भाग I, अध्याय 1 (= I-1-0-0)

1. कुरान में 1000+ गलतियाँ, मुख्य पृष्ठ। सामग्री - AN अवलोकन

(भाग १, अध्याय १ - १४ = इस्लाम के कुछ विशेष पहलू जैसा कि कुरान में बताया गया है - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

भाग । कुछ विषयों की सामग्री के साथ-साथ परिचय का अवलोकन।

1. "पवित्र कुरान", अब्दुल्ला द्वारा अनुवादित यूसुफ अली।
2. मुहम्मद . द्वारा "कुरान का संदेश" असद
3. अब्दुल्लाह द्वारा "कुरान का अर्थ" यूसुफ अली।
4. "सहीह हदीस" - अल-बुखारी के बाद हदीसें।
5. "सही हदीस" - इमाम के बाद हदीस मुस्लिम।
6. मुहम्मद इब्ने द्वारा "मुहम्मद का जीवन" इशाक।
7. विभिन्न अन्य स्रोत।

भाग II कुरान में गलतियाँ और त्रुटियाँ।

भाग III: कुरान में अधिक गलतियाँ और त्रुटियाँ प्लस अप्रमाणित दावे, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक:

भाग IV: जिहाद के लिए कुछ मांग - पवित्र युद्ध - कुरान और इस्लाम में:

भाग V: कुरान और इस्लाम के अनुसार इस्लाम के तहत गैर-मुस्लिम, पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब:

भाग VI: मुस्लिम देशों में इस्लाम के तहत कुरान के अनुसार, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक:

भाग VII: विभिन्न विषय:

भाग आठ: अगला जीवन:

भाग IX: इस्लाम में कुछ विशेष या बहुत विशेष विषय:

भाग X: धूर्त वाद-विवाद और सूचना:

भाग XI: मुहम्मद के बारे में संक्षिप्त - इस्लाम के स्वयंभू पैगंबर:

भाग XII: कुछ विचार और निष्कर्ष:

भाग XIII: कुछ प्रासंगिक पते:

एनबी: अगर आपको कहीं भी कोई गलती मिलती है, तो कृपया हमें सूचित करें। अगर यह एक वास्तविक गलती है, तो यह होगा सुधारा गया।

1. पहले 2 छोटे अध्याय पढ़ें "कुरान को कैसे पढ़ा जाए इसके लिए कुछ आवश्यक बातें और समझा" (VII-10-1-0) और "कुरान को शाब्दिक रूप से समझा जाना है अगर कुछ और नहीं है" संकेत दिया" (VII-10-2-0)।

2. http://www.1000mistakes.com को कई मुस्लिम अधिकारियों ने ब्लॉक कर दिया है। सूचित करने या बहस करने के लिए ऐसे क्षेत्रों में लोगों के साथ, आप जो चाहें, उसे काट कर पेस्ट कर सकते हैं और इसे नीचे भेज सकते हैं http://www.1000mistakes.com से अलग शीर्षक।

3. http://www.1000mistakes.com उन 9 पेजों में से एक है, जिन्हें मुस्लिम संगठनों ने चेतावनी दी थी विशेष रूप से 2008 और 2009 के खिलाफ - यह विशेष रूप से धर्मांतरण करने वालों को अपना विश्वास खो सकता है इस्लाम; सही और "डाउन-टू-द-अर्थ" जानकारी काम करती है। इस संबंध में यह लायक है यह देखते हुए कि "चेतावनी" में http://www.1000mistakes.com 3 में से एक था जो न तो था गलत तथ्य लाने का आरोप लगाया, न ही हेट पेज होने का।

४. टिप्पणी १४१ (श्लोक ६/१४९ तक) "कुरान का संदेश" (देखें बिंदु ५) बताते हैं (स्वीडिश से अनुवादित) अल्लाह के दावा किए गए सर्वज्ञता बनाम मनुष्य की दावा की गई स्वतंत्र इच्छा के बारे में:

"दूसरे शब्दों के साथ: भविष्य के बारे में अल्लाह के ज्ञान के बीच वास्तविक संबंध (और .) फलस्वरूप भविष्य में क्या होने वाला है*) एक तरफ अपरिहार्य के बारे में और दूसरे पर मनुष्य की अपेक्षाकृत (!!*) स्वतंत्र इच्छा - दो कथन जो प्रत्येक के विपरीत प्रतीत होते हैं अन्य - वह बाहर है जो मनुष्य के लिए समझना संभव है, लेकिन जैसा कि दोनों कथन किए गए हैं अल्लाह की ओर से (कुरान* में) दोनों सच होने चाहिए"। अविश्वसनीय। अंध विश्वास ही सही और जीवन का बुद्धिमान तरीका, पूरी तरह से असंभव का सामना करते हुए भी !!

5. और एक विचार: अल-अजहर अल द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ कुरान" में-
काहिरा में शरीफ इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक)
ऐसे विषयों पर दुनिया) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि
अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु
यह है कि अगर अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, तो स्वचालित रूप से भी है
कोई सबूत नहीं है, और यह साबित करना असंभव है कि मुहम्मद का ईश्वर से संबंध है। और अगर वहाँ
अल्लाह नहीं है और/या मुहम्मद और ईश्वर के बीच कोई संबंध नहीं है, तो मुहम्मद क्या है? -
और इस्लाम से बढ़कर क्या है? - एक बना हुआ, अमान्य धर्म?

6. आगे: उस पुस्तक में सभी गलतियाँ, अंतर्विरोध आदि 100% साबित करते हैं कि कुरान नहीं है
एक सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा किया गया - कोई भी ईश्वर ऐसी और इतनी गलतियाँ आदि नहीं करता है। यदि इस्लाम है तो a
धर्म बनाया, फिर उन सभी मुसलमानों का क्या जिन्हें तलाश करने से मना किया गया है
एक वास्तविक धर्म (यदि ऐसा मौजूद है)? और जीने के बाद कहाँ जाएंगे और
इस्लाम जैसे अमानवीय युद्ध धर्म का पालन करना कुरान (और हदीसों) के अनुसार है।
अगर कहीं दूसरा जीवन है? - नरक या स्वर्ग?

7. एनबी और पीएस: आप किसी चीज के बारे में कितने भी आश्वस्त हों, अगर यह साबित नहीं होता है, तो यह नहीं है
ज्ञान, केवल विश्वास या दृढ़ विश्वास, और गलत हो सकता है। केवल वही साबित या संभव है
सिद्ध ज्ञान है।

(जैसा कि http://www.1000mistakes.com कई मुस्लिम क्षेत्रों में अवरुद्ध है - जो दर्शाता है कि वे हैं
इससे डरते हैं और तर्कों की कमी करते हैं (यदि उनके पास http://www.1000mistakes.com के लिए वास्तविक तर्क थे)
गलत है, ब्लॉक करना अनावश्यक था) - इसमें से जो कुछ भी आप चाहते हैं उसे "काटें और पेस्ट करें" और भेजें if
आप सूचित करना चाहते हैं या वहां बहस करना चाहते हैं। नाम छोड़ना याद रखें
http://www.1000mistakes.com)।

पीएस: अगर हमें केंद्रीय रूप से अवरुद्ध कर दिया गया है - एफ। भूतपूर्व। स्पैम द्वारा (कई बार पहले से ही बहुत अधिक है
अमित्र स्रोत) हम कहीं और नए पते के साथ फिर से खोलेंगे, और नए की घोषणा करेंगे
पता ओम एफ. भूतपूर्व।http://www.topix.com/forum/religion/islam. इसके अलावा अगर आपकी टिप्पणियाँ हमें करती हैं
हम तक नहीं पहुंचे, उस मंच पर शीर्षक में "1000 गलतियों" के साथ एक थ्रेड पर पोस्ट की गई कोई भी टिप्पणी
हमारे द्वारा पढ़ा जाएगा - यह एक बड़ा अंतरराष्ट्रीय बहस पृष्ठ है। हम उस पृष्ठ पर उत्तर नहीं दे सकते,
हालांकि, चूंकि यह पर्याप्त सुरक्षित नहीं है - हमें मौत की धमकियां मिली हैं (प्रतिद्वंद्वी को मारने के लिए बेहतर है, तो
जाँच करें कि क्या किसी धर्म ने केवल झूठ का अभ्यास करने वाले व्यक्ति के शब्द पर आपका ब्रेनवॉश किया है (f.
भूतपूर्व। "युद्ध छल है") और अपनी शपथ को भी तोड़ने की वकालत की अगर इससे बेहतर परिणाम मिले, तो यह सच है
या बना हुआ - पुरानी मान्यताओं पर सवाल उठाना मुश्किल है)।

कृपया सभी और सभी को और सभी प्रासंगिक मंचों को सूचित करें - च। भूतपूर्व। बहस के लिए इंटरनेट पेज or जानकारी - पते के बारे में http://www.1000mistakes.com। यह जानकारी है कि बहुतों को इसकी तत्काल आवश्यकता है, कम से कम मुसलमानों को तो नहीं। किसी भगवान ने इतने लोगों से किताब नहीं बनाई गलतियाँ और अन्य गलतियाँ - और अगर कुरान और इस्लाम इंसानों द्वारा बनाए गए हैं या अंधेरी ताकतें, इस अमानवीय अंधेरे और क्रूर युद्ध धर्म के अनुयायी कहां हैं एक संभावित अगले जीवन में जा रहे हैं?

भाग I, अध्याय 2 (= I-2-0-0)

की अनुमानित आयु कुरान में विभिन्न सूरह, मुहम्मद की पवित्र पुस्तक, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह + प्रतिकूल संदर्भ।

(भाग १, अध्याय १ - १४ = इस्लाम के कुछ विशेष पहलू जैसा कि कुरान में बताया गया है - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

कुरान में अक्सर छंद होते हैं जो "टकराते हैं" या छंद होते हैं जहां कोई से सख्त होता है
अन्य। उन मामलों में कोई इस्लामी निरसन नियम का उपयोग करता है: सामान्य रूप से सबसे छोटी कविता है
एक जो मायने रखता है - पुराने को "बेहतर (?) एक के लिए बदल दिया जाता है" - यहां तक कि कुरान भी

इसका उल्लेख करता है। आप मुसलमानों से इस बात का विरोध करते हुए मिलते हैं कि ऐसा नियम मौजूद है, क्योंकि इसका मतलब है कि
अल्लाह को अपना मन बनाने में समस्या थी या नियमों को अच्छा बनाने के लिए पर्याप्त बुद्धिमान नहीं था
एक ही बार में और शुरू से ही पर्याप्त - उसे कोशिश करनी पड़ी और असफल होना पड़ा। एक तरह से बिलकुल सही - ऐसा लगता है कि
वह नहीं था - - - लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कैसे विरोध या व्याख्या करते हैं, कुछ छंद (कुछ सैकड़ों) हैं
किसी तरह निरस्त कर दिया। यह वे दूर समझाने की कोशिश करते हैं f. भूतपूर्व। इसके साथ ही अल्लाह ने को नहीं बदला
नियम, बस उन्हें सख्त बना दिया - शराब के नियमों को अक्सर एक उदाहरण के रूप में उपयोग किया जाता है। लेकिन एक के लिए
केवल कुछ मामलों में चीजों को इस तरह से समझाना संभव है, और दूसरे के लिए
समस्या अभी भी बनी हुई है: अल्लाह को सबसे अच्छा नियम खोजने की कोशिश करनी पड़ी और असफल होना पड़ा - एक नियम को मजबूत करना भी है
एक निरसन। पाठकों के लिए समस्या यह जानना है कि कौन किससे पुराना है, जैसा कि यह है
ज्यादातर कुरान में नहीं कहा गया है। निरसन भी मुख्यधारा के इस्लाम और में गहराई से एकीकृत है
मुस्लिम कानून। विरोध सिर्फ तथ्यों के इनकार + इच्छाधारी सोच पर आधारित हैं।

मक्का काल (610-622 ईस्वी) के अधिकांश छंद जो गैर-मुसलमानों के प्रति हल्के हैं, f हैं।
भूतपूर्व। ओवरराइड - निरस्त - वैध डकैती, घृणा, बलात्कार, रक्त और हत्या के छंदों से
मदीना काल (622-632 ई.) जब युद्ध जैसे विषयों की बात आती है, तो गैर-
मुस्लिम, और गैर-मुसलमानों के साथ संबंध, मुस्लिम कानून में उल्लेख नहीं है, इसलिए यह है
हमारे लिए - और मुसलमानों के लिए - यह जानना बहुत जरूरी है कि कौन सी आयतें मायने रखती हैं, और कौन सी नहीं (या यहाँ तक कि)
कम), और जो ओवरराइड करता है - निरस्त करता है - जो। इस वजह से हमें यह टेबल मिली है। लेकिन
हम इस बात पर बहुत जोर देते हैं कि इसका इस्तेमाल सबसे बड़े के साथ किया जाना चाहिए
देखभाल, आंशिक रूप से क्योंकि यह एक कैनोनाइज्ड नहीं है, और आंशिक रूप से इसलिए
यहां तक कि इस्लाम भी अधिकांश सूराहों की सही उम्र नहीं जानता है।
कम से कम छोटी-मोटी गलतियाँ होना निश्चित है। कहा जाता है कि अधिक सटीक सूचियाँ मौजूद हैं (f. उदा। एक बनाया गया .)
द्वारा थ. नोल्डके), लेकिन हम अभी तक उनमें से कोई भी नहीं ढूंढ पाए हैं। अगर/जब हम एक बेहतर पाते हैं
एक, हम इस सूची को समायोजित करेंगे। लेकिन इससे कोई बड़ा फर्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि मुख्य और महान विभाजन
622 ईस्वी में मक्का से उड़ान के पहले और बाद के बीच है, और जो किसी भी सूची को विभाजित करता है
मुख्य रूप से सही। जब तक हमें कोई बेहतर नहीं मिल जाता, तब तक हम इसका इस्तेमाल करेंगे। परिणाम कम से कम होगा
मोटे तौर पर सही।

तालिका के बाएँ और मध्य में सूरा को अनुमानित आयु + क्रम संख्या के आधार पर सूचीबद्ध किया गया है
(अनुमानित) आयु संदर्भों के लिए उपयोग करें। सुदूर दाहिनी ओर से पता चलता है कि किस सूरह की उम्र क्या है और
सीरियल नंबर - क्रॉस रेफरेंस। सावधान रहें कि दाईं ओर की सूची - 2 कॉलम - में कोई प्रत्यक्ष नहीं है
बाकी से संबंध। इसे सिर्फ इसलिए रखा गया है क्योंकि यह सुविधाजनक था।

युद्ध/जिहाद के अध्याय में और कुछ अन्य अध्यायों में जहाँ हम दिखाना चाहते थे
इस्लाम के विकास, सूरह को क्रम संख्या द्वारा व्यवस्थित किया जाता है क्योंकि वे बहुत
उम्र के हिसाब से लगभग सूरा की सीमा। वहां आपको सूरा ढूंढना आसान हो सकता है
पहले सीरियल नंबर ढूंढकर देखें। एनबी: जैसा कि मुख्य अवलोकन उम्र के अनुसार होता है, यह भी
स्वचालित रूप से सीरियल नंबरों द्वारा श्रेणीबद्ध किया जाता है - उस सिंहावलोकन में अंतिम कॉलम देखें। खोजने के लिए
एक सूरा की क्रम संख्या, क्रॉस संदर्भ देखें। एक ही समय में सीरियल नंबर बताते हैं
(लगभग) जो सूरह एक दूसरे से बड़े और छोटे हैं।

एनबी और एक बार फिर: दो अंतिम कॉलम एक पूरी तरह से अलग सूची है, क्रॉस रेफरेंस - रखा गया
वहाँ केवल सुविधा के लिए।

सूरा और सीरियल नंबर अनुमानित उम्र के अनुसार कालानुक्रमिक क्रम में गिने जाते हैं: क्रॉस
संदर्भ:

सूरा नहीं।	साल बनाया (अनुमानित।)	अपवाद छंद	टिप्पणियाँ	धारावाहिक नहीं।	सूरा नहीं।	धारावाहिक नहीं।

पेज 9

096	६१०	वी.6-19 बाद में	नंबर 1 (जुलाई/अगस्त 610)	001	001	002
001	610-614			002	002	088
068	611-614		संभावना संख्या ३.	003	003	092
073	611-614		संभावना नहीं ४.	004	004	096
080	611-614		शीघ्र	005	005	१०७
111	611-614		संभावना संख्या ६.	006	006	063
081	611-615		शायद नं 7.	007	007	062
087	611-615		संभावना नहीं 8.	008	008	090
092	611-615		संभावना नहीं 9.	009	009	105
089	611-615		संभावना नहीं 10.	010	010	066
093	611-615		89 . के बाद	011	011	067
094	611-615		93 . के बाद	012	012	068
103	611-615		94 . के तुरंत बाद	013	013	109
072	611-615			014	014	072
074	611-615			015	015	069
075	611-615			016	016	078
102	611-615			017	017	065
१०७	611-615			018	018	077
109	611-615		107 . के तुरंत बाद	019	019	035
112	611-615			020	020	036
091	611-615		97 . के तुरंत बाद	021	021	070
085	611-615		91 . के तुरंत बाद	022	022	047
095	612-615		85 . के तुरंत बाद	023	023	073

पेज 10

	612-615			024	024	098

१०१			95 . के बाद			
053	612-615	वी. 13-18 (बाद में +?)	112 . के तुरंत बाद	025	025	033
१०४	613			026	026	042
054	614?		053 के ठीक बाद?	027	027	043
086	614			028	028	064
077	614		104 और 50 029 . के बीच		029	076
050	614			030	030	044
090	614-615		50 . के ठीक बाद	031	031	038
36	614-615		25 . के ठीक पहले	032	032	074
025	614-615		19 . के समान समय	033	033	095
035	614-615		25 और 19 . के बीच	034	034	058
019	614-615		19 . के बाद	035	035	034
020	614-615		देर ६१४/६१५ की शुरुआत	036	036	032
038	614-615			037	037	045
031	614-617			038	038	037
070	614-617			039	039	046
088	614-618			040	040	048
056	615			041	041	049
026	615-616			042	042	050
027	615-616		26 . के तुरंत बाद	043	043	051
030	615-616			044	044	052
037	615-617			045	045	053
039	615-617		मध्यम मक्का	046	046	056

पेज 11

022	६१६ ऐप	39+49=622, कुछ 624	मध्यम मक्का	047	047	078
040	616-618		7 का समूह (40-46)	048	048	100
041	616-618		40 . के बाद	049	049	106
042	616-618		7 का समूह (40-46)	050	050	030
043	616-619			051	051	059

			7 का समूह (40-46)			
044	616-619		7 का समूह (40-46)	052	052	075
045	616-620		7 का समूह (40-46)	053	053	025
067	618-619			054	054	027
069	618-619		67 . के बाद	055	055	110
046	620		7 का समूह (40-46)	056	056	041
072	620		46 . के समय के बारे में	057	057	103
034	620?		17 . से कुछ समय पहले	058	058	099
051	620?			059	059	091
078	620-622		देर से मक्का	060	060	102
079	620-622		78 . के बाद	061	061	093
007	621		6 . से पहले	062	062	089
006	621	दो या तीन को छोड़कर वर्सेज		063	063	094
028	621	622 में वी.85?	17 . के ठीक पहले	064	064	111
017	६२१ या बाद में		पिछाड़ी 28, पूर्व.11,12,13	065	065	097
010	621		17 और 11 . के बीच	066	066	१०१
011	621	वी.12, 17, 114 बाद में?		067	067	054
012	621		11 . के तुरंत बाद	068	068	003

पेज 12

015	621		ठीक 12 . के बाद	069	069	055
021	६२१?		देर से मक्का	070	070	039
071	621-622			071	071	071
014	621-622		71 . के बाद	072	072	057
023	621-622		अंतिम मक्का?	073	073	004
032	621-622		23 के ठीक बाद, मक्का	074	074	015
052	621-622		32 के बाद?	075	075	016
029	621-624?	कई अस्पष्ट	देर से मक्का या जल्दी मेड.	076	076	112
018	622		16 . के ठीक पहले	077	077	029

016	622		मक्का (उसी समय के रूप में 72)	078	078	060
082	?		मक्का	079	079	061
100	?		१०३ के बाद कभी	080	080	005
105	?			081	081	007
106	?		वी.105?106=एक?	082	082	079
113	?		जल्दी मक्का?	083	083	086
114	?		जल्दी मक्का?	084	084	085
084	622		82 . के बाद	085	085	022
083	622	वी.1-4 मदीना	शायद आखिरी मक्का	086	086	028
047	622	वी. 13 मक्का	1. आंशिक रूप से मदीना में?	087	087	008
002	622-624	V.275-281 632 . में	1. मदीना में पूर्ण	088	088	040
062	622-625		प्रारंभिक मदीना	089	089	010
008	624	कुछ वी. बाद में		090	090	031

059	624-625			091	091	021
003	625		मदीना में नंबर 2?	092	092	009
061	625-626		देर से ६२५ या जल्दी ६२६ ०९३		093	011
063	625-626		देर से ६२५ या जल्दी ६२६ ०९४		094	012
033	625-629	कई अंतर। वर्षों (627?)	मेडिना	095	095	023
004	626	V.58 बाद में, (कुछ v. इससे पहले?)		096	096	001
065	626-628			097	097	014
024	627-628		देर से ६२७ या जल्दी ६२८ ०९८		098	113
058	627-628		संभावित रूप से जल्दी 628	099	099	114
048	628		देर से ६२८	100	100	080
066	629			१०१	१०१	024
060	629-630		संभावित रूप से जल्दी 630	102	102	017
057	630-632			103	103	013

१०८	630-632?		उम्र अस्पष्ट	१०४	१०४	026
009	631			105	105	081
049	631			106	106	082
005	632	कुछ वी. पहले	नवीनतम में से एक	१०७	१०७	018
110	632		अंतिम सूरह	१०८	१०८	१०४
013	?		(बहुत?) 17 . के बाद	109	109	019
055	?		13 . के बाद	110	110	१०८
064	?			111	111	006
076	?			112	112	020

098	?			113	113	083
099	?			114	114	084

एक अनुस्मारक: इस तालिका का उपयोग करते हुए बहुत सावधान रहना चाहिए कि बहुत सख्त निष्कर्ष न निकालें
वर्षों से एक साथ, क्योंकि वर्ष अक्सर सटीक नहीं होते हैं, और जैसा कि अन्य गलतियाँ हो सकती हैं
- इस्लाम को कभी-कभी वेतन बिंदुओं से उम्र का अनुमान लगाना पड़ता है। लेकिन वर्षों से व्यापक रूप से अलग, यह है
अधिक विश्वसनीय है कि कौन सबसे पुराना है और कौन सा सबसे छोटा। और ज्यादातर इस्लाम तय करने में सक्षम है
मक्का और मदीना काल के बीच।

टेबल के लिए पोस्ट स्क्रिप्टम।

जहाँ तक इस्लाम के विकास की प्रवृत्तियों को देखने की बात है - और मुहम्मद में - यह तालिका अधिक है
पर्याप्त से अधिक। एफ. पूर्व. आप देखेंगे कि मुहम्मद - या अल्लाह - और सख्त होते जा रहे हैं
622 ईस्वी से द्वेषपूर्ण और इस्लाम अधिक अमानवीय और खूनी, जैसे-जैसे वर्ष बीतते हैं और वह लाभ प्राप्त करता है
अधिक शक्ति (तथ्य यह है कि वह यहूदियों द्वारा स्वीकार नहीं किया गया था, इसके बाद भी गिना जा सकता है
मदीना आना - खुद को अस्वीकार करना या एक नेता के रूप में और अधिक शक्ति के लिए खोई हुई आशा के लिए भी
उन्हें)।

"काफिरों" की कम सहनशीलता, अधिक "काफिरों के साथ कोई मित्र नहीं", अधिक घृणा और दमन
"काफिरों" के खिलाफ, अधिक दास और बलात्कार, "काफिरों" के खिलाफ अधिक युद्ध - भी सख्त हो सकता है
अपने अनुयायियों के प्रति। अल्लाह इतना क्यों बदल दे - एक भगवान के लिए - कोई समय नहीं? लेकिन एक
इंसान 23 साल में ऐसे बदल सकता है और बहुत कम समय में भी - सत्ता छोड़ जाती है
निशान, और इसी तरह सत्ता के लिए लालच और वासना करते हैं। "सत्ता भ्रष्ट करती है, पूर्ण शक्ति भ्रष्ट करती है"
बिल्कुल"। 622 में मदीना की उड़ान के बाद मुहम्मद और इस्लाम तेजी से और बहुत कुछ बदल गए
ई., और मुहम्मद की शुरुआत एक चोर/डाकू/जबरन वसूली करने वाले/बलात्कारी/हत्यारे और बाद में सरदार के रूप में हुई।

क्योंकि यह देखना मुश्किल है कि कुरान को पढ़ने वाली कौन सी आयत सबसे पुरानी और सबसे कम उम्र की है
सूरह के सामान्य उत्तराधिकार, हम ऊपर की संख्याओं का उपयोग करते हैं, और उन्हें इसके अनुसार रखते हैं
उम्र, सबसे पुराना पहला, "सहिष्णुता", "मुसलमान बेहतर", "कोई दोस्त नहीं", "नफरत" के अध्यायों में
'काफिरों' और 'युद्ध/पवित्र युद्ध/जिहाद' के खिलाफ और उनके साथ व्यवहार। तो आप भी देख सकते हैं
मुहम्मद और उनके धर्म का विकास और पतन।

हमें यह भी बताया गया है (लेकिन अभी तक जाँच नहीं की गई है) कि वह वास्तव में उपयोग करने के लिए पर्याप्त रूप से बेशर्म नहीं था
शीर्षक "पैगंबर" जीवन के अंत तक, क्योंकि वह वास्तव में एक भविष्यवक्ता नहीं था। (उन्होंने कभी नाटक नहीं किया या यहां तक कि
भविष्यवाणी करने में सक्षम होने का उपहार होने का दावा किया - होने के लिए न्यूनतम आवश्यकता
एक नबी। वह केवल एक प्रभावशाली और प्रभावशाली उपाधि थी जिसे उसने "उधार" लिया था। अध्याय भी देखें

मैं/7)।

एनबी: अगर आपको कहीं भी कोई गलती मिलती है, तो कृपया हमें सूचित करें। अगर यह एक वास्तविक गलती है, तो यह होगा सुधारा गया।

14

पेज 15

भाग I, अध्याय 3 (= I-3-0-0)

कुछ गंभीर प्रश्न और कुरान के बारे में टिप्पणियाँ, मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

(भाग १, अध्याय १ - १४ = इस्लाम के कुछ विशेष पहलू जैसा कि कुरान में बताया गया है - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

1. कुरान कई जगह बताता है कि अल्लाह
सब कुछ तय करता है - बिल्कुल सब कुछ (f.
भूतपूर्व। आपकी मृत्यु का समय भी तय है
आपके जन्म से पहले - जब भ्रूण 4
महीने वास्तव में)। लेकिन कुरान भी कहता है
उस आदमी की स्वतंत्र इच्छा है। ये दोनों नहीं हैं
गठबंधन करना संभव है। (मुस्लिम विचारकों ने
1400 . के माध्यम से इसे समझाने में सक्षम नहीं है
वर्ष (अगले 3 प्रश्नों के लिए भी यही है,
जबकि प्रश्न संख्या 5 में चर्चा नहीं की गई है
इस्लाम - मृत्युदंड हो सकता है या कम से कम
इसके लिए निकासी))। एफ. पूर्व. " का संदेश
कुरान "- अल-अहजारी द्वारा प्रमाणित पुस्तक
काहिरा में मुस्लिम विश्वविद्यालय, शीर्ष में से एक
मुस्लिम विश्वविद्यालय और उच्च की एक पुस्तक
मुस्लिम प्रचार में सम्मान - कहते हैं: "हम"
इसे समझा नहीं सकता, लेकिन यह सच होना चाहिए,
क्योंकि यह अल्लाह (कुरान* में) ने कहा है।"
कुल समर्पण और बहुत प्रभावशाली
बयान, खासकर जब आप जानते हैं
कुरान गलत तथ्यों और तार्किक रूप से भरा है
अमान्य कथन, "संकेत" और "प्रमाण"। देखो
एफ। भूतपूर्व। पूर्वनियति के बारे में अध्याय और
मुक्त इच्छा। क्या मनुष्य वास्तव में स्वतंत्र इच्छा रखता है? या करता है
अल्लाह सच में सब कुछ तय करता है? दोनों साथ में
कुरान और के बावजूद असंभव हैं
इस्लाम का दावा- इस्लाम से ही सामान्य
अप्रमाणित दावे।

2. कुरान कहता है कि अल्लाह सर्वज्ञ है और भविष्य के बारे में भी सब कुछ जानता है।

लेकिन कुरान यह भी कहता है कि मनुष्य के पास स्वतंत्र है मर्जी। ये दो कथन संभव नहीं हैं ऊपर बताए अनुसार गठबंधन करें, क्योंकि अगर आदमी स्वतंत्र इच्छा है, उसके कार्य बदल देंगे भविष्य - और यह पूर्वाभास करना संभव नहीं होगा ये परिवर्तन अगर मनुष्य की इच्छा वास्तव में स्वतंत्र है, यह भले ही वसीयत केवल एक छोटे से के लिए स्वतंत्र है डिग्री। क्या अल्लाह सच में सर्वज्ञ है? - आदमी कर सकता है हमेशा अपना मन एक बार फिर बदल लें अगर उसके पास है स्वतंत्र इच्छा, और फिर क्या अल्लाह के बारे में सोचा वह जानता था? के बारे में अध्याय देखें पूर्वनियति और स्वतंत्र इच्छा।

3. कुरान में कहा गया है कि अल्लाह सर्वज्ञ है और सर्वशक्तिमान लेकिन इसमें यह भी कहा गया है कि अल्लाह भेजता है दुर्घटनाएं और आपदाएं और मांगें लड़ाई और युद्ध - यह सब आपकी परीक्षा लेने के लिए है। कैसे क्या इस्लाम इन दोनों कथनों को मिलाता है? - अगर अल्लाह सर्वज्ञ है, वह सब कुछ जानता है और परीक्षण बिना किसी कारण के है, और बहुत कुछ परीक्षण उनकी छवि को पूरी तरह से नष्ट कर देता है भगवान।
4. कुरान कई जगह कहता है कि अल्लाह रास्ता अवरुद्ध करता है - या रास्ता वापस - इस्लाम के लिए कुछ लोगों के लिए, विशेष रूप से "बुरे" व्यक्तियों के लिए। अल्लाह के "अवरुद्ध" तो उन्हें नहीं बनाता है पछतावा और पश्चाताप, जो कम से कम कुछ करेंगे "सामान्य" परिस्थितियों में किया है। सभी वही वह इन व्यक्तियों को नर्क में भेजता है उन्हें पश्चाताप करने का यह मौका दिए बिना। फिर उसे एक अच्छा देवता कैसे कहा जा सकता है?
5. इस्लाम और हदीस बताते हैं कि अल्लाह तय करता है 5 आपके पैदा होने के महीनों पहले चाहे आप हों स्वर्ग या नर्क में समाप्त होने के लिए। एक व्यक्ति कैसे हो सकता है पैदा होने से पहले ही नर्क में बर्बाद हो गया उन बुरे कामों के लिए दोषी ठहराया जाता है जिन्हें करने के लिए उसे मजबूर किया जाता है, और वह कैसे सोच सकता है कि अल्लाह दयालु है? भगवान?
6. अगर कुरान मानव निर्मित है - सभी की तरह गलत तथ्य और अंतर्विरोध और f. भूतपूर्व। अमान्य "सबूत" संकेत कर सकते हैं - और यदि वहां कहीं मौजूद है एक असली भगवान, इस्लाम सभी को रोकता है मुसलमानों को मौत की सजा की धमकी कई स्थानों, इसे खोजने से संभवतः वास्तविक भगवान। क्या इस मामले में भाग्य अच्छा है?

फिर सवाल यह है कि समाज किन मूल्यों पर टिका है। ये मान मोटे तौर पर हो सकते हैं 3 में विभाजित करें:

1. **सकारात्मक मूल्य - जैसे ईमानदारी, परवाह करना अन्य, आदि**

2. **खाली मूल्य - चीजें, कार्य या विचार लोग मानते हैं कि वे मूल्यवान हैं क्योंकि वे ऐसा कहा जाता है, लेकिन वास्तव में इसका कोई मूल्य नहीं है। एफ। भूतपूर्व। दाढ़ी को उतनी ही लंबाई में रखने के लिए मुहम्मद का।**
3. **नकारात्मक या गलत मूल्य - क्या परंपरा आदि बताना कीमत के लायक है, लेकिन वास्तव में बुरे हैं। जैसे दमन/दुर्व्यवहार करना या साथी मनुष्यों को मारना क्योंकि वे मुसलमान नहीं हैं, या गुलाम बच्चों का बलात्कार नहीं कर रहे हैं या महिलाएं - आखिर वे इंसान हैं जो आमतौर पर बलात्कार से घृणा करता है।**

ए।

इस्लाम के कुछ सकारात्मक मूल्य हैं - जैसे ईमानदार रहें (इस्लाम का बचाव करने या आगे बढ़ाने के अलावा, महिलाओं को धोखा देना, अपना पैसा सुरक्षित करना, आदि, जब आप अल-तकिया का उपयोग करते हैं - वैध झूठ - अगर आवश्यक), निष्पक्ष रूप से व्यवहार करें, अनाथों की देखभाल करें, आदि।

बी।

इस्लाम के बहुत सारे खाली मूल्य हैं - जैसे अर्थहीन औपचारिकताएँ, मुहम्मद की नकल करना भी अर्थहीन विवरण, आदि।

सी।

और इस्लाम में बहुत सारे नकारात्मक/झूठे मूल्य हैं - जैसे चोरी करना/लूटना, बलात्कार करना, गुलाम बनाना, दूसरों का दमन, हत्या, घृणा और युद्ध। और सबसे बुरा: अंधों का महिमामंडन विश्वास और सभी ज्ञान का दमन जो इस्लाम से संबंधित नहीं है (जिसे "विदेशी" कहा जाता है) ज्ञान" - और इस प्रकार नकारात्मक)।

नायब, नायब, नायब:

1. पहले 2 छोटे अध्याय पढ़ें "कुरान को कैसे पढ़ा जाए इसके लिए कुछ आवश्यक बातें और समझा" (VII-10-1) और "कुरान को शाब्दिक रूप से समझा जाना है यदि और कुछ नहीं है संकेत दिया" (VII-10-2)।

2. http://www.1000mistakes.com को कई मुस्लिम अधिकारियों ने ब्लॉक कर दिया है। के साथ बहस करने के लिए ऐसे क्षेत्रों में रहने वाले लोग, जो आप चाहते हैं उसे काट कर चिपकाएँ और इसे शीर्षकों के तहत भेजें http://www.1000mistakes.com से अलग।

3. http://www.1000mistakes.com उन 9 पेजों में से एक है, जिन्हें मुस्लिम संगठनों ने चेतावनी दी थी विशेष रूप से 2008 और 2009 के खिलाफ - यह विशेष रूप से प्रोसेलिट्स को अपना विश्वास खो सकता है इस्लाम; सही और "डाउन-टू-द-अर्थ" जानकारी काम करती है। इस संबंध में यह लायक है यह देखते हुए कि "चेतावनी" में http://www.1000mistakes.com 3 में से एक था जो न तो था गलत तथ्य लाने का आरोप लगाया, न ही हेट पेज होने का।

४. टिप्पणी १४१ (श्लोक ६/१४९ तक) "कुरान का संदेश" (देखें बिंदु ५) बताते हैं (स्वीडिश से अनुवादित) अल्लाह के दावा किए गए सर्वज्ञता बनाम मनुष्य की दावा की गई स्वतंत्र इच्छा के बारे में:

"दूसरे शब्दों के साथ: भविष्य के बारे में अल्लाह के ज्ञान के बीच वास्तविक संबंध (और .) फलस्वरूप भविष्य में क्या होने वाला है*) एक तरफ अपरिहार्य के बारे में और दूसरे पर मनुष्य की अपेक्षाकृत (!!*) स्वतंत्र इच्छा - दो कथन जो प्रत्येक के विपरीत प्रतीत होते हैं अन्य - वह बाहर है जो मनुष्य के लिए समझना संभव है, लेकिन जैसा कि दोनों कथन किए गए हैं अल्लाह की ओर से (कुरान* में) दोनों सच होने चाहिए"। अविश्वसनीय। अंध विश्वास ही सही और जीवन का बुद्धिमान तरीका, पूरी तरह से असंभव का सामना करते हुए भी !!

5. और एक विचार: अल-अजहर अल द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ कुरान" में-
काहिरा में शरीफ इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक)
ऐसे विषयों पर दुनिया) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि
अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु
यह है कि अगर अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, तो स्वचालित रूप से भी है
कोई सबूत नहीं है, और यह साबित करना असंभव है कि मुहम्मद का ईश्वर से संबंध है। और अगर वहाँ
अल्लाह नहीं है और/या मुहम्मद और ईश्वर के बीच कोई संबंध नहीं है, तो इस्लाम क्या है?

6. आगे: उस पुस्तक में सभी गलतियाँ, अंतर्विरोध आदि 100% साबित करते हैं कि कुरान नहीं है
एक सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा किया गया - कोई भी ईश्वर ऐसी और इतनी गलतियाँ आदि नहीं करता है। यदि इस्लाम है तो a
धर्म बनाया, फिर उन सभी मुसलमानों का क्या जिन्हें देखने से मना किया गया है
एक वास्तविक धर्म के लिए (यदि ऐसा कोई मौजूद है)? और जीने के बाद कहाँ जागेंगे और
इस्लाम जैसे अमानवीय युद्ध धर्म का पालन करना कुरान (और हदीसों) के अनुसार है।
अगर कहीं दूसरा जीवन है? - नरक या स्वर्ग?

7. एनबी और पीएस: आप किसी चीज के बारे में कितने भी आश्वस्त हों, अगर यह साबित नहीं होता है, तो यह नहीं है
ज्ञान, केवल विश्वास या दृढ़ विश्वास, और गलत हो सकता है। केवल वही साबित या संभव है
सिद्ध ज्ञान है।

(जैसा कि http://www.1000mistakes.com कई मुस्लिम क्षेत्रों में अवरुद्ध है - जो दर्शाता है कि वे हैं
इससे डरते हैं और तर्कों की कमी करते हैं (यदि उनके पास http://www.1000mistakes.com के लिए वास्तविक तर्क थे)
गलत है, ब्लॉक करना अनावश्यक था) - जो कुछ भी आप चाहते हैं उसे "काटें और पेस्ट करें" और भेजें if
आप सूचित करना चाहते हैं या वहां बहस करना चाहते हैं। नाम छोड़ना याद रखें
http://www.1000mistakes.com)।

पीएस: अगर हमें केंद्रीय रूप से अवरुद्ध कर दिया गया है - एफ। भूतपूर्व। स्पैम द्वारा (कई बार पहले से ही बहुत अधिक है
अमित्र स्रोत) हम कहीं और नए पते के साथ फिर से खोलेंगे, और नए की घोषणा करेंगे
पता ओम एफ. भूतपूर्व। http://www.topix.com/forum/religion/islam । साथ ही अगर आपकी टिप्पणी हमें
हम तक न पहुंचें, थ्रेड पर पोस्ट की गई कोई भी टिप्पणी "इसके साथ क्या है
http://www.1000mistakes.com?" (या शीर्षक में "1000 गलतियां" वाला पेज बनाएं
यदि आप चाहें तो स्वयं) उस मंच पर हमारे द्वारा पढ़ा जाएगा - यह एक बड़ा अंतर्राष्ट्रीय वाद-विवाद पृष्ठ है।

भाग I, अध्याय 4 (= I-4-0-0)

4. मेरे हत्यारे को। कट्टर पक्ष कुरान की, मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह

(भाग १, अध्याय १ - १४ = इस्लाम के कुछ विशेष पहलू जैसा कि कुरान में बताया गया है - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।)

१८

पेज 19

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मुसलमानों के अनुसार, मुहम्मद के बारे में अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होना बुरा है। महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने के लिए
उसके बारे में विधर्म है और मृत्युदंड का वहन करता है। और उसके बारे में निष्कर्ष निकालने के लिए मुसलमान
पसंद नहीं है - यह कुछ भी मायने नहीं रखता है कि निष्कर्ष 100% सत्य हो सकते हैं - यह सभी के लिए एक कर्तव्य बनाता है
और हर मुसलमान उसकी हत्या करे। या उसे। मुहम्मद ने भी महिलाओं की हत्या कर दी थी जब वे
उसका विरोध किया, और वह महान मूर्ति है - उसने जो कुछ भी किया वह सही और नैतिक और नैतिक रूप से है
सही। कोई अल्लाह के बारे में सवाल पूछ सकता है और कोई अल्लाह का इनकार कर सकता है, लेकिन अल्लाह के बारे में नहीं
अर्ध-संत मुहम्मद - उन्हें एक निर्विवाद संत होना चाहिए, भले ही उन्हें एक नहीं कहा जा सकता है
संत औपचारिक रूप से, क्योंकि कुरान इसे प्रतिबंधित करता है। उसे बिना किसी संदेह के परिपूर्ण क्यों होना चाहिए
और अचूक संत? सिर्फ इसलिए कि ऐतिहासिक मुहम्मद एक संदिग्ध व्यक्ति थे
संदिग्ध नैतिकता, न कि मुसलमानों की शानदार तस्वीर - और फिर भी इस्लाम पर टिकी हुई है
केवल, और बिल्कुल और पूरी तरह से, ऐसे आदमी के शब्दों पर।

क्या तुम मेरी बातों से नाराज़ हो? लेकिन क्या आप इस्लाम की बातों से नाराज़ हो सकते हैं?
बताता है? मेरे शब्द यहाँ कुरान पढ़ने से सही उद्धरण और तार्किक निष्कर्ष हैं, कुछ
मुहम्मद के बारे में हदीस और इस्लाम के अपने इतिहास को मजबूत किया - चा। भूतपूर्व। मुहम्मद इब्न इशाक
"मुहम्मद का जीवन"। क्या आप नाराज़ हो सकते हैं क्योंकि मुझे विश्वास है कि इस्लाम खुद क्या कहता है? किया था
आप स्वयं वास्तव में कुरान और हदीस और इब्न इशाक पढ़ते हैं - इसे अपने दिमाग से पढ़ें और
इतिहास, भूगोल, पुरातत्व, खगोल विज्ञान, मनोविज्ञान, आदि के बारे में आपके सभी ज्ञान के साथ,
न केवल अपनी आँखों और/या अपने छापे हुए पुराने विचारों से - ताकि आपने पहले गलतियाँ देखीं
तुमने मुझे मौत की सजा दी?

इसमें कोई शक नहीं कि मुहम्मद ने कम से कम दो महिलाओं के साथ बलात्कार किया। इसमें कोई शक नहीं कि उसे पसंद आया
कई पत्नियाँ - मुख्य रूप से युवा पत्नियाँ - और कुछ अन्य महिलाएँ भी हो सकती हैं (इसमें f. पूर्व आधा . हैं)
दर्जनों ज्ञात "कनेक्शन" जहां कोई नहीं जानता कि शादी हुई या सिर्फ वासना
लिंग। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मुहम्मद ने गुलामों को लिया और स्वीकार भी किया और गुलामों में भाग लिया
व्यापार (क्या यह कुछ 2000 महिलाओं और बच्चों को गुलाम के रूप में केवल ख़ैबर में ले जाया गया था और
याथ्रिब/मदीना में/बाहर अंतिम यहूदी जनजाति से बेचा या उपहार या "उपहार" के रूप में उपयोग किया जाता है - में
ख़ैबर?) इसमें कोई शक नहीं कि वह पिछले १० वर्षों से चोरी/लूट से जी रहा था,
जबरन वसूली और हत्या (मदीना में वर्ष)। इसमें कोई शक नहीं कि उसने यातना का इस्तेमाल किया। वहाँ है
इसमें कोई शक नहीं कि उसने लोगों को धोखा दिया - उसने खुद भी कहा कि युद्ध विश्वासघात था (और वह क्या है
मुस्लिम क्षेत्र नहीं, युद्ध क्षेत्र है)। इसमें कोई शक नहीं कि वह एक हत्यारा था (उसके कई विरोधी थे
हत्या कर दी)। इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह एक सामूहिक हत्यारा था (उदाहरण के लिए ख़ैबर में लगभग 700 पुरुष)।
इसमें कोई शक नहीं कि इस्लाम बहुत बदल गया था (किसी के लिए भी यह देखना आसान है कि वह पढ़ता है या नहीं .)
सूरह कालानुक्रमिक रूप से) ६२२ ईस्वी के आसपास/बाद में (उनकी मामूली शिक्षाओं में क्या गलत था)
मक्का में?) इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस्लाम जैसा कि कुरान में सोचा गया था, अपेक्षाकृत से बदल गया
मक्का काल में सौम्य, एक इस्लाम के लिए कि मदीना में नफरत का धर्म बन गया,
चोरी/लूट, बलात्कार, दमन और युद्ध। यह सब मैंने आदरणीय मुसलमान से सीखा है
किताबें - जैसा कि मैंने कहा: इब्न इशाक, हदीस और कुरान में से।

क्या आप मुझसे नाराज़ हो सकते हैं क्योंकि मैं इतनी अच्छी तरह से इस्लामी किताबों को उद्धृत करता हूँ?

क्या आप मुझसे नाराज़ हो सकते हैं क्योंकि मैं इस बात की ओर इशारा करता हूँ कि सारा इस्लाम इसी आदमी के वचन पर बना है?

क्या तुम मुझसे नाराज़ हो सकते हो क्योंकि मैं इस आदमी की खूबियों का ज़िक्र करता हूँ जैसा कि इस्लामी किताबों में बताया गया है?

क्या आप मुझसे नाराज़ हो सकते हैं क्योंकि मैं इन सादे इस्लामिक सत्यों का उल्लेख करता हूँ?

क्या तुम सच में मेरी हत्या करना चाहते हो क्योंकि मैं बताता हूं कि कुरान और हदीस और इस्लामी क्या है?
इतिहास की किताबें सच में बताती हैं?

क्या आप दावा करते हैं कि मैं चीजें बना रहा हूं, जब यह जांचना इतना आसान है कि क्या मैं उद्धरण देता हूं और बताता हूं
सत्य?

बात ये है कि आज़ादी- क्या सच है ये बताने की आज़ादी, सिर्फ़ एक आतंकवादी या क्या नहीं
तानाशाह पसंद करता है कि आप बताएं - बचाव करना होगा। और उस स्वतंत्रता को खोने का एक निश्चित तरीका, और सभी
अन्य स्वतंत्रता, आतंक के आगे झुकना है, चाहे वह राज्यों से हो या हत्यारों से। एक सावधान हो सकता है
खतरे के कारण। लेकिन सुबह उठकर खुद के आईने का सामना करना पड़ता है।

इस कार्य को शुरू करने के हमारे निर्णय के दो कारण थे:

1. एक वास्तविक मौका है कि भविष्य में इस्लाम
प्रभावी हो जाएगा, बस इसकी वजह से
उग्रवाद और विभिन्न प्रकार के खतरों का प्रयोग,
दबाव और आतंक। वह मामले में होगा a
स्थिर दुनिया - 900 से अधिक वर्षों से
इस्लाम एक को भी आगे लाने में असमर्थ रहा है
मानवता को लाभ पहुंचाने वाला नया विचार। आप डेट कर सकते हैं
१०९५ ईस्वी तक कुल ठहराव (सीए ११९८ ईस्वी)
महग्रेब/स्पेन में) और "the ." की एक पुस्तक
मुहम्मद के बाद सबसे बड़ा मुसलमान "- अल-
ग़ज़ाली।

यह भी अभाव और भूख की दुनिया होगी,
क्योंकि एक ऐसी व्यवस्था जहाँ सबसे पवित्र, नहीं
सर्वश्रेष्ठ योग्य, पर अंतिम शब्द है
कई स्तर, इतना बड़ा नहीं खिला पाएंगे a
जनसंख्या - मुसलमान कई बच्चे पैदा करते हैं।
यह और भी अधिक है क्योंकि ऐसे बंद सिस्टम हैं
भ्रष्टाचार के लिए बहुत खुला और फलस्वरूप
अधिक अक्षमता।

कमी का एक और कारण यह होगा कि
मुस्लिम देश, कोई लोगों को नहीं सिखा सकता
आलोचनात्मक सोच - वे सोचना शुरू कर सकते हैं
के बारे में और कुछ के बारे में प्रश्न पूछना
गलतियाँ और बकवास तर्क कई जगह
कुरान में। और गंभीर सोच के बिना
थोड़ी प्रगति।

ठीक है, हो सकता है कि मैं बहुत निराशावादी हूँ - १९४१ में यह
ऐसा लग रहा था कि नाजियों की जीत हो रही है। लेकिन सच
जानकारी और उनके बीच एक मजबूत इच्छा
लोकतंत्र से लड़ने के लिए जब उन्हें वास्तव में करना था,
नाजी धर्म का ब्रेनवॉश करने से ज्यादा - क्योंकि
यह कई लोगों के लिए एक धर्म बन गया - माना जाता है,
ज्वार बदल दिया। (इस्लामी विचारधारा में कई हैं
नाज़ीवाद के समान)।

2. कुरान में सभी गलत तथ्य साबित होते हैं
कि कुछ गलत है - इसे बनाया नहीं जा सकता
एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा। और सभी अमान्य
"संकेत", बयान, विरोधाभास, और नहीं करने के लिए
उल्लेख "सबूत", आदि और भी बदतर हैं,
क्योंकि गलतियाँ हो सकती हैं (हालाँकि
एक सर्वज्ञ भगवान के लिए नहीं), लेकिन सक्रिय उपयोग
अमान्य कथन और अमान्य प्रमाण, नहीं हैं
ईमानदार गलतियाँ - यही इसकी पहचान है
धोखेबाज, धोखेबाज और ठग - - - और
वास्तविक चरित्र और नैतिकता को जानना
इस्लामी इतिहास के अनुसार मुहम्मद
(बाद में धार्मिक चमक नहीं कुछ मुसलमान
उसके साथ चित्रित किया है), वह भयावह है।
खासकर जब से बहुत सारे स्व-
"भविष्यद्वक्ताओं" की घोषणा काफी हद तक
इतिहास के माध्यम से मुहम्मद, हालांकि के रूप में नहीं
उसके जैसा सफल, वह पहचानता है
चित्र। यह भी कुछ बताता है कि
मुहम्मद ने "पैगंबर" शीर्षक "उधार" लिया -
वह कभी नबी नहीं था। हो सकता है कि वह एक था
संदेशवाहक या किसी चीज़ का प्रेरित या
कोई, लेकिन असली नबी नहीं - वह न तो
था, न ही होने का दावा किया था, होने का दिखावा नहीं किया था
बनाने में सक्षम होने का उपहार है
भविष्यवाणियां।

यदि इस्लाम बना हुआ धर्म है, और यदि है तो
कहीं न कहीं एक वास्तविक धर्म मौजूद है (जो हम
ईमानदारी से हमारे दौरान संदेह में आ गए हैं
कुरान का अध्ययन), इस्लाम सड़क को अवरुद्ध करता है
वह धर्म सभी मुसलमानों के लिए है। यह मामले में होगा
उनके लिए एक अशिष्ट जागरण अगर कोई Last . है
जिस दिन वे ईमानदारी से प्रवेश करने की उम्मीद करते हैं

कुरान में वर्णित आदिम स्वर्ग,
और खोजें - क्या?

मेरी हत्या करने से पहले मेरा एक ही निवेदन है - or
कोई और - क्या आप पहले सब पढ़ते हैं
कुरान, और कुछ 22-24 सूरह पढ़ें
मदीना अलग से या अधिमानतः सभी सूरह
कुरान में कालानुक्रमिक रूप से, और इस प्रकार नियंत्रण
अगर मेरी गलतियों के बारे में जानकारी और
विरोधाभास और तार्किक रूप से निराधार
बयान और "संकेत" और दावे (याद रखें
कि मैंने तार्किक रूप से निराधार कहा, क्योंकि यह है
उन सब के नीचे की बुनियाद, जिसकी कमी है -
अल्लाह एक महान ईश्वर है अगर उसने सूरज बनाया - - -
लेकिन वास्तव में कहीं भी यह साबित नहीं हुआ है कि वह
इसे बनाया)। लेकिन अपने पढ़ने के दौरान आप

21

पेज 22

अपने ज्ञान का उपयोग करें - सिर्फ वही नहीं जो कोई
या इमाम आपको बताते हैं, लेकिन असली, चेक किया हुआ
ज्ञान - और आपका दिमाग, सिर्फ आपका नहीं
आँख या कान।

एक बुद्धिमान, शिक्षित के लिए यह संभव नहीं है
व्यक्ति प्रश्न पूछता था, देखने के लिए नहीं
कुरान में गलतियाँ और तार्किक गलतियाँ।
(आपको कुरान और कुछ क्यों लगता है
पढ़े-लिखे मुसलमान इतना जोर देते हैं कि आप
आँख बंद करके और बिना किसी प्रश्न के विश्वास करना चाहिए
और बिना सबूत या वास्तविक मांगे
संकेत? - लेकिन आपको बहुत भोले होना होगा
आप पर प्रभावित अंध विश्वास को स्वीकार करें
नेता जो अपने प्रमुख पदों को पसंद करते हैं, या द्वारा
आपके माता-पिता जिन्हें केवल इतना बताया गया है
अन्य जो अपने शब्दों को केवल दावों पर आधारित करते हैं, में
धर्म और अनंत काल जैसे गंभीर प्रश्न
- विशेष रूप से केवल पर आधारित धर्म में
शब्द (वे शब्द जो अक्सर से टकराते हैं)
और कठिन मांगों और कार्यों से मारे जाते हैं -
और कर्म और मांगें की तुलना में अधिक विश्वसनीय हैं
शब्द) एक व्यक्ति के रूप में संदिग्ध नैतिकता के साथ और
नैतिक और शक्ति के लिए एक मजबूत वासना जैसे
मुहम्मद.

एक परेशान करने वाला तथ्य: "द मैसेज" पुस्तक में
कुरान का", अल-अजहर अल- द्वारा प्रमाणित
काहिरा में शरीफ इस्लामिक रिसर्च अकादमी
(मुस्लिम में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक
ऐसे विषयों पर दुनिया) 27 दिनांकित एक पत्र में।
दिसंबर 1998, इसे अनिच्छा से स्वीकार किया गया
कि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है, और यह कि
उसे सिद्ध करना संभव नहीं है। एक अतिरिक्त
यहाँ मुद्दा यह है कि अगर वहाँ के लिए कोई ptoof नहीं हैं
अल्लाह और उसे पटाना असंभव है,
स्वचालित रूप से इसका कोई प्रमाण भी नहीं है, और
मुहम्मद के दावे को साबित करना नामुमकिन
अल्लाह से संबंध। अगर कोई अल्लाह नहीं है
और/या मुहम्मद के बीच कोई संबंध नहीं है
और एक भगवान, तो इस्लाम क्या है? और इसमें
केस: आप किस लिए हत्या कर रहे हैं?

एनबी: अगर आपको कहीं भी कोई गलती मिलती है, तो कृपया हमें सूचित करें। अगर यह एक वास्तविक गलती है, तो यह होगा सुधारा गया।

नायब, नायब, नायब:

1. पहले 2 छोटे अध्याय पढ़ें "कुरान को कैसे पढ़ा जाए इसके लिए कुछ आवश्यक बातें और समझा" (VII-10-1) और "कुरान को शाब्दिक रूप से समझा जाना है यदि और कुछ नहीं है संकेत दिया" (VII-10-2)।

2. http://www.1000mistakes.com को कई मुस्लिम अधिकारियों ने ब्लॉक कर दिया है। के साथ बहस करने के लिए ऐसे क्षेत्रों में रहने वाले लोग, जो आप चाहते हैं उसे काट कर चिपकाएँ और इसे शीर्षकों के तहत भेजें http://www.1000mistakes.com से अलग।

3. http://www.1000mistakes.com उन 9 पेजों में से एक है, जिन्हें मुस्लिम संगठनों ने चेतावनी दी थी विशेष रूप से 2008 और 2009 के खिलाफ - यह विशेष रूप से प्रोसेलिट्स को अपना विश्वास खो सकता है इस्लाम; सही और "डाउन-टू-द-अर्थ" जानकारी काम करती है। इस संबंध में यह लायक है यह देखते हुए कि "चेतावनी" में http://www.1000mistakes.com 3 में से एक था जो न तो था गलत तथ्य लाने का आरोप लगाया, न ही हेट पेज होने का।

४. टिप्पणी १४१ (श्लोक ६/१४९ तक) "कुरान का संदेश" (देखें बिंदु ५) बताते हैं (स्वीडिश से अनुवादित) अल्लाह के दावा किए गए सर्वज्ञता बनाम मनुष्य की दावा की गई स्वतंत्र इच्छा के बारे में:

"दूसरे शब्दों के साथ: भविष्य के बारे में अल्लाह के ज्ञान के बीच वास्तविक संबंध (और .) फलस्वरूप भविष्य में क्या होने वाला है*) एक तरफ अपरिहार्य के बारे में और दूसरे पर मनुष्य की अपेक्षाकृत (!!*) स्वतंत्र इच्छा - दो कथन जो प्रत्येक के विपरीत प्रतीत होते हैं अन्य - वह बाहर है जो मनुष्य के लिए समझना संभव है, लेकिन जैसा कि दोनों कथन किए गए हैं अल्लाह की ओर से (कुरान* में) दोनों सच होने चाहिए"। अविश्वसनीय। अंध विश्वास ही सही और जीवन का बुद्धिमान तरीका, पूरी तरह से असंभव का सामना करते हुए भी !!

5. और एक विचार: अल-अजहर अल द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ कुरान" में- काहिरा में शरीफ इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक) ऐसे विषयों पर दुनिया) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि अगर अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, तो स्वचालित रूप से भी है कोई सबूत नहीं है, और यह साबित करना असंभव है कि मुहम्मद का ईश्वर से संबंध है। और अगर वहाँ अल्लाह नहीं है और/या मुहम्मद और ईश्वर के बीच कोई संबंध नहीं है, तो इस्लाम क्या है?

6. आगे: उस पुस्तक में सभी गलतियाँ, अंतर्विरोध आदि 100% साबित करते हैं कि कुरान नहीं है एक सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा किया गया - कोई भी ईश्वर ऐसी और इतनी गलतियाँ आदि नहीं करता है। यदि इस्लाम है तो a धर्म बनाया, फिर उन सभी मुसलमानों का क्या जिन्हें देखने से मना किया गया है एक वास्तविक धर्म के लिए (यदि ऐसा कोई मौजूद है)? और जीने के बाद कहाँ जागेंगे और इस्लाम जैसे अमानवीय युद्ध धर्म का पालन करना कुरान (और हदीसों) के अनुसार है। अगर कहीं दूसरा जीवन है? - नरक या स्वर्ग?

7. एनबी और पीएस: आप किसी चीज के बारे में कितने भी आश्वस्त हों, अगर यह साबित नहीं होता है, तो यह नहीं है ज्ञान, केवल विश्वास या दृढ़ विश्वास, और गलत हो सकता है। केवल वही साबित या संभव है सिद्ध ज्ञान है।

(जैसा कि http://www.1000mistakes.com कई मुस्लिम क्षेत्रों में अवरुद्ध है - जो दर्शाता है कि वे हैं इससे डरते हैं और तर्कों की कमी करते हैं (यदि उनके पास http://www.1000mistakes.com के लिए वास्तविक तर्क थे) गलत है, ब्लॉक करना अनावश्यक था) - जो कुछ भी आप चाहते हैं उसे "काटें और पेस्ट करें" और भेजें if आप सूचित करना चाहते हैं या वहां बहस करना चाहते हैं। नाम छोड़ना याद रखें http://www.1000mistakes.com)।

पेज 24

पीएस: अगर हमें केंद्रीय रूप से अवरुद्ध कर दिया गया है - एफ। भूतपूर्व। स्पैम द्वारा (कई बार पहले से ही बहुत अधिक है
अमित्र स्रोत) हम कहीं और नए पते के साथ फिर से खोलेंगे, और नए की घोषणा करेंगे
पता ओम एफ. भूतपूर्व।http://www.topix.com/forum/religion/islam. साथ ही अगर आपकी टिप्पणी हमें
हम तक न पहुंचें, थ्रेड पर पोस्ट की गई कोई भी टिप्पणी "इसके साथ क्या है
http://www.1000mistakes.com?" (या शीर्षक में "1000 गलतियां" वाला पेज बनाएं
यदि आप चाहें तो स्वयं) उस मंच पर हमारे द्वारा पढ़ा जाएगा - यह एक बड़ा अंतर्राष्ट्रीय वाद-विवाद पृष्ठ है।

भाग I, अध्याय 5 (= I-5-0-0)

पुस्तक "1000+ . का परिचय कुरान में गलतियाँ" - The मुहम्मद की पवित्र पुस्तक, मुसलमान, इस्लाम और यहां तक कि अल्लाह

(भाग १, अध्याय १ - १४ = इस्लाम के कुछ विशेष पहलू जैसा कि कुरान में बताया गया है - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

कुरान के बारे में कई सीखी हुई किताबें हैं - लेकिन सीखी हुई किताब कौन पढ़ता है? यह किताब तो है
सरल है, कि हर कोई इसे पढ़ और समझ सकता है - और प्रत्येक टिप्पणी या स्पष्टीकरण करता है
पढ़ने और समझने में ज्यादा समय न लें, भले ही आपको इसके बारे में बहुत कम जानकारी हो
चीज़ें। यह एक किताब के रूप में है जो आपको जरूरत पड़ने पर जानकारी को खोलने और खोजने के लिए है, लेकिन यह पढ़ने के लिए भी है
यदि आप चाहें तो ऐतिहासिक और अन्य तथ्यों के साथ एक और किताब। और कम से कम नहीं: यह इतनी बारीकी से अनुसरण करता है
कुरान (अब्दुल्ला यूसुफ अली का अंग्रेजी में अनुवाद, इस्लाम में तीन में से एक माना जाता है)
सबसे अच्छा, यदि सबसे अच्छा नहीं है, तो कभी भी अंग्रेजी में किए गए अनुवाद - दो अन्य हैं पिकथल और
शाकिर (हालाँकि मोहसिन कहन भी बहुत बुरे नहीं हैं)), कि हर कोई उस पर नियंत्रण कर सकता है
उद्धरण 100% सही है - और फिर निष्कर्ष सही हैं। यह वास्तव में एक है
अंक और कुरान में गलतियों पर विश्वकोश, लेकिन सूरह और . पर बनाया गया
कुरान में छंदों की संख्या, वर्णमाला के बजाय।

एक बार फिर: मुफ़्त इस्तेमाल और मुखर रूप से फैलाने के लिए, दोस्तों के लिए, प्रिंट में, इंटरनेट पर या
हालाँकि - जब भी आप इसका उपयोग करते हैं तो केवल नाम और इंटरनेट पते का उल्लेख करना याद रखें, इसलिए
ताकि अधिक लोग इसे ढूंढ सकें। अगर कभी कोई प्रिंटर इतना बहादुर हो कि उसे प्रिंट कर सके, तो रॉयल्टी को जाने दें
अगर वह इसे वहन कर सकता है तो सेव द चिल्ड्रन पर जाएं। शायद बाद में जब पाठ नया न हो? इसे रखें
इंटरनेट पर कई जगह - मुसलमान इसे ब्लॉक करना पसंद करेंगे। (हालांकि अवरुद्ध करने से मदद नहीं मिलेगी
बहुत - हम इसे इंटरनेट पर अन्य स्थानों पर पोस्ट करेंगे)। सामग्री का उपयोग करने की भी पूरी तरह से अनुमति है
आगे के काम के लिए इस पुस्तक से, यदि आप कम से कम शीर्षक ("1000+ गलतियाँ in
कुरान") और इस पुस्तक का इंटरनेट पता ("http://www.1000mistakes.com")। (लेकिन अगर कोई
यह कहते हुए कि यह एक संशोधित मात्रा है

24

पेज 25

क्लोग बेलास्ट, उसे पहले अध्याय में कोड का अर्थ बताने के लिए कहें - यह स्पष्ट है
पहचान। कि एक कोड आवश्यक है, एक संभावित भविष्य में जीवन के बारे में कुछ बताता है

मुस्लिम समाज हो सकता है - "1984" अयातुल्ला खुमैनी, बिन लादेन और मुल्ला के साथ संयुक्त
उमर?)

http://www.1000mistakes.com 9 इंटरनेट पतों में से एक है जिसे विशेष रूप से नाम से चेतावनी दी गई है,
मुस्लिम संगठनों द्वारा - "धर्माध्यक्षों को http://www.1000mistakes.com से दूर रखें वरना"
अविश्वास करना शुरू कर सकता है। यह ध्यान देने योग्य है कि मुस्लिम संगठन यह दावा नहीं करते हैं
एक घृणास्पद पृष्ठ - यह निश्चित रूप से नहीं है, केवल सीधे तथ्य और जानकारी है - और उन्होंने ऐसा किया
इस बारे में एक शब्द भी न कहें कि जानकारी गलत है - केवल वह
यदि आप http://www.1000mistakes.com पढ़ते हैं तो आप प्रोसीलीट्स और अन्य को ढीला कर देते हैं।

यह पुस्तक गैर-ईसाइयों (और गैर-यहूदियों) के लिए अतिरिक्त जानकारीपूर्ण हो सकती है, क्योंकि कुरान बड़े पैमाने पर
डिग्री बाइबिल से (मुड़) कहानियों पर आधारित है। गैर-ईसाई - और कई ईसाई भी,
मुसलमानों का जिक्र नहीं करना - बाइबल को अच्छी तरह से नहीं जानते, और फिर देख नहीं पाते कि क्या बना है
ऊपर और क्या सच हो सकता है (हम कहते हैं "हो सकता है" क्योंकि पूरी बाइबिल भी साबित नहीं हुई है)। भी
बहुत से लोग विज्ञान, इतिहास, भूगोल आदि में पारंगत नहीं हैं, यह देखने के लिए कि कुरान कहाँ है
गलत - कभी-कभी बेतहाशा गलत।

हिंदुओं के लिए एक छोटी सी टिप्पणी। आप में से कुछ ईसाईयों के खिलाफ "युद्ध" करते हैं - मुख्य रूप से धार्मिक
युद्ध। लेकिन क्या ऐसा करने का यह सही समय है, जब एक आम विरोधी है जो आज है?
पूरी दुनिया को जीतने के लिए घोषित धार्मिक और राजनीतिक लक्ष्य के साथ एकमात्र
सभी गैर-मुसलमानों को दबाओ? - एक प्रतिपक्षी जिसने अतीत में भारत में FAR का बुरा व्यवहार किया था - the
पूर्व बड़ा भारत - किसी भी ईसाई से - - - बस पूछें च। भूतपूर्व। दिल्ली। यह भी याद रखें: अगर इस्लाम लेता है
अंत में, ईसाई आखिरकार "पुस्तक के लोग" और कम से कम आधे इंसान हैं। परन्तु आप
कुरान के अनुसार, केवल पगान हैं - शून्य या उससे कम मूल्य के (यही मुख्य कारण था)
इस्लाम ने इतने सैकड़ों हजारों लोगों की हत्या की, जो पहले के समय में थे?
भारत, अब आंशिक रूप से पाकिस्तान और बांग्लादेश + भारत, में जिंदा चमड़ी, जिंदा जला दिया गया और
जिंदा दफन।)

बाइबिल की किंवदंतियों के अलावा कुरान में कहानियां अक्सर . के अनुसार होती हैं
धार्मिक और अन्य दंतकथाएं, किंवदंतियां और परियों की कहानियां जो उस समय अरब में अच्छी तरह से जानी जाती थीं,
लेकिन जो बना हुआ साबित होता है और सच नहीं होता। यहां तक कि बाइबिल की कहानियां भी ज्यादातर मुहम्मद
बाइबल से नहीं जानता था, लेकिन लोककथाओं से (वह शायद ही बाइबल को जानता था, केवल
धार्मिक कहानियाँ और दंतकथाएँ जो कभी-कभी वास्तव में बाइबल से होती थीं, लेकिन अधिकतर बनाई जाती थीं
ऊपर, और वह नहीं जानता था कि कौन से थे - यह संभावना है कि मुहम्मद अपने पूरे जीवन में कभी नहीं
यहां तक कि एक बाइबिल भी देखी) और जो उसे पसंद आया उसे उद्धृत किया - लेकिन अक्सर बाइबिल की तुलना में झूठा होता है।
फिर जब किसी ने उससे कहा कि वह बाइबल के अनुसार गलत है, तो उसने फौरन समझाया
कि टोरा (मुख्य यहूदी धर्मग्रंथ और ओटी का पहला भाग) और बाइबिल को द्वारा गलत साबित किया गया था
बुरे गैर-मुसलमान, और उनकी कहानियाँ सच्ची थीं। उतना ही सच है जितना उसने लिया था
अरब लोककथाओं की अन्य शाखाओं और थोड़ा आगे पूर्व से, एक मोड़ दिया और उन्हें बताया
अल्लाह के थे।

अंत में: कोई भी इंसान पूर्ण नहीं है - और हम इससे बहुत दूर हैं। अगर हमने उन बिंदुओं को नजरअंदाज कर दिया है जिन्हें
शामिल किया गया है, कृपया हमें सूचित करें। और अगर हमने गलतियाँ की हैं - लेकिन हमारा मतलब असली है
गलतियाँ, धार्मिक इच्छाधारी सोच पर आधारित कुछ नहीं - हम जानना चाहेंगे,
ताकि हम किताब को सही कर सकें। हमारे फीडबैक फॉर्म पर जाएं।

कई मुसलमानों के लिए यह सामान्य है कि वे ऐसी किसी भी जानकारी को समझाने की कोशिश करें जो इसके अनुरूप नहीं है
मानक हठधर्मिता और इस्लाम की कहानियों के लिए, यदि जानकारी का उल्लेख नहीं है - यहां तक कि स्पष्ट तथ्य
- संकेत दें या दिखाएं कि धर्म या कुरान में कुछ गड़बड़ है। एक बहुत ही सामान्य
ऐसा करने का तरीका केवल यह बताना है - बिना सबूत के - कि आप झूठ बोल रहे हैं। या कि आप इस्लाम हैं

नफरत करने वाला या यहूदी प्रेमी और इस तरह आप जो कुछ भी कहते हैं उसे झूठ या कम से कम के रूप में खारिज कर दिया जाना चाहिए
बिना किसी ब्याज या मूल्य के। लेकिन अगर हम इस्लाम से नफरत करने वाले भी थे, तो यह सवाल नहीं है -
सवाल यह है: क्या यह व्यक्ति इस समय सच बोलता है? (वास्तव में एक बेहतर है
किसी चीज से नफरत करने वाले से कठिन प्रश्न और कठिन तथ्य प्राप्त करने का मौका,
क्योंकि प्रेमी कभी उनका उल्लेख नहीं करेगा - विशेष रूप से धर्म में नहीं)। लेकिन वास्तव में हम नहीं हैं
मुसलमानों से नफरत करने वाले - केवल इस्लाम से डरते हैं और मूर्ख हैं कि इतने सारे मुसलमान पढ़ सकते हैं
कुरान - और हदीस - और गलतियों और अन्य अजीब बिंदुओं पर प्रतिक्रिया न करें।

चूंकि यह पुस्तक कुरान का इतनी बारीकी से पालन करती है, जैसा कि हम कहते हैं कि आपके लिए उस सब को नियंत्रित करना आसान है
उद्धरण सही हैं। फिर अपने दिमाग का उपयोग करें: क्या लेखक आगे कहते हैं, तार्किक और
सही? और दूसरी तरफ: अगर कोई कुछ समझाने की कोशिश करता है या बस कॉल करता है
कुछ झूठ है: बस किताब खोलो और जांचें - और वहां आपके पास संदर्भ भी हैं
कुरान में इसे कहां खोजें, तो आप सीधे कुरान में जा सकते हैं और देख सकते हैं कि लेखक या
वक्ता झूठ बोल रहा है या "विरोधी" झांसा दे रहा है। (अंग्रेजी पेपरबैक में कुरान की कीमत कुछ ही है
यूरो या पाउंड या डॉलर - मुसलमानों के अनुसार अब्दुल्ला यूसुफ अली . द्वारा किया गया अनुवाद
सबसे अच्छा हो सकता है - और यह वह है जिसे इस पुस्तक के आधार के रूप में इस्तेमाल किया गया है - लेकिन जिनके द्वारा अनुवादित किया गया है
पिकथल या शाकिर उतने ही अच्छे हो सकते हैं - हालाँकि इनमें मामूली अंतर हो सकता है
अनुवाद।)

एक बार फिर: इस पुस्तक को पढ़ते समय अपने मस्तिष्क का प्रयोग करें - और पढ़ते समय उल्लेख न करें
कुरान - और जब इस्लामवादियों के साथ चर्चा या पढ़ना - यह कभी-कभी इतना आवश्यक होता है
मुसलमानों के लिए यह साबित करने के लिए कि कुरान में कोई गलती नहीं है (क्योंकि तब कुछ है
धर्म के साथ गलत) कि वे तथ्यों को थोड़ा "मोड़" देते हैं - या थोड़ा नहीं। और एक बार भी
अधिक: कुरान पढ़ते समय अपने ज्ञान और मस्तिष्क का उपयोग करना याद रखें।

कई मुसलमानों के लिए अंध विश्वास अत्यधिक आकर्षक और प्रशंसनीय है। संदेह न करना बेहतर है और
यह पता लगाने के लिए नहीं कि क्या कुछ गलत है - - - और अगले जीवन में (शायद) आश्चर्य प्राप्त करें - की तुलना में
सभी संभावित गलतियों, विरोधाभासों, और अमान्य "संकेत" आदि की जाँच करें कि एक सर्वज्ञ देवता
कभी इस्तेमाल नहीं किया था - और हो सकता है कि खोज करने के लिए समय में कुछ गलत हो
कयामत के संभावित दिन के इस तरफ सही धर्म (यदि ऐसा मौजूद है)। के दिन के बाद
कयामत कहा जाता है कि बहुत देर हो चुकी है। इसके अलावा: अगर वे जाँच नहीं करते हैं कि क्या कुछ गलत है, कट्टरपंथियों
उनकी हत्या नहीं करेंगे।

नायब, नायब, नायब:

1. पहले 2 छोटे अध्याय पढ़ें "कुरान को कैसे पढ़ा जाए इसके लिए कुछ आवश्यक बातें और
समझा" (VII-10-1) और "कुरान को शाब्दिक रूप से समझा जाना है यदि और कुछ नहीं है
संकेत दिया" (VII-10-2)।

2. http://www.1000mistakes.com को कई मुस्लिम अधिकारियों ने ब्लॉक कर दिया है। के साथ बहस करने के लिए
ऐसे क्षेत्रों में रहने वाले लोग, जो आप चाहते हैं उसे काट कर चिपकाएँ और इसे शीर्षकों के तहत भेजें
http://www.1000mistakes.com से अलग।

3. http://www.1000mistakes.com उन 9 पेजों में से एक है, जिन्हें मुस्लिम संगठनों ने चेतावनी दी थी
विशेष रूप से 2008 और 2009 के खिलाफ - यह विशेष रूप से प्रोसेलिट्स को अपना विश्वास खो सकता है
इस्लाम; सही और "डाउन-टू-द-अर्थ" जानकारी काम करती है। इस संबंध में यह लायक है
यह देखते हुए कि "चेतावनी" में http://www.1000mistakes.com 3 में से एक था जो न तो था
गलत तथ्य लाने का आरोप लगाया, न ही हेट पेज होने का।

४. टिप्पणी १४१ (श्लोक ६/१४९ तक) "कुरान का संदेश" (देखें बिंदु ५) बताते हैं
(स्वीडिश से अनुवादित) अल्लाह के दावा किए गए सर्वज्ञता बनाम मनुष्य की दावा की गई स्वतंत्र इच्छा के बारे में:

"दूसरे शब्दों के साथ: भविष्य के बारे में अल्लाह के ज्ञान के बीच वास्तविक संबंध (और .)
फलस्वरूप भविष्य में क्या होने वाला है*) एक तरफ अपरिहार्य के बारे में और
दूसरे पर मनुष्य की अपेक्षाकृत (!!*) स्वतंत्र इच्छा - दो कथन जो प्रत्येक के विपरीत प्रतीत होते हैं
अन्य - वह बाहर है जो मनुष्य के लिए समझना संभव है, लेकिन जैसा कि दोनों कथन किए गए हैं
अल्लाह की ओर से (कुरान* में) दोनों सच होने चाहिए"। अविश्वसनीय। अंध विश्वास ही सही
और जीवन का बुद्धिमान तरीका, पूरी तरह से असंभव का सामना करते हुए भी !!

5. और एक विचार: अल-अजहर अल द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ कुरान" में-

काहिरा में शरीफ इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक)
ऐसे विषयों पर दुनिया) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि
अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु
यह है कि अगर अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, तो स्वचालित रूप से भी है
कोई सबूत नहीं है, और यह साबित करना असंभव है कि मुहम्मद का ईश्वर से संबंध है। और अगर वहाँ
अल्लाह नहीं है और/या मुहम्मद और ईश्वर के बीच कोई संबंध नहीं है, तो इस्लाम क्या है?

6. आगे: उस पुस्तक में सभी गलतियाँ, अंतर्विरोध आदि 100% साबित करते हैं कि कुरान नहीं है
एक सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा किया गया - कोई भी ईश्वर ऐसी और इतनी गलतियाँ आदि नहीं करता है। यदि इस्लाम है तो a
धर्म बनाया, फिर उन सभी मुसलमानों का क्या जिन्हें देखने से मना किया गया है
एक वास्तविक धर्म के लिए (यदि ऐसा कोई मौजूद है)? और जीने के बाद कहाँ जागेंगे और
इस्लाम जैसे अमानवीय युद्ध धर्म का पालन करना कुरान (और हदीसों) के अनुसार है।
अगर कहीं दूसरा जीवन है? - नरक या स्वर्ग?

7. एनबी और पीएस: आप किसी चीज के बारे में कितने भी आश्वस्त हों, अगर यह साबित नहीं होता है, तो यह नहीं है
ज्ञान, केवल विश्वास या दृढ़ विश्वास, और गलत हो सकता है। केवल वही साबित या संभव है
सिद्ध ज्ञान है।

(जैसा कि http://www.1000mistakes.com कई मुस्लिम क्षेत्रों में अवरुद्ध है - जो दर्शाता है कि वे हैं
इससे डरते हैं और तर्कों की कमी करते हैं (यदि उनके पास http://www.1000mistakes.com के लिए वास्तविक तर्क थे)
गलत है, ब्लॉक करना अनावश्यक था) - जो कुछ भी आप चाहते हैं उसे "काटें और पेस्ट करें" और भेजें if
आप सूचित करना चाहते हैं या वहां बहस करना चाहते हैं। नाम छोड़ना याद रखें
http://www.1000mistakes.com)।

पीएस: अगर हमें केंद्रीय रूप से अवरुद्ध कर दिया गया है - एफ। भूतपूर्व। स्पैम द्वारा (कई बार पहले से ही बहुत अधिक है
अमित्र स्रोत) हम कहीं और नए पते के साथ फिर से खोलेंगे, और नए की घोषणा करेंगे
पता ओम एफ. भूतपूर्व।http://www.topix.com/forum/religion/islam. साथ ही अगर आपकी टिप्पणी हमें
हम तक न पहुंचें, थ्रेड पर पोस्ट की गई कोई भी टिप्पणी "इसके साथ क्या है

http://www.1000mistakes.com?" (या शीर्षक में "1000 गलतियां" वाला पेज बनाएं
यदि आप चाहें तो स्वयं) उस मंच पर हमारे द्वारा पढ़ा जाएगा - यह एक बड़ा अंतर्राष्ट्रीय वाद-विवाद पृष्ठ है।

भाग I, अध्याय 6 (= I-6-0-0)

कुरान के बारे में प्रस्तावना, मुहम्मद की पवित्र पुस्तक, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह

(भाग १, अध्याय १ - १४ = इस्लाम के कुछ विशेष पहलू जैसा कि कुरान में बताया गया है - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मूल रूप से हमें धर्म में बहुत कम दिलचस्पी थी, लेकिन जैसे-जैसे अधिक से अधिक मुसलमान यहां पहुंचे
पश्चिम में, हमने पाया कि हमें उनकी पवित्र पुस्तक - कुरान (कुरान या भी लिखी गई) को पढ़ना चाहिए
कुरान) - क्योंकि लोगों और उनकी संस्कृति को समझना संभव नहीं है, बिना
उनके धर्म को जानना।

हमने पढ़ा। और चौंक गए और डर गए। हमें बताया गया था - खासकर मुसलमानों द्वारा - कि
इस्लाम एक शांतिपूर्ण धर्म है। एक तरह से यह है - लेकिन केवल अन्य मुसलमानों के प्रति, और केवल लंबे समय तक
जैसा कि कुछ मुस्लिम नेता "काफिरों" के खिलाफ युद्ध नहीं चाहते हैं या जब तक कुछ मुसलमान करते हैं
यह घोषित न करें कि कुछ अन्य मुसलमान वास्तव में मुसलमान नहीं हैं। बहुत सारे और बहुत सारे हैं
कुरान में गैर-मुसलमानों के प्रति युद्ध और नफरत और भेदभाव के लिए उकसाना। इस्लाम के रूप में
कुरान में दिया गया - और विशेष रूप से मदीना से 22-24 सूरह में - बस एक धर्म है

नफरत और दमन, चोरी/लूट और बलात्कार, खून और युद्ध। लेकिन हम कई जानते हैं
मुसलमान - उनमें से ज्यादातर कुरान में उन बिंदुओं के अनुसार नहीं रहते हैं। और धीरे-धीरे
हमारा ध्यान एक रहस्य की ओर गया: कुरान बताता है कि इसे सर्वज्ञ द्वारा भेजा गया है
भगवान अल्लाह, और सही है और गलतियों के बिना, मुहम्मद ने बताया कि पुस्तक को नीचे से भेजा गया था
ईश्वर और परिपूर्ण था और बिना गलतियों के, इस्लाम भी यही कहता है, और ऐसा ही मुसलमान भी करते हैं।

और सभी एक ही तरह के बहुत सारे गलत तथ्य और अन्य हैं
कुरान में गलतियाँ + बहुत सारे अमान्य और गलत तर्क।

कुरान इसका खंडन करता है। मुहम्मद ने इसका खंडन किया। इस्लाम इससे इनकार करता है। मुसलमान इससे इनकार करते हैं। लेकिन साथ ही:
एफ का अच्छा ज्ञान रखने वाला कोई भी व्यक्ति। भूतपूर्व। भूगोल, इतिहास, मनोविज्ञान, पुरातत्व, या
खगोल विज्ञान पुस्तक में बड़ी संख्या में गलतियाँ पायेगा।

एफ. पूर्व. कुरान मुस्लिम (!!) सिकंदर महान (अरब "उपनाम" के तहत) के बारे में बताता है
Dhu'l Quarnayn = "दो सींग वाला", जो सिकंदर के लिए एक प्रसिद्ध अरब नाम है
विज्ञान के लिए) सूरह १८ में, कि उन्होंने पश्चिम की यात्रा तब तक की जब तक कि उन्हें वह स्थान नहीं मिला जहाँ सूर्य अस्त होता है "अ"
गंदे पानी का झरना "पृथ्वी पर !! यहां अन्य गलत बिंदुओं के अलावा, हम जानते हैं
इतिहास है कि सिकंदर ने कभी पश्चिम की यात्रा नहीं की। मैसेडोनिया (उनका मूल देश) और मिस्र थे
सबसे दूर पश्चिम वह कभी आया था।

पेज 29

और उन ७ भौतिक आकाशों या फर्मों के बारे में कथनों के बारे में जो अक्सर होते हैं (सीए।
200 बार) पुस्तक में उल्लिखित है? - इनमें से सबसे निचले हिस्से में स्थिर तारे (the .)
उनमें से किसी एक के लिए तारों को ठीक करना संभव बनाने के लिए आकाश को भी भौतिक होना चाहिए)। और कैसे
सितारों को बुरी आत्माओं के खिलाफ हथियार के रूप में इस्तेमाल करने के बारे में? - पुस्तक के निर्माता ने स्पष्ट रूप से नहीं किया
एक शूटिंग स्टार और एक असली स्टार के बीच का अंतर जानें। कोई भी भगवान बेहतर जानता था। परंतु
मुहम्मद का यह मानना था - यह अरब में उस समय का खगोल विज्ञान था (वास्तव में यह से है)
ग्रीक और उस समय के फारसी/भारतीय खगोल विज्ञान, एक तथ्य का मुसलमानों ने कभी उल्लेख नहीं किया)।

सबसे प्रसिद्ध गलती का उल्लेख नहीं करना: कुरान के अनुसार, मैरी - जीसस की मां
- इमरान की बेटी और हारून की बहन थी (और परिणामस्वरूप मूसा की - 1200 साल)
पूर्व)। हदीस (मुहम्मद के बारे में मुस्लिम परंपरा) से यह ज्ञात है कि पहले से ही
मुहम्मद ने उन दो गलतियों को "समझाने" की कोशिश की, लेकिन न तो उन्होंने और न ही बाद के मुसलमानों ने
सफल - धर्म के वैज्ञानिक (कुछ मुस्लिमों सहित) उस पर सहमत हैं मुहम्मद
यहां गलती की। या तो बनाते समय या इसे पढ़ते समय।

और एक आखिरी बात का उल्लेख करने के लिए: कुरान के अनुसार यीशु को सुसमाचार माना जाता था
बच्चा/युवा। लेकिन सबसे पुराना सुसमाचार (चार हैं, एक नहीं) लगभग 25 वर्षों में लिखा गया था
यीशु की मृत्यु के बाद (नई खोजों का कहना है कि कुछ साल पहले हो सकता है)। वे बस मौजूद नहीं थे -
अस्तित्व में नहीं हो सकता था - जब यीशु वह छोटा था। आखिर सभी सुसमाचार जीवन की कहानी हैं,
यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान, और उसके अंतिम गायब होने के बाद तक नहीं लिखा जा सकता था।
शायद - शायद - एक अस्तित्व में था जो सीए से पुराना था। वर्ष ६० ई., लेकिन यह भी बहुत के लिए
स्पष्ट कारण यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान और गायब होने के बाद लिखे जाने थे। अधिक
इस बारे में बाद में।

इस्लाम का पूरा धर्म एक ही धारणा पर बना है: कि मोहम्मद हमेशा बोलते थे
सत्य, संपूर्ण सत्य, और सत्य के अलावा कुछ नहीं, और कभी नहीं भूले या विवरण को गलत नहीं बनाया - और
विशेष रूप से तब जब उन्होंने बताया कि कुरान को अल्लाह, सर्वशक्तिमान और की ओर से भेजा गया था
सर्वज्ञ भगवान्। लेकिन एक सर्वज्ञ ईश्वर "सामूहिक रूप से" गलतियाँ नहीं करता है - वह नहीं करता है
बिल्कुल गलतियाँ करना। न तो वह अमान्य "संकेत" और न ही "प्रमाण" या अमान्य तर्क का उपयोग करता है - केवल
धोखेबाज और धोखेबाज ऐसा करते हैं।

यह हमारे लिए एक रहस्य बन गया - गलतियाँ आदि कितनी और इतनी स्पष्ट थीं। लेकिन सैकड़ों
लाखों मुसलमानों में से सभी मूर्खों के स्वर्ग में या भ्रम में नहीं रह सकते थे!? हमें होना था
गलत और कुछ स्पष्टीकरण होना था। गलतियों को देखना इतना आसान था - कोई भी कर सकता है
कुरान में जाओ और उन्हें ढूंढो। कुछ ऐसा होना चाहिए था जिसे हमने अनदेखा कर दिया था।

और रहस्य और भी गहरा हो गया क्योंकि यह हमारे सामने आया कि कई गलतियाँ थीं
दुनिया और इतिहास की तस्वीर के अनुसार जिसने मध्य पूर्व में पुरुषों को सीखा
मुहम्मद के समय में विश्वास किया। किसी भी भगवान ने उन्हें गलतियों के रूप में पहचाना था, लेकिन

सुझाव सही भूगोल, इतिहास, खगोल विज्ञान, आदि मुहम्मद के अनुसार था

हमने ईमानदारी से स्पष्टीकरण खोजने की कोशिश की। लेकिन जवाब मिलना मुश्किल है - "स्पष्टीकरण" हाँ, स्पष्टीकरण संख्या और जवाब कभी-कभी विनम्र भी नहीं होते थे - हमें "बेवकूफ होना था या" इजरायल-प्रेमी या मुस्लिम-नफरत करने वाले या हमने सिर्फ इस्लाम विरोधी प्रचार को तोता" ऐसा पूछने के लिए प्रश्न और केवल यह स्वीकार न करें कि कुरान परिपूर्ण है और गलतियों के बिना, कोई फर्क नहीं पड़ता इसमें क्या गलतियां हैं। यहां तक कि इस्लामी सूचनाओं के संगठन भी व्यंग्यात्मक थे क्योंकि वे मेरी मूर्खता का उत्तर दिया: हम f. भूतपूर्व। कुरान में बयानों के बारे में स्पष्टीकरण मांगा कि आकाश "खंभे जो आप नहीं देखते" द्वारा समर्थित हैं। जवाब था कि "सब लोग" 60 से अधिक आईक्यू के साथ, समझें कि इसका कोई स्तंभ नहीं है"। हमने जवाब दिया कि

29

पेज 30

हम अदृश्य स्तंभों के बीच का अंतर जानते हैं - कुरान में बयान - और गैर-मौजूदा स्तंभों, और एक वास्तविक स्पष्टीकरण के लिए कहा। हमें कभी जवाब नहीं मिला।

मुसलमानों की पहेली और कुरान में सभी स्पष्ट गलतियाँ अभी भी हमारे लिए एक पहेली हैं।

नायब, नायब, नायब:

1. पहले 2 छोटे अध्याय पढ़ें "कुरान को कैसे पढ़ा जाए इसके लिए कुछ आवश्यक बातें और समझा" (VII-10-1) और "कुरान को शाब्दिक रूप से समझा जाना है यदि और कुछ नहीं है संकेत दिया" (VII-10-2)।

2. http://www.1000mistakes.com को कई मुस्लिम अधिकारियों ने ब्लॉक कर दिया है। के साथ बहस करने के लिए ऐसे क्षेत्रों में रहने वाले लोग, जो आप चाहते हैं उसे काट कर चिपकाएँ और इसे शीर्षकों के तहत भेजें http://www.1000mistakes.com से अलग।

3. http://www.1000mistakes.com उन 9 पेजों में से एक है, जिन्हें मुस्लिम संगठनों ने चेतावनी दी थी विशेष रूप से 2008 और 2009 के खिलाफ - यह विशेष रूप से प्रोसेलिट्स को अपना विश्वास खो सकता है इस्लाम; सही और "डाउन-टू-द-अर्थ" जानकारी काम करती है। इस संबंध में यह लायक है यह देखते हुए कि "चेतावनी" में http://www.1000mistakes.com 3 में से एक था जो न तो था गलत तथ्य लाने का आरोप लगाया, न ही हेट पेज होने का।

४. टिप्पणी १४१ (श्लोक ६/१४९ तक) "कुरान का संदेश" (देखें बिंदु ५) बताते हैं (स्वीडिश से अनुवादित) अल्लाह के दावा किए गए सर्वज्ञता बनाम मनुष्य की दावा की गई स्वतंत्र इच्छा के बारे में:

"दूसरे शब्दों के साथ: भविष्य के बारे में अल्लाह के ज्ञान के बीच वास्तविक संबंध (और .) फलस्वरूप भविष्य में क्या होने वाला है*) एक तरफ अपरिहार्य के बारे में और दूसरे पर मनुष्य की अपेक्षाकृत (!!*) स्वतंत्र इच्छा - दो कथन जो प्रत्येक के विपरीत प्रतीत होते हैं अन्य - वह बाहर है जो मनुष्य के लिए समझना संभव है, लेकिन जैसा कि दोनों कथन किए गए हैं अल्लाह की ओर से (कुरान* में) दोनों सच होने चाहिए"। अविश्वसनीय। अंध विश्वास ही सही और जीवन का बुद्धिमान तरीका, पूरी तरह से असंभव का सामना करते हुए भी !!

5. और एक विचार: अल-अजहर अल द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ कुरान" में-काहिरा में शरीफ इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक) ऐसे विषयों पर दुनिया) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि अगर अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, तो स्वचालित रूप से भी है कोई सबूत नहीं है, और यह साबित करना असंभव है कि मुहम्मद का ईश्वर से संबंध है। और अगर वहाँ अल्लाह नहीं है और/या मुहम्मद और ईश्वर के बीच कोई संबंध नहीं है, तो इस्लाम क्या है?

6. आगे: उस पुस्तक में सभी गलतियाँ, अंतर्विरोध आदि 100% साबित करते हैं कि कुरान नहीं है एक सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा किया गया - कोई भी ईश्वर ऐसी और इतनी गलतियाँ आदि नहीं करता है। यदि इस्लाम है तो a धर्म बनाया, फिर उन सभी मुसलमानों का क्या जिन्हें देखने से मना किया गया है एक वास्तविक धर्म के लिए (यदि ऐसा कोई मौजूद है)? और जीने के बाद कहाँ जागेंगे और इस्लाम जैसे अमानवीय युद्ध धर्म का पालन करना कुरान (और हदीसों) के अनुसार है। अगर कहीं दूसरा जीवन है? - नरक या स्वर्ग?

7. एनबी और पीएस: आप किसी चीज के बारे में कितने भी आश्वस्त हों, अगर यह साबित नहीं होता है, तो यह नहीं है ज्ञान, केवल विश्वास या दृढ़ विश्वास, और गलत हो सकता है। केवल वही साबित या संभव है सिद्ध ज्ञान है।

(जैसा कि http://www.1000mistakes.com कई मुस्लिम क्षेत्रों में अवरुद्ध है - जो दर्शाता है कि वे हैं
इससे डरते हैं और तर्कों की कमी करते हैं (यदि उनके पास http://www.1000mistakes.com के लिए वास्तविक तर्क थे)
गलत है, ब्लॉक करना अनावश्यक था) - जो कुछ भी आप चाहते हैं उसे "काटें और पेस्ट करें" और भेजें if
आप सूचित करना चाहते हैं या वहां बहस करना चाहते हैं। नाम छोड़ना याद रखें
http://www.1000mistakes.com)।

पीएस: अगर हमें केंद्रीय रूप से अवरुद्ध कर दिया गया है - एफ। भूतपूर्व। स्पैम द्वारा (कई बार पहले से ही बहुत अधिक है
अमित्र स्रोत) हम कहीं और नए पते के साथ फिर से खोलेंगे, और नए की घोषणा करेंगे
पता ओम एफ. भूतपूर्व।http://www.topix.com/forum/religion/islam. साथ ही अगर आपकी टिप्पणी हमें
हम तक न पहुंचें, थ्रेड पर पोस्ट की गई कोई भी टिप्पणी "इसके साथ क्या है
http://www.1000mistakes.com?" (या शीर्षक में "1000 गलतियां" वाला पेज बनाएं
यदि आप चाहें तो स्वयं) उस मंच पर हमारे द्वारा पढ़ा जाएगा - यह एक बड़ा अंतर्राष्ट्रीय वाद-विवाद पृष्ठ है।

भाग I, अध्याय 7 (= I-7-0-0)

मुहम्मद के बारे में संक्षिप्त, The कुरान के पैगंबर, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह

(अध्याय XI में और भी बहुत कुछ हैं)।

(भाग १, अध्याय १ - १४ = इस्लाम के कुछ विशेष पहलू जैसा कि कुरान में बताया गया है - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मुसलमान पागल हो जाते हैं जब कोई मुहम्मद के बारे में कुछ नहीं कहता -
याद रखें एफ. भूतपूर्व। उसके बारे में कुछ समय पहले डेनिश कार्टून (एक एपिसोड जिसने बाकी के बारे में बताया
दुनिया इस्लाम के बारे में और इस्लाम के बारे में मुसलमानों के बारे में बहुत अधिक है और मुसलमान वास्तव में हमें चाहते थे
समझने के लिए)। लेकिन मुसलमानों को यह स्वीकार करना होगा कि दुनिया के अधिकांश लोग वास्तव में विश्वास नहीं करते हैं
इस्लाम ही सच्चा धर्म है - अगर उन्होंने किया होता तो बहुत पहले मुसलमान हो गए होते। फलस्वरूप
वे तो निश्चित रूप से यह नहीं मानते कि मुहम्मद ने हमेशा सच कहा - अगर उन्होंने किया, तो उनके पास था
जल्दी से मुसलमान हो गए।

साथ ही: यह किसी का अपमान नहीं है - f. भूतपूर्व। मुहम्मद - यह बताने के लिए कि क्या सच है (f। उदा। कि एक व्यक्ति
जिन्होंने ७०० असहाय कैदियों को मार डाला, और फिर उनके सभी परिवारों को गुलाम बना लिया - और
17 साल की नवविवाहित महिला के पति को प्रताड़ित करने के बाद व्यक्तिगत रूप से बलात्कार किया
उसी दिन - स्पष्ट रूप से अच्छा आदमी नहीं है)। न ही ईमानदार सवाल पूछना अपमान है,
भले ही यह f के बारे में प्रश्न हो। भूतपूर्व। मुहम्मद - एफ। भूतपूर्व। छंद कैसे हो सकते हैं जहां यह स्पष्ट रूप से है
मोहम्मद जो बोलता है, उसे स्वर्ग से नीचे भेज दिया जाए और एक श्रद्धेय "माँ" की प्रतियाँ बन जाएँ
किताब" वहाँ? - और इतनी पुरानी किताब जो शायद कभी लिखी नहीं गई थी, लेकिन हमेशा मौजूद थी? (NS
अंतिम कुरान में नहीं कहा गया है, लेकिन कई मुसलमानों के लिए एक स्वीकृत "सच्चाई" है)।

मुहम्मद के बारे में एक और मुख्य तथ्य है जिसका कभी उल्लेख या बहस नहीं की गई - हाँ, अधिकांश
लोग, अधिकांश/सभी मुसलमानों का उल्लेख नहीं करने के लिए, यह भी नहीं सोचते कि यह गलत है - a

आसानी से भुला दिया गया तथ्य - भले ही यह बहुत स्पष्ट है कि यह गलत है: मुहम्मद थे
एक भविष्यवक्ता नहीं, उसने सिर्फ उस प्रभावशाली और प्रभावशाली "भारी" शीर्षक को "उधार" लिया।

नबी की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. भविष्यवाणी करने में सक्षम है। यदि नहीं तो वह निश्चित रूप से कोई नबी नहीं है।

2. भविष्यवाणियों को कम से कम अधिकतर सच होना चाहिए। यदि नहीं तो वह स्पष्ट रूप से एक झूठा नबी है।

3. भविष्यद्वाणी करना उसके जीवन में उसके मिशन/कार्य का एक बहुत ही निराधार हिस्सा नहीं होना चाहिए - आप करते हैं
बढ़ई की उपाधि के योग्य नहीं हैं, भले ही आप अपने बगीचे के शेड की मरम्मत हर ब्लू मून में एक बार करें।

मुहम्मद के पास न तो था, न ही दावा किया था और न ही होने का दिखावा किया था, बनाने में सक्षम होने का उपहार
भविष्यवाणियां। कुरान में कहीं नहीं है जहां वह कहता है कि वह भविष्यवाणियां करता है, और कहीं नहीं
कुरान में जहां वह दावा करता है कि वह भविष्यवाणी करने में सक्षम है - इसके विपरीत वास्तव में:
जब भी कुछ अलौकिक के लिए अनुरोध होता है (भविष्यवाणी करना कुछ अलौकिक है
- एक चमत्कार) यह साबित करने के लिए कि अल्लाह वास्तविक है या मुहम्मद का ईश्वर से संबंध साबित करने के लिए,
कुरान "समझाने" के लिए भारी रूप से पीछे हट रहा है कि अल्लाह ऐसा क्यों नहीं करना चाहता था। पीछे-
पेडलिंग कभी-कभी इतनी भारी होती थी, कि कोई मौका नहीं है कि एक बुद्धिमान व्यक्ति को पसंद आए
मुहम्मद नहीं जानते थे कि मुख्य तर्क - कि एक या कुछ वास्तविक चमत्कार नहीं होंगे
किसी को भी उस पर किसी भी तरह विश्वास दिलाएं - झूठ था और है।

हदीसों में मुहम्मद से जुड़े चमत्कार, दूरदर्शिता आदि के बारे में कुछ भी नहीं है।
लेकिन कुरान 100% साबित करता है कि ये किंवदंतियां हैं - किताब दोहराई और मजबूत
जब भी सवाल उठाया जाता है, तो बैक-पेडलिंग यह साबित करता है। अगर चमत्कार (और बनाना
भविष्यवाणी चमत्कारों का एक वर्ग है) मुहम्मद से जुड़ा हुआ था, कुरान
जिस प्रश्न को कोई पाता है उसे लगातार "व्याख्या" करने के बजाय गर्व से इसके बारे में बताया था
पुस्तक में। हां, अगर किसी ने - दोस्त या दुश्मन - ने कभी एक सिंगल के बारे में देखा या विश्वसनीय रूप से सुना हो
चमत्कार, अल्लाह के लिए प्रमाण के रूप में चमत्कार के लिए अनुरोध या चुनौती क्रमशः
अल्लाह के साथ मुहम्मद का संबंध कभी नहीं उठाया गया था, उल्लेख नहीं करने के लिए इतनी दृढ़ता से उठाया गया था
कि उसने कुरान में अपना रास्ता खोज लिया क्योंकि इसे दूर करने की आवश्यकता थी।

ऐसे कुछ मामले हैं जहां मुहम्मद ने क्या कहा - या कम से कम इस्लाम जो कहता है उसने कहा -
सच हुआ। लेकिन एक व्यक्ति के लिए लंबे जीवन में ज्यादा बात करना असंभव है, जिसमें शामिल हैं
आशावादी उत्साह अपने अनुयायियों और योद्धाओं से बात करें, जब तक कि कम से कम इसका थोड़ा सा सच न हो - और
फिर मजबूत समर्थकों द्वारा याद किया जाता है (जबकि बाकी को भुला दिया जाता है)। लेकिन मुख्य तथ्य यह है
कि जब मुहम्मद ने कुछ कहा, तो उन्होंने कभी यह दिखावा भी नहीं किया कि यह उचित था
भविष्यवाणियां। और उसने कभी उस उपहार के होने का दावा नहीं किया। वास्तव में उन चीजों में से एक जो किसी पर हमला करती है
कुरान पढ़ते समय, इच्छित भविष्यवाणियों और इरादे की कुल अनुपस्थिति है
भविष्य की भविष्यवाणी - उल्लेख किए गए कुछ को छोड़कर कि दुर्घटना से अभी-अभी हुआ है
सच। कोई वास्तविक भविष्यवाणी बिल्कुल नहीं। और जैसा कि कहा गया है: मुहम्मद से सक्षम होने का कोई दावा नहीं
वास्तविक भविष्यवाणियां करें।

तो जब एफ. भूतपूर्व। मूसा ने कहा कि "मेरे जैसा एक नबी" और मुसलमान आने वाले थे
दावा है कि मुहम्मद के बारे में एक भविष्यवाणी है, यह एक मजाक है: **मुहम्मद "ए" कैसे हो सकते हैं
मूसा की तरह नबी" जब वह वास्तव में कोई नबी नहीं था ?!**

मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे - उन्होंने केवल शीर्षक "उधार" लिया। एक "भूल गया" तथ्य।

मुहम्मद के जीवन को तीन भागों में बाँटा जा सकता है:

1. "साधारण" जीवन (ca.570-610 AD)। वह बड़ा होकर सेल्समैन बन गया। मुसलमान
परंपराएं बताती हैं कि वह एक ईमानदार व्यक्ति था। इस पर अविश्वास करने का कोई विशेष कारण नहीं है, बल्कि यह भी है
केवल मुस्लिम स्रोत हैं - और मुसलमानों/इस्लाम के लिए यह विश्वास करना बहुत आवश्यक है कि वह था
ईमानदार और कभी झूठ नहीं बोला या धोखा नहीं दिया या विश्वासघात नहीं किया - जो कुछ भी उसने किया - क्योंकि सारा इस्लाम ही
उसकी बातों पर टिका है।

2. कुछ अनुयायियों के साथ एक शांतिपूर्ण धर्म के लिए मक्का में स्वयं घोषित पैगंबर (610-

622 ई.)।

3. याथ्रिब/मदीना (622-632 ईस्वी) में एक स्वघोषित नबी जिसने अपना धर्म बदल लिया
६२२ ईस्वी में और उसके तुरंत बाद, जब वह और उसके
अनुयायियों ने चोरी/लूट, दासता और जबरन वसूली से जीविकोपार्जन करना शुरू कर दिया। यह बहुत ही
यह देखना आसान है कि क्या आप सूरह को कालानुक्रमिक क्रम में पढ़ते हैं। इस्लाम के गैर-मुस्लिम विशेषज्ञ
इतिहास इस बात से सहमत है कि उसकी नैतिकता और उसका धर्म बहुत बिगड़ गया और बहुत हो गया
मदीना आने के बाद और अधिक अमानवीय - शायद यही उनकी बढ़ती सफलता का कारण था,
युद्ध और दमन/दासता और धर्म की लूट ने अरब योद्धा जनजातियों को बहुत आकर्षित किया
अपने पूर्व शांतिपूर्ण संस्करण से अधिक। अगर आप सूरह को पढ़ते हैं तो कुरान से यह बहुत स्पष्ट है
कालानुक्रमिक क्रम और हदीस से, कि मुहम्मद को शक्ति पसंद थी और वह होना पसंद करते थे
निर्विवाद शासक - अल्लाह का प्रतिनिधि, और कुछ मायनों में बनने की कोशिश भी कर रहा है
पृथ्वी पर अल्लाह की शक्ति का पर्याय है - और वह अधिक से अधिक शक्ति की आकांक्षा रखता है - - -
और याद रखें कि "पूर्ण शक्ति बिल्कुल भ्रष्ट करती है"। जरा देखिए कि उसने खुद को कैसे चिपकाया
भगवान - उसकी शक्ति का मंच। चोरी/लूटना, जबरन वसूली, घृणा, बलात्कार, बेईमानी, विश्वासघात,
दमन, दासता, दास व्यापार, यातना, हत्या, हत्या, सामूहिक हत्या और युद्ध -
सब कुछ "वैध और अच्छा" था और अपने धर्म को आगे बढ़ाने के लिए अल्लाह को पसंद था
फलस्वरूप उसकी शक्ति। इस्लाम के बारे में बेईमानी (उदाहरण के लिए खैबर के ३० पुरुष he
शांति वार्ता के लिए सुरक्षित आचरण की गारंटी दी गई, लेकिन इसके बजाय हत्या कर दी गई), विश्वासघात (याद रखें f. पूर्व। उसका
"युद्ध विश्वासघात है" इस तथ्य के साथ संयुक्त है कि इस्लाम के बाहर सब कुछ "भूमि" था और है
युद्ध") और सत्ता की लालसा सबसे गंभीर हो सकती है - ऐसा आदमी कितना विश्वसनीय होता है जब वह बात करता है
सत्ता के लिए उनके मंच, उनके धर्म के बारे में? "अल-तकिया" के बारे में अध्याय भी देखें - the
वैध झूठ।

उन्होंने व्यक्तिगत रूप से युवा महिलाओं के बलात्कार का भी अभ्यास किया और वे बड़े पैमाने पर महिलावादी बन गए,
कई अन्य स्वयंभू नबियों की तरह - - - और उसे बनाए रखने के लिए अल्लाह की मदद की जरूरत है
हरम शांतिपूर्ण और आज्ञाकारी कुछ समय। या तो उनका व्यक्तिगत नैतिक और नैतिक बिगड़ गया - या
उनके व्यक्तित्व की सतह के छिपे हुए पहलू।

अलग अध्याय में मुहम्मद के बारे में अधिक।

नायब, नायब, नायब:

1. पहले 2 छोटे अध्याय पढ़ें "कुरान को कैसे पढ़ा जाए इसके लिए कुछ आवश्यक बातें और
समझा" (VII-10-1) और "कुरान को शाब्दिक रूप से समझा जाना है यदि और कुछ नहीं है
संकेत दिया" (VII-10-2)।

2. http://www.1000mistakes.com को कई मुस्लिम अधिकारियों ने ब्लॉक कर दिया है। के साथ बहस करने के लिए
ऐसे क्षेत्रों में रहने वाले लोग, जो आप चाहते हैं उसे काट कर चिपकाएँ और इसे शीर्षकों के तहत भेजें
http://www.1000mistakes.com से अलग।

3. http://www.1000mistakes.com उन 9 पेजों में से एक है, जिन्हें मुस्लिम संगठनों ने चेतावनी दी थी
विशेष रूप से 2008 और 2009 के खिलाफ - यह विशेष रूप से प्रोसेलिट्स को अपना विश्वास खो सकता है

इस्लाम; सही और "डाउन-टू-द-अर्थ" जानकारी काम करती है। इस संबंध में यह लायक है
यह देखते हुए कि "चेतावनी" में http://www.1000mistakes.com ३ में से एक था जो न तो था
गलत तथ्य लाने का आरोप लगाया, न ही हेट पेज होने का।

४. टिप्पणी १४१ (श्लोक ६/१४९ तक) "कुरान का संदेश" (देखें बिंदु ५) बताते हैं
(स्वीडिश से अनुवादित) अल्लाह के दावा किए गए सर्वज्ञता बनाम मनुष्य की दावा की गई स्वतंत्र इच्छा के बारे में:

"दूसरे शब्दों के साथ: भविष्य के बारे में अल्लाह के ज्ञान के बीच वास्तविक संबंध (और .)
फलस्वरूप भविष्य में क्या होने वाला है*) एक तरफ अपरिहार्य के बारे में और
दूसरे पर मनुष्य की अपेक्षाकृत (!!*) स्वतंत्र इच्छा - दो कथन जो प्रत्येक के विपरीत प्रतीत होते हैं
अन्य - वह बाहर है जो मनुष्य के लिए समझना संभव है, लेकिन जैसा कि दोनों कथन किए गए हैं
अल्लाह की ओर से (कुरान* में) दोनों सच होने चाहिए"। अविश्वसनीय। अंध विश्वास ही सही
और जीवन का बुद्धिमान तरीका, पूरी तरह से असंभव का सामना करते हुए भी !!

5. और एक विचार: अल-अजहर अल द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ कुरान" में-
काहिरा में शरीफ इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक)

ऐसे विषयों पर दुनिया) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया गया है कि
अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहां एक अतिरिक्त बिंदु
यह है कि अगर अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, तो स्वचालित रूप से भी है
कोई सबूत नहीं है, और यह साबित करना असंभव है कि मुहम्मद का ईश्वर से संबंध है। और अगर वहाँ
अल्लाह नहीं है और/या मुहम्मद और ईश्वर के बीच कोई संबंध नहीं है, तो इस्लाम क्या है?

6. आगे: उस पुस्तक में सभी गलतियाँ, अंतर्विरोध आदि 100% साबित करते हैं कि कुरान नहीं है
एक सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा किया गया - कोई भी ईश्वर ऐसी और इतनी गलतियाँ आदि नहीं करता है। यदि इस्लाम है तो a
धर्म बनाया, फिर उन सभी मुसलमानों का क्या जिन्हें देखने से मना किया गया है
एक वास्तविक धर्म के लिए (यदि ऐसा कोई मौजूद है)? और जीने के बाद कहाँ जागेंगे और
इस्लाम जैसे अमानवीय युद्ध धर्म का पालन करना कुरान (और हदीसों) के अनुसार है।
अगर कहीं दूसरा जीवन है? - नरक या स्वर्ग?

7. एनबी और पीएस: आप किसी चीज के बारे में कितने भी आश्वस्त हों, अगर यह साबित नहीं होता है, तो यह नहीं है
ज्ञान, केवल विश्वास या दृढ़ विश्वास, और गलत हो सकता है। केवल वही साबित या संभव है
सिद्ध ज्ञान है।

(जैसा कि http://www.1000mistakes.com कई मुस्लिम क्षेत्रों में अवरुद्ध है - जो दर्शाता है कि वे हैं
इससे डरते हैं और तर्कों की कमी करते हैं (यदि उनके पास http://www.1000mistakes.com के लिए वास्तविक तर्क थे)
गलत है, ब्लॉक करना अनावश्यक था) - जो कुछ भी आप चाहते हैं उसे "काटें और पेस्ट करें" और भेजें if
आप सूचित करना चाहते हैं या वहां बहस करना चाहते हैं। नाम छोड़ना याद रखें
http://www.1000mistakes.com)।

पीएस: अगर हमें केंद्रीय रूप से अवरुद्ध कर दिया गया है - एफ। भूतपूर्व। स्पैम द्वारा (कई बार पहले से ही बहुत अधिक है
अमित्र स्रोत) हम कहीं और नए पते के साथ फिर से खोलेंगे, और नए की घोषणा करेंगे
पता ओम एफ. भूतपूर्व।http://www.topix.com/forum/religion/islam. साथ ही अगर आपकी टिप्पणी हमें
हम तक न पहुंचें, थ्रेड पर पोस्ट की गई कोई भी टिप्पणी "इसके साथ क्या है
http://www.1000mistakes.com?" (या शीर्षक में "1000 गलतियां" वाला पेज बनाएं
यदि आप चाहें तो स्वयं) उस मंच पर हमारे द्वारा पढ़ा जाएगा - यह एक बड़ा अंतर्राष्ट्रीय वाद-विवाद पृष्ठ है।

भाग I, अध्याय 8 (= I-8-0-0)

अल्लाह के बारे में कुछ शब्द, कुरान के भगवान, मुहम्मद, मुसलमान और इस्लाम

(पुस्तक के अंत में और भी बहुत कुछ है)।

(भाग १, अध्याय १ - १४ = इस्लाम के कुछ विशेष पहलू जैसा कि कुरान में बताया गया है - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

पुराने अरबों में बहुत सारे देवता थे। मक्का में काबा में लगभग 360 लोगों का प्रतिनिधित्व किया गया था। इनमे से
4 मक्का के आसपास के क्षेत्र और अरब के बड़े हिस्से में प्रमुख थे: अल-लाह, और हिस
तीन बेटियां अल-लत, अल-उज्जा और (अल-) मानत। शीर्ष देवता अल-लाह था (इस नाम का अर्थ है "द ."
भगवान"- "भगवान" नहीं, बल्कि "भगवान")।

मुहम्मद ने इस पुराने बहुदेववादी मुख्य देवता का नाम अल-लाह से थोड़ा बदलकर अल्लाह कर दिया,
ने बताया कि अन्य सभी देवता (लेकिन अल्लाह नहीं) केवल कल्पना और गढ़े हुए थे, और यह कि अल्लाह और
यहूदी/ईसाई भगवान याहवे एक ही ईश्वर थे - एक बयान जो केवल इस्लाम कहता है, लेकिन
अधिकांश यहूदी और ईसाई विरोध करते हैं, और एक अच्छे कारण से; क्योंकि बहुत सारे मौलिक हैं
मतभेद; यह संभवतः इस्लाम और दो अन्य धर्मों के पीछे एक ही ईश्वर नहीं हो सकता है, और

विशेष रूप से न्यू टेस्टामेंट (एनटी) पर आधारित नहीं - तब तक नहीं जब तक कि ईश्वर के पास गंभीर रूप से न हो
विभाजित व्यक्तित्व, एक प्रकार का मानसिक विकार। ("मार मत करो" बनाम "अच्छे कारण के बिना मत मारो", the
"खोया हुआ मेमना" बनाम "गलती करने वालों के लिए शोक मत करो", का उल्लेख करने के लिए खोज और मूल्य
केवल दो।)

अल्लाह भी गैर-विश्वासियों के लिए यहोवा की तुलना में बहुत कठिन ईश्वर है - कम से कम जब आप मिलते हैं
न्यू टेस्टामेंट (एनटी) में याहवेह और नई वाचा बनाम अल्लाह के देर के हिस्सों में
मदीना से सूरह में मुहम्मद की शिक्षाएँ। पुराने नियम (OT) में इसके बारे में बताया गया है
2000-4000 साल पहले के युद्ध। NT शायद ही युद्ध को स्वीकार करता है। कुरान, और विशेष रूप से सूरह से
मदीना न केवल अविश्वासियों के खिलाफ नफरत और युद्ध के लिए उकसाता है, बल्कि ऐसे युद्ध भी करता है
कर्तव्य - पहले, अब और भविष्य में, जब तक इस्लाम का प्रभुत्व न हो और अन्य सभी का दमन न हो जाए,
कुछ अधिकार वाले द्वितीय श्रेणी के नागरिक, और अतिरिक्त कर का भुगतान। आतंकवादियों के लिए अच्छा ग्रंथ। NS
अंतर यह है कि ईसाई धर्म को कभी-कभी राजनीतिक या सैन्य के लिए उपयोग नहीं किया जाता है
धर्म और NT के बावजूद उद्देश्य, जबकि इस्लाम का इस्तेमाल किया गया है - और अप्रयुक्त - in
धर्म के अनुसार, और विशेष रूप से पिछले कुछ 22 सूरहों के अनुसार
मदीना (जो वास्तव में इस्लाम और मुहम्मद और कुरान के नियमों के अनुसार मान्य हैं)
निरसन के लिए (जब दो या दो से अधिक छंद असहमत होते हैं, तो सामान्य रूप से सबसे छोटा सही होता है
एक और सबसे पुराना/अमान्य है - मदीना के लोग सबसे छोटे हैं, और
नफरत और बलात्कार, दमन और खून का उपदेश देने वाले)।

नहीं, **इन धर्मों के पीछे एक ही ईश्वर नहीं है - तब तक नहीं जब तक कि अल्लाह कम से कम न हो सिज़ोफ्रेनिक** ।

खैर, जैसा कि हमें जवाब नहीं मिला, हम उन गलतियों को सूचीबद्ध करते हैं जो हमें मिली हैं, और कोई भी और सभी से पूछें
स्पष्टीकरण के लिए मुस्लिम और गैर-मुसलमान। कृपया हमें बताएं कि हम कहां गलत हैं, ताकि हम कर सकें
समझें कि इस्लाम एक वास्तविक और सच्चा और परोपकारी धर्म क्यों है। लेकिन कृपया इसे वास्तविक होने दें
स्पष्टीकरण, तेज शब्द नहीं सिर्फ एक गलती छिपाने के लिए - हम ज्यादातर तेजी से बात के माध्यम से देखेंगे
जैसे भी।

अगर हमने कोई गलती की है, तो कृपया हमें बताएं और उन्हें सुधारा जाएगा (लेकिन दूसरी ओर;
अगर ऐसी कोई गलतियाँ हैं जिन्हें हमने नज़रअंदाज़ कर दिया है, तो हम उसके बारे में जानकारी की भी सराहना करेंगे - लेकिन
फिर; यह वास्तविक गलतियाँ होनी चाहिए, अटकलें नहीं)।

और अंत में: **अल्लाह ने कभी भी - कभी नहीं - अपने अस्तित्व या किसी भी संबंध को साबित नहीं किया मुहम्मद. केवल शब्द थे। धोखेबाज़ और विश्वासघाती (f. उदा. ख़ैबर और उसके .) शांति वार्ता प्रतिनिधिमंडल)**

भाग I, अध्याय 9 (= I-9-0-0)

का निर्माण और अनुवाद कुरान, की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

- और कुछ उद्धरण

(भाग १, अध्याय १ - १४ = इस्लाम के कुछ विशेष पहलू जैसा कि कुरान में बताया गया है - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

अगर और कुछ नहीं कहा जाता है, तो कुरान से हमारे सभी उद्धरण "पवित्र कुरान" से हैं।

इस्लामिक प्रसार केंद्र, अब्दुल्ला यूसुफ अली द्वारा अनुवादित, ... संस्करण, के साथ मुद्रित
बर्मिंघम, बी10 ओयूजी, यूके। श्री ए यूसुफ अली को मुसलमानों द्वारा शीर्ष 3 में से एक माना जाता है
कुरान के अंग्रेजी के अनुवादक (अन्य दो पिकथल और शाकिर हैं), यदि सबसे अच्छा नहीं है।

पुस्तक पेपरबैक में सस्ती है, और कोई भी इसे पढ़ सकता है - भाषा आसान है, हालांकि अक्सर
उबाऊ और उच्च गुणवत्ता वाले साहित्य से दूर - और नियंत्रित करें कि क्या हमारे उद्धरण सही हैं। और
कोई भी चाहे तो गलतियों या अन्य चीजों की तलाश कर सकता है।

मुस्लिम सूत्रों के अनुसार, कहानी यह है कि कुरान को इसकी अंतिम सामग्री सीए मिली। 650 ईस्वी
(तीसरे खलीफा, उस्मान के अधीन ६५६ ईस्वी के बाद का नहीं)। लेकिन यह 100% सच नहीं है - वास्तव में
100% सच से बहुत दूर। यह आंशिक रूप से इसलिए है क्योंकि भले ही सभी को पुरानी कुरान को जलाने का आदेश दिया गया हो
और केवल नया, आधिकारिक रखें, इसमें कम से कम १०० - २०० वर्ष लगे और यह अधिक हो सकता है (पुस्तकें
आखिरकार मूल्यवान थे - और धर्म का प्रतिनिधित्व करते थे जैसे उन्होंने इसे सीखा था) अन्य सभी से पहले
लोगों को नष्ट कर दिया गया था, और ग्रंथों को कई शिक्षित लोगों के लिए जाना जाता था। इसके परिणामस्वरूप

ग्रंथों में समय-समय पर परिवर्तन होते रहते हैं जैसे वे कॉपी किए गए थे - हाथ से। अरब के अलावा लिखा
उस समय की भाषा में छोटे स्वरों की कमी थी और आज भी अरबों में से कोई भी बिंदु नहीं था
लिखते समय उपयोग करें (तथाकथित द्विअर्थी बिंदु) और अन्य संकेत जैसे पूर्ण विराम, अल्पविराम, आदि। -
लिखित अरब भाषा/वर्णमाला लगभग 900 ईस्वी तक सिद्ध नहीं हुई थी। वजह से
कि, यह जानना आज भी अक्सर मुश्किल होता है कि वास्तव में कौन सा शब्द लिखा गया था, जैसा कि किसी को करना है
अनुमान लगाएं कि किस स्वर का उपयोग करना है और कौन से संकेत गायब हैं। ऐसे मामलों में जहां एक से अधिक अर्थ
संभव है, सभी अलग-अलग संभावित अर्थों को इस्लाम द्वारा सही माना जाता है - लेकिन वे हैं
छलावरण के लिए "पढ़ने के तरीके" कहा जाता है कि वास्तव में पाठ की विभिन्न किस्में हैं। और
हदीस में भी (अगले अध्याय में व्याख्या) कहा गया है कि मुहम्मद के अनुसार,
कुरान को 7 संस्करणों में नीचे भेजा गया था कि सभी सही थे, भले ही वे भिन्न हों। नहीं करने के लिए
अस्पष्ट होने के कारण पहले के समय में मौजूद सभी विभिन्न किस्मों का उल्लेख किया
भाषा: हिन्दी। (f. उदा। 1972 में यमन में कई बहुत पुराने कुरान पाए गए। वे निकले
आधुनिक लोगों की तुलना में "छोटे, लेकिन महत्वपूर्ण अंतर" - और फिर पश्चिमी
वैज्ञानिकों को प्रवेश से वंचित कर दिया गया था।) तो जब कोई मुसलमान कहता है कि कुरान हमेशा सही है, तो यह है
उनसे यह पूछना उचित है कि कौन सा कुरान (आज अरबी कुरान हावी है, वह है)
१९२४ में जब उन्होंने हाफ्स के बाद एक संस्करण छापा, तब मिस्र में उनका दबदबा रहा।
जबकि वार्श के बाद अफ्रीका के कुछ हिस्सों, विशेष रूप से उत्तरी अफ्रीका में उपयोग किया जाता है)।

वास्तव में लंबे समय तक पुस्तक के 14 - चौदह - विहित संस्करण थे (इब्न .)
वाराक: "मैं मुस्लिम क्यों नहीं हूं" और अन्य): उस्मान के संस्करण के बाद भी, बहुत सारे थे
दूसरों की, आंशिक रूप से अस्पष्ट वर्णमाला के कारण। तब एक "अंतिम" विहितकरण किया गया था
महान मुस्लिम शिक्षक इब्न मोहेयर (मृत 935 ईस्वी) से प्रभावित। उन्होंने कहा कि 7 वेरिएंट
(अन्य मुस्लिम शिक्षकों ने १० से १४ को स्वीकार किया) को सही माना जाना था। लेकिन जैसा कि प्रत्येक अस्तित्व में था
दो संस्करणों में, एक 14 अलग-अलग के साथ समाप्त हुआ, सभी को सही के रूप में स्वीकार किया गया, क्योंकि यह पूरी तरह से था
उन अलग-अलग तरीकों से मूल को समझना संभव है (और वास्तव में अधिक), मूल के रूप में
जैसा कि उल्लेख किया गया है, पूर्ण वर्णमाला से बहुत दूर के माध्यम से लिखा गया था। (मैं एक उदाहरण बनाने के लिए
Hindi: यदि आप जानते हैं कि स्वरों को छोड़ दिया गया है, और आपके पास दो अक्षर हैं, तो आप सोचते हैं
एक शब्द का प्रतिनिधित्व करता है - एफ। भूतपूर्व। "एच" और "एस" - शब्द "घर" के रूप में "नली" या यहां तक कि हो सकता है
"उसका" या "है")।

ये विहित 14 संस्करण हैं (उन्होंने इसे "पढ़ने के तरीके" कहा - जैसा कि इसे छिपाने के लिए कहा गया था
कई प्रकार थे)। 1. नाम संपादक है, 2. और 3. नाम कथावाचक हैं:

१+२: मदीना से नफी वारश या कलून के बाद।

3+4: मक्का से इब्न कथिर अल-बज़ी या कुनबुल के बाद।

5+6: हिशाम या इब्न ढकवान के बाद दमिश्क से इब्न अमीर।

7+8: बसरा से अबू अमर अल-दुरी या अल-सुसी के बाद।

9+10: कूफ़ा से आसिम हाफ्स या अबू बक्र (खलीफा नहीं) के बाद।

11+12: कुफ़ा से हमज़ा खलाफ या खल्लाद के बाद।

१३+१४: कुफ़ा से अल-किसाई अल-दुरी या अबुल हरीथ के बाद।

जैसा कि आप समझते हैं कि मुसलमानों से यह पूछने का एक अच्छा कारण है कि कौन सा कुरान एक आदर्श है
और गलतियों के बिना - और जिसे अल्लाह ने वास्तव में उतारा (यदि उसने किया)। इनमें से केवल एक
वास्तव में 100% सही हो सकता है - और कोई भी नहीं हो सकता है। सबसे अधिक संभावना है कि कोई नहीं - बहुत अधिक किस्में हैं
मुमकिन। और किताब में बहुत सारी गलतियाँ आदि।

इन 14 में से 3 वर्षों में हावी हो गए: युद्ध के बाद नफी, हाफ्स के बाद आसिम और अबू
अल-दुरी के बाद अमर। और आज ज्यादातर दो संस्करण हैं जिनका उपयोग किया जाता है: आसिम आफ्टर हाफ्स -
1924 में मिस्र में मुद्रित होने पर इस्तेमाल किया जाने वाला - और वार्श के बाद नफी (अफ्रीका के कुछ हिस्सों में प्रयुक्त)।
हाफ्स के बाद आसिम आज हावी है, लेकिन वार्श के बाद नफी जैसा कि उल्लेख किया गया है, का उपयोग बड़े हिस्से में किया जाता है
अफ्रीका।

चूंकि गलतियों का सवाल इस्लाम के लिए बहुत जरूरी है, इसलिए हमने सभी जगहों को उद्धृत करना चुना है
जहां हमें कुछ ऐसा मिला है जो स्पष्ट रूप से गलत है (संख्याओं द्वारा क्रमांकित) या बहुत संभावना है
गलत (अक्षरों द्वारा क्रमांकित)। इसका मतलब है कि एक ही गलती अक्सर दोहराई जाएगी
विभिन्न कनेक्शन। हमने उनमें से अधिकतर का उल्लेख करना चुना है, ताकि पाठक सक्षम हो सकें
स्थानों का पता लगाएं - यदि दोहराव को कई बार पढ़ना बहुत उबाऊ है, तो इसके बजाय शॉर्टलिस्ट पढ़ें।
आपको कई बार दोहराए गए कई उत्तर भी मिलेंगे (शॉर्टलिस्ट में नहीं) - सिर्फ इसलिए कि
कुरान एक ही कहानी और एक ही किस्से को बार-बार बताता है (और अक्सर उबाऊ गद्य में)
- अच्छा साहित्य नहीं, मुसलमान चाहे कुछ भी कहें)।

और: इन सभी शताब्दियों के दौरान गलतियों के लिए बहुत सारे स्पष्टीकरण सामने आए हैं (हम करेंगे
उनमें से कुछ का उल्लेख करें)। कुछ सच हो सकते हैं, कुछ सवालिया निशान लगाते हैं, और बहुत कुछ स्पष्ट रूप से
बस तेज-तर्रार बात कर रहे हैं। ऐसे स्पष्टीकरण मिलने पर अपने ज्ञान और अपने मस्तिष्क का उपयोग करें: हैं
वे विश्वसनीय स्पष्टीकरण? क्या ऐसा कुछ है जो अधिक शोध की मांग करता है? या यह बस तेज़ है-
बातचीत? **अक्सर यह तेज-तर्रार बात होती है।**

भाग I, अध्याय 10 (= I-10-0-0)

हदीस के बारे में संक्षिप्त - अन्य धार्मिक का स्रोत मुहम्मद के लिए सूचना, मुसलमान और इस्लाम

(भाग १, अध्याय १ - १४ = इस्लाम के कुछ विशेष पहलू जैसा कि कुरान में बताया गया है - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस्लाम में आप हदीस (अरब में बहुवचन हदीस) शब्द से अक्सर मिलेंगे। यह संक्षिप्त है
मुहम्मद और उनके कुछ करीबी सहकर्मियों (और विशेष रूप से) के बारे में कहानियाँ या कहानियाँ
शिया इस्लाम भी कुछ अन्य प्रारंभिक मुसलमानों) ने कहा और किया। इस्लाम क्या सबसे ज्यादा मानता है
विश्वसनीय संग्रह, मुहम्मद के 200-300 साल बाद एकत्र किए गए थे, लेकिन इस तरह के किस्से तब थे
राजनीतिक और अन्य उद्देश्यों के लिए बड़े पैमाने पर इस्तेमाल और अप्रयुक्त किया गया था, पहले से ही थे
वस्तुतः उनमें से सैकड़ों हजारों, और उनमें से अधिकांश नकली (नेताओं द्वारा बनाए गए f. उदा।)

पेज 39

अपने अनुयायियों को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि यह या वह मुहम्मद के तरीकों के अनुसार था।)
सर्वश्रेष्ठ संग्राहकों ने एक बहुत बड़ा और - हमें लगता है - से अच्छे को छाँटने के लिए यथोचित ईमानदार काम किया
बुरा है, और आज कुछ हज़ार हदीसों को सच कहा जाता है। लेकिन आज भी उन्हें सुलझाया जाता है
चार श्रेणियों में यह कितनी संभावना है कि वे वास्तव में सच हैं। मुख्य रूप से तीन हैं
हदीस के सच होने की कितनी संभावना है, इसका मूल्यांकन करने के लिए मानदंड: इसे किसने बताया? कितना विश्वसनीय
क्या वे लोग कहानी सुना रहे थे और फिर से बता रहे थे? और क्या और लोगों ने वही कहानी सुनाई?
निश्चित रूप से कमजोर जगह यह है कि अगर किसी ने हदीस को नकली बना दिया, तो नकली करना उतना ही आसान था कि कौन भी बताया था। कुछ सच हो सकते हैं, कुछ शायद - या निश्चित रूप से - नहीं, यहां तक कि सर्वश्रेष्ठ में भी
संग्रह। मोहम्मद के तीन नकली कार्टून के साथ कहानी - मुल्लाओं द्वारा नकली
डेनमार्क अधिक क्रोध को भड़काने के लिए - दोनों के बारे में बताता है कि फ़ेकिंग कितना आसान है, और इसके बारे में क्या
नैतिकता कभी-कभी पादरी भी प्रतिनिधित्व करते हैं: लक्ष्य औचित्य देता है - या पवित्र करता है - साधन,
और अल-ताकिया (वैध झूठ - एक इस्लामी विशेषता) था और अब उपयोग करने के लिए सुविधाजनक है और
फिर। बड़ी संख्या में हदीसों को नकली बनाया गया था, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज भी अ
वास्तव में स्वीकृत हदीसों की संख्या नकली है (कुरान f. पूर्व। साबित करता है कि सभी
मुहम्मद से जुड़े चमत्कारों के बारे में हदीसें गढ़ी गई हैं - अगर नहीं होतीं तो
वहाँ उल्लेख किया है, और - अधिक आवश्यक - मुहम्मद को इस तथ्य को स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं थी कि
उससे जुड़ा एक भी चमत्कार कभी नहीं था। साथ ही इस्लाम स्वीकार करता है कि "मुहम्मद ने बनाया"
कुरान को छोड़कर कोई चमत्कार नहीं") - और यह जानना मुश्किल है कि कौन से हैं (हालांकि कभी-कभी
यह देखना आसान है कि यह और यह नकली हैं)।

इस्लाम द्वारा सबसे विश्वसनीय होने के लिए जिन दो संग्रहों को समेटा गया है, उनमें से एक अल-
बुखारी और एक इमाम मुस्लिम द्वारा।

भाग I, अध्याय 11 (= I-11-0-0)

कुछ आवश्यक जानकारी पाठों से और उनके बारे में कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

(भाग १, अध्याय १ - १४ = इस्लाम के कुछ विशेष पहलू जैसा कि कुरान में बताया गया है - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

०१ २/१०६: "हमारे (अल्लाह के) खुलासे में से कोई भी हम निरस्त नहीं करते हैं या भुलाने का कारण नहीं बनते हैं, लेकिन
हम कुछ बेहतर या समान स्थानापन्न करते हैं - - -"। इस संबंध में "विकल्प" का अर्थ ठीक-ठीक है
"निरस्त" के समान, लेकिन "निरस्त" कुछ मुसलमानों के बीच एक भरा हुआ शब्द है, क्योंकि यह "बात करता है"
एक ऐसे भगवान के बारे में जिसे सर्वज्ञ होने का दावा किया जाता है और फिर भी उसे प्रयास करना और असफल होना है या वह है
वह जो रैली चाहता है, उसके बारे में अपना मन बनाने में असमर्थ है। असल में "विकल्प" बताता है
बिल्कुल वैसा ही, लेकिन किसी कारण से वह शब्द इतना "लोड" नहीं है। कई मुसलमान इस बात से इनकार करते हैं कि
निरसन मौजूद हैं और कुरान में विरोधाभासों को अन्य तरीकों से समझाने की कोशिश करते हैं, लेकिन

पेज ४०

निरसन इस्लाम का एक एकीकृत और अनिवार्य रूप से आवश्यक हिस्सा है, दोनों धर्म और में
एफ। भूतपूर्व। न्यायिक प्रणाली। नीचे 16/101 भी देखें।

002 3/7: "वह (अल्लाह*) वह है जिसने तुम्हें (मुहम्मद/मुसलमान*) किताब (कुरान*), इसमें छंद बुनियादी या मौलिक (स्थापित अर्थ के) हैं; वो हैं पुस्तक की नींव: अन्य अलंकारिक हैं। परन्तु जिनके हृदय में कुटिलता है, वे अनुसरण करते हैं उसका वह भाग जो अलंकारिक है, कलह की तलाश में है, और इसके छिपे अर्थों की तलाश कर रहा है, लेकिन इसके छिपे अर्थ को अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता।" यहाँ यह बहुत स्पष्ट है कि मैदान और ग्रंथों में स्पष्ट अर्थ मुख्य रूप से सही समझ है। जब आपको याद आता है कि मुहम्मद की मंडली मुख्य रूप से अशिक्षित और अक्सर भोले लोग थे, यह और भी आसान है समझें कि यह मामला होना ही था।

फिर आरोपों के बारे में सवाल है। कुछ बिखरे हुए छंद हैं जिन्हें रूपक कहा जाता है या समान, और जिसका अर्थ समझाया गया है। जैसा कि अर्थ समझाया गया है, ये अवश्य "छंद बुनियादी या मौलिक" में शामिल के रूप में समझा जा सकता है।

कोई स्पष्ट रूपक नहीं हैं, जहां अर्थ स्पष्ट या समझाया नहीं गया है। वहां एक छंदों की संख्या जहां अर्थ देखना मुश्किल या असंभव है। लेकिन ऊनी भाषण एक रूपक का मतलब एक रूपक नहीं है - एक रूपक एक कहानी है जिसका अर्थ कुछ और है। ऊनी भाषण केवल ऊनी या अस्पष्ट भाषण है - - - "उन लोगों के लिए जिनके दिल में विकृति है"?

लेकिन किसी भी पाठ में - यहां तक कि डोनाल्ड डक में भी - छिपे हुए अर्थों को खोजना - या बनाना संभव है। लेकिन इस आयत (3/7) में इसके खिलाफ दृढ़ता से सलाह दी गई है: केवल अल्लाह ही ऐसा करने के लिए योग्य है: "- - - इसके छिपे अर्थ को अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। और इसके बारे में जानने के लिए बेहतर कौन है अल्लाह? - पुस्तक के निर्माता (?) - और प्रकल्पित मदर बुक में श्रद्धा रखने वाला अल्लाह का घर, एक किताब जिसे कुरान की एक प्रति होने का दावा किया जाता है (बिना सबूत के सामान्य के लिए) इस्लाम)? लेकिन फिर भी इस्लाम द्वारा किसी भी गलती को "समझाने" के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक मानक व्याख्या या विरोधाभास जिसे समझाना मुश्किल है, वह यह है कि इसे शाब्दिक रूप से नहीं समझा जाना चाहिए लेकिन अलंकारिक रूप से। जैसे ही एफ. भूतपूर्व। विज्ञान से पता चलता है कि कुरान में कुछ गलत है, वह पाठ "बुनियादी और मौलिक - स्थापित अर्थ" होने से स्विच करता है, एक बनने के लिए रूपक। यह अल्लाह के बावजूद और कुरान के बावजूद। यह तीन सबसे अधिक बार में से एक है आखिरी खाई का इस्तेमाल इस्लाम और मुसलमान उन चीजों को "समझाने" की कोशिश करने के लिए करते हैं जो नहीं हो सकती हैं व्याख्या की। (अन्य हैं: "आप केवल एक बिंदु या कुछ से अर्थ नहीं ले सकते हैं कविता - आपको पूरे कनेक्शन (या पूरे कुरान) से न्याय करना होगा", और: "आप हैं सिर्फ एक मुस्लिम नफरत या इज़राइल प्रेमी और इसके परिणामस्वरूप आप जो तथ्य बताते हैं वे अमान्य हैं और नहीं ब्याज")। इसके बावजूद वे खुद खुशी से और उल्लास के साथ उद्धरण देते हैं और अक्सर भी इस्लाम का पक्ष लेने के लिए शब्दों को संदर्भ से बाहर कर देता है (f. उदा। "वहाँ (गलत तरीके से उद्धृत) नहीं है" धर्म में मजबूरी") या किसी अन्य धर्म को बदनाम करने के लिए)। लेकिन 3/7 साबित करता है कि बनाने के लिए शब्दों के पीछे छिपे अर्थ - f. भूतपूर्व। इसका अर्थ अलंकारिक होने के लिए बदलना जहां a रूपक इंगित नहीं किया गया है - गलत है और अल्लाह की इच्छा और व्यवस्था के खिलाफ है - यह है "जिनके हृदयों में कुटिलता है" का कार्य।

नीचे 44/58 और 54/17 भी देखें।

००३ ४/८२: "अगर यह (कुरान*) अल्लाह के अलावा किसी और की ओर से होता, तो वे उसमें मिल जाते बहुत विसंगति। ” कुछ १७००+ गलत तथ्य - कुछ ३०० गलतियाँ एक साथ हो सकती हैं - सैकड़ों विरोधाभास, अवैध तर्क के सैकड़ों मामले, अस्पष्ट के सैकड़ों मामले भाषा, अमान्य या स्पष्ट रूप से गलत "संकेत" और "सबूत" के बहुत सारे मामले - यह शायद ही है इस विस्तृत पृथ्वी पर अधिक से अधिक गलत और गलत वाली पुस्तक खोजना संभव है अंक - - - विसंगतियां। यह अपने आप में 100% साबित करता है कि कुछ गंभीर रूप से गलत है

कुरान और इसलिए मुहम्मद और इस्लाम के साथ। और इस श्लोक के साथ मिलकर यह बनाता है यह एक निर्विवाद तथ्य है - कम से कम 110% सत्य: कुछ गलत है।

००४ ५/१०१: "हे विश्वास करने वालों! उन चीजों के बारे में सवाल न पूछें, जिन्हें अगर सादा बना दिया जाए आप, आपको परेशान कर सकते हैं (मुहम्मद/कुरान* में आपके विश्वास में)"। एक मुसलमान के पास बेहतर था ज्ञान प्राप्त न करें जो उसे बता सके कि इस्लाम गलत हो सकता है - भरी किताब में अंध विश्वास गलतियाँ, अंतर्विरोध, आदि सत्य का पता लगाने से बेहतर है; यदि इसके लिए कोई जोखिम है तो सत्य कुरान की तुलना में "गलत" है।

005 13/38: "प्रत्येक अवधि के लिए एक पुस्तक (प्रकट) है"। क्योंकि समय बदल रहा है, इस्लाम दावा करता है कि अल्लाह ने समय-समय पर नई किताबें उतारी हैं - इब्राहीम को (लगभग 1900 साल का खानाबदोश) ईसा पूर्व शायद ही पढ़ना और लिखना जानता था), मूसा को, बाद के यहूदियों को, और यीशु को (सिवाय इसके कि .)

NT केवल यीशु की मृत्यु के वर्षों बाद आया) - और अंत में कुरान। केवल कुछ प्रश्न:

1. अगर कुरान मदर बुक की कॉपी है
   जो स्वर्ग में लिपटी है, क्यों है मां
   पुस्तक लगभग केवल मुहम्मद से बात कर रही है, in
   124ooo या उससे अधिक होने के बावजूद
   भविष्यद्वक्ताओं के अनुसार समय के माध्यम से
   इस्लाम?
2. अगर कुरान मदर बुक की कॉपी है,
   युगों पहले बना - शायद तब से अस्तित्व में है
   अनंत काल - यह मुहम्मद को सलाह क्यों देता है?
   बहुत, एक दर्जन या तो अन्य भविष्यद्वक्ता थोड़ा और
   नबियों के अन्य सभी समूह बिल्कुल नहीं -
   उन्हें भी सलाह की आवश्यकता हो सकती है, और अल्लाह कर सकता है
   नूह या लूत को मदर बुक का हवाला न दें या
   दावा किए गए कई अन्य में से एक, बस बता रहा है
   वे मुहम्मद की पत्नियों के बारे में किस्से सुनाते हैं
   अच्छी लड़कियों के लिए कहा गया था - या यीशु को कैसे
   युद्ध आदि में खूनी होना (इसके अलावा "अल्लाह फैसला करता है"
   सब कुछ ”सैद्धांतिक रूप से भी असंभव है
   "मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा है" के साथ गठबंधन करने के लिए। बिलकुल
   असंभव।)
3. अगर कुरान एक माँ की प्रकट प्रति है
   किताब कल्प पुरानी है और सारी दुनिया के लिए है,
   फिर क्यों है "वर्तमान" और समकालीन
   पुस्तक के लिए समय और स्थान और पृष्ठभूमि
   सिर्फ साल कब और सिर्फ वह क्षेत्र जहां
   मुहम्मद एक उपदेशक थे? - किस्से हैं
   मूसा और अब्राहम और यीशु के बारे में और a
   कुछ अन्य, लेकिन वे किस्से हैं - मुहम्मद
   और मक्का/मदीना "वर्तमान समय" है और
   स्थानीयकरण और पृष्ठभूमि संस्कृति
   पुस्तक - गलत विज्ञान, किंवदंतियाँ शामिल हैं,
   परियों की कहानियां और सोचने और व्यवहार करने के तरीके।
   सभी के लिए कोई सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान भगवान नहीं
   समय और सारी दुनिया समय से बंधी है और
   कुछ वर्षों और कुछ हज़ार वर्ग तक का क्षेत्र
   मील - बहुत सारे गलत का उल्लेख नहीं करना

   उस असभ्य से जुड़ा ज्ञान और
   पिछड़ा समय और स्थान।
4. यदि "प्रत्येक अवधि के लिए एक पुस्तक (प्रकट) है"
   क्योंकि समय बदलता है, फिर क्यों नहीं होता
   लंबे समय से एक नई किताब? चीजें बदल गई
   पिछले ३०० वर्षों से अधिक - हाँ, १०० वर्ष - की तुलना में
   सभी पूर्व में 200ooo वर्ष हो सकते हैं
   संयुक्त, कुछ एक सर्वज्ञ और
   अल्लाह जैसे दिव्यदर्शी भगवान लंबे समय से जानते थे
   मुहम्मद से पहले भी उनकी एक इच्छा थी
   पिता की आँखों, अगर वह सही ढंग से वर्णित है
   कुरान.

००६ १६/१०१: "जब हम (अल्लाह*) एक रहस्योद्घाटन को दूसरे के लिए प्रतिस्थापित करते हैं - - -।" "विकल्प" के रूप में
और इस संबंध में "निरसन" का अर्थ बिल्कुल वही है - एक या अधिक पुराने को बदलने के लिए
नए के साथ छंद और पुराने को अमान्य कर दें - यह उसके लिए 100% प्रमाणों में से एक है
प्रतिस्थापन/निरसन कुरान का हिस्सा है - - - इसके बावजूद कि कुछ मुसलमान दावा करते हैं और
विश्वास करना बहुत पसंद है (कि निरसन मौजूद नहीं है), क्योंकि निरसन साबित करते हैं कि अल्लाह है
अचूक नहीं है और उसे कोशिश करनी है और असफल होना है - और/या वह बहुत मजबूत दिमाग वाला नहीं है और अपना बदलता है
मन अब और फिर। इसी तरह का एक अन्य प्रमाण 2/106 है - उसे ऊपर देखें।

००७ ४४/५८: “वास्तव में, हम (अल्लाह) ने आपकी (मुहम्मद की) जीभ में इस (कुरान) को आसान बना दिया है

ताकि वे (लोग*) ध्यान दें।" ऊपर 3/7 और नीचे 54/17 भी देखें। कोई नहीं है
संदेह है कि मुहम्मद/अल्लाह का मतलब कुरान को शाब्दिक रूप से समझा जाना था। छिपे हुए को खोजने के लिए
स्पष्ट रूप से इंगित नहीं किए गए रूपक का अर्थ गलत है। सभी एक ही मुसलमान और इस्लाम का उपयोग करते हैं
पूर्व और पश्चिम में दावों को "समझाने" में सक्षम होने के लिए अंतिम उपाय के रूप में जो व्याख्या योग्य नहीं है यदि
कोई कुरान को अक्षरशः पढ़ता है और जिस तरह से अल्लाह स्पष्ट रूप से कहता है कि इसे पढ़ना है और
समझा जाता है - सिवाय उनके "जिनके दिलों में कुटिलता है" (3/7)।

००८ ५४/१७: "और हमने (अल्लाह*) ने कुरान को समझने में आसान बना दिया है - - -।" कोई भी
गलतियों या अमान्य तर्क जैसे कठिन बिंदुओं को "समझाने" की कोशिश करना चाहते हैं या
अंतर्विरोधों को रूपक आदि कहकर इस वाक्य को पढ़ना चाहिए। यह 4 . भी लिखा है
समय और इस प्रकार एक ठोस रूप से पुख्ता और कील वाला सत्य: कुरान को शाब्दिक रूप से समझा जाना है और
छिपे हुए अर्थों की खोज केवल अल्लाह के लिए है, और ऐसी खोज केवल उनके लिए है "जिनके" में
दिल विकृत है - - -।" व्याख्या करना दूर है कि रूपक के बारे में दावों की आवश्यकता है, स्पष्ट रूप से गलत है
- कुरान को अक्षरशः समझा जाना है और कुछ नहीं कहा गया है। (3/7)। 3/7 और 44/58 . भी देखें
के ऊपर।

009 54/20: 54/17 के समान।

010 54/32: 54/17 के समान।

011 54/40: 54/17 के समान।

भाग I, अध्याय 12 (= I-12-0-0)

इस्लाम और के बारे में एक गंभीर पीएस मुसलमानों

(भाग १, अध्याय १ - १४ = इस्लाम के कुछ विशेष पहलू जैसा कि कुरान में बताया गया है - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

कुरान पढ़ते समय - और इससे भी अधिक जब आप पढ़ रहे हों
इसमें क्या कहा गया है इसके बारे में टिप्पणियाँ, स्पष्टीकरण या "स्पष्टीकरण"
पुस्तक, आपको याद रखनी चाहिए:

1. मुसलमान अपने धर्म के बारे में सोचते या बात करते समय शायद ही कभी या कभी भी आलोचनात्मक सोच का इस्तेमाल नहीं करते हैं। वे कुरान को अंतिम सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं, और फिर वास्तविकता को समायोजित करने का प्रयास करते हैं यदि "नक्शा करता है" इलाके में फिट नहीं है "। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि गलती कितनी स्पष्ट है।
2. चीजों की व्याख्या करते हुए, मुसलमान अक्सर तर्क से आगे जाकर निष्कर्ष निकालते हैं जो वास्तव में अनुमति देता है।
3. चीजों को समझाते हुए, मुसलमान अक्सर-अक्सर-सच के लिए चीजें कहते हैं जो साबित नहीं होती हैं।
4. बातें समझाते हुए मुसलमान अक्सर कहते हैं कि वो बिना सबूत के सही हैं, और फिर मांगते हैं किसी विरोधी से सबूत। (चर्चा को "जीतने" का प्रभावी तरीका)। इसे स्वीकार न करें-मांग किसी भी बयान के लिए दस्तावेज और सबूत, क्योंकि वे अक्सर गलत या अप्रमाणित होते हैं केवल दावे।
5. मुसलमान विज्ञान को स्वीकार नहीं करते हैं यदि वह विज्ञान उनके धर्म से टकराता है।
6. मुसलमान विज्ञान का उपयोग करते हैं यदि इसे देखने के लिए बनाया जा सकता है - कभी-कभी एक या दो मोड़ के साथ - जैसे उनके धर्म का समर्थन करता है। बिग बैंग एफ. भूतपूर्व। यह साबित करने के लिए प्रयोग किया जाता है कि कुरान सही है जब वह कहता है कि आकाश और पृथ्वी कभी एक शरीर थे - भले ही यह दिखाना आसान हो कि यह गलत है। या कि बड़ी बाढ़ वास्तव में खाली बेसिन की बाढ़ थी जो भूमध्यसागरीय बन गई थी अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च द्वारा प्रमाणित सी (f। पूर्व। "कुरान का संदेश", काहिरा में अकादमी) - जिसे गलत साबित करना और भी आसान है, जैसा कि कुछ 4 - 5 . हुआ

लाखों साल पहले, होमो सेपियन्स (आधुनिक आदमी) के अस्तित्व में आने से पहले, और इसके अलावा कई ले लिया
होने वाले वर्ष - पानी केवल साल में कुछ मीटर बढ़ रहा है - क्योंकि जलडमरूमध्य संकरा था
शुरुआत और बेसिन बड़ा)।

7. कुरान कहता है कि इसे अक्षरशः पढ़ा जाना चाहिए। वैसे ही कुछ मुसलमान "उन्नत" का उपयोग करते हैं "व्याख्या" करने के लिए तर्क जो इंगित करते हैं या छंद वे गलतियाँ नहीं करना चाहते हैं, लाक्षणिक हैं वाले - रूपक।
8. कुरान में ईश्वर के लिए एक भी वैध प्रमाण नहीं है, इसके संभावित अपवाद के साथ कुछ "सबूत" बाइबिल से लिए गए - और वे यहूदी और ईसाई भगवान के बारे में बोलते हैं (हम में से ज्यादातर लोग इसे नहीं जानते, लेकिन उसका नाम यहोवा है) अल्लाह नहीं। और निश्चित रूप से एक नहीं है अल्लाह के अस्तित्व के लिए एकमात्र वैध प्रमाण - इस्लाम हमें जो बताता है उसके बावजूद। एक भी सिंगल नहीं। केवल दावे और बयान - उनमें से कुछ बहुत ढीले - और अमान्य "संकेत" और "सबूत" + अमान्य तर्क।
9. मुहम्मद के ईश्वर से संबंध के लिए एक भी वैध प्रमाण नहीं है - केवल तार्किक रूप से अमान्य दावे और बयान।
10. मुहम्मद वास्तव में एक नबी नहीं थे - उन्होंने सिर्फ "उधार" लिया जो थोपने और प्रभावित करने वाले थे शीर्षक। एक भविष्यद्वक्ता एक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास निम्नलिखित का उपहार है: 1. वैध भविष्यवाणियां करने में सक्षम होना। 2. The वह जो भविष्यवाणियाँ करता है वह कम से कम अधिकतर सही होती है - यदि नहीं तो वह एक झूठा भविष्यद्वक्ता है। 3. वह ऐसा करता है बार-बार और/या आवश्यक भविष्यवाणियां करना कि स्पष्ट रूप से भविष्यवाणियां करना उसके मिशन का हिस्सा है। मुहम्मद के पास न तो यह उपहार था, न ही यह दिखावा किया कि उसके पास यह है, और न ही दावा किया कि उसके पास यह है। (विवरण

मुहम्मद के बारे में अध्याय।) वह किसी या किसी चीज़ के लिए दूत हो सकता है, लेकिन असली नबी नहीं।

11. मुसलमान और इस्लाम बताते हैं कि अल्लाह और यहोवा एक ही ईश्वर हैं। लेकिन केवल मुसलमान (और कुछ) अन्य जो उस बिंदु पर मुसलमानों का अनुसरण करते हैं) ऐसा कहते हैं। और इतने मौलिक हैं कई केंद्रीय बिंदुओं पर मतभेद, विशेष रूप से ईसाई धर्म की तुलना में, कि कथन केवल सत्य नहीं है - तब तक नहीं जब तक कि ईश्वर स्किज़ोफ्रेनिक न हो।
12. इस्लाम बताता है कि जहां कुरान बाइबिल से अलग है, उसका कारण यह है कि बाइबिल को गलत ठहराया जाता है। विज्ञान बताता है कि इसका कारण यह है कि मुहम्मद बाइबल को बुरी तरह जानते थे, और इससे निकलने का आसान तरीका जब उन्होंने कहा कि कुछ बाइबिल से टकरा रहा है, तो यह कहना था कि बाइबिल को गलत ठहराया गया था। विज्ञान वास्तव में लंबे समय से किसी भी उचित और सबसे अनुचित से परे साबित हुआ है संदेह है कि मुहम्मद का दस्तावेज नहीं है और कभी साबित नहीं हुआ दावा गलत है। एक अतिरिक्त बिंदु यहाँ यह है कि कुरान में कहानियाँ अक्सर अपोक्रिफ़ल (निर्मित) शास्त्रों से ली जाती हैं, और यहूदी और ईसाई और अन्य किंवदंतियों और परियों की कहानियों से, बाइबिल से नहीं, और जब कहानी अलग है या बाइबिल में मौजूद नहीं है, मुहम्मद बस और साहसपूर्वक "स्पष्ट" की व्याख्या करता है; यही कारण है कि कुरान की एक अलग कहानी है, वह यह है कि बाइबिल झूठा है - और इस्लाम आज भी ऐसा ही कहता है, इसके विपरीत साबित करने वाले सभी सबूतों के बावजूद (वे करना होगा, क्योंकि अगर धर्म झूठा साबित नहीं होता है)। शायद ही कोई एक सच्चा वैज्ञानिक आज का मानना है कि कुरान एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा भेजा गया है - और कोई प्रोफेसर नहीं है विश्वास करने वाले मुसलमानों के बाहर का इतिहास इतिहास के लिए ऐतिहासिक तथ्यों के स्रोत के लिए इसका उपयोग करता है ६१० ईस्वी से पहले, कोई फर्क नहीं पड़ता कि मुसलमान इस बात पर जोर देते हैं कि हर शब्द और हर अल्पविराम सत्य है और मुहम्मद के शब्दों के समान - जो सत्य नहीं है, क्योंकि अरब में अल्पविराम मौजूद नहीं था जब कुरान एकत्र किया गया था।
13. इसके अलावा: सभी पुरानी पांडुलिपियां यह भी दर्शाती हैं कि बाइबल के झूठे होने का दावा सही नहीं है - और इसका सबसे अच्छा प्रमाण यह है कि इस्लाम ने कभी भी इतने पुराने का कोई उदाहरण पेश नहीं किया मिथ्याकरण हालांकि हजारों (13ooo?) प्रासंगिक पुरानी पांडुलिपियां मौजूद हैं, और बाइबल के संदर्भ में और भी बहुत कुछ (32ooo?), उनमें इनमें से कोई भी शामिल नहीं है मिथ्याकरण इस्लाम दावा करता है - उनमें से एक नहीं। यदि मिथ्याकरण का एक ही प्रमाण होता पाया, इस्लाम ने इसके बारे में चिल्लाया था।
14. मुस्लिमों में आपको "मुस्लिम नफरत" या "इज़राइल निचला" आदि के रूप में खारिज करने की प्रवृत्ति होती है यदि बहस में वे आपकी बात को पसंद नहीं करते हैं या यदि उन्हें तथ्यों से बाहर निकलने का रास्ता चाहिए तो वे जवाब नहीं दे सकते। लेकिन यदि आपके द्वारा प्रस्तुत किए गए तथ्य सत्य हैं, तो चाहे आप कुछ भी हों, वे सत्य नहीं हैं यह या वह - आपका व्यक्ति तथ्यों के लिए अप्रासंगिक है। मुसलमान अक्सर इसे "भूल" जाते हैं।
15. एक कठिन प्रश्न या तर्क से बाहर निकलने का दूसरा तरीका यह है: "आप निष्कर्ष नहीं निकाल सकते" केवल एक या कुछ छंदों से - आपको कुरान से सामान्य तस्वीर से न्याय करना होगा"। यह वे दावा करते हैं, भले ही वे स्वयं एक दूसरे धर्म की निंदा करते हैं बिट्स और तथ्यों के टुकड़े (या कल्पना)। लेकिन जैसा कि कुछ गैर-मुसलमानों ने कभी कुरान पढ़ा है, यह है उनके लिए दावे को पूरा करना मुश्किल है। लेकिन ईमानदारी से कहूं तो: यदि आप निकालने में असमर्थ हैं एक या कुछ श्लोकों का सार, किसी को भी वाद-विवाद से दूर रहना चाहिए - उनका बुद्धिजीवी क्षमता केवल एक दुकान में रोटी और पनीर खाने तक है।
16. उपरोक्त बिंदु का एक सीधा उत्तर यह है कि जो कोई भी निकालने में सक्षम नहीं है किसी पाठ या पाठ के भाग से महत्वपूर्ण बिंदु, किसी में भाग लेने के लिए मस्तिष्क नहीं है बहस और इससे बाहर रहना चाहिए, फैलाने वाले दावों का उपयोग करने के बजाय - जैसे आप न्याय नहीं कर सकते

कुरान के केवल अंश - कठिनाइयों से निकलने के लिए।
17. और फिर रूपक हैं। कुरान स्पष्ट रूप से कहता है कि इसे मुख्य रूप से समझना है
शाब्दिक रूप से, इसके बारे में अध्याय देखें या f. पूर्व 3/7। लेकिन जो कुछ भी समझाना मुश्किल होता है वह बन जाता है
रूपक और इस तरह से दूर समझाया गया है - पुस्तक में वैज्ञानिक गलतियों को शामिल किया गया है।
पुस्तक में वैज्ञानिक "तथ्य" हैं - और हैं - शाब्दिक तथ्य होने के लिए - - - वास्तविक होने तक
विज्ञान को इसके लिए बहुत मजबूत सबूत मिलते हैं कि यह गलत है। तब यह रूपक बन जाता है, के अनुसार
इस्लाम और मुसलमान। पुस्तक में जो कुछ बताया गया है वह सभी पुराने के लिए वैज्ञानिक तथ्य था
मंडलियों और अनुयायियों, और पुराने समय में उनके विद्वानों के लिए। फिर - के बजाय
जाँच कर रहा था कि क्या गलत था - प्रत्येक गलत तथ्य को क्रमिक रूप से समझाया गया था या
इसके गलत होने के सबूत बहुत मजबूत होने के कुछ साल बाद इसका नाम बदलकर "रूपक" कर दिया गया। आज

कुरान में बहुत कुछ "रूपक" हैं (अलग अध्याय भी देखें)। समझाना बेहतर है
चीजें दूर हैं, इस संभावना का सामना करने के लिए कि कुछ गलत हो सकता है। यह चेहरे में भी
मुसलमानों को अगले जन्म में भयानक परिणाम मिल सकते हैं, यदि इस्लाम एक बना हुआ धर्म है -
और इससे भी अधिक यदि कोई वास्तविक ईश्वर कहीं मौजूद है, एक ईश्वर है तो उन्हें इस संभावना से वंचित कर दिया गया है
खोजने के लिए।

भाग I, अध्याय 14 (= I-14-0-0)

खंडन और बदनाम करने का प्रयास http://www.1000mistakes.com BY मुसलमान और इस्लाम

(भाग १, अध्याय १ - १४ = इस्लाम के कुछ विशेष पहलू जैसा कि कुरान में बताया गया है - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

www.1000.mistakes.com अब (शरद ऋतु 2009 ई.) नेट पर एक साल हो गया है।

मुसलमानों से हमें जो पहली प्रतिक्रियाएँ मिलीं, वे कितनी गलत थीं, इस बारे में दस्तावेजी बयान नहीं थे
हम थे, साथ ही कई दावे - प्रलेखित नहीं - उन्होंने जो कहा वह सही था। कौन कौन से
सही नहीं थे।

इसके बाद मौत की चेतावनियों का बारीकी से पालन किया गया। उन तथ्यों को लाने वाले को मारना बेहतर है जो आप नहीं करते हैं
जैसे, चीजों को सोचने के बजाय - - - और शायद आपको अपने कुछ पुराने विश्वासों पर सवाल उठाना पड़े।
बिना किसी सबूत या दस्तावेज के दूसरों ने आपको जो बताया है, उसके अलावा किसी और चीज पर विश्वास नहीं बनाया गया है
कुछ भी। वास्तविकता में विश्वास केवल उस व्यक्ति के शब्दों पर निर्मित होते हैं जो इस्लाम के अनुसार एक था
चोर / लुटेरा, जबरन वसूली करने वाला, महिला बनाने वाला, पीडोफिल, गुलाम, अत्याचारी, बलात्कारी, अत्याचारी, हत्यारा
सामूहिक हत्यारा, नफरत फैलाने वाला, युद्ध करने वाला, एक आदमी जिसने अल-तकिया (वैध) को संस्थागत रूप दिया
झूठ) और किटमैन (वैध अर्ध-सत्य), एक ऐसा व्यक्ति जिसका नारा था कि "युद्ध छल है"
(मुहम्मद इब्न इशाक) और जिन्होंने घोषणा की कि अगर कोई शपथ देता है तो उसे भी तोड़ देना चाहिए
बेहतर परिणाम, सत्ता पसंद करने वाले व्यक्ति का उल्लेख नहीं करना - आपको यह सब कुरान और में मिलता है
सही हदीस।

इस तरह की धमकियाँ इस बारे में मात्राएँ बताती हैं कि इस्लाम कितना शांतिपूर्ण युद्ध धर्म - यह भी दावा करता है कि "यह"
शांति का धर्म" - है। यह इस्लाम के अच्छे तर्कों की कमी के बारे में भी बताता है - यदि आप
तर्क अच्छे हों, वाद-विवाद जीतने के लिए प्रतिद्वंद्वी को मारना आवश्यक नहीं है।

अगला कदम यह था कि http://www.1000mistakes.com के सन्दर्भों को बहुतों पर ब्लॉक कर दिया गया था
मुस्लिम इंटरनेट पेज - बहस के लिए पेज पर भी। कुरान के अनुसार आप नहीं करेंगे
उन विषयों पर चर्चा करें जो आपको दूसरे विचार दे सकते हैं - अंधा विश्वास और सुनना
अनिर्दिष्ट "सही" दावे बहुत बेहतर हैं।

फिर इस वसंत (2009) में कुछ दिलचस्प हुआ: इस्लामिक संगठनों को भेजा गया
9 खतरनाक इंटरनेट पेजों के बारे में चेतावनियां कवर करें - लेकिन निश्चित रूप से एक रिसाव था और यह

इंटरनेट पर समाप्त हो गया। उस सूची में http://www.1000mistakes.com था - और यह केवल 3 . में से एक था
वे पृष्ठ जिन्हें उन्होंने न तो "नफरत पृष्ठ" कहा और न ही यह दावा किया कि उद्धरण या तथ्य गलत थे। वे
केवल पृष्ठ के खिलाफ सख्ती से चेतावनी दी, क्योंकि यह विशेष रूप से इस्लाम में नए रंगरूटों का कारण बन सकता है
उनका विश्वास खो दिया।

2 कारणों से दिलचस्प: 1))। यही वह समूह है जिसे हम प्राथमिक रूप से पहुँचने का प्रयास करते हैं। 2))। चेतावनी
दिखाता है कि पृष्ठ काटता है।

और अब हमने पेंच के एक नए मोड़ की खोज की है: इंटरनेट पेज जो खंडन करने की कोशिश कर रहे हैं
http://www.1000mistakes.com।

एफ. पूर्व. एक गरीब आत्मा चिल्ला रही है: "इस साइट का खंडन कहाँ किया गया है? - क्या कोई मुस्लिम है?
भाई जिसने इन बातों का खंडन किया या वेबसाइट?"।

अब सच्चाई क्या है यह जानने के लिए मदद के लिए चीखना-चिल्लाना एक बात है। लेकिन अगर आप केवल चिल्लाते हैं
खंडन करते हुए, आपको केवल वही उत्तर मिलते हैं जिनके आप हकदार हैं - और विशेष रूप से यदि आप केवल अधिक या कम कॉल करते हैं
पेशेवर व्याख्याकार-दूर-दर्दनाक-वास्तविकताएं।

और सुखदायक उत्तर हैं। मुसलमानों के कुछ समूहों के लिए विशिष्ट उत्तर: बहुत सारे शब्द,
लेकिन ढीले शब्द। बहुत समझाते हैं कि इसे अलग तरह से समझा जाना चाहिए क्योंकि सादा
अर्थ वह नहीं है जो कुरान का वास्तव में अर्थ है। इसके लिए बहुत सारे दावे यह और यह स्पष्ट
अर्थ, एक छिपा हुआ अर्थ है - एक रूपक या कुछ और है - यही वास्तविक अर्थ है - - -
इसके बावजूद कुरान में अल्लाह कहता है कि पुस्तक में स्पष्ट और आसान पाठ है
अर्थ, और यह कि केवल "दिल के बीमार" छिपे हुए अर्थों की तलाश करते हैं क्योंकि वे केवल
अल्लाह समझ सकता है। अर्थात। अल्लाह बताता है कि कुरान स्पष्ट रूप से जो अर्थ व्यक्त करता है, वही है
कुरान का अर्थ है।

लेकिन गलत सूचना को रूपक, आदि कहना सभी समान रूप से सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले इस्लामी अंतिम में से एक है
अस्पष्ट और गलत को समझाने के लिए रिसॉर्ट्स - आप इसे बहुत बार मिलते हैं।

यहां एक दिलचस्प और सबसे महत्वपूर्ण तथ्य भी देखा जाना चाहिए: ऐसे मामलों में मुसलमान नहीं करते हैं
हमेशा (इसे कम से कम कहने के लिए) उनकी जानकारी को बहुत अच्छी तरह से जांचें - न तो "समझाते समय"
न ही सुनते समय। जब तक सतह पर स्पष्टीकरण या व्याख्या दूर दिख सकती है
ठीक है, सीधे चेहरे से कहा जाता है कि "यह सच है" - "ऐसा हो सकता है" भी नहीं, बल्कि "यह"
इस तरह है" - और फिर कुछ सवालों के साथ स्वीकार किया, लेकिन राहत के साथ, पवित्र श्रोताओं द्वारा जो
चाहता है और चाहता है कि यह सच हो।

हाँ, हम इस मुस्लिम अन्य विशेषता को लगभग भूल ही चुके थे: बिल्कुल सही वैज्ञानिक का उपयोग न करना
तथ्य और बिल्कुल सही तर्क नहीं।

अब हम इस पर अधिक ध्यान नहीं देंगे, हालांकि हम इसके बारे में अध्याय में इसका थोड़ा सा उपयोग करेंगे
इस्लाम पर बहस करते समय मुसलमानों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली वाद-विवाद की संदिग्ध तकनीकें
अगला - और अंतिम - संस्करण 2010 ईस्वी में कुछ समय (पूर्ण संस्करण)।

1. ईमानदारी से वह / वह जो धर्म जैसे गंभीर प्रश्न में सत्य की मांग नहीं करता, बल्कि केवल
   उन तथ्यों का खंडन करना जो किसी को पसंद नहीं है, जो जवाब मिलता है उसका हकदार होता है।
2. वह जो आँख बंद करके विश्वास करता है और सत्य क्या है और क्या नहीं यह जानने की कोशिश करने से परहेज करता है
   केवल वही जो पुराने लोगों ने बताया है, और जो परिणामस्वरूप सत्य होने की कामना करता है, वह योग्य है
   अगले जन्म में जागने के लिए - यदि ऐसा मौजूद है। खासकर अगर वह गलत था और जाग गया था
   गलत जगह।

3. और वह या वह जो शीर्ष पर कमोबेश पेशेवर व्याख्याताओं को कॉल करता है-सच से दूर-
   जानकारी, और भी अधिक वे उत्तर प्राप्त करते हैं जिनके वे हकदार हैं - यहां तक कि दूसरी शक्ति के लिए भी।
4. और जो लोग इस तरह की व्याख्याओं पर विश्वास करते हैं, वे एक-एक टुकड़े की जांच किए बिना दूर हो जाते हैं
   अनिर्दिष्ट दावे, भले ही वे जानते हों कि ऐसे मामलों में मुसलमान कितने बेईमान हो सकते हैं,
   और यह जानते हुए कि अल-तकिया और किटमैन को न केवल अनुमति है, बल्कि ऐसे में अनिवार्य है
   यदि धर्म की रक्षा करना या उसे आगे बढ़ाना आवश्यक हो, तो वह और भी अधिक योग्य है - हम नहीं
   यह भी जानते हैं कि किस शक्ति को।

हम आपको सीधी जानकारी देते हैं, और आपको बताते हैं कि कहां और क्या देखना है। इसे जांचें यदि आप
सत्य की खोज करना चाहते हैं। यदि आप केवल अपनी इच्छाधारी सोच को मजबूत करना चाहते हैं, तो कॉल करें
खंडन। और हम ऐसी चीजों पर समय बर्बाद नहीं करना चाहते - कम से कम अभी तो नहीं। शायद
जब यह पुस्तक 2010 ई. में कुछ समय के लिए समाप्त हुई। यदि आपके पास आवश्यक दिमागी शक्ति है, तो
हमारी जानकारी और तथ्यों की जांच करें और स्वयं सोचें। अगर आप केवल अपने को मजबूत करना चाहते हैं
इच्छाधारी सोच - सही या गलत - फिर कुछ कम या ज्यादा ईमानदार "बड़े भाई" को बुलाओ
परेशान करने वाले तथ्यों की व्याख्या करें - लेकिन तथ्य - आपके लिए दूर।

**यदि आप वास्तव में सत्य की तलाश में हैं, तो हमारी जानकारी देखें। लेकिन
मुसलमानों के "अस्वीकार" की जाँच करें और भी बेहतर, जहाँ तक यह बहुत अधिक है
अमान्य दावों या गलत तथ्यों के आधार पर, अर्धसत्य, या
सही तथ्यों का ट्विस्ट। आपको इस पर हम पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है - बस
अपने आप को अच्छी तरह से जांचें।**

ठीक है, जैसा कि कहा गया है, हम अपने में समझाने और "खंडन" के कुछ "फूलों" का उपयोग करेंगे
भविष्य के अध्याय में इस्लाम और अन्य धर्मों की गम्भीर और बेईमान बहस के बारे में
मुसलमान। लेकिन हम "खंडन" के स्तर को दिखाने के लिए यहां कुछ जोड़ते हैं:

1. एक विरासत लेता है और भागों को बनने का प्रबंधन करता है = 1. और वोइला, वहाँ हैं
   कुरान में विरासत के कानूनों के बारे में कोई सवाल नहीं; "वे सही हैं" - - - कोई बात नहीं
   तथ्य यह है कि इन कानूनों द्वारा बनाई गई सभी समस्याओं पर मुस्लिम लेवीर्स अच्छा पैसा कमाते हैं। अमान्य
   तर्क।
2. मुहम्मद ने जॉन के बाद सुसमाचार में भविष्यवाणी की। इस बारे में हमने अध्याय में चर्चा की है
   बाइबिल में मुहम्मद, और इसे यहां नहीं दोहराएंगे - वह अध्याय देखें। लेकिन यह बहुतों को बताता है
   पुस्तिकाएं कि इस्लाम इससे बेहतर दावा नहीं ढूंढ पाया है: जब यीशु ने अपना वादा किया था
   प्रेरित एक सहायक - सत्य की आत्मा - जो उनकी मदद करने और उनके साथ रहने के लिए आएगी और
   उनमें हो और दुनिया के लिए अदृश्य हो, वह "मुहम्मद का मतलब होना चाहिए" - जो पैदा हुआ था
   उनके मरने के ५०० साल बाद, उनके साथ नहीं थे, उनमें नहीं थे, अदृश्य से दूर थे
   दुनिया जब हा अंत में पैदा हुई थी - - और सच्चाई की भावना से बहुत दूर थी (वास्तविक
   मुहम्मद अर्ध-संत मुसलमानों के दावे से बहुत दूर थे)।
3. कुरान 7 आसमानों के बारे में बात करता है "एक के ऊपर एक"। प्रिय व्याख्याताओं में से एक-दूर
   भले ही ब्रह्माण्ड के लिए अरब शब्द का प्रयोग न किया गया हो, लेकिन चुपके से उसे 7 ब्रह्मांडों में बदल देता है
   यहां। हमें उसे यह भी याद दिलाना चाहिए कि आकाश अदृश्य स्तंभों द्वारा वहाँ रखा गया है,
   कुरान के अनुसार। और एफ. पूर्व कि मूह आकाश के बीच है - इसमें
   "अनुवाद" जिसका अर्थ है कि कम से कम एक ब्रह्मांड - न केवल एक स्वर्ग, बल्कि एक ब्रह्मांड है
   हमारे और हमारे लूना के बीच - हमारा चाँद। कई मुस्लिम फंतासी तदर्थ में से केवल एक और
   "स्पष्टीकरण" जहां कोई बहुत ज्ञान या अल-तकिया के बिना सोचता है कि वे सोचते हैं
   एक अच्छा विचार पाया है और फिर सपाट हो गया है क्योंकि वे तस्वीर के कुछ पहलुओं को भूल जाते हैं:
   उसका एफ. भूतपूर्व। ब्रह्मांड के लिए लापता अरब शब्द, यह दावा करने में निराशाजनक अक्षमता कि कम से कम
   फिर एक ब्रह्मांड को हमारे और चंद्रमा के बीच रखना होगा। उल्लेख नहीं है कि यह पूरी तरह से अन-
   वैज्ञानिक - खगोल विज्ञान का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों के पास कई अजीब विचार हैं, लेकिन उनमें से एक भी नहीं है
   कभी इस तरह के एक सिद्धांत को प्रसारित किया है। इस व्याख्याता-दूर ने कम से कम एक छोटे से बेहतर उत्पादन किया था
   उनके "स्वर्ग" को ब्रह्मांड में बदलने का प्रमाण, आदि।

47

पेज 48

4. फिर वहाँ है अच्छे पुराने बिग बैंग थ्योरी का एक बार फिर से उपयोग - हमारी गलतियों की सूची देखें। प्रति
   बिग बैंग को २१/३० से जोड़ना तभी संभव है जब उन लोगों से बात की जाए जिनके बारे में कुछ भी नहीं पता है
   खगोल विज्ञान। दस्तावेज़ीकरण के बिना एक और ढीला दावा - और मजबूत विरोधाभास में
   विज्ञान।
5. "यदि पृथ्वी सूर्य के निकट होती, तो तापमान में तेजी से वृद्धि होती।" गलत। यह उठाएगा
   धीरे-धीरे - और रहने योग्य क्षेत्र हमारे सूर्य को घेर लेता है यदि अन्य शर्तें होतीं
   अनुकूल (इस तरह खगोलविद इस अभिव्यक्ति को परिभाषित करते हैं) शुक्र के थोड़ा अंदर से . तक चलता है
   पिछले मंगल - मार्जिन विशाल हैं।

6. "केवल भूमध्य रेखा के पास थोड़ा कम और ध्रुवों के पास थोड़ा अधिक होगा। इसके आलावा:
जब महासागर अपने आप में समा गए तो इसे कहाँ जाना चाहिए? - इसे अपने मस्तिष्क का उपयोग करने की अनुमति है।
(एकमात्र मामला जहां पानी शायद - शायद - गायब हो जाएगा, अगर पृथ्वी के पास
साल में एक बार घूमता है, और इस तरह से कि एक ही तरफ हर समय सूरज का सामना करना पड़ता है
("लॉक" स्पिन)। पानी तब बर्फ और बर्फ के रूप में दूर की ओर की तुलना में बस जाएगा
रवि। लेकिन क्या यह सब वहाँ बर्फ के रूप में रहेगा, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि क्या स्पिन था
पूरी तरह से बंद है, या अगर यह डगमगाता है, और एक ग्रह के पास कितना पानी है - यदि उसके पास बहुत कुछ है, तो
बर्फ की परत मोटी हो जाएगी, और धीरे-धीरे हिलना शुरू हो जाएगी, और वह एकमात्र जगह है जहां वह हिल सकती है, है
निचले स्थानों की ओर = उन स्थानों की ओर जहां बर्फ गायब हो गई है - और गायब हो गई है - क्योंकि यह
पानी में पिघल गया है।)
7. "पृथ्वी का झुकाव (झुकाव) 33 डिग्री है।" दूर तक गलत। वर्तमान में यह 23.4 डिग्री है, लेकिन
वर्षों में कुछ डिग्री धीरे-धीरे बदलता है - हालांकि कभी भी 33 डिग्री नहीं।
8. "पृथ्वी के झुकाव का परिणाम जो मौसम है, वह निवास को संभव बनाता है"। अधिक
कचरा - एफ। भूतपूर्व। उष्ण कटिबंध में विशाल बस्तियाँ हैं जहाँ लगभग कोई मौसम नहीं है
अर्थ तापमान का बड़ा परिवर्तन (जो कि झुकाव का कारण बनता है)। यह है
अपने मस्तिष्क का उपयोग करने की अनुमति।
9. यदि कोई झुकाव (झुकाव) नहीं होता "डंडे स्थिर अंधेरे और ठंडे होते और
पानी वहां जम जाएगा और दूसरी जगहों से गायब हो जाएगा" (कम से कम अर्थ है
सही ढंग से उद्धृत, यदि शब्द नहीं हैं)। बकवास।
   1. उस स्थिति में ध्रुवों पर पड़ने वाले प्रकाश के दो प्रभाव होते हैं। कोई है
   ज्यामिति: एक बड़ा दीपक गोधूलि का कारण होगा या बहुत सुबह का प्रकाश हो सकता है
   ऐसे मामलों में एक छोटी गेंद के डंडे। और एक ग्रह की तुलना में एक सूर्य एक बड़ा दीपक है।
   2. अपवर्तन जोड़ें - वायुमंडल में प्रकाश का झुकना - और सूर्य होगा
   एक ही समय में दोनों ध्रुवों पर क्षितिज पर कम। जिसका अर्थ है ध्रुव दोनों
   मामले में स्थायी दिन का उजाला होगा, तर्क के बिल्कुल विपरीत
   हमारे सम्मानित व्याख्याता-दूर। यदि आप नहीं करते हैं तो आप भौतिकी के प्रोफेसर से संपर्क करें
   इसपर विश्वास करो।
   3. और जहां तक ध्रुवों पर बर्फ बनने वाला सारा पानी है - क्या कोई व्याख्याकर्ता दूर है
   वह जानता है कि ऐसा क्यों नहीं होगा? आखिर प्रकृति ने बार-बार यह साबित किया है कि
   ऐसा नहीं होता है - प्रत्येक भूगर्भीय हिम काल ने यह साबित किया है, यहां तक कि
   विशाल "स्नोबॉल अर्थ" 700 मिलियन वर्ष पहले - जैसा कि कहा गया है कि इसे आपके मस्तिष्क का उपयोग करने की अनुमति है
   और इसे अपने ज्ञान के साथ जोड़ो। कारण बहुत सरल है, लेकिन क्या इनमें से कोई भी
   या तो कम बुद्धिमान या अल-ताकिया व्याख्याकार-दूर जानते हैं कि दावा गलत क्यों है?

खैर, अभी के लिए इतना ही काफी है। हम कुछ इस्लामिकों का कत्ल थोड़ा और करने जा रहे हैं
तर्क और वैज्ञानिक तथ्यों का दुरुपयोग और वाद-विवाद में ईमानदारी की कमी/अल-तकिया का उपयोग
मुस्लिम बहस के बारे में अध्याय, जो कुछ समय के लिए अन्य अंतिम अध्यायों के साथ आएगा
2010 ई. के दौरान

लेकिन सिर्फ एक छोटी सी बात:

कुरान बताता है कि अल्लाह सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है। यह भी बताता है कि अल्लाह विश्वसनीय है और
बुद्धिमान। और अल्लाह कुरआन में बताता है कि उसने एक ऐसी किताब उतारी है जो सीधी और आसान है
समझें - सीधी भाषा के साथ। वह यह भी बताते हैं कि इसे अक्षरशः समझना है - यह केवल के लिए है
अल्लाह छिपे हुए अर्थों को देखने के लिए (हाँ, और उनके लिए "उनके दिल में एक बीमारी के साथ")।

**क्या आप वाकई मानते हैं कि ऐसी परिस्थितियों में ऐसे भगवान की इतनी बड़ी जांच होती है?
सही शब्दों को खोजने के साथ वास्तव में उसका क्या मतलब है? - और वह मात्र
इंसानों को बार-बार उसकी मदद करनी पड़ती है और समझाना पड़ता है कि वह क्या कर रहा है
"वास्तव में" का अर्थ है? इतनी छोटी सी किताब में सैकड़ों बार?**

यदि आप वास्तव में ऐसी बात पर विश्वास करने में सक्षम हैं - भोलापन या इच्छाधारी सोच से - तो आपका
मस्तिष्क या तो इतना खाली है या इतना आलसी है कि आप वास्तव में उत्तर के लायक हैं व्याख्याकार दूर हैं
सम्मोहित करने में सक्षम।

लेकिन यह विधर्म है और किसी भी देवता और उसके मस्तिष्क का अपमान है।

भाग II, अध्याय 1, उपअध्याय 1 (= II-1-1-0)

सभी गलतियाँ करें, त्रुटियाँ करें, विरोधाभास, आदि। 110% साबित करें या सिर्फ 100% कि कुछ है मुहम्मद के साथ गलत, थे कुरान, इस्लाम - और शायद अल्लाह?

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

एक बात निश्चित है: एक सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है। एक और बात जो निश्चित है, वह है
कि एक सर्वज्ञानी ईश्वर स्वयं का खंडन नहीं करता है या अन्य विरोधाभास नहीं करता है। अभी तक एक और
जो बात पक्की है वह यह है कि एक सर्वज्ञानी भगवान को कोशिश करने और असफल होने की जरूरत नहीं है - वह जानता है
बहुत शुरुआत जो सबसे अच्छा है। वही समय-समय पर अपना मन बदलने के लिए जाता है - an
सर्वज्ञ भगवान शुरू से ही जानता है कि वह क्या चाहता है और पसंद करता है और सर्वोत्तम समाधान और क्या
नियम और कानून सबसे अच्छा काम करेंगे।

यह उल्लेख करने के लिए कि एक अच्छा और परोपकारी भगवान पहले से ही लोगों को नर्क की निंदा नहीं करता है
वे पैदा होते हैं और खुद को बचाने के मौके के बिना, जैसा कि कुरान बताता है। वह भी नहीं
किसी के साथी की चोरी/लूट, दमन, बलात्कार, हत्या आदि जैसे अन्याय का उपदेश देना

मनुष्य। इसके अलावा किसी भी अच्छे और परोपकारी भगवान का नैतिक कोडेक्स लगभग इस तरह होता है: "विरुद्ध करो
आप जैसे दूसरे चाहते हैं कि दूसरे आपके खिलाफ करें"।

वैसे ही कुरान अविश्वसनीय रूप से गलत तथ्यों और अन्य गलतियों से भरा है - अलग देखें
अध्याय यह मुहम्मद, कुरान, मुसलमानों और इस्लाम के लिए एक सीधा विरोधाभास है
दावा (हमेशा की तरह बिना किसी दस्तावेज के)। इससे भी बदतर: पूर्णता का यह गलत दावा
वे इस बात के प्रमाण के रूप में उपयोग करने का प्रयास करते हैं कि पुस्तक एक ईश्वर द्वारा बनाई गई है। फिर क्या करता है सारी गलतियाँ
हकीकत में साबित? बेशक कुरान किसी ईश्वर ने नहीं बनाया है - यही वजह है कि
मुसलमान और इस्लाम किताब में एक भी गलती स्वीकार नहीं कर सकते, चाहे कितनी भी "दूर" क्यों न हो
उनके कई "व्याख्या" हैं; अगर एक भी गलती है, तो कुछ गलत है
धर्म। (और वही सब: मुस्लिम विद्वान मानते हैं कि कुछ आयतें गलत होनी चाहिए -
अलग अध्याय देखें)।

एक अतिरिक्त टाइट-बिट यह है कि कई गलतियाँ और कुछ अन्य विचार, के अनुसार हैं
गलत विज्ञान के साथ मुहम्मद के समय में इस क्षेत्र में विश्वास किया जाता था। कोई सर्वज्ञ और
ईथर ईश्वर को आदिम समय से गलत विज्ञान का पालन करना पड़ता है और एक आदिम लोगों को एक
पृथ्वी का छोटा सा हिस्सा - बहती मध्यम आकाशगंगा के एक अस्पष्ट कोने में एक छोटा ग्रह
ब्रह्मांड में कहीं और कुछ अरबों के बीच। जरूर कुछ गलत भी है
यहां।

साथ ही कुरान अंतर्विरोधों से भरा है - अलग-अलग अध्याय देखें। कुछ सैकड़ों हैं
आंतरिक अंतर्विरोध - कुरान खुद का खंडन करता है। बहुत सारे विरोधाभास हैं
वास्तविकता और तथ्य। और बाइबल में बहुत से विरोधाभास हैं। एक हो सकता है पोह-पोह
बाइबिल की तुलना में मतभेद, क्योंकि वह अन्य धर्मों का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन यह अधिक गंभीर है
कई लोगों की तुलना में। ऐसा इसलिए है क्योंकि कुरान और इस्लाम बताते हैं कि बाइबिल के पैगंबर जुसल थे
मुहम्मद के लिए फौटनर्स, और कोई भी भगवान नबियों के अपने लंबे उत्तराधिकार को अलग नहीं बताएगा
उन्हीं चीजों और तथ्यों के बारे में कहानियां। यह बाइबिल से स्पष्ट है - अलग पढ़ें

भविष्यद्वक्ता, और तुम स्पष्ट रेखाएं पाओगे। और फिर अचानक मुहम्मद है - बाहर चिपके हुए
सभी टूटी हुई रेखाओं और मतभेदों और गलतियों के कारण, गले में खराश में दांत-इक्का की तरह
पुराने नबियों के संदेशों की तुलना में। और याद रखें: मुसलमानों के अनुसार दावा किया गया
अंतर्विरोधों की कमी इस बात का प्रमाण है कि कुरान सर्वज्ञ ईश्वर अल्लाह की ओर से आया है। NS
तथ्य यह है कि सभी समान कई विरोधाभास हैं, परिणामतः यह साबित करता है कि पुस्तक करता है
ऐसे भगवान से नहीं आते।

साथ ही एक सर्वज्ञ भगवान के पास इतना ज्ञान होता है कि उसे अपना मन बदलने की जरूरत नहीं पड़ती
समय-समय पर जब उसे अधिक जानकारी या नए आवेग मिलते हैं - यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि वह
ज्ञान से इतना भरा है, कि उसे कोशिश करने और असफल होने की ज़रूरत नहीं है और यह सीखना है कि इस तरह से सबसे अच्छा क्या है।
इसके लिए एक और 100% मुहम्मद, कुरान के साथ कुछ गलत है, और कम से कम नहीं
इस्लाम।

इसके अलावा अनिर्दिष्ट दावा है कि अल्लाह अच्छा और उदार है, बहुत स्पष्ट रूप से गलत है -
बस शरीयत - इस्लामी कानून - और इसकी ज्यादतियों, जिहाद और इसके कई अमानवीय और के बारे में पढ़ें
अनैतिक नियम, सभी गैर-मुस्लिमों के दमन के बारे में, चोरी और लूट और बलात्कार के बारे में
"अच्छा और वैध" होने के नाते और जब आप बलात्कार करते हैं तो आपको "सहसंबंध इंटरप्टस" का अभ्यास नहीं करना चाहिए
कैदियों, क्योंकि यह अल्लाह के लिए तय करना है कि बाद में बच्चा होना है या नहीं (क्या आप विरोध करते हैं?
- कुरान पढ़ें और आप इसे वहां पाएंगे), सभी रंगभेद, नफरत फैलाने का उल्लेख नहीं करने के लिए,
और गर्मजोशी। और नर्क के लिए लोगों (और जिन्नों) को बनाना, की कमी का उल्लेख नहीं करना
असली नैतिक, इसके ऊपर आता है। कुरान किसी अच्छे और परोपकारी ईश्वर की ओर से नहीं है। से संबंधित
नैतिक, एकमात्र नैतिक कोडेक्स मुसलमानों और इस्लाम और कुरान के पास है: "क्या किया?

मुहम्मद ऐसे मामलों में या उसके बारे में कहते हैं या करते हैं" - और मुहम्मद कुल मिलाकर बहुत अनैतिक थे
कई बिंदुओं पर बीमार नैतिक व्यक्ति।

इनमें से प्रत्येक बिंदु 100% साबित करता है कि कुछ गंभीर रूप से गलत है
- और एक साथ रखें 110% सबूत काफी कम होना चाहिए।

और फिर हमने 4 या 5 मेगा गलतियों का भी उल्लेख नहीं किया है (5 यदि आप गिनती नहीं करते हैं
अन्य सभी गलतियों के साथ विरोधाभास, 4 यदि आप करते हैं)। अलग अध्याय देखें।

भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 2, खंड 1 (= II-1-2-1)

मेगा गलती 1, भाग 1, में कुरान

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलतियाँ नहीं करता, आदि)

1. भाग II = कुरान में गलतियाँ।
2. अध्याय 1 = कुरान में गलत तथ्य।
3. उपअध्याय 2 = 5 मेगा गलतियाँ, कुछ विवरण। (सारांश खंड 4 में है)।
4. धारा 1 = कुछ गलत विवरण/नमूने पृथ्वी के बारे में।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस उप-अध्याय में ये खंड हैं - 5 मेगा गलतियाँ - (और भी होनी चाहिए
खंड, क्योंकि कुरान में कई और प्रकार की गलतियाँ और त्रुटियाँ हैं, लेकिन इन नमूनों को होना चाहिए
यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि यह किस बारे में है):

1. खंड 1: गलत तथ्यों के कुछ नमूने

पृथ्वी के बारे में (यह खंड)।
2. धारा 2: गलत तथ्यों के कुछ नमूने
ब्रह्मांड के बारे में।
3. धारा 3: गलत तथ्यों के कुछ नमूने
मनुष्य और जानवरों के बारे में - सृजन, जीवन, और
जी उठने।
4. धारा 4: 5 बड़ी गलतियाँ जो होनी चाहिए
इस्लाम को मार डालो - अगर खुफिया गिना जाता है।

("सभी" गलत तथ्यों को खोजने के लिए जो मेगा मिस्टेक 1 तक ले जाते हैं, उपचैप्टर 3, 16 . पढ़ें
विषयों द्वारा व्यवस्थित कुरान में गलत तथ्यों के बारे में अनुभाग। और "सब" खोजने के लिए
इस मागा गलती के कारण होने वाली गलतियाँ, इसके सभी अध्यायों के साथ पूरा भाग II पढ़ें,
उप-अध्याय, और अनुभाग (II-8-1, II-8-2, और II-9 को छोड़कर जो मेगा मिस्टेक 2 की ओर ले जाता है)

51

पेज 52

1. मूल रूप से आकाश और पृथ्वी - या पृथ्वी - धुएं की तरह था (सूरह 41/11)। खैर, विज्ञान कहते हैं पृथ्वी और आकाश/आकाश कभी नहीं धुएँ थे (= सूक्ष्म कण "फ्लोटिंग" या गैस में बिखरा हुआ)। स्थिति सबसे करीब उसी के समान पहले कुछ 300.000 . था (380ooo?) बिग बैंग के कुछ साल बाद लगभग 13.7 अरब साल पहले - पहले सितारों से पहले दिखाई दिया। लेकिन एक बात के लिए तो यह केवल था गैस (हाइड्रोजन और थोड़ा हीलियम) और नहीं धुआँ - कोई कण नहीं - और दूसरी चीज़ के लिए कोई पृथ्वी नहीं थी। हमारी पृथ्वी की है 3. सितारों और ग्रहों की पीढ़ी, और लगभग 4.6 अरब साल पहले दिखाई दिया (4.57 .) नवीनतम वैज्ञानिक जानकारी के अनुसार), बिट्स और पत्थर, धातु के टुकड़ों से बना, खनिज, आदि आदि, शून्य में फेंक दिए गए पुराने सितारों के विस्फोट से - सुपरनोवा - at कम से कम दो बार खत्म। का एकत्रीकरण कंकड़ और पत्थर के टुकड़ों से सब कुछ या अयस्क या धातु या कुछ भी, बड़े शिलाखंडों को, धूमकेतु, क्षुद्रग्रह और यहां तक कि ग्रह - मिनी ग्रह - धीरे-धीरे पृथ्वी का निर्माण किया। हम अभी भी बची हुई निर्माण सामग्री देख सकते हैं वहाँ चारों ओर बिखरे हुए: उल्का, धूमकेतु, और कुइपर बेल्ट और ऊर्ट के बादल भी - रेत और कंकड़ के दाने से सब कुछ से अधिक के व्यास वाले छोटे ग्रहों के लिए 2000 किलोमीटर। और यह निश्चित रूप से नहीं है धूम्रपान, भी। गलत।
2. फिर अल्लाह ने आसमान और धरती से कहा: "आओ एक साथ - - -", (41/11)। लेकिन विज्ञान बताता है कि पृथ्वी और आकाश - ब्रह्मांड - सभी 4.57 बिलियन के लिए कभी एक साथ नहीं आए पृथ्वी के अस्तित्व में आए वर्ष - और भी बुरा; बिग बैंग के बाद से कभी नहीं 13.7 अरब साल पहले। इसके विपरीत; NS ब्रह्मांड का विस्तार हो रहा है, और लगभग सब कुछ तेजी से दूर हो रहा है लगभग सब कुछ, बिग के बाद से बैंग - पृथ्वी के जन्म से बहुत पहले। गलत।
3. आकाश और पृथ्वी तब जुड़ गए थे एक साथ "सृष्टि की एक इकाई के रूप में" (21/30), अल्लाह के सामने उन्हें अलग कर दो (21/30)। NS कुरान कब तारे आदि के बारे में कुछ नहीं कहता है।

पृथ्वी से अलग हो गए थे - और विज्ञान यह कहता है
कहानी गलत है, कम से कम कहने के लिए
यह। पृथ्वी कभी भी आपस में जुड़ी नहीं थी
की एक इकाई के रूप में आकाश या ब्रह्मांड के साथ

सृजन (वह समय जब यह स्थिति थी,
कभी-कभी अशिक्षित मुसलमानों द्वारा दावा किया जाता है
बिग बैंग से पहले था - लेकिन बिग से पहले
बैंग और 9.1 अरब से अधिक वर्षों के लिए
उसके बाद, एक साथ आने के लिए कोई पृथ्वी नहीं थी
साथ)।

4. ब्रह्मांड और पृथ्वी की रचना और
   पृथ्वी पर जितने भी हैं, उन्हें 6 दिन लगे,
   कुरान के अनुसार (7/54 - 25/59 - 32/4 -
   50/38 - 57/4) - या शायद 8 दिन, ए
   विरोधाभास (41/9-12)। (मुसलमान कोशिश करते हैं
   उस विरोधाभास को यह कहकर दूर करें कि
   2 दिन दोगुने गिने गए, लेकिन वह नहीं है
   कुरान क्या कहता है - और कोई फर्क नहीं पड़ता: 6 या 8
   दिन दोनों पूरी तरह से गलत हैं)। बात नहीं
   क्या "सही" समय 6 या 8 दिन है,
   उसमें और में बहुत बड़ा अंतर है
   13.7 अरब साल विज्ञान के बारे में बताता है,
   क्योंकि सृष्टि अभी भी जारी है। - और भी
   के 4.57 अरब वर्षों की तुलना में
   मनुष्य के साथ आने तक पृथ्वी का निर्माण।
   गलत।
5. कुरान भी परोक्ष रूप से, लेकिन स्पष्ट रूप से बताता है
   कि पृथ्वी पहले बनाई गई और ब्रह्मांड
   बाद में (41/9-12)। लेकिन विज्ञान इससे सहमत नहीं है।
   ब्रह्मांड - जिसे हम स्वर्ग के रूप में देखते हैं या
   फर्मामेंट - लगभग 9+ बिलियन वर्ष अस्तित्व में था
   पृथ्वी से पहले। गलत।
6. भौगोलिक दृष्टि से नर्क सबसे कम था (हालांकि यह है .)
   100% स्पष्ट नहीं है, क्योंकि कुछ स्थान हैं
   नर्क और के बीच निकटता का उल्लेख किया
   स्वर्ग) - नरक जिसके 7 द्वार की ओर जाते हैं
   नर्क के विभिन्न भाग, विभिन्न स्तरों के साथ
   असहनीय दर्द और उससे भी ज्यादा असहनीय
   दर्द, ज्यादातर आग और खराब भोजन से और
   पीना। कम से कम भूगोल गलत तो लगता है।
7. नरक के ऊपर पृथ्वी आती है, या वास्तव में
   पृथ्वी। क्योंकि कुरान कहता है कि अल्लाह
   7 पृथ्वी बनाई (65/12 एकमात्र स्थान है
   जहां सटीक संख्या का उल्लेख किया गया है, लेकिन
   कई अन्य स्थान हैं जहाँ पृथ्वी हैं
   बहुवचन में उल्लिखित)। कुरान अब और नहीं बताता
   अन्य पृथ्वी के बारे में, लेकिन हदीस (छोटा
   मुहम्मद और कुछ के बारे में या उनके बारे में कहानियाँ
   अपने निकटतम सहकर्मियों और निकटतम
   उत्तराधिकारियों - उन्होंने क्या कहा और क्या किया) -
   अल-बुखारी या इमाम जैसे पुरुषों द्वारा एकत्रित
   मुसलमान - कहते हैं हमारे नीचे पड़े हैं
   पृथ्वी (यदि आप काफी बुरे हैं, तो आप के अनुसार
   अल-बुखारी के माध्यम से भी नीचे गिर सकता है

पेज 54

कयामत के दिन पृथ्वी) और वे हैं
रहने वाले लोगों के लिए अधिक से अधिक नर्क की तरह
वहाँ, जितना नीचे तुम जाओगे। इस्लाम भी
विभिन्न पृथ्वी के नाम हैं: 1.
रमाका, २. खालादा, ३. अर्का, ४. हरबा, ५.
माल्थम, 6. सिज्जिन, 7. अजीबा। गलत। (एफ. पूर्व.
६/४५ और भी बहुत कुछ) अध्याय भी देखें
हेल प्रॉपर के बारे में, VIII/2/b.

8. हमारी पृथ्वी - और अन्य - समतल है/हैं। (और
जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, उन्हें एक रखा गया है
हदीस के अनुसार दूसरे के ऊपर। यह है
इतना स्पष्ट, कि इसका शायद ही उल्लेख किया गया हो
सीधे, लेकिन सभी चित्रों का उपयोग किया जाता है
पृथ्वी, किसी समतल वस्तु के चित्र हैं, और
विज्ञान एकमत है कि कुरान धरती में
समतल है (13/3 - 15/19 - 20/53 - 43/10 - 50/7 -
51/48 - 55/10 - 71/19 - 78/6 - 91/6)। कुंआ,
एक अनुवाद है (50 . से अधिक में से)
to English) जो कहता है कि पृथ्वी की तरह बनता है
एक अंडा - और 3 आयामों में (द्वारा अनुवादित
राशद खलीफा - इस्लाम भी वर्गीकृत नहीं करता
एक अच्छे अनुवादक के रूप में)। यह अक्सर होता है
मुसलमानों द्वारा उद्धृत किया गया है जो यह साबित करना चाहते हैं कि
कुरान सही है, लेकिन कोई मूल सिद्धांत नहीं है
अरब मूल में उस "अनुवाद" के लिए - it
गलत है (यह फ्लैट घोंसले के बारे में बताता है
जमीन पर शुतुरमुर्ग, जबकि राशदी
खलीफा दावा करना चुनता है कि इसका मतलब अंडा है)।
कोई भी अच्छा अनुवादक बात नहीं करता
एक सपाट पृथ्वी के अलावा कुछ भी। और जैसा कि कहा: All
गंभीर वैज्ञानिक एकमत हैं: कुरान में
पृथ्वी समतल है। गलत।

9. धरती पर अल्लाह पहाड़ (अरबी) बैठ गया
क्रिया को वास्तव में "ड्रॉप डाउन" कहा जाता है -
जैसे किसी लंगर को गिराने में - लेकिन ऐसा ही हो
मई) (16/15 - 21/31 - 41/10)। लेकिन एक के लिए
वह चीज जो कभी पहाड़ नहीं बनती - या गिराई नहीं जाती -
नीचे; वे बड़े हो जाते हैं। एक और बात के लिए
पहाड़ पृथ्वी को स्थिर नहीं करते - पर
इसके विपरीत यह की परत में असंतुलन है
धरती। तीसरी बात के लिए पहाड़ नहीं
पृथ्वी को हिलने से रोकें - इसके विपरीत
पहाड़ों का निर्माण पृथ्वी से जुड़ा है-
भूकंप और यहां तक कि एक बड़ी बर्फबारी भी
पहाड़ (अक्सर हिमपात होता है
पहाड़, लेकिन बारिश या और नीचे कुछ भी नहीं)
या एक बड़ी पहाड़ी झील में बड़ा परिवर्तन - या
एक बड़ा बांध - भूकंप का कारण बन सकता है
वजन में परिवर्तन - पहाड़ कभी कभी
क्या यह अस्थिर है। (एक और बात यह है कि यह हो सकता है

54

पेज 55

ऐसा लगता है कि मुहम्मद ने मुख्य रूप से नहीं सोचा था
भूकंप के बारे में, लेकिन पृथ्वी के बारे में ही
अस्थिर होना, ताकि यह बस शुरू हो सके
डगमगाना और पलटना (और आपको छोड़ देना?))। नहीं

बाद: गलत।

10. पृथ्वी पर नदियाँ हैं। हदीसें बताती हैं कि 2 बड़े लोगों में से - नील और महानद - स्वर्ग/स्वर्ग में शुरू करो। कहना गलत है इसमें से कम से कम।
11. पृथ्वी भी पौधों से भरी हुई है और जानवर - जोड़े में बनाई गई हर चीज (43/12, 51/49)। लेकिन पौधे और जानवर दोनों हैं जो केवल महिला में मौजूद है - ठीक कुछ तक छिपकली और कुछ मछलियाँ। और जब तुम आओ एक-कोशिका वाले प्राणियों के लिए, यदि कोई हो तो कुछ में 2 लिंग होते हैं। और एक-कोशिका वाले "प्राणी" अब तक सबसे अधिक हैं अनेक प्रकार और संख्या दोनों में। कोई भगवान जानता था।
12. बादलों की वर्षा से सब कुछ भर जाता है। वे टुकड़ों में टूट कर बारिश की बूंदों में। गलत: भाप के संघनन से बूँदें बनती हैं - हर भगवान जानता था।
13. और सब कुछ रात और दिन के अधीन है जो उनकी कक्षा का अनुसरण करते हैं (f.ex. 36/40)। परंतु विज्ञान कहता है कि दिन और रात निश्चित होते हैं और कोई कक्षा नहीं है - परिवर्तनों का कारण केवल इतना है कि पृथ्वी प्रकाश में घूमती है सूर्य से।

पृथ्वी का वर्णन किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया है जो ग्रह और उसकी रचना के बारे में बहुत कम जानता है। फिर कुरान किसने बनाया?

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 2, खंड 2 (= II-1-2-2)

मेगा गलती 1, भाग 2, में कुरान

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

1. भाग II = कुरान में गलतियाँ।
2. अध्याय 1 = कुरान में गलत तथ्य।
3. उपअध्याय 2 = 5 मेगा गलतियाँ, कुछ विवरण। (सारांश खंड 4 में है)।
4. धारा 2 = कुछ गलत विवरण/नमूने ब्रह्मांड के बारे में।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस उप-अध्याय में ये खंड हैं - 5 मेगा गलतियाँ - (और भी होनी चाहिए खंड, क्योंकि कुरान में कई और प्रकार की गलतियाँ और त्रुटियाँ हैं, लेकिन इन नमूनों को होना चाहिए यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि यह किस बारे में है):

1. खंड 1: गलत तथ्यों के कुछ नमूने पृथ्वी के बारे में (यह खंड)।
2. धारा 2: गलत तथ्यों के कुछ नमूने ब्रह्मांड के बारे में।
3. धारा 3: गलत तथ्यों के कुछ नमूने

मनुष्य और जानवरों के बारे में - सृजन, जीवन, और
जी उठना
4. धारा 4: 5 बड़ी गलतियाँ जो होनी चाहिए
इस्लाम को मार डालो - अगर खुफिया गिना जाता है।

("सभी" गलत तथ्यों को खोजने के लिए जो मेगा मिस्टेक 1 तक ले जाते हैं, उपचैप्टर 3, 16 . पढ़ें
विषयों द्वारा व्यवस्थित कुरान में गलत तथ्यों के बारे में अनुभाग। और "सब" खोजने के लिए
इस मागा गलती के कारण होने वाली गलतियाँ, इसके सभी अध्यायों के साथ पूरा भाग II पढ़ें,
उप-अध्याय, और अनुभाग (II-8-1, II-8-2, और II-9 को छोड़कर जो मेगा मिस्टेक 2 की ओर ले जाता है)

1. कुरान बताता है कि रात सूरज को छुपाती है (९१/४). लेकिन यह पृथ्वी है जो छुपाती है सूरज और रात बनाता है, के अनुसार विज्ञान और प्राथमिक विद्यालय के भूगोल के लिए। कोई भी शिशु देवता भी यह जानता था, लेकिन मुहम्मद नहीं। इसके अलावा: रात बस है धूप की कमी। किसी चीज की कमी नहीं हो सकती कुछ भी छुपाएं - और कम से कम की कमी धूप धूप को छुपा नहीं सकती। गलत। कुरान किसने बनाया?
2. जहां तक चंद्रमा की बात है तो यह कड़ाके की ठंड देता है ("अत्यधिक ठंड" अब्दुल्ला युसूफ को उद्धृत करने के लिए अली) (76/13)। ऐसा लग सकता है कि ठंड में, चांदनी रेगिस्तान की रातें। लेकिन विज्ञान ने पाया है कि चंद्रमा न तो ठंडा और न ही हीथ विकीर्ण करता है जिसे पृथ्वी पर महसूस किया जा सकता है। ठंड है पृथ्वी द्वारा अंतरिक्ष में अपनी गर्मी विकीर्ण करने के कारण जब कोई कूड्स नहीं हैं जो उस में बाधा डाल सकते हैं विकिरण। कोई भगवान जानता था।
3. इस सब के ऊपर स्वर्ग या आकाश है या चंदवा या छत की तरह फर्ममेंट (40/64 और अधिक वाले)। लेकिन विज्ञान ने पाया है कि ऊपर कोई छत्र नहीं है - केवल निर्वात। क्या दिखता है दिन के दौरान नीले आकाश की तरह, बस एक है के बंटवारे और झुकने से बना भ्रम सूरज की रोशनी। रात में एक को दूसरा मिल जाता है, लेकिन इसी तरह दिखने वाला भ्रम क्योंकि हम

उन पर 3 आयामों में देखने में असमर्थ हैं दूरियां। न भ्रम न शून्य असली छत या किसी भी प्रकार की छतरियां बनाता है। वास्तव में निर्वात एक बुरा और कमजोर है छत/चंदवा। कोई अच्छा पता होगा - मुहम्मद नहीं।
4. कैनोपी/छत में कोई दोष नहीं है कि स्वर्ग/आकाश बनाने लगता है (५०/6 - 67/3)। लेकिन निर्वात कैसे दिखाई दे सकता है दोष?
5. आकाश/आकाश सभी समान मजबूत नहीं है टुकड़े गिर सकते हैं (17/92 - 34/9)। परंतु वैक्यूम के टुकड़े कैसे गिर सकते हैं? (और एनबी: पुस्तक उल्कापिंडों के बारे में बात नहीं करती है - यह अंतर जानता है)।
6. स्वर्ग वास्तव में 7 आकाशों से बना है या फ़र्ममेंट या ट्रैक्ट्स (के लिए अन्य नाम आकाश/स्वर्ग वहाँ ऊपर - "आकाश" ज्यादातर है रात के आसमान के लिए इस्तेमाल किया जाता है) - "ऊपर एक" अन्य" (2/29 - 17/44 - 23/17 - 23/86 - 41/12 .) - 35/12 - 67/3 - 71/15 - 78/12)। यह है बहुत गलत खगोल विज्ञान के समान विश्वास पुराने ग्रीस और फारस की, जो कि क्या था

एक मुहम्मद के समय में विश्वास करता था
अरब - एक ऐसा तथ्य जिसका कभी किसी मुसलमान ने उल्लेख नहीं किया
(क्योंकि एक मुसलमान यह संकेत कैसे दे सकता है कि a
सर्वज्ञ भगवान पुराने और गलत में विश्वास करते थे
सांसारिक विज्ञान? - असंभव भले ही सच हो
कि कुरान के निर्माता इस पर विश्वास करते हैं)।
लेकिन केवल निर्वात और शूटिंग सितारे हैं
और कुछ नहीं - उचित में नहीं
पृथ्वी के पड़ोस - के अनुसार
विज्ञान। एक बार फिर: कोई भी भगवान जानता था -
मुहम्मद नहीं। फिर कुरान किसने बनाया?

७. वहाँ आकाश अदृश्य द्वारा रखा जाता है
खम्भे ("बिना किसी खम्भे के जो तुम देख सकते हो"
यूसुफ अली के अनुसार) (13/2 - 31/10)। परंतु
कोई इंसान और कोई जानवर नहीं टकराया
ऐसा खंभा और किसी पक्षी या विमान ने कभी नहीं
एक से टकरा गया। (कुछ मुसलमान कहते हैं कि
अदृश्य - जो कुरान कहता है -
मतलब गैर-मौजूदा। लेकिन एक बढ़िया
उन दो अर्थों के बीच अंतर, और
कुरान कहता है "अदृश्य"। यह भी है
यह कहना व्यर्थ है कि कुछ रखा गया है
वहाँ गैर-मौजूदा स्तंभों द्वारा)।

8. सितारों को सबसे निचले स्वर्ग में बांधा गया है
(37/6 - 41/12)। पुराने ग्रीक के अनुसार
और फारसी खगोल विज्ञान, तारे, ग्रह,
और सूर्य और चन्द्रमा को ७ . तक स्थिर किया गया

57

पेज 58

अदृश्य आकाश। (सितारों से एक, चाँद
और सूर्य एक एक को, और उस समय ज्ञात
ग्रह - शुक्र, मंगल, बृहस्पति और शनि -
एक-एक को भी। 7 अलग-अलग आंदोलन
आवश्यक 7 अदृश्य - जैसे कांच या क्रिस्टल -
स्वर्ग, और स्वर्ग को भौतिक होना था
और खुद को और सितारों को रखने के लिए मजबूत
आदि वहाँ ऊपर।) कुरान के अनुसार, the
सितारों को उनके स्थान पर इस प्रकार रखा जाता है
७ स्वर्गों में से सबसे नीचे - लेकिन मुसलमान कभी नहीं
उल्लेख करें कि यह वही था (गलत तरीके से)
मुहम्मद के समय अरब में विश्वास करते थे।
क्या अल्लाह को पुराने से बेहतर ज्ञान नहीं होता
ग्रीक और फारसी खगोल विज्ञान? - और क्यों नहीं
एफ से खगोल विज्ञान भूतपूर्व। दक्षिण अमेरिकी या
अन्य स्थानों से यदि वह एक सार्वभौमिक देवता है?

9. "तथ्य" कि सितारों को एक से बांधा गया था
स्वर्ग का अर्थ है कि स्वर्ग भौतिक है
वाले - यदि नहीं तो तारों को बांधा नहीं जा सकता
उनमें से एक (37/6 - 41/12)। लेकिन कोई रॉकेट नहीं है
कभी एक से टकराया।

10. सूर्य और चंद्रमा के बीच में हैं
आकाश (ठीक है, सूर्य के लिए यह स्पष्ट रूप से नहीं है
निर्दिष्ट)। जिसका अर्थ है कि कम से कम एक
आकाश चाँद के नीचे होना चाहिए। इस
"तथ्य" से भी स्पष्ट है कि तारे हैं
सबसे निचले स्वर्ग में बांधा गया। और के रूप में
सितारों को सबसे निचले स्वर्ग में बांधा जाता है, सभी
खरबों तारे - सूर्य - एक बात के लिए चाहिए
सबसे निचले स्वर्ग को भीड़-भाड़ वाला बनाओ, और
दूसरे के लिए पृथ्वी को बल्कि गर्म बनाओ।

11. चंद्रमा "अत्यधिक ठंड" भी पैदा करता है

(36/39)। लेकिन चंद्रमा ठंड नहीं पैदा करता है। ऐसा होता है कि आप चांद को सबसे अच्छे से देखें
साफ रातों में - और साफ रातों में
मरुस्थल अपनी ऊष्मा को शीघ्रता से अंतरिक्ष में विकिरित करता है और
तापमान गिरता है। कोई भगवान जानता था,
लेकिन मुहम्मद नहीं।

12. सीरियस शक्तिशाली तारा है (53/49)। लेकिन सीरियस है
बहुत शक्तिशाली सितारा नहीं, यह केवल होता है
अपेक्षाकृत हमारे निकट। इसकी तुलना में यह एक बच्चा है
Aldebaran, Betelgeuse या the जैसे दिग्गज
खतरनाक एटा कैरिने - और वे फिर से हैं
असली सुपर जायंट्स की तुलना में बच्चे।
13. सितारे सजावट के लिए हैं (37/6+7 - 41/12 -
67/3 - 67/5)। उसके लिए बनाई गई हर चीज हम
इस छोटे से ग्रह पर मनुष्यों के पास कुछ होगा
सजावट?
14. इसके अतिरिक्त तारों का प्रयोग किसके लिए किया जाता है?
सजावट, अल्लाह उन्हें शूटिंग सितारों के रूप में उपयोग करता है

एक "ज्वलनशील आग" के रूप में - हथियार - पीछा करने के लिए
बुरी आत्माएं (जिन्स - अरब परी से आंकड़े
किस्से और किंवदंतियाँ मूल रूप से) जासूसी करना चाहते हैं
स्वर्ग पर (21/32 - 37/6+7 - 37/10 - 67/5)।
विज्ञान संशयपूर्ण है, हालांकि, शूटिंग सितारों के रूप में
मिलीग्राम और ग्राम में मापा जाता है,
जबकि असली तारे 12 गुना आकार के होते हैं
बृहस्पति का (शुरू करने के लिए न्यूनतम आकार और to
परमाणु प्रतिक्रिया जारी रखें) और अप करने के लिए
पृथ्वी के आकार का कुछ मिलियन गुना - और
वे बहुत दूर हैं और बहुत अलग हैं
हमसे दूरी (2-3 प्रकाश वर्ष दूर से
और १३.७ अरब प्रकाश-वर्ष तक या शायद
More), हमारे चंद्रमा के नीचे एक गोले पर स्थिर नहीं है।

15. स्वर्ग में स्वर्ग होता है। स्वर्ग है
सभी के लिए समान नहीं - यह निर्भर करता है
आस्तिक क्या पात्र है। ७ स्वर्ग
स्वर्ग के 7 स्तर बनाओ। कुरान नहीं है
यहाँ बहुत विशिष्ट है, लेकिन हदीस विवरण देते हैं
- एफ। भूतपूर्व। अल-बुखारी से हदीस नंबर 3887।
    1. पहला स्वर्ग। यहाँ आदम बैठता है और
    सहेजे गए लोगों को भेजता है - मुख्य रूप से
    अच्छे मुसलमान - उसके दाहिनी ओर जाने के लिए
    उनके जन्नत में, और खोए हुओं को
    उसकी बाईं ओर नर्क में जाने के लिए (पुराने में)
    अरब, दाहिनी ओर अच्छा था
    साइड, और लेफ्ट साइड बैड साइड - अल्लाह
    इस पुराने अरब रिवाज का पालन किया it
    प्रतीत)। यह स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट नहीं है, लेकिन
    ऐसा लगता है कि यह भी जन्नत के लिए
    "सामान्य" मुसलमान भी स्थित हैं
    यहाँ, और यह कम से कम 4 . में विभाजित है
    विभिन्न उद्यान, एक से बेहतर
    अन्य कितना अच्छा है इस पर निर्भर करता है
    मुसलमान और कितना भयानक योद्धा
    तुम अल्लाह के लिए रहे हो, क्योंकि
    मुहम्मद, और मुहम्मद के लिए
    उत्तराधिकारी
    2. दूसरा स्वर्ग। यहाँ और ऊपर से
    स्वर्ग मुसलमानों के लिए आरक्षित है
    जो कुछ अतिरिक्त के लायक हो। NS
    जितना अधिक आप योग्य हैं, उतना ही ऊंचा स्वर्ग -

अल्लाह के करीब - आप अंत में समाप्त होते हैं
अच्छा मुस्लिम पैगंबर यीशु मिल गया है
इसमें - दूसरा - स्वर्ग। कि वह
यह कम समाप्त हो गया, थोड़ा सा लग सकता है
आश्चर्य की बात है, जैसा कि इस्लाम उसे मानता है
एक महान नबी (और जैसा कि कहा गया है: एक पवित्र
मुस्लिम एक - कुरान वर्णन करता है
वह जो एक से अलग है

59

पेज 60

बाइबिल में एनटी में पाता है - - - एक तथ्य
कि इस्लाम उस बाइबिल के साथ समझाता है
कम से कम आंशिक रूप से गलत साबित हुआ है - - - और as
बिना किसी के इस्लाम के लिए सामान्य
दावों के लिए दस्तावेज, और
विज्ञान के पास जो स्पष्ट रूप से है उसके विपरीत
मिला)। इसका कारण यह हो सकता है कि वह था
इसमें मुहम्मद का एक प्रतियोगी
जीवन, और इसलिए यीशु को होना ही था
थोड़ा कम किया, क्योंकि यह आवश्यक था
इस बात पर जोर दें कि मुहम्मद बहुत थे
बड़ा नबी। इस स्वर्ग में तुम
जॉन द बैपटिस्ट को भी खोजें (वह नहीं है a
बाइबिल में पैगंबर) - यह दिखाता है
की तुलना में यीशु के स्तर का है
मुहम्मद. (नीचे नाम हैं
मुहम्मद इब्न इशाक से: "जीवन"
मुहम्मद")।

3. तीसरा स्वर्ग। यहाँ एक के बीच मिलता है
   अन्य अच्छे मुस्लिम नबी
   जोसेफ - वह जो एक के रूप में बेचा गया था
   मिस्र का गुलाम। (वह एक नबी नहीं है
   बाइबल)
4. चौथा स्वर्ग। (यहूदी) नबी
   इदरीस (यहाँ उनके अरब नाम का प्रयोग किया गया है)।
5. पांचवां स्वर्ग। भविष्यवक्ता हारून
   (मूसा का भाई - हारून नहीं है a
   बाइबिल में पैगंबर)।
6. छठा स्वर्ग। पैगंबर मूसा।
7. सातवां स्वर्ग। यह कहाँ है
   इब्राहीम - केंद्रीय नबी
   (निश्चित रूप से मुस्लिम) इस्लाम के बाद
   मुहम्मद - रहता है (इब्राहीम भी है
   बाइबिल में पैगंबर नहीं; वह इनमें से एक है
   इस्राएल के तीन कुलपिता, परन्तु नहीं
   नबी - वह एफ। भूतपूर्व। एक सिंगल नहीं बनाया
   भविष्यवाणी जो ज्ञात है)। भी
   मुहम्मद में समाप्त होने के लिए माना जाता है
   7. स्वर्ग - अल्लाह के पास जिसके पास उसका
   7. स्वर्ग पर निवास।
8. इस प्रकार मुहम्मद को कहा जाता है
   के दौरान स्वर्ग का अनुभव किया है
   उनकी दावा की गई रात की यात्रा वहाँ - एक यात्रा
   इस्लाम के बारे में अनिश्चित है एक वास्तविक यात्रा थी or
   एक सपना। (आयशा हदीसों में कहती है कि
   उसने उस रात अपना बिस्तर कभी नहीं छोड़ा।)

16. जब कयामत का दिन एक बार आता है,
    चाँद अँधेरे में दब जाएगा (75/8) या
    चाँद और सूरज एक साथ आएंगे (75/9)।
    उस स्थिति में मनुष्य के पास बहुत समय होता है - वहाँ है

संभावना है कि इसमें से कुछ होगा
विज्ञान के अनुसार। लेकिन वह मामले में कुछ है
भविष्य में 5 अरब साल। उस समय हमारे
सूरज एक तथाकथित लाल दानव बन गया होगा,
जो बड़ा हो सकता है और नहीं भी हो सकता है
पृथ्वी को घेरने के लिए पर्याप्त है और इसलिए
चांद। लेकिन उस स्थिति में चंद्रमा नहीं होगा
अँधेरे में घिरी, लेकिन ३००० डिग्री में
(सेंटीग्रेड) चमकदार लाल और नारकीय लपटों की।
और पृथ्वी और कल्पित ७ आकाश
पृथ्वी के ऊपर एक ही स्थिति में होगा।

17. उस दिन भी तारे पृथ्वी पर गिरेंगे
और चमकना बंद करो (81/2)। पृथ्वी सुंदर होगी
मामले में भीड़, क्योंकि सितारे कई हैं और
विशाल - और केवल एक सर्वशक्तिमान ईश्वर ही रोक सकता है
तारे बनाने वाली परमाणु प्रक्रियाएं
चमकते हैं, और इस प्रकार उन्हें कुछ चमकना बंद कर देते हैं
लाख साल बाद। कोई भगवान जानता था -
मुहम्मद नहीं। कुरान किसने बनाया?
18. और अल्लाह आकाशों/आसमानों को भी ढांप देता है कि
उस दिन (21/104)। यदि इसमें शामिल हैं
भौतिक ब्रह्मांड, यह एक बड़ा काम है, क्योंकि यह कम से कम
13.7 अरब प्रकाश वर्ष की त्रिज्या है = 27.4
सभी दिशाओं में अरब प्रकाश वर्ष व्यास।
और इसके अलावा: वास्तव में का रूप क्या है
ब्रम्हांड? - अगर यह गोलाकार है तो मुश्किल है
ग्लोब के आकार का कुछ रोल करें।
19. नहीं भूलना चाहिए: सूर्य अस्त होगा और
चमकना बंद करो - मुहम्मद विश्वास करने लगता है
सूरज एक सपाट डिस्क है जिसे मोड़ा जा सकता है।
20. कुरान यही कहता है - एक किताब जो
माना जाता है या कम से कम सटीक होने का दावा किया जाता है
स्वर्ग में मदर बुक की प्रति। एक किताब
अल्लाह और कोणों से बहुत सम्मानित और पूर्ण
ज्ञान का। (13/39)। क्या इसका मतलब यह है कि अगर
कुरान जो कहता है उससे विज्ञान अलग है, it
इसका मतलब है कि विज्ञान गलत है? या - - -? (परंतु
ईमानदारी से - इतने लोगों के साथ एक किताब कैसे हो सकती है
गलतियाँ, विकृत तर्क और अमान्य तर्क
स्वर्ग में एक श्रद्धेय पुस्तक बनें / an . के घर
सर्वज्ञ भगवान?)

मुसलमानों और अन्य लोगों को यह कहकर कुरान का बचाव करने की जल्दी होगी कि इसमें गलतियाँ हैं
बाइबिल, भी, सृष्टि के विषय में। परंतु:

ए।

बाइबिल या तोराह की गलतियाँ कुरान को एक चौथाई सही नहीं बनाती हैं।

बी।

बाइबल इंसानों द्वारा लिखी गई थी। इंसान गलतियाँ कर सकता है, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता
धर्म के लिए बहुत कुछ, जब तक कि धार्मिक भाग सही हों। (कुछ गलत हैं
बाइबिल में भी तथ्य - मुख्य रूप से सृजन, आदि से संबंधित - लेकिन कुरान की तुलना में बहुत कम)।
लेकिन यह माना जाता है कि कुरान अल्लाह द्वारा बनाया गया है - या अनंत काल से अस्तित्व में है - और an
सर्वज्ञ भगवान केवल गलती नहीं करते हैं, पूज्य "माँ पुस्तक" का उल्लेख नहीं करते हैं
अपने ही घर में गलत तथ्यों और अन्य गलतियों के बारे में। इसलिए कुरान में गलतियां हैं
इस्लाम के लिए बहुत गंभीर - ऐसी गलतियाँ १००% और अधिक साबित करती हैं कि कुछ गंभीर है
धर्म के आधार पर गलत। इसलिए न तो मुसलमान और न ही इस्लाम बर्दाश्त कर सकते हैं
स्वीकार करें कि गलतियाँ मौजूद हैं - एक भी नहीं और चाहे वे कितनी भी स्पष्ट क्यों न हों। यह है
हठपूर्वक आँख बंद करके विश्वास करने से बेहतर है कि समय रहते पता लगाया जाए कि वे गलत हो सकते हैं -
जब/यदि वे अगले जन्म में जागते हैं और पता लगाते हैं कि उनका मस्तिष्क धो दिया गया है
ऊपर धर्म, बहुत देर हो चुकी है। बहुत विचारोत्तेजक, **विशेष रूप से इस्लाम बड़े लोगों का ही है
धर्म जो स्वयं को किसी भी संदेह से परे साबित करते हैं - कोई उचित संदेह नहीं, बल्कि कोई भी
संदेह - किसी भी वास्तव में सोच वाले, शिक्षित व्यक्ति के लिए कि उनके साथ कुछ बहुत गलत है
पैगंबर और उनका धर्म।**

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 2, खंड 3 (= II-1-2-3)

मेगा गलती 1, भाग 3, में कुरान

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

1. भाग II = कुरान में गलतियाँ।
2. अध्याय 1 = कुरान में गलत तथ्य।
3. उपअध्याय 2 = 5 मेगा गलतियाँ, कुछ विवरण। (सारांश खंड 4 में है)।
४. धारा ३ = कुछ गलत विवरण/नमूने मनुष्य और पशु के बारे में - सृजन, जीवन, और जी उठने। (यह अनुभाग।)

इस उप-अध्याय में ये खंड हैं - 5 मेगा गलतियाँ - (और भी होनी चाहिए
खंड, क्योंकि कुरान में कई और प्रकार की गलतियाँ और त्रुटियाँ हैं, लेकिन इन नमूनों को होना चाहिए
यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि यह किस बारे में है):

1. खंड 1: गलत तथ्यों के कुछ नमूने पृथ्वी के बारे में (यह खंड)।
2. धारा 2: गलत तथ्यों के कुछ नमूने ब्रह्मांड के बारे में।
3. धारा 3: गलत तथ्यों के कुछ नमूने मनुष्य और जानवरों के बारे में - सृजन, जीवन, और जी उठने।
4. धारा 4: 5 बड़ी गलतियाँ जो होनी चाहिए इस्लाम को मार डालो - अगर खुफिया गिना जाता है।

62

पेज 63

("सभी" गलत तथ्यों को खोजने के लिए जो मेगा मिस्टेक 1 तक ले जाते हैं, उपचैप्टर 3, 16 . पढ़ें
विषयों द्वारा व्यवस्थित कुरान में गलत तथ्यों के बारे में अनुभाग। और "सब" खोजने के लिए
इस मागा गलती के कारण होने वाली गलतियाँ, इसके सभी अध्यायों के साथ पूरा भाग II पढ़ें,
उप-अध्याय, और अनुभाग (II-8-1, II-8-2, और II-9 को छोड़कर जो मेगा मिस्टेक 2 की ओर ले जाता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

पृथ्वी भी पौधों से भरी हुई है और

1. जानवर - सब कुछ केवल एक से बनाया गया
   कच्चा माल प्रत्येक, हालांकि कौन सा भिन्न होता है
   एक आयत और सूरह से दूसरी तक; से
   मिट्टी या पानी या कुछ भी नहीं, आदि विज्ञान बताता है
   स्पष्ट: जीवित प्राणियों में लगभग होते हैं
   सौ परमाणु और हजारों और लाखों
   विभिन्न प्रकार के अणु।
2. कुरान इस बारे में कुछ खास नहीं कहता है
   पौधों का निर्माण। लेकिन जैसा कि किताब कहती है
   अल्लाह ने सभी जीवित चीजों को पानी से बनाया -
   नायब; में नहीं, लेकिन से - (21/30), वे शायद
   पानी से बनाए गए थे।
3. लेकिन सभी जानवर (मनुष्यों को शामिल नहीं)
   स्पष्ट रूप से - और गलत तरीके से - बनाए जाने के लिए कहा गया है
   चिपचिपी मिट्टी से (37/11) या पानी से
   (२१/३०, २४/२४)। आप आधुनिक मुसलमानों से मिलते हैं
   कह रहा है: "हिप, हुर्रे: कुरान साबित होता है
   विज्ञान!! कुरान नहीं जान सकता था
   जानवरों को एक बार पानी में बनाया गया था
   एक समय पर, जब तक कि अल्लाह ने ऐसा न कहा हो !!"
   होने के बीच एक अंतर की दुनिया है
   पानी से बना जैसे कुरान कहता है, और
   पानी में बनाया जा रहा है। दरअसल जब आती है
   जानवरों के निर्माण के लिए एक है
   यहाँ विरोधाभास जैसा कि ३७/११ कहता है कि
   जीव चिपचिपी मिट्टी से बनते हैं, और 21/30
   और २४/४५ कि दोनों कहते हैं कि सभी प्राणी हैं
   पानी से बना (पानी में नहीं, बल्कि से
   पानी)।
4. लेकिन मनुष्य की रचना कैसे हुई, यह जटिल है
   कुरान; एक और पहला आदमी - आदम -
   कम से कम १३ तरीकों से बनाया गया था (या ५-६-७ अगर
   आप कहते हैं कि उनमें से कुछ अलग थे
   उसी कच्चे माल के लिए "नाम")। इस
   भले ही एक आदमी में नहीं बनाया जा सकता
   एक से अधिक तरीके। कुरान कहता है कि वह था
   बनाया गया:

ए। मिट्टी से	6/2, 7/12, 17/61, 18/76, 32/7।
बी। बजती मिट्टी से	15/26, 15/28, 15/33।

सी। बजती मिट्टी से	55/64।
डी। चिपचिपी मिट्टी से	37/11.
इ। मिट्टी के सार से (जो कुछ भी है?) २३/१२।	
एफ। कीचड़ से	15/26, 15/28, 15/33।
जी। धूल से	3/59, 22/5, 31/11, 40/67।
एच। फॉर्म अर्थ	20/55
मैं। जमे हुए खून के थक्के से	९६/२.
जे। वीर्य से*	16/4 75/37, 76/2, 80/19।
क। से कुछ नहीं	19/9, 19/67।
एल पानी से	21/30, 24/45, 25/54।
एम। आधार सामग्री से	70/39।

5. *यह नहीं बताया गया है कि वीर्य कहाँ से आया।
6. केवल एक ही सही हो सकता है, जैसा कि एडम संभवतः
   केवल एक बार बनाया गया था। और विज्ञान कहता है कि
   यह भी गलत है - मनुष्य पहले से विकसित हुआ

प्राइमेट्स, और एडम जैसे में वर्णित है
कुरान कभी नहीं था। (हां, हम के बारे में जानते हैं
पूर्व में रहने वाले पुरातत्व से ईव
लगभग २००० वर्ष पहले अफ्रीका, और
इसी आदम जो कुछ एशिया में रहता था
60ooo (64ooo?) साल पहले, लेकिन वह है
कुछ अलग)।

7. और प्रत्येक प्राणी जोड़े में बनाया गया था
(३६/३६, ४३/१२, ५१/४९)। गलत। भले ही हम
पौधों को छोड़ दें, ऐसे कई जानवर हैं जिन्हें मिलता है
उनके बच्चे अलैंगिक रूप से = अंदर नहीं आते
जोड़े। सभी एक-कोशिका वाले जानवर हैं,
और वे अब तक सबसे अधिक संख्या में हैं, दोनों में
संख्या और प्रकार। फिर की संख्या है
आदिम जानवर जो जोड़े में नहीं आते -
स्पंज एफ. भूतपूर्व। और कुछ कम भी हैं
आदिम जानवरों तक और कुछ शामिल हैं
उभयचर, छिपकली और मछली जो कर सकते हैं
अलैंगिक रूप से प्रचारित करते हैं, और उनमें से कुछ केवल
एक लिंग में मौजूद है जहाँ तक विज्ञान रहा है
पता लगाने में सक्षम। (आधुनिक मुसलमान अक्सर
पूह-पूह के बावजूद एक-कोशिका वाले जानवर
उनकी विशाल संख्या - यह सबसे आसान तरीका है
उन्हें "सब कुछ" अभिव्यक्ति से बाहर निकालने के लिए
कुरान में - लेकिन एक भगवान बेहतर जानता था।
और फिर अन्य सभी हैं।)

8. इन सभी जानवरों में से अल्लाह ने मनुष्य को 4
प्रकार (२ लिंग x ४ = ८ विभिन्न जानवर)
मवेशी (39/6)। लेकिन मनुष्य के पास कम से कम ९ प्रकार के होते हैं
मवेशी: भेड़ के अलावा, बकरी, गाय और
ऊंट, जो कुरान हैं

उल्लेख (दूसरी जगह), कम से कम हैं
एशिया में याक और जल भैंस, लामा
और कम से कम एक और लामा के समान
अमेरिका और उत्तर में हिरन -
और भारत में हाथी (और सुअर)। इस
घोड़ों, गधों, खच्चरों, मुर्गी के अलावा,
बत्तख, गीज़, आदि कोई भी देवता जानता था -
मुहम्मद नहीं। या हो सकता है कि अल्लाह ही जानता हो
अरब में मवेशी थे?

9. और पक्षी पृथ्वी पर उड़ते हैं। केवल अल्लाह
शक्ति उन्हें वहीं रखती है, कुरान कहता है
(16/79 - 67/19)। लेकिन विज्ञान बताता है कि
कारण वायुगतिकीय नियम है - अंतर
हवा के दबाव में और पंखों के नीचे - कि
उन्हें वहाँ पकड़ो। मुहम्मद से अनजान,
लेकिन किसी भी भगवान के लिए अच्छी तरह से जाना जाता है।

10. कुछ पक्षी भी बोल सकते थे - कम से कम राजा से
सुलैमान (२७/१६, २७/२२-२६)। लेकिन पक्षी नहीं
में लंबी चर्चा के लिए दिमाग है
सुसंगत और सरल भाषा के लिए नहीं। गलत -
अगर इस्लाम के पास इसका पुख्ता सबूत नहीं है
सही होना।

11. और चींटियाँ बोल सकती थीं (27/18)। लेकिन दिमाग
एक चींटी की बड़ी और उन्नत से बहुत दूर है
बोलने के लिए पर्याप्त दिमाग। इसके अलावा वे नहीं
स्वर के लिए अंग हैं। गलत - अगर इस्लाम
होने का कोई पुख्ता सबूत नहीं है
सही। आम तौर पर आपको बोलने वाले जानवर मिलते हैं,

पृथ्वी और कीड़े केवल परियों की कहानियों में और दंतकथाएं।

12. और आदमी? मनुष्य कभी एक राष्ट्र था (2/213, 10/19)। गलत। आदमी कभी नहीं था एकल राष्ट्र। कुछ 160ooo-200ooo वर्ष पहले शायद - शायद - एक ही जनजाति (आदमी) चारों ओर एक तथाकथित "अड़चन" के माध्यम से चला गया उस समय और संभवतः केवल "कुछ" व्यक्ति बच गया और बाद में सभी के "माता-पिता" बन गए

    मनुष्य - यही कारण है कि बहुत छोटा है मनुष्य में डीएनए-भिन्नता), लेकिन कभी भी एक नहीं राष्ट्र।
13. और अंत में: जब मनुष्य अगले जन्म में जाता है, वह शरीर में पुनर्जीवित हो जाएगा - केवल में ही नहीं आत्मा, कई अन्य धर्मों की तरह। अल्लाह सभी कणों और तरल पदार्थों को पुनः संयोजित करता है - परमाणु, अणु - आप और . से बने थे आपके शरीर का रीमेक बनाता है। (बस आशा है कि आप नहीं थे एक नरभक्षी द्वारा खाया गया, और आपके कण और उसके पुनर्जीवित शरीर में मिलने वाले रस - फिर वे किससे संबंधित हैं?) और तुम जाओ में पृथ्वी पर जीवन के समान जीवन जीने पर

कई तरह से, लेकिन एक साधारण और गरीब में उच्च समाज शैली के योद्धा के सपने और

बहुत सारी महिलाओं के साथ। के बारे में बहुत कम कहा जाता है जन्नत जा रही औरतें - इस्लाम मर्दों का है और मुख्य रूप से एक योद्धा का धर्म। और अगर आप खूब खाते-पीते हैं, आपको कभी इसकी जरूरत नहीं पड़ती हदीस के अनुसार शौचालय जाओ - और स्त्रियाँ केवल तुम्हारे सुख के लिए लगती हैं, जैसे आपको लगता है कि आपको बेटे (या बेटियां) नहीं मिल रहे हैं स्वर्ग।

अगले जन्म में जो कहा गया वह कुरान में सही है या नहीं, यह बताना संभव नहीं है। लेकिन सृष्टि के बारे में बहुत कुछ सही नहीं है, और सभी नहीं - कम से कम कहने के लिए - जिसके बारे में बताया गया है सृष्टि और अंत के बीच जो होता है, वह सही है। संक्षेप में (पृथ्वी, ब्रह्मांड सहित) और जीवित प्राणी): कुरान के अनुसार "सब कुछ" इस प्रकार है:

ऊपर - ऊपर 7. ऊपर - स्वर्ग - अल्लाह है।

फिर पृथ्वी के ऊपर 7 आकाशों को शंकु दें - एक के ऊपर एक।

उनके बीच में सूर्य (?) और चंद्रमा हैं।

7 स्वर्गों में स्वर्ग है।

सबसे निचला स्वर्ग, कम से कम 4 बगीचों में विभाजित, ऐसा लगता है कि सामान्य मनुष्यों के लिए स्वर्ग है।

आकाश के नीचे, और सबसे नीचे तक बांधे गए, सभी तारे हैं।

आकाशों और तारों के नीचे बादल हैं - जिन्हें अल्लाह कभी-कभी टुकड़े-टुकड़े कर देता है (बारिश की बूँदें)।

इन सबके तहत पक्षियों को अल्लाह की मर्जी से ही दूर रखा जाता है।

पृथ्वी पर पहाड़ स्थापित हैं।

पहाड़ों को नीचे करने का कारण पृथ्वी को स्थिर करना है।

पृथ्वी पर नदियाँ हैं। हदीसों के अनुसार उनमें से दो - नील और फरात - जन्नत में शुरू होते हैं।

पृथ्वी पर राजमार्ग भी हैं - अल्लाह द्वारा बनाए गए।

पृथ्वी पर आगे भी सभी प्रकार के प्राणी रहते हैं - मिट्टी या किसी चीज से या कुछ भी नहीं।

यह सब हमारी समतल पृथ्वी पर विद्यमान है या रह रहा है।

(हदीथ के अनुसार) हमारी पृथ्वी के नीचे और अधिक समतल पृथ्वी हैं - 7 सभी एक साथ।

इस्लाम के अनुसार उन अलग-अलग पृथ्वी के निवासियों के लिए जीवन अधिक नारकीय है, जिस निचली पृथ्वी पर आप जाते हैं।

और नीचे (?) में नर्क है।

हदीस (f। पूर्व। अल-बुखारी) के अनुसार, एक बहुत बुरा व्यक्ति कयामत के दिन पृथ्वी और नर्क में गिर सकता है।

ठीक वैसे ही जैसे आपके प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक ने आपको बताया था?

कुरान इन बिंदुओं के बारे में उतना ही गलत है जितना गलत हो सकता है।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 2, खंड 4 (= II-1-2-4)

66

पेज 67

5 मेगा गलतियाँ कि इस्लाम को मारना चाहिए - - - IF खुफिया गिना गया।

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

1. भाग II = कुरान में गलतियाँ।
2. अध्याय 1 = कुरान में गलत तथ्य।
3. उपअध्याय 2 = 5 मेगा गलतियाँ, कुछ विवरण। (सारांश खंड 4 में है)।
4. धारा 4: 5 बड़ी गलतियाँ जो होनी चाहिए इस्लाम को मार डालो - अगर खुफिया गिना जाता है। (इस अनुभाग।)

इस उप-अध्याय में ये खंड हैं - 5 मेगा गलतियाँ - (और भी होनी चाहिए खंड, क्योंकि कुरान में कई और प्रकार की गलतियाँ और त्रुटियाँ हैं, लेकिन इन नमूनों को होना चाहिए यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि यह किस बारे में है):

1. खंड 1: गलत तथ्यों के कुछ नमूने पृथ्वी के बारे में (यह खंड)।
2. धारा 2: गलत तथ्यों के कुछ नमूने ब्रह्मांड के बारे में।
3. धारा 3: गलत तथ्यों के कुछ नमूने मनुष्य और जानवरों के बारे में - सृजन, जीवन, और जी उठने।
4. धारा 4: 5 बड़ी गलतियाँ जो होनी चाहिए इस्लाम को मार डालो - अगर खुफिया गिना जाता है।

("सभी" गलत तथ्यों को खोजने के लिए जो मेगा मिस्टेक 1 तक ले जाते हैं, उपचैप्टर 3, 16 . पढ़ें विषयों द्वारा व्यवस्थित कुरान में गलत तथ्यों के बारे में अनुभाग। और "सब" खोजने के लिए इस मागा गलती के कारण होने वाली गलतियाँ, इसके सभी अध्यायों के साथ पूरा भाग II पढ़ें, उप-अध्याय, और अनुभाग (II-8-1, II-8-2, और II-9 को छोड़कर जो मेगा मिस्टेक 2 की ओर ले जाता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मेगा गलती 1: कुरान में पहली बड़ी गलती यह सब है निर्विवाद रूप से गलत तथ्य और अन्य स्पष्ट गलतियाँ कुरान।

उदाहरण:

1. अध्याय II-1-2-1 "(गलत) पृथ्वी कुरान के अनुसार"।

2. अध्याय II-1-2-2 "(गलत) ब्रह्मांड कुरान के अनुसार"।
3. अध्याय II-1-2-3 "मनुष्य, पशु; NS (गलत) सृष्टि, पृथ्वी पर जीवन - और जी उठने"। (ये 3 अध्याय प्रत्येक में वास्तविकता 3 मेगा गलतियाँ स्वयं हैं - कि यही कारण है कि मुख्य गलतियों में से प्रत्येक का संरक्षण उन 3 विषयों को अलग से एकत्र किया जाता है।)
4. अध्याय II-1-3 "कुरान में गलत तथ्य" (16 उप-अध्याय।)
5. अध्याय II/2 "इसमें व्याकरण संबंधी गलतियाँ" कुरान"।
6. अध्याय II/3 "गैर-अरबी शब्द" कुरान"।
7. अध्याय II/5 "बाइबल में मुहम्मद?"
8. अध्याय II/8/A और II/8/B "इनमें से कुछ" कुरान में विरोधाभास ”।
9. अध्याय II/10 "कुरान में गलतियाँ" मुस्लिम विद्वानों द्वारा स्वीकार किया गया !!!"
10. अध्याय VII/6 "अन्य (अमान्य) 'संकेत' और 'सबूत' -।"

(कुछ या सभी बिंदुओं पर मुसलमान अधिक बेतहाशा विरोध करेंगे। और पढ़े-लिखे मुसलमान नहीं (और .) कुछ शिक्षित लोग अल-तकिया के नियमों का पालन करते हुए, नीच झूठ) और भी अधिक विरोध करेंगे इस बिंदु पर बेतहाशा "मुस्लिम विद्वानों द्वारा स्वीकार की गई गलतियाँ"। यह इस्लाम के लिए एक तबाही है कुरान में विरोधाभासों को स्वीकार करने के लिए, क्योंकि विरोधाभासों की कमी कुछ (अमान्य) में से एक है इसके लिए "सबूत" का दावा किया कि अल्लाह ने उस किताब को उतारा, और कुछ में से एक (लेकिन अमान्य के रूप में) अल्लाह के अस्तित्व के लिए "सबूत" का दावा किया। वही मुहम्मद को न खोजने के लिए जाता है बाइबिल (जैसा कि केवल दावा किया गया "सबूत" के बारे में है जो उनके पास मुहम्मद के परमात्मा के लिए है कनेक्शन।) लेकिन दावे इतने स्पष्ट रूप से गलत हैं, तर्क इतने स्पष्ट रूप से मुड़ गए हैं और तर्क इतना स्पष्ट रूप से अमान्य है कि इसमें कोई संदेह नहीं है - जब तक कि इस्लाम हमें कुछ वास्तविक न दे सबूत)। विशिष्टताओं / छंदों के लिए अलग-अलग अध्याय देखें।

विशेष रूप से सभी गलत तथ्य, विकृत तर्क, अमान्य तर्क, अंतर्विरोध, और तार्किक रूप से अमान्य (कभी-कभी गलत भी) "संकेत" और "प्रमाण" के लिए खोजना आसान है थोड़ा ज्ञान वाला कोई भी + सोचने में सक्षम होने के नाते, न केवल दूसरों के दावे को अवशोषित करने के लिए। यहां तक कि कुरान में एक या कुछ गलतियां भी कुरान के दावे के लिए नष्ट कर रही थीं एक सर्वज्ञानी भगवान द्वारा बनाई गई और अल्लाह के व्यक्तिगत में एक श्रद्धेय "मदर बुक" पुस्तक की प्रति स्वर्ग और घर। लेकिन एक या कुछ गलतियाँ नहीं हैं, बल्कि एक बड़ी संख्या है, और बहुत दूर भी है उनमें से कई के लिए निराशाजनक "स्पष्टीकरण" भी खोजना असंभव है - कुछ ऐसे भी हैं मुस्लिम विद्वानों ने इसे गलती मान लिया है। कोई सर्वज्ञ भगवान ऐसा नहीं बनाता है और यह गलतियों की संख्या - यह पुस्तक किसी सर्वज्ञ या सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा नहीं बनाई गई है। और क्या है फिर इस्लाम?

हाँ, इस्लाम क्या है अगर उनका एकमात्र आधार - भारी संख्या में गलतियों वाली किताब और विरोधाभास, एक स्व-घोषित भविष्यवक्ता जो वास्तव में एक वास्तविक नबी नहीं था, और एक कभी सिद्ध (सर्वज्ञ) भगवान - असत्य है? अंधविश्वास।

यह पहली बड़ी गलती अकेले - हाँ, यहाँ तक कि इसके कई अलग-अलग हिस्से भी - साबित करते हैं १००%, यह कहना १५०% सुनिश्चित नहीं है कि कुरान किसी सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान द्वारा नहीं बनाया गया है

भगवान - हाँ, किसी भी भगवान द्वारा नहीं, क्योंकि कोई भगवान गलती नहीं करता है, इस संख्या का उल्लेख नहीं करना और
इस तरह के गलत तथ्य और विरोधाभास। उसे भी मुड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी
तर्क, यह उल्लेख नहीं करने के लिए कि वह - या वह - अमान्य तर्क या अमान्य "संकेत" का उपयोग नहीं करेगा (in .)
कुरान संकेत या प्रमाण के लिए एक और शब्द) और "सबूत" - यदि अन्य कारणों से नहीं, तो
क्योंकि वह जानता था कि देर-सबेर उसका पता चल जाएगा और उसकी विश्वसनीयता कम हो जाएगी।

तथ्य यह है कि कई गलतियाँ पुराने और गलत ग्रीक और के अनुसार भी हैं
फ़ारसी विज्ञान - "तथ्य" जिसे मुहम्मद के समय अरब में माना जाता था - इसके अलावा
साबित करता है कि कुरान उस क्षेत्र में रहने वाले किसी व्यक्ति (या व्यक्तियों) द्वारा बनाया गया है
मुहम्मद. कोई भी देवता अरब, पृथ्वी के गलत विज्ञान से ६१० - ६३२ के आसपास बंधा नहीं होगा
ई. (मेगा गलती 4 देखें)।

और इस प्रश्न को समाप्त करने के लिए कि कुरान को किसने बनाया: यदि कुछ होते तो
कुरान, किताब और विशेष रूप से मदीना से सूरह के पीछे अलौकिक शक्तियां
पूरी तरह से और निर्विवाद रूप से साबित करता है कि यह अच्छी शक्तियों द्वारा नहीं बनाया गया था - वे सूरह हैं
बहुत अनैतिक, बहुत खूनी, और बहुत अमानवीय, और इसके अलावा एक तथ्य यह भी है कि
मुहम्मद का विचार था कि यदि वह बेहतर परिणाम देता है तो वह अपनी जई भी तोड़ देगा।
कोई अच्छी शक्ति नहीं - और कोई अच्छा भगवान नहीं - ऐसे दृष्टिकोण हैं। अगर कोई अलौकिक होता
शक्ति शामिल थी, यह एक अंधेरा था - एफ। भूतपूर्व। इब्लीस (मुस्लिम शैतान) भेष में, बहुत कुछ कह रहा है
अच्छी चीजें, लेकिन खून और अनैतिक और अमानवीयता की मांग करना। मांगें - और कर्म -
हमेशा सस्ते शब्दों की तुलना में अधिक विश्वसनीय होते हैं। और मुहम्मद को देखने में असमर्थ होगा
कट्टर देवदूत गेब्रियल और गेब्रियल की तरह तैयार शैतान के बीच अंतर।

मेगा गलती 2: कुरान में दूसरी बड़ी गलती है पुस्तक में विरोधाभास - विशेष रूप से आंतरिक अंतर्विरोध जहां पुस्तक स्वयं का खंडन करती है (350+ स्थान), लेकिन वास्तविकता के साथ भी विरोधाभास, और a . के लिए विशेष कारण भी बाइबिल के साथ विरोधाभास।

कुछ लोग कहेंगे कि कुरान में केवल 4 बड़ी गलतियाँ हैं, साथ ही विरोधाभास भी हैं
गलतियाँ और "मेगा गलती 1" से संबंधित हैं। लेकिन बहुत देर तक सोचने के बाद हम
उन लोगों से सहमत हैं जो कहते हैं कि विरोधाभास इतने खास हैं कि गलतियों की एक श्रेणी है, कि
वे अपनी खुद की बड़ी गलती करते हैं, खासकर जब इस्लाम गलत दावे का उपयोग करता है कि वहाँ हैं
(किसी भी मामले में अमान्य - चतुर व्यक्ति एक पुस्तक बना सकते हैं) के लिए कोई विरोधाभास इतना भारी नहीं है
बिना किसी विरोधाभास के) अल्लाह के लिए सबूत और अल्लाह और मुहम्मद के बीच संबंध के लिए।
कुरान की तरह कोई सर्वज्ञ भगवान खुद को अनुबंधित नहीं करता है। फिर कुरान किसने बनाया? एक नहीं
कम से कम सर्वज्ञ भगवान।

जब बाइबल के साथ अंतर्विरोधों की बात आती है, तो उनकी भारी गिनती का कारण यह है:

मुहम्मद ने दावा किया कि वह केवल और केवल एक के लिए भविष्यद्वक्ताओं के एक लंबे उत्तराधिकार में अंतिम थे
सर्वज्ञ भगवान। लेकिन एक भगवान एक ही बात के बारे में अलग-अलग विचार अपने अलग-अलग लोगों को नहीं बताते हैं
भविष्यद्वक्ता - वह वही बताता है जो इस बारे में बताया जाना है और यह प्रत्येक को
जिन्हें इसके बारे में जानने की जरूरत है। यह आप स्पष्ट रूप से देखते हैं यदि आप बाइबल में भविष्यवक्ताओं को पढ़ते हैं
(दावा किए गए उत्तराधिकार में एकमात्र भविष्यवक्ता जहां किसी प्रकार का दस्तावेज मौजूद है) - वहाँ
एक नबी से दूसरे और अगले और अगले के लिए सीधी रेखाएँ हैं। फिर साथ आता है
मुहम्मद पूरी तरह से अलग कहानियों के साथ, पूरी तरह से अलग मौलिक तरीकों का उल्लेख नहीं करने के लिए
सोच और नैतिकता, नैतिक (और कोई सहानुभूति नहीं - जैसे एफ। पूर्व। यीशु के पास था)। और एक यहाँ होना चाहिए
याद रखें कि विज्ञान ने साबित कर दिया है कि बाइबिल में मिथ्याकरण के बारे में इस्लाम के कई दावे
गलत हैं - और इसका सबसे अच्छा प्रमाण यह तथ्य है कि यदि एक भी एकल अस्तित्व में होता

मिथ्याकरण के लिए सबूत, इस्लाम इसके बारे में पवित्र स्वर्ग के लिए चिल्लाया था। ऐसा किसी ने नहीं सुना था
चीख अभी बाकी है - 1400 साल बाद भी नहीं।

सभी विरोधाभास - हाँ, उनमें से हर एक - 110% साबित करते हैं कि कुरान नहीं बना है
एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा।

नमूने के लिए भाग II, अध्याय 8, उप-अध्याय 1 और 2 + भाग II, अध्याय 9 + के बारे में अध्याय देखें
बाइबिल के साथ विरोधाभास जो 2010 ईस्वी में जोड़ा जाएगा।

**मेगा गलती 3: कुरान में तीसरी बड़ी गलती है
मुहम्मद - उनके शब्दों और कर्मों के प्लस और माइनस योग, और
कभी-कभी उसके बीच अक्सर अंतर (ज्यादातर में)
मक्का अवधि) शांतिपूर्ण प्रचार और उनकी कठिन मांगें और
कर्म और नफरत- और युद्ध-भड़काना, विशेष रूप से मदीना में
अवधि - अपने झूठ और विश्वासघात का उल्लेख नहीं करना। असली और
ऐतिहासिक मुहम्मद इस्लाम और मुसलमानों की चमकदार तस्वीरों से बहुत दूर थे
पेंट - बहुत दूर।**

(विवरण के लिए भाग XI में मुहम्मद के बारे में अध्याय देखें)। वह संत सदृश से दूर है
अर्ध-भगवान के बारे में कई मुसलमान बात करते हैं। चोर / लुटेरा, जबरन वसूली करने वाला, हत्यारा (उसके बारे में कहा जाता है)
कम से कम 26 विरोधियों की हत्या या हत्या - इब्न इशाक उनमें से 10 के नाम हैं), और मास
कातिल (खैबर अकेले लगभग 700), आतंकवादी (देखें f। पूर्व। उसकी सभी हत्या, दासता, यातना,
आदि), मुख्य रूप से पैसे और गुलामों के लिए लगभग ६० छापे के साथ हाइवेमैन (इब्न इशाक नाम ४३ छापे
+ युद्ध, ज्यादातर चोरी / लूटने, गुलाम बनाने और मारने के लिए - उनमें से कई मुहम्मद के नेतृत्व में हैं
व्यक्तिगत रूप से - और कुछ और थे (अलग अध्याय देखें)) ६२२ ईस्वी से उसके बड़े होने तक
627 के आसपास और बाद में कहीं एक सरदार बनने के लिए काफी मजबूत। (स्रोत: मुहम्मद
इब्न इशाक: "मुहम्मद का जीवन", खलीफा के दरबार में 750 ईस्वी के आसपास लिखा गया
बगदाद, हदीस और कुरान), बलात्कारी - उसने यहाँ तक कहा कि महिला कैदियों / दासों का बलात्कार करने के लिए
"अच्छा और वैध" था, और व्यक्तिगत रूप से कम से कम रैहाना बिन्त अमर और सफीजा बिन्तो के साथ बलात्कार किया
हुआय (दोनों ही मामलों में उसके पूरे परिवार की हत्या करने और/या उन्हें गुलाम बनाने के बाद), आदि।
सत्ता के लिए उसकी वासना का उल्लेख नहीं करने के लिए - बस देखो कि वह कैसे खुद को भगवान और से चिपकाता है
धर्म, उसकी शक्ति का मुख्य मंच।

लेकिन इस मामले में सबसे जरूरी - कुरान कितना विश्वसनीय है - क्या यह नैतिक रूप से सच है?
मंदबुद्धि व्यक्ति झूठ का उपयोग करने में एक आश्वस्त आस्तिक था जब वे इससे बेहतर परिणाम देंगे
सच्चाई: उन्होंने संस्थागत भी किया - और खुद का इस्तेमाल किया - "अल-ताकिया" (वैध झूठ) और
"किटमैन" (वैध अर्ध-सत्य) और उन्होंने स्वयं कहा (और स्वयं को कम से कम एक बार अभ्यास किया
अल-बुखारी के अनुसार) वह एक शपथ भी तोड़ देगा यदि वह बाद में पाया कि वह देगा
बेहतर परिणाम। यह सब मुख्य रूप से अल-बुखारी और मुस्लिम के बाद हदीसों के अनुसार है, लेकिन यह भी
कुरान।

और वह एक विश्वासघाती था। एफ देखें। भूतपूर्व। खैबर से निहत्थे शांति प्रतिनिधिमंडल जो उनके पास था
सुरक्षित वापसी की गारंटी - उसने 30 में से 29 की हत्या कर दी (एक बच गया)। उनका नारा भी था:
"युद्ध विश्वासघात है" या "युद्ध छल है"। (इब्न इशाक और हदीस)।

इसके अलावा कुछ आयतें जो उन्होंने दावा किया कि वे अल्लाह की ओर से आई हैं, उनके लिए बहुत सुविधाजनक थीं
व्यक्तिगत रूप से - एफ। भूतपूर्व। वह स्थान जहाँ अल्लाह ने पारिवारिक मामलों में उसकी मदद की
मुहम्मद से पहले स्वर्ग में बनाया जाना), सूरह १११ और अन्य स्थानों पर।

इसके अलावा कई छंद हैं जहां यह स्पष्ट है कि मुहम्मद ही बात कर रहे हैं। ऐसा कैसे
एक किताब में मुहम्मद के बॉटन होने से पहले होने का दावा किया गया था?

और कम से कम नहीं: कुरान में कई छंद हैं जहां मुहम्मद को पता था कि वह था
झूठ बोलना - एफ। भूतपूर्व। जब उसने अपने अनुयायियों से कहा कि जिस कारण से वह चमत्कार करने में असमर्थ था,
यह था कि चमत्कार किसी को प्रभावित नहीं करेंगे और उन्हें वैसे भी मुसलमान बना देंगे। (देखें मेगा
गलती 4)।

कितनी बड़ी संभावना है कि ऐसे आदमी ने सच, सिर्फ सच, और पूरा सच कहा?
शायद ही कोई। लेकिन इस आदमी के शब्द ही इस्लाम का एकमात्र आधार है (यही कारण है .)
मुहम्मद के बारे में कुछ भी नकारात्मक कहना इतना खतरनाक क्यों है, और इसीलिए इस्लाम हैं
"अन्य धर्मों के पैगम्बरों का अपमान करने" के खिलाफ विश्वव्यापी निषेध पर जोर देना और जोर देना -
वे उसके शब्दों और कर्मों के बारे में थोड़ा सा भी संदेह नहीं कर सकते, क्योंकि तब इस्लाम हो सकता है
ढहना)। एक बहुत ही अविश्वसनीय गवाह।

यह मेगा गलती और इसके पीछे असली मुहम्मद के बारे में ऐतिहासिक तथ्य - से लिया गया
इस्लाम के सबसे विश्वसनीय स्रोत हैं: कुरान, इब्न इशाक और हदीस - 100% साबित करते हैं कि
मुहम्मद विश्वसनीय व्यक्ति नहीं थे। यह भी साबित करता है कि वह एक अच्छा आदमी नहीं था - बहुत दूर भी
अमानवीय, बहुत खूनी - - और झूठ बोलने / अपनी शपथ तोड़ने को तैयार - और कुछ छंद वह
बताया, वह बस जानता था कि असत्य थे (उदाहरण के लिए कारण कि वह / अल्लाह चमत्कार क्यों नहीं कर सका)।और
इस आदमी ने जो कहा और किया वह इस्लाम का एकमात्र आधार है। वहाँ है
कुछ नहीं - कुछ नहीं - अन्य। **अल्लाह के लिए एक भी वैध प्रमाण नहीं,**
कुरान के सच होने का एक भी वैध प्रमाण नहीं, एक नहीं
मुहम्मद के एक ईश्वर से संबंध के लिए एकल प्रमाण - करने के लिए नहीं
एक अच्छे परमेश्वर का उल्लेख करें।

मेगा मिस्टेक ३ बस इतना है कि सारा इस्लाम केवल - केवल - उन शब्दों पर बना है जो यहाँ तक कि सभी
मुस्लिम सूत्रों का कहना है कि इस्लाम सबसे विश्वसनीय हैं, परोक्ष रूप से लेकिन बहुत स्पष्ट रूप से कहते हैं कि था
एक बहुत ही अविश्वसनीय आदमी - लेकिन सत्ता, महिलाओं और धन को पसंद करता है (कम से कम रिश्वत के लिए, लेकिन इसके लिए भी)
खुद - मुसलमानों के दावे के बावजूद, इस्लामी स्रोत बताते हैं कि मुहम्मद अमीर थे जब वह
मर गया (उसने केवल अपने धर्म को अपनी संपत्ति का वारिस होने दिया, अपने परिवार को नहीं))।

कोई सबूत नहीं, कोई दस्तावेज नहीं, कुछ भी नहीं - केवल मांग और
अंध विश्वास का महिमामंडन। कई चीजों का उपयोग करने वाले व्यक्ति में अंधा विश्वास
एक धोखेबाज और एक धोखेबाज की पहचान - - - और एक आदमी अपनी सलाह दे रहा है
फॉलोअर्स कि अगर एक टूटी हुई शपथ आपके लिए या इस्लाम के लिए बेहतर होती,
आपको एक शपथ भी तोड़नी चाहिए।

यह आदमी और उसकी दास्ताँ ही एक ऐसी चीज़ है जिस पर इस्लाम बनाया गया है।

कोई भगवान अपना घर, अपना धर्म, ऐसी ढीली रेत पर नहीं बनाता - बाइबिल में एक प्रतीक है कि क्या है
अविश्वसनीय और इसके कारण आपको अंत में निंदा करनी पड़ेगी।

मागा गलती 4: चौथी बड़ी गलती यह है कि उनमें से कई हैं
कुरान में गलतियाँ "विज्ञान" के अनुसार हैं
मुहम्मद के समय में और उसके आसपास अरब में विश्वास किया

(च। उदा। ऊपर वर्णित पूरी तरह से गलत खगोल विज्ञान और भाग II में, अध्याय 1-3-10 और
१-३-११.) - एक ऐसा तथ्य जिसका मुसलमान कभी जिक्र नहीं करते। कोई भी सर्वज्ञ ईश्वर गलत विज्ञान से बंधा नहीं है
630 ई. के आसपास पृथ्वी का एक छोटा सा टुकड़ा। लेकिन मुहम्मद थे। किसी भगवान ने ये गलतियाँ नहीं कीं।

लेकिन उल्लेखित तथ्य यह है कि गलतियाँ उस समय के विज्ञान के अनुसार होती हैं,
यह स्पष्ट करता है कि गलतियाँ - और इसलिए पुस्तक - एक या एक से अधिक मनुष्यों द्वारा की गई हैं
मुहम्मद के समय में रह रहे हैं। सबसे अधिक संभावना स्वयं मुहम्मद द्वारा।

किसी भी भगवान को पृथ्वी के एक छोटे से हिस्से से गलत "विज्ञान" का उपयोग नहीं करना पड़ेगा, जो कि एक छोटा सा भी नहीं है
ब्रह्मांड का हिस्सा, और इससे भी अधिक: उसे "विज्ञान" का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं होगी जो मनुष्य को विश्वास था
उस छोटे से क्षेत्र में एक निश्चित समय पर जो मुहम्मद का समय हुआ करता था। साथ ही यह तथ्य
अकेले ही १००% साबित करता है कि कुरान एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा नहीं बनाया गया है - यह एक or . द्वारा बनाया गया है
अरब में मुहम्मद के समय मनुष्यों के पास जितना ज्ञान था उससे अधिक मनुष्य। कुंआ,
एक विकल्प है: कि कुछ अंधेरी ताकतों ने इसे बनाया और मुहम्मद को दे दिया - च। भूतपूर्व। NS
गेब्रियल के वेश में शैतान (मुहम्मद के पास अंतर जानने का मौका नहीं होगा)।
सारा खून और अमानवीयता और यहां तक कि मदीना के सूरह में भी झूठ इस बात की ओर इशारा कर सकता है
दिशा, लेकिन व्यक्तिगत रूप से हम इस पर विश्वास नहीं करते हैं - एक शैतान भी इतना नहीं बना सकता
गलतियाँ, आदि, यदि अन्य कारणों से नहीं, तो क्योंकि उसे पता होना था कि उसे पता चल जाएगा
जल्दी या बाद में और अपने अनुयायियों पर अपनी शक्ति खो देते हैं।

अगर कुरान के पीछे कुछ अलौकिक शक्तियां थीं, तो किताब और विशेष रूप से
मदीना के सूरह **बिल्कुल और निर्विवाद रूप** से **साबित करते हैं कि यह किसी अच्छे द्वारा नहीं बनाया गया था**
भगवान या अच्छी शक्तियों द्वारा - वे सूरह बहुत अधिक अन्यायपूर्ण हैं, बहुत खूनी हैं, और भी
अमानवीय , और इसके अलावा तथ्य यह है कि मुहम्मद की राय थी कि वह
यहां तक कि उसके जई को भी तोड़ दें यदि वह बेहतर परिणाम देता है। कोई अच्छी शक्ति नहीं - और कोई अच्छा भगवान नहीं - है
ऐसे दृष्टिकोण। यदि कोई अलौकिक शक्ति शामिल थी, तो वह एक अंधकारमय शक्ति थी - f. भूतपूर्व। इबलिस
(मुस्लिम शैतान) भेष में)।

निष्कर्ष- कोई भी भगवान एक छोटे और आदिम क्षेत्र के गलत "विज्ञान" तक सीमित नहीं है एक आदिम समाज में एक पिछड़े ग्रह पर एक अस्पष्ट कोने में एक आदिम समय के दौरान ब्रह्मांड में अरबों अन्य लोगों के बीच बहती एक मध्यम आकाशगंगा की। कोई भगवान कभी नहीं होगा अपने धर्म को गलत विज्ञान के आधार पर (यहां तक कि एक विशेष समय और स्थान से भी) Earth) और अन्य गलतियाँ जो जल्दी या बाद में पता चलेंगी। (लेकिन मुहम्मद ऐसी गलत जानकारी के साथ क्या करना होगा यदि वह या उसके आस-पास के अन्य लोगों ने धर्म।)

मेगा गलती 5. 5 मेगा गलतियों में से आखिरी यह है कि मुहम्मद स्पष्ट रूप से कुरान में कुछ स्थानों पर पड़े हैं।

एफ. पूर्व. कुरान में वे सभी स्थान जहाँ मुहम्मद को प्रश्नों से अपना बचाव करना है अल्लाह या अल्लाह से अपने संबंध को साबित करने वाले चमत्कारों के लिए, और बताता है कि नहीं का कारण चमत्कार, यह है कि यह किसी को भी विश्वास नहीं दिलाएगा।

जैसा कि मुहम्मद के मानक उत्तर से पहले उल्लेख किया गया था कि अल्लाह भेजना नहीं चाहता था चमत्कार, क्योंकि कोई भी उस वजह से किसी भी तरह विश्वास नहीं करेगा। यह उत्तर है स्पष्ट रूप से गलत - एक या दो या तीन वास्तविक चमत्कारों ने लोगों का एक बड़ा हिस्सा बना दिया था और चारों ओर, घंटों और दिनों में मुसलमानों पर विश्वास करना। मुहम्मद एक बुद्धिमान व्यक्ति थे और वह भी लोगों को जानता और समझता था - वह जानता था कि यह तर्क झूठ था। मुहम्मद ने भी कहा उन चमत्कारों के बारे में जिन्होंने बुतपरस्तों को मुसलमान बना दिया - f. भूतपूर्व। फिरौन रामसेस II के जादूगर। वो भी जानता था यीशु और उसके चमत्कारों के प्रभावों के बारे में। जो किसी के साथ किसी को भी 100% साबित करता है मनोविज्ञान और मानव स्वभाव और व्यवहार के तरीकों का ज्ञान, जो मुहम्मद जानता था बहुत अच्छी तरह से कि उसने जो कुछ अल्लाह को बताया था, उसके कम से कम कुछ हिस्से झूठ थे।

इस मेगा गलती को मुहम्मद द्वारा अल-ताकिया (the .) के संस्थागतकरण द्वारा मजबूत किया गया है वैध झूठ) और किटमैन (वैध अर्ध-सत्य) प्लस मुहम्मद के स्पष्ट कथन कि छल है अनुमति दी गई है और यहां तक कि शपथ तोड़ना भी उचित है यदि बेईमानी से बेहतर परिणाम मिलता है ईमानदारी। एक बात के लिए कोई भरोसा नहीं कर सकता कि ऐसे अविश्वसनीय आदमी ने पूरा सच कहा था और केवल सच। लेकिन इससे भी बदतर: किसी सर्वशक्तिमान ईश्वर को झूठ की आवश्यकता नहीं है - और कोई सर्वज्ञ ईश्वर नहीं करेगा कभी झूठ का प्रयोग करें, क्योंकि वह जानता था कि उसके अनुयायी देर-सबेर झूठ को देखेंगे और उस में ढीला आत्मविश्वास।

किसी भी सर्वज्ञ या सर्वशक्तिमान ईश्वर को झूठ पर भरोसा करने की आवश्यकता नहीं है।

इन 5 मेगा गलतियों में से प्रत्येक अलग-अलग - और अक्सर अलग-अलग हिस्से अकेले - 100% साबित होते हैं कि कुरान, मुहम्मद और इस्लाम के साथ कुछ गंभीर रूप से गलत है। कोई कुछ बुद्धि और ज्ञान वाला व्यक्ति कुरान में गलतियों को देख सकेगा (और हदीसों में - f। उदा। कुरान अप्रत्यक्ष रूप से साबित होता है, लेकिन बिल्कुल वही जो सभी दावा करते हैं मुहम्मद से जुड़े चमत्कार जो आपको हदीस में मिलते हैं, किंवदंतियों / परियों की कहानियों से बने हैं। इसलाम यह भी कहता है कि मुहम्मद ने केवल कुरान ही चमत्कार किया था, और इस प्रकार स्वीकार करता है कि हदीसों में पाए जाने वाले "चमत्कार" परियों की कहानियां हैं) कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति विश्वास करने में सक्षम नहीं है कि कुरान के गहन अध्ययन के बाद इस्लाम के पीछे एक सर्वज्ञ ईश्वर है - तब तक नहीं उसे इतनी दृढ़ता से विश्वास करना पड़ता है, या इतनी दृढ़ता से विश्वास करना चाहता है, या इतना ब्रेनवॉश किया गया है कि तथ्य रुचि के नहीं हैं।

और एक छोटा अतिरिक्त बिंदु: अल-अजहर अल द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ कुरान" में- काहिरा में शरीफ इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक) ऐसे विषयों पर दुनिया) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं, और उसे साबित करना संभव नहीं है।

5 मेगा गलतियों के लिए अंतिम निष्कर्ष:

I. **गलतियाँ १००% और किसी भी संदेह से परे साबित होती हैं कि कुरान किसी द्वारा नहीं बनाया गया है सर्वज्ञ भगवान। कोई सर्वज्ञ भगवान नहीं f. भूतपूर्व। एक भी गलती करता है - या अमान्य या सम का उपयोग करता है**

गलत "संकेत" या "प्रमाण" - सैकड़ों द्वारा गलतियाँ आदि करने का उल्लेख नहीं करना।

द्वितीय. **साथ ही सभी विरोधाभास १००% साबित होते हैं और किसी भी संदेह से परे कि कुरान नहीं है एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा बनाया गया। कोई सर्वज्ञ भगवान नहीं f. भूतपूर्व। एक भी विरोधाभास बनाता है - or ट्रेइंग और फेल होने के बाद, या नई जानकारी या बदलाव के बाद खुद को निरस्त करना पड़ता है मन से कुछ और खूनी-विरोधाभास आदि का उल्लेख न करने के लिए सैकड़ों की संख्या में।**

III. शिक्षाएं (हमेशा शब्द नहीं क्योंकि अक्सर अच्छा के बीच अंतर होता है
कुरान में शब्द और मजबूत मांगें, लेकिन वास्तविक शिक्षाएं) और मुहम्मद का जीवन,
विशेषकर ६२२ ईस्वी के बाद, **किसी भी संदेह से परे साबित होता है कि वह संत और ईमानदार नहीं थे आदमी मुसलमान के बारे में बताना पसंद करते हैं** । वह नैतिक रूप से मंद था - चोरी / लूट, बलात्कार, दासता,
विरोधियों की हत्या करना और यहां अधिक आवश्यक: एक आदमी जो झूठ बोलने में विश्वास करता है (यहां तक कि तोड़ना
शपथ) और विश्वासघात, जब उसने खुद के लिए बेहतर परिणाम दिया / उसकी शक्ति के मंच (इस्लाम)
ईमानदारी की तुलना में विश्वसनीय नहीं है। (कई वैज्ञानिक कहते हैं कि वह तब तक ठीक रहा होगा जब तक कि उसने ए . के रूप में शुरुआत नहीं की
622 ईस्वी में हाईवेमैन, लेकिन पैसा और शक्ति ने उसे नैतिक रूप से नष्ट कर दिया, या बनाया
उनके व्यक्तित्व के काले पहलू उभर आते हैं) सिर्फ यही बात साबित नहीं करती कि उन्होंने झूठ बोला था

अल्लाह, इस्लाम और खुद, लेकिन अन्य बिंदुओं के साथ-साथ देखा - च। भूतपूर्व। नीचे बिंदु III - आईटी
साबित करता है कि अपने (मुहम्मद के) झूठ बोलने आदि में विश्वास करने के अलावा, उन्होंने झूठ बोलने का अभ्यास किया
वह स्वयं। हम जो देखते हैं, उसके अलावा उसने कुरान में और कितना झूठ बोला। भूतपूर्व।
मेगा गलती 5 में? शायद उसने सत्ता हासिल करने या हासिल करने के लिए अपने धर्म के बारे में झूठ बोला था?

चतुर्थ। स्पष्ट रूप से गलत तर्कों का उपयोग - तर्क जो कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति जानता था वह झूठ था
- **किसी भी संदेह से परे साबित करें कि मुहम्मद जानता था कि वह कम से कम कुछ जगहों पर झूठ बोल रहा था कुरान** (उस झूठ के अलावा जो उसने हदीसों के अनुसार अन्य कनेक्शनों में इस्तेमाल किया था)। एक आदमी
जो झूठ (शपथ तोड़ना) और विश्वासघात में विश्वास करते थे, जब उन्होंने इसके लिए बेहतर परिणाम दिए
खुद/उसकी सत्ता का मंच (इस्लाम) ईमानदारी से ज्यादा विश्वसनीय नहीं है। और कितने सूरह
और छंद के बारे में वह झूठ बोला था? (देखें f. उदा. अल-ताकिया)?

V. एक और छोटा (?), लेकिन दिलचस्प बिंदु है: एक भविष्यवक्ता वह व्यक्ति होता है जिसके पास उपहार होता है
भविष्यवाणियाँ करने से। मुहम्मद के पास वह तोहफा नहीं था, और एक बार भी दिखावा नहीं किया या
कुरान में दावा है कि उसके पास था। (कई बार उन्होंने भविष्य के बारे में क्या कहा?
सच हुआ, और इस वजह से याद किया गया - जबकि उसने जो कहा वह नहीं आया
सच है, लंबे समय से भुला दिया गया है, सामान्य की तरह। लेकिन किसी ने भी शामिल नहीं किया मुहम्मद ने खुद दावा किया था
कि वे भविष्यद्वक्ता थे जब उन्हें कहा गया था। और जैसा कि पहले ही कहा गया है: मुहम्मद कभी भी नहीं
इस तरह के उपहार का दावा या दिखावा।) और जैसा कि मुहम्मद भविष्यवाणी करने में असमर्थ थे,
वह वास्तव में कोई नबी नहीं था - एक दूत या प्रेरित हो सकता है (हालांकि किसके लिए?) - लेकिन कोई नबी नहीं। उन्होंने केवल एक प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक "उधार" लिया।

VI. सभी गलतियाँ जो अरब के (गलत) विज्ञान के अनुसार हैं (या वास्तव में इसकी)
पड़ोसियों') 630 ईस्वी के आसपास, यह भी किसी भी संदेह से परे साबित होता है कि यह पुस्तक किसी द्वारा नहीं बनाई गई है
सर्वज्ञ भगवान - कोई भी सर्वज्ञ भगवान एक छोटे से क्षेत्र के गलत विज्ञान का उपयोग करने के लिए बाध्य नहीं है
पृथ्वी और समय की एक विशिष्ट अवधि में - यहां तक कि बहुत ही आदिम विज्ञान के साथ समय की अवधि।

इस तथ्य के इर्द-गिर्द कोई रास्ता नहीं है कि कुरान स्वयं 100% और किसी से परे साबित हो संदेह है कि कुरान के साथ कुछ गंभीर रूप से गलत है - और मुहम्मद के साथ - और इसलिए इस्लाम के साथ।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 1 (= II-1-3-1)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची थीम द्वारा व्यवस्थित

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और:
कुरान में त्रुटियों के बारे में अल्लाह

७४

पेज 75

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस खंड की सामग्री:

1. कुछ "तथ्यों" का वर्णन करते हैं (के अनुसार) कुरान) अल्लाह के बारे में।
2. कुरान के अनुसार अल्लाह का व्यवहार।
3. अल्लाह से संबंधित विभिन्न विषय।

1. कुछ अल्लाह के बारे में "तथ्यों" (कुरान के अनुसार) का वर्णन करते हैं।

००१ ६/१४९: "अल्लाह के पास तर्क हैं जो घर पहुँचते हैं - - -"। जिसका अर्थ है: अल्लाह सब कुछ तय करता है। "कुरान का संदेश" अपनी टिप्पणी 141 में इसकी व्याख्या करता है सूरह (स्वीडिश से अनुवादित): **"दूसरे शब्दों के साथ: अल्लाह के बीच वास्तविक संबंध भविष्य के बारे में ज्ञान (और फलस्वरूप जो है उसमें अपरिहार्यता के बारे में) भविष्य में घटित होगा*) एक ओर और मनुष्य की अपेक्षाकृत (!!*) स्वतंत्र इच्छा दूसरी ओर - दो ऐसे बयान जो एक-दूसरे के विरोधाभासी प्रतीत होते हैं - मनुष्यों के लिए जो संभव है उससे बाहर हैं समझने के लिए, लेकिन जैसा कि दोनों कथन अल्लाह की ओर से किए गए हैं (कुरान* में) दोनों को होना चाहिए सच"।** यह तर्क "सत्य" शब्द के पीछे के अर्थ के लिए अंतिम हार है।

ऐतिहासिक वास्तविक मुहम्मद जैसे नैतिक रूप से नष्ट चरित्र के एक व्यक्ति ने कहा है अप्रमाणित और अप्रमाणित कहानी - - - और यही परम सत्य भी है सैकड़ों गलतियाँ, अंतर्विरोध, और अन्य गलतियाँ, और यहाँ बिल्कुल सामने असंभव !!

यह इस दावे के लिए भी अंतिम हार है कि यह संभव है इस दावे के साथ कि आदमी के पास स्वतंत्र इच्छा है, उस दावे के साथ जोड़िए अल्लाह आपके जीवन का हर विवरण चाहता है।

***002 7/28: "अल्लाह लज्जाजनक बातों की कभी आज्ञा नहीं देता"। गलत:

1. अल्लाह बच्चों के साथ यौन संबंध बनाने की आज्ञा/अनुमति देता है। एक वयस्क के लिए बच्चे के साथ सेक्स का आनंद लेना है पूरी तरह से शर्मनाक। एक वयस्क के लिए परिचय देने के लिए a सेक्स के लिए बच्चा अमानवीय है और इससे भी ज्यादा शर्मनाक मुहम्मद ने तो यह भी दिखाया कि यह ठीक था कम से कम लड़की से 9 है - और बदतर: वह - ऐशा - उसकी पसंदीदा बन गई पत्नी अपने बचपन के बाकी।
2. अल्लाह का हुक्म है कि कोई गुलामों को अ में ले जा सकता है जिहाद - और कोई भी झड़प या युद्ध जहाँ मुसलमान शामिल हैं, जिहाद घोषित है। के लिए सदियों (सी.ए. 1930 - 1940 तक) सभी चार इस्लाम के कानून स्कूलों ने कहा कि यदि विपरीत भाग गैर-मुस्लिम थे, यह अच्छा था

पेज 76

जिहाद घोषित करने के लिए पर्याप्त कारण - जिसका अर्थ है कि कोई गुलाम शिकारी भी होने का दावा कर सकता है जिहाद कर रहा है। साथी मनुष्यों को मजबूर करने के लिए गुलाम बनो, तुम्हारे लिए मुफ्त में परिश्रम करना, होना आपके लिए बेचने या दुर्व्यवहार करने या सेक्स के लिए उपयोग करने के लिए स्वतंत्र है खिलौना, पूरी तरह से अमानवीय है, पूरी तरह से स्वार्थी, पूरी तरह से अनैतिक - और पूरी तरह से शर्मनाक। नहीं करने के लिए उल्लेख करें कि यह प्रतिबद्ध करने के लिए एक विचित्र कार्य है एक कल्पित भगवान का नाम अच्छा है।

3. बाल कैदी/गुलाम/पीड़ित का बलात्कार करना है निहायत स्वार्थी, अनैतिक, अमानवीय और बेहद शर्मनाक - - - लेकिन अल्लाह ने आज्ञा दी कि यह ठीक है अगर बच्चा प्रेरित है गर्भवती - और के अनुसार कम से कम 9 वर्ष इस्लाम।
4. किसी भी महिला बंदी/गुलाम/पीड़ित से बलात्कार करना - a साथी इंसान - लगभग उतना ही स्वार्थी है और एक बच्ची के साथ बलात्कार जैसा शर्मनाक और बुरा। लेकिन में कुरान यह "अच्छा और वैध" है अगर महिला है गर्भवती नहीं। कि यह "अच्छा और वैध" है एक कारण हो सकता है कि बलात्कार इतना आम क्यों है मुस्लिम योद्धा/सैनिक। (एक और सहानुभूति इस्लाम का एकीकृत हिस्सा नहीं है - और नैतिक दर्शन के साथ भी ऐसा ही है)।
5. विरोधियों की हत्या करना - व्यक्तिगत भी विरोधियों - संभवतः के नाम पर अच्छा भगवान कुछ ज्यादा है शर्मनाक
6. भेदभाव, नफरत और युद्ध के लिए उकसाना, in संभवतः एक अच्छे देवता का नाम सम है इससे भी बदतर - और एक भगवान का प्रमाण या पाखंड से भरा एक "भविष्यद्वक्ता"।
7. के नाम पर चोरी/लूट/लूटना और उगाही करना ऐसा भगवान - और उनकी अनुमति के साथ "अच्छा और वैध" - लगभग एक बुरा और जैसा है बलात्कार और हत्या के रूप में बहुत पाखंड और रंगभेद / दमन। लेकिन ये सभी बिंदु यह सामान्य है:
    1. वे स्वार्थी योद्धाओं को आकर्षित करते हैं a डाकू "पैगंबर" की सेना - और उसके लिए उत्तराधिकारी'।
    2. वे लालची योद्धाओं को आकर्षित करते हैं a डाकू "पैगंबर" की सेना - और उसके लिए उत्तराधिकारी'।
    3. वे अमानवीय योद्धाओं को आकर्षित करते हैं a डाकू "पैगंबर" की सेना - और उसके लिए उत्तराधिकारी'।
    4. वे आदिम योद्धाओं को आकर्षित करते हैं a डाकू "पैगंबर" की सेना - और उसके लिए उत्तराधिकारी'।

पेज 77

5. यह लुटेरे के लिए सस्ता तरीका है

"पैगंबर" - और उसके उत्तराधिकारियों के लिए - to
एक सेना प्राप्त करें - एक सस्ती सेना।

अंत में: **उस महिला के लिए गंभीर या मृत्युदंड, जिसके साथ बलात्कार हुआ है, लेकिन करने में असमर्थ है 4 पुरुष चश्मदीद गवाह पेश करते हैं जो सबसे अधिक अमानवीय होने की सबसे अधिक संभावना है अनैतिक, सबसे अन्यायपूर्ण और सबसे शर्मनाक कानून हमने कभी भी कम से कम किसी में देखा है आधा सभ्य धर्म या संस्कृति, और अल्लाह/मुहम्मद ने इसका परिचय दिया है।**

***003 10/64: "इसके बाद; अल्लाह के शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। यह वास्तव में है सर्वोच्च फेलिसिटी। " पहला वाक्य आंशिक रूप से समझा सकता है कि मुसलमान इसे स्वीकार क्यों नहीं कर सकते हैं गलतियाँ, चाहे उन्हें कितनी भी बेतुकी "व्याख्या" का उपयोग करना पड़े। दूसरा स्पष्ट रूप से है गलत - देखें एफ। भूतपूर्व। 10/39।

इसके अलावा: यह सूरा मुहम्मद सीए द्वारा तय किया गया था। 621. इस्लाम में कई बदलाव हुए उसके बाद - इस्लाम पूरी तरह से शांतिपूर्ण से बदलकर लूट, नफरत के धर्म में बदल गया और युद्ध। ऐसी कई गलतियाँ भी थीं जिन्हें अब विज्ञान गलत देखता है, और वहाँ थे कई "संकेत" और "प्रमाण" जो वास्तविकता में तर्क के नियमों ने उस क्षण बदल दिए जब वे थे उच्चारण। (सिर्फ वो अशिक्षित मुसलमान नहीं जानते)। दोनों वाक्य बस गलत हैं। 6/115 में भी इसी तरह का दावा।

00a 13/14: "उसके लिए (अल्लाह *) (अकेला) सत्य में प्रार्थना है - - -"। हाँ, लेकिन केवल अगर अल्लाह मौजूद है (और एकमात्र भगवान है)। **एक अच्छा कारण था कि मुहम्मद ने क्यों मांग की और महिमामंडित किया अंध विश्वास: अस्तित्व में है और कोई वास्तविक प्रमाण मौजूद नहीं है और इसके लिए कोई दस्तावेज नहीं है अल्लाह का अस्तित्व - या उस मामले के लिए मुहम्मद के ईश्वर से संबंध के लिए। अंध विश्वास इस्लाम केवल मुहम्मद जैसे नैतिक रूप से संदिग्ध व्यक्ति के शब्दों पर आधारित है। (असली, ऐतिहासिक मुहम्मद केवल गौरवशाली संत इस्लाम पेंट्स से दूर से संबंधित हैं।)**

004 20/114: "सबसे ऊपर अल्लाह, बादशाह, सत्य है!" अल्लाह जैसा कि कुरान में दिखाया गया है सबसे अच्छा आंशिक रूप से सत्य और आंशिक रूप से गलतियों का प्रतिनिधित्व करता है। और क्या वह भी मौजूद है?

दरअसल: अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक द्वारा प्रमाणित किताब "द मैसेज ऑफ द कुरान" में काहिरा में अनुसंधान अकादमी (इस तरह मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक विषयों) दिनांक २७. दिसंबर १९९८ के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है।

005 22/52: "- - - अल्लाह ज्ञान और ज्ञान से भरा है - -।" नहीं अगर कुरान है अपने ज्ञान और ज्ञान के लिए प्रतिनिधि - इस्लाम को वास्तविक और विश्वसनीय उत्पादन करना होगा सबूत अगर वे जोर देते हैं कि अल्लाह के पास बहुत ज्ञान और ज्ञान है। यह भी देखें ११/१ - २७/९ - ३१/२७ - 33/1 - 33/40 - 34/1 - 35/2 - 39/1 - 40/2 - 49/8 - 41/12 - 41/42 - 42/3 - 42/50 - 43/9 -43 /84 - 45/2 - 45/37 - 46/2 - 46/4 - 48/7 - 48/8 - 48/19 - 51/30 - 53/6 - 57/1 - 59/1 - 59/22 - 59/24 - 60/5 - 60/10 - 62/1 - 62/3 - 64/18 - 66/2 - 76/30 - 84/23।

इसके अलावा: क्या आपने कभी गौर किया है कि जिसे घमंड करने की सबसे ज्यादा जरूरत है - जोर से और बार-बार - वह कितना सच्चा है, धोखेबाज और ठग है, और जो अपने बारे में शेखी बघारता है ज्ञान का माध्यम ठीक है, लेकिन शीर्ष बुद्धिमान नहीं है? - वास्तव में ईमानदार और वास्तव में बुद्धिमान व्यक्तियों को उन चीजों के बारे में घमंड करने की आवश्यकता नहीं है। वास्तविक ईमानदारी और वास्तविक कुछ समय के घनिष्ठ संबंध के बाद बुद्धि स्वयं को महसूस करती है - यदि आवश्यकता हो तो इसके बारे में शेखी बघारना, कुछ गलत है।

77

पृष्ठ ७८

006 30/60: "- - - अल्लाह का वादा सच है - - -"। **अल्लाह के वादों के माध्यम से व्यक्त कर रहे हैं मुहम्मद और कुरान। पहले के अनुसार अत्यधिक संदिग्ध नैतिकता वाला व्यक्ति था इस्लामी धार्मिक और ऐतिहासिक साहित्य (कुरान, हदीस, और इब्न इशाक सबसे केंद्रीय लोगों का उल्लेख करने के लिए)। दूसरी तयशुदा किताब है उस आदमी द्वारा, और बड़ी संख्या में गलतियों, विरोधाभासों से युक्त, मुड़ तर्क, मुड़ तर्क, अमानवीय नैतिकता और नैतिकता, आदि, आदि इस्लाम को लाना होगा विश्वास करने के लिए वास्तविक प्रमाण - और इस्लाम अब तक कुछ भी साबित करने में असमर्थ रहा है मौलिक - - - वे इसके बजाय महिमामंडित करते हैं और भोले अंध विश्वास पर जोर देते हैं** । यह भी देखें 16/38 - 32/9 - 35/5 - 40/77 - 46/17।

**007 31/30: "ऐसा इसलिए है क्योंकि अल्लाह (एकमात्र) रियल्टी - - -" है। क्या सच में अल्लाह एक हकीकत है? सभी

उसके बारे में किस्से सिर्फ एक आदमी से निकलते हैं - एक आदमी यहाँ तक कि इस्लामी इतिहास भी बताता है
एक लंबे समय तक एक मुख्य राजमार्ग के रूप में और चोरी / लूट और जबरन वसूली से (के लिए)
अपहृत सेल्समैन, आदि)। अपने विरोधियों पर हत्या और हत्या की पहल करने वाला व्यक्ति (f.
भूतपूर्व। बद्र की लड़ाई के बाद अस्मा बिन्त मारवान (महिला कवि), अल-नाद्र, अबू उज्जा और ओक्बा,
अबू अफाक (100 वर्ष से अधिक पुराना कहा जाता है), काब इब्न अल-अशरफ, इब्न सुनयना, ओथमान बिन
मोघिरा, अबी 'एल हकाक, और किनाना को नहीं भूलना बी। अल-रबी जिसे उसने मौत के घाट उतार दिया
धन पाया, और बाद में उसने व्यक्तिगत रूप से किनाना की 17 वर्षीय नवविवाहित पत्नी सफीजा के साथ बलात्कार किया
(मुहम्मद तब लगभग ६० के थे)। एक आदमी जिसने सामूहिक हत्या की पहल की - एक बार लगभग 700 असहाय
खैबर के पुरुष बंदी, और उनके सभी बच्चों और महिलाओं को गुलाम बनाया। और कम से कम दो
दासी, रैहाना बिन्त अम्र और उपरोक्त सफीजा बिन्त हुयय ने बलात्कार किया और
अपने निजी इस्तेमाल के लिए लिया), एक बलात्कारी जिसे अल्लाह से अपने और अपने सभी के लिए अनुमति मिली है
पुरुषों से बलात्कार करने के लिए ("यौन संबंध रखने के लिए" अधिक विनम्र शब्दों का उपयोग करने के लिए) सभी महिला दासियाँ और
कैदी जो गर्भवती नहीं थीं (यह अल्लाह के बारे में भी कुछ बताता है)। यह ज्ञात नहीं है कि क्या वह
अधिक "युद्ध" कैदियों और/या दासों के साथ बलात्कार किया और कितने मामलों में, लेकिन आकस्मिक तरीके से उनके पुरुष
इन दोनों के साथ उसके बलात्कार को स्वीकार किया, यह संकेत दे सकता है कि यह उनके लिए कोई बड़ा आश्चर्य नहीं था। एक आदमी कि
युद्ध शुरू किया और युद्ध की सभी लूट का 20% प्राप्त किया, जिसमें दास शामिल थे (हालांकि सभी अपने व्यक्तिगत के लिए नहीं)
उपयोग) - 100% अगर पीड़ितों ने बिना लड़े हार मान ली। और सत्ता की लालसा वाला आदमी - देखने में आसान
कुरान और हदीस दोनों से। **और एक आदमी - और एक भगवान - पूरी तरह से उत्पादन करने में असमर्थ
कहानियों के लिए एक वास्तविक प्रमाण का एक कोटा।** (स्रोत: दूसरों के बीच: इब्न हिशाम और इब्न इशाक -
मुहम्मद के बारे में जीवनी के लिए इस्लाम द्वारा दोनों का सबसे अधिक सम्मान किया जाता है। इब्न इशाक की "द लाइफ ऑफ"
मुहम्मद "इस्लाम में सबसे अधिक सम्मानित हैं - बगदाद में खलीफा के लिए लिखा गया है
750 ई. साथ ही कुरान और हदीस - अल-बुखारी और मुस्लिम)।

केवल इस आदमी ने कुरान में किस्से सुनाए - ऐसे किस्से जिनमें सबसे ऊपर सैकड़ों और सैकड़ों हैं
गलतियों की, कम से कम सैकड़ों ढीले बयान, और कई विरोधाभास, और सैकड़ों
अमान्य "संकेत" और "प्रोफेसर" - ढीले बयान और अमान्य "संकेत" / "प्रमाण" होने के नाते
धोखेबाजों और धोखेबाजों और सच्चे तर्कों के बिना व्यक्तियों की पहचान।

इस्लाम के अनुसार एक अच्छा और सिद्ध व्यक्ति। (यदि यह सच है, तो हम आशा करते हैं कि हम कभी भी किसी बुरे से नहीं मिलेंगे
मुस्लिम।)

लेकिन एक सामान्य आदमी कहता है कि वह संदिग्ध और संदिग्ध नैतिकता वाला था। एक संदिग्ध है
संदेहास्पद नैतिकता वाला व्यक्ति, एक ऐसा व्यक्ति जो झूठ का उपयोग करने में विश्वास करता था जब उसके पास कोई कारण था
वह, और जो मामूली सबूत पेश करने में असमर्थ था, लेकिन बहुत हवादार और आंशिक रूप से
ऐसा करने में असमर्थता के लिए अतार्किक बहाने, प्लस "संकेत" और "सबूत" बिना मूल्य के, क्या यह एक है
वह आदमी जो हमेशा सिर्फ और सिर्फ नकारा न जा सकने वाला और पूरा सच बताता है?

और अल्लाह की वास्तविकता के लिए इस्लाम का एकमात्र संकेत इस तरह की कहानियां हैं
यार। 22/6 - 22/62 - 23/116 भी देखें।

००८ ३५/१४: "और कोई भी (हे आदमी!) आपको (सच्चाई) एक (अल्लाह) - - -" की तरह नहीं बता सकता है। शायद यह
सच हो अगर अल्लाह मौजूद है। लेकिन जो सच कुरान में बताया गया है, वह ज्यादा से ज्यादा आंशिक रूप से सच है-गलतियां,
अमान्य "संकेत" और "प्रमाण", विरोधाभास, अस्पष्ट भाषा, आदि। यह भी देखें 28/75 - 34/48 -
43/86.

***009 42/24: "और अल्लाह - - - अपने शब्दों से सच साबित करता है।" मुहम्मद से कई पूछा गया
अपने - या संभवतः अल्लाह के - शब्दों को साबित करने का समय लेकिन उसने कभी नहीं किया, और ऐसा कभी नहीं लगा
सक्षम, यह और भी अधिक, जैसा कि f. भूतपूर्व। **उसके कुछ "स्पष्टीकरण" के लिए वह कभी क्यों नहीं कर सका
कुछ भी साबित करो, उसके जैसा बुद्धिमान व्यक्ति जानता था कि झूठ है** । और कुरान के शब्द
अन्य कारणों के अलावा कोई बात साबित न करें क्योंकि ये हैं:

I. तथ्य होने का दिखावा करने वाली बहुत सारी गलतियाँ।
(ठग ले?)
द्वितीय. का दिखावा करने वाले बहुत सारे ढीले बयान
तथ्य हो। (ठग ले?)
III. बहुत सारे अमान्य "संकेत" होने का दिखावा करते हैं
दस्तावेज़ीकरण। (ठग ले?)
चतुर्थ। बहुत अधिक अमान्य "सबूत" - कुछ सम
गलत - दस्तावेज होने का दिखावा।
(ठग ले?)

V. कुछ स्पष्ट झूठ - f. भूतपूर्व। कि चमत्कार होगा
किसी को विश्वास न दिलाना। (ठग लें।)
VI. मुहम्मद कुछ भी पेश करने में असमर्थ थे
लेकिन सबूत मांगे जाने पर तेजी से बात करते हैं।
(ठग ले?)
सातवीं। तर्क के बहुत सारे अमान्य उपयोग। (ठग ले?)
आठवीं। बहुत सारे विरोधाभास - (झूठ साबित होते हैं?)

ये सब धोखेबाज़ और धोखेबाज़ के लक्षण हैं।

०१० ४९/१३: "और अल्लाह को पूरा ज्ञान है और वह (सभी चीजों से) परिचित है।" नहीं अगर वह
एक "मदर बुक" है (देखें f. पूर्व 13/39 - 43/4) जैसे कुरान अपने स्वर्ग में पूजनीय है, और यदि नहीं
उसने अपने धर्म के आधार के रूप में इतनी गलत सामग्री वाली एक पुस्तक की एक प्रति नीचे भेजी। देखो
40/75 और 41/12। यह भी देखें 4/176 - 15/86 - 27/6 - 27/44 -31/34 - 32/6 - 35/28 - 48/26 - 49/1 -
49/16 - 49/18 - 57/3 -58/7 - 64/4 - 65/12 - 67/13।

इसके अलावा: क्या आपने कभी गौर किया है कि जिसे घमंड करने की सबसे ज्यादा जरूरत है - जोर से और बार-बार
- वह कितना सच्चा है, धोखेबाज और ठग है, और जो अपने बारे में शेखी बघारता है
ज्ञान ठीक होने का माध्यम है, लेकिन शीर्ष बुद्धिमान और शिक्षित नहीं है? - वास्तव में
ईमानदार और वास्तव में बुद्धिमान और बुद्धिमान व्यक्तियों को उन चीजों के बारे में घमंड करने की आवश्यकता नहीं है। असली
ईमानदारी और वास्तविक बुद्धिमत्ता कुछ समय के घनिष्ठ संबंध के बाद खुद को महसूस करती है - अगर वहाँ है
शेखी बघारने की जरूरत है, कुछ गड़बड़ है।

०११ ५६/८०: "एक रहस्योद्घाटन (कुरान*) दुनिया के भगवान से (अल्लाह *) - - -"। यह कर सकते हैं
सच में ऐसा हो? 41/12 - और 40/75 देखें। असंभव - कोई भी सर्वज्ञ ईश्वर नहीं बनायेगा / वितरित करेगा
इतनी सारी गलतियों, विरोधाभासों, आदि के साथ पुस्तक - उल्लेख नहीं करने के लिए इसे अपने स्वर्ग में रखें
एक श्रद्धेय मदर बुक (13/39 - 43/4) के रूप में। क्या यह किसी भगवान का रहस्योद्घाटन हो सकता है? या अन्य
चारों ओर: क्या कोई चीज इतनी सारी गलतियाँ, विरोधाभास पैदा कर सकती है, इतना अमान्य
तर्क एक ही दुनिया के भगवान और भगवान हो? यह भी देखें 2/131 - 26/109 - 26/127 - 26/145 -
26/192.

०१२ ७४/५६: "वह (अल्लाह*) नेकी का मालिक है - - -।" एक भगवान कानून बना रहा है जो कहता है कि
हत्या करना और बलात्कार करना और चोरी करना और गुलाम बनाना "सही और अच्छा" है, और कौन कहता है कि a
महिला के साथ बलात्कार होने पर उसे अभद्रता के लिए सख्त सजा दी जाएगी और 4 पुरुष नहीं ला सकतीं
कर्म का साक्षी, धर्मी नहीं है - इसके विपरीत: वह सबसे अमानवीय है,
पूरे ब्रह्मांड में सबसे बुरे और सबसे अन्यायी प्राणी। **अंतिम उल्लेखित कानून - दंड देने के बारे में
बलात्कार की महिला - अब तक के सबसे अन्यायपूर्ण कानूनों में से एक है (हो सकता है)
साथ में उस कानून के साथ जो कहता है कि जिहाद में चोरी/लूट/बलात्कार/हत्या - सब कुछ
जिहाद है - "अच्छा और वैध"), विशेष रूप से अल्लाह के रूप में (यदि वह मौजूद है और सर्वज्ञ है) जानता है
वह दोषी नहीं है।**

2. कुरान के अनुसार अल्लाह का व्यवहार।

00b 2/65-66: "हम (अल्लाह*) ने उनसे कहा 'तुम वानर बनो, तुच्छ और ठुकराया'। तो हमने इसे बनाया
अपने समय और अपने वंश के लिए एक उदाहरण, और अल्लाह से डरने वालों के लिए एक सबक "।
मनुष्य का वानर में बदल जाना एक असाधारण कथन है। एक असाधारण बयान
एक असाधारण प्रमाण की आवश्यकता है। यहां कुरान कोई प्रमाण नहीं देता है।

00c 2/105: "लेकिन अल्लाह अपनी विशेष दया के लिए जिसे वह चाहेगा - - -"। मुहम्मद
असद यहाँ बताते हैं कि यह कह रहा है कि यहूदियों और ईसाइयों ने इस पर विश्वास करने से इनकार कर दिया
मुहम्मद और उनका कुरान, क्योंकि मुहम्मद "बाहर" से थे - कुरान, इस्लाम
और मुसलमान इस अप्रमाणित दावे को दोहराते और दोहराते हैं और इसे "व्याख्या" के रूप में उपयोग नहीं करते हैं।
जबकि वास्तविक मुख्य कारण यह था कि इतनी संख्या में और ऐसे मौलिक थे
बाइबिल से मतभेद, कि स्पष्ट रूप से कुछ बहुत गलत था। इसके अलावा, यहूदी - the
क्षेत्र में गैर-अरबों का पूर्ण बहुमत - माना जाता है कि उनके पास एक वाचा थी, और दोनों कुरान
और आधुनिक समय के इस्लाम और मुसलमान इतने बेईमान हैं कि इस तथ्य का कभी भी उल्लेख नहीं कर सकते
यहूदियों को मुहम्मद की शिक्षाओं में दिलचस्पी न होने का मुख्य कारण: वाचा
और अलग-अलग धर्म ही दो कारण थे जिनकी वजह से उन्हें इस्लाम में दिलचस्पी नहीं थी -
वह नहीं जो कुरान और इस्लाम दावा करता है और दावा करता है और दावा करता है (उनके लिए बिल्कुल सामान्य रूप में)
बिना किसी सबूत या दस्तावेज के) - इसका कारण यह था कि मुहम्मद यहूदी नहीं थे।

०१३ २/१०८: "लेकिन जो कोई ईमान (इस्लाम*) से बदल कर अविश्वास में बदल गया, वह बिना
सम मार्ग से सन्देह (स्वर्ग का मार्ग*)"। सभी गलतियों और गलत तर्क के साथ
कुरान, सभी विरोधाभासों का उल्लेख नहीं करने के लिए, इस्लाम के लिए सबसे वास्तविक संदेह है
स्वर्ग के लिए "समान रास्ता" हो - यह और भी अधिक है जब कोई जानता है कि उसके लिए एकमात्र स्रोत
कुरान में कहानियां, नैतिक रूप से पतित व्यक्ति और स्वयं घोषित पैगंबर थे
मुहम्मद (जिनके पास भविष्यवाणी करने में सक्षम होने का उपहार नहीं था, लेकिन उन्होंने अच्छा इस्तेमाल किया
शीर्षक सभी समान) - समय के दौरान लगभग सभी स्वयं घोषित पैगंबर बन गए हैं
झूठे भविष्यद्वक्ता इस जीवन में कुछ चाहते हैं - आम तौर पर पैसा, महिला और/या शक्ति -
उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले साधनों की बहुत अधिक परवाह किए बिना। मुहम्मद कम से कम महिलाओं को चाहते थे और
शक्ति। (और अगर कोई अगला जीवन है: इस्लाम गलत तरीका है तो सभी मुसलमान कहाँ समाप्त होते हैं)
बहुत देर से पता चलता है कि यह एक बना हुआ धर्म हो सकता है?)

००डी ६/१०१: "- - - उसके (यहोवा*) एक बेटा कैसे हो सकता है जब वह कोई पत्नी नहीं रखता है?" गलत - और
कुरान ने खुद एक संभावित समाधान दिया है: यह घोषणा करता है कि भगवान सिर्फ "बी" और कह सकते हैं
यह है। हो सकता है कि यहोवा ने अभी कहा "पुत्र बनो", और यीशु था।

**लेकिन एक और, लेकिन अल्पज्ञात तथ्य है: बहुत पुराने यहूदी धर्म में एक था
महिला देवता भी। उन्होंने भगवान और उनके अमत के बारे में बात की (दूसरों के बीच स्रोत "नया"
वैज्ञानिक")। पुराने इब्रियों के बहुत ही मर्दाना समाज में, देवी को भुला दिया गया था,
हालाँकि, - - - लेकिन यहोवा के लिए एक पुत्र "स्वाभाविक मार्ग" होना संभव था। भगवान करेंगे
यह जानते हैं, लेकिन मुहम्मद नहीं। ऊपर 17/111 भी देखें।

80

पेज 81

लेकिन देवताओं को बच्चों को इंसानों की तरह क्यों बनाना चाहिए? 18/5 - 112/3 में भी ऐसा ही दावा।

00e 7/57: "यह वही है जो हवाओं को भेजता है - - -"। हवाएं अंतर से बनती हैं
तापमान और हवा का दबाव। इस्लाम को साबित करना होगा कि अल्लाह कर रहा है - अगर वह करता है।

**०१४ ९/१११: "अल्लाह ने ईमान वालों से उनके व्यक्ति और उनका माल मोल लिया है; - - - वे
उसके पक्ष में लड़ो, और घात करो और मारे जाओ; एक प्रतिज्ञा जो उस पर सच्चाई से, व्यवस्था के द्वारा, बान्धी हुई है,
सुसमाचार, और कुरान: - - -"। यह वास्तव में एक मजबूत है। अगर ऐसा कुछ है जो . है
बिल्कुल निश्चित है, यह है कि आपको सुसमाचारों में आदेश या हत्या के लिए उकसाना नहीं मिलता है। ये है
110% गलत।

०१५ १३/२८: "- - - क्योंकि निस्संदेह अल्लाह की याद में दिलों को संतुष्टि मिलती है"।
यह केवल (कुछ) मुसलमानों के लिए सच है, और मुश्किल समय में भी कुछ अन्य लोग आराम चाहते हैं
धर्म - और केवल उनमें से कुछ के लिए सामाजिक अनुकूलन के कारण भी। विज्ञान बताता है कि a
लोगों का मामूली अंश (5 - 10% हो सकता है) के पास भगवान के लिए एक आंतरिक ड्राइव है, और कुछ और
जो जीवन कठिन होने पर ऐसी सोच का सहारा लेते हैं। (२००६ या २००७ में उन्होंने यह भी पाया कि कौनसा
हमारे डीएनए में जीन जो इस ड्राइव को उत्पन्न करता है। एक सिद्धांत यह है कि धर्म विकासवाद का पक्षधर है
क्योंकि यह समूह को करीब लाता है और फिर जीवित रहने की संभावना अधिक होती है)। ये लोग
अपने धर्म में संतुष्टि पाते हैं - चाहे वे किसी भी धर्म में हों - यदि वे इसे मानते हैं। और अगर
वे मुसलमान होते हैं, फिर वे अल्लाह में संतुष्टि पाते हैं। लेकिन ध्यान दें: संतुष्टि करता है
वे जिस ईश्वर में विश्वास करते हैं, उससे उत्पन्न नहीं होते - वह एक कल्पना हो सकता है, जैसा कि अल्लाह प्रतीत होता है
(कुरान में सभी गलतियों से दृढ़ता से संकेत मिलता है) - लेकिन उनके अपने विश्वास से, क्योंकि यह मजबूत है
उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त है कि यह सही है, और फिर उस सुरक्षा में सुरक्षित महसूस करें (झूठा या नहीं
कोई फर्क नहीं पड़ता, जब तक वे खुद मानते हैं कि उनका विश्वास सही है)। संभावना है
कि सुरक्षा की यह भावना, और इसलिए सुरक्षा और कम घबराहट, एक और डार्विनियन है
इस विरासत में मिली विशेषता का कारण - यह किसी तरह से अस्तित्व की लड़ाई में बढ़त दे सकता है।

ये विचार निश्चित रूप से प्रश्न उत्पन्न करते हैं: क्या कोई भगवान है या वे सभी हमारे से बने हैं
कुछ अलौकिक की जरूरत है?

हमें इसका पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि अगर यह सब हमारे अंदर से उपजा है, तो हमें करने की कोशिश करनी चाहिए
कम से कम अमानवीय और अनैतिक धर्मों के साथ कुछ।

00f 16/81: "उसने (अल्लाह *) ने तुम्हें हीथ से बचाने के लिए तुम्हें वस्त्र बनाए"। यह एक और है
वह बिंदु जहां कोई आश्चर्य कर सकता है: क्या कुरान के निर्माता केवल मध्य पूर्व को जानते थे? - अधिकांश
दुनिया में इंसानों को ठंड से बचाने के लिए कपड़े बनाए जाते हैं।

०१६ १७/४२: "यदि उसके साथ (अल्लाह*) अन्य देवता होते - - - निहारना, वे
निश्चय ही सिंहासन के प्रभु के लिए एक रास्ता खोज लिया है"। गलत - यह एक संभावना है, लेकिन

निश्चितता से बहुत दूर। एफ. पूर्व. पदानुक्रम संभव है, या सत्ता का बंटवारा। इसी तरह का दावा
२१/२२.

*00g 17/111: "- - - और (उसके) प्रभुत्व में कोई भागीदार नहीं है - - -"। खैर, इस्लाम कहता है कि अल्लाह
यहोवा के समान परमेश्वर। यदि हम उस काल्पनिक कथन से यहीं पर चर्चा करें और कहें
अल्लाह = यहोवा: बहुत पुराने हिब्रू धर्म में याहवे की एक महिला साथी / पत्नी थी
- उनकी अमत (स्रोत: न्यू साइंटिस्ट और कम से कम दो अन्य)। सख्ती से मर्दाना सेमेटिक में
सदियों से अमात को भुला दिया गया संस्कृति। लेकिन हो सकता है कि वह अभी भी मौजूद थी
मुहम्मद का समय - और आज भी हो सकता है? 25/2 भी देखें। और नीचे 72/3 देखें।

00h 19/35: "अल्लाह के लिए यह उचित नहीं है कि वह एक बेटा पैदा करे"। हमे आशा हैं
यह वास्तव में भगवान है जो यहां बात कर रहा है, क्योंकि अगर यह मुहम्मद है; मनुष्य को कैसे पता चलता है
एक भगवान के लिए क्या उपयुक्त है? - और महिमा के अक्सर बच्चे होते हैं - कई बच्चे। एफ. पूर्व. Ramses
II के 67 बेटे और अज्ञात संख्या में बेटियाँ थीं, और जिंगिस खान के इतने बच्चे थे
कि विज्ञान अभी भी एशिया में उसके डीएनए का पता लगा सकता है (स्रोत: न्यू साइंटिस्ट)। और यदि यह कथन है
सच है, यहोवा के बारे में यीशु के "पिता" और "मेरे पिता" कहने की पहेली है - दोनों
बाइबिल और कुरान कहते हैं कि यीशु ईमानदार थे। (याद रखें: मुहम्मद याहवे अल्लाह को कहते हैं, as
वह जोर देकर कहते हैं कि यह एक ही ईश्वर है - हालाँकि यह कुछ ऐसा है जो केवल तभी संभव है जब यहोवा/अल्लाह हो
सिज़ोफ्रेनिक क्योंकि दो शिक्षाओं के बीच बहुत अधिक और बहुत गंभीर अंतर हैं।)
अवैध तर्क। 19/92 - 37/152 - 37/180 भी देखें।

०१७ २२/७८: "वह (अल्लाह*) है, जिसने तुम्हें पहले और इसमें दोनों जगह मुसलमान नामित किया है
(रहस्योद्घाटन) - - -"। गलत। नाम पहले कभी इस्तेमाल नहीं किया गया था - इसका कोई निशान नहीं है
कहीं भी। यह उन मामलों में से एक है जहां इस्लाम को अपना दावा साबित करना होगा।

०१८ २४/६४: "पूरी तरह से सुनिश्चित हो कि जो कुछ स्वर्ग में है (बहुवचन और .) अल्लाह के लिए है
गलत*) और धरती पर।" कुरान जैसी किताब के आधार पर यह सुनिश्चित करना असंभव है
इतनी सारी गलतियों के साथ, मुड़े हुए तथ्य, अंतर्विरोध, और इतना ही अमान्य तर्क, आदि। +
कुछ सादा बेईमानी।

***019 26/209: "- - - और हम (अल्लाह) कभी अन्याय नहीं करते"।

I. एक पुरुष सही ढंग से कह रहा है कि एक महिला के पास है
अगर वह नहीं कर सकता तो अभद्रता अल्लाह से झूठ बोल रही है
4 गवाह पेश करें - भले ही एक सर्वज्ञानी
अल्लाह को पता होना चाहिए कि वह सच बोल रहा है।

द्वितीय. बलात्कार की शिकार महिला को मना किया जाता है
बताओ वह कौन थी, जब तक कि वह उत्पादन नहीं कर सकती 4
पुरुष गवाह जो वास्तव में है
अधिनियम देखा। अगर वह 4 . का उत्पादन नहीं कर सकती है
ऐसे गवाह, और सभी वही बताते हैं कि कौन
बलात्कारी है/हैं, उसके पास 80 चाबुक होंगे
बदनामी के लिए। और वह भी सख्ती से होना है
अवैध यौन संबंध के लिए दंडित किया गया, भले ही a
सर्वज्ञ भगवान जानता है कि वह बता रही है
सत्य!! शायद सबसे अन्यायी और अनैतिक
कानून हमने कभी किसी में देखा है अत्यंत नहीं
आदिम समाज या संस्कृति।

III. एक मालिक के लिए उसका बलात्कार करने की 100% अनुमति है
महिला दास या युद्ध के कैदी (यह हो सकता है
यही कारण है कि मुसलमान अक्सर महिलाओं का बलात्कार करते हैं
संघर्ष - एफ। भूतपूर्व। पहले बांग्लादेश में और
पहले और अब अफ्रीका में)। कुरान भी
सीधे कहता है कि रेप करना भी गुनाह नहीं है तुम्हारा भी
विवाहित दास या युद्ध के विवाहित कैदी, जैसे
जब तक वे गर्भवती न हों। के लिए कीमत
पीड़ितों को इस्लाम और के लिए कोई दिलचस्पी नहीं है
कुरान - और कुछ मुसलमान।

जिहाद - और लगभग किसी भी संघर्ष की घोषणा की जाती है
जिहाद (पवित्र युद्ध)। यह "न्यायपूर्ण और अच्छा" है।

देखें तो और भी हैं। कृपया हमें यह कभी न बताएं कि कुरान में वर्णित अल्लाह कभी नहीं है
अन्यायपूर्ण ये 4 - और अधिक - भयानक हैं। वास्तव में सबसे अन्यायपूर्ण जो हमने कभी किसी में देखा है
कानून। 7/29 - 7/33 - 8/51 - 40/31 - 45/19-20 में इसी तरह के दावे।

०२० २८/५९: "न ही तेरा रब (अल्लाह) किसी आबादी को तब तक नाश करने वाला था जब तक कि वह उसके पास नहीं भेज देता।
एक संदेशवाहक को केंद्र में रखें - - -"। कुरान बहुत से नबियों के बारे में बात करता है - हदीस में यह है
समय और दुनिया भर में 124oooo का उल्लेख किया। (और एक असभ्य, लेकिन
प्रासंगिक अनुस्मारक: मुहम्मद वास्तविक भविष्यवाणियां करने में असमर्थ थे - वह वास्तव में नहीं थे
पैगंबर, केवल "उधार" वह बड़ा शीर्षक)। लेकिन इस्राएल के अपवाद के साथ (और कुछ शासकों ने जो
राजनीतिक कारणों से अपनी मर्जी से ऐसा किया) कहीं भी, कभी भी कोई निशान नहीं हैं
एकेश्वरवादी धर्मों के भविष्यद्वक्ता - न पुरातत्व में, न साहित्य में, न कला में, न कला में
वास्तुकला - लोककथाओं या परियों की कहानियों में भी नहीं। इसके अलावा: कई स्थानों को नष्ट कर दिया गया
युद्ध, अकाल या अन्य विपत्तियाँ उस समय के लिए बिना भविष्यद्वक्ताओं द्वारा देखे बिना
एकेश्वरवादी धर्म उन्हें पहले चेतावनी देता है - कुरान के कहने के बावजूद भी ऐसी सारी बातें
अल्लाह की योजना के अनुसार होता है।

श्लोक गलत है। और हमें यह भी यकीन नहीं है कि ऐसा तामसिक और कठोर भगवान एक अच्छा है या
परोपकारी भगवान - जब कोई कुछ कहता या घोषित करता है, लेकिन मांग करता है या कुछ करता है
अन्यथा, हम हमेशा मानते हैं कि मांगें और कर्म सस्ते शब्दों की तुलना में अधिक विश्वसनीय हैं।
17/15 - 17/16 में इसी तरह के दावे।

०२१ २९/४५: "- - - अल्लाह की याद निःसंदेह सबसे बड़ी (जीवन की वस्तु) है।" वहाँ है
इस बारे में बहुत संदेह है अगर उसने कुरान की रचना की है - गलतियाँ साबित करती हैं कि वह मामले में बहुत है
सर्वज्ञता से दूर, बेकार "संकेत" और "सबूत" साबित करते हैं कि वह तार्किक में बहुत अच्छा नहीं है
सोच, सभी विरोधाभास साबित करते हैं कि उसकी कोई पूर्ण स्मृति नहीं है, और उसका उपयोग अमान्य है
बहाने और अपने अस्तित्व के प्रमाण भेजने में उसकी अक्षमता साबित करती है कि वह सर्वशक्तिमान नहीं है। और अगर
कुरान किसी और ने बनाया तो शक और भी बड़ा है, क्यूंकि कुरान और इस्लाम दोनों ही हैं
बिना किसी मूल्य के - या नकारात्मक मूल्य के साथ, जितना अधिक धर्म अमानवीय है (एफ।
भूतपूर्व। युद्ध, आतंकवाद, महिलाओं का दमन और उनमें से कई का बलात्कार करने की स्वतंत्रता, का दमन
सभी गैर-मुसलमान, गुलामी के बारे में विचार, और गैर-मुसलमानों के प्रति दुश्मनी)।

०२२ ३०/२६: "- - - सभी (प्राणी*) उसके (अल्लाह*) के आज्ञाकारी हैं।" गलत। नहीं गैर-
मुसलमान पूरी तरह से अल्लाह का आज्ञाकारी है। और कोई भी मुस्लिम पापी किसी का भी निष्ठापूर्वक आज्ञाकारी नहीं है
भगवान। इस्लाम को आगे यह साबित करना होगा कि सभी गैर-मनुष्यों में भी कीड़े शामिल हैं और
स्लग और रोगाणु - उसके प्रति समर्पित रूप से आज्ञाकारी हैं। हां, उन्हें यह भी साबित करना होगा कि सभी
विश्वास करने वाले मुसलमान उसके प्रति समर्पित रूप से आज्ञाकारी हैं।

०२३ ३०/३०: "- - - अल्लाह के काम (गढ़ा) में कोई बदलाव नहीं (होने दें): वह (इस्लाम) है
मानक धर्म - - -"। कोई भी "मानक" धर्म इतनी स्पष्ट पुस्तक पर आधारित नहीं हो सकता है
गलतियां। और उम्मीद है कि कोई भी "मानक" धर्म नफरत, दमन और खून पर आधारित नहीं हो सकता।
(यह पैराग्राफ एक कारण है कि इस्लाम क्यों कहता है - या दिखावा - कि कुरान सही है,
और क्यों इस्लाम सबसे स्पष्ट गलतियों को भी स्वीकार नहीं कर सकता - सभी गलतियाँ होनी चाहिए
"समझाया" दूर, क्योंकि अल्लाह के में कोई बदलाव (और निश्चित रूप से कुछ भी गलत नहीं) हो सकता है
काम - कुरान)।

00i 32/5: "वास्तव में, आपके भगवान (अल्लाह *) की दृष्टि में एक दिन आपके एक हजार वर्ष के समान है
(मोहम्मद*) की गणना"। यहाँ कुछ गड़बड़ है जैसा कि ७०/४ कहता है: "- - - उसे

(अल्लाह*) एक दिन में जिसकी माप (अ) पचास हज़ार वर्ष है"? भले ही ऐसा होना चाहिए
आलंकारिक भाषण, 50 का एक कारक ज्यादा है। हकीकत में एक और विरोधाभास। 22/47 भी देखें।

०२४ ३३/४: "- - - वह (अल्लाह*) रास्ता दिखाता है।" संभव नहीं है अगर कुरान का शब्द है
अल्लाह - बहुत सारी गलतियाँ, आदि। एक किताब जो आंशिक रूप से सच है वह एक खराब नक्शा है।

०२५ ३३/७२: "हमने (अल्लाह*) ने स्वर्ग (बहुवचन और गलत*) और (
समतल ग्रह*) पृथ्वी और पर्वत, लेकिन उन्होंने इसे लेने से इनकार कर दिया - - -"। कम से कम न तो
ग्रह (या मुहम्मद की तरह डिस्क) पृथ्वी, न ही इसके पहाड़ों में मस्तिष्क है या
कुछ भी स्वीकार या अस्वीकार करने की चेतना। एक परी की कहानी।

००j ३६/२४: "(अगर मैं एक और भगवान * लेता) तो मैं वास्तव में - - - प्रकट त्रुटि में होता।" **नहीं अगर वह भगवान
मौजूद है - और विशेष रूप से तब नहीं जब उसके ऊपर अल्लाह एक बना हुआ भगवान है (आखिरकार वह लिया गया था
मुहम्मद द्वारा बुतपरस्त अरब देवताओं से अधिक जिन्होंने उसका नाम अल-लाह से बदल दिया
अल्लाह, और यहाँ तक कि अधिकांश बुतपरस्त अरब धार्मिक अनुष्ठानों को भी अपने ऊपर ले लिया।)**

०२६ ४०/५१: "हम (अल्लाह) निःसंदेह अपने रसूलों और ईमानवालों की सहायता करेंगे---
।" गलत - कुरान में सभी गलतियों आदि के साथ, संदेह के भारी कारण हैं।

*०२७ ४०/८२: "क्या वे पृथ्वी पर यात्रा नहीं करते और देखते हैं कि उन लोगों का अंत पहले क्या था
उन्हें?" अरब में और उसके आसपास बिखरे हुए खंडहर थे - और हैं। मुहम्मद ने बताया कि वे थे
अल्लाह ने पापों के लिए दंडित किए गए लोगों के सभी अवशेष (और अच्छे उपाय के लिए वे मजबूत थे)
मुहम्मद के समकालीन अरबों की तुलना में)। जो चाहता है उस पर विश्वास करें - लेकिन किसी प्रोफेसर से संपर्क करें
इतिहास या एक मनोवैज्ञानिक यदि आप करते हैं। कम से कम 3/137 - 6/11 - 7/4 - 9/70 -16/36 . में इसी तरह के दावे
-21/6 - 40/21 - 40/82।

०२८ ४३/१०: "--- और (अल्लाह) ने तुम्हारे लिए सड़कें---" बनाई हैं। हमने a . के बारे में कभी नहीं सुना है
एक भगवान द्वारा बनाई गई सड़क, शायद परियों की कहानियों को छोड़कर। अरब में रास्ते/सड़कें इतनी पुरानी थीं कि
उनकी शुरुआत किसी को याद नहीं रही और फिर मुहम्मद इस तरह की बातें बता सकते थे। लेकिन यह है
स्पष्ट रूप से सच नहीं है। 16/15 में इसी तरह का दावा।

०२९ ४३/१४: "और हमारे भगवान (अल्लाह *) के लिए, निश्चित रूप से, हमें वापस लौटना चाहिए।" कम से कम 2oo+ . के साथ
गलतियाँ आदि कुरान में, यह भी गलत हो सकता है - 41/10 और 41/12 देखें। निश्चित रूप से यह नहीं है
यकीन है कि हम अल्लाह से मिलते हैं - अगर कोई भगवान है - इस जीवन के बाद। 19/68 - 62/8 भी देखें।

00k 55/24: "और उसके (अल्लाह के) जहाज चल रहे हैं - - -"। हमने कभी किसी भगवान के मालिक के बारे में नहीं सुना
जहाजों। इसका शाब्दिक अर्थ नहीं हो सकता। लेकिन कुरान कहता है कि इसे अक्षरशः पढ़ा जाना चाहिए।

०३० ६४/८: "अल्लाह और उसके रसूल पर और प्रकाश (कुरान*) पर ईमान लाओ - - -
" प्रकाश के लिए, 40/75 और 41/12 देखें। जैसा विश्वास करने के लिए: सभी गलतियों को देखें,
विरोधाभास, अमान्य दावे/तर्क, आदि - अत्यधिक अनैतिक कानूनों का उल्लेख नहीं करना जो नहीं हैं
किसी भी दयालु भगवान द्वारा बनाया गया।

०३१ ७०/४: "- - - एक दिन में जिसकी माप (अ) पचास हजार वर्ष - - -।" एक ठोस
३२/५ और २२/४७ का विरोधाभास जो दोनों कहते हैं १००० वर्ष।

**001 72/3: "- - - उसने (अल्लाह*) ने न तो पत्नी ली है और न ही बेटा।" अगर अल्लाह एक ही भगवान नहीं है
यहोवा के समान यह सच हो सकता है। लेकिन अगर दोनों एक ही हैं: ठीक है, यीशु ने उसे "पिता" कहा था
हजारों गवाहों के सामने और एक पत्नी के रूप में: वास्तव में पुराने हिब्रू धर्म में भगवान

एक महिला थी - उसकी अमत (स्रोत: न्यू साइंटिस्ट और अन्य)। लेकिन पुरुष संस्कृति में वह
भूल गया था। इसके ठीक ऊपर 17/111 भी देखें।

3. अल्लाह से संबंधित विभिन्न विषय:

00m 2/177: "- - - अल्लाह और आखिरी दिन, और कोणों, और किताब, और पर विश्वास करने के लिए

[illegible] इस्लाम [illegible] में स्वीकार करने जैसा है -
प्रलेखित, यह सब अच्छा और अच्छी तरह से केवल अंध विश्वास पर टिकी हुई है जो एक नैतिक रूप से बहुत संदिग्ध है
व्यक्ति ने एक बार कहा था।

०३२ ६/१०१: "- - - उसके (यहोवा*) के एक पुत्र कैसे हो सकता है जब उसका कोई संगी नहीं है?" गलत - और
कुरान ने खुद एक संभावित समाधान दिया है: यह घोषणा करता है कि भगवान सिर्फ "बी" और कह सकते हैं
यह है। हो सकता है कि यहोवा ने अभी कहा "पुत्र बनो", और यीशु था।

**लेकिन एक और, लेकिन अल्पज्ञात तथ्य है: बहुत पुराने यहूदी धर्म में एक था
महिला देवता भी। उन्होंने भगवान और उनके अमेत के बारे में बात की (दूसरों के बीच स्रोत "नया"
वैज्ञानिक")। पुराने इब्रियों के बहुत ही मर्दाना समाज में, देवी को भुला दिया गया था,
हालाँकि, - - - लेकिन यहोवा के लिए एक पुत्र "स्वाभाविक मार्ग" होना संभव था। भगवान करेंगे
यह जानते हैं, लेकिन मुहम्मद नहीं।

लेकिन देवताओं को बच्चों को इंसानों की तरह क्यों बनाना चाहिए? (कुरान इस पर लौटता है
विषय बल्कि अक्सर।)

०३३ ६/११४: "कहो: 'क्या मैं अल्लाह के अलावा अन्य न्यायाधीश की तलाश करूँ?'" इब्न वाराक के अनुसार "मैं क्यों
मैं मुसलमान नहीं हूं", शब्द "से" मूल अरब पाठ में नहीं पाया जाता है। युसूफ अली ने
इसे छिपाने के लिए जोड़ा गया कि यहाँ एक बार फिर मुहम्मद एक किताब में बोल रहे हैं जिसका उन्होंने नाटक किया था
बहुत समय पहले एक भगवान द्वारा, और अल्लाह के अपने स्वर्ग में एक श्रद्धेय मदर बुक की एक प्रति। (इब्न
वार्राक कुरान में कम से कम 8 ऐसे स्थानों की ओर इशारा करता है: 2/286, 6/104, 6/114, 11/2-3, 19/36,
27/91, 42/10/, 51/50-51)।

०३४ ७/४२: "- - - हम (अल्लाह*) किसी भी आत्मा पर कोई बोझ नहीं डालते हैं, लेकिन जो वह सहन कर सकता है - - -"।
क्या यह सच हो सकता है? - मुसलमानों में भी आत्महत्या (या अल्लाह के लिए मौत की मांग करना, जब
वास्तविक कारण बहुत कठिन जीवन है), अपने परिवार या बच्चे को छोड़कर, सक्षम होने के लिए अपराध का सहारा लेना
रहने के लिए, आदि होता है।

०३५ १४/१२: "हमारे पास (मुसलमानों) कोई कारण नहीं है कि हमें अल्लाह पर भरोसा क्यों नहीं करना चाहिए"।
गलत। कुरान में सभी गलतियाँ आदि 100% साबित करती हैं कि यह किसी ईश्वर की ओर से नहीं है। और सभी
गलत तथ्य जो उस समय मध्य पूर्व में गलत विज्ञान के अनुसार हैं
मुहम्मद, दृढ़ता से संकेत करते हैं कि यह अरब में एक या एक से अधिक मनुष्यों द्वारा के समय में बनाया गया था
मुहम्मद. दोनों ही मामलों में धर्म एक बना हुआ है, और अल्लाह का अस्तित्व भी नहीं हो सकता है। में
इसके अलावा एक तथ्य यह भी है कि मुहम्मद ने केवल झूठ बोला और अपनों का सम्मान भी नहीं किया
शपथ। 5/84 में इसी तरह का दावा।

०३६ १४/२२: "यह अल्लाह ही था जिसने तुम्हें सच्चाई (कुरान*) - - - का वादा दिया था। इसके साथ कई
गलतियाँ कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है।

०३७ १६/६२: "- - - वे (लोग*) अल्लाह को उस चीज़ का श्रेय देते हैं जिससे वे नफरत करते हैं (बेटियाँ*)"। गलत - अगर
इस्लाम एक सार्वभौमिक धर्म होने का दिखावा करता है। पृथ्वी पर कुछ स्थान - जैसे अरब में - बालिकाएँ
हो सकता है कि नफरत की गई हो। लेकिन ज्यादातर जगहों पर वे केवल कम मूल्य के थे, और नफरत से बहुत दूर थे।

तब कुछ स्थानों पर उन्हें कमोबेश समान रूप से महत्व दिया जाता था। ऐसे स्थान भी थे जहाँ
बेटियाँ मूल्यवान थीं - f. भूतपूर्व। क्योंकि उनका मतलब अपने माता-पिता के लिए पैसा/मूल्यवान था जब
उन्होंने शादी की। यहाँ तक कि कुछ स्थान ऐसे भी थे जहाँ समाज मातृसत्तात्मक थे, और
लड़कियों का मुख्य लिंग। (यह कुरान में कई बिंदुओं में से एक है जहां गलत ज्ञान है
अरब में कुछ मनुष्यों को कुरान के निर्माता के रूप में इंगित करता है - ऐसे बहुत से हैं
वह।)

०३८ २१/१८: "- - - नहीं, हम (अल्लाह) सत्य को असत्य के विरुद्ध उछालते हैं, और वह अपना दिमाग निकाल देता है,
और देखो, असत्य नाश हो जाता है!" क्या ऐसा ही होता है अगर कोई कुरान को पूरी तरह से फेंक देता है
गलतियाँ, आदि? - कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है।

00n 21/112: "- - - आप जो ईशनिंदा करते हैं, उसके खिलाफ!" क्या कही गई बातों पर शक करना ईशनिंदा है?
अल्लाह के बारे में, जब संदेह के भारी कारण हैं? (- सभी गलतियाँ, विरोधाभास, आदि।
कुरान में)।

०३९ २२/४०: "क्या अल्लाह ने लोगों के एक समूह को दूसरे के माध्यम से जाँच नहीं की, वहाँ निश्चित रूप से होगा"

मठों, गिरजाघरों, आराधनालयों और मस्जिदों को गिरा दिया गया है - - -।" गलत - यह
एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर दुनिया का प्रबंधन करने के एकमात्र तरीके से बहुत दूर है। एक
विकल्प एफ है। भूतपूर्व। आदमी को थोड़ा सा बदलने के लिए और उसे शांति से जीने का तरीका सिखाने के लिए। **केवल सदस्य**
एक संस्कृति और युद्ध और लूटपाट और दमन के धर्म को यह तुरंत नहीं देखते हैं।
यह बिंदु युद्ध और विजय के लिए एक कृत्रिम बहाना है - और दमन और लूट।

040 22/67: "- - - आप (मुसलमान*) निश्चित रूप से सही रास्ते पर हैं"। यह तभी सच है जब
कुरान सही है - - - और कुरान में बहुत सारी गलतियाँ, अंतर्विरोध, मुड़े हुए हैं
तर्क, मुड़ तर्क, कुछ एकमुश्त झूठ, आदि (जो सभी धोखा देने के लिए हॉलमार्क हैं,
धोखेबाज और ठग - आम तौर पर पैसे, महिलाओं और/या सत्ता की तलाश में रहने वाले व्यक्ति
बेईमान तरीके। मुहम्मद को महिलाएँ और शक्ति पसंद थी - और संभव के लिए "उपहार" के लिए पैसा
अनुयायी)। 45/18 में इसी तरह का दावा। इसके अलावा: क्या आपने कभी गौर किया है कि जो सबसे ज्यादा
शेखी बघारने की जरूरत है - जोर से और बार-बार - वह कितना सच्चा है, धोखेबाज है और
ठग, और जो अपने ज्ञान के बारे में शेखी बघारता है, वह ठीक होने का माध्यम है, लेकिन शीर्ष पर नहीं
बुद्धिमान और सीखा हुआ? - वास्तव में ईमानदार और वास्तव में बुद्धिमान व्यक्तियों को कभी भी इसकी आवश्यकता नहीं होती है
उन बातों पर घमंड करो। सच्ची ईमानदारी और सच्ची बुद्धि कुछ समय बाद खुद को महसूस कराती है
घनिष्ठ संबंध - यदि शेखी बघारने की जरूरत है, तो कुछ गड़बड़ है।

०४१ २२/७८: "वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें पहले और इस में मुसलमान नाम दिया है
(रहस्योद्घाटन) - - -"। गलत। मुहम्मद से पहले नाम का इस्तेमाल कभी नहीं किया गया था - किसी भी तरह का नहीं है
इसका (या धर्म का) कहीं भी निशान। यह उन मामलों में से एक है जहां इस्लाम को करना होगा
अपना दावा साबित करें।

०४२ २३/८५: "वे (गैर-मुसलमान*) कहेंगे, 'अल्लाह के लिए'"। गलत। यदि वे a . का नाम लेते हैं
भगवान, वे अपने स्वयं के भगवान का नाम कहेंगे (पुराने अरब में जो हो सकता है)
बहुदेववादी अल-लाह)। 23/87 - 23/89 में इसी तरह के दावे।

०४३ २४/४१: "- - - यह अल्लाह है जिसकी प्रशंसा सभी प्राणियों (बहुवचन और गलत) में और पर है
पृथ्वी मनाते हैं - - -"। यह दस्तावेज नहीं किया गया है या स्पष्ट रूप से कहीं भी या कोई भी नहीं दिखाया गया है
समय। 16/50 में इसी तरह का दावा।

००० ३१/११: "ऐसी है अल्लाह की रचना: अब मुझे (अल्लाह*) दिखाओ कि दूसरों के पास क्या है
उसके अलावा बनाया है - - -।" हमें पहले दिखाओ अगर अल्लाह के पास हर चीज के बारे में सभी सस्ते शब्द हैं
सृजित, सत्य हैं - केवल खोए और आसान शब्द हैं जो कोई भी अपने भगवान के बारे में उपयोग कर सकता है,

निःशुल्क। तमाम ग़लतियों और अंतर्विरोधों के साथ, उलझे हुए शब्द और तर्क और यहाँ तक कि
कुछ स्पष्ट झूठ (उदाहरण के लिए कि चमत्कार संशयवादियों या धर्म अपनाने वालों को प्रभावित नहीं करेंगे) कुरान है
पर बनाया गया है, यह भी गलत हो सकता है।

०४४ ४५/५: "- - - तथ्य यह है कि अल्लाह आकाश से जीविका भेजता है - - -।" "हमेशा" के रूप में
कुरान केवल दावा करता है, और कुछ भी साबित नहीं करता है। जब तक यह सिद्ध नहीं होता, तब तक यह तथ्य नहीं है-
शब्द बहुत सस्ते हैं। वास्तव में यह उन बहुत से मामलों में से एक है जहां कुरान एक लेता है
प्राकृतिक घटना - यहाँ बारिश - और बेहिचक कहो कि यह अल्लाह है जो इसे बनाता है - - - बस
जैसे किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी अपने भगवान या देवताओं के बारे में उतना ही सस्ते में कह सकता है।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 2 (= II-1-3-2)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची थीम द्वारा व्यवस्थित

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और कुरान में त्रुटियों के बारे में

कुरान

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस खंड की सामग्री:

1. **(दावा) कुरान को नीचे भेजना।**
2. **कुरान में भाषा।**
3. **कुरान के व्यावहारिक मूल्य का दावा किया।**
4. **में सामग्री का धार्मिक मूल्यांकन कुरान.**
5. **कुरान के इस हिस्से में "काफिर"।**
6. **विभिन्न विषय।**
7. **इस अध्याय के इस खंड के निष्कर्ष।**

1. (दावा किया गया) कुरान को नीचे भेजना:

निम्नलिखित आयतों और नोटों से यह बहुत स्पष्ट है कि इस्लाम का दावा है कि कुरान को नीचे भेजा गया है
एक ईश्वर से - ईश्वर द्वारा मुहम्मद को प्रकट किया गया - और उनके अनुयायियों को मुहम्मद के माध्यम से।
मुसलमान भी दावा करते हैं कि किताब स्पष्ट है और सब कुछ समझने में आसान है - - - को छोड़कर
जब ऐसे बिंदु हैं जो स्पष्ट रूप से गलत हैं। फिर ग्रंथ अचानक रूपक हैं और/या
एक विशेष संदर्भ से समझा जाना चाहिए - या "जब तक आप सही ढंग से नहीं समझा जा सकता"
पूरी किताब का पूरा अवलोकन करें"।

०१ २/२४: "लेकिन अगर तुम नहीं कर सकते - और निश्चित रूप से तुम (गैर-मुस्लिम *) नहीं कर सकते (एक सूरा का उत्पादन करें)
कुरान के समान गुण*) - - -"। सूरह कोई अच्छा साहित्य नहीं है - कमोबेश प्रतियां
अरब लोककथाओं, किंवदंतियों, परियों की कहानियों और चीजों के बारे में मुहम्मद को बाइबिल से बताया गया था या
(मुख्य रूप से) एपोक्रिफ़ल (बनाई गई) "बाइबिल" कहानियों से। इसके अलावा रचना और
ग्रंथों की प्रस्तुति प्राथमिक विद्यालय में है। बहुत से अच्छे लेखक ऐसे संग्रह कर सकते हैं
कहानियाँ और बहुत बेहतर काम करते हैं (इन बिंदुओं पर f. उदा। बाइबल कहीं बेहतर लिखी गई है)। NS
अरब भाषा को अपने आप में श्रेष्ठ कहा जाता है - लेकिन जब आप जानते हैं कि भाषा थी
शीर्ष बुद्धिमान और शीर्ष विद्वान पुरुषों द्वारा लगभग 250 वर्षों तक पॉलिश किया गया, जब तक कि इसे कुछ हद तक नहीं मिला
९०० ईस्वी के आसपास अंतिम रूप (अरब वर्णमाला तब तक पूरी नहीं हुई थी), वह बिंदु बताता है
लगभग 650 से मूल कुरान के बारे में कुछ भी नहीं - खलीफा उस्मान और अन्य'। दावा
गलत है।

००२ २/९७: "- - - वह (गेब्रियल*) अल्लाह की इच्छा से (रहस्योद्घाटन) आपके दिल में लाता है - - -"।
कोई भी सर्वज्ञ भगवान इतनी गलतियों और इतने अमान्य तर्क के साथ एक किताब नहीं भेजता है।
इसके अलावा: ऊपर 16/102 देखें।

00a 5/59: "- - - रहस्योद्घाटन (कुरान*) जो हमारे पास आया है (मुहम्मद) - - -"। अच्छा, एक
इस्लाम के बारे में केंद्रीय प्रश्न यह है कि क्या वास्तव में रहस्योद्घाटन थे (उसके साथ कई
गलत तथ्य, आदि) - और यदि थे: किससे। ये विकल्प हैं:

1. एक ईश्वर की ओर से खुलासे - जो कुरान साबित होता है कि ऐसा नहीं है, क्योंकि कोई भगवान नहीं, सर्वज्ञ या नहीं, इतनी गलतियाँ की थीं, विरोधाभास, और इतना गलत तर्क, आदि।
2. या धोखेबाज से खुलासे - f. भूतपूर्व। NS शैतान - गेब्रियल होने का नाटक। और यह अमानवीय और कुछ बिंदुओं पर अत्यधिक अनैतिक धर्म मुहम्मद की स्थापना, संकेत कर सकते हैं

कि यह वास्तव में एक संभावना है।

3. या मुहम्मद के दिमाग में कुछ काम कर रहा है (टीएलई जैसी बीमारी आसानी से समझा सकती है कि - देखें बीबीसी "गॉड ऑन द ब्रेन", 20. मार्च 2003) - और अमानवीय और कुछ बिंदुओं पर अत्यधिक अनैतिक धर्म मुहम्मद की स्थापना, यह संकेत दे सकता है कि यह भी वास्तव में एक है संभावना।
4. या "रहस्योद्घाटन" बस एक इंसान से आया है मस्तिष्क बीमारी के साथ या बिना बीमारी के - if मुहम्मद के पास टीएलई (टेम्पोरल लोब) था मिर्गी) चिकित्सा विशेषज्ञों की तरह f के अनुसार। भूतपूर्व। बीबीसी को संदेह है, जो आसानी से उसकी व्याख्या करता है "अनुभव", लेकिन यहां तक कि उसकी स्पष्ट वासना भी शक्ति a . के निर्माण की व्याख्या कर सकती है

धर्म - कई स्वयं घोषित "पैगंबर" सत्ता या धन की लालसा के साथ या महिलाओं के पास है समय के माध्यम से ऐसा किया (मुहम्मद अत कम से कम पसंद की गई शक्ति और महिलाएं - और धन को अनुयायियों को आकर्षित करें और रखें "उपहार"।

5. या यह सब एक "परिदृश्य" है जो ठंड से बना है और षडयंत्रकारी दिमाग - और मुहम्मद का अमानवीय क्रूरता और आसानी से पहचानी जाने वाली वासना शक्ति (देखें एफ। उदा। वह खुद को कैसे चिपकाता है अल्लाह) इसका संकेत दे सकता है।

कुछ बिंदुओं का संयोजन भी संभव है। 22/54 भी देखें,

एक छोटा अतिरिक्त बिंदु: अल-अजहर अल-शरीफ द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ कुरान" में काहिरा में इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक .) ऐसे विषय) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि अल्लाह के लिए कोई पुतला नहीं है और उसे पटाना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है।

००३ ६/१०४: "अब (कुरान*) तुम्हारे पास (मुसलमान*), तुम्हारे रब (अल्लाह*) की ओर से आ गया है। सबूत - - -"। गलत। सभी कुरान में अल्लाह या इस्लाम के लिए एक भी वैध प्रमाण नहीं है - या मुहम्मद एक वास्तविक दूत होने के कारण (वह निश्चित रूप से कोई नबी नहीं था, जैसा कि उसने नहीं किया था - और दावा भी नहीं किया या होने का दिखावा नहीं किया - भविष्यवाणी करने की क्षमता)। एक भी प्रमाण नहीं जो किसी भी भगवान को सिद्ध करता है। वहाँ से ली गई कहानियों में कुछ अपवाद हो सकते हैं बाइबिल, लेकिन वे मामले में यहोवा के बारे में बात करते हैं, और इस्लाम के मामले में उन्हें साबित करना होगा कि अल्लाह और यहोवा वास्तव में एक ही ईश्वर है - केवल कुरान में अप्रमाणित दावों के आधार पर एक बयान और हदीस में, और एक बयान जो कभी भी किसी भी तरह से प्रलेखित नहीं किया गया है। अन्य सभी बयान केवल पतली हवा और सस्ते शब्दों पर आधारित होते हैं - ऐसे शब्द जो किसी भी धर्म में किसी भी पुजारी अपने भगवान के बारे में उपयोग कर सकते हैं। सबूत के तौर पर इनका कोई मूल्य नहीं है।

कुरान कुछ जगहों पर "सबूत" की बात करता है और कई जगहों पर यह "संकेतों" के बारे में बात करता है। **उन सभी में यह समान है कि वे बिना किसी अपवाद के प्रमाण के रूप में मूल्यहीन हैं अल्लाह के लिए मुहम्मद के कनेक्शन के लिए एक भगवान के लिए। आखिर प्रमाण एक या अधिक होता है सिद्ध तथ्य जो किसी एक को निष्कर्ष दे सकते हैं - और कुरान और इस्लाम कभी नहीं उन दावों को साबित करता है जो वे अल्लाह या मुहम्मद के लिए अपने "चिन्ह" और "सबूत" बनाते हैं एक भगवान से संबंध। कभी नहीं।** अगर एफ. भूतपूर्व। स्वर्ग और पृथ्वी अल्लाह, इस्लाम के लिए प्रमाण होंगे पहले यह साबित करना होगा कि यह वास्तव में अल्लाह ही था जिसने उन्हें बनाया - इतना ही नहीं। अगर बारिश होगी a अल्लाह के लिए सबूत, इस्लाम को पहले यह साबित करना होगा कि वास्तव में अल्लाह ही है जो बारिश को बनाता और निर्देशित करता है, इतना ही नहीं, क्योंकि यह कोई भी धर्म कह सकता है - प्रमाण के रूप में मूल्यहीन (बाल नदियों को बनाता है .) नीचे की ओर दौड़ें। अल्लाह उन्हें ऊपर की ओर नहीं दौड़ा सकता। एर्गो: बाल असली भगवान और अल्लाह है सिर्फ एक धोखेबाज। वगैरह वगैरह वगैरह। बेमतलब "सबूत"।) अगर धरती पर जीवन अल्लाह के लिए सबूत होना है, इस्लाम को पहले यह साबित करना होगा कि यह वास्तव में अल्लाह ही था जिसने इसे बनाया - केवल खाली बयानों का उपयोग न करें

किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी नि:शुल्क उपयोग कर सकता है। आदि, आदि, आदि।

कुरान अन्य सभी धर्मों से सबूत मांगने में बहुत अच्छा है, लेकिन यह कभी नहीं, कभी नहीं,
अल्लाह या कुरान या मुहम्मद के किसी ईश्वर से संबंध के बारे में कोई वैध प्रमाण प्रस्तुत करता है
जब विवादित "सत्य" की बात आती है (यह "प्रमाण" और "संकेत" प्रदान करता है, लेकिन वे मान्य नहीं हैं)। और
यह अधिक सोचने वाली बात है कि बार-बार यह कहता है कि यह और यह एक प्रमाण है, और कई,

कई बार यह कहता है कि यह और यह एक संकेत है, बयान बिना अपवाद के हैं
पतली हवा से या अन्य तरीकों से लिए गए बयान जो सिद्ध तथ्यों पर नहीं बने हैं - कुछ भी नहीं a
न्यायाधीश एक तटस्थ, अच्छी गुणवत्ता वाली अदालत में सबूत के रूप में स्वीकार करेगा। कुछ भी तो नहीं। कोई भगवान जानता होगा
बयान वास्तविक प्रमाण के रूप में बिना मूल्य के थे, और उन्हें कॉल नहीं करते - या संकेत देते हैं कि वे हैं -
सबूत **यह केवल घटिया शब्द और जनमत है कि किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी उपयोग कर सकता है।**
क्षमा करें, लेकिन यह बहुत ही स्पष्ट सत्य है - और वास्तव में इससे भी बदतर: ढीले का उपयोग कौन करता है
कथन, अमान्य तर्क और अमान्य प्रमाण? - धोखेबाज और धोखेबाज! यह वास्तव में बताता है
एक भगवान के बारे में कुछ अगर वह सरल और सरल, अशिक्षित लोगों को धोखा देने की कोशिश कर रहा है -
यह उल्लेख नहीं करने के लिए कि यह उसके बारे में क्या बताता है यदि वह यह नहीं समझता कि एक समय मनुष्य होगा
छल के माध्यम से देखने के लिए पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करें, और इससे भी अधिक यदि अल्लाह ने नहीं किया
समझें कि गलतियों और झांसा देने से बने ऐसे "सबूत" का उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा
शिक्षित, विचारशील व्यक्ति जब उन्हें पता चला कि वे असत्य हैं।

इसी तरह के दावों के लिए देखें 2/41 - 2/91 - 2/117 - 2/147 - 2/176 - 2/213 - 3/3 - 3/7 - 3/60 - 4/105 -
4/113 - 4/140 - 5/15 - 6/91 - 6/92 - 6/104 - 6/114 - 6/155 - 7/52 - 10/94 - 10/108 - 11/17 -
12/2 - 13/36 - 15/9 - 16/64 - 17/73 - 17/82 - 17/105 - 17/106 - 18/27 - 18/29 - 20/113 -
21/10 - 21/45 - 22/54 - 23/90 - 24/1 - 24/25 - 25/1 - 25/6 - 28/47 - 38/53 - 32/2 - 32/3 -
35/31 - 38/29 - 39/1 - 39/2 - 39/23 - 39/41 - 40/2 - 41/2 - 42/17 - 43/78 - 55/2 - 64/8 -
69/43 - 76/23।

इसके अलावा: क्या आपने कभी गौर किया है कि जिसे शेखी बघारने की जरूरत है - जोर से और बार-बार -
वह कितना सच्चा है, धोखेबाज़ और धोखेबाज़ है, और अपके विषय में घमण्ड करनेवाला है
ज्ञान औसत से ठीक है, लेकिन शीर्ष बुद्धिमान और सीखा नहीं है? - वास्तव में
ईमानदार और वास्तव में बुद्धिमान और जानकार व्यक्तियों को उन पर घमंड करने की आवश्यकता नहीं है
चीज़ें। वास्तविक ईमानदारी और वास्तविक बुद्धिमत्ता कुछ समय के घनिष्ठ संबंध के बाद खुद को महसूस करती है
- अगर शेखी बघारने की जरूरत है, तो कुछ गड़बड़ है। और जैसा कि यहाँ के बारे में बहुत सारे दावे हैं
सच बोलते हुए, हम प्रचार के लिए नाजी-जर्मन मंत्री, जोसेफ को उद्धृत कर सकते हैं
गोएबल्स: "यदि आप अक्सर झूठ बोलते हैं, तो लोग विश्वास करना शुरू कर देते हैं कि यह सच है।" (की मात्रा बहुत है
नाज़ीवाद के पीछे की विचारधारा और स्लैम के पीछे की विचारधारा के बीच समानता)।

००४ १३/१: "- - - पुस्तक: वह जो तुम्हारे रब (अल्लाह*) की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है - - -
". हेमलेट को उद्धृत करने के लिए यही प्रश्न है। क्या किसी भगवान ने वास्तव में उसके साथ एक किताब का निर्माण और खुलासा किया है
कई गलतियाँ, विरोधाभास, और अमान्य "प्रमाण", आदि? नहीं। और जब किसी भगवान ने इसे प्रकट नहीं किया,
उसने इसे मुहम्मद को भी नहीं बताया। एक विकल्प यह है कि शैतान ने गेब्रियल का प्रतिरूपण किया
और अन्य मामलों में मुहम्मद को "प्रेरणा से" ("कुरान का अर्थ" उद्धृत करने के लिए)
युसुफ अली), और इस प्रकार यह उनके द्वारा प्रकट किया गया था। एक अन्य विकल्प यह है कि यह सब a . से उपजा है
बीमार दिमाग - टीएलई (टेम्पोरल लोब मिर्गी) + शक्ति की लालसा आसानी से सब कुछ समझा सकती है।
फिर भी एक और विकल्प यह है कि इसे प्रकट नहीं किया गया था, बल्कि इसे बनाया गया था - तथ्य यह है कि इनमें से कई
गलतियाँ जो मुहम्मद के समय और क्षेत्र के गलत विज्ञान के अनुसार हैं,
और यह भी तथ्य कि मुहम्मद इतने मूर्ख नहीं थे कि जो कुछ भी कहा गया है उस पर विश्वास कर सकें
कुरान, संकेत दे सकता है कि यह बना हुआ है। (अंतिम तर्क के लिए: एफ। उदा। दावा है कि
चमत्कार कुछ लोगों को विश्वास नहीं दिलाते, मुहम्मद बहुत बुद्धिमान थे और जानते भी थे
लोगों को खुद पर विश्वास करने के बारे में बहुत कुछ - और f. भूतपूर्व। यीशु इसके विपरीत का एक अच्छा प्रमाण था: अ
बहुत कुछ सब कुछ के बावजूद विश्वास नहीं करता था, लेकिन बहुत से लोग किस वजह से विश्वास करते थे?
उन्होंने देखा और सुना और देखा। वही कहानी का निष्कर्ष था कि मुहम्मद
खुद जादूगरों और मूसा के बारे में बताया: वे आए (मुहम्मद के अनुसार)
शब्द) एक छोटे से चमत्कार के बाद विश्वास करना।) इसी तरह के लिए भी देखें 2/231 - 3/3 - 4/136 - 5/48 - 5/59
- 5/64 - 5/67 - 6/7 - 7/2 - 7/3 - 10/2 - 13/19 - 16/89 - 18/1 - 16/102 - 25/33 - 27/6 - 33 /2 -
34/6 - 35/24 - 35/31 - 39/2 - 47/2।

पेज 91

००५ १३/३८: "प्रत्येक अवधि के लिए एक पुस्तक प्रकट की गई है"। मुश्किल से। होमो सेपियन्स - आधुनिक मनुष्य - is 200ooo वर्ष पुराना हो सकता है (और उससे बहुत पहले मनुष्य या ह्यूमनॉइड थे)। कोई नहीं है उन सभी वर्षों से अगले प्रमुख कदम तक किसी भी किताब या एकेश्वरवाद का पता लगाना, कि हुआ 60ooo+ (64ooo?) साल पहले हो सकता है। उस समय कुछ हुआ - कोई नहीं जानता है क्या - जिसने होमो सेपियन्स को मॉडर्न मैन की ओर अपने पाठ्यक्रम पर शुरू किया (यह संभावना है) एशिया के पश्चिमी भाग में कहीं हुआ, शायद दक्षिणी कैस्पियन क्षेत्र में)। फिर अगले बड़े कदम तक कोई किताब नहीं: कृषि आदमी 15ooo साल पहले, कुछ दे या ले लो हजार साल - शायद मध्य पूर्व में कहीं। कोई किताब और कोई निशान नहीं दुनिया में कहीं भी एकेश्वरवाद। अगला कदम: शहर। जीवन को विनियमित करने के लिए कोई किताब नहीं या होमो अर्बनस (शहर में आदमी) के लिए धर्म - कस्बों और यहां तक कि शहरों के बाद भी लंबे समय तक नहीं पॉप अप करना शुरू कर दिया था, और अभी भी किसी भी तरह के एकेश्वरवाद का कोई निशान नहीं है, अल्लाह का उल्लेख नहीं करना। NS वास्तविक एकेश्वरवाद के पहले निशान - और बाद में एक एकेश्वरवादी ईश्वर के बारे में एक पुस्तक - के साथ आई यहूदी (नाम कालानुक्रमिक रूप से व्यापक समझ में प्रयोग किया जाता है)। और फिर भी यह अत्यधिक है संभावना नहीं है कि उनके पास मिस्र की अवधि से पहले की किताबें थीं (कि इब्राहीम के पास एक किताब या किताबें थीं, is इतनी संभावना नहीं है कि इस्लाम को इसे साबित करना होगा अगर वे उस पर जोर देंगे - यह बेहद असंभव है कि उस समय का खानाबदोश पढ़ना भी जानता था।) पारसी लोगों के पास एक किताब भी थी, लेकिन वह मुहम्मद को नहीं पता था - कम से कम अपने जीवन के अंत तक तो नहीं। उसके बाद - और कुरान से पहले - विज्ञान केवल एक या दो पुस्तकों के बारे में जानता है (इस पर निर्भर करता है कि आप "बाइबल" को मानते हैं या नहीं एकेश्वरवाद के आधार के रूप में यहूदियों की + NT एक या दो पुस्तकें हों - यदि आप शामिल करते हैं तो एक जोड़ें पारसी. (उस समय अरब में एक छोटा, युवा एकेश्वरवादी संप्रदाय भी था मुहम्मद, लेकिन हमारी जानकारी में उनके पास कोई पवित्र पुस्तक नहीं थी।)

उन कालों और युगों के दौरान ऐसी किसी अन्य पुस्तक या कल्प के कोई निशान नहीं मिले हैं किसी भी प्रकार के विज्ञान में एकेश्वरवाद: पुरातत्व (एकन-एटन और उसके सूर्य के लिए एक ?-चिह्न के साथ), साहित्य, लोकगीत, इतिहास, कला, वास्तुकला। इस्लाम को इसके लिए बहुत मजबूत सबूत पेश करने होंगे इसके विपरीत - अब तक उन्होंने केवल सस्ते बयान और यहां तक कि सस्ते शब्द भी तैयार किए हैं - - - और एक वास्तविक प्रमाण नहीं।

इससे भी बदतर: जब मुहम्मद के दिल के बाद आखिरकार एक किताब आई, तो उसमें केवल एक छोटा सा हिस्सा था दुनिया की और थोड़े समय की अवधि - जबकि कुरान में कहा गया है कि सभी लोगों में समय उनके नबियों (और एक किताब) पड़ा है।

सबसे खराब: इस्लाम बताता है कि "पुस्तक" को अंतराल पर फिर से जीवंत करने का कारण यह था कि दुनिया और समाज बदल गए (कभी सिद्ध या प्रलेखित दावे के अलावा कि बाइबिल मिथ्या है)। लेकिन दुनिया और संस्कृतियां और समाज अधिक बदल गए हैं पिछले ३०० वर्षों - हाँ, यहाँ तक कि पिछले १०० वर्षों में - सभी २००० या उससे अधिक वर्षों की तुलना में। इन सभी परिवर्तनों के बाद हमें एक नई पुस्तक की आवश्यकता क्यों नहीं है? - अगर अल्लाह सर्वज्ञ है, तो वह 13.7 अरब या उससे अधिक साल पहले (जब ब्रह्मांड बनाया गया था) जानता था कि कम से कम कुरान निराशाजनक रूप से अपर्याप्त होगा (उदाहरण के लिए कुछ कानून) और बहुत खतरनाक (एफ। पूर्व। परमाणु, सबसे क्रूर और अमानवीय युद्ध के साथ संयुक्त रासायनिक और बैक्टीरियोलॉजिकल हथियार धर्म), 1950 ईस्वी के आसपास नहीं। हमारा एक ऐसा दौर है जिसे वास्तव में एक पुस्तक शिक्षण की आवश्यकता है मनुष्यों और राष्ट्रों के बीच प्रेम और शांति - घृणा और दमन और अमानवीयता नहीं और युद्ध (जैसे एफ। पूर्व कुरान और जिंगिस चान का धर्म और कुछ अन्य युद्ध धर्म)।

**00b 13/39: "- - - उसके साथ (अल्लाह*) पुस्तक की जननी है (प्रकल्पित मूल पुस्तक जिनमें से कुरान को एक प्रति* कहा गया है)"। केवल हम जैसे इंसानों को लगता है कि यह संभावना नहीं है चरम है कि एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ भगवान के पास गलतियों से भरी किताब है, उनके स्वर्ग में एक श्रद्धेय मदर बुक के रूप में विरोधाभास, तार्किक रूप से अमान्य दावे आदि। वहां समझाने के लिए भी बहुत सारी समस्याएं हैं, अगर यह बहुत समय पहले भगवान द्वारा बनाई गई थी - नहीं उल्लेख करें कि क्या यह एक अनमनी किताब है जो हमेशा के लिए अस्तित्व में है, जैसा कि कई मुसलमान जोर देते हैं:

९१

पेज 92

1. अगर किताब इतनी पुरानी है और पहले भी मौजूद थी, तो क्यों? क्या भगवान को अपूर्ण भेजना पड़ा

किताबें - टोरा, ओटी, एनटी? और एनबी: विज्ञान
दिखा दिया है कि वे मुसलमानों की तरह झूठे नहीं हैं
दावे (बिना इस्लाम के सामान्य
दस्तावेज)।

2. कैसे समझाऊं कि कुछ श्लोकों में यह है
मुहम्मद बोल रहे हो?
3. कैसे समझाएं कि भगवान को कभी-कभी
उसका संदेश बदलो - माँ में मिटा दो
कुछ नया लिखो और बुक करो? - और क्या उसने
वास्तव में इस पुस्तक में सब कुछ ठीक है
समय? खासकर अगर वह मां की नकल कर रहा हो
किताब वह इसे एक बार में ठीक करना चाहिए?
4. वह संदेशों को कैसे बदल सकता था, अगर यह था
सभी बहुत पहले लिखे गए - या हमेशा मौजूद रहे
- एक मदर बुक में उन्होंने कॉपी किया? निकाली जा रही है
कुछ और लिखना?
5. कैसे आ गया कि इतने श्लोक उत्तर हैं या
मक्का में हुई चीजों पर टिप्पणी
और मदीना मुहम्मद को और जीवन के दौरान
मुहम्मद का? — मुहम्मद एफ. भूतपूर्व।
अपनी पत्नियों से झगड़ा किया, और अल्लाह ने भेजा
नीचे सूरह समझाने के लिए कि मुहम्मद as
हमेशा सही था - और हमेशा की तरह थोड़ा सा
समस्या को टालने के लिए देर से, लेकिन उसके लिए प्रासंगिक
तभी चाहिए? (याद रखें कि यदि मनुष्य के पास
पसंद की स्वतंत्रता, पूर्ण सर्वज्ञता और इस प्रकार
पूर्ण भेद भी असंभव है - स्वीकार किया
इस्लाम द्वारा भी, सिवाय इसके कि वे कहते हैं कि यह होना चाहिए
सब एक ही सच है क्योंकि अल्लाह ऐसा कहता है
कुरान (!!))
6. कैसे समझाऊं कि यह (कुरान) हो सकता है
कल्पों पहले लिखा गया है, अगर अल्लाह ने दिया है
मनुष्य एक निश्चित मात्रा में स्वतंत्र इच्छा रखते हैं? -
मानवीय हरकतें ग्रंथों को अस्त-व्यस्त कर देंगी
तरीके। (भविष्यवाणी और मानव स्वतंत्र इच्छा हैं
१००% असंगत और १००% असंभव
गठबंधन - और आदमी हमेशा अपना बदल सकता है
मन एक बार फिर, इसे असंभव बना रहा है
जानिए वास्तव में क्या होगा, जब तक
ह ोती है)।
7. इस्लाम कहता है कि ग्रंथों को थोड़ा बदलना पड़ा
समय के साथ, क्योंकि समय बदलता है - इसलिए
नई पवित्र पुस्तकें। लेकिन 300 पिछले वर्षों का समय
आदम से १७०० तक बदल गया है
ई. कोई नबी और कोई पवित्र ग्रंथ क्यों नहीं हैं
ज़रूरी? (13/38 भी देखें)। और कैसा था
मदर बुक का पाठ फिट में बदल गया
न्यू टाइम्स।

8. यदि "मातृ पुस्तक" कल्प पुरानी है, तो क्यों है
लगभग सभी मुहम्मद से बात करते हैं, थोड़ा-थोड़ा a
कुछ अन्य, और अन्य के लिए कुछ भी नहीं 124ooo
(हदीस के अनुसार संख्या) नबी?
पहले नबी - जब सब कुछ नया था
- आखिर सबसे ज्यादा जानकारी और मदद की जरूरत है।
9. कैसे समझाएं कि अधिकांश कहानियों में
कुरान धार्मिक परियों की कहानियों पर आधारित है? - कोई
भगवान जानता था कि वे असत्य थे।
10. सभी गलतियों की व्याख्या कैसे करें? - कोई देवता
बेहतर जानता था।
11. सभी अमान्य कथनों की व्याख्या कैसे करें? -

कोई भी भगवान बेहतर जानता था।

12. सभी अमान्य "संकेतों" की व्याख्या कैसे करें (इलाज .) सबूत के तौर पर)?
13. अमान्य "सबूत" की व्याख्या कैसे करें? - कोई भगवान बेहतर जानता था।
14. सीधे गलत बयानों की व्याख्या कैसे करें, "संकेत" और "सबूत"। ?
15. सभी अंतर्विरोधों की व्याख्या कैसे करें - "कोई विरोधाभास नहीं" का दावा इनमें से एक है अल्लाह के लिए "सबूत"?

13/1 भी देखें।

00c 16/102: "- - - पवित्र आत्मा रहस्योद्घाटन लाया है - - -"। मुहम्मद आज़ाद : " कुरान का संदेश" बताता है कि अरब शब्द "रुह अल-कुदुस" (= पवित्र आत्मा) का प्रयोग किया जाता है ३ कुरान में बार (2/87, 5/110 - दोनों यीशु से जुड़े हुए हैं - और यहाँ), और यहाँ इसका अर्थ है एंजेल गेब्रियल। अरब में पवित्र आत्मा = गेब्रियल ?! इसके अलावा: 2/97 देखें।

००६ २५/३३: "- - - हम (अल्लाह) आपको (मुहम्मद या मुसलमान) सच्चाई और सबसे अच्छा बताते हैं स्पष्टीकरण (उसके)।" सबसे अच्छी व्याख्याएं कभी नहीं - कभी नहीं - बहुत सी गलतफहमियों पर निर्मित होती हैं तथ्य। कुरान भी कई जगह कहता है कि इस्लाम में विश्वास बुद्धि पर आधारित है, बौद्धिक क्षमता और ज्ञान। क्या यह?

कभी-कभी ऐसा लगता है कि यह सरासर अंध विश्वास और सच्चे तथ्यों के दमन पर बनी है। ("कुरान का संदेश" यहां तक कहता है कि कुरान को न देख पाना आदिम है एक भगवान से बना है, बिना किसी सबूत के - और एक और जगह है कि यह एक अच्छा आस्तिक नहीं है असली सबूतों की तलाश करो। खेदजनक सत्य यह है कि केवल इसलिए विश्वास करना आदिम और भोला है कुछ कहा या लिखा हुआ है। शब्द सस्ते हैं।)

एक किताब जिसमें ढेर सारी गलतियाँ, अंतर्विरोध, उलझे हुए तर्क, जैसे उलझा हुआ तर्क, और बहुत ही संदिग्ध नैतिकता के व्यक्ति द्वारा निर्देशित, अपने मंच का बचाव और विस्तार करना शक्ति - उसका स्व-घोषित धर्म - कोई विश्वसनीय मार्गदर्शन और संदिग्ध सत्य नहीं है। इसे विश्वसनीय बनाने के लिए और सबूतों की जरूरत है।

००७ २६/२१०-२११: "किसी भी दुष्ट ने इसे (प्रकाशितवाक्य) नहीं उतारा। यह न तो सूट करेगा उन्हें - - -"। हो सकता है कि किसी बुरी आत्मा ने कुरान को उतारा न हो। **लेकिन निश्चित है कि नहीं सर्वज्ञ भगवान ने ऐसा किया है - बहुत सारी गलतियाँ, आदि। यह भी निश्चित है कि कोई अच्छा भगवान नहीं है या आत्मा ने किया - बहुत अमानवीय, घृणा और दमन और खून से भरा हुआ - करने के लिए नहीं**

पुस्तक में मनहूस नैतिकता और नैतिक का उल्लेख करें। वही सब संभव है कि यह नहीं था बुरी या बुरी ताकतों द्वारा भेजा गया - यह आसानी से संभव है, और यहां तक कि संभावना भी है कि इसे बनाया गया था एक या अधिक पुरुष (सभी गलत विज्ञान और उस दिशा में बहुत अधिक बिंदु)। लेकिन क्या है बिल्कुल यकीन है, कि मदीना के सूरहों में पाया जाने वाला इस्लाम बुराई के अनुकूल है आत्माओं और ताकतों को बहुत अच्छी तरह से: अमानवीयता, रक्त, घृणा, युद्ध। बस मुसलमानों से पूछो कि वे क्या सोचते हैं मंगोलों के पूर्व में उन पर हमला करने के बारे में। मंगोलिया में और उसके बाद का धर्म जिंजिस खान मूल रूप से इस्लाम से काफी मिलते-जुलते थे। जब इस्लाम ने अपनी युद्ध मशीन का इस्तेमाल किया और भारत और अन्य स्थानों में अमानवीयता, वे सभी मुसलमानों के अनुसार नायक थे। तब वे मंगोलों से मिले जिन्होंने मुसलमानों के साथ भी ऐसा ही किया - और मंगोल भयानक राक्षस थे। फिर दक्षिणी मंगोल मुसलमान बन गए और पहले की तरह ही चलते रहे, लेकिन अब गैर-मुसलमानों के खिलाफ - - - और अब वे इस्लाम के अनुसार महान नायक थे। उन्हें पूछना अगर एफ. भूतपूर्व। तैमूर लेंक (तामेरलेन) नाम याद रखें।

मदीना के सूरह में वर्णित इस्लाम निश्चित रूप से बुरी ताकतों/आत्माओं के अनुकूल है।

00d 30/43: "- - - सही धर्म (इस्लाम) - - -"। क्या यह संभव है कि सही धर्म हो सकता है एक किताब पर आधारित है जिसमें कई गलतियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, आदि दोहराए या किए गए हैं एक अरब सेल्समैन, हाईवेमैन, कातिल द्वारा (उसने विरोधियों और अन्य लोगों को हत्या करने दिया), अत्याचारी और बलात्कारी (वह - लगभग 60 वर्ष की आयु में - कम से कम नवविवाहित, 17 वर्षीय सफीजा के बाद बलात्कार किया उसने अपने पति किनाना को मौत के घाट उतार दिया था, और उसके बाद रैहाना बिन्त अम्र को मार डाला था उसके परिवार के पुरुष हिस्से की हत्या कर दी और बाकी को गुलाम बना लिया।) इस जानकारी के लिए स्रोत:

मुहम्मद इब्न इशाक: "पैगंबर मुहम्मद का जीवन" - इस्लाम में सबसे सम्मानित
मुहम्मद के बारे में पुराने (मृत 768 ईस्वी) लेखक। (यह दूसरे अब्बासी खलीफा के लिए लिखा गया था
बगदाद, मंसूर में, लगभग 750 ई.) न अरब सेल्समैन, न हाइवेमैन, न ही
अत्याचारी, न हत्यारे, न ही बलात्कारी ईमानदार होने के लिए सबसे अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं (भले ही
इस्लाम जोर देता है कि वह था, लेकिन इस्लाम शायद ही उस बिंदु पर सबसे विश्वसनीय स्रोत है)। यह अरबी
सेल्समैन, हाईवेमैन, टॉर्चर, कातिल और बलात्कारी और अमानवीय सरदार भी असमर्थ थे
अपनी कहानी के लिए एक छोटा सा सबूत पेश करने के लिए। लेकिन उन्होंने (?) बहुत सारे ढीले-ढाले बयान दिए
और अमान्य "संकेत" और "सबूत"। 12/40 में इसी तरह का दावा। और उसके संस्थागतकरण के बारे में क्या
अल-तकिया (वैध झूठ) और किटमैन (वैध आधा सच) और उनका कहना (हदीस में) कि
शपथ भी तोड़ी जा सकती है - क्या वह सही धर्म का हिस्सा है?

इस तरह का आदमी ही एकमात्र स्रोत है जिस पर इस्लाम बना है।

क्या यह सही धर्म हो सकता है?

00e 36/5: "यह (कुरान*) एक रहस्योद्घाटन है - - -"। ख़ैर, किसके मामले में? - an . से नहीं
सर्वज्ञ और/या अच्छा भगवान। शायद खुद से या किसी और इंसान से? (सीएफआर। कितनी अच्छी तरह
धर्म उसके लिए शक्ति के मंच के रूप में और उसकी निजी परेशानियों में भी उसकी मदद करने के लिए उपयुक्त है -
मदर बुक होने का दिखावा क्या है, अल्लाह द्वारा सम्मानित) - या कुछ अंधेरे ताकतों से? (**सीएफआर.
अमानवीयता, बेईमानी, नफरत, खून, युद्ध, आदि - यह फिट बैठता है च। भूतपूर्व। एक शैतान बहुत अच्छी तरह से - और यह
मुसलमानों के लिए एक सच्चे धर्म की खोज करना लगभग असंभव बना देता है यदि ऐसा मौजूद है लेकिन
इस्लाम गलत है** - - - यह भी एक शैतान के लिए अच्छा है और एक संभावित नरक को आबाद करने की उसकी इच्छा है)।

००f ३७/१६४: **यहाँ अधिकांश इस्लामी विद्वानों के अनुसार कोण जो बात कर रहे हैं। कि कम से कम
इसका मतलब है कि कुरान अनंत काल से अस्तित्व में नहीं हो सकता है, जैसे कि कई मुसलमान विश्वास करना पसंद करते हैं:
कम से कम कुछ फ़रिश्तों के बनने के बाद इसे बनाया और बनाया गया होगा - अगर नहीं तो
फ़रिश्ते किताब में बात नहीं कर सकते थे। (कुछ 8 जगह ऐसी भी हैं जहाँ
मुहम्मद बोल रहे हैं - एक असंभव अगर स्वर्ग में "मदर बुक" जो
कहा जाता है कि कुरान की एक प्रति वास्तव में पुरानी है।)**

**008 42/13: "उसी (इस्लाम*) ने उसी धर्म (इस्लाम*) के लिए स्थापित किया है - - - इब्राहीम,
मूसा, और यीशु"। **न कुरान, न हदीस, न इस्लाम ज़रा सा भी लाए हैं
इसके लिए वैध प्रमाण - केवल शब्द और दावे। और कम से कम जब यीशु की बात आती है, तो यह है
गलत। यीशु और मुहम्मद की शिक्षाएँ बहुत भिन्न हैं
मूल रूप से।**

बेशक मुसलमान कहते हैं कि बाइबल झूठी है और शास्त्र गायब हो गए हैं। परंतु
उन्हें अभी तक पहला साबित करना है और यह साबित करना है कि इस्लाम के सभी बिंदुओं का दस्तावेजीकरण करने वाले धर्मग्रंथ हैं
कहते हैं कि गलत हैं अन्य धर्मों में गायब हो गए हैं और कोई भी विश्वसनीय और असंभव नहीं है
गलतफहमी वाले 13oo के बीच प्रासंगिकता के साथ फिर से प्रकट हुए हैं + 32ooo हो सकता है
बाइबिल के संदर्भ में, जो मौजूद है। "मजबूत दावों को मजबूत सबूत की जरूरत है।" यह और भी
इसलिए विज्ञान ने जितने भी पुराने शास्त्रों को पाया है, उन सभी के माध्यम से यह साबित कर दिया है कि बाइबल है
मिथ्या नहीं - एक तथ्य जो एनटी के लिए अतिरिक्त स्पष्ट है।

***009 43/4: "- - - यह (कुरान*) किताबों की माँ में है, हमारी (अल्लाह की *) उपस्थिति में, उच्च
(गरिमा में) - - -"। यह कुरान में उन जगहों में से एक है जहां मुहम्मद कुरान का दावा करते हैं
अल्लाह के अपने घर/स्वर्ग में मदर बुक (की एक प्रति) से लिया गया है। (13/39 भी देखें)।
**लेकिन ऐसी कोई किताब नहीं जिसमें सैकड़ों गलतियां हों, सैकड़ों विरोधाभास हों, सैकड़ों हों
ढीले दावे और बयान, बहुत सारे अमान्य तर्क, बहुत सारे अमान्य "संकेत" और बहुत सारे
अवैध "सबूत" किसी के लिए भी आसान है, जिसके पास अच्छी और व्यापक शिक्षा है, आदि भी देखें
एक श्रद्धेय मदर बुक से कॉपी किया गया, उच्च सम्मान और सम्मान में, परिपूर्ण स्वर्ग में,
एक परिपूर्ण, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ भगवान का घर।**

०१० ४६/९: "मैं (मुहम्मद) एक नए सिद्धांत को लाने वाला नहीं हूं - - -"। मुहम्मद
ढोंग किया गया इस्लाम यहूदियों का एक निरंतरता - या अनियंत्रित - धर्म था और
ईसाई। यह सच नहीं है - विशेष रूप से NT में यह स्पष्ट है कि शिक्षाएँ मौलिक रूप से
इतने अलग हैं, कि वह एक ही भगवान नहीं हो सकता - कम से कम अगर वह मानसिक रूप से बीमार नहीं है। 29/46 . देखें
और 12/111.

०११ ५६/८०: "एक रहस्योद्घाटन (कुरान*) दुनिया के भगवान से (अल्लाह *) - - -"। यह कर सकते हैं

इतनी सारी गलतियों के साथ किताब देखें। असंभव नहीं है कि सर्वज्ञ ईश्वर स्वर्ग में एक प्रति के रूप में रखें
पुस्तक (43/4)। क्या यह वास्तव में किसी भगवान का रहस्योद्घाटन हो सकता है? या दूसरी तरफ: कर सकते हैं
इतनी सारी गलतियाँ, अंतर्विरोध, इतना अमान्य तर्क उत्पन्न करने वाली कोई चीज़ सम का स्वामी हो
एक दुनिया? यह भी देखें 2/131 - 6/155 - 7/196 - 8/41 - 11/14 - 13/1 - 13/19 - 13/37 - 14/1 -
15/1 - 16/102 - 20/4 - 26/109 - 26/127 - 26/192 - 31/21 - 32/2 - 34/6 - 36/5 - 43/43 - 45/2
- 46/2 - 47/9।

***०१२ ६१/९: "- - - सत्य का धर्म जो सभी धर्मों पर प्रचार कर सकता है - - -"। ये भी
यह याद रखने योग्य है कि आज के सामान्य लोग - और पहले के समय - के साथ अनिच्छुक होंगे
इस्लाम जैसे सीवी वाले व्यक्ति पर विश्वास करना या विश्वास करना मुहम्मद को बताता है: डकैती, जबरन वसूली,
महिलाओं, झूठ, टूटी हुई शपथ ("युद्ध विश्वासघात है"), नफरत के लिए उकसाना, दमन के लिए उकसाना
सभी विरोधियों, विरोधियों की हत्या, विरोधियों की हत्या, सामूहिक हत्या, बलात्कार, विश्वासघात,
(च. खैबर के ३० विरोधियों को सुरक्षित वापसी के वादे के तहत शांति बहस के लिए आमंत्रित किया गया - लेकिन
29 थोड़े से बहाने पर मारे गए, आखिरी भागने में कामयाब हो गया) युद्ध के लिए उकसाना - और वासना
सत्ता के लिए। हम मुसलमानों से मिले हैं, यह बहाना करते हुए कि वह एक कठोर व्यक्ति था जो कठिन परिस्थितियों में रहता था
समय, और वह दूसरों से भी बदतर नहीं था। ऐसा हो सकता है, लेकिन वह निश्चित रूप से बेहतर भी नहीं था,
और उसने एक अच्छे भगवान का प्रतिनिधित्व करने का नाटक किया (?)। उद्धरण का अंतिम भाग भी मात्रा बताता है
इस्लाम के बारे में। 9/29 में इसी तरह का दावा। और जहाँ तक सच्चाई का सवाल है - कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है।

95

पेज 96

013 69/51: "लेकिन, वास्तव में; यह निश्चित निश्चितता का सत्य है"। बमुश्किल - बहुत अधिक गलतियाँ, आदि। - - -
लेकिन शब्द सस्ते हैं। इसी तरह के दावों के लिए भी देखें 2/109 - 2/147 - 5/48 - 5/75 - 6/73 - 8/7 -
9/30 - 9/33 - 9/48 - 9/60 - 10/2 - 10/32 - 10/34 - 13/1 - 21/18 - 10/35 - 10/36 - 10/94 -
11/17 - 14/22 - 17/81 - 17/105 - 21/109 - 22/54 - 23/71 - 28/3 - 28/53 - 32/3 - 33/4 - 34/6 -
34/49 - 36/70 - 37/21 - 37/52 -40/62 - 40/75 - 41/41 - 41/53 - 42/18 - 42/24 - 43/29 - 43/87
- 46/16 - 46/30 - 46/34 - 47/2 - 47/3 - 50/19 - 56/57 - 56/92 - 57/16 - 67/21 - 73/11 - 85/19
- 92/16 - 103/3।

इसके अलावा: क्या आपने कभी गौर किया है कि जिसे घमंड करने की सबसे ज्यादा जरूरत है - जोर से और बार-बार
- वह कितना सच्चा है, धोखेबाज और ठग है, और जो अपने बारे में शेखी बघारता है
ज्ञान ठीक होने का माध्यम है, लेकिन शीर्ष बुद्धिमान और शिक्षित नहीं है? - वास्तव में
ईमानदार और वास्तव में जानकार व्यक्तियों को उन चीजों के बारे में घमंड करने की आवश्यकता नहीं है। असली
ईमानदारी और वास्तविक बुद्धिमत्ता और ज्ञान कुछ समय के करीब होने के बाद खुद को महसूस करते हैं
संबंध - यदि शेखी बघारने की जरूरत है, तो कुछ गड़बड़ है।

हिटलर के प्रचार मंत्री जोसेफ गोएबल्स को भी याद रखें: "यदि आप झूठ बोलते हैं"
अक्सर लोग इसे सच मानने लगते हैं।" (इसमें कई समानताएं हैं
नाजी विचारधारा और इस्लाम की विचारधारा)।

2. कुरान में भाषा:

०१४ ४/८२: "अगर यह (कुरान*) अल्लाह के अलावा किसी और की ओर से होता, तो वे निश्चित रूप से उसमें पाए जाते
बहुत विसंगति। " क्या सबूत है!!! सभी गलतियों, विरोधाभासों आदि के अलावा वहाँ
कुरान में इतनी विसंगति है कि इस्लाम का एक विशेष नियम है कि इस तरह की समस्याओं को कैसे हल किया जाए
- निरसन का तथाकथित नियम: यदि दो (या अधिक) स्थानों के बीच विसंगति है
कुरान, सबसे छोटा सामान्य रूप से सही है - सर्वज्ञ अल्लाह को अक्सर
अपना मन बदलें या नई जानकारी प्राप्त करें जिसने उसे अपने शब्दों को बदलने के लिए मजबूर किया, जिसकी किसी को आवश्यकता है
विशेष नियम ऐसे मामलों में कैसे व्यवहार करना है (यह एक कारण है कि यह क्यों आवश्यक है
इस्लाम सूरह और छंदों की उम्र जानने के लिए, या कम से कम जो इससे पुराना है)। और
कुरान और आधुनिक ज्ञान में इतना अंतर है कि यह स्पष्ट है कि
या तो इस्लाम के पास करने के लिए बहुत अच्छी व्याख्या है, या कुरान एक सर्वज्ञ द्वारा नहीं बनाया गया है
भगवान। (इस्लाम में बहुत सारी व्याख्याएं हैं, लेकिन इसमें से अधिकांश अमान्य या अत्यधिक संदिग्ध हैं - अपने का उपयोग करें
मस्तिष्क और ज्ञान जब आप सुनते या पढ़ते हैं, और आप देखेंगे कि यह सच है)। उद्धृत
वाक्य वास्तव में एक अप्रत्यक्ष, लेकिन कुरान से ही मजबूत सबूत है कि कुरान नहीं भेजा गया है
एक सर्वज्ञ भगवान से नीचे - और एक कारण है कि मुसलमान यह स्वीकार नहीं कर सकते कि एक है
पुस्तक में एक भी गलती, चाहे उन्हें "व्याख्या" करने के लिए कितनी ही असंभावित व्याख्याओं का उपयोग करना पड़े
गलतियाँ: यदि गलतियाँ हैं, तो धर्म में मौलिक रूप से कुछ गड़बड़ है।

(यह उल्लेख किया जाना चाहिए कि कुछ मुसलमान इनकार करते हैं कि निरसन का नियम है (एक सर्वज्ञ)
भगवान को अपने स्वयं के नियमों को समायोजित करने या आगे निर्दिष्ट करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए - यह तस्वीर को खराब करता है

पूर्णता)। लेकिन कोई भी अपने लिए पढ़ और देख सकता है, कई बिंदु समायोजित विस्तारित
या गई सीमाएँ दी गई हैं - बड़ी या छोटी - कुरान में हमने कभी गिना नहीं की, लेकिन हमारे पास लाल है
सीए से नंबर १०० (वास्तव में ४ - ५ से मजबूत विश्वासियों से) ५०० से अधिक स्थानों तक
आप कितनी सख्ती से न्याय करते हैं इसके आधार पर - केवल 9/5, "तलवार की कविता", मुस्लिम द्वारा कहा जाता है
विद्वानों ने 124 हल्के छंदों को निरस्त करने के लिए)।

इसके अलावा एक में सभी उल्लिखित गलतियाँ हैं - वे की तुलना में विसंगतियाँ हैं
वास्तविकता। इसी तरह के दावे के लिए देखें 39/23

015

९६

पेज 97

६/१५१: "आओ, मैं (मुहम्मद*) पूर्वाभ्यास करूंगा कि अल्लाह ने तुम्हें (वास्तव में) किस चीज से मना किया है - -
- (f. e x.*) अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करें"। यह बहुत स्पष्ट रूप से गलत है और थोड़ा विरोधाभास है
कुरान में अन्य स्थानों की तुलना में - मुहम्मद का स्पष्ट रूप से वास्तव में मतलब था
विलोम; कि आपको अपने माता-पिता के लिए भगवान होने का आदेश दिया गया था। एक सर्वज्ञ भगवान नहीं बनायेंगे
ऐसी गलती। कुरान किसने बनाया? **पुनश्च: यह छंद मुस्लिम विद्वानों में से एक है (but
हमेशा इमाम या आम आदमी नहीं) मानते हैं कि गलत होना चाहिए - - - और सर्वज्ञ देवता नहीं करते हैं
गलतियाँ करना।**

जैसा कि उल्लेख किया गया है, मुस्लिम विद्वान भी सहमत हैं कि यहाँ पाठ गलत है - यह बिल्कुल है
कुरान इस बारे में अन्य सभी जगहों पर जो कहता है, उसके विपरीत। जो आपको एक अपराजेय प्रदान करते हैं
किसी भी मुस्लिम के खिलाफ सबूत है कि किताब बिना किसी गलती के है। कोई प्रमाण
और इस्लाम द्वारा स्वीकृत एक तथ्य! (और इसके अलावा: अगर यहां कोई गलती है, तो और कितने हैं?)
बस याद रखें: ६/१५१ (स्कैंडिनेवियाई में ६ = सेक्स, और १५१ में दोनों सिरों पर सेक्स होता है (१ + ५ = ६, और ५)
+ 1 = 6)। याद करने के लिए आसान।

०१६ १६/१०३: "- - - यह (कुरान*) अरबी में है, शुद्ध और स्पष्ट है"। कई मायनों में गलत: वहाँ
विदेशी शब्द हैं, वर्तनी संबंधी गलतियां हैं, व्याकरण संबंधी त्रुटियां हैं और हैं
बहुत सारे और बहुत सारे स्थान जहाँ आज भी इस्लाम शब्दों का सही अर्थ नहीं जानता है या
छंद (अंतिम आंशिक रूप से क्योंकि पुस्तक मूल रूप से एक अधूरे माध्यम से लिखी गई थी
वर्णमाला)।

017 18/2: "(उसने (अल्लाह*) ने इसे बनाया है) सीधा (और साफ़) - - -"। किस्से "प्रति से" सादे हैं
और आसान। लेकिन एक किताब जो गलत तथ्यों और अन्य गलतियों से भरी है, f. भूतपूर्व। भाषाई वाले, (और
शायद धार्मिक भी - वे अपवाद क्यों हों?) न तो सीधे हैं और न ही स्पष्ट हैं।

०१८ २६/२११: "- - - और न ही वे (गैर-मुस्लिम) सक्षम होंगे (इसे उत्पन्न करने के लिए) (कुछ इसी तरह का)
कुरान के लिए *)"। **गलत। कुरान के बारे में मुसलमान जितने भी शानदार शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, उसके बावजूद,
यह अच्छा साहित्य नहीं है।** बहुत सारी गलतियाँ और विरोधाभास हैं। बहुत सारे हैं
गलत तर्क का। अनेक भाषाई त्रुटियाँ हैं। शायद ही कुछ मूल है
किताब - कहानियां बाइबल और कुछ अन्य पुरानी किताबों से ली गई हैं, जो धार्मिक रूप से बनाई गई हैं
किस्से, लोककथाओं से और परियों की कहानियों से और बस थोड़ा बदल गया। सोच और ससुराल में भी
और नैतिकता थोड़ी नई थी - यदि कोई हो; पुराने की तुलना में कुछ बदलाव थे
अरब, लेकिन विचार पड़ोसी संस्कृतियों से आए। और फिर वही किस्से सुनाए जाते हैं
और फिर - सबसे उबाऊ। साथ ही अच्छे लेखक - मूल संगीतकार नहीं - अरबों को पॉलिश किया
लगभग २५० वर्षों तक (लगभग ९०० ईस्वी तक) पुस्तक में भाषा।

एक अच्छे या मध्यम लेखक के लिए कहानियाँ एकत्र करने और लिखने के लिए लिखने में कोई समस्या नहीं होगी
कुछ इसी तरह - या बेहतर।

ऐसे दावे कि कुरान अच्छा साहित्य है आप भोले, अनपढ़, अनपढ़ को बता सकते हैं
पुराने (और उस मामले के लिए आधुनिक) समय की बर्बरता। जब आप किसी से बात कर रहे हों तो इसे छोड़ दें
शिक्षित आधुनिक व्यक्ति जो कुरान को जानता है (बहुत कम लोग - बहुतों को घृणा हुई थी)
और साहित्य के बारे में थोड़ा जानता है। कुरान अपने समय के लिए बुद्धिमान धार्मिक कथाएँ हो सकती हैं,
लेकिन यह साहित्य का एक अच्छा टुकड़ा नहीं है और न ही था। उबाऊ, दोहराव, इस और उस का हाथापाई
- कहानियों में कोई तार्किक प्रणाली नहीं, सभी कहानियां दूसरों से "उधार" और प्रसिद्ध, कोई नई नहीं
विचार, आदि। इसी तरह के दावों के लिए देखें 17/88

*०१९ ३९/२८: "(यह) अरबी में कुरान है, बिना किसी कुटिलता के - - -"। एक बात के लिए हमारे पास है
कभी समझ में नहीं आया कि अल्लाह चाहता तो कुरान अरब में क्यों अच्छी बात है

सारी पृथ्वी के लिए भगवान बनना - ठीक है, यहां तक कि अरब भी कहते हैं कि यह एक कठिन भाषा है और मुश्किल है

अनुवाद करें (हालांकि भाषा विशेषज्ञों का कहना है कि दावा उड़ा दिया गया है - शायद एक अतिरिक्त बचाव के रूप में
जो कुछ वे समझा नहीं सकते उसे समझाने से बचें, शायद उनके लिए कृत्रिम बैकअप के रूप में
मांग है कि मुसलमानों को अरबी में कुरान पढ़ना चाहिए - और कहें कि यह सिर्फ एक मुश्किल माध्यम है
भाषा: हिन्दी)।

वे आगे जोर देते हैं कि इसका अनुवाद करना असंभव है, जैसा कि ऊपर बताया गया है (जापानी की तरह)
अन्य भाषाओं को अच्छी तरह सीखने से पहले कहा करते थे)। वह बकवास है। मानव मस्तिष्क क्या है
सोचने में सक्षम, ज्ञान और बुद्धि के समान स्तर पर एक और मानव मस्तिष्क करने में सक्षम है
समझें कि क्या यह चीजों को समझाता है।

निःसंदेह यह तथ्य है कि भाषाओं में विशेष शब्द आदि होते हैं जो आपको अन्य में नहीं मिलते
भाषाएँ - सभी भाषाओं के लिए यही स्थिति है, और अरब के लिए कुछ खास नहीं है, जैसे कुछ
अशिक्षित मुसलमान दावा करना पसंद करते हैं (और उनमें से कुछ इसे मानते भी हैं, हम सोचते हैं)। एफ लो। भूतपूर्व।
नॉर्वेजियन बहुत ही सरल शब्द "ट्रान"। वह शब्द कुछ अन्य भाषाओं में मौजूद है। एफ. पूर्व.
अंग्रेजी को "कॉड लिवर ऑयल" कहना है - और फ्रेंच कुछ ऐसा ही। अरब में एक करना होगा
ऐसा कुछ कहें "उत्तरी अटलांटिक मछली के जिगर से तेल जिसे अंग्रेजी में कॉड कहा जाता है"
- लेकिन मुख्य बात यह है कि भले ही उन्हें इस मामले में नॉर्वेजियन के स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो
जरूरत नहीं है, यह 100% बिल्कुल और सही ढंग से वही और सही अर्थ बताता है। या इनुइट ले लो -
कहा जाता है कि उनके पास विभिन्न प्रकार की बर्फ और बर्फ की स्थिति के लिए 42 अलग-अलग शब्द हैं -
अरब के पास शायद ही एक जोड़े से ज्यादा हों। लेकिन एक अरब को समझाना इतना मुश्किल नहीं होगा
कि इस इनुइट शब्द का अर्थ है कि बर्फ गीली है, यह कि यह पानी से भरा हुआ है, यह कि
बर्फ सूखी है, यह है कि यह है या हवा से चलाई गई है, यह कि यह मुश्किल से जमी है, यह है कि यह है
चिपचिपा (ताकि आप बर्फ के गोले f. पूर्व बना सकें), यह कि यह ख़स्ता है, आदि।

और यह अरब के साथ भी ऐसा ही है: अरब f. भूतपूर्व। "2 वर्षीय शी-ऊंट" के लिए एक शब्द है। "सोल्चो
ein Wort gibt es nicht in Deutch" ("ऐसा शब्द जर्मन में मौजूद नहीं है") - लेकिन ऐसा नहीं है
एक जर्मन को यह समझाने में समस्या है कि कोई 2 साल की मादा ऊंट के बारे में बात कर रहा है।
जैसा कि कहा गया है: एक मानव मस्तिष्क क्या सोच सकता है, उसी स्तर पर दूसरा मानव मस्तिष्क कर सकता है
थोड़ा स्पष्टीकरण के साथ समझें।

इसके अलावा: यह मांग करने के लिए कि एक अफगान किसान अरब में कुरान पढ़ेगा, इसका मतलब है कि आप
मांग है कि वह उन सभी अलग-अलग शब्दों और अलग-अलग अर्थों को पहले से ही समझाए
- क्योंकि यही एकमात्र तरीका है जिससे वह उन्हें बाद में पढ़कर समझ सकता है। सिर्फ एक ही
शब्द और वही स्पष्टीकरण - लेकिन बहुत अधिक शब्द, क्योंकि वह शायद नहीं जानता
पहले से ही कौन से शब्द हैं जो उसे अतिरिक्त अंतर्दृष्टि दे सकते हैं।

इसके अलावा उस समय की अरब वर्णमाला जो कहा गया था उसे ठीक से लिखने के लिए अनुपयुक्त थी -
उस समय वर्णमाला बहुत अधूरी थी। (ऐसा होने का एक कारण यह भी था
पहले के समय में कुरान की कई किस्में। अब मुख्य रूप से पहले के 14 . में से 2 हैं
"विहित" जो उपयोग किए जाते हैं - एक (वार्श) अफ्रीका के कुछ हिस्सों में, और एक (हाफ्स) बाकी हिस्सों में
दुनिया - हालांकि वे इसे "पढ़ने के तरीके" कहते हैं, यह छिपाने के लिए कि वास्तविकता "किस्में" है। वे
इस मामले में दो भाव बिल्कुल समान हैं)। अगर अल्लाह बहुतों तक पहुंचना चाहता है, तो स्वाभाविक
उस क्षेत्र की भाषा यूनानी या शायद लैटिन या फारसी थी। या बहासा क्यों नहीं?
इंडोनेशिया? - सीखने के लिए दुनिया की सबसे आसान भाषाओं में से एक और अधिक से अधिक संभावनाओं के साथ
अरब में मुस्लिम, और आसपास के देशों से अच्छे संबंध हैं। ए के मामले में
पश्चिमी भाषा या फारसी वे भी किताब को सही ढंग से लिख सकते थे, जैसे कि
भाषाओं में पहले से ही पूर्ण अक्षर थे। तब उन्हें न जानने की समस्या नहीं हुई थी
वास्तव में क्या कहा और लिखा गया था। अब मुसलमान ही निराधार या गलत कर सकते हैं।
यह दावा करने वाले कथन कि आज का कुरान अंतिम अक्षर और अंतिम अल्पविराम तक सही है, यहां तक कि
हालांकि सभी अक्षर - न ही अल्पविराम - अरब में 650 ईस्वी के आसपास भी मौजूद थे।

बहुत से मुसलमान जो कहते हैं उस पर विश्वास भी करते हैं। एक पूर्ण वर्णमाला के साथ यह वास्तव में हो सकता है
सही रहा। लेकिन उस समय की अधूरी वर्णमाला का तथ्य इस दावे को मजाक बना देता है। **परंतु
कुटिलता के बिना? सभी गलतियों और विरोधाभासों के साथ? !! सभी अमान्य . के साथ
"संकेत" और "सबूत"? तमाम ढीले-ढाले बयानों के साथ? ऐसे "तथ्य" आम तौर पर होते हैं
कुटिलता के लक्षण।**

०२० ५४/३२: "लेकिन हमने (अल्लाह*) ने कुरान को समझने में आसान बना दिया है - - -"। यह एक . में
तरीका बहुत सही है - भाषा ज्यादातर सादा और सरल है, और कुरान ही इसे बनाता है
स्पष्ट है कि किसी को इसे शाब्दिक रूप से समझना है (हालांकि कई मुसलमान दावा करते हैं कि छंद के साथ)
गलतियाँ रूपक हैं - यह कठिन प्रश्नों से बचने के लिए उपयोग करने का एक आसान तरीका है)।

लेकिन यह सब समान है कम से कम आंशिक रूप से गलत है - आंशिक रूप से क्योंकि यहां बहुत सारे स्थान हैं
यह अनुमान लगाना मुश्किल है कि वास्तव में कौन सा शब्द है। कुरान की व्याख्या के लिए अलग किताबों की जरूरत है
- ऐसे कई हैं। और अगर आप किसी भी अच्छे को पढ़ेंगे, तो आप पाएंगे कि यहां तक कि
आज किताब में ऐसे बिंदु हैं जिन्हें इस्लाम समझ नहीं पाया है, और भी बहुत कुछ
जिन बिंदुओं का वे अभी भी सही अर्थ नहीं जानते हैं - या दो या दो से अधिक अर्थों में से कौन सा है?
सही वाला। लेकिन यह देखना आसान है कि मुहम्मद का मतलब था कि यह आसान था और जटिल नहीं था
समझें - और एक सर्वज्ञ ईश्वर एक ऐसी पुस्तक की रचना करने में सक्षम था जो संभव था
समझना और गलत समझना या न समझना असंभव है, जैसा कि मुहम्मद ने दावा किया था
और निश्चित रूप से विश्वास और इरादा। कुरान की रचना किसने की? इसी तरह के दावों के लिए देखें 42/3 -
41/42 - 54/17 - 54/22 - 54/40।

3. कुरान का दावा किया गया व्यावहारिक मूल्य:

०२१ ६/९२: "जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं वे इस (पुस्तक) (कुरान) पर ईमान रखते हैं, - - -"।
गलत। कई ऐसे हैं जो अगले जन्म में विश्वास करते हैं, लेकिन कुरान में विश्वास नहीं करते - f. भूतपूर्व।
यहूदी और ईसाई, लेकिन कई अन्य भी।

०२२ ६/१५४: "कुरान) सभी चीजों को विस्तार से समझा रहा है"। यह सब से दूर समझा रहा है
चीजें, और निश्चित रूप से पर्याप्त विवरण में नहीं - अन्य तथ्यों के बीच में पर्याप्त कानून नहीं हैं
कुरान को उन्नत समाज चलाने के लिए, जिसके कारण मुसलमानों को पूरक आहार बनाना पड़ा है।
इसी तरह के दावों के लिए 6/38 - 7/52 - 10/39 - 12/2 - 12/111 - 22/8 देखें।

०२३ १०/८२: "और अल्लाह अपने शब्दों (कुरान) से अपने सत्य को सिद्ध और स्थापित करता है, - - -"।
गलत। कुरान के शब्द अल्लाह के बारे में कुछ भी साबित नहीं करते हैं, जब तक कि पहले यह साबित न हो जाए कि यह
वास्तव में अल्लाह ने बनाया था, और यह कि अल्लाह ने वास्तव में कुरान के अनुसार बनाया और किया है। यह है
अधिक से अधिक आंशिक रूप से केवल सत्य - बहुत अधिक गलतियाँ, अंतर्विरोध आदि। इसी तरह के दावों के लिए देखें
2/22 - 3/70 - 5/48 - 6/57 - 7/181 - 8/6 - 10/33 - 10/82 - 11/20 - 13/17 - 23/70 - 34/53 -
47/3 - 54/55।

०२४ १७/१२: "- - - हमने (अल्लाह) ने विस्तार से सब कुछ समझाया है"। गलत। बहुत सी चीजें हैं
विस्तार से नहीं बताया - f. भूतपूर्व। मुस्लिम कानूनों को और अधिक के साथ पूरक करना पड़ा है
कुरान और हदीस की तुलना में पैराग्राफ - और अभी भी मुस्लिम कानून से दूर हैं
आधुनिक जीवन और समाजों के विषय में और यहां तक कि दैनिक जीवन के विषय में भी पूर्ण। और केवल? - ए
पुरुष यह कह रहा है कि एक महिला ने अभद्र व्यवहार किया है, अल्लाह के अनुसार अल्लाह से झूठ बोल रहा है और
कुरान, अगर वह 4 गवाह पेश नहीं कर सकता, भले ही वह पूरा सच बोलता हो,
और सर्वज्ञ अल्लाह यह जानता है। और भी बदतर: एक बलात्कार
महिला को दंडित किया जाना है यदि वह 4 पुरुषों को यह गवाही देने के लिए पेश नहीं कर सकती है कि यह वास्तव में बलात्कार था -
सामान्य रूप से बिल्कुल असंभव। **कुरान की वो दो बातें सबसे भयानक हैं
अन्यायपूर्ण और अमानवीय अनुच्छेदों के बारे में हमने कभी किसी सभ्य (?)**

99

पेज १००

कानून। क्या शरीयत सभ्य है? क्या अल्लाह अच्छा है या/और न्यायी है? इसी तरह के दावों के लिए देखें 15/1 -16/89 - 24/34
- 26/2 - 27/1 - 36/69 - 43/2 - 44/2।

०२५ ३१/२: "ये बुद्धिमान पुस्तक के छंद हैं"। **एक किताब जिसमें बहुत सारी गलतियाँ हैं और
अप्रमाणित, सस्ते के अलावा कुछ भी नहीं पर आधारित बहुत सारे और बहुत सारे निराधार बयानों के साथ
शब्द कोई बुद्धिमान पुस्तक नहीं है और न ही कोई पुस्तक "ज्ञान से भरी" है।** यह रोगसूचक हो सकता है कि नाम
इस सूरह का, लुकमान, एक अरब परी कथा में एक बुद्धिमान व्यक्ति का नाम है, वास्तविक नहीं। के लिए

इसी तरह के दावे देखें 2/231- 10/1 - 10/37 - 17/99 - 28/2 - 31/20 - 32/2 - 35/25 - 36/2 - 43/4 -

00g 39/41: "फिर, वह मार्गदर्शन प्राप्त करता है (देखें 39/41c*) अपनी आत्मा को लाभान्वित करता है - - -"। कैसे
क्या यह आपकी आत्मा को चोरी/लूट, नफरत, बलात्कार, हत्या, सामूहिक हत्या (कई, कई मामलों में)
मुस्लिम इतिहास), गुलाम, आदि? यह आपकी जेब को फायदा पहुंचाता है - और मुहम्मद और उनके को देता है
उत्तराधिकारी कई और सस्ते योद्धा - लेकिन आपकी आत्मा? गलत। इसी तरह के दावों के लिए 2/2 - 2/5 . देखें
- 2/120 - 10/35 - 12/111 - 16/64 - 16/89 - 18/55 - 22/54 - 27/2 - 31/3 - 41/44 - 45/11 -

46/30 - 47/32 - 68/7 - 71/13 - 87/3।

**026 96/11: "- - - अगर वह (एक आदमी*) मार्गदर्शन पर है?" क्या किसी किताब में मार्गदर्शन है
गलत तथ्यों के साथ 1700 से अधिक अंकों के साथ, कम से कम 200 संभावित गलत तथ्य, से अधिक
भाषाविदों के अनुसार अरब संस्करण में 100 भाषाई गलतियाँ, ढेर सारे ढीले-ढाले बयान और
बहुत सारे अमान्य "संकेत" और "सबूत" - धोखेबाजों और धोखेबाजों की पहचान? उल्लेख नहीं करना
४००+ विरोधाभास, १००+ निरस्तीकरण और कुरान में अस्पष्ट भाषा के ३००+ मामले - the
दावा किया गया कि अभाव इस्लाम का एकमात्र दृढ़ता से दावा किया गया है (लेकिन कभी साबित नहीं हुआ) ईश्वरीय प्रमाण है
किताब की उत्पत्ति !! - नहीं; कोई वास्तविक मार्गदर्शन नहीं। कोई सबूत नहीं और कोई अच्छा मार्गदर्शन नहीं। एक जैसा
28/49 - 34/6 - 45/20 - 32/5 . में दावे

4. कुरान के अनुसार कुरान में सामग्री का धार्मिक मूल्यांकन:

०२७ ६/९२: (कुरान है) "पुष्टि करना (रहस्योद्घाटन) जो इससे पहले आया था (बाइबल*)"।
गलत। इतने सारे मूलभूत अंतर हैं, कि कुरान इसकी पुष्टि नहीं करता है
बाइबिल। एफ देखें। भूतपूर्व। 2/89 और 3/3 आगे स्पष्टीकरण के लिए। 26/196 - 35/31 - 46/12 . में इसी तरह के दावे
- 46/30। आगे नीचे बाइबल के बारे में अलग अध्याय देखें।

**०२८ १०/३७: "यह कुरान ऐसा नहीं है जो अल्लाह के सिवा कोई और पैदा कर सकता है---"। बहुत
गलत। कई अच्छे लेखक के संग्रह से जितनी अच्छी और बेहतर कहानियां लिख सकते हैं
कुरान में सूरह। इस्लाम जो कहता है उसके बावजूद कुरान बहुत अच्छा साहित्य नहीं है। NS
वही कहानियां बार-बार दोहराई जाती हैं। उन्हें अक्सर ठीक से बताया भी नहीं जाता है। ईमानदारी से
पुस्तक के बड़े हिस्से बल्कि सुस्त पढ़ने वाले हैं। और कल्पित उच्च गुणवत्ता मुहम्मद के अरबी
भाषा: हिन्दी? - जिस बात का मुसलमान कभी जिक्र नहीं करते, वह यह है कि इसे पूरा करने में लगभग 250 साल लग गए
भाषा (कई मुसलमान तो यह भी नहीं जानते और कहने पर जोर-जोर से विरोध करते हैं) - ऐसा नहीं था
लगभग 900 ईस्वी तक कि इसे आज की भाषा जैसा कुछ मिल गया था। यह बहुत में भी मौजूद था
एक से अधिक पाठ। एक बात तो मुहम्मद (हदीस के अनुसार) ने भी कहा कि भेजा गया है
7 किस्मों में नीचे जो सभी सत्य थे - भले ही विवरण अलग थे। एक और बात के लिए
कुछ पुराने, मूल ग्रंथ "आधिकारिक" के बाद लंबे समय तक मुस्लिम दुनिया में मौजूद रहे।
एक 650 ईस्वी के आसपास समाप्त हो गया था (किसी समय कम से कम 14 कैनोनाइज्ड किस्में थीं)। के लिए
अभी भी एक और बात है कि ग्रंथों को समय के साथ थोड़ा बदल दिया गया है - कम से कम बहुत पुराना
1972 में यमन में पाए गए कुरान में आधुनिक से "छोटे, लेकिन महत्वपूर्ण अंतर" थे
संस्करण। प्रमुख कुरान आज (हाफ्स के बाद), वह संस्करण है जो में आधिकारिक था
मिस्र जब पहली बार 1924 में छपा था, जैसा कि हमने पढ़ा है। प्रस्तावना (सूची) भी देखें।

100

पेज 101

०२९ १३/३७: "इस प्रकार हमने (अल्लाह *) ने इसे (कुरान*) में अधिकार का निर्णय होने के लिए प्रकट किया
अरबी।" एक किताब जिसमें इतनी सारी गलतियाँ और अंतर्विरोध हैं, इतने अमान्य तर्क हैं, कि
अमानवीय नैतिक और नैतिक या नैतिक दर्शन के बिना, "निर्णय" का कोई आधार नहीं है
अधिकार"। अगर मुसलमान असहमत हैं, तो उन्हें विश्वास करने के लिए मजबूत सबूत लाने होंगे। एक जैसा
2/101 - 4/170 - 6/115 - 9/48 -11/14 - 12/1 - 16/123 - 24/46 में दावे।

०३० १६/६४: "(कुरान को नीचे भेजा गया *) व्यक्त उद्देश्य के लिए, कि आप (मुहम्मद *)
उन्हें बातें स्पष्ट कर देनी चाहिए - - -"। के माध्यम से चीजों को स्पष्ट करना कैसे संभव है
गलतियों, विरोधाभासों और अमान्य/झूठे "सबूतों" से भरी किताब?

०३१ २१/५०: "और यह (कुरान*) एक धन्य संदेश है जिसे हमने (अल्लाह*) उतारा है।
प्रश्न पूछना कितने तरीकों से संभव है: क्या यह सच हो सकता है कि एक सर्वज्ञ भगवान के पास है
इतने सारे गलत तथ्यों, विरोधाभासों और अन्य गलतियों के साथ एक किताब भेजी - f.
भूतपूर्व। भाषाई और शायद धार्मिक - गलतियाँ? उल्लेख नहीं करने के लिए: यह कितनी संभावना है कि की एक पुस्तक
ऐसा दयनीय गुण, कम से कम गलत तथ्यों, विरोधाभासों और अमान्य प्रमाणों से संबंधित,
और साहित्य के रूप में एक माध्यम के रूप में, श्रद्धेय मातृ पुस्तक के रूप में एक प्रमुख स्थान हो सकता है
एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान भगवान के घर में? यह बस असंभव है। इसी तरह के दावे

21/50 - 36/17 - 38/1 - 38/7 - 42/52 - 56/81

०३२ ४०/७०: "जो लोग किताब को अस्वीकार करते हैं (कुरान या झूठी बाइबिल नहीं हो सकती है, जैसे इस्लाम दावा करता है - हमेशा की तरह बिना किसी दस्तावेज के*) जिसे हमने (अल्लाह*) भेजा - - -"। नहीं सर्वज्ञ ईश्वर ने कुरान को उतारा - बहुत सारी गलतियाँ, आदि। (और विज्ञान ने दिखाया है कि आधुनिक बाइबिल की सामग्री पहले वाले के समान ही है, और परिणामतः नहीं है झूठा - इस्लाम के दावे बस यही हैं; दावे।)

यह सबसे खुला सवाल है कि सच्चाई से सबसे दूर कौन है- मुसलमान या (कुछ?) गैर-मुसलमान। सभी गलत तथ्यों, अंतर्विरोधों और अन्य गलतियों से यह स्पष्ट है कि कुरान एक सर्वज्ञानी भगवान द्वारा नहीं बनाया गया है - और कुरान में अमानवीयता भी साबित करती है कि यह है किसी अच्छी या परोपकारी शक्ति द्वारा नहीं बनाया गया (जब कोई दावा करता है और अच्छी बातें बताता है, लेकिन मांग करता है और बुरे काम करता है, मांग और कर्म उसके न्याय के लिए अधिक विश्वसनीय होते हैं चरित्र, बहुत सस्ते शब्दों की तुलना में)। और अगर इस्लाम बना हुआ धर्म है, तो बना हुआ धर्म है पुस्तक - फिर उन सभी मुसलमानों के साथ क्या जिन्हें वास्तविक की तलाश करने की संभावना से वंचित कर दिया गया है धर्म (यदि ऐसा मौजूद है)? -उनकी एक ही उम्मीद है कि नर्क भी एक कल्पना है, नहीं तो वे अंदर हैं संभावित अगले जीवन में एक कठोर जागृति के लिए। 2/91 - 3/137 - 7/96 - 16739 में इसी तरह के दावे - 29/68 - 35/3 - 77/19 - 77/24 - 77/28 - 77/34 - 77/37 - 77/40 - 77/45 - 77/47 - 77/49 - 98/6।

०३३ ५०/१: "- - - गौरवशाली कुरान द्वारा - - -"। इतनी सारी गलतियों, विरोधाभासों वाली एक किताब, आदि, और धोखाधड़ी और धोखा देने के इतने सारे हॉलमार्क के साथ (ढीले बयान, अमान्य "संकेत" और "सबूत") शानदार नहीं है। वैसे अभिव्यक्ति एक शपथ है - कुरान की कसम। आशा है कि बाकी सब सच है, अगर नहीं तो यह झूठी कसम है। हालांकि इस्लाम में कुछ मामलों में झूठी कसमें अनुमति है - या भुगतान किए जाने पर माफ किया जा सकता है)। 50/1 - 85/21 . में इसी तरह के दावे

5. कुरान के इन हिस्सों में "काफिर":

०३४ २/८९: "- - - जब उनके पास (मदीना में यहूदी *) आता है कि (पाठ जो बाद में बन गए कुरान*) जिसे उन्हें पहचानना चाहिए था (यह दर्शाता है कि उन्हें ग्रंथों को पहचानना चाहिए था मुहम्मद से उनके ओ.टी./टोरा* में)"। गलत - अंतर्निहित बुनियादी सोच और बहुत कुछ विवरण इतने अलग हैं, कि केवल एक चीज को पहचानना संभव है, वह यह है कि कुछ बहुत है गलत। कुरान का वास्तविक बाइबिल से कोई लेना-देना नहीं है - और विज्ञान ने इसका कारण साबित कर दिया है ऐसा नहीं है कि सभी दस्तावेजी इस्लामी दावों के बावजूद बाइबल को गलत साबित नहीं किया गया है।

१०१

पेज 102

०३५ २/१४६: "- - - लेकिन उनमें से कुछ (यहूदी, ईसाई*) सच्चाई को छुपाते हैं (कुरान*) - - -"। इतने सारे गलत तथ्यों और इतने गलत तर्क के साथ, यह आंशिक रूप से सबसे अच्छा है सच्चाई। 2/89 के ठीक ऊपर और 40/75 देखें।

०३६ ४/१७४: "- - - आपके पास (यहूदी, ईसाई*) एक ठोस प्रमाण (कुरान*) आया है अपने रब (अल्लाह*) की ओर से - - -"। इसके साथ ही बहुत सी गलतियाँ, गलत तर्क, आदि आदि कुरान है बहुत आश्वस्त नहीं है, और इसके "सबूत" / "संकेत" अब और अधिक आश्वस्त नहीं हैं। 2/99 देखें।

०३७ १६/३६: "- - - इनकार करने वाले (सच्चाई)"। कुरान में सभी गलतियों के साथ, यह है यह विश्वास करना असंभव है कि पुस्तक या इस्लाम पूर्ण सत्य और केवल सत्य का प्रतिनिधित्व करता है। (वह मुख्य कारणों में से एक है कि इस्लाम कुरान में एक भी गलती को स्वीकार नहीं कर सकता - अगर वहाँ है गलतियाँ हैं, पुस्तक में कुछ गड़बड़ है - - - - और फलस्वरूप धर्म के साथ)। सिमिलरी का दावा 6/5 - 21/24 - 22/53 में है।

०३८ २७/७६: "--- यह कुरान इजराइल की सन्तानों को उन अधिकांश बातों की व्याख्या करता है जिनमें वे असहमत हैं"। बहुत गलत। एक बात के लिए कुरान मोज़ेक धर्म से बहुत अलग है (और ईसाई धर्म से और भी अलग), कि यह स्पष्ट रूप से समान नहीं है। दूसरे के लिए: ए उस किताब के साथ बहुत सारी गलतियाँ, आदि बहुत कम समझा सकते हैं।

०३९ २८/४८: "--- जब सत्य (कुरान) उनके पास आ गया (कुरैश - अग्रणी मक्का में जनजाति*) - - -"। यदि ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि "सत्य" शब्द इतना केंद्रीय और इतना अनुपयोगी है इस्लाम, हमने बहुत पहले इस पर टिप्पणी करना बंद कर दिया था, लेकिन कुरान अपनी सभी त्रुटियों के साथ कर सकता है केवल आंशिक सत्य हो। देखिये सारी गलतियाँ - कुछ छोटी, कुछ बड़ी भूल, कुछ दोहराई गईं कई बार और वास्तव में पुख्ता, लेकिन एक सर्वज्ञ भगवान के लिए एक गलती भी असंभव है। है अल्लाह सर्वज्ञ नहीं है? या किसी और ने कुरान की रचना की? अगर अल्लाह सर्वज्ञ नहीं है, इसका मतलब है कि धर्म में कुछ गड़बड़ है। अगर मुहम्मद या किसी और इंसान ने रचा

यह, यह एक झूठा धर्म है।
और अगर यह एक झूठा धर्म है और कहीं कोई वास्तविक, सच्चा धर्म है, जिसे इस्लाम रोकता है
अपने ईमान वालों के लिए रास्ता - - - तो फिर सारे मुसलमानों का क्या?

०४० ३५/४२: "- - - उनकी उड़ान (धार्मिकता से (= मुहम्मद की शिक्षाओं)) - - -"। कोई
बड़ी संख्या में गलतियों, विरोधाभासों और अमान्य वाली पुस्तक पर आधारित शिक्षण
"सबूत" और "संकेत", और सबसे ऊपर केवल एक ही व्यक्ति द्वारा संदिग्ध नैतिकता के बारे में बताया गया है
और चरित्र (महिलाकरण, बलात्कार, डकैती, जबरन वसूली, हत्या और सामूहिक हत्या - और वासना)
शक्ति - यह सब और बहुत कुछ इस्लाम द्वारा ही अच्छी तरह से प्रलेखित है, हालांकि इस पर प्रकाश डाला गया है) - जैसे
शिक्षण धार्मिकता का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। यह और भी अधिक है कि यह दृढ़ता से घृणा करने के लिए उकसाता है,
दमन, हत्या और युद्ध - बहुत धर्मी या अच्छा नहीं)। इसी तरह के दावे 6/111 - 17/41 में -
17/46 - 71/6।

०४१ ५१/९: "जिसके द्वारा (गैर-मुस्लिम*) बहकाया जाता है (सच्चाई से दूर)"। सच्चाई के लिए के रूप में,
40/75 देखें। 5/75 - 6/95 - 9/30 - 10/34 - 40/62 में सिमिलरी के दावे।

०४२ ५४/१८: "विज्ञापन (लोगों) ने खारिज कर दिया (सच्चाई (कुरान की शिक्षा)) - - -।" **वे
शिक्षाएँ केवल आंशिक रूप से ही सत्य हैं - बहुत सारी गलतियाँ, आदि।**

6. विभिन्न विषय।

०४३ २/२४: "लेकिन अगर आप नहीं कर सकते - और निश्चित रूप से आप (गैर-मुस्लिम *) नहीं कर सकते (एक सूरा का उत्पादन करें)
कुरान के समान गुण*) - - -"। सूरह कोई अच्छा साहित्य नहीं है - कमोबेश प्रतियां

अरब लोककथाओं, किंवदंतियों, परियों की कहानियों और चीजों के बारे में मुहम्मद को बाइबिल से बताया गया था और
(मुख्य रूप से) अपोक्रिफल (बनाई गई) कहानियों से। इसके अलावा . की रचना और प्रस्तुति
पाठ प्राथमिक विद्यालय स्तर के हैं। कई अच्छे लेखक ऐसी कहानियों का संग्रह कर सकते हैं और कर सकते हैं
बहुत बेहतर (इन बिंदुओं पर f. उदा। बाइबल कहीं बेहतर लिखी गई है)। अरब भाषा ही है
उत्कृष्ट कहा जाता है - लेकिन जब आप जानते हैं कि लगभग 250 वर्षों तक भाषा को पॉलिश किया गया था
शीर्ष बुद्धिमान और शीर्ष विद्वान पुरुषों द्वारा, जब तक कि इसे 900 ईस्वी के आसपास कुछ हद तक अंतिम रूप नहीं मिला
(अरब वर्णमाला तब तक पूरी नहीं हुई थी), वह बिंदु मूल के बारे में कुछ नहीं बताता
क़ुरान क़रीब ६५० ईस्वी के - ख़लीफ़ा उस्मान और अन्य'। दावा गलत है।

044 3/9: "- - - एक दिन जिसके बारे में कोई संदेह नहीं है - - -"। गलत। एक बार दुनिया का अंत
आएगा। लेकिन ऐसा होगा जैसा कुरान में कहा गया है, ठीक है, इसका एक अच्छा कारण है
संदेह है, क्योंकि उस पुस्तक में और भी बहुत कुछ गलत है।

०४५ ३/६१: "- - - अब (पूर्ण) ज्ञान के बाद तुम्हारे पास आया है - - -"। इतनी गलतियों के साथ
कुरान, यह आंशिक रूप से सबसे अच्छा ज्ञान है।

00h 13/31: "अगर कभी कोई कुरान होता जिसके साथ पहाड़ों को हिलाया जाता - - - (यह होगा
यह वाला)"। खैर, अब तक कुरान ने रेत का एक दाना भी नहीं हिलाया है। खैर, इसमें है
बहुत से लोगों का मार्गदर्शन या पथभ्रष्ट किया, और उन्होंने कुछ किया है, लेकिन कुरान ने स्वयं किया है
कुछ नहीं। 59/21 में भी ऐसा ही दावा।

00i 14/27: "- - - शब्द (कुरान*) के साथ जो दृढ़ है - - -।" इतने सारे शब्दों के साथ कर सकते हैं
गलतियाँ और झुके हुए तर्क, आदि धोखाधड़ी, मस्तिष्क धोने के अलावा अन्य प्लेटफार्मों पर मजबूती से खड़े रहते हैं,
दबाव और शक्ति?

०४६ १६/१२५: "- - - तेरे रब का मार्ग (अल्लाह*) - - -"। कुरान रास्ते का प्रतिनिधित्व नहीं करता
एक सर्वज्ञ भगवान का - अच्छा नहीं कम से कम: बहुत सारी गलतियाँ, आदि और बहुत अधिक
अमानवीयता।

०४७ १७/१०६: "हमने (अल्लाह*) ने इसे (कुरान*) चरणों में उतारा है।" मुहम्मद ने खुलासा किया
कुरान धीरे-धीरे और अक्सर हुई चीजों या वास्तविक स्थितियों के संबंध में -
लेकिन ज्यादातर चीजें होने के बाद या समस्याएं थीं - पहले नहीं ताकि परेशानी हो सके
टाल गए हैं। एक असभ्य पर्यवेक्षक पूछ सकता था कि क्या स्पष्टीकरण यह था कि
छंदों के निर्माता को नहीं पता था कि क्या होने वाला है, लेकिन फिर एक भगवान के सर्वशक्तिमान का इस्तेमाल किया
बाद में चीजों को साफ करने का अधिकार - यह और भी अधिक है जब मुहम्मद व्यक्तिगत रूप से
शामिल था, भगवान (?) ने कमोबेश हमेशा उसका पक्ष लिया।

०४८ १८/१: "(अल्लाह*) ने उसमें कुटिलता की अनुमति नहीं दी है।" गलती से भरी किताब में
तथ्य और अन्य गलतियाँ, बहुत कुटिलता है। विशेष रूप से अमान्य "संकेतों" का उपयोग
और "सबूत" गंध।

०४९ १८/५६: "- - - सत्य को कमजोर करने के लिए (मुहम्मद / की शिक्षाओं)
कुरान*), - - -"। वास्तविकता को दोहराने के लिए: कुरान में इतनी सारी गलतियों के साथ, यह अधिकतम हो सकता है
आंशिक रूप से सच।

०५० २०/२: "हमने (अल्लाह *) ने तुम्हारे लिए कुरान को तुम्हारे लिए (एक अवसर) नहीं भेजा है
संकट - - -"। मुख्य तथ्य यह है कि अल्लाह (यदि वह मौजूद है) ने इसे बिल्कुल भी नीचे नहीं भेजा - नहीं
सर्वज्ञानी भगवान वह कई और स्पष्ट गलतियाँ करते हैं, आदि।

051 22/7: "- - - इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता - - -"। कुरान में सभी गलतियों के साथ, वहाँ
बहुत सी चीजों के बारे में संदेह का हर कारण है।

०५२ २६/६: "- - - जिस बात का उन्होंने (अविश्वासियों*) मज़ाक उड़ाया, उसकी सच्चाई!" सबसे अच्छा कुरान प्रतिनिधित्व करता है
आंशिक रूप से सच - बहुत सारी गलतियाँ।

०५३ २६/१९३: "इसके साथ (कुरान*) विश्वास और सच्चाई की आत्मा आई"। अगर सच्चाई नीचे आ गई
कुरान के साथ, इसे बाद में विकृत कर दिया गया होगा।

०५४ ३१/२२: "- - - सबसे भरोसेमंद हाथ पकड़ना (कुरान और अल्लाह*) - - -"। लेकिन एक किताब
इतनी सारी गलतियों के साथ, आदि - और यहां तक कि कुछ चमकदार झूठ भी (जैसे कि चमत्कार नहीं करेंगे)
बहुत से लोग मानते हैं) - भरोसेमंद नहीं है।

055 33/8: "- - - (संरक्षक (जिन्हें कुरान पैगंबर या अन्य मानता है)
धर्म के शिक्षक*)) सत्य के (इस्लाम की शिक्षा*) - - -"। इस्लाम की शिक्षाओं के रूप में
कुरान द्वारा प्रतिनिधित्व, सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है - सभी गलतियों को देखें (और विरोधाभास और
अमान्य "सबूत" और "संकेत", आदि)।

०५६ ३३/३४: "और पढ़ो - - - अल्लाह और उसकी बुद्धि (= कुरान *) - - -"। सीमित है
गलतियों से भरी किताब में ज्ञान, और इसके अलावा: जो ज्ञान है उसे कैसे चुनें - यदि कोई हो -
सभी गलतियों के बीच, मुड़ शब्द और तर्क, और यहां तक कि कुछ एकमुश्त झूठ भी?

०५७ ३६/१२: "- - - हमने (कुरान* में) - - - - सभी चीजों का हिसाब लिया है। सभी चीजें नहीं
कुरान में दूर तक गिना जाता है। देखो एफ. भूतपूर्व। सभी अतिरिक्त अनुच्छेदों पर जो आवश्यक हैं
मुस्लिम कानूनों में।

०५८ ३६/६९: "--- यह किसी पैगाम और कुरान से कम नहीं है---।" कम से कम यह a . से बहुत कम है
सच्चा संदेश और एक सच्चा कुरान जिसे कुरान खुद इंगित करता है - बहुत सारी गलतियाँ,
मुड़ तर्क और बहुत अधिक अमान्य तर्क + कुछ स्पष्ट झूठ। आदि।

०५९ ३९/२२: "जिसका दिल इस्लाम के लिए खुला है, ताकि उसे ज्ञान प्राप्त हो।"
(कुरान की सामग्री*) अल्लाह की ओर से - - -"। सभी गलतियों के साथ, अमान्य "संकेत", आदि
कुरान, यह आंशिक रूप से आत्मज्ञान देता है। जबकि गलतियां आदि विपरीत देते हैं
प्रबुद्धता का।

०६० ३९/५५: “और उन सर्वोत्तम (पाठ्यक्रमों) का पालन करें जो आप पर प्रकट हुए हैं (की शिक्षाएँ)
कुरान*) अपने रब की ओर से - - -"। गलतियों, अंतर्विरोधों से भरी किताब, मुड़ी हुई
तर्क और तर्क, और यहाँ तक कि स्पष्ट झूठ भी (जैसे कि चमत्कार किसी को विश्वास नहीं करेंगे),
सबसे अच्छा पायलट नहीं है।

०६१ ४३/४४: "(कुरान) वास्तव में आपके लिए और लोगों के लिए संदेश है - - -।" निश्चित रूप से
नहीं - बहुत ज्यादा गलत है। या अगर यह एक संदेश है - किसकी ओर से?

०६२ ४४/४: "उस (रात) में (जब पहला सूरा नीचे भेजा गया कहा जाता है) हर अलग बनाया जाता है
ज्ञान का मामला ”। कुरान में ज्ञान के लिए - 40/75 और 41/12 और कई अन्य देखें।

०६३ ४७/१६: "--- वो (मुसलमान) जिन्होनें ज्ञान प्राप्त किया है (कुरान*)---"। NS
कुरान ज्ञान के टुकड़ों और टुकड़ों का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है, और अशिक्षित लोगों के लिए यह मुश्किल है
यह जानने के लिए कि क्या सच है और क्या नहीं। 40/75 और 41/12 और अन्य देखें।

१०४

पेज 105

०६४ ५०/३७: "वास्तव में इसमें एक संदेश है (कुरान*) - - - (अर्थात*) (सच्चाई) - - -।" 40/75 देखें।
इसमें बस कोई संदेश नहीं है, जब तक कि इस्लाम वास्तव में यह साबित नहीं कर देता कि अल्लाह ने वास्तव में वह सब किया जो उसने किया था
दावे।

०६५ ५१/५: "(कुरान ५१/१ से ५१/४ तक कसम खाता है कि) वास्तव में तुम (मुसलमानों) से क्या वादा किया जाता है
(कुरान* में) सच है - - -"। इतनी सारी गलतियों के साथ, आदि - और यहाँ तक कि स्पष्ट झूठ भी - उसमें
किताब, यह भी शायद ही सच है। इसके लिए कम से कम ठोस सबूत की जरूरत होगी।

०६६ ५३/२८: "- - - अनुमान सत्य (कुरान*) के खिलाफ कुछ भी नहीं करता है"। **असल में यही है
कुरान से संबंधित प्रश्न: कितना सच है और कितना अनुमान - और
वह भी कितना नहीं है?**

०६७ ५६/५१: "- - - और (सच्चाई (कुरान*)) को असत्य समझो! - -"। कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से है
सच। 56/92 . में भी ऐसा ही दावा

7. इस अध्याय का निष्कर्ष - और कुरान में और भी बहुत कुछ:

00j 10/32b: "- - - सत्य के अलावा, त्रुटि के अलावा क्या रहता है?" यह बहुत स्पष्ट है कि बहुत कुछ
कुरान में कहा गया है कि यह सच नहीं है - और फिर "त्रुटि के अलावा क्या रहता है"?

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 3 (= II-1-3-3)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची थीम द्वारा व्यवस्थित

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और कुरान में त्रुटियों के बारे में मुहम्मद

**(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ,
विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र
मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण
कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)**

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस खंड की सामग्री:

1. **मुहम्मद - आदमी - कुरान में।**
2. **मुहम्मद - दूत।**

3. **क्या कुरान बाइबिल की पुष्टि कर रहा है?**
4. **मुहम्मद - विभिन्न विषय।**

1. मुहम्मद - आदमी - कुरान में + अन्य इस्लामी स्रोतों से कुछ जानकारी:

00a 3/161: "कोई भी भविष्यद्वक्ता (कभी) अपने भरोसे के लिए झूठा नहीं हो सकता।" मोहम्मद के कुछ हाईवेमेन (यह ६२५ ईस्वी में था जब मुसलमान चोरी/लूट से जीते थे और जबरन वसूली) असंतुष्ट थे और बताया कि मोहम्मद ने लूट को बांटते समय धोखा दिया। फिर यह अल्लाह द्वारा लिखित स्वर्ग में लच्छेदार मदर बुक से छंद बहुत आसानी से आ गया अरबों साल पहले या अनंत काल से अस्तित्व में था। इस्लाम का कहना है कि यह साबित हुआ कि मोहम्मद ने नहीं किया धोखा। यह सही हो सकता है अगर अल्लाह सर्वज्ञ होता और कुरान बनाता, लेकिन अगर नहीं मोहम्मद या किसी और ने किया।

एक और और बहुत अधिक गंभीर तथ्य यह भी है: समय के माध्यम से सबसे अधिक - लगभग नहीं कहने के लिए सभी - स्वघोषित भविष्यवक्ता झूठे भविष्यद्वक्ता रहे हैं।

अधिकांश झूठे भविष्यद्वक्ता पुरुष रहे हैं (और हैं) और धर्म में उन्होंने एक रास्ता खोज लिया है पैसा, महिला, सम्मान और शक्ति - धोखेबाजों के 4 सामान्य कारण। कुछ मानसिक रूप से हैं विशेष या बीमार - मुहम्मद उनमें से हैं यदि उनके पास टीएलई था (अध्याय देखें "टीएलई क्या है - टेम्पोरल लोब मिर्गी")। कुछ वास्तव में मानते हैं कि वे भविष्यद्वक्ता हैं, अन्य केवल धोखेबाज हैं - if मुहम्मद के पास टीएलई था, वह ईमानदारी से विश्वास कर सकता था कि उसका भगवान से कुछ संबंध था, **लेकिन यह कुरान से भी बहुत स्पष्ट है कि वह कम से कम कभी-कभी जानता था कि वह धोखा दे रहा है;** कुछ उन्होंने किताब में जिन तर्कों का इस्तेमाल किया, उनमें से कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति जानता था कि वह झूठ था (f। उदा। वह) चमत्कार कई संदेहियों को विश्वास नहीं दिलाएंगे), और मुहम्मद एक बुद्धिमान व्यक्ति थे। और उनमें से कुछ बस ठंडे थे और गणना कर रहे थे - कभी-कभी मनोरोगी भी - - - और जब कोई मुहम्मद के पीड़ितों और विरोधियों के प्रति निष्ठुर व्यवहार को देखता है, तो उसका उसके और सत्ता के बीच खड़े हर किसी के जीवन और कल्याण के लिए पूर्ण उपेक्षा धन (लालची योद्धाओं और सरदारों को उनके धर्म और उनकी सेना में आने के लिए रिश्वत देने के लिए उपयोग करने के लिए), और उसका चतुर मनोवैज्ञानिक (हर चतुर सेल्समैन मानव स्वभाव के बारे में बहुत कुछ जानता है और मनोविज्ञान) अपने अशिक्षित, भोले शुरुआती अनुयायियों के साथ छेड़छाड़, यह विश्वास करना आसान है मुहम्मद इनमें से थे - संभावित टीएलई के प्रभाव के साथ जोड़ा जा सकता है या कुछ।

001 7/157: "- - - अनपढ़ नबी (मुहम्मद), जिनका उल्लेख वे अपने में पाते हैं अपना (शास्त्र)"। आप अक्सर मुसलमानों से यह दावा करते या कहते हुए मिलते हैं कि मोहम्मद की भविष्यवाणी की गई है बाइबल। लेकिन हम कभी भी इसकी पूरी सूची नहीं ढूंढ पाए हैं कि वह कहां का है उल्लेख किया गया है - जाहिर है क्योंकि शिक्षित मुसलमान मुख्य रूप से 2:5 के बारे में बोलते हैं। १८/१५ + 18 का उल्लेख OT में किया गया है (और एक NT में पवित्र आत्मा के बारे में)। लेकिन वहाँ यह एक यहूदी के बारे में बात कर रहा है (एक अनुवाद यहूदियों से कहता है "एक अपने लोगों में से, अपने साथी देशवासियों से", एक और भाई के बारे में बात करता है - लेकिन एक यहूदी का भाई एक यहूदी है, अरब नहीं, और उसी के लिए एक यहूदी का साथी देशवासी - वह एक यहूदी है। यह यीशु के बारे में बात कर सकता है, लेकिन इसके बारे में नहीं मुहम्मद. वास्तव में "भाई/भाइयों/भाइयों/भाईचारे" शब्द का प्रयोग लाक्षणिक रूप से किया जाता है ऐसा न हो कि बाइबिल में 255 बार, व्यावहारिक रूप से हमेशा एक बंद समूह के बारे में (व्यावहारिक रूप से हमेशा यहूदी ओटी में - एक देश-से-देश भाषण के लिए एक अपवाद, लूत के लिए एक और कुछ के बारे में 3 एदोमी, जहाँ तक हम देखते हैं। और व्यावहारिक रूप से हमेशा ईसाई और/या एनटी में यहूदी, कुछ को छोड़कर ऐसे स्थान जहां हर कोई यीशु में संभावित भाई हैं) और कभी भी विशेष रूप से शामिल नहीं हैं अरब। केवल (लगभग ५-६) बार हमने ओटी में उल्लिखित अरबों को पाया है, कहानी या तो है तटस्थ, जैसे यह कहना कि उन्होंने राजा सुलैमान को श्रद्धांजलि अर्पित की, या वे शत्रु थे - कभी कुछ नहीं भाइयों की तरह। कुरान में भी शब्द का प्रयोग लगभग 30 बार लाक्षणिक रूप से किया जाता है - कभी नहीं यह दर्शाता है कि मुसलमान यहूदियों के भाई हो सकते हैं (सिवाय इसके कि वे अच्छे मुसलमान नहीं हैं - पाखंडी)।

क्या बुरा है: मूसा की किताब के उस हिस्से में जहां मुसलमानों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले दो उद्धरण मिलते हैं OT, Deuteronomy (= 5. Mos.) के संबंध में प्रमुख के रूप में, आप भाई/भाइयों शब्द का प्रयोग पाते हैं अध्याय १८-२४ में कम से कम १३ या १४ बार (विवादित दो अध्याय १८-१८/१५ में हैं और

18/18)। केवल वही जो यहूदियों के बारे में नहीं है। विशेष रूप से नाम से उल्लेख किया गया है - मिदोमाइट्स - और अन्य सभी १९-२२ भाइयों स्पष्ट रूप से यहूदियों के बारे में हैं, संदर्भ बहुत स्पष्ट है (एक भी नहीं)
अरब या इश्माएलियों के बारे में एक शब्द का उल्लेख किया गया है)। आगे एक दिलचस्प श्लोक है
दो बहस के ठीक बाद, 18/21। यह बताता है कि असली नबियों की पहचान है
कि वे भविष्यद्वाणियां करते हैं, और भविष्यद्वाणियां जो सच होती हैं। मुहम्मद ने कभी नहीं बनाया
भविष्यवाणियां। कई बार उनकी कही हुई बातें याद आ जाती थीं क्योंकि वे आ जाती थीं
सच या आंशिक रूप से सच - हमेशा की तरह किसी भी व्यक्ति के जीवन में - लेकिन वास्तविक भविष्यवाणी कभी नहीं। यहां तक कि बहुत
कुरान से स्पष्ट है कि मुहम्मद ने का उपहार होने का दिखावा या दावा भी नहीं किया था
भविष्यवाणी करना **भविष्यवक्ता की परिभाषा भविष्यवाणी करने के उपहार के साथ एक व्यक्ति है, और
जो इसका अभ्यास करते हैं। मुहम्मद के पास वह उपहार नहीं था - उन्होंने कभी नाटक या दावा भी नहीं किया
इसे पाने के लिए - और परिणामस्वरूप कोई नबी नहीं था - उसने केवल "उधार" लिया था जो प्रभावशाली था
शीर्षक। जब वह कोई वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं था तो वह "मूसा के समान भविष्यद्वक्ता" कैसे हो सकता है**? दावा है
इच्छाधारी सोच भी नहीं, बल्कि बकवास। (मुसलमान इस आयत का कभी जिक्र नहीं करते)।

**जब मुहम्मद वास्तविक नहीं थे तो मुहम्मद "मूसा की तरह नबी" कैसे हो सकते हैं?
नबी?!**

और अंतिम, लेकिन कम से कम जैसा कि उल्लेख किया गया है: शब्द भाई/भाई/भाई/भाईचारा भी
कुरान में अक्सर इस्तेमाल किया जाता है (लाक्षणिक रूप से 30 से अधिक बार) - और उसी तरह से
जैसा कि बाइबल में है: एक समूह के सदस्यों के बारे में - यहाँ या तो अरब या मुसलमान समूह के रूप में। और जैसे
जहाँ तक हम देख सकते हैं, असली अरब कुरान में भी यहूदियों के किसी भी तरह के भाई नहीं हैं। हम
एक छोटा अपवाद मिला है - किसी भी नस्ल के पाखंडी यहूदियों के भाई हो सकते हैं (!)।
इस मामले में प्रभावशाली।

इस्लाम हमेशा मांग करता है कि उनकी कहानियों के बिंदुओं को पूरा पढ़ा और समझा जाना चाहिए
संदर्भ - खासकर जब वे कुछ कठिन बिंदुओं को समझाने में परेशानी में पड़ जाते हैं। लेकिन इसमें
मामले में संदर्भ उनकी इच्छाधारी सोच को पूरी तरह से नष्ट कर देता है और इसके लिए सबूत की सख्त जरूरत है
ओटी में मुहम्मद - हताश क्योंकि कुरान घोषणा करता है कि वह वहां भविष्यवाणी कर रहा है, और नहीं
स्पष्ट भविष्यवाणी मिलनी है - इसलिए वे अपने स्वयं के नियमों को छोड़ देते हैं और दो शब्दों को उद्धृत करते हैं
संदर्भ और फिर घोषणा करें कि एक यहूदी का भाई एक अरब है, यहां तक कि उस संदर्भ में जहां वह है
स्पष्ट है कि मूसा ने यहूदियों से और उनके बारे में बात की, और जहां संदर्भ भी सीधे तौर पर यह बताता है कि यह
वह मुहम्मद नहीं हो सकता जिसके बारे में वह बात कर रहा था, क्योंकि उसने भविष्य के भविष्यवक्ता के बारे में बात की थी,
जबकि खुद मुहम्मद ने भी भविष्यवाणी करने का उपहार होने का दिखावा नहीं किया था। वह अंदर था
वास्तविकता कोई नबी नहीं - एक दूत हो सकता है, लेकिन एक नबी नहीं - उसने केवल उस थोपने वाले शीर्षक का इस्तेमाल किया।
भविष्य के महान भविष्यवक्ता के बारे में मूसा की भविष्यवाणी शायद यीशु के बारे में बात कर रही थी, जो बहुत
स्पष्ट रूप से बाइबिल और कुरान दोनों के अनुसार एक नबी था। लेकिन वह असंभव रूप से कर सकता था
मुहम्मद के बारे में बात की है जो अन्य तथ्यों के अलावा, जैसा कि वास्तव में कहा गया है, कोई पैगंबर नहीं था - वह
केवल "उधार" वह अच्छा शीर्षक है, यहां तक कि उपहार को वास्तविकता में शीर्षक देने का नाटक किए बिना
मांग की।

मैं।

लेकिन इस तरह के तथ्यों की परवाह किए बिना या यहां तक कि उल्लेख किए बिना, इस्लाम बहुत सीधे आगे और
सीधे तौर पर दावा करते हैं कि जब यहूदी 5 में भाइयों के बारे में बात करते हैं। मूसा। १८/१५ + १८ वे बात करते हैं
अरबों के बारे में और मुहम्मद की भविष्यवाणी करें क्योंकि वह एकमात्र व्यक्ति है जो यहाँ मूसा के पास हो सकता है
के बारे में बात की। वह अध्याय वास्तव में किस बारे में है, वह यह है कि मूसा अपने यहूदियों को बताता है (हम शब्द का प्रयोग करते हैं
यहूदी सुविधा के कारण - हम जानते हैं कि पहले शब्द सदियों बाद गढ़ा गया था) बातें

उनके भविष्य के बारे में - कि लेवियों को उनके भाइयों के बीच कोई विरासत नहीं मिलेगी (5.
राज्य मंत्री १८/१ - मुसलमानों द्वारा कभी उल्लेख नहीं किया गया) - शेष यहूदी - और च। भूतपूर्व। जो ऊपर उठेगा
एक नबी जैसा (जितना महान) अपने भाइयों में से - यहूदियों में से।

1. मुहम्मद ने कभी बनाने की कोशिश तक नहीं की
भविष्यवाणी करना जैसा कि उल्लेख किया गया है, वहां कुछ हैं
उद्धरण जहां उन्होंने कहा, हुआ - लेकिन जैसे
जितना उन्होंने कहा, यह अस्वाभाविक होगा यदि नहीं
थोड़ा सा सच हुआ। लेकिन वास्तविक भविष्यवाणियों के लिए,
उसने कभी कोशिश भी नहीं की - और असली नबी क्या है
भविष्य के बारे में कुछ नहीं बता पा रहे हैं? - वह था
ऐसी बात है कि एक असली नबी किया था
इसलिए, कि मूसा ने इस प्रकार का उल्लेख तक नहीं किया

मामला। कोई भविष्यवाणी नहीं = कोई नबी नहीं। सही नहीं
भविष्यवाणी करना = मूसा के अनुसार झूठा नबी
(५. मो. १८/२१)।

2. भविष्यवक्ता जो कहता है वह सही नहीं है - नहीं है
यहोवा की ओर से - एक झूठा भविष्यद्वक्ता बनाता है,
अध्याय (5. मूसा 18/21) और . के अनुसार
वह व्यक्ति जिसे इस्लाम स्वयं दृढ़ता से उद्धृत करता है।
कुरान में सभी गलतियों को देखें और
रोना। (इसके बारे में अलग अध्याय भी देखें
दावा है कि मुहम्मद का उल्लेख है
बाइबिल)।

द्वितीय.

5. राज्यमंत्री १८/१८ - वास्तव में यह ५ के समान ही कहता है। १८/१५.

III.

यूहन्ना १/२१ - परन्तु वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में बात कर रहा है। वह कहता है कि वह नबी नहीं है। **और इस्लाम जॉन १/२६-२७ को छोड़ देता है जहां जॉन बैपटिस्ट बताता है कि "पैगंबर" खड़ा था लोगों के बीच** - और निश्चित रूप से लगभग 600 साल बाद इसकी उम्मीद नहीं की गई थी। (यीशु अस्तित्व में था, लेकिन अभी तक अपना मिशन शुरू नहीं किया था। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला यीशु से आधा वर्ष बड़ा था, और मुहम्मद के जन्म से ५४० साल पहले उन्होंने जो कहा था, वह कहा।)

चतुर्थ।

NT से मुख्य दावा यूहन्ना १४/१६ है जहाँ यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं: "और मैं उनसे पूछूंगा पिता (भगवान / यहोवा *), और वह तुम्हें हमेशा के लिए तुम्हारे साथ रहने के लिए एक और सलाहकार देगा "। प्रति शिष्यों को दे दो मुहम्मद का कोई अर्थ नहीं था - उनका जन्म उनके होने के लगभग 500 साल बाद हुआ था मृत, और उनके लिए कोई मदद नहीं हो सकती है। वह भी सदा उनके साथ नहीं रह सकता। लेकिन वह है मुसलमान क्या दावा करते हैं, क्योंकि उन्हें एनटी से उद्धरण की आवश्यकता है, क्योंकि कुरान कहता है कि वह है ईसाइयों को भी पूर्वबताया गया था, और यह एकमात्र स्थान है जहाँ ग्रंथों को पर्याप्त रूप से मोड़ा जा सकता है - क्योंकि इसमें बहुत सारे घुमाव लगते हैं (इस दावे के बारे में अध्याय देखें कि मुहम्मद की भविष्यवाणी की गई है बाइबिल में। (वचन वास्तव में पवित्र आत्मा की भविष्यवाणी कर रहा है - यह कुछ दिनों बाद आया बाइबिल के अनुसार।)

अजीब तरह से पर्याप्त इस्लाम कभी भी अगली कविता (जॉन 14/17) का उल्लेख नहीं करता है जो जारी है: "- the सत्य की आत्मा (मुहम्मद न तो आत्मा थे, न सत्य (उसने धोखा दिया और झूठ बनाया - cfr। अल-ताकिया, और यहां तक कि उनकी शपथ के बारे में उनका दृष्टिकोण)। दुनिया उसे स्वीकार नहीं कर सकती, क्योंकि वह न तो उसे देखता है और न ही उसे जानता है। परन्तु तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और करेगा आप में हो" इसे बहुत ही दृश्यमान मुहम्मद को फिट करने का प्रयास करें !! इसके बारे में अलग अध्याय भी देखें दावा है कि मुहम्मद को बाइबिल में भविष्यवाणी की गई थी।

"कुरान का संदेश" समस्या को बहुत सरलता से हल करता है: यह बताता है कि कुरान की एक आयत बताते हैं कि एनटी मुहम्मद के बारे में क्या बताता है (सूरः ६१, छंद ६)। समस्या यह है कि बाइबिल सूरा ६१/६ के समान दूर से कुछ भी नहीं कहती है। (एक सुंदर व्याख्या यह है कि इसमें होना चाहिए गैर-मौजूदा इंजील इस्लाम में उल्लेख किया गया है कि बच्चे को कैसे समझाने की जरूरत है यीशु सुसमाचार (ओं) को लिखे जाने से पहले सीख सकते थे - एक सुसमाचार जो मैरी और अन्य अगर यह एक परी कथा नहीं होती तो 100% निश्चित रूप से ध्यान रखा जाता, क्योंकि यह वास्तव में पुख्ता होता यीशु और यहोवा/परमेश्वर के बीच और भी अधिक विशेष संबंध)। दरअसल यह गैर-मौजूदा सुसमाचार मौजूद हो सकता है, लेकिन कुछ समय बाद - एक सुसमाचार के रूप में यीशु के जीवन की कहानी है, मृत्यु और पुनरुत्थान, यह मैं तब तक नहीं लिख सका जब तक यीशु की मृत्यु नहीं हुई - और पुनरुत्थान - कुछ 33 साल का।

सूरह ६१/६ का प्रासंगिक भाग कहता है: "(यीशु ने कहा*): - - - मैं एक की खुशखबरी दे रहा हूँ मेरे बाद आने वाला रसूल, जिसका नाम अहमद होगा (= नाम का एक और संस्करण मोहम्मद*)"। लेकिन दूर से ऐसा कुछ भी बाइबल में नहीं मिलता है। बेशक इस्लाम बताते हैं कि बाइबिल के मिथ्याकरण के साथ - यही मानक और सस्ता स्पष्टीकरण है

जब भी कुरान और बाइबिल में अंतर होता है। लेकिन एक मिथ्याकरण नहीं होगा
उन हजारों लोगों के बीच काम करें जिन्होंने यीशु को बोलते हुए सुना था - और फिर जीवन और समय का पैमाना (वे किसी भी महीने या साल में यीशु के वापस आने की उम्मीद करते थे - अगर पहले कोई और नबी आना था, तो यह यीशु के वापस आने से पहले कम से कम एक पीढ़ी या अधिक लेने की संभावना होगी, उन्हें देने के लिए अन्य नबी अपने काम के लिए समय) पहले ईसाइयों की, सभी की सामग्री का उल्लेख नहीं करने के लिए उन व्यक्तियों द्वारा लिखे गए पत्र जो वास्तव में कहानी जानते थे, अलग थे। सूरह ६१/६ से भी बदबू आती है मोहम्मद को श्रेय देने के लिए बहुत कुछ बनाया गया। अगर कोई मुसलमान जोर देता है कि यह सच है, तो उसके पास है भारी सबूत पेश करने के लिए। (और सब कुछ के ऊपर विज्ञान ने दिखाया है कि बाइबिल कभी नहीं फर्जीवाड़ा किया गया था)।

वी

अंत में एक ग्रीक शब्द है, "पैराक्लेटोस"। यूनानी सुसमाचार में यह शब्द (सुसमाचार) मूल रूप से ग्रीक में लिखा गया था) जॉन के बाद वे एक स्पष्टीकरण के रूप में उपयोग करते हैं। मुस्लिम कहते हैं गलत वर्तनी होनी चाहिए, क्योंकि यदि आप एक और शब्द लेते हैं, "पेरिक्लीटोस" जो काफी समान है और इसे अरामी में अनुवाद करें, आपको एक शब्द मिलता है जिसे अरब में मोहम्मद के रूप में व्याख्या किया जा सकता है। बहुत आश्वस्त करना (लेकिन याद रखें कि प्रागैतिहासिक काल से अरब संस्कृतियों में रहते हैं जहां षड्यंत्रों के सिद्धांत व्याप्त हैं - शायद इसलिए कि उन्हें कभी जानकारी नहीं थी वे भरोसा कर सकते थे, और फिर उन्होंने अनुमान और कहानियां बनाईं। स्थिति वास्तव में एक आधुनिक मुस्लिम देशों में बड़ी डिग्री समान है - और इससे भी अधिक उन देशों में जो अभी भी हैं ज्यादा आधुनिक नहीं हैं। अधिकांश मुस्लिम देशों में जाएं और आप इसमें डूब सकते हैं ऐसी कहानियाँ और सिद्धांत)। ६१/६ भी देखें और अध्याय "बाइबल में मुहम्मद" देखें। और अंत में: यह दावा करना कि शब्दों को गलत समझा गया हो सकता है, मुसलमानों के लिए स्वाभाविक है, जैसा कि पुराना है अरब वर्णमाला में स्वरों की कमी थी, और किसी को उनका अनुमान लगाना था। लेकिन NT ग्रीक में लिखा गया था मूल रूप से, और यूनानी वर्णमाला पूर्ण थी, और गलतफहमी के लिए यह स्रोत था मौजूद नहीं।

जहाँ तक उसकी निरक्षरता का सवाल है: आप यह दावा पाते हैं कि वह कुरान में कई जगह नहीं पढ़ सकता था - च। भूतपूर्व। 7/158 - और हदीसों में। इसकी सच्चाई कोई नहीं जानता और न ही कोई कभी जान पाएगा, लेकिन दावे के अविश्वास के लिए अच्छे तर्क हैं।

002 11/2: "(कहो) 'वास्तव में, मैं (भेजा) तुम्हारे पास (लोग *) उसी (अल्लाह *) - - -" से हूं। अनुसार इब्न वार्राक के लिए शब्द "(कहो)" अरब मूल में मौजूद नहीं है। इसका मतलब है कि यहाँ यह है मुहम्मद जो बोलता है। कुरान में कुछ ऐसे स्थान हैं (इब्ने के अनुसार 8) वाराक)। लेकिन यह कैसे संभव है कि मुहम्मद एक किताब (होने का नाटक (?)) में बोलता है अल्लाह द्वारा या अनंत काल से अस्तित्व में है - और अल्लाह द्वारा भेजा गया है? (कुछ मुसलमान कहते हैं कि शब्द is बस भूल गए - लेकिन कुरान में और कितने शब्द भूल गए होंगे?)

००३ १२/१०४: "और इसके लिए आप (मुहम्मद*) उनसे (लोग/मुसलमान*) कोई इनाम नहीं मांगते (नया धर्म*) - - -"। नहीं, सभी चोरी/लूट मूल्यों के 20% और गुलामों के अलावा कुछ भी नहीं छापे और युद्ध, पीड़ितों से लिए गए सभी मूल्यों का 100% जो बिना लड़े आत्मसमर्पण कर दिया, ढेर सारी औरतें और ढेर सारी निरपेक्ष और निर्विवाद शक्ति/तानाशाही, और ढेर सारी और बहुत सारे मुक्त योद्धा - उन्हें केवल उन्हें स्वर्ग और वादों के वादे के साथ भुगतान करना था मनुष्यों और देशों से चुराए गए युद्ध की समृद्ध लूट के बारे में। और "गरीब-कर" (सामान्यतः २.५% - १०% आपकी आय का नहीं, लेकिन आपकी संपत्ति का यदि आप बहुत गरीब नहीं थे) - कि वह केवल गरीबों के लिए खर्च - और ज़कात - कर से बहुत दूर (शासक के लिए यह कहने के लिए स्वतंत्र है कि - और वह कभी-कभी वास्तव में बहुत मायने रखता था) गैर-मुसलमानों से (हालांकि न तो २०% और न ही १००% सब कुछ उसके निजी इस्तेमाल के लिए था - जितना कहा गया था वह और अधिक युद्ध और युद्ध छेड़ने के लिए खर्च किया गया था पड़ोसी अरबों को अच्छा मुसलमान बनाने के लिए "उपहार" + कुछ गरीबों को दिया गया था),

और कीमत पड़ोसी संस्कृतियों और मनुष्यों और जीवन को उन्होंने नष्ट कर दिया - और अधिक हासिल करने के लिए उसके लिए शक्ति और उसके योद्धाओं के लिए धन और दास। यह कुरान से निर्विवाद रूप से स्पष्ट है कि वह कम से कम महिलाओं और शक्ति को पसंद करता था। 25/57 - 34/47 - 38/86 - 42/23 में इसी तरह के दावे।

004 19/36: "वास्तव में अल्लाह मेरा (मुहम्मद का) भगवान है और आपका (मुसलमानों का *) भगवान - -"। इस एक गंभीर है: यहाँ स्पष्ट रूप से यह स्वयं मुहम्मद है - मुहम्मद आदमी - अर्थात् बोला जा रहा है। ब्रह्मांड के निर्माण से पहले किसी ईश्वर द्वारा बनाई गई पुस्तक में यह कैसे संभव है या एक हो सकता है जो अनंत काल से अस्तित्व में है, और एक श्रद्धेय मदर बुक की एक प्रति नीचे भेजी गई है अल्लाह के द्वारा स्वर्ग से? (कुरान में इस तरह की कुछ गलतियाँ (?) हैं - देखें 6/104 -6/114

- 11/2-3 - 19/36 - 27/91 - 42/10 - 51/50-51 - 6/116 और 11/2-3 में अनुवादक ने धोखा दिया है
और "गलती" को छिपाने के लिए अरब पाठ में "कहो" शब्द जोड़ा - धर्म में ईमानदारी? - या
"अल-तकिया? - ए. युसूफ अली एक अच्छे अनुवादक हैं और जहां तक हम उचित निर्णय कर सकते हैं
ईमानदार वाला। लेकिन वह एक समर्पित मुसलमान थे, और उनके पास "सद्भावना" का उपयोग करने की प्रवृत्ति है
इस्लाम लिखते समय हमारा अनुमान है कि वह सोच रहा होगा कि यह बस रहा होगा
भूल गए और उसके कारण इसे जोड़ा। लेकिन यह भी अनुवाद करते समय ईमानदारी नहीं है। एक जैसा
3/51 में दावा।

***005 27/91: "मेरे लिए (मुहम्मद*), मुझे प्रभु (अल्लाह*) की सेवा करने का आदेश दिया गया है
यह शहर (मक्का - ६१५-६१६ ईस्वी से जब मुहम्मद अभी भी वहाँ रहते थे*) - - - "। ये है
एक और गंभीर: यह मुहम्मद है जो एक बार फिर बोल रहा है - - - एक किताब में
स्वर्ग में एक "मातृ पुस्तक" की प्रति हो, एक ऐसी पुस्तक जो अनंत काल से अस्तित्व में हो या शायद
अल्लाह ने बनाया था। पिकथल और दाऊद दोनों इस बहुत ही खुलासा करने वाली गलती को छुपाते हैं (वहां .)
कुछ और हैं जहां या तो कोण या मुहम्मद बोलते हैं या बोल सकते हैं) को जोड़कर
शब्द "कहो:", लेकिन वह मूल में नहीं है, इब्न वाराक के अनुसार, "मैं एक क्यों नहीं हूं
मुस्लिम", पी.175. पिकथल द्वारा बेईमानी और मामले में दाऊद द्वारा। लेकिन फिर ऐसा होता है कि आप मिलते हैं
बेईमानी जब मुसलमान चीजों को "समझाने" की कोशिश करते हैं - यहां तक कि किताबों में भी आपको विश्वास करना चाहिए
बौद्धिक रूप से उच्च गुणवत्ता और नैतिक। (अल-अजहर विश्वविद्यालय, काहिरा की तरह, यह प्रमाणित करते हुए कि

भूमध्य सागर के भरने से बड़ी बाढ़ को समझाया जा सकता है। वे बहुत जानते हैं
ठीक है कि समय और जिस तरह से यह हुआ दोनों उस स्पष्टीकरण को प्रतिबंधित करते हैं - कुछ 4 - 5 मिलियन
साल पहले और "धीरे-धीरे" शायद 100 साल की अवधि में)।

वैसे भी मुहम्मद के लिए एक अच्छा क्षण था - उन्हें सत्ता पसंद थी। (बस देखो कि उसने खुद को कैसे चिपकाया
सत्ता के अपने मंच के लिए; उसका भगवान)।

००६ ३३/२१: "तुम (मुसलमानों) के पास अल्लाह के रसूल में एक सुंदर पैटर्न है (आचरण का)
किसी के लिए जिसकी आशा अल्लाह और अंतिम दिन पर है - - -"। गलत। चोरी/लूटना,
स्त्रीलिंग, बलात्कार, झूठ बोलना, विश्वासघात करना, जबरन वसूली करना, दमन करना, हत्या करना, घृणा करना, युद्ध करना
भीड़-भाड़, सामूहिक हत्या, छापे और आक्रमण के युद्ध - यह कोई "सुंदर पैटर्न" नहीं है
किसी भी मानवीय नैतिक या नैतिक संहिता के अनुसार, कुछ युद्ध धर्मों को छोड़कर, इस्लाम शामिल है,
और **यह इस्लाम के बारे में मात्रा बताता है कि यह आदमी उनका सबसे बड़ा नायक और चमकता हुआ मूर्ति है।**

007 33/45: "हे पैगंबर! - - -"। **लेकिन क्या मुहम्मद सचमुच एक नबी थे? एक नबी है a
वह व्यक्ति जिसके पास विशिष्ट और सही भविष्यवाणी करने में सक्षम होने का उपहार है - और करता है
यह।** तब असली और झूठे नबी में फर्क होता है - क्योंकि वहाँ थे
बहुत सारे झूठे भविष्यद्वक्ता, जैसा कि यह (और अभी भी) एक अच्छा जीवन जीने का एक आसान तरीका था यदि आप हैं
चालाक। बाइबल के अनुसार एक सच्चे और झूठे भविष्यद्वक्ता के बीच अंतर यह है कि
असली भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणियाँ कीं और वे सच हुईं, जबकि झूठे लोग क्या करते हैं
भविष्यवाणियां सच नहीं होती हैं (कभी-कभी संयोग से छोड़कर)। मुहम्मद ने कोशिश भी नहीं की
भविष्यवाणियाँ करने या दिखावा करने के लिए कि वह ऐसी भविष्यवाणी कर सकता है। कई बार ऐसा होता है कि वह क्या करता है
कहा सच हुआ या संयोग से आंशिक रूप से सच हुआ - और उनके द्वारा याद किया गया
अनुयायी सिर्फ इसलिए कि यह सच हो गया, जबकि उन्होंने जो कहा वह सच नहीं हुआ, वे नहीं थे
स्मरण किया हुआ। ऐसा ही हर इंसान के साथ होता है; हम कहते हैं और हम बहुत बात करते हैं,
कि कभी-कभी कुछ सही होना चाहिए - स्कैंडिनेविया में उनके पास भी है
इसके लिए एक विशेष अभिव्यक्ति: "गा ट्रोल आई ऑर्ड" - जिसका अर्थ है ट्रोल जैसा कुछ बनाता है
आपके शब्द सच होते हैं - लेकिन इसका आपके भेदक या भविष्यवक्ता होने का कोई मतलब नहीं है।
मुहम्मद ने वास्तविक भविष्यवाणियाँ करने की कोशिश तक नहीं की - दो-तीन निरपेक्ष में से एक
एक नबी होने के लिए आवश्यकताएँ। (और फिर उन्होंने दूसरी आवश्यकता का परीक्षण भी नहीं किया: दीद
उसकी भविष्यवाणियाँ अधिकतर/हमेशा सच होती हैं?) वह इतना चतुर था कि दिखावा करने की कोशिश नहीं कर सकता
चीजें जो वह जानता था कि वह करने में असमर्थ था। और फिर निश्चित रूप से उनके पास अन्य आवश्यकता का भी अभाव था:
भविष्यवाणियां जो सच हुईं। **मुहम्मद के लिए तीन आवश्यकताओं में से कोई भी नहीं है
एक नबी होने के नाते:**

1. भविष्यवाणी करने में सक्षम होना।
2. ऐसी भविष्यवाणियाँ करना जो नियमित रूप से सच हों।
   और:
3. ऐसी भविष्यवाणियाँ इतनी बार करना कि यह एक
   उनके मिशन का अनिवार्य हिस्सा।

-

मुहम्मद क्या कोई नबी नहीं थे - उनके पास वह उपहार नहीं था। उसने अभी चुराया है या
एक प्रतिष्ठित शीर्षक "उधार" । एक भविष्यवक्ता के रूप में वह केवल एक धोखेबाज था एक वाक्पटु नेता, लेकिन वह करने में असमर्थ जो आपको भविष्यद्वक्ता बनाता है: भविष्यवाणियां करने के लिए - और भविष्यवाणी करता है कि नियमित रूप से सच हो।

वह एक दूत हो सकता है; अगर यह सच है कि उसके पास एक संदेश था। लेकिन कोई नबी नहीं। इस्लाम पसंद करता है यह बताना कि एक दूत होना नबी होने से कहीं अधिक है। लेकिन होना पैगंबर, आपके पास विशेष उपहार होने चाहिए, जबकि एक दूत होने का सीधा सा मतलब है कि आप कमोबेश निष्क्रिय रूप से संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाते हैं - एक गलत काम करने वाला लड़का। लेकिन एक और

111

पेज 112

के मामले में सवाल है: एक दूत लड़का किसके लिए? - स्वयं उसके लिए? - अन्य मनुष्यों के लिए? - के लिए कुछ अंधेरे बल? दो बातें 100% निश्चित हैं:

1. वह किसी के लिए दूत लड़का नहीं था सर्वज्ञ भगवान - बहुत सारी गलतियाँ, मुड़ तर्क और मुड़ तर्क के रूप में, आदि में कुरान.
2. वह किसी अच्छे देवता का दूत नहीं था - बहुत अधिक चोरी, घृणा, भेदभाव और अमानवीयता, बलात्कार, खून का जिक्र नहीं, जबरन वसूली, दमन, हत्या और युद्ध। (यह है कहा कि मुहम्मद सिर्फ एक और डाकू था बैरन और सरदार - दूसरे से भी बदतर नहीं से रहने वाले डाकू बैरन और सरदारों एक हार्ड में चोरी, जबरन वसूली और दास व्यापार समय। यह सच हो सकता। लेकिन वह निश्चित रूप से था कोई बेहतर भी नहीं - और उसे होना चाहिए था अन्य सभी की तुलना में बहुत बेहतर है यदि वह एक अच्छे भगवान का प्रतिनिधित्व किया)। उसका व्यवहार और मदीना में सभी वर्षों से उनका वास्तविक संदेश किसी भी संदेह से परे साबित करें कि यदि वह एक भगवान का प्रतिनिधित्व किया, यह बिल्कुल नहीं था a अच्छा था। साथ ही धोखा देना और झूठ बोलना और जई तोड़ना भी, की पहचान है एक धोखेबाज और एक धोखेबाज और एक ठग - और का एक अंधेरा भगवान या बदतर।

तथ्य यह है कि कुरान में सभी गलत तथ्य जो गलत के अनुसार हैं अरब में "विज्ञान" (मुख्य रूप से पुराने ग्रीस और फारस से) मुहम्मद के समय में, स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि कुरान एक या एक से अधिक मनुष्यों द्वारा वहां और फिर बनाया गया है। लेकिन अगर इसमें एक ईश्वर शामिल था, वह सर्वज्ञ नहीं था, और मदीना से अमानवीय सूरह सबसे स्पष्ट रूप से दिखाता है कि वह निश्चित रूप से एक अच्छा या परोपकारी व्यक्ति नहीं था। - - - लेकिन हो सकता है उसका भेस में एक शैतान से संदेश आया?

००८ ३४/५०: "अगर मैं (मुहम्मद *) भटक रहा हूँ, तो मैं केवल अपनी आत्मा के नुकसान के लिए भटक रहा हूँ - - -"। इस सबसे बड़ा और बेहद गलत है - अगर मुहम्मद गुमराह थे (और उसमें बहुत अधिक बिंदु) दिशा) यह प्रत्येक मुसलमान की आत्मा के नुकसान के लिए है। क्योंकि तब इस्लाम झूठा है धर्म। यह एक और जगह है जहाँ मुहम्मद जानता था कि हा झूठ बोल रहा था - वह बहुत बुद्धिमान था यह देखने के लिए नहीं।

***009 68/4: "और आप (मुहम्मद या मुसलमान*) (सबसे खड़े) उच्च स्तर पर चरित्र - - -"। खैर: कुरान में देखा:

1. बहुत सारे गलत तथ्य, और अन्य गलतियाँ।
2. बहुत सारे अमान्य तर्क - हॉलमार्क के लिए धोखेबाज और धोखेबाज। औरों से भी देखा इस्लामी साहित्य:
3. एक स्वघोषित भविष्यवक्ता जो वास्तव में था कोई नबी नहीं - उसके पास का उपहार नहीं था भविष्यवाणी करना मुहम्मद ने भी नहीं

पेज 113

वह उपहार पाने का दिखावा या दावा करता है, वह सिर्फ
प्रतिष्ठित शीर्षक "उधार"। (कुछ
जो बातें उसने कही, वे सच हुईं - लेकिन वे नहीं थीं
भविष्यवाणी के रूप में दिया गया।) एक दूत ठीक है। - के लिए
कोई या कुछ या अपने लिए - an
उसी के लिए प्रेरित, ठीक है। लेकिन एक व्यक्ति जो
भविष्यवाणी करने का उपहार नहीं है, नहीं है a
पैगंबर - मुहम्मद सिर्फ "उधार" an
प्रभावशाली शीर्षक। इस्लाम यह भी दावा करता है कि
"मैसेंजर" की तुलना में अधिक विशिष्ट शीर्षक है
"पैगंबर" - लेकिन उस शीर्षक का अर्थ है "वह जो"
बस एक या एक से अधिक संदेशों को एक में लाता है
या अधिक अन्य, वास्तव में होने के बिना
फंसाया"। उसके पास भी नहीं है
समझें कि वास्तव में चीजें किस बारे में हैं।
इसके अलावा: मुहम्मद ने उधार क्यों लिया?
शीर्षक "पैगंबर" यदि शीर्षक "दूत" था
अधिक प्रतिष्ठित? - सिर्फ इसलिए कि ए
पैगंबर कुछ और है: संदेश जैसे a
दूत + भविष्यवाणियाँ - - - यदि यह सच है
नबी.

4. एक दूत जो राजमार्गों का प्रधान होता है
यत्रिब/मदीना से - पवित्र महीनों में भी।
5. एक दूत भी जबरन वसूली से जी रहा है -
(एफ से अपहरण किए गए पुरुषों के लिए पैसा उदा।
कारवां)।
6. एक संदेशवाहक जो देय है वह का १००% था
अगर पीड़िता ने बिना दिए हार मान ली तो चीजें लूट लीं
लड़ाई (यद्यपि सभी व्यक्तिगत उपयोग के लिए नहीं)।
7. एक संदेशवाहक जो "खराब" करने की अनुमति देता है
युद्ध" - और उसके लिए 20% (यद्यपि सभी के लिए नहीं)
वह स्वयं)।
8. एक दूत जो दासों को लेने की अनुमति देता है - और
उसके लिए 20% (यद्यपि सभी व्यक्तिगत उपयोग के लिए नहीं)।
9. एक संदेशवाहक जिसने सीए प्राप्त किया। २.५ से १०%
हर साल आपके पास क्या है (यदि आप
बहुत गरीब नहीं थे) - गरीबों के लिए, लेकिन उनके लिए भी
युद्ध और "उपहार" के लिए अनुयायियों, युद्धों को आकर्षित करने के लिए,
आदि।
10. विश्वासघात का उपयोग करने वाला एक दूत (f। पूर्व। का वादा)
सुरक्षित वापसी टूटा 628 ई.)
11. के साथ विशेष समझौते के साथ एक दूत
कई महिलाओं के लिए भगवान।
12. गैर के खिलाफ नफरत सिखाने वाला एक दूत
अनुयायी।
१३. एक दूत जो शिक्षा दे रहा है और युद्ध के लिए उकसा रहा है
गैर-अनुयायियों के खिलाफ।
14. एक संदेशवाहक व्यक्तिगत रूप से महिला का बलात्कार करता है
कैदी/गुलाम।

पेज 114

15. दूत और उसके जन सब के संग
 किसी भी महिला का बलात्कार करने के लिए अपने भगवान से अनुमति
 कैदी या दास जो गर्भवती नहीं थी। वह था
 "भगवान और वैध"।
16. एक दूत जिसने की हत्याओं की शुरुआत की
 विरोधियों
17. एक दूत जिसने हत्याओं की शुरुआत की
 विरोधियों
18. एक संदेशवाहक जिसने सामूहिक हत्या की पहल की।
19. महिलाओं के दमन की शिक्षा देने वाला दूत
 और गैर-अनुयायी।
20. सत्ता की लालसा वाला दूत (देखने में आसान .)
 कुरान से और. एफ। भूतपूर्व। हदीस)।

 और कम से कम नहीं:

21. अल-तकिया का परिचय देने वाला एक दूत - the
 वैध झूठ - और किटमैन - वैध आधा सच।

यह सब मुस्लिम स्रोतों से है - इस्लाम खुद उसके बारे में क्या बताता है, हालांकि अधिक चमकदार में शब्दों। नाराज़ होने का कोई बहाना नहीं, क्योंकि इस्लाम के मुताबिक़ ये १००% सच है अपने आप।

हां, हमें लगता है कि कई लोग इसे "चरित्र का एक उत्कृष्ट मानक" कहेंगे। लेकिन बहुत से नहीं वे गैर-मुस्लिम होंगे। और कितने मुसलमान इसे कह सकते हैं और ईमानदार महसूस कर सकते हैं?

010 81/19: "वास्तव में, यह सबसे सम्मानित रसूल (मुहम्मद *) - - - का शब्द है।" यदि एक आदमी जो चोर/लुटेरा है, जबरन वसूली करने वाला, महिला बनाने वाला, बच्चे से छेड़छाड़ करने वाला (ऐशा कई वर्षों से से वह 9 वर्ष की थी), बलात्कारी, विश्वासघाती, अत्याचारी, हत्यारा, सामूहिक हत्यारा, युद्ध करने वाला और भी बहुत कुछ, एक "सबसे सम्मानित दूत" है - - - ठीक है, उस स्थिति में हम एक से मिलना पसंद नहीं करेंगे सामान्य दूत, एक अपमानजनक का उल्लेख नहीं करने के लिए। ऐसा लग सकता है कि इस्लाम के पास एक नैतिकता और नैतिकता के लिए कुछ विशेष मानक।

2. मुहम्मद - दूत:

००बी ४/१३६: "अल्लाह और उसके रसूल (मुहम्मद*) पर ईमान रखो - - -"। कहीं नहीं है साबित कर दिया कि मुहम्मद एक ईश्वर के दूत थे।

011 6/104: "- - - मैं (मुहम्मद*) आपके कार्यों पर नजर रखने के लिए (यहां) नहीं हूं"। यह श्लोक है सीधे मुहम्मद से उद्धृत - यह मुहम्मद है जो पूरी तरह से अपने दम पर बोल रहा है। कैसे आएं - अनंत काल से एक किताब में और अल्लाह के अपने में श्रद्धेय मदर बुक की एक प्रति मुहम्मद के जन्म से बहुत पहले से स्वर्ग?

०१२ ६/१६३: "- - - मैं (मुहम्मद*) उसकी (अल्लाह की *) इच्छा के आगे झुकने वालों में पहला हूँ। " कैसे क्या यह संभव है यदि कुरान सही है और उससे पहले बहुत से लोग मुसलमान थे, और अल्लाह को नमन? (हालांकि वास्तव में यह बहुत संभव है कि वह सही था: कि वह पहला था कभी)। 6/14 में इसी तरह का दावा। कुछ मुसलमान बताते हैं कि यह एक विशेष भूमि में पहला है या कुछ और, लेकिन यह वह नहीं है जो कुरान कहता है।

00c 15/6: "हे तू (मुहम्मद *) जिसके लिए संदेश प्रकट किया जा रहा है"। 15/1ए देखें। 43/43 में इसी तरह का दावा।

०१३ ३३/४०: "(मुहम्मद थे*) नबियों की मुहर - - -।" ऊपर 33/28 और 33/45 . देखें नीचे:

मुहम्मद नबियों (अंतिम नबी) की मुहर कैसे हो सकते हैं, जबकि वह वास्तव में हैं नबी नहीं था? - उसके पास न तो था, न ही होने का दिखावा था, न ही उसने उपहार पाने का दावा किया था भविष्यवाणी के !!!

00d 34/3: "लेकिन सबसे निश्चित रूप से, (मैं - मुहम्मद) मेरे भगवान (अल्लाह *) - - -" द्वारा। अभिव्यक्ति "द्वारा मेरे रब" यहाँ एक शपथ है, लेकिन फिर मुहम्मद ने बहुत स्पष्ट रूप से और कई बार (हदीस) कहा: यह कठिन भी है कि सामान्य रूप से एक जई को तोड़ना अच्छी बात नहीं थी यदि आप इसका मतलब था जब आप यह कहा (यदि नहीं था तो कम या ज्यादा ठीक है।), यदि आपके पास कोई कारण था तो इसे तोड़ना कोई बड़ा पाप नहीं था - हाँ, कुछ मामलों में ऐसा करना सही भी होता है। यह - अक्सर **अल-तकिया या वैध झूठ** कहा जाता **है (इसे टूटी हुई शपथ होना जरूरी नहीं है - यह एक साधारण झूठ हो सकता है) - आज भी एक समस्या है: आप कब विश्वास कर सकते हैं कि एक मुसलमान क्या कहता है और कब नहीं? असल में यह भी एक समस्या है मुसलमानों के लिए; जब वे ऐसा करने की आवश्यकता है, क्योंकि एक जई भी विश्वसनीय नहीं है** - मुहम्मद से स्पष्ट पूर्वता के साथ (उन्होंने पूर्व में खैबर से एक निहत्थे शांति प्रतिनिधिमंडल को सुरक्षित वापसी का वादा किया - - - और हत्या कर दी उन सभी (30 में से 29) - जो भागने में कामयाब रहे, उन्होंने कहा: "युद्ध विश्वासघात है" इब्न को उद्धृत करने के लिए इशाक।)

00e 34/28: "हम (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) नहीं भेजा है, बल्कि एक सार्वभौमिक (दूत) के रूप में - - -"। अगर वे सार्वभौम थे तो फिर सब कुछ अरब से ही क्यों? - सही होने पर भी जानकारी अन्य जगहों पर मौजूद थी (पृथ्वी के रूप में), कुरान में आप गलत पाते हैं ज्ञान, और गढ़ी हुई और गलत किंवदंतियाँ और परियों की कहानियाँ जो अरब में प्रसारित हुईं? नहीं भगवान ने ऐसी गलतियां की थीं। कुरान में कई जगहों पर आपको इसी तरह की टिप्पणियां मिलेंगी- f. उदा.16/89 और 51/50। ज्यादातर वे मक्का काल से हैं, और पूरी तरह से निरस्त कर दिए गए हैं - मारे गए - मदीना काल के कठोर सूरह द्वारा (f। पूर्व। 9/5 तक)। 2/119 भी देखें।

00f 35/24: "वास्तव में हम (अल्लाह) ने तुम्हें (मुहम्मद*) - - - भेजा है। वास्तव में मुहम्मद और कुरान दोहराता है और दोहराता है और दोहराता है (अक्सर "अल्लाह और उसके" शब्दों में) Messenger") - 1933 और . के बीच एक निश्चित जर्मन "प्रचार मंत्री" के योग्य 1945 हमें लगता है कि यह **जोसेफ गोएबल्स** नाम का एक बहुत ही ईमानदार और विश्वसनीय व्यक्ति था , **जिसका नारा था था: "एक झूठ को बार-बार दोहराएं, और लोग उस पर विश्वास करेंगे"।** यहाँ इसे दोहराया गया है समय के माध्यम से अरबों बार, और लाखों मुसलमान इस पर विश्वास करते हैं - लेकिन फिर कोई मुसलमान नहीं समाज ने कभी भी अपने विषयों को आलोचनात्मक सोच में, या यथार्थवाद सोचने के लिए प्रशिक्षित किया है। पर इसके विपरीत: मुस्लिम समाजों में जीवन ने अक्सर उन्हें बीमार प्रकार की सोच में प्रशिक्षित किया है जो है: यह विश्वास करना कि अधिकांश कार्य और अधिकांश जानकारी जो आपको पसंद नहीं हैं वे झूठ हैं जो इसका कारण बताते हैं षड्यंत्र के सिद्धांत + इस्लाम और मुल्ला और इमाम में अंध विश्वास। एक ही बात है कुरान में गलतियाँ जो बताती हैं कि यह विश्वसनीय नहीं है और सबसे अधिक संभावना का आविष्कार किया गया है। अधिक गंभीर है कि बार-बार पूछने पर भी मुहम्मद साबित नहीं कर पाए कुछ भी - झूठ की एक बानगी - या अधिक झूठ - क्या सबूत असंभव हैं, किसी को करना होगा तेज-तर्रार और चोरी का उपयोग करें, दोनों कुरान में बहुत हैं। और जब वहाँ एक कुछ भी साबित करने का सवाल? - इस्लाम में अभी भी बहुत तेज-तर्रार बात है।

लेकिन सबसे बुरी बात यह है कि सभी अमान्य दावे और बयान, और "संकेत", "सबूत" और तेज़-बात करना - ये किसी भी चतुर धोखेबाज या झूठे नबी की पहचान हैं जो प्राकृतिक कारणों से हैं सबूत पेश करने में असमर्थ। दावा किए गए संदेश में उन सभी गलतियों के साथ, यह स्पष्ट है कि

115

पृष्ठ ११६

इस दावे को भी प्रमाण की आवश्यकता है - विशेष रूप से टेम्पोरल लोब मिर्गी (TLE) जैसी बीमारी के बाद से अपने फिट, अपने दर्शनीय स्थलों (?) और अपने अन्य अनुभवों (?) दोनों को आसानी से समझा सकता है - TLE अक्सर देता है इस तरह के धार्मिक भ्रम (बीबीसी के बीच स्रोत)। (कुछ व्यक्तिगत "प्रेरणा" जोड़ें या व्यक्तिगत और घरेलू समस्याओं को हल करने के लिए चालाक, और समकालीन गलत को जोड़ने के लिए ज्ञान और विज्ञान, और आपके पास कुरान बिल्कुल है - इसकी सभी गलतियों और अन्य के साथ कमजोरियां)। 2/117 - 9/33 - 33/45 - 34/28 - 48/8 - 61/9 - 62/2 - 73/15 में इसी तरह के दावे।

00g 36/3: "आप (मुहम्मद*) वास्तव में दूतों में से एक हैं - - -।" केवल 2 चीजें हैं ज़रूर:

1. **यह कभी सिद्ध नहीं होता है या किसी अन्य तरीके से प्रलेखित - और अन्य सभी के साथ कुरान में गलतियाँ, यह प्रमाण है सख्ती ज़रूरी।**
2. **यदि मुहम्मद एक दूत थे, तो किसको? केवल दो चीजें जो कुरान बहुत स्पष्ट करता है, क्या यह किसी के लिए नहीं था? सर्वज्ञ भगवान (बहुत सारी गलतियाँ, आदि)**

और एक अच्छे भगवान के लिए नहीं (बहुत ज्यादा चोरी/लूटना, बेईमानी करना, दबाना, बलात्कार, अमानवीयता, आतंक, खून और युद्ध, आदि) । 4/179 - 5/19 - 48/29 में इसी तरह के दावे।

०१४ ४१/४३: "तुम्हें (मुहम्मद*) से कुछ भी नहीं कहा गया है जो पहले दूतों से नहीं कहा गया था आप (f। पूर्व। यीशु और पुराने यहूदी भविष्यद्वक्ता *) - - -। **गलत। जैसा कि विज्ञान ने पूरी तरह से किया है साबित कर दिया कि बाइबल मिथ्या नहीं है (गलतियाँ शायद, मिथ्याकरण नहीं) - और विशेष रूप से एनटी नहीं - यह बहुत स्पष्ट है कि मुहम्मद ने जो कहा है, वह अक्सर दूर है वास्तविक (?) भविष्यद्वक्ताओं और कुलपतियों को क्या बताया गया था।** और इसे द्वारा मजबूत किया जाता है तथ्य यह है कि यह बहुत बार बहुत स्पष्ट है कि मुहम्मद ने अपनी "बाइबिल" कहानियों को लिया था बाइबिल, लेकिन धार्मिक किंवदंतियों से जो क्षेत्र में प्रसारित हुई, और जिसे मुहम्मद मानते थे बाइबिल से थे - - - और फिर बाद में तुलना की गई त्रुटियों की व्याख्या करने का केवल एक ही तरीका था असली बाइबिल के लिए: वह सही था और बाइबिल झूठा !!!। उपरोक्त उद्धरण के लिए, यह नहीं है सच है कि मुहम्मद को कुछ भी नहीं कहा गया था जो पहले (वास्तविक) भविष्यवक्ताओं से नहीं कहा गया था - एक तथ्य कि इस्लाम कभी-कभी पुष्टि भी करता है - f. भूतपूर्व। मुहम्मद के बयान में कि **वह था पहला "दूत / पैगंबर" जिसे भगवान से चोरी करने और लूटने और बलात्कार करने की अनुमति मिली थी, जिसे कुरान के अनुसार ईश्वर पुष्टि करता है वह "ईश्वर और वैध" है।**

०१५ ४२/१५: "मैं (मुहम्मद *) उस किताब (कुरान*) में विश्वास करता हूँ जिसे अल्लाह ने उतारा है - - -।" किसी भी सर्वज्ञ भगवान ने इतनी सारी गलतियों, आदि के साथ एक किताब नहीं भेजी है, जिसका उल्लेख नहीं है इसे अपने घर में "मदर बुक" के रूप में सम्मानित किया।

०१६ ४२/५२: "- - - और वास्तव में तू (मुहम्मद*) ने (पुरुषों को) सीधे रास्ते की ओर मार्गदर्शन किया - - -"। यह टेढ़ी किताब से सीधे किसी का मार्गदर्शन करना संभव नहीं है।

०१७ ४६/९: "मैं (मुहम्मद) एक नए सिद्धांत को लाने वाला नहीं हूं - - -"। मुहम्मद ढोंग किया गया इस्लाम यहूदियों का एक निरंतरता - या अनियंत्रित - धर्म था और ईसाई। **यह सच नहीं है - खासकर एनटी में यह स्पष्ट है कि शिक्षाएं मौलिक रूप से इतने भिन्न हैं, कि यह एक ही ईश्वर नहीं हो सकता - कम से कम यदि वह नहीं है मानसिक रूप से बीमार। 29/46 और 12/111 देखें। और विज्ञान ने लंबे समय से यह पता लगाया है कि बाइबल है हमारे पास ग्रंथों के पहले निशान के बाद से नहीं बदला - इस्लाम और के विपरीत विरोधाभास में**

कुरान के बार-बार दावे। यह केवल कुरान है जो अलग है, और संभावित कारण है कि कुरान के निर्माता बाइबिल को अच्छी तरह से नहीं जानते थे - और इसके अलावा स्पष्ट रूप से किंवदंतियों का इस्तेमाल किया और उनकी पुस्तक में बाइबिल के वास्तविक ग्रंथों के बजाय परियों की कहानियां।

०१८ ५३/५६: "यह पुराने के (श्रृंखला) के वार्नर (मुहम्मद*) का है। मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को प्रभावित किया और प्रभावित किया और प्रभावित किया कि वह उनमें से एक थे लंबी श्रृंखला - हालांकि सभी में सबसे महान - भविष्यवक्ताओं की (भले ही वह परिभाषा के अनुसार नहीं था नबी, क्योंकि उनके पास भविष्यवाणियां करने का उपहार नहीं था - उन्होंने बस उस प्रतिष्ठित को "उधार" लिया शीर्षक), क्योंकि इससे उन्हें "वजन" और प्रतिष्ठा मिली। और एक कालातीत "अधिकार" से संबंधित होने के लिए धर्म ने भी अपनी शिक्षाओं को उन लोगों के बीच महत्व दिया जो इसे मानते थे। (विज्ञान ने कभी नहीं ६१० ईस्वी से पहले कहीं भी या किसी भी समय इस्लाम जैसे धर्म का कोई निशान मिला - यदि उनके पास था, आप शर्त लगा सकते हैं कि इस्लाम ने इसके बारे में बताया था।) लेकिन वह निश्चित रूप से उसी श्रृंखला से संबंधित नहीं थे यहूदी भविष्यवक्ताओं, जिनमें यीशु भी शामिल थे - शिक्षाएँ बहुत भिन्न थीं। और उन्होंने बनाया भविष्यवाणियाँ - वास्तविक भविष्यवाणियाँ -। मुहम्मद नहीं।

019 60/1: "- - - (पैगंबर (मुहम्मद*)) - - -।" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। NS पैगंबर की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. का उपहार है और पर्याप्त कनेक्शन बंद करें भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान के लिए।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम ज्यादातर सच हो जाते हैं। नहीं तो वह झूठा नबी है।
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है

कोई सामान्य स्रोत से - और है) कुछ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि
उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, उल्लेख नहीं किया
दावा किया या दावा किया, कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है
कि भविष्य के बारे में उसने जो कुछ कहा वह सब/अधिकांश सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में वह और . दोनों
इस्लाम ने कहा और कहता है कि "कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से कोई चमत्कार नहीं जुड़ा था।
- भविष्यवाणी करना एक तरह का चमत्कार है। (यह तथ्य भी सभी चमत्कारों का एक ठोस प्रमाण है
वहाँ हदीसों में वर्णित मुहम्मद से जुड़ी कहानियाँ हैं)। यह भी देखें 30/40a
और 30/46ए।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या
कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। वह केवल "उधार"
वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

3. क्या कुरान बाइबिल की पुष्टि कर रहा है?

०२० ३७/३७बी: "- - - और वह (मुहम्मद) रसूलों की (पहले) पुष्टि करता है
उसे (= यहूदियों और ईसाइयों से*))"। गलत। के बीच बहुत बुनियादी अंतर हैं
विशेष रूप से एनटी और कुरान। मुहम्मद के के बावजूद कुरान बाइबिल की पुष्टि नहीं कर रहा है
शब्द - शिक्षाओं के बीच मूलभूत अंतर बस बहुत बड़े हैं - विशेष रूप से
NT और "नई वाचा" यीशु के कारण की तुलना में। 29/46 और अन्य देखें। वास्तव में यह
दावा कुरान में कई जगह पाया जाना है।

इसके बारे में अलग से मुख्य अध्याय भी देखें।

117

पृष्ठ ११८

4. कुरान में मुहम्मद - विभिन्न विषय:

०२१ २/१३६: "- - - रहस्योद्घाटन (कुरान*) हमें (मुहम्मद/मुसलमान*) को दिया गया"। वे थे
सच में दिया? - और क्या वे वास्तव में खुलासे थे? किसी भी परिस्थिति में उन्होंने / कुरान नहीं किया
सर्वज्ञानी ईश्वर से आते हैं - न कि गलतियों से भरे हुए, आदि, और न ही किसी परोपकारी ईश्वर से,
क्योंकि बहुत अधिक रक्त और बदतर है।

00h 5/15: "- - - अल्लाह की ओर से आपके पास (यहूदी, ईसाई*) आया है एक (नया) प्रकाश
(मुहम्मद*) - - -"। खैर, यह एक सवाल है: क्या एक आदमी इतना नैतिक रूप से पतित हो गया और
एक किताब के आधार पर एक धर्म का प्रचार करना जिसमें इतनी सारी गलतियाँ और इतने सारे गलत तर्क आदि हैं
बहुत दमन और खून, वास्तव में एक भगवान का प्रतिनिधित्व करते हैं?

00i 8/5: "जैसे तेरे रब (अल्लाह*) ने तुझे (मुहम्मद*) को सच में घर से बाहर निकालने का हुक्म दिया---
". यह मुख्य प्रश्नों में से एक है - क्या मुहम्मद को आदेश दिया गया था? - और किसके द्वारा? (NS
मदीना के सूरह एक अच्छे भगवान के बारे में शैतान के बारे में अधिक सोचते हैं।)

022 14/1: "- - - ताकि आप (मुहम्मद - कुरान के माध्यम से) नेतृत्व कर सकें
मानव जाति अंधकार की गहराइयों से प्रकाश में - - -"। इतनी गलतियों वाली कोई किताब नहीं
किसी को भी प्रकाश में ला सकता है। इतना दमनकारी, अमानवीय और भरा हुआ किसी भी धर्म के लिए भी यही बात लागू होती है
नफरत, भेदभाव, खून और युद्ध, और "मुहम्मद/नेता को सारी शक्ति"।

00j 33/46: "(मुहम्मद हो *) प्रकाश फैलाने वाले दीपक के रूप में।" क्या मुहम्मद ने सबसे अधिक प्रकाश फैलाया?
या सबसे अंधेरा? एक बयानबाजी का सवाल जिसका कोई जवाब नहीं है।

०२३ ३४/५०: "अगर मैं (मुहम्मद*) भटक रहा हूँ, तो मैं केवल अपनी आत्मा के नुकसान के लिए भटक रहा हूँ - - -"।

यह सबसे बड़ा और बेहद गलत है - अगर मुहम्मद गुमराह थे (और बहुत अधिक बिंदु .) उस दिशा में) यह प्रत्येक मुसलमान की आत्मा के नुकसान के लिए है। क्योंकि तब इस्लाम एक झूठा धर्म।

00k 35/5: "- - - (नहीं) मुख्य धोखेबाज आपको अल्लाह के बारे में धोखा दे।" यहाँ कुरान बात करता है
शैतान के बारे में। लेकिन एक सवाल: मुहम्मद के पूर्ण और निर्विवाद प्रमुख हैं
मुसलमान। यदि इस्लाम झूठा धर्म है - तो क्या मुहम्मद तो मुख्य धोखेबाज हैं? सवाल यह है की
हास्यास्पद नहीं - कुरान निश्चित रूप से एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा नहीं बनाया गया है (बहुत ज्यादा गलत है)
कुरान), न ही किसी अच्छे ईश्वर द्वारा (बहुत अधिक बेईमानी, भेदभाव, अमानवीयता, घृणा, खून)
और युद्ध), और फिर विकल्प हैं: मनुष्य द्वारा निर्मित - तर्कसंगत या बीमार (f. उदा। TLE समझाएगा
बहुत) - या कुछ अंधेरे बलों द्वारा बनाया गया - एफ। भूतपूर्व। शैतान ने गेब्रियल की तरह कपड़े पहने।

०२४ ३९/३३: "और वह (सबसे अधिक संभावना मुहम्मद, जैसा कि" एच "के साथ लिखा गया है, न कि" एच "*) जो लाता है सच्चाई - - -"। कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है - यह भी देखें f. भूतपूर्व। 40/75 और 41/12। एक जैसा 37/37 . में दावा

025 43/29: "- - - एक रसूल (मुहम्मद*) चीजों को स्पष्ट कर रहा है।" कोई दूत उपदेश नहीं कुरान में क्या है, चीजों को स्पष्ट करता है - बहुत सारी गलतियाँ, बहुत सारे विरोधाभास, और तार्किक रूप से बहुत अधिक अस्पष्ट, आदि।

०२६ ४३/८७: "यदि आप (मुहम्मद या मुसलमान*) उनसे पूछें कि उन्हें किसने बनाया, तो वे ज़रूर कहो, अल्लाह - - -"। गलत - यदि वे किसी देवता का उल्लेख करते हैं, तो वे अपना उल्लेख करेंगे (In .) अरब इसका मतलब बुतपरस्त अल-लाह एफ हो सकता है। भूतपूर्व।)। एफ देखें। भूतपूर्व। 43/9 - और कई अन्य।

०२७ ४६/४: "मुझे (मुहम्मद*) इससे पहले एक किताब (प्रकट) लाओ (सबूत के रूप में) - - -"। गलत। एक किताब अपने आप में कुछ भी साबित नहीं करती है - एक किताब को झूठा साबित करना उतना ही आसान है जितना कि भाषण को झूठा बनाना। एफ. पूर्व. कुरान अच्छी तरह से एक मिथ्याकरण हो सकता है - मुहम्मद या किसी के द्वारा बनाया गया।

028 53/2: "आपका चैंपियन (मुहम्मद*) न तो गुमराह है और न ही गुमराह किया जा रहा है।" सब गलतियाँ, आदि साबित करते हैं कि वह कम से कम कुछ हद तक भटक गया था। हालांकि a . के **सभी लक्षण धोखेबाज, धोखेबाज और ठग संकेत कर सकते हैं कि हो सकता है कि उन्हें गुमराह नहीं किया गया था - वे अंतिम 3 शब्द सच हो सकते हैं, हो सकता है कि वह भ्रामक था।**

००एल ५३/३: "न ही वह (मुहम्मद*) (अपनी) इच्छा के बारे में (कुछ) नहीं कहता है"। यह मजबूत लगेगा सबूत यह साबित करने के लिए कि सूरा पसंद नहीं है। 66 या नहीं। 111 योग्य हैं और एक श्रद्धेय में हैं जन्नत में मदर बुक - वह जो अनंत काल से अस्तित्व में हो। और उन्हें साबित करने के लिए भी एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा पूजनीय पुस्तक के योग्य हैं। और "माँ" के बारे में क्या किताब"/ कुरान मुहम्मद की घरेलू समस्याओं का समाधान कर रहा है?

०२९ ६२/२: "(मुहम्मद को*) उन्हें (अनपढ़ अरबों*) पवित्रशास्त्र में निर्देश देना था और ज्ञान - - -" उन्हें शास्त्रों में निर्देश देने के लिए, वह शायद ही खुद एक एनाल्फैबेटिक हो सकता है, लेकिन इसके अलावा: 40/75 और 41/12 देखें।

00m 69/44 - 46: "और अगर रसूल (मुहम्मद*) ने हमारे नाम, हम (अल्लाह*) निश्चित रूप से उसके दाहिने हाथ से उसे आकार देंगे, और हमें निश्चित रूप से चाहिए उसके हृदय की धमनी को काट डाला।" नहीं अगर आप - अल्लाह - मौजूद नहीं हैं। या अगर आप दूर हैं सर्वशक्तिमान यदि आप मौजूद हैं।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 3 (= II-1-3-4)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची थीम द्वारा व्यवस्थित

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

इसमें कुछ स्पष्ट गलतियाँ "संकेत" और के बारे में कुरान अल्लाह और/या के लिए "सबूत" कुरान और/या मुहम्मद एक भगवान से संबंध: - बिना

अपवाद स्पष्ट रूप से और पूरी तरह से सबूत के रूप में अमान्य

(- केवल अन्य सिद्ध दावों या कुछ भी नहीं पर बनाए गए दावों को खो दें)।

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

00a 2/39: "- - - संकेत - - -" भी लिखा "चिह्न", "उसके संकेत", "हमारे (अल्लाह के *) संकेत" या "मेरे (अल्लाह के*) चिन्ह" या अन्य रूपांतर। "कुरान-स्पीक" में इसका अर्थ है एक संकेत या प्रमाण अल्लाह का अस्तित्व और/या कुरान की दैवीय उत्पत्ति और/या मुहम्मद का अल्लाह से संबंध। **वास्तव में यह बिल्कुल कुछ भी साबित नहीं होता है, क्योंकि बिना किसी अपवाद के वे केवल हारे हुए बयान हैं या खुले दावों के रूप में सिर्फ खाली हवा में लटका हुआ है, सब कुछ कुछ नहीं पर बनाया गया है, क्योंकि यह कभी नहीं है साबित या प्रलेखित कि अल्लाह ने वास्तव में कहा या किया या बनाया या बनाया जो प्रत्येक में कुरान है मामला दावा करता है कि उसने कहा या किया या बनाया, और फिर "संकेत" के रूप में उपयोग करें।** सभी मनुष्यों के अनुसार सोच, सभी न्यायिक कानून, और तर्क के और भी सख्त कानूनों के अनुसार जैसे "सबूत" सपाट और सरल रूप से अमान्य और बिना किसी मूल्य के हैं। **आखिर एक वैध प्रमाण है: "एक या अधिक सिद्ध तथ्य (ओं) जो केवल एक निष्कर्ष दे सकते हैं"** , और कुरान में सभी "संकेत" बिना किसी अपवाद के अनुभव हवा या "तथ्यों" पर बनाता है कि न तो किताब और न ही इस्लाम साबित करता है - या साबित करने में सक्षम है (ठीक है, बाइबल से लिए गए "चिन्हों" में कुछ अपवाद हो सकते हैं, लेकिन वे मामले में यहोवा को साबित करते हैं, अल्लाह को नहीं - **हम जानते हैं कि मुसलमानों और कुरान को पसंद है कहते हैं कि वे दोनों एक ही भगवान के लिए अलग-अलग नाम हैं, लेकिन यह तब तक सच नहीं है जब तक ईश्वर मानसिक रूप से बहुत बीमार है (सिज़ोफ्रेनिक), क्योंकि शिक्षाएँ मौलिक रूप से भी हैं अलग**), ("कुरान में 1000+ गलतियाँ" में इस अन्य स्थानों के बारे में और अधिक।)

इसके अलावा एक तथ्य यह भी है कि किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी ठीक उसी के लिए दावा कर सकता है उसके भगवान (ओं) के रूप में मुसलमान अल्लाह के लिए दावा करते हैं, बिल्कुल सभी मामलों में जहां शब्द "चिह्न (ओं)" या कुरान में "सबूत" बाइबिल से उधार नहीं लिए गए हैं, जब तक कि कोई वास्तविक प्रमाण या नहीं वास्तविक दस्तावेज सामने लाने होंगे - शब्द इतने सस्ते हैं। "बाल सूर्य को उदय करता है" पूर्व। अल्लाह इसे पश्चिम में नहीं बढ़ा सकता। फिर बाल असली भगवान है और अल्लाह नकली एक।" शिशु "सबूत" लेकिन यह उस तरह का स्तर है जिसे आप "संकेत" और "प्रमाण" में पाते हैं कुरान (यह उदाहरण कुरान से लिया गया है - इब्राहीम अपने भगवान अल्लाह को साबित कर रहा है, लेकिन बेशक फिर नायक के रूप में अल्लाह के साथ। प्रमाण के रूप में पूरी तरह से अमान्य))।

जैसा कि कहा गया है कि दावे तार्किक रूप से किसी देवता के संकेत/प्रमाण के रूप में बिना किसी मूल्य के हैं, किसी विशिष्ट देवता का उल्लेख नहीं करना - f. भूतपूर्व। अल्लाह। और यह एक दिलचस्प तथ्य का दस्तावेजीकरण करता है: इस्लाम न तो अल्लाह के लिए एक भी प्रमाण मिला है, न कुरान की पुष्टि के लिए, न ही इसके लिए एक देवता के साथ मुहम्मद का संबंध। **अगर उनके पास एक ही सबूत होता - यहां तक कि एक छोटा - आप शर्त लगा सकते हैं कि उन्होंने इसके बारे में बताया था और इसका इस्तेमाल किया था!** इस्लाम is केवल खोए हुए शब्दों पर और ढीले और अप्रमाणित दावों के रूप में बनाया गया - - - एक ऐसे व्यक्ति द्वारा बनाया गया जिसके शब्द ओल्ड बेली, लंदन में शायद ही "सच्चे" प्रमाण के रूप में स्वीकार किया गया हो।

आप पाते हैं कि "चिह्न" शब्द कुरान में कई जगहों पर इस्तेमाल किया गया है। एफ. उदा.: 2/41 - 61/ - 129 - 164 - 231 - 252 - 259 - 3/4 - 11 - 19 - 21 - 41 - 58 - 97 - 101 - 103 - 108 - 109 - 112 - 113 - 118 - 164 - 190 - 4/56 - 5/10 - 44 - 75 - 86 - 114 - 6/4 - 21 - 27 - 33 - 35 - 37 - 39 - 46 - 49 - 55 - 57 - 93 - 97 - 99 - 105 -118 - 124 - 126 - 130 - 157 - 158x2 - 7/9 - 24 - 26 - 35 - 36 - 37 - 40 - 58 - 103 - 105 - 106 - 126 - 132 - 133 - 136 - 146 - 147 - 174 - 175 - 8/52 - 9/9 - 10/13 - 17 - 75 - 11/21 - 39 - 101 - 12/7 - 13/1 - 2 - 4 - 14/5 - 15/75 - 77 - 81 -

16/11 - 12 - 13 - 65 - 66 - 67 - 69 - 79 - 104 - 105 - 17/98 - 18/9 - 56 - 57 - 105 - 106 -
19/58 - 77 - 20/7 - 54 - 126 - 127 - 128 - 21/37 - 77 - 22/51 - 23/30 - 58 - 66 - 24/18 -
25/36 - 37 - 26/4 - 8 - 103 - 121 - 158 - 174 - 190 - 28/48 - 87 - 29/15 - 23 - 44 - 47 - 49
- 30/20 - 21 - 22x2 - 23 - 24x2 - 25 - 53 - 32/15 - 22 - 23 - 24 - 26 - 34/9 - 19 - 38 -
36/6 - 37 - 41 - 46x2 - 38/29 - 39/42 - 52 - 59 - 63 - 71 - 40/4x2 - 5 - 6 - 9 - 13 - 35 - 56
- 63 - 69 - 78 - 81 - 41/15 - 28 - 37 - 39 - 40 - 53 - 42/32 - 33 - 43/69 - 45/5 - 6 - 8 - 11 -
13 - 32 - 33 - 40 - 46/27 - 48/20 - 51/20 - 37 -38 - 41 - 43 - 54/2 - 55/15 - 18 - 57/17 -
७८/२८ – ९०/१९। नीचे 30/10 - 65/11 - 30/9 - 2/99a - 2/99b भी देखें।

001 2/99a: "हम (अल्लाह*) ने आप पर (लोगों*) प्रकट निशानियाँ उतारी हैं - - -"। कुरान है
यह जो कहता है उसके साथ अतिभारित "संकेत" (प्रमाण होने के लिए संकेतित) और "स्पष्ट संकेत" या पसंद हैं
यहाँ "प्रकट संकेत" (मजबूत प्रमाण होने का संकेत) - और उनमें से एक भी साबित नहीं होता है
अल्लाह या मुहम्मद के बारे में कुछ भी, जैसा कि किताब कभी साबित नहीं करती, केवल दावा करती है, कि अल्लाह ने किया
यह या वह जिसे वह तब "चिह्न" या "स्पष्ट संकेत" या "प्रमाण" कहता है (कुछ हो सकता है
बाइबिल से लिए गए संकेतों के लिए अपवाद, लेकिन वे मामले में यहोवा को साबित करते हैं, अल्लाह को नहीं - और
केवल इस्लाम दावा करता है कि यहोवा और अल्लाह एक ही ईश्वर हैं (जो तब तक नहीं हो सकते, जब तक कि
ईश्वर सिज़ोफ्रेनिक है - वे बहुत अलग हैं, खासकर जब यहोवा उसके अनुसार कार्य कर रहा हो
एनटी से नई वाचा, जो मुहम्मद के शुरू होने से लगभग 580 साल पहले आई थी
उपदेश, लेकिन जिसका मुसलमान कभी उल्लेख नहीं करते))। विशेष रूप से "साफ़ संकेत" के दावे तो हैं
स्पष्ट रूप से गलत है, कि उन्हें इस कॉलम में शामिल नहीं करना असंभव है: "गलत तथ्य" -
वे कोई संकेत नहीं हैं - और निश्चित रूप से कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं - एक भगवान के लिए, और भले ही वे थे, वे
अल्लाह के लिए बिल्कुल स्पष्ट संकेत नहीं थे, क्योंकि किसी भी धर्म में कोई भी पुजारी सिर्फ
अपने भगवान या देवताओं के लिए भी यही दावा - शब्द इतने सस्ते हैं - - - मुहम्मद के लिए भी। और देखें
2/39 - 30/10 - 65/11 - 30/9 ऊपर और 2/99बी ठीक नीचे।

००२ २/९९ब: “हमने तुझ पर (लोगों*) प्रकट निशानियाँ (आयत) उतारी हैं; और कोई उन्हें अस्वीकार नहीं करता
लेकिन जो विकृत हैं - - -"। गलत। "संकेत" पर सवाल उठाने के लिए जो आने वाले साबित नहीं हुए हैं
अल्लाह की ओर से, और इस प्रकार तार्किक रूप से अमान्य संकेतों के रूप में, प्रमाण के रूप में उल्लेख नहीं करना, होने का संकेत नहीं है
विकृत - इसके विपरीत; बिना सवाल पूछे उस पर आंख मूंद कर विश्वास कर लेना बहुत बड़ी बात है
अनाड़ी।

००३ ३/९७: “इसमें (मक्का में काबा*) संकेत प्रकट हैं; (उदाहरण के लिए), इब्राहीम का स्टेशन
- - -"। एक बात के लिए इब्राहीम कभी मक्का में नहीं था (2/127 देखें) और कभी भी काबा या इसके निर्माण का निर्माण नहीं किया
नींव। और यदि वह कभी वहां रहा होता और उसे बनाया होता: वहां एक पत्थर है, जिस पर एक निशान है
यह। इस्लाम इसे इब्राहीम का स्टेशन कहता है और कहा जाता है कि यह निशान इब्राहीम का है
पैर जब वह काबा का निर्माण कर रहा था। घर का निर्माण करने वाला कौन सा कार्यकर्ता कभी सभी में है
इतिहास और बहुत पहले, एक ही कठोर प्राकृतिक पत्थर पर इतने लंबे समय तक खड़ा रहा, कि उसके पैर
सहस्राब्दियों तक चलने वाले उस पत्थर में एक निशान बनाया?

004 30/9: "- - - स्पष्ट (संकेत) - - -"। अल्लाह और इस्लाम के बारे में स्पष्ट संकेत मौजूद नहीं हैं
कुरान. किसी को आश्चर्य हो सकता है कि मुहम्मद ने अवैध दावों और "चिन्हों" और यहां तक कि "सबूत" का इस्तेमाल क्यों किया।
- अमान्य सबूत और तर्क आम तौर पर धोखेबाजों, धोखेबाजों और . की पहचान होते हैं
ठग यह वास्तविक तथ्यों और प्रमाणों की कमी को भी इंगित करता है, दिखाता है और साबित करता है। "साफ़ संकेत" में
"कुरान-बोल" = स्पष्ट प्रमाण। अल्लाह के लिए स्पष्ट सबूत, या कुरान के लिए एक भगवान द्वारा बनाया जा रहा है, या
मुहम्मद के एक ईश्वर से संबंध के लिए, लेकिन प्रमाण बस मौजूद नहीं हैं। इस्लाम इसके बारे में जानता है और
मुस्लिम विद्वान इसके बारे में जानते हैं - आप इसका उल्लेख पाते हैं और उनकी व्याख्या करने की कोशिश करते हैं
किताबें, लेकिन निजी मुसलमान द्वारा पढ़ी गई किताबें ज्यादा नहीं पढ़ीं। और जब विद्वान और
इमाम और अन्य उन्हें नहीं बताते हैं, आम मुसलमान अक्सर ईमानदारी से मानता है कि सब कुछ वास्तव में है
सुनिश्चित और सुरक्षित - असुविधाजनक तथ्यों को छुपाकर और उनके द्वारा धोखा दिया जाता है
कुरान में सभी अमान्य "संकेत" और "स्पष्ट संकेत" और यहां तक कि "सबूत" की महिमा, नहीं

हदीसों में और हदीसों में "चमत्कारों" द्वारा उल्लेख करने के लिए - जो शायद ही कभी
एकल इमाम स्पष्ट रूप से अपने झुंड को बताता है कि कुरान द्वारा पूरी तरह से असत्य साबित किया गया है
किंवदंतियाँ (इस्लाम परोक्ष रूप से इस तथ्य को अपने बयान से स्वीकार करता है कि "इस्लाम से एकमात्र चमत्कार"
मुहम्मद कुरान है" - जो परोक्ष रूप से यह भी स्वीकार करता है कि मुहम्मद पैगंबर नहीं थे

(एक भी वास्तविक नहीं किया किसी उसके पास वह चमत्कार है)। यह देखने के लिए कि अभी तक क्या नहीं हुआ है - और मुहम्मद

६५/११ और ३०/९ के समान अधिक दावों के लिए, देखें f. उदा.: 2/118 - 2/159 - 2/185 - 2/187 - 2/213 - 2/219 - 2/221 - 2/242 - 2/266 - 3/86 - 3/105 - 3/183 - 3/184 - 6/57- 157 - 7/73 - 7/85 - 7/101 - 8/42 - 9/70 - 10/15 - 11/17 - 11/28 -11/53 - 11/63 - 11/88 - 14/9 - 19/73 - 20/133 - 22/16 - 22/72 - 24/1 - 24/58 - 24/59 - 24/61 - 30/47 - 32/25 - 34/43 - 40/22 - 40/28 - 40/50 - 40/66 - 40/83 46/7 - 45/17 - 45/25 - 57/25 - 58/5 - 64/6। यह भी देखें 2/39 - 30/10 - 65/11 ऊपर और 2/299a - 2/299b नीचे।

005 30/10: "- - - अल्लाह के लक्षण - - -"। किसी सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर ने दृढ़ता से प्रयोग नहीं किया था खुद को साबित करने के लिए संदिग्ध "संकेत", आदि का उल्लेख नहीं करने के लिए, उन्होंने अपना नाम मजबूत करने के लिए जोड़ा दावा। ऊपर 2/39 भी देखें। 3/41 - 7/146 - 7/176x2 - 7/177 - 9/65 - में सिमिलरी दावे 10/71 - 10/95 - 14/5 - 22/37 - 23/105 - 26/15 - 27/52 - 27/81 - 27/82 - 27/83 - 27/84 - 28/35 - 28/36 - 28/45 - 28/59 - 29/49 - 30/21 - 31/31 - 31/32 - 40/81 - 54/42 - 57/19 - 64/10 - 74/16। इसके ठीक ऊपर 2/39 और नीचे 65/11 - 30/9 - 2/99a - 2/99b भी देखें।

006 65/11: "- - - अल्लाह की निशानियाँ (हैं*) जिसमें स्पष्ट व्याख्याएँ हैं - - -"। **गलत। कुरान में वर्णित "चिन्हों" में से एक भी ऐसा नहीं है, जिसका कोई मूल्य हो, न ही प्रमाण के रूप में और न ही स्पष्टीकरण के रूप में (बाइबल से लिए गए कुछ के संभावित स्पष्टीकरण के साथ, लेकिन वे दूसरे भगवान, यहोवा के बारे में बात करते हैं)। कारण यह है कि वे बिना किसी अपवाद के बस हैं ढीले बयान या अन्य अमान्य बयानों पर निर्माण कर रहे हैं, "संकेत" या "सबूत" - पूरी तरह से अमान्य। यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर ऐसे अमान्य तर्कों का उपयोग करता है, तो वे धोखेबाज की पहचान हैं और एक धोखेबाज। कोई भगवान उनका उपयोग नहीं करेगा। इसके अलावा 2/39 - 30/30 ऊपर और 30/9 - 2/299a देखें - 2/299बी नीचे।

007 कुरान भी कुछ जगहों पर ऐसे दावों के लिए "चिह्न" के बजाय "सबूत" शब्द का उपयोग करता है। वे कम से कम "संकेतों" के रूप में और उन्हीं कारणों से अमान्य हैं।

यह इस तरह के प्रमाण और निश्चित प्रमाण हैं जिनके बारे में कुरान बताता है, और कुछ मुसलमान भी मानते हैं।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 5 (= II-1-3-5)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची थीम द्वारा व्यवस्थित

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और गैर-मुसलमानों के बारे में त्रुटियाँ कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह:

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस खंड की सामग्री:

1. **"काफिर" "सच्चाई" पर विश्वास नहीं करते।**
2. **विभिन्न विषय।**

"काफिर" "सच्चाई" पर विश्वास नहीं करते:

001 2/144: "पुस्तक के लोग (= यहूदी, ईसाई और सबियन) अच्छी तरह जानते हैं कि
कि (किबला बदलने का कारण = प्रार्थना करने की दिशा*) उनके रब की ओर से सत्य है।

1. यहूदी और ईसाई निश्चित रूप से नहीं जानते
   यह - और सबियन न तो इसे जानते थे
   (सबीन सबा में रहते थे, जो अब है
   यमन वे के माध्यम से ईसाई बन गए थे
   पूर्वी अफ्रीका में ईसाइयों का प्रभाव।
   (हालांकि इस्लाम कहता है कि सबियन एक संप्रदाय थे।))
2. चूँकि कुरान में बहुत सारी गलतियाँ हैं, इसलिए यह एक
   सवाल है कि क्या बाकी भी गलतियाँ हैं।
3. चूंकि कुरान में बहुत सारी गलतियां हैं, यह
   यह भी एक प्रश्न है कि क्या यह हमारे रब की ओर से है,
   यहोवा। यह भी एक सवाल है कि क्या कोई भगवान था
   कुरान में बिल्कुल भी शामिल - एक भगवान नहीं करता
   विरोधाभास या गलतियाँ करें, करने के लिए नहीं
   ऐसी कई गलतियों का उल्लेख करें - या ढीली
   बयान और झूठे "संकेत" और "सबूत" -
   धोखेबाजों और धोखेबाजों की पहचान।

00a 4/136: "कोई भी जो अल्लाह, उसके दूतों, उसके रसूलों और न्याय के दिन से इनकार करता है,
बहुत दूर चला गया है, बहुत दूर चला गया है"। मुश्किल से। जब आप जानते हैं कि कैसे गलतियों और गलत तर्क से भरा है
किताब वह है जिस पर सारा इस्लाम टिका है, यह तय करने के लिए कुछ और सबूत चाहिए कि यह गैर-मुसलमान है

जो "दूर, बहुत दूर" हैं। हो सकता है कि यह मुसलमान हो। और क्या हुआ अगर इस्लाम बना हुआ धर्म है
जो एक वास्तविक ईश्वर के लिए मार्ग को अवरुद्ध करता है - - - यदि ऐसा कोई मौजूद है?

००बी १०/५२: "तुम (पापियों*) को मिलता है, लेकिन जो तुमने कमाया है उसका प्रतिफल!" क्या वाकई सच है
नरक में भयानक और चिरस्थायी दंड में न्याय, और आखिरकार बहुत बड़े पाप नहीं हैं
पापियों में से कई? और ख़ासकर अगर अल्लाह ने उनके पैदा होने से पहले ही तय कर लिया हो कि वे
नर्क में समाप्त होना चाहिए और बाद में उन्हें "सीधी सड़क" का पालन करने से रोक दिया जैसे इस्लाम बताता है
अल्लाह अक्सर करता है?

002 39/22: "वे (गैर-मुस्लिम*) स्पष्ट रूप से (गलती से) भटक रहे हैं!" इस्लाम का दावा है कि
केवल मुसलमान "गलती में नहीं भटकते"। लेकिन जैसा कि यह केवल (इस्लाम के लिए सामान्य है) an
अनिर्दिष्ट दावा - यह निश्चित रूप से प्रकट नहीं होता है। (एक और तथ्य यह है कि सभी के साथ
कुरान में गलतियाँ और बदतर, यह एक बहुत ही खुला प्रश्न है जो सबसे खराब में भटक रहा है
त्रुटि)।

००३ ५०/५: "लेकिन वे (गैर-मुस्लिम*) सत्य (कुरान*) - - - को नकारते हैं। एफ देखें। भूतपूर्व। 40/75 और
४१/१२ - कुरान सबसे अच्छा केवल आंशिक रूप से सच है। इसी तरह के दावे एफ. भूतपूर्व। 7/166 - 34/43 - 38/88 -
47/7 - 68/8 - 96/13।

००४ ५१/८: "वास्तव में आप (लोग/गैर-मुस्लिम*) एक सिद्धांत में मतभेद हैं"। कुछ हो सकते हैं
गलती से भटकना हाँ, और कुछ नहीं भी हो सकते हैं। उनमें से "हाँ हो सकता है" हैं
मुसलमानों, जैसा कि कुरान में सभी गलतियाँ और बदतर हैं, बिल्कुल साबित करते हैं कि कुछ गलत है
उस किताब और उस धर्म के साथ। 11/22 - 34/8 - 39/22 -52/11 - 16/109 में इसी तरह के दावे।

005 60/1: "- - - उन्होंने (गैर-मुसलमानों) ने सत्य (कुरान*) - - - को खारिज कर दिया है। 40/75 और देखें
41/12. नहीं, लेकिन उन्होंने कुरान को खारिज कर दिया है - किताब "सच्चाई" नहीं है - - - उन सभी के साथ
गलतियाँ, अंतर्विरोध और अन्य त्रुटियाँ यह आंशिक रूप से सत्य है। इसी तरह के दावे एफ. भूतपूर्व।
4/167 - 6/5 - 34/45 - 36/64 -39/32 - 75/32 - 77/15 - 98/1।

००६ ६०/२: "- - - वे (गैर-मुसलमान*) चाहते हैं कि तुम (मुसलमान*) सत्य को अस्वीकार कर दो।" जैसा
सत्य के लिए: 40/75 और 41/12 देखें। बाकी के लिए, कुरान सही हो सकता है - लेकिन पूरी तरह से
उस पुस्तक के दावे के अलग-अलग कारण। **इस्लाम अपने शुद्ध कुरान जैसे रूप में एक बहुत
विनाशकारी, अमानवीय और अनैतिक धर्म, और जब उसके ऊपर यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट है
कि कुरान कोई ईश्वरीय कृति नहीं है, हम नहीं चाहते कि हमारे वंशजों का अंत हो जाए
ऐसा कुछ।**

007 63/4: "वे (गैर-मुस्लिम*) कैसे बहकावे में हैं (सच्चाई से दूर)!" बहुत बढ़िया दूर
आंशिक सत्य से - 40/75 और 41/12 देखें। (लेकिन हमारे में बहुत पीछे एक असभ्य विचार है
दिमाग: इस्लाम की बात आने पर वास्तव में कौन भ्रमित होते हैं? - जो सिर्फ इमामों को सुन रहे हैं
अपने ज्ञान और अपने मस्तिष्क का उपयोग किए बिना और कोई प्रश्न नहीं पूछे, या अन्य? -
कुरान में बहुत सारे मिडटेक हैं।)

बी। विभिन्न विषय:

00c 2/93: "हम (मदीना में यहूदी *) सुनते हैं और हम अवज्ञा करते हैं"। मुहम्मद असद कहते हैं (com.77):
"भले ही उन्होंने उन शब्दों को न कहा हो, उनका बाद का व्यवहार इस उद्धरण को सही ठहराता है"। लेकिन शब्द
जो नहीं कहा गया है, कहा नहीं गया है - क्या कोई भगवान ऐसे तर्कों का सहारा लेगा? और यह कैसे आया
उद्धरण कुरान में है - अरबों साल पुराना और अचूक और अल्लाह द्वारा पूजनीय - अगर उन्होंने किया
यह मत कहो?

008 2/113: "फिर भी वे (यहूदी और ईसाई) एक ही किताब का अध्ययन करते हैं"। यह केवल .... ही
आंशिक रूप से सच। यहूदी सिर्फ ओटी पढ़ते हैं। ईसाई अपने धर्म का निर्माण अधिक सौम्य और अधिक पर करते हैं
मानव एनटी और नई वाचा - वाचा मुसलमानों ने कभी उल्लेख नहीं किया - ओटी के साथ मुख्य रूप से
ऐतिहासिक पृष्ठभूमि। यह एक सच्चाई है जिसे अक्सर भुला दिया जाता है या "भूल" जाता है जब कोई बात करता है
ईसाई धर्म के बारे में - खासकर जब कोई धर्म को काले रंग में रंगना चाहता है
मुमकिन।

009 5/18: "(दोनों) यहूदी और ईसाई कहते हैं: 'हम अल्लाह के बेटे हैं, और उसके प्यारे'।
कहो: 'फिर वह तुम्हें तुम्हारे पापों का दंड क्यों देता है? - - -'"। सवाल बयानबाजी का भी नहीं है,
लेकिन भोले - कभी-कभी आपको प्यारे बच्चों को भी अंतर सिखाने के लिए दंडित करना पड़ता है
सही और गलत के बीच, अच्छे और बुरे के बीच। 5/17 में इसी तरह का प्रश्न।

००डी ५/२३: "- - - लेकिन अगर आपको ईमान है तो अल्लाह पर अपना (यहूदी*) भरोसा रखें"। इसकी संभावना बहुत कम है
मूसा के समय के यहूदियों ने अपने साथी यहूदियों से कहा था कि वे अल्लाह पर भरोसा करें, जो कि ईश्वर के नाम के रूप में है
यहूदी याहवे थे (और नाम के अलावा अल्लाह को मोहम्मद ने केवल कुछ ही पेश किया था
2000 साल बाद (अल-लाह के विकल्प के रूप में))।

०१० ९/३०: "यहूदी 'उज़ेयर (= पैगंबर एज्रा*) को ईश्वर का पुत्र कहते हैं - - -"। यह गलत है, और
मुस्लिम सूत्र भी इसे मानते हैं। लेकिन वे कहते हैं कि अरब में यहूदियों ने ऐसा कहा (जो हो भी सकता है और नहीं भी .)
सही हो) - जिसने मोहम्मद को धोखा दिया हो, लेकिन एक सर्वज्ञ भगवान को पता था
सत्य। यह कैसे हो सकता है कि एक सर्वज्ञ भगवान एक गलती पर भरोसा करते हैं जो शायद के एक छोटे से समूह द्वारा की गई है
अरब प्रायद्वीप पर यहूदी? यह गलती हो सकती है स्थानीय निवासी को धोखा दिया हो सकता है
मुहम्मद, लेकिन एक सर्वज्ञ भगवान नहीं! फिर कुरान की रचना किसने की?

०११ १५/१४ + १५: "- - - वे केवल यही कहेंगे (जब चमत्कार का अनुभव हो*): 'हमारी आँखों में है'
नशे में - - -"। गलत। कम से कम कुछ लोगों को विश्वास हो गया था - f. भूतपूर्व। फिरौन रामसेस द्वितीय
जादूगर। ये दो छंद तेज-चर्चा का एक टुकड़ा हैं। कुरान में कुछ तेज़-तर्रार बात है -
चीजों और तथ्यों और विचारों को समझाने की कोशिश कर रहा है और कम से कम ऐसे प्रश्न नहीं हैं जो मुश्किल हैं
समझाना या उत्तर देना। कुरान में तेजी से बात करने के बारे में अध्याय देखें। और भी तेज़ हैं-
आज मुसलमानों के बीच बात करते हैं, गलतियों को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं, निरस्तीकरण, इस्लाम में बदलाव
लगभग ६२२, आदि, इस्लाम को एक शांतिपूर्ण धर्म के रूप में पेश करने की कोशिश का उल्लेख नहीं करने के लिए। (यह एक विशिष्ट . है
युद्ध धर्म यदि आप कुरान के अनुसार जीते हैं।)

लेकिन इस वाक्य के बारे में वास्तव में बुरी बात यह है कि यह उन बिंदुओं में से एक है जहां मुहम्मद खुद जानता था कि वह झूठ बोल रहा है - जैसा कि कहा **गया था** कि कम से कम कुछ लोग इस पर विश्वास करेंगे इस्लाम अगर उसने चमत्कार पैदा किया। वह बहुत बुद्धिमान था और लोगों के बारे में बहुत कुछ नहीं जानता था यह जानिए - यह और भी अधिक है क्योंकि उन्होंने खुद उनके बाद अन्यजातियों के मुसलमान बनने के बारे में बताया था चमत्कारों का अनुभव किया था (उदाहरण के लिए, फिरौन के जादूगरों का उल्लेख किया गया था), और उसके पास भी था यीशु में अच्छा उदाहरण - कुछ ने कोई बात नहीं विश्वास करने से इनकार कर दिया, लेकिन बहुतों ने ऐसा किया चमत्कार के बाद।

***०१२ १७/१०७: "कहो: 'तुम विश्वास करो या नहीं, यह सच है कि जिन्हें दिया गया था पहले से ज्ञान (= ईसाई और यहूदी मुख्य रूप से *), जब इसे (कुरान *) पढ़ा जाता है वे, नम्र साज-सज्जा में उनके चेहरे पर गिर जाते हैं"। एक शब्द: बकवास। और क्या है इससे भी बदतर: जिसने इस कविता की रचना की वह जानता था कि यह एक झूठ है - जिसे मुहम्मद भी जानते थे जब उसने इसे बनाया या सुनाया। कुछ यहूदी और ईसाई ६५६ ईस्वी तक धर्म परिवर्तन कर चुके थे जब कहा जाता है कि कुरान लिखा गया है, हालांकि बहुत कम यदि कोई हो तो 621 में जब यह सूरह बनाया गया था, लेकिन एक के रूप में सामान्य नियम: बिलकुल बकवास। जरा इस्लाम, यहूदियों और के बीच संघर्षों के इतिहास को देखें ईसाइयों, मदीना में और उसके आस-पास के सभी यहूदियों का उल्लेख नहीं करने के लिए जो भगोड़े बन गए या मारे गए थे, इस्लाम स्वीकार करने के बजाय - f. भूतपूर्व। ख़ैबर - और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है। आप

कभी-कभी नए, उभरते धर्मों और संप्रदायों में इस तरह की बेईमानी मिलती है। यह एक तरीका है अपने बयानों के लिए "वजन" बढ़ाना, खासकर जब उनके पास दिखाने के लिए कुछ तथ्य या सबूत हों खुद के लिए। सिर्फ एक छोटा सा तथ्य जो इस परी कथा का खंडन करता है: खैबर में 700 यहूदी समय रहते मुसलमान बनकर अपनी जान और माल बचा सकते थे। एक आदमी के लिए वे नहीं चुना। इसी तरह के दावे - हालांकि यहाँ के रूप में स्पष्ट बकवास नहीं है - 5/83 - 17/108 में - 17/109 - 26/197 - 28/52 - 28/53 - 46/10।

013 21/50: "- - - क्या तुम (लोग*) तो इसे (कुरान*) झुठलाओगे?" बेशक हम इसे खारिज कर देंगे। जब कुछ बुद्धि और शिक्षा वाले लोग एक किताब के साथ आमने-सामने होते हैं जिसमें बहुत कुछ होता है और बहुत सारी गलतियाँ, विरोधाभास, मुड़ तर्क और मुड़ तर्क के रूप में, जहाँ यह है स्पष्ट कथाकार जानता था कि वह झूठ बोल रहा था - और सब कुछ एक एकल कथाकार से a . के साथ बताया गया सबसे संदिग्ध नैतिकता और नैतिकता, लेकिन सत्ता के लिए एक मजबूत पसंद के साथ - और धर्म उसका सत्ता के लिए मुख्य मंच - यह सवाल पूछना भी बहुत भोला है। कोई बुद्धिमान, शिक्षित, ब्रेन वॉश नहीं करने वाले व्यक्ति के पास वास्तव में इसे अस्वीकार करने के अलावा दूसरा विकल्प होता है यदि कोई वास्तविक प्रमाण नहीं है उत्पादित। (और इस्लाम अल्लाह के लिए या उसके लिए एक भी वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत करने में असमर्थ रहा है मुहम्मद का दावा एक ईश्वर से है - कोई भी ईश्वर - और इसलिए इस्लाम के सत्य होने के लिए, in १४०० साल - - - आपको क्यों लगता है कि मुहम्मद और इस्लाम अंध विश्वास की महिमा और मांग करते हैं?)

०१४ २२/५५: "जो लोग ईमान (इस्लाम*) को ठुकरा देते हैं, उनके विषय में संदेह नहीं रहेगा (रहस्योद्घाटन)"। शायद सही - हो सकता है कि किसी ईश्वर द्वारा कोई रहस्योद्घाटन हो (शायद द्वारा .) यहोवा) कुछ समय। लेकिन हमें इसमें कोई संदेह नहीं है कि गंभीर होने के अच्छे कारण हैं कुरान के दावों, बयानों और विवरण के बारे में संदेह - दावे और क्यों चाहिए जिन कथनों की हम जाँच नहीं कर सकते, वे उन कथनों से अधिक विश्वसनीय हो सकते हैं, जिनमें हम पाते हैं चाहने या गलत होने के लिए बहुत अधिक?

०१५ २५/४: "लेकिन अविश्वासी कहते हैं: 'यह कुछ नहीं है, केवल एक झूठ है जिसे उसने गढ़ा है, और अन्य इसमें उसकी मदद की है।' वास्तव में उन्होंने ही अधर्म और झूठ को सामने रखा है।" कुरान में इतनी सारी गलतियों के साथ, यह एक बहुत ही खुला प्रश्न है कि क्या यह अविश्वास करने वाले हैं? झूठ को सामने रखा है। यह मुहम्मद भी हो सकता है। यह कम से कम एक से नहीं है सर्वज्ञ भगवान।

016 28/53: "- - - वास्तव में हम (यहूदी और ईसाई*) मुसलमान रहे हैं (अल्लाह के आगे नतमस्तक विल) इससे पहले"। कोई टिप्पणी आवश्यक नहीं - सिवाय f देखें। भूतपूर्व। 28/52, 28/48 ए या 28/48 बी।

०१७ ५/१९: "हे पुस्तक के लोग (मुख्य रूप से यहूदी और ईसाई, लेकिन सबियन भी (ईसाई) सबा, अब यमन का हिस्सा है (इस्लाम इसके बजाय बताता है कि वे एक एकेश्वरवादी संप्रदाय थे जो कुछ अलग थे जगह) - और बाद में एक फैशन के बाद और कुछ मंडलियों में भी पारसी*)! अब आया है आप, हमारे रसूल (मुहम्मद*) - - - को आपको स्पष्ट कर रहे हैं। कुछ सवाल कर सकते हैं यदि वास्तव में मुहम्मद एक ईश्वर के दूत थे - तो उन्होंने हमेशा उनके जैसा व्यवहार नहीं किया एक अच्छे और क्षमा करने वाले ईश्वर का प्रतिनिधि, और उसका संदेश (कुरान) गलतियों से भरा है सर्वज्ञ भगवान ने बनाया था। लेकिन जिस बात पर शक नहीं किया जा सकता, वह है इतने लोगों के साथ एक संदेश गलत तथ्य चीजों को आंशिक रूप से स्पष्ट कर सकते हैं (और सबसे खराब वास्तव में चीजों को गड़बड़ कर सकते हैं)।

00e 28/82: "जो लोग अल्लाह को अस्वीकार करते हैं वे निश्चित रूप से कभी समृद्ध नहीं होंगे"। एक संभावित अगले जीवन के लिए
चर्चा वास्तव में असंभव है - हम कुछ भी नहीं जानते हैं, और कुछ भी नहीं जान सकते हैं। कुछ कहेंगे वे
जानते हैं, लेकिन वे बहुत गलत होंगे - वे जो करते हैं, वह दृढ़ता से विश्वास करना है। ज्ञान नहीं है
ठोस तथ्यों, सबूतों और/या दस्तावेज़ीकरण के बिना संभव है, और इस्लाम में एकमात्र वास्तविक तथ्य है
कि एक अकेले आदमी ने कहानियां सुनाईं या तो उसने इनकार कर दिया या दस्तावेज करने में असमर्थ था - या तो
क्योंकि भगवान नहीं चाहता था (अतार्किक और/या मनोवैज्ञानिक रूप से गलत बहाने के साथ) या था
करने में असमर्थ, या क्योंकि भगवान का अस्तित्व नहीं था। शब्द बहुत हैं - लेकिन शब्द सस्ते हैं।

बहुत सारे बयान हैं - लेकिन बिना सबूत के हवा में लटके बयान उतने ही सस्ते हैं।
बहुत सारे और बहुत सारे "संकेत" हैं - लेकिन कुछ सर्वथा गलत हैं, और बाकी पूरी तरह से हैं
अल्लाह के लिए सबूत के रूप में बेकार, क्योंकि वे वास्तव में हवा में लटके हुए अप्रमाणित बयान हैं
और केवल यह साबित करता है कि शब्द सस्ते हैं - वे दावे और बयान हैं कि कोई भी पुजारी किसी भी
धर्म अपने भगवान या देवताओं के बारे में तब तक बना सकता है, जब तक कि उसे वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत करने की आवश्यकता न हो - -
- जैसे मुहम्मद ने दृढ़ता से या सरासर आवश्यकता से किया। और यहां तक कि छंद भी बता रहे हैं
वे अल्लाह को साबित करते हैं। लेकिन उनमें से एक भी उसके बारे में कुछ भी साबित नहीं करता - वे इस प्रकार हैं
"संकेत" के रूप में और उन्हीं कारणों से मूल्यहीन। विशेष रूप से हमें सभी का उल्लेख करना चाहिए
प्राकृतिक घटनाएं जो कुरान कहती हैं वे संकेत हैं जो अल्लाह को इंगित करते हैं या साबित करते हैं - लेकिन केवल
वे जो बात साबित करते हैं, वह यह है कि इस्लाम कभी भी किसी के लिए एक भी वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत करने में सक्षम नहीं रहा है
किसी भी धर्म के पुजारी प्राकृतिक घटनाओं और उनके बारे में ठीक वही सस्ते शब्द कह सकते हैं
भगवान का)। जो आगे यह साबित करता है कि इस्लाम को अपने प्रभाव के लिए सस्ते शब्दों पर निर्भर रहना पड़ा है
मंडलियां और अन्य। अगर उनके पास कुछ भी होता, तो वे इसके बारे में पूंजी के साथ बात करते थे
पत्र।

लेकिन जब इस जीवन में समृद्धि की बात आती है, तो यह स्पष्ट है कि कुरान पूरी तरह से गलत है।
और इसके ऐसे ही रहने की संभावना है, क्योंकि मुस्लिम देश अपनी आधी वयस्क आबादी को ऐसा नहीं करने के लिए मजबूर करते हैं
काम, और संस्कृति वास्तविक सोच के प्रतिकूल है - जिसका अन्य प्रभावों के साथ अर्थ है कि सभी
मुस्लिम दुनिया में एक साल में कैलिफोर्निया के एकल राज्य की तुलना में कम नए पेटेंट हैं - और
अगर कोई चाकू-धार तकनीक या प्रौद्योगिकी के पेटेंट को देखता है तो अंतर और भी खराब होता है। इस
अन्य कारणों में (f. उदा. बहुत अधिक बच्चे) हमेशा के लिए मुस्लिम राज्यों को दूसरे स्थान पर रखेंगे-
वर्ग अर्थव्यवस्था, अगर उनके पास बेचने के लिए तेल जैसे प्राकृतिक संसाधन नहीं हैं - या हमला कर सकते हैं
पड़ोसी देश और चोरी/लूट/गुलाम।

००f ३३/६०: "--- वे (गैर-मुस्लिम, पाखंडी, आदि*) जिनके हृदय में रोग है---"। ए
अच्छा नारा है कि आप कुरान में कई जगह मिलते हैं: यदि आप एक अच्छे मुसलमान नहीं हैं, तो
मतलब तुम बीमार हो। लेकिन कई नारों की तरह यह एक विकृत सच भी हो सकता है - या सिर्फ झूठ।

०१८ ३३/६१-६२: "वे (गैर-मुस्लिम, पाखंडी, आदि*) उन पर शाप देंगे: जब भी
वे पाए जाते हैं, वे आकार और मारे जाएंगे (दया के बिना) ('धर्म में कोई मजबूरी नहीं')
2/256*), (ऐसे थे) उन लोगों में अल्लाह की प्रथा (अनुमोदित) जो पहले से रहते थे (f। पूर्व।
यहूदी और ईसाई*)"। मुहम्मद ने दावा किया कि अल्लाह यहोवा के लिए सिर्फ एक और नाम था -
**लेकिन एक आदेश खोजने की कोशिश करें जिसमें कहा गया हो कि सभी गैर-ईसाइयों की हत्या "बिना" की जाएगी
दया "नई वाचा में (एनटी में) कि ईसाई धर्म (एक वाचा मुसलमानों) पर बनाया गया है
कभी उल्लेख नहीं)।** ओह, हम अच्छी तरह जानते हैं कि ईसाई देशों के लोगों ने बुरा किया है
चीजें, लेकिन वह उनके धर्म के बावजूद थी - और वे वास्तव में गहरे ईसाई नहीं थे -
और न के अनुसार, या धर्म के कारण भी, जैसा मामला अक्सर होता है
"शांति का धर्म" (मुस्लिम पाखंडी- "युद्ध और दमन के धर्म" के लिए बोलते हैं) इस्लाम।

इसके अलावा: क्या इस तरह के वाक्य जैसे इस्लाम वास्तव में "शांति का धर्म" है?

*०१९ ४०/४: "अल्लाह के संकेतों के बारे में कोई भी विवाद नहीं कर सकता लेकिन अविश्वासियों"। गलत। वहाँ है
कोई कारण नहीं है कि मुसलमानों के लिए उन पर चर्चा करना भी संभव नहीं है, सिवाय धार्मिक विचारों के और
निषेध। और उन्हें ऐसा करना चाहिए, क्योंकि उनमें से कोई भी वैध प्रमाण नहीं है (वे पतली हवा पर आराम करते हैं या
अप्रमाणित बयान) अल्लाह के। बाइबल से लिए गए कुछ लोग यहोवा को सिद्ध कर सकते हैं, परन्तु
बिल्कुल कोई साबित नहीं करता है या यहां तक कि अल्लाह को इंगित भी नहीं करता है। वे एफ. भूतपूर्व। किसी भी पुजारी द्वारा किसी भी में इस्तेमाल किया जा सकता है
अपने भगवान (ओं) के बारे में धर्म।

020 43/9: "- - - 'स्वर्ग (बहुवचन और गलत) की रचना किसने की?' वे (गैर-मुसलमान*)
उत्तर देना सुनिश्चित करें, 'वे (अल्लाह*) द्वारा बनाए गए थे। गलत - अगर वे मानते हैं कि एक भगवान ने बनाया है

पेज 128

यह, वे अपने स्वयं के भगवान का उल्लेख करना सुनिश्चित करेंगे, हालांकि पुराने अरब में हो सकता है
बहुदेववादी भगवान अल-लाह, जो (इरादा?) भ्रम पैदा कर सकता है क्योंकि नाम थे
इसी तरह (**यही कारण है कि इस्लाम अब . के बजाय "ईश्वर" शब्द का उपयोग करता है
पश्चिम में "अल्लाह", हमें बताया गया है - यह कुछ वास्तविक मतभेदों को छुपाता है।**) एक जैसा
39/38 में दावा।

०२१ ४३/७८: "- - - लेकिन आप में से अधिकांश (गैर-मुस्लिम*) सच्चाई से नफरत करते हैं।" सच - देख
40/75 23/70 में इसी तरह का दावा। और इसके साथ:

1. कुछ नफ़रत - लेकिन कई डरे हुए हैं।
2. काफी संख्या में लोग अरुचि महसूस करते हैं क्योंकि
अमानवीय और अन्यायपूर्ण कानून, "नैतिक", और
इस्लाम में परंपराएं।
3. भयभीत होने में अंतर है
ताकत और भयभीत कमजोरी - एक तथ्य यह है कि
कभी कभी भुला दिया जाता है।

०२२ ६२/६: "- - - तो अपनी (यहूदी, ईसाई) मृत्यु की इच्छा व्यक्त करें, यदि आप सच्चे हैं!" एक
पवित्र यहूदियों और ईसाइयों के लिए असंभव मांग: एक बात के लिए जीवन के अपने मूल्य हैं
सब लोग। उनमें से विश्वासियों के लिए अधिक आवश्यक: जीवन यहोवा/परमेश्वर की ओर से एक उपहार है - to
इसे समाप्त करने की इच्छा उसके द्वारा दिए गए उपहार को कम करना है। सबसे गंभीर: अपने जीवन को समाप्त करना (चाहना) है,
यहोवा की ओर से इस उपहार के खिलाफ एक पाप इतना गंभीर है, और इसलिए यहोवा के खिलाफ, कि यह स्वचालित रूप से
आपको नर्क में भेजता है।

**किसी भी ईश्वर को यह पता था - मुहम्मद स्पष्ट रूप से नहीं। फिर कुरान किसने बनाया? (में
इससे भी बदतर: मुस्लिम विद्वान आज इस तथ्य को जानते हैं। लेकिन वे इसका जिक्र कभी नहीं करते, इसके बावजूद
इस तर्क का उपयोग करते हुए। बेईमानी।)** 2/94 - 2/95 में इसी तरह का दावा।

***०२३ ६७/१०: "क्या हम (गैर-मुस्लिम*) थे लेकिन सुनते थे या अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करते थे - - -"। इसलाम
अक्सर यह बताने की कोशिश करता है कि यह बुद्धि है जो मुसलमानों को विश्वास दिलाती है, या कि बुद्धि के साथ
कुरान से स्पष्ट है कि यह एक ईश्वर की कृति है। कम से कम निश्चित तो यह है कि
कोई भी जो अपनी बुद्धि का उपयोग करता है और f का उचित न्यूनतम ज्ञान रखता है। भूतपूर्व।
इतिहास, भूगोल, खगोल विज्ञान, पुरातत्व आदि कुरान में बहुत सारी गलतियाँ पायेंगे - if
वह किसी कारण से अंधा नहीं है या देखना नहीं चाहता है। इसके अलावा अगर वह बहुत कम न्यूनतम जानता है
तर्क और तर्क का उपयोग करने और जानकारी का मूल्यांकन करने के नियमों के लिए, उसे हार देखना होगा
बयान, विरोधाभास, अमान्य "संकेत" और अमान्य "सबूत" के रूप में - और वह हो सकता है
विचार से मारा जाएगा: इस तरह के तर्कों का उपयोग कौन करता है, सिवाय उसके जिसके पास कोई वास्तविक नहीं है
तर्क, और इसलिए धोखा देना और धोखा देना है - f. भूतपूर्व। अनुयायियों और सत्ता हासिल करने के लिए?

024 69/50: "लेकिन वास्तव में (रहस्योद्घाटन (कुरान*)) अविश्वासियों के लिए दुख का कारण है"।
सच है, लेकिन गलत कारणों से: सभी युद्ध और खून और आतंक के कारण इस्लाम ने
युगों के माध्यम से प्रतिनिधित्व किया - और इसका उत्तर यह नहीं है कि अन्य धर्मों ने भी इसका कारण बना है
युद्ध, आदि क्योंकि इससे नफरत, बलात्कार, दमन, डकैती और रक्त धर्म नहीं बनता है
इस्लाम एक कोटा बेहतर है - और अधिकांश अन्य धर्मों में, यह वास्तविक धर्म के बावजूद किया जाता है,
की वजह से नहीं। और क्योंकि कई लोगों को एक किताब पर बने धर्म में खोई हुई आत्माओं पर दया आती थी
जहां कुछ गंभीर रूप से गलत है। (हो सकता है कि उनके अपने धर्म भी गलत थे, लेकिन सभी
एक सर्वज्ञ ईश्वर की ओर से होने का नाटक करने वाली पुस्तक में गलत तथ्य, आदि, यह साबित करते हैं कि
इस्लाम वास्तव में कुछ ऐसा है जो गलत है - और यह बहुत दृढ़ता से संदेह करता है कि यह
वास्तव में एक ईश्वरीय रहस्योद्घाटन है।) लेकिन, हाँ, इस्लाम ने बहुत दुख पैदा किया है - और शायद नहीं
केवल गैर-मुसलमानों के लिए।

पेज 129

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 6 (= II-1-3-6)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची थीम द्वारा व्यवस्थित

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और कुरान में यीशु के बारे में त्रुटियाँ - मुहम्मद की पवित्र पुस्तक, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह:

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस खंड की सामग्री:

0. यीशु के जन्म के आसपास। (एनबी: यह विज्ञान से एक परिचय है, नोट कुरान से।)

1. कुरान के अनुसार यीशु का प्रागितिहास।

2. कुरान के अनुसार बेबी और चिल जीसस।

3. कुरान के अनुसार पैगंबर यीशु।

ध्यान दें! ध्यान दें! ध्यान दें! यह हिस्सा कमोबेश यहाँ और यीशु के बारे में अलग अध्याय में समान है। (इसका कारण बहुत ही सरल है कि कुरान उसके बारे में जो कुछ लिखता है, वह गलत है। नोट केवल बाइबल की तुलना में गलत है, लेकिन जो हम जानते हैं उसकी तुलना में गलत है समय और स्थिति)। यीशु के बारे में अलग अध्याय में, इसके लिए बस थोड़ा सा जोड़ा गया है उन लोगों का लाभ जो इतिहास और/या बाइबल नहीं जानते हैं।

हमने इस सामग्री को दोनों जगहों पर शामिल करना चुना है - जैसा कि हमने अक्सर किया है जब सामग्री एक से अधिक विषयों के लिए प्रासंगिक है - ताकि पाठकों के लिए सभी को खोजना आसान हो जाए वे उस विषय पर खोज करते हैं जिसे वे ढूंढते हैं। लेकिन अगर यह कभी छपी हुई किताब बन जाए, तो यह होगा खराब अर्थव्यवस्था इसे दो बार छापने के लिए - बेहतर होगा कि सिर्फ अलग अध्याय को छापा जाए, और फिर गलत तथ्यों की इस शॉर्टलिस्ट के पाठक को उस अध्याय में देखें।

ध्यान दें: इस अध्याय के श्लोकों को उनके अनुसार व्यवस्थित किया गया है: कहानी की "नारुरल प्रगति" और सूरह के अनुसार नहीं और पद संख्या।

0. यीशु के जन्म के आसपास। (विज्ञान से, कुरान से नहीं।)

विज्ञान लंबे समय से जानता है कि यीशु का जन्म 1 वर्ष में नहीं हुआ था। किसी ने शुरू नहीं किया यीशु के जन्म से लेकर बहुत बाद तक, और भिक्षु जो कुछ सौ वर्ष बाद में उनके जन्म के वर्ष को इंगित करने की कोशिश की, थोड़ा चूक गए।

बाइबल उसके जन्म को रोमन साम्राज्य के सभी लोगों की गिनती से जोड़ती है। हम जानते हैं
इतिहास है कि यह सम्राट सीज़र ऑगस्टस द्वारा शुरू किया गया था और ८ से ८ वर्षों में हुआ था
6 ई.पू. इसलिए यीशु का जन्म वर्ष ५ ईसा पूर्व के बाद नहीं हुआ होगा (उनके माता-पिता का हो सकता है
कुछ समय के लिए रुके f. भूतपूर्व। मैरी की गर्भावस्था के कारण)। आगे हम इतिहास से जानते हैं
वह राजा हेरोड्स - रोमनों के अधीन स्थानीय रीजेंट - जिसे हेरोड्स द ग्रेट भी कहा जाता है, जो है
कहानी में केंद्रीय, वर्ष 4 में मृत्यु हो गई। ईसा पूर्व (बाद में एक और राजा हेरोड्स भी है - उसका बेटा
हेरोड्स एंटिपास)। इस प्रकार यह बहुत स्पष्ट है कि यीशु का जन्म कुछ वर्ष ईसा पूर्व हुआ था। विज्ञान मानता है
उनका जन्म 6 ईसा पूर्व या 5 ईसा पूर्व में हुआ था।

उनके जन्म के बारे में कहानी में केंद्रीय "बेतलेहेम का सितारा" भी है। सुसमाचार के अनुसार
मैथ्यू के बाद यह 3 बार दिखाई दिया।

वर्ष 7 ईसा पूर्व में एक ट्रिपल संयोजन था: बृहस्पति और शनि तारा नक्षत्र में
मई, सितंबर और दिसंबर में फिश। (3 बार संभव है क्योंकि जैसा कि पृथ्वी से देखा जाता है
ग्रह कभी-कभी रुक जाते हैं और अपने पाठ्यक्रम को जारी रखने से पहले पीछे की ओर भागते हैं - यह
पृथ्वी की गति के कारण होने वाला एक प्रदुषण है।) वास्तव में सूर्य, पृथ्वी, बृहस्पति, शनि और
Phishes एक लाइन पर थे। यह शायद पहली उपस्थिति रही होगी।

खगोल विज्ञान, ज्योतिष के लिए "विश्व" केंद्र - पुराने समय में निकटता से जुड़ा हुआ है - और
उस समय गणित अब इराक में बेबीलोन था। यहूदी धर्म और उसकी भविष्यवाणियाँ
भविष्य के भविष्यवक्ता और राजा के बारे में वहाँ अच्छी तरह से जाना जाता था, केवल इसलिए कि वहाँ बहुत से यहूदी रहते थे।

अब ज्योतिष में बृहस्पति राजा या दैवीय राजा से जुड़ा था। शनि जुड़ा था
दोनों धार्मिकता और फिलिस्तीन के लिए, और फिश यहूदियों से जुड़े थे। यह बताया
ज्योतिषी - जादूगर - कि बड़ी चीजें यहूदियों और फिलिस्तीन से जुड़ी हो सकती हैं।

फिर 6 ईसा पूर्व में भी मंगल ने चित्र में प्रवेश किया - बृहस्पति, शनि और मंगल सभी विहित थे
एक दूसरे से डिग्री और अभी भी फिश में। मंगल शक्ति का प्रतीक है, और जादूगरों को बताया
(यूनानी "माग्लोई" = बुद्धिमान पुरुषों से) कि सितारों ने एक शक्तिशाली राजा की भविष्यवाणी की थी।

फिर 17. 6 अप्रैल ई.पू. बृहस्पति अर्धचंद्र के पीछे गायब हो जाता है - और फिर से प्रकट होता है। यह भी
चंद्रमा एक शक्तिशाली प्रतीक था क्योंकि यह चंद्रमा देवता का प्रतिनिधित्व करता था - एल या अल-लाह (बाद में इसका नाम बदलकर अल्लाह)
मुहम्मद द्वारा) - एफ। भूतपूर्व। पड़ोसी अरब में। यह पुन: प्रकट होना दूसरा हो सकता है
तारे की उपस्थिति। और जैसा कि बाबुल से देखा गया, यह आकाश में की दिशा में हुआ
जेरूसलम। जादूगरों को यह सब यहूदियों से जुड़े एक शक्तिशाली राजा की भविष्यवाणी कर सकता था -
और वे भविष्य में एक शक्तिशाली यहूदी भविष्यवक्ता के बारे में मूसा की भविष्यवाणियों को जानते थे।

अंत में चीनी सूत्र 5 ईसा पूर्व में नए तारे के बारे में बताते हैं। यह स्पष्ट नहीं है कि यह धूमकेतु था या a
नोवा यह पूर्व में उठ रहा था - जादूगरों के लिए एक संकेत जो बता रहा था कि अब यह होने वाला था।
यदि ३ "बुद्धिमान" या "राजा" - जादूगर - अब बाबुल से यरुशलम के लिए निकल गए, तो यात्रा होगी

70 दिनों की तरह कुछ - लगभग उसी समय यह एक धूमकेतु को प्रतीत होता है
उस दूरी को पार करें। मत्ती के बाद सुसमाचार के अनुसार: "- - - - तारा पहले चला गया
उन्हें - - -।" यदि यह इसके बजाय एक नोवा होता, तो इसका फिक्स स्थान सितारों के बीच होता, लेकिन to
दक्षिण जैसा यरूशलेम से देखा गया जब जादूगर वहां पहुंचे - बेतलेहेम दक्षिण में स्थित है
जेरूसलम।

(स्रोत: मुख्य रूप से डेविड ह्यूजेस: "द स्टार ऑफ बेटलहेम मिस्ट्री" और मार्क किगर: "द स्टार"
बेतलेहेम के।)

1. कुरान के अनुसार यीशु का प्रागितिहास:

एक व्यक्ति था जिसने इस्राएल को यीशु के लिए तैयार किया था - जॉन द बैपटिस्ट - से आधा वर्ष बड़ा
केवल यीशु, लेकिन चूंकि यीशु ने केवल ३० साल की उम्र में अपना प्रचार शुरू किया था, यूहन्ना के पास किसी भी तरह बात करने का समय था
एक के बारे में जो शीघ्र ही आने वाला था। कुरान उसके बारे में ज्यादा कुछ नहीं बताता है, लेकिन एक है
थोड़ा: उसके पिता को एक देवदूत ने कहा था कि उसे एक बेटा होगा, और वह - - - (देखें 19/7 बस
नीचे):

001 19/7: "- - - उसका नाम याह्या (जॉन *) होगा: उस नाम से किसी पर भी हम (अल्लाह *) नहीं हैं
पहले भेद प्रदान किया"। परन्तु योहानान (यूहन्ना के लिए हिब्रू), कारेह का पुत्र, एक था
2. किंग्स, 25/23 में प्रतिष्ठित व्यक्ति। इसके अलावा हमारे सूत्रों का कहना है कि शब्द "भेद"

अरब संस्करण में नहीं है, लेकिन यूसुफ अली द्वारा एक स्पष्ट गलती को रोकने के लिए जोड़ा गया है, जैसा कि
जॉन नाम हिब्रू में अज्ञात से बहुत दूर था। (यूसुफ अली की टिप्पणी 2461)। अन्य अनुवादक
- एफ। भूतपूर्व। "कुरान का संदेश" में मुहम्मद आज़ाद - बिंदु पर अपनी टिप्पणी में कहें
कि सटीक अनुवाद है (स्वीडिश से अनुवादित): "हम (अल्लाह*) ने पहले कभी नाम नहीं लिया
किसी के साथ उसका (जॉन द बैपटिस्ट *) नाम पहले"। लेकिन जॉन नाम का उल्लेख किया गया है 27
टाइम्स इन ओटी = जॉन द बैपटिस्ट से पहले - यह काफी सामान्य नाम था। प्रासंगिक इतिहास से
पुजारी-राजा जॉन हिरकेनस और जनरल जॉन एसेन भी थे। वहाँ दोनों थे
बहुत से यूहन्ना और विशिष्ट लोगों ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से पहले यूहन्ना का नाम लिया। बस गलत।

*002 3/35: "इमरान की पत्नी ने कहा"। यह कुरान की दो सबसे प्रसिद्ध गलतियों में से एक है। NS
यहाँ पुस्तक यीशु की भावी माँ मरियम की माँ के बारे में बात कर रही है (इसमें 3/36 भी देखें)
कुरान: "मैंने उसका नाम मरियम रखा है")। परन्तु इमरान हारून, मूसा और मरियम का पिता था,
जो लगभग 1200 साल पहले रहते थे। मुहम्मद बाइबल को अच्छी तरह से नहीं जानते थे, और यह है
स्पष्ट है कि उसने सोचा था कि मरियम हारून और मूसा की बहन थी। १९/२८ में यह सीधे तौर पर कहा गया है,
मैरी के बारे में बात करते समय: "हे हारून की बहन" - सबसे प्रसिद्ध गलती। (यह भी है
६६/१२ में उल्लेख किया गया है) यह संभावना है कि इस गलती का कारण अरब मैरी और . में है
मरियम इसी तरह लिखी जाती है: मरियम। बाइबल के अपने सीमित ज्ञान के साथ उन्होंने
माना कि यह वही महिला है। कोई भी भगवान बेहतर जानता था। हम जोड़ सकते हैं कि कुछ मुसलमान
कहते हैं कि यह वही इमरान नहीं है, लेकिन वैज्ञानिक इस बात पर सहमत हैं कि मुहम्मद का मतलब एक ही आदमी था -
इमरान कि कुरान के अनुसार अल्लाह ने आदम, नूह और इब्राहीम की तरह चुना था (देखें .)
3/33 कुरान में) - हारून के पिता, मूसा - - और मरियम / मरियम / मरियम। वह
मुहम्मद वास्तव में यहाँ गलत थे, और उन्हें लगा कि मरियम हारून और मूसा की बहन हैं, is
इस तथ्य से प्रलेखित है कि हदीस के अनुसार (सूचना का अन्य मुस्लिम स्रोत
उनके धर्म और मुहम्मद के बारे में) मुहम्मद को सुधारा गया, और उन्होंने खोजने की कोशिश की
गलती को सुधारने के लिए स्पष्टीकरण (बिना सफलता के)। उन्होंने दिखाने वाली जानकारी भी नहीं जोड़ी
कि वह और अल्लाह किसी कारण से अपने गलत बयान में सही थे।

आप मुसलमानों से यह कहते हुए मिलेंगे कि कुरान का मतलब यह नहीं है कि मरियम वास्तव में की बहन थी
हारून (वे कहते हैं कि इसका मतलब लाक्षणिक रूप से था - दो सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले तरीकों में से एक)
उन चीजों को समझाना जो इस्लाम में समझना मुश्किल या असंभव है। दूसरा है
"आप केवल कुछ छंदों से अर्थ का न्याय या समझ नहीं सकते हैं, आपको देखना होगा"

पूरा सूरह (या पूरा कुरान)", भले ही कुरान खुद बताता है कि किताब मुख्य रूप से है
शाब्दिक रूप से समझा जा सकता है, और भले ही वे स्वयं अक्सर एक या एक से बहुत कुछ कमाते हैं
कुछ शब्द), और यह कि किताब का मतलब यह नहीं है कि वह इमरान की बेटी थी - केवल a
उसके वंशज। इस्लाम को इतने सैकड़ों वर्षों के बाद बेहतर मिलना चाहिए था
"स्पष्टीकरण" - "स्पष्टीकरण" कि सबसे ऊपर कहा जाता है कि इस तथ्य का खंडन किया जाता है कि
पहले से ही मोहम्मद ने गलती को सुधारने की कोशिश की, लेकिन सफलता के बिना उल्लेख किया।
लेकिन कोई अन्य स्पष्टीकरण नहीं है जिसका वे उपयोग करने का प्रयास कर सकते हैं। इसके अलावा 19/28 को पूरे ओवरव्यू में देखें
गलत तथ्य।

यह जोड़ा जा सकता है कि कुरान यीशु की इस दादी के बारे में क्या बताता है, यह अज्ञात है
बाइबिल, जो यीशु की मृत्यु के कुछ साल बाद लिखी गई थी, लेकिन दावा किया गया कि वह मुहम्मद 600 . को जानता था
वर्षों बाद - - - और मध्य पूर्व में "रहने वाले" किंवदंतियों के लिए भी जाना जाता है। अगर होता
सच है, यह गारंटी थी कि इसे सुसमाचारों में नहीं भुलाया जाएगा, क्योंकि इसने के बीच संबंध बनाया था
यीशु और भगवान / यहोवा मजबूत। इस्लाम आरोप लगाता है - बिना किसी दस्तावेज के जैसे
इस्लाम के लिए सामान्य - एनटी के मिथ्याकरण के लिए ईसाई (जो सभी विज्ञानों के विपरीत है)
कहते हैं), लेकिन आरोप यह है कि उन्होंने यीशु को अधिक पवित्र बनाया है, कम नहीं, जो मामला है अगर
यह कहानी सच थी और बाइबल से हटा दी गई थी (यह के अनुसार कभी नहीं थी)
विज्ञान)।

कुरान यह भी बताता है कि मरियम ने की शिक्षा के तहत यरूशलेम के मंदिर में सेवा की
जकारिया (जॉन द बैपटिस्ट के पिता - और बाइबिल के अनुसार मैरी के एक रिश्तेदार), और - -

००३ ३/३७: "हर बार जब वह (जकारिया *) उसे देखने के लिए (उसके) कक्ष में प्रवेश करता, तो वह उसे पाता
भरण-पोषण प्रदान किया। उसने कहा: 'हे मरियम! यह आपको कहाँ से (आता है)?' उसने कहा: "से
अल्लाह : क्योंकि अल्लाह जिसे चाहता है उसे बिना माप के रोज़ी देता है"। इस का मतलब है कि
उसने चमत्कार से अपना भोजन भगवान से प्राप्त किया। यह एक बनी हुई परी कथा है। एक भी नहीं है
एक मौका है कि इस तरह के एक चमत्कार को NT से हटा दिया गया था - यह और भी अधिक अगर
इस्लाम अपने बयानों में सही था कि ईसाइयों (और यहूदियों) ने बाइबिल को गलत ठहराया था
(मुहम्मद बाइबिल के अच्छे जानकार नहीं थे, और जब वे इसका उल्लेख करते थे तो अक्सर गलतियाँ करते थे

इसके लिए या इससे कहानियां लीं (लेकिन वह अक्सर परियों की कहानियों/किंवदंतियों से बना था, यह विश्वास करते हुए) वास्तव में बाइबिल से थे - यह संभावना है कि उसने कभी बाइबल नहीं देखी (शायद ओटी - यहूदी .) शास्त्र - लेकिन NT नहीं)। उन्होंने हमेशा ऐसी गलतियों को समझाया कि वह सही थे, और वह अपवित्र यहूदियों और ईसाइयों ने बाइबल को गलत ठहराया था)। दरअसल बस ये कहानी इन्हीं में से एक है कई कहानियाँ कुरान ने बाइबल से बिल्कुल भी "उधार" नहीं ली है, बल्कि एक गढ़ी हुई कहानी से है उस समय फली-फूली धार्मिक किंवदंतियाँ। इन गलतियों के कारण यहूदी जब वह यात्रिब/मदीना आया तो उसे स्वीकार नहीं किया - यहूदियों ने कहा कि उसकी शिक्षा गलत थी और यह कि परिणामस्वरूप वह एक झूठा नबी था। (**मुसलमानों में एक प्रवृत्ति (!) का उल्लेख नहीं है यह तथ्य, लेकिन इसके बजाय, मुहम्मद को बताने के लिए, अधिक चापलूसी, लेकिन बेईमान - कम से कम उनके विद्वान यह जानते हैं - कहानी: यहूदियों के क्रोधित होने के कारण उन्हें स्वीकार नहीं किया गया था क्योंकि अल्लाह ने एक गैर-यहूदी को नबी के लिए बुलाया था। लेकिन वास्तव में मुहम्मद की शिक्षाएँ यहूदियों के लिए विधर्मी थे।)**

लेकिन अगर ईसाइयों ने बाइबिल को गलत ठहराया होता, तो उनका मुख्य उद्देश्य मज़बूत करना होता यीशु की स्थिति और यहोवा के साथ उसके संबंध - यहूदी और ईसाई देवता। कोई नहीं है मौका है कि उन्होंने अपनी मां से जुड़े एक चमत्कार को छोड़ दिया था, एक प्रत्यक्ष के बारे में बता रहा था यहोवा और उसके बीच संबंध - और इस प्रकार यीशु के साथ। (कि उसने मन्दिर में सेवा की, जो कुरान में बताया गया है, वह भी बाइबिल के लिए नया है - और अगर यह वहाँ कभी नहीं छोड़ा गया था सच था)।

यह कुछ ऐसा भी बताता है कि जब मुहम्मद बाइबिल से भिन्न होते हैं, तो उनकी/कुरान की कहानियां अक्सर सिद्ध असत्य धार्मिक दंतकथाओं और किंवदंतियों के अनुरूप होते हैं (अक्सर अपोक्रिफ़ल ग्रंथ - और अक्सर नोस्टिक)। यह बताता है कि यह बाइबिल नहीं है जो गलत है, लेकिन कुरान में हो सकता है स्रोतों के रूप में परियों की कहानियों का इस्तेमाल किया।

फिर यीशु के साथ गर्भधारण का समय आया। जैसा कि बाइबिल में पहली जानकारी आई थी एक कोण से, लेकिन कहानी में एक मोड़ आया (मुहम्मद के नए धर्म का समर्थन करने के लिए?) वह परी से भयभीत - एक आदमी के आकार में और कहा:

004 19/18: "- - - मैं (मैरी, जीसस की माता) आपसे (अल्लाह) परम कृपालु की शरण चाहता हूं: (पास मत आना) अगर तुम अल्लाह से डरते हो"। यह बहुत कम संभावना है कि एक यहूदी को शरण लेनी चाहिए दूसरे देश के उस समय के अत्यधिक बहुदेववादी देवता से। जैसा कि बाद में क्या देखा गया यीशु के साथ हुआ, उस समय इस्राएल में एकेश्वरवाद और यहोवा प्रबल थे। अगर कुरान सच कहता है जब यह बताता है कि मैरी मंदिर में काम कर रही थी, यह बिल्कुल है असंभव - अगर वह यहोवा के अलावा किसी अन्य देवता को संबोधित करती तो वह गंभीर संकट में पड़ जाती (लेकिन फिर कुरान सबसे अधिक संभावना है कि इस बिंदु पर भी गलत है - हमें इसके बारे में कुछ भी नहीं मिला है मैरी मंदिर में बाइबिल या किसी अन्य स्रोत में काम कर रही है, और अगर यह सच होता, तो अधिकांश ईसाई सूत्रों ने इसका उल्लेख किया था, क्योंकि इसका अर्थ होगा यीशु और के बीच एक और संबंध यहोवा। (वास्तव में यह अपोक्रिफल से लिया गया है - बना हुआ - "जैकब के बाद 'प्रोटो गॉस्पेल'" - - - लेकिन मुसलमान कुरान और बाइबिल में अंतर इसलिए बताते हैं क्योंकि बुरा गैर-मुसलमानों ने बाद वाले को गलत ठहराया है - इसलिए नहीं कि मुहम्मद ने कभी-कभी मुड़ का इस्तेमाल किया था कुरान में कहानियों के आधार के रूप में परियों की कहानियां।)) हमारे मुस्लिम स्रोत भी इसका उल्लेख नहीं करते हैं कुरान में इस कथन के लिए कोई अन्य विश्वसनीय स्रोत मौजूद है - जो इस्लाम अक्सर/हमेशा नहीं करते जब उनके पास कोई स्रोत नहीं होता है, केवल कुछ भी नहीं पर बने बयान होते हैं। बस एक परी कथा चमक उठी और एक सच्ची कहानी के रूप में इस्तेमाल की गई। अल्लाह द्वारा या मुहम्मद द्वारा, और संभवत: अल्लाह की ओर से भेजा गया है और स्वर्ग में मदर बुक से कॉपी किया गया है, शायद एक किताब अल्लाह द्वारा बनाया गया, लेकिन सबसे अधिक संभावना है - इस्लाम के अनुसार - कभी नहीं बनाया, लेकिन अनंत काल से अस्तित्व में है (असंभव है क्योंकि स्वर्गदूत पुस्तक में कम से कम एक जगह बोलते हैं, जिसका अर्थ है कि उन्हें बनाया जाना था किताब बनने से पहले - और मुहम्मद कुरान में भी बोलते हैं (कम से कम 8 जगह) और यह क्या दर्शाता है?) अनंत काल से एक मदर बुक और भगवान द्वारा उनके में पूजनीय होम - - - जैकब सीए के बाद बने प्रोटो गॉस्पेल से उद्धरण। 615 ई. यकीन मानिए अगर आप मांगना।

कुरान के अनुसार, मैरी को उनके होने वाले बेटे का नाम भी बताया गया था:

*००५ ३/४५: "- - - उसका नाम क्राइस्ट जीसस होगा - - -"। उसका नाम केवल यीशु था। शब्द क्राइस्ट एक नाम भी नहीं था, बल्कि सम्मान की उपाधि थी, और यह उनकी मृत्यु के वर्षों बाद ही उभरा - मूल रूप से अब तुर्की में क्या है। लेकिन मुहम्मद बाइबल को अच्छी तरह से नहीं जानते थे। (मसीह या

ग्रीक में क्रिस्टोस का अर्थ हिब्रू में मसीहा के समान है - अभिषिक्त व्यक्ति (जो इंगित करता है "राजा", क्योंकि पुराने इस्राएल में नए राजाओं का अभिषेक किया गया था)। इस वजह से . के कुछ संस्करण
बाइबिल एनटी में मसीहा के बजाय मसीह का उपयोग करता है, लेकिन नाम - या शीर्षक वास्तव में - वास्तव में मसीह
उनकी मृत्यु के बाद तक, यीशु से जुड़ा नहीं था)। लेकिन सुसमाचार मूल रूप से थे
ग्रीक में लिखा गया था, और ऐसे समय में जब वह शीर्षक उभरा था।

खैर, मैरी गर्भवती हो गई और गर्भावस्था की पूरी अवधि के दौरान किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया।
ऐसा होने की कितनी बड़ी संभावना है? - ऐसा होता है (ज्यादातर अगर महिला बहुत मोटी है),
लेकिन कम से कम कहने की संभावना कम है। और जब उसका समय आया, तो वह चली गई और
यीशु का जन्म एक ताड़ के पेड़ के नीचे खेत में हुआ था - बाइबिल की कहानी से काफी अलग।
मैरी उदास और डरी हुई थी, लेकिन फिर:

2. कुरान के अनुसार बेबी एंड चाइल्ड जीसस।

***006 19/24+25:" लेकिन (एक आवाज) (नवजात शिशु यीशु*) नीचे से रोया (हथेली-
पेड़): 'शोक मत करो! क्योंकि तेरे रब ने तेरे नीचे एक नाला बनाया है; 'और हिलाओ'
अपने आप को ताड़ के पेड़ का तना (आमतौर पर खजूर लगभग 50 सेमी या उससे अधिक चौड़ा होता है और
मजबूत - मानव के लिए हिलाना असंभव है: यह आप पर ताजा पके खजूर को गिरने देगा|"। इस
कहानी एक अपोक्रिफ़ल "प्रोटो गॉस्पेल" में अध्याय 20 से "उधार" ली गई है, जिसे कुछ के बाद कहा जाता है
मैथ्यू। मुहम्मद या अल्लाह द्वारा "उधार", लेकिन संभवत: से एक प्रति के रूप में नीचे भेजा गया
स्वर्ग में माँ की किताब। आप चाहें तो आखिरी पर विश्वास करें। अगर कोई मूल कहानियाँ हैं तो बहुत कम हैं
कुरान - ज्यादातर वे विभिन्न स्रोतों से "उधार" लेते हैं, लेकिन अक्सर फिट करने के लिए थोड़ा बदल जाते हैं
मुहम्मद की शिक्षा। इस विशेष मामले में कहानी "द चाइल्डबर्थ ऑफ मैरी" में भी मिलती है
और साल्वाडोर का बचपन" अगर हम नाम को सही ढंग से याद करते हैं, और शायद यह दर्ज हो गया है
कुरान "द अरब चाइल्डहुड गॉस्पेल" के माध्यम से (स्रोत; इब्न वाराक के बीच। हम अच्छी तरह से हैं
इस बात से वाकिफ हैं कि मुसलमान इब्न वाराक के बारे में बुरे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन वह हमारे कुछ गैर-
मुस्लिम स्रोत सिर्फ इसलिए कि हमने अब तक मुसलमानों को उसका दस्तावेजीकरण करने में सक्षम नहीं देखा है
किसी भी बिंदु पर गलत)। जैसा कि पहले कहा गया था: मुहम्मद ने ऐसी परियों की कहानियों से कहानियाँ लीं, और फिर
बाइबल पर झूठा होने का आरोप लगाया, जब उसने उसी तरह की किंवदंतियाँ और कहानियाँ नहीं बताईं।

मैरी घर आई और उसका परिवार नकारात्मक था, कम से कम कहने के लिए (19/27)। बिल्कुल
नवजात यीशु - अधिकतम कुछ घंटे - को अपनी माँ की रक्षा करनी पड़ी:

**007 19/30a: "मैं (बेबी जीसस*) वास्तव में अल्लाह का सेवक हूं, - - -"। 3/51 देखें। वह और
जारी रखा:

**008 19/30b: "(अल्लाह ने*) मुझे रहस्योद्घाटन दिया और मुझे (बच्चा यीशु*) एक नबी बनाया -
- -"। यहां तक कि इस्लाम (उदाहरण के लिए, तबरी द्वारा उद्धृत विद्वान इकरीमा) भी उस में असंभवता को स्वीकार करता है।
एक बच्चा एक नबी है, लेकिन उसे समझाना अस्पष्ट और काल्पनिक है। एक बहुत स्पष्ट
गलती। यह और भी अधिक है क्योंकि इस आश्चर्य का एक भी मौका नहीं है
अगर यह सच था तो एनटी में भूल गए या छोड़े गए।

**009 19/30-33: नवजात शिशु यीशु अपने पालने में लगातार बातें कर रहा है और चर्चा कर रहा है।
इसके अलावा यह एपोक्रिफ़ल (बना हुआ) चाइल्ड गॉस्पेल से "उधार" लिया गया है - इस मामले में जहाँ तक हम
"द अरब चाइल्ड गॉस्पेल" के माध्यम से जानें - जिसे "यीशु मसीह की शैशवावस्था का पहला सुसमाचार" कहा जाता है -
2. सदी से एक अपोक्रिफल ग्रंथ। एक भी मौका नहीं है कि ऐसा आश्चर्य हो
बाइबल से हटा दिया गया था, क्योंकि इससे यीशु की स्थिति काफी मजबूत होती।
यह और भी अधिक है क्योंकि एक बच्चे के रूप में यीशु के बारे में बहुत सी कहानियाँ नहीं हैं, और यह कहानी होगी
अपने जीवन के उस हिस्से को कम खाली कर दिया है। एक बार फिर एक परी कथा को एक सच्ची कहानी की तरह इस्तेमाल किया गया
अल्लाह या मुहम्मद। "कुरान का संदेश" जैसी किताब भी इसका बचाव करने में सक्षम नहीं है
एक सच्ची कहानी के रूप में, लेकिन यह केवल अनुमानों और अनुमानों को दूर करने के लिए प्रस्तुत करता है
असंभव

एक बहुत स्पष्ट रूप से सच्ची कहानी नहीं - एक स्पष्ट गलती।

हम कभी किसी मुसलमान से नहीं मिले, यह समझाते हुए कि कुरान अक्सर अपनी कहानियों को कुएं से क्यों लेता है
जाना जाता है, लेकिन किंवदंतियों और परियों की कहानियों को बनाया है, और फिर बाइबिल से मतभेदों की व्याख्या की है
इस बात पर जोर देकर कि बाइबल नकली है। और पुरानी कहानियों का प्रयोग स्पष्ट रूप से पुरानी कहानियों का कारण है
अरबों ने मुहम्मद को "सिर्फ पुरानी कहानियां सुनाने" के लिए उद्धृत किया - और वे सही थे, जैसा कि उन्होंने बस कॉपी किया था
पुरानी कहानियाँ।

जीसस के बचपन के बारे में न तो बाइबल में और न ही कुरान में बहुत कुछ कहा गया है। में

बाइबल उनका बचपन ज्यादातर कुछ अपवादों के साथ एक सामान्य बचपन रहा है, लेकिन
कुरान में वह सुसमाचार का अध्ययन करके पैगंबर बनने या बनने के लिए जल्दी तैयार था:

134

पेज 135

**010 3/48: "और अल्लाह उसे (बच्चे यीशु*) - - - सुसमाचार सिखाएगा"। एक बात यह है कि
शब्द "सुसमाचार" एकवचन में है - 4 सुसमाचार हैं। में "सुसमाचार" का उपयोग करना असामान्य नहीं है
एकवचन, लेकिन ऐसा लगता है कि मुहम्मद नहीं जानते थे कि एक से अधिक थे। **लेकिन असली
डरावना यह है कि उस समय सुसमाचार मौजूद नहीं थे - अस्तित्व में नहीं हो सकते थे, क्योंकि वे हैं
यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान की कहानी, और इस प्रकार उनके बाद तक नहीं लिखी जा सकती थी
मृत्यु और पुनरुत्थान।** सबसे पुरानी रचना उनकी मृत्यु के लगभग 25 वर्ष बाद लिखी गई है (या हो सकता है a
थोड़ा पहले, नए विज्ञान के अनुसार - स्रोत: न्यू साइंटिस्ट)। हमें एक अकेला भगवान दिखाओ कि
वह नहीं पता था। लेकिन जैसा कि पहले कहा गया था: मुहम्मद बाइबल को अच्छी तरह से नहीं जानते थे। 3/3 भी देखें।

हम जोड़ सकते हैं कि बहुत से मुसलमान आपको बताएंगे कि कुरान 4 ज्ञात के बारे में बात नहीं कर रहा है
सुसमाचार, लेकिन एक पुराने के बारे में वे दावा करते हैं कि गायब हो गया है। और वे आंशिक रूप से सही हो सकते हैं
एक बिंदु - यह हो सकता है कि एक बार एक और और पुराना सुसमाचार था, हालांकि इतना पुराना नहीं था कि
यीशु इसे न तो एक बच्चे के रूप में पढ़ सकता था, न ही एक वयस्क के रूप में। 3 सुसमाचार इतने समान हैं, कि यह है
स्पष्ट है कि एक संबंध है, और संभावित स्पष्टीकरणों में से एक यह है कि वे सभी सामग्री लेते हैं
एक पुराने सुसमाचार से। लेकिन अजीब तरह से मुसलमान कभी भी अन्य संभावित स्पष्टीकरण का उल्लेख नहीं करते हैं:
कि दो सबसे कम उम्र के लोगों ने केवल 3 में से सबसे पुराने से सामग्री ली। और अजीब तरह से
इमाम अपनी मण्डली को कभी नहीं बताते कि वास्तव में एक सुसमाचार क्या है। मुसलमानों के लिए हानिकारक अंक
हैं:

1. एक सुसमाचार यीशु के जीवन, मृत्यु का इतिहास है
   और पुनरुत्थान, मुख्य बिंदु होने के साथ
   उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान - के लिए अंतिम प्रमाण
   किसी अलौकिक चीज से उसका संबंध।
   पहले भी बहुत सारे सबूत थे
   बाइबिल और कुरान दोनों के अनुसार
   - उनके कई चमत्कार। लेकिन उसका पुनरुत्थान
   के बारे में कोई विवाद या इनकार किया
   कुछ अलौकिक की भागीदारी
   असंभव। लेकिन सभी में मुख्य बिंदुओं के रूप में
   सुसमाचार उसकी परीक्षा है, उसकी मृत्यु है, और उसका
   पुनरुत्थान, उसके बाद तक कोई भी सुसमाचार मौजूद नहीं हो सकता था
   उसकी मौत। और कोई कहानी नहीं जिसमें उसका मुकदमा भी शामिल नहीं है,
   मृत्यु और पुनरुत्थान एक सुसमाचार है, क्योंकि
   फिर वही बिंदु जो इसे सुसमाचार बनाता है -
   उसका पुनरुत्थान और इस प्रकार . का अंतिम प्रमाण
   कुछ अलौकिक शामिल किया जा रहा है, और
   अँधेरी ताकतों पर उसकी अंतिम जीत के बारे में - is
   वहाँ नहीं। (नीचे बिंदु 3 भी देखें)।
   ज्ञात है कि मुहम्मद वास्तव में नहीं जानते थे
   बाइबिल, और विशेष रूप से एनटी नहीं, और ऐसा लगता है
   जैसे उसने वास्तव में बिना "सुसमाचार" शब्द का प्रयोग किया था
   इसका मतलब जानना। साथ ही आधुनिक
   मुसलमान - कम से कम छोटे वाले
   शिक्षा - क्या a . के बारे में अस्पष्ट विचार हैं
   सुसमाचार है, और बस कहता है कि वहाँ होना चाहिए
   यीशु ने जो पढ़ा, वह बड़ा था, जो इस प्रकार है
   आप देखते हैं एक असंभव है। (बेशक कुछ
   फिर सर्व-विजेता तर्क का प्रयास करें कि
   अल्लाह जानता था और बता सकता था - - - लेकिन फिर हम
   एक बार फिर इस तथ्य के खिलाफ हैं कि पूर्ण

१३५

अल्लाह के लिए दिव्यदृष्टि मुफ्त के साथ संयुक्त
मनुष्य के लिए इच्छा भी असंभव है, एक सच्चाई है
जिसे इस्लामी विद्वान भी मानते हैं, हालांकि अधिकांश
अनिच्छा से, और बहुत ही लंगड़ा जोड़ के साथ
कि "सब एक समान यह सच होना चाहिए, क्योंकि यह है
कुरान में बताया" (!!!))

2. हम जानते हैं कि अगर कभी कोई पुराना अस्तित्व में था
सुसमाचार, हम स्वतः ही यह भी जान लेते हैं कि
यीशु की मृत्यु के बाद लिखा गया था, इसलिए यीशु कर सकता था
इसका अध्ययन नहीं किया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक सुसमाचार as
कहा यीशु के जीवन, मृत्यु और की कहानी है
जी उठने (जो ज्यादातर मुसलमान नहीं करते
पता लगता है), और इस प्रकार नहीं हो सकता
उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद तक लिखा गया -
और इस प्रकार हम जानते हैं कि मामले में लिखा नहीं गया था
33 ई. के बाद तक। (वास्तव में अधिक
संभावना सीए. 27-28 ई. यह ज्ञात है कि यीशु
सबसे अधिक संभावना 33 वर्ष की थी जब उनकी मृत्यु हुई, लेकिन
अंतरराष्ट्रीय कालक्रम सबसे अधिक संभावना है कुछ
साल गलत - काफी संभावना 5 - 6 साल देर से)।

3. यदि कभी इतना पुराना सुसमाचार होता, कि
इसका मतलब है कि यह समय के और भी करीब था
हुआ, और इस प्रकार 3 का उल्लेख करता है
सुसमाचार और भी अधिक विश्वसनीय हैं जैसा कि वे मामले में करते हैं
अपनी सामग्री को एक बहुत ही लिखित सुसमाचार से लिया
यीशु की मृत्यु के कुछ ही समय बाद, और इस प्रकार एक समय में
जब जो हुआ वो और भी ताज़ा था
लोगों और समाज के दिमाग और
लेखक। लेकिन यीशु के लिए अध्ययन करना अभी भी असंभव है,
जैसा कि नहीं था - नहीं हो सकता - उसके बाद तक मौजूद नहीं था
मौत।

(हम जोड़ सकते हैं कि "सुसमाचार" का अर्थ है "अच्छी खबर" या "खुशखबरी" या "खुशखबरी"। आप मिलते हैं
यह शब्द कुछ बाइबलों और अन्य साहित्यों में इस तरह प्रयोग किया जाता है, लेकिन तब इसे सामान्य रूप से लिखा जाता है
"सुसमाचार" नहीं "सुसमाचार"।) सिमिलरी 5/46 - 5/110 - 57/27 में दावा करता है।

केवल एक और चमत्कार का उल्लेख है - और वास्तव में उनके बचपन के बारे में क्या बताया गया है
कुरान में बाइबिल का उल्लेख नहीं है - (उनकी बात करने और बहस करने के अलावा जब वह न्यायसंगत थे
घंटे पुराना) बचपन से:

*०११ ३/४९: "मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ, जिसमें मैं तुम्हारे लिए उसमें से कुछ बनाता हूँ।
मिट्टी, जैसा कि एक पक्षी की आकृति थी, और उसमें सांस लें, और यह अल्लाह के द्वारा एक पक्षी बन जाता है
छोड़"। इसके अलावा यह आश्चर्य एनटी से कभी नहीं छोड़ा गया था अगर यह सच था - 3/37 देखें। परंतु
वास्तव में यह "परी कथा" चाइल्ड गॉस्पेल (यह एक) में से एक में बनाई गई किंवदंतियों से लिया गया है
थॉमस चाइल्ड गॉस्पेल से आया है - जिसे "द थॉमस गॉस्पेल ऑफ़ द इन्फेंसी ऑफ़" भी कहा जाता है
जीसस क्राइस्ट"- एक अपोक्रिफल (= बना हुआ) २ सदी से एक)। एक भगवान ने बच्चे को जाना था
गॉस्पेल बनाए गए थे - मुहम्मद स्पष्ट रूप से नहीं। इसके अलावा: यह दुनिया को क्या बताता है कि
कुरान अल्लाह के लिए एक अप्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में एक गढ़ी हुई कहानी का उपयोग करता है? और यह के बारे में क्या बताता है
मुहम्मद के कई कथनों की विश्वसनीयता जब बाइबिल और के बीच भिन्नता है

कुरान का कारण यह है कि बाइबिल को गलत ठहराया गया है, जब यह स्पष्ट है कि कारण यह है कि
कुरान परियों की कहानियों से उद्धृत कर रहा है?

3. कुरान के अनुसार पैगंबर यीशु।

***०१२ ६१/६: "- - - (यीशु ने कहा*) मैं अल्लाह का रसूल हूँ - - -"। अगर यीशु ने कहा था

बहुत दूर के विदेशी से ज्ञात बहुदेववादी ईश्वर अल-लाह के बारे में कुछ ऐसा ही है
देश, एक बात के लिए उसके कई अनुयायी नहीं थे, और दूसरे के लिए: पादरी के पास एक ही बार में था
उसके पास उसे मारने का बहाना था - और बहुत पहले उन्होंने वास्तव में किया था। यह श्लोक है
30 के आसपास इज़राइल में धार्मिक और राजनीतिक वास्तविकताओं को नहीं जानने वाले किसी व्यक्ति द्वारा रचित
ई. 4/157 - 5/72 - 5/117 में इसी तरह के दावे।

वही जीसस - कुरान के अनुसार - अल्लाह के दास थे:

०१३ ४/१७२: "मसीह अल्लाह की सेवा और पूजा न करने का तिरस्कार करता है।" 3/51 में में फंसा है
स्पष्टीकरण यह गलत क्यों है - पूरी सूची देखें। एकमात्र संभव अपवाद है यदि यहोवा और
वास्तव में अल्लाह वही ईश्वर है। लेकिन केवल इस्लाम ही यह कहता है, और यहोवा की शिक्षाएँ
(विशेष रूप से एनटी में) अल्लाह की शिक्षाओं से आवश्यक बिंदुओं पर इतने अलग हैं कि वे
वह एक ही भगवान नहीं हो सकता जब तक कि वह मानसिक रूप से बीमार (सिज़ोफ्रेनिक) न हो। इस्लाम के मामले में करना होगा
साबित करो कि वे क्या कहते हैं।

और निश्चित रूप से वह कुरान के अनुसार शिष्यों के लिए अच्छे मुसलमान चाहते थे:

०१४ ६१/१४: "- - - यीशु ने कहा - - - चेलों के लिए,' (कार्य) के लिए मेरा सहायक कौन होगा
अल्लाह?"' पूरी सूची में 61/6a + 61/6b + 3/51 देखें। 3/52 में इसी तरह का दावा।

और निश्चित रूप से वे - यहाँ भी कुरान के अनुसार - अच्छे मुसलमान थे:

०१५ ५/१११: "(चेले*) ने कहा: "हमें विश्वास है, और क्या आप गवाही देते हैं कि हम झुकते हैं
मुसलमानों के रूप में अल्लाह "। मेड अप स्टोरी - स्पष्टीकरण के लिए 3/51 देखें। 3/52 - 61/14 में इसी तरह के दावे।

परन्तु चेलों को भी प्रमाण चाहिए थे (उन सभी चमत्कारों के अतिरिक्त जो यीशु ने के अनुसार किए थे)
बाइबिल और कुरान दोनों):

०१६ ५/११४: "हमें (यीशु और चेले*) स्वर्ग से एक टेबल सेट (विंड के साथ), - - - भेजें।
एक गढ़ी हुई कहानी - ऐसा कोई चमत्कार नहीं है जो स्पष्ट रूप से यीशु के संबंध को दर्शाता हो
यहोवा के लिए, बाइबल से हटा दिया जाएगा। एक भी मौका नहीं। भले ही मुहम्मद ने
सही था और ईसाइयों ने एनटी को गलत ठहराया था, इस तरह की कहानियां उनके पास होंगी
जोड़ा गया, छोड़ा नहीं गया। कुछ मुसलमानों का कहना है कि यह "ईश्वर की प्रार्थना" के लिए थोड़ा सा उल्लेख कर सकता है - "दे"
हमें हमारी दैनिक रोटी" - बाइबिल में। अधिक संभावना है कि यह पिछले ईस्टर का एक विपरीत संस्करण है
रात का खाना।

कुरान एक उपदेशक के रूप में या उनकी शिक्षाओं के बारे में यीशु के बारे में लगभग कुछ भी नहीं बताता है। मुख्य
मुहम्मद के लिए बिंदु थे कि यीशु एक अच्छा मुसलमान था और भले ही यीशु एक
महान भविष्यवक्ता - और बाइबिल और कुरान दोनों के अनुसार एक वास्तविक भविष्यवक्ता - वह वास्तव में
महानतम का कोई मुकाबला नहीं था: मुहम्मद।

00a 5/75: "मरियम का पुत्र मसीह, एक दूत से अधिक कुछ नहीं था; - - -"। बाइबल कहती है
कुछ और - कि यीशु ने यहोवा को अपना पिता कहा, और हमेशा केवल अपने आध्यात्मिक से दूर
पिता - और जैसा कि बाइबिल यीशु की मृत्यु के बाद अपेक्षाकृत कम समय में लिखा गया है, और इस बिंदु पर

हजारों गवाहों का आधार जो बता सकते हैं कि यीशु ने क्या कहा था, और अगर कथाकार का विरोध करें
जीसस को गलत तरीके से उद्धृत किया, यह संभावना है कि कुरान की तुलना में बाइबिल यहां अधिक विश्वसनीय है। NS
कुरान ६०० साल बाद लिखा गया है, और बिना किसी सबूत के केवल निराधार बयान देता है या
यहां तक कि इंडिकिया भी बयानों का समर्थन कर रही है। यह और भी अधिक के लिए एकमात्र इस्लामी स्रोत के रूप में
बयान, निम्न गुणवत्ता वाले नैतिक व्यक्ति थे, और एक व्यक्ति जो महानतम होने का दावा करता था
हर समय के भविष्यवक्ता, कुछ ऐसा निश्चित रूप से वह नहीं हो सकता था यदि यीशु यहोवा का एक रिश्तेदार था।

जैसा कि उल्लेख किया गया है कि स्वयं यीशु ने अक्सर यहोवा को अपना पिता कहा - और यीशु विश्वसनीय भी है
कुरान के अनुसार। एक चिपचिपा तथ्य इस्लाम स्वीकार नहीं कर सकता (जैसा कि कुरान/मोहम्मद ने कहा है)
यह स्वीकार नहीं कर सकता कि यीशु यहोवा का पुत्र हो सकता है, क्योंकि तब मुहम्मद नहीं हैं
"भविष्यद्वक्ताओं" में सबसे महान - और मुहम्मद की रक्षा भी आवश्यक है, क्योंकि वह वास्तव में एक था
संदिग्ध और अनैतिक चरित्र)। 3/59 - 4/171 - 19/34 में इसी तरह के दावे।

00b ४३/८१: "यदि (अल्लाह) परम कृपालु का एक बेटा होता, तो मैं (मुहम्मद) सबसे पहले होता
पूजा"। कुछ सबूत !! परन्तु उसके लिए: यीशु अभी भी यहोवा को पिता कह रहा है। और कोई भी

इतिहास के तटस्थ प्रोफेसर कहेंगे कि सभी सामान्य नियमों के अनुसार, बाइबल होनी चाहिए
सही इतिहास के स्रोत के रूप में कुरान की तुलना में अधिक विश्वसनीय: यीशु के समय के बहुत करीब,
अच्छे स्रोतों के बिना हजारों गवाह, कई कथाकार, बनाम एक एकल कथाकार 600
वर्षों बाद - और यहां तक कि एक संदिग्ध चरित्र का व्यक्ति और यीशु को कम करने के लिए मजबूत मकसद के साथ
खुद सबसे महान पैगंबर बनें - और एक व्यक्ति स्पष्ट रूप से सत्ता की लालसा रखता है (बस कुरान पढ़ें
और हदीस - यह देखना स्पष्ट है।) और एक आदमी जिसे निश्चित रूप से एक के रूप में स्वीकार नहीं किया गया था
विश्वसनीय न्यायिक प्रणाली वाले किसी भी देश में विश्वसनीय गवाह। (**वास्तविक और ऐतिहासिक
मुहम्मद चमकदार अर्ध-संत इस्लाम से कुछ अलग थे और
मुसलमानों का दावा- एक दावा जरूरी बना दिया क्योंकि सारा इस्लाम सिर्फ इसी आदमी पर बना है
शब्द**)।

०१७ ५/११६ए: "क्या तुमने (यीशु*) लोगों से कहा, 'मुझे और मेरी माँ को देवताओं के रूप में पूजा करो
अल्लाह का अपमान'?" यीशु अल्लाह के साथ शामिल नहीं थे - पूरी सूची में 3/51 देखें
व्याख्या। जहाँ तक एक दिव्य यीशु के लिए है, यह स्पष्ट रूप से बाइबल में नहीं कहा गया है, लेकिन कई जगहों पर यह है
समझ गया कि वह था (उदाहरण के लिए अगर यहोवा वास्तव में किसी तरह से उसका पिता था)। लेकिन जब यह
मरियम के पास आता है, इस्लाम सही है - संत बाइबल की शिक्षा का हिस्सा नहीं हैं (दूसरी ओर)
हाथ भी कुछ मुसलमानों के संत हैं, विशेष रूप से शिया)। **और सब एक ही कुरान है
यहाँ बहुत गलत है: मैरी कभी भी ट्रिनिटी का हिस्सा नहीं थी।** नीचे 5/116b देखें।

०१८ ५/११६बी: मोहम्मद का मानना था कि ट्रिनिटी में भगवान / यहोवा, यीशु और मैरी शामिल थे।
गलत। मुहम्मद और कुरान दोनों ही चरम रूप से गलत थे, जब वे इस प्रकार
माना जाता है कि मैरी ट्रिनिटी का हिस्सा थीं। इसमें परमेश्वर/यहोवा, यीशु और पवित्र का (?) शामिल है
आत्मा - जिसे "पवित्र भूत" या "सत्य की आत्मा", "ईश्वर की आत्मा" या केवल "पवित्र आत्मा" भी कहा जाता है।
आत्मा"। मुहम्मद ने पवित्र आत्मा को कभी नहीं समझा, भले ही उन्होंने इसे कुछ (3) बार इस्तेमाल किया हो
कुरान में - और कुछ मुसलमान कुरान में पवित्र आत्मा को के दूसरे नाम के रूप में संदर्भित करते हैं
आर्क एंजेल गेब्रियल (!) 5/117 भी देखें। 61/6 . में भी ऐसा ही दावा

00c 5/46: "हमने (अल्लाह *) ने मरियम के पुत्र यीशु को कानून की पुष्टि करते हुए भेजा (मूसा * का)"।
बाइबिल के अनुसार जीसस को पुराने नियमों को बदलने के लिए नहीं भेजा गया था - यह उनका मुख्य नहीं था
प्रयोजन। **वही जो उसने किया था - कुछ को बदला और कुछ को रद्द भी किया
उन्हें, विशेष रूप से यहूदी धार्मिक द्वारा समय के माध्यम से किए गए सभी परिवर्धन में से कई
विचारक और नेता। यह उनके अंतिम ईस्टर को कमोबेश औपचारिक रूप दिया गया था, जब नया
अनुबंध पेश किया गया था।** (इस वाचा का इस्लाम और अधिकांश मुसलमानों द्वारा कभी उल्लेख नहीं किया गया है
धार्मिक शिक्षा के बिना इसके बारे में सुना भी नहीं है। यह भले ही यह इनमें से एक है
ईसाई धर्म में मुख्य और सबसे केंद्रीय तथ्य।) 61/6 में इसी तरह का दावा।

१३८

पेज 139

जब कुरान में वर्णित मुहम्मद के बारे में भविष्यवाणी करने की बात आती है, तो ऐसा लगता है
कि बस यही था और इस्लाम और मुसलमानों के लिए स्वयं मुहम्मद की तुलना में अधिक आवश्यक है,
क्योंकि वह अक्सर उस विषय पर नहीं लौटता था (या हो सकता है कि वह सावधान था क्योंकि उसे संदेह था
या पता था कि यह सच नहीं था?) हालाँकि, इस्लाम और मुसलमानों के लिए यह एक आवश्यक प्रश्न है, क्योंकि
इस्लाम के पास न तो अल्लाह के लिए न ही मुहम्मद के संबंध के लिए एक भी वैध प्रमाण है
भगवान - एक वास्तविक भविष्यवाणी अगर सबूत नहीं होती, तो कम से कम एक अच्छा संकेत होता। इसके अतिरिक्त
कुरान बताता है कि मुहम्मद को ओटी और एनटी दोनों में ढूंढना आसान है, और फिर इस्लाम को उसे ढूंढना होगा
"आओ नर्क या उच्च जल" - यदि नहीं तो कुरान गलत है और फिर कुछ गलत है
धर्म। मुस्लिम पादरियों के लिए यह दावा कितना आवश्यक है, इसका एक संकेत हदीसों में है-
एफ। भूतपूर्व। अल-बुखारी - आप मुहम्मद के बारे में "उद्धरण" पाते हैं जो संभवतः बाइबिल से लिया गया है
और संभवतः बाइबिल से मुहम्मद के समय के बारे में उद्धृत किया गया था (और इस प्रकार यह है
इस्लाम के लिए यह दावा करना भी असंभव है कि बाइबल को बाद में गलत ठहराया गया है), जो कि से नहीं हैं
बाइबिल, लेकिन टिप्पणीकार इस बारे में एक शब्द भी फुसफुसाते नहीं हैं कि उद्धरण गलत हैं, लेकिन
केवल उन पाठकों को देना जो बाइबल नहीं जानते (= f. उदा. ९९.९% मुसलमान) यह मानते हैं कि यह a . है
"सच्चाई" और सही उद्धरण)। अल-तकिया।

***019 61/6c: "- - - (यीशु ने कहा: मैं हूं*) एक दूत के आने के बाद खुशखबरी दे रहा है
मैं, जिसका नाम अहमद होगा (मुहम्मद* नाम का दूसरा रूप) - - -"। **ये है
काफी मजेदार कविता, जैसा कि आप मुसलमानों से मिलते हैं जो जोर देकर कहते हैं कि यह बाइबिल से है। लेकिन वहाँ नहीं है
दूर से बाइबल में ऐसा कुछ भी, और न ही कुछ 13ooo प्रासंगिक में
६१० ईस्वी से पुराने समय के दौरान पाए गए शास्त्र या अंश – इसमें कुछ ३०० शामिल हैं
सुसमाचारों से।** यह केवल कुरान में पाया जाता है। साथ ही **आपको एक भी केस नहीं मिलता है
ओटी जहां दूर के भविष्य के बारे में एक भविष्यवाणी जिसमें एक स्पष्ट नाम का उल्लेख है। लेकिन यहाँ - ओ
आश्चर्य! - सबसे सुविधाजनक रूप से दिया गया अचूक नाम है।**

और यह याद रखने योग्य है कि नए संप्रदायों या धर्मों के निर्माताओं के लिए यह काफी आम है
खुद को एक मातृ धर्म से जोड़ लें और उसे झुका दें - या यहां तक कि हाईजैक (इसके कुछ हिस्से)। NS
Amaddijja-मुसलमानों के संस्थापक वास्तव में नवीनतम उदाहरणों में से एक हैं, और मॉर्मन बताते हैं
पृथ्वी पर अपने अंतिम दिनों के दौरान यीशु ने अमेरिका का दौरा किया। ऐसी बातें जड़ें, विश्वास और देती हैं
एक आंदोलन के लिए वजन।

यीशु ने अपने चेलों से कहा कि पवित्र आत्मा (जिसे पवित्र आत्मा भी कहा जाता है, परमेश्वर का आत्मा,
सत्य की आत्मा, या केवल आत्मा - अल्लाह की तरह और मुहम्मद की तरह इसके एक से अधिक नाम हैं)
शीघ्र ही आना चाहिए - जो उसने किया। और उन्होंने कहा कि उन्हें खुद एक बार "टू" लौटना चाहिए
जीवित और मृत का न्याय करो"। लेकिन किसी और के बारे में एक भी शब्द नहीं - और न ही उल्लेख करने के लिए
एक विदेशी नाम के साथ यहूदी सवाल करेंगे।

हम एक जगह के बारे में जानते हैं जहां मुहम्मद का उल्लेख किया गया है: बरनबास इंजील में - एक मोस्ट
अपोक्रिफ़ल पुस्तक - हमारे एक स्रोत के अनुसार इसे ख़लीफ़ा के दरबार में भी लिखा जा सकता है
बगदाद में (बहुत अजीब नहीं है अगर यह मुहम्मद का उल्लेख करता है)। आपको सबूत बनाने होंगे
केवल अगर आपके पास कोई वास्तविक नहीं है। मुसलमान कभी-कभी आपको बताते हैं कि यह "सुसमाचार" एक वास्तविक है।

लेकिन मुसलमान जिस मानक व्याख्या का पालन करते हैं - बिना सबूत के: बाइबल को गलत ठहराया गया है और
गलत षडयंत्रों से निकाला गया मुहम्मद का नाम - उस क्षेत्र के लोगों में तीव्र प्रवृत्ति होती है
षड्यंत्र के सिद्धांतों की तलाश करें और उन पर विश्वास करें (हमारे पास एक निजी सिद्धांत है कि इसका कारण यह है कि
उन्हें अपने इतिहास में कभी भी अपेक्षाकृत विश्वसनीय जानकारी के लिए उपयोग नहीं किया गया है)। लेकिन उस मामले में:

1. पहले ईसाइयों का जीवन रहा था
   पूरी तरह से अलग - और उनके समय का पैमाना था
   पूरी तरह से अलग थे अगर उनमें से कोई था

   एक और भविष्यवक्ता के बारे में सुना, जिसकी अपेक्षा की जा सकती है
   यीशु की वापसी से पहले "जीवितों का न्याय करने के लिए"
   और मृत "। (वे वापसी जानेंगे
   यीशु की तुलना में अधिक समय लगेगा
   वे अब विश्वास करते थे, "भविष्यद्वक्ता" को समय देने के लिए
   काम करने के लिए)।
2. एनटी की सामग्री अलग थी -
   कम से कम पत्र अलग नहीं थे। यह
   बस एक परी कथा है जो मजबूत करने के लिए बनाई गई है
   मुहम्मद का पैगंबर होने का दावा - जैसे
   कुछ अन्य स्व-घोषित भविष्यद्वक्ता। (**बल्कि
   विडंबना, क्योंकि उसके पास होने का उपहार नहीं था
   भविष्यवाणी करने में सक्षम - उसने भी नहीं किया
   दावा करें या दिखावा करें कि उसके पास यह था - वह वास्तविक नहीं था
   नबी. किसी के लिए एक दूत or
   कुछ शायद, लेकिन वास्तविक नहीं
   नबी**)।
   1. मुसलमान केवल अपने दावे का समर्थन करते हैं
      बाइबिल में प्रयुक्त एक ग्रीक शब्द पर:
      "पैराक्लेटोस" जिसका अर्थ है "सहायक" -
      पृथ्वी छोड़ने से पहले यीशु ने वादा किया था
      अपने शिष्यों को एक सहायक भेजो - पवित्र
      आत्मा (जो कुछ दिनों बाद आई
      - व्हिटसन में - बाइबिल के अनुसार
      (एक कहानी जिसे नकारा नहीं गया है
      कुरान))।
   2. इस्लाम का दावा है कि "पैराक्लेटोस" एक है
      एक और ग्रीक शब्द के लिए गलत वर्तनी
      "पेरिक्लीटोस", जिसका अर्थ है "अत्यधिक"
      की सराहना की"। अरामी में "अत्यधिक"
      स्तुति" का अर्थ है "महामना"
      जो उस शब्द के दूसरे भाग के रूप में
      एक क्रिया "हमीदा" (= स्तुति करने के लिए) और as . है
      एक संज्ञा "हम्द" (कानून या स्तुति)। अगर तुम

फिर अरब के नाम जारी रखें
मुहम्मद और अहमद (दूसरा)
मुहम्मद नाम का संस्करण) दोनों
"हमीदा" या "हम्द" से निकला है
इस्लाम के अनुसार। जो इस्लाम के लिए
और सभी मुसलमान इसके लिए एक मजबूत सबूत हैं
कि "पैराकेलेटोस" वास्तव में है
गलत वर्तनी और इसका अर्थ है "मुहम्मद"
जॉन के बाद सुसमाचार में (f. पूर्व जॉन
14/16)। करने के लिए एक बहुत ही ठोस सबूत नहीं है
इसे कम से कम कहें - और इसके अतिरिक्त:

3. शब्द "पेरिक्लीटोस" कि इस्लाम
दावों की वर्तनी गलत है - केवल
संभावना है कि उन्हें जवाब मिलना होगा
वे चाहते हैं और सख्त जरूरत है (वे
इसकी सख्त जरूरत है, क्योंकि कुरान

स्पष्ट रूप से बताता है कि मुहम्मद
एनटी में भी भविष्यवाणी की - - - और वह है
वहाँ नहीं) - में बिल्कुल मौजूद नहीं है
बाइबिल, एनटी में उल्लेख नहीं करने के लिए। यह है
एक बार इस्तेमाल नहीं किया।

4. शब्द "पेरिक्लीटोस" भी नहीं है
सभी में एक बार मिला कुछ
13oo प्रासंगिक पांडुलिपियां और
टुकड़े विज्ञान पहले से जानता है
610 ई. न तो एक ही जगह या
समय, न ही अनेकों में से एक में
पांडुलिपियां
5. न ही यह के उद्धरणों में पाया जाता है
बाइबिल कुछ 30ooo अन्य पुराने में मिली
पांडुलिपियां
6. शब्द "पेरिक्लीटोस" बस कभी नहीं
पुराने शास्त्रों में इस्तेमाल किया गया था कि
बाइबिल बन गया। वह शब्द है
हर जगह इस्तेमाल किया जाने वाला "पैराक्लेटोस" है -
"सहायक" (और एक सहायक वह था जो
शिष्यों की आवश्यकता)। यह प्रत्येक के लिए जाता है
और हर ज्ञात प्रति।
7. इसके अलावा: यह कैसे संभव हो सकता है
झूठा - जैसा कि इस्लाम दावा करता है - वही
हजारों में एक ही तरह से शब्द और
दसियों या सैकड़ों हजारों
पांडुलिपियां - और प्रत्येक को कैसे खोजें
और प्रत्येक में प्रत्येक "पेरिक्लीटोस" और
हर कई अलग
पांडुलिपियां - उन सभी में फैली हुई हैं
देश? - और सबसे ऊपर: एक में
कम यात्रा के साथ समय और शायद ही कोई
मीडिया इस्लाम को साबित करना मुश्किल काम है
उनका दावा - और याद रखें: यह है
दावा करने वाले जिन्हें साबित करना होता है
उन्हें, दूसरों को इसका खंडन करने के लिए नहीं। इस
अक्सर भुला दिया जाता है जब मुसलमान
ढीले दावों और बयानों को फेंक दें
चारों तरफ।
8. बड़ी संख्याएँ भी हैं (30ooo .)
?) गैर-धार्मिक पांडुलिपियों या
टुकड़े जो बाइबिल को संदर्भित करते हैं।
जब भी उन में यह शब्द पॉप अप होता है

इसे बिलेटोस किसी लिखा है। इस्लाम शिक्षित करें
समझाएं कि यह कैसे खोजना संभव था
और इन सभी "कागजात" को झूठा बनाने के लिए, और
कम से कम कैसे मिटाना संभव था
स्याही और ऐसे में एक और शब्द लिखें

एक तरीका है कि यह आधुनिक के लिए असंभव है
विज्ञान मिथ्याकरण के निशान खोजने के लिए।

9. अरबों को लगता है कि यह तर्कसंगत है कि पैराकलेटोस
   और पेरिक्लिटोस मिलाया जा सकता है - में
   पुराने अरब वर्णमाला और शास्त्र यह
   बस इसका मतलब था कि किसी ने अनुमान लगाया था
   लिखित स्वर गलत नहीं हैं। लेकिन नहीं
   तो ग्रीक के लिए, पहले से ही ग्रीक के रूप में और ए
   बहुत समय पहले एक पूर्ण था
   वर्णमाला जहाँ सभी अक्षर लिखे गए थे।
   इस प्रकार की गलत वर्तनी इसलिए है
   ग्रीक में तार्किक नहीं।
10. मुसलमान यह समझाने की कोशिश करते हैं कि यह हो सकता है
    पवित्र आत्मा का प्रश्न न हो,
    क्योंकि पवित्र आत्मा पहले से ही था
    वर्तमान। और पवित्र आत्मा थी
    उपस्थित या यीशु का दौरा किया। **लेकिन यह था
    शिष्यों का हिस्सा नहीं - और वह
    Whitsun . में क्या हुआ था
    बाइबिल के अनुसार: वे प्रत्येक
    आत्मा के साथ व्यक्तिगत संपर्क मिला,
    और यह काफी हद तक एक का बदलाव है
    परिस्थिति।**
11. मुसलमान भी कहते हैं कि दो अलग-अलग
    आत्मा के लिए नामों का उपयोग किया जाता है (आत्मा
    सत्य और पवित्र आत्मा की (आप .)
    वास्तव में पवित्र आत्मा भी है,
    परमेश्वर की आत्मा (१. मूसा १/२) और केवल
    आत्मा)) यह साबित करता है कि जॉन करता है
    पवित्र आत्मा का मतलब नहीं है, जब वह
    "सत्य की आत्मा" नाम का उपयोग करता है -
    "सत्य की आत्मा" का अर्थ होना चाहिए
    मुहम्मद जो अपने अनुयायियों से झूठ बोलता है
    कुरान में ("चमत्कार नहीं करेंगे-
    एक विश्वास", एफ। उदा.) और उसकी सलाह दी
    लोग अल-तकिया का उपयोग करते हैं या यहां तक कि तोड़ते भी हैं
    उनकी शपथ अगर इससे बेहतर परिणाम मिले।
    अन्य सभी गलत तर्क के अलावा
    यहाँ, यह दावा उतना ही तार्किक है जितना कि
    दावा है कि अल्लाह के 99 नाम
    इसका मतलब है कि 99 अलग-अलग देवता हैं, या
    मुहम्मद . के 5-6 या अधिक नाम
    इसका मतलब है कि उसके 5-6 या अधिक थे।
    आत्मा का नाम बस द्वारा रखा गया है
    अलग-अलग नाम (कम से कम 5) – और in
    इसके अलावा यह बिल्कुल स्पष्ट है कि
    पूरी बाइबल में केवल एक ही आत्मा है
    यहोवा के साथ एक विशेष संबंध के साथ।
12. केवल एक ही निष्कर्ष है -
    निष्कर्ष विज्ञान ने बहुत पहले बनाया है

- इसमें बनाना संभव: यह
इस्लामी दावा - कई अन्य लोगों की तरह -
या तो झूठ है (एक अल-तकिया?) or
वास्तविकता पर नहीं आशाओं के आधार पर कामना करना। और फिर भी "किशमिश"
सॉसेज में" का उल्लेख नहीं है:

13. **यीशु ने अपने चेलों से वादा किया था a सहायक - एक पैराकलेटोस। यदि उसने किया होता मतलब मुहम्मद, कैसे हो सकता है मुहम्मद उनके सहायक हो जब वे सभी 500 साल पहले मर चुके थे वह भी पैदा हुआ था ??** यह बस है निरर्थक या इच्छाधारी सोच।
14. आगे की भावना के अनुसार बाइबिल में वही छंद जो मुसलमान बोली, देखा नहीं जा सका। मुहम्मद देखना मुश्किल नहीं था।
15. और एक और "किशमिश": में भी इसी छंद में कहा गया है कि आत्मा हमेशा के लिए उनके साथ रहना चाहिए। मुहम्मद निश्चित रूप से साथ नहीं थे उन्हें हमेशा के लिए - वह साथ भी नहीं था उन्हें।

वास्तविकता पर नहीं आशाओं के आधार पर कामना करना? - या एक झांसा? - या झूठ/अल-तकिया? कम से कम विज्ञान ने बहुत पहले पुरानी पांडुलिपियों से साबित हुआ कि यह सच नहीं है - इस पर बाइबल को कभी भी गलत नहीं ठहराया गया था या तो बिंदु। (लेकिन इस्लाम को उसे कहीं ढूंढ़ना है, नहीं तो कुरान गलत है .)
यह इस्लाम के लिए बहुत आवश्यक बिंदु है - और फिर इस्लाम के साथ कुछ गंभीर रूप से गलत है)।
7/157 भी देखें।

(हमें यह भी उल्लेख करना चाहिए कि अपोक्रिफल (बनाया गया) "बरनबास का सुसमाचार" कभी-कभी अभी भी
एक तर्क के रूप में प्रयोग किया जाता है, क्योंकि वहां मुहम्मद का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है (कोई आश्चर्य नहीं कि
सिद्धांत है कि यह बगदाद में अदालत में बना है सही है)। हालाँकि, खेदजनक तथ्य यह है कि एक निर्मित
ऊपर का सुसमाचार एक बना हुआ सुसमाचार है (उनमें से कई हैं) - और यह इसके बारे में कुछ बताता है
इस्लाम के पास तर्कों की कमी है कि वे जोर देकर कहते हैं कि हो सकता है कि यह बना न हो, और
इसलिए मुहम्मद के लिए एक प्रमाण है, जब विज्ञान एकमत है: यह झूठे लोगों में से एक है।
वास्तविकता में "बरनबास का सुसमाचार" केवल यही साबित करता है कि इस्लाम का कोई वास्तविक नहीं है
उनके दावे के लिए दस्तावेज़ीकरण कि मुहम्मद का उल्लेख NT में किया गया है, क्योंकि उन्हें सहारा लेना पड़ता है
इस तरह के तर्क के लिए)।

लेकिन इस बात का सबसे ठोस सबूत है कि बाइबल गलत नहीं है, इस्लाम से ही मिलता है। अगर उन्हें के मिथ्याकरण के लिए एक भी ठोस सबूत मिला होता सभी हजारों पुरानी पांडुलिपियों के बीच बाइबिल, वे इसके बारे में पवित्र स्वर्ग के लिए चिल्लाए थे - और नहीं-
ऐसी चीख आज तक किसी ने नहीं सुनी- 1400 साल बाद भी नहीं!!!

लेकिन एक सवाल जो मुहम्मद के लिए बहुत महत्वपूर्ण था: क्या यीशु ईश्वर का पुत्र था?

00d 9/30b: "- - - ईसाई ईसा मसीह को ईश्वर का पुत्र कहते हैं - - - (इसमें) वे क्या अनुकरण करते हैं
पुराने समय के अविश्वासी (यहूदी?*) कहा करते थे। उन पर अल्लाह का श्राप हो:---"। हम वापस आ गए
पुराने तथ्यों के अनुसार: यीशु ने स्वयं परमेश्वर को "पिता" कहा। इसके बहुत सारे गवाह थे। वह था
कुछ साल बाद लिखा। कुरान इसका जोरदार खंडन करता है। कुरान में न तो है
गवाह और न ही कोई अन्य सबूत। कुरान ६०० से अधिक वर्षों के बाद लिखा गया था और सभी
वही केवल दावे और बयान प्रदान करता है। यदि यीशु पुत्र न होते तो मुहम्मद को बहुत कुछ प्राप्त होता

ईश्वर का - यदि यीशु ईश्वर से निकटता से संबंधित है, तो मुहम्मद स्पष्ट रूप से सबसे महान नहीं हैं

[illegible]
सही हो कि मुहम्मद ने व्यक्तिगत रूप से पैसे के उपयोग के अलावा पैसे की बहुत अधिक परवाह नहीं की थी
रिश्वत के रूप में, इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्हें सत्ता पसंद थी और उन्होंने "खरीदने" के लिए बड़ी रकम खर्च की थी।
अनुयायी (शक्ति के लिए उसकी लालसा कुरान और हदीस के ग्रंथों से आसानी से देखी जा सकती है)। NS
उद्धरण का अंत बल्कि सहानुभूतिपूर्ण है (?!)। 2/116 - 4/171 - 10/68 में समान कथन -
17/111 - 18/4 - 18/5 -19/88-89 - 23/91 - 25/2। इस उद्धरण का कारण तीन गुना हो सकता है:

1. मुहम्मद का जुनून तो वहीं है
एक भगवान था।
2. तथ्य यह है कि यदि यीशु किसी तरह से पुत्र था
भगवान/याहवे, मुहम्मद बहुत स्पष्ट रूप से
भविष्यद्वक्ताओं में सबसे महान नहीं थे।
3. यदि यीशु परमेश्वर का पुत्र होता, होता
लोगों को मुहम्मद की बात सुनना मुश्किल
और बाइबिल के लिए नहीं - मिथ्या के बारे में कहानियां
बाइबिल या नहीं।

यदि मुहम्मद आंशिक रूप से अपने धर्म में विश्वास करते थे, तो बिंदु 1 मुख्य हो सकता था। अगर वह
नहीं किया - और बहुत स्पष्ट रूप से वह जानता था कि इसके कुछ भाग सत्य नहीं थे (उदाहरण के लिए स्पष्टीकरण कि वह क्यों था?
चमत्कार नहीं कर सका) - भाग २ और ३ मुख्य थे (उनकी शक्ति के मंच को ध्यान में रखते हुए)।

उसके कारण यह बहुत आवश्यक था कि--

**00e 43/59: "वह (यीशु*) एक सेवक से अधिक कुछ नहीं था - - -"। संभव। लेकिन अभी भी है
मजेदार तथ्य यह है कि हजारों लोगों ने उन्हें यहोवा को "पिता" कहते सुना। जबकि केवल एक आदमी - और एक आदमी
बहुत ही संदिग्ध चरित्र और नैतिकता के - विपरीत कहते हैं। और वह भी एक आदमी जिसने
यीशु के परमेश्वर के पुत्र न होने से बहुत कुछ हासिल करना है। और यह 600 साल बाद भी है
बिना किसी दस्तावेज के।

- - - एक नौकर जिसने इस तरह की बातें कही:

०२० ४३/६४: "(यीशु ने कहा): अल्लाह के लिए, वह मेरा भगवान और तुम्हारा भगवान है - - -"। 43/63 देखें। हम कर सकते हैं
जोड़ें कि नए धर्मों या संप्रदायों की शुरुआत करने वाले अक्सर जाने-माने व्यक्तियों को "हाई-जैक" करने का प्रयास करते हैं या
अपनी शिक्षाओं में इसका उपयोग करने के लिए परिस्थितियाँ। ऐसा मामला लग सकता है।

**021 43/63a: "(यीशु ने कहा*): इसलिए अल्लाह से डरो - - -"। जैसा कि पहले कहा गया था: यदि यीशु एक होता
देश के बहुत दूर से ज्ञात बहुदेववादी ईश्वर अल-लाह के लिए मिशनरी, वह एक के लिए
उस समय में बहुत ही कम अनुयायी थे, जो पूरी तरह से एकेश्वरवादी इज़राइल थे, और इसलिए
एक और चीज जिसे वह बहुत पहले पादरियों द्वारा मार दिया गया था - खासकर अगर उसे वही मिला हो a
बड़े अनुयायी जैसे वह वास्तव में था। यह एक ऐसे व्यक्ति द्वारा बताई गई कहानी है जो धार्मिक और को जानता था
वर्ष 30 ई. के आसपास इज़राइल में राजनीतिक स्थिति बुरी तरह से।

022 43/63b: "(यीशु ने कहा*): अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो - - -।" यह वास्तव में मुहम्मद है
नारा - उसे सत्ता चाहिए थी, कुरआन से इतना आसानी से देखा जा सकता है, और धर्म/अल्लाह था
उनकी शक्ति का मंच। और कुरान में कई जगह यह स्पष्ट हो जाता है कि मुहम्मद चाहते हैं
सभी को विश्वास है कि वह एक "सामान्य" (लेकिन शीर्ष) भविष्यवक्ता था (वास्तव में वह कोई वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं था, जैसा कि
उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार नहीं था - मुहम्मद के बारे में अध्याय देखें), और फिर यह
अच्छा था अगर यीशु ने मुहम्मद जैसे ही शब्दों का इस्तेमाल किया और दिखाया कि यह सामान्य तरीके थे

144

पेज 145

बात करने के लिए भविष्यवक्ताओं। लेकिन वास्तव में एक - और कई में से एक - के बीच मूलभूत अंतर
यीशु और मुहम्मद (और उस मामले के लिए f. पूर्व बुद्ध और मुहम्मद के बीच), वह था
यीशु को इस पृथ्वी पर सत्ता में बिल्कुल दिलचस्पी नहीं थी। नतीजतन यह नारा है कि
मुहम्मद अक्सर अपनी शक्ति को सुरक्षित रखने के लिए प्रयोग किया जाता था, यीशु के लिए अर्थहीन था। (कुरान
इस तथ्य का विरोध नहीं करता: कि यीशु ने प्रचार किया, लेकिन उसने पृथ्वी पर शक्ति की तलाश नहीं की।)

साथ ही नीचे दिए गए पद को यीशु को किसी चीज़ से कम करने की रणनीति के हिस्से के रूप में लिया जा सकता है
कुछ सामान्य के लिए विशेष - कम से कम एक साधारण नबी - के लिए इसे आसान बनाने के लिए
मुहम्मद का नंबर एक होना (एक और स्पष्ट उदाहरण: मुहम्मद की दावा की गई यात्रा के दौरान)
स्वर्ग में, यीशु भविष्यद्वक्ताओं के स्वर्गों में सबसे निचले स्थान पर रहा - स्वर्ग संख्या 2. जबकि
बाइबिल के अन्य ज्ञात भविष्यद्वक्ता ईश्वर के ऊपर और करीब रहते थे, और मुहम्मद

7 में स्थान दिया जाना था। स्वर्ग, देवता के सबसे करीब):

०२३ २/१३६: "हम (अल्लाह*) उनमें से किसी एक (पैगंबर*) के बीच कोई फर्क नहीं करते - - -
". कम से कम यहोवा एक भेद करता है: वास्तविक और झूठे भविष्यद्वक्ताओं के बीच। NS
एक वास्तविक भविष्यवक्ता होने की कसौटी यह है कि आप भविष्यवाणियां करते हैं - और भविष्यवाणियां आती हैं
सच। यदि नहीं, तो वह एक झूठा भविष्यद्वक्ता है (५. मूसा १८/२१)। मुहम्मद ने अपने पूरे जीवन में एक नहीं बनाया
वास्तविक भविष्यवाणी। (कुछ कहावतें थीं जिन्हें याद किया गया क्योंकि वे हुईं
सच हो या आंशिक रूप से सच हो - दूसरों को ऐसे मामलों में सामान्य की तरह भुला दिया गया - लेकिन कोई वास्तविक नहीं
भविष्यवाणियां। वह कभी नहीं - कुरान में कोई जगह नहीं है और शायद ही सभी हदीसों में - यहां तक कि
भविष्यवाणी करने का उपहार होने का दावा किया)। क्या वह तब वास्तव में एक नबी था - या उसने किया था
बस एक प्रभावशाली शीर्षक "उधार"? वह बस एक नबी नहीं था। किसी के लिए दूत
या शायद कुछ - या एक प्रेरित, लेकिन कोई भविष्यद्वक्ता नहीं। लेकिन अगर कुरान या बाइबिल या
दोनों इस विषय में सच बोलते हैं, यीशु स्पष्ट रूप से थे। कुरान, हालांकि, यीशु को कम करता है
जितना संभव हो सके, और मुहम्मद के शीर्षक के अधिकार के प्रश्न को छोड़ देता है - जितनी बार संभव हो
किताब बिना किसी सबूत या दस्तावेज के किसी तथ्य के लिए चीजों का इलाज करती है।

अंत में यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान है। यदि वास्तव में ऐसा हुआ, तो यीशु स्पष्ट रूप से थे
मुहम्मद से कम से कम एक डिवीजन ऊपर। तो कुरान के मुताबिक ऐसा नहीं हुआ।

०२४ ५/११६: मोहम्मद का मानना था कि ट्रिनिटी में ईश्वर / यहोवा, यीशु और मैरी शामिल हैं।
गलत। मुहम्मद और कुरान दोनों ही चरम रूप से गलत थे, जब वे इस प्रकार
माना जाता है कि मैरी ट्रिनिटी का हिस्सा थीं। (इसमें परमेश्वर/यहोवा, यीशु और पवित्र का (?) शामिल है
आत्मा - जिसे पवित्र आत्मा भी कहा जाता है, सत्य का आत्मा, परमेश्वर का आत्मा, या केवल आत्मा)।
मुहम्मद ने भी पवित्र आत्मा को कभी नहीं समझा, भले ही उन्होंने इसे कुछ बार इस्तेमाल किया था
कुरान - और कुछ मुसलमान कुरान में पवित्र आत्मा को आर्क के दूसरे नाम के रूप में संदर्भित करते हैं
एंजेल गेब्रियल (!) जैसा कि "ज्ञात" है कि गेब्रियल सूरह और छंद लाए, लेकिन यह भी कहा जाता है
कुरान कि आत्मा कुछ लाया। गलत निष्कर्ष: गेब्रियल को समान होना चाहिए
आत्मा। 5/117 भी देखें। 5/73 . में भी ऐसा ही दावा

*०२५ ४/१५६: "- - - उन्होंने मरियम के खिलाफ एक गंभीर झूठा आरोप लगाया (कि यीशु को सूली पर चढ़ाया गया था और
मृत*)"। इतने सारे गवाह थे, जिनमें बहुत से लोग भी शामिल थे जो यीशु को जानते थे, और इसमें भी शामिल थे
बहुत से लोग जो उससे नफरत करते थे और निश्चित रूप से अगर उसे फांसी नहीं दी गई तो उसने विद्रोह कर दिया था - यहूदी पादरी
और बाद के मुस्लिम पादरियों और विद्वानों जैसे विद्वान शक्तिशाली थे - कि यह आरोप था
निश्चित रूप से झूठ नहीं। इस्लाम कुछ और कहे तो उन्हें अच्छे सबूत देने होंगे, नहीं
केवल ६०० साल बाद पतली हवा से लिए गए बुलंद दावों और बयानों को सामने लाते हैं। क्योंकि वह
क्या केवल कुरान की पेशकश है: कुछ उदात्त बयान कुछ भी नहीं - कोई सबूत नहीं और नहीं
यहां तक कि कोई भी संकेत यह दर्शाता है कि वे सभी गवाह - और शासक और घृणित यहूदी
पादरी - गलत थे। शब्द बहुत सस्ते हैं - - - और इस्लाम एक ही तथ्य पैदा कर सकता है कि
न तो मुहम्मद और न ही इस्लाम यह स्वीकार कर सकता है कि यीशु मरा और फिर से जीवित हो गया - उस स्थिति में वह

स्पष्ट रूप से एक बड़ा नबी था और/या मुहम्मद की तुलना में भगवान के साथ घनिष्ठ संबंध था, और
जो मुसलमानों के लिए वर्जित है। यह उनके लिए बस अस्वीकार्य है।

*०२६ ४/१५७: "- लेकिन उन्होंने उसे नहीं मारा, और न ही उसे सूली पर चढ़ाया, लेकिन ऐसा करने के लिए इसे प्रकट किया गया था
उन्हें - - -"। 4/156 देखें। इसके अलावा: अगर किसी और ने यह सुनिश्चित नहीं किया कि यह कोई धोखेबाज नहीं था और वह
हत्या वास्तव में हुई थी, क्रोधित और द्वेषपूर्ण यहूदी पादरियों और विद्वानों ने देखा होगा
वह। यह दावा किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया है जो यह स्वीकार नहीं कर सका कि मुहम्मद नहीं थे
महानतम पैगंबर (हालांकि मुहम्मद वास्तव में पैगंबर नहीं थे - उन्होंने ऐसा नहीं किया)
भविष्यवाणी करने में सक्षम होने का उपहार है)। अगर इस्लाम कुछ और कहना चाहता है, तो वे
करने के लिए बहुत सारी व्याख्या और सिद्ध करना होगा - यह और भी अधिक है जैसा कि कुरान हमेशा करता है
गैर-मुसलमान अपने धर्म के बारे में जो कहते हैं, उसके लिए सबूत मांगते हैं, लेकिन यह खुद कभी भी कोई पेशकश नहीं करता है
इस्लाम या अल्लाह के लिए असली सबूत। सभी "संकेतों" के बावजूद यह दावा करता है, उनमें से एक भी नहीं
"संकेत" - बाइबिल से लिए गए कुछ के संभावित अपवाद के साथ - किसी भी भगवान को बिल्कुल साबित करता है, और
निश्चित रूप से एक भी व्यक्ति अल्लाह या मुहम्मद की शिक्षाओं के बारे में कुछ भी साबित नहीं करता है।
शब्द बहुत सस्ते हैं, और उन "संकेतों" में से एक भी ऐसा नहीं है जो उतना ही अच्छा नहीं हो सकता है
पुजारियों या विश्वासियों या अन्य सभी धर्मों के "भविष्यद्वक्ताओं" द्वारा आसानी से उपयोग किया जा सकता है: मैनिटो ने ऐसा किया, थोर
ऐसा किया, काली ने कुछ बनाया, ओसिरिस ने कुछ और, बाल ने पृथ्वी को बनाया, और अल-उज्जा ने
महान। इस्लाम हमेशा यह दावा करता है कि अल्लाह ने यह और यह किया है और यह एक "चिन्ह" या अ है
अल्लाह के लिए "सबूत"। **लेकिन वे कभी यह साबित नहीं करते कि यह वास्तव में अल्लाह ही था जिसने यह और यह किया।
उसके कारण प्रत्येक ऐसे "चिह्न" और "प्रमाण" सहज और तार्किक रूप से और**

कोई भी धर्म अपने भगवान के बारे में ठीक वही बेकार शब्द कह सकता है। दावे हैं और इसी कारण से कोई भी पुजारी संकेत या संकेत के रूप में पूरी तरह से अमान्य, सबूत के रूप में उल्लेख नहीं करना। एक अकेला नहीं है अल्लाह के लिए या मुहम्मद की शिक्षाओं के लिए कहीं भी वैध प्रमाण - - - या के लिए अनिर्दिष्ट दावा है कि यीशु को सूली पर नहीं चढ़ाया गया था और उनकी मृत्यु हो गई थी। इसी तरह के दावे एफ. पूर्व में। 4/156 (के ऊपर)।

कोई बात नहीं - यह एक तथ्य के रूप में माना जाता है कि यीशु वास्तव में एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे। उसे सुना गया और उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद इतने लोगों ने देखा, कि यह संभव है कि कहानी सच हो - कि वह वास्तव में उसके निष्पादन के बाद अस्तित्व में था।

लेकिन अपने शिष्यों को अंतिम विदाई देने के बाद उन्हें न तो कभी सुना गया और न ही देखा गया।

और ईमानदारी से: अगर भगवान ने उसे अपने ऊपर शारीरिक और जीवित रूप से ले लिया, जैसे कुछ मुसलमान इस तथ्य की व्याख्या करते हैं के साथ, यह किसी अन्य चीज़ के रूप में किसी अलौकिक चीज़ से उसके संबंध के लिए उतना ही अच्छा प्रमाण है। जबकि मुहम्मद के लिए ऐसा एक भी प्रमाण मौजूद नहीं है।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 7 (= II-1-3-7)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची थीम द्वारा व्यवस्थित

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

१४६

पेज 147

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और बाइबिल के बारे में त्रुटियाँ कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह:

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मुहम्मद को सबसे अधिक संभावना पड़ोसी यहूदी से "एक ईश्वर" के लिए प्रेरणा मिली और ईसाई धर्म। पारसी जो एक तरह से सीमा रेखा का मामला था, वह ऐसा लगता है के बारे में बहुत कम जानते हैं, लेकिन इस्लाम में ऐसे विचार और किस्से हैं जो वहां से निकल सकते हैं। में इसके अलावा अरब में एक छोटा संप्रदाय था जो एक ईश्वर में विश्वास करता था, लेकिन ऐसा लगता है कि एक है में उनकी सोच के लिए शायद पृष्ठभूमि में से एक के अलावा, बहुत कम प्रभाव था शुरुआत।

उनका मतलब यह हुआ कि मुख्य मूर्तिपूजक ईश्वर, अल-लाह, एकमात्र वास्तविक ईश्वर था और अन्य सभी अरब बुतपरस्त देवता काल्पनिक थे। तब उसके पास एक ही ईश्वर था और यहूदियों और ईसाइयों के पास एक और केवल एक, उसके भगवान को उनके जैसा ही भगवान होना था। दरअसल यह कोई नया विचार नहीं था

[illegible] अक्षर लेकिन थोड़ा अलग सर्वनाम) और यहूदी और ईसाई भगवान यहोवा एक ही थे भगवान।

और चूंकि वे (संभवतः) एक ही भगवान थे, पवित्र पुस्तकों को भी वही होना था। लेकिन वो या जिसने कुरआन बनाया, उसने कॉपी लेने की परवाह नहीं की - या खर्चा नहीं उठाया बाइबल की, और टोरा और बाकी ओटी की भी नहीं, जो भी नहीं होनी चाहिए मुश्किल है, क्योंकि आस-पड़ोस के यहूदियों के पास निश्चित रूप से कम से कम एक या कुछ थे आराधनालय, और एक प्रतिलिपि बनाना संभव होना चाहिए था - हालांकि यह जितना महंगा था एक मुंशी द्वारा हाथ से लिखा जाना (लेकिन उसने एक अमीर विधवा से शादी की थी)।

इसके बजाय उसने या जिन्होंने कुरान को बनाया - यह किसी भी भगवान द्वारा उन सभी के साथ नहीं बनाया गया था गलतियाँ, विरोधाभास, गलत तर्क वाले स्थान, आदि - कहानी की समृद्ध परंपरा पर निर्भर हैं बता दें, सस्ती किताबें, फिल्म और रेडियो आने से पहले दुनिया के ज्यादातर हिस्सों में एक पारंपरिक शगल आ गया था। परेशानी यह थी कि इनमें से अधिकतर कहानियां परियों की कहानियां और किंवदंतियां थीं - उनमें से कई नहीं यहां तक कि बाइबिल पर आधारित, लेकिन अपोक्रिफल पर आधारित - निर्मित - धार्मिक ग्रंथ, जिनमें से कई धर्म के बारे में अपने विशेष विचारों को फिट करने के लिए फ्रिंज धार्मिक संप्रदायों द्वारा बनाए गए थे (यदि मुहम्मद ने कुरआन बनाया या किसी ने बनवाया, वो बनाने वाले से कोसों दूर था उनके अपने "पवित्र ग्रंथ" उस समय - और बाद में)।

परेशानी यह थी कि उसे यह समझने में काफी समय लगा कि कोई समस्या है - असली बाइबिल ने किंवदंतियों से अलग बातें कही। सबसे अधिक संभावना है कि वह पूरी तरह से जागरूक नहीं हुआ था जब तक वह बारह वर्ष के प्रचार के बाद मदीना आया, जहां बहुत से यहूदी थे, और वह उन्हें अपने एकेश्वरवाद के लिए भर्ती करने का प्रयास किया। तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उसे या तो छोड़ना पड़ा अपना धर्म और दूसरे को स्वीकार करें - और सर्वोच्च नेता के रूप में अपना स्थान खो दें + बहुत कुछ प्राप्त करें अपने अनुयायियों को भटकाने के लिए बुरे शब्द (इसे कम से कम कहने के लिए)। या उसे करना पड़ा कुछ। शायद वह स्वयं भी जो कुछ वह प्रचार कर रहा था उसके कम से कम भागों में विश्वास करता था (यह है इस सवाल से कि उनके जैसा बुद्धिमान व्यक्ति अपनी कहानियों में हर चीज में विश्वास करता था - उसका चमत्कार न होने के बहाने इसके अच्छे उदाहरण हैं, क्योंकि वे स्पष्ट रूप से गलत थे कि नहीं मानव स्वभाव के बारे में ज्ञान रखने वाला बुद्धिमान व्यक्ति उन सभी पर विश्वास कर सकता है यदि वह नहीं करता है बिल्कुल चाहते हैं या ब्रेन वॉश किया गया है।) खासकर अगर उसे दिमागी बीमारी जैसे f. भूतपूर्व। टेम्पोरल लोब मिर्गी - टीएलई - (स्रोत बीबीसी) यह संभव है कि वह अपनी कहानियों के कुछ हिस्सों पर विश्वास करता हो वह स्वयं।

उसने जो समाधान चुना - या उसे चुनने के लिए मजबूर किया गया क्योंकि उसके पास यही एकमात्र विकल्प था - वह था सदियों पुराना "मैं सही हूं, और बाकी सभी गलत हैं।"

जिसका स्वतः ही अर्थ था कि बाइबल गलत थी जहाँ यह उसकी अपनी कहानियों से भिन्न थी। और जैसा कि उसने सोचा था कि बाइबल ईश्वर की ओर से है, (ऐसा नहीं है - यह मनुष्यों द्वारा बनाई गई है, यहाँ तक कि मूसा की पुस्तक - केवल अपने विश्वासियों के अनुसार ईश्वर / यहोवा द्वारा प्रेरित) जिसका अर्थ यह होना चाहिए मिथ्याकरण किया गया है। या यह एक अच्छा "स्पष्टीकरण" था यदि वह हर चीज में पूरी तरह से विश्वास नहीं करता था उन्होंने खुद बताया।

बाइबल के झूठे होने के दावों के पीछे की कहानी और तर्क यही है। सामान्य की तरह इस्लाम में दावे के लिए कभी भी कोई सबूत या दस्तावेज पेश नहीं किया गया है - यह सब एक है कुछ नहीं पर आराम करने का दावा। और उन्हें यह कहना है और उन्हें विश्वास करना है, क्योंकि यदि नहीं इस्लाम झूठा धर्म है।

नतीजतन स्थानीय यहूदियों के पास जो ग्रंथ थे, वे मूल रूप से अग्रदूत रहे होंगे और कुरान की तरह, जब तक कि उनके दावों के अनुसार उन्हें गलत नहीं ठहराया गया।

०१ २/७५: "- - - यह देखते हुए कि उनमें से एक दल (मदीना* में यहूदी) अल्लाह का वचन सुनता है, और इसे समझने के बाद जानबूझकर इसे विकृत कर दिया - - -।" **गलत। विज्ञान ने दिखाया है बहुत स्पष्ट रूप से कि बाइबल मिथ्या नहीं है, शायद कुछ गलतियाँ, लेकिन मिथ्याकरण नहीं - और फलस्वरूप यह कि यह कुरान जैसा कुछ कभी नहीं रहा। अगर इस्लाम का मतलब कुछ है अन्यथा, उन्हें सबूत लाने होंगे, न केवल ढीले दावे और यहां तक कि ढीले बयान भी। असल में : इस्लाम के पास एक छोटा सा भी सबूत होता तो दुनिया उसे सुनने को मजबूर हो जाती हर दो घंटे या उससे अधिक - कम से कम।**

हम यह भी जोड़ सकते हैं कि इस्लाम और मुसलमान यहाँ अपने शब्दों को साबित करने के लिए बाइबल का उपयोग करने का प्रयास करते हैं - f. भूतपूर्व। यिर्मयाह २३/३६: "तुमने जीवित परमेश्वर के वचनों को विकृत किया है।" यह बेईमानी है दो स्तर:

1. यह संदर्भ से बाहर उद्धृत एक बात के लिए है। यिर्मयाह कहता है: "यदि कोई भविष्यद्वक्ता वा याजक वा कोई और दावा करता है, 'यह दैवज्ञ है' यहोवा (यहोवा*), मैं (यहोवा*) दण्ड दूँगा वह आदमी और उसका घराना। - - - परन्तु आप 'यहोवा की वाणी' का उल्लेख नहीं करना चाहिए फिर से क्योंकि (यदि आप * करते हैं) हर आदमी का शब्द

१४८

उसका दैवज्ञ बन जाता है और इसलिए आप उसे विकृत करते हैं जीवित परमेश्वर के वचन"। (एनआईवी)। वहां पर एक इस अर्थ और अर्थ के बीच खाई ऊपर से थोड़ा मुड़ उद्धरण में मुसलमानों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली बाइबिल। **बेईमान और थोड़ा घृणित - और काफी खुलासा तरीकों और वास्तविक तथ्यों की कमी के बारे में और तर्क।**
2. भले ही यह सच हो - भले ही यिर्मयाह ने कहा था कि यहूदियों ने विकृत कर दिया था - यद्यपि "विकृत" की तुलना में एक मजबूत शब्द है "विकृत" - जिसने एक मिलीमीटर नहीं बताया कुरान के ग्रंथों को विकृत करने के बारे में, जैसे यहाँ है संकेत दिया, तोराह का केवल विरूपण।

यह जानते हुए कि यह व्यापक रूप से वितरित और अत्यधिक बेशकीमती "द मैसेज ऑफ द" से लिया गया है कुरान", सबसे प्रमुख इस्लामी बौद्धिक संस्थानों में से एक द्वारा विहित या कम से कम प्रमाणित दुनिया में इस तरह के मामले उनकी तरफ से हमें बदनाम करते हैं: बुद्धिजीवियों का सहारा लेना इस तरह की बेईमानी का पता चलने पर अपमान होता है। कोई "अल-" शब्द का उल्लेख कर सकता है तकिया" (वैध झूठ - इस्लाम के लिए एक विशेषता) - कभी-कभी उपयोग करने की अनुमति और एक कर्तव्य यदि आवश्यक हो तो इस्लाम की रक्षा या प्रचार में उपयोग करें। लेकिन अगर कोई धर्म सच्चा है, तो क्या वह इसे बढ़ावा देने के लिए झूठ बोलना जरूरी है?

और किस कारण से? सिर्फ सही होने के लिए, सही क्या है यह जानने की कोशिश करने के बजाय। यह इस तथ्य के बावजूद कि कीमत अगर वे गलत हैं, तो प्रत्येक की आत्मा का नुकसान है और हर मुसलमान - - - अगर अगले जन्म में कोई नर्क है।

और भी बहुत कुछ है जो बाइबल और कुरान में अंतर करता है। के बारे में अध्याय देखें उन दो पुस्तकों के बीच विरोधाभास।

002 2/89a: "- - - जब उनके पास आता है (मदीना में यहूदी *) कि (मुहम्मद के ग्रंथ जो कुरान* बन गया) जिसे उन्हें पहचानना चाहिए था (यह दर्शाता है कि उन्हें होना चाहिए था मुहम्मद के ग्रंथों को उनके ओटी/तोराह*) में मान्यता दी।" गलत - अंतर्निहित बुनियादी सोच और बहुत सारे विवरण इतने अलग हैं कि केवल एक ही चीज को पहचानना संभव है, वह है मुहम्मद के इस तरह के दावों में कुछ बहुत गलत है।

यहूदी और ईसाई एक जैसे - उन्हें कुरान जैसी किताबें मिली थीं (कुरान के अनुसार) - पुस्तकें जिन्हें पुस्तक के अंतिम संस्करण ने अब पुष्टि की है (- - - कुरान के अनुसार):

003 2/89b: "- - - (एक किताब (कुरान)) पुष्टि करता है कि उनके पास क्या है (तोराह और बाइबिल) - - -", जिसका अर्थ है कि कुरान टोरा और अन्य पवित्र यहूदी धर्मग्रंथों की पुष्टि करता है और बाइबिल। लेकिन बहुत से मौलिक सिद्धांत अलग हैं - कुरान नहीं है न तो तोराह, आदि की पुष्टि, न ही बाइबल की, नए नियम का उल्लेख नहीं करने के लिए (NT) जिस पर ईसाई धर्म बना है। एफ. पूर्व. "तुम नहीं मारोगे" बनाम "तुम नहीं मारोगे" एक अच्छे कारण के बिना", "खोए हुए मेमने" का मूल्य और संघर्ष, बनाम "आप शोक नहीं करेंगे" गलत काम करने वाले जो नर्क में समाप्त होते हैं", "अपने दुश्मन से प्यार करें" बनाम "दुश्मन को जहां कहीं भी मिले, उसे मार डालें" उसे", और "अपने दुश्मन से प्यार करो" बनाम युद्ध के लिए उकसाने और आदेश और नफरत और भेदभाव "काफिरों" के बारे में, बस कुछ गहरे मतभेदों का उल्लेख करने के लिए। उल्लेख नहीं करने के लिए "मेरा साम्राज्य नहीं है" इस दुनिया के" (स्वीडिश से अनुवादित), की तुलना में: अल्लाह और मुहम्मद के लिए सभी तक लड़ो

गैर-मुसलमानों को पूरी तरह से दबा दिया जाता है और वे अतिरिक्त कर देते हैं। कम से कम 2/41 - 2/91 में इसी तरह के दावे - 2/97 - 2/101 - 3/3 - 4/47 - 5/48 - 10/37 - 12/111।

004 2/101: "- - - पुस्तक के लोगों की एक पार्टी (यहाँ यहूदी - पुस्तक के लोग = यहूदी और ईसाई, और इस संबंध में "पुस्तक" बाइबिल है *) ने अल्लाह की पुस्तक को फेंक दिया (कुरान*), मानो (यह कुछ था) वे नहीं जानते थे!" यहाँ कुरान बताता है कि यहूदियों ने कुरान को ओटी से मान्यता दी। यह गलत है - इतने बुनियादी अंतर हैं और इतने सारे बिंदु जो कुरान और बाइबिल के बीच भिन्न हैं, केवल एक चीज जो यह जानना संभव है कि क्या कुछ पूरी तरह से गलत है। 3/78 में इसी तरह का दावा।

जब यहूदी - क्षेत्र में ईसाइयों की तुलना में कहीं अधिक यहूदी थे - असहमत थे, कुछ उनके साथ गलत होना था:

००५ ३/७०: "तुम (यहूदी*) अल्लाह की उन आयतों को क्यों झुठलाते हो, जिनमें से तुम (स्वयं) हो गवाह?" उन्होंने "संकेतों" को खारिज कर दिया - मुहम्मद की शिक्षा (एक किताब के रूप में कुरान ने किया था अभी तक मौजूद नहीं है)। यहां "साइन" शब्द दो कथनों को संदर्भित कर सकता है:

1. इस्लाम का कहना है कि मुहम्मद को बाइबिल में भविष्यवाणी की गई है, और विशेष रूप से 5 मूसा को संदर्भित करता है। 18/15 और १८/१८. लेकिन एक यहूदी का भाई यहूदी है, नहीं एक अरब, और यहूदियों के साथी देशवासी यहूदी भी हैं, अरब नहीं। इस्लाम भी कभी नहीं अगले कुछ छंदों का उल्लेख करें - f. भूतपूर्व। संख्या 18/21 असली और झूठे नबियों के बारे में, और जहाँ मुहम्मद के रूप में भी योग्य नहीं हैं असली नबी। के बारे में अध्याय देखें "बाइबल में मुहम्मद?" गलत।
2. यहां दूसरा संभावित दावा यह है कि जब यीशु ने अपने चेलों से एक सहायक के बारे में बात की जो उनके पास आना चाहिए, मुसलमान दावा करते हैं कि इसका मतलब मुहम्मद था, भले ही वे उनके "स्पष्टीकरण" को थोड़ा मोड़ना नहीं है (उन्हें GT . से कम से कम एक "पूर्वानुमान" की आवश्यकता है और एक NT से, क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि मुहम्मद दोनों में भविष्यवाणी की गई है) - और यहां तक कि हालांकि मुहम्मद का जन्म 500 साल बाद हुआ था चेले मर चुके थे, उन्हें उनका होना चाहिए इस्लाम के अनुसार सहायक! (यीशु बात कर रहे थे पवित्र आत्मा के बारे में जो में आया था कुछ दिनों बाद शिष्य)।
3. कुरान में एक या दो विद्वान यहूदियों का जिक्र है इस्लाम का दावा है कि मोहम्मद को एक के रूप में स्वीकार किया गया है नबी. (यह सच हो सकता है या नहीं हो सकता)। लेकिन यह यह कहना किसी भी तरह से सही नहीं है कि "तु" (सभी or अधिकांश यहूदियों) ने ऐसा किया। इसके विपरीत - हो सकता है एक हजार यहूदी मारे गए हों और कत्ल किए गए और कई और गुलाम बनाए गए, क्योंकि उन्होंने इस्लाम को अपना मानने से इंकार कर दिया था धर्म। गलत।

अध्याय "बाइबल में मुहम्मद?" देखें।

इसके लिए इस्लाम ने केवल दावे और तर्क को तोड़-मरोड़ कर पेश किया है - ठीक है, दावा। उन्हें करना होगा
अगर वे ब्रेनवॉश करने के अलावा दूसरों द्वारा विश्वास करना चाहते हैं तो दस्तावेज या सबूत पेश करें
और भोले। 2/42 - 2/101 - 2/146 में इसी तरह के दावे।

मुहम्मद ने कहा, उनके साथ क्या गलत था, कम से कम उन्होंने विकृत या फेंक दिया था
ओटी के कुछ हिस्सों को दूर किया, ताकि यह कुरान जैसी कहानी न बताए - जो निश्चित रूप से उसके पास थी
यह तब किया गया जब इसे अल्लाह की ओर से उतारा गया (जैसा कि बताया गया है कि बाइबिल का कोई भी हिस्सा "नीचे नहीं भेजा गया" है।)
सब कुछ मनुष्यों द्वारा लिखा गया है - ईश्वर से प्रेरित हो सकता है, लेकिन मनुष्यों द्वारा लिखा गया है। क्या आता है
मूसा के नियम 10 आज्ञाओं को छोड़कर "नीचे भेजे गए" के सबसे करीब है,
जो बाइबल यहोवा ने मूसा से कही, और मूसा ने उन्हें बाद में लिख दिया।)

लेकिन सबसे गंभीर और चिरस्थायी आरोप अधिक गंभीर आरोप के साथ समाप्त हुआ -
एफ द्वारा समर्थित भूतपूर्व। 3/24 और 7/162:

००६ ५/१३: "- - - वे (यहूदी*) शब्दों को बदल देते हैं (ओटी* के) और शब्द का एक अच्छा हिस्सा भूल जाते हैं
संदेश जो उन्हें भेजा गया था (OT*)"। ईसाईयों पर भी यही आरोप लगाया जाता है। **लेकिन: के अनुसार
हमारी सबसे अच्छी जानकारी कुछ १३००० प्रासंगिक शास्त्र या अंश मौजूद हैं (कुछ ३००
गॉस्पेल से) ६१० ईस्वी से पुराना (जब मुहम्मद ने अपना धर्म शुरू किया)। इसके अलावा
बाइबिल के कुछ 3200 पुराने संदर्भ मौजूद होंगे। वे सभी दिखाते हैं कि न तो ओटी
न ही NT को गलत ठहराया गया है (= मुहम्मद और उससे पहले के समय की बाइबिल उसी के समान है)
आज में से एक और वास्तव में पुराने शास्त्रों के समान) - और न ही कुछ भुला दिया गया है
(छोड़ा गया)। लेकिन इस्लाम को इस पर जोर देना होगा।** एक बात तो यही थी बहाना मुहम्मद
बाइबिल और कुरान के बीच के अंतरों को स्पष्ट करते समय उपयोग किया जाता है - और
मुहम्मद और कुरान को केवल सच बोलना होगा, क्योंकि यदि नहीं तो बहुत
धर्म के तहत नींव ढह जाती है। और दूसरी बात के लिए - अगर कुरान गलत है और
बाइबिल सही है, इस्लाम एक बना हुआ धर्म है। **लेकिन एक तथ्य यह है कि इस्लाम को कोई नहीं मिला है
अपने दावे के लिए सबूत, भले ही उन्होंने इसे 1400 वर्षों तक खोजा हो।** उनके पास है
कई तर्क दिए, लेकिन अक्सर की तरह इस्लाम के पीछे केवल सस्ते शब्द हैं
उनके दावे - अगर उन्हें 13000 . के बीच अपने दावे के लिए एक भी वास्तविक प्रमाण मिला होता
शास्त्रों या अन्य जगहों पर, आप इस पर बड़ी रकम का दांव लगा सकते हैं कि दुनिया को सूचित किया गया था
इसके बारे में जल्दी और पूरी तरह से। जब तब विज्ञान बताता है कि बाइबल असंक्षिप्त है सिवाय
बेहतर अनुवाद के लिए और हस्तलिखित पांडुलिपियों के लिए सामान्य छोटी किस्में फैली हुई हैं
सैकड़ों साल और हजारों किलोमीटर - और हजारों शास्त्र थे
चारों ओर फैल गया - और हर एक को एक ही तरीके से मिथ्या बनाया जाना था और
सभी प्रकार की पांडुलिपियों में सभी कनेक्शन (तथ्य जो मुसलमान कभी उल्लेख या व्याख्या नहीं करते हैं) - ठीक है,
जब यह सब जोड़ दिया जाता है, तो यह आप पर निर्भर करता है कि दोनों पुस्तकों में से कौन - यदि कोई है - सबसे अधिक है
विश्वसनीय। (यह भी देखें ३/२४)।

007 6/20: "जिन्हें हमने (अल्लाह*) ने किताब (यहूदी, ईसाई*) दी है, वे यह जानते हैं
(कि कुरान मुहम्मद, आदि* पर अवतरित हुआ) क्योंकि वे अपने पुत्रों को जानते हैं।" बहुत गलत
- उनके पास संदेह करने के बहुत सारे कारण थे कि कुछ गलत था - बहुत गलत - दोनों के साथ
मुहम्मद और उनके धर्म के साथ। एफ. पूर्व. बहुत सारे बिंदु जो बाइबल/तोराह से भिन्न थे
और भी कई अन्य गलतियाँ।

००८ ६/९१: "- - - आप (यहूदी*) बहुत कुछ छिपाते हैं (इसकी (तोराह = ओटी* का पहला भाग) सामग्री -
- -"। विज्ञान ने कभी इतना स्पष्ट रूप से दिखाया है कि यह इस्लामी दावा गलत है - कई वास्तव में पुराने
दस्तावेजों से पता चला है कि आज के ग्रंथ वास्तव में पुराने लोगों की तरह हैं। इस्लाम को करना होगा
कुरान और अन्य जगहों पर बार-बार किए गए दावों के लिए वास्तविक प्रमाण लाओ - अब तक उनके पास केवल

निराधार दावों और ढीले शब्दों का उत्पादन करता है, और हम पुराने तथ्य पर वापस आ गए हैं: **यदि इस्लाम में होता
एक भी कठिन तथ्य यह दिखा रहा था कि बाइबल को किसी भी तरह से गलत ठहराया गया था, दुनिया के पास था
जल्दी और बड़े अक्षरों में बताया गया। इसका कारण यह है कि इस्लाम में एक भी वास्तविक नहीं है
अल्लाह के अस्तित्व का प्रमाण, एक दूत के रूप में गेब्रियल के लिए, मुहम्मद के लिए
किसी ईश्वर या किसी भी चीज़ से संबंध - सब कुछ केवल - केवल - किस पर टिकी हुई है
मुहम्मद ने बताया, और ऐतिहासिक मुहम्मद (इस्लामी चमकदार के विपरीत)
तस्वीर) एक ऐसा व्यक्ति था जिसे किसी भी गंभीर अदालत में विश्वसनीय के रूप में स्वीकार नहीं किया गया होता**

साक्षी। बाइबिल के मिथ्याकरण का प्रमाण इस बात का संकेत होगा कि कुरान था
कम से कम इस एक बिंदु पर सही, और इस तरह इस्लाम में आपका बहुत स्वागत है। लेकिन १४०० सौ वर्षों में
कोई वास्तविक प्रमाण नहीं मिला है - केवल दावे और शब्द - बड़ी मात्रा में पुराने होने के बावजूद
ज्ञात पांडुलिपियाँ और अंश। इसलिए झूठी बाइबल के लिए एक वास्तविक प्रमाण बड़ा था
सभी मुस्लिम मीडिया में और हमेशा के लिए धर्म पर बहस करने वाले सभी मुसलमानों के लिए समाचार। लेकिन यहां
कुछ नहीं।

ऐसा कोई प्रमाण इस्लाम द्वारा कभी प्रस्तुत नहीं किया गया है।

3/24, 5/13, 5/14, 5/15 भी देखें। 2/42 - 5/14 - 5/15 में इसी तरह के दावे। और अध्याय . के बारे में
बाइबिल और कुरान के बीच अंतर, जिसे 2010 ईस्वी में जोड़ा जाएगा।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 8 (= II-1-3-8)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची थीम द्वारा व्यवस्थित

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और परमेश्वर/याहवे के बारे में त्रुटियाँ कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

कुरान और इस्लाम में एक स्वयंसिद्ध यह है कि यहोवा और अल्लाह एक ही के दो नाम हैं
भगवान। परंतु:

00a 2/107: "और उसके सिवा तुम्हारा (लोग*) न तो कोई संरक्षक है और न ही सहायक।" खैर, **यीशु ने बताया कई बार और बहुत सारे गवाहों के सामने कि वह मदद कर सके।**

001 5/72: "वे निन्दा करते हैं जो कहते हैं: 'ईश्वर मरियम का पुत्र है'"। कोई ईसाई ऐसा नहीं कहता
यहोवा मरियम, यीशु का पुत्र है। (हालांकि कैथोलिक लोग "माँ की" अभिव्यक्ति का उपयोग करते हैं
भगवान" का अर्थ है "(पवित्र) यीशु की माँ", लेकिन वे स्पष्ट रूप से अंतर को जानते हैं
भगवान / यहोवा और यीशु)। इसी तरह का दावा 5/17.- 5/72 में।

00b 5/73: "वे निन्दा करते हैं जो कहते हैं: अल्लाह एक त्रिमूर्ति में तीन में से एक है"। हमारे सूत्र बताते हैं
कि 3 अंतिम शब्द अरब संस्करण में मौजूद नहीं हैं, लेकिन यूसुफ अली द्वारा जोड़े गए हैं। फिर
मामले के समाप्त होने पर सही पाठ: "अल्लाह (भगवान*) तीन (देवताओं*) में से एक है।" जो स्पष्ट रूप से गलत है,
क्योंकि ईसाई केवल एक ईश्वर को मानते हैं। इसके अलावा इसमें परिवर्धन करने के लिए यह एक सबसे संदिग्ध अभ्यास है
पाठकों को यह बताए बिना कि यह एक अतिरिक्त पाठ है - f. भूतपूर्व। जोड़ लगाकर

में ( )। नीचे 5/116 देखें। 2/139 - 3/64 - 42/13 में इसी तरह के दावे।

००२ ५/११६: मोहम्मद का मानना था कि ट्रिनिटी में ईश्वर / यहोवा, यीशु और मैरी शामिल हैं।
गलत। मुहम्मद और कुरान दोनों ही चरम रूप से गलत थे, जब वे इस प्रकार
माना जाता है कि मैरी ट्रिनिटी का हिस्सा थीं। (इसमें परमेश्वर/यहोवा, यीशु और पवित्र का (?) शामिल है
आत्मा - जिसे पवित्र आत्मा भी कहा जाता है, सत्य का आत्मा, परमेश्वर का आत्मा, या केवल आत्मा)।
मुहम्मद ने पवित्र आत्मा को कभी नहीं समझा, भले ही उन्होंने इसका इस्तेमाल कुछ (3?) बार किया था
कुरान - और कुछ मुसलमान कुरान में पवित्र आत्मा को आर्क के दूसरे नाम के रूप में संदर्भित करते हैं
एंजेल गेब्रियल (!) जैसा कि "ज्ञात" है कि गेब्रियल सूरह और छंद लाए, लेकिन यह भी कहा जाता है
कुरान कि आत्मा कुछ लाया, और फिर वे "होना चाहिए" वही (!) अमान्य तर्क।
5/117 भी देखें।

00c ६/१६३: "कोई भी साथी उसके पास नहीं है: - - -"। अगर यहां कुरान का मतलब अल्लाह है, तो यह सही हो सकता है। अगर यह यहोवा को इंगित कर रहा है, यीशु के कई शब्दों को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है जैसे पुस्तक गलत है।

***003 29/46: "- - - हमारा (मुसलमान*) और आपका (यहूदी और ईसाई*) ईश्वर एक है - - -"। ये है
सही नहीं है जब तक कि वह सिज़ोफ्रेनिया न हो, क्योंकि बहुत सारे मूलभूत पहलू बहुत भिन्न हैं
दो शिक्षाओं के बीच। कुछ का उल्लेख करने के लिए:

इस्लाम:	**नया नियम (एनटी)**
अच्छे कारण के बिना मत मारो।	मारो नहीं।
युद्ध करना धर्म कर्तव्य है।	मारो नहीं।
एक आखँ के लीए एक आखँ।	बदला न लेना।
आप दूसरे का बोझ नहीं उठा सकते।	अपने साथी आदमी का बोझ उठाओ।
धर्म देश को चलाएगा।	मेरा देश इस दुनिया का नहीं है।
अल्लाह के लिए मारे जाओ और जन्नत में जाओ।	जन्नत में जाने के लिए बच्चे समान बनो।
जन्नत=पृथ्वी जैसी विलासिता प्लस स्त्रियां।	स्वर्ग = आपकी आत्मा के लिए स्वर्ग।
(महिलाओं के लिए = विलासिता और का एक हिस्सा पति)।	(महिलाओं के लिए = आपकी आत्मा के लिए स्वर्ग।)
जन्नत = पुनर्जीवित शरीर।	जन्नत = आत्मा रहती है।
अच्छे कारण के अलावा झूठ मत बोलो।	झूठ मत बोलो।

अविश्वासी का शोक मत करो।	"खोया हुआ भेड़ का बच्चा"।
एक शपथ तोड़ो और इसके लिए नुकसान का भुगतान करो।	किसी भी जई को तोड़ना घोर पाप है।
अल-तकिया - मुसलमानों का वैध झूठ।	झूठ मत बोलो।
लूटना और चोरी करना "अच्छा और वैध" हो सकता है।	चोरी मत करो।
लूटना, चोरी करना और मारना "अच्छा और" हो सकता है वैध"।	दूसरों के खिलाफ वैसा ही करें जैसा आप चाहते हैं कि दूसरे करें तुम्हारे खिलाफ।"*
एक महिला दास का बलात्कार करना "अच्छा और" है वैध"।	इतना अनैतिक कि इसका जिक्र तक नहीं है।
स्वर्ग में योग्यता हासिल करने में दूसरों की मदद करें।	दूसरों की मदद करें क्योंकि उन्हें इसकी आवश्यकता है - और लाभ प्राप्त करें स्वर्ग में योग्यता।
अपने निकटतम परिवार को सहायता देने के लिए - पत्नी, बच्चे - स्वर्ग में उतना पुण्य दो बाहरी लोगों की मदद करना।	अपने नजदीकी की मदद करना बेशक एक बात है। NS बाइबल मुख्य रूप से दूसरों की मदद करने के बारे में बात करती है जब यह मदद देने की बात करता है।

*ऐसा ही एक वाक्य इस्लाम (हदीस में) में भी मौजूद है, लेकिन यह इतना छिपा हुआ है और भुला दिया गया है
और सोते हुए, कि हमने कभी इसे मुसलमानों से भी उद्धृत नहीं सुना है जो यह साबित करने की कोशिश कर रहे हैं कि a
परोपकारी धर्म इस्लाम है।

(उन लोगों के लिए जो नहीं जानते: यीशु ने कहा था कि अगर कोई तुम्हारे एक गाल पर मारो, तो दूसरे को फेर दो
उसकी ओर = अच्छे से बुरा उत्तर देना। और: यीशु ने कहा कि एक अच्छा चरवाहा एक की खोज करेगा
खोया हुआ मेमना = खोई हुई आत्मा को बचाना बहुत मूल्यवान है, और न बचाए गए शोक करने का कारण है
वाले।)

हम भी सोचते हैं कि दोनों धर्मों का दुरुपयोग किया गया है - हालांकि एक और अंतर के साथ: क्राइस्ट उनकी शिक्षा के विरोध में दुरुपयोग किया गया है, इस्लाम बहुत बार और इसके कारण कुरान की अक्सर खूनी शिक्षा और वास्तविक नैतिकता की कमी के अनुसार।

लेकिन ये कुछ शिक्षाएं हैं - कुछ बुनियादी बातें। **और यह दोहराने लायक है यहाँ विज्ञान ने साबित कर दिया है कि बाइबल झूठी नहीं है - कुछ गलतियाँ, लेकिन नहीं मिथ्याकरण। यह कुरान और इस्लाम के बहुत अधिक दावों के दस्तावेजीकरण के बावजूद कभी नहीं हुआ मिथ्याकरण दावों के लिए इस्लाम को सबूत दिखाना होगा यदि वे विश्वास करना चाहते हैं - सबूत वे 1400 वर्षों में खोजने में असमर्थ हैं।** (हम आपको यह भी याद दिलाते हैं कि केवल दूसरा विकल्प यह है कि कुरान के साथ कुछ गंभीर रूप से गलत है और इसलिए इस्लाम)। केवल इस्लाम कहता है कि यह वही ईश्वर है - और वे गलत हैं, जब तक कि ईश्वर मानसिक रूप से बीमार न हो। 2/139 -3/64 - 42/13 में इसी तरह के दावे।

00d 112/3: "वह (अल्लाह*) पैदा नहीं करता - - -।" खैर, अगर अल्लाह एक ही भगवान होना चाहिए यहोवा के समान, यीशु ने उसे कई बार "पिता" कहा और कई बार कहा कि वह था यहोवा का पुत्र - और बहुत से/अधिकांश समय यह स्पष्ट है कि यह वास्तविक अर्थ में था। में NT यह कम से कम १६३ बार कहा गया है कि यहोवा यीशु का पिता था, और कम से कम ६६ बार उस यीशु यहोवा का पुत्र था। रिश्ता कैसे शुरू हुआ, इस बारे में कुछ नहीं कहा गया है। यदि सही, 3 संभावनाएं हैं:

1. सदियों पुरानी और ज्यादातर भूली हुई कहानी यहोवा की एक महिला समकक्ष - अमाती यहोवा के - बहुत दूर के अतीत में हिब्रू पूर्व-इतिहास, सत्य है। फिर "अमत" यहोवा की यीशु की माता हो सकती है।

2. यहोवा ने उसे बनाया होगा। जैसा कहा जाता है दोनों बाइबिल में और कुरान में और भी अधिक में, भगवान केवल "होना" कह सकता था और यह था। मई भगवान ने कहा "बेटा बनो" और यीशु था।
3. इसके अलावा यीशु अनंत काल से अस्तित्व में हो सकता है।

6/101 में इसी तरह का दावा।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 9 (= II-1-3-9)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची थीम द्वारा व्यवस्थित

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और भाग्य के बारे में त्रुटियां कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

एक छोटा अक्षर [illegible] (00 या 0 सहित) [illegible] अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

**001 ३/१५४: "भले ही आप अपने घरों में रहे हों (की लड़ाई में भाग लेने के बजाय)
उहूद, जहां बहुत से लोग मारे गए थे), जिनके लिए मौत का फैसला किया गया था, निश्चित रूप से होगा
अपनी मृत्यु के स्थान पर चले गए (= वे किसी भी तरह मर गए थे *)"। यहाँ हमारे पास फिर से है
पूर्वनियति। तुम युद्ध भी कर सकते हो, क्योंकि अल्लाह ने बहुत पहले ही ठान लिया है (दरअसल 5 .)
महीनों पहले तुम हदीस के अनुसार पैदा हुए थे) जब तुम मरोगे। यदि आपका समय समाप्त हो गया है,
चाहे तुम बिस्तर पर पड़े ही क्यों न हो, तुम मर जाओगे। इसका मतलब है कि लड़ाई करना नहीं है
खतरनाक है, लेकिन आप बहुत सारी दौलत जीत सकते हैं - और गुलाम - और अगर आप युद्ध में मर जाते हैं, तो आप निश्चित हैं
अपने विलासितापूर्ण जीवन और इच्छुक घंटों (अपनी पत्नियों के अतिरिक्त) के साथ स्वर्ग में जाने के लिए, जो
आप सुनिश्चित नहीं हैं कि आप घर पर मरते हैं। करने के लिए केवल बुद्धिमान चीज है अपने लिए लड़ना
पैगंबर - या उनके उत्तराधिकारी।

आज आँकड़ों से साबित करना आसान है कि यह बहुत गलत है - लेकिन मुहम्मद को नहीं पता था
आँकड़ों के बारे में (और एक भगवान को यह जानने के लिए आँकड़ों की भी आवश्यकता नहीं थी कि यह मूर्खता है)। वास्तव में
इस्लाम आज पूर्वनियति के विषय में बहुत पीछे-पीछे चलता है - एफ कह रहा है। भूतपूर्व। कि कुरान
इसका अर्थ वास्तविक पूर्वनियति नहीं है (लेकिन यह स्पष्ट नहीं करना कि यह "वास्तव में" क्या है)। लेकिन किताब तो है
स्पष्ट, कि इसे दूर से समझाना असंभव है - f. भूतपूर्व। बयानों से जुड़े कई स्थान कि
जब आपका समय समाप्त हो जाएगा, तो आप किसी भी तरह मर जाएंगे, (और इसलिए आप युद्ध में भी जा सकते हैं)। एफ देखें।
भूतपूर्व। 3/154बी)।

००२ ६/२८: "लेकिन अगर वे (पापियों*) को (नरक से पृथ्वी*) लौटा दिया जाता, तो वे निश्चित रूप से
उन चीजों के लिए फिर से आना जिनके लिए उन्हें मना किया गया था"। **यह उन जगहों में से एक है जहां एक बुद्धिमान व्यक्ति
लोगों के बारे में बहुत सारी जानकारी, जैसे मुहम्मद को पता था कि वह झूठ बोल रहा है - अधिकांश व्यक्ति
कुरान में वर्णित नरक की तरह एक नर्क को देखने और अनुभव करने के बाद,
अगर उन्हें दूसरा मौका मिला तो व्यावहारिक रूप से कुछ भी खत्म नहीं होगा।**

००३ २८/८४: "- - - बुराई करने वालों को उनके कर्मों की सजा (हद तक) ही मिलती है"। चौरस रूप में
गलत। अधिकांश पापियों ने जो पाप किए हैं, उनके बीच अन्याय की खाई है, और
नर्क में मिलती है सजा

00a 32/10: "- - - एक नई रचना?" मुहम्मद का मानना था कि हमें शारीरिक रूप से फिर से बनाया जाना है
कयामत का दिन। उनका यह भी तर्क है कि यदि अल्लाह आपको वीर्य (और अंडा -
हालांकि अंडा कोशिका मुहम्मद और कुरान के लिए अज्ञात थी) वह आपको फिर से बनाने में सक्षम है
शारीरिक रूप से तुम धूल और रस बन गए हो। हो सकता है - लेकिन to . में अंतर है
प्राकृतिक तरीका बनाएं, और मजबूत एन्ट्रापी के खिलाफ फिर से बनाएं (भौतिकी का एक शब्द जो संदर्भित करता है
to caos) - इसलिए तर्क का अभाव है।

००४ ३३/१६: "भागने से आपको कोई लाभ नहीं होगा, यदि आप मृत्यु से भाग रहे हैं या"
वध; और यहां तक कि अगर (आप बच जाते हैं), तो आपको एक संक्षिप्त (राहत) से अधिक की अनुमति नहीं दी जाएगी
का आनंद लें"। गलत। आँकड़ों के माध्यम से यह सिद्ध करना बहुत आसान है कि यदि आप a . से दूर हो जाते हैं
लड़ाई, एक साल बाद आपके जीवित रहने की संभावना में बहुत सुधार होता है। कोई भी भगवान जानता था - लेकिन
मुहम्मद आँकड़े नहीं जानते थे। (**वास्तव में दावा भी विरोधाभासी और विरोध में है
सामान्य ज्ञान - उसे यह जानना था कि यह झूठ था, भले ही वह कोई आंकड़े न जानता हो,** लेकिन
पूर्वनियति अधिक योद्धाओं और अधिक क्रूर योद्धाओं को प्राप्त करने के लिए अच्छा प्रचार था)।
इसके ठीक नीचे 3/154 भी देखें।

००बी ३७/१६: "जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएँ, तो क्या हम फिर से जी उठेंगे---
". **कुरान और इस्लाम सिखाते हैं कि कयामत के दिन हर इंसान
शारीरिक रूप से पुनर्जीवित** - अल्लाह उन सभी हड्डियों और धूल और तरल पदार्थों को इकट्ठा करता है जिनसे आप बने थे और
इसे आपके सांसारिक, पुराने शरीर में वापस एक साथ रखता है, अगर आप बूढ़े हो गए तो कायाकल्प को छोड़कर (कुछ भी नहीं है
पुनर्जीवित शिशुओं और बच्चों की उम्र और परिपक्वता के बारे में कहा) - नरक में यदि आप बुरे रहते हैं
जीवन और पृथ्वी की तरह, लेकिन 1 से 4 सितारा स्वर्ग में शानदार जीवन यदि आप अच्छे रहे हैं (और
और भी बेहतर अगर आप एक उत्कृष्ट मुस्लिम रहे हैं) - और यह निर्भर करता है कि कितना अच्छा और कैसे
आप जितने भी योद्धा रहे हैं - पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान। जो चाहता है उस पर विश्वास करो - और
याद रखें कि वास्तव में अल्लाह ने कुरान के अनुसार पृथ्वी पर आपके द्वारा किए गए हर काम का फैसला किया
और इस्लाम के लिए (एक तथ्य इस्लाम भी यह समझाने में असमर्थ है कि मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा के दावे कैसे फिट होते हैं,
और इस प्रकार उसे नर्क में भेजने का न्याय अगर अल्लाह ने पृथ्वी पर उसके (बुरे) कृत्यों का फैसला किया है।)

50/3 में इसी तरह का दावा।

**005 64/7: "अविश्वासियों को लगता है कि उन्हें नहीं उठाया जाएगा (इस जीवन के बाद*)"। गलत।
इस्लाम पूरी दुनिया के लिए एक धर्म बनना चाहता है, और जिन धर्मों से यह मिला और मिले उनमें से अधिकांश में एक है
दूसरा जीवन। लेकिन पुराने अरबों के लिए जिस बात को स्वीकार करना मुश्किल था, वह यह थी कि मुहम्मद ने कहा था कि

न केवल आपकी आत्मा - या कुछ इसी तरह - को पुनर्जीवित किया जाना था, बल्कि आपका पूर्ण और सटीक
शरीर, सिवाय इसके कि आपको एक युवा और अच्छे दिखने वाले व्यक्ति के रूप में पुनर्जीवित किया जाना है - ऐसा कहा जाता है
मानसिक या शारीरिक विकलांगों के साथ पैदा हुए लोगों, या इसमें बच्चों / बच्चों के बारे में कुछ भी नहीं
कनेक्शन। (एक विसंगति है, हालांकि: २-३ जगहों पर कुरान बताता है कि आपकी महिलाएं
स्वर्ग में "उपयुक्त आयु" का होगा - च। भूतपूर्व। ७८/३३. क्यों? - अगर हर कोई जवान होगा और तब
मोटे तौर पर एक ही उम्र के?) यदि शारीरिक पुनरुत्थान विश्वसनीय है या नहीं, तो किसी को भी करना होगा
खुद के लिए फैसला करो।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 10 (= II-1-3-10)

**गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The
मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए
कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची
थीम द्वारा व्यवस्थित**

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और दृश्यमान आकाश के बारे में त्रुटियाँ कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

**(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ,
विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र
मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण
कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)**

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस खंड में सामग्री:

9. भौतिक स्वर्ग का अंत क्या होगा (और पृथ्वी)?

1. इस्लामी ब्रह्मांड।

कुरान के अनुसार "सब कुछ" इस प्रकार है:

सब से ऊपर - ७ से ऊपर । स्वर्ग अल्लाह का ठिकाना है ।

पृथ्वी के ऊपर सात आकाश - एक के ऊपर एक।

अदृश्य स्तम्भों के द्वारा आकाश पृथ्वी पर विश्राम कर रहा है।

उनके बीच में सूर्य (?) और चंद्रमा हैं।

सूरज एक सपाट डिस्क है (यदि नहीं तो इसे फोल्ड नहीं किया जा सकता है जैसा कि कयामत के दिन होता है।

7 स्वर्गों में जन्नत है - उच्च स्वर्ग शीर्ष मुसलमानों के लिए हैं।

निचला स्वर्ग "सामान्य अच्छे" मुसलमानों के लिए है - कम से कम 4 बागों में विभाजित = 4 गुण।

आकाश के नीचे, और सबसे नीचे तक बांधे गए, सभी तारे हैं।

स्वर्ग पर जासूसी करने वाली बुरी आत्माओं का पीछा करने के लिए अल्लाह अक्सर सितारों को शूटिंग सितारों के रूप में उपयोग करता है।

आकाशों और तारों के नीचे बादल हैं - जिन्हें अल्लाह कभी-कभी तोड़ देता है (बारिश)।

उसके तहत वहां अल्लाह की मर्जी से ही पक्षियों को रखा जाता है।

पृथ्वी पर पहाड़ नीचे स्थापित हैं - या वास्तव में नीचे गिर गए हैं।

अल्लाह ने धरती पर पहाड़ों को क्यों रखा है इसका कारण इसे स्थिर करना है।

हदीसों के अनुसार पृथ्वी पर 2 नदियाँ स्वर्ग से शुरू होती हैं - नील और यूफ्राथेस।

पृथ्वी पर भी सभी प्रकार के प्राणी रहते हैं - मिट्टी से या किसी चीज से या कुछ भी नहीं।

आदमी - एडम - अगर आप ठीक और सख्ती से गिनें तो 13 अलग-अलग तरीकों से प्रमाणित किया जाता है।

यह सब हमारी समतल पृथ्वी पर विद्यमान है या रह रहा है।

7 पृथ्वी हैं - हदीसों के अनुसार अन्य "हमारी" पृथ्वी के अधीन हैं।

हदीसों के अनुसार इस्लाम 7 धरती के नाम जानता है।

हदीस बताती है कि पृथ्वी जितनी नीची है, उसके निवासियों के लिए स्थिति उतनी ही अधिक नर्क जैसी है।

और तल पर नर्क (?)

यह सब (संभवतः स्वर्ग और नर्क के अपवाद के साथ) ६ - या ८ - दिनों में बनाया गया था।

जैसे आपके भूगोल के शिक्षक ने आपको बताया था? और इस बकवास को किसने बनाया?

2. इसे किसने बनाया? - और किससे?

001 31/25: "यदि आप उनसे पूछें कि वह कौन है जिसने स्वर्ग बनाया (बहुवचन और एक बार फिर गलत) और पृथ्वी, वे निश्चित रूप से कहेंगे, 'अल्लाह'। गलत। अगर वे मानते हैं कि किसी भगवान ने इसे बनाया है, तो वे

निश्चित रूप से अपने स्वयं के भगवान का नाम लेंगे - हालांकि पुराने अरब में यह हो सकता था बहुदेववादी भगवान अल-लाह। (अल-लाह और अल्लाह के उच्चारण की समानता छुपाती है बोले जाने पर अंतर - **ठीक उसी तरह जब मुसलमान अल्लाह के बजाय ईश्वर शब्द का इस्तेमाल करते हैं**

**गैर-मुसलमानों से बात करना - यह सतह पर कुछ बुनियादी बातों को छुपाता है
कम ज्ञान वाले लोगों के लिए अल्लाह और ईश्वर/याहवे के बीच मतभेद हैं।**)

कुरान के अनुसार यह बहुत स्पष्ट है कि निर्माता अल्लाह है। आपको वह कथन मिलता है - परंतु
कभी प्रमाण नहीं - कम से कम इन श्लोकों में: 10/3 - 11/7 - 21/30 - 21/32 - 23/17 - 25/59 - 30/22 -
32/4 - 35/1 - 39/5 - 41/11 - 41/12 - 50/38 - 51/47 - 79/28।

002 35/1: "- - - अल्लाह, जिसने (कुछ नहीं से) आकाश (बहुवचन और गलत*) और
धरती - - -"। एक तरह से यह लगभग सही है कि जैसा स्वर्ग हम देखते हैं, वह (लगभग) से बना है
कुछ नहीं, क्योंकि एक ऑप्टिकल भ्रम फोटॉन से बना है (लेकिन मुहम्मद बहुत गलत थे)
वही, जैसा कि वह / कुरान का मानना था कि यह किसी सामग्री से बना था - यदि f पूर्व नहीं। सितारे
स्वर्ग में से किसी एक पर नहीं बांधा जा सकता)। लेकिन पृथ्वी निश्चित रूप से नहीं बनी है
कुछ नहीं - भले ही कोई बिग बैंग को संदर्भित करता हो। हम जोड़ सकते हैं कि ७ आकाश एक निर्माण है
पुराने ग्रीक और फारसी गलत खगोल विज्ञान से लिया गया - उन्होंने 7 अदृश्य लेकिन मजबूत आकाश का इस्तेमाल किया
आकाशीय आंदोलनों को समझाने की कोशिश करने के लिए। एक ऐसा तथ्य जिसका मुसलमान कभी जिक्र नहीं करते।

3. इसे कैसे बनाया गया?

**003 21/30: "क्या अविश्वासी यह नहीं देखते कि आकाश (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी
(सृष्टि की एक इकाई के रूप में) एक साथ जुड़े हुए थे, इससे पहले कि हम (अल्लाह *) उन्हें अलग कर दें?"
स्वर्ग एक प्रकाशिक भ्रम है - एक ऐसा तथ्य जो आज सर्वविदित है, लेकिन मुहम्मद इसे नहीं जानते थे
- और एक भौतिक वस्तु से एक भ्रम "क्लोवेन असंडर" नहीं हो सकता है। हम भी मिले हैं
मुसलमानों का कहना है कि बिग बैंग की थ्योरी कुरान को साबित करती है। लेकिन बिग बैंग "लौंग"
13.7 अरब साल पहले, जबकि हमारा सूर्य (हेलीओस या सूर्य *) एक 3 है।
पीढ़ी का तारा, और यह और पृथ्वी में शामिल ग्रह सिर्फ 4.6 अरब वर्ष पुराने हैं (नवीनतम
संख्या वास्तव में 4.57 अरब वर्ष हैं)। उम्र में अंतर, और इससे भी अधिक तथ्य यह है कि हमारे
सूर्य ३ है। पीढ़ी, (जिसका अर्थ है कि पृथ्वी - और सूर्य - से बनी सामग्री, है
तरल होने के दो चक्रों और (पूर्व) सूर्य के मिश्रित भागों के माध्यम से सुपर . बन गया
नोवा (विस्फोटक तारे) और ब्रह्मांड के बड़े हिस्से में फैले हुए थे जहां यह मिश्रित था
अन्य विस्फोटित सुपर नोवा के अवशेष, और अंत में एक नया सूर्य और ग्रह बनाने के लिए एकत्रित हुए)
इस संबंध में बिग बैंग को पूरी तरह अप्रासंगिक बना देता है - पिछले सभी 9 अरब वर्षों के लिए
पृथ्वी और सूर्य और ग्रह बस एक में बिखरे हुए परमाणु, अणु और टुकड़े थे
आकाशीय "मिक्सर" - एक पृथ्वी नहीं, आदि जिसे पहचाना जा सकता है और जिसे "एक साथ जोड़ा जा सकता है" या
आकाश के साथ "क्लोवेन असंडर"। कम से कम अल-अहज़र विश्वविद्यालय के प्रोफेसर यह जानते हैं
क्योंकि ये बहुत प्रसिद्ध तथ्य हैं, और इसका उपयोग करके लोगों को धोखा देने की कोशिश करना बेईमानी है
f में यह "तर्क"। भूतपूर्व। "कुरान का संदेश" - एक किताब जो देने का नाटक करती है, जैसा देखा गया है
मुस्लिम दृष्टिकोण से, कुरान की सही जानकारी और स्पष्टीकरण,
मुस्लिम दुनिया में कुरान पर सर्वोच्च अधिकारियों में से एक द्वारा प्रमाणित, उपरोक्त-
विश्वविद्यालय का उल्लेख किया।

निष्कर्ष: कुरान के अनुसार अल्लाह ने धुएं जैसी किसी चीज की मात्रा बनाई,
धुएं को "एक साथ आने" का आदेश दिया, और बाद में उस द्रव्यमान को 2 में विभाजित कर दिया - पृथ्वी (वास्तव में
७ पृथ्वी) एक भाग में, और स्वर्ग जैसा कि हम इसे देखते हैं (लेकिन वास्तव में ७ भौतिक आकाश के अनुसार
कुरान - और इस्लाम) दूसरे भाग में। यह उल्लेख करना अनावश्यक होना चाहिए कि इसमें नहीं है
वास्तव में जो हुआ उससे समानता। बिग बैंग ने गैस फैलाई - लगभग केवल हाइड्रोजन (H), लेकिन
आयनित और इस प्रकार अपारदर्शी रूप में हीलियम (He) के निशान के साथ - और बिल्कुल धूम्रपान नहीं,
क्योंकि सूक्ष्म कण अभी तक विशाल लोकों पर मौजूद नहीं थे। कुछ ३०००० के बाद - ३८०००
वर्षों तक गैस इतनी ठंडी हो गई थी कि अणुओं (मुख्य रूप से H2) के साथ संयोजन करने में सक्षम हो सकती थी

सितारों के लिए संघनित। अंतरिक्ष में गैस के कारण पहले तारे सुपर जाइंट्स के रूप में प्रबल थे
आज की तुलना में कहीं अधिक कसकर पैक किया गया था और इस प्रकार बड़े सितारे बनाने के लिए तैयार करना आसान था। में
तारे H2 को परमाणु प्रतिक्रियाओं के माध्यम से लोहे तक विभिन्न परमाणुओं में बदल दिया गया था कि
ऊर्जा सितारों को "लाइव" से मुक्त करता है।

लेकिन सुपर जाइंट्स में ये प्रतिक्रियाएं बहुत अधिक तापमान और दबाव के कारण तेजी से चलती हैं।
पहले से ही लगभग 10 मिलियन वर्षों के बाद - या यदि वे छोटे थे - तो वे सुपर-
नोवा उन विस्फोटों की चरम स्थितियों में भारी सामान बनाया जाता है - और उगल दिया जाता है
ब्रह्मांड में बाहर। वहाँ यह गैस के बादलों के हिस्से बन गए जो युगों से संघनित हो गए
नए सितारे। औसत आकार अब छोटा था, प्राकृतिक कारणों से - गैस के बादल कम थे
सघन। कुछ छोटे औसत आकार के कारण, औसत "जीवन" कुछ लंबा था।
लेकिन फिर भी इस 2 का एक बड़ा प्रतिशत। पीढ़ी के सितारे जाने के लिए काफी बड़े थे

सुपरनोवा जल्दी या बाद में (अक्सर अभी भी बहुत तेज) - और फिर एक नया चक्र शुरू हुआ। गैस बादल - जिसमें अब H2 के अलावा अन्य पदार्थ का एक छोटा प्रतिशत होता है और वह - समय से संघनित होता है नए सितारे।

और यहाँ अंत में हमारा तारा - हेलिओस या सूर्य - फिट बैठता है। हमारा सूर्य एक 3 पीढ़ी का तारा है - और उसके कारण पृथ्वी की तरह "चट्टान ग्रह" बनाने के लिए पर्याप्त भारी सामग्री थी।

लेकिन स्वर्ग और पृथ्वी कभी धुंआ नहीं थे। तारे और सूर्य ने कभी भी a . के साथ एक द्रव्यमान नहीं बनाया पहचानने योग्य पृथ्वी (एक और तथ्य जिसने इसे असंभव बना दिया: पृथ्वी को 9.1 अरब वर्ष बनाया गया था और खरबों तारे ब्रह्मांड की तुलना में बाद में)। उल्लेख नहीं है कि एक पहचानने योग्य पृथ्वी और स्वर्ग/तारे/आदि कभी भी एक द्रव्यमान नहीं थे जो पृथ्वी को छोड़कर अलग हो गए थे जैसे हम इसे जानते हैं जीवन और जीवों के लिए तैयार।

कुरान और मुहम्मद शायद ही अधिक गलत हो सकते थे, भले ही उन्होंने वास्तव में कोशिश की हो प्रति।

004 41/11a: "- - - यह (आकाश) धुआँ था - - -)"। मुहम्मद के अनुसार आकाश कुछ सामग्री थी (तारों को सबसे निचले स्वर्ग में बांधा गया था, f. पूर्व।) और होना था किसी चीज से बना। लेकिन यह गलत है। आकाश जैसा हम देखते हैं, वह सिर्फ एक ऑप्टिकल भ्रम है।

कुछ मुसलमान उसके बाद बिग बैंग और बादल जैसी स्थिति की खोज करते हैं, और वर्तमान में विजयी होते हैं इस्लाम के वैज्ञानिक और सही होने के इस "सबूत" के लिए आपको। लेकिन बिग बैंग हुआ 13.7 विज्ञान के अनुसार अरबों साल पहले। बादल राज्य 300ooo - 380ooo वर्षों तक चला, लेकिन यह आयनित गैस (हाइड्रोजन और थोड़ा हीलियम - आयनित होने पर अपारदर्शी होते हैं) से बनाया गया था, धुएं से नहीं। और हमारा सूर्य और पृथ्वी ९ अरब साल बाद तक नहीं मिला - 4.57 अरब साल पहले - और सभी 3 पीढ़ी की कृतियों में शीर्ष पर हैं। के बीच संबंध बिग बैंग और पृथ्वी के बाद बादल (धूम्रपान नहीं) अत्यधिक कमजोर हैं और उनका कोई लेना-देना नहीं है हमारे आकाश के साथ। अधिक तार्किक लेकिन कम बार-बार उद्धृत, ये कहानियां कह रही हैं कि आकाश बनाया गया था धूल और गैस के बादल से धीरे-धीरे सूर्य, ग्रहों आदि में मिल रहा है। लेकिन वह सूर्य, ग्रहों आदि के रूप में समाप्त सामग्री - हमारे आकाश जैसा एक ऑप्टिकल भ्रम नहीं बना है गैस या धूल या बादल। इसे प्रकाश से ही बनाया जाता है। नीचे 41/11c देखें।

005 41/11बी: "आओ तुम (पृथ्वी और आकाश*) एक साथ - - -"। पृथ्वी और आकाश कभी अलग नहीं हुए दो या दो से अधिक भाग जो तब एक साथ आ सकते थे। (इस्लाम समझाने की कोशिश करता है कि क्या मतलब है गैस, मुख्य रूप से H2 - हाइड्रोजन। लेकिन हाइड्रोजन - या अन्य गैसों - का धुएं से कोई लेना-देना नहीं है - कोई भगवान जानता था। (धुआं = गैस में तैरते सूक्ष्म कण - सूक्ष्म कणों के बिना नहीं धूम्रपान)।

***006 41/11c: "उसने (अल्लाह *) उससे (आकाश) और पृथ्वी से कहा: 'आओ तुम एक साथ - - -'"। NS आकाश जैसा कि हम इसे दिन में देखते हैं, केवल एक ऑप्टिकल भ्रम है जो अपवर्तन - झुकने - का परिणाम है दुर्लभ ऊपरी वायुमंडल में प्रकाश - यह नीला है क्योंकि नीला प्रकाश सबसे कम झुकता है। यह बस काम पर भौतिक नियम हैं - "एक साथ आने" का कोई सवाल ही नहीं है (और शारीरिक रूप से असंभव)।

रात का आकाश एक और ऑप्टिकल भ्रम है - दिन आकाश और रात का आकाश भी "बनाया" नहीं है उसी तरह से। यहाँ हम एक "आकाश" देखते हैं क्योंकि हम उन पर 3 आयाम नहीं देख सकते हैं दूरियां। रात में यदि संभव हो तो एक साथ आने वाली चीजों के बारे में बात करना और भी गलत है।कोई भी भगवान यह जानता था। मुहम्मद स्थानीय गलत खगोल विज्ञान में विश्वास करते थे। की रचना किसने की कुरान?

00a 51/47: "- - - यह हम (अल्लाह*) हैं जिन्होंने अंतरिक्ष की विशालता को बनाया है।" यहाँ एक बिंदु है कि नियंत्रित होना चाहिए : हमारे एक सूत्र के अनुसार अरब में प्रयुक्त होने वाला शब्द है "समा" जिसे "आकाश" कहा जाता है, जबकि "ब्रह्मांड" या "अंतरिक्ष" के लिए अरब शब्द कहा जाता है "अल-कान" होना। हम अब तक इसकी निश्चित रूप से जाँच नहीं कर पाए हैं, लेकिन इसका उल्लेख इसलिए करें क्योंकि इस तरह की बेईमानी बहुत कुछ बताती है कि क्या यह सच है - और हम अक्सर इस्लाम में बेईमानी पाते हैं मीडिया/किताबें (हालांकि हमने मूल रूप से युसुफ अली जैसे व्यक्ति से इसकी उम्मीद नहीं की थी)।

4. कितने आकाश मौजूद हैं? (सात आकाश/आसमान/क्षेत्र/आकाश।)

*००७ २/२९: "- - - उसने सातों आकाशों को आदेश और पूर्णता दी - - -"। फर्मामेंट है

स्वर्ग के लिए एक और शब्द हम इसे देखते हैं, हालांकि ज्यादातर रात के आकाश के लिए उपयोग किया जाता है। कुरान कई
स्थान सात आकाश या आकाश या पथ के बारे में बताता है (शब्द "आकाश" या इसी तरह का है
कुरान में बहुवचन में कम से कम 199 बार प्रयोग किया गया) - इसमें कोई संदेह नहीं है कि कुरान के अनुसार
7 (भौतिक) आकाश हैं। (इस्लाम भी "जानता है" जो विभिन्न स्वर्गों में निवास करते हैं - f. पूर्व।
2 में यीशु। स्वर्ग में, 4 में यूसुफ, 5 में हारून, 6 में मूसा, और 7 में इब्राहीम। स्वर्ग,
और अल्लाह से ऊपर 7. स्वर्ग, कुछ का उल्लेख करने के लिए)। इसमें कोई शक नहीं कि कुरान
मानते हैं कि स्वर्ग भौतिक है - यदि नहीं तो इसे बनाना या तारों को ठीक करना संभव नहीं था
सबसे निचला स्वर्ग, जैसे कुरान कई जगह बताता है। किसी भगवान ने इस पर विश्वास नहीं किया था - **लेकिन
मुहम्मद ने किया, जैसा कि उस समय मध्य पूर्व में विश्वास था
मुहम्मद. सात आकाश पुराने ग्रीक खगोल विज्ञान से लिए गए हैं - या शायद . से
फारसी खगोल विज्ञान, जो 7 आकाशों में भी विश्वास करता था (तारों को ले जाने के लिए 1 स्वर्ग, 1
4 ज्ञात योजनाकारों में से प्रत्येक के लिए, और सूर्य और चंद्रमा के लिए एक-एक)। कोई भी भगवान, लेकिन
मुहम्मद नहीं, जानते होंगे कि यह बहुत गलत था।** इस्लाम के कई "स्पष्टीकरण" हैं
इस बहुत स्पष्ट गलती के बारे में, लेकिन हमने कभी किसी मुसलमान को देखा या सुना नहीं है
इस संभावना का भी उल्लेख करते हुए कि खगोल विज्ञान के बारे में मुहम्मद की तस्वीर हो सकती है
ग्रीक या फारसी खगोल विज्ञान में उनके विश्वास द्वारा समझाया गया।

008 4/131: "- - - स्वर्ग - - -" (बहुवचन, लेकिन संख्या का उल्लेख नहीं है। एनबी: अरब बहुवचन में
मतलब कम से कम ३, क्योंकि अरब उन भाषाओं में से है जिनका एक विशेष रूप है - द्वैलिस - कब
दो के बारे में बात कर रहे हैं - लेकिन यहाँ शब्द उन 7 स्वर्गों को संदर्भित करता है जिन पर मुहम्मद विश्वास करते थे)। भले ही
कथन को एक ही पद में 2 बार दोहराया गया है जैसे इस एक में, अभी भी कोई 7 सामग्री नहीं है
आकाश (2/22) देखें। कोई भी भगवान जानता था, लेकिन मुहम्मद समकालीन ग्रीक में विश्वास करते थे
और फारसी खगोल विज्ञान - मुसलमानों ने कभी यह उल्लेख नहीं किया कि 7 स्वर्ग किसका खगोल विज्ञान था
मुहम्मद के समय का क्षेत्र, और न ही इस्लाम। हर कोई आश्चर्य करने के लिए स्वतंत्र है कि क्यों।

009 10/6: "- - - स्वर्ग - - -" (उल्लेख नहीं की गई संख्या - ऊपर 4/131 देखें)। यह शब्द है
कुरान में 190 बार बहुवचन में प्रयोग किया जाता है। (शब्द "आकाश", "सात
स्वर्ग", "आकाश", "सात पथ", और "सात आकाश" कम से कम एक साथ उपयोग किए जाते हैं
बहुवचन में 199 बार - इसमें कोई संदेह नहीं है कि कुरान 7 स्वर्गों में विश्वास करता है)। का बहुवचन

शब्द का अर्थ है मुहम्मद के समय मध्य पूर्व में सही खगोल विज्ञान क्या था:
तारे, ४ ज्ञात ग्रह, सूर्य और चंद्रमा ७ अदृश्य, लेकिन मजबूत थे
आकाश गोलार्द्धों की तरह बना (वास्तव में यूनानियों को पता था कि पृथ्वी एक गोला है, इसलिए तब
आकाश को गोलाकार होना था) पृथ्वी के ऊपर। अरबों और कई अन्य लोगों को यह तस्वीर मिली
ग्रीक से और फारसी खगोल विज्ञान से। मुसलमान आज निश्चित रूप से जानते हैं कि यह गलत है, और हैं
7 आकाशों को अलग-अलग तरीकों से "व्याख्या" करना - अंतरिक्ष के बारे में अस्पष्ट विचारों से, यह बताने के लिए
इसका मतलब कुछ और है - वे कहते हैं - पुराने अरब में 7 नंबर का मतलब "कई" भी हो सकता है
(जैसे कि इस मामले में ७ से अधिक सही है), और वातावरण में ७ परतों को संदर्भित करने के लिए
7 आकाश (बिना यह बताए कि कैसे तारे आकाश के सबसे निचले भाग में स्थिर थे,
या यह समझाते हुए कि पुनरुत्थित भौतिक मनुष्य वातावरण की परतों पर कैसे चल सकते हैं -
स्वर्ग स्वर्ग में है - जैसे इस्लामी शास्त्र बताते हैं), आदि। **आश्चर्यजनक रूप से अब तक कोई भी नहीं
हमारे समूह ने एक मुस्लिम से मुलाकात की है जिसमें उल्लेख किया गया है कि 7 स्वर्ग सही थे
मुहम्मद के समय में खगोल विज्ञान - हो सकता है कि वे इसका उल्लेख न करना पसंद करें, क्योंकि
अगला तार्किक सवाल यह है: एक भगवान जानता था कि कोई 7 स्वर्ग नहीं थे, मुहम्मद
विश्वास था कि वहाँ थे। फिर कुरान किसने बनाया?**

आपको कम से कम इन श्लोकों में ७ गैर-मौजूद स्वर्ग का यह संदर्भ मिलेगा: २/२२ – २९ -
107 - 144 - 164 - 255 x 2 - 284 - 3/5 - 29 - 83 - 3/109 - 128 - 132 - 180 - 189 - 190 - 191
- 4/126 - 131 x 2 - 132 - 170 - 171 - 5/17 - 40 - 97 - 120 - 6/1 - 3 - 12 - 14 - 73 - 75 - 79
- १०१-७/५४-१५८-१८५-१८७-९/३६-११६-१०/३-६-१८-५५-६६-६८-१०/१-३-११/७-
107 - 108 - 123 - 12/101 - 105 - 13/2 - 15 - 16 - 18 - 14/2 - 10 - 19 - 24 - 32 - 48 - 15/16
- 85 - 16/3 - 49 - 52 - 73 - 77 - 17/95 - 99 - 102 - 18/14 - 26 - 51 - 19/65 - 93 - 20/4 - 6 -
21/4 - 16 - 19 - 22 - 30 - 32 - 104 - 22/18 - 56 - 64 - 23/71 - 24/6 - 35 - 41 - 42 - 25/2 -
6 - 59 - 26/24 - 27/25 - 60 - 65 - 87 - 29/44 - 52 - 61 - 30/8 - 18 - 22 - 27 - 66 - 31/10 -16
- 20 - 25 - 32/4 - 5 - 33/72 - 34/1 - 3 - 22 - 24 - 35/1 - 38 - 40 - 41 - 44 - 36/81 - 37/5 -
38/10 - 39/5 - 38 - 46 - 63 - 67 - 68 - 40/37 - 57 - 42/4 - 5 - 11 - 12 - 42 - 49 - 53 - 43/9
- 82 - 85 - 44/7 - 38 - 45/3 - 13 - 22 - 27 - 36 - 37 - 46/3 - 4 - 33 - 49/16 - 50/38 - 52/36
- 53/26 - 31 - 55/29 - 33 - 57/1 - 2 - 4 - 5 - 10 - 58/7 - 59/1 - 24 - 61/1 - 62/1 - 63/7- 64/1
- 3 - 4 - 78/19 - 37 - 85/9।

०१० ४१/१२: "उसने (अल्लाह *) ने प्रत्येक स्वर्ग को अपना कर्तव्य और आदेश सौंपा"। वह कैसे कर सकता है

कि जब 7 स्वर्ग नहीं थे?

011 53/49: "- - - वह (अल्लाह) सीरियस (ताकतवर सितारा) का भगवान है - -"। सीरियस यह बहुत नहीं है शक्तिशाली, भले ही वह पृथ्वी से ऐसा ही क्यों न लगे। यह जैसे सितारों की तुलना में एक बौना है Betelgeuse, Aldebaran और लाखों अन्य। और f की तुलना में सिर्फ एक पटाखा। भूतपूर्व। NS अत्यधिक शक्तिशाली एटा कैरिने (विस्फोट के लिए विशाल और अस्थिर सीमा रेखा, और खगोलीय रूप से निकट भविष्य में सुपरनोवा जाने की उम्मीद है)। की तुलना में उल्लेख नहीं है असली सुपर दिग्गज।

***०१२ ६७/३: "वह (अल्लाह*) जिसने सात आकाशों को एक दूसरे के ऊपर बनाया - - -"। **यह है हमारे आकाश की कुरान की तस्वीर को अधिक सटीक और स्पष्ट रूप से बताना शायद ही संभव है यह। न तो बहुत अधिक गलत होना संभव है,** खासकर जब हम इसे इसके अनुसार जोड़ते हैं कुरान स्वर्ग अदृश्य स्तंभों द्वारा धारण किया जाता है, जिससे स्वर्ग बनाया जाता है कुछ सामग्री (यदि नहीं तो आप उन्हें तारे, आदि नहीं बांध सकते), कि तारे स्थिर हैं सूर्य के साथ सबसे निचले स्वर्ग तक (?) और आकाश के बीच चंद्रमा, और यह कि तारे बुरी आत्माओं की जासूसी करने के लिए शूटिंग सितारों के रूप में भी दोगुना - और सब कुछ वहीं बना रहा पृथ्वी पर विश्राम कर रहे अदृश्य स्तम्भों द्वारा। कुरान की रचना किसने की - ईश्वर या कोई नहीं सर्वज्ञ? मुहम्मद शायद? (और ७१/१५ भी "एक के ऊपर एक" की पुष्टि करता है)।

०१३ ७८/१२: "और क्या हम (अल्लाह) ने तुम्हारे ऊपर सात फ़र्म बना लिए हैं - - -?" के लिए कुछ बनाना है, सामग्री का उपयोग करना है। उसके लिए एक और पुष्टि स्वर्ग सामग्री हैं। मुसलमान कभी-कभी बताते हैं कि पुराने अरब में 7 "कई" (और .) का पर्यायवाची था 70 "बहुत से" के लिए), और यह कि कुरान का अर्थ 7 नहीं बल्कि कई है। परंतु ईमानदारी से "कई" कम से कम "7" जितना गलत है। और आपको उल्लेखित ७ आकाश मिलेंगे, कम से कम इन छंदों में फ़र्ममेंट या ट्रैक्ट: 2/29 - 17/44 - 23/17 - 23/86 - 41/12 - 65/12 - 67/3 -71/15 - 78/12। (10/6 भी देखें)।

5. आकाश कैसे बनते हैं? - और इसकी रक्षा।

०१४ २/२२: "- - - और स्वर्ग (बहुवचन और गलत) आपकी छतरी - - -"। स्वर्ग/आकाश नहीं है छत्र दिन के समय हम जो "स्वर्ग" देखते हैं, वह वास्तव में प्रकाश के झुकने से होने वाला भ्रम है, और रात में हम जो "चिकना" स्वर्ग देखते हैं, वह भी एक भ्रम है, जो इस तथ्य के कारण होता है कि हम हैं बड़ी दूरियों के कारण वहाँ तीसरे आयाम को देखने में असमर्थ है, और प्राप्त करता है यह धारणा कि सभी तारे हमसे समान दूरी पर हैं। कोई भी भगवान यह जानता था, लेकिन मोहम्मद नहीं। 67/3a, 67/3b, 67/5a, और 67/5b भी देखें। मुसलमान समझाते हैं आकाश (बहुवचन और गलत) अंतरिक्ष और सितारों और आकाशगंगाओं के साथ - लेकिन हर बार वे तब "भूल जाओ" यह समझाने के लिए कि कैसे सितारों को 7 स्वर्गों के सबसे निचले हिस्से में रखा गया है कुरान अस्तित्व बताता है, या सितारों को शूटिंग सितारों के रूप में कैसे उपयोग किया जाता है। वे कभी-कभी 7 आकाश भी बताते हैं = वायुमंडल में 7 परतें। **कोई टिप्पणी नहीं - लेकिन एल्डेबारन जैसे सितारों के बारे में सोचें - एक विशाल तारा - हमारे वायुमंडल में एक परत पर स्थिर। एक मजाक।** छतरियों के बारे में दावा जो आपको कम से कम मिल जाए 2/22 - 21/32 - 40/64 - 52/5 - 79/28 में। यहां तक कि आपको एफ. भूतपूर्व। 21/32 में कि यह ठीक है संरक्षित - नीचे देखें।

**०१५ १३/२: "अल्लाह वह है जिसने आकाश (बहुवचन और गलत) को बिना किसी स्तंभ के ऊपर उठाया है आप देख सकते हैं: - - -"। एक मुस्लिम सूचना संगठन सीए था। 2007 ने इसे समझाने के लिए कहा वाक्य। उन्होंने १००% विनम्रता से उत्तर नहीं दिया, कि ६० या उससे अधिक के आईक्यू वाले किसी को भी समझें कि इसका मतलब था कि खंभे मौजूद नहीं थे। पूछने वाले ने जवाब दिया कि वह अस्तित्वहीन और अदृश्य के बीच का अंतर जानता था - उपरोक्त वाक्य में अर्थ है "अदृश्य" - और उनसे वास्तविक स्पष्टीकरण देने के लिए कहा। उन्होंने कभी जवाब नहीं दिया।

कोई स्तंभ मौजूद नहीं है - दृश्यमान या अदृश्य। **और वास्तव में विचार उपहास है, जैसा कि मौजूद है कोई भौतिक स्वर्ग नहीं है जिसे स्थिति में रखने की आवश्यकता है - जो स्वर्ग हम देखते हैं वह सिर्फ एक ऑप्टिकल है मोह माया। कोई भी भगवान - छोटे वाले भी - यह जानते होंगे, लेकिन मुहम्मद स्वाभाविक रूप से नहीं। फिर कुरान किसने बनाया?**

इसके अलावा कोई भी आदमी या जानवर या पक्षी कभी भी ऐसे अदृश्य स्तंभ से नहीं टकराया - और न ही कोई विमान एक से टकरा गया। पूरी सूची में 31/10a भी देखें।

०१६ १५/१७: "- - - हम (अल्लाह*) ने उन्हें (राशि चक्रों*) हर बुरी आत्मा से सुरक्षित रखा है शापित: - - - "कुरान के अनुसार, सितारों - राशि चिन्हों सहित - को बांधा जाता है

7 के सबसे निचले हिस्से तक (सामग्री - उन्हें होना चाहिए यदि तारों को उनमें से किसी एक से जोड़ा जा सकता है)
आकाश। लेकिन जिन्न/बुरी आत्माएं स्वर्ग की जासूसी करना चाहती थीं, और उन्हें पीछा करना पड़ा
सितारों को शूटिंग सितारों के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। और फिर उसी समय राशि चिन्हों पर पहरा दिया गया।
विज्ञान के अनुसार यह कम से कम पांचवीं शक्ति के लिए बिल्कुल बकवास है। कोई भगवान जानता था -
बच्चे भी - लेकिन मुहम्मद नहीं। फिर किसने कुरान को उसके सारे गलत तथ्यों के साथ बनाया,
आदि।?

**०१७ २१/३२: "और हम (अल्लाह*) ने आकाश (बहुवचन और गलत*) को एक छतरी कुआँ बना दिया है
संरक्षित - - -"। मुहम्मद सितारों और शूटिंग सितारों के बीच अंतर नहीं देख पा रहे थे।
कुरान में यह बताया गया है कि शूटिंग सितारे (सामान्य सितारे होने के लिए गलती) "तीर" हैं।

बुरी आत्माओं या जिन्नों (प्राचीन अरब लोककथाओं से "उधार" लेने वाले) का पीछा करना चाहते थे
स्वर्ग पर जासूसी। आज कोई भी बच्चा एक असली स्टार और एक शूटिंग स्टार के बीच का अंतर जानता है,
और यह भी कि अगर शूटिंग सितारे असली सितारे होते तो पृथ्वी पर और पृथ्वी पर क्या होता। एक बच्चा भी
यह बौना भगवान जानता था - लेकिन मुहम्मद नहीं, क्योंकि यह आधुनिक ज्ञान है। प्रासंगिक या
बेतुका सवाल: फिर कुरान की रचना किसने की?

***०१८ ३७/६+७: "हम (अल्लाह*) ने निचले स्वर्ग को सुंदरता (में) सितारों से सजाया है - (के लिए)
सुंदरता) और सभी जिद्दी विद्रोही बुरी आत्माओं से बचाव के लिए।" पहले 37/6 देखें। फिर
कुरान एक तारे और एक शूटिंग स्टार के बीच का अंतर नहीं जानता है, और बताता है कि तारे
बुरी आत्माओं का पीछा करने के लिए उपयोग किया जाता है जो जासूसी करना चाहते हैं या स्वर्ग में कही गई बातों को सुनना चाहते हैं। NS
ऐसे मामलों में शूटिंग सितारों को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। **यह कहने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए कि
कम से कम २५वें और ३०वें क्रम में गलत है** = एक तारे के द्रव्यमान और के बीच का अंतर
एक शूटिंग स्टार की। श्लोक ८ भी देखें। कि सबसे निचले स्वर्ग की रक्षा केवल परियों में होती है
किस्से किसी खुदा को पता था - तो कुरान किसने बनाया?

***०१९ ६७/५: "--- और हम (अल्लाह*) ने ऐसे (दीपक (तारे*) जैसे) मिसाइलें चलाने के लिए बनाई हैं
दुष्टों को दूर करो - - -"। अच्छा अच्छा। कोई भी माध्यमिक विद्यालय का बच्चा यह देख सकता है कि प्रवेश
इसी श्लोक से ६७/५अ गलत थे, इस पर हंसेंगे: तारे सबसे नीचे तक बंधते हैं
स्वर्ग और फिर बुरी आत्माओं को दूर भगाने के लिए शूटिंग सितारों के रूप में दोगुना! आज यह स्पष्ट है कि
"सूचनाएं" केवल परियों की कहानियों में हैं। 67/3 और 67/5a भी देखें। कुरान किसने बनाया?

आगे कोई टिप्पणी नहीं - सिवाय इसके कि आप 15/17-18 - 37/10 - 72/8 . में समान पाते हैं

6. निर्माणों की गुणवत्ता कैसी है? (हो सकता है कि हिस्से गिर जाएंगे?)

००बी २२/६५: **क्या मुहम्मद अली ने यहाँ "अल-तकिया" (वैध झूठ) बनाया है? वह ऐसा कहता है
अल्लाह "आकाश (बारिश) को धरती पर गिरने से रोकता है"। लेकिन "The " के अनुसार
कुरान का संदेश "अरब पाठ कहता है कि अल्लाह स्वर्ग को गिरने से रोकता है
पृथ्वी पर नीचे। मामले में काफी वैज्ञानिक गलती। और ए युसुफ से एक बेईमानी भी
मामले में अली**

020 32/23: "वह (अल्लाह) जिसने वह सब कुछ बनाया है जिसे उसने सबसे अच्छा बनाया है - - -"।
गलत। हर चीज से दूर सबसे अच्छा बनाया जाता है। मनुष्यों को लेने के लिए: हम देख सकते हैं a
इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पेक्टर का थोड़ा अधिक, हम अधिक उत्पादन करने में सक्षम शरीर के साथ कर सकते हैं
विटामिन, हम बीमारियों के खिलाफ बेहतर प्रतिरोध के साथ कर सकते हैं, हम शरीर के साथ कर सकते हैं
पहनने और आंसू के लिए मजबूत, हम मजबूत हड्डियों और शरीर के अन्य अंगों के साथ कर सकते थे, हम कर सकते थे
खोए हुए शरीर के अंगों के स्वतः पुनर्जनन के साथ बहुत बेहतर, और बहुत कुछ और बहुत कुछ जो हो सकता था
जो "सबसे अच्छा" है, उससे बेहतर और करीब रहा है। की "पूर्ण" सूची में ६७/३बी भी देखें
गलतियां।

०२१ ३४/९: "- - - हम (अल्लाह*) उन पर आकाश का एक टुकड़ा गिरा सकते हैं।" हम के रूप में आकाश
देखें कि यह एक ऑप्टिकल भ्रम है (मुहम्मद का मानना था कि यह कुछ ऐसी सामग्री थी जिसके लिए तारे थे
बांधे गए थे)। एक ऑप्टिकल भ्रम का एक टुकड़ा - ऐसा कहने के लिए एक मृगतृष्णा - नीचे कैसे गिर सकता है
कोई व्यक्ति? मुसलमान इसे "समझाते" हैं कि कुरान एक शूटिंग स्टार के बारे में बात करता है या
एक जैसा। लेकिन अन्य जगहों की किताब ऐसे गिरते सितारों के बारे में बात करती है, और भले ही वह इसे मानती है
साधारण तारे बनने के लिए, यह स्पष्ट रूप से इसमें और आकाश के बीच का अंतर जानता है। कोई नहीं है
संदेह है कि यह आकाश के एक टुकड़े के बारे में ही बात कर रहा है। 17/92 - 52/44 भी देखें।

**022 50/6: "- - - और इसमें कोई दोष नहीं हैं (आकाश*) - - -"। आकाश दो अलग ऑप्टिकल है
भ्रम - पहले दिन सूरज की रोशनी के झुकने से, और रात में हमारी अक्षमता से ३

लंबी दूरी पर आयाम:

१६४

पेज 165

1. जैसे दिन में सूरज की रोशनी पूरे पर पड़ती है
   वातावरण और चारों ओर प्रकाश झुकता है, खामियां हैं
   वहाँ नहीं। (वास्तव में कोई खामियां नहीं हैं, लेकिन
   तापमान के कारण झिलमिलाता
   वातावरण में अंतर देखना आसान है
   जब आप दूरबीन का उपयोग करते हैं - और अक्सर रात में
   तारों का टिमटिमाना)। एक बार फिर स्वाभाविक
   घटना कुरान के कारण होती है
   अल्लाह बिना किसी सबूत के। एक और ढीला
   बयान। हां, इसमें खामियां कैसे हो सकती हैं
   दृष्टि भ्रम?
2. रात में हम के निर्वात में गहराई से देखते हैं
   स्थान। वैक्यूम में कोई खामियां नहीं हैं। और
   शारीरिक रूप से बोलना: वहाँ कैसे दिखाई दे सकता है
   वैक्यूम में दोष?. एक बार और: एक ढीला
   वास्तविक मूल्य के बिना बयान - को छोड़कर
   धोखेबाज और धोखेबाज।

किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी अपने भगवान के बारे में ऐसा ही कह सकता है। शब्द इतने सस्ते हैं।

7. सूर्य, चंद्रमा और सितारों के बारे में क्या?

०२३ २/१८९: "वे (अमावस्या) समय की निश्चित अवधि को चिह्नित करने के लिए संकेत हैं (
मामलों के) पुरुष, - - -"। गलत - अमावस्या बस एक प्राकृतिक घटना है जो मनुष्य अक्सर करता है
समय की गणना के लिए उपयोग करता है। लेकिन यह उस उद्देश्य के लिए नहीं बनाया गया है। अगर इस्लाम उस पर जोर देता है, तो वे करेंगे
साबित करना है।

०२४ ६/९६: "वह (समय की) गणना के लिए - - - सूर्य और चंद्रमा बनाता है"। गलत। वे -
और विशेष रूप से सूर्य - प्राकृतिक घटनाएं हैं जो पृथ्वी पर जीवन के लिए आवश्यक हैं (चंद्रमा
जीवन के उद्भव के लिए आवश्यक हो सकता है, कम से कम शुष्क भूमि पर)। ऐसा होता है कि वे
समय की गणना के लिए ठीक हैं, लेकिन वे इसके लिए नहीं बने हैं। (वास्तव में वे मुश्किल से ही बनते हैं
विशेष रूप से पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने के लिए।)

०२५ ३१/२९: "क्या तुम नहीं देखते - - - कि उसने (अल्लाह *) सूरज और चाँद को अपने अधीन कर लिया है
कानून), प्रत्येक अपना पाठ्यक्रम चला रहा है - - -।" गलत। पृथ्वी के सापेक्ष सूर्य स्थिर है और यह है
गतिमान पृथ्वी। ("स्पष्टीकरण" कुछ मुसलमानों से: हम इस तथ्य को छोड़ देते हैं कि यह यहाँ बात कर रहा है
पृथ्वी और सूर्य के बीच सापेक्ष गति के बारे में - स्पष्ट रूप से आंशिक रूप से क्योंकि यह बातूनी है
पृथ्वी पर पर्यवेक्षक के सापेक्ष आंदोलन के बारे में, और इस तथ्य से स्पष्ट है कि बात की जा रही है
सूर्य और चंद्रमा दोनों की गति - और हम इस तथ्य को छोड़ देते हैं कि कविता की शुरुआत हुई थी
"देखो तुम नहीं - - -", और उस समय के आदमी की घटनाओं में स्पष्ट अर्थ खोजें
बस नहीं देख सकता था: मुहम्मद ने आकाशगंगा के चारों ओर सूर्य के पाठ्यक्रम के बारे में बताया, हर बार एक बार
225 मिलियन वर्ष (2009 से नई संख्या दर्शाती है कि तारे कुछ तेजी से आगे बढ़ रहे हैं
और इसलिए कि यह संख्या थोड़ी कम है)। खैर, यह स्पष्ट हो सकता था, अगर उनके पास होता
समझाया कि वे सिर्फ उस गति के लिए क्यों बस गए - क्योंकि आकाशगंगा चारों ओर घूम रही है
स्थानीय समूह (आकाशगंगाओं का एक छोटा समूह), जो हमारे स्थानीय में फिर से घास काट रहा है
सुपर ग्रुप (हजारों आकाशगंगाओं का समूह), जो फिर से घास काट रहा है
गुरुत्वाकर्षण के कुछ विशाल केंद्र को द ग्रेट अट्रैक्टर कहा जाता है - - - जो फिर से हो सकता है
रास्ता कहीं। (मुहम्मद को स्पष्ट रूप से वास्तविक संबंधों के बारे में ज़रा भी विचार नहीं था
पृथ्वी, चंद्रमा और सूर्य के बीच - किसी भी देवता को सब कुछ ठीक-ठीक पता था। और मुसलमान हैं
"स्पष्टीकरण" खोजने के लिए उत्सुक हैं ताकि उन्हें गलतियों को न देखना पड़े।) 33/29ab भी देखें -
36/40 - 39/5 - 39/38 - 91/2

165

पृष्ठ १६६

क्या वे सिर्फ अपनी पसंद के तर्क उठा रहे हैं और यह प्रतीत होता है कि प्रयोग करने योग्य है, कोई फर्क नहीं पड़ता
क्या यह वास्तव में फिट बैठता है या नहीं? वैसे यह पहली बार नहीं होगा।

००बी ३६/३८: ३६/३८ (अरब: "ली-मुस्तकारिन लाहा") का सामान्य अनुवाद है (से अनुवादित)
स्वीडिश): "और सूरज अपने आराम की जगह पर चला जाता है" जो कि गलत है। लेकिन पुराने अरबी के रूप में
लिखित भाषा दूर से सटीक थी, मुहम्मद अली का प्रतिलेखन संभव है, यदि कम हो
संभावित एक - जैसा कि "(से) उस पाठ्यक्रम के लिए अंतिम बिंदु है जिसका यह अनुसरण करता है" और - अन्य सम्मिलित करना
लिखित व्यंजनों के बीच स्वर (पुराने अरब में केवल व्यंजन लिखे गए थे) और
अभिव्यक्ति "ला मुस्तक़रा लहा" प्राप्त करना - "यह आराम किए बिना अपना पाठ्यक्रम चलाता है" (अब्द अल्लाह
इब्न मसूद/ज़माख़शरी)। या "सूरज कुछ हद तक अपना रास्ता चलाता है, फिर रुक जाता है"
(बायदावी: "दि लाइट्स ऑफ रिवीलेशन" पृ.585)। कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप यहां कौन सा अनुवाद चुनते हैं
गलत है।

०२६ ३६/३९: "- - - जब तक वह (चंद्रमा*) किसी तिथि के पुराने (और मुरझाए हुए) निचले हिस्से की तरह वापस नहीं आती-
डंठल (जो अर्धचंद्राकार रूप लेता है*)"। गलत। चंद्रमा अर्धचंद्र नहीं बनता - यह केवल
ऐसा दिखता है, और मोहम्मद भी देख सकता था, अगर वह चौकस होता: भीतर
वर्धमान द्वारा इंगित चक्र, और वास्तव में चंद्रमा द्वारा कवर किया गया है, आप कभी नहीं देखते हैं a
तारा। यह कोई भी देवता जानता था। मुहम्मद स्पष्ट रूप से नहीं। कुरान किसने बनाया?

असल में चांद का कोई मतलब नहीं है - कुरान के मुताबिक इसका मतलब मुख्य रूप से
गणना समय - और सूर्य भी, आंशिक रूप से (ऊपर f. उदा. 2/189 देखें)।

***०२७ ६७/५: "और हम (अल्लाह) ने (पुराने समय से) सबसे निचले स्वर्ग को दीयों से सजाया है
(सितारे*) - - -"। ब्रह्मांड की कुरान की तस्वीर ग्रीक और / या फारसी खगोल विज्ञान से ली गई है,
और जैसा कि कोई भी माध्यमिक विद्यालय का बच्चा धार्मिक शिक्षा से अंधी नहीं है, देख सकता है; यह बहुत अधिक है
गलत। एक बात के लिए स्वर्ग को संभव बनाने के लिए किसी सामग्री से बनाना पड़ता है
उनमें से एक को तारे ठीक करना। इसके अलावा: ग्रीक आदि खगोल विज्ञान से हम जानते हैं कि ग्रह,
तारे, सूर्य और चंद्रमा अलग-अलग आकाशों में स्थिर थे। जैसा कि कुरान के अनुसार तारे हैं
सबसे नीचे तक स्थिर, उन्हें चंद्रमा से भी प्रेमी होना है - यह भी इस तथ्य से पुष्टि होती है
कि कुरान चाँद को आसमानों के बीच रखता है। लेकिन क्या होता है अगर आप कहने की कोशिश करते हैं
Betelgeuse या यहां तक कि Helios - हमारा सूर्य - लूना के नीचे - हमारा चंद्रमा? उत्तर आवश्यक नहीं है। के अलावा:
कुरान किसने बनाया?

आगे: हमारे रॉकेट बहुत ऊंचे नहीं जा सकते - वे भौतिक आकाश से टकराएंगे !!!
मुहम्मद ने कहा कि कुरान परिपूर्ण और गलतियों या दोषों के बिना है। कुरान कहता है
कुरान परिपूर्ण और गलतियों या दोषों के बिना है। इस्लाम कहता है कि कुरान परिपूर्ण और बिना है
गलतियाँ या खामियाँ। मुसलमानों का कहना है कि कुरान सही है और गलतियों या दोषों के बिना है। के सभी
वे कहते हैं कि कुरान परिपूर्ण और गलतियों या दोषों के बिना है क्योंकि अल्लाह ने नीचे भेजा है
एक किताब की प्रति जो उसने बनाई थी या जो हमेशा के लिए अस्तित्व में थी - एक किताब जो पूजनीय है
"मदर बुक" (f. पूर्व 13/39 - 43/4) अल्लाह के स्वर्ग में - और एक सर्वज्ञ भगवान कर सकते हैं
न तो गलतियाँ करें और न ही उन ग्रंथों का सम्मान करें जिनमें बहुत सारी गलतियाँ, खामियाँ और हॉलमार्क हों
धोखेबाज और धोखेबाज। इसके ठीक नीचे 67/3 और 67/5b भी देखें।

**लेकिन उन सभी शब्दों से क्या मदद मिलती है जब गलतियाँ और
खामियां किसी भी तरह हैं? और जब इस्लाम बताता है कि कुल
कुरान में किसी भी गलती का अभाव साबित करता है कि यह अल्लाह से है, क्या है
तो क्या इस तरह के मेगा ब्लंडर साबित होते हैं?**

०२८ ७१/१६: "और उनके (आकाश) के बीच में चाँद को एक दीपक बनाया - - -।" चाँद नहीं है
७ आकाशों के बीच में (= कहीं सितारों के बीच में या वास्तव में उनके ऊपर, जैसे

तारे मुहम्मद के सबसे निचले स्वर्ग के लिए बांधे जाते हैं)। कोई भी बच्चा भगवान जानता था,
मुहम्मद नहीं। कुरान किसने बनाया?

**029 76/13: "- - - (चंद्रमा की) अत्यधिक ठंड।" चाँद अक्सर रात में उठता है। साफ रातें -
जब आप चाँद देख सकते हैं - अरब जैसे रेगिस्तानों में अक्सर बहुत ठंड होती है। लेकिन ठंड नहीं है
चंद्रमा के कारण - यह महज एक संयोग है। यह ठंडा है क्योंकि पृथ्वी इसका अधिक विकिरण करती है
आकाश के साफ होने पर अंतरिक्ष में जाने के लिए - कुछ ऐसा जो मुहम्मद नहीं जान सकता था, लेकिन किसी भी भगवान के पास था
इसे जाना। कुरान की रचना किसने की?

8. सृष्टि को बनाने में कितना समय लगा?

०३० ११/७: "वह (अल्लाह *) वह है जिसने आकाश (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी को छह में बनाया
दिन"। एक बार और: इसमें बहुत अधिक समय लगा। और कोई भी भगवान जानता है कि - लेकिन मुहम्मद ने किया
नहीं। (मुसलमान कभी-कभी कहते हैं कि दिन के लिए अरब शब्द का अर्थ कल्प भी हो सकता है, लेकिन जैसा कि हमारे पास है
इस शब्द का अनुवाद किसी भी गुणवत्तापूर्ण पुस्तक में नहीं मिला या किसी शिक्षित व्यक्ति से नहीं सुना,
यह इस भूल को दूर करने का एक स्पष्ट प्रयास प्रतीत होता है)। नीचे 41/9-12 भी देखें और
मेगा गलतियाँ।

कि इसमें ६ दिन लगे, कम से कम १०/३-११/७-२५/५९-३२/४-५०/३८-५७/४ में उल्लेख किया गया है। परंतु:

***०३१ ४१/९-१२: "(अल्लाह*) ने दो दिनों में पृथ्वी की रचना की - - -। उन्होंने (पृथ्वी) पहाड़ों पर सेट किया
उसके ऊपर दृढ़ होकर खड़ा हुआ, और पृथ्वी पर आशीर्वाद दिया, और उस में सब कुछ मापा
चार दिनों में उन्हें (जीवित संस्थाओं*) को उचित अनुपात में पोषण देने के लिए चीजें - - - (और *)
इसलिए उसने उन्हें (आकाश*) सात आकाशों के रूप में दो दिनों में पूरा किया - - -"। यह 8 दिन बनाता है -
कुरान आमतौर पर जो कहता है उसकी तुलना में बहुत असंगत और बहुत गलत: 6 दिन। (नहीं करने के लिए
उस १३.७ अरब वर्षों का उल्लेख करें जिसे विज्ञान ने खोजा है - या पृथ्वी के लिए 4.57 अरब वर्ष - या
पहला आदिम जीवन प्राप्त करने तक करोड़ों वर्ष)। एक और विरोधाभास। हम
कहा गया है कि हमें बहुत मूर्ख बनना होगा जो यह नहीं समझता कि पहले दो दिन हैं
अगले चार में शामिल हैं। हम मानते हैं कि इस्लाम इसे दूर "समझाने" का एकमात्र तरीका है -
लेकिन यह बहुत स्पष्ट रूप से वह नहीं है जो पाठ कहता है। ("कुरान के संदेश ने "सिद्ध" किया है
कुरान थोड़ा (कम से कम स्वीडिश अनुवाद में) "स्पष्टीकरण" को इतना गूंगा नहीं बनाने के लिए
- लेकिन केवल "बिल्कुल नहीं", जैसा कि यूसुफ अली का अनुवाद बहुत स्पष्ट है)।

इसका मतलब है कि सब कुछ ६ या ८ दिनों में बन गया था - एक छोटा आंतरिक विरोधाभास। परंतु
विरोधाभास वास्तविकता की तुलना में कुछ भी नहीं बनाता है: 13.7 अरब वर्ष।

9. और भौतिक स्वर्ग का अंत क्या होगा?

०३२ ७३/१८: "----आसमान फट जाएगा---।" वैक्यूम को अलग कैसे किया जा सकता है? (भी
देखें 69/16 - 76/9 - 82/1 - 84/1।)

**033 75/8+9: "(जिस दिन*) चाँद अँधेरे में दफ़न है, और सूरज और चाँद
एक साथ जुड़े हुए हैं - - -"। पहले लगभग 5 अरब वर्षों में यह शारीरिक रूप से असंभव है। और यह
जिस दिन यह संभव हो सके, कुरान में वर्णित जन्नत अब संभव नहीं है।
क्योंकि - और कम से कम नहीं: उस दिन चाँद अँधेरे में नहीं, बल्कि तीव्र रोशनी में दफ़न होगा
- और कुरान में वर्णित कयामत और जन्नत का दिन असंभव होगा। इसलिये
उस दिन पृथ्वी और चंद्रमा दोनों ही सूर्य के अंदर दब जाते हैं - यदि ऐसा होता है (विज्ञान नहीं है
यकीन है कि सूरज पर्याप्त गुब्बारा होगा)। लेकिन किसी भी मामले में बेहद सूजा हुआ सूरज कुछ भी कर देगा
बृहस्पति के अंदर का स्थान पृथ्वी पर स्वर्ग के लिए या पृथ्वी के ऊपर/आसपास स्वर्ग के लिए बहुत गर्म है - the
कुरान वहां स्वर्ग को एक सौम्य और चिरस्थायी सूर्य के नीचे रखता है। चिरस्थायी भी रहेगा
असंभव और गलत, क्योंकि विज्ञान बताता है कि लगभग 5 अरब वर्षों में पृथ्वी या तो है

विशाल सूजे हुए, लाल (अब और पीले नहीं) सूरज, और स्पोर्टिंग सीए के अंदर। 3000 सेंटीग्रेड, या
तत्कालीन विशाल तारे के ठीक ऊपर और पृथ्वी पर तापमान लगभग 2oo+ डिग्री . के साथ
सेंटीग्रेड - मुस्लिम नर्क की लपटों की तुलना में अधिक गर्म।

०३४ ७८/१: "और आकाश (बहुवचन और गलत*) ऐसे खुलेंगे मानो दरवाजे हों - - -"।
खुली जगह में खोलने के लिए कुछ भी नहीं है।

035 81/2: "जब (अंतिम दिन*) सितारे (यहाँ यह वास्तविक सितारों के बारे में बात कर रहा है, शूटिंग नहीं
तारे*) गिरते हैं (पृथ्वी पर*), अपनी चमक खो देते हैं - - -"। तारे पृथ्वी पर नहीं गिर सकते - कभी नहीं
विज्ञान के अनुसार। सैद्धांतिक रूप से पृथ्वी सूर्य में गिर सकती है - और 5 अरब में ऐसा कर सकती है
वर्षों का समय - लेकिन वीज़ा वर्सा नहीं (यह पृथ्वी होगी जो चलती है, सूर्य नहीं)। और "खोना"
उनकी चमक "? - किसी तारे/सूर्य को इतना ठंडा होने में करोड़ों अरबों साल लगते हैं कि वह
प्रकाश देना बंद कर देता है।

०३६ ८१/१+ ४ + ५: "जब सूरज (अपने विशाल प्रकाश के साथ) मुड़ा हुआ हो (मुहम्मद ऐसा लगता है)
विश्वास करें कि सूर्य एक सपाट डिस्क है जिसे मोड़ा जा सकता है) - - - वह-ऊंट, 10 महीने युवा के साथ,
(और*) जब जंगली जानवरों को एक साथ झुंड में रखा जाता है (मानव आवासों में) - - -
" विज्ञान के अनुसार, लगभग 5 अरब वर्षों में सूर्य एक लाल दानव बन जाएगा। पृथ्वी होगी

या तो इसके द्वारा निगल लिया जाए या इसकी सतह के ठीक ऊपर चक्कर लगाया जाए। यदि पृथ्वी जीवित रहती है, तो उसके पास a . होगा
सतह का तापमान लगभग 2oo+C - और सभी ऊंट, जंगली जानवर और इंसान चले जाएंगे
अरबों साल पहले, और पृथ्वी केवल सूखी राख होगी। तब से इसमें कई लगेंगे
सूरज के अंधेरा होने से अरबों साल पहले (यह सफेद बौना बनने के लिए सिकुड़ जाएगा और
चमकते रहो)। बहुत गलत समय कारक। कोई भगवान जानता था।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 11 (= II-1-3-11)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची थीम द्वारा व्यवस्थित

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और में पृथ्वी के बारे में त्रुटियाँ कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस खंड में सामग्री:

1. मुस्लिम यूनिवर्स।
2. पृथ्वी का निर्माण।
3. पृथ्वी के निर्माण के बारे में विवरण और
   रहने योग्य बना रहा है।

1. इस्लामी ब्रह्मांड।

कुरान के अनुसार "सब कुछ" इस प्रकार है:

सब से ऊपर - ७ से ऊपर । स्वर्ग अल्लाह का ठिकाना है ।

पृथ्वी के ऊपर सात आकाश - एक के ऊपर एक।

अदृश्य स्तम्भों के द्वारा आकाश पृथ्वी पर विश्राम कर रहा है।

आकाश के बीच में सूर्य (?) और चंद्रमा हैं।

सूरज एक सपाट डिस्क है (यदि नहीं तो इसे फोल्ड नहीं किया जा सकता है जैसा कि कयामत के दिन होता है।

7 स्वर्गों में जन्नत है - उच्च स्वर्ग शीर्ष मुसलमानों के लिए हैं।

निचला स्वर्ग "सामान्य अच्छे" मुसलमानों के लिए है - कम से कम 4 बागों में विभाजित = 4 गुण।

आकाश के नीचे, और सबसे नीचे तक बांधे गए, सभी तारे हैं।

स्वर्ग पर जासूसी करने वाली बुरी आत्माओं का पीछा करने के लिए अल्लाह अक्सर सितारों को शूटिंग सितारों के रूप में उपयोग करता है।

आकाशों और तारों के नीचे बादल हैं - जिन्हें अल्लाह कभी-कभी तोड़ देता है (बारिश)।

उसके तहत वहां अल्लाह की मर्जी से ही पक्षियों को रखा जाता है।

पृथ्वी पर पहाड़ नीचे स्थापित हैं - या वास्तव में नीचे गिर गए हैं।

अल्लाह ने धरती पर पहाड़ों को क्यों रखा है इसका कारण इसे स्थिर करना है।

हदीसों के अनुसार पृथ्वी पर 2 नदियाँ स्वर्ग से शुरू होती हैं - नील और यूफ्राथेस।

पृथ्वी पर भी सभी प्रकार के प्राणी रहते हैं - मिट्टी से या किसी चीज से या कुछ भी नहीं।

आदमी - एडम - अगर आप ठीक और सख्ती से गिनें तो 13 अलग-अलग तरीकों से प्रमाणित किया जाता है।

यह सब हमारी समतल पृथ्वी पर विद्यमान है या रह रहा है।

7 पृथ्वी हैं - हदीसों के अनुसार अन्य "हमारी" पृथ्वी के अधीन हैं।

हदीसों के अनुसार इस्लाम 7 धरती के नाम जानता है।

हदीस बताती है कि धरती जितनी नीची है, उसके निवासियों के लिए स्थिति उतनी ही नर्क जैसी है।

और तल पर नर्क (?)

यह सब (संभवत: जन्नत और नर्क को छोड़कर) 6 - या 8 - दिनों में बनाया गया था।

169

पृष्ठ १७०

जैसे आपके भूगोल के शिक्षक ने आपको बताया था? और इस बकवास को किसने बनाया?

यह निम्नलिखित अध्याय पृथ्वी के बारे में है:

2. पृथ्वी का निर्माण:

पृथ्वी थी - कुरान के अनुसार - आकाश के साथ मिलकर कुछ इस तरह से बनाई गई
धुआं कि अल्लाह ने एक साथ आने का आदेश दिया और फिर वह अलग हो गया। एक हिस्सा
हमारी सपाट पृथ्वी बन गई (या वास्तव में "पृथ्वी" क्योंकि 7 (65/12) हैं - एक के ऊपर एक
हदीसों के अनुसार) और दूसरा स्वर्ग बन गया, या वास्तव में ७ भौतिक स्वर्ग जो
पृथ्वी के ऊपर स्थित है। (इसके बारे में अधिक जानकारी के लिए, पिछला अध्याय देखें - के निर्माण के बारे में
स्वर्ग)।

***001 ४१/९-१२: "(अल्लाह*) ने दो दिनों में पृथ्वी की रचना की - - -। उन्होंने (पृथ्वी) पहाड़ों पर सेट किया
इसके ऊपर मजबूती से खड़ा है - - -।" ऊपर 21/31 देखें।

***001 ४१/९-१२: "(अल्लाह*) ने दो दिनों में पृथ्वी की रचना की - - -। उन्होंने (पृथ्वी) पहाड़ों पर सेट किया
उसके ऊपर दृढ़ होकर खड़ा हुआ, और पृथ्वी पर आशीर्वाद दिया, और उस में सब कुछ मापा
चार दिनों में उन्हें (जीवित प्राणियों*) को उचित अनुपात में पोषण देने के लिए चीजें - - - (और *)
इसलिए उसने उन्हें (आकाश*) सात आकाशों के रूप में दो दिनों में पूरा किया - - -"। यह 8 दिन बनाता है -
**कुरान की तुलना में बहुत असंगत और बहुत गलत है जो अन्य सभी स्थानों पर है
कहते हैं: 6 दिन। (4.57 अरब वर्षों का उल्लेख नहीं है कि विज्ञान ने पाया है)।** एक और
अंतर्विरोध। हमें बताया गया है कि हमें बहुत मूर्ख होना चाहिए जो यह नहीं समझते कि
दो पहले दिन अगले चार में शामिल हैं। हम स्वीकार करते हैं कि यही एकमात्र तरीका है जिससे इस्लाम कोशिश कर सकता है
इसे "समझाएं" - लेकिन यह बहुत स्पष्ट रूप से वह नहीं है जो पाठ कहता है। (" का संदेश
कुरान" ने कुरान को थोड़ा सा (कम से कम स्वीडिश अनुवाद में) "सिद्ध" किया है ताकि इसे बनाया जा सके
"स्पष्टीकरण" इतना गूंगा नहीं है - लेकिन केवल "बिल्कुल नहीं", जैसा कि यूसुफ अली का अनुवाद बहुत है
स्पष्ट)।

002 13/3: "और वह (अल्लाह) है जिसने धरती को फैलाया, - - -"। इसी तरह की बातें कही जाती हैं
कुरान में कई जगह - **धरती चपटी और फैली हुई है। यह गोल या गोल हो सकता है,
लेकिन पैनकेक की तरह, गोले की तरह नहीं।** उस समय अरबों का भूगोल यही था
मुहम्मद - हालाँकि यह शायद ही किसी देवता का भूगोल था। पृथ्वी का आकार नहीं है
कुरान में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया - यह इतना स्पष्ट था कि यह सपाट था, इसका कोई कारण नहीं था
इसका जिक्र कर रहे हैं। लेकिन पृथ्वी की तुलना प्रत्येक वस्तु से की जाती है, वह कुछ समतल है - और
विज्ञान को इस बात में जरा भी संदेह नहीं है कि मुहम्मद की धरती चपटी थी। मुस्लिम विद्वान
विषय से बचने या इसे किसी तरह से "समझाने" के लिए प्रवृत्त होते हैं। (अंग्रेजी का एक अनुवादक है कि

कहते हैं "अंडे के आकार का" - लेकिन यह गलत अनुवाद है (यह फ्लैट पर शुतुरमुर्ग के घोंसले के बारे में बात करता है ग्राउंड, और अनुवादक ने इसके बजाय अंडे के बारे में बात करने के लिए "चुना" है)। सब वही
अक्सर मुसलमानों द्वारा उद्धृत किया जाता है - कुछ ईमानदारी से इस पर विश्वास करना चाहते हैं, दूसरों को पता है कि वे हैं "अल-तकिया" का उपयोग करना - वैध झूठ - जो इस्लाम का एक एकीकृत हिस्सा है (लेकिन किसी अन्य का नहीं)
बड़े धर्म))। 15/19 - 20/53 - 43/10 - 50/7 - 51/48 - 55/10 - 71/19 - 78/6 - भी देखें।
79/30 - 88/20 -91/6 जो सभी पृथ्वी की तुलना किसी समतल वस्तु से करते हैं।

००३ ६५/१२: "अल्लाह वह है जिसने सात फ़र्म (गलत*) और पृथ्वी को एक समान बनाया
संख्या"। हदीसें "एक के ऊपर एक"। मुहम्मद इब्न 'अब्द अल्लाह अल-
Kisa'i अंतिम भाग का अर्थ है एक "स्पष्टीकरण" के अनुसार पृथ्वी में 7 परतें नीचे। **परंतु**
कुरान वास्तव में क्या कहता है कि 7 पृथ्वी हैं - 7 समतल पृथ्वी । कोई बात नहीं अगर आप
कुरान / हदीस या इसके लिए "व्याख्याओं" में से एक पर विश्वास करें कुछ हद तक विशेष
भूविज्ञान/खगोल विज्ञान, ऊपर और नीचे से "पृथ्वी" के नाम हैं:

1. रमाका,
2. खालाड़ा,
3. अर्का,
4. हरबा,
5. माल्थम,
6. सिज्जिन,
7. अजीबा।

एफ के अनुसार। पूर्व अल-बुखारी उन्हें एक के ऊपर एक रखा गया है - कुरान के अनुसार आसान है
पृथ्वी समतल है/हैं। नीचे की ओर, संबंधित परत पर अधिक शैतानी जीवन - और यदि आप
बहुत बड़े पापी हैं, आप कयामत के दिन उन सब से नीचे गिर सकते हैं। अरे नहीं
कहने की जरूरत है कि यह सब बकवास है।

यह भी देखें 2/131 - 7/61 - 7/67 - 7/104 - 7/121 - 10/3 - 26/16 - 26/23 - 26/47 - 26/77 - 26/98 - 26/109 - 26/127 - 26/145 - 27/8 - 27/44 - 32/2 - 37/87 - 38/87 - 39/74 - 41/9 - 43/46 -
45/36 - 56/80 - 59/16 - 68/52 - 69/43 - 81/27 - 81/29 - 83/6 और भी बहुत कुछ। ये सभी
स्थान बहुवचन में "दुनिया" का उल्लेख करते हैं - एफ। भूतपूर्व। "दुनिया के भगवान (अल्लाह *)" - और संदर्भ
7 दुनिया के लिए। लेकिन यहाँ एक ठोकर से सावधान रहें: कुरान भी १-२ मामलों में इस्तेमाल करता है
अभिव्यक्ति "दुनिया" एक और संबंध में - मुस्लिम विद्वान इसे उस या उन में मानते हैं
कुछ मामलों में "पुरुष और जिन्न" या "पुरुष और महिला" का उल्लेख है। पश्चिमी भाषाओं में यह नहीं है
अंतर देखना संभव है, क्योंकि हमारी संज्ञाओं में केवल एकवचन और बहुवचन होते हैं। लेकिन अरबी में
(और कुछ अन्य भाषाएं) यह अलग है: उनके पास एकवचन, दोहरी (= 2), और बहुवचन है। हम
सूचित किया कि ऐसे सभी मामलों में जहां मूल अरब पाठ में बहुवचन है, यह 7 गैर-
मौजूदा पृथ्वी (ठीक है, एक मौजूद है, भले ही वह समतल न हो)। लेकिन अगर अरब पाठ में कोई जगह है
द्वैत में संज्ञा "संसार", यह केवल वह स्थान है जो किसी अन्य चीज़ का उल्लेख कर रहा है - जैसे "मनुष्य और
जिन्न"।

004 21/31a: "और हमने (अल्लाह*) ने धरती पर पहाड़ - - - स्थापित किए हैं। पहाड़ नहीं हैं
"पृथ्वी पर सेट" - वे बिना किसी अपवाद के "बड़े हो गए" हैं, चाहे वे किसी भी हों
टेक्टोनिक या ज्वालामुखी गतिविधि का परिणाम (पहाड़ बनाने के केवल 2 तरीके)। कोई भगवान जानता था
यह, लेकिन मुहम्मद नहीं। क्या इससे पता चलता है कि कुरान का असली रचयिता कौन है?

हम यह जोड़ सकते हैं कि हमें सूचित किया जाता है कि वास्तविक क्रिया जो मूल अरब पाठ में प्रयोग की जाती है, वास्तव में इसका अर्थ "सेट डाउन" नहीं है, लेकिन "ड्रॉप डाउन" है और यह वही क्रिया है जिसका उपयोग तब किया जाता है जब एक f. भूतपूर्व।
लंगर गिरा रहा है। पहाड़ निश्चित रूप से नीचे नहीं गिराए जाते हैं। 31/10 और 41/9 भी देखें-
12.

005 21/31b: "और हम (अल्लाह) ने धरती पर पहाड़ों को मजबूती से खड़ा कर दिया है, कहीं ऐसा न हो कि वह
उनके साथ हिलाओ - - -"। इस्लाम और कुरान के कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि यह डिस्क को संदर्भित करता है
वह पृथ्वी है (कुरान में पृथ्वी चपटी है, लेकिन शायद एक गोल डिस्क) हिल सकती है और
अस्थिर हो जाते हैं, और इस वजह से फिसल सकते हैं या इधर-उधर हो सकते हैं और सब कुछ गिरा सकते हैं -
मानवता शामिल - पृथ्वी से दूर।

हम कुछ मुस्लिम विद्वानों का उल्लेख करते हैं: जलालन, (पृष्ठ 437), बदावी (पृष्ठ 686), तबरी (पृष्ठ 589), और
ज़माख़शरी (भाग ४, पृ. ३८१): वे सभी कहते हैं कि "अगर यह इन अचल (!!*) के लिए नहीं होता
पहाड़, पृथ्वी खिसक जाएगी। "(!!!*) और जलालान, बैदावी, और ज़माखशरी सभी कहते हैं

कि."- - - उसने (अल्लाह*) ने अडिग पहाड़ों को रखा (इससे अधिक नहीं कि वे इस दौरान कांपें,
भूकंप*) पृथ्वी पर ऐसा न हो कि वह लोगों के साथ झुक जाए।" यह स्पष्ट रूप से कुरान वास्तव में क्या है
इसका मतलब था, और यह और भी स्पष्ट रूप से वह अर्थ था जो मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को बताया था, जैसा कि यह है
विद्वान मुस्लिम विद्वानों को जो यकीन था वह सच था।

लेकिन यह "सत्य" इतना हास्यास्पद है, कि आइए हम वैकल्पिक व्याख्या पर चलते हैं - वह जो
इस्लाम में अब प्रचलन में है कि वे जानते हैं कि मूल "सच्चाई" गलत थी: कि पहाड़
भूकम्प में बाधा डालते हैं।

वह सही नहीं है। खैर, यह सच्चाई से इतनी दूर है कि यह गलत भी नहीं है - यह कभी-कभी होता है
सच्चाई के विपरीत:

1. एफ़ के अनुसार। भूतपूर्व। हैवीवेट जैसे "नया"
   वैज्ञानिक" और "प्रकृति" पहाड़ कभी-कभी
   भूकंप का कारण बन सकता है: में बदलाव
   बड़े पहाड़ में पानी की मात्रा (= वजन)
   कभी-कभी झीलों, बांधों या हिमनदों का कारण बनता है
   छोटे और मध्यम भूकंप। वही जाना
   पहाड़ों में भारी हिमपात के लिए
   कभी - कभी। इसके अलावा जब बर्फ गिरती है
   पहाड़, लेकिन कम या कम बर्फ नीचे नहीं
   (वहां बारिश के रूप में गिरती है जो भाग जाती है) और का
   बेशक समुद्र के तल पर कुछ भी नहीं है,
   परिवर्तित वजन संतुलन का कारण हो सकता है
   भूकंप (अधिक भूकंप हैं
   गर्मियों की तुलना में सर्दियों के दौरान उत्तर)।
2. आज यह सर्वविदित है कि पर्वत
   टेक्टोनिक गतिविधि के कारण बनाया गया (जो हमेशा
   भूकंप का कारण बनता है - हालांकि कभी-कभी भी
   मानव के लिए कमजोर महसूस करते हैं) या ज्वालामुखी गतिविधि
   जो अक्सर भूकंप का कारण बनता है। वो हैं
   केवल दो तरीके जिससे पहाड़ बनते हैं।
   यानि कि पहाड़ हकीकत में बनते हैं
   भूकंप से (या वास्तव में उसी द्वारा)
   तंत्र जो अधिकांश भूकंप करते हैं), यह
   ऐसे भूकंपों में बाधा नहीं डालता है। कोई भगवान था
   यह ज्ञात है, लेकिन मुहम्मद नहीं - यह नया है
   मनुष्यों के लिए ज्ञान। फिर किसने रचा
   कुरान?
3. ज्वालामुखी भी पृथ्वी से निकटता से जुड़ा हुआ है
   भूकंप ज्वालामुखी भी कई मामलों में है
   टेक्टोनिक गतिविधि से जुड़े - इस प्रकार हैं
   के लिए दो तंत्रों के बीच संबंध
   पहाड़ की इमारत - और भूकंप के लिए।
   टेक्टोनिक गतिविधि लावा को आसान बनाती है
   सतह के माध्यम से तोड़ना - जैसा कि देखा गया f. भूतपूर्व।
   पैसिफिक के चारों ओर "द रिंग ऑफ फायर" में।

यह भी देखें १५/१९ - १६/१५ - ३१/10 - ४१/10

005 21/31c: "और हम (अल्लाह) ने धरती पर पहाड़ों को मजबूती से खड़ा कर दिया है, कहीं ऐसा न हो कि वह
उनके साथ हिलाओ - - -"। कुरान इंगित करता है कि पहाड़ इतने बड़े हैं
पृथ्वी) कि वे पृथ्वी को स्थिर करने में सक्षम हैं। लेकिन पृथ्वी की तुलना में पर्वत ही हैं
छोटे-छोटे युद्ध और शायद ही वह भी। कोई भगवान जानता था - मुहम्मद नहीं। किसने रचना की
कुरान?

3. पृथ्वी के निर्माण और इसे रहने योग्य बनाने के बारे में विवरण:

006 78/7: "(अल्लाह ने बनाया*) पहाड़ों को खूंटे के रूप में - - -"। कुछ मुसलमान कहते हैं: हिप, हुर्रे - यहाँ
मुहम्मद और कुरान के लिए एक प्रमाण है: विज्ञान पहाड़ों की "जड़ों" के बारे में बात करता है
- पहाड़ खूंटे की तरह हैं! मुहम्मद कैसे जान सकते थे ?!" लेकिन पहाड़ "जड़ें" नहीं हैं
खूंटे की तरह, लेकिन उभार या विकृत चादरों की तरह (जैसे पहाड़ और पहाड़ की जंजीरें अक्सर लंबी होती हैं
और संकरा - रॉकी पर्वत को देखें - एंडीज श्रृंखला f। उदा।) या विकृत गोलार्ध के रूप में।
गहरे खूंटे मौजूद हैं - या वास्तव में चादरें - मेंटल (पिघले हुए पत्थर) में बहुत नीचे की ओर इशारा करते हुए,
लेकिन वास्तव में पहाड़ों या पुर्वत श्रृंखलाओं के संबंध में नहीं, हालांकि वे सह-अस्तित्व में हो सकते हैं: वे
कुछ ऐसे स्थान मौजूद हैं जहाँ पृथ्वी की पपड़ी के बड़े टुकड़े - टेक्टोनिक प्लेट्स - मजबूर हैं
क्रस्ट (टेक्टोनिक मूवमेंट) की गति के कारण नीचे की ओर। लेकिन उसके पास करने के लिए कुछ भी नहीं है
पहाड़ों के साथ करो (भले ही पहाड़ आंदोलन के माध्यमिक परिणाम हो सकते हैं) - यह है
कुछ बिल्कुल अलग।

007 21/31c: "- - - और हम (अल्लाह) ने उसमें (पहाड़ों में) चौड़े रास्ते बनाए हैं
(पहाड़ों के बीच) - - -"। हम ईमानदारी से अल्लाह को नहीं जानते थे - या किसी अन्य भगवान - निर्मित
राजमार्ग और यहां हम एक सस्ता मजाक बना सकते हैं (अपने कांग्रेस-पुरुषों (या समान) को पूछने के लिए कहें
उस पर टैक्स का सारा पैसा खर्च करने के बजाय, अल्लाह आपकी सड़कों का निर्माण करता है)। लेकिन हम इससे परहेज करते हैं।

खैर, मुहम्मद के लिए यह कहना संभव होगा - सच है या नहीं - कि अल्लाह ने दिखाया
पहले यात्री जहां यात्रा करना है। लेकिन किसी भी हालत में अल्लाह ने सड़कों या राजमार्गों का निर्माण नहीं किया। जब तक
इस्लाम वास्तव में साबित करता है कि उसने किया - लेकिन इस्लाम कभी साबित नहीं करता, वे केवल बताते हैं या कहते हैं या दावा करते हैं, यहां तक कि
हालांकि वे हर किसी से सबूत मांगते हैं। या वे कहते हैं कि कुरान में ऐसा कहा गया है, और वह
इसे साबित करता है। लेकिन ऐसी कई गलतियों वाली किताब का सबूत के तौर पर कोई महत्व नहीं है - और इसके अलावा यह है
कुरान को साबित करने के लिए कुरान का उपयोग करना तार्किक रूप से असंभव है, क्योंकि परिपत्र प्रमाण बिना मूल्य के हैं।

008 27/61: "(अल्लाह*) ने इसके (पृथ्वी के) बीच - - - में नदियाँ बनाईं। गलत। कुरान मानता था
पृथ्वी चपटी थी, और फिर बीच में है। लेकिन पृथ्वी एक गोला है, और सतह a
गोले का कोई बीच नहीं है।

009 39/5: "उसने (अल्लाह*) ने आकाश (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी को सही में बनाया
(अनुपात)"। पृथ्वी एफ। भूतपूर्व। सपाट है - एक डिस्क की तरह - कुरान में। और 7 आकाश। गलत। और
सिर्फ "सही अनुपात में" नहीं।

00a 55/17: "वह (अल्लाह *) दो पूर्व और दो पश्चिम का स्वामी है।" यह गुप्त
वाक्य का अर्थ है एक वर्ष के दौरान सूर्य का सबसे उत्तरतम और दक्षिणतम बिंदु (the
विषुव) - पूर्व और पश्चिम में। (हम इसका उल्लेख इसलिए करते हैं क्योंकि कुछ मुसलमान रास्ते खोजने की कोशिश करते हैं
इस वाक्य का प्रयोग "साबित" करने के लिए करें कि कुरान कहता है कि पृथ्वी गोलाकार है।)

०११ १८/९०: "- - - वह सूर्य के उदय के लिए आया - - -"। यहाँ आना शारीरिक रूप से संभव नहीं है
वह स्थान जहाँ सूर्य पृथ्वी से उगता है जैसा कि कुरान इंगित करता है, क्योंकि यह उगता नहीं है
पृथ्वी से - और यदि यह होता, तो सिकंदर दोनों (सूरह 18 का यह भाग सिकंदर के बारे में है)
ग्रेट) और पृथ्वी बल्कि तली हुई थी। 18/86a, b, और c भी देखें।

०१२ १६/४८बी: "- - - अल्लाह की रचनाएँ, (यहां तक कि) (निर्जीव) चीजों के बीच - कैसे उनकी बहुत
छायाएँ घूमती हैं, दाएँ से बाएँ - - -"। गलत: यह एक सामान्य कानून नहीं है - यह केवल सच है
उत्तरी गोलार्ध पर। दक्षिण में यह बाएँ से दाएँ है - और इस्लाम होने का दिखावा करता है
एक सार्वभौमिक धर्म। मानसिक रूप से विक्षिप्त भगवान भी यह जानता था - लेकिन मुहम्मद निश्चित रूप से
नहीं। कुरान किसने बनाया?

०१३ ३०/४८: "- - - तो क्या वह (अल्लाह) उन्हें (बादलों*) आकाश में फैला देता है जैसा वह चाहता है, और
उन्हें टुकड़ों में तोड़ दो, जब तक कि आप उनके बीच से बारिश की बूंदों को जारी न देखें - - -"। यह है
इससे अधिक गलत होना संभव नहीं है। क्या होता है कि बादल टूट कर बिखर जाते हैं
वर्षा की बूँदें, लेकिन ठीक विपरीत: वह बूँदें आपस में मिलकर बूँदें बनाती हैं। आगे नहीं

टिप्पणियाँ। लेकिन कोई भी भगवान बेहतर जानता था। 16/65 - 25/49 - 30/24 - 36/33 - 50/11 भी देखें।

०१४ १६/६५अ: "और अल्लाह आसमान से बारिश बरसाता है, और उसके साथ पृथ्वी को जीवन देता है" उसकी मृत्यु के बाद :- - -"। यदि पृथ्वी को फलने-फूलने के लिए केवल वर्षा की आवश्यकता है, तो यह पहले मरा नहीं था बौछार - बहुत सारे जीवित बीज थे और जड़ें हो सकती हैं।

०१५ १६/६५ब: "और अल्लाह आसमान से बारिश बरसाता है, और उसके साथ पृथ्वी को जीवन देता है" उसके मरने के बाद: निःसन्देह इसमें सुनने वालों के लिए एक निशानी है।" ऊपर 16/65a देखें। यह कुछ है अमान्य प्रमाण का उपयोग करने के लिए साइन इन करें। कुरान अक्सर उन संकेतों के बारे में बात करता है जो दस्तावेज या साबित करेंगे अल्लाह। खेद की बात यह है कि उनमें से हर एक, कुछ के संभावित अपवाद के साथ बाइबल से लिए गए, ईश्वर के प्रमाण के रूप में बिना किसी मूल्य के हैं, और एक भी साबित नहीं होता है अल्लाह के अस्तित्व के बारे में कुछ भी। दो सबसे आम कारण हैं कि वे वास्तव में हैं केवल हवा से लिए गए बयान हैं, या वे ऐसे बयानों पर आधारित हैं जो साबित नहीं होते हैं। देखो इसके बारे में अलग अध्याय।

०१६ २९/६३: "और यदि तुम उनसे (गैर-मुसलमानों) से पूछो, तो वह कौन है जो यहाँ से बरसता है आकाश - - - वे निश्चित रूप से उत्तर देंगे, 'अल्लाह'"। गलत। यदि उन्होंने किसी देवता का उल्लेख किया होता, तो वे अपने स्वयं के भगवान का उल्लेख किया था - या उनमें से एक जिसका संबंध बारिश से है।

००बी २२/६५: क्या मुहम्मद अली ने यहाँ "अल-तकिया" (वैध झूठ) बनाया है? उनका कहना है कि अल्लाह "आकाश (बारिश) को पृथ्वी पर गिरने से रोकता है"। लेकिन "द मेसेज ऑफ द" के अनुसार कुरान "अरब पाठ कहता है कि अल्लाह स्वर्ग को पृथ्वी पर गिरने से रोकता है। अत्यंत मामले में एक वैज्ञानिक गलती। और युसूफ अली से भी बेईमानी के मामले में अगर उसने बदल दिया "आकाश" से "बारिश" का अर्थ।

017 56/70: "- - - हम (अल्लाह*) इसे (पूरी बारिश*) नमक - - - बना सकते हैं। दोनों को बदले बिना नहीं प्राकृतिक और भौतिक नियम। नमक बस वाष्पित नहीं होता है, और फिर जैसे बारिश नहीं हो सकती नीचे। अगर इस्लाम जोर देता है कि यह सच है, तो उन्हें इसे साबित करना होगा - शब्द सस्ते हैं। (वहाँ एक है यहां अतिरिक्त टिप्पणी हालांकि: समुद्र से उड़ाई गई बूंदें समुद्र तक पहुंचने से पहले सूख सकती हैं समुद्र फिर से, और नमक के सूक्ष्म कण हवा में बह सकते हैं। लेकिन यह प्रभाव देने के लिए बहुत छोटा है किसी भी मात्रा में नमकीन बारिश।)

०१८ ११/४४: "हे पृथ्वी तेरा जल निगल ले - - -"। यह नूह की बड़ी बाढ़ से है। पृथ्वी के लिए इतना पानी निगलना शारीरिक रूप से असंभव है। अगर बाढ़ कुछ मुसलमानों की तरह स्थानीय होती बताना पसंद है, पानी समुद्र में जा सकता है। लेकिन तथ्य यह है कि कुरान बताता है कि सन्दूक माउंट पर समाप्त हुआ। अल-जुदी (मुहम्मद असद के अनुसार पहले माउंट क़र्दू: "कुरान का संदेश") में सीरिया, इंगित करता है कि यह वास्तव में कुछ बड़ा था - पानी ऊंचाई पर नहीं पहुंच सकता सीरिया में पहाड़, जब तक कि पूरी दुनिया में जल स्तर लगभग समान न हो। यह था और है पृथ्वी के लिए उस मात्रा में पानी को निगलना असंभव है।

019 31/29: "- - - अल्लाह रात को दिन में मिला देता है और वह दिन को रात में मिला देता है - - -।" ये है कई प्राकृतिक घटनाओं में से एक मुहम्मद ने बिना किसी सबूत के अपहरण कर लिया या दस्तावेज़ीकरण। यह अल्लाह के लिए प्रमाण के रूप में किसी भी मूल्य से पूरी तरह से शून्य है जब तक कि यह साबित न हो जाए कि यह वास्तव में अल्लाह ही है जो पृथ्वी को सूर्य से प्रकाश में घुमाता है - प्रत्यावर्तन का वास्तविक कारण दिन और रात का। ऐसे सबूतों के बिना, यह सस्ते, बेकार शब्दों की एक और संख्या है

कि कोई भी अपने भगवान या देवताओं के लिए नि: शुल्क उपयोग कर सकता है। यह भी देखें 3/27 - 24/44 -25/62 - 31/29 - 35/12 - 39/5 - 40/61 - 41/37 - 45/5 57/6।

020 36/4c: "- - - प्रत्येक (रात और दिन*) साथ में (अपनी) कक्षा में तैरता है (कानून के अनुसार)।" गलत। रात और दिन स्थिर हैं - वे बस चलते प्रतीत होते हैं क्योंकि पृथ्वी में घूमती है धूप इससे कोई भी भौतिक विज्ञानी हंसेगा - रात की एक निश्चित स्थिति होती है सूर्य, और केवल पृथ्वी के घूमने के कारण गति करता प्रतीत होता है। इसमें थोड़ी सी भी समानता नहीं है एक कक्षा के लिए। यह कोई भी भगवान जानता है।

यह जोड़ने के लिए एक अच्छा अतिरिक्त स्पर्श है कि वे "कानून के अनुसार" कक्षाओं में तैरते हैं।

०२१ ९१/४: "रात में जैसे ही वह इसे (सूर्य*) छुपाती है"। रात सूरज को नहीं छुपाती - वहाँ रात है क्योंकि पृथ्वी छाया बनाती है। यह किससे 180 डिग्री अलग है

मुहम्मद ने कहा, यह इसलिए नहीं है क्योंकि रात सूरज को छुपाती है, बल्कि इसलिए कि पृथ्वी
ऐसा करता है। कोई भी भगवान जानता था इसके अलावा: रात बस सूरज की रोशनी की कमी है - यह शारीरिक रूप से है
रात के लिए सूरज को छुपाना नामुमकिन है। कोई भी देवता यह भी जानता था। फिर किसने बनाया
कुरान? 7/54 - 13/3 - 92/1 भी देखें।

**०२२ ४५/५: "और रात और दिन का विकल्प - - - बुद्धिमान लोगों के लिए संकेत हैं"।
तब तक नहीं जब तक इस्लाम यह साबित न कर दे कि रात और दिन को बदलने वाला अल्लाह ही है। वे कह सकते हैं कि अल्लाह
भौतिक कानून बनाए - लेकिन फिर उन्हें यह साबित करना होगा कि - - - "मजबूत दावों की मांग"
मजबूत सबूत और शब्द सस्ते हैं"। और निश्चित रूप से उन्हें अन्य सभी के साथ प्रतिस्पर्धा करनी होगी
धर्म वही कहने और करने की कोशिश कर रहे हैं, उन्हीं सस्ते शब्दों के साथ। शब्द तब तक सस्ते हैं
जैसा कि आपको उन्हें साबित करने की ज़रूरत नहीं है - और कुरान में बहुत कम साबित होता है।

***इस्लाम में पढ़े-लिखे लोग जानते हैं कि कुछ भी साबित नहीं होता (इंसानों के लिए खुदा साबित करना)
असंभव है - केवल एक भगवान ही ऐसा कर सकता है, और अल्लाह ने कभी कुछ साबित नहीं किया, और केवल मुहम्मद
गंभीर अनुरोधों के बावजूद तेजी से बात की)। बचाव यह है कि "कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति देख सकता है"
कुरान के ग्रंथों से कि उन्हें एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा भेजा जाना है "(!!) सब
गलतियाँ और सभी अमान्य "सबूत" आदि इसे अस्वीकार करते हैं। रक्षा की दूसरी पंक्ति यह है कि यह
सबूतों पर भरोसा करने के लिए "आदिम" सोच रहा है !!! (एफ। पूर्व। "कुरान के संदेश" में कि
सबसे ऊपर एक शीर्ष विश्वविद्यालय द्वारा "प्रमाणित" है - काहिरा में अल-अहज़र)। **वास्तविकता 180-
डिग्री विपरीत: यह आदिम है - और भोला - ऐसा स्वीकार करने की सोच - और इतनी बार -
कुछ प्रकार के सबूतों के बिना स्पष्ट रूप से गलत और असंभव बयान।**

**०२३ ३६/४०: "- - - और न ही रात दिन से आगे (* से लंबी हो सकती है) - - -"। गलत। उच्च पर
अक्षांशों में, रात हमेशा सर्दियों के दिनों की तुलना में लंबी होती है। आर्कटिक सर्कल से थोड़ा आगे (a .)
अपवर्तन के कारण थोड़ा अतीत - वातावरण में प्रकाश का झुकना) रात भी 24 . रहती है
प्रत्येक वर्ष कम या अधिक समय के लिए दिन में घंटे - कितने समय के लिए अक्षांश पर निर्भर करता है। **NS
कुरान में प्राकृतिक घटनाओं को चुनने और यह बताने की प्रबल प्रवृत्ति है कि वे साबित करते हैं या संकेत हैं
अल्लाह के लिए, पहले यह साबित किए बिना कि अल्लाह वास्तव में उनका कारण है। एक चीज़ के लिए
ऐसे "सबूत" पूरी तरह से अमान्य हैं क्योंकि वे केवल अप्रमाणित दावों पर आधारित हैं। दूसरे के लिए: यह
हर बार हमारे दिमाग में यह आता है कि (कोशिश करना) अमान्य कथनों और "सबूत" का उपयोग करना एक है
धोखेबाजों और ठगों के लिए हॉलमार्क। और एक विडंबनापूर्ण तीसरे के लिए: कभी-कभी "सबूत"
यहां तक कि वास्तव में हंसते हुए गलत हो जाता है - एक किताब में जो एक से आने का दावा करती है
सर्वज्ञ भगवान।**

00c 6/96: "वह (अल्लाह *) रात को आराम और शांति के लिए बनाता है - - -"। एक और प्राकृतिक
घटना (ऊपर 36/40b देखें) जो मुहम्मद ने अपने भगवान के लिए दावा किया था - और हमेशा की तरह
एक भी सबूत के बिना। लेकिन यहां मुख्य बात यह है कि जीवन के लिए नींद कोई शर्त नहीं है -

इसके विपरीत नींद जीवन द्वारा इस तथ्य को अपनाना है कि यह उस समय का अंधेरा हिस्सा है।
बस गलत।

०२४ ३२/७: "वह (अल्लाह*) जिसने वह सब कुछ बनाया जो उसने सबसे अच्छा बनाया - - -"। गलत। हम
बीमारियों के संबंध में बेहतर प्रतिरोध हो सकता था, हमारे शरीर में सक्षम हो सकते थे
अधिक विटामिन स्वयं बनाएं, हमारा मस्तिष्क बेहतर हो सकता था - f.ex. सोचने की क्षमता
एक बार में लगभग २-३ चीजें, या अधिक आसानी से सीखना – बस कुछ बिंदुओं का उल्लेख करना। अच्छा किन्तु
सबसे अच्छे से बहुत दूर।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 12 (= II-1-3-12)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची थीम द्वारा व्यवस्थित

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और

जीवन के बारे में त्रुटियाँ (आदमी और) अन्य जीवित प्राणी) कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस खंड में सामग्री:

कुरान के अनुसार पृथ्वी पर जीवन का निर्माण:

001 3/59: "उसने (अल्लाह) ने उसे (आदम*) धूल से पैदा किया, - - -"। कुरान कई के बारे में बताता है
जिस तरह से आदमी बनाया गया था - 13 अलग अगर आप सख्त हैं, 5 - 7 अगर आप कम सख्त हैं। केवल 1 हो सकता है
सच है, क्योंकि मनुष्य (एडम) केवल एक बार बनाया गया था। वास्तव में वे सभी मनुष्य के रूप में गलत हैं
पहले के प्राइमेट से विकसित।

कुछ मुसलमान इस बात पर गर्व करते हैं कि पुरातत्वविदों ने पाया है कि मानव जाति बीत चुकी है
तथाकथित बाधाओं के माध्यम से, और सभी में एक "माँ" समान हो सकती है - the
पुरातात्विक पूर्व संध्या - और एक सामान्य "पिता" - कम ज्ञात पुरातात्विक एडम। क्या
जहाँ तक हमने सुना है, उनमें से किसी ने भी कभी इसका उल्लेख नहीं किया है, क्या यह "ईव" है?
लगभग १६० से २०० साल पहले रहते थे, जबकि संबंधित "एडम" बहुत बाद में रहता था
- शायद 60 साल पहले, अफ्रीका में ईव, एशिया में एडम सबसे अधिक संभावना है (शायद निकट .)
कैस्पियन सागर)। (और एक बार फिर, वास्तव में बाइबिल और कुरान से आदम
संभवतः कभी अस्तित्व में नहीं था - मनुष्य एक प्राइमेट से विकसित हुआ, वह अचानक नहीं बनाया गया था
अस्तित्व)। 6/2 भी देखें।

***002 6/2: "वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, - - -"। यह बहुतों में से एक है
जिस तरह से इंसान (आदम) को कुरान के अनुसार बनाया गया था - भले ही आदम को केवल एक बार बनाया गया हो,
उस पुस्तक के अनुसार। वह इस तरह से बनाया गया था:

ए। मिट्टी से:	6/2 7/12 17/61 32/7 38/71 38/76।
बी। बजने वाली मिट्टी से:	15/26 15/28 15/33।
सी। बजती मिट्टी से:	55/64
डी। चिपचिपी मिट्टी से:	37/11
इ। मिट्टी के सार से:	23/12
एफ। कीचड़ से:	15/26 15/28 15/33।
जी। धूल से:	3/59 22/5 35/11 40/67।
एच। पृथ्वी से:	20/55
मैं। जमे हुए रक्त के थक्के से: 96/2	
जे। वीर्य से:#	16/4 75/37 76/2 80/19।

क। से कुछ नहीं: 19/9 19/67।
एल पानी से: 21/30 24/45 25/54।
एम। आधार सामग्री से: 70/39।

#(यह नहीं बताया गया है कि वीर्य कहां से आया)।

#ज्यादातर जब किताब वीर्य की बात करती है तो वह (बनाने) बच्चों के संबंध में होती है, लेकिन
यहाँ जिस तरह से शब्दों का प्रयोग किया गया है, उससे यह स्पष्ट है कि यह मनुष्य की रचना से संबंधित है। लेकिन
वीर्य से बच्चे नहीं बनते - यह सत्य का केवल 50% है। वीर्य + . से बनता है बच्चा
एक अंडा कोशिका, लेकिन एक अंडा कोशिका इतनी छोटी होती है कि मुहम्मद को इसके बारे में पता नहीं था - मानव अंडे
शायद ही किसी शव या वध किए गए जानवर में खून और गोर में देखा जा सकता है। वास्तव में
मुहम्मद के समय कोई नहीं जानता था कि गर्भाधान कैसे हुआ - एक सिद्धांत यह था कि वीर्य
एक बीज था जो एक महिला में रखे जाने पर बढ़ता था - हालांकि हर बार से बहुत दूर। आश्चर्यजनक रूप से यह है
कुरान इसे कैसे समझाता है। कोई भी भगवान बेहतर जानता था।

आदमी/आदम को बनाने के सभी अलग-अलग तरीकों को सख्ती से बोलने का मतलब है कि कुरान बताता है कि
आदमी/आदम को 13 अलग-अलग तरीकों से बनाया गया था, भले ही आदम को केवल एक बार बनाया गया हो - और
विज्ञान के अनुसार वह भी नहीं। यदि एक समान "रचना" एक साथ एक गांठ, तब भी बनी हुई है

177

पेज 178

कम से कम 5-7 विभिन्न रचनाएँ। केवल एक ही सही हो सकता है (जैसा कि एडम ने उल्लेख किया है कि केवल बनाया गया था
एक बार कुरान के अनुसार - और बाइबिल के अनुसार) - और विडंबना यह है कि विज्ञान लंबे समय से है
दिखाया गया है कि सभी विकल्प गलत हैं, जैसा कि कहा गया है कि मनुष्य एक प्रागैतिहासिक प्राइमेट से विकसित हुआ है।

कुछ मुसलमान समझाते हैं कि आदम एक छोटी मिट्टी, थोड़ी धूल, थोड़ी सी धरती से पैदा हुआ था
थोड़ा खून, थोड़ा वीर्य, थोड़ा कुछ नहीं और थोड़ा पानी। लेकिन यह कुरान से कोसों दूर है
बताता है - और भले ही यह कुरान की सच्ची कहानी थी, यह गलत है, क्योंकि मनुष्य प्रागैतिहासिक से विकसित हुआ है
प्राणी और मनुष्य में मिट्टी आदि कहाँ मिलती है?

००३ १५/२६: "हमने (अल्लाह*) ने ध्वनि मिट्टी से मनुष्य को बनाया, - - -")। एकदम गलत। 6/2 देखें।

००४ १५/२८: "मैं (अल्लाह*) मनुष्य को बनाने वाला हूँ - - - - - - - - - -। गलत। 6/2 देखें।

००५ १६/४: "उसने (अल्लाह*) ने मनुष्य को बनाया है ("मनुष्य" शब्द का प्रयोग इस तरह किया जाता है, जिसका अर्थ है मानव
दौड़ = इस मामले में एडम*) एक शुक्राणु-बूंद से - - -"। गलत। भले ही किसी का वास्तव में मतलब होना चाहिए
आदम नहीं बल्कि आम तौर पर बोलने वाले पुरुष, यह गलत है। एक शुक्राणु-बूंद सिर्फ आधा है
व्याख्या - एक अंडा कोशिका भी आवश्यक है। लेकिन मुहम्मद को यह नहीं पता था। (मानव अंडा
कोशिकाएं इतनी छोटी होती हैं कि उन्हें आंखों से देखा नहीं जा सकता, जब वे मानव ऊतक, रक्त और गोर में पड़ी हों)।
लेकिन कोई भगवान जानता था। 6/2 भी देखें।

00a 16/5: "और मवेशियों को उसने (अल्लाह*) ने तुम्हारे लिए (मनुष्यों के लिए) पैदा किया - - -"। मुश्किल से। मवेशी और उनके
पूर्वजों का अस्तित्व लाखों वर्षों से हो सकता है। मनुष्य ने दीर्घ युगों के बाद ही रास्ते खोजे
लगभग 15ooo साल पहले उनका उपयोग कर रहे थे।

00b 16/8: "और (उसने (अल्लाह *) ने तुम्हारे लिए घोड़े, खच्चर और गधों को बनाया है ताकि वे सवारी कर सकें और उनका उपयोग कर सकें।
कार्यक्रम के लिए - - -"। ऊपर 16/5 देखें।

००६ २०/५५: "(पृथ्वी) से हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें पैदा किया - - -"। गलत। आदमी नहीं बनाया गया था
पृथ्वी से। 6/2 भी देखें।

००७ २१/३०: "हम (अल्लाह) ने हर जीव को पानी से बनाया है।" गलत - जीवित चीजें
पानी से नहीं बने थे। कुछ मुसलमानों का कहना है कि आधुनिक विज्ञान यहां कुरान को साबित करता है, जैसे
विज्ञान बताता है कि जीवन की शुरुआत पानी से हुई थी। लेकिन जीवन की शुरुआत तो पानी में ही हुई थी, पानी से नहीं बनी -
वहाँ एक बड़ा भेद है। यहाँ वास्तव में बुरी बात यह है कि यह गलत जानकारी है
सुशिक्षित मुसलमानों द्वारा भी कहा गया है - f. भूतपूर्व। यह टिप्पणी 38 to . में अच्छी तरह से समझाया गया है
२१/३० में "कुरान का अर्थ" - मुसलमानों द्वारा जिनके पास इतनी शिक्षा है और
ज्ञान है कि वे अच्छी तरह से जानते हैं कि पानी में बनने और बनने के बीच का अंतर है
पानी से। फिर वे अन्य बातें कितनी विश्वसनीय हैं जिनका वे दावा करते हैं या "समझाते हैं"? 6/2 भी देखें। हम कर सकते हैं
जोड़ें कि कुरान में यह एकमात्र स्थान है जहां - संभवतः - पौधों का "निर्माण" भी है
इसमें शामिल है, इसके बावजूद पौधे सभी जानवरों और मानव जीवन के आधार हैं।

008 21/56: "- - - वह (अल्लाह) जिसने उन्हें (मनुष्य*) (कुछ नहीं से) पैदा किया: और मैं (अब्राहम) हूँ

इस (सच्चाई) के गवाह "। कुरान के हिसाब से भी गलत, जैसा कि कुरान इंसान को बताता है - आदम
- इस और उस से बनाया गया था। और उसके ऊपर: - मनुष्य किसी चीज़ से बना था, हालाँकि
नहीं बनाया, जैसा कि वह पहले के प्राइमेट से विकसित हुआ था। यह वास्तव में एक अनपेक्षित मजाक है: कहा जाता है
कि अल्लाह ने कुछ ऐसा किया जो सच नहीं है - और इब्राहीम गवाह है कि यह सच है, और यह
भले ही वह लाखों साल बाद जीवित रहे! (पहले प्रोटो के बाद लगभग ६ मिलियन वर्ष या उससे थोड़ा अधिक)
मानव, और पहले होमो सेपियन्स के बाद 200ooo हो सकता है)। अल्लाह के लिए कुछ सबूत! क्या ऐसा संभव है
कि अल्लाह ने खुद यह गलत "सबूत" उतारा है? **लेकिन यह इसके बारे में कुछ बताता है**
कुरान में सबूत - और मुसलमानों से। 6/2 भी देखें।

०0९ २३/१२: "मनुष्य हम (अल्लाह *) ने एक सर्वोत्कृष्टता (मिट्टी के) से बनाया है"। हमने कभी नहीं
समझ में आया कि मिट्टी का सार क्या है, लेकिन यह पूरी तरह से सुनिश्चित है कि यह गलत है: एक बात के लिए
मनुष्य नहीं बनाया गया था - विज्ञान के अनुसार वह पहले के प्राइमेट से विकसित हुआ था। किसी अन्य के लिए
बात - भले ही किसी ने इस्लाम के इस कथन को स्वीकार कर लिया हो कि मनुष्य बनाया गया है, आदम किसी भी तरह से नहीं कर सकता था
कई तरह से बनाए गए हैं - 6/2 देखें। और तीसरी बात के लिए: मनुष्य केवल से नहीं बना है
एक या कुछ खनिज जैसे मिट्टी में।

*०१० २४/४५: "और अल्लाह ने हर जानवर को पानी से पैदा किया है"। बस और स्पष्ट रूप से गलत।
6/2 देखें। कुछ मुसलमान यह कहने की कोशिश करते हैं कि विज्ञान ने इस आयत को साबित कर दिया है (+ दो अन्य - 21/30 और
24/54, उन्हें देखें) जैसा कि विज्ञान ने दिखाया है कि जीवन की शुरुआत पानी से हुई थी। लेकिन यह एक बहुत बड़ा है
"से" पानी और "पानी में" के बीच का अंतर। कुरान में कोई जगह नहीं है यहां तक कि एक
उस जीवन के बारे में फुसफुसाते हुए कहा कि जीवन पानी में ही बना है। गलत बस।

*०११ ३०/२०: "उसकी (अल्लाह की) निशानियों में यह है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया---"। गलत।
मनुष्य धूल से नहीं बनाया गया था - वास्तव में वह विज्ञान के अनुसार बिल्कुल भी नहीं बनाया गया था। 6/2 देखें।
इस तथ्य में एक अतिरिक्त विडंबना है कि कुरान गलत जानकारी के एक टुकड़े का उपयोग करता है
"साबित" अल्लाह। वास्तविकता का विरोधाभास - और कुरान का, जैसा कि किताब भी बताती है कि आदम था
कई अलग-अलग तरीके बनाए।

012 37/11: "उन्हें (यहाँ यह स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है कि कौन से प्राणी हैं, लेकिन जैसे जिन्न आग से बने हैं, यह
इंसान होना चाहिए*) क्या हमने (अल्लाह*) चिपचिपी मिट्टी से पैदा किया है।" गलत। एक चीज़ के लिए
विज्ञान बताता है कि मनुष्य बनाया नहीं गया है - वह विकसित हुआ है। एक और बात के लिए: वह किसी भी मामले में नहीं है
मिट्टी से बना। 6/2 देखें।

०१३ ३८/७१: "मैं (अल्लाह *) मिट्टी से मनुष्य बनाने वाला हूँ:" विज्ञान के अनुसार मनुष्य नहीं था
बनाया, लेकिन पहले के प्राइमेट से विकसित - और मिट्टी से नहीं बनाया गया। 6/2 देखें।

०१४ ३९/६: "उसने (अल्लाह) ने आपके लिए जोड़े में मवेशियों के आठ सिर उतारे - - -"। अन्य से
कुरान में हम जानते हैं कि मवेशी थे: 2 गाय, 2 भेड़, 2 बकरियां, 2 ऊंट = 4 जोड़े = 8
सिर। यह गलत है - याक, जल भैंस, लामा, हिरन, और भारतीय हाथी और शायद
अधिक भूले हुए + सूअर (इस्लाम के अनुसार भी अल्लाह द्वारा बनाए गए, लेकिन किसी कारण से कि
कोई भी यहूदियों और मुसलमानों के लिए वर्जित नहीं जानता - मांस स्वादिष्ट और उच्च गुणवत्ता का है - - - लेकिन an
कुरान के अनुसार घृणा, बिना किसी स्पष्टीकरण के। ऐसे सिद्धांत हैं कि यह है
क्योंकि सुअर एक गंदा जानवर है - लेकिन जंगली में वे नहीं हैं। एक और सिद्धांत का खतरा है
ट्राइकिनोसिस - लेकिन इसकी जांच करना आसान है। एक और बात यह है कि सुअर एक ही तरह का खाना खाता है
लोगों के रूप में, और इसलिए कई समाजों के लिए बहुत "महंगा" बन गया। लेकिन वास्तव में कोई नहीं जानता
और कुरान व्याख्या नहीं करता है)। इसके अलावा मवेशी नहीं बनाए गए या "नीचे भेजे गए", लेकिन
विकसित। कोई भी भगवान यह जानता था - मुहम्मद नहीं। कुरान किसने बनाया?

०१५ ४१/१०: "उसने (पृथ्वी) पहाड़ों पर दृढ़ - - - - - स्थापित किया और उसमें सभी को मापा
उन्हें (जानवरों या इंसानों को? *) उचित अनुपात में पोषण देने के लिए चीजें, 4 दिनों में - - -"।
गलत। इसमें लाखों साल लगे - केवल पृथ्वी को ठंडा करने के लिए कोई भी
जिस तरह का जीवन संभव था, उसमें कम से कम 300 मिलियन वर्ष लगे। और पहले जीवन से विकास
पहले "असली" जानवर को लगभग 2.5 - 3.5 बिलियन वर्ष लगे (विज्ञान ने माना है कि इसमें लगा
पहला आदिम जीवन घटित होने से पहले एक अरब साल या उससे अधिक की तरह कुछ, लेकिन ये आखिरी
कुछ वर्षों में उन्होंने पाया है कि हो सकता है कि यह कुछ समय पहले हुआ हो)। पहले "असली" जानवर आए
प्री-कैम्ब्रियम के अंत में, लगभग ५००-६०० मिलियन वर्ष पहले की अवधि में, जो कुछ साल पहले था
एडियाकरियन नामित किया गया था। (और फिर पशु जीवन "विस्फोट" नामक अगली अवधि के दौरान
कैम्ब्रियम।)

पेज 180

०१६ ५१/४९: "और हर चीज़ से हमने (अल्लाह) जोड़े बनाए हैं - - -"। **बहुत गलत। इस केवल बहुकोशिकीय प्राणियों के लिए जाता है, और उन सभी के लिए भी नहीं** - आदिम जानवरों के बीच और यहां तक कि सरीसृप और मछली तक आप कुछ ऐसे प्रकार पाते हैं जो अलैंगिक रूप से फैलते हैं, और इस प्रकार नहीं जोड़े बनाओ। एककोशिकीय प्राणी जोड़े में नहीं होते हैं, और उनमें से कई और भी हैं प्रजातियों में और कुल संख्या में। कोई भगवान जानता था - मुहम्मद नहीं। किसने बनाया कुरान? 36/36 - 43/21 भी देखें।

०१७ ५५/१४: "उसने (अल्लाह) ने मनुष्य को बजने वाली मिट्टी से मिट्टी के बर्तनों की तरह बनाया"। गलत - लेकिन कुछ मजाकिया। 6/2 देखें।

018 64/2: "- - - वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें पैदा किया है - - -"। विज्ञान के अनुसार मनुष्य था नहीं बनाया गया है, लेकिन पहले के एक प्राइमेट से विकसित हुआ है। कम से कम मनुष्य तो किसी में नहीं बनाया जा सकता 13 अलग-अलग तरीकों से कुरान बताता है कि एक व्यक्ति आदम को बनाया गया था - 6/2 देखें + 38/75 + 55/3। अंत में: इस्लाम और कुतान केवल एक दावा प्रस्तुत करते हैं कि कोई भी धर्म और कोई भी जब तक उन्हें कुछ भी साबित नहीं करना है, तब तक वे किसी भी भगवान को पसंद कर सकते हैं। हार का दावा बिना प्रमाण के विश्वास का आधार हो सकता है - दृढ़ विश्वास के लिए भी - लेकिन वे बिना मूल्य के हैं ज्ञान के आधार के रूप में जब तक वे सिद्ध नहीं होते हैं। यह विशेष रूप से इसलिए है क्योंकि यह एक है अत्यंत गंभीर बात है कि कहीं वास्तव में कोई ईश्वर है, और यह ईश्वर न ही अल्लाह है। अगर ईश्वर अल्लाह नहीं है, और साथ ही मुसलमानों को खोज करने की संभावना से वंचित कर दिया गया है यह संभव भगवान अंध विश्वास से उन पर अप्रमाणित दावों द्वारा मजबूर किया गया है जिसका कोई भी मुफ्त में उपयोग कर सकता है भगवान (ओं) के बारे में आरोप लगाते हैं और अंध विश्वास की महिमा करते हैं - ठीक है, तो वे एक असभ्य के लिए हैं अगर अगला जीवन है तो जागना।

०१९ ७०/३९: "क्योंकि हम (अल्लाह*) ने उन्हें (मनुष्यों*) को (आधार पदार्थ) से पैदा किया है जिसे वे जानते हैं! " मनुष्य की रचना नहीं हुई, यहां तक कि मूल पदार्थ से भी नहीं; वह पहले के एक प्राइमेट से विकसित हुआ था। कोई भगवान जाना जाता था। 6/2 भी देखें।

**020 95/4: "हमने (अल्लाह*) ने वास्तव में मनुष्य को सबसे अच्छे साँचे में बनाया है"। गलत - और यह कुछ बताता है कि कुरान मजबूत करता है ("वास्तव में" शब्द के साथ) एक बयान - एक ढीला एक अक्सर की तरह - यह गलत है। मनुष्य सबसे अच्छे साँचे में निर्मित होने से बहुत दूर है। कई "निर्माण" विवरण" और बेहतर हो सकते थे - टूट-फूट को सहने की हमारी क्षमता f. उदा।, और हमारी देखने की क्षमता अंधेरे में, और भी बहुत कुछ। साथ ही बीमारियों से निपटने की हमारी क्षमता एकदम सही नहीं है - और अगर हमारा दिमाग एक समय में एक से अधिक चीजों के बारे में सोच सकते हैं, तो हम अधिक कुशल होंगे। आदि, आदि, आदि।

**०२१ ९६/२: "(अल्लाह*) ने मनुष्य को (मात्र) जमा रक्त के थक्के से बनाया - - -"। न आदमी (6/2 देखें) और न ही एक आदमी (75/37 देखें) खून से बना था - जमा हुआ या नहीं - भले ही कुछ पुराने यूनानियों ने ऐसा माना, और जिनसे मुहम्मद ने इस विचार को चुराया होगा। लेकिन इंसान या जानवर की शुरुआत - युग्मनज - इतनी छोटी होती है कि इसे देखा नहीं जा सकता तेरी आंखें केवल लोथ में या लोथ में या वध किए गए पशु में रक्त हैं। मुहम्मद यह माना जाता था कि वीर्य रक्त के थक्के के रूप में विकसित हुआ जो भ्रूण में विकसित हुआ। यह लायक हो सकता है यह उल्लेख करते हुए कि इस कविता में कथन अरस्तू के सिद्धांत की तरह है। लेकिन कोई भगवान जानता था बेहतर। कुरान की रचना किसने की? और मुसलमान कभी इसका जिक्र क्यों नहीं करते कि इतने सारे कुरान में "तथ्य" उस पर (अक्सर गलत) ग्रीक और फारसी विज्ञान के अनुसार हैं समय?

मनुष्य का प्रसार।

०३० ४/१a: "अपने अभिभावक-भगवान का सम्मान करें, जिन्होंने आपको (लोगों *) - - -" बनाया है। आदमी नहीं था विज्ञान के अनुसार बनाया गया था, लेकिन पहले के प्राइमेट से विकसित हुआ था।

पृष्ठ १८१

022 4/1b: "- - - ने आपको एक ही व्यक्ति से बनाया है - - -"। आदमी एक से नहीं आ सकता
व्यक्ति, कम से कम 2 होना चाहिए - नर और मादा। लेकिन अगर कोई जोड़ा होता, तो भी
बहुत कम हो - "जनजाति" के व्यवहार्य होने के लिए डीएनए किस्म बहुत छोटी होगी। आदमी बस
धीरे-धीरे विकसित हुआ - कुरान की तरह - पहले के प्राइमेट से (पुरातात्विक के लिए)
हव्वा और पुरातात्विक आदम जिसके बारे में विज्ञान बात करता है, और जिसका कुछ मुसलमान उपयोग नहीं करते हैं
कुछ "साबित" करने की कोशिश कर रहा है: 3/59 - 6/2 देखें।)

024 22/5: "- - - फिर (अल्लाह ने आपको बनाया) शुक्राणु से"। गलत। इंसान नहीं बना है
शुक्राणु से बाहर, भले ही यह स्पष्ट हो कि मुहम्मद ऐसा मानते थे - कुरान शुक्राणु को बताता है
एक महिला में लगाया और बढ़ता है। मनुष्य वास्तव में 1 शुक्राणु कोशिका + 1 अंडे से बना है
कोशिका, लेकिन यह संभव है कि मुहम्मद नहीं जानते थे - ऐसा अंडा कोशिका सभी में देखने के लिए बहुत छोटा है
एक खुले शव में रक्त, आंत और गोर, बिना आवर्धन के। उनका विश्वास भी
एक पुराने ग्रीक सिद्धांत से मेल खाता है। 6/2 भी देखें।

०२७ २३/१३: "तब हम (अल्लाह) ने उसे (भविष्य के बच्चे*) शुक्राणु के रूप में (एक बूंद) शुक्राणु के स्थान पर रखा।
आराम - - -"। गलत। मुहम्मद का मानना था कि शुक्राणु एक प्रकार का बीज है जो विकसित होकर बन सकता है
एक इंसान (और अगर पुरुष पहले चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया, तो वह लड़का बन गया, जबकि अगर महिला
हदीसों में उसके अनुसार, पहले यह एक लड़की बन गई)। वास्तविकता यह है कि शुक्राणु है
एक महिला में नहीं लगाया जाता है, लेकिन एक अंडे की कोशिका के साथ जुड़ जाता है और परिणामी युग्मनज तब शुरू होता है
बढ़ रही है। 53/45-46 भी देखें।

०२८ २३/१४ए: "तब हमने (अल्लाह) शुक्राणु को जमा रक्त के थक्के में बनाया - - -"। गलत।
और दोगुना गलत:

I. शुक्राणु का थक्का नहीं बनता है
जमा हुआ खून।
द्वितीय. शुक्राणु (इसमें से 1 कोशिका) एक अंडे के साथ जुड़ता है
कोशिका और युग्मनज बन जाता है।

मुहम्मद बेहतर नहीं जानते थे, क्योंकि उनके समय में अरब में यही विश्वास था - बिना
एक सूक्ष्मदर्शी यह देखना असंभव है कि वास्तव में क्या होता है। लेकिन एक भगवान जानता था। वहां एक है
यह कहते हुए कि "स्वाद केक का प्रमाण है", और यह स्वादिष्ट है। मुहम्मद और कुरान
और इस्लाम और मुसलमानों के पास "स्पष्टीकरण" खोजने के लिए बहुत व्यस्त समय था - उनमें से कुछ
बल्कि असंभव है - "समझाने" के लिए कि क्यों अल्लाह/मुहम्मद ने एक भी वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया
कि एक अलौकिक प्राणी शामिल था, यहां तक कि बहुत से मित्र और कई शत्रुओं ने भी पूछा
इसके लिए ईमानदारी से। **लेकिन अल्लाह को अपना साबित करने के लिए जरा सा भी चमत्कार करने की जरूरत नहीं पड़ी
अस्तित्व। उसे बस इतना करना था कि इन सभी मामलों में सच बोलना था - इस तरह - जहां
कुरान अब गलत साबित हो रहा है। यदि अल्लाह वास्तव में अस्तित्व में था, और यदि वह वास्तव में था / है
सर्वज्ञ - फिर उसने इतनी गलतियाँ क्यों कीं?**

जैसा कि अभी है, ये सभी गलत तथ्य अविश्वसनीय रूप से मजबूत संकेत हैं और इस बात के प्रमाण हैं कि यह था
कुरान बनाने में शामिल एक सर्वज्ञ भगवान नहीं - और फिर इस्लाम के बारे में क्या? - क्या यह
बना हुआ, झूठा धर्म? उल्लेख नहीं करने के लिए: तब क्या होगा जब सभी मनुष्यों के पास अपना रास्ता हो
एक वास्तविक धर्म (यदि ऐसा मौजूद है) इस्लाम द्वारा अवरुद्ध है?

०२९ २३/१४बी: "--- तो हमने (अल्लाह*) ने एक (भ्रूण) गांठ बना दी; हम उस गांठ की हड्डियों से बने हैं और
हड्डियों को मांस से पहिनाया "। गलत - 100% गलत: पहले मांस बनाया जाता है, और फिर हड्डियाँ
भ्रूण के मांस के अंदर विकसित होना। यह टिप्पणी की जानी चाहिए कि मुहम्मद की कहानी कैसे एक
बच्चा बना है, पुरानी यूनानी चिकित्सा मान्यताओं के अनुसार है - f. भूतपूर्व। प्रसिद्ध चिकित्सक

गैलेन और अरस्तू - जो मुहम्मद के समय मध्य पूर्व में जाना जाता था। कोई
भगवान बेहतर जानता था। फिर कुरान किसने बनाया?

०२६ ३९/६: "वह (अल्लाह*) आपको, आपकी माताओं के गर्भ में, चरणों में, एक के बाद एक बनाता है
- - -।" पुरानी यूनानी चिकित्सा (गैलेन, अरस्तू) के अनुसार, भ्रूण का विकास 4 चरणों में हुआ था।
आधुनिक चिकित्सा असहमत है - यह निरंतर है।

०२३ ४९/१३: "- - - हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (आदमी*) नर और मादा के एक (जोड़े) से पैदा किया - - -
" विज्ञान के अनुसार आदम और हव्वा कभी नहीं थे। इसके अलावा अगर सब कुछ जस्ट के साथ शुरू हुआ होता

एक जोड़ी, लंबे समय में समूह को व्यवहार्य बनाने के लिए डीएनए-किस्म बहुत छोटी थी = आदमी
कुछ पीढ़ियों के बाद मर गया था। (वास्तव में विज्ञान कहता है कि पर्याप्त डीएनए विविधता है
+ खतरनाक बीमारियों के खिलाफ एक उचित सुरक्षा मार्जिन है, जानवरों के एक समूह को चाहिए
कम से कम 2000 से मिलकर बनता है - और संक्रामक के प्रभाव को कम करने के लिए कुछ के आसपास फैलता है
बीमारियाँ - लंबे समय में व्यवहार्य होना सुनिश्चित करने के लिए।) 6/98 - 7/189 - 39/6 भी देखें।

०२५ ८६/६+७: "वह (मनुष्य*) उत्सर्जित एक बूंद (शुक्राणु*) से बना है - से आगे बढ़ना
रीढ़ और पसलियों के बीच।" **गौरवशाली: मुहम्मद उस शुक्राणु को भी नहीं जानते थे
वृषण से आता है - "पत्थर" - और स्रोत को शरीर के अंदर रखा और आधा
मीटर बहुत ऊपर !!!! यह यूनानी चिकित्सा के अनुसार है - हिप्पोक्रेट्स एफ। भूतपूर्व।
सोचा कि शुक्राणु गुर्दे से होकर गुजरा है। एक बच्चा भगवान भी बेहतर जानता है। कौन
कुरान की रचना की? और इस्लाम क्या है - और यह मुसलमान है - अगर कुरान नकली है?**

*०३१ ९२/३: "द्वारा (रहस्य) नर और मादा की रचना - - -"। हमारे लिए कोई रहस्य नहीं, नहीं
एक भगवान के लिए रहस्य - मुहम्मद के लिए एक बड़ा रहस्य। (हदीस के अनुसार उसने सोचा कि यदि
महिला पहले चरमोत्कर्ष पर पहुंची, लड़की बनी, लेकिन अगर पुरुष पहले था, तो वह लड़का बन गया - और
बेशक लड़के सबसे अच्छे थे।) कुरान किसने बनाया? यह भी देखें 18/37 - 32/8 - 35/11 - 40/67 -
75/37 - 77/20।

पृथ्वी पर जीवन आदि:

०४३ ३/८३: "- - - सभी प्राणी (= फ़रिश्ते, जिन्न, मनुष्य और जानवर*) स्वर्ग में और उस पर
पृथ्वी है, इच्छुक या अनिच्छुक (क्या 2/256 के बारे में: "- धर्म में कोई मजबूरी नहीं -"?)
उनकी (अल्लाह की *) इच्छा (स्वीकृत इस्लाम)" के लिए। मुसलमानों को बहुत मजबूत सबूत पेश करने होंगे
हमें विश्वास दिलाएं कि घोंघे और फ्लैटवर्म और मच्छरों सहित सब कुछ मुसलमान हैं।

०३५ ७/१६३: "(मछली*) खुलेआम अपना सिर (पानी के ऊपर*) पकड़े हुए - - -।" अरे नहीं
पानी में मुक्त मछलियों के लिए पानी के ऊपर अपना सिर पकड़ना शारीरिक रूप से संभव है - वे कूद सकते हैं
और वे सतह को छू सकते हैं, लेकिन वे अपने सिर को सतह से ऊपर नहीं रख सकते। समुद्री
स्तनधारी कर सकते हैं, लेकिन मछली नहीं। कोई भी भगवान जानता था - लेकिन रेगिस्तान में रहने वाले मुहम्मद को नहीं।

00c 7/166: अल्लाह ने कुछ "बुरे" यहूदी लोगों से कहा (कुरान के अनुसार): "तुम बंदर बनो - - -
" शायद ही संभव हो कि उन्हें वानरों में स्थानांतरित कर दिया गया हो।

०४१ १३/१३: "- - - गड़गड़ाहट उसकी स्तुति दोहराती है - - -"। शायद ही - गड़गड़ाहट सिर्फ एक प्राकृतिक है
और बिजली के लिए स्वचालित प्रतिक्रिया (जो फिर से प्राकृतिक और स्वचालित प्रतिक्रिया है
विद्युत शुल्क)। इस्लाम को यह साबित करना होगा कि गड़गड़ाहट अल्लाह को इस तरह से पुरस्कृत कर रही है, क्रम में
विश्वास किया जाना।

०४२ १३/१५अ: “आकाशों और पृथ्वी में जितने प्राणी हैं, वे सजदा करते हैं
खुद को अल्लाह के लिए (अधीनता को स्वीकार करते हुए) ”। जहाँ तक स्वर्ग की बात है, यह कहना कठिन है

हां या नहीं। लेकिन पृथ्वी के लिए: कोई भी गैर-मुस्लिम कभी भी अल्लाह के लिए खुद को सजदा नहीं करता। यह वही
सभी जानवरों, मछलियों और कीड़ों, आदि के लिए जाता है: उनमें से कोई भी कभी भी साष्टांग प्रणाम करते नहीं देखा गया है
खुद को किसी भी भगवान के लिए, अल्लाह में शामिल है - और अल्लाह के लिए इसे देखना अधिक आसान होना चाहिए, जैसा कि
वह एक दिन में साष्टांग प्रणाम के साथ ५ प्रार्थनाओं को प्राथमिकता देता है, कुछ दिन में और कुछ रात में (और भी आसान
यह देखने के लिए कि क्या यह अल्लाह के लिए सज्दा है, क्योंकि कुछ जानवर आदि जाग रहे हैं और दोनों दिन सक्रिय हैं और
रात - सामान्य नींद के समय साष्टांग प्रणाम के लिए जागना, आसान होना चाहिए
की पुष्टि की)। कुरान में इस बात को साबित करने के लिए इस्लाम के पास यहां कुछ भारी सबूत पेश करने हैं
विश्वसनीय 2/116 - 6/38 - 16/49 - 17/44 - 21/20 - 22/18 भी देखें।

०४० १३/१५बी: "- - - तो (अल्लाह के लिए खुद को सजदा करें) उनकी (जीवितों की) छाया करें
सुबह और शाम में"। छाया केवल सूर्य के प्रकाश की कमी है - और वे प्राकृतिक के लिए हैं
कारण लंबे और सपाट हैं सुबह और शाम। इस्लाम को यह साबित करना होगा कि यह
सूर्य के प्रकाश में पृथ्वी के घूमने का परिणाम सूर्य के प्रकाश की कमी को कुछ स्थानों पर होशपूर्वक बनाता है
एक भगवान के लिए "खुद को" साष्टांग प्रणाम करने का निर्णय लें। यदि कोई सबूत पेश नहीं किया जाता है, तो यह स्पष्ट रूप से एक परी है
छोटे बच्चों के लिए उपयुक्त बौद्धिक स्तर पर कहानी। 16/48 भी देखें।

०३८ २५/४५अ: "यदि वह (अल्लाह) चाहे तो उसे (छाया) स्थिर बना सकता है!" केवल
ऐसा करने का तरीका पृथ्वी को घूमना बंद करना है। **इस्लाम को साबित करना होगा कि अल्लाह कर सकता है
वह - खासकर जब से कुरान में सभी गलतियाँ गंभीर और उचित संदेह देती हैं**

के बारे में अगर वह सर्वशक्तिमान है - और सर्वज्ञ। अगर वह मौजूद है।

०३९ २५/४५बी: "- - - वह (अल्लाह*) छाया को लम्बा खींचता है!" यह पृथ्वी का घूमना है कि
छाया बढ़ाता है। कोई भी ईश्वर जानता था, लेकिन मुहम्मद नहीं - यह "नया" ज्ञान है। फिर
कुरान किसने बनाया? सर्वज्ञ देवता नहीं। और अल्लाह को सर्वज्ञ कहा गया है - या वह है?

०३७ ३३/४: "अल्लाह ने अपने (एक) शरीर में किसी के लिए दो दिल नहीं बनाए हैं - - -"। गलत। इस
वास्तव में हुआ है - जैसे कि मनुष्य की जटिल सृष्टि में लगभग कुछ भी।

हम यह भी टिप्पणी करेंगे कि कुरान में "अगर अल्लाह ने चाहा - - -" जैसी बातें अक्सर होती हैं। **NS
वाक्यांश कुछ लोगों के लिए विशिष्ट होते हैं जिन्हें यह दिखाने के लिए घमंड करना पड़ता है कि वे सक्षम नहीं हैं
खुद को साबित करने के लिए** - आप f. भूतपूर्व। अक्सर आधे धमकाने वाले बच्चों से ऐसी ही बातें सुनने को मिलती हैं
दूसरों को प्रभावित करना। अगर यहाँ ऐसा है, तो या तो अल्लाह या मुहम्मद को बार-बार करना पड़ता है
ऐसा अभिमान करो। (अलग अध्याय देखें)।

०३४ ३६/४२: "और हमने (अल्लाह*) ने उनके (लोगों*) के लिए समान (बर्तन) बनाए हैं।
सन्दूक*) - - -"। हमने कभी नहीं सुना कि अल्लाह ने नावें बनाईं। मुसलमान कहते हैं अल्लाह ने दिखाया
आदमी नावें कैसे बनाता है, लेकिन यह वह नहीं है जो कुरान कहता है: बनाना = बनाना।

033 43/10: "- - - और (अल्लाह) ने तुम्हारे लिए सड़कें - - - बनाई हैं। हमने a . के बारे में कभी नहीं सुना है
एक भगवान द्वारा बनाई गई सड़क, शायद परियों की कहानियों को छोड़कर। अरब में रास्ते/सड़कें इतनी पुरानी थीं कि
उनकी शुरुआत किसी को याद नहीं रही और फिर मुहम्मद इस तरह की बातें बता सकते थे।

०३२ ४३/११: "- - - हम (अल्लाह*) उसके द्वारा (बारिश* के साथ) एक मरी हुई भूमि में जी उठते हैं; फिर भी
क्या तुम (मृतकों में से) जी उठोगे - - -"। तुलना गलत है - और एक भगवान ने इसे जाना था। में
पहला मामला डीएनए जीवित है और अच्छी तरह से और अंकुरित होने के लिए तैयार है। मृत शरीर में सब कुछ है
समाप्त - डीएनए भी और एन्ट्रापी के खिलाफ जाने की इसकी सभी संभावनाएं (भौतिकी से एक शब्द जो
अराजकता और ऊर्जा की स्थिति के लिए एक उपाय कहा जा सकता है)। इसमें महत्वपूर्ण अंतर है।
लेकिन फिर कुरान में बिना किसी दस्तावेज के अल्लाह को श्रेय देने की प्रबल प्रवृत्ति है
प्राकृतिक घटनाएँ। 2/164 - 7/57 - 35/9 - 41/39 - 43/11 - 45/5 भी देखें।

१८३

पृष्ठ १८४

**०३६ ६७/१९: "(अल्लाह) - - -" के अलावा कोई भी उन्हें (पक्षियों*) ऊपर नहीं रख सकता। गलत। क्या रखता है
पक्षी ऊपर, वायुगतिकी के नियम हैं। (बेशक मुसलमान अपने पसंदीदा में से किसी एक का उपयोग कर सकते हैं
अंतिम उपाय: घोषित करें कि अल्लाह ने उन कानूनों को बनाया है। लेकिन फिर उन्हें यह साबित करना होगा कि - नहीं
केवल सस्ते शब्दों का प्रयोग करें जो किसी भी धर्म का पुजारी किसी भी दावा किए गए भगवान के बारे में उपयोग कर सकता है।) यह भी देखें
16/79.

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 13 (= II-1-3-13)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची थीम द्वारा व्यवस्थित

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और इतिहास के बारे में त्रुटियां कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस खंड में सामग्री:

यह अध्याय कालानुक्रमिक रूप से लिखा गया है, कुरान की आयतों के क्रम में नहीं। इस कहानियों की प्रगति को बेहतर ढंग से दिखाने के लिए।

१८४

पृष्ठ १८५

1. नूह और बाढ़: (तिथि पूरी तरह से अज्ञात है, लेकिन शायद कुछ 2000 - 4000 ईसा पूर्व (सीए। 3200 ईसा पूर्व?) - - - अगर ऐसा हुआ)।

नूह एक जाना-पहचाना नाम है। हो सकता है कि वह अस्तित्व में हो, हो सकता है कि वह सिर्फ एक परी कथा हो, या शायद
वह कुछ भूले हुए चरम बाढ़ के बचे लोगों की पहचान है। बाइबिल में और
कुरान वह एक धार्मिक व्यक्ति था जिसे अपने भगवान से एक सन्दूक बनाने का आदेश मिला - किसी प्रकार का
एक नाव की - और एक बड़ी बाढ़ की तैयारी करो जो आने वाली थी, क्योंकि उसका भगवान सब कुछ मिटा देगा
अधर्मी लोग। (एक बड़ी बाढ़ के बारे में किंवदंतियाँ आपको कई धर्मों में मिलती हैं। कम से कम मौजूद हैं
175 विभिन्न ऐसी किंवदंतियाँ)।

**001 11/40: "हम (अल्लाह*) ने कहा (नूह से*):
जानवर*) दो - नर और मादा, और आपका परिवार - - -"। कुरान के बारे में कुछ नहीं कहता
सन्दूक का आकार। लेकिन वैज्ञानिक पत्रिका लेक्सिकॉन के अनुसार बाइबल कहती है कि लगभग २०० मी
लंबा, कोई 30 मीटर चौड़ा और कोई 12 मीटर ऊंचा और 3 मंजिलें। यह कुछ १८००० वर्ग बनाता है
मीटर मोटे तौर पर बोल रहा हूँ। (एनआईवी ३०० हाथ लंबा, ५० हाथ चौड़ा और ३० हाथ ऊँचा बताता है = १४०
मीटर लंबा, 23 मीटर चौड़ा और 13.5 मीटर ऊंचा। 3 मंजिलों के साथ इसका मतलब है कि लगभग 9600 वर्ग मीटर। केवल।) लेकिन
10 से अधिक प्रकार के "सामान्य" जानवर हैं, लगभग 2ooo प्रकार के पक्षी, और at
कम से कम 10 मिलियन प्रकार के कीड़े और अन्य कीट जैसे जानवर, और आसानी से एक लाख अन्य छोटे
जानवर - जैसे स्लग, कीड़े, आदि। बस इतने सारे लोगों के लिए पर्याप्त जगह नहीं होगी, न कि
प्रत्येक का 2 का उल्लेख करें। इसके अलावा यह सभी जानवरों के लिए भोजन का सवाल होगा। कुरान
यात्रा कितने समय तक चली, इस बारे में कुछ नहीं कहते, लेकिन बाइबल के अनुसार यह अधिक समय तक चली
एक वर्ष से अधिक। इतने सारे जानवरों के लिए एक हेक्टेयर बहुत अधिक भोजन लगेगा - और कैसे हुआ
वे च. भूतपूर्व। मांसाहारियों के लिए मांस स्टोर करें, या कुछ मकड़ियों आदि के लिए जीवित कीड़े? वह सब खाना
बहुत जगह लेगा - खुद जानवरों से कहीं ज्यादा। उसमें असंभव
"छोटी नाव। और उसके ऊपर, विशेष जानवरों के लिए विशेष भोजन का प्रश्न था -
कोअला भालू के लिए यूकेलिप्टस के पत्ते f. भूतपूर्व। यह और भी संभव है कि नूह का घर उसी में था
इराक के दक्षिण में (यदि वह कभी अस्तित्व में था) विज्ञान के अनुसार - - और फिर सवाल है कि कहाँ
उन्होंने एफ पाया। भूतपूर्व। बारहसिंगा, ध्रुवीय भालू, कैरिबस, कोंडोर, लामा, प्यूमा, कंगारू, ओरंग-
utans आदि, आदि, बस कुछ का उल्लेख करने के लिए। और सवाल यह है कि कौन खिला रहा था और
इन सभी जानवरों को पानी देना, यह उल्लेख नहीं करना कि किसने इसे साफ रखा - नूह का परिवार
आखिरकार छोटा था (बाइबल के अनुसार 8)।

साथ ही प्रकृति के नियम बताते हैं कि प्रत्येक का एक जोड़ा सभी को स्थापित करने के लिए पर्याप्त नहीं होगा
पशु दौड़ - कोई डीएनए किस्म नहीं। और डीएनए की वैरायटी साइंस ने खोज ली है, बहुत बात करती है
समय की अलग-अलग लंबाई क्योंकि अधिकांश पशु समूह कुछ ही थे। कहानी बस है
सच नहीं। इस बात की बहुत कम संभावना है कि नूह जैसा व्यक्ति एक बार बाढ़ में जीवित और बच गया हो
उसके लिए पूरी दुनिया को कवर करने के लिए पर्याप्त - एफ। भूतपूर्व। वह अपने परिवार और अपने के साथ बच गया
मवेशी, आदि। विज्ञान लगभग सही समय पर एक या दो बहुत बड़ी बाढ़ के बारे में जानता है। परंतु
सब कुछ बहुत छोटे पैमाने पर है। और ऐसा नहीं जैसा किसी प्रकल्पित प्रेक्षक ने बताया है

कुरान में भगवान (या बाइबिल में उस मामले के लिए)।

मुसलमान यह कहकर समस्याओं को कम करने की कोशिश करते हैं कि नूह को प्रत्येक में से केवल दो लाना चाहिए पालतू मवेशी - लेकिन यह वह नहीं है जो कुरान कहता है, और इसके अलावा: अन्य सभी ने कैसे किया अगर बाढ़ सार्वभौमिक होती तो जानवर जीवित रहते? लेकिन वे आगे बताते हैं कि यह सिर्फ एक बड़ा था, लेकिन क्षेत्रीय बाढ़ - जो कुरान में नहीं कहा गया है, लेकिन यह भी नहीं कहा जाता है कि यह दुनिया भर में था (लेकिन देखें .) पॉइंटअबाउट माउंट। अल-जुडी नीचे)। लेकिन फिर कुछ लोग असली गलती करते हैं - या धोखा देने की कोशिश करते हैं - क्योंकि नीचे जो होता है वह ज्यादातर लोगों को अच्छी तरह से नहीं पता होता है, हालांकि यह अच्छी तरह से जाना जाता है अधिक शिक्षित लोग, और इस प्रकार "रैंक और फ़ाइल" को धोखा देना आसान है: एफ। उदा। " का संदेश कुरान", एक शीर्ष मुस्लिम विश्वविद्यालय द्वारा प्रमाणित (अल-अहजर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च .) अकादमी, काहिरा) बताता है:

1. बाढ़ अवश्य ही की पूर्ति कर रही होगी भूमध्य सागर - उसका उल्लेख किए बिना यह हुआ (जब जिब्राल्टर जलडमरूमध्य) खोला गया) कोई ४-५ मिलियन वर्ष पहले या उससे अधिक, और आधुनिक मनुष्य के अस्तित्व से बहुत पहले।
2. यह सब भी बिना यह बताए कि भरने में कई साल लग गए - जितना हो सकता है 100 या अधिक के रूप में - चूंकि उद्घाटन छोटा था शुरुआत और धारा भी धीमी बेसिन भर जाने से बहुत पहले। पास अब क्या है इस्राएल और मिस्र का जल गुलाब साल में सिर्फ एक या कुछ मीटर - बहुत नहीं खुरदरी बाढ़, जैसा कि कुरान में वर्णित है (एफ। भूतपूर्व। 11/42)।
3. उस समुद्र का धीरे-धीरे भरना कैसे दे सकता है जो अब इराक है, वहां अचानक बाढ़ आ गई, जहां यह है हुआ होना चाहिए था? - दक्षिण में या उसके निकट कहीं इराक।
4. हो सकता है कि वे इसे भरने के साथ मिला दें काला सागर (मुसलमानों द्वारा भी उल्लिखित)? लेकिन इसमें भी समय लगा (महीने या कुछ) वर्ष) - और इराक से बहुत दूर था। वह घटना घटी अंतिम हिमयुग के बाद जो 10ooo रुक गया - गर्म अवधि के तहत जितनी देर हो सकती है (यहां तक कि) कम बर्फ) 5700 - साल पहले। समय हो सकता है ठीक है, लेकिन फिर या तो नूह या कहानी के मामले में यात्रा की है - और यह भी भरना नहीं हो सकता मौसम और लहरों की व्याख्या करें।
5. अंत में चरम है, लेकिन अल्पज्ञात मेसोपोटामिया में बाढ़ - अब लगभग इराक - लगभग 5200 साल पहले। यह आसानी से हो सकता है बाढ़ की ही व्याख्या करें, और यदि यह एक था असाधारण "साधारण" बाढ़, यह भी हो सकता है मौसम की व्याख्या करें। लेकिन बड़ा होने पर भी, यह एक था स्थानीय हो रहा है। (लेकिन तब कुरान नहीं करता सीधे तौर पर दावा करें कि यह पूरी दुनिया को कवर कर रहा था - लेकिन दूसरी ओर बिंदु देखें माउंट अल-जुडी ठीक नीचे)।
6. खैर, एक और संभावना है कि बस - बस - एक संभावना हो सकती है। चीन में एक है के शासनकाल में देर से आई एक बड़ी बाढ़ की कहानी महारानी नु वा, और इसी एक में भारत जो इसे एक बहुत ही दुर्लभ ग्रह से जोड़ता है नक्षत्र ग्रहों का यह संरेखण हुआ १०. मई २८०७ ई.पू., और यदि सब कुछ सच है कि बड़ी बाढ़ शुरू हुई दिनांक - एक गैर-दस्तावेज से जुड़ा हो सकता है

हिंद महासागर में एक क्षुद्रग्रह की लैंडिंग।
लेकिन सिद्धांत बहुत सट्टा है।(लोकप्रिय .)
वैज्ञानिक पत्रिका "डिस्कवर" 11/2007)।

7. और एक और पहेली जो फिट नहीं बैठती
"स्थानीय" बाढ़ के बारे में मुस्लिम "स्पष्टीकरण":
कुरान का दावा है कि सन्दूक a . पर फंसे हुए हैं
सीरिया में पहाड़ (माउंट अल-जुडी - पहले .)
नाम क़ार्दू (११/४४) - तुर्की में अरारत नहीं)।
सन्दूक के लिए एक उच्च पर फंसे होने के लिए
पहाड़, बाढ़ को सार्वभौमिक होना था - if
पानी बहकर खाली नहीं हुआ था,
निचले स्थान – का प्रारंभिक ज्ञान
भौतिक विज्ञान।

एक विश्वविद्यालय के लिए एक झांसा देना जैसे बाढ़ = भूमध्य सागर को भरना, आदि है बेईमान और कुछ बताता है, खासकर जब वे 11/44 और अन्य छंदों को "भूल जाते हैं" और माउंट अल-जुडी जो धार्मिक रूप से शिक्षित मुसलमानों के लिए एक प्रसिद्ध "तथ्य" है - the एक विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों को ऐसे तथ्यों को जानना होगा, और यह जानना होगा कि यह गलत है, या कम से कम जांचें कि क्या वे निश्चित नहीं थे। भूमध्य सागर जिस तरह से भर गया वह एक प्रसिद्ध है प्रासंगिक शिक्षा वाले मुसलमानों में भी, बड़े पैमाने पर प्रोफेसर शामिल थे विश्वविद्यालय। 23/27 - 11/40 में इसी तरह के दावे।

तब भगवान ने पापियों की सजा शुरू की:

००२ ५४/११: "तो हमने (अल्लाह*) ने स्वर्ग के द्वार खोल दिए (यहाँ = धार्मिक रूप से परिभाषित) स्वर्ग के रूप में यह f. भूतपूर्व। बड़े अक्षर "H" के साथ लिखा गया है, आकाश या बादलों का विकल्प नहीं*) पानी बरसने के साथ"। लेकिन जिस भौतिक आकाश में मुहम्मद विश्वास करते थे, वह अस्तित्व में नहीं था - और इस प्रकार पानी नहीं हो सका।

००३ ११/४२: "तो सन्दूक उनके साथ पहाड़ों की तरह लहरों (ऊँची) पर तैरता रहा, और नूह अपने पुत्र (जो तट पर था) को पुकारा - - -"। जब नाव लहरों के बीच तैर रही हो जैसे पहाड़, तट पर किसी के साथ संवाद करना संभव नहीं है। मुहम्मद, में रह रहे हैं रेगिस्तान, शायद नहीं जानता। लेकिन किसी भी भगवान ने ऐसी गलती नहीं की थी - कह रहे थे कि वे कर सकते थे संवाद। उस तरह की लहरें बहुत शोर करती हैं, और हवा भी सामान्य रूप से साथ होती है उस तरह के समुद्र। नाटकीय परी कथा। नीचे 11/43 भी देखें।

यह इस बात का एक और प्रमाण है कि कुरान में नाटकीय परिदृश्यों की व्याख्या नहीं की जा सकती है भूमध्यसागरीय या काला सागर भरना: एक विशाल जलप्रपात भी पैदा नहीं करता लहरें "पहाड़ों की तरह" - पानी की एक अपेक्षाकृत स्थिर धारा ऐसा नहीं करती है, सिवाय इसके कि जलप्रपात, और जैसे-जैसे वे दौड़ते हुए दूरी के अनुपात में कम होते जाते हैं - दुगुनी दूरी = आधी ऊर्जा प्रति मीटर तरंग मोर्चा, क्योंकि वे एक अर्धवृत्त में फैली हुई हैं (एनबी: यह रैखिक तरंग मोर्चों के साथ हवा में उड़ने वाली तरंगों के लिए नहीं जाता है, और निश्चित रूप से नहीं अगर हवा है अभी भी लहरों में ऊर्जा को प्रवाहित करना और स्थानांतरित करना - केवल वहीं जहां तरंगों का स्रोत है a "बिंदु" एक झरने की तरह - या पानी में फेंका गया पत्थर)। और एक झरना - कोई फर्क नहीं पड़ता कैसे बड़ा - कभी भी भयानक तूफान (अन्य स्थानों का उल्लेख) उत्पन्न न करें।

004 11/43: "पुत्र (नूह* के) ने उत्तर दिया - - -"। उस तरह के मौसम में न कोई कॉल और न ही कोई रिप्लाई संभव था - हवा की गर्जना और लहरों का दुर्घटनाग्रस्त होना बहुत अधिक शोर है। में इसके अलावा आपके पास अपनी आवाज की आवाज "उड़ाने" वाली हवा का प्रभाव है। और देखें 11/42 ठीक ऊपर।

005 7/64: "- - - हम (अल्लाह*) बाढ़ में डूबे हुए हैं जिन्होंने हमारे संकेतों को अस्वीकार कर दिया"। और सन्दूक को छोड़कर सभी लोग डूब गए। खैर, इस्लाम बिलकुल सही दावा करता है कि

कुरान यह नहीं कहता है कि बड़ी बाढ़ ने पूरी पृथ्वी को कवर किया - इस दावे के बावजूद कि अर्की
इस्लाम के अनुसार एक पहाड़ (सीरिया में माउंट अल-जेडी) पर उच्च समाप्त हुआ। लेकिन जब वे कोशिश करते हैं
कुरान में वर्णित बाढ़ की व्याख्या करें, वे न केवल ठोकर खाते हैं, बल्कि सिर के बल गिर जाते हैं
एक पूर्ण पहाड़ी के नीचे। यह विशेष रूप से कुछ तथ्यों के रूप में जो वे मोड़ते हैं, उनके बीच बहुत प्रसिद्ध हैं
सीखा लोगों, कि वे स्पष्ट रूप से जानते हैं कि वे धोखा देने के लिए चीजें और निष्कर्ष बना रहे हैं
भोले और/या नहीं पढ़े-लिखे लोग - - - कुछ छोटे अल-ताकिया और/या किटमैन? (वैध झूठ और
अर्धसत्य) - जो कि वैध है (हाँ, यदि आवश्यक हो तो एक दायित्व भी) को बढ़ावा देने और/या
धर्म की रक्षा करना, जो सत्य की खोज से कहीं अधिक आवश्यक है। देखो
11/40 - 11/42 और 11/43 ऊपर।

००६ २१/७६: "हमने (अल्लाह*) - - - ने उसे (नूह*) और उसके परिवार को बड़े संकट से छुड़ाया।
बड़ी बाढ़*)"। गलत: कुरान उसके एक बेटे पर बहुत स्पष्ट है (उसके पास सिर्फ 3 था - शेम,
हाम और येपेथ - बाइबिल के अनुसार (1. मो. 9/18)) बाढ़ में डूब गए। गलती और
ठोस विरोधाभास। 37/76 में भी ऐसा ही दावा। 37/76 में भी ऐसा ही दावा।

इस प्रकार बड़ी बाढ़ आई - - -

००७ ३६/४१बी: "और उनके (मनुष्यों) के लिए एक निशानी यह है कि हम (अल्लाह) ने उनकी जाति को जन्म दिया।
बाढ़) भरी हुई सन्दूक में - - -"। कोई लकड़ी की नाव संभवतः कुरान का भार नहीं उठा सकती थी
कहता है: नूह + उसके लोग + हर जानवर में से 2+ खाना और चारा। आज मुसलमान भी देखते हैं
यह बहुत गलत है, और यह कहकर इसे दूर करने की कोशिश करें कि केवल पालतू जानवर थे
मतलब, लेकिन यह वह नहीं है जो कुरान कहता है। इसके अलावा: इस्लाम बताता है कि सन्दूक a . पर फँसा हुआ है
सीरिया में पहाड़ - माउंट अल-जुदी (तुर्की में अरारत नहीं) - लेकिन अगर पानी इतना ऊंचा था,
अन्य जानवर कहाँ बचे थे? - और इतने लंबे समय के लिए? (कुरान निर्दिष्ट नहीं करता है, लेकिन
बाइबल कुछ 16 महीने कहती है)।

2. कुछ स्थानीय अरब किंवदंतियाँ और/या परीकथाएँ:

मुहम्मद ने अपने उपदेश में पुरानी अरब कहानियों और अन्य स्थानीय चीजों का भी इस्तेमाल किया। या उसने बना लिया
(?) चीज़ें। मुहम्मद - या वास्तव में वह जिसने कुरान बनाया था अगर वह कोई था या
मुहम्मद के अलावा कुछ और - कहानियों की रचना में ज्यादा रचनात्मक कल्पना नहीं दिखाई,
लेकिन उसे अपनी शिक्षाओं के अनुकूल बनाने के लिए आवश्यक ट्विस्ट करने पड़े। ज्यादातर कहानियाँ बस
लंबी शामों / रातों में पास-टाइम के लिए बताई गई प्रसिद्ध कहानियों से "उधार" लिया गया था,
अक्सर कमोबेश पेशेवर कथाकारों द्वारा कहा जाता है - दोनों आदिम में सामान्य अवसर हैं
किताबों या कागजों या रेडियो या अन्य मीडिया के बिना समाज।

*००८ १०/१९: "मानव जाति केवल एक राष्ट्र थी - - -"। मानव जाति कभी नहीं बल्कि एक राष्ट्र थी। शायद
एक बार एक जनजाति या कुछ छोटी जनजातियाँ, लेकिन एक राष्ट्र कभी नहीं, जैसा कि कुछ मुसलमान समझाने की कोशिश करते हैं -
और वह मामला कुछ 160ooo - 200ooo साल पहले था (ऐसा लगता है कि एक "बोतल" है
गर्दन" जब उस समय मनुष्य लगभग मर गया)। आप भी कभी-कभी मुस्लिमों से कहते हुए मिलते हैं
जीत है कि विज्ञान ने कुरान को साबित कर दिया है, क्योंकि अब उन्होंने प्रागैतिहासिक ईव को पाया है
और प्रागैतिहासिक आदम - - - यह उल्लेख किए बिना कि प्रागैतिहासिक तथाकथित "ईव" रहता था
ऊपर उल्लिखित कुछ १६०००० - २००० साल पहले (संख्या कुछ भिन्न होती है) अफ्रीका में,
जबकि प्रागैतिहासिक "एडम" कुछ 60ooo - 70ooo (64ooo?) साल पहले ही रहता था, और नहीं
एशिया में कैस्पियन सागर के दक्षिण की संभावना नहीं है। "एडम" से 100 साल पहले "ईव" मृत हो गया था
जन्म - और एक लंबी दूरी - यह देखना मुश्किल है कि वे मनुष्य के "माता-पिता" कैसे हो सकते हैं, और
इस प्रकार कुरान को सिद्ध करो।

*009 10/47: "हर लोगों के लिए (एक दूत भेजा गया)"। हदीस में 124ooo दूतों का उल्लेख है
या भविष्यद्वक्ता। **एकेश्वरवाद की शिक्षा देने वाले भविष्यवक्ताओं का एक भी निशान नहीं है (सिवाय इज़राइल और कुछ अन्य विशेष मामले), पुराने समय में इस्लाम का उल्लेख नहीं करने के लिए, न ही**

पुरातत्व में, कला में, साहित्य में, लोक कथाओं में, न ही धर्मों में। उनमें से कुछ को छोड़ देना चाहिए था छोटे निशान कम से कम, जब वे इतने सारे थे। यह श्लोक सत्य नहीं है।

०१० ३५/४४: "क्या वे (लोग*) पृथ्वी पर यात्रा नहीं करते हैं, और देखते हैं कि उनका अंत क्या था
उनके पहले - - -?" अरब में और उसके आसपास इधर-उधर खंडहर थे। मुहम्मद ने दावा किया

- बिना किसी दस्तावेज के सामान्य रूप से केवल गैर-मुसलमानों को कुछ भी साबित करने की आवश्यकता है - कि
उनमें से हर एक अविश्वास या पापों के कारण अल्लाह के क्रोध का परिणाम था
इस्लाम के खिलाफ। गलत। युद्धरत जनजातियों द्वारा बसाए गए एक शुष्क और कठोर भूमि में बहुत सारे थे
खाली घरों और खंडहरों के अन्य कारण।

फिर हम अरब किंवदंतियों से कुछ नामित जनजातियों पर आते हैं जिनका अक्सर उल्लेख किया जाता है
कुरान. वे सभी नष्ट कर दिए गए क्योंकि उन्होंने अल्लाह और इस्लाम के खिलाफ पाप किया था
कुरान:

०११ ५४/१९: "क्योंकि हम (अल्लाह*) ने उनके (आद के लोगों) पर एक दिन में एक भयंकर हवा भेजी थी
हिंसक आपदा का "। खैर, कुछ गलत है - और विरोधाभासी - जैसा कि यहाँ एक दिन कहा गया है,
४१/१६ में इसे (कई) दिन और ६९/७ में ६ रातें और ७ दिन कहा जाता है।

00a 7/73: थमूद जनजाति के बारे में किंवदंती से जुड़े, आपको बार-बार में बताया जाता है
कुरान कि स्वयंभू नबी सलीह उनके लिए एक ऊँट लाए और बताया कि यह एक निशानी है - अ
सबूत - अल्लाह से। जैसा कि कुरान में बताया गया है, इसका बिल्कुल कोई अर्थ नहीं है - सिर्फ एक दावा
प्रसिद्ध पतली हवा में लटका हुआ। जिस देश में ऊँट किसी देवता का प्रमाण हो, वहाँ कैसे हो सकता है?
एक दर्जन में 15 ऊंट हैं?

लेकिन फिर हम स्पष्टीकरण में भाग लेते हैं: यह पुराने अरब लोककथाओं से लिया गया है - एक पुरानी किंवदंती
कि अरब में हर कोई मुहम्मद के समय जानता था (लेकिन एक सर्वज्ञ ईश्वर होगा जो
पूरी दुनिया में पहुंचना चाहता था, एक पुरानी परी कथा का उपयोग करना जो केवल अरबों को ज्ञात हो - और इस तरह से
अगर कोई बाकी कहानी नहीं जानता है तो उसे समझ में नहीं आता है?)

बहुत संक्षेप में किंवदंती इस तरह चलती है: एक बार एक पहाड़ी चट्टान थी। उस ठोस से बाहर
एक दिन चट्टान पर एक ऊँट आया। यह ऊँट तब एक देवता का भविष्यद्वक्ता बन गया।

ऐसी पृष्ठभूमि के साथ ऊंट इतना खास था, कि वह किसी चीज के लिए एक संकेत था - केवल वही
कुरान ने कहानी का सिर्फ एक हिस्सा बताया, क्योंकि वहां और उस समय हर कोई बाकी को जानता था।
लेकिन जैसा कि हमने पूछा: क्या कोई सर्वज्ञ ईश्वर पूरी दुनिया तक पहुंचना चाहता है, इसका एक हिस्सा बताएं
मंजिला, जब वह जानता था कि दुनिया के अधिकांश लोग बात नहीं समझेंगे? (लेकिन जैसे
अपेक्षित; आधुनिक समय में आप मुसलमानों को यह कहते हुए पाते हैं कि यह ऊंट नहीं, बल्कि बिना है
एक विश्वसनीय विकल्प देना।)

०१२ ११/६७: "ए (शक्तिशाली) विस्फोट ने अपराधियों (थमूद के लोगों) को पछाड़ दिया, और वे लेट गए
सज्दा (मृत*) अपने घरों में सुबह से पहले - - -।" खैर, ७/७८ में वे an . द्वारा मारे गए थे
भूकंप और 69/5 में एक भयानक तूफान (जो एक विस्फोट से कुछ अलग है - a
तूफान कुछ समय तक रहता है, विस्फोट क्षण भर में समाप्त हो जाता है, जैसे विस्फोट से विस्फोट)। दो
विकल्पों में से गलत होना चाहिए - बस एक या दो और विरोधाभास। यह भले ही
किसी भी विरोधाभास की अनुपस्थिति का दावा कुरान में यह साबित करने के लिए किया गया है कि इसे नीचे भेजा गया है
अल्लाह से। एक छोटी सी अतिरिक्त जिज्ञासा: ईमानदार अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च
काहिरा में प्रसिद्ध कुलीन इस्लामी विश्वविद्यालय अल-अजहर विश्वविद्यालय में अकादमी ने पवित्र किया है a
इस कविता का परिवर्तन ६९/५: स्वीडिश संस्करण अरब पाठ को बताता है कि वे एक द्वारा मारे गए थे
भूकंप और नया अंग्रेजी एक कहता है "एक भयानक उथल-पुथल से (पृथ्वी की)।" फिर चुपचाप
और अच्छी तरह से कालातीत कुरान में एक विरोधाभास गायब हो गया है। **पर क्या ये कुछ बताता है**

**इस्लाम में ईमानदारी के बारे में? - या ऐसे मामले में सोचने के तरीके के बारे में जहां संभव हो
अगला जीवन दांव पर है, और सत्य को खोजने के लिए परम आवश्यक चीज होनी चाहिए
असली सही तरीका? झूठ बोलना और धोखा देना कभी सच नहीं होता - और इस्लाम को इसकी आवश्यकता क्यों है
ऐसे तरीके? और क्या झूठ से सही धर्म पाया जा सकता है? अगर झूठ हैं
स्वीकार्य है, तो अधिक हो सकता है एक झूठ है - और उस सिद्धांत को याद रखें जो हो सकता है
मुहम्मद गेब्रियल से नहीं मिले, लेकिन इब्लिस (शैतान) या कुछ अन्य अंधेरे बलों से मिले
गेब्रियल होने का प्रच्छन्न और दिखावा, इस मामले में सभी चोरी, कठोर नियम और
इस्लाम में खून को आसानी से समझाया गया है।** इसके ठीक नीचे 7/78 भी देखें।

०१३ ७/७८: "तब भूकम्प ने उन्हें (तमूद* का गोत्र) अनजाने में ले लिया, और वे लेट गए
सुबह सज्दा (मृत*) अपने घरों में"। गलत। ११/६७ में एक बात के लिए (इसे देखें
ऊपर) वे एक शक्तिशाली विस्फोट से मारे गए और 69/5 में एक तूफान से - एक या दो अधिक
विरोधाभास है कि इस्लाम के अनुसार कुरान में मौजूद नहीं है।

दूसरे के लिए कभी भी ऐसा भूकंप नहीं आया जिसने बिल्कुल सभी को मार डाला - कहीं नहीं
पूरी पृथ्वी, और कभी भी नहीं। भिन्न गुणवत्ता वाली ऊंची इमारतों के अपवाद के साथ, यह एक बहुत ही है
गंभीर भूकंप जो लगभग 30% से अधिक निवासियों को मारता है।

०१४ ७/९१: "लेकिन एक भूकंप ने उन्हें (शूएब के लोग, मद्यन*) ले लिया, और वे लेटे रहे
सुबह से पहले अपने घरों में (मृत *) सजदा करें। ” गलत। भूकंप कभी नहीं मारता
100%। ऊपर 7/78 देखें।

3. अब्राहम और लूत (अब्राहम का भतीजा):

(यदि इब्राहीम केवल एक किंवदंती नहीं है, तो वह 1800 - 2000 ईसा पूर्व तक जीवित रहे)।

अब्राहम 3 यहूदी (?) कुलपिताओं में से पहला था (अन्य उसके पुत्र इसहाक और इसहाक के थे)
बेटा याकूब)। उन्हें बाइबल में भविष्यवक्ता नहीं माना जाता है।

00b 2/140: "- - - क्या तुम अल्लाह से बेहतर जानते हो?" (- इज़राइल के पुराने कुलपतियों आदि के बारे में।)

1. नहीं - अगर अल्लाह वास्तव में मौजूद है और सर्वज्ञ है
   और मुहम्मद से संपर्क किया। इनमें से सभी
   सभी से संदिग्ध लग रहा है
   कुरान में गलतियाँ, आदि।
2. शायद - अगर अल्लाह वास्तव में मौजूद है, लेकिन नहीं है
   सर्वज्ञ, लेकिन मुहम्मद से संपर्क किया -
   जिस पर मुहम्मद ने केवल दावा किया, कभी नहीं
   साबित हुआ, भले ही यह संभव होना चाहिए
   अल्लाह।
3. हां, कम से कम में जानकारी के संबंध में
   कुरान - अगर अल्लाह वास्तव में मौजूद है, लेकिन नहीं था
   मुहम्मद से संपर्क करें। आधुनिक विज्ञान जानता है a
   मुहम्मद की तुलना में बहुत अधिक - और नहीं हैं
   सत्ता के लिए बाहर जाना, आदि = अधिक विश्वसनीय।
4. हाँ, निश्चित रूप से - अगर अल्लाह मौजूद नहीं है और
   शायद एक बीमार आदमी की कल्पना थी
   (टीएलई?) शक्ति के मंच का निर्माण।

00c 37/97: "उन्होंने (लोगों*) ने कहा, 'उसे (अब्राहम) एक भट्टी बनाओ, और उसे उस में फेंक दो
भयंकर आग!" आप यह मानने के लिए स्वतंत्र हैं कि यह अब्राहम के साथ हुआ - लेकिन सावधान रहें कि कहानी है

"मिद्रश रब्बा" नामक एक कहानी से "उधार" (मुहम्मद भी प्रेरित हो सकते हैं)
ओटी में डैनियल और उसके दोस्तों के बारे में कहानी द्वारा)।

00d 3/67: "अब्राहम एक यहूदी नहीं था और न ही अभी तक एक ईसाई - - -"। वह निश्चित रूप से कोई ईसाई नहीं था,
जैसा कि वह रहता था - यदि वह कभी जीवित रहा - लगभग 1800 - 2000 वर्ष बहुत पहले। लेकिन कॉल करना सही हो सकता है
सभी यहूदियों का पूर्वज एक यहूदी। (हम जानते हैं कि उस समय यह शब्द मौजूद नहीं था, लेकिन यह सामान्य है
उन लोगों के लिए भी इस शब्द का प्रयोग करना जो बाद में यहूदी बने।) अरबों का दावा है कि वह भी थे
उनके पूर्वज ने उसे और उससे भी अधिक उसके पुत्र को विवाह से बाहर कर दिया, इश्माएल - और as
बिना किसी सबूत या दस्तावेज के कुरान और इस्लाम के लिए सामान्य - मक्का में मृत
इस्लाम का केंद्र - (संयोग से?) इस तथ्य के बावजूद कि इश्माएल और उसके वंशज,
बाइबल के अनुसार, जिनसे वे प्राप्त होने का दावा करते हैं, "हवीला से लेकर' तक के क्षेत्र में बसे"
शूर, मिस्र की सीमा के पास, जैसा कि आप अश्शूर की ओर जाते हैं ”(१. मूसा २५/१८) = लाल समुद्र के पास
और अरब से बहुत दूर। और ध्यान दें: बाइबिल का यह भाग १००० से अधिक वर्षों से लिखा गया है
इससे पहले कि यहूदियों के पास उसे अरब में न रखने का कोई कारण था। विज्ञान भी लंबा है
पहले उस शब्द की किसी भी न्यायिक परिभाषा से परे साबित हुआ, कि बाइबल मिथ्या नहीं है -
इस्लाम के मजबूत दावों के विपरीत, विपरीत के बारे में कुछ भी साबित नहीं हुआ - ताकि
मूल रूप से लिखे जाने के बाद से यह जानकारी संक्षिप्त नहीं है।

जो सवाल उठाता है: क्या मुहम्मद और उसके अरब वास्तव में इब्राहीम के वंशज हैं?
कम से कम वे केवल चौथाई नस्लों के मामले में हैं, क्योंकि इश्माएल की मां, हाजिरा, से एक गुलाम थी
मिस्र (1. मूसा 16/1), और उसकी पत्नी (केवल एक का उल्लेख किया गया है) मिस्र से थी (भी
बाइबिल के अनुसार और १००० से अधिक वर्षों से पहले से लिखित और संक्षिप्त
मुहम्मद - 1. मो.21/20)। खैर, इससे भी बदतर: आधुनिक डीएनए विश्लेषणों से पता चला है कि
शुद्ध अरब मौजूद नहीं है। अरब एक चौराहे के पास है - कारवां और व्यापारी गुजर चुके हैं

के माध्यम से - - - और कभी-कभी बच्चों को पीछे छोड़ दिया (याद रखें कि मुहम्मद से पहले
अरब सेक्स और शराब "दो रमणीय चीजें" थीं)। और अरब कारवां और व्यापारी
खूब घूमा करते थे - और कभी-कभी विदेश से दुल्हनों को वापस लाते थे। और अंत में शायद
पतला रक्त का मुख्य कारण: दास। सचमुच लाखों गुलाम - उनमें से कुछ 2/3
महिलाओं - समय के माध्यम से मुहम्मद के पहले और बाद में अरब में लाया गया है।
और हरम की महिलाएं - क्या आपको लगता है कि उन्हें कंडोम की मांग करने की अनुमति थी? यह है
यह कहना असंभव है कि अरबों में अब्राहम के डीएनए के निशान नहीं हैं - शायद यहूदी से
गुलाम औरतें भी? लेकिन कोई भी वैज्ञानिक कहेगा कि इससे कहीं ज्यादा डीएनए मिलने की संभावना है
इब्राहीम से (यदि वह कभी अस्तित्व में था) यहूदियों में तो अरबों में बड़े हैं, क्योंकि यहूदी ज्यादातर
धर्म को छोड़कर अंतर्विवाह।

00e 3/68: "निःसंदेह, मनुष्यों में, इब्राहीम के सबसे करीबी रिश्तेदार, वे हैं जो अनुसरण करते हैं
उसे - - -"। आप केवल एक अनुयायी होने के कारण किसी पुरुष से संबंधित नहीं होते हैं। इसके अलावा देखें
3/67 की दूसरी छमाही के ठीक ऊपर।

00f 2/130: "- - - इब्राहीम का धर्म (= इस्लाम*) - - -।" कुरान अक्सर दावा करता है कि इस्लाम
= अब्राहम का धर्म। लेकिन यह हमेशा से था और केवल एक दावा है - कोई सबूत नहीं, नहीं
दस्तावेज़ीकरण - समझाने की कोशिश भी नहीं, सिवाय अनिर्दिष्ट और साबित किए गए दावे को छोड़कर कि
हर कोई जो कुछ और कहता है वह झूठ बोल रहा है, और वह अन्य शास्त्र जिन्हें विज्ञान अधिक मानता है
विश्वसनीय (100% साबित नहीं हुआ, लेकिन सच होने की अधिक संभावना है) मिथ्याकरण हैं, भले ही
विज्ञान ने दिखाया है कि वे कम से कम झूठे नहीं हैं - हो सकता है कि सब कुछ सच न हो
बाइबल भी, लेकिन विज्ञान ने स्पष्ट रूप से दिखाया है कि यह मिथ्या नहीं है। (इसे साबित करने के लिए १००.०% निश्चित रूप से है
असंभव - हमेशा सैद्धांतिक या निर्मित संभावनाएं होंगी। लेकिन यह कम से कम साबित होता है
99.5% - शब्द की किसी भी न्यायिक परिभाषा से बहुत दूर - और अगर इस्लाम कुछ और दावा करता है,
उन्हें सबूत पेश करने होंगे, न केवल ऐसे दावे जो संभावित सिद्धांत पर भी आधारित नहीं हैं
इस बारे में कि सभी हज़ारों अलग-अलग पांडुलिपियों में इतने अध्याय कैसे रहे होंगे और

छंदों को ठीक उसी तरह से मिथ्या बना दिया गया है - उस समय पूरी दुनिया में फैला हुआ था जिसे कोई जानता था। सभी
इस्लाम जो पेश करता है, वह एक हठीला दावा है - इस बारे में एक सिद्धांत भी नहीं कि यह कैसे संभव होना चाहिए
सब कुछ गलत साबित करते हैं, या विज्ञान को पता है कि हजारों पुरानी पांडुलिपियों के बारे में क्यों,
दिखाता है कि यह गलत नहीं है। कोई सबूत नहीं। हजारों . मौजूद होने के बावजूद कोई दस्तावेज नहीं
दस्तावेज। केवल एक जिद्दी दावा कुछ और नहीं बल्कि बहुत सारी गलतियों वाली किताब पर आधारित है
संदिग्ध नैतिक और कम से कम कहने की शक्ति की लालसा वाले व्यक्ति द्वारा। दावा नहीं है
0,5% संभावना भी साबित हुई - केवल दावे। एफ पूर्व में इसी तरह का दावा। नीचे सिर्फ 2/135।

०१५ २/१३५: "- - - इब्राहीम का धर्म, सच्चा (धर्म*) - - -"। कुरान के अनुसार,
इब्राहीम एक मुसलमान था। लेकिन अन्य सभी गलतियों और मुड़ तर्क और कहानियों को देखते हुए
कुरान - इस्लाम को इसके लिए असली सबूत पेश करने होंगे जो सच था। यह भी देखें २/१३०
के ऊपर। और शायद नीचे 21/56c इस बात का संकेत है कि यह कितना सच है?

016 21/56c: "- - - वह (अल्लाह) जिसने उन्हें (मनुष्य*) (कुछ नहीं से) पैदा किया: और मैं (अब्राहम)
मैं इस (सच्चाई) का गवाह हूं।" यह वास्तव में एक अनपेक्षित मजाक है। बताया जाता है कि अल्लाह ने
कुछ ऐसा जिसका कुरान में भी खंडन किया गया है - और इब्राहीम गवाह है कि यह सच है,
और यह भले ही वह लाखों साल बाद जीवित रहा हो (पहले प्रोटो इंसान कम से कम 6 मिलियन रहते थे
साल पहले, होमो सेपियन्स का पता लगभग 160oo - 200ooo साल पहले लगाया गया है। यदि इब्राहीम कभी जीवित रहे,
वह लगभग ३८०० - ४००० साल पहले रहता था)! अल्लाह के लिए कुछ सबूत। क्या यह संभव है कि अल्लाह स्वयं
इसे नीचे भेजा है? लेकिन यह कुरान में और मुसलमानों से सबूतों के बारे में कुछ बताता है।
6/2 भी देखें।

*०१७ ८७/१९: "इब्राहीम की पुस्तकें - - -"। अब्राहम के पास विज्ञान के अनुसार कोई किताब नहीं थी - और
निश्चित रूप से बहुवचन में नहीं। ४००० साल पहले एक खानाबदोश के अलावा, शायद ही पढ़ना जानता था।

और फिर लूत था:

018 11/92: "उसने (लूत*) ने कहा, 'हे मेरे लोगों! लूत दूर से एक अप्रवासी था (उर इन
चाल्डिया अब दक्षिण इराक में) - यह बाइबिल और कुरान दोनों के अनुसार है। के लोग
सदोम और अमोरा (अब पश्चिम यरदन में मृत सागर के पास, यदि वे यरदन के निकट स्थित थे)
उस झील के पूर्वी किनारे जैसा कि इस्लाम ने संकेत दिया है) लूत के लोग नहीं थे। और कुरान और दोनों
बाइबिल से पता चलता है कि लूत और स्थानीय लोगों के बीच दूरी थी - उन्होंने निश्चित रूप से नहीं किया था
उसके लोग बनें। 7/80 - 11/93 में भी ऐसा ही दावा। इसके ठीक नीचे 26/161 भी देखें।

019 26/161: "- - - उनके (सदोम और अमोरा के लोग*) भाई लूत - - -"। गलत। बहुत
दो शहरों के लिए एक अजनबी था, और यह कुरान और बाइबिल दोनों से बहुत स्पष्ट है कि वह
उन स्थानीय लोगों के साथ अच्छा मेलजोल नहीं था। वह उनके लिए "भाई" नहीं था - यहाँ तक कि में भी नहीं
शब्द का लाक्षणिक अर्थ। (यहाँ शब्द स्पष्ट रूप से लूत और को बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है
वर्णित लोग उस पैटर्न में फिट होते हैं जो कुरान का दावा सार्वभौमिक है: कि पैगंबर आते हैं
जिन लोगों को उन्हें पढ़ाना है। लेकिन यहाँ यह गलत है)। इसके ठीक ऊपर 11/92 और 27/56 भी देखें -
यह बहुत स्पष्ट है कि लूत उनका कोई भाई नहीं था। ("लूट (लूत*) के अनुयायियों को हमारे से बाहर निकालो
शहर - - -"।)

०२० २९/२८: “क्या तुम (सदोम और अमोरा के पुरुष) अश्लीलता (समलैंगिकता*) करते हो,
जैसा कि सृष्टि के किसी भी व्यक्ति ने (हमेशा) आपके सामने नहीं किया। ” गलत। समलैंगिकता थी
कुछ भी नया नहीं - यह कुछ "उच्च" जानवरों के बीच भी मौजूद है, कभी-कभी प्रभुत्व के संकेत के रूप में
- और यह मानवता के एक छोटे से हिस्से के डीएनए में है। यदि इस्लाम उनके इस दावे पर कायम रहता है कि यह
कुछ "मानवता में कोई भी व्यक्ति (कभी) पहले प्रतिबद्ध नहीं था", उन्हें इसे साबित करना होगा।
7/80 . में इसी तरह का दावा

लूत को आगंतुक मिले, और आनंदित स्थानीय पुरुष उन्हें "स्वाद" देना चाहते थे - और वे बहुत अधिक थे
पीछा करने के लिए बहुत कुछ। अंतिम हताश प्रयास के रूप में, उन्होंने कहा (बाइबल के अनुसार भी):

021 15/71: "मेरी बेटियाँ हैं (विवाह करने के लिए)"। यहाँ मर्यादा को कुरान की बेहतरी मिली है
(या अनुवादक)। सदोम या अमोरा के पुरुष विवाह के लिए नहीं जा रहे थे - न ही
क्या कुछ बेटियाँ बहुत सारे पुरुषों से शादी कर सकती हैं। यह यौन शोषण के बारे में बात कर रहा है। सबसे अधिक संभावना है
बेईमान अनुवाद - लेकिन उस मामले में: कुरान में और कितनी जगहों की व्याख्या की गई है
बेईमानी से?

अगला विषय दावा है - और हमेशा की तरह कुरान और इस्लाम में केवल एक दावा पर आधारित है
कम या कुछ भी नहीं - कि अब्राहम और इश्माएल ने मक्का में काबा मस्जिद का निर्माण किया। सख्ती से
बोलना यहाँ एक विरोधाभास है, जैसा कि एक स्थान पर कुरान कहता है कि उन्होंने नींव का निर्माण किया,
एक और जगह है कि उन्होंने पूरी इमारत का निर्माण किया।

०२२ २२/२६: "देखो, हमने (अल्लाह) ने इब्राहीम को (पवित्र) घर (काबा*) का स्थान दिया - -
-"। अब्राहम कभी मक्का नहीं गए। नीचे 2/127 देखें। यह देने के लिए एक बनी-बनाई कहानी है
मुहम्मद की शिक्षाओं को अधिक विश्वसनीयता, और अरबों के बीच इसे और अधिक रोचक बनाना।

**023 2/127: "और याद रखें कि इब्राहीम और इश्माएल ने सदन की नींव डाली
(कबा*) (इस प्रार्थना के साथ):---"। इब्राहीम ने कभी काबा नहीं बनाया - और कई हैं
उसके कारण:

1. वह कसदिया के ऊर में पैदा हुआ था (यदि वह वास्तव में) अस्तित्व में) जो अब दक्षिण इराक में है। साथ में बाद में उसने अपने पिता तारा के साथ यात्रा की उत्तर-पश्चिम में परात घाटी के साथ-साथ करण जो अब उत्तरी इराक है। सालों बाद उन्होंने दक्षिण दक्षिण-पश्चिम में कानन तक जारी रखा और सिकेम नगर जो अब इस्राएल है (सिकेमो) यरूशलेम के उत्तर में है। अब इसका नाम है नब्लस)। कहने का मतलब है कि उन्होंने साथ यात्रा की तथाकथित उपजाऊ वर्धमान - प्राकृतिक मार्ग जब आप जानवरों के झुंड के साथ यात्रा करते हैं। NS विकल्प के माध्यम से एक शॉर्टकट लेना था अरब रेगिस्तान, लेकिन उसकी कई भेड़ों में से कुछ और बकरी और गाय ऐसी यात्रा से बचे रहेंगे। उर से रास्ते में वह कभी मक्का नहीं गया सिकेम को। (इसके अलावा यह बहुत जल्दी था कहानी - इश्माएल अभी पैदा नहीं हुआ था, और वह एक है के अनुसार काबा की इमारत का हिस्सा कुरान)।
2. इब्राहीम तब के पश्चिमी भाग में बस गया कानन (अब लगभग इज़राइल), जबकि

उसका भतीजा लूत यरदन घाटी में बस गया
आगे पूर्व। बाद में इब्राहीम दक्षिण की ओर चला गया
नेगेव। नेगेव आज सबसे ज्यादा इसके लिए जाना जाता है
रेगिस्तान, लेकिन सब रेगिस्तान नहीं था। यह सब है
बाइबिल के अनुसार, लेकिन कुरान में नहीं है
परस्पर विरोधी जानकारी, सिवाय इसके कि उसके पिता
एक और नाम है। बात यह है कि बीच

कानन और मक्का और नेगेव और के बीच
मक्का सैकड़ों और सैकड़ों . हैं
कठिन और शुष्क और गर्म अरब के किलोमीटर
रेगिस्तान। इब्राहीम अमीर था और उसके पास विशाल झुंड थे
जानवरो का। वह उन विशाल को नहीं ले सका
भेड़ों के झुंड, आदि, उस रेगिस्तान के माध्यम से।
इसके आलावा; वह क्यों चाहिए? - थोड़ा था
मक्का के आसपास घास और पानी नहीं
ज़मज़म का कुआँ तब तक नहीं मिला था,
कुरान के अनुसार)। और जब वह कभी नहीं
उस जगह का दौरा किया, उसके लिए यह असंभव था
हाजिरा और इश्माएल को वहीं छोड़ दो।

3. इब्राहीम से सैकड़ों किलोमीटर दूर रहता था
मक्का - और पाने के लिए कठोर इलाके को पार करना पड़ा
तक और से। कोई बड़ा मंदिर नहीं बनाता (इसलिए)
बड़ा है कि हदीस के अनुसार अमीर मक्का
पूर्ण पुरानी नींव का उपयोग नहीं करना चाहता था
जब उन्होंने उसे बहाल किया - और पूरा शहर
क्या की तुलना में एक छोटे मंदिर की जरूरत है
नींव ने संकेत दिया कि अब्राहम को अपने लिए आवश्यक था
केवल परिवार के लिए) अपने और अपने परिवार के लिए a
वह स्थान जहाँ वे कभी नहीं जा सकते या लगभग कभी नहीं जा सकते।
आप चाहें तो विश्वास करें।
4. अब्राहम खानाबदोश था। खानाबदोशों के पास नहीं है
बड़े पैमाने पर निर्माण करने की जानकारी और तकनीक
पत्थर की इमारतें। अब्राहम बस नहीं था
काबा के निर्माण में शामिल है, और यह है
बहुत कम संभावना है कि वह कभी मक्का गए हों और
यहां तक कि अरब प्रायद्वीप भी। यह एक परी की तरह दिखता है
काबा और तोह को वजन देने के लिए बनाई गई कहानी
इस्लाम। और मुहम्मद को कम से कम वजन नहीं,
जो 2500 साल बाद बता सके कि वह प्रत्यक्ष थे
इब्राहीम के वंशज - बिना
उन सभी वर्षों से थोड़ा सा लिखित पेपर।
२५०० साल के ज्यादातर एक वर्णमाला खानाबदोश
बिना किसी लिखित इतिहास के। यकीन मानिए अगर आप
चाहते हैं - और यदि आप जानते हैं कि आपका एनलफैबेट कौन है
पूर्वज वर्ष 500 ईसा पूर्व था। (2500 वर्ष
पहले)। हालांकि, यह जोड़ने लायक है कि मुसलमान
कहो कि मक्का जहां इब्राहीम का गुलाम था,
हाजिरा, और उसका और उसका बच्चा इस्माइल (इश्माएल)
इब्राहीम की छावनी से विदा किए गए, कि
वे दोनों वहीं रहते थे, और वह इब्राहीम
बाद में अक्सर उनसे मिलने जाते थे। कोई नहीं है
इसके लिए सूचना का स्रोत। ओटी कहता है
वे नेगेव में रहते थे, जो ऊँट के अनुसार सप्ताह है
मक्का से - और बहुत, बहुत लंबे समय के लिए
भेड़, बकरियों और मवेशियों के बड़े झुंड -
मवेशियों के झुंड को चला रहे अमेरिकी काउबॉय
रेलवे, 10-12 मील (16 - 20 किमी) a

दिन (इसके अलावा बहुत से जानवर मुश्किल से
कठोर के माध्यम से लंबे ट्रेक से बचे रहेंगे
अरब मरुस्थल जिसमें हफ्तों तक पानी बहुत कम या बिल्कुल नहीं होता)
- और इसके अलावा उसके लिए कोई कारण नहीं था
और उसके परिवार को इतना खतरनाक और
अर्थहीन यात्रा, जैसा कि मक्का में पेश किया गया है
इब्राहीम के लिए बहुत कम या कोई चारागाह और पानी नहीं
जानवरों के बीफ झुंड। और जैसा उसने कभी नहीं लिया
अपने भेड़-बकरियों और परिवार को मक्का नहीं जा सका
हाजिरा और इस्माइल को वहीं छोड़ गए हैं। अगर इस्लाम
जोर देकर कहना चाहता है कि वह कभी मक्का गया था,
उन्हें मजबूत सबूत पेश करने होंगे, जैसा कि यह है
अत्यंत असंभव - और "विशेष दावे"
विशेष प्रमाण मांगता है"। इसकी बहुत संभावना है
यह f से बनी या "उधार ली गई" कहानी है।
भूतपूर्व। लोककथाओं की शिक्षा देने के लिए
मुहम्मद और मुहम्मद स्वयं
साख

5. एक और तथ्य: बाइबिल - एक किताब जो
इस्लाम जोर देकर कहता है कि हर बार सही होता है
कुछ पाठ उन्हें पसंद हैं, और जो हो सकता है
सच्चाई दूसरी बार भी कहती है (१. मूसा २१/२१):
"जब वह (इश्माएल*) रेगिस्तान में रह रहा था
परन की, उसकी माँ ने उसके लिए एक पत्नी प्राप्त की
मिस्र "। धार्मिक मुसलमानों को छोड़कर जो
यह पराण के संदर्भ में पुरजोर इच्छा रखता है
या मक्का के पास फरान, सभी गंभीर वैज्ञानिक कहते हैं
कि यह सिनाई में परान था - - - जो भी
अपनी माँ के लिए इसे आसान बना दिया (जो से थी)
मिस्र) उसे मिस्र से भी एक पत्नी खोजने के लिए
हालाँकि इससे उसके बच्चे मिस्र और
केवल इब्राहीम के स्टॉक के वंशज
(इसमें केवल एक पत्नी का उल्लेख है
इश्माएल)।

आगे (१. मूसा २५/१८): "उसके (इश्माएल के) वंशज हवीला से शूर तक के क्षेत्र में बस गए,
मिस्र की सीमा के पास, जैसा कि आप अश्शूर की ओर जाते हैं "। मिस्र की सीमा का अर्थ है सिनाई निकट
लाल सागर। वहीं वैज्ञानिक असली परान को जगह देते हैं।

मक्का जाने के लिए जानवरों के बड़े झुंड वाले आदमी के लिए बहुत मना था - और
इब्राहीम के लिए वहाँ जाने का कोई कारण नहीं था। न खाने पर थोड़ा और के लिए बहुत कम या न पानी
उसके जानवर रेगिस्तान के माध्यम से, और मक्का की घाटी एक बंजर (- और उसका बेटा इश्माएली)
वहाँ नहीं, बल्कि "मिस्र की सीमा के पास" केवल लिखित स्रोत के अनुसार)।
**इब्राहीम कभी मक्का में नहीं था और फलस्वरूप कभी भी काबा नहीं बनाया - बड़ा मंदिर
कि वह किसी भी तरह से निर्माण और बदतर बनाने का तरीका नहीं जानता था; उपयोग नहीं कर सका, क्योंकि
वह और उसका परिवार 1000 किमी दूर के बेहतर हिस्से में रहते थे।** (और केवल शुरुआती के अनुसार
लिखित स्रोत - बहुत पहले लिखा गया था कि इश्माएल को मक्का में न रखने का कोई कारण था if
वह वहीं रहता था - कहता है कि वह "मिस्र की सीमा के पास" से भी आगे रहता था)। अगर इस्लाम
कुछ और दावा करते हैं, उन्हें एक बार के लिए सबूत पेश करने होंगे, न कि केवल गैर-दस्तावेज
दावे, अगर वे विश्वास करना चाहते हैं।

०२४ १४/३५: "याद रखें इब्राहीम ने कहा: 'हे मेरे भगवान! इस शहर (मक्का*) को अमन का बना दो

और सुरक्षा: - - - "। अब्राहम कभी मक्का नहीं गए। इसके अलावा: के समय कोई शहर नहीं था
इब्राहीम - यह वास्तविकता और कुरान दोनों के अनुसार है। याद रखें कि हाजिरा कैसे पीछे भागता है
और वहां बिना लोगों को ढूंढे और बिना पानी पाए। 2/127 भी देखें। गलत और
कुरान और वास्तविकता के साथ एक विरोधाभास।

025 2/125a: "- - - अब्राहम का स्टेशन - - -" एक पत्थर है। मुहम्मद ने संकेत दिया
और इस्लाम कहता है कि इब्राहीम के पैरों से निशान बनाया गया था जब वह वहां खड़ा था और उसने बनाया था
काबा। बता दें कि इब्राहीम कभी मक्का में नहीं था (जब तक कि इस्लाम इसे साबित न कर दे - 2/127 देखें)
ऊपर) एक तरफ: कोई भी कार्यकर्ता कुछ बनाने के लिए एक ही स्थान पर इतने लंबे समय तक खड़ा नहीं रहा,
कि उसके पैरों ने सदियों और सहस्राब्दियों के बाद दिखाई देने वाले एक ठोस प्राकृतिक पत्थर में अपनी छाप छोड़ी।

०२६ २/१२५ब: "- - - हम ने इब्राहीम और इश्माएल के साथ वाचा बाँधी, कि वे मेरे
हाउस (मक्का में काबा*)"। अब्राहम का काबा के निर्माण से कोई लेना-देना नहीं था - देखें
2/127 ऊपर। (इसके अलावा: बाइबिल कहती है कि भगवान ने इसाक के साथ अपनी वाचा बनाई, और कोई वाचा नहीं
इसहाक के सौतेले भाई इश्माएल के साथ। यह मुहम्मद और अरी से एक हजार साल पहले लिखा गया था
एक समय जब यहूदियों और मुसलमानों के बीच कोई झगड़ा नहीं था (क्योंकि मुसलमानों का अस्तित्व ही नहीं था)
इस्लाम ऐसा साबित करता है) और परिणामस्वरूप यहूदियों के लिए मुसलमानों को कम करने की कोशिश करने का कोई कारण नहीं है।)

०२७ ३/९६: "मनुष्य के लिए नियुक्त पहला घर (= काबा) (पूजा का) बक्का (=
मक्का*)"। गलत। भले ही हमें स्वीकार करना चाहिए कि इब्राहीम ने "नींव बनाई"
मक्का में काबा, वह 2000-1800 ईसा पूर्व के आसपास रहता था (यदि वह कल्पना नहीं है)। उस समय प्रथम
एफ में मंदिर, आदि। भूतपूर्व। मिस्र और मेसोपोटामिया पुराने थे। आज वास्तविक को खोजना संभव है
कई चीजों की उम्र। यह लक्षण है कि जहाँ तक हम जानते हैं, इस्लाम ने यह देखने की कोशिश नहीं की है कि क्या यह है
काबा के सबसे पुराने हिस्सों की वास्तविक उम्र का पता लगाना संभव है। ललकारने वाली जुबान यह संकेत देती है कि
शायद कारण यह है कि वे डरते हैं कि यह 3800 साल से छोटा है।- क्या होगा अगर यह पता चला है
लगभग १०० ईसा पूर्व - या ईस्वी - च। पूर्व?) हम आगे जोड़ सकते हैं कि यह भी कहा जाता है कि इब्राहीम
आदम द्वारा बनाए गए मंदिर के और भी पुराने खंडहरों पर बनाया गया (यह भले ही ईडन गार्डन हो)
जिसके निकट आदम रहता था - यदि वह रहता था - में या उसके निकट या में स्थित माना जाता है
दक्षिण इराक के आर्द्रभूमि, बहुत दूर), लेकिन नूह के समय नष्ट हो गए - लेकिन पहले की तरह अक्सर
मुसलमान केवल बताते हैं, शायद ही कभी साबित करते हैं, इसलिए जो चाहते हैं उस पर विश्वास करें। (हम विज्ञापन दे सकते हैं कि कुछ मुसलमान
इसे ठीक कर दिया है कि कुरान पूजा के पहले घर के बारे में बात कर रहा है
एकेश्वरवादी ईश्वर, लेकिन कुरान ऐसा नहीं कहता है। इसके अलावा: अगर कुरान या हदीस है
सही है और हर समय और हर लोगों के लिए नबी रहे हैं - 124ooo हदीस कहती है -
इस्लाम के पास यह साबित करने के लिए थोड़ा समय होगा कि उन सभी पैगम्बरों या उनके अनुयायियों में से एक भी नहीं है
पूजा के लिए एक छोटा सा घर भी बनाया है।" ऊपर 2/127 भी देखें।

4. जोसेफ: (अब्राहम के बाद की 3 पीढ़ियां - यदि केवल एक किंवदंतियां नहीं)।

यूसुफ कुलपिता याकूब के 12 पुत्रों में दूसरा सबसे छोटा था - और साथ में उसके
छोटा भाई बिन्यामीन अपनी दिवंगत माँ राहेल के इकलौता पुत्र - याकूब की पसंदीदा पत्नी।
अब तक बाइबल और कुरान दोनों मोटे तौर पर सहमत हैं। उसके बड़े भाई उसे पसंद नहीं करते थे, और
उससे छुटकारा पाने का फैसला किया:

०२८ १२/१९+२०: यहाँ कुछ गड़बड़ है - या एक और विरोधाभास। श्लोक १९ कहता है कि
"यात्रियों" ने यूसुफ को उस कुएँ में पाया जहाँ उसके भाइयों ने उसे फेंका था, और उसे ले गए
दास और उसे छुपाया। श्लोक 20 बताता है कि उसके भाइयों ने उसे कुछ दिरहम (छोटी चांदी) के लिए बेच दिया था
सिक्के)। दोनों सच नहीं हो सकते।

बाइबिल के अनुसार यूसुफ मिस्र में एक दास के रूप में पोतीफार नामक एक शक्तिशाली व्यक्ति को बेच दिया गया था,
कुरान के अनुसार अजीज नामक एक व्यक्ति को। लेकिन जैसा कि "अज़ीज़" का सीधा सा अर्थ है "महान"
एक", यह एक शीर्षक हो सकता है - शायद पोटिफ़र के लिए।

कुछ समय बाद उसके मालिक की पत्नी उसे बहकाना चाहती थी। यूसुफ ने मना कर दिया - और सब कुछ
पता चला था। बाइबल के अनुसार उसके मालिक ने क्रोधित होकर उसे कारागार में डाल दिया। अनुसार
कुरान को यूसुफ ने साबित कर दिया कि वह दोषी नहीं था, लेकिन सभी को एक ही दिन में जेल में डाल दिया गया था
लंगड़ा और तार्किक नहीं "कारण" - लंगड़ा और अतार्किक, लेकिन बाकी कहानी के लिए आवश्यक है।

00g 12/32: यूसुफ को जेल में डालने का क्या तर्क था जब यह साबित हो गया कि वह नहीं था

दोषी? यह सब उस समय था जब पत्नी को सावधान रहना चाहिए था। (मुसलमान
एक तरह का स्पष्टीकरण है, लेकिन केवल एक तरह का)।

खैर, कुछ वर्षों के बाद यूसुफ को रिहा कर दिया गया क्योंकि समकालीन फिरौन को उसकी जरूरत थी
क्लैरवॉयंट उपहार, जिसके बारे में उसके आसपास के लोगों को जेल में रहने के दौरान पता चला, जैसा कि वह था
यह बताने में सक्षम है कि उसका एक साथी कैदी जल्द ही रिहा होने वाला था, जबकि दूसरा
निष्पादित किया जाएगा। परंतु:

०२९ १२/४१: "- - - वह एक क्रॉस से लटकाएगा - -"। यूसुफ के समय मिस्र में प्रयोग नहीं किया जाता था
सूली पर चढ़ाने से निष्पादन।

कुरान के अनुसार - लेकिन बाइबिल के अनुसार नहीं - कुछ नाटक था क्योंकि जोसेफ
अपनी बेगुनाही साबित करने की मांग की (अतार्किक साबित हुआ - उसी कुरान के अनुसार -
जेल में समाप्त होने से पहले ही निर्दोष)।

०३० १२/५१ए: "आपका (महिलाओं का) क्या संबंध था जब आपने उसे (यूसुफ *) बहकाने की कोशिश की थी।
- - -"। 12/23 के अनुसार केवल अजीज की पत्नी ने ही यह कोशिश की थी। गलती और
अंतर्विरोध।

और कुख्यात पत्नी ने कुछ महिला मित्रों को आमंत्रित किया कि वे कितनी सुंदर दिखें - कहने के लिए नहीं
सुंदर - जोसेफ था। नाटकीय प्रभाव के साथ: उन्होंने एक दृश्य में खुद को चाकुओं से चोट पहुंचाई
केवल तीसरी श्रेणी के उपन्यासों में बच्चों के लिए विश्वसनीय, वयस्कों के लिए नहीं:

00h 12/31: यहाँ 2 बिंदुओं में थोड़ा तर्क है: उन्हें दिखाने से पहले उन्हें चाकू क्यों देना?
यूसुफ? (कुछ मुसलमान कहते हैं कि यह फल काटने के लिए था, लेकिन जब आप फल काटते हैं, तो आप फल काटते हैं और
ज्यादातर चाकू नीचे रखें - किसी भी समय कुछ के हाथों में चाकू था, और
ब्लेड नहीं पकड़े। और किसी चेहरे से इतना मूढ़ होना कोई स्वाभाविक प्रतिक्रिया नहीं है, कि सभी और
उनमें से प्रत्येक ने अपनी उंगलियां काट दीं - एक या अधिक से अधिक दो ऐसा कर सकते थे, हालांकि इसकी संभावना नहीं थी, लेकिन
और नहीं।

यह भी बताया गया है कि पत्नी मुस्लिम थी:

*०३१ १२/५१: पोटिफ़र की महिलाएं (यह नाम बाइबिल से है - अज़ीज़ (शीर्षक या नौकरी?)
कुरान) घर ने कहा: "अल्लाह हमारी रक्षा करें"। नाम और भगवान अल्लाह पुराने में मौजूद नहीं थे
मिस्र में बहुदेववादी पंथियन - और निश्चित रूप से उच्च वर्ग के बीच नहीं (दासों से और
व्यापारियों ने यहोवा के बारे में सुना होगा, लेकिन अल्लाह के बारे में नहीं, और शायद ही अल-लाह के बारे में भी
शीघ्र)। उनके देवता ओसिरिस, एटन, आमोन और अन्य थे। असल में एक नहीं मिला है
मिस्र में उच्च वर्ग (और निम्न वर्गों में भी नहीं) के बीच एकेश्वरवाद का एक निशान
पुराने समय। (अक्न-एटन और उनके सूर्य देवता को छोड़कर)। 12/52 में इसी तरह का दावा।

यूसुफ ने फिरौन को सही भविष्यवाणी की कि बड़े और अच्छे के साथ 7 साल आएंगे
फसल, लेकिन उनके बाद 7 साल कम और खराब फसल के साथ होंगे। अब तक बाइबिल
और कुरान कमोबेश सहमत है। लेकिन कुरान कहते हैं कि बाद में एक और होगा
बहुत सारे भोजन के साथ वर्ष।

०३२ १२/४९: "फिर उस (अवधि) के बाद एक वर्ष आएगा जिसमें लोगों के पास प्रचुर मात्रा में होगा"
पानी - - -"। लेकिन अरब शब्द जो उसके लिए प्रयोग किया जाता है, और जिसका अनुवाद "प्रचुर मात्रा में पानी" के साथ किया जाता है
"युगथु" या "युघथ" है जिसका वास्तव में अर्थ "बारिश से राहत पाने के लिए" कहा जाता है (यूसुफ
अल-फ़दी (ईसाई))। साथ ही "कुरान के संदेश" में वह अनुवाद है (से अनुवादित
स्वीडिश): "- - - एक साल जब लोगों को बारिश से आशीर्वाद मिलेगा - - -", और एक समान
शब्द पर टिप्पणी करें और जैसा कि हम पहले इस अनुवाद से मिल चुके हैं, हम देखते हैं कि यूसुफ अली के पास है
उसके प्रतिलेखन को थोड़ा "विस्तारित" किया (यदि सही अर्थ "विस्तारित" है, तो यह बताता है
कुछ)। लेकिन मिस्र में बहुत कम बारिश होती है और न ही बारिश होती है - यह नील नदी की बाढ़ है जो लाती है
पानी - - - जिसका मतलब कुरान एक बार फिर गलत है। ("कुरान का संदेश शान से
बताते हैं कि इसका मतलब अफ्रीका में आगे दक्षिण में बारिश होना चाहिए, जिसने नील नदी को बड़ा बना दिया, लेकिन ऐसा नहीं है
किताब क्या कहती है)।

सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ ने कहा था। और उसके भाई अन्न मोल लेने के लिथे मिस्र आए। वहां
कुछ इंटरमेज़ो थे क्योंकि यूसुफ यह नहीं बताना चाहता था कि वह कौन था, और सभी समान
उसके परिवार से संपर्क चाहता था:

०३३ १२/७७: “यदि वह (बेंजामिन*) चोरी करता है, तो उसका (यूसुफ*) एक भाई था जिसने पहले चोरी की थी (उसे)"। यहाँ कुछ गलत है: बच्चे/युवा जोसफ पर चोरी का आरोप नहीं लगाया गया था। (से संबंधित यूसुफ की उम्र जब उन्हें मिस्र लाया गया था, यूसुफ अली "कुरान का अर्थ" में कहते हैं वह १६ या १७ वर्ष का था या १८ वर्ष का भी हो सकता है। हमें किसी भी बात पर विश्वास करने का कोई कारण नहीं मिलता - उसके पास हो सकता है उस उम्र का या उससे छोटा या उससे भी छोटा)।

लेकिन एक अच्छा मुसलमान होने के नाते, अंत में यूसुफ और उसके पिता के लिए चीजें अच्छी होनी ही थीं:

00i 12/69: यूसुफ ने बिन्यामीन से कहा: "देखो! मैं आपका (अपना) भाई हूँ - - -"। यह छंद फिट नहीं है 70 - 77 जो उसने इस समय बताया था।

०३४ १२/८४: "और उसकी (याकूब की *) आँखें दुख से सफेद हो गईं - - -"। आंखें नहीं बन सकतीं सफेद (और कमोबेश अंधे) दु: ख से। ऐसा बीमारी या शारीरिक कारणों से होता है आँख में खराबी - कभी-कभी उम्र से संबंधित। कोई भी भगवान जानता था - मुहम्मद शायद नहीं।

०३५ १२/९४: "जब कारवां (मिस्र) चला गया, तो उनके पिता (याकूब*) ने (अपने बेटों* से) कहा - - -"। परंतु १२/८७ कहता है: “हे मेरे (याकूब के*) पुत्रों! तुम (मिस्र* को) जाओ और यूसुफ और उसके बारे में पूछताछ करो भाई - - -"। याकूब उस यात्रा में मिस्र के साथ नहीं आया - वह घर पर ही रहा। इस प्रकार जब याकूब अपने पुत्रों के मिस्र से निकल गया, तब वह उन से बात न कर सका। एक गलती और एक विरोधाभास वास्तविक स्थिति। (यह भी १२/९६ से स्पष्ट है: "जब सुसमाचार का वाहक आया (तो .) याकूब का घर*) - - -।" याकूब अपने पुत्रों से तब तक कुछ न कह सका, जब तक वे अपने घर वापस नहीं आ गए उसे।) 12/95 में इसी तरह का दावा।

तब याकूब और उसका सारा घराना मिस्र को यूसुफ के पास गया। कुल मिलाकर वे 70 . के थे व्यक्ति + बाइबल के अनुसार उसके पुत्रों की पत्नियाँ (1. मूसा 46/27)। और - -

00j 12/99: "- - - उसने (यूसुफ*) अपने माता-पिता के लिए एक घर प्रदान किया - - -"। संभव नहीं, उसके जैसा माँ (राहेल) की मृत्यु पहले ही हो चुकी थी जब बेंजामिन का जन्म हुआ था - वह केवल एक घर प्रदान कर सकता था

उनके पिता। (इस्लाम इसकी व्याख्या या "व्याख्या" इस दावे के साथ करता है कि वह अपनी बहन की गणना करता है माँ (लिआ - याकूब की पत्नी भी) उसकी माँ होने के लिए, लेकिन कुरान में कुछ भी नहीं कहा गया है इसलिए। लेकिन फिर इस्लाम के लिए बिना तथ्यों के दावे करना बिल्कुल सामान्य है।) एक और छोटा विवरण यहां। इब्राहीम ने पहले लिआ: और बाद में उसकी बहन राहेल से शादी की। लेकिन मुसलमानों की शादी नहीं हो सकती एक ही समय में 2 बहनों के लिए। फिर इब्राहीम एक अच्छा और समर्पित मुसलमान कैसे हो सकता है?

5. मूसा, फिरौन और निर्गमन:

(यदि विज्ञान सही है, तो निर्गमन हुआ - यदि यह हुआ - लगभग 1235 ईसा पूर्व, और यदि बाइबिल संख्याओं के बारे में सही है, तो इसका मतलब है कि मूसा - अगर वह एक वास्तविक व्यक्ति था और न केवल एक किंवदंती - पैदा हुआ था सीए। 1315 ईसा पूर्व और मृत्यु सीए। 1195 ईसा पूर्व, सीए की उम्र में। १२० साल (कुछ पुराने बाइबिल) व्यक्ति बहुत बूढ़े हो गए)। इसका यह भी अर्थ है कि फिरौन रामसेस II था)।

०३६ ७/१४३: "- - - और मैं (मूसा*) सबसे पहले विश्वास करने वाला हूँ"। असंभव, कुरान के अनुसार नूह और इब्राहीम और इसाक और याकूब और बहुत कुछ उससे पहले अल्लाह में विश्वास करने वाले थे। और मूसा और अन्य सभी मुहम्मद के कहने से झूठ बोल रहे थे कि वह - मुहम्मद - पहले थे। कई विरोधाभास। (२/१२७-१३३, ३/६७, ६/१४, ६/१६३, 26/51)। मुसलमान बताते हैं कि ये अंतर्विरोध अंतर्विरोध नहीं हैं, क्योंकि इसका मतलब है एक समूह, एक राष्ट्र, या कुछ और का - लेकिन यह वह नहीं है जो कुरान कहता है, और यह भी करता है सभी मामलों की व्याख्या न करें।

00k 28/3: "हम (अल्लाह*) आपको मूसा और फिरौन की कुछ कहानी सच्चाई में सुनाते हैं - - - " मूसा के बारे में कहानी बाइबल में बताई गई कहानी से थोड़ी अलग नहीं है - जो इस भाग के लिए है जो (हो सकता है) हुआ उसके समय के 1000 वर्ष से अधिक निकट है - और मजबूत के साथ मूसा से संबंधित परंपराएं। यह एक सवाल है कि कौन सा सबसे विश्वसनीय है। किसी भी मामले में: दोनों फिरौन रामसेस द्वितीय की मृत्यु गलत है (लेकिन जब बाइबल की बात आती है तो यह संभव है इसे समझाएं - कुरान के साथ ऐसा नहीं है, अगर यह अल्लाह द्वारा बताया गया है और अल्लाह सर्वज्ञ है। यहूदी फिरौन के लिए एक सामान्य या रामसेस II के 67 पुत्रों में से एक गलती कर सकता है - कोई सर्वज्ञ देवता नहीं ऐसी गलती करता है)।

मूसा और उसका भाई हारून फिरौन रामसेस II (वास्तव में मजबूत और शक्तिशाली में से एक) के पास आए मिस्र के इतिहास में फिरौन):

०३७ २०/४७: "वास्तव में हम (मूसा और हारून*) आपके (रामसेस द्वितीय के *) प्रभु द्वारा भेजे गए दूत हैं। (अल्लाह*) - - -"। गलत - रामसेस II एक बहुदेववादी था। इसके अलावा: उसने शायद . के बारे में सुना होगा यहोवा (लेकिन दासों के देवता का बहुत सम्मान नहीं करेगा), लेकिन अल्लाह का कभी नहीं।

*038 28/38: "फिरौन ने कहा: 'हे प्रमुखों! कोई भगवान नहीं मैं तुम्हारे लिए जानता हूं लेकिन खुद - -"। यह एक है वास्तव में अच्छे लोगों की, क्योंकि रामसेस II के समय मिस्र में देवताओं की अच्छी संख्या थी, एक मजबूत लिपिक संगठन के साथ कुछ केंद्रीय शामिल थे - **उल्लेख नहीं करने के लिए: फिर कैसे हा-आमेन (नीचे 28/6) के बारे में इस्लाम की कहानी की व्याख्या करें? (यह कई लोगों के लिए विशिष्ट है कुरान में गलतियों की "व्याख्या" कि मुसलमान कुछ "समझाते हैं", लेकिन हैं पुस्तक में अन्य जानकारी के साथ "टकराने" में असमर्थ - f. भूतपूर्व। आकाश की व्याख्या ब्रह्मांड के रूप में यह बताए बिना कि सितारों को सबसे निचले स्वर्ग में कैसे बांधा जा सकता है, या यहाँ की तरह: रामसेस II एकमात्र ईश्वर है - - - लेकिन हा-आमेन, उसका मुख्य सलाहकार, यह उच्च है उसी इस्लाम के अनुसार दूसरे भगवान के लिए पुजारी !!)** लेकिन मुहम्मद के समय पुराने देवताओं को कम किया गया - मिस्र आंशिक रूप से ईसाई (वर्तमान कॉप्ट के पूर्वज) था। यह भूल किसी सच्चे ईश्वर ने नहीं की थी, लेकिन मुहम्मद नहीं जान सकते थे। फिर किसने रचा कुरान?

इस्लाम इसे दूर से समझाने की कोशिश करता है कि इसका शाब्दिक अर्थ नहीं है - केवल रामसेस द्वितीय ही थे ऊपर। लेकिन इस मामले में कुरान क्या कहता है यह बहुत स्पष्ट है। और यह भी याद रखें कि कुरान - और अधिकांश मुसलमान - कहते हैं कि कुरान का शाब्दिक अर्थ है जहां और कुछ नहीं कहा जाता है - - -

199

पेज 200

और यह कि किसी चीज़ को एक रूपक कहना या यह कहना कि यह लाक्षणिक रूप से है, हमें लगता है कि वह है for इस्लाम कुरान में चीजों/गलतियों को दूर करने का सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला माध्यम है जिसका कोई नहीं है व्याख्या।

०३९ ७९/२४: "(फिरौन रामसेस II*) कह रहा है: 'मैं तुम्हारा भगवान हूँ (इस संबंध में: तुम्हारा भगवान*), सबसे ऊपर'"। फिरौन पुराने मिस्र में "सबसे ऊंचा" देवता नहीं था। 28/38 देखें बस के ऊपर।

040 28/6: "- - - हामान - - -"। कुरान में हामान एक उच्च नेता या किसी प्रकार का सलाहकार है फिरौन के अधीन। लेकिन विज्ञान कहता है कि यह बाइबिल में एस्तेर की किताब से हामान है। बाइबल के अनुसार हामान फारसी राजा ज़ेरक्सेस के अधीन एक शक्तिशाली मंत्री था (हिब्रू: क्षयर्ष) (४८६ - ४६५ ईसा पूर्व) और उल्लिखित पुस्तक में एक केंद्रीय व्यक्ति - मुहम्मद ने शायद उसके बारे में सुना होगा। उस मामले में कुछ बहुत गलत है, क्योंकि रामसेस II स्वाभाविक रूप से मिस्र में राजा/फिरौन था, और उसके ऊपर लगभग ८०० वर्ष जीवित रहे पूर्व। हामान उसका शीर्ष मंत्री नहीं हो सका। एक और यह भी है: क्या हामान नाम का इस्तेमाल किया गया था मिस्र में? - इसे फारसी नाम कहा जाता है। अशिक्षित मुसलमानों का कहना है कि यह सिर्फ एक और आदमी था एक ही नाम के साथ। पढ़े-लिखे मुसलमान इस दावे से ज्यादा सावधान हैं। लेकिन यहाँ इस्लाम ने एक व्याख्या जो शायद सच हो सकती है: उस समय मिस्र में मुख्य देवताओं में से एक आमोन था। "कुरान के संदेश" के अनुसार आमोन के महायाजक की उपाधि हा-आमीन थी - जिसे हमोन के रूप में समझा जा सकता है। बहुत संभावना नहीं है, विशेष रूप से उस तरह का "स्पष्टीकरण" अक्सर पाया जाता है जब इस्लाम को बेहतर कहानियां खोजने में समस्या होती है। लेकिन बाद सब संभव। सिवाय इसके कि कोई भगवान ऐसी गलती भी नहीं करता है। और 28/38a को छोड़कर: "फिरौन ने कहा: 'हे प्रमुखों! कोई भगवान नहीं मैं तुम्हारे लिए जानता हूं लेकिन खुद - -"। **फिरौन नहीं कर सकता उसी समय मिस्र में एकमात्र देवता हो (जैसा कहा गया है बहुत गलत है) और महायाजक (हा-आमीन) दूसरे देवता के रूप में उनके दूसरे आदेश के रूप में।** यह वास्तव में और बस एक हो सकता है अधिक प्रसिद्ध मुस्लिम "अर्ध-व्याख्या" - **वे एक पहलू को एक समस्या के साथ समझाते हैं, लेकिन "स्पष्टीकरण" खोजने में असमर्थ हैं जो अन्य पहलुओं से टकराते नहीं हैं वही - या अन्य - समस्याएं। जैसे जब वे ब्रह्मांड को समझाए बिना समझाते हैं सभी तारे सबसे निचले और भौतिक स्वर्ग में, और आकाश के बीच चंद्रमा = सितारों के बाहर।**

सवाल यह भी है कि मुहम्मद हा-आमीन के बारे में लगभग 1900 साल कैसे सुन सकते थे? बाद में - आमोन और उसके महायाजक के एक प्रमुख धर्म का हिस्सा बनने के बाद, इसके विपरीत हामान के लिए, जो यहूदियों की धार्मिक परंपराओं का हिस्सा था। यह और भी अधिक है कि वहाँ थे उस समय अरब में हजारों यहूदी, जो मुहम्मद को बता सकते थे, लेकिन कुछ ही से मिस्र। बेशक मुसलमान कहेंगे कि अल्लाह जानता था। परन्तु यदि किसी सर्वज्ञ अल्लाह ने यह कहा होता, उन्होंने - जैसा कि ऊपर कहा गया है - नाम के साथ कोई गलती नहीं की थी। और अगर गलती से आई है अल्लाह के बाद मुहम्मद ने उससे कहा था: मुहम्मद ने और कितनी गलतियाँ कीं?

हामान का उल्लेख 28/8 - 28/38 - 29/39 - 42/24 - 40/36 में भी किया गया है।

मूसा और मिस्र में सबसे अच्छे जादूगरों के बीच एक प्रतियोगिता होनी थी। कुरान में
ऐसा लगता है कि इसमें अधिक समय लगने की उम्मीद है:

०४१ १०/८७: "मिस्र में अपने (मूसा के*) लोगों के लिए आवास प्रदान करें - - -"। गलत - और ए
बाइबिल और कुरान दोनों के अनुसार वास्तविकता के साथ विरोधाभास। कुरान के अनुसार
यहूदी मिस्र में लंबे समय तक रहे थे, और बाइबिल के अनुसार इतने लंबे समय तक
430 वर्ष (1. मो. 12/40) की राशि। उनके पास आवास थे - मूसा को बताने का कोई कारण नहीं
ऐसे प्रदान करें। और भी मूर्खतापूर्ण: जब वे सब चाहते थे तो (नए) आवास क्यों प्रदान करें
करना, मिस्र छोड़ना था?

00m 26/42: "- - - आप (जादूगर*) उस स्थिति में (यदि आप मूसा पर जीत हासिल करते हैं) (उठाया जाएगा)
पोस्ट) मेरे व्यक्ति के निकटतम (रामसेस II)। यह अत्यधिक संभावना नहीं है कि शक्तिशाली फिरौन
रामसेस द्वितीय ने कहा कि जादूगरों के झुंड के लिए - और विशेष रूप से छोटे के बाद जीतने के लिए
प्रतिद्वंद्वी।

०४२ ७/१२७: "उसने (रामसेस द्वितीय*) ने कहा: 'उनके (यहूदी'*) नर बच्चों को हम मार डालेंगे - - -"। परंतु
वे पहले से ही यहूदियों के नर बच्चों को मार रहे थे - इसलिए मूसा के बच्चे को करना पड़ा
कुरान के अनुसार नील नदी पर भी डाल दिया जाए। एक गलती और एक विरोधाभास दोनों। और
कुरान में विरोधाभास मौजूद नहीं है? एफ देखें। भूतपूर्व। नीचे 7/141।

परन्तु मूसा ने प्रतियोगिता को एक वास्तविक चमत्कार के द्वारा जीत लिया। वह अकेला और बहुत बड़ा चमत्कार नहीं बना
सारे जादूगर मुसलमान हो जाते हैं:

००n ७/१२०: मूसा द्वारा अपना चमत्कार करने के बाद "जादूगर पूजा में प्रोस्टेट नीचे गिर गए" और
आश्वस्त था कि मूसा का ईश्वर एक मजबूत और वास्तविक था। **यह इसका एक प्रमाण है
मुहम्मद को पता था कि वह झूठ बोल रहा है जब उसने अपने दर्शकों से कहा कि इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा
चमत्कार करें, क्योंकि अविश्वासी किसी भी तरह विश्वास नहीं करेंगे,** और इस प्रकार समझाया गया
इस तथ्य को दूर करें कि वह (और उसके प्रकल्पित भगवान) चमत्कार करने में असमर्थ थे। यहाँ वह बताता है
विपरीत। इस एक बिंदु पर मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत अधिक सही कहानी। वही कहानी
20/69-70 में।

फिरौन बहुत क्रोधित हुआ:

०४३ २६/४: फिरौन रामसेस द्वितीय ने कहा: "निश्चय ही वह (मूसा*) तुम्हारा (जादूगर का) अगुवा है - - -।"
गलत। रामसेस द्वितीय मूसा को शाही दरबार से मूसा के भागने से पहले से जानता था, और जानता था
वह ४० साल से दूर था (बाइबल के अनुसार) - वह का नेता नहीं हो सकता था
स्थानीय जादूगर।

०४४ २६/४९: "- - - मैं (फिरौन रामसेस II) आपको (मूसा और अन्य *) को मरने के लिए प्रेरित करेगा
पार करना!" लेकिन पुराने मिस्र ने सज़ा के तौर पर सूली पर चढ़ाए जाने का इस्तेमाल नहीं किया। 7/124 में भी ऐसा ही दावा -
20/71.

00o 7/124: "सुनिश्चित करें कि मैं (रामसेस II *) आपके हाथों और पैरों को विपरीत दिशा में काट दूंगा - - -"। जैसा
जहाँ तक हमें पता चला है, रामसेस द्वितीय के समय मिस्र ने इस अरब तरीके का इस्तेमाल नहीं किया था
सजा का।

०४५ १७/१०२ए: "- - - मैं (मूसा) तुम्हें वास्तव में मानता हूं, हे फिरौन, एक के लिए बर्बाद होने के लिए
विनाश!" फिरौन रामसेस II विनाश के लिए अभिशप्त नहीं था, कम से कम इस बार तो नहीं। उसने किया
कुरान (और बाइबिल) जो कुछ भी कहता है, उसके बावजूद डूबना नहीं। (जो कारणों में से एक हो सकता है
क्यों कुछ मुसलमान चाहते हैं कि मिस्र से पलायन फिरौन के अधीन हो, हम नहीं करते हैं
रामसेस II के साथ-साथ जानते हैं - अधिमानतः एक हम नहीं जानते कि वह डूब गया होगा या नहीं)।

फिरौन ने मूसा को अपने वचन का सम्मान किया और "अपने लोगों को जाने दिया" - हालांकि उसके बाद ही
कई गंभीर विपत्तियाँ। लेकिन फिर उसने उन सभी दासों के खोने का पछतावा किया और उसके बाद पीछा किया
उन्हें। यहूदी तो समुद्र के साम्हने पकड़े गए, परन्तु यहोवा ने उनके लिये उस पार मार्ग बनाया;

00p 2/50: "- - - हमने (अल्लाह*) ने तुम्हारे लिए (मूसा और उसके यहूदी*) समुद्र को बाँट दिया - - -"। अन्य से
कुरान में (और अधिकांश बाइबिल में) यह स्पष्ट है कि यह लाल सागर था। लेकिन में

हिब्रू मूल नाम यम सूफ है, जिसका अर्थ "द सी ऑफ रीड्स" भी हो सकता है
एनआईवी (बाइबल का "नया अंतर्राष्ट्रीय संस्करण") में कई फुटनोट्स में भी पुष्टि की गई है। NS

सी ऑफ रीड्स - इसका एक और नाम था: टिमसा सागर - एक बड़ी झील हुआ करती थी जहाँ स्वेज
नहर अब चलती है - कड़वे समुद्र से ज्यादा दूर नहीं। नाम बताता है कि यह सिर्फ एक उथली झील थी -
सबसे लंबे नरकट जो हम खोज पाए हैं, वह एक प्रकार का चावल है जो 5 -7 मीटर तक लंबा हो सकता है और
कंबोडिया में बड़े समुद्र टोनले सैप में बढ़ता है। मिस्र के उस क्षेत्र में उगने वाले नरकट हैं
छोटा - - - और उस नाम वाली झील सरकंडों से अधिक गहरी नहीं हो सकती है, उनके "सिर" ऊपर प्राप्त करें
पानी।

नक्शा भी देखें: गोशेन जहाँ यहूदी बसे थे, वह नील नदी के डेल्टा में था। लेना
उन्हें सीनै को दक्षिण-दक्षिण-पूर्व जाना था। ऐसा जाना किसी भी विश्वसनीयता से परे मूर्खता होगी
दूर पश्चिम में कि वे लाल सागर के पश्चिमी किनारे पर समाप्त हो गए, और इस तरह इतनी बड़ी संख्या को मजबूर कर दिया
लोगों और जानवरों की नावों से समुद्र पार करने के लिए उनके पास नहीं था (याद रखें कि उन्होंने नहीं किया था
समुद्र के खुलने के बारे में जानें - आग / धुआँ-स्तंभ या नहीं (= पथप्रदर्शक / यहोवा
बाइबिल के अनुसार))। आखिरकार वे बाइबिल के अनुसार 600ooo पुरुष + महिलाएं + . थे
बच्चे + जानवर और सामान। (सैद्धांतिक रूप से यह 70 - 90 के लिए काफी संभव है (निर्भर करता है)
उसके समूह में उसके 11 पुत्रों की कितनी पत्नियाँ थीं) जो याकूब + यूसुफ और . के साथ आए थे
उनका परिवार 430 साल बाद 2000oo "यहूदी" बन गया। और उनके पास नाव नहीं थी।)

विज्ञान बताता है कि - यदि पलायन हुआ - "यहूदी" काफी हद तक आगे निकल गए थे क्योंकि वे
इस झील के किनारे मार्च या डेरा डाला।

26/63 में इसी तरह का दावा।

*०४६ २०/७८: "तब फिरौन ने अपनी सेना के साथ उनका पीछा किया, लेकिन पानी पूरी तरह से"
उन्हें अभिभूत किया और उन्हें ढँक दिया "। हो सकता है कि पानी ने सैनिकों को ढँक दिया हो, लेकिन नहीं
फिरौन - - - रामसेस II नहीं डूबा। इसी तरह का दावा है कि फिरौन सहित सभी डूब गए
- 7/103 में - 10/90 -17/103 - 23/48 - 26/66 - 27/14 - 28/40 - 40/37 - 43/55 - 44/25-28 -
51/40 - 69/9-10 - 73/16 - 79/25। हम जोड़ सकते हैं कि विज्ञान को पूरा यकीन है कि अगर
पलायन हुआ, यह 1235 ईसा पूर्व के आसपास हुआ = रामसेस द्वितीय के शासनकाल के दौरान। जैसा कि हम जानते हैं
कि रामसेस डूबे नहीं, इस्लाम बहुत चाहता है कि यह पहले और कम में हुआ हो
ज्ञात फिरौन कि हम नहीं जानते कि वह क्या मर गया, लेकिन जैसा कि अक्सर वे केवल समर्थन करते हैं
अटकलों के साथ दावा।

जैसे ही वह पानी से घिरा हुआ था, कुरान के अनुसार फिरौन चिल्लाया:

*०४७ १०/९०बी: "मैं (रामसेस II) मानता हूं कि उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है जिसके बच्चे हैं
इज़राइल में विश्वास है: मैं उन लोगों में से हूं जो (इस्लाम में अल्लाह के लिए) (= मुस्लिम बन गए)"। एक
रामसेस II (10/90 देखें) के बारे में हम और अधिक जानते हैं कि वह एक बहुदेववादी था और कभी नहीं था
मुस्लिम - और कभी यहूदी नहीं।

०४८ ७/१३७: "- - - हमने (अल्लाह) महान कार्यों और उम्दा इमारतों को जमीन पर समतल किया
जिसे फिरौन और उसके लोगों ने खड़ा किया था - - -"। न तो पुरातत्व में कोई निशान है, न ही
इतिहास, साहित्य या कला में, वर्ष १२३५ ईसा पूर्व (कुछ साल पहले) के आसपास ऐसी तबाही का
रामसेस II के शासनकाल का अंत) जब ऐसा होना चाहिए था - से पलायन के दौरान
मिस्र। इसके विपरीत; रामसेस द्वितीय सबसे मजबूत और सबसे सफल में से एक था
फिरौन, कई वर्षों के बाद कई महान इमारतों को पीछे छोड़ते हुए - अन्य बातों के अलावा -
इमारत। क्या मुहम्मद ने अपनी कहानी में और नाटक किया है, यह विश्वास करना कि यह असंभव होगा
जांचें कि क्या यह सच था? इस्लाम को सबूत खोजने होंगे - और वे आज मौजूद नहीं हैं।

**०४९ ४३/५६: "और हम (अल्लाह*) ने उन्हें ज़माने की क़ौम बना दिया---"। गलत। न
रामसेस द्वितीय और न ही मिस्र के लोग वर्ष १२३५ ईसा पूर्व में अतीत के लोग बन गए

संभावित पलायन का अनुमानित वर्ष, विज्ञान के अनुसार)। ऐसा तब तक नहीं हुआ जब तक
बहुत बाद में - और अंतिम विनाश ६५९ ईस्वी में आया जब मुआविया के अधीन अरबों ने विजय प्राप्त की
देश और ले लिया - हमेशा के लिए (?) मुसलमान "व्याख्या" करना पसंद करते हैं कि "एक लोग" का अर्थ है
फिरौन के सैनिक। लेकिन अभिव्यक्ति "एक लोग" का इससे कहीं अधिक व्यापक अर्थ है।

यहूदी तब बाइबल के अनुसार सिनाई और उसके आस-पास ४० वर्षों तक घूमते रहे -
उस बिंदु पर कुरान अस्पष्ट है, लेकिन वहां कुछ भी इस जानकारी का विरोध नहीं करता है।

6. मिस्र के बाद मूसा:

०५० ७/१६०: "हमने उन्हें (मूसा के लोगों) को बारह जनजातियों या राष्ट्रों में विभाजित किया।" गलत:
उनमें १२ भाई थे, फिर १२ परिवार, फिर १२ गोत्र पहले से ही याकूब के बाद से (कुछ
बाइबिल के अनुसार 430 साल पहले)।

बहुत जल्दी - संभवतः उनके मिस्र छोड़ने के कुछ ही समय बाद - मूसा ने यहोवा से मुलाकात की
पहाड़। वहाँ उन्होंने बाइबिल के अनुसार 2 पत्थरों पर लिखी 10 आज्ञाएँ प्राप्त कीं
गोलियाँ + यहोवा ने उसे व्यवस्था सुनाई, और उसने—खुद मूसा ने—उन्हें बाद में लिख दिया।
बस यह कुछ अलग है - और सरल - कुरान में वर्णित है:

०५१ २/५३: "- - - हमने (अल्लाह) मूसा को शास्त्र (पुस्तक*) - - -" दिया। नाम की किताब
मूसा के बाद, OT में पहले ५, (टोरा), मूसा द्वारा नहीं लिखे गए हैं। मूसा रहता था (यदि वह नहीं है
एक कथा) लगभग 1300-1200 (सीए। 1315 से 1195?) ईसा पूर्व (यदि मिस्र से पलायन वास्तव में लिया गया था
जगह, यह सीए हुआ। 1235 ईसा पूर्व रामसेस द्वितीय के शासनकाल के दौरान विज्ञान के अनुसार), और
वे पुस्तकें सीए से पहले नहीं लिखी गई थीं। 800 ईसा पूर्व - शायद 500 ईसा पूर्व के अंत में - यह भी
विज्ञान के अनुसार। एक भगवान को यह पता था, जबकि मुहम्मद उनके बारे में कुछ नहीं जानते थे
वास्तविक उम्र, और अनुमान लगाना था। (सटीक होने के लिए: बाइबिल कहती है कि यहोवा ने मूसा को कानून बताया -
पत्थर की उन दो पटियाओं के सिवा और कुछ नहीं दिया गया, जिनमें दस आज्ञाएं थीं
खुदा हुआ - और उसके बाद उसके द्वारा लिखे गए कानून। यह भी कहता है कि जब सुलैमान
वाचा के सन्दूक को लगभग ४०० साल बाद यरूशलेम के मंदिर में ले जाया गया (१.किंग्स ८/९);
इसमें केवल दो पत्थर की गोलियां थीं। "मूसा की किताब" के बारे में कुछ भी नहीं है - और
विज्ञान एकमत है कि वे बहुत बाद में लिखे गए हैं। अगर मुसलमान कुछ और दावा करते हैं, तो वे
सबूत पेश करने होंगे।) कानून वास्तव में केवल टोरा/मूसा की पुस्तक का हिस्सा है।
इसी तरह के दावे 2/87 - 3/84 - 6/91 - 6/154 - 11/110 - 17/2 - 23/49 - 25/35 - 28/43 - 32/23 -
37/117 - 40/53 - 41/45।

०५२ ७/१४५: "(अल्लाह ने मूसा को कानून दिया*) सब कुछ समझाते हुए।" की किताब में कानून
मूसा सब बातों से बहुत दूर समझाता है।

जब मूसा 40 दिन तक पहाड़ पर यहोवा से भेंट करता रहा, तब यहूदियोंने उस से एक बछड़ा बनाया
सोना और उससे प्रार्थना की (ऐसा लगता है कि यह असामान्य नहीं था - वे इतिहास से जाने जाते हैं और
पुरातत्वविदों को कम से कम एक ऐसा बछड़ा मिला है)। कुरान एक आदमी को दोष देता है
सामरिया:

०५३ २०/८५: "- - - सामरी ने उन्हें भटका दिया था"। परन्तु यहूदी अभी तक शोमरोन में नहीं पहुंचे थे
और कोई सामरी मौजूद नहीं था (वास्तव में नाम सामरिया/सामेरियन जहां तक हम पा सकते हैं, था
722 ईसा पूर्व तक गढ़ा नहीं गया - पलायन के 500 से अधिक वर्षों बाद हुआ (यदि ऐसा हुआ)
सीए। 1235 ईसा पूर्व)। मुसलमान यह कहकर गलती को "समझाने" की कोशिश करते हैं कि इसका मतलब "शमीर" हो सकता है =
अजनबी, या "शोमर" = चौकीदार = अरब में समारा (अप्रासंगिक क्योंकि यहूदी बोलते नहीं थे
अरब)। **लेकिन अगर कुरआन का मतलब कुछ और है तो इस्लाम के अनुसार यहाँ कहा गया है - या
गलत समझा जा सकता है - पुस्तक में कितने अन्य स्थान समान हैं या
बदतर/धार्मिक गलतियाँ?** 20/87 - 20/95 . में इसी तरह के दावे

०५४ ७/१४९: "जब उन्होंने (यहूदियों ने) पश्चाताप किया (मूसा के पहाड़ से उतरने से पहले)
10 आज्ञाओं के साथ*) - - -"। गलत - और एक विरोधाभास। दोनों कुरान और
बाइबल बताती है कि उसके नीचे आने तक ऐसा नहीं हुआ था - और वह बहुत क्रोधित था।

०५५ ७/१७१: "जब हमने (अल्लाह*) ने उन पर (यहूदियों*) पहाड़ (सिनाई*) को ऐसे हिलाया जैसे कि
एक चंदवा रहा है - - -"। इसके लिए इस्लाम से मजबूत सबूत की जरूरत है, खासकर जब से यह वास्तव में एक से है

पुरानी यहूदी किताब "अबोदा सारा" से ली गई कहानी।

मूसा ने एक बड़ा तम्बू भी बनाया था - तम्बू - वे एक मंदिर के रूप में इस्तेमाल करते थे। अंदर था
वाचा का सन्दूक - कुछ हद तक लेकिन बहुत बड़ी छाती नहीं:

00q 2/247: "- - - आपके पास (यहूदी) वाचा का सन्दूक आएगा"। खैर, के अनुसार
वाचा का सन्दूक बाइबिल यहूदियों के पास नहीं आया - उन्होंने इसे स्वयं बनाया
एक विवरण के अनुसार जो उन्हें यहोवा से मिला था। यह लगभग १३३० ईसा पूर्व के तहत किया गया था
मूसा। 2/248 में इसी तरह का दावा।

वे "वादा किए गए देश" की ओर बढ़े - कनान, अब इज़राइल लगभग:

*०५६ ५/२०: "याद रखें मूसा ने अपने लोगों से कहा: - - - अल्लाह - - - तुम्हें राजा बनाया"। गलत।
पहले यहूदी राजा शाऊल (कुरान में तलुत) और उसके बाद डेविड लगभग 200 साल बाद थे
मूसा। कोई भी - मामूली भी - भगवान को यह पता था। हमने मुसलमानों को समझाते हुए सुना है कि यह है
कुरान का मतलब नहीं है, बल्कि यह है कि अल्लाह ने सभी यहूदियों को राजा बनाया। लेकिन जो कोई जानता है
यहूदी इतिहास और पहले और अब के यहूदियों के बारे में बहुत कम, अच्छी तरह से जानता है कि अधिकांश यहूदी
राजाओं की तरह कभी नहीं थे या हैं या व्यवहार (डी) नहीं हैं। यह एक स्पष्ट "स्पष्टीकरण" है।

00r 5/23a: "- - - दो (मूसा के यहूदियों के *) जिन पर अल्लाह का हाथ है - - -"। अल्लाह या यहोवा? यह सभी देखें
3/51.

00s 5/21: "- - - पवित्र भूमि जिसे अल्लाह ने आपको (मूसा और उसके यहूदियों *) को सौंपा है - - -"।
अल्लाह या यहोवा? (यह भी देखें 3/51)।

परन्तु वे कनान में रहने वाले लोगों से डर गए, और मूसा ने उस में कभी प्रवेश नहीं किया। उसने किया
अगले नेता, यहोशू के अधीन होने तक नहीं। सब एक जैसे - -

00t 37/114: "फिर से (पुराने) हमने (अल्लाह *) ने मूसा और हारून पर अपनी कृपा की - - -"।
"कुरान का संदेश" यह विज्ञापन करने के लिए त्वरित है कि ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि वे वंशज थे
इब्राहीम, लेकिन उनकी अपनी गुणवत्ता के कारण। जिसका ज़िक्र कुरान में कभी नहीं, जिसका इस्लाम में कभी ज़िक्र नहीं
उल्लेख करता है, जिसका मुसलमान कभी उल्लेख नहीं करते हैं, वह यह है कि इज़राइल (एक में विश्वास) के साथ विशेष संपर्क
यहोवा, ऐसा नहीं है - दोहराना नहीं - कि उनके पास इब्राहीम नाम का एक पूर्वज था जो लगभग हजारों साल था
पहले। इसका कारण यह था और वह वाचा है जो इस्राएल और यहोवा के बीच तदनुसार बनाई गई थी
ओटी में - और समय के माध्यम से कई बार नवीनीकृत। उन्हें धमकाने के लिए यह अच्छा प्रचार है
इब्राहीम पर विश्वास करना जो लगभग ४० वर्ष पहले रहता था (यदि वह कभी जीवित रहा) तो
स्वर्ग। लेकिन यह झूठ बोलना बहुत बेईमानी है, और कभी भी इसके वास्तविक कारण का उल्लेख नहीं करना
यहूदी का विश्वास: वाचा - टूटा और दुर्व्यवहार किया, लेकिन कभी नहीं उठा या समाप्त नहीं हुआ। (उसी में
जिस तरह से एनटी में यीशु के माध्यम से बनाई गई "नई वाचा" का उल्लेख कभी नहीं करना बहुत बेईमानी है - लेकिन
तो मुसलमान अल-तकिया (वैध झूठ) या "किटमैन" (वैध अर्ध-सत्य) का उपयोग करने के लिए बाध्य हैं।
यदि आवश्यक हो, जब इस्लाम की रक्षा या प्रचार करने की बात आती है - चाहे इस्लाम कोई भी हो
झूठा धर्म या नहीं)।

जी। शाऊल, दाऊद और सुलैमान - इस्राएल के पहले ३ राजा।

(लगभग १००० ईसा पूर्व - शाऊल युद्ध पहले राजा, डेविड दूसरे (1007 - 970 ईसा पूर्व?), और फिर
सुलैमान - शायद 927 ईसा पूर्व तक)

00u 2/247: "अल्लाह ने तलुत (शाऊल *) को आप पर राजा नियुक्त किया है (यहूदी 1000 से कुछ समय पहले)
ईसा पूर्व *)"। सबसे अधिक संभावना है कि यह यहोवा (परमेश्वर) था जिसने ऐसा किया, या क्या? अल्लाह और यहोवा नहीं हैं
एक ही ईश्वर चाहे इस्लाम चाहे जो भी हो - मूलभूत अंतर बहुत बड़े और बहुत अधिक हैं।
तब तक नहीं जब तक कि ईश्वर मानसिक रूप से बीमार न हो - यदि वह मौजूद है।

00v 38/19: "- - - और पक्षी इकट्ठे हुए (सभाओं में): उसके साथ सभी (राजा डेविड *) मुड़ गए
(अल्लाह के लिए)।" जो चाहता है उस पर विश्वास करें - हम पक्षियों की सभाओं की ओर मुड़ने में विश्वास नहीं करते हैं
कोई भी भगवान, तब तक नहीं जब तक कि हमें इसके लिए कुछ सबूत न मिलें और न केवल ऐसे शब्द जिनकी कीमत शून्य हो।

०५७ ४/१६३: "- - - डेविड को हम (अल्लाह*) ने स्तोत्रों को दिया"। गलत: विज्ञान के अनुसार वे
राजा दाऊद से कुछ शताब्दियाँ छोटी हैं। (और इसके अलावा - अल्लाह शायद ही शामिल था। इफ
एक ईश्वर था, वह यहोवा था)। 17/55 में इसी तरह का दावा।

०५८ २१/८०: "यह हम (अल्लाह *) थे जिन्होंने उसे (राजा डेविड *) के कोट बनाने के बारे में सोचा था
मेल ”। लेकिन मेल और इसी तरह के कोट लगभग 1000 ईसा पूर्व - डेविड के समय से पुराने हैं।

00w 27/16–44: इन कहानियों - कुरान में अन्य स्थानों को भी दोहराया - राजा सुलैमान के बारे में,
चींटियाँ, उसके लिए गुलामी करने वाले जिन्न, घेरा, और सबा की रानी का उल्लेख नहीं करने के लिए - हैं
काल्पनिक रूप से एक परी कथा से गुंबद की तरह - - - जो वे हैं: वे हैं
बने हुए से "उधार" - अपोक्रिफ़ल, और शायद ही अपोक्रिफ़ल - शास्त्र "दूसरा
एस्टर का टारगम"। किसी भी भगवान को पुरानी परियों की कहानियों को चुराने और उन्हें छोटे या बड़े के साथ फिर से बताने की जरूरत नहीं है।
उन्हें अपने धर्म/कहानियों के अनुकूल बनाने के लिए ट्विस्ट करते हैं, और फिर उन्हें तथ्य कहते हैं। लेकिन मुहम्मद अक्सर करते थे
इसलिए। यही कारण है कि उनके समकालीन अक्सर कहते थे कि जो कुछ उन्होंने अभी बताया वह पुराना था
किस्से - उन्होंने बस किंवदंतियों, परियों की कहानियों और कहानियों को पहचान लिया।

00x 27/36: राजा सुलैमान एक अच्छा मुसलमान है। कोई भी व्यक्ति चाहे तो इस पर विश्वास करने के लिए स्वतंत्र है। अभी - अभी
यह शायद ही "एस्टर के सैकंड टारगम" से भी है - ऊपर 27/16-44 देखें।

*०५९ २७/१८: एक चींटी ने दूसरी चींटियों से बात की और एक तरह से राजा सुलैमान की बात सुनी।
गलत। चींटियों के पास जटिल रचना करने की दिमागी शक्ति नहीं है (गैर-मानव के लिए
स्थलीय प्राणी) वाक्य, और उनके पास शब्दों के उच्चारण के लिए अंग नहीं हैं - यहां तक कि नहीं
"चींटी-भाषा" शब्द। यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि उनके पास ज़ोर से बोलने की शक्ति की कमी है
मनुष्य सुनने के लिए। एक परी की कहानी। (यह उल्लेखनीय है कि इस्लाम एक हद तक इसे स्वीकार करता है
कुरान का सन्देश इसे एक किंवदंती कहता है - टिप्पणी 17. लेकिन अगर यह एक किंवदंती है जिसे सच की तरह बताया गया है,
कुरान में ऐसे और कितने हैं?) 27/18 में इसी तरह का दावा। यह भी देखें 27/16-44
बिलकुल ऊपर। केवल वही स्थान जहाँ आप आम तौर पर बात करने वाली चींटियों से मिलते हैं, परियों की कहानियों में हैं।

०६० २७/१६: "हम (राजा सुलैमान*) को पक्षियों की बोली समझा गया है।" गलत। एक
बात यह है कि एक पक्षी "भाषण" नहीं है, बल्कि लगभग 2000 विभिन्न प्रकारों में से प्रत्येक के लिए एक है
पृथ्वी पर पक्षियों की संख्या, और वास्तव में और भी अधिक, क्योंकि कुछ पक्षियों की "भाषाएँ" भिन्न होती हैं या
एक स्थान से दूसरे स्थान पर "बोलियाँ" - भले ही आपको कॉकनी अंग्रेजी समझा जाए, आप करेंगे
इतालवी या अरब या स्वाहिली नहीं समझते। अधिक मौलिक तथ्य यह है कि पक्षियों का मस्तिष्क
सुसंगत भाषण विकसित करने के लिए बहुत छोटे हैं। पिछले वर्षों में विज्ञान ने पाया है कि पक्षी
दिमाग ज्यादा कुशल हो सकता है कि हमारा, चना के लिए चना, लेकिन इतना ही नहीं वे भी बहुत दूर हैं
सुसंगत भाषण के लिए छोटा - न्यूनतम आकार जहां मस्तिष्क के लिए सैद्धांतिक रूप से संभव है
मूल रूप से मानव मस्तिष्क के समान संकाय प्राप्त करें, एक मस्तिष्क के आकार का अनुमान लगाया जाता है a
बिल्ली की। पक्षियों से सुसंगत, बुद्धिमान भाषण शारीरिक रूप से असंभव है।

205

पेज 206

**०६१ २७/२२-२६: एक पक्षी - घेरा - अपने स्वयं के लंबे, सुसंगत भाषण/वाक्य बनाना
संयोजन। पृथ्वी पर कोई पक्षी ऐसा नहीं कर सकता - उनके पास मस्तिष्क की क्षमता नहीं है (देखें 27/6b और
27/16 ठीक ऊपर)। एक परी की कहानी।

०६२ २७/२४: "मैंने (घेरा*) ने उसे (सबा की रानी*) सूर्य की पूजा करते हुए पाया - - -"।
सबा अरब प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर पर था - आज लगभग यमन। में
पुराने समय में इस पूरे प्रायद्वीप में चंद्र धर्म था, सूर्य धर्म नहीं - अल-लाह के साथ (जिसका
मुहम्मद ने बाद में नाम बदलकर अल्लाह कर दिया) चंद्रमा देवता के रूप में। यह प्रलेखित है कि पुराने सबाहो में भी
मुख्य देवता चंद्रमा देवता थे (स्रोत: "चंद्र जुनून और अल्लाह की बेटियां")।

०६३ २७/२८: "मेरे इस पत्र के साथ जाओ, और इसे उन तक पहुँचाओ: फिर खींचो
उनके पास से वापस, और (प्रतीक्षा करें) देखें कि वे क्या उत्तर देते हैं…” कोई पक्षी ऐसा करने में सक्षम नहीं है। नहीं
यहां तक कि वाहक कबूतर भी पत्र लाता है - यह केवल एक पत्र के साथ वापस आने में सक्षम है। (कबूतरों ने
जिसे पत्र प्राप्त करना है, उसके पास से पिंजरों में लाया जाना है जिसे भेजना है
संदेश। फिर जब पक्षी को छोड़ दिया जाता है, तो वह बस घर लौटना चाहता है - - और ले जाता है
अपने घोंसले को पत्र, जहां रिसीवर इसे एकत्र कर सकता है। पक्षियों का उपयोग करने का यही एकमात्र संभव तरीका है
पत्र ले जाने के लिए। परियों की कहानियों को छोड़कर।)

०६४ २७/४४: "- - - उसने (सबा की रानी*) सोचा कि यह (फर्श*) पानी की झील है (हालांकि
यह कांच के स्लैब थे) - - -"।

1. उनके पास बनाने की तकनीक नहीं थी
   कांच की वह गुणवत्ता ca. 900 - 1000 ई.पू.
2. उनके पास तकनीक भी नहीं थी
   बड़े स्लैब बनाएं - और उन्हें वास्तव में बड़ा होना था

के बीच की दरारों पर तुरंत ध्यान न दें
स्लैब आज भी यह मुश्किल है, क्योंकि इसकी जरूरत है
के लिए बहुत सटीक और धीमी गति से ठंडा करने के महीने
कि बड़े स्लैब में दरार न पड़े। (सीएफआर। का निर्माण
बड़े खगोलीय परवलयिक के लिए दर्पण
दूरबीन)।

00y 27/39: "- - - (एक) जिन्न के - - -"। जिन्न कुरान में एक विस्तृत भूमिका वाले प्राणी हैं।
वे पुरानी अरब परियों की कहानियों और किंवदंतियों से "उधार" लेते हैं। अल्लाह ने उन्हें आग से बनाया,
कुरान में एक जगह के अनुसार किताब बताती है- या चिलचिलाती हवा की आग से हो सकती है।
उनके आकार के बारे में बहुत कम कहा गया है - शायद मोटे तौर पर इंसानों की तरह, हालांकि यह संकेत दिया गया है कि
उनमें से कई प्रकार थे। "देवताओं" में भी उनकी एक विसरित भूमिका है - वे
निश्चित रूप से स्वर्ग में नहीं हैं, लेकिन न ही नरक में हैं। वहाँ बस के बारे में कुछ नहीं कहा जाता है
जहां वे संबंधित हैं। न तो स्वर्ग और नर्क के "जीवन" में उनकी भूमिका के बारे में कुछ कहा गया है और न ही
"निवासियों" से उनका वास्तविक संबंध उन दो स्थानों - या पृथ्वीवासियों से है। जैसा हमने कहा; बहुत
उनके और उनके जीवन के बारे में फैला हुआ है, सिवाय इसके कि वे ऐसे प्राणी होने चाहिए जो मर सकते हैं - तथा
नरक में अंत ज्यादातर ऐसा लगता है। जैसा कि कहा गया है कि वे पुराने अरब लोककथाओं और परियों की कहानियों से उधार लिए गए हैं
और ज्यादातर ऐसा लगता है कि वास्तव में धर्म में नहीं हैं, हालांकि उनका काफी उल्लेख किया गया है
बार बार। आम तौर पर हमें लगता है कि वे ज्यादातर समय थोड़े संदिग्ध होते हैं, लेकिन हमेशा नहीं। कुछ
एफ थे। भूतपूर्व। दास (या दास) राजा सुलैमान के लिए, और पुराने समय में - 100 साल पहले नहीं -
मनुष्यों और जिन्नों के बीच विवाह आदि के लिए कानून मौजूद होंगे, हालांकि कोई विवाह नहीं
कभी हुआ !!

क्या वे वास्तव में छिपी हुई दुनिया में मौजूद हैं? - या वे वास्तव में सिर्फ परी से कुछ हैं
रहस्यमय प्रभाव के लिए प्रयुक्त किस्से?

एक और रहस्य: यदि इस्लाम मुख्य और मूल धर्म है, तो कई को जिन्नों से मिलना चाहिए
स्थान - एफ। भूतपूर्व। बाइबिल में। लेकिन आप उनसे इस्लाम में ही मिलते हैं।

०६५ ३८/३७: "- - - और शैतान भी (सहित) हर तरह के बिल्डर और गोताखोर (काम करने के लिए)
राजा सुलैमान* के लिए) - - -"। हमें इस पर विश्वास करने के लिए, इस्लाम को बहुत वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत करने होंगे -
यह और भी अधिक था क्योंकि यह सुलैमान की प्रतिष्ठा को इतना बढ़ा देता था, कि यह निश्चित रूप से नहीं था
बाइबिल में भुला दिया गया - - - और वहां इसका उल्लेख नहीं है। 21/82 में इसी तरह का दावा।

०६६ ३८/३६: "तब हम (अल्लाह*) ने हवा को उसकी (सुलैमान की *) शक्ति - - - के अधीन कर दिया। इस
मजबूत सबूत की जरूरत है - हम शायद ही विश्वास करते हैं कि सुलैमान तापमान और हवा को नियंत्रित करने में सक्षम था
वातावरण में दबाव इस तरह से कि वह हवाओं का निदेशक हो। इसी तरह का दावा
34/12।

**067 34/14a: "फिर, जब हमने (अल्लाह*) ने (सुलैमान की) मृत्यु का आदेश दिया, तो उन्हें कुछ भी नहीं दिखा
(परिवेश में जिन्न शामिल थे) उसकी मृत्यु, पृथ्वी के एक छोटे से कीड़े को छोड़कर, जो रखती थी
(धीरे-धीरे) अपने कर्मचारियों को कुतर रहा है - - -"। गलत:

1. सुलैमान के महल में कोई नहीं होगा
   पृथ्वी और फिर पृथ्वी से कोई कीड़ा नहीं। (इस
   बाहर नहीं हो सकता, उसके नौकरों के रूप में
   पराक्रमी राजा को बैठे नहीं छोड़ेंगे
   कई दिनों और रातों के माध्यम से बाहर)।
2. पृथ्वी से ऐसा कोई कीड़ा नहीं है जो
   एक कर्मचारी की तरह सूखी, कठोर लकड़ी को कुतरना। कुछ
   मुसलमान चाहते हैं कि यह दीमक हो,
   लेकिन दीमक कोई कीड़ा नहीं है, और एक भगवान जानता है
   वह।
3. नीचे 34/14b भी देखें।

**०६८ ३४/१४बी: "फिर, जब हमने (अल्लाह*) ने (सुलैमान की) मृत्यु का आदेश दिया, तो उन्हें कुछ भी नहीं दिखा।
(ऊपर ३४/१४ ए देखें) उसकी मृत्यु, पृथ्वी से एक छोटे से कीड़े को छोड़कर, जो (धीरे-धीरे) रखता था
अपने कर्मचारियों को कुतरना; इसलिए जब वह नीचे गिरा - - -"। गलत: a . के लिए दिन या उससे अधिक समय लगेगा
सुलैमान के गिरने के लिए पर्याप्त कर्मचारियों को कमजोर करने के लिए छोटा कीड़ा - सप्ताह हो सकता है।

1. एक पराक्रमी राजा बैठा है जो घास खा रहा है
लंबे समय के बाद कुछ समय बाद संबोधित किया जाएगा
उसके नौकर।
2. एक शक्तिशाली राजा काफी देर तक बात नहीं करता
जबकि, उनके सेवकों द्वारा संबोधित किया जाएगा।
3. एक शक्तिशाली राजा अपने कर्तव्यों का ध्यान नहीं रखता
और उसके आगंतुक काफी देर तक,
उनके सेवकों द्वारा संबोधित किया जाएगा।
4. एक पराक्रमी राजा जो शाम को नहीं सोता
उनके सेवकों द्वारा संबोधित किया जाएगा।
5. कठोर मोर्टिस (एकमात्र संभव है, लेकिन अत्यधिक
स्थिति के लिए असंभावित कारण) में समय लगता है
प्रारंभ - और यह गायब हो जाता है। अगर दूसरे के लिए नहीं
कारण, वह उस लंबे समय के कारण गिर जाएगा
इससे पहले कि एक छोटे कीड़ा को कमजोर होने का समय मिले
कर्मचारी।

207

पृष्ठ २०८

6. यरूशलेम की जलवायु में - सर्दियों में भी
(जब वहाँ आखिर आग लगेगी) - उसका
शरीर सड़ने लगेगा। सबके पास था
यह नोटिस करने के लिए।

बस एक परी कथा।

8. सिकंदर महान (!!) उर्फ धुल क्वार्नायन (लगभग 330 ईसा पूर्व):

सिकंदर महान एक ऐसा व्यक्ति है जिसे "पवित्र पुस्तक" में खोजने की उम्मीद नहीं है। लेकिन कुरान में आप उसे ढूंढते हैं - मुख्य रूप से सूरह 18 में।

पुस्तक उनके लिए एक अरब नाम का उपयोग करती है: धुल क्वार्नेयन - दो सींग वाला। लेकिन यह ठीक है इतिहास में जाना जाता है कि यह अरब में सिकंदर के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला नाम था। इसके अलावा तथ्य हैं जैसे प्रसिद्ध मुस्लिम विद्वान इब्न हिशाम (लगभग 900 ई.)
इब्न इशाक के "द लाइफ ऑफ मुहम्मद" पर उनकी टिप्पणी: "सिकंदर एक ग्रीक था और वह" अलेक्जेंड्रिया की स्थापना की ”। सिकंदर वास्तव में मैसेडोनिया का था, लेकिन वह यूनान का राजा भी था, और यह बहुत ही प्रारंभिक ज्ञान है कि उन्होंने अलेक्जेंड्रिया की स्थापना की - और इसे अपना नाम दिया।

आप पाएंगे कि मुसलमान इस तथ्य का पुरजोर विरोध करते हैं, क्योंकि यह एक अत्यंत अविश्वसनीय कहानी और भी बदतर: हर शिक्षित व्यक्ति जानता है कि उसके पास कुछ भयानक है - हँसी में नहीं कहना - गलत। सिकंदर इस तरह की मूर्खताओं में शामिल नहीं था, और वह निश्चित रूप से कोई मुसलमान नहीं था, बल्कि एक बहुदेववादी था। कुछ मुसलमान गलती का इस्तेमाल करने की कोशिश भी करते हैं किताब यह बताकर बनाती है कि वह एक अच्छा मुसलमान है, इस बात के प्रमाण के तौर पर कि धुल क्वारनैन नहीं हो सकते सिकंदर, क्योंकि आज हम जानते हैं कि वह एक बहुदेववादी था। परेशानी यह है कि मुहम्मद अशिक्षित अनुयायी ६२२ ईस्वी में जब यह सुरा दिनांकित है, उसके बारे में बेहोश विचार नहीं था कि - मुहम्मद और अल्लाह ने इसे बताया, और फिर इसे सच होना ही था! लेकिन इसमें कोई शक नहीं: दुहली क्वारनैन सिकंदर महान हैं। कुरान के कुछ अनुवादों में - f. भूतपूर्व। दाऊद - तुम वे पाएंगे कि वे कुरान में धुल कर्नायन के बजाय सिकंदर महान को सरलता से लिखते हैं।

०६९** १८/९५: "उसने (सिकंदर*) ने कहा: '(शक्ति) जिसमें मेरे भगवान (अल्लाह !!!*) मुझे स्थापित करना बेहतर है - - -"। कुरान स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि सिकंदर एक पवित्र मुसलमान था (मुहम्मद से लगभग 950 साल पहले)। एक ख़ामोशी बनाना: यह गलत है। सिकंदर एक बहुदेववादी था। 18/86a, 18/96b और 18/96c भी देखें। 18/98 में इसी तरह का दावा।

070 18/96a: "- - - वह (सिकंदर) सूर्य की स्थापना पर पहुंचे, - - -"। की सेटिंग तक पहुंचने के लिए सूर्य का अर्थ है पश्चिम जाना। इस कहानी में अन्य सभी गलतियों के अलावा, हम जानते हैं कि सिकंदर कभी पश्चिम नहीं गया (वह अब तक का सबसे दूर पश्चिम था, उसकी मातृभूमि मैसेडोनिया उत्तर थी नर्क और मिस्र)। नीचे 18/86 और 18/86 भी देखें।

**071 18/86b: "- - - जब वह (सिकंदर) सूर्य के अस्त होने पर पहुंचे - - -"। कोई भी जो भूगोल और खगोल विज्ञान के बारे में दो मिलीमीटर जानता है जानता है कि यह गलत और हास्यास्पद है चरम: सूर्य पृथ्वी पर नहीं डूबता है - और बिल्कुल भी पानी के तालाब में नहीं। और देखें 18/86a और 18/86c ठीक ऊपर और ठीक नीचे।

***072 18/86c: "- - - उन्होंने (सिकंदर महान*) ने इसे (सूर्य*) धुंधले झरने में पाया
पानी"। यह कथन - या परियों की कहानी - विस्मयादिबोधक चिह्नों की एक श्रृंखला के योग्य है - आज कोई भी
जिसने प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली है, वह इन अन्य तथ्यों के अलावा जानता है:

1. I. सूरज इतना बड़ा है कि कहीं भी बस नहीं सकता
   धरती।
2. II यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि यह बसने के लिए बहुत बड़ा है
   तालाब में - धुंधला है या नहीं।
3. III. और अगर सूरज कभी भीतर आ गया
   पृथ्वी से लाख किलोमीटर या मील,
   अब कोई वसंत या तालाब नहीं होगा।

मुहम्मद सूरज के आकार या तापमान को नहीं जानते थे - ऐसा लगता है कि वह यह भी मानते हैं कि यह था
एक सपाट डिस्क जिसे मोड़ा जा सकता था - लेकिन एक सर्वज्ञ भगवान को पता था। कुरान किसने बनाया?

मुसलमान इसे f द्वारा "समझाने" की कोशिश करते हैं। भूतपूर्व। यह बता रहा था कि उसने जो देखा वह एक सूर्यास्त का प्रतिबिंब था
वसंत। महान योद्धा राजा सिकंदर के बारे में सोचो - पश्चिम और पश्चिम और पश्चिम की सवारी उसके साथ
पुरुष, दिन-ब-दिन और सप्ताह-दर-सप्ताह उस स्थान का पता लगाने के लिए जहां सूर्य अस्त होता है। फिर एक दिन वह
एक और तालाब से टकराता है - एक भी गंदे पानी से। जब वह खड़ा होता है तो वह गंदा वसंत
उसके और सूर्य के बीच सीधी रेखा में है, वह लाल और पीले रंग की दर्पण छवि देखता है
कीचड़ भरी सतह में सूर्यास्त - एक ऐसा नजारा जिसे उसने पहले भी बार-बार देखा है
तालाबों और झरनों और नदियों और झीलों और समुद्रों की सतह - और वह अपने आदमियों की जय करता है: "अब हम"
हमारे लक्ष्य तक पहुँच गया है !! यहीं सूरज डूबता है !! अब वापस चलते हैं और अपने बारे में बताते हैं
महान खोज"।

जो चाहे उस पर विश्वास करो।

लेकिन जो भी इसे मानता है उसे इतिहास के प्रोफेसर या मनोवैज्ञानिक को देखने की जरूरत है
दिमाग। (ऊपर 18/86a और 18/86b भी देखें।)

०७३ १८/९०: "- - - वह सूर्य के उदय के लिए आया - - -"। यहाँ आना शारीरिक रूप से संभव नहीं है
वह स्थान जहाँ सूर्य पृथ्वी से उगता है जैसा कि कुरान इंगित करता है, क्योंकि यह उगता नहीं है
पृथ्वी से - और यदि ऐसा होता, तो सिकंदर और पृथ्वी दोनों ही तले हुए होते। और देखें
18/86a - 18/86b - 18/86c ठीक ऊपर।

*00z 18/94: "- - - गोग और मागोग - - -"। ये बाइबिल से हैं। बाइबिल में एक है a
देश और दूसरा राजा - मागोग देश का राजा गोग। कुरान में वे दो बुरे हैं
लोग या जनजाति। कौन सही है? याद रखें कि मुहम्मद बाइबल को अच्छी तरह से नहीं जानते थे। ए
भगवान जानता था। फिर कुरान की रचना किसने की?

***७४ १८/९५-९७: एक घाटी में रहने वाले लोगों को दो अन्य लोगों द्वारा आतंकित किया गया - गोग और
मागोग। उन्होंने (स्थानीय लोगों*) सिकंदर से मदद मांगी। उन्होंने कहा: "मैं एक मजबूत अवरोध खड़ा करूंगा
तुम्हारे और उनके बीच: 'मेरे लिए लोहे के टुकड़े लाओ'"। और उसने लोहे के ब्लॉकों की एक दीवार बनाने दी
स्थानीय लोगों द्वारा उत्पादित, सीधे घाटी में, इतना मजबूत कि असंभव हो
गोग और मागोग के लोगों को पार करने के लिए, और इतना लंबा कि यहां तक कि पार करना असंभव हो
सबसे लंबी सीढ़ी के साथ।

लेकिन पूरी पृथ्वी पर कहीं भी 330 ईसा पूर्व के आसपास इतने लोहे के ब्लॉक मौजूद नहीं थे - ब्लॉक
लोहे के स्थानीय लोगों को उसे लाने के लिए कहा गया था। (यहां ध्यान दें कि १८/९३ बताता है कि दीवार को पार करना था" (ए
ट्रैक्ट) दो पहाड़ों के बीच" जिसके नीचे लोग रहते थे - दीवार का होना जरूरी था
"एक पथ" को पार करने के लिए कुछ लंबाई इतनी बड़ी है कि एक पूरे लोगों के जीने के लिए - इसमें बहुत सारा लोहा लगता है
ब्लॉक।) यह भी याद रखें कि उस समय लोहा महंगा था - इसे बनाने में बहुत मेहनत लगती थी।
इतना लोहा रखने के लिए स्थानीय लोगों को बहुत अमीर होना पड़ा।

पृष्ठ २१०

(इसके अलावा यह सब हास्यास्पद है: बहुत कम घाटियों में केवल एक ही रास्ता संभव है - गोगो
और मागोग दीवार के चारों ओर हो सकता है। और यदि नहीं, तो हमेशा नीचे खोदना संभव है
दीवार - यह एक घाटी थी जिसमें लोग रहते थे, और ऐसी घाटी के नीचे मिट्टी होगी
दीवार।) ऊपर 18/86a - 18/86b - 18/86c भी देखें।

**075 18/96a: "लंबे समय तक, जब वह (सिकंदर - या वास्तव में दीवार बनाने वाले कार्यकर्ता*) ने
उसने दो खड़ी पहाड़ी-किनारों के बीच की जगह को भर दिया, उसने कहा, 'झटका (अपनी धौंकनी से)'।
फिर जब उसने उसे आग की तरह लाल कर दिया---"। संपूर्ण बनाना संभव नहीं होगा
इतनी बड़ी दीवार लगभग 330 ईसा पूर्व में आग की तरह लाल हो गई थी। उनके पास न तो साधन था - उस तरह की आग -
न ही तकनीक। आज भी मुश्किल से ज्यादा होगा। परियों की कहानी।

**076 18/96b: "फिर, जब उन्होंने (सिकंदर महान) ने इसे (लाल) आग के रूप में बनाया था, तो उन्होंने कहा: 'लाओ
मुझे, कि मैं उस पर पिघला हुआ सीसा डालूं" (दाऊद कांस्य कहता है)।

1. हमें नहीं लगता कि पृथ्वी पर कोई एक जगह है
   ऐसी नौकरी के लिए पर्याप्त सीसा - या कांस्य - था।
2. अगर हुआ भी तो धातु महंगी थी -
   इतना कुछ पाने के लिए स्थानीय लोगों को बहुत अमीर होना पड़ता है
   सीसा/कांस्य। और यह और भी अधिक के लिए जाता है
   एक विशाल दीवार बनाने के लिए पर्याप्त लोहे के ब्लॉक।
3. तकनीकी रूप से गर्म करना संभव नहीं होगा
   इतनी बड़ी और लंबी दीवार "इसे (लाल) बनाने के लिए"
   आग "सी। 330 ईसा पूर्व - आज शायद ही संभव हो -
   उस पर सीसा/कांस्य डालने के लिए।

गोग और मागोग के बारे में बाकी की कहानी को शामिल करने के लिए: वे अपने से बाहर निकलने में असमर्थ होंगे
बड़ी घाटी - जब तक उन्हें चेतावनी के रूप में रिहा नहीं किया जाता है, तब तक उन्हें खिलाने के लिए बड़ा होना चाहिए
अंतिम दिन के करीब। लेकिन आज भी किसी को उनकी घाटी नहीं मिली-पर भी नहीं
सैटेलाइट फोटो। यह एक अच्छी तरह से छिपी हुई बड़ी घाटी होनी चाहिए:

०७७ २१/९६ब: "जब तक गोग और मागोग (२ बुरे गोत्र*) पार नहीं हो जाते (उनकी बाधा), और वे
हर पहाड़ी से तेजी से झुंड "। कुरान के अनुसार गोग और मागोग (सूरह 18) दो थे
लोहे से बुने एक लंबे, मजबूत अवरोध के पीछे घाटी में कैद लोगों (जनजातियों?) के समूह
धुल क्वार्नेयन/अलेक्जेंडर द ग्रेट द्वारा निर्मित ब्लॉक। लेकिन पृथ्वी पर कहीं नहीं है - चलो
उस क्षेत्र में अकेले सिकंदर ने यात्रा की - एक घाटी जो दो बड़े लोगों के लिए भोजन का उत्पादन करने के लिए काफी बड़ी थी
लोगों की जनजातियाँ ("हर पहाड़ी से झुंड" = बड़ी जनजातियाँ), जिनसे बाहर निकलना असंभव है,
भले ही मुख्य घाटी और बाहर का रास्ता अवरुद्ध हो। इसके अलावा पूरी मंजिल बकवास है: भले ही
वे इस तरह के अवरोध को पार नहीं कर सकते थे, समय को देखते हुए यह हमेशा संभव होगा
इसके नीचे खोदो। भले ही इसे ठोस चट्टान पर खड़ा किया गया हो, लगभग 330 ईसा पूर्व जब कुरान
ऐसा होने का दिखावा (सिकंदर की मृत्यु 323 ईसा पूर्व), लोग जानते थे कि छोटी सुरंगें कैसे बनाई जाती हैं
एक चट्टान के माध्यम से भी अगर वे वास्तव में चाहते थे, एफ। भूतपूर्व। अग्नि + जल द्वारा। इसके अलावा: कहाँ
घाटी है? आज दुनिया के हर इंच की मैपिंग की गई है, और घाटी में कोई दीवार नहीं है
कहीं भी। पूर्व में नहीं जहां सिकंदर ने यात्रा की, और कहीं नहीं। **याद रखना; दो
गोग और मागोग के बड़े गोत्रों को आज उस घाटी में रहना होगा, क्योंकि उन्हें ही होना है
कुरान के अनुसार कयामत के दिन से कुछ समय पहले इसे इससे मुक्त कर दिया गया।**

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 14 (= II-1-3-14)

**गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The
मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए**

पेज 211

**कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची
थीम द्वारा व्यवस्थित**

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और अंत के बारे में त्रुटियां कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

001 42/7: "- - - सभा का दिन (कयामत का दिन), जिसमें कोई संदेह नहीं है - -"। में
इतनी सारी गलतियों वाली किताब (40/75 देखें) किसी भी चीज पर संदेह करने का कारण है:

1. क्या अल्लाह सर्वशक्तिमान है और कुरान को बनाया है? - या नहीं?
2. क्या अल्लाह सर्वशक्तिमान है, और उसे नहीं बनाया कुरान?

   कुरान के काले हिस्से एक और प्रस्तुत करते हैं संभावना:

3. क्या वास्तव में कुरान काली ताकतों द्वारा बनाई गई है? अगर एफ। भूतपूर्व। इब्लीस - द डेविल - जैसे कपड़े पहने गेब्रियल, मुहम्मद के पास मौका नहीं था फर्क देखें। कई अमानवीय और/या इस्लाम और कुरान में अनैतिक पहलू इंगित करें कि यह एक संभावित स्पष्टीकरण है। लेकिन क्या अंधेरे बल भी एक पाठ "भेज" देंगे और इतनी सारी गलतियों, अंतर्विरोधों वाली किताब, आदि।? - उन्हें पता था कि उन्हें देखा जाएगा के माध्यम से और जल्दी या बाद में विश्वसनीयता खो देते हैं।

   अंत में तथ्य यह है कि कई गलतियाँ आदि। पुस्तक में क्या था के अनुसार हैं

   अरब में अच्छा ज्ञान और विज्ञान मुहम्मद का समय, एक आश्चर्य बनाता है:

4. क्या कोई नर्क है? - और मामले में है कुरान में विवरण सही है? - वहां किताब में और भी कई गलतियाँ।
5. क्या कोई कयामत का दिन है? - और अगर यह है अल्लाह द्वारा चलाया जाता है? - या यहोवा के द्वारा? - या किसी के द्वारा अन्य भगवान?
6. क्या कोई स्वर्ग है? - और क्या यह मामले में है शरीर के लिए स्वर्ग जैसा कुरान में है? - या

कुरान के साथ यह एक समस्या है: इतनी गलतियाँ हैं कि कारण हैं कुछ भी संदेह करना, और यह जानना असंभव है कि क्या कुछ सच है, और उस स्थिति में क्या। सच क्या है? अल-तकिया क्या है? - स्पष्ट और सरल रूप से गलत क्या है?

भविष्य में कभी-कभी मनुष्य के लिए एक अंतिम दिन आएगा - लेकिन चूंकि इसमें बहुत कुछ गलत है कुरान, संदेह करने का हर कारण है कि अल्लाह का वर्णन (या अस्तित्व भी), और तो परिणामतः यह विश्वास करना कि अल्लाह के अन्तिम दिन की व्यवस्था का भी वर्णन है गलत।

और हर मुसलमान के बारे में क्या है अगर कुरान आंशिक या पूरी तरह से गलत है, और वे धमकियों, सामाजिक दबाव या केवल महिमामंडित सादे और अंध विश्वास के कारण, समय पर पता लगाने का मौका नहीं मिला है? अगर इस जीवन के बाद कुछ नहीं है, तो उनके पास होगा कुछ भी नहीं खोया - सिवाय इसके कि उन्होंने इस जीवन को कठिन या नरक या बहुतों के लिए बदतर बना दिया है। लेकिन अगर बाद में कुछ है, यह एक अशिष्ट जागरण हो सकता है, क्योंकि केवल एक ही चीज है कुरान के बारे में यह निश्चित है: कोई ईश्वर नहीं - सर्वज्ञ या नहीं - बनाया गया (उनके में श्रद्धेय का उल्लेख नहीं है खुद का स्वर्ग) एक किताब जिसमें इतनी सारी गलतियाँ, विरोधाभास, आदि हैं, और इतना ही अमान्य है तर्क और अमान्य "संकेत" और "प्रमाण" के रूप में। 3/25 - 6/12 -15/99 - 40/59 - 45/26 में इसी तरह के दावे - 45/32।

००२ २९/५४: "- - - एक ज़मानत की, नर्क आस्था के अस्वीकार करने वालों (गैर-मुस्लिम*) को घेर लेगा (इस्लाम*)।" **नहीं, यह कोई निश्चितता नहीं है क्योंकि कुरान में सभी गलतियों को दृढ़ता से कम कर दिया गया है धर्म की वास्तविकता में पाठक का विश्वास।** और भी अधिक: अगर किसी ने कुरान को बनाया है, और एक और, वास्तविक धर्म मौजूद है, मुहम्मद और इस्लाम के अस्वीकार करने वालों के पास एक मौका है उस धर्म को खोज रहे हैं, लेकिन मुसलमानों को नहीं।

003 66/6: "- - - एक आग जिसका ईंधन पुरुष और पत्थर है - - -"। आग एक रासायनिक प्रतिक्रिया है - आम तौर पर एक ऑक्सीकरण - जो गर्मी जारी करता है, और इतनी गर्मी कि प्रतिक्रिया जारी रहती है स्वयं और अभी भी एक दृश्यमान लौ बनाने के लिए पर्याप्त अधिशेष हीथ जारी करता है। ऐसा नहीं होता पत्थरों के साथ - और निश्चित रूप से उन पत्थरों के साथ नहीं जिनके बारे में मुहम्मद और उनकी मण्डली को पता था। (मुसलमान कह रहे हैं कि मुहम्मद का मतलब कोयला था, लेकिन कोयले को गर्म करने के साधन के रूप में था मुहम्मद और उनकी मण्डली के समय अरब में अज्ञात - जिसका अर्थ है कि यह बहुत है स्पष्ट है कि उनके अनुयायी सामान्य पत्थरों को समझने के लिए थे)। गलत।

००४ ५६/९५: "वास्तव में, यह (कुरान में नरक का वर्णन*) बहुत सत्य है और निश्चितता"। नर्क के बारे में कुरान जो कहता है वह बाकी की तुलना में अधिक सत्य और निश्चित क्यों होना चाहिए?

किताब की कई गलतियों और त्रुटियों के साथ? - इस्लाम के मामले में कुछ सबूत लाने होंगे सस्ते शब्दों के बजाय। ऊपर 42/7 और अन्य स्थान देखें।

००ए ५५/५६: मुस्लिम स्वर्ग काफी हद तक पारसी की तरह है (जोरोस्ट्रियन मुख्य रूप से रहते थे फारस में, अरब के बड़े व्यापारिक भागीदारों में से एक। अरब उस धर्म को जानते थे - शायद ही अच्छी तरह से मोज़ेक या ईसाई धर्म, लेकिन कम से कम सतही रूप से।) - सिवाय इसके कि घंटे वहाँ पेरिस नामित थे। इसके ठीक नीचे 19/71 भी देखें।

००बी १९/७१: "आप में से कोई नहीं, बल्कि इसके ऊपर से गुजरेगा (सीरात पुल - अंतिम पारित होने के लिए) दिन*)"। जोरास्ट्रियन से काफी मिलता-जुलता है, जहां पुल का नाम चिनावड रखा गया है। 55/56 को भी देखें के ऊपर।

००५ ७६/२१: "- - - और वे (स्वर्ग में) चांदी के कंगन से सुशोभित होंगे - -।" तब में १८/३१ - ३५/३३ कंगन सोने के हैं। एक छोटा सा विवरण - लेकिन एक सर्वज्ञ भगवान को नहीं मिलता विवरण भी गलत। एक गलती और एक छोटा सा विरोधाभास।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 15 (= II-1-3-15)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए

कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची
धड़ द्वारा व्यवस्थित

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और किंवदंतियों और परी से त्रुटियाँ कुरान में किस्से - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों की किताब, इस्लाम और अल्लाह

कहानियों और परियों की कहानियों से स्पष्ट रूप से "उधार"

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मुहम्मद के पास शायद ही कोई मूल कहानी थी। उन्होंने किसी भी उपयुक्त स्रोत से चुना, कई में धार्मिक किंवदंतियों के मामले उनका मानना था कि वे बाइबिल की कहानियां हैं, और सामान्य से भी स्थानीय परियों की कहानियों और किंवदंतियों, और उन्हें अपने नए फिट करने के लिए उन्हें थोड़ा या बहुत मोड़ दिया धर्म। कुछ नहीं के लिए उनके विरोधियों ने दावा किया कि उन्होंने "बस पुरानी कहानियों को बताया"। (न ही उसने कई मूल विचार या विचार हैं - लगभग बिना किसी अपवाद के उन्हें चुना गया था या आसपास की संस्कृतियों से उधार लिया गया और पुराने अरब युद्ध और डकैती की संस्कृति के साथ मिलाया गया।) नीचे आपको कुछ नमूने मिलते हैं।

*00a 18/9: "या क्या आप प्रतिबिंबित करते हैं कि गुफा के साथी - - -"। यह एक पुरानी कहानी है - अ धार्मिक कथा - जो कुरान में शामिल है। 7 स्लीपरों की कहानी सर्वविदित है - और सिर्फ एक परी कथा है। 7 इफिसुस के ईसाई थे जो अब तुर्की है, जो भाग गए कहानी "सीज़र" डेसियस के तहत एक पोग्रोम के दौरान एक गुफा है। डेसियस ने गुफा की चारदीवारी की थी उन्हें मारने के लिए। इसके बजाय 7 सो गए, और राज्य के 30.वें वर्ष तक नहीं उठे धर्मपरायण थियोडोसियस का - जो कि 448 ईस्वी में है। डेसियस ने लगभग दो साल से अधिक समय तक लगाम लगाई / बस 250 ई. के बाद इसका मतलब है कि अगर परियों की कहानी सच होती, तो वे लगभग 195 साल सो चुके होते (कुरान कहता है ३०० या ३०९ साल - परियों की कहानी में भी यह गलत है)। इस्लाम को परेशानी है यह समझाते हुए कि कुरान में यह कहानी कैसे समाप्त हुई, और हमने जो "व्याख्याएं" देखी हैं, वे बहुत हैं "उदार" और फैलाना - f. पूर्व कि यह वास्तव में एक पुरानी यहूदी परी कथा के बारे में बताया गया है (क्या an . करता है) सर्वज्ञ भगवान को पुरानी परियों की कहानियों पर भरोसा करने की आवश्यकता है?) - या यह कि यह गलतफहमी से निकला है Esseers के बारे में (क्या एक सर्वज्ञ भगवान चीजों को गलत समझते हैं?) - के सदस्य कुमरान समाज (मृत सागर के पास) लेकिन बिना कोई स्रोत या दस्तावेज दिए - केवल अटकलें इसके अलावा उम्र कोई मायने नहीं रखती - यह तो बना हुआ है भले ही हो जाए कि मूल थोड़ा पुराना है। वे यह भी बताते हैं कि यह एक रूपक है - जो वे बहुत बार करते हैं जब वे "स्पष्टीकरण" खोजने में कठिनाइयाँ होती हैं जिन पर विश्वास करना संभव है। लेकिन यह स्पष्ट रूप से नहीं है एक रूपक होने का मतलब - अन्य बातों के अलावा एक रूपक के अर्थ सामान्य रूप से बहुत होते हैं देखने में आसान या समझाया गया। कुरान आगे सामान्य रूप से बताता है कि वह कब रूपक बता रहा है या कुछ इसी तरह, और कम से कम नहीं; कुरान ही इस बात पर जोर देता है कि इसे शाब्दिक रूप से समझा जाएगा यदि और कुछ नहीं कहा जाता है। स्लीपरों का उल्लेख 18/13 - 18/22 - 18/25 में भी किया गया है।

०१ १०५/३+४: "- - - हान (अल्लाह *) ने उनके खिलाफ पक्षियों की उड़ानें भेजीं, उन्हें पत्थरों से मारना

पकी हुई मिट्टी से।" यह 570 ईस्वी में एबिसिनिया के हमले को संदर्भित करता है (हालांकि आधुनिक विज्ञान
प्रश्न पूछे वर्ष काफी सही है)। उस राजा अब्राहा या अब्रहा ने अपना बहुत सा सैन्य खो दिया
एक गंभीर बीमारी के कारण - शायद चेचक - और बिना हमला किए घर लौटना पड़ा
मक्का। पक्षियों के पत्थरों से सैनिक नहीं मारे गए। (मुसलमान कभी-कभी कोशिश करते हैं
कुछ भाषाई जिम्नास्टिक द्वारा स्पष्ट पाठ और उतनी ही स्पष्ट गलती को "समझाएं" जो
इसमें शामिल है कि पत्थर के लिए अरब शब्द और लेखन के लिए एक भिन्न नहीं हैं, और वे
सोचो कि इन शब्दों को मिलाया गया है (अल्लाह द्वारा भेजे गए एक पवित्र पुस्तक में, और बिना)
गलतियाँ - कितने और मिश्रण?), और फिर कहें कि अर्थ रूपक है (एक पुस्तक में)
अल्लाह कहता है कि जैसा लिखा है वैसा ही समझा जाएगा), इसका मतलब पत्थर नहीं, बल्कि कठोर भौतिक हो सकता है
हड़ताल - लेकिन कठिन शारीरिक प्रहार भी बीमारी के समान नहीं है। **मुसलमान अक्सर
गलतियों को छिपाने की कोशिश करने के लिए भी इस तरह के "स्पष्टीकरण" का उपयोग करें। लेकिन अगर वहाँ है
यहाँ भाषाई गलती, मुसलमानों के अनुसार- और कितनी भाषाई गलतियाँ हैं
वहाँ कुरान में?**

00b 5/23: "- - - दो (मूसा के यहूदियों के*) जिन पर अल्लाह का हाथ है - - -"। अल्लाह या यहोवा? यह सभी देखें 3/51.

002 37/142: "तब बड़ी मछली ने उसे (योना) निगल लिया"। गलत।

२१४

पेज 215

1. निगलने के लिए पर्याप्त बड़ी मछली मौजूद नहीं है a आदमी पूरा। एक अपवाद है, लेकिन वह कोई बड़े शिकार (व्हेल-शार्क) को नहीं खाता है। इसके अलावा इनमें से एक या दो हो सकते हैं व्हेल, लेकिन ओर्का भी निगलता नहीं है एक टुकड़े में सील (यथोचित समान आकार)।
2. भले ही वह निगल लिया गया हो, वह नहीं था बच गया - वह की कमी से मिनटों में मर गया था ऑक्सीजन।
3. और क्या उसके पास ऑक्सीजन की आपूर्ति थी - जो उन्होंने स्पष्ट रूप से नहीं किया - में एसिड का रस "मछली" के पेट ने उसे कुछ ही देर में मार डाला था समय।

एक परी कथा, भले ही यह कहानी बाइबल से "उधार" ली गई हो। (इसमें कुछ गलतियाँ भी हैं
बाइबल)। योना के बारे में भी 37/44 में अन्य स्थानों के बीच।

00c 2/73: "अल्लाह ने कहा: '(शरीर) पर (बछिया) के टुकड़े से प्रहार करो।" इस प्रकार अल्लाह लाया
जीवन के लिए मृत - - - "। इस तरह किसी मृत व्यक्ति को जगाना संभव नहीं है। इस्लाम को पैदा करना होगा a
ठोस प्रमाण - विशेष रूप से क्योंकि यह कहानी बाइबिल में नहीं है, और इस प्रकार एक किंवदंती या . से ली गई है
कुछ।

003 2/102: "- - - (जादू) के खरीदार - - -"। जादू सिर्फ अंधविश्वास है।

००४ ५/११०: "और देख, तू ने मेरी अनुमति से चिड़िया की आकृति के समान मिट्टी से बनाई है,
और तुम उसमें सांस लेते हो, और वह मेरे जाने से पंछी हो जाता है, - - - "। एक बनी हुई कहानी
मेड अप (एपोक्रिफ़ल) थॉमस चाइल्ड गॉस्पेल में किंवदंतियों को बनाया। यह भी देखें ३/४९ -
मुहम्मद अक्सर खुद को दोहराते हैं, भले ही इससे कोई अच्छा साहित्य न हो। इसके अलावा: एक आश्चर्य
इस तरह बाइबल में नहीं भुलाया गया था - और विशेष रूप से "गलत करने वालों" द्वारा नहीं
जीसस को और अधिक पवित्र बनाने के लिए बाइबिल को झूठा साबित करें, जैसे कुरान अक्सर कहता/संकेत करता है। (पर कैसे
यहूदियों को यीशु को और अधिक पवित्र बनाने के लिए मिथ्याकरण के लिए सहमत करने के लिए? - उन दो में मिथ्याकरण
धर्मों को समान होना था, यदि यहूदी धर्मग्रंथ नहीं होते और ईसाई ओ.टी
एक दूसरे से काफी अलग हैं।)

००५ ३५/४४: "क्या वे (लोग*) पृथ्वी पर यात्रा नहीं करते, और देखते हैं कि उनका अंत क्या था
उनके पहले - - -?" अरब में और उसके आसपास इधर-उधर खंडहर थे (और हैं)।
मुहम्मद ने दावा किया - बिना किसी दस्तावेज के सामान्य रूप से केवल गैर-मुस्लिमों की आवश्यकता है
कुछ भी साबित करो - कि उनमें से हर एक अल्लाह के क्रोध का परिणाम था क्योंकि
इस्लाम में अविश्वास आदि। गलत। युद्धरत जनजातियों द्वारा बसाए गए एक शुष्क और कठोर भूमि में थे
खाली घरों और खंडहरों के कई अन्य कारण।

006 27/39: "- - - (एक) जिन्न के - - -"। जिन्न कुरान में एक विस्तृत भूमिका वाले प्राणी हैं।
वे पुरानी अरब परियों की कहानियों और किंवदंतियों और मूर्तिपूजक धर्म से "उधार" लेते हैं। अल्लाह ने बनाया
उन्हें आग से, किताब बताती है - हालांकि एक जगह ऐसा कहा जाता है कि वे एक . की आग से बने हैं
चिलचिलाती हवा। उनके आकार के बारे में बहुत कम कहा गया है - शायद मोटे तौर पर इंसानों की तरह, लेकिन यह भी
शायद विभिन्न आकृतियों के साथ क्योंकि शब्द विभिन्न प्रकार के प्राणियों का प्रतिनिधित्व कर सकता है। वे भी
"देवताओं" में एक व्यापक भूमिका है - वे निश्चित रूप से स्वर्ग में नहीं हैं, लेकिन न तो
नरक में। वे कहां हैं, इसके बारे में कुछ नहीं कहा गया है। के बारे में भी कुछ नहीं कहा गया है
स्वर्ग और नरक के "जीवन" में उनकी भूमिका या "निवासियों" के साथ उनका वास्तविक संबंध
दो स्थान - या पृथ्वीवासियों को। जैसा हमने कहा; उनके और उनके जीवन के विषय में बहुत कुछ फैला हुआ है,

सिवाय इसके कि वे ऐसे प्राणी होने चाहिए जो मर सकते हैं - और अंत में नरक में ज्यादातर ऐसा लगता है, भले ही
कुरान बताता है कि वे इस्लाम के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया दे सकते हैं। जैसा कि कहा गया है कि वे पुराने अरब से उधार लिए गए हैं
लोककथाओं, परियों की कहानियों और पुराने बुतपरस्त धर्म, और ज्यादातर ऐसा लगता है कि वास्तव में इसमें शामिल नहीं हैं
इस्लाम धर्म, हालांकि उनका उल्लेख अक्सर किया जाता है। आम तौर पर हमें लगता है कि वे एक हैं
ज्यादातर समय थोड़ा संदिग्ध, लेकिन हमेशा नहीं। कुछ थे एफ. भूतपूर्व। राजा के लिए नौकर (या दास)
सुलैमान, और पुराने समय में - 100 साल पहले नहीं - इसके लिए कानून मौजूद होंगे
इंसानों और जिन्नों के बीच शादी आदि, हालांकि कभी कोई शादी नहीं हुई !!

क्या वे वास्तव में छिपी हुई दुनिया में मौजूद हैं? - या वे वास्तव में सिर्फ परी से कुछ हैं
रहस्यमय प्रभाव के लिए प्रयुक्त किस्से? इसके अलावा: यदि वे वास्तविक हैं और यदि इस्लाम मूल है, तो आयु-
पुराना धर्म - हमें अन्य धर्मों में कम से कम उनके निशान क्यों नहीं मिलते? (शब्द
कभी-कभी "बुरी आत्माओं" और बुरे थूक के साथ अनुवाद किया जाता है जो आपको कई धर्मों में मिलता है, लेकिन यह
अनुवाद सटीक नहीं है।)

००डी ५५/१५: "और उसने (अल्लाह*) जिन्नों को धुएँ से मुक्त आग से पैदा किया।" जिन्न से प्राणी हैं
पुराने अरब लोकगीत, परियों की कहानियां और पुराने अरब बुतपरस्त धर्म से संबंधित किंवदंतियां। क्या यह सिर्फ
सह-घटना है कि ये प्राणी अल्लाह की दुनिया में हैं - कि कुरान के अनुसार वास्तविक प्राणी हैं -
पहले केवल बुतपरस्त अरबों के लिए जाना जाता था और किसी अन्य को नहीं, यहां तक कि वास्तविक (?)
बाइबिल में भविष्यद्वक्ता? पूरी दुनिया के लिए एक धर्म में और पूरी दुनिया के लिए एक भगवान द्वारा बनाया गया,
उन्होंने पूरी दुनिया में सिर्फ उस क्षेत्र के अलावा किसी अन्य स्थान पर खुद को प्रकट नहीं किया।
क्या ही सौभाग्य की बात है कि अल्लाह अंत में सिर्फ एक अरब - मुहम्मद - को एक के लिए चुनता है
दूत, ताकि वह बाकी दुनिया को बता सके कि वास्तविक में जिन्न क्या भूमिका निभाते हैं
धर्म। लेकिन यह भी अजीब है कि बाइबल से उधार ली गई चीज़ों के अलावा और थोड़ी-बहुत
अन्य पड़ोसी धर्म, कुरान में दुनिया के बाकी हिस्सों के बारे में या उससे कुछ भी नहीं है
- **और कुरान में दुनिया के उन हिस्सों से कोई सामान नहीं है, भले ही अल्लाह सभी के लिए है**
उसी के अनुसार सारे जगत में और सब समय के भविष्यद्वक्ता हुए हैं
किताब। ऊपर 27/39 भी देखें।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 3, खंड 16 (= II-1-3-16)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The
मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। ए
कुरान में ऐसी गलतियों और त्रुटियों की संक्षिप्त सूची
थीम द्वारा व्यवस्थित

अवलोकन के लिए अधिकतर प्रत्येक या समान प्रकार में से एक। 16 खंड।

("पूर्ण" सूची भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 से 8 तक है।)

कुछ स्पष्ट गलतियाँ और विभिन्न विषयों के बारे में त्रुटियाँ कुरान में - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

२१६

पेज 217

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

टिप्पणियों को ३ नंबरों (०० या ० सहित) द्वारा क्रमांकित किया गया, कुछ स्थानों के बाद एक छोटा पत्र = स्पष्ट गलतियाँ। टिप्पणियों की संख्या 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षर (बड़ा या .) छोटा) = संभावित गलती।

001 2/145+146: "यदि आप ज्ञान के बाद (नए क़िबला (= किस दिशा का सामना करना है) के बाद जब आप प्रार्थना कर रहे हों)*), उनकी (पुस्तक के लोग*) (व्यर्थ) इच्छा का पालन करने के लिए - फिर क्या तुम वास्तव में (स्पष्ट रूप से) गलत थे। किताब के लोग इसे वैसे ही जानते हैं जैसे वे अपने को जानते हैं अपने बेटे।" लेकिन यह सबसे स्पष्ट है कि यह सच नहीं है - न तो यहूदी और न ही ईसाई इसे जानते हैं - - - और विशेष रूप से ईसाई नहीं, जिनके पास क़िबला नहीं है - प्रार्थना करते समय सामना करने की दिशा। (चर्च ज्यादातर अपनी मण्डली का मुख पूर्व की ओर करते हैं, लेकिन कोई क़िबला नहीं है)। इसी तरह की जानकारी 2/149.

***002 2/256: "- - - धर्म में कोई बाध्यता नहीं - - -"। शांतिपूर्ण साबित करने के लिए यह "प्रमुख" इस्लाम, जिसका अधिकांश मुसलमानों द्वारा प्रतिदिन उपयोग किया जाता है और स्वयं इस्लाम द्वारा बहुत बार, बहुत गलत है, क्योंकि यह कम से कम इन छंदों द्वारा अधिक खूनी और द्वारा निरस्त (अमान्य बना दिया गया है) अमानवीय बाद में मदीना सूरह: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, २५/५२, ३३/६१, ३३/७३, ३५/३६, ४७/४, ६६/९ (सीए. ३० विभिन्न छंद !!!)। इसमें कई शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह देना या अनुमति देना (तलवार के साथ) पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। (कम से कम 29 विरोधाभास)। (जैसा कि ५/३३ के लिए: याद रखें कि लगभग सभी मुहम्मद ने जो युद्ध और छापे लड़े, वे आक्रमण के युद्ध थे, भले ही उन्होंने इसे जिहाद कहा हो - यहां तक कि बद्र, उहुद और ट्रेंच/मदीना भी आक्रमण के युद्ध में रक्षा की लड़ाई थे मुहम्मद के छापे द्वारा शुरू किया गया और जीवित रखा गया - मुख्य रूप से पैसे के लिए। गैर-मुसलमानों को नहीं करना चाहिए 5/33 के अनुसार अपना और अपने सामान का बचाव करें)। **मुसलमान कभी नहीं - कभी नहीं - उल्लेख करें कि यह श्लोक पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है, और इस प्रकार मूल्य के बिना।**

इसके अलावा तलवार के अलावा और भी कई तरह की मजबूरियां हैं- अर्थव्यवस्था, क्रूर कर, सामाजिक कलंक, "बेरुफ़्सवरबॉट" (अच्छे काम निषिद्ध), शारीरिक असुरक्षा, आदि। और वे सभी तलवार से समर्थित थे - अनुरूप और आज्ञाकारिता और भुगतान या फिर - - - !!

यह जोड़ा जाना चाहिए कि कुछ मुसलमान इस बकवास को अच्छे विश्वास में कहते हैं - वे वास्तव में इसे मानते हैं। **लेकिन एक भी मुसलमान अपने धर्म में शिक्षित नहीं है, यह नहीं जानता कि वह हर बार झूठ बोल रहा है उनका कहना है कि इस्लाम के तहत धर्म में कोई मजबूरी नहीं है - लेकिन फिर बचाव और इस्लाम को बढ़ावा देने के दो मामले हैं जहां अल-तकिया (वैध झूठ), न केवल है वैध है, लेकिन इस्लाम में अनिवार्य है,** यदि इसका उपयोग करना आवश्यक है। (एक छोटा PS: इनमें से एक या दो छंद २/२५६ से थोड़ी पुरानी हो भी सकती है और नहीं भी, लेकिन इस्लाम में एक बार लंबी बहस छिड़ गई थी एक पुराना पद एक छोटे को निरस्त कर सकता है, और निष्कर्ष यह था कि यह संभव था)।

एक अंतिम छोटा, लेकिन आवश्यक तथ्य: 2/256 यह नहीं कहता है कि "इसमें कोई बाध्यता नहीं है" धर्म" जैसे मुसलमान अक्सर इसे उद्धृत करते हैं - यह कहता है "धर्म में कोई बाध्यता न हो"। यह किसी तथ्य का कथन नहीं है, बल्कि एक मांग या इच्छा है।

पेज 218

यदि इस पद को निरस्त नहीं किया गया होता, तो यह "खुशखबरी" होता। हाँ, भले ही मुसलमानों ने
ईमानदार रहा और बताया गया कि कविता को कम से कम 30 कठोर बाद के छंदों ने निरस्त कर दिया है -
कम से कम इसने मुसलमानों के नैतिक स्तर को इतना ईमानदार बनाने में मदद की थी।

**००३ ३/१५४: "भले ही आप अपने घरों में रहे हों (की लड़ाई में भाग लेने के बजाय)
उहूद, जहां बहुत से लोग मारे गए*), जिनके लिए मौत का फैसला किया गया था, निश्चित रूप से होगा
अपनी मृत्यु के स्थान पर चले गए (= वे किसी भी तरह मर गए थे *)"। यहाँ हमारे पास है
पूर्वनियति। तुम युद्ध भी कर सकते हो, क्योंकि अल्लाह ने बहुत पहले ही निश्चय कर लिया है कि तुम कब
मरना हैं। यदि आपका समय समाप्त हो गया है, तो आप मर जाएंगे, भले ही आप अपने बिस्तर पर पड़े हों। वह
इसका मतलब है कि युद्ध करना खतरनाक नहीं है, लेकिन आप बहुत सारा धन जीत सकते हैं - या गुलाम - और अगर
आप युद्ध में मर जाते हैं, आप अपने विलासितापूर्ण जीवन और तैयार घंटों के साथ स्वर्ग जाना सुनिश्चित करते हैं (in .)
आपकी पत्नियों के अलावा), जिसके बारे में आप निश्चित नहीं हैं कि आप घर पर मरते हैं। एकमात्र बुद्धिमान
करने की बात यह है कि आप अपने नबी - या उसके उत्तराधिकारियों के लिए लड़ें। आज साबित करना आसान है
आँकड़े हैं कि यह बहुत गलत है - लेकिन मुहम्मद को आँकड़ों के बारे में नहीं पता था (और एक भगवान था
यह मूर्खता जानने के लिए आंकड़ों की भी जरूरत नहीं थी)। दरअसल इस्लाम आज बैक-पेडल बहुत
पूर्वनियति से संबंधित बहुत कुछ - बता रहा है f. भूतपूर्व। कि कुरान का मतलब असली नहीं है
पूर्वनियति - लेकिन यह बताए बिना कि यह क्या है। **लेकिन कुछ मामलों में किताब तो है
स्पष्ट, कि इसे दूर से समझाना असंभव है - f. भूतपूर्व। बयानों से जुड़ी कई जगह
कि जब तुम्हारा समय समाप्त हो जाएगा, तो तुम किसी भी तरह से मर जाओगे, और इसलिए तुम युद्ध में भी जा सकते हो।
एक कुशल युद्ध धर्म।** एफ देखें। भूतपूर्व। 3/154)।

००४ ३/१९०: "- - - समझदार लोगों के लिए वास्तव में निशानियाँ हैं - - -"। मनोवैज्ञानिक रूप से a
अच्छा नारा; जो ज्ञानियों में शामिल नहीं होना चाहता, और जिसकी चापलूसी नहीं होती
एक नेता के अर्ध-देवता द्वारा बुद्धिमानों में शामिल किया जा रहा है? - विशेष रूप से अशिक्षित
और भोले-भाले अनुयायी - - - या ब्रेनवॉश करने वाले। लेकिन केवल दो चीजें असली आदमी
समझ उन बयानों से सीख सकती है जो स्पष्ट रूप से अमान्य हैं, क्योंकि वे सिर्फ सस्ते हैं
ऐसे शब्द जो कभी सिद्ध नहीं होते - केवल माँगों द्वारा समर्थित और अंध विश्वास के लिए चापलूसी:

1. पहला संभावित निष्कर्ष एक आदमी समझ बना सकता है: **मुहम्मद हदी कोई वैध तर्क नहीं - यदि उसके पास वास्तविक था और सच्चे तर्क, उसे इस्तेमाल नहीं करना पड़ा अमान्य वाले।**
2. **अन्य संभावित निष्कर्ष एक आदमी इससे समझ बन सकती है कि कुछ गंभीर रूप से गलत है। आख़िरकार गलत जानकारी, अमान्य तर्क, और कभी-कभी झूठ, एक की पहचान है धोखेबाज, धोखेबाज और ठग। प्लस से गलत तथ्य आपको गलत उत्तर मिलते हैं।**

2/99 भी देखें।

005 4/11+12: विरासत के बारे में छंद इस्लाम में स्पष्ट नहीं हैं। मुहम्मद ने कहा
निश्चित अनुपात। लेकिन परेशानी यह है कि वे अनुपात पूर्ण से अधिक जोड़ सकते हैं
संपत्ति का मूल्य। अगर वहाँ एफ. भूतपूर्व। क्या पुरुष की मृत्यु के बाद ये उत्तराधिकारी होते हैं: 1 पत्नी = 1/8
(3/24), 3 बेटियां = 2/3 (16/24), 1 पिता = 1/6 (4/24) और 1 मां = 1/6 (4/24)। यदि आप जोड़ते हैं
ये आप देखेंगे कि उन्हें 27/24 विरासत में मिला है, जो गणितीय और व्यावहारिक रूप से है
असंभव। या अगर एक आदमी मर जाता है और केवल एक बहन और एक भाई को छोड़ देता है: बहन को ½ और मिलता है
बहन को जो मिलता है उसका दुगना = ३/२, जो एक बेतुका मजाक है। और क्या होगा अगर एक आदमी

2 पत्नियाँ थीं, एक बच्चे के साथ और दूसरी नहीं: क्या बच्चे वाले को 1/8 और दूसरे को मिलता है
? आदि विरासत से संबंधित न्यायिक समस्याएं इस्लाम के तहत जटिल हैं क्योंकि
ये गलतियाँ। लेकिन कहा जाता है कि शेयरों को अल्लाह, सर्वज्ञ द्वारा ठहराया जाता है !!!

00a 5/60: "जिन्होंने अल्लाह के श्राप और उसके प्रकोप को झेला, उनमें से कुछ को उसने बदल दिया"
वानर और सूअर में - - -"। शायद ही। इसके लिए पुख्ता सबूत चाहिए।

वे विश्वास नहीं करेंगे? गलत। (यदि किसी ईश्वर के वास्तविक प्रमाण होते, तो कम से कम अधिकांश निशानियां आईं,
लोग मानेंगे - यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है। मोहम्मद ने यह भी साबित कर दिया कि वह जानता था कि
बता रहे हैं कि मूसा के कुछ चमत्कारों ने फिरौन के जादूगरों को मुसलमान बना दिया। और यीशु
दिखाया कि चमत्कारों ने लोगों को विश्वास दिलाने के लिए चमत्कार किया - और मुहम्मद
कम से कम उसके बारे में थोड़ा तो जानता था। वाक्य वास्तव में "समझाने" के लिए तेजी से बात करने जैसा लगता है क्योंं
अल्लाह/मुहम्मद अल्लाह के लिए अचूक सबूत पेश करने में असमर्थ थे। **बदतर: An
मुहम्मद जैसा बुद्धिमान व्यक्ति जानता था कि यह तर्क झूठ है - और फिर भी उसने इसका इस्तेमाल किया
बार बार। यह कुरान की उन जगहों में से एक है जहां मुहम्मद उसे जानते थे
झूठ बोलना।** इसी तरह का दावा एफ. भूतपूर्व। 17/59 में।

००बी ६/१४५: "मुझे (मुहम्मद*) प्रेरणा से प्राप्त संदेश में कोई नहीं मिला
(मांस) खाने के लिए मना किया जाता है - - - जब तक कि यह मृत मांस, या खून से भरा किला, या का मांस न हो
सूअर - क्योंकि यह एक घृणित है (कोई नहीं जानता कि यह क्यों प्रतिबंधित है*) - या - - - (मांस) पर
जिसे अल्लाह के अलावा किसी और नाम से पुकारा गया है।" यह सूरह "दिखाई" सीए। 621 ई.
लगभग ६ साल बाद अल्लाह या मुहम्मद ने स्पष्ट रूप से पाया कि उन्होंने एक गलती की है और
भूल गए कि गधों का मांस भी मुसलमानों के लिए वर्जित है - हदीसों के अनुसार यह (एफ।
भूतपूर्व। अल-बुखारी) तब उस तरह के मांस को जोड़ने के लिए इस आयत को निरस्त कर दिया गया था। यह एक है
उन मामलों में जहां हदीस द्वारा कुरान को निरस्त कर दिया गया है। (लेकिन सावधान रहें कि अगर एक मुसलमान को मजबूर किया जाता है
इस प्रकार के मांस का सेवन करें - f. भूतपूर्व। सरासर भूख से - या इसे खाने के लिए धोखा दिया जाता है - f. भूतपूर्व। कोई व्यक्ति
उसे गलत तरीके से बताता है कि सॉसेज में सूअर का मांस नहीं है और वह जो कहा जाता है उस पर भरोसा करता है - तो यह नहीं है
पाप)। 2/173 - 16/115 में भी ऐसा ही दावा।

००७ ६/१४६: "उन लोगों के लिए जो यहूदी कानून का पालन करते थे, हमने (अल्लाह*) हर किसी को (खाने के लिए) मना किया था
(पशु) अविभाजित खुर के साथ, और हमने उन्हें बैल और भेड़ की चर्बी से मना किया - - -"।
इस तथ्य को छोड़कर कि अल्लाह और यहूदियों का ईश्वर, यहोवा एक ही ईश्वर नहीं है - तब तक नहीं
वह सिज़ोफ्रेनिक है - सही अंतिम भाग है: - - - "पशु, भेड़ या बकरी की चर्बी" (3. Mos.
7/23)। एक छोटी सी गलती, लेकिन एक सर्वज्ञ देवता बकरी को नहीं भूले थे।

००८ ६/१५१: "आओ, मैं (मुहम्मद*) अभ्यास करूंगा कि अल्लाह ने तुम्हें क्या मना किया है (वास्तव में)
से - - - (f. e x.*) अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करें"। यह बहुत स्पष्ट रूप से गलत है और थोड़ा सा है
कुरान में अन्य स्थानों की तुलना में विरोधाभास - मुहम्मद का स्पष्ट रूप से मतलब था
बिल्कुल विपरीत; कि आपको अपने माता-पिता के लिए भगवान होने का आदेश दिया गया था। एक सर्वज्ञ देवता
ऐसी गलती नहीं करेंगे। कुरान किसने बनाया?

**साथ ही मुस्लिम विद्वान इस बात से सहमत हैं कि यहां पाठ गलत है - यह बिल्कुल विपरीत है
कुरान इस बारे में अन्य सभी जगहों पर कहता है। जो आपको के खिलाफ एक अपराजेय सबूत देते हैं
कोई भी मुसलमान यह शेखी बघारता है कि किताब बिना किसी गलती के है। एक प्रमाण और एक तथ्य
इस्लाम द्वारा स्वीकृत!** (और इसके अलावा: अगर यहाँ कोई गलती है, तो और कितने हैं?) Just
याद रखें: ६/१५१ (स्कैंडिनेवियाई में ६ = सेक्स, और १५१ में दोनों सिरों पर सेक्स होता है (१ + ५ = ६, और ५ + १)
= ६)। याद करने के लिए आसान।

२१९

पृष्ठ २२०

00c 7/56: "पृथ्वी पर कोई शरारत न करें, इसके क्रम में सेट होने के बाद - - -"। हमारी किताब के अनुसार,
हत्या, बलात्कार, चोरी/लूटना, घृणा, दमन, हत्या, युद्ध आदि शरारतें हैं। लेकिन हो सकता है
यह केवल मुसलमानों के खिलाफ है जो अनैतिक और निषिद्ध है? (उदाहरण: क्रूसेडर बुरा कर रहे हैं
मुसलमानों के लिए चीजें बुरे लोग थे। मुसलमान ऐसा ही कर रहे हैं और गैर-मुसलमानों के खिलाफ भी बदतर हैं
एफ में भूतपूर्व। सिंध (अब मुख्य रूप से पाकिस्तान) या अफ्रीका नायक थे - और इससे भी बदतर; वे आज भी हैं
नायक माना जाता है)।

00d 7/102: "उनमें से अधिकांश (लोग *) हम (अल्लाह *) ने पुरुषों को उनकी वाचा के प्रति सच्चे नहीं पाया - - -"।
"कुरान का संदेश" (7/102, टिप्पणी 81) बताता है कि शब्द के लिए सटीक शब्द
अनुवाद है: "हमें उनके द्वारा ऐसा कुछ भी नहीं मिला जो उन्हें सत्य और सही से बांधे"। और कि
पुस्तक यह कहकर जारी रखती है कि इसमें मनुष्य की सहज रूप से देखने की क्षमता शामिल हो सकती है
सही और गलत के बीच का अंतर।

अब तथ्य यह है कि कुछ सबसे बुनियादी नैतिक सवालों का जवाब कई में एक ही मिलता है
समाज इंगित करता है कि मनुष्य के भीतर की कोई बात कुछ सामान्य नैतिक सत्य बताती है:
चोरी मत करो, आप दूसरों के लिए उपद्रव नहीं करेंगे - या इससे भी बदतर - आप बलात्कार नहीं करेंगे, आप नहीं करेंगे
मारना, आदि। लेकिन इस्लाम और कुरान इस बात का सबसे अच्छा प्रमाण है कि ये आंतरिक संदेश आसान हैं

एक करिश्माई नेता और एक समाज के लिए ओवरराइड करें, और अनैतिक व्यवहार करें a
प्रशंसनीय नैतिक कोडेक्स: चोरी / लूट, बलात्कार, दासता, हत्या, और बहुत कुछ - यह सब "अच्छा और
वैध "कुरान में।

और इस्लाम और कुरान एकमात्र मौलिक रूप से स्वीकार्य नैतिक संख्या के साथ तेजी से टकराते हैं। 1. नियम: अपने जैसे अन्य लोगों के खिलाफ व्यवहार करें चाहते हैं कि दूसरे आपके खिलाफ व्यवहार करें - जो एक दर्शन और एक समाज का निर्माण करने के लिए एकमात्र नैतिक और नैतिक रूप से स्वीकार्य नैतिक है।

००९ ९/३६: "अल्लाह की दृष्टि में महीनों की संख्या बारह (एक वर्ष में) है - इसलिए द्वारा ठहराया गया
उसे (अल्लाह*) - - -"। एक वर्ष वह समय है जब पृथ्वी को सूर्य के चारों ओर एक पूर्ण चक्र बनाने की आवश्यकता होती है। ए
महीना वास्तव में वह समय है जब चंद्रमा को पृथ्वी के चारों ओर एक पूर्ण चक्र बनाने की आवश्यकता होती है। ये दोनों
मंडल सिंक्रनाइज़ नहीं हैं। इस वजह से इस कथन में कुछ गलत है, जैसे 12 इस तरह
महीने प्राकृतिक वर्ष से लगभग 11 दिन कम होते हैं। इस्लामी वर्ष एक कृत्रिम निर्माण है
अल्लाह द्वारा ठहराया गया है या नहीं, मुस्लिम वर्ष वास्तव में एक वर्ष नहीं है (103 मुस्लिम वर्ष =
लगभग 100 वास्तविक वर्ष)। आप मुस्लिमों को उस मुस्लिम वर्ष का महिमामंडन करते हुए पाएंगे जो साथ-साथ चलता है
वास्तविक वर्ष, लेकिन प्लसस माइनस की तुलना में बहुत छोटे हैं - - - प्लस यह कुछ बनाता है
इस कविता के साथ गलत: एक मुस्लिम वर्ष बस एक वर्ष नहीं है।

00e 10/27: "लेकिन जिन्होंने बुराई कमाया है उन्हें बुराई की तरह इनाम मिलेगा - - -"। मुहम्मद, हिस
पुरुषों और उनके उत्तराधिकारियों ने बहुत अधिक बुराई की - चोरी करना/लूटना, बलात्कार करना, गुलाम बनाना,
स्थानों और जीवन और भूमि और संस्कृतियों को नष्ट करना, जबरन वसूली करना, आतंकित करना, यातना देना, हत्या करना,
घृणा और युद्ध और सामूहिक हत्याओं और अन्य मनुष्यों के दमन के लिए उकसाना - केवल इतना ही था
एक भगवान द्वारा स्वीकृत, मुहम्मद के अनुसार, हालांकि एक भगवान है कि मामले में न तो थे
सर्वज्ञ, न ही सर्वशक्तिमान (उन्हें पूर्व में चमत्कारों के लिए सभी प्रश्नों की व्याख्या करनी पड़ी - कुछ
स्पष्ट रूप से तार्किक रूप से अमान्य दावों के साथ), परोपकारी का उल्लेख नहीं करने के लिए - इसमें काफी समय लगेगा
उन्हें "बुराई के समान प्रतिफल" देने के लिए बहुत कुछ।

०१० १०/३१: "'- - - वह कौन है जो सभी मामलों को नियंत्रित और नियंत्रित करता है?' वे (गैर-मुसलमान) जल्द ही
कहो, 'अल्लाह'"। गलत। अन्य धर्मों के लोग अपने स्वयं के भगवान (या देवताओं) का नाम रखेंगे। (हालांकि
उस समय के गैर-मुस्लिम अरब अल-लाह कह सकते हैं - पुराने बहुदेववादी अरब शीर्ष देवता, एक नाम
यह अल्लाह की तरह लगता है।)

०११ १०/९४: "- - - संदेह करने वालों से सावधान रहें (इस्लाम के बारे में)।" सभी गलतियों आदि के साथ
कुरान, संदेह में न होना सरासर भोलापन है, और कम से कम तथ्यों की जांच करें।

२२०

पेज 221

०१२ १०/९६: "वे जिनके विरुद्ध तेरे रब का वचन प्रमाणित हुआ है - - -।" **यह में से एक है
इस्लाम के लिए मुख्य समस्याएं - जैसा कि मुहम्मद के लिए था: कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है
इस्लाम का सत्यापन - एक भी प्रमाण नहीं, और एक स्थान नहीं। केवल सस्ते शब्द
और दावा करता है कि किसी भी मामले में सत्यापित नहीं हैं।** लेकिन अंध विश्वास की महिमा और मांग
आप बहुत पाते हैं।

जब भी हम झांसा देने वाले और बचाव करने वाले झांसे में आने वाले लोगों से मिलते हैं - जैसे यहाँ - हमारे लिए वह दृढ़ता से
न केवल यह दर्शाता है कि उनके पास कोई वास्तविक तर्क नहीं है, बल्कि यह भी है कि वे इसे स्वयं जानते हैं, और
बस इच्छाधारी सोच या विश्वासों की रक्षा करने का प्रयास करें, जिस पर वे मानसिक रूप से सवाल करने में असमर्थ हैं।

०१३ ११/१४: "यदि वे (तुम्हारे झूठे देवता) तुम्हारी पुकार का उत्तर नहीं देते, तो जान लो कि यह प्रकाशितवाक्य
(कुरान*) अल्लाह के ज्ञान के साथ (पूर्ण) नीचे भेजा जाता है, - - -"। यह तार्किक रूप से 100% है
गलत, जैसे झूठे देवता या अन्य देवता उत्तर दें या नहीं, अल्लाह के बारे में कुछ भी साबित नहीं करता है। NS
केवल एक चीज जो अल्लाह को सिद्ध कर सकती है, वह अल्लाह की ओर से अचूक उत्तर या कर्म हैं। क्या ए
भगवान अपने - ज्यादातर अनपढ़ और अशिक्षित - दर्शकों को सस्ते और आदिम तरीकों से धोखा देने की कोशिश करते हैं
इस तरह?

00f 12/111: "यह है - - - समझ के साथ समाप्त पुरुषों के लिए निर्देश।" ऐसा हो सकता है -
कई मुस्लिम विचारक और विद्वान पुरुष बुद्धिमान व्यक्ति थे और हैं। लेकिन किस काम के लिए? -
जब आप सबसे बुद्धिमान व्यक्तियों को भी शुरू से ही गलत जानकारी देते हैं, तो उनका
निष्कर्ष अनिवार्य रूप से सिर्फ गलतियाँ और त्रुटियाँ बन जाते हैं, चाहे वे कितने भी बुद्धिमान क्यों न हों। प्रति
"पीयर गिन्ट" में स्वर्गीय हेनरिक इबसेन को उद्धृत करें: "नार उटगैंग्सपंकटेट एर सैम गैलेस्ट, ब्लर रिजल्टेट टिड्ट"
मूल" - जिसका अर्थ कुछ इस तरह है "जब तथ्य वास्तव में गलत होते हैं, तो परिणाम"
अक्सर बहुत 'मूल' हो जाता है"। साथ ही: "यदि आप सही जानकारी को एक से गुणा करते हैं
छात्र, जब आप गलत जानकारी को एक समूह से गुणा करते हैं, तो आपको इससे बेहतर उत्तर मिलता है
प्रतिभाशाली"।

०१४ १३/१७: "इस प्रकार अल्लाह (दृष्टान्तों के द्वारा) प्रकट करता है - - -"। क्या यह वास्तव में एक सर्वज्ञ हो सकता है
भगवान जो इतनी सारी गलतियाँ दिखाता है? न्येत - एक अच्छा अंग्रेजी शब्द जिसका अर्थ है किसी के साथ नहीं
इसके तहत लाइनें।

०१५ २०/१०६+१०७: "वह उन्हें छोड़ देगा (पहाड़/पहाड़ की जंजीर जो हटा दी जाएगी*)
समतल समतल और समतल। तुम उनके स्थान पर कुछ भी टेढ़ा या टेढ़ा नहीं देखोगे"। यह ऐसा होगा
समतल पृथ्वी पर सही हो। लेकिन चूंकि पृथ्वी घुमावदार है, इसलिए कम से कम घुमावदार रेखाएं तो होनी ही चाहिए
जहां बड़ी-बड़ी पर्वत श्रृंखलाएं हटाई जाएंगी। कोई भगवान जानता था।

०१६ २०/११६: "अपने आप को आदम को सजदा करना"। गलत, जैसा कि आदम कभी अस्तित्व में नहीं था - मनुष्य ने विकसित किया
एक रहनुमा से। हमने कुछ समय पहले कुछ मुसलमानों से इस बारे में बहस की थी और उन्होंने
विजयी रूप से हमें बताया कि हम गलत थे, क्योंकि अब विज्ञान ने पाया था कि एक ईव थी
और एक आदम। जो काफी हद तक सच है। परन्तु जिस बात का उन्होंने उल्लेख नहीं किया, वह यह थी कि यह हव्वा जीवित थी
लगभग 160ooo - 200ooo साल पहले, और एक तथाकथित "अड़चन" का प्रतिनिधित्व किया - एक समय जब
मानव जाति लगभग समाप्त हो गई थी और केवल हव्वा की बालिकाएँ थीं, या दूसरी लड़की का डीएनए
बच्चे बाद में मर गए (यह परिणाम माइटोकॉन्ड्रिया डीएनए - एमडीएनए - और एमडीएनए के परीक्षणों से है)
केवल कहानी के स्त्री पक्ष के बारे में बताता है, क्योंकि माइटोकॉन्ड्रिया केवल माता-पिता से बच्चे तक जाता है
अंडा कोशिका के माध्यम से - स्त्री डीएनए ले जाना)। फिर लगभग 60oo+ (ca. 64ooo?) साल पहले,
होमो सेपियन्स के साथ कुछ हुआ। वह अभी भी होमो सेपियन्स था, लेकिन कुछ - विज्ञान
पता नहीं क्या-क्या हुआ जो उसे तकनीकी और अन्य की राह पर चलने लगा
विकास। और एक और अड़चन थी - कुछ ऐसा ही जो हुआ
"पुरातात्विक पूर्व संध्या" - एक बार फिर हुआ। लेकिन इस बार यह Y गुणसूत्र में पठनीय है,
जो केवल पुरुषों के पास है, और फलस्वरूप केवल मर्दाना पक्ष को दर्शाता है। इससे पता चलता है कि सभी

आज रहने वाले पुरुषों का एक सामान्य "पिता" होता है (पुरातत्वविदों द्वारा संयोग से नहीं "द ,"
पुरातात्विक एडम" या सिर्फ "एडम") - एक अकेला आदमी जो 140ooo रहता था (कुछ कहते हैं 100ooo)
ईव की तुलना में वर्षों बाद। उन पुरातत्वविदों ने उनका नाम आदम और हव्वा रखा, काफी तार्किक है। परंतु
उनका बाइबल में आदम और हव्वा से या "आदम और उसकी पत्नी" से कोई लेना-देना नहीं है
कुरान - वे कैसे f. भूतपूर्व। पुरुष और पत्नी बनें जब वे 100ooo - 140ooo वर्ष रहते थे
अलग, और एक अफ्रीका में, दूसरा एशिया में हो सकता है? इस तरह के आवश्यक तथ्यों का उल्लेख नहीं करना
जब वे पुरातात्विक आदम और हव्वा की बात करते हैं, तो हम बेईमान पाते हैं। और कम से कम
इस्लाम में विद्वान - वे जो अपने छात्रों और मंडलियों को पढ़ाते हैं और उनका साक्षात्कार लिया जाता है
और मीडिया में लिखें और बोलें - यह अच्छी तरह से जानते हैं। यह एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथ्य है।

०१७ २२/२९: "- - - उनके लिए (मक्का में हज के दौरान*) निर्धारित संस्कार (मुसलमान*) - - -"। NS
हज के दौरान मक्का में सभी संस्कार अरब में बुतपरस्त/मूर्तिपूजक काल से लिए जाते हैं - और में
इसके अलावा वे हमेशा इतने बचकाने और आदिम होते हैं; 2 पहाड़ियों के बीच 7 बार आगे-पीछे दौड़ें,
एक इमारत के चारों ओर 7 बार घूमें, कुछ पत्थरों को शैतान होने का दिखावा करने वाले निशान पर फेंकें, और
एक या एक से अधिक असहाय जानवरों को मारना, यही मुख्य कार्य हैं। एक सर्वज्ञ भगवान सक्षम होना चाहिए
आत्मा के लिए और भगवान के लिए और अधिक मूल्यवान कुछ लिखने के लिए।

1. किसने पुराने बुतपरस्त संस्कारों को अधिकार बताया?
   केवल अनुमान के लिए, असली भगवान?
2. किसने इतना उथला, आदिम, और निर्धारित किया
   एक अनुमानित अथाह के लिए बचकाना संस्कार,
   "गहरा" भगवान?
3. किसने निर्धारित किया कि न तो कोई संस्कार से
   दुनिया में कहीं और, न ही कुछ
   अल्लाह की ओर से नया और आत्मीय होना चाहिए
   एक अनुमानित विश्व धर्म में इस्तेमाल किया जा सकता है - केवल
   बुतपरस्त पुराने के पुराने, उथले बुतपरस्त संस्कार
   अरब - और केवल अरब - योग्य था
   केवल असली भगवान?
4. कैसे हुआ कि अन्य सभी भविष्यद्वक्ताओं में से कोई नहीं
   यहाँ तक कि इन संस्कारों के बारे में भी सुना - न यीशु
   न ही वास्तव में "दस्तावेज" भविष्यवक्ताओं में से कोई भी
   मक्का जाने की भी कोशिश की - अगर वे थे और
   क्या भगवान वास्तव में सोचते हैं कि एक आवश्यक है
   एक आस्तिक के लिए जो आवश्यक है उसका हिस्सा और a
   भगवान के प्रति कर्तव्य?

00g 22/33: "- - - उनका बलिदान का स्थान प्राचीन घर (काबा*) के पास है।" गलत। NS
बलि का स्थान मीना में है, काबा से किलोमीटर दूर है।

०१८ २२/३४: "हमने (अल्लाह *) प्रत्येक लोगों के लिए संस्कार (बलिदान के) - - - नियुक्त किए।" बस एस
समस्या: ईसाइयों को किसी भी प्रकार के बलिदान - या संस्कार नहीं दिए गए हैं
ऐसा।" और कितने धर्मों में वास्तव में "उनके भगवान द्वारा दिए गए" संस्कार हैं, और कितने
धर्म इसका दिखावा नहीं करते?

00h 22/37: "यह उनका (बलि के जानवरों का मांस या उनका खून नहीं है, जो अल्लाह तक पहुंचता है: यह
क्या आपकी पवित्रता उस तक पहुँचती है - - -"। क्या एक सर्वज्ञ भगवान को आपको असहाय की हत्या करते देखना है
जानवरों को देखने के लिए कि आप एक पवित्र आस्तिक हैं? - नहीं अगर वह वास्तव में सर्वज्ञ है। अगर अल्लाह सच में
सर्वज्ञ और यदि पशु बलि का एकमात्र उद्देश्य अपनी धर्मपरायणता सिद्ध करना है, तो
बलिदान वास्तव में अर्थहीन है, एक सर्वज्ञ भगवान के रूप में हर समय बहुत अच्छी तरह से जानता है

आप पवित्र आस्तिक हैं या नहीं। दरअसल कुरान कई जगह इसे बिल्कुल बनाता है
स्पष्ट है कि अल्लाह आपकी आत्मा के सबसे गहरे हिस्सों के अंतरतम कोनों को भी जानता है। **प्रति
आपकी धर्मपरायणता का "परीक्षा" या "प्रमाण" क्या है, इसका क्या लाभ और क्या अर्थ है और क्या तर्क है, यदि
अल्लाह पहले से ही जवाब जानता है? - और वैसे: वही होता है
युद्ध और युद्ध में अपनी धर्मपरायणता का परीक्षण करना और मारना और मारना, कुछ ऐसा भी है
अर्थहीन अगर अल्लाह एक अच्छा भगवान होता।**

019 22/40: "- - - मठ, चर्च, आराधनालय, - - -, जिसमें अल्लाह का नाम है
स्मरण किया - - - "। वहाँ अल्लाह का नाम नहीं लिया जाता - इसके विपरीत यह है
यहोवा (या केवल परमेश्वर) का नाम जो वहाँ स्मरण किया जाता है। मुसलमान दावा करेंगे कि यह
वही ईश्वर है - हमेशा की तरह बिना कुछ साबित किए - लेकिन शिक्षाएँ मौलिक रूप से ऐसी हैं
अलग, कि यह असंभव है कि वे तब तक समान हों जब तक कि ईश्वर मानसिक रूप से गंभीर रूप से बीमार न हो।
साथ ही वे दावा करेंगे कि शिक्षाओं में अंतर का कारण यह है कि बाइबल हैं
जानबूझ कर मिथ्याकरण - एक बात के लिए लंबे समय से विज्ञान ने साबित किया है कि वह सच नहीं है (यहां तक कि
सबसे पुराने ग्रंथ आज की तरह हैं', छोटी-छोटी गलतियों को छोड़कर जब पांडुलिपियां सामान्य होती हैं
हाथ से कॉपी किया गया), **और दूसरे के लिए शारीरिक रूप से असंभव था** (इसे बनाना संभव नहीं है
हजारों में फैली सभी हजारों पांडुलिपियों में सभी कनेक्शनों में धांधली
किलोमीटर और हजारों अलग-अलग मालिकों के स्वामित्व में - जो अक्सर असहमत भी होते हैं (यहां तक कि
कभी-कभी जोरदार - एफ। भूतपूर्व। यहूदी और ईसाई) कई विषयों पर और इसका विरोध करेंगे
उनके मूल्यवान और पोषित पवित्र ग्रंथों का मिथ्याकरण)। इसके अलावा: आप कैसे बदलते हैं
एक पुराने शास्त्र में शब्द इस तरह से कि आधुनिक विज्ञान खरोंच को देखने में असमर्थ है या
जो भी हो? - क्योंकि सभी पुरानी पांडुलिपियों को भी "सही" किया जाना था, न कि केवल का परिवर्तन
ग्रंथ जब नई प्रतियां लिखी गईं। लेकिन यह कभी साबित नहीं हुआ कि बाइबल को गलत ठहराया गया है
एकमात्र रास्ता और एकमात्र तरीका मुहम्मद अपने धर्म और अपने मंच को बचा सकता था
शक्ति जब वह अंततः समझ गया कि उसकी शिक्षाओं और शिक्षाओं के बीच कितना अंतर था
बाइबिल।

00i 29/2: "क्या पुरुष सोचते हैं - - - उनका परीक्षण नहीं किया जाएगा?" लेकिन क्यों?! अगर अल्लाह सर्वज्ञ है और
सब कुछ पहले से जानता है - यहाँ तक कि सब कुछ पहले ही तय कर लेता है (इस दावे के बावजूद कि मनुष्य के पास है
(कुछ मुसलमानों के अनुसार सीमित) निर्णय लेने की व्यक्तिगत स्वतंत्रता - हालांकि इस्लाम भी है
यह समझाने में असमर्थ है कि इस कथन को कैसे जोड़ा जा सकता है कि अल्लाह सब कुछ तय करता है
पहले, इस कथन के साथ कि मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा है (अजीब नहीं, क्योंकि यह समय का एक संस्करण है
यात्रा विरोधाभास, और वह विरोधाभास सुलझने योग्य नहीं है)) - **यदि यह सब है, तो उत्तर खोजने के लिए परीक्षण क्यों करें
अल्लाह पहले से जानता है?**

०२० २९/६९: "और जो लोग हमारे (कारण) में प्रयास करते हैं - हम (अल्लाह *) निश्चित रूप से उनका मार्गदर्शन करेंगे
हमारे रास्ते - - -"। कुरान में इतना गलत होने के साथ, संभावना है कि यह भी गलत है। कम से कम
यह निश्चितता से बहुत दूर है। एफ पूर्व में इसी तरह के दावे। 2/137 - 27/79।

००ज ३०/३२: "जो अपने धर्म को तोड़कर (मात्र) संप्रदाय - - -" बन जाते हैं। हम हो चुके हैं
बताया कि वहां मौजूद हैं या कुछ 3ooo मुस्लिम संप्रदाय मौजूद हैं। हम सत्यापित करने में सक्षम नहीं हैं
संख्या, लेकिन यह स्पष्ट है कि काफी संख्या में हैं - सऊदी अरब में वहाबवाद से और सख्त,
अमदियास और अन्य को। यह भी स्पष्ट है कि इतिहास के माध्यम से और भी बहुत कुछ हुआ है -
कुछ को खून में भी मिटा दिया गया है, क्योंकि धर्म में कोई बाध्यता नहीं है, के अनुसार
इस्लाम। जैसा कि कुरान को बहुत स्पष्ट और समझने में आसान कहा गया है, एक अनुचित प्रश्न

is: कौन सा संप्रदाय इसे सही ढंग से समझता है? - और बाकी सभी इसे क्यों समझते हैं
अलग तरह से? - और आखिरी, लेकिन बहुत कम से बहुत दूर: वास्तव में सही समझ क्या है?

०२१ ३०/२-४: "रोमन साम्राज्य (बीसेंट्ज़/कॉन्स्टेंटिनोपल*) को (फारस* द्वारा) पराजित किया गया है
निकट की भूमि (दमिश्क ६१३ ई., यरुशलम ६१४ ई., मिस्र ६१५-६१६ ई. - एक युद्ध हो सकता है

सीरिया में ६१५ ईस्वी में - बस अपनी पसंद चुनें (सूरा ६१५ या ६१६ ईस्वी से है)); लेकिन वे,
(यहां तक) इसके बाद (इस) उनकी हार जल्द ही विजयी होगी - कुछ ("बोली") वर्षों के भीतर।
६२८ ईस्वी में बिसांट्ज़ ने फारस को हराया, जब उन्होंने पहली बार की शुरुआत में कई हार का सामना किया था
युद्ध।

1. अरब शब्द "बोली" का अर्थ है "कुछ" और "अर्थात् संख्या 3 से कम नहीं, अधिक नहीं" 9 से "इस सूरह के लिए टिप्पणी 2 के अनुसार" "कुरान के संदेश" में। यह ले लिया कम से कम 12 साल।
2. यह उनके अनुयायियों के लिए एक उत्साहवर्धक बात थी। कोई नहीं - स्वयं मुहम्मद ने भी नहीं - कहा कि यह एक भविष्यवाणी थी - - - सिवाय इसके कि कई मुसलमान बाद में ऐसा कहते हैं।
3. कुरान से साफ है कि मुहम्मद के पास होने का उपहार नहीं था भविष्यवाणी करने में सक्षम (एक प्रकार का चमत्कार), और यह इतना स्पष्ट है कि उसने कभी दावा भी नहीं किया या उस उपहार को पाने का नाटक किया। यह सिर्फ एक था (कुछ) मामलों में जहां वह सब से थोड़ा सा कहा कि उनके जीवन के माध्यम से आंशिक रूप से आया था सच (वास्तव में: इतना कि उसने कहा और बोला यह एक चमत्कार है कि अब और नहीं हुआ सच - और इस मामले की तुलना में अधिक सच है। और ध्यान दें: इस्लाम का यही एकमात्र भारी दावा है उसके बारे में भविष्यवाणी करने में सक्षम होने के बारे में। कई सिद्धांत और दावे हैं इस क्षमता के बारे में उन्होंने कहा कि उन्होंने दावा नहीं किया या स्वयं अभ्यास करें, लेकिन यह केवल एक ही है इस्लाम को एक "भारी" दावा माना जाता है।

०२२ ३२/२२: “और उस से अधिक अधर्म कौन करेगा जिसे उसके रब की आयतें सुनाई जाती हैं
(अल्लाह*) और फिर कौन उससे मुकरता है?” a . पर संदेह करने में कुछ भी गलत नहीं है
धर्म केवल एक किताब पर बना है जिसमें कई गलतियाँ हैं और एक भी वैध प्रमाण नहीं है, और साथ में
बिना किसी मूल्य के कई "संकेत" और "सबूत", और जिनमें धोखाधड़ी का प्रभाव हो सकता है
अशिक्षित या बुद्धिमान व्यक्ति - और सबसे ऊपर एक किताब जो केवल एक आदमी द्वारा बताई जाती है
जिसकी ईमानदारी सामान्य, बुद्धिमान लोग उसके कर्मों की नैतिकता के कारण संदेह करेंगे
और मांगें और उनके कुछ शब्द -

जब एक आदमी अच्छा उपदेश देता है, लेकिन करता है और बहुत कुछ बुरा मांगता है, तो हम उसके कामों और मांगों पर विश्वास करते हैं उसके शब्दों से ज्यादा। शब्द बस बहुत सस्ते हैं।

०२३ ३३/८: "वह (अल्लाह) सत्य के (संरक्षकों (33/8 के ठीक ऊपर * देखें)) पर सवाल उठा सकता है
सत्य के विषय में (उन पर आरोप लगाया गया था) - - -"। कुरान कहता है/दिखावा करता है कि पुराना
इज़राइल के शास्त्र कुरान के समान ही थे, लेकिन बुरे यहूदियों ने उन्हें विकृत कर दिया। अगर वह था
सच था, उन पर सबसे अच्छा आरोप लगाया गया था - सभी गलतियों को देखें, उदात्त
कुरान में "स्पष्टीकरण" और अमान्य "संकेत" और "सबूत"।

०२४ ३३/६२: "(ऐसा था) अल्लाह के अभ्यास (गैर-विश्वासियों को बिना दया के मारना) (अनुमोदित)
उन लोगों में जो पहले से रहते थे: आप के अभ्यास (अनुमोदित) में कोई बदलाव नहीं पाएंगे
अल्लाह।" मुहम्मद यहाँ मोज़ेक और ईसाई धर्मों को संदर्भित करता है (और वह अल्लाह को सेट करता है =

पेज 225

यहोवा) जब वह "उन लोगों के बारे में बात करता है जो पहले से रहते थे"। लेकिन भले ही ओटी कठिन है
कई गैर-यहूदियों के खिलाफ, युद्ध और हत्या यहूदियों के लिए रहने के लिए जगह पाने के लिए थी, नहीं
केवल इसलिए कि वे यहूदी नहीं थे, या लूट और दास के लिए नहीं थे। और **एनटी में: कोशिश करें
एक जगह खोजने के लिए यह कहते हुए कि अविश्वासियों की हत्या सिर्फ इसलिए की जाएगी क्योंकि उनके पास है
एक और धर्म - ऐसा आदेश बस मौजूद नहीं है। कोई भगवान झूठ बोल रहा था अगर उसने कहा
यह, लेकिन मुहम्मद अच्छी तरह से बाइबल को नहीं जानते थे, इसलिए हो सकता है - बस हो सकता है - उन्होंने सोचा
उसने सच बोला।** किसी भी मामले में यह एक सरदार के लिए एक अच्छा बयान था जो सुरक्षित करने की कोशिश कर रहा था और
सत्ता के अपने मंच का विस्तार करें। (यह सूरह ६२७ - ६२९ ईस्वी - उसके पहले का माना जाता है
630 ईस्वी में मक्का पर विजय प्राप्त करके पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लिया था।)

**०२५ ३५/२४: "- - - और कोई भी लोग नहीं थे, बिना चेतावनी देने वाले (अल्लाह के लिए एक नबी*)
उनके बीच रहते हुए (अतीत में) - - -"। जैसा कि पहले कहा गया है: न पुरातत्व में, न ही में
न वास्तुकला में, न कला में, न इतिहास में, न साहित्य में, न लोककथाओं में, न लोक कथाओं में - नहीं
यहां तक कि परियों की कहानियों में भी हमें एकेश्वरवाद के किसी भी शिक्षण का एक ही निशान मिलता है, जिसमें दो प्रसिद्ध हैं
(यहोवा और अल्लाह) और दो या तीन कम ज्ञात अपवाद (फिरौन अकन-एटन, प्रार्थना करते हुए
सूर्य, एक अरब संप्रदाय लगभग ६०० ईसा पूर्व - संभवतः दो एकेश्वरवादी धर्मों से प्रेरित था
क्षेत्र, और पारसी एक फैशन के बाद)। कुछ जगहों पर एक या एक से अधिक देवताओं का बोलबाला है, लेकिन नहीं
एकेश्वरवाद के निशान।

अमेरिका में - बिल्कुल कोई निशान नहीं।

ऑस्ट्रेलिया में - बिल्कुल कोई निशान नहीं।

प्रशांत में - बिल्कुल कोई निशान नहीं।

यूरोप में - बिल्कुल कोई निशान नहीं।

अफ्रीका में - एक अकेले आदमी के अपवाद के साथ बिल्कुल कोई निशान नहीं: फिरौन अकन-एटन - बट
वह निश्चित रूप से अल्लाह के बारे में नहीं बोल रहा था। वह एकमात्र भगवान के लिए सूर्य चाहता था।

एशिया में - बिल्कुल कोई निशान नहीं, सिवाय इसके कि अब हम मध्य पूर्व कहते हैं: ईसाई, द
प्रसिद्ध यहूदी और जैसा कि पहले ही पारसी (एक फैशन के बाद) और एक कम कुएं का उल्लेख किया गया है
ज्ञात अरब एकेश्वरवादी और उस समय बहुत पुराना संप्रदाय नहीं था - संभवतः यहूदियों से प्रेरित था।
बेशक बुद्ध थे, लेकिन वे कोई भगवान नहीं थे, और इसके अलावा उन्होंने स्वीकार किया कि देवता मौजूद थे,
लेकिन कहा कि वे गलत तरीके से निर्वाण की ओर नहीं ले जा रहे थे - कोई एकेश्वरवाद नहीं। 124oooo (या अधिक -
संख्या को प्रतीकात्मक कहा जाता है, जैसा कि और भी हो सकता था) भविष्यवक्ताओं को छोड़ना पड़ा था
कुछ निशान कहीं।

यह कथन केवल सत्य नहीं है। **अगर इस्लाम फिर भी जिद करता है, तो उन्हें मजबूत पैदा करना होगा
सबूत "मजबूत बयान मजबूत सबूत की मांग करते हैं", विज्ञान को उद्धृत करने के लिए - सिर्फ ढीला नहीं
दावे, अमान्य "संकेत" और "सबूत", और अधिक ढीले बयान।** 16/36 में इसी तरह के दावे -
30/47 - 39/71 - 43/6।

०२६ ३८/८७: "- - - सभी दुनिया के लिए एक संदेश।" संभव है कि कुरान और इस्लाम सभी तक पहुंचें
कुरान में जिन 7 पृथ्वी का उल्लेख है - लेकिन 7 पृथ्वी नहीं हैं (सपाट - और एक के ऊपर एक)
हदीसों के अनुसार।) 65/12 देखें।

**00k 39/7: "कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठा सकता"। क्या ये सच में सच हो सकता है?
उस मामले में यह एक और प्रमाण है कि अल्लाह यहोवा के समान ईश्वर नहीं हो सकता,

225

पेज 226

क्योंकि यहोवा ने NT में यीशु के द्वारा जिन बातों पर जोर दिया है, उनमें से एक यह है कि एक अच्छा मसीही विश्वासी होगा
अपने बोझ के साथ दूसरों की मदद करें।

*०२७ ४२/३०: "तुम्हारे साथ जो भी दुर्भाग्य होता है, वह तुम्हारे हाथों की चीजों के कारण होता है
गढ़ा - - -" । गलती कभी यह दुर्भाग्य और संयोग के कारण होता है और कभी f.
भूतपूर्व। दूसरे क्या करते हैं। एफ. पूर्व. अगर कुछ आतंकवादी - आम तौर पर मुसलमान - आपको मारते या विकृत करते हैं
जिन चीजों के आप बिल्कुल दोषी नहीं हैं। और कम से कम यह प्राकृतिक आपदाओं के कारण हो सकता है
- 2004 की सुनामी की तरह, जिसमें 300 से अधिक लोग मारे गए, जिनमें ज्यादातर मुसलमान थे। इसके अलावा: कैसे करता है
यह आयत सभी दावों से मेल खाती है कि अल्लाह सब कुछ तय करता है?

**०२८ ४३/६: "लेकिन हम (अल्लाह*) ने लोगों के बीच कितने नबी भेजे थे?
पुराना?" खैर, हदीस 124ooo कहता है - और यह सच नहीं है, क्योंकि इतने लोगों में से कुछ को छोड़ना पड़ा था
कुछ निशान। कोई नहीं है।

इसके अलावा: इतने सारे अलग-अलग लोगों के साथ दुनिया में इतने सारे अलग-अलग स्थान - क्यों थे?
मुहम्मद के समय दुनिया में कोई अन्य पैगंबर नहीं है - हाँ, बिल्कुल भी नहीं a
मुहम्मद से बहुत पहले? उत्पत्ति और टोरा के समय के पैमाने के अनुसार और
बाइबिल कि कुरान सही नहीं है, और 124ooo पैगंबर, इसका मतलब सैकड़ों या एक होना चाहिए
प्रत्येक पीढ़ी के लिए कुछ हजारों। होमो सेपियन्स की सही उम्र के लिए भी - आधुनिक आदमी -
हर साल लगभग एक नया नबी होना चाहिए!

और: इस्लाम के स्पष्टीकरण के लिए कि क्यों अल्लाह पृथ्वी पर नई पवित्र पुस्तकें अभी और फिर चाहता था, is
कि दुनिया बदल जाती है, और फिर पवित्र पुस्तक में कुछ विवरणों को समायोजित करने की आवश्यकता है। फिर क्यों है
मुहम्मद ने आखिरी कहा? - और कुरान आखिरी किताब हो, एक किताब जो भी है
अमानवीय, न्याय पर बहुत आदिम, और आधुनिक के लिए युद्ध पर बहुत पुराना (बहुत विनाशकारी)
समाज, सिर्फ 3 विषयों का उल्लेख करने के लिए। दुनिया के बीच बहुत कुछ बदल गया है
मुहम्मद और अब, आदम और मुहम्मद के बीच की तुलना में, और मनुष्य को नए निर्देश की आवश्यकता है
एक कम अमानवीय दुनिया के लिए - और एक सर्वज्ञ भगवान को पहले से ही पता था। इसके अलावा: अगर
पवित्र पुस्तकें स्वर्ग में मदर बुक की प्रतियां हैं, जिसका अर्थ है कि मदर बुक को
नीचे भेजने के लिए एक सही प्रति देने के लिए प्रत्येक नए संस्करण के लिए बदला जा सकता है - लेकिन मदर बुक
समय की शुरुआत के बाद से परिपूर्ण और निरंकुश है !?

029 61/13: "- - - खुशखबरी - - -"। चोरी/लूटने, दबाने, बलात्कार करने, गुलाम बनाने, रखने की अनुमति
हरम, हत्या, आदि जो कुरान के मध्य भाग हैं - क्या वह "खुशखबरी" है? सीधे
युद्ध में जाने और मारने और दबाने और गुलाम बनाने और लूटने और नष्ट करने का आदेश, और हो सकता है
खुद को मारा या घायल किया - क्या वह "खुशखबरी" है? केवल पर ध्यान केंद्रित करने के प्रत्यक्ष आदेश
धार्मिक ज्ञान और धर्म से संबंधित ज्ञान (अप्रत्यक्ष रूप से कुरान और में बहुत स्पष्ट है)
इस्लाम में बहुत पहले से ही प्रत्यक्ष और अचूक रूप से बहुत स्पष्ट - और से पूरी तरह से प्रभावी
१०९५ ईस्वी) - वह "खुशखबरी" है। सभी उन्नत देशों का पूर्ण विनाश या विजय
और संस्कृतियाँ वे अफ्रीका, यूरोप और एशिया में कम से कम पूर्व में मिलीं, जो उस समय भारत थी -
विनाश को दूर करने में स्थानीय लोगों को कम से कम 200 साल लगे (यदि कभी) - क्या वह "खुशखबरी" है?
युद्ध धर्म में अमानवीयता - क्या वह "खुशखबरी" है? महिलाओं की संख्या घट कर तीसरी
वर्ग के नागरिक - यदि वास्तव में नागरिक हैं - (इस्लाम का दावा है कि इस्लाम के तहत महिलाएं बेहतर थीं/हैं
पहले की तुलना में, केवल कुछ हिस्सों के लिए सच है जो अब मुस्लिम क्षेत्र है, मुख्यतः के कुछ हिस्सों में
अरब - और वहां भी यह हर जगह सच नहीं था और जरूरी नहीं कि आज भी सच हो अगर
यह इस्लाम के दमनकारी कारक के लिए नहीं था) - यह "खुशखबरी" है? दासता और
दमन और सामूहिक हत्याएं/गैर-मुसलमानों का वध - था और है (मुसलमानों को युद्ध में देखें
और आतंक आज भी) कि "खुशखबरी"? एक युद्ध धर्म ने समाजों के लिए क्या किया और क्या किया
और व्यक्तिगत आत्मा - क्या वह "खुशखबरी" है? सोच का दमन - सभी अधार्मिक
दर्शन, और सभी धार्मिक गैर-अनुरूप (इस्लाम के लिए) सोच - क्या यह "खुशखबरी" है?

खैर, हाँ, यह कुछ मुसलमानों के लिए है - उन योद्धाओं में से जो अच्छे स्वास्थ्य में जीवित रहे और
लूटपाट से धनी हो गए, और प्रधानों में से जो धन और स्त्रियों के धनी हो गए
लूटपाट/गुलाम लेने और कराधान से प्लस शक्तिशाली बन गया, तब और आज। प्लस के लिए
अल्पसंख्यक जिन्हें अच्छा महसूस करने के लिए एक धर्म की आवश्यकता होती है - लेकिन अगर वे दृढ़ता से विश्वास करते हैं तो उन्होंने भी महसूस किया था
दूसरे धर्म में (यह एक ऐसा तथ्य है जिसे हम किसी भी धर्म के धार्मिक लोगों से देखते हैं)।

बाकी सभी के लिए यह "बुरी ख़बर" से लेकर आतंक तक सब कुछ था - और अभी भी है (बस देखें
एक बार जब लूटपाट से दौलत खत्म हो गई - और यहां तक कि
इससे भी बदतर जब गैर-मुस्लिम वंशजों के कठोर कराधान या पोग्रोम्स ने संख्या को कम कर दिया
और/या उन लोगों की अर्थव्यवस्था और इसलिए मुस्लिम नेताओं के लिए कर आय। देखो एफ.
भूतपूर्व। आज के भारत, चीन, ब्राजील के विकास में - विशेष रूप से भारत और चीन दूर थे
1950 के आसपास कई इस्लामिक देशों से पीछे, लेकिन इन दौरान क्या होता रहा है?
वर्षों? तेल, क्षेत्र के बाहर से पैसा और बाहर से विचारों को ले लो, अधिक या

पादरियों और मीडिया और अन्य नेताओं पर कम मजबूर - वास्तव में क्या हुआ है
एफ के बाद से इस्लामी क्षेत्र। उदा.1950 कई अन्य स्थानों की तुलना में?

हाँ: बाकी सभी के लिए यह "बुरी ख़बर" से लेकर आतंक तक सब कुछ था और अभी भी है।

मुसलमानों के लिए स्वर्ग के बारे में एक हिस्सा "खुशखबरी" है - अगर यह सच है। यह भी तथ्य है कि हत्या,
अल्लाह की सेवा में बलात्कार, दासता, दमन और चोरी "अच्छा और वैध" है (और .)
कुछ भी जिहाद घोषित किया जा सकता है) सही या गलत प्रकार के मुसलमानों के लिए खुशखबरी है।
बाक़ी ख़बरें उनके लिए भी आतंक हैं-नफरत, जंग, औरतों का दमन, ठिठकना
समाज, अनैतिक नैतिक, केवल धार्मिक ज्ञान वास्तव में मायने रखता है, अधिकारियों के अधीन दासता,
आदि। यहां तक कि मुसलमानों के लिए भी यह दावा केवल आंशिक रूप से सत्य है।

खासकर इसलिए कि इस्लाम बना हुआ धर्म है। और इससे भी ज्यादा अगर कहीं इसके अलावा
एक सच्चा धर्म है कि इस्लाम अपने सदस्यों को खोजने से भी रोकता है।

कुरान और "खुशखबरी" के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि इसके कुछ हिस्सों के लिए
आंशिक रूप से खुशखबरी थी, और कुछ अन्य लोगों के लिए इसके कुछ हिस्से आत्मा को शांति देते हैं - जैसे
मजबूत विश्वासियों को किसी भी मुख्य धर्म से लाभ मिलता है।

**अन्य सभी के लिए - जिसमें बहुसंख्यक मुसलमान शामिल थे - यह "बुरी ख़बर" थी। मुसलमानों के लिए
खासकर अगर इस्लाम एक बना हुआ धर्म है। जो कि के प्रमाणों से प्रतीत होता है
कुरान और मांगों से और मुहम्मद के जीवन से।** और भी बहुत कुछ है
यह दावा - एक तरह से कम से कम कुछ मुसलमानों के लिए आंशिक रूप से सच है, लेकिन अन्य सभी के लिए आतंक - में
कुरान - एफ। भूतपूर्व। 2/119 - 17/9 - 33/45 - 33/47।

***०३० ८४/१५+१६: "क्योंकि उसका रब (अल्लाह) उस पर (गैर-मुस्लिम*) हमेशा चौकस रहता था! इसलिए मैं
(मुहम्मद*) सूर्यास्त की सुर्ख चमक देखने के लिए फोन करते हैं - - -"। एक गंभीर - यहाँ यह एक बार
मुहम्मद जो बोल रहा है वह अधिक है - जिसे मदर बुक की प्रति कहा गया है
(१३/३९ - ४३/४) स्वर्ग में, अल्लाह से बना या अनंत काल से अस्तित्व में है। वो कैसे संभव है?

भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 1 (= II-1-4-1)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। NS "पूर्ण" सूची - "विश्वकोश" - सूरह पर आधारित और पद संख्या

**(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ,
विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र
मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण
कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)**

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें।
धारा 1 से 16.

कुछ स्पष्ट तथ्य गलतियाँ और सुरह में त्रुटियाँ १ से ५ इंच कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

टिप्पणियों को ३ नंबरों (०० या ० सहित) द्वारा क्रमांकित किया गया, कुछ स्थानों के बाद एक छोटा
पत्र = स्पष्ट गलतियाँ। टिप्पणियों की संख्या 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षर (बड़ा या .)
छोटा) = संभावित गलती।

सभी छंद या छंदों के कुछ हिस्सों में जहां हमने गलतियां पाई हैं, उनमें तीन शामिल हैं
अपवाद:

1. निश्चित रूप से हमसे गलतियाँ होती हैं
   अनदेखी
2. कुछ गलतियाँ होती हैं जिनके लिए लंबे समय की आवश्यकता होती है
   स्पष्टीकरण। यदि वे आवश्यक नहीं हैं, तो वे
   अक्सर छोड़े गए हैं - लंबी व्याख्या
   छोटी-छोटी बातों के लिए अधिकांश पाठकों के लिए उबाऊ हैं - -
   - और अक्सर कोशिश करने वाले व्यक्ति के लिए एक बानगी भी
   आपको अपनी नाक से नेतृत्व करने के लिए।
3. सभी सीमा रेखा के मामले हैं: क्या यह आसान है
   देखें कि यह गलत है? या मौजूद हो सकता है
   स्पष्टीकरण जो इसे कम स्पष्ट कर सकते हैं यदि यह
   सच में गलती है? यदि नहीं तो हमारे पास सामान्य रूप से है
   इसे यहां शामिल नहीं किया। इसका उपयोग करने के लिए
   "गलतियों का विश्वकोश", बस देखें

   आपके कुरान में सूरह और पद्य संख्या, और it
   अगर कोई गलत तथ्य है तो यहां खोजना आसान है
   उस श्लोक में।
   1. स्पष्ट रूप से गलत जानकारी/कथन
      क्रम संख्या के साथ गिने जाते हैं - 3
      संख्याएँ, कभी-कभी उसके बाद a
      छोटा पत्र।
   2. अत्यधिक गलत होने की संभावना है
      सूचना/विवरण क्रमांकित हैं
      अक्षरों के साथ।

228

पेज 229

   3. वे संख्याएँ जो क्रमानुसार नहीं हैं
      संख्याएँ सूरह संख्याएँ और पद्य हैं
      अब्दुल्ला यूसुफ अली की संख्या
      कुरान का अंग्रेजी में अनुवाद।
   4. टिप्पणियों के अंदर () उद्धरणों के अंदर और
      * द्वारा चिह्नित हमारे द्वारा डाले जाते हैं, जैसे
      यह: (xxxxxx*)। और *के सामने
      सीरियल नंबर: बड़ी या "नई" गलतियाँ
      - हालांकि वास्तव में सभी गलतियाँ बड़ी हैं
      भले ही वे छोटे हों, एक के रूप में
      सर्वज्ञ भगवान को बस कभी नहीं करना चाहिए
      गलतियाँ करना। ** या *** = एनबी या
      नायब !! इसके अलावा हम रंग और/या . का उपयोग करते हैं
      कुछ महत्वपूर्ण पर विशेष लेखन
      वाले।

सूरा १-५:

सूरा १:

**001 1/1 - 7. "अल्लाह के नाम पर, सबसे दयालु, सबसे दयालु। अल्लाह की स्तुति करो
दुनिया के चेरिशर और सस्टेनर; सबसे दयालु, सबसे दयालु; दिन के मास्टर
निर्णय। हम आपकी पूजा करते हैं और हम आपकी सहायता चाहते हैं। हमें सीधा रास्ता दिखाओ, रास्ता
जिन्हें तू ने अपनी कृपा प्रदान की है, जिनका (भाग) क्रोध नहीं है, और जो नहीं जाते हैं
पथभ्रष्ट"।

यह वास्तव में एक बुरा है क्योंकि यह अल्लाह से प्रार्थना है, यह अल्लाह नहीं बोल रहा है (जब मुहम्मद
अल्लाह जो कहता है उसे दोहराना है, अल्लाह "कहो" आदेश देता है - और अल्लाह के अलावा प्रार्थना नहीं करता है
वह स्वयं!! इस्लाम जो दावा करता है उसकी तुलना में एक स्पष्ट गलती: यह सब अल्लाह द्वारा उतारा गया है (The .)
कहा जाता है कि कुरान या तो अल्लाह ने बनाया है, या कभी नहीं बनाया है, लेकिन हमेशा से अस्तित्व में रहा है - अंतिम
दावा असंभव है, हालांकि, कुरान में कम से कम एक जगह स्वर्गदूत बोल रहे हैं (भी
मुस्लिम विद्वानों के अनुसार), जो साबित करता है कि कुरान तब तक नहीं बनाया जा सकता था जब तक

कम से कम पहले स्वर्गदूत बनाए गए थे)।

ऐसी और भी जगहें हैं जहाँ यह स्पष्ट है कि मुहम्मद ही बोल रहे हैं - में भी
बयानों के विपरीत कि कुरान स्वर्ग से है, अल्लाह द्वारा बनाया गया है या कभी नहीं बनाया गया है
लेकिन अनंत काल से अस्तित्व में था।

यह कुछ ऐसा बताता है जो शुरुआत में, और जो कहा जाता है वह एक तरह से का सार होता है
पुस्तक, इस्लाम के लिए बहुत मौलिक की तुलना में कुछ गंभीर रूप से गलत है -
लेकिन अप्रमाणित - यह कथन कि पुस्तक एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा भेजी गई है, और यह परिपूर्ण है और
गलतियों के बिना।

सूरह १: कम से कम १ गलती।

सूरा २:

001 2/1: "- - - संसारों - - -"। पहले से ही 7 पृथ्वी का एक संदर्भ है जो के अनुसार मौजूद है
कुरान. (एक के ऊपर एक, हदीसों के अनुसार)। गलत - के बावजूद कोई 7 पृथ्वी नहीं हैं
65/12। 2/22a देखें।

002 2/2: "यह किताब (कुरान) है; इसमें मार्गदर्शन निश्चित है, निःसंदेह---"। जैसे तुम
देखेंगे, इसमें बहुत सारे गलत तथ्य, विरोधाभास और अप्रमाणित तर्क आदि हैं
कुरान. इसका मतलब है कि मार्गदर्शन सुनिश्चित से बहुत दूर है। सारी ग़लतियाँ आदि भी बहुत कुछ पैदा करती हैं
शेष पाठ के बारे में संदेह।

003 2/4: "- - - रहस्योद्घाटन (कुरान) आपको (मुहम्मद*) भेजा गया, और आपके सामने भेजा गया
समय (= टोरा/बाइबल*) - - -।" गलत। कुरान तोराह या बाइबिल के समान नहीं है,
और विज्ञान ने किसी भी उचित या न्यायिक संदेह से परे साबित कर दिया है कि बाइबिल में एनटी कभी नहीं
गलत ठहराया गया था + कि अगर टोरा/ओटी को गलत ठहराया गया है, तो यह कम से कम 300 साल ईसा पूर्व हुआ होगा,
और सबसे अधिक संभावना कम से कम 500 - 800 ईसा पूर्व या उससे पहले, यदि कभी हो। यह भी बहुत स्पष्ट है कि इस्लाम नहीं है
उनके बार-बार किए गए दावों के लिए थोड़ा सा दस्तावेज़ीकरण - अनुमान लगाएं कि क्या उन्होंने जल्दी किया था
अगर उनके पास सबूत का एक छोटा सा भी टुकड़ा होता तो इसे पेश करें !!

004 2/5: "वे (ईमान वाले*) सच्चे मार्गदर्शन पर हैं - - -"। इतने सारे गलत तथ्यों के साथ,
सबसे अच्छा मार्गदर्शन आंशिक रूप से सच है।

005 2/22a: "- - - स्वर्ग, आपकी छत्र - - -"। बहुवचन और गलत - ७ स्वर्ग का जिक्र
कुरान की - - - और मुहम्मद के समय में गलत ग्रीक और फारसी खगोल विज्ञान की। देखो
2/29 - 23/17 - 23/86 - 41/2 - 65/12 - 67/3 - 78/12, और 10/6 - 31/10 भी।

*006 2/22b: "- - - और स्वर्ग (बहुवचन और गलत - 2/22a ठीक ऊपर देखें) आपका चंदवा - - -
" स्वर्ग/आकाश कोई छत्र नहीं है। दिन के समय हम जो "स्वर्ग" देखते हैं, वह वास्तव में एक भ्रम है
सूरज की रोशनी के झुकने और विभाजित होने से, और रात में हम जो "चिकना" स्वर्ग देखते हैं, वह भी एक है
भ्रम, क्योंकि हम उन दूरियों पर तीसरे आयाम को देखने में असमर्थ हैं, और प्रभाव प्राप्त करते हैं
कि सभी तारे हमसे समान दूरी पर हैं। यह तो कोई भी भगवान जानता था, लेकिन मोहम्मद
नहीं। यह भी देखें 67/3a - 67/3b - 67/5a - 67/5b। मुसलमान आकाश की व्याख्या करते हैं (बहुवचन और
गलत) अंतरिक्ष और सितारों और आकाशगंगाओं के बारे में अस्पष्ट दावों के साथ - लेकिन हर बार वे तब
एफ की व्याख्या करने के लिए "भूल जाओ"। भूतपूर्व। तारों को ७ आकाशों में से सबसे नीचे तक कैसे बांधा जाता है
कुरान बताता है मौजूद है। और वे भूल जाते हैं चाँद (और सूरज?)
सितारे! वे कभी-कभी यह भी कहते हैं कि वातावरण में ७ आकाश = ७ परतें। कोई टिप्पणी नहीं
- लेकिन एल्डेबारन जैसे सितारों के बारे में सोचें - एक विशाल तारा - नीचे हमारे वायुमंडल में एक परत के लिए तय है
हमारा चाँद। एक मजाक।

007 2/22c: "- - - आकाश से बारिश - - -"। बहुवचन (7 स्वर्ग) और गलत। ऊपर 2/22b देखें।

008 2/22d: "- - - जब तुम (लोग*) जानते हो (सच्चाई (कुरान*)"। कुरान ज्यादा से ज्यादा
जैसा कि आप देखेंगे, आंशिक रूप से सत्य का प्रतिनिधित्व करता है। 13/1 - 40/75 - 41/12 देखें।

**009 2/23: "- - - जो हमने (अल्लाह*) ने उतारा है (कुरान*) - - -"। गलत। कोई सर्वज्ञ नहीं
भगवान ने बनाया है या पोषित किया है (cfr। "द मदर बुक - f। उदा। 13/69) एक किताब जिसमें कई हैं
गलत तथ्य, विरोधाभास और अन्य त्रुटियां। या तो यह अल्लाह द्वारा नहीं बनाया गया है या अल्लाह नहीं है

सर्वज्ञ - यदि वह मौजूद है।

०१० २/२४: "लेकिन अगर तुम नहीं कर सकते - और निश्चित रूप से तुम (गैर-मुस्लिम *) नहीं कर सकते (एक सूरा का उत्पादन) कुरान के समान गुण*) - - -"। सूरह कोई अच्छा साहित्य नहीं है - कमोबेश प्रतियां अरब लोककथाओं, किंवदंतियों, परियों की कहानियों और चीजों के बारे में मुहम्मद को बाइबिल से बताया गया था - और मुख्य रूप से बाइबल से ही नहीं बल्कि अपोक्रिफ़ल (बनाई गई) कहानियों से। इसके साथ में ग्रंथों की रचना और प्रस्तुति प्राथमिक विद्यालय से संबंधित है। कई अच्छे लेखक ऐसी कहानियों को इकट्ठा करें और बहुत बेहतर करें (इन बिंदुओं पर f. उदा। बाइबल कहीं बेहतर लिखी गई है)। अपने आप में अरब भाषा को उत्कृष्ट कहा जाता है - लेकिन जब आप जानते हैं कि भाषा थी

शीर्ष बुद्धिमान और शीर्ष विद्वान पुरुषों द्वारा लगभग 250 वर्षों तक पॉलिश किया गया, जब तक कि इसे कुछ हद तक नहीं मिला ९०० ईस्वी के आसपास अंतिम रूप (अरब वर्णमाला तब तक पूरी नहीं हुई थी), वह बिंदु बताता है लगभग 650 से मूल कुरान के बारे में कुछ भी नहीं - खलीफा उस्मान और अन्य '। दावा गलत है।

**०११ २/२५: "- - - खुशखबरी - - -।" गलत। सबसे अच्छे से कोई कह सकता है कि कुरान लूट और दासों और शक्ति के चाहने वाले सब बुरे लोगों के लिए शुभ समाचार लाया, और कुछ मजबूत धर्म के लिए तरसते हैं - - - अगर ऐसा नहीं होता क्योंकि कुरान खुद 100% साबित करता है कि किताब में कुछ बहुत गलत है। इतना गलत कि इसे न तो कोई बनाया जा सकता है और न ही किसी के द्वारा प्रतिष्ठित किया जा सकता है भगवान - एक छोटे से छोटे भगवान द्वारा भी नहीं। किताब में बहुत कुछ गलत है। 61/13 भी देखें।

012 2/29a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत - नहीं 7 स्वर्ग। 2/22बी देखें।

*०१३ २/२९बी: "- - - उन्होंने सात फर्मों को आदेश और पूर्णता दी - - -"। फर्मामेंट है स्वर्ग के लिए एक और शब्द जो हम देखते हैं, हालांकि ज्यादातर रात के आकाश के लिए उपयोग किया जाता है। कुरान कई स्थान सात आकाश या आकाश या पथ के बारे में बताता है (शब्द "आकाश" या इसी तरह का है कुरान में बहुवचन में कम से कम 199 बार प्रयोग किया गया) - इसमें कोई संदेह नहीं है कि कुरान के अनुसार 7 (भौतिक) आकाश हैं। (इस्लाम भी "जानता है" जो विभिन्न स्वर्गों में निवास करते हैं - f. पूर्व। 2 में यीशु। स्वर्ग में, 4 में यूसुफ, 5 में हारून, 6 में मूसा, और 7 में इब्राहीम। स्वर्ग, और अल्लाह के ऊपर 7. स्वर्ग, कुछ का उल्लेख करने के लिए। हालांकि कुरान में ऐसा नहीं कहा गया है)। वहां इसमें कोई संदेह नहीं है कि कुरान मानता है कि स्वर्ग भौतिक है - यदि नहीं तो यह संभव नहीं था इसे बनाएं या सितारों को सबसे निचले स्वर्ग में ठीक करें, जैसे कुरान कई जगहों पर बताता है। नहीं भगवान ने यह माना था - लेकिन मुहम्मद ने ऐसा किया, जैसा कि मध्य पूर्व में माना जाता था मुहम्मद के समय में। सात आकाश पुराने ग्रीक खगोल विज्ञान से लिए गए हैं - or शायद फारसी खगोल विज्ञान से, जो 7 आकाशों में भी विश्वास करता था। कोई भगवान, लेकिन नहीं मुहम्मद, जानते होंगे कि यह बहुत गलत था। इस्लाम के कई "स्पष्टीकरण" हैं इस बहुत स्पष्ट गलती के बारे में, लेकिन हमने कभी किसी मुस्लिम का उल्लेख नहीं देखा या सुना है यहां तक कि संभावना है कि मुहम्मद की तस्वीर खगोल विज्ञान के बारे में उनके द्वारा समझाया जा सकता है ग्रीक या फारसी खगोल विज्ञान में विश्वास।

मुसलमान कभी-कभी समझाते हैं कि पुराने अरब में 7 "कई" (और 70 "बहुत" के लिए समानार्थी थे कई"), और यह कि कुरान का अर्थ 7 नहीं बल्कि कई है। लेकिन ईमानदारी से "कई" है कम से कम "7" जितना गलत।

०१४ २/३२: "- - - यह तू (अल्लाह) है जो ज्ञान और ज्ञान में सिद्ध है"। सब गलतियाँ साबित करती हैं कि कुरान का निर्माता ज्ञान में पूर्ण नहीं था, और सभी अमान्य तर्क साबित करता है कि वह भी ज्ञान में परिपूर्ण नहीं था। कम से कम कुछ तो गड़बड़ है।

015 2/39: "- - - संकेत - - -" भी लिखा "चिह्न", "उसके संकेत", "हमारे (अल्लाह के) संकेत" या "मेरे (अल्लाह के*) चिन्ह" या अन्य रूपांतर। "कुरान-स्पीक" में इसका अर्थ है एक संकेत या प्रमाण अल्लाह और/या कुरान का अस्तित्व। वास्तव में यह बिल्कुल कुछ भी नहीं साबित होता है, जैसे बिना अपवाद वे केवल बयान खो देते हैं या ढीले दावों के रूप में सिर्फ खाली हवा में लटकते हैं, सभी निर्मित कुछ भी नहीं, क्योंकि यह कभी भी साबित या प्रलेखित नहीं है कि अल्लाह ने वास्तव में कहा या किया या बनाया कुरान प्रत्येक मामले में दावा करता है कि उसने कहा या किया या बनाया, और फिर "चिह्न" के रूप में उपयोग करता है। या वे अन्य दावों पर निर्भर हैं जो सिद्ध नहीं हैं। सभी मानवीय सोच के अनुसार, सभी न्यायिक कानून, और तर्क के और भी सख्त कानूनों के अनुसार जैसे "सबूत" सपाट और सरलता से अमान्य हैं और बिना किसी मूल्य के हैं। **आखिरकार एक वैध प्रमाण है: "एक या अधिक सिद्ध तथ्य" जो केवल एक निष्कर्ष दे सकता है",** और कुरान में बिना किसी अपवाद के सभी "चिह्न" का निर्माण होता है "तथ्यों" का दावा किया कि न तो किताब और न ही इस्लाम साबित करता है - या साबित करने में सक्षम हैं (ठीक है, वहाँ हो सकता है बाइबल से लिए गए "चिन्हों" में कुछ अपवाद हों, लेकिन वे मामले में यहोवा को साबित करते हैं, नहीं

अल्लाह - हम जानते हैं कि मुसलमान और कुरान यह कहना पसंद करते हैं कि वे दोनों अलग हैं
एक ही भगवान के नाम, लेकिन यह तब तक सच नहीं है जब तक कि भगवान मानसिक रूप से बहुत बीमार न हों
(सिज़ोफ्रेनिक), क्योंकि शिक्षाएँ मौलिक रूप से बहुत भिन्न हैं (इस अन्य स्थानों के बारे में अधिक)
"कुरान में 1000+ गलतियाँ" में))।

इसके अलावा एक तथ्य यह भी है कि किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी अपने लिए ठीक वैसा ही दावा कर सकता है
भगवान (ओं) के रूप में मुसलमान अल्लाह के लिए दावा करते हैं, बिल्कुल सभी मामलों में जहां शब्द "चिह्न (ओं)" में है
कुरान बाइबिल से उधार नहीं लिया गया है, जब तक कोई वास्तविक प्रमाण या कोई वास्तविक दस्तावेज नहीं है
मांग की गई - शब्द इतने सस्ते हैं। "बाल सूर्य को पूर्व दिशा में उदय करता है। अल्लाह
इसे पश्चिम में नहीं बढ़ा सकते। तब बाल ही असली देवता है और अल्लाह नकली।" शिशु-संबंधी
"सबूत", लेकिन यह उस तरह का स्तर है जिसे आप कुरान में "संकेत" और "प्रमाण" पर पाते हैं (यह
उदाहरण कुरान से लिया गया है - इब्राहीम अपने भगवान अल्लाह को साबित कर रहा है, लेकिन निश्चित रूप से
नायक के रूप में अल्लाह। प्रमाण के रूप में पूरी तरह से अमान्य)।

*** जैसा कि कहा गया है कि दावे तार्किक रूप से बिना किसी मूल्य के संकेत/प्रमाण के रूप में हैं
देवता, किसी विशिष्ट देवता का उल्लेख नहीं करने के लिए - f. भूतपूर्व। अल्लाह। और यह एक दिलचस्प तथ्य दस्तावेज करता है:
इस्लाम के पास न तो अल्लाह के लिए एक भी सबूत है, न कुरान की पुष्टि के लिए, न ही इसके लिए
एक देवता के साथ मुहम्मद का संबंध। यदि उनके पास ऐसा एक ही प्रमाण होता -
यहां तक कि एक छोटा - आप शर्त लगा सकते हैं कि उन्होंने इसके बारे में बताया था और इसका इस्तेमाल किया था! इसलाम
केवल खोए हुए शब्दों पर और ढीले और अप्रमाणित दावों के रूप में बनाया गया है - - - एक ऐसे व्यक्ति द्वारा बनाया गया है जिसका
ओल्ड बेली, लंदन में शब्दों को शायद ही "वास्तविक" प्रमाण के रूप में स्वीकार किया गया हो। NS
अंतर्निहित दावा है कि तथाकथित संकेतों का प्रमाण के रूप में कोई मूल्य है या कम से कम संकेत के लिए
अल्लाह बस गलत है जब तक कि इस्लाम पहले यह साबित नहीं कर देता कि अल्लाह वास्तव में "संकेतों" के पीछे था।

आप पाते हैं कि कुरान में कई जगहों पर इस शब्द का इस्तेमाल किया गया है।

०१६ २/४१अ: "और उस पर विश्वास करो जो मैं (अल्लाह*) प्रकट करता हूँ (कुरान*) - - - "। एक सर्वज्ञ भगवान था
इतनी गलतियों के साथ एक किताब का खुलासा नहीं किया।

017 2/41b: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

**०१८ २/४१ सी: "(कुरान*), रहस्योद्घाटन की पुष्टि करता है (ओटी - पुराना नियम*) जो है
तुम्हारे साथ (यहूदी*) - - -"। कुरान ओटी की पुष्टि नहीं कर रहा है और एनटी बिल्कुल नहीं - the
मौलिक विचार और शिक्षण विशेष रूप से NT और नई वाचा से बहुत अलग हैं
(मत्ती २६/२८, मरकुस १४/२४, लूका २२/२०) - नई वाचा जिसका मुसलमानों ने कभी उल्लेख नहीं किया, और
पढ़े-लिखे लोगों को छोड़कर इसके बारे में कभी नहीं बताया गया।

019 2/42a: "- - - और सत्य को असत्य से न ढकें - - -"। 40/75 देखें।

*020 2/42b: "- - - और न ही सत्य को छुपाएं जब आप जानते हैं (यह क्या है)"। "सत्य" के लिए 40/75 देखें।
इस की सामग्री और ऊपर का प्रवेश द्वार: ऐसा कहा जाता है कि इसका उद्देश्य उन यहूदियों के लिए है जिन्होंने नहीं किया था
5 मूसा को गलत समझना चाहते हैं। १८/१५ (और १८/१८) का अर्थ यह है कि यह कविता मुहम्मद की भविष्यवाणी करती है
- (स्वीडिश से अनुवादित): "आपके अपने लोगों में से एक नबी, आपके भाइयों में से,
हे यहोवा, तेरा परमेश्वर, तेरे पास आए। उसे सुनो"। इसका मतलब है कि भगवान कह रहे हैं: "मैं एक
नबी तुम्हारे भाइयों में से निकले - - -। मुसलमान कहते हैं "भाइयों" का मतलब यहाँ है
अरब, और यह कि बाइबल यहाँ मुहम्मद के बारे में बात करती है। लेकिन बहुत ईमानदारी से: यहूदियों का भाई
एक और यहूदी है विशेष रूप से जैसा कि कहा जाता है कि वह "आपके अपने लोगों के बीच से" आएगा -
यहूदियों के अपने लोग। (हम यहूदी शब्द का प्रयोग करते हैं, क्योंकि आज यह सामान्य शब्द है, भले ही
शब्द मूसा के समय से बहुत छोटा है। यूसुफ अली भी इसका इस्तेमाल करते हैं)। यह बस हो सकता है
यीशु के बारे में भविष्यवाणी करना, लेकिन मुसलमानों ने अर्थ को "समायोजित" कर दिया है।

वास्तव में शब्द "भाई" या इसी तरह का प्रयोग लाक्षणिक अर्थ में कम से कम 55 बार ओटी में किया जाता है,
लगभग हमेशा एक और यहूदी या अन्य यहूदी (1 अपवाद: एक राजा दूसरे राजा से बात करता है।
बहुत कम और अपवाद: लूत के लोगों के बारे में और एदोमियों के बारे में - एसाव के वंशज,
कुलपति जैकब का भाई), और अरबों के बारे में बिल्कुल नहीं। अरब और अरब हैं
बाइबल में आधा दर्जन बार उल्लेख किया गया है - बिना किसी अपवाद के या तो तटस्थ रूपों में या जैसे
दुश्मन, कभी दोस्त या रिश्तेदार के रूप में नहीं। इससे भी बदतर - और मुसलमानों ने कभी इसका उल्लेख नहीं किया: यह शब्द है
कुरान में लगभग ३० बार, और हमेशा साथी (मुस्लिम) अरबों के बारे में (एक अपवाद,
जहां मुख्य बात यह है कि बुरे पाखंडी आपस में चिपके रहते हैं)। वहाँ बस कोई जगह नहीं है
न तो बाइबिल में और न ही कुरान में यहूदियों और अरबों के बीच भाईचारे की अभिव्यक्ति (but .)
इसके विपरीत कई)। इसके अलावा 5. मो. १५. और १८. २१ में जारी है
मुसलमान) जो बताते हैं कि कोई भी उस पर भगवान के पैगंबर को पहचान लेगा जो वे बनाते हैं
भविष्यवाणियाँ, और सही भविष्यवाणियाँ। मुहम्मद ने कभी वास्तविक भविष्यवाणियां नहीं कीं - उन्होंने भी नहीं किया
उस उपहार के होने का दिखावा या दावा करना, पूरे कुरान में एक बार नहीं। (वह बस नहीं था
असली भविष्यवक्ता, लेकिन उस भव्य और प्रभावशाली उपाधि को उधार लिया।) इसके विपरीत वह व्यस्त था
यह समझाते हुए कि वह चमत्कार करने में असमर्थ क्यों था (भविष्यवाणी करना एक प्रकार का चमत्कार है)।
मुहम्मद इस प्रकार - २१ के कारण भी नहीं हो सके। - यहोवा का वादा किया हुआ नबी हो। और के रूप में वह
वास्तव में कोई नबी नहीं था - जैसा कि उसने उल्लेख किया था कि वह उपहार नहीं था - वह बिल्कुल नहीं हो सकता था
एक विशेष भविष्यवक्ता के रूप में वह वास्तव में कोई नबी नहीं था (ठीक है, a . के लिए अन्य परिभाषाएँ बनाई गई हैं)
भविष्यद्वक्ता, परन्तु सच्ची भविष्यद्वाणी करने में समर्थ हुए बिना तुम वास्तविक भविष्यद्वक्ता नहीं हो), और
दावा सवाल से बाहर है।

यह केवल एक शब्द का मामला है जो एक से अधिक अर्थ दे सकता है, और एक धर्म में
अपने कल्पित ईश्वर के लिए प्रमाणों की कमी से, और अत्यधिक आवश्यकता से सख्त जरूरत है क्योंकि वे
बाइबल में सबूत या कम से कम संकेत खोजने का झूठा वादा किया गया था, जिसका अर्थ है कि
बाइबल के शब्द के सामान्य उपयोग के लिए विदेशी है, और इसे संदर्भ से बाहर उद्धृत करें (5. Mos. 18/21
यहां तक कि मुहम्मद को यहां एक स्पष्टीकरण के रूप में असंभव बना देता है), लेकिन इच्छाधारी सोच से भरा हुआ है।

**इस्लाम को पुख्ता सबूत पेश करने होंगे। आखिरकार वे ही हैं जो इस संभावना को पैदा करते हैं
दावा करते हैं, और फिर यह उन पर निर्भर करता है कि वे इसे साबित करें - दूसरों पर निर्भर नहीं है कि वे इसका खंडन करें। (लेकिन फिर इस्लाम
अप्रमाणित दावों और बयानों और अंध विश्वास पर रहता है)।

00a 2/50: "- - - हमने (अल्लाह*) ने तुम्हारे लिए (मूसा और उसके यहूदी*) समुद्र को बाँट दिया - - -"। अन्य से
कुरान में स्थान (और बाइबिल के अधिकांश अनुवादों में) यह बताया गया है कि यह लाल सागर था।
लेकिन हिब्रू मूल में नाम यम सुफ है, जिसका अर्थ "द सी ऑफ" भी हो सकता है
रीड्स" (इसकी पुष्टि एनआईवी में कई फुटनोट्स में भी की गई है ("नया अंतर्राष्ट्रीय संस्करण")
बाइबिल))। रीड्स का सागर (जिसे तिमसा सागर भी कहा जाता है) एक बड़ी झील हुआ करती थी जहाँ स्वेज
नहर अब चलती है - कड़वे समुद्र से ज्यादा दूर नहीं। नाम बताता है कि यह सिर्फ एक उथली झील थी -
सबसे लंबे नरकट जो हम खोज पाए हैं, वह एक प्रकार का चावल है जो 5 -7 मीटर तक लंबा हो सकता है और
कंबोडिया में बड़े समुद्र टोनले सैप में उगता है, और मिस्र के इस क्षेत्र में उगने वाले नरकट हैं
छोटा - - - और पानी उतना गहरा नहीं हो सकता जितना कि नरकट पानी के ऊपर अपने "सिर" प्राप्त करते हैं।

नक्शा भी देखें: गोशेन जहाँ यहूदी बसे थे, वे नील नदी के डेल्टा में थे। लेना
उन्हें सीनै को दक्षिण-दक्षिण-पूर्व जाना था। ऐसा जाना किसी भी विश्वसनीयता से परे मूर्खता होगी
दूर पश्चिम में कि वे लाल सागर के पश्चिमी किनारे पर समाप्त हो गए, और इस तरह इतनी बड़ी संख्या को मजबूर कर दिया
लोगों और जानवरों की नावों से समुद्र पार करने के लिए उनके पास नहीं था (याद रखें कि उन्होंने नहीं किया था
समुद्र के खुलने के बारे में जानें - आग / धुआँ-स्तंभ या नहीं (= पथप्रदर्शक / यहोवा
बाइबिल के अनुसार))। आखिरकार वे बाइबिल के अनुसार 600ooo पुरुष + महिलाएं + . थे
बच्चे + जानवर और सामान। (सैद्धांतिक रूप से यह 70 - 100 के लिए काफी संभव है (निर्भर करता है)
उसके समूह में उसके 11 पुत्रों की कितनी पत्नियाँ थीं) जो याकूब + यूसुफ और . के साथ आए थे
उनका परिवार, 430 साल बाद 2000oo "यहूदी" बन सकता है।)

विज्ञान बताता है कि - यदि पलायन हुआ - "यहूदी" काफी हद तक आगे निकल गए थे क्योंकि वे
उस झील के किनारे चढ़ाई या डेरा डाला।

०२१ २/५३: "- - - हमने (अल्लाह) ने मूसा को शास्त्र - - -" दिया। मूसा के नाम पर किताबें
(टोरा) मूसा द्वारा नहीं लिखे गए हैं। मूसा १३००-१२०० के आसपास (यदि वह एक कल्पना नहीं है) रहते थे
ईसा पूर्व (यदि मिस्र से पलायन वास्तव में हुआ था, तो यह ईसा पूर्व 1235 ईसा पूर्व के शासनकाल के दौरान हुआ था)
रामसेस II विज्ञान के अनुसार), और उन पुस्तकों को सीए से पहले नहीं लिखा गया था। ८०० ईसा पूर्व -
शायद 500 ईसा पूर्व के अंत तक - विज्ञान के अनुसार भी। एक भगवान जानता था कि, जबकि

इस बात को उनकी वास्तविक उम्र के बारे में कुछ नहीं पता था और उन्हें अनुमान लगाना था। (सटीक होने के लिए: बाइबल कहती है फिर पहाड़ में मूसा को व्यक्तिगत सुनाई - पत्थर कुछ दो तालियों के सिवा कुछ भी मौलिक नहीं जहां दस
आज्ञाएँ खुदी हुई थीं, पहाड़ से नीचे लाई गई थीं - और उन्हें बताया गया था
कानून और खुद ने इसे बाद में लिखा। ओटी यह भी कहता है कि जब सुलैमान ने
यरूशलेम में मंदिर में वाचा का सन्दूक (1.राजा 8/9); इसमें केवल दो पत्थर थे
गोलियाँ। "मूसा की किताबें" के बारे में कुछ भी नहीं है, हालांकि ओटी यह स्पष्ट करता है कि
कानून लिखित रूप में मौजूद थे और बाद में फिर से पाए गए - लेकिन विज्ञान एकमत है कि किताबें
मूसा के (आप इसे एकवचन में भी लिखा हुआ देखते हैं) बहुत बाद में लिखे गए हैं। अगर मुसलमान दावा करते हैं
कुछ और, उन्हें सबूत पेश करने होंगे।) कानून वास्तव में टोरा/किताबों का हिस्सा है
मूसा की।

०२२ २/६१: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

00b 2/65-66: "हम (अल्लाह*) ने उनसे कहा 'तुम वानर बनो, तुच्छ और ठुकराया'। तो हमने इसे बनाया
अपने समय और अपने वंश के लिए एक उदाहरण, और अल्लाह से डरने वालों के लिए एक सबक "।
मनुष्य का वानर में बदल जाना एक असाधारण कथन है। एक असाधारण बयान
एक असाधारण प्रमाण की आवश्यकता है। यहां कुरान कोई प्रमाण नहीं देता है।

00c 2/73: "अल्लाह ने कहा: '(शरीर) पर (बछिया) के टुकड़े से प्रहार करो।" इस प्रकार अल्लाह लाया
जीवन के लिए मृत - - - "। इस तरह किसी मृत व्यक्ति को जगाना संभव नहीं है। इस्लाम को पैदा करना होगा a
ठोस प्रमाण - विशेष रूप से क्योंकि यह कहानी बाइबिल में नहीं है, और इस प्रकार एक किंवदंती से ली गई है।

**०२३ २/७५: "- - - यह देखकर कि उनमें से एक दल (मदीना में यहूदी*) अल्लाह का वचन सुनता है,
और इसे समझने के बाद जानबूझकर इसे विकृत कर दिया - - -।" **गलत। विज्ञान ने दिखाया है बहुत
स्पष्ट रूप से कि बाइबल मिथ्या नहीं है - और फलस्वरूप यह कभी भी कुछ नहीं रही
कुरान की तरह।** इस्लाम का मतलब अगर कुछ और है तो उन्हें सबूत लाने होंगे, ढीले ही नहीं
दावे और यहां तक कि ढीले बयान भी। अगर इस्लाम के पास एक छोटा सा भी सबूत होता तो दुनिया
इसे हर दो घंटे या उससे अधिक सुनने के लिए मजबूर किया जाता है - कम से कम।

*हम यह जोड़ सकते हैं कि इस्लाम और मुसलमान अपने शब्दों को साबित करने के लिए बाइबल का उपयोग करने का प्रयास करते हैं - f. भूतपूर्व।
यिर्मयाह २३/३६: "तुम ने जीवित परमेश्वर के वचनों को विकृत किया है।" यह बेईमानी है
दो स्तर:

1. यह संदर्भ से बाहर उद्धृत एक बात के लिए है। यिर्मयाह कहता है: "यदि कोई भविष्यद्वक्ता वा याजक वा कोई और दावा करता है, 'यह दैवज्ञ है' यहोवा (यहोवा*), मैं (यहोवा*) दण्ड दूँगा वह आदमी और उसका घराना। - - - परन्तु आप 'यहोवा की वाणी' का उल्लेख नहीं करना चाहिए फिर से क्योंकि (यदि आप * करते हैं) हर आदमी का शब्द उसका दैवज्ञ बन जाता है और इसलिए आप उसे विकृत करते हैं जीवित परमेश्वर के वचन"। (एनआईवी)। **वहां पर एक**

इस अर्थ और के बीच रसातल ऊपर में अर्थ थोड़ा मुड़ बाइबिल से उद्धरण। बेईमान और थोड़ा घृणित - और काफी खुलासा कुछ मुस्लिम तरीकों और कमियों के बारे में वास्तविक तथ्य और तर्क।
2. *(मुहम्मद अपने सभी बच्चों को खोने के लिए जीते थे एक बेटी को छोड़कर - के लिए एक सजा यहोवा उर्फ अल्लाह का प्रतिनिधित्व करने का दावा?)
3. भले ही यह सच हो - भले ही यिर्मयाह ने कहा था कि यहूदियों ने विकृत कर दिया था (यद्यपि "विकृत" की तुलना में एक मजबूत शब्द है "विकृत") यह एक मिलीमीटर नहीं बताया कुरान के ग्रंथों को विकृत करने के बारे में, जैसे यहाँ है संकेत दिया, तोराह का केवल विरूपण।

यह जानते हुए कि यह व्यापक रूप से वितरित और अत्यधिक बेशकीमती "द मैसेज ऑफ द" से लिया गया है
कुरान", विहित या कम से कम सबसे प्रमुख इस्लामी बौद्धिक संस्थानों द्वारा प्रमाणित

दुनिया में, इस तरह के मामले हमें उनकी ओर से खराब स्वाद देते हैं: बौद्धिक बेईमानी का सहारा लेना
इस तरह का पता चलने पर अपमानजनक होता है।

और किस कारण से? सिर्फ सही होने के लिए, सही क्या है यह जानने की कोशिश करने के बजाय। यह इस तथ्य के बावजूद कि कीमत अगर वे हैं गलत है, हर मुसलमान की आत्मा का नुकसान है - - - अगर अगले जन्म में कोई नर्क है।

०२४ २/७९: "फिर हाय उन पर जो किताब को अपने हाथों से लिखते हैं (= झूठा) - - -।"
ऊपर 2/75 देखें। (और किसी भी भगवान ने इतने गलत तथ्यों और अन्य के साथ एक किताब नहीं बनाई
कुरआन में आप जैसी गलतियाँ पाते हैं: क्या होगा अगर यह एक मिथ्याकरण है - क्या यह "हाय" है
मुहम्मद? - वह एफ। भूतपूर्व। अपनी सभी पत्नियों के साथ लगभग कोई संतान नहीं हुई और लगभग सभी को खो दिया
उसे मिले बच्चे। और इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि वह नर्क में समाप्त हुआ या जन्नत में - यदि ऐसे हैं
मौजूद।)

०२५ २/८७: "हमने (अल्लाह*) ने मूसा को किताब - - - दी। 2/53 देखें।

०२६ २/८९ए: "और फिर उनके पास (मदीना में यहूदी) एक किताब (कुरान*) आती है
अल्लाह - - -"। जिस किताब में इतनी सारी गलतियाँ, अमान्य "सबूत" आदि हों, वह किसी सर्वज्ञ की नहीं होती
भगवान? 41/12 देखें।

027 2/89b: "- - - (एक किताब (कुरान)) जो उनके पास है उसकी पुष्टि करता है (यहूदी और ईसाई*)
(टोरा और बाइबिल) - - -", जिसका अर्थ है कि कुरान टोरा और अन्य की पुष्टि करता है
पवित्र यहूदी धर्मग्रंथ और बाकी बाइबिल। लेकिन बहुत सारे मौलिक सिद्धांत हैं
अलग - कुरान न तो तोराह, आदि की पुष्टि करता है, न ही बाइबिल का, न तो
न्यू टेस्टामेंट (NT) का उल्लेख जिस पर ईसाई धर्म का निर्माण हुआ है। एफ. पूर्व. "आप करेंगे
मारो नहीं" बनाम "आप एक अच्छे कारण के बिना नहीं मारेंगे", "खोया" के लिए मूल्य और संघर्ष
भेड़ का बच्चा", बनाम "आप नर्क में समाप्त होने वाले गलत काम करने वालों के लिए शोक नहीं करेंगे", "अपने दुश्मन से प्यार करें" बनाम।
"दुश्मन को जहाँ भी मिले उसे मार डालो", और "अपने दुश्मन से प्यार करो" बनाम उकसाने और आदेश देने के लिए
युद्ध और नफरत और "काफिरों" के भेदभाव के बारे में, बस कुछ गहरे मतभेदों का उल्लेख करने के लिए।
"मेरा साम्राज्य इस दुनिया का नहीं है" और "भगवान को दे दो जो भगवान का है," का उल्लेख नहीं है।
और सम्राट पर सम्राट का क्या है" - अंतिम अर्थ धन - (अनुवादित
स्वीडिश से), की तुलना में: अल्लाह और मुहम्मद के लिए तब तक लड़ें जब तक कि सभी गैर-मुस्लिम पूरी तरह से न हो जाएं
दबा दिया और अतिरिक्त कर का भुगतान किया।

०२८ २/८९सी: "- - - जब उनके पास (मदीना में यहूदी *) आता है कि (पाठ जो बाद में बन गए
कुरान*) जिसे उन्हें पहचानना चाहिए था (यह दर्शाता है कि उन्हें ग्रंथों को पहचानना चाहिए था
मुहम्मद से उनके ओटी/टोरा में)। गलत - अंतर्निहित बुनियादी सोच और बहुत कुछ
विवरण इतने अलग हैं, कि केवल एक चीज को पहचानना संभव है, वह यह है कि कुछ बहुत है
गलत।

०२९ २/९०: "- - - (रहस्योद्घाटन (कुरान*)) जिसे अल्लाह ने उतारा है - - -"। कोई सर्वज्ञ नहीं
भगवान ने कभी ऐसी कई गलतियों के साथ एक किताब बनाई, भेजी या सम्मानित की और इतनी ही अमान्य
तर्क।

०३० २/९१ ए: "उस पर विश्वास करो जो अल्लाह ने उतारा है (= कुरान *)"। क्या वाकई अल्लाह के पास है
इतने सारे गलत तथ्यों के साथ एक किताब नीचे भेजी? बस नहीं - अगर वह सर्वज्ञ होता तो नहीं।

०३१ २/९१बी: "- - - फिर भी वे इसके अलावा सभी को अस्वीकार करते हैं, भले ही वह सत्य (कुरान*) हो"। के साथ एक किताब
इतने सारे गलत तथ्य केवल आंशिक रूप से सत्य हैं।

032 2/91c: "- - - पुष्टि करना कि उनके पास क्या है (टोरा, आदि, (= OT*) और बाइबिल*)"। NS
कुरान न तो तोराह और न ही बाइबिल की पुष्टि है - नीचे 2/89 ऊपर + 3/3 देखें।

***00d 2/93: "हम (मदीना में यहूदी*) सुनते हैं और हम अवज्ञा करते हैं"। मुहम्मद असद कहते हैं
(com.77): "भले ही उन्होंने उन शब्दों को न कहा हो, उनका बाद का व्यवहार इस उद्धरण को सही ठहराता है"। परंतु
ऐसे शब्द जो कहे नहीं जाते, कहे नहीं जाते, और ईमानदारी से उद्धृत नहीं किए जा सकते - क्या कोई ईश्वर इसका सहारा लेगा
ऐसे तर्क? और यह कैसे हुआ कि यह उद्धरण कुरान में है - अरबों साल पुराना हो सकता है
और अचूक और अल्लाह के द्वारा श्रद्धेय - यदि उन्होंने यह नहीं कहा? - और कितने अन्य बने
तर्क क्या आप कुरान में पाते हैं?

***०३३ २/९४: "यदि अंतिम घर, अल्लाह (यहोवा) के पास, आपके लिए (यहूदियों *) विशेष रूप से हो, और नहीं

किसी और के लिए, तो मृत्यु की तलाश करो, यदि तुम सच्चे हो - - -"। गलत। एक यहूदी (या एक ईसाई)
स्वर्ग जाने के लिए मृत्यु की तलाश नहीं कर सकते, क्योंकि आत्म हत्या - परोक्ष रूप से - एक गंभीर पाप है
(ईश्वर के उपहार को नष्ट करना - आपका जीवन) = नर्क में समाप्त होना। कोई भी भगवान जानता था - लेकिन जाहिर है
मुहम्मद नहीं। इससे भी बदतर: मुस्लिम विद्वान आज यह जानते हैं, लेकिन किसी भी तरह से तर्क का प्रयोग करें
उनकी मंडलियां।

00e 2/95: "लेकिन वे (यहूदी *) कभी भी मौत की तलाश नहीं करेंगे, उन (पापों) के कारण जो उनके
हाथ उनके आगे आगे भेजे हैं।" कारण अधिक संभावना 2/94 में उल्लिखित है
के ऊपर।

०३४ २/९७ए: "- - - वह (गेब्रियल*) आपके दिल में (रहस्योद्घाटन (कुरान*)) नीचे लाता है
अल्लाह की मर्जी - - -"। कोई भी सर्वज्ञ भगवान इतनी गलतियों के साथ एक किताब नहीं भेजता है और
विरोधाभास और इतना अमान्य तर्क।

०३५ २/९७ बी: "- - - जो पहले हुआ उसकी पुष्टि (टोरा + बाइबिल*)"। गलत। देखें 2/89
ऊपर और 3/3 नीचे।

*036 2/97c: "- - - खुशखबरी - - -"। गलत। सबसे अच्छे से कोई कह सकता है कि कुरान
लूट और दासों, और शक्ति की चाह में सब बुरे लोगों के लिये शुभ समाचार लाया, और
कुछ लोग एक मजबूत धर्म के लिए तरसते हैं - - - अगर ऐसा नहीं होता क्योंकि कुरान खुद 100% साबित होता है
कि किताब में कुछ बहुत गलत है। इतना गलत कि इसे न तो बनाया जा सकता है और न ही पूजनीय
कोई भी भगवान - एक छोटे से छोटे भगवान द्वारा भी नहीं। किताब में बहुत कुछ गलत है। 61/13 भी देखें।

२३६

पेज 237

०३७ २/९९अ: "हम (अल्लाह*) ने तुम पर (लोग*) प्रकट निशानियाँ उतारी हैं - - -"। **कुरान
यह जो कहता है उसके साथ अतिभारित है "संकेत" (प्रमाण होने के लिए इंगित) और "स्पष्ट संकेत" या
जैसे यहाँ "प्रकट संकेत" (मजबूत प्रमाण होने का संकेत) - और उनमें से एक भी नहीं
अल्लाह या कुरान या मुहम्मद के बारे में कुछ भी साबित करता है, जैसा कि किताब कभी साबित नहीं करती है,
केवल दावा करता है, कि अल्लाह ने ऐसा किया या वह जिसे वह तब "चिह्न" या "स्पष्ट संकेत" या अ . कहता है
"सबूत"** (बाइबल से लिए गए संकेतों के लिए कुछ अपवाद हो सकते हैं, लेकिन वे मामले में)
यहोवा को सिद्ध करो, अल्लाह को नहीं - और **केवल इस्लाम का दावा है कि यहोवा और अल्लाह एक ही ईश्वर हैं
(जो तब तक नहीं हो सकते, जब तक कि ईश्वर स्किज़ोफ्रेनिक न हो - वे बहुत अलग हैं, विशेष रूप से
जब यहोवा NT से नई वाचा के अनुसार कार्य कर रहा हो** (f. पूर्व लूका 22/20),
जो मुहम्मद के उपदेश शुरू करने से लगभग ५८० साल पहले आया था, लेकिन कौन से मुसलमान
कभी उल्लेख नहीं)। विशेष रूप से "स्पष्ट संकेत" के दावे इतने स्पष्ट रूप से गलत हैं, कि यह है
उन्हें इन कॉलमों में शामिल नहीं करना असंभव है: "गलत तथ्य"। वे संकेत नहीं हैं - और
निश्चित रूप से कोई स्पष्ट संकेत नहीं - एक भगवान के लिए, और यहां तक कि अगर वे थे, तो वे बिल्कुल स्पष्ट संकेत नहीं थे
अल्लाह के लिए,

क्योंकि किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी अपने भगवान या देवताओं के लिए वही दावा कर सकता है - शब्द इतने सस्ते हैं - - मुहम्मद के लिए भी।

०३८ २/९९बी: "हमने आप पर (लोगों) प्रकट चिन्हों (आयत) को उतारा है; और कोई अस्वीकार नहीं करता
उन्हें लेकिन जो विकृत हैं - - -"। **गलत। "संकेत" पर सवाल उठाने के लिए जो सिद्ध नहीं हैं
अल्लाह की ओर से आ रहा है, और इस प्रकार तार्किक रूप से अमान्य संकेत के रूप में, सबूत के रूप में उल्लेख नहीं करना, एक नहीं है
विकृत होने का संकेत - इसके विपरीत; बिना पूछे उस पर आँख बंद करके विश्वास करना
प्रश्न भोले होने का एक मजबूत संकेत है, खासकर जब कोई जानता है कि नैतिक रूप से कैसे
कुरान के लिए एकमात्र स्रोत - मुहम्मद - पतित थे।**

*०३९ २/१०१अ: "और जब उनके पास अल्लाह का एक रसूल आया - - -"। **क्या कोई आदमी
उसने लिखी किताब में इतनी सारी गलतियाँ की - शायद अल्लाह की ओर से -
वास्तव में एक सर्वज्ञ भगवान के दूत हो? या अगर उसने कोई गलती नहीं की, और कुरान
नकली है - तो क्या वह अल्लाह की ओर से है? एक सर्वज्ञ भगवान ने बस एक किताब नहीं भेजी
उसके साथ कई गलतियाँ, आदि।**

०४० २/१०१बी: "- - - पुस्तक के लोगों की एक पार्टी (यहाँ यहूदी - पुस्तक के लोग =
यहूदी और ईसाई, और इस संबंध में "पुस्तक" बाइबिल* है) ने की पुस्तक को फेंक दिया
अल्लाह (कुरान*), मानो (यह कुछ था) वे नहीं जानते थे!" यहाँ कुरान बताता है
कि यहूदियों ने कुरान को ओटी से मान्यता दी। यह गलत है - बहुत मौलिक हैं
मतभेद और इतने सारे बिंदु जो कुरान और बाइबिल के बीच भिन्न हैं, कि
केवल एक चीज जिसे जानना संभव है, वह यह है कि कुछ पूरी तरह से गलत है। सबूतों में से एक
यह है कि इस क्षेत्र के हजारों यहूदियों के पूर्ण बहुमत ने स्वीकार करने से इनकार कर दिया

इस्लाम - बर्बादी या गुलामी या मौत के सामने भी।
०४१ २/१०१: "(मुहम्मद *) पुष्टि कर रहे थे कि (बाइबल, आदि *) उनके साथ क्या था (यहूदी और ईसाई *)"। गलत। 2/89 देखें।

042 2/102: "- - - (जादू) के खरीदार - - -"। जादू सिर्फ अंधविश्वास है - किसी भी भगवान को पता था यह।

*00f 2/105: "लेकिन अल्लाह अपनी विशेष दया के लिए जिसे वह चाहेगा - - -"। मुहम्मद असद यहाँ बताते हैं कि यह कह रहा है कि यहूदियों और ईसाइयों ने इस पर विश्वास करने से इनकार कर दिया मुहम्मद और उनका कुरान, क्योंकि मुहम्मद "बाहर" से थे - कुरान, इस्लाम और मुसलमान इस अप्रमाणित दावे को दोहराते और दोहराते हैं और इसे "व्याख्या" के रूप में उपयोग नहीं करते हैं। जबकि वास्तविक मुख्य कारण यह था कि उन्होंने मुहम्मद के नए धर्म को स्वीकार नहीं किया था बाइबल से इतने सारे और ऐसे मूलभूत अंतर थे, कि कुछ

जाहिर है बहुत गलत था। इसके अलावा, यहूदी - क्षेत्र में गैर-अरबों का पूर्ण बहुमत - माना जाता है कि उनके पास यहोवा के साथ एक वाचा थी, और कुरान और आधुनिक समय इस्लाम और . दोनों मुसलमान इतने बेईमान हैं कि इस तथ्य का उल्लेख कभी भी यहूदियों के मुख्य कारण के रूप में नहीं करते हैं मुहम्मद की शिक्षाओं में कोई दिलचस्पी नहीं थी: वाचा और बहुत अलग धर्म वे दो कारण थे जिनकी वजह से उन्हें इस्लाम में दिलचस्पी नहीं थी - कुरान और इस्लाम में नहीं दावे और दावे और दावे (उनके लिए सामान्य रूप से बिना किसी सबूत के या दस्तावेज़ीकरण): - इसका कारण यह था कि मुहम्मद यहूदी नहीं थे।

043 2/107a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत (कोई 7 स्वर्ग नहीं)। 2/22a देखें।

00g 2/107b: "और उसके सिवा तुम्हारे (लोगों) का न तो कोई संरक्षक है और न ही सहायक।" खैर, यीशु कई बार और बहुत सारे गवाहों के सामने कहा कि वह मदद कर सकता है, और यहाँ तक कि कुरान भी स्वीकार करता है कि यीशु ईमानदार था।

०४४ २/१०८: "लेकिन जो कोई ईमान (इस्लाम*) से बदल कर अविश्वास में बदल गया, वह बिना सम मार्ग से सन्देह (स्वर्ग का मार्ग*)"। सभी गलतियों, विरोधाभासों के साथ, और कुरान में गलत तर्क, सबसे वास्तविक संदेह है, और संदेह का कारण है, जिसके लिए इस्लाम कर सकता है स्वर्ग के लिए "समान रास्ता" हो - यह और भी अधिक है जब कोई जानता है कि उसके लिए एकमात्र स्रोत कुरान में कहानियां, नैतिक रूप से पतित व्यक्ति और स्वयं घोषित पैगंबर थे मुहम्मद (जिनके पास भविष्यवाणी करने में सक्षम होने का उपहार नहीं था, लेकिन उन्होंने अच्छा इस्तेमाल किया शीर्षक सभी समान) - समय के दौरान लगभग सभी स्वयं घोषित पैगंबर बन गए हैं झूठे भविष्यद्वक्ता इस जीवन में कुछ चाहते हैं - आम तौर पर पैसा, महिला और/या शक्ति - उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले साधनों की बहुत अधिक परवाह किए बिना। मुहम्मद कम से कम महिलाओं को चाहते थे और शक्ति। (और अगर इस्लाम गलत तरीका है और वे इसे बहुत देर से खोजते हैं तो सभी मुसलमान कहाँ समाप्त होते हैं?)

०४५ २/१०९: "- - - सत्य के बाद (कुरान*) प्रकट हो गया है - - -"। कुरान सबसे अच्छा है आंशिक रूप से सत्य - बहुत सारी गलतियाँ, बहुत सारे विरोधाभास, बहुत अधिक विकृत तर्क, आदि।

०४६ २/११३ए: "- - - वे (यहूदी और ईसाई*) (एक ही) पुस्तक का अध्ययन करने का दावा करते हैं।" गलत के लिए दो कारण: एक: यहूदियों के पास केवल पुराना नियम (OT) है। दो: ईसाई धर्म है NT पर निर्मित, OT मुख्य रूप से ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के रूप में - एक ऐसा तथ्य जिसे विरोधी अक्सर भूल जाते हैं या "भूल जाओ"।

**०४७ २/११३बी: "फिर भी वे (यहूदी और ईसाई*) एक ही किताब का अध्ययन करते हैं"। ये है केवल आंशिक रूप से सच। यहूदी सिर्फ ओटी पढ़ते हैं। ईसाई अपने धर्म का निर्माण अधिक नरमी से करते हैं और अधिक मानव NT और नई वाचा (लूका 22/20) - वाचा का मुसलमानों ने कभी उल्लेख नहीं किया - ओटी के साथ मुख्य रूप से ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के रूप में। यह एक सच्चाई है जिसे अक्सर भुला दिया जाता है या "भूल" जाता है जब कोई ईसाई धर्म के बारे में बात करता है - खासकर जब कोई धर्म को चित्रित करना चाहता है जितना संभव हो उतना काला।

048 2/116a: "वे कहते हैं; 'अल्लाह ने एक बेटा पैदा किया है' (जिसका कुरान सख्ती से खंडन करता है)। लेकिन यीशु ने अक्सर परमेश्वर/यहोवा को पिता कहा - इसके बहुत से, कई गवाह थे। अगर वह सच बोला - और कुरान भी कहता है कि वह एक ईमानदार व्यक्ति था - इस मामले में इसका मतलब है कुरान यहाँ गलत है। (यहोवा को बाइबल में कम से कम १६३ बार यीशु का पिता कहा गया है, और यहोवा के पुत्र यीशु कम से कम 66 बार। और याद रखें: अनिर्दिष्ट दावों के बावजूद इस्लाम से, विज्ञान ने दिखाया है कि बाइबल मिथ्या नहीं है)।

०४९ २/११६बी: "और पृथ्वी पर: सब कुछ उसकी पूजा करता है।" अन्य स्थानों से
कुरान जानता है कि "सब कुछ" का शाब्दिक अर्थ है - प्रत्येक जीवित प्राणी और सभी निर्जीव
चीज़ें। जैसा कि कोई अन्य जीवों को कभी नहीं देखता है, निर्जीव चीजों का उल्लेख नहीं करने के लिए

मुसलमान अल्लाह की इबादत करते हैं - और इंसानों को छोड़कर कोई भगवान भी नहीं - और निर्जीव के लिए भी
चीजें, और प्रकृति इस प्रकार दिखाती है कि दावा सत्य नहीं है, यह उन दावों में से एक है जो अवश्य ही
असत्य माना जाएगा जब तक कि इस्लाम इसे साबित न कर दे। साबित करता है, न केवल राज्यों या दावों। (टिप्पणी उद्धृत करने के लिए
120 अब्दुल्ला यूसुफ अली में: "कुरान का अर्थ": "- - - स्वर्ग में सब कुछ और
पृथ्वी अल्लाह की महिमा मनाती है ”। लेकिन मुसलमानों के लिए सामान्य की तरह यह केवल एक दावा है - नहीं
दस्तावेज़ीकरण, कोई सबूत नहीं, और कोई वास्तविक स्पष्टीकरण नहीं)।

050 2/117a: "वास्तव में, हम (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) को सच्चाई से भेजा है - - -"। सारी गलतियाँ,
आदि कुरान में बताता है कि यह सच नहीं हो सकता - कि उसे एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा नहीं भेजा गया था।

०५१ २/११७ब: "--- हम (अल्लाह*) ने तुझे (मुहम्मद*) सच में भेजा है---"। खैर, यह एक है
बहुत ही केंद्रीय प्रश्न: मुहम्मद ने जो कहा, वह कितना सच था?

०५२ २/११८: "हमने (अल्लाह*) ने उन लोगों के लिए निशानियाँ स्पष्ट कर दी हैं जो दृढ़ता से पकड़ते हैं
विश्वास के लिए - - -।" अल्लाह के लिए कहीं भी कोई वैध स्पष्ट संकेत नहीं हैं - प्रमाण -
कुरान. ऊपर 2/99 देखें।

०५३ २/११९अ: "वास्तव में, हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुसलमानों/लोगों*) को वास्तव में खुशी का वाहक भेजा है
ख़बर और चेतावनी देने वाला (= मुहम्मद) - - -।" किसी भी सर्वज्ञ ईश्वर ने किसी भी देश में समाचार देने वाला नहीं भेजा है
जो इतना गलत है।

०५४ २/११९बी: "- - - खुशखबरी - - -"। यह कि कुरान "खुशखबरी" है, केवल सबसे अच्छा है
आंशिक रूप से सच। ऊपर 2/97c और नीचे 61/13 देखें।

०५५ २/१२०: "अल्लाह का मार्गदर्शन (कुरान*) - यही एकमात्र मार्गदर्शन है"। so . के साथ एक किताब
बहुत सारी गलतियाँ, इतना अमान्य तर्क, और इतनी अमानवीयता कोई मार्गदर्शन नहीं है - at
सबसे अच्छा पथभ्रष्ट।

०५६ २/१२५ए: "- - - इब्राहीम का स्टेशन ले लो (कबा* में / के पास) - - -"। इब्राहीम कभी नहीं था
मक्का में। नीचे 2/127 देखें।

057 2/125b: "- - - अब्राहम का स्टेशन - - -" एक पत्थर में एक निशान है। मुहम्मद ने संकेत दिया और
इस्लाम कहता है कि इब्राहीम के पैरों से निशान बनाया गया था जब उन्होंने वहां खड़े होकर काबा का निर्माण किया था।
बता दें कि इब्राहीम कभी मक्का में नहीं था (जब तक कि इस्लाम इसे साबित नहीं करता - नीचे 2/127 देखें)
एक तरफ: कोई भी कार्यकर्ता कुछ बनाने के लिए एक ही स्थान पर इतने लंबे समय तक खड़ा नहीं रहता, कि उसका
पैरों ने एक ठोस प्राकृतिक पत्थर में एक निशान बनाया - सदियों बाद दिखाई देने वाले निशान। अब इस्लाम कहता है
निशान (वास्तव में 2 - प्रत्येक पैर के लिए एक) एक चमत्कार का परिणाम है, जैसा कि वे दावा करते हैं कि पत्थर इतना बदल गया
नरम है कि इब्राहीम के पैर उसमें डूब गए। (वे यह भी दावा करते हैं कि पत्थर जन्नत का है - (.)
स्वर्ग के उद्यान))। खैर, इस्लाम ने अब तक यह भी साबित कर दिया है कि इब्राहीम कभी गया भी था
मक्का, एक ऐसी जगह जो उसके और उसके जानवरों के बड़े झुंड के लिए बहुत प्रतिबंधित थी - एक बंजर
मुसलमानों को उद्धृत करने के लिए रेगिस्तान, और ज़मज़म से पहले भी उनकी पहली यात्रा का दावा किया गया था
पाया, इस्लाम के अनुसार - रेगिस्तानी भूमि को मना कर रहा था जिसके माध्यम से उसे
अपनी सब भेड़ों, बकरियों, गायों, आदि का नेतृत्व करो और उनके लिए भोजन और पानी ढूंढो - और उसके पास बहुत से थे
एक अमीर आदमी था। और सब के ऊपर एक जगह जहां से वह रहता था और बहुत दूर एक जगह थी
मवेशियों आदि के बड़े मालिक के लिए कोई आकर्षण। जो चाहे उस पर विश्वास करें - लेकिन डॉक्टर के पास जाएं यदि
आप इस और उस कहानी के बाकी हिस्सों पर विश्वास करते हैं (2 खानाबदोशों द्वारा बनाई गई बड़ी मस्जिद, इश्माएल ला रहा है a
बड़ा पत्थर - उठाने के लिए बहुत बड़ा - अपने पिता के खड़े होने के लिए, और एक पत्थर इतनी मजबूती से चमक रहा है कि अल्लाह
बिना किसी उचित सबूत के) लाइट बंद करनी पड़ी।

058 2/125c: "- - - हम ने इब्राहीम और इश्माएल के साथ वाचा बाँधी, कि वे मेरे
हाउस (मक्का में काबा*)"। इब्राहीम और इश्माएल का इमारत के निर्माण से कोई लेना-देना नहीं था
काबा - नीचे 2/127 देखें।

०५९ २/१२६: "- - - इब्राहीम ने कहा: 'इसे (मक्का*) शांति का शहर बनाओ - - -।" गलत। अब्राहम
मक्का में कभी नहीं था, जब तक कि इस्लाम इसके लिए ठोस सबूत पेश नहीं करता। नीचे 2/217 देखें।

**060 2/127a: "और याद रखें कि इब्राहीम और इश्माएल ने सदन की नींव रखी
(कबा*) (इस प्रार्थना के साथ):---"। **इब्राहीम ने काबा की नींव कभी नहीं बनाई (और अ
अंतर्विरोध; अन्य छंद कहते हैं कि उन्होंने भवन का निर्माण किया, न कि केवल इसकी नींव) - और
उसके कई कारण हैं:**

1. वह कसदिया के ऊर में पैदा हुआ था (यदि वह वास्तव में)
   अस्तित्व में) जो अब दक्षिण इराक में है। साथ में
   अपने पिता के साथ, (तारा के अनुसार)
   बाइबिल), बाद में उन्होंने उत्तर-पश्चिम की ओर ऊपर की ओर यात्रा की
   फरात घाटी से करण तक जो अभी है
   उत्तर इराक। वर्षों बाद उन्होंने दक्षिण जारी रखा
   दक्षिण पश्चिम से कानन और शहर सिकेम in
   अब इज़राइल क्या है (सिकेम उत्तर में है
   जेरूसलम। इसे अब नब्लस नाम दिया गया है)। अर्थात्
   कहने के लिए उन्होंने तथाकथित उपजाऊ के साथ यात्रा की
   वर्धमान - जब आप यात्रा करते हैं तो प्राकृतिक मार्ग
   जानवरों के झुंड के साथ। विकल्प था
   अरब रेगिस्तान के माध्यम से एक शॉर्टकट ले लो, लेकिन
   उसकी कई भेड़ों और बकरियों में से कुछ और
   ऐसी यात्रा में गाय बच जाएंगी। वह कभी नहीं
   उर से सिकेम के रास्ते में मक्का का दौरा किया।
   (इसके अलावा कहानी में बहुत जल्दी था -
   इश्माएल अभी पैदा नहीं हुआ था, और वह का एक हिस्सा है
   के अनुसार काबा की इमारत
   कुरान)।
2. इब्राहीम तब के पश्चिमी भाग में बस गया
   कानन (अब लगभग इज़राइल), जबकि
   उसका भतीजा लूत यरदन घाटी में बस गया
   आगे पूर्व। बाद में इब्राहीम दक्षिण की ओर चला गया
   सिनाई में नेगेव। नेगेव आज सबसे ज्यादा जाना जाता है
   उसके रेगिस्तान के लिए, लेकिन सभी रेगिस्तान नहीं थे। यह सब है
   बाइबिल के अनुसार, लेकिन कुरान में नहीं है
   परस्पर विरोधी जानकारी, सिवाय इसके कि उसके पिता
   एक और नाम था। बात यह है कि बीच
   कानन और मक्का और इससे भी अधिक के बीच
   नेगेव और मक्का सैकड़ों और सैकड़ों हैं
   कठिन और शुष्क और गर्म के किलोमीटर के
   अरब रेगिस्तान। इब्राहीम अमीर था और उसके पास बहुत बड़ा था
   जानवरों के झुंड। वह उन्हें नहीं ले सका
   उस रेगिस्तान के माध्यम से भेड़, आदि के विशाल झुंड।
3. इब्राहीम से सैकड़ों किलोमीटर दूर रहता था
   मक्का - और पाने के लिए कठोर इलाके को पार करना पड़ा
   तक और से। कोई बड़ा मंदिर नहीं बनाता

   खुद को और अपने परिवार को एक ऐसी जगह पर जहां वे कर सकते हैं
   कभी नहीं या लगभग कभी नहीं जाते।
4. अब्राहम खानाबदोश था। खानाबदोशों के पास नहीं है
   बड़े पैमाने पर निर्माण करने की जानकारी और तकनीक

पत्थर की इमारतें।

इब्राहीम बस में शामिल नहीं था
काबा का निर्माण, और यह अत्यधिक संभावना नहीं है
कभी मक्का और यहां तक कि अरब भी गए
प्रायद्वीप यह एक परी कथा की तरह दिखता है
काबा और इस्लाम को वजन दो। और नहीं
कम से कम मुहम्मद को, जो २५०० साल बाद
बता सकता है कि वह प्रत्यक्ष वंशज था
इब्राहीम - जरा सा भी लिखित कागज के बिना
उन सभी वर्षों से। 2500 वर्ष अधिकतर एक-
बिना किसी लिखित के वर्णमाला घुमंतू
इतिहास। आप चाहें तो विश्वास करें - और यदि आप
जानिए कौन थे आपके पूर्वज साल 500
ईसा पूर्व (= सीए 2500 साल पहले)।

यह भी जोड़ने योग्य है कि मुसलमान कहते हैं कि
मक्का वह जगह थी जहां इब्राहीम (या वास्तव में .)
सारा का) दास हाजिरा, और उसका और उसका बच्चा
इस्माइल (इश्माएल) से दूर भेज दिया गया
इब्राहीम की छावनी, कि वे दोनों वहीं रहें, और
कि इब्राहीम अक्सर बाद में उनसे मिलने जाता था।
इसके लिए जानकारी का कोई स्रोत नहीं है।
ओटी का कहना है कि वे नेगेव में रहते थे, जो है
मक्का से ऊंट द्वारा सप्ताह - और भी बहुत कुछ,
भेड़, बकरियों के बड़े झुंड के लिए बहुत लंबा,
और मवेशी (अमेरिकी काउबॉय झुंड चला रहे हैं
रेलवे के लिए मवेशियों की, 10-12 मील की दूरी तय की -
16-20 किमी - एक दिन। दक्षिण में खानाबदोश
शायद ही कोई तेजी से आगे बढ़े - - - अगर वे कर सकते थे
पानी खोजें)। लंबे समय के अलावा यह
ले जाएगा, कई जानवर शायद ही करेंगे
कठोर अरब के माध्यम से लंबे ट्रेक से बचे
रेगिस्तान। और इसके अलावा कोई कारण नहीं था
उसके और उसके परिवार के लिए ऐसा करने के लिए a
उनके साथ खतरनाक और अर्थहीन यात्रा
जानवरों को एक बंजर और सूखी घाटी में। और के रूप में वह
कभी मक्का नहीं गए, वह नहीं जा सकते थे
हाजिरा और इस्माइल वहाँ (यह और भी अधिक
बाइबिल में उल्लेख है कि इश्माएल के पास रहता था
मिस्र की सीमा और मिस्र से अपनी पत्नी को मिला
(बस नीचे देखें) - - - और विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है
कि बाइबिल गलत नहीं है - आसान तरीका
मुसलमानों के लिए बाहर जब बाइबिल का उल्लेख है
चीजें जो उन्हें पसंद नहीं हैं)। इस्लाम चाहे तो
जोर देकर कहते हैं कि उन्होंने कभी मक्का का दौरा किया, उन्हें करना होगा

मजबूत सबूत पेश करें, क्योंकि यह अत्यंत है
असंभावित - और "विशेष वक्तव्यों की मांग"
विशेष प्रमाण"। यह अत्यधिक संभावना है कि यह सिर्फ एक है
कहानी बनाई गई है या f से "उधार" लिया गया है। भूतपूर्व।
मुहम्मद की शिक्षा देने के लिए लोकगीत
साख

5. एक और तथ्य: बाइबिल - एक किताब जो इस्लाम
हर बार कुछ पाठ होने पर जोर देना सही होता है
वे पसंद करते हैं, लेकिन यह सच हो सकता है अन्य
बार, भी, कहता है (१. मूसा २१/२१): "जबकि वह
(इश्माएल*) पारान के रेगिस्तान में रहता था,
उसकी माँ ने उसके लिए मिस्र से एक पत्नी लाई।"
धार्मिक मुसलमानों को छोड़कर जो दृढ़ता से

चाहता है कि यह परान या फ़रान का संदर्भ हो
मक्का के पास तमाम गंभीर वैज्ञानिक कहते हैं कि यह
सिनाई में परान था - - - जिसने इसे भी बनाया
उसकी माँ के लिए आसान (जो मिस्र से थी)
यद्यपि मिस्र से उसकी पत्नी ढूंढ़ने के लिए
जिसने उसके बच्चों को मिस्री और केवल बनाया
इब्राहीम के स्टॉक के वंशज (वहाँ है
इश्माएल के लिए केवल एक पत्नी का उल्लेख किया)।

6. आगे (1. मो. 25/18): "उसका (इश्माएल का)
हवीला से लेकर क्षेत्र में बसे वंशज
शूर, मिस्र की सीमा के पास, जैसे तुम जाओ
अश्शूर की ओर"। मिस्र की सीमा का अर्थ है
लाल सागर के पास। जहां ज्यादातर वैज्ञानिक
परान जगह। (यह थोड़ा विडंबना है कि इस्लाम कहता है
बाइबिल का नाम सही है, लेकिन बाकी सब
जगह के बारे में जानकारी की, पत्नी से
(पड़ोसी) मिस्र, आदि गलत। लेकिन यदि आप
देखने जाओ, तुम पाओगे कि के अनुसार
इस्लाम, बाइबिल में कभी कोई गलती नहीं है और यह है
विश्वसनीय जब वह जो कहता है वह इस्लाम में फिट बैठता है। परंतु
जब यह उन चीजों या तथ्यों को बताता है जो विरोधाभासी हैं
इस्लाम, बाइबल को गलत ठहराया गया है - या यहाँ की तरह एक
बस विरोधाभासी तथ्यों को छोड़ देता है - - -
जो कोई भी सुरक्षित रूप से कर सकता है, जैसा कि शायद ही कोई हो
मुसलमान अच्छी तरह से बाइबल को अच्छी तरह से जानता है
चेरी-सूचना का चयन)। और नायब:
यह १००० या उससे अधिक साल पहले लिखा गया था
मुहम्मद, और बिना किसी कारण के
इश्माएल अरब से दूर अगर यह सच नहीं था।

**मक्का तक जाने के लिए जानवरों के बड़े झुंड वाले आदमी के लिए बहुत मना था -
और इब्राहीम के लिए वहाँ जाने का कोई कारण नहीं था। इसके विपरीत: थोड़ा भोजन
उसके जानवर, मक्का में ज़मज़म से पहले पानी नहीं मिला (?) - और इश्माएली
"मिस्र की सीमा के पास" रहते हैं। वह कभी मक्का में नहीं था और फलस्वरूप कभी नहीं बनाया गया
काबा - बड़ा मंदिर जिसे बनाने का ज्ञान उसके पास नहीं था, और
और भी बुरा; उपयोग नहीं कर सकता था, क्योंकि वह 1000 किमी दूर के बेहतर हिस्से में रहता था।**

242

पेज 243

०६१ २/१२७ब: "और याद रखें कि इब्राहीम और इश्माएल ने सदन की नींव रखी
(काबा*)"। 2/127 देखें।

०६२ २/१२९: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

00h 2/130: "- - - इब्राहीम का धर्म (= इस्लाम*) - - -।" कुरान अक्सर दावा करता है कि इस्लाम
= अब्राहम का धर्म। लेकिन यह हमेशा था और केवल एक दावा है - कोई सबूत नहीं, नहीं
दस्तावेज़ीकरण - समझाने की कोशिश भी नहीं, सिवाय अनिर्दिष्ट और साबित किए गए दावे को छोड़कर कि
हर कोई जो कुछ और कहता है वह झूठ बोल रहा है, और वह अन्य शास्त्र जिन्हें विज्ञान अधिक मानता है
विश्वसनीय (100% साबित नहीं हुआ, लेकिन सच होने की अधिक संभावना है) मिथ्याकरण हैं, भले ही
विज्ञान ने दिखाया है कि वे झूठे नहीं हैं - हो सकता है कि बाइबल में सब कुछ सच न हो,
भी, लेकिन विज्ञान ने स्पष्ट रूप से दिखाया है कि यह गलत नहीं है। (इसे साबित करने के लिए १००.०% निश्चित रूप से है
असंभव - हमेशा सैद्धांतिक या निर्मित संभावनाएं होंगी। लेकिन यह कम से कम साबित होता है
99.5% - शब्द की किसी भी न्यायिक परिभाषा से बहुत दूर - और अगर इस्लाम कुछ और दावा करता है,
उन्हें सबूत पेश करने होंगे, न केवल ऐसे दावे जो संभावित सिद्धांत पर भी आधारित नहीं हैं
इस बारे में कि सभी हज़ारों अलग-अलग पांडुलिपियों में इतने अध्याय कैसे रहे होंगे और
छंदों को ठीक उसी तरह से मिथ्या बना दिया गया है - उस समय पूरी दुनिया में फैला हुआ था जिसे कोई जानता था। सभी
इस्लाम जो पेश करता है, वह एक हठीला दावा है - इस बारे में एक सिद्धांत भी नहीं कि यह कैसे संभव होना चाहिए
सब कुछ गलत साबित करते हैं, या विज्ञान के बारे में सभी हजारों पुरानी पांडुलिपियों को क्यों जानता है,
दिखाओ कि यह गलत नहीं है। तुलना के लिए: बाइबिल के मिथ्याकरण के बारे में इस्लाम के दावे नहीं हैं
0.5% भी साबित हुआ। वे केवल दावे हैं।

कोई सबूत नहीं। हजारों दस्तावेज होने के बावजूद कोई दस्तावेज नहीं है। केवल एक

जिद्दी दक्षा कुछ और नहीं बल्कि एक किताब पर आधारित है जिसमें बहुत सारी गलतियाँ हैं जो एक आदमी द्वारा तय की गई हैं
संदिग्ध नैतिक और कम से कम कहने के लिए शक्ति की लालसा।

०६३ २/१३१: "संसारों के भगवान"। कुरान 7 (सपाट) दुनिया (65/12) के बारे में बताता है - एक ऊपर
दूसरी हदीस के अनुसार। गलत (एक छोटा विवरण: अब्दुल्ला यूसुफ अली में (वही .)
यूसुफ अली, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद संशोधित): "पवित्र कुरान का अर्थ", 11. संस्करण,
शब्द "संसारों" से "ब्रह्मांड" में बदल दिया गया है - मेरा अनुमान है कि क्यों।

०६४ २/१३५: "- - - इब्राहीम का धर्म, सत्य (धर्म*) - - -"। कुरान के अनुसार,
इब्राहीम एक मुसलमान था। लेकिन अन्य सभी गलतियों और मुड़ तर्क और कहानियों को देखते हुए
कुरान - इस्लाम को इसके लिए असली सबूत पेश करने होंगे जो सच था। यह भी देखें २/१३०
के ऊपर।

०६५ २/१३६ए: "- - - हमें (मुहम्मद/मुसलमान*) को दिए गए खुलासे (कुरान*)"। थे
उन्होंने वास्तव में दिया? - और क्या वे वास्तव में खुलासे थे? किसी भी परिस्थिति में ऐसा नहीं किया
रहस्योद्घाटन/कुरान एक सर्वज्ञानी भगवान से आते हैं - गलतियों से भरा नहीं, आदि।

६६ २/१३६बी: "हम (अल्लाह) उनमें से किसी एक (पैगंबर*) के बीच कोई फर्क नहीं करते - -
-"। कम से कम यहोवा एक भेद करता है: वास्तविक और झूठे भविष्यद्वक्ताओं के बीच। NS
एक वास्तविक भविष्यवक्ता होने की कसौटी यह है कि आप भविष्यवाणियां करते हैं - और भविष्यवाणियां आती हैं
सच। यदि नहीं, तो वह एक झूठा भविष्यद्वक्ता है (५. मूसा १८/२१)। मुहम्मद ने अपने पूरे जीवन में एक नहीं बनाया
वास्तविक भविष्यवाणी। (कुछ कहावतें थीं जिन्हें याद किया गया क्योंकि वे हुईं
सच हो जाते हैं - ऐसे मामलों में अन्य को सामान्य की तरह भुला दिया जाता है - लेकिन कोई वास्तविक भविष्यवाणी नहीं होती है। वह
कभी नहीं - कुरान में कोई जगह नहीं और शायद ही सभी हदीसों में - यहां तक कि . का उपहार होने का भी दावा किया
भविष्यवाणियाँ करना)। क्या वह तब वास्तव में एक नबी था - या क्या उसने केवल एक प्रभावशाली "उधार" लिया था
शीर्षक? वह बस एक नबी नहीं था। किसी के लिए एक दूत या शायद कुछ - या एक
प्रेरित, लेकिन कोई नबी नहीं। लेकिन अगर कुरान या बाइबिल या दोनों के बारे में सच बोलते हैं

यह, यीशु स्पष्ट रूप से था। कुरान, हालांकि, जितना संभव हो सके यीशु को कम करता है, और सरलता से
मुहम्मद के शीर्षक के अधिकार के प्रश्न को छोड़ देता है - जैसा कि अक्सर पुस्तक चीजों को मानती है a
मामूली सबूत या दस्तावेज के बिना तथ्य।

०६७ २/१३६ब: "हम (अल्लाह*) उनमें से किसी एक (पैगंबर*) के बीच कोई फर्क नहीं करते - -
-"। **गलत। कुरान मुहम्मद के बीच बहुत फर्क करता है - भले ही वह
कोई वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं था, क्योंकि उसके पास भविष्यवाणी करने में सक्षम होने का उपहार नहीं था - और
अन्य सभी नबी। अगर अल्लाह ने उनके बीच कोई अंतर नहीं किया, तो इतना बड़ा क्यों है
कुरान में अंतर?**

00i 2/137: "- - - (मुसलमान*) सही रास्ते पर - - -"। क्या कोई "पथ" भरी हुई पुस्तक पर आधारित हो सकता है?
गलतियाँ और बहुत ही संदिग्ध नैतिक व्यक्ति द्वारा निर्देशित, वास्तव में "सही मार्ग" कहा जा सकता है?

०६८ २/१३९: "- - - (अल्लाह*) हमारा (मुसलमान*) भगवान है और आपका (गैर-मुस्लिम*) भगवान - - -"। जैसा
यह दावा केवल अन्य पर आधारित है, सिद्ध दावों पर नहीं, और विशेष रूप से अन्य मौजूद होने के कारण
संभावनाएं जहां कम से कम कुछ मजबूत परंपराओं पर आधारित हैं, यह एक अमान्य कथन है,
जब तक साबित न हो जाए।

00j 2/140: "- - - क्या तुम अल्लाह से बेहतर जानते हो?" (- इज़राइल के पुराने कुलपतियों आदि के बारे में।)

1. नहीं - अगर अल्लाह वास्तव में मौजूद है और सर्वज्ञ है
   और मुहम्मद से संपर्क किया। इनमें से सभी
   सभी से संदिग्ध लग रहा है
   कुरान में गलतियाँ, आदि।
2. शायद - अगर अल्लाह वास्तव में मौजूद है, लेकिन नहीं है
   सर्वज्ञ, लेकिन मुहम्मद से संपर्क किया -
   जिस पर मुहम्मद ने केवल दावा किया, कभी नहीं
   साबित हुआ, भले ही यह संभव होना चाहिए
   अल्लाह।
3. हाँ - अगर अल्लाह वास्तव में मौजूद है, लेकिन नहीं था
   मुहम्मद से संपर्क करें। आधुनिक विज्ञान जानता है a
   मुहम्मद की तुलना में बहुत अधिक - और नहीं हैं
   सत्ता के लिए बाहर जाना, आदि = अधिक विश्वसनीय।

4. हाँ, निश्चित रूप से - अगर अल्लाह मौजूद नहीं है और
शायद एक बीमार आदमी की कल्पना थी
(टीएलई?) शक्ति के मंच का निर्माण।

069 2/144a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०७० २/१४४बी: "पुस्तक के लोग (= यहूदी, ईसाई और सबियन) अच्छी तरह जानते हैं कि
कि (किबला बदलने का कारण = प्रार्थना करने की दिशा*) उनके रब की ओर से सत्य है।

1. यहूदी और ईसाई निश्चित रूप से नहीं जानते
यह - और न ही सबाइयों को यह पता था
(सबीन सबा में रहते थे, जो अब है
यमन वे के माध्यम से ईसाई बन गए थे
पूर्वी अफ्रीका में ईसाइयों का प्रभाव।
(हालांकि इस्लाम कहता है कि सबियन एक संप्रदाय थे
अरब में - हालांकि बहुत अस्पष्ट विचारों के साथ
कहां और किसके बारे में।))

244

पेज 245

2. चूँकि कुरान में बहुत सारी गलतियाँ हैं, इसलिए यह एक
सवाल है कि क्या बाकी भी गलत है।
3. चूंकि कुरान में बहुत सारी गलतियां हैं, यह
यह भी एक प्रश्न है कि क्या यह हमारे रब की ओर से है,
यहोवा। **यह भी एक सवाल है कि क्या कोई भगवान था
कुरान में बिल्कुल शामिल - एक भगवान करता है
गलती न करें, इस तरह का उल्लेख न करें
गलतियों की संख्या - या ढीले बयान
और झूठे "संकेत" और "सबूत" - the
धोखेबाजों और धोखेबाजों की पहचान।**

०७१ २/१४५: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

*072 2/145+146: "यदि आप, ज्ञान के बाद (नए क़िबला के = किस दिशा का सामना करना है)
जब आप प्रार्थना कर रहे हों*), उनकी (पुस्तक के लोग*) (व्यर्थ) इच्छा का पालन करने के लिए - फिर
क्या तुम वास्तव में (स्पष्ट रूप से) गलत थे। किताब के लोग इसे वैसे ही जानते हैं जैसे वे अपने को जानते हैं
अपने बेटे।" लेकिन यह सबसे स्पष्ट है कि यह सच नहीं है - न तो यहूदी और न ही ईसाई इसे जानते हैं -
- - और विशेष रूप से ईसाई नहीं, जिनके पास कोई क़िबला नहीं है (चर्च ज्यादातर अपना बनाते हैं
मण्डली का मुख पूर्व की ओर है, परन्तु कोई क़िबला नहीं है)।

०७३ २/१४६: "- - - लेकिन उनमें से कुछ (यहूदी, ईसाई*) सच्चाई को छुपाते हैं (
कुरान*) - - -"। इतने सारे गलत तथ्यों और इतने गलत तर्क के साथ, यह आंशिक रूप से सबसे अच्छा है
सच्चाई। 40/75 देखें।

०७४ *२/१४६: "---सत्य (कुरान की शिक्षा*) जो उन्होंने (यहूदी, ईसाई*)
खुद जानते हैं।" कुरान और के बीच बहुत सारे और इतने बुनियादी अंतर हैं
बाइबिल - विशेष रूप से एनटी - कि केवल एक चीज जिसे जानना संभव है, वह है कुछ
इस तरह के इस्लामी दावों में बहुत गलत है (सामान्य रूप से, एक सिद्ध दावा नहीं)।

075 2/147a: "सत्य - - -", 40/75 देखें।

०७६ २/१४७बी: "सच्चाई आपके (लोगों के) भगवान (अल्लाह*) - - - की ओर से है। इतनी सारी गलतियों के साथ
कुरान में, यह भगवान से नहीं है, क्योंकि भगवान गलती नहीं करते हैं।

077 2/147c: "सच्चाई (कुरान*) आपके (लोगों के) भगवान से है, इसलिए संदेह में बिल्कुल न हों"।
इतनी सारी गलतियों और इतने गलत तर्क आदि के साथ, संदेह का हर कारण है।

00k 2/149: "- - - वह (नया क़िबला) वास्तव में आपके रब की ओर से सत्य है"। इतने सारे के साथ
कुरान में गलतियां, यह एक खुला प्रश्न है कि क्या यह सच है या नहीं। यह बताने लायक है
मुसलमानों का कहना है कि काबा की दिशा इब्राहीम की किबला थी। हम हो चुके हैं
यह पता लगाने में असमर्थ कि वे ऐसा क्यों कहते हैं - ऐसा कोई विश्वसनीय स्रोत नहीं है जो यह बता सके कि इब्राहीम के पास भी था
एक किबला, यह उल्लेख नहीं करने के लिए कि यह दिशा मक्का था, एक ऐसी जगह जिसे उसने शायद ही कभी सुना हो

के बारे में (यह मुहम्मद से पहले की पिछली कुछ पीढ़ियों के दौरान ही मक्का का विकास हुआ था
कुछ आकार के एक उचित धनी शहर के लिए)।

078 2/159: "- - - स्पष्ट (संकेत) - - -।" 2/99a और 2/99b देखें।

०७९ २/१६०: "सिवाय उन लोगों के जो तौबा कर लेते हैं और सुधार करते हैं और खुलेआम (सत्य) घोषित करते हैं"। साथ
कुरान में इतनी सारी गलतियाँ, सबसे अच्छी किताब आंशिक रूप से सच है। 40/75 देखें।

245

पृष्ठ २४६

080 2/164a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

*०८१ २/१६४बी: "- - - बारिश जो अल्लाह आसमान से उतारता है और वह जीवन जो वह
मरी हुई पृथ्वी को देता है।" कोई भी भगवान जानता था कि यह जड़ों या बीजों के साथ जीवित है, नहीं
मृत - यह केवल ऐसा ही देखा।

०८२ २/१६४सी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०८३ २/१७३: "उसने (अल्लाह*) ने तुम्हें केवल मरे हुए मांस, और खून, और मांस के मांस को मना किया है
सूअर, और जिस पर अल्लाह के सिवा दूसरा नाम लिया गया है।" गलत। आप
उन जानवरों का मांस खाने से भी मना किया जाता है जिन्हें आप गला घोंटकर मारते हैं, या मौत के घाट उतारे जाते हैं,
और हदीस - एफ। भूतपूर्व। अल-बुखारी - आपको गधे से मांस खाने के लिए बहुत स्पष्ट रूप से प्रतिबंधित करता है।

084 2/176a: "- - - अल्लाह ने किताब उतारी"। इतने सारे गलत तथ्यों के साथ, यह असंभव है
कि कुरान एक भगवान द्वारा भेजा गया है।

085 2/176b: "- - - अल्लाह ने किताब (कुरान*) को सच में उतारा"। इसके साथ ही ढेर सारी गलतियां
और अन्य संदिग्ध तर्क, यह आंशिक रूप से सत्य है।

०८६ २/१७७: "- - - अल्लाह और आखिरी दिन, और कोणों, और किताब, और पर विश्वास करने के लिए
संदेशवाहक - - -"। मुहम्मद अली कहते हैं कि यह "स्वर्गीय रहस्योद्घाटन" को स्वीकार करने जैसा है
तथ्य - स्पष्ट रूप से इस्लाम का अर्थ आज भी है, भले ही कुछ भी सिद्ध न हो या
प्रलेखित, यह सब एक नैतिक रूप से बहुत संदिग्ध और शायद बीमार में अंध विश्वास पर टिकी हुई है
(टीएलई?) व्यक्ति ने एक बार कहा था।

087 2/185: "- - - स्पष्ट (संकेत) - - -"। कोई स्पष्ट संकेत मौजूद नहीं है (अल्लाह या मुहम्मद के लिए प्रमाण)
सभी कुरान में - 2/99 देखें।

०८८ २/१८७: "- - - अल्लाह मनुष्यों को अपनी निशानियाँ स्पष्ट करता है - - -"। कोई स्पष्ट संकेत मौजूद नहीं है (सबूत
अल्लाह या मुहम्मद के लिए) सभी कुरान में - 2/99 देखें।

०८९ २/१८९: "वे (अमावस्या) समय की निश्चित अवधि को चिह्नित करने के लिए संकेत हैं (
मामलों के) पुरुष, - - -"। गलत - अमावस्या केवल एक प्राकृतिक घटना है। आदमी अक्सर
समय की गणना करने के लिए उपयोग करता है लेकिन यह उस उद्देश्य के लिए नहीं बनाया गया है। अगर इस्लाम उस पर जोर देता है, तो वे करेंगे
साबित करना है।

090 2/213a: "मानव जाति एक अकेला राष्ट्र था - - -।" मानव जाति कभी भी एक राष्ट्र नहीं था। कुछ
160ooo-200ooo साल पहले शायद एक जनजाति, लेकिन कभी एक राष्ट्र नहीं - और बिल्कुल नहीं
इन पिछले कुछ सहस्राब्दियों के भीतर जो कुरान द्वारा कवर किया गया है।

०९१ २/२१३बी: "- - - खुशखबरी - - -"। गलत। 2/97c और 61/13 देखें।

092 2/213c: "उसने (अल्लाह*) ने किताब (कुरान*) - - - भेजी। एक सर्वज्ञ भगवान ने नहीं भेजा a
कई गलतियों, विरोधाभासों और अमान्य प्रमाणों आदि के साथ बुक करें।

०९३ २/२१३डी: "उसने (अल्लाह*) ने किताब को सच में भेजा, - - -"। इतने सारे गलत तथ्यों के साथ सबसे अच्छा यह
केवल आंशिक सत्य है। 40/75 देखें।

094 2/213e: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं - अल्लाह या मुहम्मद के लिए सबूत
- सभी कुरान में। 2/99 देखें।

पेज 247

०९५ २/२१३एफ: "अल्लाह ने अपनी कृपा से विश्वासियों (कुरान* के माध्यम से) - - -" का मार्गदर्शन किया। एक किताब
उसके साथ कई गलतियाँ और अमान्य प्रमाण, आदि कोई मार्गदर्शन नहीं है।

096 2/213g: "अल्लाह ने अपनी कृपा से विश्वासियों को सत्य की ओर निर्देशित किया, - - -"। अल्लाह का अनुमान
इतनी गलतियाँ वाली किताब, सच नहीं है। सबसे अच्छी बात यह है कि किताब आंशिक रूप से सच है।

०९७ २/२१९: "इस प्रकार अल्लाह आपको अपनी निशानियाँ - - -" स्पष्ट करता है। एक स्पष्ट संकेत नहीं है -
अल्लाह या मुहम्मद के लिए सबूत - सभी कुरान में। 2/99 देखें।

०९८ २/२२१: "लेकिन अल्लाह - - - मानव जाति के लिए अपने संकेतों को स्पष्ट करता है - - -"। एक भी स्पष्ट संकेत नहीं है
- मुहम्मद के अल्लाह के लिए सबूत - सभी कुरान में, क्योंकि यह कहीं भी साबित नहीं होता है कि अल्लाह बनाता है
चिन्ह। 2/99 देखें।

099 2/231a: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

१०० २/२३१बी: "- - - तथ्य यह है कि उसने (अल्लाह) ने आप पर किताब - - -" उतारी। क्या यह सच है कि
भगवान ने एक ऐसी किताब भेजी है जिसमें इतने सारे गलत तथ्य हैं? असंभव।

*१०१ २/२३१सी: "- - - बुद्धि की पुस्तक, - - -"। इतने सारे गलत तथ्यों वाली किताब नहीं है
बुद्धि की पुस्तक। सबसे अच्छा आंशिक रूप से ज्ञान की एक किताब। (लेकिन कौन से हिस्से ज्ञान हैं और कौन से
नहीं?)

१०२ २/२४२: "इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी निशानियाँ स्पष्ट करता है - - -"। एक भी स्पष्ट नहीं है
संकेत - अल्लाह या मुहम्मद के लिए सबूत - पूरे कुरान में। 2/99 देखें।

00m 2/247a: "अल्लाह ने आप पर तालुत (शाऊल *) को राजा नियुक्त किया है (यहूदी 1100 - 1000 के आसपास)
ईसा पूर्व *)"। सबसे अधिक संभावना है कि यह यहोवा (परमेश्वर) था जिसने ऐसा किया, या क्या? अल्लाह और यहोवा नहीं हैं
एक ही ईश्वर चाहे इस्लाम चाहे जो भी हो - मूलभूत अंतर बहुत बड़े और बहुत अधिक हैं।
तब तक नहीं जब तक कि ईश्वर मानसिक रूप से बीमार न हो - यदि वह मौजूद है।

00n 2/247b: "- - - आपके पास (यहूदी) वाचा का सन्दूक आएगा"। खैर, के अनुसार
वाचा का सन्दूक बाइबिल यहूदियों के पास नहीं आया - उन्होंने इसे स्वयं बनाया
एक विवरण के अनुसार जो उन्हें यहोवा से मिला था। यह लगभग १३३० ईसा पूर्व के तहत किया गया था
मूसा।

१०३ २/२४८ए: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

00o 2/248b: "- - - वाचा का सन्दूक आपके पास आएगा - - - कोणों द्वारा ले जाया गया - - -"।
इसके लिए पुख्ता सबूत की जरूरत है, खासकर जब से बाइबल में बहुत अधिक संभावित स्पष्टीकरण है। देखो
2/247बी ऊपर।

104 2/248c: "- - - एक प्रतीक (= साइन*) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

१०५ २/२५२: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

१०६ २/२५५: "- - - स्वर्ग में सभी चीजें - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

१०७ २/२५३ए: "- - - हमने (अल्लाह) ने स्पष्ट (संकेत) - - -।" एक भी स्पष्ट मौजूद नहीं है
(कुरान-बोलना = प्रमाण में) न तो कुरान के लिए, न अल्लाह के लिए, न ही मुहम्मद के लिए
सभी कुरान में एक भगवान से संबंध - केवल झूठे दावे और अंध विश्वास की मांग।

१०८ २/२२५बी: "- - - स्पष्ट (संकेत) के बाद उनके पास आया था - - -।" गलत। ऊपर 2/253a देखें।

१०९ २/२५५: "- - - आकाश के ऊपर - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

***११० २/२५६: "---धर्म में कोई बाध्यता नहीं---"। यह "प्रमुख" "साबित" करने के लिए
शांतिपूर्ण इस्लाम, **जिसका अधिकांश मुसलमानों द्वारा प्रतिदिन उपयोग किया जाता है और स्वयं इस्लाम द्वारा बहुत बार, बहुत ही है गलत है, क्योंकि इसे कम से कम इन (सीए. 30 सभी एक साथ) द्वारा निरस्त (अमान्य बना दिया गया है) अधिक खूनी और अमानवीय बाद में मदीना सूरह: 2/191 - 2/193 - 3/28 - 3/85 - 4/91 - 5/33 - 5/72 - 5/73 - 8/12 - 8/38-39 - 8/39 - 8/60 - 9/3 - 9/5 - 9/14 - 9/23 - 9/29 - 9/33 - 9/73 - 9/123 - 14/7 - 25/36 - 25/52 - 33/61 - 33/73 - 35/36 - 47/4 - 66/9** (**5/33** के लिए: याद रखें)
मुहम्मद ने जितने भी युद्ध और छापे लड़े, वे आक्रमण के युद्ध थे, भले ही वे इसे कहते हों
जिहाद - यहाँ तक कि बद्र, उहुद और खाई (मदीना) भी किस युद्ध में रक्षा की लड़ाई थी?
आक्रमण शुरू हुआ और मुहम्मद के छापे से जीवित रहा। गैर-मुसलमानों को बचाव नहीं करना चाहिए
खुद और उनके सामान, 5/33 के अनुसार)।

इसके अलावा तलवार के अलावा और भी कई तरह की मजबूरियां हैं - अर्थव्यवस्था, क्रूर कर, सामाजिक कलंक, "बेरुफ़्सवरबोट" (अच्छे काम निषिद्ध), शारीरिक असुरक्षा, आदि। And उन सभी को तलवार से सहारा दिया गया था - "अनुरूप और आज्ञाकारी और भुगतान करें या फिर - - -" !!

यह जोड़ा जाना चाहिए कि कुछ मुसलमान इस बकवास को अच्छे विश्वास में कहते हैं। लेकिन एक सिंगल नहीं
मुसलमान अपने धर्म में पढ़ा-लिखा है, नहीं जानता कि वह हर बार झूठ बोल रहा है, वह कहता है कि नहीं है
इस्लाम के तहत धर्म में मजबूरी - लेकिन फिर इस्लाम का बचाव और प्रचार दो दो हैं
ऐसे मामले जहां अल-तकिया (वैध झूठ) और किटमैन (वैध अर्ध-सत्य), न केवल हैं
वैध है, लेकिन इस्लाम में अनिवार्य है, यदि इसका उपयोग करना आवश्यक है। (एक छोटा PS: इनमें से एक या दो
२/२५६ को निरस्त करने वाली छंद स्वयं २/२५६ से थोड़ी पुरानी हो भी सकती है और नहीं भी, लेकिन एक बार एक था
इस्लाम में लंबी बहस चल रही है कि क्या एक पुरानी आयत एक छोटे को निरस्त कर सकती है, और निष्कर्ष यह था कि
यह संभव था)।

बीसदेस मुसलमान आम तौर पर कविता को गलत तरीके से उद्धृत करते हैं, और आपको बताते हैं कि यह कहता है: "कोई मजबूरी नहीं है
धर्म में"। यह वास्तव में क्या कहता है: "धर्म में कोई बाध्यता न हो" - एक इच्छा या ए
मांग, एक पूरा तथ्य नहीं।

यदि इस पद को निरस्त नहीं किया गया होता, तो यह "खुशखबरी" होता। हाँ, भले ही मुसलमानों ने
ईमानदार रहा है और बताया गया है कि कविता कम से कम 30 कठोर बाद के छंदों द्वारा निरस्त कर दी गई है जिससे उसने मदद की थी
- कम से कम इसने मुसलमानों के नैतिक स्तर को ईमानदार होने में मदद की थी।

१११ २/२५९: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

११२ २/२६६: "इस प्रकार अल्लाह आपको (लोगों *) (उसकी) निशानियों को स्पष्ट करता है"। कोई स्पष्ट नहीं हैं
कुरान में अल्लाह या मुहम्मद के लिए संकेत - एक नहीं। 2/99 देखें।

११३ २/२८४: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

११४ २/२८६: "(प्रार्थना करें:) 'हमारे भगवान! - - -'"। शब्द (प्रार्थना :) मूल अरब में मौजूद नहीं है
पाठ - यूसुफ अली ने इसे "छलावरण" में जोड़ा है कि यह मुहम्मद प्रार्थना कर रहा है
अल्लाह। यह कैसे समझाया जा सकता है कि मुहम्मद किसके द्वारा बनाई गई पुस्तक में अल्लाह से प्रार्थना कर रहे हैं?
अल्लाह या कभी नहीं बनाया जा सकता है, लेकिन अनंत काल से अस्तित्व में है?

कुछ और जगहें हैं जहां स्पष्ट रूप से अल्लाह नहीं बोल रहा है। 6/114a देखें।

सूरह २: कम से कम ११४ गलतियाँ + कम से कम १५ संभावित गलतियाँ।

सूरा ३:

००१ ३/३अ: "वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें (मुहम्मद*) (कुरान*) - - - भेजा है। एक किताब
इसके साथ ही बहुत सी गलतियाँ आदि किसी सर्वज्ञ भगवान द्वारा नहीं भेजी जाती हैं।

००२ ३/३बी: "यह वही है जिसने तुम्हें (कदम दर कदम) नीचे भेजा, सच में - - -"। यह आंशिक रूप से सबसे अच्छा है
सत्य। 13/1, 41/12 और विशेष रूप से 40/75 देखें।

**003 3/3c: "- - - पुस्तक, इससे पहले जो हुआ उसकी पुष्टि करती है; (तोराह और बाइबिल*) - - -"।
**कुरान और तोराह/बाइबिल के बीच बहुत सारे मूलभूत अंतर हैं
(विशेष रूप से एनटी), कि कुरान निश्चित रूप से दो अन्य में से किसी की रचना नहीं है**
(देखें 2/89)। कुरान और इस्लाम बताते हैं कि ऐसा इसलिए है क्योंकि उन किताबों को गलत ठहराया गया है, लेकिन 1400 . के लिए
वर्षों से किसी मुसलमान ने कभी इसका सबूत नहीं दिया - केवल बयान - और आज यह साबित होता है
विज्ञान कि वे कथन गलत हैं। असल में यह इस्लाम से भी साबित होता है: अगर होता तो
मिथ्याकरण के लिए कोई सबूत मौजूद था, इस्लाम इसके बारे में एक ही बार में चिल्लाया था - लेकिन केवल एक चीज
वे सेवा करते हैं, दावा है।

**सुनिश्चित करें: यदि मुसलमानों को इसके लिए कोई सबूत मिला होता, तो यह हर प्रासंगिक और बड़े शब्दों के साथ लिखा गया था
कई अप्रासंगिक स्थान।**

इस बात का कभी कोई प्रमाण नहीं कि कुरान- या मुहम्मद- वास्तव में किसी ईश्वर की ओर से है। कभी नहीँ।

004 3/4a: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

00a 3/4b: "कुरान का संदेश" यहां बताता है कि यहां संकेत सुसमाचार (या
Evangelion - दोनों शब्दों का अर्थ है "खुशखबरी"। "कुरान का संदेश" अंग्रेज़ी में
दिखावा करता है कि "इवेंजेलियन" कुछ खास है, लेकिन यह केवल उसी अर्थ के लिए ग्रीक है।
स्वीडिश में (और कुछ अन्य भाषाओं में) - इस तरह की छोटी सी बेईमानी जिससे आप अक्सर मिलते हैं
इस्लामी धार्मिक साहित्य में, केवल इस मामले में संभव नहीं है, क्योंकि वे शब्द का प्रयोग नहीं करते हैं
"सुसमाचार" - वे "इवेंजेलियम" शब्द का उपयोग करते हैं) जो यीशु को मिला था। इसके बारे में हमारी टिप्पणी बस है
कि उस समय मौजूद इंजील/सुसमाचार का एक निशान बिल्कुल कहीं नहीं मिला है
यीशु की (विज्ञान का कहना है कि मौजूदा लोगों की तुलना में एक पुराना हो सकता है, लेकिन यह एक में है
मामला भी यीशु की मृत्यु के बाद लिखा जाना था, एक इवेंजेलियन के रूप में - अंग्रेजी में सुसमाचार - है
यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में कहानी, और इसके बाद तक नहीं लिखी जा सकती थी
हो गई। यह दावा आपको एकमात्र पूर्ण स्थान पर मिलता है - और केवल एक गैर-दस्तावेज दावे के रूप में -
कुरान में है (और बाद में इस्लामी प्रासंगिक (?) साहित्य कुरान पर या उसके आसपास बनाया गया है)। एक किताब
बहुत सारी गलतियों के साथ, एक बहुत ही संदिग्ध नैतिकता वाले व्यक्ति द्वारा बताया गया जो सबसे ऊपर है
कहानियों को अपनी शक्ति के मंच के रूप में इस्तेमाल किया - और ६००-६५० साल बाद एक पुस्तक का उपयोग करके बनाया गया
मुख्य रूप से धार्मिक किंवदंतियाँ, आदि स्रोत के रूप में, इस्लाम को बनाने के लिए ठोस सबूत पेश करने होंगे
यह दावा विश्वसनीय है - जरूरी नहीं कि सच हो, कम से कम विश्वसनीय हो।

005 3/5: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

००६ ३/७अ: "वही है जिसने तुम्हारे पास किताब उतारी है: - - -"। बहुत सारी गलतियाँ हैं
कुरान में - यह संभवतः एक भगवान द्वारा नहीं भेजा जा सकता है, एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा उल्लेख नहीं किया जा सकता है।

**007 3/7बी: "---- यह सब (कुरान*) हमारे रब की ओर से उतारा गया है:---"। 2/231 देखें
और 3/7ए।

हम इस श्लोक से कुछ और जोड़ना चाहते हैं, क्योंकि सभी में से कुछ में जोड़ आवश्यक है
इस्लाम/मुसलमान ऐसे बयानों आदि को "समझाने" की कोशिश करते हैं, जो स्पष्ट रूप से सच नहीं हैं, द्वारा
कह रहे हैं कि वे रूपक हैं:

***00b 3/7c "वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें किताब (कुरान*) उतारी है: **इसमें हैं
छंद मूल या मौलिक (स्थापित अर्थ का) (= शाब्दिक रूप से पढ़ा जाना *); वे (द
छंद शाब्दिक रूप से पढ़े जाने वाले*) किताब (कुरान*) की नींव** हैं: अन्य हैं
अलंकारिक (कुरान में कई अलंकारिक या समान छंद हैं - वे या तो हैं
देखने में आसान अलंकारिक हैं, या अर्थ समझाया गया है, या दोनों*)। पर जिनके दिल में है
विकृति (,*) उसके उस भाग का अनुसरण करती है जो अलंकारिक है, विकार की तलाश में है, उसके छिपे होने के लिए
अर्थ (= केवल बुरे व्यक्ति ही छिपे अर्थों की तलाश करते हैं - रूपक से भी*), लेकिन नहीं
अल्लाह को छोड़कर छिपे अर्थों को कोई जानता है (= संभवतः छिपे हुए अर्थ के लिए नहीं हैं
मनुष्य *)"।

**** **स्पष्ट पाठ में: कुरान को साहित्यिक पढ़ा जाना है यदि कुछ और कहा या संकेत नहीं दिया गया है - छिपे हुए अर्थ अल्लाह के लिए हैं और खोजने की कोशिश कर रहे हैं
छिपे हुए अर्थ विकृतियों द्वारा किए जाते हैं। मुसलमानों के लिए यह याद रखना बहुत आवश्यक है कि जब वे गलतियों को समझाने के लिए ललचाते हैं और
अक्सर छिपे अर्थों के साथ रूपक के रूप में भूल करता है। कोई छिपा हुआ अर्थ नहीं है जब तक कि यह संकेत न दिया जाए कि यह श्लोक कहता है, और केवल बुरा
मनुष्य ऐसे खोजता है।**

008 3/9: "- - - एक दिन जिसके बारे में कोई संदेह नहीं है - - -"। गलत। एक बार दुनिया का अंत

[illegible] है, ठीक है, संदेह का एक अच्छा कारण है

००९ ३/११: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

010 3/13: "- - - साइन - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

011 3/15: "- - - खुशखबरी - - -"। गलत। ऊपर 2/97c देखें।

*०१२ ३/१८: "--- यही अल्लाह की गवाही है---।" समस्या यह है कि वहाँ मौजूद नहीं है एक
अल्लाह की ओर से एक ही गवाह - कोई चमत्कार नहीं जो गवाह हो सकता था, और कुछ नहीं। केवल
एक पुस्तक में लिखे गए एक बहुत ही संदिग्ध व्यक्ति के शब्द जिसमें बहुत सारी त्रुटियां, विरोधाभास आदि हैं।
मुसलमान अक्सर प्रकृति से "संकेत" के बारे में बात करते हैं, लेकिन प्रकृति अल्लाह के लिए सबूत नहीं है
जब तक कि पहले यह साबित न हो जाए कि इसे किसी ईश्वर ने बनाया है, और तब यह साबित हो जाता है कि वह ईश्वर ही अल्लाह है।
शब्द बहुत सस्ते हैं। यह दावा गलत है जब तक कि इस्लाम यह साबित नहीं कर देता कि अल्लाह ने वास्तव में इसे बनाया है - और
साबित करता है, न केवल मुसलमानों जैसे दावे लगभग हमेशा करते हैं।

०१३ ३/१९: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०१४ ३/२१: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

**०१५ ३/२४: "- - - उनके (यहूदी, ईसाई*) जालसाजी (बाइबल के*) - - -"। कुरान,
मुहम्मद, इस्लाम और अधिकांश मुसलमान दावा करते हैं कि बाइबल को गलत ठहराया गया है - **दावा करें, लेकिन कभी नहीं
दस्तावेज़ या अन्य तरीकों से इसे साबित करें। न केवल दावा करें कि यह मिथ्या है, बल्कि यह कि इसे गलत ठहराया गया है
प्रयोजन। यह इस तथ्य के बावजूद कि विज्ञान लंबे समय से साबित कर चुका है कि यह मिथ्या नहीं है** - एक
सचमुच हज़ारों प्रासंगिक पुराने कागज़ात और कागज़ के स्क्रैप (लगभग १३००० पुराने से पुराने) जानता है
६१० ईस्वी + बाइबल के कुछ ३२००० प्रासंगिक सन्दर्भ), यह कौन से दस्तावेज़ नहीं हैं
झूठा - और इस तथ्य के लिए शाही अवहेलना के साथ कि जैसे-जैसे बाइबल व्यापक रूप से फैली हुई थी
दूरियां, इधर, उधर और हर जगह। समन्वय करना शारीरिक रूप से असंभव था
हर एक कॉपी का हर जगह मिथ्याकरण ताकि सभी मिथ्याकरण समान हों, न कि
उल्लेख करें कि सभी समान बिंदुओं और अन्य पत्रों में इन सभी के सभी संदर्भों को भी होना चाहिए
अनुरूप मिथ्याकरण किया।

२५०

पृष्ठ २५१

***अगली बार जब कोई मुसलमान आपको यह बताए तो सबूत मांगें। उसका खेल थ्रो करना है प्रलेखित नहीं
चारों ओर दावा करते हैं, और विपरीत के लिए आपसे सबूत मांगते हैं - जो कि अगर आप करते हैं तो मुश्किल हो सकता है
पर्याप्त ज्ञान नहीं है। लेकिन यह उसका कर्तव्य है कि वह अपने दावों को साबित करे - अस्वीकृत करना आपका नहीं
उन्हें। ध्यान दें: उनके पास इस तरह के सबूत नहीं हैं - अगर उनके पास केवल एक कमजोर था, तो सुनिश्चित करें कि आप और
बाकी दुनिया ने इसके बारे में कुछ लोगों ने बड़े अक्षरों (वास्तव में की कमी) का उपयोग करके सुना था
इस्लाम का दस्तावेज इस बात का सबसे अच्छा सबूत है कि दावा कुछ गढ़ा हुआ है। और
वास्तव में; झूठे दावों और बयानों को इधर-उधर फेंकना, यह दिखावा करना कि वे तथ्य हैं, हैं
धार्मिक बहस में मुसलमानों और इस्लाम के लिए विशिष्ट धार्मिक प्रचार में उल्लेख नहीं है)।

**लेकिन यह दावा करना कि बाइबिल को गलत ठहराया गया था, मुहम्मद के लिए एकमात्र रास्ता था - और यह
अभी भी इस्लाम के लिए एकमात्र रास्ता है। यदि वे स्वीकार करते हैं कि बाइबल को मिथ्या नहीं बनाया गया है और
हर जगह कुरान उससे टकराती है, इसका मतलब यह स्वीकार करना है कि इस्लाम बना हुआ है
धर्म** - जो विश्वासियों के लिए बहुत कठिन है, और नेताओं के लिए बहुत महंगा है।

हम यह जोड़ सकते हैं कि यह दावा करने के लिए कि फ्रिंज संप्रदायों के लिए यह बिल्कुल सामान्य है - जो कि इस्लाम एक बार था -
मातृ धर्म गलत है और वे स्वयं ही सही हैं। होने वाला
हमारे द्वारा इस बिंदु पर विश्वास किया गया, इस्लाम को केवल सस्ते और ढीले ही नहीं, वास्तविक सबूत पेश करने होंगे
अपने दावे का समर्थन करने के लिए शब्द। चूंकि इतने सारे पुराने कागजात मौजूद हैं, यह साबित करना बहुत होना चाहिए
आसान - - - अगर यह सच थे।

**यहाँ इस्लाम का दावा केवल विज्ञान द्वारा गलत साबित होता है - जब तक कि इस्लाम इसके विपरीत सबूत पेश नहीं करता। लेकिन सबूत, सिर्फ झूठे दावे नहीं
जैसे वे सामान्य रूप से उपयोग करते हैं।**

016 3/25: "- - - एक दिन जिसके बारे में कोई संदेह नहीं है - - -"। गलत। ऊपर 3/9 देखें।

०१७ ३/२७: "तू (अल्लाह) दिन में रात को बढ़ाता है, और तू दिन को
रात को लाभ - - -"। रात और दिन पृथ्वी के प्रकाश में घूमने का एक स्वाभाविक परिणाम है
सूर्य से। कुरान जो ऊपर कहता है, अगर इस्लाम दावा करता है, तो उन्हें इसे साबित करना होगा।

017 3/29: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

*०१८ ३/३५: "इमरान की पत्नी ने कहा"। यहाँ कुरान मरियम की माँ के बारे में बात कर रहा है (यह भी देखें .) कुरान में 3/36: "मैंने उसका नाम मरियम रखा है")। **लेकिन इमरान हारून, मूसा का पिता था और मरियम, जो लगभग १२०० वर्ष पहले जीवित थी!** मुहम्मद बाइबल को बहुत ज्यादा नहीं जानते थे ठीक है, और यह स्पष्ट है कि उसने सोचा था कि मरियम हारून और मूसा की बहन थी। १९/२८ में यह है मरियम के बारे में बात करते हुए सीधे कहा: "हे हारून की बहन"। संभावना है कि इसका कारण गलती यह है कि अरब में मरियम और मरियम (मूसा और हारून की बड़ी बहन) लिखी गई हैं उसी तरह: मरियम। बाइबिल के अपने सीमित ज्ञान के साथ उनका मानना था कि यह वही था महिला। कोई भी भगवान बेहतर जानता था। हम जोड़ सकते हैं कि कुछ मुसलमान कहते हैं कि यह वही नहीं है इमरान, लेकिन वैज्ञानिक इस बात से सहमत हैं कि मुहम्मद का मतलब वही आदमी था - इमरान जो था आदम, नूह और इब्राहीम की तरह अल्लाह द्वारा चुना गया (कुरान में 3/33 देखें) - हारून के पिता, मूसा - - - और मरियम / मरियम / मरियम। वह मुहम्मद वास्तव में यहाँ गलत था, और उसने सोचा मरियम हारून और मूसा की बहन थी, इस तथ्य से प्रलेखित है कि हदीस के अनुसार (उनके धर्म और मुहम्मद के बारे में जानकारी का अन्य मुस्लिम स्रोत) मुहम्मद को सुधारा गया, और उन्होंने गलती को सुधारने के लिए स्पष्टीकरण खोजने की कोशिश की (बिना सफलता)। उन्होंने यह दिखाते हुए जानकारी भी नहीं जोड़ा कि वह और अल्लाह किसी कारण से थे अपने गलत बयान में ठीक वही।

आप मुसलमानों से यह कहते हुए भी मिलेंगे कि कुरान का मतलब यह नहीं है कि मरियम वास्तव में वही थी हारून की बहन (वे कहते हैं कि इसका मतलब लाक्षणिक रूप से था - मुसलमानों के लिए सामान्य रास्ता, जब चीजों को समझाना मुश्किल है), और यह कि किताब का मतलब यह नहीं है कि वह किसकी बेटी थी

२५१

पेज 252

इमरान - उनका केवल एक वंशज। इस्लाम को इतने सैकड़ो साल बाद मिल जाना चाहिए बेहतर "स्पष्टीकरण" - "स्पष्टीकरण" कि सबसे ऊपर कहा जाता है कि इस तथ्य का खंडन किया गया है कि पहले से ही मोहम्मद ने गलती को सुधारने की कोशिश की, लेकिन सफलता नहीं मिली उल्लिखित। लेकिन कोई अन्य स्पष्टीकरण नहीं है जिसका वे उपयोग करने का प्रयास कर सकते हैं। 19/28 भी देखें।

**** **सभी बिंदुओं का एक और पहलू भी है जो गलत या लाचार है व्यक्त या कुछ - कुछ ३००० स्थानों पर अविश्वसनीय हो सकता है - बहुत मोटे तौर पर एक इंच हर दूसरे श्लोक में औसतन (६२४७ श्लोक कहा गया है)। कौन विश्वास करने को तैयार है कि एक सर्वज्ञ और बुद्धिमान भगवान एक किताब में खुद को व्यक्त करने में इतना असहाय है कि वह बताता है कि वह समझने में सरल भाषा का उपयोग करता है, और इतना अशिक्षित है कि वह उपयोग करता है सैकड़ों गलत तथ्य, ताकि मात्र मनुष्य बार-बार बार-बार में कदम रखना है और समझाना है या "समझाना" है कि उसका "वास्तव में क्या मतलब है"? - उल्लेख नहीं करना "समझाओ" या गलतियों को समझाओ? इसमें बहुत अधिक भोलापन, ब्रेनवॉश करने और सादा पुराना होने की आवश्यकता होती है अंधापन और मोरन की कमी के कारण कम से कम सवाल तो नहीं पूछना चाहिए। आप बस विश्वास करते हैं क्योंकि आपकी दादी ने आपको ऐसा कहा था, और आपकी पुरानी मान्यताओं पर सवाल उठाना मुश्किल है आपके "जीवन के तथ्यों" का आधार?**

019 3/37: "हर बार जब वह (जकारिया *) उसे देखने के लिए (उसके) कक्ष में प्रवेश करता, तो वह उसे पाता भरण-पोषण प्रदान किया। उसने कहा: 'हे मरियम! यह आपको कहाँ से (आता है)?' उसने कहा: "से अल्लाह : क्योंकि अल्लाह जिसे चाहता है उसे बिना माप के रोज़ी देता है"। इस का मतलब है कि उसने चमत्कार से अपना भोजन भगवान से प्राप्त किया। यह एक बनी हुई परी कथा है। एक भी नहीं है एक मौका है कि इस तरह के एक चमत्कार को NT से हटा दिया गया था - यह और भी अधिक अगर इस्लाम ने अपने बयानों में सही कहा था कि ईसाइयों (और यहूदियों) ने बाइबल को गलत ठहराया था और यीशु को "बड़ा" बनाया - हालाँकि आप यहूदियों को उनके धर्मग्रंथों की प्रतिलिपियाँ बनाने के लिए कैसे मिथ्या बनाते हैं यीशु "बड़ा"? (मुहम्मद बाइबिल के अच्छे जानकार नहीं थे, और अक्सर गलतियाँ करते थे जब उन्होंने इसका उल्लेख किया या इससे कहानियाँ लीं। उन्होंने हमेशा ऐसी गलतियों को समझाया कि वह सही था, और यह कि अपवित्र यहूदियों और ईसाइयों ने बाइबल को गलत ठहराया था। दरअसल बस यही कहानी वह है जो कुरान ने बाइबिल से बिल्कुल भी "उधार" नहीं ली है, लेकिन उनमें से एक से उस समय फली-फूली धार्मिक किंवदंतियाँ। ये गलतियां थीं वजह यहूदियों ने उसे स्वीकार नहीं किया जब वह यात्रिब/मदीना आया - यहूदियों ने उसकी शिक्षाओं को कहा गलत थे और फलस्वरूप वह एक झूठे नबी थे। (मुसलमानों में "प्रवृत्ति" होती है न कि इस तथ्य का उल्लेख करें, लेकिन इसके बजाय, मुहम्मद को, अधिक चापलूसी वाली कहानी बताएं: वह नहीं था स्वीकार किया क्योंकि यहूदी नाराज थे क्योंकि अल्लाह ने एक गैर-यहूदी को पैगंबर के लिए बुलाया था।))

लेकिन अगर ईसाइयों ने बाइबिल को गलत ठहराया होता, तो उनका मुख्य उद्देश्य मज़बूत करना होता यीशु की स्थिति और यहोवा के साथ उसके संबंध - यहूदी और ईसाई देवता। कोई नहीं है मौका है कि उन्होंने अपनी मां से जुड़े एक चमत्कार को छोड़ दिया था, एक प्रत्यक्ष के बारे में बता रहा था यहोवा और उसके बीच संबंध। (कि वह मंदिर में सेवा करती थी, जिसके बारे में भी बताया गया है

कुरान, बाइबिल के लिए भी नया है - और अगर यह सच था तो वहां कभी नहीं छोड़ा गया था)।

यह कुछ ऐसा भी बताता है कि जब मुहम्मद बाइबिल से भिन्न होते हैं, तो उनकी/कुरान की कहानियां
अक्सर सिद्ध असत्य धार्मिक दंतकथाओं और किंवदंतियों (अक्सर अपोक्रिफा पर आधारित) के अनुरूप होते हैं
शास्त्र - और अक्सर गूढ़ज्ञानवादी)। यह बताता है कि यह बाइबल नहीं है जो गलत है, बल्कि यह है कि कुरान
स्रोतों के रूप में परियों की कहानियों का इस्तेमाल किया हो सकता है। क्या स्रोत के रूप में भगवान को परियों की कहानियों की आवश्यकता होगी?

०२० ३/४१ए: "- - -एक चिन्ह - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२१ ३/४१बी: "- - -तेरा चिन्ह - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

*०२२ ३/४५: "- - - उसका नाम क्राइस्ट जीसस होगा - - -"। उसका नाम केवल यीशु था। शब्द
क्राइस्ट एक नाम भी नहीं था, बल्कि सम्मान की उपाधि थी, और यह उनकी मृत्यु के वर्षों बाद ही उभरा -
मूल रूप से अब तुर्की में क्या है। लेकिन मुहम्मद बाइबल को अच्छी तरह से नहीं जानते थे। (क्राइस्ट इन
ग्रीक का अर्थ हिब्रू में मसीहा के समान है - अभिषिक्त। इस वजह से कुछ
बाइबिल के संस्करण एनटी में मसीहा के बजाय मसीह का उपयोग करते हैं, लेकिन नाम - या शीर्षक वास्तव में - क्राइस्ट
वास्तव में उनकी मृत्यु के बाद तक, यीशु से जुड़ा हुआ नहीं था)।

**023 3/48: "और अल्लाह उसे (बच्चे यीशु*) - - - सुसमाचार सिखाएगा"। एक बात यह है कि
शब्द "सुसमाचार" एकवचन में है - 4 सुसमाचार हैं। में "सुसमाचार" का उपयोग करना असामान्य नहीं है
एकवचन, लेकिन ऐसा लगता है कि मुहम्मद नहीं जानते थे कि एक से अधिक थे। **लेकिन असली
डरावना यह है कि उस समय सुसमाचार मौजूद नहीं थे - अस्तित्व में नहीं हो सकते थे, क्योंकि वे हैं
यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान की कहानी। सबसे पुरानी रचना लगभग २५ साल बाद लिखी गई है
उनकी मृत्यु** (या थोड़ा पहले हो सकती है, नए विज्ञान के अनुसार - स्रोत: न्यू साइंटिस्ट)। प्रदर्शन
हम एक अकेला भगवान जो यह नहीं जानता था। लेकिन जैसा कि पहले कहा गया था: मुहम्मद नहीं जानते थे
बाइबिल अच्छी तरह से। 3/3 भी देखें।

हम जोड़ सकते हैं कि बहुत से मुसलमान आपको बताएंगे कि कुरान 4 ज्ञात के बारे में बात नहीं कर रहा है
सुसमाचार, लेकिन एक पुराने के बारे में वे दावा करते हैं कि गायब हो गया है। और वे आंशिक रूप से सही हो सकते हैं
एक बिंदु - यह हो सकता है कि एक बार एक और और पुराना सुसमाचार था, (हालांकि इतना पुराना नहीं था कि
यीशु इसे पढ़ सकता था, न तो एक बच्चे के रूप में, न ही एक वयस्क के रूप में)। 3 सुसमाचार इतने समान हैं, कि यह है
स्पष्ट है कि एक संबंध है, और संभावित स्पष्टीकरणों में से एक यह है कि वे सभी सामग्री लेते हैं
एक पुराने सुसमाचार से। लेकिन अजीब तरह से मुसलमान कभी भी अन्य संभावित स्पष्टीकरण का उल्लेख नहीं करते हैं:
कि दो सबसे कम उम्र के लोगों ने केवल 3 में से सबसे पुराने से सामग्री ली। और अजीब तरह से
इमाम अपनी मण्डली को कभी नहीं बताते कि वास्तव में एक सुसमाचार क्या है। मुसलमानों के लिए हानिकारक
बिंदु हैं:

1. एक सुसमाचार यीशु के जीवन, मृत्यु का इतिहास है
   और पुनरुत्थान, मुख्य बिंदु होने के साथ
   उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान - के लिए अंतिम प्रमाण
   किसी अलौकिक चीज से उसका संबंध।
   पहले भी बहुत सारे सबूत थे
   बाइबिल और कुरान दोनों के अनुसार
   - उनके कई चमत्कार। लेकिन उसका पुनरुत्थान
   के बारे में कोई विवाद या इनकार किया
   कुछ अलौकिक की भागीदारी
   असंभव। **लेकिन सभी में मुख्य बिंदुओं के रूप में
   सुसमाचार उसकी परीक्षा है, उसकी मृत्यु है, और उसका
   पुनरुत्थान, कोई भी सुसमाचार तब तक अस्तित्व में नहीं हो सकता था जब तक
   उनकी मृत्यु के बाद।** और कोई कहानी नहीं जिसमें उनका . शामिल नहीं है
   परीक्षण, मृत्यु और पुनरुत्थान एक सुसमाचार है,
   क्योंकि वही बिंदु जो इसे सुसमाचार बनाते हैं
   - उसका पुनरुत्थान और इस प्रकार अंतिम प्रमाण और
   अँधेरी ताकतों पर अंतिम विजय - नहीं हैं
   वहां। (नीचे बिंदु C भी देखें)।
2. यह ज्ञात है कि मुहम्मद वास्तव में नहीं थे
   बाइबिल को जानते हैं, और विशेष रूप से एनटी को नहीं, और यह
   ऐसा लगता है जैसे उसने "सुसमाचार" शब्द का प्रयोग बिना

वास्तव में इसका मतलब होता
मुसलमान कम से कम छोटे वाले साथ ही आधुनिक
शिक्षा - क्या a . के बारे में अस्पष्ट विचार हैं

२५३

पेज 254

सुसमाचार है, और बस कहता है कि वहाँ होना चाहिए
यीशु ने जो पढ़ा, वह बड़ा था, जो इस प्रकार है
आप देखते हैं एक असंभव है। (बेशक कुछ
फिर सर्व-विजेता तर्क का प्रयास करें कि
अल्लाह जानता था और बता सकता था - - - लेकिन फिर हम
एक बार फिर इस तथ्य के खिलाफ हैं कि पूर्ण
अल्लाह के लिए दिव्यदृष्टि मुफ्त के साथ संयुक्त
मनुष्य के लिए इच्छा भी असंभव है, एक सच्चाई है
जिसे इस्लामी विद्वान भी मानते हैं, हालांकि अधिकांश
अनिच्छा से, और बहुत ही लंगड़ा जोड़ के साथ
कि "सब एक समान यह सच होना चाहिए, क्योंकि यह है
कुरान में बताया" (!!!))

3. हम जानते हैं कि अगर कभी कोई पुराना अस्तित्व में था
सुसमाचार, हम स्वतः ही यह भी जान लेते हैं कि
यीशु की मृत्यु के बाद लिखा गया था, इसलिए यीशु कर सकता था
इसका अध्ययन नहीं किया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक सुसमाचार as
कहा यीशु के जीवन, मृत्यु और की कहानी है
जी उठने (जो ज्यादातर मुसलमान नहीं करते
पता लगता है), और इस प्रकार नहीं हो सकता
उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद तक लिखा गया -
और इस प्रकार हम जानते हैं कि मामले में लिखा नहीं गया था
33 ई. के बाद तक। (एक छोटा वैज्ञानिक
सुधार: यह ज्ञात है कि यीशु 33 वर्ष का था
साल की उम्र में जब उनकी मृत्यु हो गई। लेकिन जब रोम बाद में
गणना जब यीशु का जन्म हुआ, तो उन्होंने एक बनाया
5 - 6 साल तक की गलती हो सकती है।
इसलिए वास्तव में यीशु का जन्म लगभग 5 - 6 . हुआ था
हमारे समय-सारणी के वर्षों पहले की बात है
शून्य - और उनकी मृत्यु तदनुसार हो सकती है
27 - 28 ईस्वी के आसपास रहे हैं)।

4. यदि कभी इतना पुराना सुसमाचार होता, कि
इसका मतलब है कि यह समय के और भी करीब था
हुआ, और इस प्रकार 3 का उल्लेख करता है
सुसमाचार और भी अधिक विश्वसनीय हैं जैसा कि वे मामले में करते हैं
अपनी सामग्री को एक बहुत ही लिखित सुसमाचार से लिया
यीशु की मृत्यु के कुछ ही समय बाद, और इस प्रकार एक समय में
जब जो हुआ वो और भी ताज़ा था
लोगों और समाज के दिमाग और
लेखक। लेकिन यीशु के लिए अध्ययन करना अभी भी असंभव है,
जैसा कि नहीं था - नहीं हो सकता - उसके बाद तक मौजूद नहीं था
मौत।

(हम जोड़ सकते हैं कि "सुसमाचार" का अर्थ है "अच्छी खबर" या "खुशखबरी" या "खुशखबरी"। आप मिलते हैं
यह शब्द कुछ बाइबलों और अन्य साहित्यों में इस तरह प्रयोग किया जाता है, लेकिन तब इसे सामान्य रूप से लिखा जाता है
"सुसमाचार" नहीं "सुसमाचार"।)

*०२४ ३/४९: "मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ, जिसमें मैं तुम्हारे लिए उसमें से कुछ बनाता हूँ।
मिट्टी, जैसा कि एक पक्षी की आकृति थी, और उसमें सांस लें, और यह अल्लाह के द्वारा एक पक्षी बन जाता है
छोड़"। इसके अलावा यह आश्चर्य एनटी से कभी नहीं छोड़ा गया था अगर यह सच था - 3/37 देखें। परंतु
वास्तव में यह "परी कथा" चाइल्ड गॉस्पेल (वास्तव में) में से एक में बनाई गई किंवदंतियों से लिया गया है

यह थॉमस चाइल्ड गॉस्पेल से आया है - जिसे "द थॉमस गॉस्पेल ऑफ़ द इन्फ़ैन्सी ऑफ़ जीसस" भी कहा जाता है क्राइस्ट"- 2 सदी से एक अपोक्रिफल)। एक भगवान को पता था कि बाल सुसमाचार बनाए गए थे यूपी। इसके अलावा: यह दुनिया को क्या बताता है कि कुरान एक परोक्ष के रूप में बनाई गई कहानी का उपयोग करता है अल्लाह के लिए सबूत? और यह मुहम्मद के कई बयानों की विश्वसनीयता के बारे में क्या बताता है? जब बाइबिल और कुरान के बीच अंतर होता है, तो इसका कारण यह है कि बाइबिल है झूठा है, जब यह स्पष्ट है कि कुरान अक्सर परियों की कहानियों का जिक्र कर रहा है?

**025 3/51: (यीशु ने कहा*): "यह अल्लाह है जो मेरा पालनहार और तुम्हारा पालनहार है; फिर उसकी पूजा करो"। यह किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखा/बताया जाना चाहिए जिसे यीशु के समय इज़राइल का कोई ज्ञान नहीं था। वह था उन अवधियों में से एक जब यहूदी धर्म मजबूत था और धार्मिक प्रतिष्ठान शक्तिशाली। इसके अलावा (मुस्लिम) भगवान का नाम मुहम्मद के बाद तक अल्लाह नहीं था उसका नाम थोड़ा बदल दिया - यह अल-लाह था (जिसका अर्थ है "ईश्वर" - "ईश्वर" नहीं, बल्कि "ईश्वर"। पश्चिम में मुस्लिम मिशनरी आज अक्सर अल्लाह की जगह ईश्वर शब्द का प्रयोग करते हैं, क्योंकि तब यहोवा (हमारे भगवान) और अल्लाह के बीच कई अंतर देखने में अधिक कठिन हैं। वे कहते हैं कि अल्लाह का अर्थ ईश्वर है, लेकिन कड़ाई से "अल-लाह" = "ईश्वर")। उस के यहूदी समय यात्रा करने वाले लोग थे, और वे अरब और वहां के बहुदेववादी धर्म को जानते थे।

1. अगर यीशु ने प्रचार किया होता कि लोगों को प्रार्थना करनी चाहिए दूसरे से एक ज्ञात बहुदेववादी भगवान के लिए देश (और याद रखें कि उस समय देवताओं इसके अलावा कम से कम एक हद तक सोचा गया था ज्यादातर अपने देश या जनजाति का ख्याल रखना या जो कुछ भी) - उसे अल-लाह या पुराने एल कहो - उन्हें बहुत कम फॉलोअर्स मिले होंगे।
2. **अगर यीशु ने अल-लाह के बारे में प्रचार किया था - अ ज्ञात बहुदेववादी विदेशी देवता - यहूदी धार्मिक प्रतिष्ठान ने उसे मार डाला था** विधर्म के लिए **साल पहले** , के लिए अनादर यहोवा और ऐसी ही बातें।

बयान किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा बनाया गया है जो धार्मिक और राजनीतिक स्थिति को नहीं जानता है इजराइल ३० ईस्वी के आसपास (इसे बनाने का उद्देश्य बहुत स्पष्ट है)।

026 3/52a: "(यीशु*) ने कहा: 'अल्लाह के (काम) के लिए सहायक कौन होगा?" 3/51 देखें।

०२७ ३/५२बी: "चेले (यीशु* के) ने कहा: 'हम अल्लाह के मददगार हैं:' 3/51 देखें।

028 3/52c: चेलों ने कहा: "- - - हम अल्लाह में विश्वास करते हैं, - - -"। 3/51 देखें।

029 3/52d: चेलों ने कहा: "- - - और आप (यीशु) गवाही देते हैं कि हम मुसलमान हैं"। देखो 3/51. इसके अलावा मुहम्मद से 600 साल पहले इस शब्द का शायद ही कोई अर्थ था।

०३० ३/५८: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

00c 3/59: "अल्लाह के सामने यीशु की समानता आदम के समान है - - -"। यानी में कहना है "कुरान-स्पीक": वह एक नबी था, लेकिन उसके लिए एक साधारण इंसान। खैर, यीशु ने बुलाया भगवान/याहवे "पिता", जो आदम नहीं कर सका। और विज्ञान के अनुसार, आदम कभी नहीं अस्तित्व में था।

०३१ ३/५९: "उसने (अल्लाह) ने उसे (आदम*) धूल से पैदा किया, - - -"। कुरान कई के बारे में बताता है जिस तरह से आदमी बनाया गया था - 13 अलग अगर आप सख्त हैं, 5 - 7 अगर आप कम सख्त हैं। केवल 1 हो सकता है सच है, क्योंकि मनुष्य (एडम) केवल एक बार बनाया गया था। दरअसल वे सभी गलत हैं। कुछ मुसलमान गर्व है कि पुरातत्वविदों ने पाया है कि मानव जाति तथाकथित से गुज़री है बाधाएं, और यह कि सभी में एक "माँ" समान हो सकती है - पुरातात्विक पूर्व संध्या - और एक आम "पिता" - कम ज्ञात पुरातात्विक एडम। "हिप, हुर्रे! विज्ञान है

आदम और उसकी पत्नी को कुरान में साबित कर दिया !!" जिसका जिक्र उनमें से किसी ने कभी नहीं किया
जहाँ तक हमने सुना है, यह तथ्य है कि यह "ईव" लगभग १६० से २००० साल पहले भारत में रहती थी।
अफ्रीका, जबकि संबंधित "एडम" बहुत बाद में रहता था - 60ooo - 70ooo के रूप में देर से हो सकता है
(६४ooo?) साल पहले और एशिया में। कुछ शादी !!! (और वास्तव में बाइबिल से आदम और
कुरान सबसे अधिक संभावना कभी अस्तित्व में नहीं था - मनुष्य एक प्राइमेट से विकसित हुआ, उसे बनाया नहीं गया था
अचानक अस्तित्व)। 6/2 भी देखें।

०३२ ३/६०: "सत्य केवल अल्लाह की ओर से आता है; - - -"। इतने गलत तथ्यों के साथ कि आप
उस पुस्तक में खोजें, यह अधिक से अधिक आंशिक रूप से सत्य हो सकता है, यदि यह उस पुस्तक में प्रकल्पित सत्यों को संदर्भित करता है
कुरान. 40/75 भी देखें।

०३३ ३/६१: "- - - अब (पूर्ण) ज्ञान के बाद तुम्हारे पास आया है - - -"। इतनी गलतियों के साथ
कुरान, यह आंशिक रूप से सबसे अच्छा ज्ञान है।

०३४ ३/६४: "- - - कि हम (मुसलमान और यहूदी/ईसाई) अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करते (= यहोवा
और अल्लाह को एक ही ईश्वर*) होने का दावा किया जाता है। यह मौलिक के रूप में संभव नहीं है
कुरान और बाइबिल/एनटी के बीच मतभेद बहुत बड़े और बहुत अधिक हैं - तब तक नहीं जब तक कि
भगवान सिज़ोफ्रेनिक है। यह मुख्य रूप से मुसलमान ही कहते हैं - और उन्हें मजबूत लाना होगा
सबूत

00d 3/67: "अब्राहम एक यहूदी नहीं था और न ही अभी तक एक ईसाई - - -"। वह निश्चित रूप से कोई ईसाई नहीं था,
जैसा कि वह रहता था - यदि वह कभी जीवित रहा - लगभग 1800 - 2000 वर्ष बहुत पहले। लेकिन कॉल करना सही हो सकता है
सभी यहूदियों का पूर्वज एक यहूदी। (हम जानते हैं कि उस समय यह शब्द मौजूद नहीं था, लेकिन यह सामान्य है
उन लोगों के लिए भी इस शब्द का उपयोग करना, जिन्हें बाद में यहूदी नाम मिला। "यहूदी" शब्द बना है
"यहूदा" से - यहूदी कुलपति जैकब के पुत्रों में से एक का नाम - का पोता
अब्राहम।)

00e 3/68: "निःसंदेह, मनुष्यों में, इब्राहीम के सबसे करीबी रिश्तेदार, वे हैं जो अनुसरण करते हैं
उसे - - -"।

1. आप किसी पुरुष से सिर्फ इसलिए संबंधित नहीं हो जाते क्योंकि तुम अनुयायी हो।
2. क्या वाकई इस्लाम इब्राहीम की असलियत का अनुसरण कर रहा है? धर्म? - केवल कुरान ऐसा कहता है, और कुरान ने साबित कर दिया है कि इसमें बहुत सारी गलतियाँ हैं - बहुत सारे।
3. अगर मुहम्मद ने खुद को यहां शामिल किया: क्या वह था? वास्तव में इब्राहीम का वंशज? - अब्राहम लगभग २५०० साल पहले रहते थे, और कितने आज भी जानते हैं अपने पुरखों को 2500 साल वापस? - लोगों ने राजनीतिक के लिए झूठ बोला है या पूरे इतिहास में व्यक्तिगत कारण और पूर्व-इतिहास, माननीय पूर्वजों के बारे में भी।

4. भले ही मुहम्मद के वंशज रहे हों इब्राहीम - तो 2500 साल बाद कितने करीब? मामले में उनके पहले पूर्वज इश्माएल थे। इश्माएल आधा मिस्री था (उसकी माँ हागरो मिस्र की एक दासी थी (1.Mos. 16/1), और इश्माएल ने स्वयं एक स्त्री से विवाह किया (केवल एक पत्नी का उल्लेख है) मिस्र से (1. राज्य मंत्री २१/२१) और उनका परिवार के पास बस गया मिस्र की सीमा (१. मूसा २५/१८) सिनाई में। NS मिस्र की सीमा कभी भी बीच में नहीं थी अरब, भले ही मुसलमान हाजिरा चाहते हैं और इश्माएल मक्का में बस गया)। इसके साथ - साथ आधुनिक डीएनए ने दिखाया है कि अरब दूर हैं शुद्ध जाति है। अरब व्यापारी थे - और पत्नियों और दासों को घर लाया और मिल गया

उनके साथ बच्चे। साथ ही विदेशी व्यापारी
अरब पार किया और अब एक बच्चा बनाया और
तब - यौन वर्जनाएँ कहीं अधिक शिथिल थीं
मुहम्मद से पहले। अरब बस एक है
स्थानीय और बहुत से नहीं स्थानीय डीएनए का मिश्रण - in
पहले से ही उल्लेखित तथ्य के अलावा कि
पहले से ही 2 पीढ़ियों के बाद केवल के
रिश्ता अब्राहम के साथ था - - - और
मुहम्मद तक 25oo साल का मतलब कुछ 100 . था
पीढ़ियाँ।

संदेह के बहुत कारण हैं।

०३५ ३/७०: "तुम (यहूदी*) अल्लाह की उन आयतों को क्यों ठुकराते हो, जिनमें तुम हो (स्वयं) गवाह?" शब्द "साइन" यहां इन बयानों को संदर्भित कर सकता है:

1. इस्लाम का कहना है कि मुहम्मद को बाइबिल में भविष्यवाणी की गई है, और विशेष रूप से 5 मूसा को संदर्भित करता है। 18/15 और १८/१८. लेकिन एक यहूदी का भाई यहूदी है, नहीं एक अरब, और यहूदियों के साथी देशवासी यहूदी भी हैं, अरब नहीं। अध्याय देखें "बाइबल में मुहम्मद?" के बारे में गलत।
2. दूसरा "मुख्य" दावा यह है कि जब यीशु अपने शिष्यों से एक सहायक के बारे में बात की कि उनके पास आना चाहिए, मुसलमानों का दावा है कि मतलब मुहम्मद, भले ही उन्हें करना पड़े उनके "स्पष्टीकरण" को थोड़ा मोड़ें नहीं (वे जीटी से कम से कम एक और एनटी से एक की जरूरत है, क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि मुहम्मद की भविष्यवाणी की गई थी दोनों में) - और भले ही मुहम्मद थे शिष्यों के मरने के 500 साल बाद पैदा हुआ! - वह उनका सहायक कैसे हो सकता है? चेले?!!(यीशु पवित्र के बारे में बात कर रहे थे भूत/पवित्र आत्मा/आदि। जो आया था कुछ दिनों बाद शिष्य)।

२५७

पृष्ठ २५८

3. कुरान में एक या दो विद्वान यहूदियों का जिक्र है इस्लाम का दावा है कि मोहम्मद को एक के रूप में स्वीकार किया गया है नबी. लेकिन भले ही यह हो (या हो सकता है नहीं) सच था, यह कहना किसी भी तरह से सही नहीं है कि "तुम" (सभी यहूदियों) ने ऐसा ही किया। गलत।

अध्याय "बाइबल में मुहम्मद?" देखें। और "झूठी बाइबिल?"

*इस्लाम ने केवल इसके लिए दावे और तर्क को तोड़-मरोड़ कर पेश किया है - ठीक है, दावा। उन्हें करना होगा अगर वे ब्रेनवॉश करने के अलावा दूसरों द्वारा विश्वास करना चाहते हैं तो दस्तावेज या सबूत पेश करें और भोले।

०३६ ३/७१: "- - - सच छुपाना (कुरान जो कहता है*) - - -"। इतनी सारी गलतियों के साथ कुरान सबसे अच्छा केवल आंशिक रूप से सत्य है। यह भी देखें "बाइबल में मुहम्मद?"

०३७ ३/७१अ: "तुम सत्य को असत्य क्यों पहिनते हो (= बाइबल, टोरा, और अन्य यहूदी धर्मग्रंथ - यह कुरान में दृढ़ता से कहा गया है (यदि यह सच नहीं है, तो कुरान एक झूठी किताब है*)*), और सच छुपाओ,---?" हमेशा जब एक था कुरान और बाइबिल के बीच विसंगति, मुहम्मद ने कहा कि यह वह था जो सही था और यहूदी और ईसाई जिन्होंने बाइबिल को गलत ठहराया था (यहां तक कि उन मामलों में जहां यह स्पष्ट है) कुरान में कहानी उस समय अरब में ज्ञात एक गढ़ी हुई किंवदंती से मेल खाती है) - एक मोस्ट एक ऐसे व्यक्ति के लिए सुविधाजनक स्पष्टीकरण जो बाइबल के बारे में बहुत कम जानता था। लेकिन क्या कुरान सच्चाई का प्रतिनिधित्व करते हैं? - कई स्पष्ट गलतियों, आदि के साथ, यह अधिक से अधिक आंशिक रूप से सच हो सकता है।

०३८ ३/७१बी: "- - - सच छुपाएं (कुरान जो कहता है*) - - -"। इतनी गलतियों के साथ, कुरान सबसे अच्छा केवल आंशिक रूप से सच है। यह भी देखें "बाइबल में मुहम्मद?" और 3/71a बस के ऊपर।

०३९. ३/७५: "लेकिन वे (यहूदी और ईसाई*) अल्लाह के खिलाफ झूठ बोलते हैं (= उन्होंने झूठ बोला है) बाइबल*), और वे इसे अच्छी तरह जानते हैं।" गलत। ऊपर 2/75 देखें।

०४० ३/७८: "(कई यहूदी और ईसाई*) पुस्तक (बाइबल) को विकृत करते हैं - - -"। यह एक अप्रमाणित दावा जिसके बिना इस्लाम मर चुका है। लेकिन सच तो यह है कि 1400 सालों में इस्लाम ने केवल दावे और शब्द प्रस्तुत करने में असमर्थ रहे हैं - दोनों ही बहुत सस्ते हैं - जबकि विज्ञान के पास लगभग १३००० प्रासंगिक पुराने कागज़ात और अंश हैं (उनमें से ४ . से लगभग ३००) गॉस्पेल) तत्कालीन ज्ञात दुनिया भर से, साथ ही कुछ ३२००० प्रासंगिक उद्धरण अन्य पांडुलिपियों में बाइबिल, जो दस्तावेज है कि बाइबिल विकृत नहीं है। (**और आप शर्त लगाते हैं: if इस्लाम को अपने दावे का एक ही असली सबूत मिल गया था, वे इसके बारे में चिल्ला रहे थे)। इस वास्तव में सभी प्रमाणों में सर्वश्रेष्ठ है कि कोई प्रमाण मौजूद नहीं है। "बाइबल में मुहम्मद" भी देखें। और "झूठी बाइबिल?"

०४१ ३/८३ए: "- - - सभी जीव (= फ़रिश्ते, जिन्न, आदमी और जानवर) स्वर्ग में और उस पर पृथ्वी है, इच्छुक या अनिच्छुक (2/256 के बारे में क्या: "- धर्म में कोई मजबूरी नहीं -"? *) झुक गया उनकी (अल्लाह की *) इच्छा (स्वीकृत इस्लाम)" के लिए। मुसलमानों को बहुत मजबूत सबूत पेश करने होंगे हमें विश्वास दिलाएं कि सब कुछ, जिसमें घोंघे और फ्लैटवर्म और मच्छर शामिल हैं, अल्लाह से प्रार्थना करते हैं।

०४२ ३/८३बी: "- - - स्वर्ग - - -"। 2/22a देखें।

*०४३ ३/८४: "- - - में (पुस्तकें) मूसा को दी गई"। गलत। मूसा (यदि वह अस्तित्व में था) 1300-१२०० ई.पू

विज्ञान के अनुसार फिरौन रामसेस II का शासन)। ये 5 किताबें (तोराह) नहीं लिखी गई थीं सीए से पहले 800 ईसा पूर्व, और 500 ईसा पूर्व के रूप में देर हो सकती है, लेकिन मूसा के नाम पर। मूसा था उन पुस्तकों को कभी नहीं दिया (हालांकि उन्हें मौखिक रूप से कानून दिया गया था, जिसे उन्होंने स्वयं लिखा था बाद में, बाइबिल के अनुसार - कानून बाद में "मूसा की पुस्तक" का हिस्सा बन गए सौ साल बाद) - लेकिन यह मुहम्मद नहीं जानता था - जबकि एक भगवान ने इसे जाना था। देखो 2/53.

०४४ ३/७५: "लेकिन वे (यहूदी / ईसाई *) अल्लाह के खिलाफ झूठ बोलते हैं (= उन्होंने झूठ बोला है) बाइबिल)"। गलत। ऊपर 3/24 देखें।

०४५ ३/७८: "- - - पुस्तक को विकृत करना (= बाइबल को गलत ठहराना*) - - -।" गलत। ऊपर 3/24 देखें।

046 3/86: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। 2/99 देखें।

०४७ ३/९६: "मनुष्य के लिए नियुक्त पहला घर (= काबा) (पूजा का) बक्का में था (= मक्का*)"। गलत। भले ही हमें स्वीकार करना चाहिए कि इब्राहीम ने "नींव बनाई" मक्का में काबा, वह 2000-1800 ईसा पूर्व के आसपास रहता था (यदि वह कल्पना नहीं है)। उस समय प्रथम एफ में मंदिर, आदि। भूतपूर्व। मिस्र और मेसोपोटामिया पुराने थे। आज वास्तविक को खोजना संभव है कई चीजों की उम्र। यह लक्षण है कि जहाँ तक हम जानते हैं, इस्लाम ने यह देखने की कोशिश नहीं की है कि क्या यह है काबा के सबसे पुराने हिस्सों की वास्तविक उम्र का पता लगाना संभव है। ललकारने वाली जुबान यह संकेत देती है कि शायद कारण यह है कि वे डरते हैं कि यह 3800 साल से छोटा है। - क्या होगा अगर यह पता चला है लगभग 100 ईसा पूर्व - या एडी - एफ के आसपास बनाया गया है। भूतपूर्व? इस्लाम को भी मापने से संबंधित एक समस्या है काबा की उम्र: उन्हें योग्य पश्चिमी विशेषज्ञों का उपयोग करना होगा। अगर वे मुस्लिम का इस्तेमाल करते हैं विशेषज्ञ - जो इसे करने के लिए अच्छी तरह से योग्य हो सकते हैं - और पाते हैं कि यह f. भूतपूर्व। 5630 साल का है, एक नहीं "अल-तकिया" - वैध झूठ - के कारण एकल आत्मा उन पर बिना शर्त विश्वास करेगी मुसलमानों को न केवल उपयोग करने की अनुमति है, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करने के लिए बाध्य हैं इस्लाम को बढ़ावा देना या बचाव करना। (और गैर-मुसलमानों को मक्का जाने की अनुमति नहीं है।) यह भी जोड़ें कि यह आगे कहा गया है कि इब्राहीम ने एक मंदिर के और भी पुराने खंडहरों पर बनाया था आदम - बेशक अब्राहम की तरह आदम रेगिस्तान के प्रोटो-मक्का तक गया और उसने एक का निर्माण किया बड़ा मंदिर वह अपने घर से एक हजार किलोमीटर दूर कभी नहीं जा सकता था (एडम - और उसका स्वर्ग - कल्पना का वास्तविक, माना जाता है कि ज्यादातर अमीरों में कहीं रखा गया है आर्द्रभूमि जो अब दक्षिण इराक है), लेकिन नूह के समय नष्ट हो गई - लेकिन पहले की तरह अक्सर मुसलमान केवल बताते हैं, शायद ही कभी साबित करते हैं, इसलिए जो चाहते हैं उस पर विश्वास करें।

(हम यह विज्ञापन दे सकते हैं कि कुछ मुसलमानों ने इस आयत को ठीक कर दिया है कि कुरान जिस बारे में बात कर रहा है) एकेश्वरवादी भगवान के लिए पूजा का पहला घर, लेकिन कुरान ऐसा नहीं कहता है। इसके अलावा: अगर कुरान या हदीस सही है और हर समय और हर लोगों के लिए नबी रहे हैं
- 124ooo हदीस कहती है - इस्लाम के पास यह साबित करने के लिए थोड़ा समय होगा कि एक भी नहीं उन भविष्यद्वक्ताओं या उनके अनुयायियों ने इब्राहीम से पहले बहुत शुरुआती समय में, कभी भी बनाया है पूजा के लिए एक छोटा सा घर। ” 2/127 भी देखें।

048 3/97a: "- - - संकेत प्रकट - - -"। 2/99 देखें।

०४९ ३/९७ब: “इसमें (मक्का में काबा*) संकेत प्रकट हैं; (उदाहरण के लिए), का स्टेशन अब्राहम - - -"। एक बात के लिए इब्राहीम कभी मक्का में नहीं था (2/127 देखें) और कभी नहीं बनाया था काबा या इसकी नींव। और यदि वह कभी वहां रहा होता और उसे बनाया होता: वहां एक पत्थर है, इसमें एक निशान के साथ। इस्लाम इसे इब्राहीम का स्टेशन कहता है और यह बताने के लिए कहा जाता है कि निशान कहाँ से है? इब्राहीम के पैर जब वह काबा का निर्माण कर रहा था। घर बनाने वाला कौन सा मजदूर कभी सारा इतिहास और बहुत पहले, एक ही कठोर प्राकृतिक पत्थर पर इतने लंबे समय तक खड़ा रहा, कि उसका सहस्राब्दियों तक चलने वाले उस पत्थर में पैरों ने छाप छोड़ी?

कुरान इस तरह के निश्चित प्रमाणों के बारे में बताता है और कुछ मुसलमान इस पर विश्वास भी करते हैं।

050 3/98a: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०५१ ३/९८बी: "(यहूदी और ईसाई*) आप स्वयं गवाह थे (अल्लाह की वाचा के)"। गलत। वे यहोवा की वाचा के साक्षी थे। अल्लाह यहोवा के समान ईश्वर नहीं है, जब तक कि ईश्वर गंभीर रूप से सिज़ोफ्रेनिक न हो, क्योंकि शिक्षाएँ मौलिक रूप से बहुत भिन्न हैं। अगर इस्लाम अभी भी इसके विपरीत जोर देता है, उन्हें सबूत लाने होंगे, पुराने ही नहीं और अभी भी नहीं ढीले दावों का दस्तावेजीकरण।

00f 3/101: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०५२ ३/१०३: "इस प्रकार अल्लाह अपने संकेतों को स्पष्ट करता है - - -"। एक भी वास्तविक नहीं है कुरान में न तो अल्लाह और न ही मुहम्मद के लिए स्पष्ट संकेत या प्रमाण का उल्लेख नहीं करने के लिए संकेत / प्रमाण - 2/99 देखें।

०५३ ३/१०५: "- - - स्पष्ट चिन्ह - - -"। 3/103 के ठीक ऊपर और 2/99 देखें।

०५४ ३/१०८: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०५५ ३/१०९: "- - - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत - 2/22a देखें।

०५६ ३/११२: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०५७ ३/११३: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०५८ ३/११८: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०५९ ३/१२८: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत - 7 स्वर्ग नहीं हैं। 2/22a देखें।

०६० ३/१३२: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत - 2/22a देखें।

*00g 3/137a: "- - - पृथ्वी के माध्यम से यात्रा करें, और देखें कि अस्वीकार करने वालों का अंत क्या हुआ सच्चाई"। अरब में बिखरे हुए पुराने खंडहर थे। मुहम्मद ने बताया कि वे सभी अवशेष थे लोगों के बाद अल्लाह ने उनके पापों की सजा दी थी। अधिक संभावित स्पष्टीकरण हैं।

०६१ ३/१३७बी: "- - - सत्य को नकारने वाले"। कुरान में कई गलत तथ्यों के साथ, यह सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच बताता है।

**062 3/154a: "भले ही आप अपने घरों में रहे (लड़ाई में भाग लेने के बजाय) उहुद के, जहां बहुत से लोग मारे गए थे), जिनके लिए मौत का फैसला किया गया था, निश्चित रूप से अपनी मृत्यु के स्थान पर चले गए हैं (= वे किसी भी तरह मर गए थे *)"। यहाँ हमारे पास है पूर्वनियति। तुम युद्ध भी कर सकते हो, क्योंकि अल्लाह ने बहुत पहले (5 महीने) का फैसला किया है

हदीस के अनुसार पैदा होने से पहले), जब तुम मरोगे। यदि आपका समय समाप्त हो गया है, तो आप करेंगे
कोई बात नहीं मरो, भले ही तुम अपने बिस्तर पर लेटे हो। इसका मतलब है कि युद्ध करना खतरनाक नहीं है,
लेकिन आप बहुत सारी दौलत जीत सकते हैं - और गुलाम - और अगर आप युद्ध में मर जाते हैं, तो आपका जाना निश्चित है
अपने विलासितापूर्ण जीवन और इच्छुक घंटों (अपनी पत्नियों के अलावा) के साथ स्वर्ग, जो आप नहीं हैं
यकीन है कि अगर आप घर पर मर जाते हैं। करने के लिए केवल बुद्धिमान चीज है अपने नबी के लिए लड़ना - या उसका
उत्तराधिकारी "शांति का धर्म"? - या युद्ध का धर्म?

आज आँकड़ों से साबित करना आसान है कि यह बहुत गलत है - लेकिन मुहम्मद को नहीं पता था
आँकड़ों के बारे में (और एक भगवान को यह जानने के लिए आँकड़ों की भी आवश्यकता नहीं थी कि यह मूर्खता है)। पर
दूसरी ओर यह दावा सभी तर्कों के विपरीत है, कि यह उन बिंदुओं में से एक है जहां मुहम्मद
जानता था कि वह झूठ बोल रहा है - वह इस पर विश्वास करने के लिए बहुत समझदार था। दरअसल इस्लाम आज बैक-पेडल
पूर्वनियति के बारे में बहुत कुछ बता रहा है f. भूतपूर्व। कि कुरान का मतलब असली नहीं है
पूर्वनियति (लेकिन यह स्पष्ट नहीं करना कि वे इसका क्या दावा करते हैं)। लेकिन कुछ मामलों में किताब ऐसी है
स्पष्ट, कि इसे दूर से समझाना असंभव है।) **f. भूतपूर्व। बयानों से जुड़ी कई जगह**
कि जब तुम्हारा समय समाप्त हो जाएगा, तो तुम किसी भी तरह से मर जाओगे, और इसलिए तुम युद्ध में भी जा सकते हो।
एफ देखें। भूतपूर्व। 3/154बी नीचे)।

**०६३ ३/१५४बी: "यदि तुम अपने घरों में ही रहते, तो भी जिनके लिए मृत्यु का आदेश दिया गया था
निश्चय ही वे अपनी मृत्यु के स्थान पर चले गए होंगे।" यह तर्कों में से एक है
मुहम्मद युद्ध के लिए उकसाते थे; पूर्वनियति। आज जैसा कहा गया है उसे साबित करना बहुत आसान है
आँकड़ों का मतलब है कि यह पूरी तरह से गलत है - इसकी तुलना में आपके घर में मरने की संभावना बहुत कम है
एक ही समय एक लड़ाई में बिताने के लिए। (**लेकिन मुहम्मद की जरूरत थी - या कम से कम चाहता था -**
योद्धाओं, भले ही उसे पता हो कि वह झूठ बोल रहा है।)

०६४ ३/१६१ए: "- - - नबी - - -"। लेकिन मुहम्मद वास्तव में एक नबी नहीं थे - उन्होंने न्याय किया
प्रभावशाली शीर्षक "उधार" लिया: उसके पास भविष्यवाणी करने की क्षमता नहीं थी - उसने नहीं किया
यहां तक कि दिखावा करें या दावा करें कि उसके पास यह था। इस्लाम भी इसे परोक्ष रूप से स्वीकार करता है: भविष्यवाणियां एक विशेष प्रकार की होती हैं
चमत्कारों का, और इस्लाम कहता है कि मुहम्मद से जुड़ा एकमात्र चमत्कार है
कुरान।

00h 3/16b1: "कोई भी भविष्यद्वक्ता (हमेशा) अपने भरोसे के लिए झूठा नहीं हो सकता।" मोहम्मद के कुछ
हाईवेमेन (यह ६२५ ईस्वी में था जब मुसलमान चोरी/लूट से जीते थे और
जबरन वसूली) असंतुष्ट थे और बताया कि मोहम्मद ने लूट को बांटते समय धोखा दिया। फिर यह
अल्लाह द्वारा लिखित स्वर्ग में लच्छेदार मदर बुक से छंद बहुत आसानी से आ गया
या अनंत काल से अस्तित्व में है। इस्लाम कहता है कि उसने साबित कर दिया कि मोहम्मद ने धोखा नहीं दिया। **यह सही हो सकता है**
अगर अल्लाह ने कुरान बनाया, लेकिन मोहम्मद या किसी और ने ऐसा नहीं किया।

**यहाँ एक और और बहुत अधिक गंभीर तथ्य है: समय के माध्यम से सबसे - कहने के लिए नहीं
(लगभग?) सभी - स्व-घोषित भविष्यद्वक्ता झूठे भविष्यद्वक्ता रहे हैं। अधिकांश झूठे भविष्यद्वक्ता
पुरुष रहे हैं (और हैं) और धर्म में उन्होंने धन, स्त्री, सम्मान,
और शक्ति - धोखेबाजों के 4 सामान्य कारण। कुछ मानसिक रूप से विशेष या बीमार हैं -
मुहम्मद उनमें से हैं यदि उनके पास टीएलई था (अध्याय देखें "टीएलई क्या है - टेम्पोरल लोब"
मिर्गी")। कुछ वास्तव में मानते हैं कि वे पैगंबर हैं, अन्य सिर्फ धोखेबाज हैं - अगर मुहम्मद ने
TLE, उसने ईमानदारी से विश्वास किया होगा कि उसका भगवान से कोई संबंध था, लेकिन यह भी बहुत स्पष्ट है
कुरान से कि वह कम से कम कभी-कभी जानता था कि वह धोखा दे रहा है; उसके कुछ तर्क
किताब में इस्तेमाल किया गया, कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति जानता है कि झूठ है (उदाहरण के लिए कि चमत्कार नहीं करेंगे
संदेह करने वाले मानते हैं), और मुहम्मद एक बुद्धिमान व्यक्ति थे। और कुछ स्वघोषित
"भविष्यद्वक्ता" बस ठंडे थे और गणना कर रहे थे - कभी-कभी मनोरोगी भी - - - और
जब कोई मुहम्मद के पीड़ितों और विरोधियों के साथ ठंडे खून वाले व्यवहार को देखता है, तो उसका कुल
उसके और सत्ता के बीच खड़े हर किसी के जीवन और भलाई के लिए उपेक्षा और
धन (लालची योद्धाओं और सरदारों को उनके धर्म और उनकी सेना में आने के लिए रिश्वत देने के लिए उपयोग करने के लिए), और
उसका चतुर मनोवैज्ञानिक (हर चतुर सेल्समैन मानव स्वभाव के बारे में बहुत कुछ जानता है और
मनोविज्ञान) अपने अशिक्षित, भोले शुरुआती अनुयायियों के साथ छेड़छाड़, यह विश्वास करना आसान है
मुहम्मद इनमें से थे - संभावित टीएलई के प्रभाव के साथ जोड़ा जा सकता है या
कुछ।

पृष्ठ २६२

00i 3/164a: "- - - उसने (अल्लाह) ने उनमें (मुसलमानों) से एक रसूल (मुहम्मद*) भेजा।
आपस में - - -"। कुरान और वहाँ की सारी ग़लतियाँ और ग़लत तर्क आदि, इसे बनाता है
स्पष्ट है कि मुहम्मद को किसी सर्वज्ञ या सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा नहीं भेजा गया था (उदाहरण के लिए कोई चमत्कार नहीं -
भले ही कोई भी भगवान जानता हो कि यह एक झूठ है कि चमत्कार बहुत सारे अनुयायियों को नहीं देंगे - - - और
मुहम्मद ने भी किया)। **लेकिन इस बात की बहुत कम संभावना है कि किसी नाबालिग भगवान ने उनसे संपर्क किया हो, और एक बड़ी संभावना है कि वह जिसे गेब्रियल मानता था, वास्तव में वह शैतान/ए . था भेष में शैतान (मुहम्मद का अमानवीय व्यवहार और वह अमानवीय धर्म)**
पेश किया - चोरी / लूट, बलात्कार, दासता, यातना, हत्या, सामूहिक हत्या, घृणा, भेदभाव, और युद्ध - इसका संकेत दे सकते हैं)। अंत में ऐसी कोई छोटी संभावना नहीं है कि यह सब मानव निर्मित था।

०६५ ३/१६४बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०६६ ३/१८०: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22 देखें।

०६७ ३/१८३: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं (= अल्लाह के लिए सबूत or
मुहम्मद) कुरान में - एक नहीं। 2/99 देखें।

०६८ ३/१८४: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। गलत। 2/99 देखें।

०६९ ३/१८९: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

070 3/190a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत - 7 भौतिक स्वर्ग नहीं हैं। देखो
२/२२ए. कोई भगवान जानता था, लेकिन मुहम्मद नहीं। कुरान किसने बनाया?

०७१ ३/१९०बी: "- - - संकेत - - -।" जब तक यह साबित नहीं हो जाता कि वास्तव में अल्लाह ही ने पैदा किया
यह, यह अल्लाह या इस्लाम से संबंधित किसी भी चीज़ के संकेत या संकेत या प्रमाण के रूप में अमान्य है। देखें 2/39
के ऊपर।

*072 3/190c: "- - - समझदार लोगों के लिए वास्तव में संकेत हैं - - -"। मनोवैज्ञानिक रूप से a
अच्छा नारा; जो ज्ञानियों में शामिल नहीं होना चाहता, और जिसकी चापलूसी नहीं होती
एक नेता के अर्ध-देवता द्वारा बुद्धिमानों में शामिल किया जा रहा है? - विशेष रूप से अशिक्षित
और भोले-भाले अनुयायी - - - या ब्रेनवॉश करने वाले। लेकिन केवल दो चीजें असली आदमी
समझ उन बयानों से सीख सकती है जो स्पष्ट रूप से अमान्य हैं, क्योंकि वे सिर्फ सस्ते हैं
शब्द जो कभी सिद्ध नहीं होते - केवल मांग और अंध विश्वास के लिए चापलूसी द्वारा समर्थित:

1. ए और पहला संभव निष्कर्ष एक आदमी का समझ बना सकता है: **मुहम्मद हदी कोई वैध तर्क नहीं - यदि उसके पास वास्तविक था और सच्चे तर्क, उसे इस्तेमाल नहीं करना पड़ा अमान्य वाले।**
2. **बी अन्य संभावित निष्कर्ष एक आदमी इससे समझ यह बन सकती** है कि कुछ गंभीर रूप से गलत है। गलत सूचना, अमान्य तर्क, और कभी-कभी झूठ, आखिर धोखेबाज की पहचान होती है, धोखा, और ठग।

2/99 भी देखें।

पृष्ठ २६३

०७३ ३/१९१: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

सूरह 3: 73 गलतियाँ + 9 संभावित गलतियाँ।

सूरा 4:

०१ ४/१ ए: "अपने अभिभावक-भगवान का सम्मान करें, जिन्होंने आपको (लोगों *) - - -" बनाया है। आदमी नहीं था
विज्ञान के अनुसार बनाया गया था, लेकिन पहले के प्राइमेट से विकसित हुआ था। इसके अलावा: भले ही आदमी के पास था
बनाया गया है, इस्लाम कभी भी इस बात का प्रमाण नहीं लाया है कि वह एक ईश्वर द्वारा बनाया गया था (f. ex. a . द्वारा नहीं)
शैतान), और न ही इसके लिए भगवान अल्लाह थे।

002 4/1b: "- - - ने आपको एक ही व्यक्ति से बनाया - - -"। आदमी एक से नहीं आ सकता
व्यक्ति, कम से कम 2 होना चाहिए - नर और मादा। लेकिन अगर कोई जोड़ा होता, तो भी
बहुत कम हो - "जनजाति" के व्यवहार्य होने के लिए डीएनए किस्म बहुत छोटी होगी। आदमी बस
धीरे-धीरे विकसित हुआ - कुरान की तरह - पहले के प्राइमेट से (पुरातात्विक के लिए)
हव्वा और पुरातात्विक आदम जिसके बारे में विज्ञान बात करता है, और जिसका कुछ मुसलमान उपयोग नहीं करते हैं
कुछ "सिद्ध" करने की कोशिश कर रहा है: अध्याय देखें: "कुछ गलत तर्क - और उनके उत्तर"।)

००३ ४/११+१२: विरासत के बारे में छंद इस्लाम में स्पष्ट नहीं हैं। मुहम्मद ने कहा
निश्चित अनुपात। लेकिन परेशानी यह है कि वे अनुपात पूर्ण से अधिक जोड़ सकते हैं
संपत्ति का मूल्य। अगर वहाँ एफ. भूतपूर्व। क्या पुरुष की मृत्यु के बाद ये उत्तराधिकारी होते हैं: 1 पत्नी = 1/8
(3/24), 3 बेटियां = 2/3 (16/24), 1 पिता = 1/6 (4/24) और 1 मां = 1/6 (4/24)। यदि आप विज्ञापन करते हैं
ये आप देखेंगे कि उन्हें 27/24 विरासत में मिला है, जो गणितीय और व्यावहारिक रूप से है
असंभव। या अगर एक आदमी मर जाता है और केवल एक बहन और एक भाई को छोड़ देता है: बहन को ½ और मिलता है
बहन को जो मिलता है उसका दुगना = ३/२, जो एक बेतुका मजाक है। और क्या होगा अगर एक आदमी
2 पत्नियाँ थीं, एक बच्चे के साथ और दूसरी नहीं? क्या बच्चे वाले को 1/8 और दूसरे को मिलता है
? आदि विरासत से संबंधित न्यायिक समस्याएं इस्लाम के तहत जटिल हैं क्योंकि
ये गलतियाँ। लेकिन कहा जाता है कि शेयरों को अल्लाह, सर्वज्ञ द्वारा ठहराया जाता है !!!

००३क ०४९ ४/२९ (ए३८): "अपनी संपत्ति को आपस में व्यर्थ मत खाओ"। लेकिन क्या यह
सही अर्थ? "कुरान के संदेश" में है: "एक दूसरे की संपत्ति को मत खाओ"
गलत तरीके से - आपसी समझौते के आधार पर व्यापार के माध्यम से भी नहीं" - जो मोटे तौर पर कहता है
वही (कुछ और शब्दों में "एक दूसरे को धोखा न दें" या इससे भी बदतर)। लेकिन अरब
सामने शब्द "इल्ला" का अर्थ है "सिवाय" या "जब तक यह नहीं है", जिसका अर्थ है कि शाब्दिक अर्थ
वास्तविकता यह है कि "एक दूसरे की संपत्ति को गलत तरीके से न खाएं, जब तक कि यह (एक कार्य) व्यापार न हो"
आपसी समझौते के आधार पर" - - - जिसका अर्थ है कि गलत लाभ ठीक है यदि भाग सहमत हैं
यह - एफ। भूतपूर्व। सरासर ठगी से जहां खरीदार का मानना है कि उसे उचित सौदा मिलता है। यह दृढ़ता से
अन्य इस्लामी कानूनों का खंडन करता है। इसे समझाने के लिए कुछ अत्यधिक उन्नत मौखिक जिम्नास्टिक की आवश्यकता होती है
दूर। हर विद्वान इस बात से सहमत है कि शाब्दिक अर्थ गलत होना चाहिए, लेकिन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए
विशेष अर्थों में उस अर्थ को गायब करने के लिए। का सबसे अच्छा बहुत ही असामान्य उपयोग
भाषा - इसके बावजूद कुरान खुद दावा करता है कि जिस भाषा को समझना है
शाब्दिक, और यह समझना आसान है। अधिक संभावना है कि यह एक ला 6/151 में एक बड़ी गलती है।

***004 4/40: "अल्लाह अंतिम डिग्री में अन्यायी नहीं है - - -।" **गलत। उदाहरण: का दमन
अन्य "अच्छा और वैध और न्यायपूर्ण" है। वही चोरी करना और हो सके तो लूटना है
इसे जिहाद कहने का बहाना ढूंढो - और वही किसी गर्भवती महिला के बलात्कार के लिए
कैदी या गुलाम। लेकिन अन्याय की सबसे बड़ी जड़ यह है कि बलात्कार की शिकार महिला को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए
अभद्रता के लिए अगर वह वास्तविक बलात्कार के लिए 4 पुरुष गवाह पेश नहीं कर सकती है। अल्लाह में
कुरान कई बार बेहद अन्यायपूर्ण है।**

००५ ४/४७: (कुरान है) "यह पुष्टि करना कि आपके साथ (पहले से ही) क्या था (= बाइबिल, टोरा,
आदि।*) "। बहुत सारे बुनियादी विचार हैं जो कुरान और बाइबिल के बीच भिन्न हैं
- विशेष रूप से NT और नई वाचा की तुलना में (f. पूर्व लूका 22/20)। युद्ध के लिए उकसाना
गैर-विश्वासियों के खिलाफ, "खोया हुआ मेमना", "मारना नहीं" बनाम "एक अच्छे कारण के अलावा मत मारो",
युद्ध के लिए सभी उकसावे, आदि, आदि। कुरान बाइबिल की पुष्टि नहीं है, और निश्चित रूप से
एनटी का नहीं। यह भी संभव नहीं है कि इतने अलग-अलग विचारों के पीछे एक ही ईश्वर हो, जब तक कि वह न हो
मानसिक रूप से बीमार। 2/89 और 29/46 भी देखें।

006 4/56: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

**007 4/82: "अगर यह (कुरान*) अल्लाह के अलावा किसी और की ओर से होता, तो वे निश्चित रूप से उसमें पाए जाते

बहुत विसंगति। " क्या सबूत है!!! सभी गलतियों, विरोधाभासों आदि के अलावा।
(लगभग कम से कम अविश्वसनीय 3000(!!!) सब कुछ शामिल है), इसमें बहुत अधिक विसंगति है
कुरान, कि इस्लाम का एक विशेष नियम है कि ऐसी समस्याओं को कैसे हल किया जाए - तथाकथित नियम
निरसन: यदि कुरान में दो (या अधिक) स्थानों के बीच विसंगति है, तो सबसे छोटा
एक आम तौर पर सही होता है - सर्वज्ञ अल्लाह को अक्सर अपना मन बदलना पड़ता है या मिल जाता है
नई जानकारी जिसने उसे अपने शब्दों को बदलने के लिए मजबूर किया, कि किसी को एक विशेष नियम की आवश्यकता है कि कैसे
ऐसे मामलों में व्यवहार करें (यह एक कारण है कि इस्लाम के लिए उम्र जानना आवश्यक है)
सूरह और छंद, या कम से कम जो इससे पुराना है)। और इतनी विसंगति है
कुरान और आधुनिक ज्ञान के बीच, यह स्पष्ट है कि या तो इस्लाम में बहुत कुछ अच्छा है
करने के लिए समझाना, या कुरान एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा नहीं बनाया गया है। (इस्लाम में बहुत कुछ है
स्पष्टीकरण, लेकिन गलतियों को दूर करने आदि के बारे में जो कुछ भी है, वह अमान्य है या
अत्यधिक संदिग्ध - जब आप सुनते या पढ़ते हैं तो अपने मस्तिष्क और ज्ञान का उपयोग करें, और आप इसे देखेंगे
क्या सच है)। उद्धृत वाक्य वास्तव में कुरान से एक अप्रत्यक्ष, लेकिन मजबूत सबूत है कि
कुरान एक सर्वज्ञानी भगवान की ओर से नहीं भेजा गया है - और एक कारण है कि मुसलमान बर्दाश्त नहीं कर सकते
यह स्वीकार करने के लिए कि पुस्तक में एक ही गलती है, चाहे वे कितने भी संभावित स्पष्टीकरण क्यों न हों
गलतियों को "समझाने" के लिए उपयोग करना होगा: यदि गलतियाँ हैं, तो मौलिक रूप से कुछ है
धर्म के साथ गलत।

(यह उल्लेख किया जाना चाहिए कि कुछ मुसलमान इनकार करते हैं कि निरसन का नियम है (एक सर्वज्ञ)
भगवान को अपने स्वयं के नियमों को समायोजित करने या आगे निर्दिष्ट करने की आवश्यकता नहीं होगी - यह तस्वीर को खराब करता है
पूर्णता और सर्वज्ञता), लेकिन कोई भी अपने लिए पढ़ और देख सकता है: कई बिंदु हैं
समायोजित, विस्तारित या अन्य सीमाएँ दी गई - बड़ी या छोटी - कुरान में। हमने कभी नहीं
गिने जाते हैं, लेकिन हमने सीए से संख्याएं पढ़ी हैं। १०० से ५०० से अधिक निरसन के आधार पर
आप कितनी सख्ती से न्याय करते हैं। वास्तव में कुछ इस्लामी विद्वानों ने कहा है कि केवल ९/५ – "द श्लोक"
तलवार की "- 124 पुराने हल्के छंदों को निरस्त करता है)।

इसके अलावा एक में सभी उल्लिखित गलतियाँ हैं - वे की तुलना में विसंगतियाँ हैं
वास्तविकता।

००८ ४/१०५अ: "हम (अल्लाह*) ने तुम्हारे पास किताब (कुरान*) - - - उतारी है। इतने सारे के साथ
गलतियाँ और संदेहास्पद तर्क - क्या यह वास्तव में एक भगवान द्वारा नीचे भेजा जा सकता है? नहीं।

००९ ४/१०५ब: "हम (अल्लाह*) ने तुम्हारे पास किताब (कुरान*) सच्चाई से उतारी है, - - -"। साथ
इतनी सारी गलतियाँ, इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह केवल आंशिक रूप से सच हो सकता है (यदि नहीं था)
कोई गलती नहीं हुई)।

०१० ४/११३अ: "क्योंकि अल्लाह ने तुम पर किताब (कुरान*) उतारी है। 4/105 देखें।

०११ ४/११३बी: "क्योंकि अल्लाह ने तुम्हारे लिए किताब (कुरान*) और ज्ञान - - - " उतार दिया है। जैसा
पहले कहा - एफ। भूतपूर्व। 4/105 में - संदेह का कारण है कि क्या कुरान किसी भगवान द्वारा भेजा गया है,
और संदेह का कोई कारण नहीं है कि कुछ सामग्री सत्य नहीं है।

012 4/126: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

013 4/131a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

014 4/131b: "- - - हम (अल्लाह*) ने किताब के लोगों (यहूदी और ईसाई*) को निर्देशित किया है
आपके सामने (मुसलमान*) - - -।" गलत। अल्लाह और यहोवा एक ही ईश्वर नहीं हैं - तब तक नहीं जब तक कि
भगवान मानसिक रूप से गंभीर रूप से बीमार हैं - शिक्षाएं बहुत अलग हैं और इस्लाम भी कभी नहीं रहा
कुछ भी करने में सक्षम लेकिन यह दावा करते हुए कि यह एक ही भगवान है - कभी कोई प्रमाण या किसी भी प्रकार का नहीं
दस्तावेज़ीकरण। वे आपको केवल बहुत सारी गलतियों के साथ एक किताब दिखाते हैं, (एक बहुत द्वारा बताया गया)
संदेहास्पद व्यक्ति जो कभी भी कुछ साबित करने में सक्षम नहीं था) और दावा - बिना दस्तावेज के
यहाँ भी - कि यह एक प्रमाण है। आखिरकार एक प्रमाण "एक या एक से अधिक सिद्ध तथ्य हैं जो केवल दे सकते हैं"
एक निष्कर्ष"। कुरान में "संकेत" और "सबूत" ज्यादातर अमान्य साबित होते हैं क्योंकि वे करते हैं
सिद्ध तथ्यों पर नहीं, केवल दावों पर निर्माण करें।

015 4/131c: "- - - स्वर्ग - - -"। भले ही एक ही पद्य में कथन को 2 बार दोहराया जाए,
अभी भी कोई ७ भौतिक आकाश नहीं हैं (२/२२ए देखें)। कोई भी भगवान जानता था, लेकिन मुहम्मद

समकालीन ग्रीक और फारसी गलत खगोल विज्ञान में विश्वास - मुसलमान कभी नहीं
उल्लेख करें कि मुहम्मद के समय में 7 आकाशीय क्षेत्र का खगोल विज्ञान था, और न ही
इस्लाम करता है। हर कोई आश्चर्य करने के लिए स्वतंत्र है कि क्यों।

०१६ ४/१३२: "- - - स्वर्ग - - -"। देखें 4/132 ठीक ऊपर और 2/22a.

00a 4/136a: "अल्लाह और उसके रसूल (मुहम्मद *) - - - पर विश्वास करो। कहीं नहीं है
साबित कर दिया कि मुहम्मद एक ईश्वर के दूत थे। ऐसा भी नहीं कि उसके पास वास्तव में कोई था
एक भगवान से संबंध।

०१७ ४/१३६बी: "- - - और वह शास्त्र जिसे उसने (अल्लाह*) ने अपने रसूल के पास भेजा है"। ये तो बहुत
कुछ ज्ञान और पढ़ने और सोचने की क्षमता वाले किसी भी व्यक्ति के लिए स्पष्ट है, कि वहाँ हैं
कुरान में कई गलतियाँ। यह एक प्रश्न है कि क्या किसी ऐसी पुस्तक पर विश्वास करना उचित है जहाँ आप
पता है कि बहुत सी गलतियाँ हैं - और हो सकती हैं और भी बहुत कुछ आपको दिखाई न दें। तथ्य यह है कि वहाँ हैं
कई गलत तथ्य - और संदिग्ध बयान + विरोधाभास + अमान्य "संकेत" की संख्या
और "सबूत", एक अप्रमाणित दावे पर भी संदेह पैदा करता है कि पुस्तक को किसी के द्वारा नीचे भेजा गया है
सर्वज्ञ भगवान और स्वर्ग में पूजनीय पुस्तक की एक प्रति। यह असंभव है कि यह हो सकता है
सच।

*00b 4/136c: "कोई भी जो अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसके रसूलों और उसके दिन का इनकार करता है
निर्णय, बहुत दूर चला गया है, बहुत दूर चला गया है"। मुश्किल से। जब आप जानते हैं कि कैसे गलतियों से भरा है और
गलत तर्क जिस किताब पर पूरा इस्लाम टिका है, वह यह तय करने के लिए कुछ और सबूत लेता है कि यह है
गैर-मुसलमान जो "दूर, बहुत दूर" हैं।

018 4/140 "पहले से ही उसने (अल्लाह*) तुम्हें किताब (कुरान*) में वचन भेजा है।" गलत। ए
इतनी सारी गलतियों और इतने अमान्य तर्क वाली किताब न तो बनाई जाती है और न ही भेजी जाती है
भगवान - सर्वज्ञ या नहीं।

*०१९ ४/१५६: "- - - उन्होंने मरियम के खिलाफ एक गंभीर झूठा आरोप लगाया (कि यीशु को सूली पर चढ़ाया गया था और
मृत*)"। इतने सारे गवाह थे, जिनमें बहुत से लोग भी शामिल थे जो यीशु को जानते थे, और इसमें भी शामिल थे

265

पृष्ठ २६६

बहुत से लोग जो उससे नफरत करते थे और निश्चित रूप से अगर उसे फांसी नहीं दी गई तो उसने विद्रोह कर दिया था - यहूदी पादरी
शक्तिशाली था - कि यह आरोप निश्चित रूप से झूठा नहीं था। इस्लाम कुछ और कहे तो
अच्छे सबूत देने होंगे, न केवल पतली हवा से निकाले गए ऊंचे बयानों को सामने लाना होगा 600
सालों बाद। क्योंकि कुरान को बस इतना ही देना है: कुछ ऊँचे-ऊँचे बयानों का समर्थन
कुछ भी नहीं - कोई सबूत नहीं और यहां तक कि एक संकेत भी नहीं जो यह दर्शाता हो कि वे सभी गवाह हैं - और
शासक और घृणित यहूदी पादरी - गलत थे। शब्द बहुत सस्ते हैं - - - और एकमात्र तथ्य
इस्लाम यह पैदा कर सकता है कि न तो मुहम्मद और न ही इस्लाम यह स्वीकार कर सकता है कि यीशु की मृत्यु हुई और वह था
पुनर्जीवित - उस मामले में वह स्पष्ट रूप से एक बड़ा भविष्यवक्ता था और/या उसके निकट संबंध थे
मुहम्मद की तुलना में भगवान, और यह मुसलमानों के लिए वर्जित है। यह उनके लिए बस अस्वीकार्य है।

020 4/157a: "हमने ईसा मसीह को मार डाला - - -"। गल्त नाम। क्राइस्ट शब्द एक के रूप में अस्तित्व में नहीं था
यीशु के लिए नाम कई वर्षों के बाद तक, और फिर यह एशिया माइनर से आया, और फिर एक शीर्षक के रूप में,
(तुर्क उस समय नहीं आए थे), मूल रूप से यरूशलेम से नहीं (देखें 3/45)। कोई भगवान था
यह ज्ञात है। (ग्रीक में मसीह = हिब्रू में मसीहा (= अभिषिक्त)। उसके कारण कुछ
बाइबिल के अनुवाद एनटी में मसीहा के बजाय मसीह का उपयोग करते हैं। लेकिन शीर्षक क्राइस्ट - नहीं a
नाम मूल रूप से, लेकिन एक शीर्षक - वास्तव में यीशु के लिए उनकी मृत्यु के वर्षों बाद तक उपयोग नहीं किया गया था।)

021 4/157b: "- - - (यीशु*) अल्लाह के रसूल"। यह पूरी तरह से निश्चित है कि यहूदियों ने यह नहीं कहा
यह। 3/51 देखें।

*022 4/157c: "- लेकिन उन्होंने उसे नहीं मारा, और न ही उसे क्रूस पर चढ़ाया, लेकिन इसलिए इसे प्रकट करने के लिए बनाया गया था
उन्हें - - -"। 4/156 देखें। इसके अलावा: **अगर किसी और ने यह सुनिश्चित नहीं किया कि यह कोई धोखेबाज नहीं है और
कि फाँसी वास्तव में हुई थी, क्रोधित और द्वेषपूर्ण यहूदी पादरियों ने देखा होगा
वह।** यह दावा किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया है जो यह स्वीकार नहीं कर सका कि मुहम्मद नहीं थे
महानतम पैगंबर (हालांकि वास्तव में मुहम्मद वास्तव में एक वास्तविक पैगंबर नहीं थे - उन्होंने ऐसा नहीं किया
भविष्यवाणी करने में सक्षम होने का उपहार है)। अगर इस्लाम कुछ और कहना चाहता है, तो वे
करने के लिए बहुत सारी व्याख्या और सिद्ध करना होगा - यह और भी अधिक है जैसा कि कुरान हमेशा करता है
गैर-मुसलमान अपने धर्म के बारे में जो कहते हैं, उसके लिए सबूत मांगते हैं, लेकिन यह खुद कभी भी कोई पेशकश नहीं करता है
इस्लाम या अल्लाह के लिए असली सबूत। सभी "संकेतों" के बावजूद यह दावा करता है, उनमें से एक भी नहीं
"संकेत" - बाइबिल से लिए गए कुछ के संभावित अपवाद के साथ - किसी भी भगवान को बिल्कुल साबित करता है, और

निश्चित रूप से एक भी व्यक्ति अल्लाह या मुहम्मद की शिक्षाओं के बारे में कुछ भी साबित नहीं करता है।
शब्द बहुत सस्ते हैं, और उन "संकेतों" में से एक भी ऐसा नहीं है जो उतना अच्छा नहीं हो सकता और पुजारियों या विश्वासियों या अन्य धर्मों के भविष्यवक्ताओं द्वारा जितना आसान उपयोग किया जाता है: मैनिटो ने ऐसा किया, थोर ने वह किया, काली ने कुछ बनाया, ओसिरिस ने कुछ और, बाल ने पृथ्वी को बनाया, और अल-उज्जा बढ़िया है। इस्लाम हमेशा यह दावा करता है कि अल्लाह ने यह और यह किया है और यह एक "चिन्ह" है अल्लाह के लिए एक "सबूत"। लेकिन वे कभी यह साबित नहीं करते कि यह वास्तव में अल्लाह ही था जिसने यह और यह किया। उसके कारण प्रत्येक ऐसे "चिह्न" और "प्रमाण" सहज और तार्किक रूप से अमान्य हैं क्योंकि एक संकेत या प्रमाण - और इसी कारण से किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी ठीक-ठीक कह सकता है उसके भगवान के बारे में वही बेकार शब्द। संकेत के रूप में दावे पूरी तरह से अमान्य हैं या संकेत, प्रमाण के रूप में उल्लेख नहीं करना। अल्लाह के लिए या के लिए एक भी वैध प्रमाण नहीं है मुहम्मद की शिक्षा कहीं भी - - - या उसके लिए यीशु को सूली पर नहीं चढ़ाया गया और उनकी मृत्यु हो गई।

०२३ ४/१५७डी: "- - - निश्चित रूप से उन्होंने उसे (यीशु*) नहीं मारा - - -"। अगर इस्लाम उत्पादन करने में सक्षम नहीं है इस कथन के लिए वास्तव में कठिन प्रमाण, यह स्पष्ट रूप से गलत है। के लिए ४/१५६ और ४/१५७सी देखें आगे स्पष्टीकरण।

०२४ ४/१५९: "और किताब के लोगों में से कोई नहीं है, लेकिन उस पर विश्वास करना चाहिए (अल्लाह) उनकी मृत्यु से पहले - - -।" गलत। अगर किताब के कुछ लोग ईमान लाते हैं, तो वे ईमान लाते हैं यहोवा, अल्लाह में नहीं। यह वही भगवान नहीं है जब तक कि भगवान के साथ कुछ गलत न हो। इस्लाम को मामले में ऐसा साबित करना होगा।

०२५ ४/१६३: "- - - डेविड को हम (अल्लाह*) ने स्तोत्रों को दिया"। गलत: विज्ञान के अनुसार वे राजा दाऊद से कुछ शताब्दियाँ छोटी हैं। (और इसके अलावा - अल्लाह शायद ही शामिल था। इफ एक ईश्वर था, वह यहोवा था)।

00c 4/167: "जो लोग ईमान (इस्लाम*) को अस्वीकार करते हैं - - - वास्तव में बहुत दूर, बहुत दूर भटक गए हैं"। देखो 4/136.

००डी ४/१७०ए: "द रसूल (मुहम्मद*) अल्लाह की ओर से - - - - आया है। कोई नहीं है जगह ने साबित कर दिया कि मुहम्मद किसी भी ईश्वर - अल्लाह या किसी और के दूत हैं।

०२६ ४/१७०बी: "अल्लाह की ओर से रसूल (= मुहम्मद) आपके पास सच्चाई से आया है: - - -"। मोहम्मद की कहानियों (कुरान) में इतने सारे गलत तथ्यों के साथ, यह असंभव है कि उन्हें वास्तव में मिल गया एक भगवान से सूरह और छंद, कम से कम एक सर्वज्ञ भगवान से नहीं। 40/75 भी देखें।

027 4/170c: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

00e 4/171a: "- - - मरियम के पुत्र ईसा मसीह, एक दूत थे (इससे अधिक नहीं) - -।" कुंआ, वह अक्सर यहोवा (यहूदी और ईसाई देवता) को अपना पिता कहता था।

०२८ ४/१७१बी: "मसीह यीशु थे - - - अल्लाह के एक रसूल, - - -"। अगर इस्लाम में मजबूत नहीं है इस बात के प्रमाण हैं, वह निश्चित रूप से अल्लाह का दूत नहीं था - इसके बारे में स्पष्टीकरण के लिए 3/51 देखें।

00f 4/171c: "- - - (वह (अल्लाह*) बहुत महान है) एक बेटा होने से ऊपर"। अगर कुरान यहाँ बात करता है केवल अल्लाह के बारे में, यह सही हो सकता है। लेकिन अगर यह यहोवा के समान अल्लाह के बारे में बात करता है, तो हम मुसलमानों को इस तथ्य की याद दिलाना है कि यीशु कई बार और कई गवाहों के सामने यहोवा को अपना पिता कहा - शब्द "पिता" यीशु के बीच संबंधों के एक बयान के रूप में और यहोवा का प्रयोग NT में कम से कम १६३ बार किया गया है, और शब्द "बेटा" कम से कम ६६ बार, कई बार उस समय के स्वयं यीशु द्वारा। और कुरान भी इस बात से सहमत है कि यीशु विश्वसनीय थे। और हम आपको याद दिला दें कि बिना किसी दस्तावेज के इस्लाम और कुरान के दावे के बावजूद बाइबिल के मिथ्याकरण, विज्ञान ने स्पष्ट रूप से प्रलेखित किया है कि उन अनिर्दिष्ट दावों सही नहीं हैं।

029 4/171d: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०३० ४/१७२: "मसीह अल्लाह की सेवा और पूजा न करने का तिरस्कार करता है।" 3/51 में में फंसा है स्पष्टीकरण क्यों यह गलत है। एकमात्र संभावित अपवाद यह है कि अगर यहोवा और अल्लाह वास्तव में हैं एक ही भगवान। लेकिन केवल इस्लाम ही कहता है कि, और यहोवा की शिक्षाएँ (विशेषकर NT and . में) नई वाचा - एफ। भूतपूर्व। लूका 22/20) की शिक्षाओं से आवश्यक बिंदुओं पर बहुत अलग हैं अल्लाह, कि वे एक ही ईश्वर नहीं हो सकते। इस्लाम को साबित करने की जरूरत होगी, सिर्फ दावा करने के लिए नहीं

यह।

०३१ ४/१७४: "- - - आपके पास (यहूदी, ईसाई*) एक पुख्ता सबूत (कुरान*) आया है
अपने रब (अल्लाह*) की ओर से - - -"। इसके साथ ही बहुत सी गलतियाँ, अंतर्विरोध आदि, और भी बहुत कुछ
गलत तर्क, आदि, आदि। कुरान बहुत आश्वस्त नहीं है, और इसके "सबूत" / "संकेत" अब और नहीं हैं
आश्वस्त करने वाला 2/99 देखें।

०३२ ४/१७६: "और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखता है"। जाहिर है इस मामले में नहीं। एफ. पूर्व.:
उत्तराधिकारियों के सही संयोजन को देखते हुए, उनके शेयर 112.5% और यहां तक कि 125% या . तक जुड़ जाते हैं
विरासत का १५०% (इसने वकीलों और सांसदों को बहुत काम दिया है - और कम से कम
वकील बहुत पैसा - समय के माध्यम से।)

सूरह 4: कम से कम 32 गलतियाँ + 6 संभावित गलतियाँ।

सूरह 5.

००१ ५/१ (ए२): "आपके लिए वैध (भोजन के रूप में) (मुसलमान*) सभी चार पैरों वाले जानवर हैं, जिनके साथ
अपवाद नाम - - -"। लेकिन अरब का शाब्दिक अर्थ "बहिमत अल-अनम" है "चार पैरों वाला"
मवेशी" या "जानवरों का जानवर"। लेकिन "मवेशी" "सभी चार पैरों वाले" से बहुत अलग है
जानवरों"। रहस्य को जोड़ने के लिए रेज़ी और अन्य कहते हैं: "- - - सभी जानवर जो मिलते-जुलते हैं
(पालतू) मवेशी इस हद तक कि वह पौधों को खाता है और शिकार का जानवर नहीं है।" (एक सार
यह है कि मुसलमान समुद्री स्तनधारियों को नहीं खा सकते - 4 पैर वाले नहीं और उनमें से अधिकांश के जानवर हैं
शिकार। लेकिन हमने इस बारे में कोई निषेध नहीं देखा है।) इस श्लोक का मुख्य सार यह है कि
कोई भी अरब विद्वान वास्तव में सुनिश्चित नहीं है कि इसका सही अर्थ कैसे समझा जाए, लेकिन **वे सहमत हैं
उस पर "चार-पैर वाले मवेशी" एक तनातनी है जो गलत होनी चाहिए** - एक और मामला जहां
बहुसंख्यक इस बात से सहमत हैं कि कुरान में कुछ पाठ गलत हैं (ऐसे कुछ हैं - देखें .)
अलग छोटा अध्याय। और जब बड़े-से-बड़े मुस्लिम विद्वान भी नहीं समझते कि क्या
पाठ का वास्तव में अर्थ है, यह "एक स्पष्ट और आसानी से समझी जाने वाली भाषा" नहीं है।

इसे मुस्लिम विद्वानों के बचाव में जोड़ा जाना चाहिए जो के अर्थ को "समायोजित" करने का प्रयास करते हैं
यह आयत, कि कुरान स्पष्ट रूप से शिकार की अनुमति देता है, और ज्यादातर वे भोजन के लिए शिकार पर जाते थे - - -
और तुम पशुओं का शिकार करने नहीं जाते। इस प्रकार यह बहुत स्पष्ट है कि जब वे यह कहते हैं तो वे सही होते हैं
टॉटोलॉजी गलत है।

001a 5/10: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

००२ ५/१२: "अल्लाह ने पहले इस्राएल के बच्चों से एक वाचा ली - - -।" गलत। देखो
4/159. वाचा यहोवा के साथ थी।

**003 5/13: "- - - वे (यहूदी*) शब्दों को बदल देते हैं (OT* का) और इसका एक अच्छा हिस्सा भूल जाते हैं
संदेश जो उन्हें भेजा गया था (OT*)"। कुछ १३००० शास्त्र या अंश पुराने हैं
६१० ईस्वी से (जब मुहम्मद ने खुद को एक दूत घोषित किया) और कुछ ३२००० संदर्भ
अन्य पांडुलिपियों में बाइबिल के छंद। वे दिखाते हैं कि न तो ओटी और न ही एनटी गलत है - और न ही है
कुछ भी भूल गया (छोड़ा गया)। **लेकिन इस्लाम को इस पर जोर देना होगा।** एक बात के लिए यह था
बहाना मुहम्मद ने बाइबिल और कुरान के बीच के अंतर को समझाते हुए इस्तेमाल किया -
और मुहम्मद और कुरान को केवल सच बोलना होगा, क्योंकि यदि नहीं तो
धर्म के तहत नींव ढह जाती है। और दूसरी बात के लिए - अगर कुरान गलत है और
बाइबिल सही है, इस्लाम एक बना हुआ धर्म है। लेकिन एक तथ्य यह है कि इस्लाम को कोई नहीं मिला है
अपने दावे के लिए सबूत, भले ही उन्होंने इसे 1400 वर्षों तक खोजा हो। उनके पास है
कई तर्क दिए, लेकिन अक्सर की तरह इस्लाम के पीछे केवल सस्ते शब्द हैं
उनके दावे - **अगर उन्हें 13000 . के बीच अपने दावे के लिए एक भी वास्तविक प्रमाण मिला होता
शास्त्रों या अन्य जगहों पर, आप इस पर बड़ी रकम का दांव लगा सकते हैं कि दुनिया को सूचित किया गया था
इसके बारे में जल्दी और पूरी तरह से।** जब विज्ञान तब बताता है कि बाइबल असंक्षिप्त है सिवाय
बेहतर अनुवाद के लिए और हस्तलिखित पांडुलिपियों के लिए सामान्य छोटी किस्में फैली हुई हैं
सैकड़ों साल और हजारों किलोमीटर - और हजारों शास्त्र थे
चारों ओर फैल गया - और हर एक को एक ही तरीके से गलत साबित करना पड़ा (तथ्य .)
मुसलमान कभी इसका उल्लेख या व्याख्या नहीं करते हैं) - ठीक है, जब यह सब जोड़ा जाता है, तो यह आपको तय करना है
जो - यदि कोई हो - दोनों पुस्तकों में से सबसे विश्वसनीय है। (२/७५ और ३/२४ भी देखें)।

००४ ५/१४: "- - - लेकिन वे (ईसाई*) उस संदेश (बाइबल/एनटी*) का एक अच्छा हिस्सा भूल गए जो कि था
उन्हें भेज दिया है - - -"। 3/24 और 5/13 देखें (बिल्कुल ऊपर)। जब एनटी की बात आती है, तो विज्ञान सम है

ओटी की तुलना में अधिक सुरक्षित "ग्राउंड" है, क्योंकि किसी के पास मूल दस्तावेज लगभग वापस जा रहे हैं
पहले चर्च - इसमें लगभग 300 गॉस्पेल या गॉस्पेल के टुकड़े शामिल थे - और वहां नहीं पाए गए

मिथ्याकरण। **ग्रंथ बस आज के समान ही हैं। इस्लाम को सबूत पेश करने होंगे, नहीं केवल हवा से निकाले गए दावे जैसे वे सामान्य रूप से करते हैं।** इतने पुराने दस्तावेजों के साथ यह मिथ्याकरण खोजने में काफी आसान होना चाहिए था - - - अगर यह सच था। 2/75 भी देखें!

००५ ५/१५ए: "- - - आपको (यहूदियों और ईसाइयों*) को बता रहा है कि आप इसमें से बहुत कुछ छिपाते थे किताब (बाइबल*) - - -"। इस सिद्धांत पर विश्वास करने के लिए कि बाइबल मिथ्या है, किसी को जानना होगा कई अलग-अलग की हजारों प्रतियों के समान मिथ्याकरण करने के तरीके के बारे में बहुत कम पांडुलिपियां, जहां सभी के ऊपर सभी अलग-अलग मिथ्याकरणों को सभी में सिंक्रनाइज़ किया जाना है अलग-अलग पांडुलिपियां, ताकि अलग-अलग पांडुलिपियां व्यापक रूप से अलग-अलग तथ्य न बताएं। और कम से कम नहीं: अलग-अलग कागजात के सभी संदर्भों को सिंक्रनाइज़ किया जाना चाहिए - ऐसा करने का प्रयास करें आज भी 100ooo कागज बड़े क्षेत्रों में फैले हुए हैं और बिना किसी द्रव्यमान के संचार, एक अच्छा डाकघर भी नहीं (13oo प्रासंगिक कागजात या कागजात के स्क्रैप के साथ आज भी मौजूद है, पुराने समय में कम से कम 100oo और कई और रहे होंगे, चारों ओर फैले हुए - कागज नष्ट हो जाते हैं या सड़ जाते हैं या सदियों से गायब हो जाते हैं, सभी समान रूप से मिथ्या, क्योंकि उस समय कोई नहीं जानता था कि आज तक कौन से कागज बचेंगे !!!)

२/७५, ३/२४, ५/१३ और ५/१४ पढ़ लेने के बाद आप स्वयं निर्णय लें।

00a 5/15b: "- - - अल्लाह की ओर से आपके पास (यहूदी, ईसाई) आया है एक (नया) प्रकाश (मुहम्मद*) - - -"। खैर, यह एक सवाल है: क्या एक आदमी इतना नैतिक रूप से पतित हो गया और एक किताब के आधार पर एक धर्म का प्रचार करना जिसमें इतनी सारी गलतियाँ, आदि और इतने गलत तर्क, वास्तव में एक भगवान का प्रतिनिधित्व करते हैं? और क्या युद्ध धर्म एक परोपकारी ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है?

006 5/15c: "- - - (अल्लाह ने नीचे भेजा है*) एक सुस्पष्ट पुस्तक (कुरान*)"। किसी भगवान ने नहीं भेजा नीचे - उल्लेख नहीं करने के लिए इसे अपने स्वर्ग में मातृ पुस्तक के रूप में सम्मानित किया - इसके साथ एक पुस्तक बहुत सारी गलतियाँ और इतना गलत और अमान्य तर्क।

**00b 5/17a: "फिर वह (भगवान*) आपको आपके पापों की सजा क्यों देता है (यदि वह आपसे प्यार करता है*)"। गलत मनोविज्ञान, और एक भोला सवाल, जैसा कि कोई भी जानता है कि आपको कभी-कभी दंडित करना पड़ता है यहां तक कि जिन बच्चों से आप प्यार करते हैं।

*007 5/17b: "निन्दा में वे लोग हैं जो कहते हैं कि अल्लाह मरियम का पुत्र मसीह है"। कोई भी ईसाई यह नहीं कहता कि यीशु ही अल्लाह है। न ही वे कहते हैं कि यीशु यहोवा है। मुहम्मद ईसाइयों के त्रिमूर्ति सिद्धांत को कभी नहीं समझा। (उनका यह भी मानना था कि ट्रिनिटी में शामिल हैं यहोवा, यीशु और मरियम!!!). लेकिन अगर कोई केवल उस हठधर्मिता को देखता है, तो इस्लाम सही हो सकता है कि वह है सही नहीं - हो सकता है। यह केवल एक हठधर्मिता है जिसे मनुष्यों ने बहुत झगड़े के बाद तय किया है और विचार - विमर्श; यह बाइबिल का हिस्सा नहीं है। **लेकिन कोई भी सही दिमाग में नहीं है और कुछ के साथ बाइबिल के बारे में ज्ञान, कभी भी विश्वास करेगा कि मैरी त्रिमूर्ति का हिस्सा थी।**

008 5/17c: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

*009 5/18a: "(दोनों) यहूदी और ईसाई कहते हैं: 'हम अल्लाह के बेटे हैं, और उसके जानम'"। न तो यहूदी और न ही ईसाई कहते हैं कि वे यहोवा के असली बेटे - या बेटियाँ - हैं अल्लाह के) (हालांकि वे अक्सर लाक्षणिक रूप से - लेकिन केवल आलंकारिक रूप से - उन्हें "पिता में पिता" के रूप में संदर्भित करते हैं। स्वर्ग" या मनुष्य "भगवान के बच्चे" के रूप में)।

010 5/18बी: "(दोनों) यहूदी और ईसाई कहते हैं: 'हम अल्लाह के बेटे हैं, और उसके प्यारे'। कहो: 'फिर वह तुम्हें तुम्हारे पापों का दंड क्यों देता है? - - -'"। सवाल बयानबाजी का भी नहीं है, लेकिन भोले - कभी-कभी आपको प्यारे बच्चों को भी अंतर सिखाने के लिए दंडित करना पड़ता है सही और गलत के बीच, अच्छे और बुरे के बीच।

011 5/18बी: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

012 5/19a: "हे पुस्तक के लोग (मुख्य रूप से यहूदी और ईसाई, लेकिन सबियन भी - एक ईसाई
सबा में संप्रदाय, अब यमन का हिस्सा (इस्लाम की एक और व्याख्या भी है) - और बाद में a . के बाद
फैशन और कुछ मंडलियों में भी पारसी*)! अब तुम्हारे पास आया है, (चीजें) बना रहा है
आपके लिए स्पष्ट, हमारे रसूल (मुहम्मद *) - - -"। कुछ लोग सवाल कर सकते हैं कि क्या वास्तव में मुहम्मद
एक भगवान के दूत थे - वह हमेशा एक अच्छे और के प्रतिनिधि की तरह व्यवहार नहीं करते थे
क्षमाशील ईश्वर, और उसका संदेश (कुरान) गलतियों से भरा है जो एक सर्वज्ञ ईश्वर ने नहीं किया था
बनाया गया। लेकिन जिस बात पर संदेह नहीं किया जा सकता, वह यह है कि इतने सारे गलत तथ्यों वाला संदेश सबसे अच्छा है
चीजों को आंशिक रूप से स्पष्ट कर सकता है (और सबसे खराब वास्तव में चीजों को गड़बड़ कर सकता है)।

013 5/19c: "- - - खुशखबरी - - -।" गलत। 2/97c और 61/13 देखें।

00c 5/19b: "- - - हमारे (अल्लाह के *) रसूल (मुहम्मद *) - - -"। क्या कोई आदमी इतना नैतिक हो सकता है
मुहम्मद की तरह पतित - और गलतियों से भरी किताब का प्रचार करना और तर्क को अमान्य करना -
वास्तव में एक अच्छे और सर्वज्ञ भगवान का प्रतिनिधित्व करते हैं?

*०१४ ५/२०: "याद रखें मूसा ने अपने लोगों से कहा: - - - अल्लाह - - - तुम्हें राजा बनाया"। गलत।
पहले यहूदी राजा शाऊल (कुरान में तलुत) और उसके बाद डेविड लगभग 200 साल बाद थे
मूसा। कोई भी - मामूली भी - भगवान को यह पता था। हमने मुसलमानों को समझाते हुए सुना है कि यह है
कुरान का मतलब नहीं है, बल्कि यह है कि अल्लाह ने सभी यहूदियों को राजा बनाया। लेकिन जो कोई जानता है
यहूदी इतिहास और पहले और अब के यहूदियों के बारे में बहुत कम, अच्छी तरह से जानता है कि अधिकांश यहूदी
राजाओं की तरह कभी नहीं थे या हैं या व्यवहार (डी) नहीं हैं। यह एक स्पष्ट "स्पष्टीकरण" है।

00d 5/21: "- - - पवित्र भूमि जो अल्लाह ने तुम्हें (मूसा और उसके यहूदियों*) को दी है - - -
". अल्लाह या यहोवा? (यह भी देखें 3/51)।

00e 5/23a: "- - - दो (मूसा के यहूदियों के *) जिन पर अल्लाह का हाथ है - - -"। अल्लाह या यहोवा? यह सभी देखें
3/51.

00f 5/23b: "- - - लेकिन अल्लाह पर अपना (यहूदी*) भरोसा रखो अगर तुम ईमान रखते हो"। इसकी संभावना बहुत कम है
मूसा के समय के यहूदियों ने अपने साथी यहूदियों से कहा था कि वे अल्लाह पर भरोसा करें, जो कि ईश्वर के नाम के रूप में है
यहूदी याहवे थे (और नाम के अलावा अल्लाह को मोहम्मद ने केवल कुछ ही पेश किया था
2000 साल बाद (अल-लाह के विकल्प के रूप में))।

015 5/40: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०१६ ५/४४: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

00g 5/46a: "हमने (अल्लाह*) ने मरियम के बेटे यीशु को कानून की पुष्टि करते हुए भेजा (मूसा के*)"।
बाइबिल के अनुसार जीसस को पुराने नियमों को बदलने के लिए नहीं भेजा गया था - यह उनका मुख्य नहीं था प्रयोजन। फिर भी उसने ऐसा ही किया - कुछ को बदल दिया और उनमें से कुछ को रद्द भी कर दिया,
विशेष रूप से यहूदी धार्मिक विचारकों द्वारा समय के माध्यम से किए गए सभी परिवर्धन और
नेताओं। यह उसके अंतिम ईस्टर के दौरान कमोबेश औपचारिक था, जब नई वाचा (f.
भूतपूर्व। ल्यूक 22/20) पेश किया गया था। (इस वाचा का उल्लेख इस्लाम द्वारा कभी नहीं किया गया है, और अधिकांश
धार्मिक शिक्षा के बिना मुसलमानों ने इसके बारे में सुना भी नहीं है। यह भले ही एक है
ईसाई धर्म में मुख्य और सबसे केंद्रीय तथ्य)।

०१७ ५/४६बी: "हमने (अल्लाह) ने उसे (यीशु को) सुसमाचार भेजा"। कोई भी भगवान जानता था कि
उस समय सुसमाचार मौजूद नहीं थे। 3/3 और 3/48 देखें।

०१८ ५/४८अ: "तुम्हें (मुहम्मद*) हमने (अल्लाह*) ने शास्त्र - - - भेजा है। जैसा कि बहुत सारे हैं
कुरान में गलतियाँ, इस बारे में उचित संदेह हैं कि क्या किसी ईश्वर ने वास्तव में कुरान को उतारा है।
ये और भी अधिक हैं क्योंकि कई गलतियाँ उसी के अनुसार होती हैं, जिस पर विश्वास किया जाता है
मध्य पूर्व में मुहम्मद के समय में सच हो। मुहम्मद ने माना होगा कि यह था
सच, एक भगवान जानता था कि यह गलत था। फिर कुरान किसने बनाया?

इस्लाम को कुछ के साथ तर्कसंगत विचारकों द्वारा विश्वास किए जाने वाले कथन को साबित करना होगा

ज्ञान।

०१९ ५/४८बी: "--- हमने (अल्लाह*) ने सच में शास्त्र भेजा---"। सभी गलत तथ्यों के साथ - और शायद अन्य गलतियाँ - कुरान में, यह आंशिक रूप से सत्य है।

021 5/48c: "- - - इससे पहले आए शास्त्र (बाइबल) की पुष्टि, - - -"। वहाँ पर बहुत कुरान और बाइबिल के बीच कई और इतने बुनियादी अंतर - विशेष रूप से एनटी - कि कुरान बाइबिल की पुष्टि नहीं है, और विशेष रूप से एनटी की नहीं। 2/89 और 3/3 देखें।

०२२ ५/४८d: "- - - सत्य (कुरान*) से अलग होना जो आपके पास आया है।" उस के साथ कई गलतियाँ, कुरान सबसे अच्छा केवल आंशिक रूप से सत्य है। **इस्लाम दोहराता है और दोहराता है और इस दावे को दोहराता है कि यह "सत्य" है। मंत्री जी को याद करना लाज़मी है "दास रीच" में प्रचार (!) - नाजी जर्मनी - जोसेफ गोएबल्स: "यदि आप एक झूठ दोहराते हैं अक्सर, लोग इस पर विश्वास करने लगते हैं।"** (इसमें कई अन्य समानताएं भी हैं इस्लाम और नाज़ीवाद, और नाज़ीवाद को मुसलमानों के बड़े हिस्से में पसंद और सम्मान किया जाता था नाजियों के शैतानी दिनों में आबादी।)

00h 5/59: "- - - रहस्योद्घाटन (कुरान*) जो हमारे पास आया है (मुहम्मद) - - -"। **कुंआ, इस्लाम के बारे में केंद्रीय प्रश्नों में से एक यह है कि क्या वास्तव में रहस्योद्घाटन थे - और यदि वहाँ थे: किससे? ये विकल्प हैं:**

1. एक ईश्वर की ओर से खुलासे - जो कुरान साबित होता है कि ऐसा नहीं है, क्योंकि कोई भगवान नहीं, सर्वज्ञ या नहीं, इतनी गलतियाँ की थीं और विरोधाभास, आदि, और इतना गलत तर्क, आदि।
2. या धोखेबाज से खुलासे - f. भूतपूर्व। NS डेविल - गेब्रियल होने का नाटक करना या काम करना मुहम्मद के मस्तिष्क पर (TLE जैसी बीमारी) आसानी से समझाएगा कि - बीबीसी देखें "भगवान पर" द ब्रेन", 20. मार्च 2003) - और अमानवीय और कुछ बिंदुओं पर अत्यधिक अनैतिक धर्म मुहम्मद की स्थापना, संकेत कर सकते हैं कि यह वास्तव में एक संभावना है।
3. या "रहस्योद्घाटन" बस एक से आया है मानव मस्तिष्क एक बीमारी के साथ - अगर मुहम्मद एफ। भूतपूर्व। TLE (टेम्पोरल लोब एपिलेप्सी) जैसा था चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार एफ. भूतपूर्व। बीबीसी संदिग्ध, जो आसानी से उसकी व्याख्या करता है "अनुभव"।
4. या यह सब एक "परिदृश्य" है जो ठंड से बना है और षडयंत्रकारी दिमाग - और मुहम्मद का अमानवीय क्रूरता और आसानी से पहचानी जाने वाली वासना

शक्ति (देखें एफ। उदा। वह खुद को कैसे चिपकाता है अल्लाह) इसका संकेत दे सकता है।

अंक 3 और 4 का संयोजन भी संभव है।

00i 5/60: "जिन लोगों ने अल्लाह के श्राप और उसके प्रकोप को झेला, उनमें से कुछ को उसने बदल दिया" वानर और सूअर में - - -"। शायद ही। इसके लिए पुख्ता सबूत चाहिए।

०२३ ५/६४: "अल्लाह की ओर से आपके पास (मुहम्मद*) आने वाला रहस्योद्घाटन (कुरान *) - -"। एक किताब जिसमें इतनी सारी गलतियाँ आदि हैं, वह सर्वज्ञ ईश्वर की नहीं है। ऊपर 5/59 देखें।

०२४ ५/६७: "--- (संदेश) जो तेरे रब की ओर से तुझे (मुहम्मद*) भेजा गया है।" इस बात की कोई संभावना नहीं है कि कोई संदेश (कुरान) जो गलतियों, गलत तर्क आदि से भरा हो एक सर्वज्ञ देवता। 5/59 देखें।

*025 5/72a: "वे निन्दा करते हैं जो कहते हैं: 'ईश्वर मरियम का पुत्र है'"। कोई ईसाई ऐसा नहीं कहता

यहोवा मरियम, यीशु का पुत्र है। (हालांकि कैथोलिक लोग "माँ की" अभिव्यक्ति का उपयोग करते हैं
भगवान" का अर्थ है "(पवित्र) यीशु की माँ", लेकिन वे स्पष्ट रूप से अंतर को जानते हैं
भगवान / यहोवा और यीशु)।

०२६ ५/७२बी: "परन्तु मसीह ने कहा; 'हे इस्राएल के बच्चों! अल्लाह की इबादत करो, मेरे रब और तुम्हारे भगवान'"। **यदि यीशु ने इस्राएल में ज्ञात बहुदेववादी ईश्वर अल-लाह के बारे में सिखाने की कोशिश की थी एक मूर्तिपूजक पड़ोसी देश से, उसके बहुत कम अनुयायी थे और थे उस समय इज़राइल में धार्मिक माहौल में पादरियों द्वारा जल्दी से मार डाला गया।

00j 5/73: "वे निन्दा करते हैं जो कहते हैं: अल्लाह एक त्रिमूर्ति में तीन में से एक है"। हमारे सूत्र बताते हैं कि 3 अंतिम शब्द अरब संस्करण में मौजूद नहीं है, लेकिन यूसुफ अली द्वारा जोड़ा गया है। फिर सही पाठ समाप्त होने की स्थिति में: "अल्लाह (यहोवा*) तीन (देवताओं*) में से एक है।" जो स्पष्ट रूप से गलत है, जैसे ईसाई केवल एक ईश्वर में विश्वास करते हैं। इसके अलावा यह a . में परिवर्धन करने के लिए एक सबसे संदिग्ध अभ्यास है पाठ पाठकों को यह बताए बिना कि यह एक अतिरिक्त है - f. भूतपूर्व। कम से कम डाल कर ( ) में जोड़ ।

00k 5/75a: "मरियम का पुत्र मसीह, एक दूत से ज्यादा कुछ नहीं था; - - -"। बाइबल कहती है कुछ और - कि यीशु ने यहोवा को अपना पिता कहा (इस संबंध का उल्लेख कम से कम है 163 बार "पिता" के रूप में + 66 बार "पुत्र" के रूप में NT में - अक्सर स्वयं यीशु द्वारा), और दूर हमेशा अपने आध्यात्मिक पिता से - और जैसा कि बाइबल अपेक्षाकृत कम समय बाद लिखी जाती है यीशु की मृत्यु, और इस बिंदु पर हजारों गवाहों के आधार पर जो बता सकते हैं कि यीशु ने कहा, और विरोध करें यदि कथावाचक यीशु को झूठा उद्धृत करते हैं, तो संभावना है कि बाइबल अधिक है कुरान की तुलना में यहाँ विश्वसनीय। कुरान ६०० साल बाद लिखा गया है, और केवल निराधार प्रदान करता है बिना किसी सबूत के बयान और दावे या दावों का समर्थन करने वाले संकेत भी। यह भी और इसलिए कि दावों के लिए एकमात्र इस्लामी स्रोत एक ऐसा व्यक्ति था जिसने महानतम होने की मांग की थी सभी समय के भविष्यद्वक्ता, कुछ निश्चित रूप से वह नहीं हो सकते थे यदि यीशु यहोवा के रिश्तेदार थे - और यह और भी अधिक है क्योंकि मुहम्मद वास्तव में पैगंबर नहीं थे: उनके पास उपहार नहीं था भविष्यवाणी करने में सक्षम होने के नाते (उसने न तो दावा किया और न ही होने का दिखावा किया) - शायद a किसी के लिए या कुछ के लिए दूत, या एक प्रेरित, लेकिन एक नबी नहीं।

जैसा कि उल्लेख किया गया है कि यीशु स्वयं अक्सर यहोवा को अपना पिता कहते हैं - और यीशु विश्वसनीय है कुरान के अनुसार भी (लेकिन जैसा कि कहा गया है कि कुरान/मोहम्मद यह स्वीकार नहीं कर सकते कि यीशु हो सकता है) यहोवा के पुत्र हो, क्योंकि तब मुहम्मद "भविष्यद्वक्ताओं" में सबसे महान नहीं हैं - और

मुहम्मद की रक्षा भी आवश्यक है, क्योंकि वह वास्तव में एक संदिग्ध और अनैतिक था चरित्र)।

०२७ ५/७५बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

00l 5/75c: "- - - बहकाया - - -।" कुरान में गलतियाँ, आदि यह एक खुला प्रश्न बनाता है कि कौन बहकावे में है और कौन नहीं।

०२८ ५/७५डी: "- - - वे (गैर-मुस्लिम*) सच्चाई से बहक गए हैं।" सभी के साथ गलत तथ्य - और शायद अन्य गलतियाँ - कुरान में, यह केवल आंशिक रूप से सच बताता है।

****029 5/81: "- - - पैगंबर (मुहम्मद*) - - -"। **लेकिन मुहम्मद वास्तविक नहीं थे नबी. नबी की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:**

1. **** का उपहार है और काफी करीब है भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान से संबंध।
2. **** भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम ज्यादातर सच हो जाते हैं। नहीं तो वह झूठा नबी है।
3. ****इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी सामान्य रूप से क्या होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि

कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि वह जो कुछ भी करता है [illegible] नहीं किया,
भविष्य के बारे में कहा सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में उसने और इस्लाम दोनों ने कहा और कहा कि वहाँ
"कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से जुड़े कोई चमत्कार नहीं थे - भविष्यवाणी करना एक तरह का है
चमत्कार। (यह आखिरी तथ्य भी इस बात का पुख्ता सबूत है कि मुहम्मद से जुड़े तमाम चमत्कार
वहाँ हदीसों का उल्लेख है, कहानियाँ बनी हैं)।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। केवल वह "उधार" वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

०३० ५/८३: "- - - उन्होंने (ईसाई*) सच्चाई को पहचान लिया (कुरान* के अनुरूप)"। जैसा
पहले कहा था: कुरान में कई गलतियों के साथ, मुहम्मद की शिक्षाएं सबसे अच्छी हैं
आंशिक रूप से सच्चाई।

00m 5/84a: "हम (मुहम्मद और लोगों) को अल्लाह पर विश्वास न करने का क्या कारण हो सकता है -
- -?" खैर, इसके कड़े जवाब हैं- कुरान की सारी गलतियां, की अमानवीयता
मुहम्मद और इस्लाम, कुछ बिंदुओं पर मुहम्मद और इस्लाम की बीमार नैतिकता, आदि, आदि।
आदि लेकिन मुख्य बात यह है कि सवाल गलत है। सही और प्रासंगिक प्रश्न था
किया गया: "हमें अल्लाह पर विश्वास करने का क्या कारण हो सकता है?"

**०३१ ५/८४बी: "हमें अल्लाह और सच्चाई (कुरान*) पर विश्वास न करने का क्या कारण हो सकता है
जो हमारे पास आया है, - - -?" दूसरों के बीच 5/75 और 5/83 देखें। इसके अलावा - जवाब देने के लिए
प्रश्न: विश्वास न करने के भारी कारण हैं: तथ्य यह है कि कुरान - का आधार
धर्म - एक पुस्तक में इतने सारे गलत तथ्य शामिल हैं जो उनके द्वारा नीचे भेजे जाने का दावा करते हैं

भगवान। फिर कितनी गलतियाँ धार्मिक बिन्दुओं में गलत हैं? क्या वाकई भेजा गया है
एक भगवान से नीचे, या यह यहाँ पृथ्वी पर किसी के द्वारा बनाया गया है? और अगर उतारा जाता है तो उसमें
मामले में अल्लाह बहुत स्पष्ट रूप से सर्वज्ञ नहीं है - और उदार नहीं है।

०३२ ५/८६: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

033 5/89: "- - - संकेत - - -"। अल्लाह या किसी भी चीज़ के प्रमाण के रूप में अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०३४ ५/९७: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

**०३५ ५/११०ए: "मैंने (अल्लाह*) ने तुम्हें (यीशु*) - - - सुसमाचार" के बारे में सोचा था। गलत। इंजील ने नहीं किया
यीशु की मृत्यु (सबसे पुराना सुसमाचार) के लगभग 25 वर्ष बाद तक अस्तित्व में है। 3/3 और 3/48 देखें।

०३६ ५/११०ब: “और देखो, तू (बालक यीशु*) मिट्टी से, मानो एक की आकृति बनाता है
पक्षी, मेरी छुट्टी से, और आप उसमें सांस लेते हैं और यह मेरी छुट्टी से एक पक्षी बन जाता है, - - - "। एक बनाया
अप स्टोरी फॉर्म द मेड अप लेजेंड्स इन मेड अप (एपोक्रिफल) थॉमस चाइल्ड गॉस्पेल। देखो
३/४९ - मुहम्मद अक्सर खुद को दोहराते हैं, भले ही इससे कोई अच्छा साहित्य न हो। इसके अलावा: ए
आश्चर्य है कि इस तरह बाइबिल में नहीं भुलाया गया था - और विशेष रूप से "गलत करने वालों" द्वारा नहीं
जीसस को और अधिक पवित्र बनाने के लिए बाइबिल को गलत साबित करना चाहते हैं, जैसे कुरान अक्सर कहता/संकेत करता है।

०३७ ५/१११: "(चेले*) ने कहा: "हमें विश्वास है, और क्या आप गवाही देते हैं कि हम झुकते हैं
मुसलमानों के रूप में अल्लाह ”। मेड अप स्टोरी - स्पष्टीकरण के लिए 3/51 देखें।

०३८ ५/११४ए: "हमें (यीशु और चेले*) स्वर्ग से एक टेबल सेट (विंड्स के साथ), - - - भेजें।
एक गढ़ी हुई कहानी - ऐसा कोई चमत्कार नहीं है जो स्पष्ट रूप से यीशु के संबंध को दर्शाता हो
यहोवा के लिए, बाइबल से हटा दिया जाएगा। एक भी मौका नहीं। भले ही मुहम्मद ने
सही था और ईसाइयों ने NT को गलत ठहराया था, इस तरह की कहानियाँ उन्होंने जोड़ी थीं, नहीं
छोड़ा गया कुछ मुसलमान कहते हैं कि यह "ईश्वर की प्रार्थना" के लिए थोड़ा सा उल्लेख कर सकता है - हमें अपना दैनिक दें
रोटी - बाइबिल में। बहुत अधिक संभावना है कि यह पिछले ईस्टर डिनर का एक विपरीत संस्करण है।

०३९ ५/११४बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०४० ५/११६ए: "क्या तुमने (यीशु*) ने मनुष्यों से कहा, 'मुझे और मेरी माँ को देवताओं के रूप में पूजा करो
अल्लाह का अपमान'?" यीशु अल्लाह के साथ शामिल नहीं था - स्पष्टीकरण के लिए 3/51 देखें। एक के लिए
दैवीय यीशु, जिसे बाइबल में स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है, लेकिन कई जगहों पर यह समझा जाता है कि वह

था (f। उदा। अगर यहोवा वास्तव में किसी तरह से उसका पिता था, और उसके सभी चमत्कार भी - पुष्टि की गई)
कुरान द्वारा - कुछ इंगित करता है)। लेकिन जब मरियम की बात आती है तो इस्लाम सही है - संत हैं
बाइबिल की शिक्षा का हिस्सा नहीं (दूसरी ओर भी कुछ मुसलमानों के संत हैं,
विशेष रूप से शिया)। लेकिन कोई भी ईसाई - एक अकेला नहीं - एक भगवान के रूप में मैरी से प्रार्थना करता है।

*०४१ ५/११६बी: मोहम्मद का मानना था कि ट्रिनिटी में भगवान / यहोवा, यीशु और मरियम शामिल थे।
गलत। मुहम्मद और कुरान दोनों ही चरम रूप से गलत थे, जब वे इस प्रकार
माना जाता है कि मैरी ट्रिनिटी का हिस्सा थीं। (इसमें परमेश्वर/यहोवा, यीशु और पवित्र का (?) शामिल है
आत्मा - जिसे पवित्र आत्मा भी कहा जाता है, सत्य का आत्मा, परमेश्वर का आत्मा, या केवल आत्मा)।
मुहम्मद कभी त्रिमूर्ति नहीं थे और उन्होंने पवित्र आत्मा को कभी नहीं समझा, भले ही उन्होंने इसका इस्तेमाल किया था
कुरान में कुछ बार आत्मा - और कुछ मुसलमान कुरान में पवित्र आत्मा का उल्लेख करते हैं
आर्क परी गेब्रियल (!) के लिए एक और नाम के रूप में यह "ज्ञात" है कि गेब्रियल सूरह लाया और
छंद, लेकिन कुरान में यह भी कहा गया है कि आत्मा कुछ लाया। 5/117 भी देखें।

०४२ ५/११७: (यीशु ने कहा): "अल्लाह, मेरे रब और अपने रब की इबादत करो"। करने के लिए बनाई गई एक कहानी
इस्लाम को मजबूत करो। यदि यीशु ने अल-लाह के बारे में ऐसी बातें कही होती, तो उसके पास बहुत कम होते
अनुयायी - - - और यहूदी पादरियों द्वारा महीनों के भीतर मारे गए थे। आगे के लिए 3/51 देखें
व्याख्या।

०४३ ५/१२०: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

सूरह 5: कम से कम 41 गलतियाँ + 13 संभावित गलतियाँ।

यहाँ तक का योग: कम से कम 263 गलतियाँ + 43 संभावित गलतियाँ।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 4, खंड 2 (= II-1-4-2)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। NS "पूर्ण" सूची - "विश्वकोश" - सूरह पर आधारित और पद संख्या

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें।
धारा 1 से 16.

कुछ स्पष्ट तथ्य गलतियाँ और सुरह में त्रुटियाँ ६ से १० में कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

टिप्पणियों को ३ नंबरों (०० या ० सहित) द्वारा क्रमांकित किया गया, कुछ स्थानों के बाद एक छोटा
पत्र = स्पष्ट गलतियाँ। टिप्पणियों की संख्या 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षर (बड़ा या .)
छोटा) = संभावित गलती।

सूरह 6

001 6/1: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

***002 6/2: "वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, - - -"। यह बहुतों में से एक है
जिस तरह से इंसान (आदम) को कुरान के अनुसार बनाया गया था - भले ही आदम को केवल एक बार बनाया गया हो,
उस पुस्तक के अनुसार। वह इस तरह से बनाया गया था:

ए। मिट्टी से:	6/2 7/12 17/61 32/7 38/71 38/76।
बी। बजने वाली मिट्टी से:	15/26 15/28 15/33।
सी। बजती मिट्टी से:	55/64
डी। चिपचिपी मिट्टी से:	37/11
इ। मिट्टी के सार से:	23/12
एफ। कीचड़ से:	15/26 15/28 15/33।
जी। धूल से:	3/59 22/5 35/11 40/67।
एच। पृथ्वी से:	20/55
मैं। जमे हुए रक्त के थक्के से: 96/2	
जे। वीर्य से:#	16/4 75/37 76/2 80/19।
क। से कुछ नहीं:	19/9 19/67।
एल पानी से:	21/30 24/45 25/54।
एम। आधार सामग्री से:	70/39।

#(यह नहीं बताया गया है कि वीर्य कहां से आया)।**

**ज्यादातर जब पुस्तक वीर्य की बात करती है तो वह (बनाने) बच्चों के संबंध में होती है। परंतु
वीर्य से बच्चे भी नहीं बनते - यह सत्य का केवल 50% है। एक बच्चा . से बना है
वीर्य + एक अंडा कोशिका, लेकिन एक अंडा कोशिका इतनी छोटी होती है कि मुहम्मद को इसके बारे में पता नहीं था -
मानव अंडे शायद ही किसी शव या वध किए गए जानवर के रक्त और गोर में देखे जा सकते हैं।
वास्तव में मुहम्मद के समय कोई नहीं जानता था कि गर्भाधान कैसे हुआ - एक सिद्धांत
क्या वह वीर्य एक बीज था जो एक महिला में रखे जाने पर बढ़ता था - हालांकि हर बार से बहुत दूर।
हैरानी की बात यह है कि कुरान इसे कैसे समझाता है। कोई भी भगवान बेहतर जानता था।

आदमी/आदम को बनाने के सभी अलग-अलग तरीकों को सख्ती से बोलने का मतलब है कि कुरान बताता है कि
मनुष्य/आदम को 13 अलग-अलग तरीकों से बनाया गया था, भले ही आदम को केवल एक बार बनाया गया था (वास्तव में
वह कभी नहीं बनाया गया था और न ही कभी अस्तित्व में था - मनुष्य पहले के प्राइमेट से विकसित हुआ था)। अगर एक गांठ
समान "रचना" एक साथ, अभी भी कम से कम 5-7 विभिन्न रचनाएँ बनी हुई हैं। केवल एक ही कर सकते हैं
कुरान के अनुसार भी सही हो (क्योंकि आदम को केवल एक बार बनाया गया था, यहां तक कि के अनुसार भी)
कुरान और बाइबिल) - और विडंबना यह है कि विज्ञान ने लंबे समय से दिखाया है कि सभी
विकल्प गलत हैं, जैसा कि कहा गया है कि मनुष्य एक प्रागैतिहासिक रहनुमा से विकसित हुआ है। कुछ मुसलमान
समझाओ कि आदम एक छोटी मिट्टी, थोड़ी धूल, थोड़ी सी धरती, थोड़े से खून से बनाया गया था, a
थोड़ा वीर्य, थोड़ा सा कुछ नहीं और थोड़ा पानी। लेकिन कुरान जो कहता है वह उससे बहुत दूर है - और
भले ही यह कुरान जो कहता है उसकी सच्ची कहानी थी, यह गलत है, क्योंकि मनुष्य पहले से विकसित हुआ है
प्राणी और मनुष्य में मिट्टी आदि कहाँ मिलती है?

००३ ६/३: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

004 6/4: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

005 6/5a: "और अब वे (गैर-मुस्लिम*) सच्चाई (कुरान*) को खारिज करते हैं - - -"। इसके साथ कई
गलतियाँ, आदि। कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है। 13/1 भी देखें।

००६ ६/५बी: "और अब वे (मनुष्य/गलती करने वाले*) सत्य को अस्वीकार करते हैं (मुहम्मद की शिक्षा*) जब
यह उन तक पहुँचता है: - - - "। कुरान में बहुत सारी गलतियाँ हैं - गलत तथ्य, और अन्य गलतियाँ -
कि सबसे अच्छा यह केवल आंशिक रूप से सत्य है।

***007 6/7: "अगर हम (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) पर एक लिखित (संदेश) भेजा होता
चर्मपत्र - - - अविश्वासियों (किसी भी तरह से विश्वास नहीं करेंगे*)"। गलत - और मुहम्मद थे
बहुत बुद्धिमान और लोगों के बारे में बहुत कुछ जानता था कि यह नहीं पता था कि यह झूठ था और झूठ है: एक वास्तविक चमत्कार
- या एक से अधिक - ने नए विश्वासी बनाए थे, भले ही कुछ लोग इसे जादू कहने की कोशिश करें। ये है
उन जगहों में से एक जहां मुहम्मद जैसा बुद्धिमान व्यक्ति जानता था कि वह झूठ बोल रहा है।

*008 6/11a: "पृथ्वी के माध्यम से यात्रा करें और देखें कि उन लोगों का अंत क्या था जिन्होंने अस्वीकार कर दिया था
सत्य"। अरब और पड़ोसी देशों में बिखरे हुए पुराने घरों के खंडहर थे,
गांवों और कस्बों। मुहम्मद ने बताया कि ये अल्लाह द्वारा नष्ट किए गए लोगों द्वारा छोड़े गए अवशेष थे
अल्लाह पर विश्वास न करने के कारण - जो कि ज्यादातर मामलों में शायद ही सच हो। सच बोलने के लिए: नहीं
इतिहास के एक गंभीर प्रोफेसर इस पर विश्वास करते हैं। और एक गंभीर वैज्ञानिक पुस्तक के बारे में नहीं
इतिहास इस तरह के दावों का उल्लेख एक विश्वसनीय कारण के रूप में करता है कि क्यों घर या गाँव या कस्बे या शहर
खाली हो गया। उन्हें मनाने के लिए इस्लाम से भारी सबूत लेने होंगे।

००९ ६/११बी: "---देखो सत्य को ठुकराने वालों का क्या अंत हुआ"। सच्चाई अधिक नहीं है
f की तुलना में यहाँ विश्वसनीय है। भूतपूर्व। 6/5 और 6/11। 13/1 भी देखें।

010 6/12a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०११ ६/१२बी: "कि वह (अल्लाह*) तुम्हें क़यामत के दिन इकट्ठा करेगा, कोई
संदेह जो भी हो।" इतनी सारी गलतियों, अंतर्विरोधों, इतने गलत तर्क के साथ
शिक्षाओं, कुरान और इस्लाम में किसी भी चीज के बारे में गंभीर संदेह है - और अच्छे के साथ
कारण - तथाकथित अंतिम दिन और एक भगवान द्वारा निर्णय शामिल है।

012 6/14a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

**00a 6/14b: "लेकिन मुझे (मुहम्मद*) अल्लाह को नमन करने वालों में सबसे पहले होने का आदेश दिया गया है
- - -"। वह कैसे संभव हो सकता है? - आदम और नूह और कई अन्य मुस्लिम थे
कुरान को। (मुसलमान बताते हैं कि इसका मतलब कुरान में वर्णित प्रत्येक व्यक्ति से है
रास्ता, अपने समूह या जनजाति या राष्ट्र या कुछ और में पहला था, लेकिन कुरान ऐसा नहीं है
कहते हैं। लेकिन इस एक मामले में कुरान सही हो सकता है - यह भी हो सकता है कि मुहम्मद थे
प्रथम। सर्वप्रथम)।

०१३ ६/२०: "जिन्हें हमने (अल्लाह*) ने किताब (यहूदी, ईसाई*) दी है, वे इसे जानते हैं
(कि कुरान मुहम्मद, आदि* पर अवतरित हुआ) क्योंकि वे अपने पुत्रों को जानते हैं।" बहुत गलत
- उनके पास संदेह करने के बहुत सारे कारण थे कि कुछ गलत था - बहुत गलत - दोनों के साथ
मुहम्मद और उनके धर्म के साथ।

०१४ ६/२१: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०१५ ६/२७: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

**०१६ ६/२८: "लेकिन अगर वे (पापियों*) को (नरक से पृथ्वी*) लौटा दिया जाता, तो वे निश्चित रूप से
उन चीजों के लिए फिर से आना जिनके लिए उन्हें मना किया गया था"। यह उन जगहों में से एक है जहां एक बुद्धिमान व्यक्ति
लोगों के बारे में बहुत सारी जानकारी, जैसे मुहम्मद को पता था कि वह झूठ बोल रहा है - अधिकांश व्यक्ति
कुरान में वर्णित नरक की तरह देखा और अनुभव किया, व्यावहारिक रूप से करेंगे
अगर उन्हें दूसरा मौका मिला तो कुछ भी खत्म नहीं होगा।

017 6/33: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०१८ ६/३५: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

019 6/37: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२० ६/३८ए: "कुछ भी नहीं है जो हमने (अल्लाह) किताब (कुरान*) से हटा दिया है"। गलत। बहुत
यहां तक कि आवश्यक चीजों को भी छोड़ दिया जाता है (उदाहरण के लिए, इसलिए इस्लाम को कई और कानून बनाने पड़े हैं
कुरान में उद्धृत), और बहुत सारे तथ्य - और अन्य कथन हो सकते हैं - गलत हैं।

०२१ ६/३८ब: "पृथ्वी पर न तो कोई पशु (जो जीवित है) है, और न ही कोई प्राणी है जो उसके पंखों पर उड़ता है,
लेकिन (आप जैसे समुदायों का हिस्सा है)। गलत। कई जानवर और पक्षी हैं, नहीं
कीड़ों का उल्लेख करें, जो अकेले रहते हैं - कीड़ों और कुछ मांसाहारी और यहां तक कि पक्षियों के बीच भी
आपकी अपनी प्रजाति के करीब आना खतरनाक हो सकता है, खासकर यदि आप पुरुष हैं।

०२२ ६/३८सी: "कुछ भी नहीं है जो हमने (अल्लाह *) किताब (कुरान*) से हटा दिया है - - -"। वहां एक है
बहुत सी चीजें जो आपको कुरान में नहीं मिलती - f. भूतपूर्व। मानव जीवन के लिए कानून अधूरे हैं, और
आधुनिक समाजों में तो और भी अधिक।

०२३ ६/३९: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२४ ६/४५: "अल्लाह की स्तुति करो, संसारों का पालनहार"। ऐसी कोई 7 दुनिया नहीं हैं
(65/12) को संदर्भित करता है।

०२५ ६/४६: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२६ ६/४९: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२७ ६/५५: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२८ ६/७५: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

029 6/57: "- - - स्पष्ट चिह्न - - -"। सभी में अल्लाह या मुहम्मद के लिए कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं
कुरान. 2/99 देखें।

*०३० ६/५७: "वह (अल्लाह) सत्य की घोषणा करता है"। हो सकता है वह करता हो, लेकिन उस मामले में बाहर
कुरान, जैसा कि कुरान में उल्लेख किया गया है, केवल आंशिक रूप से सत्य है - बहुत सारे गलत तथ्य भी
कई अंतर्विरोध, साहित्य के अनुसार अरब भाषा में भी कई गलतियां
कई अमान्य "संकेत" और "प्रमाण" - और कुछ अन्य गलतियाँ भी हो सकती हैं - - - शायद यहां तक कि
धार्मिक गलतियाँ (वे अपवाद क्यों हों?) वास्तव में: इतनी गलतियों के साथ कि
आप कुरान में पाते हैं, यह आंशिक रूप से सत्य है।

०३१ ६/७१: "- - - संसार - - -"। कुरान के अनुसार मौजूद 7 दुनियाओं का जिक्र।
गलत। 65/12 देखें।

032 6/73a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०३३ ६/७३बी: "उसका (अल्लाह का) वचन (कुरान*) सत्य है"। इतनी सारी गलतियों के साथ, यह
सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है।

०३४ ६/७५: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

278

पृष्ठ २७९

035 6/79: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०३६ ६/९१अ: "किसने वह पुस्तक उतारी जिसे मूसा लाया था?" गलत - कोई किताब नहीं। केवल मूसा
10 आज्ञाओं को नीचे लाया। (उन्हें कानून भी बताया गया था, और बाद में इसे लिखा था, लेकिन
और कुछ नहीं, बाइबल के अनुसार)। मूसा की ५ पुस्तकें - तोराह - कुछ लिखी गई थीं
विज्ञान के अनुसार 400-700 साल बाद। (सटीक होने के लिए: बाइबिल के अनुसार उन्हें 2 . मिला
10 आज्ञाओं के साथ पत्थर की पटिया, और इसके अलावा उसे कानून बताया गया, जिसे उसने
बाद में खुद लिखा। कानून बाद में मूसा की किताब - टोरा का हिस्सा बन गया। NS
मूसा की पुस्तक को अक्सर "व्यवस्था" के रूप में संदर्भित किया जाता है, लेकिन वास्तव में कानून केवल एक नाबालिग है
इसका एक हिस्सा - जैसे जब इस्लाम एक सूरह में एक केंद्रीय शब्द लेता है, और उसके लिए एक नाम के रूप में उसका उपयोग करता है
सूरा)। बाइबल में यह भी उल्लेख है कि जब सुलैमान वाचा का सन्दूक लेकर आया था
मंदिर जो उसने यरूशलेम में बनाया था, उसमें केवल दो पत्थर की पटियाएँ थीं (1. राजा 8/9)। यह है

हालांकि, उल्लेख किया गया है कि (किताब की) व्यवस्था बाद में राजा योशिय्याह (2. किंग्स 22/8)।

०३७ ६/९१बी: "अल्लाह ने (मूसा की किताबें) नीचे भेजीं)"। जैसा कि मूसा ने कभी नहीं - या लाया - बाइबल के अनुसार वे पुस्तकें, वे किसी के द्वारा नहीं भेजी जा सकती थीं। वे विज्ञान के अनुसार कई सौ साल बाद लिखे गए थे। लेकिन ऊपर 6/91a देखें।

०३८ ६/९१सी: "- - - तुम (यहूदी) बहुत कुछ छिपाते हो (इसका (तोराह = ओटी का पहला भाग*) सामग्री - - -)"। **विज्ञान ने कभी इतना स्पष्ट रूप से दिखाया है कि यह इस्लामी दावा गलत है - कई वास्तव में पुराने दस्तावेजों से पता चला है कि आज के ग्रंथ वास्तव में पुराने की तरह हैं।** कुरान और अन्य जगहों पर बार-बार किए गए दावों के लिए इस्लाम को वास्तविक सबूत लाने होंगे - जब तक अब उनके पास केवल बिना पैसे वाले दावे और ढीले-ढाले शब्द हैं, और हम वापस पुराने पर आ गए हैं तथ्य: **यदि इस्लाम को यह दिखाते हुए एक कठिन तथ्य मिला था कि बाइबल को किसी भी तरह से गलत ठहराया गया था, तो दुनिया को जल्दी और बड़े अक्षरों में बताया गया था। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस्लाम में एक नहीं है अल्लाह के अस्तित्व के लिए एकमात्र वास्तविक प्रमाण, एक दूत के रूप में गेब्रियल के लिए, मुहम्मद के लिए किसी ईश्वर या किसी भी चीज़ से संबंध - सब कुछ केवल - केवल - किस पर टिकी हुई है मुहम्मद ने बताया, और ऐतिहासिक मुहम्मद (इस्लामी चमकदार के विपरीत) तस्वीर) एक ऐसा व्यक्ति था जिसे किसी भी गंभीर अदालत में विश्वसनीय के रूप में स्वीकार नहीं किया गया होता साक्षी।** बाइबिल के मिथ्याकरण का प्रमाण इस बात का संकेत होगा कि कुरान था इस एक बिंदु पर कम से कम सही, और इस प्रकार बहुत स्वागत है। लेकिन १४०० सौ वर्षों में कोई वास्तविक नहीं प्रमाण मिल गया है - केवल दावे और शब्द। इसलिए एक मिथ्या बाइबिल के लिए एक वास्तविक प्रमाण था सभी मुस्लिम मीडिया में और हमेशा के लिए धर्म पर बहस करने वाले सभी मुसलमानों के लिए बड़ी खबर रही है। **नहीं इस तरह के सबूत कभी इस्लाम द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं।**

3/24, 5/13, 5/14, 5/15 भी देखें।

039 6/91d: "कहो: 'अल्लाह ने इसे (कुरान*) नीचे भेजा - - -"। किसी सर्वज्ञ भगवान ने कभी नीचे नहीं भेजा a उस किताब के साथ कई गलतियां, गलत तर्क, आदि का उल्लेख नहीं करने के लिए इसे एक पूजनीय मां के रूप में रखा अपने ही स्वर्ग में बुक करें।

०४० ६/९२अ: "और यह एक किताब (कुरान*) है जिसे हमने (अल्लाह) उतारा है।" यह है एक सवाल है कि क्या एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा इतनी सारी गलतियों के साथ एक किताब भेजी जा सकती है। लेकिन उस प्रश्न का उत्तर स्वयं देता है: नहीं।

०४१ ६/९२बी: (कुरान है) "पुष्टि करना (रहस्योद्घाटन) जो इससे पहले आया था (बाइबल*)"। गलत। इतने सारे मूलभूत अंतर हैं, कि कुरान इसकी पुष्टि नहीं करता है बाइबिल। एफ देखें। भूतपूर्व। 2/89 और 3/3 आगे स्पष्टीकरण के लिए।

०४२ ६/९२सी: "जो आख़िरत में ईमान रखते हैं वे इस (पुस्तक) (कुरान) पर ईमान रखते हैं, - - -"। गलत। कई ऐसे हैं जो अगले जन्म में विश्वास करते हैं, लेकिन कुरान में विश्वास नहीं करते - f. भूतपूर्व। यहूदी और ईसाई, लेकिन कई अन्य भी।

०४३ ६/९३: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०४४ ६/९५: "--- तो फिर तुम (गैर-मुस्लिम*) सच्चाई से कैसे भटक रहे हो? (कुरान*)"। इतनी सारी गलतियों और इतने गलत तर्क आदि के साथ, कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सत्य है। और यह एक खुला प्रश्न है कि सत्य से कौन भ्रमित है।

00b 6/96a: "वह (अल्लाह*) रात को आराम और शांति के लिए बनाता है - - -"। एक और प्राकृतिक घटना है कि मुहम्मद ने अपने भगवान के लिए दावा किया - और हमेशा की तरह एक भी सबूत के बिना। परंतु यहां मुख्य बात यह है कि जीवन के लिए नींद कोई शर्त नहीं है - इसके विपरीत नींद एक है जीवन द्वारा इस तथ्य के लिए किया गया अनुकूलन कि यह उस समय का काला भाग है।

०४५ ६/९६बी: "वह (समय की) गणना के लिए - - - सूर्य और चंद्रमा बनाता है"। गलत। वे - और विशेष रूप से सूर्य - प्राकृतिक घटनाएं हैं जो पृथ्वी पर जीवन के लिए आवश्यक हैं (चंद्रमा जीवन के उद्भव के लिए आवश्यक हो सकता है, कम से कम शुष्क भूमि पर)। ऐसा होता है कि वे समय की गणना के लिए ठीक हैं, लेकिन वे इसके लिए नहीं बने हैं। (वास्तव में वे मुश्किल से ही बनते हैं विशेष रूप से पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने के लिए।)

०४६ ६/९७: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०४७ ६/९८: "वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें एक ही व्यक्ति (आदम*) - - - से उत्पन्न किया है। एक बात यह है कि आदम कभी अस्तित्व में नहीं था - विज्ञान के अनुसार मनुष्य पहले के प्राइमेट से विकसित हुआ है। एक और बात यह है कि 1 व्यक्ति - यहां तक कि 1 जोड़ी व्यक्ति - को बहुत कम डीएनए-किस्म देगा मनुष्य को एक जाति के रूप में व्यवहार्य बनाएं।

०४८ ६/९९: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०४९ ६/१०१ए: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

00c 6/101b: "- - - वह (यहोवा*) एक बेटा कैसे पैदा कर सकता है जब वह कोई पत्नी नहीं रखता है?" गलत - और कुरान ने खुद एक संभावित समाधान दिया है: यह घोषणा करता है कि भगवान सिर्फ "बी" और कह सकते हैं यह है। हो सकता है कि यहोवा ने अभी कहा "पुत्र बनो", और यीशु था।

**लेकिन एक और, लेकिन अल्पज्ञात तथ्य है: बहुत पुराने यहूदी धर्म में एक था महिला देवता भी। उन्होंने भगवान और उनके अमत के बारे में बात की (दूसरों के बीच स्रोत "नया" वैज्ञानिक")। पुराने इब्रियों के बहुत ही मर्दाना समाज में, देवी को भुला दिया गया था, हालाँकि, - - - लेकिन यहोवा के लिए एक पुत्र "स्वाभाविक मार्ग" होना संभव था। देवताओं के पास होगा यह जानता था, लेकिन मुहम्मद नहीं।

लेकिन देवताओं को बच्चों को इंसानों की तरह क्यों बनाना चाहिए? एक भोला बयान।

050 6/101c: "- - - वह (अल्लाह*) सभी चीजों का पूरा ज्ञान रखता है।" कुछ तो गम्भीर है यहां गलत: कुरान साबित करता है कि या तो अल्लाह ने कुरान नहीं बनाया, या उसके पास दूर था सभी चीजों का ज्ञान।

०५१ ६/१०४अ: "अब (कुरान*) आ जाओ - - - अपने रब (अल्लाह*) - - - की ओर से। नहीं सर्वशक्तिमान ईश्वर ने कभी इतनी सारी गलतियों, इतने विरोधाभासों के साथ एक किताब बनाई है

पृष्ठ २८१

गलत तर्क, और ईमानदारी से इतना निम्न गुणवत्ता वाला साहित्य (सभी शानदार शब्दों के बावजूद धार्मिक मुसलमान), उल्लेख नहीं करने के लिए इसे अपने स्वर्ग में एक श्रद्धेय मातृ पुस्तक के रूप में रखा, जैसे कुरान खुद कम से कम 2 जगहों पर दावा करता है। 13/39 देखें।

०५२ ६/१०४ब: "अब (कुरान) तुम्हारे पास (मुसलमान*), अपने रब (अल्लाह*) की ओर से आ जाओ। सबूत - - -"। **गलत। सभी कुरान में अल्लाह के लिए या के लिए एक भी वैध प्रमाण नहीं है इस्लाम - या मुहम्मद के असली नबी होने के नाते। एक भी सबूत नहीं जो किसी को साबित करता है भगवान बिल्कुल।** बाइबल से ली गई कहानियों में कुछ अपवाद हो सकते हैं, लेकिन वे मामले यहोवा के बारे में बात करते हैं, और इस्लाम के मामले में साबित करना होगा कि अल्लाह और यहोवा वास्तव में हैं वही ईश्वर - केवल कुरान और हदीस में अप्रमाणित दावों पर आधारित एक बयान, और अ बयान जो कभी भी किसी भी तरह से प्रलेखित नहीं किया गया है। सभी कथन बाइबल से नहीं (और शायद वे भी), केवल पतली हवा और सस्ते शब्दों पर आधारित हैं - ऐसे शब्द जो कोई भी पुजारी कोई भी धर्म अपने भगवान के बारे में उपयोग कर सकता है। वे प्रमाण के रूप में या यहाँ तक कि कुछ भी नहीं के लायक हैं संकेत।

कुरान कुछ जगहों पर "सबूत" के बारे में बात करता है और कई जगहों पर जहां यह "संकेतों" के बारे में बात करता है (जो इस्लाम है-सबूत के लिए बोलो)। उन सभी में यह समान है कि **वे बिना किसी अपवाद के हैं सबूत के रूप में मूल्य के बिना हैं, क्योंकि कुरान और इस्लाम कभी साबित नहीं करते कि यह वास्तव में है अल्लाह जो यह और यह करता है। याद रखें: एक प्रमाण एक या एक से अधिक सिद्ध तथ्य है कि केवल एक ही निष्कर्ष दे सकता है।** अगर स्वर्ग और धरती अल्लाह के लिए सबूत हैं, तो इस्लाम को सबसे पहले साबित करें कि यह वास्तव में अल्लाह ही था जिसने उन्हें बनाया - इतना ही नहीं कहो। अगर बारिश के लिए एक सबूत होगा अल्लाह, इस्लाम को पहले यह साबित करना होगा कि वास्तव में अल्लाह ही है जो बारिश को बनाता और निर्देशित करता है, न कि सिर्फ ऐसा कहते हैं, क्योंकि कोई भी धर्म कह सकता है - प्रमाण के रूप में मूल्यहीन (बाल नदियों को प्रवाहित करता है .) नीचे की ओर। अल्लाह उन्हें ऊपर की ओर नहीं दौड़ा सकता। एर्गो: बाल ही असली ईश्वर है और अल्लाह न्यायप्रिय है एक धोखेबाज। वगैरह वगैरह वगैरह। बेमतलब "सबूत"।) अगर धरती पर जीवन अल्लाह के लिए सबूत होना है, इस्लाम को पहले यह साबित करना होगा कि यह वास्तव में अल्लाह ही था जिसने इसे बनाया - न कि केवल खोखले दावों का उपयोग करें और बयान किसी भी धर्म में कोई भी पुजारी निः शुल्क उपयोग कर सकता है। आदि, आदि, आदि।

** कुरान अन्य सभी धर्मों से सबूत मांगने में बहुत अच्छा है, लेकिन यह कभी नहीं, कभी नहीं, जब विवादित "सत्य" की बात आती है तो वह स्वयं कोई मान्य प्रमाण प्रस्तुत करता है (यह "प्रमाण" प्रदान करता है और "संकेत", लेकिन वे सिर्फ अप्रमाणित दावों पर या कुछ भी नहीं पर बनाए गए हैं और मान्य नहीं हैं)। और यह है

अतिरिक्त विचारोत्तेजक कि बार-बार यह कहता है कि यह और यह एक प्रमाण है, और अनेक, अनेक
कभी-कभी यह कहता है कि यह और यह एक संकेत है, बिना किसी अपवाद के बयानों के रूप में कहा गया है
दावों या बयानों को हवा से निकाल दिया गया है या अन्य तरीकों से वास्तविक साक्ष्य पर नहीं बनाया गया है - कुछ भी नहीं
कि एक न्यायाधीश निष्पक्ष, अच्छी गुणवत्ता वाली अदालत में सबूत के रूप में स्वीकार करेगा। कुछ भी तो नहीं। कोई भी भगवान
पता है कि बयान वास्तविक प्रमाण के रूप में बिना मूल्य के थे, और उन्हें कॉल न करें - या संकेत दें कि वे हैं
- सबूत। यह केवल घटिया शब्द और जनमत है कि किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी उपयोग कर सकता है। माफ़ करना,
लेकिन यह बहुत सीधा सच है - और वास्तव में इससे भी बदतर - - - और यही सोचा जाता है
उकसाने वाले: झूठे दावों और बयानों, अमान्य तर्कों और अमान्य सबूतों का उपयोग कौन करता है? -
धोखेबाज और धोखेबाज और धोखेबाज। यह वास्तव में एक भगवान के बारे में कुछ बताता है अगर वह कोशिश कर रहा है
सरल, अशिक्षित लोगों को धोखा देना - **यह उल्लेख नहीं करना कि यह उसके बारे में क्या बताता है यदि उसने किया था
नहीं जानते या समझते हैं कि एक समय मनुष्यों को देखने के लिए पर्याप्त ज्ञान मिलेगा
छल के माध्यम से,** और इससे भी अधिक यदि अल्लाह को समझ में नहीं आया कि ऐसे प्रमाणों का क्या प्रभाव है
शिक्षित, विचारशील व्यक्तियों पर गलतियों और झांसे का असर होगा। सोचा उत्तेजक के रूप में:
**कुछ गलतियाँ आदि यह स्पष्ट है कि मुस्लिम विद्वान देखते हैं, और अन्य - बहुत कुछ - यह
अविश्वसनीय है अगर वे नहीं देखते हैं, लेकिन वे अपने दर्शकों को इसके बारे में नहीं बताते हैं। पर
इसके विपरीत: वे बताते हैं कि कुरान में सब कुछ सही है।** पुराना प्रश्न फिर से प्रकट होता है: यदि
इस्लाम एक बना हुआ धर्म है, और कहीं न कहीं एक वास्तविक धर्म मौजूद है जो मुसलमानों के पास है
के बारे में जानकारी प्राप्त करने से इनकार किया गया या धोखा दिया गया - फिर सभी मुसलमानों को क्या?
अगले जीवन संभव?

पृष्ठ २८२

**053 6/104c: "- - - - मैं (मुहम्मद*) आपके कार्यों पर नजर रखने के लिए (यहां) नहीं हूं"। यह श्लोक है
सीधे मुहम्मद से उद्धृत - यह मुहम्मद है जो पूरी तरह से अपने दम पर बोल रहा है।
कैसे आएं - अनंत काल से एक किताब में और अल्लाह के अपने में श्रद्धेय मदर बुक की एक प्रति
स्वर्ग? कुरान में कुछ ऐसे 8 मामले हैं, और कम से कम एक मामले में फ़रिश्ते हैं
बोलना - नीचे 6/114a देखें।

०५४ ६/१०५: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

**०५५ ६/१०९: "--- आपको (मुसलमानों को) क्या एहसास होगा कि (यहां तक कि) अगर (विशेष) निशानियां आईं,
वे विश्वास नहीं करेंगे?" **गलत। अगर ईश्वर के वास्तविक प्रमाण होते, तो कम से कम एक अच्छी संख्या
लोगों का विश्वास होगा - यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है (देखें f. पूर्व। फिरौन के पर
जादूगरों और यीशु के चमत्कारों के परिणामों पर)। वाक्य वास्तव में तेज़-बात की तरह लगता है
"समझाने" के लिए कि क्यों अल्लाह/मुहम्मद अचूक सबूत पेश करने में असमर्थ थे
अल्लाह। इससे भी बदतर: मुहम्मद जैसा बुद्धिमान व्यक्ति जानता था कि यह तर्क झूठ है - और सब
वही वह अक्सर इस्तेमाल करता था। यह केवल कुरान में उन जगहों में से एक है जहां
मुहम्मद जानता था कि वह झूठ बोल रहा है।**

०५६ ६/१११: "लेकिन उनमें से अधिकांश (गैर-मुस्लिम*) (सच्चाई (कुरान*)) को नज़रअंदाज़ करते हैं।" उस के साथ
बहुत सारी गलतियाँ, इतना गलत तर्क, आदि, वह किताब सबसे अच्छा केवल आंशिक रूप से सत्य है।

*०५७ ६/११४ए: "कहो: 'क्या मैं अल्लाह के अलावा अन्य न्यायाधीश की तलाश करूँ?'" इब्न वाराक के अनुसार "क्यों
मैं मुस्लिम नहीं हूं", मूल अरब पाठ में "से" शब्द नहीं पाया जाता है। युसूफ अली ने
इसे छिपाने के लिए जोड़ा गया कि यहाँ एक बार फिर मुहम्मद एक किताब में बोल रहे हैं जिसका उन्होंने नाटक किया था
बहुत समय पहले एक भगवान द्वारा, और अल्लाह के अपने स्वर्ग में एक श्रद्धेय मदर बुक की एक प्रति। (इब्न
वार्राक कुरान में कम से कम 8 ऐसे स्थानों की ओर इशारा करता है: 2/286, 6/104, 6/114, 11/2-3, 19/36,
27/91, 42/10/, 51/50-51)।

०५८ ६/११४बी: "- - - वह (अल्लाह*) वही है जिसने तुम्हें (मुसलमानों*) किताब भेजी है।
कुरान*)"। कई गलतियों को ध्यान में रखते हुए, यह संदिग्ध है - कम से कम ठोस की जरूरत है
सबूत

०५९ ६/११४ सी: "- - - यह (कुरान*) आपके (मुसलमानों*) रब (अल्लाह) की ओर से उतारा गया है - -
-"। किसी भी सर्वज्ञ भगवान ने कभी भी इतनी गलतियों, विरोधाभासों, तार्किक के साथ एक किताब नहीं भेजी
भूलों, आदि का उल्लेख नहीं करने के लिए अपने ही स्वर्ग में एक श्रद्धेय माँ पुस्तक के रूप में रखा गया है (13/39),
जैसे कुरान भी दावा करता है - हमेशा की तरह बिना किसी दस्तावेज या सबूत के।

०६० ६/११४डी: "- - - यह (कुरान*) आपके (मुसलमानों*) रब (अल्लाह*) की ओर से अवतरित हुआ है
सत्य"। सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच।

०६१ ६/११५अ: "तेरे रब (अल्लाह*) की बातें सच में पूरी होती हैं"। जैसा कि कई ने कहा

बार: इतनी सारी गलतियों के साथ, यह अधिकतम आंशिक रूप से सत्य है।
062 6/115b: "- - - उनके (अल्लाह के) शब्दों को कोई नहीं बदल सकता"। शायद कोई मुसलमान नहीं कर सकता, क्योंकि
इसका मतलब है कि इस्लाम की नींव और बुनियादी बातों में कुछ गड़बड़ है - वे नहीं कर सकते
उस कारण से कुरान में किसी भी शब्द को बदलने का जोखिम उठा सकते हैं। लेकिन एफ. भूतपूर्व। विज्ञान दिखा सकता है अगर कुछ
कुरान में शब्द गलत हैं। जो वे हैं। कुरान में भी बदलाव हैं -
पुराने कुरान में अंतर, विभिन्न "पढ़ने के तरीके" (बात करने का एक छलावरण तरीका)
वास्तव में ग्रंथों की किस्में क्या हैं), निरस्त छंद और में परिवर्तन
६२२ ईस्वी के आसपास/बाद का धर्म – किसके द्वारा और क्यों?

०६३ ६/११८: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०६४ ६/१२४: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०६५ ६/१२६: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०६६ ६/१३०: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

००डी ६/१४५: "मैं (मुहम्मद*) मुझे प्रेरणा से प्राप्त संदेश में नहीं मिला
(मांस) खाने के लिए मना किया जाता है - - - जब तक कि यह मृत मांस, या खून से भरा किला, या का मांस न हो
सूअर - क्योंकि यह एक घृणित है (कोई नहीं जानता कि यह क्यों प्रतिबंधित है*) - या - - - (मांस) पर
जिसे अल्लाह के अलावा किसी और नाम से पुकारा गया है।" यह सूरह "दिखाई" सीए। 621 ई.
लगभग ६ साल बाद अल्लाह या मुहम्मद ने स्पष्ट रूप से पाया कि उन्होंने एक गलती की है और
भूल गए कि गधों का मांस भी मुसलमानों के लिए वर्जित है - हदीसों के अनुसार यह (एफ।
भूतपूर्व। अल-बुखारी) तब उस तरह के निषिद्ध मांस को जोड़ने के लिए इस आयत को निरस्त कर दिया गया था।
यह उन मामलों में से एक है जहां हदीस द्वारा कुरान को निरस्त कर दिया गया है। (लेकिन ध्यान रहे कि अगर मुसलमान
इस प्रकार का मांस खाने के लिए मजबूर - f. भूतपूर्व। सरासर भूख से - या इसे खाने के लिए धोखा दिया जाता है - f. भूतपूर्व।
कोई उसे गलत तरीके से बताता है कि सॉसेज में सूअर का मांस नहीं है और वह जो कहा जाता है उस पर भरोसा करता है - तो
यह कोई पाप नहीं है)।

०६७ ६/१४६: "उन लोगों के लिए जो यहूदी कानून का पालन करते थे, हमने (अल्लाह*) हर किसी को (खाने के लिए) मना किया था।
(पशु) अविभाजित खुर के साथ, और हमने उन्हें बैल और भेड़ की चर्बी से मना किया - - -"।
इस तथ्य को छोड़कर कि अल्लाह और यहूदियों का ईश्वर, यहोवा एक ही ईश्वर नहीं है - तब तक नहीं
वह स्किज़ोफ्रेनिक है - सही है: - - - "मवेशी, भेड़ या बकरी की चर्बी" (3. मो. 7/23)। ए
छोटी सी गलती, लेकिन एक सर्वज्ञ भगवान बकरी को नहीं भूले थे।

****068 6/149: "अल्लाह के पास वो दलीलें हैं जो घर तक पहुँचती हैं---"। **जिसका अर्थ है: अल्लाह
सब कुछ तय करता है। लेकिन फिर मनुष्य की दावा की गई स्वतंत्र इच्छा के बारे में क्या? " का संदेश
कुरान "इस सूरह (स्वीडिश से अनुवादित) को अपनी टिप्पणी १४१ में इसकी व्याख्या करता है:
"दूसरे शब्दों के साथ: भविष्य के बारे में अल्लाह के ज्ञान के बीच वास्तविक संबंध"
(और फलस्वरूप भविष्य में क्या होने वाला है*) एक तरफ अपरिहार्य के बारे में
और दूसरे पर मनुष्य की अपेक्षाकृत (!!*) स्वतंत्र इच्छा - दो कथन जो विरोधाभासी प्रतीत होते हैं
एक-दूसरे के बारे में - जो मनुष्य के लिए समझना संभव है, उससे बाहर है, लेकिन दोनों के रूप में
बयान अल्लाह की ओर से दिए गए हैं (कुरान* में) दोनों सच होने चाहिए"।**

**यह तर्क "सत्य" शब्द के पीछे के अर्थ के लिए अंतिम हार है। जैसे नैतिक रूप से संदिग्ध चरित्र का व्यक्ति
ऐतिहासिक वास्तविक मुहम्मद, ने एक अप्रमाणित और अप्रमाणित कहानी सुनाई है - - और वह अंतिम सत्य भी सैकड़ों लोगों के सामने है
गलतियाँ, विरोधाभास, और अन्य गलतियाँ, और यहाँ बिल्कुल असंभव का सामना करना पड़ता है !!**

***069 6/151a : "आओ, मैं (मुहम्मद*) पूर्वाभ्यास करूंगा **कि अल्लाह ने (वास्तव में) निषिद्ध क्या किया है
आप से - - - (f. e x.*) अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करें"।** यह बहुत स्पष्ट रूप से गलत है और थोड़ा सा है
कुरान में अन्य स्थानों की तुलना में एक विरोधाभास - मुहम्मद का स्पष्ट रूप से मतलब था
बिल्कुल विपरीत; कि आपको अपने माता-पिता के लिए भगवान होने का आदेश दिया गया था। एक सर्वज्ञ देवता
ऐसी गलती नहीं करेंगे। कुरान किसने बनाया?

**साथ ही मुस्लिम विद्वान इस बात से सहमत हैं कि यहाँ पाठ गलत है - यह अन्य सभी स्थानों के बारे में कुरान के कहने के बिल्कुल विपरीत है। कौन कौन से
आपको किसी भी मुस्लिम के खिलाफ एक अपराजेय सबूत देते हैं कि किताब बिना किसी गलती के है। एक प्रमाण और एक तथ्य द्वारा स्वीकृत
इस्लाम!**

इसके ठीक नीचे 6/151b भी देखें।

और इसके अलावा: यदि यहाँ कोई गलती है, तो और कितनी हैं? इसके ठीक नीचे 6/151b भी देखें।

बस याद रखें: ६/१५१ (स्कैंडिनेवियाई में ६ = सेक्स, और १५१ में दोनों सिरों पर सेक्स होता है (१ + ५ = ६, और ५) + 1 = 6)। याद करने के लिए आसान।

070 ***6/151b : "आओ, मैं (मुहम्मद*) पूर्वाभ्यास करूंगा **कि अल्लाह ने (वास्तव में) क्या मना किया है आप से** - - - (f. e x.*) **अपने बच्चों को न चाहते हुए भी मारते हैं** - - -" = **अपने बच्चों को मार डालो अगर आप बहुत गरीब हैं।** कुरान ऐसी चीजों के बारे में जो कहता है उसकी तुलना में स्पष्ट रूप से गलत है अन्य स्थान।

यहाँ भी (ऊपर 6/151a देखें) मुस्लिम विद्वान इस बात से सहमत हैं कि यहाँ पाठ गलत है - यह कुरान के बारे में जो कहता है उसके बिल्कुल विपरीत है यह अन्य सभी स्थान। जो आपको किसी भी मुस्लिम के खिलाफ एक और अपराजेय सबूत देते हैं कि किताब बिना किसी गलती के है। ए सबूत और इस्लाम द्वारा स्वीकृत एक तथ्य!

०७१ ६/१५४अ: "हमने (अल्लाह*) ने मूसा को किताब दी, - - -"। जैसा कि कुछ समय पहले कहा गया था: 5 मूसा की पुस्तकें - जिन्हें "मूसा की पुस्तक" भी कहा जाता है - (तोराह) 400-700 वर्षों में लिखी गई थीं बाद में विज्ञान के अनुसार। मूसा को केवल 10 आज्ञाएँ लिखित रूप में मिलीं। यानी: उसे "व्यवस्था" भी मिली - जो "मूसा की पुस्तक" का हिस्सा है - लेकिन केवल मौखिक रूप से, और फिर इसे बाद में बाइबिल के अनुसार स्वयं लिखा। लेकिन एक बात के लिए कानून का सिर्फ एक हिस्सा है किताब, और दूसरे के लिए: विज्ञान सभी का एक ही मतलब है कि पूरी किताब सदियों बाद लिखी गई है।

072 6/154b: "(कुरान) सभी चीजों को विस्तार से समझा रहा है"। यह सब से दूर समझा रहा है चीजें, और निश्चित रूप से पर्याप्त विवरण में नहीं - अन्य तथ्यों के बीच में पर्याप्त कानून नहीं हैं एक समाज चलाने के लिए कुरान, जिसके कारण मुसलमानों को कई पूरक बनाने पड़े हैं।

०७३ ६/१५५ए: "और यह एक किताब (कुरान*) है जिसे हमने (अल्लाह*) ने उतारा है - - -"। साथ इतनी सारी गलतियाँ - क्या यह वास्तव में किसी भगवान द्वारा की गई है? - और कई गलतियों और बहुत कुछ के साथ एक किताब है नफरत और युद्ध के लिए उकसाना और अन्य लोगों और महिलाओं का दमन, एक आशीर्वाद? नहीं करने के लिए दोनों।

०७४ ६/१५५बी: "- - - एक किताब (कुरान*) जिसे हमने (अल्लाह*) ने एक आशीर्वाद के रूप में प्रकट किया है"। ए कई गलतियों और अमान्य और यहां तक कि गलत सबूतों वाली किताब कोई आशीर्वाद नहीं है।

०७५ ६/१५६: "पुस्तक (इस मामले में बाइबल) हमसे पहले दो लोगों को भेजी गई थी (मोहम्मद और/या अरब*)"। गलत। ओटी मुख्य रूप से एक लोगों के लिए था - यहूदी। लेकिन NT लिखा था - नीचे नहीं भेजा - कई लोगों के लिए। अध्याय/अक्षर सम हैं बहुत अलग लोगों को संबोधित किया। इसके अलावा किताबों के साथ अन्य धर्म भी थे - एफ। में फारस। या इसे दूसरे तरीके से देखने के लिए - जैसे "कुरान का संदेश" इसे समझाता है: बाइबिल थी यहूदियों और ईसाइयों को भेजा गया **"केवल वही जो अरबों के अनुसार" भगवान के रहस्योद्घाटन के आधार पर शास्त्र जानते थे "।** इसका दिलचस्प हिस्सा इस्लाम गलती का कारण बताता है: वह कारण यह था कि अरब - मुहम्मद - केवल ईसाइयों और यहूदियों की किताबों के बारे में जानते थे। क्या अरब ६२१ ईस्वी के आसपास जब मुहम्मद ने इस सूरा को हुक्म दिया, **तो यह पूरी तरह से अप्रासंगिक होना चाहिए एक सर्वज्ञ भगवान जब उन्होंने कुरान को कई युग पहले बनाया** - एक मदर बुक जिसे उसने और उसके दूतों ने अपने स्वर्ग में आदर दिया, अब एक और गलती के साथ। तो कौन कुरान बनाया?

076 6/157a: "- - - एक स्पष्ट संकेत - - -"। न तो अल्लाह के लिए और न ही उसके लिए कोई स्पष्ट संकेत / प्रमाण हैं कुरान में एक भगवान से मुहम्मद का संबंध। 2/99 देखें।

०७७ ६/१५७बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०७८ ६/१५८ए: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०७९ ६/१५८बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०८० ६/१६२: "- - - संसार - - -"। नीचे 65/12 देखें।

00e 6/163a: "उसके पास कोई साथी नहीं है: - - -"। अगर यहां कुरान का मतलब अल्लाह है, तो यह सही हो सकता है। अगर यह यहोवा को इंगित कर रहा है, यीशु के शब्दों को समझा जा सकता है जैसे कुरान यहाँ गलत है। भी 6/101बी देखें।

०८१ ६/१६३बी: "- - - - मैं (मुहम्मद*) उसकी (अल्लाह की *) इच्छा को नमन करने वालों में प्रथम हूँ। " यह कैसे संभव है अगर कुरान सही है और उससे पहले बहुत सारे लोग मुसलमान थे, और अल्लाह को नमन? (हालांकि वास्तव में यह बहुत संभव है कि वह सही था: कि वह पहले था कभी)। मुसलमान समझाते हैं कि इसका मतलब किसी समुदाय में पहला है, लेकिन यह वह नहीं है जो कुरान कहता है।

सूरह 6: कम से कम 81 गलतियाँ + 5 संभावित गलतियाँ।

सूरा 7:

00a 7/2: "एक किताब (कुरान*) तुम पर (मुहम्मद*) प्रकट हुई"। क्या इतने सारे के साथ एक किताब कर सकते हैं एक सर्वज्ञानी भगवान द्वारा गलतियों का खुलासा किया जा सकता है?

०१ ७/३: "(हे लोगों!) का पालन करें जो आपके भगवान से आपको दिए गए रहस्योद्घाटन, - - -"। देखें 7/2 और भी कई। ऐसी किताब किसी सर्वज्ञ भगवान ने नहीं बनाई है। या तो अल्लाह सर्वज्ञ नहीं है, या किसी और ने बनाया है।

*00b 7/4: "हम (अल्लाह) ने (उनके पापों के लिए) कितने नगरों को नष्ट किया है?" वहां थे अरब में बिखरे खंडहर। मुहम्मद ने कहा कि वे सभी उनके लिए सजा के रूप में नष्ट कर दिए गए थे पाप यह शायद ही सच है।

002 7/9: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

00c 7/11: "- - - हम (अल्लाह*) ने फ़रिश्तों को आदम को प्रणाम करने को कहा, और वे झुक गए; नहीं तो इब्लीस (भविष्य का शैतान) - - -।" लेकिन इब्लीस कोई फरिश्ता नहीं था, जैसा कि यहाँ बताया गया है। यह कहा जाता है कुरान में कई जगह है कि उसे आग से बनाया गया था (f। उदा। 7/12), जिसका अर्थ है कि वह एक था जिन्न (कुरान के अनुसार कोण प्रकाश से बनाए गए हैं)।

००३ ७/१२: "तू (अल्लाह) ने बनाया - - - उसे (आदम*) मिट्टी से"। कई तरीकों में से एक अल्लाह ने कुरान के अनुसार आदम को बनाया। गलत। अधिक जानकारी के लिए 6/2 देखें।

004 7/26: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

**005 7/28: "अल्लाह लज्जाजनक बातों की कभी आज्ञा नहीं देता"।

1. **अल्लाह बच्चों के साथ यौन संबंध बनाने की आज्ञा/अनुमति देता है। एक वयस्क के लिए बच्चे के साथ सेक्स का आनंद लेना है पूरी तरह से शर्मनाक। एक वयस्क के परिचय के लिए सेक्स के लिए एक बच्चा अमानवीय है और यहां तक कि प्रेरणा भी शर्मनाक मुहम्मद ने न केवल कहा, बल्कि यह भी प्रदर्शित किया कि यह कम से कम ठीक था लड़की से 9 है - और बदतर: वह -**

आयशा - के लिए उनकी पसंदीदा पत्नी बन गई बाकी उसका बचपन।

2. अल्लाह का हुक्म है कि कोई गुलामों को अ में ले जा सकता है जिहाद - और कोई भी झड़प या युद्ध जहाँ मुसलमान शामिल हैं, जिहाद घोषित है। के लिए सदियों (सी.ए. 1930 - 1940 तक) सभी चार इस्लाम के कानून स्कूलों ने कहा कि यदि विपरीत हिस्सा गैर-मुस्लिम था, वह काफी अच्छा था

जिहाद घोषित करने का कारण - सैद्धांतिक रूप से भी
कोई भी गुलाम शिकारी जिहाद कर सकता है। प्रति
साथी मनुष्यों को दास बनने के लिए मजबूर करना, परिश्रम करना
आपके लिए मुफ्त में, आपके लिए बेचने के लिए स्वतंत्र होने के लिए या
दुर्व्यवहार या सेक्स टॉय के लिए उपयोग, पूरी तरह से है
अमानवीय, पूरी तरह से स्वार्थी, पूरी तरह से अनैतिक -
और पूरी तरह से शर्मनाक। उल्लेख नहीं है कि यह है
a . के नाम पर करने के लिए एक विचित्र कार्य
भगवान को अच्छा माना।

3. बाल कैदी/गुलाम/पीड़ित का बलात्कार करना है
निहायत स्वार्थी, अनैतिक, अमानवीय और
बेहद शर्मनाक - - - लेकिन अल्लाह ने
आदेश दिया कि यह ठीक है।
4. किसी भी महिला बंदी/गुलाम/पीड़ित से बलात्कार करना - a
साथी इंसान - लगभग उतना ही स्वार्थी है और
एक बच्ची के साथ बलात्कार जैसा शर्मनाक और बुरा। लेकिन में
कुरान यह "अच्छा और वैध" है जब तक
महिला गर्भवती नहीं है।
5. विरोधियों की हत्या करना - व्यक्तिगत भी
विरोधियों - संभवतः के नाम पर
अच्छा भगवान कुछ ज्यादा है
शर्मनाक लेकिन मुहम्मद द्वारा अभ्यास किया।
6. भेदभाव, नफरत और युद्ध के लिए उकसाना, in
संभवतः एक अच्छे देवता का नाम सम है
हत्या से भी बदतर - और अच्छे का सबूत or
पाखंड से भरा एक "नबी"।
7. के नाम पर चोरी/लूट/लूटना और उगाही करना
ऐसा भगवान - और उनकी अनुमति के साथ
"अच्छा और वैध" लगभग एक बुरा और जैसा है
हत्या, नफरत, दमन के रूप में बहुत पाखंड
और युद्ध।

लेकिन इन सभी बिंदुओं में यह समान है:

1. वे स्वार्थी, लालची योद्धाओं को आकर्षित करते हैं a
डाकू "पैगंबर" की सेना - और उसके लिए
उत्तराधिकारी'।
2. वे अमानवीय योद्धाओं को एक डाकू की ओर आकर्षित करते हैं
"पैगंबर" की सेना - और उसके उत्तराधिकारियों के लिए।
3. वे आदिम योद्धाओं को एक डाकू की ओर आकर्षित करते हैं
"पैगंबर" की सेना - और उसके उत्तराधिकारियों के लिए।

4. यह एक लुटेरे "पैगंबर" के लिए एक सस्ता तरीका है - और
अपने उत्तराधिकारियों के लिए - एक सेना प्राप्त करने के लिए - एक सस्ता
सेना।

अंत में: **उस महिला के लिए गंभीर या मृत्युदंड, जिसके साथ बलात्कार हुआ है, लेकिन करने में असमर्थ है 4 पुरुष चश्मदीद गवाह पेश करते हैं जो सबसे अधिक अमानवीय होने की सबसे अधिक संभावना है अनैतिक, सबसे अन्यायपूर्ण और सबसे शर्मनाक कानून हमने कभी भी कम से कम किसी में देखा है आधा सभ्य धर्म या संस्कृति, और अल्लाह और/या मुहम्मद ने इसे पेश किया है। और एक महिला को मजबूर करने के लिए जो कुछ परिस्थितियों में अपने पूर्व पति से पुनर्विवाह करना चाहती है किसी अन्य पुरुष के साथ यौन संबंध बनाने के लिए उसे पुनर्विवाह करने की अनुमति देना भी सड़ा हुआ है और शर्मनाक**

००६ ७/२९: "मेरे रब (अल्लाह*) ने न्याय की आज्ञा दी है - - -"। यह केवल आंशिक रूप से सच है। देखें 7/28 बिलकुल ऊपर।

००७ ७/३३: "मेरे (मुहम्मद या मुसलमानों)*) भगवान (अल्लाह *) ने वास्तव में मना किया है हैं: शर्मनाक कर्म - - -"। यह केवल आंशिक रूप से सच है - ऊपर 7/28 देखें।

008 7/35: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

009 7/36: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

010 7/37: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

011 7/40: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

00d 7/42: "- - - हम (अल्लाह*) किसी भी आत्मा पर कोई बोझ नहीं डालते हैं, लेकिन जो वह सहन कर सकता है - - -"। क्या यह सच हो सकता है? - मुसलमानों में भी आत्महत्या (या अल्लाह के लिए मौत की मांग करना, जब वास्तविक कारण बहुत कठिन जीवन है), अपने परिवार या बच्चे को छोड़कर, सक्षम होने के लिए अपराध का सहारा लेना रहने के लिए, आदि होता है।

०१२ ७/५२अ: "हम (अल्लाह*) ने निश्चित रूप से उनके पास एक किताब (कुरान*), - - - भेजी थी। NS
बार-बार आने वाला प्रश्न: क्या एक ऐसी किताब है जिसमें बहुत सारी गलतियाँ हैं - गलत तथ्य, विरोधाभास, अमान्य प्रमाण, वर्तनी और शायद धार्मिक गलतियाँ - वास्तव में किसी ईश्वर द्वारा भेजी गई हैं?
असंभव - किसी सर्वशक्तिमान या सर्वज्ञ ईश्वर के विरुद्ध विधर्म न कहना।

०१३ ७/५२बी: "- - - ज्ञान पर आधारित एक किताब (कुरान), - - -"। इतनी सारी गलतियों के साथ, पुस्तक केवल आंशिक रूप से ज्ञान पर आधारित है - या गलतियों के बेहतर हिस्से के लिए; पुराने होने पर और गलत ज्ञान। एक सर्वज्ञ भगवान के पास ज्ञान नहीं होगा जो बन जाएगा
रगड़ा हुआ।

014 7/52c: "- - - ज्ञान पर आधारित एक किताब, जिसे हमने (अल्लाह*) विस्तार से समझाया -"। देखो 6/154.

015 7/54a: "- - - अल्लाह, जिसने छह दिनों में आकाश (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी को बनाया - - -"। सृष्टि में लाखों वर्ष लगे - एक भगवान को पता था कि, मुहम्मद नहीं। (इसके आलावा: कुरान में एक और जगह 8 दिन लगे।)

016 7/54बी: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०१७ ७/५४सी: "वह रात को दिन पर परदे की तरह खींचता है - - -"। रात तो बस का अभाव है
रोशनी। कुछ भी तो नहीं। किसी भी चीज़ को परदे के रूप में इस्तेमाल करना या किसी चीज़ पर खींचना संभव नहीं है - और दिन के उजाले पर बिल्कुल नहीं। मुहम्मद ने यह पूरी तरह से गलत किया था: दिन के उजाले कर सकते हैं अंधेरे को प्रभावित करते हैं, लेकिन रात का अंधेरा दिन के उजाले को प्रभावित नहीं कर सकता। पूरा गलत।

00e 7/56: "मधुमक्खी के क्रम में सेट होने के बाद, पृथ्वी पर कोई शरारत न करें - - -"। हमारी किताब के अनुसार, हत्या, बलात्कार, चोरी/लूटना, घृणा, दमन, दासता, हत्या, युद्ध आदि शरारतें हैं।
लेकिन क्या यह केवल मुसलमानों के खिलाफ हो सकता है जो अनैतिक और निषिद्ध है?

00f 7/57a: "यह वही है जो हवाओं को भेजता है - - -"। हवाएं अंतर से बनती हैं
तापमान और हवा का दबाव। इस्लाम को साबित करना होगा कि अल्लाह कर रहा है - अगर वह करता है।

०१८ ७/५७ब: "- - - जो भूमि मर गई है, उस पर वर्षा करने के लिए वर्षा करो, और हर तरह की उपज पैदा करो
इसके साथ फसल: - - -"। वह भूमि जो केवल पौधों को उभरने के लिए पानी लेती है, मृत नहीं है - यह है
जीवित बीजों और शायद जड़ों से भरा हुआ।

019 7/58: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

020 7/61: "- - - दुनिया!" कुरान बताता है कि 7 (फ्लैट) दुनिया (65/12) हैं। हदीस कहते हैं
नाम, और यह कि उन्हें एक के ऊपर एक रखा गया है। इसे नवीनतम कहना गलत है।

021 7/64a: "- - - हम (अल्लाह*) बाढ़ में डूबे हुए हैं जिन्होंने हमारे संकेतों को अस्वीकार कर दिया"। और
सन्दूक को छोड़कर सभी लोग डूब गए। खैर, इस्लाम बिलकुल सही दावा करता है कि
कुरान सीधे तौर पर यह नहीं कहता है कि बड़ी बाढ़ ने पूरी पृथ्वी को ढक लिया (लेकिन यह अप्रत्यक्ष रूप से ऐसा कहता है, जैसा कि यह बताता है कि सन्दूक सीरिया में एक पहाड़ पर समाप्त हुआ - असंभव अगर बाढ़ ने सभी को कवर नहीं किया दुनिया - मामले में पानी बाढ़ वाले क्षेत्रों में गायब नहीं हो गया था)। लेकिन जब वो समझाने की कोशिश करते हैं
कुरान में वर्णित बाढ़, वे न केवल ठोकर खाते हैं, बल्कि सिर के ऊपर से नीचे गिरते हैं a

पूर्ण पहाड़ी। **यह विशेष रूप से कुछ तथ्यों के रूप में जो वे मोड़ते हैं, विद्वानों के बीच बहुत प्रसिद्ध हैं लोग, कि उन्हें स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए कि वे चीजें और निष्कर्ष बना रहे हैं भोले और/या पढ़े** -लिखे **लोगों को धोखा देना** - - - कुछ छोटे अल-ताकिया और/या किटमैन? (वैध) झूठ और अर्धसत्य) - यह वैध है (हाँ, अल-तकिया भी एक दायित्व है) यदि आवश्यक हो तो धर्म को बढ़ावा देना और/या उसकी रक्षा करना, जो यह पता लगाने की तुलना में कहीं अधिक आवश्यक है कि यह सच है। लेकिन जिस धर्म को झूठ बोलना पड़ता है, उसमें छिपाने के लिए भी चीजें होती हैं - f. भूतपूर्व। वह न तो मुहम्मद और न ही अल्लाह कभी इस्लाम के बारे में कुछ भी साबित करने में सक्षम थे।

***एफ। भूतपूर्व। वे भूमध्य सागर के भरने के साथ बाढ़ की व्याख्या करने की कोशिश करते हैं और काला सागर - जो वैज्ञानिक बकवास भी नहीं है:

1. भूमध्य सागर किसके द्वारा भरा गया था? जिब्राल्टर लगभग 4-5 मिलियन वर्ष पहले - long होमो सेपियन्स से पहले - आधुनिक आदमी - हमेशा अस्तित्व में था (होमो सेपियन्स अफ्रीका में विकसित हुआ) कुछ १६०ooo-२०० साल पहले, से बाहर आया था अफ्रीका शायद ७० साल पहले, और फिर एशिया में कुछ हुआ (?) कुछ 60ooo-70ooo (64ooo?) साल पहले कि उसे डाल दिया हम जो हैं उसके लिए राह पर या उसे बनाया है आज।)
2. फिलिंग अप में कई साल लग गए - धुन पर सौ साल का, ऐसा इसलिए है क्योंकि उद्घाटन

शुरुआत में बहुत बड़ा नहीं था और बेसिन विशाल। इसलिए पानी गुलाब धीरे-धीरे - साल में कुछ मीटर। नाटक और कुरान में वर्णित तरह की लहरें बस मौजूद नहीं था।
3. एक नक्शा देखें और कृपया हमें बताएं कि कैसे भूमध्य सागर का धीरे-धीरे भरना दक्षिण मेसोपोटामिया में बाढ़ ला सकता है - अब लगभग दक्षिण इराक - जहां नूह माना जाता है कि रहते हैं?
4. काला सागर के भरने में कोई कमी नहीं थी के मूल भरने के संबंध में भूमध्यसागरीय बिल्कुल देखें - स्टार्क में एफ के लिए विरोधाभास भूतपूर्व। ७/६४, टिप्पणी ४६, in "कुरान का संदेश"।
5. काला सागर का भरण-पोषण हुआ जब महासागर लगभग समाप्त हो चुके थे आखिरी से बर्फ के पिघलने के कारण हिमयुग - हमने ५७०० साल पहले देखा है, मुख्य गलनांक 10ooo - 12oo साल पहले समाप्त हो गया, लेकिन कुछ उतार-चढ़ाव आए हैं - कूलर और गर्म अवधि) लेकिन गणना की गई समय कुछ बदलता है। यह तेजी से हुआ, लेकिन प्रलय पैदा करने के लिए पर्याप्त तेजी से दूर कुरान में वर्णित लोगों की तरह - महीने या कुछ साल। सभी एक ही सिद्धांत बिग . की कहानी को समझाने की कोशिश कर रहे हैं बाढ़, क्या यह भर रहा है - कहानी है यात्रा की (या नूह वहाँ रह सकता है और बाद में ले जाया गया?) और इसे और भी बनाया गया है नाटकीय।
6. **इस्लाम का दावा है कि जहाज पर फंसे हुए हैं a सीरिया में पहाड़ (तुर्की में अरारत नहीं)। के लिए ऊँचे पहाड़ पर फँसाने के लिए सन्दूक, पानी सभी भौतिक नियमों के अनुसार होना चाहिए पूरी पृथ्वी को ढँक लिया है - यदि नहीं तो

खाली निचले स्थानों पर प्रवाहित किया गया और
गायब / गिर गया। मुस्लिम विद्वान जानते हैं
प्राथमिक भौतिक नियम अच्छे और साथ ही
किसी और को। वे जानते हैं कि ये
कुरान क्या बात कर सकता है इसके बारे में "स्पष्टीकरण"
एक "स्थानीय" बाढ़ के बारे में सभी सरासर बेईमानी हैं।
या कुरान क्या बताता है कि अर्की कहाँ है
समाप्त हो गया, गलत है। इन दोनों में से कम से कम एक के पास है
गलत होना - और वे इसे जानते हैं, लेकिन सभी
वही बताएं जो वे जानते हैं कि गलत होना चाहिए
भोले और/या अशिक्षित अनुयायी और
धर्मांतरण करने वाले

7. एक अत्यधिक सट्टा सिद्धांत भी है कि
बाढ़ an . के प्रभाव के कारण हुई थी

२८९

पृष्ठ २९०

हिंद महासागर में क्षुद्रग्रह। को सन्दर्भित
चीनी इतिहास और खगोलीय
तारीखों के मामले में हिंदू किंवदंतियों में नक्षत्र
बाढ़ की शुरुआत 10. मई 2807 ई.पू. परंतु
जैसा कि कहा गया है कि सिद्धांत अत्यधिक सट्टा है - और
प्रभाव का कोई निशान नहीं मिला है।

8. सबसे संभावित स्पष्टीकरण, हालांकि, और एक
हमने इस्लाम से बिल्कुल नहीं सुना, क्या
तथ्य यह है कि वहाँ एक के निशान पाए गए हैं
इराक में उस समय से भीषण बाढ़ आ सकती है जब
मोटे तौर पर नूह के साथ मेल खाता है (5200 वर्ष .)
पहले)। यह आश्चर्यजनक रूप से बहुत कम ज्ञात है - हमारे पास है
इसका उल्लेख केवल 2-3 बार देखा, और हमने पढ़ा
बहुत सारी ऐसी चीजें। स्पष्ट निशान थे
पाया - जहाँ तक हमें याद है - 1920 के दशक में
एक ब्रिटिश टीम द्वारा, और हमें याद है कि
1990 के दशक (संख्या 7/1994?) लोकप्रिय विज्ञान
पत्रिका LEXICON के साथ एक लेख था
बाढ़ की मिट्टी की गहरी परत से तस्वीर
पीछे छोड़ दिया था। मानव के निशान थे
उस परत के नीचे गतिविधि, जो इंगित करती है कि
जब यह हुआ तब लोग वहां रहते थे।

9. इस्लाम द्वारा दिए गए किसी भी स्पष्टीकरण में यह नहीं है:
विशाल मौसम की व्याख्या करना संभव है
कुरान वर्णन करता है। में ही संभव है
अंतिम बिंदु ठीक ऊपर और शायद क्षुद्रग्रह
प्रभाव - स्पष्टीकरण हम कभी नहीं मिले
मुसलमानों से। और स्पष्टीकरण जो नहीं कर सकते
समझाओ कि सन्दूक कैसे समाप्त हो सकता है a
सीरिया में पहाड़ जैसा कुरान का दावा है।

022 7/64b: "- - - हमारे संकेत - - -"। "हमारी निशानी" कुरान है - "अल्लाह के लिए सबूत" के लिए बोलो। पर वहाँ
अल्लाह के लिए एक भी प्रमाण मौजूद नहीं है - कुरान में नहीं और कहीं और नहीं। (वास्तव में
केवल एक चीज जो देवता को सिद्ध कर सकती है, वह है चमत्कार - या एक से अधिक। कोई चमत्कार साबित नहीं कर रहे हैं
न तो अल्लाह, न कुरान, न ही मुहम्मद का सभी कुरान में एक ईश्वर से संबंध। और यह
हदीसों के अनुसार मुहम्मद से जुड़े चमत्कारों का दावा, कुरान बहुत स्पष्ट रूप से
सिद्ध किंवदंतियाँ बनी हुई हैं - एक तथ्य जो इस्लाम द्वारा स्वीकार किया जाता है जो कहता है कि एकमात्र चमत्कार
मुहम्मद से जुड़ा, कुरान है (सबसे संदिग्ध चमत्कार, लेकिन वह दूसरा है
कहानी), लेकिन मुस्लिम "पादरियों" द्वारा उनके दर्शकों के लिए समान रूप से प्रचारित किया गया।)

023 7/67: "- - - दुनिया!" नीचे 65/12 देखें।

024 7/73a: "- - - स्पष्ट (चिह्न) - - -"। a . से एक भी अचूक (= स्पष्ट) चिन्ह नहीं है
सभी कुरान में भगवान, बाइबिल से लिए गए कुछ के संभावित अपवाद के साथ - लेकिन वे
मामला यहोवा की निशानी है, अल्लाह की नहीं। 2/99 भी देखें।

00g 7/73b: थमुद जनजाति के बारे में किंवदंती से जुड़े, आपको बार-बार कहा जाता है
कुरान कि स्वयंभू नबी सलीह उनके लिए एक ऊँट लाए और बताया कि यह एक निशानी है - अ
सबूत - अल्लाह से। जैसा कि कुरान में बताया गया है, इसका बिल्कुल कोई अर्थ नहीं है - सिर्फ एक दावा

पतली हवा में लटका हुआ। जिस देश में 15 . हैं, वहां ऊंट भगवान के लिए सबूत कैसे हो सकता है?
एक दर्जन के लिए ऊंट?

*लेकिन फिर हम स्पष्टीकरण में भाग लेते हैं: यह पुराने अरब लोककथाओं से लिया गया है - एक पुरानी किंवदंती
कि अरब में हर कोई मुहम्मद के समय जानता था (लेकिन एक सर्वज्ञ ईश्वर होगा जो
पूरी दुनिया में पहुंचना चाहता था, एक पुरानी परी कथा का उपयोग करना जो केवल अरबों को ज्ञात हो - और इस तरह से
अगर कोई बाकी कहानी नहीं जानता है तो उसे समझ में नहीं आता है?)

बहुत संक्षेप में किंवदंती इस तरह चलती है: एक बार एक पहाड़ी चट्टान थी। उस ठोस से बाहर
एक दिन चट्टान पर एक ऊँट आया। यह ऊँट तब एक देवता का भविष्यद्वक्ता बन गया।

ऐसी पृष्ठभूमि के साथ ऊंट इतना खास था, कि वह किसी चीज के लिए एक संकेत था - केवल वही
कुरान ने कहानी का सिर्फ एक हिस्सा बताया, क्योंकि वहां और उस समय हर कोई बाकी को जानता था।
लेकिन जैसा कि हमने पूछा: क्या कोई सर्वज्ञ ईश्वर पूरी दुनिया तक पहुंचना चाहता है, इसका एक हिस्सा बताएं
कहानी, जब वह जानता था कि दुनिया के अधिकांश लोग बात नहीं समझेंगे? (लेकिन जैसा कि अपेक्षित था;
आधुनिक समय में आप मुसलमानों को यह कहते हुए पाते हैं कि यह अंधविश्वास का यह ऊंट नहीं था
कहानी, लेकिन एक विश्वसनीय विकल्प दिए बिना।)

०२५ ७/७८: "तब भूकम्प ने उन्हें (तमूद* का गोत्र) अनजाने में ले लिया, और वे लेट गए
सुबह सज्दा (मृत*) अपने घरों में"। गलत। ऐसा भूकंप कभी नहीं आया कि
पूरी तरह से सभी को मार डाला - पूरी पृथ्वी पर कहीं नहीं, और कभी नहीं। के अपवाद के साथ
कम गुणवत्ता वाली ऊंची इमारतों के लिए, यह एक बहुत ही गंभीर भूकंप है जो कुछ से अधिक लोगों की जान लेता है
30% निवासी। (एक और तथ्य यह है कि ६९/५ में थमूद एक तूफान से मारा जाता है - इनमें से एक
विरोधाभास जो इस्लाम के अनुसार कुरान में मौजूद नहीं हैं।)

०२६ ७/८०अ: "- - - उसने (लूत/लूत*) अपने लोगों (सदोम और अमोरा के लोगों*) से कहा।"
गलत। स्थानीय लोग लूत के लोग नहीं थे। बाइबिल और कुरान दोनों एकमत हैं:
लूत देश के लिए एक अजनबी था और दक्षिण इराक के कसदिया में उर से आया था
अब्राहम)। दोनों पुस्तकों से यह भी स्पष्ट है कि उन्होंने स्थानीय लोगों के साथ पर्याप्त रूप से घुल-मिल नहीं किया था
उनमें से एक बनें। (मुसलमान सभी एक ही स्पष्टीकरण के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं)।

०२७ ७/८०बी: "- - - अश्लीलता (समलैंगिकता) जैसे सृष्टि में कोई भी व्यक्ति (कभी) प्रतिबद्ध नहीं है
तुमसे पहले?" गलत। समलैंगिकता कुछ लोगों की प्रकृति का एक एकीकृत हिस्सा है। विज्ञान
यह भी पाया है कि यह किस जीन से जुड़ा है - और यही कारण है कि यह समाप्त नहीं हुआ है, है
कि एक ही जीन व्यक्ति के विषमलैंगिक होने पर कई बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति देता है- या
उभयलिंगी, बिना किसी के तंत्र की व्याख्या कर सकते हैं। आप के साथ समलैंगिकता भी पाते हैं
कुछ जानवर - वहाँ यह कभी-कभी प्रभुत्व का प्रमाण होता है।

028 7/85: "- - - एक स्पष्ट (चिह्न) - - -"। 2/99 देखें।

०२९ ७/९१: "लेकिन एक भूकंप ने उन्हें (शूएब के लोग, मद्यन*) ले लिया, और वे लेटे रहे
सुबह से पहले अपने घरों में (मृत *) सजदा करें। " गलत। ऊपर 7/78 देखें।

०३० ७/९६: "- - - उन्होंने (गैर-मुस्लिम*) खारिज कर दिया (सच्चाई) (= मुहम्मद की शिक्षाओं*)"।
इसके साथ ही कई गलत तथ्य (और कौन जानता है कि कितने गलत धार्मिक बिंदु हैं?)
सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है। 13/1 भी देखें।

031 7/101: "- - - स्पष्ट (संकेत) - - -"। गलत। 2/99 देखें।

00h 7/102: "उनमें से अधिकांश (लोग *) हम (अल्लाह *) ने अपनी वाचा के लिए पुरुषों (सच्चे) को नहीं पाया - - -". "कुरान का संदेश" (7/102, टिप्पणी 81) बताता है कि शब्द के लिए सटीक शब्द अनुवाद है: "हमें उनके द्वारा ऐसा कुछ भी नहीं मिला जो उन्हें सत्य और सही से बांधे"। और कि पुस्तक यह कहकर जारी रखती है कि इसमें मनुष्य की सहज रूप से देखने की क्षमता शामिल हो सकती है सही और गलत के बीच का अंतर।

अब तथ्य यह है कि कुछ सबसे मौलिक नैतिक प्रश्नों का एक ही उत्तर मिलता है कई समाज यह संकेत देते हैं कि मनुष्य के भीतर की कोई बात कुछ सामान्य नैतिकता बताती है सत्य: आप चोरी नहीं करेंगे, आप दूसरों के लिए उपद्रव नहीं करेंगे - या इससे भी बदतर - आप करेंगे बलात्कार नहीं, मारोगे नहीं, आदि। लेकिन इस्लाम और कुरान इसका सबसे अच्छा प्रमाण है एक करिश्माई नेता और एक समाज के लिए आंतरिक संदेशों को ओवरराइड करना आसान है, और बनाना अनैतिक व्यवहार प्रशंसनीय एक नैतिक कोडेक्स: चोरी / लूट, बलात्कार, दासता, हत्या, और अधिक - यह सब "अच्छा और वैध" है यदि आप इस्लाम में सही औपचारिकताओं का पालन करते हैं।

०३२ ७/१०३ए: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०३३ ७/१०३बी: "---देखो शरारत करने वालों का क्या अंत (डूबना*) हुआ। (फिरौन और उसके आदमी*)"। विज्ञान के अनुसार 1235 ईसा पूर्व के आसपास पलायन हुआ था (यदि ऐसा हुआ था), रामसेस द्वितीय के शासनकाल के दौरान। रामसेस II नहीं डूबा। (बाइबल भी - वह कहाँ से है संभवतः मुहम्मद को यह कहानी मिली, कम से कम परोक्ष रूप से - बताता है कि फिरौन डूब गया। लेकिन बाइबल इंसानों द्वारा बनाई गई थी। मनुष्य ने रामसेस II को अपने एक सेनापति के साथ मिश्रित किया हो सकता है या उनके 67 पुत्रों में से एक। एक भगवान सच जानता था)।

०३४ ७/१०४: "- - - संसारों - - -"। गलत। कोई 7 दुनिया नहीं हैं, (एक के ऊपर एक) हदीस के अनुसार)। नीचे 65/12 देखें।

०३५ ७/१०५: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०३६ ७/१०६: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

00i 7/114: "- - - आप (जादूगर*) उस स्थिति में (पदों पर उठाए गए) निकटतम (मेरे पास) होंगे व्यक्ति)।" यह प्रमाणित करने के लिए मजबूत सबूत की जरूरत है कि शक्तिशाली फिरौन रामसेस द्वितीय ने ऐसा वादा किया था इतने कम के लिए अविश्वसनीय रूप से बहुत - वे आखिरकार सिर्फ जादूगर थे और मूसा कोई बड़ा खतरा नहीं था उसे।

***00j 7/120: मूसा द्वारा अपना चमत्कार करने के बाद "जादूगर पूजा में प्रोस्टेट नीचे गिर गए" और निश्चय किया कि मूसा का परमेश्वर बलवन्त और वास्तविक है। **यह सबूतों में से एक है कि मुहम्मद जानता था कि वह झूठ बोल रहा था जब उसने बार-बार अपने दर्शकों को बताया कि यह चमत्कार करने का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि अविश्वासी विश्वास नहीं करेंगे किसी भी तरह,** और इस तरह इस तथ्य को स्पष्ट कर दिया कि वह (और उसके प्रकल्पित भगवान) बनाने में असमर्थ थे चमत्कार यहाँ वह ठीक इसके विपरीत बताता है - इस पर मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत अधिक सही कहानी एक बिंदु।

०३७ ७/१२१: "- - - संसारों - - -।" गलत। कोई 7 दुनिया नहीं हैं। 65/12 देखें।

00k 7/124a: "सुनिश्चित करें कि मैं (रामसेस II *) आपके हाथों और पैरों को विपरीत दिशा में काट दूंगा - - -"। जहाँ तक हमें पता चला है, रामसेस द्वितीय के समय में मिस्र ने इस अरब का उपयोग नहीं किया था सजा का तरीका।

०३८ ७/१२४ब: "- - - और मैं (फिरौन रामसेस II*) तुम सब को क्रूस पर मरने का कारण बनाऊँगा"। मिस्र में उस समय सूली पर चढ़ाने का प्रयोग नहीं होता था।

०३९ ७/१२६: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०४० ७/१२७: "उसने (रामसेस II*) ने कहा: 'उनके (यहूदी'*) नर बच्चों को हम मार डालेंगे - - -"। परंतु
वे पहले से ही यहूदियों के नर बच्चों को मार रहे थे - इसलिए मूसा के बच्चे को करना पड़ा
बाइबिल के अनुसार नील नदी पर रखा जाए और कुरान का खंडन न किया जाए। दोनों एक गलती
और एक विरोधाभास। और कुरान में विरोधाभास मौजूद नहीं है? एफ देखें। भूतपूर्व। नीचे 7/141।

00l 7/130: "हमने (अल्लाह *) फिरौन के लोगों को वर्षों (मसौदे के) - - - के साथ दंडित किया।
सीधे तौर पर यह कहीं नहीं कहा गया है कि मूसा को अपने लोगों को स्वतंत्र और बाहर निकालने में कितना समय लगा
मिस्र। लेकिन कुछ स्रोत सीमित समय का संकेत देते हैं। लेकिन बाइबल में एक जानकारी है
यह एक स्पष्ट संकेत देता है - और हमने एक बार फिर यह उल्लेख करना बेहतर समझा कि विज्ञान ने साबित कर दिया है
किसी भी कानूनी और किसी भी उचित संदेह से परे कि बाइबल को कभी भी मिथ्या नहीं बनाया गया था, कभी नहीं के बावजूद
प्रलेखित दावा खो देते हैं और कुरान और इस्लाम से बयान खो देते हैं: मूसा 80 था
वर्ष की आयु में जब वह यहूदियों के लिए स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए फिरौन के पास आया। बाद में वह और उसके
लोगों ने सिनाई में ४० साल बिताए, और वह १२० साल की उम्र में मर गया - जिसका अर्थ है कि इसे ले लिया होगा
एक वर्ष से कम, क्योंकि यदि संख्याएँ नहीं जुड़ती हैं।

०४१ ७/१३२: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०४२ ७/१३३: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०४३ ७/१३६: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०४४ ७/१३७: "- - - हमने (अल्लाह) महान कार्यों और उम्दा इमारतों को जमीन पर समतल कर दिया
जिसे फिरौन और उसके लोगों ने खड़ा किया था - - -"। न तो पुरातत्व में कोई निशान है, न ही
इतिहास, साहित्य या कला में, वर्ष १२३५ ईसा पूर्व (कुछ साल पहले) के आसपास ऐसी तबाही का
रामसेस द्वितीय के शासनकाल का अंत) जब ऐसा होना चाहिए था - निर्गमन के समय
मिस्र से। इसके विपरीत; रामसेस द्वितीय सबसे मजबूत और सबसे सफल में से एक था
फिरौन, और एक महान निर्माता भी कई वर्षों के बाद कई महान इमारतों को पीछे छोड़ रहा है -
अन्य बातों के अलावा - निर्माण। क्या मुहम्मद ने अपनी कहानी पर विश्वास करते हुए और अधिक नाटक किया है
अगर यह सच होता तो नियंत्रित करना असंभव होता?

०४५ ७/१४३: "- - - और मैं (मूसा*) सबसे पहले विश्वास करने वाला हूँ"। असंभव, जैसा कि के अनुसार
कुरान नूह और इब्राहीम और इशाक और याकूब और बहुत कुछ पहले अल्लाह में विश्वास करने वाले थे
उसे। और मूसा और अन्य सभी मुहम्मद के कहने से झूठ बोल रहे थे कि वह -
मुहम्मद - पहले थे। कई विरोधाभास। (२/१२७-१३३, ३/६७, ६/१४, ६/१६३,
26/51)। मुसलमान यह कहना पसंद करते हैं कि ऐसे मामलों में इसका मतलब सबसे पहले अगर कोई समूह या कुछ और है, लेकिन
यहाँ तक कि "स्पष्टीकरण" यहाँ भी संभव नहीं है - मूसा के कई पूर्वज मुसलमान थे
कुरान और इस्लाम के अनुसार। लेकिन हो सकता है - हो सकता है मुहम्मद वास्तव में पहले थे
वैसे भी मुसलमान?

०४६ ७/१४५ए: "(अल्लाह ने मूसा को कानून दिया*) सब कुछ समझाते हुए।" की किताब में कानून
मूसा सब बातों से बहुत दूर समझाता है।

०४७ ७/१४६ए: "----माई साइन्स---।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

00m 7/146b: "- - - भले ही वे (गैर-मुस्लिम*) सभी निशानियों (अल्लाह*) को देखें, वे नहीं करेंगे
उन पर विश्वास करो"। गलत: वे - - - अगर अल्लाह के "चिन्ह" वास्तव में के वास्तविक संकेत होते
अल्लाह। एफ. पूर्व. फिरौन के जादूगरों को देखें।

048 7/146c: "- - - हमारा चिन्ह - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०४९ ७/१४७: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०५० ७/१४९: "जब उन्होंने (यहूदियों ने) पश्चाताप किया (मूसा के पहाड़ से नीचे आने से पहले)
10 आज्ञाओं के साथ*) - - -"। गलत। कुरान और बाइबिल दोनों ही बताते हैं कि यह
उसके नीचे आने तक नहीं हुआ - और बहुत क्रोधित था।

०५१ ७/१४९-१५०: यहाँ अधिक गलत है। यहूदी सोने का बछड़ा बनाते हैं, लेकिन मूसा के सामने पश्चाताप करते हैं

रिटर्न। कुरान में अन्य स्थान - और बाइबिल में - उन्होंने निश्चित रूप से तब तक पश्चाताप नहीं किया जब तक बाद में।

*00n 7/157a: "- - - अनपढ़ पैगंबर (मुहम्मद) - - -"। इस्लाम अक्सर कहता है कि
मुहम्मद एक एनाल्फैबेटिक थे (तब वह कुरान नहीं बना सकते थे, वे कहते हैं - जो
वह किसी भी तरह) कर सकता था। लेकिन विज्ञान में इस बारे में गंभीर संदेह है - वह एक अच्छे से था
परिवार, वह बुद्धिमान था और वह पहले एक बड़ा व्यवसाय (उनकी पहली पत्नी में से एक) चलाता था और बाद में a
बड़ा संगठन। यह बहुत कम संभावना है कि ऐसे व्यक्ति ने पढ़ना और लिखना नहीं सीखा हो -
और यह संभावना नहीं है कि उसकी पहली पत्नी ने उसे अपने व्यवसाय के प्रबंधक के रूप में स्वीकार किया था यदि वह था
एनाल्फैबेटिक)।

आप मुसलमानों से भी मिल सकते हैं जो आपको बता रहे हैं कि "तथ्य" जो मोहम्मद नहीं पढ़ सकता था,
"साबित करता है" कि बाइबल के बारे में उसका सारा ज्ञान उसे पवित्र प्रेरणा से प्राप्त करना था - वह
इसके बारे में नहीं पढ़ सकता था। हम सभी मुखर कहानी कहने को छोड़ देना स्पष्ट रूप से बेईमानी पाते हैं
यह अरब (और अधिकांश अन्य देशों) में बहुत व्याप्त था - और तथ्य यह है कि अधिकांश
कुरान में बाइबिल की कहानियां ऐसी कहानियां हैं और वास्तव में बाइबिल से ही नहीं हैं।

०५२ ७/१५७बी: "जो लोग रसूल का अनुसरण करते हैं, अनपढ़ पैगंबर (मुहम्मद*) - - -"।
याद रहे कि यहां कुरान के मुताबिक अब अल्लाह मूसा से बात कर रहा है। कैसे कर सकता है
मूसा के लोग मुहम्मद का अनुसरण करते हैं जो 1800 से अधिक वर्षों के बाद पैदा हुए थे?
(इस्लाम यह कहकर इसे दूर करने की कोशिश करता है कि यह सिर्फ एक घुसपैठ है - जो कि यह सबसे स्पष्ट रूप से नहीं है:
यह एक विरोधाभास है)।

**053 7/157c: "(मुहम्मद, जिसे वे - मूसा के लोग*) 'अपने में उल्लिखित पाते हैं
खुद (शास्त्र) - कानून और सुसमाचार में - - -'"। हो सकता है कि कानून अस्तित्व में हो, जो इस पर निर्भर करता है
जब याहवे (या अल्लाह जैसा कुरान दावा करता है) ने मूसा को यह बताया और जब यहूदियों ने वास्तव में
कानून। परन्तु मूसा के लोग सुसमाचारों को कैसे खोज सकते थे? - वे लगभग . तक मौजूद नहीं थे
1400 साल बाद !! एक और मजबूत गलती और एक और मजबूत विरोधाभास।

०५४ ७/१५७डी: "- - - अनपढ़ नबी (मुहम्मद), जिसका उल्लेख वे अपने में पाते हैं
अपना (शास्त्र)"। आप अक्सर मुसलमानों से यह दावा करते या कहते हुए मिलते हैं कि मोहम्मद की भविष्यवाणी की गई है
बाइबिल - बिना दस्तावेज के मुसलमानों के लिए सामान्य। लेकिन हम कभी नहीं कर पाए
एक पूरी सूची खोजें जहां उनका उल्लेख किया गया है - जाहिर है क्योंकि शिक्षित
मुसलमान मुख्य रूप से OT में 1 और NT में 1 बोलते हैं। ओटी 5 में। १८/१५ + १८ उल्लेखित हैं,
(और एनटी में मुख्य रूप से जॉन के बाद सुसमाचार से कुछ छंद)। लेकिन यहाँ बात एक यहूदी की है
(एक अनुवाद यहूदियों से कहता है "एक अपने लोगों में से, अपने साथी देशवासियों से",
एक और भाई के बारे में बात करता है - लेकिन एक यहूदी का भाई एक यहूदी है, अरब नहीं, और उसी के लिए

एक यहूदी का साथी देशवासी - वह एक यहूदी है। यह यीशु के बारे में बात कर सकता है, लेकिन इसके बारे में नहीं
मुहम्मद. वास्तव में "भाई/भाइयों/भाइयों/भाईचारे" शब्द का प्रयोग लाक्षणिक रूप से किया जाता है
बाइबिल में कम से कम 255 बार, व्यावहारिक रूप से हमेशा एक बंद समूह के बारे में (व्यावहारिक रूप से हमेशा यहूदी
ओटी में - एक देश-से-देश भाषण के लिए एक अपवाद, लूत के लिए एक और कुछ के बारे में 3
एदोमी, जहाँ तक हम देखते हैं। और व्यावहारिक रूप से हमेशा ईसाई और/या एनटी में यहूदी, कुछ को छोड़कर
ऐसे स्थान जहां हर कोई यीशु में संभावित भाई हैं) और कभी भी विशेष रूप से शामिल नहीं हैं
अरब। केवल (लगभग ५-६) बार हमने ओटी में उल्लिखित अरबों को पाया है, कहानी या तो है
तटस्थ, जैसे यह कहना कि उन्होंने राजा सुलैमान को श्रद्धांजलि अर्पित की, या वे शत्रु थे - कभी कुछ नहीं
भाइयों की तरह।

इससे भी बुरा क्या है: मूसा की किताब के उस हिस्से में जहां मुसलमानों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले दो उद्धरण मिलते हैं
प्रमुख के रूप में, व्यवस्थाविवरण (= 5. Mos.), आप पाते हैं कि भाई/भाई शब्द 13 से कम नहीं है
या अध्याय १८-२४ में १४ बार (विवादित दो अध्याय १८-१८/१५ और १८/१८ में हैं)। NS
केवल एक जो यहूदियों के बारे में नहीं है, विशेष रूप से नाम से उल्लेख किया गया है - एदोमाइट्स - और सभी
अन्य १२-१३ मामले स्पष्ट रूप से यहूदियों के बारे में हैं। प्रसंग बहुत स्पष्ट है (एक शब्द भी नहीं
अरबों या इश्माएली के बारे में उल्लेख किया गया है - अरबों के दावा किए गए पूर्वजों)। वहाँ भी है
दो बहस के ठीक बाद एक दिलचस्प कविता: १८/२१। यह बताता है कि के लिए हॉलमार्क
वास्तविक भविष्यद्वक्ता यह हैं कि वे भविष्यद्वाणियाँ करते हैं, और भविष्यद्वाणियाँ सच होती हैं। मुहम्मद कभी नहीं
भविष्यवाणियां कीं। कई बार उनके द्वारा कही गई बातों को याद किया जाता था क्योंकि
वे सच हुए - हमेशा की तरह किसी भी व्यक्ति के जीवन में - लेकिन वास्तविक भविष्यवाणी कभी नहीं। यहां तक कि बहुत
कुरान से स्पष्ट है कि मुहम्मद ने का उपहार होने का दिखावा या दावा भी नहीं किया था
भविष्यवाणी करना (प्रति परिभाषा एक भविष्यद्वक्ता भविष्यवाणी के उपहार के साथ एक व्यक्ति है)। मुहम्मद
उसके पास वह उपहार नहीं था और फलस्वरूप वह कोई नबी नहीं था - उसने केवल "उधार" लिया था

प्रभावशाली शीर्षक। जब वह कोई वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं था तो वह "मूसा के समान भविष्यद्वक्ता" कैसे हो सकता है? NS
दावा इच्छाधारी सोच भी नहीं, बकवास है। (मुसलमान इस आयत का कभी जिक्र नहीं करते)। इसलाम
यह भी पुष्टि करता है कि मुहम्मद भविष्यवाणी करने में असमर्थ थे, क्योंकि एक भविष्यवाणी एक तरह का है
चमत्कार, और इस्लाम स्वीकार करता है कि मुहम्मद से जुड़ा एकमात्र चमत्कार कुरान (!)

*और आखिरी, लेकिन कम से कम नहीं: भाई/भाई/भाई/भाईचारे शब्द भी अक्सर होता है
कुरान में इस्तेमाल किया गया (30 से अधिक बार लाक्षणिक रूप से) - और ठीक उसी तरह जैसे बाइबिल में:
एक समूह के सदस्यों के बारे में - यहाँ या तो अरब या मुसलमान समूह के रूप में। और जहाँ तक हम कर सकते हैं
देखिए, कुरान में भी असली अरब यहूदियों के किसी भी तरह के भाई नहीं हैं। हमने एक पाया है
छोटा अपवाद - किसी भी नस्ल के पाखंडी यहूदियों के भाई हो सकते हैं (!)। इस मामले में प्रभावशाली।

इस्लाम हमेशा मांग करता है कि उनकी कहानियों के बिंदुओं को पूरा पढ़ा और समझा जाना चाहिए
संदर्भ - खासकर जब वे कुछ कठिन बिंदुओं को समझाने में परेशानी में पड़ जाते हैं। लेकिन इसमें
मामले में संदर्भ उनकी इच्छाधारी सोच को पूरी तरह से नष्ट कर देता है और इसके लिए सबूत की सख्त जरूरत है
ओटी में मुहम्मद - हताश क्योंकि कुरान घोषणा करता है कि वह वहां भविष्यवाणी कर रहा है, और नहीं
स्पष्ट भविष्यवाणी मिलनी है (यह एक स्पष्ट तथ्य है) - इसलिए वे अपने स्वयं के नियमों को छोड़ देते हैं और उद्धरण देते हैं
दो शब्द संदर्भ से बहुत दूर हैं और घोषित करते हैं कि एक यहूदी का भाई एक संदर्भ में भी एक अरब है
जहां यह स्पष्ट है कि मूसा ने यहूदियों से और उनके बारे में बात की, और जहां संदर्भ भी सीधे तौर पर
बताता है कि वह मुहम्मद नहीं हो सकता जिसके बारे में वह बात कर रहा था, क्योंकि उसने भविष्य के बारे में बात की थी
पैगंबर, जबकि खुद मुहम्मद ने भी भविष्यवाणी करने का उपहार नहीं होने का ढोंग किया था। वह
वास्तव में कोई नबी नहीं था - किसी का या किसी का दूत या प्रेरित हो सकता है, लेकिन
नबी नहीं - उसने केवल उस भव्य उपाधि का उपयोग किया। भविष्य के महान भविष्यवक्ता के बारे में मूसा की भविष्यवाणी
हो सकता है कि यीशु के बारे में बात कर रहे हों, जो दोनों के अनुसार स्पष्ट रूप से एक भविष्यवक्ता थे
बाइबिल और कुरान के लिए। लेकिन वह असंभव रूप से मुहम्मद के बारे में बात कर सकते थे, जो उनमें से थे
अन्य तथ्य जैसा कि वास्तव में कहा गया था, कोई नबी नहीं था - जैसा कि उन्होंने कहा था कि केवल "उधार" वह अच्छा शीर्षक था
उपहार पाने का ढोंग किए बिना, वास्तव में शीर्षक की मांग की - और वह भी नहीं था
मूसा जैसे यहूदी के बारे में बात की।

२९५

पृष्ठ २९६

लेकिन इस तरह के तथ्यों की परवाह किए बिना या यहां तक कि उल्लेख किए बिना, इस्लाम बहुत सीधे आगे और
सीधे तौर पर दावा करते हैं कि जब यहूदी 5 में भाइयों के बारे में बात करते हैं। मूसा। १८/१५ + १८ वे बात करते हैं
अरबों के बारे में और मुहम्मद की भविष्यवाणी करें क्योंकि वह एकमात्र व्यक्ति है जो यहाँ मूसा के पास हो सकता है
के बारे में बात की। वह अध्याय वास्तव में किस बारे में है, वह यह है कि मूसा अपने यहूदियों को बताता है (हम शब्द का प्रयोग करते हैं
यहूदी सुविधा के कारण - हम जानते हैं कि पहले शब्द सदियों बाद इस्तेमाल किया गया था) के बारे में बातें
उनका भविष्य - कि लेवियों (12 यहूदी गोत्रों में से एक) के पास कोई विरासत नहीं होगी
उनके भाइयों के बीच (5. मो. 18/1 - मुसलमानों द्वारा कभी उल्लेख नहीं किया गया) - बाकी यहूदी -
और एफ. भूतपूर्व। कि वहाँ एक बार उनके बीच से एक भविष्यद्वक्ता (जितना महान) खड़ा होगा
भाइयों - यहूदियों में से। एक सिंहावलोकन करने के लिए:

1. मुहम्मद ने कभी बनाने की कोशिश तक नहीं की
   भविष्यवाणी करना कुछ उद्धरण हैं जहां
   उसने जो कहा, हुआ - लेकिन जितना उसने कहा
   बोले, थोड़ा नहीं तो अस्वाभाविक होगा
   सच हुआ। परन्तु जहाँ तक वास्तविक भविष्यद्वाणियों की बात है, वह कभी नहीं
   यहां तक कि ऐसे लोगों को बनाने की कोशिश की - और क्या वास्तविक
   भविष्यवक्ता भविष्य के बारे में कुछ नहीं बता पा रहे हैं?
   - यह निश्चित रूप से ऐसी बात थी कि एक वास्तविक
   नबी ने वैसा ही किया, कि मूसा ने भी न किया
   ऐसे मामले का जिक्र किया। कोई भविष्यवाणी नहीं = नहीं
   नबी. सही भविष्यवाणी नहीं = असत्य
   नबी - दोनों मूसा के अनुसार (5. Mos.
   18/21)।
2. भविष्यवक्ता जो कहता है वह सही नहीं है, नहीं है
   यहोवा की ओर से = एक झूठा भविष्यद्वक्ता, के अनुसार
   अध्याय (5. मूसा 18/21) और वह आदमी जो
   इस्लाम ही दृढ़ता से उद्धरण देता है। सब देखो
   कुरान में गलतियाँ और रोना। (और देखें
   दावे के बारे में अलग अध्याय कि
   बाइबिल में मुहम्मद का उल्लेख है)।
3. 5.मोस। १८/१८ - वास्तव में यह वही कहता है
   5 के रूप में। १८/१५.

4. फिर एनटी से:

जॉन १/२१ - लेकिन वह जॉन के बारे में बात कर रहा है
बैपटिस्ट। वह कहता है कि वह नबी नहीं है।
और इस्लाम जॉन १/२६-२७ को छोड़ देता है जहां जॉन थे
बैपटिस्ट बताता है कि "पैगंबर" खड़ा था
तब लोगों के बीच" = बस जी रहा था
उस समय - और निश्चित रूप से अपेक्षित नहीं था
केवल 600 साल बाद। की "चेरी-चुनना"
शब्दों।

5. *** एनटी से मुख्य दावा जॉन 14/16 . है
जहाँ यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं:"और मैं पूछूंगा
पिता (भगवान / यहोवा *), और वह देगा
आप के साथ रहने के लिए एक और परामर्शदाता
सदैव"। शिष्यों को देने के लिए मुहम्मद
कोई मतलब नहीं था - वह लगभग 500 . पैदा हुआ था
वर्षों बाद वे मर गए, और हो सकते हैं नहीं

२९६

पृष्ठ २९७

उनकी मदद करो। लेकिन मुसलमान यही दावा करते हैं,
क्योंकि उन्हें NT से उद्धरण की आवश्यकता है,
क्योंकि कुरान बताता है कि उसे भी भविष्यवाणी की गई है
इंजील में ईसाई, और यह है
केवल वही स्थान जहाँ टेक्स्ट को घुमाया जा सकता है
पर्याप्त - क्योंकि इसमें बहुत सारे घुमाव लगते हैं
(इस दावे के बारे में अध्याय देखें कि
मुहम्मद बाइबिल में पूर्वबताया गया है)। (इस
पद वास्तव में पवित्र आत्मा की भविष्यवाणी कर रहा है - it
के अनुसार कुछ दिनों बाद पहुंचे
बाइबिल।) मुहम्मद भी "उनके साथ" नहीं थे
हमेशा के लिए" - वह उनके साथ बिल्कुल नहीं था।

अजीब तरह से पर्याप्त इस्लाम कभी भी अगली कविता (जॉन 14/17) का उल्लेख नहीं करता है जो जारी है: "- the
सत्य की आत्मा (मुहम्मद न तो आत्मा थे, न सत्य (उसने धोखा दिया और झूठ बोला - cfr। अल-
तकिया, और इस विषय में उनके दृष्टिकोण के अनुसार उनकी शपथ भी तोड़ी जा सकती है*)।
संसार उसे स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि वह न तो उसे देखता है और न ही उसे जानता है। पर तुम उसे जानते हो,
क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और तुम में रहेगा।" इस फिट मुहम्मद को बनाने की कोशिश करो !! अलग से भी देखें
उन दावों के बारे में अध्याय जो बाइबिल में मुहम्मद की भविष्यवाणी की गई थी।

*अर्थात्: १४/१७ से वे उल्लेख करते हैं कि आत्मा को "सत्य की आत्मा" कहा जाता है और इस प्रकार
"पवित्र आत्मा" नहीं हो सकता। लेकिन अल्लाह की तरह और मुहम्मद की तरह इसके और भी नाम थे -
कम से कम ५ - और इसके अलावा पूरी बाइबल में बहुत स्पष्ट है कि वहाँ केवल अस्तित्व में है/अस्तित्व में है (?)
आत्मा यहोवा के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है।

"कुरान का संदेश" समस्या को बहुत सरलता से हल करता है: यह बताता है कि कुरान की एक आयत
बताते हैं कि एनटी मुहम्मद के बारे में क्या बताता है (सूरः ६१, छंद ६)। **समस्या यह है कि
बाइबल ६१/६ पद के समान दूर से कुछ भी नहीं कहती है।** (एक "सुरुचिपूर्ण" व्याख्या यह है कि यह
काल्पनिक इंजील इस्लाम में उल्लेख किया गया है जिसके बारे में बात करता है क्योंकि इसकी आवश्यकता है
समझाएं कि बच्चा यीशु कैसे सुसमाचार (ओं) को लिखे जाने से पहले सीख सकता था - एक सुसमाचार जो
मैरी और अन्य ने 100% निश्चित रूप से ध्यान रखा था या कम से कम इसके बारे में बताया था कि क्या यह एक परी कथा नहीं थी,
क्योंकि यह वास्तव में यीशु और के बीच एक विशेष संबंध को और भी मजबूत करता
यहोवा/भगवान। लेकिन एक सुसमाचार जो अस्तित्व में नहीं हो सकता था, क्योंकि उसके बाद तक कोई भी गोर्पेल नहीं लिखा जा सकता था
यीशु की मृत्यु)।

**सुरा ६१/६ का प्रासंगिक भाग कहता है: "(यीशु ने कहा*): - - - मैं एक की खुशखबरी दे रहा हूं
मेरे बाद आने वाला रसूल, जिसका नाम अहमद होगा (= नाम का एक और संस्करण
मोहम्मद*)"। लेकिन दूर से ऐसा कुछ भी बाइबल में नहीं मिलता है। बेशक इस्लाम
बताते हैं कि बाइबिल के मिथ्याकरण के साथ - यही मानक और सस्ता स्पष्टीकरण है
जब भी कुरान और बाइबिल के बीच अंतर होता है, भले ही यह प्रलेखित हो
विज्ञान द्वारा कि इस तरह के मिथ्याकरण के बारे में इस्लाम का अनिर्दिष्ट दावा गलत है। यह भी एक

अधिकतर उन हजारों लोगों के बीच भी नहीं करेगा जिन्होंने यीशु को बोलते हुए सुना था - और फिर
जीवन और समय का पैमाना (वे किसी भी महीने या साल में यीशु के वापस आने की उम्मीद करते थे - अगर आना था)
पहले एक और भविष्यद्वक्ता, यह यीशु से पहले कम से कम एक पीढ़ी या उससे अधिक समय लेने की संभावना होगी
वापस आ जाएगा) पहले ईसाइयों के अलग होते - यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि
उन लोगों द्वारा लिखे गए सभी पत्रों और सुसमाचारों की सामग्री जो वास्तव में कहानी जानते थे, के पास था
अलग रहा। सूरह ६१/६ में मोहम्मद को देने के लिए बनाई गई किसी चीज़ की बहुत अधिक गंध आती है
साख

२९७

पृष्ठ २९८

***एक छोटा सा शीर्षक: बाइबिल में भविष्यवाणी करना कभी भी दूर के व्यक्तियों के नामों का उल्लेख नहीं करता है
भविष्य, लेकिन ६१/६ में एक सबसे सुविधाजनक रूप से एक अचूक नाम खोजें।
अगर कोई मुसलमान जोर देता है कि यह सच है, तो उसे भारी सबूत पेश करने होंगे।

**अंत में एक ग्रीक शब्द है, "पैराक्लेटोस"। यूहन्ना के बाद यूनानी सुसमाचार में यह शब्द वे
एक स्पष्टीकरण के रूप में उपयोग करें। मुसलमानों का कहना है कि गलत वर्तनी होनी चाहिए, क्योंकि यदि आप एक और लेते हैं
शब्द, "पेरिक्लीटोस" जो काफी समान दिखता है, और इसे अरामी में अनुवादित करता है, तो आपको एक शब्द मिलता है जिसमें
अरब की व्याख्या मोहम्मद के रूप में की जा सकती है। बहुत आश्वस्त करने वाला (लेकिन याद रखें कि अरबों के बाद से
प्रागैतिहासिक काल उन संस्कृतियों में रहा है जहाँ षड्यंत्रों के सिद्धांत प्रचलित रहे हैं - शायद
क्योंकि उनके पास कभी ऐसी जानकारी नहीं थी जिस पर वे भरोसा कर सकते थे, और फिर उन्होंने बना लिया
अनुमान और कहानियाँ। वास्तव में आधुनिक मुस्लिमों की स्थिति काफी हद तक वैसी ही है
देश - और इससे भी अधिक उन देशों में जो अभी भी अधिक आधुनिक नहीं हैं। अधिकांश पर जाएं
मुस्लिम देश और आप ऐसी कहानियों और सिद्धांतों में खुद को डुबो सकते हैं)। यह भी देखें ६१/६
और अध्याय "बाइबल में मुहम्मद" देखें। दावा बहुत गलत है।

***055 7/157e: "- - - पैगंबर (मुहम्मद*) - - -"। लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे।
नबी की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. **का उपहार है और काफी करीब है भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान से संबंध।**
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम ज्यादातर सच हो जाते हैं।
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है
कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी
जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि
उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, दावा किए जाने का उल्लेख नहीं किया,
कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि वह जो कुछ भी करता है
भविष्य के बारे में कहा सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में उसने और इस्लाम दोनों ने कहा और कहा कि वहाँ
"कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से जुड़े कोई चमत्कार नहीं थे - भविष्यवाणी करना एक तरह का है
चमत्कार। (यह आखिरी तथ्य भी इस बात का पुख्ता सबूत है कि मुहम्मद से जुड़े तमाम चमत्कार
वहाँ हदीसों का उल्लेख है, कहानियाँ बनी हैं)।

*** मुहम्मद वास्तव में कोई वास्तविक नबी नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या
कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। वह केवल "उधार"
वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

056 7/158a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22 देखें।

00o 7/158b: "- - - अनपढ़ पैगंबर - - -"। 7/157 देखें।

०५७ ७/१५८: "- - - पैगंबर (मुहम्मद*) - - -"। लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। **NS**
पैगंबर की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. **का उपहार है और काफी करीब है भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान से संबंध।**

पेज 299

2. **भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम ज्यादातर सच हो जाते हैं।**
3. **इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है मिशन।**

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है
कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी
जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि
उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, दावा किए जाने का उल्लेख नहीं किया,
कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि वह जो कुछ भी करता है
भविष्य के बारे में कहा सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में उसने और इस्लाम दोनों ने कहा और कहा कि वहाँ
"कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से जुड़े कोई चमत्कार नहीं थे - भविष्यवाणी करना एक तरह का है
चमत्कार। (यह आखिरी तथ्य भी इस बात का पुख्ता सबूत है कि मुहम्मद से जुड़े तमाम चमत्कार
वहाँ हदीसों का उल्लेख है, कहानियाँ बनी हैं)।

**वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या
कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। केवल वह
"उधार" वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक।** यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

०५८ ७/१६०: "हमने उन्हें (मूसा के लोगों) को बारह जनजातियों या राष्ट्रों में विभाजित किया।" गलत:
उनमें १२ भाई थे, फिर १२ परिवार, फिर १२ गोत्र पहले से ही याकूब के बाद से (कुछ
बाइबिल के अनुसार 430 साल पहले)।

०५९ ७/१६२: "लेकिन उनमें से अपराधियों (यहूदी और ईसाई) ने शब्द बदल दिया (की
बाइबिल*) उस से जो उन्हें दिया गया था - - -"। अच्छा अच्छा। **के लिए एक ही रास्ता
मुहम्मद को अपने धर्म और अपनी शक्ति को बचाने के लिए, यह दावा करना था कि बाइबिल को गलत ठहराया गया था -
और उसने कभी एक भी वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत किए बिना दावा किया और दावा किया। अर्थात्
आज इस्लाम के लिए बिल्कुल सही स्थिति: खुद को बचाने के लिए - और नेताओं की स्थिति - it
दावा और दावा करना पड़ता है - यह और अन्य चीजें - एक भी साबित करने में सक्षम हुए बिना
चीज़।** लेकिन आज स्थिति और भी कठिन है, क्योंकि विज्ञान के पास इतने पुराने दस्तावेज हैं
और टुकड़े, कि वे जानते हैं कि इस्लाम सच नहीं बोल रहा है। एफ देखें। भूतपूर्व। 7/157a-डी। बाइबल
विज्ञान के अनुसार कभी झूठ नहीं बोला गया।

०६० ७/१६३: "(मछली*) खुलेआम अपना सिर (पानी के ऊपर*) पकड़े हुए - - -।" अरे नहीं
समुद्र में मछलियों के लिए पानी के ऊपर अपना सिर पकड़ना शारीरिक रूप से संभव है - वे कूद सकते हैं और
वे सतह को छू सकते हैं, लेकिन वे अपने सिर को सतह से ऊपर नहीं रख सकते। समुद्री
स्तनधारी मछली तैर सकते हैं, लेकिन स्वतंत्र रूप से तैर नहीं सकते। कोई भी देवता जानता था - लेकिन रेगिस्तान में रहने वाला नहीं
मुहम्मद.

00p 7/166: अल्लाह ने कुछ "बुरे" लोगों से कहा (कुरान के अनुसार): "तुम बंदर बनो - - -"।
शायद ही संभव हो कि उन्हें वानरों में स्थानांतरित कर दिया गया हो।

०६१ ७/१७१: "जब हम (अल्लाह*) ने उन पर (यहूदियों*) पहाड़ (सिनाई*) को ऐसे हिलाया जैसे कि
एक चंदवा रहा है - - -"। इसके लिए इस्लाम से मजबूत सबूत की जरूरत है, खासकर जब से यह वास्तव में एक से है
पुरानी यहूदी किताब "अबोदा सारा" से ली गई कहानी।

०६२ ७/१८१: "जिनमें से हमने (अल्लाह*) पैदा किया है, वे ऐसे लोग हैं जो (दूसरों को) सच्चाई से निर्देशित करते हैं, - - -
" यदि यह कुरान में सत्य को संदर्भित करता है, तो यह आंशिक रूप से सत्य हो सकता है।

पेज 300

०६३ ७/१७४: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०६४ ७/१७५: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०६५ ७/१७६ए: "- - - हमारे चिन्ह के साथ - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०६६ ७/१७६बी: "- - - हमारे चिन्हों को अस्वीकार करें - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०६७ ७/१७७: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०६८ ७/१८१: "बेशक हमने (अल्लाह*) ने ऐसे लोग पैदा किए हैं जो (दूसरों को) सच्चाई से निर्देशित करते हैं
(इस्लाम/कुरान*) - - -"। कुरान में बहुत कुछ गलत होने के साथ, यह आंशिक रूप से सच है।

०६९ ७/१८५: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

070 7/187: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०७१ ७/१८८: "- - - खुशखबरी - - -"। ऊपर 2/97c और नीचे 61/13 देखें।

०७२ ७/१८९: "वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें (मनुष्य*) एक ही व्यक्ति (आदम*) - - - से पैदा किया।
गलत। आदम कभी अस्तित्व में नहीं था, क्योंकि मनुष्य पहले के प्राइमेट से विकसित हुआ था। और यहां तक कि अगर यह था
एडम और ईव के साथ शुरू हुआ (उसके नाम का कुरान में कभी उल्लेख नहीं किया गया है), डीएनए पूल था
दौड़ को व्यवहार्य बनाने के लिए बहुत छोटा था।

०७३ ७/१९६: "- - - अल्लाह, जिसने किताब उतारी - - -"। खैर, यह एक आवश्यक प्रश्न है: क्या यह है
सच में अल्लाह जिसने इतनी गलतियों के साथ एक किताब बनाई? असंभव।

सूरह 7: कम से कम 73 गलतियाँ + 16 संभावित गलतियाँ।

सूरा 8:

001 8/1: "- - - पैगंबर (मुहम्मद*) - - -"। लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। **NS**
पैगंबर की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. **का उपहार है और काफी करीब है**
   भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान से संबंध।
2. **भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम**
   ज्यादातर सच हो जाते हैं।
3. **इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है**
   भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है
   मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है
कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी
जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि
उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, दावा किए जाने का उल्लेख नहीं किया,
कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि वह जो कुछ भी करता है
भविष्य के बारे में कहा सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में उसने और इस्लाम दोनों ने कहा और कहा कि वहाँ
"कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से जुड़े कोई चमत्कार नहीं थे - भविष्यवाणी करना एक तरह का है

चमत्कार। (यह आखिरी तथ्य भी इस बात का पुख्ता सबूत है कि मुहम्मद से जुड़े तमाम चमत्कार
वहाँ हदीसों का उल्लेख है, कहानियाँ बनी हैं)।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या
कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। वह केवल "उधार"
वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

002 8/2: "- - - उसके लक्षण - - -"। कुरान में अल्लाह या कुछ और साबित करने वाले कोई संकेत नहीं हैं।
2/39 देखें।

००अ ८/५: "जैसे तेरे रब (अल्लाह*) ने तुझे (मुहम्मद*) को सच में घर से बाहर निकालने का हुक्म दिया---". यह मुख्य प्रश्नों में से एक है - क्या मुहम्मद को आदेश दिया गया था? - और किसके द्वारा? (NS मदीना के सूरह एक अच्छे भगवान के बारे में शैतान के बारे में अधिक सोचते हैं।)

००३ ८/६: "- - - सत्य प्रकट होने के बाद (कुरान* में प्रकट हुआ था)"। वह कुरान में कुछ दिखाई देता है यह साबित नहीं करता है कि यह सच है - इससे बहुत दूर, जैसे भी हैं बहुत सी चीजों के बारे में कई गलतियाँ। इस्लाम को सबूत पेश करने होंगे, सिर्फ दावे नहीं क्या सच है और क्या नहीं।

004 8/7: "- - - उनके (अल्लाह के) शब्दों (कुरान*) के अनुसार सत्य - - -"। इसके साथ कई कुरान में गलतियाँ, आदि, यह आंशिक रूप से सच है।

005 8/20: "- - - पैगंबर (मुहम्मद*) - - -"। लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। **NS**
पैगंबर की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. **का उपहार है और काफी करीब है भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान से संबंध।**
2. **भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम ज्यादातर सच हो जाते हैं।**
3. **इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है मिशन।**

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, दावा किए जाने का उल्लेख नहीं किया, कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि वह जो कुछ भी करता है भविष्य के बारे में कहा सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में उसने और इस्लाम दोनों ने कहा और कहा कि वहाँ "कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से जुड़े कोई चमत्कार नहीं थे - भविष्यवाणी करना एक तरह का है चमत्कार। (यह आखिरी तथ्य भी इस बात का पुख्ता सबूत है कि मुहम्मद से जुड़े तमाम चमत्कार वहाँ हदीसों का उल्लेख है, कहानियाँ बनी हैं)।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। वह केवल "उधार" वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

005a 8/24: "- - - उनके (अल्लाह के *) पैगंबर (मुहम्मद *) - - -"। लेकिन मुहम्मद वास्तविक नहीं थे नबी. ऊपर 8/20 देखें।

006 8/41: "- - - रहस्योद्घाटन (कुरान*) हम (अल्लाह*) नीचे भेजा - - -"। इसके साथ एक किताब बहुत सारी गलतियाँ, इतना अमान्य तर्क, आदि न तो किसी देवता ने किया है, न ही माता के रूप में पूजनीय है उनके स्वर्ग में पुस्तक, न ही किसी सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा भेजी गई।

007 8/42: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। कुरान में एक भी स्पष्ट संकेत/प्रमाण नहीं है - न तो अल्लाह के लिए, न ही मुहम्मद का किसी ईश्वर से संबंध है, न ही योद्धाओं के लिए जन्नत, न जन्नत के लिए जैसा कि कुरान में वर्णित है। 2/99 देखें।

*008 8/51: "अल्लाह अपने बंदों पर कभी अन्याय नहीं करता"। गलत। **एक सितारा उदाहरण: कि एक महिला है बलात्कार के बाद अवैध यौन संबंध के लिए सख्त सजा दी जाए, अगर वह 4 पुरुष आंख नहीं पैदा कर सकती है बलात्कार के गवाह, सबसे अमानवीय, अनैतिक और अन्यायपूर्ण कानूनों में से एक है जो मौजूद है यह पृथ्वी - कम से कम सभ्य या अर्ध-सभ्य संस्कृतियों में।**

009 8/52: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

010 8/54: "- - - संकेत - - -"। अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

011 8/65: "- - - पैगंबर (मुहम्मद*) - - -"। लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। **NS**

पैगंबर की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. **का उपहार है और काफी करीब है भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान से संबंध।**
2. **भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम ज्यादातर सच हो जाते हैं।**
3. **इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है मिशन।**

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, दावा किए जाने का उल्लेख नहीं किया, कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि वह जो कुछ भी करता है भविष्य के बारे में कहा सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में उसने और इस्लाम दोनों ने कहा और कहा कि वहाँ "कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से जुड़े कोई चमत्कार नहीं थे - भविष्यवाणी करना एक तरह का है चमत्कार। (यह आखिरी तथ्य भी इस बात का पुख्ता सबूत है कि मुहम्मद से जुड़े तमाम चमत्कार वहाँ हदीसों का उल्लेख है, कहानियाँ बनी हैं)।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। वह केवल "उधार" वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

011बी 8/67: "- - - एक पैगंबर - - -"। लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। ऊपर 8/65 देखें।

012 8/70: "- - - पैगंबर - - -।" गलत। ऊपर 8/65 देखें।

सूरह 8: कम से कम 14 गलतियाँ + 1 संभावना।

सूरा 9:

३०२

पेज ३०३

001 9/9: "अल्लाह की निशानियाँ - - -"। कुरान में कोई भी - एक भी नहीं - संकेत है कि के साथ सही तर्क अल्लाह को साबित करता है। (पूरी किताब में एक भी ऐसा मामला नहीं है जहां यह साबित हो कि वास्तव में अल्लाह ही है जिसने उस चीज़ को पैदा किया है जिसे निशानियाँ कहा गया है। **और फिर यह कुछ भी साबित नहीं करता और कुछ भी नहीं दर्शाता है - किसी भी धर्म में कोई भी पुजारी अपने भगवान के बारे में ऐसा ही कह सकता है !! शब्द इतने सस्ते हैं**)।

002 9/21: "- - - खुशखबरी - - -"। सबसे अच्छा केवल आंशिक रूप से सही। ऊपर 2/97c और नीचे 61/3 देखें।

००३ ९/२९: (इस्लाम है) "सत्य का धर्म"। यह १००% नहीं है - एक ख़ामोशी - सच्चाई के साथ कि कई गलतियाँ, आदि कुरान में। कठिन अतिरिक्त प्रश्न है: इसके साथ ही अनेक गलत तथ्य - क्या धार्मिक भागों में भी गलतियाँ होती हैं? और इसके अलावा वहाँ हैं "अल-तकिया" (वैध झूठ) और किटमैन (वैध अर्ध-सत्य) के तथ्य: कम से कम यह नहीं है एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा बनाया गया।

004 9/30a: "यहूदी 'उज़ैर (= पैगंबर एज्रा*) को ईश्वर का पुत्र कहते हैं - - -"। यह गलत है, और मुस्लिम सूत्र भी इसे स्वीकार करते हैं। लेकिन वे कहते हैं कि अरब में यहूदियों ने ऐसा कहा (जो हो भी सकता है और नहीं भी .) सही हो) - जिसने मोहम्मद को धोखा दिया हो, **लेकिन एक सर्वज्ञ भगवान को पता था सत्य। फिर कुरान की रचना किसने की?**

*00a 9/30b: "- - - ईसाई ईसा मसीह को ईश्वर का पुत्र कहते हैं - - - (इसमें) वे क्या अनुकरण करते हैं पुराने के अविश्वासी कहा करते थे. उन पर अल्लाह का श्राप हो:---"। हम पुराने में वापस आ गए हैं तथ्य: स्वयं यीशु ने परमेश्वर को "पिता" कहा। इसके बहुत सारे गवाह थे। यह लिखा गया था कुछ साल बाद नीचे। कुरान इसका जोरदार खंडन करता है। कुरान में न गवाह हैं और न ही कोई अन्य प्रमाण। कुरान ६०० से अधिक वर्षों के बाद लिखा गया था और सभी समान प्रस्ताव केवल दावे और बयान। यदि यीशु ईश्वर का पुत्र नहीं है तो मुहम्मद को बहुत कुछ हासिल करना था - if यीशु ईश्वर से निकटता से संबंधित है, मुहम्मद स्पष्ट रूप से भविष्यद्वक्ताओं में सबसे महान नहीं हैं, और हालांकि मुसलमान सही हो सकते हैं कि मुहम्मद व्यक्तिगत रूप से इस सब की बहुत अधिक परवाह नहीं करते थे पैसा, इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्हें सत्ता पसंद थी - और महिलाएं - और उन्होंने बड़ी रकम खर्च की

अनुयायियों को "खरीदना" रिश्वत देता है (शक्ति के लिए उसकी वासना कुरान और ग्रंथों से आसानी से देखी जा सकती है)
हदीस)। उद्धरण का अंत बल्कि सहानुभूतिपूर्ण है (?!) - - - और से बहुत अलग है
एनटी में मानसिकता

00b 9/30c: "- - - कैसे वे (दूसरों के बीच ईसाई*) सत्य से दूर बहक जाते हैं!
(कि भगवान का कोई पुत्र नहीं है*)"। टिप्पणियों के लिए दूसरों के बीच में देखें 9/30b ठीक ऊपर।

005 9/30d: "- - - सत्य! (कुरान की शिक्षा*)"। इसके साथ में कई गलतियाँ
किताब, कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है। 13/1 भी देखें।

**00c 9/33a: "वह (अल्लाह*) है जिसने मुहम्मद को भेजा है - - -"। यह वास्तव में बड़े में से एक है
प्रश्न: क्या वह सच में भेजा गया था? इस बात के बहुत से संकेत हैं कि कुरान नहीं बना है
एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा - वास्तव में यह 100% निश्चित है कि ऐसा कोई भी भगवान इतने सारे नहीं बनायेगा
गलतियाँ, आदि। और अगर वह सभी को भेजा जाता है, तो मदीना के कुछ 22-24 सूरह इसे के रूप में बनाते हैं
१००% यकीन है कि वह एक अच्छे या परोपकारी भगवान द्वारा नहीं भेजा गया था - जिस धर्म में यह चित्रित किया गया है
कुरान उसके लिए बहुत अमानवीय, अनैतिक और शैतानी है। **मामले में उसे भेजा गया था,
मदीना के सूरह साबित करते हैं कि उन्हें कुछ अंधेरे बलों द्वारा भेजा गया था।** शैतान द्वारा हो सकता है
गेब्रियल होने का नाटक? या बीमार दिमाग से? - एफ। भूतपूर्व। टीएलई।

006 9/33b: (इस्लाम है*) "सत्य का धर्म, - - -"। टिप्पणियों के लिए, 9/29 और 13/1 देखें।

007 9/36a: "अल्लाह की दृष्टि में महीनों की संख्या बारह (एक वर्ष में) है - इसलिए द्वारा ठहराया गया
उसे (अल्लाह*) - - -"। एक वर्ष वह समय है जब पृथ्वी को सूर्य के चारों ओर एक पूर्ण चक्र बनाने की आवश्यकता होती है। ए
महीना वह समय है जब चंद्रमा को पृथ्वी के चारों ओर एक पूर्ण चक्र बनाने की आवश्यकता होती है। ये दो वृत्त हैं
सिंक्रनाइज़ नहीं। इस वजह से इस कथन में कुछ गलत है, जैसा कि 12 महीने (यहाँ .)
चन्द्रमा) प्राकृतिक वर्ष से लगभग 11 दिन कम होते हैं। इस्लामी वर्ष एक कृत्रिम निर्माण है
अल्लाह ने ठहराया है या नहीं। मुस्लिम वर्ष वास्तव में एक वर्ष नहीं है (103 मुस्लिम वर्ष =
लगभग 100 वास्तविक वर्ष)। आप मुस्लिमों को उस मुस्लिम वर्ष का महिमामंडन करते हुए पाएंगे जो साथ-साथ चलता है
वास्तविक वर्ष, लेकिन प्लसस माइनस की तुलना में बहुत छोटे हैं - - - प्लस यह कुछ बनाता है
इस कविता के साथ गलत: एक मुस्लिम वर्ष बस एक वर्ष नहीं है।

008 9/36b: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22 देखें।

009 9/48a: "- - - जब तक सत्य (कुरान*) नहीं आया, - - -"। इतने सारे असत्य तथ्यों के साथ,
गलत व्याकरण, विरोधाभास, और शायद धार्मिक बयानों में गलतियाँ (क्यों
क्या उन्हें अपवाद होना चाहिए?), कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है। यह भी देखें १३/१

010 9/48b: "- - - अल्लाह का फरमान प्रकट हुआ - - -"। "अल्लाह का फरमान" -
क़ुरान - में इतनी ग़लतियाँ आदि हैं, कि वे किसी सर्वज्ञ ईश्वर की ओर से नहीं हैं। अर्थात्:
या तो अल्लाह सर्वज्ञ नहीं है या वह अल्लाह की ओर से नहीं है। कुछ गंभीर रूप से गलत है।

०११ ९/५२: "क्या आप हमारे लिए (मुसलमान*) (कोई भाग्य) दो शानदार चीजों के अलावा देख सकते हैं -
(शहादत या जीत)?" **निश्चित रूप से हाँ: हम युद्ध को अमान्य देख सकते हैं। हम देख सकते हैं
परिवार नष्ट हो गए क्योंकि पति/पिता की मृत्यु हो गई है - या एक अमान्य। हम पर कर सकते हैं
दूसरी ओर पुरुषों को पड़ोसी देशों को नष्ट करने के बजाय अपने देश का निर्माण करते हुए देखें।
और हम युद्ध का पुरस्कार देख पा रहे हैं: क्रूर मानव और विनाश - एक युद्ध
कभी कुछ बनाता नहीं, नष्ट करता है।** यह कुछ विजेताओं को चोरी करने का मौका दे सकता है और
दबाओ और अमीर बनो - लेकिन एक भयानक कीमत के लिए। लेकिन इस कीमत का कुरान में कभी जिक्र नहीं है
और कभी परवाह नहीं करता।

***__इस्लाम एक ऐसी पिछड़ी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता प्रतीत होता है, जिसके सदस्य थे और
डिग्री देखने में असमर्थ हैं - या परवाह नहीं करते हैं - वे क्या तबाही और जीवन को नष्ट कर देते हैं
दूसरों पर, जब तक वे स्वयं अमीर और शायद शक्तिशाली बन जाते हैं। कोई कीमत नहीं है
एक अच्छे जीवन के लिए उच्च - - - जब तक दूसरों को इसके लिए भुगतान करना पड़ता है।__

०१२ ९/६०: "- - - मेल-मिलाप (सत्य से) - - -"। 9/48, 13/1 और कई अन्य देखें।

०१३ ९/६५: "- - - उसकी (अल्लाह की) निशानियाँ - - -"। कुरान में एक भी "चिह्न" नहीं है जो स्पष्ट रूप से है

अल्लाह से। 2/99 देखें।

014 9/70a: "- - - शहरों को उखाड़ फेंका।" जिसे हम मध्य पूर्व और आगे कहते हैं
पूर्व की ओर नगरों और नगरों और घरों के खंडहर थे। मुहम्मद ने समझाया कि
उनमें से प्रत्येक को अल्लाह ने नष्ट कर दिया था क्योंकि उन्होंने उसके खिलाफ पाप किया था।
गलत - एक शुष्क और जंगी इलाके में इतने सारे कारण हैं कि पुराने शहर भी क्यों हैं
खाली हो सकता है, कि इस्लाम को यह साबित करना होगा कि अल्लाह का माल्यार्पण किसी एक के लिए भी कारण था
उन्हें।

015 9/70b: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। कुरान में अल्लाह आदि के लिए कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं। देखो
2/99.

016 9/73 "हे पैगंबर (मुहम्मद*)!" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। **परिभाषा
एक नबी का वह व्यक्ति है जो:**

1. **का उपहार है और काफी करीब है
भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान से संबंध।**
2. **भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम
ज्यादातर सच हो जाते हैं।**
3. **इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है
भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है
मिशन।**

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है
कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी
जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि
उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, उल्लेख नहीं किया
दावा किया या दावा किया, कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है
कि भविष्य के बारे में उसने जो कुछ कहा वह सब/अधिकांश सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में वह और . दोनों
इस्लाम ने कहा और कहता है कि "कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से कोई चमत्कार नहीं जुड़ा था।
- भविष्यवाणी करना एक तरह का चमत्कार है। (यह अंतिम तथ्य भी सभी चमत्कारों का एक ठोस प्रमाण है
वहाँ हदीसों में वर्णित मुहम्मद से जुड़ी कहानियाँ हैं)। यह भी देखें 30/40a
और 30/46ए।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या
कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। वह केवल "उधार"
वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

**०१७ ९/१११: "अल्लाह ने ईमान वालों से उनके व्यक्ति और उनका माल मोल लिया है; - - - वे
उसके पक्ष में लड़ो, और घात करो और मारे जाओ; एक प्रतिज्ञा जो उस पर सच्चाई से, व्यवस्था के द्वारा, बान्धी हुई है,
सुसमाचार, और कुरान: - - -"। **यह वास्तव में मजबूत है:**

**अगर कुछ ऐसा है जो पूरी तरह से निश्चित है, तो वह यह है कि आपको हत्या करने या करने के लिए आदेश या उत्तेजना नहीं मिलती है
इंजील में धार्मिक शारीरिक युद्ध - यह 110% गलत है। (तलवार का उल्लेख है, लेकिन मानसिकता है
कुरान से बिल्कुल अलग। पूरी तरह से।)**

018 9/113: "- - - पैगंबर (मुहम्मद*) - - -।" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। **NS
पैगंबर की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:**

1. **का उपहार है और काफी करीब है
भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान से संबंध।**
2. **भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम
ज्यादातर सच हो जाते हैं।**
3. **इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है
भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है
मिशन।**

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है
कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी

जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि
उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, उल्लेख नहीं किया
दावा किया या दावा किया, कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है
कि भविष्य के बारे में उसने जो कुछ कहा वह सब/अधिकांश सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में वह और . दोनों

इस्लाम ने कहा और कहता है कि "कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से कोई चमत्कार नहीं जुड़ा था।
- भविष्यवाणी करना एक तरह का चमत्कार है। (यह अंतिम तथ्य भी सभी चमत्कारों का एक ठोस प्रमाण है
वहाँ हदीसों में वर्णित मुहम्मद से जुड़ी कहानियाँ हैं)। यह भी देखें 30/40a
और 30/46ए।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या
कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। वह केवल "उधार"
वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

019 9/116: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

020 9/117: "- - - पैगंबर (मुहम्मद*) - - -।" ऊपर 9/113 देखें।

021 9/128: "- - - ईमान वालों (मुसलमानों) के लिए वह (मुहम्मद*) सबसे दयालु और दयालु है।"
**गलत। उन्हें उकसाना और उन्हें युद्ध में जाने के लिए मजबूर करना और "मारना और मार डाला जाना" दयालु नहीं है।
- - - या अपंग। नफरत फैलाना ठीक नहीं है। यह पूर्ण प्रस्तुत करने की मांग करने के लिए दयालु नहीं है और
आज्ञाकारिता। और मानसिक, नैतिक रूप से, और दोनों तरह से गंभीरता से दुर्व्यवहार करना दयालु नहीं है
सामाजिक रूप से जो लोग उसके लिए युद्ध में नहीं जाते थे या अन्य तरीकों से उसकी बात नहीं मानते थे
अन्य बातें। वास्तव में वह हिटलर या माओ या "चाचा" की तरह ही दयालु और दयालु था
स्टालिन "या आक्रामक ज़ुलु राजा शाका।**

**"जब कोई आदमी - या भगवान - कुछ कहता है, लेकिन मांगता है या कुछ और करता है, तो हम उसकी मांगों पर विश्वास करते हैं
और उसके कामों में, उसके वचनों में नहीं।"**

सूरह ९: कम से कम २१ गलतियाँ + ३ की संभावना।

सूरह १०:

०१ १०/१: "- - - बुद्धि की पुस्तक (कुरान*)।" इतने सारे गलत तथ्यों के साथ, यह नहीं है a
ज्ञान की पुस्तक - और जब आप कई गलतियाँ देखते हैं, तो बाकी पर भरोसा करना मुश्किल है
पाठ, भी।

002 10/2a: "- - - हमने (अल्लाह*) ने अपनी प्रेरणा (कुरान*) एक आदमी (मुहम्मद*) को भेजी है।
आपस में?" इसके साथ ही कई गलतियाँ, आदि, कुरान एक सर्वज्ञ की ओर से नहीं है
भगवान।

००३ १०/२बी: "- - - सत्य का उच्च पद"। 9/48 और 13/1 देखें।

004 10/3a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

005 10/3b: "- - - अल्लाह, जिसने 6 दिनों में आकाश (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी को बनाया"।
भले ही बाइबल दिनों की एक ही संख्या कहती है, यह अत्यंत गलत है - - - और कोई भी देवता
यह जानता था। उतना ही बुरा: कुरान 8 दिन एक जगह कहकर खुद का खंडन करता है। यह भी
हालांकि कुरान में विरोधाभासों की कमी का दावा किया गया है, इस्लाम का दावा इस बात का सबूत है कि अल्लाह
मदर किताब। (परिणामस्वरूप गलतियों की उपस्थिति साबित करें कि अल्लाह ने नहीं बनाया
पुस्तक)।

006 10/4: "अल्लाह का वादा सच्चा और पक्का है"। अल्लाह से केवल ज्ञात वादे हैं
कुरान में मिलता है। लेकिन कुरान में इतना गलत है कि उस पर भी भरोसा करना नामुमकिन है
वादों को अल्लाह की ओर से कहा गया है। इसलिए वे निश्चित से बहुत दूर हैं - या इससे भी बदतर।

००७ १०/५: "- - - उसकी (अल्लाह की) निशानियाँ - - -।" कुरान में एक भी निशानी नहीं है जो साबित हो
अल्लाह से आओ।

**008 10/6: "- - - स्वर्ग - - -"। यह और शब्द बहुवचन में प्रयोग किया जाता है जैसे 190 बार in
क़ुरान। (शब्द "आकाश", "सात आकाश", "आकाश", "सात पथ", और "सात"
फ़र्ममेंट" का प्रयोग बहुवचन में कम से कम 199 बार किया जाता है - इसमें कोई संदेह नहीं है कि कुरान
7 स्वर्गों में विश्वास करता है)। शब्द के बहुवचन से तात्पर्य है कि में सही खगोल विज्ञान क्या था?
मुहम्मद के समय में मध्य पूर्व: कि तारे, ग्रह, सूर्य और चंद्रमा थे
7 अदृश्य, लेकिन मजबूत आकाश के लिए स्थिर गोलार्द्धों की तरह बनता है (वास्तव में यूनानियों को पता था
पृथ्वी एक गोला थी, इसलिए तब वहाँ के आकाशों को गोलाकार होना था) पृथ्वी के ऊपर। अरब
और कई अन्य लोगों को यह चित्र ग्रीक और फारसी खगोल विज्ञान से मिला है। मुसलमान आज
निश्चित रूप से जानते हैं कि यह गलत है, और 7 आकाशों को अलग-अलग तरीकों से "व्याख्या" कर रहे हैं - अस्पष्ट से
अंतरिक्ष के बारे में विचार, यह बताने के लिए कि इसका मतलब कुछ और है - वे कहते हैं - पुराने अरब में
संख्या 7 का अर्थ "कई" भी हो सकता है (जैसे कि इस मामले में 7 से अधिक सही है), और to
वायुमंडल में 7 परतों का जिक्र करते हुए (बिना यह बताए कि तारे किस तरह से तय किए गए थे
स्वर्ग के सबसे निचले हिस्से में, या यह समझाते हुए कि पुनरुत्थित भौतिक मनुष्य कैसे ऊपर चल सकते हैं
वहाँ, जो कुरान बताता है), आदि। आश्चर्यजनक रूप से अब तक हमारे समूह में से कोई भी एक से नहीं मिला है
मुस्लिमों ने उल्लेख किया है कि मुहम्मद के समय में 7 स्वर्ग सही खगोल विज्ञान थे -
हो सकता है कि वे इसका उल्लेख न करना पसंद करें, क्योंकि तार्किक अगला प्रश्न तब है: **एक भगवान जानता था
कोई 7 स्वर्ग नहीं थे, मुहम्मद का मानना था कि वहाँ थे। फिर कुरान किसने बनाया?**

009 10/6: "- - - संकेत - - -"। अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

010 10/7: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

011 10/13: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। अल्लाह के लिए या मुहम्मद के लिए कोई स्पष्ट संकेत नहीं है
सभी कुरान। 2/99 देखें।

012 10/15: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। गलत। 10/13 के ठीक ऊपर और 2/99 देखें।

०१३ १०/१७: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

014 10/18: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

*०१५ १०/१९: "मानव जाति केवल एक राष्ट्र थी - - -"। मानव जाति कभी नहीं बल्कि एक राष्ट्र थी। शायद
एक बार एक जनजाति, जैसा कि कुछ मुसलमान समझाने की कोशिश करते हैं, लेकिन कभी एक राष्ट्र नहीं - और वह मामला था
कुछ 200ooo साल पहले। आप भी कभी-कभी मुसलमानों से मिलते हैं जो विजयी होकर कहते हैं कि विज्ञान ने
कुरान को साबित किया, क्योंकि अब उन्हें प्रागैतिहासिक ईव और प्रागैतिहासिक आदम मिल गया है
- - - यह उल्लेख किए बिना कि प्रागैतिहासिक ईव लगभग 160ooo - 200ooo साल पहले रहता था (the
संख्या कुछ भिन्न होती है) अफ्रीका में, जबकि प्रागैतिहासिक आदम लगभग 60 वर्ष पहले रहता था
केवल, और एशिया में संभावना नहीं है। आदम के जन्म से १०० साल पहले हव्वा की मृत्यु हो गई थी - और a
लंबी दूरी की दूरी - यह देखना मुश्किल है कि वे मनुष्य के "माता-पिता" कैसे हो सकते हैं, और इस प्रकार साबित करते हैं
क़ुरान।

०१६ १०/२१: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०१७ १०/२४: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

००ए १०/२७: "लेकिन जिन्होंने बुराई अर्जित की है उन्हें बुराई की तरह का इनाम मिलेगा - - -"। मुहम्मद, हिस
पुरुषों और उनके उत्तराधिकारियों ने बहुत अधिक बुराई की - चोरी करना/लूटना, बलात्कार करना, गुलाम बनाना,

स्थानों और जीवन और भूमि और संस्कृतियों को नष्ट करना, जबरन वसूली करना, आतंकित करना, यातना देना, हत्या करना,
घृणा और युद्ध और सामूहिक हत्याओं और अन्य मनुष्यों के दमन के लिए उकसाना - केवल इतना ही था
एक भगवान द्वारा स्वीकृत, मुहम्मद के अनुसार, हालांकि एक भगवान है कि मामले में न तो था
सर्वज्ञ, न ही सर्वशक्तिमान (उन्हें पूर्व में चमत्कारों के लिए सभी प्रश्नों की व्याख्या करनी पड़ी - कुछ
स्पष्ट रूप से तार्किक रूप से अमान्य दावों के साथ) - उन्हें "इनाम" देने में काफी समय लगेगा

बुराई की तरह। "

०१८ १०/३१: "'- - - वह कौन है जो सभी मामलों को नियंत्रित और नियंत्रित करता है?' वे (गैर-मुसलमान) जल्द ही कहो, 'अल्लाह'"। गलत। अन्य धर्मों के लोग अपने स्वयं के भगवान (या देवताओं) का नाम रखेंगे। (हालांकि उस समय के गैर-मुस्लिम अरब अल-लाह कह सकते हैं - पुराने बहुदेववादी अरब शीर्ष देवता, एक नाम यह अल्लाह की तरह लगता है।)

019 10/32a: "- - - सत्य (कुरान) - - -"। 13/1 देखें।

00b 10/32b: "- - - सत्य के अलावा, त्रुटि के अलावा क्या रहता है?" यह बहुत स्पष्ट है कि अधिकांश कुरान में जो कहा गया है वह सच नहीं है - और फिर **"त्रुटि के अलावा क्या रहता है"?**

०२० १०/३३: "इस प्रकार तेरे पालनहार (अल्लाह*) का वचन सत्य सिद्ध हुआ - - -"। परेशानी यह है कि वाक्य का अर्थ कुछ भी नहीं है - पास-पड़ोस में प्रमाण के समान दूर-दूर तक कुछ भी नहीं है। यह १०/३१ का उल्लेख कर सकता है, लेकिन जो कहा गया है उसका प्रमाण से कोई लेना-देना नहीं है - और अधिकांश गैर-मुसलमान इच्छित उत्तर भी नहीं देंगे (और यदि उन्होंने किया भी, तो यह कोई प्रमाण नहीं था)। इस तर्क-वितर्क के योग्य ईश्वर नहीं है - एक नाबालिग भी नहीं, दूर में छिपा अशिक्षित कोने।

०२१ १०/३४: "- - - तुम (लोग*) कैसे बहक गए (सच्चाई से (सच्चाई की शिक्षा) कुरान*))"। कुरान सबसे अच्छा केवल आंशिक रूप से सत्य है। 13/1 देखें।

022 10/35a: "- - - वह (अल्लाह*) जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है?" पुराना सवाल - यह मुहम्मद के उपदेश शुरू करने के कुछ समय बाद ही प्रकट हुए: क्या वास्तव में इसके पीछे कोई ईश्वर है? कुरान? - एक किताब जिसमें कई गलत तथ्य हैं? संभव नहीं।

०२३ १०/३५बी: "- - - सत्य की ओर?" उस कई गलतियों के साथ कुरान की शिक्षाएँ सबसे अच्छी हैं आंशिक रूप से सच है।

024 10/35c: "यह अल्लाह है जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है- - -"। उसमें कोई मार्गदर्शन नहीं कई गलतियाँ और अमान्य और यहाँ तक कि गलत कथन और प्रमाण। 10/35a और 13/1 देखें।

०२५ १०/३५डी: "तो क्या वह (अल्लाह*) जो सत्य को मार्गदर्शन देता है - - -"। 10/35 और 13/1 देखें।

०२६ १०/३६: "- - - सत्य (कुरान*)"। 10/35 और 13/1 देखें।

**०२७ १०/३७ए: "यह कुरान ऐसा नहीं है जो अल्लाह के अलावा अन्य द्वारा निर्मित किया जा सकता है - - -"। बहुत गलत। कई अच्छे लेखक के संग्रह से जितनी अच्छी और बेहतर कहानियां लिख सकते हैं कुरान में सूरह। इस्लाम जो कहता है उसके बावजूद कुरान अच्छा साहित्य नहीं है। यह वही कहानियां बार-बार दोहराई जाती हैं। उन्हें अक्सर ठीक से नहीं बताया जाता है। कोई नया नहीं है कहानियाँ या विचार - केवल कहानियाँ और विचार जो दूसरों से उधार लिए गए हैं। ईमानदारी से के बड़े हिस्से किताब बल्कि सुस्त पढ़ रहे हैं। और कल्पित उच्च गुणवत्ता मुहम्मद की अरब भाषा? - क्या मुसलमानों ने शायद ही कभी उल्लेख किया है कि भाषा को पूर्ण करने में लगभग 250 साल लगे - ऐसा नहीं था लगभग 900 ईस्वी तक कि इसे आज की भाषा जैसा कुछ मिल गया था। यह बहुत में भी मौजूद था एक से अधिक पाठ। एक बात तो मुहम्मद (हदीस के अनुसार) ने भी कहा कि भेजा गया है

7 किस्मों में नीचे जो सभी सत्य थे - भले ही विवरण अलग थे। एक और बात के लिए कुछ पुराने, मूल ग्रंथ "आधिकारिक" के बाद लंबे समय तक मुस्लिम दुनिया में मौजूद रहे। एक 650 ईस्वी के आसपास समाप्त हो गया था (**किसी समय कम से कम 14 कैनोनाइज्ड किस्में थीं - 2 का उपयोग आज भी किया जाता है: हाफ और वार्श,** लेकिन अधिकांश अशिक्षित मुसलमान इसे जानते भी नहीं हैं)। अभी भी एक और बात के लिए ग्रंथों को समय के साथ थोड़ा बदल दिया गया है - कम से कम 1972 में यमन में पाए गए बहुत पुराने कुरानों में "छोटे, लेकिन महत्वपूर्ण अंतर" थे आधुनिक संस्करण। हावी कुरान आज (हाफ्स), वह संस्करण है जो आधिकारिक था मिस्र जब पहली बार 1924 में छपा था, जैसा कि हमने पढ़ा है। Warsh के बाद का संस्करण है अफ्रीका के कुछ हिस्सों में उपयोग किया जाता है। प्रस्तावना भी देखें (तत्कालीन 14 विहित लोगों की सूची)।

**०२८ १०/३७बी: "- - - यह (रहस्योद्घाटन) की पुष्टि है जो इससे पहले (बाइबल*) - - -" गई थी। सोच और नैतिकता के बीच बहुत अधिक और बहुत गहरे अंतर हैं कुरान और बाइबिल - विशेष रूप से NT। कुरान इसकी कोई रचना नहीं है, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है - मतभेद बहुत मौलिक हैं।

029 10/37c: "- - - पुस्तक (कुरान*) - जिसमें कोई संदेह नहीं है - - -।" सभी की वजह से
एक सर्वज्ञानी अच्छे से नीचे भेजे जाने के लिए कहा गया एक किताब में गलतियों, बहुत संदेह है।

030 10/37d: "- - - संसार।" कुरान की 7 दुनियाओं का एक और संदर्भ (65/12)।
गलत।

**०३१ १०/३९: "--- (कुरान*) जिसका ज्ञान वे नहीं कर सकते, - - -"। के लिए
मुहम्मद के शुरुआती अनुयायियों के अशिक्षित, अक्सर एनाल्फ़ैबेटिक सदस्य, यह सच हो सकता है,
प्रश्न को छोड़कर: सबसे अधिक ज्ञान किसके पास है - बिना ज्ञान वाला, या एक
बहुत गलत ज्ञान के साथ?. लेकिन यह आज किसी भी मामले में सच नहीं है - और हम देखते हैं कि बहुत कुछ
मुहम्मद ने जिन "तथ्यों" का इस्तेमाल किया, वे गलत हैं - कुछ ऐसा जो एक भगवान को पता था।

*०३२ १०/४७: "हर लोगों के लिए (भेजा गया) एक दूत"। हदीस में 124ooo दूतों का उल्लेख है
या भविष्यद्वक्ता। **पुराने में एकेश्वरवाद की शिक्षा देने वाले भविष्यवक्ताओं का एक भी निशान नहीं है
समय (इज़राइल को छोड़कर), न तो पुरातत्व, कला, साहित्य, लोक कथाओं में, न ही धर्मों में।
उनमें से कुछ को कम से कम छोटे निशान छोड़ जाने चाहिए थे, जब वे इतने थे।** यह श्लोक
यह सच नहीं है।

00c १०/५२: "तु (पापियों*) को मिलता है, लेकिन जो कुछ तुमने कमाया है उसका प्रतिफल!" क्या वाकई सच है
नरक में भयानक और चिरस्थायी सजा में न्याय, आखिरकार बहुत बड़ा नहीं है
कई पापियों के पाप?

०३३ १०/५५ए: "- - - स्वर्ग - - -"। 2/22a देखें।

०३४ १०/५५बी: "क्या यह (मामला) नहीं है कि अल्लाह का वादा (कुरान*) निश्चित रूप से सच है?" NS
कुरान इस मामले में दूसरों की तरह साबित करता है कि यह सच नहीं है - बहुत सारी गलतियाँ, आदि।

०३५ १०/५७ए: "(कुरान है*) एक मार्गदर्शन - - -।" एक किताब जिसमें इतना गलत है, नहीं है
दिशा निर्देश।

00d 10/57b: "(कुरान है *) एक दया।" **क्या इतना दमन, बलात्कार, कोई किताब कर सकती है,
चोरी/डकैती, खून और हत्या और युद्ध, दया हो?**

०३६ १०/६४ए: "- - - खुशखबरी - - -।" 2/97c और 61/13 देखें।

309

पेज ३१०

***०३७ १०/६४बी: "इसके बाद; अल्लाह के शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। यह वास्तव में है
सर्वोच्च फेलिसिटी। " पहला वाक्य आंशिक रूप से समझा सकता है कि मुसलमान इसे स्वीकार क्यों नहीं कर सकते हैं
गलतियाँ, चाहे उन्हें कितनी भी बेतुकी "व्याख्या" का उपयोग करना पड़े। दूसरा स्पष्ट रूप से है
गलत - देखें एफ। भूतपूर्व। 10/39।

इसके अलावा: **यह सूरा मुहम्मद सीए द्वारा तय किया गया था। 621. में कई परिवर्तन हुए
उसके बाद इस्लाम - इस्लाम ने अपने मूल तत्व को भी शांतिपूर्ण से बदलकर पूरी तरह से बदल दिया
लूट, नफरत और युद्ध का धर्म।** कई गलतियां भी थीं जिन्हें अब विज्ञान देखता है
कि "तथ्य" वास्तविकता से बदल जाते हैं, और कई "संकेत" और "सबूत" थे कि
तर्क के नियम वास्तव में उस क्षण बदल गए जब उनका उच्चारण किया गया था (केवल मुसलमान नहीं करते हैं)
जानना)।

०३८ १०/६६: "- - - स्वर्ग - - -"। 2/22a देखें।

039 10/67: "- - - संकेत - - -।" 2/39 देखें।

00e 10/68a: "अल्लाह ने एक बेटा पैदा किया!" अविश्वास में एक विस्मयादिबोधक। लेकिन यीशु अनेक, अनेक
परमेश्वर/याहवेह को उसका पिता कहा जाता है (शब्द "पिता" (यीशु का) परमेश्वर/याहवे के लिए प्रयोग किया जाता है
NT में कम से कम 163 बार और "बेटा" (भगवान/याहवे का) शब्द का प्रयोग कम से कम 66 बार यीशु के लिए किया जाता है।)
कभी-कभी इसका अर्थ आलंकारिक रूप से होता है, लेकिन अधिकांश बार यह स्पष्ट होता है कि इसका शाब्दिक अर्थ है।

०४० १०/६८बी: "- - - स्वर्ग - - -"। गलत। 2/22a देखें।

०४१ १०/७१: "- - - अल्लाह की निशानियाँ - - -"। अल्लाह के लिए कोई तार्किक संकेत/सबूत नहीं हैं (या इसके लिए)

मुहम्मद) सभी कुरान में। 2/99 देखें।

***042 10/73: "हे पैगंबर! (मुहम्मद*)" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। **NS**
पैगंबर की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. **का उपहार है और काफी करीब है भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान से संबंध।**
2. **भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम ज्यादातर सच हो जाते हैं।**
3. **इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है मिशन।**

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, उल्लेख नहीं किया दावा किया या दावा किया, कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि भविष्य के बारे में उसने जो कुछ कहा वह सब/अधिकांश सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में वह और . दोनों इस्लाम ने कहा और कहता है कि "कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से कोई चमत्कार नहीं जुड़ा था। - भविष्यवाणी करना एक तरह का चमत्कार है। (यह अंतिम तथ्य भी सभी चमत्कारों का एक ठोस प्रमाण है वहाँ हदीसों में वर्णित मुहम्मद से जुड़ी कहानियाँ हैं)। यह भी देखें 30/40a और 30/46ए।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। वह केवल "उधार" वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

043 10/74: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। गलत। 10/71 के ठीक ऊपर और 2/99 देखें।

०४४ १०/७५: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें

०४५ १०/८२ए: "और अल्लाह अपने शब्दों (कुरान) से अपने सत्य को सिद्ध और स्थापित करता है, - - -"। गलत। कुरान के शब्द अल्लाह के बारे में कुछ भी साबित नहीं करते हैं, जब तक कि पहले यह साबित न हो जाए कि यह वास्तव में अल्लाह ने बनाया था, और यह कि अल्लाह ने वास्तव में कुरान के अनुसार बनाया और किया है। यह है अधिक से अधिक आंशिक रूप से केवल सत्य - बहुत अधिक गलतियाँ।

०४६ १०/८२बी: "- - - और उसके (अल्लाह के *) सत्य को स्थापित करें, - - -"। यह अच्छी तरह से स्थापित है कि एक बड़ा कुरान में कई तथ्य गलत हैं। सर्वोत्तम रूप से पुस्तक आंशिक रूप से सत्य है।

०४७ १०/८७अ: "मिस्र में अपने (मूसा'*) लोगों के लिए आवास प्रदान करें - - -"। गलत - और ए बाइबिल और कुरान दोनों के अनुसार वास्तविकता के साथ विरोधाभास। कुरान के अनुसार यहूदी मिस्र में लंबे समय तक रहे थे, और बाइबिल के अनुसार इतने लंबे समय तक 430 वर्ष (1. मो. 12/40) की राशि। उनके पास आवास थे - मूसा को बताने का कोई कारण नहीं ऐसे प्रदान करें। और भी मूर्खतापूर्ण: जब वे सब चाहते थे तो (नए) आवास क्यों प्रदान करें करना, मिस्र छोड़ना था?

०४८ १०/८७बी: "- - - खुशखबरी - - -।" सबसे अच्छा आंशिक रूप से ही सच है। ऊपर 2/97c और 61/13 . देखें नीचे।

**०४९ १०/९०ए: "लंबे समय में, जब बाढ़ से अभिभूत, उन्होंने (फिरौन रामसेस II*) ने कहा: - - -"। हम रामसेस II के बारे में बहुत कुछ जानते हैं - वह वास्तव में महान फिरौन में से एक था, और बहुत कुछ सामग्री अपने समय से मौजूद है। एक बात जो हम जानते हैं, वह यह है कि वह डूबा नहीं था (नहीं था "बाढ़ से अभिभूत")।

*०५० १०/९०बी: "मैं (रामसेस II) का मानना है कि उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है जिसके बच्चे हैं इज़राइल में विश्वास है: मैं उन लोगों में से हूं जो (इस्लाम में अल्लाह के लिए) (= मुस्लिम बन गए)"। एक

रामसेस II (10/90 देखें) के बारे में हम और अधिक जानते हैं कि वह एक बहुदेववादी था और कभी नहीं था मुस्लिम।

०५१ १०/९२: "- - - हमारी (अल्लाह की) निशानियाँ!" कुरान में एक भी निशानी नहीं है जो निश्चित रूप से है अल्लाह से। एक नहीं।

०५२ १०/९४ए: "- - - सत्य (कुरान*) वास्तव में तुम्हारे पास आया है - - -"। एक बार फिर: साथ में कई गलतियाँ, कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है।

०५३ १०/९४बी: "- - - वास्तव में आपके भगवान (अल्लाह *) से सच्चाई आपके पास आ गई है: - - -"। एक बार भी और अधिक: क्या इतने सारे गलत तथ्यों वाली किताब एक भगवान द्वारा बनाई जा सकती है?

०५४ १०/९४ सी: "- - - संदेह करने वालों से सावधान रहें (इस्लाम के बारे में)।" सभी गलतियों आदि के साथ कुरान, संदेह में नहीं होना सरासर भोलापन है, और कम से कम तथ्यों की जांच करें।

*०५५ १०/९५: "- - - अल्लाह की निशानियाँ - - -"। अल्लाह के लिए कोई वास्तविक संकेत / प्रमाण नहीं हैं कुरान - केवल दावे सिद्ध बयान नहीं। 2/99 देखें।

311

पेज ३१२

***०५६ १०/९६: "जिनके विरुद्ध तेरे रब का वचन प्रमाणित हुआ है - - -।" वह एक है इस्लाम के लिए मुख्य समस्याओं में से - जैसा कि मुहम्मद के लिए था: इसका कोई वास्तविक सत्यापन मौजूद नहीं है इस्लाम - एक भी प्रमाण नहीं और एक जगह नहीं। केवल सस्ते शब्द और दावा है कि में कोई मामला सत्यापित नहीं है। लेकिन अंध विश्वास की स्तुति और मांग आपको बहुत लगती है।

जब भी हम ऐसे लोगों से मिलते हैं जो झांसा देते हैं और झांसों का बचाव करते हैं तो महिमामंडन का जिक्र नहीं करते अंध विश्वास - जैसे यहाँ - हमारे लिए जो न केवल दृढ़ता से इंगित करता है कि उनके पास कोई वास्तविक नहीं है तर्क, लेकिन यह भी कि वे इसे स्वयं जानते हैं, और केवल इच्छाधारी सोच का बचाव करने का प्रयास करते हैं या विश्वास जो वे मानसिक रूप से सवाल करने में असमर्थ हैं - और बेईमानी के माध्यम से इसका बचाव करने के लिए।

057 10/97: "- - - साइन - - -।" 2/39 देखें।

०५८ १०/१०१: "- - - स्वर्ग - - -"। गलत। 2/22a देखें।

०५९ १०/१०८: "अब सत्य तुम्हारे रब (अल्लाह*) की ओर से तुम तक पहुँच गया है।" 10/94 और 13/1 देखें।

सूरह 10: कम से कम 59 गलतियाँ + 5 संभावित गलतियाँ।

यहाँ तक का योग (सूरह १ - १०): ५१७ गलतियाँ + ७३ संभावित गलतियाँ।

II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 3 (= II-1-4-3)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। NS "पूर्ण" सूची - "विश्वकोश" - सूरह पर आधारित और पद संख्या

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें। धारा 1 से 16.

कुछ स्पष्ट तथ्य गलतियाँ और सुरह में त्रुटियाँ ११ से २० . तक कुरान में - की पवित्र पुस्तक

मुहम्मद, मुसलमान,इस्लाम, और

टिप्पणियों को ३ नंबरों (०० या ० सहित) द्वारा क्रमांकित किया गया, कुछ स्थानों के बाद एक छोटा
पत्र = स्पष्ट गलतियाँ। टिप्पणियों की संख्या 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षर (बड़ा या .)
छोटा) = संभावित गलती।

सूरह ११:

*००१ ११/१: "- - - एक से जो बुद्धिमान और अच्छी तरह से परिचित है (सभी चीजों के साथ)"। गलत
कुरान के तथ्य बताते हैं कि वह सभी चीजों से अच्छी तरह परिचित नहीं है। या वो कोई
वरना कुरान बनाया।

**002 11/2: "(कहो) 'वास्तव में, मैं (भेजा) हूं (भेजा) आप (लोगों*) से उसकी (अल्लाह*) - - -"।
इब्न वार्राक के अनुसार अरब मूल में "(कहो)" शब्द मौजूद नहीं है। इसका मत
कि यहाँ यह मुहम्मद है जो बोलता है। ऐसी कुछ जगहें हैं (8? + फ़रिश्ते बोल रहे हैं)
कुरान में। लेकिन यह कैसे संभव है कि मुहम्मद एक किताब में बोलते हैं ((?)
अल्लाह द्वारा बनाया गया है या अनंत काल से अस्तित्व में है - और अल्लाह द्वारा भेजा गया है? (कुछ मुसलमान कहते हैं
शब्द बस भूल गया है - लेकिन कितने और शब्द भूल गए होंगे
कुरान?)

003 11/7a: "वह (अल्लाह *) है जिसने आकाश (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी को छह में बनाया
दिन" - और दूसरी जगह 8 दिन (विरोधाभास) कहती है। एक बार और: इसमें बहुत अधिक समय लगा।
और कोई भी भगवान जानता है कि - लेकिन मुहम्मद ने नहीं किया। (मुसलमान कभी-कभी कहते हैं कि अरब
दिन के लिए शब्द का अर्थ कल्प भी हो सकता है, लेकिन जैसा कि हमने शब्द का यह अनुवाद no . में पाया है
गुणवत्ता की किताब और इसे वास्तव में किसी भी शिक्षित व्यक्ति से नहीं सुना, यह एक स्पष्ट प्रयास प्रतीत होता है
इस भूल को दूर करें)। 4 मेगा गलतियाँ भी देखें।

004 11/7b: "- - - स्वर्ग - - -"। गलत। 2/22a देखें।

00a 11/14a: "- - - यह रहस्योद्घाटन (कुरान*) नीचे भेजा जाता है - - -"। बस यही सवाल है
इस्लाम: कोई भी ईश्वर इतनी गलतियों आदि से भरी किताब नहीं भेजता है।

००५ ११/१४बी: "- - - यह रहस्योद्घाटन (कुरान') के ज्ञान के साथ नीचे भेजा गया है (पूर्ण)
अल्लाह, - - -"। खैर, सभी गलतियाँ यही दर्शाती हैं कि या तो यह किसी सर्वज्ञ भगवान ने नहीं बनाया है या फिर
कुछ और गलत है।

*006 11/14c: "यदि तब वे (आपके झूठे देवता) आपके (आह्वान) का उत्तर नहीं देते हैं, तो जान लें कि यह
रहस्योद्घाटन (कुरान *) अल्लाह के ज्ञान के साथ (पूर्ण) नीचे भेजा जाता है, - - -"। ये है
तार्किक रूप से १००% गलत, जैसे कि झूठे देवता या अन्य देवता उत्तर दें या नहीं, कुछ भी साबित नहीं करता
अल्लाह के बारे में। केवल एक चीज जो अल्लाह को सिद्ध कर सकती है, वह है अचूक उत्तर या कर्म
अल्लाह। क्या कोई भगवान अपने - ज्यादातर अनपढ़ और अशिक्षित - दर्शकों को सस्ते और में धोखा देने की कोशिश करेगा?
इस तरह आदिम तरीके? यदि; उसे उन्हें धोखा देने की आवश्यकता क्यों पड़ी? और: वहाँ कभी नहीं था
स्पष्ट उत्तर असंदिग्ध रूप से अल्लाह का निर्माण करते हैं।

007 11/17a: "- - - स्पष्ट (चिह्न) - - -"। 2/99 देखें।

इसके अलावा: अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अनुसंधान अकादमी (इस तरह मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक
विषयों) दिनांक २७. दिसंबर १९९८ के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं
अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि
अल्लाह के लिए कोई पुतला नहीं है और उसे पटाना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है
के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है।

008 11/17b: "इसमें संदेह न करें (सच्चाई - कुरान - अल्लाह से *)"। गलत। NS
कुरान गलतियों आदि से इतना भरा है कि इसमें संदेह न करना पूरी तरह से भोला है।

009 11/17c: "- - - तुम्हारे रब की ओर से सच्चाई (अल्लाह*) - - -"। या तो यह गलती है कि कुरान एक सर्वज्ञ ईश्वर की ओर से है, या यह एक गलती है कि अल्लाह सर्वज्ञ है। बहुत ज्यादा गलत है पुस्तक।

०१० ११/२२: "निःसंदेह, ये (गैर-मुस्लिम) वही हैं जो सबसे ज्यादा हारेंगे आख़िरत में"। कुरान में सभी गलतियाँ, गलत तर्क आदि यह बहुत स्पष्ट करते हैं कि यह नहीं है एक भगवान से। आंशिक रूप से उसकी वजह से - और यह अकेला इस बात का 100% प्रमाण है कि कुछ है गलत - इस्लाम एक वास्तविक धर्म है इस पर संदेह करने का हर कारण है। और अगर यह बना हुआ है धर्म - और इस्लाम के विपरीत साबित करने के लिए एक कठिन काम होगा - इसके लिए हर कारण है संदेह है कि मुसलमान दूसरों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करेंगे। इसके विपरीत: यदि कोई वास्तविक मौजूद है धर्म और अगर यह एक अच्छे भगवान द्वारा चलाया जाता है, तो मुसलमानों के साथ अच्छा नहीं होगा यदि वे रहते हैं कुरान की भयानक नैतिकता के अनुसार, इससे भी बदतर नैतिक कोडेक्स, का अमानवीय व्यवहार साथी मानव, लेकिन गैर-मुस्लिम, प्राणी, आदि।

011 11/28: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। इस मामले में यह नूह कहा जाता है जो बोल रहा था, और कुरान के अनुसार नूह एक समर्पित मुसलमान था - - - लेकिन कोई स्पष्ट नहीं था अल्लाह के विषय में किसी भी चीज़ के लिए हस्ताक्षर / प्रमाण - कुछ भी सिद्ध नहीं होता है। (यह उनमें से एक है मुहम्मद और इस्लाम द्वारा अंध विश्वास की मांग और महिमामंडन करने के मुख्य कारण)।

०१२ ११/४०अ: "--- और पृथ्वी के सोते फूट पड़े (और नूह* के लिए जलप्रलय बना दिया) - - -।" कुरान स्पष्ट रूप से यह नहीं कहता है कि बाढ़ ने पूरी दुनिया को कवर किया, और जैसे हैं ऐसी बाढ़ का कोई निशान नहीं मिला, कई मुसलमान आपको यह बताने की कोशिश करते हैं कि बाढ़ केवल क्षेत्रीय थी। पढ़े-लिखे मुसलमान ईमानदारी से ऐसा नहीं मान सकते, लेकिन पढ़े-लिखे लोग जानते हैं कि यह एक और बात है असत्य कहानी - एक और अल-तकिया या किटमैन - क्योंकि कुरान स्पष्ट रूप से बताता है कि अर्की सीरिया के एक ऊँचे पहाड़ पर समाप्त हुआ, कुछ ऐसा जो पानी के इतने ऊँचे स्तर की माँग करता है कि यह शारीरिक रूप से असंभव था जब तक कि बाढ़ सार्वभौमिक न हो (पानी गैर-बाढ़ वाले स्थान यदि नहीं)। शायद हमारे समुद्र तल से 1000 मीटर ऊपर?

लेकिन यह इस कविता के लिए एक समस्या है। वास्तव में बड़ी मात्रा में पानी - देना 1000 . हो सकता है दुनिया भर में पानी का मीटर - विशाल छोड़े बिना पृथ्वी से बाहर नहीं निकल सकता है वहां खाली छेद - या तो वास्तव में खाली, या कम से कम अत्यधिक कम दबाव के साथ, (हालांकि सबसे अधिक संभावना खाली है, क्योंकि पानी को संपीड़ित करना और फिर गशिंग की व्याख्या करना लगभग असंभव है पानी के विस्तार के साथ (पानी को दोगुने घनत्व तक संपीड़ित करने के लिए, हमने पढ़ा है कि आपको इसकी आवश्यकता है ४४००००० किग्रा/सेमी २ का दबाव - या . के केंद्र पर दबाव का लगभग ३० गुना धरती))। ये छेद स्थिर होने के लिए बहुत बड़े होंगे (पर्याप्त पानी रखने के लिए), और ढह जाएगा। पृथ्वी पर कहीं भी इतने बड़े ढहने के निशान नहीं हैं।

(यह यहाँ अन्य स्थानों के बीच में है जहाँ आपको बाढ़ की तरह स्पष्टीकरण मिलेगा = का भरना भूमध्यसागरीय बेसिन - एक कहानी इतनी स्पष्ट रूप से एक अल-तकिया (वैध झूठ) कि यह अरुचिकर है। वह भरण ४-५ मिलियन वर्ष पहले हुआ था, और आधुनिक मनुष्य के अस्तित्व में आने से बहुत पहले। इसके अलावा ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि अफ्रीका और यूरोप धीरे-धीरे अलग हो गए और जिब्राल्टर की जलडमरूमध्य बहुत धीरे-धीरे खुला - सेंटीमीटर प्रति वर्ष - जिसका अर्थ है कि उद्घाटन और इस प्रकार धारा पानी छोटा था। भरने में सौ साल लग गए और यह और भी बहुत कुछ हो सकता है जल स्तर धीरे-धीरे बढ़ रहा है - साल में एक या कुछ मीटर - और प्रलय जैसा कुछ नहीं नूह की बाढ़। किसी भी पढ़े-लिखे मुसलमान के पास पहले चेक न करने का बहाना है इस तरह की कहानियाँ सुनाना, खासकर जब से यह शिक्षित लोगों के बीच एक प्रसिद्ध तथ्य है, और इस तरह की कहानी को गढ़ने से पहले वे वास्तविक तथ्यों से अवगत होने की सबसे अधिक संभावना है।

**०१३ ११/४०बी: "हम (अल्लाह*) ने कहा (नूह से*) जानवर*) दो - नर और मादा, और आपका परिवार - - -"। कुरान के बारे में कुछ नहीं कहता

सन्दूक का आकार। लेकिन वैज्ञानिक पत्रिका लेक्सिकॉन के अनुसार बाइबल कहती है कि लगभग २०० मी

लंबा, कोई 30 मीटर चौड़ा और कोई 12 मीटर ऊंचा और 3 मंजिलें। यह कुछ १८००० वर्ग बनाता है
मीटर मोटे तौर पर बोल रहा हूँ। (एनआईवी ३०० हाथ लंबा, ५० हाथ चौड़ा और ३० हाथ ऊंचाई बताता है =
140 मीटर लंबा, 23 मीटर चौड़ा और 13, 5 मीटर ऊंचा। 3 मंजिलों के साथ इसका मतलब है कि लगभग 9600 वर्ग मीटर। केवल।)
लेकिन 10 से अधिक प्रकार के "सामान्य" जानवर हैं, लगभग 2oo प्रकार के पक्षी,
और कम से कम 10 मिलियन प्रकार के कीड़े और अन्य कीट जैसे जानवर, और आसानी से एक लाख अन्य
छोटे जानवर - जैसे स्लग, कीड़े, आदि। इतने सारे लोगों के लिए बस पर्याप्त जगह नहीं होगी,
प्रत्येक में से 2 का उल्लेख नहीं करना। इसके अलावा यह सभी जानवरों के लिए भोजन का सवाल होगा। NS
यात्रा कितने समय तक चली, इसके बारे में कुरान कुछ नहीं कहता, लेकिन बाइबिल के अनुसार इसमें कितना समय लगा
एक वर्ष से अधिक। यह इतने सारे जानवरों के लिए एक हेक्टेयर बहुत अधिक भोजन लेगा - और कैसे
क्या उन्होंने एफ. भूतपूर्व। मांसाहारियों के लिए मांस स्टोर करें, या कुछ मकड़ियों आदि के लिए जीवित कीड़े? सभी कि
भोजन बहुत अधिक जगह लेगा - स्वयं जानवरों की तुलना में बहुत अधिक। में असंभव
वह "छोटी" नाव। और उसके ऊपर, विशेष के लिए विशेष भोजन का सवाल था
जानवर - कोयल के लिए नीलगिरी के पत्ते f. भूतपूर्व। यह और भी संभव है कि अदन की वाटिका
विज्ञान के अनुसार इराक के दक्षिण में था (यदि यह कभी अस्तित्व में था) - और फिर वहाँ है
सवाल जहां उन्हें एफ मिला। भूतपूर्व। बारहसिंगा, ध्रुवीय भालू, कैरिबस, कोंडोर, लामा, प्यूमा,
कंगारू, संतरे आदि, आदि, बस कुछ का उल्लेख करने के लिए। और सवाल यह है कि कौन थे
इन सभी जानवरों को खिलाना और पानी देना, यह उल्लेख नहीं करना कि यह सब किसने साफ रखा - परिवार
नूह के बाद सब कुछ छोटा था (बाइबल के अनुसार 8)। साथ ही कुदरत के नियम भी बताते हैं कि
प्रत्येक की एक जोड़ी सभी पशु जातियों को स्थापित करने के लिए पर्याप्त नहीं होगी - कोई डीएनए किस्म नहीं।
वास्तव में डीएनए विविधता विज्ञान ने पाया है, तब से बहुत अलग अवधि के बारे में बात करता है
अधिकांश पशु समूह कुछ ही थे। कहानी बस सच नहीं है। एक छोटा सा मौका है
कि नूह जैसा एक आदमी एक बार जीवित रहा और इतनी बड़ी बाढ़ से बच गया कि वह उसे ढँक सके
पूरी दुनिया - एफ। भूतपूर्व। वह अपने परिवार और अपने मवेशियों आदि के साथ जीवित रहा। विज्ञान एक के बारे में जानता है
या मोटे तौर पर सही समय पर दो बहुत बड़ी बाढ़ (मेसोपोटामिया में एक और की बाढ़)
काला सागर - नीचे देखें))। लेकिन सब कुछ बहुत छोटे पैमाने पर है, और पसंद नहीं है
कुरान में बताया।

मुसलमान यह कहकर समस्याओं को कम करने की कोशिश करते हैं कि नूह को प्रत्येक में से केवल दो लाना चाहिए
पालतू मवेशी - लेकिन कुरान ऐसा नहीं कहता है। वे आगे बताते हैं कि यह सिर्फ एक था
बड़ी, लेकिन क्षेत्रीय बाढ़ - जो कुरान में नहीं कहा गया है, लेकिन यह भी नहीं कहा जाता है कि यह दुनिया भर में थी
एक (लेकिन नीचे "यात्रा" का अंत देखें)। लेकिन फिर कुछ लोग असली गलती करते हैं - या कोशिश करें
धोखा - क्योंकि नीचे जो होता है वह ज्यादातर लोगों को अच्छी तरह से नहीं पता होता है, केवल औरों के लिए
शिक्षित लोग, और "रैंक और फ़ाइल" को धोखा देना इसलिए आसान है: एफ। उदा। " का संदेश
कुरान", एक शीर्ष मुस्लिम विश्वविद्यालय द्वारा प्रमाणित (अल-अहजर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च .)
अकादमी, काहिरा) बताता है:

1. बाढ़ अवश्य ही की पूर्ति कर रही होगी
   भूमध्य सागर - उसका उल्लेख किए बिना
   वह हुआ (जब जिब्राल्टर जलडमरूमध्य
   खोला गया) लगभग ४-५ मिलियन वर्ष पूर्व। (देखो
   के ऊपर)।
2. यह सब भी बिना यह बताए कि
   भरने में कई साल लग गए (ऊपर देखें) - मई
   १०० या अधिक के रूप में हो - उद्घाटन के रूप में
   शुरुआत में छोटा था और धारा
   पूरा होने से बहुत पहले धीमा हो गया। पास
   अब क्या है इस्राएल और मिस्र का जल गुलाब
   साल में सिर्फ कुछ मीटर - कोई बहुत उबड़-खाबड़ नहीं

   बाढ़, जैसा कि कुरान में वर्णित है (f। पूर्व।
   11/42)।
3. उस समुद्र का धीरे-धीरे कैसे भर सकता था,
   जो अब इराक है, उसमें एक फ्लैश फ्लड दें, जहां
   ऐसा होना चाहिए था? - or . में
   कहीं इराक के पास।
4. हो सकता है कि वे इसे भरने के साथ मिला दें
   काला सागर (मुसलमानों द्वारा भी उल्लिखित)?
   लेकिन इसमें भी समय लगा - और दूर था
   इराक। पिछले हिमयुग के बाद ऐसा हुआ कि

10,000 बंद कर दिया - के रूप में देर से हो सकता है a
5700 साल पहले गर्म अवधि (यहां तक कि कम बर्फ)।
समय ठीक हो सकता है, लेकिन फिर या तो नूह या
इस मामले में कहानी यात्रा कर चुकी है - और भी
यह धीमी गति से भरना मौसम की व्याख्या नहीं कर सकता
और लहरें।

5. इसके बारे में एक बहुत ही सट्टा सिद्धांत भी है
एक क्षुद्रग्रह या कुछ गिर रहा है
हिंद महासागर - एक पुरानी कहानी जिसमें a . का उल्लेख है
मामले में विशेष खगोलीय नक्षत्र
बाढ़ की शुरुआत को 10 तक इंगित करता है। मई
२८०७ ई.पू. लेकिन यह एक बहुत ही सट्टा सिद्धांत है
केवल पुरानी किंवदंतियों और संकेत के आधार पर बनाया गया है
चीनी इतिहास।
6. अंत में चरम है, लेकिन अल्पज्ञात
मेसोपोटामिया में बाढ़ - अब लगभग
इराक - लगभग 5200 साल पहले। यह आसानी से हो सकता है
बाढ़ की ही व्याख्या करें, और यदि यह एक था
असाधारण "साधारण" बाढ़, यह भी हो सकता है
मौसम की व्याख्या करें। लेकिन बड़ा होने पर भी, यह एक था
स्थानीय हो रहा है। (लेकिन तब कुरान नहीं करता
सीधे तौर पर दावा करें कि यह पूरी दुनिया को कवर कर रहा था
- लेकिन दूसरी ओर ठीक नीचे देखें -
यात्रा का अंत)।
7. और एक और पहेली जो फिट नहीं बैठती
"स्थानीय" बाढ़ के बारे में मुस्लिम "स्पष्टीकरण":
कुरान का दावा है कि सन्दूक a . पर फंसे हुए हैं
सीरिया में पहाड़ (माउंट अल-जुडी (11/44) -
तुर्की में अरारत नहीं। माउंट अल-जुडी आज है
2089 मीटर ऊंची "जबल जुडी" के रूप में पहचान
आधुनिक शहर सिजरे दक्षिण के पास "जुडी दाग"
तुर्की की सीमा के।) सन्दूक के लिए
एक ऊँचे पहाड़ पर फंसे, बाढ़ को करना पड़ा
सार्वभौम बनो - अगर पानी नहीं बहता
दूर खाली, निचले स्थानों पर - प्राथमिक
भौतिकी का ज्ञान।

एक विश्वविद्यालय के लिए एक झांसा देना जैसे बाढ़ = भूमध्य सागर को भरना, आदि है
बेईमान और कुछ बताता है - विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों को ऐसे तथ्यों को जानना होगा, और

पेज ३१७

पता है कि यह गलत है, या कम से कम उनके पास जाँच न करने का कोई बहाना नहीं है कि क्या यह संभव था। यह है एक
शिक्षित हलकों में प्रसिद्ध तथ्य। 23/27 - 26/119 . में इसी तरह के दावे

*०१४ ११/४२: "तो सन्दूक उनके साथ पहाड़ों की तरह लहरों (ऊँची) पर तैरता रहा, और नूह
अपने पुत्र (जो तट पर था*) को पुकारा - - -"। जब नाव लहरों के बीच तैर रही हो जैसे
पहाड़, तट पर किसी के साथ संवाद करना संभव नहीं है। मुहम्मद, में रह रहे हैं
रेगिस्तान, शायद नहीं जानता। लेकिन किसी भी भगवान ने ऐसी गलती नहीं की थी - कह रहे थे कि वे कर सकते थे
संवाद। उस तरह की लहरें बहुत शोर करती हैं, और हवा भी सामान्य रूप से साथ होती है
उस तरह के समुद्र, साथ ही आपको लहरों से दूर रहने के लिए किनारे से दूर रहना होगा और
उल्लिखित किनारे के खिलाफ तोड़ दिया। गलत तथ्यों के साथ नाटकीय परी कथा।

यह इस बात का भी प्रमाण है कि कुरान में नाटकीय परिदृश्यों की व्याख्या नहीं की जा सकती है
भूमध्यसागरीय या काला सागर भरना: एक विशाल जलप्रपात भी पैदा नहीं करता
लहरें "पहाड़ों की तरह" - पानी की एक अपेक्षाकृत स्थिर धारा ऐसा नहीं करती है, सिवाय इसके कि
झरना, भले ही वह बहुत बड़ा हो, और जैसे ही वे दूरी के अनुपात में कम हो जाते हैं
वे दौड़ते हैं - दुगनी दूरी = आधी ऊर्जा प्रति मीटर वेव फ्रंट, क्योंकि वे अंदर फैलते हैं
a (अर्ध) वृत्त (NB: यह रैखिक तरंग मोर्चों के साथ हवा में उड़ने वाली तरंगों के लिए नहीं जाता है, और
निश्चित रूप से नहीं अगर हवा अभी भी चल रही है और ऊर्जा को लहरों में स्थानांतरित कर रही है - केवल जहां
लहरों का स्रोत झरने की तरह एक "बिंदु" है - या पानी में फेंका गया पत्थर)। और एक

जलप्रपात - कितना भी बड़ा क्यों न हो - कभी भी भयानक तूफान (अन्य स्थानों का उल्लेख) उत्पन्न न करें।
015 11/43: "पुत्र (नूह* के) ने उत्तर दिया - - -"। उस तरह के मौसम में न कोई कॉल और न ही कोई रिप्लाई
संभव था - हवा की गर्जना और लहरों का दुर्घटनाग्रस्त होना बहुत अधिक शोर है, भले ही
थोड़ी दूरी संभव थी। इसके अलावा आपके पास हवा का प्रभाव "उड़ाने" है
दूर "तुम्हारी आवाज की आवाज। इसके ठीक ऊपर 11/42 भी देखें।

०१६ ११/४४: "हे पृथ्वी तेरा जल निगल ले - - -"। उस राशि के साथ शारीरिक रूप से असंभव
पानी। लेकिन अगर बाढ़ स्थानीय होती, तो पानी समुद्र में जा सकता था। (लेकिन तथ्य यह है कि कुरान
माउंट पर समाप्त सन्दूक को बताता है। अल-जुदी (मुहम्मद असद के अनुसार पहले माउंट क़र्दू: "The ."
कुरान का संदेश) सीरिया में इंगित करता है कि यह वास्तव में कुछ बड़ा था - पानी नहीं कर सकता
सीरिया में एक पहाड़ पर ऊंचे स्थान पर पहुंचें, जब तक कि जल स्तर लगभग समान न हो
दुनिया।

017 11/53: "- - - स्पष्ट (चिह्न) - - -"। गलत। 2/99 देखें।

018 11/59: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

019 11/63: "- - - स्पष्ट (चिह्न) - - -"। गलत। 2/99 देखें।

०२० ११/६४: "यह अल्लाह का ऊँट - - -"। यह एक पुरानी अरब किंवदंती को संदर्भित करता है जिसे मुहम्मद ने इस्तेमाल किया था
कुरान में: एक ऊंट एक ठोस चट्टान से निकला और एक नबी बन गया। यकीन मानिए अगर आप
मांगना।

*०२१ ११/६७: "ए (ताकतवर) विस्फोट ने अपराधियों (थमूद के लोगों) को पछाड़ दिया, और वे
(मृत*) सुबह से पहले अपने घरों में सजदा करना - - -।" खैर, 7/78 में वे मारे गए
भूकंप से। उनमें से एक गलत होना चाहिए - बस एक और विरोधाभास, भले ही
किसी भी विरोधाभास की अनुपस्थिति का दावा कुरान में यह साबित करने के लिए किया गया है कि इसे से नीचे भेजा गया है
अल्लाह। अंतर्विरोधों की उपस्थिति के बाद यह साबित करना चाहिए कि यह अल्लाह की ओर से नहीं है।

022 11/69: "- - - खुशखबरी - - -"। सबसे अच्छा केवल आंशिक रूप से सही। ऊपर 2/97c और नीचे 61/3 देखें।

317

पेज ३१८

023 11/88: "- - - स्पष्ट (चिह्न) - - -"। गलत। 2/39 देखें।

०२४ ११/९२: "उसने (लूत) ने कहा, 'हे मेरे लोगों! लूत दूर से एक अप्रवासी था (उर इन
दक्षिण इराक में चाल्डिया - अब वह मृत सागर के पास रह रहा था, सबसे अधिक संभावना है कि अब क्या है
जॉर्डन)। यह बाइबिल और कुरान दोनों के अनुसार है। सदोम और अमोरा के लोग
लूत के लोग नहीं थे। और कुरान और बाइबिल दोनों के बीच दूरी थी
लूत और स्थानीय लोग - वे निश्चित रूप से उसके लोग नहीं बने थे। लेकिन जैसा कि कुरान कहता है कि
पैगंबर (जो लूत कुरान के अनुसार थे) केवल मुहम्मद को छोड़कर उनके पास भेजे गए थे
अपने लोगों के लिए, पुस्तक को स्थानीय लोगों से संबंधित क्षेत्र में उसे स्थानीय बनाने की आवश्यकता है।

०२५ ११/९३: "और हे मेरे (लूत के*) लोग!" ऊपर 11/92 देखें।

०२६ ११/१०३: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२७ ११/१०७: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

028 11/108: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०२९ ११/११०: "हमने (अल्लाह*) ने बेशक मूसा को किताब दी, - - -"। विज्ञान के अनुसार वह
निश्चित रूप से नहीं - वे पुस्तकें ४००-७०० साल बाद लिखी गई हैं। (बाइबल बताती है कि मूसा ने
10 आज्ञाएँ पत्थर की पटियाओं पर लिखी गईं + उसने कानून को मौखिक रूप से प्राप्त किया और उसे लिख दिया
बाद में। व्यवस्था को कभी-कभी मूसा की पुस्तक के नाम के रूप में प्रयोग किया जाता है, लेकिन वास्तव में कानून
केवल इसका एक छोटा सा हिस्सा है)।

०३० ११/१२०: "- - - उनमें (कुरान की कहानियाँ*) तुम्हारे पास आती हैं (मुहम्मद/
मुसलमान*) सत्य - - -"। सभी गलत तथ्यों के साथ, गलत व्याकरण, आदि, और शायद
पुस्तक में और भी गलतियाँ, यह अधिक से अधिक आंशिक रूप से सत्य हो सकती है - और फिर समस्या है खोजने की
क्या सच है और क्या नहीं, उन कहानियों में से जिन्हें आप सकारात्मक रूप से नहीं जानते हैं गलत हैं।

०३१ ११/१२३: "- - - स्वर्ग - - -"। गलत। 2/29 देखें।

सूरह ११: कम से कम ३१ गलतियाँ + १ संभावित गलती।

सूरा 12:

००१ १२/१: "- - - सुस्पष्ट पुस्तक (कुरान*)"। इतनी गलतियों वाली एक किताब, अमान्य
तार्किक बिंदु, आदि शायद ही स्पष्ट हैं।

002 12/2a: "हम (अल्लाह*) ने इसे (कुरान) नीचे भेजा है - - -"। किसी सर्वज्ञ भगवान ने नीचे नहीं भेजा है
एक किताब जिसमें कई गलतियाँ, विरोधाभास, गलत तर्क के मामले आदि हैं, जिसका अर्थ है कि
या तो अल्लाह सर्वज्ञ नहीं है, या कि कुरान को किसी और ने बनाया है।

००३ १२/२बी: "- - - ताकि तुम ज्ञान सीख सको"। किताब से कोई भी ज्ञान नहीं सीखता
बहुत सारी गलतियाँ और गलत तर्क।

004 12/7: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

005 12/19+20: यहाँ कुछ गड़बड़ है - या एक और विरोधाभास। श्लोक १९ कहता है कि
"यात्रियों" ने यूसुफ को उस कुएँ में पाया जहाँ उसके भाइयों ने उसे नीचे गिराया था, और उसे ले गए

एक दास के लिए और उसे छुपाया। श्लोक 20 बताता है कि उसके भाइयों ने उसे कुछ दिरहम (छोटे) के लिए बेच दिया था
चांदी के सिक्के)। दोनों सच नहीं हो सकते।

00a 12/31: यहाँ 2 बिंदुओं में थोड़ा तर्क है: उन्हें दिखाने से पहले उन्हें चाकू क्यों देना?
यूसुफ? (कुछ मुसलमान कहते हैं कि यह फल काटने के लिए था, लेकिन जब आप फल काटते हैं, तो आप फल काटते हैं और
ज्यादातर चाकू नीचे रखें - किसी भी समय कुछ के हाथों में चाकू था, और
ब्लेड को कम पकड़ना। और किसी चेहरे से इतना मूढ़ होना कोई स्वाभाविक प्रतिक्रिया नहीं है, कि सभी
और उनमें से प्रत्येक ने अपनी उंगलियां काट दीं - एक या अधिक से अधिक दो ऐसा कर सकते थे, हालांकि इसकी संभावना नहीं थी,
लेकिन अधिक नहीं।

००बी १२/३२: यूसुफ को जेल में डालने का क्या तर्क था जब यह साबित हो गया कि वह नहीं था
दोषी? यह सब उस समय था जब पत्नी को सावधान रहना चाहिए था। (मुसलमान
एक तरह का स्पष्टीकरण है, लेकिन केवल एक तरह का)। लेकिन कहानी के लिए कारावास जरूरी है।

००६ १२/४०: "(इस्लाम) सही धर्म है - - -"। क्या कोई धर्म इतने लोगों की किताब पर आधारित हो सकता है
गलतियाँ, और किसी भी आवश्यक चीज़ के लिए एक भी वैध प्रमाण नहीं होने के कारण, वास्तव में एक "सही धर्म" हो?
बस नहीं। विशेष रूप से तब नहीं जब सारी किताब केवल एक आदमी के शब्दों पर ही टिकी हुई हो
संदिग्ध नैतिक-चोरी/लूटना, नारीकरण करना, बलात्कार करना, गुलाम बनाना, हत्या करना, झूठ बोलना - यहाँ तक कि
अपनी शपथ का सम्मान नहीं करना - आदि।

007 12/41: "- - - वह एक क्रॉस से लटकाएगा - -"। यूसुफ के समय मिस्र में प्रयोग नहीं किया जाता था
सूली पर चढ़ाने से निष्पादन।

००८ १२/४९: "फिर उस (अवधि) के बाद एक वर्ष आएगा जिसमें लोगों की बहुतायत होगी
पानी - - -"। लेकिन अरब शब्द जो उसके लिए प्रयोग किया जाता है, और जिसका अनुवाद "प्रचुर मात्रा में पानी" के साथ किया जाता है
"युगथु" या "युगथ" है जिसका वास्तव में अर्थ है "बारिश से मुक्त होना" (यूसुफ
अल-फ़दी (ईसाई))। साथ ही "कुरान के संदेश" में वह अनुवाद है (से अनुवादित
स्वीडिश): "- - - एक साल जब लोगों को बारिश से आशीर्वाद मिलेगा - - -", और एक समान
शब्द पर टिप्पणी करें और जैसा कि हम पहले इस अनुवाद से मिल चुके हैं, हम देखते हैं कि यूसुफ अली के पास है
उसके प्रतिलेखन को थोड़ा "विस्तारित" किया। लेकिन मिस्र में बहुत कम बारिश होती है और बारिश नहीं होती है - यह बाढ़ है
नील नदी जो पानी लाती है। ("कुरान का संदेश सुरुचिपूर्ण ढंग से बताता है कि इसका अर्थ होना चाहिए
अफ्रीका में और दक्षिण में बारिश हुई, जिसने नील नदी को बड़ा बना दिया, लेकिन ऐसा नहीं है जो अरब पाठ कहता है)।

००९ १२/५१ए: "आपका (महिलाओं का) क्या संबंध था जब आपने उसे (यूसुफ *) बहकाने की कोशिश की थी।
- - -"। 12/23 के अनुसार केवल अजीज की पत्नी ने ही यह कोशिश की थी। गलती और
अंतर्विरोध।

*०१० १२/५१बी: पोटिफ़र की महिलाएं (यह नाम बाइबिल से है - अज़ीज़ (शीर्षक या नौकरी?)
कुरान) घर ने कहा: "अल्लाह हमारी रक्षा करें"। नाम और भगवान अल्लाह पुराने में मौजूद नहीं थे

मिस्र में बहुदेववादी पंथियन - और निश्चित रूप से उच्च वर्ग के बीच नहीं (दासों से और
व्यापारियों ने यहोवा के बारे में सुना होगा, लेकिन अल्लाह के बारे में नहीं, और शायद ही अल-लाह के बारे में भी
शीघ्र)। उनके देवता ओसिरिस, एटन, आमोन और अन्य थे। असल में एक नहीं मिला है
पुराने समय में मिस्र में उच्च वर्ग के बीच एकेश्वरवाद का एक निशान। (अक्न को छोड़कर-
एटन और उनके सूर्य देवता)

011 12/52: पोतीफ़र (अज़ीज़) की पत्नी: "- - - अल्लाह कभी मार्गदर्शन नहीं करेगा - -"। 12/51बी देखें।

00c 12/69: यूसुफ ने बिन्यामीन से कहा: "देखो! मैं आपका (अपना) भाई हूँ - - -"। यह छंद फिट नहीं है
70 - 77 जो उसने इस समय बताया था।

319

पेज 320

०१२ १२/७७: "यदि वह (बेंजामिन*) चोरी करता है, तो उसके (यूसुफ*) का एक भाई था जिसने पहले चोरी की थी
(उसे)"। यहाँ कुछ गलत है: बच्चे/युवा जोसफ पर चोरी का आरोप नहीं लगाया गया था। (से संबंधित
यूसुफ की उम्र जब उन्हें मिस्र लाया गया था, यूसुफ अली "कुरान का अर्थ" में कहते हैं
वह १६ या १७ वर्ष का था या १८ वर्ष का भी हो सकता है। हमें किसी भी बात पर विश्वास करने का कोई कारण नहीं मिलता - उसके पास हो सकता है
उस उम्र का या उससे छोटा या उससे भी छोटा)।

०१३ १२/८४: "और उसकी (याकूब की *) आँखें दुख से सफेद हो गईं - - -"। आंखें नहीं बन सकतीं
सफेद (और कमोबेश अंधे) दु: ख से। ऐसा बीमारी या शारीरिक कारणों से होता है
आँख में खराबी - कभी-कभी उम्र से संबंधित। कोई भी भगवान जानता था - मुहम्मद शायद
नहीं।

०१४ १२/९४: "जब कारवां (मिस्र) चला गया, तो उनके पिता (याकूब*) ने (अपने बेटों* से) कहा - - -"। परंतु
१२/८७ कहता है: "हे मेरे (याकूब के*) पुत्रों! तुम (मिस्र* को) जाओ और यूसुफ और उसके बारे में पूछताछ करो
भाई - - -"। याकूब उस यात्रा में मिस्र के साथ नहीं आया था - याकूब उससे बात नहीं कर सकता था
उसके पुत्र जब मिस्र से निकले थे। एक गलती और वास्तविक स्थिति का विरोधाभास। (यह भी है
12/96 से स्पष्ट: "जब सुसमाचार का वाहक आया (याकूब के घर* में) - - -।" याकूब
अपने पुत्रों से तब तक कुछ न कह सका, जब तक वे उसके साथ घर वापस न आ गए।)

015 12/95: "उन्होंने (याकूब के पुत्रों) ने कहा (= उत्तर दिया जब कारवां मिस्र छोड़ दिया *): 'अल्लाह के द्वारा
(?*)! सचमुच तू अपने पुराने भटकते मन में है।'" ऊपर 12/94 देखें।

00d 12/99: "- - - उसने (यूसुफ*) अपने माता-पिता के लिए एक घर प्रदान किया - - -"। संभव नहीं, उसके जैसा
माँ (राहेल) की मृत्यु पहले ही हो चुकी थी जब बेंजामिन का जन्म हुआ था - वह केवल एक घर प्रदान कर सकता था
उनके पिता। (इस्लाम इसकी व्याख्या या "व्याख्या" इस दावे के साथ करता है कि वह अपनी बहन की गणना करता है
माँ (लिआ - याकूब की पत्नी भी) उसकी माँ होने के लिए, लेकिन कुरान में कुछ भी नहीं कहा गया है
इसलिए। लेकिन तब इस्लाम के लिए बिना तथ्यों के दावे करना बिल्कुल सामान्य है।) इसके अलावा: कैसे हो सकता है
इब्राहीम एक अच्छा मुसलमान होगा जब उसने एक ही समय में 2 बहनों से शादी की? - सख्त वर्जित
शरीयत में अल्लाह द्वारा।

00e 12/100: "- - - माता-पिता - - -"। ऊपर 12/99 देखें।

015a 12/100 (A95 - 2008 संस्करण A98, A99 में): "- - - और वे जैकब और उसका परिवार*) गिर गए
साष्टांग प्रणाम में, (सब) उसके सामने (यूसुफ*) - - -।" यहाँ एक पहेली के अंदर एक बड़ी पहेली है
इस्लाम के लिए एक पहेली से घिरा हुआ है। याकूब जैसा पवित्र भविष्यवक्ता असंभव रूप से साष्टांग प्रणाम कर सकता था
इंसान के सामने खुद और यूसुफ जैसा पवित्र भविष्यद्वक्ता असंभव रूप से स्वीकार कर सकता था
यह। पाठ में कुछ गलत होना चाहिए। यह भले ही अरब पाठ "वा-खररू लहु"
sudjdjadah" का शाब्दिक अर्थ है "- - - और वे उसके सामने नीचे गिर गए (वैकल्पिक रूप से "जैसे")
साष्टांग प्रणाम (या स्वीडिश प्रति के अनुसार "उससे प्रार्थना करना")"। इस्लाम का कोई भला नहीं
स्पष्टीकरण जो हमने पाया है। 'अब्द अल्लाह इब्न' अब्बास के अनुसार "उसे" "पहले" में
उसे" अल्लाह का उल्लेख करना चाहिए - जो कि यह सबसे स्पष्ट रूप से नहीं करता है। रज़ी बताते हैं कि जोसेफ
सपना पूरी तरह से पूरा नहीं हुआ था, आदि। वास्तव में यहाँ पाठ बहुत स्पष्ट है - और केवल एक चीज
मुस्लिम विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि इसका शाब्दिक अर्थ गलत होना चाहिए, और यह बिना a
अच्छा वैकल्पिक अर्थ।

०१६ १२/१०१: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०१७ १२/१०४: "और इसके लिए आप (मुहम्मद*) उनसे (लोग/मुसलमान*) कोई इनाम नहीं मांगते
(नया धर्म*) - - -"। नहीं, सभी चोरी/लूट मूल्यों के 20% और गुलामों के अलावा कुछ भी नहीं

छापे और युद्ध, पीड़ितों से लिए गए सभी मूल्यों का 100% जो बिना लड़े आत्मसमर्पण कर दिया,
ढेर सारी औरतें और ढेर सारी निरपेक्ष और निर्विवाद शक्ति/तानाशाही, और ढेर सारी और

बहुत सारे मुक्त योद्धा - उन्हें केवल उन्हें स्वर्ग और वादों के वादे के साथ भुगतान करना था
मनुष्यों, देशों और समृद्ध संस्कृतियों से चुराए गए युद्ध की समृद्ध लूट के बारे में। और "गरीब कर"
(ज्यादातर २.५ से १०% - ज्यादातर लगभग २.५% - जो आपके पास हर साल होता है अगर आप भी नहीं थे
गरीब) - जिसे वह केवल गरीबों के लिए खर्च करता था - और कभी-कभी क्रूर ज़कात - कर
गैर-मुसलमानों से (हालाँकि न तो २०% और न ही १००% और न ही कर सभी उसके लिए थे
व्यक्तिगत उपयोग - अधिक युद्ध करने और पड़ोसी बनाने के लिए "उपहार" के लिए बहुत खर्च किया गया था
अरब अच्छे मुसलमान + कुछ गरीबों को दिए गए),

और कीमत आसपास के लोगों और मनुष्यों की संस्कृतियां थी और उन्होंने जीवन को नष्ट कर दिया - to
उसके लिए अधिक शक्ति प्राप्त करें। कुरान से यह निर्विवाद रूप से स्पष्ट है कि वह कम से कम महिलाओं को पसंद करता था
और शक्ति।

018 12/105a: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

019 12/105: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

020 12/108: "- - - सबूत स्पष्ट - - -"। एक भी स्पष्ट प्रमाण नहीं है और न ही अल्लाह के लिए
न ही मुहम्मद सभी कुरान में पैगंबर होने के लिए। एक नहीं। (कुछ अपवाद हो सकते हैं
बाइबिल से लिए गए बिंदुओं में एक भगवान के लिए सबूत के लिए, लेकिन वे मामले में सबूत हैं
यहोवा, अल्लाह के लिए नहीं - वे दो देवता एक ही नहीं हो सकते, जब तक कि वह ईश्वर मानसिक रूप से न हो
बीमार - सिज़ोफ्रेनिक - क्योंकि शिक्षाएँ मौलिक रूप से बहुत भिन्न हैं, विशेष रूप से एक की तरह
NT - f में "नई वाचा" में यहोवा से मिलता है। भूतपूर्व। लूका 22/20)। 2/99 भी देखें।

०२१ १२/१०९: "और न ही हमने (अल्लाह) ने तुम्हें (संदेशवाहकों के रूप में) मनुष्यों के अलावा किसी को भेजा, जिन्हें हमने किया
प्रेरणा - (पुरुष) मानव आवासों में रह रहे हैं।" गलत। कुरान के अनुसार भी फरिश्ते
भेजे गए थे, एफ. भूतपूर्व। इब्राहीम को, लूत को, और मरियम को, और कम से कम जिन्नों को जिन्नों को भेजा गया था
संदेशवाहक

00f 12/111a: "यह है - - - समझ के साथ समाप्त पुरुषों के लिए निर्देश।" ऐसा हो सकता है -
कई मुस्लिम विचारक और विद्वान पुरुष बुद्धिमान व्यक्ति थे और हैं। लेकिन किस काम के लिए? -
जब आप सबसे बुद्धिमान व्यक्तियों को भी शुरू से ही गलत जानकारी देते हैं, तो उनका
निष्कर्ष अनिवार्य रूप से सिर्फ गलतियाँ और त्रुटियाँ बन जाते हैं, चाहे वे कितने भी बुद्धिमान क्यों न हों। प्रति
"पीयर गिन्ट" में स्वर्गीय हेनरिक इबसेन को उद्धृत करें: "नार उटगैंग्सपंकटेट एर सोम गैलेस्ट, ब्लर रिजल्टेट टिड्ट"
मूल" - जिसका अर्थ कुछ इस तरह है "जब आपके द्वारा उपयोग किए जाने वाले तथ्य वास्तव में गलत हैं, तो"
परिणाम अक्सर बहुत 'मूल' हो जाता है"। इसके अलावा: "सही तथ्यों को एक छात्र द्वारा गुणा किया जाता है
झूठे तथ्यों की तुलना में एक बेहतर उत्तर कई बुद्धिमान लोगों के साथ गुणा किया गया"।

00g 12/111b: "यह एक आविष्कृत कहानी नहीं है - - -"। जब एक किताब में इतनी सारी गलतियाँ हों, तो क्या
क्या आप पाठक से विश्वास करने की अपेक्षा करते हैं? - कम से कम विवरण का आविष्कार करना होगा।

**०२२ १२/१११सी: "- - - पहले जो हुआ उसकी पुष्टि (बाइबल) - - -"। जब ऐसा हो
एक किताब में कई और इतनी गंभीर गलतियाँ, यह उम्मीद नहीं की जा सकती है कि पाठक भी विश्वास कर सकता है
बहुत। बस जोसेफ के बारे में कहानी बाइबिल से ली गई है (जो "पहले जाती थी")। लेकिन कहानी
बहुत बदल गया है (हो सकता है कि उसने वास्तव में जोसेफ के बारे में एक स्थानीय किंवदंती को फिर से बताया हो, जो थोड़ा-सा आधारित हो)
बाइबिल) - यह कोई पुष्टि नहीं है। में सभी प्रलेखित गलतियों की पृष्ठभूमि पर
कुरान, जिस पर विश्वास करना सबसे आसान है, यदि कोई हो - कुरान या बाइबिल? कम से कम कुछ विवरण
कुरान में इस कहानी में अतार्किक हैं। इस बिंदु पर अधिक: बहुत अधिक हैं और भी
मूलभूत अंतर - कुरान बाइबिल की पुष्टि नहीं करता है।

023 12/111d: "- - - सभी चीजों का विस्तृत विवरण - - -"। गलत। वहाँ कई चीजें हैं
सामान्य जीवन के लिए आवश्यक - आधुनिक जीवन का उल्लेख नहीं करना - जो स्पष्ट नहीं है, और इससे भी अधिक
तो विवरण के लिए। एफ. पूर्व. विरासत पर मुस्लिम कानून कुरान में स्पष्ट नहीं थे, और
कई, कई चीजें इस्लाम के पास अल्लाह की ओर से कोई मार्गदर्शक रेखा नहीं है - उन्हें से एक्सट्रपलेशन करना होगा
अन्य या इसी तरह की बातें कुरान या हदीस में कही या की गई हैं।

024 12/111e: "- - - एक गाइड - - -"। ऊपर 12/111d देखें।

सूरह १२: कम से कम २४ गलतियाँ + ६ संभावित गलतियाँ।

सूरा 13:

001 13/1a: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

00a 13/1b: "- - - पुस्तक जो प्रकट हुई है - - -"। यह प्रश्नों में से एक है: क्या यह है
पता चला - और किसके द्वारा? नीचे 13/1b देखें।

**002 13/1c: "- - - पुस्तक: वह जो तेरे रब (अल्लाह*) की ओर से तुझ पर उतारा गया है
- - -"। यही सवाल है, हेमलेट को उद्धृत करने के लिए: क्या एक भगवान ने वास्तव में इतने सारे लोगों के साथ एक किताब तैयार की थी
गलतियाँ और अमान्य "सबूत"? नहीं।

एक विकल्प यह है कि f. भूतपूर्व। शैतान ने गेब्रियल का प्रतिरूपण किया और अन्य मामलों में बताया
मुहम्मद "प्रेरणा से" (यूसुफ अली द्वारा "कुरान का अर्थ" उद्धृत करने के लिए) इस प्रकार क्या
उसे "प्रकट" किया गया था। तब धर्म की अमानवीयता को समझाया जाएगा। व्यक्तिगत रूप से
हमें इस पर संदेह है, अगर किसी और कारण से नहीं, तो क्योंकि एक शैतान भी इतने सारे नहीं बनायेगा
गलतियाँ, अंतर्विरोध, आदि - वह बस अपने पीड़ितों द्वारा पता नहीं लगाना चाहेगा
जल्दी ओटी बाद में।

एक अन्य विकल्प यह है कि यह सब एक बीमार मस्तिष्क से उपजा है - टीएलई (टेम्पोरल लोब मिर्गी) +
सत्ता की लालसा सब कुछ आसानी से समझा सकती है।

एक और विकल्प यह है कि इसे प्रकट नहीं किया गया था, लेकिन ठंडे खून में बना था। यह तथ्य कि
कई गलतियाँ समय और क्षेत्र के गलत विज्ञान के अनुसार होती हैं
मुहम्मद, और यह भी कि मुहम्मद इतने मूर्ख नहीं थे कि हर बात पर विश्वास कर सकें
कुरान में कहा गया है, यह संकेत दे सकता है कि यह बना हुआ है।

अंतिम तर्क के लिए: एफ। पूर्व। कि चमत्कार कुछ लोगों को विश्वास नहीं दिलाएंगे,
मुहम्मद बहुत बुद्धिमान थे और लोगों को खुद पर विश्वास करने के बारे में बहुत कुछ जानते थे - च। भूतपूर्व।
यीशु इसके विपरीत का एक अच्छा प्रमाण था: बहुत कुछ सब कुछ के बावजूद विश्वास नहीं करता था, लेकिन काफी a
उन्होंने जो देखा और देखा, उसके कारण संख्या में विश्वास हुआ। वही था
उस कहानी का निष्कर्ष जो मुहम्मद ने स्वयं जादूगरों और मूसा के बारे में बताया: वे
(मुहम्मद के अपने शब्दों के अनुसार) एक छोटे से चमत्कार के बाद विश्वास करने आया था।

***003 13/1d: "(कुरान*) सत्य है"।

1. कई गलत तथ्य हैं कि इतिहास,
भूगोल, पुरातत्व, साहित्य, कला, आदि,
साबित गलत हैं। (कम से कम अविश्वसनीय
1700+ !!! गलत तथ्यों वाले स्थान, और
शायद 3000+ त्रुटियां सभी एक साथ)।

2. "100 से अधिक विचलन" हैं
(गलतियाँ*) के नियमों और संरचना से
सामान्य अरब भाषा", अली के अनुसार
दशी "तेईस साल"।
३. ऐसे छंद हैं जहां यह स्पष्ट रूप से है
मुहम्मद जो बोल रहा है, निरा में

सभी कथनों का विरोधाभास है कि पुस्तक है
अल्लाह द्वारा बनाया गया या अनंत काल से अस्तित्व में है
(हालांकि कुछ स्थान - f. उदा. 6/114 in
युसूफ अली या 27/91 पिकथल या दाऊद में -
गलतियों को बेईमानी से छुपाया जाता है
"कहो" शब्द डालने वाले अनुवादक,
इब्न वाराक के अनुसार।)

4. कुरान कहता है कि कुरान शुद्ध है
अरब भाषा। लेकिन अल-सुयुती के अनुसार
कम से कम 107 विदेशी शब्दों का प्रयोग किया जाता है
पुस्तक, और आर्थर जेफ़री (विशेषज्ञ)
कुरान में अरबी और गैर-अरबी शब्दों में)
सीए कहते हैं अरामी, हिब्रू से 275 शब्द,
और यूनानी, और सीरिया, इथियोपिया, और . से भी
फारस। कुरान शब्द को भी कहा जाता है
सीरिया से। (अरबों को बाद में एक बहाना मिल गया
उन गलतियों के लिए: अल-थालीबी बताता है कि
अरब ने उन शब्दों का प्रयोग शुरू किया और बनाया
उन्हें अरबी। एक आसान लेकिन बेईमान
व्याख्या।)

5. बिना स्वर के एक अक्षर का प्रयोग होता था,
और इसे और भी बदतर बनाने के लिए, लिखते समय
पुराने समय में कुरान / सूरह, उन्होंने नहीं किया
यहां तक कि उन छोटे-छोटे बिंदुओं का भी उपयोग करें जिनका नए अरब उपयोग करते हैं
विभिन्न अक्षरों को निर्दिष्ट करें। इस वजह से यह
अक्सर यह जानना मुश्किल या असंभव होता है कि कौन सा
शब्द का अर्थ है। अंग्रेजी उदाहरण का उपयोग करने के लिए: if
आपके पास केवल व्यंजन "h" और "s" and . हैं
स्वरों में रखें, तो परिणाम "घर" या . हो सकता है
"नली" या "उसका" या "है"। इस वजह से वहाँ
गलतियों के लिए हजारों संभावनाएं हैं - या
विभिन्न अर्थ। मुसलमान कुरान को कहते हैं
६५६ ईस्वी के बाद समाप्त नहीं हुआ था, लेकिन वह है
सच नहीं - केवल सरलीकृत संस्करण का उपयोग कर
तब पुरानी अधूरी वर्णमाला का प्रयोग किया जाता था,
और बहुत सारे संस्करण इस प्रकार लिखे गए थे
भाषा और वर्णमाला पूरी हो गई थी।
९०० ईस्वी तक कुरान समाप्त नहीं हुआ था, और
तब तक कई संस्करण मौजूद थे।
बहुत विद्वान इब्न Mohair . के तहत मुसलमान
(935 ईस्वी में मृत्यु हो गई) अंत में 14 संस्करणों को विहित किया गया
(प्रस्तावना देखें)। सदियों से 11 गिर गए
उपयोग करें, और फिर एक और - आज हैं
मुख्य रूप से दो - एक प्रमुख (हाफ) और एक

323

पेज ३२४

कुछ हद तक अफ्रीका (वार्श) के कुछ हिस्सों में उपयोग किया जाता है।
आखिर कोई ऐसा दिखावा कैसे कर सकता है?
आज का कुरान अल्लाह की ओर से उतारा गया है
पत्र-दर-अक्षर और अल्पविराम-दर-अल्पविराम? - NS
अल्पविराम भी मौजूद नहीं था!

6. मूल कुरान में भाषा इतनी थी
थोड़ा सटीक, कि अक्सर आवश्यक होता है
स्पष्टीकरण सम्मिलित करने के लिए।

7. और फिर कोई कैसे दिखावा कर सकता है कि
आज की कुरान में भाषा एकदम सही है और
शब्द और अर्थ के लिए सही भाषा शब्द
अर्थ के लिए जैसा कि अल्लाह ने तय किया है, जब
कोई जानता है कि उन्होंने २५० साल "डी-
मूल ग्रंथों की कोडिंग और उन्हें पॉलिश करना
भाषा: हिन्दी?

8. और भी बहुत कुछ, कोई कैसे दिखावा कर सकता है
सीधे चेहरे के साथ कि आज का कुरान
अल्लाह की ओर से एक और परिपूर्ण है, जब
पादरी/धार्मिक नेता और शिक्षित
कुलीन कम से कम, पता है कि कम से कम 14 . थे
पहले के "सही" संस्करण (छिपाने के लिए कि
वे अलग-अलग संस्करण थे, मुसलमान कहते हैं
उन्हें "पढ़ने के तरीके" - आप शब्द से मिलते हैं
आज भी, क्योंकि आज भी हैं
"पढ़ने के विभिन्न तरीके") - संस्करण जो
सदियों से एक मनमानी प्रक्रिया से था
घटाकर 3 और फिर 1-2 कर दिया गया। (एक
आज हावी है, सबसे अधिक संभावना हावी है
क्योंकि यह तब हुआ जब मिस्र का उपयोग किया गया था
इब्ने के अनुसार, १९२४ में छपी कुरान
वाराक)।
9. मौजूद 14 और अधिक संस्करणों में से, कैसे
क्या कोई यह सुनिश्चित कर सकता है कि सबसे सही संस्करण
क्या वे अंततः हावी हो गए थे? -
या कि उन संस्करण (हाफ्स और वार्श) में सभी थे
आदिम लेखन की व्याख्या
सही (विशेषकर क्योंकि वे काफी नहीं हैं
एक जैसा)?
10. कुरान में कई जगह ऐसी हैं जहां
तर्क गलत है - मुख्यतः क्योंकि
मुहम्मद निष्कर्ष निकालते हैं या बनाते हैं
पहले यह साबित किए बिना बयान कि यह वास्तव में है
अल्लाह है जिसने इसे और इसे बनाया है। एफ.ई.एक्स. सूरज
और चाँद और रात और दिन अच्छे हों
अल्लाह के लिए सबूत, लेकिन केवल अगर यह पहले है
साबित कर दिया कि वास्तव में अल्लाह ही है जिसने उन्हें बनाया है
और उन्हें चलाता है। मुहम्मद वास्तव में कभी नहीं
कुछ भी साबित करता है। कभी नहीं। वह सिर्फ दावा करता है या
राज्यों। परिणाम अमान्य दावे हैं
अमान्य तर्क, वास्तविक "संकेत" या "प्रमाण" नहीं।

मूल्यहीन। या इससे भी बदतर, इस तरह के उपयोग के रूप में
तर्क पूरी दुनिया को साबित करते हैं कि वह
कोई वास्तविक और सही तथ्य/तर्क नहीं है। यहां तक की
बदतर: झांसों का प्रयोग किसकी पहचान है
धोखेबाज और धोखेबाज।
11. उपरोक्त बिंदु में तथ्य और भी हैं
इस बिंदु पर यहाँ आवश्यक - उन जगहों पर जहाँ
वह "सबूत" शब्द को इंगित करता है या उसका उपयोग भी करता है।
समस्या वही है, और बस
संभावित निष्कर्ष समान है: मूल्यहीन
जनसांख्यिकी जो साबित करती है कि उसके पास कोई वास्तविक नहीं था और
सही तथ्य/तर्क। इससे भी बदतर: का उपयोग
झांसा देना धोखेबाजों और धोखेबाजों की पहचान है।

कुरान को कभी भी सही और गलतियों के बिना मानने का कोई कारण नहीं है, और इससे भी कम
यह मानने का कारण है कि आज का कुरान ऐसा है (ऐसा नहीं है)। यह भले ही आप सभी को छोड़ दें
गलतियों के बारे में हम जानते हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि किताब केवल आंशिक रूप से सच है। 13/39 भी देखें।

004 13/2a: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22 देखें।

**005 13/2b: "अल्लाह वह है जिसने आकाश (बहुवचन और गलत) को बिना किसी स्तंभ के ऊपर उठाया है।
आप देख सकते हैं: - - -"। एक मुस्लिम सूचना संगठन को १-२ साल पहले यह समझाने को कहा गया था
वाक्य। उन्होंने १००% विनम्रता से उत्तर नहीं दिया, कि ६० या उससे अधिक के आईक्यू वाले किसी को भी
समझें कि इसका मतलब था कि खंभे मौजूद नहीं थे। पूछने वाले ने जवाब दिया कि वह
अस्तित्वहीन और अदृश्य के बीच का अंतर जानता था - उपरोक्त वाक्य में अर्थ है

"अदृश्य" - और उनसे वास्तविक स्पष्टीकरण देने के लिए कहा। उन्होंने कभी जवाब नहीं दिया।

कोई स्तंभ मौजूद नहीं है - दृश्यमान या अदृश्य। और वास्तव में विचार उपहास है, क्योंकि कोई मौजूद नहीं है
भौतिक स्वर्ग जिसे स्थिति में रखने की आवश्यकता है - जो स्वर्ग हम देखते हैं वह सिर्फ एक ऑप्टिकल भ्रम है।
कोई भी भगवान - छोटे वाले भी - यह जानते होंगे, लेकिन मुहम्मद स्वाभाविक रूप से नहीं। इसके अलावा कोई आदमी नहीं
या जानवर या पक्षी कभी ऐसे अदृश्य स्तंभ से टकराए हैं - और कोई विमान टकराया नहीं है
एक।

006 13/2c: "- - - संकेतों को विस्तार से समझाते हुए - - -"। गलत और/या तार्किक रूप से अमान्य
वास्तव में "स्पष्टीकरण" स्पष्टीकरण बिल्कुल नहीं हैं - भले ही वे विस्तार से हों, जिसमें वे हैं
कई मामले नहीं हैं।

००७ १३/३अ: "और वह (अल्लाह) है जिसने पृथ्वी को फैलाया, - - -"। इसी तरह की बातें कही जाती हैं
कुरान में कुछ जगहों पर - धरती चपटी और फैली हुई है। यह गोल या गोल हो सकता है, लेकिन
पैनकेक की तरह, गोले की तरह नहीं। उस समय अरबों का भूगोल यही था
मुहम्मद - हालाँकि यह शायद ही किसी देवता का भूगोल था। (एक अनुवादक है
अंग्रेजी जो कहती है "अंडे के आकार का" - लेकिन यह एक गलत अनुवाद है (कुरान वहां एक . के बारे में बात करता है)
समतल जमीन पर शुतुरमुर्ग का घोंसला, लेकिन अनुवादक का कहना है कि यह एक शुतुरमुर्ग के अंडे के बारे में है)। सब
वही वह अक्सर मुसलमानों द्वारा उद्धृत किया जाता है - कुछ ईमानदारी से उस पर विश्वास करना चाहते हैं, अन्य जानते हैं
वे "अल-तकिया" का उपयोग कर रहे हैं - वैध झूठ - जो इस्लाम का एक एकीकृत हिस्सा है (लेकिन किसी का नहीं)
बड़े धर्मों के अन्य))।

००८ १३/३बी: "वह रात को एक घूंघट के रूप में दिन को खींचता है"। गलत। रात बस कमी है
सूरज की रोशनी। किसी चीज की कमी कभी भी किसी चीज पर पर्दा नहीं हो सकती। और भी बहुत कुछ: की कमी
प्रकाश धूप को छिपा नहीं सकता।

009 13/4: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -|" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

*०१० १३/१३: "- - - गड़गड़ाहट उसकी स्तुति दोहराती है - - -"। शायद ही - गड़गड़ाहट सिर्फ एक प्राकृतिक है
और बिजली के लिए स्वचालित प्रतिक्रिया (जो फिर से प्राकृतिक और स्वचालित प्रतिक्रिया है
विद्युत शुल्क)। इस्लाम को साबित करना होगा कि गड़गड़ाहट - हवा में कंपन - है
विश्वास करने के लिए, इस तरह से अल्लाह को पुरस्कृत करने में सक्षम होने के लिए पर्याप्त मस्तिष्क।

००बी १३/१४: "उसके लिए (अल्लाह*) (अकेला) सत्य में प्रार्थना है - - -"। हाँ, लेकिन केवल अगर अल्लाह मौजूद है
(और एकमात्र भगवान है)। एक अच्छा कारण था कि मुहम्मद ने क्यों मांग की और महिमामंडित किया
अंध विश्वास: अस्तित्व के लिए कोई वास्तविक प्रमाण और कोई दस्तावेज मौजूद नहीं था और मौजूद नहीं था
अल्लाह - या उस मामले के लिए मुहम्मद के भगवान से संबंध के लिए। और यह अंध विश्वास ही है
मुहम्मद जैसे नैतिक रूप से संदिग्ध व्यक्ति के शब्दों पर आधारित हो। (असली, ऐतिहासिक
मुहम्मद केवल गौरवशाली संत इस्लाम पेंट्स से दूर से संबंधित हैं।)

011 13/15a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

*०१२ १३/१५ब: "जो कुछ भी प्राणी आकाश और पृथ्वी में हैं, वे सजदा करते हैं
खुद को अल्लाह के लिए (अधीनता को स्वीकार करते हुए) "। जहाँ तक स्वर्ग की बात है, यह कहना कठिन है
हां या नहीं। लेकिन पृथ्वी के लिए: कोई भी गैर-मुस्लिम कभी भी अल्लाह के लिए खुद को सजदा नहीं करता। यह वही
सभी जानवरों, मछलियों और कीड़ों, आदि के लिए जाता है: उनमें से कोई भी कभी भी साष्टांग प्रणाम करते नहीं देखा गया है
खुद को किसी भी भगवान के लिए, अल्लाह में शामिल है - और अल्लाह के लिए इसे देखना अधिक आसान होना चाहिए, जैसा कि वह
एक दिन में साष्टांग प्रणाम के साथ ५ प्रार्थनाओं को प्राथमिकता देता है, कुछ दिन में और कुछ रात में (और भी आसान)
ध्यान दें कि कुछ जानवर आदि सामान्य रूप से दिन और रात दोनों समय जागते और सक्रिय रहते हैं)। इस्लाम कुछ
कुरान में इस बात को विश्वसनीय बनाने के लिए यहां भारी सबूत पेश करने हैं।

०१३ १३/१५सी: "- - - तो (अल्लाह के लिए खुद को सजदा करें) उनकी (जीवितों की) छाया करें
सुबह और शाम में"। छाया केवल सूर्य के प्रकाश की कमी है - और वे प्राकृतिक के लिए हैं
कारण सुबह और शाम लंबे और सपाट होते हैं। इस्लाम को यह साबित करना होगा कि यह
सूर्य के प्रकाश में पृथ्वी के घूमने का परिणाम, कुछ स्थानों पर होशपूर्वक सूर्य के प्रकाश की कमी को बनाता है
एक भगवान के लिए "खुद को" साष्टांग प्रणाम करने का निर्णय लें। यदि कोई सबूत पेश नहीं किया जाता है, तो यह स्पष्ट रूप से एक परी है
छोटे बच्चों के लिए उपयुक्त बौद्धिक स्तर पर कहानी।

014 13/16: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०१५ १३/१७अ: "इस प्रकार अल्लाह (दृष्टान्तों के द्वारा) प्रकट करता है - - -"। क्या यह वास्तव में एक सर्वज्ञ हो सकता है
भगवान जो इतनी सारी गलतियाँ दिखाता है? ग्रैत - एक अच्छा अंग्रेजी शब्द जिसका अर्थ है किसी के साथ नहीं
के तहत लाइनें।

०१६ १३/१७बी: "- - - सत्य और व्यर्थता दिखाओ।" जैसा कि पहले कहा गया है: कुरान बहुत अच्छा कर सकता है
केवल आंशिक रूप से सच हो।

017 13/18: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

00c 13/19a: "- - - जो प्रकट किया गया है - - -"। अच्छा, क्या इसका खुलासा हुआ है? - और में
मामला किसके द्वारा? (एक भगवान ने इतनी गलतियों, आदि के साथ कुछ नहीं भेजा था, लेकिन
शैतान भेष में हो सकता है - लेकिन ऐसा करने के लिए बहुत बुद्धिमान हो सकता है, क्योंकि देर-सबेर वहाँ होता है
गलतियों और गलत तर्क आदि के बारे में सवाल आएंगे, और इसलिए उनके अमानवीय के बारे में
और खूनी धर्म। वह तब विश्वसनीयता खो देगा। हो सकता है कि पूरी किताब बनी हो?)

326

पेज ३२७

०१८ १३/१९बी: "- - - जो तुम्हारे रब (अल्लाह*) की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है - - -"। देखो
१३/१७.

019 13/19c: "- - - जो तुम्हारे रब (अल्लाह*) की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है, वही सत्य है,
- - - "। ठीक है, सबसे अच्छा यह आंशिक रूप से सच है - जैसा कि पहले कहा गया था। एफ देखें। भूतपूर्व। १३/१७.

०२० १३/२८: "- - - क्योंकि निस्संदेह अल्लाह की याद में दिलों को संतुष्टि मिलती है"।
यह केवल कुछ मुसलमानों के लिए सच है, और मुश्किल समय में भी कुछ और मुसलमान चाहते हैं
धर्म में आराम - और कुछ सामाजिक या अन्य कारणों से भी। विज्ञान बताता है कि
लोगों का एक छोटा सा अंश (हो सकता है 10%) के पास भगवान के लिए एक आंतरिक ड्राइव है, और कुछ और
जो जीवन कठिन होने पर ऐसी सोच का सहारा लेते हैं - 2006 या 2007 में उन्होंने पाया भी जो
हमारे डीएनए में जीन जो इस ड्राइव को उत्पन्न करता है। एक सिद्धांत यह है कि धर्म विकासवाद का पक्षधर है
क्योंकि यह समूह को एक दूसरे के करीब लाता है और फिर जीवित रहने की संभावना को बड़ा बनाता है। ये लोग
अपने धर्म में संतुष्टि पाते हैं - कोई भी धर्म - यदि वे इसे मानते हैं। और अगर वे होते हैं
मुसलमान हो तो अल्लाह में तृप्ति पाते हैं। लेकिन ध्यान दें: संतुष्टि नहीं मिलती है
जिस ईश्वर में वे विश्वास करते हैं - वह एक कल्पना हो सकता है, जैसा कि अल्लाह प्रतीत होता है (दृढ़ता से)
कुरान में सभी गलतियों से संकेत मिलता है) - लेकिन उनके अपने विश्वास से, क्योंकि यह काफी मजबूत है
उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह सही है, और फिर उस सुरक्षा में सुरक्षित महसूस करें (झूठा या नहीं)
मामला, जब तक वे स्वयं मानते हैं कि उनका विश्वास सही है)। ऐसी संभावना है कि यह
सुरक्षा की भावना, और इसलिए सुरक्षा और कम घबराहट, एक और डार्विनियन कारण है
इस विरासत में मिली विशेषता के लिए - यह किसी तरह से अस्तित्व की लड़ाई में बढ़त दे सकता है।

ये विचार निश्चित रूप से प्रश्न उत्पन्न करते हैं: क्या कोई भगवान है या वे सभी हमारे से बने हैं
कुछ अलौकिक की जरूरत है?

हमें इसका पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि अगर यह सब हमारे अंदर से उपजा है, तो हमें कम से कम खोजने की कोशिश करनी चाहिए
अमानवीय और अनैतिक युद्ध धर्मों से बेहतर कुछ। और अगर कोई सच्चा धर्म है तो एक
उसी की तलाश करनी चाहिए।

00c 13/31: "अगर कभी कोई कुरान होता जिसके साथ पहाड़ों को हिलाया जाता - - - (यह होगा)
यह वाला)"। खैर, अब तक कुरान ने रेत का एक दाना भी नहीं हिलाया है। ठीक है, इसमें है
बहुत से लोगों का मार्गदर्शन या पथभ्रष्ट किया, और उन्होंने कुछ किया है, लेकिन कुरान ने स्वयं किया है
कुछ नहीं।

०२१ १३/३६: "जिन्हें हमने (अल्लाह*) ने किताब (कुरान*) - - - दी है। NS
राक्षसी प्रश्न: क्या एक ऐसी किताब है जिसमें भगवान द्वारा भेजी गई कई गलतियां हैं? नहीं - बस से बाहर
प्रश्न।

०२२ १३/३७अ: "इस प्रकार हमने (अल्लाह*) ने इसे (कुरान*) - - -" उतारा। क्या अल्लाह ने इसका खुलासा किया? 13/1b . देखें
और 13/19 ए।

०२३ १३/३७बी: "इस प्रकार हमने (अल्लाह *) ने इसे (कुरान*) में अधिकार का निर्णय होने के लिए प्रकट किया
अरबी।" एक किताब जिसमें इतनी सारी गलतियाँ और अंतर्विरोध हैं, इतने अमान्य तर्क हैं, कि
अमानवीय नैतिक और नैतिक या नैतिक दर्शन के बिना, "निर्णय" का कोई आधार नहीं है

अधिकार"। अगर मुसलमान असहमत हैं, तो उन्हें विश्वास करने के लिए मजबूत सबूत लाने होंगे।

०२४ १३/३८ए: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२५ १३/३८ख: "हर कालखंड के लिए एक पुस्तक प्रकट की गई है"। मुश्किल से। होमो सेपियन्स - आधुनिक मनुष्य - is 200ooo वर्ष पुराना हो सकता है (और उससे बहुत पहले मनुष्य या ह्यूमनॉइड थे)। कोई नहीं है

उन सभी वर्षों से अगले प्रमुख कदम तक किसी भी किताब या एकेश्वरवाद का पता लगाना, कि हुआ 60ooo+ साल पहले हो सकता है। उस समय कुछ हुआ - कोई नहीं जानता क्या - जिसने होमो सेपियन्स को मॉडर्न मैन की ओर अपने पाठ्यक्रम पर शुरू किया (ऐसा होने की संभावना है कहीं एशिया के पश्चिमी भाग में, शायद कैस्पियन क्षेत्र में और शायद सीए। 64ooo बहुत साल पहले)। फिर अगले बड़े कदम तक कोई किताब नहीं: कृषि आदमी, 15ooo साल पहले, दे दो या कुछ हज़ार साल लगें - शायद मध्य पूर्व में कहीं। कोई किताब और कोई निशान नहीं दुनिया में कहीं भी एकेश्वरवाद की। अगला कदम: शहर। जीवन को विनियमित करने के लिए कोई किताब नहीं या होमो अर्बनस (शहर में आदमी) के लिए धर्म - कस्बों और यहां तक कि शहरों के बाद भी लंबे समय तक नहीं पॉप अप करना शुरू कर दिया था, और अभी भी किसी भी तरह के एकेश्वरवाद का कोई निशान नहीं है, अल्लाह का उल्लेख नहीं करना। NS वास्तविक एकेश्वरवाद के पहले निशान - और बाद में एक एकेश्वरवादी ईश्वर के बारे में एक पुस्तक - के साथ आई यहूदी (नाम कालानुक्रमिक रूप से व्यापक समझ में प्रयोग किया जाता है), और शायद पारसी मेसोपोटामिया में। और फिर भी यह बहुत कम संभावना है कि उनके (इज़राइल) के पास इससे पहले किताबें थीं मिस्र में अवधि और बहुत बाद में हो सकता है (कि अब्राहम के पास एक किताब या किताबें थीं, इसकी संभावना इतनी कम है कि इस्लाम को इसे साबित करना होगा अगर वे उस पर जोर देंगे - यह बहुत कम संभावना है कि एक खानाबदोश उस समय तो पढ़ना भी जानता था।) पारसी लोगों के पास भी एक किताब थी, लेकिन वह मुहम्मद के पास थी पता नहीं - कम से कम उसके जीवन में देर तक तो नहीं। उसके बाद - और कुरान से पहले - विज्ञान जानता है केवल एक या दो पुस्तकों के बारे में (यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप यहूदियों के "बाइबल" को मानते हैं या नहीं + NT एक या दो - या कई - किताबें) एकेश्वरवाद के आधार के रूप में - यदि आप शामिल करते हैं तो एक जोड़ें पारसी।

उन कालों और युगों के दौरान ऐसी किसी अन्य पुस्तक या कल्प के कोई निशान नहीं मिले हैं किसी भी प्रकार के विज्ञान में एकेश्वरवाद: पुरातत्व (एकन-एटन और उसके सूर्य के लिए एक ?-चिह्न के साथ), साहित्य, लोकगीत, इतिहास, कला, वास्तुकला। इस्लाम को इसके लिए बहुत मजबूत सबूत पेश करने होंगे इसके विपरीत - अब तक उन्होंने केवल सस्ते बयान और यहां तक कि सस्ते शब्द भी बनाए हैं और दावे - - - और एक वास्तविक प्रमाण नहीं।

इससे भी बदतर: जब अंत में एक किताब आई, तो उसने केवल (गलत) ज्ञान पर एक छोटे से और में बनाया दुनिया का अविकसित हिस्सा - जबकि कुरान में कहा गया है कि हर व्यक्ति हर समय उनके भविष्यद्वक्ता (और एक पुस्तक) हैं। इससे भी बदतर: अगर कुरान मदर बुक की एक प्रति है, और सभी 124oo+ भविष्यवक्ताओं ने समय के माध्यम से और पूरी दुनिया में कुछ हद तक समान पाया कॉपी (एक श्रद्धेय मदर बुक जो अनंत काल से अस्तित्व में हो सकती है, बदल नहीं सकती?), जो अवश्य है उनमें से कई के लिए एक अजीब अनुभव रहा है - "सब" अरब और मुहम्मद के बारे में है।

सबसे खराब: इस्लाम बताता है कि "पुस्तक" को अंतराल पर फिर से जीवंत करने का कारण यह था कि दुनिया और समाज बदल गए (कभी सिद्ध या प्रलेखित दावे के अलावा कि बाइबिल मिथ्या है)। लेकिन "मदर बुक" को कैसे बदला जाए जो इन पवित्र पुस्तकों का दावा करते हैं की प्रतियां हैं? और दुनिया और संस्कृतियों और समाजों ने आखिरी बार और अधिक बदल दिया है ३०० वर्ष - हाँ, यहाँ तक कि पिछले १०० वर्षों में भी - २००० या उससे अधिक वर्षों की तुलना में। क्यों कर इन सभी परिवर्तनों के बाद हमें एक नई किताब की आवश्यकता नहीं है? - अगर अल्लाह सर्वज्ञ है, तो वह 13.7 अरब या अधिक साल पहले (जब ब्रह्मांड बनाया गया था) जानता था कि कुरान के कम से कम कुछ हिस्सों में होगा निराशाजनक रूप से अपर्याप्त (f. कुछ कानून) और बहुत खतरनाक (f. उदा। परमाणु, रासायनिक और) सबसे क्रूर और अमानवीय युद्ध धर्म के साथ संयुक्त बैक्टीरियोलॉजिकल हथियार), बाद में नहीं लगभग 1900 ई. हमारा एक ऐसा दौर है जिसे वास्तव में प्रेम और शांति सिखाने वाली पुस्तक की आवश्यकता है मनुष्यों और राष्ट्रों के बीच - घृणा और दमन और अमानवीयता और युद्ध नहीं (जैसे f. पूर्व कुरान और जिंगिस चान का धर्म और कुछ अन्य युद्ध धर्म)।

**00d 13/39: "- - - उसके साथ (अल्लाह*) पुस्तक की जननी है (जिसकी मूल पुस्तक कुरान को * की एक प्रति कहा जाता है) "। केवल हम जैसे इंसानों को लगता है कि यह चरम पर होने की संभावना नहीं है कि एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ भगवान के पास एक श्रद्धेय माँ के रूप में गलतियों से भरी किताब है उसके स्वर्ग में पुस्तक। अगर इसे भगवान ने बनाया है तो समझाने में भी काफी दिक्कतें हैं

पेज ३२९

बहुत समय पहले - उल्लेख नहीं करने के लिए कि क्या यह एक अनमनी किताब है जो हमेशा के लिए अस्तित्व में है, जैसे कई मुसलमान जोर देते हैं:

1. अगर किताब इतनी पुरानी है और पहले भी मौजूद थी, तो क्यों? क्या भगवान को अपूर्ण भेजना पड़ा किताबें - टोरा, ओटी, एनटी? या "माँ" थी Book" में सक्षम होने के लिए अब और फिर बदल गया अलग-अलग प्रतियां भेजें?
2. कैसे समझा जाए कि कुछ सूरह में यह है मुहम्मद बोल रहे हो?
3. कैसे समझाएं कि भगवान को कभी-कभी परिवर्तन - निरस्त - उसका संदेश? - और क्या उसने वास्तव में इस आखिरी किताब में सब कुछ ठीक है समय? खासकर अगर वह मां की नकल कर रहा हो वह किताब चाहिए? या पूज्य है मदर बुक चेंज?
4. वह संदेशों को कैसे बदल सकता था, अगर यह था सभी बहुत पहले लिखे गए - या हमेशा मौजूद रहे - एक मदर बुक में उन्होंने कॉपी किया? या करता है श्रद्धेय मदर बुक चेंज?
5. कैसे आ गया कि इतने श्लोक उत्तर हैं या मक्का में हुई चीजों पर टिप्पणी और मदीना मुहम्मद को और जीवन के दौरान मुहम्मद का? — मुहम्मद एफ. भूतपूर्व। अपनी पत्नियों से झगड़ा किया, और अल्लाह ने भेजा नीचे सूरह समझाने के लिए कि मुहम्मद as हमेशा सही था - और हमेशा की तरह थोड़ा सा समस्या को टालने के लिए देर से, लेकिन उसके लिए प्रासंगिक तभी चाहिए? - की स्वतंत्र इच्छा याद रखें पु रूप। यह लगभग सभी मुहम्मद और के बारे में है अरब और उसके बारे में बहुत कम ने दावा किया 124ooo नबी और उनकी जरूरतें और संस्कृतियां और देश।
6. कैसे समझा जाए कि यह हो सकता था युगों पहले लिखा था, जब अल्लाह ने दिया था मनुष्य (एक निश्चित राशि?) स्वतंत्र इच्छा? - मानवीय हरकतें ग्रंथों को अस्त-व्यस्त कर देंगी तरीके। (भविष्यवाणी और मानव स्वतंत्र इच्छा हैं १००% असंगत और १००% असंभव जोड़ना)। बात यह है: मुक्त के साथ मानव वसीयत एक बार फिर अपना मन बदल सकती है।
7. इस्लाम कहता है कि ग्रंथों को थोड़ा बदलना पड़ा समय के साथ, क्योंकि समय बदलता है - इसलिए नई पवित्र पुस्तकें। लेकिन 300 पिछले वर्षों का समय आदम से १७०० तक बदल गया है ई. ठीक है, यहां तक कि पिछले १०० वर्षों के रूप में उल्लिखित। न भविष्यद्वक्ता और न पवित्र क्यों हैं किताब जरूरी? (13/38 भी देखें)।
8. यदि "मातृ पुस्तक" कल्प पुरानी है, तो क्यों है लगभग सभी मुहम्मद से बात करते हैं, थोड़ा-थोड़ा a

पेज 330

कुछ अन्य, और अन्य के लिए कुछ भी नहीं 124ooo (हदीस के अनुसार)? पहले नबी -

जब सब कुछ नया था - आख़िरकार ज़रूरत थी
अधिकांश जानकारी और सहायता।
9. कैसे समझाएं कि अधिकांश कहानियों में
कुरान धार्मिक परियों की कहानियों पर आधारित है? - कोई
भगवान जानता था कि वे असत्य थे।
10. सभी गलतियों की व्याख्या कैसे करें? - कोई देवता
बेहतर जानता था।
11. सभी अमान्य कथनों की व्याख्या कैसे करें? -
कोई भी भगवान बेहतर जानता था।
12. सभी अमान्य "संकेतों" की व्याख्या कैसे करें (इलाज .)
सबूत के तौर पर)?
13. अमान्य "सबूत" की व्याख्या कैसे करें? - कोई
भगवान बेहतर जानता था।
14. सीधे गलत बयानों की व्याख्या कैसे करें,
"संकेत" और "सबूत"?
15. अंतर्विरोधों की व्याख्या कैसे करें? - कोई भगवान नहीं
न तो स्वयं का विरोध करता है और न ही वास्तविकता का।

13/1 भी देखें।

सूरह १३: कम से कम २५ गलतियाँ + ४ संभावित गलतियाँ।

सूरा 14:

001 14/1a: "एक किताब (कुरान*) जिसे हमने (अल्लाह*) ने उतारा है - - -"। वही पुराना
प्रश्न: क्या इतनी स्पष्ट गलतियों वाली कोई पुस्तक वास्तव में एक सर्वज्ञ द्वारा प्रकट की जा सकती है
भगवान? और क्या यह इत्तेफाक है कि कई गलत तथ्य किस एक के अनुसार हैं?
मुहम्मद के समय अरब में विश्वास - परियों की कहानियों के साथ भी? एक भगवान की कहानियां? -
असंभव।

002 14/1b: "- - - पता चला - - -"। ऊपर 13/1a और 13/19a देखें।

*003 14/1c: "- - - ताकि आप (मुहम्मद - कुरान के माध्यम से *) नेतृत्व कर सकें
मानव जाति अंधकार की गहराइयों से प्रकाश में - - -"। इतनी गलतियों वाली कोई किताब नहीं
और वह संदिग्ध नैतिकता किसी को भी प्रकाश में ले जा सकती है। वही किसी भी धर्म के लिए जाता है
दमन, अमानवीय और घृणा, भेदभाव, रक्त और युद्ध, और "पूरी शक्ति" से भरा हुआ
मुहम्मद / नेता ”।

004 14/2: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

005 14/4: "हमने (अल्लाह*) ने कोई रसूल (सिवाय सिखाने के लिए) उसकी (अपनी) भाषा में नहीं भेजा।
लोग - - -।" गलत। यदि आप मूसा को दूत कह सकते हैं, तो उसे मिस्र में मिस्री भाषा बोलनी होगी -
हिब्रू नहीं। और लूत कसदिया के ऊर से था (इराक में फारस की खाड़ी से बहुत दूर नहीं), नहीं
सदोम या अमोरा से - जब कुरान कहता है कि सदोम और अमोरा के लोग थे
उसके लोग, यह भी गलत है, यह और भी अधिक है क्योंकि कुरान यह स्पष्ट करता है कि न केवल
क्या वह एक अजनबी था, लेकिन साथ ही वह स्थानीय लोगों के साथ एकीकृत नहीं था। और योना वहाँ से नहीं था
नीनवे जहाँ उसे प्रचार करना था। इसके अलावा इब्राहीम एक विदेशी था जिसकी भाषा विदेशी थी
जिस स्थान पर वह बस गया (कनान और सीनै) - यदि कोई उसे दूत मानता है। NS
मिस्र में यूसुफ के मामले में भी यही बात लागू होती है। और नीनवे में योना को न भूलना।

006 14/5a: "- - - हमारे (अल्लाह के *) संकेत - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

007 14/5b: "- - - इसमें संकेत हैं - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

008 14/9: "- - - साफ़ (साइन) - - -"। अल्लाह के लिए या मुहम्मद के लिए कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं
कुरान - एक नहीं। 2/99 देखें।

009 14/10: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

010 14/12a: "हमारे पास (मुसलमानों) कोई कारण नहीं है कि हमें अल्लाह पर भरोसा क्यों नहीं करना चाहिए"।
गलत। कुरान में सभी गलतियाँ आदि 100% साबित करती हैं कि यह किसी ईश्वर की ओर से नहीं है, और सभी

गलत तथ्य जो उस समय मध्य पूर्व में गलत विज्ञान के अनुसार हैं
मुहम्मद, दृढ़ता से संकेत करते हैं कि यह अरब में एक या एक से अधिक मनुष्यों द्वारा के समय में बनाया गया था मुहम्मद. दोनों ही मामलों में धर्म एक बना हुआ है, और अल्लाह का अस्तित्व भी नहीं हो सकता है।

011 14/12b: "क्योंकि जो लोग भरोसा करते हैं उन्हें अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिए।" गलत। 14/12a . देखें बिलकुल ऊपर।

00a 14/19a: "- - - अल्लाह ने आकाश (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी को सत्य में बनाया - -"। यह जानना असंभव है कि क्या यह सच है, जब तक कुरान केवल शब्द प्रदान करता है और एक भी नहीं प्रमाण। शब्द बहुत सस्ते होते हैं - खासकर जब यह स्पष्ट हो कि इसमें कई गलतियाँ आदि हैं पुस्तक।

012 14/19b: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०१३ १४/२२: "यह अल्लाह ही था जिसने तुम्हें सच्चाई (कुरान*) - - - का वादा दिया था। इसके साथ कई गलतियाँ कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है।

014 14/24: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

00b 14/27: "- - - शब्द (कुरान*) के साथ जो दृढ़ है - - -।" इतने सारे शब्दों के साथ कर सकते हैं गलतियाँ और झुके हुए तर्क, आदि धोखाधड़ी, मस्तिष्क धोने के अलावा अन्य प्लेटफार्मों पर मजबूती से खड़े रहते हैं, दबाव और सत्ता की कामना?

015 14/32: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

016 14/35: "याद रखें इब्राहीम ने कहा: 'हे मेरे भगवान! इस शहर (मक्का*) को अमन का बना दो और सुरक्षा; - - - "। अब्राहम कभी मक्का नहीं गए। इसके अलावा: के समय कोई शहर नहीं था इब्राहीम - यह वास्तविकता और कुरान दोनों के अनुसार है। याद रखें कि हाजिरा कैसे पीछे भागता है और वहां बिना लोगों को ढूंढे और बिना पानी पाए। एक शहर के रूप में मक्का केवल a . था मुहम्मद के समय एक शहर के रूप में कुछ पीढ़ी पुरानी - इब्राहीम के लगभग 2500 साल बाद। 2/127 भी देखें।

017 14/48: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22 देखें।

सूरह १४: कम से कम १७ गलतियाँ + २ संभावित गलतियाँ।

सूरा 15:

00a 15/1a: "ये रहस्योद्घाटन की आयत (छंद *) हैं - - -"। खैर, क्या कुरान एक रहस्योद्घाटन है? - और किसके द्वारा? सैद्धांतिक रूप से 4 संभावनाएं हैं:

1. एक भगवान - लेकिन कुरान साबित करता है कि वह नहीं है मामला; बहुत सारी गलतियाँ, आदि।
2. कुछ डार्क फोर्स, एफ। भूतपूर्व। शैतान - शायद भेष में। युद्ध का अमानवीय धर्म इस दिशा में इंगित करें।
3. मुहम्मद के समय के मनुष्य। तथ्य कि किताब में बहुत सारी गलतियाँ हैं मध्य में गलत विज्ञान के अनुसार उस समय पूर्व इस दिशा में इशारा कर सकता है।
4. खुद मुहम्मद। मुहम्मद की वासना शक्ति - और महिलाएं - इस ओर इशारा कर सकती हैं। यह ऊपर दिए गए बिंदु को भी आसानी से समझा देगा। जोड़ें उसकी नैतिकता और नैतिकता की कमी और यह भी हो सकता है उस एक के ऊपर भी बिंदु स्पष्ट करें।
5. स्पष्ट निष्कर्ष यह है कि यह कम से कम नहीं था एक ईश्वर द्वारा प्रकट किया गया, जैसा कि कुरान दावा करता है।

001 15/1b: "- - - एक कुरान जो चीजों को स्पष्ट करता है।" इतनी सारी गलतियों के साथ, यह बहुत कम करता है

चीजें स्पष्ट और कुछ चीजें बहुत अस्पष्ट - f. भूतपूर्व। जिस बुनियाद पर इस्लाम टिका है।

००बी १५/६: "हे तू (मुहम्मद*) जिस पर संदेश प्रकट किया जा रहा है"। ऊपर 15/1a देखें।

००२ १५/९: "हमने निस्संदेह, संदेश (कुरान*) नीचे भेजा है"। गलत। वहां एक है
उसके बारे में बहुत अच्छी तरह से स्थापित संदेह। बहुत सी गलतियाँ, अन्य बातों के अलावा।

००३ १५/१४ + १५: "- - - वे केवल यही कहेंगे (जब चमत्कार का अनुभव हो*): 'हमारी आँखों में है'
नशे में - - -"। गलत। कम से कम कुछ तो विश्वास करने आए थे। ये दो श्लोक हैं a
तेजी से बात का टुकड़ा। कुरान में कुछ तेज-तर्रार बात है - चीजों को समझाने की कोशिश करना और
तथ्य और विचार और कम से कम ऐसे प्रश्न नहीं हैं जिन्हें समझाना या उत्तर देना मुश्किल हो। अध्याय देखें
कुरान में तेजी से बात के बारे में। और आज मुसलमानों के बीच और भी तेज-तर्रार बात हो रही है, कोशिश कर रहा है
गलतियों को दूर करने के लिए, निरसन, इस्लाम में 622 के आसपास परिवर्तन, आदि, कोशिश करने का उल्लेख नहीं करने के लिए
इस्लाम को एक शांतिपूर्ण धर्म के रूप में पेश करने के लिए। बस इस मामले में कोई दूर के सवालों को समझाने की कोशिश करता है
अल्लाह के लिए सबूत और एक भगवान के साथ मुहम्मद के संबंध के लिए।

**लेकिन इस बिंदु के बारे में वास्तव में बुरी बात यह है कि यह उन बिंदुओं में से एक है जहां मुहम्मद
खुद जानता था कि वह झूठ बोल रहा है - कम से कम कुछ लोग इस्लाम में विश्वास करेंगे यदि वह चमत्कार करता है। वह
बहुत बुद्धिमान था और लोगों के बारे में बहुत कुछ जानता था जो यह नहीं जानता था - यह और भी अधिक
उन्होंने खुद चमत्कारों का अनुभव करने के बाद मुस्लिम बनने के बारे में बताया (f. पूर्व।
फिरौन के जादूगर), और उसका यीशु में भी एक अच्छा उदाहरण था - कुछ ने विश्वास करने से इनकार कर दिया
कोई बात नहीं, लेकिन बहुत से अन्य लोगों ने यीशु द्वारा किए गए चमत्कारों के बाद किया (उसके अनुसार भी बनाया गया
कुरान के लिए)।

004 15/16: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

००५ १५/१७: "- - - हम (अल्लाह) ने उन्हें (राशि चक्रों*) हर बुरी आत्मा से सुरक्षित रखा है
शापित: "कुरान के अनुसार, सितारों - राशि चक्र के संकेतों को शामिल करते हुए - को बांधा जाता है
7 का सबसे निचला भाग (सामग्री - उन्हें ऐसा होना चाहिए यदि तारों को उनमें से किसी एक से जोड़ा जा सके)

आकाश। लेकिन जिन्न/बुरी आत्माएं स्वर्ग की जासूसी करना चाहती थीं, और उन्हें पीछा करना पड़ा
शूटिंग सितारे = संरक्षित। और फिर उसी समय राशि चिन्हों पर पहरा दिया गया।
विज्ञान के अनुसार यह कम से कम पांचवीं शक्ति के लिए बिल्कुल बकवास है। कोई भगवान जानता था -
बच्चे भी - लेकिन मुहम्मद नहीं। फिर किसने कुरान को उसके सारे गलत तथ्यों के साथ बनाया,
आदि।?

**००६ १५/१८: "लेकिन कोई भी (जिन्न/बुरी आत्मा*) जो सुनवाई प्राप्त करता है (स्वर्ग पर जासूसी करके*)
चुपके, एक धधकती आग द्वारा पीछा किया जाता है, उज्ज्वल (देखने के लिए)। " कुरान के अनुसार तारे हैं
7 सामग्री के निम्नतम (ऊपर 15/17 देखें) आकाश में बांधा गया। सितारे रोशनी हैं और
सजावट, लेकिन जिन्न और बदमाशों का पीछा करने के लिए हथियारों के लिए सितारों की शूटिंग के लिए भी उपयोग किया जाता है
आत्माएं मुहम्मद को यह नहीं पता था कि एक तारे का द्रव्यमान कहीं 1 . की सीमा में होता है
शूटिंग स्टार x 10 से 20. या अधिक शक्ति और शूटिंग स्टार के रूप में उपयोग करना पूरी तरह से असंभव है
हमारा वायुमंडल - आकार के कारण, गर्मी के कारण, विकिरण के कारण, के लिए
गुरुत्वाकर्षण का कारण, विशाल आकार के कारण आदि। जैसा कि ऊपर 15/17 में कहा गया है: वैज्ञानिक
बकवास और पागलपन कम से कम 5. शक्ति। किसी भगवान ने यह काल्पनिक कथा सामग्री नहीं कही - लेकिन
मुहम्मद कोई बेहतर नहीं जानता था। फिर कुरान किसने बनाया?

००७ १५/१९अ: “और पृथ्वी को हम (अल्लाह*) ने बिछाया है (एक कालीन की तरह); - - -"। कुरान में
पृथ्वी चपटी है - जो गलत है। बस किसी भी भगवान से पूछो।

००८ १५/१९बी: "- - - उस पर स्थापित (पृथ्वी पर) पहाड़ दृढ़ और अचल - - -।" लेकिन कोई नहीं
पहाड़ कभी भी नीचे स्थापित किया गया था - ऊपर कहीं से उल्लेख नहीं है। वे बिना
अपवाद बड़े हुए, चाहे वे ज्वालामुखी के कारण बड़े हुए हों या
टेक्टोनिक गतिविधि (केवल दो तरीके से पहाड़ बनते हैं)। कोई भी भगवान जानता था - लेकिन
मुहम्मद नहीं।

००९ १५/२६: "हमने (अल्लाह*) ने बजती हुई मिट्टी से मनुष्य को पैदा किया, - - -"। एकदम गलत। 6/2 देखें।

०१० १५/२६: "हमने (अल्लाह*) ने मनुष्य को - - - - कीचड़ - - - से बनाया है। गलत। 6/2 देखें।

०११ १५/२७: "और जिन्न जाति, हमने (अल्लाह *) पहले पैदा की, एक चिलचिलाती आग से
हवा।" यहाँ कुछ गड़बड़ है। कुरान में कई जगह कहा गया है कि जिन्न थे
अग्नि से उत्पन्न - और एक स्थान को बिना धुएँ के आग से कहा जाता है।

०१२ १५/२८: "मैं (अल्लाह*) बजती हुई मिट्टी से मनुष्य को उत्पन्न करने वाला हूँ, - - -।" गलत। 6/2 देखें।

०१३ १५/२८: "मैं (अल्लाह*) मनुष्य पैदा करने वाला हूँ, - - - - - - - - - - से। गलत। 6/2 देखें।

०१४ १५/३३: "- - - मनुष्य, जिसे तू ने बजती हुई मिट्टी से बनाया, - - -"। गलत। 6/2 देखें।

०१५ १५/३३: "----मनुष्य, जिसे तू ने बनाया है----कीचड़,---"। गलत। 6/2 देखें।

016 15/71: "मेरी बेटियाँ हैं (विवाह करने के लिए)"। यहाँ मर्यादा को कुरान की बेहतरी मिली है
(या अनुवादक)। सदोम या अमोरा के पुरुष विवाह के लिए नहीं जा रहे थे - न ही
क्या कुछ बेटियाँ बहुत सारे पुरुषों से शादी कर सकती हैं। यह यौन शोषण के बारे में बात कर रहा है। सबसे अधिक संभावना है
बेईमान अनुवाद - लेकिन उस मामले में: कुरान में और कितनी जगहों की व्याख्या की गई है
बेईमानी से?

०१७ १५/७५: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

333

पेज ३३४

०१८ १५/७७: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

019 15/81: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

020 15/85: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०२१ १५/८६: "क्योंकि वास्तव में तेरा रब (अल्लाह*) है, जो सृष्टिकर्ता है, जो सब कुछ जानता है।"
कुरान में गलतियों का मतलब है कि किताब किसी और ने बनाई है - या कि अल्लाह जानता है
सभी चीजें नहीं।

०२२ १५/९९: "- - - वह घंटा जो निश्चित है (कयामत का दिन*)"। सभी गलतियों के कारण
कुरान, निश्चित रूप से कयामत का दिन भी अनिश्चित है - कम से कम द्वारा वर्णित रूप में
कुरान - क्योंकि यह आसानी से एक त्रुटि भी हो सकती है। यह और भी अधिक है क्योंकि पुस्तक में सभी गलतियाँ हैं
साबित करें कि यह किसी भगवान द्वारा नहीं बनाया गया है, और मुहम्मद भविष्यवाणी करने में असमर्थ पैगंबर थे, और
फिर हमें सही भविष्य बताने वाला कौन बचा है? (वैसे: भविष्यद्वक्ता क्या भविष्यवाणी करने में असमर्थ है?
- एक शीर्षक चोरी हो गया क्योंकि यह प्रभावशाली लगता है? मुहम्मद ने कभी वास्तविक भविष्यवाणियां नहीं की (वहां)
कुछ कहावतें थीं जिन्हें याद किया जाता है क्योंकि वे सच हो गईं, लेकिन वास्तविक नहीं
भविष्यवाणी)। जबकि एक वास्तविक भविष्यद्वक्ता भविष्यवाणी करने वाला व्यक्ति/व्यक्ति होता है। एकमात्र संभव
निष्कर्ष: मुहम्मद कोई वास्तविक नबी नहीं थे; उसने केवल शीर्षक "उधार" लिया - इतने सारे की तरह
अन्य बातें। किसी के लिए या किसी चीज के लिए दूत हो सकता है - शायद अपने लिए (?) - लेकिन नहीं
एक सच्चा नबी।)

सूरह १५: कम से कम २२ गलतियाँ + २ संभावित गलतियाँ।

सूरा १६:

001 16/2a: "उसने (अल्लाह*) ने अपने फ़रिश्तों को प्रेरणा से उतारा ("रुह"*) - - -।" लेकिन अरब
रूह शब्द का अर्थ "प्रेरणा" नहीं बल्कि "आत्मा" है।

00a 16/2b: "वह (अल्लाह *) प्रेरणा के साथ अपने स्वर्गदूतों को नीचे भेजता है ("रुह") - - -।" लेकिन
अरब शब्द "रुह" का अर्थ वास्तव में प्रेरणा नहीं है - इसका अर्थ है आत्मा या पवित्र आत्मा। हम
यह जोड़ सकते हैं कि मुसलमान अक्सर दावा करते हैं कि पवित्र आत्मा स्वर्गदूत का दूसरा नाम है
गेब्रियल। लेकिन यहाँ यह स्पष्ट है कि (पवित्र) आत्मा - "रुह" - स्वर्गदूतों में शामिल नहीं है
(स्वर्गदूत "परिवहन" रूह)। (वास्तव में मुहम्मद ने कभी भी यह नहीं समझा कि पवित्र क्या है?
आत्मा - इसमें से एक कम से कम 5 नाम है - था)। साथ ही देखें 70/4, 78/38 और 97/4 जहां वही है
शब्द - "रुह" - प्रयोग किया जाता है।

002 16/3: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

००३ १६/४: "उसने (अल्लाह*) ने मनुष्य को बनाया है ("मनुष्य" शब्द का प्रयोग इस तरह किया जाता है, जिसका अर्थ है मानव

दौड़ = इस मामले में एडम*) एक शुक्राणु-बूंद से - - -"। गलत। भले ही इसका वास्तव में मतलब नहीं होना चाहिए आदम, लेकिन आम तौर पर पुरुष, यह गलत है। एक शुक्राणु-बूंद सिर्फ आधा स्पष्टीकरण है - एक अंडा भी सेल आवश्यक है। लेकिन मुहम्मद को यह नहीं पता था। (मानव अंडाणु कोशिकाएं होने के लिए बहुत छोटी होती हैं केवल आंखों से देखा जाता है जब यह मानव ऊतक, रक्त और गोर में पड़ा होता है)। 6/2 भी देखें।

00b 16/5: "और मवेशियों को उसने (अल्लाह*) ने तुम्हारे (मनुष्यों) के लिए पैदा किया - - -"। मुश्किल से। मवेशी और उनके पूर्वजों का अस्तित्व लाखों वर्षों से हो सकता है। मनुष्य ने दीर्घ युगों के बाद ही रास्ते खोजे उनका उपयोग करना - लगभग 15ooo साल पहले ही।

00c 16/8: "और (उसने (अल्लाह *) ने तुम्हारे लिए सवारी करने और उपयोग करने के लिए घोड़े, खच्चर और गधे बनाए हैं कार्यक्रम के लिए - - -"। ऊपर 16/5 देखें।

००४ १६/११: "--- वास्तव में यह (विभिन्न खाद्य पौधे*) उन लोगों के लिए एक निशानी है जिन्हें विचार दिया जाता है।" वास्तव में यह होगा - - - लेकिन उस दिन तक नहीं जब तक कि इस्लाम यह साबित नहीं कर देता कि वास्तव में अल्लाह ही ने बनाया है इन खाद्य पौधों। उस दिन तक यह केवल एक स्पष्ट संकेत है कि इस्लाम और कुरान के पास ही है दावे और सस्ते शब्द और दिखाने के लिए कोई सबूत नहीं। क्योंकि अगर उनके पास असली तर्क थे, तो उन्होंने किया केवल तार्किक रूप से अमान्य दावों का सहारा नहीं लेना है। (यह एक अपरिहार्य निष्कर्ष है कुछ व्यक्ति चीजों को विचार दे रहे हैं)।

००५ १६/१२: "- - - वास्तव में यह (सूर्य, चंद्रमा, तारे, दिन, रात*) बुद्धिमान पुरुषों के लिए संकेत हैं।" गलत। ऊपर 16/11 देखें।

006 16/13: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

007 16/15a: "और उसने (अल्लाह) ने धरती पर पहाड़ों को मजबूती से खड़ा कर दिया है, ऐसा न हो कि वह तुम्हारे साथ हिलाओ; - - -"। पहाड़ भूकंप में बाधा नहीं डालते (वास्तव में इस्लामी में अन्य स्थान साहित्य यह इंगित करता प्रतीत होता है कि पुस्तक का वास्तव में अर्थ यह है कि पृथ्वी बन सकती है अस्थिर और पलटना - एक ग्लोब के लिए असंभव है, लेकिन एक सपाट पृथ्वी के लिए संभव है)। कुछ मुसलमान अस्पष्ट रूप से कुरान के चारों ओर एक रास्ता खोजने की कोशिश करता है और "समझाता है" कि पहाड़ बढ़ते हैं ("सेट" नहीं हैं) पृथ्वी पर"), लेकिन उस मामले में इस मामले में कोई स्पष्टीकरण नहीं है - दोनों विवर्तनिक से विकास आंदोलनों और ज्वालामुखीय गतिविधि के परिणामस्वरूप भूकंप हो सकते हैं - - - के विपरीत प्रभाव कुरान क्या कहता है।

008 16/15b: "(अल्लाह ने*) सड़कें बनाईं - - -"। गलत - अगर इस्लाम वास्तव में इसे साबित नहीं करता है। NS मध्य पूर्व में मुहम्मद के समय में सड़कें वास्तव में केवल अधिकांश स्थानों पर पटरियां थीं - अल्लाह ने नहीं, बल्कि सदियों और सहस्राब्दियों से मनुष्यों और जानवरों के चलने से बनाया है।

००९ १६/३६अ: "क्योंकि हमने (अल्लाह) ने निश्चय ही हर क़ौम के बीच एक रसूल भेजा है। आज्ञा), 'अल्लाह की सेवा करो, और बुराई से बचो': - - -"। कुरान जोर देकर कहता है कि हर व्यक्ति इतिहास के माध्यम से हर जगह और हर बार अल्लाह के लिए नबी भेजे गए हैं। हदीस उल्लेख करें कि उस समय के दौरान 124ooo नबी या उससे अधिक रहे हैं, और यहां तक कि संख्या असंख्य लोगों के लिए सिर्फ एक अभिव्यक्ति है। लेकिन दुनिया में कहीं नहीं - सिवाय in . के इज़राइल (और एक तरह से मिस्र में फिरौन अकन-एटन के अधीन, जिसने केवल सूर्य को भगवान के रूप में स्वीकार किया - अल्लाह नहीं, और फारस में पारसी) - किसी भी समय या किसी भी परिस्थिति में एक ईस्वी सन् से पहले एकेश्वरवाद का प्रचार करने वाले भविष्यवक्ताओं के निशान। न इतिहास में, न लोककथाओं में, न परंपराओं में, न इतिहास में, न कला में, न साहित्य में, न पुरातत्व में, न किसी स्थान पर - परियों की कहानियों या किंवदंतियों में भी नहीं। खासकर जब आप इसकी तुलना सिर्फ दो के परिणामों से करते हैं "भविष्यद्वक्ताओं": जीसस और मुहम्मद, यह संभव नहीं है कि 124oooo या अधिक नबियों के माध्यम से समय ने एक भी निशान नहीं छोड़ा। अल्लाह के लिए सभी नबियों के बारे में यह बयान बस नहीं है सच।

०१० १६/३६ब: "इसलिये पृथ्वी पर घूमो, और देखो कि इन्कार करनेवालों का अन्त क्या हुआ (.) सत्य)"। अरब में बिखरे हुए खंडहर थे। कुरान/मुहम्मद बताता है कि वे सभी परिणाम हैं अल्लाह के काफिरों की सजा के बारे में। शायद ही सच है - कम से कम उन सभी के लिए नहीं।

011 16/36c: "- - - जिन्होंने इनकार किया (सच्चाई)"। कुरान में सभी गलतियों के साथ, यह है यह विश्वास करना असंभव है कि पुस्तक या इस्लाम पूर्ण सत्य और केवल सत्य का प्रतिनिधित्व करता है। (वह मुख्य कारणों में से एक है कि इस्लाम कुरान में एक भी गलती को स्वीकार नहीं कर सकता है, चाहे कोई भी हो

गलती कितनी स्पष्ट है - अगर गलतियाँ हैं, तो किताब में कुछ गड़बड़ है - - - -
और फलस्वरूप धर्म के साथ)।

००डी १६/३८: "- - - सत्य में उस पर एक वादा (बाध्यकारी), - - -"। से भरी किताब में क्या सच है
गलतियां?

012 16/39: "- - - सत्य के अस्वीकार करने वाले - - -"। ऊपर 16/38 देखें।

०१३ १६/४८ए: "- - - अल्लाह की रचनाएँ, (यहां तक कि) (निर्जीव) चीजों के बीच - कैसे उनकी (बहुत)
परछाईं घूमती हैं, - - -, खुद को अल्लाह को सजदा करते हैं"। गलत - 13/15c देखें।

०१४ १६/४८बी: "- - - अल्लाह की रचनाएँ, (यहां तक कि) (निर्जीव) चीजों के बीच - कैसे उनकी बहुत
छायाएँ घूमती हैं, दाएँ से बाएँ - - -"। गलत: यह एक सामान्य कानून नहीं है - यह केवल सच है
उत्तरी गोलार्ध पर। दक्षिण में यह बाएँ से दाएँ है - और इस्लाम होने का दिखावा करता है
एक सार्वभौमिक धर्म। मानसिक रूप से विक्षिप्त भगवान भी यह जानता था - लेकिन मुहम्मद निश्चित रूप से
नहीं। कुरान किसने बनाया?

०१५ १६/४९ए: "और जो कुछ स्वर्ग में है (बहुवचन और गलत*) अल्लाह को प्रणाम करता है और
पृथ्वी पर, चाहे गतिमान (जीवित) जीव हों या देवदूत - - -"। गलत - अगर इस्लाम नहीं
विपरीत साबित करो। पशु, पक्षी, कीड़े, मछली, कीड़े, आदि - वे कभी नहीं देखे जाते हैं
अल्लाह (या किसी अन्य ईश्वर) को प्रणाम करना। कोई अनुष्ठान नहीं, कोई दिन/रात में ५ प्रार्थनाएं (यहां तक कि .)
और भी बहुत कुछ: कुछ जानवर स्वाभाविक रूप से रात और दिन दोनों समय सक्रिय रहते हैं - "प्रार्थना" करना आसान होना चाहिए
नोटिस), कभी-कभी अपने ही नेताओं, आदि के अलावा कोई दासता नहीं। और निश्चित रूप से गैर-मुस्लिम
मनुष्य अल्लाह की आज्ञा नहीं मानते - हालाँकि कभी-कभी अन्य वास्तविक या गढ़े हुए भगवान या
भगवान का।

016 16/49बी: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

017 16/50: "वे सभी (सभी जीवित प्राणी *) अपने भगवान (अल्लाह *) का सम्मान करते हैं"। गलत - अगर इस्लाम करता है
अच्छे प्रमाण नहीं देते। ऊपर 16/49a देखें।

018 16/52: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

019 16/62: "- - - वे (लोग*) अल्लाह को उस चीज़ का श्रेय देते हैं जिससे वे नफरत करते हैं (बेटियाँ*)"। गलत - अगर
इस्लाम एक सार्वभौमिक धर्म होने का दिखावा करता है। पृथ्वी पर कुछ स्थान - जैसे अरब में - बालिकाएँ
हो सकता है कि नफरत की गई हो। लेकिन ज्यादातर जगहों पर वे केवल कम मूल्य के थे, और नफरत से बहुत दूर थे।
तब कुछ स्थानों पर उन्हें कमोबेश समान रूप से महत्व दिया जाता था। ऐसे स्थान भी थे जहाँ
बेटियाँ मूल्यवान थीं - f. भूतपूर्व। क्योंकि उनका मतलब अपने माता-पिता के लिए पैसा/मूल्यवान था जब
उन्होंने शादी की। यहाँ तक कि कुछ स्थान ऐसे भी थे जहाँ समाज मातृसत्तात्मक थे, और
लड़कियों का मुख्य लिंग। (यह कुरान में कई बिंदुओं में से एक है जो कुछ इंसानों को इंगित करता है)
अरब में कुरान के निर्माता के रूप में - इस तरह के बहुत सारे बिंदु हैं।)

020 16/64a: "और हमने (अल्लाह*) ने किताब (कुरान*) - - - उतारी। पुराना और
अतार्किक - लेकिन बहुत प्रासंगिक - प्रश्न यह है: क्या किसी सर्वज्ञ ने तीसरी दर की किताब भेजी?
- तीसरी दर क्योंकि इसमें इतनी सारी गलतियाँ और इतना अमान्य / मुड़ तर्क है कि आप नहीं कर सकते
किसी भी चीज़ पर भरोसा करें जिसे आप अन्य स्रोतों के माध्यम से नियंत्रित नहीं कर सकते + अच्छी तरह से लिखित नहीं। साधारण तथ्य यह है:
कोई भगवान ऐसी किताब नहीं बनायेगा।

०२१ १६/६४बी: "(कुरान नीचे भेजा गया था*) व्यक्त उद्देश्य के लिए, कि तुम (मुहम्मद*)
उन्हें बातें स्पष्ट कर देनी चाहिए - - -"। के माध्यम से चीजों को स्पष्ट करना कैसे संभव है
गलतियों, विरोधाभासों और अमान्य/झूठे "सबूतों" से भरी किताब?

022 16/64c: "- - - और यह (कुरान*) एक मार्गदर्शक होना चाहिए - - - विश्वास करने वालों के लिए"। ए
इतनी सारी गलतियों आदि वाली किताब किसी के लिए मार्गदर्शक नहीं है।

00e 16/64d: "- - - और यह (कुरान*) उन लोगों के लिए एक मार्गदर्शक और दया होना चाहिए जो
मानना।" क्या इतनी अमानवीयता, नफरत और खून वाली किताब किसी पर दया कर सकती है? -
सिवाय शायद स्वयं मुहम्मद को और उनके उत्तराधिकारियों और सहायकों को जिन्होंने अर्जित/लाभ किया
धन और शक्ति?

०२३ १६/६५अ: "और अल्लाह आसमान से बारिश बरसाता है, और उसके साथ पृथ्वी को जीवन देता है"
उसकी मृत्यु के बाद :- - -"। यदि पृथ्वी को फलने-फूलने के लिए केवल वर्षा की आवश्यकता है, तो यह पहले मरा नहीं था
बौछार - बहुत सारे जीवित बीज थे और जड़ें हो सकती हैं। और यह अल्लाह है या कोई और ईश्वर - या
प्रकृति - जो इसे नीचे भेजती है?

०२४ १६/६५ब: "और अल्लाह आसमान से बारिश बरसाता है, और उसके साथ पृथ्वी को जीवन देता है"
उसके मरने के बाद: निःसन्देह इसमें सुनने वालों के लिए एक निशानी है।" ऊपर 16/65a देखें। यह कुछ है
अमान्य प्रमाण का उपयोग करने के लिए साइन इन करें। कुरान अक्सर उन संकेतों के बारे में बात करता है जो दस्तावेज या साबित करेंगे
अल्लाह। खेद की बात यह है कि उनमें से हर एक, कुछ के संभावित अपवाद के साथ
बाइबल से लिए गए, ईश्वर के प्रमाण के रूप में बिना किसी मूल्य के हैं, और एक भी साबित नहीं होता है
अल्लाह के अस्तित्व के बारे में कुछ भी। दो सबसे आम कारण हैं कि वे वास्तव में हैं
केवल पतली हवा से लिए गए दावे हैं, या वे ऐसे बयानों पर आधारित हैं जो साबित नहीं होते हैं। देखो
इसके बारे में अलग अध्याय।

०२५ १६/६५सी: "- - - वास्तव में इसमें (बारिश, आदि *) सुनने वालों के लिए एक निशानी है।" शायद इसलिए
जो सिर्फ सुनते हैं और सोचते नहीं। जो लोग भी सोचते हैं, उनके लिए यह वास्तव में एक संकेत है
कुछ भी नहीं, जब तक कि इस्लाम यह साबित न कर दे कि बारिश आदि करने वाले वास्तव में अल्लाह ही है, और वह सब
कुरान में अप्रमाणित और अप्रमाणित दावे सिर्फ इतनी पतली हवा और सस्ते नहीं हैं
शब्दों। खैर, वास्तव में यह एक बात साबित करता है: कि कुरान, मुहम्मद, इस्लाम, मुसलमान,
सभी के पास अप्रमाणित और अप्रमाणित दावों के अलावा धर्म के लिए दिखाने के लिए और कुछ नहीं है - if
उनके पास कुछ विश्वसनीय सबूत थे, उन्होंने सिर्फ शब्दों और मुड़ तर्क के बजाय उनका इस्तेमाल किया था।

०२६ १६/६६: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२७ १६/६७: "--- इसमें (फल, आदि*) भी बुद्धिमान लोगों के लिए एक निशानी है"। गलत। देखो
16/65b और 16/65c ठीक ऊपर।

०२८ १६/६९: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

029 16/73: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

030 16/77: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०३१ १६/७९ए: "कुछ भी उन्हें (पक्षियों) ऊपर नहीं रखता, लेकिन (शक्ति) अल्लाह"। गलत। क्या
उन्हें पकड़ो वायुगतिकी के नियम हैं। मुहम्मद को यह नहीं पता होगा, लेकिन सभी देवताओं
चाहेंगे।

०३२ १६/७९बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के रूप में अमान्य - विशेष रूप से प्रारंभिक दावा के रूप में
गलत (ऊपर 16/79a देखें)। ऊपर 2/39 देखें।

00f 16/81a: "उसने (अल्लाह*) ने तुम्हें वस्त्र बनाया - - -"। सबूत है कि अल्लाह ने ऐसा किया?

00g 16/81b: "उसने (अल्लाह*) ने तुम्हें हीथ से बचाने के लिए कपड़े बनाए हैं"। यह एक और है
वह बिंदु जहां कोई आश्चर्य कर सकता है: क्या कुरान के निर्माता केवल मध्य पूर्व को जानते थे? - अधिकांश

इंसानों को ठंड से बचाने के लिए कपड़े बनाए जाते हैं।

०३३ १६/८२: "- आपका (मुहम्मद का) कर्तव्य केवल स्पष्ट संदेश का प्रचार करना है"। अरे नहीं
गलतियों से भरी किताब से स्पष्ट संदेश देना संभव है।

०३४ १६/८९अ: "- - - हम (अल्लाह*) ने तुम्हारे पास किताब (कुरान*) - - - उतारी है। हाँ कि
इस्लाम के लिए बड़ा सवाल है। अगर अल्लाह मौजूद है, और अगर उसने कुरान को उतारा, और अगर मुहम्मद
सब कुछ सही ढंग से बताया - f. भूतपूर्व। मदीना में योद्धाओं को पाने के लिए "डॉक्टर" नहीं किया
उनके परिवार में शांति - इस्लाम एक धर्म है। अगर यह सच नहीं है तो क्या है? - और मामले में क्या होता है
सभी मुसलमानों के लिए यदि एक वास्तविक भगवान द्वारा चलाया जाने वाला अगला जीवन है तो उन्हें खोजने के लिए मना किया गया है?
क्या भूलों से भरी किताब कोई ईश्वर भेज सकता है - सर्वज्ञानी कहने के लिए नहीं? सपाट नं।

०३५ १६/८९बी: "- - - पुस्तक (कुरान*) सभी चीजों को समझाते हुए, - - -"। सिवाय इसके कि कुछ
स्पष्टीकरण स्पष्ट रूप से गलत हैं। और इसके अलावा बहुत सी बातें समझाई नहीं जाती हैं।

036 16/89c: "- - - (कुरान है *) एक गाइड - - - मुसलमानों के लिए"। एक किताब जिसमें कई गलतियां हैं
और इतना विकृत तर्क और इतनी नफरत और अमानवीयता वास्तविक मार्गदर्शक नहीं हो सकती
कोई भी (और अगर कोई इसे एक गाइड के रूप में उपयोग करता है, तो यह उनके बारे में वॉल्यूम बताता है)।

00h 16/102a: "- - - पवित्र आत्मा रहस्योद्घाटन लाया है - - -"। मुहम्मद आज़ाद : "
कुरान का संदेश" बताता है कि अरब शब्द "रुह अल-कुदुस" (= पवित्र आत्मा) का प्रयोग किया जाता है ३
कुरान में बार (2/87, 5/110 - दोनों यीशु से जुड़े हुए हैं - और यहाँ), और यहाँ इसका अर्थ है
एंजेल गेब्रियल। अरब में पवित्र आत्मा = गेब्रियल? इसका मतलब है कि 2/87 और . में
५/११० यीशु को स्वर्गदूत जिब्राईल के साथ बल मिला है - बाइबल जो कहती है उससे थोड़ी दूर। (यह है
संभावना है कि इस्लाम पवित्र आत्मा = गेब्रियल सेट करता है क्योंकि कुरान बताता है कि गेब्रियल बड़ा लाया
कुरान के कुछ हिस्से (अन्य हिस्से सपने में उसके पास आए, आदि), ताकि जब यह कहे कि पवित्र
आत्मा ने उसके लिए छंद लाए, इसका मतलब यह होना चाहिए कि किताब गेब्रियल के बारे में बात कर रही है - 100% नहीं
तार्किक।"

०३७ १६/१०२बी: "- - - आपके रब (अल्लाह*) की ओर से प्रकटीकरण - - -"। एक बार और: खुलासे कर सकते हैं
एक सर्वज्ञानी भगवान से हो, जब उनमें से बहुत से गलत हैं या गलतियां हैं? से बाहर
सवाल!

038 16/102c: "- - - सत्य में अपने भगवान (अल्लाह *) से रहस्योद्घाटन - - -"। तमाम गलतियों के साथ,
कुरान में बताए गए रहस्योद्घाटन, आंशिक रूप से सत्य हैं।

०३९ १६/१०२डी: "- - - सत्य में अपने भगवान (अल्लाह *) से रहस्योद्घाटन, ताकि उन्हें मजबूत करने के लिए
जो मानते हैं - - -"। किसी धर्म के लिए अपने विश्वासियों को कम से कम आंशिक रूप से मजबूत करने का यह एक अजीब तरीका है
गलत और/या विश्वसनीय "सूचना" के साथ। कुरान में बहुत सारी गलतियाँ हैं
किसी भी संवेदनशील शिक्षित व्यक्ति के लिए नई आँखों से, विश्वास करने के लिए कि यह विश्वसनीय है।

०४० १६/१०२ई: "- - - सत्य में अपने भगवान (अल्लाह *) से रहस्योद्घाटन, ताकि उन्हें मजबूत करने के लिए
जो मानते हैं, और एक गाइड के रूप में - - - मुसलमानों के लिए ”। यह इस्लाम के बारे में मात्रा बताता है, अगर वे एक किताब का उपयोग करते हैं

गलतियों से भरा + भेदभाव, नफरत और गैर-मुसलमानों के खिलाफ युद्ध उनके लिए एक मार्गदर्शक के रूप में
विश्वासियों - मुसलमानों। और इससे भी ज्यादा अगर धर्म/धार्मिक नेता दूर करने के लिए "समझाने" की कोशिश करते हैं
क्या सच है और क्या नहीं, यह जानने के बजाय स्पष्ट गलतियाँ भी।

०४१ १६/१०२एफ: "- - - सत्य में अपने भगवान (अल्लाह *) से रहस्योद्घाटन, ताकि उन्हें मजबूत करने के लिए
जो विश्वास करते हैं, और मुसलमानों के लिए एक मार्गदर्शक और खुशखबरी के रूप में ”। शुभ समाचार क्या हो सकते हैं
कम से कम एक बड़े हिस्से पर गलत और/या बेकार बयानों और गलत तथ्यों के रूप में बनाया गया है? यह है
बुरा अगर इस्लाम वास्तव में सब कुछ मानता है - इसका मतलब है कि वे बहुत अंधे हैं - या अंधे हैं - देखने के लिए
यहां तक कि सबसे स्पष्ट गलतियाँ भी। लेकिन यह बहुत बुरा है अगर (कुछ) नेताओं और सीखा
पुरुष/शिक्षक गलतियों को देखते हैं और अपने दर्शकों को झांसा देते हैं। और कम से कम नहीं: यदि सभी गलतियाँ
इसका मतलब है कि इस्लाम एक बना हुआ धर्म है - ऐसे धर्म होते हैं - और इसके लिए रास्ता अवरुद्ध करते हैं
(गलत-) सच्चे धर्म को मानने वाले (यदि ऐसा कोई मौजूद है), तो क्या? इसके अलावा: क्या इसकी अनुमति है
चोरी करो और लूटो और बलात्कार करो और गुलामों को ले लो जो "खुशखबरी" हैं? - लड़ाई, औरतें और लूटपाट
कुरान में बहुत केंद्रीय हैं।

०४२ १६/१०३: "- - - यह (कुरान*) अरबी में है, शुद्ध और स्पष्ट है"। कई मायनों में गलत: वहाँ

[illegible] नहीं जानता है या
छंद (अंतिम आंशिक रूप से क्योंकि पुस्तक मूल रूप से एक अधूरे माध्यम से लिखी गई थी
वर्णमाला)।

043 16/104: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

044 16/105: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०४५ १६/१०९: "बेशक, आख़िरत में वे (गैर-मुस्लिम*) हैं जो नाश होंगे।"
कुरान में सभी गलतियों आदि के कारण, इसके बाद के बारे में संदेह का वास्तविक कारण है
- और इससे भी ज्यादा अगर यह वास्तव में कुरान में वर्णित है। इस वजह से - और
कुरान में अन्य सभी गलतियों के कारण - इस बारे में संदेह का वास्तविक कारण है कि कौन करेगा
नाश।

०४६ १६/११५: "उसने (अल्लाह*) ने तुम्हें केवल मरा हुआ मांस, और खून, और उसके मांस को मना किया है
सूअर, और कोई भी (भोजन) जिस पर अल्लाह के अलावा किसी और का नाम लिया गया है ”। गलत।
हदीस - एफ। भूतपूर्व। अल-बुखारी और मुस्लिम - इस तथ्य पर बहुत स्पष्ट हैं कि मांस भी
गधा वर्जित है। (यह उन मामलों में से एक है जहां हदीसों ने कुरान को निरस्त कर दिया। शायद
अल्लाह भूल गया कि मदर बुक में गधे का मांस वर्जित है, या मुहम्मद भूल गए
यह उल्लेख?)

०४७ १६/१२३: "तो हम (अल्लाह*) ने आपको (मुहम्मद/मुसलमान*) प्रेरित संदेश समझा है
(कुरान*) - - -"। किसी सर्वज्ञ भगवान ने किसी को इतनी गलतियां नहीं समझी हैं, अमान्य तर्क,
अमान्य संकेत, अमान्य प्रमाण, जैसे आप कुरान में पाते हैं।

०४८ १६/१२५: "- - - तेरे रब का मार्ग (अल्लाह*) - - -"। कुरान रास्ते का प्रतिनिधित्व नहीं करता
एक सर्वज्ञ भगवान की - एक अच्छा नहीं कम से कम: बहुत सारी गलतियाँ, आदि।

सूरह १६: कम से कम ४८ गलतियाँ + ८ संभावित गलतियाँ।

सूरा 17:

339

पेज 340

001 17/1: "(अल्लाह मुहम्मद* को सबसे दूर की मस्जिद में ले गया" = चट्टान का गुंबद
इस्लाम के अनुसार जेरूसलम - लेकिन वे अभी भी इस बात से असहमत हैं कि यह एक वास्तविक यात्रा थी या एक सपना।
लेकिन किसी भी तरह: पुराने यहूदी मंदिर को टाइटस और उसकी रोमन सेना ने 64 ईस्वी में नष्ट कर दिया था,
और इस छोटे से पहाड़ पर चट्टान के गुंबद तक किसी भी परिणाम का कुछ भी नहीं बनाया गया था
६९० ईस्वी में बनाया गया था, कुछ ६३० साल बाद - - - और सूरह १७ के कुछ ६०-७० साल बाद - "द
नाइट जर्नी" - 621 ईस्वी के आसपास या उसके बाद तय की गई थी। वहाँ बस जाने के लिए कोई मस्जिद नहीं थी
लगभग 621-630 ई. क्या यह कुरान में बाद में जोड़ा गया है? - आखिरकार किताब कई में मौजूद थी
संस्करण जो हाथ से कॉपी और कॉपी किए गए थे और इस तरह कभी-कभी बदल सकते थे,
और यह वास्तव में लगभग 900 ईस्वी तक समाप्त नहीं हुआ था। (मुसलमान इसे इससे दूर समझाते हैं
पुराने यहूदी मंदिर की कुछ दीवारों का मतलब क्या है, लेकिन निश्चित रूप से वह कुरान नहीं है
कहते हैं।)

002 17/2: "हमने (अल्लाह*) ने मूसा को किताब (कुरान) दी, - - -"। सभी जानकारी के अनुसार
और विज्ञान के लिए यह गलत है। परमेश्वर / यहोवा ने उसे (बाइबल के अनुसार) 10
केवल आज्ञाएँ + उसने उसे कानून (बाद में टोरा का एक हिस्सा) बताया जो उसने खुद लिखा था
नीचे। मूसा की पुस्तक वास्तव में कई सौ वर्ष छोटी है।

00a 17/4: "- - - (और दो बार उन्हें (यहूदी*) दंडित किया जाना चाहिए)!" यहूदी रहे हैं
इतिहास के दौरान कम से कम दो बार "दंडित" - क्या इसका मतलब यह है कि वे वास्तव में अब सुरक्षित हैं,
मामूली एपिसोड को छोड़कर?

००३ १७/९ए: "वास्तव में कुरान उसे मार्गदर्शन करता है जो सबसे सही (या स्थिर) - - -" है। अर्थात्
३०००+ गलतियों, विरोधाभासों, अमान्य तर्क, और के साथ एक पुस्तक के आधार पर संभव नहीं है
और भी बुरा। यह जोड़ने योग्य है कि "कुरान का संदेश" (इस सूरह के लिए 10 टिप्पणी) निर्दिष्ट करता है
कि "सबसे सही" में "नैतिक सिद्धांत और मानव जीवन को बढ़ावा देने वाली हर चीज" शामिल है। एक सा
एक ऐसे धर्म के लिए विशेष जिसका कोई नैतिक या नैतिक दर्शन नहीं है, केवल उसी के आदेश हैं

नैतिक रूप से बहुत ही विशेष युद्ध के स्वामी और डाकू बैरन मुहम्मद - और लूटने की गणना करते हैं,
दासता, दासों का बलात्कार, दमन, भेदभाव, हत्या, घृणा, युद्ध "वध और" के रूप में
अच्छा" और बहुत स्पष्ट रूप से अनुमति दी गई, और यहां तक कि भगवान और धर्म द्वारा प्रोत्साहित किया गया। (कुंआ,
अल्लाह और मुहम्मद को कई योद्धा मिले - और मुफ्त में)। इसी तरह के दावे, 2/213 - 48/28 देखें।

००४ १७/९ब: "- - - और (कुरान*) ईमानवालों को शुभ सूचना देता है - - -"। किस तरह का
सैकड़ों गलतियों वाली किताब पर खुशखबरी लिखी जा सकती है? - मूर्खों की खबर
स्वर्ग? और क्या ऐसी ख़बरें भी विश्वसनीय हो सकती हैं, जब कुछ सैकड़ों गलतियों पर बनी हों +
सैकड़ों और सैकड़ों अप्रमाणित बयान हवा में लटके हुए हैं, जो अप्रमाणित शब्दों पर टिके हुए हैं?
(अलग अध्याय देखें)। और किस तरह की खुशखबरी नैतिकता और नैतिकता पर बनी है जैसे क्या
आप कुरान में पाते हैं - कई अन्य लोगों के लिए आपदाओं की कीमत पर एक अच्छा जीवन जीते हैं ?!

००५ १७/१२: "---- सभी चीजों को हमने (अल्लाह) विस्तार से समझाया है"। गलत। बहुत सी चीजें हैं
विस्तार से नहीं बताया - f. भूतपूर्व। मुस्लिम कानूनों को और अधिक के साथ पूरक करना पड़ा है
कुरान और हदीस की तुलना में पैराग्राफ - और अभी भी मुस्लिम कानून से दूर हैं
आधुनिक जीवन और समाजों के विषय में और यहां तक कि दैनिक जीवन के विषय में भी पूर्ण। और केवल? - ए
पुरुष यह कह रहा है कि एक महिला ने अभद्र व्यवहार किया है, अल्लाह के अनुसार अल्लाह से झूठ बोल रहा है और
कुरान, अगर वह 4 गवाह पेश नहीं कर सकता, भले ही वह पूरा सच बोलता हो, और
सर्वज्ञ अल्लाह यह जानता है। और इससे भी बदतर: एक बलात्कारी महिला को होना है
सजा दी जाती है अगर वह 4 पुरुषों का उत्पादन नहीं कर सकती है जिन्होंने इस कृत्य को देखा - आम तौर पर बिल्कुल
असंभव। (एक बात के लिए बलात्कार आमतौर पर छिपे हुए स्थानों में होता है, और दूसरे के लिए: How
बहुत से पुरुष यह बताने के लिए आगे आएंगे: "हमने देखा कि उसके साथ बलात्कार किया गया था, लेकिन उसकी मदद करने की कोशिश नहीं की" -
और फिर उस चूक के लिए कड़ी सजा दी जाए? कुरान में वे दो बिंदु सबसे ज्यादा हैं

340

पेज ३४१

बहुत ही अन्यायपूर्ण और अमानवीय अनुच्छेद हमने कभी भी आधे में भी देखे या सुने हैं
सभ्य कानून। क्या शरीयत आधी सभ्य है? क्या अल्लाह अच्छा है या/और न्यायी है?

00b 17/15: "- - - और न ही हम (अल्लाह *) अपने क्रोध के साथ तब तक आएंगे जब तक हमने एक रसूल नहीं भेजा था
(चेतावनी देने के लिए)"। इस इस्लाम को साबित करना होगा - नीचे 17/16 देखें।

00c 17/16: "जब हम (अल्लाह*) एक आबादी को नष्ट करने का फैसला करते हैं, तो हम (पहले) एक निश्चित आदेश भेजते हैं
उनमें से जिन्हें इस जीवन की अच्छी चीज़ें दी गई हैं (= अमीर और/या नेता*)
और फिर भी उल्लंघन - - -"। इस इस्लाम को साबित करना होगा, क्योंकि f. भूतपूर्व। कई प्राकृतिक
आपदा बिना किसी चेतावनी के हुई है - f. भूतपूर्व। दिसंबर में सुनामी
2004 ने मुसलमानों को कहीं अधिक मारा, किसी भी अन्य धर्म की तुलना में कहीं अधिक कठिन। हमने कभी नहीं सुना कि एफ। भूतपूर्व। मलेशिया
या इंडोनेशिया या सुमात्रा या ऐश को चेतावनी मिली थी।

006 17/41: "- - - उनकी उड़ान (सत्य से)!" आंशिक रूप से सत्य कथनों से सर्वोत्तम रूप से - कुरान
सबसे अच्छा केवल आंशिक रूप से सच है।

००७ १७/४२: "यदि उसके (अल्लाह*) के साथ (अन्य) देवता होते - - - निहारना, वे
निश्चय ही सिंहासन के प्रभु के लिए एक रास्ता खोज लिया है"। गलत - यह एक संभावना है, लेकिन
निश्चितता से बहुत दूर। एफ. पूर्व. पदानुक्रम संभव हैं, या "नौकरी" को विभाजित कर रहे हैं।

*008 17/44a: "सात आकाश - - -"। सात आकाश नहीं हैं। 10/6 देखें।

00d 17/44b: "- - - कोई चीज़ नहीं बल्कि जश्न मनाता है (= सभी चीज़ें मनाती हैं*) उसका (अल्लाह का*)
प्रशंसा - - -"। इस इस्लाम को साबित करना होगा - यह एक असंभावित बयान है जो बिना किसी स्पष्ट के बनाया गया है
तथ्य (ओं)।

००९ १७/४६: "- - - (अविश्वासियों*) अपनी पीठ फेर लेते हैं, (सत्य से) भाग जाते हैं"। ज्यादा से ज्यादा
आंशिक रूप से सत्य क्या है, क्योंकि कुरान में बहुत सारी गलतियाँ हैं।

०१० १७/५५: "हमने (अल्लाह*) ने दाऊद को (भजन का उपहार) दिया"। विज्ञान के अनुसार
भजन राजा दाऊद से बहुत छोटे हैं - कम से कम उनमें से अधिकांश। एक भगवान जानता था।

०११ १७/५९: "और हम (अल्लाह*) निशानियाँ (चमत्कार जो साबित करते हैं) भेजने से परहेज करते हैं
अल्लाह और मुहम्मद का उससे संबंध*), केवल इसलिए कि पिछली पीढ़ियों के पुरुष
उनके साथ झूठा व्यवहार किया - - -"। यह एक झूठा झूठ है - और मुहम्मद बहुत बुद्धिमान थे जिन्हें पता नहीं था

मूह। सभी नहीं, लेकिन बहुत से लोग विश्वास करने लगे (उदाहरणों के लिए, यीशु और मूसा के समय के दौरान
कुरान के अनुसार) पुराने समय में स्पष्ट चमत्कारों के कारण - और बहुत कुछ आएगा।
मुहम्मद के समय और आज के समय में विश्वास करने के लिए यदि स्पष्ट चमत्कार थे
एक धर्म से जुड़ा।

०१२ १७/६१: "- - - एक (आदम*) जिसे तू (अल्लाह*) ने मिट्टी से पैदा किया - - -"। गलत
सरल और स्पष्ट रूप से। 6/2 देखें।

०१३ १७/७३: "- - - वह (कुरान*) जिसे हमने (अल्लाह*) ने आप पर (मुहम्मद*) उतारा था। ए
किताब में इतनी सारी गलतियाँ, आदि जैसी आप कुरान में पाते हैं, किसी भगवान ने नहीं बनाई है।

०१४ १७/७७: "(यह हमारा (अल्लाह का) तरीका था) हमने आपके सामने भेजे गए दूतों के साथ
(मुहम्मद*), तुम हमारे तौर-तरीकों में कोई बदलाव नहीं पाओगे।" गलत। बहुत अंतर है
विशेष रूप से एनटी और कुरान के बीच, कि यह एक ही धर्म नहीं है। एफ. पूर्व. यीशु था
शांति के लिए, मुहम्मद युद्ध के लिए। और विज्ञान ने स्पष्ट रूप से दिखाया है कि बाइबल मिथ्या नहीं है -

३४१

पेज ३४२

इस्लाम को मामले में इसे साबित करना होगा, और 1400 साल की गहन खोज के बाद उनके पास है
एक भी सबूत नहीं मिला, केवल ढीले दावे। (लगता है कि क्या उन्होंने दुनिया को इसके बारे में बताया था अगर
उन्हें वास्तव में एक सबूत मिल गया था !!)

०१५ १७/८१: "सच्चाई (मुहम्मद* की शिक्षा) (अब) आ गई है, - - -"। इन शिक्षाओं के रूप में
कुरान पर निर्माण, और कुरान में बहुत सारी गलतियाँ हैं, शिक्षाएँ आंशिक रूप से सबसे अच्छी हैं
सच्चाई।

०१६ १७/८२: "हम (अल्लाह*) ने कुरान में - - - नीचे भेजा - -। इस्लाम को साबित करना होगा कि
कुरान वास्तव में नीचे भेजा गया है, और एक सर्वज्ञ भगवान से नीचे भेजा गया है। बिना बहुत अच्छा
सबूत, यह विश्वास करना मुश्किल है कि एक सर्वज्ञानी भगवान ने ऐसी गड़बड़ी भेजी है, और विशेष रूप से यदि
उसने अपने स्वर्ग के लिए लोगों को बचाने का इरादा किया। हाँ, ऐसे प्रमाणों के बिना, यह असंभव है
इसपर विश्वास करो।

*०१७ १७/८८: "यदि पूरी मानव जाति और जिन्न (मूल रूप से अरब लोककथाओं और परियों के आंकड़े)
किस्से - और किसी भी अन्य पैगंबर द्वारा पूरे समय में उल्लेख नहीं किया गया है, भले ही वे सुंदर हों
सक्रिय और जो इस्लाम दावा करता है उसका हिस्सा यहूदी और ईसाई के समान मूल धर्म है
one*) इस कुरान की तरह का निर्माण करने के लिए एक साथ इकट्ठा हुए थे, वे इसे नहीं बना सके
उसके जैसा"। गलत। भोले आदिम लोगों का झुंड या बचपन से ही लोगों को सिखाया जाता है
इस पर विश्वास कर सकते हैं। लेकिन कई अच्छे लेखक आज और इतिहास के माध्यम से करने में सक्षम होंगे
वह करें - यह सभी जानते हैं कि किसने कुछ अच्छी किताबें पढ़ी हैं। कुरान विशेष नहीं है
अच्छा साहित्य विनम्र होना चाहिए, इसके बावजूद कि इस्लाम क्या घोषणा करता है - बल्कि नीरस, उसी को दोहराते हुए
कहानियाँ बार-बार, और एक ही बिंदु और एक ही अंत का बार-बार उपयोग करना, और
कम से कम: यदि कोई मूल विचार या विचार हैं तो बहुत कम हैं - वे दूसरे से "उधार" हैं
सूत्रों में शामिल हैं, गढ़ी गई ग्रंथों, किंवदंतियों और पौराणिक कथाओं को शामिल किया गया है। 10/37a और 10/37b भी देखें।

०१८ १७/९२: "या तू (मुहम्मद*) आकाश को टुकड़े-टुकड़े कर देगा, जैसा तू कहता है।
होना) - - - "। कोई फर्क नहीं पड़ता कि मुहम्मद क्या कहते हैं, और अल्लाह दोहराना स्वीकार करता है
उसकी (?) किताब के हजारों और लाखों साल पहले मुहम्मद ने यह कहा था (!), यह गलत है। NS
आकाश एक प्रकाशीय भ्रम है, और टुकड़ों में नहीं गिर सकता।

019 17/95: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/2ए देखें।

०२० १७/९८: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

021 17/99a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०२२ १७/९९बी: "- - - जिसमें कोई संदेह नहीं है - - -"। इसके साथ कई गलतियाँ - कुछ इस तरह
तीन या चार पीआर। हमारी पुस्तक में पृष्ठ जब आप निश्चित रूप से गलत तथ्यों को गिनते हैं - वहाँ है
कुरान में कुछ भी ऐसा नहीं है जिसके बारे में कोई संदेह न हो, जब तक कि यह वास्तव में सही साबित न हो। और लगभग
किताब में कुछ भी साबित नहीं हुआ है।

00e 17/101: "मूसा को हमने (अल्लाह *) ने नौ स्पष्ट संकेत दिए - - -।" बाइबिल के अनुसार
उसे अपना स्टाफ सह सांप + 10 विपत्तियाँ = 11 "संकेत" मिले। कौन सी पुस्तक सबसे विश्वसनीय है - यदि कोई हो?

०२३ १७/१०२ए: "- - - मैं (मूसा) तुम्हें वास्तव में मानता हूं, हे फिरौन, एक के लिए बर्बाद होने के लिए विनाश!" फिरौन रामसेस II विनाश के लिए अभिशप्त नहीं था, कम से कम इस बार तो नहीं। उसने किया डूबो मत, कुरान जो भी कहता है उसके बावजूद। - और वह संभव के बाद कई वर्षों तक जीवित रहे एक्सोदेस। (यह एक कारण हो सकता है कि कुछ मुसलमान मिस्र से पलायन क्यों चाहते हैं

फिरौन के अधीन हुआ है जिसे हम रामसेस II के रूप में नहीं जानते हैं - अधिमानतः एक हम करते हैं पता नहीं वह डूब गया होगा या नहीं)।

०२४ १७/१०२बी: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

***०२५ १७/१०३: "- - - हम (अल्लाह*) ने उसे (फिरौन रामसेस II) और उन सभी को डुबो दिया जो उसके साथ थे उसे।" दयनीय तथ्य यह है कि हम इतिहास से जानते हैं कि रामसेस II डूबा नहीं था। उसने किया भी इतिहास के अनुसार, पलायन संभव होने के कुछ वर्षों बाद तक मरे नहीं।

026 17/105a: "हम (अल्लाह*) ने (कुरान) - - - को उतारा। अगर अल्लाह सर्वज्ञ है, तो उसने नहीं किया ऐसी दूसरी या तीसरी दर की किताब बनाएं - केवल सभी गलत तथ्य ही इसे कम से कम दूसरा बनाते हैं दर, और फिर एफ हैं। भूतपूर्व। सभी अमान्य कथन और प्रमाण, सरलता से उल्लेख नहीं करने के लिए गलत और विरोधाभास।

०२७ १७/१०५बी: "हम (अल्लाह*) ने (कुरान) को सत्य में उतारा, - - -"। शायद - और शायद नहीं। कुरान में इन बयानों के लिए ठोकर का पत्थर गलत तथ्यों का एक बड़ा संग्रह है और अवैध संकेत, आदि किताब में। यह सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है।

028 17/105c: "- - - और सच में यह उतरा है - - -"। ऊपर 17/105 देखें।

029 17/105: "- - - खुशखबरी - - -।" सबसे अच्छा केवल आंशिक रूप से सही। ऊपर 2/97c और 17/9b देखें और नीचे 91/13।

030 17/106a: "- - - एक कुरान जिसे हमने (अल्लाह*) विभाजित किया है - - -"। अगर किसी सर्वज्ञ भगवान के पास है कुरान, इस्लाम को बनाने या "नीचे भेजने" जैसे खेदजनक काम से कुछ भी लेना-देना था साबित करना होगा।

०३१ १७/१०६बी: "हमने (अल्लाह*) ने इसे (कुरान*) चरणों में उतारा है।" ऊपर 17/106a देखें।

***032 17/107: "कहो: 'आप विश्वास करते हैं या नहीं, यह सच है कि जिन्हें दिया गया था पहले से ज्ञान (= ईसाई और यहूदी मुख्य रूप से*), जब इसे (कुरान *) पढ़ा जाता है वे, नम्र साज-सज्जा में उनके चेहरे पर गिर जाते हैं"। एक शब्द: बकवास। और क्या है इससे भी बदतर: जिसने इस कविता की रचना की वह जानता था कि यह एक झूठ है - जिसे मुहम्मद भी जानते थे जब उसने इसे बनाया या सुनाया। कहा जाता है कि कुछ यहूदी और ईसाई 656 ईस्वी तक परिवर्तित हो गए थे जब कुरान को लिखा गया कहा जाता है, हालांकि 621 में बहुत कम अगर यह सूरा था बनाया, लेकिन एक सामान्य नियम के रूप में: बिल्कुल बकवास। बस बीच के संघर्षों के इतिहास को देखें इस्लाम, यहूदी और ईसाई, मदीना में और उसके आस-पास के सभी यहूदियों का उल्लेख नहीं करने के लिए जो बन गए भगोड़े या मारे गए, इस्लाम स्वीकार करने के बजाय - f. भूतपूर्व। ख़ैबर - और इसके लिए और आवश्यक नहीं है कहो। आप कभी-कभी नए, उभरते धर्मों और संप्रदायों में इस तरह की बेईमानी से मिलते हैं। यह एक रास्ता है अपने बयानों के लिए "वजन" बढ़ाने के लिए, खासकर जब उनके पास कुछ तथ्य या सबूत हों खुद के लिए दिखाओ। बस एक छोटा सा तथ्य जो इस परी कथा का खंडन करता है: में 700 यहूदी ख़ैबर समय रहते मुसलमान बनकर अपनी जान और माल बचा सकते थे। एक करने के लिए आदमी उन्होंने नहीं चुना।

033 17/108a: "और वे (यहूदी और ईसाई जब कुरान को सुनते हैं) कहते हैं: 'हमारी महिमा भगवान! सचमुच हमारे प्रभु का वादा पूरा हुआ है (और मसीह आ गया है*)!" बनाया गया अप प्रचार। ऊपर 17/107 देखें।

०३४ १७/१०८बी: "और वे (यहूदी और ईसाई) कहते हैं:" हमारे प्रभु की महिमा! सच में वादा है हमारे प्रभु का पूरा हुआ!" संभावना के लिए कि यह सच है, ऊपर 17/107 देखें। लेकिन इस्लाम

पेज ३४४

(इस मामले में "कुरान का संदेश") बताता है कि यह के सभी उल्लेखों को संदर्भित कर सकता है
बाइबिल में मुहम्मद (जिनमें से हमें कोई भी ऐसा नहीं मिला है जो केवल इच्छाधारी कथन नहीं है कि
स्पष्ट रूप से गलत हैं - "बाइबल में मुहम्मद?" देखें, लेकिन इसका सबसे अधिक अर्थ है खुशी के लिए
अंत में कुरान प्राप्त करना, जिसका अल्लाह ने वादा किया था और अब अंत में भेजा था। कोई नहीं है
बाइबिल में कुरान, और यहूदियों और ईसाइयों जैसी किसी चीज के वादे के संदर्भ में
कई बार कुरान को इतना गलत और बाइबिल से इतना दूर माना कि वह भी नहीं था
विधर्म। श्लोक १०७ और १०८ केवल परियों की कहानियां हैं जो मुहम्मद का समर्थन करने के लिए बनाई गई हैं - एक नोट
उभरते हुए नए संप्रदायों या धर्मों द्वारा उपयोग की जाने वाली असामान्य तकनीक। यह कुछ पर आधारित हो सकता है
उस समय धर्मान्तरित, या मुक्त कल्पना - बेईमानी तब होती है जब नए धर्म और संप्रदाय होते हैं
बनाया गया। और बाद में।

०३५ १७/१०९: "वे (यहूदी और ईसाई*) आँसू में मुँह के बल गिर पड़ते हैं (जब वे सुनते हैं)
कुरान*)"। ऊपर के रूप में 17/107 और 17/108 के रूप में ईमानदार।

*00f 17/111a: "- - - अल्लाह, जिसे कोई बेटा नहीं है - - -"। खैर, यीशु ने यहोवा को "पिता" कहा।
इसके अलावा कुरान को पढ़ने के लिए अरबों को डांटना अजीब है कि अल्लाह की बेटियां हैं - अल-लैट,
अल-उज्जा और (अल-) मनत - क्योंकि परिवार को चाहने वाले ईश्वर पर विश्वास करना सीधी मूर्खता है,
बेटियों का चयन करेंगे। वह पुत्रों को चुनना निश्चित था। वो नादानी ही काफी थी
मानव-केंद्रित पुराने अरब में सबूत, "साबित" करने के लिए कि विचार को गलत होना था। लेकिन जब
हो सकता है कि यहोवा को कोई साथ चाहिए - एक बेटा - इसके बावजूद यह पूरी तरह से असंभव है।
और भी मजेदार क्योंकि कुरान, मुहम्मद, इस्लाम और मुसलमान बताते हैं कि यह असंभव है
एक ईश्वर को समझने के लिए केवल मनुष्य - - - लेकिन सभी को यकीन है कि एक ईश्वर बनना चाहता है
अकेले, और न ही वे पूछते हैं कि क्या भगवान के पास शायद कोई कारण है (कि हम कर सकते हैं या नहीं
बेटा होने के लिए समझें, न ही पूछें कि क्या वह सिर्फ कंपनी चाहता है। भगवान की इच्छा कौन जानता है?

*00g 17/111b: "- - - और (उसके) प्रभुत्व में कोई भागीदार नहीं है - - -"। खैर, इस्लाम कहता है कि अल्लाह
यहोवा के समान परमेश्वर। यदि हम उस काल्पनिक कथन से केवल यहीं पर चर्चा करें:
पुराने हिब्रू धर्म में याहवे की एक महिला साथी / पत्नी थी - उनकी अमत (स्रोत: न्यू .)
वैज्ञानिक और कम से कम दो अन्य)। सख्ती से मर्दाना सेमेटिक संस्कृति में अमत था
सदियों से भुला दिया लेकिन हो सकता है कि वह उस समय भी मौजूद थी
मुहम्मद - और आज भी हो सकता है?

सूरह 17: कम से कम 35 गलतियाँ + 7 संभावित गलतियाँ।

सूरा 18:

001 18/1a: "- - - अल्लाह, जिसने अपने दास पुस्तक को नीचे भेजा है"। खैर, भयावह
प्रश्न यह है: क्या गलत तथ्यों और अन्य तथ्यों से भरी किताब वास्तव में किसी के द्वारा नीचे भेजी जा सकती है?
सर्वज्ञ भगवान? यदि हाँ, तो क्या इसका यह अर्थ है कि अल्लाह सर्वज्ञ/सर्वशक्तिमान नहीं है? यदि नहीं, करता है
इसका मतलब यह है कि कोई और जो सर्वज्ञ नहीं है, उसने कुरान को (ऊपर) बनाया है? अंतिम
सवाल सबसे भयावह है, खासकर अगर इसका मतलब है कि इस्लाम एक बना हुआ धर्म है, और यहां तक कि
इससे भी अधिक यदि यह (हो सकता है?) निर्मित धर्म अपने "विश्वासियों" के लिए एक वास्तविक धर्म के लिए मार्ग को अवरुद्ध करता है
(यदि ऐसा मौजूद है)। इसका उत्तर होना चाहिए: कोई भी सर्वज्ञ भगवान ऐसा नहीं करेगा
अविश्वसनीय पुस्तक (अन्य कारणों से क्योंकि मनुष्य को गलतियों को जल्दी या बाद में देखना पड़ता था),
और यह संभव है कि यह मोहम्मद के समय में एक या एक से अधिक मनुष्यों द्वारा बनाया गया हो (दूसरों के बीच
कारण क्योंकि गलतियाँ और कई कहानियाँ किस एक के अनुसार हैं
उस समय अरब में विश्वास करते थे)।

002 18/1b: "(अल्लाह*) ने उसमें कुटिलता की अनुमति नहीं दी है।" गलती से भरी किताब में
तथ्य और अन्य गलतियाँ, बहुत कुटिलता है। विशेष रूप से अमान्य "संकेतों" का उपयोग
और "सबूत" गंध।

344

पेज ३४५

003 18/2a: "(उसने (अल्लाह*) ने इसे बनाया है) सीधा (और साफ़) - - -"। एक किताब जो ग़लतफ़हमी से भरी है
तथ्य और अन्य गलतियाँ, f. भूतपूर्व। भाषाई, (और शायद धार्मिक भी - क्यों चाहिए
वे अपवाद हैं?) न तो सीधा है और न ही स्पष्ट है।

004 18/2b: "- - - खुशखबरी - - -।" सबसे अच्छा केवल आंशिक रूप से सही। ऊपर 2/97c और 17/9b देखें और नीचे 91/13।

00a 18/4: "(यह गलत है*) कि अल्लाह ने एक बेटा पैदा किया है"। खैर, हम पुराने तथ्यों पर वापस आ गए हैं कि यीशु बाइबिल के अनुसार - हजारों की पृष्ठभूमि पर लिखा है
गवाह/श्रोता - कई बार भगवान/याहवे पिता कहलाते हैं, वह विनम्र इंसान - f. भूतपूर्व।
मुहम्मद - एक भगवान के तरीकों और इच्छाओं को पूरी तरह से समझने में असमर्थ हैं (हो सकता है)
यहोवा किसी कारण से एक पुत्र चाहता था), और इस्लाम को इस बात से इंकार करना होगा कि यीशु का पुत्र था
यहोवा, मोहम्मद को महानतम नबी बनाने (या दिखावा करने) के लिए। इसके अलावा: कहाँ हैं
इस्लाम के सबूत? - इस्लाम के अंध विश्वास के महिमामंडन के बावजूद - एक मनोवैज्ञानिक रूप से बुद्धिमान नारा
जब सभी के पास एक संदिग्ध, स्वयं से संदिग्ध और कम से कम आंशिक रूप से गलत ग्रंथ हों
कम से कम संदिग्ध चरित्र के "पैगंबर" घोषित - यह विश्वास करने के लिए चरम में भोला है
अनंत काल के रूप में इतने गंभीर मामले में आँख बंद करके। यदि आपका चुना हुआ धर्म एक बना हुआ धर्म है - जो हर
अंध आस्तिक हर धर्म को मानते हैं बस उनका धर्म नहीं है - है तो कहां खत्म करें
एक अगला जीवन? - और क्या होगा यदि कोई वास्तविक धर्म है जो आपको नहीं मिला है, तो आपकी वजह से
अंधापन शायद सभी धर्म बने हैं और कुछ में आंतरिक लालसा का परिणाम है
कुछ निरपेक्ष के लिए लोग (विज्ञान ने पाया है कि कई कमजोर - और कुछ मजबूत -
आत्माओं की अपने जीन या मानस में ऐसी लालसा होती है), लेकिन उस स्थिति में कम से कम एक के पास नहीं होता है
अपने साथी पुरुषों (और महिलाओं के लिए और भी अधिक) के लिए इस्लाम के रूप में जीवन को दयनीय बनाने के लिए
उपदेश - घृणा, बलात्कार, चोरी, दासता और युद्ध।

005 18/5a: "उन्हें (ईसाइयों) को इस बात का कोई ज्ञान नहीं है (कि यहोवा ऐसा कर सकता है)
एक बेटा है*)"। गलत। बाइबिल में बहुत सारी जानकारी है। अब बेशक मुहम्मद,
कुरान, और इस्लाम सभी घोषणा करते हैं कि बाइबिल को गलत ठहराया गया है - उन्हें ऐसा करना होगा, जैसा कि था
मुहम्मद के लिए अपने "उद्धरण" बाइबिल और के बीच के अंतरों को समझाने का एकमात्र तरीका
धार्मिक किंवदंतियों, परियों की कहानियों, आदि का उद्धरण, और बाइबिल उचित (यह भी आम है
धार्मिक संप्रदायों या धर्मों का कहना है कि अन्य संप्रदायों या धर्मों ने गलत समझा या गलत समझा है
सूचना), और इस्लाम और ईसाई धर्म के बीच भी। लेकिन विज्ञान ने स्पष्ट रूप से दिखाया है कि
बाइबिल मिथ्या नहीं है।

लेकिन कुरान सिर्फ एक आदमी की कही हुई बात पर आधारित है - सिर्फ एक आदमी। एक आदमी जो 600 . रहता था
वर्षों बाद, जो एक भी सबूत या गवाह नहीं लाता है - केवल दावे और बयान लिए जाते हैं
कहीं से और किंवदंतियों से। साथ ही एक आदमी जिसके लिए यह जरूरी था (बस कुरान पढ़ें
और देखें) भविष्यद्वक्ताओं में सबसे महान होने के लिए, जिसका अर्थ था कि उसे यीशु को कम करना था। और एक आदमी जो
सत्ता के लिए बहुत तरस रहा था - एक बार फिर; बस कुरान पढ़ें और देखें कि वह खुद को किस तरह से चिपकाता है
उसकी शक्ति का मंच; उसका धर्म और उस धर्म का देवता - जिसका अर्थ है कि उसका
शिक्षाओं को अन्य शिक्षाओं पर प्राथमिकता प्राप्त करनी थी। और एक आदमी कह रहा है कि उसे उसकी शिक्षाएँ मिली हैं
सीधे एक सर्वज्ञ ईश्वर से - जिसका अर्थ था कि यह स्वीकार करना असंभव था कि वहाँ थे
शिक्षाओं में गलतियाँ (एक समस्या जो आज इस्लामी विद्वानों के लिए एक बुरा सपना है, क्योंकि
स्पष्ट रूप से बहुत सारी गलतियाँ हैं, और इसके लिए पर्याप्त अच्छे तरीके खोजना मुश्किल है
"समझाना" गलतियों को दूर करना, सिवाय उन लोगों को छोड़कर जिनके पास नहीं है - या पर्याप्त नहीं - ज्ञान, या
अपने लिए सोचने में सक्षम नहीं - - - या इतनी दृढ़ता से विश्वास करना कि वे किसी भी तरह से नहीं करना चाहते हैं
उन तथ्यों को देखें जो उनके विश्वास के अनुरूप नहीं हैं।)

जबकि बाइबल कई अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा लिखी गई है, और जहाँ तक NT का सवाल है, जिनमें से बहुत से लोग जानते थे
यीशु या उसके सबसे करीबी सहकर्मी, चेले, और लगभग सभी ने ऐसे समय में लिखा जब वहाँ अभी भी था
हजारों गवाह जीवित थे जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से सुना और देखा था कि यीशु ने क्या कहा और किया।

हम यह नहीं कहते कि बाइबल सही है। हम तो और भी कम कहते हैं कि बाइबल में सभी विवरण सही हैं, जैसे
यह स्पष्ट है कि कुछ विवरण बाइबल में भी गलत हैं, कम से कम उत्पत्ति में (सब को रचते हुए)।

लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि जानकारी के मूल्यांकन के सभी नियमों के अनुसार, बाइबल को
कुरान से ज्यादा विश्वसनीय हो। OT लगभग १००० साल पहले लिखा गया था और फलस्वरूप
जो हुआ उसके करीब 1000 साल, और कम से कम बहुत सारी मौखिक परंपराएं भी थीं।
और कुरान से पहले NT 450 - 600 लिखा गया था, और बहुत सारे और बहुत सारे गवाहों के साथ क्या
तब भी जीवित हुआ था जब इसमें से बहुत कुछ लिखा गया था। दूसरी ओर मुहम्मद के पास बहुत कम थे

मिट्टी से बने पक्षी यीशु की कहानी मिली है) या तथाकथित अपोक्रिफ़ल गॉस्पेल या किताबें - । पूर्व।
जिनमें से सभी संप्रदायों के लिए गढ़े गए या प्रचार साबित हुए हैं, या - अच्छी तरह से - परियों की कहानियां। ठीक है, हे
उन्होंने कहा कि उन्हें अपनी जानकारी एक भगवान से मिली है - लेकिन यह कहना बहुत आसान और बहुत सस्ता है - कई a
एक ही बात कई संप्रदाय या धर्म के संस्थापक ने कही है। और एक भी प्रमाण नहीं है -
एक भी नहीं - क्योंकि यह सभी कुरान में सच है, दोनों की इच्छाओं और मांगों के बावजूद
संशयवादी और अनुयायी। ऐसे प्रश्न जिनका उत्तर कुछ फास्ट-टॉक के साथ दिया गया था कि क्या
अल्लाह चाहता तो कर सकता था (लेकिन वह कभी "नहीं चाहता") या कि उनमें से कोई भी विश्वास नहीं करेगा
अगर अल्लाह ने वास्तविक (अलौकिक) सबूत भेजे (ऐसा कोई भी व्यक्ति जो लोगों के बारे में थोड़ा जानता हो)
या मनोविज्ञान के बारे में जानता है कि यह सच नहीं है - अलौकिक प्रमाण/आश्चर्य ने कम से कम कुछ बनाया है
मानना। क्या बुरा है: मुहम्मद एक बुद्धिमान व्यक्ति थे जो मानव स्वभाव को समझते थे - उनके पास था
यह जानने के लिए कि वह हर बार झूठ बोल रहा था जब उसने ऐसा कहा था)। और मत भूलना: गौरवशाली आदर्श
मुहम्मद वास्तव में एक हाईवेमैन और चोर था, एक जबरन वसूली करने वाला, एक बलात्कारी, एक हत्यारा और जन
हत्यारा, गुलाम, सत्ता की लालसा रखने वाला एक सरदार, और एक सरदार जो यह कह रहा है कि "युद्ध है"
विश्वासघात"।

एक तथ्य यह भी है कि विज्ञान के संबंध में कुछ 13oo शास्त्रों या अंशों को जानता है
बाइबिल या बाइबिल परिस्थितियों। साथ ही 30ooo+ अन्य पांडुलिपियों के संदर्भ में
बाइबिल। वे सभी आधुनिक बाइबल के अनुसार हैं, और जब वे पाते हैं कि
बाइबिल के अनुवादकों ने गलत समझा है या काफी सटीक नहीं हैं, का अनुवाद
बाइबल को बाद के संस्करणों में सुधारा गया है - हर कोई चाहता है और कोशिश करता है कि सब कुछ सही हो
यथासंभव। इसके विपरीत: जब इस्लाम को ऐसे ग्रंथ या अंश मिलते हैं जो बिल्कुल सही नहीं हैं
जैसा कि वे आज 1-2 का उपयोग करते हैं, निष्कर्षों को नकारा और छिपाया जाता है - एक स्टार उदाहरण है
1972 में यमन में कुरान की कई प्रतियां मिलीं; जब यह स्पष्ट हो गया कि विवरण - कुछ
उनमें से महत्व के - आज के कुरान (ओं) में जो लिखा गया था, उसके विपरीत थे, वैज्ञानिक
अब उन तक पहुंच से वंचित कर दिया गया था।

निष्कर्ष: कोई भी छात्र और इतिहास का कोई भी प्राध्यापक यही कहेगा कि सामान्य नियमों के अनुसार
मूल्यांकन के लिए, बाइबिल ऐतिहासिक के स्रोत के रूप में कुरान की तुलना में कहीं अधिक विश्वसनीय है
जानकारी। और कोई भी मनोवैज्ञानिक पुष्टि करेगा कि मुहम्मद जानता होगा कि उसने झूठ बोला था
हर बार उन्होंने कहा कि (अलौकिक) अल्लाह के प्रमाणों ने किसी को भी विश्वास नहीं किया
अल्लाह किसी भी तरह। और भी बहुत कुछ: कोई भी गंभीर वैज्ञानिक पहले से कुरान की जानकारी का उपयोग नहीं करता है
उनके विज्ञान में 610 ई.- को विश्वसनीय नहीं माना गया है।

00b 18/5b: "वे ("काफिर" *) क्या कहते हैं (यीशु के बारे में यहोवा का पुत्र होने के बारे में) है
झूठ के सिवा कुछ नहीं"। यह बात उन सब गवाहों से कहो जिन्होंने यीशु को ऐसा कहते सुना। वहाँ थे
बहुत से लोग यीशु की सुन रहे हैं, कि यदि ऐसा कुछ हो (यीशु ने यहोवा को अपना पिता कहा, और
स्पष्ट रूप से एक पारंपरिक अर्थ में - हालांकि शायद एक बनाया गया, पैदा हुआ बेटा नहीं) एक झूठ था, लेकिन

346

पेज ३४७

कई लोगों के पढ़ने के लिए लिपियों में लिखा गया था, गंभीर विरोध और सुधार हुए थे।
हम यह नहीं कहते कि जीसस ने सच बोला - भले ही उन्हें इस्लाम ने भी एक ईमानदार के रूप में स्वीकार किया हो
नबी. लेकिन हम कहते हैं कि यह बहुत कम संभावना है कि उसने यह नहीं कहा - कई बार - कि यहोवा था
उनके पिता। उसने जो कहा, उसके बहुत सारे गवाह थे।

*00c 18/9a: "या क्या आप प्रतिबिंबित करते हैं कि गुफा के साथी - - -"। यह एक पुरानी कहानी है - अ
धार्मिक कथा - जो कुरान में शामिल है। 7 स्लीपरों की कहानी सर्वविदित है -
और सिर्फ एक परी कथा है। 7 इफिसुस के ईसाई थे जो अब तुर्की है, जो भाग गए
कहानी "सीज़र" डेसियस के तहत एक पोग्रोम के दौरान एक गुफा है।

डेसियस ने उन्हें मारने के लिए गुफा की दीवार खड़ी कर दी थी। इसके बजाय 7 सो गए, और तब तक नहीं उठे
पवित्र थियोडोसियस के शासन के 30वें वर्ष में - यानी 448 ईस्वी में। डेसियस के लिए लगाम
२५० ईस्वी सन् के ठीक बाद/बस दो साल से अधिक। इसका मतलब है कि अगर परी कथा सच होती,
वे लगभग 195 साल सोए थे (कुरान कहता है कि 300 या 309 साल - परियों की कहानी में भी यह है
गलत)। इस्लाम को इस कहानी की व्याख्या करने में परेशानी होती है, और हमने जो "स्पष्टीकरण" देखे हैं, वे हैं
बहुत "उदार" और फैलाना - f. भूतपूर्व। कि यह वास्तव में एक पुरानी यहूदी परी कथा के बारे में बताया गया है - या कि यह
कुमरान समाज के सदस्यों - एस्सेर्स के बारे में गलतफहमियों से उत्पन्न (निकट)
मृत सागर) लेकिन बिना कोई स्रोत या दस्तावेज दिए - केवल अटकलें। इसके आलावा
उम्र कोई मायने नहीं रखती - यह बना हुआ है भले ही हो जाए कि मूल थोड़ा सा है
पुराना। वे यह भी बताते हैं कि यह एक रूपक है - जो वे ज्यादातर तब करते हैं जब उन्हें मुश्किलें आती हैं
"स्पष्टीकरण" खोजना जो विश्वास करना संभव है। लेकिन किस बात का एक रूपक? और जाहिर है
एक रूपक होने का मतलब नहीं है - अन्य बातों के अलावा कुरान में एक रूपक का अर्थ

आम तौर पर देखने में बहुत आसान होते हैं या समझाए जाते हैं। कुरान आगे सामान्य रूप से बताता है कि यह कब है
एक रूपक या ऐसा ही कुछ बता रहा है, और कम से कम नहीं; कुरान खुद जोर देता है कि यह होगा
शाब्दिक रूप से समझ में आता है अगर कुछ और नहीं कहा जाता है। स्लीपरों का भी उल्लेख 18/13 - 18/22 में किया गया है - 18/25. नीचे 18/13 भी देखें।

006 18/9बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

००७ १८/१३: "हम (अल्लाह*) आपको उनकी (7 स्लीपर्स) कहानी सच में बताते हैं: - - -"। जैसा कि यह एक है
प्रसिद्ध परियों की कहानी, और जैसा कि कुरान में कई अन्य गलतियाँ हैं, ध्यान से कहा: सबसे अच्छा यह
केवल आंशिक सत्य है। **लेकिन ध्यान दें कि इस बात पर जोर दिया जाता है कि कहानी सच है - नहीं एक रूपक, बना नहीं, बल्कि सत्य।** .

008 18/14: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

009 18/17: "- - - अल्लाह के संकेत - - -।" कुरान में एक भी निशानी नहीं है जो स्पष्ट रूप से
अल्लाह की ओर से है, और इस प्रकार एक भी "चिह्न" नहीं है जो अल्लाह के बारे में कुछ भी साबित करता है। में कोई पुजारी
कोई भी धर्म इतना आसान कह सकता है कि वे उसके भगवान के संकेत हैं। शब्द इतने सस्ते हैं।

010 18/22: "(कुछ) कहते हैं कि वे (7 स्लीपर) तीन थे, कुत्ता चौथा था
उन्हें, (अन्य) कहते हैं कि वे पाँच थे, कुत्ता छठा था - संदिग्ध रूप से अज्ञात का अनुमान लगा रहा था;
(फिर भी अन्य) कहते हैं कि वे सात थे, कुत्ता आठ था"। अगर मुहम्मद को यह कहानी एक . से मिली है
एक भगवान के माध्यम से वास्तविक कहानी, एक प्रसिद्ध परी कथा से नहीं, भगवान को उनकी संख्या पता थी (ठीक है,
एक देवता भी उस संख्या को जानता था जो एक किंवदंती में बताई गई थी), लेकिन मुहम्मद स्पष्ट रूप से नहीं।
इसके ठीक ऊपर 18/13 भी देखें।

०११ १८/२५: "तो वे (सात स्लीपर) अपनी गुफा में तीन सौ साल रहे, और (कुछ) जोड़ते हैं
नौ और ”। 18/13 और 18/22 देखें। (यदि कोई मुख्य में उल्लिखित कुछ ऐतिहासिक तथ्यों पर निर्भर करता है
किंवदंती की विविधता, वे लगभग 195 साल सोए)।

347

पेज ३४८

012 18/26: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

00d 18/27a: "- - - आपके भगवान (अल्लाह *) की पुस्तक (कुरान *): - - - "। क्या यह वास्तव में के शब्द हैं
भगवान? - इतनी सारी गलतियों के साथ?

०१३ १८/२७बी: "--- तेरे रब (अल्लाह*) की किताब (कुरान) : कोई भी उसके वचनों को नहीं बदल सकता।
कुरान*) - - -"। गलत। शब्द गलत होने पर वास्तविकता शब्दों को बदल सकती है। और कई
छंदों को निरस्त कर दिया गया ("हम (अल्लाह *) दूसरे को अच्छे या बेहतर के रूप में भेजता है") - कुछ द्वारा भी
हदीस - यह उल्लेख नहीं करने के लिए कि पूरा धर्म ६२२ ईस्वी में और उसके बाद बदल गया था
युद्ध और घृणा और चोरी और बलात्कार के लिए शांतिपूर्ण। इस्लाम इस बदलाव को स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि यह
धर्म में गलतियों को उजागर कर सकता है, लेकिन लोग पढ़ने में सक्षम हैं, और इसे खोजना आसान है
कुरान.

014 18/29: "कहो, 'सच्चाई तुम्हारे पालनहार (अल्लाह*) की ओर से है"। माना जाता है कि अल्लाह के शब्द
कुरान में "संदर्भित" सबसे अच्छा आंशिक रूप से सत्य है - सभी गलतियों को ध्यान में रखें।

015 18/31: "- - - सोने के कंगन - - -"। कौन सा सही है और कौन सा गलत? - ७६/२१ में
कंगन चांदी के हैं। उनमें से एक गलत होना चाहिए। एक गलती और एक और विरोधाभास
- इसके बावजूद "कुरान में विरोधाभास मौजूद नहीं है - जो इस बात का सबूत है कि वह आया था"
अल्लाह से"।

016 18/37a: "- - - उसे (अल्लाह*) जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया - - -"। गलत - आदमी नहीं था
धूल से निर्मित। 6/2 देखें।

०१७ १८/३७बी: "- - - उसे (अल्लाह) जिसने तुम्हें धूल से, फिर एक शुक्राणु-बूंद से पैदा किया - - -",
गलत, या सबसे अच्छा आधा सच। मनुष्य शुक्राणु की एक बूंद से नहीं बना है - हालांकि कुरान
ऐसा बार-बार कहते हैं। मनुष्य - और जानवर - शुक्राणु + एक अंडा कोशिका से बने होते हैं। अरब जानते थे
भ्रूणों के बारे में बहुत कुछ (जानवरों के वध से), लेकिन एक अंडा कोशिका इतनी छोटी होती है, कि कोई करता है
इस पर ध्यान न दें - सभी रक्त और आंतों और गोर, आदि में शायद ही संभव है - तो
कुरान बताता है कि वीर्य एक महिला में "रोपा" जाता है और एक प्राणी के रूप में विकसित होता है। मुहम्मद ने नहीं
बेहतर जानते हैं क्योंकि यह उनके समय में एक स्वीकृत सिद्धांत था - ग्रीक और / या फारसी "ज्ञान"

मूल रूप से - लेकिन एक सर्वज्ञ ईश्वर को पता था - - - तो कुरान को किसने बनाया?

017b 18/50 (A53 - 2008 में छोड़ दिया गया): "देखो, हम (अल्लाह*) ने फ़रिश्तों से कहा, आदम': इब्लीस को छोड़कर वे झुक गए। वह जिन्नों में से एक था - - -।" लेकिन यहाँ एक स्पष्ट है गलती - या अधिक संभावना; A. युसूफ अली के धर्म और अल-तकिया ने शायद उसका दमन किया हो ईमानदारी: यहाँ मूल अरब पाठ यह नहीं कहता कि वह एक जिन्न था: यह कुछ ऐसा कहता है (स्वीडिश से अनुवादित): "वह (इब्लिस *) अदृश्य प्राणियों की भीड़ से संबंधित था"। NS यहाँ पाठ ईमानदारी से और स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि वह शैतान बनने से पहले एक स्वर्गदूत था। पर दूसरी ओर कुरान अन्य स्थानों पर बताता है कि वह आग से बनाया गया था, जिसका अर्थ है कि वह इस पुस्तक के अनुसार वास्तव में एक जिन्न था। यह एक और जगह है जहाँ मुस्लिम विद्वान सहमत हैं कि कुरान में पाठ गलत है (हालांकि वे इसे स्पष्ट शब्दों में कभी नहीं कहते हैं) जैसा कि यहां है सबसे स्पष्ट रूप से संकेत मिलता है कि इब्लीस एक फरिश्ता था।

018 18/51: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

019 18/55: "- - - अब वह मार्गदर्शन (कुरान) उनके पास आ गया है ("अविश्वासियों")। ए इतनी सारी गलतियों वाली किताब वास्तव में मार्गदर्शन नहीं है।

348

पेज ३४९

020 18/56a: "- - - खुशखबरी - - -।" सबसे अच्छा आंशिक रूप से ही सच है। ऊपर 2/97c और 61/13 . देखें नीचे।

०२१ १८/५६बी: "- - - सत्य को कमजोर करने के लिए (मुहम्मद / की शिक्षाओं) कुरान*), - - -"। वास्तविकता को दोहराने के लिए: कुरान में इतनी सारी गलतियों के साथ, यह अधिकतम हो सकता है आंशिक रूप से सच।

022 18/56c: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२३ १८/५७: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

***०२४ १८/८६ए: अगली गलतियाँ एक निश्चित धुल क़ार्नायन से संबंधित हैं - एक नाम जिसका अर्थ है "द टू हॉर्नड वन", और यह प्रसिद्ध मैसेडोनियन राजा अलेक्जेंडर के लिए एक अरब "उपनाम" है महान (देखें f. पूर्व। "इस्लाम का ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी"), जो 330 ईसा पूर्व के आसपास रहते थे (मृत्यु 323 ईसा पूर्व) - मुहम्मद से लगभग 950 साल पहले। मुसलमान कभी नहीं बताते कि धुल कुरनैन है सिकंदर महान - शायद इसलिए कि हर शिक्षित यूरोपीय एक बार में यह जान लेगा कि a कुरान में उसके बारे में बहुत सी जानकारी गलत है - हम उसके बारे में बहुत कुछ जानते हैं।

आप मुसलमानों से भी मिलेंगे जो सिकंदर को धुल क़ार्नैन होने से इनकार करते हैं - "साबित" करते हैं एफ के साथ बयान भूतपूर्व। कि सिकंदर आज बहुदेववादी होने के लिए जाना जाता है, जबकि कुरान परोक्ष रूप से, लेकिन बहुत स्पष्ट रूप से बताता है कि वह एक अच्छा मुसलमान था (कुरान का एक और) गलतियां)।

यह उल्लेख करना रुचिकर हो सकता है कि इब्न इशाक ने माना है कि धुल क़ार्नायन ग्रीक मूल का एक मिस्री था (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से 2007 संस्करण में पृष्ठ 139, ए। गिलौम द्वारा संपादित)। और वह इब्न हिशाम अपने नोट नं। 186 उस पुस्तक को पता था कि वह क्या है की बात कर रहा था। वह कहता है कि धुल क़ार्नैयन एक यूनानी था (सिकंदर भी का राजा था) ग्रीस) और बस कहता है: "उसका नाम सिकंदर था। उसने अलेक्जेंड्रिया का निर्माण किया और इसका नाम रखा गया उसके बाद" (सिकंदर महान ने अलेक्जेंड्रिया की स्थापना की - एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक तथ्य)। लेकिन इब्न हिशाम सिकंदर महान का पूरा नाम इस्तेमाल करने से परहेज करता है। यह के लिए एक रहस्य कभी नहीं था सीखा है कि यह सिकंदर महान था जिसने अलेक्जेंड्रिया की स्थापना की थी, यहां तक कि उस समय भी नहीं इब्न हिशाम (मृत सीए। 840 ईस्वी), लेकिन उनके पूरे नाम का उल्लेख करना शायद मुश्किल हो सकता है कई तिमाहियों से सवाल, क्योंकि यह स्पष्ट था कि कम से कम कुछ जो धुली के बारे में बताया गया था क़ार्नेयन को स्पष्ट रूप से परियों की कहानियों के रूप में पहचाना जाना था, जो कि . की कहानी जानने वाले किसी भी व्यक्ति द्वारा परी कथाओं के रूप में पहचाना जाना था सिकंदर महान। हो सकता है कि इब्न हिशाम उन्हें के संस्थापक के रूप में पहचान कर भी बहादुर थे अलेक्जेंड्रिया?

१८/८६ए"- - - - वह (सिकंदर) सूर्य की स्थापना पर पहुंचे, - - -"। की सेटिंग तक पहुँचने के लिए सूर्य का अर्थ है पश्चिम जाना। इस कहानी में अन्य सभी गलतियों के अलावा हम जानते हैं कि सिकंदर कभी पश्चिम नहीं गया (वह अब तक का सबसे दूर पश्चिम था, उसकी मातृभूमि मैसेडोनिया उत्तर थी नर्क और मिस्र)। नीचे 18/8b और 18/86c भी देखें।

**०२५ १८/८६बी: "- - - जब वह (सिकंदर) सूरज की स्थापना पर पहुंचे - - -"। कोई भी जो
भूगोल और खगोल विज्ञान के बारे में दो मिलीमीटर जानता है जानता है कि यह गलत और हास्यास्पद है
चरम: सूर्य पृथ्वी पर नहीं डूबता है - और बिल्कुल गंदे पानी के तालाब में। और देखें
18/86a और 18/86c ठीक ऊपर और ठीक नीचे।

***०२६ १८/८६सी: "- - - उन्होंने (सिकंदर महान*) ने इसे (सूर्य*) धुंधले झरने में पाया
पानी"। यह कथन - या परियों की कहानी - विस्मयादिबोधक चिह्नों की एक श्रृंखला के योग्य है - आज कोई भी
जिसने प्राथमिक विद्यालय समाप्त कर लिया है, अन्य तथ्यों के बीच जानता है:

1. सूरज इतना बड़ा है कि कहीं भी बस नहीं सकता
धरती।
2. यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि इसमें बसना बहुत बड़ा है
एक तालाब - धुंधला या नहीं।
3. और वो भी अगर सूरज कभी एक लाख के अंदर आ गया
पृथ्वी से मीलों दूर, कोई नहीं होगा
वसंत या तालाब और अधिक - बहुत गर्म।

मुहम्मद सूरज के आकार या तापमान को नहीं जानते थे, लेकिन एक सर्वज्ञ भगवान थे
ज्ञात। कुरान किसने बनाया?

मुसलमान इसे f द्वारा "समझाने" की कोशिश करते हैं। भूतपूर्व। यह बता रहा था कि उसने जो देखा वह एक सूर्यास्त का प्रतिबिंब था
वसंत। महान योद्धा राजा सिकंदर के बारे में सोचो - पश्चिम और पश्चिम और पश्चिम की सवारी उसके साथ
पुरुष, दिन-ब-दिन और सप्ताह-दर-सप्ताह उस स्थान का पता लगाने के लिए जहां सूर्य अस्त होता है। फिर एक दिन वह
एक और तालाब से टकराता है - एक भी गंदे पानी से। जब वह खड़ा होता है तो वह गंदा वसंत
उसके और सूर्य के बीच सीधी रेखा में है, वह लाल और पीले रंग की दर्पण छवि देखता है
कीचड़ भरी सतह में सूर्यास्त - एक ऐसा नजारा जिसे उसने पहले भी बार-बार देखा है
तालाबों और झरनों और नदियों और झीलों और समुद्रों की सतह - और वह अपने आदमियों की जय करता है: "अब हम"
हमारे लक्ष्य तक पहुँच गया है !! यहीं सूरज डूबता है !! अब घर चलते हैं और अपने बारे में बताते हैं
महान खोज"।

जो चाहे उस पर विश्वास करो।

लेकिन जो भी इसे मानता है उसे इतिहास के प्रोफेसर या मनोवैज्ञानिक को देखने की जरूरत है
दिमाग। इसके ठीक ऊपर 18/86a और 18/86b भी देखें।

०२७ १८/९०: "- - - वह सूर्य के उदय के लिए आया - - -"। यहाँ आना शारीरिक रूप से संभव नहीं है
वह स्थान जहाँ सूर्य पृथ्वी से उगता है जैसा कि कुरान इंगित करता है, क्योंकि यह उगता नहीं है
पृथ्वी से - और यदि ऐसा होता, तो सिकंदर और पृथ्वी दोनों ही तले हुए होते। और देखें
18/86 x 3 ठीक ऊपर।

*00e 18/94: "- - - गोग और मागोग -। - -"। ये बाइबिल से हैं। बाइबिल में एक है a
देश और दूसरा राजा - मागोग देश का राजा गोग। कुरान में वे दो बुरे हैं
लोग। कौन सही है? याद रखें कि मुहम्मद बाइबल को अच्छी तरह से नहीं जानते थे। एक भगवान था
ज्ञात। फिर कुरान की रचना किसने की?

**०२८ १८/९५: "उसने (सिकंदर*) ने कहा: '(शक्ति) जिसमें मेरे भगवान (अल्लाह !!!*)
मुझे स्थापित करना बेहतर है - - -"। कुरान स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि सिकंदर एक पवित्र मुसलमान था
(मुहम्मद से लगभग 950 साल पहले!) एक ख़ामोशी बनाना: यह गलत है। सिकंदर
एक बहुदेववादी था। (मुसलमान कभी-कभी इस गलती को उस धुली के सबूत के तौर पर इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं
कर्णन सिकंदर नहीं थे)। नीचे 18/86a, 18/96b और 18/96c भी देखें।

***०२९ १८/९५-९७: एक घाटी में रहने वाले लोगों को दो अन्य लोगों ने आतंकित किया - गोगो
और मागोग। उन्होंने (स्थानीय लोगों*) सिकंदर से मदद मांगी। उसने कहा: "मैं एक मजबूत खड़ा करूंगा
तुम्हारे और उनके बीच की बाधा: 'मेरे लिए लोहे के टुकड़े लाओ'। और उसने लोहे की दीवार बनाने दी
घाटी में सीधे स्थानीय लोगों द्वारा निर्मित ब्लॉक, जो इतने मजबूत हैं कि असंभव हो सकते हैं
गोग और मागोग के लोगों को पार करने के लिए, और इतना लंबा कि पार करना असंभव है
सबसे लंबी सीढ़ी के साथ भी - सुनिश्चित करें कि गोग और मागोग सीढ़ी के बारे में जानते थे। लेकिन कहीं नहीं
पूरी पृथ्वी पर 330 ईसा पूर्व के आसपास इतने लोहे के ब्लॉक मौजूद थे - लोहे के ब्लॉक
स्थानीय लोगों से उसे लाने को कहा गया। (यहां ध्यान दें कि 18/93 बताता है कि दीवार को पार करना था "(एक पथ)

पृष्ठ ३५१

दो पहाड़ों के बीच" जिसके नीचे लोग रहते थे - दीवार में कुछ होना था
लंबाई "एक पथ" को पार करने के लिए एक पूरे लोगों के रहने के लिए पर्याप्त है - इसमें बहुत सारे लोहे के ब्लॉक लगे।)

(इसके अलावा यह सब हास्यास्पद है: बहुत कम घाटियाँ - और कोई बड़ी घाटी नहीं - केवल एक ही संभव रास्ता है
अंदर और बाहर - दीवार के चारों ओर घूमने की स्थिति में गोग और मागोग हो सकते हैं। और यदि नहीं, तो यह हमेशा था
दीवार के नीचे खोदना संभव - यह एक घाटी थी जिसमें लोग रहते थे, और ऐसी घाटी
दीवार के नीचे मिट्टी होगी।) 18/86a -18/86b - 18/86c भी देखें।

**030 18/96a: "लंबे समय तक, जब उसने (सिकंदर - या वास्तव में दीवार बनाने वाले कार्यकर्ता*)
उसने दो खड़ी पहाड़ी-किनारों के बीच की जगह को भर दिया, उसने कहा, 'झटका (अपनी धौंकनी से)'।
फिर जब उसने उसे आग की तरह लाल कर दिया---"। संपूर्ण बनाना संभव नहीं होगा
इतनी बड़ी दीवार लगभग 330 ईसा पूर्व में आग की तरह लाल हो गई थी। उनके पास न तो साधन था - उस तरह की आग -
न ही तकनीक। आज भी मुश्किल से ज्यादा होगा। परियों की कहानी।

**०३१ १८/९६बी: "फिर, जब उन्होंने (सिकंदर महान) ने इसे (लाल) आग के रूप में बनाया था, तो उन्होंने कहा: 'लाओ
मुझे, कि मैं उस पर पिघला हुआ सीसा डालूं" (दाऊद कहता है कि कांस्य हम सोचते हैं)।

1. हमें नहीं लगता कि पृथ्वी पर कोई एक जगह है
   ऐसी नौकरी के लिए पर्याप्त सीसा - या कांस्य - था।
2. अगर हुआ भी तो धातु महंगी थी -
   इतना कुछ पाने के लिए स्थानीय लोगों को बहुत अमीर होना पड़ता है
   सीसा/कांस्य। और यह और भी अधिक के लिए जाता है
   एक विशाल दीवार बनाने के लिए पर्याप्त लोहे के ब्लॉक।
3. तकनीकी रूप से गर्म करना संभव नहीं होगा
   इतनी बड़ी और लंबी दीवार "इसे (लाल) बनाने के लिए"
   आग "सी। 340 ईसा पूर्व - आज शायद ही संभव हो।

**०३२ १८/९८: "यह मेरे रब (अल्लाह*) की रहमत है"। गलत। सिकंदर महान नहीं था
मुस्लिम, लेकिन एक बहुदेववादी।

033 18/105: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०३४ १८/१०६: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

सूरह १८: कम से कम ३४ गलतियाँ + ५ संभावित गलतियाँ।

सूरा 19:

001 19/7: "- - - उसका नाम याह्या (जॉन *) होगा: उस नाम से किसी पर भी हम (अल्लाह *) नहीं हैं
पहले भेद प्रदान किया"। परन्तु कारेह का पुत्र योहानान (यूहन्ना) एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था
2. किंग्स, 25/23। इसके अलावा हमारे सूत्रों का कहना है कि "भेद" शब्द अरब में नहीं है
संस्करण, लेकिन यूसुफ अली द्वारा एक स्पष्ट गलती को रोकने के लिए जोड़ा गया, जैसा कि जॉन नाम नहीं था
हिब्रू में अज्ञात। (यूसुफ अली की टिप्पणी 2461)। अन्य अनुवादक - एफ. भूतपूर्व। मुहम्मद
आजाद "कुरान का संदेश" में - अपनी टिप्पणियों में इस बिंदु पर कहें कि सटीक
अनुवाद है (स्वीडिश से अनुवादित): "हमने (अल्लाह*) ने पहले कभी किसी का नाम नहीं लिया
उसके (जॉन द बैपटिस्ट के) नाम से पहले"। लेकिन जॉन (हिब्रू में जोहानन) नाम है
ओटी में 27 बार उल्लेख किया गया = जॉन द बैपटिस्ट से पहले - यह एक बहुत ही सामान्य नाम था। से
प्रासंगिक इतिहास भी पुजारी-राजा जॉन हिरकेनस और जनरल जॉन एसेन थे।
जॉन द बैपटिस्ट से पहले जॉन नाम के कई जॉन और विशिष्ट व्यक्ति दोनों थे।
बस गलत।

पृष्ठ 352

002 19/10: "- - - आपका चिन्ह - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

००३ १९/१८: "- - - मैं (मैरी, यीशु की माता) आपसे (अल्लाह) परम कृपालु की शरण चाहता हूँ: (पास मत आना) अगर तुम अल्लाह से डरते हो"। यह बहुत कम संभावना है कि एक यहूदी - और विशेष रूप से एक यहोवा के मंदिर में काम करना - उस समय के अत्यधिक बहुदेववादी देवता से शरण लेनी चाहिए दूसरा देश। जैसा कि यीशु के साथ हुआ, एकेश्वरवाद और यहोवा के रूप में देखा जा सकता है उस समय इज़राइल में मजबूत। अगर कुरान सच कहता है जब यह बताता है कि मैरी काम कर रही थी मंदिर, यह बिल्कुल असंभव है - अगर उसने किसी को संबोधित किया तो वह गंभीर संकट में पड़ गई थी यहोवा के अलावा अन्य भगवान (लेकिन फिर कुरान सबसे अधिक संभावना है कि इस बिंदु पर भी गलत है - हमारे पास है बाइबिल या किसी अन्य स्रोत में मैरी के मंदिर में काम करने के बारे में कुछ भी नहीं मिला, और यदि यह सच था, अधिकांश या सभी ईसाई स्रोतों ने इसका उल्लेख किया था, क्योंकि इसका मतलब एक और होगा यीशु और यहोवा के बीच संबंध। (वास्तव में यह गलत है कि उसने में काम किया मंदिर। यह किंवदंती अपोक्रिफल से ली गई है - निर्मित - "जैकब के बाद 'प्रोटो गॉस्पेल'" - - - लेकिन मुसलमान सब यही बताते हैं कि कुरान और बाइबिल में अंतर इसलिए है क्योंकि बुरे गैर-मुसलमानों ने बाद वाले को गलत ठहराया है - इसलिए नहीं कि मुहम्मद ने इतनी बार कुरान में कहानियों के आधार के रूप में परियों की कहानियों का इस्तेमाल किया।) हमारे मुस्लिम स्रोत भी नहीं करते हैं उल्लेख करें कि क्या कुरान में इस कहानी के लिए कोई अन्य विश्वसनीय स्रोत मौजूद है - जो इस्लाम अक्सर ऐसा नहीं करते हैं जब उनके पास कोई स्रोत नहीं होता है, केवल कुछ नहीं या पसंद पर बने बयान होते हैं यहाँ कहानीकारों ने लंबी शामों में कौन-सी किंवदंतियाँ और कहानियाँ सुनाईं। में उसका काम मंदिर बस एक परी कथा है जिसे कुरान में एक सच्ची कहानी की तरह चमकाया और इस्तेमाल किया जाता है - अल्लाह द्वारा या द्वारा मुहम्मद, और संभवतः अल्लाह से नीचे भेजा गया और मदर बुक से कॉपी किया गया स्वर्ग, शायद अल्लाह द्वारा बनाई गई एक किताब, लेकिन सबसे अधिक संभावना है - इस्लाम के अनुसार - कभी नहीं बनाया, लेकिन अनंत काल से अस्तित्व में है (असंभव है क्योंकि स्वर्गदूत पुस्तक में कम से कम एक जगह बोल रहे हैं - it पहले स्वर्गदूतों के बनाए जाने के बाद बनाया जाना चाहिए। उल्लेख नहीं है कि मुहम्मद कुछ बोलते हैं पुस्तक में 8 स्थान)।

आप चाहें तो इस पर विश्वास करने के लिए स्वतंत्र हैं।

***004 19/24+25: "लेकिन (एक आवाज़) (नवजात शिशु यीशु*) नीचे से रोया (हथेली-पेड़): 'शोक मत करो! क्योंकि तेरे रब ने तेरे नीचे एक नाला बनाया है; 'और हिलाओ' अपने आप को ताड़ के पेड़ का तना (आमतौर पर खजूर कम से कम 50 सेमी चौड़ा और मजबूत होता है - मनुष्य का हिलना असम्भव है*): यह तुम पर ताज़े पके खजूरों को गिरने देगा"। यह कहानी है एक अपोक्रिफ़ल में अध्याय 20 से "उधार लिया गया" - बना हुआ - "प्रोटो गॉस्पेल" के बाद कहा जाता है कुछ मैथ्यू। मुहम्मद या अल्लाह द्वारा "उधार", लेकिन संभवतः एक प्रति के रूप में नीचे भेजा गया स्वर्ग में मदर बुक से। आप चाहें तो आखिरी पर विश्वास करें। कुछ हैं अगर कोई मूल कुरान में कहानियां - ज्यादातर वे विभिन्न स्रोतों से "उधार" ली जाती हैं, लेकिन अक्सर बदल जाती हैं थोड़ा। इस विशेष मामले में कहानी "द चाइल्डबर्थ ऑफ मैरी एंड द" में भी मिलती है साल्वाडोर का बचपन" अगर हम नाम को सही ढंग से याद करते हैं, और यह शायद दर्ज हो गया है कुरान "द अरब चाइल्डहुड गॉस्पेल" (स्रोत; इब्न वार्राक के बीच) के माध्यम से। जैसा कि पहले कहा गया था: मुहम्मद ने ऐसी परियों की कहानियों से कहानियाँ लीं, और फिर बाइबल पर मिथ्या होने का आरोप लगाया जब उसने वही बनायी हुई किंवदंतियाँ और कहानियाँ नहीं बताईं। लेकिन कोई नवजात शिशु सोच नहीं पाता तर्कसंगत रूप से या धाराप्रवाह बोलना - यदि यह वास्तव में हुआ होता तो यह चमत्कार होना ही था, और ऐसा नहीं है संभावना है कि इसे NT में भुला दिया गया था, क्योंकि इसने यीशु के संबंध को किसी चीज़ से मजबूत किया था अलौकिक काफी।

00a 19/27: "हे मरियम! वास्तव में एक अजीब चीज (बच्चे यीशु*) को आप लाए हैं!"। मैरी हाडी बहुत मोटा और बहुत भाग्यशाली होना था अगर "उसके लोगों" में से किसी ने भी ध्यान नहीं दिया कि वह गर्भवती थी - हो सकता है घर में या मंदिर में।

***005 19/28: "(मरियम*) हे हारून की बहन!" यह कुरान में सबसे प्रसिद्ध गलती है। संभावित कारण यह है कि अरब में मरियम और मरियम (मूसा और हारून की बहन) नाम दोनों मरियम लिखी गई हैं। मुहम्मद बाइबिल में पारंगत नहीं थे, और उन्हें लगा कि यह वही महिला, भले ही उन्हें लगभग 1200 साल अलग कर दिया। हदीस बताती है कि मुहम्मद उनके अनुयायियों ने उन्हें बताया कि वह गलत थे, और गलती को दूर करने की कोशिश की, लेकिन वास्तविक सफलता के बिना। मुसलमान आज यह कहकर गलती की "व्याख्या" करते हैं कि यह सदियों पुरानी थी एक महिला को उच्च स्तर के व्यक्ति से जोड़ने के लिए सम्मान देने का तरीका, और इसी तरह "स्पष्टीकरण" लेकिन "स्पष्टीकरण" आमतौर पर विज्ञान द्वारा स्वीकार नहीं किए जाते हैं, यहां तक कि सभी द्वारा भी नहीं

मुस्लिम वैज्ञानिक - यह आंशिक रूप से इसलिए हो सकता है क्योंकि मुहम्मद ने भी मूसा को पिता बनाया है,
मरियम के पिता इमरान कुरान में एक और जगह। (यह अंतिम तथ्य कुछ मुसलमानों का है
"समझाया" कि वे दो अलग-अलग इमरान हैं। लेकिन यह भी द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है
विज्ञान, जैसा कि यह स्पष्ट है कि दोनों ही मामलों में यह वही आदमी है जिसके बारे में बात की जाती है - के संस्थापक
"इमरान का घर" या इमरान का कबीला)। कुछ मुसलमान कहते हैं कि यह एक रूपक है, लेकिन यह स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है
एक रूपक की तरह - उन कहानियों को कॉल करना जो गलत रूपक साबित होती हैं, यह भी एक मानक मुस्लिम है
कठिन बिंदुओं को समझाने का तरीका जब अन्य "स्पष्टीकरण" विफल हो जाते हैं। और याद रखें: दोनों
कुरान और इस्लाम इस बात पर जोर देते हैं कि अगर कुछ और नहीं कहा जाता है तो कुरान को शाब्दिक रूप से समझा जाना चाहिए।
रूपक, आदि में भी ऐसे बिंदु होते हैं जिन्हें देखना बहुत आसान होता है, या समझाया जाता है (जो यहाँ मामला नहीं है)
अगर मुहम्मद ने कुछ बात करने का इरादा किया था। के अनुसार एक स्पष्ट गलती
विज्ञान। यह और भी स्पष्ट है क्योंकि हदीस खुद मोहम्मद को बताती है कि वह इस बात से अनजान था
गलती की, और जब उसके द्वारा सुधारा गया तो उसे समझाने का असफल प्रयास किया गया
निकटतम सहकर्मी

**006 19/30a: "मैं (बेबी जीसस*) वास्तव में अल्लाह का सेवक हूं, - - -"। 3/51 देखें।

**007 19/30b: "(अल्लाह ने*) मुझे रहस्योद्घाटन दिया और मुझे (बच्चे यीशु*) एक नबी बनाया -
- -"। यहां तक कि इस्लाम (उदाहरण के लिए, तबरी द्वारा उद्धृत विद्वान इकरीमा) भी इस असंभवता को स्वीकार करता है कि ए
बच्चा एक नबी है, लेकिन उसे समझाना अस्पष्ट और काल्पनिक है। एक बहुत ही स्पष्ट गलती।
यह और भी अधिक है क्योंकि एक भी मौका नहीं है कि इस आश्चर्य को या . में भुला दिया गया हो
एनटी से छोड़ा गया अगर यह सच था। दरअसल यह उन बिंदुओं में से एक है जहां कई मुस्लिम
विद्वान मानते हैं कि कुरान में गलती है।

**008 19/30-33: शिशु यीशु अपने पालने में बात कर रहा है और चर्चा कर रहा है। यह भी है
एपोक्रिफ़ल चाइल्ड गॉस्पेल से "उधार" - इस मामले में जहाँ तक हम "अरब" के माध्यम से जानते हैं
बाल सुसमाचार" - जिसे "यीशु मसीह की शैशवावस्था का पहला सुसमाचार" भी कहा जाता है - एक अपोक्रिफ़ल
2. सदी से शास्त्र। ऐसा एक भी मौका नहीं है जब इस तरह का चमत्कार हुआ हो
बाइबल से हटा दिया गया, क्योंकि इससे यीशु की स्थिति काफी मजबूत हो जाती। यह भी
और इसलिए कि बचपन में यीशु के बारे में बहुत सी कहानियाँ नहीं हैं, और इस कहानी ने बनाया होगा
उसके जीवन का वह हिस्सा कम खाली। एक बार फिर एक परी कथा का उपयोग अल्लाह द्वारा एक सच्ची कहानी की तरह किया जाता है or
मुहम्मद. यहां तक कि "द मेसेज ऑफ कुरान" जैसी किताब भी इसे सच मानकर इसका बचाव करने में सक्षम नहीं है
कहानी, लेकिन यह असंभव को दूर करने के लिए केवल अटकलें और अनुमान प्रस्तुत करता है। भी
ऊपर १९/३०बी देखें।

एक बहुत स्पष्ट रूप से सच्ची कहानी नहीं - एक स्पष्ट गलती। हम एक मुसलमान से कभी नहीं मिले, यह समझाते हुए कि क्यों
कुरान अक्सर अपनी कहानियों को प्रसिद्ध से लेता है, लेकिन किंवदंतियों और परियों की कहानियों को बनाता है, और
फिर बाइबिल से अंतर को स्पष्ट करते हुए जोर देकर कहा कि बाइबिल नकली है।

"कुरान का संदेश" (A24 - 2008 संस्करण A23 में): बेबी जीसस के रूप में असंभव रूप से हो सकता है
एक पैगंबर, मुस्लिम विद्वानों के अनुसार, अन्य स्पष्टीकरण होने चाहिए। जैसा कि कहा गया है: एक
अधिक जगह जहां मुस्लिम विद्वान सहमत हैं कि कुछ होना चाहिए
कुरान में गलत।

*009 19/34: "ऐसा (था) यीशु मरियम का पुत्र: (यह) सत्य का एक कथन है, जिसके बारे में वे
(व्यर्थ) विवाद ”। हम वापस आ गए हैं कि कुरान में सच्चाई क्या है - सभी गलतियों के साथ यह है a
कठिन प्रश्न। जो निश्चित है वह यह है कि यीशु ने यह नहीं कहा कि वह ज्ञात का सेवक था
बहुदेववादी, विदेशी देवता अल-लाह / अल्लाह (उस मामले में उनके बहुत कम अनुयायी थे और उनके पास था
बहुत पहले मार दिया गया था), और यह कि उसने परमेश्वर/याहवे को "पिता" कहा। इस मामले में पाठ संदर्भित करता है
३० से ३३ तक (१९/३०अ, १९/३०ब, १९/३०-३३ ऊपर देखें), जो पहले से ही दिखाए गए हैं
स्पष्ट गलतियाँ हों। एक और स्पष्ट गलती।

००बी १९/३५: "अल्लाह के लिए यह उचित नहीं है कि वह एक बेटा पैदा करे"। हमे आशा हैं
यह वास्तव में भगवान है जो यहां बात कर रहा है, क्योंकि अगर यह मुहम्मद है; मनुष्य को कैसे पता चलता है
एक भगवान के लिए क्या उपयुक्त है? - और महिमा के अक्सर बच्चे होते हैं - कई बच्चे। एफ. पूर्व. Ramses
II के 67 बेटे और अज्ञात संख्या में बेटियाँ थीं, और जिंगिस खान के इतने बच्चे थे
कि विज्ञान अभी भी एशिया में उसके डीएनए का पता लगा सकता है (स्रोत: न्यू साइंटिस्ट)। और यदि यह कथन है
सच है, यहोवा के बारे में यीशु के "पिता" और "मेरे पिता" कहने की पहेली है (शब्द
बाइबल में "पिता" का प्रयोग कम से कम १६३ बार किया गया है, और शब्द "पुत्र" का प्रयोग कम से कम ६६ बार किया गया है
यहोवा और यीशु के बीच संबंध - अक्सर स्वयं यीशु द्वारा) - बाइबिल और दोनों
कुरान कहता है कि जीसस ईमानदार थे - और विज्ञान ने दिखाया है कि बाइबल को झूठा नहीं बनाया गया है
इस्लाम के कभी प्रलेखित दावों के बारे में नहीं। (अलाओ याद रखें: मुहम्मद याहवे अल्लाह को बुलाते हैं, जैसे वह

ज़ोर देकर कहते हैं कि यह वही ईश्वर है - ऐसा कुछ जो तभी संभव है जब यहोवा/अल्लाह सिज़ोफ्रेनिक हो
दो शिक्षाओं के बीच बहुत अधिक और बहुत गंभीर अंतर हैं।)

010 19/36: "वास्तव में अल्लाह मेरा (मुहम्मद का) भगवान है और आपका (मुसलमानों का *) भगवान - -"। इस
एक गंभीर है: यहाँ स्पष्ट रूप से यह स्वयं मुहम्मद है - मुहम्मद आदमी - अर्थात्
बोला जा रहा है। ब्रह्मांड के निर्माण से पहले किसी ईश्वर द्वारा बनाई गई पुस्तक में यह कैसे संभव है या
एक हो सकता है जो अनंत काल से अस्तित्व में है, और एक श्रद्धेय मदर बुक की एक प्रति नीचे भेजी गई है
अल्लाह के द्वारा स्वर्ग से? (कुरान में इस तरह की कुछ गलतियां (?) (8?) हैं - 6/114a देखें।)

011 19/58: "- - - संकेत - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

012 19/65: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०१३ १९/६७: "हमने (अल्लाह *) ने उसे (आदम) को कुछ भी नहीं से पहले बनाया"। आदमी बाहर नहीं बनाया गया था
कुछ भी नहीं। वास्तव में मनुष्य की रचना बिल्कुल नहीं हुई थी, बल्कि पहले के प्राइमेट से विकसित हुई थी। यह सभी देखें
6/2. (एक और छोटा विरोधाभास: ५२/३५ और अन्य में यह संकेत दिया गया है कि मनुष्य नहीं बना था
से कुछ नहीं।)

०१४ १९/६८: "तो, तुम्हारे रब (अल्लाह*) के द्वारा, निःसंदेह हम (अल्लाह*) उन्हें एक साथ इकट्ठा करेंगे -
- -"। कुरान में सभी गलतियों के साथ संदेह के अच्छे कारण हैं।

00ba 19/71: "आप में से कोई नहीं बल्कि इसके ऊपर से गुजरेगा (सीरात पुल - अंतिम पारित होने के लिए)
दिन*)"। जोरास्ट्रियन से काफी मिलता-जुलता है, जहां पुल का नाम चिनावड रखा गया है।

016 19/73: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। न तो . के लिए एक भी स्पष्ट चिह्न (=प्रमाण) नहीं है
अल्लाह और न ही सभी कुरान में मुहम्मद के ईश्वर से संबंध के लिए - केवल दावे और बयान
सिद्ध शब्दों या कुछ भी नहीं द्वारा समर्थित।

017 19/77: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

00c 19/88-89: "वे कहते हैं: '(अल्लाह) सबसे दयालु ने एक बेटा पैदा किया है!' वास्तव में आपने रखा है
आगे एक सबसे राक्षसी बात!" दूसरों के बीच में देखें १९/३५।

३५४

पेज ३५५

00d 19/92: "क्योंकि यह (अल्लाह) की महिमा के अनुरूप नहीं है कि वह सबसे दयालु है कि उसे चाहिए
बेटा पैदा करो"। दूसरों के बीच में देखें १९/३५।

018 19/93: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

019 19/98: "- - - खुशखबरी - - -।" सबसे अच्छा केवल आंशिक रूप से सही। देखें 2/97c और 17/9babove and
नीचे 91/13।

सूरह 19: कम से कम 18 गलतियाँ + 5 संभावित गलतियाँ।

सूरा 20:

०१ २०/२: "हमने (अल्लाह *) ने तुम्हारे लिए (एक अवसर) होने के लिए कुरान को नहीं भेजा है
संकट - - -"। मुख्य तथ्य यह है कि अल्लाह (यदि वह मौजूद है) ने इसे बिल्कुल भी नीचे नहीं भेजा - नहीं
सर्वज्ञानी भगवान वह कई और स्पष्ट गलतियाँ करते हैं, आदि।

002 20/4a: (कुरान है*) "उसकी ओर से एक रहस्योद्घाटन (अल्लाह*)"। अनुत्तरित प्रश्न है:
क्या एक सर्वज्ञानी ईश्वर इतनी सारी गलतियों के साथ एक किताब नीचे भेजेगा? - उल्लेख नहीं करने के लिए अगर वह
इसे एक संपूर्ण नहीं, बल्कि सभी समान रूप से सम्मानित मदर बुक के रूप में अपनी संपूर्णता के रूप में प्राप्त करेंगे
स्वर्ग? एक उत्तर है: या तो यह गलत है कि अल्लाह ने इसे उतारा, या यह गलत है कि
अल्लाह सर्वज्ञ है - अगर वह मौजूद है।

००३ २०/४बी: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

004 20/6: "- - - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

००५ २०/४७अ: "वास्तव में हम (मूसा और हारून*) आपके (रामसेस द्वितीय के*) प्रभु द्वारा भेजे गए दूत हैं।

यहोवा (लेकिन दासों के देवता का बहुत सम्मान नहीं करेगा), लेकिन अल्लाह का कभी नहीं। बारे में सुना होगा

006 20/47b: "- - - हम (मूसा और हारून*) तेरे (रामसेस II*) यहोवा (अल्लाह*) से आए हैं!" देखो 20/47a ठीक ऊपर।

००७ २०/५३: "उसी ने तेरे लिये पृथ्वी को बिछे हुए कालीन के समान बनाया है; - - -"। कुरान में पृथ्वी समतल है। पैनकेक की तरह गोल हो सकता है, लेकिन निश्चित रूप से सपाट - गोले की तरह नहीं। अर्थात् मुहम्मद क्या मानते थे, जैसा कि उनके समय में भूगोल जैसा था - लेकिन एक भगवान के पास था पता था कि यह गलत था। (वास्तव में कुरान के अनुसार ७ पृथ्वी हैं (६५/१२) - एक शीर्ष पर अन्य हदीसों के अनुसार।) 2/22 (?), 15/19, 43/10, 71/19, 79/30, 88/20 भी देखें।

००८ २०/५४: "- - - इनमें (पौधे और मवेशी*) समझदार लोगों के लिए निशानियाँ हैं।" कुरान में कोई वास्तविक संकेत नहीं हैं - न अल्लाह के लिए, न मुहम्मद के धर्म के लिए, न ही एक भगवान से मुहम्मद का संबंध। केवल संकेत "मनुष्यों को समझ में आ गया" मिलता है कुरान में इस तरह के वाक्यों से सवाल है: मुहम्मद को क्यों इस्तेमाल करना पड़ा अमान्य प्रमाण और विकृत तर्क, और निष्कर्ष: मुहम्मद द्वारा अमान्य तर्कों का प्रयोग साबित करता है कि उसके पास कोई वास्तविक तर्क/तथ्य नहीं थे - अगर उसके पास था, तो उसने इसके बजाय उनका इस्तेमाल किया था। और वास्तव में एक और बिंदु है: गढ़े हुए दावों और बयानों का उपयोग हॉलमार्क हैं धोखेबाज और ठग से।

009 20/55: "(पृथ्वी) से हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें पैदा किया - - -"। गलत। आदमी नहीं बनाया गया था पृथ्वी से। 6/2 भी देखें।

०१० २०/६९-७०: फिरौन के जादूगर मूसा को देखकर मुसलमान हो गए क्षेत्र चमत्कार कर रहा है। वही सब कुरान दोहराता है और दोहराता है और दोहराता है कि कारण है कि मुहम्मद चमत्कार करने में असमर्थ थे, (वास्तविक भविष्यवाणियां करना भी शामिल है), यह था कि कोई भी किसी भी तरह विश्वास नहीं करेगा। यह एक ऐसा दृश्य है जो यह स्पष्ट करता है कि मुहम्मद जानता था कि वह हर बार उन बहाने और "स्पष्टीकरण" का इस्तेमाल करने पर झूठ बोल रहा था।

०११ २०/७१: "- - - मैं (फिरौन रामसेस II) आपको सूली पर चढ़ाएगा - - -"। यदि हमारे स्रोत नहीं हैं बहुत गलत, मिस्र ने उस समय लोगों को सूली पर नहीं चढ़ाया था।

*०१२ २०/७८: "तब फिरौन ने अपनी सेना के साथ उनका पीछा किया, लेकिन पानी पूरी तरह से" उन्हें अभिभूत किया और उन्हें ढँक दिया "। हो सकता है कि पानी ने सैनिकों को ढँक दिया हो, लेकिन नहीं फिरौन - - - रामसेस द्वितीय डूब नहीं गया, और वह वर्षों बाद तक मरा नहीं था विज्ञान। एक और बात: सबसे अधिक संभावना है कि उन्होंने लाल सागर को ठीक से पार नहीं किया। मूल हिब्रू बाइबिल वास्तव में एक ऐसे नाम का उपयोग करता है जिसका अर्थ "रीड्स का सागर" भी है। का सागर रीड उस क्षेत्र में कड़वे समुद्र के दक्षिण में एक बड़ी, उथली झील थी जहाँ अब आप पाते हैं स्वेज़ नहर। मूसा के लिए अपने कुछ २० लाख यहूदियों (६००००० पुरुषों + .) के साथ एक बड़ी झील के पार चलना बाइबिल के अनुसार महिलाएं और बच्चे) और सामान और जानवर एक चीज हैं। प्रति लाल सागर के पश्चिमी किनारे से नीचे उतरो और नावों से उस समुद्र को पार करने की योजना बनाओ, जो उन्होंने नहीं किया था है, यह एक और बात है - याद रखें कि वे नहीं जानते थे कि यहोवा उन्हें विभाजित करेगा समुद्र (और उनमें से अधिकांश ने शायद ही इस पर विश्वास किया था यदि उन्हें बताया गया था)। तथ्य यह है कि हिब्रू उनके द्वारा पार किए गए समुद्र का नाम (?) - यम सुफ - जिसका अर्थ है "रीड्स का सागर" का भी उल्लेख किया गया है एनआईवी में कई बार फुटनोट्स में - और अन्य साहित्य में।

013 20/85: "- - - सामरी ने उन्हें भटका दिया था"। परन्तु यहूदी अभी तक शोमरोन में नहीं पहुंचे थे और वहां कोई सामरिया नहीं था (वास्तव में नाम सामरिया/सामेरियन जहां तक हम पा सकते हैं, 722 ईसा पूर्व तक नहीं गढ़ा गया था - जो कि पलायन के 500 से अधिक वर्षों बाद हुआ था (यदि यह) हुआ) सीए 1235 ईसा पूर्व)। मुसलमान यह कहकर गलती को "समझाने" की कोशिश करते हैं कि इसका मतलब हो सकता है "शमीर" = अजनबी, या "शोमर" = चौकीदार = समारा अरब में - - - लेकिन अगर आप चेरी-पिक करते हैं एक पूरी भाषा से, समान दिखने वाले शब्दों को खोजना हमेशा संभव होता है - और यह कि यहां अरब शब्द एक जैसा दिखता है, पूरी तरह से अप्रासंगिक है, क्योंकि पुराने के ये यहूदी शायद ही बोलते थे अरब। लेकिन अगर कुरान का मतलब कुछ और है तो वह यहां कहता है - या संभव है गलतफहमी - पुस्तक में और कितने स्थान समान या बदतर/धार्मिक हैं गलतियां?

014 20/87: "- - - समारा - - -"। ऊपर 20/85 देखें।

015 20/95: "- - - ओ सामरी - - -"। ऊपर 20/85 देखें।

०१६ २०/१०६+१०७: “वह उन्हें छोड़ देगा (पहाड़/पहाड़ की जंजीर जो हटा दी जाएगी*)
समतल समतल और समतल। तुम उनके स्थान पर कुछ भी टेढ़ा या टेढ़ा नहीं देखोगे”। यह ऐसा होगा
समतल पृथ्वी पर सही हो। लेकिन चूंकि पृथ्वी घुमावदार है, इसलिए कम से कम घुमावदार रेखाएं तो होनी ही चाहिए
जहां बड़ी-बड़ी पर्वत जंजीरें हटा दी गई थीं। कोई भगवान जानता था।

०१७ २०/११३: "इस प्रकार हमने (अल्लाह *) ने इसे (कुरान*) नीचे भेजा - - -"। इतने सारे के साथ कोई किताब नहीं
एक सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा गलतियों को एक मदर बुक के रूप में सम्मानित किया जाता है, और कोई भी सर्वज्ञ भगवान नहीं बनाता है
गलतियों से भरी पुस्तक की प्रति और उसे एक पवित्र पुस्तक और धर्म के स्रोत के रूप में भेजती है
खुद को समर्पित।

०१८ २०/११४: "सबसे ऊपर अल्लाह, राजा, सत्य है!" अल्लाह जैसा कि कुरान में दिखाया गया है
सबसे अच्छा आंशिक रूप से सत्य और आंशिक रूप से गलतियों का प्रतिनिधित्व करता है।

356

पेज ३५७

०१९ २०/११६: "अपने आप को आदम को सजदा करना"। गलत, जैसा कि आदम कभी अस्तित्व में नहीं था - मनुष्य ने विकसित किया
पहले के रहनुमा से। हमने कुछ समय पहले कुछ मुसलमानों से इस बारे में बहस की थी और उन्होंने
विजयी रूप से हमें बताया कि हम गलत थे, क्योंकि अब विज्ञान ने पाया था कि एक ईव थी
और एक आदम। जो काफी हद तक सच है। लेकिन उन्होंने जो उल्लेख नहीं किया, वह यह था कि यह "हव्वा" जीवित थी
लगभग 160ooo - 200oo साल पहले पूर्वी अफ्रीका में रिफ्ट घाटी में, और एक तथाकथित का प्रतिनिधित्व किया
"अड़चन" - एक ऐसा समय जब मानव जाति लगभग समाप्त हो गई थी - और केवल हव्वा की लड़कियां थीं, या
अन्य बालिकाओं का डीएनए बाद में मर गया (यह परिणाम माइटोकॉन्ड्रिया के परीक्षणों से है
डीएनए - एमडीएनए - और एमडीएनए केवल कहानी के महिला पक्ष के बारे में बताता है, जैसे कि माइटोकॉन्ड्रिया
केवल माता-पिता से बच्चे के पास अंडे की कोशिका के माध्यम से जाता है = माँ से - केवल ले जाता है
स्त्री डीएनए)। फिर लगभग 60ooo+ (64ooo?) साल पहले, Homo . के साथ कुछ हुआ था
सेपियन्स (कैस्पियन सागर के दक्षिण के क्षेत्र में हो सकता है)। वह अभी भी होमो सेपियन्स था, लेकिन
कुछ - विज्ञान नहीं जानता क्या - ऐसा हुआ जिसने उसे तकनीकी की राह पर ला खड़ा किया
और अन्य विकास। और एक और अड़चन थी - कुछ इसी तरह की
"पुरातात्विक पूर्व संध्या" को हुआ - एक बार फिर हुआ। लेकिन इस बार यह में पठनीय है
Y गुणसूत्र, जो केवल पुरुषों - यहाँ आदम का नाम है - के पास है, और फलस्वरूप केवल दिखाता है
मर्दाना पक्ष। इससे पता चलता है कि आज रहने वाले सभी पुरुषों का एक सामान्य "पिता" होता है
पुरातत्वविदों ने संयोग से "पुरातात्विक एडम" या सिर्फ "एडम" नाम नहीं दिया) - ए
अविवाहित आदमी जो हव्वा की तुलना में 140ooo (कुछ कहते हैं 100oo) वर्षों बाद रहता था। वह पुरातत्वविद
उनका नाम आदम और हव्वा रखा, एक तरह से काफी तार्किक है। लेकिन उनका इससे कोई लेना-देना नहीं है
बाइबिल में आदम और हव्वा या कुरान में "आदम और उसकी पत्नी" के साथ - वे कैसे f. भूतपूर्व।
पुरुष और पत्नी बनें जब वे 100ooo - 140ooo वर्ष अलग रहते थे, और एक अफ्रीका में, दूसरा
एशिया में हो सकता है? जब वे पुरातात्विक की बात करते हैं तो इस तरह के आवश्यक तथ्यों का उल्लेख नहीं करना चाहिए
आदम और हव्वा और इसे सृष्टि के धार्मिक प्रमाण के रूप में उपयोग करते हैं, हम बेईमान पाते हैं। और कम से कम
इस्लाम में विद्वान - जो अपने छात्रों और मंडलियों को पढ़ाते हैं और हैं
मीडिया में इंटरव्यू दिया और लिखा और बोला- यह जरूर जानिए। यह एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथ्य है
पढ़े-लिखे लोगों के बीच।

020 20/126: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२१ २०/१२७: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

022 20/128: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

023 20/133: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। में कहीं भी एक भी स्पष्ट चिन्ह (= प्रमाण) नहीं है
कुरान न तो अल्लाह के लिए और न ही मुहम्मद के ईश्वर से संबंध के लिए। अपवाद के बिना सभी
"संकेत", "स्पष्ट संकेत", और "सबूत" केवल दावे या बयान हैं जो केवल हवा पर टिके हुए हैं
और/या मुड़ तर्क या अन्य अप्रमाणित दावों पर। (एक अपवाद हो सकता है; तर्क
बाइबिल से लिया गया है - लेकिन वे मामले में यहोवा के बारे में बताते हैं, अल्लाह के बारे में नहीं। इस्लाम पसंद करता है
दावा करें कि वे एक और एक ही ईश्वर हैं, लेकिन शिक्षाएँ - विशेष रूप से जब आप उन्हें पाते हैं
NT (नई वाचा के मुसलमानों ने कभी उल्लेख नहीं किया - cfr। यीशु का अंतिम ईस्टर, f। पूर्व। ल्यूक
22/20) - मौलिक रूप से इतने अलग हैं कि यह असंभव है कि दोनों एक हो सकते हैं और
वही, तब तक नहीं जब तक कि भगवान कम से कम सिज़ोफ्रेनिक न हो।)

सूरह २०: कम से कम २३ गलतियाँ,

यहाँ सबटोटल: 795 गलतियाँ + 112 संभावित गलतियाँ।

भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 4 (= II-1-4-4)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। NS "पूर्ण" सूची - "विश्वकोश" - सूरह पर आधारित और पद संख्या

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें। धारा 1 से 16.

कुछ स्पष्ट तथ्य गलतियाँ और सूरह में त्रुटियाँ २१ से ३० . तक कुरान में - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

टिप्पणियों को ३ नंबरों (०० या ० सहित) द्वारा क्रमांकित किया गया, कुछ स्थानों के बाद एक छोटा पत्र = स्पष्ट गलतियाँ। टिप्पणियों की संख्या 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षर (बड़ा या .) छोटा) = संभावित गलती।

सूरा २१:

001 21/4: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22 देखें।

00a 21/6: "- - - आबादी में से एक नहीं जिसे हमने (अल्लाह) नष्ट कर दिया - - -"। मुहम्मद दावा किया कि बिखरे हुए खंडहर और बर्बाद गांवों और कस्बों को अल्लाह ने नष्ट कर दिया क्योंकि उसके निवासियों ने पाप किया है। एक शुष्क, कठोर और युद्ध जैसे क्षेत्र में शायद ही यह पूर्ण सत्य है - May कतई सच न हो।

002 21/10: "हम (अल्लाह*) ने तुम्हारे लिए (ऐ आदमियों!) एक किताब (कुरान*) - - - उतारी है। एक बार और अधिक: क्या एक सर्वज्ञ ईश्वर ने इतनी सारी गलतियों के साथ एक किताब का खुलासा किया है? - या मुहम्मद . है अल्लाह ने जो कहा उसे बताते हुए सारी गलतियाँ कीं? सीधे शब्दों में: नहीं। (- या has मुहम्मद या किसी साथी ने यह सब कल्पना और ज्ञान से बनाया जो अक्सर होता था गलत?)।

००३ २१/१६: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

004 21/18: "- - - नहीं, हम (अल्लाह) सत्य को असत्य के विरुद्ध उछालते हैं, और वह अपना दिमाग निकाल देता है, और देखो, असत्य नाश हो जाता है!" क्या ऐसा ही होता है अगर कोई कुरान को पूरी तरह से फेंक देता है गलतियां? अपनी सभी गलतियों, आदि के साथ, कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सत्य है।

005 21/19: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

006 21/20: "वे (स्वर्ग और पृथ्वी के सभी प्राणी) उसका (अल्लाह के*) उत्सव मनाते हैं
रात और दिन की स्तुति करता है - - -"। इस्लाम को यह साबित करना होगा कि सभी जानवर, पक्षी, मछलियां, कीड़े-मकोड़े, कीड़े, आदि, आदि वास्तव में ऐसा करते हैं - और सभी गैर-मुस्लिम इंसान - इससे पहले कि कोई उन पर विश्वास कर सके और इस बिंदु पर कुरान।

007 21/22a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

००८ २१/२२बी: "यदि स्वर्ग में (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी में, अन्य देवता होते
अल्लाह के सिवा दोनों में कंफ्यूजन होता! तर्क गलत है। दोनों मौजूद हैं
प्रबंधन के लिए पदानुक्रमित और समानांतर (प्रत्येक विभाग या पहलू के लिए एक बॉस) सिस्टम। एक
कह सकते हैं कि भ्रम हो सकता है, लेकिन ऐसा नहीं होगा। प्रमाण अमान्य है।

००९ २१/२४: "लेकिन उनमें से अधिकांश सत्य नहीं जानते - - -"। खैर, "सच्चाई" जैसा कि में दिया गया है
कुरान, सबसे अच्छे रूप में केवल आंशिक रूप से सत्य है - बहुत सारी गलतियाँ।

00b 21/26: "और वे कहते हैं '(अल्लाह) परम प्रतापी ने संतान पैदा की है'। उसकी जय!
वे (लेकिन) नौकर हैं जिन्हें सम्मान के लिए उठाया गया है"। हम नहीं जानते कि अल-लैट, अल- के बारे में सच्चाई क्या है
उज्जा और मानत - पुराने अरब धर्म में अल-लाह/अल्लाह की बेटियां। लेकिन यीशु कम से कम
कई बार कहा कि यहोवा उसका पिता था।

**010 21/30a: "क्या अविश्वासी यह नहीं देखते कि आकाश (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी
(सृष्टि की एक इकाई के रूप में) एक साथ जुड़े हुए थे, इससे पहले कि हम (अल्लाह *) उन्हें अलग कर दें?"
स्वर्ग एक प्रकाशिक भ्रम है - एक ऐसा तथ्य जो आज सर्वविदित है, लेकिन मुहम्मद इसे नहीं जानते थे
- और एक भौतिक वस्तु से एक भ्रम "क्लोवेन असंडर" नहीं हो सकता है। हम भी मिले हैं
मुसलमानों का कहना है कि बिग बैंग की थ्योरी कुरान को साबित करती है। लेकिन बिग बैंग "लौंग"
13.7 अरब साल पहले, जबकि हमारा सूर्य (हेलीओस या सूर्य *) एक 3 है।
जनरेशन स्टार, और यह और पृथ्वी सहित ग्रह सिर्फ 4.57 अरब साल पुराने हैं। NS
उम्र में अंतर, और इससे भी अधिक तथ्य यह है कि हमारा सूर्य ३ पीढ़ी का है, (जिसका अर्थ है कि
पदार्थ पृथ्वी - और सूर्य - से बना है, द्रव होने के दो चक्रों से गुजरा है और
पूर्व सूर्य के मिश्रित भाग जो सुपर नोवा (विस्फोटक तारे) बन गए और फैल गए
ब्रह्मांड के बड़े हिस्से जहां यह अन्य विस्फोटित सुपर नोवा के अवशेषों के साथ मिश्रित हुआ, और अंत में
एक नया सूर्य और ग्रह बनाने के लिए मिलकर) बिग बैंग को इसमें पूरी तरह से अप्रासंगिक बना देता है
कनेक्शन - पिछले सभी 9 अरब वर्षों के लिए पृथ्वी और सूर्य और ग्रह बस थे
एक आकाशीय "मिक्सर" में बिखरे हुए परमाणु, अणु और टुकड़े - पृथ्वी नहीं, आदि
पहचाना जा सकता है और "एक साथ जोड़ा जा सकता है" या "जोकर अलग" हो सकता है। कम से कम प्रोफेसरों
अल-अहज़र विश्वविद्यालय यह जानता है, और इसका उपयोग करके लोगों को धोखा देने की कोशिश करना बेईमानी है
एफ में "तर्क"। भूतपूर्व। "कुरान का संदेश" - देने का नाटक करने वाली एक किताब, जैसा कि से देखा गया है
मुस्लिम दृष्टिकोण, कुरान की सही जानकारी और स्पष्टीकरण, एक द्वारा प्रमाणित
मुस्लिम दुनिया में कुरान पर सर्वोच्च अधिकारियों, उपर्युक्त विश्वविद्यालय।
(सावधान रहें कि उस पुस्तक के अंग्रेजी में नवीनतम संस्करण को अधिक रूढ़िवादी रूप से "सही" बनाया गया है
पूर्व की तुलना में)।

०११ २१/३०बी: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

**०१२ २१/३०सी: "हम (अल्लाह*) ने पानी से सभी जीवित चीजों को बनाया है।" गलत - जीवित चीजें
पानी से नहीं बने थे। कुछ मुसलमानों का कहना है कि आधुनिक विज्ञान यहां कुरान को साबित करता है, जैसे
विज्ञान बताता है कि जीवन की शुरुआत पानी से हुई थी। **लेकिन जीवन की शुरुआत पानी से ही हुई है, यह किसी से नहीं बना है जल - वहाँ बहुत बड़ा भेद है।** यहां सबसे बुरी बात ये है कि ये झूठ भी बोला जाता है
सुशिक्षित मुसलमानों द्वारा - f. भूतपूर्व। यह टिप्पणी ३८ से २१/३० में "The ." में अच्छी तरह से समझाया गया है
कुरान का अर्थ "- मुसलमान जिनके पास इतनी शिक्षा और ज्ञान है कि वे

"पानी में बने" और "पानी से बने" होने के बीच के अंतर को अच्छी तरह से जानते हैं।
वे कितनी विश्वसनीय हैं तो अन्य चीजें जो वे दावा करते हैं? 6/2 भी देखें। हम जोड़ सकते हैं कि यह एकमात्र है
कुरान में जगह जहां - संभवतः - पौधों की "सृष्टि" भी शामिल है, इसके बावजूद
उन्हीं पौधों में से सभी जीवन का आधार हैं।

०१३ २१/३१अ: "और हमने (अल्लाह*) ने धरती पर पहाड़ - - - स्थापित किए हैं। पहाड़ नहीं हैं
"पृथ्वी पर सेट" - वे बिना किसी अपवाद के "बड़े हो गए" हैं, चाहे वे किसी भी हों
टेक्टोनिक या ज्वालामुखी गतिविधि का परिणाम। कोई भी भगवान यह जानता था, लेकिन मुहम्मद नहीं। क्या ये
बताएं कि कुरान का असली रचयिता कौन है?

०१४ २१/३१बी: "और हमने (अल्लाह) ने धरती पर पहाड़ों को स्थिर खड़ा कर दिया है, कहीं ऐसा न हो कि वह
उनके साथ हिलाओ - - -"। इस्लाम और कुरान के कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि यह डिस्क को संदर्भित करता है
वह पृथ्वी है (कुरान में पृथ्वी चपटी है, लेकिन शायद एक गोल डिस्क) हिल सकती है और
अस्थिर हो जाते हैं, और इस वजह से फिसल सकते हैं या इधर-उधर हो सकते हैं और सब कुछ गिरा सकते हैं -
मानवता शामिल - पृथ्वी से दूर।

हम कुछ मुस्लिम विद्वानों का उल्लेख करते हैं: जलालन, (पृष्ठ 437), बदावी (पृष्ठ 686), तबरी (पृष्ठ 589), और
ज़माख़शरी (भाग ४, पृ. ३८१): वे सभी कहते हैं कि "अगर यह इन अचल (!!*) के लिए नहीं होता
पहाड़, पृथ्वी खिसक जाएगी। "(!!!*)

**** और जलालान, बयदावी और ज़माख़शरी सभी कहते हैं कि "- - - उसने (अल्लाह*) रखा
पृथ्वी पर अस्थिर पहाड़ (भूकंप के दौरान हिलने से ज्यादा नहीं*) ऐसा न हो
लोगों के साथ झुकाव। " यह स्पष्ट रूप से कुरान का वास्तव में मतलब था, और यह और भी अधिक
स्पष्ट रूप से वही अर्थ था जो मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को बताया था, क्योंकि यह वही है जो विद्वान मुसलमान है
विद्वानों को यकीन था कि सच था।

लेकिन यह "सत्य" इतना हास्यास्पद है, कि आइए हम वैकल्पिक व्याख्या पर चलते हैं - वह जो
इस्लाम में अब प्रचलन में है कि वे जानते हैं कि मूल "सच्चाई" गलत थी: कि पहाड़
भूकम्प में बाधा डालते हैं।

वह सही नहीं है। खैर, यह सच्चाई से इतनी दूर है कि यह गलत भी नहीं है - यह कभी-कभी होता है
सच्चाई के विपरीत:

1. एफ़ के अनुसार। भूतपूर्व। हैवीवेट जैसे "नया"
   वैज्ञानिक" और "प्रकृति" पहाड़ कभी-कभी
   उनके कारण भूकंप आ सकते हैं
   काफी वजन और दबाव
   भूमिगत। हां, यहां तक कि भिन्नताएं भी
   बड़े पहाड़ में पानी की मात्रा (= वजन)
   झीलें या हिमनद कभी-कभी छोटे और का कारण बनते हैं
   मध्यम भूकंप। उसके लिए भी यही
   पहाड़ों में कभी-कभी भारी हिमपात होता है
   - पहाड़ों में बर्फ और नीचे बारिश
   एक सामान्य घटना है = असंतुलन
   वजन। (वहाँ f। उदा। अधिक भूकंप हैं
   गर्मियों की तुलना में सर्दियों में उत्तर)।
2. *आज यह सर्वविदित है कि पर्वत
   टेक्टोनिक गतिविधि के कारण बनाया गया (जो हमेशा
   भूकंप का कारण बनता है - हालांकि कभी-कभी भी
   मानव के लिए कमजोर महसूस करते हैं) या ज्वालामुखी गतिविधि

जो अक्सर भूकंप का कारण बनता है। इसका मत
कि पहाड़ वास्तव में द्वारा बनाए गए हैं
भूकंप (या वास्तव में उसी द्वारा)
तंत्र जो अधिकांश भूकंप करते हैं), यह
ऐसे भूकंपों में बाधा नहीं डालता। किसी भगवान के पास था
यह ज्ञात है, लेकिन मुहम्मद नहीं - यह नया है
मनुष्यों को ज्ञान। फिर किसने रचा
कुरान?

015 21/31c: "- - - और हम (अल्लाह) ने उसमें (पहाड़ों में) चौड़े रास्ते बनाए हैं
(पहाड़ों के बीच) - - -"। हम ईमानदारी से अल्लाह को नहीं जानते थे - या किसी अन्य भगवान - निर्मित
राजमार्ग और यहां हम एक सस्ता मजाक बना सकते हैं (अपने कांग्रेस-पुरुषों (या समान) को पूछने के लिए कहें
उस पर टैक्स का सारा पैसा खर्च करने के बजाय, अल्लाह आपकी सड़कों का निर्माण करता है)। लेकिन हम इससे परहेज करते हैं।

खैर, मुहम्मद के लिए यह कहना संभव होगा - सच है या नहीं - कि अल्लाह ने दिखाया
पहले यात्री जहां यात्रा करना है। लेकिन किसी भी हालत में अल्लाह ने सड़कों या राजमार्गों का निर्माण नहीं किया। जब तक
इस्लाम वास्तव में साबित करता है कि उसने किया - लेकिन इस्लाम कभी साबित नहीं करता, वे केवल बताते हैं या कहते हैं या दावा करते हैं, यहां तक कि
हालांकि वे हर किसी से सबूत मांगते हैं। या वे कहते हैं कि कुरान में ऐसा कहा गया है, और वह
इसे साबित करता है। लेकिन ऐसी कई गलतियों वाली किताब का सबूत के तौर पर कोई महत्व नहीं है - और इसके अलावा यह है
कुरान को साबित करने के लिए कुरान का उपयोग करना तार्किक रूप से असंभव है, क्योंकि परिपत्र प्रमाण बिना मूल्य के हैं।

016 21/32a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०१७ २१/३२बी: "और हम (अल्लाह*) ने आकाश (बहुवचन और गलत*) को छत्र - - - बनाया है।
गलत। हम जिस स्वर्ग को देखते हैं, वह छत्र के रूप में नहीं बना है - वह भौतिक भी नहीं है। स्वर्ग
जैसा कि हम देखते हैं, यह केवल एक भ्रम है जो दिन के समय प्रकाश के मुड़ने से, और हमारी असमर्थता से बना है
रात में उन दूरियों पर सही 3 आयाम देखें।

**०१८ २१/३२सी: "और हम (अल्लाह*) ने आकाश (बहुवचन और गलत*) को छत्र बना दिया है
अच्छी तरह से संरक्षित - - -"। मुहम्मद सितारों और शूटिंग के बीच का अंतर नहीं देख पा रहे थे
सितारे। कुरान में यह बताया गया है कि शूटिंग सितारे (सामान्य सितारे होने के लिए गलती) हैं
"तीर" बुरी आत्माओं या जिन्न (प्राणियों को पुराने अरब लोककथाओं से "उधार" लेने के लिए इस्तेमाल किया जाता है)
और मुहम्मद के अलावा किसी अन्य "नबी" के लिए अज्ञात) स्वर्ग पर जासूसी करना चाहते हैं। कोई भी बच्चा
आज एक असली स्टार और एक शूटिंग स्टार के बीच का अंतर जानता है, और यह भी कि क्या होगा
अगर शूटिंग सितारे असली सितारे थे तो पृथ्वी पर और पृथ्वी पर घटित होगा। यहां तक कि एक बौना भगवान भी था
यह ज्ञात है - लेकिन मुहम्मद नहीं, क्योंकि यह आधुनिक ज्ञान है। प्रासंगिक या अनुचित
सवाल यह है कि फिर कुरान की रचना किसने की?

019 21/32d: "- - - संकेत - - -"। अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 और 20/54 देखें।

दरअसल: अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक द्वारा प्रमाणित किताब "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अनुसंधान अकादमी (इस तरह मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक
विषयों) दिनांक २७. दिसंबर १९९८ के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं
अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि
अल्लाह के लिए कोई पुतला नहीं है और उसे पटाना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है
के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है।

**020 21/33: "- - - सभी (आकाशीय पिंड) साथ तैरते हैं, प्रत्येक अपने गोल पाठ्यक्रम में।" गलत।
केवल एक खगोलीय पिंड है जिसका एक गोल पाठ्यक्रम है, और उसके बाद केवल पृथ्वी की तुलना में:
चंद्र - लूना। और यदि आप इसकी तुलना सूर्य से करते हैं, तो इसका पाठ्यक्रम वास्तव में और अधिक गोलाकार नहीं है,

लेकिन एक प्रकार की लहरदार, और इससे भी अधिक यदि आप इसकी तुलना आकाशगंगा से करते हैं। सूरज भी नहीं है
गोल पाठ्यक्रम, भले ही आप इसकी तुलना आकाशगंगा से करें - यह एक प्रकार के मुड़े हुए साइनस वक्र का अनुसरण करता है
आकाशगंगा के भूमध्य रेखा के ऊपर और नीचे। हम देखते हैं कि बहुत से सितारों के लिए भी ऐसा ही है -
कोई चक्र नहीं, बल्कि मुड़ा हुआ साइनस। पृथ्वी का पाठ्यक्रम निश्चित रूप से इस प्रकार है, लेकिन अधिक जटिल है क्योंकि
यह एक ही समय में सूर्य की परिक्रमा कर रहा है। और हमारी आकाशगंगा - साथ में बाकी स्थानीय
आकाशगंगाओं का समूह (कुछ दर्जन आकाशगंगाएँ) और कई अन्य - हमारे कुछ हद तक रैखिक रास्ते पर हैं
"द ग्रेट अट्रैक्टर" नामक किसी चीज़ की ओर, जिसे कोई नहीं जानता कि - - - जबकि यह क्या है
वही समय हमारे स्थानीय समूह में घूम रहा है, जो भटक रहा है और एक का हिस्सा है
एक हजार या अधिक आकाशगंगाओं का बड़ा समूह। आपको अंतरिक्ष में गोल पाठ्यक्रम नहीं मिलते, जब तक कि
आप चेरी-पिक पार्ट मूवमेंट्स - और बिना टेलीस्कोप के हम सभी कोर्स देख सकते हैं a
"द ग्रेट" की दिशा में इस आंदोलन के कारण कुछ हद तक रैखिक मुख्य दिशा
अट्रैक्टर", लेकिन स्थानीय चक्कर या इसी तरह के कारण अनियमित।

०२१ २१/३७: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२२ २१/४५: "मैं (मुहम्मद*) रहस्योद्घाटन के अनुसार आपको (लोगों*) को चेतावनी देता हूं।
कुरान*)। कुरान मुहम्मद या अन्य मनुष्यों से या से एक रहस्योद्घाटन हो सकता है
कुछ अदृश्य शक्तियाँ, **लेकिन एक सर्वज्ञ ईश्वर से नहीं - कोई सर्वज्ञ ईश्वर नहीं बनाता
गलतियाँ, और कुरान में कुछ के साथ अविश्वसनीय 3000 या अधिक स्थान हो सकते हैं
गलती की तरह (दोहराव सहित), यदि आप पूरी तरह से सब कुछ और सभी विवरण गिनते हैं।
हमारी पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ के लिए 5 से अधिक !!** कई गलतियाँ सिर्फ विवरण हैं -
लेकिन एक भगवान विवरण को भी गलत नहीं बनाता है। और कई त्रुटियां निश्चित रूप से अधिक हैं
विवरण की तुलना में।

023 21/50a: "और यह (कुरान*) एक धन्य संदेश है - - -"। उस के साथ एक संदेश कई गलतियाँ, अमान्य अंक और गलत प्रमाण, धन्य नहीं हैं।

024 21/50b: "और यह (कुरान*) एक धन्य संदेश है जिसे हमने (अल्लाह *) भेजा है नीचे"। प्रश्न पूछना कितने तरीकों से संभव है: **क्या यह सच हो सकता है कि एक सर्वज्ञ? भगवान ने ऐसी कई गलत तथ्यों, विरोधाभासों और के साथ एक किताब भेजी है अन्य गलतियाँ** - एफ। भूतपूर्व। भाषाई और शायद धार्मिक गलतियाँ? उल्लेख नहीं करने के लिए: इसकी कितनी संभावना है यह कि इतनी दयनीय गुणवत्ता की पुस्तक, कम से कम गलत तथ्यों और अमान्य प्रमाणों से संबंधित, और साहित्य के रूप में, एक के घर में श्रद्धेय मातृ पुस्तक के रूप में एक प्रमुख स्थान हो सकता है सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान भगवान? यह बस असंभव है।

00c 21/50c: "- - - क्या तुम (लोग) तो इसे (कुरान*) ठुकरा देंगे?" बेशक हम इसे खारिज कर देंगे। जब कुछ बुद्धि और शिक्षा वाले लोग एक किताब के साथ आमने-सामने होते हैं जिसमें बहुत कुछ होता है और बहुत सारी गलतियाँ, विरोधाभास, मुड़ तर्क और मुड़ तर्क के रूप में, जहाँ यह है स्पष्ट कथाकार जानता था कि वह झूठ बोल रहा था - और सब कुछ एक एकल कथाकार से a . के साथ बताया गया सबसे संदिग्ध नैतिकता और नैतिकता, लेकिन महिलाओं और शक्ति के लिए एक मजबूत पसंद के साथ, और सत्ता के लिए उनका मुख्य मंच धर्म है, **यह सवाल पूछना भी बहुत भोला है। नहीं बुद्धिमान, शिक्षित, ब्रेन वॉश नहीं करने वाले व्यक्ति के पास वास्तव में इसे अस्वीकार करने के अलावा एक और विकल्प है यदि कोई वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया जाता है। (और इस्लाम एक भी वास्तविक का उत्पादन करने में असमर्थ रहा है अल्लाह के लिए सबूत या मुहम्मद के एक भगवान के लिए दावा किए गए संबंध के लिए - कोई भी भगवान - और इसलिए इस्लाम के सत्य होने के लिए, १४०० वर्षों में - - - आप मुहम्मद और इस्लाम की महिमा क्यों करते हैं? और अंध विश्वास की मांग?)**

025 21/56a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०२६ २१/५६बी: "- - - वह (अल्लाह*) जिसने उन्हें (मनुष्य*) (कुछ नहीं से) पैदा किया।" गलत। आदमी था कुछ से नहीं बनाया। वह बनाया ही नहीं गया। 6/2 देखें।

027 21/56c: "- - - वह (अल्लाह) जिसने उन्हें (मनुष्य*) (कुछ नहीं से) पैदा किया: और मैं (अब्राहम) मैं इस (सच्चाई) का गवाह हूं।" **यह वास्तव में एक अनपेक्षित मजाक है। बताया जाता है कि अल्लाह ने कुछ ऐसा जो सत्य नहीं है - और इब्राहीम गवाह है कि यह सत्य है,** और यह भी हालांकि वह लाखों साल बाद जीवित रहे! हाँ, वह दावा किए गए आदम से भी बाद में जीवित रहा, और अभी भी आदम की रचना का गवाह था !!अल्लाह के लिए कुछ सबूत !! क्या यह संभव है कि अल्लाह स्वयं इसे नीचे भेजा है? लेकिन यह कुरान में प्रमाणों के बारे में कुछ बातें बताता है - और से मुसलमान। 6/2 भी देखें।

०२८ २१/७६: "हमने (अल्लाह*) - - - ने उसे (नूह*) और उसके परिवार को बड़े संकट से छुड़ाया। बड़ी बाढ़*)"। गलत: कुरान उसके एक बेटे पर बहुत स्पष्ट है (उसके पास सिर्फ 3 था - शेम, हाम और येपेथ - बाइबिल के अनुसार (1. मो. 9/18)) बाढ़ में डूब गए। गलती और ठोस विरोधाभास। 37/76 में भी ऐसा ही दावा।

०२९ २१/७७: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०३० २१/८०: "यह हम (अल्लाह *) थे जिन्होंने उसे (राजा डेविड *) के कोट बनाने के बारे में सोचा था मेल ”। लेकिन मेल और इसी तरह के कोट सीए से पुराने हैं। 950 - 1000 ईसा पूर्व - डेविड का समय।

०३१ २१/८२: “और दुष्टों (जिन्नों) में से कुछ ऐसे थे जिन्होंने (उसके लिए काम किया = सुलैमान*) - - - ". इस्लाम को इसके लिए पुख्ता सबूत लाने होंगे। इस तरह की परियों की कहानियां थीं मुहम्मद कहानियों को "उधार" ले सकता था, लेकिन वास्तव में किसी भी जिन्न का कोई सिद्ध मामला नहीं था किसी के लिए काम करना। यह भी किसी भी मामले में बाइबिल से हटाया नहीं गया था अगर यह सच था - it सुलैमान को इतना महिमामंडित किया था कि उसे भुलाया नहीं जा सकता।

032 21/91: "- - - साइन - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य - या मुहम्मद। 2/39 और 20/54 देखें के ऊपर।

00d 21/96a: "- - - गोग और मागोग (लोग) - - -"। नाम बाइबिल से हैं। लेकिन में बाइबिल वे एक राजा (गोग) और उनके देश (मागोग) हैं, जबकि कुरान में वे दो बुरे हैं

लोग कौन सी किताब सबसे विश्वसनीय है?
*०३३ २१/९६बी: "जब तक गोग और मागोग (लोगों) को (उनकी बाधा) के माध्यम से जाने नहीं दिया जाता है, और वे
हर पहाड़ी से तेजी से झुंड "। कुरान के अनुसार गोग और मागोग (सूरह 18) दो थे
लोहे से बने एक लंबे, मजबूत अवरोध के पीछे घाटी में कैद लोगों (जनजातियों?) के समूह
धुल क़ार्नयन/अलेक्जेंडर द ग्रेट द्वारा निर्मित ब्लॉक। लेकिन पृथ्वी पर कहीं नहीं है - चलो
उस क्षेत्र में अकेले सिकंदर ने यात्रा की - एक घाटी जो दो बड़े लोगों के लिए भोजन का उत्पादन करने के लिए काफी बड़ी थी
लोगों की जनजातियाँ ("हर पहाड़ी से झुंड" = बड़ी जनजातियाँ), जिनसे बाहर निकलना असंभव है,
भले ही मुख्य घाटी और मुख्य मार्ग अवरुद्ध हो। इसके अलावा पूरी मंजिल है
बकवास: भले ही वे इस तरह की बाधा को पार नहीं कर पाए हों, समय दिया जाए तो हमेशा
इसके नीचे खुदाई करना संभव होगा। भले ही इसे ठोस चट्टान पर खड़ा किया गया हो, लगभग 330 ई.पू.
जब कुरान यह दिखावा करता है कि ऐसा हुआ (सिकंदर की मृत्यु 323 ईसा पूर्व), लोग जानते थे कि कैसे बनाना है
एक चट्टान के माध्यम से भी छोटी सुरंगें यदि वे वास्तव में चाहते थे, f. भूतपूर्व। अग्नि + जल द्वारा। और
पहाड़ों के पार हमेशा एक बड़ी घाटी से रास्ते होंगे। इसके अलावा: कहाँ है
घाटी? आज दुनिया के हर इंच की मैपिंग की गई है, **और घाटी में कोई दीवार नहीं है**
कहीं भी । पूर्व में नहीं जहां सिकंदर ने यात्रा की, और कहीं नहीं। (और गोग और
कुरान के अनुसार, कयामत के दिन से कुछ समय पहले तक मागोग को रिहा नहीं किया जाना चाहिए, इसलिए
उन्हें अभी भी घाटी में होना चाहिए)।

363

पेज ३६४

०३४ २१/१०४ए: "जिस दिन हम (अल्लाह*) आकाश को ऊपर उठाते हैं (बहुवचन और गलत - जैसे कोई 180+
कुरान में अन्य स्थान जहां शब्द अलग से प्रयोग किया जाता है, और कम से कम 199 स्थान सभी में)
एक स्क्रॉल की तरह - - -"। एक ऑप्टिकल भ्रम को रोल करना संभव नहीं है। और कम से कम देखने योग्य
ब्रह्मांड एक गोला है - व्यास 27.4 बिलियन प्रकाश-वर्ष - और एक गोले को कैसे रोल करें? (का
बेशक इस्लाम कह सकता है कि ब्रह्मांड (का हिस्सा) एक "ब्रेन" (सितारों की एक मोटी "शीट" कुछ खरब) है
प्रकाश वर्ष चौड़ा) - कुरान के लिए एक और विरोधाभास - लेकिन फिर उन्हें पहले साबित करना होगा
कि "ब्रेन्स" मौजूद हैं, क्योंकि वे सिर्फ एक वैज्ञानिक या विज्ञान कथा अटकलें हैं)।

035 21/104b: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

00e 21/108: "- - - इसलिए उसकी (अल्लाह की *) इच्छा (इस्लाम में) को नमन।" क्या यह बुद्धिमानी की बात है
बुद्धिमान, विद्वान लोगों के लिए करना, जो जानते हैं कि कुरान में कितना गलत है, और इसके बारे में जानते हैं
बहुत संदिग्ध पृष्ठभूमि? यह साबित करने के लिए मजबूत प्रमाण की आवश्यकता है कि यह एक वास्तविक ईश्वर के साथ एक वास्तविक धर्म है
- और अगर नहीं है: **तो क्या हुआ अगर कहीं असली धर्म मौजूद है, और आप हैं**
इसे खोजने के लिए निषिद्ध (f. पूर्व। इस्लाम द्वारा)? - यह अंतिम दिन एक कठोर जागरण होगा
(यदि यह मौजूद है)।

036 21/109: "- - - सच में - - -"। इतनी सारी गलतियों और झूठे दावों के साथ कुरान
सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है।

00f 21/112: "- - - आप जो ईशनिंदा करते हैं, उसके खिलाफ!" क्या कही गई बातों पर शक करना ईशनिंदा है?
अल्लाह के बारे में, जब संदेह के भारी कारण हैं? (- कुरान में सभी गलतियाँ आदि)।

सूरह २१: कम से कम ३६ गलतियाँ + ६ संभावित गलतियाँ।

सूरा 22:

001 22/5a: "हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें धूल से पैदा किया - - -"। गलत। मनुष्य से नहीं बनाया गया था
धूल। 6/2 देखें।

002 22/5b: "- - - तब (अल्लाह ने आपको बनाया) शुक्राणु से"। गलत। इंसान नहीं हैं
शुक्राणु से निर्मित, भले ही यह स्पष्ट हो कि मुहम्मद ऐसा मानते थे - कुरान
इंगित करता है कि शुक्राणु एक महिला में लगाया जाता है और बढ़ता है। मनुष्य वास्तव में से बने हैं
1 शुक्राणु कोशिका + 1 अंडा कोशिका, लेकिन यह संभव है कि मुहम्मद को यह नहीं पता था - ऐसा अंडा कोशिका है
बिना खुले शव में सभी रक्त, आंतों और गोर में दिखाई देने के लिए बहुत छोटा है
आवर्धन उनका विश्वास भी एक पुराने यूनानी सिद्धांत से मेल खाता है। 6/2 भी देखें।

००३ २२/६: "- - - अल्लाह हकीकत है - - -"। **तब तक नहीं जब तक इस्लाम असली सबूत नहीं लाता। यह भी है**
बहुत सारी गलतियों वाली किताब पर आधारित धर्म पर आंख मूंदकर विश्वास करना भोलापन,
विरोधाभास, विकृत तथ्य और अमान्य तर्क - एक अत्यधिक संदिग्ध व्यक्ति द्वारा बताया गया
नैतिक, लेकिन महिलाओं और शक्ति के लिए एक मजबूत पसंद और उनके धर्म के साथ उनके मंच के रूप में
शक्ति।

004 22/7: "- - - इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता - - -"। कुरान में सभी गलतियों के साथ, वहाँ
बहुत सी चीजों के बारे में संदेह का हर कारण है।

005 22/8: "- - - (कुरान है*) प्रबुद्धता की एक किताब - - -"। अपनी सभी गलतियों के साथ ऐसा नहीं है।
इससे भी बदतर: **उन सभी गलतियों के साथ आप कभी नहीं जानते कि क्या सच है और क्या नहीं।**

364

पेज ३६५

006 22/16: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। न तो अल्लाह के लिए और न ही कोई स्पष्ट संकेत (= प्रमाण) हैं
सभी कुरान में मुहम्मद के संबंध के लिए। 2/99 देखें।

००७ २२/१८अ: "क्या तू नहीं देखता कि जो कुछ उस में है, उसकी पूजा में अल्लाह के आगे झुक जाए
स्वर्ग (बहुवचन और गलत) पृथ्वी पर - - -?" नहीं, हम ऐसा नहीं देखते हैं। **यह सिर्फ एक और है
गलतियाँ और सस्ते शब्द / दावे - और जीववाद का एक और नमूना - कुरान में,
जब तक इस्लाम वास्तव में यह साबित नहीं कर देता कि यह वास्तविकता है।**

008 22/18b: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

009 22/23: "- - - सोने और मोतियों के कंगन - - -।" एफ में। उदा.76/21 वे चांदी से हैं।

०१० २२/२६: "देखो, हमने (अल्लाह) ने इब्राहीम को (पवित्र) घर (काबा*) का स्थान दिया - -
-"। अब्राहम कभी मक्का नहीं गए। 2/127 देखें। यह मुहम्मद की देने के लिए एक बनी हुई कहानी है
अधिक विश्वसनीयता सिखाना, और इसे अरबों के बीच और अधिक रोचक बनाना।

**00a 22/29: "- - - उनके लिए (मक्का में हज के दौरान*) निर्धारित संस्कार (मुसलमान*) - - -"।
हज के दौरान मक्का में सभी संस्कार अरब में बुतपरस्त/मूर्तिपूजक काल से लिए गए हैं -
और इसके अलावा वे हमेशा इतने बचकाने और आदिम होते हैं; 2 . के बीच 7 बार आगे-पीछे दौड़ें
छोटी पहाड़ियाँ, एक इमारत के चारों ओर ७ बार घूमें, कुछ पत्थरों को एक चिह्न पर फेंकें
शैतान, और बलि के लिए एक या एक से अधिक असहाय जानवरों को मारना, ये मुख्य कार्य हैं।

1. किसने पुराने बुतपरस्त संस्कारों को ही होने के लिए निर्धारित किया था
   केवल अनुमान के लिए सही, असली भगवान?
2. किसने इतना छिछला और बचकाना संस्कार बताया
   एक अनुमानित अथाह, "गहरे" भगवान के लिए?
3. किसने निर्धारित किया कि न तो कोई संस्कार से
   दुनिया में कहीं और न ही कुछ
   अल्लाह की ओर से नया और आत्मीय होना चाहिए
   एक अनुमानित विश्व धर्म में इस्तेमाल किया जा सकता है - केवल
   बुतपरस्त पुराने के पुराने, उथले बुतपरस्त संस्कार
   अरब?

००बी २२/३३: "- - - उनका बलिदान स्थान प्राचीन घर (काबा*) के पास है।" गलत। NS
बलि का स्थान काबा से किलोमीटर दूर मीना में है।

०११ २२/३४: "हमने (अल्लाह *) ने प्रत्येक लोगों के लिए संस्कार (बलिदान के) - - - नियुक्त किए।" बस एस
समस्या: ईसाइयों को किसी भी प्रकार के बलिदान - या संस्कार नहीं दिए गए हैं
ऐसा।"

00c 22/37: "यह उनका (बलिदान के जानवरों का) मांस या उनका खून नहीं है, जो अल्लाह तक पहुंचता है: यह
क्या आपकी पवित्रता उस तक पहुँचती है - - -"। क्या एक सर्वज्ञ भगवान को आपको असहाय की हत्या करते देखना है
जानवरों को देखने के लिए कि आप एक पवित्र आस्तिक हैं? - नहीं अगर वह वास्तव में सर्वज्ञ है। **अगर अल्लाह सच में
सर्वज्ञ और यदि पशु बलि का एकमात्र उद्देश्य अपनी धर्मपरायणता सिद्ध करना है, तो
बलिदान वास्तव में अर्थहीन है, एक सर्वज्ञ भगवान के रूप में हर समय बहुत कुछ जानता है
ठीक है कि आप एक पवित्र आस्तिक हैं या नहीं।** दरअसल कुरान कई जगह इसे बनाता है
बिल्कुल स्पष्ट है कि अल्लाह तुम्हारे भीतर के सबसे गहरे हिस्सों के अंतरतम कोनों को भी जानता है
आत्मा। आपकी धर्मपरायणता का "परीक्षा" या "प्रमाण" क्या है, इसका क्या लाभ और क्या अर्थ और क्या तर्क है, यदि
अल्लाह पहले से ही जवाब जानता है? - और वैसे: परीक्षण के लिए भी यही होता है

पेज ३६६

युद्ध और युद्ध में आपकी धर्मपरायणता और मारना और मारना, कुछ ऐसा जो अर्थहीन भी था अगर
अल्लाह एक अच्छा ईश्वर था - यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि क्या वह पहले से ही उत्तर जानता है।

*०१२ २२/४०ए: "क्या अल्लाह ने लोगों के एक समूह को दूसरे के माध्यम से नहीं जांचा, निश्चित रूप से होगा
मठों, गिरजाघरों, आराधनालयों और मस्जिदों को गिरा दिया गया है - - -।" **गलत - यह**
एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर दुनिया का प्रबंधन करने के एकमात्र तरीके से बहुत दूर है।
एक विकल्प एफ. भूतपूर्व। मनुष्य को थोड़ा सा बदलने के लिए और उसे शांति से जीने का तरीका सिखाने के लिए। केवल
युद्ध और लूटपाट और दमन की संस्कृति और धर्म के सदस्य तुरंत नहीं देखते हैं
यह। यह बिंदु युद्ध और विजय के लिए एक कृत्रिम बहाना है - और दमन और लूट।

*०१३ २२/४०बी: "- - - मठ, चर्च, आराधनालय, - - -, जिसमें अल्लाह का नाम है
स्मरण किया - - - "। वहाँ अल्लाह का नाम नहीं लिया जाता - इसके विपरीत
याहवे (या केवल ईश्वर) का नाम वही है जो कोई वहां स्मरण करता है। **मुसलमान दावा करेंगे कि**
यह वही भगवान है - हमेशा की तरह बिना कुछ साबित किए - लेकिन शिक्षाएं हैं
मौलिक रूप से इतना अलग, कि यह असंभव है कि वे तब तक समान हों जब तक कि ईश्वर न हो
मानसिक रूप से गंभीर रूप से बीमार। साथ ही वे दावा करेंगे कि शिक्षाओं में अंतर का कारण
क्या यह है कि बाइबल जानबूझ कर मिथ्या है - कुछ ऐसा विज्ञान जो लंबे समय से एक बात के लिए सिद्ध कर चुका है
सच नहीं है (यहां तक कि सबसे पुराने शास्त्र भी आज की तरह हैं, छोटी-छोटी गलतियों को छोड़कर सामान्य जब
पांडुलिपियों को हाथ से कॉपी किया जाता है), और दूसरे के लिए शारीरिक रूप से असंभव था (संभव नहीं)
हजारों में फैली सभी हजारों पांडुलिपियों में समान मिथ्याकरण करें
किलोमीटर और हजारों अलग-अलग मालिकों के स्वामित्व में - जो अक्सर असहमत भी होते हैं (यहां तक कि
दृढ़ता से कभी-कभी) कई विषयों पर)। **आप कैसे एफ. भूतपूर्व। यहूदी और ईसाई बनाओ**
ओटी में क्या और कैसे मिथ्याकरण करने पर सहमत हैं? लेकिन यह एकमात्र रास्ता था और एकमात्र रास्ता था
मुहम्मद अपने धर्म और सत्ता के अपने मंच को तब बचा सकते थे जब वे अंततः समझ गए थे
उसकी शिक्षाओं और बाइबल में कितना अंतर था।

00d 22/47: "वास्तव में, आपके (इंसानों) *) भगवान (अल्लाह *) की दृष्टि में एक दिन, एक हजार के समान है
आपकी गणना के वर्ष "। खैर, 70/4 में यह 50oo साल की तरह है। एक और विरोधाभास कि
"कुरान में मौजूद नहीं है" और इस प्रकार "साबित" करता है कि पुस्तक अल्लाह की ओर से है।

013 22/51: "- - - हमारे (अल्लाह के *) संकेत - - -"। अल्लाह की ओर से स्पष्ट रूप से एक भी निशानी नहीं है
सभी कुरान। बाइबल से लिए गए कुछ अंशों के संभावित अपवाद के साथ, एक भी नहीं है
एक संकेत जो एक भगवान द्वारा सिद्ध किया गया है - कोई भी देवता। (और जो मामले में बाइबिल से हैं
यहोवा को साबित करता है, अल्लाह को नहीं - दो बहुत अलग देवता (विशेषकर जब हम NT . में यहोवा से मिलते हैं)
और वहां की नई वाचा - जिसका मुसलमान कभी उल्लेख नहीं करते) यदि नहीं तो इस्लाम वास्तव में इस बात को सिद्ध करता है
विलोम। लेकिन इस्लाम कभी भी किसी मौलिक बात को साबित नहीं करता)।

014 22/52a: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

015 22/52b: "- - - अल्लाह ज्ञान और ज्ञान से भरा है - -।" नहीं अगर कुरान है
अपने ज्ञान और ज्ञान के लिए प्रतिनिधि - इस्लाम को वास्तविक और विश्वसनीय उत्पादन करना होगा
सबूत अगर वे जोर देते हैं कि अल्लाह के पास बहुत ज्ञान और ज्ञान है।

०१६ २२/५३: "- - - गलत करने वाले (सत्य से) दूर हैं"। सबसे अच्छे रूप में वे बहुत दूर हैं
"बिट्स एंड पीस ऑफ़ ट्रुथ" से, कम से कम कुरान में सत्य होने का दिखावा किया जाता है, जैसा कि
पुस्तक में सबसे अच्छे अंश और अंश होते हैं जो सत्य है।

017 22/54a: "- - - (कुरान) सत्य है - - -"। इतनी सारी गलतियों के साथ, उलझे हुए तर्क,
आदि, यह सबसे अच्छा आंशिक रूप से ही सच है।

366

पेज ३६७

०१८ २२/५४बी: "- - - (कुरान) आपके रब (अल्लाह*) की ओर से सत्य है - - -।" **गलत। नहीं सर्वज्ञ ईश्वर ने कभी किसी पुस्तक पर अपना धर्म बनाया, या पूजनीय, या अग्रेषित किया, या बनाया कि कई गलतियाँ, विरोधाभास और संदिग्ध, अप्रमाणित दावे।** भेष में एक शैतान or सत्ता के मंच के लिए तरसने वाला व्यक्ति ऐसा कर सकता है, लेकिन सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान नहीं भगवान।

019 22/54c: "- - - अल्लाह (कुरान*) ईमान लाने वालों का सीधा मार्ग है।" गलत - एक किताब जिसमें कई गलतियाँ, मुड़ तथ्य/तर्क आदि हैं, एक सीधे का प्रतिनिधित्व नहीं कर रहा है रास्ता, कम से कम जन्नत में तो नहीं।

०२० २२/५५: "जो लोग ईमान (इस्लाम*) को ठुकरा देते हैं, उनके विषय में संदेह नहीं रहेगा (रहस्योद्घाटन)"। शायद सही - हो सकता है कि किसी ईश्वर द्वारा किया गया कोई रहस्योद्घाटन हो (शायद .) यहोवा द्वारा) कुछ समय। लेकिन **इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसके अच्छे कारण हैं कुरान के दावों, बयानों और विवरण के बारे में गंभीर संदेह - क्यों चाहिए जिन दावों और बयानों की हम जांच नहीं कर सकते, वे उन दावों और बयानों से अधिक विश्वसनीय हैं जिनकी हम जांच कर सकते हैं,** और जिनमें से हम बहुत अधिक को चाहने वाले या गलत पाते हैं?

021 22/57: "- - - हमारी (अल्लाह की *) निशानियाँ - - -।" पूरे कुरान में एक भी निशानी नहीं है स्पष्ट रूप से अल्लाह द्वारा बनाया गया। केवल (अप्रमाणित) दावे।

00e 22/62: "- - - अल्लाह - वह वास्तविकता है - - -"। खैर, यह उन बड़े बिंदुओं में से एक है जो न तो कुरान और हदीस और न ही इस्लाम के विद्वान इसके लिए थोड़ा सा सबूत देने में सक्षम हैं। कुछ मुस्लिम बुद्धिजीवी भी ऐसा मानते हैं। यह सभी "संकेत" और "सबूत" के बावजूद जो कहते हैं तो कुरान में - **उनमें एक चीज समान है: उनमें से कोई एक नहीं देता है अल्लाह का एकल वैध प्रमाण - ये सभी दावे या बयान हवा पर बनाए गए हैं या साबित न किए गए "तथ्यों" या अन्य दावों या बयानों पर जो साबित नहीं हुए हैं। एक तथ्य कि "गंध"। वह बस एक मुहम्मद की कल्पना में बना कुछ हो सकता है अल्लाह का अवतार होने का नाटक करना - या उसके समान - यहोवा। अंतिम संभव नहीं है, क्योंकि दो शिक्षाओं के सार बहुत अलग हैं, लेकिन मुहम्मद ऐसा दिखावा कर सकते थे। और: **धोखा देना धोखेबाजों की पहचान है।**

022 22/64: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

00f 22/65: क्या मुहम्मद अली ने यहाँ "अल-तकिया" (वैध झूठ) बनाया है? उनका कहना है कि अल्लाह "आकाश (बारिश) को पृथ्वी पर गिरने से रोकता है"। लेकिन "द मेसेज ऑफ द" के अनुसार कुरान "अरब पाठ कहता है कि अल्लाह स्वर्ग को पृथ्वी पर गिरने से रोकता है। अत्यंत मामले में एक वैज्ञानिक गलती। और मामले में युसूफ अली से बेईमानी भी।

023 22/67: "- - - आप (मुसलमान*) निश्चित रूप से सही रास्ते पर हैं"। **यह तभी सच है जब कुरान सही है - - - और कुरान में बहुत सारी गलतियाँ हैं, तर्क-वितर्क हैं, मुड़ तर्क, कुछ एकमुश्त झूठ, आदि (जो सभी धोखेबाजों, धोखेबाजों की पहचान हैं और ठग** - आम तौर पर बेईमानी में पैसे, महिलाओं और/या सत्ता की तलाश करने वाले व्यक्ति तरीके। मुहम्मद को महिलाओं और शक्ति पसंद थी - और "उपहार" के लिए पैसा और संभव के लिए रिश्वत अनुयायी)।

024 22/72a: "- - - हमारे (अल्लाह के *) स्पष्ट संकेत - - -"। गलत। 2/99 देखें।

025 22/72b: "- - - ये संकेत - - -"। अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। 2/39 और 20/54 देखें।

०२६ २२/७८: "वह (अल्लाह) है जिसने तुम्हें पहले और इस में मुसलमान नाम दिया है (रहस्योद्घाटन) - - -"। गलत। नाम पहले कभी इस्तेमाल नहीं किया गया था - इसका कोई निशान नहीं है कहीं भी। यह उन मामलों में से एक है जहां इस्लाम को अपना दावा साबित करना होगा।

सूरह 22: कम से कम 26 गलतियाँ + 6 संभावित गलतियाँ।

सूरा 23:

००१ २३/१२: "मनुष्य हम (अल्लाह *) ने एक सर्वोत्कृष्ट (मिट्टी के) से बनाया है"। हमने कभी नहीं समझ में आया कि मिट्टी का सार क्या है, लेकिन यह पूरी तरह से सुनिश्चित है कि यह गलत है: एक बात के लिए

मनुष्य नहीं बनाया गया था - विज्ञान के अनुसार वह पहले के प्राइमेट से विकसित हुआ था। किसी अन्य के लिए
बात - भले ही किसी ने इस्लाम के इस कथन को स्वीकार कर लिया हो कि मनुष्य बनाया गया है, आदम किसी भी तरह से नहीं कर सकता था
कई तरह से बनाए गए हैं - 6/2 देखें। और तीसरी बात के लिए: मनुष्य केवल से नहीं बना है
एक या कुछ खनिज जैसे मिट्टी में।

002 23/13: "तब हम (अल्लाह) ने उसे (भविष्य के बच्चे*) शुक्राणु के रूप में (एक बूंद) शुक्राणु के स्थान पर रखा
आराम - - -"। **गलत। मुहम्मद का मानना था कि शुक्राणु एक प्रकार का बीज है जो बढ़ सकता है
एक इंसान बनो (और अगर आदमी पहले चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया, तो वह लड़का बन गया, जबकि अगर**
हदीसों में उसके अनुसार **, महिला पहले चरमोत्कर्ष पर पहुंची, यह एक लड़की बन गई**)। हकीकत यह है कि
शुक्राणु एक महिला में नहीं लगाया जाता है, लेकिन एक अंडे की कोशिका और परिणामस्वरूप युग्मनज के साथ जुड़ जाता है
बढ़ने लगती है।

००३ २३/१४अ: "तब हमने (अल्लाह) शुक्राणु को जमा हुआ खून का थक्का बना दिया - - -"। गलत।
और दोगुना गलत:

1. शुक्राणु किसका थक्का नहीं बनता है?
   जमा हुआ खून।
2. शुक्राणु (इसमें से 1 कोशिका) एक अंडे के साथ जुड़ता है
   कोशिका और युग्मनज बन जाता है।

मुहम्मद बेहतर नहीं जानते थे, क्योंकि उनके समय में अरब में यही विश्वास था - बिना
एक सूक्ष्मदर्शी यह देखना असंभव है कि वास्तव में क्या होता है। लेकिन एक भगवान जानता था। वहां एक है
यह कहते हुए कि "स्वाद केक का प्रमाण है"। **मुहम्मद और कुरान और इस्लाम और
मुसलमानों के पास "स्पष्टीकरण" खोजने के लिए बहुत व्यस्त समय था - उनमें से कुछ बल्कि
असंभावित - "व्याख्या" करने के लिए कि क्यों अल्लाह/मुहम्मद ने एक भी वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया
कि एक अलौकिक प्राणी शामिल था,** यहां तक कि बहुत से मित्र और कई शत्रुओं ने भी पूछा
इसके लिए ईमानदारी से। हां, अल्लाह को अपना साबित करने के लिए जरा सा भी चमत्कार नहीं करना पड़ा
अस्तित्व। उसे बस इतना करना था कि इन सभी मामलों में सच बताना था जो अब साबित हो रहे हैं
गलत - जैसे इस मामले में। यदि अल्लाह वास्तव में मौजूद था, और यदि वह वास्तव में सर्वज्ञ था/है - क्यों
तो क्या उसने इतने सारे गलत उत्तर दिए? - जब उसे केवल सच बोलना था -
एक भ्रूण कैसे बनता है, इसकी वास्तविकता की तरह - और धीरे-धीरे सबसे मजबूत होगा
अपने अस्तित्व के प्रमाण और उसके लिए मुहम्मद ने सच बोला। उसने कभी नहीं किया। दरअसल सभी में
कुरान एक भी वैज्ञानिक "तथ्य" नहीं है जो कि एक के अनुसार नहीं है
उस समय अरब में सत्य माना जाता था (और इसका अधिकांश भाग वास्तव में ग्रीक या फ़ारसी
"ज्ञान"।)

**जैसा कि अभी है, ये सभी तथ्य अविश्वसनीय रूप से इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि कोई नहीं था
कुरान बनाने में शामिल सर्वज्ञ ईश्वर - और फिर इस्लाम के बारे में क्या? - क्या यह
बना हुआ, झूठा धर्म? उल्लेख नहीं करने के लिए: यदि संभव हो तो क्या होगा
अगला जीवन सभी मनुष्यों को - मुसलमान - जिन्हें वास्तविक धर्म की तलाश करने का मौका मिला है
(यदि ऐसा मौजूद है) इस्लाम द्वारा अवरुद्ध?**

368

पेज ३६९

004 23/14b: "- - - फिर हमने (अल्लाह) ने एक (भ्रूण) गांठ बनाई; हम उस गांठ की हड्डियों से बने हैं और
हड्डियों को मांस से पहिनाया "। गलत - 100% गलत: पहले मांस बनाया जाता है, और फिर हड्डियाँ
भ्रूण के मांस के अंदर विकसित होना। यह टिप्पणी की जानी चाहिए कि मुहम्मद की कहानी कैसे एक
बच्चा बना है, पुरानी यूनानी चिकित्सा मान्यताओं के अनुसार है - f. भूतपूर्व। प्रसिद्ध चिकित्सक
गैलेन और अरस्तू - जो मुहम्मद के समय मध्य पूर्व में जाना जाता था। कोई
भगवान बेहतर जानता था। फिर कुरान किसने बनाया?

००५ २३/१७: "और हम (अल्लाह*) ने तुम्हारे ऊपर सात पथ (= सात आकाश*) - - - बनाए हैं।
गलत। सात (भौतिक) आकाश नहीं हैं। 2/29 देखें।

००अ २३/१९: "सीनै पर्वत से निकलने वाला एक पेड़ भी, जो तेल पैदा करता है, और उन लोगों के लिए आनंदित होता है
जो इसे खाने के लिए इस्तेमाल करते हैं।" मुस्लिम विद्वान इस बात से सहमत हैं कि यहाँ इसका अर्थ जैतून के पेड़ से है। लेकिन वहाँ है
प्रश्न रहे हैं - माउंट के आसपास का क्षेत्र। सिनाई काफी शुष्क है, और जैतून के लिए बिल्कुल नहीं जाना जाता है
पेड़।

००६ २३/२७: (अल्लाह ने नूह से कहा)"--- हर प्रजाति के जोड़े पर सवार हो जाओ, नर और
महिला - - -"। असंभव। बस बहुत सारे जानवर हैं + किसी भी जहाज के लिए आवश्यक भोजन या
प्रत्येक में से दो लेने के लिए नाव या जहाज। इस तरह के काम के लिए एक आधुनिक सुपर टैंकर भी लगाया गया था
बहुत छोटा - और सन्दूक एक लकड़ी की नाव थी। 11/40 देखें। और किसने खिलाया, पानी पिलाया

और इन सभी जानवरों के लिए सफाई? और जिसने उन्हें इकट्ठा किया और सभी के लिए भोजन इकट्ठा किया
उन्हें - और भोजन को कैसे संग्रहीत किया गया ताकि खराब न हो?

मुसलमान यह बताने की कोशिश करते हैं कि सबसे अधिक संभावना है कि अल्लाह का मतलब केवल पालतू जानवरों से था। लेकिन ऐसा नहीं है
कुरान क्या कहता है। और कुरान को शब्द से समझा जाना है, अगर कुछ और नहीं कहा जाता है -
3/7 देखें। इसके अलावा: इस्लाम सीरिया में 2089 मीटर ऊंचे पहाड़ पर फंसे सन्दूक को बताता है (माउंट अल-
जेडी), और उस स्थिति में पृथ्वी पर इतना पानी होना चाहिए था कि सभी जानवर डूब गए थे अगर
वे सन्दूक में नहीं थे।

007 23/30: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

008 23/39: "(पैगंबर (मुहम्मद)) ने कहा - - -।" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे।
नबी की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. का उपहार है और पर्याप्त कनेक्शन बंद करें
   भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान के लिए।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम
   ज्यादातर सच हो जाते हैं।
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है
   भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है
   मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है
कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी
जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि
उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, दावा किए जाने का उल्लेख नहीं किया,
कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि वह जो कुछ भी करता है
भविष्य के बारे में कहा सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में उसने और इस्लाम दोनों ने कहा और कहा कि वहाँ
"कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से जुड़े कोई चमत्कार नहीं थे - भविष्यवाणी करना एक तरह का है
चमत्कार। (यह आखिरी तथ्य भी इस बात का पुख्ता सबूत है कि मुहम्मद से जुड़े तमाम चमत्कार
वहाँ हदीसों का उल्लेख है, कहानियाँ बनी हैं)।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या
कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यद्वक्ता नहीं जैसा कि उसके पास नहीं था
भविष्यवाणी का उपहार। उन्होंने केवल उस प्रभावशाली और प्रभावशाली उपाधि को "उधार" लिया। आप पर
किसी को अनुमान लगाने के लिए क्यों।

009 23/45: "- - - हमारे संकेत - - -"। कुरान में कोई संकेत नहीं हैं जो स्पष्ट रूप से से आते हैं
अल्लाह - 2/99 देखें।

०१० २३/४८: "- - - और वे (फिरौन और उसके प्रमुख*) नष्ट हो गए थे
(डुबा हुआ*))"। लेकिन कम से कम फिरौन (रामसेस II) नष्ट/डूब नहीं गया था। रामसेस द्वितीय ने
डूबने से नहीं मरते। और हम जानते हैं कि वह (संभव) पलायन के कुछ साल बाद ही मर गया।

011 23/49: "और हमने (अल्लाह*) ने मूसा को किताब - - -" दी। गलत। मूसा को कभी नहीं मिला
कुछ दूर तक कुरान या बाइबिल के समान। दोनों के हिसाब से उसे क्या मिला?
बाइबिल और कुरान, 10 आज्ञाएँ थीं। शारीरिक रूप से उन्हें बस इतना ही मिला था
बाइबिल को। परन्तु उन्हें व्यवस्था के बारे में बताया गया - जो बाद में मूसा की पुस्तक का भाग था - और उन्हें लिखा
बाद में खुद नीचे। विज्ञान बताता है कि जिसे मूसा की किताब कहा जाता है वह कई सदियों की है
छोटा।

012 23/58: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

013 23/66: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

014 23/70a: "नहीं, वह (मुहम्मद *) उनके लिए सच्चाई (कुरान*) - - - लाया है। बहुत
मुहम्मद जो लाए थे उसके सर्वोत्तम अंश और अंश सत्य हो सकते हैं - सभी गलतियाँ देखें।

०१५ २३/७०बी: "- - - लेकिन उनमें से ज्यादातर (गैर-मुस्लिम) सच्चाई से नफरत करते हैं"। गलत। ऐसा लगता है
जो वास्तव में सच्चाई की तलाश कर रहे हैं, ज्यादातर गैर-मुस्लिम हैं। **मुसलमान, और उल्लेख नहीं करने के लिए**

ऐसा लगता है कि उनके कई धार्मिक नेता अंधे की तलाश कर रहे हैं - या उन्हें उकसा रहे हैं और उनका महिमामंडन कर रहे हैं
वास्तविक ज्ञान के बावजूद विश्वास; वे सभी मामलों में सच्चाई से नफरत करने वाले प्रतीत होते हैं जहां
सच्चाई वह नहीं है जो उनका धर्म कहता है।

इस्लाम के बारे में सच्चाई जानने के लिए मैंने खुद कुछ साल पहले कुरान का अध्ययन शुरू किया था। NS
मुख्य बात जो मैंने अब तक पाई है, वह यह है कि **वास्तविक सत्य बताते हैं कि बहुत सारी गलतियाँ हैं**
कुरान में, विरोधाभासों का उल्लेख नहीं करने के लिए, अमान्य "संकेत" और "सबूत" - की पहचान
धोखेबाज और धोखेबाज - आदि, कि यह असंभव रूप से एक सर्वज्ञ भगवान से आ सकता है। इसलिए
कई गलतियाँ कि किताब में कही गई बातों पर विश्वास करना असंभव है, जब तक कि किसी के पास ठोस अतिरिक्त न हो
सबूत, या कम से कम अन्य, विश्वसनीय स्रोतों से पुष्टि।

और यह भी कि **मुहम्मद को कम से कम कुछ मामलों में यह जानना पड़ा है कि वह यह नहीं कह रहे थे**
सत्य - कुछ बिंदुओं पर वह जो कहता है, वह इस तथ्य का खंडन करता है कि वह एक बुद्धिमान व्यक्ति था
लोगों को समझना। वह बस झूठ बोल रहा था। लेकिन तब उनका एक नारा था: "युद्ध छल है",
और उसने यह भी बताया कि परिणाम अल्लाह की शपथ लेने से भी अधिक गिना जाता है।
क्षमा मांगना।

016 23/71a: "यदि सत्य (जैसा कुरान में बताया गया है) - - -" होता। अधिकांश बिट्स और टुकड़ों पर
कुरान सच हैं। सभी गलतियाँ देखें।

017 23/71b: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

018 23/85: "वे (गैर-मुस्लिम*) कहेंगे, 'अल्लाह के लिए'"। गलत। यदि वे a . का नाम लेते हैं
भगवान, वे अपने स्वयं के भगवान का नाम कहेंगे (पुराने अरब में जो हो सकता है)
बहुदेववादी अल-लाह)।

*019 23/86: "सात आकाशों का स्वामी कौन है - - -?" गलत। कोई 7 स्वर्ग नहीं हैं
(और याद रखें: उन्हें भौतिक होना था, क्योंकि कुरान के अनुसार सितारे हैं
सबसे निचले स्वर्ग में बांधा गया है, और आप कुछ भी गैर-भौतिक के लिए नहीं बांध सकते हैं)। देखो
२/२९.

020 23/87: "वे कहेंगे, '(वे हैं) अल्लाह के लिए"। गलत। ऊपर 23/85 देखें।

021 23/89: "वे कहेंगे, '(यह है) अल्लाह के लिए"। गलत। ऊपर 23/85 देखें।

०२२ २३/९०: "हमने (अल्लाह*) ने उन्हें (गैर-मुस्लिम*) सत्य (कुरान*) - - - भेजा है। दोनों में से एक
अल्लाह सर्वज्ञ नहीं है या किसी और ने कुरान बनाया है - यह केवल आंशिक रूप से सच है।

०२३ २३/९०: "हमने (अल्लाह*) ने उन्हें सत्य - - - भेजा है। सबसे अच्छे बिट्स और टुकड़ों में क्या है
भेजे गए (= कुरान) सच हैं। बहुत सारी गलतियाँ।

00b 23/91: "अल्लाह ने कोई बेटा पैदा नहीं किया - - -"। शायद नहीं। लेकिन अगर इस्लाम फिर भी कहता है कि अल्लाह =
हे यहोवा, यह निश्चित है कि बाइबल कहती है कि यीशु ने यहोवा को अपना पिता कई बार बुलाया और
कई श्रोता। और हमने बाइबल में बहुत कम गलतियाँ पाई हैं - और विशेष रूप से NT में -
जैसा कि हमने कुरान में पाया है, भले ही हम बाइबिल को भी आलोचनात्मक आंखों से लाल करते हैं। और:
साथ ही कुरान बताता है कि यीशु ईमानदार थे। और अंत में: विज्ञान ने स्पष्ट रूप से दिखाया है कि बाइबल है
झूठा नहीं - इस्लाम के कभी प्रलेखित दावे के बावजूद।

०२४ २३/१०५: "- - - मेरी (अल्लाह की *) निशानियाँ - - -"। पूरे कुरान में एक भी निशानी नहीं है
स्पष्ट रूप से अल्लाह द्वारा बनाया गया - केवल दावा करता है कि किसी भी धर्म में कोई पुजारी कर सकता है।

०२५ २३/११६: "इसलिए महान हो अल्लाह, राजा, वास्तविकता - - -"। **अगर एक बात है**
जो इस्लाम में सिद्ध नहीं है, यह अल्लाह की सच्चाई है। धर्म में सब कुछ बसा है
एक बहुत ही संदिग्ध नैतिकता वाले व्यक्ति द्वारा बताई गई कहानी में अंध विश्वास पर, लेकिन एक मजबूत इच्छा के साथ
शक्ति - एक व्यक्ति अपने धर्म को अपनी शक्ति के मंच के रूप में उपयोग कर रहा है (कई अन्य लोगों की तरह)। और एक स्व
भविष्यवाणी करने में असमर्थ घोषित भविष्यवक्ता (= एक चोरी या "उधार" शीर्षक)।

सूरह २३: कम से कम २५ गलतियाँ + २ संभावित गलतियाँ।

सूरा 24:

001 24/1a: "एक सूरा जिसे हमने (अल्लाह*) उतारा है - - -।" इसके अलावा इस सूरा में शामिल हैं
गलतियाँ, और फलस्वरूप एक सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा नीचे नहीं भेजा जाता है।

002 24/1b: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। कुरान में कहीं भी अल्लाह के लिए कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं -
"संकेतों" में या तो मुड़ तथ्य या मुड़ तर्क या दोनों होते हैं या किसी भी चीज़ पर आराम नहीं करते हैं
सिद्ध, और इस प्रकार तार्किक मूल्य के बिना हैं। 2/99 देखें।

००३ २४/१८: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

004 24/25: "- - - अल्लाह (= कुरान*) सत्य है - - -"। सभी गलतियों के साथ, आदि
कुरान (अल्लाह के शब्द) सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है।

००५ २४/३४: "- - - बातें स्पष्ट करने वाली छंद - - -"। एक किताब में इतनी गलतियां नहीं होती
बहुत सी बातें स्पष्ट करना। कम से कम सही तो नहीं।

006 24/35: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

००७ २४/४१ए: "- - - यह अल्लाह है जो स्वर्ग में सभी प्राणियों की प्रशंसा करता है (बहुवचन और गलत) और पर
पृथ्वी मनाते हैं - - -"। यह दस्तावेज नहीं किया गया है या स्पष्ट रूप से कहीं भी या कोई भी नहीं दिखाया गया है
समय।

008 24/41b: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

009 24/42: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

010 24/44: "यह अल्लाह है जो रात और दिन को बदलता है - - -"। यह प्रकृति है जो बारी-बारी से करती है
रात और दिन - लेकिन शब्द सस्ते हैं, और कोई भी धर्म बता सकता है कि यह उनके भगवान हैं जो ऐसा करते हैं। इसलाम
इसके लिए सबूत पेश करने होंगे कि यह वास्तव में अल्लाह ही है जो पृथ्वी को चारों ओर घुमाता है
सूर्य से प्रकाश - प्रत्यावर्तन का कारण। लेकिन इस्लाम शायद ही कभी कुछ साबित करता है - केवल
दावे। और इस्लाम में अल-तकिया भी है - वैध झूठ - किसी अन्य बड़े धर्म के पास नहीं है।

*०११ २४/४५: "और अल्लाह ने हर जानवर को पानी से पैदा किया है"। बस और स्पष्ट रूप से गलत।
6/2 देखें। कुछ मुसलमान यह कहने की कोशिश करते हैं कि विज्ञान ने इस आयत को साबित कर दिया है (+ दो अन्य - 21/30 और
२४/५४) जैसा कि विज्ञान ने दिखाया है कि जीवन की शुरुआत पानी से हुई थी। **लेकिन एक बहुत बड़ा अंतर है
"से" पानी और "अंदर" पानी के बीच।** कुरआन में ऐसी कोई जगह नहीं जिसके बारे में फुसफुसाहट भी हो
कि जीवन जल से ही उत्पन्न हुआ है, केवल उसी से। हम यह भी उल्लेख करते हैं कि कुरान में कुछ भी नहीं कहा गया है
इस बारे में कि पौधे कैसे बनाए गए, भले ही पौधे पृथ्वी पर सभी जीवन का आधार हैं।
शायद पानी से जानवरों की तरह? गलत बस।

०१२ २४/४६: "हमने (अल्लाह *) ने वास्तव में संकेत भेजे हैं जो चीजों को प्रकट करते हैं - - -"। क्या
दावा किया जाता है कि नीचे भेजा गया है, कुरान है, और इतनी सारी गलतियों वाली किताब, आदि, कुछ भी नहीं बनाती है
प्रकट - शायद धर्म और मुहम्मद के प्रति संदेह को छोड़कर।

00a 24/58: "- - - दोपहर हीथ के लिए अपने कपड़े उतारें - - -।" कुरान को कॉपी कहा गया है
स्वर्ग में मदर बुक की, और यह कि ऐसी प्रतियां अन्य भविष्यवक्ताओं को भेजी गई हैं
दुनिया भर में और समय में अल्लाह - हदीस के अनुसार 124000 या उससे अधिक, और तो
सभी लोग - कुरान के अनुसार भी। क्या इनुइट्स या समोएड्स के बीच एक नबी होगा?
ठंडे उत्तर में भी इसे समझें? और ऑस्ट्रेलिया के पुराने आदिवासियों में से एक या
१४९२ से पहले दक्षिण अमेरिका में भारतीय - वह अपनी प्रति से क्या समझेंगे?
मदर बुक, गायों और भेड़ों और ऊंटों और अरब रीति-रिवाजों और नियमों के बारे में बात करना - और
मुहम्मद और उनकी पत्नियों और परिवार के झगड़ों के बारे में? अगर मदर बुक के लिए होती
पूरी दुनिया, जैसा कि इस्लाम दावा करता है, वह केवल अरब और मुख्य रूप से एक पर ही ध्यान केंद्रित क्यों करता है?
भविष्य में भविष्य के अधिकांश भविष्यद्वक्ताओं के लिए वास्तव में पुराने पैगंबर इस्लाम के बारे में बताता है? थोड़ा है
यहाँ गलत। (माइंड यू: हम दावा की गई मदर बुक के बारे में बात करते हैं कि कुरान का दावा किया गया है
की एक प्रति बनें - सभी मनुष्यों के लिए मदर बुक - सभी भविष्यद्वक्ता - हर जगह और सभी के माध्यम से
टाइम्स।)

०१३ २४/५८: "- - - इस प्रकार अल्लाह आपको संकेत स्पष्ट करता है - - -।" नीचे 24/61 देखें।

०१४ २४/५९: "- - - इस प्रकार अल्लाह आपको निशानियाँ स्पष्ट करता है - - -।" नीचे 24/61 देखें।

०१५ २४/६१: "इस प्रकार अल्लाह आपके लिए संकेतों को स्पष्ट करता है - - -"। तार्किक रूप से कोई नहीं है
अल्लाह का वैध स्पष्ट संकेत (= प्रमाण) या मुहम्मद का कहीं भी ईश्वर से संबंध
कुरान. वे बिना किसी अपवाद के सिर्फ दावे हैं या कुछ भी नहीं या अन्य पर आधारित नहीं हैं
दावे।

०१६ २४/६४ए: "पूरी तरह से सुनिश्चित हो कि अल्लाह के लिए है जो कुछ भी आकाश में है (बहुवचन और .)
गलत*) और धरती पर।" कुरान जैसी किताब के आधार पर यह सुनिश्चित करना असंभव है
इतनी सारी गलतियों, अंतर्विरोधों, उलझे हुए तथ्यों और इतने ही अवैध तर्क आदि के साथ।

017 24/64बी: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

सूरह २४: कम से कम १७ गलतियाँ + १ संभावित गलती।

सूरा 25:

०१ २५/१: "धन्य है वह (अल्लाह*) जिसने मानदंड (कुरान*) - - -" उतारा। NS
कुरान किसी सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा नहीं बनाया गया है - बहुत सारी गलतियाँ, आदि।

002 25/2a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

00a 25/2b: "- - - कोई बेटा नहीं है उसने (अल्लाह *) पैदा किया - - -"। अगर अल्लाह यहोवा के अलावा कोई और देवता है,
यह सही हो सकता है। अगर इस्लाम इस बात पर जोर देता है कि अल्लाह सिर्फ यहोवा का दूसरा नाम है (जो वह नहीं कर सकता
हो, क्योंकि शिक्षाओं के मूलभूत पहलू बहुत भिन्न हैं) यह एक और प्रश्न हो सकता है,
जैसा कि यीशु ने कई गवाहों के सामने अक्सर यहोवा को अपना पिता कहा। "पिता" शब्द है
यीशु के साथ यहोवा के संबंध के लिए बाइबल में कम से कम १६३ बार इस्तेमाल किया गया है, और "बेटा" कम से कम ६६
यहोवा के साथ यीशु के संबंध के लिए समय।

00b 25/2c: "- - - और न ही उसका (अल्लाह) उसके राज्य में कोई साझीदार है - - -"। खैर, अगर अल्लाह चाहिए
यहोवा के लिए सिर्फ एक और नाम होता है: बहुत पुराने इब्रानी धर्म में एक था
महिला देवता - यहोवा की अमत (स्त्री या पत्नी)। (स्रोत: न्यू साइंटिस्ट आदि)। में
वहाँ बहुत ही मर्दाना समाज, उसे बस भुला दिया गया। और फिर का सवाल है
यीशु और पवित्र आत्मा का, जिसका कुरान में भी कुछ (3?) बार उल्लेख किया गया है - एक प्रकार का
साथी? लेसर अंडरलिंग पर।

००३ २५/४: "लेकिन अविश्वासी कहते हैं: 'यह कुछ भी नहीं है, केवल एक झूठ है जिसे उसने गढ़ा है, और अन्य
इसमें उसकी मदद की है।' वास्तव में उन्होंने ही अधर्म और झूठ को सामने रखा है।"
कुरान में इतनी सारी गलतियों के साथ, यह एक बहुत ही खुला प्रश्न है कि क्या यह अविश्वास करने वाले हैं?
झूठ को सामने रखा है। यह मुहम्मद भी हो सकता है। कुरान कम से कम एक से नहीं है
सर्वज्ञ भगवान - बहुत सारी गलतियाँ, आदि।

004 25/6a: "कहो: '(कुरान) उसके (अल्लाह *) द्वारा भेजा गया था जो रहस्य जानता है (कि
है) स्वर्ग में (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी - - -"। वही पुराना प्रश्न: क्या कोई किताब के साथ हो सकती है?
एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा सैकड़ों गलतियाँ भेजी गई हैं? - और यदि नहीं: कौन
इसकी रचना की? सर्वज्ञ अल्लाह नहीं।

005 25/6b: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

006 25/20: "और जिन रसूलों को हमने (अल्लाह) ने तुमसे पहले (मुहम्मद*) भेजा, वे थे
सभी (पुरुष) जिन्होंने खाना खाया - - -।" गलत। दूतों के रूप में दूत भेजे गए थे कम से कम
इब्राहीम (जो डर गया था क्योंकि उन्होंने खाना नहीं खाया) (11/69), लूत (11/77) और तो

मरियम, यीशु की माँ (19/17)। और जिन्नों को भी दूत के रूप में भेजा गया जो पुरुष नहीं थे
कुरान (6/130) के अनुसार।

007 25/33a: "- - - हम (अल्लाह*) आप पर प्रकट करते हैं (मुहम्मद या मुसलमान*) - - -"। एक भगवान किया
ऐसी कई गलतियों, विरोधाभासों, ढीले बयानों और अमान्य "संकेतों" के साथ एक पुस्तक प्रकट करें
और "सबूत"? नहीं।

008 25/33b: "- - - हम (अल्लाह*) आपको (मुहम्मद या मुसलमान*) सच बताते हैं---"। पर
"रहस्योद्घाटन" (कुरान) के अधिकांश अंश और अंश सत्य हैं - सभी गलत तथ्यों को देखें और
अन्य गलतियाँ - एफ। भूतपूर्व। भाषाई, और असंभाव्य धार्मिक नहीं, क्योंकि उन्हें नहीं बनाना चाहिए
अपवाद।

009 25/33c: "- - - हम (अल्लाह) आपको (मुहम्मद या मुसलमान) सच्चाई और
सर्वोत्तम स्पष्टीकरण (उसके)।" सबसे अच्छा स्पष्टीकरण कभी नहीं - कभी नहीं - बहुत सारे पर बनाया गया है
गलत तथ्य। कुरान भी कई जगह कहता है कि इस्लाम में विश्वास बुद्धि पर आधारित है,
बौद्धिक क्षमता और ज्ञान। क्या यह?

कभी-कभी ऐसा लगता है कि यह सरासर अंध विश्वास और सच्चे तथ्यों के दमन पर बनी है।
("कुरान का संदेश" यहां तक कहता है कि कुरान को न देख पाना आदिम है
बिना किसी सबूत के भगवान से बना है। और एक और जगह है कि यह एक अच्छा आस्तिक नहीं है कि
असली सबूतों की तलाश करो। **खेदजनक सत्य यह है कि केवल विश्वास करना आदिम और भोला है
क्योंकि कुछ कहा या लिखा गया है, या क्योंकि आपके पूर्वजों और -माताओं ने विश्वास किया था
इसलिए। या इसलिए कि एक बहुत ही उतावले नैतिक व्यक्ति ने ऐसा कहा था।**)

010 25/35: "- - - हमने मूसा को किताब भेजी - - -"। गलत। तोराह (उन पुस्तकों से युक्त)
विज्ञान के अनुसार कई सौ साल बाद लिखा गया था - 800 साल तक हो सकता है
बाद में। (मूसा ने १० आज्ञाओं को लिखित रूप में + व्यवस्था को मौखिक रूप से प्राप्त किया और इसे लिख दिया
खुद बाद में, बाइबिल के अनुसार। व्यवस्था मूसा की पुस्तक का एक भाग है।)

०११ २५/३६: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

012 25/37: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

013 25/45a: "- - - वह (अल्लाह*) छाया को लम्बा खींचता है!" यह पृथ्वी का घूमना है कि
छाया बढ़ाता है। किसी भी देवता को पता था, लेकिन मुहम्मद को नहीं - यह नया ज्ञान है। तो कौन
कुरान बनाया? सर्वज्ञ देवता नहीं। और अल्लाह को सर्वज्ञ कहा गया है - या वह है?

०१४ २५/४५बी: "अगर वह (अल्लाह) चाहे तो इसे (छाया) स्थिर बना सकता है!" केवल
ऐसा करने का तरीका पृथ्वी को घूमना बंद करना है। इस्लाम को साबित करना होगा कि अल्लाह कर सकता है
वह - खासकर जब से कुरान में सभी गलतियाँ गंभीर और उचित संदेह देती हैं if
वह सर्वशक्तिमान है - और सर्वज्ञ।

हम यह भी टिप्पणी करेंगे कि कुरान में "अगर अल्लाह ने चाहा - - -" जैसी बातें अक्सर होती हैं। NS
वाक्यांश कुछ लोगों के लिए विशिष्ट होते हैं जिन्हें यह दिखाने के लिए घमंड करना पड़ता है कि वे सक्षम नहीं हैं
खुद को साबित करें - आप f. भूतपूर्व। अक्सर इसे आधे धमकाने वाले बच्चों से सुनते हैं जो दूसरों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। अगर
यहाँ ऐसा ही है, या तो अल्लाह या मुहम्मद को अक्सर इस तरह की शेखी बघारनी पड़ती है।
(अलग अध्याय देखें)।

०१५ २५/४९: "- - - इसके साथ (पानी *), हम (अल्लाह *) एक मृत भूमि को जीवन दे सकते हैं - - -"। अगर यह सब लेता है
प्रकृति को जगाना ही जल है, भूमि मरी नहीं है, जड़ और बीज से जीवित है - यह तो है
मृत लग रहा है।

016 25/54: "वह (अल्लाह*) है जिसने मनुष्य को पानी से पैदा किया है"। एकदम गलत। 6/2 और देखें

24/45.

*०१७ २५/५६: "- - - शुभ समाचार - - -"। गलत। सबसे अच्छे से कोई कह सकता है कि कुरान
लूट और दासों के चाहनेवालों, और कितनों के बीच सब बुरे लोगों के लिये शुभ समाचार लाया
एक मजबूत धर्म की लालसा - - - अगर ऐसा नहीं होता क्योंकि कुरान खुद 100% साबित करता है कि
किताब में कुछ बहुत गलत है। इतना गलत कि इसे न तो कोई बनाया जा सकता है और न ही किसी के द्वारा प्रतिष्ठित किया जा सकता है
भगवान - एक छोटे से छोटे भगवान द्वारा भी नहीं। किताब में बहुत कुछ गलत है।

***०१८ २५/५७: "मैं (मुहम्मद*) आपसे कोई इनाम नहीं मांगता - - -"। **कुछ भी नहीं - - - के 20% को छोड़कर
छापे और युद्धों में/बाद में चुराई गई या जबरन वसूली गई हर चीज, जो लूटी गई थी उसका १००% या
बिना लड़े जबरन वसूली, बहुत सारी महिलाएं और कुल और अप्रतिबंधित शक्ति। और 2.5%
(१०% तक) आपकी संपत्ति का प्रत्येक वर्ष "खराब-कर" में** - - - आंशिक रूप से गरीबों के लिए, लेकिन यह भी
कम से कम आंशिक रूप से मुस्लिम बनने या रहने के लिए गुनगुना भुगतान करने के लिए, और इसके लिए उपयोग करना न भूलें
वेगिंग वार। और अपने लिए और अपनी सभी महिलाओं और कुछ बच्चों के लिए थोड़ा (हो सकता है कि का न हो)
"गरीब-कर")। पाखंड।

**** सटीक होने के लिए "गरीब-कर" - ज़कात - अल-बुखारी के बाद हदीसों के अनुसार (टिप्पणी 1 से
अध्याय 24) 8 विभिन्न उद्देश्यों के लिए हैं:

1. 1 "फुकरा" - गरीब लोगों की एक श्रेणी।
2. "अल-मसाकिन" - की एक और श्रेणी
   गरीब लोग।
3. प्रशासन करने वाले व्यक्ति
   जकात। (मूल रूप से मुहम्मद)।
4. मुस्लिम बनने के लिए लोगों को घूस देना और
   इस्लाम को बढ़ावा देने के अन्य तरीके।
5. मुस्लिम बने रहने के लिए गुनगुने मुसलमानों को रिश्वत देना।
6. मुस्लिम बंदियों को मुक्त कराना।
7. ऋणग्रस्त व्यक्तियों की सहायता करना।
8. धर्म के लिए युद्ध छेड़ना - और उसका
   नेता (ओं)।
9. यात्रियों की सहायता के लिए (अक्सर मक्का के तीर्थयात्री)।

ऐसा लगता है कि अंक 4 और 7 के लिए एक बड़ा प्रतिशत इस्तेमाल किया गया था। (आपको यह दावा भी मिलेगा कि
जकात के 5 मकसद हैं। फिर वे 1 और 2 को एक साथ जोड़ते हैं और अक्सर 6 और 8 को छोड़ देते हैं।
हमने इस पुस्तक में कुछ स्थानों पर उस सूची का उपयोग किया है।)

019 25/59a: "वह (अल्लाह) जिसने आकाश (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी और सभी को बनाया
यानी छह दिनों में - - -"। गलत। इसमें 4.6 अरब साल लगे। (वास्तव में नवीनतम
संख्या 4.57 बिलियन है)। कुरान में भी आप यह कहते हुए विरोधाभासी जानकारी पा सकते हैं
2 + 4 + 2 दिन = 8 दिन लगे।

020 25/59b: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

**०२१ २५/६२: "और वह (अल्लाह) है जिसने रात और दिन को एक दूसरे का अनुसरण किया"।
गलत। यह पृथ्वी का घूमना है जो इसका कारण बनता है - किसी भी भगवान को पता था।

**हम जोड़ सकते हैं कि कुरान कई जगहों पर प्राकृतिक घटनाओं के बारे में बात करता है, और अल्लाह कहता है
बनाता है या उसका कारण बनता है। इसके लिए ठोस सबूत चाहिए, क्योंकि यह ऐसी चीजें हैं जो अपने आप होती हैं
भौतिक नियम - और विशेष रूप से चूंकि शब्द और कथन बहुत सस्ते हैं, और इससे भी अधिक
**जैसा कि किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी अपने बारे में यही कह सकता है
भगवान (एस) नि: शुल्क - शब्द इतने सस्ते हैं।** मजबूत दावे मजबूत सबूत मांगते हैं,
वैज्ञानिक कहते हैं, और मुहम्मद ने इनमें से एक भी कथन या दावे को सिद्ध नहीं किया। एक नहीं
एक।

०२२ २५/७३: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह या किसी भी चीज़ के प्रमाण के रूप में अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

सूरह २५: कम से कम २२ गलतियाँ + २ संभावित गलतियाँ।

सूरा 26:

००१ २६/२: "- - - वह पुस्तक जो (बातें) स्पष्ट करती है - - -"। सभी गलतियों के साथ, यह बहुत बनाता है
थोड़ा स्पष्ट है, क्योंकि जो कहा गया है उस पर नियंत्रण किए बिना कोई भरोसा नहीं कर सकता है।

002 26/4: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह या किसी भी चीज़ के प्रमाण के रूप में अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

००३ २६/६: "- - - जो उन्होंने (अविश्वासियों*) का मज़ाक उड़ाया उसकी सच्चाई!" सबसे अच्छा कुरान प्रतिनिधित्व करता है
आंशिक सत्य - बहुत अधिक गलतियाँ, आदि।

004 26/8: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

005 26/15: "- - - हमारे (अल्लाह के *) संकेत - - -"। सभी में अल्लाह के लिए कोई वैध संकेत नहीं हैं
कुरान. 2/39 और 2/99 देखें।

006 26/16: "- - - दुनिया - - -"। 7 दुनिया नहीं हैं, इसके बावजूद कुरान ऐसा कहता है।
नीचे 65/12 देखें।

007 26/23: "- - - संसारों - - -"। ऊपर 26/16 देखें। और नीचे 65/12।

008 26/24: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

००९ २६/२९: "यदि तू (मूसा) ने मेरे (फिरौन*) के अलावा किसी अन्य देवता को आगे रखा है, तो मैं करूँगा
निश्चय ही तुम्हें कारागार में डालेगा।" गलत - मिस्र में एक के कई देवता थे। और भी अधिक: के अनुसार
इस्लाम के प्रयासों में से एक रामसे में ज़ेरक्स के आदमी हैमोन को रखने की गलती को समझाने की कोशिश करता है
द्वितीय का दरबार - और सैकड़ों वर्ष गलत - मुख्य देवताओं में से एक के महायाजक (हा-आमोन)
- आमोन - इस बैठक में भी मौजूद थे और फिरौन के मुख्य सलाहकारों में से एक (एक "तथ्य"
जो इस वाक्य को असंभव रूप से अतार्किक बनाता है)।

00a 26/42: "- - - आप (जादूगर*) उस स्थिति में (यदि आप मूसा पर जीत हासिल करते हैं) (उठाया जाएगा)
पोस्ट) मेरे व्यक्ति के निकटतम (रामसेस II)। यह अत्यधिक संभावना नहीं है कि शक्तिशाली फिरौन
रामसेस द्वितीय ने कहा कि जादूगरों के झुंड के लिए - और विशेष रूप से छोटे के बाद जीतने के लिए
प्रतिद्वंद्वी।

010 26/47: "- - - संसारों - - -"। ऊपर 26/16 और 65/12 देखें।

०११ २६/४९ए: फिरौन रामसेस II ने कहा: "निश्चय ही वह (मूसा*) आपका (जादूगर का) अगुवा है - - -।"
गलत। रामसेस द्वितीय मूसा को जानता था और जानता था कि वह 40 वर्षों से दूर था (के अनुसार)
बाइबिल - कुरान के अनुसार वर्षों की एक अनिर्दिष्ट संख्या, लेकिन वर्ष) - वह नहीं हो सकता
स्थानीय जादूगरों के नेता।

०१२ २६/४९बी: "- - - मैं (फिरौन रामसेस II) आपको (मूसा और अन्य *) को मरने के लिए प्रेरित करेगा
पार करना!" लेकिन पुराने मिस्र ने सज़ा के लिए सूली पर चढ़ाए जाने का इस्तेमाल नहीं किया।

०१३ २६/६३: "तब हमने (अल्लाह) प्रेरणा से मूसा से कहा: 'अपनी छड़ी से समुद्र पर प्रहार करो'। इसलिए यह
विभाजित, और प्रत्येक अलग भाग एक पहाड़ के विशाल, दृढ़ द्रव्यमान की तरह बन गया।' के अनुसार
विज्ञान यहूदियों ने पलायन शुरू किया (यदि यह कभी हुआ - और यदि ऐसा हुआ, तो यह हुआ ca. 1235
रामसेस द्वितीय के शासनकाल के दौरान ईसा पूर्व - अब तक के सबसे महान फिरौन में से एक - और कुछ साल पहले
रामसेस द्वितीय की मृत्यु (मुसलमान अक्सर इसे बदलना चाहते हैं - अधिमानतः लगभग 1500-1600 ईसा पूर्व)
- क्योंकि हम जानते हैं कि रामसेस II डूब नहीं गया था, लेकिन इस बिंदु पर विज्ञान स्पष्ट है)) गोशेन से
मिस्र के उत्तर पूर्व में - विशिष्ट होना: नील डेल्टा में। उन्होंने लगभग दक्षिण की यात्रा की
जो अब स्वेज नहर के समानांतर है, और उसके पश्चिम में है। फिर वे दक्षिण पूर्व की ओर मुड़े,
इससे पहले कि वे फिर से दक्षिण की ओर बढ़े - अभी भी लगभग स्वेज नहर के समानांतर, लेकिन अब
पूर्व में जहां अब नहर है। फिर वे लाल समुद्र के समानांतर दक्षिण की ओर बढ़ते गए।
स्वेज नहर के आने से पहले, भूमध्य सागर और लाल सागर के बीच, यहाँ था
कुछ बिखरी हुई झीलों के साथ अखंड नीची और काफी समतल भूमि, जिनमें से सबसे बड़ी थी
कड़वे समुद्र।

विज्ञान के अनुसार यहूदियों को के दौरान समुद्रों में से एक के खिलाफ घेर लिया गया हो सकता है
ऊपर उल्लेख दक्षिण पूर्व की ओर पैर, एक समुद्र जिसका नाम टिमसा सागर है - या हिब्रू में यम सुफ।

पुराने हिब्रू शास्त्रों में यहूदियों को यम सूफ के खिलाफ घेर लिया गया था, जिसका अर्थ हो सकता है
लाल सागर (सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला अनुवाद) या सी ऑफ रीड्स - दोनों नाम संभव हैं।
रीड्स का सागर एक उथला समुद्र था - सटीक गहराई के लिए हमारे स्रोत अस्पष्ट हैं, लेकिन काफी
अधिक से अधिक कुछ मीटर होने की संभावना है। (सबसे लंबी ईख जो हम खोज पाए हैं, वह एक विशेष प्रकार की है
कंबोडिया में टोनले सैप झील में उगने वाले चावल का। यह 5-7 मीटर तक हो सकता है। नरकट बढ़ रहा है
मिस्र में छोटे हैं, और "सी ऑफ रीड्स" नाम पाने के लिए, झील को काफी उथला होना था
सरकंडों के लिए झील के कम से कम एक बड़े हिस्से पर पानी के ऊपर अपने "सिर" पाने के लिए)। प्रति
अनुमान: ऊपर बताए अनुसार एक या दो से लेकर कुछ मीटर गहरे तक।

ऐसे उथले समुद्रों में इतना गहरा पानी नहीं था कि "प्रत्येक अलग भाग - - -
पहाड़ के विशाल, दृढ़ द्रव्यमान की तरह "। मामले में गलत - और संभावना है कि ऐसा ही हो, यहां तक कि
यदि अधिक नाटकीय लाल सागर को अक्सर अनुवाद के रूप में प्रयोग किया जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मूसा के लिए यह
लाल सागर के पश्चिमी किनारे के साथ दक्षिण की ओर मार्च करने के लिए सादा मूर्खता थी जब वह चाहता था
पूर्व में सीनै को जाने के लिए, और फिर उन सभी के साथ अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए उस समुद्र को पार करना होगा
नावों में लोग, उपकरण, जानवर आदि उनके पास नहीं थे। (बाइबल बताती है कि वे 600ooo थे
पुरुष, जिसका अर्थ है कुछ 2 मिल। इसमें महिलाएं और बच्चे शामिल हैं - एक संख्या जो है
४३० वर्षों के बाद गणितीय रूप से संभव (हालांकि संभावना नहीं है) बाइबल कहती है कि यहूदी रहते थे
मिस्र में)।

०१४ २६/६६: "लेकिन हम (अल्लाह *) ने दूसरों (मिस्रियों) को डुबो दिया।" गलत, कम से कम के लिए
खुद रामसेस II - वह डूबने से नहीं मरा, और कुछ साल बाद तक उसकी मृत्यु नहीं हुई।

015 26/67: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह या किसी भी चीज़ के प्रमाण के रूप में अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

016 26/77: "- - - संसारों - - -"। कुरान बताता है कि 7 (सपाट) दुनिया हैं - हदीस कहते हैं कि
उन्हें एक के ऊपर एक रखा जाता है, और उन्हें नाम दिया जाता है। गलत। 65/12 देखें।

377

पेज ३७८

017 26/98: "- - - संसारों के भगवान - - -"। 26/77 को ठीक ऊपर और 65/12.नीचे देखें।

०१८ २६/१०३: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

019 26/109: "- - - संसारों के स्वामी"। गलत। ऊपर 26/77 और नीचे 65/12 देखें।

०२० २६/११९: "- - - भरे हुए सन्दूक में (सभी प्राणियों के साथ)।" गलत। कोई नाव इतना नहीं ले सकती थी
हजारों जानवरों (कीड़े और इसी तरह के) जोड़े + उनके लिए भोजन। और भी
और तो और लकड़ी की नाव नहीं - इस तरह के आकार के लिए पर्याप्त बड़ा और मजबूत बनाना संभव नहीं है।
11/40 देखें।

०२१ २६/१२१: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२२ २६/१२७: "- - - दुनिया के भगवान।" गलत। ऊपर 26/77 और नीचे 65/12 देखें।

०२३ २६/१३९: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह या किसी भी चीज़ के प्रमाण के रूप में अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२४ २६/१४५: "- - - दुनिया के भगवान।" गलत। ऊपर 26/77 और नीचे 65/12 देखें।

०२५ २६/१५८: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२६ २६/१६१: "- - - उनके (सदोम और अमोरा के लोग*) भाई लूत - - -"। गलत। बहुत
दो शहरों के लिए एक अजनबी था, और यह कुरान और बाइबिल दोनों से बहुत स्पष्ट है कि वह
उन स्थानीय लोगों के साथ अच्छा मेलजोल नहीं था। वह आया - इब्राहीम के साथ - कसदिया के ऊर से
(दक्षिण इराक में)। वह उनमें से कोई "भाई" नहीं था - शब्द के लाक्षणिक अर्थ में भी नहीं।
(यहाँ शब्द स्पष्ट रूप से लूत को बनाने के लिए प्रयोग किया गया है और उल्लिखित लोग उस पैटर्न के अनुरूप हैं
कुरान का दावा सार्वभौमिक है: कि पैगंबर उन लोगों से आते हैं जिन्हें वे पढ़ाना चाहते हैं। लेकिन यहाँ
और कुछ अन्य मामलों में जो गलत है)। यह भी देखें २७/५६ - यह बहुत स्पष्ट है कि लूत कोई भाई नहीं था
उनका - एक प्राकृतिक "भाई" भी नहीं। ("लूट (लूत*) के अनुयायियों को हमारे से बाहर निकालो
शहर - - -"।)

०२७ २६/१६४: "- - - दुनिया के भगवान।" गलत। ऊपर 26/77 और नीचे 65/12 देखें।

०२८ २६/१७४: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२९ २६/१८०: "- - - दुनिया के भगवान।" गलत। ऊपर 26/77 और नीचे 65/12 देखें।

०३० २६/१९०: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह या किसी भी चीज़ के प्रमाण के रूप में अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

031 26/192a: "वास्तव में, यह (कुरान*) दुनिया के भगवान (अल्लाह *) से एक रहस्योद्घाटन है"।
अगर सच है कि यह एक रहस्योद्घाटन है, तो अल्लाह सर्वज्ञ नहीं है या मुहम्मद ने बहुत सारी गलतियाँ की हैं
इसे पढ़ते समय, या मुहम्मद ने इसे स्वयं बनाया, या बहुत सारी गलतियाँ हुई हैं जब
650 ई. के आसपास पुस्तक का संकलन और बाद में उसकी नकल करना। निश्चित रूप से कुछ गलत है।

०३२ २६/१९२बी: "- - - संसारों के स्वामी - - -।" गलत। ऊपर 26/77 और नीचे 65/12 देखें।

०३३ २६/१९३: "इसके साथ (कुरान) आस्था और सच्चाई की आत्मा आई"। अगर सच्चाई नीचे आ गई
कुरान के साथ, इसे बाद में विकृत कर दिया गया होगा। एनबी: यह उन जगहों में से एक है जहां कुरान
"पवित्र आत्मा" का उल्लेख करता है।

**०३४ २६/१९६: "निःसंदेह यह (कुरान*) प्रकाशित पुस्तकों में (घोषित) है।
टोरा, बाइबल*) पुराने लोगों की।" इसके बारे में बहुत संदेह है, मूल के रूप में
शिक्षाओं के तत्व बहुत भिन्न हैं - विशेष रूप से NT और "नए" की तुलना में
वाचा" जो ईसाई धर्म का मूल है। और ये भी पक्का है कि कुरान
बाइबिल या किसी भी यहूदी शास्त्र में घोषित नहीं किया गया है। इसके बारे में अध्याय भी देखें
बाइबिल में मुहम्मद।

**०३५ २६/१९७: "क्या यह उनके लिए एक निशानी नहीं है कि इसराएल के बच्चों के विद्वान इसे जानते थे (है
सच)?" कुरान और हदीस में भी, यह दावा किया जाता है कि एक या बहुत कम विद्वान थे
यहूदी (ओं) जिन्होंने मुहम्मद को पैगंबर के रूप में स्वीकार किया। कहानियां सच भी हो सकती हैं। किंतु हम
पुराने सत्य पर वापस आ गए हैं: "एक निगल से गर्मी नहीं होती"। **यह बिल्कुल निश्चित है कि
यहूदियों ने एक समूह के रूप में - सीखा या नहीं - में भी सच्चाई के लिए उनकी शिक्षाओं को स्वीकार नहीं किया
मौत का चेहरा** (उदाहरण के लिए खैबर में), एक या कुछ अपवादों को छोड़ दिया जा सकता है। वही है
सच आज.

नहीं, यह कोई वैध संकेत नहीं था।

***036 26/209: "- - - और हम (अल्लाह) कभी अन्याय नहीं करते"।

1. एक पुरुष सही ढंग से कह रहा है कि एक महिला के पास है
   अशोभनीय रहा है, अगर वह नहीं कर सकता तो अल्लाह से झूठ बोल रहा है
   4 गवाह पेश करें - भले ही एक सर्वज्ञानी
   अल्लाह को पता होना चाहिए कि वह सच बोल रहा है।
2. एक महिला जिसके साथ बलात्कार हुआ है, उसके लिए मना किया गया है
   बताओ वह कौन थी, जब तक कि वह उत्पादन नहीं कर सकती 4
   पुरुष गवाह जो वास्तव में है
   अधिनियम देखा। अगर वह 4 . का उत्पादन नहीं कर सकती है
   ऐसे गवाह, और सभी वही बताते हैं कि कौन
   बलात्कारी है उसके लिए 80 चाबुक लगेंगे
   बदनामी
3. **ऐसी महिला जिसका बलात्कार हुआ हो और वह पेश नहीं कर सकती
   4 पुरुष गवाह (जो सबसे ऊपर होंगे
   अगर वे गवाह हैं तो उसकी मदद नहीं करने के लिए दंडित किया गया
   उन्होंने जो देखा उसके बारे में) जिसने बहुत ही कार्य देखा, is
   कड़ी सजा दी जाए - पथराव किया जा सकता है - के लिए
   अभद्रता - अगर वह छिपाने में असमर्थ है तो उसके पास है
   बलात्कार किया गया - . **शायद सबसे अन्यायी और
   नैतिक कानून हमने कभी देखा है a
   "आधुनिक समाज।**
4. एक मालिक के लिए उसका बलात्कार करने की 100% अनुमति है
   महिला दास या युद्ध के कैदी (यह हो सकता है
   यही कारण है कि मुसलमान अक्सर महिलाओं का बलात्कार करते हैं
   संघर्ष - एफ। भूतपूर्व। पहले बांग्लादेश में और

पहले और अब अफ्रीका में)। **कुरान भी**
सीधे कहता है कि रेप करना भी गुनाह नहीं है
आपके विवाहित दास या युद्ध के कैदी, जैसे
जब तक वे गर्भवती न हों।

5. **यह गौरवशाली है और मुसलमानों का
चोरी करना, लूटना, लूटना, गुलाम बनाना और गैर को मारना
जिहाद के दौरान मुसलमान - और लगभग कोई भी

संघर्ष को जिहाद (पवित्र युद्ध) घोषित किया जाता है। **यह है "उचित और अच्छा"।**

देखें तो और भी हैं। कृपया हमें यह कभी न बताएं कि कुरान में वर्णित अल्लाह कभी नहीं है
अन्यायपूर्ण ये 5 बिंदु - और अधिक - नैतिक रूप से भयानक हैं। इसमें से कुछ वास्तव में सबसे अन्यायपूर्ण
हमने कभी किसी कानून में देखा है।

*०३७ २६/२१०-२११: "किसी भी दुष्ट ने इसे (प्रकाशितवाक्य) नहीं उतारा। यह न तो सूट करेगा
उन्हें - - -"। हो सकता है कि किसी बुरी आत्मा ने कुरान को उतारा न हो। **लेकिन निश्चित है कि नहीं
सर्वज्ञ भगवान ने ऐसा किया है - बहुत सारी गलतियाँ, आदि। यह भी निश्चित है कि कोई अच्छा या
परोपकारी ईश्वर या आत्मा ने किया - बहुत अमानवीय, घृणा और दमन और खून से भरा हुआ
- किताब में घटिया नैतिकता और नैतिकता का जिक्र नहीं है।** वही सब संभव है
बुरी या बुरी ताकतों द्वारा नहीं भेजा गया था (यहां तक कि बुरी अलौकिक ताकतें भी बहुत बुद्धिमान होंगी
इतनी सारी गलतियों, विरोधाभासों, अमान्य तर्क आदि के साथ एक किताब बनाने के लिए, जैसा कि उन्हें जानना था
उन्हें जल्दी या बाद में पता चल जाएगा और उनकी विश्वसनीयता ढीली हो जाएगी) - यह बस संभव है, और
यहां तक कि संभावना है कि यह एक या एक से अधिक पुरुषों (सभी गलत विज्ञान और "ज्ञान" में) द्वारा बनाया गया था
उस समय अरब में और उसके आसपास की स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, और भी बहुत कुछ
वह दिशा)। लेकिन जो बात पूरी तरह से निश्चित है, वह यह है कि एक इस्लाम जैसा सूरहों में मिलता है
मदीना से बुरी आत्माओं और ताकतों को बहुत अच्छा लगता है: अमानवीयता, चोरी, खून, नफरत, युद्ध।
बस मुसलमानों से पूछें कि वे पूर्व में उन पर हमला करने वाले मंगोलों के बारे में क्या सोचते हैं। धर्म
मंगोलिया में जिंजिस खान के अधीन और बाद में मूल रूप से इस्लाम के समान था। जब इस्लाम
एफ में अपनी युद्ध मशीन और अमानवीयता का इस्तेमाल किया। भूतपूर्व। भारत और अन्य स्थानों पर, वे सभी के अनुसार
मुसलमान हीरो थे। फिर वे मंगोलों से मिले जिन्होंने मुसलमानों के साथ भी ऐसा ही किया - और
मंगोल भयानक राक्षस थे। लेकिन फिर दक्षिणी मंगोल मुसलमान बन गए और
पहले की तरह ही जारी रहा, लेकिन अब गैर-मुसलमानों के खिलाफ - - और अब वे थे
इस्लाम के अनुसार महान नायक। उनसे पूछें कि क्या एफ. भूतपूर्व। तैमूर लेंको नाम याद रखें
(तामेरलेन)।

मदीना के सूरह में वर्णित इस्लाम निश्चित रूप से बुरी ताकतों/आत्माओं के अनुकूल है।

०३८ २६/२११: "- - - न ही वे (गैर-मुस्लिम) सक्षम होंगे (इसे उत्पन्न करने के लिए) (कुछ इसी तरह का)
कुरान के लिए *)"। गलत। **कुरान के बारे में मुसलमान जितने भी शानदार शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, उसके बावजूद,
किताब अच्छा साहित्य नहीं है।** बहुत सारी और बहुत सारी गलतियाँ हैं। बहुत कुछ गलत है
तर्क। कई भाषाई गलतियाँ हैं। बहुत सारे और बहुत सारे विरोधाभास हैं।
किताब में शायद ही कुछ मौलिक हो - कहानियाँ बाइबल से ली गई हैं और कुछ
अन्य पुरानी किताबें, गढ़ी हुई धार्मिक कहानियों से, लोककथाओं से और परियों की कहानियों से और न्यायोचित
थोड़ा बदल गया, और मूल विचार पड़ोसी संस्कृतियों से उधार लिए गए - मुख्य रूप से
यहूदी और ईसाई, लेकिन पूर्व से भी कुछ (पारसी f। पूर्व और शायद थोड़ा सा . से)
बुद्ध - अरबों का संबंध चीन जितना ही पूर्व में था, और उस समय बौद्ध धर्म था
जो अब पाकिस्तान और भारत के कुछ हिस्सों में मजबूत है (लेकिन बाद में इस्लाम द्वारा खून में डूब गया था)।
साथ ही कानूनों और नैतिकता में भी कुछ नया नहीं था - यदि कोई हो; की तुलना में कुछ बदलाव थे
पुराना अरब, लेकिन यहाँ भी विचार पड़ोसी संस्कृतियों से आए थे। और वही कहानियां
बार-बार कहा जाता है - सबसे उबाऊ। लेकिन अच्छे लेखक - मूल संगीतकार नहीं - पॉलिश
लगभग २५० वर्षों तक (लगभग ९०० ईस्वी तक) पुस्तक में अरब भाषा।

एक अच्छे या मध्यम लेखक के लिए समान - या . के साथ कुछ लिखने में कोई समस्या नहीं होगी
बेहतर - सामग्री।

ऐसे दावे कि कुरान अच्छा साहित्य है आप भोले, अनपढ़, अनपढ़ को बता सकते हैं
पुराने (और उस मामले के लिए आधुनिक) समय के मूल निवासी। जब आप किसी से बात कर रहे हों तो इसे छोड़ दें

शिक्षित आधुनिक व्यक्ति जो कुरान को जानता है (बहुत कम लोग - बहुतों को घृणा हुई थी)
और साहित्य के बारे में थोड़ा जानता है। कुरान अपने समय के लिए बुद्धिमान धार्मिक कथाएँ हो सकती हैं,
लेकिन यह साहित्य का एक अच्छा टुकड़ा नहीं है। उबाऊ, दोहराव, इस और उस की एक हाथापाई - कोई तार्किक नहीं
कहानियों में प्रणाली, किस्से और विचार सभी दूसरों से "उधार" और प्रसिद्ध, आदि।

सूरह २६: कम से कम ३८ गलतियाँ + १ संभावित गलती।

सूरह 27:

001 27/1: "- - - एक किताब (कुरान*) जो चीजों को स्पष्ट करती है - - -"। जितनी अधिक गलतियाँ,
विरोधाभास, आदि। एक किताब में हैं, कम स्पष्ट यह चीजों को बना सकता है। यह बस खो देता है
विश्वसनीयता। कुरान कई मामलों में अविश्वसनीय है - सचमुच बोल रहा है।

002 27/2a: "एक गाइड (कुरान*)"। ऊपर 27/1 देखें।

००३ २७/२बी: "- - - खुशखबरी - - -"। गलत। सबसे अच्छे से कोई कह सकता है कि कुरान
लूट और दासों के चाहनेवालों और सब बुरे लोगों के बीच खुशखबरी लाया
कुछ मजबूत धर्म के लिए तरसते हैं - - - अगर ऐसा नहीं होता क्योंकि कुरान खुद 100% साबित करता है कि
किताब में कुछ बहुत गलत है। इतना गलत कि इसे न तो कोई बनाया जा सकता है और न ही किसी के द्वारा प्रतिष्ठित किया जा सकता है
भगवान - एक छोटे से छोटे भगवान द्वारा भी नहीं। किताब में बहुत कुछ गलत है।

004 27/6a: "(अल्लाह है*) सब कुछ जानने वाला"। अगर यह सही है, तो उसने कुरान की रचना नहीं की है - बहुत दूर भी
कई गलतियाँ। या अधिक स्पष्ट होना: कुरान का रचयिता वह है जो सब कुछ नहीं है
जानना।

००५ २७/६बी: "- - - कुरान आपको (मुहम्मद/मुसलमान) की उपस्थिति से प्रदान किया जाता है
जो समझदार और जानने वाला (अल्लाह*) है।" इस्लाम का दावा है कि कुरान की नकल है
मदर बुक जो स्वर्ग में अल्लाह और उसके कोणों द्वारा पूजनीय है। आगे दावा किया गया है
कि पुस्तक या तो सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा बनाई गई है - एकमात्र ईश्वर - या
अनंत काल से अस्तित्व में है, और इतना मौलिक है कि इसे भगवान ने भी नहीं बनाया है। इस
कविता को अंतिम दावे की मजबूती के रूप में समझा जा सकता है: कुरान को नहीं कहा जाता है
अल्लाह द्वारा या उसकी ओर से बनाया या उतारा गया, लेकिन "अल्लाह की उपस्थिति" से नीचे भेजा गया। तथ्य
जो इस ऊंचे और गैर-दस्तावेज दावे को खराब कर देता है (दावा आम तौर पर इस्लाम में गैर-दस्तावेज हैं -
हालांकि वे किसी और से दस्तावेज और सबूत मांगते हैं) की बड़ी संख्या है
पुस्तक में गलतियाँ, विकृत तथ्य, अंतर्विरोध, विकृत और अमान्य तर्क आदि। कोई भगवान नहीं -
सर्वज्ञानी हो या नहीं - कभी ऐसा मैला काम किया है। और यह भी: बड़ी संख्या में
गलतियाँ, संस्कार, सोचने के तरीके आदि संस्कृति के अनुसार हैं और "ज्ञान" किसमें है?
अब हम मध्य पूर्व को मुहम्मद के समय के आसपास कहते हैं - लेकिन कोई सर्वज्ञ ईश्वर नहीं होगा
एक विशेष सदी से गलत विज्ञान, रीति-रिवाजों और नियमों और सोचने के तरीकों का उपयोग करना होगा
और एक विशेष, छोटा क्षेत्र और लघु ग्रह पृथ्वी पर थोड़े समय के समय से, जब वह
पुस्तक बनाई - या यह अन्य तरीकों से अस्तित्व में आई - ब्रह्मांड के निर्माण से पहले
(जो विज्ञान के अनुसार 13.7 अरब साल पहले हुआ था)। प्रचार करना? कम से कम यह है
गलत।

एक और तथ्य यह है कि यह असंभव बना देता है कि पुस्तक अनंत काल से है: कम से कम है
कुरान में एक जगह है कि फरिश्ते (मुस्लिम विद्वानों के अनुसार भी) बोल रहे हैं (और at
कम से कम 8 स्थान जहाँ मुहम्मद बोल रहे हैं)। इसका मतलब है कि किताब नहीं हो सकती थी
बनाया - या कम से कम समाप्त नहीं हुआ - जब तक कि पहले स्वर्गदूतों को नहीं बनाया गया था (वे नहीं कर सकते थे
बनाने से पहले पुस्तक में बोलें)। कुरान में स्पष्ट है कि फरिश्ते नहीं हैं
अनंत काल से - अल्लाह ने उन्हें प्रकाश से बनाया है। और इसे इतने समय में नहीं बनाया जा सकता था कि
मुहम्मद के लिए कम से कम 8 बार उल्लेखित अपनी बात रखना असंभव बना देता है।

006 27/8: "- - - संसार।" कुरान झूठा बताता है कि 7 पृथ्वी हैं। ऊपर 26/77 देखें और

नीचे 65/12।

007 27/9: "- - - मैं अल्लाह हूँ - - - समझदार!" बहुत बुद्धिमान नहीं अगर उसने कुरान और उसके सभी
गलतियाँ, आदि

००८ २७/१४: "- - - देखें कि उनका क्या अंत (डूबने से मौत*) था (फिरौन रामसेस II और
उसके आदमी*)"। कम से कम रामसेस II के लिए व्यक्तिगत रूप से गलत - कुछ साल बाद तक उनकी मृत्यु नहीं हुई,
और डूबने से नहीं।

*00a 27/16 - 44: ये कहानियाँ - कुरान में अन्य स्थानों पर भी दोहराई गई - राजा के बारे में
सुलैमान, चींटियाँ, उसके लिए गुलामी करने वाले जिन्न, घेरा, और की रानी का उल्लेख नहीं करने के लिए
सबा - शानदार हैं जैसे वे एक परी कथा से थे - - - जो वे हैं: वे हैं
"उधार" से बना - अपोक्रिफ़ल - शास्त्र "एस्टर का दूसरा टारगम"। कोई भगवान नहीं
पुरानी परियों की कहानियों को चुराने और उन्हें अपने में फिट करने के लिए छोटे - या बड़े - ट्विस्ट के साथ फिर से बताने की जरूरत है
धर्म/कथाएं, और फिर उन्हें तथ्य कहें। लेकिन मुहम्मद अक्सर ऐसा करते थे। यही कारण है कि
उनके समकालीनों ने अक्सर कहा कि उन्होंने जो कहा वह सिर्फ पुरानी कहानियां थीं - उन्होंने बस पहचान लिया
किंवदंतियों, परियों की कहानियों और कहानियों।

००९ २७/१६: "हमें (राजा सुलैमान*) पक्षियों की बोली समझा गया है।" गलत। एक
बात यह है कि एक पक्षी "भाषण" नहीं है बल्कि कम से कम 2000 विभिन्न प्रकार के प्रत्येक के लिए एक है
पक्षी, और वास्तव में और भी अधिक, क्योंकि कुछ पक्षियों की एक जगह से दूसरी जगह तक अलग-अलग "बोलियाँ" होती हैं
दूसरा - भले ही आपको कॉक्नी अंग्रेजी समझा जाए, आप इतालवी नहीं समझेंगे या
अरब या स्वाहिली। अधिक मौलिक तथ्य यह है कि पक्षियों का दिमाग बहुत छोटा होता है
सुसंगत भाषण विकसित करना। पिछले वर्षों में विज्ञान ने पाया है कि पक्षियों का मस्तिष्क अधिक हो सकता है
कुशल है कि हमारा, चना के लिए चना, लेकिन फिर भी यह इसके लिए बहुत छोटा है - the
न्यूनतम आकार जहां मस्तिष्क के लिए मौलिक रूप से संकाय प्राप्त करना सैद्धांतिक रूप से संभव है
मानव मस्तिष्क के समान, एक बिल्ली के मस्तिष्क के आकार का अनुमान लगाया जाता है। सुसंगत, बुद्धिमान
पक्षियों से भाषण केवल शारीरिक रूप से असंभव है।

*०१० २७/१८: एक चींटी ने अन्य चींटियों से बात की और राजा सुलैमान को सुनने के लिए संभव था।
गलत। चींटियों के पास जटिल रचना करने की दिमागी शक्ति नहीं है (गैर-मानव के लिए
स्थलीय प्राणी) वाक्य - ऊपर 27/16 देखें - और उनके पास अंग नहीं हैं
उच्चारण शब्द - "चींटी-भाषा" शब्द भी नहीं। उल्लेख नहीं है कि उनके पास शक्ति की कमी है
इतना जोर से बोलना कि मनुष्य सुन सकें। एक परी की कहानी। (उल्लेखनीय है कि इस्लाम को अ
डिग्री इसे स्वीकार करती है। "कुरान का संदेश इसे एक किंवदंती कहता है - टिप्पणी 17। लेकिन अगर यह है a
किंवदंती को सच की तरह बताया, कुरान में ऐसे और कितने हैं?)

**०११ २७/१९: "तो वह (सुलैमान) उसके भाषण पर मुस्कुराया - - -"। गलत। 27/16 और 27/18 को बस देखें
के ऊपर। सुलैमान के लिए यह सुनना असंभव होगा कि चींटी भी क्या उच्चारण नहीं कर सकती -
इसलिए भी कि यदि वह बोल सकती है और यदि वह हमारे लिए पर्याप्त जोर से बोल सकती है, तो सुनिए, छोटा
एक चींटी का आकार हमारे कानों को दर्ज करने के लिए शब्दों को बहुत ऊँचा बना देगा।

**०१२ २७/२२-२६: एक पक्षी - घेरा - अपने स्वयं के लंबे, सुसंगत भाषण/वाक्य बनाना
संयोजन। पृथ्वी पर कोई पक्षी ऐसा नहीं कर सकता - उनके पास मस्तिष्क की क्षमता नहीं है (देखें 27/6b)। ए
परियों की कहानी।

०१३ २७/२४: "मैंने (हूपू*) ने उसे (सबा की रानी*) सूर्य की पूजा करते हुए पाया - - -"।
सबा अरब प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर पर था - आज लगभग यमन। में
पुराने समय में इस पूरे प्रायद्वीप में चंद्र धर्म था, सूर्य धर्म नहीं - अल-लाह (जिसका

मुहम्मद ने बाद में नाम बदलकर अल्लाह कर दिया) मूल रूप से एक चंद्रमा देवता थे। यह प्रलेखित है कि में भी
ओल्ड सबा मुख्य देवता चंद्रमा देवता थे (स्रोत; "चंद्र जुनून और बेटियों की"
अल्लाह")। हम यह भी जोड़ सकते हैं कि मुसलमान कहते हैं कि भले ही चंद्रमा धर्म प्रमुख था, वहां
सूर्य उपासक भी रहे होंगे। यह सच है, लेकिन देश के शासक के लिए नहीं -
शासक को बहुत मजबूत होना चाहिए या आधिकारिक और मुख्य धर्म का सदस्य होना चाहिए, नहीं तो होगा
समस्या हो (कश्मीर को देखें f. पूर्व। - यह सब एक हिंदू शासक के साथ शुरू हुआ)
मुस्लिम अंडरलाइंग)।

इसके अलावा वह - रानी - ने अल्लाह की पूजा नहीं की, क्योंकि वह नाम अभी तक नहीं बनाया गया था।
शायद चंद्रमा भगवान अल-लाह (बाद में जैसा कि मुहम्मद ने अल्लाह के नाम पर उल्लेख किया है) या पुराना
एल.

014 27/25: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०१५ २७/२८: “तू मेरे इस पत्र के साथ (हूपू*) जा, और उन्हें दे दे: फिर चित्र बनाना
उनके पास से वापस, और (प्रतीक्षा करें) देखें कि वे क्या उत्तर देते हैं…” कोई पक्षी ऐसा नहीं कर सकता। नहीं
कबूतर भी चिट्ठियाँ लाता है - वह पत्र लेकर ही लौट पाता है। (कबूतरों को होना है
जो पत्र प्राप्त करने वाले हैं, उनके पास पिंजरों में लाए गए हैं जिन्हें पत्र भेजना है
संदेश। फिर जब पक्षी को छोड़ दिया जाता है, तो वह बस घर लौटना चाहता है - - और ले जाता है
अपने घोंसले को पत्र, जहां रिसीवर इसे एकत्र कर सकता है। पक्षियों का उपयोग करने का यही एकमात्र संभव तरीका है
पत्र ले जाने के लिए। परियों की कहानियों को छोड़कर।)

00b 27/36: राजा सुलैमान एक अच्छा मुसलमान है। कोई भी व्यक्ति चाहे तो इस पर विश्वास करने के लिए स्वतंत्र है।

**00c 27/37: राजा सुलैमान को सबा की ओर से उपहार दिए जाते हैं, लेकिन वह गुस्से से जवाब देता है: “वापस जाओ
उन्हें (सबा के शासकों/रानी*), और सुनिश्चित करें कि हम ऐसे यजमानों के साथ उनके पास आएंगे
(सेना*) क्योंकि वे कभी नहीं मिल पाएंगे (= उन पर हमला*) - - -।" इस उत्तर का कोई तार्किक आधार नहीं है
कारण या अर्थ, विशेष रूप से उपहार समृद्ध थे ("धन की प्रचुरता" - 27/36)। भी
इस्लाम इस बात से सहमत है कि यहाँ कुछ गलत है, क्योंकि "एक नबी अच्छे उपहारों का जवाब a . के साथ नहीं दे सकता था
आक्रमण का युद्ध", लेकिन उनके पास कोई अच्छी व्याख्या नहीं है - केवल बल्कि लंगड़ा
शायद इसके बारे में अटकलें वास्तव में अल्लाह ही है जो उन्हें बोल रहा है और धमकी दे रहा है
अगर वे मुसलमान नहीं बने तो वह क्या करेंगे (मुहम्मद से 1500 साल पहले! - राजा .)
सुलैमान ने ९६१ - ९२२ ईसा पूर्व शासन किया था जो विकिपीडिया के अनुसार अधिकतम १० वर्ष देता है या लेता है)। "होने देना
धर्म में कोई बाध्यता नहीं है"? लेकिन यह उन जगहों में से एक है जहां
मुस्लिम विद्वान सहमत हैं कि पाठ में कुछ गलत है
क़ुरान।

*00d 27/39: "- - - (एक) जिन्न के - - -"। जिन्न कुरान में एक विस्तृत भूमिका वाले प्राणी हैं।
वे पुरानी अरब परियों की कहानियों और किंवदंतियों से "उधार" लेते हैं। अल्लाह ने उन्हें आग से बनाया,
पुस्तक बताती है (या चिलचिलाती हवा की आग से हो सकती है - कई विरोधाभासों में से एक)
कुरान)। उनके आकार के बारे में बहुत कम कहा गया है - शायद मोटे तौर पर इंसानों की तरह। उनके पास एक भी है
"पंथियन" में फैलाना भूमिका - वे निश्चित रूप से स्वर्ग में नहीं हैं, लेकिन न ही नरक में हैं।
वे कहां हैं, इसके बारे में कुछ नहीं कहा गया है। उनके बारे में भी कुछ नहीं कहा गया है
स्वर्ग और नरक के "जीवन" में भूमिका या उन दोनों के "निवासियों" के साथ उनका वास्तविक संबंध
स्थानों - या पृथ्वीवासियों के लिए। जैसा हमने कहा; उनके और उनके जीवन के विषय में बहुत कुछ फैला हुआ है, सिवाय
कि वे ऐसे प्राणी होने चाहिए जो मर सकते हैं - और अंत में नरक में ज्यादातर ऐसा लगता है। जैसा कि कहा गया है कि वे हैं
पुराने अरब लोककथाओं और परियों की कहानियों से उधार लिया गया है और ज्यादातर ऐसा लगता है कि वास्तव में इसका संबंध नहीं है
धर्म, हालांकि उनका उल्लेख अक्सर किया जाता है। आम तौर पर हमें लगता है कि वे थोड़े हैं
ज्यादातर समय संदेह करते हैं, लेकिन हमेशा नहीं। कुछ थे एफ. भूतपूर्व। राजा के लिए नौकर (या दास)
सुलैमान (लेकिन केवल कुरान के अनुसार, बाइबिल के अनुसार नहीं), और पुराने समय में - 100 नहीं

वर्षों पहले - मनुष्यों और जिन्नों के बीच विवाह आदि के लिए कानून मौजूद रहे होंगे, हालांकि
कभी शादी नहीं हुई !!

क्या वे वास्तव में छिपी हुई दुनिया में मौजूद हैं? - या वे वास्तव में सिर्फ परी से कुछ हैं
रहस्यमय प्रभाव के लिए प्रयुक्त किस्से? एक और जिज्ञासा: किसी अन्य पैगंबर ने कभी जिन्न का उल्लेख नहीं किया
- आग से बने जीव, इंसानों से शादी करने में सक्षम, और जीव जो अगले जन्म में जाते हैं,
हालांकि उनमें से ज्यादातर नर्क में।

016 27/44a: "- - - उसने (सबा की रानी*) सोचा कि यह (फर्श*) पानी की झील है
(हालांकि यह कांच के स्लैब थे) - - -"।

1. उनके पास बनाने की तकनीक नहीं थी
   कांच की वह गुणवत्ता ca. 1000 ई.पू. (सुलैमान
   सीए से शासन किया। ९६१ ई.पू. से ९२२ ई.पू. (प्लस या .)
   माइनस अधिकतम 10 वर्ष))।
2. उनके पास बड़ा बनाने की तकनीक नहीं थी
   स्लैब - और उन्हें बनाने के लिए वास्तव में बड़ा होना था
   दरारें इतनी कम कि उन पर ध्यान नहीं गया -
   कांच के सीए 1000 ई.पू. आज भी है
   मुश्किल है, क्योंकि इसके लिए दिन और सप्ताह और यहां तक की जरूरत होती है

के लिए बहुत सटीक और धीमी गति से ठंडा करने के महीने
कि बड़े स्लैब में दरार न पड़े। (सीएफआर। का निर्माण
बड़े खगोलीय दूरबीन)।

017 27/44b: "- - - संसार।" एक बार फिर: कुरान के बावजूद 7 दुनिया नहीं हैं (और .)
हदीस)। ऊपर 26/77 और नीचे 65/12 देखें।

०१८ २७/५२: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

019 27/60: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०२० २७/६१: "(अल्लाह*) ने इसके (पृथ्वी के) बीच - - - में नदियाँ बनाईं। गलत। कुरान मानता था
पृथ्वी चपटी थी, और फिर बीच में है। लेकिन पृथ्वी एक गोला है, और सतह a
गोले का कोई बीच नहीं है। इसके अलावा: क्या यह अल्लाह है या बारिश जो नदियाँ बनाती है?

021 27/63: "- - - खुशखबरी - - -"। इस मामले में यह बारिश को संदर्भित करता है। यह रेगिस्तान में खुशखबरी है
जैसे अरब में, लेकिन शायद ही f में। भूतपूर्व। Amazonas या इंग्लैंड या कई अन्य स्थान। एक और
कुरान में कई "अरबवाद"। मुहम्मद के स्थानीय इलाके में बारिश खुशखबरी थी, में
एक विश्व धर्म का क्षेत्र जो सबसे अच्छा दावा करता है वह आंशिक रूप से सत्य है - लेकिन अरब ही एकमात्र क्यों है
कुरान का सांस्कृतिक और अन्यथा केंद्र अगर यह पूरी दुनिया के लिए है - और एक सर्वज्ञ से
भगवान?

022 27/65: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०२३ २७/७६: "--- यह कुरान इस्राइल के बच्चों को ज्यादातर मामलों की व्याख्या करता है जिसमें
वे असहमत हैं"। बहुत गलत। एक बात के लिए कुरान मोज़ेक धर्म से बहुत अलग है
(और ईसाई धर्म से और भी अलग), कि यह स्पष्ट रूप से समान नहीं है। दूसरे के लिए: ए
उस किताब के साथ बहुत सारी गलतियाँ, आदि बहुत कम समझा सकते हैं।

024 27/77a: "और यह (कुरान*) निश्चित रूप से एक मार्गदर्शक है - - -।" एक किताब जिसमें कई गलतियां हैं
और इससे भी बदतर, निश्चित रूप से कोई गाइड नहीं है - कम से कम एक अच्छा या विश्वसनीय नहीं है।

०२५ २७/७७बी: "और यह (कुरान) निश्चित रूप से - - - ईमान लाने वालों के लिए एक दया है।" इसके साथ
ज्ञान से घृणा (धार्मिक और संबंधित ज्ञान को छोड़कर - f. पूर्व खगोल विज्ञान से .)
तारीखों, विशेष दिनों, आदि का ठीक से पालन करें), नफरत और युद्ध की इसकी मांग, इसका अंधेरा और कुल
जीवन के सभी पहलुओं पर प्रभुत्व, आदि, - और इसके आधे सदस्यों (महिलाओं) का दमन
- यह ईमान वालों पर भी दया नहीं है।

०२६ २७/७९: "- - - क्योंकि तू (मार्ग पर) सत्य प्रकट करता है (कुरान की सामग्री*)"। परंतु
कुरान की सामग्री मिश्रित है, और इसमें से अधिकतम कुछ वास्तव में सच है - सभी देखें
गलतियां।

०२७ २७/८१: "- - - हमारी (अल्लाह*) निशानियाँ - - -।" से/के बारे में कोई तार्किक रूप से विश्वसनीय संकेत नहीं हैं
सभी कुरान में अल्लाह। 2/99 देखें।

०२८ २७/८२: "- - - हमारी (अल्लाह की) निशानियाँ।" गलत। देखें 27/81 ठीक ऊपर और 2/99।

029 27/83: "- - - हमारी (अल्लाह की *) निशानियाँ - - -"। गलत। ऊपर 27/81 और 2/99 देखें।

०३० २७/८४: "- - - मेरी (अल्लाह की) निशानियाँ - - -"। गलत। ऊपर 27/81 और 2/99 देखें।

031 27/87: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

***०३२ २७/९१: "मेरे लिए (मुहम्मद*), मुझे प्रभु (अल्लाह*) की सेवा करने का आदेश दिया गया है
यह शहर (मक्का - ६१५-६१६ ईस्वी से जब मुहम्मद अभी भी वहाँ रहते थे*) - - - "। यह है एक
गंभीर एक: यह मुहम्मद है जो एक बार फिर बोल रहा है - - - एक किताब में जिसे नकल माना जाता है
स्वर्ग में एक "मदर बुक" की, एक किताब जो अनंत काल से मौजूद हो सकती है या शायद बनाई गई थी
अल्लाह द्वारा। पिकथल और दाऊद दोनों इस बहुत ही खुलासा करने वाली गलती को छुपाते हैं (कुछ हैं

अधिक [illegible] हो [illegible] (37/164-166) [illegible] "कहो:" शब्द जोड़कर, लेकिन वह मूल में नहीं है, इब्न वारक के अनुसार, "मैं मुस्लिम क्यों नहीं हूं", पृष्ठ 175।
पिकथल द्वारा बेईमानी और मामले में दाऊद द्वारा। लेकिन तब ऐसा होता है कि आप बेईमानी से तब मिलते हैं जब मुसलमान चीजों को "समझाने" की कोशिश करते हैं - यहां तक कि किताबों में भी आपको बौद्धिक रूप से विश्वास करना चाहिए उच्च गुणवत्ता और नैतिक। (अल-अजहर विश्वविद्यालय, काहिरा की तरह, यह प्रमाणित करते हुए कि बड़ी बाढ़ हो सकती है भूमध्यसागरीय देखें को भरने से समझाया जा सकता है। वे अच्छी तरह जानते हैं कि दोनों समय और जिस तरह से हुआ वह उस स्पष्टीकरण को प्रतिबंधित करता है - लगभग ४-५ मिलियन वर्ष पहले और शायद १०० वर्षों की अवधि में "धीरे-धीरे", और कम से कम नहीं; गलत जगह, के बगीचे के रूप में माना जाता है कि ईडन अब दक्षिण इराक में स्थित है (यदि यह कभी अस्तित्व में था))।

वैसे भी मुहम्मद के लिए एक अच्छा क्षण था - उन्हें सत्ता पसंद थी। (बस देखो कि उसने खुद को कैसे चिपकाया सत्ता के अपने मंच के लिए; उसका भगवान)।

०३३ २७/९३: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह या किसी भी चीज़ के प्रमाण के रूप में अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

सूरह २७: कम से कम ३३ गलतियाँ + २ संभावित गलतियाँ।

सूरा 28:

001 28/2: "ये किताब (कुरान*) की आयतें हैं जो (बातें) स्पष्ट करती हैं"। उस के साथ किताब में कई गलतियां, विरोधाभास और संदिग्ध तर्क, ज्यादा से ज्यादा कुछ चीजें हो सकती हैं स्पष्ट कर दिया।

00a 28/3a: "हम (अल्लाह) आपको मूसा और फिरौन की कुछ कहानी सच्चाई में सुनाते हैं - - -"। मूसा के बारे में कहानी बाइबल में बताई गई कहानी से थोड़ी अलग नहीं है - जो इसके लिए है जो (हो सकता है) हुआ - और मजबूत के साथ समय के करीब 1000 साल से अधिक का हिस्सा है मूसा से संबंधित परंपराएं। यह एक सवाल है कि कौन सा सबसे विश्वसनीय है। किसी भी मामले में: दोनों फिरौन रामसेस द्वितीय की मृत्यु गलत है (लेकिन जब बाइबल की बात आती है तो यह संभव है इसकी व्याख्या करें - कुरान के साथ ऐसा नहीं है, जो अल्लाह द्वारा बताया गया है, और अल्लाह सर्वज्ञ है बाइबिल के मानव कथाकार रामसेस II को अपने ६७ पुत्रों में से एक या उनके किसी एक के साथ मिला सकते हैं जनरलों - अल्लाह के लिए ऐसी गलती असंभव है))।

002 28/3b: "- - - सत्य में - - -"। कुरान में सभी गलतियों आदि के साथ, यह सबसे अच्छा आंशिक रूप से है सच।

*00b 28/6: "- - - हामान - - -"। कुरान में हामान के तहत किसी प्रकार का एक उच्च नेता है फिरौन। लेकिन विज्ञान कहता है कि यह बाइबिल में एस्तेर की किताब से हामान है। हामान था बाइबिल के अनुसार फारसी राजा ज़ेरक्स के अधीन एक शक्तिशाली मंत्री (हिब्रू: क्षयर्ष) (486 - 465 ईसा पूर्व) और उल्लेखित पुस्तक में एक केंद्रीय व्यक्ति - मुहम्मद मे उसके बारे में अच्छा सुना है। उस मामले में कुछ बहुत गलत है, क्योंकि रामसेस द्वितीय स्वाभाविक रूप से मिस्र में राजा/फिरौन था, और उसके ऊपर लगभग ८०० वर्ष पहले रहता था। हामान नहीं कर सका उनके शीर्ष मंत्री बनें।

मुसलमान इसे इसी से समझाना चाहते हैं कि यह एक और हामान था। लेकिन विज्ञान संदेह में नहीं है, यह है वही। यहाँ एक और प्रश्न है: क्या मिस्र में हामान नाम का प्रयोग किया गया था? - कहा जाता है फारसी नाम हो।

यहां इस्लाम की एक और व्याख्या है जो शायद सच हो सकती है: में मुख्य देवताओं में से एक उस समय मिस्र आमोन था। "कुरान का संदेश" के अनुसार उच्च की उपाधि आमोन का पुजारी हा-आमेन था - जिसे हामोन के रूप में समझा जा सकता था। बहुत संभावना नहीं है, विशेष रूप से इस तरह के "स्पष्टीकरण" के रूप में अक्सर पाया जाता है जब इस्लाम में समस्याएं होती हैं बेहतर कहानियाँ ढूँढना। लेकिन सब के बाद संभव है। **सिवाय इसके कि कोई भगवान ऐसा नहीं बनाता गलतियाँ । और 28/38a को छोड़कर: "फिरौन ने कहा: 'हे प्रमुखों! नहीं भगवान मैं तुम्हारे लिए जानता हूँ लेकिन खुद - - -"। फिरौन एक ही समय में मिस्र में एकमात्र देवता नहीं हो सकता (जैसा कि कहा गया है बहुत गलत) और दूसरे देवता के महायाजक (हा-आमेन) को उसके दूसरे अधिकारी के रूप में नियुक्त करें। बहुतों की तरह कई बार मुस्लिम "स्पष्टीकरण" तस्वीर के केवल एक हिस्से को कवर करता है और इस तरह गलत साबित होता है। भी नीचे 38a देखें।

सवाल यह भी है कि मुहम्मद हा-आमीन के बारे में लगभग 1900 साल कैसे सुन सकते थे?
बाद में - आमीन और उसके महायाजक के एक बड़े धर्म का हिस्सा बनने के बाद, इसके विपरीत
हामान, जो यहूदियों की धार्मिक परंपराओं का हिस्सा था। यह और भी अधिक था क्योंकि वहाँ थे
उस समय अरब में हजारों यहूदी, जो मुहम्मद को बता सकते थे, लेकिन कुछ ही से
मिस्र। बेशक मुसलमान कहेंगे कि अल्लाह जानता था। परन्तु यदि किसी सर्वज्ञ अल्लाह ने यह कहा होता,
उन्होंने - जैसा कि ऊपर कहा गया है - नाम के साथ कोई गलती नहीं की थी। और अगर गलती से आई है
अल्लाह के बाद मुहम्मद ने उससे कहा था: मुहम्मद ने और कितनी गलतियाँ कीं?

00c 28/8: "- - - हामान - - -"। ऊपर 28/6 देखें।

386

पेज ३८७

००३ २८/३०: "- - - संसारों - - -"। कुरान झूठा बताता है कि 7 पृथ्वी हैं। ऊपर 26/77 देखें और
नीचे 65/12।

004 28/35: "- - - हमारी (अल्लाह की *) निशानियाँ - - -"। ऊपर 27/81, 2/39 और 2/99 देखें।

005 28/36: "- - - हमारे (अल्लाह के *) स्पष्ट संकेत - - -"। ऊपर 27/81 और 2/99 देखें।

*006 28/38a: "फिरौन ने कहा: 'हे प्रमुखों! कोई भगवान नहीं मैं तुम्हारे लिए जानता हूं लेकिन खुद - -"। ये है
वास्तव में अच्छे लोगों में से एक, क्योंकि रामसेस द्वितीय के समय मिस्र में अच्छी संख्या थी
देवताओं, एक मजबूत लिपिक संगठन के साथ कुछ केंद्रीय लोगों को शामिल किया - उल्लेख नहीं करने के लिए: How
तो ऊपर २८/६ में हा-आमीन के बारे में इस्लाम की अपनी कहानी की व्याख्या करें? (**यह कई लोगों के लिए विशिष्ट है
कुरान में गलतियों की "व्याख्या" कि मुसलमान कुछ "समझाते हैं", लेकिन हैं
फिर पुस्तक में अन्य जानकारी के साथ "टकराने" में असमर्थ** - f. भूतपूर्व। समझाते हुए
आधुनिक ब्रह्मांड के रूप में स्वर्ग बिना यह बताए कि तारों को फिर कैसे बांधा जा सकता है
निम्नतम स्वर्ग)। लेकिन मुहम्मद के समय पुराने देवताओं को कम कर दिया गया - मिस्र आंशिक रूप से था
ईसाई (वर्तमान कॉप्ट के पूर्वज)। एक असली भगवान ने यह भूल नहीं की थी, लेकिन
मुहम्मद को पता नहीं चल सका। फिर कुरान की रचना किसने की?

इस्लाम इसे दूर से समझाने की कोशिश करता है कि इसका शाब्दिक अर्थ नहीं है - केवल रामसेस द्वितीय ही थे
ऊपर। लेकिन इस मामले में कुरान क्या कहता है यह बहुत स्पष्ट है। और यह भी याद रखें कि कुरान -
और अधिकांश मुसलमान - कहते हैं कि कुरान का शाब्दिक अर्थ है जहां और कुछ नहीं कहा जाता है - - -
और यह कि किसी चीज़ को रूपक कहना या यह कहना कि यह लाक्षणिक रूप से है, हमें लगता है कि इस्लाम के लिए है
कुरान में उन चीजों/गलतियों को दूर करने का सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला साधन जिसका कोई नहीं है
व्याख्या।

00d 28/38b: "- - - हामान - - -"। ऊपर 28/6 देखें।

007 28/40: "तो हम (अल्लाह) ने उसे (रामसेस II*) और उसके यजमानों को आकार दिया, और उन्हें
समुद्र - - -"। कम से कम रामसेस II के लिए गलत - वह नहीं डूबा और वर्षों बाद उसकी मृत्यु हो गई।

008 28/43: "हमने (अल्लाह*) ने मूसा पर किताब उतारी"। गलत। मूसा को कोई किताब नहीं मिली। NS
मूसा की पुस्तकें सदियों बाद लिखी गईं - उनका नाम उनके नाम पर रखा गया। (मूसा मिल गया
10 आज्ञाएँ केवल बाइबल के अनुसार लिखित रूप में। इसके अलावा उन्हें कानून बताया गया,
जिसे उन्होंने खुद बाद में लिखा था। व्यवस्था मूसा की बाद की पुस्तकों के भाग हैं)।

009 28/45: "- - - हमारी (अल्लाह की *) निशानियाँ - - -"। कोई भी सर्वज्ञ ईश्वर अमान्य चिन्हों का प्रयोग नहीं करेगा। देखो
27/81, 2/39 और 2/99 ऊपर।

010 28/47: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०११ २८/४८अ: "- - - जब सत्य (कुरान) उनके पास आ गया (कुरैश - अग्रणी
मक्का में जनजाति*) - - -"। यदि ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि "सत्य" शब्द इतना केंद्रीय और इतना अनुपयोगी है
इस्लाम, हमने बहुत पहले इस पर टिप्पणी करना बंद कर दिया था - यह इतना स्पष्ट है कि कुरान हो सकता है
केवल आंशिक सत्य। देखिये सारी गलतियाँ - कुछ छोटी, कुछ बड़ी भूल, कुछ दोहराई गईं
कई बार और वास्तव में पुख्ता - - - **लेकिन एक सर्वज्ञ के लिए एक गलती भी असंभव है
भगवान। क्या अल्लाह सर्वज्ञ है? या किसी और ने कुरान की रचना की? अगर अल्लाह नहीं
सर्वज्ञ, इसका मतलब है कि धर्म में कुछ गड़बड़ है। अगर मुहम्मद या कोई और
मानव ने इसकी रचना की, यह एक झूठा धर्म है।**

***और अगर यह एक झूठा धर्म है और कहीं कोई वास्तविक, सच्चा धर्म है, जिसके लिए इस्लाम
अपने ईमान वालों के लिए रास्ता रोकता है - - - फिर मुसलमानों के लिए क्या?

012 28/48b: "- - - (संकेत) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०१३ २८/४९: "फिर तुम (लोगों) अल्लाह से एक किताब (कुरान*) लाओ, जो एक बेहतर मार्गदर्शक है
- - -"। गलत तथ्यों, विकृत तर्कों, अंतर्विरोधों, अवैध बयानों से भरी किताब
और जैसा कि अमान्य तर्क किसी के लिए भी अच्छा मार्गदर्शक नहीं है।

०१४ २८/५२: "(यहूदी और ईसाई) - वे इस (रहस्योद्घाटन) में विश्वास करते हैं - - -"। एकदम गलत।
कुछ मुसलमान बन गए, लेकिन भारी बहुमत को भागना पड़ा, उन्हें गुलाम बना दिया गया, या
उन्हें मार दिया गया / मार डाला गया / मार डाला गया क्योंकि उन्होंने मुहम्मद की कहानियों पर विश्वास करने से इनकार कर दिया था। सीएफआर. एफ।
भूतपूर्व। मदीना और उसके आसपास के वर्षों में क्या हुआ था इस सूरह के बाद के वर्षों में बताया गया था (621 ईस्वी में या
बाद में)। एक और जगह जहां मुहम्मद जैसा बुद्धिमान व्यक्ति जानता था कि वह झूठ बोल रहा है।

०१५ २८/५३ए: "वे (यहूदी और ईसाई) कहते हैं: 'हम उस पर विश्वास करते हैं, क्योंकि यह सत्य है
हमारे प्रभु - - -"। खैर, यही मुहम्मद ने दावा किया है। वास्तविकता जैसा कि इस्लामी में स्पष्ट रूप से बताया गया है
लिखित स्रोत जो आपको ऊपर २८/५२ में मिलते हैं - और जैसे २८/५२ में भी यहाँ मुहम्मद को
पता है वह झूठ बोल रहा था। 28/48a और 28/48b भी देखें।

016 28/53b: "- - - सत्य - - -"। कुरान केवल आंशिक रूप से ही सत्य है - बहुत सारी गलतियाँ,
आदि।

017 28/53c: "- - - वास्तव में हम (यहूदी और ईसाई*) मुसलमान रहे हैं।
अल्लाह की मर्जी) इससे पहले"। कोई टिप्पणी आवश्यक नहीं - सिवाय f देखें। भूतपूर्व। २८/५२, २८/४८ए या
28/48 बी ऊपर।

018 28/53d: "- - - इसके लिए (कुरान*) सत्य है - - -"। नहीं, इसके साथ ही कई गलतियाँ, आदि
कुरान शायद ही सच है - सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है।

019 28/53e: "- - - इसके लिए (कुरान*) हमारे रब (अल्लाह*) की ओर से सत्य है - - -।" **के साथ एक किताब
कि कई गलतियाँ, विरोधाभास और अन्य त्रुटियाँ किसी ईश्वर की ओर से नहीं हैं - सर्वज्ञ या
नहीं।**

०२० २८/५९ए: "न ही तेरा रब (अल्लाह) एक आबादी को तब तक नष्ट करने वाला था जब तक कि वह उसके पास नहीं भेज देता
एक संदेशवाहक को केंद्र में रखें - - -"। कुरान बहुत से नबियों के बारे में बात करता है - हदीस में यह है
समय और दुनिया भर में 124oooo का उल्लेख किया। (और एक असभ्य, लेकिन
प्रासंगिक अनुस्मारक: मुहम्मद वास्तविक भविष्यवाणियां करने में असमर्थ थे - वह वास्तव में नहीं थे
पैगंबर, केवल "उधार" वह बड़ा शीर्षक)। लेकिन इज़राइल के अपवाद के साथ और कुछ हद तक
फारस (और कुछ शासक जिन्होंने राजनीतिक कारणों से अपनी मर्जी से ऐसा किया + एक छोटा संप्रदाय
अरब, संभवतः यहूदियों और ईसाइयों से प्रेरित) **कहीं भी, किसी भी समय कोई निशान नहीं हैं
एकेश्वरवादी धर्मों के भविष्यवक्ताओं के बाद** - इतिहास में नहीं, पुरातत्व में नहीं, में नहीं
साहित्य, कला में नहीं, वास्तुकला में नहीं - लोककथाओं या परियों की कहानियों में भी नहीं।

*इसके अलावा: युद्ध, अकाल या अन्य आपदाओं से कई स्थान नष्ट हो गए
एक एकेश्वरवादी धर्म के लिए भविष्यवक्ताओं द्वारा दौरा किए बिना समय उन्हें पहले चेतावनी दी गई - इसके बावजूद
कुरान के कहने के अनुसार ऐसी सभी चीजें केवल अल्लाह की योजना के अनुसार होती हैं।

श्लोक गलत है। और हमें यह भी यकीन नहीं है कि ऐसा तामसिक और कठोर भगवान एक अच्छा है या
परोपकारी भगवान - जब कोई कुछ कहता या घोषित करता है, लेकिन मांग करता है या कुछ करता है

अन्यथा, हम हमेशा मानते हैं कि मांगें और कर्म सस्ते शब्दों की तुलना में अधिक विश्वसनीय हैं।
17/15 - 17/16 में इसी तरह के दावे।

021 28//59b: "- - - हमारे (अल्लाह के *) संकेत - - -"। कोई भी देवता अमान्य चिन्हों/प्रमाणों का प्रयोग नहीं करेगा। देखो 2/99.

०२२ २८/७५: "--- तब वे (गैर-मुसलमान*) जानेंगे कि सच्चाई अल्लाह में है (अकेले) - -
-"। यह आशा की जानी चाहिए कि अगर अल्लाह एक भगवान है। लेकिन कुरान से देखते हुए, ज़्यादा से ज़्यादा उसमें है आंशिक रूप से सच्चाई।

00e 28/82: "जो लोग अल्लाह को अस्वीकार करते हैं वे निश्चित रूप से कभी समृद्ध नहीं होंगे"। एक संभावित अगले जीवन के लिए चर्चा वास्तव में असंभव है - हम कुछ भी नहीं जानते हैं, और कुछ भी नहीं जान सकते हैं। कुछ कहेंगे वे जानते हैं, लेकिन वे बहुत गलत होंगे - वे जो करते हैं, वह दृढ़ता से विश्वास करना है। ज्ञान नहीं है ठोस सिद्ध तथ्यों के बिना संभव है, और इस्लाम में एकमात्र वास्तविक तथ्य यह है कि एक अकेले आदमी ने कहा ऐसी कहानियाँ जिन्हें उसने या तो अस्वीकार कर दिया था या दस्तावेज़ीकरण करने में असमर्थ था - या तो इसलिए कि कोई देवता नहीं चाहता था (अतार्किक और/या मनोवैज्ञानिक रूप से गलत बहाने के साथ) या ऐसा करने में असमर्थ था, या क्योंकि एक भगवान ने किया था मौजूद नहीं। शब्द बहुत हैं - लेकिन शब्द सस्ते हैं। बहुत सारे कथन हैं - लेकिन बिना सबूत के हवा में लटके बयान उतने ही सस्ते हैं। बहुत सारे और बहुत सारे "संकेत" हैं - लेकिन कुछ सर्वथा गलत हैं, और बाकी अल्लाह के लिए सबूत के रूप में पूरी तरह से बेकार हैं, जैसे वे वास्तव में सिर्फ अप्रमाणित दावे या हवा में लटके बयान हैं और केवल यही साबित करते हैं शब्द सस्ते हैं - **वे बयान हैं जो किसी भी धर्म में कोई भी पुजारी अपने बारे में कह सकता है भगवान या देवता, जब तक उसे वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है** - - - जैसे मुहम्मद दृढ़ता से या सरासर आवश्यकता से उत्पादन नहीं किया। और यहां तक कि छंद भी बता रहे हैं अल्लाह साबित करो। लेकिन उनमें से एक भी उसके बारे में कुछ भी साबित नहीं करता - वे उतने ही मूल्यहीन हैं जितना "संकेत" और उन्हीं कारणों से - कुछ तो स्पष्ट रूप से गलत भी हैं। विशेष रूप से हमें चाहिए उन सभी प्राकृतिक घटनाओं का उल्लेख करें जो कुरान कहता है कि वे संकेत हैं जो अल्लाह को इंगित या सिद्ध करते हैं, लेकिन एक बार भी यह साबित किए बिना कि यह वास्तव में अल्लाह ही है जो घटना को बनाता है, और इस प्रकार केवल एक चीज जो वे साबित करते हैं, वह यह है कि इस्लाम कभी भी एक भी वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत करने में सक्षम नहीं रहा है, क्योंकि किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी प्राकृतिक घटनाओं के बारे में वही सस्ते शब्द कह सकता है और उसके देवता (को) । जो आगे यह साबित करता है कि इस्लाम को अपने प्रभाव के लिए सस्ते शब्दों पर निर्भर रहना पड़ा है मंडलियां और अन्य। कोई इस बारे में अनुमान लगा सकता है कि क्यों।

*लेकिन जब इस जीवन में समृद्धि की बात आती है, तो यह स्पष्ट है कि कुरान पूरी तरह से गलत है। और इसके ऐसे ही रहने की संभावना है, क्योंकि मुस्लिम देश अपनी आधी वयस्क आबादी को ऐसा नहीं करने के लिए मजबूर करते हैं काम, और संस्कृति गैर-धार्मिक ज्ञान ("विदेशी ज्ञान") और वास्तविक के प्रतिकूल है या आलोचनात्मक सोच - जिसका अन्य प्रभावों में अर्थ है कि सभी मुस्लिम दुनिया में कम है कैलिफ़ोर्निया के एकल राज्य की तुलना में एक वर्ष में नए पेटेंट - और अंतर और भी बदतर है यदि एक चाकू-धार तकनीक या प्रौद्योगिकी के पेटेंट को देखता है। यह अन्य कारणों से हमेशा के लिए रहेगा मुस्लिम राज्यों को दोयम दर्जे की अर्थव्यवस्था में रखना, अगर उनके पास तेल जैसे प्राकृतिक साधन नहीं हैं बेचना। या यदि वे दूसरों का शोषण करने या उन पर कर लगाने के लिए पर्याप्त रूप से मजबूत नहीं होते हैं।

०२३ २८/८४: "---- बुराई करने वालों को उनके कर्मों की सजा (उस हद तक) ही मिलती है"। **चौरस रूप में गलत। अधिकांश पापियों ने जो पाप किए हैं, उनके बीच अन्याय की खाई है, और जो दण्ड उन्हें नर्क में मिलता है।**

024 28/87: "- - - अल्लाह की निशानियाँ - - -"। सभी में स्पष्ट रूप से अल्लाह को दर्शाने वाली कोई निशानी नहीं है कुरान. प्रत्येक दावा किया गया "चिह्न" किसी भी अन्य भगवान द्वारा दावा किया जा सकता है - और वास्तव में वे किसी भी देवता को नहीं दर्शाते, क्योंकि यह प्रमाणित नहीं है कि वे किसी देवता द्वारा बनाए गए हैं। (संभवतः कुछ बाइबिल से लिया गया मान्य हो सकता है, लेकिन वे मामले में यहोवा को दर्शाते हैं, अल्लाह को नहीं - मुसलमानों को पसंद है

दावा करने के लिए (बिना सबूत के मुसलमानों के लिए सामान्य) कि यहोवा और अल्लाह एक ही भगवान हैं, लेकिन शिक्षाएँ मौलिक रूप से बहुत भिन्न हैं)।

सूरह 28: कम से कम 24 गलतियाँ + 5 संभावित गलतियाँ।

सूरा 29:

*00a 29/2: "क्या पुरुष सोचते हैं - - - उनका परीक्षण नहीं किया जाएगा?" लेकिन क्यों जरूरी है किसी पर भरोसा करना अगर अल्लाह सर्वज्ञ है और सब कुछ पहले से जानता है? - पहले भी सब कुछ तय कर लेता है (in .) इस दावे के बावजूद कि मनुष्य को निर्णय लेने की (सीमित?) व्यक्तिगत स्वतंत्रता है - यद्यपि इस्लाम भी है यह समझाने में असमर्थ है कि इस कथन को कैसे जोड़ा जा सकता है कि अल्लाह सब कुछ तय करता है पहले, इस कथन के साथ कि मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा है (अजीब नहीं, क्योंकि यह समय का एक संस्करण है यात्रा विरोधाभास, और वह विरोधाभास असफल साबित होता है)) - **यदि यह सब है, तो परीक्षण क्यों हैं जवाब खोजने के लिए जरूरी है अल्लाह पहले से ही जानता है?**

००१ २९/१५: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

002 29/23: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

003 29/28a: "- - - लूत (लूत*); निहारना, उसने अपने लोगों से कहा (सदोम के लोग और अमोरा*) - - -।" गलत। एक बात के लिए वे लोग लूत के "स्वाभाविक" लोग नहीं थे, जैसे कि वह बहुत दूर से अजनबी था
मृत सागर के पास), और दूसरे के लिए बाइबल और कुरान दोनों यह स्पष्ट करते हैं कि वह भी उन समुदायों का एक प्राकृतिक सदस्य नहीं था - वह एक बाहरी व्यक्ति था। (हो सकता है कुरान बताता है कि वे उसके लोग थे ताकि यह कह सकें कि वह अपने लोगों के लिए एक नबी था, जैसे वे झूठा दावा करते हैं कि हर भविष्यवक्ता था - यूसुफ (मिस्र), मूसा (सिनाई 40 वर्ष) के बावजूद, इब्राहीम (कनान), लूत (मृत दृश्य क्षेत्र), योना (निनवे)।

004 29/28b: "क्या तुम (सदोम और अमोरा के पुरुष) अश्लीलता (समलैंगिकता*) करते हो, जैसा कि सृष्टि के किसी भी व्यक्ति ने (हमेशा) आपके सामने नहीं किया। " गलत। समलैंगिकता थी कुछ भी नया नहीं - यह कुछ "उच्च" जानवरों के बीच भी मौजूद है, कभी-कभी प्रभुत्व के संकेत के रूप में - और यह मानवता के एक छोटे से हिस्से के डीएनए में है। यदि इस्लाम उनके इस दावे पर कायम रहता है कि यह कुछ "मानवता में कोई भी व्यक्ति (कभी) पहले प्रतिबद्ध नहीं था", उन्हें इसे साबित करना होगा।

005 29/35: "- - - एक स्पष्ट संकेत - - -।" अल्लाह के लिए कोई स्पष्ट या स्पष्ट संकेत नहीं हैं - या इसके लिए एक ईश्वर से मुहम्मद का संबंध - सभी कुरान में। 2/99 देखें।

00b 29/39a: "- - - हामान - - -"। 28/6 देखें।

006 29/44a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

007 29/44b: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

*008 29/45: "- - - अल्लाह की याद निःसंदेह सबसे बड़ी (जीवन की वस्तु) है।" वहाँ है इस बारे में बहुत संदेह है अगर उसने कुरान की रचना की है - गलतियाँ साबित करती हैं कि वह मामले में बहुत है सर्वज्ञता से दूर, बेकार "संकेत" और "सबूत" साबित करते हैं कि वह तार्किक में बहुत अच्छा नहीं है सोच, और अमान्य बहाने का उपयोग और अपने अस्तित्व के सबूत भेजने में असमर्थता, साबित करता है कि वह सर्वशक्तिमान नहीं है। और अगर किसी और ने कुरान बनाया, तो शक और भी बड़ा है, तब कुरान और इस्लाम दोनों का कोई मूल्य नहीं है - या नकारात्मक मूल्य के साथ, जैसे अधिकांश धर्म अमानवीय है (उदाहरण के लिए युद्ध, आतंकवाद, सभी गैर-मुसलमानों का दमन,

महिलाओं का दमन और उनमें से कई का बलात्कार करने की आजादी, गुलामी और दुश्मनी के बारे में विचार गैर-मुसलमानों के प्रति)।

***009 29/46: "- - - हमारा (मुसलमान*) और आपका (यहूदी और ईसाई*) ईश्वर एक है - - -"। ये है सही नहीं है जब तक कि वह सिज़ोफ्रेनिया न हो, क्योंकि बहुत सारे मूलभूत पहलू बहुत भिन्न हैं दो शिक्षाओं के बीच। कुछ बिंदुओं का उल्लेख करने के लिए:

इस्लाम:	नया नियम:
अच्छे कारण के बिना मत मारो।	मारो नहीं।
युद्ध करना धर्म कर्तव्य है।	मारो नहीं।
एक आखँ के लीए एक आखँ।	बदला न लेना
आप दूसरे का बोझ नहीं उठा सकते।	अपने साथी आदमी का बोझ उठाओ।
धर्म देश को चलाएगा।	मेरी जमीन इस दुनिया की नहीं है।
अल्लाह के लिए मारे जाओ और जन्नत में जाओ।	जन्नत में जाने के लिए बच्चे समान बनो।

जन्नत=पृथ्वी-सदृश विलासिता प्लस नारी	जन्नत=स्वर्ग आपकी आत्मा के लिए।
(महिलाओं के लिए = विलासिता और का एक हिस्सा पति)।	(महिलाओं के लिए = आपकी आत्मा के लिए स्वर्ग।)
जन्नत = पुनर्जीवित शरीर।	जन्नत = आत्मा रहती है।
अच्छे कारण के अलावा झूठ मत बोलो।	झूठ मत बोलो।
अविश्वासी का शोक मत करो।	"खोया हुआ भेड़ का बच्चा"।
एक शपथ तोड़ो और इसके लिए नुकसान का भुगतान	**किसी** भी जई को तोड़ना घोर पाप है।
अल-तकिया - मुसलमानों का वैध झूठ।	झूठ मत बोलो।
लूटना और चोरी करना "अच्छा और" हो सकता है वैध"	चोरी मत करो।
एक महिला दास का बलात्कार करना "अच्छा और" है वैध"।	इतना अनैतिक कि इसका जिक्र तक नहीं है।
स्वर्ग में योग्यता हासिल करने में दूसरों की मदद करें।	दूसरों की मदद करें क्योंकि उन्हें इसकी आवश्यकता है - और योग्यता प्राप्त करें स्वर्ग में।

(उन लोगों के लिए जो नहीं जानते: यीशु ने कहा था कि अगर कोई तुम्हारे एक गाल पर मारो, तो दूसरे को फेर दो उसके प्रति = ऐसा न करना और बुरे का उत्तर अच्छे से देना । और: यीशु ने कहा कि एक चरवाहा खोए हुए मेमने की तलाश करना = खोई हुई आत्मा को बचाना बहुत मूल्यवान है, और इसका कारण है बचाए नहीं गए लोगों के लिए शोक मनाओ।)

हम जानते हैं कि दोनों धर्मों का दुरुपयोग किया गया है - हालांकि एक गंभीर अंतर के साथ: क्राइस्ट ने उनकी शिक्षाओं के विरोध में दुरुपयोग किया गया है, इस्लाम अक्सर इसके अनुसार शिक्षाओं, कुरान के अक्सर खूनी धर्म और वास्तविक नैतिकता की कमी के कारण। वाक्य ऊपर कुछ शिक्षाएँ हैं - कुछ मूल बातें।

केवल इस्लाम कहता है कि यह वही ईश्वर है - और वे गलत हैं, जब तक कि ईश्वर मानसिक रूप से बीमार न हो।

010 29/47a: "- - - हम (अल्लाह*) ने किताब (कुरान*) - - - उतारी है। किसी भगवान ने कभी नहीं भेजा एक किताब के साथ कई गलतियों, आदि - उल्लेख नहीं करने के लिए इसे अपने "घर" के रूप में सम्मानित किया मदर बुक।

011 29/47b: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

012 29/49a: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

013 29/49b: "- - - हमारे संकेत - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

014 29/52: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22 देखें।

०१५ २९/५४: "- - - एक ज़मानत के, नर्क ईमान के इनकार करने वालों (गैर-मुस्लिम*) को घेर लेगा (इस्लाम*)।" नहीं, यह कोई निश्चितता नहीं है कि कुरान की सभी गलतियों ने एक पाठक की दृढ़ता को कम कर दिया है धर्म की वास्तविकता में विश्वास। **इससे भी अधिक: अगर किसी ने कुरान को बनाया है, और एक और, वास्तविक धर्म मौजूद है, मुहम्मद और इस्लाम को अस्वीकार करने वालों के पास एक मौका है उस धर्म को खोजने का।**

०१६ २९/६१ए: "यदि आप वास्तव में उनसे पूछें कि किसने आकाश बनाया है (बहुवचन और गलत - जैसे कि कुरान में कम से कम 198 अन्य स्थान) और पृथ्वी - - - वे (गैर-मुस्लिम*) निश्चित रूप से उत्तर, 'अल्लाह'"। गलत। अगर वे मानते हैं कि एक भगवान ने इसे बनाया है, तो वे निश्चित रूप से अपना नाम रखेंगे भगवान (जो पुराने अरब में बहुदेववादी अल-लाह हो सकता है)।

017 29/61b: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०१८ २९/६३: "और यदि तुम उनसे (गैर-मुसलमानों) से पूछो कि वह कौन है जो यहाँ से बरसता है आकाश - - - वे निश्चित रूप से उत्तर देंगे, 'अल्लाह'"। गलत। ऊपर 29/61 देखें।

019 29/68: "- - - सत्य को खारिज करता है (कुरान*) - - -"। गलत। इतने सारे के साथ

गलतियाँ, यह अधिकतम आंशिक रूप से सत्य है।
०२० २९/६९: "और जो लोग हमारे (कारण) में प्रयास करते हैं - हम (अल्लाह *) निश्चित रूप से उनका मार्गदर्शन करेंगे
हमारे रास्ते - - -"। कुरान में इतना गलत होने के साथ, संभावना है कि यह भी गलत है। कम से कम
यह निश्चितता से बहुत दूर है।

सूरह 29: कम से कम 20 गलतियाँ + 2 संभावित गलतियाँ।

सूरा 30:

001 30/2-4: "रोमन साम्राज्य (बीसेंट्ज़/कॉन्स्टेंटिनोपल) पराजित हो गया है (फारस द्वारा*)
पास की भूमि में (दमिश्क ६१३ ई., यरुशलम ६१४ ई., मिस्र ६१५-६१६ ई. - एक हो सकता है
६१५ ईस्वी में सीरिया में लड़ाई - बस अपनी पसंद चुनें (सूरह ६१५ या ६१६ ईस्वी से है)); लेकिन वे,
(यहां तक) इसके बाद (इस) उनकी हार जल्द ही विजयी होगी - कुछ ("बोली") वर्षों के भीतर।
६२८ ईस्वी में बिसांट्ज़ ने फारस को हराया, जब उन्होंने पहली बार की शुरुआत में कई हार का सामना किया था
युद्ध।

1. 1. अरब शब्द "बोली" का अर्थ है "कुछ" और
"अर्थात् संख्या 3 से कम नहीं, अधिक नहीं"
9 से "इस सूरह के लिए टिप्पणी 2 के अनुसार"
"कुरान के संदेश" में। यह ले लिया
कम से कम 12 साल।
2. यह उनके अनुयायियों के लिए एक उत्साहवर्धक बात थी। कोई नहीं -
स्वयं मुहम्मद ने भी नहीं - कहा कि यह

एक भविष्यवाणी थी - - - सिवाय इसके कि कई
मुसलमान बाद में ऐसा कहते हैं।
3. कुरान से साफ है कि
मुहम्मद के पास होने का उपहार नहीं था
भविष्यवाणी करने में सक्षम (एक प्रकार का चमत्कार),
और यह इतना स्पष्ट है कि उसने कभी दिखावा भी नहीं किया
या उस उपहार के होने का दावा किया। यह सिर्फ था
(कुछ) मामलों में से एक जहां सब से थोड़ा सा
उन्होंने कहा कि उनके जीवन के माध्यम से आने के लिए हुआ
आंशिक रूप से सच (वास्तव में: इतना कि उसने कहा और
बोले यह चमत्कार है कि अब और नहीं हुआ
सच होने के लिए - और इस मामले की तुलना में अधिक सच है।
और एनबी: यह एकमात्र भारी दावा इस्लाम है
उसके बारे में भविष्यवाणी करने में सक्षम है
(हालांकि अन्य दावे हैं)। वहां एक
उसके बारे में सिद्धांतों और दावों की संख्या
वह क्षमता जिसके बारे में उसने कहा था कि उसने दावा नहीं किया या या
खुद के होने का दिखावा करें, लेकिन यही एकमात्र है
one इस्लाम को "भारी" दावा माना जाता है।
एक बार - लगभग - जीवनकाल में = एक नबी?

002 30/8: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

003 30/9: "- - - स्पष्ट (संकेत) - - -"। अल्लाह और इस्लाम के बारे में स्पष्ट संकेत मौजूद नहीं हैं
कुरान. **किसी को आश्चर्य हो सकता है कि मुहम्मद ने अवैध प्रमाणों का उपयोग क्यों किया - अवैध प्रमाण और तर्क आम तौर पर धोखेबाजों और ठगों की पहचान होते हैं। यह की कमी को भी इंगित करता है वास्तविक तथ्य और प्रमाण।** 2/39 देखें।

004 30/10: "- - - अल्लाह के लक्षण - - -"। किसी सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर ने दृढ़ता से प्रयोग नहीं किया था
खुद को साबित करने के लिए संदिग्ध "संकेत", आदि का उल्लेख नहीं करने के लिए, उन्होंने अपना नाम मजबूत करने के लिए जोड़ा
दावा। 2/39 भी देखें।

005 39/16: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

006 30/18: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

007 30/20: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

*008 30/20: "उसकी (अल्लाह की) निशानियों में यह है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया---"। गलत। मनुष्य धूल से नहीं बनाया गया था - वास्तव में वह विज्ञान के अनुसार बिल्कुल भी नहीं बनाया गया था। 6/2 देखें। इस तथ्य में एक अतिरिक्त विडंबना है कि कुरान "साबित" करने के लिए गलत जानकारी के एक टुकड़े का उपयोग करता है। अल्लाह। वास्तविकता का विरोधाभास।

009 30/21a: "- - -उसके संकेत - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०१० ३०/२१बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०११ ३०/२२अ: "और उसकी (अल्लाह की) निशानियों में से है आकाशों की रचना (बहुवचन और गलत) - - -"। बहुत स्पष्ट रूप से एक गलत प्रमाण - एक गलत "चिह्न" - क्योंकि कोई 7 स्वर्ग नहीं हैं। विडंबना? पर कम से कम वास्तविकता का विरोधाभास।

012 30/22b: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

013 30/22c: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

014 30/23a: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०१५ ३०/२३बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

016 30/24a: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०१७ ३०/२४बी: "- - - वह (अल्लाह*) आसमान से बारिश भेजता है और इसके साथ पृथ्वी को जीवन देता है उसके मर जाने के बाद बेशक उसमें निशानियाँ हैं (अल्लाह के लिए) जो बुद्धिमान हैं।" गलत। अगर बस पानी ने पृथ्वी को जीवित कर दिया, इसका मतलब था कि यह सिर्फ मृत दिख रही थी, लेकिन बीज के साथ जीवित थी, आदि। और जो बुद्धिमान हैं वे अल्लाह के लिए सबूत के रूप में संदिग्ध "तथ्यों" का उपयोग करने में विडंबना देखेंगे।

018 30/24c: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

019 30/25: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२० ३०/२६: "- - - सभी (प्राणी*) उसके (अल्लाह*) के आज्ञाकारी हैं।" गलत। नहीं गैर-मुसलमान पूरी तरह से अल्लाह का आज्ञाकारी है। और कोई भी मुस्लिम पापी किसी का भी निष्ठापूर्वक आज्ञाकारी नहीं है भगवान। इस्लाम को यह भी साबित करना होगा कि सभी गैर-मनुष्यों में भी कीड़े और स्लग शामिल हैं और रोगाणु - उसके प्रति समर्पित रूप से आज्ञाकारी हैं। हां, उन्हें यह भी साबित करना होगा कि सभी मुसलमान उसके प्रति निष्ठापूर्वक आज्ञाकारी हैं, पाखंडी नहीं।

021 30/27: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०२२ ३०/२८: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२३ ३०/३०ए: "- - - अल्लाह के काम (गढ़ा) में कोई बदलाव (होने दें): वह (इस्लाम) है मानक धर्म - - -"। कोई भी "मानक" धर्म इतने सारे लोगों वाली किताब पर आधारित नहीं हो सकता है स्पष्ट गलतियाँ। और उम्मीद है कि कोई भी "मानक" धर्म नफरत, दमन और पर आधारित नहीं हो सकता है रक्त। (यह पैराग्राफ एक कारण है कि इस्लाम क्यों कहता है - या दिखावा करता है - कि कुरान है सही है, और क्यों इस्लाम सबसे स्पष्ट गलतियों को भी स्वीकार नहीं कर सकता - सभी गलतियाँ होनी चाहिए "समझाया" दूर, क्योंकि अल्लाह के काम में कोई बदलाव नहीं हो सकता - कुरान)।

00a 30/30b: "- - - अल्लाह द्वारा किए गए काम (गढ़ा) में कोई बदलाव नहीं (होने दें): वह (इस्लाम) है मानक धर्म: लेकिन अधिकांश मानव जाति नहीं समझते हैं"। असभ्य, लेकिन अधिकांश प्रासंगिक, प्रश्न यह है: क्या यह वास्तव में गैर-मुसलमान हैं जो समझ गए हैं? - समझा कि कुछ गलत हो सकता है।

००बी ३०/३२: "जो लोग अपने धर्म को तोड़ते हैं, और (मात्र) संप्रदाय बन जाते हैं - - -"। हम हो चुके हैं बताया कि कुछ 3००० मुस्लिम संप्रदाय मौजूद हैं और मौजूद हैं। हम सत्यापित करने में सक्षम नहीं हैं संख्या, लेकिन यह स्पष्ट है कि काफी संख्या में हैं - सऊदी अरब में वहाबवाद से और सख्त,

अमदियास और अन्य को। यह भी स्पष्ट है कि इतिहास के माध्यम से और भी बहुत कुछ हुआ है -
कुछ को खून में भी मिटा दिया गया है, क्योंकि धर्म में कोई बाध्यता नहीं है, के अनुसार
इस्लाम। जैसा कि कुरान को बहुत स्पष्ट और समझने में आसान कहा गया है, एक अनुचित प्रश्न
is: कौन सा संप्रदाय इसे सही ढंग से समझता है? - और बाकी सभी इसे क्यों समझते हैं
अलग तरह से? - और आखिरी, लेकिन बहुत कम से बहुत दूर: वास्तव में सही समझ क्या है?

०२४ ३०/३७: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२५ ३०/४२: "पृथ्वी के माध्यम से यात्रा करें और देखें कि आपके सामने उन लोगों का अंत क्या था (गैर-मुसलमान) - - -।" मध्य पूर्व में यहाँ-वहाँ खंडहर थे। मुहम्मद ने दावा किया कि वे सभी दंडित लोगों में से थे क्योंकि वे गैर-मुस्लिम और पापी थे। एक शुष्क और में युद्धरत और सामंती कबीलों से बसा कठोर इलाका, खाली होने के और भी कई कारण थे मकानों। इस्लाम को इस दावे के लिए पुख्ता सबूत देने होंगे कि वे सभी इसी का परिणाम थे धार्मिक अविश्वास, अगर वे इस बिंदु पर विश्वास करना चाहते हैं।

00c 30/43: "- - - सही धर्म (इस्लाम) - - -"। क्या यह संभव है कि सही धर्म हो सकता है एक किताब पर आधारित है जिसमें कई गलतियाँ हैं, जो एक अरब विक्रेता द्वारा दोहराई या की गई हैं, हाइवेमैन, हत्यारा (उसने कम से कम 26 विरोधियों और अन्य लोगों को हत्या करने दिया - इब्न इशाक नाम 10 उनमें से), अत्याचारी और बलात्कारी (वह - लगभग 60 वर्ष की आयु में - कम से कम नवविवाहित के साथ बलात्कार किया, 17 वर्ष पुराने सफीजा ने अपने पति किनाना को मौत के घाट उतार दिया था, और रैहाना बिन्त अमरो उसके परिवार के पुरुष हिस्से की हत्या करने और बाकी को गुलाम बनाने के बाद।) इसके लिए स्रोत जानकारी: मुहम्मद इब्न इशाक: "पैगंबर मुहम्मद का जीवन" - इस्लाम में सबसे अधिक मुहम्मद के बारे में पुराने (मृत 768 ईस्वी) लेखकों का सम्मान। (यह दूसरे के लिए लिखा गया था बगदाद, मंसूर में अब्बासी खलीफा, लगभग 750 ई.) न तो अरब सेल्समैन, न ही हाईवेमैन, न यातना देने वाले, न हत्यारे, न ही बलात्कारी होने के लिए सबसे अच्छी प्रतिष्ठा है ईमानदार (भले ही इस्लाम जोर दे कि वह था, लेकिन इस्लाम शायद ही उस पर सबसे विश्वसनीय स्रोत है बिंदु)। यह अरब सेल्समैन, हाइवेमैन, अत्याचारी, हत्यारा और बलात्कारी और अमानवीय सरदार, अपनी कहानी के लिए एक भी छोटा सा सबूत पेश करने में असमर्थ था। लेकिन उसने (?) बहुत सारे का उत्पादन किया ढीले बयान और अमान्य "संकेत" और "सबूत"।

वह एकमात्र स्रोत है जिस पर इस्लाम बना है।

क्या यह "सही धर्म" हो सकता है?

०२६ ३०/४६ए: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

027 30/46बी: "- - - खुशखबरी - - -"। गलत। सबसे अच्छे से कोई कह सकता है कि कुरान लूट और दासों के चाहने वाले सब बुरे योद्धाओं के बीच, और उनके बीच में एक खुशखबरी लाया कुछ लोग किसी धर्म के लिए तरसते हैं - - - अगर ऐसा इसलिए नहीं होता क्योंकि कुरान खुद 100% साबित करता है कि किताब में कुछ बहुत गलत है। इतना गलत कि इसे न तो कोई बनाया जा सकता है और न ही किसी के द्वारा प्रतिष्ठित किया जा सकता है भगवान - एक छोटे से छोटे भगवान द्वारा भी नहीं। इसके लिए किताब में बहुत कुछ गलत है।

०२८ ३०/४७अ: "हम (अल्लाह) ने वास्तव में तुम्हारे (मुहम्मद*) दूतों को तुम्हारे पास भेजा था। (संबंधित) लोग - - -"। कुरान बताता है कि अल्लाह ने भी सभी लोगों को नबी भेजे थे हर समय - हदीस (इस्लाम के बारे में "ज्ञान" का दूसरा मुख्य "स्तंभ") 124oo का उल्लेख करें, और वह भी केवल एक प्रतीकात्मक संख्या हो सकती है। लेकिन न तो में पुरातत्व में, न ही वास्तुकला में (भवन निर्माण के लिए पुन: उपयोग किए गए मंदिर या पत्थर), न ही साहित्य में, न इतिहास, न लोककथाएं, न ही परियों की कहानियों में भी उनके थोड़े से निशान हैं भविष्यद्वक्ता। **कि इतने सारे भविष्यद्वक्ता एक निशान की फुसफुसाहट भी न छोड़ें - स्पष्ट रूप से नहीं।**

029 30/47b: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। ऊपर 2/99 देखें।

०३० ३०/४८: "- - - तो क्या वह (अल्लाह) उन्हें (बादलों*) आकाश में फैला देता है जैसा वह चाहता है, और उन्हें टुकड़ों में तोड़ दो, जब तक कि आप उनके बीच से बारिश की बूंदों को जारी न देखें - - -"। **यह है इससे अधिक गलत होना संभव नहीं है।** क्या होता है कि बादल टूट नहीं जाते,

लेकिन इसके ठीक विपरीत: वह बूंदें आपस में मिलकर बूंदें बनाती हैं। और टिप्पणी नहीं। परंतु
कोई भी भगवान बेहतर जानता था।

०३१ ३०/५३: "- - - हमारा (अल्लाह *) चिन्ह (ओं) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। 2/39 और 2/99 देखें
के ऊपर।

०३२ ३०/५८: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

033 30/60: "- - - अल्लाह का वादा सच है - - -"। अल्लाह के वादों के माध्यम से व्यक्त कर रहे हैं
मुहम्मद और कुरान। मुहम्मद के अनुसार अत्यधिक संदिग्ध नैतिकता के व्यक्ति थे
इस्लामी धार्मिक और ऐतिहासिक (कुरान, हदीस, इब्न इशाक का उल्लेख करने के लिए उनके कर्मों को बताया गया)
सबसे केंद्रीय वाले) साहित्य। दूसरा उस आदमी द्वारा निर्देशित एक किताब है, और इसमें विशाल
गलतियों की संख्या, मुड़ तर्क, मुड़ तर्क, अमानवीय नैतिकता और नैतिक, आदि, आदि।
इस्लाम को मानने के लिए असली सबूत लाने होंगे - और इस्लाम अब तक नहीं कर पाया है
कुछ भी मौलिक साबित करें - - - वे इसके बजाय महिमामंडित करते हैं और भोले अंध विश्वास पर जोर देते हैं।

सूरह ३०: कम से कम ३३ गलतियाँ + ३ संभावित गलतियाँ।

अब तक का सबटोटल: कम से कम 1076 गलतियाँ + 142 संभावित गलतियाँ।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 4, खंड 5 (= II-1-4-5)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। NS "पूर्ण" सूची - "विश्वकोश" - सूरह पर आधारित और पद संख्या

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें।
धारा 1 से 16.

कुछ स्पष्ट तथ्य गलतियाँ और सूरह में त्रुटियाँ ३१ से ४० . तक कुरान में - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

टिप्पणियों को ३ नंबरों (०० या ० सहित) द्वारा क्रमांकित किया गया, कुछ स्थानों के बाद एक छोटा
पत्र = स्पष्ट गलतियाँ। टिप्पणियों की संख्या 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षर (बड़ा या .)
छोटा) = संभावित गलती।

सूरा 31:

००१ ३१/२: "ये बुद्धिमान पुस्तक के छंद हैं"। एक किताब जिसमें बहुत सारी गलतियाँ हैं और

अप्रमाणित, सस्ते शब्दों के अलावा कुछ भी नहीं पर आधारित बहुत सारे और बहुत सारे निराधार बयान हैं
कोई बुद्धिमान पुस्तक नहीं और कोई पुस्तक "ज्ञान से भरी" नहीं। यह रोगसूचक हो सकता है कि इसका नाम
सूरह, लुकमान, कुछ अरब परियों की कहानियों में एक बुद्धिमान व्यक्ति का नाम है।

002 31/3ए: "एक गाइड - - -"। ऊपर 31/2 देखें। ऐसी पुस्तक भी कोई अच्छी मार्गदर्शक नहीं है।

००३ ३१/३बी: "और यह (कुरान) निश्चित रूप से - - - ईमान लाने वालों के लिए एक दया है।" इसके साथ
ज्ञान से घृणा (धार्मिक और संबंधित ज्ञान को छोड़कर - f. पूर्व खगोल विज्ञान से .)
धार्मिक तिथियों, विशेष दिनों, आदि का बिल्कुल पालन करें), नफरत और युद्ध की इसकी मांग, इसका अंधेरा और
जीवन के सभी पहलुओं पर पूर्ण प्रभुत्व, आदि, - और इसके आधे सदस्यों का दमन
महिलाओं) - यह ईमान वालों के लिए भी कोई दया नहीं है।

*००४ ३१/३०: "- - - अल्लाह (एकमात्र) वास्तविकता है - -।" केवल तथ्य जो वास्तविकताओं के बारे में हैं
अल्लाह, क्या उसका वजूद कभी साबित नहीं होता, उस पर विश्वास सिर्फ अंध विश्वास पर टिका है, और
उसके बारे में सभी ज्ञान (या आविष्कृत कहानियों?)
संदिग्ध नैतिकता और नैतिकता, और एक आदमी अपनी शपथ को भी तोड़ने को तैयार है अगर वह बेहतर देता है
परिणाम, और जिसने कहानियों को अपनी शक्ति के मंच के रूप में इस्तेमाल किया।

दरअसल: अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक द्वारा प्रमाणित किताब "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अनुसंधान अकादमी (इस तरह मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक
विषयों) दिनांक २७. दिसंबर १९९८ के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं
अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि
अल्लाह के लिए कोई पुतला नहीं है और उसे पटाना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है
के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है।

005 31/5: "ये (मुसलमान*) (सच्चे) मार्गदर्शन पर हैं - - -"। बहुत सारी गलतियों वाली किताब,
मुड़ तर्क, मुड़ तर्क के रूप में, और बहुत ही संदिग्ध नैतिकता वाले व्यक्ति द्वारा निर्देशित और
सत्ता के अपने मंच की रक्षा और विस्तार करना - उसका स्वघोषित धर्म - कोई विश्वसनीय नहीं है
मार्गदर्शन और संदिग्ध सत्य का। इसे विश्वसनीय बनाने के लिए और सबूतों की जरूरत है।

006 31/9: "अल्लाह (कुरान*) का वादा सच है"। ऊपर 32/5 देखें।

**007 31/10a: "उन्होंने बिना किसी स्तंभ के आकाश (बहुवचन और गलत) बनाया जो आप कर सकते हैं
देख - - -"। कुरान बताता है कि 7 स्वर्ग अदृश्य स्तंभों पर टिके हैं (बेशक उन्हें जरूरत है
खम्भे - नहीं तो गिर पड़ेंगे!!!) आजकल तो इस्लाम भी जानता है कि यह गलत है, और
बयानों को दूर समझाया जाना चाहिए। हमारे पास एफ. पूर्व इस्लामी जानकारी से कहा गया है
इंटरनेट पर केंद्र जो: "- 60 से अधिक आईक्यू वाले सभी लोग निश्चित रूप से समझते हैं कि
इसका मतलब है कि खंभे मौजूद नहीं हैं"।

लेकिन हम "अदृश्य" और "मौजूद नहीं" के बीच का अंतर अच्छी तरह से जानते हैं।

हमें यह भी याद है कि कुरान - और इस्लाम और मुसलमान - कहते हैं कि किताब होना
शाब्दिक रूप से समझा जाता है, (यदि और कुछ नहीं कहा जाता है)।

008 31/10b: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

397

पेज 398

009 31/10a: "उसने पृथ्वी पर पहाड़ों को स्थापित किया - - -"। पहाड़ सेट नहीं हैं (दूसरा स्थान)
कुरान यह भी कहता है "सेट डाउन") - वे बिना किसी अपवाद के बड़े हो गए हैं।

010 31/10c: "उसने पृथ्वी पर पहाड़ों को स्थिर खड़ा किया, ऐसा न हो कि वह तुम्हारे साथ हिल जाए - - -"।
कुछ मुस्लिम विद्वानों का कहना है कि यह (गलत) खतरे को संदर्भित करता है कि पैनकेक की तरह (?), फ्लैट
डिस्क जो कि पृथ्वी है, हिलना शुरू कर सकती है, फिर गिर सकती है और मुड़ सकती है और आपको छोड़ सकती है। लेकिन फिर भी अगर
हम इस्लाम के आधुनिक "व्याख्या" को स्वीकार करते हैं - कि इसका संबंध भूकंप से है, यह है
पूरी तरह से ग़लत। पहाड़ भूकंप में बाधा नहीं डालते हैं। इसके विपरीत: भूकंप बहुत
अक्सर उन्हीं प्रक्रियाओं से जुड़े होते हैं जो पहाड़ों का निर्माण करती हैं, चाहे वह विवर्तनिक हो या
ज्वालामुखीय गतिविधि (जब हम विवर्तनिक गतिविधि के संबंध में "अक्सर" कहते हैं, तो इसका कारण है
भूकंप भी टेक्टोनिक प्लेटों से बने होते हैं जो बिना एक-दूसरे के एक-दूसरे के पीछे खिसकते हैं
पहाड़ों का निर्माण)। तथ्य यह है कि कुछ मामलों में पहाड़ - या बड़ी किस्मों की वजह से

पहाड़ों में झीलें या बर्फ का द्रव्यमान - अलग-अलग वजन भूकंप का कारण बन सकता है (स्रोत:
न्यू साइंटिस्ट)। (पृथ्वी के उत्तरी भाग में कुछ और भूकंप हैं
सर्दियों के दौरान बर्फ के भार के कारण, और अक्सर अधिक हिमपात होता है
तराई की तुलना में पहाड़ - स्रोत: न्यू साइंटिस्ट।)

00a 31/11: "अल्लाह की रचना ऐसी है: अब मुझे (अल्लाह) दिखाओ कि वहाँ क्या है
उसके अलावा बनाया है - - -।" हमें पहले दिखाओ अगर अल्लाह के पास हर चीज के बारे में सभी सस्ते शब्द हैं
सृजित, सत्य हैं - केवल खोए और आसान शब्द हैं जो कोई भी अपने भगवान के बारे में उपयोग कर सकता है,
निःशुल्क। सभी गलतियों और मुड़ शब्दों और तर्क के साथ और यहां तक कि कुछ स्पष्ट झूठ के साथ
(च. उदाहरण के लिए कि चमत्कार किसी को विश्वास नहीं करेंगे) कुरान पर बनाया गया है, यह भी गलत हो सकता है।

011 31/16: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

012 31/20a: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०१३ ३१/२०बी: "- - - बिना किताब के (कुरान* की तरह) उन्हें प्रबुद्ध करने के लिए"। इसका तात्पर्य है कि
कुरान कुछ लोगों को प्रबुद्ध करता है - लेकिन एक किताब जिसमें कई गलतियाँ आदि हैं, किसी को भी प्रबुद्ध नहीं करती हैं।
यह भी ध्यान दें कि मुहम्मद लिखित शब्दों को कितना महत्व देते हैं - एक किताब एक सबूत लगती है
उसके लिए धर्म में कुछ के लिए।

014 31/21 "- - - (रहस्योद्घाटन) जो अल्लाह ने उतारा है - - -"। क्या कोई सर्वज्ञ भगवान हो सकता है
इतनी गलतियों के साथ पाठ संदेश भेजे? असंभव।

015 31/22: "- - - सबसे भरोसेमंद हाथ (कुरान और अल्लाह*) - - -"। लेकिन एक किताब
इतनी सारी गलतियों के साथ, आदि - और यहां तक कि कुछ चमकदार झूठ भी (जैसे कि चमत्कार नहीं करेंगे)
बहुत से लोग मानते हैं) - भरोसेमंद नहीं है।

016 31/25a: "यदि आप उनसे पूछें कि वह कौन है जिसने स्वर्ग बनाया (बहुवचन और एक बार फिर गलत)
और पृथ्वी, वे निश्चित रूप से कहेंगे, 'अल्लाह'। गलत। अगर वे मानते हैं कि किसी भगवान ने इसे बनाया है, तो वे
निश्चित रूप से अपने स्वयं के भगवान का नाम लेंगे - हालांकि पुराने अरब में यह हो सकता था
बहुदेववादी भगवान अल-लाह।

***(अल-लाह और अल्लाह के उच्चारण की समानता बोली जाने पर अंतर छुपाती है -
ठीक उसी तरह जब मुसलमान गैर-मुसलमानों से बात करने के लिए अल्लाह के बजाय ईश्वर शब्द का इस्तेमाल करते हैं - यह
सतह पर अल्लाह और के बीच कुछ मूलभूत अंतरों को छुपाता है
भगवान / यहोवा कम ज्ञान वाले लोगों के लिए)।

017 31/25b: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

398

पेज 399

018 31/27: "- - - अल्लाह है - - - ज्ञान से भरा हुआ।" नहीं अगर कुरान उसके लिए प्रतिनिधि है
बुद्धि।

019 31/29a: "- - - अल्लाह रात को दिन में मिला देता है और वह दिन को रात में मिला देता है - - -।" ये है
प्राकृतिक घटनाओं में से एक मुहम्मद ने बिना किसी सबूत या दस्तावेज के अपहरण कर लिया। यह है
अल्लाह के लिए सबूत के रूप में किसी भी मूल्य से पूरी तरह से शून्य जब तक यह साबित नहीं हो जाता कि यह वास्तव में अल्लाह है
पृथ्वी को सूर्य से प्रकाश में घुमाता है - दिन और रात के प्रत्यावर्तन का वास्तविक कारण।
ऐसे सबूतों के बिना, यह सस्ते, बेकार शब्दों की एक और संख्या है जो कोई भी कर सकता है
अपने भगवान के लिए निः शुल्क उपयोग करें।

०२० ३१/२९बी: "- - - उसने (अल्लाह*) ने सूरज और चाँद को (अपने कानून के अधीन) - - -"। अच्छा
अल्लाह के लिए सबूत - - - लेकिन केवल अगर यह साबित हो जाए कि वास्तव में वही है जो उन्हें अपने में ले जाता है
प्रक्षेप पथ इस तरह के सबूतों के बिना, ये सिर्फ एक बेकार दावे में सस्ते शब्द हैं जो कोई भी कर सकता है
पूरी तरह से निः शुल्क उपयोग करें - अल्लाह के लिए या किसी अन्य भगवान के लिए, वास्तविक या आविष्कार।

०२१ ३१/२९सी: "क्या तुम नहीं देखते - - - कि उसने (अल्लाह) सूरज और चाँद को अपने अधीन कर लिया है
कानून), प्रत्येक अपना पाठ्यक्रम चला रहा है - - -।" गलत। पृथ्वी के सापेक्ष सूर्य स्थिर है और यह है
गतिमान पृथ्वी। ("स्पष्टीकरण" कुछ मुसलमानों से: हम इस तथ्य को छोड़ देते हैं कि यह यहाँ बात कर रहा है
पृथ्वी और सूर्य के बीच सापेक्ष गति के बारे में - स्पष्ट रूप से आंशिक रूप से क्योंकि यह बातूनी है
पृथ्वी पर पर्यवेक्षक के सापेक्ष आंदोलन के बारे में, और इस तथ्य से स्पष्ट है कि बात की जा रही है
सूर्य और चंद्रमा दोनों की गति - और हम इस तथ्य को छोड़ देते हैं कि कविता की शुरुआत हुई थी

"देखो न - - -" और "स्पष्ट" अर्थ खोजें: मुहम्मद सूर्य के बारे में बात करते हैं
आकाशगंगा के चारों ओर, हर 225 मिलियन वर्ष में एक बार। खैर, यह स्पष्ट हो सकता था, अगर
उन्होंने समझाया था कि वे उस आंदोलन के लिए क्यों बस गए - क्योंकि आकाशगंगा घूम रही है
स्थानीय समूह (आकाशगंगाओं का एक छोटा समूह) में, जो फिर से हमारे स्थानीय में घूम रहा है
सुपर ग्रुप (हजारों आकाशगंगाओं का एक समूह), जो फिर से घास काट रहा है
गुरुत्वाकर्षण के कुछ विशाल केंद्र को द ग्रेट अट्रैक्टर कहा जाता है - - - जो फिर से हो सकता है
रास्ता कहीं। (**मुहम्मद को स्पष्ट रूप से वास्तविक संबंधों के बारे में ज़रा भी विचार नहीं था
पृथ्वी, चंद्रमा और सूर्य के बीच - किसी भी देवता को सब कुछ ठीक-ठीक पता था। थेब जिसने बनाया
क़ुरान?**) और भी अधिक: भले ही कोई केवल सूर्य के चारों ओर की गति को देखता हो
आकाशगंगा, वह एक वृत्त नहीं है - यह हेलिओस के रूप में लगभग एक घुमावदार वक्र है - हमारा सूर्य -
गांगेय भूमध्य रेखा के ऊपर और नीचे गांगेय के चारों ओर अपने रास्ते पर घूमता है
केंद्र। लेकिन कुल आंदोलन के कुछ हिस्सों को तब तक चुनें और चुनें जब तक आपको अपनी पसंद का कोई न मिल जाए।

**यदि वे केवल अपनी पसंद के तर्कों को चुन रहे हैं और प्रतीत होता है कि प्रयोग करने योग्य हैं,
कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह वास्तव में फिट बैठता है या नहीं? वैसे यह पहली बार नहीं होगा।

**022 31/30: "ऐसा इसलिए है क्योंकि अल्लाह (एकमात्र) रियल्टी - - -" है। क्या सच में अल्लाह एक हकीकत है? सभी
उसके बारे में किस्से सिर्फ एक आदमी से निकलते हैं - एक आदमी यहाँ तक कि इस्लामी इतिहास भी बताता है
लंबे समय तक मुख्य राजमार्ग के रूप में और लूट और जबरन वसूली से (अपहरण के लिए)
विक्रेता, आदि)। एक आदमी अपने विरोधियों पर हत्याओं और हत्याओं की शुरुआत कर रहा है (f. उदा। Asma .)
बद्र, अबू अफाक की लड़ाई के बाद बिन्त मारवान (महिला कवि), अल-नाद्र, अबू उज्जा और ओकाबा
(100 वर्ष से अधिक पुराना कहा जाता है), काब इब्न अल-अशरफ, इब्न सुनयना, ओथमान बिन मोघिरा, अबी 'एल
हुक़ायक़, और किनाना को नहीं भूलना b. अल-रबी जिसे उसने धन खोजने के लिए मौत के घाट उतार दिया, और
बाद में उन्होंने किनाना की 17 वर्षीय नवविवाहित पत्नी सफीजा (मुहम्मद
लगभग 60 तब)। एक आदमी जिसने सामूहिक हत्या की पहल की - एक बार लगभग 700 असहाय पुरुष कैदी,
और अपने सभी बच्चों और महिलाओं को गुलाम बनाया - उनमें से एक, सफिज्जा बिन्त हुयय (और दूसरा)
समय रेहाना बिन्त अमर), अपने निजी इस्तेमाल के लिए), एक बलात्कारी जिसके लिए अल्लाह की अनुमति है
खुद को और उसके सभी पुरुषों को बलात्कार करने के लिए ("अधिक विनम्र शब्दों का उपयोग करने के लिए" के साथ यौन संबंध रखें) सभी
दासियाँ और कैदी जो गर्भवती नहीं थीं (यह अल्लाह के बारे में भी कुछ बताता है)। ए

आदमी जिसने युद्ध शुरू किया और युद्ध की सभी लूट का 20% या उससे अधिक प्राप्त किया, इसमें दास शामिल थे (हालांकि नहीं
सभी अपने निजी इस्तेमाल के लिए)। और सत्ता की लालसा रखने वाला आदमी - कुरान और दोनों से देखना आसान है
हदीस से। और एक आदमी - और एक भगवान - के लिए एक वास्तविक प्रमाण का एक चौथाई उत्पादन करने में पूरी तरह से असमर्थ
किस्से। (स्रोत: दूसरों के बीच: इब्न हिशाम और इब्न इशाक़ - दोनों ही इस्लाम द्वारा सबसे अधिक सम्मानित हैं
मुहम्मद के बारे में आत्मकथाओं के लिए। इब्न इशाक की "द लाइफ ऑफ मुहम्मद" सबसे अधिक है
इस्लाम में सभी मुहम्मद आत्मकथाओं के पुराने लोगों का सम्मान - खलीफा के लिए लिखा गया
बगदाद लगभग 750 ई. साथ ही कुरान और हदीस - अल-बुखारी और मुस्लिम)।

केवल इस आदमी ने कुरान में किस्से बताए - ऐसे **किस्से जो सबसे ऊपर हैं सैकड़ों और
सैकड़ों गलतियाँ, कम से कम सैकड़ों ढीले बयान और सैकड़ों अमान्य
"संकेत" और "प्रोफेसर" - वे भी ढीले बयान, दावे, और अमान्य "संकेत" / "सबूत", सभी
धोखेबाजों और धोखेबाजों और सच्चे तर्कों के बिना व्यक्तियों की पहचान होना।**

इस्लाम के अनुसार एक अच्छा और सिद्ध व्यक्ति। अगर यह सच है, तो हम आशा करते हैं कि हम कभी किसी बुरे से नहीं मिलेंगे
मुस्लिम।

लेकिन एक सामान्य आदमी कहता है कि वह संदिग्ध और संदिग्ध नैतिकता वाला था। एक संदिग्ध है
संदिग्ध नैतिकता वाला आदमी और जो थोड़ा सा भी सबूत पेश करने में असमर्थ है, लेकिन बहुत कुछ के लिए
इस अक्षमता के लिए हवादार और आंशिक रूप से अतार्किक बहाने, और यहां तक कि "संकेत" और "सबूत" के बिना भी
मूल्य, **क्या यह ऐसा व्यक्ति है जो केवल और केवल निर्विवाद और पूर्ण सत्य बताता है?**

और अल्लाह की वास्तविकता के लिए इस्लाम का एकमात्र संकेत उस तरह के आदमी की कहानियां हैं।

023 31/31a: "- - - उसके संकेत - - -।" अल्लाह या किसी भी चीज़ के प्रमाण के रूप में अमान्य। 2/39 और 2/99 देखें
के ऊपर।

०२४ ३१/३१बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२५ ३१/३२: "- - - हमारी (अल्लाह की) निशानियाँ - - -"। कोई सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर उपयोग नहीं करता
अपने अस्तित्व और शक्ति को साबित करने के लिए अविश्वसनीय और/या अप्रमाणित संकेत।

026 31/34: "वास्तव में, अल्लाह के पास पूरा ज्ञान है और वह (सभी चीजों से) परिचित है"। सभी
कुरान में गलतियाँ इसके विपरीत साबित होती हैं - - या कि कुरान को किसी और ने बनाया है।

सूरह ३१: कम से कम २६ गलतियाँ + १ संभावित गलती।

सूरा 32:

001 32/2a: "(यह है) किताब (कुरान) का रहस्योद्घाटन - - -।" यह एक रहस्योद्घाटन नहीं है
एक सर्वज्ञ भगवान - बहुत सारी गलतियाँ। (लेकिन शायद बुरी ताकतों या इंसानों से?)

००२ ३२/२बी: “--- वह पुस्तक जिसमें कोई सन्देह नहीं है---” f के कारण। भूतपूर्व। सभी गलत
कुरान में तथ्य और अमान्य तर्क, संदेह के बहुत अच्छे कारण हैं।

003 32/2c: "- - - दुनिया के भगवान (अल्लाह *) से पुस्तक (कुरान *)।" गलत। नहीं
सर्वज्ञानी भगवान एक किताब बनाता है जिसमें बहुत सी गलतियाँ आदि होती हैं, उसका उल्लेख नहीं है
मदर बुक के रूप में "घर"।

004 32/2d: "- - - संसार।" एक बार फिर कुरान में 7 पृथ्वी का संदर्भ। गलत।

400

पेज 401

005 32/3a: "नहीं, यह (कुरान*) सत्य है - - -"। नहीं। सबसे अच्छा यह आंशिक रूप से सच है - बहुत अधिक
गलतियाँ, विरोधाभास, आदि।

००६ ३२/३बी: "नहीं, यह (कुरान*) तुम्हारे रब (अल्लाह*) की ओर से सत्य है - - -"। के साथ एक किताब कर सकते हैं
तार्किक मूल्य के बिना कई गलतियाँ और "संकेत" और "प्रमाण" वास्तव में a . द्वारा रचित हैं
सर्वज्ञ भगवान और स्वर्ग में पूजनीय "मातृ पुस्तक" बनें? नहीं।

007 32/4a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

008 32/4बी: "यह अल्लाह है जिसने आकाश (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी और सभी को बनाया है
उनके बीच, छह दिनों में - - -"। एक सरल और विनम्र अभिव्यक्ति: बहुत गलत। और दुसरी:
कुरान की आयतों का एक विरोधाभास जो 2 + 4 + 2 = 8 दिन बताता है।

009 32/5a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०१० ३२/५बी: "वास्तव में, आपके भगवान (अल्लाह *) की दृष्टि में एक दिन आपके एक हजार वर्ष के समान है
(मोहम्मद*) की गणना"। क्या यहाँ कुछ गलत है जैसा कि ७०/४ कहता है: "- - - उसे (अल्लाह*)
एक दिन में जिसकी माप (अ) पचास हजार वर्ष है”? भले ही यह लाक्षणिक हो
भाषण, 50 का एक कारक ज्यादा है। हकीकत में एक और विरोधाभास। 22/47 भी देखें।

०११ ३२/६: "- - - सभी चीजों के ज्ञाता (अल्लाह*) - - -"। कुछ तो गम्भीर रूप से गलत है: अल्लाह
अगर कुरान उसके ज्ञान का प्रतिनिधि है तो वह सभी चीजों का ज्ञाता नहीं है।

012 32/7a: "वह (अल्लाह*) जिसने वह सब कुछ बनाया जो उसने सबसे अच्छा बनाया - - -"। गलत।
हम बीमारियों के बारे में बेहतर प्रतिरोध कर सकते थे, हमारे शरीर में सक्षम हो सकते थे
अधिक विटामिन स्वयं बनाएं, हमारा मस्तिष्क बेहतर हो सकता था - f.ex. सोचने की क्षमता
एक बार में लगभग २-३ चीजें, या अधिक आसानी से सीखना – बस कुछ बिंदुओं का उल्लेख करना। अच्छा किन्तु
सबसे अच्छे से बहुत दूर।

०१३ ३२/७ब: "उसने मनुष्य की सृष्टि मिट्टी से (इससे अधिक कुछ नहीं) शुरू की"। गलत। आदमी था
मिट्टी से नहीं बनाया। 6/2 देखें।

०१४ ३२/८: "और (अल्लाह*) ने अपनी (मनुष्य की) संतान को प्रकृति की एक सर्वोत्कृष्टता से बनाया
द्रव तिरस्कृत (वीर्य*)"। सिर्फ आधा सच। मुहम्मद का मानना था कि वीर्य एक प्रकार का था
स्त्री में बोया गया बीज - उसे अंडाणु के बारे में पता नहीं था। कोई भगवान जानता था। फिर
कुरान किसने बनाया?

00a 32/10: "- - - एक नई रचना?" मुहम्मद का मानना था कि हमें शारीरिक रूप से फिर से बनाया जाना है
कयामत का दिन। उनका यह भी तर्क है कि यदि अल्लाह आपको वीर्य (और अंडा -
हालांकि मुहम्मद के लिए अज्ञात) वह धूल बन जाने के बाद आपको शारीरिक रूप से फिर से बनाने में सक्षम है

और रस। हो सकता है - लेकिन प्राकृतिक तरीका बनाने और करने के बीच एक अंतर है
मजबूत एन्ट्रापी के खिलाफ फिर से बनाएं (केओस के लिए भौतिकी में एक नाम या ऐसा कुछ) - तर्क
इसलिए कमी है।

०१५ ३२/१५: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०१६ ३२/२२अ: "और जिस पर उसके रब की आयतें पढ़ी जाती हैं, उससे ज़्यादा गुनाह कौन करेगा
(अल्लाह*) और फिर कौन उससे मुकरता है?" a . पर संदेह करने में कुछ भी गलत नहीं है
कई गलतियों वाली किताब पर ही बना है धर्म और एक भी वैध प्रमाण नहीं, बल्कि
कई "संकेत" और "सबूत" बिना किसी मूल्य के या यहां तक कि 100% गलत, लेकिन जो हो सकते हैं

अशिक्षित या बुद्धिमान व्यक्तियों को धोखा देने का प्रभाव - और सबसे ऊपर केवल एक आदमी द्वारा बताया गया
जिसकी ईमानदारी सामान्य, बुद्धिमान लोग उसके कर्मों की नैतिकता के कारण संदेह करेंगे
और उसके कुछ शब्द - **जब एक आदमी अच्छा प्रचार करता है, लेकिन करता है और बहुत कुछ मांगता है
बुरा, हम किसी भी दिन उसके कामों पर विश्वास करते हैं और उसके शब्दों से ज्यादा मांगते हैं।**

०१७ ३२/२२बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०१८ ३२/२३: "वह (अल्लाह) जिसने वह सब कुछ बनाया है जिसे उसने सबसे अच्छा बनाया है - - -"।
गलत। हर चीज से दूर सबसे अच्छा बनाया जाता है। मनुष्यों को लेने के लिए: हम देख सकते हैं a
इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पेक्टर का थोड़ा अधिक, हम अधिक उत्पादन करने में सक्षम शरीर के साथ कर सकते हैं
विटामिन, हम बीमारियों के खिलाफ बेहतर प्रतिरोध के साथ कर सकते हैं, हम शरीर के साथ कर सकते हैं
पहनने और आंसू के लिए मजबूत, हम मजबूत हड्डियों और शरीर के अन्य अंगों के साथ कर सकते थे, हम कर सकते थे
खोए हुए शरीर के अंगों के स्वतः पुनर्जनन के साथ बहुत बेहतर, और बहुत कुछ और बहुत कुछ जो हो सकता था
जो "सबसे अच्छा" है, उससे बेहतर और करीब रहा है।

०१९ ३२/२३: "हमने पहले मूसा को किताब दी - - -"। गलत। वो किताबें थीं
मूसा की मृत्यु के ५ से ८ शताब्दी बाद लिखे गए विज्ञान के अनुसार। (उसे मिला 10
आज्ञाएँ और केवल बाइबल के अनुसार - और १००० वर्ष होने के कारण कानून के बारे में बताया गया था
पुरानी और वास्तविक परंपराओं पर निर्मित, बाइबल इस बिंदु पर अधिक विश्वसनीय है। कानून ही हो सकता है
बड़े हो, लेकिन किताबें नं।)

०२० ३२/२४: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२१ ३२/२६: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

सूरह 32: कम से कम 21 गलतियाँ + 1 संभावित गलती।

सूरा 33:

001 33/1a: "हे पैगंबर (मुहम्मद)!"। लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। NS
पैगंबर की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. का उपहार है और पर्याप्त कनेक्शन बंद करें
   भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान के लिए।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम
   ज्यादातर सच होते हैं - यदि नहीं तो वह झूठे नबी हैं।
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है
   भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है
   मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है
कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी
जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि
उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, दावा किए जाने का उल्लेख नहीं किया,
कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि वह जो कुछ भी करता है
भविष्य के बारे में कहा सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में उसने और इस्लाम दोनों ने कहा और कहा कि वहाँ
"कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से जुड़े कोई चमत्कार नहीं थे - भविष्यवाणी करना एक तरह का है
चमत्कार। (यह आखिरी तथ्य भी इस बात का पुख्ता सबूत है कि मुहम्मद से जुड़े तमाम चमत्कार
वहाँ हदीसों का उल्लेख है, कहानियाँ बनी हैं)।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या
कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यद्वक्ता नहीं जैसा कि उसके पास नहीं था
भविष्यवाणी का उपहार। उन्होंने केवल उस प्रभावशाली और प्रभावशाली उपाधि को "उधार" लिया। आप पर
किसी को अनुमान लगाने के लिए क्यों।

002 33/1b: "- - - अल्लाह ज्ञान और ज्ञान से भरा है।" कुरान में गलतियाँ, आदि
विपरीत साबित करता है - या कि कुछ और गलत है।

००३ ३३/२: "- - - जो आपके पास आता है (मुहम्मद को कुरान के शब्द*) by
अपने रब (अल्लाह*) से प्रेरणा - - - ". क्या इतनी गलतियों वाली किताब हो सकती है और
विरोधाभास, कि तार्किक मूल्य के बिना कई "संकेत" और "प्रमाण", और बिल्कुल बिना
एक एकल वैध प्रमाण, इस तरह के "अच्छे" गुणवत्ता वाले व्यक्ति द्वारा बताया गया (31/30 देखें) वास्तव में और निश्चित रूप से
एक दयालु, दयालु, अच्छे और सर्वज्ञ भगवान से आते हैं? या अल्लाह के साथ कुछ गलत है?
वास्तव में इस्लाम भी अनिच्छा से स्वीकार करता है कि न तो अल्लाह का प्रमाण है और न ही अल्लाह का
कुरान या इस्लाम को नीचे भेजना। "कुरान का संदेश" जैसी किताब इसे खारिज करती है
इसके साथ बौद्धिक रूप से कुरान के ग्रंथों से यह नहीं देखना असंभव है कि पुस्तक है
अल्लाह से बनाया गया है, और यह सोचने और तर्क करने का एक आदिम तरीका है, जिसके लिए पूछना है
कुरान के पूर्ण सत्य को स्वीकार करने के प्रमाण (वास्तव में वास्तविकता को उल्टा करना है; एक
बहुत ही आदिम होना चाहिए - और भोला - कुछ सच होने के लिए स्वीकार करने के लिए, सिर्फ इसलिए कि एक नहीं
संदिग्ध किताब दोहराती है और दोहराती है कि यह सच होना चाहिए - एक झूठ को बार-बार दोहराएं, और लोग
इस पर विश्वास करना शुरू कर देंगे, गोएबल्स ने कहा।)

न्येत - एक अच्छा अंग्रेजी शब्द जिसका अर्थ है दोगुना नहीं: **ऐसी किताब किसी भी सर्वज्ञ से नहीं है।**

004 33/4a: "अल्लाह ने अपने (एक) शरीर में किसी के लिए दो दिल नहीं बनाए हैं - - -"। गलत। इस
वास्तव में हुआ है - जैसे कि मनुष्य की जटिल सृष्टि में लगभग कुछ भी।

005 33/4b: "लेकिन अल्लाह (कुरान*) सच बताता है - - -"। हो सकता है अल्लाह करे, लेकिन
क़ुरान ऐसा अभी और तब ही करता है - सभी गलतियाँ और अमान्य संकेत और प्रमाण देखें।

006 33/4c: "- - - वह (अल्लाह*) रास्ता दिखाता है।" संभव नहीं है अगर कुरान शब्द है
अल्लाह की - बहुत सारी गलतियाँ, आदि। एक किताब जो आंशिक रूप से सच है वह एक ख़राब नक्शा है।

007. 33/6: "पैगंबर (मुहम्मद*) - - -।" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। NS
पैगंबर की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. का उपहार है और पर्याप्त कनेक्शन बंद करें
   भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान के लिए।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम
   ज्यादातर सच हो जाते हैं।
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है
   भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है
   मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है
कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी
जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि
उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, दावा किए जाने का उल्लेख नहीं किया,
कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि वह जो कुछ भी करता है
भविष्य के बारे में कहा सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में उसने और इस्लाम दोनों ने कहा और कहा कि वहाँ

"कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से जुड़े कोई चमत्कार नहीं थे - भविष्यवाणी करना एक तरह का है
चमत्कार। (यह अंतिम तथ्य भी इस बात का एक और ठोस प्रमाण है कि से जुड़े सभी चमत्कार)
मुहम्मद ने वहां हदीसों का उल्लेख किया है, कहानियां बनाई गई हैं)।

*मुहम्मद वास्तव में कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या
कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यद्वक्ता नहीं जैसा कि उसके पास नहीं था
भविष्यवाणी का उपहार। उन्होंने केवल उस प्रभावशाली और प्रभावशाली उपाधि को "उधार" लिया। आप पर
किसी को अनुमान लगाने के लिए क्यों।

००८ ३३/८a: "- - - सत्य के (संरक्षक (जिन्हें कुरान भविष्यद्वक्ता के रूप में स्वीकार करता है*))
इस्लाम की शिक्षा*) - - -"। इस्लाम की शिक्षाओं के रूप में कुरान द्वारा प्रतिनिधित्व सबसे अच्छा है:
आंशिक रूप से सत्य - सभी गलतियों, विरोधाभासों आदि को देखें (और अमान्य "प्रमाण" और "संकेत")।

009 33/8b: "वह (अल्लाह) सत्य के (संरक्षकों (33/8a के ठीक ऊपर* देखें)) पर सवाल उठा सकता है
सत्य के विषय में (उन पर आरोप लगाया गया था) - - -"। कुरान कहता है/दिखावा करता है कि पुराना
इज़राइल के शास्त्र कुरान के समान ही थे, लेकिन बुरे यहूदियों ने उन्हें विकृत कर दिया। अगर वह था
सच था, उन पर सबसे अच्छा आरोप लगाया गया था - सभी गलतियों को देखें, उदात्त
कुरान में "स्पष्टीकरण" और अमान्य "संकेत" और "सबूत"। (इसके अलावा विज्ञान ने साबित कर दिया है
बाइबिल - यहाँ ओ.टी. - मिथ्या नहीं है। कुछ गलतियाँ हो सकती हैं, लेकिन कोई मिथ्याकरण नहीं।)

010 33/13: "- - - पैगंबर (मुहम्मद *) - - -।" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। NS
पैगंबर की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. का उपहार है और पर्याप्त कनेक्शन बंद करें
   भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान के लिए।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम
   ज्यादातर सच हो जाते हैं।
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है
   भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है
   मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है
कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी
जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि
उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, दावा किए जाने का उल्लेख नहीं किया,
कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि वह जो कुछ भी करता है
भविष्य के बारे में कहा सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में उसने और इस्लाम दोनों ने कहा और कहा कि वहाँ
"कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से जुड़े कोई चमत्कार नहीं थे - भविष्यवाणी करना एक तरह का है
चमत्कार। (यह अंतिम तथ्य भी इस बात का एक और ठोस प्रमाण है कि से जुड़े सभी चमत्कार)
मुहम्मद ने वहां हदीसों का उल्लेख किया है, कहानियां बनाई गई हैं)।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या
कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यद्वक्ता नहीं जैसा कि उसके पास नहीं था
भविष्यवाणी का उपहार। उन्होंने केवल उस प्रभावशाली और प्रभावशाली उपाधि को "उधार" लिया। आप पर
किसी को अनुमान लगाने के लिए क्यों। 30/40 और 30/45 भी देखें।

*०११ ३३/१६: "भागने से आपको कोई लाभ नहीं होगा, यदि आप मृत्यु से भाग रहे हैं या
वध; और यहां तक कि अगर (आप बच जाते हैं), तो आपको एक संक्षिप्त (राहत) से अधिक की अनुमति नहीं दी जाएगी
का आनंद लें"। गलत। आँकड़ों के माध्यम से यह सिद्ध करना बहुत आसान है कि यदि आप a . से दूर हो जाते हैं
लड़ाई, एक साल बाद आपके जीवित रहने की संभावना में बहुत सुधार होता है। कोई भी भगवान जानता था - लेकिन

मुहम्मद आँकड़े नहीं जानते थे। (वास्तव में दावा भी विरोधाभासी और विरोध में है
सामान्य ज्ञान - उन्हें पता होना था कि वे झूठ थे, भले ही उन्हें कोई आंकड़े न पता हों)। इसके अलावा: यहां तक कि एक
समय का छोटा टुकड़ा + दूसरी जगह अल्लाह की सर्वज्ञ पिछली इच्छा से विचलन है
और ज्ञान।

***०१२ ३३/२१: "तुम (मुसलमानों) के पास अल्लाह के रसूल में एक सुंदर पैटर्न है (of .)
आचरण) किसी के लिए भी जिसकी आशा अल्लाह और अंतिम दिन में है - - -"। गलत।

चोरी/लूटना, स्त्री बनाना, बलात्कार करना, झूठ बोलना, विश्वासघात करना, जबरन वसूली करना, दमन करना, हत्या, नफरत फैलाने, युद्ध भड़काने, सामूहिक हत्या, लूटने और मारने के लिए छापेमारी और दास, और आक्रमण के युद्ध - यह किसी भी इंसान के अनुसार "सुंदर पैटर्न" नहीं है नैतिक या नैतिक कोडेक्स, कुछ युद्ध धर्मों को छोड़कर, इस्लाम शामिल है, और यह मात्रा बताता है इस्लाम के बारे में कि यह आदमी उनका सबसे बड़ा नायक और चमकता हुआ मूर्ति है।

013 33/28: "हे पैगंबर (मुहम्मद*)!" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। परिभाषा एक नबी का वह व्यक्ति है जो:

1. का उपहार है और पर्याप्त कनेक्शन बंद करें भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान के लिए।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम ज्यादातर सच हो जाते हैं।
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, दावा किए जाने का उल्लेख नहीं किया, कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि वह जो कुछ भी करता है भविष्य के बारे में कहा सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में उसने और इस्लाम दोनों ने कहा और कहा कि वहाँ "कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से जुड़े कोई चमत्कार नहीं थे - भविष्यवाणी करना एक तरह का है चमत्कार। (यह अंतिम तथ्य भी इस बात का एक और ठोस प्रमाण है कि से जुड़े सभी चमत्कार) मुहम्मद ने वहां हदीसों का उल्लेख किया है, कहानियां बनाई गई हैं)।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यद्वक्ता नहीं जैसा कि उसके पास नहीं था भविष्यवाणी का उपहार। उन्होंने केवल उस प्रभावशाली और प्रभावशाली उपाधि को "उधार" लिया। आप पर किसी को अनुमान लगाने के लिए क्यों। 30/40 और 30/45 भी देखें।

014 33/30: "- - - पैगंबर - - -।" ३३/२८ को ठीक ऊपर और ३३/४५ नीचे देखें।

015 33/32: "- - - पैगंबर - - -"। ऊपर 33/28 और नीचे 33/45 देखें।

०१६ ३३/३४: "और पढ़ो - - - अल्लाह और उसकी बुद्धि (= कुरान *) - - -"। सीमित है गलतियों से भरी किताब में ज्ञान, और इसके अलावा: जो ज्ञान है उसे कैसे चुनें - यदि कोई हो - सभी गलतियों के बीच, मुड़ शब्द और तर्क, और यहां तक कि कुछ एकमुश्त झूठ भी?

017 33/38: "- - - पैगंबर - - -।" ऊपर 33/28 और नीचे 30/40a + 33/45a देखें।

405

पेज ४०६

०१८ ३३/४०ए: "(मुहम्मद थे*) नबियों की मुहर - - -।" मुहम्मद असली नहीं थे नबी - एक दूत या किसी चीज के लिए प्रेरित या शायद कोई, लेकिन कोई वास्तविक नबी नहीं। ऊपर 33/28 और नीचे 33/45 देखें:

०१९ ३३/४०बी: "- - - पैगम्बरों की मुहर - - -।" ऊपर 33/40a देखें: मुहम्मद कैसे हो सकते थे? भविष्यद्वक्ताओं (अंतिम और महान भविष्यद्वक्ता) की मुहर हो, जब वह वास्तव में वास्तविक नहीं था नबी? - उसके पास न तो था, न ही होने का दिखावा था, और न ही उसने का उपहार होने का दावा किया था भविष्यवाणी !!!

020 33/40c: "- - - अल्लाह को हर चीज़ का पूरा ज्ञान है।" कुरान साबित करता है कि यह सच नहीं है - बहुत सारी गलतियाँ, आदि। या हो सकता है कि यह अल्लाह ही नहीं है जिसने कुरान को बनाया हो?

***021 33/45a: "हे पैगंबर! - - -"। लेकिन क्या मुहम्मद सचमुच एक नबी थे? एक नबी है a वह व्यक्ति जिसके पास विशिष्ट भविष्यवाणियां करने में सक्षम होने का उपहार है - और वह करता है। फिर वहाँ है असली और झूठे नबी के बीच का अंतर - क्योंकि बहुत सारे झूठे थे भविष्यवक्ताओं, जैसा कि यह था (और अभी भी) एक अच्छा जीवन जीने का एक आसान तरीका है यदि आप चतुर हैं। बाइबिल के अनुसार एक सच्चे भविष्यवक्ता और एक झूठे के बीच का अंतर यह है कि वास्तविक

भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणियाँ कीं और वे सच हुईं, जबकि झूठे भविष्यद्वाणियों से क्या बनाते हैं
सच नहीं होना (कभी-कभी संयोग से छोड़कर)। मुहम्मद ने बनाने की कोशिश तक नहीं की
भविष्यवाणी या दिखावा कर सकता है कि वह ऐसा कर सकता है। कई बार ऐसा होता है कि उन्होंने क्या कहा
संयोग से सच हो गया - और उनके अनुयायियों द्वारा सिर्फ इसलिए याद किया गया
यह सच हो गया, जबकि उसने जो कहा वह सच नहीं हुआ, याद नहीं किया गया। यह ऐसा है
हर इंसान के साथ; हम कहते हैं और हम इतनी बात करते हैं कि कभी-कभी कुछ होता है
समय-समय पर सही होना चाहिए - स्कैंडिनेविया में उनके पास इसके लिए एक विशेष अभिव्यक्ति भी है: To
"गा ट्रोल आई ऑर्ड" - जिसका अर्थ है कि ट्रोल जैसा कुछ आपके शब्दों को सच करता है - लेकिन यह है
आपके भेदक या भविष्यद्वक्ता होने का कोई अर्थ नहीं है। मुहम्मद ने बनाने की कोशिश तक नहीं की
वास्तविक भविष्यवाणियां - एक नबी होने के लिए पेड़ों की पूर्ण आवश्यकताओं में से एक। (और फिर उसने किया
दूसरी आवश्यकता का परीक्षण भी नहीं किया: क्या उनकी भविष्यवाणियां ज्यादातर/हमेशा सच हुईं?) वह
बस इतना होशियार था कि वह उन चीजों के साथ दिखावा करने की कोशिश कर रहा था जिसे वह जानता था कि वह करने में असमर्थ है। और फिर
बेशक उसके पास अन्य आवश्यकताओं की भी कमी थी: भविष्यवाणियाँ जो सच हुईं, और भविष्यद्वाणियाँ a . के रूप में
उनके मिशन का हिस्सा। मुहम्मद के पास होने के लिए तीन आवश्यकताओं में से कोई भी नहीं था
नबी:

1. का उपहार है और पर्याप्त कनेक्शन बंद करें
   भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान के लिए।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम
   ज्यादातर सच हो जाते हैं।
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है
   भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है
   मिशन।

मुहम्मद बस कोई नबी नहीं थे - उनके पास वह उपहार नहीं था। उसने अभी-अभी चुराया या "उधार लिया" a
प्रतिष्ठित शीर्षक। एक भविष्यवक्ता के रूप में वह केवल एक धोखेबाज था - एक वाक्पटु नेता, लेकिन करने में असमर्थ
वह करें जो आपको भविष्यद्वक्ता बनाता है: भविष्यवाणियां करने के लिए - और भविष्यवाणियां जो नियमित रूप से सच होती हैं।

***वह एक दूत हो सकता है, अगर यह सच है तो उसके पास एक संदेश था। लेकिन कोई नबी नहीं। (इस्लाम पसंद करता है
यह बताना कि एक दूत होना नबी होने से कहीं अधिक है। लेकिन होना
पैगंबर, आपके पास विशेष उपहार होने चाहिए, जबकि एक दूत होने का सीधा सा मतलब है कि आप
कमोबेश निष्क्रिय रूप से संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाते हैं - एक गलत काम करने वाला लड़का।) लेकिन दूसरा

के मामले में सवाल है: एक दूत लड़का किसके लिए? - स्वयं उसके लिए? - अन्य मनुष्यों के लिए? - के लिए
कुछ अंधेरे बल? दो बातें 100% निश्चित हैं:

1. *वह किसी के लिए दूत लड़का नहीं था
   सर्वज्ञ भगवान - बहुत सारी गलतियाँ,
   विरोधाभास, मुड़ तर्क और के रूप में
   मुड़ तर्क, आदि कुरान में।
2. **वह किसी भी मामले में एक दूत लड़का नहीं था
   कोई भी अच्छा या परोपकारी भगवान - बहुत ज्यादा
   चोरी, नफरत, भेदभाव और अमानवीयता,
   बलात्कार, खून, जबरन वसूली का जिक्र नहीं,
   दमन, दासता, हत्या और युद्ध। (यह
   कहा जाता है कि मुहम्मद सिर्फ एक और थे
   डाकू बैरन और सरदार - इससे बुरा कोई नहीं
   से रहने वाले अन्य डाकू बैरन और सरदारों
   उनमें चोरी, जबरन वसूली और दास व्यापार
   कठिन समय। यह सच हो सकता। लेकिन वो
   निश्चित रूप से दूसरों से भी बेहतर नहीं था -
   और उसे सभी से बहुत बेहतर होना चाहिए था
   अन्य अगर वह एक अच्छे का प्रतिनिधित्व करता है और
   दयालु भगवान)। उसका व्यवहार और उसका वास्तविक
   मदीना में सभी वर्षों से संदेश साबित होता है
   किसी भी संदेह से परे कि यदि वह प्रतिनिधित्व करता है a
   भगवान, यह बिल्कुल अच्छा भगवान नहीं था। भी
   धोखा देना और झूठ बोलना और यहां तक कि तोड़ना भी
   जई, धोखेबाज की पहचान है और

कुरान में सभी गलत तथ्य जो अरब में गलत "विज्ञान" के अनुसार हैं
(मुख्य रूप से पुराने ग्रीस और फारस से) मुहम्मद के समय, स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि
कुरान वहाँ और फिर एक या एक से अधिक मनुष्यों द्वारा बनाया गया है। लेकिन अगर कोई भगवान शामिल था,
मदीना के अमानवीय सूरह सबसे स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि वह निश्चित रूप से एक अच्छा नहीं था। - - - परंतु
भेष में शैतान हो सकता है?

०२२ ३३/४५बी: "वास्तव में हम (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) - - - भेजा है। मुहम्मद नहीं थे
अल्लाह द्वारा भेजा गया अगर अल्लाह एक अच्छा भगवान था - उसकी (मुहम्मद की) शिक्षाएं बहुत खूनी थीं और
एक अच्छे भगवान का प्रतिनिधित्व करने के लिए बहुत अमानवीय - और बहुत सारी गलतियाँ, आदि के साथ (लेकिन उन्होंने a . बनाया)
मुहम्मद के लिए शक्ति का अच्छा मंच)। ऊपर 33/45a भी देखें।

023 33/45c: "- - - खुशखबरी - - -"। गलत। इस्लाम कोई खुशखबरी नहीं है, सिवाय इसके कि
दबा दिया और लूट सकता था और चोरी कर सकता था और बलात्कार कर सकता था और अमीर बन सकता था - और वास्तव में केवल के लिए खुश था
पिरामिड के शीर्ष के पास वाले। युद्ध धर्मों में अक्सर ऐसा होता है, खासकर जब इसे बनाया जाता है
एक मजबूत और करिश्माई नेता (और उनके उत्तराधिकारी) के लिए उपयुक्त हैं, हालांकि कई युद्ध धर्मों ने नहीं किया है
अपने सदस्यों को बनाने की कोशिश में इस्लाम के समान पाखंडी रहा है और दूसरों को विश्वास है कि यह अच्छा है और
न्यायपूर्ण और परोपकारी। और ठीक है, यह मामूली प्रतिशत लोगों के लिए खुशखबरी हो सकती है
जिस पर विश्वास करने के लिए धर्म की आवश्यकता है (सटीक प्रतिशत ज्ञात नहीं है, लेकिन विज्ञान 5 इंगित करता है -
10%, हालांकि मुश्किल समय में कुछ और।) इस्लाम में इन छोटे प्रतिशत ने सभी को हड़प लिया है
शक्ति और हर किसी को न केवल जीने के लिए, बल्कि अपनी तरह सोचने और जीने के लिए भी मजबूर करती है।

४०७

पेज ४०८

00a 33/46: "(मुहम्मद हो *) प्रकाश फैलाने वाले दीपक के रूप में।" क्या मुहम्मद ने सबसे अधिक प्रकाश फैलाया?
या सबसे अंधेरा? एक बयानबाजी का सवाल जिसका कोई जवाब नहीं है।

024 33/47: "- - - खुशखबरी - - -"। ऊपर 33/45a और 33/45c देखें।

025 33/50a: "हे पैगंबर! - - -।" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। ए . की परिभाषा
पैगंबर एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. का उपहार है और पर्याप्त कनेक्शन बंद करें
   भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान के लिए।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम
   ज्यादातर सच हो जाते हैं।
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है
   भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है
   मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है
कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी
जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि
उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, दावा किए जाने का उल्लेख नहीं किया,
कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि वह जो कुछ भी करता है
भविष्य के बारे में कहा सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में उसने और इस्लाम दोनों ने कहा और कहा कि वहाँ
"कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से जुड़े कोई चमत्कार नहीं थे - भविष्यवाणी करना एक तरह का है
चमत्कार। (यह आखिरी तथ्य भी इस बात का पुख्ता सबूत है कि मुहम्मद से जुड़े तमाम चमत्कार
वहाँ हदीसों का उल्लेख है, कहानियाँ बनी हैं)।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या
कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यद्वक्ता नहीं जैसा कि उसके पास नहीं था
भविष्यवाणी का उपहार। उन्होंने केवल उस प्रभावशाली और प्रभावशाली उपाधि को "उधार" लिया। आप पर
किसी को अनुमान लगाने के लिए क्यों। 30/40 और 30/45 भी देखें।

026 33/50b: "- - - पैगंबर (मुहम्मद*) को - - -।" ३३/४०ए, ३३/४५ए, और ३३/५०ए देखें
के ऊपर।

027 33/50c: "- - - अगर पैगंबर (मुहम्मद*) - - -।" ऊपर 33/40a, 33/45a, और 33/50a देखें।

२८ ३३/५३एः "- - - पैगंबर (मुहम्मद का) घर - - -।" देखें 33/40a, 33/45a, और 33/50 के ऊपर।

029 33/53b: "- - - पैगंबर (मुहम्मद *) - - -।" ऊपर 33/40a, 33/45a, और 33/50a देखें।

०३० ३३/५८: "हे पैगंबर! (मुहम्मद*) - - -।" ऊपर 33/40a, 33/45a, और 33/50 देखें।

००बी ३३/६०: "--- वे (गैर-मुस्लिम, पाखंडी, आदि*) जिनके हृदय में रोग है---"। ए
अच्छा नारा है कि आप कुरान में कई जगह मिलते हैं: **यदि आप एक अच्छे मुसलमान नहीं हैं, तो मतलब तुम बीमार हो। लेकिन कई नारों की तरह यह एक विकृत सच भी हो सकता है - या सिर्फ झूठ।**

****031 33/61-62: "वे (गैर-मुस्लिम, पाखंडी, आदि*) उन पर श्राप देंगे:
जब भी वे मिलें, वे आकार और मारे जाएंगे (दया के बिना) ('कोई मजबूरी नहीं')
धर्म' 2/256*)। (ऐसे थे) पहले से रहने वालों में अल्लाह के अभ्यास (अनुमोदित)

४०८

पेज ४०९

(च. उदा. यहूदी और ईसाई*). मुहम्मद ने दावा किया कि अल्लाह सिर्फ एक और नाम था
यहोवा - **लेकिन एक आदेश खोजने की कोशिश करें जिसमें कहा गया हो कि सभी गैर-ईसाईयों की हत्या कर दी जाएगी एनटी में और नई वाचा में "दया के बिना" (एफ। पूर्व ल्यूक 22/20 एनटी में) (एक वाचा मुसलमानों ने कभी उल्लेख नहीं किया) और एनटी कि ईसाई धर्म पर बनाया गया है।** ओह, हम अच्छी तरह जानते हैं कि
ईसाई देशों के लोगों ने बुरे काम किए हैं, लेकिन वह उनके धर्म के बावजूद था -
और वे वास्तव में गहराई से ईसाई नहीं थे - और उसके अनुसार नहीं, या यहां तक कि इसलिए भी
धर्म का, जैसा मामला अक्सर "शांति के धर्म" के साथ होता है (मुस्लिम-बोलने के लिए)
"युद्ध के धर्म") इस्लाम को छिपाना।

***०३२ ३३/६२: "(ऐसा था) अभ्यास (गैर-विश्वासियों को बिना दया के मारना) (अनुमोदित)
अल्लाह उन लोगों में से जो पहले रहते थे: आप अभ्यास (अनुमोदित) में कोई बदलाव नहीं पाएंगे
अल्लाह।" मुहम्मद यहाँ मोज़ेक और ईसाई धर्मों को संदर्भित करता है (और वह अल्लाह को सेट करता है =
यहोवा) जब वह "उन लोगों के बारे में बात करता है जो पहले से रहते थे"। लेकिन भले ही ओटी कठिन है
कई गैर-यहूदियों के खिलाफ, युद्ध और हत्या यहूदियों के लिए रहने के लिए जगह पाने के लिए थी, नहीं
केवल इसलिए कि वे यहूदी नहीं थे, या लूट और दास के लिए नहीं थे। और एनटी में: कोशिश करें
एक जगह खोजने के लिए यह कहते हुए कि अविश्वासियों की हत्या सिर्फ इसलिए की जाएगी क्योंकि उनके पास है
एक और धर्म - ऐसा आदेश बस मौजूद नहीं है। **यहां कुरान वास्तव में 180 . है यीशु की शिक्षाओं के मूल में डिग्री विरोधाभास।**

कोई भी भगवान झूठ बोल रहा था अगर उसने ऐसा कहा था, लेकिन मुहम्मद बाइबिल को अच्छी तरह से नहीं जानते थे, इसलिए हो सकता है
हो - बस हो सकता है - उसने सोचा कि वह सच बोलता है। किसी भी मामले में यह एक के लिए एक अच्छा बयान था
सत्ता के अपने मंच को सुरक्षित और विस्तारित करने की कोशिश कर रहे सरदार। (यह सूरा माना जाता है
६२७ - ६२९ ईस्वी - इससे पहले कि उसने मक्का पर विजय प्राप्त करके पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लिया था।)

०३३ ३३/७२एः "हमने (अल्लाह*) ने स्वर्ग (बहुवचन और गलत*) और (
ग्रह*) पृथ्वी और पर्वत, लेकिन उन्होंने इसे लेने से इनकार कर दिया - - -"। न तो ग्रह (or
मुहम्मद की तरह डिस्क) पृथ्वी, और न ही इसके पहाड़ों में मस्तिष्क या चेतना है
कुछ भी स्वीकार या अस्वीकार। एक परी की कहानी।

०३४ ३३/७२बी: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

सूरह 33: कम से कम 34 गलतियाँ + 2 संभावित गलतियाँ।

सूरह 34:

001 34/1a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

002 34/1b: "- - - वह (अल्लाह*) ज्ञान से भरा है - - -"। खैर, कुरान में उनके शब्द साबित करते हैं कि
कुछ गलत है, क्योंकि वह किताब गलतियों, विरोधाभासों, उलझे हुए तर्कों से भरी है,
पतली हवा, अमान्य तर्क और यहां तक कि कुछ सीधे झूठ पर आधारित दावे (जैसे "चमत्कार करेंगे"
कोई भी किसी भी तरह विश्वास नहीं करता")।

**00a 34/3a: "लेकिन सबसे निश्चित रूप से, (मैं - मुहम्मद) मेरे भगवान (अल्लाह *) - - -" द्वारा। इजहार
"मेरे भगवान द्वारा" यहाँ एक शपथ है, लेकिन फिर मुहम्मद बहुत स्पष्ट रूप से और कई बार (हदीस)
कहा कि मुश्किल से भी सामान्य तौर पर जई को तोड़ना अच्छी बात नहीं थी, अगर आपका मतलब तब था जब
आपने कहा था (अगर नहीं था तो कम या ज्यादा ठीक है।), अगर आपके पास कोई कारण हो तो इसे तोड़ना कोई बड़ा पाप नहीं था -

हाँ, कुछ मामलों में ऐसा करना सही भी है। **यह - जिसे अक्सर अल- कहा जाता है उसका एक हिस्सा तकिया या वैध झूठ - आज भी एक समस्या है: आप कब विश्वास कर सकते हैं a मुसलमान कहता है और कब नहीं?** वास्तव में यह मुसलमानों के लिए भी एक समस्या है; उनके पास नहीं है जब उन्हें ऐसा करने की आवश्यकता हो, तो अपने शब्दों को मजबूत करने का एक निश्चित तरीका है, क्योंकि एक जई भी है

विश्वसनीय नहीं - मुहम्मद से स्पष्ट पूर्वता के साथ (उन्होंने f.ex. ने एक निहत्थे शांति का वादा किया) खैबर से प्रतिनिधिमंडल सुरक्षित वापसी - - - और उन सभी की हत्या कर दी जिन्होंने कामयाबी हासिल की दूर जाना (30 में से 29)। इसमें मुहम्मद को उद्धृत करने के लिए "युद्ध विश्वासघात है" नारा जोड़ें इब्न इशाक।)

003 34/3 बी: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

004 34/5: "- - - हमारी (अल्लाह की) निशानियाँ - - -।" अल्लाह या किसी भी चीज़ के प्रमाण के रूप में अमान्य। देखें 2/39 और 2/99 ऊपर।

00b 34/6a: "- - - (रहस्योद्घाटन (कुरान*)) - - -"। यदि यह एक रहस्योद्घाटन है, तो यह कम से कम से नहीं है एक सर्वज्ञ ईश्वर - बहुत सारी गलतियाँ, आदि, और किसी अच्छी शक्ति (ईश्वर या आत्मा) से नहीं - बहुत अधिक चोरी, दमन, बलात्कार, घृणा, रक्त, हत्या, युद्ध, अमानवीयता आदि।

००५ ३४/६बी: "- - - (रहस्योद्घाटन (कुरान*)) तेरे रब द्वारा तुझे (मुहम्मद*) नीचे भेजा गया (अल्लाह*) - - -"। कुरान किसी सर्वज्ञानी ईश्वर की ओर से नहीं है - बहुत सारी गलतियाँ, आदि। न ही है यह एक अच्छे भगवान से - युद्ध धर्म सामान्य रूप से नहीं हैं: बहुत अधिक अमानवीयता, अन्याय और आतंक।

006 34/6c: "- - - यही सत्य है - - -।" इस दावे के खिलाफ बहुत सी बातें "बात" करती हैं कि यह है सच्चाई यह है कि कुरान स्वर्ग से है - इस्लाम को हमें इस पर विश्वास करने के लिए इसे साबित करना होगा।

007 34/6d: "- - - यह (कुरान*) पथ के लिए मार्गदर्शन करता है (स्वर्ग के लिए) - - -।" इसके साथ एक किताब संदिग्ध सामग्री असंभव रूप से एक ईश्वरीय मार्गदर्शक हो सकती है - इस्लाम को हमें बनाने के लिए इसे साबित करना होगा इसपर विश्वास करो।

00c 34/8: "- - - जो विश्वास नहीं करते - - - हैं - - - सबसे दूर की त्रुटि में।" सवाल है: **कौन सबसे दूर की त्रुटि में होने की संभावना है; वह / वह एक किताब में भोलेपन और आँख बंद करके विश्वास करता है जहां कोई बात साबित या प्रलेखित नहीं है, सिवाय इसके कि उसकी अधिकांश सामग्री गलत है और टेढ़ी-मेढ़ी और निकम्मा, और उस में से कुछ झूठ भी, और एक पुस्तक जो बहुत बड़े मनुष्य के द्वारा कही गई है संदिग्ध चरित्र, लेकिन नारी और शक्ति की वासना के साथ? या वह / वह पता लगाने की कोशिश करता है अगर उसकी दास्तां सच हो सकती है या नहीं** - और फिर उसे छोड़ देता है अगर वे पाते हैं कि यह एक बना हुआ धर्म है (या शुरू .) एक सच्चे धर्म की तलाश में, यदि ऐसा कोई मौजूद है)। एक बने धर्म का कोई मूल्य नहीं है कि क्या कोई अन्य वास्तविक धर्म मौजूद है या नहीं (लेकिन निश्चित रूप से यह सबसे गंभीर है यदि ऐसा सच्चा धर्म मौजूद है, और किसी को इसकी तलाश करने की संभावना से इनकार किया जाता है। तब संभव अगला जीवन हो सकता है परेशानी भरा)।

008 34/9a: "- - - हम (अल्लाह*) उन पर आसमान का एक टुकड़ा गिरा सकते हैं।" हम के रूप में आकाश देखें कि यह एक ऑप्टिकल भ्रम है (मुहम्मद का मानना था कि यह कुछ ऐसी सामग्री थी जो सितारे थे तक बांधा गया)। एक ऑप्टिकल भ्रम का एक टुकड़ा - ऐसा कहने के लिए एक मृगतृष्णा - नीचे कैसे गिर सकता है कोई व्यक्ति?

मुसलमान इसे "समझाते" हैं कि कुरान एक शूटिंग स्टार या इसी तरह के बारे में बात करता है। परंतु अन्य स्थानों की पुस्तक ऐसे सितारों के बारे में बात करती है, और भले ही वह इसे साधारण सितारे मानती हो, यह इस और आकाश के बीच के अंतर को बहुत स्पष्ट रूप से जानता है। इसमें कोई शक नहीं है कि यह बात कर रहा है आकाश के एक टुकड़े के बारे में ही।

००९ ३४/९बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

010 34/12a: "और सुलैमान (हम (अल्लाह*) ने हवा (आज्ञाकारी) - - -।" इस्लाम होगा
यह साबित करने के लिए कि यह एक किंवदंती / परी कथा से केवल एक और मंजिल "उधार" नहीं है।

०११ ३४/१२बी: "- - - और हम (अल्लाह*) ने उसके लिए प्रवाहित करने के लिए पिघला हुआ पीतल का एक फ़ॉन्ट बनाया (सुलैमान*) - - -"।

1. पिघले हुए पीतल के फव्वारे को चालू रखने के लिए, उस समय तकनीकी रूप से असंभव था।
2. अगर यह सब एक ही चल रहा होता, तो नहीं इसके लिए बिल्कुल मौका है कि इसे भुला दिया गया था या बाइबल से हटा दिया गया बहुत बड़ा आश्चर्य है।

दावा केवल एक परी कथा है, शायद मंदिर के पीतल "समुद्र" से प्रेरित है जिसे बाइबल बताती है
लगभग - पानी से भरा एक गोल धातु का बर्तन, 10 हाथ (4.5 मीटर) व्यास और 5 हाथ (2.25 .)
मी) उच्च (1. किंग्स 7/23)।

**०१२ ३४/१४अ: "फिर, जब हमने (अल्लाह*) ने (सुलैमान की) मृत्यु का आदेश दिया, तो उन्हें कुछ भी नहीं दिखा
(परिवेश में जिन्न शामिल थे) उसकी मृत्यु, पृथ्वी के एक छोटे से कीड़े को छोड़कर, जो रखती थी
(धीरे-धीरे) अपने कर्मचारियों को कुतर रहा है - - -"। गलत:

1. सुलैमान के महल में कोई नहीं होगा पृथ्वी और फिर पृथ्वी से कोई कीड़ा नहीं। (इस बाहर नहीं हो सकता, जैसा कि उसके कर्मचारी करेंगे पराक्रमी राजा को बाहर मत छोड़ो कई दिनों और रातों के माध्यम से)।
2. पृथ्वी से ऐसा कोई कीड़ा नहीं है जो एक कर्मचारी की तरह सूखी, कठोर लकड़ी को कुतरना। कुछ मुसलमान चाहते हैं कि यह दीमक हो, लेकिन दीमक कोई कीड़ा नहीं है, और एक भगवान जानता है वह।
3. नीचे भी 34/14 देखें।

**०१३ ३४/१४बी: "फिर, जब हमने (अल्लाह*) ने (सुलैमान की) मृत्यु का आदेश दिया, तो उन्हें कुछ भी नहीं दिखा
(ऊपर ३४/१४ ए देखें) उसकी मृत्यु, पृथ्वी से एक छोटे से कीड़े को छोड़कर, जो (धीरे-धीरे) रखता था
अपने कर्मचारियों को कुतरना; इसलिए जब वह नीचे गिरा - - -"। गलत: एक छोटे से होने में कुछ दिन लगेंगे
सुलैमान के गिरने के लिए पर्याप्त कर्मचारियों को कमजोर करने के लिए कीड़ा - सप्ताह हो सकता है।

1. एक पराक्रमी राजा बैठा है जो घास काट भी नहीं रहा है लंबे समय के बाद उनके द्वारा संबोधित किया जाएगा नौकर
2. एक शक्तिशाली राजा काफी देर तक बात नहीं करता जबकि, उनके सेवकों द्वारा संबोधित किया जाएगा।
3. एक शक्तिशाली राजा अपने कर्तव्यों का ध्यान नहीं रखता और उसके आगंतुक काफी देर तक, उनके सेवकों द्वारा संबोधित किया जाएगा।
4. एक पराक्रमी राजा जो शाम को नहीं सोता उनके सेवकों द्वारा संबोधित किया जाएगा।
5. कठोर मोर्टिस ("मृत्यु की कठोरता" - the केवल संभव, लेकिन अत्यधिक असंभावित कारण स्थिति) शुरू होने में समय लगता है - और यह

गायब हो जाता है। यदि अन्य कारणों से नहीं तो वह
गिरना क्योंकि कठोर मोर्टिस लंबे समय तक गायब हो गए
इससे पहले कि एक छोटे कीड़ा को कमजोर होने का समय मिले

6. यह कर्मचारी की जलवायु में - सर्दियों में भी
(जब वहाँ आखिर आग लगेगी) - उसका
शरीर सड़ने लगेगा। सबके पास था
यह नोटिस करने के लिए।

बस एक परी कथा।

०१४ ३४/१९: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

015 34/22: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

016 34/24: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

017 34/28a: "हम (अल्लाह*) ने आपको (मुहम्मद) - - - नहीं भेजा है। क्या मुहम्मद सच में भेजे गए थे?
एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान भगवान द्वारा? जैसा कि आप देखते हैं कि यदि आप इस अध्याय को पढ़ते हैं, तो गंभीर हैं
संदेह के कारण। (देखें f. उदा. 41/12)। इतना गंभीर कि इस्लाम को इसे साबित करना होगा, भरोसा ही नहीं
सैकड़ों गलतियों और विकृत तर्क आदि पर निर्मित अंध विश्वास की मांग पर - a . द्वारा बताया गया
बहुत ही संदिग्ध चरित्र और नैतिकता का आदमी, लेकिन सत्ता और धर्म के स्वाद के साथ उसका
सत्ता का मंच।

००डी ३४/२८बी: "हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) नहीं भेजा, बल्कि एक सार्वभौमिक (मैसेंजर) के रूप में भेजा है -
- -"। अगर वे सार्वभौम थे तो फिर सब कुछ अरब से ही क्यों? - सही होने पर भी
कुरान में अन्य स्थानों (पृथ्वी के पूर्व रूप) की जानकारी मौजूद है, आपको गलत लगता है
ज्ञान। और गढ़ी हुई और गलत किंवदंतियाँ और परियों की कहानियाँ जो अरब में प्रसारित हुईं? नहीं
भगवान ने सही जानकारी का उपयोग करने के बजाय उनका उपयोग करने जैसी गलतियां की थीं।

018 34/28c: "- - - खुशखबरी - - -"। 33/45c देखें।

०१९ ३४/३८: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

020 34/43a "- - - हमारे (अल्लाह के) स्पष्ट संकेत - - -"। एक भी स्पष्ट संकेत मौजूद नहीं है
सभी कुरान में अल्लाह को साबित करना। 2/99 देखें।

०२१ ३४/४३बी: "और काफ़िरों ने सच (कुरान*) - - - के बारे में कहा। कुरान सबसे अच्छा
आंशिक रूप से सत्य का प्रतिनिधित्व करता है - सभी गलतियाँ, अमान्य कथन आदि देखें।

०२२ ३४/४५: "और उनके (अविश्वासियों*) पूर्ववर्तियों ने (सत्य) - - - को अस्वीकार कर दिया। एफ देखें। भूतपूर्व।
34/43 ठीक ऊपर, और कई अन्य - जैसे 49/75।

***०२३ ३४/४७: "मैं (मुहम्मद*) आपसे कोई इनाम नहीं मांगता - - -"। - - - **पूर्ण शक्ति को छोड़कर
और बहुत सारी महिलाएं। हाँ, और सभी चोरी/लूटे गए क़ीमती सामानों और दासों का 20% – 100% अगर
कोई लड़ाई नहीं है - और खराब-कर (औसतन सीए। हर चीज का 2.5% जो आप प्रत्येक के मालिक हैं और
हर साल) क्योंकि मुझे अपने धर्म और मंच को मजबूत करने के लिए रिश्वत के लिए पैसे की जरूरत है
शक्ति, और युद्ध के लिए और मेरे और मेरे बड़े परिवार के लिए, और कुछ गरीबों के लिए।**

०२४ ३४/४८: "निश्चय ही मेरे रब (अल्लाह*) ने सत्य (कुरान) - - - को ढाला। एफ देखें।
भूतपूर्व। 34/43 ठीक ऊपर, और कई अन्य, जैसे 40/75 या 41/12।

025 34/49: "सत्य (कुरान*) आ गया है - - -"। एफ देखें। भूतपूर्व। 34/43 ऊपर, और कई
अन्य।

*****026 34/50: "अगर मैं (मुहम्मद*) भटक रहा हूँ, तो मैं केवल अपनी आत्मा के नुकसान के लिए भटक रहा हूँ - - -"।

**यह सबसे बड़ा और बेहद गलत है - अगर मुहम्मद गुमराह थे (और उस दिशा में बहुत अधिक बिंदु) तो यह हर किसी के नुकसान के लिए है
मुसलमान की आत्मा। क्योंकि तब इस्लाम झूठा धर्म है।**

**यह एक और जगह है जहाँ मुहम्मद जानता था कि हा झूठ बोल रहा था - वह बहुत बुद्धिमान नहीं था
यह देखना गलत था।**

०२७ ३४/५२: "हम (मुसलमान*) (अब) (सच्चाई) (कुरान*) - - - में विश्वास करते हैं। कुरान अत
सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है - बहुत सारी गलतियाँ, अमान्य दावे + अमान्य तर्क - - और कुछ एकमुश्त
लेटा होना।

सूरह 34: कम से कम 27 गलतियाँ + 4 संभावित गलतियाँ।

सूरा 35:

001 35/1a: "- - - अल्लाह, जिसने (कुछ नहीं से) आकाश (बहुवचन और गलत*) और
धरती - - -"। एक तरह से यह लगभग सही है कि जैसा स्वर्ग हम देखते हैं, वह लगभग शून्य से बना है,
एक ऑप्टिकल भ्रम के रूप में फोटॉनों से बना है (लेकिन मुहम्मद एक ही तरह से बहुत गलत थे, जैसे
वह / कुरान का मानना था कि स्वर्ग में कुछ सामग्री शामिल है)। लेकिन पृथ्वी निश्चित रूप से
कुछ भी नहीं से नहीं बना है - भले ही कोई बिग बैंग को संदर्भित करता हो।

002 35/1b: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

००३ ३५/२: "(अल्लाह है*) ज्ञान से भरा हुआ।" अगर कुरान उसके ज्ञान के लिए प्रतिनिधि नहीं है
और ज्ञान - बहुत सारी गलतियाँ, आदि।

*००४ ३५/३ए: "- - - फिर तुम सत्य से कैसे बहक जाते हो?" बड़ा सवाल: कौन हैं
बहकाया-मुसलमान या गैर-मुसलमान? कुरान में बहुत सारी गलतियाँ हैं और अन्य
दोष है कि यह कहना कि यह किसी देवता द्वारा बनाया गया है या पूजनीय है या भेजा गया है, उस ईश्वर का अपमान है।
और अगर कुरान अल्लाह के बारे में गलत है, तो मुसलमान और भी अधिक भ्रमित हैं।

००५ ३५/३बी: "- - - फिर तुम सत्य (कुरान*) से कैसे बहक जाते हो?" क्या यह सच है?
कम से कम एकमात्र और पूर्ण सत्य तो नहीं। बहुत सी चीजें गलत हैं।

00a 35/5a: "निश्चित रूप से अल्लाह का वादा सच है।" यदि वह मौजूद है और यदि वह सर्वज्ञ है और यदि
वह सर्वशक्तिमान है, आशा की जानी चाहिए कि ऐसा ही है। लेकिन कुरान से यह जानना संभव नहीं है कि क्या
सच है या अगर कुछ भी सच है - बहुत सारी गलतियाँ, बहुत सारे विरोधाभास, बहुत सारे
अमान्य "संकेत" और "सबूत", और बहुत से किस्से और कथन कुछ भी नहीं या अन्य पर बने हैं
सिर्फ हवा पर टिके बयान।

*00b 35/5b: "- - - (नहीं) मुख्य धोखेबाज आपको अल्लाह के बारे में धोखा दे।" यहाँ कुरान बात करता है
शैतान के बारे में। लेकिन एक सवाल: मुहम्मद के पूर्ण और निर्विवाद प्रमुख हैं
मुसलमान। **यदि इस्लाम झूठा धर्म है - तो क्या मुहम्मद तो मुख्य धोखेबाज हैं?** NS
प्रश्न हास्यास्पद नहीं है - यह निश्चित है कि यह किसी सर्वज्ञ भगवान द्वारा नहीं बनाया गया है (बहुत अधिक है .)

413

पेज ४१४

कुरान में गलत), न ही किसी अच्छे ईश्वर द्वारा (बहुत अधिक बेईमानी, भेदभाव, अमानवीयता,
नफरत, खून और युद्ध), और फिर विकल्प हैं: मनुष्य द्वारा निर्मित - तर्कसंगत या बीमार (f. उदा। TLE -
टेम्पोरल लोब मिर्गी - बहुत कुछ समझाएगा) - या कुछ अंधेरे बलों द्वारा बनाई गई - एफ। भूतपूर्व। शैतान
गेब्रियल की तरह कपड़े पहने।

००६ ३५/९: "- - - और इसके साथ (बारिश के साथ) पृथ्वी को उसकी मृत्यु के बाद पुनर्जीवित करें - - -"। भूमि जो हो सकती है
केवल बारिश जोड़कर पुनर्जीवित किया मरा नहीं है। यह बीज और शायद जड़ों के साथ जीवित है।

007 35/11a: "और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया - - -"। गलत - आदमी से नहीं बनाया गया
धूल। 6/2 देखें। हम जोड़ सकते हैं कि कुरान में कुछ स्थानों पर चरण-दर-चरण की सूची है
मनुष्यों का विकास। पहला कदम आम तौर पर मनुष्य की रचना है (जैसे यहाँ)। अगला कदम
वीर्य है - मोहम्मद को अंडे की कोशिका के बारे में पता नहीं लगता है - जैसे 35/11b . में
बस नीचे। अगले चरण में भ्रूण की शुरुआत और विकास होता है - लेकिन हड्डियां इससे पहले आती हैं
मांस, गलत। फिर कभी-कभी बच्चे और पुरुष के जन्म और विकास का अनुसरण करता है।

008 35/11बी: "और अल्लाह ने तुम्हें धूल से पैदा किया, फिर एक शुक्राणु-बूंद से - -।" देखें ३५/११a
बिलकुल ऊपर। इसके साथ - साथ; शुक्राणु की बूंद से कोई नहीं बनता है - एक हमेशा से बना होता है (ए)
शुक्राणु (कोशिका) + एक अंडा कोशिका। एक भगवान को यह पता था, लेकिन मुहम्मद एक के लिए अंडे की कोशिका के रूप में नहीं जानते थे
एक शव के खून और गोर में कुछ देखना लगभग असंभव है, और कम से कम नहीं: भले ही वह
उसे देखा, उसे नहीं पता होगा कि यह कुछ खास था।

009 35/12: "वह (अल्लाह*) रात को दिन में मिला देता है, और वह दिन को रात में मिला देता है - - -"। NS

दिन और रात के बीच प्रत्यावर्तन होता है क्योंकि पृथ्वी चारों ओर घूमती है, तैरती है
अंतरिक्ष में घूमा। मुहम्मद अक्सर प्राकृतिक घटनाओं को लेते हैं और उन्हें बुलाते हैं
सबूत / संकेत / अल्लाह की ओर से। यह तब तक असत्य है जब तक कि इस्लाम पहले वास्तव में दोनों को साबित नहीं कर देता कि यह किया गया है
एक भगवान द्वारा, और यह भगवान अल्लाह है। लेकिन आम तौर पर इस्लाम कुछ भी साबित नहीं करता - यह केवल दावा करता है और
राज्य करता है और बिना दस्तावेज के अंध और भोले विश्वास की मांग करता है - - - यहां तक कि ठोस होने के बावजूद
सबूत है कि कुछ बहुत गलत है।

०१० ३५/१४: "और कोई भी (हे मनुष्य!) आपको (सच्चाई) एक (अल्लाह) - - -" की तरह नहीं बता सकता है। शायद यह
सच हो अगर अल्लाह मौजूद है। लेकिन जो सच कुरान में बताया गया है, वह ज्यादा से ज्यादा आंशिक रूप से सच है-गलतियां,
विरोधाभास, अमान्य "संकेत" और "प्रमाण", आदि।

00c 35/24a: "वास्तव में हम (अल्लाह) ने तुम्हें (मुहम्मद*) - - - भेजा है। वास्तव में मुहम्मद
और कुरान इसे दोहराता है और दोहराता है और दोहराता है (अक्सर "अल्लाह और उसके" शब्दों में)
मैसेंजर") - 1933 और 1945 के बीच एक निश्चित जर्मन "प्रचार मंत्री" के योग्य
हमें लगता है कि यह जोसेफ गोएबल्स नाम का एक बहुत ही ईमानदार और विश्वसनीय (?) व्यक्ति था, जिसका नारा था
था: **"एक झूठ को बार-बार दोहराएं, और लोग उस पर विश्वास करना शुरू कर देंगे"।** यहाँ यह हो गया है
समय के माध्यम से अरबों बार दोहराया, और लाखों मुसलमान इस पर विश्वास करते हैं - लेकिन फिर नहीं
मुस्लिम समाज ने कभी भी अपने विषयों को आलोचनात्मक सोच, या यथार्थवाद सोचने के लिए प्रशिक्षित किया है। पर
इसके विपरीत: आम तौर पर मुस्लिम समाजों ने उन्हें बीमार प्रकार की सोच में प्रशिक्षित किया है जो कि है
यह मानते हुए कि अधिकांश कार्य और अधिकांश जानकारी झूठ है जो साजिश का कारण देती है
सिद्धांत + इस्लाम और मुल्ला और इमाम में अंध विश्वास।

शायद उद्धरण में शब्द सत्य हैं। लेकिन सबसे अधिक संभावना है कि वे नहीं हैं। एक ही बात है
कुरान में गलतियाँ जो बताती हैं कि यह विश्वसनीय नहीं है और सबसे अधिक संभावना का आविष्कार किया गया है। **अधिक गंभीर है
कि बार-बार पूछने पर भी मुहम्मद साबित नहीं कर पाए
कुछ भी** - झूठ की एक बानगी - या अधिक झूठ - यह है कि सबूत असंभव हैं। एक है
तेजी से बात करने और चोरी करने के लिए, जिनमें से दोनों कुरान में बहुत सारे हैं। और जब वहाँ
कुछ साबित करने का सवाल है? - इस्लाम में अभी भी बहुत तेज-तर्रार बात है।

414

पेज ४१५

*लेकिन सबसे बुरी बात यह है कि सभी अमान्य दावे और बयान, और "संकेत", "सबूत" और तेज़-
बात करना - ये किसी भी चतुर धोखेबाज या झूठे नबी की पहचान हैं जो प्राकृतिक कारणों से हैं
सबूत पेश करने में असमर्थ।

०११ ३५/२४बी: "वास्तव में हम (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) को सच्चाई से भेजा है - - -"। हम वापस आ गए हैं
वस्तुतः सदियों पुराना प्रश्न (गंभीर प्रश्न जो 610 ईस्वी के आसपास शुरू हुए - लेकिन
अंत में मुहम्मद सबसे मजबूत सैन्य थे) कुरान के बारे में: **क्या - अगर कुछ भी - is
सच है, और कुरान में क्या सच नहीं है? (आजकल यह देखना आसान है कि कम से कम कई
किस्से और कई कथन असत्य हैं)।**

012 35/24c: "- - - खुशखबरी - - -।" गलत। इस्लाम कोई खुशखबरी नहीं है, सिवाय इसके कि
दबे हुए - और वास्तव में केवल लूट और दासों और चोरी के धन की तलाश करने वालों के लिए खुश हैं,
और कम से कम उन लोगों के लिए जो पिरामिड के शीर्ष के पास हैं - और प्राप्त करते हैं - बहुत सारी शक्ति
योग। यह अक्सर युद्ध धर्मों में ऐसा होता है, खासकर जब एक मजबूत और फिट होने के लिए बनाया जाता है
करिश्माई नेता (और उनके उत्तराधिकारी), हालांकि कई युद्ध धर्मों के रूप में नहीं किया गया है
इस्लाम के रूप में पाखंडी अपने सदस्यों और दूसरों को यह विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहा है कि यह अच्छा और न्यायपूर्ण है और
मानवीय और परोपकारी। और ठीक है, यह लोगों के प्रतिशत के लिए खुशखबरी हो सकती है
जिस पर टिके रहने के लिए एक धर्म की आवश्यकता है - कम से कम उन संभावित लोगों के लिए जहां पुराना मूर्तिपूजक धर्म था
बहुत ज्यादा मजबूत नहीं है।

**०१३ ३५/२४डी: "- - - और कोई भी लोग नहीं थे, बिना चेतावनी देने वाले (अल्लाह के लिए एक नबी*)
उनके बीच रहते हुए (अतीत में) - - -"। जैसा कि पहले कहा गया है: न पुरातत्व में, न ही में
न वास्तुकला में, न कला में, न इतिहास में, न साहित्य में, न लोककथाओं में, न लोक कथाओं में - नहीं
परियों की कहानियों में भी, क्या हमें एकेश्वरवाद की किसी शिक्षा का एक भी अंश मिलता है, जिसमें दो कुएं हों
ज्ञात (यहोवा और अल्लाह) और दो या तीन कम ज्ञात अपवाद (फिरौन अकन-एटन,
सूर्य से प्रार्थना करना, एक अरब संप्रदाय लगभग ६०० ईसा पूर्व - संभवतः दो एकेश्वरवादी से प्रेरित था
क्षेत्र में धर्म - साथ ही एक फैशन के बाद पारसी)। कुछ स्थान एक या कुछ देवता
प्रभुत्व, लेकिन कोई एकेश्वरवाद नहीं।

1. अमेरिका में - बिल्कुल कुछ नहीं।
2. ऑस्ट्रेलिया में - बिल्कुल कुछ नहीं।
3. प्रशांत में - बिल्कुल कुछ नहीं।

4. यूरोप में - बिल्कुल कुछ नहीं।
5. अफ्रीका में - बिल्कुल कुछ भी नहीं
 एक अकेले आदमी का अपवाद: फिरौन अकन-
 एटन - लेकिन वह निश्चित रूप से बोल नहीं रहा था
 अल्लाह के बारे में। वह केवल के लिए सूरज चाहता था
 भगवान।
6. एशिया में - बिल्कुल कुछ नहीं, सिवाय इसके कि क्या
 अब हम मध्य पूर्व कहते हैं: ईसाई,
 प्रसिद्ध यहूदी और पहले से ही
 मुख्य रूप से फारस में पारसी लोगों का उल्लेख किया
 (एक फैशन के बाद) और एक कम प्रसिद्ध अरबी
 एकेश्वरवादी और उस समय बहुत पुराना संप्रदाय नहीं था
 - सबसे अधिक संभावना यहूदियों से प्रेरित है। बेशक
 बुद्ध थे, लेकिन वे भगवान नहीं थे/हैं, और
 इसके अलावा उन्होंने स्वीकार किया कि देवताओं का अस्तित्व है, लेकिन उन्होंने बताया
 वे गलत रास्ते पर थे जो आगे नहीं बढ़ रहे थे
 निर्वाण - कोई एकेश्वरवाद नहीं।

124oooo (या अधिक - संख्या को प्रतीकात्मक कहा जाता है, जैसा कि और भी हो सकता है) नबी
अगर कहानी सच होती तो कहीं कुछ निशान छोड़ जाते।

यह कथन केवल सत्य नहीं है। अगर इस्लाम फिर भी जिद करता है, तो उन्हें मजबूत पैदा करना होगा
सबूत "मजबूत बयान मजबूत सबूत की मांग करते हैं", विज्ञान को उद्धृत करने के लिए। और सिर्फ ढीला नहीं
दावे, अमान्य "संकेत" और "सबूत", और इस्लाम जैसे अधिक ढीले बयान आम तौर पर उत्पन्न होते हैं।

014 35/25a: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। 2/99 देखें।

०१५ ३५/२५बी: "- - - प्रबुद्धता की पुस्तक (कुरान) - - -"। इतने सारे के साथ एक किताब
गलतियाँ और इतने सारे अमान्य "संकेत" और "प्रमाण" किसी भी प्रकार के होने के लिए बहुत अविश्वसनीय हैं
प्रबोधन। वास्तव में एक गलती या एक झूठा "सबूत" कुरान को साबित कर देगा
एक सर्वज्ञ भगवान से नहीं था - और यहाँ सैकड़ों हैं (वास्तव में अविश्वसनीय हो सकता है 3ooo
यदि आप सभी प्रकार की गलतियाँ गिनते हैं)।

*०१६ ३५/२८: "जो लोग वास्तव में अल्लाह से डरते हैं - - - जिनके पास ज्ञान है - -"। तथ्य यह है कि यह अधिक है
यदि आपके पास थोड़ा ज्ञान और/या बुद्धि है तो धार्मिक होना सामान्य है (लेकिन निश्चित रूप से यह एक है
भोले और अशिक्षितों की चापलूसी करने और उन्हें आकर्षित करने का अच्छा तरीका)। और **कुरान भी**
साबित करता है कि कहीं न कहीं सही ज्ञान की भारी कमी थी - और
फलस्वरूप पुस्तक में गंभीर रूप से कुछ गड़बड़ है और इसलिए
धर्म।

०१७ ३५/३१अ: "जो हम (अल्लाह*) ने तुझ पर (मुहम्मद/लोग*) प्रकट किया है
किताब (कुरान*) - - -"। क्या एक सर्वज्ञानी भगवान इतनी गलतियों के साथ एक किताब प्रकट कर सकता है,
विरोधाभास, और अमान्य "संकेत" और "प्रमाण"? नहीं।

०१८ ३५/३१ब: "जो हमने (अल्लाह*) ने तुम पर किताब (कुरान*) में उतारा है, वह है
सत्य - - -"। ऊपर 35/31a देखें। और यह भी: उस बहुत सारी गलतियों के साथ, आदि। यह सबसे अच्छा हिस्सा है
और सच्चाई के टुकड़े।

019 35/31c: "- - - (कुरान*) पुष्टि करता है कि इससे पहले क्या था (प्रकट किया गया) (= बाइबिल, द
टोरा, आदि*)"। गलत। 29/46, और अन्य देखें।

020 35/33: "- - - सोने के कंगन - - -"। खैर, एक और जगह (७६/२१) यह कहा गया था कि वे थे
चांदी से। एक छोटा सा अंतर्विरोध - लेकिन एक अंतर्विरोध।

021 35/38: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

022 35/40a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

023 35/40बी: "- - - स्पष्ट (सबूत) - - -"। किसी भी बात का कोई स्पष्ट या वैध प्रमाण नहीं है

सभी कुरान में अल्लाह के विषय में। 2/99 देखें।

024 35/41: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०२५ ३५/४२: "- - - उनकी उड़ान (धार्मिकता से (= मुहम्मद की शिक्षाओं)) - - -"। **कोई बड़ी संख्या में गलतियाँ और अमान्य "सबूत" वाली पुस्तक पर आधारित शिक्षण और "संकेत", और सबसे ऊपर केवल एक ही व्यक्ति द्वारा संदिग्ध नैतिकता के बारे में बताया गया है और चरित्र (महिलाकरण, बलात्कार, डकैती, जबरन वसूली, हत्या और सामूहिक हत्या - और वासना) शक्ति के लिए - इस्लाम द्वारा ही अच्छी तरह से प्रलेखित है, हालांकि इस पर प्रकाश डाला गया है) - ऐसी शिक्षा**

यह धार्मिकता का प्रतिनिधित्व नहीं करता है जब तक कि यह वास्तव में सिद्ध न हो। यह और भी इतना है कि यह नफरत, दमन, हत्या और युद्ध के लिए दृढ़ता से उकसाता है - बहुत धर्मी या अच्छा नहीं।

०२६ ३५/४४क: "क्या वे (लोग*) पृथ्वी पर यात्रा नहीं करते हैं, और देखते हैं कि अंत क्या था जो उनसे पहले - - -?" अरब में और उसके आसपास इधर-उधर खंडहर थे। मुहम्मद दावा किया - बिना किसी दस्तावेज के सामान्य रूप से केवल गैर-मुस्लिमों को कुछ भी साबित करने की आवश्यकता है - कि उनमें से हर एक अविश्वास आदि के कारण अल्लाह के क्रोध का परिणाम था इस्लाम। गलत। युद्धरत जनजातियों द्वारा बसाए गए शुष्क और कठोर भूमि में बहुत से अन्य थे खाली घरों और खंडहरों के कारण।

०२७ ३५/४४बी: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22 देखें।

सूरह 35: कम से कम 27 गलतियाँ + 3 संभावित गलतियाँ।

सूरा 36:

००१ ३६/२: "कुरान द्वारा, ज्ञान से भरा - - -"। इस मामले में भी धार्मिकता के लिए क्या जाता है ज्ञान के लिए जाता है - 35/42 और 49/75 देखें।

00a 36/3: "आप (मुहम्मद*) वास्तव में दूतों में से एक हैं - - -।" केवल 2 चीजें हैं ज़रूर:

1. **यह कभी सिद्ध नहीं होता है या किसी अन्य तरीके से प्रलेखित - और अन्य सभी के साथ कुरान में गलतियाँ, यह प्रमाण है सख्ती ज़रूरी।**
2. यदि मुहम्मद एक दूत थे, तो किसको? केवल दो चीजें जो कुरान इस बारे में बहुत स्पष्ट करता है, क्या **यह था एक सर्वज्ञ भगवान के लिए नहीं (बहुत अधिक गलतियाँ, आदि) और अच्छे के लिए नहीं या निरंकुश भगवान (अत्यधिक अनैतिकता, चोरी/लूटना, बेईमानी करना, दबाना, बलात्कार, अमानवीयता, आतंक, खून और युद्ध, आदि।)।**

00b 36/5a: "यह (कुरान) एक रहस्योद्घाटन है - - -"। **खैर, किसके मामले में?** - an . से नहीं सर्वज्ञ और/या अच्छे भगवान (36/3 के ठीक ऊपर और 36/5बी ठीक नीचे देखें)। शायद खुद से या कुछ अन्य इंसान? (सीएफआर। धर्म उसके लिए शक्ति के मंच के रूप में कितनी अच्छी तरह फिट बैठता है और उनकी निजी परेशानियों में भी उनकी मदद करने के लिए - जो कि मदर बुक होने का ढोंग करते हैं, श्रद्धेय अल्लाह के द्वारा) - या कुछ अंधेरी ताकतों द्वारा? (cfr। अमानवीयता, बेईमानी, नफरत, खून, युद्ध, आदि - यह फिट बैठता है एफ। भूतपूर्व। एक शैतान बहुत अच्छी तरह से - और यह मुसलमानों के लिए एक की खोज करना लगभग असंभव बना देता है सच्चा धर्म है अगर ऐसा कोई मौजूद है, अगर इस्लाम गलत है - - - यह भी एक शैतान और उसकी इच्छा के लिए अच्छा है एक संभावित नरक को आबाद करने के लिए)।

००२ ३६/५बी: "यह (कुरान*) उसके (अल्लाह*) द्वारा उतारा गया एक रहस्योद्घाटन है"। एक बार और: क्या यह कर सकते हैं वास्तव में उन सभी गलतियों और अमान्य "संकेतों" के साथ एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा नीचे भेजा जाना चाहिए और "सबूत"? कभी नहीं।

003 36/6: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह या किसी भी चीज़ के प्रमाण के रूप में अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

पेज ४१८

००४ ३६/१२ए: "- - - हमने (कुरान* में) - - - सभी चीजों का हिसाब लिया है। सभी चीजें नहीं
कुरान में दूर तक गिना जाता है। देखो एफ. भूतपूर्व। सभी अतिरिक्त अनुच्छेदों पर जो हैं
मुस्लिम कानूनों में जरूरी

005 36/12b: "- - - एक स्पष्ट किताब में (कुरान*) (सबूत के) - - -"। एक किताब जिसके साथ कई
गलतियाँ और अमान्य "संकेत" और "प्रमाण" बहुत कम स्पष्ट प्रमाण देते हैं।

006 36/17: "- - - स्पष्ट संदेश (कुरान*)।" गलतियों, अंतर्विरोधों से भरी किताब
(च. उदा। मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा है v/अल्लाह सब कुछ तय करता है - यहां तक कि इस्लाम भी यह समझाने में असमर्थ है कि,
"लेकिन यह सच होना चाहिए, क्योंकि यह अल्लाह (कुरान* में)"!!!) "The ." के अनुसार कहता है
कुरान का संदेश "- **अमान्य तर्क और ठीक इसी तरह का तर्क कोई स्पष्ट संदेश नहीं देता है।**

00c 36/24: "(अगर मैं एक और भगवान * लेता) मैं वास्तव में - - - प्रकट त्रुटि में होता।" नहीं अगर वह भगवान
मौजूद है - और विशेष रूप से नहीं अगर अल्लाह एक बना हुआ भगवान है (आखिरकार वह से लिया गया था)
मुहम्मद द्वारा बुतपरस्त अरब देवताओं, जिन्होंने उसका नाम अल-लाह से बदलकर अल्लाह कर दिया, और यहां तक कि ले लिया
अधिकांश बुतपरस्त अरब धार्मिक अनुष्ठानों पर भी।)

007 36/33a: "एक संकेत - - -।" अल्लाह या किसी भी चीज़ के प्रमाण के रूप में अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

००८ ३६/३३बी: "उनके लिए एक निशानी है मरी हुई धरती: हम (अल्लाह*) इसे जीवन देते हैं - - -"। से
कुरान के अन्य भागों, हम जानते हैं कि इसका अर्थ है "बारिश जोड़ना"। लेकिन एक भूमि जो आती है
सिर्फ बारिश जोड़ने से जीवन मरा नहीं है - यह बीज और शायद जड़ों के साथ जीवित है।

*००९ ३६/३६: "- - - अल्लाह, जिसने सभी चीजों को जोड़े में बनाया - -"। गलत। केवल बहु-सेलुलर
पौधे और जानवर जोड़े में हैं - और उन सभी से भी दूर। कोई एककोशिकीय जीवन मौजूद नहीं है
जोड़े - और वे संख्या और प्रजातियों दोनों में कहीं अधिक प्रचुर मात्रा में हैं। इसके अलावा काफी कुछ है
बहुकोशिकीय प्राणियों की संख्या जो अलैंगिक रूप से फैलती है और इस प्रकार जोड़े में मौजूद नहीं है - up
और इसमें स्पंज, आदि, कुछ मछलियाँ और कुछ सरीसृप शामिल हैं।

०१० ३६/३७: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०११ ३६/३८ए: "और सूर्य उसके लिए निर्धारित अवधि के लिए अपना पाठ्यक्रम चलाता है - - -"। सूरज दौड़ता है
पृथ्वी से संबंधित कोई पाठ्यक्रम नहीं है, हालांकि यह उस समय का स्वीकृत खगोल विज्ञान था। यह है
पृथ्वी जो परिक्रमा करती है - अपने चारों ओर और सूर्य के चारों ओर। नीचे 36/38 बी देखें।

*00d 36/38b: 36/38a का सामान्य अनुवाद - 36/38a ठीक ऊपर देखें - (अरब: "li-
मुस्तकारिन लाहा") है (स्वीडिश से अनुवादित): "और सूरज अपने आराम की जगह पर चला जाता है" जो
रास्ता गलत है। लेकिन जैसा कि पुरानी अरब लिखित भाषा सटीक थी, मुहम्मद अली की
प्रतिलेखन एक संभव है, यदि कम संभावना है - जैसा कि "(से) पाठ्यक्रम के लिए अंतिम बिंदु है जो इसे"
अनुसरण करता है" या - लिखित व्यंजनों के बीच अन्य स्वरों को सम्मिलित करना (पुराने अरब में केवल
व्यंजन लिखे गए थे) और "ला मुस्तक़रा लहा" अभिव्यक्ति प्राप्त करना - "यह अपना पाठ्यक्रम चलाता है"
आराम किए बिना" (अब्द अल्लाह इब्न मसूद / ज़माखशरी)। या "सूर्य अपनी दिशा a . की ओर दौड़ता है
कुछ हद तक, तब यह रुक जाता है" (बायदावी: "द लाइट्स ऑफ रिवीलेशन" पृष्ठ 585)।

अगली बार जब आप किसी मुसलमान से मिलें तो गंभीरता से कहें कि कुरान हमेशा कितना सटीक है, ऐसा न करें
हँसो - यह असभ्य है।

012 36/39: "- - - जब तक वह (चंद्रमा*) किसी तिथि के पुराने (और मुरझाए हुए) निचले हिस्से की तरह वापस नहीं आती-
डंठल (जो अर्धचंद्राकार रूप लेता है*)"। गलत। चंद्रमा अर्धचंद्र नहीं बनता - यह केवल
ऐसा दिखता है, और मोहम्मद भी देख सकता था, अगर वह चौकस होता: भीतर

पेज 419

वर्धमान द्वारा इंगित चक्र, और वास्तव में चंद्रमा द्वारा कवर किया गया है, आप कभी नहीं देखते हैं a
तारा। यह कोई भी देवता जानता था। मुहम्मद स्पष्ट रूप से नहीं। कुरान किसने बनाया?

013 36/40a: "सूर्य को चंद्रमा को पकड़ने की अनुमति नहीं है - - -"। यह भौतिक नहीं है
सूर्य के लिए चंद्रमा को पकड़ना संभव है - कुछ 5 अरब वर्षों में नहीं (तब यह शायद होगा
घटित - - - यदि पृथ्वी सूर्य से घिर जाती है)। एक भगवान जानता था।

**०१४ ३६/४०बी: "- - - और न ही रात दिन से आगे (* से लंबी हो सकती है) - - -"। गलत। पर
उच्च अक्षांशों पर रात हमेशा सर्दियों के दिनों की तुलना में लंबी होती है। आर्कटिक से थोड़ा आगे
वृत्त (थोड़ा अतीत (भूमध्य रेखा की ओर) अपवर्तन के कारण - प्रकाश का में झुकना
वातावरण) रात भी हर साल कम या अधिक समय के लिए 24 घंटे तक चलती है - के लिए
अक्षांश पर कब तक निर्भर करता है। कुरान में प्राकृतिक चुनने की प्रबल प्रवृत्ति है
घटनाएँ और बताएं कि वे साबित करते हैं या अल्लाह के लिए संकेत हैं, पहले यह साबित किए बिना कि अल्लाह वास्तव में है
उनके लिए कारण। एक बात के लिए ऐसे "सबूत" पूरी तरह से अमान्य हैं। दूसरे के लिए: यह हर बार
हमारे दिमाग में आता है कि (कोशिश करना) अमान्य कथनों का उपयोग करना और "सबूत" के लिए एक हॉलमार्क है
धोखेबाज और ठग। और एक विडंबनापूर्ण तीसरे के लिए: कभी-कभी "सबूत" भी बन जाते हैं
सच में गलत हँसी। और कम से कम नहीं: यदि आपको बने तर्कों का उपयोग करने की आवश्यकता है, तो इसका मतलब है कि आप
कोई वास्तविक तर्क नहीं है।

015 36/40c: "- - - प्रत्येक (रात और दिन*) साथ में (अपनी) कक्षा में (कानून के अनुसार) तैरता है।"
गलत। रात और दिन स्थिर हैं - वे बस चलते प्रतीत होते हैं क्योंकि पृथ्वी में घूमती है
धूप इससे कोई भी भौतिक विज्ञानी हंसेगा - रात की एक निश्चित स्थिति होती है
सूर्य, और केवल पृथ्वी के घूमने के कारण गति करता प्रतीत होता है। इसमें थोड़ी सी भी समानता नहीं है
एक कक्षा के लिए।

यह एक अच्छा अतिरिक्त स्पर्श है कि वे "कानून के अनुसार" कक्षाओं में तैरते हैं।

०१६ ३६/४१ए: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०१७ ३६/४१बी: "और उनके (मनुष्यों) के लिए एक निशानी यह है कि हम (अल्लाह) ने उनकी जाति (के माध्यम से) को जन्म दिया
बाढ़) भरी हुई सन्दूक में - - -"। कोई लकड़ी की नाव संभवतः कुरान का भार नहीं उठा सकती थी
कहते हैं: नूह + उसके लोग + हर जानवर के 2 + लंबे समय तक भोजन और चारा (कुरान कहता है)
कितने समय के बारे में कुछ भी नहीं, बाइबल एक वर्ष से अधिक का संकेत देती है)। आज मुसलमान भी देखते हैं
यह बहुत गलत है, और यह कहकर इसे दूर करने की कोशिश करें कि केवल पालतू जानवर थे
मतलब, लेकिन यह वह नहीं है जो कुरान कहता है। इसके अलावा: इस्लाम बताता है कि सन्दूक a . पर फँसा हुआ है
सीरिया में पर्वत - 2089 मीटर ऊंचा माउंट। अल-जेडी - (तुर्की में अरारत नहीं), लेकिन अगर पानी था
ऊँचा, जहाज में जिन जानवरों का प्रतिनिधित्व नहीं किया गया था, वे कहाँ जीवित रहे? - और उस लंबे समय के लिए (कुरान
जैसा कि उल्लेख किया गया है, निर्दिष्ट नहीं है, लेकिन बाइबल कहती है कि लगभग 16 महीने)?

०१८ *३६/४२: "और हमने (अल्लाह*) ने उनके लिए (लोगों*) समान (जहाजों के समान) बनाया है।
सन्दूक*) - - -"। हमने कभी नहीं सुना कि अल्लाह ने नावें बनाईं।

019 36/46a: "- - - साइन - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

020 36/46b: "- - - संकेत - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२१ ३६/६४: "- - - उसके लिए तुम ("अविश्वासियों"*) (निरंतर) अस्वीकार (सच्चाई)।" में "सच्चाई"
कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है। बहुत सारी गलतियाँ, आदि।

419

पेज 420

022 36/69a: "हम (अल्लाह*) ने (पैगंबर) को निर्देश नहीं दिया है - - -।" लेकिन मुहम्मद नहीं थे
असली नबी। नबी की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. 1. का उपहार है और काफी करीब है
   भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान से संबंध।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम
   ज्यादातर सच हो जाते हैं।
3. 3. बारंबार और/या आवश्यक बनाता है
   भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, दावा किए जाने का उल्लेख नहीं किया, कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि वह जो कुछ भी करता है भविष्य के बारे में कहा सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में उसने और इस्लाम दोनों ने कहा और कहा कि वहाँ "कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से जुड़े कोई चमत्कार नहीं थे - भविष्यवाणी करना एक तरह का है चमत्कार। (यह आखिरी तथ्य भी इस बात का पुख्ता सबूत है कि मुहम्मद से जुड़े तमाम चमत्कार वहाँ हदीसों का उल्लेख है, कहानियाँ बनी हैं)।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यद्वक्ता नहीं जैसा कि उसके पास नहीं था भविष्यवाणी का उपहार। उन्होंने केवल उस प्रभावशाली और प्रभावशाली उपाधि को "उधार" लिया। आप पर किसी को अनुमान लगाने के लिए क्यों। 30/40 और 30/45 भी देखें।

०२३ ३६/६९बी: "हमने (अल्लाह) ने (पैगंबर) को काव्य - - - में निर्देश नहीं दिया है। से संबंधित मुहम्मद को कविता बनाने में पारंगत नहीं होने के कारण, यह इस्लाम द्वारा "सबूत" के रूप में इस्तेमाल किया जाने वाला दावा है कि कुरान मुहम्मद द्वारा नहीं बनाया गया है। लेकिन दावा अमान्य है - आपको होने की जरूरत नहीं है कुरान की तरह कहानियों को स्पिन करने के लिए कविता पर पारंगत। दरअसल अक्सर भोलेपन का अंदाज और बेबस दोहराव आदि इंगित करते हैं कि यह एक अच्छे कवि या निबंधकार द्वारा नहीं बनाया गया है। और कुरान के अलावा कविता नहीं, गद्य है।

०२४ ३६/६९सी: "- - - यह किसी संदेश और कुरान से कम नहीं है - - -।" कम से कम यह a . से बहुत कम है सच्चा संदेश और एक सच्चा कुरान जिसे कुरान खुद साबित करता है - बहुत सारी गलतियाँ, मुड़ तर्क और बहुत अधिक अमान्य तर्क + कुछ स्पष्ट झूठ। आदि।

025 36/69d: "- - - चीजों को स्पष्ट करने वाला कुरान"। एक किताब जिसमें ढेर सारी गलतियां हैं, विरोधाभास, भ्रामक "संकेत" और "सबूत", आदि चीजों को स्पष्ट करने के बजाय भ्रमित करते हैं।

026 36/70: "- - - अस्वीकार (सच्चाई (कुरान*)) - - -"। कुरान ज्यादा से ज्यादा आंशिक रूप से सच है - बहुत ज्यादा गलतियाँ, आदि

०२७ ३६/७७: "क्या मनुष्य नहीं देखता कि यह हम (अल्लाह*) हैं जिसने उसे शुक्राणु से पैदा किया है?" एक बार एक प्राकृतिक घटना है कि कुरान कहता है कि अल्लाह साबित करता है, पहले यह साबित किए बिना कि वास्तव में अल्लाह ही है जो इसे बनाता है। इसके अलावा: मनुष्य शुक्राणु द्वारा नहीं बनाए गए थे। मनुष्य / एक आदमी एक शुक्राणु कोशिका + एक अंडा कोशिका से बनाए गए थे। लेकिन मुहम्मद को यह नहीं पता था - एक भगवान था ज्ञात।

028 36/81: "- - - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

सूरह 36: कम से कम 28 गलतियाँ + 4 संभावित गलतियाँ।

सूरा 37:

001 37/5: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

***002 37/6: "हमने (अल्लाह*) ने वास्तव में निचले स्वर्ग (इन) सितारों को - - -" से सजाया है। कुरान किताब में कुछ जगहों पर इसे कुछ रूपों में बताता है: **सितारों को सबसे निचले हिस्से में बांधा जाता है 7 आकाश (जिसका अर्थ यह भी है कि स्वर्ग को किसी चीज़ से बनाना है सामग्री - यदि नहीं तो वहां तारों को बांधना संभव नहीं था)। तारे भी कम हैं चाँद की तुलना में,** - कुरान में अन्य स्थान भी बताते हैं कि चाँद आकाश के बीच में है - इसके अलावा यहां कहा गया है कि सितारों को सबसे निचले स्वर्ग में बांधा जाता है। यह वास्तव में है मुहम्मद के समय और उससे पहले ग्रीक और/या फारसी खगोल विज्ञान से उधार लिया गया (एक तथ्य Ial- कोई भी बच्चा भगवान बेहतर जानता था। मुसलमान आमतौर पर इस बारे में सवालों से बचने की कोशिश करते हैं - या आपको बहुत सारे फैलाने वाले शब्द देता है (और यह कभी नहीं बताता कि यह स्थानीय, गलत खगोल विज्ञान से है)। हमारे पास है शायद ही कभी एक उचित देखा - सही नहीं, लेकिन कम से कम तार्किक रूप से उचित - की व्याख्या यह, मानक एक को छोड़कर जब कुछ इतना गलत है कि "स्पष्टीकरण" भी नहीं है संभव: यह "लाक्षणिक", "रूपक" है - या कुछ इसी तरह - स्पष्टीकरण या कहानियां।

***003 37/6+7: "हमने (अल्लाह*) ने निचले स्वर्ग को सुंदरता से (इन) सितारों से अलंकृत किया है - (के लिए) सुंदरता) और सभी जिद्दी विद्रोही बुरी आत्माओं से बचाव के लिए।" पहले 37/6 को ठीक ऊपर देखें। फिर : **कुरान एक तारे और एक तारे के बीच का फ़र्क नहीं जानता, और बताता है कि सितारों का उपयोग बुरी आत्माओं का पीछा करने के लिए सितारों की शूटिंग के लिए किया जाता है जो चाहते हैं जासूसी करें या स्वर्ग में कही गई बातों को सुनें।** शूटिंग सितारों का उपयोग हथियारों के रूप में किया जाता है जैसे मामले यह कहना आवश्यक नहीं है कि यह गलत है कम से कम २५वें - ३०वें क्रम = एक तारे के द्रव्यमान और एक शूटिंग तारे के बीच का अंतर। श्लोक 8 भी देखें।

***004 37/10: "ऐसी (बुरी आत्माओं*) को छोड़कर जैसे चुपके से कुछ छीन लेते हैं, और वे हैं एक धधकती आग से पीछा किया, भेदी चमक की ”। ऊपर 36/6 और 36/6+7 देखें। यह रहा बताया कि कैसे एक शूटिंग स्टार द्वारा आत्माओं का पीछा किया जाता है - एक लाल लौ नहीं, बल्कि एक भेदी चमक। यह बताने का कोई कारण नहीं है कि यह बहुत गलत है।

005 37/11: "उन्हें (यहाँ यह स्पष्ट नहीं है कि कौन से प्राणी हैं, लेकिन जैसे जिन्न आग से बने हैं, यह होना चाहिए मनुष्य*) ने हम (अल्लाह*) को चिपचिपी मिट्टी से बनाया है।" गलत। एक बात के लिए विज्ञान बताता है वह आदमी बनाया नहीं गया है - वह विकसित हुआ है। दूसरी बात: किसी भी हाल में वह मिट्टी का नहीं बना है। 6/2 देखें।

**00a 37/16: "जब हम मर जाएंगे, और मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएंगे, तो क्या हम (तब) फिर से उठेंगे - - -"। कुरान और इस्लाम सिखाते हैं कि कयामत के दिन हर इंसान को ज़िंदा किया जाता है शारीरिक रूप से - अल्लाह उन सभी हड्डियों और धूल और तरल पदार्थों को इकट्ठा करता है जिनसे आप बने थे, और इसे वापस रख देता है एक साथ अपने सांसारिक, पुराने शरीर को बनाने के लिए, यदि आप बूढ़े हो गए तो कायाकल्प को छोड़कर (कुछ भी नहीं कहा जाता है पुनर्जीवित शिशुओं और बच्चों की उम्र और परिपक्वता के बारे में) - नरक में यदि आप एक बुरा जीवन जीते हैं और एक पृथ्वी की तरह, लेकिन शानदार, 1 से 4 सितारा स्वर्ग में जीवन यदि आप अच्छे रहे हैं - और इस पर निर्भर करता है कि आप कितने अच्छे और कितने योद्धा रहे हैं - अपने जीवन के दौरान धरती। जो चाहता है उस पर विश्वास करो - और याद रखो कि वास्तव में अल्लाह ने वह सब कुछ तय किया जो तुमने किया था पृथ्वी पर (एक तथ्य यह भी कि इस्लाम भी यह समझाने में असमर्थ है कि मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा के दावे कैसे फिट होते हैं, और इस प्रकार उसे नर्क में भेजने का न्याय अगर अल्लाह ने पृथ्वी पर उसके कृत्यों का फैसला किया है।)

006 37/21: "- - - सच तु (एक बार) इनकार किया - - -"। कुरान में बताया गया "सच्चाई" सबसे अच्छा हो सकता है आंशिक रूप से सत्य - बहुत अधिक गलतियाँ, अमान्य "संकेत" और "प्रमाण", आदि।

007 37/37a: "वह (मुहम्मद *) (बहुत) सत्य (कुरान *) के साथ आया है"। कुरान है सत्य के सर्वोत्तम अंशों में - बहुत अधिक गलतियाँ और अमान्य "संकेत" और "प्रमाण"।

००८ ३७/३७बी: "- - - और वह (मुहम्मद) रसूलों (पहले के) की पुष्टि करता है उसे (= यहूदियों और ईसाइयों से*))"। गलत। बहुत सारे और बहुत मौलिक हैं विशेष रूप से एनटी और कुरान के बीच अंतर। कुरान बाइबिल की पुष्टि नहीं कर रहा है - शिक्षाओं के बीच मूलभूत अंतर बस बहुत बड़े हैं - विशेष रूप से तुलना की गई NT और "नई वाचा" यीशु लाया। 29/46 और अन्य देखें।

009 37/52: "- - - सत्य (संदेश का (= कुरान*))"। 376 37/37 और कई अन्य देखें।

०१० ३७/७६: "- - - और हम (अल्लाह*) ने उसे (नूह*) और उसके लोगों को महान से छुड़ाया आपदा (बाढ़*)।" गलत - कुरान के अनुसार उसका एक (बाइबल के अनुसार) केवल ३ बेटे डूब गए (बाइबल में ऐसा नहीं है)। 21/76 में इसी तरह का दावा।

011 37/87: "- - - संसार।" कुरान बताता है कि 7 (सपाट) पृथ्वी हैं, और हदीस कहते हैं कि उन्हें एक के ऊपर एक रखा गया है, और उनके नामों का भी उल्लेख किया गया है। गलत।

00b 37/97: "उन्होंने (लोगों) ने कहा, 'उसे (अब्राहम) एक भट्टी बनाओ, और उसे आग में फेंक दो। भयंकर आग!" आप यह मानने के लिए स्वतंत्र हैं कि यह अब्राहम के साथ हुआ - लेकिन सावधान रहें कि कहानी है "मिद्रश रब्बा" नामक एक कहानी से "उधार" (मुहम्मद भी प्रेरित हो सकते हैं) ओटी में डैनियल और उसके दोस्तों के बारे में कहानी द्वारा)।

00c 37/114: "फिर से (पुराने के) हम अल्लाह *) ने मूसा और हारून पर अपनी कृपा की - - -"। "कुरान का संदेश" यह जोड़ने के लिए त्वरित है कि ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि वे की संतान थे इब्राहीम, लेकिन उनकी अपनी गुणवत्ता के कारण। जिसका ज़िक्र कुरान में कभी नहीं, जिसका इस्लाम में कभी ज़िक्र नहीं उल्लेख करता है, जिसका मुसलमान कभी उल्लेख नहीं करते हैं, वह यह है कि इज़राइल (एक में विश्वास) के साथ विशेष संपर्क यहोवा, नहीं है - दोहराना नहीं - क्योंकि उनके पास इब्राहीम नाम का एक पूर्वज था

हजारों साल पहले। कारण था और वह वाचा है जो इस्राएल और के बीच बनाई गई थी
ओटी के अनुसार याहवे - और युगों के माध्यम से कई बार नवीनीकृत किया गया। अच्छा प्रचार है
इब्राहीम पर विश्वास करने के लिए उन्हें धमकाने के लिए जो लगभग 4oo साल पहले रहते थे (यदि वह कभी रहते थे) a
स्वर्ग के लिए पार्ट-आउट कार्ड। लेकिन यह झूठ बोलना बहुत बेईमानी है, और कभी इसका उल्लेख नहीं करना
यहूदी के विश्वास का वास्तविक कारण: वाचा - टूटा हुआ और दुर्व्यवहार किया गया, लेकिन कभी उठाया नहीं गया या
समाप्त हो गया। (उसी तरह जिस तरह से बनाई गई "नई वाचा" का उल्लेख कभी नहीं करना बहुत ही बेईमानी है
NT में यीशु के माध्यम से - लेकिन फिर मुसलमान अल-ताकिया (वैध झूठ) या "किटमैन" का उपयोग करने के लिए बाध्य हैं।
(वैध अर्ध-सत्य) यदि आवश्यक हो, जब इस्लाम का बचाव या प्रचार करने की बात आती है - नहीं
चाहे इस्लाम झूठा धर्म है या नहीं)।

012 37/117: "और हम (अल्लाह*) ने उन्हें (मूसा और हारून को) किताब दी - - -" गलत।
बाइबल के अनुसार मूसा ने १० आज्ञाएँ प्राप्त कीं और इसके अलावा उन्हें बताया गया
व्यवस्था (वास्तव में मूसा की पुस्तक का भाग) - जिसे उसने स्वयं बाद में लिखा था। और कुछ नहीं।
यहाँ अधिक आवश्यक यह है कि विज्ञान बताता है कि जिसे "मूसा की पुस्तक" कहा जाता है, वह लिखा गया था
मूसा के समय के सदियों बाद।

०१३ ३७/१४२: "तब बड़ी मछली ने उसे (योना) निगल लिया।" गलत।

1. निगलने के लिए पर्याप्त बड़ी मछली मौजूद नहीं है a
   आदमी पूरा। एक या दो अपवाद हैं,
   लेकिन वे बड़े शिकार नहीं खाते (व्हेल-
   शार्क और जिसे मेगामाउथ कहा जाता है)।

   इसके अलावा इनमें से एक या दो हो सकते हैं
   व्हेल, लेकिन ओर्का भी निगलता नहीं है
   एक टुकड़े में सील (यथोचित समान आकार)।
2. भले ही वह निगल लिया गया हो, वह नहीं था
   बच गया - वह की कमी से मिनटों में मर गया था
   ऑक्सीजन।
3. और क्या उसके पास ऑक्सीजन की आपूर्ति थी - जो
   उन्होंने स्पष्ट रूप से नहीं किया - में एसिड का रस
   "मछली" के पेट ने उसे कुछ ही देर में मार डाला था
   समय।

एक परी कथा, भले ही यह कहानी बाइबल से "उधार" ली गई हो। (इसमें कुछ गलतियाँ भी हैं
बाइबल)।

०१४ ३७/१४४: "वह (योना*) निश्चय ही उस दिन तक मछली के भीतर रहता
जी उठने"। मछलियां इतनी देर तक जीवित नहीं रहेंगी, लेकिन एक तरफ: ऊपर 37/142 देखें।

०१५ ३७/१४५: "परन्तु हम (अल्लाह*) ने उसे (योना*) की स्थिति में नग्न किनारे पर फेंक दिया।
बीमारी।" कुछ तो गड़बड़ है, क्योंकि कुरान में एक और जगह किताब बताती है कि उसे कास्ट किया गया था
एक अच्छी जगह पर (अल्लाह की दया के कारण)।

00d 37/152: "'अल्लाह ने बच्चे पैदा किए'? लेकिन वे झूठे हैं!" हो सकता है अल्लाह के पास नहीं है
बच्चे। लेकिन अगर मुसलमानों की तरह अल्लाह = यहोवा दावा करना पसंद करते हैं, तो जिज्ञासु तथ्य यह है कि यीशु
कई बार यहोवा को अपना पिता कहा - और स्पष्ट रूप से एक रूपक या आलंकारिक रूप से नहीं।

**00e 37/164: **यहाँ अधिकांश इस्लामी विद्वानों के अनुसार कोण जो बात कर रहे हैं। वह अत
कम से कम का मतलब है कि कुरान अनंत काल से अस्तित्व में नहीं हो सकता है, जैसे कि कई मुसलमान पसंद करते हैं
विश्वास करें: इसे अवश्य बनाया गया होगा, और कम से कम कुछ फ़रिश्तों के बनने के बाद बनाया गया होगा - if
फ़रिश्ते किताब में नहीं बोल सकते थे।**

००f ३७/१८०: "((वह स्वतंत्र है) वे (बच्चों*) से (गैर-मुस्लिम*) (उसे) बताते हैं। देखो
37/152 ठीक ऊपर।

016 37/182: "- - - संसार।" कुरान झूठा बताता है कि 7 पृथ्वी हैं। ऊपर 26/77 देखें
और नीचे 65/12।

सूरह 37: कम से कम 16 गलतियाँ + 6 संभावित गलतियाँ।

सूरा 38:

००१ ३८/१: "- - - कुरान द्वारा, नसीहत से भरा: (यही सच्चाई है)।" एक किताब जो से भरी हुई है गलतियाँ, अमान्य "संकेत" और "सबूत" और कम से कम प्रलेखित दावों के असंख्य नहीं हैं और केवल "हवा में लटका" कथन आंशिक रूप से सत्य है।

002 38/10: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

00a 38/19: "- - - और पक्षी (सभाओं में) इकट्ठे हुए: उसके साथ सभी (राजा डेविड *) मुड़ गए (अल्लाह के लिए)।" जो चाहता है उस पर विश्वास करें - हम पक्षियों की सभाओं की ओर मुड़ने में विश्वास नहीं करते हैं कोई भी भगवान, तब तक नहीं जब तक कि हमें इसके लिए कुछ प्रमाण न मिलें और न केवल ऐसे शब्द जिनकी कीमत शून्य हो।

423

पेज 424

003 38/29a: "- - - एक किताब (कुरान*) जिसे हम (अल्लाह*) ने उतारा है - - -"। **बहुत से गलतियाँ, बहुत सारे विरोधाभास, बहुत सारे अमान्य "संकेत" और "सबूत", और बहुत सारे और बहुत सारे दस्तावेज नहीं/साबित नहीं किए गए दावे और बयान, जिनमें से सभी को देखा जाना था देर-सबेर - क्या वे सर्वज्ञ ईश्वर के लक्षण हैं? आम तौर पर वे हैं धोखेबाजों, धोखेबाजों और ठगों की पहचान। किसी भगवान ने नहीं भेजा।**

004 38/29b: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39a देखें।

००५ ३८/३६: "तब हम (अल्लाह*) ने हवा को उसकी (सुलैमान की *) शक्ति - - - के अधीन कर दिया। इस मजबूत सबूत की जरूरत है - हम शायद ही विश्वास करते हैं कि सुलैमान तापमान और हवा को नियंत्रित करने में सक्षम था वातावरण में दबाव इस तरह से कि वह हवाओं का निदेशक हो।

006 38/37: "- - - और शैतान (सहित) हर तरह के बिल्डर और गोताखोर (काम करने के लिए) राजा सुलैमान* के लिए) - - -"। हमें इस पर विश्वास करने के लिए, इस्लाम को बहुत वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत करने होंगे - यह और भी अधिक था क्योंकि यह सुलैमान की प्रतिष्ठा को इतना बढ़ा देता था, कि यह निश्चित रूप से नहीं था बाइबिल में भुला दिया गया - - - और वहां इसका उल्लेख नहीं है। (वास्तव में यह "उधार" से है एक बना हुआ ग्रंथ)।

007 38/66: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

008 38/67: "वह (कुरान*) सर्वोच्च संदेश है - - -"। ऊपर 38/29 देखें। ऐसा एक पुस्तक निश्चित रूप से कोई सर्वोच्च संदेश नहीं है।

009 38/71: "मैं (अल्लाह*) मिट्टी से मनुष्य बनाने वाला हूँ:" विज्ञान के अनुसार मनुष्य नहीं था बनाया, लेकिन पहले के प्राइमेट से विकसित - और कम से कम मिट्टी से नहीं बनाया गया। 6/2 देखें।

010 38/75: "- - - एक (आदमी*) जिसे मैंने (अल्लाह*) ने अपने हाथों से बनाया है - - -।" देखें 38/71 ठीक ऊपर और 6/2।

०११ ३८/७६अ: "तू (अल्लाह*) ने मुझे (इब्लीस - शैतान*) आग से पैदा किया - -।" यहाँ कुछ गलत है, कुरान में एक और जगह के रूप में यह कहा जाता है कि वह एक चिलचिलाती आग से पैदा हुआ था हवा - आग और गर्म हवा के बीच अंतर है।

012 38/76b: "- - - उसे (मनुष्य) तू (अल्लाह*) ने मिट्टी से बनाया है।" 38/71 और 6/2 देखें।

०१३ ३८/८६: "मैं (मुहम्मद*) इस (कुरान) के लिए कोई इनाम नहीं माँगता - - -" - - - **पूर्ण को छोड़कर आप सब पर अधिकार + ढेर सारी औरतें + रिश्वत के लिए ढेर सारी क़ीमती चीज़ें + मुफ़्त या करीब-करीब छापे और युद्धों के लिए मुक्त योद्धा अधिक छापे के लिए अधिक शक्ति और अधिक धन प्राप्त करने के लिए और युद्ध और रिश्वत और शक्ति।**

014 38/87: "- - - सभी दुनिया के लिए एक संदेश।" संभव है कि कुरान और इस्लाम सभी तक पहुंचें कुरान में जिन 7 पृथ्वी का उल्लेख है - लेकिन कोई 7 पृथ्वी नहीं हैं (सपाट, और एक के ऊपर एक) हदीसों के अनुसार।) 65/12 देखें।

०१५ ३८/८८: "और तुम (गैर-मुसलमान*) निश्चित रूप से इसकी सच्चाई (कुरान*) (सभी) जानोगे कुछ समय बाद"। देखें ३८/२९ या ४०/७५ - यह सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है क्योंकि कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है।

सूरह 38: कम से कम 15 गलतियाँ + 1 संभावित गलती।

सूरा 39:

001 39/1a: "इस किताब (कुरान*) का रहस्योद्घाटन अल्लाह की ओर से है"। नहीं, ऊपर 38/29 देखें।

002 39/1b: "(अल्लाह है*) ज्ञान से भरा हुआ"। 38/29 देखें। अगर कुरान अल्लाह की ओर से है, तो वह भरा नहीं है ज्ञान की - बहुत अधिक गलतियाँ, आदि।

003 39/2a: "वास्तव में यह हम (अल्लाह*) हैं जिन्होंने किताब (कुरान*) - - - को उतारा है। क्या वह वास्तव में ऐसा है? वास्तव में, ऐसा विश्वास करना असंभव है - बहुत सारी गलतियाँ, आदि। 38/29 देखें।

००४ ३९/२बी: "(अल्लाह ने *) किताब (कुरान*) को आप पर (मुहम्मद या मुसलमान*) सच में"। क्या सच में ये सच हो सकता है कि अल्लाह ने ऐसी किताब उतारी है, इतनी सारी त्रुटियां? - 38/29 देखें। उस स्थिति में अल्लाह सर्वज्ञ नहीं हो सकता। कुछ गड़बड़ है।

005 39/5a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत (कुरान में कम से कम 199 बार, शामिल) स्वर्ग के लिए दूसरे शब्द जैसा कि हम इसे पृथ्वी से देखते हैं - जैसे "फर्ममेंट" या "ट्रैक्ट्स")। 2/22a देखें।

006 39/5b: "उसने (अल्लाह*) ने आकाश (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी को सच में बनाया (अनुपात)"। स्वर्ग और पृथ्वी की मुहम्मद की तस्वीर के लिए सही - पृथ्वी f. भूतपूर्व। कुरान में डिस्क की तरह सपाट है। और 7 आकाश। गलत।

007 39/5c: "- - - प्रत्येक (सूर्य और चंद्रमा) एक पाठ्यक्रम का अनुसरण करता है - - -"। जैसा कि से संबंधित है पृथ्वी (और वह संबंध जिसके बारे में मुहम्मद जानते थे), सूर्य एक पाठ्यक्रम का पालन नहीं करता है। यह पृथ्वी है जो इसके चारों ओर एक कोर्स चलाती है।

*008 39/5d: "वह रात को दिन को ओवरलैप करता है, और दिन रात को ओवरलैप करता है - - -"। गलत। वह सूर्य द्वारा किया जाता है, क्योंकि रात वास्तव में सिर्फ एक छाया है। अगर इस्लाम दिखावा करता है कुछ और, उन्हें असली सबूत पेश करने होंगे - सिर्फ सस्ते शब्द नहीं। "मज़बूत बयान मजबूत सबूत मांगते हैं"। **कोई भी भगवान यह जानता था - मुहम्मद नहीं। हाँ, कोई भी भगवान सिर्फ ऐसी बातें बताकर खुद को भविष्य के लिए साबित कर सकते थे - कोई चमत्कार नहीं ज़रूरी। फिर कुरान की रचना किसने की?**

009 39/6a: "उसने आप सभी को एक ही व्यक्ति (आदम*) - - - से बनाया है। विज्ञान के अनुसार आदम कभी अस्तित्व में नहीं था - मनुष्य पहले के प्राइमेट से विकसित हुआ।

०१० ३९/६बी: "उसने (अल्लाह*) ने तुम्हारे लिए मवेशियों के आठ सिर उतारे - - -"। विज्ञान के अनुसार, मवेशियों को नीचे नहीं भेजा गया है, लेकिन विकसित किया गया है।

०११ ३९/६सी: "उसने (अल्लाह) ने आपके लिए जोड़े में मवेशियों के आठ सिर उतारे - - -"। अन्य से कुरान में हम जानते हैं कि मवेशी थे: 2 गाय, 2 भेड़, 2 बकरियां, 2 ऊंट = 4 जोड़े = 8 सिर। यह गलत है, जैसा कि कुरान पूरी दुनिया के लिए है: जल भैंस (एशिया) भी हैं, बारहसिंगा (उत्तर में), लामा (एस अमेरिका), अल्पाका (एस अमेरिका), गुआमाको (एस। अमेरिका), विचुना (एस अमेरिका - एस अमेरिका से 4 ऊंट से दूर से संबंधित हैं), याक (एशिया), और (भारतीय) हाथी - और शायद अन्य (+ घोड़ा, गधा, आदि। (और सुअर))। कोई भी भगवान यह जानता था - मुहम्मद नहीं। कुरान किसने बनाया? जूलॉजिकल द्वारा विरोधाभासी तथ्य।

०१२: ३९ / ६ डी: "वह (अल्लाह *) आपको, आपकी माताओं के गर्भ में, चरणों में, एक के बाद एक बनाता है अन्य - - -।" पुरानी यूनानी चिकित्सा (गैलेन, अरस्तू) के अनुसार, भ्रूण का विकास 4 . में हुआ था चरण। आधुनिक चिकित्सा असहमत है।

**00a 39/7: "कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठा सकता"। क्या ये सच में सच हो सकता है?
उस मामले में यह एक और प्रमाण है कि अल्लाह यहोवा के समान ईश्वर नहीं हो सकता,
क्योंकि यहोवा ने NT में यीशु के द्वारा जिन बातों पर जोर दिया है, उनमें से एक यह है कि एक अच्छा मसीही विश्वासी होगा
अपने बोझ के साथ दूसरों की मदद करें।

०१३ ३९/१२: "और मुझे (मुहम्मद) अल्लाह को नमन करने वालों में प्रथम होने का आदेश दिया गया है
इस्लाम में।" यह कैसे संभव है अगर कुरान सही है और बहुत सारे लोग मुसलमान थे
उसके सामने, और अल्लाह को नमन किया? (हालांकि वास्तव में यह बहुत संभव है कि वह सही था: कि वह
पहले वाला था)। मुसलमान समझाते हैं कि इसका मतलब किसी समुदाय में पहला है, लेकिन ऐसा नहीं है
कुरान क्या कहता है। इब्राहीम और इश्माएल दोनों के अलावा कुतान के दावे के अनुसार,
मक्का में रहते थे - कम से कम कुछ समय के लिए।

014 39/22a: "जिसका दिल इस्लाम के लिए खुला है, ताकि उसे ज्ञान प्राप्त हो"
(कुरान की सामग्री*) अल्लाह की ओर से - - -"। सभी गलतियों के साथ, अमान्य "संकेत", आदि
कुरान, यह आंशिक रूप से आत्मज्ञान देता है। जबकि गलतियां आदि विपरीत देते हैं
प्रबुद्धता का।

०१५ ३९/२२बी: "वे (गैर-मुस्लिम*) स्पष्ट रूप से (गलती से) भटक रहे हैं!" इस्लाम का दावा है कि
केवल मुसलमान "गलती में नहीं भटकते"। लेकिन यह केवल (इस्लाम के लिए सामान्य रूप में) एक गैर-दस्तावेज है
दावा - यह निश्चित रूप से प्रकट नहीं होता है। (एक और तथ्य यह है कि सभी गलतियों के साथ और इससे भी बदतर)
कुरान, यह एक बहुत ही खुला प्रश्न है जो सबसे खराब त्रुटि में भटक रहा है)। हमें भी चाहिए
उल्लेख करें कि इस तरह के दावे इस्लाम जैसे फ्रिंज संप्रदायों के लिए एक बार सामान्य थे।

016 39/23a: "अल्लाह ने (कुरान*) - - - को उतारा है। वास्तव में? बिलकुल नहीं। 38/29 और देखें
अन्य।

***०१७ ३९/२३बी: "अल्लाह ने प्रकट किया है - - - सबसे सुंदर संदेश - - -"। नफरत के लिए उकसाना,
बलात्कार, दमन, जबरन वसूली, गुलाम बनाना, हत्या, सामूहिक हत्या और युद्ध + के लिए पूर्ण अनुमति
किसी भी गुलाम या कैदी के साथ बलात्कार और सिपहसालार द्वारा + 100% तानाशाही (मुहम्मद और उसका .)
उत्तराधिकारी)। **हाँ, यह एक सुंदर संदेश है। (या वास्तव में: भयानक)** ।

०१८ ३९/२३सी: "(कुरान) अपने आप में सुसंगत है"। गलत - बहुत सारे हैं
विरोधाभास - सैकड़ों। इस्लाम को भी यह तय करने के लिए एक विशेष निरसन नियम की आवश्यकता है कि
पैराग्राफ सही है जब दो या दो से अधिक "टकराते हैं" (सबसे छोटा एक सामान्य रूप से होता है
सही - यही एक कारण है कि इस्लाम में विभिन्न आयतों की उम्र मायने रखती है)। कुछ
मुसलमान कहते हैं कि यह सच नहीं है - अल्लाह ने सिर्फ नियमों को सख्त बनाया है। यह ठीक लग सकता है
कुछ मामलों में स्पष्टीकरण, एफ। भूतपूर्व। शराब के संबंध में। **लेकिन किस तरह के सर्वज्ञ भगवान ने किया
शुरू से ही नहीं पता कि किस तरह के नियमों की जरूरत थी? - इसके अलावा: अधिक सख्त
नियम भी एक निरस्त है।**

*०१९ ३९/२८: "(यह) अरबी में कुरान है, बिना किसी कुटिलता के - - -"। हम कभी नहीं रहे
यह समझने में सक्षम है कि यह अच्छी बात क्यों है कि कुरान अरब में है अगर अल्लाह बनना चाहता है
सभी पृथ्वी के लिए भगवान - ठीक है, यहां तक कि अरब भी कहते हैं कि यह एक कठिन भाषा है (हालांकि भाषा विशेषज्ञ
कहते हैं कि दावा इस्लाम द्वारा उड़ा दिया गया है - शायद व्याख्या करने से बचने के लिए एक अतिरिक्त बचाव के रूप में
जिसे वे स्पष्ट नहीं कर सकते, शायद मुसलमानों की उस मांग के लिए कृत्रिम समर्थन के रूप में
अरबी में कुरान पढ़ें - और कहें कि यह सिर्फ एक मध्यम कठिन भाषा है)।

*वे आगे जोर देते हैं कि इसका अनुवाद करना असंभव है (ठीक वैसे ही जैसे पहले जापानी करते थे
उन्होंने अन्य भाषाओं को अच्छी तरह सीखा)। वह बकवास है। **एक मानव मस्तिष्क क्या सोच सकता है,**

**ज्ञान और बुद्धि के समान स्तर पर एक और मानव मस्तिष्क सक्षम है
समझना।**

निःसंदेह यह तथ्य है कि भाषाओं में विशेष शब्द आदि होते हैं जो आपको अन्य में नहीं मिलते
भाषाएँ - सभी भाषाओं के लिए यही स्थिति है, और अरब के लिए कुछ खास नहीं है, जैसे कुछ

अशिक्षित मुसलमान दावा करना पसंद करते हैं (और उनमें से कुछ इसे मानते भी हैं, हम सोचते हैं)। एफ लो। भूतपूर्व।
नॉर्वेजियन बहुत ही सरल शब्द "ट्रान"। वह शब्द कुछ अन्य भाषाओं में मौजूद है। एफ. पूर्व.
अंग्रेजी को "कॉड लिवर ऑयल" कहना है - और फ्रेंच समान। अरब में कहना होगा
कुछ इस तरह "उत्तरी अटलांटिक मछली के जिगर से तेल जिसे अंग्रेजी में कॉड कहा जाता है" -
लेकिन मुख्य बात यह है कि भले ही उन्हें इस मामले में नॉर्वेजियन के स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो
जरूरत नहीं है, यह 100% बिल्कुल और सही ढंग से वही और सही अर्थ बताता है। या इनुइट ले लो -
कहा जाता है कि उनके पास विभिन्न प्रकार की बर्फ और बर्फ की स्थिति के लिए 42 अलग-अलग शब्द हैं -
अरब के पास शायद ही एक जोड़े से ज्यादा हों। लेकिन एक अरब को समझाना इतना मुश्किल नहीं होगा
कि इस इनुइट शब्द का अर्थ है कि बर्फ गीली है, यह कि यह पानी से भरा हुआ है, यह कि
बर्फ सूखी है, यह है कि यह है या हवा से चलाई गई है, यह कि यह मुश्किल से जमी है, यह है कि यह है
चिपचिपा (ताकि आप बर्फ के गोले f. पूर्व बना सकें), यह कि यह ख़स्ता है, आदि।

और यह अरब के साथ भी ऐसा ही है: अरब f. भूतपूर्व। "2 वर्षीय शी-ऊंट" के लिए एक शब्द है। "सोल्चो
ein Wort gibt es nicht in Deutch" ("ऐसा शब्द जर्मन में मौजूद नहीं है") - लेकिन ऐसा नहीं है
एक जर्मन को यह समझाने में समस्या है कि कोई 2 साल की मादा ऊंट के बारे में बात कर रहा है।
जैसा कि कहा गया है: एक मानव मस्तिष्क क्या सोच सकता है, उसी स्तर पर दूसरा मानव मस्तिष्क कर सकता है
थोड़ा स्पष्टीकरण के साथ समझें।

**इसके अलावा: यह मांग करने के लिए कि एक अफगान किसान अरब में कुरान पढ़ेगा, इसका मतलब है कि
आप मांग करते हैं कि उन्हें उन सभी अलग-अलग शब्दों और अलग-अलग अर्थों को समझाया जाएगा
पहले से - क्योंकि यही एकमात्र तरीका है जिससे वह उन्हें बाद में पढ़कर समझ सकता है।
बस वही शब्द और वही व्याख्याएं - लेकिन बहुत अधिक शब्द, क्योंकि वह शायद नहीं
पहले से ठीक से जान लें कि कौन से शब्द उसे अतिरिक्त अंतर्दृष्टि दे सकते हैं।

**इसके अलावा उस समय की अरब वर्णमाला यह लिखने के लिए अनुपयुक्त थी कि वास्तव में क्या था
कहा- उस समय वर्णमाला बहुत अधूरी थी।** (यही कारण था कि क्यों
पहले के समय में कुरान की कई किस्में थीं। अब मुख्य रूप से इनमें से 2 हैं
पहले 14 "कैननाइज्ड" जो उपयोग किए जाते हैं - एक (वारश) अफ्रीका के कुछ हिस्सों में, और एक (हाफ्स) में
बाकी दुनिया - हालांकि वे इसे "पढ़ने के तरीके" कहते हैं, यह छिपाने के लिए कि वास्तविकता है
"किस्में"। इस मामले में वे दो भाव बिल्कुल समान हैं)। अगर अल्लाह पहुंचना चाहता है
कई, उस क्षेत्र की प्राकृतिक भाषा ग्रीक या शायद लैटिन या फारसी थी। या क्यों
बहासा इन्डोनेशियाई नहीं? - सीखने के लिए दुनिया की सबसे आसान भाषाओं में से एक और अधिक से अधिक के साथ
अरब में संभावित मुस्लिम, और आसपास के देशों के साथ अच्छे संबंध हैं। यदि
एक पश्चिमी भाषा या फ़ारसी के वे भी किताब को सही ढंग से लिख सकते थे, जैसे
उन भाषाओं में पहले से ही पूर्ण अक्षर थे। तब उन्हें not . की समस्या नहीं हुई थी
यह जानना कि वास्तव में क्या कहा और लिखा गया था। अब मुसलमान ही निराधार बना सकते हैं- or
गलत - बयान जो दावा करते हैं कि आज का कुरान आखिरी और आखिरी अक्षर तक सही है
अल्पविराम, भले ही सभी अक्षर नहीं - और अल्पविराम - अरब में 650 ईस्वी के आसपास भी मौजूद थे।

बहुत से मुसलमान जो कहते हैं उस पर विश्वास भी करते हैं। एक पूर्ण वर्णमाला के साथ यह वास्तव में हो सकता है
सही रहा। लेकिन उस समय की अधूरी वर्णमाला का तथ्य इस दावे को मजाक बना देता है। **परंतु
मुल्ला, इमाम आदि अपनी सभाओं से इन बिंदुओं पर झूठ क्यों बोलते हैं - या छुपाते हैं
अंक?**

लेकिन कुटिलता के बिना? सभी गलतियों के साथ? !! उन सभी विरोधाभासों के साथ ?! सभी के साथ
अमान्य "संकेत" और "प्रमाण"? सभी ढीले दावों और बयानों के साथ? **ऐसे "तथ्य"
आमतौर पर कुटिलता के बहुत लक्षण हैं।**

020 39/32: "- - - सत्य (कुरान) को खारिज करता है - - -"। 38/29 देखें। सबसे अच्छी किताब आंशिक रूप से सच है।

०२१ ३९/३३: "और वह (सबसे अधिक संभावना मुहम्मद, जैसा कि" वह "के साथ लिखा गया है, न कि" वह "*) जो
सत्य लाता है - - - "कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है - यह भी देखें f. भूतपूर्व। 40/75 और 41/12।

*022 39/38a: "यदि आप उनसे पूछें कि वह कौन है जिसने आकाश (बहुवचन और गलत) बनाया है और
पृथ्वी, वे 'अल्लाह' कहना सुनिश्चित करेंगे - - -"। गलत। अगर वे मानते हैं कि एक भगवान ने इसे बनाया है, तो उन्होंने
अपने स्वयं के भगवान का नाम रखा था - हालांकि वहाँ और फिर यह बहुदेववादी अल-
लाह।

023 39/38b: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०२४ ३९/४१अ: "वास्तव में हम (अल्लाह*) ने किताब (कुरान*) - - - को उतारा है। **क्या अल्लाह कर सकता है इस गुणवत्ता की किताब बनाई? कोई भगवान दूसरा दर या तीसरा दर - किताब नहीं बनाता है।** 38/39 देखें।

025 39/41b: "वास्तव में हम (अल्लाह*) ने किताब (कुरान*) को सत्य - - - में उतारा है। सबसे अच्छे रूप में आंशिक सत्य - सभी गलतियाँ देखें, आदि।

00b 39/41c: "वास्तव में हम (अल्लाह *) ने किताब (कुरान*) - - -, (निर्देश) के लिए प्रकट किया मानवता।" अगर अल्लाह एक अच्छा खुदा है, जैसे इस्लाम दिखावा करता है, तो फिर सारे अनैतिक निर्देश क्यों? और अमानवीयता मदीना के कुछ 22-24 सूरहों में पाई जाती है? और इसके साथ एक किताब कई त्रुटियाँ निर्देश के योग्य नहीं हैं - एक परोपकारी ईश्वर के धर्म के आधार के रूप में नहीं।

***00सी 39/41डी। "तब वह, जो मार्गदर्शन प्राप्त करता है (ऊपर 39/41c देखें*) अपने स्वयं के लाभ को प्राप्त करता है आत्मा - - -"। **चोरी/लूट, नफरत, बलात्कार, हत्या, सामूहिक हत्या से आपकी आत्मा को क्या लाभ हो सकता है? (मुस्लिम इतिहास में कई, कई मामले), गुलाम, आदि? यह आपकी जेब को लाभ देता है - और देता है मुहम्मद और उनके उत्तराधिकारी कई और सस्ते योद्धा - लेकिन आपकी आत्मा?** गलत। इस इस तरह का जीवन केवल एक आदमी - और उसकी संस्कृति और धर्म को क्रूर बनाता है।

०२६ ३९/४२: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

027 39/46: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०२८ ३९/५२: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२९ ३९/५५: "और उन सर्वोत्तम (पाठ्यक्रमों) का पालन करें जो आप पर प्रकट हुए हैं कुरान*) अपने रब की ओर से - - -"। गलतियों, उलझे तर्कों से भरी किताब और तर्क, अंतर्विरोध, और यहाँ तक कि स्पष्ट झूठ (जैसे कि चमत्कार किसी को भी विश्वासी नहीं बना देंगे), सबसे अच्छा पायलट नहीं है।

०३० ३९/५९: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०३१ ३९/६३ए: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/2ए देखें।

०३२ ३९/६३बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

428

पेज 429

033 39/67a: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०३४ ३९/६७बी: "- - - आकाश (बहुवचन और गलत) उसके (अल्लाह के) दाहिने हाथ में लुढ़क जाएगा - - -"। स्वर्ग जैसा कि कुरान सोचता है, कुछ से बने 7 अदृश्य गोलार्ध हैं सामग्री। आप गोलार्द्धों को कैसे रोल करते हैं? लेकिन इस बिंदु पर अधिक: मुहम्मद के रूप में स्वर्ग और हमने इसे देखा/देखा, निकट निर्वात में एक ऑप्टिकल भ्रम है। आप एक ऑप्टिकल कैसे रोल करते हैं भ्रम, और आप वैक्यूम को कैसे रोल करते हैं? उल्लेख नहीं करने के लिए: आप ब्रह्मांड को कैसे रोल करते हैं?

035 39/68: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०३६ ३९/७१क: "--- क्या आपस में से दूत तुम्हारे पास नहीं आए - - -?" नहीं उन्होंने किया नहीं। हदीस/इस्लाम 124ooo नबियों के बारे में बात करता है। **अगर इतने सारे काम कर रहे थे कहीं, किसी समय, कम से कम उनमें से कुछ ने निशान छोड़ दिया था। कोई नहीं है।** 35/24 देखें।

०३७ ३९/७१: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

038 39/74: "- - - संसारों - - -"। मौजूद 7 समतल पृथ्वी का एक और संदर्भ कुरान के अनुसार - और हदीसों के अनुसार एक के ऊपर एक रखा गया है। नहीं टिप्पणियाँ आवश्यक। 65/12 देखें।

सूरह 39: कम से कम 38 गलतियाँ + 3 संभावित गलतियाँ।

सूरा 40:

००१ ४०/२: "- - - यह किताब (कुरान*) अल्लाह की ओर से है -"। धारा 38/29 और 39/41।

002 40/2: "- - - (अल्लाह है*) ज्ञान से भरपूर - - -"। नहीं अगर उसने कुरान नीचे भेजा। 38/29 देखें।

००३ ४०/४ए: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

*००४ ४०/४बी: "कोई भी अल्लाह के संकेतों के बारे में विवाद नहीं कर सकता लेकिन अविश्वासियों"। गलत। वहां
कोई कारण नहीं है कि मुसलमानों के लिए उन पर चर्चा करना भी संभव नहीं है, सिवाय धार्मिक विचारों के और
निषेध। और उन्हें ऐसा करना चाहिए, क्योंकि उनमें से कोई भी वैध प्रमाण नहीं है (वे पतली हवा पर आराम करते हैं या
अल्लाह के अप्रमाणित दावे या बयान)। बाइबल से लिए गए कुछ लोग यहोवा को सिद्ध कर सकते हैं, परन्तु
बिल्कुल कोई साबित नहीं करता है या यहां तक कि अल्लाह को इंगित भी नहीं करता है। वे एफ. भूतपूर्व। किसी भी पुजारी द्वारा किसी भी में इस्तेमाल किया जा सकता है
अपने भगवान (ओं) के बारे में धर्म।

005 40/8: "- - - (अल्लाह है*) ज्ञान से भरा हुआ।" नहीं अगर उसने कुरान नीचे भेजा। 38/29 देखें।

००६ ४०/१३: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

००७ ४०/२१: "क्या वे (लोग*) पृथ्वी पर यात्रा नहीं करते हैं और देखते हैं कि उनका अंत क्या था
उनके पहले?" मध्य पूर्व में यहां-वहां खंडहर हैं। मुहम्मद ने दावा किया कि वे
उन लोगों के अवशेष थे जिन्हें अल्लाह ने उनके पापों के लिए दंडित किया था। गलत। शुष्क और कठोर भूमि में
और युद्धरत कबीलों के साथ, और भी कई कारण हैं जिनकी वजह से पुराने घर और बस्तियाँ हो सकती हैं
खाली या खंडहर में तब्दील।

008 40/22। "- - - स्पष्ट (संकेत) (= अल्लाह के लिए प्रमाण*) - - -"। अल्लाह के लिए कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं
सभी कुरान में। 2/99 देखें। इस मामले में स्पष्ट संकेत हो सकते हैं, लेकिन मामले में
यहोवा, अल्लाह के लिए नहीं।

429

पेज ४३०

00a 40/24: "- - - हामान - - -"। 28/6 देखें।

009 40/28: "- - - स्पष्ट (संकेत) - - -"। ऊपर 40/22 और 2/99 देखें।

*०१० ४०/३१: "--- अल्लाह ने कभी अपने बंदों के साथ अन्याय नहीं चाहा।" गलत। **एक सितारा उदाहरण:**
इस्लामी कानून जो बताता है कि बलात्कार करने वाली महिला को कड़ी सजा दी जानी चाहिए / पत्थरवाह किया जाना चाहिए
अभद्रता के लिए अगर वह 4 पुरुष गवाहों को पेश नहीं कर सकती है जिन्होंने वास्तव में बलात्कार देखा था,
शायद सबसे अन्यायपूर्ण कानून है जो कभी भी आधे सभ्य समाज में मौजूद था।
घोर अन्याय।

०११ ४०/३५: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

००बी ४०/३६: "- - - हामान - - -"। 28/6 देखें।

012 40/37a: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०१३ ४०/३७बी: "- - - फिरौन की साजिश ने विनाश (उसके लिए) के अलावा कुछ नहीं किया।" गलत। हम
कुरआन में और जगहों से जान लेते हैं कि नाश डूबने वाला बताया गया है। लेकिन रामसेस II
डूबने से नहीं मरा, और उसके ऊपर संभव होने के कई साल बाद तक वह नहीं मरा
सीए में पलायन 1235 ईसा पूर्व - दोनों विज्ञान के अनुसार।

०१४ ४०/५०: "- - - स्पष्ट संकेत (= अल्लाह के प्रमाण) - - -"। **अल्लाह का कोई प्रमाण नहीं है -**
कुरान में नहीं, और कहीं नहीं (यहां तक कि कई मुस्लिम विद्वान भी इसे मानते हैं)। अगर एक सबूत
अस्तित्व में था, आप 1000 - हजार -% सुनिश्चित हो सकते हैं कि पूरी दुनिया को सूचित किया गया था और
बड़े अक्षरों के साथ।

०१५ ४०/५१: “हम (अल्लाह) निःसंदेह अपने रसूलों और ईमानवालों की सहायता करेंगे---
।" गलत - कुरान में सभी गलतियों आदि के साथ, संदेह के भारी कारण हैं।

**०१६ ४०/५३: "हम (अल्लाह*) ने पहले मूसा को मार्गदर्शन - - - दिया था। गलत।
विज्ञान के अनुसार ये पुस्तकें मूसा की मृत्यु के सदियों बाद लिखी गई थीं। (के अनुसार
बाइबिल, मूसा को केवल लिखित रूप में 10 आज्ञाएं मिलीं। इसके अलावा उन्हें कानून बताया गया
(वास्तव में जो अब मूसा की पुस्तक है उसके कुछ अंश), जिसे उसने बाद में स्वयं लिखा था।

अब, इस्लाम में यह बताने की प्रवृत्ति है कि बाइबिल को गलत ठहराया गया है - और अजीब तरह से - हमेशा तरीकों से
यह उन बिंदुओं को छोड़ने के लिए होता है जो इस्लाम का निर्माण करेंगे यदि इसे गलत साबित नहीं किया गया था। इसके अलावा वे
बार-बार कहते हैं कि शास्त्र लोप हो गए हैं - सदा शास्त्र ऐसे कहे जाते हैं
कुरान और अन्य नहीं, और केवल इतना ही नहीं: ऐसे सभी ग्रंथों में एक अजीब संयोग है
खो जाना हुआ। इसके अलावा: विज्ञान ने पिछले कुछ वर्षों में कुछ 13ooo ग्रंथ जमा किए हैं या
बाइबिल के लिए प्रासंगिक अंश और बाइबिल के संदर्भ में लगभग 30ooo। सभी में किया गया है
बाइबिल के अनुसार या बाइबिल के लिए प्रासंगिकता के साथ समझना आसान है - तथा
इस्लाम के दावों के साथ कोई भी "अपवित्र" नहीं किया गया है, लेकिन यह बस करता है
पाए गए सभी लोगों के बीच मौजूद नहीं है - कुछ ने गहरी अंतर्दृष्टि भी दी है इसलिए यह किया गया है
अनुवादों में विवरण को सही करना संभव है।

अंत में: कुरान पर भरोसा करने वाले या उसकी प्रतियों के आधार पर कई पुराने ग्रंथ भी पाए गए हैं।
लेकिन जो कुछ भी आज के ग्रंथों जैसा नहीं है, वह मुसलमानों द्वारा छिपाया जाता है। स्टार उदाहरण
जिनमें से "कुरान कब्र" है - खराब हो चुके कुरान स्क्रॉल के लिए विश्राम स्थल - यमन में पाया गया
1972. पश्चिम के वैज्ञानिकों और वैज्ञानिक तरीकों ने उन्हें पढ़ना संभव बनाया, लेकिन कब
यह पता चला कि **आज के ग्रंथों से "छोटे, लेकिन महत्वपूर्ण" मतभेद थे,**
कुछ चयनित "खतरनाक" भागों को छोड़कर, स्क्रॉल तक आगे पहुंच से इनकार कर दिया गया था। इस

भले ही कुरान के इतिहास को जानने वाला कोई भी व्यक्ति उस कथन को जानता हो: "कुरान का
आज अंतिम अक्षर और अंतिम अल्पविराम है जो गेब्रियल ने मुहम्मद को बताया था" is
सच नहीं।

ईमानदारी?

०१७ ४०/५६: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

018 40/57: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०१९ ४०/५९: "वह घड़ी (कयामत का) अवश्य आएगी: इसमें कोई संदेह नहीं है - - -"। यह बिल्कुल है
संभव है कि कयामत की घड़ी आ जाए - ऐसा बहुत से धर्म कहते हैं। लेकिन जैसा कुरान ने दिया है
इसके लिए एक भी वैध प्रमाण नहीं है - बस सस्ता, हालांकि अक्सर मजबूत, शब्द - मजबूत होते हैं
कुरान की तरह कयामत और नर्क पर शक करने के कारण। यह और भी अधिक है जैसा कि कुरान में है
इतनी सारी अन्य गलतियाँ, और इतने सारे विरोधाभासों और अमान्य "संकेत" और "प्रमाण" का उपयोग करता है,
कुछ भी नहीं या अन्य अमान्य कथनों, "संकेत" या . पर आधारित सभी कथनों का उल्लेख नहीं करना
"सबूत"।

*०२० ४०/६१: "यह अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई - - - और दिन - - -"। गलत। यह है
सूर्य और पृथ्वी की परिक्रमा जो रात और दिन बनाती है। यह सिर्फ एक और जगह है जहाँ
मुहम्मद एक प्राकृतिक घटना लेता है, बिना प्रमाण के बताता है कि यह किसके द्वारा किया या बनाया गया है
अल्लाह, और फिर बताता है या इंगित करता है कि यह अल्लाह या इस्लाम के लिए एक प्रमाण है। प्रमाण के रूप में, यह है
तार्किक रूप से पूरी तरह से अमान्य - और जैसा कि पहले कहा गया है: अमान्य प्रमाणों आदि का उपयोग, आदि, है
किसी की पहचान जानबूझकर सच नहीं बोलना और धोखा देने या धोखा देने की कोशिश करना या
किसी को धोखा देना।

०२१ ४०/६२: "---- सत्य से कैसे भटके हुए हो! (कुरान*)"। 38/29 देखें। एक किताब
इस तरह सबसे अच्छा आंशिक रूप से सत्य का प्रतिनिधित्व करता है।

०२२ ४०/६३: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२३ ४०/६४: "(अल्लाह ने*) आसमान को छत्र बना दिया - - -"। गलत। आकाश - या स्वर्ग - नहीं है
एक चंदवा, खासकर तब नहीं जब आप जानते हैं कि यह कुरान के अनुसार बनाया गया है
कुछ सामग्री (सितारों को सबसे निचले स्वर्ग में बांधा जाता है)। आकाश जैसा हम देखते हैं, है
निकट निर्वात में एक ऑप्टिकल भ्रम।

024 40/66a: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। गलत। 2/99 देखें।

०२५ ४०/६६बी: "- - - संसार।" कुरान झूठा बताता है कि 7 पृथ्वी हैं। ऊपर 26/77 देखें
और नीचे 65/12।

०२६ ४०/६७अ: "वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें धूल से पैदा किया - - -"। गलत। आदमी नहीं था

धूल से बना। 6/2 देखें।
०२७ ४०/६७बी: "(अल्लाह ने आपको बनाया*) एक शुक्राणु बूंद से - - -"। गलत। आप नहीं बने थे
स्पर्म ड्रॉप से। आप एक शुक्राणु कोशिका और एक अंडे की कोशिका के संलयन से बने हैं - अंडा
सेल भी अब तक का सबसे बड़ा है। कुरान में अन्य स्थानों से यह स्पष्ट है कि मुहम्मद
माना जाता है कि शुक्राणु एक महिला में "रोपने के लिए बीज" था, और वहां से एक बनने के लिए बढ़ना शुरू हो गया
भ्रूण और फिर एक बच्चा। कोई एक इंच लंबा भगवान जानता था कि यह गलत था। तो कौन
कुरान बनाया?

०२८ ४०/६९: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२९ ४०/७०: "जो लोग इस्लाम की तरह किताब (कुरान या "झूठी नहीं" बाइबिल को अस्वीकार करते हैं)
दावे - हमेशा की तरह बिना किसी दस्तावेज के*) जो हमने (अल्लाह*) भेजे - - -"। नहीं
सर्वज्ञ ईश्वर ने कुरान को उतारा - बहुत सारी गलतियाँ, आदि। (**और विज्ञान ने दिखाया है कि
आधुनिक बाइबिल की सामग्री पहले वाले की तरह ही है** - इस्लाम के दावे न्यायसंगत हैं
वह; दावे।)

यह सबसे खुला सवाल है कि सच्चाई से सबसे दूर कौन है- मुसलमान या (कुछ?) गैर-
मुसलमान। सभी गलत तथ्यों, अंतर्विरोधों और अन्य गलतियों से यह स्पष्ट है कि
कुरान एक सर्वज्ञानी भगवान द्वारा नहीं बनाया गया है - और कुरान में अमानवीयता भी साबित करती है कि यह है
किसी अच्छी या परोपकारी शक्ति द्वारा नहीं बनाया गया (जब कोई दावा करता है और अच्छी बातें बताता है, लेकिन
मांग करता है और बुरे काम करता है, मांग और कर्म उसके न्याय के लिए अधिक विश्वसनीय होते हैं
चरित्र, बहुत सस्ते शब्दों की तुलना में)। और अगर इस्लाम बना हुआ धर्म है, तो बना हुआ धर्म है
पुस्तक - फिर उन सभी मुसलमानों के साथ क्या जिन्हें वास्तविक की तलाश करने की संभावना से वंचित कर दिया गया है
धर्म (यदि ऐसा मौजूद है)? - मामले में उनकी एकमात्र आशा यह है कि नर्क भी एक कल्पना है।

***०३० ४०/७५: "---सत्य (कुरान*)---"। चीजों को दोहराने के लिए:

1. कुरान में 1750 से अधिक स्थान हैं
   गलत तथ्यों के साथ।जो हमारे पास है उसे जोड़ें
   अनदेखी + अन्य सभी प्रकार की गलतियाँ
   और अन्य प्रकार की गलतियाँ और आपके पास हो सकती हैं
   कुछ ३००० या अधिक स्थानों पर गलतियों के साथ,
   एक ही किताब में विरोधाभास, आदि।
2. कुरान में इसके अलावा कम से कम 200+ . है
   "सबसे अधिक संभावना है" गलत तथ्य।
3. कुरान में और भी गलतियाँ होने की संभावना है
   तथ्य जो हमने नहीं देखे हैं।
4. कुरान में बहुत सारे अमान्य "संकेत" हैं
   अल्लाह / इस्लाम का संकेत या "साबित" करना। उपयोग
   अमान्य तर्कों की पहचान है
   धोखा देती है
5. कुरान में कई अमान्य हैं
   "सबूत," इंगित करने का नाटक या "साबित"
   अल्लाह/इस्लाम। अमान्य "संकेतों" का उपयोग और
   "सबूत" धोखेबाजों के लिए मजबूत पहचान हैं,
   धोखेबाज, और धोखेबाज।
6. कुरान में बड़ी संख्या में दावे हैं
   और पतली हवा में लटकने या आराम करने वाले बयान
   अन्य अमान्य दावों, बयानों, "संकेत" पर,
   या "सबूत"। ऐसे अमान्य का उपयोग
   तर्क और सस्ते शब्द की पहचान है
   धोखेबाज और धोखेबाज।
7. एक भी कथन नहीं है, "चिह्न" या
   कुरान में "सबूत" जो वास्तव में अल्लाह को साबित करता है -
   वे बिना किसी अपवाद के तार्किक रूप से अमान्य हैं।
   बाइबल से कुछ ऐसे लिए गए हैं जो शायद
   एक भगवान को इंगित करें - अल्लाह नहीं, बल्कि एक भगवान। लेकिन
   बाइबिल यहोवा के बारे में बात करता है, अल्लाह के बारे में नहीं

पेज ४३३

(और शिक्षाएँ मौलिक रूप से ऐसी हैं
अलग - 29/46 देखें - कि इसके बावजूद क्या
कुरान और हदीस कहते हैं, अल्लाह एक नहीं है
भगवान के रूप में जिसके बारे में यीशु ने बताया - तब तक नहीं जब तक कि वह
सिज़ोफ्रेनिक है।)

8. अरब कुरान में 100 . से अधिक शामिल हैं
भाषाविदों के अनुसार भाषाई गलतियाँ।
9. कुरान को शुद्ध अरबी कहा गया है। यह
बहुत सारे गैर-अरबी शब्द शामिल हैं। हमारे पास है
अलग-अलग संख्याएँ देखीं, लेकिन शायद 275
आर्थर जेफ्रीज़ के अनुसार अलग-अलग शब्द
(कुरान शब्द उनमें से एक कहा जाता है)।
कहानी के लिए ये गंभीर नहीं हैं, लेकिन हैं
कुरान की तुलना में गलतियाँ हैं
कहते हैं, और कुरान सही होने का दिखावा करता है और
गलतियों के बिना - an . से नीचे भेजा गया
सर्वज्ञ भगवान। इस्लाम की एक व्याख्या है,
यद्यपि: अरबों ने विदेशी शब्दों का प्रयोग किया है और
उन्हें अरब बना दिया। एक नीग्रो नहीं बनता
एक अरब भले ही वह अरब चला जाए। एक बहुत
किसी चीज़ को सच दिखाने का व्यावहारिक तरीका
केवल।
10. कुरान में कम से कम सीए है। 400
विरोधाभास।
11. कुरान में कम से कम 400+ स्थान हैं
जहां मूल अरब पाठ इतना अस्पष्ट है कि
यह सुनिश्चित करना असंभव है कि वास्तव में क्या है
मतलब।

कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है। संदेह और संदेह के बहुत अच्छे कारण हैं।

यह भी बताया जाता है कि कुरान अल्लाह के स्वर्ग में एक पूजनीय "मातृ पुस्तक" की प्रति है।
यह गलत होना चाहिए। एक सर्वशक्तिमान ईश्वर असंभव रूप से पूजनीय हो सकता है - एक मजाकिया के रूप में नहीं रखा गया
जिज्ञासु, लेकिन श्रद्धेय !! - इतनी सारी गलतियों और विरोधाभासों वाली एक किताब, वह संख्या
ढीले और मूल्य के दावों और बयानों के बिना, सभी अमान्य "संकेतों" का उल्लेख नहीं करना और
"सबूत" - एक मूर्ख या धोखेबाज या धोखेबाज की पहचान। इसके अलावा: अन्य १२४००० + पहले
इस्लाम के अनुसार नबियों (या उनमें से कम से कम कई) को माता की एक समान प्रति प्राप्त हुई
पुस्तक। दिखाओ कि आप कम से कम 2000 साल पहले रहने वाले नबी हुद या सालेह थे
मुहम्मद (क्योंकि मूसा ने कुरान के अनुसार उनके बारे में बात की थी, और वह जीवित रहे (?) कुछ
मुहम्मद से 2000 साल पहले - हुद और सालेह निश्चित रूप से उससे पहले रहे होंगे), या
कि आप १४९२ ईस्वी से पहले अमेरिका में भारतीय पैगम्बरों में से एक थे - या आर्कटिक में या
ऑस्ट्रेलिया में बॉटनी बे से 100 साल पहले - कुरान और इस्लाम का दावा है कि सभी लोगों के पास है
नबी थे। फिर कुरान पढ़ो और देखो तुम कितना समझोगे और कितना
नहीं - गाय, भेड़, बकरी, ऊंट, जहाज, मेल के कोट, और कई अन्य जैसे शब्द भी नहीं
शब्द - दक्षिण अमेरिका या ऑस्ट्रेलिया में उनका क्या अर्थ था? और कितना अप्रासंगिक है? - एफ।
भूतपूर्व। मुहम्मद की पारिवारिक समस्याएं, सभी तथ्य और घटनाएं जो ज्यादातर अरब के लिए प्रासंगिक हैं,
आदि।

उसी के साथ कुरान को मन से पढ़ो- और रोओ।

पेज ४३४

और कोई दुविधा है? - याद रखें हम यहां बात करते हैं आदर्श और कालातीत मां के बारे में बुक करें कि कुरान और अन्य सभी झूठी किताबें नबियों को सभी जगह भेजी गईं आदम से लेकर मुहम्मद तक की दुनिया की सटीक प्रतियां हैं। उस इस्लाम के बावजूद यह बताते हैं कि नए भविष्यवक्ताओं और नए शास्त्रों का कारण यह था कि समय बदल गया था, इसलिए शास्त्रों को थोड़ा बदलना पड़ा - एक की सही प्रतियों को कैसे बदला जाए और परफेक्ट मदर बुक?

031 40/77: "- - - अल्लाह का वादा सच है - - -"। कुरआन में इतना गलत है, वो भी इसे साबित करना होगा, क्योंकि धर्म के बारे में संदेह के गंभीर कारण हैं क्या सच है। यदि यह एक बना हुआ है, तो निश्चित रूप से "अल्लाह के वादे" भी सच नहीं हैं।

०३२ ४०/७८: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०३३ ४०/८१ए: "- - - उसके संकेत - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०३४ ४०/८१बी: "- - - संकेत - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

*०३५ ४०/८२: "क्या वे पृथ्वी पर यात्रा नहीं करते और देखते हैं कि उन लोगों का अंत क्या था? उन्हें?" अरब में और उसके आसपास बिखरे हुए खंडहर थे - और हैं। मुहम्मद ने बताया कि वे थे अल्लाह ने पापों के लिए दंडित किए गए लोगों के सभी अवशेष (और अच्छे उपाय के लिए वे मजबूत थे) मुहम्मद के समकालीन अरबों की तुलना में)। जो चाहता है उस पर विश्वास करें - लेकिन किसी प्रोफेसर से संपर्क करें इतिहास या एक मनोवैज्ञानिक यदि आप करते हैं। कम से कम 3/137 - 6/11 - 7/4 - 9/70 -16/36 . में इसी तरह के दावे - 21/6 - 40/21।

036 40/83: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। 2/99 देखें।

सूरह ४०: कम से कम ३६ गलतियाँ + २ संभावित गलतियाँ।¨

यहाँ उप-योग: कम से कम १३३८ गलतियाँ + १६९ संभावित गलतियाँ।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 4, खंड 6 (= II-1-4-6)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। NS "पूर्ण" सूची - "विश्वकोश" - सूरह पर आधारित और पद संख्या

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें। धारा 1 से 16.

कुछ स्पष्ट तथ्य गलतियाँ और सुराह में त्रुटियाँ ४१ से ६० . तक

कुरान में - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

टिप्पणियों को ३ नंबरों (०० या ० सहित) द्वारा क्रमांकित किया गया, कुछ स्थानों के बाद एक छोटा पत्र = स्पष्ट गलतियाँ। टिप्पणियों की संख्या 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षर (बड़ा या .) छोटा) = संभावित गलती।

सूरा 41:

001 41/2: "(अल्लाह) से एक रहस्योद्घाटन (कुरान *) - - -"। 38/29 और 40/75 देखें।

००२ ४१/३: "एक किताब (कुरान) जिसकी आयतों को विस्तार से समझाया गया है - - -"। बहुत छंदों की विस्तार से व्याख्या नहीं की गई है - देखें f. भूतपूर्व। सभी अतिरिक्त स्पष्टीकरण जो आवश्यक हैं इस्लामी कानूनों के संबंध में।

003 41/9a: "(अल्लाह पहले*) ने दो दिनों में पृथ्वी की रचना की - - -"। **गलत। पृथ्वी दूर थी पहले बनाया।** ब्रह्मांड की रचना लगभग १३.७ अरब साल पहले हुई थी - हमारा सूर्य और पृथ्वी कुछ ४.६ अरब साल पहले (या वास्तव में ४.५७ अरब) - - - और खरबों तारे और सबसे अधिक संभावना पौधों का निर्माण 9 अरब से अधिक वर्षों के बीच में किया गया था। कोई भी भगवान जानता था, लेकिन मुहम्मद नहीं। फिर कुरान की रचना किसने की?

००४ ४१/९बी: "(अल्लाह*) ने दो दिनों में पृथ्वी की रचना की - - -"। गलत। इसने 4.6 . का बेहतर हिस्सा लिया इसे आज की तरह पाने के लिए अरबों वर्ष - और इसे जीवन के लिए उपयुक्त बनाने के लिए सैकड़ों मिलियन वर्ष।

005 41/9c: "- - - संसारों - - -"। कुरान की प्रसिद्ध 7 समतल पृथ्वी - एक के ऊपर अन्य और नामित, एफ के अनुसार। भूतपूर्व। अल-बुखारी। 65/12 देखें।

***006 41/9-12: "(अल्लाह*) ने दो दिनों में पृथ्वी को बनाया - - -। उन्होंने (पृथ्वी) पहाड़ों पर सेट किया उसके ऊपर दृढ़ होकर खड़ा हुआ, और पृथ्वी पर आशीर्वाद दिया, और उस में सब कुछ मापा चार दिनों में उन्हें (जीवित संस्थाओं*) को उचित अनुपात में पोषण देने के लिए चीजें - - - (और *) इसलिए उसने उन्हें (आकाश*) सात आकाशों के रूप में दो दिनों में पूरा किया - - -"। यह 8 दिन बनाता है - कुरान आमतौर पर जो कहता है उसकी तुलना में बहुत असंगत और बहुत गलत: 6 दिन। (नहीं करने के लिए उल्लेख करें कि 4.6 अरब वर्षों से विज्ञान ने पता लगाया है)। एक और विरोधाभास। हम हो चुके हैं कहा कि हमें बहुत मूर्ख बनना होगा जो यह नहीं समझता कि पहले दो दिन शामिल हैं अगले चार। हम मानते हैं कि इस्लाम इसे दूर "समझाने" का एकमात्र तरीका है - लेकिन वह बहुत स्पष्ट रूप से वह नहीं है जो पाठ कहता है। ("कुरान के संदेश" ने कुरान को "सिद्ध" किया है थोड़ा (कम से कम स्वीडिश अनुवाद में) "स्पष्टीकरण" को इतना गूंगा नहीं बनाने के लिए - लेकिन केवल "बिल्कुल नहीं", जैसा कि यूसुफ अली का अनुवाद बहुत स्पष्ट है)।

००७ ४१/१०ए: "उन्होंने (पृथ्वी) पहाड़ों पर दृढ़ खड़े होकर, उसके ऊपर - - -" स्थापित किया। गलत। NS पहाड़ पृथ्वी पर (नीचे) नहीं थे - वे बड़े हुए।

००८ ४१/१०बी: "उसने (पृथ्वी) पहाड़ों पर स्थिर - - - - - स्थापित किया और उसमें सभी को मापा उन्हें (जानवरों या इंसानों को? *) उचित अनुपात में पोषण देने के लिए चीजें, 4 दिनों में - - -"। गलत। इसमें लाखों साल लग गए - किसी भी तरह का बनाने के लिए केवल पृथ्वी का ठंडा होना जीवन संभव, कम से कम 300 मिलियन वर्ष लगे। और पहले जीवन से विकास तक

पहले असली जानवर को लगभग 2.5 - 3 अरब साल लगे। यह देर से प्री-कैम्ब्रियम में हुआ था पीरियोड, जिसे कुछ साल पहले एडियाकरियन नाम दिया गया था, जो लंबे पूर्व- लगभग 500 - 550 मिलियन वर्ष पहले कैम्ब्रियम पीरियोड। (और फिर पशु जीवन "विस्फोट" कैम्ब्रियम नाम की अवधि के दौरान।)

***009 41/11a: "- - - यह (आकाश) था (जैसे) धुआँ - - -)"। आकाश के अनुसार मुहम्मद कुछ भौतिक थे (सितारों को सबसे निचले स्वर्ग में बांधा गया था, एफ। पूर्व।) और कुछ से बनाया जाना था। लेकिन यह गलत है। आकाश जैसा कि हम इसे देखते हैं, बस एक ऑप्टिकल है मोह माया।

कुछ मुसलमान उसके बाद बिग बैंग और बादल जैसी स्थिति की खोज करते हैं, और वर्तमान में विजयी होते हैं इस्लाम के वैज्ञानिक और सही होने के इस "सबूत" के लिए आप। लेकिन बिग बैंग हुआ 13.7 विज्ञान के अनुसार अरबों साल पहले। बादल जैसी अवस्था 300ooo - 380ooo वर्षों तक चली और बादल नहीं थे (गैस में तैरते सूक्ष्म कण) लेकिन केवल आयनित गैस, मुख्य रूप से हाइड्रोजन + a थोड़ा हीलियम। - - और हमारा सूर्य और पृथ्वी 9 अरब साल बाद तक नहीं मिला - 4.6 अरब वर्षों पहले - और सभी 3 पीढ़ी की कृतियों में शीर्ष पर हैं। "बादलों" के बीच संबंध बिग बैंग के बाद और पृथ्वी अत्यधिक कमजोर है और इसका हमारे आकाश से कोई लेना-देना नहीं है।

अधिक तार्किक लेकिन कम बार उद्धृत, वे किस्से हैं जो कहते हैं कि आकाश बादल से बना था

धूल और गैस के धीरे-धीरे सूर्य, ग्रहों आदि में समाहित हो रहे हैं लेकिन वह सामग्री समाप्त हो गई
सूर्य, ग्रह, आदि - हमारे आकाश की तरह एक ऑप्टिकल भ्रम गैस या धूल से नहीं बना है या
बादल। यह केवल निकट निर्वात में प्रकाश के झुकने से बनता है। (और भ्रम जो बनाता है
रात का आकाश ऐसा लगता है जैसे गोलार्द्ध 3 को देखने में हमारी अक्षमता से बना है। उन पर आयाम
दूरियां)। नीचे 41/11c देखें।

०१० ४१/११बी: "आओ तुम (पृथ्वी और आकाश*) एक साथ - - -"। पृथ्वी और आकाश कभी अलग नहीं हुए
दो भाग जो तब एक साथ आ सकते थे। (इस्लाम समझाने की कोशिश करता है कि इसका मतलब गैस है,
मुख्य रूप से H2 - हाइड्रोजन। लेकिन हाइड्रोजन - या अन्य गैसों - का धुएं से कोई लेना-देना नहीं है - कोई भी
भगवान जानता था। (धुआं = सूक्ष्म कण गैस में "पतला" - कणों के बिना धुआं नहीं)।

***०११ ४१/११ सी: "उसने (अल्लाह*) उससे (आकाश) और पृथ्वी से कहा: 'आओ तुम एक साथ - - -'"। NS
आकाश जैसा कि हम इसे दिन में देखते हैं, केवल एक ऑप्टिकल भ्रम है जो अपवर्तन - झुकने - का परिणाम है
दुर्लभ ऊपरी वायुमंडल में प्रकाश - यह नीला है क्योंकि नीला प्रकाश सबसे कम झुकता है। यह बस
भौतिक नियम काम कर रहे हैं - "एक साथ आने" का कोई सवाल ही नहीं है।

रात का आकाश एक और ऑप्टिकल भ्रम है - दिन आकाश और रात का आकाश भी "बनाया" नहीं है
उसी तरह से। यहाँ हमें एक आकाश दिखाई देता है क्योंकि हम उन पर 3 आयाम नहीं देख सकते हैं
दूरियां। रात में यदि संभव हो तो एक साथ आने वाली चीजों के बारे में बात करना और भी गलत है।कोई भी
भगवान यह जानता था। मुहम्मद स्थानीय गलत खगोल विज्ञान में विश्वास करते थे। की रचना किसने की
कुरान?

०१२ ४१/१२ए: "- - - सात फर्ममेंट - - -"। **गलत - 7 स्वर्ग नहीं हैं।** (फर्ममेंट is
स्वर्ग या आकाश का दूसरा नाम - मुख्य रूप से रात के आकाश के लिए उपयोग किया जाता है)।

०१३ ४१/१२बी: "तो उसने (अल्लाह) ने उन्हें दो दिनों में सात फर्मों के रूप में पूरा किया - - -"। अगर
कुरान सुनने का मतलब है आसमान जैसा दिन के हिसाब से दिखता है, उतने ही साल लग गए जितने में वातावरण लगा
रूप - कुछ मिलियन वर्ष। अगर उसका मतलब तारों से भरे रात के आसमान से है - जिसका अर्थ अक्सर तब होता है जब
कोई "फर्ममेंट" शब्द का उपयोग करता है - यह सब विज्ञान के अनुसार 13.7 अरब साल पहले शुरू हुआ था, और
हो सकता है कि पहले सितारे बहुत बाद में दिखाई न दें - - - और सृजन अभी भी नहीं है
पूरा हुआ।

**०१४ ४१/१२सी: "उसने (अल्लाह*) ने प्रत्येक स्वर्ग को उसका कर्तव्य और आदेश सौंपा"। उसने ऐसा कैसे किया
ऐसा तब करते हैं जब सात आसमान नहीं थे?

***०१५ ४१/१२डी: "और हम (अल्लाह*) ने निचले स्वर्ग को रोशनी (= तारे*) - - - से सजाया। **इस
यह उन बिंदुओं में से एक है जिसे मुसलमान समझाने की कोशिश करने में बहुत अनिच्छुक हैं, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से है और
असंभव रूप से गलत - और किसी भी विश्वसनीय तरीके से "व्याख्या" करना असंभव है।** हम
पुराने खगोल विज्ञान से जानिए कि चंद्रमा और ग्रहों को अलग-अलग आकाश में बांधा गया था,
और इसका मतलब है कि सितारों को हमारे और चंद्रमा के बीच होना चाहिए - लगभग 384ooo . से कम पर
किमी की दूरी - जैसे सितारों को सबसे निचले स्वर्ग में बांधा गया। (कुरान यह भी कहता है कि
सूर्य (?) और चंद्रमा आकाश के बीच में हैं)। अन्य सभी असंभवताओं के अलावा,
इंसान एक मिलीसेकंड में कुरकुरे भी नहीं होंगे। **एक बार फिर: कोई भी मौजूदा देवता यह जानता था,
मुहम्मद नहीं। क्या अल्लाह मौजूद नहीं है? या कुरान की रचना किसने की?**

***016 41/12e: "- - - और (इसे प्रदान किया) (सबसे कम स्वर्ग*) गार्ड के साथ"। हम जानते हैं
कुरान में अन्य जगहों पर, कि यह "गार्ड" सितारों के खिलाफ इस्तेमाल किए गए सितारों की शूटिंग के लिए गलत है
बुरी आत्माएँ स्वर्ग की जासूसी करना चाहती हैं। इस तरह की "सूचना" का एकमात्र स्थान आज फिट बैठता है
परिकथाएं। कुरान की रचना किसने की?

०१७ ४१/१२f: "(अल्लाह है) ज्ञान से भरा हुआ।" कुछ गड़बड़ है। या तो अल्लाह नहीं है
सर्वज्ञ - तो उसने कुरान को उतारा होगा। या वह ज्ञान से भरा है - सर्वज्ञ।
फिर उसने कुरआन जैसी किताब को इतनी गलतियों के साथ नहीं उतारा - 41/75 देखें। अगर नहीं
अल्लाह, फिर कुरान की रचना किसने की?

०१८ ४१/१५: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

इसके अलावा: अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अनुसंधान अकादमी (इस तरह मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक
विषयों) दिनांक २७. दिसंबर १९९८ के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं
अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि

अल्लाह के लिए कोई पुतला नहीं है और उसे पटाना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है
के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है।

०१९ ४१/२८: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

020 41/30: "- - - खुशखबरी - - -।" गलत। इस्लाम कोई खुशखबरी नहीं है, सिवाय इसके कि
दबे हुए - और वास्तव में केवल लूट और दासों और चोरी के धन की तलाश करने वालों के लिए खुश हैं,
और कम से कम उन लोगों के लिए जो पिरामिड के शीर्ष के पास हैं - और प्राप्त करते हैं - बहुत सारी शक्ति
योग। यह अक्सर युद्ध धर्मों में ऐसा होता है, खासकर जब एक मजबूत और फिट होने के लिए बनाया जाता है
करिश्माई नेता (और उनके उत्तराधिकारी), हालांकि कई युद्ध धर्मों के रूप में नहीं किया गया है
इस्लाम के रूप में पाखंडी अपने सदस्यों और दूसरों को यह विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहा है कि यह अच्छा और न्यायपूर्ण है और
मानवीय और परोपकारी। और ठीक है, यह के छोटे प्रतिशत के लिए खुशखबरी हो सकती है
जिन लोगों को एक धर्म की आवश्यकता होती है - कम से कम उन लोगों के लिए जहां पुराने बुतपरस्त हैं
धर्म पर्याप्त मजबूत नहीं था।

*०२१ ४१/३७अ: "उसकी (अल्लाह की) निशानियों में रात और दिन हैं - - -"। रात और
दिन सूर्य और पृथ्वी के घूमने से बनते हैं - काम पर भौतिक तथ्य। अगर इस्लाम कहता है
सूरज और पृथ्वी और भौतिक नियम अल्लाह द्वारा बनाए गए हैं, उन्हें इसे साबित करना होगा - यह है
न तो कुरान में और न ही हदीसों में साबित हुआ - **सस्ते शब्द और अमान्य संकेत
कोई भी उपयोग कर सकता है, एफ। भूतपूर्व। किसी भी धर्म में कोई पुजारी: बाल ने सूर्य को बनाया और उसे उदय किया
पूर्व। अल्लाह न तो इसे तोड़ सकता है और न ही पश्चिम में उठा सकता है - तो बाल साकार है**

खुदा और अल्लाह झूठा। यह केवल सस्ते शब्द हैं जो कुछ भी साबित नहीं करते हैं, सिवाय इसके कि सहारा लेना
इस तरह के नकली तर्क धोखेबाजों, ठगों और धोखेबाजों की पहचान हैं, जो
इस तरह के तर्कों का उपयोग करके किसी के बारे में कुछ या अन्य को साबित या इंगित कर सकता है।

०२२ ४१/३७बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२३ ४१/३९सी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२४ ४१/३९: "वह (अल्लाह*) जो (मृत) पृथ्वी को जीवन देता है (बारिश भेजकर*)"। पृथ्वी जो
सिर्फ पानी डालने से जिंदा हो जाता है, मरा नहीं है - बस ऐसा ही दिखता है। यह बीज के साथ जीवित है और
शायद जड़ें।

०२५ ४१/४०ए: "- - - सत्य - - -"। इन सभी गलतियों, आदि के साथ, कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सत्य है।

**०२६ ४१/४०बी: "जो हमारी (अल्लाह की) निशानियों में सत्य को विकृत करते हैं - - -।" यह संभव नहीं है
अमान्य संकेतों में सत्य को विकृत करें, वे पहले से ही अमान्य हैं - एक नहीं (संभव के साथ .)
कुछ अपवादों के अपवाद जो किसी अन्य ईश्वर की ओर इशारा करते हैं, यहोवा, बाइबल से लिया गया है) का कोई मूल्य नहीं है
संकेत या प्रमाण, **क्योंकि वे बिना किसी अपवाद के तार्किक रूप से अमान्य हैं, क्योंकि वे सभी हैं
हवा में लटके रहना - केवल अप्रमाणित दावे - या अन्य अमान्य पर टिके रहना - सिद्ध नहीं -
"कथन", "संकेत" या "प्रमाण"। किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी अपने बारे में ऐसा ही कह सकता है
भगवान का)। एक वास्तविक देवता अमान्य "संकेत" और "प्रमाण" का उपयोग नहीं करेगा, वह प्रमाण जो उसे जानना था
जल्दी या बाद में देखा जाएगा।** (वास्तव में यह बहुत समय पहले देखा गया है,
लेकिन सामाजिक या वास्तविक हत्या के लिए विश्वासियों और इस्लाम के नियमों की संख्या का वजन
जो लोग "विधर्म" सोचते हैं, भले ही वह पूर्ण सत्य हो, इसे रोल ऑन करें - असली भगवान से दूर अगर
ऐसा मौजूद है, और अगर इस्लाम गलत है।)

०२७ ४१/४०सी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२८ ४१/४२ए: "कोई झूठ उसके पास नहीं पहुंच सकता (कुरान*) - - -"। कोई टिप्पणी नहीं, सिवाय देखें
40/75 और कई अन्य।

०२९ ४१/४२बी: "- - - एक (अल्लाह*) ज्ञान से भरा - - -"। जिस तरह से अल्लाह प्रकट होता है
कुरान, वह ज्ञान से बहुत दूर है।

00a 41/42c: "- - - सभी पुरस्कार के योग्य।" एक दावा किया गया है, लेकिन कभी भी ऐसा सिद्ध देवता नहीं है जो ऐसा करता है
सभी प्रशंसा के योग्य कई गलतियाँ? मुश्किल से।

०३० ४१/४३: "तुम्हें (मुहम्मद*) से कुछ भी नहीं कहा गया है जो पहले दूतों से नहीं कहा गया था

आज (f। पूर्व। यीशु और पहले के यहूदी भविष्यवक्ता *) - - -। **गलत। जैसा कि विज्ञान ने पूरी तरह से किया है साबित कर दिया कि बाइबिल गलत नहीं है - और विशेष रूप से एनटी नहीं - यह बहुत स्पष्ट है कि क्या मुहम्मद ने दावा किया है कि उन्हें बताया गया है, अक्सर वास्तविक (?) भविष्यद्वक्ताओं और से बहुत दूर है पितृ पक्ष को बताया गया है।** और यह इस तथ्य से मजबूत होता है कि यह अक्सर बहुत स्पष्ट होता है कि मुहम्मद ने अपनी "बाइबिल" की कहानियाँ बाइबल से नहीं, बल्कि धार्मिक किंवदंतियों से लीं (अक्सर अपोक्रिफल शास्त्रों और कहानियों पर भी आधारित होता है, बाइबल पर नहीं) जो कि क्षेत्र, और मुहम्मद का मानना था कि बाइबिल से था - - और फिर बाद में उनके पास केवल एक था वास्तविक बाइबिल की तुलना में त्रुटियों की व्याख्या कैसे करें: वह सही था और बाइबिल झूठा !!!. जहाँ तक उपरोक्त उद्धरण की बात है, यह सत्य नहीं है कि मुहम्मद को कुछ भी नहीं कहा गया था कि पहले (असली) पैगम्बरों को नहीं कहा गया था - एक तथ्य जिसकी पुष्टि इस्लाम कभी-कभी करता है - च। भूतपूर्व। **में मुहम्मद का बयान कि वह पहला "दूत/पैगंबर" था जिसे मिला था**

भगवान से चोरी करने और लूटने और बलात्कार करने की अनुमति, जो भगवान कुरान के अनुसार है यहां तक कि पुष्टि करता है कि "ईश्वर और वैध" है।

०३१ ४१/४४: "यह (कुरान*) एक मार्गदर्शक है - - -"। एक किताब जिसमें ढेर सारी गलतियां - देखें 40/75 - कोई वास्तविक मार्गदर्शक नहीं है। या यह कुछ अमानवीय के लिए एक मार्गदर्शक है।

०३२ ४१/४५: "हमने (अल्लाह *) निश्चित रूप से मूसा को किताब पहले से दी - - -"। गलत। वो किताबें विज्ञान के अनुसार बहुत बाद में लिखे गए थे। (बाइबल के अनुसार मूसा को केवल 10 लिखित में आज्ञाएँ। इसके अलावा उन्होंने मौखिक रूप से कानून प्राप्त किया - जो अब "द" है, उसके कुछ हिस्से हैं मूसा की किताब" (वास्तव में बाइबिल में पहली 5 किताबें) - जिसे उन्होंने खुद बाद में लिखा था। और कुछ नहीं। और जैसा कि कहा गया है: विज्ञान पुष्टि करता है कि तोराह - मूसा की पुस्तक - सदियों की है मूसा से छोटा)।

०३३ ४१/५३ए: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

034 41/53b: "- - - यह (कुरान*) सत्य है।" 40/75 देखें।

सूरह ४१: कम से कम ३४ गलतियाँ + १ संभावित गलती।

सूरा 42:

001 42/3a: "इस प्रकार (वह (अल्लाह *)) प्रेरणा भेजते हैं (बहुत सी आयतें" द्वारा भेजी गई थीं प्रेरणा" - आसान - - - और झूठा करने में आसान*) आपको (मुहम्मद*) - - -।" छंद और सूरह तो त्रुटियों से भरा एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा नहीं भेजा गया था।

००२ ४२/३बी: "- - - (अल्लाह *) ज्ञान से भरा है।" 40/75 और 41/12 देखें।

००३ ४२/४: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

004 42/5: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

005 42/7a: "इस प्रकार हमने (अल्लाह*) प्रेरणा से - - - को भेजा है।" ऊपर 42/3ए देखें।

006 42/7b: "- - - सभा का दिन (कयामत का दिन), जिसमें कोई संदेह नहीं है - -"। एक किताब में जितनी गलतियाँ हैं (40/75 देखें) किसी भी चीज़ पर संदेह करने का कारण है:

1. क्या अल्लाह सर्वशक्तिमान है और कुरान को बनाया है? - या नहीं?
2. क्या अल्लाह सर्वशक्तिमान है, और उसे नहीं बनाया कुरान? यह भी तथ्य है कि कई गलतियाँ आदि पुस्तक के अनुसार हैं अच्छा ज्ञान और विज्ञान क्या था अरब में मुहम्मद के समय में, बनाता है एक आश्चर्य:
3. क्या अरब में किसी इंसान ने कुरान बनाया? - उससे काफ़ी कुछ समझ में आ जाएगा।
4. क्या कोई नर्क है? - और मामले में है कुरान में विवरण सही है? - वहां

5. क्या कोई कयामत का दिन है? - और अगर यह है
अल्लाह द्वारा चलाया जाता है? - या यहोवा के द्वारा? - या किसी के द्वारा
अन्य भगवान?
6. क्या कोई स्वर्ग है? - और क्या यह मामले में है
शरीर के लिए स्वर्ग जैसा कुरान में है? - या
बाइबल की तरह आत्मा के लिए? - या कुछ और
अन्य।

कुरान के साथ यह एक समस्या है: इतनी गलतियाँ हैं कि कारण हैं
किसी बात पर संदेह करना, और यह जानना असंभव है कि क्या कुछ सत्य है, और उस स्थिति में क्या? क्या
क्या सच है? अल-तकिया क्या है? - स्पष्ट और सरल रूप से गलत क्या है?

भविष्य में कभी-कभी मनुष्य के लिए एक अंतिम दिन आएगा - लेकिन चूंकि इसमें बहुत कुछ गलत है
कुरान, संदेह करने का हर कारण है कि अल्लाह का वर्णन (या अस्तित्व भी), और
तो परिणामतः यह विश्वास करना कि अल्लाह के अन्तिम दिन की व्यवस्था का भी वर्णन है
गलत।

और हर मुसलमान के बारे में क्या है अगर कुरान आंशिक या पूरी तरह से गलत है, और वे
खतरों के कारण, सामाजिक दबाव या केवल महिमामंडित सादे और अंध विश्वास के कारण नहीं है
समय पर पता लगाने का मौका था? अगर इस जीवन के बाद कुछ नहीं है, तो उन्होंने कुछ भी नहीं खोया होगा
- सिवाय इसके कि उन्होंने कई लोगों के लिए इस जीवन को कठिन या नरक या बदतर बना दिया है। लेकिन अगर वहाँ है
कुछ बाद में, यह एक कठोर जागृति हो सकती है, क्योंकि **केवल एक ही चीज है
कुरान के बारे में निश्चित: कोई भगवान नहीं - सर्वज्ञ या नहीं - बनाया गया (उनके में श्रद्धेय का उल्लेख नहीं है
खुद का स्वर्ग) एक किताब जिसमें कई गलतियाँ, विरोधाभास, आदि हैं, और बहुत कुछ
अमान्य तर्क और अमान्य "संकेत" और "प्रमाण" के रूप में।**

007 42/11: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

008 42/12: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

००९ ४२/१३ए: "उसी (अल्लाह*) ने उसी धर्म की स्थापना की है - - - (जैसे नूह*)"। सबके साथ
गलतियाँ (देखें f। उदा। 40/75) यह पूछने के अच्छे कारण हैं कि क्या यह वास्तव में एक सर्वशक्तिमान है
भगवान जिसने इस धर्म को बनाया।

**010 42/13b: "उसी (इस्लाम*) ने उसी धर्म (इस्लाम*) के लिए स्थापित किया है - - - इब्राहीम,
मूसा, और यीशु"। न कुरान, न हदीस, न इस्लाम ज़रा भी जायज़ लाए हैं
इसके लिए प्रमाण - केवल शब्द। **और कम से कम जब यीशु की बात आती है, तो यह गलत है। शिक्षाएं
यीशु और मुहम्मद के लोग मौलिक रूप से बहुत भिन्न हैं।** बेशक मुसलमान
कहते हैं कि बाइबिल को गलत ठहराया गया है और शास्त्र गायब हो गए हैं - यही एकमात्र रास्ता है
वे। लेकिन उन्हें अभी तक पहला साबित करना है और यह साबित करना है कि शास्त्र सभी का दस्तावेजीकरण करते हैं
अंक इस्लाम कहते हैं कि गलत हैं अन्य धर्मों में गायब हो गए हैं और कोई भी विश्वसनीय नहीं है और
उन लोगों को गलत समझना असंभव है जो प्रासंगिकता के साथ 13ooo के बीच फिर से प्रकट हुए हैं कि
मौजूद। "मजबूत दावों को मजबूत सबूत की जरूरत है।" यह और भी अधिक **विज्ञान के रूप में सभी के माध्यम से
पुराने शास्त्रों ने यह साबित कर दिया है कि बाइबल मिथ्या नहीं है - एक ऐसा तथ्य जो NT के लिए अतिरिक्त स्पष्ट है।**

०११ ४२/१३सी: "वही धर्म (इस्लाम) - - - जिसे हमने (अल्लाह*) प्रेरणा से भेजा है
आप (मुहम्मद*) - - -"। क्या यह वास्तव में एक सर्वज्ञ ईश्वर है जिसने धर्म के आधार पर दीक्षा दी है?
पर के साथ एक किताब गलतियों, अमान्य तर्क, अमान्य तर्क, अमान्य के 3ooo मामले हो सकते हैं
"संकेत" और "सबूत", साथ ही बहुत सारे विरोधाभास, आदि? निश्चित रूप से नहीं। देखें 40/75 और 41/12
ऊपर और कई अन्य।

०१२ ४२/१५: "मैं (मुहम्मद *) उस किताब (कुरान*) में विश्वास करता हूँ जिसे अल्लाह ने उतारा है - - -।"
किसी भी सर्वज्ञ भगवान ने इतनी सारी गलतियों, आदि के साथ एक किताब नहीं भेजी है, जिसका उल्लेख नहीं है
इसे अपने घर में "मदर बुक" के रूप में सम्मानित किया।

013 42/17a: "यह अल्लाह है जिसने किताब (कुरान*) - - - को उतारा है। देखें 40/75 और 42/15
के ऊपर।

०१४ ४२/१७ब: "यह अल्लाह है जिसने किताब (कुरान*) को सत्य - - - में उतारा है। देखें 40/75
और ऊपर 41/12 - और अन्य।

015 42/18: "- - - और इसे जानो (कुरान*) सत्य है।" ०४/७५ और ४१/१२ - और अन्य देखें।

०१६ ४२/२३: "मैं (मुहम्मद*) आपसे (मुसलमानों/लोगों*) से कोई इनाम नहीं माँगता - - -"। - - - **को छोड़कर
आप पर पूर्ण तानाशाही, आपकी ओर से पूर्ण आज्ञाकारिता, ढेर सारी महिलाएं, सस्ते योद्धा,
घूस आदि के लिए ढेर सारा धन।** "

०१७ ४२/२४ए: "- - - सत्य (कुरान में शिक्षा*) - - -।" इसके साथ ही कई गलतियां और
इससे भी बदतर, कुरान की शिक्षाएं आंशिक रूप से सच हैं।

***०१८ ४२/२४बी: "और अल्लाह - - - अपने शब्दों से सच साबित करता है।" मुहम्मद से पूछा गया
कई बार अपने - या संभवतः अल्लाह के - शब्दों को साबित करने के लिए, लेकिन उन्होंने कभी नहीं किया, और कभी नहीं लगा
ऐसा करने में सक्षम होने के लिए, यह और भी अधिक, जैसा कि f. भूतपूर्व। उसके कुछ "स्पष्टीकरण" के लिए वह कभी क्यों नहीं कर सका
कुछ भी साबित करो, उसके जैसा बुद्धिमान व्यक्ति जानता था कि झूठ है (एफ। एड। कि असली चमत्कार होगा
किसी को भी किसी भी तरह से विश्वास न करें)। और कुरान के शब्द अन्य बातों के अलावा कुछ भी साबित नहीं करते हैं
कारण क्योंकि:

1. तथ्य होने का दिखावा करने वाली बहुत सारी गलतियाँ। (ठग ले?)
2. अब तक बहुत सारे ढीले-ढाले बयान जो दिखावा करते हैं तथ्य हो। (ठग ले?)
3. बहुत सारे अमान्य "संकेत" होने का दिखावा करते हैं दस्तावेज़ीकरण। (ठग ले?)
4. बहुत अधिक अमान्य या गलत "सबूत" दस्तावेज होने का नाटक कर रहा है। (ठग ले?)
5. कुछ स्पष्ट झूठ - f. भूतपूर्व। कि चमत्कार होगा किसी को विश्वास न दिलाना। (ठग ले।)
6. मुहम्मद कुछ भी पेश करने में असमर्थ थे लेकिन सबूत मांगे जाने पर तेजी से बात करते हैं। (ठग ले?)
7. तर्क के बहुत सारे अमान्य उपयोग। (ठग ले?)
8. बहुत सारे विरोधाभास (- झूठ साबित होते हैं?)

ये सब धोखेबाज़ और धोखेबाज़ के लक्षण हैं।

०१९ ४२/२९ए: "- - - उसका (अल्लाह के*) चिन्ह (ओं) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। 2/39 और 2/99 देखें
के ऊपर।

०२० ४२/२९बी: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

*०२१ ४२/३०ए: "जो भी दुर्भाग्य आपके साथ होता है, वह आपके हाथों की चीजों के कारण होता है
गढ़ा - - -"। गलत। कभी यह दुर्भाग्य और संयोग के कारण होता है और कभी f.
भूतपूर्व। दूसरे क्या करते हैं। एफ. पूर्व. अगर कुछ आतंकवादी - आम तौर पर मुसलमान - आपको मारते या विकृत करते हैं
जिन चीजों के आप बिल्कुल दोषी नहीं हैं। और कम से कम यह प्राकृतिक आपदाओं के कारण हो सकता है
- 2004 की सुनामी की तरह, जिसमें 300 से अधिक लोग मारे गए, ज्यादातर मुसलमान (सीए। 80%)।

*०२२ ४२/३०बी: "जो भी दुर्भाग्य आपके साथ होता है, वह आपके हाथों की चीजों के कारण होता है गढ़ा - - -"। गलत। कुरान के अनुसार, अल्लाह सब कुछ चाहता है (हालांकि इस्लाम है) यह समझाने में असमर्थ है कि यह मनुष्य की दावा की गई स्वतंत्र इच्छा से कैसे मेल खाता है - और लंगड़ा दावा कि वही सब सच होना चाहिए, "क्योंकि अल्लाह कुरान में ऐसा कहता है" (!!!))।

०२३ ४२/३२ए: "- - - उसके (अल्लाह के*) चिन्ह - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। 2/39 और 2/99 देखें के ऊपर।

*00a 42/32b: "और उसकी निशानियों में से जहाज हैं, जो समुद्र के माध्यम से सुचारू रूप से चल रहे हैं - - -"। न तो अल्लाह ने और न ही मुहम्मद ने कभी एक जहाज बनाया - और अगर इस्लाम कहता है कि अल्लाह ने मनुष्य को सोचा जहाजों का निर्माण, उन्हें इसे साबित करना होगा। वही अगर यहाँ क्या बात है कि हवा चलती है जहाज। कुरान ने कभी साबित नहीं किया कि अल्लाह हवा बनाता है - एक हिंदू या बुतपरस्त पुजारी वही अमान्य शब्द बोल सकते हैं, जो उसके भगवान (ओं) ने बनाते हैं। शब्द इतने सस्ते हैं।

०२४ ४२/३३: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२५ ४२/३५: "- - - हमारे (अल्लाह के *) चिन्ह - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। 2/39 और 2/99 देखें के ऊपर।

०२६ ४२/४९: "- - - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०२७ ४२/५०: "--- वह (अल्लाह*) ज्ञान से परिपूर्ण है---"। मुश्किल से। 40/75 और 41/12 देखें।

०२८ ४२/५२ए: "- - - हम (अल्लाह*) ने (कुरान) को रोशनी - - - बनाया है। **के साथ एक किताब हो सकती है 3ooo गलतियाँ, विरोधाभास, अमान्य कथन, "संकेत", "प्रमाण", अमान्य तर्क, आदि हैं ज्यादा रोशनी नहीं।** 40/75 + 41/12 भी देखें।

०२९ ४२/५२बी: "---- और वास्तव में तू (मुहम्मद*) ने (पुरुषों को) सीधे रास्ते की ओर मार्गदर्शन किया - - -"। इस कुटिल किताब से सीधे किसी का मार्गदर्शन करना संभव नहीं है।

०३० ४२/५३: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22 देखें।

सूरह ४२: कम से कम ३० गलतियाँ + १ संभावित गलती।

सूरा 43:

001 43/2: "- - - वह पुस्तक जो चीजों को स्पष्ट करती है - - -"। 2000+ गलतियों वाली एक किताब बनाती है कुछ चीजें स्पष्ट। 40/75 + 41/12 भी देखें।

002 43/3: "- - - (और ज्ञान सीखो) - - -।" त्रुटियों से भरी किताब से कोई भी ज्ञान नहीं सीखता।

***003 43/4a: "- - - यह (कुरान*) किताबों की माँ में है, हमारी (अल्लाह की *) उपस्थिति में, उच्च (गरिमा में) - - -"। यह क्वीन में उन जगहों में से एक है जहां मुहम्मद का दावा है कुरान अल्लाह के अपने घर/स्वर्ग में मदर बुक (की एक प्रति है) से लिया गया है। **लेकिन कोई नहीं**

सैकड़ों गलतियाँ, सैकड़ों अंतर्विरोध, सैकड़ों ढीली वाली किताब दावे और बयान, बहुत सारे अमान्य तर्क, बहुत सारे अमान्य "संकेत" और बहुत सारे अमान्य अच्छी और विस्तृत शिक्षा वाले किसी भी व्यक्ति के लिए आसान "सबूत" आदि को भी कॉपी किया जाता है एक श्रद्धेय मदर बुक से, उच्च सम्मान और सम्मान में, पूर्ण स्वर्ग में, एक परिपूर्ण, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ भगवान का घर। 13/39 भी देखें।

००४ ४३/४ए: "- - - (एक कुरान*) ज्ञान से भरा - - -।" 40/75 और 41/12 देखें।

**005 43/6: "परन्तु हम (अल्लाह*) ने कितने नबी लोगों के बीच भेजे थे? पुराना?" खैर, हदीस 124ooo कहती है - और यह सच नहीं है, क्योंकि बहुतों को कुछ छोड़ना पड़ा था निशान।

इसके अलावा: इतने सारे अलग-अलग लोगों के साथ दुनिया में इतने सारे अलग-अलग स्थान - क्यों थे? मुहम्मद के समय दुनिया में कोई अन्य पैगंबर नहीं है - हाँ, बिल्कुल भी नहीं a मुहम्मद से बहुत पहले? उत्पत्ति और टोरा के समय के पैमाने के अनुसार और

बाइबिल है कि कुरान सही नहीं करता है, और 124ooo पैगंबर, इसका मतलब सैकड़ों या एक होना चाहिए
प्रत्येक पीढ़ी के लिए कुछ हजारों।

और: इस्लाम के स्पष्टीकरण के लिए कि क्यों अल्लाह पृथ्वी पर नई पवित्र पुस्तकें अभी और फिर चाहता था, is
कि दुनिया बदल जाती है, और फिर पवित्र पुस्तक में कुछ विवरणों को समायोजित करने की आवश्यकता है। फिर क्यों है
मुहम्मद ने आखिरी कहा? - और कुरान आखिरी किताब हो, एक किताब जो भी है
अमानवीय, न्याय पर बहुत आदिम, और आधुनिक के लिए युद्ध पर बहुत पुराना (बहुत विनाशकारी)
समाज, सिर्फ 3 विषयों का उल्लेख करने के लिए। दुनिया के बीच बहुत कुछ बदल गया है
मुहम्मद और अब, आदम और मुहम्मद के बीच की तुलना में, और मनुष्य को नए निर्देश की आवश्यकता है
एक कम अमानवीय दुनिया के लिए - और एक सर्वज्ञ भगवान को पहले से ही पता था।

006 43/9a: "- - - 'स्वर्ग (बहुवचन और गलत) का निर्माण किसने किया?' वे (गैर-मुस्लिम*)
उत्तर देना सुनिश्चित होगा, 'वे (अल्लाह*) द्वारा बनाए गए थे। गलत - अगर वे मानते हैं कि एक भगवान था
इसे बनाया, वे अपने स्वयं के भगवान का उल्लेख करना सुनिश्चित करेंगे, हालांकि पुराने अरब में हो सकता है
बहुदेववादी भगवान अल-लाह रहे हैं, जो (इरादा?) भ्रम पैदा कर सकता है क्योंकि
नाम इतने समान थे (**यही कारण है कि इस्लाम अब "ईश्वर" शब्द का उपयोग करता है
पश्चिम में "अल्लाह" के बजाय, हमें बताया गया है - यह कुछ वास्तविक मतभेदों को छुपाता है।**)

007 43/9बी: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

008 43/9c: "(अल्लाह है*) ज्ञान से भरा - - -"। 41/12 और 40/75 देखें।

009 43/10a: "(अल्लाह) ने तुम्हारे लिए धरती (एक कालीन की तरह) को फैलाया है - - -"। कुरान
कई जगह कहते हैं कि पृथ्वी समतल है (इसकी तुलना हमेशा किसी समतल चीज़ से की जाती है) - शायद गोल
एक डिस्क की तरह, लेकिन फ्लैट - - - एक कालीन की तरह। गलत।

010 43/10b: "- - - और (अल्लाह) ने आपके लिए सड़कें - - - बनाई हैं। हमने a . के बारे में कभी नहीं सुना है
एक भगवान द्वारा बनाई गई सड़क, शायद परियों की कहानियों को छोड़कर। अरब में रास्ते/सड़कें इतनी पुरानी थीं कि
उनकी शुरुआत किसी को याद नहीं रही और फिर मुहम्मद इस तरह की बातें बता सकते थे।

०११ ४३/११ ए: "- - - हम (अल्लाह*) उसके साथ (बारिश* के साथ) एक मरी हुई भूमि में जी उठते हैं - - -"। ए
केवल बारिश के कारण जीवित हो रही भूमि मरी नहीं है - यह बीज के साथ जीवित है और शायद
जड़ें

०१२ ४३/११बी: "- - - हम (अल्लाह*) उसके साथ (बारिश* के साथ) एक मरी हुई भूमि में जी उठते हैं - - -।"
गलत। यदि पानी ही सब कुछ लेता है, तो भूमि केवल मृत दिखती है - यह बीज और जड़ों के साथ जीवित है। कोई
ईश्वर जानता है।

०१३ ४३/११ सी: "- - - हम (अल्लाह) उसके द्वारा (बारिश के साथ*) एक मरी हुई भूमि में जी उठते हैं; फिर भी
क्या तुम (मृतकों में से) जी उठोगे - - -"। तुलना गलत है - और एक भगवान ने इसे जाना था। में
पहला मामला डीएनए जीवित है और अच्छी तरह से और अंकुरित होने के लिए तैयार है। मृत शरीर में सब कुछ है
समाप्त - डीएनए भी और एन्ट्रापी के खिलाफ जाने की इसकी सभी संभावनाएं (भौतिकी से एक शब्द जो
अराजकता और ऊर्जा की निम्न अवस्थाओं के लिए एक उपाय कहा जा सकता है)। महत्वपूर्ण अंतर है
के कारण से।

०१४ ४३/१२: "- - - (अल्लाह) ने सभी चीजों में जोड़े बनाए - - -"। बहुत गलत। यह केवल के लिए जाता है
बहुकोशिकीय प्राणी, और उन सभी से बहुत दूर। और यह एककोशिकीय प्राणियों के लिए बिल्कुल भी नहीं है
- और वे मात्रा और प्रजातियों दोनों में कहीं अधिक बड़ी संख्या में मौजूद हैं। कोई भी भगवान यह जानता था -
मुहम्मद नहीं।

०१५ ४३/१४: "और हमारे भगवान (अल्लाह *) के लिए, निश्चित रूप से, हमें वापस लौटना चाहिए।" 2oo+ गलतियों आदि के साथ।
कुरान में, यह भी गलत हो सकता है - 41/10 और 41/12 देखें। निश्चित रूप से यह सुनिश्चित नहीं है कि हम
अल्लाह से मिलो - अगर कोई भगवान है - इस जीवन के बाद।

016 43/29a: "- - - सत्य (कुरान*) - - -"। 40/75 और 42/12 देखें।

017 43/29b: "- - - एक रसूल (मुहम्मद*) चीजों को स्पष्ट कर रहा है।" कोई दूत उपदेश नहीं
कुरान में क्या है, चीजों को स्पष्ट करता है - बहुत सारी गलतियाँ और बहुत अधिक अस्पष्ट तर्क, आदि।

018 43/30: "- - - सत्य (कुरान*) - - -"। 40/75 और 42/12 देखें।

00a 43/43a: "- - - रहस्योद्घाटन - - -।" क्या यह एक रहस्योद्घाटन है? और किस मामले में? - इससे नहीं
एक सर्वज्ञ भगवान (बहुत सारी गलतियाँ) और न ही एक अच्छे भगवान से (बहुत अमानवीय, भी .)
बेईमान, बहुत खूनी)। लेकिन शायद भेष में एक अंधेरी शक्ति से? - या इंसानों से? - या
खुद से भी?

०१९ ४३/४३बी: "- - - प्रकाशितवाक्य आपको (मुहम्मद*) - - - पर भेजा गया।" दावा किया गया
रहस्योद्घाटन कम से कम किसी भी सर्वज्ञ भगवान द्वारा नहीं भेजा गया है जैसे कुरान किसी को विश्वास करना चाहता है
- अगर बिल्कुल नीचे भेजा गया।

020 43/44: "(कुरान) वास्तव में आपके लिए और लोगों के लिए संदेश है - - -।" निश्चित रूप से
नहीं - बहुत ज्यादा गलत है। या अगर यह एक संदेश है - किसकी ओर से?

00b 43/45: "और हमारे (अल्लाह के) रसूलों से सवाल करो जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा था
(मुहम्मद*); क्या हमने (अल्लाह) के अलावा किसी अन्य देवता को सबसे दयालु नियुक्त किया है
पूजा की?" बाइबिल वालों के लिए अल्लाह या यहोवा? (कुरान जो कुछ भी कहता है उसके बावजूद, यह है
एक ही ईश्वर नहीं जब तक कि ईश्वर सिज़ोफ्रेनिक न हो - शिक्षाएँ मौलिक रूप से भी हैं
विभिन्न। इस्लाम दूर समझाने की कोशिश करता है - बिना दस्तावेज के इस्लाम के लिए सामान्य की तरह - the
दावों के साथ मतभेद कि बाइबल को गलत ठहराया गया है, लेकिन विज्ञान ने लंबे समय से दिखाया है कि यह है
सच नहीं। उस पुस्तक में भी सीमित संख्या में गलतियाँ हो सकती हैं - हालाँकि इससे बहुत कम
कुरान में - लेकिन कोई मिथ्याकरण नहीं।

021 43/46: "- - - संसारों - - -"। एक बार फिर ७ गैर-मौजूद पृथ्वी जो कुरान बताता है
के बारे में। 65/12 देखें।

444

पेज 445

०२२ ४३/५५: "- - - हम (अल्लाह*) ने उन सभी को डुबो दिया (= फिरौन रामसेस द्वितीय और उसके लोग*)।" पर
कम से कम रामसेस खुद नहीं डूबे। वह डूबने से नहीं मरा, और वह तब तक नहीं मरा जब तक
कई साल बाद।

**०२३ ४३/५६: "और हम (अल्लाह*) ने उन्हें ज़माने की क़ौम बना दिया---"। गलत। न
रामसेस द्वितीय और न ही मिस्र के लोग वर्ष १२३५ ईसा पूर्व में अतीत के लोग बन गए
संभावित पलायन का अनुमानित वर्ष, विज्ञान के अनुसार)। ऐसा तब तक नहीं हुआ जब तक
बहुत बाद में - और अंतिम विनाश ६५९ ईस्वी में आया जब मुआविया के अधीन अरबों ने विजय प्राप्त की
देश और ले लिया - हमेशा के लिए (?) मुसलमान "व्याख्या" करना पसंद करते हैं कि "एक लोग" का अर्थ है
फिरौन के सैनिक। लेकिन अभिव्यक्ति "एक लोग" का इससे कहीं अधिक व्यापक अर्थ है।

**00c 43/59: "वह (यीशु*) एक सेवक से अधिक कुछ नहीं था - - -"। संभव। लेकिन अभी भी है
मजेदार तथ्य यह है कि हजारों लोगों ने उन्हें यहोवा को "पिता" कहते सुना। जबकि केवल एक आदमी - और एक आदमी
बहुत ही संदिग्ध चरित्र और नैतिकता का, इसके विपरीत दावा करता है - और यह एक ऐसा व्यक्ति भी है जिसके पास था
यीशु के परमेश्वर के पुत्र न होने से बहुत कुछ हासिल करना है। और उसने इसे ६०० साल तक दावा किया
बाद में बिना किसी दस्तावेज के।

**024 43/63a: "(यीशु ने कहा*): इसलिए अल्लाह से डरो - - -"। **यदि यीशु के लिए एक मिशनरी होता
एक जाने-माने बहुदेववादी देवता जो देश के बहुत दूर नहीं थे, उन्हें एक चीज़ के लिए बहुत कम मिले थे
उस समय के अनुयायी पूरी तरह से एकेश्वरवादी इज़राइल थे, और एक और चीज़ के लिए उनके पास था
पादरियों द्वारा बहुत पहले ही मार दिया गया था** - खासकर यदि उसे समान रूप से एक बड़ा अनुयायी मिला हो
उसने वास्तव में किया। यह एक ऐसे व्यक्ति द्वारा बताई गई कहानी है जो भारत में धार्मिक और राजनीतिक स्थिति को जानता था
इजराइल साल 30 ईस्वी के आसपास बुरी तरह से।

०२५ ४३/६३बी: "(यीशु ने कहा*): अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो - - -।" यह वास्तव में मुहम्मद है
नारा - वह सत्ता चाहता था, और धर्म/अल्लाह उसकी शक्ति का मंच था। और कई जगह
कुरान यह स्पष्ट हो जाता है कि मुहम्मद चाहता है कि हर कोई यह विश्वास करे कि वह एक "सामान्य" था (लेकिन
शीर्ष) नबी (वास्तव में वह कोई वास्तविक नबी नहीं था, क्योंकि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार नहीं था
- मुहम्मद के बारे में अध्याय देखें), और तब अच्छा होता अगर यीशु ने उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल किया जैसे
मुहम्मद ने दिखाया और दिखाया कि भविष्यवक्ताओं के लिए यह कहना सामान्य था। लेकिन वास्तव में से एक - और एक
कई - यीशु और मुहम्मद के बीच मूलभूत अंतर (और उस मामले के बीच
एफ। भूतपूर्व। बुद्ध और मुहम्मद), यह था कि यीशु को इस पर सत्ता में बिल्कुल दिलचस्पी नहीं थी
धरती। **नतीजतन यह नारा जो मुहम्मद बहुत बार अलग-अलग में इस्तेमाल करते थे
अपनी शक्ति को सुरक्षित करने के लिए, यीशु के लिए अर्थहीन था।** (कुरान किस बात का विरोध नहीं करता

एक तथ्य के रूप में लिया जा सकता है: कि यीशु ने प्रचार किया, लेकिन पृथ्वी पर शक्ति की तलाश नहीं की।)

०२६ ४३/६४: "(यीशु ने कहा): अल्लाह के लिए, वह मेरा भगवान और तुम्हारा भगवान है - - -"। ऊपर 43/63 देखें। हम जोड़ सकते हैं कि नए धर्मों या संप्रदायों की शुरुआत करने वाले अक्सर प्रसिद्ध "हाई-जैक" की कोशिश करते हैं व्यक्तियों या स्थितियों को अपनी शिक्षाओं में इसका उपयोग करने के लिए। ऐसा मामला लग सकता है।

०२७ ४३/६९: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

028 43/78a: "वास्तव में, हम (अल्लाह*) लाए हैं - - - (कुरान*) - - -"। क्या यह वास्तव में एक है सर्वज्ञ भगवान जिसने इसे उत्पन्न किया है? देखें 40/75 और 41/12

029 43/78b: "वास्तव में, हम (अल्लाह *) सच्चाई (कुरान*) - - - लाए हैं। ज़्यादा से ज़्यादा कुरान आंशिक रूप से सच है। 40/75 और 41/12 देखें।

030 43/78c: "- - - लेकिन आप में से अधिकांश (गैर-मुस्लिम*) सच्चाई से नफरत करते हैं।" सच - देख 40/75 और 41/12। और इसके साथ:

445

पेज ४४६

1. *थोड़ी-सी नफ़रत- लेकिन बहुत से डरे हुए हैं।
2. काफी संख्या में लोग अरुचि महसूस करते हैं क्योंकि अमानवीय और अन्यायपूर्ण कानूनों और परंपराओं में इस्लाम।
3. **भयभीत में अंतर होता है ताकत और भयभीत कमजोरी - एक तथ्य यह है कि कभी कभी भुला दिया जाता है।

00d 43/81: "अगर (अल्लाह) सबसे दयालु का एक बेटा होता, तो मैं (मुहम्मद) सबसे पहले होता पूजा"। कुछ सबूत !! परन्तु उसके लिए: यीशु अभी भी यहोवा को पिता कह रहा है। और कोई भी इतिहास के तटस्थ प्रोफेसर कहेंगे कि सभी सामान्य नियमों के अनुसार, बाइबल होनी चाहिए सही इतिहास के स्रोत के रूप में कुरान की तुलना में अधिक विश्वसनीय: यीशु के समय के बहुत करीब, अच्छे स्रोतों के बिना हजारों गवाह, कई कथाकार, बनाम एक एकल कथावाचक और ६०० साल बाद - और यहां तक कि एक संदिग्ध चरित्र का आदमी और यीशु को कम करने के लिए मजबूत मकसद के साथ खुद सबसे महान पैगंबर बनें - और एक व्यक्ति स्पष्ट रूप से सत्ता की लालसा रखता है (बस कुरान पढ़ें और हदीस - यह देखना आसान है f. भूतपूर्व। वह खुद को भगवान से चिपका रहा है।) एक आदमी जो निश्चित रूप से विश्वसनीय न्यायिक प्रणाली वाले किसी भी देश में विश्वसनीय गवाह के रूप में स्वीकार नहीं किया गया था। (NS वास्तविक और ऐतिहासिक मुहम्मद चमकदार अर्ध-संत इस्लाम से कुछ अलग थे और मुसलमानों का दावा है - एक ऐसा दावा जिसे जरूरी बनाया गया है क्योंकि सारा इस्लाम सिर्फ इसी आदमी पर बना है शब्द - यदि वह झूठ बोलता है, तो धर्म झूठा है)। इसके अलावा: विज्ञान ने दिखाया है कि कभी नहीं बाइबिल के मिथ्याकरण के बारे में इस्लामी दावा गलत है।

०३१ ४३/८२: "- - - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

032 43/84: "- - - वह (अल्लाह*) ज्ञान और ज्ञान से भरा है"। 40/75 और 41/12 देखें।

033 43/85: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०३४ ४३/८६: "- - - केवल वह (पूंजी नहीं "एच" एक गलत छाप होना चाहिए - यह अल्लाह को संदर्भित करता है *) जो सत्य की गवाही देता है - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

035 43/87a: "यदि आप (मुहम्मद या मुसलमान*) उनसे पूछें कि उन्हें किसने बनाया, तो वे करेंगे ज़रूर कहो, अल्लाह - - -"। गलत। एफ देखें। भूतपूर्व। 43/9 - और कई अन्य।

036 43/87b: "- - - सत्य (कुरान*) - - -।" कुरान सबसे अच्छा केवल आंशिक रूप से सच है - भी बहुत कुछ गलत है।

सूरह 43: कम से कम 36 गलतियाँ + 4 संभावित गलतियाँ।

सूरा 44:

001 44/2: "- - - किताब (कुरान) जो चीजों को स्पष्ट करती है - - -"। इसके साथ एक किताब कई गलतियाँ और संदिग्ध तर्क - 40/75 और 41/12 देखें - एक संदिग्ध व्यक्ति द्वारा निर्धारित चरित्र - देखें एफ। भूतपूर्व। 31/30 - चीजों को स्पष्ट नहीं करता है।

००२ ४४/४: "उस (रात) में (जब पहला सूरा नीचे भेजा गया कहा जाता है) हर अलग बनाया जाता है
ज्ञान का मामला "। कुरान में ज्ञान के लिए - 40/75 और 41/12 देखें।

००३ ४४/६: "वह (अल्लाह*) सुनता और जानता है (सब कुछ) - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

446

पेज ४४७

004 44/7: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

००५ ४४/२५-२८: "इस प्रकार (उनका (फिरौन रामसेस द्वितीय और उसके पुरुष*) अंत - - -" था। हम जानते हैं
कुरान के अन्य भागों का अंत डूब रहा था। गलत, कम से कम खुद रामसेस II के लिए - हे
डूबने से नहीं मरा (यदि उसने किया होता, तो आप शर्त लगाते कि तीन धर्म इसके बारे में चिल्लाते थे!), और
वह केवल सीए में संभावित पलायन की तुलना में वर्षों बाद मर गया। विज्ञान के अनुसार 1235 ई.पू.

006 44/33: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

007 44/38: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

सूरह 44: कम से कम 7 गलतियाँ।

सूरा 45:

00a 45/2a: "पुस्तक का रहस्योद्घाटन (कुरान*) - - -।" के लिए कभी कोई सबूत नहीं थे
कुछ भी। कुरान में इतनी सारी चीजें गलत हैं कि इसे साबित करना होगा कि यह वास्तव में था
प्रकट किया।

०१ ४५/२बी: "पुस्तक (कुरान*) का रहस्योद्घाटन अल्लाह की ओर से है - - -"। 40/75 और देखें
41/12.

002 45/2c: "(अल्लाह है) ज्ञान से भरा है।" 40/75 देखें।

००३ ४५/३ए: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

004 45/3b: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

005 45/4: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

**006 45/5a: "और रात और दिन का विकल्प - - - उन लोगों के लिए संकेत हैं जो हैं
ढंग"। तब तक नहीं जब तक इस्लाम यह साबित न कर दे कि रात और दिन को बदलने वाला अल्लाह ही है। वे कह सकते हैं कि
अल्लाह ने भौतिक नियम बनाए - लेकिन फिर उन्हें इसे साबित करना होगा - - "मजबूत दावों की मांग"
मजबूत सबूत "। और निश्चित रूप से उन्हें कहने की कोशिश कर रहे अन्य सभी धर्मों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी होगी
और वही करें, उन्हीं सस्ते शब्दों के साथ। जब तक आपके पास नहीं है तब तक शब्द सस्ते हैं
उन्हें साबित करो - और कुरान में बहुत कम साबित होता है।

***इस्लाम में पढ़े-लिखे लोग जानते हैं कि कुछ भी साबित नहीं होता। बचाव यह है कि "कोई भी बुद्धिमान"
व्यक्ति कुरान के ग्रंथों से देख सकता है कि उन्हें एक सर्वज्ञ द्वारा नीचे भेजा जाना है
भगवान" (!!)। सभी गलतियाँ और सभी अमान्य "प्रमाण" आदि इसे अस्वीकार करते हैं। की दूसरी पंक्ति
बचाव यह है कि सबूतों पर भरोसा करना "आदिम" सोच है !!! (एफ। पूर्व। "संदेश" में
कुरान का" कि सबसे ऊपर एक शीर्ष विश्वविद्यालय - काहिरा में अल-अजहर द्वारा "प्रमाणित" है)। **NS**
वास्तविकता 180 डिग्री विपरीत है: यह आदिम है - और भोले - ढीले को स्वीकार करने की सोच
कुछ प्रकार के सबूतों के बिना दावे और अक्सर स्पष्ट रूप से गलत और असंभव बयान।

007 45/5बी: "- - - तथ्य यह है कि अल्लाह आकाश से जीविका भेजता है - - -।" हमेशा की तरह"
कुरान केवल दावा करता है, और कुछ भी साबित नहीं करता है। जब तक यह सिद्ध नहीं होता, तब तक यह तथ्य नहीं है
- शब्द बहुत सस्ते हैं। वास्तव में यह उन बहुत से मामलों में से एक है जहां कुरान एक लेता है
एक प्राकृतिक घटना - यहाँ बारिश - और अनजाने में कहो कि यह अल्लाह है जो इसे बनाता है - - - बस
जैसे किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी अपने भगवान या देवताओं के बारे में उतना ही सस्ते में कह सकता है।

447

पेज ४४८

008 45/5c: "(अल्लाह*) उसके मरने के बाद पृथ्वी को पुनर्जीवित करता है (बारिश भेजकर*) - - -"। एक बात यह है कि कुरान किसी भी तरह से यह साबित नहीं करता है कि अल्लाह ही बारिश भेजता है - किताब में एक है प्राकृतिक घटनाओं के लिए बिना किसी दस्तावेज के अल्लाह को श्रेय देने की प्रबल प्रवृत्ति। परंतु: अगर पृथ्वी सिर्फ पानी के कारण जीवित हो जाती है, तो वह मरी नहीं थी - बस वैसी ही दिखती थी।

009 45/5d: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

**010 45/6a: "अल्लाह की निशानियाँ ऐसी हैं, जो हम (अल्लाह*) तुझे (मुहम्मद*) सुनाते हैं सच्चाई में - - -"। एक अजीब कहावत है, क्योंकि कुरान में सभी "संकेत" तार्किक रूप से अमान्य हैं, क्योंकि वे या तो दावे या बयान कुछ भी नहीं पर आधारित हैं या अन्य अमान्य (सिद्ध नहीं) दावों पर आधारित हैं, कथन, "सबूत", आदि। बाइबल से लिए गए कुछ के लिए कुछ अपवाद हो सकते हैं, लेकिन वे मामले में यहोवा को इंगित करते हैं।

०११ ४५/६बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

012 45/8: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०१३ ४५/९: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

014 45/11a: "यह (कुरान*) (सच्चा) मार्गदर्शन है - - -"। शायद 3ooo गलतियों वाली एक किताब, अमान्य कथन, अंतर्विरोध आदि, आदि कोई सच्चा मार्गदर्शन नहीं है। 40/75 और 41/12 देखें।

०१५ ४५/११बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

016 45/13a: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०१७ ४५/१३बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

018 45/17: "- - - स्पष्ट संकेत - - -।" 2/99 देखें।

००बी ४५/१८: "फिर हम (अल्लाह*) ने तुम्हें धर्म के (दाहिने) रास्ते पर डाल दिया - - -"। सारी गलतियाँ, विरोधाभास, अमान्य कथन, "संकेत" और "सबूत" के बारे में गंभीर संदेह का कारण देते हैं वह।

**०१९ ४५/१९+२०: "- - - अल्लाह नेक का रक्षक है। ये इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं पुरुष - - -"। हां, लेकिन केवल तभी जब यह प्रलेखित हो कि अल्लाह वास्तव में एक रक्षक है। यहाँ नहीं हैं कुरान में उसके लिए सबूत - अमान्य (सिद्ध नहीं) दावों के आधार पर केवल दावे या बयान या खुलेआम बयान आदि। वास्तव में स्वयं अल्लाह के लिए एक भी वैध प्रमाण नहीं है। (लेकिन तब मनुष्य के लिए ईश्वर को सिद्ध करना संभव नहीं है - केवल एक ईश्वर ही ऐसा कर सकता है। वह में से एक है कुरान में सभी "सबूत" अमान्य होने के कारण - अल्लाह ने इनकार कर दिया या असमर्थ था कुछ भी साबित करने के लिए)।

०२० ४५/२०: "ये पुरुषों के लिए स्पष्ट प्रमाण हैं और एक मार्गदर्शन - - - (विश्वासियों *) के लिए।" देखो 45/19+20 ठीक ऊपर - एक अमान्य "प्रमाण" मार्गदर्शन कैसे हो सकता है? **आखिर प्रमाण एक है या अधिक सिद्ध तथ्य (तथ्य) जो केवल एक निष्कर्ष दे सकते हैं** जबकि इस्लाम/मुहम्मद/ कुरान अब तक अक्सर अप्रमाणित दावों या बयानों का उपयोग केवल नए दावों के आधार के रूप में करता है, बजाय सिद्ध तथ्य - और फिर कोई निष्कर्ष अमान्य है।

०२१ ४५/२२: "- - - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22 देखें।

पेज 449

022 45/25: "- - - स्पष्ट संकेत - - -।" अल्लाह के कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं - या मुहम्मद के एक भगवान से संबंध - सभी कुरान में। 2/22 देखें।

०२३ ४५/२६: "- - - न्याय का दिन, जिसके बारे में कोई संदेह नहीं है - - -"। सभी की वजह से गलतियाँ, आदि, कुरान में, संदेह का हर कारण है, और विशेष रूप से एक मुसलमान के बारे में निर्णय का शैली दिवस।

०२४ ४५/२७: "- - - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०२५ ४५/३२: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०२६ ४५/३२: "- - - इसके (न्याय दिवस*) (आने वाले) - - - के बारे में कोई संदेह नहीं था। देखें ४५/२६ के ऊपर।

027 45/35: "- - - अल्लाह के लक्षण - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 और 2/99 देखें।

028 45/36a: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०२९ ४५/३६बी: "- - - द वर्ल्ड्स - - -"। कुरान के लिए परेशानी यह है कि ७ पृथ्वी यह संदर्भित करती है करने के लिए, मौजूद नहीं है। 65/12 देखें।

030 45/37a: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०३१ ४५/३७बी: "(अल्लाह है*) ज्ञान से भरा हुआ"। 40/75 और 41/12 देखें।

सूरह ४५: कम से कम ३१ गलतियाँ + २ संभावित गलतियाँ।

सूरा 46:

00a 46/2a: "पुस्तक का रहस्योद्घाटन (कुरान*) - - -।" एक वर्ग में वापस - कुरान है प्रकट किया? - और किसके मामले में? 41/12 देखें।

००१ ४६/२बी: "(अल्लाह है*) ज्ञान से भरा हुआ।" अगर कुरान इसके लिए प्रतिनिधि नहीं है - बहुत सारे गलतियाँ, आदि। 40/5 और 41/12 देखें।

002 46/3: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

००३ ४६/४a: "- - - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

००४ ४६/४बी: "मुझे (मुहम्मद*) इससे पहले एक किताब (प्रकट) लाओ (सबूत के रूप में) - - -"। गलत। एक किताब अपने आप में कुछ भी साबित नहीं करती है - किताब को झूठा साबित करना उतना ही आसान है जितना कि झूठ बोलना भाषण। एफ. पूर्व. कुरान अच्छी तरह से एक मिथ्याकरण हो सकता है - मुहम्मद या किसी के द्वारा बनाया गया।

005 46/7a: "- - - हमारे (अल्लाह के) स्पष्ट संकेत - -।" सभी में अल्लाह की ओर से कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं कुरान - 2/99 देखें।

००६ ४६/७बी: "- - - अविश्वासी सत्य के बारे में कहते हैं (कुरान*) - - -।" देखें 2/99 और 40/75 के ऊपर।

449

पेज 450

००७ ४६/९: "मैं (मुहम्मद) एक नए सिद्धांत को लाने वाला नहीं हूँ - - -"। मुहम्मद ढोंग किया गया इस्लाम यहूदियों और के धर्म - या अनियंत्रित - की निरंतरता था ईसाई। **यह सच नहीं है - खासकर एनटी में यह स्पष्ट है कि शिक्षाएं मौलिक रूप से बहुत अलग हैं (और वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि इस्लाम के अनिर्दिष्ट) बाइबल के मिथ्याकरण के दावे गलत हैं), कि यह एक ही ईश्वर नहीं हो सकता - at कम से कम अगर वह मानसिक रूप से बीमार नहीं है। 29/46 और 12/111 देखें।

***008 46/10: "यदि (यह शिक्षा) अल्लाह की ओर से हो, और तुम (गैर-मुस्लिम) इसे अस्वीकार करते हो, और एक गवाह इज़राइल के बच्चों में से इसकी समानता की गवाही देता है (पहले के शास्त्रों के साथ (क्या है .) मुहम्मद की "समानता" की परिभाषा यहाँ?*)), और विश्वास किया है (या विश्वास करने का नाटक किया है - कभी-कभी यह आवश्यक था*) जबकि तुम अभिमानी हो, (तुम कितने अन्यायी हो) - - -"। इस

वाक्य थोड़ा जटिल है, लेकिन मुहम्मद ने जो कहा, वह यह था कि एक यहूदी सहमत था - सच है या नहीं
सच है - कि कुरान पुराने यहूदी धर्मग्रंथों के समान था, और यह कि गैर-मुस्लिम तब है
यह स्वीकार नहीं करना अन्याय है कि मुहम्मद एक वास्तविक नबी है।

1. स्वयं के बीच इस तरह के किस्से काफी आम हैं
   घोषित भविष्यवक्ता अपने नए को साबित करने की कोशिश कर रहे हैं
   धर्म या संप्रदाय। वे सच हो सकते हैं या सच नहीं।
2. हमारे पास इसके लिए केवल मुहम्मद का शब्द है - a
   वह आदमी जिसने पहल की थी या खुद बहुत कुछ किया था
   संदिग्ध कार्यों में झूठ बोलना/विश्वासघात, और अन्य शामिल हैं
   उस के ऊपर बनाने से बहुत कुछ हासिल करना था
   लोग उस पर विश्वास करते हैं, एक ऐसा व्यक्ति जो वासना करता है
   शक्ति - और जो एक संदिग्ध को पढ़ा रहा था
   कहानी। कोई अन्य स्रोत नहीं हैं। कहानी मई
   सच हो या सच न हो।
3. हम नहीं जानते कि कितने यहूदी रहते थे
   मक्का/मदीना के पड़ोस। लेकिन सिर्फ में
   एक गोत्र को उसने नष्ट किया, वहाँ 700 पुरुष थे
   (सभी मारे गए - खैबर में। साथ ही 29 से
   जिस शांति प्रतिनिधिमंडल को उसने आमंत्रित किया और उसकी हत्या कर दी
   पूर्व)। जैसे-जैसे परिवार बड़े होते गए, वह
   मतलब कुछ 2oo-3oo महिलाएं और
   इसके अलावा बच्चे (सभी दास बने)। और
   तीन बड़े कबीले थे (और कुछ छोटे
   वाले) और इस प्रकार हज़ारों यहूदी - और
   कम से कम यहां महिलाओं को छोड़ा नहीं जा सकता, जैसे
   वे पुरुषों की तुलना में अधिक धार्मिक होते हैं। यह
   एक या कुछ नहीं तो सबसे आश्चर्यजनक होगा
   उनमें से शक्ति-उस-होना को हास्य करना चाहते थे
   या वास्तव में धर्म बदल दिया - विश्वास से या
   लालच या डर या अन्य कारण।
4. लेकिन अन्य सभी - हजारों और हजारों -
   यहूदियों ने कहा कि मुहम्मद गलत थे। इस
   यहां तक कि जब वह उनके साथ उनके खिलाफ कूच किया
   सेना, और वे उसे हास्य करने के लिए जानते थे मतलब
   "कोई युद्ध"। यहां तक कि जब उन्हें सब कुछ देना पड़ा
   उनके खेत और उसके लिए दिहाड़ी मजदूर बन जाते हैं -
   अभी भी यह जानते हुए कि उनका मज़ाक उड़ाने का मतलब वे थे
   अगर वे समय पर अपनी संपत्ति रखेंगे

   उसका मजाक उड़ाया था। यहां तक कि जिन्हें करना पड़ा
   भागना, वह सब कुछ खोना जो वे ले नहीं सकते थे -
   यह जानते हुए कि यदि वे उसका मज़ाक उड़ाते हैं, तो वे
   रह सकता है। 700 पुरुषों का उल्लेख नहीं करने के लिए
   खैबर - यह जानकर कि उनकी हत्या कर दी गई
   आधा दर्जन दिन और दूर में
   रात, और वह शायद उसे विनोदी
   उनकी जान बचा सकते थे। सभी ने कहा नहीं;
   मुहम्मद के लिए संभव होना बहुत गलत था
   तब भी स्वीकार करो।
5. भले ही यह सही था कि एक या कुछ यहूदी
   हाँ कहा - कौन सा कुआँ सच हो सकता है: "एक
   निगल कोई गर्मी नहीं बनाता है"। (यह भी हो सकता है a
   गढ़ी हुई कहानी - जो अक्सर नए में होती है
   संप्रदाय "साबित" करने के लिए वे सही हैं।)

सब कुछ: इस "सबूत" का कोई मूल्य नहीं है। यहूदियों के अनुसार मुहम्मद बहुत गलत थे। और
इससे भी अधिक: हमारे पास अभी भी मूसा की वही पुस्तकें हैं - तोराह कम से कम 1000
विज्ञान के अनुसार मुहम्मद से कई साल पहले - और बाकी यहूदी बाइबिल (ओटी) कि
अरब में यहूदियों के पास था। **कोई भी पढ़ सकता है और देख सकता है कि वे सही थे।**

००९ ४६/१२एः "- - - यह पुस्तक (कुरान) पुष्टि करती है (यह (तोरा*)) - - -"। ऊपर 46/10 देखें,
और विशेष रूप से अंतिम पंक्तियाँ। तोराह को यहूदियों से बेहतर कोई नहीं जानता था और न ही जानता था। गलत।

010 46/12बी: "- - - खुशखबरी - - -।" गलत। इस्लाम कोई खुशखबरी नहीं है, सिवाय लोगों के
दबाया नहीं गया - और वास्तव में केवल लूट और दासों की तलाश करने वालों और चोरी के लिए खुश है
धन, और कम से कम उन लोगों के लिए जो पिरामिड के शीर्ष के पास हैं - और प्राप्त करते हैं - बहुत सारी शक्ति
के अतिरिक्त। यह अक्सर युद्ध धर्मों में ऐसा होता है, खासकर जब एक मजबूत और फिट होने के लिए बनाया जाता है
करिश्माई नेता (और उनके उत्तराधिकारी), हालांकि कई युद्ध धर्मों के रूप में नहीं किया गया है
इस्लाम के रूप में पाखंडी अपने सदस्यों और दूसरों को यह विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहा है कि यह अच्छा और न्यायपूर्ण है और
मानवीय और परोपकारी। और ठीक है, यह मामूली प्रतिशत के लिए खुशखबरी हो सकती है
जिन लोगों को एक धर्म की आवश्यकता होती है - कम से कम उन लोगों के लिए जहां पुराने बुतपरस्त हैं
धर्म पर्याप्त मजबूत नहीं था।

०११ ४६/१६: "- - - सच्चाई का वादा (स्वर्ग* के बारे में कुरान के शब्द) - - -"। देखो
40/75 और 41/12 - जन्नत का वादा इसका हिस्सा है।

00b 46/17: "अल्लाह का वादा सच है।" वह हो सकता है - यदि वह मौजूद है (एक नहीं है .)
एकल प्रमाण, और अमान्य प्रमाणों के साथ प्रयासों की संख्या, आदि, कोई अच्छा प्रभाव नहीं डालते हैं, जैसे
यह आम तौर पर धोखेबाजों और धोखेबाजों की पहचान है)। लेकिन संदेह के अच्छे कारण हैं,
जानकारी का एकमात्र स्रोत कुरान है, और बहुत कुछ सही नहीं है - या
संदिग्ध।

०१२ ४६/२७: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०१३ ४६/३०एः "हमने (कुछ जिन्नों*) ने मूसा के बाद एक किताब (कुरान*) को सुना है,
इससे पहले जो आया उसकी पुष्टि करना - - -"। अरब परियों की कहानियों से जिन्स को "उधार" लिया गया था,
किंवदंतियों और पुराने अरब बुतपरस्त धर्म से - मुहम्मद ने ज्यादातर अपनी दुनिया को पर आधारित किया
(विपरीत) बाइबिल की किंवदंतियाँ - - - और अरब परंपराओं पर (बाकी दुनिया ने बहुत कम या नहीं बनाया)
अल्लाह के धर्म में निशान - अमेरिका या ऑस्ट्रेलिया से कुछ भी नहीं f. भूतपूर्व। लेकिन हो सकता है

अशिक्षित, युद्धप्रिय अरबों ने अधिकांश धार्मिक पहलुओं में लगभग सही काम किया था
उनका मूर्तिपूजक धर्म? - केवल उन लोगों के अरब जिनके पास कोई किताब नहीं है?)

०१४ ४६/३०बी: "- - - पुष्टि करना कि (तोराह, बाइबिल*) इससे पहले क्या आया (कुरान*) - - -"। से संबंधित
टोरा और बाइबिल की पुष्टि: 40/75 और 46/10 देखें।

015 46/30c: "- - - यह (कुरान*) गाइड (पुरुष) - - -"। एक किताब जिसमें ढेर सारी गलतियां और
अमान्य "सबूत" आदि कोई विश्वसनीय मार्गदर्शक नहीं है।

०१६ ४६/३०सी: "- - - यह (कुरान*) पुरुषों को सत्य की ओर ले जाता है - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

017 46/33: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०११ ४६/३४अ: "क्या यह सत्य नहीं है? (= कुरान में जो कहा गया था*)"। अपनी सभी गलतियों आदि के साथ।
कुरान सबसे अच्छा आंशिक रूप से सच है।

०१९ ४६/३४बी: "- - - आप (सच्चाई (कुरान*)) को नकारने के लिए अभ्यस्त थे!" ऊपर 46/34a देखें।

सूरह 46: कम से कम 19 गलतियाँ + 2 संभावित गलतियाँ।

सूरा 47:

00a 47/2a: "- - - मुहम्मद को भेजे गए (रहस्योद्घाटन) में विश्वास करें - - -"। क्या वाकई भेजा गया था
नीचे? 42/12 देखें।

001 47/2b: "- - - इसके लिए (कुरान*) सत्य है - - -"। 40/75 देखें।

002 47/2c: "- - - इसके लिए (कुरान*) उनके (मुसलमानों*) रब (अल्लाह*) - - - की ओर से सच्चाई है।" है
यह? सं. 40/75 और 41/12 देखें।

००३ ४७/३ए: "- - - जो विश्वास करते हैं वे सत्य (कुरान*) का पालन करते हैं - - -"। क्या वे? 40/75 देखें।

००४ ४७/३बी: "- - - सत्य (कुरान*) उनके रब (अल्लाह*) की ओर से - -"। क्या यह? नहीं अगर अल्लाह है सर्वज्ञ - पुस्तक में बहुत अधिक गलत है। 41/12 + 40/75 देखें।

****005 47/4: यह वास्तव में एक गंभीर बात है: "इसलिए, जब तुम अविश्वासियों से मिलते हो (में लड़ाई), उनकी गर्दन पर मारना; अंत में, जब तुम उन्हें पूरी तरह से अपने वश में कर लो, तो एक बंधन बांधो दृढ़ता से (उन पर) - - -।" लेकिन हमारे स्रोत बताते हैं कि शब्द "(लड़ाई में)" है अरब पाठ में नहीं लिखा - यह अनुवादक द्वारा जोड़ा गया है। मुसलमानों मुख्य रूप से अरब में कुरान पढ़ना चाहिए, और अगर पाठ है: "इसलिए, जब तुम मिलते हो" अविश्वासियों, उनकी गर्दन पर मारो - - -"। **यह केवल एक स्थायी आदेश होने की स्थिति में है आक्रामक।**

शांति का असली धर्म।

006 47/9: "- - - अल्लाह का रहस्योद्घाटन (कुरान*) - - -।" यह अत्यधिक संदिग्ध है यदि कुरान एक वास्तविक रहस्योद्घाटन है। जो संदिग्ध नहीं है वह यह है कि यह किसी भी मामले में किसी से नहीं आया है सर्वज्ञ भगवान (बहुत अधिक गलत है), और किसी भी अच्छे भगवान से (बहुत अमानवीय, बहुत अनुचित, भी .) कठोर, बहुत घृणित, बहुत खूनी।)

452

पृष्ठ ४५३

००७ ४७/१०: "क्या वे (गैर-मुस्लिम*) पृथ्वी पर यात्रा नहीं करते हैं, और देखते हैं कि अंत क्या था उनसे पहले (किसने बुराई की)?" मध्य पूर्व में बिखरे हुए खंडहर हैं - घर, गांवों, कस्बों। मुहम्मद ने दावा किया - बिना किसी सबूत के सामान्य रूप से - कि वे सभी थे अविश्वास और पापों के लिए अल्लाह की सजा के परिणाम। लेकिन एक शुष्क और कठोर देश में जो सबसे ऊपर युद्धप्रिय निवासियों द्वारा बसाया गया था, खाली घरों के और भी कई कारण थे। यह कथन कि अविश्वास और अन्य पापों की सजा के कारण सभी खाली थे विश्वास करने के लिए अल्लाह को इस्लाम से मजबूत सबूत चाहिए।

008 47/14: "- - - अपने (एक व्यक्ति*) भगवान (अल्लाह*) से एक स्पष्ट (पथ) पर (= के अनुसार जीना) कुरान) - - -"। मुसीबत यह है कि इतनी कुटिल, और इतनी संदिग्ध स्पष्टता की, जैसा कि कुरान है, यह एक स्पष्ट पथ का प्रतिनिधित्व नहीं करता है।

००९ ४७/१६: "--- वो (मुसलमान) जिन्होनें ज्ञान प्राप्त किया है (कुरान*)---"। NS कुरान ज्ञान के टुकड़ों और टुकड़ों का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है, और अशिक्षित लोगों के लिए यह मुश्किल है यह जानने के लिए कि क्या सच है और क्या नहीं। 40/75 और 41/12 और अन्य देखें।

००बी ४७/२७: "लेकिन कैसे (यह होगा) जब कोण उनकी आत्माओं को मौत पर ले जाते हैं - - -।" कुछ हैं यहाँ गलत है? 32/11 में एक विशेष फरिश्ता है - मौत का दूत - ऐसा कर रहा है, और 39/42 में यह अल्लाह है।

०१० ४७/३२: "- - - मार्गदर्शन के बाद (कुरान) उन्हें स्पष्ट रूप से दिखाया गया है (गैर-मुसलमान*) - - -"। एक किताब में इतना मार्गदर्शन नहीं है जिसमें इतनी गलतियाँ और धोखा हैं (अमान्य कथनों, "संकेत" और "प्रमाण" का उपयोग करने का प्रयास करना)। 40/75 देखें। अगर कुछ है, तो यह नहीं . में है रास्ता "स्पष्ट" है।

सूरह 47: कम से कम 10 गलतियाँ + 2 संभावित गलतियाँ।

सूरा 48:

००१ ४८/४: "- - - अल्लाह ज्ञान से भरा है - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

002 48/7: "- - - (अल्लाह है*) ज्ञान से भरपूर - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

003 48/8a: "हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) को साक्षी बनाकर भेजा है - - -"। क्या इस विश्वसनीय? - इतनी गलतियों वाली किताब में, अमान्य कथन, "संकेत" और "प्रमाण"? वहां इसका केवल एक ही संभावित उत्तर है: एक "गवाह" जो इतनी गलत जानकारी लाता है और गलत तथ्य, एक सर्वज्ञ भगवान की ओर से नहीं भेजा गया है। और कोई जोड़ सकता है: एक "गवाह" ऐसा लाने वाला दुनिया के लिए बहुत अन्याय, नफरत और दुख, एक अच्छे और परोपकारी भगवान द्वारा नहीं भेजा जाता है। अगर मुहम्मद को बिल्कुल भेजा गया था, किसके द्वारा अनुमान लगाया जा सकता है। व्यक्तिगत रूप से हम शायद ही विश्वास करते हैं उन्हें एक शैतान ने भी भेजा था, हालांकि कुरान में प्रचारित धर्म किसी भी शैतान के लिए उपयुक्त है।

लेकिन एक शैतान भी इतनी सारी गलतियों और त्रुटियों के साथ एक "पवित्र" पुस्तक नहीं बनायेगा - वह करेगा
जल्दी या बाद में पता चल जाएगा।

***लेकिन हो सकता है कि एक शैतान जानता हो कि गलतियाँ बहुत मायने नहीं रखतीं - **हो सकता है कि वह जानता हो कि धार्मिक दृष्टि से अंधे व्यक्ति सबसे स्पष्ट गलत तथ्यों को भी नहीं देख पाते हैं, क्योंकि वे उन्हें नहीं देखना चाहते?**

004 48/8b: "- - - खुशखबरी - - -।" गलत। इस्लाम कोई खुशखबरी नहीं है, सिवाय इसके कि
दबे हुए - और वास्तव में केवल लूट और दासों और चोरी के धन की तलाश करने वालों के लिए खुश हैं,
और कम से कम उन लोगों के लिए जो पिरामिड के शीर्ष के पास हैं - और प्राप्त करते हैं - बहुत सारी शक्ति

योग। यह अक्सर युद्ध धर्मों में ऐसा होता है, खासकर जब एक मजबूत और फिट होने के लिए बनाया जाता है
करिश्माई नेता (और उनके उत्तराधिकारी), हालांकि कई युद्ध धर्मों के रूप में नहीं किया गया है
इस्लाम के रूप में पाखंडी अपने सदस्यों और दूसरों को यह विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहा है कि यह अच्छा और न्यायपूर्ण है और
मानवीय और परोपकारी। और ठीक है, यह मामूली प्रतिशत के लिए खुशखबरी हो सकती है
जिन लोगों को एक धर्म की आवश्यकता होती है - कम से कम उन लोगों के लिए जहां पुराने बुतपरस्त हैं
धर्म पर्याप्त मजबूत नहीं था।

005 48/19: "- - - अल्लाह है - - - ज्ञान से भरा हुआ।" 40/75 और 41/12 और अन्य देखें।

006 48/20: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

007 48/26: "और अल्लाह को हर चीज़ का पूरा ज्ञान है"। कुरान इसके विपरीत साबित करता है (देखें .)
४०/७५) - - - कुरान नहीं तो मिथ्याकरण है।

008 48/28: "वह (अल्लाह*) है जिसने मार्गदर्शन के साथ अपने रसूल (मुहम्मद*) को भेजा है - - -
" एक किताब पर आधारित शिक्षण में बहुत सारी गलतियों के साथ ज्यादा मार्गदर्शन नहीं होता है और
एक धोखेबाज और धोखेबाज (ढीले बयान और अमान्य "संकेत" और
"सबूत")।

009 48/28: "- - - सत्य का मार्गदर्शन और धर्म, इसे सभी धर्मों पर घोषित करने के लिए - -"। पर
सबसे आंशिक रूप से सच। 40/75 देखें। वाक्य का दूसरा भाग इस्लाम के बारे में मात्रा बताता है।

00a 48/29: "मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।" कितनी गलतियाँ हैं और कितनी हैं
कुरान में धोखा देने और धोखा देने की कोशिश की - क्या यह अब और विश्वसनीय है? - विशेष रूप से it . के रूप में
आदमी ने खुद कहा है, एक आदमी जो अविश्वसनीय था और जो स्पष्ट रूप से सत्ता पसंद करता था?

सूरह 48: कम से कम 9 गलतियाँ + 1 संभावित गलती।

सूरा 49:

001 49/1: "- - - अल्लाह - - - सब कुछ जानता है।" नहीं अगर उसने कुरान की रचना की। 40/75 देखें।

002 49/8: "- - - अल्लाह ज्ञान और ज्ञान से भरा है"। 40/75 देखें।

003 49/13a: "- - - हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मनुष्य*) नर और मादा के एक (जोड़े) से पैदा किया - -
-"। विज्ञान के अनुसार आदम और हव्वा कभी नहीं थे। इसके अलावा अगर सब कुछ के साथ शुरू हुआ था
सिर्फ एक जोड़ी, लंबे समय में समूह को व्यवहार्य बनाने के लिए डीएनए-किस्म बहुत छोटी थी =
मनुष्य कुछ पीढ़ियों के बाद मर गया था। (वास्तव में विज्ञान कहता है कि पर्याप्त डीएनए होने के लिए
किस्म + खतरनाक बीमारियों, जानवरों के एक समूह (OT .) के खिलाफ एक उचित सुरक्षा मार्जिन है
मानव) में कम से कम 2000 सदस्य होने चाहिए - और कम करने के लिए कुछ के आसपास फैलें
संक्रामक रोगों का प्रभाव - लंबे समय में व्यवहार्य होना सुनिश्चित करने के लिए।)

००४ ४९/१३बी: "और अल्लाह को पूरा ज्ञान है और वह (सभी चीजों से) अच्छी तरह परिचित है।" नहीं अगर
उसके पास "मदर बुक" है और उसका सम्मान करता है (देखें f। उदा। 43/4) जैसे कुरान अपने स्वर्ग में प्रतिष्ठित है,
और तब नहीं जब उसने अपने आधार के रूप में इतनी गलत सामग्री वाली किसी पुस्तक की एक प्रति नीचे भेजी हो
धर्म। 40/75 और 41/12 देखें। यह भी देखें 4/176 - 27/6 - 27/44 - 48/26 - 49/1 - 49/16 - 49/18 -
57/3 - 64/4 - 65/12 - 67/13।

**इसके अलावा: क्या आपने कभी गौर किया है कि जिसे शेखी बघारने की जरूरत है - जोर से और बार-बार -

वह कितना सच्चा है, धोखेबाज़ है, और जो अपने ज्ञान पर घमण्ड करता है, वह है

बल्कि औसत दर्जे का, लेकिन शीर्ष पर नहीं, बुद्धिमानों के लिए? - वास्तव में ईमानदार और वास्तव में बुद्धिमान व्यक्तियों को उन चीजों के बारे में घमंड करने की आवश्यकता नहीं है। वास्तविक ईमानदारी और वास्तविक बुद्धिमत्ता स्वयं को बनाती है कुछ समय के घनिष्ठ संबंध के बाद महसूस किया - अगर शेखी बघारने की जरूरत है, तो कुछ गलत है।

005 49/16a: "लेकिन अल्लाह सब कुछ जानता है जो आकाश में (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी पर है - - -"। नहीं अगर वह अपने स्वर्ग में कुरान की तरह "मातृ पुस्तक" (43/4) का सम्मान करता है। 40/75 और 41/12 देखें।

006 49/16बी: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

007 49/18: "वास्तव में अल्लाह आकाशों के रहस्यों को जानता है (बहुवचन और गलत - कुछ प्रमाण या बयान कुरान चुनता है) और पृथ्वी - - -"। नहीं अगर वह एक "मातृ पुस्तक" का सम्मान करता है (43/4) उसने अपने स्वर्ग में से कुरान की नकल की है।" ऊपर ४०/७५, ४१/१२ और ४९/१६ए देखें।

सूरह 49: कम से कम 7 गलतियाँ।

सूरा 50:

001 50/1a: "- - - गौरवशाली कुरान द्वारा - - -"। इतनी सारी गलतियों, विरोधाभासों वाली एक किताब, आदि, और धोखाधड़ी और धोखा देने के इतने सारे हॉलमार्क के साथ (ढीले बयान, अमान्य "संकेत" और "सबूत", आदि) शानदार नहीं है। वैसे अभिव्यक्ति एक शपथ है - द्वारा शपथ ग्रहण कुरान. आशा है कि बाकी सब सच है, अगर नहीं तो यह झूठी कसम है। हालांकि इस्लाम में कुछ मामलों में झूठ शपथ की अनुमति है - या भुगतान किए जाने पर माफ किया जा सकता है)।

00a 50/1b: "- - - गौरवशाली कुरान द्वारा (तू (मुहम्मद*)) अल्लाह के रसूल हैं"। देखो 49/29।

00b 50/3: "क्या! जब हम मरेंगे और मिट्टी बन जाएंगे (क्या हम फिर जीवित रहेंगे?) मुहम्मद ने सोचा कि कयामत के दिन सभी मनुष्य मांस और शारीरिक रूप से पुनर्जीवित होंगे और कम से कम नहीं मानसिक रूप से सिर्फ एक ही इंसान होने के लिए कि वे यहाँ पृथ्वी पर थे सिवाय कायाकल्प के - अल्लाह उन सभी हड्डियों, धूल, तरल पदार्थ और गैस के अणुओं को इकट्ठा करेगा जिनमें आप शामिल थे, **और इससे अपने (पूर्व) शरीर और आत्मा को फिर से बनाएँ** (हालांकि एक युवा और अच्छे के आकार में-व्यक्तिगत दिख रहा है - लेकिन जैसा कि कुरान स्वर्ग में आपके बच्चों के बारे में बहुत कम बात करता है, यह स्पष्ट नहीं है यदि मरने वाले बच्चों और बच्चों को वयस्कों के रूप में बनाया गया था या नहीं। यह भी स्पष्ट नहीं है कि वे स्वर्ग में आत्मनिर्भर होगा, या केवल आपके परिवार के सदस्य) जो चाहते हैं उस पर विश्वास करें।

002 50/5: "लेकिन वे (गैर-मुस्लिम*) सत्य (कुरान*) - - - को नकारते हैं। एफ देखें। भूतपूर्व। 40/75 और 41/12.

**003 50/6: "- - - और इसमें कोई दोष नहीं हैं (आकाश*) - - -"। आकाश दो अलग ऑप्टिकल है भ्रम - पहले दिन सूरज की रोशनी के झुकने से, और रात में हमारी अक्षमता से ३ लंबी दूरी पर आयाम:

1. जैसे दिन में सूरज की रोशनी पूरे पर पड़ती है वातावरण और चारों ओर प्रकाश झुकता है, खामियां हैं नग्न आंखों से देखना मुश्किल है। (वहाँ वास्तव में कोई दोष नहीं हैं, लेकिन झिलमिलाते हैं तापमान अंतर देखना आसान है जब आप दूरबीन का उपयोग करते हैं - और कभी-कभी रात में तारों का टिमटिमाना)। एक बार फिर स्वाभाविक घटना कुरान के कारण होती है

अल्लाह बिना किसी सबूत के। एक और ढीला बयान।
2. रात में हम के निर्वात में गहराई से देखते हैं स्थान। वैक्यूम में कोई दृश्य दोष नहीं हैं। एक बार और: वास्तविक के बिना एक ढीला बयान मूल्य - धोखेबाजों और धोखेबाजों को छोड़कर।

किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी अपने भगवान के बारे में ऐसा ही कह सकता है। शब्द इतने सस्ते हैं।

इसके अलावा: ऑप्टिकल भ्रम में दोष कैसे हो सकते हैं? और शारीरिक रूप से बोलना: वहाँ कैसे हो सकता है निर्वात में दृश्य दोष हो?

004 50/7: "और पृथ्वी - हम (अल्लाह *) ने इसे फैलाया - - -"। कुरान पृथ्वी को बताता है फ्लैट - डिस्क की तरह हो सकता है, लेकिन फ्लैट। गलत।

००५ ५०/११: "--- और हम (अल्लाह*) उसके साथ (नया) जीवन देते हैं (पानी के साथ*) उस भूमि को जो मर चुकी है - - -"। सिर्फ पानी से जिंदा हो जाने वाली जमीन मरी नहीं है - बीज से जिंदा है और शायद जड़ें

००६ ५०/१३: "- - - लूत के भाई (लूत*) - - -।" यह सदोम के लोगों को संदर्भित करता है और अमोरा, लेकिन यह बहुत स्पष्ट है कि वे उसके "भाई" नहीं थे। एक बात के लिए वह एक था बहुत दूर से अजनबी, और दूसरे के लिए यह बाइबल और दोनों से बहुत स्पष्ट है कुरान कि वह उनके साथ था - संबंध एक प्राकृतिक जैसा कहीं नहीं था "भाई"। बस गलत।

इस शब्द के उपयोग का एकमात्र कारण हम देख सकते हैं कि मुहम्मद स्थिति चाहते थे उनके इस कथन में फिट होने के लिए कि भविष्यवक्ताओं को उनके ही लोगों - "उनके अपने भाइयों" के पास भेजा गया था। गलत - और f के बारे में भी भूल जाना। पूर्व योना।

००७ ५०/१९: "---सत्य (जैसे कुरान में*)---"। 49/75 देखें।

008 50/37a: "वास्तव में इसमें एक संदेश (कुरान*) - - - है।" इसमें बस कोई संदेश नहीं है - अल्लाह की ओर से नहीं - जब तक इस्लाम वास्तव में यह साबित नहीं कर देता कि अल्लाह ने वास्तव में कहा और वह सब किया जो इसका संदर्भ देता है।

009 50/37b: "वास्तव में इसमें एक संदेश है (कुरान*) - - - (अर्थात *) (सच्चाई) - - -।" देखो 40/75. इसमें बस कोई संदेश नहीं है, जब तक कि इस्लाम वास्तव में यह साबित नहीं कर देता कि अल्लाह ने वास्तव में वह सब किया है।

010 50/38a: "हमने (अल्लाह) ने आकाश (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी और सभी को बनाया उनके बीच छह दिनों में ”। बिलकुल गलत - इसमें कुछ अरबों साल लगे।

०११ ५०/३८बी: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

00c 50/38c: "- - - और न ही थकान का कोई एहसास हुआ (6 दिनों में सब कुछ बनाने से*) हम (अल्लाह*)।” फिर सप्ताह में 7 दिन क्यों हैं (बाइबल बताती है कि भगवान ने 7 दिन विश्राम किया था)?

सूरह 50: कम से कम 11 गलतियाँ + 3 संभावित गलतियाँ।

सूरा 51:

001 51/5: "(कुरान ५१/१ से ५१/४ तक कसम खाता है कि) वास्तव में तुम (मुसलमानों) से क्या वादा किया जाता है (कुरान* में) सच है - - -"। इतनी सारी गलतियों के साथ, आदि - और यहाँ तक कि स्पष्ट झूठ भी - उसमें किताब, यह भी शायद ही सच है। इसके लिए कम से कम ठोस सबूत की जरूरत होगी।

002 51/8: "वास्तव में आप (लोग/गैर-मुस्लिम*) एक सिद्धांत में मतभेद हैं"। कुछ हो सकता है हाँ, कुछ नहीं हो सकता है। "हाँ हो सकता है" में मुस्लिम हैं, सभी गलतियों के रूप में और कुरान में इससे भी बदतर यह साबित होता है कि उस किताब और उस धर्म में कुछ गड़बड़ है।

००३ ५१/९: "जिसके द्वारा (गैर-मुस्लिम*) बहकाया जाता है (सच्चाई से दूर)"। सच्चाई के लिए के रूप में, 40/75 देखें।

004 51/20: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

***005 51/23: "- - - स्वर्ग और पृथ्वी के भगवान (अल्लाह *) द्वारा (कुरान / अल्लाह कसम खाता है) अल्लाह !!*), यही (स्वर्ग का वादा*) ही सच है---"। हमें ऐसी आशा करनी है, एक असत्य के रूप में जई इस्लाम में भी अच्छा नहीं है - लेकिन कोई मुआवजा दे सकता है, और अगर इसे बिना सोचे समझे कहा गया हो इसे बिना माफ भी किया जा सकता है (और अगर यह इस्लाम की रक्षा या आगे बढ़ाना है, तो यह एक दायित्व है) यदि आवश्यक हो तो ऐसा करें)। लेकिन कुरान में सच्चाई के लिए 40/75, 41/12 और अन्य देखें। (वाक्य में कुरान जो "द्वारा" से शुरू होता है वह आम तौर पर शपथ होती है।)

006 51/30: "- - - वह (अल्लाह*) बुद्धि और ज्ञान से भरा है।" 40/75 देखें।

007 51/37: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

008 51/38: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

009 51/40: "तो हम (अल्लाह*) ने उसे (फिरौन रामसेस II*) और उसकी सेना को ले लिया, और उन्हें फेंक दिया समुद्र में (जहाँ वे डूबे*)"। एक बात के लिए वे समुद्र में नहीं फेंके गए, वे खुद गए (बाइबल के अनुसार और कुरान में अन्य स्थानों द्वारा विरोध नहीं किया गया) सूखा समुद्र तल, और फिर पानी लौट आया), लेकिन दूसरे के लिए: कम से कम रामसेस II ने खुद किया था विज्ञान के अनुसार डूबने से नहीं मरे और कुछ साल बाद तक उनकी मृत्यु भी नहीं हुई।

010 51/41: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०११ ५१/४३: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

**00a 51/47: "- - - यह हम (अल्लाह*) हैं जिन्होंने अंतरिक्ष की विशालता को बनाया है।" यहाँ एक बिंदु है कि नियंत्रित होना चाहिए : हमारे एक सूत्र के अनुसार अरब में प्रयुक्त होने वाला शब्द है "समा" जिसे "आकाश" कहा जाता है, जबकि "ब्रह्मांड" या "अंतरिक्ष" के लिए अरब शब्द कहा जाता है "अल-कान" होना। हम अब तक इसकी निश्चित रूप से जाँच नहीं कर पाए हैं, लेकिन इसका उल्लेख इसलिए करें क्योंकि इस तरह की बेईमानी बहुत कुछ बताती है कि क्या यह सच है - और हम अल-तकिया के आधे सच या मामले पाते हैं इस्लामिक मीडिया/किताबों में बहुत बार (हालांकि हमने मूल रूप से किसी व्यक्ति से इसकी उम्मीद नहीं की थी युसूफ अली)।

012 51/48: "और हम (अल्लाह*) ने (विशाल) पृथ्वी - - - को फैलाया है। अन्य स्थानों से जिस कुरान को हम फैलाना जानते हैं वह कालीन की तरह है - और धरती चपटी है। गलत।

०१३ ५१/४९: "और हर चीज़ से हमने (अल्लाह) जोड़े बनाए हैं - - -"। बहुत गलत। केवल यही बहुकोशिकीय प्राणियों के लिए जाता है, और उन सभी के लिए भी नहीं - आदिम जानवरों के बीच और यहां तक कि सरीसृप और मछली तक आप कुछ ऐसे प्रकार पाते हैं जो अलैंगिक रूप से फैलते हैं, और इस प्रकार नहीं

जोड़े बनाओ। एककोशिकीय प्राणी जोड़े में नहीं होते हैं, और उनमें से कई और भी हैं प्रजातियों में और कुल संख्या में। कोई भगवान जानता था - मुहम्मद नहीं। किसने बनाया कुरान?

०१४ ५१/५०: "मैं (मुहम्मद*) उसी (अल्लाह*) की ओर से तुम्हें चेतावनी देने वाला हूँ - - -।" यहाँ एक है उनमें से अधिक वास्तव में बुरे हैं: अल्लाह के बोलने से अचानक किताब बदल जाती है मुहम्मद बोल रहे हैं। **लेकिन मुहम्मद के लिए एक किताब में बोलना कैसे संभव है कि अरबों साल पुराना होने का दिखावा करता है (अनंत काल से - ब्रह्मांड के **बनने** से पहले 13.7 अरब साल पहले) या अल्लाह ने अपने स्वर्ग में बनाया था?

सूरह 51: कम से कम 14 गलतियाँ + 1 संभावित गलती।

सूरा 52:

001 52/5: "द्वारा (अल्लाह कसम खा रहा है) चंदवा (स्वर्ग*) ऊंचा उठा - - -"। कोई नहीं है चंदवा/सामग्री स्वर्ग, केवल ऑप्टिकल भ्रम। इसका क्या मतलब है कि अल्लाह कसम खाता है कुछ ऐसा जो उसे पता होना चाहिए वह मौजूद नहीं था ??

002 52/11: "- - - जो (सत्य (कुरान*)) को असत्य मानते हैं - - -"। कम से कम यह नहीं है
पूर्ण सत्य - 40/75 और 41/12 और अन्य देखें।

००३ ५२/३६: "- - - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

००४ ५२/४४: "क्या वे (गैर-मुसलमान*) आसमान का एक टुकड़ा (उन पर) गिरते हुए देखते, वे
केवल कहो:' बादल ढेर में इकट्ठे हुए! आकाश एक ऑप्टिकल बीमारी है (या वास्तव में दो)। एक टुकड़ा
एक ऑप्टिकल इलेशन गिर नहीं सकता है। (पाठ से स्पष्ट है कि इसका मतलब बादल नहीं है, और यह है
कुरान में अन्य स्थानों से स्पष्ट है कि उल्कापिंड (शूटिंग सितारे) ज्ञात हैं - यह वास्तव में एक है
आकाश का टुकड़ा जिसका अर्थ है)।

सूरह 52: कम से कम 4 गलतियाँ।

सूरा 53:

001 53/2: "आपका चैंपियन (मुहम्मद) न तो गुमराह है और न ही गुमराह किया जा रहा है।" सब
गलतियाँ, आदि साबित करते हैं कि वह कम से कम कुछ हद तक भटक गया था। हालांकि a . के सभी लक्षण
धोखेबाज, धोखेबाज और ठग **संकेत कर सकते हैं कि हो सकता है कि उन्हें गुमराह नहीं किया गया था - वे अंतिम 3 शब्द सच हो सकते हैं, हो सकता है कि वह भ्रामक था।**

००२ ५३/३: "न ही वह (मुहम्मद) अपनी (अपनी) इच्छा के बारे में (कुछ) नहीं कहता है। यह मजबूत लगेगा
सबूत यह साबित करने के लिए कि सूरा पसंद नहीं है। 66 या नहीं। 111 योग्य हैं और एक श्रद्धेय में हैं
जन्नत में मदर बुक - जो अनंत काल से अस्तित्व में हो सकती है। और यह भी साबित करने के लिए कि वे हैं
एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा पूजनीय पुस्तक के योग्य।

00a 53/5: "- - - सत्ता में एक ताकतवर (अल्लाह *) - - -।" लेकिन क्या अल्लाह ताकतवर है? - वहाँ है
इसका एक भी प्रमाण नहीं है। बहुत सारे शब्द - बड़े शब्द भी - लेकिन एक भी नहीं
प्रमाण।

००३ ५३/६: "(अल्लाह है *) बुद्धि के साथ संपन्न - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

004 53/11a: "द (पैगंबर (मुहम्मद के*)) - - -।" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे।
नबी की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. का उपहार है और पर्याप्त कनेक्शन है
   भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान के लिए।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम
   ज्यादातर सच हो जाते हैं।
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है
   भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है
   मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है
कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी
जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि
उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, उल्लेख नहीं किया
दावा किया या दावा किया, कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है
कि भविष्य के बारे में उसने जो कुछ कहा वह सब/अधिकांश सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में वह और . दोनों
इस्लाम ने कहा और कहता है कि "कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से कोई चमत्कार नहीं जुड़ा था।
- भविष्यवाणी करना एक तरह का चमत्कार है। (यह अंतिम तथ्य भी सभी चमत्कारों का एक ठोस प्रमाण है
वहाँ हदीसों में वर्णित मुहम्मद से जुड़ी कहानियाँ हैं)। यह भी देखें 30/40a
और 30/46ए।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या
कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। वह केवल "उधार"
वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

00b 53/11b: "(पैगंबर (मुहम्मद का *)) (दिमाग और) दिल ने किसी भी तरह से गलत नहीं किया
जो उसने देखा।" अगर कुरान मौलिक रूप से बाइबिल से अलग है, और बाइबिल नहीं है
विज्ञान के अनुसार झूठा - इस्लाम के प्रलेखित दावों के बावजूद - क्या स्पष्टीकरण?

फिर बचे हैं?

00c 53/18a: "वास्तव में उसने (मुहम्मद *) देखा - - -"। यह वास्तव में कितना सच है? - के साथ एक किताब में इतनी गलतियाँ और एक आदमी से इतनी संदिग्ध नैतिकता कि उसकी शपथ भी पवित्र नहीं है?

००५ ५३/१८बी: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

006 53/26: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

007 53/28: "- - - अनुमान सत्य (कुरान*) के विरुद्ध कुछ भी नहीं करता है"। असल में यही है कुरान से संबंधित प्रश्न: कितना सच है और कितना अनुमान - और कैसे इतना भी नहीं है? 40/75 + 41/12 देखें।

008 53/31: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

००९ ५३/४५+४६: "- - - उसने (अल्लाह) ने (आदमी*) को जोड़े में बनाया - नर और मादा - एक बीज से (वीर्य*) जब रखा जाता है (उसके स्थान पर (एक मादा गर्भ *))। मुहम्मद वीर्य को मानते थे एक प्रकार का बीज था जो एक महिला में लगाए जाने पर उगना शुरू हो सकता था। गलत - या सबसे अच्छा आधी कहानी। लेकिन मुहम्मद स्पष्ट रूप से दूसरे आधे - अंडे की कोशिका - को नहीं जानते थे कुरान में एक ही कहानी कई बार कही गई है। वास्तव में यह उस समय का प्राणी शास्त्र था मुहम्मद का - कोई नहीं जानता था कि गर्भाधान कैसे हुआ, और अंडा कोशिका को नहीं जानता था। एक भगवान बेहतर जानता था। कुरान किसने बनाया?

459

पेज 460

*010 53/49: "- - - वह (अल्लाह) सीरियस (ताकतवर सितारा) का भगवान है - - -"। सीरियस यह बहुत नहीं है शक्तिशाली, भले ही वह पृथ्वी से ऐसा ही क्यों न लगे। यह जैसे सितारों की तुलना में एक बौना है Betelgeuse, Aldebaran और लाखों अन्य। और f की तुलना में सिर्फ एक पटाखा। भूतपूर्व। NS अत्यधिक शक्तिशाली एटा कैरिने (विस्फोट के लिए विशाल सीमा रेखा, और जाने की उम्मीद है खगोलीय रूप से निकट भविष्य में सुपरनोवा)। असली दिग्गजों की तुलना में उल्लेख नहीं है।

**०११ ५३/५६: "यह पुराने के (श्रृंखला) के वार्नर (मुहम्मद*) का है"।
मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को प्रभावित किया और प्रभावित किया और प्रभावित किया कि वह उनमें से एक थे लंबी श्रृंखला - हालांकि सभी में सबसे महान - भविष्यवक्ताओं की (भले ही वह परिभाषा के अनुसार नहीं था नबी, क्योंकि उनके पास भविष्यवाणियां करने का उपहार नहीं था - उन्होंने बस उस प्रतिष्ठित को "उधार" लिया शीर्षक), क्योंकि इससे उन्हें "वजन" और प्रतिष्ठा मिली। और एक कालातीत "अधिकार" से संबंधित होने के लिए धर्म ने भी अपनी शिक्षाओं को उन लोगों के बीच महत्व दिया जो इसे मानते थे (विज्ञान ने कभी नहीं ६१० ईस्वी से पहले कहीं भी या किसी भी समय इस्लाम जैसे धर्म का कोई निशान मिला - **यदि उनके पास था, आप शर्त लगा सकते हैं कि इस्लाम ने इसके बारे में बताया था।**) लेकिन वह निश्चित रूप से एक ही श्रृंखला से संबंधित नहीं था यहूदी भविष्यवक्ताओं के रूप में, यीशु शामिल थे - शिक्षाएँ बहुत भिन्न थीं। और उन्होंने बनाया भविष्यवाणियाँ - वास्तविक भविष्यवाणियाँ - जो वह करने में असमर्थ था।

सूरह 53: कम से कम 11 गलतियाँ + 3 संभावित गलतियाँ।

सूरा 54:

001 54/2: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

002 54/5: "(कुरान है*) परिपक्व ज्ञान - - -"। मुश्किल से। 40/75, 41/12 और अन्य देखें।

००३ ५४/६: "इसलिए (हे पैगंबर (मुहम्मद *)!)" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। NS पैगंबर की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. का उपहार है और पर्याप्त कनेक्शन बंद करें भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान के लिए।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम ज्यादातर सच हो जाते हैं।
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है
कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी
जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि
उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, उल्लेख नहीं किया
दावा किया या दावा किया, कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है
कि भविष्य के बारे में उसने जो कुछ कहा वह सब/अधिकांश सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में वह और . दोनों
इस्लाम ने कहा और कहता है कि "कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से कोई चमत्कार नहीं जुड़ा था।
- भविष्यवाणी करना एक तरह का चमत्कार है। (यह अंतिम तथ्य भी सभी चमत्कारों का एक ठोस प्रमाण है
वहाँ हदीसों में वर्णित मुहम्मद से जुड़ी कहानियाँ हैं)। यह भी देखें 30/40a
और 30/46ए।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या
कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। वह केवल "उधार"
वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

460

पेज ४६१

००४ ५४/११: "तो हमने (अल्लाह*) ने स्वर्ग के द्वार खोल दिए (यहाँ = धार्मिक रूप से परिभाषित)
स्वर्ग के रूप में यह f. भूतपूर्व। बड़े अक्षर "H" के साथ लिखा गया है, आकाश या बादलों का विकल्प नहीं*)
पानी बरसने के साथ"। लेकिन जिस भौतिक आकाश में मुहम्मद विश्वास करते थे, वह अस्तित्व में नहीं था
- और इस प्रकार पानी नहीं हो सका।

005 54/15: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

***006 54/17: "और हमने (अल्लाह*) ने कुरान को समझने में आसान बना दिया है - - -।" देखो
54/32 नीचे।

007 54/18: "विज्ञापन (लोगों) ने खारिज कर दिया (सच्चाई (कुरान की शिक्षा)) - - -।" वे
शिक्षाएँ केवल आंशिक रूप से ही सत्य हैं - बहुत सारी गलतियाँ, आदि।

००८ ५४/१९: "क्योंकि हम (अल्लाह*) ने उनके (आद के लोगों) पर एक दिन में एक भयंकर हवा भेजी थी
हिंसक आपदा का "। खैर कुछ गलत है - और विरोधाभासी - जैसा कि यहाँ एक दिन कहा जाता है,
४१/१६ में इसे (कई) दिन और ६९/७ में ६ रातें और ७ दिन कहा जाता है।

***009 54/22: "लेकिन हमने (अल्लाह*) ने कुरान को समझने में आसान बना दिया है - - -।" देखो
45/32 नीचे।

०१० ५४/३२: "लेकिन हमने (अल्लाह *) ने कुरान को समझने में आसान बना दिया है - - -"। यह एक . में
तरीका बहुत सही है - भाषा ज्यादातर सादा और सरल है, और कुरान ही इसे बनाता है
स्पष्ट है कि इसे शाब्दिक रूप से समझना है। साथ ही यह कथन कि समझना आसान है,
इसका अर्थ है कि जैसा लिखा है वैसा ही समझा जाना है - यदि नहीं तो "समझने में आसान" नहीं होता,
(हालांकि कई मुसलमान दावा करते हैं कि छंद जो गलत हैं, रूपक हैं - यह एक आसान तरीका है
कठिन प्रश्नों से बचने के लिए उपयोग करें)

लेकिन यह सब समान है, कम से कम आंशिक रूप से गलत - आंशिक रूप से क्योंकि ऐसे बहुत से स्थान हैं जहां यह है
यह अनुमान लगाना मुश्किल है कि वास्तव में कौन सा शब्द है। व्याख्या करने के लिए अलग पुस्तकों की आवश्यकता है
कुरान - ऐसे कई हैं। और अगर आप किसी भी अच्छे लेख को पढ़ेंगे, तो आप पाएंगे कि
किताब में आज भी कई ऐसे बिंदु हैं जिन्हें इस्लाम समझ नहीं पाया है और यहां तक कि
और भी बहुत से बिंदुओं का वे अभी भी सही अर्थ नहीं जानते हैं - या दो या अधिक में से कौन सा
अर्थ सही है (हालांकि इस्लाम बताता है कि सभी संभावित अर्थ सही हैं -
वे इस तथ्य को छिपाने के लिए "पढ़ने के विभिन्न तरीके" कहते हैं कि एक बात के लिए पुस्तक अस्पष्ट है,
और दूसरे के लिए कि कई संभावित किस्में मौजूद हैं)। लेकिन यह देखना भी आसान है कि मुहम्मद
मतलब यह समझना आसान और जटिल नहीं था - और एक सर्वज्ञ ईश्वर करने में सक्षम था
एक ऐसी पुस्तक की रचना करें जिसे समझना संभव हो और गलत समझना असंभव हो या नहीं
समझें, जैसे मुहम्मद ने दावा किया और निश्चित रूप से विश्वास किया और इरादा किया। किसने रचना की
क़ुरान?

०११ ५४/४०: "और हमने (अल्लाह*) ने कुरान को समझने में आसान बना दिया है - - -"। देखो
54/32 ठीक ऊपर।

012 54/42: "- - - हमारे संकेत - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

013 54/55: "सत्य की एक सभा - - -"। किताब में इतना गलत होने के साथ और इसलिए
धर्म, इसे हमारे द्वारा विश्वास करने के लिए ठोस प्रमाण की आवश्यकता है।

सूरह 54: कम से कम 13 गलतियाँ।

सूरा 55:

001 55/2: "वह (अल्लाह *) है जिसने कुरान को सोचा है।" 40/75, 41/12 और अन्य देखें।

002 55/3: "उसने (अल्लाह*) ने इंसान को पैदा किया"। कम से कम जैसा कुरान में कहा गया है वैसा नहीं - 6/2 देखें। इसके आलावा
मनुष्य को विज्ञान के अनुसार नहीं बनाया गया था - वह पहले के एक प्राइमेट से विकसित हुआ था। अगर इस्लाम
कहते हैं कि वह बनाया गया था, उन्हें इसे साबित करना होगा।

००३ ५५/१०: "वह (अल्लाह*) है जिसने पृथ्वी को फैलाया है - - -"। हम अन्य जगहों से जानते हैं
कुरान में कि फैला हुआ, कालीन की तरह था - मुहम्मद का मानना था कि कुरान था
समतल। गलत।

००४ ५५/१४: "उसने (अल्लाह) ने मनुष्य को बजती हुई मिट्टी से मिट्टी के बर्तनों की तरह बनाया"। गलत - लेकिन
कुछ मजाकिया। 6/2 देखें।

**00a 55/15: "और उसने (अल्लाह*) जिन्नों को आग से धुएँ से मुक्त बनाया।" जिन्न से प्राणी हैं
पुराने अरब लोकगीत, परियों की कहानियां और पुराने अरब बुतपरस्त धर्म से संबंधित किंवदंतियां। सह द्वारा ही है-
घटना है कि अल्लाह की दुनिया में ये प्राणी - कि कुरान के अनुसार वास्तविक प्राणी हैं -
पहले केवल बुतपरस्त अरबों के लिए जाना जाता था और किसी अन्य को नहीं, यहां तक कि वास्तविक (?)
बाइबिल में भविष्यद्वक्ता? - और किसी भी अन्य नबी के लिए नहीं कुरान के दावे सभी फैले हुए थे
दुनिया भर में और हर समय? क्योंकि पुराने अरब और उनके पड़ोसियों के अलावा कोई नहीं जानता था
जिन्न के बारे में पूरी दुनिया के लिए एक धर्म में और पूरी दुनिया के लिए एक भगवान द्वारा बनाए गए, वे कभी नहीं
उस क्षेत्र के अलावा पूरी दुनिया में खुद को किसी अन्य स्थान पर प्रकट किया। क्या किस्मत है
संयोग है कि अल्लाह अंत में एक दूत के लिए सिर्फ एक अरब - मुहम्मद - को चुनता है, ताकि वह
बाकी दुनिया को बता सकता है कि वास्तविक धर्म में जिन्न की क्या भूमिका है। लेकिन यह भी है
अजीब बात है कि बाइबिल से उधार ली गई चीजों को छोड़कर और पड़ोसी से थोड़ी सी
धर्म, कुरान और कुरान में बाकी दुनिया के बारे में या उसके बारे में कुछ भी नहीं है
व्यावहारिक रूप से दुनिया के उन अतीत से कोई सामान नहीं है, भले ही भविष्यवक्ता रहे हों
उस पुस्तक के अनुसार हर समय और हर समय। (जिन्न अक्सर आत्माओं के साथ अनुवाद किया जाता है (भगवान or .)
बुरा) - लेकिन यह गलत है, क्योंकि आत्माओं के लिए अरब शब्द "रुह" है। इसके अलावा अन्य शब्द
अन्य संस्कृतियों के अलौकिक प्राणियों का अनुवाद के लिए उपयोग किया जाता है, लेकिन यह लक्षण है कि शीर्ष
अनुवादक शब्द का अनुवाद नहीं करते हैं, लेकिन अरब का उपयोग करते हैं - जिन्न प्राणियों का एक समूह है विशेष
अरब लोककथाओं और किंवदंतियों के लिए, और यहां तक कि शीर्ष अनुवादक भी समकक्ष प्राणी नहीं पाते हैं या
पश्चिमी भाषाओं में नाम।)

000 55/17: "वह (अल्लाह) दो पूर्व और दो पश्चिम का स्वामी है।" यह गुप्त
वाक्य का अर्थ है एक वर्ष के दौरान सूर्य के उत्तरतम और दक्षिणतम बिंदु (.)
विषुव) - पूर्व और पश्चिम में। (हम इसका उल्लेख इसलिए करते हैं क्योंकि कुछ मुसलमान रास्ते खोजने की कोशिश करते हैं
इस वाक्य का उपयोग यह साबित करने के लिए करें कि कुरान कहता है कि पृथ्वी गोलाकार है।)

००बी ५५/२४: "और उसके (अल्लाह के) जहाज चल रहे हैं - - -"। हमने कभी किसी भगवान के मालिक के बारे में नहीं सुना
जहाजों। इसका शाब्दिक अर्थ नहीं हो सकता। लेकिन कुरान कहता है कि इसे अक्षरशः पढ़ा जाना चाहिए।

005 55/29: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

*00c ५५/३१: "- - - तुम दोनों दुनिया!" "कुरान के संदेश" के अनुसार, अरब शब्द
जिसका प्रयोग यहाँ किया गया है - "थाकलां" (बहुवचन नहीं, बल्कि "थकल" का द्वैत) वास्तव में इसका अर्थ नहीं है
"दुनिया", लेकिन आम तौर पर "मनुष्यों और अदृश्य प्राणियों" के साथ अनुवाद किया जाता है, लेकिन इसका अर्थ यह भी हो सकता है
अन्य कनेक्शनों में "पुरुष और महिला"।)

006 55/33: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

**00d ५५/५६: मुस्लिम स्वर्ग को पारसी की तरह छोड़ दिया गया है (जोरोस्ट्रियन मुख्य रूप से रहते थे
फारस में, अरब के बड़े व्यापारिक भागीदारों में से एक। अरब उस धर्म को जानते थे - शायद ही
अच्छी तरह से मोज़ेक या ईसाई धर्म, लेकिन कम से कम सतही रूप से।) - सिवाय इसके कि
घंटे वहाँ पेरिस नामित थे। (इसके अलावा यहूदी और ईसाई नरक को प्रेरणा मिली होगी
पारसी से।)

सूरह ५५: कम से कम ६ गलतियाँ + ४ संभावित गलतियाँ।

सूरा 56:

001 56/51: "- - - और (सच्चाई (कुरान*)) को असत्य समझो! - -"। देखें ४०/७५, ४१/१२, और
अन्य।

002 56/57: "- - - सत्य (कुरान की सामग्री*) - - -"। लेकिन कुरान की सामग्री at
सर्वोत्तम केवल आंशिक रूप से सत्य है - बहुत अधिक गलत है।

००३ ५६/७०: "- - - हम (अल्लाह*) इसे (पूरी बारिश*) नमक - - - बना सकते हैं। दोनों को बदले बिना नहीं
प्राकृतिक और भौतिक नियम। अगर इस्लाम जोर देता है कि यह सच है, तो उन्हें इसे साबित करना होगा - शब्द हैं
सस्ता।

004 56/80a: "दुनिया के भगवान (अल्लाह *) से एक रहस्योद्घाटन (कुरान *) - - -"। यह कर सकते हैं
सच में ऐसा हो? 41/12 - और 40/75 देखें। असंभव - कोई भी सर्वज्ञ ईश्वर नहीं बनायेगा / वितरित करेगा
इतनी सारी गलतियों के साथ किताब - यह उल्लेख नहीं है कि इसे अपने स्वर्ग में एक श्रद्धेय माँ के रूप में रखें
पुस्तक (13/39 - 43/4)। क्या यह किसी भगवान का रहस्योद्घाटन हो सकता है? या दूसरी तरफ: कर सकते हैं
इतनी सारी गलतियाँ, अंतर्विरोध, इतना अमान्य तर्क उत्पन्न करने वाली कोई चीज़ सम का स्वामी हो
एक दुनिया? 2/131 - 26/109 - 26/127 - 26/192 भी देखें।

005 56/80b: "- - - संसार।" कुरान कहता है कि 7 (सपाट) पृथ्वी हैं - और हदीस
उन्हें एक के ऊपर एक रखें और उनका नाम रखें। गलत। 65/12 देखें।

006 56/81: "क्या यह (कुरान*) ऐसा संदेश है कि आप इसे हल्के सम्मान में रखेंगे?" इस
बयानबाजी का सवाल जवाब "नहीं" की मांग करता है। गलत। किताब में इतना गलत होने के साथ, यह है
इसे बहुत हल्के सम्मान में रखने के लिए सही है - यदि सम्मान में है, तो इसमें सब कुछ होना चाहिए
किताब में क्या सही है और क्या गलत है, इसका पता लगाने के लिए दस्तावेज।

007 56/92: "- - - वे (गैर-मुस्लिम*) जो (सत्य (कुरान*)) को असत्य मानते हैं - - -"।
वास्तव में एक सवाल है: कुरान में क्या सच है और क्या झूठ - देखें 40/75 और 41/12
और दूसरे।

००८ ५६/९५: "वास्तव में, यह (कुरान में नरक का वर्णन*) बहुत सत्य है और
निश्चितता"। नर्क के बारे में कुरान जो कहता है वह बाकी की तुलना में अधिक सत्य और निश्चित क्यों होना चाहिए?
किताब की? 40/75 और अन्य स्थान देखें।

सूरह 56: कम से कम 8 गलतियाँ।

सूरा 57:

001 57/1a: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

002 57/1b: "- - - वह (अल्लाह*) है - - - समझदार।" सभी गलतियों के अनुसार नहीं, आदि में
कुरान.

००३ ५७/२: "----स्वर्ग---।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

004 57/3: "- - - उसे (अल्लाह*) हर चीज़ का पूरा ज्ञान है"। नहीं अगर उसे कुछ करना था
कुरान के साथ - 40/75 और अन्य स्थान देखें।

005 57/4: "वह (अल्लाह) है जिसने आकाश (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी को छह में बनाया
दिन - - -"। यह संदेह करना संभव नहीं है कि मुहम्मद/कुरान का अर्थ है कि इस सब में ६ दिन लगे,
एक बार को छोड़कर इसमें 8 दिन (विरोधाभास) लगे। गलत। वास्तव में इसमें अरबों वर्ष लगे।

006 57/4बी: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

007 57/5: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

008 57/6: "वह (अल्लाह) रात को दिन में और दिन को रात में मिला देता है - - -"। गलत। यह है
सूर्य और पृथ्वी की परिक्रमा जो ऐसा करती है - कोई भी देवता इसे जानता था, लेकिन मुहम्मद नहीं। फिर
कुरान किसने बनाया? अगर इस्लाम फिर भी कहता है कि अल्लाह करता है - या उसके पीछे प्राकृतिक नियम बनाए -
उन्हें सबूत लाना होगा - - - और न केवल शब्दों या बयानों को कोई पुजारी किसी के लिए उपयोग कर सकता है
भगवान, क्योंकि बयान और शब्द बहुत सस्ते हैं।

009 57/9: "- - - प्रकट संकेत - - -"। कुरान में कोई प्रकट - निश्चित - संकेत नहीं हैं। देखो
2/99.

010 57/10: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

०११ ५७/१६: "- - - सत्य (कुरान*) जो सामने आया है - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

012 57/17: "- - - चिह्न (चिह्न) - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

013 57/19a: "- - - वे (मुसलमान) सच्चे हैं (सत्य के प्रेमी (कुरान*)) - - -"। देखें 40/75
+ 41/12।

014 57/19: "- - - हमारे (अल्लाह के संकेत - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के रूप में अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

015 57/25: "- - - स्पष्ट संकेत - - -।" 2/99 देखें।

***०१६ ५७/२७: "- - - (अल्लाह*) ने उसे (यीशु*) सुसमाचार दिया - - -"। एक बात के लिए
ऐसा लगता है कि मुहम्मद नहीं जानते थे कि 4 सुसमाचार थे - उन्होंने हमेशा एकवचन का इस्तेमाल किया। ज़्यादा बुरा
यह है कि सभी सुसमाचार उसकी (यीशु की) मृत्यु के बाद लिखे गए थे। मुसलमान "दिन बचाने" की कोशिश करते हैं
जोर देकर कहा कि अल्लाह ने एक और सुसमाचार का इस्तेमाल किया जो अब गायब हो गया है - के लिए एक मानक तरीका
मुसलमानों को कठिन बिंदुओं को "व्याख्या" करने के लिए, और बिना दस्तावेज के सामान्य रूप से। लेकिन इस मामले में
वे सही भी हो सकते हैं - हो सकता है कि कोई पुराना अस्तित्व में रहा हो (3 में से 3 के लिए संभावित मूल)
ज्ञात सुसमाचार)। बुरी खबर यह है कि हम जानते हैं कि अगर यह कभी अस्तित्व में था, तो वह भी था
यीशु के मरने के बाद लिखा गया, क्योंकि एक सुसमाचार यीशु के जीवन और मृत्यु की कहानी है और
पुनरुत्थान, और यह तब तक नहीं लिखा जा सकता था जब तक ऐसा नहीं हुआ था (और यह संभव था
मामले में सुसमाचार का अर्थ है कि यीशु और पहले लिखे गए के बीच और भी कम समय है
गोस्पेल)। मुस्लिम भी कभी भी अन्य संभावित स्पष्टीकरण का उल्लेख नहीं करते हैं कि 3 ऐसा क्यों हैं

464

पेज ४६५

इसी तरह: कि सबसे पुराने दो अन्य लोगों के लिए मॉडल रहे हैं। (इस मामले में कोई बूढ़ा नहीं था
सुसमाचार की उन्होंने आंशिक रूप से नकल की - और मुसलमानों के लिए इस बिंदु पर कोई दावा नहीं किया।)

सूरह 57: कम से कम 16 गलतियाँ।

सूरा 58:

001 58/5: "- - - स्पष्ट संकेत - - -।" 2/99 देखें।

002 58/7a: "- - - अल्लाह जानता है (सब) जो स्वर्ग में है (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी पर -
- -"। अगर कुरान एक "मातृ पुस्तक" (५४/३२) की एक प्रति है तो वह अपने स्वर्ग में सम्मान करता है। देखो
40/75 और 41/12।

003 58/7बी: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

सूरह 58: कम से कम 3 गलतियाँ।

सूरा 59:

001 59/1a: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/2ए देखें।

00a 59/1a: "- - - वह (अल्लाह *) पराक्रम में ऊंचा है - -।" क्या वह है? वहाँ कहीं नहीं - बिल्कुल कहीं नहीं - उसके पराक्रम या शक्ति का कोई प्रमाण नहीं है। बहुत सारे और बहुत सारे और बहुत सारे बड़े शब्द हैं और शेखी बघारना, लेकिन एक भी वैध प्रमाण नहीं - एक नहीं। और पुनश्च: सामान्य दुनिया में कौन हैं जिन्हें बड़ी-बड़ी बातों पर और शेखी बघारना पड़ता है? - जिनके पास सच्चे तथ्यों की कमी है।

002 59/बी: "- - - (अल्लाह *) ज्ञानी है।" 58/7 के ठीक ऊपर और 40/75 + 41/12 देखें।

003 59/16: "- - - दुनिया!" मुहम्मद का मानना था कि 7 (सपाट) पृथ्वी थीं। गलत। देखो 65/12।

00b 59/21: "अगर हम (अल्लाह*) ने इस कुरान को पहाड़ पर उतारा होता - - -"। क्या यह वास्तव में एक था सर्वज्ञ भगवान जिसने इसे नीचे भेजा? 41/12 और 40/75 देखें।

004 59/22: "अल्लाह - - - जानता है (सभी चीजें) - - -"। 40/75 और 41/12 - और अन्य देखें।

005 59/24a: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22 देखें।

006 59/24b: "(अल्लाह* है) ज्ञानी - -"। 59/1 + 40/75 + 41/12 देखें।

सूरह 59: कम से कम 6 गलतियाँ + 2 संभावित गलतियाँ।

सूरा 60:

001 60/1a: "- - - उन्होंने (गैर-मुसलमानों) ने सत्य (कुरान*) - - - को खारिज कर दिया है। देखें 40/75 और 41/12।

002 60/1b: "- - - (पैगंबर (मुहम्मद*)) - - -।" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। NS पैगंबर की परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो:

1. का उपहार है और पर्याप्त कनेक्शन बंद करें भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान के लिए।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम ज्यादातर सच होते हैं - यदि नहीं तो वह झूठे नबी हैं।
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, उल्लेख नहीं किया दावा किया या दावा किया, कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि भविष्य के बारे में उसने जो कुछ कहा वह सब/अधिकांश सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में वह और . दोनों इस्लाम ने कहा और कहता है कि "कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से कोई चमत्कार नहीं जुड़ा था। - भविष्यवाणी करना एक तरह का चमत्कार है। (यह अंतिम तथ्य भी सभी चमत्कारों का एक ठोस प्रमाण है वहाँ हदीसों में वर्णित मुहम्मद से जुड़ी कहानियाँ हैं)। यह भी देखें 30/40a और 30/46ए।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। वह केवल "उधार" वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

००३ ६०/२: "- - - वे (गैर-मुस्लिम*) चाहते हैं कि तुम (मुसलमान*) सत्य को अस्वीकार कर दो।" जैसा सत्य के लिए: 40/75 और 41/12 देखें। बाकी के लिए, कुरान सही हो सकता है - लेकिन पूरी तरह से उस पुस्तक के दावे के अलग-अलग कारण। इस्लाम अपने शुद्ध कुरानिक रूप में एक बहुत विनाशकारी, अमानवीय और अनैतिक धर्म, और जब उसके ऊपर यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट है कि कुरान ईश्वरीय कार्य नहीं है, हम नहीं चाहते कि हमारे वंशज कुछ इस तरह खत्म हो जाएं वह

004 60/5: "(अल्लाह*) - - - बुद्धिमान।" 58/7 + 40/75 + 41/12 देखें।

005 60/10: "और अल्लाह ज्ञान और ज्ञान से भरा है।" 40/75 और 41/12 देखें।

006 60/12: "हे पैगंबर (मुहम्मद*)!" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। परिभाषा एक नबी का वह व्यक्ति है जो:

1. का उपहार है और पर्याप्त कनेक्शन बंद करें भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान के लिए।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम ज्यादातर सच हो जाते हैं।
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, उल्लेख नहीं किया दावा किया या दावा किया, कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है

कि भविष्य के बारे में उसने जो कुछ कहा वह सब/अधिकांश सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में वह और . दोनों इस्लाम ने कहा और कहता है कि "कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से कोई चमत्कार नहीं जुड़ा था। - भविष्यवाणी करना एक तरह का चमत्कार है। (यह अंतिम तथ्य भी सभी चमत्कारों का एक ठोस प्रमाण है वहाँ हदीसों में वर्णित मुहम्मद से जुड़ी कहानियाँ हैं)। यह भी देखें 30/40a और 30/46ए।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। वह केवल "उधार" वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

सूरह 60: कम से कम 6 गलतियाँ।

यहाँ तक उप-योग: १६३४ गलतियाँ + १९७ संभावित गलतियाँ।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 4, खंड 7 (= II-1-4-7)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। NS "पूर्ण" सूची - "विश्वकोश" - सूरह पर आधारित और पद संख्या

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें। धारा 1 से 16.

कुछ स्पष्ट तथ्य गलतियाँ और

सुरह में त्रुटियाँ ६१ से ८० कुरान में - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

टिप्पणियों को ३ नंबरों (०० या ० सहित) द्वारा क्रमांकित किया गया, कुछ स्थानों के बाद एक छोटा पत्र = स्पष्ट गलतियाँ। टिप्पणियों की संख्या 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षर (बड़ा या .) छोटा) = संभावित गलती।

सूरा ६१:

001 61/1a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

002 61/1b: "- - - (अल्लाह *) ज्ञानी है।" 40/75 + 41/12 + 59/1 देखें।

00a 61/5: "- - - मैं (मूसा*) अल्लाह का रसूल हूं (भेजा) तुम्हारे पास (यहूदी*) - - -।" अल्लाह या यहोवा? कुरान कई जगहों पर पुराने यहूदियों के भगवान के लिए अल्लाह नाम का इस्तेमाल करता है। अधिकतर हम इसे "गिरफ्तार" नहीं किया है, लेकिन इसके सही होने की संभावना बहुत कम है क्योंकि शिक्षाएं भी हैं विभिन्न।

एक अन्य बिंदु: अल-अजहर अल-शरीफ द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में काहिरा में इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक .) ऐसे विषय) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि अल्लाह के लिए कोई पुतला नहीं है और उसे पटाना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है।

***003 61/6a: "- - - (यीशु ने कहा*) मैं अल्लाह का रसूल हूं - - -"। अगर यीशु ने कहा था बहुत दूर विदेशी देश के जाने-माने बहुदेववादी भगवान के बारे में कुछ ऐसा, एक बात के लिए उसके बहुत से अनुयायी नहीं थे, और दूसरे के लिए: पादरियों के पास एक ही बार में एक था उसे मारने का बहाना। **इस श्लोक की रचना किसी ऐसे व्यक्ति ने की है जो धर्म को नहीं जानता और ३० ईस्वी के आसपास इज़राइल में राजनीतिक वास्तविकताएँ।**

००४ ६१/६/बी: "- - - (यीशु ने कहा कि वह * के लिए आया था) कानून की पुष्टि (मूसा* की) - - -।" क्या बाइबल के अनुसार उसने कहा था, कि वह उस व्यवस्था को पूरा करने नहीं, परन्तु व्यवस्था को पूरा करने आया था और आत्माओं को बचाने के लिए - जो पुराने कानूनों की पुष्टि करने के समान नहीं था या था उन्हें बदलने या उन्हें खत्म करने से प्रतिबंधित किया गया है। उसने वास्तव में बाइबल के अनुसार क्या किया, मनुष्य और यहोवा के बीच एक नई वाचा बना रहा था कि "वास्तव में" बदल गया या समाप्त हो गया उन पुराने कानूनों में से कई - एक वाचा का मुसलमानों ने कभी उल्लेख नहीं किया। इसका सार जानने के लिए पढ़ें बाइबिल में "अंतिम भोज" के बारे में। (उस भोज के कम से कम १२ गवाह थे, और उन्होंने इसके बारे में बाद में कई लोगों को बताया।) एफ। पूर्व। ल्यूक 22/20।

***005 61/6c: "- - - (यीशु ने कहा: मैं हूँ*) बाद में आने के लिए एक दूत की खुशखबरी दे रहा है मैं, जिसका नाम अहमद होगा (मुहम्मद* नाम का दूसरा रूप)---"। **ये है काफी मजेदार कविता, जैसा कि आप मुसलमानों से मिलते हैं जो जोर देकर कहते हैं कि यह बाइबिल से है। लेकिन वहाँ नहीं है दूर से बाइबल में ऐसा कुछ भी,** और न ही कुछ 13ooo प्रासंगिक धर्मग्रंथों में या पूरे समय में पाए गए टुकड़े, 610 ईस्वी से पुराने - इसमें से लगभग 300 शामिल हैं गॉस्पेल - न ही अन्य ज्ञात पांडुलिपियों में बाइबिल के छंदों के कुछ 30oo संदर्भों में। यह है कुरान में ही मिलता है। (बाइबल भी कभी नहीं - मेवर - जब यह भविष्यवाणी करती है तो नाम देती है दूर भविष्य में - आने वाले मसीहा के नाम के बारे में भी नहीं। यहाँ आपको मिलता है एक स्पष्ट नाम - नियम का काफी उल्लंघन - - - और मुहम्मद के लिए अविश्वसनीय रूप से सुविधाजनक, the बहुत आदमी जिसने यह बताया। आप चाहें तो मान लीजिए कि यह एक संयोग है।)

**और यह याद रखने योग्य है कि नए संप्रदायों या धर्मों के निर्माताओं के लिए यह काफी आम है खुद को एक मातृ धर्म से जोड़ लें और उसे झुका दें - या यहां तक कि हाईजैक (इसके कुछ हिस्से)। NS Amaddijja-मुसलमानों के संस्थापक वास्तव में नवीनतम उदाहरणों में से एक हैं, और मॉर्मन बताते हैं

पृथ्वी पर अपने अंतिम दिनों के दौरान यीशु ने अमेरिका का दौरा किया। ऐसी बातें जड़ें, विश्वास और देती हैं
एक आंदोलन के लिए वजन।

*यीशु ने पवित्र आत्मा को बताया (जिसे पवित्र आत्मा भी कहा जाता है, परमेश्वर का आत्मा, सत्य का आत्मा,
या केवल आत्मा - अल्लाह की तरह और मुहम्मद की तरह इसके एक से अधिक नाम हैं) आना चाहिए
शीघ्र ही - जो उसने किया। और उसने कहा कि उसे स्वयं एक बार "न्याय करने के लिए" लौटना चाहिए
जीवित और मृत"। लेकिन किसी और के बारे में एक भी शब्द नहीं - और न ही किसी के साथ का जिक्र करना
एक विदेशी नाम पर यहूदी सवाल करेंगे।

**हम एक जगह के बारे में जानते हैं जहां मुहम्मद का उल्लेख किया गया है: बरनबास इंजील में - एक मोस्ट
अपोक्रिफ़ल पुस्तक - हमारे एक स्रोत के अनुसार इसे ख़लीफ़ा के दरबार में भी लिखा जा सकता है
बगदाद में (बहुत अजीब नहीं है अगर यह मुहम्मद का उल्लेख करता है)। कम से कम यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि
जिस कॉपी से आज की प्रतियां बनाई जाती हैं, वह धर्मों को "कनेक्ट" करने का एक देर से प्रयास है। आप की ज़रूरत है
सबूत बनाने के लिए केवल अगर आपके पास कोई वास्तविक नहीं है। मुसलमान कभी-कभी आपको बताते हैं कि यह "सुसमाचार" है
अकेले हैं।

लेकिन मुसलमान जिस मानक व्याख्या का पालन करते हैं - बिना सबूत के: बाइबल को गलत ठहराया गया है और
मुहम्मद का नाम लेना और उनसे बुरी षडयंत्रों से निकली उम्मीद - उसमें लोग
क्षेत्र में साजिश के सिद्धांतों को देखने और विश्वास करने की एक मजबूत प्रवृत्ति है (हमारे पास एक निजी है
सिद्धांत है कि इसका कारण यह है कि वे अपने इतिहास में कभी भी अपेक्षाकृत विश्वसनीय के लिए उपयोग नहीं किए गए हैं
जानकारी)। लेकिन उस मामले में:

1. पहले ईसाइयों का जीवन रहा था
   पूरी तरह से अलग - और उनके समय का पैमाना था
   पूरी तरह से अलग थे अगर उनमें से कोई था
   एक और भविष्यवक्ता के बारे में सुना, जिसकी अपेक्षा की जा सकती है
   यीशु की वापसी से पहले "जीवितों का न्याय करने के लिए"
   और मृत ")। (वे वापसी जानेंगे
   यीशु की तुलना में अधिक समय लगेगा
   वे अब विश्वास करते थे, नए "भविष्यद्वक्ता" को देने के लिए
   काम का समय)।
2. एनटी की सामग्री अलग थी -
   कम से कम पत्र अलग नहीं थे। यह
   बस एक परी कथा है जो मजबूत करने के लिए बनाई गई है
   मुहम्मद का पैगंबर होने का दावा - जैसे
   कुछ अन्य स्व-घोषित भविष्यद्वक्ता। (बल्कि
   विडम्बनापूर्ण; क्योंकि उसके पास होने का उपहार नहीं था
   भविष्यवाणी करने में सक्षम - उसने भी नहीं किया
   दावा करें या दिखावा करें कि उसके पास यह था - वह एक भी नहीं था
   असली नबी। किसी के लिए मैसेंजर या
   शायद कुछ, लेकिन असली नबी नहीं)।
3. ***मुसलमान केवल अपने दावे का समर्थन करते हैं
   बाइबिल में प्रयुक्त एक ग्रीक शब्द:
   "पैराक्लेटोस" जिसका अर्थ है "सहायक" - जीसस
   पृथ्वी छोड़ने से पहले, उसे भेजने का वादा किया था
   शिष्य एक सहायक - पवित्र आत्मा (जो
   कुछ दिनों बाद पहुंचे - व्हिटसन में -
   बाइबिल के अनुसार (एक कहानी जो नहीं है
   कुरान में अस्वीकृत))।
   1. इस्लाम का दावा है कि "पैराक्लेटोस" एक है
      एक और ग्रीक शब्द के लिए गलत वर्तनी
      "पेरिक्लीटोस", जिसका अर्थ है "अत्यधिक"
      एक की प्रशंसा की ")। अरामी में "अत्यधिक"
      स्तुति" का अर्थ है "महामना"
      जो उस शब्द के दूसरे भाग के रूप में
      एक क्रिया "हमीदा" (= स्तुति करने के लिए) और as . है
      एक संज्ञा "हम्द" (कानून या स्तुति)। अगर तुम
      फिर अरब के नाम जारी रखें
      मुहम्मद और अहमद (दूसरा)

मुहम्मद नाम का रूप) दोनों
"हमीदा" या "हम्द" से निकला है
इस्लाम के अनुसार। जो इस्लाम के लिए
और सभी मुसलमान इसके लिए एक मजबूत सबूत हैं
कि "पैराकेलेटोस" वास्तव में है
गलत वर्तनी और इसका अर्थ है "मुहम्मद"
जॉन के बाद सुसमाचार में (f. पूर्व जॉन
१४/१६) - इस्लाम और मुसलमानों ने
अंतर देखने की कठिनाइयाँ
एक संभावित (और अक्सर .) के बीच
असंभावित) स्पष्टीकरण और एक प्रमाण
जब वे एक प्रमाण होने का दावा चाहते हैं।
यहाँ दावा एक बहुत नहीं है
कम से कम कहने के लिए ठोस सबूत
- और इसके साथ:

2. शब्द "पेरिक्लीटोस" कि इस्लाम
दावों की वर्तनी गलत है - केवल
संभावना है कि उन्हें जवाब मिलना होगा
वे चाहते हैं और सख्त जरूरत है (वे
इसकी सख्त जरूरत है, क्योंकि कुरान
स्पष्ट रूप से बताता है कि मुहम्मद
एनटी में भी भविष्यवाणी की - - - और वह है
वहाँ नहीं) - में बिल्कुल मौजूद नहीं है
बाइबिल, एनटी में उल्लेख नहीं करने के लिए। यह है
एक बार इस्तेमाल नहीं किया।
3. शब्द "पेरिक्लीटोस" भी नहीं है
सभी में एक बार मिला कुछ
13oo प्रासंगिक पांडुलिपियां और
टुकड़े विज्ञान पहले से जानता है
610 ई. न तो एक ही जगह या
समय, न ही अनेकों में से एक में
पांडुलिपियां।और उतना ही बुरा: एक में नहीं
हजारों अन्य पुराने में से एक
पांडुलिपियां जो संदर्भ देती हैं
बाइबल। एक बार नहीं।
4. बदतर: यह किसी में भी नहीं पाया जाता है
कुछ ३०० प्रतियाँ या अंश
६१० ईस्वी या अन्य में पुराने सुसमाचार
पांडुलिपियों में सुसमाचार का जिक्र है।
5. *शब्द "पेरिक्लीटोस" बस कभी नहीं
पुराने शास्त्रों में इस्तेमाल किया गया था कि
बाइबिल बन गया। वह शब्द है
हर जगह इस्तेमाल किया जाने वाला "पैराक्लेटोस" है -
"सहायक" (और एक सहायक वह था जो
शिष्यों की आवश्यकता)। यह प्रत्येक के लिए जाता है
और हर ज्ञात प्रति।
6. **इसके अलावा: यह कैसे संभव हो सकता है
झूठा - जैसा कि इस्लाम दावा करता है - वही
सैकड़ों में उसी तरह शब्द और
हजारों पांडुलिपियां - और कैसे

में प्रत्येक "periklytos" को खोजने के लिए
प्रत्येक और कई अलग-अलग
पांडुलिपियां - उन सभी में फैली हुई हैं
देश? - और सबसे ऊपर: एक में
कम यात्रा के साथ समय और शायद ही कोई
मीडिया!? इस्लाम को साबित करना कठिन काम है
उनका दावा - और याद रखें: यह है
दावा करने वाले जिन्हें साबित करना होता है
उन्हें, दूसरों को इसका खंडन करने के लिए नहीं। इस
अक्सर भुला दिया जाता है जब मुसलमान
ढीले दावों और बयानों को फेंक दें
चारों तरफ।

7. *मुसलमान समझाने की कोशिश करते हैं कि यह हो सकता है
पवित्र आत्मा का प्रश्न न हो,
क्योंकि पवित्र आत्मा पहले से ही था
वर्तमान। और पवित्र आत्मा थी
उपस्थित या यीशु का दौरा किया। परंतु ऐसा नहीं था
शिष्यों का हिस्सा - और वह था
व्हाट्सन के अनुसार क्या हुआ?
बाइबिल के लिए: वे प्रत्येक व्यक्तिगत हो गए
आत्मा के साथ संपर्क, और वह था
एक स्थिति का काफी बदलाव।
8. *मुसलमान भी कहते हैं कि दो के रूप में
आत्मा के लिए अलग-अलग नामों का प्रयोग किया जाता है
(सत्य की आत्मा और पवित्र आत्मा
(आपके पास वास्तव में पवित्र भी है
भूत, परमेश्वर की आत्मा (1. मूसा 1/2)
और केवल आत्मा)) यह साबित करता है कि
यूहन्ना का अर्थ पवित्र आत्मा नहीं है,
जब वह "की आत्मा" नाम का प्रयोग करता है
सत्य" - "सत्य की आत्मा" अवश्य
मतलब मुहम्मद जो उससे झूठ बोलता है
कुरान में अनुयायी ("चमत्कार करेंगे
किसी पर विश्वास न करें", f. उदा।) और
अपने लोगों को अल-ताकिया का उपयोग करने की सलाह दी
या यहां तक कि अपनी शपथ तोड़ दें अगर उसने दिया a
बेहतर परिणाम। सभी के अलावा
अन्य गलत तर्क यहाँ, यह दावा है
यह दावा करने के लिए उतना ही तार्किक है कि 99
अल्लाह के नाम का अर्थ है 99
विभिन्न देवता, या 5-6 या अधिक
मुहम्मद के नाम का अर्थ है वहाँ
उसके 5-6 या उससे अधिक थे। आत्मा
बस द्वारा नामित किया गया है (कम से कम 5)
अलग-अलग नाम - और इसके अलावा यह है
बिल्कुल स्पष्ट है कि कुल मिलाकर
बाइबिल वहाँ केवल एक आत्मा है a
यहोवा से विशेष संबंध।
9. यीशु ने अपने शिष्यों को एक सहायक देने का वादा किया -
एक पैराकलेटोस। अगर उसका मतलब होता

मुहम्मद, मुहम्मद **कैसे हो सकता है
उनके सहायक बनो जब वे सब थे
मृत ५०० साल पहले वह सम था
जन्म??**
से भी पुरानी हजारों पांडुलिपियों में
610 ई. - समय का पहला बिंदु जब
ईसाइयों को इसके लिए एक कारण मिल सकता है a
मिथ्याकरण - इसे मिटाना कैसे संभव था

शब्द paracletos के आदिम अर्थ के साथ
उस समय, और सरीय शब्द मेरे perikletos
इसके बजाय cletos, इस तरह से कि आधुनिक
विज्ञान भौतिक निशान नहीं ढूंढ पा रहा है
मिटाने से, चमत्कारी खोजने में असमर्थ
इस्तेमाल की गई स्याही में अंतर, और
अक्षरों का कोई अंतर देखने में असमर्थ (सभी .)
लोगों ने अलग लिखा)?

5. केवल एक ही निष्कर्ष है - निष्कर्ष
विज्ञान ने बहुत पहले कर दिया है - बनाना संभव
क्या यह है: यह इस्लामी दावा - कई अन्य लोगों की तरह
- या तो झूठ है (एक अल-तकिया?) या इच्छाधारी
विचारशील।

वास्तविकता पर नहीं आशाओं के आधार पर कामना करना? - या एक झांसा? - या झूठ/अल-तकिया? कम से कम विज्ञान बहुत पहले साबित कर चुका है पुरानी पांडुलिपियों से कि यह सच नहीं है - इस बिंदु पर भी बाइबिल को कभी भी गलत नहीं ठहराया गया था। (लेकिन इस्लाम को उसे कहीं ढूंढ़ना है, नहीं तो इस्लाम के लिए इस पर कुरान गलत है आवश्यक बिंदु)। 7/157 भी देखें।

(जैसा कि उल्लेख किया गया है कि अपोक्रिफल (बनाया गया) "बरनबास का सुसमाचार" कभी-कभी एक के रूप में प्रयोग किया जाता है तर्क, क्योंकि वहाँ मुहम्मद का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है (कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यह सिद्धांत है) बगदाद के दरबार में किया गया सही है)। हालाँकि, खेदजनक तथ्य यह है कि एक बना हुआ सुसमाचार है a गढ़ा हुआ सुसमाचार (उनमें से कई हैं) - और यह इस्लाम की कमी के बारे में कुछ बताता है तर्क है कि वे जोर देना जारी रखते हैं कि हो सकता है कि यह बना न हो, और इसलिए यह एक प्रमाण है मुहम्मद के लिए, जब विज्ञान एकमत है: यह झूठे लोगों में से एक है। केवल एक चीज़ "बरनबास का सुसमाचार" वास्तव में साबित करता है कि इस्लाम के पास उनके दावे के लिए कोई वास्तविक दस्तावेज नहीं है कि मुहम्मद का उल्लेख NT में किया गया है, क्योंकि उन्हें उस तरह के तर्क का सहारा लेना पड़ता है)।

***लेकिन इस बात का सबसे ठोस प्रमाण कि बाइबिल को गलत नहीं ठहराया गया है, इस्लाम से ही मिलता है। **यदि वे सभी लोगों के बीच बाइबल के मिथ्याकरण के लिए एक ही ठोस प्रमाण मिला था हजारों पुरानी पांडुलिपियां जो मौजूद हैं, उन्होंने पवित्र को चिल्लाया था इसके बारे में स्वर्ग - और ऐसी चीख अब तक किसी ने नहीं सुनी - बाद में भी नहीं 1400 साल !!!.**

**00b 61/9a: "वह (अल्लाह*) है जिसने अपने रसूल (मुहम्मद*) - - - को भेजा है। सबके साथ दावा किए गए संदेश में वे गलतियाँ, यह स्पष्ट है कि इस दावे को भी प्रमाण की आवश्यकता है - खासकर जब से टेम्पोरल लोब मिर्गी (टीएलई) जैसी बीमारी उसके दोनों दौरे को आसानी से समझा सकती है, उसकी जगहें (?) और उसके अन्य अनुभव (?) - टीएलई अक्सर इस तरह के धार्मिक भ्रम देता है (बीबीसी के बीच स्रोत)। व्यक्तिगत हल करने के लिए कुछ व्यक्तिगत "प्रेरणा" या चालाक जोड़ें और घरेलू समस्याओं, और समकालीन गलत ज्ञान और विज्ञान को जोड़ें, और आप कुरान को ठीक-ठीक रखें - उसकी सभी गलतियों और अन्य कमजोरियों के साथ।

**006 61/9b: "वह (अल्लाह*) है जिसने मार्गदर्शन के साथ अपने रसूल (मुहम्मद*) को भेजा है - - -"। अविश्वसनीय शायद 3ooo+ गलतियों वाली पुस्तक पर आधारित एक शिक्षण, ढीला बयान, विरोधाभास, अमान्य "संकेत" और "सबूत" + कम से कम कुछ स्पष्ट झूठ और यह कहना कि मुहम्मद ने अपनी शपथों का भी बहुत अधिक सम्मान नहीं किया, यह अधिक नहीं है दिशा निर्देश।

***007 61/9c: "- - - सत्य का धर्म, जो सभी धर्मों पर प्रचार कर सकता है - -"। देखें 40/75 और 41/12। यह भी याद रखने योग्य है कि आज के सामान्य लोग - और पहले के समय - इस्लाम जैसे सीवी वाले व्यक्ति पर भरोसा करने या उस पर विश्वास करने में अनिच्छुक होगा जैसे इस्लाम मुहम्मद को बताता है था: डकैती, जबरन वसूली, झूठ, टूटी शपथ, नफरत के लिए उकसाना, सबका दमन करने के लिए उकसाना विरोधियों, विरोधियों की हत्या, विरोधियों की हत्या, सामूहिक हत्या, बलात्कार, विश्वासघात, (30 .) सुरक्षित वापसी के वादे के तहत खैबर के विरोधियों को बहस के लिए आमंत्रित किया गया - लेकिन 29 की हत्या कर दी गई थोड़ा सा बहाना, आखिरी वाला भागने में कामयाब), युद्ध के लिए उकसाना - और महिलाओं के लिए वासना और सत्ता के लिए। हम मुसलमानों से मिले हैं, यह बहाना करते हुए कि वह एक कठोर व्यक्ति था जो कठिन परिस्थितियों में रहता था समय, और वह अन्य सरदारों से भी बदतर नहीं था। ऐसा हो सकता है, **लेकिन वह निश्चित रूप से नहीं था या तो बेहतर, और उसने एक अच्छे और परोपकारी भगवान का प्रतिनिधित्व करने का दिखावा (?) किया। व्यक्तिगत रूप से यदि हम एक आदमी से मिलते हैं - या एक भगवान - यह कहते हुए कि वह परोपकारी है, लेकिन उसके कठोर कर्म या कर्म हैं, हम**

किसी भी दिन और किसी भी समय उसकी मांगों और कर्मों को उसकी बातों से ज्यादा मानते हैं।
उद्धरण का अंतिम भाग इस्लाम के बारे में भी बताता है।

008 61/13: "- - - खुशखबरी - - -"। चोरी/लूटने, दबाने, बलात्कार करने, गुलाम बनाने, रखने की अनुमति
हरम, हत्या, आदि जो कुरान के मध्य भाग हैं - क्या वे "खुशखबरी" हैं? सीधे
युद्ध में जाने और मारने और दबाने और गुलाम बनाने और लूटने और नष्ट करने का आदेश - - - और शायद
अपनी पत्नी/पत्नियों को विधवा (विधवाओं) और अपने बच्चे को अनाथ छोड़कर, अमान्य या मृत हो जाना -
क्या वे "खुशखबरी" हैं? केवल धार्मिक ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करने के सीधे आदेश
(अप्रत्यक्ष रूप से कुरान में बहुत स्पष्ट है और इस्लाम में प्रत्यक्ष और अचूक रूप से बहुत स्पष्ट है
बहुत जल्दी - और १०९५ ईस्वी से पूरी तरह से प्रभावी और अल-ग़ज़ाली, "बाद में सबसे महान मुस्लिम"
मुहम्मद") - क्या वे "खुशखबरी" हैं? सभी उन्नत देशों का कुल विनाश और
वे संस्कृतियाँ जो अफ्रीका, यूरोप और एशिया में कम से कम पूर्व में मिलीं, जो उस समय भारत थी -
विनाश को दूर करने में स्थानीय लोगों को कम से कम 200 साल लगे (यदि कभी) - क्या वे "खुश" हैं
ख़बरें"? युद्ध धर्म में अमानवीयता - क्या वे "खुशखबरी" हैं? की कमी
महिलाओं से तीसरे वर्ग के नागरिक - यदि वास्तव में नागरिक हैं - (इस्लाम का दावा है कि महिलाएं बेहतर थीं/हैं)
इस्लाम के तहत पहले की तुलना में अब मुस्लिम क्षेत्र के कुछ हिस्सों के लिए सच है,
मुख्य रूप से अरब के छोटे-छोटे हिस्सों में - और वहाँ भी यह जरूरी नहीं कि आज सच हो अगर यह
इस्लाम के दमनकारी कारक के लिए नहीं था) - क्या वे "खुशखबरी" हैं? दासता और
गैर-मुसलमानों का दमन और सामूहिक हत्याएं/हत्या - थे और हैं (मुसलमानों को देखें)
आज भी युद्ध और आतंक मचा रहे हैं) वो "खुशखबरी"? युद्ध धर्म ने क्या किया और क्या किया
समाज और व्यक्तिगत आत्मा - क्या वे "खुशखबरी" हैं? सोच का दमन -
सभी गैर-धार्मिक दर्शन, और सभी धार्मिक गैर-अनुरूप (इस्लाम के लिए) सोच - ये हैं
"खुशखबरी"? खैर, हाँ, कुछ मुसलमानों के लिए - उन योद्धाओं में से जो अच्छे में बच गए
स्वास्थ्य और लूट से धनी हो गए, और नेताओं में से जो धन के धनी हो गए
और महिलाएं लूट/गुलाम लेने और कराधान प्लस से शक्तिशाली बन गईं, तब और आज।
और कुछ लोगों के लिए मनोवैज्ञानिक कारणों से एक सख्त धर्म की लालसा।

**बाकी सभी के लिए यह "बुरी ख़बर" से लेकर आतंक तक सब कुछ था - और अभी भी है (बस देखें .)
पिछड़े समाजों के परिणामस्वरूप एक बार लूटपाट से धन समाप्त हो गया, सिवाय इसके कि कहाँ
उनके पास बेचने के लिए प्राकृतिक संसाधन हैं, जैसे तेल - और कभी-कभी कठिन होने पर भी बदतर
गैर-मुस्लिम वंशजों के कराधान या नरसंहार, उनकी संख्या और/या अर्थव्यवस्था को कम कर दिया
अंडरलिंग्स = कम कर संभव। देखो एफ. भूतपूर्व। आज के भारत, चीन, ब्राजील में विकास पर

473

पेज ४७४

- खास तौर पर भारत और चीन 60 साल पहले इस्लामिक देशों से काफी पीछे थे, लेकिन क्या हुआ
इन वर्षों के दौरान हो रहा है? **तेल, बाहर से पैसे ले लो इलाके के
और बाहर के विचार, कमोबेश पादरियों और मीडिया के नेताओं पर थोपे गए
और अन्य - इस्लामिक क्षेत्र में वास्तव में एफ के बाद से क्या हुआ है। उदा.1950 की तुलना में
कई अन्य स्थान?**

हाँ: बाकी सभी के लिए यह "बुरी ख़बर" से लेकर आतंक तक सब कुछ था और अभी भी है।

मुसलमानों के लिए स्वर्ग के बारे में एक हिस्सा "खुशखबरी" है - अगर यह सच है। साथ ही हत्या, बलात्कार,
गुलाम बनाना, दमन और चोरी करना सही या गलत किस्म के मुसलमानों के लिए खुशखबरी है।
बाकी ख़बरें उनके लिए भी बुरी से लेकर आतंक तक हैं- नफरत, जंग, औरतों का दमन,
स्थिर समाज, अनैतिक नैतिक, केवल धार्मिक ज्ञान वास्तव में मायने रखता है, दासता के तहत
अधिकारियों, लड़ो और मारे जाओ, आदि। **मुसलमानों के लिए भी दावा है कि इस्लाम खुशखबरी है
सबसे अच्छा केवल आंशिक रूप से सत्य है - भले ही धर्म सत्य होना चाहिए।**

और खासकर अगर इस्लाम बना हुआ धर्म है। और इससे भी ज्यादा अगर वहाँ कहीं है a
सच्चा धर्म जिसे इस्लाम अपने सदस्यों को खोजने से भी रोकता है।

कुरान और "खुशखबरी" के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि कुछ के लिए - कुछ के लिए ही -
इसके कुछ हिस्से आंशिक रूप से खुशखबरी थे, और कुछ अन्य लोगों के लिए आत्मा को शांति देते हैं
- जैसे मजबूत विश्वासियों को किसी भी मुख्य धर्म से लाभ होता है।

*** अन्य सभी के लिए - जिसमें बहुसंख्यक मुसलमान शामिल थे - यह "बुरी ख़बर" थी और है। जैसा
विशेष रूप से उल्लेख किया गया है यदि इस्लाम एक बना हुआ धर्म है। जो प्रमाणों से प्रतीत होता है
कुरान और दावों और मुहम्मद के जीवन के बारे में। इस तरह के और भी कई दावे हैं-
मुसलमानों के लिए आंशिक रूप से सच है, लेकिन अन्य सभी के लिए आतंक - कुरान में - एफ। भूतपूर्व। २/११९ - १७/९ -
33/45 - 33/47।

009 61/14a: "- - - यीशु ने कहा - - - चेलों के लिए, ' (कार्य) के लिए मेरा सहायक कौन होगा
अल्लाह?'" 61/6 + 61/6 (2 टुकड़े) देखें।

010 61/14b: "चेलों ने कहा, 'हम अल्लाह के मददगार हैं"'। ६१/६ + ६१/६ (२ टुकड़े) देखें।

सूरह ६१: कम से कम १० गलतियाँ + २ संभावित गलतियाँ।

सूरा 62:

001 62/1a: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

002 62/1b: "(अल्लाह*) - - - बुद्धिमान - - - *)"। गलत अगर कुरान उसके लिए प्रतिनिधि है
बुद्धि।

00a 62/2a: "वह (अल्लाह*) है जिसने (मुहम्मद*) भेजा है"। यह विश्वास करना कठिन है कि एक
सर्वज्ञ भगवान ने एक संदेशवाहक भेजा जिसमें एक संदेश था जिसमें बहुत कुछ गलत था, और एक दूत
खुद की इतनी अच्छी देखभाल कर रहे हैं।

**00b 62/2b: "वह (अल्लाह*) है जिसने अनपढ़ों में से एक रसूल भेजा है।
आपस में - - - "। सभी मुस्लिम साहित्य कहते हैं कि मुहम्मद वर्णानुक्रमिक थे, और उपयोग करें
कि कुरान को बनाने में असमर्थता के प्रमाण के लिए - कई अच्छे टेलर का उल्लेख नहीं करना
पुराने समय में किस्से एनाल्फैबेटिक थे। लेकिन इसके दो अन्य संभावित अर्थ भी हैं

यह कविता: कि उनके श्रोता अनपढ़ व्यक्ति थे ("- - - अनपढ़ के बीच - - -"), या
कि वे एक पवित्र पुस्तक के बिना व्यक्ति थे।

*जहां तक मुहम्मद की व्यापार करने की अक्षमता का प्रश्न है: इस कथन पर प्रश्नचिह्न लगाया गया है: एक अच्छा व्यक्ति और बुरा
बहुत गरीब परिवार पढ़ना-लिखना नहीं जानता? एक अमीर विधवा एक एनाल्फैबेटिक से शादी कर रही है,
यह जानते हुए कि उसे अपना व्यवसाय चलाना है? विद्वान में प्रवेश के साथ एक बुद्धिमान व्यवसायी
पुरुष, सत्ता के लिए एक ड्राइव के साथ, पढ़ना और लिखना नहीं सीख रहे हैं? इसकी संभावना नहीं है - लेकिन वहाँ हैं
उस समय से मुहम्मद के बारे में कोई तटस्थ स्रोत नहीं है। इसका पता लगाना कभी संभव नहीं होगा
ज़रूर, एक तरह से या दूसरे।

003 62/2c: "- - - उसके (अल्लाह के *) संकेत - - -।" अल्लाह की ओर से न तो स्पष्ट रूप से कोई संकेत हैं और न ही
कुरान, और न ही कोई अन्य जगह। 2/99 देखें।

**004 62/2d: "(मुहम्मद को*) उन्हें (अनपढ़ अरबों*) पवित्रशास्त्र में निर्देश देना था और
ज्ञान - - -" उन्हें शास्त्रों में निर्देश देने के लिए, वह शायद ही खुद एक एनाल्फैबेटिक हो सकता है, लेकिन
इसके अलावा: 40/75 और 41/12 देखें।

005 62/3: "- - - (अल्लाह है*) समझदार - - -"। ६१/१ + ४०/७५ + ४१/१२ देखें।

006 62/5: "- - - अल्लाह के लक्षण - - -।" ऊपर 62/2 और 2/99 देखें।

००७ ६२/६: "- - - तो मृत्यु की इच्छा व्यक्त करें, यदि आप सच्चे हैं!" एक असंभव मांग
पवित्र यहूदियों और ईसाइयों के लिए: एक बात के लिए जीवन के मूल्य सबके लिए हैं। अधिक आवश्यक
उनके लिए: जीवन यहोवा/परमेश्वर की ओर से एक उपहार है - इसे समाप्त करने की इच्छा करने के लिए उससे एक उपहार कम करना है।
सबसे गंभीर: **अपने स्वयं के जीवन को समाप्त करना (चाहना) इतना गंभीर पाप है कि यह स्वचालित रूप से भेजता है
तुम नर्क में।**

किसी भी ईश्वर को यह पता था - मुहम्मद स्पष्ट रूप से नहीं। फिर कुरान किसने बनाया? (**एक तरह से
बदतर: मुस्लिम विद्वान आज इस तथ्य को जानते हैं। लेकिन वे इसका इस्तेमाल करने के बावजूद कभी इसका जिक्र नहीं करते हैं
यह तर्क। बेईमानी।**)

००८ ६२/८: "- - - आपको चीजों के ज्ञाता (अल्लाह *) - - -" के पास वापस भेज दिया जाएगा। के लिए जैसा
ज्ञाता": ६१/१ + ४०/७५ + ४१/१२ देखें।

सूरह 62: कम से कम 8 गलतियाँ + 2 संभावित गलतियाँ।

सूरा 63:

00a 63/1: "- - - तुम (मुहम्मद*) वास्तव में उसके (अल्लाह के) रसूल - - -।" अच्छी तरह से
कुरान ऐसा कहता है - लेकिन कुरान में जो कुछ कहा गया है वह स्पष्ट रूप से गलत है। **और कर सकते हैं**
12 साल तक ओके मैसेज लाने का दावा करने वाला आदमी और फिर बेहद अनैतिक और
10 वर्षों के लिए अमानवीय संदेश (622 ईस्वी में और उसके बाद और उड़ान के बाद इस्लाम बहुत बदल गया
मदीना के लिए) आदमी के लिए - और संदेशों को अपनी शक्ति के मंच के रूप में उपयोग करना - वास्तव में होना चाहिए
एक कालातीत और परोपकारी भगवान का दूत?

001 63/4: "वे (गैर-मुस्लिम*) कैसे बहकावे में हैं (सच्चाई से दूर)!" बहुत बढ़िया दूर
आंशिक सत्य से - 40/75 और 41/12 देखें। (लेकिन हमारे में बहुत पीछे एक असभ्य विचार है
मस्तिष्क: इस्लाम की बात आने पर वास्तव में कौन भ्रमित होते हैं? - जो सिर्फ इमामों को सुन रहे हैं
अपने ज्ञान और अपने मस्तिष्क का उपयोग किए बिना और कोई प्रश्न नहीं पूछे, या अन्य?)

002 63/7: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

सूरह 63: कम से कम 2 गलतियाँ + 1 संभावित गलती।

सूरा 64:

001 64/1: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

002: 64/2 "- - - वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें पैदा किया है - - -"। विज्ञान के अनुसार मनुष्य था
नहीं बनाया गया है, लेकिन पहले के एक प्राइमेट से विकसित हुआ है। कम से कम मनुष्य में तो नहीं बनाया जा सकता
13 अलग-अलग तरीकों में से एक से अधिक जिसमें कुरान एक व्यक्ति को बताता है कि आदम था
बनाया - 6/2 देखें।

003 64/3: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

004 64/4a: "वह (अल्लाह*) जानता है कि स्वर्ग में क्या है (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी पर - - -"।
कुरान के अनुसार, वह इसके केवल कुछ हिस्सों को जानता है - 40/75 और 41/12 देखें।

005 64/4b: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

006 64/6: "- - - स्पष्ट संकेत - - -"। 2/99 देखें।

**007 64/7: "अविश्वासियों को लगता है कि वे (इस जीवन के बाद*) नहीं जी उठेंगे"। गलत।
इस्लाम पूरी दुनिया के लिए एक धर्म बनना चाहता है, और जिन धर्मों से यह मिला और मिले उनमें से अधिकांश में एक है
दूसरा जीवन। लेकिन पुराने अरबों के लिए जिस बात को स्वीकार करना मुश्किल था, वह यह थी कि मुहम्मद ने कहा था कि
न केवल आपकी आत्मा - या कुछ इसी तरह - को पुनर्जीवित किया जाना था, बल्कि आपका पूर्ण और सटीक
शरीर और मानसिक आत्म, सिवाय इसके कि आपको एक युवा और अच्छे दिखने वाले के रूप में पुनर्जीवित किया जाना है
व्यक्ति - मानसिक या शारीरिक रूप से विकलांग लोगों के साथ पैदा हुए लोगों के बारे में कुछ नहीं कहा गया है, या
इस संबंध में बच्चे/बच्चे। (एक विसंगति है, हालांकि: 2-3 जगह कुरान
बताता है कि स्वर्ग में आपकी महिलाएं "उपयुक्त उम्र" की होंगी - f. भूतपूर्व। ७८/३३. क्यों? - अगर हर कोई
युवा होगा और फिर लगभग उसी उम्र का होगा?) यदि शारीरिक पुनरुत्थान विश्वासयोग्य है या नहीं,
किसी को भी अपने लिए फैसला करना होगा।

008 64/8a: "इसलिए, अल्लाह और उसके रसूल पर और प्रकाश (कुरान*) पर विश्वास करो - - -
" प्रकाश के लिए, 40/75 और 41/12 देखें। जैसा विश्वास करने के लिए: सभी गलतियों को देखें,
विरोधाभास, अमान्य दावे/तर्क, आदि - अत्यधिक अनैतिक कानूनों का उल्लेख नहीं करना जो नहीं हैं
किसी भी दयालु भगवान द्वारा बनाया गया।

009 64/8b: "- - - वह प्रकाश (कुरान*) जिसे हमने (अल्लाह*) उतारा है।" 41/12 + . देखें
40/75.

010 64/10: "- - - हमारी (अल्लाह की) निशानियाँ - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

०११ ६४/१८: "- - - (अल्लाह है*) ज्ञान से भरपूर।" 40/75 और 41/12 देखें।

सूरह 64: कम से कम 11 गलतियाँ।

सूरा 65:

001 65/1: "हे पैगंबर (मुहम्मद*)!" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। की परिभाषा
एक नबी वह व्यक्ति है जो:

1. का उपहार है और पर्याप्त कनेक्शन बंद करें
   ईल भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान के लिए।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम
   ज्यादातर सच हो जाते हैं। (यदि नहीं तो वह झूठा है
   नबी।)
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है
   भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है
   मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है
कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी
जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि
उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, उल्लेख नहीं किया
दावा किया या दावा किया, कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है
कि भविष्य के बारे में उसने जो कुछ कहा वह सब/अधिकांश सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में वह और . दोनों
इस्लाम ने कहा और कहता है कि "कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से कोई चमत्कार नहीं जुड़ा था।
- भविष्यवाणी करना एक तरह का चमत्कार है। (यह अंतिम तथ्य भी सभी चमत्कारों का एक ठोस प्रमाण है
वहाँ हदीसों में वर्णित मुहम्मद से जुड़ी कहानियाँ हैं)। यह भी देखें 30/40a
और 30/46ए।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या
कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। वह केवल "उधार"
वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

00a 65/7: "अल्लाह ने किसी व्यक्ति पर जो कुछ उसने दिया है उससे अधिक बोझ नहीं डालता।" अच्छी तरह से वहाँ
क्या मुस्लिम देशों में भी लोग हैं, जो बोझ नहीं उठा सकते और पलायन कर सकते हैं - अन्य स्थानों पर या
इस जीवन से भी।

**002 65/11: "- - - अल्लाह की निशानियाँ (हैं*) जिसमें स्पष्ट व्याख्याएँ हैं - - -"। गलत।
**कुरान में वर्णित "चिन्हों" में से एक भी ऐसा नहीं है, जिसका कोई मूल्य हो, न ही
प्रमाण के रूप में और न ही किसी देवता या दूत के लिए स्पष्टीकरण के रूप में** (संभावित अपवाद के साथ)
कुछ बाइबिल से लिए गए हैं, लेकिन वे दूसरे भगवान, यहोवा के बारे में बात करते हैं)। **कारण यह हैं कि
वे बिना किसी अपवाद के सिर्फ ढीले बयान हैं या अन्य अमान्य दावों पर निर्माण कर रहे हैं
या कथन, "संकेत" या "प्रमाण" - पूरी तरह से अमान्य। आखिर एक प्रमाण "एक या अधिक" है
सिद्ध तथ्य जो केवल एक निष्कर्ष दे सकते हैं।" यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर ऐसे अमान्य का उपयोग करता है
तर्क, वे एक धोखेबाज और एक धोखेबाज की पहचान का उपयोग कर रहे हैं।** कोई भगवान उनका उपयोग नहीं करेगा।

**003 65/12a: "अल्लाह वह है जिसने सात फरमान बनाए - - -"। फर्मामेंट एक और नाम है
स्वर्ग के लिए जैसा कि हम इसे देखते हैं - ज्यादातर रात के आकाश के बारे में उपयोग किया जाता है। कुरान में कई जगह कहा गया है
बहुवचन में 7 आकाश या आकाश या पथ या सिर्फ स्वर्ग हैं (कम से कम 199 स्थान
कुरान) 7 स्वर्गों का जिक्र करते हुए, इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसका क्या अर्थ है। बिलकुल गलत है,
हालांकि। (भले ही मुसलमान इसे वातावरण में 7 परतों के साथ समझाने की कोशिश करें या फैलाएँ
अंतरिक्ष के बारे में तर्क जैसा कि हम आज जानते हैं या इसके एक रूपक होने के बारे में बयान - the
मुसलमानों के लिए उन चीजों को समझाने या "समझाने" के लिए मानक अंतिम उपाय जो असंभव हैं
समझाएं - भले ही यह बहुत स्पष्ट रूप से कोई रूपक नहीं है - कम से कम किसी के लिए स्पष्ट जो इच्छा से भरा नहीं है
सोच या धार्मिक अवरोध।

*** 004 65/12b: "अल्लाह वह है जिसने सात फ़र्म (गलत*) और पृथ्वी की एक
समान संख्या"। हदीस के अनुसार अंतिम भाग का अर्थ है 7 अलग-अलग पृथ्वी - एक ऊपर
अन्य। मुहम्मद इब्न 'अब्द अल्लाह अल-किसा' के अनुसार अंतिम भाग का अर्थ है 7 परतें नीचे

एक "स्पष्टीकरण" के अनुसार पृथ्वी। लेकिन कुरान वास्तव में जो कहता है, वह है ७ पृथ्वी – ७ समतल पृथ्वी। कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कुरान / हदीस या इसके लिए "व्याख्याओं" में से एक मानते हैं कुछ विशेष भूविज्ञान/खगोल विज्ञान, ऊपर और नीचे से "पृथ्वी" के नाम हैं:

1. रमाका,
2. खालाड़ा,
3. अर्का,
4. हरबा,
5. माल्थम,
6. सिज्जिन,
7. अजीबा।

एफ के अनुसार। पूर्व अल-बुखारी उन्हें एक के ऊपर एक रखा गया है - कुरान की तरह आसान बताता है कि पृथ्वी समतल है/हैं। नीचे की ओर, संबंधित परत पर उतना ही अधिक शैतानी जीवन - और यदि तुम बहुत बड़े पापी हो, तो उनके द्वारा नीचे गिर सकते हो। यह कहना जरूरी नहीं है यह सब बकवास है।

005 65/12c: "- - - अल्लाह (अपने) ज्ञान में सब कुछ समझता है।" 40/75 और 41/12 देखें।

सूरह ६५: कम से कम ५ गलतियाँ + १ संभावित गलती।

सूरा 66:

001 66/1: "हे पैगंबर (मुहम्मद*)!" लेकिन मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे। की परिभाषा एक नबी वह व्यक्ति है जो:

1. का उपहार है और पर्याप्त कनेक्शन बंद करें भविष्यवाणी करने के लिए एक भगवान के लिए।
2. भविष्यवाणी करता है कि हमेशा या कम से कम ज्यादातर सच होते हैं। (यदि नहीं तो वह झूठे नबी हैं)।
3. इतना बार-बार और/या आवश्यक बनाता है भविष्यवाणी, कि यह उसका एक स्पष्ट हिस्सा है मिशन।

मुहम्मद ने जो कुछ कहा, वह सच हो गया - जैसे कि एक व्यक्ति को बहुत सी बातें कहने के लिए करना पड़ता है कई वर्षों के दौरान - और जो कुछ उसने कहा वह सच नहीं हुआ, उसे भुला दिया गया (यह भी जो सामान्य रूप से होता है)। यहाँ मुख्य बात यह है कि मुहम्मद ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि उसने जो कुछ भी कहा वह भविष्यवाणी के रूप में था, उसने कभी संकेत नहीं दिया, उल्लेख नहीं किया दावा किया या दावा किया, कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार था, कि यह कहीं भी प्रलेखित नहीं है कि भविष्य के बारे में उसने जो कुछ कहा वह सब/अधिकांश सच हो गया (बिंदु 2), और अंत में वह और . दोनों इस्लाम ने कहा और कहता है कि "कुरान को छोड़कर" मुहम्मद से कोई चमत्कार नहीं जुड़ा था। - भविष्यवाणी करना एक तरह का चमत्कार है। (यह अंतिम तथ्य भी सभी चमत्कारों का एक ठोस प्रमाण है वहाँ हदीसों में वर्णित मुहम्मद से जुड़ी कहानियाँ हैं)। यह भी देखें 30/40a और 30/46ए।

वास्तव में मुहम्मद कोई वास्तविक पैगम्बर नहीं थे। शायद किसी के लिए दूत या कुछ या अपने लिए - या शायद एक प्रेरित - लेकिन एक वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। वह केवल "उधार" वह प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। यह अनुमान लगाना किसी पर निर्भर है कि ऐसा क्यों है।

002 66/2: "- - - वह (अल्लाह*) ज्ञान और बुद्धि से भरा है।" 40/75 और 41/12 देखें।

003 66/3: "- - - पैगंबर (मुहम्मद*) - - -।" गलत। ऊपर 66/1 देखें।

004 66/6: "- - - एक आग जिसका ईंधन पुरुष और पत्थर है - - -"। आग एक रासायनिक प्रतिक्रिया है - आम तौर पर एक ऑक्सीकरण - जो गर्मी जारी करता है, और इतनी गर्मी कि प्रतिक्रिया जारी रहती है

स्वयं और अभी भी एक दृश्यमान लौ बनाने के लिए पर्याप्त अधिशेष हीथ जारी करता है। ऐसा नहीं होता
पत्थरों के साथ - और निश्चित रूप से उन पत्थरों के साथ नहीं जिनके बारे में मुहम्मद और उनकी मण्डली को पता था।
(मुसलमान कह रहे हैं कि मुहम्मद का मतलब कोयला था, लेकिन कोयले को गर्म करने के साधन के रूप में था
मुहम्मद और उनकी मण्डली के समय अरब में अज्ञात - जिसका अर्थ है कि यह बहुत है
स्पष्ट है कि उनके अनुयायी सामान्य पत्थरों को समझने के लिए थे)। गलत।

005 66/8: "- - - पैगंबर (मुहम्मद*) - - -।" गलत। ऊपर 66/1 देखें।

006 66/9: "हे पैगंबर (मुहम्मद*)!" गलत। ऊपर 66/1 देखें।

00a 66/11: फिरौन (रामसेस II) की पत्नी को दृढ़ता से विश्वास करने का संकेत दिया गया है
मुस्लिम। अब एक फिरौन की आम तौर पर कई पत्नियाँ थीं - और रामसेस II जैसी एक शक्तिशाली पत्नियाँ
कम से कम नहीं (यह ज्ञात है कि उनके 67 बेटे थे, लेकिन हमने पत्नियों की संख्या नहीं देखी है)। वे कर सकते हैं
उनके अलग-अलग धर्म हैं - विशेष रूप से वे संभव हैं जो मिस्र में पैदा नहीं हुए हैं। लेकिन यह पूरी तरह से है
विज्ञान के लिए अज्ञात है कि उनमें से एक मुहम्मद से 2000 साल पहले मुस्लिम हो सकता है।
दरअसल - और कुरान और इस्लाम के बार-बार पुराने होने के दावों के बावजूद
धर्म, विज्ञान ने इस्लाम जैसे धर्म का एक भी निशान कहीं भी या किसी भी समय नहीं पाया है
६१० ईस्वी से पहले जब मुहम्मद ने अपना मिशन शुरू किया - और वास्तव में एकेश्वरवादी धर्मों का
केवल मोज़ेक (यहूदी), ईसाई, और कुछ हद तक फारस में पारसी (+
अकन एटन के सूर्य देवता और अरब में छोटे एकेश्वरवादी संप्रदाय के साथ प्रकरण, सबसे अधिक संभावना है
यहूदियों और ईसाइयों से प्रेरित)। इस्लाम को सबूत लाने होंगे।

007 66/12: "और 'इमरान - - -' की बेटी मरियम। **एक बार फिर यह मशहूर गलती।
इमरान मूसा और हारून के पिता थे - - लेकिन वे रहते थे (यदि वे कल्पना नहीं हैं) कुछ
मरियम से 1200 साल पहले, यीशु की माँ। मूसा के फिरौन f. भूतपूर्व। रामसेस II . था
विज्ञान के अनुसार, और हम जानते हैं कि वह कब रहता था। मुसलमान इसे इस तरह समझाने की कोशिश करते हैं कि यह था
एक और इमरान, लेकिन विज्ञान इस पर सहमत है कि यह वही है, और मुहम्मद ने यहां एक
वास्तविक गलती। यह और भी अधिक है क्योंकि हदीस से पता चलता है कि मुहम्मद को बाद में उनके बारे में बताया गया था
गलती, और इसे दूर "समझाने" की कोशिश की, लेकिन सफलता के बिना।

सूरह 66: कम से कम 7 गलतियाँ + 1 संभावित गलती।

सूरा 67:

****001 67/3a: "वह (अल्लाह*) जिसने सात आकाशों को एक के ऊपर एक - - - बनाया। **यह है
हमारे आकाश की कुरान की तस्वीर को अधिक सटीक और स्पष्ट रूप से बताना शायद ही संभव है
यह। न तो बहुत अधिक गलत होना संभव है,** खासकर जब हम इसे इसके अनुसार जोड़ते हैं
कुरान स्वर्ग अदृश्य स्तंभों द्वारा धारण किया जाता है, जिससे स्वर्ग बनाया जाता है
कुछ सामग्री (यदि नहीं तो आप उन्हें बना सकते हैं और सितारों को नहीं बांध सकते हैं, आदि), कि
तारे सूर्य (?) के साथ सबसे निचले स्वर्ग में और आकाश के बीच चंद्रमा, और
कि बुरी आत्माओं का पीछा करने के लिए सितारे शूटिंग सितारों के रूप में भी दोगुना हो जाते हैं। देखें 67/5a और
67/बी नीचे। कुरान की रचना किसने की - ईश्वर या कोई सर्वज्ञ नहीं?

002 67/3b: "- - - क्या आप (अल्लाह के स्वर्ग के निर्माण में) कोई दोष देखते हैं?" 50/6 देखें।

479

पेज ४८०

****003 67/5a: "और हम (अल्लाह*) ने (पुराने समय से) **सबसे निचले स्वर्ग को अलंकृत किया है
लैंप (सितारे*)** - - -"। ब्रह्मांड की कुरान की तस्वीर ग्रीक और/या फारसी से ली गई है
खगोल विज्ञान, और जैसा कि कोई भी माध्यमिक विद्यालय का बच्चा धार्मिक शिक्षा से अंधी नहीं है, देख सकता है;
यह बहुत गलत है। एक बात के लिए स्वर्ग को किसी भौतिक वस्तु से बनाना पड़ता है
उनमें से किसी एक को तारों को ठीक करना संभव बनाएं। इसके अलावा: ग्रीक आदि खगोल विज्ञान से हम जानते हैं
कि ग्रह, तारे, सूर्य और चंद्रमा ७ अलग-अलग आकाशों में स्थिर थे। सितारों के अनुसार
कुरान के लिए सबसे नीचे तय है, उन्हें चाँद से भी प्रेमी होना चाहिए। पर क्या
क्या होता है यदि आप Betelgeuse या यहां तक कि Helios - हमारा सूर्य - लूना के नीचे - हमारा चंद्रमा कहने का प्रयास करते हैं?

आगे: हमारे रॉकेट बहुत ऊंचे नहीं जा सकते - वे भौतिक आकाश से टकराएंगे।
मुहम्मद ने कहा कि कुरान परिपूर्ण और गलतियों या दोषों के बिना है। कुरान कहता है
कुरान परिपूर्ण और गलतियों या दोषों के बिना है। इस्लाम कहता है कि कुरान परिपूर्ण और बिना है
गलतियाँ या खामियाँ। मुसलमानों का कहना है कि कुरान सही है और गलतियों या दोषों के बिना है। के सभी

वे कहते हैं कि कुरान सही है और गलतियों या दोषों के बिना है क्योंकि अल्लाह ने एक किताब भेजी है
उन्होंने बनाया था या जो हमेशा के लिए अस्तित्व में था - एक पुस्तक जो श्रद्धेय "मदर बुक" है (f। उद्ध।
४३/४) अल्लाह के स्वर्ग में - और एक सर्वज्ञ ईश्वर न तो गलती कर सकता है और न ही श्रद्धा
बहुत सारी गलतियाँ, विरोधाभास, खामियाँ और धोखेबाजों और धोखेबाजों की पहचान वाले ग्रंथ।
ऊपर 67/3 और ठीक नीचे 67/5 भी देखें।

**लेकिन गलती होने पर ये सभी शब्द क्या मदद करते हैं,
विरोधाभास, और खामियां किसी भी तरह हैं? और जब
इस्लाम बताता है कि कुरान में किसी भी गलती की पूरी कमी है
साबित करता है कि यह अल्लाह की ओर से है, फिर मेगा ब्लंडर्स को क्या पसंद है
यह साबित?**

***004 67/5b: "- - -और हम (अल्लाह*) ने ऐसे (लैंप (तारे*) जैसे) मिसाइलें चलाने के लिए बनाई हैं
दुष्टों को दूर करो - - -"। अच्छा अच्छा। कोई भी माध्यमिक विद्यालय का बच्चा इस प्रविष्टि को देख सकता है
ऊपर के एक ही श्लोक से, गलत था, वह इस पर हंसेगा: तारे सबसे नीचे तक बंध गए
स्वर्ग और फिर शूटिंग सितारों के रूप में दोहरीकरण बुरी आत्माओं या जिन्नों को दूर भगाने के लिए !! 67/3 भी देखें।

और टिप्पणी नहीं। और कोई जरूरी नहीं,

*** 005 67/10: "क्या हम (गैर-मुस्लिम*) होते लेकिन सुनते या अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करते - - -"। इसलाम
अक्सर यह बताने की कोशिश करता है कि यह बुद्धि है जो मुसलमानों को विश्वास दिलाती है, या बुद्धिमत्ता जो है
कुरान से यह देखना आवश्यक है कि यह एक ईश्वर की कृति है। कम से कम निश्चित तो यह है कि
कोई भी जो अपनी बुद्धि का उपयोग करता है और f का उचित न्यूनतम ज्ञान रखता है। भूतपूर्व।
इतिहास, भूगोल, खगोल विज्ञान, पुरातत्व आदि कुरान में बहुत सारी गलतियाँ पायेंगे - if
वह किसी कारण से अंधा नहीं है या देखना नहीं चाहता है। इसके अलावा: अगर वह बहुत छोटा जानता है
तर्क का प्रयोग करने के लिए न्यूनतम तर्क और नियम और सूचना के मूल्यांकन के लिए उसे देखना होगा
खो बयान, अमान्य "संकेत" और अमान्य "प्रमाण" के रूप में - और हो सकता है कि वह होगा
विचार से मारा: **इस तरह के तर्कों का उपयोग कौन करता है, सिवाय उसके जिसके पास कोई वास्तविक नहीं है
तर्क, और इसलिए धोखा देना और धोखा देना है - f. भूतपूर्व। अनुयायियों और सत्ता हासिल करने के लिए?**

००६ ६७/१३: "उसे (अल्लाह) निश्चित रूप से (पूर्ण) ज्ञान है - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

**007 67/19: "(अल्लाह) - - - को छोड़कर कोई भी उन्हें (पक्षियों *) ऊपर नहीं रख सकता है। गलत। क्या रखना
पक्षी ऊपर, वायुगतिकी के नियम हैं। (बेशक मुसलमान अपने पसंदीदा में से किसी एक का उपयोग कर सकते हैं
अंतिम उपाय: घोषित करें कि अल्लाह ने उन कानूनों को बनाया है। लेकिन फिर उन्हें यह साबित करना होगा कि - नहीं
केवल सस्ते शब्दों का प्रयोग करें जो कि किसी भी धर्म में कोई पुजारी किसी भी देवता के बारे में उपयोग कर सकता है।) 16/79 भी देखें।

480

पेज ४८१

008 67/21: "- - - उड़ान (सत्य से)।" 40/75 और 41/12 देखें।

सूरह 67: कम से कम 8 गलतियाँ।

सूरा 68:

***001 68/4: "और आप (मुहम्मद या मुसलमान*) (सबसे खड़े) एक ऊंचे स्तर पर
चरित्र - - -"। कुंआ:

कुरान और हदीसों में देखा गया है:

1. बहुत सारे गलत तथ्य, और अन्य गलतियाँ।
   एक सर्वज्ञ भगवान के लिए विशिष्ट नहीं है।
2. बहुत सारे अमान्य तर्क - हॉलमार्क के लिए
   धोखेबाज और धोखेबाज।
3. बहुत सारे "संकेत" - सबूत के रूप में सभी अमान्य
   अल्लाह या मुहम्मद के कनेक्शन के लिए a
   भगवान।
4. "सबूत" की एक संख्या - सबूत के रूप में सभी अमान्य
   अल्लाह के लिए या मुहम्मद के संबंध के लिए a
   भगवान। कुछ "सबूत" भी हैं
   वैज्ञानिक रूप से गलत। धोखेबाजों की पहचान,
   धोखेबाज, और धोखेबाज।

5. एक आदमी अपने आप को अपने भगवान और अपने से चिपका रहा है धर्म - उसकी शक्ति का मंच।
6. एक नबी जो वास्तव में कोई नबी नहीं था - वह भविष्यवाणी करने का उपहार नहीं था। **मुहम्मद ऐसा होने का दिखावा या दावा भी नहीं किया उपहार,** उन्होंने प्रतिष्ठित को "उधार" दिया शीर्षक। (कुछ बातें उन्होंने कही, सच हुईं - लेकिन वे भविष्यवाणी के रूप में नहीं दिए गए थे।) ए मेसेंजर ओके - किसी के लिए या कुछ के लिए या खुद के लिए - उसी के लिए एक प्रेरित, ठीक है। परंतु एक व्यक्ति जिसके पास उपहार नहीं है भविष्यवाणी करना, वास्तविक नबी नहीं है - मुहम्मद ने सिर्फ "उधार" एक भव्य शीर्षक। इस्लाम यह भी दावा करता है कि दूत एक अधिक प्रतिष्ठित शीर्षक पैगंबर - लेकिन शीर्षक बस का अर्थ है "वह जो फंसाया नहीं गया है, लेकिन बस एक या एक से अधिक संदेशों को एक में लाता है या अधिक अन्य"। उसके पास भी नहीं है समझें कि चीजें वास्तव में क्या हैं। इसके अलावा: मुहम्मद ने उधार क्यों लिया? शीर्षक "पैगंबर" अगर शीर्षक "दूत" था अधिक प्रतिष्ठित किया गया है? - सिर्फ इसलिए कि ए पैगंबर कुछ और है: संदेश जैसे a दूत + भविष्यवाणियाँ - - - यदि यह सच है नबी.
7. एक दूत जो राजमार्गों का प्रधान होता है यत्रिब/मदीना से - पवित्र महीनों में भी।

481

पेज 482

8. एक दूत भी जबरन वसूली से जी रहा है - (एफ से अपहरण किए गए पुरुषों के लिए पैसा उदा। कारवां)।
9. एक दूत जिसका बकाया का १००% था अगर पीड़िता ने बिना दिए हार मान ली तो चीजें लूट लीं लड़ाई (यद्यपि सभी व्यक्तिगत उपयोग के लिए नहीं)।
10. एक संदेशवाहक जो "खराब" करने की अनुमति देता है युद्ध" - और उसके लिए 20% (यद्यपि सभी के लिए नहीं) वह स्वयं)।
११. एक दूत जो दासों को लेने की अनुमति देता है - और उसके लिए 20% (यद्यपि सभी व्यक्तिगत उपयोग के लिए नहीं)।
12. एक दूत जिसने सीए प्राप्त किया। 2.5% (से 0% से 10% जो आपके पास प्रत्येक का स्वामित्व है और हर साल (यदि आप बहुत गरीब नहीं थे) - के लिए गरीब, लेकिन युद्ध के लिए और आकर्षित करने के लिए "उपहार" के लिए भी अनुयायी, आदि
13. विश्वासघात का उपयोग करने वाला एक दूत (f। पूर्व। का वादा) से 30 मजबूत प्रतिनिधिमंडल की सुरक्षित वापसी खैबर टूट गया और उनमें से 29 की हत्या कर दी गई)।
14. एक दूत जिसके साथ विशेष समझौता है कई महिलाओं के लिए भगवान।
15. गैर के खिलाफ नफरत सिखाने वाला एक दूत अनुयायी।
१६. एक दूत जो शिक्षा दे रहा है और युद्ध भड़का रहा है गैर-अनुयायियों के खिलाफ।
17. एक संदेशवाहक व्यक्तिगत रूप से महिला का बलात्कार करता है कैदी/गुलाम।
18. दूत और उसके जन सब के संग किसी भी महिला का बलात्कार करने के लिए अपने भगवान से अनुमति कैदी या दास जो गर्भवती नहीं थी। वह था "भगवान और वैध"।
19. एक दूत जिसने की हत्याओं की शुरुआत की

20. एक दूत जिसने हत्याओं की शुरुआत की
विरोधियों
21. एक संदेशवाहक जिसने सामूहिक हत्या की शुरुआत की।
22. महिलाओं के दमन की शिक्षा देने वाला दूत
और गैर-अनुयायी।
23. सत्ता की लालसा वाला दूत (देखने में आसान .)
एफ से भूतपूर्व। हदीस, लेकिन इससे भी ज्यादा f से।
भूतपूर्व। जिस तरह से वह खुद को अपने प्लेटफॉर्म से चिपका लेता है
शक्ति का, उसका भगवान, कुरान में भी)।

और कम से कम: यह सब मुस्लिम स्रोतों से है - इस्लाम खुद उसके बारे में क्या बताता है, हालांकि में
अधिक चमकदार शब्द। गुस्सा होने का कोई बहाना नहीं होता, क्योंकि यह १००% सच है
इस्लाम को ही।

हाँ, बहुत से लोग इसे "चरित्र का एक उच्च स्तर" कहेंगे। लेकिन उनमें से बहुत से नहीं होंगे
गैर मुस्लिम हो। और कितने मुसलमान इसे कह सकते हैं और ईमानदार हो गए हैं?

482

पेज 483

002 68/7: "- - - वे (मुसलमान*) जो (सच्चा) मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं (कुरान की सामग्री*) - -
-"। क्या कुरान अपनी सभी गलतियों के साथ सही मार्गदर्शन दे सकता है? 40/75 और 41/12 देखें।

003 68/8: "तो उन लोगों की न सुनें जो इनकार करते हैं (सच्चाई)। 40/75 और 41/12 देखें।

004 68/15: "- - - हमारी (अल्लाह की) निशानियाँ - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

005 68/52: "- - - सभी संसार।" एक बार फिर मुहम्मद के 7 (सपाट) संसारों का संदर्भ।
गलत। ऊपर 65/12b देखें।

सूरह 68: कम से कम 5 गलतियाँ।

सूरा 69:

001 69/9+10: "और फिरौन, और उससे पहले के लोगों - - - (अल्लाह *) ने उन्हें एक के साथ दंडित किया
प्रचुर जुर्माना। ” कुरान बताता है कि फिरौन के लिए यह दंड डूब रहा था, लेकिन
रामसेस II नहीं डूबा। संभावित निर्गमन के कई वर्षों बाद तक उनकी मृत्यु भी नहीं हुई,
विज्ञान के अनुसार।

002 69/16: "और आकाश फट जाएगा - - -"। आप निर्वात को कैसे चीरते हैं और खोलते हैं
स्थान?

००३ ६९/४३ए: "(यह (कुरान*) एक संदेश है जो प्रभु (अल्लाह *) की ओर से भेजा गया है"
दुनिया (अल्लाह*)।" गलत होना चाहिए। 41/12 और 40/75 देखें। कोई सर्वज्ञ ईश्वर न तो बनाता है और न ही पूजता है
या अपने नाम पर इतनी ग़लती वाली किताब अग्रेषित करें।

004 69/43b: "- - - संसारों - - -।" लेकिन मुहम्मद की 7 दुनिया मौजूद नहीं है। 65/12बी देखें।

00a 69/44 - 46: "और यदि रसूल (मुहम्मद*) ने हमारे
नाम, हम (अल्लाह*) निश्चित रूप से उसके दाहिने हाथ से उसे आकार देंगे, और हमें निश्चित रूप से चाहिए
उसके हृदय की धमनी को काट डाला।" **नहीं अगर तुम - अल्लाह - मौजूद नहीं है। न ही अगर आप दूर हैं
सर्वशक्तिमान यदि आप मौजूद हैं।**

**005 69/50: "लेकिन वास्तव में (रहस्योद्घाटन (कुरान*) के लिए दुख का कारण है
अविश्वासियों"। सच है, लेकिन गलत कारणों से: सभी युद्ध और खून और आतंक के कारण इस्लाम
युगों से प्रतिनिधित्व किया है - और इसका उत्तर यह नहीं है कि अन्य धर्मों में भी है
युद्ध आदि का कारण बनता है क्योंकि वह घृणा, बलात्कार, दमन, डकैती और रक्त धर्म नहीं बनाता है
इस्लाम की तरह एक चौथाई बेहतर - और अधिकांश अन्य धर्मों में यह वास्तविक के बावजूद किया जाता है
धर्म के कारण नहीं। और क्योंकि कई लोगों को इस पर बने धर्म में खो जाने वाली आत्माओं पर दया आती थी
एक किताब जहां कुछ गंभीर रूप से गलत है। (हो सकता है कि उनके अपने धर्म भी गलत थे,
लेकिन सभी गलत तथ्य, आदि, एक सर्वज्ञ भगवान से होने का नाटक करने वाली पुस्तक में साबित करते हैं कि
इस्लाम में वास्तव में कुछ ऐसा है जो गलत है - और यह बहुत संदेह करता है कि यह

वास्तव में एक दिव्य रहस्योद्घाटन है।

असल में इस्लाम ही बड़े धर्मों में से एक है जो सीधे तौर पर खुद को साबित करता है - के माध्यम से उनकी पवित्र पुस्तक - कि यह पवित्र पुस्तक के साथ कुछ गंभीर रूप से गलत है और इस प्रकार धर्म।

006 69/51: "लेकिन, वास्तव में; यह निश्चित निश्चितता का सत्य है"। शायद ही - लेकिन शब्द सस्ते हैं। देखो 40/75 और 41/12 - - - और अन्य।

सूरह ६९: कम से कम ६ गलतियाँ + १ संभावित गलती।

सूरा 70:

00a 70/4a: "एन्जिल्स एंड द स्पिरिट (अरब पाठ में "रूह") - - -।" शब्द "रुह" का प्रयोग किया जाता है a अरब पाठ में कुछ बार - कम से कम 16/2, 78/38, 97/4 और यहाँ। इसका वास्तव में अर्थ है "आत्मा" या "पवित्र आत्मा", लेकिन f. भूतपूर्व। १६/२ में एक और अनुवाद दिया ("प्रेरणा")। एक संख्या मुसलमान चाहते हैं कि यह देवदूत गेब्रियल का दूसरा नाम हो (सिर्फ इसलिए कि यह वह था जो कहा जाता है कि सूरह को मुहम्मद के पास लाने के लिए कहा जाता है, और यह कुछ स्थानों पर कहा जाता है कि "रुह" - आत्मा या पवित्र आत्मा - ऐसे लोगों को नीचे लाया, "अर्गो" पवित्र आत्मा = देवदूत गेब्रियल)। लेकिन तर्क सही नहीं है - तार्किक कटौती के नियमों के माध्यम से यह है केवल यह कहना संभव है कि वे वही हो सकते हैं। और यहाँ एक और जानकारी है कि उस कटौती को असंभव या असंभव बना देता है: "रुह" - पवित्र आत्मा" - शामिल नहीं है स्वर्गदूतों के बीच। न ही यह अन्य स्थान है - जो इसे तार्किक रूप से अत्यधिक असंभव बनाता है पवित्र आत्मा = स्वर्गदूत गेब्रियल। (बाइबल में यह स्पष्ट है कि वे समान नहीं हैं)।

००१ ७०/४बी: "- - - एक दिन में जिसकी माप (अ) पचास हजार वर्ष है - - -।" एक ठोस ३२/५ और २२/४७ के विरोधाभास जो दोनों कहते हैं १००० वर्ष।

००२ ७०/३९: "क्योंकि हम (अल्लाह*) ने उन्हें (मनुष्यों*) को (आधार पदार्थ) से पैदा किया है जिसे वे जानते हैं! " मनुष्य बनाया नहीं गया था; वह पहले के एक प्राइमेट से विकसित हुआ था। कोई भगवान जानता था। यह भी देखें ६/२ - आदम को एक दर्जन अलग-अलग तरीकों से नहीं बनाया जा सकता था।

सूरह 70: कम से कम 2 गलतियाँ + 1 संभावित गलती।

सूरा 71:

0a *71/6: "- - - (गैर-मुस्लिम*) की उड़ान (दाएं (इस्लाम*) से।" धर्म निर्माण कर सकते हैं कुरान पर उसकी सभी गलतियों, अंतर्विरोधों आदि के साथ, क्या सही है? 40/75 और 41/12 देखें? संदेह का अच्छा कारण है। **और अगर इस्लाम कई अन्य लोगों की तरह बना हुआ धर्म है - फिर सभी मुसलमानों के साथ क्या होगा यदि कोई दूसरा मौजूद है जो सही है और एक अगला है दुनिया? - - - और उन्हें इसकी तलाश करने से रोक दिया गया है।**

***001 71/15a: "- - - अल्लाह ने सात आकाशों को एक के ऊपर एक - - -" बनाया है। देखें ६७/३ए, 67/3बी, 67/5ए और 67/5बी ऊपर।

००२ ७१/१६: "और चाँद को उनके (आकाश के) बीच में एक दीया बनाया - - -।" चाँद नहीं है मुहम्मद के ७ आकाश (७१/१५ए के ठीक ऊपर देखें) के बीच में। कोई भी देवता - यहाँ तक कि शिशु देवता - पता था, मुहम्मद नहीं। कुरान किसने बनाया?

**003 71/19: "और अल्लाह ने तुम्हारे लिए धरती को कालीन (फैला हुआ) बना दिया है।" कुरान पृथ्वी समतल का वर्णन करता है - डिस्क की तरह गोल हो सकता है, लेकिन सपाट। गलत। (इसी तरह का विवरण . में 15/19, 20/53, 43/10, 79/30, 88/70)।

सूरह ७१: कम से कम ३ गलतियाँ + १ संभावित गलती।

सूरा 72:

**00a 72/3: "- - - उसने (अल्लाह*) ने न तो पत्नी ली है और न ही बेटा।" अगर अल्लाह एक ही भगवान नहीं है यहोवा के समान यह सच हो सकता है। परन्तु यदि दोनों समान हैं: ठीक है, यीशु ने उसे "पिता" कहा। कई बार और हजारों गवाहों के सामने। और पत्नी के लिए: वास्तव में पुराने हिब्रू में

पेज 485

धर्म भगवान की एक महिला साथी थी - उनकी अमत (स्रोत: न्यू साइंटिस्ट और अन्य)। परंतु
पुरुष संस्कृति में उसे भुला दिया गया।

*001 72/8: "हम (जिन्स - एक बुतपरस्त अरब धर्म, किंवदंतियों और परी से" उधार " लिया जा रहा है
किस्से*) ने स्वर्ग के रहस्यों को छुपाया, लेकिन हमने इसे कठोर मार्गदर्शकों और ज्वलनशील से भरा पाया
आग। " कुरान बताता है कि अल्लाह सितारों का इस्तेमाल शूटिंग सितारों की तरह करता है - धधकती आग - पीछा करने के लिए
स्वर्ग की जासूसी करने की चाहत रखने वाले और जिन्न बुरी आत्माओं को दूर भगाएं। कोई टिप्पणी आवश्यक नहीं होनी चाहिए।

002 72/9: "- - - धधकती आग - - -।" ऊपर 72/8 देखें।

००३ ७२/१३: "- - - मार्गदर्शन की बात सुनी (कुरान* की) - - -"। से मार्गदर्शन के लिए
कुरान: 41/12 और 40/75 देखें।

सूरह 72: कम से कम 3 गलतियाँ + 1 संभावित गलती।

सूरा 73:

०१ ७३/११: "- - - सत्य को नकारना (कुरान* का) - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

00a 73/15: "हमने आपके पास (हे आदमियों!) एक रसूल (मुहम्मद*) - - -" भेजा है। क्या कोई
सर्वज्ञ ईश्वर एक ऐसे धर्म की शिक्षा देने वाला दूत भेजते हैं जिसमें बहुत सारी गलतियाँ हों और बहुत कुछ
धोखेबाज और धोखेबाज की पहचान? इस्लाम को इसे साबित करना होगा - सामान्य ही नहीं
गैर-दस्तावेज दावे।

००२ ७३/१६: "- - - हम (अल्लाह*) ने उसे (रामसेस II*) एक भारी सजा के साथ आकार दिया - - -"। एक के लिए
बात: यह संभावना है कि रामसेस II को कोई व्यक्तिगत सजा नहीं मिली - वर्षों बाद उनकी मृत्यु हो गई। दूसरे के लिए: हम
कुरान से जान लो कि सज़ा डूब रही थी - लेकिन रामसेस II डूबा नहीं।
गलत।

००३ ७३/१८: "----आसमान फट जाएगा---।" वैक्यूम को अलग कैसे किया जा सकता है?

सूरह ७३: कम से कम ३ गलतियाँ + १ संभावित गलती।

सूरा 74:

001 74/16: "- - - हमारी (अल्लाह की) निशानियाँ - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

००२ ७४/५६: "वह (अल्लाह*) नेकी का मालिक है - - -।" **एक भगवान कानून बना रहा है कि f. भूतपूर्व।
कहते हैं कि हत्या और बलात्कार और चोरी करना "सही और अच्छा" है, और कौन कहता है कि a
महिला के साथ बलात्कार होने पर उसे अभद्रता के लिए सख्त सजा दी जाएगी और 4 पुरुष नहीं ला सकतीं
कर्म का साक्षी है, वह धर्मी नहीं है - इसके विपरीत: वह सबसे अधिक का है
पूरे ब्रह्मांड में अमानवीय, सबसे खराब और सबसे अन्यायपूर्ण प्राणी।** अंतिम उल्लेखित कानून - के बारे में
बलात्कार की महिला - अब तक के सबसे अन्यायपूर्ण कानूनों में से एक है (हो सकता है)
साथ में उस कानून के साथ जो कहता है कि जिहाद में चोरी/लूट, जबरन वसूली और हत्या -
सब कुछ जिहाद है - "अच्छा और वैध" है), खासकर अल्लाह के रूप में (यदि वह मौजूद है और सर्वज्ञ है)
जानता है कि वह दोषी नहीं है। कई बिंदुओं पर परोपकारी के विपरीत।

सूरह 74: कम से कम 2 गलतियाँ।

सूरा 75:

पेज ४८६

**001 75/8+9: "(जिस दिन*) चाँद अँधेरे में दफ़न है, और सूरज और चाँद
एक साथ जुड़े हुए हैं - - -"। पहले लगभग 5 अरब वर्षों में यह शारीरिक रूप से असंभव है। और यह
जिस दिन यह संभव हो सके, कुरान में वर्णित जन्नत अब संभव नहीं है।
क्योंकि - और कम से कम नहीं: उस दिन चाँद अँधेरे में नहीं, बल्कि तीव्र रोशनी में दफ़न होगा
- और कुरान में वर्णित कयामत और जन्नत का दिन असंभव होगा। उस दिन
पृथ्वी और चंद्रमा दोनों ही सूर्य के अंदर दबे हुए हैं - यदि ऐसा होता है (विज्ञान काफी नहीं है
यकीन है कि सूरज पर्याप्त गुब्बारा होगा)। लेकिन किसी भी हाल में प्रचंड धूप किसी भी जगह बना लेगी
बृहस्पति के अंदर पृथ्वी पर स्वर्ग के लिए या पृथ्वी के ऊपर/आसपास स्वर्ग में बहुत गर्म है - कुरान
वहाँ स्वर्ग को एक सौम्य और चिरस्थायी सूर्य के नीचे रखता है। साथ ही हमेशा के लिए असंभव होगा
और गलत, क्योंकि विज्ञान बताता है कि लगभग 5 अरब वर्षों में पृथ्वी या तो अंदर है
विशाल सूजा हुआ, लाल (अब पीला नहीं) सूरज, और स्पोर्टिंग सीए। 2000 - 3000 सेंटीग्रेड, या बस
तत्कालीन विशाल तारे के ऊपर और कुछ 2oo - 3000 डिग्री सेंटीग्रेड के तापमान के साथ -
मुस्लिम नर्क की लपटों से भी ज्यादा गर्म।

002 75/32: "- - - उन्होंने सत्य (कुरान*) - - - को खारिज कर दिया। 40/75 और 41/12 देखें।

003 75/37: "क्या वह शुक्राणु की एक बूंद नहीं - - -?" नहीं। वह बस एक शुक्राणु कोशिका तक "था" नहीं था
और एक अंडा कोशिका आपस में जुड़ गई थी। कोई भी भगवान यह जानता था - मुहम्मद नहीं। शुक्राणु कोई बीज नहीं है
एक महिला में एक संतरे के रंज की तरह बढ़ने के लिए संयंत्र।

सूरह 75: कम से कम 3 गलतियाँ।

सूरा 76:

001 76/2: "वास्तव में, हमने (अल्लाह *) आदमी को मिश्रित शुक्राणु की एक बूंद से पैदा किया - - -।" गलत।
न तो आदमी (ऊपर 6/2 और 75/37 देखें), और न ही एक आदमी (75/37 देखें) से ही बनाया गया था
शुक्राणु।

*002 76/13: "- - - (चंद्रमा की) अत्यधिक ठंड।" चाँद अक्सर रात में उठता है। साफ रातें -
जब आप चाँद देख सकते हैं - अरब जैसे रेगिस्तानों में अक्सर बहुत ठंड होती है। लेकिन ठंड नहीं है
चन्द्रमा के कारण - वह एक स्पष्ट आकाश के कारण मात्र एक संयोग है। यह ठंडा है क्योंकि पृथ्वी
अंतरिक्ष की ओर अपना प्रकाश बिखेरता है - कुछ ऐसा जो मुहम्मद नहीं जान सकता था, लेकिन कोई भी ईश्वर इसे जानता था।
कुरान की रचना किसने की?

003 76/16: "- - - क्रिस्टल स्पष्ट, चांदी से बना - -।" यह किसी न किसी तरह की गलती होनी चाहिए - यहाँ तक कि
मुहम्मद जानते थे कि चांदी से बनी कोई चीज साफ-पारदर्शी नहीं हो सकती
क्रिस्टल लेकिन अगर एफ. भूतपूर्व। आधिकारिक कुरान बनाते समय खलीफा उस्मान ने यहां गलती की,
तो उसने या दूसरों ने और कितनी गलतियाँ कीं?

००४ ७६/२१: "- - - और वे (स्वर्ग में) चांदी के कंगन से सुशोभित होंगे - -।" तब में
१८/३१ - ३५/३३ कंगन सोने के हैं। एक छोटा सा विवरण - लेकिन एक सर्वज्ञ भगवान को नहीं मिलता
विवरण भी गलत। एक गलती और एक छोटा सा विरोधाभास।

005 76/23: "यह हम (अल्लाह*) हैं जिन्होंने कुरान को उतारा है - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

006 76/30: "- - - अल्लाह ज्ञान और ज्ञान से भरा है।" 40/75 और 41/12 देखें।

सूरह 76: कम से कम 6 गलतियाँ।

सूरा 77:

००१ ७७/९: "- - - जब स्वर्ग छिन्न-भिन्न हो जाता है - - -।" वैक्यूम को अलग कैसे किया जा सकता है?

002 77/15: "- - - सत्य के अस्वीकार (कुरान*) - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

००३ ७७/१९: "- - - सत्य के अस्वीकार करने वाले (कुरान*) - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

004 77/20: "क्या हम (अल्लाह*) ने आपको एक द्रव (शुक्राणु) से पैदा नहीं किया - - -?" सं. 75/37 देखें।

005 77/24: "- - - सत्य के अस्वीकार (कुरान*) - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

००६ ७७/२८: "- - - सत्य के अस्वीकार करने वाले (कुरान*) - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

007 77/34: "- - - सत्य के अस्वीकार (कुरान*) - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

008 77/37: "- - - सत्य के अस्वीकार (कुरान*) - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

009 77/40: "- - - सत्य के अस्वीकार (कुरान*) - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

010 77/45: "- - - सत्य को अस्वीकार करने वाले (कुरान*) - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

०११ ७७/४७: "- - - सत्य को अस्वीकार करने वाले (कुरान*) - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

012 77/49: "- - - सत्य को अस्वीकार करने वाले (कुरान*) - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

सूरह 77: कम से कम 12 गलतियाँ।

सूरा 78:

०१ ७८/६: "क्या हमने (अल्लाह*) ने पृथ्वी को व्यापक विस्तार नहीं बनाया - - -?" हम दूसरे से जानते हैं
कुरान में जगह है कि यह विस्तार सपाट है, और एक डिस्क की तरह गोल हो सकता है। लेकिन पृथ्वी एक है
वृत्त।

00a 78/7: "(अल्लाह ने बनाया*) पहाड़ों को खूंटे के रूप में - - -"। कुछ मुसलमान कहते हैं: हिप, हुर्रे - यहाँ
मुहम्मद और कुरान के लिए एक प्रमाण है: विज्ञान पहाड़ों की "जड़ों" के बारे में बात करता है
- पहाड़ खूंटे की तरह हैं! मुहम्मद कैसे जान सकते थे?! लेकिन पहाड़ "जड़ें" नहीं हैं
खूंटे की तरह, लेकिन उभार या विकृत चादरों की तरह (जैसा कि पहाड़ अक्सर लंबे और संकरे होते हैं - देखें)
श्रृंखला रॉकी पर्वत + एंडीज एफ़। उदा।) या विकृत गोलार्ध के रूप में। गहरे खूंटे मौजूद हैं
- या वास्तव में चादरें - मेंटल (पिघले हुए पत्थर) में बहुत नीचे की ओर इशारा करते हुए, लेकिन के संबंध में नहीं
पर्वत या पर्वत श्रृंखलाएं वास्तव में, हालांकि वे सह-अस्तित्व में हो सकती हैं: वे कुछ स्थानों पर मौजूद हैं
जहां पृथ्वी की पपड़ी के बड़े टुकड़े - टेक्टोनिक प्लेट्स - किसके कारण नीचे की ओर झुके हुए हैं?
क्रस्ट के मूवमेंट (टेक्टोनिक मूवमेंट)। लेकिन इसका पहाड़ों से कोई लेना-देना नहीं है
हालांकि पहाड़ आंदोलन के गौण परिणाम हो सकते हैं) - यह पूरी तरह से कुछ है
विभिन्न।

002 78/12a: "और (क्या हमने (अल्लाह) ने आप पर निर्माण नहीं किया - - - - - - - -?" के लिए
कुछ बनाना है, सामग्री का उपयोग करना है - स्वर्ग के अन्य टुकड़ों से भी
जानकारी किसी सामग्री से बनाई जानी चाहिए। गलत: आकाश जैसा हम देखते हैं, वैसा ही होता है an
ऑप्टिकल भ्रम - या वास्तव में 2.

487

पेज ४८८

००३ ७८/१२बी: "और (क्या हमने (अल्लाह) ने तुम्हारे ऊपर सात फ़र्म नहीं बनाए - -?"
गलत: 67/3 a, 67/3b, 67/5a और 67/5b देखें। बस और दोगुना गलत।

00b 78/12-13: "और क्या हमने (अल्लाह*) ने तुम्हारे ऊपर सात फ़र्म नहीं बनाए, और
(उसमें) वैभव का प्रकाश (=सूर्य*)?" सूर्य ("उसमें") 7 . के बीच नहीं रखा गया है
फर्मामेंट्स

००४ ७८/१९ए: "और आकाश (बहुवचन और गलत*) ऐसे खुलेंगे मानो दरवाजे हों - - -
" खुली जगह में खोलने के लिए कुछ भी नहीं है।

005 78/19b: "- - - स्वर्ग - - -"। बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

006 78/28: "- - - संकेत - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

007 78/37: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

सूरह: कम से कम 7 गलतियाँ + 2 संभावित गलतियाँ।

सूरा 79:

001 79/24: "(फिरौन रामसेस II*) कह रहा है: 'मैं तुम्हारा भगवान हूँ (इस संबंध में: तुम्हारा भगवान*), सबसे ऊपर"'। फिरौन पुराने मिस्र में "सबसे ऊंचा" देवता नहीं था।

002 79/25: "लेकिन अल्लाह ने उसे (फिरौन रामसेस II*) - - -" सज़ा दी। गलत। हम जानते हैं कुरान में अन्य जगहों पर डूबने की सजा बताई गई है। लेकिन एक बात के लिए रामसेस II डूबने से नहीं मरा, और दूसरी बात के लिए: वह वर्षों बाद ही मर गया।

००३ ७९/२८: "उस (अल्लाह*) ने ऊँचे स्थान पर उसकी (स्वर्ग की) छत्र - - - को ऊपर उठाया। स्वर्ग नहीं है छत्र 67/3ए देखें। 67/3बी, 67/5ए और 67/5बी।

*००४ ७९/३०: "और पृथ्वी, इसके अलावा, वह (अल्लाह *) एक व्यापक खर्च के लिए बढ़ा दिया है - - -"। 78/6 देखें। चूंकि यह कुरान में अंतिम स्थानों में से एक है जहां पृथ्वी के रूप का संकेत दिया गया है (फ्लैट), हम जोड़ सकते हैं कि आप मुसलमानों से मिलेंगे जो जोर देकर कहते हैं कि यह अंडे के आकार का है। यह लिया जाता है अनुवादकों में से एक, जिसे इस्लाम भी उत्कृष्ट नहीं मानता, राशदी खलीफा। वह अनुवाद करता है कि पृथ्वी अंडे के आकार की है। लेकिन अरब मूल के बारे में बोलता है जमीन कि शुतुरमुर्ग अपना अंडा देने से पहले चपटा हो जाता है = एक समतल क्षेत्र। इसके बजाय चतुर मि. राशद खलीफा अंडे के बारे में बात करते हैं - और अंडे के आकार का !! और जैसा कि यह वास्तविकता में एक तरह से फिट बैठता है (पृथ्वी .) वास्तव में थोड़ा चपटा गोला है - ध्रुवों के बीच का व्यास at . की तुलना में 21 किमी छोटा है भूमध्य रेखा (एक अंडा इसके विपरीत है) और कभी-कभी इतनी मामूली नाशपाती के आकार के साथ) - हालांकि कुरान नहीं - यह गलत अनुवाद अक्सर उद्धृत किया जाता है। (आप उस अनुवाद को कभी भी अच्छे से नहीं पाते हैं अनुवादक)।

सूरह 79: कम से कम 4 गलतियाँ।

सूरा 80:

६९५ ८०/१९: "एक शुक्राणु-बूंद से उसने (अल्लाह*) ने उसे (मनुष्य*) - - - बनाया है। गलत। न आदमी (6/2 देखें) और न ही एक आदमी (75/37 देखें) सिर्फ शुक्राणु से बनाया गया था।

सूरह 80: कम से कम 1 गलती।

488

पेज 489

यहाँ तक उप-योग: कम से कम १७३९ गलतियाँ + २१२ संभावित गलतियाँ।

भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 4, खंड 8 (= II-1-4-8)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। NS "पूर्ण" सूची - "विश्वकोश" - सूरह पर आधारित और पद संख्या

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें। धारा 1 से 16.

कुछ स्पष्ट तथ्य गलतियाँ और सुरह में त्रुटियाँ ८१ से ११४ कुरान में - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

टिप्पणियों को ३ नंबरों (०० या ० सहित) द्वारा क्रमांकित किया गया, कुछ स्थानों के बाद एक छोटा
पत्र = स्पष्ट गलतियाँ। टिप्पणियों की संख्या 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षर (बड़ा या .)
छोटा) = संभावित गलती।

सूरा ८१:

001 81/1: "जब सूर्य (अपने विशाल प्रकाश के साथ) मुड़ा हुआ है - - -।" एक ठोस गोला नहीं हो सकता
मुड़ा हुआ - यह अंधेरा हो सकता है (कई अरब वर्षों में), जो अंतर्निहित हो सकता है
अर्थ है, लेकिन इसे मोड़ा नहीं जा सकता। ऐसा लगता है कि मुहम्मद का मानना था कि सूर्य एक सपाट डिस्क था।
कोई भी भगवान बेहतर जानता था।

002 81/1+ 4 + 5: "जब सूर्य (अपने विशाल प्रकाश के साथ) मुड़ जाता है (अंधेरा हो जाता है*) - - -
ऊँट, १० महीने के बच्चे के साथ, बिना देखभाल के छोड़ दिया जाता है (और*) जब जंगली जानवरों को चराया जाता है
एक साथ (मानव आवासों में) - - -"। कुछ ५ अरब वर्षों में सूर्य एक लाल दानव बन जाएगा,
विज्ञान के अनुसार। पृथ्वी या तो इसके द्वारा निगल ली जाएगी या इसकी सतह के ठीक ऊपर चक्कर लगा देगी।
यदि पृथ्वी बच जाती है, तो उसके पास a . की सतह के रूप में लगभग 2oo+C का सतही तापमान होगा
लाल विशालकाय 2000-3000 सेंटीग्रेड है - और सभी ऊंट, जंगली जानवर और इंसान चले जाएंगे
अरबों साल पहले। पृथ्वी स्वयं केवल सूखी राख होगी। तब से इसमें कई लगेंगे
सूरज के अंधेरा होने से अरबों साल पहले (यह नोवा नहीं जाएगा क्योंकि यह एक कारक से बहुत छोटा है
सीए का 12 - अंधेरा हो जाएगा)। बहुत गलत समय कारक। कोई भगवान जानता था।

003 81/2: "जब (अंतिम दिन*) सितारे (यहाँ यह वास्तविक सितारों के बारे में बात कर रहा है, शूटिंग नहीं
तारे*) गिरते हैं (पृथ्वी पर*), अपनी चमक खो देते हैं - - -"। तारे पृथ्वी पर नहीं गिर सकते - कभी नहीं

489

पेज 490

विज्ञान के अनुसार और वास्तविकता के अनुसार। सैद्धांतिक रूप से पृथ्वी सूर्य में गिर सकती है - और
5 अरब वर्षों में ऐसा कर सकता है - लेकिन "विका वर्सा" नहीं (यह पृथ्वी होगी जो वास्तव में चलती है,
सूरज नहीं)।

004 81/19: "वास्तव में, यह सबसे सम्मानित रसूल (मुहम्मद *) - - - का शब्द है।" यदि एक
आदमी जो चोर/लुटेरा है, जबरन वसूली करने वाला, महिला बनाने वाला, बच्चे से छेड़छाड़ करने वाला (ऐशा कई वर्षों से
से वह 9 वर्ष की थी), बलात्कारी, विश्वासघाती, अत्याचारी, हत्यारा, सामूहिक हत्यारा, युद्ध करने वाला
और भी बहुत कुछ है एक "सबसे सम्मानित दूत" - - - ठीक है, उस स्थिति में हम एक से मिलना पसंद नहीं करेंगे
सामान्य दूत, एक असम्मानजनक का उल्लेख नहीं करने के लिए। **ऐसा लग सकता है कि इस्लाम ने एक
नैतिकता और नैतिकता के लिए कुछ विशेष मानक।**

005 81/27: "- - - संसारों - - -।" खैर, मुहम्मद की ७ (सपाट) दुनिया बस कभी नहीं होती
विज्ञान द्वारा पाया गया। 65/12बी देखें।

006 81/29: "- - - संसारों - - -।" ८१/२७ के ठीक ऊपर और ५६/१२बी देखें।

सूरा 82:

००१ ८२/१: "जब आकाश अलग हो जाता है - - -।" वैक्यूम को अलग कैसे किया जा सकता है?

सूरा 83:

001 83/6: "- - - संसारों - - -।" ऊपर 81/27 देखें।

002 83/13: "- - - हमारे (अल्लाह के *) संकेत - - -।" अल्लाह की ओर से न तो स्पष्ट रूप से कोई चिन्ह मौजूद है और न ही
कुरान, न कहीं और। और 2/99 देखें।

सूरा ८४:

००१ ८४/१: "जब आकाश का किराया अलग-अलग होता है - - -।" वैक्यूम को अलग-अलग किराए पर नहीं दिया जा सकता है। कोई भगवान था
ज्ञात।

***002 84/15+16: "क्योंकि उसका रब (अल्लाह*) उस पर (गैर-मुस्लिम*) हमेशा चौकस रहता था! इसलिए मैं
(मुहम्मद*) सूर्यास्त की सुर्ख चमक देखने के लिए फोन करते हैं - - -"। एक गंभीर - यहाँ यह एक बार
मुहम्मद जो बोल रहा है वह अधिक है - जिसे मदर बुक की प्रति कहा गया है
(४३/४) स्वर्ग में, अल्लाह से बना और अनंत काल से अस्तित्व में है। वो कैसे संभव है?

003 84/23: "लेकिन अल्लाह ज्ञान से भरा है - - -।" अगर कुरान उसके लिए प्रतिनिधि नहीं है
ज्ञान।

सूरा 85:

001 85/9: "- - - स्वर्ग - - -।" बहुवचन और गलत। 2/22a देखें।

002 85/19: "- - - (सच्चाई) (कुरान*) को खारिज करना!" 40/75 और 41/12 देखें।

*003 85/21: "- - - एक गौरवशाली कुरान - - -"। **इतनी सारी गलतियों, विरोधाभासों वाली एक किताब, और छल और छल के अन्य लक्षण बहुत गौरवशाली नहीं हैं।** यह भी देखें ४०/७५ और 41/12.

सूरह ८१-८५: कम से कम १५ गलतियाँ।

490

पेज 491

सूरा ८६:

००१ ८६/६: "वह (मनुष्य*) एक बूंद (शुक्राणु*) से उत्सर्जित - - -" से बना है। 80/19 + 6/2 देखें।

002 86/6+7: "वह (मनुष्य*) उत्सर्जित एक बूंद (शुक्राणु*) से बना है - से आगे रीढ़ और पसलियों के बीच।" गौरवशाली: मुहम्मद उस शुक्राणु को भी नहीं जानते थे वृषण से आता है - "पत्थर" - और स्रोत को शरीर के अंदर रखा और आधा मीटर बहुत ऊपर !!!! और ऐसा स्थान जहाँ वीर्य उत्पादन के लिए बहुत अधिक गर्मी हो। (वृषण में हैं मुख्य शरीर के बाहर अंडकोश की थैली क्योंकि इसे सक्षम होने के लिए शरीर के तापमान से थोड़ा कम की आवश्यकता होती है वीर्य का उत्पादन)। यह यूनानी चिकित्सा के अनुसार है - हिप्पोक्रेट्स एफ। भूतपूर्व। सोचा था शुक्राणु गुर्दे से होकर गुजरे। **एक बच्चा भगवान भी बेहतर जानता है। की रचना किसने की कुरान? और इस्लाम क्या है - और यह मुसलमान है - अगर कुरान नकली है?

सूरा ८७:

001 87/3: "- - - और मार्गदर्शन दिया (कुरान*) - - -"। a . में बहुत कम विश्वसनीय मार्गदर्शन है गलतियों और धोखे और छल की पहचान से भरी किताब। 40/75 और 41/12 देखें।

*002 87/19: "इब्राहीम की पुस्तकें - - -"। विज्ञान के अनुसार अब्राहम के पास कोई पुस्तक नहीं थी - और निश्चित रूप से बहुवचन में नहीं। ४००० साल पहले एक खानाबदोश के अलावा, शायद ही पढ़ना जानता था। (वहाँ मौजूद है, हालांकि, "इब्राहीम का नियम" - बहुत अधिक बना हुआ (अपोक्रिफ़ल) शास्त्र।)

सूरा 88:

001 88/20: "और यह पृथ्वी पर कैसे फैला है?" - समतल पृथ्वी फिर से इंगित की गई है। देखो 79/30 और अन्य ऊपर।

सूरा 89 - 90:

001 90/19: "- - - संकेत - - -।" अल्लाह के लिए सबूत के तौर पर अमान्य। ऊपर 2/39 देखें।

सूरह ८६-९०: कम से कम ६ गलतियाँ।

सूरा ९१:

001 91/2: "चन्द्रमा द्वारा जैसे वह (चंद्रमा*) उसका (सूर्य*) अनुसरण करती है"। चाँद नहीं सूर्य का अनुसरण करें - यह केवल वैसा ही दिखता है जैसा पृथ्वी से देखा जाता है। क्या अल्लाह धरती पर रहता है? पर कम से कम ऐसा लगता है कि कुरान के निर्माता ने ऐसा किया था।

००२ ९१/४: "रात में जैसे ही यह इसे (सूर्य) छुपाता है"। रात सूरज को नहीं छुपाती - वहाँ रात है क्योंकि पृथ्वी छाया बनाती है। यह किससे 180 डिग्री अलग है मुहम्मद ने कहाः रात होती है क्योंकि रात सूरज को छुपाती है। कोई भी भगवान जानता था। इसके अलावा: रात बस सूरज की रोशनी की कमी है - रात के लिए शारीरिक रूप से असंभव है सूरज को छुपाओ। कोई भी देवता यह भी जानता था। फिर कुरान किसने बनाया?

003 91/6 "पृथ्वी और उसके (चौड़े) विस्तार से - - -"। पृथ्वी कोई विस्तृत विस्तार नहीं है (यह है कुरान में अन्य स्थानों से जाना जाता है कि पृथ्वी एक विस्तृत, सपाट विस्तार है), लेकिन एक गोला है।

सूरा 92:

**001 92/1: "द्वारा (शपथ की शुरुआत*) रात के रूप में यह छुपाती है (प्रकाश) - - -"। गलत - यह है
पृथ्वी जो प्रकाश को छुपाती है और रात का कारण बनती है। यह कोई भी देवता जानता है - मुहम्मद नहीं।
(देखें ९१/४)।

*००२ ९२/३: "द्वारा (रहस्य) नर और मादा की रचना - - -"। हमारे लिए कोई रहस्य नहीं, नहीं
एक भगवान के लिए रहस्य - मुहम्मद के लिए एक बड़ा रहस्य। (हदीस के अनुसार उसने सोचा कि यदि
औरत पहले चरमोत्कर्ष पर पहुंची, लड़की हुई, लेकिन पुरुष पहले चरमोत्कर्ष पर पहुंचा तो लड़का बन गया-
और लड़के बेशक सबसे अच्छे थे।) कुरान को किसने बनाया?

003 92/16: "- - - सत्य (कुरान) - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

सूरह ९३-९४-९५:

**001 95/4: "हमने (अल्लाह*) ने इंसान को बेहतरीन तरीके से बनाया है"। गलत - और यह
कुछ बताता है कि कुरान मजबूत करता है ("वास्तव में" शब्द के साथ) एक बयान - एक ढीला एक
इतनी बार - यह गलत है। मनुष्य सबसे अच्छे साँचे में निर्मित होने से बहुत दूर है। कई "निर्माण"
विवरण" और बेहतर हो सकते थे - टूट-फूट को सहने की हमारी क्षमता f. उदा।, और हमारी देखने की क्षमता
अंधेरे में, और भी बहुत कुछ। साथ ही बीमारियों से निपटने की हमारी क्षमता एकदम सही नहीं है - और अगर हमारा दिमाग
एक समय में एक से अधिक चीजों के बारे में सोच सकते हैं, तो हम अधिक कुशल होंगे। आदि, आदि, आदि।

सूरह ९१-९५: कम से कम ७ गलतियाँ।

सूरा 96:

**001 96/2: "(अल्लाह*) ने मनुष्य को (मात्र) जमा रक्त के थक्के से बनाया - - -"। न
आदमी (6/2 देखें) और न ही एक आदमी (75/37 देखें) खून से बना था - जमा हुआ या नहीं - भले ही
कुछ पुराने यूनानियों ने ऐसा माना, और जिनसे मुहम्मद ने इस विचार को चुराया होगा।
लेकिन मानव या जानवर की शुरुआत - शुक्राणु कोशिका और अंडा कोशिका और फिर युग्मनज -
इतने छोटे हैं कि यह केवल आपकी आंखों से नहीं देखा जा सकता है, एक शव में खून और गोर में या
एक मारे गए जानवर में। मुहम्मद का मानना था कि वीर्य एक बीज था जिसे में लगाया गया था
महिला रक्त के थक्के में विकसित हुई जो भ्रूण में विकसित हुई। यह उल्लेखनीय हो सकता है कि
इस श्लोक में कथन अरस्तु के सिद्धांत के समान है। **लेकिन कोई भी भगवान बेहतर जानता था। कौन
कुरान की रचना की? और मुसलमान कभी इस बात का जिक्र क्यों नहीं करते कि इतने सारे "तथ्य"
कुरान में उस समय ग्रीक और फारसी (गलत) विज्ञान के अनुसार हैं?**

**002 96/11: "- - - अगर वह (एक आदमी*) मार्गदर्शन पर है?" क्या किसी किताब में मार्गदर्शन है
गलत तथ्यों के साथ 1700 से अधिक अंकों के साथ, कम से कम 200 संभावित गलत तथ्य, से अधिक
भाषाविदों के अनुसार अरब संस्करण में 100 भाषाई गलतियाँ, ढेर सारे ढीले-ढाले बयान और
बहुत सारे अमान्य "संकेत" और "सबूत" - धोखेबाजों और धोखेबाजों की पहचान? उल्लेख नहीं करना
कुरान में 200+ विरोधाभास, 100+ निरस्तीकरण और अस्पष्ट भाषा के 400+ मामले - the
दावा किया गया कि अभाव इस्लाम का एकमात्र दृढ़ता से दावा किया गया है (लेकिन कभी साबित नहीं हुआ) ईश्वरीय प्रमाण है
किताब की उत्पत्ति !! - नहीं; कोई वास्तविक मार्गदर्शन नहीं। कोई सबूत नहीं और कोई अच्छा मार्गदर्शन नहीं।

003 96/13: "- - - अगर वह (एक आदमी *) इनकार करता है (सच्चाई (कुरान *)) - - -"। 40/75 और 41/12 देखें।

सूरह 97 - 98 - 99 - 100:

001 98/1a: "वे (गैर-मुस्लिम*) जो इनकार करते हैं (सच्चाई (कुरान*)) - - -"। 40/75 और देखें
41/12.

002 98/1b: "- - - स्पष्ट साक्ष्य - - -"। इसका मतलब है कुरान: 96/11, 40/75 और 41/12 देखें।

003 98/4: "- - - स्पष्ट साक्ष्य - - -"। इसका मतलब है कुरान: 96/11, 40/75 और 41/12 देखें।

००४ ९८/६: "जो झुठलाते हैं (सच्चाई (कुरान*)) - - -।" कुरान में जो कुछ भी गलत है, उसके साथ,
सबसे अच्छी किताब आंशिक रूप से सच है।

सूरह 96 - 100: कम से कम 7 गलतियाँ।

सूरह १०१ - १०२ - १०३:

001 103/3: "- - - सत्य की शिक्षा - - -"। 40/75 और 41/12 - - - और अन्य देखें।

सूरह १०४ - १०५:

०१ १०५/३+४: "- - - हान (अल्लाह *) ने उनके खिलाफ पक्षियों की उड़ानें भेजीं, उन्हें पत्थरों से मारना
पकी हुई मिट्टी से।" यह 570 ईस्वी में एबिसिनिया के हमले को संदर्भित करता है। उप राजा अब्राह ओर
अब्राह, एक विषाणुजनित बीमारी - शायद चेचक - के कारण अपनी सेना का अधिकांश भाग खो चुका था और उसे
मक्का पर हमला किए बिना घर लौटना। पक्षियों के पत्थरों से सैनिक नहीं मारे गए।
मुस्लिम विद्वान अक्सर मानते हैं कि इसकी संभावना नहीं है, लेकिन कभी-कभी स्पष्ट पाठ को "व्याख्या" करने का प्रयास करते हैं
कुछ भाषाई जिम्नास्टिक द्वारा स्पष्ट गलती के रूप में जिसमें शामिल है कि अरबी शब्द for
पत्थर और लेखन के लिए अलग नहीं हैं, और अगर उन्हें लगता है कि ये शब्द हैं
मिश्रित (अल्लाह द्वारा भेजी गई एक पवित्र पुस्तक में, और बिना गलतियों के), और फिर कहो
अर्थ रूपक है (एक किताब में अल्लाह कहता है कि जैसा लिखा है वैसा ही समझा जाएगा), यह हो सकता है
मतलब पत्थर नहीं, बल्कि कठिन शारीरिक प्रहार। मुसलमानों को अक्सर दूर का उपयोग करना पड़ता है
इस तरह "स्पष्टीकरण" गलतियों को छिपाने की कोशिश करने के लिए। लेकिन अगर यहाँ कोई भाषाई गलती है,
मुसलमानों के अनुसार कुरान में और कितनी भाषाई गलतियाँ हैं?

सूरह 106 से 114:

00a 112/3: "वह (अल्लाह*) पैदा नहीं करता - - -।" खैर, अगर अल्लाह एक ही भगवान होना चाहिए
यहोवा के समान, यीशु ने उसे कई बार "पिता" कहा और कई बार कहा कि वह था
यहोवा का पुत्र - और बहुत से/अधिकांश समय यह स्पष्ट है कि यह वास्तविक अर्थ में था। में
NT यह कम से कम १६३ बार कहा गया है कि यहोवा यीशु का पिता था, और कम से कम ६६ बार उस
यीशु यहोवा का पुत्र था। रिश्ता कैसे शुरू हुआ, इस बारे में कुछ नहीं कहा गया है। यदि सही,
3 संभावनाएं हैं:

1. उम्रदराज और ज्यादातर भूली हुई महिला
   बहुत दूर के अतीत में यहोवा के समकक्ष
   हिब्रू पूर्व-इतिहास का, सच हो सकता है। फिर
   यहोवा की "अमत" की माता हो सकती है
   यीशु।
2. यहोवा ने उसे बनाया होगा। जैसा कहा जाता है
   दोनों बाइबिल में और कुरान में और भी अधिक में,
   भगवान केवल "होना" कह सकता था और यह था। मई
   भगवान ने कहा "हो" और यीशु था।
3. इसके अलावा यीशु अनंत काल से अस्तित्व में हो सकता है।

सूरह १०१ - ११४: कम से कम २ गलतियाँ + १ संभावित गलती।

सभी कुरान के लिए कुल: कम से कम १७७६ गलतियाँ + २१३ संभावित गलतियाँ।

हकीकत में और भी हैं। यह हमारा शिक्षित अनुमान है कि एक वास्तविक गहन विश्लेषण पर समाप्त होगा
गलत तथ्यों के साथ 2oo+ अंक, क्योंकि ऐसे बिंदु हैं जिन्हें हमने छोड़ दिया है क्योंकि सबूत
अधिक जटिल थे, संभावित गलतियाँ हैं - उनमें से बहुत सारी वास्तविक हो जाएँगी
गलतियाँ - ऐसे सीमावर्ती मामले हैं जिन्हें हमने छोड़ दिया है क्योंकि हम निश्चित नहीं थे, और नहीं
कम से कम: हमने शायद ही सभी गलतियाँ देखी हों।

इसके अलावा अन्य गलतियाँ, त्रुटियाँ और गलतियाँ हैं।

इस संस्करण (2009) में हमारे पास अधिकांश गलत तथ्य हैं। तीन श्रेणियां हैं जो हैं
लापता:

1. गलत तथ्य जिन्हें हमने नज़रअंदाज कर दिया है - वहाँ
   कुछ होना निश्चित है।
2. गलतियाँ जिन्हें बहुत समझाने की ज़रूरत है - हम
   अगर वे नाबालिग थे तो उन्हें छोड़ दिया है।
3. हमारे पास सभी सीमा-रेखा संदिग्ध बिंदु हैं
   छोड़े गए - कम से कम उनमें से कुछ वास्तविकता में हैं
   गलतियां। इसका मतलब है कि वास्तव में और भी हैं
   जिसे सूचीबद्ध किया जा सकता है - विशेष रूप से संभावित गलतियाँ।
   एफ. पूर्व. हर समय कुरान नाम का उपयोग करता है
   अल्लाह पुराने इसराईल के ख़ुदा के लिए और सब
   कई बार यह दावा करता है कि मुहम्मद थे
   एक भगवान का प्रतिनिधि - एक सर्वज्ञ हो सकता है
   भगवान ने एक प्रतिनिधि भेजा है जो प्रस्तुत करता है
   उनके अनुयायियों के लिए इतनी सारी गलतियाँ?

2009 के इस संस्करण को गलत तथ्यों के लिए अंतिम रूप देने की योजना है - **यह इससे कहीं अधिक है 100% और अधिक साबित करने के लिए पर्याप्त है कि मुहम्मद के साथ कुछ गंभीर रूप से गलत है, कुरान के साथ, और इस्लाम के साथ** । हम व्याकरण से कुछ और गलतियाँ जोड़ सकते हैं, शब्दावली, आदि, और कुछ और विरोधाभास, निरसन, आदि, लेकिन गलत तथ्यों के लिए हम सोचो यह काफी है। हालांकि अगर हमें उन गलतियों से अवगत कराया जाता है जिन्हें हमने अनदेखा किया है, तो वे करेंगे जोड़ा जाना।

अगर हमने गलतियाँ की हैं - लेकिन वास्तविक गलतियाँ और f नहीं। भूतपूर्व। बाइबिल के साथ सिर्फ मतभेद - हमारे पास है नहीं मिला, कृपया हमें इंटरनेट और हमारे उत्तर बॉक्स द्वारा सूचित करें। हम उन्हें बाद में जोड़ देंगे।

भाग II, अध्याय 1, उप अध्याय 4, खंड 9 (= II-1-4-9)

गलतियाँ और त्रुटियाँ - गलत तथ्य - कुरान में, The मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। NS "पूर्ण" सूची - "विश्वकोश" - सूरह पर आधारित और पद संख्या

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

494

पेज 495

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें। धारा 1 से 16.

से अपरिहार्य निष्कर्ष तथ्य गलतियाँ और त्रुटियाँ कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

[illegible] के साथ - और
अपनी बुद्धि और ज्ञान का उपयोग करें, न कि केवल अंध विश्वास - और एक तथ्य को ध्यान में रखते हुए: THAT
एक सर्वज्ञानी भगवान कोई गलती नहीं करता है, इसलिए एक का अस्तित्व
एकल गलती एक चेतावनी है कि कुछ गलत है, और
बहुत कम से अधिक का अस्तित्व चीजों के लिए एक १००% प्रमाण है
गंभीर रूप से गलत होना। खैर, वास्तव में एक गलती भी 100% ऐसा प्रमाण है।

1. बहुत सारे गलत तथ्य हैं - और अन्य
गलतियाँ - कुरान में। कोई भगवान नहीं कहेगा or
वह जो कुछ भी जानता था उसे निर्देशित करना गलत था - उसके पास था
यह जानने के लिए कि जल्दी या बाद में यह होगा
उसे खोजा और बदनाम किया। वह छोड़ देगा
गलतियाँ करें और इसके बजाय अन्य तर्कों का उपयोग करें
- या इससे भी बेहतर: वह बताएगा कि क्या था
सही और समय के साथ उसका अस्तित्व है
साबित। **कोई सर्वज्ञ भगवान नहीं बनाया या भेजा**
कुरान के नीचे।
2. कुरान की तरह दावा करने के लिए यह करता है कि an
सर्वज्ञ भगवान एक पूर्ण पुस्तक का सम्मान करते हैं
गलत तथ्य और अन्य गलतियाँ, साथ ही बहुत सारे
विरोधाभास, तार्किक रूप से अमान्य "संकेत" -
कुरान- "संकेत" या "सबूत" के लिए बोलते हैं - और
अमान्य के रूप में (उनमें से कुछ गलत भी हैं)
"सबूत", आदि, आदि एक अपमान और विधर्म दोनों है
भगवान की ओर। यह वॉल्यूम भी बताता है और
भोलेपन के बारे में मील और यह कितना मुश्किल है
आप जो आए थे उसका पुनर्मूल्यांकन करना हो सकता है
एक बच्चे के रूप में विश्वास करें (या बाद में) सिर्फ इसलिए कि आपका
पिता या माता-पिता या शिक्षक या
पुजारियों/मुल्लाओं/इमामों ने तुमसे ऐसा कहा - क्योंकि
यही मुसलमानों की आस्था का एकमात्र कारण है।
और यह भी कि पुनर्मूल्यांकन करना कितना मुश्किल है
आपके पास मौलिक विचार और सिद्धांत
अपने जीवन का निर्माण किया है और आपके समाज ने इसका निर्माण किया है
संस्कृति पर - यह पूछने के लिए भी बहुत कुछ लेता है

495

पेज ४९६

प्रश्न: क्या यह गलत हो सकता है? **अपरिहार्य**
निष्कर्ष: कुरान नहीं है
एक सर्वज्ञानी द्वारा लिखित
भगवान।एक प्रासंगिक प्रासंगिक टिप्पणी:
गलत तथ्य एक की पहचान नहीं हैं
सर्वज्ञ भगवान, लेकिन धोखेबाजों, ठगों के
और धोखेबाज।
3. "कुरान का संदेश" पुस्तक में,
अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक द्वारा प्रमाणित
काहिरा में अनुसंधान अकादमी (2-3 . में से एक)
ऐसे में मुस्लिम दुनिया के शीर्ष विश्वविद्यालय
विषय) दिनांक २७. दिसंबर १९९८ के एक पत्र में, यह है
बल्कि अनिच्छा से स्वीकार किया कि वहाँ नहीं हैं
अल्लाह के लिए सबूत, और यह संभव नहीं है
उसे साबित करो। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि
अल्लाह के लिए कोई पुतला नहीं है और असंभव है
उसके ऊपर, स्वचालित रूप से भी नहीं है
के लिए सबूत, और साबित करना असंभव
मुहम्मद ने अल्लाह से जुड़ाव का दावा किया।
4. बहुत सारे और बहुत सारे ढीले बयान हैं बस
कहीं से बाहर ले जाया गया या नहीं पर इमारत
सिद्ध कथन, सिद्ध तथ्य नहीं या यहाँ तक कि
गलत तथ्यों पर। एक भगवान का मतलब हो सकता था
इसमें से कुछ सिर्फ जानकारी के रूप में - हालांकि वह

मामले ने गलत तथ्यों को स्रोत के रूप में छोड़ दिया था, और
उसे कम से कम कुछ सबूत शामिल करने थे।
लेकिन ढीले बयानों का उपयोग एक तकनीक है
धोखेबाजों और धोखेबाजों द्वारा उपयोग किया जाता है। **मुद्दा ये है
संदिग्ध, हालांकि अकेले देखा जाना पर्याप्त नहीं है
अपरिहार्य निष्कर्षों के लिए यदि कोई छोड़ देता है
गलत तथ्य। लेकिन जब साथ देखा
यहां अन्य बिंदु अलग हैं: नहीं
सर्वज्ञ भगवान ने इस पुस्तक को बनाया है।**

5. संकेत के लिए बहुत सारे "संकेत" का उपयोग किया जाता है
कुरान में अल्लाह का - और एक नहीं
उनमें से एक वैज्ञानिक रूप से है
या तार्किक रूप से मान्य है क्योंकि इनमें से एक नहीं
वे सिद्ध तथ्यों पर आधारित हैं जो बताते हैं कि यह
वास्तव में अल्लाह ही है जिसने निशानी पैदा की - शब्द हैं
सस्ते, लेकिन केवल वास्तविक प्रमाण ही विश्वसनीय होते हैं। और
याद रखें: एक प्रमाण है "एक या अधिक सिद्ध
तथ्य जो केवल एक निष्कर्ष दे सकते हैं"
(इस्लाम आम तौर पर सिद्ध दावों आदि का उपयोग नहीं करता है,
आधार के रूप में सिद्ध तथ्यों के बजाय
निष्कर्ष)। कुछ संकेत ये भी हैं
गलत बयानों के आधार पर। कोई भगवान नहीं करेगा
यह - ऊपर के समान कारणों से। यहां तक की
बदतर: बना हुआ या गलत का उपयोग
तर्क, धोखे की पहचान हैं और
धोखेबाज **अपरिहार्य निष्कर्ष:**

496

पेज 497

**कुरान किसी ने नहीं बनाया है
सर्वज्ञ भगवान।**

6. और भी गंभीर: बहुत सारे "सबूत" हैं
कुरान में अल्लाह के लिए - और एक नहीं
उनमें से एक वैज्ञानिक रूप से है
या तार्किक रूप से उसी के लिए मान्य
ऊपर के रूप में कारण। (कुछ संभव हैं
बाइबिल से लिए गए अपवाद, लेकिन वे
मामला यहोवा की ओर इशारा करता है, अल्लाह की ओर नहीं (देखें #7)।
इसके अलावा - और एक उच्च डिग्री के लिए - यह एक है
धोखेबाजों और धोखेबाजों की पहचान। कोई भगवान नहीं
कभी इसका इस्तेमाल करेंगे। **अपरिहार्य
निष्कर्ष: कुरान नहीं है
एक सर्वज्ञानी भगवान द्वारा बनाया गया।**

7. कुरान अक्सर प्राकृतिक रूप से होने वाली चीजों का इस्तेमाल करता है
अल्लाह के लिए संकेत या सबूत के रूप में घटनाएं,
उस अल्लाह के ज़रा भी सबूत के बिना
वास्तव में इसके पीछे है। ये कथन हैं
पूरी तरह से बिना मूल्य के क्योंकि:
    1. किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी न्यायोचित कह सकता है
    उसके भगवान के बारे में वही - शब्द हैं
    वह सस्ता।
    2. कोई भी भगवान इस तरह की घटनाओं का इस्तेमाल नहीं करेगा
    आगे स्पष्टीकरण के बिना सबूत,
    क्योंकि वह उन्हें खुद से जानता था
    अमान्य प्रमाण थे, और इससे भी अधिक
    क्योंकि वह जानता था कि आदमी जल्दी होगा
    पता करें कि चीजें कैसे काम करती हैं, और फिर वह
    संदेह के घेरे में आ जाएगा क्योंकि
    उसने अवैध सबूतों का इस्तेमाल किया - हॉलमार्क
    धोखेबाजों और धोखेबाजों से।
    **अपरिहार्य निष्कर्ष:
    कुरान द्वारा नहीं बनाया गया है**

8. कुरान में कई गलतियाँ हैं **एक सर्वज्ञ भगवान।**
   उस पर जो विश्वास किया उसके अनुसार
   जिसे हम अब कहते हैं, उसमें समय की सच्चाई थी
   मध्य पूर्व - ज्यादातर ग्रीक, फारसी पर आधारित
   और कुछ भारतीय विज्ञान। कोई भी भगवान
   जानते हैं कि यह गलत था, लेकिन मुहम्मद
   और उनके समकालीन नहीं। **तार्किक और
   अपरिहार्य निष्कर्ष: The
   कुरान किसी भगवान द्वारा नहीं बनाया गया है, लेकिन
   समय पर रहने वाले किसी व्यक्ति द्वारा
   मुहम्मद की - सबसे अधिक संभावना BY
   मोहम्मद स्व.**
9. बहुत सारे और इतने मौलिक हैं
   विशेष रूप से नए . के बीच मतभेद
   वसीयतनामा (= ईसाई) और कुरान, कि
   यह असंभव है कि दोनों धर्म हो सकते हैं

497

पेज 498

   एक ही भगवान जब तक कि वह सिज़ोफ्रेनिक न हो - और
   न मुसलमान, न यहूदी, न ईसाई
   स्वीकार करो उसे। **अपरिहार्य निष्कर्ष:
   अगर भगवान मानसिक रूप से बीमार नहीं है -
   सिज़ोफ्रेनिक - अल्लाह और
   भगवान/याहवे एक ही नहीं है
   भगवान।**
10. हम जोड़ सकते हैं कि अध्यायों के बारे में
   युद्ध के लिए उकसाना, युद्ध के बारे में (और विशेष रूप से
   चूंकि कमोबेश सब कुछ माना जाता है
   एक जिहाद), गुलामी के अध्यायों के बारे में और
   मानवीय संबंधों के बारे में को छोड़कर
   मुस्लिम पुरुष, और कुछ पहलुओं के बारे में
   इस्लामी कानून (f। उदा। एक आदमी अल्लाह के लिए गलत है अगर
   वह सही ढंग से बताता है कि एक महिला ने व्यवहार किया है
   अभद्रता से, लेकिन उसके पास 4 गवाह नहीं हैं, या
   कि एक महिला को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए
   अभद्रता अगर उसके साथ बलात्कार किया जाता है, लेकिन करने में असमर्थ
   4 पुरुष गवाहों को उसी कार्य के लिए पेश करें - नहीं
   उल्लेख करने के लिए कि चोरी / रॉबिन, बलात्कार,
   अल्लाह के नाम पर दमन, हत्या आदि
   "वैध और अच्छा") एक और 100% दें
   निष्कर्ष जो एक और **अपरिहार्य है
   निष्कर्ष: अगर वहाँ था A
   इसमें शामिल "उच्च शक्ति"
   कुरान का निर्माण, यह था
   एक परोपकारी भगवान नहीं।**

जब वे बहस करते हैं तो इस्लाम में अर्धसत्य और चेरी पिकिंग का उपयोग करने की प्रवृत्ति होती है। सर्वश्रेष्ठ होने के लिए
एक सही उत्तर खोजने का मौका, आपको हमेशा उन सभी वास्तविक तथ्यों का उपयोग करना होगा जिन्हें आप जानते हैं, और फिर
सख्त और सही तर्क का उपयोग करके निष्कर्ष निकालना। इस्लाम हमेशा से ऐसा ही करता है। बहुत गलत इस्तेमाल करना
उदाहरण के तौर पर ७ भौतिक आकाशों के कथन:

यह इस्लाम f को समझाने की कोशिश करता है। भूतपूर्व। कि पुराने अरब में "7" का अर्थ अक्सर "कई" होता था। यह हो सकता है या
सच नहीं हो सकता है, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह कुछ भी नहीं बताता है, क्योंकि "अनेक आकाश" उतना ही बुरा है जितना
"सात आकाश"। और वे अक्सर यह समझाने की कोशिश करते हैं कि मुहम्मद वास्तव में ब्रह्मांड का मतलब था
और फिर सभी आकाशगंगाएँ, आदि - ऐसी चीजें जिनका कुरान में कभी उल्लेख नहीं है और जिनके बारे में कभी कोई विचार नहीं था।
और वे समझाने की कोशिश करते हैं कि कुरान वास्तव में वातावरण में 7 परतों की बात करता है,
आयनोस्फीयर और मैग्नेटोस्फीयर - चीजें मुहम्मद के दिमाग से कहीं ज्यादा दूर हैं
अंतरिक्ष दूरबीन की पहुंच से बाहर। मेरे एक परिचित को वास्तव में an . से डांट पड़ी
नाराज मुस्लिम क्योंकि उन्होंने यह मानने से इनकार कर दिया कि मुहम्मद वास्तव में विज्ञान से बहुत आगे थे
जब उन्होंने ७ आकाश की बात की, जिसका अर्थ है वातावरण में ७ परतें जो अब विज्ञान अंत में है
की खोज की थी - "सब कुछ ठीक है" (चाहे सितारों को उनमें से सबसे कम पर तय न किया गया हो)

कुरान जैसी परतें कहती हैं, इस तरह के पड़ोस से उत्पन्न होने वाली पृथ्वी का तलना, आदि)

इस चर्चा में, इस्लाम ध्यान से यह उल्लेख करना छोड़ देता है:

1. सूरह 17 - द नाइट जर्नी - जहाँ
मुहम्मद बताता है कि वह एक पर्यटक यात्रा कर रहा है
7 आकाश के माध्यम से। यह नहीं हो सकता

इस संबंध में उल्लेख किया गया है, क्योंकि यह
गलती की पुष्टि करता है।
2. यह कि तारे सबसे निचले हिस्से में जुड़े हुए हैं
आकाश। इसका भी उल्लेख नहीं किया जा सकता है, यदि
किसी को भी बनाने का मौका होगा
सबसे मूर्ख या धार्मिक रूप से अंधे को छोड़कर
इसपर विश्वास करो।
3. हमारे सभी पठन में एक भी स्थान नहीं है
हम एक मुस्लिम/इस्लाम से मिले, जिसका उल्लेख है
सर्वविदित तथ्य है कि ग्रीक और फारसी और में
जहां तक हम वहां के भारतीय खगोल विज्ञान को भी जानते हैं
७ आकाश थे, और अरबों ने उन्हें प्राप्त किया
वहाँ से खगोल विज्ञान - एक बहुत ही आसान और 100%
में ७ स्वर्ग के लिए निश्चित व्याख्या
कुरान. लेकिन इसका उल्लेख नहीं किया जा सकता है,
क्योंकि कोई भगवान - सर्वज्ञ या नहीं - होगा
पृथ्वी से और से गलत खगोल विज्ञान का प्रयोग करें
पृथ्वी पर समय की एक विशिष्ट अवधि
कथन, "संकेत" और "प्रमाण"।

इस प्रकार की बौद्धिक बेईमानी शिक्षितों पर एक महान और नकारात्मक प्रभाव डालती है
पाठक खुले दिमाग रखने की कोशिश कर रहे हैं - ऐसा पाठक केवल एक ही चीज के साथ निष्कर्ष निकाल सकता है, वह यह है कि
मुसलमान इतने बेईमान हैं या इच्छाधारी सोच या धार्मिक अंधेपन से इस तरह के प्रभाव में हैं
- या नेता ठिठुरते हुए सत्ता के लिए जा रहे हैं - कि किसी भी बात पर विश्वास करना संभव नहीं है
वे कहते हैं, जब तक कि तुम्हारे पास बाहर से अच्छे प्रमाण न हों। - या कि वे बस इतने भोले हैं,
अशिक्षित या धार्मिक दृष्टि से अंधा। लेकिन: दोहराना और दोहराना और दोहराना कि सब कुछ
कुरान सच है, कई लोगों को भोले बना सकता है और इतने भोले-भाले लोग नहीं मानते कि ऐसा है, भी।
जोसेफ गोएबल्स को याद करें: "यदि आप एक झूठ को बार-बार दोहराते हैं, तो लोग उस पर विश्वास करने लगते हैं"
सत्य"।

मुसलमानों (और अन्य) के लिए जाँच और परीक्षण और बदलने की मनोवैज्ञानिक कठिनाइयाँ
किसी के गहरे विश्वास, समझने में आसान होते हैं। **लेकिन इसमें क्या तर्क है: विश्वास करना बेहतर है
हमारे पूर्वजों के धर्म में आँख बंद करके जिसे किसी ने कभी नियंत्रित नहीं किया है कि क्या है
सही या गलत। बेहतर - कोई फर्क नहीं पड़ता कि तथ्य क्या कहते हैं - की तुलना में यह पता लगाया जा सकता है कि यह वास्तव में है
गलत है और फिर किसी भी तरह से स्वर्ग की ओर नहीं ले जा सकता। यह खासकर अगर कहीं
एक सच्चा धर्म मौजूद है जिसे देखने के लिए आपको प्रतिबंधित किया गया है, और फिर आप जागते हैं
एक संभावित (?) अगले जीवन में गलत जगह।**

हमारा व्यक्तिगत बौद्धिक, गैर-धार्मिक मन बस आश्चर्य करता है: **क्या वास्तव में पूछना बेहतर नहीं है
सवाल करते हैं और आँख बंद करके अपने पिता के ईश्वर पर विश्वास करते हैं, जैसे मुसलमान करते हैं - और केवल पाते हैं
अगले जन्म में यह सच है या नहीं?**

**और अगर कुरान - और इस्लाम - बनाया गया है (f. पूर्व। एक मुहम्मद अनुयायियों द्वारा चाहते हैं और
इतने सारे नए धार्मिक नेताओं की तरह सत्ता (यह स्पष्ट है कि उन्हें सत्ता और महिलाएं पसंद थीं - और
रिश्वत के लिए पैसा/"उपहार") और/या मुहम्मद द्वारा शायद आंशिक रूप से एक बीमारी द्वारा शासित
(जैसे f. पूर्व TLE), वह सभी मुसलमानों को कहाँ छोड़ता है? - खासकर अगर वहाँ होना चाहिए
क्या एक और सच्चा धर्म हो सकता है जिसे इस्लाम अपने विश्वासियों को खोजने में बाधा डालता है?**

भाग II, अध्याय 2 (= II-2-0-0)

कुरान में अन्य प्रकार की गलतियाँ और त्रुटियाँ,
मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक। NS
"पूर्ण" सूची - "विश्वकोश" - सूरह पर आधारित
और पद संख्या

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें। धारा 1 से 16.

व्याकरण संबंधी गलतियाँ और कुरान में त्रुटियां - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों की किताब, इस्लाम और अल्लाह

व्याकरण संबंधी गलतियाँ कम से कम उतनी ही बुरी हैं जितनी कि पुस्तक में विदेशी शब्द, जितनी कि वे अधिक स्पष्ट हैं गलतियाँ हैं, लेकिन कुरान में विदेशी शब्दों के अध्याय का परिचय देखें (अध्याय II/3)। नीचे दिए गए उदाहरण पी। रफीकुल-हक्क और पी। न्यूटन से हैं: "कुरान: व्याकरण संबंधी त्रुटियां "(मुसलमानों द्वारा पसंद नहीं की गई एक पुस्तक, सिर्फ इसलिए कि इसमें गलतियों का दस्तावेज है कुरान, लेकिन किताब तीखी आलोचना के खिलाफ खड़ी है - और बदनामी)। लेकिन सावधान रहें कि हम भी इंटरनेट से कुछ नमूने लिए हैं, और इसलिए उनका उपयोग सावधानी से किया जाना चाहिए - और यदि आपको गलतियाँ मिलती हैं, कृपया हमें सूचित करें।

मुसलमान कह रहे हैं कि कुरान में व्याकरण संबंधी त्रुटियां नहीं हो सकतीं, क्योंकि अरब कुरान के साथ काम के दौरान व्याकरण विकसित किया गया था (एनबी: 650 ईस्वी के आसपास नहीं, बल्कि दौरान पुस्तक बनाने की अवधि - यानी लगभग 250 वर्षों के दौरान सी तक। 900 ई. जब कुरान को बहुत पॉलिश करने के बाद आखिरकार कुछ वैसा ही मिला जैसा आज है)। अर्थात् सच होने की संभावना है - लेकिन व्याकरण एक भाषा से बना है, किसी एक किताब से नहीं। प्लस: सम यदि उन्होंने व्याकरण संबंधी नियम बनाए हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि वे हमेशा उनका पालन करने में सक्षम थे।

यह भी सावधान रहें कि शब्द अरब अक्षरों से लिखे गए हैं - अलग-अलग लिप्यंतरणकर्ता हो सकते हैं ध्वनियों को थोड़ा अलग लिखें - एक सामान्य घटना जब कुछ लिखा जाता है किसी अन्य वर्णमाला वाली भाषा से।

१. २/१७७: आमन होना चाहिए तुममिनु।
२. २/१७७: आटा टुटु (२ बार) होना चाहिए।
3. 2/177: अकामा तुकीमुउ होना चाहिए।
४. २/१७७: सासबरीना साबिरुन होना चाहिए (क्योंकि वाक्य में इसकी स्थिति - तथा बहुवचन मर्दाना होना चाहिए)। में 5 गलतियाँ एक श्लोक।
5. 3/59: कुन फीकुनु कुन फेकाना होना चाहिए।

6. ४/१६२: मुकिमीइन (स्त्री बहुवचन) होना चाहिए

mukiimuun (मर्दाना बहुवचन - 7/160 देखें)।
7. 5/69: Saabbi'uuna Sabi'iina होना चाहिए। (= सबियन)।
8. 7/56: क़ारीबुन क़रीबा होना चाहिए।
9. 7/160: अस्बटन (स्त्री बहुवचन) होना चाहिए सेबटन (मर्दाना - मानव बहुवचन पुरुष हैं अरब)।
१०. २०/६३: हाज़ानी हाज़ायन होना चाहिए।
११. २१/३: 'असरू' असार होना चाहिए।
१२. २२/१९: 'इखतसमुउ' होना चाहिए 'इख्तासमा'।
१३.४१/११: अत'ईन को अत'एतैन होना चाहिए।
14. 49/9: 'इक-ततालु' होना चाहिए 'इकततालता।
15. 63/10: 'अकुन' अकुना होना चाहिए।
१६. ६३/२०: हदने (नाममात्र) होना चाहिए हडहैने (अभियोगात्मक)।
17. 91/5: मा को आदमी होना चाहिए।

और भी हैं लेकिन इससे पता चलता है कि व्याकरण संबंधी गलतियाँ हैं (ज्यादातर गिरावट) कुरान में - कई या कुछ बहुत ज्यादा मायने नहीं रखते, क्योंकि भगवान कोई गलती नहीं करता है। अली दशती के अनुसार: "तेईस साल: भविष्यवाणी के कैरियर का एक अध्ययन" मुहम्मद" कुरान में सामान्य अरब भाषाई से 100 से अधिक भिन्नताएं हैं नियम और संरचनाएं।

एक स्पष्ट निष्कर्ष: कुरान में सही और अच्छी अरब भाषा का इस्तेमाल एक के रूप में नहीं किया जा सकता है इस बात का सबूत है कि अल्लाह ने कुरान को उतारा, क्योंकि इसमें कई गलतियाँ हैं - पर इसके विपरीत: गलतियाँ यह साबित कर सकती हैं कि कोई भगवान शामिल नहीं था।

भाग II, अध्याय 3 (= II-3-0-0)

कुरान में अन्य प्रकार की गलतियाँ और त्रुटियाँ, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें। धारा 1 से 16.

कुरान में गैर अरब शब्द - मुहम्मद की पवित्र पुस्तक, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

कुरान बहुत जोर से जोर देता है कि यह शुद्ध और सही अरबी में लिखा गया है। आम तौर पर कुछ गैर-अरबी शब्दों का अर्थ बहुत अधिक नहीं होना चाहिए, लेकिन कुरान, इस्लाम और मुस्लिम दोनों के रूप में शुद्ध और सही भाषा को "चिह्न" / "प्रमाण" के रूप में जोर दें कि पुस्तक अल्लाह द्वारा बनाई गई है, यह गंभीर हो जाता है। एक सर्वज्ञ ईश्वर भाषा की शुद्धता को प्रमाण के रूप में प्रयोग कर रहा है लेखकत्व, एक भी गैर-अरबी शब्द का उपयोग नहीं करेगा - यह और भी अधिक है जैसा कि ज्यादातर मामलों में संबंधित अरब शब्द मौजूद थे। एक मुस्लिम "स्पष्टीकरण" (भाषाशास्त्र में निर्धारित)

[illegible] मुस्लिम "स्पष्टीकरण" की तरह
कुरान में गलतियों के संबंध में, यह बहुत ही तदर्थ है, और तीव्र द्वारा चिह्नित किया गया है
कुछ स्पष्टीकरण खोजने की आवश्यकता है, और इस तथ्य से कि यह केवल एक ही संभव था -
अच्छा है या नहीं उन्हें इसका इस्तेमाल करना है। भाषा - और "स्पष्टीकरण" - पर्याप्त शुद्ध नहीं है और
अल्लाह के अस्तित्व, मुहम्मद से उसके संबंध, या अल्लाह के लेखकत्व को साबित करने के लिए काफी अच्छा है।

शुद्ध अरब भी कुछ इस्लामी साहित्य के अनुसार स्वर्ग में बोली जाने वाली भाषा है
कुछ मुस्लिम संप्रदायों - विशेष रूप से अमद्दीज्जास - ने "साबित" किया है कि यह मूल भाषा भी है
पृथ्वी पर, मानो या न मानो।)

१२/२: "हमने (अल्लाह*) ने इसे अरबी कुरान के रूप में उतारा है - - -।"

१३/३७: "इस प्रकार हमने (अल्लाह *) ने इसे (कुरान*) में अधिकार का निर्णय होने के लिए प्रकट किया
अरबी।"

१६/१०३: "'यह एक आदमी है जो उसे (मुहम्मद*)' सिखाता है। (लेकिन*) उसी की जुबान की ओर इशारा करते हैं
(एक विद्वान विदेशी*) विशेष रूप से विदेशी है, जबकि यह अरबी, शुद्ध और स्पष्ट है"। प्रमाण है
अमान्य (भले ही शिक्षक एक विदेशी था, मुहम्मद की रीटेलिंग इस पर निर्भर करेगी)
मुहम्मद के शब्दों की पसंद), इसलिए भी कि भाषा "शुद्ध और स्वच्छ" नहीं है।

४१/४४: "दुर्भाग्य से उनके (गैर-मुस्लिम*) अभिधारणा के लिए (कि मुहम्मद के पास एक विदेशी था)
शिक्षक*), कोई भी संभावित मानव शिक्षक जिसके बारे में वे सोच सकते हैं, अरबी भाषा में गरीब होगा यदि
उनके पास वह सारा ज्ञान था जो कुरान पिछले रहस्योद्घाटन (बाइबल *) से प्रकट करता है। अलग
उस से, यहां तक कि सबसे वाक्पटु अरब भी, के साथ कुछ भी पैदा नहीं कर सकता था और नहीं कर सकता था
कुरान की शिक्षा की वाक्पटुता, चौड़ाई और गहराई, मानो किताब की हर आयत से स्पष्ट हो
(कुरान*)"।

खैर, भाषा यहाँ भी कुछ साबित नहीं करती है, क्योंकि यह "शुद्ध और स्वच्छ अरब" नहीं है और जैसा कि इसमें है
मामला मुहम्मद की पसंद के शब्दों का था जो फैलाए गए थे, संभावित शिक्षक के नहीं। (भी;
वास्तव में कुरान बाइबिल के बारे में ज्यादा ज्ञान नहीं दिखाता है, लेकिन गैर-
बाइबिल की किंवदंतियाँ और किस्से जो अरब में प्रचलित और लोकप्रिय थे - और उससे आगे - के समय
मुहम्मद. एक शिक्षक जो वास्तव में बाइबिल जानता था, उसने कुरान को बहुत अलग तरीके से बताया था। NS
कविता कुछ भी साबित नहीं करती है।)

यहाँ यह भी याद रखने योग्य है:

1. पुराने अरब वर्णमाला में केवल था
   व्यंजन - यह आज भी स्पष्ट नहीं है कि क्या है
   कई वाक्यों का वास्तविक अर्थ।

2. पुराने अरब वर्णमाला में अंक नहीं थे
   ("विशेषक चिह्न") बाद में चिह्नित करने के लिए उपयोग किया जाता है
   विभिन्न पत्र।
3. पुरानी अरब वर्णमाला में निशान नहीं होते थे
   पूर्ण विराम या अल्पविराम की तरह - भले ही कई a
   मुस्लिम आज दावा करते हैं कि का हाफ्स संस्करण
   कुरान वह पढ़ रहा है - या हो सकता है
   युद्ध संस्करण अगर वह अफ्रीका से है - एक है
   मुहम्मद के शब्दों की सटीक प्रति "नीचे तक"
   अंतिम अल्पविराम ”।
4. लिखित अरब भाषा और वर्णमाला थी
   सीए तक पूर्ण नहीं। 900 ई. - उत्तम
   650 ईस्वी के आसपास लिखना असंभव था जब
   आधिकारिक कुरान बनाया गया था।

लेकिन फिर भी एक किताब में आयातित शब्दों का प्रयोग, एक के रूप में परिपूर्ण अरब भाषा का उपयोग करने की कोशिश कर रहा है
दैवीय उत्पत्ति का प्रमाण, बताता है कि यह किसी सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा नहीं बनाया गया है - उसने ऐसा नहीं बनाया था
गलतियां।

हम इस बात पर जोर देते हैं कि निम्नलिखित नमूने आंशिक रूप से इंटरनेट से लिए गए हैं, क्योंकि हमारे अरब तक नहीं है

वह मानक। इसलिए इसे सावधानी से इस्तेमाल किया जाना चाहिए, और अगर आपको गलतियां मिलती हैं, तो कृपया हमें सूचित करें।
यह केवल एक स्वाद के रूप में है - विशेषज्ञों के अनुसार और भी बहुत कुछ है:

1. **अकादियन** :
२. आदम = मनुष्य या मानव। सही अरबी
 शब्द: बशरन या पागल।
3. ईडन = बगीचा। सही अरब शब्द: जनना।
4. **अरामी** :
5. क़ियामा = पुनरुत्थान।
6. **असीरियन** :
7. अब्राहम/इब्राहिम - एक नाम। सही अरबी
 समकक्ष: अबू रहीम।
8. **मिस्र** :
9. फिरौन = राजा या शक्तिशाली (एक उपाधि भी)।
 कुरान में 84 बार इस्तेमाल किया।
10. **इथियोपिक** :
11. मलक = फरिश्ता (2/33)
12. **ग्रीक** :
13. इब्लीस - ग्रीक शब्द डायबोलोस का भ्रष्टाचार
 = शैतान।
14. इंजिल - ग्रीक शब्द का भ्रष्ट होना
 eua (n) ggelion = इंजील. सही।
15. **हिब्रू:**
१६. अहबर = शिक्षक।
17. दरसा = का गहरा अर्थ खोजने के लिए
 शास्त्रों का सटीक और गहन अध्ययन।
१८. फुरकान (सिरिएक, pwrqn में भी प्रयुक्त) = to
 मुक्त करो, मोक्ष।

503

पेज 504

19. इस्सा या ईसा = एसाव (कुलपति का भाई)
 जैकब)। कुरान कहता है कि इसका मतलब यीशु है।
 यीशु के लिए सही अरब: येशुवा।
20. जहन्नम (गेहिन्नोम या गेहन्ना) =
 मूल रूप से हेनोम या हिनोमो की घाटी
 जेरूसलम के पास, पैगनो के लिए तीव्रता से उपयोग किया जाता है
 (बाल) आग में बलिदान, और इसलिए बाद में
 नरक को नाम दिया।
21. जन्नतु अदन = स्वर्ग, ईडन का बगीचा
 (आज विज्ञान द्वारा माना जाता है कि
 दक्षिण इराक - अगर यह कभी अस्तित्व में था)।
22. मलकुट = शासन, अल्लाह / ईश्वर का देश।
 एनबी: कोई मूल अरब शब्द -ut के साथ समाप्त नहीं होता है।
२३. मसानी = दोहराव।
२४. मौन = अभयारण्य खोजना ।
25. रब्बानी = शिक्षक।
26. सब्त = विश्राम का दिन (सब्त)।
27. सकीनात = अल्लाह/ईश्वर की उपस्थिति।
28. तबुत = सन्दूक।
29. तघुत = भूल।
30. ओराह (तौरात) = यहूदी पवित्र ग्रंथ, थे
 टोरा।
31. तुफान = प्रलय
32. इब्रानी शब्द भी हैं जैसे; हेबर,
 सकीना, मून, तुरत, जहानीम।
33. **फारसी:**
३४. फिरदौस = उच्चतम या ७. स्वर्ग । सही
 अरब: जन्नत।
३५. हारूट या हारुत = फरिश्ता के लिए फारसी नाम।

"सारांश" भी देखें।

३६. हूर = शिष्य। सही अरब: तिलमीत।
37. जिन्न = अच्छा या बुरा दानव। सही अरब: रूह।
38. मारूट या मारुत = फरिश्ता का फारसी नाम। वास्तव में हवा के हिंदू देवता हो सकते हैं।
39. सीरत = पथ। सही अरब: अल्तारीक।
४०. **सिरिएक** (पूर्वी में प्रयुक्त होने वाली लिटर्जिकल भाषा) ईसाई चर्च - अरामी से व्युत्पन्न)।
41. 2/50 फुरकान (मूल हिब्रू?) - से pwrqn, सिरिएक = मोक्ष।
४२. ५२/२९ कहिन - ख़ान से, सिरिएक = "पुजारी" - अर्थ एक मूर्तिपूजक भविष्यवक्ता या डिवाइनर (६९/४७)।
४३. ३/४५ माशीह = "मसीह"।
४४. ५७/१२ मुहायमिन - भजन से', सिरिएक = "वफादार"।
45. 21/87 नून - (योना (यूनुस) के लिए प्रयुक्त शीर्षक), nwn से, सिरिएक = "मछली"।
46. 2/85 क़ियामा - qymt से, सिरिएक = "जी उठने"। (भी २/११३, कई बार)।

504

पेज 505

४७. ५/८५ qissiis - qshysh से, सिरिएक = "ईसाई पुजारी"।
४८. ४/८५ कुरान - क़्यर्न से, सिरिएक = "शास्त्रीय" पाठ" या "पढ़ना"। (भी कई अन्य स्थान)।
४९. ३/७३ रब्बीनिक - आरबीएन से, सिरिएक = "परसेप्टर, चिकित्सक।" (भी ५/४८, ५/६८)।
५०. १६/१०२ रुह अल-कुदुस, rwh.qwdsh' से, सिरिएक = "पवित्र आत्मा"।
51. 20/80 तूर - t.wr' से, सिरिएक = "पर्वत"।

सिरिएक शब्द भी हैं जैसे; टैबूट, टैग हूट, जकात, मालकाउट।

अध्याय II/3 के लिए पोस्ट स्क्रिप्ट:

जैसा कि ऊपर कहा गया है, और भी हैं - और अन्य देशों से भी। अल सुयुति खुद 107 . सूचीबद्ध करता है कुरान में विदेशी शब्द। आर्थर जेफ़री जैसा विशेषज्ञ लगभग 275 शब्द कहता है।

यह एक निराश होना चाहिए कि "कुरान" शब्द भी एक अरब शब्द नहीं है, बल्कि सिरिएक से है।

एक स्पष्ट निष्कर्ष: **पुस्तक में एक स्पष्ट और शुद्ध अरब भाषा का उपयोग एक के रूप में नहीं किया जा सकता है इस बात का सबूत है कि अल्लाह ने कुरआन उतारा (- इसके बावजूद कुछ मुसलमान कहते हैं कि अरब वह भाषा है जिसका प्रयोग स्वर्ग में किया जाता है)। इसके विपरीत: गलतियाँ हो सकती हैं विपरीत इंगित करें।**

भाग II, अध्याय 4 (= II-4-0-0)

कुरान में अन्य प्रकार की गलतियाँ और त्रुटियाँ, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें। धारा 1 से 16.

एनिमिज़्म और एंथ्रोपोमॉर्फ़िज़्म
कुरान में - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

(एनिमिज़्म = मृत पदार्थ देना और पौधों को जानवरों के समान गुण देना। एंथ्रोपोमॉर्फ़िज़्म = मृत देना पदार्थ, पौधे या जानवर मानव जैसे गुण - अक्सर केवल आध्यात्मिक गुण। दोनों हैं आदिम और/या मूर्तिपूजक धर्मों और लोगों के लिए विशिष्ट)।

505

पेज 506

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

जीववाद और मानवरूपता को धर्मों के भीतर सबसे आदिम विशेषता माना जाता है। जीववाद का अर्थ है कि किसी का मानना है कि लकड़ी या पत्थर आदि जैसी निर्जीव वस्तुओं के पास है या है जीवन और मन और विचारों जैसे जानवरों (इसलिए नाम) या मनुष्यों या यहां तक कि विचारों में बसा हुआ है भगवान का। एंथ्रोपोमोर्फिज्म समान है, लेकिन निर्जीव पदार्थ देता है, पौधों और जानवरों को मानव-जैसे लक्षण - और सोचने के तरीके - ज्यादातर।

कुरान में कुछ ऐसे स्थान हैं जहां जीववाद स्पष्ट है - पहाड़ या आकाश या अन्य चीजें अल्लाह से होशपूर्वक बोलना या प्रतिक्रिया करना - या अल्लाह की स्तुति करना। हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं - और अंधविश्वास के अगले चरण में से कुछ को भी शामिल करें: पशु व्यवहार, सोच और/या मनुष्यों की तरह बोलना - जानवरों का मानवीकरण (मानवरूपता)।

०१ १९/९०-९१ "मानो आकाश फटने के लिए तैयार है, पृथ्वी अलग हो जाएगी, और पहाड़ पूरी तरह से बर्बाद हो जाना। कि वे (ईसाई*) (अल्लाह) के लिए एक बेटे का आह्वान करें (यहोवा/परमेश्वर*) - - -।" इस प्रकार इस दावे के संबंध में अविश्वास प्रकृति में होगा कि यीशु ईश्वर का पुत्र है।

002 21/79: "- - - यह हमारी (अल्लाह की *) शक्ति थी जिसने पहाड़ियों और पक्षियों को हमारा जश्न मनाया (अल्लाह की) स्तुति - - -।" पहाड़ियां कोई भावना या कुछ भी व्यक्त नहीं करती हैं - वे पूरी तरह से निर्जीव हैं। पक्षी? पुराने समय में धार्मिक लोग दावा करते थे कि वे भगवान - या अल्लाह या देवताओं की स्तुति करने के लिए गाते हैं। लेकिन विज्ञान लंबे समय से पाया गया है कि उनके गीतों के कारण अधिक नीरस हैं - बहुत बार घोषित करने के लिए उनका क्षेत्र या साथियों को आकर्षित करना। इसके अलावा उनके पास अमूर्त सोच के लिए दिमागी शक्ति नहीं है जैसे किसी भगवान की स्तुति करना। एक श्लोक में जीववाद और एंटोपमोर्फिज्म।

००३ २२/१८: "- - - अल्लाह की पूजा में झुक जाओ जो सब कुछ स्वर्ग में है (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी पर - सूरज, चाँद, तारे, पहाड़ियाँ, पेड़ और जानवर - - -। ए बहुत सारी जीववाद + निर्जीव चीजों का भी अवतार। बुरा नहीं। " का संदेश कुरान" (टिप्पणी 22) इस बात पर भी जोर देता है कि यह "अल्लाह की इच्छा के तहत सचेत अधीनता" है। बिल्कुल भी बुरा नहीं-खासकर निर्जीव पदार्थ के लिए नहीं।

००४ ३३/७२: "हमने (अल्लाह*) ने वास्तव में (सामग्री*) को ट्रस्ट (इस्लाम/कुरान) की पेशकश की थी। आकाश और पृथ्वी और पर्वत; परन्तु उन्होंने डरकर इसे करने से इन्कार कर दिया उसके - - -।" भयभीत सूरज और ग्रह और पहाड़ ??? धर्म के लिए भी बुरा नहीं - जैसे परियों की कहानियों में।

००५ ४१/११: "उन्होंने (आकाश और पृथ्वी*) ने कहा: 'हम (एक साथ) आते हैं, इच्छा से आज्ञाकारिता। " वे न केवल सोच रहे हैं और जवाब दे रहे हैं; उनमें इच्छा और आज्ञाकारिता भी है।"

006 59/21: "अगर हम (अल्लाह*) ने इस कुरान को पहाड़ पर उतारा होता, तो तुम (मुसलमान*) अल्लाह के डर से उसे खुद को विनम्र और खुद को अलग करते हुए देखा होता"। चट्टानें नहीं जो हो रहा है उसे केवल समझते हैं, लेकिन डरते भी हैं।

007 62/1: "आकाशों और धरती पर जो कुछ भी है, वह अल्लाह की प्रशंसा और महिमा की घोषणा करता है" - - -"। वास्तव में जो कुछ भी मौजूद है उसका दिमाग अल्लाह की स्तुति करने में सक्षम है?

008,64/1: "जो कुछ आकाशों और धरती पर है, वह अल्लाह की स्तुति और महिमा की घोषणा करता है"
- - -"| नंबर 62/1 ठीक ऊपर सीमिटेड है।

अध्याय II/4 के लिए पोस्ट स्क्रिप्ट।

कुरान को पढ़ो और तुम ऐसे और भी पाओगे - बहुत ज्यादा नहीं, लेकिन बहुत ज्यादा। यह बताता है
धर्म कितना उन्नत या आदिम है, इस बारे में महासागर, कि यह आदिम पर भी संचालित होता है
जीववाद और मानवरूपता के स्तर।

भाग II, अध्याय 5 (= II-5-0-0)

कुरान में अन्य प्रकार की गलतियाँ और त्रुटियाँ, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।

**(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ,
विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र
मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण
कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)**

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें।
धारा 1 से 16.

बाइबिल में मुहम्मद? - दावे कुरान में कुरान में - The मुहम्मद की पवित्र पुस्तक, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

(हम धार्मिक लोग नहीं हैं, लेकिन इस अध्याय में हम बहस करने में सक्षम होने के लिए बाइबिल पर निर्माण करते हैं
मुसलमानों के साथ और इस्लाम के साथ जो इन विषयों पर सब कुछ उस की विश्वसनीयता पर बनाता है
पुस्तक - सिवाय जब वे पूर्व-निर्धारित उत्तर चाहते हैं, क्योंकि यदि नहीं तो बाइबिल अविश्वसनीय है
और नकली।)

स्वघोषित "भविष्यद्वक्ताओं" के लिए नए संप्रदायों या धर्मों को शुरू करने की कोशिश करना असामान्य नहीं है
विहित ग्रंथों से खुद को जोड़कर खुद को वैध बनाना। हो सकता है कि
मुहम्मद ने भी किया। उन्हें विद्वान पुरुषों से जोड़ने वाली कहानियां हैं, और यह होने की कोशिश की जाती है
इस बात के प्रमाण के रूप में उपयोग किया जाता है कि वह भविष्यद्वक्ताओं के यहूदी उत्तराधिकारियों में एक नबी है। और निश्चित रूप से अगर
वह बाइबिल में अंकित है (जिसे कुरान इंगित करता है) जो उसके लिए एक उत्कृष्ट प्रमाण होना चाहिए
वैधता और भूले नहीं: कुरान सच में कहता है-कई जगहों पर-उसका ज़िक्र है
बाइबिल, और फिर इस्लाम को उसे वहां खोजना होगा, क्योंकि उनके पास उसकी वैधता का कोई प्रमाण नहीं है
और एक ईश्वर से जुड़ाव - केवल उसके अपने शब्द। लेकिन इसलिए भी क्योंकि कुरान में गलतियों का मतलब है
कि मुहम्मद और धर्म दोनों में कुछ गड़बड़ है। (यह एक मुख्य कारण है
इस्लाम कुरान में कोई गलती स्वीकार नहीं कर सकता - गलती कितनी भी स्पष्ट क्यों न हो इस्लाम
इसे दूर करने की कोशिश करता है, भले ही कई "स्पष्टीकरण" सर्वथा दयनीय हों।)

कुरान में दो स्थान जो सबसे स्पष्ट रूप से कहते हैं कि बाइबिल में उनकी भविष्यवाणी की गई है:

सूरह ७/श्लोक १५७:

"जो लोग रसूल (मुहम्मद*) का अनुसरण करते हैं, जो अनपढ़ पैगंबर हैं, जिन्हें वे पाते हैं
अपने स्वयं के (शास्त्रों) में उल्लिखित - कानून में (ओटी के पहले 5 भागों को अक्सर कहा जाता है
"कानून" भले ही कानून केवल इसका एक छोटा सा हिस्सा है*) और सुसमाचार (के पहले 4 भाग)
एनटी*) - - -।" और:

सूरह ६१/श्लोक ६:

"- - - मरियम के पुत्र यीशु ने कहा: 'हे इस्राएल के बच्चों! मैं अल्लाह का रसूल (भेजा) हूँ
तुम, मेरे सामने कानून (जो आया) की पुष्टि करते हैं, और एक की खुशखबरी देते हैं
मेरे बाद आने वाला दूत, जिसका नाम अहमद होगा (नाम का दूसरा संस्करण)
मुहम्मद*) - - -।"

इस्लाम को दो कारणों से बाइबिल में भविष्यवाणी खोजने की जरूरत है:

1. एक एकल मौजूद नहीं है
   दस्तावेज या उसके लिए कोई अन्य प्रमाण
   मुहम्मद का किसी ईश्वर से कोई संबंध था -
   केवल उसके शब्द हैं। और मुहम्मद
   के बावजूद कोई संत या विश्वसनीय सज्जन नहीं थे
   इस्लाम जिस चमकदार तस्वीर को चित्रित करने की कोशिश करता है -
   वह आदमी जिसने अल-तकिया को वैध ठहराया (the
   वैध झूठ) और अपने अनुयायियों को तोड़ने की सलाह दी
   उनके जई यदि वह एक बेहतर परिणाम देगा, is
   बहुत विश्वसनीय नहीं। में उसके बारे में एक भविष्यवाणी
   बाइबल दृढ़ता से कुछ संकेत देगी।
2. **और: अगर उसके बारे में कोई भविष्यवाणी नहीं है
   ओटी और एनटी दोनों में इसका मतलब है कि
   कुरान में गंभीर गलतियां हैं,
   और इसे बनाया/भेजा नहीं जा सकता था
   नीचे / एक भगवान द्वारा स्वर्ग में पूजनीय - - - और
   अगर कोई अल्लाह शामिल नहीं है, तो इस्लाम एक है
   धर्म बनाया और मुहम्मद अ
   धोखेबाज और धोखेबाज।**

इस वजह से उन्हें ओटी और एनटी दोनों में उसके बारे में भविष्यवाणियां ढूंढनी पड़ती हैं - चाहे कैसे भी! -
यह पता लगाने की कोशिश करने की तुलना में गलत और गलत तर्कों पर इस्लाम में विश्वास करना बेहतर है
कुरान सच है या नहीं।

बाइबिल में केवल दो स्थान हैं मुस्लिम विद्वान वास्तव में कुछ भी साबित करने की कोशिश करते हैं: कि
शब्द "भाई" 5. Mos. १८/१५ और १८/१८ का अर्थ है "अरब" (यहूदियों के भाई), और वह
यीशु के शब्द कि प्रेरितों को यूहन्ना के बाद सुसमाचार में एक सहायक के रूप में पवित्र आत्मा मिलेगा
वास्तविकता ६०० साल बाद मुहम्मद के बारे में एक भविष्यवाणी थी। और भी बिंदु हैं, लेकिन वे
मुस्लिम विद्वान भी मानते हैं कि वे कमजोर हैं, और वे ज्यादातर मुसलमानों और अन्य लोगों के लिए उपयोग किए जाते हैं
बाइबल, ऐतिहासिक तथ्यों और शामिल धर्मों के बारे में बहुत कम वास्तविक ज्ञान के साथ।

जो बात पूरी तरह से निश्चित है, वह यह है कि बाइबल में कहीं भी ऐसी भविष्यवाणी नहीं है जो स्पष्ट रूप से भविष्यवाणी करती हो
कि मुहम्मद आने वाला है। और एक और तथ्य जो इतना स्पष्ट है कि कोई स्पष्ट नहीं है
पैगंबर के बारे में भविष्यवाणी (प्रति परिभाषा मुहम्मद कोई पैगंबर नहीं है - के बारे में अध्याय देखें)

मुहम्मद) अरब या उस क्षेत्र के किसी अन्य देश से। कोई स्पष्ट संकेत भी नहीं हैं
इन दो चीजों में से किसी के बारे में।

कुछ बिंदु शेष रह जाते हैं जहां - कल्पना को थोड़ा या बहुत खींचकर - यह है
यह कहा जा सकता है "यदि हम इसे और इस तरह से समझते हैं, तो इसे इस तरह समझा जा सकता है और"
यह, और इसका मतलब यह हो सकता है कि हम मुहम्मद को इस पाठ में देख सकते हैं - कम से कम शायद"। अब तक

तर्क उचित है - लेकिन याद रखें कि यह अभी भी केवल एक दावा है।
लेकिन फिर क्या होता है कि वे "यह एक संभावना है" का दावा करने से यह दावा करने से कूद जाते हैं
"यह एक तथ्य है" बिना किसी और सबूत, दस्तावेज या संकेत के - तार्किक रूप से पूरी तरह से
अमान्य कदम, निश्चित रूप से दावा किए गए निष्कर्ष को तार्किक रूप से अमान्य बनाता है। हम तीन देखते हैं
इस तार्किक बकवास के कारण:

1. इस्लाम और उसके मुसलमान दुविधा में हैं/हैं: जैसा कि कहा गया है ऊपर: अगर वे मुहम्मद को नहीं पाते हैं कुरान की तरह बाइबिल स्पष्ट रूप से और भी बहुत कुछ कहता है लोगों की तुलना में, कुछ गड़बड़ है कुरान, और फिर यह एक भगवान द्वारा नहीं बनाया गया है, और तो मुहम्मद - इच्छुक या अनिच्छुक - is धोखा दिया (अंधेरे बलों द्वारा कपड़े पहने हुए) एंजेल गेब्रियल? - या टीएलई जैसी बीमारी से?) या धोखेबाज और इस्लाम बना हुआ धर्म।
2. किसी धर्म में "सुरक्षित" रहना कहीं बेहतर है एक भ्रम हो सकता है, यह जांचने के लिए कि क्या यह है सच है या नहीं - भले ही यह एक और तथ्य है कि अगर यह गलत है, हो सकता है कि इसका पता लगाना बेहतर हो यह जीवन और खोजने की संभावना है a सच्चा धर्म (यदि ऐसा कोई मौजूद है), तो . से किसी ऐसी चीज में जागना जो उससे बहुत दूर हो एक संभावित अगले जीवन में मुस्लिम स्वर्ग।
3. किसी व्यक्ति के लिए इसका सामना करना बहुत कठिन होता है मौलिक तथ्य (किसी भी प्रकार का) जो आप जीवन और आगे में एक आधारशिला के लिए लिया है जिसे आपने आंशिक रूप से या पूरी तरह से बनाया है आपका जीवन - चीजें जो आपने स्वयं के लिए ली हैं- आपके पूरे जीवन के लिए स्पष्ट तथ्य, सिर्फ इसलिए कि यह वही था जो आपके माता-पिता और अन्य लोग थे अपने आसपास विश्वास किया। नैतिक रूप से, नैतिक रूप से और बौद्धिक रूप से गलत - - - लेकिन आसान। उद्धरण के लिए "कुरान का संदेश" एक बार फिर (में यह मामला स्वीडिश से अनुवादित है): "क्योंकि इसमें से कोई सोचता है कि यह तथ्य की बात है कि ये भौतिकवादी विचार बस मान्य हैं और केवल इसलिए कि यह वही है जो पुराने हैं विश्वास किया, और प्रत्येक नई पीढ़ी बिना सवाल पूछे बिना आलोचनात्मक रूप से स्वीकार करता है, उनके पूर्वजों की मान्यताओं के लिए। यह तथ्य - - - नैतिक रूप से गलत (या इससे भी बदतर) की ओर इशारा करता है एक नैतिक या बौद्धिक दावे को इस रूप में स्वीकार करना है इसके अलावा किसी भी अन्य आदर्श/कारण के बिना सच है

509

पेज ५१०

इसे पहले सच के रूप में देखा गया है पीढ़ी"। (टिप्पणी 66 से सूरह 28)।

4. मुसलमानों को शायद ही कभी आलोचनात्मक और में प्रशिक्षित किया जाता है तार्किक सोच - के लिए बहुत खतरनाक धर्म और बहुतों के लिए बहुत खतरनाक राजनीतिक शासन। इस वजह से उनके तरीके सोच कभी-कभी खतरनाक होती है और गलत - बस देखें कि कैसे साजिश के सिद्धांत अधिकांश मुस्लिम देशों में फल-फूल रहे हैं और क्षेत्रों, और "हो सकता है" के रूप में नहीं बल्कि "निश्चित तथ्यों" के रूप में।

यहाँ कुछ सिद्धांत दिए गए हैं कि बाइबिल में मुहम्मद को कहाँ खोजा जाए - व्यवस्था की गई
बाइबिल में जहां बिंदु दिखाई देते हैं उसके अनुसार। (हम नए अंतर्राष्ट्रीय संस्करण का उपयोग करते हैं - एनआईवी
- क्योंकि यह सबसे नया अनुवाद है और इसके परिणामस्वरूप सबसे विश्वसनीय होने की संभावना है, जैसे
विज्ञान हर साल पुरानी भाषाओं के बारे में थोड़ा और सीखता है)।

पुराना नियम (ओटी)।

उत्पत्ति (१. मो.) १७/२०:

“इश्माएल, मैं (यहोवा*) ने तुम्हारी (इब्राहीम*) सुनी है: मैं उसे फलदायी बनाऊँगा और
उसकी संख्या में बहुत वृद्धि करें। वह बारह शासकों का पिता होगा, और मैं उसे एक बना दूँगा
महान राष्ट्र"। इसे कुछ मुसलमान मुहम्मद और महान के बारे में पहली भविष्यवाणी कहते हैं
अरब राष्ट्र। लेकिन वे यह उल्लेख करना छोड़ देते हैं कि यह भविष्यवाणी पहले ही एक जोड़े को पूरी हो चुकी थी
पीढ़ियों के बाद के रूप में 1. Mos.25/13 - 16 में बताया गया: "इश्माएल के पुत्रों के नाम ये हैं,
उनके जन्म के क्रम में सूचीबद्ध: - - - (12 नाम*) - - -। इश्माएल के ये पुत्र थे, और
बारह कबीलों के शासकों के नाम उनकी बस्तियों और डेरों के अनुसार ये हैं।”
(कुछ अनुवादक शासकों के बजाय राजकुमारों और जनजातियों के बजाय राष्ट्र कहते हैं।)

खैर, ये हैं १२ शासक और महान राष्ट्र- १२ कबीलों का मतलब सत्ता में बहुत कम है
आबादी वाली भूमि। लेकिन मुसलमान इसमें मुहम्मद को कैसे देख पाते हैं, यह हमें पता नहीं चला।

उत्पत्ति (१. मो.) २१/२१:

"जब वह (इश्माएल*) पारान के रेगिस्तान में था, उसकी माँ ने उसके लिए मिस्र से एक पत्नी लाई"।
पारान सिनाई प्रायद्वीप पर है। लेकिन मक्का के पास उस नाम की एक जगह भी है (ठीक है,
वास्तव में यह फरान है, परान नहीं, लेकिन इस्लाम मुख्य रूप से इसे पारन कहने के लिए बदल गया है
कारण - और वे शायद ही कभी इसका उल्लेख करते हैं) - और मुसलमान यह नहीं कहते कि शायद यह था
इस पारान के बारे में बाइबल बोलती है। वे केवल यह घोषणा करते हैं कि नाम साबित करता है कि यह यह जगह थी,
और सिनाई में पारान के बारे में बात करने का कोई कारण नहीं है। यह स्पष्ट करने जैसा है कि स्टालिन में
उसकी सारी क्रूरता एक अमेरिकी थी क्योंकि संयुक्त राज्य अमेरिका में मास्को नाम का एक शहर है (वहां वास्तव में .)
है)।

लेकिन जब वे बाइबल और १. मूसा का हवाला देते हैं। और इसे "सबूत" के लिए उपयोग करें, यह बेईमानी की सीमा है
कुछ बहुत ही अरुचिकर है जिसका उल्लेख भी नहीं करना चाहिए 1. Mos. २५/१८: “उसके (इश्माएल के) वंशज
हवीला से शूर तक के क्षेत्र में, जो मिस्र के सिवाने के पास है, और तुम अश्शूर की ओर जाते हो।”
जो एक बहुत ही प्राकृतिक जगह थी, क्योंकि इश्माएल की माँ हाजिरा मिस्र की रहने वाली थी। इसे भी बनाया
उसके लिए अपने बेटे के लिए मिस्र से पत्नी ढूंढना आसान है, जैसा कि बाइबल बताती है कि उसने किया - जबकि गहरा
अरब प्रायद्वीप के अंदर, यह एक और काम था।

510

पेज 511

बाइबिल - जिसे मुसलमान स्वयं इस मामले में गवाह के रूप में उपयोग करते हैं - यहाँ से साबित होता है
उतनी ही ताकत कि इश्माएल, उसकी मां और उसके वंशज का मक्का से कोई लेना-देना नहीं था
अरब। **वे मिस्र की सीमा के पास सीनै बनियान में रहते थे। (की सीमा के निकट होना
मिस्र, इसे सिनाई के पश्चिमी भाग में होना था)। दरअसल इससे एक और सबूत भी मिलता है-
एक स्रोत और बाइबिल में एक जगह से जिसे मुसलमान स्वयं एक निर्णायक के रूप में उपयोग करते हैं
गवाह - इसके लिए हाजिरा और इश्माएल के रहने के बारे में सभी कहानियां - और इब्राहीम
वहाँ जाने के लिए - मक्का, बस एक बनी हुई कहानी है। यह इस तथ्य पर भी फिट बैठता है कि इब्राहीम के लिए
लंबे समय तक सिनाई में उसी बाइबिल के अनुसार रहते थे जिसका इस्लाम यहाँ उपयोग करता है a
दावा किया गया सबूत और यह यथोचित रूप से माउंट के पास है। सिनाई में परान।**

व्यवस्थाविवरण (= 5. राज्यमंत्री) १८/१५ और १८/१८:

ध्यान दें: यह इस्लाम के अनुसार दो "भारी" बिंदुओं में से एक है - ओटी में एकमात्र "भारी"।
(दूसरा NT में पवित्र आत्मा के बारे में है)

ये दोनों - 5. मो. १८/१५ और १८/१८ - वास्तव में समान और समान हैं, और हम व्यवहार करेंगे
उन्हें इस तरह (इस्लाम ऐसा ही करता है)। १८/१५ में यहोवा ने मूसा के द्वारा यहूदियों से कहा: "प्रभु!
तेरा परमेश्वर तेरे (यहूदियों*) में से मेरे (मूसा*) जैसा नबी तेरे लिए खड़ा करेगा
भाई बंधु। आपको उसकी बात सुननी चाहिए ”। १८/१८ में यहोवा ने मूसा से कहा: "मैं उनके लिए उठूंगा
(यहूदी*) उनके भाइयों में से तुम्हारे समान एक भविष्यद्वक्ता है, और वह उन्हें सब कुछ बता देगा
उसे आज्ञा दें।"

इस्लाम के अनुसार दो केंद्रीय भाव हैं, "आपके / उनके भाई" और "एक नबी जैसा"
आप (मूसा*)"। हम एक समय में एक बिंदु लेते हैं:

"- - - आपके/उनके भाई - - -"।

इस्लाम और अधिकांश/सभी मुसलमान दावा करते हैं कि यह लाक्षणिक भाषण है (सही) और इसे इंगित करना चाहिए
मुहम्मद, क्योंकि वह (होने का दावा करता है - मुहम्मद के बारे में अध्याय देखें) का दावा किया जाता है कि वह एक है
वंशज - यहां तक कि एक प्रत्यक्ष वंशज (बिना किसी मामूली के इस्लाम के लिए सामान्य)
दस्तावेज़ीकरण) - अब्राहम और इश्माएल - इसहाक के भाई - और वह अरब क्योंकि
वे (होने का दावा करते हैं) इश्माएल के वंशज यहूदियों के भाई हैं
इसहाक) - "यह एकमात्र संभव अर्थ है"। परंतुः

1. भाई (भाई)/भाई/भाईचारा शब्द है
आलंकारिक अर्थ में प्रयुक्त कम से कम 255
बाइबिल में बार - लगभग 19 बार शामिल हैं
5.Mos में। (ऐसे तथ्य जिनका शायद ही कभी उल्लेख किया गया हो
और मुसलमानों द्वारा कभी नहीं)। वे -
भाई (भाई)/भाई/भाईचारा - हमेशा
विशिष्ट समूहों के बारे में बोलें, (और केवल के साथ
एक सीमा रेखा का मामला - NT में a . हैं
कुछ जगह जहां पूरी दुनिया शामिल है
(मनुष्य के रूप में - और संभावित ईसाई के रूप में)) -
ओटी में यहूदियों और ईसाइयों और/या यहूदियों के बारे में
एनटी में।
2. ओटी में इसके अलावा हमेशा जैसा बताया गया है
ऊपर केवल साथी यहूदियों के लिए प्रयोग किया जाता है - यह है
संदर्भ से स्पष्ट और अक्सर सीधे कहा जाता है।
हमें केवल 5 अपवाद मिले हैं, लेकिन वहाँ
एक या दो और हो सकते हैं। 1. मो.13/8 . में

इब्राहीम लूत के लिए शब्द का उपयोग करता है (वास्तव में लूत
उसका भतीजा था), १.मोस में। 25/18 बताया गया है
कि इश्माएल और उसके पुत्र और निकट
वंशजों ने के प्रति शत्रुतापूर्ण होना चुना
शेष परिवार - बाद के यहूदी - यहाँ तक कि
हालांकि वे उस समय निकट से संबंधित थे -
भाइयो - (एक घिनौनी बात के अनुसार करना
उस दूर के अतीत की नैतिकता के लिए), और में
4. राज्यमंत्री 20/14, 5.Mos.2/2, और 5.Mos. 2/8 यह है
एदोमियों (. के वंशजों) के बारे में प्रयुक्त
एसाव, याकूब का भाई)।

यहूदियों ने एक फैशन के बाद माना
एदोमी (दूर के) रिश्तेदार होने के लिए (जैसा कहा गया है
याकूब के भाई एसाव के वंशज,
तीन कुलपतियों में से अंतिम इब्राहीम, इसाक
और याकूब, जिसने इस्राएल के इतिहास की शुरुआत की) -
और इस प्रकार एक बड़े, लेकिन परिभाषित और . में शामिल है
बंद समूह। इसके विपरीत वे नहीं मानते थे
रिश्तेदारों के रूप में इश्माएली। एक चीज़ के लिए
इश्माएल की माँ एक विदेशी थी (से
मिस्र)। एक और बात के लिए इश्माएल बाहर था
जो वाचा यहोवा ने उसके नवीनीकरण के समय बनाई
वह वाचा जो उसने इब्राहीम के साथ की थी और
अपने पुत्र इसहाक के साथ नई वाचा बान्धी
(परन्तु एसाव इसहाक के पुत्र की नाईं भीतर था)
1.Mos में उल्लेख किया गया है। १७/१९-२१: "मैं (यहोवा*)
उसके साथ मेरी वाचा स्थापित करेगा (इसहाक*)
अपने वंशजों के लिए एक चिरस्थायी वाचा के रूप में
उसके बाद। और इश्माएल के विषय में मैं ने सुना है
आप: मैं उसे जरूर आशीर्वाद दूंगा - - - लेकिन my
वाचा मैं इसहाक के साथ स्थापित करूंगा - - -।" के लिए
एक तिहाई इश्माएली जिसे अरब बाद में दावा करते हैं
अरब बन गए, इतनी दूर रहते थे कि
प्राकृतिक कारणों से भी संबंध सभी थे

लेकिन अलग कर दिया। चौथे और बदतर के लिए: The
इश्माएली ने यहूदियों का शत्रु बनना चुना -
1. राज्यमंत्री २५/१८: "और वे (इश्माएली*)
अपने सभी भाइयों के प्रति शत्रुता में रहते थे "-
इस बिंदु पर आगे कुछ पंक्तियाँ देखें। और
पांचवें और शायद सबसे जरूरी के लिए
वाचा के बाहर होने के अलावा: इश्माएल
और उसकी माँ को परिवार से निकाल दिया गया
और जनजाति (जो आसानी से उनकी व्याख्या कर सकते हैं
शत्रुता, लेकिन फिर भी यह एक में शत्रुता थी
समय जब एक व्यक्ति और एक परिवार की सुरक्षा
मुख्य रूप से उस की ताकत पर निर्भर करता है
परिवार - और कोई बात नहीं उन्हें निष्कासित कर दिया गया
2
पीढ़ी बाद में)।

512

पेज ५१३

अन्य सभी समय के बारे में शब्द का प्रयोग किया गया था
साथी यहूदी।

3. सीमा रेखा के सभी कुछ उल्लिखित मामलों में
अपवाद विपरीत भाग का नाम था
निर्दिष्ट, जबकि मूसा ने स्पष्ट रूप से नहीं किया था
निर्दिष्ट करें कि जिन भाइयों के बारे में उन्होंने बात की थी
१८/१५ और १८/१८ यहूदी नहीं थे - पर
इसके विपरीत यह किसी के लिए भी स्पष्ट है जो नहीं हैं
मजबूत इच्छाधारी सोच से बोझिल या
सख्त जरूरत है, **कि वह बात कर रहा था और यहूदियों के बारे में और सबसे सामान्य का उपयोग करना साथी यहूदियों के लिए अभिव्यक्ति।**
4. एनटी में शब्द भी हमेशा (के साथ)
ऊपर बिंदु 1 में उल्लिखित अपवाद) का उपयोग किया जाता है
एक समूह में साथियों के बारे में - या तो साथी यहूदी
या साथी ईसाई।
5. **पूरे में एक भी जगह नहीं है बाइबिल जहां अरबों का उल्लेख किया गया है भाइयों या उससे भी अधिक दूर के रिश्तेदारों के रूप में।**
1.Mos के एकल अपवाद के साथ। 25/18
जहां शब्द का प्रयोग तनाव के लिए किया जाता है
इश्माएलियों का बुरा आचरण (ऊपर बिंदु 2 देखें)
यह दावा किए गए पूर्वजों के लिए भी जाता है
अरब।
6. शब्द भाई(ओं)/भाई/भाईचारे
कुरान में भी लाक्षणिक रूप से प्रयोग किया जाता है - at
कम से कम 32 बार - और कुरान का पालन करता है
बाइबल के समान नियम: भाई हैं
एक समूह से संबंधित - मुसलमानों से मुसलमानों तक
(भगवान या कम भगवान), अरब से अरब, जनजाति
गोत्र के भीतर के लोग, (यहां तक कि लूत/लूत भी वे कोशिश करते हैं
दिखावा करने के लिए स्थानीय लोगों का था), बुरा करने के लिए
बुरा। यहां तक कि एक और एक बार जहां
इसमें स्पष्ट रूप से यहूदियों का उल्लेख है (59/11)
संबंध यह नहीं कहा जाता है कि अरब या
मुसलमान यहूदियों के भाई हैं, लेकिन यह कि
पाखंडी (राष्ट्रीयता का कोई विवरण नहीं, इसलिए
संभवतः सभी पाखंडी) के भाई हैं
यहूदी ("बुरे लोगों" समूह से संबंधित)।
एक बार भी ऐसा नहीं कहा गया है या संकेत भी नहीं दिया गया है कि अरब यहूदियों के भाई हैं।
एक तथ्य जिसका कोई मुसलमान कभी उल्लेख नहीं करता (और कुछ पता है) ।

7. अरब और अरबों का बार-बार उल्लेख किया जाता है
ओटी में, एफ. भूतपूर्व। 2. इतिहास 9/14 और 22/1,
यशायाह 21/13, यिर्मयाह 25/24, यहेजकेल 30/5।
उनका उल्लेख हमेशा तटस्थ शब्दों में किया जाता है -
जैसे राजा सुलैमान को श्रद्धांजलि देना - या in
नकारात्मक कनेक्शन, एफ। भूतपूर्व। दुश्मनों के रूप में। **नहीं**

एक जगह वहाँ कुछ भी कहा या संकेत दिया है
रिश्ते के बारे में, रिश्तेदारी का जिक्र नहीं
और बिल्कुल अल्पविराम के बारे में नहीं
भाईचारा। किसी न किसी कारण से
मुसलमान कभी भी इस तथ्य का उल्लेख नहीं करते - लेकिन
तो बेशक जीतना ज्यादा जरूरी है
क्या सही है यह जानने के लिए बहस करें। आख़िरकार
अल-तकिया - वैध झूठ - दोनों एक अधिकार है
और जब बात आती है तो मुसलमानों के लिए एक कर्तव्य
धर्म की रक्षा या प्रचार करना। NS
वे जिस धर्म में विश्वास करते हैं क्योंकि दूसरे मानते हैं
इसमें और उनसे कहा है कि वे इस पर विश्वास करें
अंध विश्वास - - - क्योंकि दूसरे इसमें विश्वास करते हैं
अंध विश्वास से, और पादरी और अन्य लोग करते हैं
उनकी मान्यताओं और उनके . पर सवाल नहीं उठाना चाहता
सत्ता के छोटे या बड़े मंच।

8. मुसलमान दावा करते हैं - बिना सामान्य के
दस्तावेज़ीकरण - कि कुरान शब्द हैं
अल्लाह की, और यह कि मुहम्मद ने इस प्रकार बात की
भगवान के शब्द, जो मानदंडों में से एक है
(वह दूसरों को याद करता है - नीचे देखें) होने के लिए
भविष्यवक्ता मूसा के बारे में बात की (f. पूर्व।
यिर्मयाह 1/9 के अलावा 5. मूसा। 18/15 और
18/18-19)। यह सही हो सकता था - - - अगर
इस्लाम साबित करता है कि कुरान वास्तव में एक से है
भगवान (वास्तव में सभी गलतियाँ और अन्य गलत)
अंक 100% साबित करते हैं कि यह भगवान से नहीं है -
कोई भगवान ऐसा खेदजनक काम नहीं करेगा)। इसके आलावा:
भले ही यह सही था कि वे थे
एक भगवान के शब्द, यह केवल एक मानदंड होगा,
सबूत नहीं - कई यहूदी भविष्यवक्ताओं
दोनों के अनुसार, भगवान के शब्दों की बात की
बाइबिल और कुरान, लेकिन वे नहीं थे
पैगंबर मूसा के बारे में बात की। मुसलमान प्रस्तुत करते हैं
एक सबूत की तरह जीत में अप्रमाणित दावा।

9. मुसलमान भी किस सिलसिले में खारिज करते हैं
ये दो श्लोक कहे गए। वे खुद को
दूसरों से सख्ती से कहो कि तुम एक श्लोक नहीं ले सकते
- या अधिक - कुरान और मेक . से
उससे निष्कर्ष या कथन - a
किसी भी मुसलमान से मानक मांग,
खासकर जब वह उन तर्कों से मिलता है जो हैं
जवाब देना मुश्किल है, अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला आखिरी तरीका।
लेकिन अपने लिए वह नियम अमान्य है और
वे इन दो छंदों को 5.Mos से उद्धृत करते हैं। बहुत
संदर्भ से बहुत बाहर।

क्योंकि संदर्भ स्पष्ट रूप से बताता है कि मूसा
यहूदियों से और उनके बारे में बात कर रहा था, और
छंद १८/१-२ यह भी निर्दिष्ट करता है कि कौन

पेज 515

"भाइयों" थे - उन्होंने एक ही शब्द का इस्तेमाल किया था
उसी भाषण में कुछ ही सेकंड पहले
वही लोग और एक ही संदर्भ में: The
लेवी गोत्र का "कोई उत्तराधिकार न होगा"
उनके भाइयों के बीच (= 11 अन्य गोत्र*)।
यहोवा (यहोवा*) उनका निज भाग है
पुजारी होना चाहिए और उसके लिए भुगतान किया जाना चाहिए*) - - -"।
फिर कुछ सेकंड बाद वह उसी शब्द का प्रयोग करता है
यह निर्दिष्ट किए बिना कि अब वह बोल रहा है
अन्य भाइयों के बारे में (जो उसे करना था
अपने श्रोताओं को भ्रमित न करने के लिए यदि उनका मतलब था
अरब या इज़राइली या कोई और) - के लिए
साधारण कारण कि उन्होंने बोलना जारी रखा
लगभग 11 गोत्रों के बारे में (वैसे: यीशु
यहूदा जनजाति से था)।

10. और भी प्रसंग हैं: **मूसा ने इस बारे में बात की एक नबी। वास्तव में मुहम्मद एक नहीं थे नबी.** एक नबी वह व्यक्ति होता है जिसके पास निकट होता है एक भगवान के लिए पर्याप्त संबंध, ताकि भगवान उसे बताता है या उसके बारे में सूचित करता है उन विषयों पर भविष्य जो भगवान चाहते हैं कि मनुष्य जानना। (अधिक विशिष्ट होने के लिए: एक नबी बनाता है भविष्यवाणियां। वह इतनी बार भविष्यवाणियाँ करता है और/या इतने आवश्यक हैं कि भविष्यवाणी करना एक है अपने मिशन का हिस्सा चिह्नित किया। और वह कम से कम ज्यादातर सही भविष्यवाणियां करता है - यदि नहीं तो वह है एक झूठा नबी)। **यह का उपहार है भविष्यवाणी करना कोई भी वास्तविक नबी नहीं है सक्षम होने के उपहार के बिना भविष्यवाणी करने के लिए / मजबूर। ए दूत, शायद, या बहुत से अन्य चीजें, लेकिन आप एक असली नबी नहीं हैं जब तक आप भविष्यवाणी करने में सक्षम नहीं हैं** ।

मुहम्मद के पास वह उपहार नहीं था। ये तो बहुत
कुरान से स्पष्ट है कि उसके पास न तो था
उपहार, न ही कभी दावा किया या इसे पाने का नाटक किया
- पूरी किताब में एक बार भी नहीं।

ओह, कुछ समय के अनुसार थे
परंपराएं, जब उन्होंने जो कहा, वह बाद में आया
सच है, और कुछ उत्साहजनक बातें भी हैं जो हमेशा होती हैं
आशावादी और सच होता है अगर कोई सफल होता है
कोई क्या करने की कोशिश करता है। इसके साथ ऐसा है
कोई भी जो ज्यादा बोलता है - उत्साहपूर्वक बात करें और
दूसरी बात - कि कम से कम कुछ बातें तो होनी ही चाहिए
सरल सांख्यिकीय कारणों से सच होते हैं - तथा
बाकी ज्यादातर भूल जाते हैं। लेकिन मुख्य
चिज़े हैं:

पेज ५१६

1. उन्हें कभी भी होने का दावा नहीं किया गया था
भविष्यवाणी जब उन्हें कहा गया था।

2. मुहम्मद ने कभी दावा नहीं किया भविष्यवाणी करने में सक्षम होने का उपहार।
3. मुहम्मद ने केवल "उधार लिया" / चुरा लिया शीर्षक थोपना और प्रभावित करना, वह था कोई वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं। उसने भी नहीं नबी होने का दिखावा - वह केवल इस्तेमाल करता था शीर्षक।

और जब वह वास्तव में कोई नबी नहीं था - नहीं एक दिखावा करने वाला भी - वह भविष्य नहीं हो सकता पैगंबर मूसा के बारे में बताया। (हम वहां जानते हैं पैगंबर कौन है, इसके लिए "नरम" परिभाषाएं मौजूद हैं, जैसे "भगवान की ओर से बोलने वाला व्यक्ति" - यह एक प्रभावशाली शीर्षक है और कई लोग इसका उपयोग करना चाहते हैं यह। लेकिन एक असली नबी को बनाने में सक्षम होना चाहिए भविष्यवाणियाँ)।

11. इसके बाद 5.Mos है। १८/२० - अगले दरवाजे इस्लाम के लिए पड़ोसी आवश्यक १८/१८: "परन्तु एक भविष्यद्वक्ता जो मेरे में बोलने की कल्पना करता है किसी भी चीज़ का नाम बताओ जिसकी मैंने उसे आज्ञा नहीं दी है कहो, या एक नबी जो के नाम से बोलता है अन्य देवताओं को मार डाला जाना चाहिए। ” ये झूठे नबियों को बाहर निकालने के लिए मानदंड। उसके में प्रसिद्ध और कुख्यात "शैतानी छंद" मुहम्मद ने तीन बुतपरस्तों को बढ़ावा दिया देवी अल-लैट, अल-उज्जा और मानत - 3 अरब मुख्य मूर्तिपूजक भगवान अल-लाह की बेटियां (वही ईश्वर जिसका नाम मुहम्मद ने रख दिया अल्लाह)। मूर्तिपूजक देवियों को बढ़ावा देने के लिए निश्चित रूप से कुछ ऐसा है जिसे यहोवा के पास "नहीं" था कहने की आज्ञा दी।" और प्रचार कर रहा है मूर्तिपूजक देवी का मतलब मुहम्मद भी था अल्लाह के नाम पर बात नहीं हो सकती बस तब, लेकिन बुतपरस्त अल-लाही के नाम पर - एक और भगवान।

इस श्लोक के अनुसार - इसी अध्याय में कि इस्लाम एक मजबूत और विश्वसनीय के रूप में उपयोग कर रहा है प्रमाण - जैसा कि आप देख रहे हैं, यह प्रलेखित है कि परिभाषा के अनुसार मुहम्मद एक झूठा है पैगंबर (भी f। उदा। वह सब जो गलत है) कुरान दस्तावेज वही)। और कोई झूठ नहीं नबी वह भविष्यवक्ता हो सकता है जो मूसा ने बोला था के बारे में। "असली नबी" के लिए भी यही है।

12. और एक और प्रसंग कुछ ही सेकंड बाद में मूसा का वही भाषण (5.Mos. 18/21)।

516

पेज ५१७

मूसा ने कहा: “यदि भविष्यद्वक्ता जो कुछ कहता है यहोवा का नाम (यहोवा*) नहीं है हो या सच हो, यह एक संदेश है भगवान ने बात नहीं की है ”। मुहम्मद कभी भी वास्तविक भविष्यवाणियाँ कीं और बहुत कुछ जो उसने कहा और कुरान में, दोहराने का नाटक करते हुए एक भगवान के शब्द, सबसे स्पष्ट रूप से सच नहीं है - बस सभी गलत तथ्यों और सभी को देखें पुस्तक में अन्य गलत बिंदु। के अनुसार 5. राज्यमंत्री १८/२१ (बाइबल में एक और पद मुसलमान कभी उल्लेख नहीं करते) यह साबित करता है - शीर्ष पर अन्य प्रमाणों में से - कि मुहम्मद नहीं थे

नबी. फलस्वरूप वह भी इसी कारण से
मूसा की बात नहीं की जा सकती थी
के बारे में।

13. जैसा कि उल्लेख किया गया है कि "भाई" आदि शब्द हैं
बाइबिल में कई बार इस्तेमाल किया। यहां तक कि इसका उपयोग किया जाता है
ठीक उसी वाक्य में कम से कम एक
इज़राइल के लिए महत्वपूर्ण मामला, और उसी के द्वारा
हे मनुष्य, मूसा, और उन्हीं लोगोंसे बातें करना
- यहूदी। 5. राज्यमंत्री १७/१५: "- - - सुनिश्चित करें
अपने ऊपर राजा नियुक्त करो, अपना प्रभु,
परमेश्वर (यहोवा*) चुनता है। वह से होना चाहिए
अपने ही भाइयों के बीच। ऊपर मत डालो
तू जो इस्राएल का भाई नहीं है।" एक
एक और कविता और एक और संदर्भ मुसलमान
कभी उल्लेख न करें - यह अनुमान लगाने की अनुमति है कि क्यों।
कोई और टिप्पणी आवश्यक नहीं है।

निष्कर्ष - और यह इतना स्पष्ट निष्कर्ष है कि इस पर जोर देने की आवश्यकता नहीं है कि यह है केवल वही जो तार्किक रूप से संभव है: इन छंदों का मुहम्मद से कोई लेना-देना नहीं है - यह केवल मूसा अपने लोगों से अपने लोगों के बारे में बात कर रहा है। यहां तक कि प्रत्येक ऊपर दिए गए ये बिंदु साबित करते हैं कि 100% - जब कोई सभी को एक साथ लेता है तो इसका उल्लेख नहीं करना चाहिए।

एक और स्पष्ट निष्कर्ष: इस्लाम ने उन पंक्तियों के "चेरी पिकिंग" का उपयोग किया है जिनका वे उपयोग कर सकते थे, उसी संदर्भ के उन हिस्सों को छोड़ दिया जो उनके दावों को गलत साबित करते हैं, और उन्हें तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं उन दावों तक पहुंचने के लिए जो वे खोज रहे हैं, शब्दों और संदर्भों को थोड़ा सा।

व्यवस्थाविवरण (5. मो.) १८/१५ + १८/१८ जारी रखा:

"- - - मेरे जैसा नबी (मूसा*) - - -" / "- - - आप जैसा नबी (मूसा*) - - -।"

मुसलमानों का दावा है कि मूसा और मुहम्मद के बीच इतनी समानताएं हैं कि मुहम्मद को वह भविष्यद्वक्ता होना चाहिए जिसके बारे में मूसा ने बात की थी। और यह कि बहुत सारे अंतर हैं मूसा और यीशु के बीच कि यह यीशु नहीं हो सकता।

मुसीबत यह है कि आप इस दुनिया में और हर समय दो आदमियों को चाहे जो भी चुनें - अपनी पसंद के किसी दो को चुनें - आपको समानताएं मिलेंगी और आप अंतर पाएंगे (हालांकि यह .) यह विशिष्ट है कि इस्लाम केवल मूसा और मुहम्मद के बीच समानता की तलाश करता है, और इसके लिए मूसा और जीसस के बीच मतभेद - वे यह पता लगाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं कि क्या सही है, केवल पाने के लिए

517

पेज ५१८

उन्हें जिस उत्तर की आवश्यकता है।) ऐसी समानताएं और अंतर दिलचस्प हो सकते हैं, लेकिन उनके पास नहीं है प्रमाण के रूप में मूल्य यह है कि वे "साइन योग्यता गैर" नहीं हैं - ऐसे तथ्य जो अन्य उत्तरों को असंभव बनाते हैं।

यहाँ दो केंद्रीय शब्द हैं: "पैगंबर" और "मूसा"। लेकिन मुख्य शब्द "पैगंबर" है - "मूसा" सिर्फ तुलना या माप के लिए है। और निश्चित रूप से मुसलमान इस उपाय पर बहस करते हैं, नहीं मौलिक शब्द - उनमें से बुद्धिमान, क्योंकि मुहम्मद एक वास्तविक नबी नहीं थे (अध्याय देखें .) मुहम्मद के बारे में)। हाँ, वह एक भविष्यद्वक्ता का उपहार होने का दिखावा भी नहीं कर रहा था (देखें .) पिछला टुकड़ा ऊपर) - उन्होंने केवल उस प्रभावशाली शीर्षक को "उधार" लिया। शायद वह एक दूत था किसी के लिए या कुछ के लिए, लेकिन कोई वास्तविक नबी नहीं।

और तुलना करने की बात यह है कि यदि आप एक नबी की दूसरे के साथ तुलना करना चाहते हैं, तो वह ऐसा है भविष्यवाणी करने में अच्छा और उतना ही शक्तिशाली - और सही भविष्यवाणियाँ - अन्य की तरह। मुहम्मद स्पष्ट रूप से यहाँ पूरी तरह से सच हैं, क्योंकि उनके पास वह उपहार बिल्कुल नहीं था। **और एक आदमी-चाहे कितना भी करिश्माई क्यों न हो- जो कोई वास्तविक नबी नहीं था, वह नबी नहीं हो सकता था मूसा ने बात की।**

(दूसरी ओर यीशु हो सकता है। कुरान और बाइबिल दोनों के अनुसार वह एक . था पैगंबर कम से कम मूसा जितना महान - भले ही हदीस यीशु को 2 में रखें। स्वर्ग और मूसा 5 में)।

वास्तविकता में अन्य सभी विवरण इस मामले में रुचि के बिना हैं क्योंकि यह "अनिवार्य रूप से गैर" है। NS आराम बस इतनी गर्म हवा है।

एक छोटा पीएस: यूहन्ना ५/४६ में यीशु कहते हैं: "यदि तुम मूसा की प्रतीति करते, तो मेरी भी प्रतीति करते, क्योंकि वह! मेरे बारे में लिखा" यहां तक कि कुरान भी कहता है कि यीशु एक नबी था जिसने सच बोला था।

व्यवस्थाविवरण (5.मो.) 33/2:

"यहोवा (यहोवा/परमेश्वर*) सीनै से आया और सेईर से उन पर उदय हुआ; वह चमक उठा पारान पर्वत से। वह दक्षिण से असंख्य पवित्र लोगों के साथ आया - - -।" यह नहीं है यहोवा, कुछ अरबों के अनुसार, लेकिन मुहम्मद और उसके योद्धाओं के अनुसार। इसके बावजूद:

1. मुहम्मद कभी सिनाई में नहीं थे - कम से कम नहीं अनुयायियों के "असंख्य" मिलने के बाद (अधिकांश संभवत: कभी नहीं जब तक कि वह अपना शुरू करने से पहले नहीं था धर्म ६१० ईस्वी में, और यह कभी नहीं कहा जाता है वहाँ गया)।
2. वही सेईर के लिए जाता है - एक जगह जिसका उल्लेख किया गया है ओटी में पेंटाटेच में कई बार (एफ। उदा। नंबर (4. राज्यमंत्री) 10/12, 12/16, 13/3, 13/26 और 5. राज्यमंत्री 1/1) उस स्थान के रूप में जहाँ एदोमी लोग मृत सागर के पास बस गए। मुहम्मद शायद ही कभी वहाँ गए हों, सिवाय शायद उसने इसे सीरिया के रास्ते में पारित किया जब छोटे वर्षों में कारवां पर काम करना, और कुछ मुसलमान तब कहते हैं कि यह युद्ध को संदर्भित करता है राजा दाऊद ने के साथ एक स्थान पर जीत हासिल की समान/समान नाम - - - लेकिन 5 में। 33/2 आईटी मूसा जो बोल रहा था, और वह जीवित रहा 100-200 साल पहले और इसके बारे में कभी नहीं सुना वह लड़ाई। (कुछ यह भी चाहते हैं कि यह यरूशलेम के पास सायर गाँव, लेकिन मूसा ने कभी नहीं

518

पेज 519

फिलिस्तीन में प्रवेश किया - और न ही उसने तम्बू में प्रवेश किया एक मंदिर के लिए इस्तेमाल किया, जिसमें उसका संपर्क था अपने भगवान के साथ - भगवान (नबी नबी - the .) बाइबिल में प्रभु का हमेशा अर्थ होता है यहोवा/परमेश्वर) जो "सिनाई और सैर" से आया था और परान)।
3. और वही माउंट के लिए भी जाता है। परान - अ पहाड़ और सिनाई में एक क्षेत्र। यह पहाड़ मुसलमानों ने स्वीकार किया कि अरब में "स्थानांतरित" हो गए हैं, मक्का के पास (एक पहाड़ और एक क्षेत्र के साथ a मिलते-जुलते नाम - फरान, लेकिन अब मुसलमान ज्यादातर दावा करते हैं कि नाम परान है), लेकिन अब तक हमने किसी भी वास्तविक वैज्ञानिक को नहीं पढ़ा है जो में है संदेह: माउंट। पारान सिनाई में है। इस पर्वत और क्षेत्र का कई बार उल्लेख है बाइबिल में (4. मो.10/12, 12/16, 13/3, १३/२६, ५. १/१) और विज्ञान के रूप में कहा गया है इसमें कोई शक नहीं। (हम जोड़ सकते हैं कि यहोवा बाइबिल के अनुसार, सिनाई में प्रकट हुआ खुद को यहूदियों और मूसा को एक स्तंभ के रूप में दिन के धुएँ का और एक का आग/प्रकाश द्वारा रात। वह अच्छी तरह से रात में चमक सकता है माउंट परान। मुसलमान चाहते हैं कि इसका मतलब यह हो मुहम्मद का धर्म से चमका मक्का के निकट इसी नाम का पर्वत - लेकिन न तो मुहम्मद और न ही इस्लाम के पास कोई था उस पहाड़ से खास नाता उल्लेख करें कि सिनाई में इजरायली नहीं होंगे अगर वह माउंट से चमकता है तो उसे देखने में सक्षम है। फरान इन अरब। सॉरी-मुसलमानों को लाना होगा

सबूत, न केवल दावे)।
कभी-कभी "बोजराह" नाम का उल्लेख किया जाता है - यह वर्तमान बसरा नहीं है, बल्कि अल-बुसैरा है
एदोम, मृत सागर के दक्षिण में।

और जैसा कि कहा गया है: बाइबल में शब्द "प्रभु" का अर्थ हमेशा ईश्वर / यहोवा (या NT . में) होता है
कभी-कभी जीसस) - और मुहम्मद न तो ईश्वर थे और न ही जीसस। इसके अलावा यह नहीं है
संभव है कि यह मुहम्मद हो सकता है जिसका अर्थ है - ओटी में "भगवान" शब्द हमेशा और बिना
अपवाद का अर्थ है यहोवा।

एक और व्याख्या भी है: कि यह सब प्रतीकात्मक है। इस मामले में "सिनाई से आया"
मूसा की उपस्थिति का अर्थ है - लेकिन वाक्य वास्तव में पढ़ता है "प्रभु सिनाई से आया था",
और ओटी में अभिव्यक्ति "भगवान" हमेशा और बिना किसी अपवाद के अर्थ भगवान / यहोवा है। यह
क्या यहोवा सीनै से आया था - यह गलत समझना संभव नहीं है कि - - - जब तक नहीं
आप बिल्कुल चाहते हैं।

अन्य मुसलमानों का दावा है कि "भगवान सिनाई से आए थे" भगवान से उस रहस्योद्घाटन को संदर्भित करता है
सिनाई से आया था। लेकिन उस और अगली पंक्ति को इस दावे के साथ जोड़ने के लिए कि तब सेइर एक को संदर्भित करता है
युद्ध राजा डेविड ने सेईर नामक स्थान जीता जिसका अर्थ नहीं है - रहस्योद्घाटन के बारे में बात करने के लिए
और फिर एक लड़ाई है - कहानी के बीच में कुछ पूरी तरह से अलग - अतार्किक है।

विशेष रूप से क्योंकि वास्तव में पाठ यहोवा था जो "सेईर से उन पर उदय हुआ", और फिर
इससे भी अधिक, तब कहा जाता है कि यह फिर से प्रतीकात्मक हो जाता है: परन को प्रतीक के रूप में शांत किया जाता है
मुहम्मद.

नतीजतन कुछ मुसलमान (उदाहरण के लिए बदावी) दावा करते हैं कि रेखा "और उनके ऊपर से निकली"
सेईर" यीशु के प्रकटन को दर्शाता है। सिनाई तब मूसा, सेईर के प्रकटन को संदर्भित करता है
यीशु की उपस्थिति (और मुहम्मद और उनके धर्म की चमक की अगली पंक्ति) - in
उनके अनुसार सेईर को यरूशलेम के निकट साईर गांव का उल्लेख करना चाहिए, क्योंकि यह है
स्पष्ट है कि यीशु कभी नहीं गए थे या सेईर के पर्वत और क्षेत्र के साथ उनका कोई अन्य संबंध नहीं था।
जो बेतुका भी नहीं है, जैसा कि बाइबल कई जगहों पर सेईर को उस क्षेत्र के रूप में वर्णित करती है जहाँ
एदोमी (एसाव के वंशज) रहते थे, और वे यरूशलेम के दक्षिण में बहुत दूर रहते थे।

जैसा कि आप अनुमान लगा सकते हैं, यह सब अनुमान लगाने का सिर्फ एक गड़बड़ है, "तदर्थ" प्रस्ताव और इच्छाधारी
सच्चाई की तलाश करने के बजाय, "सही" उत्तर पाने की सोच रहा है।

इन तीन पंक्तियों में से अंतिम, जो मुहम्मद की भविष्यवाणी की भविष्यवाणी करती है, "- - - हे" है
(यहोवा* - एकमात्र विषय जिसका उल्लेख किया गया है) पारान पर्वत से निकला"। वहाँ केवल है
कुछ मुसलमानों के अनुसार इसका एक संभावित अर्थ - यहाँ भी आम तौर पर इस्लाम नहीं, लेकिन
कुछ मुसलमान - और वह यह है कि अल्लाह की महिमा मुहम्मद के रूप में चमकती है
अरब में पारान (या फरान) से गौरवशाली धर्म।

आलंकारिक कहानियों को शाब्दिक कहानियों से बनाना लगभग हमेशा संभव होता है - मुसलमान हैं
उस पर विशेषज्ञ, क्योंकि यह लगभग किसी भी चीज़ के लिए उनकी सामान्य अंतिम खाई की रक्षा है जो इसमें गलत है
कुरान - चीजें जो सादा सच हुआ करती थीं, जैसे ही रूपक या समान होती हैं
वास्तविकता या विज्ञान साबित करता है कि यह गलत है, "और रूपक को अलग तरह से समझा जाना चाहिए और"
बिल्कुल सही है अगर हम इसे इस तरह और इस तरह से समझें "।

यहाँ मूसा अपने यहूदियों को याद दिला रहा है कि कैसे यहोवा - अपने अवतारों में, का एक स्तंभ
बाइबल के अनुसार दिन में धुआँ और रात में एक आग/प्रकाश - उनके साथ
सिनाई (सिनाई प्रायद्वीप पर एक पहाड़ जहां यहूदी कुछ समय के लिए रुके थे)
मिस्र से मार्च) सेईर (एक अन्य पर्वत और सिनाई प्रायद्वीप पर भी एक क्षेत्र) के माध्यम से और
कभी-कभी अन्य स्थानों के बीच मार्ग के साथ माउंट से रात में चमकता था। परान
पहाड़ और सिनाई प्रायद्वीप पर एक क्षेत्र)।

लेकिन तथ्यों का ऐसा विवरण मुहम्मद को साबित नहीं करता है, और मुसलमानों को सबूत चाहिए। - फिर
इसका एक दृष्टांत बनाएं और इसे "समझें" जिस तरह से आपको सबसे अच्छा लगता है - - - और सामान्य रूप से
मुस्लिम केवल अनिर्दिष्ट दावों पर आधारित हैं। और उत्तर पाने के लिए तथ्यों को पर्याप्त मोड़ दें
आप की जरूरत है।

लेकिन परेशानी यह है कि बाइबल में भी कई बार पारान का उल्लेख किया गया है (देखें बिंदु ३)

इस टुकड़े का पहला भाग)। बाइबिल के अनुसार यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि यह कहाँ था - विभिन्न अनुवाद 2 संभावित स्थान देते हैं (लाल सागर के पास या जॉर्डन नदी के पास और कुछ दिन सीर पर्वत से चलते हैं - जिससे लाल सागर का स्थान सबसे अधिक संभावना है, जैसे वह पहाड़ पश्चिम सिनाई में है)। लेकिन यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यह यहूदियों के रास्ते में था मिस्र के पीछे पीछा किया, और वे एक अकेले के बिना रहते हुए सीनै के माध्यम से चले गए अरब के संदर्भ में - लगभग 200 साल बाद राजा सुलैमान के अधीन नहीं (2. इति. 9/14)।

और वास्तव में: यदि यह सच होता कि मूसा ने अपने सभी कम से कम २० लाख लोगों पर चढ़ाई की थी (बाइबल के अनुसार ६००० पुरुष + महिलाएं और बच्चे) और उनके सभी जानवर पूरे रास्ते

अरब प्रायद्वीप पर शुष्क रेगिस्तान के माध्यम से मक्का के पास परान या फरान तक सभी तरह से अरब में और फिर वही गर्म और शुष्क रास्ता - आप चाहें तो विश्वास करें - ये 3 पंक्तियाँ ही यहूदियों को याद दिलाता है कि यहोवा का प्रकटीकरण उनके साथ हर समय एक साथ रहा था मिस्र से फिलिस्तीन तक (मूसा ने यह भाषण "यरदन के पूर्व" (5. मूसा 1/5) दिया था जो का अर्थ है फ़िलिस्तीन की सीमा के पास - "चालीसवें वर्ष में" (5. मो. 1/3), जिसका अर्थ है शीघ्र ही इससे पहले कि वह मर गया और यहोशू यहूदियों को भविष्य के इस्राएल में ले गया)। सभी कहानी "the ." के बारे में बताती है भगवान", और "भगवान" = ओटी में अपवादों के बिना यहोवा। अगर इस्लाम फिर भी जोर देता है, तो उनके पास होगा कुछ सबूत पेश करने के लिए, न केवल ढीले दावे।

भजन संहिता 45/2-5:

“हे शूरवीर, अपनी तलवार अपक्की बाजू में बान्ध; वैभव और ऐश्वर्य को धारण करो। सत्य, नम्रता और धार्मिकता के लिये जयजयकार करते हुए अपने प्रताप से आगे बढ़ो; अपना जाने दो दाहिना हाथ अद्भुत कर्म प्रदर्शित करता है। अपने तीखे बाणों को राजा के हृदयों में भेदने दें दुश्मन - - -"।

यह मुहम्मद युद्ध और युद्ध की सवारी कर रहे हैं, मुसलमान कहते हैं।

लेकिन यह कहते हुए, वे किसी कारण से या किसी अन्य कारण से पद ४५/१ को छोड़ देते हैं, जिससे यह पता चलता है कि यह कोई है किसी राजा के लिए गाना - "मैं राजा के लिए अपनी कविता पढ़ता हूं" - और मुहम्मद कोई राजा नहीं था। और अजीब तरह से वे छंद 6 को भी छोड़ देते हैं, जिससे पता चलता है कि गायक उसे मारने के लिए कह रहा है राजा के शत्रु, और "पराक्रमी" जो "विजयी होकर आगे बढ़ना" है, वह परमेश्वर/यहोवा है।

मुहम्मद कोई भगवान नहीं थे। और यह संदेहास्पद है कि अगर कोई आदमी चोरी करता है और झूठ बोलता है / अपनी शपथ तोड़ता है, बलात्कार किया गया, गुलाम बनाया गया, प्रताड़ित किया गया, जबरन निकाला गया, हत्या की गई, और घृणा और दमन के लिए उकसाया गया, न कि अपनी शक्ति के मुंच के रूप में खुद को एक ईश्वर से चिपका हुआ उल्लेख करते हैं, "सत्य की ओर से" आगे बढ़ते हैं, विनम्रता और धार्मिकता ”।

भजन 149/6 - 7:

"उनके मुंह में परमेश्वर की स्तुति हो, और उनके हाथों में दोधारी तलवार हो, जो उन्हें भड़काने के लिए" राष्ट्रों पर प्रतिशोध और लोगों पर दण्ड - - -।"

यह निश्चित रूप से मुहम्मद और उसके आदमी हैं !! - - कुछ मुसलमानों के अनुसार। लेकिन वे क्यों छंद 2 छोड़ें जो बताता है कि यह यहूदी अपने भगवान (यहोवा) और उनके राजा की स्तुति कर रहे हैं - शायद दाऊद या सुलैमान ?: “इस्राएल अपने बनानेवाले (यहोवा*) के कारण आनन्द मनाए; सिय्योन के लोगों को रहने दो उनके राजा में खुशी - - -"।

मुहम्मद का सिय्योन से बहुत कम लेना-देना था और इज़राइल द्वारा उनकी बहुत कम प्रशंसा की गई थी।

गीतों का गीत (सुलैमान का गीत) 5/16:

यह एक प्रेम गीत है - लगभग एक महिला (प्रिय) और एक पुरुष (निचला) के बीच एक युगल गीत, लेकिन "दोस्तों" से इधर-उधर की कुछ पंक्तियों के साथ। शायद समग्र में सबसे काव्य कृति बाइबिल। अध्याय ५, पद १६ में स्त्री गाती है: “उसके मुंह में मिठास है; वह पूरी तरह से है सुंदर। यह मेरा प्रेमी है, यह मेरा मित्र है, हे यरूशलेम की पुत्रियों"। सुलैमान के साथ शामिल है, यह स्वाभाविक रूप से यरूशलेम में हुआ था।

"एक साथ प्यारा" के लिए हिब्रू शब्द "मछमद" है। मुसलमानों का दावा है कि यह हो सकता है "स्तुति" के लिए अनुवादित = अहमद = मुहम्मद (= प्रशंसित) और इसके लिए एक प्रमाण है

बाइबिल में मुहम्मद। (आपको कभी भी किसी भी प्रकार के विज्ञान का वैज्ञानिक नहीं मिलेगा जो

स्वीकार करें कि संभावना = प्रमाण। कोई अन्य उचित बुद्धिमान व्यक्ति भी नहीं।) और वह पंक्तियों का वास्तविक अर्थ है: "उसके मुख में स्वयं मिठास है, वह मुहम्मद है। ये है हे मेरे प्रेमी, हे यरूशलेम की पुत्रियों, यह मेरा मित्र है।"

परंतु:

1. श्लोक 1/5-6 बताता है कि वह एक काली औरत थी। यह है मुहम्मद साहब में केवल एक काली औरत के नाम से जाना जाता है हरम - उपपत्नी मारीह। लेकिन वह एक थी मिस्र की दासी, औरत नहीं जेरूसलम।
2. गीत में कई जगहों से यह बहुत स्पष्ट है कि यह यरूशलेम में हुआ था। मुहम्मद कभी यरुशलम नहीं गए - और निश्चित रूप से नहीं अपनी अमीर पहली पत्नी कदिया की मृत्यु के बाद और वह महिलाओं की तलाश में जा सकते हैं।
3. श्लोक 3/7, 3/9, 3/11, और 8/12 स्पष्ट रूप से बताते हैं कि यह राजा सुलैमान के समय हुआ था - मुहम्मद से लगभग १६०० वर्ष पूर्व।
4. श्लोक 8 बताता है कि वह स्त्री की थी लेबनान। मुहम्मद की पत्नियों में से कोई भी नहीं थी लेबनान से, जहाँ तक हम कर पाए हैं पता लगाएं।

वास्तव में बिंदु ३ अकेला यह साबित करने के लिए पर्याप्त है कि मुहम्मद शामिल नहीं है: लगभग १६०० वर्ष उसके सामने बहुत समय है।

इसके अलावा: "मछमद" शब्द ओटी में 13 बार आता है। (राजा 20/6, 2 इतिहास 36/19, यशायाह 64/11, विलाप 1/19, 1/11, 2/4, यहेजकेल 24/16, 24/21, 24/25, होशे 9/6, 9/16, योएल 3/5 + यहां)। मुहम्मद के लिए शब्द का आदान-प्रदान करें, और कुछ अजीब गद्य - या कविता प्राप्त करें। NS तर्क बस बना हुआ है। मुसलमान हमेशा इस बात पर जोर देते हैं कि कुरान पढ़कर आप चुन नहीं सकते वाक्य इधर-उधर - अर्थ ठीक करने के लिए आपको पूरी तस्वीर देखनी होगी। परंतु वे सभी अक्सर स्वयं इसके विपरीत कार्य करते हैं; यदि किसी शब्द या वाक्य का मुड़ना से लिया गया हो पूरी कहानी का उपयोग उनके इच्छित अर्थ के निर्माण के लिए किया जा सकता है।

यशायाह 1/7:

"जब वह (टॉवर* में देखता है) घोड़ों की टीमों के साथ रथों को देखता है, गधों पर सवार या वह ऊँटों पर सवार हो, वह चौकस और चौकस रहे।"

यह मुहम्मद के आगमन के बारे में एक भविष्यवाणी होनी चाहिए, मुसलमान कहते हैं - हालांकि शायद ही कभी मुस्लिम पढ़े-लिखे लोगों से बात करते विद्वान। यह एफ. भूतपूर्व। एक लाख अन्य हो सकते हैं।

और पद ९ बताता है कि क्यों विद्वान शायद ही कभी इस "सबूत" के बारे में मुहम्मदिन बाइबिल के बारे में बोलते हैं: आने वाले बाबुल से शरणार्थी हैं - उनमें से शायद ही कोई मुहम्मद हो। खासकर जब बाबुल मुहम्मद से 1000 साल पहले गिरा था।

यशायाह २१/१३-१५:

एक अनुवाद, इंटरनेट पर एक इस्लामी पेज से लिया गया (एनबी: यह सही भी हो सकता है, भले ही एनआईवी इसका कुछ अलग अनुवाद करता है - पुराने हिब्रू का वही कमजोर बिंदु है जो पुराने अरब में है

कि उन्होंने मुख्य रूप से केवल व्यंजन लिखे, जो - जैसे अरब और f.ex में। कुरान - मतलब
कि कुछ जगहों पर अलग-अलग व्याख्याएं हो सकती हैं। ऐसे मामलों में एनआईवी आमतौर पर का उपयोग करता है
पाठ में सबसे आम व्याख्या, और फुट नोट्स में विकल्प का उल्लेख है)।

“अरब पर बोझ। अरब के जंगल में, हे यात्रा करने वाली कंपनियों, तुम टिकोगे
डेदानिम। तेमा देश के निवासी प्यासे को जल पिलाते थे,
जो भाग गया उसे रोटी देकर रोका। क्योंकि वे तलवारों से भागे थे, खींचे हुए से
तलवार, और झुके हुए धनुष से, और युद्ध की घोरता से"। (यह वास्तव में राजा है
जेम्स संस्करण, लेकिन जैसा कि एनआईवी एक बहुत छोटा अनुवाद है और फलस्वरूप से बना है
पुरानी भाषाओं के बारे में बेहतर ज्ञान, यह संभावना है कि एनआईवी केजेवी से अधिक सटीक है)।

एनआईवी का अनुवाद:

"देदानियों के कारवां, जो अरब के घने भाग में डेरे डालते हैं, प्यासों के लिए पानी लाते हैं,
तुम जो तेमा में रहते हो, भगोड़ों के लिए भोजन लाओ। वे तलवार से भागते हैं, खींचे हुए से
तलवार, झुके हुए धनुष से, और युद्ध के गढ़ से।”

यह निर्विवाद रूप से मुहम्मद के बारे में एक भविष्यवाणी है !! कुछ मुसलमान कहते हैं। कोई और नहीं थे
अरब में प्रसिद्ध उड़ान, और इसलिए यह उसके बारे में होना चाहिए।

परंतु:

1. ऐसा कुछ भी नहीं है जो कहता है कि यह एक प्रसिद्ध के बारे में है
   उड़ान - यह कुछ और के बारे में हो सकता है
   स्थानीय संघर्ष, हालांकि के लिए पर्याप्त आवश्यक है
   पीड़ित। इसके ठीक नीचे बिंदु भी देखें।
२. श्लोक २१/९ - इससे पहले की कुछ पंक्तियाँ
   इस्लाम उद्धरण - बताता है कि इस प्रकरण के साथ क्या करना है
   बाबुल का पतन - एक तथ्य यह है कि मुसलमान
   आसानी से "भूल जाता है" - कुछ ऐसा
   1000 साल पहले हुआ था
   मुहम्मद. अब बाबुल का नाम अक्सर होता है
   एक बुरे या के लिए एक अभिव्यक्ति के रूप में प्रयोग किया जाता है
   पतित समुदाय, लेकिन भले ही आप यहां हों
   कहते हैं कि बाबुल कुरैशी जनजाति का प्रतिनिधित्व करता है
   और मक्का, यह फिट नहीं है, जैसा कि मुहम्मद ने किया था
   मक्का के पतन के कारण भागो मत। मक्का
   और कुरैश अभी भी बहुत शक्तिशाली थे
   जब मुहम्मद 622 ई. में भाग गए।
3. ये शरणार्थी युद्ध से भाग रहे हैं।
   मुहम्मद युद्ध से नहीं, बल्कि से भागे
   उत्पीड़न।
4. हम जानते हैं कि मुहम्मद
   अपनी उड़ान के दौरान टेमा का क्षेत्र - यह बहुत दूर है
   सुदूर उत्तर (. के उत्तर में लगभग 400 किमी)
   मक्का और 300 किमी से अधिक उत्तर में
   मदीना, जबकि मुहम्मद ने एक का अनुसरण किया
   बल्कि प्रत्यक्ष हालांकि इधर-उधर (to
   उसके उत्पीड़कों से बचें) मक्का के बीच मार्ग
   और मदीना)। अजीब मुसलमान कभी नहीं

   इसका उल्लेख करें, भले ही कम से कम उनका
   विद्वान इसे भली-भांति जानते हैं।
5. यहाँ आवश्यक तथ्य: यशायाह जीया और लिखा
   अश्शूरियों के समय में। NS
   अश्शूरियों ने ७३२ में अरब पर आक्रमण शुरू किया
   ईसा पूर्व - एक तथ्य भी मुस्लिम विद्वान बहुत जानते हैं
   कुंआ। यशायाह ने बस के बारे में लिखा और बनाया a

6. एक और आश्चर्यक तथ्य: समय सीमा।
आने वाले युद्ध के बारे में भविष्यवाणी।
एक और तथ्य मुस्लिम विद्वान जानते हैं,
लेकिन कोल्ड-ब्लडली मोड़ने के लिए छोड़ देता है
जानकारी: अगले ही छंद (21/16-17)
यशायाह की कथा आगे कहती है: "यहोवा यही है
(यहोवा*) मुझसे कहता है: "एक वर्ष के भीतर, जैसे
अनुबंध से बंधे नौकर इसे गिनेंगे, सभी
केदार का वैभव समाप्त होगा। NS
धनुर्धारियों के उत्तरजीवी, के योद्धा
केदार, थोड़े होंगे"। यहाँ सीधे तौर पर कहा गया है
कि यह भविष्यवाणी a . के भीतर पूरी होनी है
साल - कुछ १३०० साल बाद नहीं और
मुहम्मद के बारे में

चेरी-चुनने के लिए कुछ पंक्तियाँ चुनें जिन्हें घुमाकर उत्तर दिया जा सकता है यदि आप खिंचाव करते हैं आपकी कल्पना पर्याप्त है, और फिर कुछ कहने से ठीक पहले पंक्तियों को छोड़ दें पूरी तरह से अलग, और अगली पंक्ति जो साबित करती है कि आप जो कहते हैं वह झूठ है - केवल है उसके लिए एक अभिव्यक्ति: बेईमानी। खैर, एक या दो और: अल-तकिया (वैध झूठ) और किटमैन (कानूनी अर्धसत्य) - अभिव्यक्तियाँ जो आप केवल प्रमुख धर्मों के इस्लाम में पाते हैं। (जैसा अल-ताकिया और किटमैन के लिए: अल-ताकिया के बारे में अध्याय देखें)।

यशायाह 53:

यह उद्धृत करने के लिए बहुत लंबा है, लेकिन कुछ मुसलमानों को यकीन है कि वह व्यक्ति मुहम्मद है। को पढ़िए अध्याय - यह लगभग आधा पृष्ठ है - और हंसो (या रोओ)। इस आदमी की कोई समानता नहीं है मुहम्मद - एफ। भूतपूर्व। पद 9: "- उस ने न तो कोई उपद्रव किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली।" मुहम्मद एक सामूहिक हत्यारे, बलात्कारी और सरदार थे और उनका एक नारा था: "युद्ध है" छल" इब्न इशाक के अनुसार।

लेकिन विवरण यीशु के लिए उपयुक्त हो सकता है।

यशायाह 63:

यह उद्धरण के लिए बहुत लंबा है। लेकिन मुसलमान कहते हैं कि सबसे शक्तिशाली व्यक्ति मुहम्मद है। लेकिन पढ़ें यह - यह परमेश्वर/यहोवा है जो इस्राएल के लोगों से और उनके बारे में बात कर रहा है!

मुहम्मद तो निश्चित रूप से कोई भगवान नहीं थे - और बिल्कुल यहोवा नहीं।

हबाकुक 3/3:

"परमेश्वर तेमान से आया है, जो पारान पर्वत से पवित्र है"।

अब बाइबल और विज्ञान दोनों कहते हैं कि माउंट पारान सिनाई में है। लेकिन इस्लाम मक्का के पास कहता है भले ही मुस्लिम सूत्रों के अनुसार उस पर्वत का सही नाम फरान है, और तो पवित्र एक - भगवान - का मतलब अल्लाह होना चाहिए और तेमान को इस्लाम का संकेत देना चाहिए। लेकिन तेमानो बाइबिल में अधिक स्थानों का उल्लेख किया गया है, और तेमन सबसे अच्छी जगह नहीं है:

यिर्मयाह 49/7 में: यहोवा पूछता है, "क्या अब तेमान में बुद्धि नहीं रही?" (ठीक है, अगर एक थे व्यंग्यात्मक कोई भी इस बात से सहमत हो सकता है कि तेमन का मतलब इस्लाम होना चाहिए)।

यिर्मयाह ४९/२० - २२ में यहोवा कहता है: "इसलिये सुन लो कि यहोवा (यहोवा*) ने क्या योजना बनाई है। एदोम के विरुद्ध जो उस ने तेमान में रहनेवालों के विरुद्ध युक्ति की है: भेड़-बकरियों के बच्चे घसीटा जाएगा; वह (यहोवा*) उनके कारण उनके चरागाह को पूरी तरह नष्ट कर देगा। -
- उस समय एदोम के योद्धाओं के मन उस स्त्री के हृदय के समान होंगे, जो प्रसव पीड़ा में है।

यह स्पष्ट है कि तेमान एदोम (मृत सागर के पास) में चरागाहों और बहुत कुछ के साथ एक जगह है - यह है एक धर्म नहीं। लेकिन यह स्पष्ट है कि इसे नष्ट कर दिया जाएगा - क्या यह किसी भी तरह इस्लाम के अनुकूल हो सकता है?

यहेजकेल 25/13 में यहोवा कहता है कि वह एदोम (मृत सागर के पास) को उजाड़ देगा, जिसमें जगह भी शामिल है

तेमन।

आमोस 1/12 में यहोवा कहता है: "मैं तेमान में आग भेजूंगा"। यह स्पष्ट रूप से एक जगह है - एक गांव या
एक शहर - एक धर्म नहीं (एक विचार पर आग लगाना मुश्किल है)।

ओबद्याह में, पद ९ यहोवा कहता है: "हे तेमान, तेरे योद्धा डरेंगे और एसाव के
तुम्हारे विरुद्ध हिंसा के कारण पहाड़ (एदोम*) वध में काटे जाएंगे
भाई जैकब "। इस्लाम के पास एक है जो वे कह सकते हैं कि वह इसहाक (इश्माएल) का भाई था, लेकिन ऐसा कोई नहीं
एसाव को छोड़कर याकूब का भाई था (इश्माएल याकूब का भाई नहीं था) - और इसके अलावा अगर
तेमान इस्लाम था, मुसलमान अब तक मर चुके थे - "वध में कटौती"।

वास्तव में इसमें से कुछ भी इस्लाम के इतिहास में फिट नहीं बैठता।

और एक लंबी कहानी को छोटा करने के लिए: बाइबल इंगित करती है कि तेमन जेरिको के पास एक शहर था। और
किसी भी मामले में यह इस्लाम नहीं हो सकता था - इतिहास पूरी तरह से अलग है।

हाग्गै 2/7:

यहोवा कहता है: "मैं सब जातियों को हिलाऊंगा, और सब जातियों की अभिलाषाएं आएंगी - - -"। अरबी में
"सभी राष्ट्रों की इच्छा" = "हेमदा" = "प्रशंसित एक" जो कि शब्दार्थ = मुहम्मद।
(मूल क्रिया हमदा है जो वास्तव में कई शब्दों का मूल है)। लेकिन सब वही
शब्द स्वतंत्र रूप से विनिमेय नहीं हैं - कोई भी मुसलमान मुहम्मद हमदा को नहीं बुलाएगा - - - सिवाय
जब वे यहाँ अपने "नबी" के लिए "सबूत" की तलाश कर रहे हैं - ऐसे प्रमाण जिनकी उन्हें बहुत आवश्यकता है, क्योंकि
उनके पास कोई नहीं है।

सूरह 1 में, पद 2: "स्तुति (अल-हमदी (हमदा से)) अल्लाह के लिए हो" - अगर आपको पत्थरवाह किया जाएगा
आपने कहा कि हमदा/हेमदा = मुहम्मद और कहा "मुहम्मद अल्लाह के लिए हो"। डेनियल में
11/37 एक के पास "वह (राजा*) अपने पितरों के देवताओं के लिए या एक के लिए कोई सम्मान नहीं दिखाएगा
(भगवान*) महिलाओं द्वारा वांछित (हेमदाह*) - - -"। यहाँ मुहम्मद के लिए हमदा को बदलने का प्रयास करें -
और मुहम्मद को मूर्तिपूजक देवताओं के साथ मिलाओ!

भले ही शब्दों की जड़ एक ही हो (अरब में अक्सर शब्द की जड़ें 3 . से बनी होती हैं)
व्यंजन, और फिर अलग-अलग स्वरों को भरकर उन्हें अलग-अलग शब्द और अलग-अलग मिलते हैं

अर्थ), शब्द स्वतंत्र रूप से विनिमेय नहीं हैं - सिवाय इसके कि जब शब्दों को इच्छापूर्वक घुमाया जाए
और शब्दों की जड़ें मुहम्मद के दैवीय संपर्क के लिए "प्रमाण" दे सकती हैं।

नया नियम (एनटी)।

नए नियम में, इस्लाम के लिए स्थिति और भी कठिन है - कम छंद हैं
मुहम्मद के बारे में भविष्यवाणी करने का मतलब मोड़ना संभव है। और यहां तक कि मुख्य दावा
वे जो उत्तर चाहते हैं उस पर पहुंचने के लिए तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर पेश करने की जरूरत है और जिसकी सख्त जरूरत है
क्योंकि कुरान कहता है कि मुहम्मद को इंजिल - द गॉस्पेल में भी भविष्यवाणी की गई है। (सूरह:
7/157 और f.ex. सूरह 61/6)। वही हदीसों के लिए जाता है - वे स्पष्ट रूप से कहते हैं कि वह है
बाइबिल में उल्लेख किया है।

साथ ही यहां हम दावों की व्यवस्था करेंगे कि प्रासंगिक छंद किस उत्तराधिकार में हैं
बाइबल।

यूहन्ना १/१९-२३:

"अब यह यूहन्ना (यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले*) की गवाही थी जब यरूशलेम के यहूदियों ने याजकों को भेजा
और लेवीय (लेवी गोत्र से - याजक गोत्र*) उससे पूछें कि वह कौन था। (२०) उसने नहीं किया
अंगीकार करने में असफल रहे, परन्तु स्वतंत्र रूप से अंगीकार किया, 'मैं मसीह (मसीहा*) नहीं हूँ।' उन्होंने उससे पूछा, 'तब
आप कौन हैं? क्या तुम एलिय्याह हो?' उन्होंने कहा, 'मैं नहीं हूँ।' 'क्या आप पैगंबर हैं?' उसने जवाब दिया,
'नहीं।' अंत में उन्होंने कहा, 'तुम कौन हो? हमें उन लोगों के पास वापस लेने के लिए उत्तर दें जिन्होंने हमें भेजा है।
आप अपने बारे में क्या कहते हैं?' यूहन्ना ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के शब्दों में उत्तर दिया, 'मैं हूं'
मरुभूमि में एक पुकारने वाले की आवाज, 'प्रभु के लिए सीधा मार्ग बनाओ'"।

खैर, यह मुहम्मद के बारे में होना चाहिए - रेगिस्तान में एक आवाज और एक "सीधा रास्ता" (अं)
अभिव्यक्ति अक्सर मुहम्मद द्वारा प्रयोग की जाती है)! यह भले ही बाकी सब यीशु के बारे में है और है

अपनी दिव्यता की घोषणा करना और झूठ होना है - चेरी का यह छोटा टुकड़ा सच होना चाहिए,
कुछ मुसलमानों के अनुसार।

लेकिन जॉन द बैपटिस्ट - यीशु के लिए दूत, और वह जो यीशु की घोषणा करता था, कैसे कर सकता था '
देवत्व - "मुहम्मद के लिए सीधा रास्ता बनाओ" लगभग ५८० साल बाद? - बिना एक बार भी
अरब या कुछ के बारे में संकेत दे रहे हैं? दोनों के बीच कहीं कोई संबंध नहीं है।
गलत।

और अंत में: जैसा कि बाइबिल में "प्रभु" शब्द से पहले उल्लेख किया गया है, जिसका उपयोग धार्मिक के लिए एक नाम के रूप में किया गया है
"व्यक्ति" हमेशा और बिना अपवाद के याहवे या (कभी-कभी) यीशु को संदर्भित करता है।
इस नियम से कोई अपवाद नहीं है।

यूहन्ना १४/१५-२६ और १६/७-८:

यूहन्ना के बाद सुसमाचार के दो भाग (यूहन्ना १४/१५-२६ और १६/७-८) मुख्य के लिए इतने आवश्यक हैं
इस्लाम से दावा, हम पहले इसकी पूरी लंबाई में इसे उद्धृत करते हैं। (चिह्नित शब्द * हमारे द्वारा जोड़े गए हैं
स्पष्टीकरण):

यूहन्ना १४/१५-२६:

"(15) यदि तुम मुझ से (यीशु*) प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञा का पालन करोगे। (16) और मैं पिता से विनती करूंगा
(यहोवा*), और वह तुम्हें (शिष्यों*) एक और सलाहकार (यूनानी: परकलेटोस*) देगा।
हमेशा तुम्हारे साथ रहो - (17) सत्य की आत्मा (इस आत्मा के लिए कम से कम 5 नामों में से एक*)। NS
संसार उसे स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि वे न तो उसे देखते हैं और न ही उसे जानते हैं। लेकिन आप उसे जानते हैं, क्योंकि

वह आपके साथ रहता है (लेकिन आप में नहीं*) और वह आप में होगा (बाद में*)। (१८) मैं नहीं छोड़ूंगा
तुम (चेले*) अनाथ हो कर, मैं तुम्हारे पास आऊँगा। (१९) बहुत पहले दुनिया मुझे नहीं देखेगी
अब और नहीं, लेकिन तुम मुझे देखोगे। क्योंकि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे। (२०) उस दिन (जब
काउंसलर आता है*) आप (चेलों*) को एहसास होगा कि मैं अपने पिता में हूँ, और आप अंदर हैं
मैं, और मैं तुम में हूँ। (२१) जिसके पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उनका पालन करता है, वह वही है जो
मुझे प्यार करता है। जो मुझ से प्रेम रखता है, उस से मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं भी उससे प्रेम रखूंगा, और दिखाऊंगा
(२२) तब यहूदा (यहूदा इस्करियोती नहीं) ने कहा, *परन्तु हे प्रभु, तू ऐसा क्यों चाहता है?
अपने आप को हमें दिखाओ और दुनिया को नहीं?" (२३) यीशु ने उत्तर दिया, "यदि कोई मुझ से प्रेम रखता है, तो वह करेगा
मेरी शिक्षा का पालन करो। मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आकर अपना घर बनाएंगे
उनके साथ। (24) जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरी शिक्षा को नहीं मानेगा। ये शब्द जो आप सुनते हैं
मेरा अपना नहीं; वे उस पिता के हैं जिस ने मुझे भेजा है (= यह वास्तव में यहोवा है जो है
बोल*) (25) यह सब मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए कहा है। (२६) लेकिन काउंसलर
(पैराकलेटोस*), पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, तुम्हें सब सिखाएगा
और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण दिलाएगा।"

यूहन्ना १६/७-८:

(७) "लेकिन मैं (यीशु*) तुमसे (शिष्यों*) सच कहता हूँ: मैं तुम्हारे भले के लिए जा रहा हूँ।
जब तक मैं न जाऊं, तब तक सलाहकार (पैराक्लेटोस*) आपके पास नहीं आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊं तो भेज दूंगा
उसे तुम। (८) जब वह आएगा, तो वह संसार को पाप के विषय में दोषी ठहराएगा और
धार्मिकता और न्याय - - -।"

इस्लाम का दावा है कि यहां काउंसलर (पैराक्लेटोस = हेल्पर, काउंसलर, एडवाइजर) जॉन है
मुहम्मद के बारे में बोलता है। वे भविष्य के भविष्यद्वक्ता के बारे में बात कर रहे हैं, वे कहते हैं, और कोई नहीं है
मुहम्मद के अलावा अन्य विकल्प। उस दावे को पक्का करने के लिए, वे दावा करते हैं कि शब्द
"पैराक्लेटोस" की वर्तनी गलत है - यह निश्चित रूप से "पेरिक्लीटोस" होगा (इस्लाम के लिए सामान्य के रूप में वे करते हैं)
हजारों पुराने होने के बावजूद दावे के लिए दस्तावेज़ प्रस्तुत करने का प्रयास भी न करें
दस्तावेज़)। "पेरिक्लीटोस" का अरामी में अनुवाद किया जा सकता है - अरामी, अरब नहीं - और एक को मिलता है
शब्द महामना, जिसका अनुवाद अरब में अहमद या मुहम्मद के रूप में किया जा सकता है।

दयनीय।

और इससे भी बदतर: सिरिएक में इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द (उस समय क्षेत्र में चर्च द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भाषा)
मुहम्मद और उससे पहले) "मेनाहेमना" है। यह "जाहिर है" वास्तव में "महमाना" का अर्थ है
और एक और गलत स्पेलिंग मुसलमान कहते हैं। और यह मुहम्मद को संदर्भित करता है जो वे कहते हैं।

अजीब बात यह है कि सिरिएक "मेनाहहेमना" का अर्थ है "'जीवन देने वाला' और विशेष रूप से 'एक' जो मरे हुओं में से उठता है'" (प्रोफेसर ए। गिलौम "द लाइफ ऑफ मुहम्मद", 2007, पृष्ठ में 104)। फिर किसने लोगों को मौत से उठाकर जीवन दिया? और जो मौत से जी उठा वह स्वयं? - मुहम्मद नहीं, बल्कि जीसस। विडंबना?

खैर, पेरिक्लिटोस का अर्थ है "शानदार" या "प्रशंसित" - और इस्लाम इस पर कूद पड़ा शब्द, क्योंकि नाम अहमद - अरब नाम मुहम्मद का दूसरा रूप है, जो भी कुछ हद तक महामना के समान दिखता है - इसका अर्थ "प्रशंसित" भी है। यह बिना किसी संदेह के और बहुत स्पष्ट रूप से मुहम्मद के बारे में एक भविष्यवाणी थी !! - समस्या इसे समझाने की थी। और एकमात्र संभव तरीका कुछ ट्विस्ट करना था, जिसमें यह दावा करना भी शामिल था कि सभी पुराने पांडुलिपियों ने गलत शब्द लिखा था। यह मुहम्मद के बारे में होना था - अगर किसी और के लिए नहीं कारण, तो क्योंकि कुरान कहता है कि उनका उल्लेख सुसमाचारों में भी किया गया है, और कोई दूसरा नहीं है वास्तविक संभावना। (इसके अलावा: यह कहा जाता है कि मुहम्मद का मूल नाम अमीन था - उनके से

527

पेज 528

माता का नाम अमीना - और वह नाम मुहम्मद बाद में आया। अगर यह सही है, कहाँ क्या यह दावा लाता है?)

परंतु:

1. मुहम्मद कोई वास्तविक नबी नहीं थे (उन्होंने ऐसा नहीं किया) भविष्यवाणी करने का उपहार है - उसने भी नहीं किया इसे पाने का दिखावा करें या इसके होने का दावा करें - देखें मुहम्मद के बारे में)। केवल वह "उधार" वह शीर्षक अर्थ से भरा हुआ है और प्रतिष्ठा।
2. "Parakletos" शब्द आपको कुछ मिल जाएगा बाइबिल में स्थान। शब्द "पेरिक्लीटोस" उस पुस्तक में कहीं भी मौजूद नहीं है - नहीं एक ही स्थान। गलत जब तक सही साबित न हो।
3. यहां से हजारों पुरानी पांडुलिपियां हैं मुहम्मद से पहले (610 ई. - उसकी शुरुआत) आजीविका)। हमने 50ooo तक की संख्याएँ देखी हैं, लेकिन सबसे अधिक संभावना है कि कुछ 13oo प्रासंगिक हैं पांडुलिपियां या टुकड़े। इनमें से कुछ भी पांडुलिपियां या सुसमाचार के टुकड़े हैं - यहाँ भी हमने अलग-अलग संख्याएँ देखी हैं (up से 5oo), लेकिन ऐसा लगता है कि कुछ ३०० है एक सही है और कुछ 70 पूर्ण हैं या यथोचित रूप से पूर्ण। यह सहित एफ. भूतपूर्व। कोडेक्स साइनाइटिकस और कोडेक्स अलेक्जेंड्रिनस इन ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन। शब्द उनमें से एक में "पेरिक्लीटोस" का उपयोग नहीं किया गया है - एक बार नहीं। इसके अलावा हैं बड़ी संख्या में पुरानी पांडुलिपियों के साथ बाइबिल के संदर्भ। यहां भी आप अलग-अलग नंबर खोजें, लेकिन यह कुछ जैसा दिखता है 30ooo सही है। में से एक भी नहीं उन्हें आप "पेरिक्लीटोस" शब्द को a . के रूप में पाएंगे बाइबिल का संदर्भ या उद्धरण। **यह बस में नहीं है और मौजूद नहीं है बाइबिल कहीं भी या किसी भी समय। (एक अतिरिक्त इस बात का अच्छा सबूत है कि यह सच है, अगर यह अस्तित्व में था, इस्लाम पवित्र करने के लिए चिल्लाया था इसके बारे में स्वर्ग - लेकिन वे चुप हैं, सिवाय उनके लगातार और - सामान्य के रूप में - नहीं प्रलेखित दावे।खैर, वे अस्पष्ट हैं Nicaea (अब Iznik in .) में परिषद का उल्लेख करें तुर्की) ३२५ ईस्वी में, लेकिन भले ही यह था सच है, यह स्पष्ट नहीं करता है कि सभी क्यों**

325 ईस्वी से पुरानी पांडुलिपियां भी हैं
"गलत" होने का दावा किया - और झूठा किया गया
चतुर एक तरीका है कि आधुनिक विज्ञान भी हैं
मिथ्याकरण के निशान खोजने में असमर्थ।
इससे भी बदतर: उसके लिए पूरा एजेंट

परिषद ज्ञात है, और कोई संकेत नहीं है
किसी की सामग्री को बदलने की इच्छा के बारे में
ग्रंथ (इसके अलावा: आप बिशप कैसे बनाते हैं
बाइबिल के ग्रंथों को बदलें? - या अयातुल्ला परिवर्तन
कुरान में छंद?)

1. Nicaea में परिषद का एजेंडा
   विकिपीडिया के अनुसार 325 ई.

   एरियन (एक विधर्मी समूह*) प्रश्न
   के बीच संबंध के बारे में
   परमेश्वर पिता और यीशु; यानी हैं
   पिता और पुत्र केवल उद्देश्य में एक या
   एक beilg में भी.

2. ईस्टर मनाने की तिथि
   अवलोकन।
3. मेलेटियन विद्वता।
4. विधर्मियों द्वारा बपतिस्मा की वैधता।
5. व्यपगत की स्थिति
   लिसिनियस के तहत उत्पीड़न।

   जैसा कि आप देखते हैं: के बारे में एक शब्द नहीं
   किसी भी बाइबिल ग्रंथों में परिवर्तन।

6. इसके अलावा 20 . प्रख्यापित किए गए थे
   नए चर्च कानून:
7. 1. आत्म-बधिया का निषेध।
8. 2. के लिए न्यूनतम अवधि की स्थापना
   कत्था
9. 3. में उसकी उपस्थिति का प्रतिषेध
   एक छोटी औरत के मौलवी का घर
   जो उसे संदेह के घेरे में ला सकता है।
10. 4. में एक बिशप का समन्वय
    कम से कम 3 प्रांतीय की उपस्थिति
    बिशप और रचना द्वारा
    महानगर।
11. 5. 2 प्रांतीय धर्मसभाओं के लिए प्रावधान
    प्रतिवर्ष आयोजित किया जाना है।
12. 6. असाधारण अधिकार
    के कुलपति के लिए स्वीकार किया
    अलेक्जेंड्रिया और रोम, उनके लिए
    संबंधित क्षेत्रों।
13. 7. मानद अधिकारों की मान्यता
    यरूशलेम की दृष्टि से।
14. 8. समझौते के लिए प्रावधान
    नवप्रवर्तनवादी।
15. 9 - 14. हल्की प्रक्रिया के लिए प्रावधान
    के दौरान चूक के खिलाफ
    लिसिनियस के तहत उत्पीड़न (एक .)
    सम्राट*)।

१६. १५ - १६. के धरने का निषेध
पुजारी
17. 17. इनमें से ursury का निषेध
पादरी वर्ग
18. 18. बिशपों की वरीयता और
प्राप्त करने में बधिरों से पहले प्रेस्बिटर्स
पवित्र भोज, यूचरिस्ट।
19. 19. की अमान्यता की घोषणा
पॉलियनहेरेटिक्स में बपतिस्मा।
20. 20. दौरान घुटना टेकने का निषेध
रविवार और ५० दिनों में पूजा पाठ
ईस्टरटाइड (पेंटेकोस्ट)।
21. जैसा कि आप देखते हैं: बदलते ग्रंथों का कोई निशान नहीं
बाइबिल में। जैसा कि पहले कहा गया है: बनाने के लिए
मुख्यधारा के धर्माध्यक्षों ने ग्रंथों में परिवर्तन किया
बाइबिल, बनाना जितना आसान है
मुख्यधारा के अयातुल्ला ने ग्रंथों को बदल दिया
कुरान - दोनों भी मान रहे हैं
दृढ़ता से और दोनों बहुत रूढ़िवादी हैं
एक अल्पविराम भी बदलने के लिए। **इस्लाम की
दावा बस में लाल रंग का है
जो थोड़ा जानता है उसके कान
Nicaea के बारे में,** लेकिन यह एकमात्र है
के दावों के लिए उनके पास संभावना है
बाइबिल का मिथ्याकरण जो हो सकता है
सूचित नहीं के लिए सही ध्वनि -
इसमें 99.9% मुसलमान शामिल हैं। परंतु
भले ही यह सच था, यह था
ट्रेस के बिना झूठ बोलना असंभव
325 ई. से पुरानी सभी पांडुलिपियां,
और मिथ्याकरण करना असंभव था
OT से सभी पांडुलिपियां
यहूदियों के स्वामित्व में।

4. इस्लाम - और कुरान - जैसा कि ऊपर बताया गया है
दावा है कि बाइबिल को गलत साबित किया जाना चाहिए (पर भी
कई अन्य स्थान)। वे यह नहीं बताते कि कैसे
पुराने दिनों में धीमी यात्रा के साथ और कोई द्रव्यमान नहीं
संचार यह न केवल संभव था
सभी हजारों पांडुलिपियों को गलत साबित करें
यूरोप, उत्तर के बड़े हिस्से में फैला हुआ है
अफ्रीका और एशिया, लेकिन बिल्कुल वही बनाने के लिए
उनमें से प्रत्येक में मिथ्याकरण।
जब तक इस्लाम न समझाए- हम पूछते भी नहीं
सबूत के लिए, लेकिन केवल तार्किक रूप से मान्य के लिए
स्पष्टीकरण - यह कब और कैसे किया गया (यह)
Nicaea में नहीं था - एजेंडा और वास्तविक
बहस वहाँ बहुत प्रसिद्ध हैं), वहाँ है
बनाने के लिए केवल एक संभावित निष्कर्ष:
एक और अल-तकिया (वैध झूठ)। यह भी
इन पांडुलिपियों के अलावा और भी बहुत कुछ,

बहुत सारे और बहुत सारे अन्य हैं जो संदर्भित करते हैं
बाइबल (लगभग 30oo?), और इनमें भी
संदर्भ वहाँ एक समय पर नहीं है a

"पेरिक्लीटोस" का संदर्भ - एक एकल नहीं।
दोषियों में ये सारे कागजात कैसे ट्रेस करें लिए?
और उन सभी को ठीक उसी तरह से गलत ठहराते हैं
उन सभी का रास्ता? उल्लेख नहीं करने के लिए: कैसे किया
वे इन सभी में "पैराक्लेटोस" शब्द को मिटा देते हैं
पांडुलिपियां + उपर्युक्त 13ooo
(उनमें से 325 ईस्वी से पुराने) और
"पेरिक्लीटोस" को इस तरह से डालें कि आधुनिक
विज्ञान मिथ्याकरण को देखने के लिए असमर्थ है?

5. इसके लिए एक बहुत अच्छा सबूत ऐसा नहीं
मिथ्याकरण हमेशा आगे होते हैं, क्या यह तथ्य है कि यदि
यह कहीं भी या कभी भी पाया गया था,
इस्लाम ने इसे बहुत पूंजी के साथ प्रकाशित किया था
पत्र। लेकिन कुछ भी नहीं है
अनिर्दिष्ट दावे या यहां तक कि दावे
दस्तावेजों के विपरीत - जैसे
परिषद के दौरान फर्जीवाड़े का दावा
निकिया में।

एक शब्द में: बकवास। और विज्ञान लंबा है
से पता चला है कि इस्लाम का दावा है कि
बाइबिल गलत है गलत हैं। अगर मुसलमान अभी भी
कुछ और दावा करते हैं, उन्हें करना होगा
सबूत पेश करें (केवल सस्ते दावे नहीं)।

6. अगला "स्पष्टीकरण" जो मिलता है वह यह है कि
आदमी ने हिब्रू से NT का अनुवाद किया a . बनाया
गलती की और गलत शब्द का इस्तेमाल किया। लेकिन एन.टी
कभी अनुवाद नहीं किया गया था - यह मूल रूप से लिखा गया था
ग्रीक!

7. उपरोक्त बिंदु के समानांतर एक दावा: The
अधूरे अक्षर से आई थी गलती -
अरबी जैसे हिब्रू ने ही व्यंजन लिखे,
और फिर पाठक को - या अनुमान लगाना पड़ा
(मूल कुरान के साथ समस्याओं में से एक)
- स्वरों। दो शब्दों का एक ही है
व्यंजन: prklts। aeo और आप जोड़ें
पैराकेलेट प्राप्त करें; eiy.o जोड़ें और आपको मिलता है
परिक्लीटोस लेकिन एक बार फिर: NT में लिखा गया था
ग्रीक और ग्रीक में एक पूर्ण वर्णमाला थी -
गलती के लिए यह संभावना बस नहीं थी
ग्रीक में मौजूद हैं। समस्या भी मौजूद नहीं थी
बोली जाने वाली हिब्रू में - केवल लिखित में, और
पहले लेखकों ने निश्चित रूप से शब्दों को लिया - जैसे
बोले - अपने ही सिर से। ये दोनों
तथ्य मुस्लिम विद्वानों को अच्छी तरह से ज्ञात हैं, और
फिर भी वे ये तर्क अपने को बताते हैं

कम पढ़ी-लिखी मंडलियाँ और श्रोता !!
गलत।

8. लेकिन फिर भी एनटी के लेखक कर सकते थे
ऐसी गलती की है! गलत भी। के लिए
एक बात लगभग एक दर्जन अलग थी
एनटी लिखने वाले पुरुष - और फिर सभी
जिसने इस शब्द का इस्तेमाल किया, उसे बस वही बनाना था
गलती। बस इसे समझाने की कोशिश करो! इसके अलावा
बहुत सारे लोग थे जो उन दोनों को समझते थे
दो भाषाएँ - बहुत सारे यहूदी, जैसा कि यूनानी था
रोमन साम्राज्य में दूसरी भाषा
लैटिन और कई नौकरशाहों के बाद
वह था या फिलिस्तीन में तैनात किया गया था

दो समूहों का उल्लेख करें। वे जल्दी से ढूंढ लेंगे
गंभीर गलतियाँ और कानाफूसी
गलतियों के बारे में सुधार या चीख -
इस पर निर्भर करता है कि वे दोस्त थे या नहीं
शत्रु साथ ही मुसलमानों का यह तर्क है
गलत।

9. फिर हम पाठ पर लौटते हैं। यीशु था
अपने शिष्यों से बात की और उनसे वादा किया a
सहायक - एक Parakletos। अगर इसका मतलब
मुहम्मद, **वह कितना सहायक हो सकता है**
५०० से अधिक वर्षों के बाद शिष्य
मर चुके थे!!?? बस और सिर्फ यही सवाल
अकेले इस्लाम से इस दावे को मारता है - यह एक है
पूर्ण असंभवता। और भी बदतर: इस्लाम के
इसे विद्वान भली-भांति जानते हैं। बहुत गलत।
10. "- - - एक और दिलासा देने वाला
(Parakletos/Periklytos?) - - -। " का उपयोग करने के लिए
यहाँ Periklytos का अर्थ है, उस स्थिति में
यीशु भी एक पेरिक्लिटोस है, क्योंकि एक नया
यीशु के स्थान पर आ रहा है। लेकिन यीशु कभी नहीं है
पेरिक्लिटोस कहा जाता है - शब्द मौजूद नहीं है
बाइबिल में कहीं भी, आज नहीं और में नहीं
कुछ 13oo प्रासंगिक पुराने शास्त्रों में से कोई भी
और टुकड़े या कुछ 30ooo संदर्भ।
गलत - जब तक कि इस्लाम सबूत पेश न करे (but
एक अस्तित्व में था, इस्लाम ने इसे पैदा किया था
सदियों पहले)।
11. "- - - लेकिन आप (शिष्य*) उसे जानते हैं
दिलासा देने वाला*) - - -"। शिष्यों में से कोई भी कभी नहीं
मुहम्मद को जानते थे - लेकिन उनके पास ज्ञान था
आत्मा के, जैसा कि वे साथी थे
यीशु। गलत।
12. "- - - क्योंकि वह (सहायक*) तुम्हारे साथ रहता है -
- -"। यह कहना निराशाजनक रूप से अपर्याप्त है
मुहम्मद कभी भी शिष्यों के साथ नहीं रहे।
ऐसा न हो कि तीसरी शक्ति के लिए गलत।

13. "पैराकेलेटोस" का अर्थ है "हमेशा आपके साथ रहना"।
मुहम्मद हमेशा के लिए किसी के साथ नहीं थे - हे
एक चीज के लिए पैदा हुआ था 550 साल बहुत देर से
के लिए एक "पैराक्लेटोस" या यहां तक कि एक "पेरिक्लीटोस" बनें
शिष्य, और दूसरी बात के लिए दूसरे के लिए
वह चीज जो हमेशा के लिए दूर थी। गलत।
14. "आत्मा - - -"। "पैराकेलेटोस" एक था
आत्मा, आदमी नहीं। यहाँ मुहम्मद गलत है।
15. "सत्य की आत्मा - - -।" जो आदमी
संस्थागत "अल-तकिया" (वैध झूठ)
और "किटमैन" (वैध अर्ध-सत्य) - और
स्वयं इसका अभ्यास किया, वह व्यक्ति जो
संस्थागत रूप दिया गया कि शपथ भी तोड़ी जा सकती है
अगर वह बेहतर परिणाम देता है (हालांकि आपको चाहिए
अल्लाह को बाद में बहाने के तौर पर कुछ दो
कुरान के अनुसार, यदि आपका मतलब था
शपथ) - और इसे स्वयं अभ्यास किया, वह व्यक्ति जो
एक नारा के रूप में था कि "युद्ध छल/विश्वासघात है"
(इब्न इशाक), वह आदमी न तो था, न ही था
"सत्य की आत्मा" के साथ बहुत अधिक संपर्क।
इस वजह से भी गलत।
16. "दुनिया - - - न उसे देखती है - - -"। नहीं

मानव - जैसे मुहम्मद - अदृश्य है (लेकिन अ
आत्मा हो सकती है)। गलत।

17. "- - - वह - - - आप में होगा - - -।" होने वाला
फ़्लिपेंट: इकलौता इंसान मुहम्मद कभी
में था, बहुत सारी महिलाएं थीं। गलत।
18. "मैं (यीशु*) तुम्हें (चेलों*) को नहीं छोड़ूंगा
अनाथ के रूप में - - -।" वे अनाथ हो गए थे
उनके शेष जीवन अगर उन्हें इंतजार करना पड़ा
500-600 साल बाद मुहम्मद के लिए। गलत।
19. "उस दिन (जब पैराकलेटोस आता है*)
आप (शिष्य*) महसूस करेंगे - - -।" दिन
दिलासा देने वाले/पैराक्लेटोस के आने के बारे में
जाहिर है के जीवन में एक दिन था
चेले - मुहम्मद नहीं थे। एक और
इस बात का सबूत है कि इस्लाम का दावा गलत है।
20. इस्लाम कहता है: यह पवित्र आत्मा नहीं हो सकता कि
Parakletos था, क्योंकि यह स्पष्ट है कि
पवित्र आत्मा पहले से ही था, और यीशु
कुछ के बारे में बात की जो आना चाहिए। का
बेशक आत्मा यीशु में और उसके आसपास थी -
और शिष्यों के आसपास - कम से कम कभी-कभी।
लेकिन यीशु ने कहा कि यह उनमें होना चाहिए और
उनमें से एक हिस्सा, जो पहले नहीं था।
व्हिटसन में यही हुआ था,
बाइबिल के अनुसार - शिष्य थे
पवित्र आत्मा से भरा हुआ था, जो काफी था
नई स्थिति। अवैध तर्क। गलत।

21. इस्लाम कहता है: यह इसके बारे में नहीं हो सकता था
पवित्र आत्मा, क्योंकि यीशु ने के बारे में बताया था
सत्य की आत्मा। लेकिन सभी NT में मौजूद है
केवल एक विशेष आत्मा यहोवा से जुड़ी हुई है।
केवल एक। कोई गलती संभव नहीं है। गलत
तर्क। अगला पैराग्राफ भी देखें
नीचे।
22. इस्लाम कहता है: पवित्र आत्मा और आत्मा
सत्य दो अलग-अलग प्राणी हैं - वे भी
अलग-अलग नाम हैं! - और अल्लाह के पास 99 . है
नाम (लेकिन ९९ देवताओं के अनुसार नहीं हैं
इस्लाम), मुहम्मद कुछ, जीसस कुछ, अधिकांश
मनुष्य दो या तीन। आत्मा में कम से कम 5
अलग-अलग नाम (पवित्र आत्मा, आत्मा)
सत्य की, पवित्र आत्मा, परमेश्वर की आत्मा
उत्तर सिर्फ आत्मा)। इसके अलावा: बिंदु देखें
बिलकुल ऊपर। अमान्य प्रमाण।
23. इस्लाम कहता है: लेकिन वे एक जैसे नहीं हो सकते
नाम "पवित्र आत्मा" न्यूट्रम है
(सेक्सलेस), जबकि नाम "द स्पिरिट ऑफ"
सत्य" मर्दाना (पुरुष) है। गलत है, लेकिन यह
दूसरे से व्याकरण के साथ दिखाना आसान है
भाषाएं, संज्ञा के रूप में केवल एक है
अंग्रेजी में व्याकरणिक लिंग। ले लो
जर्मन शब्द "ऐन मैडचेन" (एक लड़की)। NS
कण "ईन" से पता चलता है कि शब्द
व्याकरणिक रूप से मर्दाना है
(स्त्रीलिंग/महिला: "ईइन"), लेकिन एक लड़की बहुत
जाहिर है स्त्रीलिंग है। या अच्छे पुराने ले लो
अटलांटिक स्टीमर "क्वीन एलिजाबेथ"। में
नॉर्वेजियन वह "ऐन बात" (किसी की नाव) है
size) और "ein" नार्वेजियन में भी is

मर्दाना। लेकिन वह भी "ईट स्क्रिप" (ए .) है
समुद्री जहाज)। लेकिन कण "ईट" का अर्थ है
न्यूट्रम / सेक्सलेस। और आगे वह "ई स्कूटी" है
(एक जहाज के लिए दूसरा शब्द)। और "ई" का अर्थ है
स्त्रीलिंग/महिला लिंग। खैर, अच्छे में भी
ओल्ड इंग्लैंड "क्वीन एलिजाबेथ" वास्तव में है
बिना किसी लिंग या लिंग के। लेकिन व्याकरणिक रूप से
यह (जहाज) सामान्य रूप से एक "वह" भी है
इंग्लैंड। संज्ञा का व्याकरणिक लिंग
असली के लिए कोई सबूत नहीं है - यदि कोई हो - लिंग
या होने का लिंग या उसके पीछे की वस्तु
संज्ञा। एक संकेत, हाँ अक्सर। एक सबूत, नहीं।

२४. प्रेरितों के काम १/४-५ से एक प्रासंगिक टिप्पणी: यीशु
कुछ ही समय पहले अपने शिष्यों से कहा
स्वर्ग के लिए उदगम: "मत छोड़ो"
यरूशलेम, लेकिन उपहार की प्रतीक्षा करें (the
दिलासा देनेवाला/पैराक्लेटोस*) मेरे पिता (यहोवा*)
वादा किया था, जो तुमने मुझे बोलते सुना है

के बारे में। यूहन्ना के लिए पानी से बपतिस्मा दिया, लेकिन एक में
कुछ दिन तुम पवित्र से बपतिस्मा पाओगे
आत्मा"।

1. **दिलासा देने वाले को "एक" में आना चाहिए कुछ दिन"। मुहम्मद कुछ आया ५७७ साल बाद** (यह साल हुआ 33 ई. (या कुछ वर्ष पहले यदि अंतर्राष्ट्रीय वर्ष कुछ ही होते हैं - 4 से 6 - साल देर से) - मुहम्मद ने अपनी शुरुआत की 610 ईस्वी में उपदेश)।
2. यहाँ यीशु आत्मा को पवित्र कहते हैं आत्मा। कुछ ही समय पहले उन्होंने इसे कहा सत्य की आत्मा - और उसने बात की एक ही भावना, क्योंकि (जैसा कहा गया है) पहले) केवल एक ही आत्मा है संपूर्ण NT और संपूर्ण बाइबिल में यहोवा से जुड़ा हुआ है। एक और सबूत ऊपर जो कहा गया है उसके लिए - - - और के लिए कि दो नामों का अर्थ एक ही है।

बाइबल में इस बात के और भी संकेत/प्रमाण हैं कि दिलासा देने वाला पवित्र आत्मा था और
उसके लिए दिलासा देने वाला मुहम्मद नहीं हो सकता - बस बहुत सारे छंद हैं
बाइबल जो उस दावे के साथ "टकराती" है। लेकिन हमने ऊपर जो लिखा है, वह काफ़ी से ज़्यादा है
मुसलमानों और इस्लाम से दावे को अस्वीकार करने के लिए।

इन सभी स्पष्टीकरणों के लिए क्षमा करें, लेकिन मिलने के लिए बहुत सारे दावे थे, और उन सभी को करना पड़ा
उत्तर दिया जाए।

बस 2 और टिप्पणियाँ:

1. बाइबिल एक बड़ी किताब है - एनआईवी की हमारी प्रति बहुत छोटे प्रिंट वाले 700 से अधिक पृष्ठ हैं। इतनी बड़ी किताब में असंभव नहीं है कुछ शब्द खोजें जो कुछ के समान दिखते हों किसी अन्य भाषा में शब्द या शब्द - या कम से कम कुछ के साथ समानता दी जा सकती है घुमा लेकिन वहाँ से यह बहुत दूर की बात है सतही या यहां तक कि मुड़ + सतही . का उपयोग करने के लिए प्रमाण के रूप में प्रतीत होता है समानता - कम से कम एक में ईमानदार बहस। एक अंतर यह भी है एक संभावना और एक सबूत के बीच। और भी

1. कुरान, मुख्य पृष्ठ में 1000+ गलतियाँ। सामग्री - एक सिंहावलोकन
   और अधिक यदि आप ईमानदारी से खोजने की कोशिश कर रहे हैं
   सच क्या है। (लेकिन तब इस्लाम "जानता है" क्या है
   सच है और "सबूत" खोजने के लिए पूरी कोशिश करता है - by
   जो भी आवश्यक हो अक्सर। अंध विश्वास
   और बेईमानी पता लगाने की कोशिश करने से बेहतर है
   क्या सच है और क्या नहीं)।
२. यदि पहले मसीहियों ने दूसरे की अपेक्षा की थी
   भविष्यवक्ता बाद में, एक बात के लिए वे जी चुके थे
   उनका जीवन अलग तरह से (यीशु को

महीनों या कुछ वर्षों में वापसी, उन्होंने योजना बनाई
और उसी के अनुसार रहते थे - अगर उन्होंने उम्मीद की थी
इस बीच एक और नबी, उनके पास था
एक लंबी प्रतीक्षा के लिए योजना बनाई), और इससे भी अधिक:
एनटी में ग्रंथ - विशेष रूप से अक्षरों में
- अलग था।

लेकिन उपरोक्त सभी शब्दों के बावजूद, वास्तव में केवल एक या कुछ तथ्य हैं जिन्हें आपको मारने की आवश्यकता है
इन दावों में वास्तविकता - कि NT में ये छंद पैगंबर मुहम्मद की भविष्यवाणी करते हैं:

1. **मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे - उन्होंने किया था
   वास्तविक भविष्यवाणी का उपहार नहीं है, और
   खुद भी यह दावा नहीं किया कि उसके पास वह उपहार है
   इसे पाने का दिखावा करें। वह केवल "उधार"
   एक प्रभावशाली और प्रभावशाली शीर्षक। और के रूप में वह
   कोई वास्तविक नबी नहीं था - के लिए एक दूत
   कोई या कुछ शायद, लेकिन नहीं
   नबी - वह निश्चित रूप से नबी नहीं था
   जिसके बारे में मूसा ने बात की थी। (यीशु कभी नहीं
   बाद में एक और नबी के बारे में बात की - नहीं
   पूरे एनटी में जगह)**
2. **यीशु ने अपने शिष्यों को एक सहायक का वादा किया था
   कुछ दिन। मुहम्मद 600 साल बाद जीवित रहे
   - वह उनकी मदद नहीं कर सका।**
3. **Parakletos/काउंसलर अदृश्य था
   और शिष्यों के भीतर होना। मुहम्मद
   न अदृश्य था, न भीतर
   शिष्य।**

लघु और सरल और बिंदु तक। (याद रखें कि जब किसी को कई शब्दों की जरूरत हो और
कुछ सरल साबित करने के लिए कई तर्क, अक्सर इसका कारण यह होता है कि वह आपकी अगुवाई करता है
नाक ताकि आप यहाँ और वहाँ गलतियाँ या अमान्य तर्क न देखें। आप अक्सर मिलते हैं
उस तकनीक का उपयोग करने वाले मुसलमान।

लेकिन क्या मुहम्मद बाइबिल में सभी समान हैं?

काला विकल्प।

वास्तव में उस मुहम्मद और इस्लाम के लिए लगातार, गैर-धार्मिक तर्क हैं
अंधेरे अलौकिक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है। हम इस बहस में भारी प्रवेश नहीं करने जा रहे हैं, लेकिन वहां
हमारे मन में शंकाओं से छुटकारा पाने में असमर्थ होने के दो कारण हैं, और वही दो
कारणों का उल्लेख न करना असंभव और गैर-जिम्मेदार बना देता है:

1. अगर कुछ अंधेरे बल - एफ। भूतपूर्व। शैतान - कपड़े पहने
   गेब्रियल की तरह, या अगर उन्होंने उसके दिमाग में काम किया
   - एफ। भूतपूर्व। टीएलई जैसी बीमारी के माध्यम से
   बीबीसी ने प्रस्तावित किया (20. मार्च 2003) जो अक्सर
   लोगों की तरह धार्मिक अनुभव देता है
   मुहम्मद के पास था - या सपनों में, मुहम्मद

पेज ५३७

यह पता लगाने का कोई मौका नहीं था कि वह था
धोखा दिया।

2. मदीना से खूनी और अमानवीय सूरह
जिसने इस्लाम को अमानवीय और कठोर बना दिया
युद्ध धर्म बन गया - और आज है
कुरान के अनुसार - जीने वालों के लिए
के निरस्त भागों के अनुसार कड़ाई से
कुरान, जो सिर्फ का प्रभुत्व है
मदीना से सूरह - एक शैतान को ज्यादा बेहतर बनाता है
की तुलना में यह एक अच्छा, परोपकारी भगवान फिट बैठता है।

उसके कारण हम कुछ तथ्यों का उल्लेख करते हैं:

1. यीशु ने कई जगह कहा कि झूठे भविष्यद्वक्ता करेंगे
उठेंगे, और कि वे बहुतों को धोखा देंगे।
मुहम्मद निर्विवाद रूप से कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे
क्योंकि उसके पास भविष्यवाणी करने का वरदान नहीं था -
और किसी अन्य व्यक्ति ने इतने सारे लोगों का नेतृत्व नहीं किया है
संप्रदाय या धर्म मूल रूप से . पर आधारित है
अमानवीयता (दमन, भेदभाव,
नफरत, गुलामी, "अच्छा और वैध" बलात्कार, "अच्छा"
और वैध" चोरी/लूटना, "अच्छा और"
वैध" और यहां तक कि भगवान के लिए सबसे अच्छी सेवाएं
(?); युद्ध, कुछ बिंदुओं का उल्लेख करने के लिए)।
मुहम्मद उस तस्वीर को बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है
आराम।
2. प्रेरित पौलुस ने उल्लेख किया कि शैतान
कभी-कभी खुद को एक परी के रूप में प्रच्छन्न करता है
रोशनी। मुहम्मद प्रकाश के दूत से मिले -
गेब्रियल - - - या कोई या कुछ
गेब्रियल की तरह बहाना।
3. पौलुस ने यह भी कहा कि एक समय इस पर ध्यान देगा
"शैतानों के सिद्धांत"। जैसा कि ऊपर बताया गया है
मदीना से सूरह बहुत अधिक पसंद हैं
से सिद्धांतों की तरह शैतानों से सिद्धांत
एक अच्छा और परोपकारी भगवान - उल्लेख नहीं करने के लिए
सैटेनिक वर्सेज।
4. पॉल ने यह भी भविष्यवाणी की थी कि एक समय आएगा
जब लोग नहीं खोजेंगे और सुनेंगे
ध्वनि सिद्धांत, लेकिन दंतकथाओं को सुनो। और भी
बहुत से मुसलमान आज और पहले करते थे/नहीं करते थे
सच्चाई की तलाश करें, लेकिन केवल तलाश करें ("सबूत"
के लिए) वे क्या सुनना चाहते हैं। और क्या यह एक है
संयोग है कि अधिकांश किस्से में
कुरान को से "उधार" होने के लिए प्रलेखित किया गया है
परियों की कहानियां, किंवदंतियां और दंतकथाएं? यहां तक कि अधिकांश
जो ओटी से प्रतीत होते हैं और कुछ
ओटी से प्रतीत होता है वास्तविकता में प्रलेखित हैं
बाइबल से नहीं, बल्कि गढ़ी हुई चीजों से आने के लिए

पेज ५३८

किस्से और दंतकथाएं - अपोक्रिफल ग्रंथ और
किंवदंतियों अक्सर।

यदि आप बाइबल पढ़ते हैं तो आपको बहुत अधिक काले कथन, तथ्य और भविष्यवाणियाँ मिलेंगी जो शायद
मुहम्मद और इस्लाम के अनुकूल।

हम अभी इसका जिक्र करते हैं।

विभिन्न तर्क:

दावा:

"१. उत्पत्ति १२/१-३ में इब्राहीम से एक प्रतिज्ञा की गई है कि वह आशीषित होगा और वह सब
राष्ट्र उसे आशीर्वाद देंगे और उसके द्वारा धन्य होंगे। यह केवल इश्माएल के वंशज हैं -
मुहम्मद और मुसलमान - जिन्होंने उस वादे को पूरा किया है जो उन्हें आशीर्वाद देना चाहिए, तब से
ये वही हैं जो इब्राहीम के और उसके परिवार के लिए प्रार्थना करके उसे आशीर्वाद देते हैं। इन श्लोकों को त्याग दो
मुहम्मद को इंगित करना चाहिए।"

बाइबल वास्तव में क्या कहती है:

"यहोवा (यहोवा*) ने अब्राम (बाद में इब्राहीम*) से कहा था, 'अपना देश, अपने पिता का देश छोड़ दो
उस देश में जाकर उस देश में जा, जिसे मैं तुझे दिखाऊंगा। मैं तुम्हें एक महान राष्ट्र बनाऊंगा और मैं करूंगा
तुम्हें आशीर्वाद देते हैं; मैं तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का कारण होगा। मैं उन्हें आशीर्वाद दूंगा जो
तुझे आशीर्वाद दे, और जो कोई तुझे शाप दे, मैं उसे शाप दूंगा; और पृथ्वी के सब लोग आशीष पाएंगे
तुम्हारे माध्यम से।'" यह यहोवा है जो आशीर्वाद दे रहा है - लोगों के बारे में कहीं भी बात नहीं है
उसका आशीर्वाद किसी भी चीज का संकेत है। हम उल्लेख करते हैं कि तर्क देना एक है
वास्तविक तर्कों की कमी का संकेत।

दावा:

"मूसा और यीशु राष्ट्रीय भविष्यद्वक्ता थे और अल्लाह/याहवे के उस वादे को पूरा नहीं कर सकते थे कि
इब्राहीम में राष्ट्र धन्य होंगे। एर्गो १. उत्पत्ति १२/१-३ में मुहम्मद का संकेत होना चाहिए।"

बाइबल वास्तव में क्या कहती है:

मूसा के लिए: "- - - - मैं (यहोवा*) ने तुम्हें (मूसा*) ऊपर उठाया है, ताकि तुम्हें अपनी शक्ति दिखाऊं, ताकि
मेरे नाम का प्रचार सारी पृथ्वी पर हो सकता है।" यहाँ तक कि मूसा भी दुनिया के लिए एक संदेश था
बाइबिल के अनुसार। यीशु के बारे में: उन आदेशों को पढ़ें जो उसने अपने शिष्यों को उनके जाने से पहले दिए थे,
आज्ञा दी कि वे सारे जगत में जाकर सब लोगों को बपतिस्मा देकर अपना चेला बना लें
यहोवा, यीशु और पवित्र आत्मा के नाम पर। केवल छोटे इसराइल पर निशाना बिल्कुल नहीं।
(यीशु ने व्यक्तिगत रूप से सिर्फ एक देश में काम किया, लेकिन धार्मिक नेता मुहम्मद ने भी ऐसा ही किया)। NS
दावा अमान्य है।

दावा:

"अल्लाह / यहोवा ने इश्माएल को एक महान राष्ट्र बनाने का वादा किया। (उत्पत्ति 16/10, 17/18, 21/13।) भाग
एक महान राष्ट्र होने में परमेश्वर की आज्ञाओं को प्राप्त करना शामिल है। एर्गो केवल राष्ट्र प्राप्त कर रहे हैं
विशेष आज्ञाओं का संकेत दिया जा सकता है, जिसका अर्थ अरब और मुहम्मद होना चाहिए।"

उत्तर:

इतिहास के माध्यम से ऐसे कई महान राष्ट्र रहे हैं जिनके पास विशेष आज्ञाएं नहीं हैं
एक एकेश्वरवादी देवता। दावा अमान्य है। (हालांकि हो सकता है - बीच में कोई महान राष्ट्र नहीं हैं
मुस्लिम वाले। कुछ अमीर, लेकिन कोई महान नहीं। क्या यह साबित करता है कि मुहम्मद बाहर हैं
प्रश्न का?)

अध्याय II/5 के लिए पोस्ट स्क्रिप्टम:

इन दावों पर अधिक समय बर्बाद करने का कोई कारण नहीं था, अगर ऐसा नहीं था क्योंकि वे हैं
इस्लामी प्रचार में इतना केंद्रीय नहीं है, क्योंकि उन्हें मुहम्मद और अल्लाह के लिए "सबूत" की आवश्यकता है।

लेकिन अधिकांश दावे बहुत दूर हैं, और यहां तक कि दो मुख्य दावों में भी पानी नहीं है।
ईसाई और जहां तक हम जानते हैं यहूदी आमतौर पर इस पर चर्चा करने की जहमत भी नहीं उठाते - अधिकांश
दावे और तर्क बहुत दूर हैं। दावों का बेहतर हिस्सा एक साजिश में है
सिद्धांत और वहां भी नहीं यदि आप पूरी तरह से वास्तविक तर्कों से बाहर नहीं हैं, तो आपको करना होगा
प्रकट करें कि कुरान को गलत होने से बचाने की कोशिश करने के लिए, और कोशिश करने के लिए आप वास्तव में कितने हताश हैं
इस बात के लिए तर्क खोजें कि मुहम्मद एक नबी था न कि धोखेबाज। लेकिन तर्क
उन्हें कम से कम अपने "तथ्यों" के स्तर का उपयोग करना होगा - या तथ्यों की कमी - जो कि पीछे हैं
दावे और बयान।

कम से कम पढ़े-लिखे, बुद्धिमान लोगों से बात करते समय, इस्लाम ने इसे बेहतर ढंग से गिरा दिया था
तर्क पूरी तरह से - यह बहुत खुलासा है (लेकिन उनके पास वास्तव में कोई विकल्प नहीं है: कुरान के रूप में)
मुहम्मद का उल्लेख बाइबिल में ओटी और एनटी दोनों में किया गया है - उन्हें खोजना होगा
कुछ, क्योंकि नहीं तो कुरान में दो और गलतियां हैं। और वास्तव में गंभीर।
साथ ही, यदि वे इन दावों को छोड़ देते हैं, तो ईश्वरीय संबंध के लिए एक प्रकार के प्रमाण की एकमात्र आशा खो जाती है
- कोई अन्य संभावित दस्तावेज या सबूत नहीं है)।

स्पष्ट रूप से कहा गया: **मुहम्मद भी सुसमाचारों में नहीं हैं। नहीं तो इस्लाम कुछ पैदा करता है
गलत और प्रलेखित दावों से बेहतर, यह बहस सिर्फ समय की बर्बादी है,** सिवाय
कि यह मुसलमानों को वास्तव में एक गंभीर प्रश्न का सामना करने की अनुमति नहीं देता है - और सिवाय इसके कि
दावे कम पढ़े-लिखे गैर-मुसलमानों और अन्यजातियों के प्रति इस्लाम के लिए उपयोगी प्रचार हैं, और
मुसलमानों के प्रति और भी अधिक जो दृढ़ता से विश्वास करना चाहते हैं और अपने विश्वास को मजबूत करना चाहते हैं।
केवल अप्रमाणित दावे और अप्रमाणित कथन के रूप में मौजूद हैं - और यदि दस्तावेज़ या
अन्य सबूत मौजूद थे, इस्लाम ने उन्हें कम से कम एक हजार साल पहले पेश किया था। पर वहाँ
बहुत सारे पुराने दस्तावेज मौजूद हैं जो इस्लाम के दावों के विपरीत साबित होते हैं।

इसके अलावा: **जब एफ. भूतपूर्व। मूसा ने कहा कि "मेरे जैसा एक भविष्यद्वक्ता" आने वाला था, और
मुसलमानों का दावा है कि यह मुहम्मद के बारे में भविष्यवाणी है, यह एक मजाक है: सभी के अलावा
अन्य बिंदु - मुहम्मद "मूसा की तरह एक नबी" कैसे हो सकते हैं जब वह वास्तव में
कोई नबी नहीं था ?!** (अध्याय I/7 देखें)।

मुहम्मद कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे - उन्होंने केवल शीर्षक "उधार" लिया।

एक "भूल गया" तथ्य।

भाग II, अध्याय 6 (= II-6-0-0)

कुरान में अन्य प्रकार की गलतियाँ और त्रुटियाँ, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र

मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें। धारा 1 से 16.

क्या अल्लाह एक ही ईश्वर है यहोवा (भगवान) जैसा दावा किया गया है क़ुरान? - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं

एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

कुरान और इस्लाम ने अपने पूर्ण में से एक के रूप में, लेकिन कभी भी तथ्यों को साबित नहीं किया है कि अल्लाह और
यहोवा वही परमेश्वर है। मुहम्मद ने पाया कि चूंकि केवल एक ही ईश्वर था, और यहूदी और के रूप में
ईसाइयों का एक ईश्वर था, उसे एक ही होना था। इसके अलावा अरबों के पास लंबे समय तक था
सोचा कि यह एक ही ईश्वर (अल-लाह और यहोवा) के लिए सिर्फ दो नाम हो सकते हैं। और कम से कम नहीं:
मुहम्मद ने अपनी अधिकांश शिक्षाओं को यहूदियों के धर्मों के आधार पर बनाया था
और ईसाई - इतना कि जब वह मदीना पहुंचे, तो वह अपना विलय करना चाहता था
यहूदी के साथ शिक्षाएँ।

लेकिन मौलिक रूप से इतने सारे और इतने गहरे अंतर हैं कि यह संभव नहीं हो सकता है
वही। एक और एक ही भगवान इतने अलग-अलग धर्मों की शिक्षा नहीं दे सकते।

जब संबंध की बात आती है तो दो धर्म इस्लाम और ईसाई धर्म बहुत भिन्न होते हैं
उनके भगवान। इस्लाम में वह सबसे दूर और पूर्ण गुरु है - और युद्ध का देवता। NT में वह भी है
परम गुरु, लेकिन साथ ही वह बहुत अलग तरीके से अपनी प्रजा के करीब होता है।
इसके अलावा NT में याहवे/भगवान युद्ध के देवता से बहुत दूर हैं। बहुत दूर।

बेशक इस्लाम उनके मानक स्पष्टीकरण का उपयोग करता है: कि बाइबिल को गलत ठहराया गया है - हालांकि वे कभी नहीं
उस कथन को 1400 वर्षों तक सिद्ध किया है। और वे उस कथन पर कायम रहते हैं - क्योंकि वह
बाइबिल और कुरान के बीच मतभेदों के लिए उनके पास एकमात्र संभावित "स्पष्टीकरण" है,
यह भले ही विज्ञान ने स्पष्ट रूप से दिखाया है कि चर्च द्वारा बाइबल को कभी भी गलत नहीं ठहराया गया था
(कुछ गलतियाँ हो सकती हैं, हालाँकि कुरान की तुलना में बहुत कम - लेकिन कोई मिथ्याकरण नहीं)। यह है
स्पष्ट है कि कुरान में कई कहानियां धार्मिक परियों की कहानियों से "उधार" ली गई हैं,
और भले ही विज्ञान ने बहुत पहले उल्लेख किया है कि दावों को झूठा साबित कर दिया है
कुछ 13oo प्रासंगिक पांडुलिपियां और कागजात के टुकड़े जो सभी के अनुसार हैं
बाइबिल - उनमें से कुछ यीशु की मृत्यु के कुछ वर्षों के बाद से - और वह अधिकांश नए
उनकी मृत्यु के कुछ समय बाद ही वसीयतनामा भी लिखा गया था, जबकि कुरान की तुलना में अधिक लिखा गया था
६०० साल बाद कहानियों के आधार पर - अक्सर परियों की कहानियां - सदियों से शब्दों के माध्यम से बताई जाती हैं-
मुंह, क्योंकि मुहम्मद कोई महान पाठक नहीं थे और लिखित शब्दों की तलाश नहीं करते थे। बेशक
इस्लाम यह दिखावा करता है कि कुरान खुदा ने बनाया है, लेकिन किसी भी खुदा ने कभी ऐसी किताब नहीं बनाई जो पूरी हो

540

पेज ५४१

गलत तथ्यों और अमान्य "संकेत" और "सबूत" और अमान्य तर्क के रूप में। अगली बार जब आप मिलेंगे
मुस्लिम कह रहा है कि बाइबिल गलत है, उसे साबित करने के लिए कहें - वह केवल बयानों के साथ आता है या
कभी सिद्ध नहीं हुए कुरान के संदर्भ, क्योंकि कोई सबूत नहीं हैं। इसके विपरीत जैसा कहा गया है: विज्ञान
ने स्पष्ट रूप से साबित कर दिया है कि बाइबल को मिथ्या नहीं बनाया गया है, बल्कि एक प्रति और समान सामग्री के साथ
सबसे पुरानी पांडुलिपियां।

**इस बात का सबसे अच्छा प्रमाण कि बाइबिल को गलत नहीं ठहराया गया है, इस्लाम और मुसलमानों द्वारा दिया गया है:
अगर इस तरह के मिथ्याकरण के लिए हर इंसान के पास एक ही सबूत मौजूद होता
इस विस्तृत पृथ्वी पर विषय के सामने आने पर इसके बारे में बताया गया था। इस्लाम पूरी तरह से है
उस बिंदु पर चुप - बहुत सारे ढीले दावे, लेकिन एक भी सबूत नहीं। सभी में एक नहीं
विज्ञान के लिए ज्ञात हजारों प्रासंगिक दस्तावेज।**

साथ ही मुसलमान यह दिखावा करते हैं कि आज का कुरान मुहम्मद ने जो कहा है, उसके समान है - जो है
स्पष्ट रूप से सच नहीं है - यदि किसी अन्य कारण से नहीं, तो उसके अलावा अरब लिखित भाषा (वर्णमाला) थी
उस समय बहुत अधूरे थे, और सटीक शब्दों को लिखना अक्सर असंभव था - उन्होंने न तो किया
स्वर हैं, न ही वे बिंदु जो बाद में अरब लेखन में हैं, और उसके कारण, कई
"शब्द" के दोहरे या कई अर्थ होते हैं। इसके अलावा अलग-अलग ग्रंथ भी थे
६५६ ईस्वी के बाद - और कम से कम नहीं: पुराने कुरान और अंश आज के कुरानों से भिन्न हैं - f. भूतपूर्व।
कई 1972 में यमन में पाए गए। एक समय में वहाँ f. भूतपूर्व। अस्तित्व में कम से कम 14 प्रमाणित
कुरान की डिब्बाबंद किस्में (इब्न वाराक: "मैं मुस्लिम क्यों नहीं हूं" और कई अन्य) -
वे इस पुस्तक के निर्देश में सूचीबद्ध हैं (आज 14 में से दो उपयोग में हैं - बड़े पैमाने पर युद्ध
अफ्रीका के कुछ हिस्सों, और बाकी दुनिया में हाफ्स)। तो अगली बार जब आप किसी मुसलमान से मिलें जो कह रहा हो
आज का कुरान मुहम्मद के शब्दों के समान है, इसे साबित करने के लिए कहें - और इनमें से कौन सा
कुरान उन्हें सबसे सही लगता था।

कुछ अंतर दिखाने के लिए हम कुछ विवरणों पर चर्चा करेंगे - लेकिन केंद्रीय विवरण -
एनटी और कुरान के बीच। अंतर सभी समान इतने मौलिक हैं कि यह संभव नहीं है NT

और कुरान उसी ईश्वर की बात कर रहा है।

1. ए जीसस - और 10 आज्ञाएँ - कहते हैं:
   तुम नहीं मारोगे। आदेश निरपेक्ष है।

   कुरान कहता है:

2. एक अच्छे कारण के अलावा मत मारो, और:
3. मुसलमानों को मत मारो (4/92)।
4. इसके अलावा: अध्याय IV के बारे में पढ़ें
   इस्लाम और युद्ध और रोना।

यह असंभव है कि इतने अलग-अलग नियमों और कानूनों के पीछे एक ही भगवान हो।

1. बी जीसस ने कहा: अगर कोई आप में से किसी एक को मारता है
   गाल, दूसरे को उसकी ओर मोड़ें (= आप
   बदला नहीं लेगा)।
2. कुरान कहता है:

   001 2/178: "समानता का कानून निर्धारित है"
   हत्या के मामलों में तुम्हारे लिए "- बदला लो
   (हालांकि क्षमा करना एक अच्छा काम है - या स्वीकार करना
   हत्या करके बदला लेने के बदले पैसा)।

३.००२ २/१९४: "यदि कोई इसका उल्लंघन करता है"
   तेरे विरुद्ध निषेध, तेरा उल्लंघन
   इसी तरह उसके खिलाफ - - -"। बदला लेने।
4. 003 42/20: "चोट के लिए प्रतिपूर्ति है"
   उसके बराबर एक चोट (डिग्री में) (हालांकि नहीं
   बदला लेना अल्लाह के लिए बेहतर है*)"। नियम है: An
   आँख के लिए आँख।

यह असंभव है कि इतने अलग-अलग नियमों और कानूनों के पीछे एक ही भगवान हो।

1. जीसस ने कहा: क्षमा करना पर्याप्त नहीं है
   दुश्मन 7 बार। आपको उसे माफ कर देना चाहिए
   सत्तर गुना 7 बार (= हमेशा)।
2. कुरान कहता है:
३.००४ ९/८०: "--- अगर आप सत्तर बार मांगते हैं
   उनकी माफ़ी, अल्लाह उन्हें माफ़ नहीं करेगा
   - - -"। बस कोई टिप्पणी आवश्यक नहीं है।

यह असंभव है कि इतने अलग-अलग नियमों और कानूनों के पीछे एक ही भगवान हो।

1. यीशु ने कहा: "सम्राट को वह दो जो उसका है
   सम्राट, और ईश्वर जो ईश्वर का है"।
   जिसका अर्थ है कि धर्म चर्च के लिए है,
   और धर्मनिरपेक्ष सरकार के लिए है
   सरकार। मुहम्मद ने सभी शक्ति की मांग की
   इस्लाम को।
2. यीशु ने कहा: एक चरवाहा जिसके पास १०० भेड़ें हैं, जो
   पता चला कि एक खो गया है, अपने झुंड को छोड़ देगा
   (एक सुरक्षित स्थान पर) और खोये हुए की तलाश में जाएं
   एक।
3. कुरान कहता है:

   ००५ २/६-७: "उन लोगों के लिए जो विश्वास को अस्वीकार करते हैं - - -
   अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है---"।
   यहोवा और के बिल्कुल विपरीत
   यीशु कहते हैं।

४.००६ २/२६: "- - - वह (अल्लाह*) बहुतों का कारण बनता है आवारा - - -"। यहोवा अपने से बहुत दूर चला जाएगा भटके हुए लोगों को बचाने का तरीका, और बिल्कुल नहीं इसके विपरीत करो।

5. 007 2/89: "अल्लाह उनका दुश्मन है जो विश्वास को अस्वीकार करें"। जबकि यहोवा अपना छोड़ देता है खोए हुए को बचाने की कोशिश करने के लिए एक सुरक्षित स्थान पर झुंड लें वाले।

६.००८ २/२१३: "क्योंकि अल्लाह जिसे चाहता है उसका मार्गदर्शन करता है" उस मार्ग पर जो सीधा है"। जबकि यहोवा वह हर किसी का मार्गदर्शन करने के लिए अपने रास्ते से बहुत आगे निकल जाता है जन्नत में जा सकते हैं।

542

पेज ५४३

7. 009 4/89: "उनके लिए जिन्हें अल्लाह ने फेंका है" रास्ते से हटकर, आप कभी नहीं पाएंगे मार्ग"। एनटी के अनुसार यहोवा कभी भी किसी को सही रास्ते से न फेंके - और उनका नेतृत्व करने के लिए अपने रास्ते से बहुत आगे निकल जाएगा गलत ट्रैक पर वापस दाईं ओर।

८. ०१० ४/१२१: "हम (अल्लाह*) उसे छोड़ देंगे पथ पर एक जन्नत के लिए नहीं) रास्ते में वह चुना है, और उसे नर्क में डाल दिया है"। यह है गणितीय रूप से यकीन है कि यह वही भगवान नहीं है।

९. ०११ ५/४१: “जो दौड़ लगाते हैं, वे तुझे शोकित न करें एक दूसरे को नर्क में"। कोई टिप्पणी आवश्यक नहीं है।

१०. ०१२ ५/६८: “परन्तु शोक मत करो (इन) विश्वास के बिना लोग ”। 180 डिग्री विपरीत यहोवा/यीशु का दृष्टिकोण क्या है।

११.०१३ ६/३९: "- - - जिसे अल्लाह चाहता है, हे भटकने के लिए छोड़ देता है: जिसे वह चाहता है, हे सीधे रास्ते पर प्लेसथ ”। यहोवा कभी नहीं चाहेंगे कि कोई अनुसरण न करे सही रास्ता।

१२. ०१४ ६/४५: "अधर्मियों (अविश्वासियों) में से अंतिम अवशेष काट दिया गया। पुरस्कार हो अल्लाह - --"। (अंतिम 4 शब्द मीलों के बारे में बताते हैं इस्लाम और के बीच का अंतर यीशु / यहोवा।)

कुरान में इस तरह के और भी बहुत से हैं। और इससे बेहतर तरीका खोजना शायद ही आसान हो यह दिखाने के लिए कि दो देवता कितने अलग हैं - एक मामले में नर्क जाने वालों के लिए अल्लाह की स्तुति करो, और दूसरी ओर, जो भटके हुओं को ढूंढ़ने के लिथे बहुत दूर जाता है।

यह असंभव है कि इतने अलग-अलग नियमों और कानूनों के पीछे एक ही भगवान हो।

. यीशु कहते हैं: अपने साथी पुरुष और स्त्री से प्रेम करो। कुरान कहता है: अपने साथी मुसलमान से प्यार करो - कम से कम अगर वह बुरा नहीं है। और:

१.०१५ ५८/२२: “तुम्हें कोई भी व्यक्ति नहीं मिलेगा जो अल्लाह और आखिरी दिन पर ईमान रखते हैं, प्यार करने वाले जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं।" अन्य पहलुओं के अलावा: केवल कसौटी यह है कि अगर वे अल्लाह से प्यार करते हैं और मुहम्मद.

यह असंभव है कि एक ही भगवान तो पीछे है विभिन्न नियम और कानून।

2. जी जीसस ने कहा: मेरा राज्य इस का नहीं है

दुनिया। मुहम्मद ने कहा: अल्लाह और मेरी आज्ञा का पालन करो।
और मेरे लिए और हमारे लिए युद्ध लड़ो।

यह असंभव है कि एक ही भगवान तो पीछे है
विभिन्न नियम और कानून।

3. एच. जीसस ने कहा: जो कोई दोष नहीं है उसे फेंक दें
पहला पत्थर।
4. कुरान कहता है:

016 24/2: "- - - उनमें से प्रत्येक को a . के साथ कोड़े मारें
सौ धारियाँ - - -"। और इस्लाम अक्सर
वास्तविकता विज्ञापन: महिला को मौत के घाट उतारना, लेकिन नहीं
आदमी। (हालांकि औपचारिक रूप से कुरान
सामान्य रूप से समान सजा की मांग करता है)। या
उस महिला को दंडित करें जो 4 पुरुष नहीं ला सकती
गवाहों ने साबित किया कि उसके साथ वास्तव में बलात्कार किया गया था।

यह असंभव है कि इतने अलग-अलग नैतिक, नियमों और कानूनों के पीछे एक ही ईश्वर हो।

फिर आपके साथी मनुष्यों का प्यार है। यह NT और में बहुत केंद्रीय है
ईसाई धर्म। जबकि इस्लाम में यह अवधारणा लगभग न के बराबर है, सिवाय प्यार के
आपका निकटतम परिवार - और निश्चित रूप से मुहम्मद का। (एक व्यावहारिक प्रभाव यह था कि दासता थी
पश्चिम से समाप्त कर दिया गया। एक और तथ्य यह है कि अधिकांश मानवीय संगठन हैं
में या पश्चिम में उत्पन्न हुआ। यह भले ही इस्लाम उदारता पर जोर देता है - - लेकिन एनटी जोर देता है
कुछ ज्यादा गहरा। कुरान यह भी बताता है कि आपके सबसे करीबी परिवार के प्रति उदारता आपको प्रदान करती है
स्वर्ग में अजनबियों के प्रति उदारता के समान गुण - और फिर अपने बजाय अजनबियों की मदद क्यों करें
पत्नी या बच्चा या माता-पिता? ईसाई धर्म में अपने निकटतम परिवार की मदद करना एक ऐसी बात है
बेशक, यह शायद ही वहाँ बहुत अधिक योग्यता देता है। यह उल्लेख के अलावा और बहुत
मूलभूत अंतर: एनटी कहते हैं: "उन्हें प्यार करो"। कुरान कहता है: "उनके प्रति उदार बनो -
लेकिन ऐसा नहीं कि अपना पर्स खाली कर दें।"

प्रेम का यह अंतर बहुत मौलिक है। बहुत मौलिक। दो धर्म बस हैं
एक ही भगवान से नहीं।

अध्याय II/6 के लिए पोस्ट स्क्रिप्ट:

इस तरह की छोटी-छोटी बातों में भी, इतने बुनियादी अंतर हैं
शिक्षा, कि यह असंभव है कि एक ही भगवान ने इतने अलग नियम और कानून बनाए। यह और भी
इसलिए, चूंकि ये "छोटी" चीजें धर्मों के मूल सिद्धांतों में भारी अंतर को प्रकट करती हैं और
जिस तरह से देवता प्रतिक्रिया करते हैं और सोचते हैं।

और कई अन्य बुनियादी अंतर हैं।

क्षमा करें इस्लाम, लेकिन **कोई रास्ता नहीं है कि अल्लाह याहवे/ईश्वर के समान हो सकता है। जैसा कि पहले कहा गया था: तब तक नहीं जब तक कि वह स्किज़ोफ्रेनिक न हो** ।

भाग II, अध्याय 7 (= II-7-0-0)

कुरान में अन्य प्रकार की गलतियाँ और त्रुटियाँ, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।

पेज ५४५

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें। धारा 1 से 16.

क्या अल्लाह बेहतर है - अधिक परोपकारी, आदि। - भगवान की तुलना में बाइबिल के यहोवा (भगवान) की तरह कुरान में दावा किया? - NS मुहम्मद की पवित्र पुस्तक, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

यह अध्याय अभी प्रकाशित होने के लिए तैयार नहीं है, और इसे 2010 में जोड़ा जाएगा)।

भाग II, अध्याय 8, उपअध्याय 1 (= II-8-1-0)

कुरान में अन्य प्रकार की गलतियाँ और त्रुटियाँ, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें। धारा 1 से 16.

300+ आंतरिक विरोधाभास कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

545

पेज ५४६

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

कुरान का दावा है कि कुरान में कोई विरोधाभास नहीं है। मुहम्मद ने दावा किया कि वहाँ नहीं थे
कुरान में विरोधाभास। इस्लाम का दावा है कि कुरान में कोई विरोधाभास नहीं है। मुसलमानों
दावा है कि कुरान में कोई विरोधाभास नहीं है।

वे बिना किसी गलती के दावा करते हैं - और वे गलत हैं। वहां बहुत सारे हैं।

कुरान में विरोधाभासों को 3 श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

1. कुरान और कुछ के भीतर विरोधाभास
   हदीसों तक। ये मौजूद नहीं हैं
   इस्लाम के अनुसार, और उसी कारण से
   बिंदु 2 में, साथ ही यह कि अंतर्विरोधों की कमी -
   गलतियों की दावा की कमी की तरह - एक सबूत है
   इसके लिए किताब अल्लाह की ओर से आई है। लेकिन
   यहां किसी के लिए भी इसे जांचना इतना आसान है
   विरोधाभास वास्तविक हैं - और जैसे हैं
   असली, हो सकता है कि वे साबित करें कि किताब कहां से नहीं है
   अल्लाह? - इस मामले में एक और सबूत।
   (निरसन भी एक तरह से विरोधाभास है
   कुरान में पाठ के लिए, नए पाठ के रूप में अधिक
   या कम पुराने के विपरीत है। लेकिन यह एक है
   विशेष मामला जो दूसरे में संभाला जाएगा
   अध्याय।)
2. वास्तविकता के साथ विरोधाभास। वहां अत्यधिक हैं
   वे, लेकिन हम यहाँ कुछ का ही उल्लेख करेंगे,
   क्योंकि अधिकांश गलत तथ्य (अध्याय .)
   II/1) वास्तव में एक ही समय में हैं
   वास्तविकता के साथ विरोधाभास - 2000+ of . हो सकता है
   उन्हें। ये विरोधाभास मौजूद नहीं हैं,
   मुसलमानों के अनुसार - अस्तित्व में नहीं हो सकता, क्योंकि
   तो कुरान गलत है और इस्लाम बना हुआ है
   धर्म - - - लेकिन यह किसी के लिए भी आसान और मुफ्त है
   यह जांचने के लिए कि क्या वे सच हैं। फिर वे क्या करते हैं
   पटोव?
3. बाइबिल की तुलना में विरोधाभास (और .)
   कुछ अन्य पुस्तकों/परंपराओं के लिए - मुहम्मद
   एफ। भूतपूर्व। कुछ किंवदंतियों का खंडन/मोड़ करना पड़ा,
   पुरानी कहानियाँ, आदि, अपने धर्म में फिट होने के लिए)। NS
   बाइबिल में विरोधाभास विशेष हैं
   कई तरीके, एफ। भूतपूर्व। क्योंकि यह बहुत सामान्य है
   मुसलमानों का सिर्फ दावा करने का कारण यह है कि
   बाइबल मिथ्या है, भले ही विज्ञान लंबे समय से हो
   दावे को असत्य साबित कर दिया है, और भले ही
   मुसलमान न कभी हैं और न कभी सक्षम हुए हैं
   अपने दावों को साबित करने के लिए। दावे सस्ते हैं।

ध्यान दें: विरोधाभास और निरसन के बीच का अंतर कभी-कभी मनमाना होता है। एक
निरसन हमेशा कुरान और / या में अन्य छंदों के साथ आंतरिक रूप से एक विरोधाभास था
वास्तविक जीवन के साथ।

एक - कुछ हद तक मनमाना - भेद करना: अल्लाह/मुहम्मद ने कुछ कहा है
जो अन्य बातों के विपरीत कहा गया था। यदि यह जीवन या धर्म में मामूली परिणाम का था, तो यह
को नज़रअंदाज़ कर दिया गया - और बस उस पाठ में एक विरोधाभास बन गया जिसे लोग और इस्लाम जी सकते थे
जब तक उन्होंने इसे अनदेखा किया, यह नहीं समझा कि यह एक विरोधाभास था, या समझा सकता था
इसे दूर।

लेकिन अगर विरोधाभास शिक्षा के लिए अधिक केंद्रीय था या दैनिक या धार्मिक में प्रभाव डालता था
अनुयायियों का जीवन, यह स्पष्ट होना था कि कौन सा विरोधाभासी संदेश मान्य था
एक। यह औपचारिक रूप से "ईमानदारी से" ढोंग करने और यह बताने में सक्षम होने के लिए कि "कोई नहीं हैं"
कुरान में विरोधाभास" - - - क्योंकि विरोधाभास निरस्त और अमान्य हैं और

पुस्तक के अर्थ से चला गया, भले ही पाठ से नहीं। में इस तरह की औपचारिकताएं जरूरी हैं
इस्लाम। इस वजह से, और कुरान की कुछ आयतों के आधार पर (उदा. २/१०६, १६/१०१), वे
निरसन का नियम बनाया: यदि कुरान में दो या दो से अधिक छंद "टकराव" करते हैं तो यह सामान्य रूप से है
सबसे छोटा जो वैध है। (लेकिन सावधान रहें कि "निरस्त" शब्द कुछ हद तक भरा हुआ है
कई मुसलमानों के लिए, क्योंकि यह साबित करता है कि अल्लाह को कभी-कभी अपना मन बदलना पड़ता था, या वह था
एक बार में सही नियम बनाने में असमर्थ, लेकिन कोशिश करनी पड़ी और असफल होना पड़ा - जैसे मुहम्मद हो सकते थे
उम्मीद की जाती है कि अगर उसने कुरान बनाया है तो उसे करना होगा - और वह मामले में सिर्फ एक और संकेत/सबूत है
उसके लिए किसी सर्वज्ञ ईश्वर ने पुस्तक नहीं बनाई - - और अल्लाह को सर्वज्ञ होना चाहिए। वे इसलिए
इसके बजाय अक्सर दूसरे शब्दों का प्रयोग करें।) निरसन के बारे में अध्याय भी देखें।

आप देखेंगे कि कई मामलों में यह वही छंद/बिंदु हैं जिन्हें निरस्त कर दिया गया है (और इस प्रकार
एक ही समय का खंडन किया जाता है) कई अन्य छंदों द्वारा, और दूसरी तरफ। (भी अक्सर
जिन छंदों का निरादर नहीं किया गया है, वे एक से अधिक अन्य श्लोकों द्वारा खंडित हैं)। कारण
बस इतना है कि कई या अधिकांश कठोर छंद - मुख्य रूप से मदीना से जहां इस्लाम बदल गया
एक युद्ध धर्म के लिए - प्रत्येक एक ही नरम छंद के कई या अधिकांश का खंडन और खंडन करता है -
मुख्य रूप से पहले के समय (मक्का अवधि) से। कुछ अन्य श्लोकों के बारे में भी यही बात है - भी
कुछ ऐसे हैं जिनका सिर्फ खंडन किया गया है, लेकिन निरस्त नहीं किया गया है।

यदि आप वास्तव में गणना करना चाहते हैं कि वास्तव में यहाँ कितने परस्पर विरोधी बिंदु हैं, तो आप
यह अध्याय केवल प्रत्येक टिप्पणी के अंत में संख्याओं को जोड़ता है। जहां कोई संख्या नहीं है,
गिनें 1. फिर आप 2 से विभाजित करते हैं क्योंकि विरोधाभासी और विरोधाभासी कविता दोनों हैं
शामिल। अंत में आप बहुत कम जोड़ते हैं, क्योंकि सभी जोड़े में नहीं होते हैं।

अंत में: हर बार एक कविता दूसरे के साथ "टकराती" है, यह एक विरोधाभास है (जो कई में
मामलों को निरस्त किया जाना है) - और सैकड़ों या अधिक हैं (हमारे द्वारा सूचीबद्ध की तुलना में बहुत अधिक)।
लेकिन इसे कितने श्लोकों के साथ न मिलाएं जो विरोधाभासी या निरंकुश हैं। क्योंकि कई
छंद अक्सर एक ही अन्य छंदों का खंडन या निरसन करते हैं, विरोधाभासी की संख्या और
निराकृत श्लोक बहुत प्रिय हैं-सैकड़ों में खण्डित श्लोक और निराकृत श्लोकों में
कम सैकड़ों (लेकिन याद रखें कि केवल मुस्लिम विद्वानों के अनुसार केवल 9/5 ही निरस्त करता है
124 हल्के छंद)।

गलतियों के संबंध में कुरान में स्थिति कितनी खराब है, इसका एक दृश्य प्रभाव देने के लिए
और त्रुटियां, हमने प्रत्येक विरोधाभासी के लिए सभी आंतरिक अंतर्विरोधों को दिखाने के लिए चुना है
केवल एक योग लिखने के बजाय पद्य/बिंदु, (और निरसन के लिए समान)। हर रोज़
इस सूची में संख्या एक श्लोक को दूसरे का खंडन करते हुए दिखाती है - और यदि आप सभी को एक साथ जोड़ते हैं, तो आप पाएंगे
देखें कि इस सूची में ५३९० टकराने वाले छंद (+ संभावित अंतर्विरोध) हैं। प्रत्येक टक्कर के रूप में

२ श्लोक लेता है, अर्थात इस सूची में २६९५ अंतर्विरोध = २६९५ गलतियाँ या
त्रुटियां, और वास्तव में और भी बहुत कुछ हैं। (लेकिन याद रखें कि जितने
छंद का कई या बहुत बार विभिन्न अन्य छंदों द्वारा खंडन किया जाता है, 300 . से थोड़ा कम
छंद (+ 19 संभावित विरोधाभास) इस सूची में शामिल हैं - लेकिन जैसा कि कहा गया है: और भी हैं, जैसे
हमने सब से दूर पाया है। (१४०० वर्षों के बाद भी इस्लाम में कोई सूची नहीं है जो बता रही है
किन छंदों का निरादर किया गया है और किन छंदों से, जिनका निरसन किया जा सकता है, और कौन से हैं
निरस्त नहीं किया गया।)

पुनश्च: हमने इसे इंटरनेट पर लॉन्च करने से ठीक पहले कुछ विरोधाभास जोड़े हैं। जैसा कि हम जोड़ेंगे
कुछ और जब हम २०१० में इस पुस्तक को समाप्त करते हैं, तब तक हम गणित के सुधार के साथ प्रतीक्षा करते हैं
फिर।

001 1/1-7: "अल्लाह के नाम पर, सबसे दयालु, सबसे दयालु, अल्लाह की स्तुति करो - - - तुम
क्या हम (मुहम्मद और मुसलमान*) इबादत करते हैं और आपकी मदद चाहते हैं। हमें सीधा रास्ता दिखाओ - - -
". कुरान एक विरोधाभास से शुरू होता है। वे सभी स्थान जहाँ मुहम्मद ने अल्लाह को उद्धृत किया शुरू होता है
"कहो" शब्द के साथ। यह यहाँ मौजूद नहीं है, जिसका अर्थ है कि यह मुहम्मद है जो प्रार्थना कर रहा है
- एक किताब में दावा किया और माना जाता है कि कम से कम आदम से पहले अल्लाह द्वारा बनाया गया था, तब से
आदम भी (जो वास्तव में पहले के प्राइमेट से विकसित मनुष्य के रूप में अस्तित्व में नहीं था) था
पुस्तक से परिचित कराया गया है, लेकिन शायद अनंत काल से अस्तित्व में है - जिसका अर्थ है कम से कम तब से
लगभग 13.7 अरब साल पहले ब्रह्मांड के निर्माण से पहले)। और एक किताब जो . है
स्वर्ग में श्रद्धेय और अपरिवर्तनीय मदर बुक - अल्लाह और उसके स्वर्गदूतों द्वारा अपने आप में पूजनीय
"घर"। असंभव और एक ठोस आंतरिक विरोधाभास।

मुसलमान इसे समझाने की कोशिश करते हैं कि अल्लाह सर्वज्ञ है और सब कुछ जानता है, और निश्चित रूप से
यह भी जानता था - कि मुहम्मद प्रार्थना कर रहे होंगे, और इसे मदर बुक में शामिल किया।
समय की शुरुआत।

समस्या केवल यह है कि यह सैद्धांतिक रूप से असंभव भी है यदि मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा है - और यदि मनुष्य कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं है, तो एक बात के लिए कुरान झूठ बोल रहा है, और दूसरी बात: फिर कैसे अल्लाह की इच्छा के अनुसार काम करने वाले सभी बुरे और अन्यायपूर्ण व्यक्तियों की व्याख्या करें, और कैसे उचित ठहराएं कि संभवतः एक अच्छा ईश्वर मनुष्यों को इस तरह से व्यवहार करने के लिए मजबूर करता है कि वे नर्क में समाप्त हो जाते हैं?

उस का संयोजन अल्लाह सब कुछ बहुत पहले से जानता है - यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि वह फैसला करता है सब कुछ - और मनुष्य के लिए स्वतंत्र इच्छा एक परम असंभव है। असल में यह "the ." का एक संस्करण है समय यात्रा विरोधाभास ”और वह विरोधाभास लंबे समय से असफल साबित हुआ है।

इसे समझने का एक आसान तरीका है:

1. अल्लाह सर्वज्ञ है। लेकिन पल अल्लाह कहते हैं: अब मुझे भविष्य पता है, आदमी कर सकता है कुछ भी नहीं जो अल्लाह को जानता है उसे बदल देता है, क्योंकि इससे अल्लाह का ज्ञान हो जाएगा गलत। मनुष्य के पास उससे कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं है पल (और याद रखें कि अल्लाह ने आपने पहले से तय किया है और आपके जीवन को जानता है पैदा हुए थे - और इस विशेष मामले में बहुत कुछ लंबा)।
2. मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा है। तब यह संभव नहीं है भविष्य जानने के लिए अल्लाह, क्योंकि एक आदमी कर सकता है हमेशा अपना मन एक बार और बदलें। फिर

अल्लाह सर्वज्ञ नहीं है, या कम से कम पूरी तरह से नहीं है भेदक

वास्तव में इस्लाम स्वीकार करता है कि वे इसकी व्याख्या करने में असमर्थ हैं - शायद सबसे बड़ा - विरोधाभास। उनका समाधान केवल यह कहना है: हम इसे समझ या समझा नहीं सकते हैं, लेकिन अल्लाह के रूप में सच होना चाहिए कुरान में ऐसा कहो (!!!)

अंतिम हार। लेकिन जैसा कि यह स्पष्ट करता है कि कुरान में प्रार्थना कैसे समाप्त हुई - अ बहुत पुरानी मदर बुक की कॉपी - अगर मुहम्मद सच में इबादत कर रहे होते तो ये ही होते हैं ४ संभव समाधान:

1. अल्लाह खुद से मां की दुआ कर रहा था पुस्तक। चर्चा करने के लिए बहुत हास्यास्पद।
2. मुहम्मद वास्तव में प्रार्थना कर रहे थे, लेकिन बाहर मदर बुक का पाठ। पर कैसे कुरान में और भी बहुत कुछ है तो बाहर से मदर बुक?
3. यह वास्तव में मदर बुक से है, लेकिन अल्लाह या गेब्रियल आवश्यक शब्द "कहो" भूल गया - लेकिन कितने और शब्द भूल जाते हैं कुरान में?
4. यह मदर बुक में था और न ही अल्लाह न ही गेब्रियल भूले - लेकिन मुहम्मद ने किया। परंतु तब - अगर वह कुछ भूल गया, तो कितना और क्या वह भूल गया कि अंदर होना चाहिए था कुरान?

अपनी पसंद चुनें।

इसी तरह के विरोधाभास हैं - मुहम्मद बोल रहे हैं - इस दावे के साथ कि यह सब से है अल्लाह, कम से कम इन आयतों में: 2/286, 6/104, 6/114, 11/2-3, 19/36, 27/91, 41/10 और 51/50-51। इसके अलावा कम से कम एक ऐसा स्थान है जहाँ यह स्पष्ट होता है कि फ़रिश्ते बोल रहे हैं - जिससे यह असंभव है कि पुस्तक अनंत काल से हो, क्योंकि कम से कम कुछ स्वर्गदूत बनाए गए हैं

पुस्तक से पहले (यदि स्वर्गदूत पुस्तक में नहीं बोल सकते थे)।

002 2/34: "हम (अल्लाह *) ने फ़रिश्तों से कहा: 'आदम को झुको', और वे झुके: नहीं
तो इब्लीस - - -।" लेकिन इब्लीस (शैतान) कोई फरिश्ता नहीं था। कुरान के अनुसार फ़रिश्ते बनाये जाते थे
प्रकाश से, जबकि जिन्न आग से बने थे। और इब्लीस कुरान में कई बार कहता है कि वह है
आग से बना - वह एक जिन्न था।

००३ २/३७: "फिर आदम ने अपने रब (अल्लाह*) से प्रेरणा के शब्द सीखे (मुसलमान* हो गए)
- - -"।

कम से कम इन छंदों से इसका खंडन होता है:

१.६/१४: "लेकिन मुझे (मुहम्मद*) आज्ञा दी गई है
अल्लाह को नमन करने वालों में सबसे पहले
इस्लाम - - -।" मुहम्मद पहले मुसलमान थे।
२.७/१४३: मूसा ने कहा: "मैं सबसे पहले विश्वास करने वाला हूँ"।

(वास्तव में अन्य दावा किए गए नबियों के साथ इस तरह के और भी हैं।)

(२ विरोधाभास)।

००४ २/४९: "- - - हम (अल्लाह*) ने तुम्हें फ़िरऔन (जो*) के लोगों से छुड़ाया - - -
अपने पुत्रों का वध किया - - -"। वास्तव में यह उसके अनुसार है जो बाइबल बताती है (The .)
कुरान बताता है कि बच्चे मूसा को नील नदी (20/39) में डाल दिया गया था, लेकिन इस तरह का कोई कारण नहीं बताया
अपराध। बाइबल बताती है कि यह सभी यहूदी लड़कों को मारने के शाही आदेश के कारण था)। लेकिन यह
कुरान में दो छंदों का खंडन करता है जो यह नहीं बताता कि यह किया गया था, लेकिन यह कि फिरौन शुरू होगा
मूसा के साथ टकराव के दौरान ऐसा करना। (7/141 और 14/6 में समान)।

१.७/१२७: "उसने (फिरौन*) ने कहा: 'उनका पुरुष'
बच्चों को हम मारेंगे: (केवल) उनकी मादा
क्या हम जिंदा बचाएंगे - - -"। और यह स्पष्ट है कि
यह तेजी से शुरू करना है।
2. 40/25: "विश्वास करने वालों के पुत्रों को मार डालो"
उसे (मूसा*)"।

(२ विरोधाभास)।

005 2/62: "जो लोग (हमारे कुरान में) ईमान रखते हैं, और जो यहूदी (शास्त्रों) का पालन करते हैं।
और ईसाई - कोई भी जो अल्लाह में विश्वास करता है (= भगवान / यहाँ यहोवा *) और अंतिम दिन, और
धार्मिकता से काम करो, उनका प्रतिफल उनके प्रभु के पास होगा (स्वर्ग में जाओ *) - - -"।
विरोधाभासी - और निरस्त - द्वारा:

१. ३/८५: "अगर किसी को धर्म के अलावा कोई और चाहिए"
इस्लाम (अल्लाह को अधीनता), यह कभी नहीं होगा
उसे स्वीकार किया - - -।" हाँ: "कोई मजबूरी नहीं
धर्म में।" (मक्का से भी, लेकिन शायद ही
रक्षात्मक - ऊपर 3/28 देखें)।
२. ५/१७: "निन्दा में (और दण्ड दिया जाएगा)
5/73* के अनुसार। कि यीशु दिव्य है तो
अल्लाह की तरफ से एक और भगवान रखो, जो है
के अनुसार परम और अक्षम्य पाप
4/48 और 4/116। यह यीशु को बड़ा भी बनाता है
मुहम्मद की तुलना में पैगंबर, जो मुहम्मद
और इस्लाम स्वीकार नहीं कर सकता) वे हैं जो कहते हैं
कि अल्लाह मरियम का पुत्र मसीह है।" यह था
ईसाइयों को छोड़ दिया - मुहम्मद की तरह
स्पष्ट रूप से इरादा - - - अगर ऐसा नहीं था क्योंकि
ईसाई ईश्वर = जीसस नहीं कहते।
मुहम्मद ट्रिनिटी को नहीं समझते थे।

3. 5/72: "जो कोई अल्लाह के साथ अन्य देवताओं में शामिल हो जाता है - अल्लाह उसे बाग मना करेगा - - -।" इस
कम से कम ईसाइयों के लिए सड़क को अवरुद्ध करता है, as
इस्लाम के अनुसार यीशु (और मारिया!) हैं
देवताओं में शामिल हो गए (और ट्रिनिटी के कुछ हिस्सों -
मुहम्मद ने न तो कभी समझा
ट्रिनिटी, न ही पवित्र आत्मा (हालांकि उन्होंने इस्तेमाल किया
पवित्र आत्मा कुरान में कुछ बार)।

550

पेज ५५१

४.५/७३: "वे अल्लाह की बात कहने वाले की निन्दा करते हैं"
(भगवान/याहवे) एक त्रिएक में से एक है - - - a
ईशनिंदा करने वालों को होगी कड़ी सजा
उनमें से।" ईसाइयों को कौन सा वाक्य
भाड़ में।
5. 8/38: "काफ़िरों से कहो, अगर (अब) वे
(अविश्वास से (मुसलमान बनें*))
उनका अतीत उन्हें माफ कर दिया जाएगा, लेकिन अगर वे
जारी रहें, उनके सामने वालों के लिए सजा
पहले से ही है (उनके लिए चेतावनी का विषय)"।
6. ९/१७: "यह उन लोगों के लिए नहीं है जो देवताओं के साथ जुड़ते हैं
अल्लाह (= भगवान / यहाँ यहोवा *) - - -। - - - आग में
क्या वे निवास करेंगे"। ईसाइयों के लिए कोई उम्मीद नहीं
उनका यीशु, जो इस्लाम के अनुसार है
ईसाइयों द्वारा गलत तरीके से दिव्य के रूप में देखा गया - in
2/62 के बावजूद।
7. 9/29: "उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते,
न ही अंतिम दिन, न ही उसे मना है
जिसे अल्लाह और उसके द्वारा मना किया गया है
पैगंबर (मुहम्मद *), स्वीकार नहीं करते
सत्य का धर्म (भले ही वे हों)
पुस्तक के लोग (यहूदी और ईसाई .)
मुख्य रूप से), जब तक वे जजिया का भुगतान नहीं करते ("काफिर" -टैक्स
जहां इस्लाम ने कोई ऊपरी सीमा निर्धारित नहीं की है, और वह
इतिहास के माध्यम से अक्सर बहुत
high*) इच्छुक सबमिशन के साथ, और महसूस करें
खुद को वश में कर लिया"। काफिरों पर विजय प्राप्त करें
और फिर उन्हें नीग्रो की तरह जीने दो
दक्षिण अफ्रीका में या दक्षिणी में रंगभेद
१९०० के दशक की शुरुआत में संयुक्त राज्य अमेरिका में राज्य - - - वाले
जिन्हें गुलामी में नहीं लिया गया था - विशेष रूप से
महिलाएं। हां, कोई मजबूरी नहीं - न तो द्वारा
तलवार पहले, न नष्ट अर्थव्यवस्था से
और सामाजिक जीवन, आदि हार के बाद और बाद में।

(7 विरोधाभास)।

006 2/97: "जो कोई गेब्रियल का दुश्मन है - क्योंकि वह नीचे लाता है (रहस्योद्घाटन (= कुरान*)) (कम से कम जो "प्रेरणा"* द्वारा नहीं लाया गया है) - - -"। इसके विपरीत:

१.१६/१०२: "- - - पवित्र आत्मा लाया है
अपने रब की ओर से रहस्योद्घाटन (= कुरान*)
(अल्लाह*) - - -।" कम से कम आंशिक रूप से विरोधाभास।
मुसलमान कभी-कभी कहते हैं कि गेब्रियल लाया
उनमें से अधिकांश जिन्हें द्वारा नहीं भेजा गया था
"प्रेरणा", लेकिन वह पवित्र आत्मा लाया
कुछ, और वे इससे दूर हो गए होंगे -
- - अगर ऐसा नहीं होता क्योंकि दूसरे मुसलमान कहते हैं
कि यह उस पवित्र के लिए प्रमाणों में से एक है
आत्मा = गेब्रियल (एसआईसी !!)।

551

पेज ५५२

***007 2/106: "हम (अल्लाह*) हमारे किसी भी रहस्योद्घाटन को रद्द नहीं करते हैं या भुलाने का कारण नहीं बनते हैं, लेकिन हम कुछ बेहतर या समान स्थानापन्न करते हैं"। खैर, यह एक विरोधाभास है - और एक निरसन - अपने आप में। (नोट: कुछ मुसलमान पसंद करते हैं - जैसे कुरान में यहाँ - शब्द "विकल्प", क्योंकि यह उनके लिए कम "भारित" शब्द है, लेकिन इस मामले में अर्थ बिल्कुल सही है समान - केवल एक शब्द दैनिक अंग्रेजी से है, दूसरा लैटिन से लिया गया है। यह वास्तव में इस्लाम में निरसन के अभ्यास के पीछे छंदों में से एक है। यह भी एक कारण हो सकता है - मुख्य कारण हो सकता है - कुरान में मूल रूप से निरस्त छंदों को क्यों शामिल किया गया था - उन्हें इस अर्थ में निरस्त नहीं किया जाना चाहिए कि उन्हें भुला दिया जाए। **लेकिन निरसन है इस्लाम में नितांत आवश्यक है, क्योंकि इसमें इतना अंतर्विरोध है कि स्थिति असंभव होगा जब तक कि उन्हें कई बनाकर समाप्त नहीं किया जा सके अमान्य।** निरसन के बारे में अलग अध्याय से। कुरान वास्तव में इस बिंदु का खंडन करता है:

१.६/११५: "--- उसे कोई नहीं बदल सकता (अल्लाह का) शब्दों - - -"। खैर, वह विरोध कर रहा है और खुद को निरस्त करना, क्योंकि वह स्पष्ट रूप से इसे बदलता है खुद जब कोई चीज उसे मजबूर करती है - कोशिश करें और असफल? या अधिक के बारे में अपना विचार बदलें खून और अन्याय 622 ई. - या अन्य समस्याओं या चीजों के कारण जो उसके पास है सीखा?

२. १०/६४: "इसके बाद, इसमें कोई बदलाव नहीं हो सकता" अल्लाह के शब्द। " **एक बात के लिए यह वाक्य का उन लोगों पर गंभीर प्रभाव पड़ता है जो कहो कि कुरान में पूर्वनियति नहीं है वास्तविक पूर्वनियति: गलत - अगर अल्लाह के पास है कुछ कहा या सोचा या लिखा, नहीं आदमी की स्वतंत्र इच्छा कुछ भी बदल सकते हैं** - - - जिसका अर्थ है कि कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं है, और यह है पत्थर में खुदी हुई के रूप में निश्चित रूप से पूर्वनिर्धारित। परंतु यहाँ अधिक प्रासंगिक यह है कि वहाँ थे अल्लाह के में कई और कभी-कभी बड़े बदलाव इसके बाद के शब्द 621 ई. में "रहस्योद्घाटन"।

(२ विरोधाभास)।

008 2/107: "और उसके (अल्लाह*) के सिवा तुम्हारा न कोई संरक्षक है और न सहायक।" लेकिन विरोधाभासी इससे कम से कम:

१.९/७१: "विश्वासियों, पुरुषों और महिलाओं, हैं एक दूसरे के रक्षक - - -।"

२.४१/३१: "हम (स्वर्गदूत*) आपके रक्षक हैं यह जीवन और परलोक में"।

(२ विरोधाभास)।

009 2/109: "- - - लेकिन क्षमा करें और अनदेखा करें - - -"। समय-समय पर ये कोमल शब्द मदीना आने के 1-2 साल बाद मुहम्मद ने अपने धर्म के लिए यहूदियों को जीतने की कोशिश की, जल्द ही कठोर शब्दों द्वारा निरस्त कर दिया गया। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम . द्वारा "मार डाला" जाता है ये पद: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८ -39 (द चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,

पेज ५५३

35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०१० २/१२३: "(वह दिन (कयामत का) जब) एक आत्मा दूसरे का लाभ नहीं उठाएगी - - - और न ही करेगी हिमायत उसे (आत्मा*) लाभ - - -।" एक पूर्ण कानून: कोई मध्यस्थता संभव नहीं है। परंतु:

१. २०/१०९: "उस दिन (कयामत का दिन*) कोई हिमायत का फायदा नहीं, सिवाय उन लोगों के जिन्हें (अल्लाह) द्वारा अनुमति प्रदान की गई है - - -।" यहाँ यह संभव है यदि अल्लाह अनुमति दे।
२.३४/२३: "उसके पास कोई सिफ़ारिश नहीं हो सकती" (अल्लाह की*) उपस्थिति (= . के दिन पर) कयामत*), सिवाय जिसके उसने दी है अनुमति।" हिमायत ठीक है अगर अल्लाह अनुमति देता है।
३.४३/८६: "और जिन्हें वे पुकारते हैं ("भगवान", संत *) अल्लाह के अलावा कोई शक्ति नहीं है हिमायत का - केवल वह (है*) जो सहन करता है सत्य के साक्षी - - -।" शब्द "वह" अल्लाह का ज़िक्र नहीं कर सकता, क्योंकि कुरान तब हमेशा पूंजी 1 अक्षर ("उसका") का प्रयोग करें। परंतु कुरान के अनुसार पैगंबर और दूतों को "गवाही करने के लिए" बुलाया जाना है सच्चाई के लिए"। "वह" इसलिए संदर्भित होना चाहिए प्रत्येक नबी और दूत (or कम से कम मुहम्मद के लिए, जो अल के अनुसार- बुखारी को मध्यस्थता करने का अधिकार है) - - - कौन इस श्लोक के अनुसार करने की शक्ति है हस्तक्षेप करना

1/123 के बावजूद हिमायत असंभव नहीं है - यह केवल अनुमति लेता है।

(३ विरोधाभास।)

०११ २/१२५-१३२: यह उद्धृत करने के लिए बहुत लंबा है, लेकिन यह स्पष्ट है कि कुरान के अनुसार इब्राहीम एक भक्त मुसलमान था और मुहम्मद से बहुत पहले इस्लाम में अल्लाह को नमन करता था। ये श्लोक इस प्रकार स्पष्ट रूप से छंद ६/१४ और कुछ अन्य के दो संभावित अर्थों में से एक का खंडन करता है पद्य नीचे 6/14 देखें।

०१२ २/१३९: "- - - हम (मुसलमान*) अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार हैं और आप (गैर-मुस्लिम*) के लिए तुम्हारा - - -" लेकिन वह 9/5 और अन्य कठिन छंदों से बहुत पहले था। इस कविता को निरस्त किया जाता है - अमान्य किया गया - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन छंद भी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह देना या अनुमति देना (तलवार के साथ) पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०१३ २/१७३: "उसने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुसलमानों*) मरे हुए मांस, और खून, और सूअर का मांस, और जिस पर अल्लाह के अलावा और कोई नाम लिया गया है। ”
यह अन्य छंदों द्वारा खण्डन किया गया है जो f को भी प्रतिबंधित करता है। भूतपूर्व। गला घोंट दिया या गोर जानवर, अन्य जानवरों और हदीसों द्वारा मारे गए जानवर, जो गधे के मांस को प्रतिबंधित करते हैं।

00a 2/180: "यह निर्धारित है, जब मृत्यु आप में से किसी के पास आती है, यदि वह कोई सामान छोड़ देता है, तो वह एक वसीयत करना - - -।" लेकिन क्यों? - यह वास्तव में शरिया कानूनों द्वारा निरस्त किया गया है विरासत।

०१४ २/१९०: "- - - लेकिन सीमा (युद्ध में*) - - - का उल्लंघन न करें। यह "सीमा का उल्लंघन न करें" है

खंडित - और अधिकतर निरस्त - बल्कि दृढ़ता से: यह कविता विरोधाभासी है और अक्सर
कम से कम इन छंदों से "मारे गए": 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73,
8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36,
25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०१५ २/१९१: "और उन्हें (अपने विरोधियों* को) जहाँ कहीं भी पकड़ें, मार डालें, उन्हें वहाँ से हटा दें
जहां आपने उन्हें बाहर कर दिया है (सावधान रहें स्पेन, सिसिली, माल्टा और अन्य जिन्होंने उन्हें बदल दिया
बाहर*); कोलाहल और ज़ुल्म के लिए (उनसे*) वध से भी बदतर है (उनमें से*) - - -"। इस
कविता विरोधाभास (और निरस्त) कम से कम ये छंद (यहाँ दूसरों के बीच में से 88 हैं
१२४ मुस्लिम विद्वानों का कहना है कि ९/५ द्वारा निरस्त कर दिया गया है: २/१०९, २/१९०, २/२५६, २/२७२, ३/२०, ४/६२, ४/८१,
4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/ ८७, ७/१८८, ७/१९३,
7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/ 35,
16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49,
22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/ २८,
35/23, 35/24ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/ 9,
46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29,67/26, 73/10,
73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 91 विरोधाभास)।

०१६ २/१९३: "और उन से तब तक लड़ो जब तक कोई कोलाहल या अन्धेर न हो, और प्रबल हो जाए
न्याय और अल्लाह में विश्वास (धर्म में कोई बाध्यता नहीं, २/२५६*) - - -।" यह श्लोक विरोधाभासी है
(और निरस्त करता है) कम से कम ये छंद (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 हैं जो कहते हैं कि हैं)
9/5 द्वारा निरस्त): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48 , ५/९९,
6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/ ६८, १०/४१,
10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126,
16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96,
24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/ १७,
39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b,
46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45,
86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 91 विरोधाभास)।

०१७ २/२१५: "आप जो कुछ भी खर्च करते हैं (दान/भिक्षा* में) जो अच्छा है, माता-पिता और रिश्तेदारों के लिए है और
अनाथ और जो चाहते हैं और राहगीरों के लिए। "व्यापक" अर्थ में निरस्त - द्वारा हो सकता है
एक भगवान अपनी पहली कोशिश में सही नियम बनाने में सक्षम नहीं है? - द्वारा:

1. 9/60: भिक्षा गरीबों और जरूरतमंदों के लिए है,
और जो (निधि) का प्रशासन करने के लिए नियोजित हैं;
उनके लिए जिनके दिल (हाल ही में) रहे हैं

मेल मिलाप (सच्चाई के लिए (मुहम्मद अक्सर इस्तेमाल किया जाता है)
नए अनुयायियों को रखने के लिए "उपहार"); उन लोगों के लिए
बंधन और कर्ज में; अल्लाह के कारण में;
और राहगीर के लिए - - -"।

०१८ २/२२१: "अविश्वासी से विवाह न करो
महिलाएं (मूर्तिपूजक (अरबी में यह शब्द है)
पाठ?)), जब तक वे विश्वास नहीं करते"। विरोधाभासी -
और निरस्त - द्वारा:

२. ५/५: "(विवाह में आपके लिए वैध) हैं (नहीं .)
केवल) पवित्र महिलाएं जो विश्वासी हैं, लेकिन
के लोगों के बीच पवित्र महिलाओं
पुस्तक"। कम से कम ईसाई महिलाओं को नहीं करना चाहिए
2/221 के अनुसार स्वीकार किया जा सकता है, जैसा कि वे उपयोग करते हैं
धार्मिक चिह्न, आदि। यदि "मूर्तिपूजक" शब्द है
अरब पाठ में नहीं (पाठ में ( ) कभी-कभी is
स्पष्टीकरण, कभी-कभी विनिर्देश - और
कभी-कभी पाठ के लिए "सहायता" अधिक ध्वनि करने के लिए

सही। यह सभी ईसाई और यहूदी के लिए जाता है
महिला।

०१९ २/२३०: "इसलिए यदि कोई पति अपनी पत्नी को तलाक देता है (अपरिवर्तनीय रूप से), तो वह उसके बाद उससे पुनर्विवाह नहीं कर सकता है। जब तक कि उसने दूसरे पति से शादी नहीं कर ली (और उस शादी को "पूरा" कर दिया*) और उसके पास उसे तलाक दे दिया।" यह स्थिति अक्सर मिलने वाली नहीं है, लेकिन ऐसा होता है। यह सबसे शर्मनाक है उन मामलों में विलेख महिला को खुद को वेश्या बनाने के लिए मजबूर करने के लिए उसके पास वापस जाने की अनुमति दी जाती है पति। परंतुः

१.१६/९०: "- - - और वह (अल्लाह*) शर्मनाक मना करता है
काम - - -।"

०२० २/२५४: "- - - दिन से पहले (कयामत*) आता है जब कोई सौदेबाजी (लाभ नहीं होगी), न ही दोस्ती, न हिमायत।" दूसरों के बीच: हिमायत असंभव है। लेकिन: "(दिन (of .) कयामत) जब) एक आत्मा दूसरे का लाभ नहीं उठाएगी - - - और न ही हिमायत से उसे (आत्मा*) लाभ होगा - - -।" एक पूर्ण कानून: कोई मध्यस्थता संभव नहीं है। परंतुः

१. २०/१०९: "उस दिन (कयामत का दिन*)
कोई हिमायत का फायदा नहीं, सिवाय उन लोगों के जिन्हें
(अल्लाह) द्वारा अनुमति प्रदान की गई है - - -।"
यहाँ यह संभव है यदि अल्लाह अनुमति दे।
२.३४/२३: "उसके पास कोई सिफ़ारिश नहीं हो सकती"
(अल्लाह की*) उपस्थिति (= . के दिन पर)
कयामत*), सिवाय जिसके उसने दी है
अनुमति।" हिमायत ठीक है अगर अल्लाह अनुमति देता है।
३.४३/८६: "और जिन्हें वे पुकारते हैं
("भगवान", संत *) अल्लाह के अलावा कोई शक्ति नहीं है
हिमायत का - केवल वह (है*) जो सहन करता है
सत्य के साक्षी - - -।" शब्द "वह"
अल्लाह का ज़िक्र नहीं कर सकता, क्योंकि कुरान
तब हमेशा पूंजी 1 अक्षर ("उसका") का प्रयोग करें। परंतु

कुरान के अनुसार पैगंबर और
दूतों को "गवाही करने के लिए" बुलाया जाना है
सच्चाई के लिए"। "वह" इसलिए संदर्भित होना चाहिए
प्रत्येक नबी और दूत (or
कम से कम मुहम्मद को) - - - फिर कौन
इस श्लोक के अनुसार करने की शक्ति है
हस्तक्षेप करना

2/253 के बावजूद हिमायत संभव है - यह केवल अनुमति लेता है।

(३ विरोधाभास।)

०२१ २/२५६: "धर्म में कोई बाध्यता न हो"। यह उन सभी मुसलमानों के लिए प्रमुख है जो इस्लाम कितना शांतिपूर्ण और सहिष्णु है, इस बारे में गैर-मुसलमानों को प्रभावित करना चाहता है।

लेकिन नायब! ध्यान दें! सूरह कहते हैं: "इसे रहने दो - - -।" यह केवल एक आदेश है या - न्याय करना भी २/२५५ - अधिक संभावना एक इच्छा। यह कुछ ऐसा नहीं है जो अस्तित्व में है या मौजूद है । यह एक आशा या लक्ष्य है भविष्य के लिए, यह ऐसा कुछ नहीं है जो किसी के पास पहले से ही है - और वैसे ही अधिकांश मुसलमान इसे इस तरह उद्धृत करें: "धर्म में कोई बाध्यता नहीं है" - - - एक छोटा, छोटा "किटमैन" (वैध) अर्धसत्य - इस्लाम के लिए एक विशेष अभिव्यक्ति "अल-तकिया", वैध झूठ) के साथ मिलकर बनाता है कुरान और धर्म बहुत अधिक मित्रवत और सहिष्णु लगते हैं। लेकिन उनमें से एक भी नहीं इस तथ्य का उल्लेख करें कि इस कविता का खंडन किया गया है और ज्यादातर मामलों में कम से कम इन 29 . द्वारा निरस्त किया गया है छंद:

1. **2/191: "और उन्हें (अपने विरोधियों*) को मार डालो
जहाँ कहीं भी आप उन्हें पकड़ें, और उन्हें बाहर निकाल दें
उन्होंने तुझे कहाँ से निकाला है; के लिए
कोलाहल और ज़ुल्म (उनसे*) बदतर है
वध की तुलना में (उनमें से *) - - -।" (सूरह २ is

622-624 ई. से - प्रारंभिक मदीना।)

2. ***2/193: "और उनसे (अपने विरोधियों*) से लड़ो तब तक जब तक कोई और कोलाहल न हो या उत्पीड़न, और वहां न्याय और विश्वास प्रबल होता है अल्लाह में ("धर्म में कोई मजबूरी नहीं"*) - - -।"

३/३/२८: "आस्तिकों को मित्रों के लिए मत लेने दो या विश्वासियों के बजाय अविश्वासियों की मदद करता है: if कोई ऐसा करो। से कोई मदद नहीं मिलेगी अल्लाह - - -।" सामाजिक दबाव, लेकिन हो सकता है मूल रूप से रक्षात्मक था, क्योंकि यह 625 . से है एडी - मुहम्मद के पूर्ण नियंत्रण से पहले 630 ई. में आज यह आपत्तिजनक है।

४.३/८५: "अगर किसी को धर्म के अलावा कोई और धर्म चाहिए" इस्लाम (अल्लाह को अधीनता), यह कभी नहीं होगा उसे स्वीकार किया - - -।" हाँ: "कोई मजबूरी नहीं धर्म में।" (शायद ही रक्षात्मक हो - 3/28 देखें के ऊपर)।

5. 3/148: "- - - और उन लोगों के खिलाफ हमारी मदद करें जो विश्वास का विरोध करें"। यह ६२५ ई. का है - मदीना काल। इसका मतलब रक्षात्मक हो सकता है या आक्रामक मदद। 630 के बाद संभव

रक्षात्मक उपयोग चला गया - इस्लाम बन गया शक्तिशाली, और केवल आक्रामक पहलू बचा है, और यह कम से कम 2/256 के विपरीत है।

6. 4/81: "- - - तो (मुसलमान*) इनसे दूर रहें "काफिर" या पाखंडी*) - - -।" (626 ई.) सामाजिक दबाव आदि भी है दबाव- खासकर जब हर कोई जानता है कि यह है यदि आप विरोध करते हैं तो तलवार से समर्थित।

7. **4/90: "अगर वे ("काफिर"*) वापस नहीं लेते हैं आप से, और (बजाय) आपको गारंटी भेजें शांति की (याद रखें कि लगभग सभी में संघर्ष, आम तौर पर मुसलमान थे हमलावर*) अपने हाथों को रोकने के अलावा, उन्हें पकड़ लो और जहाँ कहीं भी मिले उन्हें मार डालो उन्हें - - -।" No . के बारे में कोई टिप्पणी नहीं धर्म में मजबूरी"।

8. 5/33: "मजदूरी करने वालों के लिए सजा" अल्लाह और उसके रसूल के खिलाफ युद्ध (मुहम्मद*) - - - है: निष्पादन, या सूली पर चढाना, या हाथ काटना और विपरीत दिशा से पैर, या निर्वासन से भूमि।" याद रखें कि यह सूरा 632 . से है एडी, और वह व्यावहारिक रूप से सभी छापे और युद्ध मुसलमानों के हमले के युद्ध थे - यहाँ तक कि बद्र, उहुद और मदीना की लड़ाई खाई आक्रमण के युद्ध में लड़ाइयाँ थीं मुहम्मद और उनके द्वारा शुरू किया गया और जीवित रखा गया लूट और जबरन वसूली के लिए छापेमारी - तो ज्यादातर पीड़ित जिन्होंने "अल्लाह के खिलाफ युद्ध लड़ा" और उसके रसूल" हताश होकर लड़ रहे थे और खुद का बचाव करने के लिए सरासर आत्मरक्षा इस्लाम के हमले के खिलाफ - - - और to स्पष्ट रूप से अपना बचाव करना एक बहुत बड़ा पाप था। लूट, जमीन पाने के लिए मुसलमानों पर हमला, गुलाम, सत्ता - - - और इस्लाम को अपने ऊपर थोपना पड़ोसियों। इस्लाम की शांति के बावजूद शब्द, आसपास के अरबों को अक्सर केवल दो विकल्प: मुसलमान बनें या लड़ें/मरें।

"धर्म में कोई बाध्यता नहीं"।

९. ५/७२: "वे (ईसाई*) ईशनिंदा करते हैं जो कहो: 'परमेश्वर मरियम का पुत्र मसीह है।' - - - तथा आग उनका ठिकाना होगा।" गम्भीर चेतावनी भी एक मजबूरी है।

10. 5/73: "वे निन्दा करते हैं जो कहते हैं: अल्लाह है" ट्रिनिटी में तीन में से एक - - -।" यह रखना था अल्लाह के पक्ष में दो अन्य देवता - दो बार परम पाप। इसके बारे में भी चेतावनी निन्दा एक मजबूरी है।

11. 8/12: "मैं (अल्लाह*) में आतंक पैदा करेगा अविश्वासियों के दिल: ऊपर मारो

उनकी गर्दनें और उनकी सारी उँगलियों पर प्रहार करो उन्हें (उन्हें धनुष का उपयोग करने में असमर्थ बनाना)।" याद रखें: लगभग सभी झड़पें, लड़ाइयाँ और कम से कम 110 वर्षों के लिए युद्ध (की लड़ाई तक) टूर्स, फ्रांस, कार्ल मार्टेल के खिलाफ 732 . में एडी) और वास्तव में बहुत लंबे समय तक, युद्ध थे मुसलमानों द्वारा शुरू की गई आक्रामकता): "नहीं धर्म में मजबूरी। "

१२. **८/३८-३९: "अविश्वासियों से कहो, यदि (अभी) वे परहेज करते हैं (अविश्वास से मुसलमान*)), उनके अतीत को माफ कर दिया जाएगा उन्हें, लेकिन अगर वे बने रहते हैं, तो सजा जो उनसे पहले हैं (एक मामला) उनके लिए चेतावनी)। और उनसे तब तक लड़ो जब तक अब कोई हंगामा और उत्पीड़न नहीं है, और वहाँ न्याय (शरिया? *) और विश्वास प्रबल है अल्लाह पूरी तरह से और हर जगह "। अच्छा तो यह कम से कम कहने के लिए यह विरोधाभासी और निरस्त है और मारता है।

१३. ***८/३९: "और उनसे लड़ो (अविश्वासियों) जब तक कोई और कोलाहल और उत्पीड़न न हो, और अल्लाह में न्याय और विश्वास कायम है पूरी तरह से और हर जगह - - -।" क्या ऐसा संभव है के युद्धों के बारे में अधिक प्रत्यक्ष आदेश प्राप्त करने के लिए धर्म और परास्त के दमन का "काफिर"? और अगर "न्याय" का मतलब शरीयत है, तो गैर-मुसलमानों के लिए भी भगवान नहीं है सभ्य।

14. **8/60: "उनके खिलाफ (अविश्वासियों*) अपनी ताकत को अधिकतम करने के लिए तैयार करें आपकी शक्ति - - - आतंक को (दिलों में) प्रहार करने के लिए of) (हमला किया - मुसलमान लगभग हमेशा) शांतिपूर्ण शब्दों के बावजूद हमलावर थे आज*) अल्लाह के दुश्मन - - -।" युद्ध के लिए धर्म - और धन और दास और शक्ति - लेकिन "धर्म में कोई बाध्यता नहीं।"

१५. ९/३ (६३१ ईस्वी): "और एक गंभीर घोषणा करें" विश्वास को अस्वीकार करने वालों को दंड "। मुसलमानों कह सकते हैं कि यह लाक्षणिक रूप से और के लिए है अगला जीवन। लेकिन 9/5 के संबंध में कहा गया है, जो इस जीवन को दर्शाता है।

१६. ***9/5: "लेकिन जब निषिद्ध महीने हैं" अतीत, फिर लड़ो और पगानों को मार डालो (अविश्वासियों*) जहाँ कहीं भी तुम उन्हें पाओ, और उन्हें आकार दें, उन्हें परेशान करें, और प्रतीक्षा में लेटें उन्हें हर रणनीति में (युद्ध की)" यह है प्रसिद्ध और कुख्यात "तलवार का पद" - "शांति के धर्म" से कि कम से कम

"धर्म में कोई बाध्यता नहीं" का उपदेश देता है। परंतु
तो अक्सर शांति का प्रचार करना एक अच्छी रणनीति है

558

पेज 559

युद्ध का। (अध्याय में 9/5 भी देखें
"निरसन"।) पीएस: "युद्ध की हर रणनीति"
आतंकवाद को भी पवित्र करते हैं।

17. **9/14: "उनसे लड़ो ("काफिर"*), और
अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथ से दण्ड देगा
अल्लाह* की ओर से लड़ना), उन्हें ढाँपना
लज्जा के साथ, उन पर आपकी (जीत के लिए) मदद करें -
- -।" कोई टिप्पणी आवश्यक नहीं है। एक शांतिपूर्ण
धर्म जिसका कोई धार्मिक अर्थ नहीं है
युद्ध और योजनाएँ, रणनीतियाँ और शिक्षाएँ?
और अल्लाह को आदिम सहायता की आवश्यकता क्यों है
मनुष्य यदि वह सर्वशक्तिमान है?
18. ****9/23: "अपने रक्षकों के लिए मत लो"
पिता, तुम्हारे पुत्र, तुम्हारे भाई, तुम्हारे साथी,
या आपके रिश्तेदार अगर वे ऊपर बेवफाई से प्यार करते हैं
ईमान (इस्लाम*): अगर तुम में से कोई ऐसा करता है, तो वे करते हैं
गलत।" सामाजिक दबाव - और उस स्थिति के लिए
आर्थिक दबाव (अक्सर गैर-
उच्च करों के रूप में मुस्लिम अधीनस्थ,
आदि) - "धर्म में मजबूरी" भी है -
जो इस्लाम में मौजूद नहीं है (?)
19. **9/29: "उनसे लड़ो जो विश्वास नहीं करते"
न अल्लाह, न अन्तिम दिन, न वह धारण करता है
निषिद्ध है जिसे द्वारा निषिद्ध किया गया है
अल्लाह और उसके नबी (मुहम्मद*), नहीं
सत्य के धर्म को स्वीकार करें (भले ही
वे हैं) किताब के लोग (यहूदी और .)
मुख्य रूप से ईसाई), जब तक वे जज़िया का भुगतान नहीं करते
("काफिर" -कर जहां इस्लाम ने कोई ऊपरी निर्धारित नहीं किया है
सीमा, और जो अक्सर के माध्यम से
इतिहास बहुत ऊंचा रहा है*) इच्छा के साथ
प्रस्तुत करते हैं, और खुद को वश में महसूस करते हैं "।
काफिरों को जीतो और दबाओ और फिर जाने दो
वे रंगभेद के तहत नीग्रो की तरह रहते हैं
दक्षिण अफ्रीका या संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिणी राज्यों में
१९०० के दशक की शुरुआत में - - - जो नहीं थे
गुलामी में ले लिया - खासकर महिलाओं को।
हां, कोई मजबूरी नहीं - न तलवार से
पहले, न ही नष्ट हुई अर्थव्यवस्था और सामाजिक
जीवन, आदि हार के बाद।
20. 9/33: "वह (अल्लाह*) है जिसने अपना भेजा है
मार्गदर्शन और धर्म के साथ दूत
सत्य, इसे सभी धर्मों पर घोषित करने के लिए,
भले ही पगान इससे घृणा कर सकते हैं "। साथ
सीधे शब्दों में: इसे स्वीकार करें चाहे आप इसे पसंद करें या
नहीं - क्योंकि "धर्म में कोई बाध्यता नहीं है।"
२१. ९/७३: "हे पैगंबर! के खिलाफ कड़ी मेहनत करें
अविश्वासियों और पाखंडियों, और दृढ़ रहो
उनके विरुद्ध।" सर्वोच्च नेता और
बेशक उनके अनुयायियों को कड़ी मेहनत करनी चाहिए

559

"काफिरों" के खिलाफ - लेकिन "कोई मजबूरी नहीं"
धर्म में"। अच्छा, कम से कम यह अच्छा है
प्रचार जो "साबित" करता है कि वह कितना शांतिपूर्ण है
कुरान है।

२२. ९/१२३: "हे विश्वास करने वालों! लड़ो
अविश्वासी जो आपको बांधे रखते हैं और उन्हें जाने देते हैं
आप में दृढ़ता खोजें - - -।" यदि आप एक अच्छे
मुसलमान, फिर गैर-मुसलमानों से लड़ो - लेकिन "नहीं"
मजबूरी" - धर्म में नहीं।

२३. २५/३६: "'तुम दोनों (मूसा और हारून*) के पास जाओ
जिन लोगों ने हमारी आयतों को ठुकरा दिया है। और
उन (लोगों) को हमने (अल्लाह*) नष्ट कर दिया
पूर्ण विनाश।" एक स्पष्ट संदेश।

२४. २५/५२: "इसलिए उनकी बात मत सुनो
अविश्वासियों, लेकिन उनके खिलाफ प्रयास करें
सबसे ज़ोरदार, (कुरान) के साथ"। जैसा
आप देखते हैं: धर्म शामिल नहीं है जब आप
"काफिरों" के खिलाफ प्रयास करें।

25. ***33/61: "वे (पाखंडी - अच्छा नहीं)
पर्याप्त मुसलमान - या गैर-मुसलमान*)
जब भी वे हों उन पर एक अभिशाप है
पाए गए, उन्हें जब्त और मार डाला जाएगा (बिना
दया)।" यदि आप काफी अच्छे मुसलमान नहीं हैं
तुम बिना दया के मारे जाओगे। सर्वाधिक
स्पष्ट आदेश। केवल इसका उल्लेख न करें, क्योंकि
प्रचार पंक्ति है: "धर्म का
शांति" और "धर्म में कोई बाध्यता नहीं"।

२६. ३३/७३: (क्योंकि मनुष्य - अरबों - ने लिया
कुरान/इस्लाम का विश्वास -) "साथ"
परिणाम यह हुआ कि अल्लाह को पाखंडियों को दण्ड देना पड़ा,
पुरुषों और महिलाओं, और अविश्वासियों, पुरुषों
और महिलाएं - - -।" और मुसलमान काम करते हैं
अल्लाह की ओर से।

27. 35/36: "लेकिन जो (अल्लाह) को अस्वीकार करते हैं - के लिए"
वे नर्क की आग होंगी"। बिल्कुल नहीं
सतह पर मजबूरी, लेकिन कम से कम स्पष्ट
धमकी। हम इसे शामिल करते हैं क्योंकि यह खतरा है
बार-बार दोहराया जाता है, इसलिए यह काफी बनाता है
किसी के लिए भी मनोवैज्ञानिक मजबूरी
यकीन नहीं होता कि इस्लाम गलत है।

२८. ४७/४: "इसलिए, जब तुम मिलो
अविश्वासी (लड़ाई में), उनकी गर्दन पर वार करते हैं; पर
लंबाई, जब तुमने पूरी तरह से वश में कर लिया है
उन्हें, (उन पर) एक बंधन मजबूती से बांधें - - -।"
हाँ, अविश्वासियों को मारना या वश में करना है।
और: हमारे सूत्रों के अनुसार शब्द
"(लड़ाई में)" अरब मूल में मौजूद नहीं है -
जो पाठ को एक हेक्टेयर बहुत अधिक बनाता है
भयावह। **एक अतिरिक्त बिंदु: हमारे अनुसार
स्रोत शब्द "लड़ाई में" में नहीं है**

**मूल अरब पाठ। अगर यह सच है तो यह श्लोक
कहीं अधिक गंभीर है। बहुत ज़्यादा।**

29. 66/9: "हे पैगंबर। के खिलाफ कड़ी मेहनत करें
अविश्वासियों और पाखंडियों, और दृढ़ रहो
उनके विरुद्ध।" "काफिरों" के लिए कोई क्षमा नहीं -
मजबूरी से ज्यादा नए मुसलमान बनाती है

कोई मजबूरी नहीं - - - और लूट लूट है अगर
मुहम्मद को लोगों के खिलाफ दृढ़ रहना होगा
जो अपनी बेवफाई में जिद्दी हैं।

(कम से कम २१ अंतर्विरोध युद्ध के लिए कुछ खतरे सहित, आदि। + ८ (वास्तव में कई और अधिक)
सामाजिक और आर्थिक दबाव आदि पर आधारित - तलवार की शक्ति के साथ
पृष्ठभूमि अगर किसी ने इन मजबूरियों के खिलाफ विरोध करने की कोशिश की = CONTRADICTED BY AT
कम से कम 29 अंक / छंद - अक्सर कठोर। सूरह और हदीस की मांग
निम्न स्थिति, "बेरुफ़सवरबॉट" - अच्छी नौकरी पाने में कठिनाइयाँ - इस तरह के दबाव हैं,
पृष्ठभूमि में तलवार। जजिया के साथ भी - अतिरिक्त कर - जो कभी-कभी हो सकता है
क्रूर, जो कुछ मुसलमान बताना पसंद करते हैं, उसके बिल्कुल विपरीत है)।

2/256 सभी कुरान में सबसे अनुपयोगी आयत है - और हर एक के रूप में बदतर शिक्षित मुस्लिम, और अशिक्षितों का एक बड़ा प्रतिशत जानता है कि यह पूरी तरह से समाप्त हो गया है और अमान्य।

०२२ २/२७२: "तुम्हें (ऐ रसूल (मुहम्मद*)) को दाहिनी ओर रखना आवश्यक नहीं है
पथ - - -।" इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह देने या अनुमति देने वाली कई बाध्यताएं शामिल हैं (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०२३ २/२८६: "(शिकार) 'हमारे (मुसलमान'*) भगवान (अल्लाह *) हमारी निंदा नहीं - - -।'" शब्द (प्रार्थना) है
अरब मूल में नहीं पाया जाना। यूसुफ अली ने इसे छलावरण में डाल दिया है कि यह वास्तव में है
मुहम्मद जो बोल रहा है - स्वर्ग से एक पुस्तक में असंभव है और इससे भी पुराना हो सकता है
13.7 अरब साल। ऊपर 1/1-7 देखें। कम से कम 1/1-7 में आपको वही विरोधाभास मिलेगा,
6/104, 6/114, 11/2-3, 19/36, 27/91, 47/10 और 51/50-51+। यह हर जगह का खंडन करता है
कुरान में दावा किया गया है कि यह पुस्तक अकेले अल्लाह द्वारा बनाई गई है, और इससे भी अधिक कि पुस्तक है
बहुत पुराना - विशेष रूप से पुराना यदि यह अनंत काल से अस्तित्व में है (कम से कम 13.7 बिलियन वर्ष पुराना - the
ब्रह्मांड की आयु) - लेकिन यह असंभव है क्योंकि स्वर्गदूत कम से कम एक जगह बात कर रहे हैं
कुरान, जिसका अर्थ है कि किताब कम से कम कुछ स्वर्गदूतों के बनने के बाद बनाई जानी चाहिए। और जैसे
मुहम्मद भी कम से कम 6 जगह बोल रहे हैं, यह मुहम्मद से भी पुराना नहीं हो सकता। भी
नीचे 6/114 देखें।

०२४ ३/२०: "यदि वे ("काफिर"*) करते हैं (मुसलमान* बन जाते हैं), तो वे सही मार्गदर्शन में हैं, लेकिन यदि वे
पीछे मुड़ो, तुम्हारा कर्तव्य संदेश देना है - - -।" यह - कि उनका कर्तव्य उन्हें बताना था
संदेश (केवल), का गहरा खंडन किया गया था - और इन छंदों में से कम से कम उन द्वारा निरस्त किया गया था
नंबर ३ के बाद आया (६२५ ईस्वी में), और हम उनमें से जो पहले आए थे, उन्हें भी जोड़ते हैं, क्योंकि
इस्लाम कहता है कि स्पष्ट मामलों में एक पुरानी आयत एक छोटी को निरस्त कर सकती है (यह एक अपवाद है
मानक नियम से कि नवीनतम पुराने लोगों को निरस्त करता है)। वैसे भी यह स्पष्ट है
अंतर्विरोध। इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: 2/191,

2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/ 36, 47/4, 66/9।
इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह देने या अनुमति देने वाली कई बाध्यताएं शामिल हैं (के साथ
यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०२५ ३/२८: "आस्तिकों के बजाय विश्वासियों को मित्रों या सहायकों के लिए मत लेने दो: यदि
कोई ऐसा करो। किसी चीज़ में अल्लाह की ओर से सहायता नहीं मिलेगी - - -।" सामाजिक दबाव, लेकिन इसका मतलब हो सकता है
मूल रूप से रक्षात्मक, जैसा कि ६२५ ईस्वी से है जब मुहम्मद ने ६३० ईस्वी में पूर्ण नियंत्रण प्राप्त किया था
आज आपत्तिजनक है। इस कविता का खंडन किया गया है (वास्तव में सख्त बना दिया गया है) और अक्सर at . द्वारा "मार डाला" जाता है
कम से कम ये श्लोक: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/ 38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25 /52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं।
आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a

यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है 2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

026 3/42a "देखो स्वर्गदूतों (बहुवचन*) ने कहा (जब वे मरियम को बताने आए कि वह जा रही है) बेबी जीसस*)"। परंतु:

1. 00a 19/17: "- - - हम (अल्लाह*) ने उसे भेजा हमारे परी (एकवचन - उसे यह बताने के लिए कि वह जा रही थी बच्चा यीशु* है), और वह पहले प्रकट हुआ उसे हर तरह से एक आदमी के रूप में। " इसके अलावा १९/१८ और 19/9 केवल एक के बारे में बताता है। एक अलग है एक और तीन या अधिक के बीच का अंतर। (अगर केवल दो थे, अरब ने इस्तेमाल किया था व्याकरणिक द्वैत, और अनुवादित किया गया "हमारा दो कोण "।

०२७ ३/४२बी "देखो स्वर्गदूतों (बहुवचन*) ने कहा (जब वे उसे बताने आए कि वह होने जा रही है) बेबी जीसस*)"। परंतु:

१. १२/१०९: "न ही हम ने तेरे आगे भेजा है" (मानवता, मनुष्य*) (संदेशवाहक के रूप में) कोई भी लेकिन पुरुष।"
२. १६/४३: "और तुमसे पहले (मुहम्मद*) भी हमने जो दूत भेजे थे, वे केवल पुरुष थे - - -"।
३. २१/७: "तुम्हारे सामने (मुहम्मद*) भी, हमने जो दूत भेजे थे, वे केवल पुरुष थे।"
४. २५/२०: "और वे दूत जिन्हें हम (अल्लाह*) तुमसे पहले भेजे गए सभी (मनुष्य) - - - थे।

ठीक है, 3/42 - 6/130 - 11/69 - 11/77 - 11/81- 19/17b - 19/19 - 22/75 सभी कहते हैं कि सभी नहीं थे पुरुष। १२/१०९ - १६/४३ - २१/७ - २५/२० के लिए एक अच्छा सा विरोधाभास जो सब कुछ कहता है दूत पुरुष थे।

(४ विरोधाभास)।

562

पेज ५६३

०२८ ३/५९: "उसने (अल्लाह*) ने उसे (आदम - और साथ ही यीशु*) को धूल से पैदा किया।" ये है ६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम से बना था मिट्टी, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताती है कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४ बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम से बना था पृथ्वी, ९६/२ जो बताता है कि मनुष्य/एडम जमा रक्त के थक्के से बना था, १६/४, ७५/३७, ७६/२, 80/19, बता दें कि आदमी/एडम वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया है) आया), २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो बताता है कि आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! में नहीं पानी, लेकिन पानी से!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम "आधार सामग्री" से बना था, और नहीं इस मामले में सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख करने के लिए: 19/9 और 19/67 जो दोनों बताते हैं कि आदमी/एडम कुछ भी नहीं से बनाया गया था। (इस अध्याय में १०००+ . के बारे में पद ६/२ भी देखें कुरान में गलतियाँ।) (कड़ाई से इस आयत को 27 अन्य के विपरीत, लेकिन न्यूनतम 11 विरोधाभास।)

00a 3/67: "अब्राहम - - - ने अपनी इच्छा अल्लाह (जो इस्लाम है) को झुकाया - -।" संभव विरोधाभास। इब्राहीम भी एक अच्छा मुसलमान है - इब्राहीम के बारे में मुख्य स्रोत में शायद ही ऐसा हो, बाइबिल (और याद रखें; विज्ञान ने साबित कर दिया है कि इस्लाम के बावजूद बाइबिल को गलत नहीं ठहराया गया है) दावों का दस्तावेजीकरण कभी नहीं किया)।

१. ६/१४: "मुझे (मुहम्मद*) होने की आज्ञा दी गई है अल्लाह को नमन करने वालों में पहला इस्लाम)"। स्पष्ट रूप से वह नहीं था, कुरान के अनुसार कई थे

२.६/१६३: (मुहम्मद ने कहा): "- - - मैं प्रथम हूँ
उससे पहले के मुसलमानों में इब्राहीम भी शामिल था।
उनकी (अल्लाह की *) इच्छा के आगे झुकने वालों में से। ”
ऊपर 6/14 देखें।
३.७/१४३: (मूसा ने कहा*): "- - - और मैं सबसे पहले हूँ
विश्वास करने के लिए।"
4. 39/12: (मुहम्मद ने कहा): "और मैं हूँ"
झुकने वालों में सबसे पहले होने का आदेश दिया
इस्लाम में अल्लाह के लिए ”।

जाहिर है कि केवल एक ही पहला हो सकता है। (और वास्तव में इब्राहीम का भी खंडन किया गया था, क्योंकि
आदम और नूह दोनों इस्लाम के अनुसार अच्छे मुसलमान थे)।

(4 विरोधाभास)

०२९ ३/८५: "यदि कोई इस्लाम के अलावा किसी अन्य धर्म की इच्छा रखता है (अल्लाह के अधीन), तो वह कभी नहीं होगा
उसे स्वीकार किया - - -।" यह पद कम से कम इन छंदों का खंडन करता है (और निरस्त करता है) (यहाँ 88 . हैं)
१२४ मुस्लिम विद्वानों में से कहते हैं कि ९/५ द्वारा निरस्त कर दिया गया है: २/१०९, २/१९०, २/२५६, २/२७२, ३/२०,
4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/ ११२, ६/१५८, ७/८७,
7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/ ३,
15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107,
21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/ 30,
34/25, 34/28, 35/23, 35/24 ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/ 59,
45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29,
67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 91
विरोधाभास)।

563

पेज ५६४

030 3/148: "- - - और विश्वास का विरोध करने वालों के खिलाफ हमारी मदद करें"। यह ६२५ ई. का है -
मदीना काल। यह रक्षात्मक मदद के रूप में हो सकता था, लेकिन तब कोई इसका इस्तेमाल करता
"से", "खिलाफ" नहीं। यह पद कम से कम इन छंदों का खंडन करता है (और निरस्त करता है) (यहाँ 88 . हैं)
१२४ मुस्लिम विद्वानों में से कहते हैं कि ९/५ द्वारा निरस्त कर दिया गया है: २/१०९, २/१९०, २/२५६, २/२७२, ३/२०,
4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/ ११२, ६/१५८, ७/८७,
7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/ ३,
15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107,
21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/ 30,
34/25, 34/28, 35/23, 35/24 ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/ 59,
45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29,
67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 91
विरोधाभास)।

०३१ ४/१५: “यदि आपकी कोई महिला व्यभिचार (व्यभिचार*) की दोषी है - - - उन्हें सीमित करें
घर जब तक मौत उन पर दावा नहीं करते, या अल्लाह उनके लिए कोई (अन्य) तरीके से आदेश देता है"। (अंतिम भाग
वाक्य को विशेष रूप से प्रत्येक महिला के लिए "रास्ता" के रूप में समझा जाना चाहिए जो
ऐसा "आदेश" मिलता है।) लेकिन विरोधाभास - और निरसन - 1-2 साल बाद - 627 या 628 में
एडी:

१. २४/३: "महिला और पुरुष का दोषी"
व्यभिचार या व्यभिचार - उनमें से प्रत्येक को कोड़े मारें
सौ धारियों के साथ - - -"।

यह भी जोड़ा जाना चाहिए कि इस्लाम में लगातार अफवाह है कि लगभग 100 छंद
खलीफा उस्मान के पास आधिकारिक कुरान होने पर गायब हो गया और इसे कुरान में कभी नहीं बनाया गया
बनाया, और वह छंदों में से एक था जिसने इस अपराध के लिए पत्थर मारने की मांग की थी। यह तथ्य कि
उसके लिए पत्थर मारना हदीस में निर्धारित है, और हदीस (अल-बुखारी) बताता है कि कम से कम एक बार
इस तरह के पत्थरबाजी में खुद मुहम्मद ने भी हिस्सा लिया था।

०३२ ४/१८: “उन लोगों का पश्चाताप कुछ भी नहीं है जो बुराई करते रहते हैं, जब तक कि मृत्यु का सामना नहीं करना पड़ता
उनमें से एक, और वह कहता है, 'अब मैंने पश्चाताप किया है:'" लेकिन कम से कम एक विरोधाभास है:
फ़िरौन चिल्लाया (कुरान में एक और जगह) जब वह डूबने वाला था कि अब उसे विश्वास हो गया
अल्लाह में, और यह परिणाम था:

1. 10/92: "आज का दिन (जब मिस्र की सेना मूसा और यहूदियों* के साथ पकड़ा गया*) हम (अल्लाह*) आपको (फिरौन) शरीर में बचाते हैं - - -।" अभिव्यक्ति "शरीर में" चाहिए मतलब "शारीरिक" या "सुरक्षित और" जैसा ही है (अपेक्षाकृत कम से कम) ध्वनि "। यह सच हो सकता, जैसा कि रामसेस II वास्तविकता में नहीं डूबा था।

०३३ ४/४८: "अल्लाह क्षमा नहीं करता कि उसके साथ साथी स्थापित किए जाएं, - - -।" विरोधाभासों पर कम से कम यह एक:

१.४/१५३: "फिर भी उन्होंने (मूसा के यहूदी*) पूजा की (सोना*) बछड़ा - - - तो भी हम (अल्लाह*) उन्हें माफ कर दिया - - - "- जो उसने कहा कि वह करेगा 4/48 में नहीं/कभी नहीं।

564

पेज ५६५

०३४ ४/६२: "वे लोग (अच्छे मुसलमान या धर्मत्यागी नहीं*) - - - उनसे दूर रहें, लेकिन उन्हें चितौनी देना, और उनके प्राण तक पहुंचने के लिए उन से कुछ कहना।" नोट से दूर रहने के लिए अच्छे मुसलमान, संभावित धर्मत्यागियों का उल्लेख नहीं करने के लिए, वास्तविक नहीं थे - और शीघ्र ही नहीं भी आधिकारिक - एक लंबे समय के लिए लाइन। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इनके द्वारा "मार डाला" जाता है कड़ी कार्रवाई की मांग करने वाले छंद: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देना या अनुमति देना शामिल है राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०३५ ४/७८: "सब कुछ अल्लाह की ओर से है।" कुरान में अन्य स्थानों से कोई भी जानता है कि "सब" चीजें" का अर्थ है जो कुछ भी होता है, दिया जाता है, लिया जाता है, और कुछ भी। तब 4/78 है 4/79 द्वारा स्पष्ट रूप से विरोधाभास: "- - - लेकिन जो कुछ भी आपको होता है, वह आपकी (अपनी) आत्मा से होता है"। इसके अलावा 4/79 से यह वाक्य गलत है - प्राकृतिक और अन्य आपदाएं हैं और दुर्घटनाएँ, और अन्य लोगों और जानवरों की हरकतें हैं। इसके अलावा हर श्लोक कह रहा है कि मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा है, इसका खंडन इस (और कई अन्य) छंदों से होता है - मनुष्य के लिए स्वतंत्र इच्छा और पूर्वनियति, और यहां तक कि सर्वज्ञता को भी जोड़ना बिल्कुल असंभव है। यहां तक कि इस्लाम स्वीकार करते हैं कि गठबंधन करना असंभव है, "लेकिन यह सच होना चाहिए क्योंकि अल्लाह कुरान में ऐसा कहता है" (!!!!!) ("कुरान का संदेश" ६/१४९, नोट १४१)।

०३६ ४/७९: "---- परन्तु जो कुछ तुझ को हो रहा है, वह तेरी (अपनी) आत्मा की ओर से है।" परंतु:

1. 4/78: "सब कुछ अल्लाह की ओर से है।" टिप्पणी देखें 4/78 के ठीक ऊपर।

037 4/81। "- - - तो (मुसलमान*) उनसे दूर रहें ("काफिर"/पाखंडी*) - - -।" (626 ई.) सामाजिक दबाव, आदि भी दबाव है - खासकर जब हर कोई जानता है कि यह द्वारा समर्थित है अगर आप विरोध करते हैं तो तलवार। यह श्लोक कम से कम इन छंदों का खंडन करता है (और निरस्त करता है) जो मांग करते हैं कड़ी प्रतिक्रियाएँ (यहाँ १२४ मुस्लिम विद्वानों में से ८८ हैं जिन्हें ९/५ द्वारा निरस्त कर दिया गया है): २/१०९, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/ 66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/ १०८, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/ 56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/ १५, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी है 9/5 के तहत उद्धृत। (कम से कम 91 विरोधाभास)।

०३८ ४/८२: "अगर यह (कुरान*) अल्लाह के अलावा किसी और से होता, तो वे निश्चित रूप से पाते उसमें बहुत अधिक विसंगतियां (गलतियां, निरसन, अंतर्विरोध, अस्पष्ट भाषा, आदि*) हैं।" में यह अध्याय यह श्लोक काफी विडंबनापूर्ण है। **और इस्लाम के सोचने के तरीके के अनुसार केवल छंद ही यह साबित करता है कि कुरान एक सर्वज्ञ ईश्वर की ओर से नहीं हो सकता।** सभी के विपरीत

पुस्तक में विरोधाभास और गलतियाँ।
०३९ ४/८४: "फिर अल्लाह के लिए लड़ो - - -।" एक और श्लोक जो खंडन करता है और निरस्त करता है
मुख्य रूप से मक्का और प्रारंभिक मेदिंस से कई शांतिपूर्ण छंद (यह 626 ईस्वी से है और
कठोर धर्म Ialam में विकसित हुआ)। कम से कम 10 विरोधाभास।

०४० ४/९०: "- - - अगर वे आपसे पीछे हटते हैं लेकिन आपसे लड़ते नहीं हैं, और (बजाय) आपको भेजते हैं
शांति की गारंटी देता है, तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए (उनके खिलाफ युद्ध करने के लिए) कोई रास्ता नहीं खोला है
इस श्लोक का खंडन और निरसन दोनों ही अन्य तथ्यों से बहुत स्पष्ट है, तथ्य यह है कि
इस्लाम के सभी 4 लॉ स्कूल इस बात पर सहमत थे कि "काफिर" मुसलमान नहीं थे, था
उन पर न केवल युद्ध, बल्कि पवित्र युद्ध - जिहाद पर हमले की घोषणा करने के लिए पर्याप्त कारण। यह कानून
20वीं सदी के 1 छमाही के दौरान भी विवादित नहीं था। यह श्लोक विरोधाभासी है
और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार" दिया जाता है: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३,
5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73,
9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देने वाले या शामिल हैं
अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि
आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,
33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

**041 4/91: "यदि वे ("काफिर"*) आपसे पीछे नहीं हटते हैं, और न ही आपको इसकी गारंटी देते हैं
शांति (याद रखें कि लगभग सभी संघर्षों में, मुसलमान हमलावर थे*) इसके अलावा
उनके हाथों को रोकना, उन्हें पकड़ना और जहाँ कहीं भी मिले उन्हें मार डालना - - -।" कोई टिप्पणी नहीं
"धर्म में कोई मजबूरी नहीं" के बारे में। यह पद कम से कम इन का खंडन करता है (और निरस्त करता है)
छंद (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 का कहना है कि 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है): 2/109, 2/190,
2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/ ७०, ६/१०४, ६/१०७,
6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/ १२,
11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/ 39,
20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55,
29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/ 48,
43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54,
52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी उद्धृत हैं
9/5 के तहत। (कम से कम 91 विरोधाभास)।

०४२ ४/११६: "अल्लाह अन्य देवताओं को उसके साथ मिलाने (पाप) को क्षमा नहीं करता है; लेकिन उसने माफ कर दिया
जिसे वह इसके अलावा अन्य पापों को प्रसन्न करता है - - -।" यह अभ्यास में ऊपर 4/48 के समान है। यह देखो।

०४३ ४/१४०: "- - - जब तुम अवज्ञा और उपहास में अल्लाह की निशानियों को सुनते हो, तो तुम ऐसा नहीं करते
उनके साथ बैठो - - -" कम से कम इन श्लोकों द्वारा अधिक कठोर किए जाने से निराकृत: २/१९१,
2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3,
9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस
कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, की सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं।
आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a
यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है
2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

०४४ ४/१५३: "फिर भी उन्होंने (मूसा के यहूदी) बछड़े (सोना*) की पूजा की - फिर भी हम
(अल्लाह*) ने उन्हें माफ कर दिया - - -।" कि उसे ऐसा करना चाहिए, इसका खंडन करता है:

१. ४/४८: "अल्लाह उन साझीदारों को माफ नहीं करता
उसके साथ स्थापित किया जाना चाहिए - - -।"
२.४/११६: "अल्लाह माफ नहीं करता (पाप)
उसके साथ अन्य देवताओं को मिलाना - - -।"

(२ विरोधाभास)।

पेज ५६७

०४५ ४/१५८: "नहीं, अल्लाह ने उसे (यीशु*) अपने ऊपर (स्वर्ग में*) - - - उठाया। लेकिन यीशु है
इस्लाम और कुरान द्वारा ईसाइयों के लिए एक झूठा भगवान होने के लिए, और फलस्वरूप यह है
इसके विपरीत:

१.२१/९८: "- - - - और (झूठे) देवताओं कि तुम
अल्लाह के सिवा इबादत है, (लेकिन) ईंधन के लिए
नरक!" ४/१५८ कहता है कि यीशु नर्क के लिए ईंधन नहीं थे।

०४६ ५/५: "(विवाह में आपके लिए वैध) (न केवल) पवित्र महिलाएं हैं जो विश्वास करने वाली हैं, लेकिन
किताब के लोगों के बीच पवित्र महिलाओं "। विरोधाभास - और निरस्त करता है:

१. २/२२१: "अविश्वासी स्त्रियों से विवाह न करो"
(मूर्तिपूजक (क्या यह शब्द अरब पाठ में है?)),
जब तक वे विश्वास नहीं करते"। तो कम से कम ईसाई
महिलाओं को के अनुसार स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए
२/२२१, क्योंकि वे धार्मिक चिह्नों आदि का प्रयोग करते हैं
शब्द "मूर्तिपूजक" अरब पाठ में नहीं हैं (पाठ
में ( ) कभी स्पष्टीकरण है, कभी कभी
विनिर्देश - और कभी-कभी "सहायता" के लिए
पाठ अधिक सही ध्वनि के लिए) यह सभी के लिए जाता है
ईसाई और यहूदी महिलाएं।

०४७ ५/१७: "निन्दा में वे लोग हैं जो कहते हैं कि अल्लाह मसीह है (= दूसरे भगवान को रखो)
अल्लाह का पक्ष - 4/48 और 4/116) के अनुसार परम और अक्षम्य पाप, का पुत्र
मैरी। " (= ईसाई)। इसका खंडन किया जाता है - और निरस्त करता है:

१. २/६२: "- - - जो यहूदी का अनुसरण करते हैं
(शास्त्र), और ईसाई और
सबियन कोई भी जो अल्लाह और में विश्वास करता है
अंतिम दिन, और धार्मिकता में काम करेंगे
उनका प्रतिफल उनके रब के पास है - - -।"

०४८ ५/२८: "यदि आप ("काफिर", कैन *) मेरे खिलाफ अपना हाथ बढ़ाते हैं (मुसलमान, हाबिल *), तो यह है
यह नहीं कि मैं तुझे घात करने के लिथे तुझ पर हाथ बढ़ाऊं। जब आप इसे पढ़ें, याद रखें
मुसलमानों के पास यदि कोई समग्र नैतिक संहिता है तो बहुत कम हैं। उन्हें क्या करना है ढूंढना है
"मुहम्मद ने ऐसी बातों के बारे में क्या कहा?" अगर उन्होंने कुछ कहा है, तो वे इसे एक के रूप में लेते हैं
कोड्क्स - अच्छा नैतिक या नहीं। यदि नहीं, तो उन्हें पुस्तक में देखना होगा: "क्या कोई समानांतर स्थिति है
कहीं?" अगर वे पाते हैं - कभी-कभी कल्पना को खींचकर - यह कार्य करने का तरीका है, या
कोई कैसे कार्य करना चाहता है, इसके लिए बहाना। यह भी ध्यान रखें कि यह श्लोक सभी में बहुत कम में से एक है
कुरान जो यीशु की शिक्षाओं के अनुसार है - बहुत कम में से एक। और यह पूरी तरह से है
निरसन द्वारा "हत्या" की गई। इस श्लोक का खंडन और निरसन किया गया है और कम से कम . द्वारा "मार डाला" गया है
ये पद: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८ -39 (द
चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,
35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

०४९ ५/३३: "अल्लाह और उसके रसूल के खिलाफ युद्ध छेड़ने वालों के लिए सजा"
(मुहम्मद*) - - - है: फांसी, या सूली पर चढ़ाने, या हाथ और पैर काटने से

567

पेज ५६८

विपरीत दिशा में, या देश से बंधुआई।" याद रखें कि यह सूरा 632 ईस्वी का है, और वह

लगभग सभी युद्ध और छापे मुसलमानों के हमले के युद्ध थे - यहाँ तक कि बद्र भी
उहुद और मदीना/ट्रेंच आक्रमण के युद्ध में लड़ाई थी शुरू हुई और किसके द्वारा जारी रखी गई
मुहम्मद और धन के लिए उनके छापे - इसलिए ज्यादातर पीड़ित जिन्होंने "अल्लाह के खिलाफ युद्ध लड़ा"
और उसके रसूल" अपने बचाव के लिए हताश और पूर्ण आत्मरक्षा में लड़ रहे थे
इस्लाम के हमले के खिलाफ - - - और खुद को बचाने के लिए स्पष्ट रूप से एक महान पाप था।
मुसलमानों ने लूट, जमीन, गुलाम, सत्ता----- और इस्लाम को अपने ऊपर थोपने के लिए हमला किया
पड़ोसियों। इस्लाम के शांतिपूर्ण शब्दों के बावजूद, स्थानीय अरबों को अक्सर केवल दो विकल्प मिलते थे:
मुसलमान बनो या लड़ो / मरो। एक स्पष्ट विरोधाभास - और निरसन - का:

१.२/२५६: "इसमें कोई बाध्यता न हो"
धर्म - - -।" लेकिन "अल्लाह और उसके रसूल"
उन सब से समान रूप से युद्ध कर रहे थे -
और कम से कम अल्लाह का मतलब धर्म था। (इस पर भी
उस समय मुसलमान मुख्य रूप से अरबों से लड़ रहे थे -
और बुतपरस्त अरब जैसा कि उल्लेख किया गया है, अक्सर केवल मिलता है
दो विकल्प: मुसलमान बनो या लड़ो और
मरो और तुम्हारी औरतें और बच्चे पैदा करो
गुलाम बनो। लेटा मुसलमान करेंगे विरोध
इस जानकारी के खिलाफ बेतहाशा, लेकिन नहीं
शिक्षित लोग - यह सादा और खूनी है
सच तो यह है कि ज्यादातर अरब बनाए गए थे
मुसलमानों को तलवार से (या रिश्वत और/या)
लूटने की संभावना)।

०५० ५/४८: "- - - इसलिए सभी गुणों में एक दौड़ के रूप में प्रयास करें।" आप सभी गुणों की दौड़ में प्रयास करते हैं
शांति से। एफएक्स में 8/12 आतंक और युद्ध और अमानवीयता है। यह श्लोक विरोधाभासी है और अक्सर
कम से कम इन छंदों से "मारे गए": 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73,
8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36,
25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०५१ ५/६९: "जो लोग (कुरान पर विश्वास करते हैं), और जो यहूदी (शास्त्रों) का पालन करते हैं,
और ईसाई और सबियन - कोई भी जो अल्लाह में विश्वास करता है (यहाँ याहवे / ईश्वर * शामिल है)
और अन्तिम दिन और धर्म के काम करो, उन पर न तो कोई भय होगा, और न वे शोक करेंगे।"
इसके विपरीत:

१. ३/८५: "यदि कोई अन्य धर्म चाहता है तो
इस्लाम (अल्लाह को अधीनता), यह कभी नहीं होगा
उसे स्वीकार किया - - -।" यह पूरी कहानी बताता है।
२.५/७२: "वे (ईसाई*) ईशनिंदा करते हैं जो
कहो: 'परमेश्वर मरियम का पुत्र मसीह है।' - - - तथा
आग उनका ठिकाना होगा।" यह कहने के लिए
यीशु दिव्य है अल्लाह के पास एक और भगवान रखना है
पक्ष - परम और अक्षम्य पाप
4/48 और 4/116 के अनुसार।
3. 5/73: "वे निन्दा करते हैं जो कहते हैं: अल्लाह है"
ट्रिनिटी में तीन में से एक - - -।" यह रखना था

568

पेज ५६९

अल्लाह के पक्ष में दो अन्य देवता - दो
बार परम पाप।

(३ विरोधाभास)।

०५२ ५/७२: "वे (ईसाई*) ईशनिंदा करते हैं जो कहते हैं: 'परमेश्वर मरियम का पुत्र मसीह है।' - - -
और आग उनका निवास ठहरेगी।" यह स्पष्ट रूप से विरोधाभासी है - और निरस्त करता है:

१. २/६२: "- - - जो यहूदी का अनुसरण करते हैं
(शास्त्र), और ईसाई और
सबियन कोई भी जो अल्लाह और में विश्वास करता है

अंतिम दिन, और धार्मिकता में काम करेंगे
उनका प्रतिफल उनके रब के पास है - - -।"
२.२/२५६: "इसमें कोई बाध्यता न हो"
धर्म - - -।"
3. 5/69: "जो लोग (कुरान पर विश्वास करते हैं), और
जो यहूदी (शास्त्रों) का पालन करते हैं, और
ईसाई और सबियन - कोई भी जो
अल्लाह पर विश्वास करो (यहाँ शामिल है
यहोवा/परमेश्वर*) और अंतिम दिन, और कार्य
धार्मिकता - उन पर न तो कोई भय होगा, न ही
क्या वे शोक करें।”

(३ विरोधाभास)

०५३ ५/७३: "वे निन्दा करते हैं जो कहते हैं: अल्लाह ट्रिनिटी में तीन में से एक है - - -।" यह था
दो अन्य देवताओं को अल्लाह के पक्ष में रखो - दो गुना परम पाप। यह विरोधाभास - और
निरस्त करता है:

१. २/६२: "- - - जो यहूदी का अनुसरण करते हैं
(शास्त्र), और ईसाई और
सबियन कोई भी जो अल्लाह और में विश्वास करता है
अंतिम दिन, और धार्मिकता में काम करेंगे
उनका प्रतिफल उनके रब के पास है - - -।"
२.२/२५६: "इसमें कोई बाध्यता न हो"
धर्म - - -।"
3. 5/69: "जो लोग (कुरान पर विश्वास करते हैं), और
जो यहूदी (शास्त्रों) का पालन करते हैं, और
ईसाई और सबियन - कोई भी जो
अल्लाह पर विश्वास करो (यहाँ शामिल है
यहोवा/परमेश्वर*) और अंतिम दिन, और कार्य
धार्मिकता - उन पर न तो कोई भय होगा, न ही
क्या वे शोक करें।”

(३ विरोधाभास)।

०५४ ५/९९: "संदेशवाहक (मुहम्मद*) का कर्तव्य अभी (संदेश) - - - का प्रचार करना है।"
इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५,
3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14,
9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है

कई लोगों को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति (तलवार के साथ)
पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73,
9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०५५ ६/२: "वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें (मनुष्य*) मिट्टी से पैदा किया - - -।" परंतु: यह विरोधाभासी है
१५/२६, १५/२६, और १५/३३ तक जो बताता है कि मनुष्य/एडम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४ जो बताता है
आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम चिपचिपे से बना था
मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और १५/३३
बताता है कि आदमी/एडम मिट्टी से बना था, 3/59, 22/5,35/11, 40/67, बता दें कि आदमी/एडम बनाया गया था
धूल से, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, ९६/२ जो बताता है कि मनुष्य/आदम था
जमे हुए खून के थक्के से बना, 16/4, 75/37, 76/2, 80/19, जो बताता है कि आदमी/एडम बनाया गया था
वीर्य से (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया), 21/30, 24/45, और 25/54 कि
बताता है कि आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि पानी से!), 70/39 कि
बताता है कि मनुष्य/एडम को "आधार सामग्री" से बनाया गया था, न कि सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख करने के लिए
इस मामले में: १९/९ और १९/६७ जो दोनों बताते हैं कि मनुष्य/एडम कुछ भी नहीं से बनाया गया था। (भी
कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्यायों में छंद ६/२ देखें।) (इस पर सख्ती से विचार करें
25 अन्य श्लोकों का खंडन करता है। लेकिन कम से कम 10 विरोधाभास।)

०५६ ६/१४: "लेकिन मुझे (मुहम्मद*) अल्लाह को नमन करने वालों में सबसे पहले होने का आदेश दिया गया है।
इस्लाम) - - -"। यह स्पष्ट रूप से इस्लाम के अनुसार गलत है (हालाँकि वास्तव में यह 100% हो सकता है)

सही - हो सकता है कि मुहम्मद पहले मुसलमान थे। जैसा कि कुरान का दावा है कि कई थे
मुहम्मद से पहले मुसलमान (मुसलमान अक्सर दावा करते हैं - जितनी बार बिना दस्तावेज के - कि
कुरान का वास्तव में यहाँ क्या अर्थ है, एक समूह में पहला है, इस मामले में अरब। लेकिन एक के लिए
कम से कम दावा किए गए पैगंबर हुद और सालेह कुरान के अनुसार अच्छे मुसलमान थे,
और दोनों मुहम्मद से बहुत पहले रहते थे - मूसा से भी पहले, जैसा कि मूसा ने उनका उल्लेख किया था
कुरान के अनुसार। एक और बात के लिए जो कुरान कहता है वह नहीं है - यह कहीं नहीं है
इंगित करता है कि इसका अर्थ समूह का पहला है, लेकिन पहला है। और कुरान में भाषा है
सही है और इस्लाम के अनुसार गलत नहीं समझा जाना चाहिए। इसके अलावा: अगर यहाँ किताब का मतलब है
जो स्पष्ट रूप से कहा गया है उसके अलावा कुछ और कुरान में और कितनी जगहों का मतलब है?
पाठ वास्तव में क्या कहता है इसके अलावा कुछ और? अन्य मुसलमानों का दावा है कि इसका मतलब पहले में है
गुणवत्ता। लेकिन सही और अचूक भाषा वाली किताब में लिखा होगा "मैं हूँ
उनमें से सबसे अच्छा - - -।"

खैर, यह कम से कम इसके विपरीत है:

१. २/३७: "फिर आदम को उसके रब से सीखा"
(अल्लाह*) प्रेरणा के शब्द (.)
कुरान*) - - -।" यह स्पष्ट है कि के अनुसार
कुरान, आदम पहले मुसलमान थे (यहां तक कि)
यद्यपि वह विज्ञान के अनुसार कभी अस्तित्व में नहीं था,
जैसा कि मनुष्य ने पहले के प्राइमेट से विकसित किया था) -
और फिर इस्लाम में अल्लाह को नमन करने वाले पहले व्यक्ति।
२. २/१२७-१३२: यह उद्धरण के लिए बहुत लंबा है, लेकिन यह है
स्पष्ट है कि कुरान इब्राहीम के अनुसार
एक भक्त मुसलमान था और अल्लाह को नमन करता था
इस्लाम मुहम्मद से बहुत पहले। यह श्लोक
इस प्रकार स्पष्ट रूप से छंद ६/१४ का खंडन करता है और
दो में से एक में कुछ अन्य संभव
उस श्लोक का अर्थ।

3. 3/67: "अब्राहम - - - ने अपनी इच्छा को झुकाया"
अल्लाह का (जो इस्लाम है) - - -।"
4. 4/163: "हम (अल्लाह*) ने तुम्हें भेजा है
(मुहम्मद*) प्रेरणा, जैसा हमने भेजा है
नूह और उसके बाद के दूतों के पास: हम
इब्राहीम, इश्माएल, इसहाक, याकूब, और
जनजाति (यहूदी?), यीशु को, अय्यूब, योना,
हारून, सुलैमान, और दाऊद को हम ने दिया
भजन। " यह बहुत स्पष्ट है कि के अनुसार
कुरान में कई मुसलमान थे कि
इस्लाम में मुहम्मद के सामने अल्लाह को नमन किया।
५.७/१४३: "(मूसा ने कहा*)"- - - और मैं सबसे पहले हूँ
विश्वास करने के लिए।" जाहिर है केवल एक ही हो सकता है
प्रथम।
६.२६/५१: फिरौन के जादूगरों ने कहा: "केवल, हमारा
इच्छा यह है कि हम अपने रब के पास लौट जाएं
(अल्लाह*), और हम सबसे आगे हो सकते हैं
विश्वासियों के बीच "। का एक और समूह
मुसलमानों को समर्पित (कुरान के अनुसार)
मुहम्मद से लगभग 2000 साल पहले।

अगर मुहम्मद का मतलब था कि वह अल्लाह के सामने झुकने वाले पहले व्यक्ति थे, तो उन्होंने अच्छी तरह से बात की होगी
बहुत सच है अगर कुरान गलत है तो इस बिंदु पर भी, लेकिन कुरान के अनुसार, उसमें क्या है
केस ने कहा, बहुत गलत था।

अगर उसका मतलब है कि वह 'असमान' में सबसे आगे था, तो वह कुरान के अनुसार हो सकता है
सही - - - हालांकि इब्राहीम और मूसा जैसे व्यक्ति शायद उसी के बारे में बहस करना चाहते थे
- और यीशु के साथ एक मजबूत बाहरी व्यक्ति के रूप में (कुरान के अनुसार वह भी एक मुस्लिम था), जैसा कि वह
स्पष्ट रूप से मुहम्मद की तुलना में बहुत बड़ा पैगंबर था। मुहम्मद के पास का उपहार नहीं था
वास्तविक भविष्यवाणियां करना - एक वास्तविक भविष्यवक्ता होने के लिए न्यूनतम आवश्यकता। वह भी नहीं था

चमत्कार करने या करने में सक्षम। बाइबिल और कुरान दोनों के अनुसार जीसस थे
दोनों में अच्छा। और जब मुहम्मद वास्तव में कोई नबी नहीं थे, जबकि जीसस एक थे
महान एक - अभी भी दोनों पुस्तकों के अनुसार - इसमें कोई संदेह नहीं है कि सबसे बड़ा पैगंबर कौन था।

इस्लाम/मुसलमान मुहम्मद की अन्य उपाधियों पर बहस कर सकते हैं - संदेशवाहक और प्रेरित - लेकिन जहाँ तक
सबसे महान पैगंबर कौन थे, इस्लाम के तमाम दावों के बावजूद इसमें कोई शक नहीं है।

(6 विरोधाभास)।

०५७ ६/२२ (६३०-६३२ ईस्वी): "पृथ्वी पर या आपकी आत्मा में कोई दुर्भाग्य नहीं हो सकता है लेकिन दर्ज किया गया है
एक फरमान में हम (अल्लाह*) के सामने इसे अस्तित्व में लाते हैं। " इसके विपरीत:

१.८/३० (६१४-६१८ ईस्वी): "जब भी दुर्भाग्य"
आपके साथ होता है (मनुष्य*), इसकी वजह से है
आपके हाथों ने जो चीजें बनाई हैं - - -"। भी
देखें ७६/३० (उम्र अज्ञात): "लेकिन तुम (मनुष्य*)
नहीं करेगा, सिवाय जैसा कि अल्लाह चाहता है।"

लेकिन उन सभी जगहों को भी देखें जहां मुहम्मद अपने लोगों से कहते हैं कि लड़ाई खतरनाक नहीं है - और
युद्ध करने से इनकार करने का कोई फायदा नहीं है - जैसा कि अल्लाह ने लंबे समय से उनकी मृत्यु का समय तय किया है,
और वे जो कुछ भी करते हैं या नहीं करते हैं, वह उस घड़ी को बदल नहीं सकता।

यह बात वास्तव में इस्लाम में दो तथ्यों के केंद्र में है:

1. मुहम्मद ने पूर्वनियति पर जोर दिया
जैसे-जैसे साल बीतते गए
मदीना - कोई अनुमान लगा सकता है कि क्या कारण था
कि उसे योद्धाओं की जरूरत है।
2. और यह एक गंभीर मुद्दा है: 1400 के माध्यम से
वर्षों से इस्लाम असमर्थ रहा है
विरोधाभास की व्याख्या करें
कथन जो मनुष्य के पास मुफ़्त है
होगा, और वह अल्लाह तय करता है
हर चीज़। अधिक या कम
आधिकारिक दृष्टिकोण (हालांकि .)
अशिक्षित लोगों में नहीं
यह शायद ही समझ में आता है
समस्या) यह है कि दो
कथन असंभव हैं
गठबंधन, "लेकिन यह सच होना चाहिए"
यह कुरान में कहा गया है "(!!!)। भी
लोगों को नर्क भेजना
एक उचित सजा के लिए संयुक्त
"तथ्य" के साथ कि अल्लाह
द्वारा सब कुछ तय करता है
भविष्यवाणी, असंभव है
के अनुमान के साथ गठबंधन करें
एक परोपकारी और/या अच्छा और
निष्पक्ष भगवान। कुछ मुसलमान बहुत पीछे चप्पू
पूर्वनियति के बिंदु पर बहुत कुछ और कोशिश करें
समझाएं कि यह वास्तविक पूर्वनियति नहीं है - लेकिन
इस पर कुरान बहुत स्पष्ट है।

०५८ ६/९१: "- - - फिर उन्हें (गैर-विश्वासियों*) को व्यर्थ प्रवचन और तुच्छ बातों में डुबाने के लिए छोड़ दो।" परंतु
सख्ती से प्रतिक्रिया करने के लिए पर्याप्त मजबूत होने से पहले उन्हें छोड़ने के लिए उन्हें क्या करना था।
इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है: 2/191,
2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3,

9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इस
इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं।
आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a
यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है
2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

०५९ ६/१०६: "- - - और उस नली से मुँह मोड़ो जो अल्लाह के साथ देवताओं को मिलाती है।" लेकिन एक तरफ मुड़ना था
सख्ती से प्रतिक्रिया करने के लिए पर्याप्त मजबूत होने से पहले उन्हें क्या करना था। यह श्लोक है
निरस्त - अमान्य - और कम से कम इन श्लोकों द्वारा खंडित: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85,
3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३,
9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई शामिल हैं

खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाली छंद भी।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 28 निरसन)।

०६० ६/१०८: "अल्लाह के सिवा उन लोगों का पर्दाफाश न करना जिन्हें वे पुकारते हैं, ऐसा न हो कि वे क्रोध के कारण
उनकी अज्ञानता में अल्लाह का पर्दाफाश करो।" यह आप भूल सकते हैं जब इस्लाम इतना मजबूत हो गया
विनम्र होने के बजाय दंडित करें। इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और इसके द्वारा खण्डन किया गया है at
कम से कम ये श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८-३९ (NS
चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,
35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने या अनुमति देने वाली छंद भी शामिल हैं
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप
विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73,
35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०६१ ६/१२१: "(मांस) न खाएं, जिस पर अल्लाह का नाम नहीं लिया गया है: वह होगा
अधर्म हो।" ११ साल बाद (६३२ ईस्वी) ५/५ द्वारा विरोधाभासी और निरस्त: "द फूड ऑफ द
पुस्तक के लोग (यहाँ बाइबिल = यहूदी और ईसाई*) आपके लिए वैध हैं - - -"।

०६२ ६/१३०: "हे जिन्नों और मनुष्यों की सभा! वहाँ तुम्हारे पास दूत नहीं आए (हम से,
अल्लाह*) आप में से - - -।" एक अलंकारिक प्रश्न जिसका उत्तर "हाँ" की माँग है - हाँ, वहाँ
अल्लाह से जिन्न के पास जिन्न दूत आए, और अल्लाह की ओर से मानव दूत
मनुष्य। और इसका स्पष्ट रूप से खंडन किया गया है:

१.२१/७: "तुम्हारे सामने (मुहम्मद*) भी,
हमने जो दूत भेजे थे, वे केवल पुरुष थे।"
२.२५/२०: "और वे दूत जिन्हें हम
(अल्लाह*) तुमसे पहले भेजे गए सभी (मनुष्य) - - - थे।

खैर, ६/१३० कहता है कि कम से कम सभी पुरुष तो नहीं थे। एक अच्छा सा विरोधाभास।

(२ विरोधाभास)।

०६३ ६/५१: "- - - उन्हें (न्याय (= कयामत का दिन*)) उनके रब के सामने लाया जाएगा
(अल्लाह*) : उसके सिवा उनका न कोई रक्षक होगा और न कोई सिफ़ारिश करने वाला---।" परंतु:

१. २०/१०९: "उस दिन (कयामत का दिन*)
कोई हिमायत का फायदा नहीं, सिवाय उन लोगों के जिन्हें
(अल्लाह) द्वारा अनुमति प्रदान की गई है - - -।"
यहाँ यह संभव है यदि अल्लाह अनुमति दे।
२.३४/२३: "उसके पास कोई सिफ़ारिश नहीं हो सकती"
(अल्लाह की*) उपस्थिति (= . के दिन पर)
कयामत*), सिवाय जिसके उसने दी है
अनुमति।" हिमायत ठीक है अगर अल्लाह अनुमति देता है।
३.४३/८६: "और जिन्हें वे पुकारते हैं
("भगवान", संत *) अल्लाह के अलावा कोई शक्ति नहीं है
हिमायत का - केवल वह (है*) जो सहन करता है
सत्य के साक्षी - - -।" शब्द "वह"
अल्लाह का ज़िक्र नहीं कर सकता, क्योंकि कुरान

तब हमेशा पूंजी 1 अक्षर ("उसका") का प्रयोग करें। परंतु

573

पेज ५७४

कुरान के अनुसार पैगंबर और
दूतों को "गवाही करने के लिए" बुलाया जाना है
सच्चाई के लिए"। "वह" इसलिए संदर्भित होना चाहिए
प्रत्येक नबी और दूत (or
कम से कम मुहम्मद - - - किसके अनुसार
इस श्लोक में मध्यस्थता करने की शक्ति है।

६/५१ के बाद भी हिमायत असंभव नहीं है - यह केवल अनुमति लेता है।

(३ विरोधाभास)

०६४ ६/६०: "उनको छोड़ दो जो अपने धर्म को मात्र खेल और मनोरंजन समझते हैं - - -"।
आप शर्त लगाते हैं कि मुहम्मद ने उन्हें अकेला नहीं छोड़ा जब वह काफी शक्तिशाली थे। यह श्लोक है
कम से कम इन श्लोकों का खंडन किया और अक्सर "मार डाला": २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१,
4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33,
9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देने वाले या शामिल हैं
अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि
आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,
33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०६५ ६/६६: "आपकी (धार्मिक*) व्यवस्था की जिम्मेदारी मेरी (मुहम्मद की) नहीं है
मामलों।" यह 621 ईस्वी में था - मुहम्मद को 622 ईस्वी के बाद अन्य विचार मिले। यह श्लोक है
कम से कम इन श्लोकों का खंडन किया और अक्सर "मार डाला": २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१,
4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33,
9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देने वाले या शामिल हैं
अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि
आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,
33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०६६ ६/७०: "उन लोगों को छोड़ दो जो अपने धर्म को केवल खेल और मनोरंजन समझते हैं - - -।"
मुहम्मद को और शक्ति मिली - और अन्य विचार - बाद में। यह श्लोक विरोधाभासी है और अक्सर
कम से कम इन छंदों से "मारे गए": 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73,
8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36,
25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

**०६७ ६/१०४अ: "अब आपके पास आपके (मुसलमानों/लोगों*) की ओर से प्रभु प्रमाण - - - (लेकिन*)
- - - मैं (मुहम्मद*) आपके कार्यों पर नजर रखने के लिए (यहां) नहीं हूं।" एक बार फिर यह स्पष्ट है कि यह है
मुहम्मद स्वयं जो कुरान में बोल रहे हैं - एक असंभव और एक स्पष्ट विरोधाभास
इस्लामिक दावा है कि यह स्वर्ग में मदर बुक की एक प्रति है। ऊपर 1/1-7 देखें।

०६८ ६/१०४बी: "- - - मैं (मुहम्मद*) आपके कार्यों पर नजर रखने के लिए (यहां) नहीं हूं।" एक साल बाद
मुहम्मद ने भी हर किसी को करते हुए देखना शुरू किया - और सख्ती से धीरे-धीरे। इस
कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार" दिया जाता है: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85,
3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14,
9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है
कई लोगों को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति (तलवार के साथ)

574

पेज ५७५

पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०६९ ६/१०७: "- - - लेकिन हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) को उनकी निगरानी न करने के लिए बनाया है ("काफिरों') कर - - -।" इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०७० ६/११२: "---तो (मुहम्मद*) उन्हें (विरोधियों*) और उनके आविष्कारों (देवताओं*) को छोड़ दो अकेला।" इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह देने या अनुमति देने वाली कई बाध्यताएं शामिल हैं (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०७१ ६/११४: "कहो 'क्या मैं (मुहम्मद*) अल्लाह के अलावा किसी और जज के लिए बोलूं?" यहाँ बिंदु क्या यह इब्न वार्राक के अनुसार: "मैं मुस्लिम क्यों नहीं हूँ" पृष्ठ १७४, शब्द "कहो" में नहीं है अरब पाठ। कुरान में कई जगह दावों का स्पष्ट विरोधाभास करने के अलावा, यह मानस दो चीज़ें:

1. यह अल्लाह नहीं, बल्कि स्वयं मुहम्मद है बोला जा रहा है। ऊपर 1/1-7 देखें।
2. अब्दुल्ला जैसा शीर्ष मुस्लिम अनुवादक भी यूसुफ अली "डॉक्टरों" ने अपने अनुवाद "छोटे" वी बिट" कुरान को और अधिक ध्वनि बनाने के लिए सही। "डॉक्टर्ड" कितना अधिक है - और कितना "doctored" के अनुवाद में है निम्न गुणवत्ता वाले अनुवादकों से कुरान? (और यह कम से कम 2/286 में समान था।)

०७२ ६/११५: "- - - उनके (अल्लाह के) शब्दों को कोई नहीं बदल सकता - - -"। खैर, वह विरोध कर रहा है खुद, जैसा कि वह स्पष्ट रूप से खुद को बदल देता है जब कोई चीज उसे मजबूर करती है - कोशिश करो और असफल हो जाओ? या 622 ई. से अधिक रक्त और अन्याय के बारे में अपना विचार बदलें? - या अन्य के कारण समस्याएं या चीजें जो उसने सीखी हैं?

१. २/१०६: "हमारा कोई रहस्योद्घाटन नहीं करते हैं" (अल्लाह*) निरस्त या भुलाने का कारण, लेकिन हम कुछ बेहतर प्रतिस्थापित करते हैं या एक जैसा"। शब्द बदले जा सकते हैं।
२. १६/१०१: "जब हम (अल्लाह*) एक को प्रतिस्थापित करते हैं दूसरे के लिए रहस्योद्घाटन - और अल्लाह सबसे अच्छा जानता है वह क्या प्रकट करता है - - -"। इसमें कोई शक नहीं कि वह कर सकता है अपने शब्दों को बदलो, कम से कम - जब उसने किया चीजों को एक बार में ठीक न करें। (ये दो श्लोक

– २/१०६ और १६/१०१ – मुख्य मूलाधार है निरसन के लिए इस्लाम के नियमों के तहत - बनाना विरोधाभास होने पर छंद अमान्य। निरसन के बारे में अलग अध्याय देखें - अगला इसके बाद का अध्याय, संख्या II/9)।

(२ विरोधाभास)।

०७३ ६/१३०: “हे जिन्नों और मनुष्यों की सभा! वहाँ के दूत तुम्हारे पास नहीं आए
आप के बीच - - -?" मनुष्य के लिए मानव दूत, जिन्न के लिए जिन्न दूत। लेकिन यह है
इसके विपरीत:

१.१२/१०९: "न ही हमने (अल्लाह*) पहले भेजा था
आप (मुहम्मद*) (संदेशवाहक के रूप में) कोई भी लेकिन
पुरुष, जिन्हें हमने प्रेरित किया - (पुरुष) में रह रहे हैं
मानव निवास। ” कोई जिन्न दूत नहीं।

खैर, इस श्लोक में इसकी व्याख्या करना संभव है
इसके साथ ही यह शायद केवल बोली जाती है
मानव आवास के बारे में। यह संभव नहीं है
अगले दो, क्योंकि वे बिना हैं
(संभव) आरक्षण।

२. १६/४३: "और तुमसे पहले (मुहम्मद*) भी
हमने जो दूत भेजे थे, वे केवल पुरुष थे - - -"।

3. 21/7: "तुम्हारे सामने (मुहम्मद) भी,
हमने जो दूत भेजे थे, वे केवल पुरुष थे - -।"

४.२२/७५: “अल्लाह ने रसूलों को चुना
कोण और पुरुषों से - - -।" लेकिन से नहीं
जिन्न।

५.२५/२०: “और वे दूत जिन्हें हम
(अल्लाह*) तुमसे पहले भेजे गए (मुहम्मद) थे
सारे पुरुष - - -।"

(५ विरोधाभास)।

०७४ ६/१३७: "- - - लेकिन उन्हें (बहुदेववादियों*) और उनके आविष्कारों को छोड़ दें।" वह में था
शांतिपूर्ण 621 ई. यह जल्द ही बदल गया: इस कविता को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और इसका खंडन किया गया है
कम से कम इन श्लोकों से: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८- 39
(चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25 /52, 33/61,
33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने वाली छंद भी शामिल हैं
अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि
आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,
33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

*****075 6/149: "अल्लाह के पास वो दलीलें हैं जो घर तक पहुँचती हैं---"। जो मैदान में
भाषा का अर्थ है कि अल्लाह की हर बात में अंतिम बात है। जिसका अर्थ है: अल्लाह तय करता है
हर चीज़। "कुरान का संदेश" इस सूरह को अपनी टिप्पणी 141 में समझाता है
(स्वीडिश से अनुवादित):

"दूसरे शब्दों के साथ: भविष्य के बारे में अल्लाह के ज्ञान के बीच वास्तविक संबंध (और .)
फलस्वरूप भविष्य में क्या होने वाला है*) एक तरफ अपरिहार्य के बारे में और

दूसरे पर मनुष्य की अपेक्षाकृत (!!*) स्वतंत्र इच्छा - दो कथन जो प्रत्येक के विपरीत प्रतीत होते हैं
अन्य - वह बाहर है जो मनुष्य के लिए समझना संभव है, लेकिन जैसा कि दोनों कथन किए गए हैं
अल्लाह की ओर से (कुरान* में) दोनों सच होने चाहिए"।

यह तर्क "सत्य" शब्द के पीछे के अर्थ के लिए अंतिम हार है - और
"तर्क" शब्द के अर्थ के लिए। नैतिक रूप से भ्रष्ट चरित्र का आदमी जैसे
ऐतिहासिक वास्तविक मुहम्मद ने एक अप्रमाणित और अप्रमाणित कहानी सुनाई है - - - और वह है
परम सत्य भी असंभव के सामने !! अंतिम विरोधाभास! - - -
और मामले में स्वतंत्र इच्छा का अंतिम निरसन।

यह दावा कि मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा है, इस दावे का खंडन करता है कि अल्लाह सब कुछ तय करता है और
जानता है कि कुरान में कई जगहों पर सब कुछ एक-दूसरे का खंडन करता है। अलग अध्याय भी देखें
पूर्वनियति के बारे में और स्वतंत्र इच्छा के बारे में।

076 ****6/151a: यह वास्तव में एक अजीब विरोधाभास है: "आओ, मैं (मुहम्मद*) पूर्वाभ्यास करूंगा
अल्लाह ने (वास्तव में) आपको प्रतिबंधित किया है - - (से*) - - अपने माता-पिता के लिए अच्छा हो - - -।" पढ़ना

यह एक बार फिर: आपको अपने माता-पिता के प्रति अच्छा होने की मनाही है !! - जो है उसके विपरीत
किताब में हर जगह कहा। मुझे जो मुस्लिम स्रोत मिले हैं, वे सभी इस बात से सहमत हैं कि यह गलत है
- और वास्तव में हम उनसे सहमत हैं - यह कुरान की शैली से इतना दूर है कि इसमें होना चाहिए
दुर्घटना हो गई।

लेकिन इसका मतलब यह है कि यहां कुरान में आपकी स्पष्ट गलती है
- इस्लाम द्वारा एक गलती के रूप में प्रमाणित - किसी भी मुस्लिम या गैर के लिए मुफ्त में सेवा करने के लिए-
मुस्लिम का दावा है कि किताब सही है और गलतियों के बिना "अंतिम अल्पविराम तक"। सिर्फ पूछना
अगर उनके पास कभी लाल ६/१५१ है? (और पूछें कि क्या वे जानते हैं कि अल्पविराम मौजूद नहीं था
अरब में जब कुरान 650 ईस्वी के आसपास लिखा गया था)।

और: जब यह गलत है - किताब में और कितना गलत है? इसके ठीक नीचे 6/151a भी देखें।

०७७ ****6/151b: यह वास्तव में एक और अजीब विरोधाभास है: "आओ, मैं (मुहम्मद*)
पूर्वाभ्यास करो कि अल्लाह ने तुम्हें क्या (वास्तव में) निषिद्ध किया है - - (से*) - - अपने बच्चों को एक पर मत मारो
चाहत की दलील (गरीबी*) - - -।" इसे एक बार और पढ़ें: आपको अपनी हत्या न करने की मनाही है
बच्चे अगर तुम गरीब हो !! - यह भी (ऊपर 6/151a देखें) इसके बारे में जो कहा गया है उसके विपरीत
किताब में हर जगह बच्चों का इलाज। हमें जो मुस्लिम स्रोत मिले हैं, सभी
इस पर सहमत हैं कि यह भी गलत है - और वास्तव में हम उनसे सहमत हैं - यह इससे बहुत दूर है
कुरान की शैली, कि यह एक दुर्घटना रही होगी।

लेकिन इसका मतलब यह है कि यहां कुरान में आपकी एक और स्पष्ट गलती है - द्वारा प्रमाणित
इस्लाम एक गलती के रूप में - किसी भी मुस्लिम या गैर-मुस्लिम को मुफ्त में सेवा करने के लिए दावा करते हुए कि पुस्तक है
सही और गलतियों के बिना "अंतिम अल्पविराम तक"। बस उनसे पूछिए कि क्या उन्होंने कभी 6/151 पढ़ा है?
(और पूछें कि क्या उन्हें इस बात की जानकारी है कि जब कुरान था तब अरब में अल्पविराम मौजूद नहीं था
650 ईस्वी के आसपास लिखा गया)। (६/१५१ए इन २ में सबसे अच्छी तरह से जाना जाता है।)

और: जब यह गलत है - किताब में और कितना गलत है?

०७८ ६/१५८: "रुको तुम ("काफिर"*): हम (मुहम्मद*) भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।" हाँ, ६२१ ई. में जब
यह सूरा जारी किया गया था, मुहम्मद के पास अभी भी पर्याप्त सैन्य शक्ति नहीं थी - फिर नारा
अभी भी चीजों को आसान लेना था। यह बाद में बदल गया। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर "मारे गए"
कम से कम इन श्लोकों द्वारा: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२,
8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52,

33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं।
आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a
यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है
2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०७९ ६/१५९: "उन लोगों के लिए विज्ञापन जो अपने धर्म को विभाजित करते हैं और संप्रदायों में टूट जाते हैं, उनका कोई हिस्सा नहीं है
उन्हें कम से कम: उनका संबंध अल्लाह के साथ है - - -।" वास्तविकता से बहुत दृढ़ता से विपरीत है -
इस्लामी इतिहास के माध्यम से कई संप्रदायों को सताया गया है, यहां तक कि खून में डूब गए हैं।
साथ ही कुरान द्वारा ही खण्डन और निरसन किया गया है: इस आयत को निरस्त किया गया है - अमान्य कर दिया गया है -
और कम से कम इन छंदों के विपरीत: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72,
8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123,
25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन यह भी
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद (तलवार के साथ)
पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73,
9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०८० ६/१६३: (मुहम्मद ने कहा) "- - - मैं उन लोगों में से पहला हूं जो उसकी (अल्लाह की *) इच्छा को झुकाते हैं।"
आदम और नूह और इब्राहीम और मूसा और कई अन्य लोगों द्वारा विरोधाभासी के अनुसार
कुरान. कुरान में कम से कम 10 विरोधाभास। (हालांकि मुहम्मद सही हो सकते हैं - हे
आसानी से पहला मुसलमान हो सकता है)।

०८१ ७/१२: "तू (अल्लाह*) ने उसे (आदम*) मिट्टी से बनाया है।" इसका खंडन है
६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताते हैं कि मनुष्य/एडम से बना था
बजती हुई मिट्टी, ५५/१४ जो बताती है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, ३७/११ जो बताता है
आदमी/एडम चिपचिपी मिट्टी से बना था, २३/१२, जो बताता है कि मनुष्य/एडम के सार से बना था
मिट्टी, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५,३५/११,

४०/६७, जो बताता है कि मनुष्य/आदम धूल से बना था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम से बना था
पृथ्वी, ९६/२ जो बताता है कि मनुष्य/एडम जमा रक्त के थक्के से बना था, १६/४, ७५/३७, ७६/२,
80/19, बता दें कि आदमी/एडम वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया है)
आया), २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो बताता है कि आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! में नहीं
पानी, लेकिन पानी से!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम "आधार सामग्री" से बना था, और नहीं
इस मामले में सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख करने के लिए: 19/9 और 19/67 जो दोनों बताते हैं कि
आदमी/एडम कुछ भी नहीं से बनाया गया था। (इस अध्याय में १०००+ . के बारे में पद ६/२ भी देखें
कुरान में गलतियाँ।) (कड़ाई से यह 25 अन्य छंदों के विपरीत माना जाता है। लेकिन न्यूनतम 10
विरोधाभास।)

०८२ ७/२८: "अल्लाह कभी भी शर्मनाक - - - की आज्ञा नहीं देता है।" इसका कई लोगों द्वारा खंडन किया गया है
कुरान में अंक, एफ। भूतपूर्व।:

१. २/२३०: "यदि कोई पति अपनी पत्नी को तलाक देता है" (अपरिवर्तनीय), वह उसके बाद पुनर्विवाह नहीं कर सकता जब तक वह दूसरी शादी नहीं कर लेती पति और उसने उसे तलाक दे दिया है।" इस स्थिति सामान्य नहीं है, लेकिन ऐसा होता है। इस्लाम में औरत को फिर वेश्यावृत्ति करनी पड़ती है खुद को कानूनी रूपों में, ऐसा करने की अनुमति के लिए (मध्यवर्ती विवाह होना चाहिए a "एक पूरा)।
2. चोरी करना/लूटना "अच्छा और वैध है।
3. गुलाम बनाना "अच्छा और वैध" है।

578

पेज 579

4. किसी भी महिला दास या युद्ध बंदी का बलात्कार करना है "अच्छा और वैध" (यदि वह गर्भवती नहीं है)।
5. हत्या और हत्या और युद्ध ही नहीं हैं अच्छा और वैध, लेकिन अल्लाह की सबसे अच्छी सेवा।
6. एक बलात्कार वाली महिला जो 4 पुरुष पैदा नहीं कर सकती इस अधिनियम के गवाहों को दंडित किया जाना है अभद्रता के लिए गंभीर रूप से।

कुरान सही है: शब्द "शर्मनाक" नहीं है। शब्द "विकृत" है।

०८३ ७/५४: "- - - अल्लाह, जिसने आकाश (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी को छह दिनों में बनाया
- - -।" इसके साथ विरोधाभास:

१.४१/९-१२: यहाँ अल्लाह ने २ + ४ + २ दिन = ८ . का प्रयोग किया निर्माण के लिए दिन (मुसलमानों का दावा है कि पृथ्वी बनाने के लिए दो दिन शामिल हैं चार दिन। लेकिन कुरान बहुत स्पष्ट है: 2 दिन के लिए पृथ्वी बनाना, फिर 4 दिन क्या बनाना है पृथ्वी पर है, और अंत में बनाने के लिए 2 दिन 7 फर्मामेंट (गलत - केवल एक ही है, और यहां तक कि जिस तरह से मुहम्मद ने सोचा था कि यह दिखता है जैसे, एक ऑप्टिकल भ्रम है)। इसमें कोई शक नहीं क्या लिखा है। (कुछ मुसलमान भी कोशिश करते हैं बता दें कि अरब ने दिन के लिए भी लिखा शब्द कल्प का अर्थ हो सकता है (पुराने अरब वर्णमाला में नहीं था स्वर या बिंदु आधुनिक अरब उपयोग करते हैं विशेष अक्षरों को दर्शाता है, और जब कोई जोड़ता है स्वर, आदि जैसे कोई पसंद करता है, बहुत कुछ संभव है।) लेकिन इसमें कोई शक नहीं है कि बोले गए शब्द मुहम्मद अपनी मण्डली के लिए इस्तेमाल करते थे "दिन" - और स्वीकृत अच्छे में से कोई नहीं अनुवादक किसी अन्य शब्द का प्रयोग करते हैं। कल्प भी अल्लाह और उसकी काबिलियत का मज़ाक बना लो: 2/117: "जब उसने (अल्लाह) ने एक मामला तय किया, तो उसने कहा: इसके लिए: 'बी' और यह है" - क्या उसे कल्पों का उपयोग करना चाहिए

यह छोटा सा काम?) हमें आपको भी मदद दिखाना चाहिए
वास्तविकता के साथ विरोधाभास: बनाने के लिए
ब्रह्मांड को अब तक 13.7 अरब वर्ष लगे हैं,
और पृथ्वी 4.57 बिलियन।

०८४ ७/७८: "तब भूकम्प ने उन्हें (तमूद* के लोग) अनजाने में ले लिया, और वे लेट गए
सज्दा (= मृत*) सुबह अपने घरों में"। सिवाय इसके कि इसका खंडन किया गया है:

१.११/६७: "(शक्तिशाली) विस्फोट ने उसे पीछे छोड़ दिया
गलत काम करने वाले (थमूद* के लोग), और
वे अपने घरों में साष्टांग प्रणाम करते हैं
सुबह - - -।" धमाका कुछ ऐसा लगता है
एफ से भूतपूर्व। एक विस्फोट।
2. 69/5: "लेकिन थमूद - वे नष्ट हो गए"
गड़गड़ाहट और बिजली के भयानक तूफान से "।

579

पेज ५८०

तूफ़ान का ज़िक्र करते हुए आप मुसलमानों से मिलते हैं
कि "स्वाभाविक रूप से भूकंप का पालन करें"। अर्थात्
गलत - नहीं है - नहीं - कनेक्शन
भूकंप और तूफान के बीच, जैसे वे हैं
पूरी तरह से अलग तंत्र के कारण। (प्रति
"सुधार" के बारे में गीत जारी रखें
कुरान: श्री मुहम्मद असद "The ." में
का संदेश) कुरान "चुपचाप और
टिप्पणियों के बिना "तूफान" से 69/5 बदल गया
और बिजली" से "भूकंप" तक। एक "अल-
तकिया" (वैध झूठ)? अल-तकिया ही नहीं है
अनुमति दी गई है, लेकिन यदि आवश्यक हो तो बचाव करने का आदेश दिया गया है
या धर्म का प्रचार करो।

2 विरोधाभास।

०८५ ७/८२: "और उसके (लूत के*) लोगों (सदोम और अमोरा के लोगों*) ने कोई उत्तर नहीं दिया
परन्तु यह, उन्होंने कहा, 'उन्हें अपने शहर से बाहर निकालो: ये वास्तव में ऐसे पुरुष हैं जो शुद्ध होना चाहते हैं
और शुद्ध।'" यह सूरह सीए आया। 621 ई. लेकिन एक ही वर्ष हो सकता है और 624 ईस्वी के बाद का नहीं हो सकता है
सर्वज्ञ अल्लाह भूल गया था कि उसने क्या कहा था, और अब इसे इस तरह याद किया:

१.२९/२९: "लेकिन उसके (लूत) लोगों ने कोई जवाब नहीं दिया
लेकिन यह: उन्होंने कहा: 'हम पर क्रोध लाएँ'
अल्लाह अगर तुम सच को लंबा करते हो "। उन्होंने केवल दिया
एक उत्तर - - - लेकिन दोनों में काफी भिन्न
आख्यान।

०८६ ७/८७: "- - - अपने आप को ("काफिरों"*) धैर्य में तब तक रखें जब तक कि अल्लाह हमारे बीच फैसला न कर ले:
क्योंकि वह निर्णय लेने में सर्वश्रेष्ठ है।" यह भी ६२१ ईस्वी में था - मुहम्मद के लिए अच्छा वर्ष नहीं था, और
वह था - या होने का नाटक - शांतिपूर्ण। परंतु: इस पद का खंडन किया जाता है और अक्सर अत . द्वारा "मार" दिया जाता है
कम से कम ये श्लोक: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/ 38-39
(चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25 /52, 33/61,
33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं।
आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a
यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है
2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०८७ ७/१२७: "उसने (फिरौन*) ने कहा: 'हम उनके पुत्रों को मार डालेंगे: (केवल) उनकी मादाएं
हम जिंदा बचाते हैं - - -"। और यह स्पष्ट है कि यह तेजी से शुरू करना है। लेकिन विरोधाभास:

१.२/४९: "- - - हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें यहाँ से छुड़ाया है
फिरौन के लोग (जो*) - - - बलि किए गए
आपके बेटे - - -"।
२.७/१४१: "- - - फिरौन के लोग - - - जिन्होंने वध किया

[illegible]
एक से अधिक जगह बताता है कि की हत्या
नर बच्चे स्थिति से बहुत पहले शुरू हो गए
7/127 में। बाइबल बताती है कि की हत्या
नर शिशु ही थे बच्चे के होने का कारण

मूसा नील नदी पर बह गया था - एक हताश
उसे बचाने की कोशिश करो (कुरान कोई वास्तविक नहीं देता)
कारण)।

3. 14/6: "(मूसा ने फिरौन के बारे में कहा कि वह*)
   अपने पुत्रों का वध किया और अपनी स्त्रियों को जाने दिया-
   लोक लाइव - - -।"

(३ विरोधाभास)।

००बी ७/१३३ (६२१ ईस्वी): "तो हमने उन पर (विपत्तियां) भेजीं: थोक मौत, टिड्डियां, जूँ, मेंढक, और
रक्त: संकेत खुले तौर पर स्वयं समझाया गया है" = 5 विपत्तियां या "संकेत"। इसके विपरीत: 17/101 (621 ईस्वी)
या बाद में): "मूसा को हमने (अल्लाह*) ने 9 स्पष्ट निशानियाँ दीं"। मुसलमान समझाते हैं कि
मूसा और उसके सफेद हाथ के कर्मचारी/सांप दो "चिन्ह" (7/107+108) थे - लेकिन वे
मामले में विपत्तियों के रूप में व्याख्या नहीं की जा सकती है। दो अंतिम कुछ कहते हैं कि मसौदे के वर्ष हैं और
फसलों की कमी (जोसेफ की कहानी से ली गई है?), लेकिन यह सही नहीं हो सकता - भले ही नहीं
पुस्तक कहती है कि मूसा ने अपने लोगों को मुक्त करने के लिए कितने समय तक काम किया, यह संकेत मिलता है कि इसमें एक
सीमित समय (यह भी बाइबिल से स्पष्ट है), जबकि फसलों की कमी के वर्षों में - ठीक है,
वर्षों। (बाइबल बताती है: कुरान की तरह कर्मचारियों के साथ संकेत, लेकिन उसके बाद 10 विपत्तियां)।

(४ विरोधाभास)।

०८८ ७/१४१: "----फिरौन के लोग---- जिन्होंने तेरे पुत्र-पुत्रियों को मार डाला और उन्हें जीवित बचाया।
मादा - - -।" वास्तव में यह बाइबल जो कहती है उसके अनुसार है (कुरान कहता है)
बेबी मूसा को नील नदी (20/39) में डाल दिया गया था लेकिन इस तरह के अपराध का कारण न दें। बाइबल
बताता है कि यह सभी यहूदी लड़कों को मारने के शाही आदेश के कारण था, और उसकी मां ने ऐसा किया था
उसे बचाने की बेताब कोशिश)। लेकिन यह कुरान की दो आयतों का खंडन करता है जो यह नहीं बताती हैं कि यह थी
किया, परन्तु यह कि फिरौन मूसा के साथ टकराव के दौरान ऐसा करना शुरू कर देगा। (इसी तरह
2/49 और 14/6)।

१.७/१२७: "उसने (फिरौन*) ने कहा: 'उनका पुरुष'
   बच्चों को हम मारेंगे: (केवल) उनकी मादा
   क्या हम जिंदा बचाएंगे - - -"। और यह स्पष्ट है कि
   यह तेजी से शुरू करना है।

2. 40/25: "विश्वास करने वालों के पुत्रों को मार डालो"
   उसे (मूसा*)"।

(२ विरोधाभास)।

०८९ ७/१४३: "- - - मैं (मूसा) सबसे पहले विश्वास करने वाला हूँ।" यह 6/14 के समान है, सिवाय इसके कि यह है
मुहम्मद के बजाय मूसा। लेकिन यह कुरान के इस कथन का खंडन करता है कि f. भूतपूर्व। एडम,
इब्राहीम, इसाक, इश्माएल, जैकब, जोसेफ, हुद, सालेह और अन्य लोग पहले मुसलमानों को मानते थे
उसे।

०९० ७/१४९ तब मूसा के यहूदियों ने देखा कि बछड़े को सोने का बना कर उन्होंने भूल की है।
और मूसा के यहोवा से भेंट करने से पहिले मन फिराया। मूसा गुस्से में था, लेकिन
लोगों ने पहले ही पश्चाताप कर लिया था। यह 621 ई. में बताया गया था। लेकिन बाद में अल्लाह के पास होना चाहिए
कुछ गलत याद आया, क्योंकि 5-6 साल बाद उसने यह कहा था:

1. 20/91: (मूसा के यहूदियों ने कहा): "हम नहीं करेंगे"
   इस पंथ (सोने का बछड़ा*) को छोड़ दें, लेकिन हम करेंगे

पेज ५८२

जब तक मूसा वापस नहीं आ जाता तब तक इसके लिए खुद को समर्पित कर दें हमें (उसकी यहोवा के साथ भेंट से*)" केवल
एक - यदि कोई हो - इन दो कहानियों में से सत्य हो सकता है।

०९१ ७/१५७: "- - - क्योंकि वह (मुसलमान*) उन्हें (मुसलमानों को) आज्ञा देता है, जो न्यायपूर्ण है, और मना करता है उन्हें क्या बुराई है"। अंतिम कथन वास्तविकता और कुरान दोनों द्वारा दृढ़ता से खंडन किया गया है।
पुस्तक - मुहम्मद और उनके उत्तराधिकारियों का उल्लेख न केवल अनुमति दी गई बल्कि मांग की गई हत्या और युद्ध, लूट और ज़बरन वसूली, बलात्कार और दासता, आदि। ऐसा करना संभव है बीमार कानूनों द्वारा चीजें "वैध"। लेकिन इस तरह की अमानवीयताओं को "अच्छा" बनाने का कोई तरीका मौजूद नहीं है "न्यायसंगत" या "शुद्ध" - और इसमें कॉल करना शामिल है जो वास्तव में लूट और दासों, या युद्धों के लिए छापे हैं आक्रामकता के लिए, "आत्मरक्षा" या जिहाद के लिए (जैसे मुसलमानों ने कई बार सेना की है)
इतिहास - एक वास्तविक लेकिन मामूली विवरण के साथ या बहाने के रूप में तर्क)।

०९२ ७/१७९: "कई जिन्न और आदमी हैं जिन्हें हमने (अल्लाह*) नर्क के लिए बनाया है - - -।" यहाँ अल्लाह बताता है कि कई पुरुष और जिन्न (एक प्रकार के प्राणी अरब बुतपरस्त धर्म से "उधार" लेते हैं, किंवदंतियाँ और परियों की कहानियाँ) उसने बनाई थीं, नर्क के लिए बनाई गई थीं। लेकिन यह उस सब के विपरीत है आदमी और जिन्न अल्लाह की सेवा के लिए बने हैं:

१.५१/५६: "मैंने (अल्लाह*) ने सिर्फ जिन्नों को पैदा किया है और पुरुष, कि वे मेरी सेवा करें।"

०९३ ७/१८२-१८३: "जो लोग हमारी (अल्लाह की) निशानियों को ठुकराते हैं - - - मैं उन्हें राहत दूंगा - - -" लेकिन सुनिश्चित हो, मुहम्मद ने उन्हें हमेशा राहत नहीं दी, जब वह काफी मजबूत हो गए। इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं। आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है 2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

०९४ ७/१८८: "मैं (मुहम्मद*) केवल एक चेतावनी देने वाला, और खुशखबरी लाने वाला हूँ - उन लोगों के लिए जो आस्था या विशवास होना।" एक चेतावनी और एक योद्धा। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम . द्वारा "मार डाला" जाता है ये पद: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८ -39 (द चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०९५ ७/१९३: "- - - तुम्हारे (मुहम्मद*) के लिए यह वही है कि तुम उन्हें बुलाओ या तुम पकड़ लो शांति!" एक साल बाद सोच में बदलाव आया: यह श्लोक विरोधाभासी है और अक्सर कम से कम इन छंदों से "मारे गए": 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

पेज ५८३

०९६ ७/१९९: "(मुहम्मद*) क्षमा को थामे रहो ("काफिरों"* के प्रति)। यह श्लोक है कम से कम इन श्लोकों का खंडन किया और अक्सर "मार डाला": २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33,

9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देने वाले या शामिल हैं
अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि
आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,
33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

०९७ ८/१: "(युद्ध की लूट*)"अल्लाह और नबी (मुहम्मद*) के पास है - -
-।" छापे और युद्ध में जो कुछ भी चुराया गया और लूटा गया और लूटा गया, उसमें गुलाम और कैदी शामिल थे
पैसे की उगाही के लिए (यह जल्दी - 624 ई. - यह मुख्य रूप से चोरी / लूट / जबरन वसूली के लिए छापे थे) संबंधित थे
अल्लाह - पृथ्वी पर उनके दूत द्वारा प्रतिनिधित्व किया: मुहम्मद। परन्तु उसके अधिकारी और योद्धा भी थे
इसे स्वीकार करने के लिए लालची - वे भी धन का हिस्सा चाहते थे। तो थोड़ी देर बाद सूरह में - अ
कुछ "खुलासे" बाद में (?) एक विपरीत आदेश आया - और निरसन:

1. ***8/41: "और जान लें कि सारी लूट में से"
कि तुम (युद्ध में) प्राप्त कर सको, पाँचवाँ हिस्सा है
अल्लाह को सौंपा - - -।" मुहम्मद को करना था
योद्धाओं को उनका हिस्सा दें - सिवाय इसके कि वह
मामलों में अपने लिए सब कुछ बचा लिया
जहां पीड़ितों ने बिना लड़े हार मान ली -
तब योद्धाओं ने कुछ नहीं किया था और कर सकते थे
हिस्से की मांग नहीं। मुहम्मद की जरूरत
धन। हालांकि यह संभावना है कि यह सच है कि वह नहीं था
बहुत विलासिता में बहुत दिलचस्पी है, उसे चाहिए
रिश्वत / "उपहार" के लिए धन और युद्ध छेड़ने के लिए
अधिक शक्ति और अधिक धन प्राप्त करें, शामिल हैं
दास - युद्ध में पैसा खर्च होता है, भले ही उसने अपना भुगतान किया हो
धर्म और धार्मिक वादों वाले योद्धा,
फिर सभी समान भोजन और उपकरण की लागत
पैसा - और उसे "उपहार" के लिए धन की आवश्यकता थी
अधिक योद्धाओं/अनुयायियों/विश्वासियों को आकर्षित करें - - -
और कुछ सामाजिक उपयोग के लिए (गरीबों की मदद)।
मुसलमान इसे दूर करने की कोशिश करते हैं
यह कहकर विरोधाभास और निरसन
सब अल्लाह/नेता के हैं, लेकिन ८०% is
योद्धाओं / लुटेरों को दिया गया। लेकिन पल
यह छापे में लुटेरों के लिए एक अधिकार बन जाता है और
युद्ध में योद्धा, रैंक और फ़ाइल का हिस्सा नं
लंबे समय तक नेता के अंतर्गत आता है।

**098 8/12: "मैं (अल्लाह*) अविश्वासियों के दिलों में आतंक पैदा करूंगा: तुम उनके ऊपर मारो
गर्दन और उनकी सारी उँगलियाँ उन पर से मारो (उन्हें धनुष का उपयोग करने में असमर्थ बनाओ)। सीधे शब्दों में: चलो
हम बुरे अविश्वासियों से लड़ते हैं। यह पद कम से कम इन छंदों का खंडन करता है (और निरस्त करता है) (यहाँ .)
124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 का कहना है कि 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272,
3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/ १०७, ६/११२, ६/१५८, ७/८७,
7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/ ३,
15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107,
21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/ 30,
34/25, 34/28, 35/23, 35/24 ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/ 59,

45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29,
67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 89
विरोधाभास)।

०९९ ८/३० (६१४-६१८ ई.)
जो चीजें तुम्हारे हाथों ने गढ़ी हैं - - -"। इसका खंडन f. भूतपूर्व। 6/22 (630-632 ई.):
"पृथ्वी पर या तुम्हारी आत्मा में कोई दुर्भाग्य नहीं हो सकता है, लेकिन हमारे सामने एक फरमान में दर्ज किया गया है"
(अल्लाह*) इसे अस्तित्व में लाएं।" और ७६/३० (उम्र अज्ञात): "लेकिन तुम (मनुष्य*) ऐसा नहीं करेंगे,
सिवाय अल्लाह की मर्जी के।" और उन सभी जगहों से भी जहां मुहम्मद अपने लोगों से कहते हैं कि
लड़ाई खतरनाक नहीं है - और युद्ध करने से इनकार करने का कोई फायदा नहीं है - जैसा कि अल्लाह लंबे समय से कर रहा है
उनकी मृत्यु का समय तय किया, और वे जो कुछ भी करते हैं या नहीं करते हैं, वह उस घंटे को बदल नहीं सकता है। इस
बात वास्तव में इस्लाम में दो तथ्यों के दिल में जाती है:

१.भविष्यवाणी - मुहम्मद यहाँ तक आये थे
तनाव पूर्वनियति अधिक से अधिक के रूप में
मदीना में वर्षों बीत गए - कोई भी अनुमान लगा सकता है
यदि कारण यह था कि उसे योद्धाओं की आवश्यकता थी।

2. और यह एक गंभीर मुद्दा है: **1400 के माध्यम से
वर्षों से इस्लाम असमर्थ रहा है
विरोधाभास की व्याख्या करें
इस और के बीच
कथन जो मनुष्य के पास मुफ़्त है
विल, और वे कथन जो
अल्लाह सब कुछ तय करता है। NS
कमोबेश आधिकारिक बिंदु
देखें (हालांकि उनमें से नहीं
अशिक्षित जो शायद ही
समस्या को समझता है) IS
कि दो कथन हैं:
गठबंधन करना असंभव है, "लेकिन यह"
सच होना चाहिए जैसा कि अल्लाह कहता है
कुरान में "(!!!). यह भी
A . के लिए लोगों को नर्क में भेजना
के साथ संयुक्त उचित सजा
"तथ्य" जो अल्लाह तय करता है
भविष्यवाणी द्वारा सब कुछ,
के साथ गठबंधन करना असंभव है
ए का अनुमान
परोपकारी और/या निष्पक्ष परमेश्वर।**
कुछ मुसलमान बहुत पीछे चप्पू पर
पूर्वनियति का बिंदु और यह समझाने की कोशिश करें कि
यह वास्तविक पूर्वनियति नहीं है, बिना
समझाते हुए कि यह क्या है - लेकिन कुरान है
इस पर बहुत स्पष्ट।

** १०० ८/३८-३९: "अविश्वासियों से कहो, यदि (अब) वे (अविश्वास से) (अविश्वास से) दूर हो जाते हैं
मुसलमान*)), उनके अतीत को माफ कर दिया जाएगा, लेकिन अगर वे बने रहे, तो उनके लिए सजा
उनके सामने पहले से ही है (उनके लिए चेतावनी का विषय)। और उनके साथ तब तक लड़ो जब तक कोई न हो
अधिक उपद्रव और उत्पीड़न, और न्याय (शरीयत? *) और अल्लाह में पूरी तरह से विश्वास है
और हर जगह "। खैर, यह कहने के लिए कम से कम यह विरोधाभासी है और निरस्त करता है और मारता है

१.२/२५६: "इसमें कोई बाध्यता न हो"
धर्म" और कुछ अन्य पुराने, "नरम" छंद।

२. ५/२८: "यदि तू ("काफिर", कैन *) खिंचाव करता है
मेरे खिलाफ तेरा हाथ (मुसलमान, हाबिल*), यह है
मेरे लिथे नहीं कि मैं तुझ पर हाथ बढ़ाऊं
तुम्हें मार डालो - - -।" जब आप इसे पढ़ते हैं,
याद रखें कि मुसलमानों के पास बहुत कम हैं यदि कोई अधिक है
सभी नैतिक कोडेक्स। उन्हें क्या करना है
के लिए देखो "मुहम्मद ने किस बारे में कहा
इस तरह की चीज़ें?" अगर उन्होंने कुछ कहा है, तो वे
इसे एक कोडेक्स के रूप में लें - अच्छा नैतिक या नहीं। अगर
नहीं, उन्हें किताब में देखना होगा: "क्या वहाँ है?
कहीं समानांतर स्थिति?" अगर वे पाते हैं -
कभी-कभी कल्पना को खींचकर-अर्थात्
कार्य करने का तरीका, या किसी की इच्छा के लिए बहाना
कार्य करने के लिए। यह भी ध्यान रहे कि यह श्लोक इन्हीं में से एक है
सभी कुरान में बहुत कम है जो इसके अनुसार है
यीशु की शिक्षाओं के साथ - बहुत में से एक
कुछ। और यह पूरी तरह से "हत्या" है
निरसन

(२ निरस्तीकरण)।
***१०१ ८/३९: "और उनसे (अविश्वासियों से) तब तक लड़ो जब तक कि फिर कोई कोलाहल और अन्धेर न हो।
और अल्लाह पर पूरी तरह से और हर जगह न्याय और विश्वास कायम है - - -।" क्या यह संभव होगा
धर्म के युद्धों और पराजितों के दमन के बारे में अधिक प्रत्यक्ष आदेश प्राप्त करें
"काफिर"? और अगर "न्याय" का अर्थ शरीयत है, तो यह गैर-मुसलमानों के लिए विनम्र होने के लिए बहुत अधिक भगवान नहीं है।
यह कविता कम से कम इन छंदों का खंडन करती है (और निरस्त करती है) (यहाँ 124 मुस्लिमों में से 88 हैं)
विद्वानों का कहना है कि 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है: 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3,
5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/ १९३, ७/१९९, ८/६१,
9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/ 125,
16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54,
23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/ २४ए,
36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/ १३५बी,
46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45,
86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 89 विरोधाभास)।

१०२ ८/४१: "और यह जान लो कि जितनी लूट तुम (युद्ध में) प्राप्त करोगे, उसमें से पांचवां हिस्सा है
अल्लाह को सौंपा - - -।)" यह खंडन करता है और थोड़ा ऊपर 8/1 को निरस्त करता है - उसे देखें।

**१०३ ८/६०: "उनके खिलाफ (अविश्वासियों*) अपनी ताकत को पूरी तरह से तैयार करो
आपकी शक्ति - - - (के दिलों में) आतंक (हमला) करने के लिए - मुसलमानों को लगभग हमेशा
आज शांतिपूर्ण शब्दों के बावजूद हमलावर थे*) अल्लाह के दुश्मन - - -।" युद्ध के लिए
धर्म - और धन और दास और शक्ति - लेकिन "धर्म में कोई मजबूरी नहीं"। यह श्लोक
कम से कम इन छंदों के विरोधाभास (और निरस्त) (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 हैं)
9/5 द्वारा निरस्त कर दिए गए हैं): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5 /48,
5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/ ६१, ९/६८,
१०/४१, १०/९९, १०/१०२, १०/१०८, ११/१२, ११/१२१, १३/४०, १५/३, १५/९४, १६/३५, १६/८२, १६/१२५,
16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54,
23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/ २४ए,

36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/ १३५बी,
46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45,
86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 89 विरोधाभास)।

**104 8/61: "लेकिन अगर दुश्मन शांति की ओर झुके, तो क्या तुम (मुहम्मद*) (भी) झुकना
शांति की ओर - - -।" यह ६२४ ईस्वी में मुहम्मद द्वारा अंतिम जीत हासिल करने से पहले की बात है
मक्का और निर्विवाद ऊपरी हाथ - और इससे पहले कि वह प्रतीत होता है पूरी तरह से भ्रष्ट था
नैतिक और नैतिक रूप से। इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है:
2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी),
8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६,
47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

###000 8/65: आप अक्सर यह दावा करते हुए देखते हैं कि इसे 8/66 से निरस्त कर दिया गया है। लेकिन आम तौर पर 8/65 होता है
बोलना, जबकि 8/66 "वर्तमान के लिए - - -" है। अपवाद, निरसन नहीं। यदि आप शिकार करते हैं
निरसन के लिए, इससे सावधान रहें: एक अपवाद जो वहां और फिर अर्थ से संबंधित है, वह है a
अपवाद, निरसन नहीं (लेकिन अगर अपवाद दूसरी जगह और दूसरे से पाया जाता है
समय, यह एक निरसन है)। बहुत सारे विरोधाभास और निरसन दोनों हैं - आप नहीं
का उपयोग करना होगा कि वास्तव में केवल एक अपवाद है जिसका अर्थ अर्थ के हिस्से के रूप में है और
फिर।

**१०५ ९/३ (६३१ ईस्वी): "और विश्वास को अस्वीकार करने वालों के लिए एक गंभीर दंड की घोषणा करें"। मुसलमानों
कह सकते हैं कि यह लाक्षणिक रूप से और अगले जीवन के लिए है। लेकिन 9/5 के संबंध में कहा गया है, जो
इस जीवन को इंगित करता है। यह पद कम से कम इन छंदों का खंडन करता है (और निरस्त करता है) (यहां 88 हैं
१२४ मुस्लिम विद्वानों का कहना है कि ९/५ द्वारा निरस्त कर दिया गया है: २/१०९, २/१९०, २/२५६, २/२७२, ३/२०, ४/६२,
4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/ १५८, ७/८७, ७/१८८,
7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/ ९४,
16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112,
22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/ 25,

34/28, 35/23, 35/24 ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/ १४, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 91 विरोधाभास)।

***१०६ ९/५: "लेकिन जब मना किए गए महीने बीत चुके हैं, तो पगानों से लड़ो और मार डालो" जहाँ कहीं तुम उन्हें पाओ, और उन्हें आकार दो, उन्हें परेशान करो, और हर जगह उनकी प्रतीक्षा करो छल (युद्ध का।)"

यह "तलवार की आयत" है - कुरान में एकमात्र आयत जिसे माना जाता है सभी कठोर और अमानवीय और के सबसे शांतिपूर्ण छंदों का खंडन और निरसन करने के लिए मदीना काल से खूनी छंद। मुस्लिम विद्वानों का कहना है कि इसमें 124 आयतों का खंडन किया गया है पुस्तक, हमने कितने विरोधाभासों के लिए कोई संख्या नहीं देखी है, लेकिन बहुत कम नहीं (सभी भी निरसन वास्तव में अंतर्विरोध हैं - यही कारण है कि उन्हें निरसन समझा जाता है: बनाना विरोधाभासी बिंदु अमान्य ताकि पुस्तक के अनुसार जीना और व्यवहार करना संभव हो - - - और यह दावा करने के लिए कि इसमें कोई विरोधाभास नहीं है क्योंकि विरोधाभासी बिंदुओं को निरस्त कर दिया गया है, हालांकि इस आखिरी तथ्य का मुसलमान कभी जिक्र नहीं करते)। इतने श्लोक हैं कि 9/5 इसके विपरीत हैं, कि हम सभी को उद्धृत नहीं कर सकता, लेकिन चूंकि सभी निरसन भी एक या अधिक के पहले विरोधाभास थे विरोधाभासी छंदों को निरस्त कर दिया गया (जो एक कारण है कि जब यह बकवास है)

586

पेज ५८७

कुछ मुसलमानों का कहना है कि निरसन मौजूद नहीं है - इसका मतलब है कि अल्लाह सर्वज्ञ नहीं है, लेकिन उसे करना पड़ा कोशिश करो और असफल हो जाओ और / या अपना मन हर बार बदलो - कुरान में: निरस्तीकरण के बिना आपके पास पुस्तक में बहुत सारे गंभीर अंतर्विरोध हैं, और जो सबसे खराब अंतर्विरोध है कि जीवन में पुस्तक का पालन करना असंभव बना दें, या ऐसे निरसन जो कम से कम आपको हवा देते हैं जीवन के माध्यम से रास्ता?), आप अध्याय में निरसन के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे। सूरह 9, सहित ९/५, ६३१ ईस्वी में आया और निरसन के इस्लामी नियमों के अनुसार, इसका मतलब है कि यह कुरान में लगभग हर चीज को ओवरराइड करता है।

कुछ विरोधाभास:

१. २/१०९ ९/५ का निरसन "- - - लेकिन (मुसलमान*) क्षमा करें और अनदेखा करें (यहूदी और ईसाई*) - - -।" लेकिन वह 9/5 और अन्य से बहुत पहले था कठिन श्लोक।

२.२/१९०: "अल्लाह के लिए उन लोगों से लड़ो जो तुम से युद्ध करो, पर मर्यादा का अतिक्रमण मत करो—--।" 9/5 सीमाओं के बारे में ज्यादा परवाह नहीं करता है।

3. 2/256: "इसमें कोई मजबूरी न हो" धर्म - - -।" यह सभी के लिए फ्लैगशिप है मुसलमान जो गैर-मुसलमानों को प्रभावित करना चाहते हैं इस्लाम कितना शांतिपूर्ण और सहिष्णु है। परंतु ध्यान दें! ध्यान दें! सूरह कहते हैं: "इसे रहने दो - - -।" यह है एक उत्तेजना या - 2/255 से भी निर्णय लेना - अधिक संभावना एक इच्छा है, यह कुछ ऐसा नहीं है एक वास्तविकता थी। यह एक आशा या लक्ष्य है भविष्य, यह ऐसा कुछ नहीं है जो अस्तित्व में है (या मौजूद है - बस एक कट्टरपंथी या a . से पूछें आतंकवादी) - और वही अधिकांश मुसलमान इसे इस तरह उद्धृत करें: "इसमें कोई बाध्यता नहीं है धर्म" - - - एक छोटा, छोटा "किटमैन" (वैध) अर्धसत्य - इस्लाम के लिए एक विशेष अभिव्यक्ति साथ में "अल-तकिया, "वैध झूठ") in वहाँ के रूप में स्पष्ट अल-ताकिया के अलावा कई मुस्लिम देश हैं मजबूरी गैर-मुसलमानों की ओर, कुरान बनाता है और धर्म बहुत अधिक मित्रवत लगता है और सहनशील

9/5 को यह न बताएं।

४. २/२७२: "यह आपके लिए आवश्यक नहीं है (ओ. मैसेंजर (मुहम्मद*)) उन्हें पर सेट करने के लिए
सही रास्ता - - -।"

५. ३/२०: "यदि वे ("काफिर"*) करते हैं (बनते हैं)
मुसलमान*), वे सही मार्गदर्शन में हैं, लेकिन अगर
वे वापस लौटते हैं, आपका कर्तव्य है कि आप उन्हें बताएं
संदेश - - -।" यह - कि उसका कर्तव्य था
संदेश देना (केवल), गहरा था
खण्डन - और निरस्त - कम से कम . द्वारा
इन छंदों में से जो संख्या ३ के बाद आए थे

587

पेज ५८८

(६२५ ईस्वी में), और हम उनमें से जोड़ते हैं
वह पहले भी आया था, क्योंकि इस्लाम कहता है an
स्पष्ट मामलों में पुरानी कविता निरस्त कर सकती है a
छोटा वाला (यह से एक अपवाद है
मानक नियम जिसे नवीनतम निरस्त करता है
पुराने वाले)। वैसे भी यह स्पष्ट है
विरोधाभास - और कई लोगों द्वारा निरस्त
छंद।

6. 4/62: "वे लोग (अच्छे मुसलमान नहीं या)
धर्मत्यागी*) - - - उनसे दूर रहें, लेकिन
उन्हें चेतावनी देना, और उनसे एक शब्द कहना
उनकी आत्मा तक पहुँचो।"

7. 4/81: "- - - तो उनसे दूर रहो (पाखंडियों,
"काफिर") - - -।" 9/5 इसके बजाय चाहता है कि आप मारें
उन्हें।

8. 4/90: "- - - अगर वे आप से हट जाते हैं लेकिन
लड़ो मत, और (बजाय) तुम्हें भेजो
(गारंटी) शांति, फिर अल्लाह ने खोल दिया
तुम्हारे लिए कोई रास्ता नहीं (उनके खिलाफ युद्ध करने के लिए।)" अनुमान
अगर यह बाद में बदल गया !!!

९. ५/२८: "यदि तू ("काफिर", कैन *) खिंचाव करता है
मेरे खिलाफ तेरा हाथ (मुसलमान, हाबिल*), यह है
मेरे लिथे नहीं कि मैं तुझ पर हाथ बढ़ाऊं
तुम्हें मार डालो - - -।"

१०. ५/४८: "- - - तो सभी गुणों में एक दौड़ के रूप में प्रयास करें।"
एक दौड़ में आप शांति से प्रयास करते हैं। 9/5 आतंक है
और युद्ध और अमानवीयता।

११. ५/९९: "मैसेंजर का कर्तव्य है कि
घोषणा (संदेश) - - -।" ओह??

१२. ६/६०: "उन लोगों को अकेला छोड़ दो जो अपना लेते हैं"
धर्म को मात्र खेल और मनोरंजन होना - - -"।

१३. ६/६६: "मेरा (मुहम्मद का) नहीं है
आपकी व्यवस्था करने की जिम्मेदारी
("काफिरों"*) मामलों।" नहीं, उसकी जिम्मेदारी
केवल आपको मारना या आपको दबाना या जबरदस्ती करना है
तुम मुसलमान बनो।

१४. ६/७०: "उन लोगों को अकेला छोड़ दो जो अपना लेते हैं"
धर्म को मात्र खेल और मनोरंजन होना - - -।"
कोई टिप्पणी आवश्यक नहीं है।

१५. ६/१०४: "मैं (मुहम्मद*) नहीं हूँ (यहाँ) तो
अपने कामों पर नजर रखना"।

१६. ६/१०७: "- - - लेकिन हम (अल्लाह*) ने तुम्हें बनाया है
(मुहम्मद*) उन पर नजर न रखने के लिए
("काफिरों') कर - - -।"

१७. ६/११२: "- - - तो (मुहम्मद*) उन्हें छोड़ दो
(विरोधियों*) और उनके आविष्कार (देवताओं*)
अकेला।"

१८. ६/१५८: "रुको तुम ("काफिरों"*): हम
(मुहम्मद*) भी इंतज़ार कर रहे हैं।" वह बाद में
इंतजार करना बंद कर दिया।

588

पेज 589

19. 7/87: "- - - अपने आप को तब तक धैर्य में रखें जब तक अल्लाह हमारे बीच फैसला करता है: के लिए वह है फैसला करने के लिए सबसे अच्छा। ”
२०. ७/१८८: "मैं (मुहम्मद*) लेकिन एक चेतावनी देने वाला हूं, और खुशखबरी देने वाला - उनके लिए जिनके पास है आस्था।" एक चेतावनी और एक योद्धा।
२१. ७/१९३: "- - - तुम्हारे लिए (मुहम्मद*) यह है वही चाहे तुम उन्हें बुलाओ या तुम अपने को धारण करो शांति!"
२२. ७/१९९: "(मुहम्मद*) क्षमा को थामे रहो ("काफिरों"* की ओर)।
२३. ८/६१: "लेकिन अगर दुश्मन की ओर झुकाव है शांति, क्या तू (मुहम्मद*) (भी) झुकना शांति की ओर - - -।"
२४. ९/६८: "- - - उसमें (नरक*) वे करेंगे (पाखंडी और "काफिर"*) बसते हैं: पर्याप्त क्या यह उनके लिए है - - -।" बाद में यह पर्याप्त नहीं था - मुहम्मद और उनके अनुयायियों ने उन्हें भेजा वहाँ (या कम से कम उन्हें मार डाला)।
२५. १०/४१: "मेरे लिए मेरा काम (मुहम्मद*), और आपका आपको! आप जिम्मेदारी से मुक्त हैं मैं जो करता हूं उसके लिए, और जो कुछ तुम करते हो उसके लिए मैं।" बाद में उसने उन्हें मजबूर करने की जिम्मेदारी ली मानना।
२६. १०/९९: "क्या आप (मुहम्मद*) तो मजबूर करेंगे मानवजाति, उनकी इच्छा के विरुद्ध, विश्वास करने के लिए!"
२७. १०/१०२: "रुको "गैर-मुसलमान*) तो: मैं के लिए" (मुहम्मद), को, आपके साथ प्रतीक्षा करेगा।"
28. 10/108: "- - - वे ("काफिर"*) जो भटक जाते हैं, अपने नुकसान के लिए ऐसा करते हैं, और मैं (मुहम्मद*) आपके अफेयर की व्यवस्था करने के लिए मैं (सेट नहीं) हूं।" मुहम्मद नहीं चाहते थे कि वे व्यवस्था करें उनके अपने मामले, लेकिन बाद में जब वह बन गए मजबूत - तब वह चाहता था कि वे बनें मुसलमान और सैनिक, ताकि वे कर सकें युद्ध और सत्ता के अपने मामलों को मजबूत करना।
२९. ११/१२: "लेकिन आप (मुहम्मद*) ही हैं वहाँ चेतावनी देने के लिए "। और फिर कुछ और - कम से कम 622 ई. के बाद
30. 11/121: "जो विश्वास नहीं करते उनसे कहो: 'जो कर सकते हो वह करो: हम अपना काम करेंगे"'। इस 621 ई. में था। मुहम्मद/अल्लाह थे/थे अभी भी शांति की बात कर रहे हैं - लेकिन ज्यादा के लिए नहीं लंबा।
३१. १३/४०: "--- तेरा (मुहम्मद का) कर्तव्य है बनाओ (संदेश) उन तक पहुंचें ("काफिरों"): उन्हें बुलाना हमारा (अल्लाह का) हिस्सा है हेतु।" खैर, ६२२ ईस्वी से यह भी मुहम्मद के "कर्तव्य" का एक हिस्सा बन गया और उसके आदमी।

589

पेज ५९०

32. 15/3: "उन्हें (काफ़िरों*) को अकेला छोड़ दो,
आनंद लेने के लिए (इस जीवन की अच्छी चीजें) और करने के लिए
कृपया स्वयं - - -।" यह 621 ई. में था।
अल्लाह को जरूरत पड़ने में ज्यादा समय नहीं लगा
अपने शब्द को बदलें और उसका खंडन करें, जब वह
अपना शांतिपूर्ण धर्म बदलना शुरू कर दिया
अमानवीयता और रक्त में से एक (सौभाग्य से कई
मुसलमान उन हिस्सों के हिसाब से नहीं जीते
अगर कुरान)।
३३. १५/९४: "--- जुड़ने वालों से मुँह मोड़ो
अल्लाह के साथ झूठे देवता। "
३४. १६/३५: "लेकिन मिशन क्या है
संदेशवाहक लेकिन स्पष्ट उपदेश देने के लिए
संदेश?" सूरह 16 बहुत आखिरी में से एक है
मक्का से सूरह - महीनों बाद
सामग्री बदलने लगी, और अंतर्विरोध
- और निरसन - के लिए आवश्यक थे
एक युद्ध धर्म में परिवर्तन। तब - था
622 ई. में मालिश स्पष्ट?
३५. १६/८२: "--- तेरा (मुहम्मद का) कर्तव्य ही है
स्पष्ट संदेश का प्रचार करने के लिए।" यह सिर्फ था
मुहम्मद के मक्का से भाग जाने के महीनों पहले
622 ई. में लेकिन यह उसके आने के कुछ समय बाद
मदीना और सत्ता हासिल करने लगे:
36. 16/125: "(सभी को) अपने भगवान के मार्ग पर आमंत्रित करें"
(अल्लाह*) ज्ञान और सुंदर के साथ
उपदेश; और उनके साथ इस तरह से बहस करें कि
सबसे अच्छे और सबसे दयालु हैं - - -।"
37. 16/126: "और यदि तुम उन्हें पकड़ते हो, तो पकड़ लो"
वे आपको पकड़ने से बदतर नहीं हैं:
परन्तु यदि तुम सब्र दिखाते हो, तो वही उत्तम है
(पाठ्यक्रम) उन लोगों के लिए जो धैर्यवान हैं।"
38. 16/127: "और क्या तू (मुहम्मद*)
सब्र करो, क्योंकि तुम सब्र तो अल्लाह की तरफ से है।
और न उन पर शोक करो, और न अपके आप को संकट
उनकी साजिशों के कारण। "
३९. १७/५४: "हम (अल्लाह*) ने तुम्हें नहीं भेजा है
(मुहम्मद*) उनके निपटाने के लिए
("काफिरों"*) उनके लिए मामले"। अल्लाह या
मुहम्मद ने के बारे में अपना विचार बदलना शुरू कर दिया
यह एक साल बाद - 622 ईस्वी में - कब
मुहम्मद ने पर्याप्त सेना हासिल करना शुरू कर दिया
उनके लिए "अपना" धर्म तय करने की शक्ति। (में
इस्लाम जो कहना पसंद करता है, उसके बावजूद इस्लाम एक
तलवार द्वारा पेश की गई बड़ी डिग्री -
और में भाग लेने की इच्छा से
लूटना/लूटना/चोरी करना और गुलामों को लेना - में
अरब)।
४०. १८/२९: "- - - जो चाहे, विश्वास करे, और जाने दे
वह जो करेगा, अस्वीकार (इसे) - - -।" लगता है अगर यह

मक्का में पिछले साल से शांतिपूर्ण लाइन थी
द्वारा निरस्त किए जाने से पहले अल्पकालिक था
मदीना से खूनी!
४१. १८/५६: "हमने (अल्लाह*) ने केवल रसूल भेजे
खुशखबरी देने के लिए - - -। " कम से कम स्व
घोषित दूत ने बदलना शुरू कर दिया
मदीना आने के तुरंत बाद मन:
42. 19/39: "लेकिन उन्हें संकट के दिन की चेतावनी दें"

- - -।" यहाँ सीए में। ६१५ ई. मुहम्मद चाहिए
बस उन्हें चेतावनी दें। तस्वीर बदल गई
कुछ हद तक जैसे उसने कुछ अधिक शक्ति प्राप्त की
सालों बाद।

43. 20/130: "इसलिए (मुहम्मद/मुसलमान*)
वे ("काफिर") जो कहते हैं, उसके साथ धैर्य रखें - - -
।" वह मक्का में मुहम्मद का स्वर था ६१५
AD या उससे पहले - और मदीना के लिए उसकी उड़ान तक
622 ई. में यह 622 . से काफी बदल गया
AD और उसके बाद और काफी विरोधाभासी
मक्का काल के हल्के शब्दों में।

४४. २१/१०७: "हम (अल्लाह*) ने तुम्हें भेजा है
(मुहम्मद*) नहीं, बल्कि सभी पर दया करने के लिए
जीव।" मुहम्मद ज्यादा नहीं थे
दुनिया के लिए दया - सूरह पढ़ें
मदीना। न तो वह सभी पर दया करता था
मुसलमान - मदीना से सूरह पढ़ें + the
महिलाओं के बारे में छंद, कानून, गुलामी, नहीं करने के लिए
अमानवीय नैतिकता के एक बड़े हिस्से का उल्लेख करें
और नैतिक कोडेक्स और युद्ध।

४५. २१/११२: "(अल्लाह*) वही है जिसका
के खिलाफ सहायता मांगी जानी चाहिए
निन्दा। " खैर, वह ६२१ (?) ई. में था।
६२२ ईस्वी के बाद तलवार आसान हो गई -
ईशनिंदा ने जल्द ही मौत की सजा दी - - -
और वहाँ कई विरोधाभास आया
ग्रंथ

४६. २२/४९: "मैं (मुहम्मद*) आपके पास (भेजा) हूँ
(पुरुष*) केवल स्पष्ट चेतावनी देने के लिए - - -।"
खैर यह सीए था। 616 ई. लेकिन कुछ 6 . से
वर्षों बाद यह केवल एक चेतावनी नहीं रह गई थी,
लेकिन तलवार - - - और बहुत सारे विरोधाभास
और ग्रंथों और शिक्षण में निरसन।

४७. २२/६८: "यदि वे ("काफिर") के साथ तकरार करते हैं
तुम, कहो। 'अल्लाह सबसे अच्छा जानता है कि तुम क्या हो'
कर रहे हैं" - और उन्हें अकेला छोड़ दें। यह सीए था।
616 ई. लेकिन कुछ ६ साल बाद से और
और भी बहुत सारे विरोधाभास आए और
निरसन

४८. २३/५४: "लेकिन उन्हें ("काफिरों" *) उनके में छोड़ दो
एक समय के लिए भ्रमित अज्ञानता "। यह में था
६२१ या ६२२ ईस्वी, उसके कुछ समय पहले -

591

पेज ५९२

मुहम्मद की - मदीना के लिए उड़ान। जब वह
काफी मजबूत सैन्य बनना शुरू कर दिया, it
उन्हें अकेला छोड़कर समाप्त हो गया था - और बहुत कुछ
अंतर्विरोधों और निरसन के बारे में
शिक्षाओं और धर्म में - शांति से तक
अमानवीयता और युद्ध।

४९. २३/९६: "जो सबसे अच्छा है उसके साथ बुराई को दूर भगाएं"। बाद में यह
बन गया: बुराई को बुराई से दूर भगाओ - खिलाफ करो
"काफिर" जैसे वे आपके खिलाफ करते हैं - कम से कम
जब बात बुरी चीजों की आती है। आगे
ठीक ऊपर 23/54 के समान टिप्पणियाँ।

५०. २४/५४: "- - - यदि तुम (लोग*) मुँह मोड़ो (से .)
मुहम्मद*), वह केवल के लिए जिम्मेदार है
कर्तव्य उस पर रखा गया है, और तुम उस स्थान के लिए
आप।"

५१. २६/२१६: "मैं (मुहम्मद*) स्वतंत्र हूँ (of .)
जिम्मेदारी) जो तुम ("काफिर"*) करते हो!"

यह मक्का सीम में था 615 और 616 ई. NS
६२२ के बाद स्वर तेजी से और अधिक अमित्र हो गया
ईस्वी में जब वह सैन्य मजबूत हुआ - और
शिक्षाओं को फिट होने के लिए कुछ "समायोजन" की आवश्यकता थी
युद्ध धर्म = अंतर्विरोध और निरसन:

52. 27/92: "मैं (मुहम्मद) केवल एक वार्नर हूं"।
वह 615 - 616 ईस्वी में था। 622 से वह उपवास
बलवान, सरदार और तानाशाह बने -
और अधिक शास्त्र विरोधाभासों के साथ और
निरसन दिखाई दिए। लेकिन बहुत पुराने
छंदों को निरस्त कर दिया गया और उनका खंडन किया गया जब
622 . के बाद मुहम्मद की सेना मजबूत हुई
AD और धर्म को बदल कर इनमें से एक कर दिया गया
युद्ध और विजय।

५३. २८/५०: लेकिन अगर वे ("काफिरों"*) ने नहीं माना तो
तुम (मुहम्मद*), जानो कि वे केवल
अपनी वासनाओं का पालन करें - - -।"

५४. २८/५५: "हमारे लिए (मुसलमान*) हमारे कर्म, और करने के लिए
आप ("काफिर"*) आपके; आपको शांति मिले - - -।"
मक्का ६२१ या ६२२ ई
मुहम्मद के प्राप्त होने के बाद की तुलना में शांतिपूर्ण स्वर
६२२ - ६२४ ईस्वी से ताकत और जरूरत a
डकैती, छापे और युद्ध के लिए धर्म अधिक उपयुक्त
- और इसे अल्लाह से प्राप्त किया (या यह अल्लाह था जो
पहले से ज्यादा खून चाहता था?) - परिणामी
के विपरीत और निरस्त करने में
पुरानी शिक्षाएँ।

५५. २९/१८: "--- दूत का ही कर्तव्य है
सार्वजनिक रूप से (और स्पष्ट रूप से) प्रचार करने के लिए।" उतना अच्छा
मुहम्मद और अधिक शक्तिशाली हो गए, इसलिए उनका
स्थानीय लोगों को नियंत्रित करने की इच्छा 'और बाद में
अरबों का जीवन और धार्मिक विचार - - - बल और
सजा एक लक्ष्य का साधन बन गई। साथ

धर्म में आवश्यक परिवर्तन, और
विरोधाभास और आवश्यक निरसन
अधिक शांतिपूर्ण 12 वर्षों की तुलना में
मक्का।

५६. २९/१८: "--- दूत का ही कर्तव्य है
सार्वजनिक रूप से (और स्पष्ट रूप से) प्रचार करने के लिए।" उतना अच्छा
मुहम्मद और अधिक शक्तिशाली हो गए, इसलिए उनका
स्थानीय लोगों को नियंत्रित करने की इच्छा 'और बाद में
अरबों का जीवन और धार्मिक विचार - - - बल और
सजा एक लक्ष्य का साधन बन गई। साथ
धर्म में आवश्यक परिवर्तन, और
विरोधाभास और आवश्यक निरसन
अधिक शांतिपूर्ण 12 वर्षों की तुलना में
मक्का।

57. 29/46: "और तुम लोगों के साथ विवाद मत करो"
पुस्तक - - -।" कोई टिप्पणी नहीं - लेकिन 9/29 पढ़ें
और 9/5 एक बार फिर।

58. 32/30: "तो उनसे दूर हो जाओ और प्रतीक्षा करें - - -
।" जब मुहम्मद अधिक शक्तिशाली हो गए,
थोड़ा इंतजार था। का बाकी
अरब प्रायद्वीप मुख्य रूप से मुस्लिम बन गया था
तलवार से - और कुछ "उपहार" से और
लूटे गए धन के वादे - जिनमें से सभी
धर्म में परिवर्तन की मांग की (या यह था)
दूसरी तरफ, एक भगवान द्वारा शुरू किया गया जो
पाया कि उनका मूल धर्म अच्छा नहीं था
पर्याप्त - या बहुत कम रक्त और मानव

त्रासदी?) जिसके कारण विरोधाभास हुआ
इस्लाम के पुराने और नए संस्करण के बीच
- और स्वाभाविक रूप से निरसन भी

59. 34/25: "ये ("काफिर") नहीं होंगे
हमारे पापों के बारे में पूछताछ की, न ही हम होंगे
पूछा कि तुम क्या करते हो।" शायद यह
इसका मतलब कुछ इस तरह है "हम जीना और रहने देना पसंद करते हैं"
जीना" और कई अधिक शांतिपूर्ण में से एक था
जिन छंदों को खारिज कर दिया गया - विरोधाभासी
और निरस्त कर दिया - जब मुहम्मद ने प्राप्त किया
अधिक शक्ति (यह सीए से है या 620 . के बाद थोड़ा सा है
ई.)

६०. ३४/२८: "हम (अल्लाह*) ने तुम्हें नहीं भेजा है
(मुहम्मद*) लेकिन एक सार्वभौमिक (मैसेंजर) के रूप में
पुरुषों के लिए उन्हें खुशखबरी दे - - -।

६१. ३५/२३: "तू (मुहम्मद*) और कोई नहीं
एक चेतावनी।" नहीं, लगभग ६१५ - ६१६ ई
केवल वही हो सकता है। लेकिन बाद में बदल गया - से
एक प्रवर्तक और एक डाकू बैरन के लिए एक चेतावनी।
के संगत परिवर्तनों के साथ
धर्म - और का निरसन और
पुरानी कहावतों के विरोधाभास, इस तरह
एक।

62. 35/24a: "वास्तव में हम (अल्लाह *) ने तुम्हें भेजा है
(मुहम्मद*) सच में ग्लैडी के वाहक के रूप में
समाचार और एक चेतावनी के रूप में - - -।" खुशी के लिए के रूप में
ख़बरें, जो केवल मुसलमानों के लिए जाती हैं, और
उन सब से भी दूर।

६३. ३६/१७: "और हमारा (मुहम्मद का) कर्तव्य
स्पष्ट संदेश की घोषणा करें।" एक बार फिर
मक्का से कुछ (सी.ए. ६१५ - ६१६ ईस्वी),
वह "तलवार की कविता" द्वारा "मारा गया" था
(९/५) और कई अन्य जब बाद में
मुहम्मद भी बन गए - या उन्होंने फैसला किया कि वह
भी था - एक प्रवर्तक।

६४. ३९/४१: "न ही तू (मुहम्मद*) ने रखा है
उन्हें ("काफिर") अपने मामलों का निपटान करने के लिए।
लेकिन ५-७ साल बाद, जब मुहम्मद
622 ई. से सत्ता प्राप्त करना प्रारंभ किया, कि
बदल गया - वह एक पर्यवेक्षक, प्रवर्तक बन गया
और डाकू बैरन - और बाद में एक सरदार - - -
और नियमों/धर्म को बदलना पड़ा। या यह था
दूसरी तरफ - कि यह अल्लाह था जो
अपना मन बदल लिया और अधिक चाहता था
अमानवीयता, अनैतिक कार्य और खून?
किसी भी तरह परिणाम विरोधाभास था और
पुराने की तुलना में निरस्तीकरण।

६५. ४१/३४: "जो बेहतर है उसके साथ पीछे हटाना (बुराई)
(अच्छा*); तो क्या वह किसके बीच और
तुम थे नफ़रत बन के रूप में यह तुम्हारा दोस्त थे
और अंतरंग "।

६६. ४२/६: "- - - आप (मुहम्मद*) नहीं हैं
उनके मामलों का निपटान। " नहीं, 614 के आसपास नहीं
- 618 ई. लेकिन ६२२ ईस्वी के बाद वह काफी हो गया
बहुत कुछ, जिसमें एक प्रवर्तक शामिल है - और छंद जैसे
इसका खंडन और निरसन दोनों किया गया।

67. 42/15: "हमारे बीच कोई विवाद नहीं है"
(मुसलमान*) और आप ("काफिर")।" शायद नहीं
६१४ - ६१८ ई. लेकिन बाद में यह शक्ति थी

वर्ग = मुसलमान (मुहम्मद अस के साथ)
तानाशाह), और गैर-मुस्लिम "पूरी तरह से"
वश में" - - - और धर्म के साथ बहुत कुछ
परिवर्तित = अंतर्विरोध और निरसन in
क़ुरान।

६८. ४२/४८: "तेरा (मुहम्मद का) कर्तव्य अभी बाकी है"
संप्रेषित करें (संदेश (कुरान* - या)
शांतिपूर्ण भाग जो ६१४ - ६१८ में मौजूद थे
एडी *))"। कुछ साल बाद इस्लाम
उनके कुछ कर्तव्यों को अधिक क्रूर पाया गया
प्रवर्तक, इसलिए अन्य छंदों के बीच यह एक और
और भी बहुत कुछ का खंडन किया गया और उन्हें निरस्त कर दिया गया।

594

पेज ५९५

६९. ४३/८३: "तो उन्हें छोड़ दो ("काफिर"*) बड़बड़ाने के लिए
और खेलते हैं (उनके घमंड के साथ) - - -।"
ठीक ऊपर 42/48 जैसी टिप्पणियाँ।

70. 43/89: "लेकिन उनसे दूर हो जाओ, और कहो
'शांति।'" ऊपर 43/48 की तरह टिप्पणियाँ।

७१. ४४/५९: "तो तुम (मुहम्मद*) रुको और
घड़ी; क्योंकि वे (लोग*) (भी) इंतज़ार कर रहे हैं।"
यहाँ बीच से शांतिपूर्ण धर्म में
मक्का काल के, मुहम्मद चाहिए
रुको और देखो। वह कुछ 10 . सख्त हो गया
वर्षों बाद - बहुत सख्त।

72. 45/14: "विश्वास करने वालों से कहो कि क्षमा कर दो"
जो लोग के दिनों की प्रतीक्षा नहीं करते
अल्लाह (कयामत का दिन*)।" लेकिन शब्द
"क्षमा करें" धीरे-धीरे 622 ईस्वी के बाद भुला दिया गया
- जब उन्होंने भी ड्यूटी संभाली
प्रवर्तक होने के नाते।

73. 46/9: "- - - मैं (मुहम्मद*) लेकिन एक वार्नर हूं,
खुला और स्पष्ट। " हाँ, ६२० ईस्वी में ही वह था
एक स्वघोषित चेतावनी। चीजें बदल गईं और
छंदों को वास्तव में निरस्त कर दिया गया जब उन्हें मिला
कुछ साल बाद अधिक शक्ति।

७४. ४६/१३५ए: "(मुहम्मद*) - - - जल्दबाजी न करें
(अविश्वासियों) के बारे में - - -।" जब उसने हासिल किया
शक्ति उसे और जल्दी मिल गई - f. भूतपूर्व। अनिच्छुक
अरब (और बहुत से अन्य) जो जीते नहीं थे
उपहारों और मुफ्त लूट / दासता द्वारा, थे
तलवार से जीता गया - निरा विरोधाभास में
मुसलमान क्या कहना पसंद करते हैं। "मुसलमान बनो"
या लड़ो और मरो!"

७५. ४६/१३५बी: "((आपका (कर्तव्य मुहम्मद है *) लेकिन)
संदेश (कुरान*) का प्रचार करने के लिए।" इस
620 ई. में था। बदलाव आया और
622 ई. के बाद

७६. ५०/३९: "फिर, धैर्य के साथ, वह सब सहन करें जो वे"
("काफिर"*) कहते हैं - - -।" धैर्य बन गया
एक साल बाद के बारे में बहुत कम चर्चा हुई
(622 ई.)

77. **50/45: "हम (अल्लाह*) सबसे अच्छी तरह जानते हैं कि वे क्या करते हैं
("काफिर"*) कहते हैं; और तुम (मुहम्मद*)
कला उन्हें बलपूर्वक डराने वाला नहीं है।"
बाद के इतिहास को जानकर यह श्लोक बड़ा है,
विडंबना या व्यंग्यात्मक मजाक। यह सूरा से है
614 ईस्वी

७८. ५१/५०-५१बी: "मैं (मुहम्मद*) उसी से हूँ
(अल्लाह*) आपके लिए एक चेतावनी (मुसलमान*), स्पष्ट

और खुला। और दूसरा मत बनाओ
(व्यक्ति/वस्तु/विचार*) पूजा की वस्तु
अल्लाह के साथ: मैं उसकी ओर से तुम्हारे लिए एक चेतावनी हूँ,
स्पष्ट और खुला! ” यह मक्का 620 का है।

मुहम्मद अभी भी सैन्य कमजोर है - और अभी भी
केवल एक चेतावनी। बाद में वह एक प्रवर्तक बन गया
(अरब का अधिकांश भाग मुसलमान बन गया)
तलवार की नोक):

७९. ५१/५४: "तो (मुहम्मद*) इससे दूर हो जाओ
उन्हें ("काफिर"*) - - -।" एक और बात
का खंडन किया गया और निरस्त कर दिया गया जब
मुहम्मद ने 2 . से सेना को मजबूत किया
वर्षों बाद।

८०. ५२/४५: "तो (मुहम्मद/मुसलमान*) चले जाओ
उन्हें ("काफिर"*) अकेले जब तक उनका सामना नहीं होता
उस दिन - - -।" उन्हें दिन तक अकेला छोड़ दो
कयामत की। लेकिन न तो मुहम्मद और न ही उनके
इस्लाम के आते ही उत्तराधिकारियों ने उन्हें अकेला छोड़ दिया
सेना काफी मजबूत थी। **और इस्लाम है
उनके जाने के बाद किसी भी समय
अकेले उस दौर में जब इस्लाम
सेना मजबूत थी?**

८१. ५२/४७: "और वास्तव में, उन लोगों के लिए जो गलत करते हैं"
("काफिर"*), एक और सजा है
इसके अलावा (कि लंबे समय में वे करेंगे
ढीला - और अन्य सजा को पूरा करें:
नर्क*)" मुश्किल में एक सुकून देने वाला विचार
मक्का अवधि का अंत - तो बस उन्हें छोड़ दो
अकेला। (५२/४५ की पुष्टि, वास्तव में)।

82. 53/29: "इसलिए उन लोगों से दूर रहो जो मुंह मोड़ते हैं"
हमारे (मुहम्मद के *) संदेश से - - -।"
वह मुहम्मद के शब्द 612 के आसपास थे -
615 ई. "मेलोडी" से 10 साल पीछे
बदला हुआ।

८३. ६७/२६: "- - - मैं (मुहम्मद*) हूँ (भेजा गया) केवल
सार्वजनिक रूप से स्पष्ट रूप से चेतावनी देने के लिए। ” लेकिन 3 - 4 साल
बाद में (622 ईस्वी से) उसने आगे बढ़ना शुरू कर दिया
अधिक गंदी और अमानवीय नौकरियां भी।

84. 73/10: "और जो कुछ वे करते हैं उसके साथ धैर्य रखें"
कहो, और उन्हें नेक (गरिमा) के साथ छोड़ दो।"
यह एक प्रारंभिक सूरह (611 - 614 ईस्वी) है।
मुहम्मद के पास बहुत कम या कोई वास्तविक शक्ति नहीं है, और है
एक शांतिपूर्ण उपदेशक। वह और धर्म दोनों
सत्ता हासिल करने पर दूसरे चेहरे दिखाए -
या हो सकता है कि अल्लाह अधिक खून और गोर चाहता था
और ६२२ ईस्वी से पीड़ित।

८५. ७३/११: "और मुझे (अल्लाह*) छोड़ दो
उन) जीवन की अच्छी चीजों के कब्जे में,
जो (फिर भी) सत्य को नकारते हैं, और उनके साथ रहते हैं
थोड़ी देर के लिए।" वह थोड़ी देर चली
ठीक जब तक मुहम्मद ने पर्याप्त प्राप्त नहीं किया
सैन्य शक्ति - फिर वह (या अल्लाह*) चला गया
एक सख्त व्यवस्था।

८६. ७९/४५: "तू (मुहम्मद*) कला लेकिन एक चेतावनी है
- - -।" और वह ऐसे ही रहा - - - जब तक वह
से अधिक करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हो गया
चेतावनी - एफ। भूतपूर्व। लागू करना और साम्राज्य-
इमारत। और यह एक सवाल है कि कौन बदल गया
622 ई. के आसपास उनका मन - अल्लाह या
मुहम्मद? और किसने धर्म बदला -
अल्लाह या मुहम्मद? उस मौके की मांग
कि से अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण धर्म
मक्का में १२ साल दोनों का करना पड़ा खंडन
और कई बिंदुओं पर निरस्त किया गया।

८७. ८६/१७: "इसलिए उन्हें देरी प्रदान करें"
अविश्वासियों: उन्हें धीरे से राहत दें (एक . के लिए)
जबकि)। मान लीजिए कि यह ६१४ ईस्वी का था
निरस्त कर दिया जब मुहम्मद और अधिक हो गया
शक्तिशाली !!

88. 88/22: "तू (मुहम्मद*) नहीं है"
(पुरुषों के) (धार्मिक*) मामलों का प्रबंधन - - -।" एक
अधिक छंद जिसे निरस्त कर दिया गया था अधिक
शक्तिशाली मुहम्मद - या अल्लाह - बाद में।

89. 109/6: "तुम्हारे लिए (गैर-मुस्लिम*) अपने रास्ते बनो
(धर्म में*), और मुझे (मुहम्मद या .)
मुसलमान*) मेरा।" यह विशिष्ट है कि
मुहम्मद और इस्लाम में शांतिपूर्ण थे
मक्का - वे इतने मजबूत नहीं थे
और कुछ। और इसके अलावा संभव है
मुहम्मद का मतलब ऐसा ही था, लेकिन था
मदीना में उसकी सफलता से नैतिक रूप से नष्ट हो गया
बाद में, जैसा कि कई वैज्ञानिक मानते हैं।

(९/५ के तहत हमने केवल वही लिया है जो न केवल विरोधाभासी हैं, बल्कि भी
9/5 से निरस्त कर दिया। जैसा कि हमारे यहां 91 (निरस्त की तुलना में 2-3 जोड़े गए) हैं जो हैं
9/5 द्वारा निरस्त और खंडित, इसका मतलब है कि हम कुछ इस्लामी के अनुसार 33 कम हैं
विद्वान: वे कहते हैं कि ९/५ १२४ हल्के छंदों को निरस्त करता है।)

१०७ ९/१४: "उनसे (अच्छे मुसलमानों*) से लड़ो, और अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों से दण्ड देगा
(वह खुद ऐसा क्यों नहीं कर पाया?*), उन्हें शर्म से ढक दो - - -।" यह कम से कम विरोधाभास
- और निरस्त करता है:

१.२/२५६: "इसमें कोई बाध्यता न हो"
धर्म।"

2. 00b 5/28: "यदि तू ("काफिर", कैन *) दोस्त
मेरे खिलाफ अपना हाथ बढ़ाओ (मुसलमानों,
हाबिल*), हाथ बढ़ाना मेरे बस की बात नहीं
तेरे विरुद्ध तुझे मार डालने के लिथे - - -।" जब आप पढ़ते हैं
यह, याद रखें कि मुसलमानों के पास बहुत कम हैं यदि कोई हो
सभी नैतिक कोडेक्स पर। उन्हें क्या करना है
देखने के लिए है "मुहम्मद ने क्या कहा"
ऐसी बातों के बारे में?" अगर उसने कुछ कहा है,
वे इसे एक कोडेक्स के रूप में लेते हैं - अच्छा नैतिक या नहीं।

यदि नहीं, तो उन्हें पुस्तक में देखना होगा: "क्या वहाँ है"
कहीं समानांतर स्थिति?" अगर वे पाते हैं
- कभी-कभी कल्पना को खींचकर - कि
कार्य करने का तरीका है, या कैसे एक के लिए बहाना है

अभिनय करना चाहता है। यह भी ध्यान रहे कि यह श्लोक एक है
सभी कुरान में बहुत कम में से
यीशु की शिक्षाओं के अनुसार - एक
बहुत कम में से। और यह पूरी तरह से "हत्या" है
निरसन द्वारा। यह श्लोक विरोधाभासी है (और
निरस्त) कम से कम ये छंद (यहां 88 . हैं)
१२४ मुस्लिम विद्वानों में से कहते हैं:
9/5 द्वारा निरस्त): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272,
3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99,
६/६०, ६/६६, ६/७०, ६/१०४, ६/१०७, ६/११२, ६/१५८,
7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41,
१०/९९, १०/१०२, १०/१०८, ११/१२, ११/१२१, १३/४०,
15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126,
16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130,
21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96,
24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18,
29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24 ए,
36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48,
43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135ए,
46/135बी, 46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51,
51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10,
73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे
सभी 9/5 के तहत उद्धृत। (कम से कम 91
विरोधाभास)।

१०८ ९/१७: "यह उन लोगों के लिए नहीं है जो अल्लाह के साथ देवताओं को मिलाते हैं (= यहाँ भगवान / यहोवा *) - - -। - - - आग में
क्या वे निवास करेंगे"। ईसाइयों के लिए उनके यीशु के साथ कोई आशा नहीं - 2/62 के बावजूद।

2/62: "जो लोग (हमारे कुरान में) ईमान लाते हैं, और जो यहूदी (शास्त्रों) का पालन करते हैं और
ईसाई - कोई भी जो अल्लाह में विश्वास करता है (= भगवान / यहाँ यहोवा *) और अंतिम दिन, और काम करता है
धार्मिकता, उनके भगवान के साथ उनका इनाम होगा (स्वर्ग में जाओ *) - - -"।

१०९ ९/२३: "अपने पिता और अपने भाइयों की हिफ़ाज़त न करना अगर वे ऊपर से बेवफाई से प्यार करते हैं
ईमान (= मुसलमान नहीं हैं*): यदि आप में से कोई ऐसा करता है, तो वे गलत करते हैं। आज भी कुछ संप्रदाय उपयोग करते हैं
यह तकनीक - जितना हो सके संपर्क को तोड़ें और जितना हो सके बंद करें
बाहर से आवेग। "हम चाहते हैं कि केवल हमारे विचार ही हमारे मतधारकों को प्रभावित करें और
अनुयायी।" यह निश्चित रूप से विचारों और तथ्यों को सही करने से रोकने का एक तरीका है। और यह निश्चित रूप से
मानसिक और सामाजिक दबाव है - मजबूरी। यह कम से कम इसके विपरीत है:

१.२/२५६: "इसमें कोई बाध्यता न हो"
धर्म - - -।"

***११० ९/२९: "उन लोगों से लड़ो जो न तो अल्लाह पर विश्वास करते हैं, न ही अंतिम दिन, और न ही उस पर विश्वास करते हैं"
मना किया गया है जिसे अल्लाह और उसके पैगंबर (मुहम्मद*) ने मना किया है, नहीं
किताब के लोगों (यहूदी और
ईसाई मुख्य रूप से *), जब तक वे जजिया ("काफिर" -कर का भुगतान नहीं करते हैं, जहां इस्लाम ने कोई ऊपरी सीमा निर्धारित नहीं की है,

598

पेज 599

और वह अक्सर इतिहास के माध्यम से बहुत अधिक रहा है*) स्वेच्छा से प्रस्तुत करने, और महसूस करने के साथ
खुद को वश में कर लिया"। काफिरों को जीतो और फिर उन्हें नीग्रो की तरह जीने दो
१९०० के दशक की शुरुआत में दक्षिण अफ्रीका या संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिणी राज्यों में रंगभेद - - - जो कि
गुलामी में नहीं ले जाया गया - विशेषकर महिलाओं को। हां, कोई मजबूरी नहीं - न ही द्वारा
पहले तलवार, न ही हार के बाद अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन आदि को नष्ट कर दिया। लेकिन यह सब
विरोधाभास - और निरस्त - कम से कम:

१.२/२५६: "इसमें कोई बाध्यता न हो"
धर्म"। यह सभी मुसलमानों के लिए प्रमुख है
जो गैर-मुसलमानों को प्रभावित करना चाहता है
इस्लाम कितना शांतिपूर्ण और सहिष्णु है। लेकिन नायब!
ध्यान दें! सूरह कहते हैं: "इसे रहने दो - - -।" यह है एक
उकसाना या – २/२५५ से भी निर्णय करना –

अधिक संभावना एक इच्छा है, यह कुछ ऐसा नहीं है
वे थे। यह भविष्य के लिए एक आशा या लक्ष्य है,
यह कुछ ऐसा नहीं है जो मौजूद है - और सभी
वही अधिकांश मुसलमान इसे इस तरह उद्धृत करते हैं: "वहाँ
धर्म में कोई बाध्यता नहीं है" - - - एक छोटा,
थोड़ा "किटमैन" (वैध अर्ध-सत्य - an
इस्लाम के लिए विशेष अभिव्यक्ति "अल-
तकिया, "वैध झूठ) कुरान बनाता है और
धर्म बहुत अधिक मित्रवत लगता है और
सहनशील

२. ५/२८: "यदि तू ("काफिर", कैन *) खिंचाव करता है
मेरे खिलाफ तेरा हाथ (मुसलमान, हाबिल*), यह है
मेरे लिथे नहीं कि मैं तुझ पर हाथ बढ़ाऊं
तुम्हें मार डालो - - -।" जब आप इसे पढ़ते हैं,
याद रखें कि मुसलमानों के पास बहुत कम हैं यदि कोई अधिक है
सभी कोडेक्स। उन्हें क्या करना है देखना है
के लिए "मुहम्मद ने ऐसे के बारे में क्या कहा"
चीज़ें?" अगर उन्होंने कुछ कहा है, तो वे लेते हैं
कि एक कोडेक्स के रूप में - अच्छा नैतिक या नहीं। अगर नहीं,
उन्हें किताब में देखना होगा: "क्या वहाँ है?
कहीं समानांतर स्थिति?" अगर वे पाते हैं -
कभी-कभी कल्पना को खींचकर-अर्थात्
कार्य करने का तरीका, या किसी की इच्छा के लिए बहाना
कार्य करने के लिए। यह भी ध्यान रहे कि यह श्लोक इन्हीं में से एक है
सभी कुरान में बहुत कम है जो इसके अनुसार है
यीशु की शिक्षाओं के साथ - बहुत में से एक
कुछ। और यह पूरी तरह से "हत्या" है
निरसन

३. २९/४६: "और देश के लोगों से विवाद न करना
पुस्तक - - -। "कोई टिप्पणी नहीं - लेकिन 9/29 पढ़ें
एक बार फिर।

यह कविता कम से कम इन छंदों का खंडन करती है (और निरस्त करती है) (यहाँ 124 मुस्लिमों में से 89 हैं)
विद्वानों का कहना है कि 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है: 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3,
5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/ १९३, ७/१९९, ८/६१,
9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/ 125,
16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54,

599

पेज ६००

23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/ २४ए,
36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/ १३५बी,
50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22,
109/6. वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 91 विरोधाभास)।

१११९/३३: "वह (अल्लाह*) है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और धर्म के साथ भेजा है
सत्य, इसे सभी धर्मों पर घोषित करने के लिए, भले ही पैगन्स इससे घृणा करें "। सादे के साथ
शब्द: आप इसे पसंद करें या न करें - इसे स्वीकार करें - क्योंकि "धर्म में कोई बाध्यता नहीं है।" NS
लक्ष्य दुनिया भर में कुल वर्चस्व है। यह पद कम से कम इन का खंडन करता है (और निरस्त करता है)
छंद (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 का कहना है कि 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है): 2/109, 2/190,
2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/ ७०, ६/१०४, ६/१०७,
6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/ १२,
11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/ 39,
20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55,
29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/ 48,
43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54,
52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी उद्धृत हैं
9/5 के तहत। (कम से कम 91 विरोधाभास)।

११२ ९/६६: "यदि हम (अल्लाह*) आप में से कुछ (इस्लाम से धर्मत्यागी) को क्षमा कर दें - - -।" इस्लाम छोड़ने के लिए
घातक पापों में से एक है और गहराई से पछताए बिना क्षमा करना असंभव है।
2/256 के तहत कई छंदों के विपरीत - इसे देखें। इस श्लोक के बारे में अधिक जानकारी के तहत
पद ९/५ अगले अध्याय में: निरसन।

(कई श्लोकों का खंडन करता है - कम से कम १० विरोधाभास)।

११३ ९/६८: "- - - उसमें (नरक*) वे (पाखंडी और "काफिर"*) वास करेंगे: इतना ही काफी है उन्हें - - -।" नहीं, कुरान की कुछ आयतों के अनुसार वे भी दण्ड के पात्र हैं अपनी दुनिया के मुसलमान। 2/256 के तहत कई छंदों के विपरीत - इसे देखें। अधिक अगले अध्याय में पद 9/5 के तहत इस पद के बारे में: निरसन।

(कई श्लोकों का खंडन करता है - कम से कम १० विरोधाभास।)

११४ ९/७१: "ईमानवाले, पुरुष और महिलाएं, एक दूसरे के रक्षक (अरब: वाली*) हैं - - -।"
लेकिन विरोधाभास:

१. ९/११६: "उसके (अल्लाह*) को छोड़कर तुम्हारे पास कोई नहीं है रक्षक (अरब: वाली*) और न ही सहायक।"

२. ३२/४: "- - - - उसके अलावा तुम्हारे पास कोई नहीं है (अल्लाह*) रक्षा या मध्यस्थता करने के लिए (आपके लिए) - - -।"

3. 42/28: "और वह (अल्लाह*) रक्षक है (अरब: वाली*) - - -।"

(३ विरोधाभास)।

११५ ९/७३: "हे पैगंबर! अविश्वासियों और पाखंडियों के खिलाफ कड़ी मेहनत करो, और दृढ़ रहो उनके विरुद्ध।" सर्वोच्च नेता और निश्चित रूप से उनके अनुयायियों को इसके खिलाफ कड़ी मेहनत करनी चाहिए "काफिर" - लेकिन "धर्म में कोई मजबूरी नहीं"। खैर, कम से कम यह अच्छा प्रचार है जो साबित करता है कुरान कितना शांतिपूर्ण है और वह कठिन साधन स्वीकार किए जाते हैं, हां भगवान से मांगा जाता है।

600

पेज 601

यह कविता कम से कम इन छंदों का खंडन करती है (और निरस्त करती है) (यहाँ 124 मुस्लिमों में से 88 हैं) विद्वानों का कहना है कि 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है: 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/ १९३, ७/१९९, ८/६१, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/ 125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/ २४ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/ १३५बी, 46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 91 विरोधाभास)।

११६ ९/११६: "उसके (अल्लाह*) के सिवा तुम्हारा कोई रक्षक (अरब: वली*) नहीं है और न ही कोई सहायक है।" असल में वह इसका खंडन किया जाता है:

१. ९/७१: "विश्वासियों, पुरुषों और महिलाओं, हैं एक दूसरे के रक्षक (अरब: वाली*) - - -।"

११७ ९/१२३: "हे ईमान लाने वालों! उन अविश्वासियों से लड़ो जो तुम्हारी कमर कसते हैं, और उन्हें खोजने दो आप में दृढ़ता - - -।" रक्त, दमन और युद्ध के लिए एक और स्पष्ट आदेश। लेकिन यह विरोध करता है - और अधिकांश "नरम" छंदों को निरस्त करता है - मुख्य रूप से मक्का से - f। उदा: अधिकांश सूचीबद्ध हैं 9/5 के तहत (इसे देखें): यह कविता कम से कम इन छंदों का खंडन करती है (और निरस्त करती है) (यहां 88 हैं) १२४ मुस्लिम विद्वानों में से कहते हैं कि ९/५ द्वारा निरस्त कर दिया गया है: २/१०९, २/१९०, २/२५६, २/२७२, ३/२०, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/ ११२, ६/१५८, ७/८७, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/ ३, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/ 30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24 ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/ 59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 91 विरोधाभास)।

११८ १०/३: "- - - अल्लाह, जिसने आकाश (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी को छह दिनों में बनाया - - -।" लेकिन यह इसके साथ विरोधाभासी है:

१.४१/९-१२: यहाँ अल्लाह ने २ + ४ + २ दिन = ८ . का प्रयोग किया
निर्माण के लिए दिन (मुसलमानों का दावा है कि
पृथ्वी बनाने के लिए दो दिन शामिल हैं
चार दिन। लेकिन कुरान बहुत स्पष्ट है: 2 दिन के लिए
पृथ्वी बनाना, फिर 4 दिन क्या बनाना है
पृथ्वी पर है, और अंत में बनाने के लिए 2 दिन
7 फर्मामेंट (गलत - केवल एक ही है, और
यहां तक कि एक तरह से यह एक ऑप्टिकल इल्यूजन है)। नहीं
क्या लिखा है के बारे में संदेह। (कुछ मुसलमान
यह भी बताने की कोशिश करता है कि अरब लिखित शब्द for
दिन का अर्थ कल्प भी हो सकता है
वर्णमाला में कोई स्वर या अंक आधुनिक नहीं थे
अरब विशेष अक्षरों को इंगित करने के लिए उपयोग करते हैं, और कब
जैसे कोई बहुत पसंद करता है, स्वर आदि जोड़ता है
संभव है।) लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि
बोला गया शब्द मुहम्मद अपने के लिए प्रयोग किया जाता है
मण्डली "दिन" थी - और इनमें से कोई भी नहीं

601

पेज 602

स्वीकृत अच्छे अनुवादक किसी अन्य का उपयोग करते हैं
शब्द। कल्प भी अल्लाह को अपना बनाते हैं
मज़ाक करने की क्षमता: 2/117: "जब वह"
(अल्लाह*) एक मामले का आदेश देता है, उसने उससे कहा: 'हो'
और यह है" - क्या उसे इस छोटे से कल्पों का उपयोग करना चाहिए
नौकरी?) हमें आपको यह भी याद दिलाना चाहिए कि यह
कविता वास्तविकता का काफी विरोध करती है: निर्माण
ब्रह्मांड के अब तक 13.7 अरब . ले लिया है
वर्ष, और पृथ्वी का 4.6 बिलियन - दोनों
प्रक्रियाएं अभी भी जारी हैं।

११९ १०/३५: "यह (केवल *) अल्लाह है जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है।" लेकिन यह है
इस तथ्य के विपरीत कि वह विश्वसनीय नहीं है - वह आपको भटका भी सकता है। यह वास्तव में टकराता है
उन सभी आयतों के साथ जो अल्लाह को बताती हैं कि वह जिसे चाहता है उसे स्वर्ग की ओर ले जाता है, और जिसे वह भटका देता है
चाहता है। एफ. पूर्व:

१२० १४/४: "- - - अल्लाह जिसे चाहता है उसे भटका देता है, और जिसे चाहता है उसका मार्गदर्शन करता है - -
-।"

१२१ १०/४१: "मेरा काम मेरे लिए (मुहम्मद*), और तुम्हारा तुम्हारे लिए! आप जिम्मेदारी से मुक्त हैं
मैं जो करता हूं उसके लिए, और जो कुछ तुम करते हो उसके लिए मैं।" इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम . द्वारा "मार डाला" जाता है
ये पद: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८ -39 (द
चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,
35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

१२२ १०/४७: "हर लोगों के लिए (भेजा गया) एक रसूल - - -।" इसके विपरीत:

१.२८/४६: "फिर भी (क्या तू (मुहम्मद*) भेजा गया है) जैसा
अपने रब (अल्लाह*) की ओर से दया करने के लिए
उन लोगों को चेतावनी, जिनके लिए कोई चेतावनी देने वाला नहीं था
तुम्हारे सामने आओ - - -।

२. ३२/३: "नहीं, यह आपकी ओर से सत्य है"
(मुहम्मद*) रब (अल्लाह*), कि तू
उन लोगों को सलाह दे सकते हैं जिनके लिए नहीं
चेतावनी देने वाला तुम्हारे सामने आया है - - -।"

3. 34/44: "लेकिन हम (अल्लाह*) ने उन्हें नहीं दिया था
(अरब"*) किताबें जिनका वे अध्ययन कर सकते थे, न ही
तेरे आगे उनके पास दूत भेजे

4. 36/6: "ताकि तू (मुहम्मद*) (मुहम्मद*)
लोगों को (अरब*)
जिनके बापों को कोई नसीहत नहीं मिली थी--
-।"

कौन सा श्लोक गलत है/हैं?

(४ विरोधाभास।)

602

पेज 603

१२३ *** १०/६४: "आखिरकार, अल्लाह के शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।" एक बात के लिए यह
उन लोगों के लिए वाक्य का गंभीर प्रभाव पड़ता है जो कहते हैं कि कुरान में भविष्यवाणी वास्तविक नहीं है
पूर्वनियति - अगर अल्लाह ने कुछ कहा / सोचा / लिखा है, तो मनुष्य की कोई भी स्वतंत्र इच्छा नहीं बदल सकती है
कुछ भी - - - जिसका अर्थ है कि कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं है, और यह निश्चित रूप से खुदी हुई के रूप में पूर्वनिर्धारित है
पथरी। लेकिन यहां अधिक प्रासंगिक यह है कि इसमें कई और कभी-कभी बड़े बदलाव हुए
इस "रहस्योद्घाटन" के बाद 621 ईस्वी में अल्लाह के शब्द और ठीक एक साल बाद मुहम्मद/अल्लाह (?)
धर्म को पूरी तरह और मौलिक रूप से बदलना शुरू कर दिया (शांति से युद्ध धर्म में)।

मुख्य परिवर्तन यह था कि पूरे धर्म को कुछ शांतिपूर्ण से बदलकर एक कर दिया गया था
नफरत, दमन, अमानवीयता और खून का धर्म। लेकिन इसमें कई अन्य बदलाव भी थे
अल्लाह (?) ने क्या कहा था - सभी अंतर्विरोधों के लिए जिन्हें समायोजित किया जाना था, और सभी
निरसन (क्षमा करें; प्रतिस्थापन - एक और, लेकिन ठीक उसी के लिए अच्छा नाम)। बहुत सारे
निरसन, कि उन्होंने स्पष्टीकरण की मांग की:

1. ***00a 2/106: "हमारा कोई भी रहस्योद्घाटन नहीं करता है"
   हम (अल्लाह*) निरस्त करते हैं या होने का कारण बनते हैं
   भूल गए, लेकिन हम कुछ बेहतर स्थानापन्न करते हैं
   या इसी के समान"। खैर, यह एक विरोधाभास है - और
   एक निरसन - अपने आप में। यह वास्तव में एक है
   निरसन के अभ्यास के पीछे छंद की
   इस्लाम में। यह भी एक कारण हो सकता है-
   मुख्य कारण हो सकता है - निरस्त क्यों किया गया
   छंदों को खलीफा उस्मान द्वारा शामिल किया गया था
   कुरान मूल रूप से - उन्हें नहीं होना चाहिए
   इस अर्थ में निरस्त कर दिया कि उन्हें होना चाहिए
   भूला हुआ। लेकिन निरसन बिल्कुल हैं
   इस्लाम में आवश्यक है, क्योंकि बहुत सारे हैं
   विरोधाभास, कि स्थिति होगी
   असंभव है जब तक कि उन्हें द्वारा समाप्त नहीं किया जा सकता
   उनमें से कई को अमान्य कर रहा है। से अलग
   निरसन के बारे में अध्याय। एनबी: सूरह २ से
   जिसे यह पद ६२२-६२४ में "पहुंचा" लिया गया है
   ई. ६२१ ई. से अल्लाह के शब्दों को होना था
   बल्कि जल्दी और बड़े पैमाने पर खारिज कर दिया
   - एक डाकू बैरन और बाद में युद्ध में परिवर्तन
   भगवान का धर्म शुरू हो गया था।
2. ***00b 16/101: "जब हम (अल्लाह*)
   एक रहस्योद्घाटन को दूसरे के लिए प्रतिस्थापित करें - - -।"
   हां, "विकल्प" निश्चित रूप से बेहतर लगता है
   "निरस्त" की तुलना में - लेकिन केवल अंतर है
   वह "विकल्प" दैनिक अंग्रेजी है, जबकि
   "निरस्त" लैटिन से निकला है। अर्थ
   बस वही है। और यह श्लोक साबित करता है कि
   अल्लाह को अपने अभिमान को "प्रतिस्थापित" करना शुरू करना पड़ा
   ६२१ ईस्वी के शब्द, अधिकतम एक - १ -
   साल बाद, क्योंकि सूरह 16 सीए से है। 622
   ई. अल्लाह के (?) शब्द अनंत काल के लिए हैं -
   लेकिन लंबे समय तक नहीं जब यह एक है
   चोरी और लूट शुरू करने का मोहक विचार,

पेज 604

और युद्ध धर्म रखना बुद्धिमानी हो सकती है
शांतिपूर्ण के बजाय।

(२ विरोधाभास।)

१२४ १०/९२: "आज के दिन (जब मिस्र की सेना ने मूसा और यहूदियों* को पकड़ लिया)
हम (अल्लाह*) आपको (फिरौन*) शरीर में बचाते हैं - - -।" अभिव्यक्ति "शरीर में" चाहिए
मतलब "शारीरिक" या "सुरक्षित और (अपेक्षाकृत कम से कम) ध्वनि" के समान है। यह सच हो सकता है, जैसा
रामसेस II नहीं डूबा। लेकिन यह कुरान की अन्य आयतों का दृढ़ता से खंडन करता है जो बताती है कि वह
डूबा हुआ। यह भी कहा जाना चाहिए कि मृत्यु के क्षण में फिरौन को बचाने के लिए,
विरोधाभास 4/18, जो बताता है कि पश्चाताप करने में बहुत देर हो चुकी है जब आप जानते हैं कि आप मरने वाले हैं।

१.१७/१०३: "- - - लेकिन हम (अल्लाह*) ने उसे डुबो दिया
(फिरौन) और जो कुछ उसके पास था वह सब।"
२.२८/४०: "- - - और हम (अल्लाह*) ने उन्हें उड़ा दिया
(फिरौन और उसके लोग*) समुद्र में: अब
देखो उन लोगों का अंत क्या था जिन्होंने ऐसा किया
गलत!"
3. 43/55: "- - - और हम (अल्लाह*) ने उन्हें डुबो दिया
सब (फिरौन और उसके लोग*)।"

(३ विरोधाभास)।

१२५ १०/९९: "तो क्या तुम (मुहम्मद*) मानव जाति को उनकी इच्छा के विरुद्ध विश्वास करने के लिए विवश करोगे!" ए
अलंकारिक प्रश्न जो उत्तर के लिए "नहीं" की अपेक्षा करता है। लेकिन वह 621 ई. में था। बात बदली
622 ई. के बाद इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: 2/191,
2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60,
9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/ 36, 47/4, 66/9।
इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह देने या अनुमति देने वाली कई बाध्यताएं शामिल हैं (के साथ
यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81,
5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29
विरोधाभास)।

१२६ १०/१०८: "- - - वे ("काफिर"*) जो भटक जाते हैं, अपने नुकसान के लिए ऐसा करते हैं, और मैं (मुहम्मद*)
आपके अफेयर की व्यवस्था करने के लिए मैं (सेट नहीं) हूं।" मुहम्मद नहीं चाहते थे कि वे अपनी व्यवस्था करें
खुद के मामले बाद में जब वह मजबूत हो गया - तब वह चाहता था कि वे मुसलमान बनें और
सैनिक, ताकि वे युद्ध और सत्ता के अपने मामलों को मजबूत कर सकें। यह श्लोक है
कम से कम इन श्लोकों का खंडन किया और अक्सर "मार डाला": २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१,
4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33,
9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देने वाले या शामिल हैं
अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि
आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,
33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

१२७ ११/२-३: "'कहो': वास्तव में, मैं (मुहम्मद *) तुम्हारी ओर से (अल्लाह *) - - - हूँ।" परंतु
इब्न वाराक के अनुसार "कहो" शब्द अरब पाठ में नहीं है। तब हमारे पास बस एक ही है
2/286 और कुछ अन्य जगहों की तरह स्थिति: मुहम्मद दावा किए गए सदियों पुराने में बोल रहे हैं
किताब। 2/286 देखें।

पेज 605

१२८ ११/७: "वह (अल्लाह*) वह है जिसने आकाश (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी को छह में बनाया दिन"। परंतु:

> १.४१/९-१२: यहाँ अल्लाह ने २ + ४ + २ दिन = ८ . का प्रयोग किया निर्माण के लिए दिन (मुसलमानों का दावा है कि पृथ्वी बनाने के लिए दो दिन शामिल हैं चार दिन। लेकिन कुरान बहुत स्पष्ट है: 2 दिन के लिए पृथ्वी बनाना, फिर 4 दिन क्या बनाना है पृथ्वी पर है, और अंत में बनाने के लिए 2 दिन 7 फर्मामेंट (गलत - केवल एक ही है, और यहां तक कि एक तरह से यह एक ऑप्टिकल इल्यूजन है)। नहीं क्या लिखा है के बारे में संदेह। (कुछ मुसलमान यह भी बताने की कोशिश करता है कि अरब लिखित शब्द for दिन का अर्थ कल्प भी हो सकता है वर्णमाला में कोई स्वर या अंक आधुनिक नहीं थे अरब विशेष अक्षरों को इंगित करने के लिए उपयोग करते हैं, और कब जैसे कोई बहुत पसंद करता है, स्वर आदि जोड़ता है संभव है।) लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि बोला गया शब्द मुहम्मद अपने के लिए प्रयोग किया जाता है मण्डली "दिन" थी - और इनमें से कोई भी नहीं स्वीकृत अच्छे अनुवादक किसी अन्य शब्द का प्रयोग करते हैं। कल्प भी अल्लाह और उसकी क्षमताओं को बनाता है एक मजाक के लिए: 2/117: "जब वह (अल्लाह*) फरमाता है एक मामला, उसने उससे कहा: 'हो' और यह है" - चाहिए वह इस छोटे से काम के लिए युगों का उपयोग करता है?) हम भी आपको याद दिलाना चाहिए कि यह श्लोक इसके विपरीत है वास्तविकता काफी कुछ: ब्रह्मांड का निर्माण है अब तक 13.7 अरब वर्ष और पृथ्वी के 4.6 बिलियन - दोनों प्रक्रियाएं अभी भी हैं जारी है।

१२९ ११/१२: "लेकिन आप (मुहम्मद *) केवल चेतावनी देने के लिए हैं"। और फिर कुछ और - कम से कम 622 ई. के बाद इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/ 36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह देने या अनुमति देने वाली कई बाध्यताएं शामिल हैं (के साथ यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 1/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

१३० ११/४३: "- - - और पुत्र (नूह* का) उन लोगों में से था जो में डूबे हुए थे बाढ़"। (एक अन्य स्थान पर कुरान यह भी बताता है कि नोश की पत्नी का भी अंत नर्क में हुआ)। अंतर्विरोध:

> १.२१/७६: "हम (अल्लाह*) ने उसकी (नूह की*) सुनी (प्रार्थना) और उसे और उसके परिवार को छुड़ाया बड़े संकट से"। उसका परिवार: सब बच गया। लेकिन फिर भी उसका बेटा डूब गया। (वह और बाइबिल के अनुसार केवल ३ थे) The गणित और तर्क कठिन हैं।

१३१ ११/६७: "(पराक्रमी) विस्फोट ने अपराधियों (तमूद के लोगों) को पछाड़ दिया, और वे सवेरे अपने घरों में साष्टांग प्रणाम करें---।" एक विस्फोट एफ से कुछ है। भूतपूर्व। एक विस्फोट। लेकिन इसका खंडन किया जाता है:

> १.७/७८: "तो भूकंप ने उन्हें ले लिया थमूद* के लोग) अनजान हैं, और वे लेटे हुए हैं साष्टांग प्रणाम (= मृत*) उनके घरों में सुबह"। (इसके अलावा और एनबी: एक भूकंप 100% कभी नहीं मारता - निम्न गुणवत्ता को छोड़कर

ऊंची इमारतों से अधिक शायद ही कभी
अधिकतम 30%।)

2. 69/5: "लेकिन थमूद - वे नष्ट हो गए"
गड़गड़ाहट और बिजली के भयानक तूफान से "।

तूफ़ान का ज़िक्र करते हुए आप मुसलमानों से मिलते हैं
कि "स्वाभाविक रूप से भूकंप का पालन करें"।

बेईमानी। यह गलत है - नहीं है -
नहीं - भूकंप और के बीच संबंध
तूफान, क्योंकि वे पूरी तरह से उत्पन्न होते हैं
विभिन्न तंत्र। (गीत जारी रखने के लिए
कुरान को "सुधार" करने के बारे में: मि।
मुहम्मद असद "द मेसेज ऑफ द" में
कुरान "चुपचाप और बिना टिप्पणियों के है
69/5 को "तूफान और बिजली" से बदलकर
"भूकंप"। एक "अल-तकिया (वैध झूठ)?

अल-तकिया की न केवल अनुमति है, बल्कि
बचाव या बढ़ावा देने के लिए यदि आवश्यक हो तो अनिवार्य
धर्म।

(२ विरोधाभास।)

१३२ ११/६९: "इब्राहीम के पास हमारे (अल्लाह के) रसूल आए - - -"। से स्पष्ट है
निम्नलिखित छंद कि ये दूत स्वर्गदूत थे। लेकिन इसका स्पष्ट रूप से खंडन किया गया है:

१. १२/१०९: "न ही हम ने तेरे आगे भेजा है"
(मानवता, मनुष्य*) (संदेशवाहक के रूप में) कोई भी लेकिन
पुरुष।"
२. १६/४३: "और तुमसे पहले (मुहम्मद*) भी
हमने जो दूत भेजे थे, वे केवल पुरुष थे - - -"।
३. २१/७: "तुम्हारे सामने (मुहम्मद*) भी,
हमने जो दूत भेजे थे, वे केवल पुरुष थे।"
४. २५/२०: "और वे दूत जिन्हें हम
(अल्लाह*) तुमसे पहले भेजे गए सभी (मनुष्य) - - - थे।

ठीक है, 3/42 - 6/130 - 11/69 - 11/77 - 11/81- 19/17b - 19/19 - 22/75 सभी कहते हैं कि सभी नहीं थे
पुरुष। १२/१०९ - १६/४३ - २१/७ - २५/२० के लिए एक अच्छा सा विरोधाभास जो सब कुछ कहता है
दूत पुरुष थे।

(४ विरोधाभास)।

१३३ ११/७७: "जब हमारे (अल्लाह के) रसूल (पाठ से स्पष्ट है कि वे कोण थे -
वे च. पूर्व खाना नहीं खाया*) लूत के पास आया (लूत*) - - -।" लेकिन इसका स्पष्ट रूप से खंडन किया गया है:

ठीक ऊपर 11/69 पर समान टिप्पणियाँ।

(४ विरोधाभास)।

१३४ ११/८१: "(फ़रिश्ते दूतों (अल्लाह से)) ने कहा: हे लूत (लूत*)! हम दूत हैं
फ़ोम योर रब!" लेकिन इसका स्पष्ट रूप से खंडन किया गया है:

उपरोक्त 11/69 पर समान टिप्पणियां।

(४ विरोधाभास)।

१३५ ११/१२१: "जो विश्वास नहीं करते उनसे कहो: 'जो तुम कर सकते हो वह करो: हम अपना काम करेंगे'"। इस
621 ई. में था। मुहम्मद/अल्लाह अब भी शांति की बात कर रहे थे/ कर रहे थे - लेकिन अधिक समय तक नहीं।
इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५,
3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14,

9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9 । यह भी शामिल है
कई लोगों को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति (तलवार के साथ)
पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

१३६ १२/१९: कारवां के लोगों ने यूसुफ को कुएँ में पाया, और उन्होंने उसे छिपा लिया
एक खजाने के रूप में"। लेकिन अगला श्लोक इस कहानी का खंडन करता है। नीचे 12/20 देखें।

१३७ १२/२०: "भाइयों (जोसेफ* के) ने उसे एक दयनीय पुरस्कार के लिए बेच दिया - कुछ दिरहम के लिए"। में
एक पद वह पाया गया, दूसरे में वह खरीदा गया। ऊपर 12/19 देखें।

१३८ १२/८७: याकूब ने कहा: “हे मेरे पुत्रों! तुम (मिस्र* को) जाओ और यूसुफ और उसके बारे में पूछताछ करो
भाई - - -।" याकूब घर पर रहा (कनान में?), और उसके बेटे भोजन खरीदने के लिए मिस्र गए। परंतु
यह तथ्य कि याकूब घर पर रहा, इसका खंडन करता है:

1. 00a 12/94-95: "जब कारवां चला गया"
   (मिस्र), उनके पिता ने कहा: 'मैं वास्तव में गंध करता हूँ'
   यूसुफ की उपस्थिति: नहीं, मुझे नहीं लगता a
   डॉटर्ड'। उन्होंने (उसके पुत्रों*) ने कहा: 'अल्लाह के द्वारा!
   सचमुच तू अपने पुराने भटकते मन में है।'"

याकूब गंध को कैसे सूंघ सकता था और जब वह अपने पुत्रों से सैकड़ों वर्ष का था तो वह कैसे बात कर सकता था
किलोमीटर की दूरी पर?

१३९ १२/९४-९५: "जब कारवां (मिस्र) चला गया, तो उनके पिता ने कहा: 'मैं वास्तव में गंध करता हूं
यूसुफ की उपस्थिति - - -।" कुरान के विपरीत जैकब घर पर रहा और
बेगीप्ट से यात्रा कर रहे अपने बेटों से बात करना असंभव था। ऊपर 12/87 देखें।

१४० १२/१०९: "न ही हम (अल्लाह*) ने तुमसे पहले (मुहम्मद*) (संदेशवाहकों के रूप में) किसी को नहीं भेजा लेकिन
पुरुष - - -।" लेकिन इसका स्पष्ट रूप से खंडन किया गया है:

607

पेज ६०८

१.३/४२: "निहारना स्वर्गदूतों (बहुवचन*) ने कहा (जब
   वे मरियम को यह बताने आए थे कि वह होने वाली है
   बेबी जीसस*)"।
२. ६/१३०: “हे जिन्नों और मनुष्यों की सभा!
   वहाँ तुम्हारे पास दूत नहीं आए
   हम, अल्लाह*) आप में से - - -।" ए
   "हां" के जवाब की मांग करते हुए बयानबाजी का सवाल
   - हाँ, अल्लाह की ओर से जिन रसूल आए
   जिन्न के लिए, और मानव दूत से
   कुरान के अनुसार इंसानों को अल्लाह।
3. 11/69: "वहाँ हमारे (अल्लाह का) आया
   इब्राहीम के संदेशवाहक - - -"। से स्पष्ट है
   निम्नलिखित छंद कि इन दूतों
   देवदूत थे।
4. 11/77: "जब हमारे (अल्लाह के) रसूल (इति)
   पाठ से स्पष्ट है कि वे कोण थे - वे
   एफ। पूर्व खाना नहीं खाया*) लूत के पास आया (लूत*) - - -।"
५.११/८१: "(द मेसेंजर्स (स्वर्गदूतों)
   अल्लाह*)) ने कहा: हे लूत (लूत*)! हम
   तेरे रब के दूत!”
6. 19/17b: "- - - हम (अल्लाह*) ने उसे हमारे पास भेजा
   परी (एकवचन - मैरी को यह बताने के लिए कि वह जा रही थी
   बच्चा यीशु* के लिए), और वह प्रकट हुआ
   उसके सामने हर तरह से एक आदमी के रूप में। ”
7. 19/19: "उसने (स्वर्गदूत*) ने कहा: 'नहीं, मैं ही हूँ
   आपके (मैरी के *) भगवान से एक दूत - - -"।
8. 22//75: "अल्लाह दोनों में से रसूल चुनता है"
   स्वर्गदूतों और पुरुषों से - - -"।

ठीक है, 3/42 - 6/130 - 11/69 - 11/77 - 11/81- 19/17b - 19/19 - 22/75 सभी कहते हैं कि सभी नहीं थे पुरुष। १२/१०९ - १६/४३ - २१/७ - २५/२० के लिए एक अच्छा सा विरोधाभास जो सब कुछ कहता है दूत पुरुष थे।

(8 विरोधाभास)।

१४१ १३/४०: (वर्ष अज्ञात)। "- - - तेरा (मुहम्मद*) कर्तव्य है (संदेश) पहुँचाना उन्हें ("काफिर"): यह हमारा (अल्लाह का) हिस्सा है कि हम उन्हें हिसाब दें।" खैर, ६२२ ईसवी से यह भी मुहम्मद और उसके आदमियों का हिस्सा बन गया। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर द्वारा "मार" दिया जाता है कम से कम ये पद: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8 /38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं। आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है 2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

00c 14/4: "- - - अल्लाह जिसे चाहता है उसे भटका देता है, और जिसे चाहता है उसका मार्गदर्शन करता है - - -।" क्या यह सच हो सकता है जब वह सत्य की ओर ले जाता है?

०१४२ १०/३५: "यह (केवल *) अल्लाह है जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है।" लेकिन यह है इस तथ्य के विपरीत कि वह विश्वसनीय नहीं है - वह आपको भटका भी सकता है। यह वास्तव में टकराता है

उन सभी आयतों के साथ जो अल्लाह को बताती हैं कि वह जिसे चाहता है उसे स्वर्ग की ओर ले जाता है, और जिसे वह भटका देता है चाहता हे।

१४३ १४/६: "(मूसा ने फिरौन के बारे में कहा कि उसने *) तुम्हारे बेटों को मार डाला और तुम्हारी महिलाओं को जाने दिया-लोक लाइव - - -।" वास्तव में यह बाइबल जो कहती है उसके अनुसार है (कुरान कहता है) बेबी मूसा को नील नदी (20/39) में डाल दिया गया था लेकिन इस तरह के अपराध का कारण न दें। बाइबल बताता है कि यह सभी यहूदी लड़कों को मारने के शाही आदेश के कारण था, और उसकी माँ ने उसे डाल दिया नदी पर उसे बचाने की बेताब कोशिश में।) लेकिन यह कुरान की दो आयतों का खंडन करता है जो बताती हैं ऐसा नहीं है कि यह किया गया था, लेकिन फिरौन के साथ टकराव के दौरान इसे करना शुरू कर देगा मूसा। (२/४९ और ७/१४१ में समान)।

१.७/१२७: "उसने (फिरौन*) ने कहा: 'उनका पुरुष' बच्चों को हम मारेंगे: (केवल) उनकी मादा क्या हम जिंदा बचाएंगे - - -"। और यह स्पष्ट है कि यह तेजी से शुरू करना है।
2. 40/25: "विश्वास करने वालों के पुत्रों को मार डालो" उसे (मूसा*)"।

(२ विरोधाभास)।

१४४ १५/३: "उन्हें (काफिरों *) को अकेला छोड़ दो, आनंद लेने के लिए (इस जीवन की अच्छी चीजें) और कृपया स्वयं - - -।" यह 621 ई. में था। अल्लाह को जरूरत पड़ने में ज्यादा समय नहीं लगा अपने शब्दों को बदलें और उनका खंडन करें, जब उन्होंने अपने शांतिपूर्ण धर्म को एक में बदलना शुरू कर दिया अमानवीयता और खून का (सौभाग्य से बहुत से मुसलमान उन हिस्सों के अनुसार नहीं रहते हैं यदि कुरान)। इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह देने या अनुमति देने वाली कई बाध्यताएं शामिल हैं (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

१४५ १५/२६अ: "हमने (अल्लाह*) ने मनुष्य को बजती हुई मिट्टी से पैदा किया - - -।" परंतु: यह इसके विपरीत है ६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ५५/६४ बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि आदमी/एडम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/5,35/11, ४०/६७, जो आदमी/एडम को बताता है

धूल से बनाया गया था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, ९६/२ जो बताता है
आदमी/एडम जमा खून के थक्के से बना था, 16/4, 75/37, 76/2, 80/19, जो बताता है
आदमी/एडम वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया), 21/30,
२४/४५, और २५/५४ जो बताते हैं कि आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि से
पानी!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम "आधार सामग्री" से बना था, और इसका उल्लेख नहीं करना था
इस मामले में सबसे बड़ा विरोधाभास: १९/९ और १९/६७ जो दोनों बताते हैं कि मनुष्य/एडम को बनाया गया था
से कुछ नहीं। (कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्यायों में छंद ६/२ भी देखें।)
(इसे कड़ाई से 28 अन्य छंदों के विपरीत माना जाता है। लेकिन न्यूनतम 15 विरोधाभास।)

१४६ १५/२६बी: "हमने (अल्लाह*) ने मनुष्य को - - - मिट्टी के आकार में ढाला - - - बनाया। परंतु:

यह ६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम बनाया गया था
मिट्टी से, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४

६०९

पेज ६१०

जो बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था
चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और
१५/३३ जो बताता है कि आदमी/एडम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/5,35/11, ४०/६७, जो आदमी/एडम को बताता है
धूल से बनाया गया था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, ९६/२ जो बताता है
आदमी/एडम जमा खून के थक्के से बना था, 16/4, 75/37, 76/2, 80/19, जो बताता है
आदमी/एडम वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया), 21/30,
२४/४५, और २५/५४ जो बताते हैं कि आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि से
पानी!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम "आधार सामग्री" से बना था, और इसका उल्लेख नहीं करना था
इस मामले में सबसे बड़ा विरोधाभास: १९/९ और १९/६७ जो दोनों बताते हैं कि मनुष्य/एडम को बनाया गया था
से कुछ नहीं। (कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्यायों में छंद ६/२ भी देखें।)
(इसे कड़ाई से 28 अन्य छंदों के विपरीत माना जाता है। लेकिन न्यूनतम 11 विरोधाभास।)

१४७ १५/२७: "और जिन्न जाति, हमने (अल्लाह *) पहले पैदा की थी, एक चिलचिलाती आग से
हवा"। यह कुरान में अन्य छंदों के विपरीत है, जो बताता है कि जिन्न आग से बने हैं या
बिना धुएँ के आग से - गर्म हवा से नहीं।

(कम से कम 3 विरोधाभास)।

१४८ १५/२८ए: १५/२६ए के समान। यह 6/2, 7/12, 17/61, 32/7, 38/71, और . द्वारा खंडित है
३८/७६ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ५५/६४ जो बताता है कि मनुष्य/आदम से बना था
बजती हुई मिट्टी, 37/11 जो बताती है कि आदमी/एडम चिपचिपी मिट्टी से बना था, 23/12, जो बताता है
मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम था
मिट्टी से बना, ३/५९, २२/5,35/11, ४०/६७, बता दें कि मनुष्य/आदम धूल से बना था, २०/५५
बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, 96/2 जो बताता है कि मनुष्य/एडम एक थक्के से बना था
जमा हुआ खून, १६/४, ७५/३७, ७६/२, ८०/१९, बता दें कि आदमी/एडम वीर्य से बना था (बिना
यह समझाते हुए कि वीर्य कहाँ से आया था), २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो बताता है कि मनुष्य/एडम था
पानी से बना (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि पानी से!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम था
"आधार सामग्री" से बना है, और इस मामले में सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख नहीं करने के लिए: 19/9
और १९/६७ जो दोनों बताते हैं कि मनुष्य/आदम कुछ भी नहीं से बनाया गया था। (इसमें पद ६/२ भी देखें
कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्याय।) (कड़ाई से यह विरोधाभास २८ अन्य
छंद। लेकिन कम से कम 15 विरोधाभास।)

१४९ १५/२८बी: १५/२६बी के समान। यह 6/2, 7/12, 17/61, 32/7, 38/71, और . द्वारा खंडित है
38/76 जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, 15/26, 15/26, और 15/33 जो मनुष्य/एडम को बताते हैं
बजने वाली मिट्टी से बनाया गया था, 55/14 जो बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11
जो बताता है कि आदमी/एडम चिपचिपी मिट्टी से बना था, 23/12, जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था
मिट्टी का सार, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९,
22/5,35/11, 40/67, जो बताता है कि आदमी/एडम धूल से बना था, 20/55 जो बताता है कि आदमी/एडम था
पृथ्वी से बना, ९६/२ जो बताता है कि मनुष्य/एडम जमा हुए रक्त के थक्के से बना था, १६/४,
७५/३७, ७६/२, ८०/१९, बता दें कि आदमी/एडम वीर्य से बना था (बिना यह बताए कि कहां से
वीर्य आया), २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो बताता है कि मनुष्य/एडम पानी से बना था (एनबी!
ध्यान दें! पानी में नहीं, बल्कि पानी से!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम "बेस" से बना था
सामग्री", और इस मामले में सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख नहीं करने के लिए: 19/9 और 19/67 जो
दोनों बताते हैं कि मनुष्य/आदम कुछ भी नहीं से बनाया गया था। (इसके बारे में अध्यायों में ६/२ पद भी देखें
कुरान में 1000+ गलतियाँ।) (कड़ाई से माना जाता है कि यह 28 अन्य छंदों का खंडन करता है। लेकिन
न्यूनतम 11 विरोधाभास।)

१५० १५/३३ए: १५/२६ए के समान अर्थ। इसका खंडन 6/2, 7/12, 17/61, 32/7, 38/71, और ३८/७६ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ५५/६४ जो बताता है कि मनुष्य/आदम बनाया गया था बजती मिट्टी से, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम चिपचिपी मिट्टी से बना था, 23/12, जो बताता है

मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम था मिट्टी से बना, ३/५९, २२/5,35/11, ४०/६७, बता दें कि मनुष्य/आदम धूल से बना था, २०/५५ बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, 96/2 जो बताता है कि मनुष्य/एडम एक थक्के से बना था जमा हुआ खून, १६/४, ७५/३७, ७६/२, ८०/१९, बता दें कि आदमी/एडम वीर्य से बना था (बिना यह समझाते हुए कि वीर्य कहाँ से आया था), २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो मनुष्य/एडम को बताते हैं पानी से बना (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि पानी से!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम था "आधार सामग्री" से बना है, और इस मामले में सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख नहीं करने के लिए: 19/9 और १९/६७ जो दोनों बताते हैं कि मनुष्य/आदम कुछ भी नहीं से बनाया गया था। (इसमें पद ६/२ भी देखें कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्याय।) (कड़ाई से यह विरोधाभास २८ अन्य छंद। लेकिन कम से कम 15 विरोधाभास।)

१५१ १५/३३बी: १६/२६बी के समान अर्थ। इसका खंडन 6/2, 7/12, 17/61, 32/7, 38/71, और 38/76 जो बताते हैं कि मनुष्य/एडम मिट्टी से बना था, 15/26, 15/26, और 15/33 जो बताते हैं आदमी/आदम बजती मिट्टी से बना था, 55/14 जो बताता है कि आदमी/एडम बजने से बना था मिट्टी, 37/11 जो बताती है कि आदमी/एडम चिपचिपी मिट्टी से बना था, 23/12, जो बताता है कि आदमी/एडम था मिट्टी के सार से बना, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, 3/59, 22/5,35/11, 40/67, जो बताता है कि मनुष्य/एडम धूल से बना था, 20/55 जो मनुष्य/एडम को बताता है पृथ्वी से बनाया गया था, 96/2 जो बताता है कि मनुष्य/एडम जमा हुए रक्त के थक्के से बना था, १६/४, ७५/३७, ७६/२, ८०/१९, बता दें कि आदमी/एडम वीर्य से बना था (बिना बताए जहां वीर्य आया था), २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम पानी से बना था (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि पानी से!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम "आधार" से बना था सामग्री", और इस मामले में सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख नहीं करने के लिए: 19/9 और 19/67 जो दोनों बताते हैं कि मनुष्य/आदम कुछ भी नहीं से बनाया गया था। (इसके बारे में अध्यायों में ६/२ पद भी देखें कुरान में 1000+ गलतियाँ।) (कड़ाई से माना जाता है कि यह 28 अन्य छंदों का खंडन करता है। लेकिन न्यूनतम 11 विरोधाभास।)

१५२ १५/८५: "तो कृपापूर्वक क्षमा के साथ (किसी भी मानवीय दोष) को अनदेखा करें"। इंसानों के बीच इस्लाम के अनुसार दोष, अल्लाह पर अविश्वास करना या इस्लाम छोड़ना भी है - और आप शर्त लगाते हैं मुहम्मद ने इस 621 ईस्वी दृष्टिकोण को छोड़ दिया जब वह काफी मजबूत हो गया। एफ. पूर्व. अरब से a तलवार की नोक पर बड़ी हद तक मुस्लिम बना दिया गया और जल्द ही इस्लाम छोड़ने की इच्छा जताई ले जाया गया - और वहन किया गया - मृत्युदंड। इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और खण्डन किया गया है कम से कम इन श्लोकों से: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८- 39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25 /52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने वाली छंद भी शामिल हैं अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१५३ १५/९४: "- - - अल्लाह के साथ झूठे देवताओं में शामिल होने वालों से दूर हो जाओ।" यह 621 ई. में था। अगले साल ही मुहम्मद ने युद्ध और खून के प्रति अपना धर्म बदलना शुरू कर दिया, और जैसे ही उसके और उसके उत्तराधिकारियों ने सैन्य शक्ति हासिल की, गैर-मुसलमानों से मुंह मोड़ना बंद कर दिया इस्लाम में धर्मांतरण की मांग करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली था - बाद में अरबों को मुख्य रूप से विकल्प मिला: मुसलमान बनो या लड़ो और मरो। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम . द्वारा "मार डाला" जाता है ये पद: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८ -39 (द चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

१५४ १६/४: "उसने (अल्लाह*) ने आदमी (आदम*) को शुक्राणु-बूंद से पैदा किया है - - -।" लेकिन यह है
६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम से बना था
मिट्टी, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताती है कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४
बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था
चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और
१५/३३ जो बताता है कि आदमी/एडम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/5,35/11, ४०/६७, जो आदमी/एडम को बताता है
धूल से बनाया गया था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, ९६/२ जो बताता है
आदमी/एडम जमे हुए खून के थक्के से बना था, (७५/३७, ७६/२, ८०/१९, जो मनुष्य/एडम को बताता है
वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया)), २१/३०, २४/४५, और
२५/५४ जो बताता है कि आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि पानी से!),
७०/३९ जो बताता है कि मनुष्य/एडम को "आधार सामग्री" से बनाया गया था, और महानतम का उल्लेख नहीं करने के लिए
इस मामले में विरोधाभास: १९/९ और १९/६७ जो दोनों बताते हैं कि मनुष्य/एडम से बनाया गया था
कुछ नहीं। (कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्यायों में छंद ६/२ भी देखें।) (कड़ाई से
इसे 27 अन्य छंदों के विपरीत माना। लेकिन न्यूनतम 12 विरोधाभास।)

१५५ १६/३५: "लेकिन रसूलों का मिशन स्पष्ट संदेश का प्रचार करने के अलावा क्या है?"
सूरह १६ मक्का के अंतिम सूरहों में से एक है - महीनों बाद सामग्री शुरू हुई
परिवर्तन, और अंतर्विरोध - और निरसन - युद्ध में परिवर्तन के लिए आवश्यक थे
धर्म। इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३,
3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3,
9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह देने या अनुमति देने वाली कई बाध्यताएं शामिल हैं (के साथ)
यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81,
5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29
विरोधाभास)।

१५६ १६/३६: "क्योंकि हमने (अल्लाह) ने निश्चित रूप से प्रत्येक लोगों के बीच एक रसूल भेजा है।"
विरोधाभास:

१.२८/४६: "फिर भी (क्या तू (मुहम्मद*) भेजा गया है) जैसा
अपने भगवान से एक दया (के अनुसार)
कुरान = अल्लाह*) लोगों को चेतावनी देने के लिए
जिसके लिए कोई चेतावनी देने वाला (= नबी, दूत*)
पहले आया था - - -।" कोई दूत नहीं था
उनके पास था, भले ही "हर लोग" के पास था
था।
२. ३२/३: "नहीं, यह आपकी ओर से सत्य है"
(मुहम्मद*) रब (अल्लाह*), कि तू
उन लोगों को सलाह दे सकते हैं जिनके लिए नहीं
चेतावनी देने वाला तुम्हारे सामने आया है - - -।"
3. 34/44: "लेकिन हम (अल्लाह*) ने उन्हें नहीं दिया था
(अरब"*) किताबें जिनका वे अध्ययन कर सकते थे, न ही
तेरे आगे उनके पास दूत भेजे
(मुहम्मद*) - - -।"
4. 36/6: "ताकि तू (मुहम्मद*)
लोगों को (अरब*)
जिनके बापों को कोई नसीहत नहीं मिली थी--
-।"

कौन सा श्लोक गलत है/हैं? (अलाओ याद रखें कि कुरान कई जगहों पर कम से कम 3 . का उल्लेख करता है
"पैगंबर" जो मुहम्मद से बहुत पहले अरब में काम करते थे)।

(4 विरोधाभास या अधिक)।

१५७ १६/४३: "और तुमसे पहले (मुहम्मद*) भी जो रसूल हमने भेजे थे, वे केवल आदमी थे - -"।
यह कुरान में छंदों द्वारा खंडन किया गया है जिसमें कहा गया है कि स्वर्गदूतों को दूतों के रूप में भेजा गया था
कम से कम इब्राहीम, लूत, और मरियम, और जिन्न को दूतों के रूप में जिन्नों के पास भेजा गया, (केवल पुरुष
12/109 - 21/7 - 25/20)

१.३/४२: "निहारना स्वर्गदूतों (बहुवचन*) ने कहा (जब
वे उसे बताने आए थे कि वह होने वाली है
बेबी जीसस*)"।

२. ६/१३०: "हे जिन्नों और मनुष्यों की सभा!
वहाँ तुम्हारे पास दूत नहीं आए
हम, अल्लाह*) आप में से - - -।" ए
"हां" के जवाब की मांग करते हुए बयानबाजी का सवाल
- हाँ, अल्लाह की ओर से जिन रसूल आए
जिन्न के लिए, और मानव दूत से
इंसानों को अल्लाह।

3. 11/69: "वहाँ हमारे (अल्लाह का) आया
इब्राहीम के संदेशवाहक - - -"। से स्पष्ट है
निम्नलिखित छंद कि इन दूतों
देवदूत थे।

4. 11/77: "जब हमारे (अल्लाह के) रसूल (इति)
पाठ से स्पष्ट है कि वे कोण थे - वे
एफ। पूर्व खाना नहीं खाया*) लूत के पास आया (लूत*) - - -।"

५.११/८१: "(द मेसेंजर्स (स्वर्गदूतों)
अल्लाह*)) ने कहा: हे लूत (लूत*)! हम
तेरे रब के दूत!"

6. 19/17b: "- - - हम (अल्लाह*) ने उसे हमारे पास भेजा
परी (एकवचन - उसे यह बताने के लिए कि वह जा रही थी
बच्चा यीशु* है), और वह पहले प्रकट हुआ
उसे हर तरह से एक आदमी के रूप में। "

7. 19/19: "उसने (स्वर्गदूत*) ने कहा: 'नहीं, मैं ही हूँ
आपके (मैरी के *) भगवान से एक दूत - - -"।

8. 22//75: "अल्लाह दोनों में से रसूल चुनता है"
स्वर्गदूतों और पुरुषों से - - -"।

ठीक है, 3/42 - 6/130 - 11/69 - 11/77 - 11/81- 19/17b - 19/19 - 22/75 सभी कहते हैं कि सभी नहीं थे
पुरुष। 12/109 - 16/43 - 21/7 - 25/20 के लिए एक अच्छा सा विरोधाभास जो सभी दूत कहते हैं
पुरुष थे।

(8 विरोधाभास)।

१५८ १६/६७: "और खजूर और दाखलता के फल में से (अन्य अनुवाद; अंगूर*), तुम
स्वस्थ पेय और भोजन प्राप्त करें - - -। यह सूरा मक्का से आखिरी लोगों में से एक है, और in
पुराने मक्का की तरह बाकी अरब में उस समय सेक्स और शराब "दो स्वादिष्ट" थे
चीजें"। लेकिन आप शर्त लगाते हैं कि मुहम्मद ने कम से कम इस "स्वास्थ्यवर्धक" को थोड़ा-थोड़ा करके प्रतिबंधित कर दिया था

पीना"। शराब के खिलाफ छंद द्वारा निरस्त और खंडित - f। उदा। 5/90: "नशीला पदार्थ
और जुआ - - - एक घृणा है - शैतान की करतूत का - - -"।

१५९ १६/८२: "----तेरा (मुहम्मद का) कर्तव्य केवल स्पष्ट संदेश का प्रचार करना है।" यह सिर्फ था
कुछ महीने पहले मुहम्मद 622 ई. में मक्का से भाग गए थे। लेकिन यह उसके आने के कुछ समय बाद
मदीना और सत्ता हासिल करना शुरू कर दिया: इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम द्वारा "मार" दिया जाता है
ये पद: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८ -39 (द
चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,
35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

१६० १६/८९: "---- हम (अल्लाह*) ने तुम पर (मुहम्मद/मुसलमान*) एक किताब उतारी है।

कुरान*) सब कुछ समझाते हुए - - -।" कुरान सभी चीजों की व्याख्या से दूर है, न्यायपूर्ण न्यायिक
कानून अधूरे हैं, और कम से कम एक बिंदु गलत है (जब विरासत में मिले शेयर नहीं जुड़ते हैं
ऊपर - जो विरासत में मिला है उसके आधार पर, शेयर कुल के 125% तक जोड़ सकते हैं
विरासत।)

यह पद और वे नियम एक दूसरे के विपरीत हैं।

१६१ १६/९०: "- - - और वह (अल्लाह *) शर्मनाक कामों को मना करता है - - -।" इसका पुरजोर विरोध:

१. २/२३०: "तो अगर एक पति अपनी पत्नी को तलाक देता है"
(अपरिवर्तनीय), वह उसके बाद पुनर्विवाह नहीं कर सकता
जब तक वह दूसरी शादी नहीं कर लेती
पति (और उस शादी को "पूरा" किया*) और
उसने उसे तलाक दे दिया है।" यह स्थिति नहीं है
अक्सर मिलते हैं, लेकिन ऐसा होता है। यह सबसे है
उन मामलों में शर्मनाक कृत्य करने के लिए मजबूर करने के लिए
महिला को खुद को वेश्या बनाने की अनुमति दी जानी चाहिए
अपने पति के पास वापस जाओ।

उल्लेख नहीं है कि कुरान में कुछ "नैतिक" नियमों द्वारा 16/90 का खंडन किया गया है:
चोरी/लूट, भेदभाव, दासता, बलात्कार, हत्या, युद्ध, आदि - सभी "अच्छा और"
वैध"। या यह नियम कि बलात्कार की शिकार महिला जो 4 पुरुष गवाहों को पेश नहीं कर सकती, जिन्होंने देखा है
वास्तविक कार्य - और मामले में उसकी मदद नहीं करने के लिए दंडित किया जाएगा - के लिए सख्ती से दंडित किया जाना है
अवैध सेक्स। सबसे अधिक संभावना सबसे अन्यायपूर्ण और शर्मनाक कानून के बारे में हमने कभी सुना है।

१६२ १६/१०१: "जब हम (अल्लाह*) एक रहस्योद्घाटन को दूसरे के लिए प्रतिस्थापित करते हैं - - -"। ("विकल्प" is
एक अंग्रेजी शब्द जिसका यहाँ बिल्कुल वही अर्थ है जो लैटिन से व्युत्पन्न शब्द है;
"अभिनिषेध करना")। अल्लाह कहता है कि वह अपने निर्देश समय-समय पर बदल रहा है। परंतु:

१.६/११५: "--- उसे कोई नहीं बदल सकता (अल्लाह का)
शब्दों - - -"। खैर, वह विरोध कर रहा है
खुद, जैसा कि वह स्पष्ट रूप से इसे स्वयं बदलता है जब
कुछ उसे मजबूर करता है - कोशिश करो और असफल हो जाओ?
२. १०/६४: "इसके बाद, इसमें कोई बदलाव नहीं हो सकता"
अल्लाह के शब्द। "

ऊपर 10/64 भी पढ़ें।

(२ विरोधाभास)।

००डी १६/१०२: "--- पवित्र आत्मा आपके रब से रहस्योद्घाटन (= कुरान*) लाया है
(अल्लाह*) - - -।"

१. २/९७: "जो कोई गेब्रियल का दुश्मन है - उसके लिए"
वह नीचे लाता है (रहस्योद्घाटन (= the .)
कुरान*)) (कम से कम जो नहीं लाया है
"प्रेरणा"*) - - -"। मुसलमान कभी-कभी कहते हैं
कि गेब्रियल उन लोगों में से सबसे अधिक लाया जो
"प्रेरणा" द्वारा नहीं भेजे गए थे, बल्कि यह कि
पवित्र आत्मा कुछ लाया, और वे हो सकता है
इससे दूर हो गए हैं - - - अगर यह नहीं था
क्योंकि दूसरे मुसलमान कहते हैं कि यह उनमें से एक है
इसके लिए सबूत होल्ट स्पिरिट = गेब्रियल
(एसआईसी !!)

१६३ १६/१०३: "- - - यह (कुरान*) अरबी, शुद्ध और स्पष्ट है।" गलत। यह शुद्ध नहीं है, जैसा कि वहाँ है
इसमें कई गैर-अरब शब्द हैं (यहां तक कि कुरान शब्द भी आयात किया जाता है)। विद्वान इससे असहमत हैं
कितने - हमें सबसे कम संख्या 107 (अल-सुयुति) मिली है, उच्चतम "सीए।
275 "(आर्थर जेफ़री)। और यह स्पष्ट नहीं है, क्योंकि कई व्याकरण संबंधी गलतियाँ हैं -
अली दशती के अनुसार 100 से अधिक: "23 वर्ष"। ऐसे के बारे में अध्याय भी देखें

गलतियां।

१६४ १६/१२५: "अपने भगवान (अल्लाह *) के मार्ग के लिए (सभी को) ज्ञान और सुंदर के साथ आमंत्रित करें
उपदेश; और उनके साथ उन तरीकों से बहस करें जो सबसे अच्छे और सबसे दयालु हैं - - -।" थोरा थोरा -
या इतना कम नहीं - इसके तुरंत बाद से मुहम्मद का लहजा बदल गया (यह बहुत आखिरी में से एक है
मक्का से सूरह - यदि अंतिम पूर्ण नहीं है, जैसा कि मुहम्मद से केवल कुछ महीने पहले बताया गया था
यत्रिब/मदीना भाग गए)। इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है:
2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी),
8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६,
47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

१६५ १६/१२६: "और यदि तुम उन्हें पकड़ते हो, तो उन्हें पकड़ने से बुरा नहीं है कि वे तुम्हें पकड़ लेते हैं:
परन्तु यदि तुम सब्र दिखाते हो, तो धीरज धरने वालों के लिए यही उत्तम है।" अभी भी
शांतिपूर्ण मक्का मोड - प्रासंगिक का एक बड़ा प्रतिशत, न कि धार्मिक वैज्ञानिक इस बात से सहमत हैं कि a
घृणित और खूनी धर्म के लिए संभावित स्पष्टीकरण इस्लाम कुछ वर्षों में बदल गया, is
उन कुछ वर्षों में मुहम्मद को उनकी नई शक्ति से नैतिक रूप से नष्ट कर दिया गया था। यह है
असामान्य से बहुत दूर कि शक्ति एक व्यक्ति को नष्ट कर देती है; "सत्ता भ्रष्ट करती है, और पूर्ण शक्ति भ्रष्ट करती है"
बिल्कुल" - और मुहम्मद ने पूर्ण और कुल शक्ति प्राप्त की। यह श्लोक विरोधाभासी है और
अक्सर कम से कम इन छंदों से "मार": २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२,
5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123,
25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देना या अनुमति देना शामिल है
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप

615

पृष्ठ ६१६

विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73,
35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

१६६ १६/१२७: "और क्या तुम (मुहम्मद*) सब्र करो, क्योंकि तुम सब्र तो अल्लाह की तरफ से है। और न
उनके लिए शोक मनाओ, और उनके षडयंत्रों के कारण अपने आप को संकट में मत डालो।" खैर, धैर्य आ गया
एक अंत - ऊपर 16/125 और 16/126 देखें। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर at . द्वारा "मार डाला" जाता है
कम से कम ये श्लोक: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/ 38-39
(चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25 /52, 33/61,
33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं।
आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a
यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है
2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

१६७ १७/२३: "तेरे रब (अल्लाह*) ने फ़रमाया है कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो, और यह कि तुम
माता-पिता के लिए दयालु। " यह वास्तव में ६/१५१ द्वारा दृढ़ता से विरोधाभासी है जो आपको होने से रोकता है
अपने माता-पिता के प्रति दयालु। (हम ईमानदारी से सोचते हैं कि ६/१५१ में शब्द f. उदा. के दौरान एक दुर्घटना का प्रतिनिधित्व करते हैं।
उस्मान की पुस्तक का संस्करण। लेकिन यह एक स्पष्ट और मजबूत विरोधाभास है - और कितने
कुरान में अधिक "दुर्घटनाएं" हैं?)

१.६/१५१: यह वास्तव में एक अजीब विरोधाभास है:
"आओ, मैं (मुहम्मद*) क्या रिहर्सल करूंगा
अल्लाह ने (वास्तव में) तुम्हें निषिद्ध किया है - -
(से*) - - अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करें - - -।" **पढ़ना
यह एक बार फिर: आप से प्रतिबंधित हैं
अपने माता-पिता के लिए अच्छा होना !! - विपरीत
किताब में हर जगह क्या कहा गया है और
इसका पुरजोर विरोध करता है। मुस्लिम सूत्रों
मैंने पाया है, सभी सहमत हैं कि यह गलत है
- और वास्तव में हम उनसे सहमत हैं - यह है
कुरान की शैली से इतनी दूर, कि उसे अवश्य
एक दुर्घटना और गलत हो गया है। (यह भी
उसी कविता में निषिद्ध है "मारने के लिए नहीं"
आपके बच्चे" यदि आप गरीब हैं - यह भी एक**

स्पष्ट गलती और विरोधाभास
बाकी कुरान)।

लेकिन इसका मतलब है कि यहां आपके पास एक (वास्तव में 2) कुरान में स्पष्ट गलती (ओं) - द्वारा प्रमाणित इस्लाम एक गलती के रूप में - किसी की मुफ्त में सेवा करना मुस्लिम या गैर-मुस्लिम दावा करते हैं कि किताब सही है और गलतियों के बिना "के लिए" अंतिम अल्पविराम "। बस उनसे पूछें कि क्या उनके पास कभी है लाल 6/151? (और पूछें कि क्या वे इसके बारे में जानते हैं अल्पविराम अरब में मौजूद नहीं था जब कुरान 650 ईस्वी के आसपास लिखा गया था)।

और: जब यह गलत है - और कितना है किताब में गलत?

(इसका अर्थ हो सकता है, हालांकि, अगर कुरान यहाँ "काफिर" माता-पिता के बारे में बात कर रहे थे, लेकिन यहां किताब ऐसा नहीं कर रही है)।

२. ९/२३: "अपने पुरखाओं की रक्षा न करना और तुम्हारे भाई यदि वे ऊपर से बेवफाई से प्यार करते हैं आस्था (= अगर वे मुसलमान नहीं हैं)।
३.५८/२२: "आपको कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिलेगा जो अल्लाह और आखिरी दिन पर विश्वास करो, प्यार करने वाला जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं, भले ही वे उनके पिता हों या उनके बेटों - - -।" (आप इसी तरह के नियम पाते हैं चरम पंथ आज भी तर्क इस तरह के नियमों के पीछे, के रूप में कई कटौती करना है संतुलित या सुधार के स्रोतों की संभावना सूचना, बाधा डालने के लिए कि एक तरफा संप्रदाय से प्रचार का खंडन किया जाता है और तथ्यों द्वारा निरस्त।)

ये घटिया श्लोक हैं। लेकिन जैसा कि अपने माता-पिता के प्रति सतही रूप से दयालु होना संभव है (केवल सतही तौर पर, मुख्य बात जो कई माता-पिता के लिए मायने रखती है - अपने बच्चों से प्यार - है चला गया), भले ही आपको उन्हें प्यार करने से मना किया गया हो, यह एक सीमावर्ती मामला है। हम इसे शामिल करते हैं आंशिक रूप से क्योंकि यह इतना बदसूरत और अमानवीय है और चरम संप्रदायों और धर्मों के बारे में बहुत कुछ बताता है इस्लाम की तरह, और आंशिक रूप से क्योंकि वास्तव में उनके प्रति वास्तव में दयालु होना लगभग असंभव है यदि आप उन्हें मनुष्यों के रूप में आपसे दूर रखने का आदेश दिया जाता है।)

१६८ १७/५४: "हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) को उनके निपटान के लिए नहीं भेजा है ("काफिरों"*) उनके लिए मामले"। अल्लाह या मुहम्मद ने इस बारे में अपना विचार बदलना शुरू कर दिया साल बाद - 622 ईस्वी में - जब मुहम्मद ने निर्णय लेने के लिए पर्याप्त सैन्य शक्ति हासिल करना शुरू कर दिया उनके लिए "उनका" धर्म। (इस्लाम जो कहना पसंद करता है, उसके बावजूद इस्लाम काफी हद तक तलवार से पेश किया गया - और लूट / लूट / चोरी में भाग लेने की इच्छा से और गुलाम लेना - अरब में)। इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

१६९ १७/६१: "- - - एक (आदम*) जिसे तू (अल्लाह*) ने मिट्टी से पैदा किया।" लेकिन यह है ६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम से बना था मिट्टी, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताती है कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४ बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था

चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/एडम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि आदमी/एडम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/5,35/11, ४०/६७, जो आदमी/एडम को बताता है धूल से बनाया गया था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, ९६/२ जो बताता है आदमी/एडम जमा खून के थक्के से बना था, 16/4, 75/37, 76/2, 80/19, जो बताता है आदमी/एडम वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया), 21/30, २४/४५, और २५/५४ जो बताता है कि आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि से पानी!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम "आधार सामग्री" से बना था: "लेकिन आदमी फोन नहीं करता

ध्यान रहे कि हमने (अल्लाह) ने उसे शून्य से पैदा किया है?" यह अन्य सभी स्थानों के विपरीत है कुरान जहां इसे मनुष्य के निर्माण के बारे में बताया गया है, और यह बताता है कि मनुष्य/आदम को बनाया गया था कुछ सामग्री या अन्य, और इस मामले में सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख नहीं करने के लिए: 19/9 और १९/६७ जो दोनों बताते हैं कि मनुष्य/आदम कुछ भी नहीं से बनाया गया था।

(कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्यायों में छंद ६/२ भी देखें।) (कड़ाई से पुनर्विचार यह 26 श्लोकों का खंडन करता है, लेकिन न्यूनतम 11 विरोधाभास।)

१७० १७/१०३: "- - - हम (अल्लाह*) ने उसे (फिरौन*) और उसके साथ के सभी लोगों को डुबो दिया।"
इसके साथ विरोधाभास:

> १.१०/९२: "आज का दिन (17/103* के समान)
> क्या हम (अल्लाह*) आपको शरीर में बचाएंगे - - -"।
> कुरान मुख्य रूप से बताता है कि फिरौन ने किया था
> डूबना (भले ही फिरौन रामसेस द्वितीय ने किया था
> डूबने से नहीं मरते, और तब तक नहीं जब तक कुछ
> वर्षों बाद जब विज्ञान कहता है कि पलायन
> हुआ है - यदि ऐसा हुआ हो)। लेकिन यहाँ या तो
> जिसका खंडन किया गया है - या अल्लाह अभ्यास में है
> "बचाने" के अपने स्वयं के वादे का खंडन किया
> शरीर में फिरौन", जिसका अर्थ होना चाहिए
> "शारीरिक", "सुरक्षित रूप से"।

१७१ १८/२९: "- - - जो चाहे विश्वास करे, और जो चाहे उसे अस्वीकार करे (इस्लाम*) - - -।"
६२२ ईस्वी के बाद उनकी शक्ति बढ़ने के साथ ही मुहम्मद ने अपना विचार बदल दिया: यह कविता विरोधाभासी (और .) निरस्त) कम से कम ये छंद (124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 को निरस्त कर दिया गया है) 9/5 तक): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, ५/९९, ६/६०, ६/६६, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/ 99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/17, 39/41, 41/ 34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6.
वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 89 विरोधाभास)।

१७२ १८/३१: "- - - वे (स्वर्ग के मुसलमान*) उसमें कंगनों से अलंकृत होंगे।
सोना - - -"। बहुत बढ़िया - सिवाय इसके कि:

> १.२२/२३: "- - - वे (मुस्लिम जन्नत में*)
> सोने के कंगनों से अलंकृत किया जाएगा और
> मोती - - -।"
> २.७६/२१: "--- वे (मुस्लिम जन्नत में*)
> चाँदी के कंगनों से अलंकृत होंगे - - -।"

एक मामूली, लेकिन स्पष्ट विरोधाभास। 1 या 2 इस पर निर्भर करता है कि आप कितनी सख्ती से निर्णय लेते हैं।

१७३ १८/५६: "हम (अल्लाह*) केवल खुशखबरी देने और चेतावनी देने के लिए संदेश भेजते हैं - - - ।" यह 622 ईस्वी में था, और कुछ ही समय बाद मुहम्मद ने अपना विचार और इस्लाम बदलना शुरू कर दिया मतांतरण प्राप्त करने के लिए तलवार का प्रयोग करने लगा। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर at . द्वारा "मार डाला" जाता है कम से कम ये श्लोक: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/ 38-39

पेज ६१९

(चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25 /52, 33/61,
33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं।
आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a
यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है
2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

१७४ १९/९: "मैं (अल्लाह*) ने वास्तव में तुम्हें (मनुष्य*) पहले पैदा किया था, जब तुम कुछ भी नहीं थे!"
परंतु:

यह ६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम बनाया गया था
मिट्टी से, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४
जो बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था
चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/एडम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और
१५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५, ३५/११, ४०/६७, जो मनुष्य/एडम को बताता है
धूल से बनाया गया था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, ९६/२ जो बताता है
आदमी/एडम जमा खून के थक्के से बना था, 16/4, 75/37, 76/2, 80/19, जो बताता है
आदमी/एडम वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया), 21/30,
२४/४५, और २५/५४ जो बताते हैं कि आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि से
पानी!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम "आधार सामग्री" से बना था, और इसका उल्लेख नहीं करना था
इस मामले में सबसे बड़ा विरोधाभास: १९/९ और १९/६७ जो दोनों बताते हैं कि मनुष्य/एडम को बनाया गया था
से कुछ नहीं। (कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्याय में छंद ६/२ भी देखें।)
(सख्ती से इसे 29 अन्य छंदों के विपरीत माना जाता है। लेकिन न्यूनतम 15 विरोधाभास।) (एनबी: इन
बस इस मामले में एक मुसलमान कह सकता है कि अल्लाह ने जकर्याह बनाया, न कि "आदमी" (आदम)। लेकिन बाद में
उसी अध्याय में यह स्पष्ट किया गया है कि अल्लाह ने जिस बारे में बात की थी उसने मनुष्य को शून्य से बनाया था - में
सबसे खराब स्थिति में उन्होंने कम से कम यह एक जगह कहा है, इसलिए विरोधाभास खड़ा है। लेकिन किसी के लिए
यदि हम यहाँ अतिरिक्त अंतर्विरोधों की गणना नहीं करते हैं।)

१७५ १९/१७: "- - - हम (अल्लाह*) ने उसे अपना फरिश्ता भेजा (एकवचन - मरियम को यह बताने के लिए कि वह जा रही है)
बच्चा यीशु* है), और वह उसके सामने हर तरह से एक आदमी के रूप में प्रकट हुआ।" 19/9 भी बताता है
केवल एक के बारे में। एक और तीन या अधिक के बीच एक अलग अंतर है। (अगर वहाँ था
केवल दो थे, अरब ने व्याकरणिक द्वैत का उपयोग किया था, और "हमारे दो कोण" का अनुवाद किया गया था):

१.३/४२: "निहारना स्वर्गदूतों (बहुवचन*) ने कहा (जब
वे उसे बताने आए थे कि वह होने वाली है
बेबी जीसस*)"। एक छोटा, लेकिन विशिष्ट
अंतर्विरोध।

१७६ १९/१७बी: "- - - हम (अल्लाह*) ने उसे अपना फरिश्ता भेजा (एकवचन - उसे यह बताने के लिए कि वह जा रही है)
बच्चा यीशु* है), और वह उसके सामने हर तरह से एक आदमी के रूप में प्रकट हुआ।"

१. १२/१०९: "न ही हम ने तेरे आगे भेजा है"
(मानवता, मनुष्य*) (संदेशवाहक के रूप में) कोई भी लेकिन
पुरुष।"
२. १६/४३: "और तुमसे पहले (मुहम्मद*) भी
हमने जो दूत भेजे थे, वे केवल पुरुष थे - - -"।
३. २१/७: "तुम्हारे सामने (मुहम्मद*) भी,
हमने जो दूत भेजे थे, वे केवल पुरुष थे।"
४. २५/२०: "और वे दूत जिन्हें हम
(अल्लाह*) तुमसे पहले भेजे गए सभी (मनुष्य) - - - थे।

पेज ६२०

ठीक है, 3/42 - 6/130 - 11/69 - 11/77 - 11/81- 19/17b - 19/19 - 22/75 सभी कहते हैं कि सभी नहीं थे

पुरुष। १२/१०९ - १६/४३ - २१/७ - २५/२० के लिए एक अच्छा सा विरोधाभास जो सब कुछ कहता है
दूत पुरुष थे।

(४ विरोधाभास)।

१७७ १९/१९: "उसने (स्वर्गदूत *) ने कहा: 'नहीं, मैं केवल आपके (मरियम के) भगवान - - - का दूत हूं।
लेकिन विरोधाभास:

१. १२/१०९: "न ही हम ने तेरे आगे भेजा है" (मानवता, मनुष्य*) (संदेशवाहक के रूप में) कोई भी लेकिन पुरुष।"
२. १६/४३: "और तुमसे पहले (मुहम्मद*) भी हमने जो दूत भेजे थे, वे केवल पुरुष थे - - -"।
३. २१/७: "तुम्हारे सामने (मुहम्मद*) भी, हमने जो दूत भेजे थे, वे केवल पुरुष थे।"
४. २५/२०: "और वे दूत जिन्हें हम (अल्लाह*) तुमसे पहले भेजे गए सभी (मनुष्य) - - - थे।

ठीक है, 3/42 - 6/130 - 11/69 - 11/77 - 11/81- 19/17b - 19/19 - 22/75 सभी कहते हैं कि सभी नहीं थे
पुरुष। १२/१०९ - १६/४३ - २१/७ - २५/२० के लिए एक अच्छा सा विरोधाभास जो सब कुछ कहता है
दूत पुरुष थे।

(४ विरोधाभास)।

१७८ १९/३६: यहाँ यह एक बार फिर है: मुहम्मद एक कहानी कह रहा है, और फिर वह बात करने के लिए बदल जाता है
अपने और अपने मुसलमानों के बारे में इस तरह से जो यह स्पष्ट करता है कि वह नहीं पढ़ रहा है: "वास्तव में"
अल्लाह मेरा रब और तुम्हारा रब है - - -।" माता की सटीक प्रति में बोल रहे मुहम्मद
किताब, खुद अल्लाह की ओर से उतारी गई??! शब्द "विरोधाभास" का उल्लेख करना आवश्यक नहीं है
- वास्तव में यह भी पर्याप्त मजबूत नहीं है, बेतुका अधिक सही है।

१७९ १९/३९: "लेकिन उन्हें (गैर-मुस्लिम*) संकट के दिन की चेतावनी दें - - -।" यहां बात हो रही है
शांतिपूर्ण चेतावनी - मुहम्मद के पास सीए में अधिक शक्ति नहीं थी। 615 ई. यह किया
६२२ ईस्वी के बाद परिवर्तन: इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है:
2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी),
8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६,
47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

१८० १९/६७: "लेकिन क्या मनुष्य को यह याद नहीं आता कि हमने (अल्लाह*) ने उसे शून्य से पैदा किया है?"
यह कुरान के अन्य सभी स्थानों का खंडन करता है जहां मनुष्य के निर्माण के बारे में बताया गया है,
और यह बताता है कि मनुष्य/आदम किसी न किसी सामग्री से बना है।

यह ६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम बनाया गया था
मिट्टी से, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४
जो बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था
चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और
१५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५, ३५/११, ४०/६७, जो मनुष्य/एडम को बताता है

धूल से बनाया गया था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, ९६/२ जो बताता है
आदमी/एडम जमा खून के थक्के से बना था, 16/4, 75/37, 76/2, 80/19, जो बताता है
आदमी/एडम वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया), 21/30,
२४/४५, और २५/५४ जो बताता है कि आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि से
पानी!), 70/39 जो बताता है कि मनुष्य/एडम "आधार सामग्री" से बना था। (इसमें पद ६/२ भी देखें
कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्याय।) (कड़ाई से माना जाता है कि यह २९ अन्य के विपरीत है
छंद। लेकिन कम से कम 15 विरोधाभास।)

१८१ १९/८४: "तो उनके खिलाफ (गैर-मुसलमान*) - - - में जल्दबाजी न करें। यह लगभग 615 ई.
लेकिन जब मुहम्मद ने वास्तविक ताकत हासिल करना शुरू कर दिया, तो उन्होंने भी गैर के खिलाफ जल्दबाजी करना शुरू कर दिया।

मुसलमान। इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39,
8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/ ७३, ३५/३६, ४७/४,
66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

00e 20/39: "(अल्लाह ने मूसा की मां से कहा): '(बच्चे को) छाती में फेंक दो, और फेंक दो
(छाती) नदी में (नील) - - -।" एक माँ के पास ऐसा करने के लिए एक हताश कारण होना चाहिए
यह, और इसका कारण यह था कि फिरौन ने लड़कों को मारने का आदेश दिया था (क्योंकि यहूदी)
बहुत अधिक हो रहे थे)। बस यही बात कुरान से ज्यादा बाइबिल में विस्तार से बताई गई है,
जो उसे ऐसा करने के लिए कारण का बिल्कुल भी उल्लेख नहीं करता है। परंतु:

1. 40/25: "(फिरौन ने 80 (?) साल बाद कहा):
'उनके साथ विश्वास करने वालों के पुत्रों को मार डालो'
(मूसा*), और उनकी मादाओं को जीवित रखना - - -।"
(यह कुरान में उन जगहों में से एक है जहां
कहानी "हंग में लटकती है" - एक की तरह
थमूद के ऊंट के बारे में - और मुसलमानों के बारे में
जो लोग किताबों को अच्छी तरह से नहीं जानते, उन्हें माफ कर दिया जाता है
शायद उसकी माँ पर विश्वास करने से
बेबी मूसा नदी में सिर्फ इसलिए कि
भगवान ने ऐसा आदेश दिया। बुरे के कारण
इस बिंदु पर कुरान के पीछे लेखकत्व - to
एक कहानी इस तरह से बताएं कि आवश्यक बिंदु
अंधेरे में हैं, बुरा लेखकत्व है - और
क्योंकि मुसलमानों को होने का बहाना है
यह बहुत ही वास्तविक विरोधाभास देखने में असमर्थ
इससे पहले, हम इसे नहीं गिनेंगे।)

१८२ २०/५५: "(पृथ्वी) से हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मनुष्य*) - - - पैदा किया।" लेकिन यह है
६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम से बना था
मिट्टी, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताती है कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४
बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था
चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/एडम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और
१५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५, ३५/११, ४०/६७, जो मनुष्य/एडम को बताता है
धूल से बनाया गया था, 96/2 जो बताता है कि आदमी/एडम जमा हुए खून के थक्के से बना था,
१६/४, ७५/३७, ७६/२, ८०/१९, बता दें कि आदमी/एडम वीर्य से बना था (बिना बताए
जहां वीर्य आया था), २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम पानी से बना था

(एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि पानी से!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम "आधार" से बना था
सामग्री"। (कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्यायों में छंद ६/२ भी देखें।)
(सख्ती से यह ३० अन्य श्लोकों का खंडन करता है। लेकिन कम से कम ११ अंतर्विरोध।)

१८३ २०/७०: "इसलिए जादूगर को सजदे में गिरा दिया गया (क्योंकि मूसा ने सच किया था .)
चमत्कार*): उन्होंने कहा: 'हम हारून के यहोवा और मूसा पर विश्वास करते हैं (क्योंकि उन्होंने उन्हें देखा था
चमत्कार*)।" लेकिन मुहम्मद ने इस आशय का खंडन किया:

****मुहम्मद कुरान में कई बार बताते हैं कि इसका कारण वह/अल्लाह
कोई चमत्कार नहीं करेगा/करेगा, यह था कि यह किसी को भी किसी भी तरह विश्वास नहीं करेगा - और
यहां सिर्फ एक छोटे की वजह से सारे जादूगर बन गए आस्तिक
चमत्कार। (**यह एक कारण है कि कोई जानता है कि मुहम्मद जानता था कि वह झूठ बोल रहा था
हर बार जब उन्होंने इस बहाने का इस्तेमाल किया - उन्होंने खुद बताया था कि चमत्कार काम करते हैं।**)

(कम से कम 5 विरोधाभास)।

१८४ २०/९१: सीनै में यहूदियों ने कहा: "हम इस पंथ (सोने का बछड़ा*) को नहीं छोड़ेंगे, लेकिन हम
जब तक मूसा हमारे पास वापस न आ जाए, तब तक वह उसके लिए अपने आप को समर्पित कर देगा।" और मूसा बहुत क्रोधित हुआ जब वह
लौट आया और अपने लोगों के बीच एक जीवित मूर्तिपूजक पंथ पाया। परंतु:

१.७/१४९: इस पद में यहूदियों ने पाया कि उनके पास था
पाप किया, और उन्होंने मूसा के सामने पश्चाताप किया
अगले पद, ७/१५० में लौटा।

कोई स्पष्टीकरण?

१८५ २०/१०९: "उस दिन (कयामत का दिन) कोई सिफ़ारिश नहीं होगी, सिवाय उन लोगों के जिन्हें (अल्लाह) द्वारा अनुमति प्रदान की गई है - - -।" यहाँ यह संभव है यदि अल्लाह अनुमति दे।

१. २//१२३: "(वह दिन (कयामत का) जब) एक आत्मा
दूसरे का लाभ नहीं उठाएंगे - - - और न ही करेंगे
हिमायत उसे (आत्मा*) लाभ - - -।" एक
पूर्ण कानून: कोई मध्यस्थता संभव नहीं है।
२.२/२५४: "--- दिन से पहले (कयामत के*)
तब आता है जब कोई सौदेबाजी नहीं होगी (लाभ होगा), न ही
दोस्ती, न हिमायत।" दूसरों के बीच में:
मध्यस्थता असंभव है।
३. ६/५१: "- - - उन्हें (निर्णय) में लाया जाएगा
(= कयामत का दिन*)) अपने रब के सामने
(अल्लाह*) : उसके सिवा उनके पास नहीं होगा
रक्षक और न ही मध्यस्थ - - -।"
४.८२/१९: "(यह होगा) वह दिन (कयामत का) जब
किसी भी आत्मा के पास (करने की) शक्ति नहीं होनी चाहिए
एक और - - -।"

अनुमति के बारे में कोई सवाल नहीं - बस असंभव।

(४ विरोधाभास)।

१८६ २०/१३०: "इसलिए (मुहम्मद/मुसलमान*) जो कुछ वे ("काफिर") कहते हैं, उसके साथ धैर्य रखें - - -।" 615 ईस्वी या उससे पहले मक्का में मुहम्मद का स्वर था - और मदीना के लिए उनकी उड़ान तक ६२२एडी. यह ६२२ ईस्वी से और उसके बाद काफी बदल गया और काफी हद तक इसका खंडन किया मक्का काल के हल्के शब्द। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम . द्वारा "मार डाला" जाता है ये पद: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८ -39 (द चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

१८७ २१/७: "तुम्हारे पहले (मुहम्मद*) भी, हम (अल्लाह*) ने जो दूत भेजे थे, वे केवल आदमी थे - - -। खैर: उस मामले में ये गलत हैं - या विरोधाभास:

१.३/४२: "निहारना स्वर्गदूतों (बहुवचन*) ने कहा (जब
वे उसे बताने आए थे कि वह होने वाली है
बेबी जीसस*)"।
२. ६/१३०: "हे जिन्नों और मनुष्यों की सभा!
वहाँ तुम्हारे पास दूत नहीं आए
हम, अल्लाह*) आप में से - - -।" ए
"हां" के जवाब की मांग करते हुए बयानबाजी का सवाल
- हाँ, अल्लाह की ओर से जिन रसूल आए
जिन्न के लिए, और मानव दूत से
इंसानों को अल्लाह।
3. 11/69: "वहाँ हमारे (अल्लाह का) आया
इब्राहीम के संदेशवाहक - - -"। से स्पष्ट है
निम्नलिखित छंद कि इन दूतों
देवदूत थे।
4. 11/77: "जब हमारे (अल्लाह के) रसूल (इति)

पाठ से स्पष्ट है कि वे कौन थे - वे
एक। पूर्व खाना नहीं खाया*) लूत के पास आया (लूत*) - - -।"

५.११/८१: "(द मेसेंजर्स (स्वर्गदूतों)
अल्लाह*)) ने कहा: हे लूत (लूत*)! हम
तेरे रब के दूत!"

6. 19/17b: "- - - हम (अल्लाह*) ने उसे हमारे पास भेजा
परी (एकवचन - उसे यह बताने के लिए कि वह जा रही थी
बच्चा यीशु* है), और वह पहले प्रकट हुआ
उसे हर तरह से एक आदमी के रूप में। "

7. 19/19: "उसने (स्वर्गदूत*) ने कहा: 'नहीं, मैं ही हूँ
आपके (मैरी के *) भगवान से एक दूत - - -"।

8. 22//75: "अल्लाह दोनों में से रसूल चुनता है"
स्वर्गदूतों और पुरुषों से - - -"।

ठीक है, 3/42 - 6/130 - 11/69 - 11/77 - 11/81- 19/17b - 19/19 - 22/75 सभी कहते हैं कि सभी नहीं थे
पुरुष। 12/109 - 16/43 - 21/7 - 25/20 के लिए एक अच्छा सा विरोधाभास जो सभी दूत कहते हैं
पुरुष थे।

(8 विरोधाभास)।

१८८ २१/३०: "हम (अल्लाह*) पानी से बने (एनबी: "पानी से", "पानी में" नहीं *) हर जीवित
चीज़।" पानी से बनी एक भी जीवित चीज मौजूद नहीं है। प्राणी हैं
यह लगभग ९८% पानी है, लेकिन यह अधिकतम है। सामान्य लगभग 70% भिन्न हो सकता है, लेकिन
मार्जिन चौड़ा है। इसके अलावा: यह 6/2, 7/12, 17/61, 32/7, 38/71, और 38/76 द्वारा खंडित है
जो बताओ आदमी/एडम मिट्टी से बना था, 15/26, 15/26, और 15/33 जो बताता है कि आदमी/एडम था
बजती हुई मिट्टी से बना, ५५/१४ जो बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, ३७/११ कि
बताता है कि आदमी/एडम चिपचिपी मिट्टी से बना था, 23/12, जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था
मिट्टी का सार, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५,
३५/११, ४०/६७, जो बताता है कि मनुष्य/एडम धूल से बना था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/एडम बनाया गया था
पृथ्वी से, ९६/२ जो बताता है कि मनुष्य/एडम जमा हुए रक्त के थक्के से बना था, १६/४, ७५/३७,
७६/२, ८०/१९, जो बताता है कि आदमी/एडम वीर्य से बना था (बिना यह बताए कि
वीर्य आया), 70/39 जो बताता है कि मनुष्य/एडम "आधार सामग्री" से बना था। (यह भी देखें पद 6/2
कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्याय में।) (इस विरोधाभास को कड़ाई से माना २८
अन्य श्लोक। और यहां न्यूनतम 28 विरोधाभास हैं।)

१८९ २१/७६: "हमने (अल्लाह*) ने उसकी (नूह की *) (प्रार्थना) सुनी और उसे और उसके परिवार को छुड़ाया
बड़े संकट से (= अल्लाह ने नूह के परिवार को बाढ़ से बचाया*)"। परंतु:

१.११/४३: "- - - और पुत्र (नूह* का) था
जलप्रलय में डूबे लोगों के बीच।"
नूह के सिर्फ 3 बेटे थे, शेम, हाम और
येपेथ - 1. मो. 7/13, और विरोधाभासी नहीं
कुरान द्वारा - और उसने उनमें से एक को खो दिया। में
इसके अलावा यह अन्य जगह से स्पष्ट है
कुरान कि उसकी पत्नी भी नर्क में समाप्त हुई। अर्थात्
नहीं "नूह के परिवार को बचाया"। (बाइबल में
नूह ने कोई पुत्र नहीं खोया।)

00f 21/98: "वास्तव में तुम, (अविश्वासियों), और (झूठे) देवताओं को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो,
(लेकिन) नरक के लिए ईंधन!" लेकिन ईसाइयों के लिए यीशु को एक झूठे देवता के रूप में पुन: स्थापित किया गया है, और फलस्वरूप
इसका खंडन किया जाता है:

१. ४/१५८: "नहीं, अल्लाह ने उसे (यीशु*) तक उठाया
स्वयं (स्वर्ग में*) - - -।"

तो यीशु नर्क के लिए ईंधन नहीं थे?

१९० २१/१०७: "हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) नहीं, बल्कि सभी प्राणियों पर दया करने के लिए भेजा है।"

[illegible] - महिलाओं के बारे में छंद,
कानून, गुलामी, एक बड़े हिस्से में अमानवीय नैतिक और नैतिक कोडेक्स का उल्लेख नहीं करना। यह श्लोक
कम से कम इन छंदों के द्वारा विरोधाभासी और अक्सर "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८,
4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३, ९/२९,
9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह शामिल हैं
या राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की अनुमति देना (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ)
यदि आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,
33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

१९१ २१/११२: "(अल्लाह*) वह है जिसकी ईशनिंदा के खिलाफ मदद मांगी जानी चाहिए।"
खैर, वह ६२१ (?) ई. में था। ६२२ ईस्वी के बाद तलवार आसान हो गई - ईशनिंदा जल्द ही ले ली गई

एक मौत की सजा - - - और कई विरोधाभासी ग्रंथ आए। यह श्लोक विरोधाभासी है
और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार" दिया जाता है: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३,
5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73,
9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देने वाले या शामिल हैं
अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि
आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,
33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

१९२ २२/५: "- - - हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मनुष्य*) को धूल से, फिर शुक्राणु से बनाया - - -"। अल्लाह
मनुष्य/एडम को धूल से और बाद में मनुष्यों को शुक्राणुओं से बनाया (+ एक अंडा कोशिका प्रत्येक - जो
मुहम्मद इसके बारे में कुछ नहीं जानते थे - लेकिन एक भगवान को पता था)। लेकिन तथ्य को छोड़ कर भी
आदम कभी नहीं था, जैसा कि मनुष्य ने पहले के प्राइमेट से विकसित किया था, वहाँ कई हैं
कुरान में उनकी रचना के बारे में विरोधाभास: यह 6/2, 7/12, 17/61, 32/7 द्वारा खंडित है,
38/71, और 38/76 जो बताते हैं कि मनुष्य/एडम मिट्टी से बना था, 15/26, 15/26, और 15/33 जो बताते हैं
आदमी/आदम बजती मिट्टी से बना था, 55/14 जो बताता है कि आदमी/एडम बजने से बना था
मिट्टी, 37/11 जो बताती है कि आदमी/एडम चिपचिपी मिट्टी से बना था, 23/12, जो बताता है कि आदमी/एडम था
मिट्टी के सार से बना, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था,
२०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, ९६/२ जो बताता है कि मनुष्य/आदम a . से बना था
जमा हुआ खून का थक्का, 16/4, 75/37, 76/2, 80/19, बता दें कि आदमी/एडम वीर्य से बना था
(बिना बताए कि वीर्य कहाँ से आया), २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो मनुष्य/एडम को बताते हैं
पानी से बनाया गया था (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि पानी से!), 70/39 जो आदमी/एडम को बताता है
"आधार सामग्री" से बनाया गया था। (अध्याय में १०००+ गलतियों के बारे में छंद ६/२ भी देखें
कुरान में।) (कड़ाई से इसे 27 अन्य छंदों के विपरीत माना जाता है। लेकिन न्यूनतम 11
विरोधाभास।)

१९३ २२/२३: "--- वे (स्वर्ग के मुसलमान*) सोने के कंगनों से अलंकृत होंगे और
मोती - - -।" बहुत बढ़िया - सिवाय इसके कि:

१.१८/३१: "- - - वे (स्वर्ग में मुसलमान*)
वह उसमें सोने के कंगनों से अलंकृत होगा
- - -"।
२.७६/२१: "--- वे (मुस्लिम जन्नत में*)
चाँदी के कंगनों से अलंकृत होंगे - - -।"

एक मामूली, लेकिन स्पष्ट विरोधाभास। 1 या 2 इस पर निर्भर करता है कि आप कितनी सख्ती से निर्णय लेते हैं।

194 22/25: "- - - पवित्र मस्जिद (मक्का में काबा*), जिसे हमने (अल्लाह*) बनाया है
(खुला) से (सभी) पुरुषों - - -।" यह सबसे ठोस विरोधाभासी और निरस्त छंदों में से एक है
सभी कुरान। यह लगभग 632 ईस्वी से गैर-मुसलमानों के लिए प्रतिबंधित था। आज मौत है
किसी भी गैर-मुसलमान के लिए न केवल काबा, बल्कि कई किलोमीटर के आसपास के क्षेत्र में प्रवेश करने का दंड
यह।

195 22/47: "वास्तव में, आपके भगवान (अल्लाह *) की दृष्टि में एक दिन आपके एक हजार वर्ष के समान है
(लोगों'*) की गणना।" इसके विपरीत:

1. 70/4: "- - - उसे (अल्लाह*) एक दिन में
का माप (के रूप में) पचास हजार वर्ष है।"

१९६ २२/४९: "मैं (मुहम्मद*) आपको (पुरुषों*) केवल एक स्पष्ट चेतावनी देने के लिए (भेजा) हूँ - -।"
खैर यह सीए था। 616 ई. लेकिन लगभग ६ साल बाद यह केवल एक चेतावनी नहीं रह गई थी,

लेकिन तलवार - - - और ग्रंथों और शिक्षाओं में बहुत सारे विरोधाभास और निरसन
इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है
कई लोगों को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति (तलवार के साथ)
पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

१९७२ २२/६८: "यदि वे ("काफिर") आपसे झगड़ा करते हैं, तो कहें। 'अल्लाह सबसे अच्छा जानता है कि तुम क्या हो' कर रहे हैं" - और उन्हें अकेला छोड़ दें। यह सीए था। 616 ई. लेकिन कुछ ६ साल बाद और उससे भी ज्यादा समय से
बहुत सारे विरोधाभास और निरसन आए। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर at . द्वारा "मार डाला" जाता है
कम से कम ये श्लोक: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/ 38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25 /52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं।
आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a
यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है
2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

१९८ २२/७५: "अल्लाह दूतों को कोणों से और पुरुषों से - - - चुनता है।" लेकिन जिन्न से नहीं।
इसके विपरीत:

> १.६/१३०: "हे जिन्नों और मनुष्यों की सभा!
> वहाँ के दूत तुम्हारे पास नहीं आए
> आप के बीच - - -?" एक बयानबाजी का सवाल
> पुरुषों की ओर से दूत आए
> पुरुष, और जिन्न से लेकर जिन्न तक। से ही नहीं
> देवदूत और पुरुष।

१९९९ २३/१२: "मनुष्य ने (अल्लाह*) को सर्वोत्कृष्टता (मिट्टी से) से बनाया है।" यह विरोधाभासी है
६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४ जो बताता है
आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम चिपचिपे से बना था
मिट्टी, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५, ३५/११, ४०/६७, जो बताता है कि मनुष्य/आदम धूल से बना था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम से बना था
पृथ्वी, ९६/२ जो बताता है कि मनुष्य/एडम जमा रक्त के थक्के से बना था, १६/४, ७५/३७, ७६/२, 80/19, बता दें कि आदमी/एडम वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया है)
आया), २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो बताता है कि आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! में नहीं
पानी, लेकिन पानी से!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम "आधार सामग्री" से बना था। (और देखें
कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्यायों में छंद ६/२।) (इस पर सख्ती से विचार करें
29 अन्य श्लोकों का खंडन करता है। लेकिन कम से कम 11 विरोधाभास।)

२०० २३/५४: "लेकिन उन्हें ("काफिर" *) उनकी भ्रमित अज्ञानता में एक समय के लिए छोड़ दें। यह में था
६२१ या ६२२ ईस्वी, कुछ समय पहले उनकी - मुहम्मद की - मदीना के लिए उड़ान। जब उन्होंने करना शुरू किया
पर्याप्त रूप से सैन्य बनें, उन्हें अकेला छोड़ कर समाप्त हो गया - और बहुत कुछ
शिक्षाओं और धर्म में विरोधाभास और निरसन - शांति से अमानवीयता की ओर
और युद्ध। इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह देने या अनुमति देने वाली कई बाध्यताएं शामिल हैं (के साथ)
यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81,

5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२०१ २३/९६: "जो सबसे अच्छा है उसके साथ बुराई को दूर भगाएं"। बाद में यह बन गया: बुराई को बुराई से दूर करो - विरोध करो "काफिर" जैसे वे आपके खिलाफ करते हैं - कम से कम जब बुरी चीजों की बात आती है। आगे की टिप्पणियाँ ठीक ऊपर 23/54 के समान। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इनके द्वारा "मार डाला" जाता है श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८- ३९ (द चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२०२ २४/२: "स्त्री और पुरुष व्यभिचार के व्यभिचार के दोषी हैं - उनमें से प्रत्येक को कोड़े मारें एक सौ धारियाँ "। एक विरोधाभास और ४/१५ का निरसन:

> १.४/१५: "यदि आपकी कोई महिला दोषी है"
> अशिष्टता (व्यभिचार*) - - - उन्हें सीमित करें घर जब तक मौत का दावा करते हैं, या अल्लाह का दावा करते हैं उनके लिए कोई (अन्य) रास्ता तय करें"। (अंतिम वाक्य के भाग को a . के रूप में समझा जाना चाहिए "रास्ता" विशेष रूप से प्रत्येक महिला के लिए पैमाइश किया गया जिसे ऐसा "आदेश" मिलता है।) लेकिन विरोधाभास
> - और निरसन - 1-2 साल बाद - 627 या . में 628 ई.

यह भी जोड़ा जाना चाहिए कि इस्लाम में लगातार अफवाह है कि लगभग 100 छंद खलीफा उस्मान के पास आधिकारिक कुरान होने पर गायब हो गया और इसे कुरान में कभी नहीं बनाया गया बनाया, और वह छंदों में से एक था जिसने इस अपराध के लिए पत्थर मारने की मांग की थी। तथ्य यह है कि इसके लिए पत्थर मारना हदीस में निर्धारित है, और हदीस (अल-बुखारी) बताती है कि कम से कम एक बार ऐसे पत्थरबाजी में खुद मुहम्मद ने हिस्सा लिया था।

२०३ २४/४५: "अल्लाह ने हर जानवर (मनुष्य भी एक जानवर*) से पैदा किया है (में नहीं, बल्कि * से) पानी - - -।" जैसा कि पहले कहा गया है: एक भी जीवित प्राणी पानी से नहीं बना है - इसमें शामिल है a पानी का प्रतिशत छोटा हो या बड़ा, लेकिन पानी से कोई जीवाणु भी नहीं बनता। ये है ६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम से बना था मिट्टी, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताती है कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४ बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५, ३५/११, ४०/६७, जो मनुष्य/एडम को बताता है धूल से बनाया गया था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, ९६/२ जो बताता है आदमी/एडम जमा खून के थक्के से बना था, 16/4, 75/37, 76/2, 80/19, जो बताता है आदमी/एडम वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया), 70/39 जो बताता है कि मनुष्य/एडम को "आधार सामग्री" से बनाया गया था। (इसके बारे में अध्यायों में ६/२ पद भी देखें कुरान में 1000+ गलतियाँ।) (कड़ाई से माना जाता है कि यह 28 अन्य छंदों का खंडन करता है। और यहां न्यूनतम 28 विरोधाभास हैं।)

२०४ २४/५४: "- - - यदि तुम (लोग*) मुंह मोड़ो (मुहम्मद* से), तो वह केवल इसके लिए जिम्मेदार है उस पर कर्तव्य और उस स्थान के लिए तुम पर। कम से कम 9/5 . द्वारा विरोधाभासी और निरस्त वास्तव में: इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३,

3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह देने या अनुमति देने वाली कई बाध्यताएं शामिल हैं (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२०५ २५/२०: "और जिन रसूलों को हमने (अल्लाह*) ने तुमसे पहले भेजा, वे सब (मनुष्य) - - - थे।

खैर: उस मामले में ये गलत हैं - या विरोधाभास:

१.३/४२: "निहारना स्वर्गदूतों (बहुवचन*) ने कहा (जब
वे मरियम को यह बताने आए थे कि वह होने वाली है
बेबी जीसस*)"।
२. ६/१३०: "हे जिन्नों और मनुष्यों की सभा!
वहाँ तुम्हारे पास दूत नहीं आए
हम, अल्लाह*) आप में से - - -।" ए
"हां" के जवाब की मांग करते हुए बयानबाजी का सवाल
- हाँ, अल्लाह की ओर से जिन रसूल आए
जिन्न के लिए, और मानव दूत से
इंसानों को अल्लाह।
3. 11/69: "वहाँ हमारे (अल्लाह का) आया
इब्राहीम के संदेशवाहक - - -"। से स्पष्ट है
निम्नलिखित छंद कि इन दूतों
देवदूत थे।
4. 11/77: "जब हमारे (अल्लाह के) रसूल (इति)
पाठ से स्पष्ट है कि वे कोण थे - वे
एफ। पूर्व खाना नहीं खाया*) लूत के पास आया (लूत*) - - -।"
५.११/८१: "(द मेसेंजर्स (स्वर्गदूतों)
अल्लाह*)) ने कहा: हे लूत (लूत*)! हम
तेरे रब के दूत!"
6. 19/17b: "- - - हम (अल्लाह*) ने उसे हमारे पास भेजा
परी (एकवचन - मैरी को यह बताने के लिए कि वह जा रही थी
बच्चा यीशु* के लिए), और वह प्रकट हुआ
उसके सामने हर तरह से एक आदमी के रूप में। "
7. 19/19: "उसने (स्वर्गदूत*) ने कहा: 'नहीं, मैं ही हूँ
आपके (मैरी के *) भगवान से एक दूत - - -"।
8. 22//75: "अल्लाह दोनों में से रसूल चुनता है"
स्वर्गदूतों और पुरुषों से - - -"।

ठीक है, 3/42 - 6/130 - 11/69 - 11/77 - 11/81- 19/17b - 19/19 - 22/75 सभी कहते हैं कि सभी नहीं थे
पुरुष। 12/109 - 16/43 - 21/7 - 25/20 के लिए एक अच्छा सा विरोधाभास जो सभी दूत कहते हैं
पुरुष थे।

(8 विरोधाभास)।

206 25/36: "'तुम दोनों (मूसा और हारून*) उन लोगों के पास जाओ, जिन्होंने हमारी निशानियों को ठुकरा दिया है।' और
उन (लोगों को) हमने (अल्लाह*) पूरी तरह से नष्ट कर दिया।" एक स्पष्ट संदेश यह श्लोक
कम से कम इन छंदों के विरोधाभास (और निरस्त) (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 हैं)
9/5 द्वारा निरस्त कर दिए गए हैं): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5 /48,

5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/ ६१, ९/६८,
१०/४१, १०/९९, १०/१०२, १०/१०८, ११/१२, ११/१२१, १३/४०, १५/३, १५/९४, १६/३५, १६/८२, १६/१२५,
16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54,
23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/ २४ए,
36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/ १३५बी,
46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45,
86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 91 विरोधाभास)।

२०७ २५/५२: "इसलिये अविश्वासियों की न सुनो, वरन उनके विरुद्ध यत्न करने का प्रयत्न करो
ज़ोरदारता, (कुरान) के साथ"। जैसा कि आप देखते हैं: जब आप प्रयास करते हैं तो धर्म शामिल नहीं होता है
"काफिरों" के खिलाफ। यह पद कम से कम इन छंदों का खंडन करता है (और निरस्त करता है) (यहाँ 88 . हैं)
१२४ मुस्लिम विद्वानों में से कहते हैं कि ९/५ द्वारा निरस्त कर दिया गया है: २/१०९, २/१९०, २/२५६, २/२७२, ३/२०,
4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/ ११२, ६/१५८, ७/८७,
7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/ ३,
15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107,
21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/ 30,

34/25, 34/28, 35/23, 35/24 ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/ 59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 91 विरोधाभास)।

२०८ २५/५४: "वह (अल्लाह*) है जिसने मनुष्य को पानी से पैदा किया - - -।" एक बात जो बिल्कुल ज़रूर, क्या वह आदमी पानी से नहीं बना है। एक और बात जो निश्चित है, वह यह है कि मुहम्मद ने उन्होंने अपनी कहानियों में बहुत विरोधाभास किया कि कैसे मनुष्य - और बाकी को भी - बनाया गया था।

यह ६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम बनाया गया था मिट्टी से, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४ जो बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५, ३५/११, ४०/६७, जो मनुष्य/एडम को बताता है धूल से बनाया गया था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, ९६/२ जो बताता है आदमी/एडम जमा खून के थक्के से बना था, 16/4, 75/37, 76/2, 80/19, जो बताता है आदमी/एडम वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया), 70/39 जो बताता है कि मनुष्य/एडम को "आधार सामग्री" से बनाया गया था। (अध्याय में ६/२ पद भी देखें कुरान में 1000+ गलतियाँ।) (कड़ाई से माना जाता है कि यह 28 अन्य छंदों का खंडन करता है। और यहां न्यूनतम 28 विरोधाभास हैं।)

२०९ २५/५९: "वह (अल्लाह*) जिसने आकाश (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी और सभी को बनाया यानी छह दिनों में - - -।" जब के निर्माण की बात आती है तो कुरान पूरी तरह से गलत है ब्रह्मांड और सब कुछ - इसे अब तक 13.7 बिलियन वर्ष लगे हैं। वह एक तरफ: यह श्लोक इसके साथ विरोधाभास:

1. 41/9-12: ये आयतें बताती हैं कि अल्लाह ने 2+ 4 + 2 दिन = 8 दिन सब कुछ बनाने के लिए। (मुसलमान यह बताने की कोशिश करते हैं कि पहले 2 दिन हैं 4 दिनों में शामिल है, लेकिन अभी इसे पढ़ें स्वयं और देखें - वे आपसे क्या चाहते हैं विश्वास वह नहीं है जो कुरान कहता है। इसे कहते हैं बहुत स्पष्ट रूप से एक काम के लिए २ दिन, अगले के लिए ४ दिन, और 2 पिछले = 8 दिनों के लिए। कुछ चाहते भी हैं

तुम उस दिन को अरब में मानना = कल्प। के लिए एक बात यह सही अनुवाद नहीं है, और दूसरे के लिए 2/117 पढ़ें और देखें कि क्या अल्लाह को चाहिए ६-८ युगों की आवश्यकता है।)

२१० २६/२१६: "मैं (मुहम्मद*) जो कुछ तुम ("काफिर"*) करते हो, उसके लिए (जिम्मेदारी से) मुक्त हूँ!" इस मक्का सीए में था। 615 - 616 ई. ६२२ ईस्वी के बाद स्वर तेजी से और अधिक अमित्र हो गया जब वह सैन्य मजबूत हुआ - और शिक्षाओं को युद्ध धर्म में फिट होने के लिए कुछ "समायोजन" की आवश्यकता थी = विरोधाभास और निरसन: इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इनके द्वारा "मार डाला" जाता है श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८- ३९ (द चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२११ २७/९१: "मेरे लिए, मुझे (मुहम्मद*) को आज्ञा दी गई है कि मैं यह शहर (यह ६१५ या ६१६ ईस्वी = मक्का* में था) - - -।" एक बार फिर अल्लाह या मुहम्मद ने कुछ भूल गए: यह मुहम्मद हैं जो बोल रहे हैं - बूढ़ी माँ की नकल से किताब (१३/३९), अल्लाह द्वारा पूजनीय और स्वर्ग से नीचे भेजी गई प्रति। असंभव। (NS अनुवादक पिकथल और दाऊद दोनों ने बहुत ही बेईमानी से "कहो" शब्द को छिपाने के लिए जोड़ा है विरोधाभास, लेकिन वह शब्द अरब पाठ में नहीं है, इब्न वार्राक के अनुसार: "मैं एक क्यों नहीं हूं मुस्लिम", पृ.175.)

२१२ २७/९२: "मैं (मुहम्मद) केवल एक चेतावनी हूँ"। वह 615 - 616 ईस्वी में था। 622 से वह उपवास

एक बलवान, सरदार और तानाशाह बन गया - और शास्त्रों ने विरोधाभास बना दिया और
निरसन मुहम्मद के सैन्य मजबूत होने पर बहुत कुछ निरस्त और खण्डन किया गया था
६२२ ईस्वी के बाद और धर्म को युद्ध और डकैती और विजय में बदल दिया गया।" इस
कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार" दिया जाता है: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85,
3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14,
9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है
कई लोगों को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति (तलवार के साथ)
पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73,
9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२१३ २८/४०: "तो हम (अल्लाह*) ने उसे (फिरौन*) और उसकी सेना को आकार दिया, और उन्हें समुद्र में फेंक दिया:
अब देखो, उन लोगों का अन्त क्या हुआ जिन्होंने कुटिलता की थी!" खैर, एक बात यह है कि के अनुसार
बाइबल, उन्हें समुद्र में नहीं बहाया गया था। लेकिन यहाँ अधिक आवश्यक है यह विरोधाभास:

1. 19/92: "आज का दिन (उसी दिन 28/40*) क्या हम (अल्लाह*) तुझे बचायेंगे (फिरौन रामसेस II*) शरीर में - - -।" "शरीर को बचाओ" नहीं जैसे कई मुसलमान जोर देना पसंद करते हैं, लेकिन "में" तन"।

२१४ २८/४६: "फिर भी (क्या तू (मूसा*) ने भेजा है) अपने भगवान से दया के रूप में (अल्लाह के अनुसार
कुरान), लोगों को चेतावनी देने के लिए (इस्लाम के अनुसार अरब *) जिनके लिए कोई चेतावनी देने वाला नहीं था
तुम्हारे सामने आओ - - -।" हम आपको याद दिलाते हैं कि यदि मूसा जीवित रहा होता, तो वह लगभग 1300 - 1200 . रहता था
ई.पू. (यदि यह सही है कि निर्गमन १२३५ ईसा पूर्व का था, और मूसा अगले ४० वर्षों तक जीवित रहा, तो उसने

सीए मर गया 1195 ई.पू. इस्लाम चाहता है कि वह कुछ समय पहले जिए- जाने-माने लोगों से दूर हो जाए
फिरौन जो डूबे नहीं - लेकिन वे भी 1500+ ईसा पूर्व में रुक गए) विरोधाभास:

१.२/१२५-१२९: ये आयतें मुसलमानों को याद दिलाती हैं उसके बारे में कुरान के अनुसार दोनों इब्राहीम और इश्माएल रहते थे और काम करते थे मक्का (= मूसा से बहुत पहले अरबों के बीच)- और दोनों भविष्यद्वक्ता और दूत थे, फिर भी कुरान के अनुसार। लेकिन के अनुसार विज्ञान: यदि इब्राहीम कभी जीवित रहा है, तो उसने प्रेम किया कुछ 2000 - 1800 ईसा पूर्व - जिसका अर्थ है मूसा से सदियों पहले अरब में चेतावनी देने वाले।
२. १०/४७: "हर लोगों के लिए (भेजा गया) a दूत - - -।" होमो सेपियन्स - जिसे भी कहा जाता है आधुनिक मनुष्य - पूर्व में सबसे अधिक विकसित होने की संभावना है अफ्रीका लगभग 160ooo - 200oo साल पहले, और पार - और कब्जा कर लिया - भूमि पुल अफ्रीका और एशिया के बीच (= मध्य पूर्व) लगभग 100ooo साल पहले। अगर हर लोग संदेशवाहक मिल गए, वह कैसे आया सिनाई/अरब/आदि। लगभग के लिए एक नहीं मिला था 100ooo वर्ष - मूसा तक नहीं लगभग 3300 बहुत साल पहले? (- या अब्राहम 4000 वर्ष का हो सकता है पहले?)
३. १६/३६: "क्योंकि हम (अल्लाह*) ने निश्चय भेजा है हर लोगों के बीच एक दूत। " देखो 10/47 ठीक ऊपर।
४. ३५/२४: "- - - और कभी कोई लोग नहीं थे, उनके बीच रहने वाले चेतावनी के बिना (भूतकाल में)।" एक बहुत ही स्पष्ट विरोधाभास।

इसके अलावा अरब में हुद और शुयाब नबी काम कर रहे थे, अगर हमारे पास है
इसे ठीक से समझा, नूह के बाद कुछ पीढ़ियों तक जीया - मूसा से बहुत पहले।

(न्यूनतम 6 विरोधाभास।)
२१५ २८/५०: लेकिन अगर वे ("काफिरों"*) आपकी (मुहम्मद*) नहीं सुनते हैं, तो जान लें कि वे केवल
अपनी वासनाओं का पालन करें - - -।" इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इनके द्वारा "मार डाला" जाता है
श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८- ३९ (द
चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,
35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

२१६ २८/५५: "हमें (मुसलमान*) हमारे कर्म, और तुम्हारे लिए ("काफिर"*) तुम्हारे; आपको शांति मिले - - -
।" मक्का ६२१ या ६२२ ईस्वी में मुहम्मद के प्राप्त होने के बाद की तुलना में कहीं अधिक शांतिपूर्ण स्वर था
६२२ - ६२४ ईस्वी से ताकत और डकैती, छापे और युद्ध के लिए अधिक उपयुक्त धर्म की आवश्यकता थी - और
यह अल्लाह से मिला (या वह अल्लाह था जो पहले से ज्यादा खून चाहता था?) - जिसके परिणामस्वरूप
पुरानी शिक्षाओं के साथ विरोधाभास और निरसन। यह श्लोक विरोधाभासी है और अक्सर

कम से कम इन छंदों से "मारे गए": 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73,
8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36,
25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२१७ २९/१८: "---- दूत का कर्तव्य केवल सार्वजनिक रूप से (और स्पष्ट रूप से) प्रचार करना है।" उतना अच्छा
मुहम्मद और अधिक शक्तिशाली हो गए, इसलिए स्थानीय लोगों को नियंत्रित करने की उनकी इच्छा भी हुई' और बाद में
अरबों का जीवन और धार्मिक विचार---बल और दण्ड एक लक्ष्य के साधन बन गए। साथ
धर्म में आवश्यक परिवर्तन, और विरोधाभासों और आवश्यक निरसन की तुलना में
मक्का में अधिक शांतिपूर्ण 12 साल। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम . द्वारा "मार डाला" जाता है
ये पद: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८ -39 (द
चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,
35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

२१८ २९/४६: "और किताब के लोगों के साथ विवाद मत करो - - -।" कोई टिप्पणी नहीं - लेकिन पढ़ें
9/29 और 9/5 एक बार फिर। इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है:
2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी),
8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६,
47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

२१९ ३१/२३: "परन्तु यदि कोई ईमान को ठुकराता है, तो उसका इनकार तुझे शोकित न करे।" लगता है अगर यह है
लगभग 8 - 10 साल बाद मुहम्मद के मजबूत होने पर विरोध किया और निरस्त कर दिया !! यह श्लोक
निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन श्लोकों द्वारा खण्डन किया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८,
3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14,
9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है
कई खूनी खतरे, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 28 निरसन)।

२२० ३२/३: "- - - आप (मुहम्मद*) ऐसे लोगों को चेतावनी दे सकते हैं जिनके पास कोई चेतावनी देने वाला नहीं आया है
आपके सामने - - -।" परंतु:

१.२/१२५-१२९: ये आयतें मुसलमानों को याद दिलाती हैं
उसके बारे में कुरान के अनुसार दोनों
इब्राहीम और इश्माएल रहते थे और काम करते थे

मक्का - और दोनों नबी थे और
दूत, अभी भी कुरान के अनुसार। परंतु
विज्ञान के अनुसार: यदि इब्राहीम ने कभी
रहते थे, वह लगभग 2000 - 1800 ईसा पूर्व रहते थे - जो
का अर्थ है मूसा से सदियों पहले, और सहस्राब्दी
मुहम्मद से पहले।

632

पेज ६३३

२. १०/४७: "हर लोगों के लिए (भेजा गया) a
दूत - - -।" होमो सेपियन्स - जिसे भी कहा जाता है
आधुनिक मनुष्य - पूर्व में सबसे अधिक विकसित होने की संभावना है
अफ्रीका लगभग 160ooo - 200oo साल पहले, और
पार - और कब्जा कर लिया - भूमि पुल
अफ्रीका और एशिया के बीच (= मध्य पूर्व)
100ooo साल पहले हो सकता है। अगर हर लोग
संदेशवाहक मिल गए, वह कैसे आया
सिनाई/अरब/आदि। लगभग के लिए एक नहीं मिला था
100ooo वर्ष - मूसा तक नहीं लगभग 3300
बहुत साल पहले?

३. १६/३६: "क्योंकि हम (अल्लाह*) ने निश्चय भेजा है
हर लोगों के बीच एक दूत। " देखो
10/47 ठीक ऊपर।

४. ३५/२४: "- - - और कभी कोई लोग नहीं थे,
उनके बीच रहने वाले चेतावनी के बिना
(भूतकाल में)।" एक बहुत ही स्पष्ट विरोधाभास।

इसके अलावा हुद और शुयाब नबी थे जो नूह के बाद कुछ पीढ़ियों तक जीवित रहे -
मूसा से पहले, मुहम्मद का उल्लेख नहीं करना।

(न्यूनतम 6 विरोधाभास।)

२२१ ३२/४: "यह अल्लाह है जिसने आकाशों (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी, और सभी को बनाया है"
उनके बीच छह दिनों में - - -।"

1. 41/9-12: ये आयतें बताती हैं कि अल्लाह ने 2+
4 + 2 दिन = 8 दिन सब कुछ बनाने के लिए।
(मुसलमान यह बताने की कोशिश करते हैं कि पहले 2 दिन हैं
4 दिनों में शामिल है, लेकिन अभी इसे पढ़ें
स्वयं और देखें - वे आपसे क्या चाहते हैं
विश्वास वह नहीं है जो कुरान कहता है। इसे कहते हैं
बहुत स्पष्ट रूप से एक काम के लिए २ दिन, अगले के लिए ४ दिन,
और 2 पिछले = 8 दिनों के लिए। कुछ चाहते भी हैं
तुम उस दिन को अरब में मानना = कल्प। के लिए
एक बात यह सही अनुवाद नहीं है, और
दूसरे के लिए 2/117 पढ़ें और देखें कि क्या अल्लाह को चाहिए
६-८ युगों की आवश्यकता है।)

२२२ ३२/४बी: "- - - तुम्हारे (मुसलमानों*) के पास उसके (अल्लाह*) के सिवा कोई नहीं है जो रक्षा करे या हस्तक्षेप करे (के लिए)
आप) - - -।" परंतु:

१.९/७१: "विश्वासियों, पुरुषों और महिलाओं, हैं
एक दूसरे के रक्षक - - -।" पुरुष और
महिलाएं शायद ही भगवान के समान लीग में हों
- लेकिन वे के अनुसार रक्षक हैं
कुरान.

२२३ ३२/५: "- - - एक दिन, वह स्थान जिसका (अ) आपकी गणना के एक हजार वर्ष होगा।"
परंतु:

1. 70/4: "- - - एक दिन में उसे (अल्लाह*) जिसका माप (अ) पचास हजार वर्ष है:" 50ooo . के बीच कुछ अंतर है साल और 1000 साल।

२२४ ३२/११: "द एंजल ऑफ डेथ (एकवचन* और जाहिर तौर पर एक नाम - बड़े अक्षर*) - - - होगा (विधिवत) अपनी आत्मा को ले लो - - -।" परंतु:

1. 39/42: "यह अल्लाह है जो आत्माओं को ले जाता है पुरुष) मृत्यु पर - - -।"
२.४७/२७: "--- फ़रिश्ते (बहुवचन*) अपना लेते हैं मृत्यु पर आत्माएं - - -।"

(२ विरोधाभास।)

२२५ ३२/३०: "तो उनसे दूर हो जाओ और प्रतीक्षा करो - - -।" जब मुहम्मद अधिक शक्तिशाली हो गए, थोड़ा इंतजार था। शेष अरब प्रायद्वीप मुख्य रूप से किसके द्वारा मुस्लिम बना दिया गया था? तलवार - और कुछ "उपहार" और लूटे गए धन के वादे - जिनमें से सभी ने बदलाव की मांग की धर्म में (या यह दूसरी तरफ था, एक भगवान द्वारा शुरू किया गया जिसने अपना मूल पाया धर्म पर्याप्त अच्छा नहीं था - या बहुत कम रक्त और मानवीय त्रासदी?) जिसके कारण इस्लाम के पुराने और नए संस्करण के बीच अंतर्विरोध - और स्वाभाविक रूप से निरसन भी। इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है कई लोगों को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति (तलवार के साथ) पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

00g 33/48: "और अविश्वासियों और कपटियों की (आज्ञा) न मानें, और न मानें उनकी झुंझलाहट, लेकिन अपना भरोसा अल्लाह पर रखो। " इसे सुकून देने वाली और उत्साहवर्धक बातचीत के रूप में देखा जा सकता है मुहम्मद के अनुयायियों को अभी भी मजबूत गैर-मुसलमानों के खिलाफ, या सलाह के रूप में बुरा न मानना गैर-मुसलमानों के अर्थ बहुत अधिक हैं और वे जो कुछ भी करते हैं उससे बहुत अधिक अपराध नहीं करते हैं कहा और किया। यदि यह मुसलमानों और गैर-मुसलमानों के बीच के संघर्ष को शांत करने के लिए है मदीना, यह इस तरह के अंतिम छंदों में से एक है, जैसा कि यह 627 ईस्वी में या थोड़ा बाद में आया था - के आसपास खैबर का आक्रमण और विस्मरण या कुछ समय बाद, (लेकिन के अंतिम प्रतीक से पहले सत्ता पर मुसलमानों का कब्जा; मक्का की विजय) - और कुछ कठोरतम से पहले "द वर्स ऑफ द स्वॉर्ड", 9/5 जैसे छंद, जो सबसे अधिक संभावना 631 ईस्वी में आए थे।

***२२६ ३३/६१: "वे (पाखंडी - पर्याप्त मुसलमान नहीं - या गैर-मुसलमान*) जब कभी वे पाए जाएं तो उन पर शाप दें, वे पकड़ लिए जाएंगे और मार डाले जाएंगे (दया के बिना)। अगर आप बहुत अच्छे मुसलमान नहीं हैं - और कभी-कभी अन्य - आपको बिना मारे मारे जाना है दया। सबसे स्पष्ट आदेश। केवल इसका उल्लेख न करें, क्योंकि प्रचार पंक्ति है: "The शांति का धर्म" और "धर्म में कोई मजबूरी नहीं"। यह कविता विरोधाभास (और निरस्त) कम से कम ये छंद (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 को 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/ 60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/ १०२, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/17, 39/41, 41/ 34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39,

50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6. वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 91 विरोधाभास)।

२२७ ३३/७३: (क्योंकि मनुष्य - अरबों - ने कुरान/इस्लाम का विश्वास ग्रहण किया -)
परिणाम यह हुआ कि अल्लाह को पाखंडियों, पुरुषों और महिलाओं, और अविश्वासियों, पुरुषों और
महिला - - -।" और मुसलमान अल्लाह की तरफ से काम करते हैं। यह कविता विरोधाभास (और निरस्त)
कम से कम ये छंद (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 को 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है):
2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/ 60, 6/66, 6/70,
6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/ १०२,
10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54,
18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216,
27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/17, 39/41, 41/ 34,
42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39,
50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6.
वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 91 विरोधाभास)।

२२८ ३४/२३: "उसकी (अल्लाह की *) उपस्थिति (= कयामत का दिन) में कोई भी सिफ़ारिश नहीं हो सकती, सिवाय इसके कि
उनके लिए जिनके लिए उसने इजाज़त दी है।" अनुमति के साथ ठीक है।

१. २//१२३: "(वह दिन (कयामत का) जब) एक आत्मा
दूसरे का लाभ नहीं उठाएंगे - - - और न ही करेंगे
हिमायत उसे (आत्मा*) लाभ - - -।" एक
पूर्ण कानून: कोई मध्यस्थता संभव नहीं है।
२.२/२५४: "--- दिन से पहले (कयामत के*)
तब आता है जब कोई सौदेबाजी नहीं होगी (लाभ होगा), न ही
दोस्ती, न हिमायत।" हिमायत है
असंभव।
३. ६/५१: "- - - उन्हें (निर्णय) में लाया जाएगा
(= कयामत का दिन*)) अपने रब के सामने
(अल्लाह*) : उसके सिवा उनके पास नहीं होगा
रक्षक और न ही मध्यस्थ - - -।"
४.८२/१९: "(यह होगा) वह दिन (कयामत का) जब
किसी भी आत्मा के पास (करने की) शक्ति नहीं होनी चाहिए
एक और - - -।"

अनुमति के बारे में कोई सवाल नहीं - बस असंभव।

(४ विरोधाभास)।

२२९ ३४/२५: "तुम ("काफिरों") से हमारे पापों के बारे में सवाल नहीं किया जाएगा, और न ही हमसे सवाल किया जाएगा
कि तुम क्या करते हो।" इसका मतलब कुछ ऐसा हो सकता है जैसे "हम जीना और जीने देना पसंद करते हैं" और था
कई और शांतिपूर्ण छंदों में से एक जो ख़ारिज हो गया - खंडन और निरस्त -
जब मुहम्मद ने अधिक शक्ति प्राप्त की (यह ca. या ६२२ ईस्वी के बाद थोड़ा सा है।) यह कविता है
कम से कम इन श्लोकों का खंडन किया और अक्सर "मार डाला": २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१,
4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33,
9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देने वाले या शामिल हैं
अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि
आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,
33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

635

पेज ६३६

२३० ३४/२८: "हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) नहीं भेजा, बल्कि एक सार्वभौमिक (मैसेंजर) के रूप में भेजा।
पुरुषों के लिए उन्हें खुशखबरी दे - - -। यह 620 ई. में था। 2 साल बाद उन्होंने धीरे-धीरे
अपने परिवेश को खुशखबरी के अलावा और भी बहुत कुछ दें। यह श्लोक विरोधाभासी है और अक्सर
कम से कम इन छंदों से "मारे गए": 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73,
8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36,
25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२३१ ३४/४४: "- - - न उन्हें (मक्का में / आसपास गैर-मुसलमानों को भेजा - यह सूरा देर से है

मक्का काल*) आपके सामने (मुहम्मद*) दूतों को चेतावनी देने वाले के रूप में। विरोधाभास:

१.२/१२५-१२९: ये आयतें मुसलमानों को याद दिलाती हैं
उसके बारे में कुरान के अनुसार दोनों
इब्राहीम और इश्माएल रहते थे और काम करते थे
मक्का - और दोनों नबी थे और
दूत, अभी भी कुरान के अनुसार। परंतु
विज्ञान के अनुसार: यदि इब्राहीम ने कभी
रहते थे, वह लगभग 2000 - 1800 ईसा पूर्व रहते थे - जो
मतलब सदियों और सहस्राब्दी पहले
मुहम्मद. हूद और सालिहो भी थे
और अन्य पहले अरब में काम कर रहे हैं
कुरान के अनुसार मुहम्मद।

२. १०/४७: "हर लोगों के लिए (भेजा गया) a
दूत - - -।" होमो सेपियन्स - जिसे भी कहा जाता है
आधुनिक मनुष्य - पूर्व में सबसे अधिक विकसित होने की संभावना है
अफ्रीका लगभग 160ooo - 200oo साल पहले, और
पार - और कब्जा कर लिया - भूमि पुल
अफ्रीका और एशिया के बीच (= मध्य पूर्व)
100ooo साल पहले के बाद नहीं (वर्ष हैं
बहस - ऐसे वैज्ञानिक मौजूद हैं जो कहते हैं कि मिन।
70ooo साल पहले)। अगर हर लोगों को मिल गया होता
संदेशवाहक, कैसे आते हैं कि सिनाई/अरब/आदि।
लगभग 100ooo वर्षों के लिए एक नहीं मिला था (या
60ooo+ साल, कुछ के रूप में कहें - हम नहीं करते हैं
जानिए क्या हुआ - 60ooo - 70ooo
(६४ooo?) साल पहले जिसने होमो सेपियन्स की शुरुआत की थी
सभ्यता की राह पर) - तब तक नहीं
इब्राहीम और इश्माएल - के अनुसार
मुहम्मद से लगभग २५०० साल पहले कुरान
पहले?

३. १६/३६: "क्योंकि हम (अल्लाह*) ने निश्चय भेजा है
हर लोगों के बीच एक दूत। " देखो
10/47 ठीक ऊपर।

४. ३५/२४: "- - - और कभी कोई लोग नहीं थे,
उनके बीच रहने वाले चेतावनी के बिना
(भूतकाल में)।" एक बहुत ही स्पष्ट विरोधाभास।

६३६

पेज ६३७

इसके अलावा हुद और शुयाब नबी थे कि अगर हमने इसे सही ढंग से समझा है, तो जीवित रहें
नूह के बाद कुछ पीढ़ी, परन्तु मूसा से पहले।

(न्यूनतम 6 विरोधाभास।)

२३२ ३४/५०: "अगर मैं (मुहम्मद *) भटक जाता हूं, तो मैं केवल अपनी आत्मा की हानि के लिए भटक जाता हूं - - -।"
**कम से कम 9. सत्ता के लिए गलत (क्योंकि एक अरब मुसलमानों से बेहतर हैं - या 10.
शक्ति या अधिक यदि आप समय के अनुसार मानते हैं)। यदि मुहम्मद पथभ्रष्ट थे -
सभी विश्वास करने वाले मुसलमान गुमराह हैं - और सभी गलत तथ्य, विरोधाभास, अमान्य
तर्क, आदि, एक अशुभ कहानी बताओ।**

00h 35/11: इस बात का कोई संकेत नहीं है कि यह अल्लाह ही कह रहा है। क्या यह मुहम्मद है
एक बार फिर खुद को मदर बुक में बोल रहे हैं?

२३३ ३५/२३: "तू (मुहम्मद*) कोई और नहीं बल्कि चेतावनी देने वाला है।" खैर, लगभग ६१५ - ६१६ ई
हो सकता है बस इतना ही। लेकिन बाद में यह बदल गया - एक चेतावनी देने वाले से एक प्रवर्तक और एक डाकू बैरन में।
धर्म के संगत परिवर्तनों के साथ - और निरसन और अंतर्विरोधों के साथ
पुरानी कहावतें, इस तरह। इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है:
2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी),
8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६,
47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।

मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

२३४ ३५/२४अ: "वास्तव में हम (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) वास्तव में खुशी के वाहक के रूप में भेजा है समाचार और एक चेतावनी के रूप में - - -।" जहाँ तक ख़ुशख़बरी की बात है, वह केवल मुसलमानों के लिए है, और दूर के लिए उन सब से भी। लेकिन उसके लिए: इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम . द्वारा "मार डाला" जाता है ये पद: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८ -39 (द चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

२३५ ३५/२४बी: "- - - कोई भी लोग नहीं थे, बिना चेतावनी देने वाले उनके बीच रहते थे (में भूतकाल)।"

१.२८/४६: "फिर भी (क्या तू (मुहम्मद*) भेजा गया है) जैसा अपने भगवान से एक दया (के अनुसार) कुरान = अल्लाह*) लोगों को चेतावनी देने के लिए जिसके लिए कोई चेतावनी देने वाला (= नबी, दूत*) पहले आया था - - -।" कोई दूत नहीं था उनके पास था, भले ही "हर लोग" के पास था था।
२. ३२/३: "नहीं, यह आपकी ओर से सत्य है" (मुहम्मद*) रब (अल्लाह*), कि तू उन लोगों को सलाह दे सकते हैं जिनके लिए नहीं चेतावनी देने वाला तुम्हारे सामने आया है - - -।"

६३७

पेज ६३८

3. 34/44: "लेकिन हम (अल्लाह*) ने उन्हें नहीं दिया था (अरब"*) किताबें जिनका वे अध्ययन कर सकते थे, न ही तेरे आगे उनके पास दूत भेजे (मुहम्मद*) - - -।"
4. 36/6: "ताकि तू (मुहम्मद*) लोगों को (अरब*) जिनके बापों को कोई नसीहत नहीं मिली थी-- -।"

कौन सा श्लोक गलत है/हैं?

(४ विरोधाभास)।

२३६ ३५/३६: "लेकिन जो लोग (अल्लाह) को अस्वीकार करते हैं - उनके लिए नरक की आग होगी"। बिल्कुल नहीं सतह पर मजबूरी, लेकिन कम से कम एक स्पष्ट खतरा। हम इसे शामिल करते हैं क्योंकि यह ख़तरा है बार-बार दोहराया जाता है, इसलिए यह किसी के लिए भी काफी मनोवैज्ञानिक मजबूरी बनाता है यकीन नहीं होता कि इस्लाम गलत है। यह कम से कम 2/256 के विपरीत है।

२३७ ३६/६: "- - - - आप (मुहम्मद *) ऐसे लोगों को चेतावनी दे सकते हैं, जिनके पिता को कोई नहीं मिला था नसीहत - - -।" = पहले कोई चेतावनी देने वाला/दूत नहीं था। परंतु:

१.२/१२५-१२९: ये आयतें मुसलमानों को याद दिलाती हैं उसके बारे में कुरान के अनुसार दोनों इब्राहीम और इश्माएल रहते थे और काम करते थे मक्का - और दोनों नबी थे और दूत, अभी भी कुरान के अनुसार। परंतु विज्ञान के अनुसार: यदि इब्राहीम ने कभी रहते थे, वह कुछ 2000 - 1800 ईसा पूर्व से प्यार करते थे - जिसका अर्थ है मूसा से सदियों पहले और मुहम्मद से पहले मिलेनिया

२. १०/४७: "हर लोगों के लिए (भेजा गया) a
दूत - - -।" होमो सेपियन्स - जिसे भी कहा जाता है
आधुनिक मनुष्य - पूर्व में सबसे अधिक विकसित होने की संभावना है
अफ्रीका लगभग 160ooo - 200oo साल पहले, और
पार - और कब्जा कर लिया - भूमि पुल
अफ्रीका और एशिया के बीच (= मध्य पूर्व)
100ooo साल पहले के बाद में नहीं (हालांकि कुछ
मिन कहो 70ooo वर्ष)। अगर हर लोग
संदेशवाहक मिल गए, वह कैसे आया
सिनाई/अरब/आदि। लगभग के लिए एक नहीं मिला था
100ooo वर्ष - मूसा तक नहीं लगभग 3300
बहुत साल पहले? और हुड और एक या दो अन्य
उसके सामने।

३. १६/३६: "क्योंकि हम (अल्लाह*) ने निश्चय भेजा है
हर लोगों के बीच एक दूत। ” देखो
10/47 ठीक ऊपर।

४. ३५/२४: "- - - और कभी कोई लोग नहीं थे,
उनके बीच रहने वाले चेतावनी के बिना
(भूतकाल में)।" एक बहुत ही स्पष्ट विरोधाभास।

इसके अलावा हुद और शुयाब नबी थे कि अगर हमने इसे सही ढंग से समझा है, तो जीवित रहें
नूह के बाद की कुछ पीढ़ियाँ - और मूसा से पहले।

(न्यूनतम 6 विरोधाभास।)

२३८ ३६/१७: "और स्पष्ट संदेश की घोषणा करना हमारा (मुहम्मद का) कर्तव्य है।" एक बार फिर
मक्का से कुछ (सीए। 615 - 616 ईस्वी), जो "तलवार की कविता" द्वारा "मारा गया" था
(९/५) और कई अन्य जब बाद में मुहम्मद भी बने - या फैसला किया कि वह भी
था - एक प्रवर्तक। इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: 2/191,
2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60,
9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/ 36, 47/4, 66/9।
इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह देने या अनुमति देने वाली कई बाध्यताएं शामिल हैं (के साथ
यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81,
5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29
विरोधाभास)।

२३९ ३७/११: "उन्हें (मनुष्य*) ने चिपचिपी मिट्टी से हमने (अल्लाह*) बनाया है।" लेकिन यह है
६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम से बना था
मिट्टी, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताती है कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४
बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 23/12, जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था
मिट्टी का सार, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५,
३५/११, ४०/६७, जो बताता है कि मनुष्य/एडम धूल से बना था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/एडम बनाया गया था
पृथ्वी से, ९६/२ जो बताता है कि मनुष्य/एडम जमा हुए रक्त के थक्के से बना था, १६/४, ७५/३७,
७६/२, ८०/१९, जो बताता है कि आदमी/एडम वीर्य से बना था (बिना यह बताए कि
वीर्य आया), २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो बताता है कि मनुष्य/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी!
पानी में नहीं, बल्कि पानी से!), 70/39 जो बताता है कि मनुष्य/एडम "आधार सामग्री" से बना था,
और इस मामले में सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख नहीं करना: १९/९ और १९/६७ जो दोनों यह बताते हैं कि
आदमी/एडम कुछ भी नहीं से बनाया गया था। (अध्याय में १०००+ . के बारे में पद ६/२ भी देखें
कुरान में गलतियाँ।) (कड़ाई से यह ३० अलग-अलग छंदों का खंडन करता है, लेकिन न्यूनतम
12 सुरक्षित विरोधाभास।)

२४० ३७/६६: "- - - वे (नरक में" काफिरों ") उसका खाएंगे (के घृणित फल)
ज़क़्क़ुम का पेड़ नर्क* में) और उनके पेट भरो।" लेकिन एक छोटा सा विरोधाभास है:

१.६९/३६: "न ही वह (नरक में "काफिर") किसी से नफरत करता है
धुलाई से भ्रष्टाचार को छोड़कर भोजन
घावों की"।

२.८८/६: "उनके लिए कोई भोजन नहीं होगा
"काफिर" नर्क में*) लेकिन एक कड़वी दारी (एक सूखी .)
सुइयों के साथ झाड़ी*) - - -।"

(२ विरोधाभास।)

२४१ ३७/४५: "लेकिन हमने (अल्लाह*) ने उसे (योना*) की स्थिति में नग्न किनारे पर फेंक दिया
बीमारी।"

१.६८/४९: "उसके (योना के *) अनुग्रह नहीं था
रब (अल्लाह*) उसके पास पहुँचा, वह सचमुच
एक नग्न किनारे पर फेंक दिया गया है, में

639

पेज 640

अपमान।" बिल्कुल 180 डिग्री
अंतर्विरोध।

२४२ ३७/१७४: "तो तुम (मुसलमानों/मुहम्मद*) को उनसे थोड़ी देर के लिए दूर कर दो---"।
यह लगभग 616 ई. आधा दर्जन साल बाद मुहम्मद ने धीरे-धीरे काम करना बंद कर दिया
उन लोगों से दूर जो उसे नहीं चाहते थे। यह श्लोक निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और
कम से कम इन श्लोकों का खंडन: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२,
8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36,
25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन छंद भी शामिल हैं
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह देना या अनुमति देना (तलवार के साथ)
पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23,
14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

२४३ ३७/१७८: ऊपर ३७/१७४ के समान।

२४४ ३८/७०: "केवल यह मुझे (मुहम्मद*) पर प्रकट किया गया है: कि मैं देने जा रहा हूँ
(शांतिपूर्ण*) स्पष्ट और सार्वजनिक रूप से चेतावनी"। यह लगभग ६१४-६१५ ईस्वी सन् का था। बाद की बातें
बदला हुआ: इस पद को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है:
2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39,
8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/ ७३, ३५/३६, ४७/४,
66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

२४५ ३८/७१: "मैं (अल्लाह*) मिट्टी से मनुष्य पैदा करने वाला हूँ"। ऊपर के 37/11 के समान। इस
६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खंडित है जो बताता है कि मनुष्य/एडम किससे बना था
मिट्टी, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताती है कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४
बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 23/12, जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था
मिट्टी का सार, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५,
३५/११, ४०/६७, जो बताता है कि मनुष्य/एडम धूल से बना था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/एडम बनाया गया था
पृथ्वी से, ९६/२ जो बताता है कि मनुष्य/एडम जमा हुए रक्त के थक्के से बना था, १६/४, ७५/३७,
७६/२, ८०/१९, जो बताता है कि आदमी/एडम वीर्य से बना था (बिना यह बताए कि
वीर्य आया), २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो बताता है कि मनुष्य/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी!
पानी में नहीं, बल्कि पानी से!), 70/39 जो बताता है कि मनुष्य/एडम "आधार सामग्री" से बना था,
और इस मामले में सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख नहीं करना: १९/९ और १९/६७ जो दोनों यह बताते हैं कि
आदमी/एडम कुछ भी नहीं से बनाया गया था। (अध्याय में १०००+ . के बारे में पद ६/२ भी देखें
कुरान में गलत तथ्य।) (कड़ाई से यह लगभग 30 अलग-अलग छंदों का खंडन करता है, लेकिन
न्यूनतम 12 निश्चित विरोधाभास।)

२४६ ३८/७६: "- - - उसे (मनुष्य/आदम*) तू (अल्लाह*) ने मिट्टी से बनाया है।" काफी हद तक 37/11 . के समान
के ऊपर। यह ६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो मनुष्य/एडम को बताता है
मिट्टी से बनाया गया था, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/एडम ध्वनि से बना था
मिट्टी, ५५/१४ जो बताती है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, २३/१२, जो बताता है कि आदमी/एडम था
मिट्टी के सार से बना, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था,
३/५९, २२/५, ३५/११, ४०/६७, जो बताता है कि मनुष्य/एडम धूल से बना था, २०/५५ जो मनुष्य/एडम को बताता है
पृथ्वी से बनाया गया था, 96/2 जो बताता है कि मनुष्य/एडम जमा हुए रक्त के थक्के से बना था,
१६/४, ७५/३७, ७६/२, ८०/१९, बता दें कि आदमी/एडम वीर्य से बना था (बिना बताए
जहां वीर्य आया था), २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम पानी से बना था

(एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि पानी से!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम "आधार" से बना था

सामग्री", और इस मामले में सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख नहीं करने के लिए: 19/9 और 19/67 जो दोनों बताते हैं कि मनुष्य/आदम कुछ भी नहीं से बनाया गया था। (इसके बारे में अध्यायों में ६/२ पद भी देखें कुरान में १०००+ गलतियाँ।) (कड़ाई से बोलने पर यह ३० अलग-अलग छंदों का खंडन करता है, लेकिन न्यूनतम 12 निश्चित विरोधाभास।)

२४७ ३९/१२ (संभवतः ६१५-६१७ ईस्वी): "और मैं (मुहम्मद*) को उनमें से पहला होने का आदेश दिया गया है। जो इस्लाम में अल्लाह को नमन करते हैं।" 6/14 देखें।

(कम से कम 6 विरोधाभास)।

२४८ ३९/१५: "तुम (गैर-मुसलमानों) की सेवा करो जो तुम उसके (अल्लाह*) के अलावा करना चाहते हो"। बस आप अंदाजा लगाइए कि अगर यह सीए से 615-617 ई. का खंडन किया गया और बाद में निरस्त कर दिया गया !! यह श्लोक निराकृत किया जाता है- अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

२४९ ३९/३९: "हे मेरे (अल्लाह या मुहम्मद के *) लोग ("काफिर" मक्का में ऐब ca.616-617 एडी*)! आप जो भी कर सकते हैं करें - - -"। इस दृष्टिकोण का 180 डिग्री परिवर्तन आधा था दर्जन साल बाद - अल्लाह ने अपना इरादा बदल दिया? यह श्लोक निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन श्लोकों का खंडन: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह देना या अनुमति देना (तलवार के साथ) पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

२५० ३९/४१: "न ही तू (मुहम्मद*) ने उन पर ("काफिरों") को उनके मामलों को निपटाने के लिए नियुक्त किया है। लेकिन ५-७ साल बाद, जब ६२२ ईस्वी से मुहम्मद ने सत्ता हासिल करना शुरू किया, तो वह बदल गया - वह एक पर्यवेक्षक, प्रवर्तक और डाकू व्यापारी बन गया - और बाद में एक सरदार - - - और नियम / धर्म बदलना पड़ा। या यह दूसरी तरफ था - कि यह अल्लाह ही था जिसने अपना विचार बदल दिया और अधिक अमानवीयता, अनैतिक कार्य और रक्त चाहते थे? वैसे भी परिणाम विरोधाभास था और पुराने की तुलना में निरस्तीकरण। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम . द्वारा "मार डाला" जाता है ये पद: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८ -39 (द चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२५१ ३९/४२: "यह अल्लाह है जो (मनुष्यों की) आत्माओं को मृत्यु पर ले जाता है - - -।"

1. 32/11: "द एंजल ऑफ डेथ (एकवचन* और .) स्पष्ट रूप से एक नाम - बड़े अक्षर*) - - - विल (विधिवत) अपनी आत्मा को ले लो - - -।" परंतु: २.४७/२७: "--- फ़रिश्ते (बहुवचन*) अपना लेते हैं मृत्यु पर आत्माएं - - -।"

(२ विरोधाभास।)

२५२ ४०/२५ फिरौन ने कहा: "जो उसके साथ विश्वास करते हैं, उनके पुत्रों को मार डालो (मूसा*), और उनकी रक्षा करो अपनी मादाओं को जीवित"। यहूदी गुलामों के लिए एक नई सजा, और यह स्पष्ट है कि यह शुरू करना है तेज। लेकिन विरोधाभास:

१.२/४९: "- - - हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें यहाँ से छुड़ाया है फिरौन के लोग (जो*) - - - बलि किए गए आपके बेटे - - -"। यह पहले से ही अभ्यास था।
२.७/१४१: "- - - फिरौन के लोग - - - जिन्होंने वध किया अपने पुरुष बच्चों और जीवित बचा लिया मादा - - -।" बाइबल एक से अधिक बताती है वह स्थान जहां नर शिशुओं की हत्या शुरू हुई 7/127 में स्थिति से बहुत पहले। बाइबल बताता है कि उन हत्याओं का कारण था बालक मूसा को नील नदी पर क्यों बहकाया गया था (कुरान कोई वास्तविक कारण नहीं देता - लेकिन कारण यह था कि नर शिशुओं को मार दिया गया था)।
3. 14/6: "(मूसा ने फिरौन के बारे में कहा कि वह*) अपने पुत्रों का वध किया और अपनी स्त्रियों को जाने दिया- लोक लाइव - - -।" यह पहले से ही अभ्यास था।

(३ विरोधाभास)।

२५३ ४१/५: "- - - तो आप (गैर-मुस्लिम अरब*) (जो आप चाहते हैं) - - -"। सादा कहानी बाद में पर: इस पद को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं। आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है 2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

२५४ ४२/२३: "मैं (मुहम्मद *) इसके लिए तुमसे कोई इनाम नहीं माँगता, सिवाय उन लोगों के प्यार के परिजन"। ठीक है, सभी चोरी किए गए सामानों और दास लोगों के 20% को छोड़कर - 100% अगर उन्होंने बिना दे दिया एक लड़ाई, हर साल आपके सभी सामान का 2.5% (औसत), बहुत सारी महिलाएं और आप पर निर्विवाद और पूर्ण शक्ति, + लड़ने के लिए बहुत सारे योद्धा और मेरे बीच मर सकते हैं अन्य बातें। सभी कुरान में सबसे मजबूत खंडन और निरस्त छंद में से एक।

२५५ ४१/९-१२: ये आयतें बताती हैं कि अल्लाह ने धरती को २ दिन में बनाया, पहाड़ और 4 दिनों में पृथ्वी पर सब कुछ और अंत में स्वर्ग ("सात फर्म" - बहुवचन और गलत) 2 दिनों में। 2 + 4 + 2 = 8 दिन। परंतु:

१.७/५४: "- - - अल्लाह, जिसने आसमान बनाया और छह दिनों में पृथ्वी - - -।"
२. १०/३: "----अल्लाह, जिसने आसमान को बनाया और छह दिनों में पृथ्वी - - -।"
३.११/७: "वह (अल्लाह*) है जिसने बनाया है आकाश (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी में छह दिन"।

4. 25/59: "वह (अल्लाह*) जिसने आकाश बनाया (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी और वह सब के बीच है, छह दिनों में - - -।"
5. 50/38: "हमने (अल्लाह*) ने आकाश बनाया (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी और सब उनके बीच छह दिनों में - - -।"
६.५७/४: "वह (अल्लाह*) है जिसने बनाया है

आकाश (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी में छह दिन।)

(६ विरोधाभास।)

२५६४१/१६: "तो हम (अल्लाह*) ने उनके खिलाफ कई दिनों (एनबी: बहुवचन *) के माध्यम से एक उग्र हवा भेजी आपदा - - -।" (६९/७ = ६ रातें और ७ दिन।) लेकिन:

१.५४/१९: "क्योंकि हम (अल्लाह*) ने उनके खिलाफ भेजा (विज्ञापन के लोग) एक दिन में एक प्रचंड हवा हिंसक आपदा का। " यहाँ यह केवल एक तक चला दिन।

२५७ ४१/३१: "हम (स्वर्गदूत *) इस जीवन में और परलोक में आपके रक्षक हैं।" परंतु कम से कम इसके विपरीत:

१. २/१०७: "और उसके पास (अल्लाह*) तुम्हारे पास है न संरक्षक और न ही सहायक।"

२५८ ४१/३४: "जो अच्छा है उससे (बुराई) दूर करो (अच्छा*); तो क्या वह किसके और तुम्हारे बीच होगा क्या नफरत बन गई थी क्योंकि यह तुम्हारा दोस्त और अंतरंग था "। यह यीशु के शब्दों से लिया गया जैसा है NT - - - लेकिन यह लगभग ६१६ - ६१८ ईस्वी सन् था, और मुहम्मद और इस्लाम के शुरू होने से बहुत पहले बदलने के लिए - एक नैतिक और नैतिक रूप से नष्ट डाकू बैरन और उसके सुविधाजनक बनने के लिए चोरी, बलात्कार, विनाश और खून का धर्म। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर द्वारा "मार" दिया जाता है कम से कम ये पद: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8 /38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं। आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है 2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२५९ ४२/६: "- - - आप (मुहम्मद*) उनके मामलों के निपटानकर्ता नहीं हैं।" नहीं, 614 के आसपास नहीं - 618 ई. लेकिन ६२२ ईस्वी के बाद वह काफी हो गया, जिसमें एक प्रवर्तक शामिल था - और इस तरह के छंद दोनों का खंडन किया गया और निरस्त कर दिया गया। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम . द्वारा "मार डाला" जाता है ये पद: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८ -39 (द चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२६० ४२/१०: "जो भी हो - - -।" मुहम्मद अल्लाह से दुआ कर रहे हैं, उसे उद्धृत नहीं कर रहे हैं। एक किताब में कम से कम 13.7 अरब वर्ष पुराना (ब्रह्मांड के निर्माण से पहले से) - और एक माँ की प्रति पुस्तक (१३/३९) अल्लाह द्वारा अपने "घर" में पूजनीय है।

२६१ ४२/१५: "हमारे (मुसलमान*) और आप ("काफिरों") के बीच कोई विवाद नहीं है।" शायद नहीं ६१४ - ६१८ ई. लेकिन बाद में यह सत्ता वर्ग = मुस्लिम (मुहम्मद के साथ तानाशाह के रूप में) था। और गैर-मुसलमानों ने "पूरी तरह से वश में कर लिया" - - - और धर्म के साथ बहुत कुछ बदल गया = कुरान में विरोधाभास और निरसन। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर द्वारा "मार" दिया जाता है कम से कम ये पद: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8 /38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले कई शामिल हैं। आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है 2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२६२ ४२/३०: "जो विपत्ति तुझ पर होती है, वह तेरे हाथ की वस्तुओं के कारण होती है गढ़ा।" यह इस वास्तविकता के विपरीत है कि चीजें कभी-कभी आपके साथ दूसरे से होती हैं

लोगों के ऐसे कार्य जिनसे आप पूरी तरह से निर्दोष हैं, या f. भूतपूर्व। प्राकृतिक आपदाएं, और यह भी है
कुरान में सभी छंदों का खंडन करते हुए कहा कि अल्लाह ने सब कुछ तय किया।

(कम से कम 10 विरोधाभास।)

२६३ ४२/४८: "तेरा (मुहम्मद का) कर्तव्य (संदेश (कुरान* - या
शांतिपूर्ण भाग जो ६१४ - ६१८ ईस्वी*) में मौजूद थे)"। कुछ साल बाद इस्लाम ने कुछ पाया
अधिक क्रूर प्रवर्तक होने के लिए उनके कर्तव्यों का, इसलिए अन्य छंदों के बीच यह एक और बहुत कुछ थे
विरोध किया और निरस्त कर दिया। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इनके द्वारा "मार डाला" जाता है
श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८- ३९ (द
चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,
35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

264 43/83: "तो उन्हें ("काफिरों" *) बड़बड़ाने और खेलने के लिए छोड़ दो (उनके घमंड के साथ) - - -।"
ठीक ऊपर 42/48 जैसी टिप्पणियाँ। और: इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम
ये पद: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८ -39 (द
चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,
35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

२६५ ४३/८६: "और अल्लाह के अलावा जिन्हें वे ("देवताओं", संतों *) का आह्वान करते हैं, उनके पास कोई शक्ति नहीं है
हिमायत - केवल वही (है*) जो सत्य की गवाही देता है - - -।" शब्द "वह" संदर्भित नहीं कर सकता
अल्लाह के लिए, क्योंकि कुरान हमेशा पूंजी 1 का उपयोग करता है। अक्षर ("उसका") तब। लेकिन के अनुसार
कुरान पैगंबर और दूतों को "सच्चाई की गवाही देने" के लिए बुलाया जाना है। "वह"
इसलिए प्रत्येक नबी और दूत (या कम से कम मुहम्मद) का जिक्र होना चाहिए
- - - जो इस श्लोक के अनुसार मध्यस्थता करने की शक्ति रखते हैं।

१. २//१२३: "(वह दिन (कयामत का) जब) एक आत्मा
दूसरे का लाभ नहीं उठाएंगे - - - और न ही करेंगे
हिमायत उसे (आत्मा*) लाभ - - -।" एक
पूर्ण कानून: कोई मध्यस्थता संभव नहीं है।
२.२/२५४: "--- दिन से पहले (कयामत के*)
तब आता है जब कोई सौदेबाजी नहीं होगी (लाभ होगा), न ही
दोस्ती, न हिमायत।" राशि अन्य:
मध्यस्थता असंभव है।
३. ६/५१: "- - - उन्हें (निर्णय) में लाया जाएगा
(= कयामत का दिन*)) अपने रब के सामने
(अल्लाह*) : उसके सिवा उनके पास नहीं होगा
रक्षक और न ही मध्यस्थ - - -।"
४.८२/१९: "(यह होगा) वह दिन (कयामत का) जब
किसी भी आत्मा के पास (करने की) शक्ति नहीं होनी चाहिए
एक और - - -।"

अनुमति के बारे में कोई सवाल नहीं - बस असंभव।

(४ विरोधाभास)।

२६६ ४३/८९: "लेकिन उनसे दूर हो जाओ, और 'शांति' कहो।" ऊपर 43/48 की तरह टिप्पणियां। और:
इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५,
3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14,
9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है
कई लोगों को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति (तलवार के साथ)
पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73,

9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२६७ ४४/३: "हमने (अल्लाह *) ने इसे (कुरान) एक धन्य रात के दौरान नीचे भेजा - - -।" यह विरोधाभास सब कुछ जो कुरान में अन्य जगहों पर कहा गया है, और इस्लाम जो कुछ भी कहता है, उसके बारे में कैसे कुरान नीचे भेजा गया था (?): 23 साल से अधिक टुकड़ा टुकड़ा।

२६८ ४४/५९: "तो तुम (मुहम्मद*) रुको और देखो; क्योंकि वे ("काफिर"*) (भी) प्रतीक्षा कर रहे हैं।" यह मक्का काल के मध्य में था। जब मदीना काल ६२२ ई.
मुहम्मद ने शांतिपूर्ण प्रतीक्षा के बारे में अपना विचार बदलना शुरू कर दिया। यह श्लोक विरोधाभासी है और अक्सर कम से कम इन छंदों से "मार": २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देना या अनुमति देना शामिल है राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२६९ ४५/१४: "विश्वास करने वालों से कहो कि जो लोग आने वाले दिनों की प्रतीक्षा नहीं करते उन्हें क्षमा करें" अल्लाह (कयामत का दिन*)।" लेकिन "माफ करना" शब्द धीरे-धीरे 622 ईस्वी के बाद भुला दिया गया - जब उन्होंने प्रवर्तक होने का भी कर्तव्य निभाया। परिणाम के साथ : यह श्लोक विरोधाभासी है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार" दिया जाता है: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देने वाले या शामिल हैं अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि

आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२७० ४६/९: "- - - मैं (मुहम्मद*) लेकिन एक वार्नर हूं, खुला और स्पष्ट।" हाँ, वह केवल ६२० ईस्वी में स्वघोषित चेतावनी देने वाले थे। चीजें बदल गईं और छंदों को वास्तव में निरस्त कर दिया गया जब उन्हें मिला कुछ साल बाद अधिक शक्ति। नीचे 46/135 के लिए लाइक कमेंट करें। यह श्लोक विरोधाभासी है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार" दिया जाता है: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देने वाले या शामिल हैं अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२७१ ४६/३५: "इसलिये सब्र से डटे रहो - - - और (अविश्वासियों) के बारे में जल्दबाजी न करो।" एक और जिसका पुरजोर खंडन किया गया और बाद में निरस्त कर दिया गया: यह श्लोक निराकृत है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

२७२ ४६/१३५ए: "(मुहम्मद*) - - - (अविश्वासियों) के बारे में जल्दबाजी न करें - - -।" जब वह शक्ति प्राप्त की उसे और अधिक जल्दबाजी मिली - f. भूतपूर्व। अनिच्छुक अरब (और बहुत से अन्य) जो नहीं थे उपहारों और मुफ्त लूट / दासता से जीते गए, तलवार से जीते गए - बिल्कुल विरोधाभास में मुसलमान क्या कहना पसंद करते हैं। मुसलमान बनो या लड़ो और मरो! यह श्लोक विरोधाभासी है और अक्सर कम से कम इन छंदों से "मार": २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देना या अनुमति देना शामिल है राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२७३ ४६/१३५बी: "(तेरा (कर्तव्य मुहम्मद है *) लेकिन) संदेश (कुरान *) की घोषणा करने के लिए।"

[illegible]
5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देना या अनुमति देना शामिल है राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)

**२७४ ४७/४: "इसलिए, जब तुम काफ़िरों से मिलो (लड़ाई में (और मुसलमानों को याद करो) व्यावहारिक रूप से हमेशा हमलावर थे - धन और दास और शक्ति हासिल करने के लिए - - - और कुछ नए अभियोगी*)), उनकी गर्दनों पर प्रहार करें - - -।" सूरह 47 622 ईस्वी और मक्का से है, लेकिन कुछ मदीना से संभावित छंद - और युद्ध की ओर परिवर्तन पहले से ही देखना संभव है। यह बहुत सारे शांतिपूर्ण छंदों का खंडन और निरसन करता है। यह श्लोक इसके विपरीत (और निरस्त) करता है कम से कम ये छंद (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 को 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है):
2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/ 60, 6/66, 6/70,

6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/ १०२, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/17, 39/41, 41/ 34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6.
वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 91 विरोधाभास)।

२७५ ४७/२७: "- - - जब फ़रिश्ते (बहुवचन*) अपनी (लोगों की) आत्माओं को मौत के घाट उतार लेते हैं"। परंतु:

1. 32/11: "द एंजल ऑफ डेथ (एकवचन* और .) स्पष्ट रूप से एक नाम - बड़े अक्षर*) - - - विल (विधिवत) अपनी आत्मा को ले लो - - -।"
२. ३९/४२: "यह अल्लाह है जो आत्माओं को ले जाता है पुरुष) मृत्यु पर - - -।"

(२ विरोधाभास।)

२७६ ४७/३६: "---- और वह (अल्लाह*) आपसे (छोड़ने के लिए) आपकी संपत्ति नहीं मांगेगा।" बस रुक जाओ थोड़ा: अल्लाह आपकी हर संपत्ति की जकात - कर - में औसतन 2.5% की मांग करता है और हर साल (यदि आप बहुत गरीब नहीं हैं)। बहुत स्पष्ट रूप से कई लोगों द्वारा खंडन और निरस्त किया गया कुरान में छंद।

२७७ ५०/३८: "हमने (अल्लाह*) ने आकाशों और धरती को और उनके बीच सभी को छह दिनों में बनाया - - -।" कौन सा विरोधाभास:

१.४१/९-१२ जो बताते हैं कि नौकरी में २ + ४ + २ = लगा 8 दिन। (मुसलमान इसे दूर समझाने की कोशिश करते हैं इसके साथ पहले 2 दिनों को में शामिल किया गया था 4 वाले। लेकिन ४१/९ खुद पढ़िए - यह स्पष्ट रूप से बताएं कि नौकरी के इस हिस्से में 2 दिन लगे, यह भाग 4 दिन, और शेष 2 दिन।) इसके अलावा: In वास्तविकता यह अरबों साल लग गए।

२७८ ५०/३९: "फिर, धैर्य के साथ, वह सब सहन करें जो वे ("काफिरों"*) कहते हैं - - -।" धैर्य एक साल बाद (622 ईस्वी) से बहुत कम चर्चित हुआ। यह श्लोक विरोधाभासी है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार" दिया जाता है: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देने वाले या शामिल हैं अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२७९ ५०/४५: "हम (अल्लाह*) सबसे अच्छी तरह जानते हैं कि वे ("काफिर"*) क्या कहते हैं; और तुम (मुहम्मद*) कला उन्हें बलपूर्वक डराने वाला नहीं है।" बाद के इतिहास को जानकर यह श्लोक बड़ा विडंबनापूर्ण या

सार्डोनिक मज़ाक। यह सूरह ६१४ ईस्वी से है: बस आप अनुमान लगा सकते हैं कि क्या इसका खंडन किया गया था और इसे निरस्त कर दिया गया था
622 ई. से !! यह था: इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है:
2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी),
8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६,
47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।

मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

२८० ५१/५०-५१ए: "मैं (मुहम्मद*) उसी (अल्लाह*) की ओर से तुम्हारे (मुसलमानों*) को चेतावनी देने वाला हूँ।
और खुला। और दूसरे (व्यक्ति/वस्तु/विचार*) को अल्लाह के पास इबादत की वस्तु न बनाओ: मैं हूँ
उसकी ओर से तुम्हारे लिए एक चेतावनी, स्पष्ट और खुला! " यहाँ उसके लिए कोई "कहो" या अन्य संकेत नहीं है
मुहम्मद कुछ भी उद्धृत कर रहा है - वह केवल स्वयं बोल रहा है, भूलकर कि उसे दिखावा करना चाहिए
कि वह स्वर्ग में बनी और पूज्यनीय मदर बुक (१३/३९) की एक प्रति उद्धृत कर रहा है। या तो यह है कि,
या अल्लाह यह कहना भूल गया है - और फिर वह और कितना भूल गया है? - या मुहम्मद
भूल गए, और मामले में और अधिक भूल गए होंगे।

२८१ ५१/५०-५१बी: "मैं (मुहम्मद*) उसी (अल्लाह*) की ओर से तुम्हारे (मुसलमानों*) को चेतावनी देने वाला हूँ।
और खुला। और दूसरे (व्यक्ति/वस्तु/विचार*) को अल्लाह के पास इबादत की वस्तु न बनाओ: मैं हूँ
उसकी ओर से तुम्हारे लिए एक चेतावनी, स्पष्ट और खुला! " यह मक्का 620 से है। मुहम्मद अभी भी है
सैन्य कमज़ोर - और अभी भी केवल एक चेतावनी। बाद में वह एक प्रवर्तक बन गया (अरब का अधिकांश हिस्सा बन गया
तलवार की नोक पर मुसलमान): इस कविता का खंडन किया जाता है और अक्सर कम से कम "मार" दिया जाता है
ये पद: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८ -39 (द
चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,
35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 29 विरोधाभास)।

२८२ ५१/५४: "तो (मुहम्मद*) उनसे दूर हो जाओ ("काफिरों"*) - - -।" एक और बात
का खंडन किया गया और निरस्त कर दिया गया जब मुहम्मद ने 2 साल बाद सैन्य मजबूत किया।
इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५,
3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14,
9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है
कई लोगों को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति (तलवार के साथ)
पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73,
9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२८३ ५१/५६: "मैंने (अल्लाह*) ने केवल जिन्नों और मनुष्यों को पैदा किया है, ताकि वे मेरी सेवा कर सकें।" परंतु:

१.७/१७९: "कई जिन्न और पुरुष हैं हम"
(अल्लाह*) ने नर्क बनाया है।"

एक छोटा सा विरोधाभास "डी लक्स"। और 7/179 अल्लाह के बारे में क्या बताता है?

२८४ ५२/३५: "क्या वे (लोग*) किसी चीज़ से नहीं बने थे, या वे स्वयं निर्माता थे?" ए
अलंकारिक प्रश्न यह कहते हुए कि मनुष्य कुछ भी नहीं से बनाया गया था - 19/67 वही कहता है। लेकिन यह
६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खंडित है जो बताता है कि मनुष्य/एडम किससे बना था
मिट्टी, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताती है कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४
बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था
चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और
१५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५, ३५/११, ४०/६७, जो मनुष्य/एडम को बताता है
धूल से बनाया गया था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, ९६/२ जो बताता है
आदमी/एडम जमा खून के थक्के से बना था, 16/4, 75/37, 76/2, 80/19, जो बताता है
आदमी/एडम वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया), 21/30,

२४/४५, और २५/५४ जो बताते हैं कि आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि से पानी!), ७०/३९ जो बताता है कि मनुष्य/एडम "आधार सामग्री" से बना था (इसमें पद 6/2 भी देखें) कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्याय।) (कड़ाई से यह विरोधाभास २९ अन्य छंद। और इस मामले में न्यूनतम 29 विरोधाभास।)

२८५ ५२/४५: "तो (मुहम्मद/मुसलमान*) उन्हें ("काफिरों"*) को तब तक अकेला छोड़ दो जब तक उनका सामना न हो जाए उस दिन - - -।" कयामत के दिन तक उन्हें अकेला छोड़ दो। लेकिन न तो मुहम्मद और न ही उनके जैसे ही इस्लाम सैन्य रूप से मजबूत हो गया, उत्तराधिकारियों ने उन्हें अकेला छोड़ दिया। **और इस्लाम अत है इस्लाम के सैन्य होने के समय में कभी भी अपने परिवेश को अकेला छोड़ दिया बलवान?** इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह देने या अनुमति देने वाली कई बाध्यताएं शामिल हैं (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२८६ ५२/४७: "और वास्तव में, जो गलत करते हैं ("काफिरों" *) के लिए एक और सजा है इसके अलावा (कि लंबे समय में वे ढीले हो जाएंगे - और दूसरी सजा को पूरा करेंगे: नरक *)" ए मक्का काल के कठिन अंत में सुकून देने वाला विचार - तो बस उन्हें अकेला छोड़ दो। (ए 52/45 की पुष्टि, वास्तव में)। लेकिन: 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 विरोधाभास)। इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/ 36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह देने या अनुमति देने वाली कई बाध्यताएं शामिल हैं (के साथ यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२८७ ५३/२९: "इसलिए उन लोगों से दूर रहो जो हमारे (मुहम्मद के) संदेश - - - से मुंह मोड़ते हैं।" यह मुहम्मद के शब्द ६१२-६१५ ईस्वी के आसपास थे। 10 साल की देरी से "माधुर्य" बदल गया। ठीक ऊपर 52/47 जैसी टिप्पणियाँ। इस कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इनके द्वारा "मार डाला" जाता है श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ५/७३, ८/१२, ८/३८- ३९ (द चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि को सलाह देना या अनुमति देना शामिल है। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२८८ ५४/६: "इसलिए, (हे पैगंबर), उनसे (गैर-मुसलमानों) से दूर हो जाओ।" सीए। 614 ई उनसे दूर होना पड़ा - लेकिन 10 साल और बाद में? यह श्लोक निराकृत है - निर्मित अमान्य - और कम से कम इन श्लोकों द्वारा खंडित: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

२८९ ५४/१९: "क्योंकि हम (अल्लाह*) ने उनके (आद के लोगों) पर एक दिन में प्रचंड हवा भेजी थी। हिंसक आपदा का। " लेकिन अन्य छंद खंडन करते हैं; यह एक दिन से अधिक समय तक चला:

१.४१/१६: "तो हम (अल्लाह*) ने उनके खिलाफ भेजा a
विपदा के दिनों में प्रचंड हवा - - -।"
2. 69/6-7: "और 'विज्ञापन - वे नष्ट हो गए'
एक उग्र हवा से - - - उसने (अल्लाह*) इसे बनाया
सात रात और आठ दिन उन पर रोष करो
उत्तराधिकार में - - -।"

(२ विरोधाभास)।

२९० ५५/१४: "उसने (अल्लाह *) ने मिट्टी के बर्तनों की तरह बजती मिट्टी (= जली हुई मिट्टी *) से मनुष्य को बनाया"। परंतु:

यह ६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम बनाया गया था मिट्टी से, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४ जो बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५, ३५/११, ४०/६७, जो मनुष्य/एडम को बताता है धूल से बनाया गया था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, ९६/२ जो बताता है आदमी/एडम जमा खून के थक्के से बना था, 16/4, 75/37, 76/2, 80/19, जो बताता है आदमी/एडम वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया), 21/30, २४/४५, और २५/५४ जो बताते हैं कि आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि से पानी!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम "आधार सामग्री" से बना था, और इसका उल्लेख नहीं करना था इस मामले में सबसे बड़ा विरोधाभास: १९/९ और १९/६७ जो दोनों बताते हैं कि मनुष्य/एडम को बनाया गया था से कुछ नहीं।

(कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्याय में छंद ६/२ भी देखें।) (कड़ाई से गिना जाता है।) यह 30 अन्य छंदों के विपरीत है। लेकिन कम से कम 11 विरोधाभास।)

२९१ ५७/४: "वह (अल्लाह*) वह है जिसने आकाश (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी को छह में बनाया दिन"। इसके विपरीत:

1. 00a 41/9-12 जो बताते हैं कि नौकरी में 2 + 4 + . लगे
2 = 8 दिन। (मुसलमान इसे समझाने की कोशिश करते हैं
इसके साथ ही पहले 2 दिनों को शामिल किया गया
4 वाले में। लेकिन ४१/९ खुद पढ़िए – it
स्पष्ट रूप से बताएं कि नौकरी के इस हिस्से में 2
दिन, यह भाग 4 दिन और शेष 2 दिन।)
और वास्तविकता अरबों साल कहती है।

२९२ ५७/२२: "पृथ्वी पर या आपकी आत्मा (दिमाग*) में कोई दुर्भाग्य नहीं हो सकता है, लेकिन एक में दर्ज किया गया है हमारे सामने फरमान (अल्लाह*) इसे अस्तित्व में लाता है - - -।" अधिक स्पष्ट शब्दों में: **कुछ नहीं कर सकता जब तक कि पूर्वनियति के अनुसार न हो - जो अल्लाह ने तय किया है और पहले से लिखा हुआ।** लेकिन यह हर उस श्लोक का खंडन करता है जिसमें कहा गया है कि मनुष्य के पास स्वतंत्र है इच्छा और उस आदमी को भी दोष देना है जब वह कुछ गलत करता है। और हादसों का क्या? और प्राकृतिक आपदाएँ - क्या वे नियोजित और क्रियान्वित हैं - जैसे केल्विन और हॉब्स में केल्विन में - एक दयालु, अच्छे भगवान द्वारा?

(कम से कम 10 विरोधाभास)।

२९३ ६६/९८: "हे पैगंबर! अविश्वासियों और पाखंडियों के खिलाफ कड़ी मेहनत करो, और दृढ़ रहो उनके विरुद्ध।" मुसलमान मुहम्मद को माफ़ कर देंगे कि यह युद्ध के बारे में है - लेकिन क्या यह कोई है बहाना, जब व्यावहारिक रूप से सभी छापे और युद्ध मुसलमानों द्वारा शुरू किए गए थे? यह श्लोक कम से कम इन छंदों के विरोधाभास (और निरस्त) (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 हैं) 9/5 द्वारा निरस्त कर दिए गए हैं): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5 /48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/ ६१, ९/६८, १०/४१, १०/९९, १०/१०२, १०/१०८, ११/१२, ११/१२१, १३/४०, १५/३, १५/९४, १६/३५, १६/८२, १६/१२५, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/ २४ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/ १३५बी,

46/13, 88/22, 109/6 - वे सभी 50/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 61 विरोधाभास) 73/11, 79/45,

२९४ ६७/२६: "- - - मैं (मुहम्मद*) हूं (भेजा गया) केवल सार्वजनिक रूप से स्पष्ट रूप से चेतावनी देने के लिए।" लेकिन 3 - 4 साल बाद में (622 ईस्वी से) उन्होंने और भी गंदे और अमानवीय काम करना शुरू कर दिया। यह श्लोक है कम से कम इन श्लोकों का खंडन किया और अक्सर "मार डाला": २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देने वाले या शामिल हैं अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

२९५ ६८/४९: "यदि उसके (योना के) प्रभु (अल्लाह*) की कृपा उस तक नहीं पहुँची होती, तो वह वास्तव में लज्जित होकर नंगे किनारे पर फेंक दिए गए हैं।" अंतर्विरोध:

1. 37/45: "लेकिन हम (अल्लाह*) ने उसे (योना*) की स्थिति में नग्न किनारे पर आगे बीमारी।" बिल्कुल 180 डिग्री अंतर्विरोध।

२९६ ६९/५: "लेकिन थमूद - वे गड़गड़ाहट के एक भयानक तूफान से नष्ट हो गए और" आकाशीय बिजली।" परंतु:

१.७/७८: "तो भूकंप ने उन्हें अनजाने में ले लिया, और वे अपने घरों में दण्डवत करते हैं सुबह।" एक अच्छे उपाय के लिए: "The ." में कुरान का संदेश "- और हम सभी के लिए जानते हैं अन्य अनुवादों में भी - यह गलती 69/5 और . का अनुवाद करते समय आसानी से गलत साबित हो जाता है के साथ एक टिप्पणी के लिए बस एक छोटा सा संदर्भ सही पाठ बड़ी किताब में दूसरी जगह। वे लिखते हैं (स्वीडिश से अनुवादित): "The थमूद के लोगों को एक द्वारा दफनाया गया था भूकंप"। तब 69/5 के अनुसार है ७/७८ - भले ही अरब शास्त्र में है उन्होंने कहा कि वे एक तूफान से नष्ट हो गए थे। हम कर सकते हैं जोड़ें कि पुस्तक को अल द्वारा मुद्रित करने की अनुमति है- अहजर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च एकेडमी,

651

पेज 652

काहिरा - में 2-3 अग्रणी विश्वविद्यालयों में से एक सभी इस्लाम।

क्या धर्म में ईमानदारी होनी चाहिए?

लेकिन फिर इस्लाम में अल-तकिया (वैध) है झूठ) और "किटमैन" (वैध अर्ध-सत्य) - और यदि आवश्यक हो तो इसका उपयोग करने का आदेश दिया जाता है इस्लाम की रक्षा या प्रचार करना (और करने की अनुमति) यह अन्य मामलों में जैसे महिलाओं को धोखा देना और पैसा सुरक्षित करना - कम से कम के अनुसार अंतिम इब्न इशाक और अल-बुखारी।)

मुसलमानों पर कब भरोसा करें और कब नहीं? गंभीर मामले?

२.११/६७: "(पराक्रमी) विस्फोट ने उसे पीछे छोड़ दिया गलत काम करने वाले (थमूद* के लोग), और वे अपने घरों में साष्टांग प्रणाम करते हैं सुबह - - -।" एक विस्फोट एफ से कुछ है। भूतपूर्व। एक विस्फोट।

(२ विरोधाभास।)

२९७ ६९/७: "उसने (अल्लाह*) ने उसे (आद* को नष्ट करने वाले तूफान) ने सात रातों तक उन पर क्रोध किया। और लगातार आठ दिन - - -।"

> १.५४/१९: "क्योंकि हम (अल्लाह*) ने उनके खिलाफ भेजा
> (विज्ञापन के लोग) एक दिन में एक प्रचंड हवा
> हिंसक आपदा का। " लेकिन अन्य छंद
> विरोधाभास - यह एक दिन से अधिक समय तक चला:

00r 69/25: "और वह (पापी*) उसका रिकॉर्ड उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा (जिस दिन कयामत) - - -।" परंतु:

> १.८४/१०: "लेकिन जिसे उसका रिकॉर्ड दिया जाता है"
> उसकी पीठ के पीछे - - -।" (हम इसकी गिनती नहीं करते हैं
> एक, क्योंकि यह कहना संभव है कि उसने अपना
> उसकी पीठ के पीछे बायां हाथ - असंभव लेकिन
> संभव।)

२९८ ६९/३६: "और न ही वह (नरक में पापी*) धोए गए भ्रष्टाचार को छोड़कर किसी भी भोजन से घृणा करता है घाव।" एक प्रासंगिक प्रश्न: आप घावों को कैसे और किसके साथ धोते हैं - और कैसे तला हुआ करते हैं घाव भ्रष्टाचार उगलते हैं - नरक में? लेकिन वह एक तरफ:

> १.३७/६६: "- - - वे (नरक में "काफिर") करेंगे
> उसके खाओ (के घृणित फल
> ज़क़्क़ुम का पेड़ नर्क में*) और उनके पेट भरो
> इसके साथ। "

> २.८८/६: "उनके लिए कोई भोजन नहीं होगा
> "काफिर" नर्क में*) लेकिन एक कड़वी दारी (एक सूखी .)
> सुइयों के साथ झाड़ी*) - - -।"

(२ विरोधाभास।)

२९९ ७०/४: "- - - उसी के लिए (अल्लाह*) एक दिन में जिसकी माप (अ) पचास हजार वर्ष है:"

> १.२२/४७: "वास्तव में, अपने प्रभु की दृष्टि में एक दिन"
> (अल्लाह*) आपके एक हजार साल के समान है
> हिसाब।"
>
> 2. 32/5: "- - - एक दिन में, वह स्थान जहां होगा
> आपकी गणना के एक हजार वर्ष हो।

(2 विरोधाभास)

३०० ७०/३९: "क्योंकि हम (अल्लाह*) ने उन्हें (मनुष्य को) (आधार पदार्थ) से पैदा किया है, वे जानते हैं।" परंतु:

यह ६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम बनाया गया था मिट्टी से, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४ जो बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५, ३५/११, ४०/६७, जो मनुष्य/एडम को बताता है धूल से बनाया गया था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, ९६/२ जो बताता है आदमी/एडम जमा खून के थक्के से बना था, 16/4, 75/37, 76/2, 80/19, जो बताता है आदमी/एडम वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया), 21/30, २४/४५, और २५/५४ जो बताते हैं कि आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि से पानी!), और इस मामले में सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख नहीं करने के लिए: 19/9 और 19/67 जो दोनों बता दें कि मनुष्य/एडम कुछ भी नहीं से बनाया गया था।

(कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्यायों में छंद ६/२ भी देखें।) (कड़ाई से गिना जाता है।)

यह 30 अन्य छंदों के विपरीत है। लेकिन कम से कम 2 विरोधाभास, जैसा कि मूल पदार्थ कहा जा सकता है
कुछ भी नहीं के अलावा कुछ भी होगा)

३०१ ७०/४२: "तो उन्हें (गैर-मुसलमान*) व्यर्थ की बातों में डुबाने और मनोरंजन करने के लिए छोड़ दो---"। लगभग ६१४-६१७ ईस्वी के आसपास मुहम्मद की शक्ति ने उन्हें यह कहने की अनुमति दी थी। जब उसकी शक्ति बड़ा हुआ, वह और भी बहुत कुछ कर सकता है। इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और इसके द्वारा खण्डन किया गया है at कम से कम ये श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८-३९ (NS चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने या अनुमति देने वाली छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

302 73/10: "और जो कुछ वे कहते हैं उसके साथ धैर्य रखें, और उन्हें महान (गरिमा) के साथ छोड़ दें।" इस एक प्रारंभिक सूरा है (611 - 614 ईस्वी)। मुहम्मद के पास बहुत कम या कोई वास्तविक शक्ति नहीं है, और वह एक शांतिपूर्ण है उपदेशक। जब उसने सत्ता हासिल की तो उसने और उसके धर्म दोनों ने दूसरे चेहरे दिखाए - या अल्लाह ६२२ ईस्वी से अधिक रक्त और जमा और पीड़ा चाहता था। यह श्लोक विरोधाभासी है और अक्सर कम से कम इन छंदों से "मार": २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१, ४/९०, ५/३३, ५/७२, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123,

25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देना या अनुमति देना शामिल है राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

३०३ ७३/११: "और मुझे (अल्लाह*) (उनके साथ अकेला) जीवन की अच्छी चीजों के अधिकार में छोड़ दो, जो (फिर भी) सच्चाई से इनकार करते हैं, और थोड़ी देर के लिए उनके साथ रहते हैं।" वह थोड़ी देर चली ठीक जब तक मुहम्मद को सैन्य शक्ति प्राप्त नहीं हुई - तब तक वह (या अल्लाह*) एक सख्त शासन के लिए चला गया। इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है कई लोगों को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति (तलवार के साथ) पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

३०४ ७४/११: "मुझे (अल्लाह *) अकेला छोड़ दो (सौदा करने के लिए) (प्राणी (मनुष्य *)) जिसे मैंने बनाया है (नंगे और) अकेले"। खैर, कुछ साल बाद मुहम्मद ने प्रबंधन के साथ अल्लाह की मदद करना शुरू कर दिया वे जीव - विशेष रूप से वे जो उन्हें अपना तानाशाह नहीं बनाना चाहते थे। यह श्लोक है निरस्त - अमान्य - और कम से कम इन श्लोकों द्वारा खंडित: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई शामिल हैं खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाली छंद भी। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

३०५ ७६/२: "वास्तव में, हमने (अल्लाह *) ने मनुष्य को बनाया (इस तरह प्रयोग किया जाता है, यह स्पष्ट है कि" मनुष्य "का प्रतिनिधित्व करता है मानव जाति, आदम*) मिश्रित शुक्राणु के साथ एक बूंद से, इसलिए हमने उसे (उपहार) दिया श्रवण और दृष्टि"। यह नहीं कहा गया है कि शुक्राणु कहाँ से आया, और लेखक स्पष्ट रूप से करता है अंडा कॉल के बारे में नहीं जानते, लेकिन वह एक तरफ:

यह ६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम बनाया गया था मिट्टी से, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४ जो बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५, ३५/११, ४०/६७, जो मनुष्य/एडम को बताता है धूल से बनाया गया था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, १६/४, ९६/२ जो बताता है मनुष्य/आदम जमे हुए रक्त के थक्के से बना था, २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो बताते हैं आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि पानी से!), 70/39 जो बताता है आदमी/एडम "आधार सामग्री" से बना था, और सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख नहीं करने के लिए यह मामला: १९/९ और १९/६७ जो दोनों बताते हैं कि मनुष्य/एडम कुछ भी नहीं से बनाया गया था। (और देखें

कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्यायों में छंद ६/३।) (इस पर सख्ती से विचार करें
27 अन्य श्लोकों का खंडन करता है। और इस मामले में भी न्यूनतम 27 विरोधाभास।)

३०६ ७६/२१: "--- और वे (स्वर्ग के निवासी*) चाँदी के कंगनों से अलंकृत होंगे -
- -।" परंतु:

१.२२/२३: "- - - वे (मुस्लिम जन्नत में*)
सोने के कंगनों से अलंकृत किया जाएगा और
मोती - - -।" बहुत बढ़िया - सिवाय इसके कि:

६५४

पेज ६५५

२. १८/३१: "--- वे (मुस्लिम जन्नत में*)
वह उसमें सोने के कंगनों से अलंकृत होगा
- - -"।

दो छोटे, लेकिन स्पष्ट विरोधाभास।

307 76/29: "यह एक नसीहत है: जो कोई चाहता है, वह अपने रब के लिए एक (सीधा) रास्ता अपनाए
(अल्लाह*)।" बाद में जो कोई चाहेगा ही नहीं। पढ़ें इस्लामिक इतिहास के बारे में जबरदस्ती
धर्मांतरण, कई लोगों में आज भी इस्लाम छोड़ने के इच्छुक व्यक्तियों के उपचार का उल्लेख नहीं करना
समाज। और रीस एफ। भूतपूर्व। 9/5.

३०८ ७६/३० (उम्र अज्ञात): "लेकिन तुम (मनुष्य *) नहीं करेंगे, सिवाय अल्लाह की इच्छा के।" संपूर्ण
पुनर्निधारण। इसके विपरीत:

१.८/३० (६१४-६१८ ईस्वी): "जब भी दुर्भाग्य"
आपके साथ होता है (मनुष्य*), इसकी वजह से है
आपके हाथों ने जो चीजें बनाई हैं - - -"। भी
6/22 (630-632 ईस्वी) देखें: "कोई दुर्भाग्य नहीं हो सकता"
पृथ्वी पर या आपकी आत्मा में होता है लेकिन है
हम (अल्लाह*) लाने से पहले एक फरमान में दर्ज हैं
अस्तित्व में है।"

लेकिन उन सभी जगहों को भी देखें जहां मुहम्मद
अपने लोगों को बताता है कि लड़ाई खतरनाक नहीं है -
और युद्ध करने से इंकार करने का कोई फायदा नहीं है - as
अल्लाह ने लंबे समय से उनके का समय तय किया है
मृत्यु, और वे कुछ नहीं करते या नहीं करते, कर सकते हैं
उस घंटे को बदलो। यह बिंदु वास्तव में जाता है
इस्लाम में दो तथ्यों का दिल:

2. मुहम्मद ने पूर्वनियति पर जोर दिया
जैसे-जैसे साल बीतते गए
मदीना - कोई अनुमान लगा सकता है कि क्या कारण था
कि उसे योद्धाओं की जरूरत है।
3. और यह एक गंभीर मुद्दा है: 1400 के माध्यम से
वर्षों से इस्लाम असमर्थ रहा है
विरोधाभास की व्याख्या करें
कथन जो मनुष्य के पास मुफ़्त है
होगा, और वह अल्लाह तय करता है
हर चीज़। अधिक या कम
आधिकारिक दृष्टिकोण (हालांकि .)
अशिक्षित लोगों में नहीं
यह शायद ही समझ में आता है
समस्या) यह है कि दो
कथन असंभव हैं
गठबंधन, "लेकिन यह सच होना चाहिए"
यह कुरान में कहा गया है "(!!!)। भी
लोगों को नरक में भेजने के लिए A
के साथ संयुक्त उचित सजा
"तथ्य" जो अल्लाह तय करता है

पेज ६५६

भविष्यवाणी द्वारा सब कुछ, IS
उनके साथ संयोजन करना असंभव है
एक परोपकारी की धारणा
और/या निष्पक्ष भगवान। कुछ मुसलमान पीछे
के बिंदु पर बहुत चप्पू
पूर्वनियति और यह समझाने की कोशिश करें कि यह नहीं है
वास्तविक पूर्वनियति, हालांकि समझाने में असमर्थ
तो यह क्या है - लेकिन कुरान बहुत स्पष्ट है
यह।

३०९ ७९/४५: "तू (मुहम्मद*) कला लेकिन एक चेतावनी----।" और वह ऐसे ही रहा - - - जब तक वह
चेतावनी से अधिक करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हो गया - f. भूतपूर्व। लागू करना और साम्राज्य-निर्माण। और यह
एक सवाल है जिसने 622 ईस्वी के आसपास अपना विचार बदल दिया - अल्लाह या मुहम्मद? और जो
धर्म बदला - अल्लाह या मुहम्मद? उस परिवर्तन ने मांग की कि धर्म से
मक्का में १२ वर्षों को कई बिंदुओं पर खंडन और निरस्त करना पड़ा। यह श्लोक है
कम से कम इन श्लोकों का खंडन किया और अक्सर "मार डाला": २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१,
4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33,
9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह देने वाले या शामिल हैं
अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि
आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,
33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

३१० ८०/१२: "- - - जो चाहे उसे (मुहम्मद की शिक्षाओं) को स्मरण में रखने दो।"।
६११-६१४ ईस्वी के आसपास यह मुहम्मद का संदेश था। करीब १० साल बाद उसने अपना कहना शुरू किया
साथी अरब - और यहूदी और अन्य: मुसलमान बनें और चोरी के सामान से अमीर बनें और
गुलाम या मरना। (अरब का अधिकांश भाग - और अन्य स्थानों को इस्लाम के लिए तलवार से जीता गया था। यह छंद
निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन श्लोकों द्वारा खण्डन किया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८,
3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14,
9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है
कई खूनी खतरे, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 28 निरसन)।

३११ ८०/१७-१९: "मनुष्य पर हाय! किस बात ने उसे अल्लाह को ठुकरा दिया? (इस तरह प्रयुक्त होने से यह स्पष्ट होता है कि
यहाँ "मनुष्य" शब्द का अर्थ मानव जाति/आदम* है।) उसके पास किस चीज़ से (अल्लाह*) है
उसे बनाया? एक शुक्राणु-बूंद से उसने उसे बनाया है - - -।" परंतु:

यह ६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम बनाया गया था
मिट्टी से, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४
जो बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था
चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और
१५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५, ३५/११, ४०/६७, जो मनुष्य/एडम को बताता है
धूल से बनाया गया था, २०/५५ जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, ९६/२ जो बताता है
मनुष्य/आदम जमे हुए रक्त के थक्के से बना था, २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो बताते हैं
आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! पानी में नहीं, बल्कि पानी से!), 70/39 जो बताता है
आदमी/एडम "आधार सामग्री" से बना था, और सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख नहीं करने के लिए
यह मामला: १९/९ और १९/६७ जो दोनों बताते हैं कि मनुष्य/एडम कुछ भी नहीं से बनाया गया था।

पेज ६५७

(कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्यायों में छंद ६/२ भी देखें।) (कड़ाई से गिना जाता है।)
यह 27 अन्य छंदों के विपरीत है। और यहां न्यूनतम 27 विरोधाभास हैं।)

३१२ ८२/१९: "(यह होगा) वह दिन (कयामत का) जब किसी आत्मा के पास (करने की) शक्ति नहीं होगी
किसी अन्य के लिए - - -।" परंतु:

१. २०/१०९: "उस दिन (कयामत का दिन*)
कोई हिमायत का फायदा नहीं, सिवाय उन लोगों के जिन्हें
(अल्लाह) द्वारा अनुमति प्रदान की गई है - - -।"
यहाँ यह संभव है यदि अल्लाह अनुमति दे।
२.३४/२३: "उसके पास कोई सिफ़ारिश नहीं हो सकती"
(अल्लाह की*) उपस्थिति (= . के दिन पर)
कयामत*), सिवाय जिसके उसने दी है
अनुमति।" हिमायत ठीक है अगर अल्लाह अनुमति देता है।
३.४३/८६: "और जिन्हें वे पुकारते हैं
("भगवान", संत *) अल्लाह के अलावा कोई शक्ति नहीं है
हिमायत का - केवल वह (है*) जो सहन करता है
सत्य के साक्षी - - -।" शब्द "वह"
अल्लाह का ज़िक्र नहीं कर सकता, क्योंकि कुरान
हमेशा पूंजी 1 का प्रयोग करें। अक्षर ("वह")। परंतु
कुरान के अनुसार पैगंबर और
दूतों को "गवाही करने के लिए" बुलाया जाना है
सच्चाई के लिए"। "वह" इसलिए संदर्भित होना चाहिए
प्रत्येक नबी और दूत को - - -
इस श्लोक के अनुसार किसके पास शक्ति है
हस्तक्षेप करना

८२/१९ के बावजूद हिमायत असंभव नहीं है - यह केवल अनुमति लेता है। हदीसें भी बताती हैं
कि मुहम्मद को मध्यस्थता का अधिकार है।

3 विरोधाभास।)

00s 84/10: "लेकिन जिसे उसकी पीठ के पीछे उसका रिकॉर्ड दिया जाता है - - -।" परंतु:

६९/२५: "और वह (पापी*) को उसका रिकॉर्ड उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा (कयामत के दिन) -
- -।" (हम इसे नहीं गिनते, क्योंकि यह कहा जा सकता है कि उसने अपना बायां हाथ अपने पीछे रखा था
वापस। लेकिन वास्तव में बायां हाथ पुराने अरब विश्वास को दर्शाता है कि बायां हाथ बुरा और अशुभ था
पक्ष)

३१३ ८६/१७: "इसलिए अविश्वासियों को विलंब प्रदान करो: उन्हें धीरे से राहत दो (एक के लिए एक के लिए)
जबकि)"। यह 614 ई. में होने की संभावना है। ६२२ ईस्वी से ध्वनि अधिक भयावह हो गई: यह
कविता का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार" दिया जाता है: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85,
3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14,
9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है
कई लोगों को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति (तलवार के साथ)
पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73,
9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

३१४ ८८/६: "उनके लिए कोई भोजन नहीं होगा ("काफिरों" नरक में *) लेकिन एक कड़वी दारी (एक सूखी झाड़ी)
सुइयों के साथ*) - - -।"

१.३७/६६: "- - - वे (नरक में "काफिर") करेंगे
उसके खाओ (के घृणित फल
ज़क़्क़ुम का पेड़ नर्क में*) और उनके पेट भरो
इसके साथ। " लेकिन एक छोटा सा विरोधाभास है:
२.६९/३६: "न ही वह (नरक में "काफिर") किसी से नफरत करता है
धुलाई से भ्रष्टाचार को छोड़कर भोजन
घावों की"।

(२ विरोधाभास।)

३१५ ८८/२२: "तू (मुहम्मद*) को (पुरुषों के) (धार्मिक*) मामलों का प्रबंधन नहीं करना है - - -।" एक अधिक कविता जिसे बाद में अधिक शक्तिशाली मुहम्मद - या अल्लाह - द्वारा निरस्त कर दिया गया था। यह श्लोक कम से कम इन छंदों के द्वारा विरोधाभासी और अक्सर "मार डाला" जाता है: २/१९१, २/१९३, ३/२८, ३/८५, ३/१४८, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३, ९/२९, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई सलाह शामिल हैं या राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की अनुमति देना (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) यदि आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

३१६ ९६/२: अल्लाह "मनुष्य को बनाया (इस तरह इस्तेमाल किया = मानव जाति / आदम *), एक (मात्र) थक्के से जमा हुआ खून - - -। " परंतु:

यह ६/२, ७/१२, १७/६१, ३२/७, ३८/७१, और ३८/७६ द्वारा खण्डन किया गया है जो बताता है कि मनुष्य/एडम बनाया गया था मिट्टी से, १५/२६, १५/२६, और १५/३३ जो बताते हैं कि मनुष्य/आदम बजरी मिट्टी से बना था, ५५/१४ जो बताता है कि आदमी/एडम बजती मिट्टी से बना था, 37/11 जो बताता है कि आदमी/एडम से बना था चिपचिपी मिट्टी, २३/१२, जो बताती है कि मनुष्य/आदम मिट्टी के सार से बना था, १५/२६, १५/२८, और १५/३३ जो बताता है कि मनुष्य/आदम मिट्टी से बना था, ३/५९, २२/५, ३५/११, ४०/६७, जो मनुष्य/एडम को बताता है धूल से बनाया गया था, 20/55 जो बताता है कि मनुष्य/आदम पृथ्वी से बना था, 16/4, 75/37, 76/2, 80/19, बता दें कि आदमी/एडम वीर्य से बनाया गया था (बिना यह बताए कि वीर्य कहाँ से आया है) आया), २१/३०, २४/४५, और २५/५४ जो बताता है कि आदमी/एडम पानी से बना था (एनबी! एनबी! में नहीं पानी, लेकिन पानी से!), 70/39 जो बताता है कि आदमी/एडम "आधार सामग्री" से बना था, और नहीं इस मामले में सबसे बड़े विरोधाभास का उल्लेख करने के लिए: 19/9 और 19/67 जो दोनों बताते हैं कि आदमी/एडम कुछ भी नहीं से बनाया गया था।

(कुरान में १०००+ गलतियों के बारे में अध्याय में छंद ६/२ भी देखें।) (कड़ाई से गिना जाता है।) यह 30 अन्य छंदों के विपरीत है। और इस मामले में भी न्यूनतम 30 विरोधाभास।)

३१७ १०९/5-६: "--- न ही तुम उसकी पूजा करोगे जिसकी मैं पूजा करता हूँ। तुम्हारे लिए अपना रास्ता बनो, और मेरे लिए मेरा।" यह मुहम्मद के करियर की शुरुआत थी - कहीं 611 और 615 ईस्वी के बीच। उनके धर्म शांतिपूर्ण था और उसकी सैन्य शक्ति शून्य थी। उसके हासिल करने के बाद सब कुछ बदल गया ६२२ ईस्वी से वास्तविक शक्ति - विज्ञान इस बात से असहमत है कि क्या यह उसका वास्तविक स्वरूप था जो उभरा जब वह पर्याप्त रूप से शक्तिशाली हो गया, या यदि वह नैतिक रूप से शक्ति द्वारा नष्ट हो गया था - शक्ति अक्सर उस प्रभाव है। इस पद का खंडन किया गया है और अक्सर कम से कम इन छंदों द्वारा "मार डाला" जाता है: 2/191, 2/193, 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 4/90, 5/33, 5/72, 5/73, 8/12, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/ 36, 47/4, 66/9। इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह देने या अनुमति देने वाली कई बाध्यताएं शामिल हैं (के साथ यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 29 विरोधाभास)।

317 विरोधाभास + 19 संभावित विरोधाभास। (और भी हैं)।

और एक अतिरिक्त विरोधाभास: अल-अजहरी द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ कुरान" में काहिरा में अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक) ऐसे विषयों पर दुनिया) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि अगर अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, तो स्वचालित रूप से भी है के लिए कोई सबूत नहीं है, और अल्लाह से मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है। अगर वहाँ कोई नहीं है अल्लाह और/या मुहम्मद और एक ईश्वर के बीच कोई संबंध नहीं है, तो इस्लाम क्या है? काफी कुरान में अधिकांश पाठ के विरोधाभास!

पुनश्च: हम दोहराते हैं कि हमने इसे इंटरनेट पर लॉन्च करने से ठीक पहले कुछ विरोधाभास जोड़े हैं। जैसा जब हम 2010 में इस पुस्तक को समाप्त कर लेंगे तो हम कुछ और जोड़ देंगे, हम इसे ठीक करने की प्रतीक्षा करते हैं तब तक मेटमैटिक्स।

भाग II, अध्याय 8, उपअध्याय 2 (= II-8-2-0)

कुरान में गलतियाँ और त्रुटियाँ - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें। धारा 1 से 16.

१००+ में बाहरी विरोधाभास कुरान - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

(जैसा कि अधिकांश गलतियाँ वास्तविकता के विरोधाभास हैं, और भी कई बाहरी विरोधाभास हैं - कई और।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

(एनबी: बाइबिल के विरोधाभास - भाग III, अध्याय 2 देखें)

कुरान का दावा है कि कुरान में कोई विरोधाभास नहीं है। मुहम्मद ने दावा किया कि वहाँ नहीं थे कुरान में विरोधाभास। इस्लाम का दावा है कि कुरान में कोई विरोधाभास नहीं है। मुसलमानों दावा है कि कुरान में कोई विरोधाभास नहीं है।

वे बिना किसी गलती के दावा करते हैं - और वे गलत हैं। वहां बहुत सारे हैं।

659

पेज 660

और वास्तव में कुरान में सभी गलत तथ्य कुरान में वास्तविकता के साथ विरोधाभास हैं - प्रत्येक गलत तथ्य एक ऐसा विरोधाभास है। **हाँ, तथ्यों में हर एक वास्तविक गलती, व्याकरण, भाषा, आदि कुरान में वास्तविकता के लिए एक बाहरी विरोधाभास है। इसका मत वास्तव में 2000 से अधिक बिंदु हैं जो वास्तविकता के विपरीत हैं।**

लेकिन यहां हम सबसे अधिक बहस वाले विरोधाभासों को सूचीबद्ध करते हैं। उनमें से ज्यादातर हम बस गलत तथ्यों की सूची से लिया है - सिर्फ इसलिए कि जैसा कहा गया है: वास्तविकता में गलत तथ्य हैं वास्तविकता के विरोधाभास। भले ही आपको बहुमत "1000+ . के अध्यायों में भी मिल जाए कुरान में गलत तथ्य", हमने पाया कि सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले और सबसे अधिक को इकट्ठा करना व्यावहारिक होगा यहां एक अलग शॉर्टलिस्ट में स्पष्ट विरोधाभास हैं, ताकि उन्हें ढूंढना आसान हो - - - और आसानी से एक सिंहावलोकन प्राप्त करें। यदि आप इन पर और आंतरिक अंतर्विरोधों की टिप्पणियों को जानते हैं (पिछला अध्याय - II/8/ए देखें), आप संबंधित दावों और बयानों में से ९०% को पूरा कर सकते हैं "कुरान में कोई विरोधाभास नहीं"।

001 2/22a "- - - स्वर्ग, आपकी छत्र - - -"। बहुवचन और गलत - 7 स्वर्गों का जिक्र।

2/29 - 23/17 - 23/86 - 41/2 - 65/12 - 67/3 - 78/12, और 10/6 - 31/10 भी देखें। स्वर्ग है कोई चंदवा नहीं - सिर्फ एक ऑप्टिकल भ्रम + वैक्यूम। और कोई 7 नहीं। सच्चे खगोल विज्ञान के विपरीत।

002 2/53: "- - - हम (अल्लाह*) ने मूसा को शास्त्र - - -" दिया। मूसा के नाम पर पुस्तकें - बाइबिल में पहले 5 - (टोरा) मूसा द्वारा नहीं लिखे गए हैं। मूसा रहता था (यदि वह नहीं है a कथा) लगभग १३००-१२०० ईसा पूर्व (यदि मिस्र से पलायन वास्तव में हुआ था, तो यह सीए हुआ था। 1235 ईसा पूर्व रामसेस द्वितीय के शासनकाल के दौरान विज्ञान के अनुसार), और उन पुस्तकों को लिखा गया था सीए से पहले नहीं। 800 ईसा पूर्व - शायद 500 ईसा पूर्व के रूप में - विज्ञान के अनुसार भी। एक भगवान था यह जानते थे, जबकि मुहम्मद को उनकी वास्तविक उम्र के बारे में कुछ नहीं पता था, और उन्हें अनुमान लगाना था। (होने वाला सटीक: बाइबल कहती है कि यहोवा ने मूसा को व्यवस्था दी थी - दो पत्थरों के अलावा कुछ भी भौतिक नहीं है पटियाएँ जहाँ दस आज्ञाएँ अंकित थीं - और यह कि उन्होंने इसे बाद में लिखा। यह यह भी कहता है कि जब सुलैमान वाचा के सन्दूक को यरूशलेम के मन्दिर में ले गया

(१ किंग्स ८/९: इसमें केवल दो पत्थर की गोलियां थीं। "कि वाचा" के बारे में कुछ भी नहीं है
मूसा" - विज्ञान, एकमत है कि वे बहुत बाद में लिखे गए हैं अगर मुसलमान कुछ दावा करते हैं
अन्यथा, उन्हें सबूत पेश करने होंगे।) कानून भी वास्तव में तोराह/पुस्तक का ही हिस्सा है
मूसा। ऐतिहासिक विज्ञान का विरोध।

००३ २/९९: "हम (अल्लाह*) ने तुम पर (लोगों*) प्रकट निशानियाँ उतारी हैं - - -"। कुरान है
यह जो कहता है उसके साथ अतिभारित "संकेत" (प्रमाण होने के लिए संकेतित) और "स्पष्ट संकेत" या पसंद हैं
यहाँ "प्रकट संकेत" (मजबूत प्रमाण होने का संकेत) - और उनमें से एक भी साबित नहीं होता है
अल्लाह या मुहम्मद के बारे में कुछ भी, जैसा कि किताब कभी साबित नहीं करती, केवल दावा करती है, कि अल्लाह ने किया
यह या वह जिसे वह तब "चिह्न" या "स्पष्ट संकेत" या "प्रमाण" कहता है (कुछ हो सकता है
बाइबिल से लिए गए संकेतों के लिए अपवाद, लेकिन वे मामले में यहोवा को साबित करते हैं, अल्लाह को नहीं - और
केवल इस्लाम दावा करता है कि यहोवा और अल्लाह एक ही ईश्वर हैं (जो तब तक नहीं हो सकते, जब तक कि
ईश्वर सिज़ोफ्रेनिक है - वे बहुत अलग हैं, खासकर जब यहोवा उसके अनुसार कार्य कर रहा हो
एनटी से नई वाचा, जो मुहम्मद के शुरू होने से लगभग 580 साल पहले आई थी
उपदेश, लेकिन जिसका मुसलमान कभी उल्लेख नहीं करते)। विशेष रूप से "साफ़ संकेत" के दावे तो हैं
स्पष्ट रूप से गलत है, कि उनमें से कुछ को भी कॉलम में शामिल नहीं करना असंभव है
"गलत तथ्य" - वे कोई संकेत नहीं हैं - और निश्चित रूप से कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं - एक भगवान के लिए, और यहां तक कि अगर
वे थे, वे निश्चित रूप से अल्लाह के लिए कोई स्पष्ट संकेत नहीं थे, क्योंकि किसी भी धर्म में कोई पुजारी
अपने भगवान या देवताओं के लिए वही दावे कर सकते हैं - शब्द इतने सस्ते हैं - - - के लिए भी
मुहम्मद. वास्तविकता और तर्क के नियमों का विरोध करना।

004 2/113a: "- - - वे (यहूदी और ईसाई*) (उसी) किताब का अध्ययन करने का दावा करते हैं।" गलत के लिए
दो कारण: एक: यहूदियों के पास केवल पुराना नियम (OT) है। दो: ईसाई धर्म है

660

पेज ६६१

NT पर निर्मित, OT मुख्य रूप से ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के रूप में - एक ऐसा तथ्य जिसे विरोधी अक्सर भूल जाते हैं या
"भूल जाओ"। विरोधाभासी वास्तविकता।

005 2/213b: "मानव जाति एक अकेला राष्ट्र था - - -।" मानव जाति कभी भी एक राष्ट्र नहीं था। कुछ
160ooo-200ooo साल पहले शायद एक जनजाति, लेकिन कभी एक राष्ट्र नहीं - और बिल्कुल नहीं
इन पिछले कुछ सहस्राब्दियों के भीतर। इससे संबंधित सभी वैज्ञानिक ज्ञान का खंडन करना।

००६ २/२१६: "और पृथ्वी पर: सब कुछ उसकी (अल्लाह *) पूजा करता है"। जब कुरान
सब कुछ कहता है, इसका मतलब सब कुछ है - निर्जीव पदार्थ भी। लेकिन कभी नहीं दिखाया गया है
उसके लिए एक ही स्पष्ट संकेत यहां तक कि जानवर भी (निर्जीव चीजों का उल्लेख नहीं करने के लिए) - शामिल
स्लग और मक्खियाँ और सब कुछ - किसी भी देवता की पूजा करता है, यह उल्लेख नहीं करने के लिए कि यह दावा किया गया है
पूजा का प्रतिपादन अल्लाह की ओर निर्देशित है। उत्तर भी कोई गैर-मुसलमान ऐसा नहीं करते हैं। इस्लाम विल
इसे साबित करना होगा अगर वे जोर देते हैं कि यह सच है।

007 2/119: "- - - खुशखबरी - - -"। यह अभिव्यक्ति कुरान में कई जगह दोहराई गई है, लेकिन
कुरान केवल खुशखबरी है अगर यह एक बनी हुई किताब नहीं है, और फिर केवल मुसलमानों के लिए है, और फिर
फिर से केवल कुछ मुसलमानों के लिए: जो दूसरों से चोरी करने के लिए युद्ध में जाना पसंद करते हैं और
अमीर बनने के लिए, जो दूसरों को शक्तिशाली बनने के लिए दबाना चाहते हैं, और अल्पसंख्यक जो कि
झुकाव के लिए एक धर्म की जरूरत है (सभी संस्कृतियों में ऐसा अल्पसंख्यक है, और वे खुशी से झुकते हैं
वे जिस भी धर्म में विश्वास करते हैं)। लेकिन यह धार्मिक अर्थों में भी एक सुखद खबर है
वे केवल तभी जब यह एक सच्चा धर्म साबित हो - - - और बहुत कुछ इंगित करता है कि कुरान बना हुआ है,
कि इस्लाम को विश्वास करने के लिए केवल दावा ही नहीं, सिद्ध करना होगा। अर्थ में विरोधाभास यह है
बहुसंख्यकों के लिए बुरी खबर, पीड़ितों के लिए उल्लेख नहीं करना (लेकिन मुहम्मद और इस्लाम ऐसा लग रहा था)
- और कम से कम आंशिक रूप से लगता है - एक सांस्कृतिक स्तर पर होना जहां कोई सहानुभूति महसूस करने में असमर्थ था
और यह समझने में असमर्थ कि इस्लाम के आक्रमणों और युद्धों का दूसरों के लिए क्या मतलब है
मनुष्य।

008 2/125: "- - - इब्राहीम का स्टेशन (मक़म-ए-इब्राहिम*)---"। यह अभ्यास में एक निशान है
मक्का में एक पत्थर। कुरान इशारा करता है और इस्लाम कहता है कि यह इब्राहीम के पैरों का निशान है
जब उसने काबा बनाया। नहीं - बिल्कुल नहीं - मकान बनाने वाला मजदूर कभी एक पर खड़ा होता था और
1400 साल बाद दिखाई देने वाले प्राकृतिक पत्थर में निशान बनाने के लिए वही जगह काफी लंबी है। यह है
दुनिया में किसी भी समय या किसी भी स्थान पर कभी नहीं हुआ। यह सपाट रूप से एक परी कथा है और दृढ़ता से
वास्तविकता और उसके लिए सोचने में सक्षम किसी भी इंसान की बुद्धि से दोनों का खंडन किया-
/ खुद। अब, इस्लाम निशान बताता है (वास्तव में 2 - प्रत्येक पैर के लिए एक) एक चमत्कार का परिणाम है, जैसे
उनका दावा है कि पत्थर इतना नरम हो गया कि अब्राहम के पैर उसमें धंस गए। (वे यह भी दावा करते हैं कि
पत्थर जन्नत से है - स्वर्ग के बगीचे)। खैर, इस्लाम ने अब तक यह भी साबित कर दिया है कि
इब्राहीम ने कभी भी मक्का का दौरा किया, एक ऐसी जगह जो उसके और उसके बड़े के लिए बहुत ही निषिद्ध थी

जानवरों के झुंड - मुसलमानों को उद्धृत करने के लिए "एक बंजर रेगिस्तान", और उनकी दावा की गई पहली यात्रा पहले भी
ज़मज़म कुआँ भी मिला था, इस्लाम के अनुसार - रेगिस्तानी भूमि को मना करने के पीछे
जिसके माध्यम से उसे अपनी सभी भेड़ों, बकरियों, गायों आदि का नेतृत्व करना था और उनके लिए भोजन और पानी खोजना था
- और उसके पास बहुत से लोग थे क्योंकि वह एक अमीर आदमी था (इस्लाम का दावा है कि बाद में केवल ऊंटों द्वारा दौरा किया गया था।
और सबसे ऊपर एक जगह जहां से वह रहता था और बिना किसी आकर्षण के एक जगह
मवेशियों का बड़ा मालिक, आदि। जो चाहे उस पर विश्वास करें - लेकिन यदि आप ऐसा मानते हैं तो डॉक्टर के पास जाएं और
बाकी उस कहानी (2 खानाबदोशों द्वारा बनाई गई बड़ी पत्थर की मस्जिद, इश्माएल एक बड़ा पत्थर ला रहा है - दूर
उठाने के लिए बहुत बड़ा (बिल्डर आमतौर पर अधिक व्यावहारिक दिमाग वाले होते हैं) - उनके पिता के लिए खड़े होने के लिए, और a
पत्थर इतना तेज चमक रहा है कि अल्लाह को अपनी रोशनी बंद करनी पड़ी) बिना उचित सबूत के।

009 3/35: "इमरान की पत्नी ने कहा"। यहाँ कुरान मरियम की माँ के बारे में बात कर रहा है (यह भी देखें .)
कुरान में 3/36: "मैंने उसका नाम मरियम रखा है")। लेकिन इमरान हारून, मूसा और के पिता थे

मरियम, जो करीब १२०० साल पहले रहती थी। अध्याय के तहत 3/35 देखें "गलत तथ्य"
कुरान"।

०१० ३/१५४: "यदि तुम अपने घरों में ही रहते, तो भी जिनके लिए मृत्यु का आदेश दिया गया था
निश्चय ही वे अपनी मृत्यु के स्थान पर चले गए होंगे।" लड़ाई में या अपने बिस्तर में - आप
अल्लाह द्वारा पूर्वनिर्धारित समय पर मरो। आँकड़ों के माध्यम से यह साबित करना बहुत आसान है कि यह है
गलत (मुसलमान भी उस पर विश्वास नहीं करते जब वे अपने मृतकों के लिए यहूदियों को दोष देते हैं और नहीं)
अल्लाह, इसके बावजूद अल्लाह तय करता है कि 5 महीने पहले (हदीस) आप पैदा होते हैं, जब आप
मरो)। वह है: यदि आपको प्रमाणों की आवश्यकता है तो यह साबित करना आसान है: सामान्य बुद्धि का भी विरोध करना।

011 5/3: "आपके लिए (भोजन के लिए) निषिद्ध हैं: मृत मांस, रक्त, सूअर का मांस (और कुछ
अधिक*)- - -।" यह एक पूरी सूची होने का दिखावा करता है, लेकिन इसका खंडन किया जाता है - और निरस्त किया जाता है - by
हदीस, भले ही वह घटना इसके जारी होने से लगभग 5 साल पहले हुई हो
सूरह: f के अनुसार गधे का मांस भी "हमेशा के लिए" सबसे स्पष्ट रूप से प्रतिबंधित है। भूतपूर्व। अल-
बुखारी।

०१२ ४/७८: "सब कुछ अल्लाह की ओर से है।" कुरान में अन्य स्थानों से कोई भी जानता है कि "सब
चीजें" का अर्थ है जो कुछ भी होता है, दिया जाता है, लिया जाता है, और कुछ भी। तब 4/78 है
4/79 द्वारा स्पष्ट रूप से विरोधाभास: "- - - लेकिन जो कुछ भी आपको होता है, वह आपकी (अपनी) आत्मा से होता है"।
इसके अलावा 4/79 से यह वाक्य गलत है - प्राकृतिक और अन्य आपदाएं हैं और
दुर्घटनाएँ, और अन्य लोगों और जानवरों की हरकतें हैं। इसके अलावा हर श्लोक कह रहा है
मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा है, इसका खंडन इस (और कई अन्य) छंदों से होता है - मनुष्य के लिए स्वतंत्र इच्छा और
पूर्वनियति, और यहां तक कि सर्वज्ञता का अर्थ है कि कुल claitvoiance बिल्कुल हैं
गठबंधन करना असंभव है। यहां तक कि इस्लाम भी स्वीकार करता है कि गठबंधन करना असंभव है, लेकिन यह होना ही चाहिए
सच है जैसा कि अल्लाह ऐसा कहता है (कुरान* में)" (!!!!!) ("कुरान का संदेश" ६/१४९, नोट १४१)।

०१३ ४४/११: "ये बसे हुए हिस्से (विरासत के) हैं जिन्हें अल्लाह ने ठहराया है; और अल्लाह सब है-
जानने वाला, सर्व-बुद्धिमान"। एक दावा जो इस तथ्य से पूरी तरह से खंडित है कि भाग करता है
हमेशा नहीं जोड़ें। निर्देशी। भूतपूर्व। ऐसे मामले हैं जहां उत्तराधिकारी उल्लिखित नियमों के अनुसार हैं
कुरान में, सभी को एक साथ 112,5% और यहां तक कि कुल विरासत का 125% विरासत में मिला है - और
अन्य मामले जहां राशि 100% से कम है।

०१४ ६/१: "अल्लाह की स्तुति करो, जिसने आकाश (बहुवचन और गलत) और पृथ्वी को बनाया - -।"
और उसने इसे कैसे बनाया? संक्षेप में (पृथ्वी, ब्रह्मांड और जीवित प्राणी शामिल हैं):
कुरान के अनुसार "सब कुछ" इस प्रकार है:

ऊपर सात आकाश - एक के ऊपर एक।

स्वर्ग में जन्नत है - और बेहतर स्वर्ग (= अल्लाह के करीब)।

उनके बीच में सूर्य और चंद्रमा हैं।

साथ ही सूर्य आकाश में घूमता है। (वास्तव में यह पृथ्वी है जो चारों ओर घूमती है।)

यह पूर्व में पृथ्वी से उगता है, और पश्चिम में गंदे पानी के एक पूल में स्थापित होता है।

सूर्योदय और सूर्यास्त की खोज धुल क़ार्नायन = सिकंदर महान ने की थी।

सूर्य और चंद्रमा के नीचे, और ७ आकाशों में से सबसे निचले हिस्से तक बंधे हुए, सभी तारे हैं।

बुरी आत्माओं और स्वर्ग पर जासूसी करने वाले जिन्न का पीछा करने के लिए सितारों का उपयोग शूटिंग सितारों के रूप में भी किया जाता है।

आकाश के नीचे और तारे बादल हैं।

बादल अल्लाह कभी-कभी टुकड़े-टुकड़े कर देता है (बारिश की बूँदें)।

उनके तहत पक्षियों को केवल अल्लाह की मर्जी से अलग रखा जाता है।

फिर हमारी समतल पृथ्वी है।

पृथ्वी पर पहाड़ स्थापित हैं - बड़े नहीं, बल्कि नीचे।

पहाड़ों द्वारा पृथ्वी को स्थिर रखा जाता है।

स्थिर पहाड़ों के बिना पृथ्वी हिलना शुरू कर सकती है और चारों ओर झुक सकती है (आज इस्लाम भूकंप की ओर इशारा करता है, लेकिन यह मूल नहीं था पुराने के मुस्लिम विद्वानों के अनुसार अर्थ)।

"हमारी" पृथ्वी पर नदियाँ हैं। हदीसें बताती हैं कि उनमें से 2 - नील और फरात - जन्नत में शुरू होती हैं।

पृथ्वी पर और भी सड़कें हैं - अल्लाह द्वारा बनाई गई।

पृथ्वी पर भी सभी प्रकार के प्राणी रहते हैं - मिट्टी या किसी चीज से निर्मित।

पहला आदमी आदम था - एक अकेला आदमी जिसे ५ और १३ अलग-अलग तरीकों से बनाया गया था।

हमारी धरती (हदीस) के नीचे और भी चपटी धरती हैं - 7 सब एक साथ।

और नीचे (हदीस) नर्क है।

ठीक वैसे ही जैसे आपके प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक ने आपको बताया था?

०१५ ६/२: "वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया - - -"। लेकिन मनुष्य कैसे बनाया गया, is कुरान में जटिल; एक और पहला आदमी - एडम - कम से कम 13 . में बनाया गया था अलग-अलग तरीके (या 5-6-7 यदि आप कहते हैं कि उनमें से कुछ एक ही कच्चे के लिए अलग-अलग नाम थे सामग्री)। यह भले ही एक आदमी को एक से अधिक तरीकों से नहीं बनाया जा सकता है। कुरान कहता है वह बनाया गया था:

मिट्टी से:	6/2 7/12 17/61 32/7 38/71 38/76।
बजने वाली मिट्टी से:	15/26 15/28 15/33।
बजती मिट्टी से:	55/64
चिपचिपी मिट्टी से:	37/11
मिट्टी के सार से:	23/12
कीचड़ से:	15/26 15/28 15/33।
धूल से:	3/59 22/5 35/11 40/67।
पृथ्वी से:	20/55
जमे हुए रक्त के थक्के से: 96/2	
वीर्य से:#	16/4 75/37 76/2 80/19।
से कुछ नहीं:	19/9 19/67।
पानी से:	21/30 24/45 25/54।
आधार सामग्री से:	70/39।

#(यह नहीं बताया गया है कि वीर्य कहां से आया)।**

**ज्यादातर जब पुस्तक वीर्य की बात करती है तो वह (बनाने) बच्चों के संबंध में होती है। परंतु वीर्य से बच्चे भी नहीं बनते - यह सत्य का केवल 50% है। एक बच्चा . से बना है

वीर्य + एक अंडा कोशिका, लेकिन एक अंडा कोशिका इतनी छोटी होती है कि मुहम्मद को इसके बारे में पता नहीं था - मानव अंडे शायद ही किसी शव या वध किए गए जानवर के रक्त और गोर में देखे जा सकते हैं। वास्तव में मुहम्मद के समय कोई नहीं जानता था कि गर्भाधान कैसे हुआ - एक सिद्धांत क्या वह वीर्य एक बीज था जो एक महिला में रखे जाने पर बढ़ता था - हालांकि हर बार से बहुत दूर। हैरानी की बात यह है कि कुरान इसे कैसे समझाता है। कोई भी भगवान बेहतर जानता था।

आदमी/आदम को बनाने के सभी अलग-अलग तरीकों को सख्ती से बोलने का मतलब है कि कुरान बताता है कि मनुष्य/आदम को 13 अलग-अलग तरीकों से बनाया गया था, भले ही आदम को केवल एक बार बनाया गया था (वास्तव में वह कभी नहीं बनाया गया था और न ही कभी अस्तित्व में था - मनुष्य पहले के प्राइमेट से विकसित हुआ था)। अगर एक गांठ समान "रचना" एक साथ, अभी भी कम से कम 5-7 विभिन्न रचनाएँ बनी हुई हैं। केवल एक ही कर सकते हैं कुरान के अनुसार भी सही हो (क्योंकि आदम को केवल एक बार बनाया गया था, यहां तक कि के अनुसार भी) कुरान और बाइबिल) - और विडंबना यह है कि विज्ञान ने लंबे समय से दिखाया है कि सभी विकल्प गलत हैं, जैसा कि कहा गया है कि मनुष्य एक प्रागैतिहासिक प्राइमेट से विकसित हुआ है।

कुछ मुसलमान समझाते हैं कि आदम एक छोटी मिट्टी, थोड़ी धूल, थोड़ी सी धरती से पैदा हुआ था थोड़ा खून, थोड़ा वीर्य, थोड़ा कुछ नहीं और थोड़ा पानी। लेकिन यह कुरान से कोसों दूर है बताता है - और अगर यह कुरान की सच्ची कहानी है तो भी गलत है। एक बात के लिए आदमी नहीं करता मिट्टी, आदि से मिलकर बनता है, और दूसरे के लिए जैसा कि उल्लेख किया गया है, वह नहीं बनाया गया था, बल्कि विकसित किया गया था प्रागैतिहासिक प्राणी।

(हाँ, हम पुरातत्व से पूर्व संध्या के बारे में जानते हैं जो लगभग 160ooo पूर्वी अफ्रीका में रहते थे - 200ooo साल पहले, और इसी आदम जो लगभग 60ooo - 70ooo . एशिया में रहता था (६४ooo?) साल पहले, लेकिन वह कुछ अलग है)।

विरोधाभासी भी 3. प्राथमिक विद्यालय के ज्ञान का निर्माण।

०१६ ६/११: "पृथ्वी में घूमो और देखो कि उन लोगों का क्या अंत हुआ जिन्होंने इनकार किया था सत्य"। चारों ओर बिखरे हुए पुराने घरों, गांवों और कस्बों के खंडहर थे। मुहम्मद ने बताया ये वो अवशेष थे जिन्हें लोगों ने अल्लाह पर विश्वास न करने के कारण नष्ट कर दिया था - जो ज्यादातर मामलों में शायद ही सच हो। सच कहूं तो इतिहास का एक भी गंभीर प्रोफेसर नहीं इस पर विश्वास करता है। उन्हें मनाने के लिए इस्लाम से भारी सबूत लेने होंगे। विरोध ऐतिहासिक विज्ञान।

०१७ ६/२८: "लेकिन अगर वे (पापियों*) को (नरक से पृथ्वी*) लौटा दिया जाता, तो वे निश्चित रूप से उन चीजों के लिए फिर से आना जिनके लिए उन्हें मना किया गया था"। यह उन जगहों में से एक है जहां एक बुद्धिमान व्यक्ति लोगों के बारे में बहुत सारी जानकारी, जैसे मुहम्मद को पता था कि वह झूठ बोल रहा है - अधिकांश व्यक्ति कुरान में वर्णित नरक की तरह देखा और अनुभव किया, व्यावहारिक रूप से करेंगे अगर उन्हें दूसरा मौका मिला तो कुछ भी खत्म नहीं होगा। यह श्लोक सबका विरोध करता है सामान्य मनोविज्ञान - और सभी सामान्य बुद्धि।

018 6/91c: "- - - आप (यहूदी*) बहुत कुछ छिपाते हैं (इसकी (तोराह = OT* का पहला भाग) सामग्री - - -"। विज्ञान ने कभी इतना स्पष्ट रूप से दिखाया है कि यह इस्लामी दावा गलत है - कई वास्तव में पुराने दस्तावेजों से पता चला है कि आज के ग्रंथ वास्तव में पुराने लोगों की तरह हैं। इस्लाम को करना होगा कुरान और अन्य जगहों पर बार-बार किए गए दावों के लिए वास्तविक प्रमाण लाओ - अब तक उनके पास केवल अप्रमाणित दावे और ढीले-ढाले शब्द पैदा करता है, और हम पुराने तथ्य पर वापस आ गए हैं: यदि इस्लाम में होता यह दिखाते हुए एक कठिन तथ्य पाया गया कि बाइबल को किसी भी तरह से गलत ठहराया गया था, दुनिया को बताया गया था जल्दी और बड़े अक्षरों के साथ। इसका कारण यह है कि इस्लाम के पास इसके लिए एक भी वास्तविक प्रमाण नहीं है अल्लाह का अस्तित्व, एक दूत के रूप में गेब्रियल के लिए, मुहम्मद के ईश्वर से संबंध के लिए या कुछ भी - सब कुछ केवल - केवल - मुहम्मद ने जो कहा, और ऐतिहासिक . पर टिका है मुहम्मद (इस्लामी चमकदार तस्वीर के विपरीत) एक ऐसा व्यक्ति था जिसके पास नहीं होता

किसी भी गंभीर अदालत में विश्वसनीय गवाह के रूप में स्वीकार किया गया है। बाइबिल के मिथ्याकरण के लिए एक सबूत इस बात का संकेत होगा कि कुरान इस एक बिंदु पर सही था, और इस प्रकार बहुत स्वागत। लेकिन १४०० सौ वर्षों में कोई वास्तविक प्रमाण नहीं मिला है - केवल दावे और शब्द। इसलिए झूठे बाइबिल के लिए एक वास्तविक प्रमाण सभी मुस्लिम मीडिया और सभी के लिए एक बड़ी खबर थी

हमेशा के लिए धर्म पर बहस करने वाले मुसलमान।

ऐसा कोई प्रमाण इस्लाम द्वारा कभी प्रस्तुत नहीं किया गया है। वे सिर्फ दावा और विरोध करते रहते हैं
ऐतिहासिक विज्ञान।

3/24, 5/13, 5/14, 5/15 भी देखें। मुस्लिम विद्वान यह जानते हैं, लेकिन अशिक्षितों को यह कहानी सुनाएं
जैसे भी। अल-तकिया? अंध विश्वास? वास्तविकता पर नहीं आशाओं के आधार पर कामना करना? "यह सच होना चाहिए, क्योंकि इसमें कहा गया है"
कुरान"?

०१९ ६/१०४: "अब (कुरान*) तुम्हारे पास (मुसलमान*), अपने रब (अल्लाह*) की ओर से आ जाओ।
सबूत - - -"। गलत। सभी कुरान में अल्लाह या इस्लाम के लिए एक भी वैध प्रमाण नहीं है -
या मुहम्मद के असली नबी होने के नाते। एक भी प्रमाण ऐसा नहीं है जो किसी भी ईश्वर को सिद्ध करता हो। भी
"कुरान में गलत तथ्य" (II/1/3) के तहत 6/104b देखें। समस्या यह है कि सभी "संकेत" और
"सबूत" तर्क के नियमों का खंडन करते हैं - आम तौर पर आधार के रूप में साबित नहीं किए गए तथ्यों का उपयोग करके
निष्कर्ष यदि मूल तथ्य सिद्ध नहीं होते हैं, तो तर्क के सभी नियमों के अनुसार "निष्कर्ष"
या दावा अमान्य है।

०२० ६/१५१: "आओ, मैं (मुहम्मद*) पूर्वाभ्यास करूंगा कि अल्लाह ने तुम्हें क्या मना किया है (वास्तव में)
से - - - (f. e x.*) अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करें"। यह बहुत स्पष्ट रूप से गलत है और थोड़ा सा है
कुरान में अन्य स्थानों की तुलना में विरोधाभास - मुहम्मद का स्पष्ट रूप से मतलब था
बिल्कुल विपरीत; कि आपको अपने माता-पिता के लिए भगवान होने का आदेश दिया गया था। दोनों के लिए एक विरोधाभास
पुस्तक और कठोर वास्तविकता के लिए कि यह मुहम्मद की सोच का खंडन कर रहा है
और उन्होंने इस पर क्या कहा और क्या मतलब था। एक सर्वज्ञ ईश्वर ऐसी गलती नहीं करेगा। कौन
कुरान बनाया?

साथ ही मुस्लिम विद्वान इस बात से सहमत हैं कि यहाँ पाठ गलत है - यह बिल्कुल विपरीत है कि
कुरान इस बारे में अन्य सभी जगहों पर कहता है। जो आपको किसी के खिलाफ अपराजेय सबूत देते हैं
मुस्लिम शेखी बघारते हैं कि किताब बिना किसी गलती के है। एक प्रमाण और एक तथ्य
इस्लाम द्वारा स्वीकृत! (और इसके अलावा: अगर यहाँ कोई गलती है, तो और कितने हैं?) Just
याद रखें: ६/१५१ (स्कैंडिनेवियाई में ६ = सेक्स, और १५१ में दोनों सिरों पर सेक्स होता है (१ + ५ = ६, और ५ + १)
= ६)। याद करने के लिए आसान। (उसी श्लोक में आप भी "अपनी हत्या न करने से निषिद्ध" हैं
बच्चे" यदि आप गरीब हैं। इस्लाम के अनुसार भी बहुत गलत है।) अध्याय II/10 भी देखें।

०२१ ६/१५४: "(कुरान*) सभी चीजों को विस्तार से समझा रहा है"। यह सब से दूर समझा रहा है
चीजें, और निश्चित रूप से पर्याप्त विवरण में नहीं - अन्य तथ्यों के बीच में पर्याप्त कानून नहीं हैं
कुरान को समाज चलाने के लिए, जिसके कारण मुसलमानों को सप्लीमेंट्स बनाने पड़े हैं। के विपरीत है
वास्तविकता।

022 7/54a: "- - - अल्लाह, जिसने छह दिनों में स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया - - -।" कोई टिप्पणी नहीं।

०२३ ७/५४बी: "वह रात को दिन पर परदे की तरह खींचता है - - -"। रात तो बस का अभाव है
रोशनी। कुछ भी तो नहीं। किसी भी चीज़ को परदे के रूप में इस्तेमाल करना या किसी चीज़ पर खींचना संभव नहीं है - और
दिन के उजाले पर बिल्कुल नहीं। मुहम्मद ने यह पूरी तरह से गलत किया था: दिन के उजाले कर सकते हैं
अंधेरे को प्रभावित करते हैं, लेकिन रात का अंधेरा दिन के उजाले को प्रभावित नहीं कर सकता। पूरा गलत।

665

पेज ६६६

०२४ ७/८०: "- - - अश्लीलता (समलैंगिकता*) जैसे सृष्टि में कोई भी व्यक्ति (कभी) प्रतिबद्ध नहीं है
तुमसे पहले?" गलत। समलैंगिकता कुछ लोगों की प्रकृति का एक एकीकृत हिस्सा है। विज्ञान
यह भी पाया है कि यह किस जीन से जुड़ा है - और यही कारण है कि यह समाप्त नहीं हुआ है, है
कि एक ही जीन व्यक्ति के विषमलैंगिक होने पर कई बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति देता है- या
उभयलिंगी (जीन हमेशा समलैंगिकता नहीं देता), बिना कोई समझा सकता है
तंत्र। आप कुछ जानवरों के साथ समलैंगिकता भी पाते हैं - वहाँ कभी-कभी इसका प्रमाण होता है
प्रभुत्व का। वैज्ञानिक ज्ञान का विरोध करता है।

०२५ ७/१२४: "- - - और मैं (फिरौन रामसेस II*) तुम सब को क्रूस पर मरने का कारण बनाऊँगा"। मिस्र में
उस समय सूली पर चढ़ाने का प्रयोग नहीं होता था। ऐतिहासिक ज्ञान का विरोध करता है।

०२६ ७/१३७: "- - - हम (अल्लाह*) ने बड़े-बड़े कामों और उम्दा इमारतों को जमीन पर समतल कर दिया है।
फिरौन और उसके लोगों ने - - -" खड़ा किया था। न तो पुरातत्व में कोई निशान है, न ही . में
इतिहास, साहित्य या कला, इस तरह की तबाही का वर्ष १२३५ ईसा पूर्व के आसपास (कुछ साल पहले)

रामसेस II के शासनकाल का अंत) जब ऐसा होना चाहिए था - से पलायन के दौरान
मिस्र। इसके विपरीत; रामसेस द्वितीय सबसे मजबूत और सबसे सफल में से एक था
फिरौन, कई वर्षों के बाद कई महान इमारतों को पीछे छोड़ते हुए - अन्य बातों के अलावा -
इमारत। क्या मुहम्मद ने अपनी कहानी में और नाटक किया है, यह विश्वास करना कि यह असंभव होगा
नियंत्रण अगर यह सच थे? सभी ऐतिहासिक और पुरातात्विक ज्ञान का खंडन करता है।

०२७ ७/१५७ए: "- - - अनपढ़ नबी (मुहम्मद*) जिसका उल्लेख वे अपने में पाते हैं
खुद (शास्त्र) - कानून में (एक नाम अक्सर टोरा के लिए इस्तेमाल किया जाता है - ओटी * का पहला भाग)
और सुसमाचार (वास्तव में NT* के पहले 4 भाग) - - -।" यहाँ एक ठोस विरोधाभास है
वास्तविकता, जैसा कि मुहम्मद बाइबिल में कहीं भी मौजूद नहीं है। मुसलमान ऐसा दावा करते हैं, लेकिन समर्थित हैं
केवल इच्छाधारी सोच और चेरीपिकिंग प्लस शब्दों को घुमाकर। अध्याय देखें:
"बाइबिल में मुहम्मद"।

०२८ ७/१५७बी: "- - - क्योंकि वह (मुसलमान*) उन्हें (मुसलमानों*) आज्ञा देता है, जो न्यायपूर्ण है, और मना करता है
उन्हें क्या बुराई है"। अंतिम कथन वास्तविकता और कुरान दोनों द्वारा दृढ़ता से खंडन किया गया है।
पुस्तक - मुहम्मद और उनके उत्तराधिकारियों का उल्लेख नहीं - न केवल अनुमति दी गई बल्कि मांग की गई
हत्या और युद्ध, लूट और जबरन वसूली, बलात्कार और दासता, आदि। ऐसा करना संभव है
बीमार कानूनों द्वारा चीजें "वैध"। लेकिन ऐसी अमानवीयताओं को "अच्छा" बनाने का कोई उपाय नहीं है, या
"न्यायसंगत" या "शुद्ध" - और इसमें कॉल करना शामिल है जो वास्तव में लूट और दासों, या युद्धों के लिए छापे हैं
"आत्मरक्षा" या जिहाद के लिए आक्रामकता (जैसे कि मुसलमानों ने कई बार सेना की है)
इतिहास - एक वास्तविक विवरण के साथ या बहाने के रूप में तर्क)।

०२९ ७/१८९: "वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें (मनुष्य*) एक ही व्यक्ति (आदम*) - - - से पैदा किया।
गलत। आदम कभी अस्तित्व में नहीं था, क्योंकि मनुष्य पहले के प्राइमेट से विकसित हुआ था। और यहां तक कि अगर यह था
आदम और हव्वा के साथ शुरू हुआ (उसका नाम कुरान में कभी भी उल्लेख नहीं किया गया है), डीएनए पूल था
दौड़ को व्यवहार्य बनाने के लिए बहुत छोटा था। अन्य वैज्ञानिक शाखाओं के बीच विरोधाभास
विज्ञान का प्राणी ज्ञान।

०३० १०/४७: "हर लोगों के लिए (भेजा गया) एक दूत - - -।" अगर वहाँ वास्तव में था, तो उन्हें चाहिए
पुरातत्व (मंदिरों), कला, इतिहास, या कम से कम किंवदंतियों में कम से कम कुछ निशान छोड़े हैं या
लोक कथाएँ - आखिरकार इस्लाम के अनुसार उनमें से 124ooo या उससे अधिक थे - कुछ सौ a
यदि आप बाइबिल और कुरान के समय के पैमाने पर भरोसा करते हैं तो पीढ़ी पूरी दुनिया में फैली हुई है
(कुरान अस्पष्ट है, लेकिन मुख्य रूप से ओटी के व्यक्तियों और जीवन का अनुसरण करता है)। इस्लाम में बहुत कुछ है
यहां विश्वास करने के लिए सबूत पेश करने हैं। प्रागितिहास, इतिहास के बारे में सभी ज्ञान का खंडन करता है,
पुरातत्व, आदि

०३१ १०/६४: "इसके बाद, अल्लाह के शब्दों में कोई बदलाव नहीं हो सकता है।" वहाँ कई थे
६२१ ईस्वी के बाद मुहम्मद की शिक्षाओं में परिवर्तन जब इस सूरह के बारे में कहा जाता है
"पहुंच गए"। इस्लाम में महान विभाजन ६२२ ईस्वी में और उसके बाद आया - शांति से के धर्म में
युद्ध और खून और अमानवीयता (अच्छी बात यह है कि ज्यादातर मुसलमान अपने हिसाब से नहीं जीते
इस्लाम के इन हिस्सों)। ६२२ ईस्वी में और उसके बाद इस्लाम में हुए वास्तविक परिवर्तनों का पुरजोर विरोध करता है।

०३२ ११/४२: "इस प्रकार सन्दूक उनके साथ पहाड़ों की तरह लहरों (ऊँची) पर तैरता रहा, और नूह
अपने पुत्र (जो तट पर था*) को पुकारा - - -"। जब नाव लहरों के बीच तैर रही हो जैसे
पहाड़, तट पर किसी के साथ संवाद करना संभव नहीं है। मुहम्मद, में रह रहे हैं
रेगिस्तान, शायद नहीं जानता। लेकिन किसी भी भगवान ने ऐसी गलती नहीं की थी - कह रहे थे कि वे कर सकते थे
संवाद। उस तरह की लहरें बहुत शोर करती हैं, और हवा भी सामान्य रूप से साथ होती है
उस तरह के समुद्र। नाटकीय परी कथा। किसी के लिए भी कुछ भी विरोध करता है जो कभी भी रहा है
गर्जन समुद्र के करीब।

०३३ १२/९४: "जब कारवां (मिस्र) चला गया, तो उनके पिता (याकूब*) ने (अपने बेटों* से) कहा - - -"। परंतु
१२/८७ कहता है: "हे मेरे (याकूब के*) पुत्रों! तुम (मिस्र* को) जाओ और यूसुफ और उसके बारे में पूछताछ करो
भाई - - -"। याकूब उस यात्रा में मिस्र के साथ नहीं आया था - याकूब उससे बात नहीं कर सकता था
उसके पुत्र जब मिस्र से निकले थे। एक गलती और वास्तविक स्थिति का विरोधाभास। (यह भी है
12/96 से स्पष्ट: "जब सुसमाचार का वाहक आया (याकूब के घर* में) - - -।" याकूब
जब तक वे उसके साथ घर वापस नहीं आ जाते, तब तक वह अपने बेटों से कुछ नहीं कह सकता था।)
भौतिकी - इब्राहीम केवल कुछ सौ मीटर ही कह सकता था, कई सौ किलोमीटर नहीं।

०३४ १२/१०४: "और इसके लिए आप (मुहम्मद*) उनसे (लोग/मुसलमान*) कोई इनाम नहीं मांगते।

(नया धर्म*) - - -"। नहीं, सभी चोरी/लूट मूल्यों के 20% और गुलामों के अलावा कुछ भी नहीं
छापे और युद्ध, पीड़ितों से लिए गए सभी मूल्यों का 100% जो बिना लड़े आत्मसमर्पण कर दिया,
ढेर सारी औरतें और ढेर सारी निरपेक्ष और निर्विवाद शक्ति/तानाशाही, और ढेर सारी और
बहुत सारे मुफ्त या सस्ते योद्धा - उन्हें केवल उन्हें स्वर्ग के वादे के साथ भुगतान करना था और
मनुष्यों, देशों और अमीर शहरों से चुराए गए युद्ध की समृद्ध लूट के बारे में वादा करता है। और यह
"गरीब-कर" - कि वह केवल गरीबों के लिए खर्च करता है - और ज़कात - गैर- से कर
मुसलमान (यद्यपि यह सब उसके निजी उपयोग के लिए नहीं था - अधिक मजदूरी के लिए बहुत कुछ खर्च किया गया था
युद्ध और "उपहार"/रिश्वत के लिए पड़ोसी अरबों को अच्छा मुसलमान बनाने के लिए + कुछ को दिया गया था
गरीब)। इस्लामी ऐतिहासिक तथ्यों के विपरीत।

035 14/12a: "हमारे पास (मुसलमानों) कोई कारण नहीं है कि हमें अल्लाह पर भरोसा क्यों नहीं करना चाहिए"।
गलत। कुरान में सभी गलतियाँ आदि 100% साबित करती हैं कि यह किसी ईश्वर की ओर से नहीं है, और सभी
गलत तथ्य जो उस समय मध्य पूर्व में गलत विज्ञान के अनुसार हैं
मुहम्मद, दृढ़ता से संकेत करते हैं कि यह अरब में एक या एक से अधिक मनुष्यों द्वारा के समय में बनाया गया था
मुहम्मद. दोनों ही मामलों में धर्म एक बना हुआ है, और अल्लाह का अस्तित्व भी नहीं हो सकता है।
इस तथ्य का खंडन करता है कि कुरान में बहुत अधिक गलत है, इसे विश्वसनीय बनाने के लिए।

०३६ १५/१७: "- - - हम (अल्लाह*) ने उन्हें (राशि चक्रों*) हर बुरी आत्मा से सुरक्षित रखा है
शापित: "कुरान के अनुसार, सितारों - राशि चक्र के संकेतों को शामिल करते हुए - को बांधा जाता है
7 का सबसे निचला भाग (सामग्री - उन्हें होना चाहिए यदि तारों को उनमें से किसी एक से जोड़ा जा सकता है)
आकाश। लेकिन जिन्न/बुरी आत्माएं स्वर्ग की जासूसी करना चाहती थीं, और उन्हें पीछा करना पड़ा
सितारों को शूटिंग सितारों के रूप में इस्तेमाल किया जाता है - एक संरक्षित आकाश/स्वर्ग। और फिर राशि चक्र के संकेत थे
साथ ही पहरा दिया। विज्ञान के अनुसार यह कम से कम पांचवें के लिए बिल्कुल बकवास है
शक्ति। कोई भी भगवान जानता था - यहाँ तक कि बच्चे भी - लेकिन मुहम्मद को नहीं। फिर किसने बनाया
कुरान अपने सभी गलत तथ्यों के साथ, आदि? केवल एक चीज जो इसका खंडन नहीं करती है, वह है परियों की कहानियां।

०३७ १६/४९: "और जो कुछ स्वर्ग में है (बहुवचन और गलत*) और उस पर अल्लाह को प्रणाम करता है
पृथ्वी, चाहे गतिमान (जीवित) जीव हों या देवदूत - - -"। गलत - अगर इस्लाम साबित नहीं करता
विपरीत। पशु, पक्षी, कीड़े-मकोड़े, मछली आदि - उन्हें कभी भी प्रणाम करते हुए नहीं देखा जाता है
अल्लाह (या किसी अन्य भगवान के लिए)। कोई अनुष्ठान नहीं, कोई दिन/रात में ५ प्रार्थनाएं नहीं (और भी अधिक: कुछ जानवर
रात और दिन दोनों सक्रिय हैं), कभी-कभी अपने ही नेताओं आदि के अलावा कोई दासता नहीं।
और निश्चित रूप से गैर-मुस्लिम इंसान अल्लाह की आज्ञा नहीं देते - हालांकि कभी-कभी दूसरों के लिए
वास्तविक या निर्मित देवता। यह विज्ञान की लगभग किसी भी शाखा का खंडन करता है - किंवदंतियों और परियों को छोड़कर
किस्से

०३८ १६/९०: "- - - और वह (अल्लाह *) शर्मनाक कामों को मना करता है - - -।" एक बलात्कार महिला होना है
अगर वह 4 पुरुष गवाहों को पेश नहीं कर सकती, जिन्होंने वास्तव में उन्हें देखा था, तो उन्हें अभद्रता के लिए सख्त सजा दी गई
बलात्कार - शायद सबसे शर्मनाक और अन्यायपूर्ण कानून जो उस धर्म में मौजूद था जो दिखावा करता था
एक अच्छे भगवान की सेवा करने के लिए। एक महिला जो वास्तव में एक पुरुष से तलाकशुदा है और वही चाहती है
उसे पुनर्विवाह करना पड़ता है, विवाह करना पड़ता है और ऐसा करने की अनुमति के लिए किसी अन्य पुरुष के साथ यौन संबंध बनाना पड़ता है।
चोरी करना और लूटना और बलात्कार और हत्या करना और दमन करना और गुलाम बनाना तब तक "अच्छा और वैध" है
जैसा कि अल्लाह के नाम पर किया जाता है - और व्यावहारिक रूप से पूरे इतिहास में सभी संघर्ष
इस्लाम, अल्लाह के नाम पर किया गया है। बस अल-तकिया का मामला। वास्तविकता का विरोध करता है।

०३९ १६/७९: "कुछ भी उन्हें (पक्षियों *) ऊपर नहीं रखता है, लेकिन (शक्ति) अल्लाह"। गलत। क्या पकड़
उन्हें ऊपर वायुगतिकी के नियम हैं। मुहम्मद को यह नहीं पता होगा, लेकिन सभी देवताओं को पता होगा।
प्रकृति के नियमों का खंडन करता है।

०४० १६/१०३: "- - - यह (कुरान*) अरबी में है, शुद्ध और स्पष्ट है"। कई मायनों में गलत: वहाँ
विदेशी शब्द हैं, वर्तनी संबंधी गलतियां हैं, व्याकरण संबंधी त्रुटियां हैं और हैं
बहुत सारे और बहुत सारे स्थान जहाँ आज भी इस्लाम शब्दों का सही अर्थ नहीं जानता है या
छंद (अंतिम आंशिक रूप से क्योंकि पुस्तक मूल रूप से एक अधूरे माध्यम से लिखी गई थी
वर्णमाला)। वास्तविकता का विरोध करता है।

०४१ १६/११५: "उसने (अल्लाह*) ने तुम्हें केवल मरे हुए मांस और खून से मना किया है। और मांस
सूअर, और कोई भी (भोजन) जिस पर अल्लाह के अलावा किसी और का नाम लिया गया है। " यह वाला
(६२२ ईस्वी से) मुहम्मद द्वारा लगभग ५ साल बाद क्षेत्र में खंडन और निरस्त कर दिया गया था,
और एक सर्व-समावेशी सूची: मुहम्मद ने गधे के मांस को हमेशा के लिए निषिद्ध के रूप में जोड़ा,
हदीसों के अनुसार (f। पूर्व। अल-बुखारी)। यह उन मामलों में से एक है जहां बाहर से तथ्य

कुरान ने उस किताब के पाठ को निरस्त कर दिया। इसके बावजूद ऊपर उद्धृत वाक्य दोहराया जाता है
बहुत बाद में निश्चित रूप से (632 ईस्वी से)। और निस्संदेह वास्तविक जीवन का विरोधाभास है।

०४२ १७/१: वास्तविकता के साथ एक विरोधाभास: "(अल्लाह) की जय हो जिसने अपने दास को लिया
(मुहम्मद) पवित्र मस्जिद से रात की यात्रा के लिए (मक्का में काबा मस्जिद*)
सबसे दूर मस्जिद (यरूशलेम में अल-अक्सा मस्जिद*) - - -।" मुसलमान अभी भी असहमत हैं
यह एक वास्तविक यात्रा थी या एक सपना। लेकिन असली परेशानी यह है कि यह सूरह का कहा जाता है
621 ईस्वी, जबकि अल-अक्सा मस्जिद - मस्जिद अल-अक्सा - सीए तक नहीं बनाई गई थी। 685 ई.
ऐतिहासिक तथ्यों का खंडन करता है - - - और एक सपना नहीं होने के लिए सबूत की जरूरत है (आयशा के अनुसार
अल-बुखारी ने कहा कि मुहम्मद ने उस रात अपना बिस्तर नहीं छोड़ा) या एक परी कथा। (मुसलमान
अल-अक्सा मस्जिद की कमी को "समझाएं" कि कुरान का मतलब निश्चित रूप से खंडहर है
पुराने यहूदी मंदिर (64 ईस्वी में रोमियों द्वारा नष्ट कर दिया गया और इस प्रकार लगभग 600 वर्ष पुराना)
मुहम्मद के समय के खंडहर), लेकिन कुरान ऐसा नहीं कहता है)।

०४३ १७/१०७: "कहो: 'तुम विश्वास करो या नहीं, यह सच है कि जिन्हें दिया गया था
पहले से ज्ञान (= ईसाई और यहूदी मुख्य रूप से *), जब इसे (कुरान *) पढ़ा जाता है
वे, नम्र साज-सज्जा में उनके चेहरे पर गिर जाते हैं"। एक शब्द: बकवास। और क्या है

६६८

पेज ६६९

इससे भी बदतर: जिसने इस कविता की रचना की वह जानता था कि यह एक झूठ है - जिसे मुहम्मद भी जानते थे
जब उसने इसे बनाया या सुनाया। कुछ यहूदी और ईसाई ६५६ ईस्वी तक धर्म परिवर्तन कर चुके थे जब
कहा जाता है कि कुरान लिखा गया है, हालांकि बहुत कम यदि कोई हो तो 621 में जब यह सूरह बनाया गया था, लेकिन एक के रूप में
सामान्य नियम: बिलकुल बकवास। जरा इस्लाम, यहूदियों और के बीच संघर्षों के इतिहास को देखें
ईसाइयों, मदीना में और उसके आस-पास के सभी यहूदियों का उल्लेख नहीं करने के लिए जो भगोड़े बन गए या
मारे गए थे, इस्लाम स्वीकार करने के बजाय - f. भूतपूर्व। ख़ैबर - और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है। आप
कभी-कभी नए, उभरते धर्मों और संप्रदायों में इस तरह की बेईमानी मिलती है। यह एक तरीका है
अपने बयानों के लिए "वजन" बढ़ाना, खासकर जब उनके पास दिखाने के लिए कुछ तथ्य या सबूत हों
खुद के लिए। बस एक छोटा सा तथ्य जो इस परी कथा का खंडन करता है: खैबारो में 700 यहूदी
समय रहते मुसलमान बनकर अपनी जान और माल बचा सकते थे। एक आदमी के लिए वे
नहीं चुना। ठोस ऐतिहासिक विज्ञान और ज्ञान का विरोध करता है।

०४४ १८/८६बी: "- - - जब वह (सिकंदर) सूरज की स्थापना पर पहुंचे - - -"। कोई भी जो
भूगोल और खगोल विज्ञान के बारे में दो मिलीमीटर जानता है जानता है कि यह गलत और हास्यास्पद है
चरम: पृथ्वी पर सूर्य अस्त नहीं होता है - और बिल्कुल भी गंदे पानी के तालाब में नहीं। भी
18/86a और 18/86c को ठीक ऊपर और ठीक नीचे देखें। दूसरों के बीच विरोधाभास ऐतिहासिक,
भौगोलिक और खगोलीय तथ्य।

०४५ १८/८६सी: "- - - उन्होंने (धु'एल-कर्णायन/अलेक्जेंडर द ग्रेट*) ने इसे (सूर्य*) वसंत में स्थापित पाया
गंदे पानी का"। यह कथन - या परी कथा - विस्मयादिबोधक चिह्नों की एक श्रृंखला के योग्य है -
आज कोई भी जिसने प्राथमिक विद्यालय समाप्त कर लिया है, अन्य तथ्यों के साथ जानता है:

1. सूरज इतना बड़ा है कि कहीं भी बस नहीं सकता
   धरती।
2. यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि इसमें बसना बहुत बड़ा है
   एक तालाब - धुंधला या नहीं।
3. और वो भी अगर सूरज कभी एक लाख के अंदर आ गया
   पृथ्वी से किलोमीटर या मील, वहाँ
   अब कोई वसंत या तालाब नहीं होगा।

मुहम्मद सूरज के आकार या तापमान को नहीं जानते थे, लेकिन एक सर्वज्ञ भगवान थे
ज्ञात। कुरान किसने बनाया?

मुसलमान इसे f द्वारा "समझाने" की कोशिश करते हैं। भूतपूर्व। यह बता रहा था कि उसने जो देखा वह एक सूर्यास्त का प्रतिबिंब था
वसंत। महान योद्धा राजा सिकंदर के बारे में सोचो - पश्चिम और पश्चिम और पश्चिम की सवारी उसके साथ
पुरुष, दिन-ब-दिन और सप्ताह-दर-सप्ताह उस स्थान का पता लगाने के लिए जहां सूर्य अस्त होता है। फिर एक दिन वह
एक और तालाब से टकराता है - एक भी गंदे पानी से। जब वह खड़ा होता है तो वह गंदा वसंत
उसके और सूर्य के बीच सीधी रेखा में है, वह लाल और पीले रंग की दर्पण छवि देखता है
कीचड़ भरी सतह में सूर्यास्त - एक ऐसा नजारा जिसे उसने पहले भी बार-बार देखा है
तालाबों और झरनों और नदियों और झीलों और समुद्रों की सतह - और वह अपने आदमियों की जय करता है: "अब हम"
हमारे लक्ष्य तक पहुँच गया है !! यहीं सूरज डूबता है !! अब घर चलते हैं और अपने बारे में बताते हैं
महान खोज"।

जो चाहे उस पर विश्वास करो।

लेकिन जो भी इसे मानता है उसे इतिहास के प्रोफेसर या मनोवैज्ञानिक को देखने की जरूरत है
दिमाग। ऐतिहासिक, खगोलीय, और अधिक तथ्यों का विरोध करता है।

इसके अलावा: हम इतिहास से जानते हैं कि सिकंदर कभी पश्चिम नहीं गया।

669

पेज ६७०

कुछ मुसलमान यह भी समझाने की कोशिश करते हैं कि धुल-कुरान सिकंदर महान नहीं थे। के लिए
यह गलतियों की "पूर्ण" सूची में 18/83 देखें।

०४६ १८/९५-९७: एक घाटी में रहने वाले लोगों को दो अन्य लोगों द्वारा आतंकित किया गया - गोग और
मागोग। उन्होंने (स्थानीय लोगों*) सिकंदर महान से मदद मांगी। उसने कहा: "मैं एक मजबूत खड़ा करूंगा
तुम्हारे और उनके बीच की बाधा: 'मेरे लिए लोहे के टुकड़े लाओ'। और उसने लोहे की दीवार बनाने दी
घाटी में सीधे स्थानीय लोगों द्वारा निर्मित ब्लॉक, जो इतने मजबूत हैं कि असंभव हो सकते हैं
गोग और मागोग के लोगों को पार करने के लिए, और इतना लंबा कि पार करना असंभव है
सबसे लंबी सीढ़ी के साथ भी।

लेकिन पूरी पृथ्वी पर कहीं भी 330 ईसा पूर्व के आसपास इतने लोहे के ब्लॉक मौजूद नहीं थे - ब्लॉक
लोहे के स्थानीय लोगों को उसे लाने के लिए कहा गया था। (यहां ध्यान दें कि १८/९३ बताता है कि दीवार को पार करना था" (ए
ट्रैक्ट) दो पहाड़ों के बीच" जिसके नीचे लोग रहते थे - दीवार का होना जरूरी था
"एक पथ" को पार करने के लिए कुछ लंबाई इतनी बड़ी है कि एक पूरे लोगों के जीने के लिए - इसमें बहुत सारा लोहा लगता है
ब्लॉक।) ऐतिहासिक वास्तविकता का विरोध करता है (और इसके अलावा भोला है - कोई बड़ी घाटी मौजूद नहीं है
केवल एक संभावित प्रवेश द्वार के साथ दो बड़ी जनजातियों को खिलाने के लिए पर्याप्त है। और अगर पार करना असंभव है,
तब नीचे खोदना संभव था - अगर आपके पास होता तो आग और पानी आपको चट्टानों से भी पार कर सकते थे
समय।)

०४७ १८/९८: "यह मेरे रब (अल्लाह*) की रहमत है"। गलत। सिकंदर महान नहीं था
मुस्लिम, लेकिन एक बहुदेववादी। ऐतिहासिक तथ्यों के विपरीत।

048 19/28: "(मरियम*) हे हारून की बहन!" यह कुरान में सबसे प्रसिद्ध गलती है। NS
संभावित कारण यह है कि अरब में मरियम और मरियम (मूसा और हारून की बहन) दोनों नाम हैं
मरियम लिखा है। मुहम्मद बाइबिल में पारंगत नहीं थे, और उन्हें लगा कि यह
वही महिला, भले ही उन्हें लगभग 1200 साल अलग कर दिया। अधिक के लिए 19/28 में देखें
अध्याय "कुरान में गलत तथ्य" ऐतिहासिक (?) तथ्यों के विपरीत - इससे इनकार भी नहीं किया जाता है
इस्लाम द्वारा कि मूसा और यीशु के बीच एक लंबा समय था।

०४९ १९/३०-३३: बच्चा यीशु अपने पालने में बात कर रहा है और चर्चा कर रहा है। यह "उधार" से है
अपोक्रिफ़ल चाइल्ड गॉस्पेल - इस मामले में जहाँ तक हम "अरब चाइल्ड गॉस्पेल" के माध्यम से जानते हैं - भी
जिसे "यीशु मसीह की शैशवावस्था का पहला सुसमाचार" कहा जाता है - 2 से एक अपोक्रिफल ग्रंथ।
सदी। "कुरान में गलत तथ्य" अध्याय में १९/३०-३३ भी देखें। विरोध
ऐतिहासिक, प्राणी और शारीरिक तथ्य - और एक परी कथा (किंवदंती) से लिया गया।

०५० २०/६९-७०: फिरौन के जादूगर मूसा को देखकर मुसलमान हो गए
वास्तविक चमत्कार कर रहे हैं। वही सब कुरान दोहराता है और दोहराता है और दोहराता है कि
कारण है कि मुहम्मद चमत्कार करने में असमर्थ थे, जिसमें वास्तविक भविष्यवाणियां करना शामिल था,
यह था कि कोई भी किसी भी तरह विश्वास नहीं करेगा। यह एक ऐसा दृश्य है जो यह स्पष्ट करता है कि
मुहम्मद जानता था कि वह हर बार उन बहाने और "स्पष्टीकरण" का इस्तेमाल करने पर झूठ बोल रहा था। वह नहीं-
कोई विश्वास करेगा यदि वे चमत्कार देखते हैं, सभी मनोवैज्ञानिक ज्ञान का खंडन करते हैं -
इस तथ्य से मजबूत हुआ कि मुहम्मद ने खुद को बताया कि यह काम करता है। विरोधाभास दोनों
मुहम्मद की बुद्धि, वास्तविकता और विज्ञान की।

०५१ २०/८५: "- - - सामरी ने उन्हें भटका दिया था"। परन्तु यहूदी अभी तक शोमरोन में नहीं पहुंचे थे
और वहां कोई सामरिया नहीं था (वास्तव में नाम सामरिया/सामेरियन जहां तक हम पा सकते हैं,
722 ईसा पूर्व तक नहीं गढ़ा गया था - जो कि पलायन के 500 से अधिक वर्षों बाद हुआ था (यदि यह)
हुआ) सीए 1235 ईसा पूर्व)। मुसलमान यह कहकर गलती को "समझाने" की कोशिश करते हैं कि इसका मतलब हो सकता है
"शमीर" = अजनबी, या "शोमर" = चौकीदार = अरब में समारा। लेकिन अगर कुरान का मतलब

पृष्ठ ६७१

इसके अलावा कुछ और बात यहाँ कहते हैं - या गलत समझना संभव है - और कितनी जगह
क्या किताब में ऐसी ही गलतियाँ हैं? ऐतिहासिक तथ्यों के विपरीत।

०५२ २२/२५: "- - - पवित्र मस्जिद (मक्का में काबा*), जिसे हमने (अल्लाह*) बनाया है
(खुला) से (सभी) पुरुषों - - -।" यह सबसे ठोस विरोधाभासी और निरस्त छंदों में से एक है
सभी कुरान। आज किसी भी गैर-मुसलमान को काबा में प्रवेश करने के लिए मौत की सजा है, लेकिन
इसके आसपास का क्षेत्र कई किलोमीटर है। ऐतिहासिक वास्तविकता के विपरीत।

053 22/52b: "- - - अल्लाह ज्ञान और ज्ञान से भरा है - -।" नहीं अगर कुरान है
अपने ज्ञान और ज्ञान के लिए प्रतिनिधि - इस्लाम को वास्तविक और विश्वसनीय उत्पादन करना होगा
सबूत अगर वे जोर देते हैं कि अल्लाह के पास बहुत ज्ञान और ज्ञान है। सभी ने पुरजोर विरोध किया
जो कुरान में गलत है।

०५४ २२/५४: "- - - (कुरान) आपके पालनहार (अल्लाह*) - - - की ओर से सत्य है। कोई सर्वज्ञ भगवान नहीं
कभी बनाया, या श्रद्धेय, या अग्रेषित, या अपने धर्म को एक किताब पर बनाया, जिसमें कई गलतियाँ हैं,
विरोधाभास, और संदिग्ध, अप्रमाणित दावे, आदि। भेष में एक शैतान या एक आदमी के लिए तरस रहा है
शक्ति का मंच ऐसा कर सकता है, लेकिन सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर नहीं। का विरोधाभास
तथ्य और वास्तविकता।

055 22/67: "- - - आप (मुसलमान*) निश्चित रूप से सही रास्ते पर हैं"। यह तभी सच है जब
कुरान सही है - - - और कुरान में बहुत सारी गलतियाँ हैं, तर्क-वितर्क हैं, मुड़े हुए हैं
तर्क, विरोधाभास, कुछ एकमुश्त झूठ, आदि (जो सभी धोखेबाजों, धोखेबाजों की पहचान हैं
और ठग - वे व्यक्ति जो आम तौर पर बेईमानी से पैसे, महिलाओं और/या सत्ता की तलाश में रहते हैं।
मुहम्मद को महिलाएं और शक्ति पसंद थी - और संभावित अनुयायियों को "उपहार" के लिए पैसा)।
कुरान में जो कुछ भी गलत है, और नैतिक/अनैतिक नियमों की वास्तविकता के विपरीत है
इस्लाम में जीवन के लिए जैसा कि कुरान में बताया गया है।

०५६ २४/४४: "यह अल्लाह है जो रात और दिन को बदलता है - - -"। यह प्रकृति है जो बारी-बारी से करती है
रात और दिन - लेकिन शब्द सस्ते हैं, और कोई भी धर्म बता सकता है कि यह उनके भगवान हैं जो ऐसा करते हैं। इसलाम
इसके लिए सबूत पेश करने होंगे कि वास्तव में अल्लाह ही है जो सूरज और धरती को चमकाता है
चारों ओर घूमना - प्रत्यावर्तन का कारण। लेकिन इस्लाम शायद ही कभी कुछ साबित करता है - केवल दावा करता है।
खगोलीय वास्तविकताओं के विपरीत।

०५७ २४/४५: "अल्लाह ने हर जानवर (मनुष्य भी एक जानवर है) को (में नहीं, बल्कि * से) बनाया है।
पानी - - -।" इसे छोटे अक्षरों में कहना और बिना हंसी के कहना: कोई टिप्पणी नहीं।

०५८ २६/२११: "- - - और न ही वे (गैर-मुस्लिम*) सक्षम होंगे (इसे उत्पन्न करने के लिए) (कुछ इसी तरह का)
कुरान के लिए *)"। गलत। मुस्लिम कुरान के बारे में जितने भी शानदार शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, उसके बावजूद यह है:
अच्छा साहित्य नहीं। बहुत सारी और बहुत सारी गलतियाँ और विरोधाभास हैं। बहुत सारे हैं
गलत तर्क। कई भाषाई गलतियाँ हैं। शायद ही कुछ मूल है
किताब - कहानियां बाइबल और कुछ अन्य पुरानी किताबों से ली गई हैं, जो कि बनी हुई हैं
(एपोक्रिफ़ल) धार्मिक कथाएँ, लोककथाओं से और परियों की कहानियों से और बस थोड़ा सा बदल गया। भी
कानून और नैतिकता में कुछ नया नहीं था - यदि कोई हो; की तुलना में कुछ बदलाव थे
पुराना अरब, लेकिन विचार पड़ोसी संस्कृतियों से आए। और वही किस्से सुनाए जाते हैं
बार-बार - सबसे उबाऊ। इसके अलावा अच्छे लेखक - मूल संगीतकार नहीं - पॉलिश किए गए
लगभग २५० वर्षों तक (लगभग ९०० ई. तक) पुस्तक में अरब भाषा। तथ्य के विपरीत
जिसे साहित्य के रूप में आंका जाता है, कुरान मध्यम से नीचे है, इसके संभावित अपवाद के साथ
अरब भाषा का उपयोग - जिसे वर्णमाला से पहले पॉलिश करने के लिए उनके पास लगभग 250 थे
लगभग 900 ई. में समाप्त हुआ।

पृष्ठ ६७२

एक अच्छे या मध्यम लेखक को कुछ ऐसा ही लिखने में कोई दिक्कत नहीं होगी - या बेहतर।

०५९ २७/१६ - ४४: राजा सुलैमान के बारे में ये कहानियाँ गढ़ी हुई चीजों से "उधार" ली गई हैं - apocryphal - शास्त्र "एस्टर का दूसरा टारगम"। किसी भगवान को पुरानी परियों की कहानियों को चुराने की जरूरत नहीं है और उन्हें अपने धर्म/कहानियों में फिट करने के लिए छोटे- या बड़े - ट्विस्ट के साथ फिर से बताएं, और फिर उन्हें कॉल करें तथ्य। लेकिन मुहम्मद अक्सर ऐसा करते थे। यही कारण है कि उनके समकालीन अक्सर कहा करते थे कि उन्होंने जो कहा वह सिर्फ पुरानी कहानियां थीं - वे केवल किंवदंतियों, परियों की कहानियों को पहचानते थे और कहानियों। सभी ज्ञात तथ्यों के विपरीत, वास्तविकता से - और इस तथ्य से कि कहानियाँ हैं एक ज्ञात परी कथा से "उधार"।

060 27/4a: "- - - उसने (सबा की रानी*) सोचा कि यह (फर्श*) पानी की झील थी (हालांकि यह कांच के स्लैब थे) - - -"।

1. उनके पास बनाने की तकनीक नहीं थी कांच की वह गुणवत्ता ca. 1000 ई.पू.
2. उनके पास बड़ा बनाने की तकनीक नहीं थी स्लैब - और उन्हें वास्तव में बड़ा नहीं होना था स्लैब के बीच की दरारों पर तुरंत ध्यान दें - कांच के सीए 1000 ई.पू. आज भी है मुश्किल है, क्योंकि इसके लिए बहुत सटीक महीनों की जरूरत है और इतने बड़े स्लैब के लिए धीमी गति से ठंडा करना ताकि दरार न पड़े। (सीएफआर। बड़े खगोलीय का निर्माण दूरबीन)।

ऐतिहासिक और तकनीकी तथ्यों के विपरीत।

०६१ २८/५२: "(यहूदी और ईसाई*) - वे इस (रहस्योद्घाटन) में विश्वास करते हैं - - -"। एकदम गलत। इस्लाम के अनुसार कुछ मुसलमान बन गए, लेकिन भारी बहुमत को भागना पड़ा, थे गुलाम बना दिया, या मारे गए/हत्या/नष्ट कर दिए गए क्योंकि उन्होंने विश्वास करने से इनकार कर दिया मुहम्मद के किस्से। सीएफआर. एफ। भूतपूर्व। इसके बाद के वर्षों में मदीना और उसके आसपास क्या हुआ? सूरह बताया गया था (621 ईस्वी या बाद में)। वास्तविकता के विपरीत।

०६२ २८/६: "- - - हामान - - -"। विज्ञान कहता है कि यह एस्तेर की पुस्तक में से हामान है बाइबिल। बाइबिल के अनुसार हामान फारसी राजा ज़ेरक्सेस के अधीन एक शक्तिशाली मंत्री था (हिब्रू: क्षयर्ष) (४८६ - ४६५ ईसा पूर्व) और उल्लिखित पुस्तक में एक केंद्रीय व्यक्ति - मुहम्मद ने शायद उसके बारे में सुना होगा। उस मामले में कुछ बहुत गलत है, क्योंकि रामसेस II स्वाभाविक रूप से मिस्र में राजा/फिरौन था, और उसके ऊपर लगभग ८०० वर्ष जीवित रहे पूर्व। हामान उसका शीर्ष मंत्री नहीं हो सका।

यहाँ इस्लाम का एक स्पष्टीकरण है कि यह सच हो सकता है: उस समय मिस्र में मुख्य देवताओं में से एक समय आमोन था। "कुरान के संदेश" के अनुसार के महायाजक की उपाधि आमोन, हा-आमेन था - जिसे हामोन के रूप में समझा जा सकता था। बहुत संभावना नहीं है, विशेष रूप से के रूप में इस तरह की "व्याख्याएं" अक्सर मिलती हैं जब इस्लाम को बेहतर खोजने में समस्या होती है कहानियों। लेकिन सब के बाद संभव है। सिवाय इसके कि कोई भगवान ऐसी गलती भी नहीं करता - a इस तरह की गलती का मतलब है कि सूरह मानवीय पतनशीलता पर आधारित है। और 28/38a को छोड़कर: "फिरौन ने कहा: 'हे प्रमुखों! कोई भगवान नहीं मैं तुम्हारे लिए जानता हूं लेकिन खुद - -"। फिरौन नहीं कर सकता उसी समय मिस्र में एकमात्र देवता हो (जैसा कि कहा गया है बहुत गलत) और महायाजक (हा-आमीन) हो दूसरे देवता के रूप में उनके दूसरे आदेश के रूप में। ऐतिहासिक तथ्यों और वास्तविकता के विपरीत।

०६३ २८/५२: "(यहूदी और ईसाई*) - वे इस (रहस्योद्घाटन) - - - में विश्वास करते हैं। एकदम गलत। इस्लाम के अनुसार कुछ मुसलमान बन गए, लेकिन भारी बहुमत को भागना पड़ा, थे गुलाम बना दिया, या मारे गए/हत्या/नष्ट कर दिए गए क्योंकि उन्होंने विश्वास करने से इनकार कर दिया मुहम्मद के किस्से। सीएफआर. एफ। भूतपूर्व। इसके बाद के वर्षों में मदीना और उसके आसपास क्या हुआ? सूरह बताया गया था (621 ईस्वी या बाद में)। ऐतिहासिक तथ्यों के विपरीत।

०६४ ३०/२६: "उसी (अल्लाह*) का है, जो आकाशों और धरती पर है: सभी हैं उसके प्रति निष्ठापूर्वक आज्ञाकारी।" यह वास्तविकता और अधिकांश ग्रंथों के लिए एक स्पष्ट विरोधाभास है कुरान में: कोई भी गैर-मुस्लिम अल्लाह के प्रति समर्पित नहीं है - समर्पित रूप से इसका उल्लेख नहीं करना। और वहाँ

कोई ऐसा ही कहीं है, चींटियों, तीन ग़ज़ों के, आदि (हम प्राणी) के लिए और भी अधिकार होता है। [illegible] दिया गया है,

०६५ ३०/४७: "हमने वास्तव में आपके (मुहम्मद*) से पहले उनके (संबंधित) दूतों को भेजा था
लोग - - -।" यह आम तौर पर एक स्वीकृत तथ्य है - पादरी और विज्ञान के बीच समान रूप से, योनाही
जिस नगर में उसे भेजा गया था, वह नीनवे के लिये परदेशी था। यूसुफ मिस्र में परदेशी था, लूत
सदोम और अमोरा में परदेशी, कनान में परदेशी इब्राहीम, और में परदेशी मूसा
सीनै जब वह मिस्र से भागा। अधिकांश भविष्यवक्ताओं ने अपने ही लोगों के बीच काम किया, लेकिन
कुरान के साथ विरोधाभास सभी नहीं।

०६६ ३१/१०: "उसने बिना किसी स्तंभ के आकाश (प्लूराल और गलत) बनाया जो आप देख सकते हैं -
- -"। कुरान बताता है कि 7 स्वर्ग अदृश्य स्तंभों पर टिके हुए हैं (बेशक उन्हें स्तंभों की आवश्यकता है - if
नहीं वे नीचे गिरेंगे !!!). आजकल तो इस्लाम भी जानता है कि यह गलत है, और बयान
दूर समझाना होगा। हमारे पास एफ़. पूर्व इस्लामी सूचना केंद्रों से बताया गया है
इंटरनेट जो: "- 60 से अधिक आईक्यू वाले हर कोई निश्चित रूप से समझता है कि इसका मतलब है
स्तंभ मौजूद नहीं हैं"।

लेकिन हम "अदृश्य" और "मौजूद नहीं" के बीच का अंतर अच्छी तरह से जानते हैं।

हमें यह भी याद है कि कुरान - और इस्लाम और मुसलमान - कहते हैं कि किताब होना
शाब्दिक रूप से समझा जाता है, (यदि और कुछ नहीं कहा जाता है)। भौगोलिक और खगोलीय द्वारा विरोधाभासी
तथ्य।

०६७ ३२/७: "वह (अल्लाह*) जिसने वह सब कुछ बनाया जो उसने सबसे अच्छा बनाया - - -"। गलत। हम
बीमारियों के संबंध में बेहतर प्रतिरोध हो सकता था, हमारे शरीर में सक्षम हो सकते थे
अधिक विटामिन स्वयं बनाएं, हमारा मस्तिष्क बेहतर हो सकता था - f.ex. सोचने की क्षमता
एक बार में लगभग २-३ चीजें, या अधिक आसानी से सीखना – बस कुछ बिंदुओं का उल्लेख करना। अच्छा किन्तु
सबसे अच्छे से बहुत दूर। अन्य जूलॉजिकल तथ्यों के बीच विरोधाभासी।

०६८ ३३/२१: "तुम (मुसलमानों) के पास अल्लाह के रसूल में एक सुंदर पैटर्न (आचरण का) है।
किसी के लिए जिसकी आशा अल्लाह और अंतिम दिन पर है - - -"। गलत। चोरी/लूटना,
स्तीलिंग, बलात्कार, झूठ बोलना, विश्वासघात करना, जबरन वसूली करना, दमन करना, हत्या करना, घृणा करना, युद्ध करना
लूटपाट, सामूहिक हत्या, लूट और हत्या के लिए छापेमारी, और आक्रमण के युद्ध - यह नहीं है
किसी भी मानव नैतिक या नैतिक दर्शन के अनुसार "सुंदर पैटर्न", कुछ युद्ध को छोड़कर
धर्म, इस्लाम भी शामिल है, और यह इस्लाम के बारे में बताता है कि यह आदमी उनका सबसे बड़ा नायक है
और चमकती मूर्ति। उनकी शिक्षाओं और उनके जीवन में वास्तविकताओं के आधार पर दृढ़ता से विरोधाभासी है
इस्लामी ऐतिहासिक स्रोत

०६९ ३३/४५: "हे पैगंबर! - - -"। लेकिन क्या मुहम्मद सचमुच एक नबी थे? वो नहीं था। शायद ए
दूत या प्रेरित, लेकिन वास्तविक भविष्यद्वक्ता नहीं, क्योंकि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार नहीं था। देखो

673

पेज ६७४

32/45a "कुरान में गलत तथ्य" के तहत, और मुहम्मद के बारे में अध्याय।
तथ्य के विपरीत।

०७० ३४/९: "- - - हम (अल्लाह*) उन पर आकाश का एक टुकड़ा गिरा सकते हैं।" हम के रूप में आकाश
देखें कि यह एक ऑप्टिकल भ्रम है (मुहम्मद का मानना था कि यह कुछ ऐसी सामग्री थी जो सितारे थे
तक बांधा गया)। एक ऑप्टिकल भ्रम का एक टुकड़ा - ऐसा कहने के लिए एक मृगतृष्णा - नीचे कैसे गिर सकता है
कोई व्यक्ति?

मुसलमान इसे "समझाते" हैं कि कुरान एक शूटिंग स्टार या इसी तरह के बारे में बात करता है। परंतु
पुस्तक अन्य जगहों पर ऐसे गिरते सितारों के बारे में बात करती है, और भले ही वह इसे मानती है
साधारण तारे, यह बहुत स्पष्ट रूप से इस और आकाश के बीच के अंतर को जानता है। इसमें कोई शक नहीं है
यह आकाश के एक टुकड़े के बारे में ही बात कर रहा है। खगोलीय तथ्यों के विपरीत।

****071 34/50: "अगर मैं (मुहम्मद*) भटक जाता हूं, तो मैं केवल अपनी आत्मा के नुकसान के लिए भटक जाता हूं - - -।"
कम से कम 9. सत्ता के लिए गलत (क्योंकि एक अरब मुसलमानों से बेहतर हैं - या 10. सत्ता या .)
अधिक यदि आप समय के अनुसार मानते हैं)। यदि मुहम्मद पथभ्रष्ट थे - सभी विश्वासी
मुसलमान पथभ्रष्ट हैं - और सभी गलत तथ्य, अंतर्विरोध, अमान्य तर्क, आदि बताते हैं
अशुभ कथा। किसी भी धार्मिक ज्ञान और तर्क से १००% विपरीत। और एक
और जगह जहां मुहम्मद जैसे बुद्धिमान व्यक्ति को पता होना चाहिए था

तर्क गलत होने के कारण वह झूठ बोल रहा था।

०७२ ३५/२५बी: "- - - प्रबुद्धता की पुस्तक (कुरान*) - - -"। इतने सारे के साथ एक किताब
गलतियाँ और इतने सारे अमान्य "संकेत" और "प्रमाण" किसी भी प्रकार के होने के लिए बहुत अविश्वसनीय हैं
प्रबोधन। वास्तव में एक ही गलती या एक झूठा "सबूत" या एक अकेला
विरोधाभास साबित करेगा कि कुरान एक सर्वज्ञ भगवान से नहीं था - और यहां सैकड़ों हैं।
वास्तविकताओं के विपरीत - पुस्तक में बहुत अधिक गलत है + यह एक अमानवीय नैतिकता सिखाता है।

०७३ ३६/३६: "- - - अल्लाह, जिसने सभी चीजों को जोड़े में बनाया - -"। गलत। केवल बहु-सेलुलर
पौधे और जानवर जोड़े में हैं - और उन सभी से भी दूर। कोई एककोशिकीय जीवन मौजूद नहीं है
जोड़े - और वे संख्या और प्रजातियों दोनों में कहीं अधिक प्रचुर मात्रा में हैं। इसके अलावा काफी कुछ है
बहुकोशिकीय प्राणियों की संख्या जो अलैंगिक रूप से फैलती है और इस प्रकार जोड़े में मौजूद नहीं है - up
और इसमें स्पंज, आदि, कुछ मछलियाँ और कुछ सरीसृप शामिल हैं। जैविक द्वारा विरोधाभासी और
जूलॉजिकल तथ्य।

**०७४ ३७/६: "हमने (अल्लाह*) ने वास्तव में निचले आकाश (इन) सितारों को - - -" से अलंकृत किया है। कुरान
इसे कुछ किस्मों में पुस्तक में कुछ स्थानों पर बताता है: सितारों को सबसे निचले हिस्से में बांधा जाता है
7 आकाश (जिसका अर्थ यह भी है कि आकाश को किसी भौतिक वस्तु से बनाया जाना है - if
वहां तारों को बांधना संभव नहीं था)। तारे भी चाँद से नीचे हैं, जैसे
कुरान में अन्य स्थानों पर बताया गया है कि चाँद आकाश के बीच में है = से ऊँचा
निचला स्वर्ग। यह वास्तव में के समय ग्रीक और/या फारसी खगोल विज्ञान से उधार लिया गया है
मुहम्मद और उससे पहले - कोई भी शिशु देवता बेहतर जानता था। मुसलमान आमतौर पर बचने की कोशिश करते हैं
इसके बारे में प्रश्न - या आपको बहुत सारे फैलाने वाले शब्द देता है। हमने शायद ही कभी देखा हो
वाजिब - सही नहीं है, लेकिन कम से कम तार्किक रूप से उचित - इसका स्पष्टीकरण, सिवाय इसके कि
मानक एक जब कुछ इतना गलत है कि "स्पष्टीकरण" भी संभव नहीं है: यह है
"लाक्षणिक", "रूपक" - या कुछ इसी तरह - स्पष्टीकरण या कहानियां। इसके विपरीत
खगोलीय तथ्य।

०७५ ३७/१४२: "तब बड़ी मछली ने उसे (योना*) निगल लिया।" गलत।

1. निगलने के लिए पर्याप्त बड़ी मछली मौजूद नहीं है a
   आदमी पूरा। एक अपवाद है, लेकिन वह
   कोई बड़े शिकार (व्हेल-शार्क) को नहीं खाता है।
   इसके अलावा इनमें से एक या दो हो सकते हैं
   व्हेल, लेकिन ओर्का भी निगलता नहीं है
   एक टुकड़े में सील (यथोचित समान आकार)।
2. भले ही वह निगल लिया गया हो, वह नहीं था
   बच गया - वह की कमी से मिनटों में मर गया था
   ऑक्सीजन।
3. और क्या उसके पास ऑक्सीजन की आपूर्ति थी - जो
   उन्होंने स्पष्ट रूप से नहीं किया - में एसिड का रस
   "मछली" के पेट ने उसे कुछ ही देर में मार डाला था
   समय।

एक परी कथा, भले ही यह कहानी बाइबल से "उधार" ली गई हो। (कुछ गलतियां भी हैं
वहां)। जूलॉजिकल और बायोलॉजिकल फैक्ट्स के विपरीत।

076 39/5: "वह रात को दिन को ओवरलैप करता है, और दिन रात को ओवरलैप करता है - - -"। गलत।
वह सूर्य द्वारा किया जाता है, क्योंकि रात वास्तव में सिर्फ एक छाया है। अगर इस्लाम कुछ और दिखावा करता है,
उन्हें असली सबूत पेश करने होंगे - सिर्फ सस्ते शब्द नहीं। "मजबूत बयानों की मांग"
मजबूत सबूत ”। कोई भी भगवान यह जानता था - मुहम्मद नहीं। हाँ, कोई भी भगवान साबित कर सकता था
खुद को भविष्य के लिए बस इस तरह की बातें बताकर - किसी चमत्कार की जरूरत नहीं है। तो कौन
कुरान की रचना की? खगोलीय तथ्यों के विपरीत।

०७७ ३९/६: "उसने (अल्लाह*) ने आपके लिए जोड़े में मवेशियों के आठ सिर उतारे - - -"। अन्य से
कुरान में हम जानते हैं कि मवेशी थे: 2 गाय, 2 भेड़, 2 बकरियां, 2 ऊंट = 4 जोड़े = 8
सिर। यह गलत है, जैसा कि कुरान पूरी दुनिया के लिए है: जल भैंस (एशिया) भी हैं,
बारहसिंगा (उत्तर में), लामा (एस अमेरिका), अल्पाका (एस अमेरिका), गुआमाको (एस।

अमेरिका, लिचुओ (एस। अमेरिका - एस अमेरिका से 4 ऊंट जो दूर से संबंधित हैं) और बाघ (एशिया), और (भारतीय) हाथी - और शायद अन्य (- घोड़ा, गधा, आदि। ()और सुअर))। कोई भी भगवान यह जानता था - मुहम्मद नहीं। कुरान किसने बनाया? जूलॉजिकल द्वारा विरोधाभासी तथ्य।

078 39/23a: "(कुरान*) अपने आप में सुसंगत है"। गलत - बहुत सारे हैं विरोधाभास। बहुत! इस्लाम को भी यह तय करने के लिए एक विशेष निरसन नियम की आवश्यकता है कि पैराग्राफ सही है जब दो या दो से अधिक "टकराव" (सबसे छोटा एक सामान्य रूप से होता है सही - यही एक कारण है कि इस्लाम में अलग-अलग आयतों की उम्र मायने रखती है और क्यों सूरह की उम्र का सवाल इस्लामी न्यायिक प्रक्रियाओं के एकीकृत हिस्से हैं)। कुछ मुसलमान कहते हैं कि यह सच नहीं है - अल्लाह ने सिर्फ नियमों को सख्त बनाया है। यह ठीक लग सकता है कुछ मामलों में स्पष्टीकरण, एफ। भूतपूर्व। शराब के संबंध में। लेकिन किस तरह के सर्वज्ञ भगवान ने नहीं किया शुरू से ही जानिए किस तरह के नियमों की जरूरत थी? - और भी सख्त नियम हैं निरसन पुस्तक में सभी विरोधाभासों के विपरीत।

079 39/23b: "अल्लाह ने प्रकट किया है - - - सबसे सुंदर संदेश - - -"। नफरत के लिए उकसाना, बलात्कार, दमन, जबरन वसूली, गुलाम बनाना, हत्या, सामूहिक हत्या और युद्ध + के लिए पूर्ण अनुमति किसी भी गुलाम या कैदी के साथ बलात्कार और सिपहसालार द्वारा + 100% तानाशाही (मुहम्मद और उसका .) उत्तराधिकारी)। हाँ यह एक सुंदर संदेश है। मुड़ नैतिकता और के विपरीत किताब में अमानवीय नैतिकता - और मुहम्मद के जीवन से कम से कम पिछले 10 साल।

675

पेज ६७६

०८० ४२/३०: "जो कुछ विपत्ति तुम पर होती है, वह तुम्हारे हाथ की वस्तुओं के कारण होती है गढ़ा।" यह इस वास्तविकता के विपरीत है कि चीजें कभी-कभी आपके साथ दूसरे से होती हैं लोगों के ऐसे कार्य जिनसे आप पूरी तरह से निर्दोष हैं, और f. भूतपूर्व। प्राकृतिक आपदाएं, और यह भी कुरान में सभी छंदों का खंडन करते हुए कहा गया है कि अल्लाह ने सब कुछ तय किया है।

(कम से कम 10 विरोधाभास।)

081 40/50: "- - - स्पष्ट संकेत (= अल्लाह के प्रमाण *) - - -"। अल्लाह का कोई सबूत मौजूद नहीं है - नहीं कुरान में, कहीं और नहीं (यहां तक कि कई मुस्लिम विद्वान भी इसे स्वीकार करते हैं)। अगर एक सबूत था अस्तित्व में है, आप 1000 - हजार -% सुनिश्चित हो सकते हैं कि पूरी दुनिया को सूचित किया गया था और बड़े . के साथ पत्र। वास्तविकता और तर्क के नियमों के विपरीत - और इस्लाम की निष्क्रियता से संबंधित यह साबित कर रहा है।

०८२ ४१/९-१२: ये आयतें बताती हैं कि अल्लाह ने धरती को २ दिन में बनाया, पहाड़ और 4 दिनों में पृथ्वी पर सब कुछ और अंत में स्वर्ग ("सात फर्म" - बहुवचन और गलत) 2 दिनों में। 2 + 4 + 2 = 8 दिन। वास्तव में इसमें लाखों वर्ष लग गए। इसके विपरीत वास्तविकता और गणित द्वारा। और कुरान द्वारा भी।

०८३ ४१/११: "- - - यह (आकाश) धुआँ था - - -)"। मुहम्मद के अनुसार आकाश कुछ सामग्री थी (तारों को सबसे निचले स्वर्ग में बांधा गया था, f. पूर्व।) और होना था किसी चीज से बना। लेकिन यह गलत है। आकाश जैसा हम देखते हैं, वह सिर्फ एक ऑप्टिकल भ्रम है।

कुछ मुसलमान उसके बाद बिग बैंग और बादल जैसी स्थिति की खोज करते हैं, और वर्तमान में विजयी होते हैं इस्लाम के वैज्ञानिक और सही होने के इस "सबूत" के लिए आप। लेकिन बिग बैंग हुआ 13.7 विज्ञान के अनुसार अरबों साल पहले। बादल राज्य 300ooo - 380ooo वर्षों तक चला। और हमारा सूर्य और पृथ्वी 9 अरब साल बाद तक नहीं मिला - 4.6 अरब साल पहले - और सभी 3 पीढ़ी की रचनाओं में शीर्ष पर हैं। बादलों के बीच संबंध बिग . के बाद धमाका और पृथ्वी बेहद कमजोर है और इसका हमारे आकाश से कोई लेना-देना नहीं है। इसके अलावा: वे बादल धुआं नहीं थे (= गैस में सूक्ष्म कण), लेकिन अस्पष्ट, आयनित गैस - ज्यादातर हीलियम - (आयनित .) जैसे यह हाइड्रोजन प्रकाश को रोकता है और बादलों की तरह दिख सकता है), लेकिन कुछ वह भी।

अधिक तार्किक लेकिन कम बार उद्धृत, वे किस्से हैं जो कहते हैं कि आकाश बादल से बना था धूल और गैस का धीरे-धीरे सूर्य, ग्रहों आदि में समा जाना। लेकिन वह सामग्री एक चीज के लिए है सूर्य, ग्रह आदि के रूप में समाप्त हुआ, और दूसरी चीज के लिए गैस में तैरते सूक्ष्म कण नहीं थे (धुएं की तरह), लेकिन मैक्रो कण - बहुत मैक्रो अक्सर। हमारे आकाश जैसा प्रकाशिक भ्रम नहीं है गैस या धूल या बादलों से बना। यह केवल प्रकाश से और/या प्रकाशीय इल्युशन से निर्मित होता है। विज्ञान के विपरीत।

०८४ ४१/१२ए: "और हम (अल्लाह*) ने निचले स्वर्ग को रोशनी (= तारे*) - - - से सजाया। ये है
एक बिंदु जिसे मुसलमान समझाने की कोशिश करने में बहुत अनिच्छुक हैं, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से है और
असंभव रूप से गलत - और दूर "व्याख्या" करना असंभव है। हम पुराने खगोल विज्ञान से जानते हैं कि
चंद्रमा और ग्रहों को अलग-अलग आकाश में बांधा गया था, जिसका अर्थ है कि सितारों को
हमारे और चंद्रमा के बीच हो - कुछ 384ooo किमी से कम दूरी पर - जैसे तारे थे
सबसे निचले स्वर्ग में बांधा गया। (कुरान यह भी कहता है कि सूर्य (?)
आकाश)। अन्य सभी असंभवताओं के अलावा, मनुष्य एक में कुरकुरा भी नहीं होगा
मिलीसेकंड। एक बार फिर: कोई भी मौजूदा ईश्वर यह जानता था, मुहम्मद नहीं। क्या अल्लाह मौजूद नहीं है?
या कुरान की रचना किसने की? लगभग किसी भी चीज़ के विपरीत - सिवाय जैसा कि कहा गया है: परी द्वारा नहीं
किस्से

676

पेज ६७७

085 41/12b: "- - - और (इसे प्रदान किया) (सबसे कम स्वर्ग*) गार्ड के साथ"। हम दूसरे से जानते हैं
कुरान में जगह है, कि यह "गार्ड" सितारों को गलत के खिलाफ इस्तेमाल किए गए सितारों की शूटिंग के लिए गलत है
आत्माएं और जिन्न स्वर्ग की जासूसी करना चाहते हैं। ऐसी "सूचना" ही आज फिट बैठती है,
परियों की कहानियों में है। कुरान की रचना किसने की? विरोधाभास: ऊपर 42/12a देखें।

०८६ ४२/२४: "और अल्लाह - - - अपने शब्दों से सच साबित करता है।" मुहम्मद से कई पूछा गया
कई बार अपने - या शायद अल्लाह के शब्दों को साबित करने के लिए - लेकिन उसने कभी ऐसा नहीं किया। और के शब्द
अन्य कारणों से कुरान कुछ साबित नहीं होता क्योंकि:

1. बहुत सारी गलतियाँ तथ्य होने का दिखावा करती हैं। (ठग ले?)
2. अब तक बहुत सारे ढीले बयानों का दिखावा किया गया तथ्य हो। (ठग ले?)
3. बहुत सारे अमान्य "संकेत" होने का दिखावा किया गया दस्तावेज़ीकरण। (ठग ले?)
4. बहुत से अमान्य "सबूत" होने का दिखावा किया गया दस्तावेज़ीकरण। (ठग ले?)
5. कुछ स्पष्ट झूठ - f. भूतपूर्व। कि चमत्कार होगा किसी को विश्वास न दिलाना। (ठग ले।)
6. बहुत अधिक अंतर्विरोध। (नहीं के लिए सबूत सर्वज्ञ भगवान।)
7. मुहम्मद कुछ भी पेश नहीं कर पा रहे थे लेकिन सबूत मांगे जाने पर तेजी से बात करते हैं। (ठग ले?)
8. तर्क के बहुत सारे अमान्य उपयोग। (ठग ले?)

ये सब धोखेबाज़ और धोखेबाज़ के लक्षण हैं। की वास्तविकता के विपरीत
कुरान में जो कुछ भी गलत है - और इस तथ्य से कि एक ईश्वर केवल वास्तविक द्वारा ही सिद्ध किया जा सकता है
अलौकिक साधन।

087 42/15: "हमारे (मुसलमान*) और आप ("काफिरों") के बीच कोई विवाद नहीं है।" कृपया बताओ
कि पुराने फिलिस्तीन और आधुनिक दारफुर में। और सिंध/भारत में, और आर्मेनिया में, नहीं
अफ्रीका और कई अन्य स्थानों में पुराने समय में उल्लेख है। पूरी तरह से इस्लामी द्वारा खण्डन किया गया
आक्रमण, युद्ध और दमन का इतिहास।

088 43/63: "(यीशु ने कहा*): इसलिए अल्लाह से डरो - - -"। यदि यीशु एक के लिए एक मिशनरी होता
देश के बहुत दूर से जाने-माने बहुदेववादी देवता, उन्हें एक चीज़ के लिए बहुत कम मिले थे
उस समय के अनुयायी पूरी तरह से एकेश्वरवादी इज़राइल थे, और दूसरी बात के लिए वह थे
पादरियों द्वारा बहुत पहले ही मार डाला गया था - खासकर यदि उसे समान रूप से उसके जैसा एक बड़ा अनुयायी मिला हो
वास्तव में मिला। यह एक ऐसे व्यक्ति द्वारा बताई गई कहानी है जो भारत में धार्मिक और राजनीतिक स्थिति को जानता था
इजराइल साल 30 ईस्वी के आसपास बुरी तरह से। ऐतिहासिक वास्तविकताओं के विपरीत।

०८९ ४६/४: "मुझे (मुहम्मद*) इससे पहले एक किताब (प्रकट) लाओ (सबूत के रूप में) - - -"। गलत।
एक किताब अपने आप में कुछ भी साबित नहीं करती है - एक किताब को झूठा साबित करना उतना ही आसान है जितना कि भाषण को झूठा बनाना। एफ. पूर्व.
कुरान अच्छी तरह से एक मिथ्याकरण हो सकता है - मुहम्मद या किसी के द्वारा बनाया गया। इसके विपरीत
वास्तविकताएं वास्तव में यह श्लोक भोला है।

०९० ४६/९: "मैं (मुहम्मद) एक नए सिद्धांत को लाने वाला नहीं हूँ - - -"। मुहम्मद
यह दिखावा किया कि इस्लाम यहूदियों के - या अभिप्रेत - पुराने धर्म की निरंतरता है
और ईसाई। यह सच नहीं है - खासकर एनटी में यह स्पष्ट है कि शिक्षाएं

677

पृष्ठ ६७८

मौलिक रूप से इतने भिन्न हैं, कि वह एक ही ईश्वर नहीं हो सकता - कम से कम यदि वह मानसिक रूप से नहीं है बीमार। "कुरान में गलत तथ्य" के तहत 29/46 देखें। की वास्तविकताओं के विपरीत
इस्लाम और जिन धर्मों का वे दावा करते हैं, उनके बीच चरम और मूलभूत अंतर
के उत्तराधिकारी - खासकर जब आप कुरान की तुलना NT से करते हैं।

०९१ ५०/४५: "हम (अल्लाह*) सबसे अच्छी तरह जानते हैं कि वे ("काफिर"*) क्या कहते हैं; और तुम (मुहम्मद*) कला उन्हें बलपूर्वक डराने वाला नहीं है।" मदीना से २२-२४ सूरहों को जानना, और
इस्लाम के पीछे जो आक्रमण है उसका इतिहास जानकर कोई भी जानता है कि यह गलत है। ए
वास्तविकता और इस्लामी इतिहास का विरोधाभास।

०९२ ६१/६: "- - - (यीशु ने कहा*) मैं अल्लाह का रसूल हूँ - - -"। अगर यीशु ने कुछ कहा होता
इस तरह एक बहुत दूर विदेशी देश से जाने-माने बहुदेववादी भगवान के बारे में, एक बात के लिए
उसके कई अनुयायी नहीं थे, और दूसरे के लिए: पादरियों के पास तुरंत एक बहाना था
उसे मार डाला। इस श्लोक की रचना किसी ऐसे व्यक्ति ने की है जो धार्मिक और राजनीतिक नहीं जानता
इज़राइल में लगभग 30 ईस्वी की वास्तविकताएँ। ऐतिहासिक तथ्यों के विपरीत।

०९३ ६१/९: "- - - सत्य का धर्म, जो सभी धर्मों पर प्रचार कर सकता है - - -"। 40/75 और देखें
41/12. यह भी याद रखने योग्य है कि आज के सामान्य लोग - और पहले के समय - होंगे
इस्लाम जैसे सीवी वाले व्यक्ति पर विश्वास करने या विश्वास करने के लिए अनिच्छुक मुहम्मद को बताता है: डकैती,
जबरन वसूली, महिला, झूठ, टूटी शपथ, नफरत के लिए उकसाना, सबका दमन करने के लिए उकसाना
विरोधियों, विरोधियों की हत्या, विरोधियों की हत्या, सामूहिक हत्या, बलात्कार, विश्वासघात, (30 .)
सुरक्षित वापसी के वादे के तहत खैबर के विरोधियों को बहस के लिए बुलाया गया - लेकिन 29 की हत्या
बहाना बनाया, आखिरी भागने में कामयाब रहा) युद्ध के लिए उकसाना - और सत्ता की लालसा। हम
मुसलमानों से मिले हैं, यह बहाना करते हुए कि वह एक कठिन समय में जीने वाले एक कठोर व्यक्ति थे, और वह
दूसरों से बुरा नहीं था। ऐसा हो सकता है, लेकिन वह निश्चित रूप से बेहतर भी नहीं था, और उसने नाटक किया
(?) एक अच्छे भगवान का प्रतिनिधित्व करने के लिए।

उद्धरण का अंतिम भाग इस्लाम के बारे में भी बताता है।

*** यह "इस्लाम शांति का धर्म है" नारे के कई विरोधाभासों में से एक है।

094 61/13: "- - - खुशखबरी - - -"। चोरी/लूटने, दबाने, बलात्कार करने, गुलाम बनाने, रखने की अनुमति
हरम, हत्या, आदि जो कुरान के मध्य भाग हैं - क्या वह "खुशखबरी" है? सीधे
युद्ध में जाने और मारने और दबाने और गुलाम बनाने और लूटने और नष्ट करने के आदेश - या मारे गए or
खुद को क्षत-विक्षत कर दिया - क्या वह "खुशखबरी" है? केवल धर्म पर ध्यान देने के सीधे आदेश
ज्ञान (अप्रत्यक्ष रूप से कुरान में बहुत स्पष्ट और प्रत्यक्ष और अचूक रूप से बहुत स्पष्ट)
इस्लाम बहुत पहले से - और 1095 ईस्वी से पूरी तरह से प्रभावी) - क्या वह "खुशखबरी" है? संपूर्ण
कम से कम अफ्रीका, यूरोप और एशिया में मिले सभी उन्नत देशों और संस्कृतियों का विनाश
पूर्व के रूप में तब तक भारत क्या था - विनाश में स्थानीय लोगों को कम से कम 200 साल लग गए
दूर करना (यदि कभी) - क्या वह "खुशखबरी" है? युद्ध धर्म में जो अमानवीयता है - वह है
"खुशखबरी"? महिलाओं को तीसरे वर्ग के नागरिकों में कमी - यदि वास्तव में नागरिक हैं - (इस्लाम .)
दावा है कि इस्लाम के तहत महिलाएं पहले की तुलना में बेहतर थीं/हैं, केवल कुछ हिस्सों के लिए सच है
अब मुस्लिम क्षेत्र क्या है, मुख्य रूप से अरब के कुछ हिस्सों में - और यहां तक कि वहां भी नहीं था
जरूरी है कि आज सच हो अगर यह इस्लाम के दमनकारी कारक के लिए नहीं था) - क्या वह "खुश" है
ख़बरें"? गैर-मुसलमानों की गुलामी और दमन और सामूहिक हत्याएं / वध -
क्या था और है (देखें आज भी युद्ध और आतंक में मुसलमानों को देखें) कि "खुशखबरी"? क्या एक
युद्ध धर्म ने समाजों और व्यक्तिगत आत्मा के लिए किया और करता है - क्या वह "खुशखबरी" है? NS
सोच का दमन - सभी गैर-धार्मिक दर्शन, और सभी धार्मिक गैर-अनुरूप (to .)
इस्लाम) सोच रहा है - क्या वह "खुशखबरी" है? खैर, हाँ, कुछ मुसलमानों के लिए - उनमें से
योद्धा जो अच्छे स्वास्थ्य में जीवित रहे और लूटपाट से अमीर बने, और

678

नेता जो दौलत के धनी बन गए और लूट/गुलाम लेने और कराधान से महिलाओं के साथ-साथ
शक्तिशाली बन गया, तब और आज।

बाकी सभी के लिए यह "बुरी ख़बर" से लेकर आतंक तक सब कुछ था - और अभी भी है (बस देखें
एक बार जब लूटपाट से दौलत खत्म हो गई - और यहां तक कि
इससे भी बदतर जब गैर-मुस्लिम वंशजों के कठोर कराधान या पोग्रोम्स ने संख्या को कम कर दिया
और/या उन अधीनस्थों की अर्थव्यवस्था। देखो एफ. भूतपूर्व। भारत, चीन, ब्राजील में विकास पर
आज – ख़ासकर भारत और चीन ६० साल पहले इस्लामिक देशों से बहुत पीछे थे, लेकिन
इन वर्षों के दौरान क्या हो रहा है? तेल, बाहर से पैसे ले लो
क्षेत्र और बाहर के विचार, कमोबेश पादरियों और मीडिया के नेताओं पर थोपे गए
और अन्य - इस्लामिक क्षेत्र में वास्तव में एफ के बाद से क्या हुआ है। उदा.1950 कई की तुलना में
अन्य स्थान?

हाँ: बाकी सभी के लिए यह "बुरी ख़बर" से लेकर आतंक तक सब कुछ था और अभी भी है।

खासकर इसलिए कि इस्लाम बना हुआ धर्म है। और इससे भी ज्यादा अगर कहीं सच है
वह धर्म जिसे इस्लाम अपने सदस्यों को खोजने से भी रोकता है।

कुरान और "खुशखबरी" के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि इसके कुछ हिस्सों के लिए
आंशिक रूप से खुशखबरी थी, और कुछ अन्य लोगों के लिए इसके कुछ हिस्से आत्मा को शांति देते हैं - जैसे
मजबूत विश्वासियों को किसी भी मुख्य धर्म से लाभ मिलता है।

अन्य सभी के लिए - जिसमें बहुसंख्यक मुसलमान शामिल थे - यह "बुरी ख़बर" थी। और जैसा कहा
खासकर अगर इस्लाम एक बना हुआ धर्म है। जो कुरान के प्रमाणों से प्रतीत होता है
और मुहम्मद के शब्द और जीवन।

निरा और काली वास्तविकता और इतिहास के विपरीत।

00a 62/2: "वह (अल्लाह*) है जिसने अनपढ़ों में से एक रसूल भेजा है
खुद - - - "। ले-मेन के लिए सभी मुस्लिम साहित्य कहते हैं कि मुहम्मद वर्णानुक्रमिक थे, और
कुरान को बनाने में असमर्थता के प्रमाण के लिए इसका उपयोग करें - यह उल्लेख नहीं करते कि बहुत से अच्छे हैं
पुराने समय में कथा सुनाने वाले एनालफैबेटिक थे।

लेकिन बयान पर सवाल उठाया गया है: एक अच्छे और बहुत गरीब परिवार का आदमी नहीं जानता कि कैसे
पढ़ें और लिखें? एक अमीर विधवा एक एनाल्फैबेटिक से शादी कर रही है, यह जानते हुए कि उसे अपना व्यवसाय चलाना है?
एक बुद्धिमान व्यवसायी, जिसमें सत्ता के लिए एक ड्राइव के साथ, विद्वान पुरुषों के प्रवेश के साथ, नहीं
पढ़ना और लिखना सीखना? इसकी संभावना नहीं है - लेकिन इसके बारे में कोई तटस्थ स्रोत नहीं हैं
उस समय से मुहम्मद यह निश्चित रूप से पता लगाना कभी भी संभव नहीं होगा, एक या दूसरे तरीके से।
वहाँ भी कम से कम एक स्थान का उल्लेख है कि मुहम्मद ने स्वयं इसके कुछ अंश लिखे थे
हुदैबियाह की सन्धि ६२८ ई. हदीसें यह भी बताती हैं कि अपने मरने वाले बिस्तर पर वह लिखना चाहता था
कुछ, और उसके आसपास के मुसलमानों को बाद में पछतावा हुआ कि उन्होंने उसे ऐसा नहीं करने दिया।

(सिर्फ इस मामले में वाक्य का अर्थ पवित्र पुस्तक के बिना लोग हो सकता है)।

विरोधाभासी, लेकिन संभावना के नियमों और हदीसों द्वारा गलत साबित नहीं हुआ।

०९५ ६२/६: "- - - तो मृत्यु की इच्छा व्यक्त करें, यदि आप सच्चे हैं!" एक असंभव मांग
पवित्र यहूदियों और ईसाइयों के लिए: एक बात के लिए जीवन के अपने मूल्य हैं। अधिक आवश्यक: जीवन एक उपहार है
यहोवा/परमेश्वर की ओर से - इसे समाप्त करने की इच्छा उसके द्वारा दिए गए उपहार को कम करना है। सबसे गंभीर: करने के लिए (इच्छा
करने के लिए) अपने स्वयं के जीवन को समाप्त करना, इतना गंभीर पाप है कि यह स्वचालित रूप से आपको नर्क में भेज देता है।

किसी भी ईश्वर को यह पता था - मुहम्मद स्पष्ट रूप से नहीं। फिर कुरान किसने बनाया?

(एक तरह से बदतर: मुस्लिम विद्वान आज इस तथ्य को जानते हैं। लेकिन इसके बावजूद वे इसका उल्लेख कभी नहीं करते हैं
इस तर्क का उपयोग करते हुए। बेईमानी।) धार्मिक, ऐतिहासिक द्वारा खंडित दावे का खंडन
और मनोवैज्ञानिक तथ्य।

०९६ ६५/१२: "अल्लाह वह है जिसने सात फ़र्म (गलत*) और पृथ्वी को एक समान बनाया
संख्या"। मुहम्मद इब्न 'अब्द अल्लाह अल-किसा' के अनुसार अंतिम भाग का अर्थ है 7 परतें
एक "स्पष्टीकरण" के अनुसार पृथ्वी में नीचे। लेकिन कुरान वास्तव में जो कहता है, वह ७ पृथ्वी है
- 7 समतल पृथ्वी। कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कुरान / हदीस या इसके लिए "व्याख्याओं" में से एक मानते हैं
कुछ विशेष भूविज्ञान/भूगोल/खगोल विज्ञान, ऊपर से "पृथ्वी" के नाम और
नीचे हैं: 1. रमाका, 2. खालादा, 3. अर्का, 4. हरबा, 5. मालथम, 6. सिज्जिन, 7. अजीबा।
एफ के अनुसार। पूर्व अल-बुखारी उन्हें एक के ऊपर एक रखा गया है - कुरान के अनुसार आसान है
पृथ्वी समतल है/हैं। नीचे की ओर, संबंधित "पृथ्वी" पर अधिक शैतानी जीवन - और यदि आप
बहुत बड़े पापी हैं, आप उनके माध्यम से कयामत के दिन नर्क में गिर सकते हैं
हदीता के अनुसार। यह कहने की जरूरत नहीं है कि यह सब बकवास है। कोई टिप्पणी नहीं।

०९७ ६८/४: "और आप (मुहम्मद या मुसलमान*) (सबसे खड़े) चरित्र के एक ऊंचे स्तर पर
- - -"। कुंआ:

कुरान और हदीसों में देखा गया है:

1. बहुत सारे गलत तथ्य, और अन्य गलतियाँ। एक सर्वज्ञ भगवान के लिए विशिष्ट नहीं है।
2. बहुत सारे अमान्य तर्क - हॉलमार्क के लिए धोखेबाज और धोखेबाज।
3. बहुत सारे "संकेत" - सबूत के रूप में सभी अमान्य अल्लाह या मुहम्मद के कनेक्शन के लिए a भगवान।
4. "सबूत" की एक संख्या - सबूत के रूप में सभी अमान्य अल्लाह के लिए या मुहम्मद के संबंध के लिए a भगवान। कुछ "सबूत" भी हैं वैज्ञानिक रूप से गलत।
5. बहुत सारे विरोधाभास।
6. एक आदमी अपने आप को अपने भगवान और अपने से चिपका रहा है धर्म - उसकी शक्ति का मंच।
7. एक नबी जो वास्तव में कोई नबी नहीं था - वह भविष्यवाणी करने का उपहार नहीं था। **मुहम्मद ऐसा होने का दिखावा या दावा भी नहीं किया उपहार,** उन्होंने प्रतिष्ठित को "उधार" दिया शीर्षक। (कुछ बातें उन्होंने कही, सच हुईं - लेकिन वे भविष्यवाणी के रूप में नहीं दिए गए थे।) ए मेसेंजर ओके - किसी के लिए या कुछ के लिए या खुद के लिए - उसी के लिए एक प्रेरित, ठीक है। परंतु एक व्यक्ति जिसके पास उपहार नहीं है भविष्यवाणी करना, वास्तविक नबी नहीं है - मुहम्मद ने सिर्फ "उधार" एक भव्य शीर्षक। इस्लाम यह भी दावा करता है कि दूत एक अधिक प्रतिष्ठित शीर्षक पैगंबर - लेकिन वह शीर्षक का अर्थ है "जिसे फंसाया नहीं गया है,

लेकिन सिर्फ एक या अधिक से संदेश लाता है एक या अधिक अन्य ”। उसके पास भी नहीं है समझें कि चीजें वास्तव में क्या हैं। इसके अलावा: मुहम्मद ने उधार क्यों लिया? शीर्षक "पैगंबर" अगर शीर्षक "दूत" था अधिक प्रतिष्ठित किया गया है? - सिर्फ इसलिए कि ए पैगंबर कुछ और है: संदेश जैसे a दूत + भविष्यवाणियाँ - - - यदि यह सच है नबी.
8. एक दूत जो राजमार्गों का प्रधान होता है यत्रिब/मदीना से - पवित्र महीनों में भी।
9. एक दूत भी जबरन वसूली से जी रहा है - (एफ से अपहरण किए गए पुरुषों के लिए पैसा उदा। कारवां)।
10. एक दूत जिसका बकाया का १००% था

अगर पीड़िता ने बिना दिए हार मान ली तो चीजें लूट लीं
लड़ाई (यद्यपि सभी व्यक्तिगत उपयोग के लिए नहीं)।

११. एक दूत जो "खराब" करने की अनुमति देता है
युद्ध" - और उसके लिए 20% (यद्यपि सभी के लिए नहीं)
वह स्वयं)।

12. एक दूत जो दासों को लेने की अनुमति देता है - और
उसके लिए 20% (यद्यपि सभी व्यक्तिगत उपयोग के लिए नहीं)।

13. एक संदेशवाहक जिसने सीए प्राप्त किया। 2.5% (से
0% से 10% जो आपके पास प्रत्येक का स्वामित्व है और
हर साल (यदि आप बहुत गरीब नहीं थे) - के लिए
गरीब, लेकिन एफ के लिए भी। भूतपूर्व। युद्ध और "उपहार" के लिए
अनुयायियों को आकर्षित करें।

14. विश्वासघात का उपयोग करने वाला एक दूत (f। पूर्व। का वादा)
खबरी से एक प्रतिनिधिमंडल की सुरक्षित वापसी
टूटा हुआ)।

15. के साथ विशेष समझौते के साथ एक दूत
कई महिलाओं के लिए भगवान।

16. गैर के खिलाफ नफरत सिखाने वाला एक दूत
अनुयायी।

१७. एक दूत जो शिक्षा दे रहा है और युद्ध भड़का रहा है
गैर-अनुयायियों के खिलाफ।

18. एक संदेशवाहक व्यक्तिगत रूप से महिला का बलात्कार करता है
कैदी/गुलाम।

19. एक दूत और उसके लोग - सब के साथ
किसी भी महिला का बलात्कार करने के लिए अपने भगवान से अनुमति
कैदी या दास जो गर्भवती नहीं थी। वह था
"भगवान और वैध"।

20. एक दूत जिसने की हत्याओं की शुरुआत की
विरोधियों

21. एक संदेशवाहक जिसने हत्याओं की शुरुआत की
विरोधियों

22. एक संदेशवाहक जिसने सामूहिक हत्या की पहल की।

23. महिलाओं के दमन की शिक्षा देने वाला दूत
और गैर-अनुयायी।

२४. सत्ता की लालसा वाला एक दूत (देखने में आसान .)
एफ से भूतपूर्व। हदीस, लेकिन इससे भी ज्यादा f से।
भूतपूर्व। जिस तरह से वह खुद को अपने प्लेटफॉर्म से चिपका लेता है
शक्ति का, उसका भगवान, कुरान में भी)।

और कम से कम: यह सब मुस्लिम स्रोतों से है - इस्लाम खुद उसके बारे में क्या बताता है, हालांकि में
अधिक चमकदार शब्द। गुस्सा होने का कोई बहाना नहीं होता, क्योंकि यह १००% सच है
इस्लाम को ही।

**हाँ, बहुत से लोग इसे "चरित्र का एक उच्च स्तर" कहेंगे। लेकिन उनमें से बहुत से नहीं
गैर मुस्लिम होंगे। और कितने मुसलमान इसे कह सकते हैं और ईमानदार हो गए हैं?**

098 71/15-16a: "- - - अल्लाह ने सात (सामग्री - मेगा गलतियाँ देखें*)
आकाश, एक के ऊपर एक - - -।" अधिक गलत होना संभव नहीं है। 3. ग्रेड . से ऊपर कौन
प्राथमिक विद्यालय को यहाँ एक टिप्पणी की आवश्यकता है? ७ (भौतिक) आकाश और उनके बीच में चंद्रमा
कहीं (और याद रखें कि तारे सबसे निचले स्वर्ग में स्थिर हैं, इसलिए वे नीचे हैं
चांद!" हम इस पर टिप्पणी करने की जहमत नहीं उठाते।

०९९ ७१/१५-१६बी: "- - - अल्लाह ने सात (सामग्री- मेगा गलतियाँ देखें) स्वर्ग बनाया है,
एक के ऊपर एक, और उनके बीच में चाँद को एक प्रकाश बनाया - - -।" चाँद बीच में है
उन्हें कहीं (और याद रखें कि तारे सबसे निचले स्वर्ग में स्थिर हैं, इसलिए वे नीचे हैं
चांद!)!! हम इस पर टिप्पणी करने की जहमत नहीं उठाते - सिवाय इसके कि चंद्रमा पीछे नहीं है और
सितारों से परे।

१०० ७८/७: "(अल्लाह ने बनाया*) पहाड़ों को खूंटे के रूप में" - कुछ मुसलमान कहते हैं: "हिप, हुर्रे -
यहाँ मुहम्मद और कुरान के लिए एक प्रमाण है। विज्ञान "जड़ों" के बारे में बात करता है
पहाड़ - पहाड़ खूंटे की तरह हैं! मुहम्मद कैसे जान सकते थे?" लेकिन पहाड़
"जड़ें" खूंटे की तरह नहीं हैं, लेकिन चौड़े उभार या राफ्ट की तरह हैं - और पहाड़ों की तरह लंबी और संकरी हैं
और पहाड़ों की जंजीरें अक्सर लंबी और संकरी होती हैं। गहरे खूंटे मौजूद हैं - या वास्तव में चादरें -
मंटेल (पिघला हुआ पत्थर) में बहुत नीचे की ओर इशारा करते हुए, लेकिन पहाड़ों के संबंध में नहीं
पर्वत शृंखलाएँ: वे कुछ स्थानों पर मौजूद हैं जहाँ पृथ्वी की पपड़ी के बड़े टुकड़े - विवर्तनिक
प्लेट्स - हलचल या क्रस्ट (टेक्टोनिक मूवमेंट) के कारण नीचे की ओर मजबूर होती हैं। परंतु
जिसका पहाड़ों से कोई लेना-देना नहीं है (भले ही पहाड़ के द्वितीयक परिणाम हो सकते हैं)
आंदोलन और एक ही स्थान पर) - यह पूरी तरह से कुछ अलग है। इसके विपरीत
भूवैज्ञानिक तथ्य।

१०१ ८१/१९: "वास्तव में, यह एक सबसे सम्मानित रसूल (मुहम्मद *) - - - का शब्द है।" यदि एक
आदमी जो चोर/लुटेरा है, जबरन वसूली करने वाला, महिला बनाने वाला, बच्चे से छेड़छाड़ करने वाला (ऐशा कई वर्षों से
से वह 9 वर्ष की थी), बलात्कारी, विश्वासघाती, अत्याचारी, हत्यारा, सामूहिक हत्यारा, युद्ध करने वाला
और भी बहुत कुछ है एक "सबसे सम्मानित दूत" - - - ठीक है, उस स्थिति में हम एक से मिलना पसंद नहीं करेंगे
सामान्य दूत, एक गैर-सम्माननीय का उल्लेख नहीं करने के लिए। ऐसा लग सकता है कि इस्लाम के पास एक
नैतिकता और नैतिकता के लिए कुछ विशेष मानक। वास्तविकता और सामान्य नैतिकता के विपरीत और
गैर-युद्ध धर्मों, समाजों और संस्कृतियों के लिए नैतिकता, और सामान्य दृष्टिकोण से संबंधित
मानवीय और अमानवीय व्यवहार (लेकिन हम इस बात पर जोर देते हैं कि बहुत दूर - सभी मुसलमान रहते हैं
इस बिंदु पर कुरान के अनुसार।)

वास्तविकता के साथ सभी 100+ स्पष्ट विरोधाभास - और अधिक खोजना आसान है: अधिकांश
पुस्तक में कई गलतियाँ केवल वास्तविकता के विपरीत हैं। 2oo+ विरोधाभास हो सकता है
वास्तविकता के साथ?

682

पेज ६८३

भाग II, अध्याय 9, (= II-9-0-0)

कुरान में अन्य प्रकार की गलतियाँ और त्रुटियाँ, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।

(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ, विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें।
धारा 1 से 16.

अल्लाह के कुछ के सुधार गलतियाँ और त्रुटियाँ: १५०+ कुरान में निरसन - The मुहम्मद की पवित्र पुस्तक, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह

(गंभीर विरोधाभासों की व्याख्या करना। या अल्लाह को कोशिश करनी चाहिए और असफल होकर सीखना चाहिए?)

+ सैटेनिक वर्सेज

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

निरसन - छंदों को अमान्य करना - कुरान में एक अजीब तथ्य और अभ्यास है। (१६३ उद्धृत हैं
नीचे, लेकिन कई और भी हैं - केवल 9/5 कुछ के अनुसार 124 हल्के छंदों को निरस्त करता है
मुस्लिम विद्वान)। अल्लाह इतना चतुर नहीं है कि बिना कोशिश किए और असफल हुए सर्वोत्तम नियम बना सके

कभी-कभी, या वह अपना मन बदल लेता है - या भूल जाता है? - बार-बार, और छंदों को बदलना होगा
कुरान में। (इस प्रकार निरसन भी कुरान में गलतियाँ हैं - अल्लाह ने गलती की
पहले प्रीफेक्ट सॉल्यूशन नहीं बना रहा था, और बाद में खुद को सही करना पड़ा। (कुछ मुसलमान कहते हैं कि
गलतियाँ नहीं, बल्कि समय जो बदल गया। लेकिन यह सब 23 साल में हुआ - 23 साल बस नहीं है
भगवान के लिए समय)।

निरसन के लिए अरब शब्द - "नस्क" - का शाब्दिक अर्थ है "किसी चीज को हटाना"
कुछ और (और) विलोपन" (इब्न मंज़ूर,"लिसन अल-अरब", 1994, 3:624)। वहाँ है और
निरसन के बारे में इस्लामी विद्वानों के बीच हमेशा बहुत "नोइस" रहा है। बुनियादी,
लेकिन शायद ही कभी उल्लेख किए गए कारण हैं कि मुहम्मद और इस्लाम को निरसन की आवश्यकता थी और आवश्यकता थी
नियम - यदि नहीं तो कुरान बहुत अधिक और बहुत अधिक विरोधाभासों के साथ समाप्त होता है कि
निरसन अब दूर समझाता है - लेकिन दूसरी ओर: निरसन से पता चलता है कि अल्लाह दूर है
परफेक्ट से - उसे समय-समय पर अपना विचार बदलना पड़ता है, या हो सकता है कि वह कोशिश कर रहा हो और असफल हो रहा हो।
इस बात पर कोई सहमति नहीं है कि क्या निरस्त करता है, या वैधता, अर्थ, या प्रयोज्यता। भी
कितने छंदों की संख्या को निरस्त कर दिया गया है, बेतहाशा भिन्न होता है - एसडब्ल्यूए देहलावी "अल-
फ़ॉज़ अल-किबिर फ़ि 'उसुल अल-तफ़सीर' में कुछ 500 छंदों का उल्लेख है, अन्य में कम संख्या है।

683

पेज ६८४

इस्लाम इस तरह के निरसनों को वर्गीकृत करता है (फरीद एसाक: "कुरान - एक उपयोगकर्ता की मार्गदर्शिका", 2005,
पृष्ठ 126):

1. कुरानिक निरसन (आमतौर पर पहले)
   कुरान में ईश्वरीय ग्रंथों के साथ छंद।
   हमारे द्वारा उद्धृत अधिकांश निरसन से संबंधित हैं
   यह या 3. समूह के लिए।
2. कुरान के कुछ पाठों का निरसन जो कहा जाता है
   अस्तित्व से मिटा दिया गया है। वहां
   इनमें से 2 समूह हैं: श्लोक जो हैं
   कुरान और सामग्री से छोड़ा गया
   (मुख्य रूप से) भूल गए, (f। पूर्व। दोनों उत्तर इब्न अब्देल
   मलिक और इब्न अब्दुल्ला इब्न मसूद कहते हैं:
   ऐसे छंदों के बारे में), और छंद जो थे
   छोड़ा गया है, लेकिन पाठ अभी भी कम से कम द्वारा अभ्यास किया जाता है
   कुछ मुसलमान (f। पूर्व। उमर (या उमर) इब्न अली
   खत्ताब (2. खलीफा) ने एक आयत के बारे में बताया
   पत्थरबाजी)। (स्रोत:
   http://www.islamreview.com/articles/qutandoc
   ट्राइनप्रिंट.एचटीएम)
3. पूर्व की आज्ञाओं का निरसन
   कुरान (लेकिन पाठ किताब में रह गया)।
4. हदीस (सुन्नत) को द्वारा निरस्त करना
   कुरान.
5. कुरान में किसी आयत या बिंदु का निरसन
   हदीस (सुन्नत) द्वारा।

अभ्यास के लिए आधार इन छंदों में मिलता है:

२/१०६ "हमारे (अल्लाह के) रहस्योद्घाटन में से कोई भी हम (अल्लाह *) निरस्त या भुलाने का कारण नहीं बनता है,
लेकिन हम कुछ बेहतर या समान - - - के लिए स्थानापन्न करते हैं। (सूरह २ में पहला पूर्ण था
Yathrib/मदीना - वह समय जब इस्लाम शांतिपूर्ण से युद्ध और जीवन के धर्म में बदल गया
डकैती और जबरन वसूली और आक्रमण से, और मुहम्मद को अपनी शिक्षाओं में बदलाव की आवश्यकता थी।)

प्रश्नों के कारण हो सकते हैं जब अल्लाह को अपने स्वयं के शब्दों को निरस्त करना पड़ता है - कभी-कभी
उनके कहे जाने के तुरंत बाद भी। क्या वह बेहतर नहीं जानता था? क्या उसने बाद में अपना मन बदल लिया?
चीजों पर विचार करना? क्या मुहम्मद की मण्डली के बारे में जानने के बाद उसने अपना विचार बदल दिया?
उसकी बातों पर प्रतिक्रिया दी? क्या उसे असफल होकर सीखना पड़ा? यह कुछ मौलिक के बारे में बताता है
अल्लाह - अगर वह मौजूद है। इस वजह से आप मुसलमानों से यह कहते हुए मिलेंगे कि कुछ भी नहीं है
कुरान में निरस्त - निरसन एक सर्वज्ञ भगवान (बहुत सही) के योग्य नहीं है, और वह
उन्होंने कभी-कभी जो किया, वह अपने शब्दों को और अधिक विशिष्ट बनाने के लिए था। कुछ मामलों में वे सही हो सकते हैं
- - - लेकिन यह भी निरस्त करना है !! इसके अलावा यह गलत है, क्योंकि यह हमेशा से दूर संभव है
इसे इस तरह से समझाएं। या इसे बिल्कुल भी समझाने के लिए। यह कुरान से पूरी तरह स्पष्ट है

स्वयं कि निरसन स्वीकार किया जाता है और अभ्यास किया जाता है (उद्धृत ३ छंद देखें), और ग्रंथ इसे साबित करते हैं
एक वास्तविकता है। यह भी बहुत स्पष्ट है कि निरसन f में एक एकीकृत वास्तविकता है। भूतपूर्व। इस्लामी कानून।

१६/१०१ "जब हम (अल्लाह) एक रहस्योद्घाटन को दूसरे के लिए प्रतिस्थापित करते हैं - और अल्लाह सबसे अच्छा जानता है
वह प्रकट करता है (चरणों में) - वे (गैर-मुस्लिम *) कहते हैं, 'तू कला लेकिन एक जालसाज': लेकिन वे समझते हैं
नहीं" (सूरह १६ ६२२ ईस्वी से है - वह समय जब मुहम्मद इस्लाम को बदलने में व्यस्त थे

हत्या, लूट और जबरन वसूली से जीने के लिए शांतिपूर्ण - और बाद में नफरत के पूर्ण धर्म के लिए और
युद्ध)।

22/52 "हम (अल्लाह*) ने कभी तुम्हारे आगे (मुहम्मद*) कोई दूत या नबी नहीं भेजा, लेकिन,
जब उसने एक इच्छा गढ़ी, तो शैतान ने उसकी इच्छा में कुछ (घमंड) फेंक दिया: लेकिन अल्लाह रद्द कर देगा
कुछ भी (व्यर्थ) जो शैतान अंदर फेंकता है, और अल्लाह उसकी निशानियों की पुष्टि (और स्थापित) करेगा - - -"।
(मक्का काल के मध्य से मुख्य रूप से - ca. 614 - 617 AD (शायद 616 AD) और
कुख्यात "शैतानी छंद" के तुरंत बाद मुहम्मद ने 53/19-22 में एक स्थिति में उद्धृत किया
जहाँ उसे मक्का के शासकों और शासक वर्ग से मित्रता करके बहुत कुछ हासिल करना था:
"क्या तुमने अल-लत, अल-उज्जा, और दूसरी, तीसरी (देवी), मानत (तीन बेटियों) को देखा है
उस समय मक्का में मुख्य देवता अल-लाह*)? ये प्रफुल्लित मूर्तियाँ हैं जिनकी हिमायत है
उम्मीद है"। मुहम्मद ने बाद में 4 छोटे छंदों को बदल दिया: "क्या तुमने अल-लत, अल-उज्जा को देखा है,
और दूसरा, तीसरा (देवी) मनत? क्या! तुम्हारे लिए पुरुष सेक्स, और उसके लिए, महिला
(बच्चों के लिए*)! निहारना, यह वास्तव में सबसे अनुचित होगा!" (मुहम्मद एक अरब थे और
यकीन था कि एक ईश्वर महिलाओं को उतना ही नीचा दिखाएगा जितना कि अरबों को*)। इस एपिसोड ने बहुत कुछ बनाया
"शोर" का, और सभी नबियों को बताने वाली एक कविता (?) प्राप्त करना उसके लिए सबसे सुविधाजनक था
इस तरह के अनुभव थे, और उन्हें दोष नहीं दिया जाना था)।

शैतान के वचनों को निरस्त करना ठीक हो सकता है, लेकिन एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर कैसे हो सकता है
शैतान को ऐसा करने की अनुमति दें? - यहां कुछ गड़बड़ है। और एक सिद्ध नबी कैसे नोटिस नहीं कर सकता था
कि 3 देवी-देवता उनकी पूर्व शिक्षाओं से कुछ अलग थे? - अगर कोई कारण नहीं था
उसे करने के लिए? और कितने अन्य छंद शैतान से कानाफूसी से प्रेरित हैं? (- NS
मदीना के क्रूर छंद किसी को यह सोचने पर मजबूर कर सकते हैं।)

५३/३-४ "न ही वह (मुहम्मद*) अपनी (अपनी) इच्छा के बारे में (कुछ) कहता है। यह किसी से कम नहीं है।
प्रेरणा उसे नीचे भेजी गई। इसका मतलब यह है कि मुहम्मद ने जो कुछ भी कहा, वह वास्तव में था
अल्लाह से प्रेरित है, और इस प्रकार अल्लाह के शब्द - जिसका अर्थ है कि सुन्नत (हदीस) भी कर सकते हैं
कुरान और दूसरी तरफ को निरस्त करें।

ऐसा लगता है कि निरसन मुख्य रूप से इन मामलों में उपयोग किया गया है:

1. **जब मुहम्मद या अल्लाह ने कहा था (कुरान मुख्य रूप से) या किया (हदीस) जो कुछ उन्होंने बाद में पाया वह बुद्धिमान नहीं था - सैटेनिक वर्सेज की तरह।**
2. **जब मुहम्मद ने पाया कि उसके पास भूले हुए छंद** - ऐसा हुआ हदीस एफ. पूर्व. अल-बुखारी (3/223 और 8/91): "आयशा (मुहम्मद की पत्नियों में से एक*) ने कहा: '(मुहम्मद ने कहा*): - - - वह (एक आदमी*) मुझे ऐसे और ऐसे छंदों की याद दिला दी जो मेरे पास थे सूरह से गिरा दिया।
3. **जब मुहम्मद/अल्लाह ने पाया कि क्या उसने / उन्होंने मुसलमानों के लिए ठहराया था जितना वे स्वीकार करेंगे उससे अधिक:** युद्ध की लूट अल्लाह का था - लेकिन इसे बदल दिया गया था 20% अल्लाह के लिए और 80% उसके आदमियों के लिए। प्रार्थना करना रात के अधिकांश, कम करने के लिए कम कर दिया गया था। और प्रत्येक मुसलमान 10 "काफिरों" से लड़ने में सक्षम है, 2 "काफिरों", आदि को कम कर दिया गया था, लेकिन क्यों किया?

पेज ६८६

एक सर्वज्ञ भगवान नहीं यह से जानते हैं
शुरु?

4. **जब मुहम्मद/अल्लाह एक शासन चाहते थे परिवर्तित** - एफ। भूतपूर्व। कम और कम शराब, या अधिक और अधिक युद्ध। (इब्न 'अरबी' के अनुसार "द" तलवार की आयत' ने 124 छंदों को निरस्त कर दिया है" - मुख्य रूप से सभी शांतिपूर्ण।) लेकिन क्यों किया सर्वज्ञानी भगवान नहीं सबसे अच्छा नियम जानते हैं शुरुआत से?
5. **जब मुहम्मद ने खुद काम किया उनकी अपनी शिक्षाओं से अलग, उनकी कर्म कुरान का हनन बन गया** । कुरान एफ. भूतपूर्व। कोड़े मारने की सलाह देता है व्यभिचारी, जबकि अभ्यास कुछ स्थानों आज भी पथराव है - कम से कम औरत की। कारण बताया जाता है कि मुहम्मद खुद पत्थर मारने का अभ्यास किया - यहां तक कि इसमें भाग भी लिया व्यक्तिगत रूप से। उसकी हत्या की आदत विरोधियों ने भी अच्छे उदाहरण बनाए भविष्य। (इस्लाम में एक अफवाह यह भी है कि पत्थर मारने की मांग करने वाली एक कविता थी अवैध सेक्स, लेकिन इस मामले में यह कविता एक थी उनमें से जिन्हें उस्मान के समय छोड़ दिया गया था आधिकारिक कुरान बनाया था।) वही जाता है यातना के लिए। और हत्या - हालांकि वह भी था नियत। एफ भी है। भूतपूर्व। के मामले में गधे का मांस - यह प्रतिबंधित नहीं है कुरान, लेकिन मुहम्मद ने इसे एक . के दौरान प्रतिबंधित कर दिया युद्ध अभियान - और हमेशा के लिए - के अनुसार हदीस।

हमेशा के लिए निरस्त करने की प्रथा इस्लाम के लिए एक समस्या थी - और है। कारण यह है कि के साथ "शैतानी छंद" और संभावित अन्य छंदों के अपवाद जिन्हें निरस्त कर दिया गया और बताया गया मुहम्मद द्वारा भुला दिया जाना - और छंदों को भुला दिया गया या अन्य कारणों से छोड़ दिया गया खलीफा उथमान और उनके आदमियों द्वारा कुरान 650 के दशक में "अंतिम" कुरान बनाते समय - the निरस्त छंद पुस्तक में रहते हैं, और इससे भी बदतर: जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, यह अक्सर अत्यधिक होता है यह स्पष्ट नहीं है कि कौन से छंद निरस्त और अमान्य हैं, और कौन से नहीं हैं। कुछ मुसलमान कहते हैं कुछ भी निरस्त नहीं किया गया है (जो एक सपना है क्योंकि निरसन वास्तव में योग्य नहीं है) सर्वज्ञ भगवान, और भगवान अल्लाह, उनकी सर्वज्ञता और उनके बारे में गंभीर संदेह उठाता है शक्तियाँ और उसका अस्तित्व, और शायद इसलिए भी कि बहुत से लोगों को कुछ निरपेक्ष की आवश्यकता होती है विश्वास करो या भरोसा करो) लेकिन यह केवल एक सपना है। वास्तविकता निरस्तीकरण है। एक ही सवाल है कितने श्लोक जैसा कि उल्लेख किया गया है कि 5 से 500 तक की संख्याएँ हैं, लेकिन यथार्थवादी 200 हो सकते हैं - 300 या कुछ और (500 तक) - यह इस बात पर निर्भर करता है कि पाठक कितना सख्त है। मुसलमान ढूंढते हैं दूसरों की तुलना में कम निरस्त छंद - १०० या अधिक असामान्य नहीं हैं - शायद इसलिए कि वे अपने भगवान और अपने धर्म में अनावश्यक कमजोरियों को स्वीकार करने के लिए अनिच्छुक हैं - - - हालांकि इब्ने अरबी ने प्रसिद्ध और कुख्यात "तलवार की कविता" (सूरह 9/5 "- - - लड़ाई और हत्या" के बारे में कहा पगान जहां कहीं भी आप उन्हें पाते हैं - - -"): "'तलवार' की कविता ने 124 छंदों को निरस्त कर दिया है" - गैर-मुसलमानों के बारे में सभी शांतिपूर्ण और धर्म में कोई बाध्यता नहीं। और वह था केवल "तलवार कविता" - और भी बहुत कुछ है।

686

पेज 687

यह न जानने की समस्या कि कौन-से श्लोक निराकृत हैं और कौन-से नहीं, किसके द्वारा और बढ़ा दिए गए हैं

तथ्य यह है कि जिन आयतों पर मुस्लिम विद्वान सहमत हैं, उन्हें भी निरस्त कर दिया गया है, कुरान में बनी हुई है - उन्हें निकाला नहीं जा सकता, क्योंकि अल्लाह ने उसे ऐसे ही उतारा है, और मनुष्य उसे ठीक नहीं कर सकता गलतियाँ या इसे क्या कहें।

निरस्त छंदों के आसपास अनिश्चितता के कुछ गंभीर परिणाम हैं:

1. जब आप नहीं हैं तो जज बनना मुश्किल है
निश्चित रूप से जानें कि कौन से छंद एक मामले के लिए प्रासंगिक हैं
निरस्त और अमान्य हैं, और कौन से नहीं।
जब आप तानाशाह को जानते हैं तो न्याय कैसे करें
आपके देश में अनुच्छेदों को रद्द कर दिया गया है
देश का संविधान, लेकिन इसके बिना है
आपके लिए निश्चित रूप से जानना संभव है कि कौन से
और कितने?
2. कई मुसलमान ईमानदारी से मानते हैं कि इस्लाम एक है
शांतिपूर्ण धर्म क्योंकि वे नहीं जानते या
विश्वास मत करो / स्वीकार करो कि शांतिपूर्ण छंद
निरस्त कर दिए जाते हैं। उनका अपमान भी हो सकता है
जब विपरीत कहा जा रहा है। और हम गैर-
मुसलमानों को याद रखना चाहिए कि यह ईमानदार
विश्वास उनके धर्म के एक अभ्यास की ओर ले जाता है कि
मुसलमानों के इन समूहों के लिए कोई खतरा नहीं बनाता है
उनके परिवेश (लेकिन निश्चित रूप से हमारी समस्या
यह जानना है कि उनमें से कौन ईमानदार हैं और कौन
नहीं)।
3. इसका बचाव करना आसान है - या इसके लिए प्रचार करना -
बिना शांतिपूर्ण छंद की ओर इशारा करके इस्लाम
यहां तक कि "निरसन" शब्द का भी उल्लेख करते हुए।
बहुत से गैर-मुसलमान इस आयत को देखते हैं और -
निरसन नियम और श्लोकों को न जानना -
यह मानता है।
४. बहुत सारे भोले-भाले गैर-मुसलमान सतही
इस्लाम के बारे में ज्ञान आसानी से स्वीकार करता है और
शांतिपूर्ण वास्तविक इस्लाम के बारे में बताता है - अक्सर as
अन्य धर्मों के विरोध में। वे बस करते हैं
नहीं पता कि इस्लाम मुख्य रूप से शुरू हुआ
शांतिपूर्ण धर्म, लेकिन एक को स्थानांतरित कर दिया गया था
नफरत, चोरी, बलात्कार, दमन, खून और
६२२ ईस्वी के आसपास और उसके बाद का युद्ध जब
मुहम्मद काफी मजबूत हो गए और
इसके अलावा पहले हाईवेमैन की जरूरत है और फिर
योद्धा की।
5. कई गैर-मुसलमान - और मुसलमान - कहते हैं कि
आतंकवादी और अन्य लोग चुनते हैं और चुनते हैं और
जब वे नफरत करते हैं और मारते हैं तो कुरान का दुरुपयोग करते हैं। **परंतु
वास्तव में यह उग्रवादी हैं और
आतंकवादी जो सही हैं: के अनुसार
मदीना से सूरह यह शांतिपूर्ण है
मुसलमान जो अच्छे मुसलमान नहीं हैं** - **और**

**मदीना से सूरह ज्यादातर ओवरराइड
मक्का से शांतिपूर्ण लोग,** जैसा कि उल्लेख किया गया है
इससे पहले। (चूंकि यह पुस्तक एक होने के लिए है
चीजों को खोलो और खोजो - एक "विश्वकोश"
- हम कभी-कभी आवश्यक जानकारी दोहराते हैं,
ताकि पाठकों को ज्यादा सर्च न करना पड़े
- इसके अलावा बहुत सी बातें दोहराई जाती हैं
क्योंकि कुरान अक्सर दोहराता और दोहराता है
और खुद को दोहराता है, और हमें देना होगा
उत्तर)। लेकिन कुछ मुल्ला, उग्रवादी और
आतंकवादी वास्तव में पढ़ना जानते हैं

कुरान सही। **और भयानक तथ्य यह है: उग्रवादी इसे सही ढंग से पढ़ते हैं (के साथ) आत्म हत्या के संभावित अपवाद)।**

6. अधिकांश छंद शांतिपूर्ण के बारे में बता रहे हैं गैर के साथ सह-अस्तित्व और उपचार कुछ ८६ सूरहों में मुसलमान पाए जाते हैं मक्का से (610-622 ई.) व्यावहारिक रूप से सभी खूनी, दमन, नफरत, बलात्कार, डकैती ("अच्छे और वैध") और युद्ध के छंद से हैं मदीना (622-632 ई.) इसका मतलब है कि कई या अधिकांश शांतिपूर्ण लोगों को रद्द कर दिया जाता है मदीना से बहुत कठोर, एक तथ्य जिसने धर्म को नफरत में बदल दिया और युद्ध और लूट और विजय - एक धर्म जो युद्धरत रेगिस्तानी अरबों को फिट किया (अब तक) उस समय अरब में बहुमत) सबसे अच्छी तरह से (it .) यह लक्षण है कि मुहम्मद ने शुरू नहीं किया था बड़ी मात्रा में अनुयायी प्राप्त कर रहे हैं जब तक कि वह शांति का उपदेश देना बंद कर दिया और शुरू कर दिया लूटने, चोरी करने, दास लेने का उपदेश देना, "अच्छा और वैध" बलात्कार, दमन, युद्ध और इस जीवन में भी धन और शक्ति - - - और प्राप्त करने के लिए शांतिपूर्ण छंदों को निरस्त कर दिया a योद्धाओं और लुटेरों का धर्म।)
7. आप देखेंगे कि कई मामलों में यह समान है छंद/अंक जो निरस्त कर दिए गए हैं (और इस प्रकार पर एक ही समय का खंडन किया जाता है) कई अन्य छंद, और दूसरी तरफ। NS कारण बस इतना है कि कई या अधिकतर कठोर छंद - मुख्य रूप से मदीना से जहाँ इस्लाम एक युद्ध धर्म में बदल गया - प्रत्येक कई या अधिकांश को निरस्त और विरोधाभासी करता है वही नरम छंद - मुख्य रूप से पहले से समय (मक्का अवधि)।

सावधान रहें कि प्रत्येक निरसन सामान्य रूप से भी एक अंतर्विरोध है (और आप यह भी पाएंगे उन्हें हमारी अंतर्विरोधों की सूची में शामिल किया गया है), लेकिन एक विरोधाभास अनिवार्य रूप से एक निरसन नहीं है। इसके अलावा: एक ही समय में कई गलत तथ्य वास्तविकता के विरोधाभास हैं - कुछ उन्हें यहां सूचीबद्ध किया गया है, लेकिन आप अध्यायों में गलत तथ्यों के बारे में और भी बहुत कुछ पाएंगे।

आपको एक दृश्य प्रभाव देने के लिए कि कुरान में गलतियों के बारे में स्थिति कितनी खराब है और त्रुटियां वास्तव में हैं, हमने प्रत्येक विरोधाभासी के लिए "सभी" निरसन दिखाने के लिए चुना है केवल एक योग लिखने के बजाय पद्य/बिंदु, (और आंतरिक अंतर्विरोधों के लिए समान)। प्रत्येक और इस सूची में प्रत्येक संख्या एक पद को दूसरे द्वारा निरसन या निरसन दर्शाती है - और यदि आप सभी को एक साथ जोड़ दें, आप देखेंगे कि इस सूची में छंदों के बीच 4556 टकराव हैं। जैसा प्रत्येक टकराव में 2 श्लोक लगते हैं, अर्थात इस सूची में 2278 निरसन हैं = 2278 कोशिश करने और असफल होने के कारण भगवान द्वारा की गई गलतियाँ या त्रुटियाँ या इसलिए कि उसने अपना परिवर्तन किया मन अभी और. और वास्तव में और भी बहुत कुछ हैं। (लेकिन याद रखें कि जैसे कई छंदों का खंडन कई बार या बहुत बार अलग-अलग छंदों द्वारा किया जाता है, इससे कम इस सूची में १५० श्लोक शामिल हैं - लेकिन जैसा कि कहा गया है: और भी हैं, जैसा कि हमने अभी तक पाया है सब। (केवल ९/५ कुछ मुस्लिम विद्वानों के अनुसार १२४ मामूली छंदों को निरस्त करता है - और इस प्रकार हो सकता है कुछ मुस्लिम विद्वानों के अनुसार 500 से अधिक छंदों को एक साथ निरस्त कर दिया गया है)।

यदि यह पुस्तक कभी छपती है, तो केवल संख्याएँ लिखकर कागज और खर्च की बचत होगी - कितने और कौन से।

पुनश्च: हमने इसे इंटरनेट पर लॉन्च करने से ठीक पहले कुछ निरसन जोड़े हैं। जैसा कि हम जोड़ेंगे a कुछ और जब हम २०१० में इस पुस्तक को समाप्त करते हैं, तब तक हम गणित के सुधार के साथ प्रतीक्षा करते हैं।

निरसन (163 + सैटेनिक वर्सेज):

०१ २/६२: "जो लोग (हमारे कुरान में) ईमान लाते हैं, और जो यहूदी (शास्त्रों) का पालन करते हैं।
और ईसाई - कोई भी जो अल्लाह में विश्वास करता है (=भगवान / यहाँ यहोवा *) और अंतिम दिन, और
धार्मिकता से काम करो, उनका प्रतिफल उनके प्रभु के पास होगा (स्वर्ग में जाओ*); उन पर होगा
न डरेंगे, और न वे शोक करेंगे"। निरस्त - द्वारा

१.३/८५: "अगर किसी को धर्म के अलावा कोई और धर्म चाहिए"
इस्लाम - - - उसे कभी स्वीकार नहीं किया जाएगा - -
-"।
२. ५/१७: "निन्दा में (और दण्ड दिया जाएगा)
५/७३* के अनुसार - कि यीशु दिव्य है
अल्लाह की तरफ से एक और भगवान रखो, जो है
के अनुसार परम और अक्षम्य पाप
४/४८ और ४/११६) वे लोग हैं जो कहते हैं कि अल्लाह
मरियम का पुत्र मसीह है।" यह छोड़ दिया था
ईसाई - मुहम्मद की तरह जाहिर है
इरादा - - - अगर ऐसा नहीं था क्योंकि ईसाई
भगवान मत कहो = यीशु। मुहम्मद ने नहीं
त्रिमूर्ति को समझें।
3. 5/72: "जो कोई अल्लाह के साथ अन्य देवताओं में शामिल हो जाता है -
अल्लाह उसे बाग़ मना करेगा - - -।" इस
कम से कम ईसाइयों के लिए सड़क को अवरुद्ध करता है, as
इस्लाम के अनुसार यीशु (और मारिया!) हैं
"अन्य" देवताओं को बनाया (और ट्रिनिटी के कुछ हिस्सों -
मुहम्मद ने न तो कभी समझा
ट्रिनिटी, न ही पवित्र आत्मा (हालांकि उन्होंने इस्तेमाल किया
पवित्र आत्मा कुरान में कुछ बार)।
४.५/७३: "वे अल्लाह की निन्दा करते हैं जो अल्लाह कहते हैं
(भगवान/याहवे) एक त्रिएक में से एक है - - - a
ईशनिंदा करने वालों को होगी कड़ी सजा

689

पेज ६९०

उनमें से।" ईसाइयों को कौन सा वाक्य
भाड़ में।
5. 9/17: "यह उन लोगों के लिए नहीं है जो देवताओं के साथ जुड़ते हैं"
अल्लाह (= भगवान / यहाँ यहोवा *) - - -। - - - आग में
क्या वे निवास करेंगे"। ईसाइयों के लिए कोई उम्मीद नहीं
उनका यीशु - 2/62 के बावजूद।
६.३/८५ (६२५ ईस्वी): "यदि कोई धर्म चाहता है"
इस्लाम के अलावा (अल्लाह को अधीनता), कभी नहीं
उसे (अल्लाह*) स्वीकार किया जाएगा - - -"। यह
उल्लेखनीय है कि सूरह २
"आया" ऐसे समय में जब मुहम्मद एक के लिए
इस बात की आशा थी कि यहूदियों ने उसे स्वीकार कर लिया है
धर्म, और दूसरी बात के लिए अभी भी नहीं थे
सैन्य मजबूत। 625 ई. में उसने हार मान ली थी
यहूदियों द्वारा स्वीकार किए जाने की आशा (वहां)
कुछ थे, यदि कोई ईसाई या सबियन
मदीना), और उसके योद्धाओं का समूह था
युद्ध में बड़ा और अधिक प्रशिक्षित = वह था
सैन्य मजबूत।

(६ निरसन)

००२ २/१०६: "हम (अल्लाह) हमारे किसी भी रहस्योद्घाटन को रद्द नहीं करते हैं या भुलाने का कारण नहीं बनते हैं, लेकिन
हम कुछ बेहतर या समान स्थानापन्न करते हैं "। खैर, यह एक विरोधाभास है - और एक निरसन -
अपने आप में। (नोट: कुछ मुसलमान पसंद करते हैं - जैसे कुरान में यहां - "विकल्प" शब्द, जैसा कि यह है
उनके लिए कम "लोडेड" शब्द, लेकिन इस मामले में अर्थ बिल्कुल समान है - केवल एक
शब्द दैनिक अंग्रेजी से है, दूसरा लैटिन से लिया गया है)। यह वास्तव में छंदों में से एक है
इस्लाम में निरसन की प्रथा के पीछे। यह भी एक कारण हो सकता है - मुख्य हो सकता है
कारण - क्यों निरस्त आयतों को मूल रूप से कुरान में शामिल किया गया - उन्हें नहीं होना चाहिए
इस अर्थ में निरस्त कर दिया कि उन्हें भुला दिया जाना चाहिए। **लेकिन निरसन बिल्कुल है**

इस्लाम में जरूरी है, क्योंकि इतना अंतर्विरोध है, कि स्थिति होगी
असंभव है जब तक कि उनमें से कई को अमान्य करके समाप्त नहीं किया जा सकता। NS
कुरान वास्तव में इस बिंदु का खंडन करता है:

१.६/११५: "--- उसे कोई नहीं बदल सकता (अल्लाह का)
शब्दों - - -"। खैर, वह विरोध कर रहा है
खुद, जैसा कि वह स्पष्ट रूप से इसे स्वयं बदलता है जब
कुछ उसे मजबूर करता है - कोशिश करो और असफल हो जाओ? या
अधिक रक्त के बारे में अपना विचार बदलें और
622 ई. से अन्याय? - या अन्य के कारण
समस्याएं या चीजें जो उसने सीखी हैं?
२. १०/६४: "इसके बाद, इसमें कोई बदलाव नहीं हो सकता"
अल्लाह के शब्द। " एक बात के लिए यह
वाक्य का उन लोगों पर गंभीर प्रभाव पड़ता है जो
कहो कि कुरान में पूर्वनियति वास्तविक नहीं है
पूर्वनियति - अगर अल्लाह के पास है
कुछ कहा/सोचा/लिखा, कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं
मनुष्य का कुछ भी बदल सकता है - - - जिसका अर्थ है
उस कनेक्शन में कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं है, और यह
पत्थर में खुदी हुई के रूप में निश्चित रूप से पूर्वनिर्धारित है। परंतु

यहाँ अधिक प्रासंगिक यह है कि वहाँ थे
अल्लाह के में कई और कभी-कभी बड़े बदलाव
इसके बाद के शब्द 621 ई. में "रहस्योद्घाटन"।

(२ निरस्तीकरण)।

०३ २/१०९: "- - - लेकिन (मुसलमान*) क्षमा करें और अनदेखा करें (यहूदी और ईसाई*) - - -।" किन्तु वह
9/5 और अन्य कठिन छंदों से बहुत पहले था। इस श्लोक को निराकृत किया जाता है - अमान्य कर दिया जाता है - कम से कम
ये श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८-३९
चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,
35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन सलाह देने या अनुमति देने वाली छंद भी शामिल हैं
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप
विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73,
35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

004 2/139: "- - - हम (मुसलमान*) अपने कामों के लिए जिम्मेदार हैं और तुम (गैर-मुस्लिम*) इसके लिए
तुम्हारा - - -" लेकिन वह 9/5 और अन्य कठिन छंदों से बहुत पहले था। इस कविता को निरस्त किया जाता है -
अमान्य किया गया - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12,
8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36,
25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन छंद भी
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह देना या अनुमति देना (तलवार के साथ)
पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23,
14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

00a 2/180: "यह निर्धारित है, जब मृत्यु आप में से किसी के पास आती है, यदि वह कोई सामान छोड़ देता है, तो वह
एक वसीयत करना - - -।" लेकिन क्यों? - यह वास्तव में शरिया कानूनों द्वारा निरस्त किया गया है
विरासत।

००५ २/१९०: "- - - लेकिन सीमा (युद्ध में*) - - - का उल्लंघन न करें। यह "सीमा का उल्लंघन न करें" है
खंडन किया - और अधिकतर निरस्त - बल्कि दृढ़ता से: इस कविता को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य बना दिया गया है
- कम से कम इन श्लोकों से: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38 -39
(चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25 /52, 33/61,
33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन सलाह देने वाली छंद भी शामिल हैं
अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि
आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,
33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

००६ २/१९१: "और जहाँ कहीं भी आप उन्हें पकड़ें, उन्हें (अपने विरोधियों*) को मार डालें, उन्हें वहाँ से हटा दें
जहां आपने उन्हें बाहर कर दिया है (स्पेन, सिसिली, दक्षिण इटली, माल्टा और अन्य सावधान रहें)

उन्हें बाहर कर दिया *); क्योंकि कोलाहल और ज़ुल्म (उनसे*) वध से भी बुरा है (उनमें से*)
- - -"। इस श्लोक ने कम से कम इन छंदों को खंडन (और विरोधाभास) किया (यहाँ १२४ में से ८८ हैं
मुस्लिम विद्वानों का कहना है कि 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है: 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90,
5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/ १८८, ७/१९३, ७/१९९,
8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/ 82,
16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68,
23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/ २३,
35/24ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/ १३५ए,
46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11,
79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88 निरसन)।

691

पेज 692

००७ २/१९३: "और उन से तब तक लड़ो जब तक कि फिर कोई कोलाहल या अन्धेर न हो, और प्रबल हो जाए
न्याय और अल्लाह में विश्वास (धर्म में कोई बाध्यता नहीं, २/२५६*) - - -।" इस कविता को निरस्त कर दिया (और
विरोधाभास) कम से कम ये छंद (124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 कहते हैं:
9/5 द्वारा निरस्त): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48 , ५/९९,
6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/ ६८, १०/४१,
10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126,
16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96,
24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/ १७,
39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b,
46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45,
86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88 निरसन)।

008 2/215: "आप जो कुछ भी खर्च करते हैं (दान/भिक्षा* में) जो अच्छा है, माता-पिता और रिश्तेदारों के लिए है और
अनाथ और जो चाहते हैं और राहगीरों के लिए। "व्यापक" अर्थ में निरस्त - द्वारा हो सकता है
एक भगवान अपनी पहली कोशिश में सही नियम बनाने में सक्षम नहीं है? - द्वारा:

1. 9/60: भिक्षा गरीबों और जरूरतमंदों के लिए है,
   और जो (निधि) का प्रशासन करने के लिए नियोजित हैं;
   उनके लिए जिनके दिल (हाल ही में) रहे हैं
   मेल मिलाप (सच्चाई के लिए (मुहम्मद अक्सर इस्तेमाल किया जाता है)
   नए अनुयायियों को रखने के लिए "उपहार"); उन लोगों के लिए
   बंधन और कर्ज में; अल्लाह के कारण में;
   और राहगीर के लिए - - -"।

००९ २/२१९: "वे आपसे (मुहम्मा*) शराब और जुए के बारे में पूछते हैं। कहो: 'उनमें है
पुरुषों के लिए बड़ा पाप, और कुछ लाभ; परन्तु पाप लाभ से बड़ा है।" यह अभी भी (622 - 624 .)
एडी) की अनुमति थी, हालांकि। बाद में इसे प्रतिबंधित कर दिया गया - - - और इस प्रकार इस कविता को निरस्त कर दिया गया।

०१० २/२२१: "अविश्वासी महिलाओं से शादी न करें (मूर्तिपूजक (क्या यह शब्द अरब पाठ में है?)), जब तक
उनका मानना है"। विरोधाभासी - और निरस्त - द्वारा: 00a 5/5: "(विवाह में आपके लिए वैध) हैं
(न केवल) पवित्र स्त्रियाँ जो ईमानवाले हैं, वरन उन लोगों में से पवित्र स्त्रियाँ हैं
पुस्तक"। तो कम से कम ईसाई महिलाओं को 2/221 के अनुसार स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए, जैसा कि वे उपयोग करते हैं
धार्मिक चिह्न, आदि। यदि शब्द "मूर्तिपूजक" अरब पाठ में नहीं हैं (पाठ में ( ) कभी-कभी है
स्पष्टीकरण, कभी-कभी विनिर्देश - और कभी-कभी पाठ के लिए "सहायता" अधिक ध्वनि करने के लिए
सही) यह सभी ईसाई और यहूदी महिलाओं के लिए है।

011 2/256: "धर्म में कोई बाध्यता न हो"। **यह सभी मुसलमानों के लिए प्रमुख है
जो गैर-मुसलमानों को प्रभावित करना चाहता है कि इस्लाम कितना शांतिपूर्ण और सहिष्णु है। लेकिन नायब!
ध्यान दें! सूरह कहते हैं: "इसे रहने दो - - -।" यह एक आदेश है या - 2/255 से भी - अधिक
शायद एक इच्छा, यह कुछ ऐसा नहीं है जो उनके पास था या है।** यह भविष्य के लिए एक आशा या लक्ष्य है,
यह कुछ ऐसा नहीं है जो मौजूद है - और वैसे भी अधिकांश मुसलमान इसे इस तरह उद्धृत करते हैं: "कोई नहीं है"
धर्म में मजबूरी" - - - एक छोटा, छोटा "किटमैन" (वैध अर्धसत्य - एक अभिव्यक्ति
इस्लाम के लिए विशेष "अल-तकिया," वैध झूठ) के साथ कुरान और धर्म बनाता है
बहुत अधिक मिलनसार और सहिष्णु ध्वनि। लेकिन उनमें से एक ने भी इस तथ्य का उल्लेख नहीं किया कि यह
कविता का खंडन किया गया है और ज्यादातर मामलों में कम से कम इन छंदों द्वारा निरस्त किया गया है:

१. २/१९१: "और उन्हें (अपने विरोधियों*) को मार डालो
   जहाँ कहीं भी आप उन्हें पकड़ें, और उन्हें बाहर निकाल दें

वध की तुलना में (उनमें से *) - - -।" (सूरह २ is
622-624 ई. से - प्रारंभिक मदीना।)

२. २/१९३: "और उनसे (अपने विरोधियों*) से लड़ें
जब तक कोई और कोलाहल या उत्पीड़न न हो,
और अल्लाह में न्याय और विश्वास कायम है
("धर्म में कोई बाध्यता नहीं"!*) - - -।"

३/३/२८: "आस्तिकों को मित्रों के लिए मत लेने दो या
विश्वासियों के बजाय अविश्वासियों की मदद करता है: if
कोई ऐसा करो। से कोई मदद नहीं मिलेगी
अल्लाह - - -।" सामाजिक दबाव, लेकिन हो सकता है
मूल रूप से रक्षात्मक था, क्योंकि यह 625 . से है
ई. - मक्का काल। इसलिए नहीं
गिना जाता है, भले ही वह आज आक्रामक हो।

४.३/८५: "अगर किसी को धर्म के अलावा कोई और धर्म चाहिए"
इस्लाम (अल्लाह को अधीनता), यह कभी नहीं होगा
उसे स्वीकार किया - - -।" हाँ: "कोई मजबूरी नहीं
धर्म में।" (मक्का से भी, लेकिन शायद ही
रक्षात्मक - ऊपर 3/28 देखें)

5. 3/148: "- - - और उन लोगों के खिलाफ हमारी मदद करें जो
विश्वास का विरोध करें"। यह ६२५ ई. का है -
मक्का काल। इसका मतलब हो सकता था
रक्षात्मक मदद, लेकिन तब किसी ने इस्तेमाल किया होगा
"से", "खिलाफ" नहीं।

६.४/९०: "यदि वे ("काफिर"*) से पीछे नहीं हटते
आप, और न ही आपको शांति की गारंटी देते हैं
(याद रखें कि लगभग सभी संघर्षों में,
मुसलमान हमलावर थे*) इसके अलावा
उनके हाथों को रोकना, उन्हें पकड़ना और मार डालना
आप उन्हें जहाँ कहीं भी प्राप्त करें - - -।" नहीं
"कोई मजबूरी नहीं" के बारे में टिप्पणियाँ
धर्म"।

7. 5/33: "मजदूरी करने वालों के लिए सजा"
अल्लाह और उसके रसूल के खिलाफ युद्ध
(मुहम्मद*) - - - है: निष्पादन, या
सूली पर चढाना, या हाथ काटना और
विपरीत दिशा से पैर, या निर्वासन से
भूमि।" याद रखें कि यह सूरा 632 . से है
AD, और यह कि सभी युद्ध आक्रमण के युद्ध थे
मुसलमानों से - बद्र की लड़ाई भी,
उहुद और मदीना/खाई एक में युद्ध थे
आक्रमण का युद्ध शुरू हुआ और किसके द्वारा जीवित रखा गया
मुहम्मद - तो ज्यादातर पीड़ित जो
"अल्लाह और उसके रसूल के खिलाफ युद्ध लड़े"
हताश और सरासर आत्म में लड़ रहे थे
के खिलाफ खुद का बचाव करने के लिए रक्षा
इस्लाम के हमले - - - और बचाव के लिए
स्वयं स्पष्ट रूप से एक महान पाप था।
लूट, जमीन पाने के लिए मुसलमानों पर हमला,
गुलाम, सत्ता - - - और इस्लाम को अपने ऊपर थोपना
पड़ोसियों। इस्लाम की शांति के बावजूद

शब्द, स्थानीय अरबों को केवल दो विकल्प मिले:
मुसलमान बनो या लड़ो / मरो। "नहीं
बाध्यता"।

८. ५/७२: "वे (ईसाई*) ईशनिंदा करते हैं जो
कहो: 'परमेश्वर मरियम का पुत्र मसीह है।' - - - तथा
आग उनका ठिकाना होगा।" गम्भीर
चेतावनी भी एक मजबूरी है।

9. 5/73: "वे निन्दा करते हैं जो कहते हैं: अल्लाह है"
ट्रिनिटी में तीन में से एक - - -।" यह रखना था
अल्लाह के पक्ष में दो अन्य देवता - दो
बार परम पाप। इसके बारे में भी चेतावनी
निन्दा एक मजबूरी है।

१०. ८/१२: "मैं (अल्लाह*) में आतंक पैदा करेगा
अविश्वासियों के दिल: ऊपर मारो
उनकी गर्दनें और उनकी सारी उँगलियों पर प्रहार करो
उन्हें (उन्हें धनुष का उपयोग करने में असमर्थ बनाना)।"
याद रखें: लगभग सभी झड़पें, लड़ाइयाँ और
कम से कम 110 वर्षों के लिए युद्ध (की लड़ाई तक)
टूर्स, फ्रांस, कार्ल मार्टेल के खिलाफ 732 . में
एडी) और वास्तव में बहुत लंबे समय तक, युद्ध थे
मुसलमानों द्वारा शुरू की गई आक्रामकता): "नहीं
धर्म में मजबूरी। "

११. ८/३८-३९: "अविश्वासियों से कहो, यदि (अभी)
वे परहेज करते हैं (अविश्वास से)
मुसलमान*)), उनके अतीत को माफ कर दिया जाएगा
उन्हें, लेकिन अगर वे बने रहते हैं, तो सजा
जो उनसे पहले हैं (एक मामला)
उनके लिए चेतावनी)। और उनसे तब तक लड़ो जब तक
अब कोई हंगामा और उत्पीड़न नहीं है, और
वहाँ न्याय (शरिया? *) और विश्वास प्रबल है
अल्लाह पूरी तरह से और हर जगह "। अच्छा तो यह
कम से कम कहने के लिए यह विरोधाभासी और निरस्त है
और मारता है।

१२. ८/३९: "और उनसे (काफ़िरों से) तब तक लड़ो जब तक
अब कोई हंगामा और उत्पीड़न नहीं है, और
अल्लाह में न्याय और विश्वास कायम है
पूरी तरह से और हर जगह - - -।" क्या ऐसा संभव है
के युद्धों के बारे में अधिक प्रत्यक्ष आदेश प्राप्त करने के लिए
धर्म और परास्त के दमन का
"काफिर"? और अगर "न्याय" का मतलब शरीयत है, तो
गैर-मुसलमानों के लिए भी भगवान नहीं है
सभ्य।

१३.८/६०: "उनके खिलाफ (अविश्वासियों*) बनाओ
अपनी ताकत को अपने अधिकतम के लिए तैयार करें
शक्ति - - - (दिलों में) आतंक पर प्रहार करना
(हमला किया - मुसलमान लगभग हमेशा)
शांतिपूर्ण शब्दों के बावजूद हमलावर थे
आज*) अल्लाह के दुश्मन - - -।" युद्ध के लिए
धर्म - और धन और दास और शक्ति -
लेकिन "धर्म में कोई बाध्यता नहीं।"

694

पेज 695

१४. ९/३ (६३१ ईस्वी): "और एक गंभीर घोषणा करें"
विश्वास को अस्वीकार करने वालों को दंड "। मुसलमानों
कह सकते हैं कि यह लाक्षणिक रूप से और के लिए है
अगला जीवन। लेकिन 9/5 के संबंध में कहा गया है,
जो इस जीवन को दर्शाता है।

१५. ९/५: "लेकिन जब निषिद्ध महीने बीत चुके हैं,

फिर जहां कहीं भी उन्हें पाओ, मार डालो (अविश्वासी*)
उन्हें संकट में डाल, और उनके लिए घात में लेट गए
हर रणनीति (युद्ध की)" **यह प्रसिद्ध है**
और कुख्यात "तलवार की कविता" - से
"शांति का धर्म" जो कम से कम उपदेश देता है
"धर्म में कोई बाध्यता नहीं"। लेकिन फिर करने के लिए
शांति का उपदेश देना अक्सर युद्ध की एक अच्छी रणनीति है।

१६. ९/१४: "उनसे ("काफिरों"*) से लड़ो, और अल्लाह
उन्हें अपने हाथ से दंड देंगे (आप हैं
अल्लाह* की ओर से लड़ना), उन्हें ढाँपना
लज्जा के साथ, उन पर आपकी (जीत के लिए) मदद करें -
- -।" कोई टिप्पणी आवश्यक नहीं है। एक शांतिपूर्ण
धर्म जिसका कोई धार्मिक अर्थ नहीं है
युद्ध और योजनाएँ, रणनीतियाँ और शिक्षाएँ?

१७. ९/२३: "अपने पुरखाओं की हिफाज़त न करना,
आपके बेटे, आपके भाई, आपके साथी, या आपके
दयालु अगर वे विश्वास से ऊपर बेवफाई से प्यार करते हैं
(इस्लाम*) : अगर तुम में से कोई ऐसा करता है तो वह गलत करता है।"
सामाजिक दबाव - और उस मामले के लिए किफायती
दबाव (अक्सर गैर-मुस्लिम के खिलाफ इस्तेमाल किया जाता है)
उच्च करों, आदि के रूप में अधीनस्थ) -
"धर्म में मजबूरी" भी है - जो
इस्लाम में मौजूद नहीं है (?)

18. 9/29: "उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह पर विश्वास नहीं करते हैं,
न ही अंतिम दिन, न ही उसे मना है
जिसे अल्लाह और उसके द्वारा मना किया गया है
पैगंबर (मुहम्मद *), स्वीकार नहीं करते
सत्य का धर्म (भले ही वे हों)
पुस्तक के लोग (यहूदी और ईसाई .)
मुख्य रूप से), जब तक वे जजिया का भुगतान नहीं करते ("काफिर" -टैक्स
जहां इस्लाम ने कोई ऊपरी सीमा निर्धारित नहीं की है, और वह
इतिहास के माध्यम से अक्सर बहुत
high*) इच्छुक सबमिशन के साथ, और महसूस करें
खुद को वश में कर लिया"। काफिरों पर विजय प्राप्त करें
और फिर उन्हें नीग्रो की तरह जीने दो
दक्षिण अफ्रीका में या दक्षिणी में रंगभेद
१९०० के दशक की शुरुआत में संयुक्त राज्य अमेरिका में राज्य - - - वाले
जिन्हें गुलामी में नहीं लिया गया था - विशेष रूप से
महिलाएं। हां, कोई मजबूरी नहीं - न तो द्वारा
तलवार पहले, न नष्ट अर्थव्यवस्था से
और सामाजिक जीवन, आदि हार के बाद।

19. 9/33: "वह (अल्लाह*) है जिसने अपना भेजा है
मार्गदर्शन और धर्म के साथ दूत

सत्य, इसे सभी धर्मों पर घोषित करने के लिए,
भले ही पगान इससे घृणा कर सकते हैं "। साथ
सीधे शब्दों में: इसे स्वीकार करें चाहे आप इसे पसंद करें या
नहीं - क्योंकि "धर्म में कोई बाध्यता नहीं है।"

20. 9/73: "हे पैगंबर! के खिलाफ कड़ी मेहनत करें
अविश्वासियों और पाखंडियों, और दृढ़ रहो
उनके विरुद्ध।" सर्वोच्च नेता और
बेशक उनके अनुयायियों को कड़ी मेहनत करनी चाहिए
"काफिरों" के खिलाफ - लेकिन "कोई मजबूरी नहीं"
धर्म में"। अच्छा, कम से कम यह अच्छा है
प्रचार जो साबित करता है कि कितना शांतिपूर्ण है
कुरान है।

२१. ९/१२३: "हे विश्वास करने वालों! लड़ो
अविश्वासी जो आपको बांधे रखते हैं और उन्हें जाने देते हैं
आप में दृढ़ता खोजें - - -।" यदि आप एक अच्छे
मुसलमान, फिर गैर-मुसलमानों से लड़ो - लेकिन "नहीं"

मजबूरी" - धर्म में नहीं।

२२. २५/३६: "तुम (मूसा और हारून*) दोनों के पास जाओ जिन लोगों ने हमारी आयतों को ठुकरा दिया है। और उन (लोगों) को हमने (अल्लाह*) नष्ट कर दिया पूर्ण विनाश।" एक स्पष्ट संदेश।

२३. २५/५२: "इसलिए उनकी बात मत सुनो अविश्वासियों, लेकिन उनके खिलाफ प्रयास करें सबसे ज़ोरदार, (कुरान) के साथ"। जैसा आप देखते हैं: धर्म शामिल नहीं है जब आप "काफिरों" के खिलाफ प्रयास करें।

२४. ३३/६१: "वे (पाखंडी - बहुत अच्छे नहीं) मुसलमान - या गैर-मुसलमान*) के पास एक होगा जब भी मिलते हैं उन पर शाप देते हैं, जब्त और मार डाला जाएगा (दया के बिना)। अगर आप काफी अच्छे मुसलमान नहीं हैं - और कभी-कभी अन्य - आपको मार दिया जाना है बिना दया के। सबसे स्पष्ट आदेश। केवल करो इसका जिक्र नहीं, क्योंकि प्रचार लाइन है: "शांति का धर्म" और "नहीं" धर्म में मजबूरी"।

२५. ३३/७३: (क्योंकि मनुष्य - अरबों - ने लिया कुरान/इस्लाम का विश्वास -) "साथ" परिणाम यह हुआ कि अल्लाह को पाखंडियों को दण्ड देना पड़ा, पुरुषों और महिलाओं, और अविश्वासियों, पुरुषों और महिलाएं - - -।" और मुसलमान काम करते हैं अल्लाह की ओर से।

२६. ३५/३६: "लेकिन जो (अल्लाह) को अस्वीकार करते हैं - के लिए" वे नर्क की आग होंगी"। बिल्कुल नहीं सतह पर मजबूरी, लेकिन कम से कम स्पष्ट धमकी। हम इसे शामिल करते हैं क्योंकि यह खतरा है बार-बार दोहराया जाता है, इसलिए यह काफी बनाता है किसी के लिए भी मनोवैज्ञानिक मजबूरी यकीन नहीं होता कि इस्लाम गलत है।

२७. ४७/४: "इसलिए, जब तुम मिलो अविश्वासी (लड़ाई में), उनकी गर्दन पर वार करते हैं; पर लंबाई, जब तुमने पूरी तरह से वश में कर लिया है उन्हें, (उन पर) एक बंधन मजबूती से बांधें - - -।" हाँ, अविश्वासियों को वश में करना होगा।

28. 66/9: "हे पैगंबर। के खिलाफ कड़ी मेहनत करें अविश्वासियों और पाखंडियों, और दृढ़ रहो उनके विरुद्ध।" "काफिरों" के लिए कोई क्षमा नहीं - मजबूरी न से ज्यादा मुसलमान बनाती है मजबूरी - - - और लूट लूट है अगर मुहम्मद को टाटी वालों के विरुद्ध दृढ़ रहना होगा अपनी बेवफाई में जिद्दी हैं।

(२/२५६ को कम से कम इन २८ बिंदुओं द्वारा निरस्त किया जाता है - और वास्तव में अधिक द्वारा)।

2/256 सभी कुरान में सबसे अनुपयोगी आयत है - और हर एक के रूप में बदतर शिक्षित मुस्लिम, और अशिक्षितों का एक बड़ा प्रतिशत जानता है कि यह पूरी तरह से समाप्त हो गया है और पूरी तरह से अमान्य।

०१२ २/२७२: "आप (हे रसूल (मुहम्मद *)) के लिए उन्हें दाईं ओर स्थापित करने की आवश्यकता नहीं है पथ - - -।" कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/ 9. इस कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, की सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं। आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a

यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है
2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

०१३ ३/२०: "अगर वे ("काफिर"*) करते हैं (मुसलमान* बन जाते हैं), तो वे सही मार्गदर्शन में हैं, लेकिन अगर वे पीछे मुड़ो, तुम्हारा कर्तव्य संदेश देना है - - -।" यह - कि उनका कर्तव्य उन्हें बताना था संदेश (केवल), का गहरा खंडन किया गया था - और इन छंदों में से कम से कम उन द्वारा निरस्त किया गया था संख्या ३ के बाद आया (६२५क में), और हम उनमें से जो पहले आए थे, उन्हें भी जोड़ते हैं, क्योंकि इस्लाम कहता है कि स्पष्ट मामलों में एक पुरानी आयत एक छोटी को निरस्त कर सकती है (यह एक अपवाद है मानक नियम से कि नवीनतम पुराने लोगों को निरस्त करता है)। वैसे भी यह स्पष्ट है विरोधाभास - और कई छंदों द्वारा निरस्त। इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है - at . द्वारा कम से कम ये श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८-३९ (NS चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने या अनुमति देने वाली छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०१४ ३/२८: "आस्तिकों के बजाय विश्वासियों को मित्रों या सहायकों के लिए मत लेने दो: यदि कोई ऐसा करो। किसी चीज़ में अल्लाह की ओर से सहायता नहीं मिलेगी - - -।" सामाजिक दबाव, लेकिन इसका मतलब हो सकता है मूल रूप से रक्षात्मक, जैसा कि 625 ईस्वी से है - मक्का काल। इसलिए गिना नहीं गया, भले ही यह आज आपत्तिजनक है। इस श्लोक ने कम से कम इन छंदों का खंडन (और विरोधाभास) किया (यहाँ 88 . हैं) १२४ मुस्लिम विद्वानों में से कहते हैं कि ९/५ द्वारा निरस्त कर दिया गया है: २/१०९, २/१९०, २/२५६, २/२७२, ३/२०, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/ ११२, ६/१५८, ७/८७, 7/188, 7/193, 7/199, ++++++++8/57*, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11 /12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/ 39,

20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/ 48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, ++++++++51/55* 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/ 6. वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88 निरसन)।

०१५ ३/८५: "यदि कोई इस्लाम (अल्लाह के अधीन) के अलावा किसी अन्य धर्म की इच्छा रखता है, तो वह कभी नहीं होगा उसे स्वीकार किया - - -।" इस श्लोक ने कम से कम इन छंदों का खंडन (और विरोधाभास) किया (यहाँ 88 . हैं) १२४ मुस्लिम विद्वानों में से कहते हैं कि ९/५ द्वारा निरस्त कर दिया गया है: २/१०९, २/१९०, २/२५६, २/२७२, ३/२०, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/ ११२, ६/१५८, ७/८७, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/ ३, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/ 30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24 ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/ 59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88 निरसन)।

016 3/148: "- - - और विश्वास का विरोध करने वालों के खिलाफ हमारी मदद करें"। यह 625 ई. से है - मक्का अवधि। यह रक्षात्मक मदद के रूप में हो सकता था, लेकिन तब कोई "से" का उपयोग करता, नहीं "के खिलाफ"। इस श्लोक ने कम से कम इन छंदों का खंडन (और विरोधाभास) किया (यहाँ 88 में से हैं १२४ मुस्लिम विद्वानों का कहना है कि ९/५ द्वारा निरस्त कर दिया गया है: २/१०९, २/१९०, २/२५६, २/२७२, ३/२०, ४/६२, ४/८१, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/ ८७, ७/१८८, ७/१९३, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/ 35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/ २८, 35/23, 35/24ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/ 9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88 निरसन)।

०१७ ४/१५: “यदि आपकी कोई महिला व्यभिचार (व्यभिचार*) की दोषी है - - - उन्हें सीमित करें घर जब तक मौत उन पर दावा नहीं करते, या अल्लाह उनके लिए कोई (अन्य) तरीके से आदेश देता है"। 626 ई. (NS वाक्य के अंतिम भाग को विशेष रूप से प्रत्येक के लिए "रास्ता" के रूप में समझा जाना चाहिए महिला जिसे ऐसा "आदेश" मिलता है।) लेकिन विरोधाभास - और निरसन - 1-2 साल बाद - में ६२७ या ६२८ ई.

१. २४/३: "महिला और पुरुष का दोषी"
व्यभिचार या व्यभिचार - उनमें से प्रत्येक को कोड़े मारें
सौ धारियों के साथ - - -"। (627 या 628 ई.)

यह भी जोड़ा जाना चाहिए कि इस्लाम में लगातार अफवाह है कि लगभग 100 छंद
खलीफा उस्मान के पास आधिकारिक कुरान होने पर गायब हो गया और इसे कुरान में कभी नहीं बनाया गया
बनाया, और वह छंदों में से एक था जिसने इस अपराध के लिए पत्थर मारने की मांग की थी। यह तथ्य कि
उसके लिए पत्थर मारना हदीस में निर्धारित है, और हदीस (अल-बुखारी) बताता है कि कम से कम एक बार
ऐसे पत्थरबाजी में खुद मुहम्मद ने हिस्सा लिया था।

(जैसा कि उल्लेख किया गया है कि परंपरा बताती है कि इस पाप के लिए पत्थर मारने की मांग करने वाली एक कविता को छोड़ दिया गया था
कुरान - सच है या नहीं। लेकिन हदीस बताता है कि मुहम्मद ने ठहराया - और व्यक्तिगत रूप से इसमें भाग लिया -
इसके लिए पत्थरबाजी - - - एक तथ्य जो उन दोनों छंदों को निरस्त करता है, हालांकि केवल कुछ स्थानों का उपयोग करता है
आज पत्थरबाजी)।

698

पेज 699

०१८ ४/४३: "दृष्टिकोण नहीं प्रार्थना एक मिनफ के साथ (नशे में *) - - -।" बनाकर निरस्त किया गया
एफ द्वारा सख्त। भूतपूर्व।:

१.५/९०: "नशे और जुआ - - (हैं*) के
शैतान की करतूत: ऐसे छोड़ो
(नफरत) - - -।"

019 4/63: "वे लोग (अच्छे मुसलमान या धर्मत्यागी नहीं*) - - - उनसे दूर रहें, लेकिन
उन्हें चितौनी देना, और उनके प्राण तक पहुंचने के लिए उन से कुछ कहना।" यह श्लोक निराकृत किया जाता है-
अमान्य किया गया - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12,
8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36,
25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन छंद भी शामिल हैं
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह देना या अनुमति देना (तलवार के साथ)
पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23,
14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

020 4/81। "- - - तो (मुसलमान*) उनसे दूर रहें ("काफिर"/पाखंडी*) - - -।" यह श्लोक है
कम से कम इन श्लोकों के द्वारा निरस्त - अमान्य - 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33,
5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73,
9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ)
यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81,
5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28
निरसन)।

०२१ ४/९०: "- - - अगर वे तुमसे पीछे हटते हैं, लेकिन तुमसे लड़ते नहीं हैं, और (बजाय) तुम्हें भेजते हैं
शांति की गारंटी देता है, तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए (उनके खिलाफ युद्ध करने के लिए) कोई रास्ता नहीं खोला है
इस श्लोक का खंडन और निरसन दोनों ही अन्य तथ्यों से बहुत स्पष्ट है, तथ्य यह है कि
इस्लाम के सभी 4 लॉ स्कूल इस बात पर सहमत थे कि "काफिर" मुसलमान नहीं थे, था
न केवल युद्ध, बल्कि पवित्र युद्ध - जिहाद घोषित करने के लिए पर्याप्त कारण। यह कानून भी नहीं था
20वीं सदी के 1 छमाही के दौरान तक विवादित। यह श्लोक निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है -
कम से कम इन श्लोकों से: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८- 39
(चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25 /52, 33/61,
33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने वाली छंद भी शामिल हैं
अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि
आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,
33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०२२ ४/९१: "यदि वे ("काफिर"*) आप से पीछे नहीं हटते हैं, और न ही आपको शांति की गारंटी देते हैं
(याद रखें कि लगभग सभी संघर्षों में, मुसलमान हमलावर थे*) इसके अलावा
उनके हाथों को रोकना, उन्हें पकड़ना और जहाँ कहीं भी मिले उन्हें मार डालना - - -।" कोई टिप्पणी नहीं
"धर्म में कोई मजबूरी नहीं" के बारे में। इस श्लोक ने कम से कम इन्हें निरस्त (और विरोधाभास) किया है
छंद (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 का कहना है कि 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है): 2/109, 2/190,
2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/ ७०, ६/१०४, ६/१०७,

6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/ 13
11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/ 39,
20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55,
29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/ 48,
43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54,

699

पेज 700

52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी उद्धृत हैं
9/5 के तहत। (कम से कम 88 निरसन)।

०२३ ४/१४०: "- - - जब तुम अवज्ञा और उपहास में अल्लाह की निशानियों को सुनते हो, तो तुम ऐसा नहीं करते
उनके साथ बैठो - - -" कम से कम इन श्लोकों द्वारा अधिक कठोर किए जाने से निराकृत: २/१९१,
2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3,
9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस
कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, की सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं।
आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a
यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है
2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

०२४ ५/३: "तुम्हारे लिए (मुसलमान*) (भोजन के लिए) निषिद्ध हैं: मृत मांस, रक्त, सूअर का मांस - -
-।" यह सुन्ना (हदीस) द्वारा निरस्त कर दिया गया है, क्योंकि मुहम्मद ने के दौरान एक बहुत ही स्पष्ट नियम बनाया था
628 ई. में खैबर की घेराबंदी: गधे का मांस खाने के लिए हमेशा मना किया जाता है। उसे याद रखो
कानून के शासन को सख्त बनाना भी एक निरसन है - भगवान को सर्वश्रेष्ठ खोजने की कोशिश करनी पड़ी और असफल होना पड़ा
कानून। या वह भूल गया या उसने अपना मन बदल लिया। वह सुन्ना कुरान को निरस्त करता है, सामान्य नहीं है
शासन, लेकिन अनसुना से बहुत दूर (महिलाओं के लिए पर्दे एफ। पूर्व। कुरान में पेश नहीं किए गए हैं - लेकिन है
तो कुछ हदीसों में)। यहां एक और खास बात यह है कि इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया था (बनाने से .)
सख्त) 632 ईस्वी में जारी होने से पहले। मुख्य नियम यह है कि सबसे छोटा छंद निराकृत करता है
पुराने वाले, लेकिन पुराने समय में एक कठिन बहस के बाद इस्लाम कुछ मामलों में उस पर सहमत हो गया
बड़ा व्यक्ति छोटे को निरस्त कर सकता है - - - और जहाँ तक हम यह पता लगाने में सफल रहे हैं,
गधे का मांस खाने पर प्रतिबंध अभी भी कायम है (यदि हम यहां गलत हैं, तो हम सराहना करेंगे
बहुत सुधार किया जाना है)। 6/145 भी देखें।

०२५ ५/५: "(विवाह में आपके लिए वैध) (न केवल) पवित्र महिलाएं हैं जो विश्वास करने वाली हैं, लेकिन
किताब के लोगों के बीच पवित्र महिलाओं ”। विरोधाभास - और निरस्त करता है:

१. २/२२१: "अविश्वासी स्त्रियों से विवाह न करो"
(मूर्तिपूजक (क्या यह शब्द अरब पाठ में है?)),
जब तक वे विश्वास नहीं करते"। तो कम से कम ईसाई
महिलाओं को के अनुसार स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए
२/२२१, क्योंकि वे धार्मिक चिह्नों आदि का प्रयोग करते हैं
शब्द "मूर्तिपूजक" अरब पाठ में नहीं हैं (पाठ
में ( ) कभी स्पष्टीकरण है, कभी कभी
विनिर्देश - और कभी-कभी "सहायता" के लिए
पाठ अधिक सही ध्वनि के लिए) यह सभी के लिए जाता है
ईसाई और यहूदी महिलाएं।

०२६ ५/२८: ००फा ५/२८: "यदि तू ("काफिर", कैन *) मेरे खिलाफ अपना हाथ बढ़ाता है (मुसलमान,
हाबिल*), तेरा वध करने के लिये तेरे विरुद्ध हाथ बढ़ाना मेरा काम नहीं है। यह श्लोक है
निराकृत - अमान्य - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33,
5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73,
9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ)
यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81,
5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28
निरसन)।

पेज 701

०२७ ५/३३: "अल्लाह और उसके रसूल के खिलाफ युद्ध छेड़ने वालों के लिए सजा"
(मुहम्मद*) - - - है: फांसी, या सूली पर चढ़ाने, या हाथ और पैर काटने से
विपरीत दिशा में, या देश से बंधुआई।" याद रखें कि यह सूरा ६३२ ईस्वी का है, और वह सब
युद्ध मुसलमानों के हमले के युद्ध थे - यहाँ तक कि बद्र, उहुद और मदीना की लड़ाई भी
खाई युद्ध में आक्रमण की लड़ाई शुरू हुई और मुहम्मद द्वारा जीवित रखी गई - इसलिए अधिकतर
पीड़ित जो "अल्लाह और उसके रसूल के खिलाफ युद्ध लड़े" हताशा में लड़ रहे थे और
इस्लाम के हमले के खिलाफ खुद का बचाव करने के लिए पूर्ण आत्मरक्षा - - और बचाव करने के लिए
स्वयं स्पष्ट रूप से एक महान पाप था। लूट, जमीन, गुलाम, सत्ता पाने के लिए मुसलमानों पर हमला -
- - और अपने पड़ोसियों पर इस्लाम थोपना। इस्लाम के शांतिपूर्ण शब्दों के बावजूद, स्थानीय अरब
केवल दो विकल्प थे: मुसलमान बनो या लड़ो / मरो। एक स्पष्ट विरोधाभास - और निरसन:

१.२/२५६: "इसमें कोई बाध्यता न हो"
धर्म - - -।" लेकिन "अल्लाह और उसके रसूल"
उन सब से समान रूप से युद्ध कर रहे थे -
और कम से कम अल्लाह का मतलब धर्म था। (इस पर भी
उस समय मुसलमान मुख्य रूप से अरबों से लड़ रहे थे -
और बुतपरस्त अरबों को केवल दो विकल्प मिले:
मुसलमान बनो या लड़ो और मरो और है
तुम्हारी औरतें और बच्चे गुलाम बन जाते हैं। धूल में मिलना
मुसलमान इसका जमकर विरोध करेंगे
जानकारी, लेकिन शिक्षित नहीं - यह है
सादा और खूनी सच है कि अधिकांश
अरबों को तलवार से मुसलमान बनाया गया।

०२८ ५/४८: "- - - इसलिए सभी गुणों में एक दौड़ के रूप में प्रयास करें।" एक दौड़ में आप शांति से प्रयास करते हैं। 8/12 है
आतंक और युद्ध और अमानवीयता। कम से कम इनके द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है
छंद: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी),
8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६,
47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

029 5/72: "वे (ईसाई*) ईशनिंदा करते हैं जो कहते हैं: 'परमेश्वर मरियम का पुत्र मसीह है।' - - -
और आग उनका निवास ठहरेगी।" यह स्पष्ट रूप से विरोधाभासी है - और निरस्त करता है:

१. २/६२: "- - - जो यहूदी का अनुसरण करते हैं
(शास्त्र), और ईसाई और
सबियन कोई भी जो अल्लाह और में विश्वास करता है
अंतिम दिन, और धार्मिकता में काम करेंगे
उनका प्रतिफल उनके रब के पास है - - -।"
२.२/२५६: "इसमें कोई बाध्यता न हो"
धर्म - - -।"
3. 5/69: "जो लोग (कुरान पर विश्वास करते हैं), और
जो यहूदी (शास्त्रों) का पालन करते हैं, और
ईसाई और सबियन - कोई भी जो
अल्लाह पर विश्वास करो (यहाँ शामिल है
यहोवा/परमेश्वर*) और अंतिम दिन, और कार्य
धार्मिकता - उन पर न तो कोई भय होगा, न ही
क्या वे शोक करें।"

पेज 702

(३ निरस्तीकरण)

०३० ५/७३: "वे निन्दा करते हैं जो कहते हैं: अल्लाह त्रिनिटी में तीन में से एक है - - -।" यह था
दो अन्य देवताओं को अल्लाह के पक्ष में रखो - दोगुना परमेश्वर। यह विरोधाभास - और
निरस्त करता है:

१. २/६२: "- - - जो यहूदी का अनुसरण करते हैं
(शास्त्र), और ईसाई और
सबियन कोई भी जो अल्लाह और में विश्वास करता है
अंतिम दिन, और धार्मिकता में काम करेंगे
उनका प्रतिफल उनके रब के पास है - - -।"
२.२/२५६: "इसमें कोई बाध्यता न हो"
धर्म - - -।"
3. 5/69: "जो लोग (कुरान पर विश्वास करते हैं), और
जो यहूदी (शास्त्रों) का पालन करते हैं, और
ईसाई और सबियन - कोई भी जो
अल्लाह पर विश्वास करो (यहाँ शामिल है
यहोवा/परमेश्वर*) और अंतिम दिन, और कार्य
धार्मिकता - उन पर न तो कोई भय होगा, न ही
क्या वे शोक करें।"

(३ निरस्तीकरण)।

०३१ ५/९०: "नशे और जुआ - - - (हैं*) शैतान की करतूत के: ऐसे बचें
(नफरत) - - -।" सुरुचिपूर्ण ढंग से निरस्त करता है - सख्त होकर:

१.४/४३: "दृष्टिकोण प्रार्थना को दिमाग से नहीं"
भिखारी (नशे में*) - - -।" द्वारा निरस्त
एफ द्वारा सख्त बनाना। भूतपूर्व।:

०३२ ५/९९: "मैसेंजर (मुहम्मद का *) का कर्तव्य (संदेश) - - - घोषित करना है।"
कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५,
3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३,
9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई शामिल हैं
खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाली छंद भी।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 28 निरसन)।

०३३ ६/६०: "उनको छोड़ दो जो अपने धर्म को मात्र खेल और मनोरंजन समझते हैं - - -"।
कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५,
3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३,
9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई शामिल हैं
खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाली छंद भी।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 28 निरसन)।

०३४ ६/६६: "आपकी (धार्मिक*) व्यवस्था की जिम्मेदारी मेरी (मुहम्मद की) नहीं है
मामलों।" कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८,

702

पेज 703

3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14,
9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है
कई खूनी खतरे, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 28 निरसन)।

०३५ ६/७०: "उन लोगों को छोड़ दो जो अपने धर्म को केवल खेल और मनोरंजन के लिए लेते हैं - - -।"
कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५,
3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३,
9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई शामिल हैं
खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाली छंद भी।

मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०३६ ६/९१: "- - - फिर उन्हें (गैर-विश्वासियों*) को व्यर्थ प्रवचन और तुच्छ बातों में डुबाने के लिए छोड़ दो।" परंतु सख्ती से प्रतिक्रिया करने के लिए पर्याप्त मजबूत होने से पहले उन्हें छोड़ने के लिए उन्हें क्या करना था। इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं। आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है 2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

०३७ ६/१०४: "- - - मैं (मुहम्मद*) आपके कार्यों पर नजर रखने के लिए (यहां) नहीं हूं।" एक साल बाद मुहम्मद ने भी हर किसी को करते हुए देखना शुरू किया - और सख्ती से धीरे-धीरे। इस कम से कम इन श्लोकों द्वारा श्लोक निराकृत किया गया है - अमान्य किया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०३८ ६/१०६: "---- और उन नली से मुँह मोड़ो जो अल्लाह के साथ देवताओं को मिलाते हैं।" लेकिन एक तरफ मुड़ना था सख्ती से प्रतिक्रिया करने के लिए पर्याप्त मजबूत होने से पहले उन्हें क्या करना था। यह श्लोक है निरस्त - अमान्य - और कम से कम इन श्लोकों द्वारा खंडित: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई शामिल हैं खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाली छंद भी। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०३९ ६/१०७: "- - - लेकिन हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) को उनकी निगरानी के लिए नहीं बनाया है ("काफिरों") कर - - -।" कम से कम इन श्लोकों के द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/ ७३, ३५/३६, ४७/४,

703

पेज 704

66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०४० ६/१०८: "अल्लाह के सिवा उन लोगों का पर्दाफाश न करना जिन्हें वे पुकारते हैं, ऐसा न हो कि वे क्रोध के कारण उनकी अज्ञानता में अल्लाह का पर्दाफाश करो।" यह आप भूल सकते हैं जब इस्लाम इतना मजबूत हो गया विनम्र होने के बजाय दंडित करें। इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और इसके द्वारा खण्डन किया गया है at कम से कम ये श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८-३९ (NS चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने या अनुमति देने वाली छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०४१ ६/११२: "- - - तो (मुहम्मद*) उन्हें (विरोधियों*) और उनके आविष्कारों (देवताओं*) को छोड़ दो अकेला।" इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/ ७३, ३५/३६, ४७/४, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम

यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०४२ ६/१२१: "(मांस) न खाएं, जिस पर अल्लाह का नाम नहीं लिया गया है: वह होगा अधर्म हो।" ११ साल बाद (६३२ ईस्वी) ५/५ द्वारा विरोधाभासी और निरस्त: "द फूड ऑफ द पुस्तक के लोग (यहाँ बाइबिल = यहूदी और ईसाई*) आपके लिए वैध हैं - - -"।

०४३ ६/१३७: "- - - लेकिन उन्हें (बहुदेववादियों*) और उनके आविष्कारों को छोड़ दें।" वह में था शांतिपूर्ण 621 ई. यह जल्द ही बदल गया: इस कविता को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और इसका खंडन किया गया है कम से कम इन श्लोकों से: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८- 39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25 /52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने वाली छंद भी शामिल हैं अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०४४ ६/१४५: "मैं (मुहम्मद*) नहीं पाता - - - कोई (मांस) खाने के लिए मना किया - - - जब तक कि यह न हो मृत मांस, या खून बहाया, या सूअर का मांस - - - या - - - (मांस) जिस पर एक नाम आह्वान किया गया है, अल्लाह के अलावा।" यह सूरा 621 ई. का है। कोई ६ साल बाद मुहम्मद ने इसे निरस्त कर दिया और गधे का मांस खाने पर प्रतिबंध लगा दिया। इस निषेध कुरान में कभी प्रवेश नहीं किया, और यह उन मामलों में से एक है जहां धूप - the हदीस - कुरान में एक बिंदु को निरस्त करें। (याद रखें कि एक नियम में जोड़ना भी है a निरसन - अल्लाह ने इसे शुरू से ही सही नहीं किया, और अपने शब्दों को बदलना पड़ा)। और देखें 5/3।

०४५ ६/१४९: "अल्लाह के पास तर्क हैं जो घर पहुँचते हैं - - -"। जो सीधी भाषा में इसका मतलब है कि अल्लाह की हर चीज में अंतिम बात है। जिसका अर्थ है: अल्लाह सब कुछ तय करता है। "कुरान का संदेश" इस सूरह के लिए अपनी टिप्पणी 141 में इसकी व्याख्या करता है स्वीडिश): "दूसरे शब्दों के साथ: **अल्लाह के ज्ञान के बीच वास्तविक संबंध**

७०४

पेज ७०५

भविष्य (और फलस्वरूप भविष्य में क्या होने वाला है*) में अपरिहार्य के बारे में एक तरफ और दूसरी तरफ मनुष्य की अपेक्षाकृत (!!*) स्वतंत्र इच्छा - दो कथन जो ऐसा प्रतीत होता है एक-दूसरे का खंडन करते हैं - जो मनुष्य के लिए समझना संभव नहीं है, उससे बाहर है, लेकिन जैसा कि दोनों कथन अल्लाह की ओर से किए गए हैं (कुरान* में) दोनों सत्य होने चाहिए।

यह तर्क "सत्य" शब्द के पीछे के अर्थ के लिए अंतिम हार है। ऐतिहासिक वास्तविक मुहम्मद जैसे नैतिक रूप से भ्रष्ट चरित्र के एक व्यक्ति ने एक को बताया है अप्रमाणित और अप्रमाणित कहानी - - - और यही परम सत्य भी है बिल्कुल असंभव !! अंतिम विरोधाभास !! और का अंतिम निरसन मामले में स्वतंत्र इच्छा के बारे में कोई दावा।

०४६ ६/१५८: "रुको तुम ("काफिर"*): हम (मुहम्मद*) भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।" यह श्लोक है निराकृत - अमान्य - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०४७ ६/१५९: "उन लोगों के लिए विज्ञापन जो अपने धर्म को विभाजित करते हैं और संप्रदायों में टूट जाते हैं, उनका कोई हिस्सा नहीं है उन्हें कम से कम: उनका संबंध अल्लाह के साथ है - - -।" वास्तविकता से बहुत दृढ़ता से विपरीत है - इस्लामी इतिहास के माध्यम से कई संप्रदायों को सताया गया है, यहां तक कि खून में डूब गए हैं। साथ ही कुरान द्वारा ही खण्डन और निरसन किया गया है: इस आयत को निरस्त किया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों के विपरीत: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन यह भी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद (तलवार के साथ) पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०४८ ७/८७: "- - - अपने आप को ("काफिरों" *) धैर्य में तब तक पकड़ो जब तक कि अल्लाह हमारे बीच फैसला न करे: क्योंकि वह निर्णय लेने में सर्वश्रेष्ठ है।" कम से कम इन श्लोकों के द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/ ७३, ३५/३६, ४७/४, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०४९ ७/१८२-१८३: "जो हमारी (अल्लाह की) निशानियों को ठुकराते हैं---------------------
-" लेकिन सुनिश्चित हो, मुहम्मद ने उन्हें हमेशा राहत नहीं दी, जब वह काफी मजबूत हो गए। इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं। आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है 2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

०५० ७/१८८: "मैं (मुहम्मद*) केवल एक चेतावनी देने वाला, और खुशखबरी लाने वाला हूँ - उन लोगों के लिए जो आस्था या विशवास होना।" एक चेतावनी और एक योद्धा। कम से कम इनके द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है छंद: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०५१ ७/१९३: "- - - तुम्हारे (मुहम्मद*) के लिए यह वही है कि तुम उन्हें बुलाओ या तुम पकड़ लो शांति!" कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है कई खूनी खतरे, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०५२ ७/१९९: "(मुहम्मद*) क्षमा को थामे रहो ("काफिरों"* के प्रति)। यह श्लोक है निराकृत - अमान्य - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०५३ ८/१ (६२४ ईस्वी): "वे तुमसे (मुहम्मद) युद्ध की लूट के बारे में पूछते हैं। कहो: '(ऐसी) लूट अल्लाह और पैगंबर मुहम्मद * के निपटान में है)"। ये है उसी सूरह में पहले से ही निरस्त:

> १.८/४१: "और यह जान लो कि सारी लूट में से कि आप प्राप्त कर सकते हैं (युद्ध में), पांचवां सौंपा गया है अल्लाह को"। योद्धा स्पष्ट रूप से चाहते थे उनके हिस्से - और कभी-कभी बातें भी होती थीं मुहम्मद के बारे में निष्पक्ष रूप से साझा नहीं करने के बारे में। मुसलमानों यह बताने की कोशिश करें कि यहाँ कोई निरसन नहीं है, जैसा कि अल्लाह वास्तव में हर चीज का स्वभाव है, लेकिन भव्य रूप से योद्धाओं को 80% देता है। लेकिन हकीकत यह है कि नियम था - होना ही था -

बदला हुआ। (मुसलमान इसे इस तरह से समझाते हैं कि यह अभी भी है
अल्लाह और मुहम्मद के थे, लेकिन
जिस क्षण यह एक अधिकार बन गया जो योद्धाओं के स्वामित्व में था
युद्ध के नियमों के भाग के रूप में, यह अब नहीं है
योद्धाओं के अलावा किसी का भी था)।

०५४ ८/१२: "मैं (अल्लाह*) अविश्वासियों के दिलों में आतंक पैदा करूंगा: तुम उनके ऊपर मारो
गर्दन और उनकी सारी उँगलियाँ उन पर से मारो (उन्हें धनुष का उपयोग करने में असमर्थ बनाओ)। सीधे शब्दों में: चलो
हम बुरे अविश्वासियों से लड़ते हैं। इस श्लोक ने कम से कम इन श्लोकों (यहाँ .) का खंडन किया (और विरोधाभासी)
124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 का कहना है कि 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272,

3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/ १०७, ६/११२, ६/१५८, ७/८७,
7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/ ३,
15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107,
21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/ 30,
34/25, 34/28, 35/23, 35/24 ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/ 59,
45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29,
67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88
निरसन)।

०५५ ८/३९: "और उनसे (अविश्वासियों से) तब तक लड़ो जब तक कि फिर कोई कोलाहल और अन्धेर न हो, और
अल्लाह में पूरी तरह से और हर जगह न्याय और विश्वास कायम है - - -।" क्या प्राप्त करना संभव है
धर्म के युद्धों और पराजित "काफिरों" के दमन के बारे में अधिक प्रत्यक्ष आदेश? और
यदि "न्याय" का अर्थ शरिया है, तो यह गैर-मुसलमानों के लिए विनम्र होने के लिए बहुत अधिक भगवान नहीं है। यह श्लोक
कम से कम इन छंदों को निरस्त (और विरोधाभासी) किया (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 हैं
9/5 द्वारा निरस्त कर दिए गए हैं): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5 /48,
5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/ ६१, ९/६८,
१०/४१, १०/९९, १०/१०२, १०/१०८, ११/१२, ११/१२१, १३/४०, १५/३, १५/९४, १६/३५, १६/८२, १६/१२५,
16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54,
23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/ २४ए,
36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/ १३५बी,
46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45,
86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88 निरसन)।

०५६ ८/३८-३९: "अविश्वासियों से कहो, यदि (अब) वे (अविश्वास से) बाज आते हैं
मुसलमान*)), उनके अतीत को माफ कर दिया जाएगा, लेकिन अगर वे बने रहे, तो उनके लिए सजा
उनके सामने पहले से ही है (उनके लिए चेतावनी का विषय)। और उनके साथ तब तक लड़ो जब तक कोई न हो
अधिक उपद्रव और उत्पीड़न, और न्याय (शरीयत? *) और अल्लाह में पूरी तरह से विश्वास है
और हर जगह "। खैर, यह कम से कम कहने के लिए विरोधाभास और निरस्त करता है और मारता है।

१.२/२५६: "इसमें कोई बाध्यता न हो"
धर्म" और कुछ अन्य पुराने, "नरम" छंद।
२. ५/२८: "यदि तू ("काफिर", कैन *) खिंचाव करता है
मेरे खिलाफ तेरा हाथ (मुसलमान, हाबिल*), यह है
मेरे लिथे नहीं कि मैं तुझ पर हाथ बढ़ाऊं
तुम्हें मार डालो - - -।" जब आप इसे पढ़ते हैं,
याद रखें कि मुसलमानों के पास बहुत कम हैं यदि कोई अधिक है
सभी कोडेक्स। उन्हें क्या करना है देखना है
के लिए "मुहम्मद ने ऐसे के बारे में क्या कहा"
चीज़ें?" अगर उन्होंने कुछ कहा है, तो वे लेते हैं
कि एक कोडेक्स के रूप में - अच्छा नैतिक या नहीं। अगर नहीं,
उन्हें किताब में देखना होगा: "क्या वहाँ है?
कहीं समानांतर स्थिति?" अगर वे पाते हैं -
कभी-कभी कल्पना को खींचकर-अर्थात्
कार्य करने का तरीका, या किसी की इच्छा के लिए बहाना
कार्य करने के लिए। यह भी ध्यान रहे कि यह श्लोक इन्हीं में से एक है
सभी कुरान में बहुत कम है जो इसके अनुसार है
यीशु की शिक्षाओं के साथ - बहुत में से एक
कुछ। और यह पूरी तरह से "हत्या" है
निरसन यह श्लोक निराकृत है - निर्मित
अमान्य - कम से कम इन श्लोकों के द्वारा: २/१९१,

2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72,
8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60,
9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123,
25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9।
इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन यह भी
राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद
आर्थिक, आदि मजबूरी (तलवार से
पृष्ठभूमि में यदि आप विरोध करते हैं) - हम
यहाँ कुछ का उल्लेख करें: ३/२८, ३/८५, ३/१४८, ४/८१,
5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36।
वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28
निरसन)।

०५७ ८/४१: "और यह जान लो कि जितनी लूट तुम (युद्ध में) प्राप्त कर सकते हो, उसमें से पांचवां हिस्सा है
अल्लाह को सौंपा - - -।)" यह खंडन करता है और थोड़ा ऊपर 8/1 को निरस्त करता है - उसे देखें।

०५८ ८/६०: "उनके खिलाफ (अविश्वासियों*) अपनी ताकत को अपने चरम पर तैयार करें
सत्ता - - - (के दिलों में) आतंक (हमला) करने के लिए - मुसलमान लगभग हमेशा थे
हमलावर आज शांतिपूर्ण शब्दों के बावजूद*) अल्लाह के दुश्मन - - -।" धर्म के लिए युद्ध
- और धन और दास और शक्ति - लेकिन "धर्म में कोई मजबूरी नहीं।" यह श्लोक निराकृत
(और विरोधाभास) कम से कम ये छंद (यहाँ ८८ हैं १२४ मुस्लिम विद्वानों में से कहते हैं:
9/5 द्वारा निरस्त): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48 , ५/९९,
6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/ ६८, १०/४१,
10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126,
16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96,
24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/ १७,
39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b,
46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45,
86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88 निरसन)।

०५९ ८/६१: "लेकिन अगर दुश्मन शांति की ओर झुकता है, तो क्या आप (मुहम्मद*) (भी) झुकते हैं
शांति की ओर - - -।" कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१,
2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3,
9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस
इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं।
आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a
यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है
2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

000 8/65: आप अक्सर यह दावा करते हुए देखते हैं कि इसे 8/66 से निरस्त कर दिया गया है। लेकिन 8/65 आम तौर पर बोल रहा है,
जबकि 8/66 "वर्तमान के लिए - - -" है। अपवाद, निरसन नहीं। यदि आप शिकार करते हैं
निरसन, इससे सावधान रहें: एक अपवाद जो वहां और फिर अर्थ से संबंधित है, वह है a
अपवाद, निरसन नहीं (लेकिन अगर अपवाद दूसरी जगह और दूसरे से पाया जाता है
समय, यह एक निरसन है)। बहुत सारे विरोधाभास और निरसन दोनों हैं - आप नहीं
का उपयोग करना होगा कि वास्तव में केवल एक अपवाद है जिसका अर्थ अर्थ के हिस्से के रूप में है और
फिर।

०६० ९/३ (६३१ ईस्वी): "और विश्वास को अस्वीकार करने वालों के लिए एक गंभीर दंड की घोषणा करें"। मुसलमान मई
कहें कि यह लाक्षणिक रूप से और अगले जीवन के लिए है। लेकिन 9/5 के संबंध में कहा गया है, जो
इस जीवन को इंगित करता है। इस श्लोक ने कम से कम इन छंदों का खंडन (और विरोधाभास) किया है (यहाँ ८८ हैं

१२४ मुस्लिम विद्वानों का कहना है कि ९/५ द्वारा निरस्त कर दिया गया है: २/१०९, २/१९०, २/२५६, २/२७२, ३/२०, ४/६२, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/ १५८, ७/८७, ७/१८८, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/ ९४, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/ 25, 34/28, 35/23, 35/24 ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/ १४, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88 निरसन)।

०६१ ९/५: "परन्तु जब मना किए हुए महीने बीत जाएँ, तो जहाँ कहीं तुम अन्यजातियों से लड़ो और मार डालो, वहीं" उन्हें ढूंढो, और उन्हें आकार दो, उन्हें संकट में डाल दो, और हर चाल में उनकी प्रतीक्षा में लेट जाओ युद्ध।)"

यह "तलवार की आयत" है - कुरान में सभी कठोर और मदीना काल के अमानवीय और खूनी छंद, जिन्हें विरोधाभासी माना जाता है और सबसे शांतिपूर्ण छंद (मुख्य रूप से मक्का अवधि से) को निरस्त करने के लिए। मुस्लिम विद्वान कहते हैं पुस्तक के १२४ छंदों का खंडन करता है, हमने इसके लिए कोई संख्या नहीं देखी है कि यह कितने का खंडन करता है, लेकिन यह कम नहीं है (वास्तव में सभी निरसन भी विरोधाभास हैं - इसलिए उन्हें समझा जाता है निरसन: विरोधाभासी बिंदुओं को अमान्य बनाना ताकि जीना और व्यवहार करना संभव हो पुस्तक के अनुसार - - - और यह दावा करने के लिए कि इसमें विरोधाभासी के रूप में कोई विरोधाभास नहीं है अंक निरस्त कर दिए गए हैं, हालांकि इस अंतिम तथ्य का मुसलमानों ने कभी उल्लेख नहीं किया)। और सभी निरसन के रूप में एक या अधिक विरोधाभासी छंदों को निरस्त करने से पहले भी विरोधाभास थे (यह एक कारण है कि यह बकवास क्यों है जब कुछ मुसलमान कहते हैं कि निरसन नहीं है अस्तित्व - इसका मतलब है कि अल्लाह सर्वज्ञ नहीं है, लेकिन उसे कोशिश करनी पड़ी और असफल होना पड़ा और अपना विचार बदलना पड़ा हर अब और फिर - कुरान में: निरस्तीकरण के बिना आपके पास बहुत कुछ गंभीर है पुस्तक में अंतर्विरोध, और जो पुस्तक को बनाने वाले अंतर्विरोधों में से सबसे खराब है पालन करना असंभव है, या निरसन जो कम से कम आपको जीवन के माध्यम से हवा देता है?) सूरह ९, ९/५ सहित, ६३१ ईस्वी में आया और निरसन के लिए इस्लामी नियमों के अनुसार, इसका मतलब है कि यह कुरान में लगभग हर चीज को ओवरराइड करता है।

यहां 9/5 निरस्त किए गए लोगों में से लगभग आधे हैं:

१. २/१०९ को ९/५ द्वारा निरस्त किया गया "- - - लेकिन (मुसलमान*) क्षमा करें और अनदेखा करें (यहूदी और ईसाई*) - - -।" लेकिन वह 9/5 और अन्य से बहुत पहले था कठिन श्लोक।
२.२/१९०: "अल्लाह के लिए उन लोगों से लड़ो जो तुम से युद्ध करो, पर मर्यादा का अतिक्रमण मत करो—--।" 9/5 सीमाओं के बारे में ज्यादा परवाह नहीं करता है।
3. 2/256: "इसमें कोई मजबूरी न हो" धर्म - - -।" यह सभी के लिए फ्लैगशिप है मुसलमान जो गैर-मुसलमानों को प्रभावित करना चाहते हैं इस्लाम कितना शांतिपूर्ण और सहिष्णु है। परंतु ध्यान दें! ध्यान दें! सूरह कहते हैं: "इसे रहने दो - - -।" यह है एक आदेश या - 2/255 से भी निर्णय लेना - अधिक शायद एक इच्छा, यह ऐसा कुछ नहीं है जो वे था। यह भविष्य के लिए एक आशा या लक्ष्य है, यह है ऐसा कुछ नहीं जो मौजूद है - और सभी समान अधिकांश मुसलमान इसे इस तरह उद्धृत करते हैं: "कोई नहीं है"

धर्म में मजबूरी"--- एक छोटा, छोटा "किटमैन" (वैध अर्ध-सत्य - एक अभिव्यक्ति) "अल-तकिया" के साथ इस्लाम के लिए विशेष, "वैध झूठ") स्पष्ट अल के अलावा- कई मुस्लिम देशों में तकिया के रूप में गैर-मुसलमानों के लिए मजबूरी हैं, कुरान और धर्म को बहुत अच्छा बनाता है अधिक मिलनसार और सहिष्णु।

9/5 को यह न बताएं।

१.२/२७२: "यह आप के लिए आवश्यक नहीं है (ओ .)
मैसेंजर (मुहम्मद*)) उन्हें पर सेट करने के लिए
सही रास्ता - - -।"
२. ३/२०: "यदि वे ("काफिर"*) करते हैं (बनते हैं)
मुसलमान*), वे सही मार्गदर्शन में हैं, लेकिन अगर
वे वापस लौटते हैं, आपका कर्तव्य है कि आप उन्हें बताएं
संदेश - - -।" यह - कि उसका कर्तव्य था
संदेश देना (केवल), गहरा था
खंडन किया - और कम से कम उन लोगों द्वारा निरस्त किया गया
इन छंदों में से जो संख्या ३ (में .) के बाद आए
625a), और हम उनमें से जो आए हैं उन्हें जोड़ते हैं
पहले भी, क्योंकि इस्लाम एक पुरानी आयत कहता है
स्पष्ट मामलों में एक छोटे को निरस्त कर सकते हैं (यह
मानक नियम से एक अपवाद है
कि नवीनतम पुराने को निरस्त कर देता है)।
वैसे भी यह एक स्पष्ट विरोधाभास है - और
अनेक श्लोकों द्वारा निराकृत।
3. 4/62: "वे लोग (अच्छे मुसलमान नहीं या)
धर्मत्यागी*) - - - उनसे दूर रहें, लेकिन
उन्हें चेतावनी देना, और उनसे एक शब्द कहना
उनकी आत्मा तक पहुँचो।"
4. 4/81: "- - - तो उनसे दूर रहो (पाखंडी,
"काफिर") - - -।" 9/5 इसके बजाय चाहता है कि आप मारें
उन्हें।
5. 4/90: "- - - अगर वे आपसे पीछे हट जाते हैं लेकिन
तुमसे नहीं लड़ो, और (बजाय) तुम्हें भेजो
(गारंटी) शांति, फिर अल्लाह ने खोल दिया
तुम्हारे लिए कोई रास्ता नहीं (उनके खिलाफ युद्ध करने के लिए।)"
6. 5/3: "आपके लिए (भोजन के लिए) निषिद्ध हैं: मृत
मांस, रक्त, सूअर का मांस (और कुछ)
अधिक*- - -।"
७.५/२८: "यदि तू ("काफिर", कैन *) खिंचाव करता है
मेरे खिलाफ तेरा हाथ (मुसलमान, हाबिल*), यह है
मेरे लिथे नहीं कि मैं तुझ पर हाथ बढ़ाऊं
तुम्हें मार डालो - - -।"
८. ५/४८: "---तो सर्वगुण सम्पन्न दौड़ में इसी प्रकार प्रयत्न करो।"
एक दौड़ में आप शांति से प्रयास करते हैं। 8/12 आतंक है
और युद्ध और अमानवीयता।

710

पेज ७११

९. ५/९९: "मैसेन्जर का कर्तव्य है कि
घोषणा (संदेश) - - -।" ओह??
१०. ६/६०: "उन लोगों को अकेला छोड़ दो जो अपना लेते हैं"
धर्म को मात्र खेल और मनोरंजन होना - - -"।
११. ६/६६: "मेरा (मुहम्मद का) नहीं है
आपकी व्यवस्था करने की ज़िम्मेदारी
("काफिरों"*) मामलों।" नहीं, उसकी जिम्मेदारी
केवल आपको मारना या आपको दबाना या जबरदस्ती करना है
तुम मुसलमान बनो।
12. 6/70: "उन लोगों को अकेला छोड़ दो जो अपना लेते हैं"
धर्म को मात्र खेल और मनोरंजन होना - - -।"
कोई टिप्पणी आवश्यक नहीं है।
१३. ६/१०४: "मैं (मुहम्मद*) नहीं हूँ (यहाँ) तो
अपने कामों पर नजर रखना"। (इस्लामी विद्वान
रिपोर्ट करें कि यह पद १२४ मामूली को निरस्त करता है
छंद - हम पट्टे पर नहीं 20
निरसन/विरोधाभास)।

१४. ६/१०७: "- - - लेकिन हम (अल्लाह*) ने तुम्हें बनाया है (मुहम्मद*) उन पर नजर न रखने के लिए ("काफिरों') कर - - -।"

१५. ६/११२: "- - - तो (मुहम्मद*) उन्हें छोड़ दो (विरोधियों*) और उनके आविष्कार (देवताओं*) अकेला।"

१६. ६/१५८: "रुको तुम ("काफिर"*): हम (मुहम्मद*) भी इंतज़ार कर रहे हैं।"

17. 7/87: "- - - अपने आप को पकड़ें ("काफिर"*) धैर्य जब तक अल्लाह हमारे बीच फैसला नहीं करता: क्योंकि वह निर्णय लेने में सर्वश्रेष्ठ है।"

१८. ७/१८८: "मैं (मुहम्मद*) लेकिन एक चेतावनी देने वाला हूं, और खुशखबरी देने वाला - उनके लिए जिनके पास है आस्था।" एक चेतावनी और एक योद्धा।

19. 7/193: "- - - आपके लिए (मुहम्मद*) यह है वही चाहे तुम उन्हें बुलाओ या तुम अपने को धारण करो शांति!"

२०. ७/१९९: "(मुहम्मद*) क्षमा को थामे रहो ("काफिरों"* की ओर)।

२१. ८/६१: "लेकिन अगर दुश्मन की ओर झुकाव है शांति, क्या तू (मुहम्मद*) (भी) झुकना शांति की ओर - - -।"

22. 9/68: "- - - उसमें (नरक*) वे करेंगे (पाखंडी और "काफिर"*) बसते हैं: पर्याप्त क्या यह उनके लिए है - - -।"

२३. १०/४१: "मेरे लिए मेरा काम (मुहम्मद*), और आपका आपको! आप जिम्मेदारी से मुक्त हैं मैं जो करता हूं उसके लिए, और जो कुछ तुम करते हो उसके लिए मैं।"

२४. १०/९९: "क्या तुम (मुहम्मद*) तो मजबूर करोगे मानवजाति, उनकी इच्छा के विरुद्ध, विश्वास करने के लिए!"

२५. १०/१०२: "रुको "गैर-मुसलमान*) तो: मैं के लिए" (मुहम्मद), को, आपके साथ प्रतीक्षा करेगा।"

२६. १०/१०८: "- - - वे ("काफिर"*) जो भटक जाते हैं, अपने नुकसान के लिए ऐसा करते हैं, और मैं (मुहम्मद*) आपके अफेयर की व्यवस्था करने के लिए मैं (सेट नहीं) हूं।" मुहम्मद नहीं चाहते थे कि वे व्यवस्था करें उनके अपने मामले बाद में जब वह बन गए मजबूत - तब वह चाहता था कि वे बनें मुसलमान और सैनिक, ताकि वे कर सकें युद्ध और सत्ता के अपने मामलों को मजबूत करना।

२७. ११/१२: "लेकिन आप (मुहम्मद*) ही हैं वहाँ चेतावनी देने के लिए "। और फिर कुछ और - कम से कम 622 ई. के बाद

२८. ११/१२१: "जो विश्वास नहीं करते उनसे कहो: 'जो कर सकते हो वह करो: हम अपना काम करेंगे'"। इस 621 ई. में था। मुहम्मद/अल्लाह थे/थे अभी भी शांति की बात कर रहे हैं - लेकिन ज्यादा के लिए नहीं लंबा।

२९. १३/४०: "--- तेरा (मुहम्मद का) कर्तव्य है बनाओ (संदेश) उन तक पहुंचें ("काफिरों"): उन्हें बुलाना हमारा (अल्लाह का) हिस्सा है हेतु।" खैर, ६२२ ईस्वी से यह भी बन गया मुहम्मद और उसके आदमियों का हिस्सा।

30. 15/3: "उन्हें (काफ़िरों*) को अकेला छोड़ दो, आनंद लेने के लिए (इस जीवन की अच्छी चीजें) और करने के लिए कृपया स्वयं - - -।" यह 621 ई. में था। अल्लाह को जरूरत पड़ने में ज्यादा समय नहीं लगा अपने शब्द को बदलें और उसका खंडन करें, जब वह अपना शांतिपूर्ण धर्म बदलना शुरू कर दिया

अमानवीयता और रक्त में से एक (सौभाग्य से कई मुसलमान उन हिस्सों के हिसाब से नहीं जीते अगर कुरान)।

३१. १५/९४: "---जुड़ने वालों से मुंह मोड़ो अल्लाह के साथ झूठे देवता। "

32. 16/35: "लेकिन मिशन क्या है संदेशवाहक लेकिन स्पष्ट उपदेश देने के लिए संदेश?" सूरह 16 बहुत आखिरी में से एक है मक्का से सूरह - महीनों बाद सामग्री बदलने लगी, और अंतर्विरोध - और निरसन - के लिए आवश्यक थे एक युद्ध धर्म में परिवर्तन।

३३. १६/८२: "--- तेरा (मुहम्मद का) कर्तव्य ही है स्पष्ट संदेश का प्रचार करने के लिए।" यह सिर्फ था मुहम्मद के मक्का से भाग जाने के महीनों पहले 622 ई. में लेकिन यह उसके आने के कुछ समय बाद मदीना और सत्ता हासिल करने लगे:

३४. १६/१२५: "(सभी को) अपने भगवान के मार्ग पर आमंत्रित करें (अल्लाह*) ज्ञान और सुंदर के साथ उपदेश; और उनके साथ इस तरह से बहस करें कि सबसे अच्छे और सबसे दयालु हैं - - -।"

३५. १६/१२६: "और यदि तुम उन्हें पकड़ते हो, तो पकड़ लो" वे आपको पकड़ने से बदतर नहीं हैं:

परन्तु यदि तुम सब्र दिखाते हो, तो वही उत्तम है (पाठ्यक्रम) उन लोगों के लिए जो धैर्यवान हैं।"

३६. १६/१२७: "और क्या तू (मुहम्मद*) सब्र करो, क्योंकि तुम सब्र तो अल्लाह की तरफ से है। और न उन पर शोक करो, और न अपके आप को संकट उनकी साजिशों के कारण। "

37. 17/54: "हम (अल्लाह*) ने तुम्हें नहीं भेजा है (मुहम्मद*) उनके निपटाने के लिए ("काफिरों""*) उनके लिए मामले"। अल्लाह या मुहम्मद ने के बारे में अपना विचार बदलना शुरू कर दिया यह एक साल बाद - 622 ईस्वी में - कब मुहम्मद ने पर्याप्त सेना हासिल करना शुरू कर दिया उनके लिए "अपना" धर्म तय करने की शक्ति। (में इस्लाम जो कहना पसंद करता है, उसके बावजूद इस्लाम एक तलवार द्वारा पेश की गई बड़ी डिग्री - और में भाग लेने की इच्छा से लूटना/लूटना/चोरी करना और गुलामों को लेना - में अरब)।

38. 18/29: "- - - जो चाहे, विश्वास करे, और जाने दे वह जो करेगा, अस्वीकार (इसे) - - -।" लगता है अगर यह मक्का में पिछले साल से शांतिपूर्ण लाइन थी द्वारा निरस्त किए जाने से पहले अल्पकालिक था मदीना से खूनी!

39. 18/56: "हमने (अल्लाह*) ने तो केवल रसूल भेजे खुशखबरी देने के लिए - - -। " कम से कम स्व घोषित दूत ने बदलना शुरू कर दिया मदीना आने के तुरंत बाद मन:

40. 19/39: "लेकिन उन्हें संकट के दिन की चेतावनी दें" - - -।" यहाँ सीए में। ६१५ ई. मुहम्मद चाहिए बस उन्हें चेतावनी दें। तस्वीर बदल गई कुछ हद तक जैसे उसने कुछ अधिक शक्ति प्राप्त की सालों बाद।

४१. २०/१३०: "इसलिए (मुहम्मद/मुसलमान*) वे ("काफिर") जो कहते हैं, उसके साथ धैर्य रखें - - - ।" वह मक्का में मुहम्मद का स्वर था ६१५ AD या उससे पहले - और मदीना के लिए उसकी उड़ान तक

622AD में। यह 622 से काफी बदल गया
AD और उसके बाद और काफी विरोधाभासी
मक्का काल के हल्के शब्दों में।

42. 21/107: "हम (अल्लाह*) ने तुम्हें भेजा है
(मुहम्मद*) नहीं, बल्कि सभी पर दया करने के लिए
जीव।" मुहम्मद ज्यादा नहीं थे
दुनिया के लिए दया - सूरह पढ़ें
मदीना। न तो वह सभी पर दया करता था
मुसलमान - मदीना से सूरह पढ़ें + the
महिलाओं के बारे में छंद, कानून, गुलामी, नहीं करने के लिए
अमानवीय नैतिकता के एक बड़े हिस्से का उल्लेख करें
और नैतिक कोडेक्स।

४३. २१/११२: "(अल्लाह*) वही है जिसका
के खिलाफ सहायता मांगी जानी चाहिए

713

पेज ७१४

निन्दा। " खैर, वह ६२१ (?) ई. में था।
६२२ ईस्वी के बाद तलवार आसान हो गई -
ईशनिंदा ने जल्द ही मौत की सजा दी - - -
और वहाँ कई विरोधाभास आया
ग्रंथ

४४. २२/४९: "मैं (मुहम्मद*) आपके पास (भेजा) हूँ
(पुरुष*) केवल स्पष्ट चेतावनी देने के लिए - - -।"
खैर यह सीए था। 616 ई. लेकिन कुछ 6 . से
वर्षों बाद यह केवल एक चेतावनी नहीं रह गई थी,
लेकिन तलवार - - - और बहुत सारे विरोधाभास
और ग्रंथों और शिक्षण में निरसन।

४५. २२/६८: "यदि वे ("काफिर") के साथ तकरार करते हैं
तुम, कहो। 'अल्लाह सबसे अच्छा जानता है कि तुम क्या हो'
कर रहे हैं" - और उन्हें अकेला छोड़ दें। यह सीए था।
616 ई. लेकिन कुछ ६ साल बाद से और
और भी बहुत सारे विरोधाभास आए और
निरसन

४६. २३/५४: "लेकिन उन्हें ("काफिरों" *) उनके में छोड़ दो
एक समय के लिए भ्रमित अज्ञानता "। यह में था
६२१ या ६२२ ईस्वी, उसके कुछ समय पहले -
मुहम्मद की - मदीना के लिए उड़ान। जब वह
काफी मजबूत सैन्य बनना शुरू कर दिया, it
उन्हें अकेला छोड़कर समाप्त हो गया था - और बहुत कुछ
अंतर्विरोधों और निरसन के बारे में
शिक्षाओं और धर्म में - शांति से तक
अमानवीयता और युद्ध।

४७. २३/९६: "जो सबसे अच्छा है उसके साथ बुराई को दूर भगाएं"। बाद में यह
बन गया: बुराई को बुराई से दूर भगाओ - खिलाफ करो
"काफिर" जैसे वे आपके खिलाफ करते हैं - कम से कम
जब बात बुरी चीजों की आती है। आगे
ठीक ऊपर 23/54 के समान टिप्पणियाँ।

४८. २४/५४: "- - - यदि तुम (लोग*) मुँह मोड़ो (से .)
मुहम्मद*), वह केवल के लिए जिम्मेदार है
कर्तव्य उस पर रखा गया है, और तुम उस स्थान के लिए
आप।"

४९. २६/२१६: "मैं (मुहम्मद*) स्वतंत्र हूँ (of .)
जिम्मेदारी) जो तुम ("काफिर"*) करते हो!"
यह मक्का सीए में था। 615 - 616 ई. NS
६२२ के बाद स्वर तेजी से और अधिक अमित्र हो गया
ईस्वी में जब वह सैन्य मजबूत हुआ - और
शिक्षाओं को फिट होने के लिए कुछ "समायोजन" की आवश्यकता थी
युद्ध धर्म = अंतर्विरोध और निरसन:

50. 27/92: "मैं (मुहम्मद) केवल एक वार्नर हूं"।
वह 615 - 616 ईस्वी में था। 622 से वह उपवास
बलवान, सरदार और तानाशाह बने -
और शास्त्र मेड विरोधाभासों और

निरसन लेकिन बहुत कुछ निरस्त कर दिया गया था और
विरोध किया जब मुहम्मद ने सेना बढ़ाई
६२२ ईस्वी के बाद मजबूत और धर्म था
युद्ध और विजय में से एक में बदल गया। ”

714

पेज ७१५

५१. २८/५०: लेकिन अगर वे ("काफिरों"*) ने नहीं माना तो
तुम (मुहम्मद*), जानो कि वे केवल
अपनी वासनाओं का पालन करें - - -।"

५२. २८/५५: "हमारे लिए (मुसलमान*) हमारे कर्म, और
आप ("काफिर"*) आपके; आपको शांति मिले - - -।"
मक्का ६२१ या ६२२ ई
मुहम्मद के प्राप्त होने के बाद की तुलना में शांतिपूर्ण स्वर
६२२ - ६२४ ईस्वी से ताकत और जरूरत a
डकैती, छापे और युद्ध के लिए धर्म अधिक उपयुक्त
- और इसे अल्लाह से प्राप्त किया (या यह अल्लाह था जो
पहले से ज्यादा खून चाहता था?) - परिणामी
के विपरीत और निरस्त करने में
पुरानी शिक्षाएँ।

५३. २९/१८: "--- दूत का ही कर्तव्य है
सार्वजनिक रूप से (और स्पष्ट रूप से) प्रचार करने के लिए।" उतना अच्छा
मुहम्मद और अधिक शक्तिशाली हो गए, इसलिए उनका
स्थानीय लोगों को नियंत्रित करने की इच्छा 'और बाद में
अरबों का जीवन और धार्मिक विचार - - - बल और
सजा एक लक्ष्य का साधन बन गई। साथ
धर्म में आवश्यक परिवर्तन, और
विरोधाभास और आवश्यक निरसन
अधिक शांतिपूर्ण 12 वर्षों की तुलना में
मक्का।

५४. २९/१८: "--- दूत का कर्तव्य ही है
सार्वजनिक रूप से (और स्पष्ट रूप से) प्रचार करने के लिए।" उतना अच्छा
मुहम्मद और अधिक शक्तिशाली हो गए, इसलिए उनका
स्थानीय लोगों को नियंत्रित करने की इच्छा 'और बाद में
अरबों का जीवन और धार्मिक विचार - - - बल और
सजा एक लक्ष्य का साधन बन गई। साथ
धर्म में आवश्यक परिवर्तन, और
विरोधाभास और आवश्यक निरसन
अधिक शांतिपूर्ण 12 वर्षों की तुलना में
मक्का।

55. 29/46: "और आप के लोगों के साथ विवाद मत करो"
पुस्तक - - -।" कोई टिप्पणी नहीं - लेकिन 9/29 पढ़ें
और 9/5 एक बार फिर।

56. 32/30: "तो उनसे दूर हो जाओ और प्रतीक्षा करें - - -
।" जब मुहम्मद अधिक शक्तिशाली हो गए,
थोड़ा इंतजार था। का बाकी
अरब प्रायद्वीप मुख्य रूप से मुस्लिम बन गया था
तलवार से - और कुछ "उपहार" से और
लूटे गए धन के वादे - जिनमें से सभी
धर्म में परिवर्तन की मांग की (या यह था)
दूसरी तरफ, एक भगवान द्वारा शुरू किया गया जो
पाया कि उनका मूल धर्म अच्छा नहीं था
पर्याप्त - या बहुत कम रक्त और मानव
त्रासदी?) जिसके कारण विरोधाभास हुआ
इस्लाम के पुराने और नए संस्करण के बीच
- और स्वाभाविक रूप से निरसन भी

५७. ३४/२५: "ये ("काफिर") नहीं होंगे
हमारे पापों के बारे में पूछताछ की, न ही हम होंगे
पूछा कि तुम क्या करते हो।" शायद यह
इसका मतलब कुछ इस तरह है "हम जीना और रहने देना पसंद करते हैं"
जीना" और कई अधिक शांतिपूर्ण में से एक था
जिन छंदों को खारिज कर दिया गया - विरोधाभासी
और निरस्त कर दिया - जब मुहम्मद ने प्राप्त किया
अधिक शक्ति (यह सीए से है या 620 . के बाद थोड़ा सा है
ई.)
58. 34/28: "हम (अल्लाह *) ने तुम्हें नहीं भेजा होगा"
(मुहम्मद*) लेकिन एक सार्वभौमिक (मैसेंजर) के रूप में
पुरुषों के लिए उन्हें खुशखबरी दे - - -।
५९. ३५/२३: "तू (मुहम्मद*) और कोई नहीं
एक चेतावनी।" नहीं, लगभग ६१५ - ६१६ ई
केवल वही हो सकता है। लेकिन बाद में बदल गया - से
एक प्रवर्तक और एक डाकू बैरन के लिए एक चेतावनी।
के संगत परिवर्तनों के साथ
धर्म - और का निरसन और
पुरानी कहावतों के विरोधाभास, इस तरह
एक।
60. 35/24a: "वास्तव में हम (अल्लाह *) ने तुम्हें भेजा है
(मुहम्मद*) सच में ग्लैडी के वाहक के रूप में
समाचार और एक चेतावनी के रूप में - - -।" खुशी के लिए के रूप में
ख़बरें, जो केवल मुसलमानों के लिए जाती हैं, और
उन सब से भी दूर।
६१. ३६/१७: "और हमारा (मुहम्मद का) कर्तव्य
स्पष्ट संदेश की घोषणा करें।" एक बार फिर
मक्का से कुछ (सी.ए. ६१५ - ६१६ ईस्वी),
वह "तलवार की कविता" द्वारा "मारा गया" था
(९/५) और कई अन्य जब बाद में
मुहम्मद भी बन गए - या उन्होंने फैसला किया कि वह
भी था - एक प्रवर्तक।
६२. ३९/४१: "न ही तू (मुहम्मद*) ने सेट किया है
उन्हें ("काफिर") अपने मामलों का निपटान करने के लिए।
लेकिन ५-७ साल बाद, जब मुहम्मद
622 ई. से सत्ता प्राप्त करना प्रारंभ किया, कि
बदल गया - वह एक पर्यवेक्षक, प्रवर्तक बन गया
और डाकू बैरन - और बाद में एक सरदार - - -
और नियमों/धर्म को बदलना पड़ा। या यह था
दूसरी तरफ - कि यह अल्लाह था जो
अपना मन बदल लिया और अधिक चाहता था
अमानवीयता, अनैतिक कार्य और खून?
किसी भी तरह परिणाम विरोधाभास था और
पुराने की तुलना में निरस्तीकरण।
63. 41/34: "जो बेहतर है उसके साथ पीछे हटाना (बुराई)"
(अच्छा*); तो क्या वह किसके बीच और
तुम थे नफरत बन के रूप में यह तुम्हारा दोस्त थे
और अंतरंग "।
६४. ४२/६: "- - - आप (मुहम्मद*) नहीं हैं
उनके मामलों का निपटान। " नहीं, 614 के आसपास नहीं

- 618 ई. लेकिन ६२२ ईस्वी के बाद वह काफी हो गया
बहुत कुछ, जिसमें एक प्रवर्तक शामिल है - और छंद जैसे
इसका खंडन और निरसन दोनों किया गया।

65. 42/15: "(मुसलमान) हमारे और आपके (काफिर) कोई विवाद नहीं है" शायद नहीं
६१४ - ६१८ ई. लेकिन बाद में यह शक्ति थी
वर्ग = मुसलमान (मुहम्मद अस् के साथ)
तानाशाह), और गैर-मुस्लिम "पूरी तरह से"
वश में" - - - और धर्म के साथ बहुत कुछ
परिवर्तित = अंतर्विरोध और निरसन in
कुरान।

६६. ४२/४८: "तेरा (मुहम्मद का) कर्तव्य अभी बाकी है
संप्रेषित करें (संदेश (कुरान* - या)
शांतिपूर्ण भाग जो ६१४ - ६१८ में मौजूद थे
एडी *))"। कुछ साल बाद इस्लाम
उनके कुछ कर्तव्यों को अधिक क्रूर पाया गया
प्रवर्तक, इसलिए अन्य छंदों के बीच यह एक और
और भी बहुत कुछ का खंडन किया गया और उन्हें निरस्त कर दिया गया।

६७. ४३/८३: "तो उन्हें ("काफिरों"*) बड़बड़ाने के लिए छोड़ दो
और खेलते हैं (उनके घमंड के साथ) - - -।"
ठीक ऊपर 42/48 जैसी टिप्पणियाँ।

68. 43/89: "लेकिन उनसे दूर हो जाओ, और कहो"
'शांति।'" ऊपर 43/48 की तरह टिप्पणियाँ।

६९. ४४/५९: "तो तुम (मुहम्मद*) रुको और
घड़ी; क्योंकि वे (लोग*) (भी) इंतज़ार कर रहे हैं।"
यहाँ बीच से शांतिपूर्ण धर्म में
मक्का काल के, मुहम्मद चाहिए
रुको और देखो। वह कुछ 10 . सख्त हो गया
वर्षों बाद - बहुत सख्त।

७०. ४५/१४: "विश्वास करनेवालों से कहो कि क्षमा कर दो
जो लोग के दिनों की प्रतीक्षा नहीं करते
अल्लाह (कयामत का दिन*)।" लेकिन शब्द
"622 ई. के बाद क्षमा को धीरे-धीरे भुला दिया गया -
जब उन्होंने भी होने का कर्तव्य निभाया
प्रवर्तक

७१. ४६/९: "- - - मैं (मुहम्मद*) लेकिन एक वार्नर हूं,
खुला और स्पष्ट। " हाँ, ६२० ईस्वी में ही वह था
एक स्वघोषित चेतावनी। चीजें बदल गईं और
छंदों को वास्तव में निरस्त कर दिया गया जब उन्हें मिला
कुछ साल बाद अधिक शक्ति।

72. 46/135a: "(मुहम्मद*) - - - जल्दबाजी न करें
(अविश्वासियों) के बारे में - - -।" जब उसने हासिल किया
शक्ति उसे और जल्दी मिल गई - f. भूतपूर्व। अनिच्छुक
अरब (और बहुत से अन्य) जो जीते नहीं थे
उपहारों और मुफ्त लूट / दासता द्वारा, थे
तलवार से जीता गया - निरा विरोधाभास में
मुसलमान क्या कहना पसंद करते हैं: मुसलमान बनो या
लड़ो और मरो!

७३. ४६/१३५बी: "(तेरा (कर्तव्य मुहम्मद है*) लेकिन)
संदेश (कुरान*) का प्रचार करने के लिए।" इस

717

पेज ७१८

620 ई. में था। बदलाव आया और
622 ई. के बाद:

७४. ५०/३९: "तो, धैर्य के साथ, वह सब जो वे सहन करते हैं"
("काफिर"*) कहते हैं - - -।" धैर्य बन गया
एक साल बाद के बारे में बहुत कम चर्चा हुई
(622 ई.)

75. 50/45: "हम (अल्लाह*) सबसे अच्छी तरह जानते हैं कि वे क्या करते हैं
("काफिर"*) कहते हैं; और तुम (मुहम्मद*)
कला उन्हें बलपूर्वक डराने वाला नहीं है।"
बाद के इतिहास को जानकर यह श्लोक बड़ा है,
विडंबना या व्यंग्यात्मक मजाक। यह सूरा से है
614 ईस्वी

७६. ५१/५०-५१बी: "मैं (मुहम्मद*) उसी से हूँ

(अल्लाह*) आपके लिए एक चेतावनी (मुसलमान*), स्पष्ट और खुला। और दूसरा मत बनाओ
(व्यक्ति/वस्तु/विचार*) पूजा की वस्तु
अल्लाह के साथ: मैं उसकी ओर से तुम्हारे लिए एक चेतावनी हूँ, स्पष्ट और खुला! " यह मक्का 620 का है।
मुहम्मद अभी भी सैन्य कमजोर है - और अभी भी
केवल एक चेतावनी। बाद में वह एक प्रवर्तक बन गया
(अरब का अधिकांश भाग मुसलमान बन गया)
तलवार की नोक):

७७. ५१/५४: "तो (मुहम्मद*) मुँह मोड़ो उन्हें ("काफिर"*) - - -।" एक और बात
का खंडन किया गया और निरस्त कर दिया गया जब
मुहम्मद ने 2 . से सेना को मजबूत किया
वर्षों बाद।

७८. ५२/४५: "तो (मुहम्मद/मुसलमान*) चले जाओ उन्हें ("काफिर"*) अकेले जब तक उनका सामना नहीं होता
उस दिन - - -।" उन्हें दिन तक अकेला छोड़ दो
कयामत की। लेकिन न तो मुहम्मद और न ही उनके
इस्लाम के आते ही उत्तराधिकारियों ने उन्हें अकेला छोड़ दिया
सेना काफी मजबूत थी। और इस्लाम अत है
किसी भी समय अपने परिवेश को छोड़ने के बाद
अकेले उस दौर में जब इस्लाम सैन्य था
बलवान?

79. 52/47: "और वास्तव में, जो गलत करते हैं उनके लिए" ("काफिर"*), एक और सजा है
इसके अलावा (कि लंबे समय में वे करेंगे
ढीला - और अन्य सजा को पूरा करें: नर्क*)" मुश्किल में एक सुकून देने वाला विचार
मक्का अवधि का अंत - तो बस उन्हें छोड़ दो
अकेला। (५२/४५ की पुष्टि, वास्तव में)।

८०. ५३/२९: "इसलिए उन लोगों से दूर रहो जो मुँह मोड़ते हैं" हमारे (मुहम्मद के *) संदेश से - - -।"
वह मुहम्मद के शब्द 612 के आसपास थे - 615 ई. "मेलोडी" से 10 साल पीछे
बदला हुआ।

८१. ६७/२६: "- - - मैं (मुहम्मद*) हूँ (भेजा गया) केवल सार्वजनिक रूप से स्पष्ट रूप से चेतावनी देने के लिए। " लेकिन 3 - 4 साल

बाद में (622 ईस्वी से) उसने आगे बढ़ना शुरू कर दिया
अधिक गंदी और अमानवीय नौकरियां भी।

82. 73/10: "और जो कुछ वे करते हैं उसके साथ धैर्य रखें" कहो, और उन्हें नेक (गरिमा) के साथ छोड़ दो।"
यह एक प्रारंभिक सूरह (611 - 614 ईस्वी) है।
मुहम्मद के पास बहुत कम या कोई वास्तविक शक्ति नहीं है, और है
एक शांतिपूर्ण उपदेशक। वह और धर्म दोनों
सत्ता हासिल करने पर दूसरे चेहरे दिखाए -
या अल्लाह अधिक खून और गोर चाहता था और
622 ई. से पीड़ित।

83. 73/11: "और मुझे (अल्लाह*) छोड़ दो उन) जीवन की अच्छी चीजों के कब्जे में,
जो (फिर भी) सत्य को नकारते हैं, और उनके साथ रहते हैं थोड़ी देर के लिए।" वह थोड़ी देर चली
ठीक जब तक मुहम्मद ने सैन्य शक्ति प्राप्त नहीं की - फिर उसने (या अल्लाह*) सख्ती की
प्रशासन।

८४. ७९/४५: "तू (मुहम्मद*) कला लेकिन चेतावनी देने वाला है - - -।" और वह ऐसे ही रहा - - - जब तक वह
से अधिक करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हो गया
चेतावनी - एफ। भूतपूर्व। लागू करना और साम्राज्य-
इमारत। और यह एक सवाल है कि कौन बदल गया

६२२ ई. के आसपास - अर्थ मत -
मुहम्मद? और किसने धर्म बदला - - अल्लाह या
अल्लाह या मुहम्मद? उस मौके की मांग
कि मक्का में 12 साल से धर्म
दोनों का खंडन और निरस्त किया जाना था
कई बिंदु।

८५. ८६/१७: "इसलिए उन्हें विलंब प्रदान करें"
अविश्वासियों: उन्हें धीरे से राहत दें (एक . के लिए)
जबकि)। मान लीजिए कि यह ६१४ ईस्वी का था
निरस्त कर दिया जब मुहम्मद और अधिक हो गया
शक्तिशाली !!

८६. ८८/२२: "तू (मुहम्मद*) ऐसा नहीं है
(पुरुषों के) (धार्मिक*) मामलों का प्रबंधन - - -।" एक
अधिक छंद जिसे निरस्त कर दिया गया था अधिक
शक्तिशाली मुहम्मद - या अल्लाह - बाद में।

87. 109/6: "तुम्हारे लिए (गैर-मुस्लिम*) अपने रास्ते बनो
(धर्म में*), और मुझे (मुहम्मद या .)
मुसलमान*) मेरा।" यह विशिष्ट है कि
मुहम्मद और इस्लाम में शांतिपूर्ण थे
मक्का - वे इतने मजबूत नहीं थे
और कुछ। और इसके अलावा संभव है
मुहम्मद का मतलब ऐसा ही था, लेकिन था
मदीना में उसकी सफलता से नैतिक रूप से नष्ट हो गया
बाद में, जैसा कि कई वैज्ञानिक मानते हैं।

०६२ ९/१४: "उनसे (अच्छे मुसलमानों*) से लड़ो, और अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों से दण्ड देगा
(वह खुद ऐसा क्यों नहीं कर पाया?*), उन्हें शर्म से ढक दो - - -।" यह कम से कम विरोधाभास
- और निरस्त करता है:

719

पेज 720

१.२/२५६: "इसमें कोई बाध्यता न हो"
धर्म।"

२. ५/२८: "यदि तू ("काफिर", कैन *) खिंचाव करता है
मेरे खिलाफ तेरा हाथ (मुसलमान, हाबिल*), यह है
मेरे लिथे नहीं कि मैं तुझ पर हाथ बढ़ाऊं
तुम्हें मार डालो - - -।" जब आप इसे पढ़ते हैं,
याद रखें कि मुसलमानों के पास बहुत कम हैं यदि कोई अधिक है
सभी कोडेक्स। उन्हें क्या करना है देखना है
के लिए "मुहम्मद ने ऐसे के बारे में क्या कहा"
चीज़ें?" अगर उन्होंने कुछ कहा है, तो वे लेते हैं
कि एक कोडेक्स के रूप में - अच्छा नैतिक या नहीं। अगर नहीं,
उन्हें किताब में देखना होगा: "क्या वहाँ है?
कहीं समानांतर स्थिति?" अगर वे पाते हैं -
कभी-कभी कल्पना को खींचकर-अर्थात्
कार्य करने का तरीका, या किसी की इच्छा के लिए बहाना
कार्य करने के लिए। यह भी ध्यान रहे कि यह श्लोक इन्हीं में से एक है
सभी कुरान में बहुत कम है जो इसके अनुसार है
यीशु की शिक्षाओं के साथ - बहुत में से एक
कुछ। और यह पूरी तरह से "हत्या" है
निरसन इस कविता को निरस्त कर दिया (और
विरोधाभास) कम से कम ये छंद (यहाँ 88 . हैं)
१२४ मुस्लिम विद्वानों में से कहते हैं:
9/5 द्वारा निरस्त): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272,
3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99,
६/६०, ६/६६, ६/७०, ६/१०४, ६/१०७, ६/११२, ६/१५८,
7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41,
१०/९९, १०/१०२, १०/१०८, ११/१२, ११/१२१, १३/४०,
15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126,
16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130,
21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96,
24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18,
29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24 ए,

36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48,
43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135ए,
46/135बी, 46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51,
51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10,
73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे
सभी 9/5 के तहत उद्धृत। (कम से कम 88
निरसन)।

०६३. ९/२३: "अपने पिता, अपने पुत्रों, अपने भाइयों, अपने साथियों, या अपने रक्षकों के लिए मत लो
अगर वे ईमान (इस्लाम*) से ऊपर बेवफाई से प्यार करते हैं, तो दयालु: यदि आप में से कोई ऐसा करता है, तो वे गलत करते हैं। "
सामाजिक दबाव - और उस मामले के लिए आर्थिक दबाव (अक्सर गैर-मुस्लिमों के खिलाफ इस्तेमाल किया जाता है)
उच्च करों, आदि के रूप में अधीनस्थ) - "धर्म में मजबूरी" भी है - जो करता है
इस्लाम में मौजूद नहीं है (?) इस आयत ने कम से कम इन छंदों को निरस्त (और विरोधाभास) किया (यहाँ 88 हैं)
१२४ मुस्लिम विद्वानों में से कहते हैं कि ९/५ द्वारा निरस्त कर दिया गया है: २/१०९, २/१९०, २/२५६, २/२७२, ३/२०,
4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/ ११२, ६/१५८, ७/८७,
7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/ ३,
15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107,
21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/ 30,

720

पेज 721

34/25, 34/28, 35/23, 35/24 ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/ 59,
45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29,
67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88
निरसन)।

०६४ ९/२९: "उन लोगों से लड़ो जो न तो अल्लाह पर विश्वास करते हैं, न ही अंतिम दिन, और न ही उसे मना करते हैं"
जिसे अल्लाह और उसके नबी (मुहम्मद*) ने मना किया है, स्वीकार नहीं करते
पुस्तक के लोगों (यहूदी और ईसाई) के सत्य का धर्म (भले ही वे हों)
मुख्य रूप से), जब तक वे जजिया ("काफिर" -कर का भुगतान नहीं करते हैं, जहां इस्लाम ने कोई ऊपरी सीमा निर्धारित नहीं की है, और वह
अक्सर इतिहास के माध्यम से बहुत अधिक *) स्वेच्छा से प्रस्तुत करने और महसूस करने के साथ रहा है
खुद को वश में कर लिया"। काफिरों को जीतो और फिर उन्हें नीग्रो की तरह जीने दो
१९०० के दशक की शुरुआत में दक्षिण अफ्रीका या संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिणी राज्यों में रंगभेद - - - जो कि
गुलामी में नहीं ले जाया गया - विशेषकर महिलाओं को। हां, कोई मजबूरी नहीं - न ही द्वारा
पहले तलवार, न ही हार के बाद अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन आदि को नष्ट कर दिया। लेकिन यह सब
विरोधाभास - और निरस्त - कम से कम:

१.२/२५६: "इसमें कोई बाध्यता न हो"
धर्म"। यह सभी मुसलमानों के लिए प्रमुख है
जो गैर-मुसलमानों को प्रभावित करना चाहता है
इस्लाम कितना शांतिपूर्ण और सहिष्णु है। लेकिन नायब!
ध्यान दें! सूरह कहते हैं: "इसे रहने दो - - -।" यह है एक
आदेश या - 2/255 से भी निर्णय लेना - अधिक
शायद एक इच्छा, यह ऐसा कुछ नहीं है जो वे
था। यह भविष्य के लिए एक आशा या लक्ष्य है, यह है
ऐसा कुछ नहीं जो मौजूद है - और सभी समान
अधिकांश मुसलमान इसे इस तरह उद्धृत करते हैं: "कोई नहीं है"
धर्म में मजबूरी"--- एक छोटा, छोटा
"किटमैन" (वैध अर्ध-सत्य - एक अभिव्यक्ति)
"अल-तकिया" के साथ इस्लाम के लिए विशेष,
"वैध झूठ) कुरान और बनाता है
धर्म बहुत अधिक अनुकूल लगता है और
सहनशील

२. ५/२८: "यदि तू ("काफिर", कैन *) खिंचाव करता है
मेरे खिलाफ तेरा हाथ (मुसलमान, हाबिल*), यह है
मेरे लिथे नहीं कि मैं तुझ पर हाथ बढ़ाऊं
तुम्हें मार डालो - - -।" जब आप इसे पढ़ते हैं,
याद रखें कि मुसलमानों के पास बहुत कम हैं यदि कोई अधिक है
सभी कोडेक्स। उन्हें क्या करना है देखना है
के लिए "मुहम्मद ने ऐसे के बारे में क्या कहा"
चीज़ें?" अगर उन्होंने कुछ कहा है, तो वे लेते हैं
कि एक कोडेक्स के रूप में - अच्छा नैतिक या नहीं। अगर नहीं,

[illegible]
कभी-कभी कल्पना को खींचकर-अर्थात्
कार्य करने का तरीका, या किसी की इच्छा के लिए बहाना
कार्य करने के लिए। यह भी ध्यान रहे कि यह श्लोक इन्हीं में से एक है
सभी कुरान में बहुत कम है जो इसके अनुसार है
यीशु की शिक्षाओं के साथ - बहुत में से एक
कुछ। और यह पूरी तरह से "हत्या" है
निरसन

721

पेज 722

३. २९/४६: "और देश के लोगों से विवाद न करना
पुस्तक - - -। "कोई टिप्पणी नहीं - लेकिन 9/29 पढ़ें
एक बार फिर। इस कविता को निरस्त कर दिया (और
विरोधाभास) कम से कम ये छंद (यहाँ 88 . हैं)
१२४ मुस्लिम विद्वानों में से कहते हैं:
9/5 द्वारा निरस्त): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272,
3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99,
६/६०, ६/६६, ६/७०, ६/१०४, ६/१०७, ६/११२, ६/१५८,
7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41,
१०/९९, १०/१०२, १०/१०८, ११/१२, ११/१२१, १३/४०,
15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126,
16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130,
21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96,
24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18,
29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24 ए,
36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48,
43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135ए,
46/135बी, 46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51,
51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10,
73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे
सभी 9/5 के तहत उद्धृत। (कम से कम 88
निरसन)।

०६५ ९/३३: "वह (अल्लाह*) है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और धर्म के साथ भेजा है
सत्य, इसे सभी धर्मों पर घोषित करने के लिए, भले ही पैगन्स इससे घृणा करें "। सादे के साथ
शब्द: आप इसे पसंद करें या न करें - इसे स्वीकार करें - क्योंकि "धर्म में कोई बाध्यता नहीं है।" इस
कम से कम इन छंदों का खंडन (और विरोधाभास) किया गया है (यहाँ 124 मुसलमानों में से 88 हैं
विद्वानों का कहना है कि 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है: 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3,
5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/ १९३, ७/१९९, ८/६१,
9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/ 125,
16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54,
23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/ २४ए,
36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/ १३५बी,
46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45,
86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88 निरसन)।

०६६ ९/६८: "- - - उसमें (नरक*) वे (पाखंडी और "काफिर"*) वास करेंगे: इतना ही काफी है
उन्हें - - -।" नहीं, कुरान की कुछ आयतों के अनुसार वे भी दण्ड के पात्र हैं
अपनी दुनिया के मुसलमान। २/२५६ के तहत कई छंदों द्वारा विरोधाभासी और निराधार -
यह देखो। अगले अध्याय में पद 9/5 के तहत इस पद के बारे में अधिक जानकारी: निरसन।

(कई छंदों द्वारा निराकृत - कम से कम ५ निरसन।)

067. 9/73: "हे पैगंबर! अविश्वासियों और पाखंडियों के खिलाफ कड़ी मेहनत करो, और दृढ़ रहो
उनके विरुद्ध।" सर्वोच्च नेता और निश्चित रूप से उनके अनुयायियों को इसके खिलाफ कड़ी मेहनत करनी चाहिए
"काफिर" - लेकिन "धर्म में कोई मजबूरी नहीं"। खैर, कम से कम यह अच्छा प्रचार है जो साबित करता है
कुरान कितना शांतिपूर्ण है। इस श्लोक ने कम से कम इन श्लोकों (यहाँ .) का खंडन किया (और विरोधाभासी)
124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 का कहना है कि 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272,
3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/ १०७, ६/११२, ६/१५८, ७/८७,
7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/ ३,

पेज 723

15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107,
21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/ 30,
34/25, 34/28, 35/23, 35/24 ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/ 59,
45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29,
67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88
निरसन)।

०६८ ९/१२३: "हे विश्वास करने वालों! उन अविश्वासियों से लड़ो जो तुम्हारी कमर कसते हैं, और उन्हें खोजने दो
आप में दृढ़ता - - -।" रक्त, दमन और युद्ध के लिए एक और स्पष्ट आदेश। लेकिन यह विरोध करता है
- और अधिकांश "नरम" छंदों को निरस्त करता है - मुख्य रूप से मक्का से - f। उदा: अधिकांश सूचीबद्ध हैं
9/5 के तहत (इसे देखें) - शामिल f. उदा.: इस श्लोक ने कम से कम इन्हें निरस्त किया (और विरोधाभासी)
छंद (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 का कहना है कि 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है): 2/109, 2/190,
2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/ ७०, ६/१०४, ६/१०७,
6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/ १२,
11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/ 39,
20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55,
29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/ 48,
43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54,
52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी उद्धृत हैं
9/5 के तहत। (कम से कम 88 निरसन)।

०६९ १०/४१: "मेरा काम मेरे लिए (मुहम्मद*), और तुम्हारा तुम्हारे लिए! आप जिम्मेदारी से मुक्त हैं
मैं जो करता हूं उसके लिए, और जो कुछ तुम करते हो उसके लिए मैं।" इस श्लोक को निराकृत किया जाता है - अमान्य कर दिया जाता है - कम से कम
ये श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८-३९
चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,
35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खून की धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप
विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73,
35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०७० १०/६४: "आखिर से, अल्लाह के शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।" एक बात के लिए यह
उन लोगों के लिए वाक्य का गंभीर प्रभाव पड़ता है जो कहते हैं कि कुरान में भविष्यवाणी वास्तविक नहीं है
पूर्वनियति - अगर अल्लाह ने कुछ कहा / सोचा / लिखा है, तो मनुष्य की कोई भी स्वतंत्र इच्छा नहीं बदल सकती है
कुछ भी - - - जिसका अर्थ है कि कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं है, और यह निश्चित रूप से खुदी हुई के रूप में पूर्वनिर्धारित है
पथरी। लेकिन यहां अधिक प्रासंगिक यह है कि इसमें कई और कभी-कभी बड़े बदलाव हुए
इस "रहस्योद्घाटन" के बाद 621 ईस्वी में अल्लाह के शब्द और ठीक एक साल बाद मुहम्मद/अल्लाह (?)
धर्म को पूरी तरह और मौलिक रूप से बदलना शुरू कर दिया (शांति से युद्ध धर्म में)।

मुख्य परिवर्तन यह था कि पूरे धर्म को कुछ शांतिपूर्ण से बदलकर एक कर दिया गया था
नफरत, दमन, अमानवीयता और खून का धर्म। लेकिन इसमें कई अन्य बदलाव भी थे
अल्लाह (?) ने क्या कहा था - सभी अंतर्विरोधों के लिए जिन्हें समायोजित किया जाना था, और सभी
निरसन (क्षमा करें प्रतिस्थापन - एक और, लेकिन ठीक उसी के लिए अच्छा नाम)। बहुत सारे
निरसन, कि उन्होंने स्पष्टीकरण की मांग की:

१. २/१०६: "हमारा कोई रहस्योद्घाटन नहीं करते हैं"
(अल्लाह*) निरस्त या भुलाने का कारण,
लेकिन हम कुछ बेहतर प्रतिस्थापित करते हैं या
एक जैसा"। खैर, यह एक विरोधाभास है - और एक
निरसन - अपने आप में। यह वास्तव में में से एक है
निरसन के अभ्यास के पीछे छंद

पेज 724

इस्लाम। यह भी एक कारण हो सकता है-
मुख्य कारण हो सकता है - निरस्त क्यों किया गया
छंदों को खलीफा उस्मान द्वारा शामिल किया गया था
कुरान मूल रूप से - उन्हें नहीं होना चाहिए
इस अर्थ में निरस्त कर दिया कि उन्हें होना चाहिए
भूला हुआ। लेकिन निरसन बिल्कुल हैं
इस्लाम में आवश्यक है, क्योंकि बहुत सारे हैं
विरोधाभास, कि स्थिति होगी
असंभव है जब तक कि उन्हें द्वारा समाप्त नहीं किया जा सकता
उनमें से कई को अमान्य कर रहा है। से अलग
निरसन के बारे में अध्याय। एनबी: सूरह २ से
जिसे यह पद ६२२-६२४ में "पहुंचा" लिया गया है
ई. ६२१ ई. से अल्लाह के शब्दों को होना था
बल्कि जल्दी और बड़े पैमाने पर खारिज कर दिया
- एक डाकू बैरन और बाद में युद्ध में परिवर्तन
धर्म शुरू हो गया था।

२. १६/१०१: "जब हम (अल्लाह*) एक को प्रतिस्थापित करते हैं
दूसरे के लिए रहस्योद्घाटन - - -।" को हां
"विकल्प" निश्चित रूप से से बेहतर लगता है
"निरस्त" - लेकिन फर्क सिर्फ इतना है कि
"विकल्प" दैनिक अंग्रेजी है, जबकि
"निरस्त" लैटिन से निकला है। अर्थ
बस वही है। और यह श्लोक साबित करता है कि
अल्लाह को अपने अभिमान को "प्रतिस्थापित" करना शुरू करना पड़ा
६२१ ईस्वी के शब्द, अधिकतम एक - १ -
साल बाद, क्योंकि सूरह 16 सीए से है। 622
ई. अल्लाह के (?) शब्द अनंत काल के लिए हैं -
लेकिन लंबे समय तक नहीं जब यह एक है
चोरी और लूट शुरू करने का मोहक विचार,
और युद्ध धर्म रखना बुद्धिमानी हो सकती है
शांतिपूर्ण के बजाय।

यह मामले में स्वतंत्र इच्छा के दावे को भी पूरी तरह से निरस्त कर देता है।

०७१ १०/९९: "तो क्या तू (मुहम्मद*) मनुष्यों को उनकी इच्छा के विरुद्ध विश्वास करने के लिए विवश करेगा!"

बेशक, जैसे ही वह काफी मजबूत सैन्य होगा! यह शांतिपूर्ण श्लोक
मक्का ६२१ ई. को शीघ्र ही समाप्त कर दिया गया! कम से कम इनके द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है
छंद: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी),
8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६,
47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०७२ १०/१०२: "रुको "गैर-मुसलमान*) तो: क्योंकि मैं (मुहम्मद) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करूंगा।"
ठीक ऊपर 10/99 के समान।

(कम से कम २१ विरोधाभास/निरसन + ५ और कई अन्य विरोधाभास)।

724

पेज ७२५

१.१०/९९: "क्या तुम (मुहम्मद*) तो मजबूर करोगे
मानवजाति, उनकी इच्छा के विरुद्ध, विश्वास करने के लिए!"

२. १०/१०२: "रुको "गैर-मुसलमान*) तो: मैं के लिए
(मुहम्मद), को, आपके साथ प्रतीक्षा करेगा।"

०७३ १०/१०८: "- - - वे ("काफिर"*) जो भटक जाते हैं, अपने नुकसान के लिए ऐसा करते हैं, और मैं (मुहम्मद*)
आपके अफेयर की व्यवस्था करने के लिए मैं (सेट नहीं) हूं।" मुहम्मद नहीं चाहते थे कि वे अपनी व्यवस्था करें
खुद के मामले बाद में जब वह मजबूत हो गया - तब वह चाहता था कि वे मुसलमान बनें और
सैनिक, ताकि वे युद्ध और सत्ता के अपने मामलों को मजबूत कर सकें। यह श्लोक है

निराकृत - अमान्य - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०७४ ११/१२: "लेकिन आप (मुहम्मद *) केवल चेतावनी देने के लिए हैं"। और फिर कुछ और - कम से कम 622 ई. के बाद कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/ 9. इस इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं। आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है 2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

०७५ ११/१२१: "उन लोगों से कहो जो विश्वास नहीं करते हैं: 'जो तुम कर सकते हो वह करो: हम अपना हिस्सा करेंगे'"। इस 621 ई. में था। मुहम्मद/अल्लाह अब भी शांति की बात कर रहे थे/ कर रहे थे - लेकिन अधिक समय तक नहीं। कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई शामिल हैं खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाली छंद भी। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०७६ १३/४०: "- - - आपका (मुहम्मद का *) कर्तव्य है कि (संदेश) उन तक पहुँचाएँ ("काफिर"): उन्हें हिसाब देना हमारा (अल्लाह का) हिस्सा है।" खैर, ६२२ ईस्वी से यह भी हिस्सा बन गया मुहम्मद और उसके आदमियों की। कम से कम इन श्लोकों के द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/ ७३, ३५/३६, ४७/४, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०७७ १५/३: "उन्हें (काफिरों) को अकेला छोड़ दो, आनंद लेने के लिए (इस जीवन की अच्छी चीजें) और कृपया स्वयं - - -।" यह 621 ई. में था। अल्लाह को जरूरत पड़ने में ज्यादा समय नहीं लगा अपने शब्दों को बदलें और उनका खंडन करें, जब उन्होंने अपने शांतिपूर्ण धर्म को एक में बदलना शुरू कर दिया अमानवीयता और खून का (सौभाग्य से बहुत से मुसलमान उन हिस्सों के अनुसार नहीं रहते हैं यदि

725

पेज ७२६

कुरान)। कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है कई खूनी खतरे, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०७८ १५/८५: "तो कृपापूर्वक क्षमा के साथ (किसी भी मानवीय दोष) को अनदेखा करें"। इंसानों के बीच इस्लाम के अनुसार दोष, अल्लाह पर अविश्वास करना या इस्लाम छोड़ना भी है - और आप शर्त लगाते हैं मुहम्मद ने इस 621 ईस्वी दृष्टिकोण को छोड़ दिया जब वह काफी मजबूत हो गया। एफ. पूर्व. अरब से a तलवार की नोक पर बड़ी हद तक मुस्लिम बना दिया गया और जल्द ही इस्लाम छोड़ने की इच्छा जताई ले जाया गया - और वहन किया गया - मृत्युदंड। इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और खण्डन किया गया है कम से कम इन श्लोकों से: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८- 39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25 /52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने वाली छंद भी शामिल हैं अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,

33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।
०७९ १५/९४: "- - - अल्लाह के साथ झूठे देवताओं में शामिल होने वालों से दूर हो जाओ।" यह श्लोक है
निराकृत - अमान्य - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०८० १६/३५: "लेकिन रसूलों का मिशन स्पष्ट संदेश का प्रचार करने के अलावा क्या है?"
सूरह १६ मक्का के अंतिम सूरहों में से एक है - महीनों बाद सामग्री शुरू हुई परिवर्तन, और अंतर्विरोध - और निरसन - युद्ध में परिवर्तन के लिए आवश्यक थे धर्म। कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है कई खूनी खतरे, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०८१ १६/६७: "और खजूर और दाखलता के फल से (अन्य अनुवाद; अंगूर*), तुम स्वस्थ पेय और भोजन प्राप्त करें - - -। यह सूरा मक्का से आखिरी लोगों में से एक है, और in पुराने मक्का की तरह बाकी अरब में उस समय सेक्स और शराब "दो स्वादिष्ट" थे चीजें"। लेकिन आप शर्त लगाते हैं कि मुहम्मद ने कम से कम इस "स्वास्थ्यवर्धक" को थोड़ा-थोड़ा करके प्रतिबंधित कर दिया था पीना"। शराब के खिलाफ छंद द्वारा निरस्त और खंडित - f। उदा। 5/90: "नशीला पदार्थ और जुआ - - - एक घृणा है - शैतान की करतूत का - - -"।

०८२ १६/८२: "----तेरा (मुहम्मद का) कर्तव्य केवल स्पष्ट संदेश का प्रचार करना है।" यह सिर्फ था कुछ महीने पहले मुहम्मद 622 ई. में मक्का से भाग गए थे। लेकिन यह उसके आने के कुछ समय बाद मदीना और सत्ता हासिल करना शुरू किया: इस कविता को निरस्त कर दिया है - अमान्य कर दिया - कम से कम इनके द्वारा

छंद: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०८३ १६/१२५: "अपने भगवान (अल्लाह *) के मार्ग के लिए (सभी को) ज्ञान और सुंदर के साथ आमंत्रित करें उपदेश; और उनके साथ उन तरीकों से बहस करें जो सबसे अच्छे और सबसे दयालु हैं - - -।" यह श्लोक है निराकृत - अमान्य - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०८४ १६/१२६: "और यदि तुम उन्हें पकड़ते हो, तो उन्हें पकड़ने से बुरा नहीं है कि वे तुम्हें पकड़ लें: परन्तु यदि तुम सब्र दिखाते हो, तो धीरज धरने वालों के लिए यही उत्तम है।" यह श्लोक कम से कम इन श्लोकों द्वारा निराकृत - अमान्य किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०८५ १६/१२७: "और क्या तू (मुहम्मद*) सब्र कर रहा है, क्योंकि तू सब्र तो अल्लाह की तरफ से है; और न

उनके लिए शोक मनाओ, और उनके षड्यंत्रों के कारण अपने आप को संकट में मत डालो।" यह श्लोक निराकृत किया जाता है- अमान्य किया गया - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह देना या अनुमति देना (तलवार के साथ) पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०८६ १६/१०१: "जब हम (अल्लाह*) एक रहस्योद्घाटन को दूसरे के लिए प्रतिस्थापित करते हैं - - -"। ("विकल्प" is एक अंग्रेजी शब्द जिसका यहाँ ठीक वैसा ही अर्थ है जैसा कि लैटिन शब्द से लिया गया है "अभिनिषेध करना")। अल्लाह कहता है कि वह अपने निर्देश समय-समय पर बदल रहा है। परंतु:

१.६/११५: "--- उसे कोई नहीं बदल सकता (अल्लाह का) शब्दों - - -"। खैर, वह विरोध कर रहा है खुद, जैसा कि वह स्पष्ट रूप से इसे स्वयं बदलता है जब कुछ उसे मजबूर करता है - कोशिश करो और असफल हो जाओ?
२. १०/६४: "इसके बाद, इसमें कोई बदलाव नहीं हो सकता" अल्लाह के शब्द। "

ऊपर 10/64 भी पढ़ें।

सूरह १६ ६२२ में आया, सूरह ६ और १० दोनों ६२१ में आए। अल्लाह इस प्रकार खुद को निरस्त करता है, ६/११५ और 10/64 16/101 के साथ।

(२ निरसन।)

०८७ १६/११५: "उसने (अल्लाह*) ने तुम्हें केवल मरे हुए मांस और खून से मना किया है। और मांस सूअर, और कोई भी (भोजन) जिस पर अल्लाह के अलावा किसी और का नाम लिया गया है। " यह वाला (६२२ ईस्वी से) मुहम्मद द्वारा लगभग ५ साल बाद क्षेत्र में खंडन और निरस्त कर दिया गया था। एक सर्व-समावेशी सूची प्राप्त करने के लिए: मुहम्मद ने गधे के मांस को हमेशा के लिए निषिद्ध के रूप में जोड़ा, हदीसों के अनुसार (f। पूर्व। अल-बुखारी)। यह उन मामलों में से एक है जहां बाहर से तथ्य कुरान ने उस किताब के पाठ को निरस्त कर दिया। इसके बावजूद ऊपर उद्धृत वाक्य दोहराया जाता है बहुत बाद में निश्चित रूप से (632 ईस्वी से)।

०८८ १७/५४: "हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) को उनके निपटान के लिए नहीं भेजा है ("काफिरों"*) उनके लिए मामले"। अल्लाह या मुहम्मद ने इस बारे में अपना विचार बदलना शुरू कर दिया साल बाद - 622 ईस्वी में - जब मुहम्मद ने निर्णय लेने के लिए पर्याप्त सैन्य शक्ति हासिल करना शुरू कर दिया उनके लिए "उनका" धर्म। (इस्लाम जो कहना पसंद करता है, उसके बावजूद इस्लाम काफी हद तक तलवार से पेश किया गया - और लूट / लूट / चोरी में भाग लेने की इच्छा से और गुलाम लेना - अरब में)। कम से कम इन श्लोकों के द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/ ७३, ३५/३६, ४७/४, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०८९ १८/२९: "- - - जो चाहे विश्वास करे, और जो चाहे उसे अस्वीकार करे (इसे) - - -।" लगता है अगर यह मक्का में पिछले साल से शांतिपूर्ण रेखा खूनी द्वारा निरस्त किए जाने से पहले अल्पकालिक थी मदीना से! कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं। आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है 2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

०९० १८/५६: "हमने (अल्लाह*) ने केवल खुशखबरी देने के लिए रसूल भेजे - - -।" कम से कम स्व

घोषित दूत मुहम्मद ने मदीना आने के तुरंत बाद अपना विचार बदलना शुरू कर दिया
कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई शामिल हैं खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाली छंद भी। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०९१ १९/३९: "परन्तु उन्हें संकट के दिन से सावधान कर दो - - -।" यहाँ सीए में। ६१५ ई. मुहम्मद बस उन्हें चेतावनी देनी चाहिए। कुछ वर्षों में अधिक शक्ति प्राप्त करने के कारण तस्वीर कुछ बदल गई बाद में। ऊपर 18/29 देखें।

०९२ १९/८४: "तो उनके खिलाफ (गैर-मुस्लिम*) जल्दबाजी न करें - - -"। यह लगभग 615 ई. लेकिन जब मुहम्मद ने वास्तविक ताकत हासिल करना शुरू कर दिया, तो उन्होंने भी गैर के खिलाफ जल्दबाजी करना शुरू कर दिया। मुसलमान। इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/ ७३, ३५/३६, ४७/४, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०९३ २०/१३०: "इसलिए (मुहम्मद/मुसलमान*) जो कुछ वे ("काफिर") कहते हैं, उसके साथ धैर्य रखें - - -।" 615 ईस्वी या उससे पहले मक्का में मुहम्मद का स्वर था - और मदीना के लिए उनकी उड़ान तक ६२२एडी. यह ६२२ ईस्वी से और उसके बाद काफी बदल गया और काफी हद तक इसका खंडन किया मक्का काल के हल्के शब्द। कम से कम इनके द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है छंद: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०९४ २१/१०७: "हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) नहीं, बल्कि सभी प्राणियों पर दया करने के लिए भेजा है।" मुहम्मद दुनिया पर ज्यादा दया नहीं करते थे - मदीना से सूरह पढ़ें। न क्या वह सभी मुसलमानों के लिए दया था - मदीना से सूरह + महिलाओं के बारे में छंद पढ़ें, कानून, गुलामी, एक बड़े हिस्से में अमानवीय नैतिक और नैतिक कोडेक्स का उल्लेख नहीं करना। यह श्लोक कम से कम इन श्लोकों द्वारा निराकृत - अमान्य किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०९५ २१/११२: "(अल्लाह*) वह है जिसकी ईशनिंदा के खिलाफ मदद मांगी जानी चाहिए।" खैर, वह ६२१ (?) ई. में था। ६२२ ईस्वी के बाद तलवार आसान हो गई - ईशनिंदा जल्द ही ले ली गई एक मौत की सजा - - - और कई विरोधाभासी और निरसन ग्रंथ आए। यह श्लोक कम से कम इन श्लोकों द्वारा निराकृत - अमान्य किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

096 22/25: "- - - पवित्र मस्जिद (मक्का में काबा*), जिसे हमने (अल्लाह*) बनाया है (खुला) से (सभी) पुरुषों - - -।" यह सबसे ठोस विरोधाभासी और निरस्त छंदों में से एक है सभी कुरान। 630 ईस्वी के तुरंत बाद गैर-मुसलमानों के लिए इसे प्रतिबंधित कर दिया गया था। आज मौत है

किसी भी गैर-मुसलमान के लिए न केवल काबा, बल्कि कई किलोमीटर के आसपास के क्षेत्र में प्रवेश करने का दंड यह।

०९७ २२/४९: "मैं (मुहम्मद*) आपको (पुरुषों*) केवल एक स्पष्ट चेतावनी देने के लिए (भेजा) हूँ - -।" खैर यह सीए था। 616 ई. लेकिन करीब ६ साल बाद यह केवल चेतावनी नहीं रह गई, बल्कि तलवार - - - और ग्रंथों और शिक्षण में बहुत सारे विरोधाभास और निरसन। इस कम से कम इन श्लोकों द्वारा श्लोक निराकृत किया गया है - अमान्य किया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०९८ २२/६८: "यदि वे ("काफिर") आपसे झगड़ा करते हैं, तो कहें। 'अल्लाह सबसे अच्छा जानता है कि तुम क्या हो' कर रहे हैं" - और उन्हें अकेला छोड़ दें। यह सीए था। 616 ई. लेकिन कुछ ६ साल बाद और उससे भी ज्यादा समय से बहुत सारे विरोधाभास और निरसन आए। इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है - at . द्वारा कम से कम ये श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८-३९ (NS चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने या अनुमति देने वाली छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

०९९ २३/५४: "लेकिन उन्हें ("काफिरों" *) उनकी भ्रमित अज्ञानता में एक समय के लिए छोड़ दें। यह में था ६२१ या ६२२ ईस्वी, कुछ समय पहले उनकी - मुहम्मद की - मदीना के लिए उड़ान। जब उन्होंने करना शुरू किया पर्याप्त रूप से सैन्य बनें, उन्हें अकेला छोड़ कर समाप्त हो गया - और बहुत कुछ शिक्षाओं और धर्म में विरोधाभास और निरसन - शांति से अमानवीयता की ओर और युद्ध। कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38,8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है कई खूनी खतरे, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१०० २३/९६: "जो सबसे अच्छा है उसके साथ बुराई को दूर भगाओ"। बाद में यह बन गया: बुराई को बुराई से दूर करो - विरोध करो "काफिर" जैसे वे आपके खिलाफ करते हैं - कम से कम जब बुरी चीजों की बात आती है। आगे ठीक ऊपर 23/54 के समान टिप्पणियाँ। इस श्लोक को निराकृत किया जाता है - अमान्य कर दिया जाता है - कम से कम ये श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८-३९ चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने या अनुमति देने वाली छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१०१ २४/२: "स्त्री और पुरुष व्यभिचार के व्यभिचार के दोषी हैं - उनमें से प्रत्येक को कोड़े मारें एक सौ धारियाँ "। एक विरोधाभास और ४/१५ का निरसन:

००ए ४/१५: "यदि आपकी कोई महिला व्यभिचार (व्यभिचार*) की दोषी है - - - उन्हें सीमित करें घर जब तक मौत उन पर दावा नहीं करते, या अल्लाह उनके लिए कोई (अन्य) तरीके से आदेश देता है"। (अंतिम भाग वाक्य को विशेष रूप से प्रत्येक महिला के लिए "रास्ता" के रूप में समझा जाना चाहिए जो

ऐसा "आदेश" मिलता है।) लेकिन विरोधाभास - और निरसन - 1-2 साल बाद - 627 या 628 में
ई.

यह भी जोड़ा जाना चाहिए कि इस्लाम में लगातार अफवाह है कि लगभग 100 छंद
खलीफा उस्मान के पास आधिकारिक कुरान होने पर गायब हो गया और इसे कुरान में कभी नहीं बनाया गया
बनाया, और वह छंदों में से एक था जिसने इस अपराध के लिए पत्थर मारने की मांग की थी। तथ्य यह है कि
इसके लिए पत्थर मारना हदीस में निर्धारित है, और हदीस (अल-बुखारी) बताती है कि कम से कम एक बार
ऐसे पत्थरबाजी में खुद मुहम्मद ने हिस्सा लिया था।

१०२ २४/५४: "- - - यदि तुम (लोग*) मुँह मोड़ो (मुहम्मद* से), तो वह केवल इसके लिए जिम्मेदार है
उस पर कर्तव्य और उस स्थान के लिए तुम पर। कम से कम 9/5 तक विरोधाभासी और निरस्त।
कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५,
3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३,
9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई शामिल हैं
खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाली छंद भी।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 28 निरसन)।

103 25/36: "'तुम दोनों (मूसा और हारून*) उन लोगों के पास जाओ, जिन्होंने हमारी निशानियों को ठुकरा दिया है। और
उन (लोगों को) हमने (अल्लाह*) पूरी तरह से नष्ट कर दिया।" एक स्पष्ट संदेश। यह श्लोक
कम से कम इन छंदों को निरस्त (और विरोधाभासी) किया (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 हैं
9/5 द्वारा निरस्त कर दिए गए हैं): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5 /48,
5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/ ६१, ९/६८,
१०/४१, १०/९९, १०/१०२, १०/१०८, ११/१२, ११/१२१, १३/४०, १५/३, १५/९४, १६/३५, १६/८२, १६/१२५,
16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54,
23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/ २४ए,
36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/ १३५बी,
46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45,
86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88 निरसन)।

१०४ २५/५२: "इसलिये अविश्वासियों की न सुनो, वरन उनके विरुद्ध पूरी यत्न करो
ज़ोरदारता, (कुरान) के साथ"। जैसा कि आप देखते हैं: जब आप प्रयास करते हैं तो धर्म शामिल नहीं होता है
"काफिरों" के खिलाफ। इस श्लोक ने कम से कम इन छंदों का खंडन (और विरोधाभास) किया (यहाँ 88 . हैं)
१२४ मुस्लिम विद्वानों में से कहते हैं कि ९/५ द्वारा निरस्त कर दिया गया है: २/१०९, २/१९०, २/२५६, २/२७२, ३/२०,
4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/ ११२, ६/१५८, ७/८७,
7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/ ३,
15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107,
21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/ 30,
34/25, 34/28, 35/23, 35/24 ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/ 59,
45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29,
67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88
निरसन)।

१०५ २६/२१६: "मैं (मुहम्मद*) जो कुछ तुम ("काफिर"*) करते हो, उसके लिए (जिम्मेदारी से) मुक्त हूँ!" इस
मक्का सीए में था। 615 - 616 ई. ६२२ ईस्वी के बाद स्वर तेजी से और अधिक अमित्र हो गया जब
वह सैन्य मजबूत हुआ - और शिक्षाओं को युद्ध धर्म में फिट होने के लिए कुछ "समायोजन" की आवश्यकता थी =
अंतर्विरोध और निरसन: इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है - कम से कम इनके द्वारा
छंद: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी),
8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६,

47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

106 27/92: "मैं (मुहम्मद) केवल एक वार्नर हूं"। वह 615 - 616 ईस्वी में था। 622 से वह उपवास
एक मजबूत व्यक्ति, सरदार और तानाशाह बन गया - और बहुत कुछ निरस्त कर दिया गया और इसका खंडन किया गया जब
622 ईस्वी के बाद मुहम्मद ने सैन्य मजबूत किया और धर्म को युद्ध में बदल दिया गया
और विजय।" कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३,
3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5,
9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/ 9. इस
इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं।
आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a
यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है
2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

१०७ २८/५०: लेकिन अगर वे ("काफ़िरों"*) ने तुम्हारी (मुहम्मद*) नहीं सुनी, तो जान लो कि वे केवल
अपनी वासनाओं का पालन करें - - -।" कम से कम इन श्लोकों के द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है:
2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39,
8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/ ७३, ३५/३६, ४७/४,
66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१०८ २८/५५: "हमें (मुसलमान*) हमारे कर्म, और तुम्हारे लिए ("काफिर"*) तुम्हारे; आपको शांति मिले - - -
।" मक्का ६२१ या ६२२ ईस्वी में मुहम्मद के प्राप्त होने के बाद की तुलना में कहीं अधिक शांतिपूर्ण स्वर था
६२२ - ६२४ ईस्वी से ताकत और डकैती, छापे और युद्ध के लिए अधिक उपयुक्त धर्म की आवश्यकता थी - और
यह अल्लाह से मिला (या वह अल्लाह था जो पहले से ज्यादा खून चाहता था?) - जिसके परिणामस्वरूप
पुरानी शिक्षाओं के साथ विरोधाभास और निरसन। इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है
- कम से कम इन श्लोकों से: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38 -39
(चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25 /52, 33/61,
33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने वाली छंद भी शामिल हैं
अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि
आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,
33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१०९ २९/१८: "---- दूत का कर्तव्य केवल सार्वजनिक रूप से (और स्पष्ट रूप से) प्रचार करना है।" उतना अच्छा
मुहम्मद और अधिक शक्तिशाली हो गए, इसलिए स्थानीय लोगों को नियंत्रित करने की उनकी इच्छा भी हुई' और बाद में
अरबों का जीवन और धार्मिक विचार---बल और दण्ड एक लक्ष्य के साधन बन गए। साथ
धर्म में आवश्यक परिवर्तन, और विरोधाभासों और आवश्यक निरसन की तुलना में
मक्का में अधिक शांतिपूर्ण 12 साल। इस श्लोक को निराकृत किया जाता है - अमान्य कर दिया जाता है - कम से कम
ये श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८-३९
चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,
35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने या अनुमति देने वाली छंद भी शामिल हैं
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप
विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73,
35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

732

पेज ७३३

११० २९/४६: "और किताब के लोगों के साथ विवाद मत करो - - -।" कोई टिप्पणी नहीं - लेकिन पढ़ें
9/29 और 9/5 एक बार फिर। कम से कम इन श्लोकों के द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है:
2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39,
8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/ ७३, ३५/३६, ४७/४,
66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१११ ३१/२३: "पर यदि कोई ईमान को ठुकराता है, तो उसका इनकार तुझे शोकित न करे।" लगता है अगर यह है
लगभग 8 - 10 साल बाद मुहम्मद के मजबूत होने पर विरोध किया और निरस्त कर दिया !! यह श्लोक
निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन श्लोकों द्वारा खण्डन किया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८,
3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14,
9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है

कई खूनी खतरे, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 28 निरसन)।

११२ ३२/३०: "इसलिए उनसे दूर हो जाओ और प्रतीक्षा करो - - -।" जब मुहम्मद अधिक शक्तिशाली हो गए,
थोड़ा इंतजार था। शेष अरब प्रायद्वीप मुख्य रूप से किसके द्वारा मुस्लिम बना दिया गया था?
तलवार - और कुछ "उपहार" और लूटे गए धन के वादे - जिनमें से सभी ने बदलाव की मांग की
धर्म में (या यह दूसरी तरफ था, एक भगवान द्वारा शुरू किया गया जिसने अपना मूल पाया
धर्म पर्याप्त अच्छा नहीं था - या बहुत कम रक्त और मानवीय त्रासदी?) जिसके कारण
इस्लाम के पुराने और नए संस्करण के बीच अंतर्विरोध - और स्वाभाविक रूप से निरसन भी।
कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५,
3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३,
9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई शामिल हैं
खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाली छंद भी।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 28 निरसन)।

113 33/61: "वे (पाखंडी - पर्याप्त मुसलमान नहीं - या गैर-मुस्लिम*) के पास एक
जब कभी वे पाए जाएँ तो उन पर शाप दें, उन्हें पकड़कर मार डाला जाएगा (दया के बिना)। अगर
आप बहुत अच्छे मुसलमान नहीं हैं - और कभी-कभी अन्य - आपको बिना मारे मारे जाना है
दया। सबसे स्पष्ट आदेश। केवल इसका उल्लेख न करें, क्योंकि प्रचार पंक्ति है: "The
शांति का धर्म" और "धर्म में कोई बाध्यता नहीं"। यह पद निराकृत (और विरोधाभास)
कम से कम ये छंद (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 को 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है):
2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/ 60, 6/66, 6/70,
6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/ १०२,
10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54,
18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216,
27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/17, 39/41, 41/ 34,
42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39,
50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6.
वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88 निरसन)।

११४ ३३/७३: (क्योंकि मनुष्य - अरबों - ने कुरान/इस्लाम का विश्वास ग्रहण किया -)
परिणाम यह हुआ कि अल्लाह को पाखंडियों, पुरुषों और महिलाओं, और अविश्वासियों, पुरुषों और

733

पेज ७३४

महिला - - -।" और मुसलमान अल्लाह की तरफ से काम करते हैं (क्यों? - अगर अल्लाह सर्वशक्तिमान है, तो क्यों?)
इस आयत ने कम से कम इन छंदों का खंडन (और विरोधाभास) किया (यहाँ 124 मुस्लिमों में से 88 हैं)
विद्वानों का कहना है कि 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है: 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3,
5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/ १९३, ७/१९९, ८/६१,
9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/ 125,
16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54,
23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/ २४ए,
36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/ १३५बी,
46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45,
86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88 निरसन)।

११५ ३४/२५: "तुम ("काफिरों") से हमारे पापों के बारे में सवाल नहीं किया जाएगा, और न ही हमसे सवाल किया जाएगा
कि तुम क्या करते हो।" इसका मतलब कुछ ऐसा हो सकता है जैसे "हम जीना और जीने देना पसंद करते हैं" और था
कई और शांतिपूर्ण छंदों में से एक जो खारिज हो गया - खंडन और निरस्त -
जब मुहम्मद ने अधिक शक्ति प्राप्त की (यह सीए से है या 620 ईस्वी के बाद थोड़ा सा है।) यह कविता है
निराकृत - अमान्य - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33,
5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73,
9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ)
यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81,
5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28
निरसन)।

११६ ३४/२८: "हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) नहीं भेजा, बल्कि एक सार्वभौमिक (दूत) के रूप में यहाँ भेजा है।

पुरुष उन्हें खुशखबरी दे रहे हैं - - -।" कम से कम इनके द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है छंद: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

११७ ३५/२३: "तू (मुहम्मद*) कोई और नहीं बल्कि चेतावनी देने वाला है।" नहीं, लगभग ६१५ - ६१६ ई हो सकता है बस इतना ही। लेकिन बाद में यह बदल गया - एक चेतावनी देने वाले से एक प्रवर्तक और एक डाकू बैरन में। धर्म के संगत परिवर्तनों के साथ - और निरसन और अंतर्विरोधों के साथ पुरानी कहावतें, इस तरह। कम से कम इन श्लोकों के द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/ ७३, ३५/३६, ४७/४, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

११८ ३५/२४अ: "वास्तव में हम (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) वास्तव में खुशी के वाहक के रूप में भेजा है समाचार और एक चेतावनी के रूप में - - -।" जहाँ तक ख़ुशख़बरी की बात है, वह केवल मुसलमानों के लिए है, और दूर के लिए उन सब से भी। लेकिन उसके लिए: यह श्लोक निराकृत किया जाता है - अमान्य कर दिया जाता है - कम से कम ये श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८-३९ चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने या अनुमति देने वाली छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप

734

पेज ७३५

विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

११९ ३५/३६: "लेकिन जो लोग (अल्लाह) को अस्वीकार करते हैं - उनके लिए नरक की आग होगी"। बिल्कुल नहीं सतह पर मजबूरी, लेकिन कम से कम एक स्पष्ट खतरा। हम इसे शामिल करते हैं क्योंकि यह खतरा है बार-बार दोहराया जाता है, इसलिए यह किसी के लिए भी काफी मनोवैज्ञानिक मजबूरी बनाता है जो निश्चित नहीं है कि इस्लाम गलत है। इस श्लोक ने कम से कम इन्हें निरस्त (और विरोधाभास) किया है छंद (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 का कहना है कि 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/ ७०, ६/१०४, ६/१०७, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/102, 10/108, 11/ १२, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/ 39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/ 48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी उद्धृत हैं 9/5 के तहत। (कम से कम 88 निरसन)।

१२० ३६/१७: "और स्पष्ट संदेश की घोषणा करना हमारा (मुहम्मद का) कर्तव्य है।" एक बार फिर मक्का से कुछ (सीए। 615 - 616 ईस्वी), जो "तलवार की कविता" द्वारा "मारा गया" था (९/५) और कई अन्य जब बाद में मुहम्मद भी बने - या फैसला किया कि वह भी था - एक प्रवर्तक। कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं। आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है 2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

१२१ ३७/१७४: "तो तुम (मुसलमानों/मुहम्मद*) को उनसे थोड़ी देर के लिए दूर कर दो---"। यह लगभग 616 ई. आधा दर्जन साल बाद मुहम्मद ने धीरे-धीरे काम करना बंद कर दिया उन लोगों से दूर जो उसे नहीं चाहते थे। यह श्लोक निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन श्लोकों का खंडन: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36,

25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन छंद भी शामिल हैं
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह देना या अनुमति देना (तलवार के साथ)
पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१२२ ३७/१७८: ऊपर ३७/१७४ के समान।

१२३ ३८/७०: "केवल यह मुझे (मुहम्मद*) पर प्रकट किया गया है: कि मैं देने जा रहा हूँ (शांतिपूर्ण*) स्पष्ट और सार्वजनिक रूप से चेतावनी"। यह लगभग ६१४-६१५ ईस्वी सन् का था। बाद की बातें बदला हुआ: इस पद को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/ ७३, ३५/३६, ४७/४, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

735

पेज ७३६

१२४ ३९/१५: "तुम (गैर-मुसलमानों) की सेवा करो जो तुम उसके (अल्लाह *) के अलावा करोगे"। बस आप अंदाजा लगाइए कि अगर यह सीए से 615-617 ई. का खंडन किया गया और बाद में निरस्त कर दिया गया !! यह श्लोक निराकृत किया जाता है- अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१२५ ३९/३९: "हे मेरे (अल्लाह या मुहम्मद के *) लोग ("काफिर" मक्का में ऐब्स ca.616-617 एडी*)! आप जो भी कर सकते हैं करें - - -"। इस दृष्टिकोण का 180 डिग्री परिवर्तन आधा था दर्जन साल बाद - अल्लाह ने अपना इरादा बदल दिया? यह श्लोक निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन श्लोकों का खंडन: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह देना या अनुमति देना (तलवार के साथ) पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१२६ ३९/४१: "न ही तू (मुहम्मद*) ने उन पर ("काफिरों") को उनके मामलों को निपटाने के लिए नियुक्त किया है। लेकिन ५-७ साल बाद, जब ६२२ ईस्वी से मुहम्मद ने सत्ता हासिल करना शुरू किया, तो वह बदल गया - वह एक पर्यवेक्षक, प्रवर्तक और एक डाकू व्यापारी बन गया - और बाद में एक सरदार - - - और नियम/धर्म बदलने पड़े। या यह दूसरी तरफ था - कि यह अल्लाह ही था जिसने बदल दिया उसका मन और अधिक अमानवीयता, अनैतिक कार्य और रक्त चाहता था? वैसे भी परिणाम था पुराने की तुलना में विरोधाभास और निरसन। यह श्लोक निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है - कम से कम इन श्लोकों से: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८- 39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25 /52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने वाली छंद भी शामिल हैं अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१२७ ४१/५: "- - - तो आप (गैर-मुस्लिम अरब*) (जो आप चाहते हैं) - - -"। सादा कहानी बाद में पर: इस पद को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/ 4, 66/9। इस इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं। आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है 2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

१२८ ४१/३४: "जो अच्छा है उससे (बुराई) दूर करो (अच्छा*); तो क्या वह किसके और तुम्हारे बीच होगा

क्या नफरत बन गई थी क्योंकि यह तुम्हारा दोस्त और अंतरंग था "। शत्रुओं से मित्रता करना था
अच्छा है जब यह 616 - 618 ईस्वी - - - के आसपास बताया गया था लेकिन वह मदीना और खून से पहले था।
कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५,
3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३,
9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई शामिल हैं
खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाली छंद भी।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,

3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 28 निरसन)।

१२९ ४२/६: "- - - आप (मुहम्मद*) उनके मामलों के निपटानकर्ता नहीं हैं।" नहीं, 614 के आसपास नहीं -
618 ई. लेकिन ६२२ ईस्वी के बाद वह काफी हो गया, जिसमें एक प्रवर्तक शामिल था - और इस तरह के छंद
दोनों का खंडन किया गया और निरस्त कर दिया गया। इस श्लोक को निराकृत किया जाता है - अमान्य कर दिया जाता है - कम से कम
ये श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८-३९
चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,
35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने या अनुमति देने वाली छंद भी शामिल हैं
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप
विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73,
35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१३० ४२/१५: "हमारे (मुसलमान*) और आप ("काफिरों") के बीच कोई विवाद नहीं है।" शायद नहीं
६१४ - ६१८ ई. लेकिन बाद में इस्लाम सत्ता वर्ग = मुसलमान (मुहम्मद अस्सी के साथ) था
तानाशाह), और गैर-मुस्लिम "पूरी तरह से वश में" - - - और धर्म के साथ बहुत कुछ बदल गया =
कुरान में विरोधाभास और निरसन। यह श्लोक निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और
कम से कम इन श्लोकों का खंडन: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२,
8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36,
25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन छंद भी शामिल हैं
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह देना या अनुमति देना (तलवार के साथ)
पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23,
14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१३१ ४२/२३: "मैं (मुहम्मद *) इसके लिए तुमसे कोई इनाम नहीं माँगता, सिवाय उन लोगों के प्यार के
परिजन"। ठीक है, सभी चोरी किए गए सामानों और दास लोगों के 20% को छोड़कर - 100% अगर उन्होंने बिना दे दिया
एक लड़ाई, हर साल आपके सभी सामान का 2.5% (औसत), बहुत सारी महिलाएं और
आप पर निर्विवाद और पूर्ण शक्ति, + लड़ने के लिए बहुत सारे योद्धा और मेरे बीच मर सकते हैं
अन्य बातें। सभी कुरान में सबसे मजबूत खंडन और निरस्त छंद में से एक।

१३२ ४२/४८: "तेरा (मुहम्मद का) कर्तव्य (संदेश (कुरान* - या
शांतिपूर्ण भाग जो ६१४ - ६१८ ईस्वी*) में मौजूद थे)"। कुछ साल बाद इस्लाम ने कुछ पाया
अधिक क्रूर प्रवर्तक होने के लिए उनके कर्तव्यों का, इसलिए अन्य छंदों के बीच यह एक और बहुत कुछ थे
विरोध किया और निरस्त कर दिया। कम से कम इन श्लोकों के द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है:
2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39,
8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/ ७३, ३५/३६, ४७/४,
66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१३३ ४३/८३: "तो उन्हें ("काफिरों" *) को बकबक करने और खेलने के लिए छोड़ दो (उनके घमंड के साथ) - - -।"
ठीक ऊपर 42/48 जैसी टिप्पणियाँ। और: इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है - कम से कम
ये श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८-३९
चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73,
35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने या अनुमति देने वाली छंद भी शामिल हैं
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप
विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73,
35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

134 43/89: "लेकिन उनसे दूर हो जाओ, और 'शांति' कहो।" ऊपर 43/48 की तरह टिप्पणियां। और: कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई शामिल हैं खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाली छंद भी। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१३५ ४४/५९: "तो तुम (मुहम्मद*) रुको और देखो; क्योंकि वे (लोग*) (भी) इंतज़ार कर रहे हैं।" यहाँ मक्का काल के मध्य से शांतिपूर्ण धर्म में, मुहम्मद को प्रतीक्षा करनी चाहिए और देखो। वह लगभग 10 साल बाद सख्त हो गया - बहुत सख्त। यह श्लोक निराकृत किया जाता है- अमान्य किया गया - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह देना या अनुमति देना (तलवार के साथ) पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१३६ ४५/१४: "विश्वास करने वालों से कहो कि जो लोग आने वाले दिनों की प्रतीक्षा नहीं करते उन्हें क्षमा कर दें" अल्लाह (कयामत का दिन*)।" लेकिन "माफ करना" शब्द धीरे-धीरे 622 ईस्वी के बाद भुला दिया गया - जब उन्होंने प्रवर्तक होने का भी कर्तव्य निभाया। परिणाम के साथ : यह श्लोक निराकृत किया जाता है - अमान्य किया गया - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह देना या अनुमति देना (तलवार के साथ) पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१३७ ४६/९: "- - - मैं (मुहम्मद*) लेकिन एक चेतावनी देने वाला हूं, खुला और स्पष्ट।" हाँ, वह केवल ६२० ईस्वी में स्वघोषित चेतावनी देने वाले थे। चीजें बदल गईं और छंदों को वास्तव में निरस्त कर दिया गया जब उन्हें मिला कुछ साल बाद अधिक शक्ति। नीचे 46/135 के लिए लाइक कमेंट करें। यह श्लोक निराकृत किया जाता है- अमान्य किया गया - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह देना या अनुमति देना (तलवार के साथ) पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१३८ ४६/३५: "इसलिए धैर्यपूर्वक - - - - और (अविश्वासियों) के बारे में जल्दबाजी न करें।" एक और जिसका पुरजोर खंडन किया गया और बाद में निरस्त कर दिया गया: यह श्लोक निराकृत है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन छंदों द्वारा खण्डन किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१३९ ४६/१३५ए: "(मुहम्मद*) - - - (अविश्वासियों) के बारे में जल्दबाजी न करें - - -।" जब वह

शक्ति प्राप्त की उसे और अधिक जल्दबाजी मिली - f. भूतपूर्व। अनिच्छुक अरब (और बहुत से अन्य) जो नहीं थे उपहारों और मुफ्त लूट / दासता से जीते गए, तलवार से जीते गए - बिल्कुल विरोधाभास में मुसलमान क्या कहना पसंद करते हैं: मुसलमान बनो या लड़ो और मरो! यह श्लोक निराकृत है - निर्मित अमान्य - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने वाली छंद भी शामिल हैं अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१४० ४६/१३५बी: "(तेरा (कर्तव्य मुहम्मद है *) लेकिन) संदेश (कुरान *) की घोषणा करने के लिए।" यह 620 ई. में था। ६२२ ईस्वी में और उसके बाद हुए परिवर्तन: इस श्लोक को निराकृत किया गया है - बनाया गया अमान्य - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने वाली छंद भी शामिल हैं अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१४१ ४७/४: "इसलिए, जब तुम काफ़िरों से मिलो (लड़ाई में (और मुसलमानों को याद करो) व्यावहारिक रूप से हमेशा हमलावर थे - धन और दास और शक्ति हासिल करने के लिए - - - और कुछ नए अभियोगी*)), उनकी गर्दनों पर प्रहार करें - - -।" सूरह 47 622 ईस्वी और मक्का से है, लेकिन कुछ मदीना से संभावित छंद - और युद्ध की ओर परिवर्तन पहले से ही देखना संभव है। यह बहुत सारे शांतिपूर्ण छंदों का खंडन और निरसन करता है। इस श्लोक ने निराकृत (और विरोधाभासी) at कम से कम ये छंद (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 को 9/5 द्वारा निरस्त कर दिया गया है): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5/48, 5/99, 6/ 60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/61, 9/68, 10/41, 10/99, 10/ १०२, 10/108, 11/12, 11/121, 13/40, 15/3, 15/94, 16/35, 16/82, 16/125, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/24a, 36/17, 39/41, 41/ 34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/135b, 46/135b, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6. वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88 निरसन)। एक और बात: हमारे अनुसार स्रोत, शब्द "(लड़ाई में)" अरब पाठ में मौजूद नहीं है। यही इस श्लोक को बहुत कुछ बनाता है अधिक भयावह - बहुत अधिक।

१४२ ४७/३६: "---- और वह (अल्लाह*) आपसे आपकी संपत्ति (छोड़ने के लिए) नहीं पूछेगा।" बस रुक जाओ थोड़ा: अल्लाह आपकी हर संपत्ति की जकात - कर - में औसतन 2.5% की मांग करता है और हर साल (यदि आप बहुत गरीब नहीं हैं)। बहुत स्पष्ट रूप से कई लोगों द्वारा खंडन और निरस्त किया गया कुरान में छंद।

१४३ ५०/३९: "तो सहन करो, धैर्य के साथ, वह सब जो वे ("काफिरों"*) कहते हैं - - -।" धैर्य एक साल बाद (622 ईस्वी) से बहुत कम चर्चित हुआ। यह श्लोक निराकृत किया जाता है- अमान्य किया गया - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह देना या अनुमति देना (तलवार के साथ) पृष्ठभूमि अगर आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१४४ ५०/४५: "हम (अल्लाह*) सबसे अच्छी तरह जानते हैं कि वे ("काफिर"*) क्या कहते हैं; और तुम (मुहम्मद*) कला उन्हें बलपूर्वक डराने वाला नहीं है।" बाद के इतिहास को जानकर यह श्लोक बड़ा विडंबनापूर्ण या सार्डोनिक मजाक। यह सूरह ६१४ ईस्वी से है: इस कविता को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - कम से कम ये श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८-३९ चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने या अनुमति देने वाली छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१४५ ५१/५०-५१बी: "मैं (मुहम्मद*) उसी (अल्लाह*) की ओर से तुम्हारे (मुसलमानों*) को चेतावनी देने वाला हूँ।
और खुला। और दूसरे (व्यक्ति/वस्तु/विचार*) को अल्लाह के पास इबादत की वस्तु न बनाओ: मैं हूँ
उसकी ओर से तुम्हारे लिए एक चेतावनी, स्पष्ट और खुला! " यह मक्का 620 से है। मुहम्मद अभी भी है
सैन्य कमजोर - और अभी भी केवल एक चेतावनी। बाद में वह एक प्रवर्तक बन गया (अरब का अधिकांश हिस्सा बन गया
तलवार की नोक पर मुसलमान): इस आयत को कम से कम इन द्वारा निरस्त किया जाता है - अमान्य कर दिया जाता है
छंद: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी),
8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६,
47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१४६ ५१/५४: "तो (मुहम्मद*) उनसे दूर हो जाओ ("काफिरों"*) - - -।" एक और बात
का खंडन किया गया और निरस्त कर दिया गया जब मुहम्मद ने 2 साल बाद सैन्य मजबूत किया।
कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५,
3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३,
9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई शामिल हैं
खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाली छंद भी।
मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28,
3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं।
(कम से कम 28 निरसन)।

१४७ ५२/४५: "तो (मुहम्मद/मुसलमान*) उन्हें ("काफिरों"*) को तब तक अकेला छोड़ दो जब तक उनका सामना न हो जाए
उस दिन - - -।" कयामत के दिन तक उन्हें अकेला छोड़ दो। लेकिन न तो मुहम्मद और न ही उनके
जैसे ही इस्लाम सैन्य रूप से मजबूत हो गया, उत्तराधिकारियों ने उन्हें अकेला छोड़ दिया। और इस्लाम किसी पर है
समय के बाद कभी अपने परिवेश को अकेला छोड़ दिया जब इस्लाम सैन्य मजबूत था? इस
कम से कम इन श्लोकों द्वारा श्लोक निराकृत किया गया है - अमान्य किया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८,
4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33,
9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं,
लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ)
यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81,
5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28
निरसन)।

१४८ ५२/४७: "और वास्तव में, उन लोगों के लिए जो गलत करते हैं ("काफिर" *), एक और सजा है
इसके अलावा (कि लंबे समय में वे ढीले हो जाएंगे - और दूसरी सजा को पूरा करेंगे: नरक *)" ए
मक्का काल के कठिन अंत में सुकून देने वाला विचार - तो बस उन्हें अकेला छोड़ दो। (ए
52/45 की पुष्टि, वास्तव में)। परंतु: कम से कम इनके द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है
छंद: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी),
8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/ ६१, ३३/७३, ३५/३६,

47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं,
सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (विरोध करने पर पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम
यहां कुछ का उल्लेख करें: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे
सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

00x 53/19-23: प्रसिद्ध और कुख्यात "शैतानी छंद" मुहम्मद ने 53/19-22 में उद्धृत किया
एक ऐसी स्थिति जहाँ उसे शासकों और शासक वर्ग के साथ मित्रता करके बहुत कुछ हासिल करना था
मक्का में: "क्या आपने अल-लत, अल-उज्जा, और दूसरी, तीसरी (देवी), मानत (तीनों) को देखा है
उस समय मक्का में मुख्य देवता की बेटियाँ, अल-लाह*)? ये प्रफुल्लित मूर्तियाँ हैं जिनकी
हिमायत की उम्मीद है"। मुहम्मद ने बाद में बदल दिया - निरस्त कर दिया - 4 छोटे छंद:
"क्या तुमने अल-लत, अल-उज्जा, और दूसरी, तीसरी (देवी) मानत को देखा है? क्या! आपके लिए पुरुष
सेक्स, और उसके लिए, महिला (बच्चों के लिए*)! निहारना, यह वास्तव में सबसे अनुचित होगा!"
(मुहम्मद एक अरब थे और उन्हें यकीन था कि एक ईश्वर महिलाओं को उतना ही नीचा दिखाएगा जितना कि अरबों
किया था*)। इस एपिसोड ने बहुत "शोर" किया।

१४९ ५३/२९: "इसलिए उन लोगों से दूर रहो जो हमारे (मुहम्मद के) संदेश - - - से मुंह मोड़ते हैं।"
यह मुहम्मद के शब्द ६१२-६१५ ईस्वी के आसपास थे। 10 साल की देरी से "माधुर्य" बदल गया।
कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५,
3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३,

खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१५० ५४/६: "इसलिए, (हे पैगंबर), उनसे (गैर-मुसलमानों) से दूर हो जाओ।" सीए। 614 ई उनसे दूर होना पड़ा - लेकिन 10 साल और बाद में? यह श्लोक निराकृत है - निर्मित अमान्य - और कम से कम इन श्लोकों द्वारा खंडित: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१५१ ६६/९: "हे पैगंबर! अविश्वासियों और पाखंडियों के खिलाफ कड़ी मेहनत करो, और दृढ़ रहो उनके विरुद्ध।" मुसलमान मुहम्मद को माफ़ कर देंगे कि यह युद्ध के बारे में है - लेकिन क्या यह कोई है बहाना, जब व्यावहारिक रूप से सभी छापे और युद्ध मुसलमानों द्वारा शुरू किए गए थे? यह श्लोक कम से कम इन छंदों को निरस्त (और विरोधाभासी) किया (यहाँ 124 मुस्लिम विद्वानों में से 88 हैं 9/5 द्वारा निरस्त कर दिए गए हैं): 2/109, 2/190, 2/256, 2/272, 3/20, 4/62, 4/81, 4/90, 5/3, 5/28, 5 /48, 5/99, 6/60, 6/66, 6/70, 6/104, 6/107, 6/112, 6/158, 7/87, 7/188, 7/193, 7/199, 8/ ६१, ९/६८, १०/४१, १०/९९, १०/१०२, १०/१०८, ११/१२, ११/१२१, १३/४०, १५/३, १५/९४, १६/३५, १६/८२, १६/१२५, 16/126, 16/127, 17/54, 18/29, 18/56, 19/39, 20/130, 21/107, 21/112, 22/49, 22/68, 23/54, 23/96, 24/54, 26/216, 27/92, 28/50, 28/55, 29/18, 29/46, 32/30, 34/25, 34/28, 35/23, 35/ २४ए, 36/17, 39/41, 41/34, 42/6, 42/15, 42/48, 43/83, 43/89, 44/59, 45/14, 46/9, 46/135a, 46/ १३५बी, 46/135बी, 50/39, 50/45, 51/50-51, 51/54, 52/45, 52/47, 53/29, 67/26, 73/10, 73/11, 79/45, 86/17, 88/22, 109/6। वे सभी 9/5 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 88 निरसन)।

१५२ ६७/२६: "- - - मैं (मुहम्मद*) हूं (भेजा गया) केवल सार्वजनिक रूप से स्पष्ट रूप से चेतावनी देने के लिए।" लेकिन 3 - 4 साल बाद में (622 ईस्वी से) उन्होंने और भी गंदे और अमानवीय काम करना शुरू कर दिया। यह श्लोक है

निराकृत - अमान्य - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१५३ ७०/४२: "तो उन्हें (गैर-मुसलमानों*) को छोड़ दें कि वे व्यर्थ की बातों में पड़ जाएं और मनोरंजन करें---"। लगभग ६१४-६१७ ईस्वी के आसपास मुहम्मद की शक्ति ने उन्हें यह कहने की अनुमति दी थी। जब उसकी शक्ति बड़ा हुआ, वह और भी बहुत कुछ कर सकता है। इस श्लोक को निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और इसके द्वारा खण्डन किया गया है at कम से कम ये श्लोक: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८-३९ (NS चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52 , 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने या अनुमति देने वाली छंद भी शामिल हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१५४ ७३/२-४ (सीए. ६११-६१४ ईस्वी): "रात में (प्रार्थना) के लिए खड़े रहें, लेकिन पूरी रात नहीं - या थोड़ा सा कम, या थोड़ा अधिक - - -"। इसे पहले ही 73/20 से कम करके कम से कम 1/3 या पढ़ने के लिए निरस्त कर दिया गया है कुरान "जितना आसान हो (आपके लिए)"।

१५५ ७३/१०: "और जो कुछ वे कहते हैं उसके साथ धैर्य रखें, और उन्हें महान (गरिमा) के साथ छोड़ दें।" इस एक प्रारंभिक सूरा है (611 - 614 ईस्वी)। मुहम्मद के पास बहुत कम या कोई वास्तविक शक्ति नहीं है, और वह एक शांतिपूर्ण है उपदेशक। जब उसने सत्ता हासिल की तो उसने और उसके धर्म दोनों ने दूसरे चेहरे दिखाए - या अल्लाह ६२२ ईस्वी से अधिक रक्त और जमा और पीड़ा चाहता था। यह श्लोक निराकृत है - निर्मित अमान्य - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने वाली छंद भी शामिल हैं

अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१५६ ७३/११: "और मुझे (अल्लाह*) (उनके साथ अकेला) जीवन की अच्छी चीजों के अधिकार में छोड़ दो, जो (फिर भी) सच्चाई से इनकार करते हैं, और थोड़ी देर के लिए उनके साथ रहते हैं।" वह थोड़ी देर चली जब तक मुहम्मद ने पर्याप्त सैन्य शक्ति प्राप्त नहीं कर ली - तब तक वह (या अल्लाह*) सख्त हो गया प्रशासन। कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है कई खूनी खतरे, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१५७ ७४/११: "मुझे (अल्लाह *) अकेला छोड़ दो (सौदा करने के लिए) (प्राणी (मनुष्य *)) जिसे मैंने बनाया है (नंगे और) अकेले"। खैर, कुछ साल बाद मुहम्मद ने प्रबंधन के साथ अल्लाह की मदद करना शुरू कर दिया वे जीव - विशेष रूप से वे जो उन्हें अपना तानाशाह नहीं बनाना चाहते थे। यह श्लोक है निरस्त - अमान्य - और कम से कम इन श्लोकों द्वारा खंडित: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, ९/१४, ९/२३, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई शामिल हैं

खूनी धमकियां, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाली छंद भी। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

158 76/29: "यह एक नसीहत है: जो कोई चाहता है, वह अपने भगवान के लिए एक (सीधा) मार्ग अपनाए (अल्लाह*)।" बाद में जो कोई चाहेगा ही नहीं। पढ़ें इस्लामिक इतिहास के बारे में जबरदस्ती धर्मांतरण, कई लोगों में आज भी इस्लाम छोड़ने के इच्छुक व्यक्तियों के उपचार का उल्लेख नहीं करना समाज। और रीस एफ। भूतपूर्व। 9/5.

१५९ ७९/४५: "तू (मुहम्मद*) कला लेकिन एक चेतावनी----।" और वह ऐसे ही रहा - - - जब तक वह चेतावनी से अधिक करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हो गया - f. भूतपूर्व। लागू करना और साम्राज्य-निर्माण। और यह एक सवाल है जिसने 622 ईस्वी के आसपास अपना विचार बदल दिया - अल्लाह या मुहम्मद? और जो धर्म बदला - अल्लाह या मुहम्मद? उस मौके ने मांग की कि धर्म से मक्का में १२ वर्षों को कई बिंदुओं पर खंडन और निरस्त करना पड़ा। यह श्लोक है निराकृत - अमान्य - कम से कम इन श्लोकों द्वारा: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ) यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१६० ८०/१२: "- - - जो चाहे उसे (मुहम्मद की शिक्षाओं) को स्मरण में रखने दो।"। ६११-६१४ ईस्वी के आसपास यह मुहम्मद का संदेश था। करीब १० साल बाद उसने अपना कहना शुरू किया साथी अरब - और यहूदी और अन्य: मुसलमान बनें और चोरी के सामान से अमीर बनें और गुलाम या मरना। (अरब का अधिकांश भाग - और अन्य स्थानों को इस्लाम के लिए तलवार से जीता गया था। यह छंद निरस्त कर दिया गया है - अमान्य कर दिया गया है - और कम से कम इन श्लोकों द्वारा खण्डन किया गया है: २/१९१, २/१९३, ३/३८, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। यह भी शामिल है कई खूनी खतरे, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी। मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

१६१ ८६/१७: "इसलिए अविश्वासियों को देर कर दो: उन्हें धीरे से राहत दो (एक के लिए एक के लिए जबकि)"। अंदाजा लगाइए कि क्या यह 614 ईस्वी से हटा दिया गया था जब मुहम्मद के और अधिक बढ़ गए थे शक्तिशाली !! कम से कम इन श्लोकों द्वारा इस श्लोक को निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है: २/१९१, २/१९३,

3/38, 3/85, 3/148, 4/90, 5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5,
9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9. इस
इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन राजनीतिक, सामाजिक, सलाह देने या अनुमति देने वाले छंद भी शामिल हैं।
आर्थिक, आदि मजबूरी (यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार के साथ) - हम उल्लेख करते हैं a
यहां कुछ: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी है
2/256 के तहत उद्धृत। (कम से कम 28 निरसन)।

१६२ ८८/२२: "तू (मुहम्मद*) को (पुरुषों के) (धार्मिक*) मामलों का प्रबंधन नहीं करना है - - -।" एक
अधिक कविता जिसे बाद में अधिक शक्तिशाली मुहम्मद - या अल्लाह - द्वारा निरस्त कर दिया गया था। यह श्लोक
कम से कम इन श्लोकों द्वारा निराकृत - अमान्य किया गया है: 2/191, 2/193, 3/38, 3/85, 3/148, 4/90,
5/33, 5/72, 8/12, 8/38, 8/38-39 (चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73,
9/123, 25/36, 25/52, 33/61, 33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी खतरे शामिल हैं, लेकिन

राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी की सलाह या अनुमति देने वाले छंद भी (के साथ)
यदि आप विरोध करते हैं तो पृष्ठभूमि में तलवार) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81,
5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3, 33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28
निरसन)।

१६३ १०९/६: "तुम्हारे लिए (गैर-मुस्लिम*) तुम्हारे रास्ते (धर्म में*), और मेरे लिए (मुहम्मद या
मुसलमान*) मेरा।" यह विशिष्ट है कि मुहम्मद और इस्लाम मक्का में शांतिपूर्ण थे - वे थे
किसी और चीज के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं। और इसके अलावा संभव है मुहम्मद का मतलब ऐसा ही था,
लेकिन बाद में कई वैज्ञानिकों की तरह मदीना में उनकी सफलता और शक्ति से नैतिक रूप से नष्ट हो गए
मानना। आगे की टिप्पणियों के लिए, ऊपर 88/22 देखें। यह श्लोक निराकृत किया गया है - अमान्य कर दिया गया है -
कम से कम इन श्लोकों से: २/१९१, २/१९३, ३/३८, ३/८५, ३/१४८, ४/९०, ५/३३, ५/७२, ८/१२, ८/३८, ८/३८- 39
(चेतावनी), 8/39, 8/60, 9/3, 9/5, 9/14, 9/23, 9/29, 9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 25 /52, 33/61,
33/73, 35/36, 47/4, 66/9। इसमें कई खूनी धमकियां शामिल हैं, लेकिन सलाह देने वाली छंद भी शामिल हैं
अनुमति राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि मजबूरी (पृष्ठभूमि में तलवार के साथ यदि
आप विरोध करते हैं) - हम यहां कुछ का उल्लेख करते हैं: 3/28, 3/85, 3/148, 4/81, 5/72, 5/73, 9/23, 14/7, 15/3,
33/73, 35/36। वे सभी 2/256 के तहत उद्धृत हैं। (कम से कम 28 निरसन)।

पुनश्च: याद रखें: हमने इसे इंटरनेट पर लॉन्च करने से ठीक पहले कुछ निरसन जोड़े हैं। जैसा
जब हम 2010 में इस पुस्तक को समाप्त कर लेंगे तो हम कुछ और जोड़ देंगे, हम इसे ठीक करने की प्रतीक्षा करते हैं
तब तक मेटमैटिक्स।

भाग II, अध्याय 9, (= II-9-0-0)

कुरान में अन्य प्रकार की गलतियाँ और त्रुटियाँ, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक।

**(भाग II, अध्याय 1 - 10 में उप-अध्याय शामिल हैं = मेगा गलतियाँ, गलतियाँ, त्रुटियाँ,
विरोधाभास, अमान्य तर्क, निरसन, आदि। कुरान में - पवित्र
मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब। उसके लिए कम से कम १००% प्रमाण
कुछ गलत है - कोई सर्वज्ञ भगवान गलती नहीं करता है)**

विषय पर आधारित तथ्य की गलतियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें।
धारा 1 से 16.

इस्लाम और मुस्लिम विद्वानों द्वारा स्वीकार किए गए कुरान में 15 गलतियाँ और त्रुटियाँ

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

आम तौर पर दावा यह है कि कुरान में एक भी अल्पविराम गलत नहीं है
जब कुरान लिखा गया था तब अरब में मौजूद नहीं था)। लेकिन कुछ अपवाद ऐसे भी हैं जहां अधिकांश
मुस्लिम विद्वान मानते हैं कि चीजें गलत होनी चाहिए - हालांकि वे इसके बारे में कभी बात नहीं करते हैं और कभी नहीं
इसके बारे में उनकी मंडलियों को बताएं। यहाँ उनमें से कुछ + उनमें से कुछ हैं जो केवल कुछ हैं
मुस्लिम विद्वान मानते हैं कि गलत होना चाहिए। (ए = आजाद "कुरान का संदेश", वाईए = युसुफ
कुरान पर अली की टिप्पणी।):

001 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा गलत माना जाता है।

744

पेज ७४५

४/२९ (ए३८): "अपनी संपत्ति को आपस में व्यर्थ में मत खाओ"। लेकिन क्या यह सही है
अर्थ? "कुरान के संदेश" में है: "एक दूसरे की संपत्ति को मत खाओ"
गलत तरीके से - आपसी समझौते के आधार पर व्यापार के माध्यम से भी नहीं" - जो मोटे तौर पर कहता है
वही (कुछ और शब्दों में "एक दूसरे को धोखा न दें" या इससे भी बदतर)। लेकिन अरब
सामने शब्द "इल्ला" का अर्थ है "सिवाय" या "जब तक यह नहीं है", जिसका अर्थ है कि शाब्दिक अर्थ
वास्तविकता यह है कि "एक दूसरे की संपत्ति को गलत तरीके से न खाएं, जब तक कि यह (एक कार्य) व्यापार न हो"
आपसी समझौते के आधार पर" - - - जिसका अर्थ है कि गलत लाभ ठीक है यदि भाग सहमत हैं
यह - एफ। भूतपूर्व। सरासर ठगी से जहां खरीदार का मानना है कि उसे उचित सौदा मिलता है। यह दृढ़ता से
अन्य इस्लामी कानूनों का खंडन करता है। इसे समझाने के लिए कुछ अत्यधिक उन्नत मौखिक जिम्नास्टिक की आवश्यकता होती है
दूर। हर विद्वान इस बात से सहमत है कि शाब्दिक अर्थ गलत होना चाहिए, लेकिन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए
विशेष अर्थों में उस अर्थ को गायब करने के लिए। का सबसे अच्छा बहुत ही असामान्य उपयोग
भाषा - इसके बावजूद कुरान खुद दावा करता है कि जिस भाषा को समझना है
शाब्दिक, और यह समझना आसान है। अधिक संभावना है कि यह एक ला 6/151 में एक बड़ी गलती है।

002 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा गलत माना जाता है।

५/१ (ए२): "आपके लिए वैध (भोजन के रूप में) (मुसलमान*) सभी चार पैरों वाले जानवर हैं, जिनके साथ
अपवाद नाम - - -"। लेकिन अरब का शाब्दिक अर्थ "बहिमत अल-अनम" है "चार पैरों वाला"
मवेशी" या "जानवरों का जानवर"। लेकिन "मवेशी" "सभी चार पैरों वाले" से बहुत अलग है
जानवरों"। रहस्य को जोड़ने के लिए रेज़ी और अन्य कहते हैं: "- - - सभी जानवर जो मिलते-जुलते हैं
(पालतू) मवेशी इस हद तक कि वह पौधों को खाता है और शिकार का जानवर नहीं है।" (एक सार
यह है कि मुसलमान समुद्री स्तनपायी नहीं खा सकते हैं - सभी 4-पैर वाले नहीं हैं और उनमें से अधिकांश हैं
शिकार के जानवर)। इस श्लोक का मुख्य सार यह है कि कोई भी अरब विद्वान वास्तव में सुनिश्चित नहीं है कि कैसे
ठीक से समझें कि इसका क्या मतलब है, लेकिन वे इस बात से सहमत हैं कि "चार पैर वाले मवेशी" एक है
टॉटोलॉजी जो गलत होनी चाहिए - एक और मामला जहां बहुमत उस पर सहमत होता है जिसमें कुछ पाठ
कुरान गलत है (ऐसे कुछ हैं - और जब महानतम मुसलमान भी नहीं)
विद्वान समझते हैं कि पाठ का वास्तव में क्या अर्थ है, यह "स्पष्ट और आसानी से समझा जाने वाला" नहीं है
भाषा: हिन्दी"।

इसे मुस्लिम विद्वानों के बचाव में जोड़ा जाना चाहिए जो के अर्थ को "समायोजित" करने का प्रयास करते हैं
यह आयत, कि कुरान स्पष्ट रूप से शिकार की अनुमति देता है, और ज्यादातर वे भोजन के लिए शिकार पर जाते थे - - -
और तुम पशुओं का शिकार करने नहीं जाते। इस प्रकार यह बहुत स्पष्ट है कि जब वे यह कहते हैं तो वे सही होते हैं
टॉटोलॉजी गलत है।

003 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा गलत होना स्वीकार किया जाता है।

६/१५१ए: "आओ, मैं (मुहम्मद*) पूर्वाभ्यास करूंगा कि अल्लाह ने (वास्तव में) तुम्हें किस चीज से मना किया है -
- - (f. e x.*) अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करें"। यह बहुत स्पष्ट रूप से गलत है और थोड़ा सा है
कुरान में अन्य स्थानों की तुलना में विरोधाभास - मुहम्मद का स्पष्ट रूप से मतलब था
बिल्कुल विपरीत; कि आपको अपने माता-पिता के लिए भगवान होने का आदेश दिया गया था। एक सर्वज्ञ देवता
ऐसी गलती नहीं करेंगे। कुरान किसने बनाया?

साथ ही मुस्लिम विद्वान इस बात से सहमत हैं कि यहाँ पाठ गलत है - यह अन्य सभी स्थानों के बारे में कुरान के कहने के बिल्कुल विपरीत है। कौन कौन से आपको किसी भी मुस्लिम के खिलाफ एक अपराजेय सबूत देते हैं कि किताब बिना किसी गलती के है। एक प्रमाण और एक तथ्य द्वारा स्वीकृत इस्लाम!

और इसके अलावा: यदि यहाँ कोई गलती है, तो और कितनी हैं?

बस याद रखें: ६/१५१ (स्कैंडिनेवियाई में ६ = सेक्स, और १५१ में दोनों सिरों पर सेक्स होता है (१ + ५ = ६, और ५) + 1 = 6)। याद करने के लिए आसान।

745

पेज ७४६

004 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा गलत माना जाता है।

६/१५१बी: यह भी वास्तव में एक अजीब विरोधाभास है: "आओ, मैं (मुहम्मद*) क्या पूर्वाभ्यास करूंगा
अल्लाह ने (सचमुच) आपको मना किया है - - (से*) - - अपने बच्चों को अभाव की दलील पर मत मारो
(गरीबी*) - - -।" इसे एक बार और पढ़ें: यदि आप अपने बच्चों को नहीं मारते हैं तो आपको मना किया जाता है
गरीब हैं!! - यह भी (ऊपर 6/151a देखें) हर जगह कही गई बातों के विपरीत है
किताब। हमने जो मुस्लिम स्रोत खोजे हैं, सभी सहमत हैं कि यह भी गलत है - और वास्तव में
हम उनसे सहमत हैं - यह कुरान के सामान्य दृष्टिकोण से बहुत दूर है
बच्चों, कि यह एक दुर्घटना रही होगी।

लेकिन इसका मतलब यह है कि यहां कुरान में आपकी एक और स्पष्ट गलती है - द्वारा प्रमाणित
इस्लाम एक गलती के रूप में - किसी भी मुस्लिम या गैर-मुस्लिम को मुफ्त में सेवा करने के लिए दावा करते हुए कि पुस्तक है
सही और गलतियों के बिना "अंतिम अल्पविराम तक"। बस उनसे पूछिए कि क्या उन्होंने कभी 6/151 पढ़ा है?
(और पूछें कि क्या उन्हें इस बात की जानकारी है कि जब कुरान था तब अरब में अल्पविराम मौजूद नहीं था
650 ईस्वी के आसपास लिखा गया)।

और: जब यह गलत है - किताब में और कितना गलत है? इसके ठीक ऊपर 6/151a भी देखें।

005 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा गलत माना जाता है।

9/30: "यहूदी 'उज़ैर (यहूदी पैगंबर एज्रा*) को ईश्वर का पुत्र कहते हैं - - -"। मुस्लिम विद्वान
आज मानते हैं कि यह गलत है। (लेकिन वे दावा करते हैं कि अरब में कुछ यहूदियों ने ऐसा कहा, और इसीलिए
यह कुरान में समाप्त हुआ। यह इस मामले में बहुत कुछ बताता है कि कुरान किसने बनाया)।

006 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा गलत माना जाता है।

११/४०बी (वाईए१५३३): "- - - और पृथ्वी के फव्वारे फूट पड़े - - -।" लेकिन अरब
अभिव्यक्ति "दूर अल तन्नूर" के दो शाब्दिक अर्थ हैं (ऊपर 11/40a भी देखें): एक
पहले से ही ११/४०ए में उल्लेख किया गया है और "- - - ओवन (अल्लाह के प्रकोप का) उबला हुआ - - -।" कौन कौन से
एक क्या आपको सबसे अच्छा लगता है? और क्या भाषा उतनी ही स्पष्ट है जितनी इस्लाम दावा करता है? साथ ही यह शाब्दिक अर्थ
मुस्लिम स्रोतों के अनुसार हमने पाया है कि सच नहीं हो सकता है।

007 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा गलत माना जाता है।

११/४०ए (ए५८ - २००८ संस्करण ए६२ में): "- - - और पृथ्वी के फव्वारे फूट पड़े - - -।"
अरब पाठ में शाब्दिक अर्थ (नीचे ११/४०बी भी देखें): "- - - उबला हुआ पृथ्वी का चेहरा
ऊपर - - -।" "कुरान का संदेश" उद्धृत करने के लिए: "यह वाक्यांश कई के अधीन रहा है
परस्पर विरोधी व्याख्याएँ" = शाब्दिक अर्थ सत्य नहीं हो सकता। और यह वास्तव में भ्रमित करने वाला है
वाक्य, अन्य कारणों से क्योंकि केवल तरल पदार्थ उबाल सकते हैं। और भ्रम पैदा करने के लिए
2008 में भी पूर्ण, आधुनिक इस्लाम एक बार फिर भूमध्य सागर को भरने का सहारा लेता है
बेसिन, जो 4-5 मिलियन वर्ष पहले हुआ था - लगभग पहले के पहले निशान के समय
होमो सेपियन्स के संभावित पूर्वज 5-6 मिलियन वर्ष पहले, और होमो से बहुत पहले
सेपियन्स (आधुनिक मनुष्य) कभी अस्तित्व में था, संभावित नूह से कुछ मिलियन वर्ष पहले का उल्लेख नहीं करने के लिए
कुछ हजार साल पहले। असभ्य होना: इस्लाम में किस बात का सम्मान किया जाता है "द मेसेज ऑफ द"
कुरान" इस बारे में लिखता है, गोबलीडेगॉग है और उस शब्द की तरह ही गलत और अर्थहीन है। **परंतु**
जब कुरान के ग्रंथ इतने भ्रमित करने वाले हैं कि शीर्ष इस्लामी विचारक भी अक्सर
ग्रंथों का वास्तव में क्या अर्थ है, और केवल अन्य समय पर समझने और सहमत होने में हानि
सहमत हैं कि इसका मतलब यह नहीं हो सकता कि यह क्या कहता है - फिर मुसलमान कैसे दोहरा सकते हैं और दोहरा सकते हैं और
दोहराएं कि कुरान में सब कुछ स्पष्ट और समझने में आसान है, और होने की मांग करें
विश्वास किया?

और कैसे इस्लाम में बड़े-बड़े विद्वान इतने गलत तथ्यों का इस्तेमाल कर सकते हैं - भोले और अशिक्षितों को बहकाने के लिए
लोग? - जो इतने प्रसिद्ध हैं और जांचना इतना आसान है और यहां तक कि बहुत कम बार भी नहीं
मीडिया में उल्लेख किया गया है, और फिर विश्वास करने की मांग की जाती है जब वे इसे लिखने का दावा करते हैं
नेक नीयत? विशेष रूप से इसलिए कि यह पहली बार नहीं है - और न ही आखिरी बार जब वे "झुकते हैं"
वैज्ञानिक और अन्य तथ्य उनकी इच्छा के अनुरूप हों।

008 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा गलत माना जाता है।

12/100 (A95 - 2008 संस्करण A98, A99 में): "- - - और वे जैकब और उसका परिवार*) में गिर गए
साष्टांग प्रणाम, (सब) उसके सामने (यूसुफ*) - - -।" यहाँ एक पहेली के अंदर एक बड़ी पहेली है
इस्लाम के लिए एक पहेली से घिरा हुआ है। याकूब जैसा पवित्र भविष्यवक्ता असंभव रूप से साष्टांग प्रणाम कर सकता था
इंसान के सामने खुद और यूसुफ जैसा पवित्र भविष्यद्वक्ता असंभव रूप से स्वीकार कर सकता था
यह। पाठ में कुछ गलत होना चाहिए। यह भले ही अरब पाठ "वा-खररू लहु"
sudjdjadah" का शाब्दिक अर्थ है "- - - और वे उसके सामने नीचे गिर गए (वैकल्पिक रूप से "जैसे")
साष्टांग प्रणाम (या स्वीडिश प्रति के अनुसार "उससे प्रार्थना करना")"। इस्लाम का कोई भला नहीं
स्पष्टीकरण जो हमने पाया है। 'अब्द अल्लाह इब्न' अब्बास के अनुसार "उसे" "पहले" में
उसे" अल्लाह का उल्लेख करना चाहिए - जो कि यह सबसे स्पष्ट रूप से नहीं करता है। रज़ी बताते हैं कि जोसेफ
सपना पूरी तरह से पूरा नहीं हुआ था, आदि। वास्तव में यहाँ पाठ बहुत स्पष्ट है - और केवल एक चीज
मुस्लिम विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि इसका शाब्दिक अर्थ गलत होना चाहिए, और यह बिना a
अच्छा वैकल्पिक अर्थ।

009 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा गलत माना जाता है।

१८/५० (ए५३ - २००८ में छोड़ा गया): "देखो, हम (अल्लाह*) ने फ़रिश्तों से कहा,
आदम': इब्लीस को छोड़कर वे झुक गए। वह जिन्नों में से एक था - - -।" लेकिन यहाँ एक स्पष्ट है
गलती - या अधिक संभावना; A. युसूफ अली के धर्म और अल-तकिया ने शायद उसका दमन किया हो
ईमानदारी: यहाँ मूल अरब पाठ यह नहीं कहता कि वह एक जिन्न था: यह कुछ ऐसा कहता है
(स्वीडिश से अनुवादित): "वह (इब्लिस *) अदृश्य प्राणियों की भीड़ से संबंधित था"। NS
यहाँ पाठ ईमानदारी से और स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि वह शैतान बनने से पहले एक स्वर्गदूत था। पर
दूसरी ओर कुरान अन्य स्थानों पर बताता है कि वह आग से बनाया गया था, जिसका अर्थ है कि वह
इस पुस्तक के अनुसार इसका अर्थ है कि वह वास्तव में एक जिन्न था। यह एक और जगह है जहाँ
मुस्लिम विद्वान इस बात से सहमत हैं कि कुरान का पाठ गलत है (हालांकि वे इसे स्पष्ट रूप से कभी नहीं कहते हैं
शब्द) क्योंकि यह यहाँ सबसे स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि इब्लीस एक फरिश्ता था।

**010 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा गलत माना जाता है।

१९/३०: "(अल्लाह ने*) मुझे रहस्योद्घाटन दिया और मुझे (बच्चे यीशु*) एक नबी बनाया - - -"।
यहां तक कि इस्लाम (उदाहरण के लिए, तबरी द्वारा उद्धृत विद्वान इकरीमा) भी इस असंभवता को स्वीकार करता है कि एक बच्चा
एक नबी है, लेकिन इसे दूर समझाना अस्पष्ट और काल्पनिक है। एक बहुत ही स्पष्ट गलती। इस
इससे भी अधिक क्योंकि ऐसा एक भी मौका नहीं है कि इस आश्चर्य को भुला दिया गया हो or
एनटी से छोड़ा गया अगर यह सच था। दरअसल यह उन बिंदुओं में से एक है जहां कई मुस्लिम
विद्वान मानते हैं कि कुरान में गलती है। इसके ठीक नीचे 19/30-33 भी देखें।

**011 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा गलत माना जाता है।

१९/३०-३३: बच्चा यीशु अपने पालने में बात कर रहा है और चर्चा कर रहा है। इसके अलावा यह "उधार" से है
अपोक्रिफ़ल चाइल्ड गॉस्पेल - इस मामले में जहाँ तक हम "अरब चाइल्ड गॉस्पेल" के माध्यम से जानते हैं - भी
जिसे "यीशु मसीह की शैशवावस्था का पहला सुसमाचार" कहा जाता है - 2 से एक अपोक्रिफल ग्रंथ।
सदी। ऐसा एक भी मौका नहीं है कि इस तरह के आश्चर्य को बाइबल से हटा दिया गया हो,
क्योंकि इससे यीशु की स्थिति काफी मजबूत होती। यह और भी अधिक है क्योंकि वहाँ नहीं हैं

एक बच्चे के रूप में यीशु के बारे में कई किस्से, और इस कहानी ने उनके जीवन के उस हिस्से को कम कर दिया होगा
खाली। एक बार फिर एक परी कथा को अल्लाह या मुहम्मद द्वारा एक सच्ची कहानी की तरह इस्तेमाल किया गया। यहां तक कि एक किताब की तरह
"कुरान का संदेश" एक सच्ची कहानी के रूप में इसका बचाव करने में सक्षम नहीं है, लेकिन यह केवल प्रदान करता है
असंभव को दूर करने के लिए अटकलें और अनुमान। इसके ठीक ऊपर १९/३०बी भी देखें।

एक बहुत स्पष्ट रूप से सच्ची कहानी नहीं - एक स्पष्ट गलती। हम एक मुसलमान से कभी नहीं मिले, यह समझाते हुए कि क्यों
कुरान अक्सर अपनी कहानियों को प्रसिद्ध से लेता है, लेकिन किंवदंतियों और परियों की कहानियों को बनाता है, और
फिर बाइबिल से अंतर को स्पष्ट करते हुए जोर देकर कहा कि बाइबिल नकली है।

"कुरान का संदेश" (A24 - 2008 संस्करण A23 में): बेबी जीसस के रूप में असंभव रूप से हो सकता है
एक पैगंबर, मुस्लिम विद्वानों के अनुसार, अन्य स्पष्टीकरण होने चाहिए। जैसा कि कहा गया है: एक
अधिक जगह जहां मुस्लिम विद्वान सहमत हैं कि कुछ होना चाहिए
कुरान में गलत।

00a - कई मुस्लिम विद्वानों ने गलत माना।

27/18 एक चींटी ने अन्य चींटियों से बात की और राजा सुलैमान को सुनने के लिए संभव था। गलत।
चींटियों में जटिल रचना करने की दिमागी शक्ति नहीं होती (गैर-मानव स्थलीय के लिए)
प्राणी) वाक्य - ऊपर 27/16 देखें - और उनके पास शब्दों के उच्चारण के लिए अंग नहीं हैं
- "चींटी-भाषा" शब्द भी नहीं। यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि उनमें ज़ोर से बोलने की शक्ति की कमी है
मनुष्य को सुनने के लिए पर्याप्त है। एक परी की कहानी। (यह उल्लेखनीय है कि इस्लाम एक हद तक स्वीकार करता है
यहाँ। "कुरान का संदेश इसे एक किंवदंती कहता है - टिप्पणी 17। लेकिन अगर यह एक किंवदंती है जिसे बताया गया है
सच की तरह, कुरान में ऐसे और कितने हैं?)

012 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा गलत माना जाता है।

27/37 (ए 29): "उनके पास वापस जाओ, और सुनिश्चित करें कि हम उनके पास (सबा *) ऐसे एक मेजबान के साथ आएंगे
(सेना*) क्योंकि वे कभी मिल नहीं पाएंगे: हम उन्हें वहाँ से अपमान में निकाल देंगे, और
वे दीन महसूस करेंगे (वास्तव में)। यह पिछले और निम्नलिखित दोनों से बहुत स्पष्ट है
छंद कि यहाँ यह सुलैमान बोल रहा है। लेकिन शांतिपूर्ण दूतावास के लिए यह कोई तार्किक जवाब नहीं है।
कुरान औपचारिक रूप से यह भी कहता है कि हमले के युद्ध की कभी भी अनुमति नहीं है (हालांकि मुसलमानों के पास है
उस औपचारिकता के इर्द-गिर्द कई रास्ते खोजे।) तो मुस्लिम विद्वानों ने पाया है कि यह होना चाहिए
कुछ गलत - अच्छा मुस्लिम राजा सुलैमान ऐसी बात नहीं कर सकता था।

00b - कई मुस्लिम विद्वानों ने गलत माना।

१०५/३+४: "- - - हान (अल्लाह*) ने उनके खिलाफ पक्षियों की उड़ानें भेजीं, उन्हें पत्थरों से मारना
पकी हुई मिट्टी।" यह 570 ईस्वी में एबिसिनिया के हमले को संदर्भित करता है। उप राजा अब्राह ओर
अब्राह, एक विषाणुजनित बीमारी - शायद चेचक - के कारण अपनी सेना का अधिकांश भाग खो चुका था और उसे
मक्का पर हमला किए बिना घर लौटना। पक्षियों के पत्थरों से सैनिक नहीं मारे गए।
मुस्लिम विद्वान अक्सर मानते हैं कि इसकी संभावना नहीं है, लेकिन कभी-कभी स्पष्ट पाठ को "व्याख्या" करने का प्रयास करते हैं
कुछ भाषाई जिम्नास्टिक द्वारा स्पष्ट गलती के रूप में जिसमें शामिल है कि अरबी शब्द for
पत्थर और लेखन के लिए अलग नहीं हैं, और अगर उन्हें लगता है कि ये शब्द हैं
मिश्रित (अल्लाह द्वारा भेजी गई एक पवित्र पुस्तक में, और बिना गलतियों के), और फिर कहो
अर्थ रूपक है (एक किताब में अल्लाह कहता है कि जैसा लिखा है वैसा ही समझा जाएगा), यह हो सकता है
मतलब पत्थर नहीं, बल्कि कठिन शारीरिक प्रहार। मुसलमानों को अक्सर दूर का उपयोग करना पड़ता है
इस तरह "स्पष्टीकरण" गलतियों को छिपाने की कोशिश करने के लिए। लेकिन अगर यहाँ कोई भाषाई गलती है,
मुसलमानों के अनुसार कुरान में और कितनी भाषाई गलतियाँ हैं?

00c - कई मुस्लिम विद्वानों ने गलत माना।

748

पेज ७४९

१११/१-५: "आग की लपटों के पिता के हाथ नाश हो जाओ! वह नाश हो! उसे अपने सभी से कोई लाभ नहीं
धन, और उसके सभी लाभ! जल गया वह जलती हुई ज्वाला की आग बन जाएगा! उसकी पत्नी ले जाएगी
(क्रैकिंग) लकड़ी - ईंधन के रूप में! - उसके (अपने) गले में ताड़-पत्ते के रेशे की एक मुड़ी हुई रस्सी।" यह
मुहम्मद के चाचा अब्दुल उजा के खिलाफ कहा जाता है - लाल रंग के कारण ज्वाला का पिता कहा जाता है
त्वचा। विद्वानों का कहना है कि एक बात के लिए इस तरह एक सूरा एक पवित्र पुस्तक में नहीं है, और
क्योंकि दूसरा परमेश्वर के योग्य नहीं, और इसलिए अवश्य ही गलत होगा। (इसके अलावा f। उदा। कुछ छंद
मुहम्मद के निजी मामलों के संबंध में कुछ विद्वानों के बीच एक संदिग्ध प्रतिष्ठा है।)

013 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा स्वीकार किया जाना असंभव है।

आज के मुस्लिम विद्वान मानते हैं कि अल्लाह को साबित करना नामुमकिन है। (वास्तव में यह बहुत समय पहले
यह सिद्ध हो गया था कि मनुष्य के लिए किसी देवता - किसी भी देवता को स्वीकार करना असंभव है।) फलस्वरूप सभी
"सबूत" और "चिह्न" - सबूत होने का संकेत - कुरान में अमान्य हैं - - लेकिन यह एक है
अपरिहार्य परिणाम उनमें से कुछ स्वीकार करेंगे, क्योंकि दावा किए गए "संकेत" और "प्रमाण" भी हैं
धर्म में केंद्रीय।

**दरअसल: अल-अजहर अल-शरीफ द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक)
ऐसे विषयों पर) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि
अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं, और उसे साबित करना संभव नहीं है।**

014 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा स्वीकार किया जाना असंभव है। पूर्वनियति बनाम मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा।

इस्लाम स्वीकार करता है कि यह समझना असंभव है कि अल्लाह के को जोड़ना कैसे संभव है
मनुष्य की दावा की गई स्वतंत्र इच्छा के साथ पूर्वनियति। (वास्तव में यह "समय यात्रा" का एक संस्करण है

विरोधाभास" - एक विरोधाभास जो असाध्य साबित होता है।) लेकिन जैसा कि यह भी एक - या वास्तव में दो - सबसे अधिक है
धर्म में केंद्रीय सिद्धांत, यह सीधे स्वीकार करना असंभव है कि कुछ गलत है। लेकिन
केवल और बहुत ही लंगड़ा "स्पष्टीकरण" यह है कि "सब कुछ वैसा ही सच होना चाहिए, जैसा कि अल्लाह ऐसा कहता है
कुरान"।

६/१४९: "अल्लाह के पास तर्क हैं जो घर पहुँचते हैं - - -"। **जिसका अर्थ है: अल्लाह तय करता है हर चीज़। लेकिन फिर मनुष्य की दावा की गई स्वतंत्र इच्छा के बारे में क्या? " का संदेश कुरान "इस सूरह (स्वीडिश से अनुवादित) के लिए अपनी टिप्पणी 141 में इसकी व्याख्या करता है:" विथ दूसरे शब्द: भविष्य के बारे में अल्लाह के ज्ञान के बीच वास्तविक संबंध (और .) फलस्वरूप भविष्य में क्या होने वाला है*) एक तरफ अपरिहार्य के बारे में और दूसरे पर मनुष्य की अपेक्षाकृत (!!*) स्वतंत्र इच्छा - दो कथन जो विरोधाभासी प्रतीत होते हैं एक-दूसरे के बारे में - जो मनुष्य के लिए समझना संभव है, उससे बाहर है, लेकिन दोनों के रूप में बयान अल्लाह की ओर से दिए गए हैं (कुरान* में) दोनों सच होने चाहिए"।**

015 - आम तौर पर इस्लाम द्वारा स्वीकार किया जाना असंभव है। मनुष्य बनाम पूर्वनियति की स्वतंत्र इच्छा।

इस्लाम स्वीकार करता है कि एक अच्छे और परोपकारी ईश्वर द्वारा पूर्वनियति को जोड़ना असंभव है
पैदा होने से पहले ही उन्हें नर्क में भेजने की इच्छा के साथ (इस्लाम बताता है कि आपका भविष्य है
पूर्वनिर्धारित जब भ्रूण 4 महीने = आपके जन्म से 5 महीने पहले हो)। इस वजह से
बताता है कि नरक में समाप्त होना बुरे कर्मों के कारण आपकी स्वतंत्र इच्छा के गलत उपयोग के कारण है - - - लेकिन
स्वतंत्र इच्छा और पूर्वनियति को जोड़ना असंभव है।

६/१४९: "अल्लाह के पास तर्क हैं जो घर पहुँचते हैं - - -"। **जिसका अर्थ है: अल्लाह तय करता है हर चीज़। लेकिन फिर मनुष्य की दावा की गई स्वतंत्र इच्छा के बारे में क्या? " का संदेश कुरान "इस सूरह (स्वीडिश से अनुवादित) के लिए अपनी टिप्पणी 141 में इसकी व्याख्या करता है:" विथ**

दूसरे शब्द: भविष्य के बारे में अल्लाह के ज्ञान के बीच वास्तविक संबंध (और .) फलस्वरूप भविष्य में क्या होने वाला है*) एक तरफ अपरिहार्य के बारे में और दूसरे पर मनुष्य की अपेक्षाकृत (!!*) स्वतंत्र इच्छा - दो कथन जो विरोधाभासी प्रतीत होते हैं एक-दूसरे के बारे में - जो मनुष्य के लिए समझना संभव है, उससे बाहर है, लेकिन दोनों के रूप में बयान अल्लाह की ओर से दिए गए हैं (कुरान* में) दोनों सच होने चाहिए"।

भाग III, अध्याय 1, (= III-1-0-0)

अधिक गलतियाँ और त्रुटियाँ प्लस अप्रमाणित दावे कुरान, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम की पवित्र पुस्तक, और अल्लाह।

विषय-वस्तु द्वारा व्यवस्थित तथ्य त्रुटियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें।
धारा 1 से 16 (= II-1-3-1 से -16) तक। मेगा गलतियों के बारे में II-1-2-1 से देखें
-4. गलत तथ्यों की "पूर्ण" सूची के लिए देखें II-1-4-1 से -9)।

झूठे बाइबल के बारे में दावा कुरान के अनुसार

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

क्या बाइबल झूठी है?

जैसा कि आप इस पुस्तक में अन्य स्थानों को भी देखेंगे, विज्ञान के अनुसार उत्तर स्पष्ट नहीं है।
हजारों पुराने शास्त्र और अंश हैं - संख्या कुछ भिन्न है, लेकिन हो सकता है
लगभग 13ooo प्रासंगिक हैं जो 610 ईस्वी से पुराने हैं (जब मुहम्मद ने अपना
मिशन और बाइबिल की किंवदंतियों, अपोक्रिफल कहानियों, आदि से उद्धृत या बताना शुरू किया, लेकिन बहुत कम
बाइबिल से उचित - और ६१० ईस्वी से पहले भी मिथ्याकरण का कोई कारण नहीं था a

मुहम्मद बाइबिल से बाहर, क्योंकि वह एक वास्तविक पैगंबर हो सकते थे) - उनमें से लगभग 300
सुसमाचारों से। इसके अलावा ६१० ई.पू. से पुरानी कुछ ३०० अन्य पांडुलिपियां भी हैं
बाइबिल में छंदों के संदर्भ। इस्लाम को उनमें से एक भी ऐसा प्रमाण नहीं मिला जिसके प्रमाण हों
कि बाइबल को गलत ठहराया गया है। अगर उन्हें इसके लिए थोड़ा सा भी सबूत मिला होता, तो आप शर्त लगाते कि उन्होंने बताया था
इसके बारे में, और बड़े अक्षरों में। और विज्ञान स्पष्ट रूप से कहता है कि आज का नया नियम
मूल के समान - NT . में मिथ्याकरण के बारे में इस्लाम से अनिर्दिष्ट दावे
स्पष्ट रूप से गलत हैं। वही पुराने नियम के लिए जाता है जहाँ तक यह संभव हुआ है
इसे ट्रेस करें - जिसका अर्थ है कि यदि मिथ्याकरण हैं, तो उन्हें कम से कम किया जाना चाहिए था
मुहम्मद से १००० साल पहले, और फलस्वरूप ऐसे समय में जब कोई कारण नहीं था
एक मुहम्मद को बदनाम करने के लिए इसे झूठा साबित करें।

कुछ गलतियाँ हो सकती हैं - हालाँकि कुरान की तुलना में बहुत कम। लेकिन कोई मिथ्याकरण नहीं।

लेकिन मुहम्मद - और इस्लाम - को "समझाने" के लिए इस (अनिर्दिष्ट) दावे की आवश्यकता है और इसकी आवश्यकता है
कुरान जो कहती है वह बाइबल कहती है, और यह वास्तव में क्या कहती है, के बीच अंतर।

750

पेज 751

मुसलमानों और इस्लाम के मानक दावों में से एक यह है कि इंजिल - द गॉस्पेल - थे
325 ई. में निकिया की परिषद में बदल दिया गया। मिथ्याकरण के बारे में बहुत से अप्रमाणित दावे
और इस परिषद के दौरान पुराने और सही सुसमाचारों के विनाश के बारे में बताया गया है
इस्लाम द्वारा। उनमें से कोई भी सिद्ध या अन्य तरीकों से प्रलेखित नहीं है - और हम फिर से वापस आ गए हैं
तथ्य यह है कि इस्लाम इस बात का सबसे अच्छा प्रमाण है कि दावे सही नहीं हैं: यदि कोई प्रमाण या दस्तावेज है
या यहां तक कि केवल किसी मिथ्याकरण के मजबूत संकेत मौजूद थे, इस्लाम ने इसे उत्पन्न किया था
संगीत और फूल। यह कभी नहीं बनाया गया है, सिर्फ इसलिए कि ऐसा दस्तावेज पूरी तरह से है
विज्ञान के लिए अज्ञात। दावा, हाँ, क्योंकि दावे सस्ते होते हैं। सबूत कभी नहीं।

इस बैठक की पृष्ठभूमि एक निश्चित एरियस (और उसके .) के बीच एक क्रूर बहस थी
अनुयायी) और पारंपरिक राष्ट्रीय चर्च।

एरियस (२५६ - ३३६ ईस्वी) एक पादरी था जो अलेक्जेंड्रिया में रहता था और काम करता था, लेकिन उसके पास उसका था
कुछ विषयों के बारे में अपने विचार। असहमति के लिए उनके मुख्य विषयों में से एक यह था कि यीशु थे
किसी और चीज से पहले बनाया और दुनिया के निर्माण में भाग लिया (दोनों से टकराता है
ईसाई धर्म और इस्लाम)। दूसरा यह था कि यीशु एक अर्ध-ईश्वर था, न तो पूरी तरह से मानव, न ही
पूरी तरह से दिव्य (ईसाई धर्म दोनों से टकराता है जो कहता है कि वह पूरी तरह से दिव्य और पूर्ण दोनों था
मानव, और इस्लाम के साथ जो दावा करता है कि वह केवल मानव था)।

इस विवाद को सुलझाने के लिए रोमन सम्राट द्वारा निकिया की परिषद की व्यवस्था की गई थी
कॉन्स्टेंटिन (रोम में पहला ईसाई सम्राट)।

विवाद का निपटारा कर दिया गया था - हालांकि मामले के अंत में समाप्त होने में काफी समय लगा - जैसा कि
शास्त्रों और 4 सुसमाचारों (ये 4 सुसमाचार) के गहन अध्ययन के बाद लगभग 250 बिशप
संगठित ईसाई चर्चों की शुरुआत से ही इनका इस्तेमाल किया गया था
ईसाइयों का मुख्य शरीर - केवल इसलिए कि ये वही थे जो (एक माना जाता था) थे
प्रेरितों और इस प्रकार वास्तव में विश्वसनीय लोगों द्वारा लिखित), व्यावहारिक रूप से सर्वसम्मति से उस पर सहमत हुए
एरियस गलत था।

Nicaea परिषद का एजेंडा, वर्ष ३२५ ई. (विकिपीडिया के अनुसार):

1. संबंधों के संबंध में एरियन प्रश्न
   परमेश्वर पिता और यीशु के बीच; यानी हैं
   पिता (परमेश्वर*) और पुत्र (यीशु*) एक में
   उद्देश्य केवल या होने में भी एक।
2. पास्का/ईस्टर के उत्सव की तिथि
   उत्सव।
3. मेलेटियन विद्वता।
4. विधर्मियों द्वारा बपतिस्मा की वैधता।
5. उत्पीड़न में व्यपगत की स्थिति
   लिसिनियस के तहत।

इसके अलावा इन्हें परिषद के दौरान जोड़ा गया था:

1. यीशु को "ईश्वर से ईश्वर, प्रकाश" के रूप में वर्णित किया गया है प्रकाश से, सच्चे परमेश्वर से सच्चे परमेश्वर।"
2. जीसस को पैदा हुआ कहा गया है, बनाया नहीं गया।
3. यीशु के बारे में कहा गया था कि वे "के सार से" थे पिता (भगवान*)" या "उसी के" पदार्थ"।

(ये परिवर्धन कलीसिया के पुराने दृष्टिकोणों की व्याख्या मात्र थे।)

इसके अलावा उन्होंने कुछ अन्य विषयों पर चर्चा करने के अवसर का उपयोग किया - एजेंडा अच्छा है ज्ञात:

1. पादरी वर्ग में किन्नर।
2. हाल ही में धर्मान्तरित और पादरियों में यौन पाप।
3. पादरियों के लिए जीवित साथी।
4. धर्माध्यक्षों का समन्वय।
5. मामलों की सुनवाई के लिए बहिष्करण और धर्मसभा।
6. अलेक्जेंड्रिया, रोम और के लिए क्षेत्राधिकार अन्ताकिया।
7. यरूशलेम प्रान्त का आदर करना।
8. कैथारी को में आत्मसात करना चर्च।
9. पादरियों को हटाना।
10. पुरोहितों को हटाना - अन्य पहलू।
11. जिन्होंने मसीह में अपने विश्वास से इनकार किया।
12. सैन्य सेवा में लौटने वाले।
13. मरने के लिए भोज।
14. नए विश्वासियों के पाप।
15. पादरी कार्य।
16. पादरी कार्य - अन्य पहलू।
17. पादरी और सूदखोरी।
18. डायकोनेट पर प्रतिबंध।
19. में पालियनवादियों का आत्मसात करना चर्च।
20. रविवार और पिन्तेकुस्त के दिन प्रार्थना।

धर्म में बड़े बदलावों के बारे में कोई भी शब्द - कोई भी परिवर्तन - केवल एक ही जगह है, कभी भी प्रलेखित इस्लामी दावों में नहीं।

.

इसके अलावा: आप किसी धर्म के 250 शीर्ष नेताओं की एक मंडली कैसे बनाते हैं - कोई भी धर्म - अचानक और नाटकीय रूप से अपना धर्म बदल लेते हैं? ऐसा ग्रुप हमेशा रहेगा बहुत रूढ़िवादी और हमेशा बड़े हठधर्मी परिवर्तनों का विरोध करते हैं - एक बार फिर; यह किसी भी धर्म के लिए जाता है (सिर्फ साक २५० अयातुल्ला अपने धर्म में नाटकीय परिवर्तन करते हैं - प्रतिरोध इस प्रकार होगा सहज और किसी भी बड़े धर्म में कमोबेश उतना ही मजबूत)।

उल्लेख नहीं करने के लिए: आप इस तरह के बदलाव की व्यवस्था कैसे करते हैं जिससे यह असंभव हो जाता है इतिहास के प्रोफेसरों और वैज्ञानिकों को कोई बदलाव मिलेगा? - क्योंकि केवल वही हैं जिनके पास कभी है दावा है कि उन्होंने इसे पाया है, मुस्लिम पादरी और कुछ विद्वान हैं (वैज्ञानिक नहीं, बल्कि विद्वान)। इस्लामी पादरी और विद्वान जिन्होंने बहुत कुछ दावा किया है, लेकिन कभी साबित या दस्तावेज नहीं किया है उन दावों में से एक।

यह अध्याय बाद में पूरा होगा, न कि 2010 ईस्वी के बाद का। और भी बहुत कुछ है। सार यह है कि विज्ञान ने किसी भी उचित और अनुचित संदेह से परे साबित कर दिया है कि बाइबिल में गलतियाँ हो सकती हैं - हालाँकि कुरान की तुलना में बहुत कम - लेकिन नहीं मिथ्याकरण।

भाग III, अध्याय 2, (= III-2-0-0)

अधिक गलतियाँ और त्रुटियाँ प्लस अप्रमाणित दावे
कुरान, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम की पवित्र पुस्तक,
और अल्लाह।

विषय-वस्तु द्वारा व्यवस्थित तथ्य त्रुटियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें।
धारा 1 से 16 (= II-1-3-1 से -16) तक। मेगा गलतियों के बारे में II-1-2-1 से देखें
-4. गलत तथ्यों की "पूर्ण" सूची के लिए देखें II-1-4-1 से -9)।

की तुलना में विरोधाभास कुरान में बाइबिल - The मुहम्मद की पवित्र पुस्तक, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मोटे तौर पर कुरान जो कहता है कि बाइबल कहती है कि अक्सर सच्चाई के तत्व होते हैं
बाइबल वास्तव में जो कहती है उसकी तुलना में। लेकिन हमेशा से दूर - और विवरण अक्सर होते हैं
बाइबिल के ग्रंथों की तुलना में पूरी तरह से गलत है। ऐसा इसलिए क्योंकि मुहम्मद ने अपनी कहानियाँ लीं
किंवदंतियों, अपोक्रिफल शास्त्रों, आदि से - उन्हें थोड़ा सा भी घुमाकर उन्हें अपने फिट करने के लिए
धर्म - और वास्तव में बाइबल से नहीं।

और हम दोहराते हैं कि विज्ञान ने दिखाया है कि मुहम्मद के आसान और कभी प्रलेखित दावे नहीं हैं
कि जब भी उसकी "बाइबिल" की कहानियों और कहानियों में बाइबल से विचलन होता,
कारण यह था कि बाइबल को गलत ठहराया गया था, गलत था और है। **उस विज्ञान के लिए सबसे अच्छा प्रमाण यहाँ सही है, क्या इस्लाम को सभी के बीच मिथ्याकरण के लिए एक ही सबूत मिल गया था हजारों पुरानी पांडुलिपियों में उन्होंने इसके बारे में स्पष्ट रूप से, अक्सर और बड़े अक्षरों में बताया था।**

बाइबल वास्तव में जो कहती है उससे बहुत कुछ अलग है, कि हम केवल एक देने का इरादा रखते हैं
नमूनों की संख्या। यह 2010 ई. के बाद नहीं किया जाएगा।

भाग III, अध्याय 3, (= III-3-0-0)

अधिक गलतियाँ और त्रुटियाँ प्लस अप्रमाणित दावे
कुरान, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम की पवित्र पुस्तक,
और अल्लाह।

विषय-वस्तु द्वारा व्यवस्थित तथ्य त्रुटियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें।
धारा 1 से 16 (= II-1-3-1 से -16) तक। मेगा गलतियों के लिए देखें II-1-2-1 के माध्यम से -
4. गलत तथ्यों की "पूर्ण" सूची के लिए II-1-4-1 से -9 देखें)।

बहुत सारी गलतियाँ और कोई सबूत नहीं

कुरान में - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह - लेकिन मजबूत मांग करता है अन्य सभी से सबूत धर्मों

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस अध्याय का कारण यह दिखाना है कि मुहम्मद (और इस्लाम के पास) बहुत अलग थे
किसी और की तुलना में इस्लाम से सबूत मांगता है।

इस्लाम और कुरान से न तो मुहम्मद, न इस्लाम और न ही मुसलमान किसी प्रमाण की मांग करते हैं
सभी - और स्पष्ट रूप से स्पष्ट गलतियों और गलत सबूतों / संकेतों को भी मना कर दें।

अन्य सभी से वैध प्रमाणों की सख्त मांग है।

यह कि इस्लाम के लिए सबूतों के लिए कोई मानक या मांग नहीं है, पहले ही दिखाया जा चुका है
अध्याय इसलिए हम यहां केवल कुछ नमूने उद्धृत करते हैं कि कैसे मुहम्मद/इस्लाम सभी गैर-
यहाँ मुसलमान।

०१ २/२५८: "लेकिन यह अल्लाह है जो सूरज को पूर्व से उगता है: क्या आप (गैर-मुस्लिम*)
उसे पश्चिम से उठने का कारण"।

एक तरह से यह एक स्टार उदाहरण है। मुस्लिम प्रारंभिक बिंदु एक प्राकृतिक प्रक्रिया पर टिकी हुई है नहीं
और अंडरलेइंग का दावा है कि यह साबित करना जरूरी नहीं है कि यह अल्लाह का काम है - यह सिर्फ एक है
कथन जो माना जाता है कि निश्चित रूप से सत्य है। जबकि प्रतिद्वंद्वी को स्वाभाविक रूप से उलटना पड़ता है
एक अच्छा पर्याप्त सबूत लाने के लिए कानून। तर्क व्यर्थ है - किसी भी धर्म में कोई पुजारी
अपने भगवान के बारे में वही कह सकता है जब तक कि उसे कुछ भी साबित न करना पड़े। शब्द इतने सस्ते हैं।

002 6/19: "क्या तुम (गैर-मुसलमान*) गवाही दे सकते हो कि अल्लाह के सिवा कोई और है
भगवान?" मुसलमानों को अल्लाह के अस्तित्व के बारे में कुछ भी साबित करने की ज़रूरत नहीं है - ये तो बात है
बेशक मुहम्मद के शब्दों के अलावा कुछ भी नहीं - विवादित का एक कठोर सरदार
चरित्र। लेकिन दूसरों को सबूत लाने होंगे। अल्लाह या उसके बारे में एक भी तथ्य नहीं
मुहम्मद का ईश्वर से संबंध कभी सिद्ध हुआ है - सब कुछ सिर्फ दावों पर आधारित है
मुहम्मद से, और वह उस चमकदार तस्वीर से बहुत दूर था जिसे इस्लाम दिखाना पसंद करता है। यह भी
केंद्रीय इस्लामी साहित्य के अनुसार।

००३ ६/१४८: "क्या तुम्हें (गैर-मुस्लिम*) कोई (निश्चित) ज्ञान है? अगर ऐसा है तो इसे हमारे सामने पेश करें। तु
अनुमान के सिवा कुछ मत मानना: तुम झूठ के सिवा कुछ नहीं करते।" बिल्कुल ऊपर दोनों की तरह विशिष्ट: नहीं
कभी साबित नहीं होने वाले अल्लाह के लिए आवश्यक दस्तावेज - उसे एक तथ्य की तरह माना जाता है। लेकिन सख्त सबूत
अन्य सभी से मांग की जाती है।

मुसलमानों के साथ चर्चा करते समय एक और विशेषता जो आप अक्सर पाते हैं, वह यह है कि उनमें से कुछ हैं
यह बताने के लिए जल्दी कि अन्य लोग - आपने शामिल हैं - झूठ। यहाँ की तरह ही। अभी भी एक और विशेषता वे अक्सर
है, यह है कि वे शब्द बयानों के लिए त्वरित हैं और कहते हैं कि यह आप पर निर्भर है कि आप उन्हें अस्वीकृत करें - जो
मुश्किल हो सकता है क्योंकि बयान गलत हैं या जवाब देने के लिए मुड़े हुए हैं मुसलमानों
पसंद। इससे पहले कि आप जवाब देने की कोशिश करें, पहले उनके बयानों के सबूत मांगें (अक्सर वह है
उनके लिए असंभव)।

००४ १०/३४: "आपके (गैर-मुस्लिम *)" भागीदारों "(देवताओं *) में से, क्या कोई भी रचना की उत्पत्ति और दोहरा सकता है
यह?" इसके लिए सबूत चाहिए। लेकिन इस आयत को जारी रखने के लिए: "यह अल्लाह है जो सृष्टि की उत्पत्ति करता है और"
इसे दोहराता है - - -"। इस आसान कथन को किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है, भले ही कुछ भी सिद्ध न हो
के दौरान - इसे लिखने के समय - 1399 साल जब से मुहम्मद ने स्वयं के रूप में अपना काम शुरू किया

घोषित पैगंबर, और यह भी कि उनके पूर्व नाम अल के नहत अल्लाह के बारे में कुछ भी साबित नहीं हुआ था।
लाह (मुहम्मद ने नाम थोड़ा बदल दिया) जब वह सैकड़ों के लिए और अधिक वर्षों के लिए हो सकता है
बुतपरस्त अरब धर्म के शीर्ष देवता थे।

००५ १०/३५: "आपके (गैर-मुस्लिम*)" सहयोगियों "में से कोई है जो कोई मार्गदर्शन दे सकता है
सत्य की ओर?" यह "काफिरों" से सबूत मांगता है - लेकिन मुस्लिम "सच्चाई" सिर्फ एक है
कथन - यहां तक कि इतनी गलत तथ्यों वाली किताब में भी, आदि कि यह अधिकतम आंशिक रूप से है
सत्य। पद जारी रखने के लिए: "यह अल्लाह है जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है"। एक स्पष्ट और
हवा से निकाला गया रॉक सॉलिड स्टेटमेंट - सिद्ध वैक्यूम से बाहर नहीं कहना। बिल्कुल अमान्य
तर्क में।

००६ १८/१५: "- - - वे (गैर-मुस्लिम*) एक स्पष्ट अधिकार (प्रमाण*) सामने क्यों नहीं लाते
(और आश्वस्त करने वाले) जो वे करते हैं (अल्लाह के अलावा अन्य भगवान हैं)"। अल्लाह साबित होना चाहिए
इससे पहले कि वे दूसरों से सबूत मांगें। अल्लाह के लिए एक भी प्रमाण मौजूद नहीं है - अ
तथ्य सीखा मुसलमान अनिच्छा से स्वीकार करते हैं - - - लेकिन अपने दर्शकों को नहीं बताते (और कई लोग
इसलिए मुसलमान वास्तव में मानते हैं कि अल्लाह और मुहम्मद का उससे संबंध पूरी तरह से है
सिद्ध)।

००७ २१/२४: "अपने (गैर-मुस्लिम*) ठोस सबूत लाओ (अल्लाह के अलावा अन्य भगवानों के लिए)"।
प्रमाण आश्वस्त करने वाला होना चाहिए। अल्लाह के लिए सिर्फ अप्रमाणित दावे और बयान इससे बढ़कर हैं
उसे एक तथ्य के रूप में स्थापित करने के लिए पर्याप्त है - कुरान और मुहम्मद कितने भी संदिग्ध क्यों न हों।

008 27/64: "(क्या कोई और हो सकता है) अल्लाह के अलावा भगवान? कहो: अपना तर्क सामने लाओ, यदि आप
कला सच कह रही है!" न केवल अल्लाह को बयानों और बयानों से ही एक तथ्य बनाया गया है।
अल्लाह का कोई अस्तित्व नहीं है - और अगर अन्य देवता हैं, तो वे अल्लाह के अलावा मौजूद हैं। लेकिन अच्छे सबूत
अन्य देवताओं के लिए उत्पादित किया जाना है। यह अच्छी बात है कि कुरान साबित करता है कि अल्लाह नहीं है
यहोवा के समान ही परमेश्वर - उनकी शिक्षाएँ मौलिक रूप से इतनी भिन्न हैं कि ऐसा नहीं हो सकता
संभव है, और अजीब बात है कि यह साबित करता है कि अगर अल्लाह मौजूद है तो वह कम से कम सर्वज्ञ नहीं हो सकता - भी
कई गलतियाँ, आदि।

००९ २८/७५: "- - - हम (अल्लाह*) कहेंगे: 'अपना सबूत पेश करो (अन्य भगवानों के लिए)*)। 27/64 देखें।

०१० ३१/११: "- - - अब मुझे (अल्लाह*) दिखाओ कि उसके अलावा अन्य (अन्य भगवान) क्या हैं
(अल्लाह*) ने - - - बनाया है। लेकिन सबसे पहले: साबित करो कि यह अल्लाह है - अगर वह मौजूद है, जो नहीं है
सिद्ध - कम से कम कुछ तो बनाया है।

अध्याय III/3 के लिए पोस्ट स्क्रिप्ट।

दस नमूनों को समस्या का संकेत देना चाहिए। मुसलमानों के बीच बहुत अंतर है
अल्लाह और उसके कामों के लिए सबूतों की मांग - कुछ भी नहीं (हालांकि वे यह दावा करने की कोशिश करते हैं कि यह और यह)
सबूत हैं, क्योंकि वे स्पष्ट रूप से सबूतों की आवश्यकता महसूस करते हैं) - और वे हर किसी से क्या मांगते हैं
अन्य। यह अक्सर असंभव की सीमा को पार कर जाता है। लेकिन जब तक आप अन्य लोगों की चर्चा करते हैं '-
या धर्म' - कमियाँ, दूसरे आपके अपने धर्म को देखना भूल सकते हैं
कमियां। कुशल लोकतंत्र, लेकिन अनुचित खेल।

लेकिन तब निष्पक्ष खेल के नियम अरब में नहीं बल्कि इंग्लैंड में स्थापित हुए।

भाग III, अध्याय 4, (= III-4-0-0)

अधिक गलतियाँ और त्रुटियाँ प्लस अप्रमाणित दावे कुरान, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम की पवित्र पुस्तक, और अल्लाह।

विषय-वस्तु द्वारा व्यवस्थित तथ्य त्रुटियों और त्रुटियों के लिए, भाग II, अध्याय 1, उप-अध्याय 3, देखें।
धारा 1 से 16 (= II-1-3-1 से -16) तक। मेगा गलतियों के लिए देखें II-1-2-1 के माध्यम से -
4. गलत तथ्यों की "पूर्ण" सूची के लिए II-1-4-1 से -9 देखें)।

कुरान और इस्लाम में गलतियाँ
यीशु के इतिहास के बारे में बाइबिल और TO . की तुलना में ऐतिहासिक तथ्य

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस अध्याय में सामग्री:

ध्यान दें! ध्यान दें! ध्यान दें! यह भाग कमोबेश "यीशु के इतिहास में गलतियाँ" में समान है
कुरान में गलत तथ्यों के बारे में और यीशु के बारे में अलग अध्याय में। (कारण
बहुत ही सरल बात यह है कि कुरान उसके बारे में जो कुछ भी लिखता है वह गलत है। गलत ही नहीं
बाइबल की तुलना में, लेकिन उस समय की तुलना में गलत है जो हम समय और तथ्यों के बारे में जानते हैं
परिस्थिति)। यीशु के बारे में अलग अध्याय में, के लाभ के लिए बस थोड़ा सा जोड़ा गया है
जो इतिहास और/या बाइबल नहीं जानते हैं।

756

पेज 757

हमने इस सामग्री को दोनों जगहों पर शामिल करना चुना है - जैसा कि हमने अक्सर किया है जब
सामग्री एक से अधिक विषयों के लिए प्रासंगिक है, ताकि पाठकों के लिए उन सभी को खोजना आसान हो जाए
वे जिस विषय की तलाश कर रहे हैं, उस पर खोजें। लेकिन अगर यह कभी छपी हुई किताब बन जाए तो बुरा होगा
इसे दो बार प्रिंट करने के लिए अर्थव्यवस्था - बेहतर होगा कि केवल अलग अध्याय को प्रिंट करें, और फिर देखें
गलत तथ्यों की शॉर्टलिस्ट के पाठक, उस अध्याय के लिए।

1. कुरान के अनुसार यीशु का प्रागितिहास:

एक व्यक्ति था जिसने इस्राएल को यीशु के लिए तैयार किया था - जॉन द बैपटिस्ट - से आधा वर्ष बड़ा
केवल यीशु, लेकिन चूंकि यीशु ने केवल ३० साल की उम्र में अपना प्रचार शुरू किया था, यूहन्ना के पास किसी भी तरह बात करने का समय था
एक के बारे में जो शीघ्र ही आने वाला था। कुरान उसके बारे में ज्यादा कुछ नहीं बताता है, लेकिन एक है
छोटा: उसके पिता को एक स्वर्गदूत ने बताया कि उसे एक पुत्र होगा, और वह -

001 19/7: "- - - उसका नाम याह्या (जॉन *) होगा: उस नाम से किसी पर भी हम (अल्लाह *) नहीं हैं
पहले भेद प्रदान किया"। परन्तु कारेह का पुत्र योहानान (यूहन्ना) एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था
2. किंग्स, 25/23। इसके अलावा हमारे सूत्रों का कहना है कि "भेद" शब्द अरब में नहीं है
संस्करण, लेकिन यूसुफ अली द्वारा एक स्पष्ट गलती को रोकने के लिए जोड़ा गया, क्योंकि जॉन नाम दूर था
हिब्रू में अज्ञात से। (यूसुफ अली की टिप्पणी 2461)। अन्य अनुवादक - एफ. भूतपूर्व। मुहम्मद
आजाद "कुरान का संदेश" में - अपनी टिप्पणी में इस बिंदु पर कहें कि सटीक
अनुवाद है (स्वीडिश से अनुवादित): "हमने (अल्लाह*) ने पहले कभी किसी का नाम नहीं लिया
उसके (जॉन द बैपटिस्ट*) नाम से पहले"। लेकिन जॉन (हिब्रू में जोहानन) नाम है
ओटी में 27 बार उल्लेख किया गया = जॉन द बैपटिस्ट से पहले - यह एक बहुत ही सामान्य नाम था। से
प्रासंगिक इतिहास भी पुजारी-राजा जॉन हिरकेनस और जनरल जॉन एसेन थे।
जॉन द बैपटिस्ट से पहले जॉन नाम के कई जॉन और विशिष्ट व्यक्ति दोनों थे।
बस गलत।

*002 3/35: "इमरान की पत्नी ने कहा"। यह कुरान में सबसे प्रसिद्ध गलती है
जहाँ मरियम, यीशु की माँ, हारून की बहन कहलाती है। यहाँ किताब के बारे में बात कर रहा है
मरियम की माँ, यीशु की भावी माँ (कुरान में 3/36 भी देखें: "मैंने उसका नाम रखा है"
मैरी")। लेकिन इमरान हारून, मूसा और मरियम का पिता था, जो लगभग 1200 वर्ष जीवित रहे

[illegible]
हारून की बहन"। (इसका उल्लेख ६६/१२ में भी किया गया है) संभावना है कि इस गलती का कारण है
कि अरब में मरियम और मरियम एक ही तरह से लिखी गई हैं: मरियम। अपने सीमित . के साथ
बाइबल का ज्ञान वह मानता था कि यह वही महिला है। कोई भी भगवान बेहतर जानता था। हम
जोड़ सकते हैं कि कुछ मुसलमान कहते हैं कि यह वही इमरान नहीं है, लेकिन वैज्ञानिक इस पर सहमत हैं
मुहम्मद का मतलब वही आदमी था - इमरान जिसे अल्लाह ने आदम, नूह और की तरह चुना था
इब्राहीम (कुरान में 3/33 देखें) - हारून के पिता, मूसा - - और
मरियम/मरियम/मैरी। वह मुहम्मद वास्तव में यहाँ गलत था, और उसने सोचा कि मैरी थी
हारून और मूसा की बहन, इस तथ्य से प्रलेखित है कि हदीस (दूसरा) के अनुसार
अपने धर्म और मुहम्मद के बारे में जानकारी का मुस्लिम स्रोत) मुहम्मद थे
सुधारा गया, और उसने गलती को सुधारने के लिए स्पष्टीकरण खोजने का प्रयास किया (बिना सफलता के)। वह भी
यह दिखाते हुए जानकारी नहीं जोड़ा कि वह और अल्लाह किसी कारण से अपनी गलती में सही थे
बयान।

आप मुसलमानों से यह कहते हुए मिलेंगे कि कुरान का मतलब यह नहीं है कि मरियम वास्तव में की बहन थी
हारून (वे कहते हैं कि इसका मतलब लाक्षणिक रूप से था - दो मानक मुस्लिम तरीकों में से एक
चीजों को स्पष्ट करना; दूसरा यह है कि आप केवल एक या कुछ छंदों से न्याय नहीं कर सकते, आप
पूरे सूरह या पूरे कुरान से न्याय करना होगा, इसके बावजूद वे स्वयं
अक्सर एक या कुछ शब्दों से बहुत कुछ बनता है), और यह कि किताब का मतलब यह नहीं है कि वह थी
इमरान की बेटी - उनका केवल एक वंशज। इतने सैकड़ो के बाद इस्लाम चाहिए

वर्षों ने बेहतर "स्पष्टीकरण" पाया है - "स्पष्टीकरण" जिसे सबसे ऊपर कहा जाता है
इस तथ्य का खंडन किया कि पहले से ही मोहम्मद ने गलती को सुधारने की कोशिश की, लेकिन
सफलता के बिना उल्लेख के रूप में। लेकिन कोई अन्य स्पष्टीकरण नहीं है जिसका वे उपयोग करने का प्रयास कर सकते हैं। और देखें
19/28 गलत तथ्य पर पूर्ण अवलोकन में।

यह जोड़ा जा सकता है कि कुरान यीशु की इस दादी के बारे में क्या बताता है, यह अज्ञात है
बाइबिल, जो यीशु की मृत्यु के कुछ साल बाद लिखी गई थी, लेकिन मुहम्मद को 600 साल के लिए जाना जाता था
बाद में - - - मध्य पूर्व में "रहने वाले" किंवदंतियों के लिए भी जाना जाता है। अगर यह सच होता, तो यह
गारंटी दी गई थी कि उन्हें सुसमाचारों में नहीं भुलाया जाएगा, क्योंकि इसने यीशु और के बीच की कड़ी बना दी थी
भगवान / यहोवा मजबूत। इस्लाम आरोप लगाता है - सामान्य रूप से मामूली दस्तावेज के बिना
इस्लाम - एनटी के मिथ्याकरण के लिए ईसाई (सभी विज्ञानों के विपरीत), लेकिन
आरोप यह है कि उन्होंने यीशु को अधिक पवित्र बनाया है, कम नहीं, जो कि अगर इस कहानी में होता
बाइबिल से हटा दिया गया है (विज्ञान के अनुसार यह कभी नहीं था)।

कुरान यह भी बताता है कि मरियम ने की शिक्षा के तहत यरूशलेम के मंदिर में सेवा की
जकारिया (जॉन द बैपटिस्ट के पिता - और बाइबिल के अनुसार मैरी के एक रिश्तेदार), और - -

००३ ३/३७: "हर बार जब वह (जकारिया *) उसे देखने के लिए (उसके) कक्ष में प्रवेश करता, तो वह उसे पाता
भरण-पोषण प्रदान किया। उसने कहा: 'हे मरियम! यह आपको कहाँ से (आता है)?' उसने कहा: "से
अल्लाह : क्योंकि अल्लाह जिसे चाहता है उसे बिना माप के रोज़ी देता है"। इस का मतलब है कि
उसने चमत्कार से अपना भोजन भगवान से प्राप्त किया। यह एक बनी हुई परी कथा है। एक भी नहीं है
एक मौका है कि इस तरह के एक चमत्कार को NT से हटा दिया गया था - यह और भी अधिक अगर
इस्लाम अपने बयानों में सही था कि ईसाइयों (और यहूदियों) ने बाइबिल को गलत ठहराया था
(मुहम्मद बाइबिल के अच्छे जानकार नहीं थे, और जब वे इसका उल्लेख करते थे तो अक्सर गलतियाँ करते थे
इसके लिए या इससे कहानियां लीं। उन्होंने हमेशा ऐसी गलतियों को समझाया कि वह सही थे, और
कि अपवित्र यहूदियों और ईसाइयों ने बाइबल को गलत ठहराया था। वास्तव में सिर्फ यह कहानी में से एक है
जिन्हें कुरान ने बाइबल से बिल्कुल भी "उधार" नहीं लिया है, बल्कि एक से बना है
उस समय फली-फूली धार्मिक किंवदंतियाँ। इन गलतियों के कारण यहूदी
जब वह यात्रिब/मदीना आया तो उसे स्वीकार नहीं किया - यहूदियों ने कहा कि उसकी शिक्षा गलत थी
और यह कि परिणामस्वरूप वह एक झूठा नबी था। उसकी शिक्षाएँ मोज़ेक से बहुत अलग थीं
एक, कि यह उनके लिए विधर्म था। (मुसलमानों में इस तथ्य का उल्लेख नहीं करने की प्रवृत्ति है, लेकिन
इसके बजाय, मुहम्मद को और अधिक चापलूसी वाली कहानी बताएं: यहूदियों के कारण उन्हें स्वीकार नहीं किया गया था
गुस्से में थे क्योंकि अल्लाह ने एक गैर-यहूदी को पैगंबर के लिए बुलाया था।)) लेकिन अगर ईसाइयों ने झूठ बोला था
बाइबिल, उनका मुख्य उद्देश्य यीशु की स्थिति और उसके संबंधों को मजबूत करना होता
यहोवा के लिए - यहूदी और ईसाई देवता। इस बात की कोई संभावना नहीं है कि उन्होंने छोड़ा था a
उसकी माँ से जुड़ा आश्चर्य, यहोवा और उसके बीच सीधे संबंध के बारे में बता रहा है।
(कि उसने मंदिर में सेवा की, जिसे कुरान में भी बताया गया है, वह भी बाइबिल के लिए नया है - और
अगर यह सच था तो वहां कभी नहीं छोड़ा गया था)। एक और प्रश्न: आप यहूदियों को कैसे बनाते हैं?
और ईसाई बाइबिल में वही मिथ्याकरण करते हैं?

यह कुछ ऐसा भी बताता है कि जब मुहम्मद बाइबिल से भिन्न होते हैं, तो उनकी/कुरान की कहानियां ज्यादातर सिद्ध असत्य धार्मिक दंतकथाओं और किंवदंतियों (अक्सर अपोक्रिफाल) के साथ मेल खाते हैं शास्त्र - और अक्सर गूढ़ज्ञानवादी)। यह बताता है कि यह बाइबल नहीं है जो गलत है, बल्कि यह है कि कुरान स्रोतों के रूप में परियों की कहानियों का इस्तेमाल किया हो सकता है।

फिर यीशु के साथ गर्भधारण का समय आया। जैसा कि बाइबिल में पहली जानकारी आई थी एक कोण से, लेकिन कहानी में एक मोड़ आया (मुहम्मद के नए धर्म का समर्थन करने के लिए?) मैरी बढ़ी भयभीत और कहा:

*००४ १९/१८: "- - - मैं (अल्लाह) परम कृपालु की शरण चाहता हूँ: (पास न आओ) यदि तुम अल्लाह से डरो" यह बहुत कम संभावना है कि एक यहूदी को उस समय के उच्च से शरण लेनी चाहिए दूसरे देश से बहुदेववादी भगवान। जैसा कि यीशु के साथ जो हुआ उससे कोई देखता है, उस समय इस्राएल में एकेश्वरवाद और यहोवा प्रबल थे। अगर कुरान सच कहता है तो बताता है कि मैरी मंदिर में काम कर रही थी, यह बिल्कुल असंभव है - वह अंदर आ गई थी गंभीर मुसीबतें अगर उसने यहोवा के अलावा किसी अन्य देवता को संबोधित किया (लेकिन तब कुरान सबसे अधिक संभावना है इस बिंदु पर भी गलत है - हमें मंदिर में मैरी के काम करने के बारे में कुछ भी नहीं मिला है बाइबिल या कोई अन्य स्रोत, और अगर यह सच था, तो अधिकांश ईसाई स्रोतों ने इसका उल्लेख किया था, जैसे इसका अर्थ होगा यीशु और यहोवा के बीच एक और संबंध। (वास्तव में यह से लिया गया है अपोक्रिफ़ल - बना हुआ - "जैकब के बाद 'प्रोटो गॉस्पेल'" - - - लेकिन मुसलमान बिना बताते हैं दस्तावेज़ीकरण कि कुरान और बाइबिल के बीच का अंतर इसलिए है क्योंकि बुरा गैर-मुसलमानों ने बाद वाले को गलत ठहराया है - इसलिए नहीं कि मुहम्मद ने कभी-कभी मुड़ का इस्तेमाल किया था कुरान में कहानियों के आधार के रूप में परियों की कहानियां।) हमारे मुस्लिम स्रोत भी इसका उल्लेख नहीं करते हैं कुरान में इस कथन के लिए कोई अन्य विश्वसनीय स्रोत मौजूद है - जो इस्लाम अक्सर करता है ऐसा तब न करें जब उनके पास कोई स्रोत न हो, केवल कुछ नहीं पर बने कथन हों। बस एक परी कथा चमक गई ऊपर और एक सच्ची कहानी के रूप में इस्तेमाल किया। अल्लाह या मुहम्मद द्वारा, और संभवत: से नीचे भेजा गया अल्लाह और स्वर्ग में श्रद्धेय मदर बुक से कॉपी, शायद अल्लाह द्वारा बनाई गई एक किताब, लेकिन सबसे अधिक संभावना है - इस्लाम के अनुसार - कभी नहीं बनाया, लेकिन अनंत काल से अस्तित्व में है (जो नहीं है संभव है, क्योंकि इस्लामी विद्वानों के अनुसार फ़रिश्ते कुरान में कम से कम एक जगह बोल रहे हैं, और इसके परिणामस्वरूप कुरान कम से कम पहले स्वर्गदूतों से छोटा होना चाहिए)।

कुरान के अनुसार, मैरी को उनके होने वाले बेटे का नाम भी बताया गया था:

*००५ ३/४५: "- - - उसका नाम क्राइस्ट जीसस होगा - - -"। उसका नाम केवल यीशु था। शब्द क्राइस्ट एक नाम भी नहीं था, बल्कि सम्मान की उपाधि थी, और यह उनकी मृत्यु के वर्षों बाद ही उभरा - मूल रूप से अब तुर्की में क्या है। लेकिन मुहम्मद बाइबल को अच्छी तरह से नहीं जानते थे। (मसीह या ग्रीक में क्रिस्टोस का अर्थ हिब्रू में मसीहा के समान है - अभिषिक्त व्यक्ति (जो इंगित करता है .) "राजा", क्योंकि पुराने इस्राएल में नए राजाओं का अभिषेक किया गया था)। इस वजह से . के कुछ संस्करण बाइबिल एनटी में मसीहा के बजाय मसीह का उपयोग करता है, लेकिन नाम - या शीर्षक वास्तव में - वास्तव में मसीह उनकी मृत्यु के बाद तक, यीशु से जुड़ा नहीं था)।

खैर, मैरी गर्भवती हो गई और गर्भावस्था की पूरी अवधि के दौरान किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। ऐसा होने की कितनी बड़ी संभावना है? - ऐसा होता है - विशेष रूप से बहुत मोटी महिलाओं के लिए - लेकिन संभावनाएं पतली हैं। और जब उसका समय आया, तो वह निकल गई, और यीशु मैदान में उत्पन्न हुआ एक ताड़ के पेड़ के नीचे - बाइबिल की कहानी से काफी अलग। मरियम उदास और डरी हुई थी, लेकिन तब नवजात शिशु यीशु ने उससे बात की और उसे दिलासा दिया।

2. कुरान के अनुसार बच्चा और बच्चा यीशु।

006 3/48: "और अल्लाह उसे (बच्चे यीशु*) - - - सुसमाचार सिखाएगा"। एक बात यह है कि शब्द "सुसमाचार" एकवचन में है - 4 सुसमाचार हैं। में "सुसमाचार" का उपयोग करना असामान्य नहीं है एकवचन, लेकिन ऐसा लगता है कि मुहम्मद नहीं जानते थे कि एक से अधिक थे। **लेकिन असली डरावना यह है कि उस समय सुसमाचार मौजूद नहीं थे - अस्तित्व में नहीं हो सकते थे, क्योंकि वे हैं यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान की कहानी। सबसे पुरानी रचना लगभग २५ साल बाद लिखी गई है उनकी मृत्यु (या थोड़ा पहले हो सकती है, नए विज्ञान के अनुसार - स्रोत: न्यू साइंटिस्ट)। प्रदर्शन मैं एक अकेला भगवान जो यह नहीं जानता था। लेकिन जैसा कि पहले कहा गया था: मुहम्मद नहीं जानते थे बाइबिल अच्छी तरह से। 3/3 भी देखें।

हम 3/48 में जोड़ सकते हैं कि बहुत से मुसलमान आपको बताएंगे कि कुरान 4 . के बारे में बात नहीं कर रहा है

ज्ञात सुसमाचार, लेकिन एक पुराने के बारे में वे दावा करते हैं कि गायब हो गया है। और वे आंशिक रूप से हो सकते हैं
एक बिंदु पर - यह हो सकता है कि एक बार एक और और पुराना सुसमाचार था, हालांकि इतना पुराना नहीं था।

759

पृष्ठ ७६०

कि यीशु इसे न तो एक बच्चे के रूप में पढ़ सकता था, न ही एक वयस्क के रूप में। 3 सुसमाचार इतने समान हैं, कि यह स्पष्ट है कि एक संबंध है, और संभावित स्पष्टीकरणों में से एक यह है कि उन सभी ने लिया एक पुराने सुसमाचार से सामग्री। लेकिन हैरानी की बात यह है कि मुसलमान कभी भी एक दूसरे का जिक्र नहीं करते हैं स्पष्टीकरण: कि दो सबसे कम उम्र के लोगों ने 3 में से सबसे पुराने से सामग्री ली। और जैसे अजीब तरह से इमाम अपनी मण्डली को कभी नहीं बताते कि वास्तव में एक सुसमाचार क्या है। मुसलमानों के लिए हानिकारक बिंदु हैं:

1. एक सुसमाचार यीशु के जीवन, मृत्यु का इतिहास है और पुनरुत्थान, मुख्य बिंदु होने के साथ उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान - के लिए अंतिम प्रमाण किसी अलौकिक चीज से उसका संबंध। पहले भी बहुत सारे सबूत थे बाइबिल और कुरान दोनों के अनुसार - उनके कई चमत्कार। लेकिन उसका पुनरुत्थान के बारे में कोई विवाद या इनकार किया कुछ अलौकिक की भागीदारी असंभव। लेकिन सभी में मुख्य बिंदुओं के रूप में सुसमाचार उसकी परीक्षा है, उसकी मृत्यु है, और उसका पुनरुत्थान, उसके बाद तक कोई भी सुसमाचार मौजूद नहीं हो सकता था उसकी मौत। **और कोई कहानी नहीं जिसमें उनका . शामिल नहीं है परीक्षण, मृत्यु और पुनरुत्थान एक सुसमाचार है (पूंजी जी के साथ), क्योंकि बहुत ही बिंदु जो इसे एक सुसमाचार बनाता है - उसका पुनरुत्थान और इस प्रकार अंतिम प्रमाण और अंतिम अँधेरी ताकतों पर विजय - वहाँ नहीं है।** (नीचे भी देखें)।

   यह ज्ञात है कि मुहम्मद वास्तव में नहीं थे बाइबिल को जानते हैं, और विशेष रूप से एनटी को नहीं, और यह ऐसा लगता है जैसे उसने "सुसमाचार" शब्द का प्रयोग बिना वास्तव में इसका मतलब जानना। साथ ही आधुनिक मुसलमान - कम से कम छोटे वाले शिक्षा - क्या a . के बारे में अस्पष्ट विचार हैं सुसमाचार है, और बस कहता है कि वहाँ होना चाहिए यीशु ने जो पढ़ा, वह बड़ा था, जो इस प्रकार है आप देखते हैं एक असंभव है। (बेशक कुछ फिर सर्व-विजेता तर्क का प्रयास करें कि अल्लाह जानता था और बता सकता था - - - लेकिन फिर हम एक बार फिर इस तथ्य के खिलाफ हैं कि पूर्ण अल्लाह के लिए दिव्यदृष्टि मुफ्त के साथ संयुक्त मनुष्य के लिए इच्छा भी असंभव है, एक सच्चाई है जिसे इस्लामी विद्वान भी मानते हैं, हालांकि अधिकांश अनिच्छा से, और बहुत ही लंगड़ा जोड़ के साथ कि "सब एक समान यह सच होना चाहिए, क्योंकि यह है कुरान में अल्लाह ने बताया "(!!!))

2. हम जानते हैं कि अगर कभी कोई पुराना अस्तित्व में था सुसमाचार, हम यह भी स्वतः जानते हैं यह यीशु की मृत्यु के बाद लिखा गया था (देखें बिंदु A ठीक ऊपर), इसलिए यीशु अध्ययन नहीं कर सकता था

760

पेज ७६१

यह। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक सुसमाचार यीशु की कहानी है'
जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान (जो अधिकांश
मुसलमानों को पता नहीं लगता है), और इस प्रकार
उनकी मृत्यु के बाद तक नहीं लिखा जा सकता है
और पुनरुत्थान - और इस प्रकार हम इसे मामले में जानते हैं
33 ई. के बाद तक नहीं लिखी गई थी।

3. यदि कभी इतना पुराना सुसमाचार होता, कि
इसका मतलब है कि यह समय के और भी करीब था
हुआ, और इस प्रकार 3 का उल्लेख करता है
सुसमाचार और भी अधिक विश्वसनीय हैं जैसा कि वे मामले में करते हैं
अपनी सामग्री को एक बहुत ही लिखित सुसमाचार से लिया
यीशु की मृत्यु के कुछ ही समय बाद, और इस प्रकार एक समय में
जब जो हुआ वो और भी ताज़ा था
लोगों और समाज के दिमाग और
लेखक। लेकिन यीशु के लिए अध्ययन करना अभी भी असंभव है,
जैसा कि नहीं था - नहीं हो सकता - उसके बाद तक मौजूद नहीं था
मौत।

(हम जोड़ सकते हैं कि "सुसमाचार" का अर्थ है "अच्छी खबर" या "खुशखबरी" या "खुशखबरी"। आप मिलते हैं
यह शब्द कुछ बाइबलों और अन्य साहित्यों में इस तरह प्रयोग किया जाता है, लेकिन तब इसे सामान्य रूप से लिखा जाता है
"सुसमाचार" नहीं "सुसमाचार"।) सिमिलरी 5/46 - 5/110 - 57/27 में दावा करता है।

***007 19/24+25: "लेकिन (एक आवाज़) (नवजात शिशु यीशु*) नीचे से रोया (हथेली-
पेड़): 'शोक मत करो! क्योंकि तेरे रब ने तेरे नीचे एक नाला बनाया है; 'और हिलाओ'
अपने आप को ताड़ के पेड़ का तना (आमतौर पर खजूर लगभग 50 सेमी या उससे अधिक चौड़ा होता है और
मजबूत - मानव के लिए हिलाना असंभव है: यह आप पर ताजा पके खजूर को गिरने देगा"। इस
कहानी एक अपोक्रिफ़ल "प्रोटो गॉस्पेल" में अध्याय 20 से "उधार" ली गई है, जिसे कुछ के बाद कहा जाता है
मैथ्यू। मुहम्मद या अल्लाह द्वारा "उधार", लेकिन संभवत: से एक प्रति के रूप में नीचे भेजा गया
स्वर्ग में माँ की किताब। आप चाहें तो आखिरी पर विश्वास करें। अगर कोई मूल कहानियाँ हैं तो बहुत कम हैं
कुरान - ज्यादातर वे विभिन्न स्रोतों से "उधार" लेते हैं, लेकिन अक्सर थोड़ा बदल जाते हैं। में
इस विशेष मामले में कहानी "द चाइल्डबर्थ ऑफ मैरी एंड द सल्वाडोर" में भी मिलती है
बचपन" अगर हम नाम को सही ढंग से याद करते हैं, और यह शायद "The ." के माध्यम से कुरान में प्रवेश किया है
अरब बचपन का सुसमाचार "(स्रोत; इब्न वारक के अलावा। हम इससे अच्छी तरह वाकिफ हैं
मुसलमान इब्न वाराक के बारे में अपशब्दों का प्रयोग करते हैं, लेकिन वह हमारे कुछ गैर-मुस्लिम स्रोतों में से एक है
सिर्फ इसलिए कि हमने अब तक कभी मुसलमानों को किसी पर गलत दस्तावेज करने में सक्षम नहीं देखा
बिंदु)। जैसा कि पहले कहा गया है: मुहम्मद ने ऐसी परियों की कहानियों से कहानियाँ लीं, और फिर उन पर आरोप लगाया
बाईबल को मिथ्या बनाया जा रहा था जब उसने वही बनायी हुई किंवदंतियाँ और कहानियाँ नहीं बताईं।

मैरी घर आई और उसका परिवार नकारात्मक था, कम से कम कहने के लिए (19/27)। बिल्कुल
नवजात यीशु - अधिकतम कुछ घंटे - को अपनी माँ की रक्षा करनी पड़ी:

**008 19/30a: "मैं (बेबी जीसस*) वास्तव में अल्लाह का सेवक हूं, - - -"। 3/51 देखें। वह और
जारी रखा:

**009 19/30b: "(अल्लाह ने*) मुझे रहस्योद्घाटन दिया और मुझे (बच्चा यीशु*) एक नबी बनाया -
- -"। **यहां तक कि इस्लाम (उदाहरण के लिए, तबरी द्वारा उद्धृत विद्वान इकरीमा) भी असंभवता को स्वीकार करता है
कि एक बच्चा एक नबी है,** लेकिन उसे समझाना अस्पष्ट और काल्पनिक है। एक बहुत
स्पष्ट गलती। यह और भी अधिक है क्योंकि इस आश्चर्य का एक भी मौका नहीं है
अगर यह सच था तो एनटी में भूल गए या छोड़े गए।

761

पृष्ठ ७६२

**010 19/30-33: नवजात शिशु जीसस अपने पालने में लगातार बातें कर रहे हैं और चर्चा कर रहे हैं।
इसके अलावा यह एपोक्रिफ़ल चाइल्ड गॉस्पेल से "उधार" लिया गया है - इस मामले में जहाँ तक हम इसके माध्यम से जानते हैं
"द अरब चाइल्ड गॉस्पेल" - जिसे "यीशु मसीह की शैशवावस्था का पहला सुसमाचार" भी कहा जाता है - एक
2. सदी से अपोक्रिफल ग्रंथ। ऐसा एक भी मौका नहीं है जब इस तरह का कोई आश्चर्य हुआ हो
बाइबल से हटा दिया गया है, क्योंकि इससे यीशु की स्थिति काफी मजबूत हो जाती। इस
इससे भी अधिक, क्योंकि बचपन में यीशु के बारे में बहुत सी कहानियाँ नहीं हैं, और यह कहानी होती
अपने जीवन के उस हिस्से को कम खाली कर दिया। एक बार फिर एक परी कथा का उपयोग अल्लाह द्वारा एक सच्ची कहानी की तरह किया जाता है or

मुहम्मद. यहां तक कि "द मेसेज ऑफ कुरान" जैसी किताब भी इसे सच मानकर इसका बचाव करने में सक्षम नहीं है
कहानी, लेकिन यह असंभव को दूर करने के लिए केवल अटकलें और अनुमान प्रस्तुत करता है।

केवल एक और चमत्कार का उल्लेख है - और वास्तव में उनके बचपन के बारे में क्या बताया गया है
कुरान में बाइबिल का उल्लेख नहीं है - (उनकी बात करने और बहस करने के अलावा जब वह न्यायसंगत थे
घंटे पुराना) बचपन से:

*०११ ३/४९: "मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ, जिसमें मैं तुम्हारे लिए उसमें से कुछ बनाता हूँ।
मिट्टी, जैसा कि एक पक्षी की आकृति थी, और उसमें सांस लें, और यह अल्लाह के द्वारा एक पक्षी बन जाता है
छोड़"। इसके अलावा यह आश्चर्य एनटी से कभी नहीं छोड़ा गया था अगर यह सच था - 3/37 देखें। परंतु
वास्तव में यह "परी कथा" चाइल्ड गॉस्पेल (यह एक) में से एक में बनाई गई किंवदंतियों से लिया गया है
थॉमस चाइल्ड गॉस्पेल से आया है - जिसे "द थॉमस गॉस्पेल ऑफ़ द इन्फेंसी ऑफ़" भी कहा जाता है
जीसस क्राइस्ट"- एक अपोक्रिफल (= बना हुआ) २ सदी से एक)। एक भगवान ने बच्चे को जाना था
गॉस्पेल बनाए गए थे - मुहम्मद स्पष्ट रूप से नहीं। इसके अलावा: यह दुनिया को क्या बताता है कि
कुरान अल्लाह के लिए एक अप्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में एक गढ़ी हुई कहानी का उपयोग करता है? और यह के बारे में क्या बताता है
मुहम्मद के कई कथनों की विश्वसनीयता जब बाइबिल और के बीच भिन्नता है
कुरान का कारण यह है कि बाइबिल को गलत ठहराया गया है, जब यह स्पष्ट है कि कारण यह है कि
कुरान परियों की कहानियों से उद्धृत कर रहा है?

एक बहुत स्पष्ट रूप से सच्ची कहानी नहीं - एक स्पष्ट गलती। हम एक मुसलमान से कभी नहीं मिले, यह समझाते हुए कि क्यों
कुरान अक्सर अपनी कहानियों को प्रसिद्ध से लेता है, लेकिन किंवदंतियों और परियों की कहानियों को बनाता है, और
फिर बाइबिल से अंतर को स्पष्ट करते हुए जोर देकर कहा कि बाइबिल नकली है।

जीसस के बचपन के बारे में न तो बाइबल में और न ही कुरान में बहुत कुछ कहा गया है। में
बाइबिल में उनका बचपन ज्यादातर सामान्य बचपन लगता है, लेकिन कुरान में वे थे
सुसमाचार का अध्ययन करके भविष्यवक्ता बनने या बनने के लिए जल्दी तैयार किया गया:

३. कुरान के अनुसार पैगंबर यीशु।

०१२ २/१३६: "हम (अल्लाह*) उनमें से किसी एक (पैगंबर*) के बीच कोई फर्क नहीं करते - - -
". कम से कम यहोवा एक भेद करता है: वास्तविक और झूठे भविष्यद्वक्ताओं के बीच। NS
एक वास्तविक भविष्यवक्ता होने की कसौटी यह है कि आप भविष्यवाणियां करते हैं - और भविष्यवाणियां आती हैं
सच। यदि नहीं, तो वह एक झूठा भविष्यद्वक्ता है (५. मूसा १८/२१)। मुहम्मद ने अपने पूरे जीवन में एक नहीं बनाया
वास्तविक भविष्यवाणी। (कुछ कहावतें थीं जिन्हें याद किया गया क्योंकि वे हुईं
सच हो जाते हैं - ऐसे मामलों में अन्य को सामान्य की तरह भुला दिया जाता है - लेकिन कोई वास्तविक भविष्यवाणी नहीं होती है। वह
कभी नहीं - कुरान में कोई जगह नहीं है और शायद ही सभी हदीसों में - यहां तक कि दावा किया गया है कि
भविष्यवाणी करने का उपहार)। क्या वह तब वास्तव में एक नबी था - या क्या उसने केवल "उधार" लिया था?
प्रभावशाली शीर्षक? वह बस एक नबी नहीं था। किसी के लिए या कुछ के लिए एक दूत
शायद - या एक प्रेरित, लेकिन कोई नबी नहीं। लेकिन अगर कुरान या बाइबिल या दोनों बोलते हैं
इस बारे में सच्चाई, यीशु स्पष्ट रूप से थे। कुरान, हालांकि, यीशु को उतना ही कम करता है
संभव है, और केवल मुहम्मद के शीर्षक के अधिकार के प्रश्न को छोड़ देता है - **पुस्तक अक्सर
बिना किसी सबूत या दस्तावेज के किसी तथ्य के लिए चीजों का इलाज करता है।**

अंत में यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान है। यदि वास्तव में ऐसा हुआ, तो यीशु स्पष्ट रूप से थे
मुहम्मद से कम से कम एक डिवीजन ऊपर। तो कुरान के मुताबिक ऐसा नहीं हुआ।

०१३ ३/५९: "अल्लाह के सामने यीशु की समानता आदम की तरह है; उसने उसे धूल से पैदा किया,
और फिर उससे कहा: 'हो' और वह था।" कुरान के अनुसार यीशु सिर्फ एक इंसान है। यह है
मुहम्मद के लिए दो कारणों से आवश्यक: एकेश्वरवाद की उनकी समझ, और उनकी मांग
या दैवीय प्रतिनिधियों में सबसे महान होने की लालसा - यदि यीशु ईश्वर का पुत्र है, तो वह
स्पष्ट रूप से मुहम्मद से कुछ अधिक और महान है। हम जोड़ सकते हैं कि बाइबिल से अधिक
20 बार कहता है कि भगवान एक है (f। पूर्व। टोरा में (f। पूर्व। Deut। 6/4), भजन (f। पूर्व। 86/10),
पैगंबर (f। पूर्व। 44/6-8) और सुसमाचार में)।

०१४ ४/१७१: "मरियम के पुत्र ईसा मसीह, अल्लाह के दूत से ज्यादा कुछ नहीं थे।" देखें 3/59
इस अध्याय में ठीक ऊपर।

०१५ ४/१७२: "मसीह अल्लाह की सेवा और पूजा न करने का तिरस्कार करता है।" 3/51 में में फंसा है
स्पष्टीकरण क्यों यह गलत है। एकमात्र संभावित अपवाद यह है कि अगर यहोवा और अल्लाह वास्तव में हैं

एक ... लेकिन केवल इस्लाम ही यह कहता है, और यहोवा की शिक्षाएँ (विशेषकर NT में) हैं
अनिवार्य बिंदुओं पर अल्लाह की शिक्षाओं से इतना भिन्न कि वे एक ही ईश्वर नहीं हो सकते
जब तक कि वह भगवान शिज़ोफ्रेनिक न हो। इस्लाम को मामले में इसे साबित करना होगा।

और निश्चित रूप से वह कुरान के अनुसार शिष्यों के लिए अच्छे मुसलमान चाहते थे।

00a 5/46: "हमने (अल्लाह *) ने मरियम के पुत्र यीशु को कानून की पुष्टि करते हुए भेजा (मूसा * का)"।
बाइबिल के अनुसार जीसस को पुराने नियमों को बदलने के लिए नहीं भेजा गया था - यह उनका मुख्य नहीं था प्रयोजन। वही जो उसने किया - कुछ को बदला और कुछ को रद्द भी किया उन्हें, विशेष रूप से यहूदी धार्मिक विचारकों द्वारा समय के माध्यम से किए गए सभी परिवर्धन और नेताओं। यह कमोबेश उसका अंतिम ईस्टर था, जब नई वाचा थी पेश किया। (इस वाचा का उल्लेख इस्लाम द्वारा कभी नहीं किया गया है, और अधिकांश मुसलमान बिना धार्मिक के हैं शिक्षा ने इसके बारे में सुना तक नहीं है। यह भले ही यह मुख्य और सबसे में से एक है ईसाई धर्म में केंद्रीय तथ्य। 61/6 में इसी तरह का दावा।

जब मुहम्मद के बारे में भविष्यवाणी करने की बात आती है, जो कुरान में वर्णित है, लेकिन यह ऐसा लगता है कि मुहम्मद की तुलना में इस्लाम और मुसलमानों के लिए बस यही था और अधिक आवश्यक है खुद, क्योंकि वह अक्सर उस विषय पर नहीं लौटता था। इस्लाम और मुसलमानों के लिए यह एक जरूरी है प्रश्न, हालाँकि, क्योंकि इस्लाम के पास न तो अल्लाह के लिए एक भी वैध प्रमाण है और न ही एक ईश्वर से मुहम्मद का संबंध - एक वास्तविक भविष्यवाणी यदि प्रमाण नहीं होती, तो कम से कम a अच्छा संकेत। इसके अलावा कुरान बताता है कि मुहम्मद को ओटी और एनटी दोनों में ढूंढना आसान है, और फिर इस्लाम को उसे ढूंढना है "आओ नर्क या उच्च जल" - यदि नहीं तो कुरान गलत है और फिर धर्म के साथ कुछ गलत है। यह दावा कितना आवश्यक है इसका एक संकेत मुस्लिम पादरी, हदीसों में यह है - f. भूतपूर्व। अल-बुखारी - आप के बारे में "उद्धरण" पाते हैं मुहम्मद को संभवतः बाइबिल से लिया गया है, संभवतः बाइबिल से उद्धृत किया गया है मुहम्मद के समय, जो बाइबिल से नहीं हैं, लेकिन टिप्पणीकार एक कानाफूसी नहीं करते हैं उसके बारे में शब्द गलत है, केवल उन पाठकों को बताना जो बाइबल नहीं जानते (= f. उदा. 99.9% .) मुसलमानों) का मानना है कि यह एक "सच्चाई" और सही उद्धरण है)।

००बी ५/७५: "मरियम का पुत्र मसीह, एक दूत से अधिक कुछ नहीं था; - - -"। बाइबल कहती है कुछ और - कि यीशु ने यहोवा को अपना पिता कहा, और हमेशा केवल अपने आध्यात्मिक से दूर पिता - और जैसा कि बाइबिल यीशु की मृत्यु के बाद अपेक्षाकृत कम समय में लिखा गया है, और इस बिंदु पर हजारों गवाहों का आधार जो बता सकते हैं कि यीशु ने क्या कहा था, और अगर कथाकार का विरोध करें जीसस को गलत तरीके से उद्धृत किया, यह संभावना है कि कुरान की तुलना में बाइबिल यहां अधिक विश्वसनीय है। NS

763

पेज ७६४

कुरान ६०० साल बाद लिखा गया है, और बिना किसी सबूत के केवल निराधार बयान देता है या यहां तक कि इंडिकिया भी बयानों का समर्थन कर रही है। यह और भी अधिक के लिए एकमात्र इस्लामी स्रोत के रूप में बयान, एक ऐसा व्यक्ति था जिसने हर समय का सबसे महान भविष्यवक्ता बनने की मांग की, कुछ ऐसा जो उसने किया था निश्चित रूप से ऐसा नहीं हो सकता था यदि यीशु यहोवा का एक रिश्तेदार था, और बहुत विवाद का व्यक्ति था नैतिकता।

साथ ही स्वयं यीशु ने अक्सर यहोवा को अपना पिता कहा - और यीशु उसके अनुसार विश्वसनीय भी है कुरान के लिए (लेकिन जैसा कि कहा गया है कि कुरान/मोहम्मद यह स्वीकार नहीं कर सकते कि यीशु का पुत्र हो सकता है) यहोवा, क्योंकि तब मुहम्मद "भविष्यद्वक्ताओं" में सबसे महान नहीं हैं - और की रक्षा मुहम्मद भी आवश्यक है, क्योंकि वह वास्तव में एक संदिग्ध और अनैतिक चरित्र था)। एक जैसा 3/59 - 4/171 - 19/34 में दावे।

०१६ ५/१११: "(चेले*) ने कहा: "हमें विश्वास है, और क्या आप गवाही देते हैं कि हम झुकते हैं मुसलमानों के रूप में अल्लाह ”। मेड अप स्टोरी - स्पष्टीकरण के लिए 3/51 देखें। 3/52 -61/14 में इसी तरह के दावे।

परन्तु चेलों को भी प्रमाण चाहिए थे (उन सभी चमत्कारों के अतिरिक्त जो यीशु ने के अनुसार किए थे) बाइबिल और कुरान दोनों):

०१७ ५/११४: "हमें (यीशु और चेले*) स्वर्ग से एक टेबल सेट (विंड के साथ), - - - भेजें। एक गढ़ी हुई कहानी - ऐसा कोई चमत्कार नहीं है जो स्पष्ट रूप से यीशु के संबंध को दर्शाता हो यहोवा के लिए, बाइबल से हटा दिया जाएगा। एक भी मौका नहीं। भले ही मुहम्मद ने सही था और ईसाइयों ने NT को गलत ठहराया था, इस तरह की कहानियाँ उन्होंने जोड़ी थीं, नहीं छोड़ा गया कुछ मुसलमान कहते हैं कि यह "ईश्वर की प्रार्थना" के लिए थोड़ा सा उल्लेख कर सकता है - हमें अपना दैनिक दें रोटी - बाइबिल में। बहुत अधिक संभावना है कि यह पिछले ईस्टर डिनर का एक विपरीत संस्करण है।

कुरान एक उपदेशक के रूप में या उनकी शिक्षाओं के बारे में यीशु के बारे में लगभग कुछ भी नहीं बताता है। मुख्य

मुहम्मद के लिए बिंदु यह थे कि वह एक अच्छा मुसलमान था और भले ही एक महान पैगंबर - और एक वास्तविक नबी - वह वास्तव में महानतम से कोई मेल नहीं था: मुहम्मद।

०१८ ५/११६ए: "क्या तुमने (यीशु*) लोगों से कहा, 'मुझे और मेरी माँ को देवताओं के रूप में पूजा करो अल्लाह का अपमान'?" यीशु अल्लाह के साथ शामिल नहीं था - स्पष्टीकरण के लिए 3/51 देखें। एक के लिए दैवीय यीशु, जिसे बाइबल में स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है, लेकिन कई जगहों पर यह समझा जाता है कि वह था (f. उदा। यदि यहोवा वास्तव में किसी तरह से उसका पिता था)। लेकिन जब मरियम की बात आती है तो इस्लाम सही - संत बाइबिल की शिक्षा का हिस्सा नहीं हैं (दूसरी ओर कुछ मुसलमान भी संत हैं, विशेष रूप से शिया)। और फिर भी कुरान यहाँ बहुत गलत है: मरियम ट्रिनिटी का हिस्सा कभी नहीं था। नीचे 5/116b देखें।

०१९ ५/११६बी: मोहम्मद का मानना था कि ट्रिनिटी में ईश्वर / यहोवा, यीशु और मैरी शामिल हैं। गलत। मुहम्मद और कुरान दोनों ही चरम रूप से गलत थे, जब वे इस प्रकार माना जाता है कि मैरी ट्रिनिटी का हिस्सा थीं। (इसमें परमेश्वर/यहोवा, यीशु और पवित्र का (?) शामिल है आत्मा - जिसे "पवित्र आत्मा", "परमेश्वर की आत्मा", "सत्य की आत्मा" या केवल "द" भी कहा जाता है आत्मा" - इसके कई नाम थे, बिल्कुल अल्लाह की तरह)। मुहम्मद ने पवित्र आत्मा को कभी नहीं समझा, भले ही उसने कुरान में इसे कई बार इस्तेमाल किया हो - और कुछ मुसलमान पवित्र आत्मा का उल्लेख करते हैं कुरान में आर्च परी गेब्रियल (!) के दूसरे नाम के रूप में। 5/117 भी देखें। इसी तरह का दावा 61/6

०२० ६/१०१: "- - - जब उसकी कोई पत्नी नहीं थी तो उसे (अल्लाह*) एक बेटा कैसे हो सकता था?"

1. कुरान ने खुद एक ही जवाब दिया है- भगवान ने कहा हो सकता है "बा एक बेटा। और यीशु था।"

764

पेज ७६५

2. या - अगर अल्लाह यहोवा का दूसरा नाम है: इन बहुत पुराना हिब्रू धर्म था a महिला देवता - यहोवा की अमत (स्रोत नई वैज्ञानिक और अन्य)। बहुत मर्दाना में संस्कृति अमात को भुला दिया गया, लेकिन यीशु हो सकता है कि "सामान्य तरीका" बनाया गया हो। (परंतु भगवान को ऐसा ही क्यों करना चाहिए मनुष्य के रूप में?)

२२ ६/१०२: "कोई भगवान नहीं है लेकिन वह (अल्लाह / यहोवा *) - - -।" मुहम्मद यहाँ एक बार और देखें ट्रिनिटी हठधर्मिता के लिए। उन्होंने कभी नहीं समझा कि ईसाइयों के पास सिर्फ एक ईश्वर है, भले ही यह भगवान (निगरानी करने के लिए) का एक सहायक है - यीशु - और एक नौकर या दूत "लड़का" - पवित्र आत्मा। हम जोड़ सकते हैं कि बाइबल 20 से अधिक बार कहती है कि ईश्वर एक है (उदाहरण के लिए टोराह में (एफ। पूर्व। Deut। 6/4), भजन (एफ। पूर्व 86/10), पैगंबर (एफ। पूर्व। 44/6-8) और सुसमाचार में)।

00c 9/30: "यहूदी उस्यर (पैगंबर एज्रा*) को ईश्वर का पुत्र कहते हैं, और ईसाई कहते हैं ईश्वर के पुत्र क्राइस्ट - - - (इसमें) वे वही करते हैं जो पुराने समय के अविश्वासी कहते थे। उन पर अल्लाह का श्राप हो:------- कैसे वे सत्य से दूर हो जाते हैं!"। यह है "सबूत" के स्तर के लिए कि यीशु कुरान में यहोवा के पुत्र नहीं हैं। यह भी देखें ३/५९, ६/१०१, और इस अध्याय में 72/3। हम भी पुराने तथ्यों की ओर लौटते हैं: यीशु ने स्वयं परमेश्वर को "पिता" कहा। इसके बहुत सारे गवाह थे। इसे कुछ साल बाद लिखा गया था। कुरान इसका जोरदार खंडन करते हैं। कुरान में न तो गवाह हैं और न ही कोई अन्य प्रमाण। कुरान था ६०० से अधिक वर्षों के बाद लिखा गया है और सभी समान केवल दावे और बयान प्रदान करते हैं। यदि यीशु परमेश्वर का पुत्र नहीं है तो मुहम्मद को बहुत कुछ हासिल करना था - यदि यीशु परमेश्वर से निकटता से संबंधित है, मुहम्मद स्पष्ट रूप से पैगंबरों में सबसे महान नहीं हैं, और हालांकि मुसलमान सही हो सकते हैं कि मुहम्मद व्यक्तिगत रूप से पैसे के बारे में बहुत ज्यादा परवाह नहीं करते थे, इसमें कोई शक नहीं कि उन्हें पसंद था शक्ति और उसने अनुयायियों को "खरीदने" के लिए बड़ी रकम खर्च की (सत्ता के लिए उसकी लालसा देखना आसान है कुरान और हदीस के ग्रंथों से)। उद्धरण का अंत बल्कि सहानुभूतिपूर्ण है (?!)। 2/116 - 4/171 - 10/68 - 17/111 - 18/4 - 18/5 -19/88-89 - 23/91 - 25/2 में समान कथन।

इसका कारण तीन गुना हो सकता है:

1. मुहम्मद का जुनून तो वहीं है एक भगवान था।
2. तथ्य यह है कि यदि यीशु किसी तरह से पुत्र था

भविष्यद्वक्ताओं में सबसे महान नहीं थे। मुहम्मद बहुत स्पष्ट रूप से
3. लोगों को सुनना मुश्किल होगा
उसे और बाइबल के लिए नहीं - मिथ्या के बारे में किस्से
बाइबिल या नहीं।

यदि मुहम्मद आंशिक रूप से अपने धर्म में विश्वास करते थे, तो बिंदु 1 मुख्य हो सकता था। अगर वह नहीं किया - और बहुत स्पष्ट रूप से वह जानता था कि इसके कुछ भाग सत्य नहीं थे (उदाहरण के लिए स्पष्टीकरण कि वह क्यों था? चमत्कार नहीं कर सका) - भाग २ और ३ मुख्य थे (उनकी शक्ति के मंच को ध्यान में रखते हुए)।

उसके कारण यह बहुत आवश्यक था कि यीशु मुहम्मद की तरह महान न हो।

लेकिन यहाँ एक और बात है: इस्लाम आज भी स्वीकार करता है कि यहूदियों को इस रूप में कभी नहीं माना गया एज्रा यहोवा के पुत्र होने के लिए, लेकिन वे तर्क देते हैं कि कुरान सभी यहूदियों के समान ही सही है उस समय अरब ने कहा था कि वह ऐसा है। अगर यह दावा सही है तो यह साबित करता है कि कुरान का निर्माता

765

पेज ७६६

क्या मुहम्मद के समय अरब में कोई रह रहा था, लेकिन जिसे इसके बारे में बहुत कम जानकारी थी? बाकी दुनिया और अन्य समय के बारे में। कोई भी भगवान जानता था कि यह दावा गलत था - भले ही मुहम्मद के समय अरब में स्थानीय लोग शायद ऐसा मानते हों या कम से कम ऐसा कहते हों। फिर कुरान किसने बनाया?

०२१ १८/४: "आगे वह (अल्लाह *) उन (भी) को चेतावनी दे सकता है जो कहते हैं कि 'अल्लाह ने एक बेटा पैदा किया है'"। इस अध्याय में ३/५९, ६/१०१, और ७२/३ देखें।

०२२ १९/८८: "वे (ईसाई*) कहते हैं: '(अल्लाह) परम कृपालु ने एक पुत्र को जन्म दिया है!" 3/59 देखें, इस अध्याय में 6/101, और 72/3।

०२३ २५/२: "---उसके (अल्लाह) ने कोई बेटा पैदा नहीं किया, और न ही उसकी हुकूमत में उसका कोई साझीदार है---।" इस अध्याय में ३/५९, ६/१०१, और ७२/३ देखें।

**00d 43/59: "वह (यीशु*) एक नौकर से ज्यादा कुछ नहीं था - - -"। संभव। लेकिन अभी भी है मजेदार तथ्य यह है कि हजारों लोगों ने उन्हें यहोवा को "पिता" कहते सुना। जबकि केवल एक आदमी - और एक आदमी बहुत ही संदिग्ध चरित्र और नैतिकता के, विपरीत कहते हैं - और यहां तक कि एक आदमी जो था यीशु के परमेश्वर के पुत्र न होने से बहुत कुछ हासिल करना है। और वो भी ६०० साल बाद भी बिना किसी दस्तावेज के।

- - - इस तरह की बातें किसने कहा:

**024 43/63a: "(यीशु ने कहा*): इसलिए अल्लाह से डरो - - -"। जैसा कि पहले कहा गया था कि यदि यीशु एक होता देश के बहुत दूर से एक ज्ञात बहुदेववादी भगवान के लिए मिशनरी, उन्होंने एक बात के लिए किया था उस समय में बहुत कम अनुयायी थे जो पूरी तरह से एकेश्वरवादी इज़राइल थे, और दूसरी बात के लिए उन्होंने पादरियों द्वारा बहुत पहले ही मार डाला गया था - खासकर यदि वह सभी समान रूप से एक बड़ा अनुयायी प्राप्त करता था जैसे उसके पास वास्तव में था। यह एक ऐसे व्यक्ति द्वारा बताई गई कहानी है जो धार्मिक और राजनीतिक जानता था वर्ष 30 ई. के आसपास इसराइल में स्थिति बुरी तरह से।

०२५ ४३/६३बी: "(यीशु ने कहा*): अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो - - -।" यह वास्तव में मुहम्मद है नारा - उसे सत्ता चाहिए थी, कुरआन से इतना आसानी से देखा जा सकता है, और धर्म/अल्लाह था उनकी शक्ति का मंच। और कुरान में कई जगह यह स्पष्ट हो जाता है कि मुहम्मद चाहते हैं सभी को विश्वास है कि वह एक "सामान्य" (लेकिन शीर्ष) भविष्यवक्ता था (वास्तव में वह कोई वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं था, जैसा कि उसके पास भविष्यवाणी करने का उपहार नहीं था - मुहम्मद के बारे में अध्याय देखें), और फिर यह अच्छा था अगर यीशु ने मुहम्मद जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया और दिखाया कि यह एक सामान्य तरीका था बात करने के लिए भविष्यवक्ताओं। लेकिन वास्तव में एक - और कई में से एक - के बीच मूलभूत अंतर यीशु और मुहम्मद (और उस मामले के लिए f. पूर्व बुद्ध और मुहम्मद के बीच), वह था **यीशु को इस पृथ्वी पर सत्ता में बिल्कुल दिलचस्पी नहीं थी। नतीजतन यह नारा है कि मुहम्मद अक्सर अपनी शक्ति को सुरक्षित रखने के लिए प्रयोग करते थे, उनके लिए अर्थहीन होता यीशु।** (कुरान इस तथ्य का विरोध नहीं करता है: कि यीशु ने उपदेश दिया, लेकिन उसने शक्ति की तलाश नहीं की धरती पर।)

साथ ही नीचे दिए गए पद को यीशु को किसी चीज़ से कम करने की रणनीति के हिस्से के रूप में लिया जा सकता है कुछ सामान्य के लिए विशेष - कम से कम एक साधारण नबी - के लिए इसे आसान बनाने के लिए मुहम्मद का नंबर एक होना (एक और स्पष्ट उदाहरण: मुहम्मद की दावा की गई यात्रा के दौरान)

स्वर्ग में, यीशु भविष्यद्वक्ताओं के स्वर्गों में सबसे निचले स्थान पर रहा - स्वर्ग संख्या 2. जबकि
बाइबिल या कुरान के अन्य ज्ञात पैगंबर ईश्वर के ऊपर और करीब रहते थे, और
मुहम्मद को ७ में स्थान दिया जाना था। स्वर्ग, देवता के सबसे करीब):

०२६ ४३/६४: "(यीशु ने कहा): अल्लाह के लिए, वह मेरा भगवान और तुम्हारा भगवान है - - -"। 43/63 देखें। हम कर सकते हैं
जोड़ें कि नए धर्मों या संप्रदायों की शुरुआत करने वाले अक्सर जाने-माने व्यक्तियों को "हाई-जैक" करने का प्रयास करते हैं या
अपनी शिक्षाओं में इसका उपयोग करने के लिए परिस्थितियाँ। ऐसा मामला लग सकता है।

00e 43/81: "अगर (अल्लाह) सबसे दयालु का एक बेटा होता, तो मैं (मुहम्मद) सबसे पहले होता
पूजा"। कुछ सबूत !! परन्तु उसके लिए: यीशु अभी भी यहोवा को पिता कह रहा है। और कोई भी
इतिहास के तटस्थ प्रोफेसर कहेंगे कि सभी सामान्य नियमों के अनुसार, बाइबल होनी चाहिए
सही इतिहास के स्रोत के रूप में कुरान की तुलना में अधिक विश्वसनीय: यीशु के समय के बहुत करीब,
अच्छे स्रोतों के बिना हजारों गवाह, कई कथाकार, बनाम एक एकल कथावाचक और
६०० साल बाद - और यहां तक कि एक संदिग्ध चरित्र का आदमी और यीशु को कम करने के लिए मजबूत मकसद के साथ
खुद सबसे महान पैगंबर बनें - और एक व्यक्ति स्पष्ट रूप से सत्ता की लालसा रखता है (बस कुरान पढ़ें
और हदीस - यह देखना स्पष्ट है।) एक आदमी जिसे निश्चित रूप से एक विश्वसनीय के रूप में स्वीकार नहीं किया गया था
विश्वसनीय न्यायिक प्रणाली वाले किसी भी देश में गवाह। (**असली और ऐतिहासिक मुहम्मद
चमकदार अर्ध-संत इस्लाम और मुसलमानों के दावों से कुछ अलग था - a
दावा इसलिए किया गया क्योंकि सारा इस्लाम इसी पर बना है, बहुत भरोसेमंद आदमी नहीं
शब्द**)।

***०२७ ६१/६ए: "- - - (यीशु ने कहा*) मैं अल्लाह का रसूल हूं - - -"। **अगर यीशु ने कहा था
बहुत दूर के विदेशी के जाने-माने बहुदेववादी भगवान के बारे में कुछ इस तरह
देश, एक बात के लिए उनके बहुत से अनुयायी नहीं थे, और दूसरे के लिए: पादरी के पास था
एक बार उसके पास उसे मारने का बहाना था - और बहुत पहले उन्होंने वास्तव में किया था।** यह श्लोक है
30 के आसपास इज़राइल में धार्मिक और राजनीतिक वास्तविकताओं को नहीं जानने वाले किसी व्यक्ति द्वारा रचित
ई. 4/157 -5/72 - 5/117 में इसी तरह के दावे।

वही जीसस - कुरान के अनुसार - अल्लाह के बंदे थे।

***०२८ ६१/६बी: "- - - (यीशु ने कहा: मैं हूँ*) बाद में आने के लिए एक दूत की खुशखबरी दे रहा है
मैं, जिसका नाम अहमद होगा (मुहम्मद* नाम का दूसरा रूप) - - -"। ये है
काफी मजेदार कविता, जैसा कि आप मुसलमानों से मिलते हैं जो जोर देकर कहते हैं कि यह बाइबिल से है। लेकिन वहाँ नहीं है
दूर से बाइबल में ऐसा कुछ भी, और न ही कुछ 13oo प्रासंगिक शास्त्रों में या
६१० ईस्वी से भी पुराने समय में पाए गए टुकड़ों में - सुसमाचारों से लगभग ३०० शामिल हैं।
यह केवल कुरान में पाया जाता है। **और अगर इस्लाम को कभी सबूत का एक माइक्रोमीटर मिल गया है
इसके लिए बाइबिल में मुहम्मद का उल्लेख है, उन्होंने इसके बारे में बहुत चुप रखा है - बहुत कुछ
दावों का, लेकिन 1400 वर्षों में एक भी प्रमाण नहीं।**

और यह याद रखने योग्य है कि नए संप्रदायों या धर्मों के निर्माताओं के लिए यह काफी आम है
खुद को एक मातृ धर्म से जोड़ लें और उसे झुका दें - या यहां तक कि हाईजैक (इसके कुछ हिस्से)। NS
Amaddijja-मुसलमानों के संस्थापक वास्तव में नवीनतम उदाहरणों में से एक हैं, और मॉर्मन बताते हैं
पृथ्वी पर अपने अंतिम दिनों के दौरान यीशु ने अमेरिका का दौरा किया। ऐसी बातें जड़ें, विश्वास और देती हैं
एक आंदोलन के लिए वजन।

यीशु ने पवित्र आत्मा को बताया (जैसा कि कहा गया है, जिसे पवित्र आत्मा भी कहा जाता है, परमेश्वर की आत्मा, की आत्मा)
सत्य, या केवल आत्मा - अल्लाह की तरह और मुहम्मद की तरह इसके एक से अधिक नाम हैं)
कुछ दिनों में आओ - जो उसने किया। और उन्होंने कहा कि उन्हें खुद एक बार "टू" लौटना चाहिए
जीवित और मृत का न्याय करो"। लेकिन किसी और के बारे में एक भी शब्द नहीं - और न ही उल्लेख करने के लिए
एक विदेशी नाम के साथ यहूदी सवाल करेंगे - जो 600 साल बाद आना चाहिए। एक
एक और बात जो इस दावे को असत्य साबित करती है, वह है जिस तरह से पहले ईसाइयों ने अपने जीवन को व्यवस्थित किया
जबकि वे यीशु की शीघ्र वापसी की प्रतीक्षा कर रहे थे - यह बहुत स्पष्ट है कि उन्होंने किसी की अपेक्षा नहीं की थी
दूर के भविष्य में पैगंबर।

हम एक जगह के बारे में जानते हैं जहां मुहम्मद का उल्लेख किया गया है: बरनबास इंजील में - एक मोस्ट अपोक्रिफ़ल पुस्तक - हमारे एक स्रोत के अनुसार इसे ख़लीफ़ा के दरबार में भी लिखा जा सकता है बगदाद में (बहुत अजीब नहीं है अगर यह मुहम्मद का उल्लेख करता है)। आपको सबूत बनाने होंगे केवल अगर आपके पास कोई वास्तविक नहीं है। मुसलमान कभी-कभी आपको बताते हैं कि यह "सुसमाचार" एक वास्तविक है। लेकिन मानक स्पष्टीकरण मुसलमान अनुसरण करते हैं - बिना प्रमाण के: बाइबिल को गलत ठहराया गया है और नाम मुहम्मद को गलत षडयंत्रों से निकाला गया - उस क्षेत्र के लोगों में देखने की तीव्र प्रवृत्ति होती है साजिश के सिद्धांतों के लिए और उनमें विश्वास करते हैं (हमारे पास एक निजी सिद्धांत है कि इसका कारण यह है कि वे उनके इतिहास में कभी भी अपेक्षाकृत विश्वसनीय जानकारी के लिए उपयोग नहीं किया गया है)। लेकिन उस मामले में:

1. पहले ईसाइयों का जीवन रहा था पूरी तरह से अलग - और उनके समय का पैमाना था पूरी तरह से अलग थे अगर उनमें से कोई था एक और भविष्यवक्ता के बारे में सुना, जिसकी अपेक्षा की जा सकती है यीशु की वापसी से पहले "जीवितों का न्याय करने के लिए" और मृत "। (वे वापसी जानेंगे यीशु की तुलना में अधिक समय लगेगा वे अब विश्वास करते थे, "भविष्यद्वक्ता" को समय देने के लिए काम करने के लिए)।
2. एनटी की सामग्री अलग थी - कम से कम पत्र अलग नहीं थे। यह बस एक परी कथा है जो मजबूत करने के लिए बनाई गई है मुहम्मद का पैगंबर होने का दावा - जैसे कुछ अन्य स्व-घोषित भविष्यद्वक्ता। (बल्कि विडंबना, क्योंकि उसके पास होने का उपहार नहीं था भविष्यवाणी करने में सक्षम - उसने भी नहीं किया दावा करें कि उसके पास यह था - वह कोई वास्तविक नबी नहीं था। मैसेंजर शायद किसी के लिए या कुछ के लिए शायद, लेकिन असली नबी नहीं)।
3. मुसलमान केवल एक पर अपने दावे का समर्थन करते हैं बाइबिल में प्रयुक्त ग्रीक शब्द: "पैराकलेटोस" जिसका अर्थ है "सहायक" - जाने से पहले यीशु पृथ्वी, अपने शिष्यों को एक सहायक भेजने का वादा किया - पवित्र आत्मा (जो कुछ दिनों में आया) बाद में - व्हिटसन में - बाइबिल के अनुसार (a कहानी जिसे कुरान में नकारा नहीं गया है))।
    1. इस्लाम का दावा है कि "पैराक्लेटोस" एक है एक और ग्रीक शब्द के लिए गलत वर्तनी "पेरिक्लीटोस", जिसका अर्थ है "अत्यधिक" की सराहना की"। अरामी में "अत्यधिक" स्तुति" का अर्थ है "महामना" जो उस शब्द के दूसरे भाग के रूप में एक क्रिया "हमीदा" (= स्तुति करने के लिए) और as . है एक संज्ञा "हम्द" (कानून या स्तुति)। अगर तुम फिर अरब के नाम जारी रखें मुहम्मद और अहमद (दूसरा) मुहम्मद नाम का संस्करण) दोनों "हमीदा" या "हम्द" से निकला है इस्लाम के अनुसार। जो इस्लाम के लिए और सभी मुसलमान इसके लिए एक मजबूत सबूत हैं कि "पैराकलेटोस" वास्तव में है

गलत वर्तनी और इसका अर्थ है "मुहम्मद" जॉन के बाद सुसमाचार में (f. पूर्व जॉन 14/16)। करने के लिए एक बहुत ही ठोस सबूत नहीं है

इसे कम से कम कहें - और इसके अतिरिक्त:

2. शब्द "पेरिक्लीटोस" कि इस्लाम
   दावों की वर्तनी गलत है - केवल
   संभावना है कि उन्हें जवाब मिलना होगा
   वे चाहते हैं और सख्त जरूरत है (वे
   इसकी सख्त जरूरत है, क्योंकि कुरान
   स्पष्ट रूप से बताता है कि मुहम्मद
   एनटी में भी भविष्यवाणी की - - - और वह है
   वहाँ नहीं - वहाँ एक नहीं है
   का एकल स्पष्ट उल्लेख
   मुहम्मद इन की तरह कोई
   बाइबिल, एक तथ्य इस्लाम साबित करता है
   हर दिन यह न बताकर कि कहां मिलें
   it) - बाइबिल में बिल्कुल भी मौजूद नहीं है,
   एनटी में उल्लेख नहीं है। अरे नहीं
   एक बार इस्तेमाल किया।
3. शब्द "पेरिक्लीटोस" भी नहीं है
   सभी में एक बार मिला कुछ
   13oo प्रासंगिक पांडुलिपियां और
   टुकड़े विज्ञान पहले से जानता है
   610 ई. न तो एक ही जगह या
   समय, न ही अनेकों में से एक में
   पांडुलिपियां
4. बदतर: यह किसी में भी नहीं पाया जाता है
   कुछ ३०० प्रतियाँ या अंश
   610 ईस्वी से पुराने सुसमाचार।
5. शब्द "पेरिक्लीटोस" बस कभी नहीं
   पुराने शास्त्रों में इस्तेमाल किया गया था कि
   बाइबिल बन गया। वह शब्द है
   हर जगह इस्तेमाल किया जाने वाला "पैराक्लेटोस" है -
   "सहायक" (और एक सहायक वह था जो
   शिष्यों की आवश्यकता)। यह प्रत्येक के लिए जाता है
   और हर ज्ञात प्रति।
6. शब्द "पेरिक्लीटोस" भी कभी नहीं है
   से उद्धरण में उल्लेख किया गया है
   बाइबल एक दूसरे में कुछ ३०ooo पाता है
   पुरानी पांडुलिपियां और टुकड़े।
7. इसके अलावा: यह कैसे संभव हो सकता है
   झूठा - जैसा कि इस्लाम दावा करता है - वही
   सैकड़ों में उसी तरह शब्द और
   हजारों पांडुलिपियां - और कैसे
   में प्रत्येक "periklytos" को खोजने के लिए
   प्रत्येक और कई अलग-अलग
   पांडुलिपियां - उन सभी में फैली हुई हैं
   देश? - और सबसे ऊपर: एक में
   कम यात्रा के साथ समय और शायद ही कोई
   मीडिया!? इस्लाम को साबित करना कठिन काम है

उनका दावा - और याद रखें: यह है
दावा करने वाले जिन्हें साबित करना होता है
उन्हें, दूसरों को इसका खंडन करने के लिए नहीं। इस
अक्सर भुला दिया जाता है जब मुसलमान
ढीले दावों और बयानों को फेंक दें
चारों तरफ।

8. और: आप शब्द को कैसे मिटाते हैं
   एक पुराने शास्त्र से "पैराक्लेटोस" a
   आधुनिक विज्ञान के लिए रास्ता संभव नहीं
   देखने के लिए? और आप एक नया कैसे ढूंढते हैं
   स्याही इतनी समान है कि आधुनिक रसायन शास्त्र
   अंतर नहीं मिल रहा है? और कैसे

आप की लिखावट को गलत बताते हैं
प्रत्येक में "पारिक्लीटोस"
कई हजारों शास्त्र - और
याद रखें और भी बहुत से थे
आज की तुलना में, क्योंकि मिथ्याचारियों के पास था
बिल्कुल हर किसी को झूठा साबित करने के लिए
अस्तित्व में था क्योंकि वे नहीं जान सकते थे
जो तब तक जीवित रहेंगे
आज - इतना सटीक कि आधुनिक
ग्राफोलोग्स देखने में असमर्थ हैं
मिथ्याकरण? - भले ही आप केवल लें
पांडुलिपियां और टुकड़े पुराने
३२५ ईस्वी से (= Nicaea) इस्लाम होगा
एक नए एचसी एंडरसन या वॉन की जरूरत है
यह समझाने के लिए मुहचौसेन।

9. मुसलमान यह समझाने की कोशिश करते हैं कि यह हो सकता है
पवित्र आत्मा का प्रश्न न हो,
क्योंकि पवित्र आत्मा पहले से ही था
वर्तमान। और पवित्र आत्मा थी
उपस्थित या यीशु का दौरा किया। परंतु ऐसा नहीं था
शिष्यों का हिस्सा - और वह था
व्हाट्सन के अनुसार क्या हुआ?
बाइबिल के लिए: वे प्रत्येक व्यक्तिगत हो गए
आत्मा के साथ संपर्क, और वह है
एक स्थिति का काफी बदलाव।

10. मुसलमान भी कहते हैं कि दो अलग-अलग
आत्मा के लिए नामों का उपयोग किया जाता है (आत्मा
सत्य और पवित्र आत्मा की (आप .)
वास्तव में पवित्र आत्मा भी है,
परमेश्वर की आत्मा (१. मूसा १/२) और केवल
आत्मा)) यह साबित करता है कि जॉन करता है
पवित्र आत्मा का मतलब नहीं है, जब वह
"सत्य की आत्मा" नाम का उपयोग करता है -
"सत्य की आत्मा" का अर्थ होना चाहिए
मुहम्मद जो अपने अनुयायियों से झूठ बोलता है
कुरान में ("चमत्कार नहीं करेंगे-
एक विश्वास", एफ। उदा।) और उसकी सलाह देता है
लोग अल-तकिया का उपयोग करते हैं या यहां तक कि तोड़ते भी हैं

770

पेज ७७१

उनकी शपथ अगर वह बेहतर परिणाम देता है।
अन्य सभी गलत तर्क के अलावा
यहाँ, यह दावा उतना ही तार्किक है जितना कि
दावा है कि अल्लाह के 99 नाम
इसका मतलब है कि 99 अलग-अलग देवता हैं, या
मुहम्मद . के 5-6 या अधिक नाम
इसका मतलब है कि उसके 5-6 या अधिक थे।
आत्मा का नाम बस द्वारा रखा गया है
अलग-अलग नाम - और इसके अलावा यह है
बिल्कुल स्पष्ट है कि कुल मिलाकर
बाइबिल वहाँ केवल एक आत्मा है a
यहोवा से विशेष संबंध।

11. केवल एक ही निष्कर्ष है - the
निष्कर्ष विज्ञान ने बहुत पहले बनाया है
- इससे बनाना संभव: यह
इस्लामी दावा - कई अन्य लोगों की तरह -
या तो झूठ है (एक अल-तकिया?) or
वास्तविकता पर नहीं आशाओं के आधार पर कामना करना। और फिर भी "किशमिश"
सॉसेज में" का उल्लेख नहीं है:

12. **यीशु ने अपने चेलों से वादा किया था a**
सहायक - एक पैराक्लेटोस। यदि उसने किया होता
मतलब मुहम्मद, कैसे हो सकता है

मुहम्मद उनके सहायक हो जब वे सभी 500 साल पहले मर चुके थे वह भी पैदा हुआ था ??

वास्तविकता पर नहीं आशाओं के आधार पर कामना करना? - या एक झांसा? - या झूठ/अल-तकिया? कम से कम विज्ञान बहुत पहले साबित कर चुका है पुरानी पांडुलिपियों से कि यह सच नहीं है - इस बिंदु पर भी बाइबिल को कभी भी गलत नहीं ठहराया गया था। (लेकिन इस्लाम को उसे कहीं ढूंढ़ना है, नहीं तो इस्लाम के लिए इस पर कुरान गलत है आवश्यक बिंदु)। 7/157 भी देखें।

(हमें यह उल्लेख करना चाहिए कि अपोक्रिफ़ल (बनाया गया) "बरनबास का सुसमाचार" भी कभी-कभी है एक तर्क के रूप में प्रयोग किया जाता है, क्योंकि वहां मुहम्मद का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है (कोई आश्चर्य नहीं यदि सिद्धांत कि यह बगदाद में खलीफा के दरबार में बना है, सही है)। हालाँकि, खेदजनक तथ्य यह है कि एक निर्मित ऊपर का सुसमाचार एक बना हुआ सुसमाचार है (उनमें से कई हैं) - और यह इसके बारे में कुछ बताता है इस्लाम के पास तर्कों की कमी है कि वे जोर देकर कहते हैं कि हो सकता है कि यह बना न हो, और इसलिए मुहम्मद के लिए एक प्रमाण है, जब विज्ञान एकमत है: यह झूठे लोगों में से एक है। वास्तविकता में "बरनबास का सुसमाचार" केवल यही साबित करता है कि इस्लाम का कोई वास्तविक नहीं है उनके दावे के लिए दस्तावेज़ीकरण कि मुहम्मद का उल्लेख NT में किया गया है, क्योंकि उन्हें सहारा लेना पड़ता है उस तरह के तर्क के लिए)।

लेकिन इस बात का सबसे ठोस सबूत है कि बाइबल गलत नहीं है, इस्लाम से ही मिलता है। अगर उनके पास था हजारों पुराने लोगों के बीच बाइबल के मिथ्याकरण के लिए एक ही ठोस प्रमाण मिला पांडुलिपियां जो मौजूद हैं उन्होंने इसके बारे में पवित्र स्वर्ग को चिल्लाया था - और नहीं- ऐसी चीख आज तक किसी ने नहीं सुनी- 1400 साल बाद भी नहीं!!!

लेकिन एक सवाल जो मुहम्मद के लिए बहुत महत्वपूर्ण था: क्या यीशु ईश्वर का पुत्र था?

०२९ ६१/१४: "- - - यीशु ने कहा - - - चेलों के लिए, ' (कार्य) के लिए मेरा सहायक कौन होगा अल्लाह?'" 61/6 + 61/6 (2 टुकड़े) देखें। 3/52 में इसी तरह का दावा।

771

पृष्ठ ७७२

और निश्चित रूप से वे - यहाँ भी कुरान के अनुसार - अच्छे मुसलमान थे।

०३० ७२/३: "उसने (अल्लाह*) ने न तो पत्नी ली है और न ही बेटा।" पत्नी के लिए: इसमें देखें 6/101 अध्याय। बेटे के लिए: कुरान इस तथ्य के खिलाफ है कि यीशु खुद को अक्सर यहोवा कहते हैं उसके पिता और वह स्वयं ईश्वर के पुत्र - - - और इस तथ्य के खिलाफ कि सभी कुरान के बावजूद अनिर्दिष्ट दावा है कि बाइबल को गलत ठहराया गया है, विज्ञान ने बहुत स्पष्ट रूप से पाया था कि बाइबल मिथ्या नहीं है - एक ऐसी खोज जो साबित करने के प्रश्न में इस्लाम की चुप्पी से 100% पुष्टि होती है दावे (क्या उन्हें ऐसा एक भी सबूत मिला था, उन्होंने इसके बारे में सभी को और सभी को बता दिया था अक्सर और बड़े अक्षरों में।

031 112/3 "वह (अल्लाह*) पैदा नहीं करता - - -।" एफ देखें। भूतपूर्व। इस अध्याय में 3/59, 6/101, और 72/3।

4. यीशु की मृत्यु और गायब होना:

०३२ २/१३६: "हम (अल्लाह*) उनमें से किसी एक (पैगंबर*) के बीच कोई फर्क नहीं करते - - - ". एक अंतर है जो कम से कम यहोवा बनाता है: वास्तविक और झूठे नबियों के बीच। एक वास्तविक भविष्यवक्ता होने की कसौटी यह है कि आप भविष्यवाणियां करते हैं - और वह भविष्यवाणियां सच हो। यदि नहीं, तो वह एक झूठा भविष्यद्वक्ता है (५. मूसा १८/२१)। मुहम्मद ने अपने पूरे जीवन में नहीं बनाया एक वास्तविक भविष्यवाणी। (कुछ कहावतें थीं जिन्हें याद किया गया क्योंकि वे हुईं कमोबेश सच होने के लिए - अन्य को ऐसे मामलों में सामान्य की तरह भुला दिया गया - लेकिन कोई वास्तविक नहीं भविष्यवाणियां। वह कभी नहीं - कुरान में कोई जगह नहीं है और शायद ही सभी हदीसों में - यहां तक कि भविष्यवाणी करने का उपहार होने का दावा किया)। क्या वह तब वास्तव में एक नबी था - या उसने किया था बस एक प्रभावशाली शीर्षक "उधार"? वह बस एक नबी नहीं था। किसी के लिए दूत या शायद कुछ - या एक प्रेरित, लेकिन कोई भविष्यद्वक्ता नहीं। लेकिन अगर कुरान या बाइबिल या दोनों इस विषय में सच बोलते हैं, यीशु स्पष्ट रूप से थे। कुरान, हालांकि, यीशु को कम करता है जितना संभव हो सके, और केवल मुहम्मद के शीर्षक के अधिकार के प्रश्न को छोड़ देता है - **पुस्तक अक्सर बिना किसी सबूत या दस्तावेज के किसी तथ्य के लिए चीजों का इलाज करता है।**

अंत में यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान है। यदि पुनरुत्थान वास्तव में हुआ, यीशु स्पष्ट रूप से मुहम्मद की तुलना में कम से कम एक डिवीजन ऊपर था। तो कुरान के अनुसार यह किया था ऐसा नहीं:

०३३ ४/१५६: "- - - उन्होंने मरियम के खिलाफ एक गंभीर झूठा आरोप लगाया (कि यीशु को सूली पर चढ़ाया गया था और मृत)"। इतने सारे गवाह थे, जिनमें बहुत से लोग भी शामिल थे जो यीशु को जानते थे, और इसमें भी शामिल थे
बहुत से लोग जो उससे नफरत करते थे और निश्चित रूप से अगर उसे फांसी नहीं दी गई तो उसने विद्रोह कर दिया था - यहूदी पादरी और विद्वान शक्तिशाली थे - कि यह आरोप निश्चित रूप से झूठा नहीं था। इस्लाम कुछ कहे तो
अन्यथा, उन्हें अच्छे प्रमाण देने होंगे, न केवल ऊँचे-ऊँचे बयानों को सामने लाना होगा
पतली हवा 600 साल बाद। क्योंकि कुरान को बस इतना ही देना है: कुछ ऊंचे बयान
कुछ भी नहीं द्वारा समर्थित - कोई सबूत नहीं और यहां तक कि कोई संकेत भी नहीं जो उन सभी गवाहों को दर्शाता हो - और शासक और घृणित यहूदी पादरी-वर्ग गलत थे। शब्द बहुत सस्ते हैं - - - और
इस्लाम केवल एक ही तथ्य पैदा कर सकता है कि न तो मुहम्मद और न ही इस्लाम यह स्वीकार कर सकता है कि यीशु की मृत्यु हो गई और पुनर्जीवित किया गया था - उस मामले में वह स्पष्ट रूप से एक बड़ा भविष्यद्वक्ता था और/या उसके करीब था
मुहम्मद की तुलना में भगवान से संबंध, और यह मुसलमानों के लिए वर्जित है। यह बस है
गवारा नहीं।

*०३४ ४/१५७: "- लेकिन उन्होंने उसे नहीं मारा, और न ही उसे सूली पर चढ़ाया, लेकिन इसलिए इसे प्रकट किया गया था
उन्हें - - -"। 4/156 देखें। इसके अलावा: अगर किसी और ने यह सुनिश्चित नहीं किया कि यह कोई धोखेबाज नहीं था और वह
हत्या वास्तव में हुई थी, क्रोधित और द्वेषपूर्ण यहूदी पादरी और उनके सहायक देखेंगे
उस से। यह दावा किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया है जो यह स्वीकार नहीं कर सका कि मुहम्मद नहीं थे
महानतम पैगंबर (हालांकि मुहम्मद वास्तव में पैगंबर नहीं थे - उन्होंने ऐसा नहीं किया)
भविष्यवाणी करने में सक्षम होने का उपहार है)। अगर इस्लाम कुछ और कहना चाहता है, तो वे

772

पृष्ठ ७७३

करने के लिए बहुत सारी व्याख्या और सिद्ध करना होगा - यह और भी अधिक है जैसा कि कुरान हमेशा करता है
गैर-मुसलमान अपने धर्म के बारे में जो कहते हैं, उसके लिए सबूत मांगते हैं, लेकिन यह खुद कभी भी कोई पेशकश नहीं करता है
इस्लाम या अल्लाह के लिए असली सबूत। सभी "संकेतों" के बावजूद यह दावा करता है, उनमें से एक भी नहीं
"संकेत" - बाइबिल से लिए गए कुछ के संभावित अपवाद के साथ - किसी भी भगवान को बिल्कुल साबित करता है, और
निश्चित रूप से एक भी व्यक्ति अल्लाह या मुहम्मद की शिक्षाओं के बारे में कुछ भी साबित नहीं करता है।
शब्द बहुत सस्ते हैं, और उन "संकेतों" में से एक भी ऐसा नहीं है जो उतना ही अच्छा नहीं हो सकता है
पुजारियों या विश्वासियों या अन्य धर्मों के भविष्यवक्ताओं द्वारा आसानी से उपयोग किया जा सकता है: मैनिटो ने ऐसा किया, थोर ने किया कि, काली ने कुछ बनाया, ओसिरिस ने कुछ और, बाल ने पृथ्वी को बनाया, और अल-उज्जा महान है।
इस्लाम हमेशा केवल यह दावा करता है कि अल्लाह ने यह और यह किया है और यह उसके लिए एक "चिह्न" या "प्रमाण" है
अल्लाह। लेकिन वे कभी यह साबित नहीं करते कि यह वास्तव में अल्लाह ही था जिसने यह और यह किया। होने के कारण
प्रत्येक ऐसे "चिह्न" और "प्रमाण" सहज और तार्किक और यहां तक कि न्यायिक रूप से भी हैं
संकेत या प्रमाण के रूप में अमान्य - और इसी कारण से किसी भी धर्म में कोई पुजारी कह सकता है
उसके भगवान के बारे में बिल्कुल वही बेकार शब्द। दावे पूरी तरह से अमान्य हैं क्योंकि
संकेत या संकेत, प्रमाण के रूप में उल्लेख नहीं करना। अल्लाह के लिए एक भी वैध प्रमाण नहीं है
या कहीं भी मुहम्मद की शिक्षाओं के लिए - - - या उसके लिए यीशु को सूली पर नहीं चढ़ाया गया और उनकी मृत्यु हो गई।
और पुनर्जीवित हो गया।

इसी तरह के दावे एफ. पूर्व में। 4/156 (ऊपर)।

कोई बात नहीं - यह एक तथ्य के रूप में माना जाता है कि यीशु वास्तव में एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे (उन्हें पूर्व में होगा
जोसेफस फ्लेवियस द्वारा उल्लेख किया गया है - एक यहूदी जो अपने समकालीन लोगों द्वारा बहुत पसंद नहीं किया गया क्योंकि
वह रोमनों के साथ बहुत अच्छे दोस्त थे, लेकिन आज उनके एक विश्वसनीय लेखक के रूप में उनका सम्मान किया जाता है
समकालीन इतिहास)। यीशु को उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद बहुतों ने सुना और देखा था,
यह संभव है कि कहानी सच हो - कि वह वास्तव में उसके निष्पादन के बाद अस्तित्व में था।

लेकिन अपने शिष्यों को अंतिम विदाई देने के बाद उन्हें न तो कभी सुना गया और न ही देखा गया। कौन सा इस्लाम बताता है
इसके साथ ही उन्हें भगवान द्वारा स्वर्ग में ले जाया गया।

और ईमानदारी से: अगर भगवान उसे अपने ऊपर शारीरिक और जीवित ले गए, जैसा कि कुछ मुसलमान बताते हैं
यह प्रतीत होता है तथ्य के साथ, यह किसी अलौकिक चीज़ से उसके संबंध के लिए उतना ही अच्छा प्रमाण है
कुछ और के रूप में।

5. पवित्र आत्मा और त्रिएकत्व।

बाइबल से यह बहुत स्पष्ट है कि इस विशेष संबंध के साथ केवल एक ही आत्मा है
यहोवा, लेकिन इसे कम से कम ५ नामों से जाना जाता है: "पवित्र आत्मा", "पवित्र आत्मा", "The ."
ईश्वर की आत्मा (याहवे *)", "सत्य की आत्मा", और केवल "द स्पिरिट" (बिल्कुल अल्लाह की तरह)
कुरान के अनुसार 99 नाम हैं और अभी भी केवल एक और एक ही भगवान है, और मुहम्मद
आधा दर्जन नाम हैं और अभी भी वही आदमी है)।

०३५ ५/१७: "निन्दा में वे हैं जो कहते हैं कि अल्लाह मसीह है।" मुहम्मद हदी

त्रिमूर्ति को समझने में परेशानी। कोई भी ईसाई यह नहीं मानता है कि यहोवा = जीसस या जीसस = यहोवा।

०३७ ५/७३: "वे निन्दा करते हैं जो कहते हैं: अल्लाह त्रिमूर्ति में से एक है।" एक हद तक कुरान यहां हो सकता है - हालांकि "निन्दा" एक बहुत मजबूत शब्द हो सकता है। शब्द "ट्रिनिटी" or बाइबल में कभी भी इसी तरह का उपयोग नहीं किया गया है, और त्रिएकता की हठधर्मिता मनुष्यों द्वारा बनाई गई एक हठधर्मिता है। दूसरी ओर, इसमें कोई संदेह नहीं है कि बाइबल के अनुसार यीशु एक इंसान से बढ़कर है और पवित्र आत्मा भी कुछ अलौकिक है, और यह कि ये दोनों + यहोवा निकट हैं जुड़े हुए।

773

पेज ७७४

०३९ ५/११६: "हे मरियम के पुत्र यीशु! क्या तू ने मनुष्यों से कहा, 'मेरी और मेरी माता की आराधना करो देवताओं के रूप में - - -?" मुहम्मद ने त्रिमूर्ति को कभी नहीं समझा - उनका मानना था कि इसमें ईश्वर शामिल है + जीसस + मैरी। वास्तव में इसमें यहोवा + यीशु + पवित्र आत्मा शामिल है। सही या गलत कोई भी ये तो भगवान को पता था-फिर कुरान को किसने बनाया।

040 "अल्लाह और उसके रसूलों पर विश्वास करो और तीन मत कहो।" इस अध्याय में 5/73 देखें।

एनबी: अगर आपको कहीं भी कोई गलती मिलती है, तो कृपया हमें सूचित करें। अगर यह एक वास्तविक गलती है, तो यह होगा संशोधित

भाग IV, अध्याय 1, (= IV-1-0-0)

जिहाद - पवित्र युद्ध (हालांकि ज्यादातर अमीरों के लिए अपवित्र युद्ध, लूट, गुलाम, शक्ति और इस्लाम का प्रसार) - में कुरान, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम, और की पवित्र पुस्तक अल्लाह

वेतन के लिए प्रोत्साहन और आदेश जिहाद - कुरान में "पवित्र युद्ध"।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

यह भी देखें कि "मुसलमान बेहतर हैं", "गैर-मुसलमानों से दोस्ती न करें", और "नापसंद, नफरत और दमन के लिए उकसाना"। यह अध्याय उनके साथ ओवरलैप करता है, लेकिन अन्य सामान्य नापसंदगी, दूसरों से दूरी और खुद की श्रेष्ठता को बढ़ावा देने के बारे में हैं - एक बनाना "दुश्मन-तस्वीर" - जबकि यह अध्याय मुख्य रूप से प्रत्यक्ष उत्तेजना और प्रेरणा के बारे में है युद्ध के लिए।

कुछ लोगों के लिए शक्ति और धन (अपने आप में एक लक्ष्य के रूप में या अधिक शक्ति के साधन के रूप में) और कभी-कभी महिलाएं, जीवन का सार रही हैं - जीवन में एकमात्र मूल्य। अगर वे ठंडे हैं पर्याप्त, पर्याप्त षडयंत्रकारी, और अमानवीय पर्याप्त या स्वच्छ मनोरोगी, वे इसके लिए किसी के साथ जाते हैं मतलब - कोई भी साधन। अन्य मनुष्यों के लिए कीमत और लागत का कोई मतलब नहीं है जब तक कि वे खुद सत्ता हासिल करते हैं, आदि। ऐसे लाखों पुरुष हुए हैं - और कुछ महिलाएं - इतिहास के माध्यम से। ज्यादातर छोटे गिरोह के नेता, लुटेरे बैरन, सरदार आदि - कभी-कभी समर्थित एक विचारधारा/धर्म द्वारा और कभी-कभी नहीं, लेकिन बहुत बार "हम अच्छे" की "दुश्मन तस्वीर" द्वारा उनके खिलाफ बुरा" नेता के "पैदल सैनिकों" पर प्रभावित हुआ। कभी-कभी एक हो गया है दुश्मन की तस्वीर के लिए अच्छा कारण है, लेकिन कभी-कभी यह कृत्रिम रूप से प्रभावित होता है - और होता है अंडरलाइंग, क्योंकि योद्धा/सैनिक लड़ने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं, अधिक कठिन लड़ते हैं, और अधिक होते हैं अमानवीयता और अत्याचार के लिए तैयार - जीत के अवसरों को बढ़ाना और अधिक के लिए नेता के लिए शक्ति - यदि "दुश्मन" बुरे हैं और अधिमानतः घृणित और उप-मानव हैं। NS सबसे अच्छा यह है कि यदि आपका शत्रु घृणित, अमानवीय और घृणा करने योग्य है। और द्वारा रास्ता: आपके योद्धाओं के लिए व्यक्तिगत लाभ और धन की संभावनाएं एक अतिरिक्त प्रेरणा है उन्हें - विशेष रूप से उनमें से कम मानव के लिए।

पेज ७७५

हमले और आक्रमण के युद्धों के लिए अपने विषयों और अधीनस्थों को भड़काने की प्रक्रिया में और
इस तरह की छापेमारी और युद्ध का हिस्सा जो अमानवीयता है, उसके कई चरण हैं। मुख्य वाले
अपने समूह और अन्य समूहों के बीच दूरी बनाना है, और फिर दूसरे को बनाना है
समूह या समूह दुश्मनों की तरह दिखते हैं, अधिमानतः उनके कुछ दोषों के कारण, और फिर
आगे अरुचि और फिर "दुश्मन" के लिए नफरत को इतना मजबूत बनाने के लिए कि उसका उपयोग किया जा सके
आतंक की अमानवीयता और उसके खिलाफ युद्ध "न्यायपूर्ण" और "सही" हैं, और अंत में निर्माण करना है
वास्तव में "दुश्मन" पर हमला करने के लिए प्रेरणा - छापे और युद्ध आखिरकार इसके हैं
योद्धाओं के लिए खतरा लूटना, बलात्कार करना और मुक्त दासता किसके लिए अच्छी प्रेरणा है?
पीड़ितों के साथ सहानुभूति महसूस करने में असमर्थ आदिम आत्माएं।

यह रसीद सार्वभौमिक है - लेकिन "पैदल सैनिक" या "- योद्धा" और "अंधा जनता" समय
और समय फिर से रणनीति और हेरफेर को देखने में असमर्थ हैं। आज यही सच है और
कल यही तथ्य था: हेरफेर काम करता है - आपको मात देना या मारना या कैद करना है
कुछ विरोधी, लेकिन फिर सत्ता का रास्ता खुला है। रणनीति बार-बार काम करती है और
फिर से करिश्माई नेताओं के लिए जो काफी ठंडे हैं, पर्याप्त योजना बना रहे हैं, पर्याप्त मनोरोगी हैं -
गिरोह के नेता, सरदार, आक्रामक राजा। और ज्यादातर "उपयोगी बेवकूफ" नहीं दिखते
"मृगतृष्णा" के माध्यम से - - - या वे वास्तविकता और वास्तविक सत्य को नहीं देखना चाहते, क्योंकि
जो कुछ हो रहा है, उससे उन्हें भी फायदा है। वे बस "पिरामिड" के हिस्से हो सकते हैं
शक्ति" या "लाभ का पिरामिड" (अक्सर पैसा) या "सम्मान और सम्मान का पिरामिड" (अक्सर
नेता/तानाशाह के लिए सबसे सस्ता पिरामिड, सिवाय इसके कि धार्मिक लाभ के वादे हो सकते हैं
उसके लिए और भी सस्ता और कहीं ज्यादा मजबूत, अगर धर्म को शामिल कर लिया जाए)।

फिर कभी-कभी दिग्गज उभर आते हैं - ठंड या मनोरोगी प्रतिभा, या कभी-कभी अर्ध-प्रतिभा
भाग्य के साथ। और जैसा कि निर्माण करने की तुलना में नष्ट करना बहुत आसान है, कई "सबसे प्रभावशाली"
पुरुष "इतिहास में, विनाशकारी ताकतों के विध्वंसक और नेता थे - और हैं। सिकंदर
महान (हालांकि उनकी विजय के परिणाम न केवल बुरे थे), अत्तिला हुन, मुहम्मद,
Gjingis खान, ज़ुलु तरह शाका (या चाका), तैमूर लेनक / तामेरलेन, हिटलर, स्टालिन, माओ,
पोल पॉट, कुछ का उल्लेख करने के लिए। अधिकांश "सफल" लोगों को एक विचारधारा का समर्थन प्राप्त था -
इसे धर्म कहें या नाजीवाद कहें या फासीवाद, साम्यवाद पर, नाम वास्तव में मायने नहीं रखता
एक ठंडे नेता के लिए जब तक वह उसका समर्थन करता है। हालांकि एक धर्म अन्य विचारधाराओं से बेहतर है,
क्योंकि अगले जीवन में पुरस्कारों के वादों की कीमत नेता को कुछ के अलावा कुछ भी नहीं है
सस्ते शब्द - जैसे कई स्वयं घोषित "पैगंबर" और अन्य धार्मिक या "धार्मिक"
नेताओं को पता चला है - और यह अक्सर बहुत ही कुशल होता है।

विशेष रूप से नाज़ीवाद और जिंगिस खान का उल्लेख करना प्रासंगिक है, क्योंकि . के मौलिक तरीके
सोच और उनके पीछे की विचारधारा इस्लाम के समान ही है। जिंजिस खान और उनके
मंगोल अतिरिक्त प्रासंगिक हैं, आंशिक रूप से क्योंकि उनका धर्म काफी हद तक उसी पर बनाया गया था
इस्लाम के रूप में विचारों के प्रकार, लेकिन कम नहीं क्योंकि ये दो राजनीतिक धार्मिक शक्तियां मिलीं
युद्ध। शुरुआत में मुसलमान हार गए - और मंगोलों ने उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा मुसलमानों ने किया था
अपने पीड़ितों का इलाज किया। लेकिन जबकि मुसलमान जानलेवा लुटेरे और दमन करने वाले =
इस्लाम के अनुसार नायकों, मुसलमानों के साथ ऐसा ही करने वाले मंगोल अमानवीय शैतान थे। परंतु
फिर मंगोल मुसलमान हो गए। उन्होंने अभी भी पूरी तरह से क्रूर और अमानवीय व्यवहार किया
वैसे, लेकिन अब - सभी चमत्कारों पर आश्चर्य - वे बड़े नायक बन गए थे, क्योंकि अब उन्होंने किया था
यह उप-मानव "काफिरों" के खिलाफ है।

कुरान खुद साबित करता है कि १००% एक बुद्धिमान भगवान द्वारा नहीं बनाया गया है - एक सर्वज्ञ द्वारा उल्लेख नहीं करने के लिए
एक: किसी भी भगवान ने इतनी गलतियों, विरोधाभासों, उलझे हुए तर्कों के साथ एक किताब नहीं बनाई थी
और भी गलत और अमान्य तर्क - उल्लेख नहीं करने के लिए इसे अपने स्वर्ग और घर में रखा
इसे "मदर बुक" के रूप में सम्मान दें, जैसे इस्लाम और कुरान स्वयं दावा करते हैं (बिना सामान्य रूप से)
दस्तावेज)। और अगर कुछ अलौकिक शक्तियां थीं - एक मामूली भगवान या जो कुछ भी -

पेज ७७६

शामिल थे, वे अच्छी ताकतें नहीं थीं: जिस धर्म को आप कुरान में पाते हैं वह बहुत दूर है
अमानवीय, अनैतिक, क्रूर और खूनी (मदीना से कुछ 22 - 24 सूरह पढ़ें - और
चूंकि वे सबसे छोटे हैं, वे सबसे ऊपर हैं जो इस्लाम के नियम के अनुसार मायने रखते हैं
निरसन (= पुराने छंदों को अमान्य करने के लिए यदि टकराव हैं))।

एक सिद्धांत यह है कि कुरान काली ताकतों द्वारा बनाई गई है - f. भूतपूर्व। भेष में शैतान (मुहम्मद)
गेब्रियल एफ की तरह तैयार शैतान के माध्यम से देखने का कोई मौका नहीं होगा। भूतपूर्व।)। धर्म -
और विशेष रूप से शैतानी और भेदभावपूर्ण, क्रूर और खूनी युद्ध धर्म जो उभरता है
मदीना के सूरह से - ऐसे विचारों और संदेहों को भोजन दे सकते हैं। किंतु हम
हम ईमानदारी से ऐसा नहीं मानते, क्योंकि एक शैतान भी मूर्ख और मूर्ख नहीं होगा
इतनी सारी गलतियों के साथ एक किताब बनाने के लिए, यह जानकर कि इसे जल्दी या बाद में देखा जाएगा
और सभी विश्वसनीयता खो गई - अगर खुद को साबित करना और फेंकना चाहते हैं तो यह एक छोटा सा होना था
ब्रह्मांड के एक छोटे से कोने में उसका वजन।

लेकिन मुहम्मद एक ऐसे व्यक्ति थे जो सत्ता चाहते थे। जिस तरह से वह चिपकता है उससे यह देखना आसान है
खुद को भगवान और धर्म के लिए - उसकी शक्ति का मंच - और जिस तरह से वह बनाता है
अपने और आम मुसलमानों/लोगों के बीच की दूरी। यदि आप सूरह को में पढ़ते हैं
कुरान कालानुक्रमिक क्रम में, और इस दृष्टिकोण से हो सकता है कि यह किसके द्वारा लिखा गया था
कोई या कुछ लोग सत्ता पाने के लिए बाहर जा रहे हैं, चाहे दूसरों को कितनी भी कीमत चुकानी पड़े, आप
देखेंगे कि यह पैटर्न में कितनी अच्छी तरह फिट बैठता है, और यह मनोवैज्ञानिक रूप से कितनी चतुराई से किया जाता है - जैसे
दस्ताने में लौकिक हाथ और भी बेहतर। जरा खुद पढ़िए और देखिए! उसे याद रखो
बहुत सी गलतियाँ जो आज पढ़े लिखे लोगों के लिए आसान है, उस समय के अरबों ने नहीं देखा
जानने के लिए ज्ञान गलत थे।

नीचे हम क्रूर और निर्दयी योद्धा बनने के लिए कुछ उत्तेजनाओं को शामिल करते हैं - आप
अधिक मिल सकते हैं। और याद रखें कि बुरे या घृणित गैर-मुसलमानों के बारे में छंद और
मुसलमानों के बेहतर होने और उनके धर्म के श्रेष्ठ होने और अन्य सभी धर्मों के अच्छे नहीं होने के बारे में
और फलस्वरूप उन धर्मों को मानने वाले उप-मानव हैं, ये सभी एक ही तर्क देते हैं
जिस तरह से ये युद्ध के लिए उकसाते हैं - वे केवल मनोवैज्ञानिक पर अलग-अलग स्थानों पर हैं
ब्रेनवॉश करने और युद्ध के लिए उकसाने की सीढ़ी।

वर्ष ६१४ - ६१८ ई. सूरह 42 (मेडिको मक्का):

००ए ४२/३९: "- - - जो, जब उन पर अत्याचारी अत्याचार किया जाता है, (डरपोक नहीं होते हैं)
क) खुद की मदद करें।" आत्मरक्षा की अनुमति थी (वास्तव में यह पुराने का एक आत्म-स्पष्ट हिस्सा था
अरब संस्कृति)।

वर्ष ६१५ - ६१७ ई. सूरह 37 (मध्य मक्का):

००बी ३७/१७३: "- - - और यह कि हमारी (अल्लाह की) ताकतें - उन्हें निश्चित रूप से जीतना चाहिए।" यह एक कहानी में है
दूतों के बारे में, और मानसिक और बौद्धिक लड़ाई के बारे में बात करने लगता है। इस समय
मुहम्मद ने भी हथियारों को साधन के रूप में इस्तेमाल करना शुरू नहीं किया था - वह पर्याप्त शक्तिशाली नहीं था,
और उनके धर्म ने शांति का उपदेश दिया। लेकिन आप शर्त लगाते हैं कि इसका उपयोग योद्धाओं के लिए एक उत्साहजनक बात के रूप में किया गया है
सदियों।

वर्ष अज्ञात, लेकिन सबसे अधिक संभावना मक्का। सूरह १००:

00c 100/5: "(घोड़ों) द्वारा जो दौड़ते हैं, पुताई (सांस) के साथ, और आग की चिंगारी पर प्रहार करते हैं, और धक्का देते हैं
भोर में घर का प्रभार घर, और थोड़ी देर में बादलों में धूल उठो, और घुसना
(दुश्मन के बीच में) एक सामूहिक - - -।" मुस्लिम विद्वानों को यकीन है कि यह कविता नहीं है

वास्तविक युद्ध के बारे में, लेकिन लाक्षणिक रूप से मतलब - हालांकि वे सटीक अर्थ पर सहमत नहीं हैं ("The
कुरान का संदेश", इस सूरह को नोट २)। लेकिन युद्ध और लड़ाई के रोमांस के लिए अच्छे छंद
जैसे भी।

वर्ष ६२१ ई. सूरह 7 (देर से मक्का):

00d 7/28: "अल्लाह आपको कभी भी शर्मनाक - - -" की आज्ञा नहीं देता। यह मूल रूप से में कहा गया था
एक शांतिपूर्ण संदर्भ - जैसा कि मक्का काल के लिए बिल्कुल सामान्य है। लेकिन यह एक अच्छा तर्क था और है

एक नेता जो कुछ करना चाहता है उसके लिए - f. भूतपूर्व। आतंकवाद। हमें यह भी टिप्पणी करनी चाहिए कि यह बहुत है गलत।

वर्ष 622 ई. सूरह 47 (पहले आंशिक रूप से मदीना में?):

०१ ४७/४अ: "इसलिये जब तुम काफ़िरों से मिलो (लड़ाई में) तो उनके गले में मारो - - -।" ए
स्पष्ट आदेश।

002 47/4बी: "लेकिन जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे गए हैं - वह (अल्लाह *) उन्हें कभी नहीं होने देंगे
कर्म नष्ट हो जाते हैं।" युद्ध करो और जन्नत में जाओ।

003 47/5: "जल्द ही वह (अल्लाह*) उनका मार्गदर्शन करेगा (मुसलमान अल्लाह/मुहम्मद* के लिए मारे गए) और
उनकी दशा सुधारो और उन्हें उस वाटिका में प्रवेश दो, जिसकी घोषणा उस ने उनके लिए की है।"
अस्पष्ट वादे - बेशक यह किसी जन्नत से कम नहीं हो सकता है, लेकिन आपको और भी महाकाव्य मिलेंगे -
और गीत - विवरण बहुत बाद में नहीं। अल्लाह को जल्दी ही एक अच्छी रसीद मिल गई - या शायद
मुहम्मद. योद्धाओं के लिए अच्छे वादे और मुहम्मद के लिए सस्ते वादे।

००४ ४७/७: "हे विश्वास करने वालों! यदि आप सहायता करेंगे (संदर्भ से यह स्पष्ट है कि इसका अर्थ युद्ध में है*)
के कारण) अल्लाह, वह तुम्हारी सहायता करेगा, और तुम्हारे पैर मजबूती से लगाएगा।" नैतिकता की मजबूती
मुहम्मद के योद्धाओं में से।

००५ ४७/२१: "- - - यह उनके लिए सबसे अच्छा था (जो विश्वास में मजबूत नहीं हैं*) यदि वे सच थे
अल्लाह (= युद्ध)।" यह भी आपके लिए सबसे अच्छा है।

006 47/35: "बेहोश न हों (युद्ध में लड़ते समय*) - - -"। एक स्पष्ट संदेश।

००७ ४७/३८: जब आप "अल्लाह के मार्ग में" खर्च करते हैं, तो इसमें कोई लापरवाही न करें - मदद के लिए शामिल
वित्तपोषण युद्ध। तब और आज - और भविष्य में। धन की आवश्यकता वाले आतंकवादियों के लिए एक अच्छी कविता
उनके कार्यों के लिए।

वर्ष ६२२ - ६२४ ई. सूरह २ (शुरुआती मदीना):

००८ २/१५४: "और उन लोगों के बारे में मत कहो जो अल्लाह के मार्ग में मारे गए हैं: 'वे मर चुके हैं'। नहीं,
वे जी रहे हैं (और स्वर्ग में ढेर सारे सेक्स के साथ एक विलासितापूर्ण जीवन का आनंद लेते हैं) - - -।" युद्ध के लिए जाओ -
सबसे बुरा जो हो सकता है वह है शाही हरम के साथ शाही जीवन का एक त्वरित तरीका। (की संभावना
अमान्य होने का कभी उल्लेख नहीं किया गया है - कभी नहीं)।

००९ २/१९१: "- - - कोलाहल (मुसलमानों के खिलाफ गैर-मुसलमानों से*) और दमन (की
मुसलमान*) वध से भी बदतर हैं (गैर-मुसलमानों के*) - - -।" सादा भाषण: गैर को मार डालो-
मुसलमान अगर सत्ताधारी पदों पर रहना चाहते हैं या आपको दबाने की कोशिश करते हैं। (उचित स्थिति है
कुरान के अनुसार मुसलमानों पर शासन किया जाएगा और गैर-मुसलमानों को दबा दिया जाएगा - a
दुनिया के लिए भविष्य?) यदि वे तुम्हें शासक नहीं बनने देंगे तो उन्हें मार डालो।

777

पेज ७७८

०१० २/१९३: "और उनसे (गैर-मुस्लिम*) तब तक लड़ो जब तक कि कोई और उपद्रव या उत्पीड़न न हो (ए
राज्य शरिया का पालन नहीं कर रहा है - मुस्लिम - कानून, या हिजाब पर प्रतिबंध लगाने वाला राज्य, आदि कई के अनुसार
मुसलमान मुसलमानों और इस्लाम* पर जुल्म कर रहे हैं और दमन कर रहे हैं, और वहाँ न्याय और
अल्लाह में विश्वास"। 2/191 के ठीक ऊपर देखें।

011 2/216a: "लड़ाई आपके लिए निर्धारित है - - -।" एक अधिक प्रत्यक्ष मौखिक उत्तेजना मुश्किल है
खोजने के लिए, जब तक कि यह धमकियों और/या धन, शक्ति/स्थिति और के वादों के साथ न हो
महिलाएं - इस या अगले जन्म में।

०१२ २/२१६बी: "- - - यह संभव है कि आप किसी चीज (लड़ाई*) को नापसंद करते हैं जो आपके लिए अच्छा है - - -।"
युद्ध में जाओ - यह आपके लिए अच्छा है कि आप इसे पसंद करते हैं या नहीं (अंतर्निहित अर्थ; कम से कम अल्लाह करेगा)
अगले जन्म में आप पर कृपा करें।) लूटपाट आदि के अतिरिक्त प्रोत्साहन के साथ उत्तेजना।

013 2/216c: "- - - अल्लाह जानता है (तुम्हारे लिए क्या अच्छा है और तुम युद्ध में गए या नहीं*)
- - -"। युद्ध के लिए प्रोत्साहन अगले जन्म में सजा की अतिरिक्त धमकी के साथ यदि नहीं।

०१४ २/२१७: "हल्ला और जुल्म वध से भी बदतर है।" ऊपर 2/191 देखें।

०१५ २/२१८: "---जिन्होंने निर्वासन सहा और संघर्ष किया----अल्लाह के मार्ग में - उनके पास है
अल्लाह की रहमत की आशा - - -।" लड़ो और अल्लाह की मेहरबानी करो। (यह श्लोक a . को संदर्भित करता है)
विशेष स्थिति। लेकिन कई अन्य मामलों की तरह, इस्लाम अर्थ और अर्थ का विस्तार करता है
कही गई बातों का मूल्य। इस्लाम में ईश्वर द्वारा दिए गए कुछ सामान्य नियम हैं, और इसलिए
बड़ी मात्रा में इसी तरह की घटनाओं या बातों के ऐसे एक्सट्रपलेशन पर निर्भर रहना पड़ता है - एक और
इस बात का संकेत है कि धर्म एक सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा नियोजित और निर्मित नहीं है। ऐसा भगवान
एक चीज ने बेहतर योजना बनाई थी और होने के बजाय चीजें होने से पहले सलाह दी थी
बाद में चीजों को हल करने के लिए, और उसने उसे मजबूर करने के बजाय सामान्य तरीकों से भी सूचित किया था
अधीनस्थ ज्यादातर समय अनुमान लगाते हैं - "यह करना सही बात हो सकती है, क्योंकि एक नोट में"
बहुत अलग मामला मुहम्मद ने यह और यह कहा"।)

०१६ २/२४४: "फिर अल्लाह के लिए लड़ो, और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है"
चीज़ें।" उकसाना + युद्ध के लिए इनाम के बारे में संकेत और नहीं जाने पर सजा के बारे में संकेत
युद्ध।

०१७ २/२४५: "वह कौन है जो अल्लाह को एक सुंदर ऋण देगा, जिसे अल्लाह उससे दोगुना कर देगा"
क्रेडिट करें और कई बार गुणा करें?" कुरान में अभिव्यक्ति "अल्लाह को एक सुंदर ऋण ऋण"
आम तौर पर इसका मतलब युद्ध में अपने जीवन को जोखिम में डालना - या इसे ढीला करना - होता है, लेकिन कभी-कभी इसका मतलब देना भी हो सकता है
मुहम्मद को पैसा, मुख्य रूप से युद्ध के उद्देश्यों के लिए। दोनों ही मामलों में कोई चुकौती का वादा नहीं किया गया है
यह दुनिया - केवल अगले में। मुहम्मद के लिए इस दुनिया में सबसे सस्ता तरीका अपने वित्त पोषण के लिए
युद्ध और इच्छुक योद्धा प्राप्त करें - खासकर यदि धर्म बना हुआ है और अल्लाह मौजूद नहीं है
या यदि कोई ईश्वर है, लेकिन उस ईश्वर से अलग है जिसे आप कुरान में मिलते हैं, और परिणामस्वरूप कौन है
मुहम्मद के शब्दों से बंधे नहीं।

०१८ २/२४९: "अल्लाह की इच्छा से, कितनी बार एक छोटी ताकत ने एक बड़ी ताकत को जीत लिया है? अल्लाह साथ है
जो डटे रहते हैं।" हो सकता है कि वास्तव में एक उत्तेजना न हो, लेकिन काफी उत्साहजनक बात हो।

019 2/251a: "अल्लाह की इच्छा से उन्होंने (यहूदियों ने) उन्हें (पलिश्तियों) भगा दिया; और दाऊद ने मार डाला
गोलियत और उसकी सेना"। बाइबिल से उधार ली गई एक कहानी - एक मोड़ के साथ - पेप टॉक के रूप में उपयोग की जाती है
मुस्लिम योद्धाओं - यह बताकर कि यह उनका अपना भगवान है, अल्लाह ने काम किया।

778

पेज ७७९

020 2/251b: "और क्या अल्लाह ने लोगों के एक समूह को दूसरे के माध्यम से जांच नहीं की, पृथ्वी ने
शरारत से भरा हो - - -।" धर्म (और लूट) के अलावा, अन्य "तर्क" भी हैं
अल्लाह और मुहम्मद आपको युद्ध में जाने के लिए क्यों बुलाते हैं, इसके कारण। हमें उस ओर इशारा करना चाहिए
एक सर्वज्ञ ईश्वर के लिए दुनिया को शांति से चलाने के अन्य तरीके हैं।

०२१ २/२६२: "जो लोग अल्लाह के लिए अपना धन खर्च करते हैं (मुख्य रूप से वित्तपोषण)
धर्म का प्रसार या सुदृढ़ीकरण या - अधिकतर उस समय में - युद्ध का वित्तपोषण*) - - - के लिए
उनका प्रतिफल उनके रब (अल्लाह*) के पास है - - -।" कम से कम केवल ऐसे शब्दों के साथ भुगतान करना
मुहम्मद के लिए अपने युद्धों और अपनी शक्ति के विकास के लिए एक बहुत ही सस्ता तरीका था। अगर
फिर एक देवता है - या एक शैतान - अगली दुनिया में चुकाने, देने वालों को उनके पैसे का मूल्य मिला
उनके अगले जीवन में। यदि किसी को इब्न इशाक "पैगंबर का जीवन" में मुहम्मद को उद्धृत नहीं करना है:
"युद्ध विश्वासघात है" - - - भी लाइनों के पीछे।

०२२ २/२६५: "और उन लोगों की समानता जो अपना धन खर्च करते हैं, अल्लाह को खुश करने की तलाश में
सबसे अच्छा यह है कि इसे युद्ध के वित्तपोषण के लिए या अन्य तरीकों से इस्लाम को फैलाने या मजबूत करने के लिए खर्च किया जाए*), is
एक बगीचा, ऊँचा और उपजाऊ: उस पर भारी बारिश होती है, लेकिन उसकी उपज में दोगुनी वृद्धि होती है
फसल - - - हम जो कुछ भी करते हैं अल्लाह देखता है।" युद्ध को वित्तपोषित करना आधा युद्ध है - यहाँ भी
उत्तेजना मूल्यवान हैं।

वर्ष: मुख्य रूप से 624 ई. सूरह 8:

०२३ ८/१२: "मैं (अल्लाह) अविश्वासियों के दिलों में आतंक पैदा करूंगा: तुम उनके ऊपर मारो
गर्दन और उनकी सभी उंगलियों को उन पर से मारो (उन्हें धनुष का उपयोग करने में असमर्थ बनाते हुए) - - -।" ए
योद्धाओं को अच्छा प्रोत्साहन।

लेकिन क्या यह वास्तव में "शांति का देवता" "शांति का धर्म" शीर्षक है? इस धर्म को बुलाओ
"शांति का धर्म" दुनिया का अपमान है - और यही कारण है कि दुनिया क्यों नहीं करती

दावे पर हंसना, ज्ञान की कमी है।

०२४ ८/१६: "यदि कोई (मुस्लिम योद्धा*) ऐसे दिन उनसे (दुश्मन*) पीठ फेरता है
(लड़ाई के दौरान*) - - - वह खुद पर अल्लाह का प्रकोप खींचता है, और उसका ठिकाना नर्क - - - है। निर्माण
लड़ाई और जीत और सबसे अधिक संभावना स्वर्ग में जाने के लिए। लड़ाई करो और मारे जाओ और जाना सुनिश्चित करो
स्वर्ग। युद्ध करो और भाग जाओ और नरक में जाओ। इस्लाम में विश्वास करने वाले के पास वास्तव में क्या विकल्प है?
वास्तव में धार्मिक व्यक्ति के लिए लड़ने के लिए एक मजबूत उत्तेजना खोजना संभव है
इस "शांति के धर्म" से संबंधित है?

०२५ ८/२४: "हे ईमान लाने वाले" अल्लाह और उसके पैगंबर को अपनी प्रतिक्रिया दें, जब वह बुलाए
आप को वह जो आपको जीवन देगा - - -।" युद्ध के आह्वान का पालन करने के लिए, आपको एक सुंदर देगा
अगला जन्म - - - और मुहम्मद एक सस्ता और प्रतिबद्ध योद्धा।

०२६ ८/३९: "और उनके साथ (उन अविश्वासियों से जो इस्लाम में परिवर्तित नहीं होंगे*) तब तक लड़ें
वहाँ कोई और उपद्रव या उत्पीड़न नहीं है, और अल्लाह में न्याय और विश्वास पूरी तरह से प्रबल है
और हर जगह "। टिप्पणियाँ अनावश्यक होनी चाहिए। **युद्ध तब तक लड़ो जब तक इस्लाम हावी न हो जाए
हर जगह। एक आदेश और एक प्रलोभन।**

०२७ ८/४०: "यदि वे (दुश्मन*) मना करते हैं (लड़ाई बंद करने के लिए - और याद रखें कि सैकड़ों के लिए)
वर्षों से मुसलमान ज्यादातर हमलावर थे*), सुनिश्चित करें कि अल्लाह आपका रक्षक है - - -।
"काफिरों" के खिलाफ किसी भी लड़ाई में अल्लाह आपकी मदद करता है।

०२८ ८/४१: "और यह जान लो कि जितनी लूट तुम (युद्ध में) प्राप्त कर सकते हो, उसमें से पांचवां हिस्सा है
अल्लाह को सौंपा (/ मुहम्मद*) - - -।" यानी 80% योद्धाओं और नेताओं के लिए है
युद्ध में - **एक आर्थिक प्रोत्साहन जो कई गरीब लोगों के लिए से कहीं अधिक गिना जाता है
धर्म - युद्ध और आतंक = अच्छा व्यवसाय।** कई लोग धन्य हो गए, कई बन गए
अमीर, और कुछ बहुत अमीर बन गए - और लुटेरों की नई पीढ़ियों के लिए आदर्श थे
योद्धा और डाकू बैरन। लेकिन मुसलमान और इस्लाम कभी विनाश में कीमत का जिक्र नहीं करते और
लुटेरों की इस अन्यायपूर्ण समृद्धि के लिए बहुतों को कीमत चुकानी पड़ी और जीवन को नष्ट कर दिया
विध्वंसक स्थानीय लोगों को अपने को फिर से हासिल करने में अक्सर (जीवित) 200 साल और उससे भी अधिक समय लग जाता है
जीवन का स्तर, स्वतंत्रता का उल्लेख नहीं करने के लिए। "द" के अच्छे और परोपकारी देवता के योद्धा
शांति का धर्म" अक्सर सामूहिक हत्याएं और नरसंहार और दासता "एन ग्रॉस" - और
सब कुछ चुरा लिया। जेरूसलम एफ. भूतपूर्व। ६३८ ई. में कब्जा करने के बाद एक भूख प्रलय हुई - the
मुसलमानों ने सब कुछ चुरा लिया, जिसमें खाना भी शामिल था।

०२९ ८/४४: "और याद करो जब तुम (बद्र* में युद्ध में) मिले थे, तो उसने (अल्लाह*) तुम्हें उन्हें दिखाया था
तेरी दृष्टि में थोड़े से, और उस ने तुझे उन की दृष्टि में तुच्छ समझा——-।" याद रखना -
क्योंकि यह अल्लाह अगली बार भी कर सकता है, और तुम बद्र की तरह जीत जाओगे। करने के लिए आराम
जानना।

०३० ८/४५: "जब आप एक बल से मिलते हैं, तो दृढ़ रहें - - -।" आदेश और पेप-टॉक।

०३१ ८/६०बी: "जो कुछ भी (पैसा, समय, अपनी सेहत, या अपना जीवन*)
अल्लाह, तुम्हें बदला दिया जाएगा, और तुम्हारे साथ अन्याय नहीं किया जाएगा"। एक अच्छा सौदा। (लेकिन के लिए
किसको? - यह इस बात पर निर्भर करता है कि इस्लाम बना हुआ धर्म है या नहीं।)

032 8/65a: "हे पैगंबर! (अल्लाह कहते हैं*) ईमान वालों को लड़ाई के लिए जगाओ।" के लिए कुछ शब्द
संभवतः अच्छा और शांतिपूर्ण भगवान। और एक भगवान और पूर्ण दयालु आदमी के लिए कुछ कार्य
एक धर्म का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक अच्छा, परोपकारी और शांतिपूर्ण होने पर जोर दिया। और आतंकवाद है
युद्ध, वे कहते हैं।

०३३ ८/६५बी: "यदि आप में से बीस (मुस्लिम योद्धा*) हैं, तो धैर्यवान और दृढ़निश्चयी (यह
- धैर्यवान और दृढ़ रहना - मुस्लिम योद्धाओं और आतंकवादियों पर प्रभावित और प्रभावित होता है
- एक तथ्य जो गैर-मुसलमान नहीं जानते या भूल जाते हैं*), वे दो सौ (गैर-मुसलमानों) पर विजय प्राप्त करेंगे
मुसलमान*), अगर एक सौ हैं, तो वे एक हज़ार काफिरों को हरा देंगे: क्योंकि ये हैं
बिना समझे लोग"। अंध विश्वासियों के लिए कम से कम एक अच्छा उत्साहजनक बात। लेकिन कुरान है
एक बिंदु पर सही: गैर-मुसलमानों के कट्टर और भाग्यवादी तरीके को नहीं समझते हैं
मुस्लिम योद्धाओं और आतंकवादियों पर प्रभावित सोच - वे आगे बढ़ते हैं और देने से इनकार करते हैं
में। सभी इस्लाम के "दुश्मनों" के लिए भी याद रखने के लिए कुछ।

०३४ ८/६६ए: "--- लेकिन (फिर भी (भले ही अल्लाह ने आपके लिए लड़ाई को हल्का कर दिया हो - कोण भेजकर) शूरवीरों?*)) यदि तुम में से सौ हों, तो वे दो सौ को, और यदि एक हजार को, वे अल्लाह की अनुमति से दो हजार पर विजय प्राप्त करेंगे - - -"। एक और जोरदार बात, और 8/65 की तुलना में कुछ अधिक यथार्थवादी। इसके अलावा: यदि आप ढीले हैं, तो जान लें कि वह दुश्मन नहीं था कि तुम्हारे लिए बहुत मजबूत था, लेकिन अल्लाह अपने अथाह ज्ञान में जो इसे ऐसा ही चाहता था। (और अंतिम जीत की ओर ले जाने के लिए अल्लाह के पास हमेशा एक अच्छा कारण होता है। लेकिन एक सर्वशक्तिमान ईश्वर क्यों नहीं हो सकता? बस तय करें कि वह चीजों को कैसा बनाना चाहता है और इसे वैसा ही बनाएं? एक संभावित रूप से अच्छा क्यों करते हैं और दयालु और प्यार करने वाले भगवान को इंसानों को इतना खून और हत्या और नफरत के माध्यम से जीने देना है और बलात्कार और दुख? कुरान में कुछ बस नहीं जोड़ता है।

०३५ ८/६६बी: "- - - क्योंकि अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है।" यह एक पेप टॉक है जो सभी गैर-मुसलमानों को हमेशा याद रखना चाहिए - कट्टर मुस्लिम योद्धा कभी हार नहीं मानते और न कभी रुकते हैं।

780

पेज ७८१

और यह भी: भविष्य में स्पेन ने कितने सैनिकों को मार डाला, उनके कुछ आदमियों को वहाँ से हटा दिया पूरब, और मुसलमानों को साबित करने के लिए बस यही शब्द दोहराए जाते हैं और दोहराए जाते हैं कुरान? - एक सबूत है कि अब ऑस्ट्रेलिया के बाहर निकलने से और मजबूती मिल सकती है।

लेकिन मुस्लिम योद्धाओं के लिए एक अच्छा और कुशल उत्साह? हाँ।

*****036 8/69: "लेकिन (अब) युद्ध में जो कुछ तुमने लिया, उसका आनंद लें, वैध और अच्छा - -"। **यह एक है कुरान में अधिक नैतिक और नैतिक शिखर: युद्ध छेड़ो, और फिर यह "वैध" है और अच्छा" चोरी करना और लूटना और लूटना - और बलात्कार करना और दास बनाना। युद्ध में जाओ और चोरी करो और गुलाम बनो और अपने आप को अमीरों की हत्या करो - और बलात्कार करो और लूटो और आनंद के लिए जीवन का आनंद लो अल्लाह के - "शांति के धर्म" के अच्छे और परोपकारी देवता। सबसे मजबूत में से एक मुहम्मद ने गरीब और पौरुष पुरुषों को युवा और युवा नहीं बनाने के लिए उकसाया - go युद्ध के लिए।**

०३७ ८/७३: "अविश्वासी एक दूसरे के रक्षक हैं: जब तक तुम ऐसा नहीं करते (प्रत्येक की रक्षा करो .) अन्य) पृथ्वी पर कोलाहल और अत्याचार होगा, और बड़ी शरारत होगी"। बाहरी लोग हैं आपके खिलाफ - एक साथ रहें और उनका विरोध करें।

०३८ ८/७४: "जो लोग ईमान लाए, और बंधुआई में चले गए, और ईमान के लिए लड़ते रहे, अल्लाह के मार्ग में साथ ही जो (उन्हें) शरण और सहायता देते हैं - ये (सब) वास्तव में ईमान वाले हैं - - - ।" आतंकवादियों के लिए भी एक अच्छी कविता।

०३९ ८/७५: "और जो बाद में ईमान को स्वीकार करते हैं, और बंधुआई को अपनाते हैं, और ईमान के लिए लड़ते हैं" आपकी कंपनी में - वे आपके हैं।" और यदि तुम ऐसा ही करते हो और मुहम्मद के लिए युद्ध करने जाते हो, आप उनमें से हैं और एक अच्छे मुसलमान हैं।

वर्ष ६२४ - ६२५ ई. सूरह 59:

०४० ५९/६: "अल्लाह ने अपने रसूल पर जो कुछ दिया है (और उनसे छीन लिया) पीड़ितों*)) - इसके लिए तुमने घुड़सवार या ऊंट के साथ कोई अभियान नहीं किया - - -।" सभी लूट युद्ध मुहम्मद (नाममात्र अल्लाह) के लिए थे, जब पीड़ितों ने बिना किसी लड़ाई के हार मान ली।

०४१ ५९/७: "अल्लाह ने अपने रसूल पर जो कुछ दिया है (और छीन लिया) उसके लोगों से बस्ती (पीड़ित*), अल्लाह की है - - -"। ऊपर 59/6 देखें

०४२ ५९/१३: "सच में तुम (मुस्लिम योद्धा*) उनसे अधिक शक्तिशाली हैं ("काफिर" यहूदियों में यह मामला *)) उनके दिलों में आतंक के कारण, (भेजे गए) अल्लाह द्वारा।" यह अच्छा मनोविज्ञान है कि आपके योद्धा मानते हैं कि दुश्मन कमजोर है और यह भी कि दुश्मन डरा हुआ है। यह दावा कि गैर-मुसलमानों के दिल में एक आतंक या बीमारी है जिसे अक्सर मुहम्मद ने दोहराया है - आंशिक रूप से अपने योद्धाओं से बात करने के लिए, और आंशिक रूप से गैर-मुसलमानों को निम्न गुणवत्ता के रूप में कलंकित करने के लिए उनके सभी अनुयायियों की आंखें।

वर्ष: संभवत: ६२५ ईस्वी, हालांकि थोड़ा सा ६३१ ईस्वी। सूरह ३:

०४३ ३/१२२: "अपने दो दलों को याद करो (अल-औस गोत्र के बानू सलामा के कबीले से, और खजराज जनजाति के हरिथा कबीले से) मध्यस्थता कायरता (की लड़ाई से ठीक पहले)

उहुद ६२५ ई.*): लेकिन अल्लाह उनका रक्षक था, और अल्लाह में विश्वसनीय (हमेशा) रखना चाहिए
उनका विश्वास"। एक शक्तिशाली उदाहरण और हमेशा के लिए पे-टॉक। (कि ये हिस्से वीरान न हों
युद्ध से पहले मुहम्मद का मतलब मुसलमानों की लड़ाई के बीच का अंतर हो सकता है
वास्तव में हार गया, लेकिन उस कीमत पर जिसने मक्का को वापस ले लिया, और एक सैन्य तबाही।)

०४४ ३/१२४: "(उहुद की लड़ाई में अल्लाह ने मदद की*) आप तीन हज़ार फ़रिश्तों के साथ (विशेषकर)
नीचे भेजा गया"। और फिर युद्ध में जाने का कोई खतरा नहीं है, क्योंकि अल्लाह मुसलमानों की इस तरह मदद कर सकता है
बाद की लड़ाइयों में भी।

०४५ ३/१२५: "हाँ - यदि आप दृढ़ रहें - - - आपका रब (अल्लाह *) आपकी पाँच मदद करेगा
एक भयानक वध करने वाले हजार स्वर्गदूत "। सुरक्षित ज्ञान में युद्ध में जाओ कि अल्लाह
आपके बगल में लड़ने वाले सैनिक स्वर्गदूतों की बड़ी बटालियन भेजता है। यह नहीं बताया गया है कि क्यों एक
सर्वशक्तिमान ईश्वर को कोणों को भेजना पड़ा और हजारों की संख्या में अपने दुश्मन की सेना को तनाव में डालना पड़ा
आपको जीतने का बेहतर मौका दें। लेकिन विश्वासियों के लिए एक शक्तिशाली उत्साह - विशेष रूप से
अशिक्षित और / या भोले।

०४६ ३/१४२: "क्या तुमने सोचा था कि तुम अल्लाह के बिना स्वर्ग में प्रवेश करोगे जो तुम में से उन लोगों की परीक्षा ले रहे हो"
(उसके पक्ष में) कड़ा संघर्ष किया और दृढ़ रहा? आप बिना बने स्वर्ग में आ सकते हैं
योद्धा। लेकिन एक बात के लिए योद्धाओं के लिए यह बहुत आसान है - और एक निश्चित तरीका अगर आप मारे गए हैं -
और दूसरी बात के लिए; यदि आप इस जीवन में एक बहादुर योद्धा होते, तो आप . के सर्वश्रेष्ठ भागों में समाप्त होते
सबसे विलासिता के साथ स्वर्ग, बहुत सारी महिलाएं (इस्लाम मुख्य रूप से पुरुषों के कब्जे में है) - और करीब
अल्लाह को। जोरदार उत्तेजना। लेकिन एक सर्वज्ञ भगवान को अपने अनुयायियों की परीक्षा क्यों लेनी पड़ती है?
पता करें कि वे किस लायक हैं?

०४७ ३/१४६: "और अल्लाह उन लोगों से प्यार करता है जो दृढ़ और दृढ़ हैं (युद्ध में *)"। एक और ताकतवर
आदिम योद्धाओं - और आतंकवादियों - को दृढ़ विश्वास के साथ उकसाना।

०४८ ३/१४८: "और अल्लाह ने उन्हें दिया (और यदि तुम बहादुरी से लड़ोगे तो तुम्हें दे देंगे) a
इस दुनिया में इनाम (लूट और स्त्रियाँ, दास और शक्ति* हो सकती हैं), और उत्कृष्ट प्रतिफल
आख़िरत का।" नए रैपिंग में वही जोरदार उकसावे। दौलत, औरतें और जन्नत
- कोई आश्चर्य नहीं कि आदिम या सरल दिमाग वाले लोग आते थे - और झुंड - उसकी सेनाओं के लिए, छापे और
आतंकवादी समूह।

०४९ ३/१५१: "जल्द ही हम (अल्लाह*) अविश्वासियों के दिल में आतंक डाल देंगे - - -।" का
अवधि। एक और अच्छी पेप-टॉक।

०५० ३/१५४: "यदि तुम अपने घरों में ही रहते, तो भी जिनके लिए मृत्यु का आदेश दिया गया था
निश्चय ही वे अपनी मृत्यु के स्थान पर चले गए होंगे (किसी भी तरह*)।" **यह इनमें से एक है
बिंदु जहां मुहम्मद जानता था कि वह झूठ बोल रहा था।** यह इतना स्पष्ट रूप से गलत है कि एक बुद्धिमान
उसके जैसा आदमी जानता था कि यह सच नहीं है। लेकिन वह एक चतुर जोड़तोड़ करने वाला था ("क्या यह इसके लायक है कि मैं?
तुम लोगों के बीच रहो, और उन लोगों पर लूट खर्च करो जो उन्हें रहने के लिए उनके विश्वास में निश्चित नहीं हैं
इस्लाम में?" एफ। उदा।) और वह लोगों को समझता था। इस तरह के झूठ ने काम किया क्योंकि उनके अनुयायी थे
आदिम और इसके अलावा विश्वास करना चाहता था। और आदिम, अशिक्षित आत्माओं के लिए वास्तव में
इस तरह से मिश-मैश पर विश्वास करना (आंकड़ों से यह साबित करना आसान है कि यह असत्य है, अगर कोई असत्य है-
इतना बुद्धिमान कि एक बार में यह न देख सके कि यह झूठ है) यह एक शक्तिशाली उत्तेजना थी - में लड़ रहा था
लड़ाई खतरनाक नहीं थी, क्योंकि अल्लाह ने तय कर लिया था कि तुम कब मरोगे, और उस समय
तुम मरोगे चाहे तुम युद्ध में हो या अपने बिस्तर पर सो रहे हो। लेकिन यह ध्यान देने योग्य है
कि आज भी यह इस्लाम का आधिकारिक दृष्टिकोण है। इस सूरह को पादटिप्पणी ११९ उद्धृत करने के लिए
"कुरान के संदेश" में:

"(द) गलत, अन्यजातिवादी विश्वास है कि मनुष्य विशेष तरीकों से कार्य करने से मृत्यु से बच सकते हैं (यहां तक कि .)
एक समय के लिए*)"।

०५१ ३/१५५: "जिन्होंने पीठ फेर ली (उहूद की लड़ाई में) - - - यह शैतान था जिसने
उन्हें विफल कर दिया - - -।" और आप अपनी अगली लड़ाई या लड़ाई में शैतान की बात नहीं मानने वाले हैं?

पेज ७८३

०५२ ३/१५६: "अविश्वासियों की तरह मत बनो, जो अपने भाइयों के बारे में कहते हैं - - -: 'यदि वे रुके होते
हमारे साथ, वे मरते या मारे नहीं जाते"'। एक स्पष्ट संदेश: बेहतर गुणवत्ता का हो और
युद्ध पर जाओ।

०५३ ३/१५७: "और यदि तुम अल्लाह के मार्ग में मारे गए या मर गए, तो अल्लाह की ओर से क्षमा और दया
जितना वे जमा कर सकते थे उससे कहीं बेहतर हैं (लूट* के)"'। युद्ध से क्यों डरते हो? - सबसे अच्छी बात यह है कि
तुम्हारे साथ हो सकता है, अल्लाह और मुहम्मद के लिए मारा जाना है। तो जाने का कोई कारण नहीं है
युद्ध - इसके विपरीत यह आपके लिए सबसे अच्छा है: इस दुनिया में लूट और / या अगले में स्वर्ग।

०५४ ३/१५८: "और यदि तुम मर जाओ, या मारे जाओ, तो देखो! यह अल्लाह के लिए है कि तुम्हें एक साथ लाया गया है।" देखो
3/157 ठीक ऊपर।

०५५ ३/१६५: "क्या! जब एक भी विपदा तुम पर प्रहार करती हो, यद्यपि तुम (अपने शत्रुओं) को मारते हो
एक दुगना बड़ा, क्या तुम कहते हो, 'यह कहाँ का है? अविश्वसनीय! आप हार के कारण संदेह करते हैं
(उहुद)! उतार-चढ़ाव अवश्यंभावी हैं, और यहाँ उसके खिलाफ एक जोरदार बात है।

०५६ ३/१६७ए: पाखंडी अच्छे नहीं थे और लड़ने से बचते थे। लेकिन तुम बेहतर हो?!
और आप अल्लाह पर बेहतर प्रभाव डालना चाहते हैं?!

०५७ ३/१६७बी: "कुरान के संदेश" में इस कविता के लिए यह टिप्पणी है (इस सूरह के लिए संख्या 128):
"आत्मरक्षा में केवल युद्ध - शब्द के व्यापक अर्थ में - को एक लड़ाई माना जा सकता है"
अल्लाह के लिए "'। लेकिन जैसा कि "शब्द का व्यापक अर्थ बहुत व्यापक है", प्रत्येक और प्रत्येक
युद्ध जहां एक हिस्सा मुस्लिम है और दूसरा नहीं - और जहां दोनों हिस्से मुस्लिम हैं -
"आत्मरक्षा" में हैं या अन्य कारणों से सिर्फ युद्ध हैं और हमेशा जिहाद घोषित किए जाते हैं, यह
बस पाखंड है। सभी युद्धों में, आक्रमण के युद्ध शामिल थे, और बहुत कुछ हुआ है
जिन्हें इतिहास के माध्यम से "जिहाद" घोषित किया गया है - कम से कम हम नहीं ढूंढ पाए हैं
इस नियम से अपवाद। **दरअसल सदियों से इस्लाम के चारों लॉ स्कूल सहमत थे
इस तथ्य पर कि एक संघर्ष में विपरीत हिस्सा गैर-मुस्लिम थे, काफी अच्छा था
उन पर हमला करने और जिहाद (पवित्र युद्ध) के लिए हमले / युद्ध की घोषणा करने का कारण।** यह नहीं था
1920 या 1930 के दशक में कुछ मुस्लिम विद्वानों ने इस "कानून" पर सवाल उठाना शुरू कर दिया था - और यह
अभी भी केवल और केवल मुसलमानों के कुछ हिस्सों द्वारा ही सवाल किया जाता है, हालांकि आजकल ये सवाल हैं
आम तौर पर मुस्लिम हिस्से बनाता है, जिसमें आतंकवादी भी शामिल हैं, दूसरे हिस्से को दोष देते हैं ताकि वे दे सकें
जिहाद का दावा कम से कम एक डेमोगॉग का न्यायपूर्ण युद्ध होने की वास्तविकता है। के लिए बहुत सुविधाजनक है
जिसे योद्धाओं/सैनिकों की आवश्यकता है - और युद्ध के लिए एक सुविधाजनक प्रोत्साहन: सभी युद्धों के खिलाफ
"काफिर" "जिहाद" हैं - बलात्कार और चोरी और हत्या की अनुमति के साथ - - और गारंटी के लिए
मारे जाने पर जन्नत में जाना।

०५८ ३/१६८: "कहो, 'अपने लिए मौत टालना (अच्छे मुसलमान नहीं*) - - -।" मौत का बुरा मत मानना
अल्लाह और मुहम्मद (और उनके उत्तराधिकारियों) के लिए - यह मरने का एक अच्छा तरीका है। ३/१६९ को भी देखें
नीचे।

०५९ ३/१६९: "अल्लाह के मार्ग में मारे गए लोगों को मरा हुआ मत समझो। नहीं, वे रहते हैं
(याद रखें कि कुरान के अनुसार मुसलमानों को शारीरिक रूप से पुनर्जीवित किया जाता है*), उनका पता लगाना
अपने रब (अल्लाह*) की मौजूदगी में रोज़ी-रोटी।" ऊपर 3/168 देखें।

०६० ३/१७०: "वे (जो युद्ध में मारे गए*) अल्लाह के इनाम (पृथ्वी के समान) में आनन्दित होते हैं
विलासितापूर्ण जीवन + महिलाओं की भरमार - महिलाओं के लिए वह जीवन कैसा है, इसका कोई मतलब नहीं है*) - - -
(और*) (शहीद) (युद्ध में मारे गए सभी मुसलमान शहीद हैं, चाहे वह युद्ध ही क्यों न हो)
आक्रमण या नहीं, या केवल पैसे और गुलामों के लिए छापेमारी - मुहम्मद ने ऐसे कई बनाए
उन*) की महिमा इस बात से है कि उन पर न तो कोई भय है और न वे शोक करते हैं।"

783

पेज ७८४

मनोवैज्ञानिक रूप से एक नेता के लिए अपने अनुयायियों से निपटने और इस तथ्य के लिए तैयार करने का एक बहुत अच्छा तरीका है
कि कुछ योद्धा युद्धों में मरने वाले थे। दुःख का कारण बहुत कम था और बहुत कम
नेता को दोष देने का कारण

०६१ ३/१७२: "उन लोगों में से जिन्होंने अल्लाह और रसूल की पुकार का उत्तर दिया, यहां तक कि होने के बाद भी" घायल, जो सही करते हैं और गलत से परहेज करते हैं, उन्हें एक बड़ा इनाम मिलता है।" मुहम्मद थे
जोक-वार्ता में अच्छा - वह लोगों को स्पष्ट रूप से समझता था और उन्हें कैसे हेरफेर करना है।

०६२ ३/१७४: "और वे (बहादुर योद्धा*) अल्लाह की कृपा और उदारता के साथ लौटे - - -।"
परास्त पीड़ितों से लड़ाई और लूट के लिए स्वर्ग में मेरिट। आपको करना चाहिए
वैसा ही! पीड़ितों को जो भयानक कीमत चुकानी पड़ी, उसका कोई मतलब नहीं था - धर्म और
संस्कृति एक नैतिक, नैतिक और सांस्कृतिक स्तर पर थी (उत्तर है?) जिसने अपने अनुयायियों को बनाया (बनाया?)
इस तरह के तथ्यों को देखने में असमर्थ - या इसके बारे में सोचने या सोचने के लिए पर्याप्त विकसित या सभ्य नहीं है।
ज़रा कई हत्यारे मुस्लिम नायकों के बारे में सोचिए f. भूतपूर्व। सिंध और अफ्रीका में। वे
आज भी चमकते हीरो

०६३ ३/१९५: "---जिन्होंने----लड़ाई या मारे गए- वास्तव में, मैं (अल्लाह*) मिटा दूँगा
उनके अधर्म के कामों से, और उन्हें बाग़ों में दाखिल करो - - -।" **एक अपराजेय और सस्ता
वास्तविक विश्वासियों को युद्ध में भर्ती करने के लिए उकसाना: युद्ध में मारे जाओ और सीधे जाओ
स्वर्ग चाहे आप पहले कितने भी बड़े पापी रहे हों।**

वर्ष ६२५ - ६२६ ईस्वी, सूरह ६१:

०६४ ६१/४: "अल्लाह वास्तव में उन लोगों से प्यार करता है जो युद्ध के मैदानों में उसके कारण लड़ते हैं जैसे कि वे एक थे"
ठोस पुख्ता संरचना। " के रोमांस के साथ मिश्रित एक शक्तिशाली उत्तेजना और युद्ध प्रचार
युद्ध - और इस समय हर कोई युद्ध और दासों की लूट और बलात्कार के लिए स्वतंत्र महिलाओं के बारे में जानता था,
आदि।

०६५ ६१/११: "कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हो और उसमें (अपना सबसे बड़ा) प्रयास करते हो
अल्लाह के कारण, अपनी संपत्ति और अपने व्यक्तियों के साथ: यह तुम्हारे लिए सबसे अच्छा होगा, यदि तुम लेकिन
जानता था!" युद्ध आंदोलन। वास्तविक "शांति का धर्म।"

०६६ ६१/१२: "(यदि आप युद्ध में जाते हैं / मुहम्मद* के लिए मारे जाते हैं) तो वह (अल्लाह*) आपको क्षमा कर देगा
पाप करते हैं, और आपको उन बगीचों में प्रवेश देते हैं जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं, और सुंदर हवेली में
अनंत काल के बगीचे - - -।" एक बार "यह सब और स्वर्ग भी" नाम की एक सस्ती किताब थी। यह है
यहां समान: सभी बलात्कार और चोरी और दास जिन्हें आप प्रबंधित कर सकते हैं - और उन अच्छे लोगों के लिए,
आपके लिए परोपकारी भगवान के रूप में परोपकारी कार्य: अधिक विलासिता और अधिक के साथ स्वर्ग
महिला। भोले, गरीब और पौरुष के लिए अच्छा और आकर्षक - उग्र नहीं कहना - असभ्य युवा
और युवा नहीं।

०६७ ६१/१३: "(और युद्ध में आपको * मिलेगा) अल्लाह से मदद और एक त्वरित जीत।" देखें ६१/१२ बस
ऊपर - और इसके अलावा आपको ज्यादा संघर्ष नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि जीत आसान होगी। हाँ
शांति का धर्म*.

वर्ष ६२५ (६२७?) - ६२८ ईस्वी (६२७ से पहले की संभावना नहीं - खाई की लड़ाई)। सूरह 33.

०६८ ३३/१६: "भागने से आपको कोई लाभ नहीं होगा, यदि आप मृत्यु से भाग रहे हैं या"
वध (युद्ध *); और यहां तक कि अगर (आप बच जाते हैं), तो आपको एक संक्षिप्त (राहत) से अधिक की अनुमति नहीं दी जाएगी
मजा लेना!" अल्लाह ने तय किया है कि आपको कब मरना है - हदीसों के अनुसार जो होता है 5

784

पेज ७८५

आपके पैदा होने के महीनों पहले। उसके कारण युद्ध से भागने का कोई कारण नहीं है - आप करेंगे
किसी भी तरह अब (या कम) नहीं रहते।

०६९ ३३/१९: "ऐसे आदमी (जो लड़ना नहीं चाहते*) को ईमान नहीं - - -।" - और अच्छे नहीं हैं।
बेशक आप बेहतर हैं?

०७० ३३/२२: जब मदीना में वास्तव में विश्वास करने वाले मुसलमानों ने ६२७ ई
(ट्रेंच की लड़ाई) "इसने केवल उनके विश्वास और आज्ञाकारिता में उनके उत्साह को जोड़ा"। की कहानियां
वीरता वीरता के लिए वासना को प्रेरित करती है - एक मनोवैज्ञानिक रूप से सही कहानी।

वर्ष 626 मुख्य रूप से। सूरह 4.

०७१ ४/७४: "उसके लिए जो अल्लाह के मार्ग में झगड़ता है - चाहे वह मारा जाए या जीत हासिल की जाए -

जल्द ही हम (अल्लाह*) उसे महान (मूल्य) का इनाम देंगे।" मुहम्मद के लिए सस्ते शब्द
खासकर और (र अल्लाह) एक कल्पना (है)। मारे गए सभी लोगों के लिए - या एक तरह से बदतर;
कटे-फटे - हमें उम्मीद करनी होगी कि मुहम्मद ने सच कहा। (लेकिन कुरान में बहुत ज्यादा है
सच नहीं है, और मुहम्मद झूठ बोलने और यहां तक कि सर्वश्रेष्ठ पाने की शपथ लेने से अनजान नहीं थे
संभावित परिणाम - और उसे योद्धाओं, सस्ते योद्धाओं की आवश्यकता थी)।

०७२ ४/७५: "और तुम अल्लाह के लिए क्यों नहीं लड़ते और जो कमजोर हैं, वे हैं"
दुर्व्यवहार (और उत्पीड़ित)? पुरुष, महिलाएं और बच्चे (मदद और बचाव के लिए रोते हुए*) - - -।"
सफेद घोड़े पर मुहम्मद के गौरवशाली नायक का संस्करण। एक और उत्तेजक सपना।

०७३ ४/७६: "- - - शैतान के दोस्तों के खिलाफ लड़ो - - -"। बेशक आप ऐसा करना चाहते हैं - और
बेशक सभी गैर-मुसलमान शैतान के दोस्त हैं।

०७४ ४/७७: "इस दुनिया का आनंद कम है: सही करने वालों के लिए परलोक सबसे अच्छा है - -
-।" आप इस छोटे से जीवन में युद्ध से भाग सकते हैं - लेकिन जो युद्ध में जाते हैं उनके पास बहुत बेहतर होगा
अगला और अनन्त जीवन। एक योद्धा बनो और मुहम्मद के लिए लड़ो - और अल्लाह के लिए (यदि वह)
मौजूद)।

०७५ ४/७८: "तुम जहाँ कहीं भी हो, मृत्यु तुम्हें मिलेगी, भले ही तुम मजबूत बने हुए टावरों में हों और
उच्च!" अल्लाह ने तय कर लिया है कि तुम्हें कब मरना है। आप युद्ध में भी जा सकते हैं और अच्छे काम कर सकते हैं
अल्लाह के लिए - और उससे पुरस्कार और युद्ध की लूट प्राप्त करें - क्योंकि तुम जल्दी नहीं मरोगे और
बाद में सब समान नहीं। कोई टिप्पणी आवश्यक नहीं होनी चाहिए।

०७६ ४/८४: "फिर अल्लाह के लिए लड़ो - - -।" एक स्पष्ट और सीधा संदेश।

०७७ ४/९१: "- - - यदि वे (आपके विरोधी*) आपसे पीछे नहीं हटते हैं और न ही आपको (गारंटी) देते हैं
उनके हाथों को रोके रखने के अलावा, उन्हें आकार दें और जब भी आप उन्हें प्राप्त करें, उन्हें मार डालें - - -। " ए
स्पष्ट और अच्छा आदेश। उकसाने वाला भी नहीं, आदेश है।

०७८ ४/९५: "समान नहीं वे ईमानवाले हैं जो (घर पर) बैठते हैं और चोट नहीं पाते हैं, और वे जो
अपने माल और अपने व्यक्ति के साथ अल्लाह के लिए प्रयास करें। अल्लाह ने एक उच्च ग्रेड दिया है
उन लोगों के लिए जो अपने माल और अपने व्यक्तियों के साथ प्रयास करते हैं"। स्पष्ट शब्द: युद्ध या आतंकवाद पर जाएं
और स्वर्ग के एक बेहतर हिस्से में समाप्त होता है - वहाँ कम से कम ४ अलग-अलग गुण हैं।
उत्तेजना "डी लक्स"।

०७९ ४/९५ + ९६: "- - - प्रयास करने वालों ने अल्लाह को बैठने वालों से ऊपर रखा है (घर पर)
एक विशेष इनाम के द्वारा - विशेष रूप से उसके (अल्लाह*) द्वारा दिए गए रैंक, और क्षमा (के लिए .)

785

पेज ७८६

कुछ भी अगर तुम युद्ध में मारे गए*) और दया।" इसमें कोई शक नहीं कि सबसे अच्छा मुसलमान कौन है और क्या?
इस्लाम में सबसे अच्छा काम है - योद्धा और युद्ध अल्लाह को सबसे ज्यादा भाते हैं। (इस्लाम बुलाने के लिए)
"शांति का धर्म" सूरह पढ़ने वाले प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि का अपमान है
मदीना से।)

०८० ४/१०४: "वह जो अल्लाह के लिए अपने घर को त्याग देता है - - - क्या उसे शरणार्थी के रूप में मरना चाहिए
घर से अल्लाह और उसके (अल्लाह के) रसूल (मुहम्मद*) के लिए, उसका इनाम देय हो जाता है
और अल्लाह के पास पक्का है - - -।" मरो मुहम्मद के लिए - और अल्लाह के लिए यदि वह मौजूद है - और जाना सुनिश्चित करें
स्वर्ग और (मुख्य रूप से) कामुक सुख और वहां अच्छा भोजन। एक आदिम और क्या हो सकता है
- अक्सर युद्ध और अपने ही अमानवीय कर्मों से बेरहमी से - गरीब, युवा योद्धा का सपना?
उच्च वर्ग का प्रलोभन।

०८१ ४/१४१: "- - - और अल्लाह अविश्वासियों को कभी भी (विजय के लिए) रास्ता नहीं देगा
विश्वासियों"। युद्ध में जाओ - लंबे समय में आपकी जीत निश्चित है।

वर्ष ६२७ - ६२९ ई. सूरह 33:

०८२ ३३/१९: "--- जब भय आएगा, तो आप (मुस्लिम योद्धा*) उन्हें अपनी ओर देखते हुए देखेंगे, उनका
आंखें घूमती हैं, जैसे (उनकी) जिनके ऊपर मृत्यु हो जाती है: लेकिन जब भय बीत जाता है, तो वे
माल के लोभी, तीखी जीभ से तुझे मारेगा।" वे - बुरे वाले - अच्छे नहीं हैं।
आप निश्चित रूप से बेहतर सामान के हैं? प्रोत्साहन देना।

वर्ष ६२८ ई. सूरह 28:

०८३ २८/१६: “तुम (बदौइन्स जो पहले युद्ध करने के लिए अनिच्छुक थे) को बुलाया जाएगा
(लड़ाई) जोरदार युद्ध के लिए दिए गए लोगों के खिलाफ। (अगर तुम बहादुरी से लड़ोगे*) तो अल्लाह तौबा करेगा
आपको एक अच्छा इनाम - - -।" यदि आप केवल लड़ने के लिए तैयार हैं, तो अपने पुराने कर्मों को क्षमा करना है
मुमकिन।

०८४ २८/२२: "यदि अविश्वासी आप से लड़ें, तो वे निश्चित रूप से अपनी पीठ फेर लेंगे - - -"।
मध्यम गुणवत्ता की पेप-टॉक।

वर्ष 629 ई. सूरह 66:

085 66/9: "हे पैगंबर (मुहम्मद*)! अविश्वासियों और पाखंडियों के खिलाफ कड़ी मेहनत करो,
और उनके विरुद्ध दृढ़ रहो। उनका ठिकाना नर्क है - - -।" एक स्पष्ट आदेश और एक स्पष्ट स्पष्टीकरण क्यों
वे उप-मानव हैं, और इस प्रकार मरने के योग्य हैं। "अनटरमेन्च" को मारना हमेशा ठीक होता है - वे
इसके लायक। ऐसा करने के लिए "उबरमेन्च" का भी अधिकार है - और कुरान में कोई संदेह नहीं है
मुसलमान "उबरमेन्च" हैं।

वर्ष ६३० - ६३२ ईस्वी (६३० ईस्वी से पहले नहीं)। सूरह 57:

०८६ ५७/१०: “तुममें (मुसलमान*) बराबर नहीं हैं, जिन्होंने पहले ख़र्च किया और लड़ाई लड़ी
विजय (मक्का की विजय ६३० ई.*), (उन लोगों के साथ जिन्होंने बाद में ऐसा किया)। वे उच्च में हैं
उन लोगों की तुलना में जिन्होंने (स्वतंत्र रूप से) ख़र्च किया और बाद में लड़े। लेकिन अल्लाह ने सभी से वादा किया है:
अच्छा (इनाम)।" पैसे खर्च करो और मुहम्मद (और उसके उत्तराधिकारियों) के लिए युद्ध में लड़ो और
अल्लाह, और अल्लाह आपको भरपूर इनाम देगा। धन प्राप्ति के लिए एक और शक्तिशाली प्रलोभन
और युद्ध के लिए योद्धा। (लेकिन क्या एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर को वास्तव में युद्ध की आवश्यकता है? - हे
सब कुछ जानता है और सब कुछ बेहतर तरीके से कर सकता है। कुरान कहता है कि यह तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए है - लेकिन
क्या एक सर्वज्ञ ईश्वर को आपकी परीक्षा लेने की आवश्यकता है, जब वह सब कुछ और सभी उत्तरों को जानता है

786

पेज 787

इससे पहले? और क्या एक भगवान वास्तव में एक अच्छा और परोपकारी हो सकता है, जब वह मुख्य चीज चाहता है
उसके नीचे से यह है कि वे एक दूसरे के खिलाफ शैतानों की तरह व्यवहार करते हैं? - जब कोई कहता है
कुछ, लेकिन निर्देश देता है या कुछ बहुत अलग करता है, हम इसमें विश्वास करते हैं
निर्देश और कर्म, सस्ते शब्दों में नहीं।)

०८७ ५७/११: “वह कौन है जो अल्लाह को एक सुंदर ऋण देगा (कुरान में यह अभिव्यक्ति)
आम तौर पर जोखिम या अपनी जान देने का मतलब है (युद्ध में)*)? क्योंकि (अल्लाह) इसे कई गुना बढ़ा देगा
उसका श्रेय, और उसके पास (इसके अलावा) एक उदार इनाम होगा। ” आकर्षित करने के लिए एक अच्छा वादा or
योद्धाओं को तैयार करना - या शायद युद्ध छेड़ने के लिए संसाधनों को आकर्षित करने के लिए। के लिए एक अच्छा सौदा
योद्धाओं और संसाधनों के दाताओं के लिए यदि शब्द सत्य हैं। लेकिन अगर मुहम्मद ठंडा है
और षडयंत्रकारी जोड़तोड़ सत्ता के लिए बाहर जा रहा है, चाहे दूसरों की कीमत कुछ भी हो,
जैसे वह इतिहास में दिखता है, न कि संत धर्म ने उसे बनाया है, केवल वही जो वास्तव में है
इससे प्राप्त हुए, मुहम्मद स्वयं और उनके सहयोगी और बाद में उनके उत्तराधिकारी थे। NS
यहां एक गंभीर तथ्य यह है कि इतिहास अक्सर धर्म की तुलना में अधिक स्पष्ट नजर आता है, विशेष रूप से
केवल अंध विश्वास पर निर्मित धर्मों की तुलना में स्पष्ट गलतियों के साथ मिश्रित और बदतर जैसे
इस्लाम।

०८८ ५७/१८: "---अल्लाह को क़र्ज़ एक ख़ूबसूरत क़र्ज़---." ऊपर 57/11 देखें।

वर्ष ६३१ ई. की संभावना है। सूरह 9:

श्लोक ९/५ प्रसिद्ध और कुख्यात "तलवार का पद" है। और मानो यह श्लोक नहीं था
काफी खूनी, यह कम से कम इन छंदों से मजबूत होता है: २/१९१, २/१९३, ४/९१, ८/३९, ८/६०, ९/२९,
9/33, 9/73, 9/123, 25/36, 33/61, 33/73, 47/4, और 66/9। जिसका अर्थ है कि एफ. भूतपूर्व। एक केंद्रीय छंद
प्रो-इस्लामिक में हमेशा ईमानदार नहीं (अल-तकिया? - और किटमैन?) प्रचार, पद्य की तरह
२/२५६: "धर्म में कोई बाध्यता न हो" को मारकर अमान्य कर दिया जाता है - निरस्त कर दिया जाता है - पर
कम से कम ये 15 अलग-अलग छंद **(वास्तव में 2/256 को कम से कम 30 कठोर शब्दों द्वारा निरस्त किया गया है)
छंद)।**

०८९ ९/५ **“परन्तु जब मना किए हुए महीने बीत जाएँ, तो पगानों से लड़ो और उन्हें मार डालो
जहाँ कहीं तुम उन्हें पाओ, और उन्हें आकार दो, उन्हें परेशान करो, और हर जगह उनकी प्रतीक्षा करो
स्ट्रेटेजम (युद्ध का)। ”** उकसाने वाला भी नहीं, बल्कि स्पष्ट आदेश। (पुराने अरब में 4 महीने थे

एक साल जब युद्ध करना मना था - हालांकि मुसलमानों ने कम से कम एक बार इसके दौरान किया था
ऐसा एक महीना - इस्लाम ने कई अन्य बुतपरस्त रीति-रिवाजों की तरह इस बुतपरस्त रिवाज को अपना लिया। इन
महीने वे हैं जो "निषिद्ध महीने" का उल्लेख करते हैं।

०९० ९/१३: "क्या तुम (मुसलमान*) उन लोगों से नहीं लड़ोगे जिन्होंने अपनी शपथ का उल्लंघन किया (जैसे मुहम्मद ने किया)
खुद*), दूत को निष्कासित करने की साजिश रची, और सबसे पहले (to .) बनकर आक्रामक नेतृत्व किया
हमला) तुम?" कुरान कहता है माफ़ करना सबसे अच्छी बात है - - - लेकिन अपने हिसाब से क्यों जियें
अपने शब्द? मुहम्मद और इस्लाम के लिए युद्ध करना और सत्ता हासिल करना वास्तविकता है, शब्द हैं:
केवल शब्द। और अगर आप युद्ध में नहीं जाना चाहते हैं, तो यह अविश्वसनीय है! - तो आप अच्छे नहीं हैं
मुस्लिम !!

०९१ ९/१६: "या यह सोचो कि तुम (मुसलमान*) कि तुम्हें छोड़ दिया जाएगा (अल्लाह के द्वारा और नहीं
युद्ध में जाने के लिए इनाम*), मानो अल्लाह आप में से उन लोगों को नहीं जानता जो संघर्ष करते हैं
हो सकता है और मुख्य - - -।" बस युद्ध में जाओ - यह निश्चित है कि अल्लाह आपको इसके लिए पुरस्कृत करेगा (जैसा कि वह है)
"शांति के धर्म" के अच्छे और परोपकारी देवता।)

०९२ ९/१९ए: "क्या आप तीर्थयात्रियों को पेय देते हैं, या पवित्र के रखरखाव करते हैं"
मस्जिद (मक्का में काबा*), अल्लाह और अल्लाह पर ईमान रखने वालों के बराबर (पवित्र सेवा)

787

पेज ७८८

अंतिम दिन और अपने पराक्रम और दिमाग से प्रयास करें (मजदूरी युद्ध - 9/16 ठीक ऊपर* देखें) कारण में
अल्लाह का?"

बेशक सक्रिय योद्धा - या आतंकवादी - सबसे अच्छे हैं। एफ. पूर्व. दारफुर और . में योद्धा
आतंकवादी कहीं भी सोचते हैं कि वे हत्या और हत्या करके एक पवित्र सेवा कर रहे हैं - - और गिरोह
दारफुर और अन्य जगहों पर बलात्कार की तरह जहां यह सामान्य युद्धों की तरह है, हिट एंड रन नहीं - और
बेशक इस दुनिया में "अच्छे और वैध" इनाम के लिए चोरी करना और लूटना भी।

हाँ, एक अच्छा और मानवीय और परोपकारी धर्म।

और गैर-मुसलमानों के लिए कुछ भविष्य - कुरान में एक जगह, योद्धाओं को याद दिलाया जाता है कि
ऐसे स्थान हैं जहां युद्ध की समृद्ध लूट अभी तक नहीं ली गई है। पश्चिम में? - या अन्य जगह? ऐसा होता है
कोई बात नहीं - यह श्लोक एक बार फिर बताता है कि योद्धा सबसे अच्छे मुसलमान हैं - - और लूटते हैं
युद्ध आकर्षक हैं।

**११० ०९३ ९/१९बी: "वे (अच्छे काम करने वाले मुसलमान*) की दृष्टि में तुलनीय नहीं हैं
अल्लाह (अल्लाह के लिए मारने/युद्ध करने वालों के साथ)"। आतंकवादी और अन्य हथियार का उपयोग कर रहे हैं और
अल्लाह के लिए क़त्ल करना सबसे अच्छा मुसलमान है।

अंदाजा लगाइए कि क्या इस तरह की आयतें कुछ एक-दिमाग वाले या कट्टर मुसलमानों पर अपना काम करती हैं। किसने कहा
"कुरान में ऐसी आयतें हैं जिनका उपयोग युद्ध और आतंक के लिए किया जा सकता है"? गलत: यह शायद ही है
गैर-मुसलमानों के खिलाफ हथियारों का इस्तेमाल किए बिना वास्तव में पवित्र मुसलमान बनना संभव है।

०९४ ९/२०ए: "जो लोग विश्वास करते हैं, और निर्वासन का सामना करते हैं और अपनी ताकत और मुख्य (= लड़ाई) के साथ प्रयास करते हैं
हथियारों के साथ*), अल्लाह के लिए, अपने माल और अपने व्यक्तियों के साथ (= व्यक्तिगत रूप से लड़ना
युद्ध या आतंकवाद - "युद्ध की कोई भी चाल" *), अल्लाह की दृष्टि में सर्वोच्च पद है - - -"।

**निःसंदेह आतंकवादी और अन्य योद्धा सबसे अच्छे मुसलमान हैं। इनमें से एक बनें
उन्हें!**

०९५ ९/२०: "- - - वे (आतंकवादी/योद्धा*) वे लोग हैं जो (उद्धार) प्राप्त करेंगे"। पर
कम से कम कुरान कुछ चीजों के बारे में ईमानदार है - जैसे हिटलर "में काम्फ" में था - - - और
कुछ लोगों ने हिटलर पर तब तक विश्वास किया जब तक बहुत देर हो चुकी थी।

और कम से कम: यह मुहम्मद/अल्लाह के लिए युद्ध के लिए मुख्य उत्तेजनाओं में से एक को दोहरा रहा है।

०९६ ९/२१: "उनके (आतंकवादी/योद्धा*) भगवान (अल्लाह *) उन्हें दया की खुशखबरी देते हैं
(अल्लाह के लिए आतंकवादियों/योद्धाओं को व्यावहारिक रूप से किसी भी पाप को माफ कर दिया जाता है) खुद से (अल्लाह की ओर से)
व्यक्तिगत रूप से *), उनकी अच्छी खुशी के लिए (उन्होंने लड़ाई और हत्या के लिए किया है
अच्छे और दयालु भगवान*), और उनके लिए बाग़, जिनमें प्रसन्नताएँ (पृथ्वी के समान धन और) हैं
महिला *) जो सहन करती है"। युद्ध, आतंक और हत्या के लिए अंतिम उत्साह की बात? अ के नाम पर
संभवतः शांतिपूर्ण धर्म और एक दयालु और अच्छा भगवान?

०९७ ९/२२: “वे (आतंकवादी/योद्धा*) उसमें (स्वर्ग में) हमेशा रहेंगे। वास्तव में अल्लाह के में उपस्थिति एक इनाम है, सबसे बड़ा (सबसे बड़ा)"। योद्धाओं/आतंकवादियों की दृष्टि में बहुत सम्मान है अल्लाह की, कि उन्हें स्वर्ग के उन हिस्सों में रहने के लिए आमंत्रित किया जाएगा जहां अल्लाह की मौजूदगी है। (में मुस्लिम स्वर्ग कुछ हिस्से दूसरों की तुलना में भी बेहतर हैं - जीसस एफ। भूतपूर्व। 2 में ही रहता है। स्वर्ग, जबकि मूसा एक बेहतर भविष्यवक्ता था और स्वर्ग संख्या चार में रहता है, और शीर्ष इब्राहीम और मुहम्मद जैसे नबी निश्चित रूप से सातवें नंबर पर हैं, जो अल्लाह के सबसे करीब हैं

788

पेज ७८९

सातवें नंबर से ऊपर रहता है। इसके अलावा स्वर्ग के कुछ क्षेत्रों में से बेहतर उद्यान हैं अन्य।

९/२१ की तुलना में यह और भी अधिक उत्साहपूर्ण बात हो सकती है।

098 9/25: "निश्चित रूप से अल्लाह ने कई युद्धक्षेत्रों में आपकी सहायता की - - -।" - और फलस्वरूप वह कर सकते हैं भविष्य के युद्धक्षेत्रों में भी ऐसा ही करने की अपेक्षा की जाती है।

099 ***9/29: "उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह पर विश्वास नहीं करते - - -।" एक उकसावे की बात भी नहीं, लेकिन सबसे ज्यादा स्पष्ट आदेश - - - इच्छा के बावजूद "धर्म में कोई बाध्यता न हो" (2/256)। और नायब: यहां आत्मरक्षा की कोई मांग नहीं है - बिना किसी आरक्षण के लड़ने का आदेश।

१०० ९/३६: "पगानों से एक साथ लड़ें क्योंकि वे आप सभी से एक साथ लड़ते हैं - - -।" एक आदेश और एक उकसाना - इस समय (६३१ ई.) मुहम्मद को अंततः ऊपरी हाथ मिल गया था, और अब से पर और आने वाली शताब्दियों के लिए, अधिकांश युद्ध जो मुसलमानों ने लड़े, वे आक्रमण के युद्ध थे और लूटपाट और लूट और दासता के युद्ध + शक्ति का विस्तार और विस्तार और धर्म।

१०१ ९/३८: “हे विश्वास करने वालों! तुझे क्या बात है, कि जब तुझे जाने को कहा जाए अल्लाह के मार्ग में (= युद्ध में जाने के लिए*), तुम पृथ्वी से बहुत चिपके रहते हो। क्या आप का जीवन पसंद करते हैं परलोक के लिए यह दुनिया?" एक बहुत ही अलंकारिक प्रश्न यह वास्तव में एक पवित्र व्यक्ति के लिए बहुत कठिन है मुस्लिम को "नहीं" का जवाब नहीं देना - मुहम्मद के लिए एक अच्छा प्रोत्साहन। और एक सवाल यह भी कि इस्लाम के बारे में बहुत कुछ बताता है।

१०२ ९/३९: "जब तक तुम (युद्ध/लड़ाई*) में नहीं जाते, वह (अल्लाह*) तुम्हें कठोर दंड देगा दंड (आमतौर पर कुरान में नर्क का पर्यायवाची *) - - -"। एक आदेश संभव नहीं एक धर्मपरायण - या कट्टर - मुस्लिम के लिए गलतफहमी।

हाँ, शांति, अच्छाई और स्वर्गीय नैतिकता पर बना धर्म।

१०३ ९/४०: "यदि आप मदद नहीं करते हैं (आपके नेता (तब मुहम्मद - आज कोई धार्मिक नेता? *)), (यह है कोई बात नहीं (क्योंकि अल्लाह मदद करता है*))। यह आंशिक रूप से एक विशेष पृष्ठभूमि पर कहा जाता है, लेकिन बहुतों की तरह कुरान में जगह, इसका मतलब किसी भी समय सभी मुसलमान हो सकते हैं। युद्ध में अपने नेताओं की मदद करें और अत्याचार - ठीक वैसे ही जैसे मुहम्मद को मदद की ज़रूरत थी।

१०४ ९/४१: "आगे जाओ (चाहे सुसज्जित हो) हल्के या भारी, और प्रयास और संघर्ष (= .) लड़ाई *), अपने माल और अपने व्यक्ति (धन और जीवन *) के साथ, अल्लाह के मार्ग में। अर्थात् आपके लिए सबसे अच्छा, यदि आप जानते थे लेकिन ”। कोई टिप्पणी आवश्यक है?

१०५ ९/४२: "यदि तत्काल लाभ (दृष्टि में) होता, और यात्रा आसान होती, तो वे (सभी) निस्संदेह तुम्हारा पीछा किया है - (लेकिन ऐसा नहीं था, और उन्होंने नहीं किया) - - -।" आप निश्चित रूप से के हैं बेहतर गुणवत्ता?!

१०६ ९/४४: "जो लोग अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं, वे प्रयास करने से कोई छूट नहीं मांगते हैं" अपने माल और व्यक्तियों के साथ (= युद्ध छेड़ना*)”। यदि आप एक सच्चे मुसलमान हैं, तो आप परहेज नहीं करते युद्ध में जाने से।

107 ***9/44: "और अल्लाह उन्हें (युद्ध में जाने वाले मुसलमानों) को अच्छी तरह जानता है जो अपना कर्तव्य करते हैं"। इनकार करना संभव नहीं है - जैसे अधिकांश मुसलमान और कई राजनीतिक रूप से सही करने वाले अन्य लोग करने का प्रयास करते हैं

पेज ७९०

आज - वह युद्ध ("अविश्वासियों के विरुद्ध") मुसलमानों के लिए एक कर्तव्य है। इसे और अधिक कहना असंभव है
सीधे कुरान की तुलना में यहाँ करता है।

१०८ ९/४५: "केवल वे (लड़ाई* करने से) छूट माँगते हैं जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते और
सही दिन"। आतंकवादी और कट्टर मुल्ला/इमाम सही हैं और उनके अनुसार सही करते हैं
कुरान.

१०९ ९/४६: "यदि वे (जो युद्ध में जाने के लिए अनिच्छुक हैं) बाहर आने का इरादा रखते थे
युद्धक्षेत्र*), इसलिए उन्हें निश्चित रूप से कुछ तैयारी करनी चाहिए थी; लेकिन अल्लाह था
उनके भेजे जाने के विरोध में, इसलिए उसने उन्हें पिछड़ा बना दिया - - -"। पेप उन लोगों के बारे में बात करते हैं जो नहीं
युद्ध में जाना चाहते हैं 'उनकी परवाह न करें - वे खराब गुणवत्ता वाले हैं जो अल्लाह नहीं चाहता था' - कोई कारण नहीं
अपनी नसों को ढीला करने के लिए।

११० ९/४७: "लेकिन अल्लाह उन लोगों को अच्छी तरह जानता है जो गलत करते हैं (= जो युद्ध में नहीं जाना चाहते*)"।
आतंकवादी सही हैं: गलत करने वाले आतंकवादी नहीं, हत्या करने वाले होते हैं
और मारो और लड़ो। वास्तव में एक परोपकारी ईश्वर द्वारा संचालित शांति और भलाई के लिए धर्म।

१११ ९/५२: "क्या आप (योद्धा और संभावित योद्धा*) हमसे (मुसलमान*) की उम्मीद कर सकते हैं (कोई भाग्य)
दो गौरवशाली चीजों के अलावा - (शहादत या जीत)?" के लिए एक नारे के रूप में चमकदार के रूप में
1939 में जर्मनी में नाज़ीवाद। और वहाँ अपंगों का उल्लेख नहीं है। न ही पीड़ितों।

११२ ९/७३ "अविश्वासियों और पाखंडियों के खिलाफ कड़ी मेहनत (लड़ाई *) करो, और उनके खिलाफ दृढ़ रहो
उन्हें।" अपने पैसे के लिए सीधे शब्द - युद्ध में जाओ।

११३ ९/८१: जो युद्ध करने को तैयार नहीं हैं वे नरक में समाप्त हो सकते हैं। क्या आप वहीं खत्म करना चाहते हैं?

११४ ९/८३: जो युद्ध करने को तैयार नहीं हैं उन्हें सामाजिक रूप से तिरस्कृत किया जाना चाहिए। कोई टिप्पणी नहीं
ज़रूरी।

११४ ९/८४: "न ही तुम उनमें से किसी के लिए (जो युद्ध में नहीं जाना चाहते थे) प्रार्थना करना कि
मरता है, और न ही उसकी कब्र पर खड़ा होता है, क्योंकि उन्होंने अल्लाह को और (कम से कम? *) उसके रसूल को अस्वीकार कर दिया
(मुहम्मद*), और विकृत विद्रोह की स्थिति में मर गया।" कब आज्ञा न मानना विकृत है
इस्लाम युद्ध चाहता है। दौलत चोरी करने, गुलाम बनाने और औरतों से रेप करने की गाजर नहीं तो चाहिए
युद्ध में जाने के लिए अनिच्छुक लोगों को आकर्षित करें, फिर उन्हें जबरदस्ती करने के लिए भारी सामाजिक दबाव का उपयोग करें। युद्ध है
कुरान के लिए और मुहम्मद के लिए बहुत जरूरी है। और "है", न केवल "था" - यह "है" सभी के लिए
भविष्य। अपने गांव/कस्बे में युद्ध करें या बहिष्कृत बनें।

११५ ९/८५: "अल्लाह की योजना है कि उन्हें (जो युद्ध में नहीं जाना चाहते) उन्हें इनके साथ दण्ड देना
इस दुनिया में चीजें, और उनकी आत्माएं अल्लाह के इनकार में नष्ट हो सकती हैं"। इनकार
युद्ध का मतलब आपके लिए जन्नत की कोई यात्रा नहीं है - या अधिक से अधिक कठिन रास्ता है - और
स्वर्ग के सबसे सरल भाग में समाप्त।

११६ ९/८८: "परन्तु रसूल और उसके साथ ईमान लाने वाले यत्न करते हैं और संघर्ष करते हैं (लड़ाई*)
उनके धन और उनके व्यक्तियों के साथ: उनके लिए (सब) अच्छी चीजें हैं: और यह वही है जो चाहते हैं
समृद्ध हो।" और आप भी समृद्ध होना चाहेंगे?

११७ ९/८९: "अल्लाह ने उनके लिए (मुहम्मद* की मदद करने वाले) बाग़ - - - तैयार किए हैं।" मदद
मुहम्मद (= युद्ध में जाना) और कमोबेश सीधे जन्नत में जाना।

पेज ७९१

११८ ९/९४: युद्ध में न जाने की इच्छा रखने वालों के बहाने पर विश्वास न करें - वास्तविक कारण
यह है कि वे बुरे मुसलमान हैं।

एक अच्छा मुसलमान जब भी अपने नेताओं को बुलाता है तो युद्ध में जाता है।

११९ ९/९५: “इसलिए उन्हें छोड़ दो (जो युद्ध नहीं करना चाहते*): क्योंकि वे घृणित हैं,
और जहन्नम उनका ठिकाना है - जो (बुराई) उन्होंने किया उसका उचित बदला"। **नफरत करने के लिए नहीं और मार डालना और चोरी करना और लूटना और बलात्संग करना और दास बनाना और हत्या करना घृणित और बुराई है, जो आपको नर्क में समाप्त करता है।** आप युद्ध में नहीं जाना चाहते हैं, इसके लिए शक्ति में वृद्धि होगी
मुहम्मद और इस्लाम धीमे चलते हैं।

युद्ध छेड़ना किसी भी योग्य मुसलमान का परम कर्तव्य है जो इसे वहन कर सकता है। कोई गलतफहमी नहीं
मुमकिन।

बहादुर भविष्य की दुनिया।

क्या आप अब भी मानते हैं कि अल्लाह वही ईश्वर है जो एनटी में यहोवा है?

लेकिन यह भोले, अशिक्षित आदिम लोगों के लिए एक भारी उत्तेजना है।

१२० ९/१११अ: “अल्लाह ने ईमानवालों से उनके व्यक्तियों और उनके माल को मोल लिया; उनके लिए (in
वापसी) उद्यान (स्वर्ग का) है: वे उसके (अल्लाह के) कारण में लड़ते हैं, और मारे जाते हैं और मारे जाते हैं
(और बाद में जन्नत में जाओ*) - - -।" यह एक अच्छा हो सकता है, अगर मानवीकरण (युद्ध ज्यादातर है)
सौदा - - - अगर अल्लाह और जन्नत मौजूद है। अगर कुछ हासिल करने वाला अकेला व्यक्ति नहीं था
मुहम्मद (और कुरान में सभी गलतियाँ, आदि बिल्कुल साबित करते हैं कि कम से कम कुछ)
गंभीर रूप से गलत है)।

१२१ ९/१११बी: "फिर उस सौदे में खुशी मनाओ जो तुमने (मुस्लिम योद्धाओं *) ने निष्कर्ष निकाला है: वह है
उपलब्धि सर्वोच्च"। एक अच्छा चारा - लेकिन ऊपर 9/111a देखें।

१२२ ९/१२०: “यह मदीना (मदीना*) के लोगों और अरब के अरबों के लिए उपयुक्त नहीं था
पड़ोस, अल्लाह के रसूल का पालन करने से इनकार करने के लिए, और न ही अपने स्वयं के जीवन को अपने जीवन को पसंद करने के लिए
- - -।" इस उत्तेजना पर कोई टिप्पणी नहीं - और विशेष रूप से इसके अंतिम भाग पर नहीं।

१२३ ९/१२३: “उन अविश्वासियों से लड़ो, जो तुम्हारी कमर कसते हैं, और वे तुम में दृढ़ता पाते हैं - - -
". कोई बकवास और स्पष्ट आदेश नहीं।

वर्ष 631. सूरह 49:

१२४ ४९/१५: "केवल वे ईमानवाले हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए हैं"
(मुहम्मद*), और तब से उन्होंने कभी संदेह नहीं किया, लेकिन अपने सामान और उनके साथ संघर्ष किया है
व्यक्तियों (= युद्ध किया*) अल्लाह के कारण में - - -।" युद्ध में अपने धन और अपने जीवन का उपयोग करें
मुहम्मद/अल्लाह - तभी आप सच्चे मुसलमान हैं। एक स्पष्ट संदेश।

मुख्य रूप से वर्ष ६३२ ई. सूरह 5.

१२५ ५/१२: "- - - और अल्लाह को एक सुंदर ऋण - - -।" यह आम तौर पर "कुरान-बोल" के लिए है
"मुहम्मद उर्फ अल्लाह की लड़ाई में अपनी जान जोखिम में डालें या खो दें"। केवल इस मामले में यह होने का दावा किया जाता है
पुराने समय के यहूदियों से कहा, जिसने इसे दोहरा महत्व दिया: एक अच्छा उत्साह और "दस्तावेजीकरण"
जो दूत युद्ध चाहते थे, वह कोई नई बात नहीं थी।

१२६ ५/३५ए: "- - - शक्ति और मुख्य के साथ प्रयास करें (आमतौर पर कुरान में इसका अर्थ है "लड़ाई में"
युद्ध"*) उसके (अल्लाह के *) कारण में।" एक स्पष्ट आदेश।

१२७ ५/३५बी: "- - - उसके (अल्लाह के *) कारण में शक्ति और मुख्य (ऊपर ५/३५ देखें*) के साथ प्रयास करें:
कि तुम उन्नति करो।” अल्लाह (और मुहम्मद) के लिए लड़ो - तब तुम एक समृद्ध प्राप्त कर सकते हो
जिंदगी।

१२८ ५/६४: “उनमें (यहूदी*) हम (अल्लाह*) ने आज तक बैर और द्वेष रखा है।
परख का। जब भी वे युद्ध की आग जलाते हैं, अल्लाह उसे बुझाता है; लेकिन वे (हमेशा)

पृथ्वी पर शरारत करने का प्रयास करें। और अल्लाह शरारत करने वालों से प्यार नहीं करता।" और क्यों चाहिए
तुम उनसे प्यार करते हो जबकि अल्लाह ने स्पष्ट रूप से उन्हें नापसंद किया था? अल्लाह की नापसंदगी एक अच्छा मकसद है और उनके खिलाफ क्रूरता के लिए स्पष्टीकरण। (मुहम्मद ने यहूदियों के साथ और उसके आसपास व्यवहार किया मदीना बहुत निर्दयी - पीछा किया (क्योंकि बहुत मजबूत विरोध ने किया कि वह मार नहीं सकता शुरुआत में) एक बड़ा हिस्सा, महिलाओं और बच्चों के बड़े समूहों को गुलाम बनाकर उनकी हत्या कर दी शेष बचे - कुछ को छोड़कर जिन्हें कुछ वर्षों तक अर्ध दास के रूप में रहने की अनुमति दी गई थी जो उनके अपने खेत हुआ करते थे एक बहुत ही कड़ी कीमत के लिए। साथ ही उसने व्यक्तिगत रूप से बलात्कार किया और कम से कम दो महिलाओं को अपने हरम के लिए गुलाम बनाया - रैहाना बिन्त अमर और सफीजा बिन्त हुयय (उन्होंने बाद में सफीजा से शादी की))। खैर, कविता अच्छा नफरत का प्रचार है - और नफरत एक है युद्ध के लिए उकसाने और अत्याचारों के स्पष्टीकरण के लिए अच्छी पृष्ठभूमि।

वर्ष: ज्ञात नहीं। सूरह 64:

१२९ ६४/१७: "यदि आप अल्लाह को एक सुंदर ऋण देते हैं, तो वह इसे आपके (क्रेडिट) से दोगुना कर देगा, और वह आपको क्षमा प्रदान करेगा - - -"। सबसे खराब मध्ययुगीन ज्यादतियों के लिए बहुत समान सोच एक बार रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा। लेकिन योद्धाओं की भर्ती के लिए अच्छे नारे - और पैसा।

कच्ची पांडुलिपि समाप्त: 16 जनवरी 2009।

पोस्ट स्क्रिप्चर टू चैप्टर IV/1.

अगले अध्याय - अध्याय IV / 2 के लिए पद शास्त्र भी देखें।

नफरत और युद्ध के छंदों के बारे में एक चौंकाने वाला तथ्य है: वे सभी उड़ान के बाद के हैं मक्का से मदीना तक। 12 वर्षों तक इस्लाम एक शांतिपूर्ण धर्म रहा है। लेकिन अचानक यह शांति से अमानवीयता, घृणा और युद्ध के क्रूर धर्म में बदल जाता है। (हमने लिखा है उम्र के अनुसार सूरह, ताकि यह बहुत ही गंभीर बदलाव को देखना आसान हो सके।)

इस बात का कहीं भी कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है कि धर्म को इतनी मौलिक रूप से एक में क्यों बदला गया था कम समय। आपको शायद ही कोई आम मुसलमान इस चरम परिवर्तन को स्वीकार करने के लिए तैयार होगा।

क्या यह अल्लाह था जिसने पाया कि वह 12 साल से गलत था और अधिक अमानवीयता, दुख चाहता था, खून और जमा हुआ खून? - कम से कम यह उन 12 . के दौरान मौलिक सोच का हनन था वर्षों। एक निरसन जो गंभीरता से अल्लाह की दूरदर्शिता और सर्वज्ञता पर सवाल उठाता है - क्यों एक कालातीत धर्म में ऐसा परिवर्तन आवश्यक था और इसकी भविष्यवाणी और भविष्यवाणी क्यों नहीं की गई थी और ६२२ ई. में उड़ान से पहले शिक्षण में शामिल किया गया? यह कुछ के बारे में बताता है चीजों को देखने की अल्लाह की क्षमता (तथ्य यह है कि अल्लाह ने व्यावहारिक रूप से कभी भी कुछ भी नहीं देखा है अप्रत्याशित रूप से हुआ, और इस तरह मुहम्मद सहित अपने अनुयायियों को चेतावनी दी और उनकी मदद की - हे इसके बजाय ऐसी स्थितियों में हमेशा "स्पष्टीकरण" (?) भेजे जाने के बाद, इस तथ्य को मजबूत करें।)

या वह मुहम्मद था जिसे सस्ते और क्रूर योद्धाओं की जरूरत थी? - सबसे पहले बस a . बनाने के लिए जीवित, के रूप में वह एक मुख्य राजमार्ग-आदमी के रूप में शुरू हुआ, डाकू और जबरन वसूली करने के कुछ ही समय बाद में आ गया मदीना, यह उल्लेख नहीं करने के लिए कि बाद में उसे अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए और भी अधिक योद्धाओं की आवश्यकता थी?

आप उन मुसलमानों से कभी नहीं मिलते जो धर्म में इस परिवर्तन का उल्लेख करते हैं - एक से कुल परिवर्तन धर्म मुख्य रूप से परोपकारी और शांतिपूर्ण, एक पूर्ण युद्ध और दमन धर्म के लिए।

आप भी इस्लाम में या मुसलमानों से कहीं भी इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं पाते कि ऐसा क्यों हुआ। और आप कभी भी किसी मुस्लिम को शांति से खून और युद्ध में इस बदलाव को स्वीकार करते हुए नहीं पाएंगे, या वह अभी भी दावा कर रहा है कि यह वही धर्म है जो कुरान और में सभी विरोधाभासों में सबसे बड़ा है इस्लाम।

लेकिन इस्लाम पर शोध करने वाले अधिकांश गैर-धार्मिक वैज्ञानिकों से, स्पष्टीकरण बस यह है: मुहम्मद को मदीना में अपने और अपने अनुयायियों के लिए जीवन यापन करना था। कारवां लूटना कुछ आसान अवसरों में से एक था (और युद्ध जैसी संस्कृति में था पुराने अरब की उसी तरह से निंदा नहीं की गई जिस तरह से अधिक सभ्य संस्कृतियों में - हालांकि अगर इस्लाम वास्तव में एक परोपकारी "शांति का धर्म" था, और अल्लाह एक अच्छा और परोपकारी ईश्वर था, चोरी और लूट, बलात्कार और जबरन वसूली, नफरत और हत्या, खून और युद्ध एक सेवा के रूप में भगवान को समझाना या उचित ठहराना असंभव था)। लेकिन योद्धाओं के लिए और उन्हें सही ठहराने के लिए

डकैती और हत्याएं, नए जीवन में फिट होने के लिए धर्म को बदलना पड़ा - और यह निकला
मुहम्मद के लिए एक भाग्यशाली परिवर्तन बनें: चोरी और जबरन वसूली गई सभी दौलत ने बहुत से नए लोगों को आकर्षित किया
अनुयायी उन धन और दासों के हिस्से चाहते हैं - विशेष रूप से धन और महिला
गुलाम और शक्ति।

वे यह भी जोड़ते हैं कि मुहम्मद ने थोड़े समय में जो धन और शक्ति प्राप्त की, वह या तो बन गई
उसके अंदर नैतिक कमजोरियां सामने आती हैं, या उसे नैतिक रूप से नष्ट कर देती है। शक्ति ने बहुतों को नष्ट कर दिया है
नैतिक रूप से।

भाग IV, अध्याय 2, (= IV-2-0-0)

जिहाद - पवित्र युद्ध (हालांकि ज्यादातर अमीरों के लिए अपवित्र युद्ध, लूट, गुलाम, शक्ति और इस्लाम का प्रसार) - में कुरान, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम, और की पवित्र पुस्तक अल्लाह

युद्ध और "पवित्र युद्ध" - जिहाद - IN कुरान

१८८ उद्धरण

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

यह भी देखें कि "मुसलमान बेहतर हैं", "गैर-मुसलमानों से दोस्ती न करें", और
"नापसंद, नफरत और दमन के लिए उकसाना"। यह अध्याय उनके साथ ओवरलैप करता है, लेकिन अन्य
सामान्य नापसंदगी, दूसरों से दूरी और खुद की श्रेष्ठता को बढ़ावा देने के बारे में हैं - एक बनाना

793

पेज ७९४

"दुश्मन-तस्वीर" - जबकि यह अध्याय मुख्य रूप से प्रत्यक्ष उत्तेजना और प्रेरणा के बारे में है
युद्ध के लिए।

बाइबिल में ओटी की तरह, लेकिन एनटी के विपरीत (जहां आज्ञा है: आप हत्या नहीं करेंगे),
युद्ध कुरान का एक एकीकृत हिस्सा है - मक्का (पहली) अवधि के दौरान शायद ही कुछ, लेकिन
मदीना के वर्षों में पर्याप्त से कहीं अधिक। हालाँकि, दो अलग-अलग अंतर हैं,
ओटी और कुरान के बीच भी:

1. ONE: कुरान में इस्लाम के लिए युद्ध में कई
   मामले एक पवित्र कर्तव्य है - जिहाद - युद्ध छेड़ना और
   अल्लाह के लिए और मुहम्मद (और उनके) के लिए मारने के लिए
   उत्तराधिकारी)। ओटी में यह केवल ऐतिहासिक तथ्य है
   कि ऐसा हुआ और यह विचार था
   इस्राएल के लिए जगह बनाने के लिए - सिवाय इसके कि यहोवा
   आदेश दिया और कुछ स्थान संतुष्ट नहीं थे
   इसके साथ ही इज़राइल ने पर्याप्त हत्या या बेदखल नहीं किया
   इससे पहले देश में रहने वाले लोग
   यहूदी (हम जानते हैं कि यह नाम वास्तव में है
   छोटा) आ गया, जिससे परेशानी होगी
   बाद में, उन्होंने कहा - - - जो उसने किया, उसके अनुसार
   बाइबल।

   जिहाद की एक निश्चित रूप से सख्त सीमा है:
   इसे केवल आत्म-युद्ध के लिए ही घोषित किया जा सकता है-
   रक्षा। जिसका जिक्र मुसलमान अक्सर नहीं करते,
   यह है कि "इसे व्यापक रूप से समझा जाना है"
   "संदेश" को उद्धृत करने के लिए शब्द का अर्थ
   कुरान का ”--- और वह भी यह छोटा

आरक्षण में अक्सर "अनदेखी" की जाती थी
विजय के युद्ध। ऐसा अक्सर करता है
टाल दी गई सीमा अर्थहीन - लगभग कुछ भी
जब आप जाते हैं तो "आत्मरक्षा" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है
"शब्द के व्यापक अर्थ" के लिए -
खासकर जब कट्टरपंथी खुद फैसला करते हैं
हमले के रूप में क्या माना जाना है (मुख्य रूप से
कुछ भी जो वे स्वयं नापसंद या असहमत हैं
साथ - कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह सच है या नहीं) और कौन
दोषी हैं (f। उदा। "पश्चिम में कोई भी (और .)
अन्य गैर-मुस्लिम देशों में कम से कम थोड़ा
मुसलमानों का विरोध), क्योंकि वे टैक्स देते हैं
और इस प्रकार "युद्ध" को वित्तपोषित करने में मदद करते हैं
इस्लाम", कट्टरपंथियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली परिभाषा है और
आतंकवादी - कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह संभव नहीं है
अधिकांश देशों में अधिकांश लोग कर का भुगतान नहीं करते हैं
यदि आप कुछ सामान्य जीवन व्यतीत करते हैं।)
वहाँ कट्टरपंथियों के हाथ और दिमाग में
शायद ही कोई सीमा हो - जो द्वारा सिद्ध होती है
आज कई जगह स्थिति याद रखें एफ.
भूतपूर्व। कि कुरान कहता है कि हत्या/युद्ध है
दमन से बेहतर (इस्लाम के लिए)। यदि कुछ

794

पेज ७९५

लंदन या एम्स्टर्डम या ओस्लो या में कट्टरपंथियों
कोपेनहेगन या पेरिस या मैड्रिड या मॉस्को या
मेरे प्यारे जर्मनी के किसी भी शहर में - या उसके लिए
यहाँ काहिरा (2007 AD) या अल्जीरिया में मामला या
कैसाब्लांका - लगता है कि वहां के मुसलमान
कुछ तरीकों को दबा दिया जाता है, या वे बस
"हमला करने वाले पश्चिम का विरोध करना" चाहते हैं, या
"काफिरों को मुसलमानों पर शासन नहीं करना चाहिए -
राजनीतिक रूप से या काम पर "(कई रहे हैं
के माध्यम से मुस्लिम देशों में एक "इंतिफादा"
सदियों क्योंकि एक गैर-मुस्लिम को नौकरी मिल गई
मुस्लिम अंडरलिंग के साथ), यह अच्छा है और
"जिहाद" के लिए वैध कारण। जैसा कि हमने देखा
बार बार। (सभी 4 इस्लामिक लॉ स्कूल
यह भी स्वीकार किया कि यदि विरोधी गैर-
मुसलमानों, यह घोषित करने के लिए पर्याप्त कारण था
जिहाद - पवित्र युद्ध। 1920 के दशक तक नहीं -
1930 के इस नियम पर भी सवाल उठाया गया था)।

2. दो: बाइबिल में 2000 के युद्धों के बारे में बताया गया है
4000 साल पहले तक। कुरान में यह न केवल
पुराने युद्धों के बारे में बताया, लेकिन दिया दमदार
युद्ध छेड़ने के लिए उकसाने और सख्त आदेश
विश्वास के लिए अक्सर एक पवित्र कर्तव्य है - और एक निश्चित
बहुत सारे पृथ्वी-समान के साथ एक स्वर्ग का रास्ता
विलासिता और बहुत सारे अद्भुत घंटे - में
पुराना समय, अब, और सभी भविष्य में जब तक इस्लाम है
प्रमुख धर्म, और सभी गैर-मुसलमान
दबे हुए और शक्तिहीन हैं
मुस्लिम शासन का पालन करना और अतिरिक्त भुगतान करना
कर।

कहा जाता है कि इस्लाम शांति का धर्म है। मुसलमानों के बीच यह सच हो सकता है - हालांकि इतिहास आज दिखाया है, और दिखाता है - कि मुस्लिम नेताओं के लिए एक पवित्र युद्ध भी शुरू करना आसान है अन्य मुसलमानों के खिलाफ। यह सिर्फ यह घोषित करना है कि दुश्मन सही के असली मुसलमान नहीं हैं विश्वास और अधिक - और निश्चित रूप से यह "हमारा" पक्ष है जो सही विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है।

जहां तक मुसलमानों और "काफिरों" का सवाल है, तो यह सबसे खुला सवाल है - कुछ लोग पक्की बात कहेंगे, नहीं

खुला - मुस्लिम समाजों और देशों में गैर-मुसलमानों के प्रति इस्लाम कितना शांतिपूर्ण है या नहीं।

लेकिन याद रखना कि मुसलमान भी इंसान हैं। उनमें से ज्यादातर सिर्फ शांति से रहना चाहते हैं और
अपने परिवार और दोस्तों और पड़ोसियों के साथ शांत, और युद्ध बिल्कुल नहीं चाहते।

दूसरी ओर, आतंकवादियों को लड़ने के लिए कहने वाली आयतों को खोजने के लिए कुरान का दुरुपयोग करने की आवश्यकता नहीं है
और गैर-मुसलमानों को मार डालो - - - एक तरह से यह देखना आसान है कि कुछ आतंकवादी शांतिपूर्ण मुसलमान क्यों कहते हैं
गलत हैं। यह और भी अधिक है, क्योंकि कुरान की सभी आयतों को एक समान नहीं माना जाता है
मूल्य - कुछ को बिना मूल्य के भी माना जाता है, जब छोटे छंद कुछ और कहते हैं।
कुरान में विरोधाभासी बिंदु हैं - अल्लाह को कई बार अपना विचार बदलना पड़ा -
और इस्लाम में सामान्य नियम यह है कि सबसे छोटी कविता मायने रखती है। होने के कारण,
हम उस वर्ष (AD) को शामिल करते हैं जब मुहम्मद ने सूरह को बताया, यदि वर्ष ज्ञात है (कई में)

मामले वर्ष लगभग ही है)। लेकिन सावधान रहें कि कुछ मामलों में सभी छंद a . में नहीं हैं
सूरह एक ही उम्र के हैं - यह बेतहाशा भिन्न हो सकता है, क्योंकि छंद एक समय में "नीचे आए", और
जरूरी नहीं कि कालानुक्रमिक क्रम में एक साथ रखा गया हो। हम उस सूरह का भी उल्लेख कर सकते हैं
प्रारंभिक काल से (मक्का में, जहां से वह यत्रिब भाग गया, जिसे बाद में मदीना नाम दिया गया, 622
एडी) मदीना में बाद के लोगों की तुलना में नरम होने के लिए (इसे कम से कम कहने के लिए) जाता है जहां मुहम्मद
जल्दी से अधिक शक्तिशाली हो गया और दृढ़ता से कठिन और अधिक युद्ध जैसा हो गया।

पहली संख्या वर्ष है, जैसा कि कहा गया है, उसके बाद सूरह और सूरह संख्या - ये एक में हैं
शीर्ष पर अलग लाइन। फिर इस अध्याय में उद्धरण की संख्या का अनुसरण करता है, जबकि 000 संदर्भित करता है
मुसलमानों के लिए बिना किसी चिंता के लड़ने के लिए। अंत में सुरा और पद्य संख्याओं का अनुसरण करता है
यूसुफ अली के अंग्रेजी में अनुवाद में कुरान।

वर्ष ६११-६१४ ई., सूरह ७३.

001 73/20: "वह (अल्लाह *) जानता है कि आप में से कुछ (कुछ) हो सकते हैं - - - अल्लाह के लिए लड़ रहे हैं
वजह"। लगभग ६१६ ईस्वी तक लड़ने का यह एकमात्र उल्लेख है, उस अवधि में जहां
मुहम्मद लगभग 50 - पचास - सूरह लाए थे, जिनमें से एक में भी शब्द का उल्लेख नहीं है
लड़ाई। और जैसा कि नीचे दिखाया गया है, सभी में लड़ाई का कोई अन्य अचूक उल्लेख नहीं है
12 साल पहले मुहम्मद को यत्रिब (अब मदीना) भागना पड़ा था - और यहां तक कि यह कविता भी
इसका अर्थ केवल शब्दों और कर्मों से मानसिक लड़ाई हो सकती है, तलवार से नहीं।
इसके बावजूद कि अल्लाह और मुहम्मद के लिए युद्ध कितना केंद्रीय बन गया। क्या अल्लाह बदल गया
कुछ वर्षों के बाद उसका मन? या यह मुहम्मद था जो सत्ता प्राप्त करते ही बदल गया था? इस
प्रारंभिक मुहम्मद के पास वास्तव में हथियारों से लड़ने के लिए पर्याप्त अनुयायी नहीं थे। लेकिन मामले में यह
इस बार का मतलब केवल शब्दों से लड़ना था यह और भी अजीब है कि अल्लाह बाद में पूरी तरह से
अपना मन बदल लिया, एक शांतिपूर्ण धर्म से एक युद्ध में बदल गया और इतनी नफरत से नफ़रत की शिक्षा दी
अल्लाह और मुहम्मद के लिए लड़ने और मरने के कर्तव्य पर जोर। यदि वे सर्वज्ञ थे, तो उन्हें
शुरू से ही जानते हैं कि अल्लाह के लिए यह क्या उपहार था कि इंसान लड़े और मारे गए
एक-दूसरे को उनके सम्मान में - यह उल्लेख नहीं करना कि उनके पहले अनुयायियों को न बताना कितना अनुचित था
जन्नत और घंटे आदि के लिए इस निश्चित रास्ते के बारे में, और उन्हें अगले के लिए इस आसान तरीके से इनकार करें
जिंदगी। यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि उनके अनुयायियों के बुरे लोगों के खिलाफ उन्हें न बताना कितना अनुचित था
कि उन्हें वास्तव में जन्नत में आने का मौका मिला: अल्लाह और हर चीज के लिए युद्ध में मारे जाओ
माफ कर दिया गया था, चाहे आप कितने भी बुरे आदमी क्यों न हों। लेकिन वास्तव में महान रहस्य यह है:
एक सर्वशक्तिमान ईश्वर को अपने लिए लड़ने के लिए मनुष्यों की आवश्यकता क्यों और क्या है? इसमें कोई तर्क नहीं है
दावा। (लेकिन एक तर्क है अगर मुहम्मद चाहते थे कि वे अपने लिए लड़ें।)

वर्ष ६१६ ईस्वी लगभग (छंद ३९ - ४८ = ६२२ या ६२३ ईस्वी को छोड़कर), सूरह २२।

002 22/39: "जिनके विरुद्ध युद्ध किया जाता है, उन्हें (लड़ाई करने के लिए) अनुमति दी जाती है, क्योंकि वे"
अन्याय कर रहे हैं"। संक्रमण पर यहाँ प्रतिबंधित शब्दों में अंतर पर ध्यान दें
(याद रखें यह आयत ६२२ या ६२३ ईस्वी की है) बल्कि शांतिपूर्ण मक्का काल के बीच और
बाद में खूनी और अमानवीय मदीना काल।

००३ २२/७८: "और उसके कारण में प्रयास करें जैसा कि आपको प्रयास करना चाहिए, (ईमानदारी से और कम .)
अनुशासन)"। शब्द "प्रयास" अक्सर "लड़ाई" के पर्याय के रूप में प्रयोग किया जाता है, लेकिन इस मामले में यह
यह स्पष्ट नहीं है कि इसका मतलब "लड़ाई" है या अधिक मुसलमानों को पाने के लिए मानसिक प्रयास या "कड़ी मेहनत" करना है। इस
जल्दी हो सकता है इसका अर्थ है "कड़ी मेहनत करें", क्योंकि धर्म 622 ईस्वी तक काफी शांतिपूर्ण था।

वर्ष ६२२ ईस्वी या बाद में, सूरह १७।

000 17/5: "- - - हम (अल्लाह*) ने तुम्हारे खिलाफ (यहूदियों*) हमारे सेवकों को भेजा (हमलावरों से पूर्व*) भयानक युद्ध को दिया - - -"। OT . के समय में कुछ बार इसराइल पर हमला किया गया था लेकिन प्राकृतिक कारणों से कोई मुसलमान शामिल नहीं था (1000 साल और बहुत पहले)।

वर्ष ६२२ ई. मक्का, सूरह १६.

0004 16/110. "परन्तु सचमुच तेरा पालनहार - उन लोगों के लिए जो परीक्षाओं के बाद अपना घर छोड़ देते हैं और उत्पीड़न - और उसके बाद विश्वास के लिए प्रयास करें और धैर्यपूर्वक दृढ़ रहें - आपका भगवान, आखिरकार यह अति क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।" टिप्पणियाँ; 22/78 देखें। हम जोड़ सकते हैं कि यह एक है मुसलमानों को मक्का से भागना पड़ा - शायद पहले वाले के बाद भी पूर्वी अफ्रीका (इथियोपिया) भाग गया था। मुसलमानों से कहा जाता है कि अल्लाह अपनों का भला करेगा जिन्हें अल्लाह के लिए भागना है।

अज्ञात वर्ष, संभवतः मक्का, सूरह १००।

005 100/5: आयु अज्ञात लेकिन संभावित मक्का। कम से कम पहले ६ छंद (सभी भाग जो हम उद्धृत करते हैं) है एक शपथ, युद्ध के बारे में बात मत करो। कुरान में "द्वारा" से शुरू होने वाले सूरा के छंद या भाग का अर्थ है निम्नलिखित पाठ एक शपथ या शपथ का उद्धरण है - अल्लाह या मुहम्मद द्वारा कसम खाता है कुछ - इस मामले में शानदार युद्ध के घोड़ों द्वारा अरबों के पास सभी में उपयोग के लिए बहुत कुछ था कबीलों के बीच युद्ध और लड़ाई। "(स्टीड्स) द्वारा जो दौड़ते हैं, पुताई (सांस) के साथ, And आग की चिंगारियों पर प्रहार करो, और भोर में घर को धक्का दो, और बादलों में धूल उठाओ उस समय, और बीच में (शत्रु के) सामूहिक रूप से प्रवेश करें - वास्तव में मनुष्य उसके लिए है रब (अल्लाह*), कृतघ्न - - - "यह आयत युद्ध के बारे में नहीं है, बल्कि कृतघ्न पुरुषों के बारे में है - या शायद युद्ध के बारे में सभी समान (मुस्लिम विद्वान कहते हैं नहीं)? - या अनियंत्रित आंतरिक स्व के बारे में पु रूप? - लेकिन किसी भी तरह: अल्लाह या मुहम्मद सम्मानित युद्ध के घोड़ों की कसम खाते हैं कि आदमी है अल्लाह के प्रति कृतघ्न।

अब हम मक्का से मुहम्मद की उड़ान के समय पर पहुँच गए हैं। उनके १२ वर्षों में मक्का में धार्मिक कार्य ८५ से ९० के बीच सूरह (शायद ८६) मुहम्मद द्वारा बताए गए हैं - आर्क कोण गेब्रियल से उद्धृत होने के लिए माना जाता है (कुछ को सीधे प्राप्त कहा जाता है और कुछ सपनों में)। और याद रखें कि कुरान में केवल 114 सूरह हैं - केवल कुछ 25 हैं- 30 (सटीक संख्या ज्ञात नहीं है, क्योंकि किसी को कुछ सूरहों की आयु का पता नहीं है) के लिए छोड़ दिया गया है मदीना में 10 साल - हालांकि इनमें से कई सबसे लंबे हैं। शायद 22 मदीना में, और फिर कुछ अज्ञात उम्र में।

आप पाएंगे कि मुहम्मद और उनकी शिक्षा मक्का में बाद के दिनों की तुलना में अधिक नरम थी मदीना - हो सकता है कि मक्का में वह दलित था, जबकि मदीना में कम समय में उसने शक्ति प्राप्त की और ऊपरी हाथ (शक्ति भ्रष्ट करती है, एक कहावत कहती है)। लेकिन कुछ ही बताते हैं कि कितना बढ़िया और भयानक परिवर्तन था - नफरत, दमन, खून और युद्ध जल्द ही एक एकीकृत हो गया धर्म का हिस्सा। और अल्लाह/मुहम्मद के लिए मारे जाने के लिए कम से कम इतना मजबूत हो गया कैथोलिक धर्म में संस्कार (एक ईसाई शब्द का उपयोग करने के लिए) "अंतिम तेल" के रूप में - कम से कम।

मदीना में मुसलमान एक विकट स्थिति में थे - उनके पास जीने के लिए कुछ नहीं था। भले ही उन्हें स्थानीय लोगों से बहुत मदद और कुछ काम मिला, उन्हें कुछ में जीवन यापन करना पड़ा मार्ग। और मुहम्मद डकैती में बदल गया और हाईवेमेन के एक समूह का मालिक बन गया मुख्य रूप से अमीर मक्का और उनके कारवां से शांतिपूर्ण व्यवसायियों को जोड़ने से रह रहे हैं। (मुसलमान यह बताना पसंद करते हैं क्योंकि मक्का और मदीना के बीच युद्ध हुआ था। यह है .) बिल्कुल गलत - और हम इसे झूठ क्यों नहीं कहते, इसका कारण यह है कि कुछ मुसलमान वास्तव में विश्वास करते हैं यह। यह वास्तव में दूसरा रास्ता था: डकैतियों के कारण युद्ध शुरू हुआ - बिना डकैती मैका ने खुशी-खुशी उसे और उसके छोटे समूह को अकेला छोड़ दिया था।

राजमार्ग गतिविधियों के लिए मुहम्मद को योद्धाओं की आवश्यकता थी - यह उल्लेख नहीं करने के लिए कि उन्हें बाद में उनकी आवश्यकता थी
जब मक्का ने डकैतियों को समाप्त करने के लिए हमला किया, और इससे भी ज्यादा जब मुहम्मद
मदीना में अपने जीवन को सुरक्षित करने और धन प्राप्त करने के लिए सबसे पहले अपने परिवेश पर हमला करना शुरू कर दिया
शक्ति, और फिर अधिक शक्ति और दास और धन प्राप्त करने के लिए लोगों पर और अधिक हमला करने के लिए और
अधिक शक्ति प्राप्त करने के लिए अपने शिक्षण का प्रसार करने के लिए। मुसलमान यह दिखावा करना पसंद करते हैं कि उन्होंने जबरदस्ती नहीं की
इस्लाम किसी पर भी। वह सत्य नहीं है। इतनी जल्दी भी उन्होंने अन्यजातियों के खिलाफ बहुत अमानवीय व्यवहार किया,
यहां तक कि बुतपरस्त अरब - और कभी-कभी "पुस्तक के लोगों" के खिलाफ भी, इस मामले में मुख्य रूप से
यहूदी। पगानों को ज्यादातर विकल्प दिए गए थे: मुसलमान बनो, गुलाम बनो या मरो। NS
अन्य सभी पगानों के लिए अक्सर वही विकल्प थे जिनसे वे अपने युद्ध पथ पर मिले थे - और
कभी-कभी पुस्तक के लोगों के लिए भी (ईसाई, यहूदी और सबियन - अंतिम वाले थे .)
लगभग जो अब यमन है उसमें रहने वाले ईसाई, और जो के माध्यम से ईसाई बन गए थे
तत्कालीन ईसाई मिस्र और इथियोपिया - हालांकि इस्लाम के पास अन्य स्पष्टीकरण भी हैं जिनके लिए
सबियन थे) जिन्हें कुरान में विशेष दर्जा दिया गया था।

उस समय तक मुहम्मद की शिक्षाएँ अपेक्षाकृत हल्की और युद्ध जैसी थीं। में
मक्का काल से 85-90 (शायद 86) सूरह लड़ाई के बारे में लगभग कोई बात नहीं है, और
शस्त्रों से लड़ने के बारे में निश्चित रूप से बात करने वाला एक भी श्लोक नहीं है। न तो कोई सिंगल है
अल्लाह (या मुहम्मद के लिए, जो एक ही बात है) के लिए युद्ध छेड़ने का जिक्र है, न कि
ऐसा करने के कर्तव्य का उल्लेख करें। "तथ्य" का एक भी उल्लेख नहीं है कि
अल्लाह/मुहम्मद के लिए मारा जाना स्वर्ग के लिए एक निश्चित रास्ता था जिसमें बहुत सारी पृथ्वी जैसी विलासिता थी और
महिलाओं, लगभग कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस तरह के धूर्त थे । अगर अल्लाह यह पहले से जानता था, तो वह था
अपने शुरुआती अनुयायियों को यह नहीं बताने के प्रति काफी अन्यायपूर्ण।

जैसा कि आप देखेंगे, यह अब थोड़े समय में पूरी तरह से बदल जाता है।

क्या इसका कारण यह है कि अल्लाह ने पाया कि वह सही नहीं था - या बदल गया
सर्वज्ञ मन - या अगर यह मुहम्मद था जिसने कुछ बदल दिया, यह हमारे कहने के लिए नहीं है, as
जब आप अलौकिक के साथ व्यवहार कर सकते हैं तो अंतिम प्रमाण मिलना असंभव है। लेकिन कुछ
परिस्थितियाँ एक विशेष दिशा की ओर इशारा कर सकती हैं।

जो बात पूरी तरह से निश्चित है, वह यह है कि मुहम्मद ने खुद को भर्ती करने का एक बहुत ही सस्ता तरीका पाया
योद्धाओं - भुगतान के वादे - विलासिता और महिलाएं - अगले जन्म में, कोई सोना नहीं और नहीं
धन। इससे निश्चित रूप से मदद मिली कि अल्लाह ने न केवल जन्नत का वादा किया, बल्कि बताया कि यह सिर्फ
चोरी करना और लूटना और गुलाम बनाना (मुहम्मद के लिए 20% - हालांकि सभी व्यक्तिगत उपयोग के लिए नहीं) - नहीं
उल्लेख करें कि अच्छे और दयालु भगवान अल्लाह ने किसी भी गैर-मुस्लिम के साथ बलात्कार करने के लिए बहुत स्पष्ट रूप से कहा है
गर्भवती लड़की या महिला नहीं (एक अभ्यास जो आप आज भी देखते हैं - f. पूर्व। के बीच युद्ध के दौरान
एक पीढ़ी पहले पाकिस्तान और बांग्लादेश, अब दारफुर का जिक्र नहीं)। बड़े का वादा
चोरी करने के लिए धन और महिलाओं को बलात्कार करने और दास के रूप में रखने के लिए भी विशेष प्रकार के पुरुषों को उग्र बना दिया
योद्धा - किसी चीज को हथियाने वाला पहला व्यक्ति अक्सर नया मालिक होता था। और एक का वादा
गौरवशाली नेक्स्ट लाइफ ने मदद की + इसने अन्य प्रकार के पुरुषों को भी भयंकर योद्धा बना दिया - या आतंकवादी
आज।

लेकिन वह गहरा और गंभीर सवाल जो आपने मुसलमानों के बारे में कभी नहीं सुना होगा: किसने बदला?
मन - अल्लाह या मुहम्मद? और मूल प्रश्न के रूप में: अगर यह अल्लाह था जो बदल गया
उसका दिमाग: वह क्यों नहीं - संभवतः सर्वज्ञ भगवान - उस युद्ध और नफरत से पहले जानता था
एक अच्छी चीज? - और यह कि मुहम्मद और अल्लाह के लिए मारा जाना न केवल एक निश्चित तरीका था
स्वर्ग, लेकिन स्वर्ग के बेहतर हिस्सों में भी? (हां, मुस्लिम जन्नत के कुछ हिस्से हैं
बाकी से बेहतर)।

अगर हम इब्न इशाक (मुस्लिम के बारे में पहली और सबसे अच्छी मुस्लिम जीवनी) को समझते हैं, तो मुहम्मद
व्यक्तिगत रूप से कम से कम इन छापों का नेतृत्व करें:

1. वड्डन पर छापा (उसके अनुसार उसका पहला छापा)
इब्न इशाक)।

2. बुवात पर छापेमारी।
3. अल-उषायरा (कुरैश) पर छापेमारी
4. बद्र पर पहली छापेमारी।
5. कारवां पर छापा (जो बन गया)
   दूसरी छापेमारी - और - बद्र की लड़ाई)।
6. अल-कुद्र में बी. सुलेमान पर छापेमारी।
7. अल-साविक पर छापेमारी
8. नजद पर छापा मारा। (धू अमर)।
9. अल-फुरु (कुरैश) के पास बहरान पर छापेमारी
10. धातूल-रिका का छापा।
11. दुमातु'एल-जंदल का आक्रमण (627 ई. में)।
12. बी. लिहयान पर छापा मारा।
13. बी मुस्तलिक पर छापा।

अधिक छापे आदि के बारे में भाग XI, अध्याय 12 और 13 भी देखें।

और भी थे (खैबर की तरह), लेकिन मुहम्मद की स्थिति धीरे-धीरे चोर से बदल गई,
हाइवेमैन, और जबरन वसूली करने वाला, एक सरदार को - वही काम करना, लेकिन एक बड़े पैमाने पर।

इसका मतलब यह होना चाहिए कि वह व्यक्तिगत रूप से एक दर्जन छापे की तरह कुछ नेतृत्व करता है। हमारे अन्य स्रोत
कहते हैं "कम से कम 3 छापे" (पहला वाला दूसरे की तुलना में अधिक सही लगता है - और यहां तक कि
यह संख्या बहुत कम लगती है), लेकिन इसके बारे में अध्याय XI/12 और XI/13 में और अधिक।

जारी रखने के लिए हम उल्लेख करते हैं कि सूरह 47 या सूरह 2 सबसे पहले सूरह मुहम्मद है
मदीना में हुक्म दिया गया था (यह संभावना है कि 47 आंशिक रूप से मदीना से थे, जबकि 2 फिरसे थे
उस शहर में पूरा) सूरह 3 के बाद बारीकी से (मदीना में वास्तव में नंबर 2 हो सकता है)। आप
एक सबसे अचानक और सबसे हड़ताली अंतर देखें - अल्लाह निश्चित रूप से अपना मन बदल लेता है "अ" में
आँख मारना"। 2 साल में या ऐसा ही कुछ इस्लाम शांतिपूर्ण से बदलकर अ हो गया था
पूर्ण युद्ध धर्म।

वर्ष ६१६ ईस्वी लगभग (छंद ३९ - ४८ = ६२२ या ६२३ ईस्वी को छोड़कर), सूरह २२।

००६ २२/३९ (६२२ या ६२३ ईस्वी): "जिनके खिलाफ युद्ध किया जाता है, उन्हें अनुमति दी जाती है (to .)
लड़ाई), क्योंकि उनके साथ अन्याय हुआ है"। संक्रमण पर यहाँ शब्दों में अंतर पर ध्यान दें
बल्कि शांतिपूर्ण मक्का काल और खूनी और अमानवीय मदीना काल के बीच
बाद में।

इस्लाम के अनुसार यह पहली बार है जब कुरान में मुसलमानों के लिए थीम वार का उल्लेख किया गया है।

007 22/40 (622 या 623 ईस्वी): "क्या अल्लाह ने लोगों के एक समूह को दूसरे के माध्यम से जांच नहीं की,
निश्चित रूप से मठों, आराधनालयों और मस्जिदों को गिरा दिया गया होगा - - -"। वह है
लड़ाई और युद्ध के विपरीत नहीं - लेकिन बाद में अमानवीय, अनैतिक और खूनी नहीं। और देखें
22/39 ठीक ऊपर। (वैज्ञानिकों का मानना है कि उनकी सफलता और शक्ति ने उन्हें नैतिक रूप से नष्ट कर दिया - एक नहीं
पूर्ण तानाशाहों और अन्य लोगों के लिए असामान्य घटना)।

799

पेज ८००

वर्ष सीए. ६२१ - ६२४ ई. सूरह 29:

००८ २९/६: "और यदि कोई प्रयास करता है (शक्ति और मुख्य के साथ (एक अभिव्यक्ति जो कुरान में है)
आम तौर पर इसका मतलब है युद्ध में लड़ाई*)), वे अपनी आत्मा के लिए ऐसा करते हैं - - -"। यदि आप युद्ध में जाते हैं, तो आप
अल्लाह के साथ योग्यता प्राप्त करें।

००९ २९/६९: "और जो लोग हमारे (अल्लाह के) (कारण) में प्रयास करते हैं - हम निश्चित रूप से उनका मार्गदर्शन करेंगे
हमारा पथ - - -"। ऊपर 29/6 देखें।

वर्ष ६२२ ई. मदीना, सूरह ४७।

*०१० ४७/४अ: "- - - जब तुम अविश्वासियों (लड़ाई में) से मिलते हो, तो उनकी गर्दन पर वार करना; लंबाई में,
जब आप उन्हें पूरी तरह से अपने वश में कर लें, तो (उन पर) दृढ़ता से एक बंधन बांधें: उसके बाद (यह समय है)
के लिए) या तो उदारता या फिरौती (अक्सर असली विकल्प फिरौती या गुलामी थे - या कभी-कभी
क्रियान्वयन*) - - -। इस प्रकार (आपको आज्ञा दी जाती है) - - -"। जैसा कि हमने कहा: का एक क्रूर परिवर्तन

धर्म सबसे अचानक।

०११ ४७/४बी: "लेकिन जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गए हैं - वह (अल्लाह *) उन्हें कभी नहीं होने देंगे
कर्म नष्ट हो जाते हैं।" यह अल्लाह/मुहम्मद के लिए मारे जाने का पहला उल्लेख हो सकता है।
इनाम का वादा अभी भी अस्पष्ट है। एक संभावित कारण यह हो सकता है कि अल्लाह - या मुहम्मद -
अभी तक नहीं देखा है कि सबसे अच्छा - और सबसे आकर्षक (?) - विचार क्या होगा।

012 47/5: "जल्द ही वह (अल्लाह*) उनका मार्गदर्शन करेगा (मुसलमान अल्लाह के लिए मारे गए) और उनका सुधार करेंगे
शर्तों, और उन्हें उस बगीचे में स्वीकार करें, जिसे उसने उनके लिए घोषित किया है"। जैसा हमने कहा;
अस्पष्ट वादे - बेशक यह जन्नत से कम नहीं हो सकता है, लेकिन आपको बहुत अधिक महाकाव्य मिलेगा -
और गीत - विवरण बहुत बाद में नहीं। अल्लाह को जल्दी ही एक अच्छी रसीद मिल गई - या शायद
मुहम्मद ने इसे पाया (मुहम्मद बुद्धिमान थे और लोगों को समझते थे - कम मत समझना
उसे)।

०१३ ४७/७: “हे विश्वास करने वालों! यदि आप सहायता करेंगे (संदर्भ से यह स्पष्ट है कि इसका अर्थ युद्ध में है*)
के कारण) अल्लाह, वह तुम्हारी सहायता करेगा, और तुम्हारे पैर मजबूती से लगाएगा।" उनकी नैतिकता को मजबूत करना
योद्धा की।

014 47/20: "लेकिन जब बुनियादी या स्पष्ट अर्थ का एक सूरा प्रकट होता है, और लड़ाई होती है
उसमें उल्लेख किया गया है, आप उन लोगों को देखेंगे जिनके दिल में एक बीमारी है जो आपको नज़र से देख रही है
मौत के करीब पहुंचने पर झपट्टा मार रहा है।" जो लोग लड़ना पसंद नहीं करते उनकी एक निशानी यह थी कि वे
बीमार थे - उनके दिल में एक बीमारी थी।

०१५ ४७/२१: "- - - उनके लिए यह सबसे अच्छा था (जिनके दिल में बीमारी* है) अगर वे थे
सच (लड़ने को तैयार थे*) अल्लाह के लिए ”। नरम - या इतना नरम नहीं हो सकता - अनिच्छुक पर दबाव
जब मुहम्मद ने ऐसा कहा तो युद्ध में जाने के लिए।

वर्ष ६२२-६२४ ई., सूरह २।

०१६ २/१९०: "अल्लाह के लिए लड़ो जो तुमसे लड़ते हैं, लेकिन सीमाओं का उल्लंघन नहीं करते हैं; के लिए
अल्लाह अपराधियों से प्यार नहीं करता"। इसे आत्मरक्षा में लड़ने के आदेश के रूप में देखा जा सकता है, और
युद्ध में भी अमानवीय नहीं। प्रश्न हो सकते हैं: सीमा को कौन परिभाषित करता है? और कौन परिभाषित करता है
आत्मरक्षा किसे कहते हैं? आतंकवादी हर चीज के लिए "हमला" शब्द का इस्तेमाल करते हैं, और जब मुसलमान
हितों पर "हमला" किया जाता है, आतंक आत्मरक्षा है। साथ ही इस्लाम कहता है कि अभिव्यक्ति होना है
"शब्द के व्यापक अर्थ में समझा (f। पूर्व। "कुरान का संदेश") - जो है

बहुत व्यापक है और युद्ध में जाने के लगभग किसी भी बहाने को कवर करता है - - - और उस युद्ध को जिहाद (पवित्र युद्ध) कहने के लिए।
शब्द बहुत सस्ते हैं, और मुसलमानों को जो पसंद नहीं है, या कम से कम क्या कह सकते हैं?
वे नापसंद करते हैं, "इस्लाम पर हमला"। यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि इसे हमला कहने में कितना कम समय लगता है
मुहम्मद के खिलाफ अपमान, जो और भी बुरा है (क्योंकि मुहम्मद कमजोर कड़ी है
इस्लाम, और थोड़ी सी भी शंका उस पर टिकी नहीं रह सकती - फिर इस्लाम की नींव
उखड़ जाती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि सभी धर्म केवल एक ही धारणा पर टिके हुए हैं: वह मुहम्मद था
हर चीज में परिपूर्ण, और परिणामस्वरूप उसने जो कुछ कहा और किया वह सच था। लेकिन असली
मुहम्मद दूर से एक विश्वसनीय व्यक्ति थे।)

**०१७ २/१९१ए: "और उन्हें (गैर-मुसलमानों) को जहां कहीं भी पकड़ें उन्हें मार डालें - - -"। एक सीधा,
नो-बकवास आदेश - गलत समझा नहीं जाना चाहिए। आतंकवादियों के लिए बहुत अच्छे शब्द।

018 2/191b: "- - - और उन्हें चालू करें (जो आपसे लड़ते हैं - यह नहीं कहा जाता है कि प्रारंभिक कौन हैं
हमलावर*) जहां से उन्होंने आपको निकाला है - - -"। बदला लेने का आदेश देने वाला वाक्य या to
दुश्मन से पहले जो खो गया है उसे फिर से लें - यह f के लिए एक दुविधा हो सकती है। भूतपूर्व। ग्रीस, बाल्कन और
स्पेन, जो सदियों से इस्लाम के अधीन था। और एफ के लिए एक अच्छी कविता। भूतपूर्व। स्पेन में आतंकवादी
(लेकिन दूसरों के लिए भी)।

*019 2/191c: "- - - कोलाहल और जुल्म वध से भी बदतर है; - - -" - लेकिन केवल उत्पीड़न
मुसलमानों का (मुसलमानों द्वारा गैर-मुसलमानों पर अत्याचार और दमन किया जाना चाहिए और किया जाएगा)। यह है
गैर-मुसलमानों को उनके द्वारा दबे हुए जीने से बेहतर है - भले ही कुरान स्पष्ट रूप से
कहता है कि मुस्लिम राज्यों में गैर-मुसलमानों को निश्चित रूप से दमन स्वीकार करना पड़ता है
सभी प्रकार की शक्ति, और अतिरिक्त और अक्सर भारी कर का भुगतान करने के लिए - जजिया। लेकिन फिर कुरान as
स्पष्ट रूप से कहता है कि मुसलमान गैर-मुसलमानों से बेहतर प्राणी हैं। (अलग अध्याय देखें)।

यह भी सवाल है कि दमन क्या है, इसे कौन परिभाषित करता है।

020 2/191d: "- - - उनसे लड़ो (गैर-मुसलमान - इस मामले में मूल रूप से पुराना शासन जो अभी भी
मक्का में शासन करने की सबसे अधिक संभावना है *) पवित्र मस्जिद (काबा *) में नहीं, जब तक कि वे (पहले) आपसे नहीं लड़ते
वहाँ, परन्तु यदि वे वहाँ तुझ से लड़ें, तो उन्हें मार डालें।" पावन भूमि पर भी यह केवल मारने के लिए है। बेशक
यदि वास्तव में किसी स्थिति को शांत करने का कोई उपाय नहीं है, तो जो करना है वह करना ही होगा। लेकिन एक के रूप में
सामान्य आदेश का उपयोग करने के लिए एकमात्र उत्तर के रूप में, यह इस्लाम के बारे में कुछ बताता है।

आपके पैसे के लिए ईमानदार शब्द।

021 2/191e: "- - - दमन करने वालों (गैर-मुस्लिम) के लिए ऐसा ईनाम (मार डाला जाना*) है
विश्वास (इस्लाम*)"। ईमानदार शब्द - और आतंकवादियों के लिए चीनी, खासकर खुद आतंकवादियों के लिए
तय करें कि "शब्द के व्यापक अर्थ में" दमनकारी कौन हैं। जो कोई आपको बताता है
नफ़रत, जंग और आतंकवाद को भड़काने के लिए कुरान का इस्तेमाल करना होगा - उन्हें किताब पढ़ने के लिए कहो
एक बार (लेकिन धार्मिक या राजनीतिक अंधापन के बिना)। कड़ाई से बोलते हुए: यह वही है जो नहीं करते हैं
युद्ध चाहते हैं - आतंकवाद भी शामिल है - जो कुरान के अनुसार गलत हैं।

०२२ २/१९५: "और अपनी संपत्ति अल्लाह के लिए खर्च करो, - - -"। यह हो सकता है या नहीं
मतलब: इस्लाम के लिए युद्ध के लिए पैसे दो। यह संभावना है कि इसका मतलब यह है, एक ही पाठ के रूप में
स्वीडिश कुरान से अनुवादित (एनबी: अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च द्वारा प्रमाणित)
अकादमी, काहिरा) पढ़ता है: "अल्लाह के कारण (लड़ाई के लिए) दे दो"। (यह कोई रहस्य नहीं है कि कई
- बहुत सारे - मुसलमान ऐसी लड़ाई के लिए पैसे और मदद देते हैं, जिसमें आतंकवादी संगठन भी शामिल हैं।)

०२३ २/२०७: "और एक प्रकार का आदमी है जो अल्लाह की प्रसन्नता के लिए अपनी जान देता है; तथा
अल्लाह (अपने) भक्तों पर दया से भरा है। जीने का आदर्श तरीका है मरना
अल्लाह/मुहम्मद।

और साथ ही मुहम्मद और किसी बाद के मुस्लिम नेताओं या आतंकवादी नेताओं के पास एक
सस्ता, क्रूर लड़ाकू।

**024 2/216a: "लड़ाई आपके लिए निर्धारित है - - -"। गलत समझना संभव नहीं है।
मुहम्मद (और उनके उत्तराधिकारियों) को योद्धाओं की ज़रूरत थी, और अच्छे भगवान और धर्म ने आदेश दिया
युद्ध में जाने के लिए "विश्वासियों"। आतंकवादी नेताओं और कुछ अन्य लोगों के लिए एक सबसे अच्छी कविता - f. भूतपूर्व।
आतंकवादी। क्या कोई है जिसने कहा कि लड़ाई और हत्या शुरू करने के लिए कुरान का इस्तेमाल करना होगा?

०२५ २/२१६बी: "लड़ाई तुम्हारे लिए निर्धारित है, और तुम इसे नापसंद करते हो।" अभी भी संभव नहीं है
समझें: मुहम्मद को बुलाए जाने पर आपको युद्ध में जाना चाहिए, चाहे आप इसे पसंद करें या नहीं।

026 2//216c: "- - - लेकिन यह संभव है कि आप उस चीज़ को नापसंद करते हैं जो आपके लिए अच्छी है (इसमें लड़ने के लिए)
युद्ध*), और यह कि आप एक ऐसी चीज़ (शांति*) से प्यार करते हैं जो आपके लिए बुरी है।" a . के अलावा कोई टिप्पणी नहीं
प्रश्न: क्या आप कभी किसी ऐसे व्यक्ति से मिले हैं जो यह बता रहा हो कि इस्लाम एक शांतिपूर्ण धर्म है?

०२७ २/२१७ए: "उसमें लड़ना (पवित्र महीनों में - पुराने अरबों में साल में ४ पवित्र महीने होते थे)
जिसमें लड़ाई और युद्ध निषिद्ध था और घोर पाप*) एक कब्र (अपराध) है; लेकिन यह गंभीर है
पवित्र मस्जिद तक पहुंच को रोकने के लिए अल्लाह की दृष्टि में - - -"। मुहम्मद के हाईवेमेन
एक पवित्र महीने और मुहम्मद के दौरान मक्का से एक कारवां पर हमला किया और लूट लिया था
आलोचकों का तूफान प्राप्त किया। लेकिन उसका/अल्लाह का जवाब था कि जैसा कि मक्का ने मुसलमानों के प्रवेश से इनकार किया था
काबा तक (यह मुहम्मद के मक्का लेने से पहले की बात है), वे बुरे लोग थे। और तब
यहाँ तक कि मुहम्मद द्वारा किया गया घोर पाप भी पाप नहीं था। सुविधाजनक। आज एक आतंकवादी ने पढ़ा:
जो कुछ भी आप किसी ऐसे व्यक्ति के खिलाफ करते हैं जो इस्लाम का पालन नहीं करता है - या इससे भी बदतर; इसका विरोध करें - कोई पाप नहीं है।

यह तर्क जो सतही तौर पर ठीक लगता है, लेकिन जो गहराई से गलत है, आप अक्सर मिलते हैं: "मैं क्या
गलत करना गलत नहीं है अगर आप भी कुछ गलत करते हैं। "लेकिन आप जो गलत करते हैं, वह उतना ही गलत है
कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपका विरोधी क्या अच्छी या बुरी चीजें करता है - और यह और भी ज्यादा तब होता है जब आप दिखावा करते हैं
एक दयालु भगवान का प्रतिनिधित्व करने के लिए। (दूसरी बात यह है कि अपने स्वयं के बुरे का बचाव करना आसान हो सकता है
व्यवहार, यदि आप किसी बात के लिए विरोधी को दोष दे सकते हैं - लेकिन आपके अपने बुरे कर्म ऐसे ही हैं

सभी समान)।
श्लोक २१६ और २१७ बताते हैं कि बहुत कम चीजें पवित्र हैं यदि मुहम्मद/इस्लाम के हित हो सकते हैं
मजबूत किया जाए।

और एक प्रश्न: पवित्र महीने एक शुद्ध अरब परंपरा थी जिसे इस्लाम ने अपने ऊपर ले लिया। कैसे
आओ कि एक सार्वभौमिक ईश्वर - कम से कम पूरी पृथ्वी के लिए - अक्सर परंपराओं से मिलता है
बुतपरस्त अरब को वही होना चाहिए जो वह चाहता था, और बहुत बार उसके पास स्वयं विचार नहीं थे - उल्लेख नहीं करने के लिए
अरब और उसके को छोड़कर दुनिया के अन्य स्थानों से लगभग कभी भी अच्छे विचार नहीं मिले
पड़ोसियों? - एफ। भूतपूर्व। हज की परंपराएं और काबा के आसपास के पारंपरिक उत्सव भी हैं
पहले से व्यावहारिक रूप से सतही और ईमानदारी से सुंदर बचकानी परंपराओं के समान
इस्लाम।

*०२८ २/२१७बी: "हल्ला और ज़ुल्म वध से भी बदतर हैं"। अशांति और उत्पीड़न
मुसलमानों के खिलाफ अच्छा नहीं है - यह बेहतर है कि मुसलमान विरोधियों को मार डालें (में .)
यह मामला मक्का में पुराने शासन के बारे में था - अभी भी खत्म नहीं हुआ - लेकिन अन्य छंदों में
कुरान आदेश को सामान्य बनाता है। २/१९१ के तहत पहली टिप्पणी देखें)। आतंकवादियों के लिए अच्छा "खाना" -

पश्चिम मुसलमानों का दमन कर रहा है, वे कहते हैं, और जैसा कि वहां हर कोई कर चुकाता है (सच नहीं - और
जो करते हैं, उन्हें करना पड़ता है) उनके इस्लाम-दमनकारी शासन के लिए, हर कोई दोषी है, और
मारे जाने के योग्य।

०२९ २/२१८: "- - - वे (मुसलमान*) जिन्होंने निर्वासन का सामना किया और युद्ध किया (और संघर्ष किया और संघर्ष किया)
अल्लाह की राह - उन्हें अल्लाह की रहमत की आस है:---"। अल्लाह के लिए लड़ो और
जन्नत में जाने की संभावना है (और यदि आप अल्लाह के लिए मारे गए हैं, तो आप वहां जाने के लिए निश्चित हैं)।

०३० २/२४४: "फिर अल्लाह के मार्ग में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है"
चीज़ें"। - - - और अल्लाह हर चीज़ का बदला और सज़ा देता है।

०३१ २/२४५: "वह कौन है जो अल्लाह को एक सुंदर ऋण देगा, जिसे अल्लाह उससे दोगुना कर देगा"
क्रेडिट करें और कई बार गुणा करें?" कुछ कहते हैं कि "सुंदर ऋण" अच्छे कर्म हैं, अन्य कहते हैं कि यह है
युद्ध में अल्लाह और मुहम्मद को अपनी जान देने वाले योद्धा (वास्तव में यह सामान्य है)
अर्थ), यहां तक कि दूसरों का कहना है कि इसका मतलब युद्धरत पैगंबर मुहम्मद को पैसा उधार देना है - और
बाद में उनके उत्तराधिकारियों के लिए - युद्ध के रूप में पैसा खर्च हुआ। कोई बात नहीं यह मुहम्मद के लिए अच्छा था - और उसका
उत्तराधिकारियों: अगले जन्म में क्या चुकाना था, चुकाना नहीं था - या भुगतान - द्वारा
इस जीवन में मुहम्मद या उनके उत्तराधिकारी (या आतंकवादी नेता)। प्राप्त करने का एक सस्ता तरीका
योद्धा की।

०३२ २/२४६: "हम अल्लाह के लिए लड़ने से कैसे इनकार कर सकते हैं।" कुरान यहूदियों का दिखावा करता है
यह उनके एक भविष्यद्वक्ता (संभवतः शमूएल*) से कह रहा था, लेकिन यह वास्तव में एक पेपी के रूप में शामिल है
युद्ध के लिए प्रेरित करने वाले मुसलमानों से बात करें। पाठ कुछ हद तक बदल गया है एक की तुलना में
बाइबिल, यह कहाँ से आता है।

०३३ २/२४९: "कितनी बार, अल्लाह की इच्छा से, (नहीं*) एक छोटी ताकत ने एक बड़े को जीत लिया? अल्लाह है
उन लोगों के साथ जो लगातार दृढ़ रहते हैं "। शुरुआत योद्धाओं के लिए उत्साह की बात है। अंतिम शुद्ध है
मनोविज्ञान - आप कुरान में बार-बार इसी तरह के वाक्यों से मिलते हैं। योद्धा,
आतंकवादियों और अन्य लोगों को टीका लगाया जाता है कि: लड़ो, और आप अंत में जीत सकते हैं। कुछ
सोवियत संघ को अफगानिस्तान पर आक्रमण करने से पहले याद रखना चाहिए था। और कुछ
बुश को बताया जाना चाहिए था, जब उनके जनरल ने उन्हें बताया कि यह 700oo सैनिकों को ले जाएगा
जीतें और इराक को शांत करें - बुश ने इसके बजाय एक और जनरल का चयन किया और केवल सीए को भेजा। 1/3 जितने
सैनिक - - - और एक दलदल में समाप्त हो गया। यह भी कुछ गैर-मुसलमानों को याद रखना चाहिए।
अपने ही देश में और बाहर।

०३४ २/२५१: "अल्लाह की इच्छा से उन्होंने (यहूदियों ने) उन्हें (पलिश्तियों) भगा दिया; और दाऊद ने मार डाला
गोलियत और उसकी सेना"। बाइबिल से उधार ली गई एक कहानी - एक मोड़ के साथ - पेप टॉक के रूप में उपयोग की जाती है
मुस्लिम योद्धा - यह उनका अपना ईश्वर था, अल्लाह (वास्तव में बाइबिल के अनुसार यहोवा), कि
काम किया।

०३५ २/२६२: "जो लोग अल्लाह के लिए अपना माल खर्च करते हैं, - - - उनके लिए उनका इनाम"
उनके रब (अल्लाह*) के पास है।" 2/195 और 2/245।

०३६ २/२६५: "- - - जो लोग अपना धन खर्च करते हैं, अल्लाह को खुश करने और मजबूत करने के लिए"
उनकी आत्माएं - - -। तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसे अच्छी तरह देखता है।" 2/195 और 2/245 देखें।

वर्ष ६२२ ईस्वी पूर्व मदीना, सूरह ८.

०३७ ८/१: "वे (योद्धा*) तुमसे (मुहम्मद*) लूट के बारे में पूछते हैं।
युद्ध (धन और दास*)। कहो: (ऐसी) लूट अल्लाह और पैगंबर के निपटान में है

(मुहम्मद*)"। यह उन नियमों में से एक है जिसे मुहम्मद या सर्वज्ञ अल्लाह को बदलना पड़ा
बाद में (और बहुत बाद में नहीं) - अंत में मुहम्मद को केवल २०% मिले, सिवाय इसके कि अगर पीड़ित ने अंदर दिया
बिना किसी लड़ाई के (तब मुहम्मद को अभी भी 100% मिले)। (इस्लाम की एक और व्याख्या है - सभी संबंधित हैं
अल्लाह को, लेकिन 80% योद्धाओं और उनके नेताओं को दिया जा सकता है)। आप मुसलमानों से मिलते हैं
यह कहना कि अल्लाह/कुरान ने कभी कुछ नहीं बदला, लेकिन यहाँ एक बिंदु है जो बहुत बाद में नहीं था
बदला हुआ। अक्सर मुसलमान बदलाव की व्याख्या इस बात से करते हैं कि नियम वास्तव में बदले नहीं गए थे, केवल
कठोर या स्पष्ट किया गया (एक सर्वज्ञ भगवान के लिए यह क्यों आवश्यक होना चाहिए?) यहाँ एक है
पूर्ण नियम जिसे बाद में बदलना पड़ा - योद्धाओं ने लूट के अपने हिस्से की मांग की।

०३८ ८/५: "जैसे तुम्हारे रब (अल्लाह*) ने तुम्हें सच में अपने घर से बाहर निकालने का हुक्म दिया है (युद्ध करने के लिए)
कुरैश के खिलाफ - बद्र की लड़ाई 624 ईस्वी*) - - -।" मुसलमान सेना पर धावा बोलने के लिए निकले थे
कमजोर कारवां - - - और इसके बजाय "अल्लाह की इच्छा के अनुसार" एक छोटी सेना से मुलाकात की। अल्लाह पसंद करता है
योद्धा - और उसे अपनी शक्ति और धर्म को बढ़ावा देने के लिए युद्ध की आवश्यकता है, भले ही वह सर्वशक्तिमान हो।

०३९ ८/५ + ६: "- - - भले ही विश्वासियों की एक पार्टी ने इसे नापसंद किया (के खिलाफ लड़ाई करने के लिए)
कुरैश, बद्र ६२४ ई.*)। इसके बाद की सच्चाई के बारे में तुमसे (मुहम्मद*) विवाद करना
प्रकट था - - -"। ऊपर 8/5 देखें। कुछ मुसलमानों ने इसके खिलाफ लड़ाई में भाग लेने से इनकार कर दिया
प्रतीत होता है कि बहुत मजबूत छोटी सेना और शुरू होने से पहले भाग गई "इसके होने के बाद भी"
स्पष्ट किया कि यह अल्लाह की इच्छा थी कि वे कुरैश के खिलाफ युद्ध करें"
"कुरान के संदेश" के लिए। युद्ध अल्लाह के लिए एक खुशी की तरह लगता है, और आवश्यक है
अपनी शक्ति को बढ़ाने और अपने धर्म को बढ़ावा देने के लिए, भले ही उन्हें सर्वशक्तिमान कहा जाता है। या मई
चाहे वह केवल अपने अनुयायियों का परीक्षण करना हो और उनकी गुणवत्ता का पता लगाना हो - भले ही वह सर्वज्ञ हो और
पहले सब कुछ जानता है। दावों द्वारा किया गया असम्भव विरोधाभास: अल्लाह फैसला करता है
सब कुछ बनाम आदमी की स्वतंत्र इच्छा है, क्या परीक्षण के लिए भी रखा जाता है? लेकिन कम से कम यह तो स्पष्ट है कि अल्लाह चाहता है
युद्ध।

०४० ८/७: "अल्लाह ने आपसे दो (दुश्मन) पार्टियों में से एक (या तो कारवां या छोटा) का वादा किया था
बद्र में सेना) - - -"। अल्लाह ने मुसलमानों से एक अच्छी छोटी सी लड़ाई का वादा किया - बहुत अच्छा। "NS
शांति का धर्म "???

०४१ ८/९: "मैं (अल्लाह*) आपकी (युद्ध में मुस्लिम योद्धा*) एक हजार कोणों से सहायता करूंगा,
रैंक पर रैंक "। भोले, अशिक्षित विश्वासियों के लिए एक अच्छी प्रेरक बात।

०४२ ८/१२: "मैं (अल्लाह*) अविश्वासियों के दिलों में आतंक पैदा करूंगा: तुम उनके ऊपर मारो
गर्दन और उनकी सभी उंगलियों को उन पर से मारो (उन्हें धनुष का उपयोग करने में असमर्थ बनाते हुए) - - -।" "NS
शांति के धर्म का नेतृत्व करने वाले शांति के देवता "। इस धर्म को "शांति का धर्म" कहना है
दुनिया का अपमान - और जिस कारण से दुनिया दावे पर नहीं हंसती है, उसका अभाव है
कुरान के बारे में ज्ञान।

०४३ ८/१५: "जब तुम (मुस्लिम योद्धा*) काफिरों से शत्रुतापूर्ण तरीके से मिलो, तो कभी मुड़ो मत
आपकी पीठ उनके लिए"। भागे हुए योद्धाओं का मुहम्मद और अन्य नेताओं के लिए कोई महत्व नहीं था।

०४४ ८/१६: "यदि कोई (मुस्लिम योद्धा*) ऐसे दिन (शत्रु*) की ओर पीठ करे
(लड़ाई के दौरान) - - - वह खुद पर अल्लाह का प्रकोप खींचता है, और उसका ठिकाना नर्क है - - - "। लड़ाई
अल्लाह और मुहम्मद के लिए या नर्क में अंत। एक श्लोक है गाजर, यह एक चाबुक। युद्ध एक है
जीवन और धर्म का मध्य भाग।

०४५ ८/१९: "तुम्हारी (दुश्मन की) सेनाएँ तुम्हारे लिए कम से कम अच्छी नहीं होंगी, भले ही वे हों
कई गुना: क्योंकि निस्संदेह अल्लाह ईमान लाने वालों के साथ है।" शायद दुश्मन को हतोत्साहित करना, लेकिन
निश्चित रूप से अपने स्वयं के योद्धाओं को प्रोत्साहित करना। "गॉट मिट अन।" बस ये उतना ही पुराना है जितना सबसे पुराना

पेज ८०५

धर्म - और अभी भी उन सभी के लिए मान्य है जो इसे मानते हैं, और अशिक्षित, भोले जल्दी
अनुयायी मानते थे - - - जैसा कि आज भी बहुत से मुसलमान करते हैं।

*०४६ ८/३८-३९: "काफिरों से कहो, अगर (अब) वे (अविश्वास से) (= बन जाते हैं)
मुसलमान*)) उनका अतीत उन्हें माफ कर दिया जाएगा; लेकिन अगर वे बने रहते हैं - - - उन्हें सफेद लड़ाई - - -"।
मुसलमान कुरान को यह कहते हुए उद्धृत करना पसंद करते हैं कि दूसरों को बनने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा
मुसलमान - इसका उपयोग इस बात के प्रमाण के रूप में किया जाता है कि ऐसी चीजें कभी नहीं होती हैं (f। उदा। 2/256)। लेकिन यहाँ यह है
ठीक इसके विपरीत कहा: मुसलमान बनो या लड़ो। यह वास्तव में अक्सर विकल्प थे
दूसरे हिस्से में था: इस्लाम में आओ या मरो - हालांकि यह उल्लेख किया जाना चाहिए कि यह ज्यादातर थे
मामला जब इस्लाम ने बुतपरस्तों पर युद्ध छेड़ा, ऐसा अक्सर नहीं जब दूसरा हिस्सा यहूदी थे या
ईसाई - हालांकि यह, और पोग्रोम्स भी हुआ। विजय के कुछ मुस्लिम युद्ध थे
बल्कि खूनी - जीत के बाद सामूहिक हत्याएं शामिल हैं।

ये दो श्लोक दिलचस्प हैं क्योंकि:

1. वे विरोध करते हैं - विरोधाभास - एक और कविता
(२/२५६: "इसमें कोई बाध्यता न हो
धर्म") - जो कुरान, इस्लाम और
मुसलमान कहते हैं कि ऐसा कभी नहीं होता)।
2. वे साबित करते हैं कि बल का प्रयोग परिवर्तित करने के लिए किया जा सकता है
लोग इस्लाम के लिए।
3. वे बताते हैं कि इस्लाम में परिवर्तित होने से इनकार करना एक
के अनुसार हमले का वैध कारण
कुरान.

**०४७ ८/३९: "और उनके साथ (उन अविश्वासियों से जो इस्लाम में परिवर्तित नहीं होंगे*) तब तक लड़ें जब तक
वहाँ कोई और उपद्रव या उत्पीड़न नहीं है, और अल्लाह में न्याय और विश्वास पूरी तरह से प्रबल है
और हर जगह "। टिप्पणियाँ अनावश्यक होनी चाहिए। युद्ध तब तक लड़ो जब तक इस्लाम हावी न हो जाए
हर जगह।

हम जोड़ सकते हैं कि "कुरान का संदेश जोड़ता है (टिप्पणी 41 से सूरह 8) कि केवल स्वयं में युद्ध"
रक्षा की अनुमति है, लेकिन "शब्द के व्यापक अर्थ" में आत्मरक्षा। और "सबसे चौड़ा"
अर्थ" एक बहुत व्यापक अभिव्यक्ति है - बिल्कुल कुछ भी (और है) होने के रूप में समझाया जा सकता है
आत्मरक्षा में किया गया, क्योंकि गैर-मुस्लिम हर चीज के लिए दोषी हैं। एक हड़ताली
नमूना आप मिल सकते हैं, यह "तथ्य" है कि "सभी अमेरिकी इस्लाम के खिलाफ आक्रामकता के दोषी हैं"
और मारे जा सकते हैं, क्योंकि वे संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्य को कर का भुगतान करते हैं"। कोई रियायत नहीं क्योंकि वे बाद में
सभी को टैक्स देने के लिए मजबूर किया जाता है - कुछ लोग इसे खुशी से करते हैं। टैक्स नहीं देने वाले लाखों लोगों को कोई रियायत नहीं।
मध्य पूर्व में युद्ध का विरोध करने वालों को कोई रियायत नहीं। रियायत भी नहीं
- अभी भी कुछ लाखों (f. पूर्व युवा) - जो टैक्स नहीं देते हैं और साथ ही उस युद्ध का विरोध करते हैं।
हर कोई दोषी है - उन्हें मार डालो। इसलिए कभी-कभी "व्यापक अर्थ में" का प्रयोग किया जाता है।

०४८ ८/४१: "और यह जान लो कि जितनी लूट तुम (युद्ध में) प्राप्त कर सकते हो, उसमें से पांचवां हिस्सा है
अल्लाह को सौंपा "। युद्ध करने का एक और अच्छा कारण- योद्धाओं और उनके नेताओं को मिलता है
80% अमीर और गुलाम - और वे लगभग किसी को भी पसंद कर सकते हैं बलात्कार कर सकते हैं। और यह कुरान कहता है
बाइबिल की पुष्टि करता है!!! - एनटी में ऐसा कुछ किसने पाया है? चोरी और लूट
इस जीवन में अपने आप को और अल्लाह/मुहम्मद (या उसके उत्तराधिकारी) को भी अमीर और शक्तिशाली बनाओ। यह
बस मौजूद नहीं है। लेकिन यह आयत एक और कारण से भी दिलचस्प है: अल्लाह/मुहम्मद
पहले से ही अल्लाह के शब्दों को बदलना पड़ा है; 8/1 में (यहाँ याद रखें कि सूरह नहीं थे
"नीचे भेजा गया" पूर्ण सूरह के रूप में, लेकिन कुछ छंद अभी और कुछ छंद, और केवल बाद में
एक साथ हैरान - एक बड़े हिस्से तक तब तक नहीं जब तक कुरान का निर्माण 650 - 656 ईस्वी के आसपास नहीं हुआ था -

पेज ८०६

लगभग २० से ४६ साल बाद मुहम्मद ने उन्हें बताया। साथ ही युसुफ अली के अनुसार 8/1 का संबंध है

8/41 (धारा 5) की तुलना में एक पूरी तरह से अन्य अनुभाग (धारा 1) क्या जानकारी है
मूल्य।) 8/1 में चोरी की गई हर चीज अल्लाह की है, लेकिन योद्धा अपना बड़ा हिस्सा चाहते थे।
एक सर्वज्ञ ईश्वर - जिसे भविष्य का भी पूरा ज्ञान है - को यह जानना चाहिए था और
फेल होने और सीखने के कारण नियमों में बदलाव नहीं करना पड़ा है।

०४९ ८/४५: "जब आप एक बल से मिलते हैं, तो दृढ़ रहें - - -।" आदेश और पेप-टॉक।

०५० ८/५७: "यदि तुम युद्ध में उन पर हावी हो जाओ, तो उनके साथ तितर-बितर हो जाओ जो उनके पीछे हो लेते हैं
उन्हें, कि वे स्मरण रखें।" कई मुस्लिम योद्धाओं और सरदारों ने इस आदेश का पालन किया
पूरी तरह से - उन्हें निश्चित रूप से कई जगहों पर याद किया गया - - - उन सभी को छोड़कर जो थे
मृत।

०५१ ८/५८: "यदि आप किसी से विश्वासघात ("डरना" नहीं "समझना" या "जानना"*) से डरते हैं
समूह, उन्हें (उनकी वाचा) वापस फेंक दो, (ताकि हो) समान शर्तों पर: अल्लाह के लिए कम नहीं है
विश्वासघाती। " - मुसलमानों को छोड़कर - - - मुहम्मद के विश्वासघात और उनके शब्दों को याद रखें
"युद्ध विश्वासघात है" (इब्न इशाक)।

०५२ ८/६०अ: "उनके खिलाफ (अविश्वासियों*) अपनी ताकत को अपने चरम पर तैयार करें
शक्ति, युद्ध के घोड़े शामिल हैं, अल्लाह के दुश्मनों (दिलों) में आतंक पर हमला करने के लिए और
आपके दुश्मन (और मुहम्मद के दुश्मन*) - - -।" "धर्म का ." से अंदरूनी जानकारी
शांति"?

०५३ ८/६०बी: "जो कुछ भी (पैसा, समय या आपका जीवन*) तुम अल्लाह के लिए खर्च करेंगे, वह
तुम्हें बदला दिया जाएगा, और तुम्हारे साथ अन्याय नहीं किया जाएगा"। सहारा मायने रखता है - आपके लिए जाने के लिए
स्वर्ग, मुहम्मद (और अल्लाह) के लिए युद्ध करने के लिए। और आप जैसे सैनिकों की गिनती - आपके लिए
मुहम्मद (और अल्लाह? - वास्तव में एक सर्वशक्तिमान ईश्वर) के लिए लूट हासिल करें या स्वर्ग जाना सुनिश्चित करें
युद्ध और सामूहिक हत्या और अमानवीयता की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए? - विशेष रूप से एक अच्छा भगवान नहीं।) होना
f के लिए युद्ध करने और धन प्राप्त करने में सक्षम। भूतपूर्व। "तेल लगाना", और अपने धर्म के लिए शक्ति और अनुयायी
और शक्ति का मंच।)

०५४ ८/६१: "लेकिन अगर दुश्मन शांति की ओर झुकता है, तो क्या आप (भी) शांति की ओर झुकते हैं।"
खैर, यही कहा गया था। अक्सर इस बात पर ध्यान नहीं दिया जाता था कि मुसलमान ताकतवर हैं
पर्याप्त - या यह आतंक की शांति थी या सबसे अच्छा दमन था।

055 8/65a: "हे पैगंबर! (अल्लाह कहते हैं*) ईमान वालों को लड़ाई के लिए जगाओ।" के लिए कुछ शब्द
संभवतः अच्छा और शांतिपूर्ण भगवान। और एक भगवान और पूर्ण दयालु आदमी के लिए कुछ कार्य
एक धर्म का प्रतिनिधित्व करने वाले ने एक अच्छा, मानवीय और शांतिपूर्ण होने पर जोर दिया।

०५६ ८/६५बी: "यदि आप में से बीस (मुस्लिम योद्धा*) हैं, तो धैर्यवान और दृढ़निश्चयी (यह
(धैर्य और दृढ़ रहना*) मुस्लिम योद्धाओं और आतंकवादियों पर प्रभावित और प्रभावित होता है
- एक तथ्य जो गैर-मुसलमान नहीं जानते या भूल जाते हैं*), वे दो सौ (गैर-मुसलमानों) पर विजय प्राप्त करेंगे
मुसलमान*), अगर एक सौ हैं, तो वे एक हज़ार काफिरों को हरा देंगे: क्योंकि ये हैं
बिना समझे लोग"। अंध विश्वासियों के लिए कम से कम एक अच्छा उत्साहजनक बात। सिविल के दौरान
संयुक्त राज्य अमेरिका में युद्ध दक्षिण ने कुछ ऐसा ही कहा - लेकिन युद्ध हार गया। लेकिन कुरान एक पर सही है
बिंदु: गैर-मुसलमान कट्टर और भाग्यवादी सोच को नहीं समझते हैं
मुस्लिम योद्धाओं और आतंकवादियों पर प्रभावित - वे आगे बढ़ते हैं और हार मानने से इनकार करते हैं
दूसरी ओर जापानी सैनिक WWII के दौरान ऐसे ही थे, लेकिन वे सभी पूरी तरह से हार गए
युद्ध - यहां तक कि अमेरिकी भी सीखने में सक्षम थे।

०५७ ८/६६: "--- लेकिन (फिर भी (भले ही अल्लाह ने आपके लिए लड़ाई को हल्का कर दिया हो - कोण भेजकर)
शूरवीरों?*)) यदि तुम में से सौ हों, तो वे दो सौ को, और यदि एक हजार को,
वे अल्लाह की अनुमति से दो हजार पर विजय प्राप्त करेंगे - - -"। एक और जोरदार बात, और
8/65 की तुलना में कुछ अधिक यथार्थवादी। इसके अलावा: यदि आप ढीले हैं, तो जान लें कि वह दुश्मन नहीं था कि
तुम्हारे लिए बहुत मजबूत था, लेकिन अल्लाह अपने अथाह ज्ञान में जो इसे ऐसा ही चाहता था। (और
अल्लाह के पास हमेशा एक अच्छा कारण होता है जो अंतिम जीत की ओर ले जाता है)।

लेकिन एक सर्वशक्तिमान ईश्वर सिर्फ यह तय क्यों नहीं कर सकता कि वह चीजों को कैसा बनाना चाहता है और इसे कैसे बनाना है
वह? एक अच्छे और दयालु और प्यार करने वाले और सर्वशक्तिमान भगवान को क्यों जाने देना चाहिए
मनुष्य इतने खून और हत्या और नफरत और बलात्कार और दुख के माध्यम से जीते हैं? में कुछ

कुरान सिर्फ जोड़ नहीं है।
***०५८ ८/६६: "- - - क्योंकि अल्लाह सब्र रखने वालों के साथ है।" यह एक पेप टॉक है जो सभी गैर-
मुसलमानों को हमेशा याद रखना चाहिए - कट्टर मुस्लिम योद्धा कभी हार नहीं मानते और न कभी रुकते हैं।

और यह भी: भविष्य में स्पेन ने कितने सैनिकों को मार डाला, उनके कुछ आदमियों को वहाँ से हटा दिया
पूरब कुछ साल पहले, और मुसलमानों के लिए "साबित" बस यही शब्द दोहराए जाते हैं और
कुरान में दोहराया? - एक सबूत है कि अब (2007) ऑस्ट्रेलिया द्वारा मजबूत किया जा सकता है।

***०५९ ८/६७: "यह एक पैगंबर (मुहम्मद *) के लिए उपयुक्त नहीं है कि उसके पास कैदी हों
युद्ध जब तक कि वह पूरी तरह से भूमि को अपने अधीन नहीं कर लेता"। में नैतिक और नैतिक वास्तविक शिखरों में से एक
इस्लाम। कैदियों की देखभाल के लिए - और संसाधनों - का प्रयास करना पड़ता है। यह मुहम्मद नहीं
जैसे - और वोइला! - अल्लाह ने उसे सभी कैदियों को मारने का आदेश दिया (बेशक के अपवाद के साथ)
जो दास के रूप में चाहते थे या अपने परिवारों से जबरन वसूली के लिए रखना चाहते थे)।

इसमें कोई शक नहीं: नैतिक और नैतिक रूप से श्रेष्ठ ईश्वर और धर्म, दोनों में बहुत सहानुभूति है -
पूर्ण और अच्छे और दयालु और अच्छे दिल वाले मुहम्मद को नहीं भूलना चाहिए जो से मुक्त थे
पाप (वास्तव में इस्लाम में नैतिकता और नैतिकता पर विचार करने वाले दार्शनिक कभी नहीं थे जैसे f.
भूतपूर्व। पुराने ग्रीस में या बाद में पश्चिम में। मुहम्मद ने अभी-अभी समकालीनों से चुना है
परंपराएँ - कुछ मामलों में उन्होंने अच्छे विचारों को चुना, अन्य मामलों में उन्होंने अमानवीय आदर्शों को चुना,
और वह यह था, क्योंकि बाद में उसे यह सोचने की अनुमति नहीं दी गई कि उसके नियम अच्छे हैं या नहीं -
या सबसे अच्छा - या नहीं।)

क्या किसी को आश्चर्य है कि मुस्लिम योद्धा और आतंकवादी कैदियों की हत्या क्यों करते हैं - दोषी हैं या नहीं?

०६० ८/६९: " **लेकिन (अब) युद्ध में जो कुछ तुमने लिया, उसका आनंद लें, वैध और अच्छा - - - "। यह एक और है
कुरान में नैतिक और नैतिक शिखर: युद्ध छेड़ो, और फिर यह "वैध और अच्छा" है
चोरी करना और लूटना और लूटना - और महिलाओं से बलात्कार करना और गुलाम बनाना।

लेकिन निश्चित रूप से इसने मुहम्मद और उसके उत्तराधिकारियों के लिए योद्धाओं को प्राप्त करना आसान और सस्ता बना दिया।
यह कि ऐसा व्यवहार किसी भी और सभी पीड़ितों के लिए एक आपदा है - और कुछ मामलों में पीछे हट जाता है
सभ्यता कुछ सौ साल की हो सकती है जैसे फारस में - गैर-मुस्लिम के रूप में गिनती नहीं है
"अनटमैच" गिनती नहीं है।

यह और भी अधिक है क्योंकि कट्टरपंथियों के लिए लगभग हर स्थिति जो उन्हें पसंद नहीं है, उन्हें युद्ध के रूप में परिभाषित किया जा सकता है
इस्लाम के खिलाफ "शब्द के व्यापक अर्थ में" - उल्लेख नहीं है कि इस्लाम के अनुसार
परिभाषा सभी क्षेत्रों में इस्लाम का प्रभुत्व नहीं है "युद्ध की भूमि"। वास्तव में एक नैतिक और नैतिक
श्रेष्ठ धर्म। और एक शांतिपूर्ण।

807

पेज ८०८

और ईमानदारी से "अच्छा" शब्द "वैध और अच्छे" में मुहम्मद, कुरान और को वर्गीकृत करता है
इस्लाम। कानूनों को तोड़ा और बनाया जा सकता है और एक पूर्ण तानाशाह के लिए इसे बनाना कोई समस्या नहीं है
वह कौन से कानून चाहता है और इस तरह चीजों को "वैध" बनाता है - उद्देश्य पर इस्तेमाल किए गए उद्धरण चिह्न। परंतु
शब्द "अच्छा" एक निरपेक्ष - लचीली "सीमाएँ" है, लेकिन मूल रूप से एक निरपेक्ष है।
सभी बाहरी लोगों के खिलाफ व्यवहार के लिए अल्लाह/मुहम्मद के वास्तविक नियम "अच्छे" और से बाहर हैं
बाहरी लोगों को विश्वास दिलाने के लिए कुरान में निरस्त छंदों के उपयोग में पाखंड
कुछ और, धर्म के इस पहलू और पाखंडियों को और भी घिनौना बना देता है।

०६१ ८/७१: "- - - यदि वे (युद्धबंदियों) के पास आपके खिलाफ विश्वासघाती साजिश है - - -"। कैसे कर सकते हैं
एक दुश्मन कैदी किसी के खिलाफ "विश्वासघाती इरादे रखता है"। प्रति परिभाषा एक शत्रु -
एक कैदी भी - आपसे अलग-अलग तरीकों से लड़ सकता है, लेकिन वह है लड़ाई, विश्वासघात नहीं। (प्रति
किसी को धोखा दो भागों के बीच किसी प्रकार का सकारात्मक संबंध होना चाहिए - यदि नहीं
यह विश्वासघात या "विश्वासघाती डिजाइन") नहीं है।

**०६२ ८/७२: "वे जो ईमान लाए - - - और ईमान के लिए लड़े, अपनी संपत्ति से (= दिया .)
पैसा - जैसे बहुत से मुसलमान आज भी करते हैं*) और उनके व्यक्ति (= व्यक्तिगत रूप से युद्ध में गए*), में
अल्लाह का कारण, साथ ही उन्हें (योद्धा, आतंकवादी*) शरण और सहायता देने वाले (जैसे .)
आज भी बड़ी संख्या में मुसलमान क्या करते हैं - कम से कम पैसा और सहानुभूति और सहायता देना
"कारण" में आतंकवाद शामिल है*) - ये सभी (अच्छे मुसलमान* हैं)"। टिप्पणियाँ अनावश्यक।

०६३ ८/७३: "- - - जब तक आप ऐसा नहीं करते, (एक दूसरे की रक्षा करें (जिसमें योद्धा और आतंकवादी* शामिल हैं)), पृथ्वी पर कोलाहल और जुल्म होगा, और बड़ी शरारत होगी (बुरा न होने के कारण- मुसलमान*)" कोई टिप्पणी नहीं - खासकर जब से न तो दमन है, न ही शरारत मुस्लिम देशों में गैर-मुसलमानों के खिलाफ (?)

**०६४ ८/७४: "जो लोग विश्वास करते हैं, और निर्वासन अपनाते हैं, और लड़ते हैं (और यहाँ इसका मतलब है) हथियार*) ईमान के लिए, अल्लाह के लिए और उन लोगों के लिए जो (उन्हें) शरण देते हैं और सहायता - ये (सभी) वास्तव में विश्वास करने वाले हैं - - -"। एडोल्फ हिटलर उस समय काफी छोटा था जब वह उन्होंने अपनी योजनाओं का वर्णन करते हुए "मीन काम्फ" लिखा और उन्होंने दुनिया को जीतने के लिए कैसे काम किया? भविष्य - दुनिया ने उस पर विश्वास नहीं किया (कोई अन्य तुलना करने का इरादा नहीं है)। कुरान वर्णन करता है दुनिया पर हावी होने के लिए मुसलमानों को कैसा व्यवहार, काम और संघर्ष करना पड़ता है - क्या दुनिया मानती है? यह और वे?

065 8/74: "- - - उनके लिए (योद्धा, आतंकवादी और उनके सभी सहायक और उन्हें सहायता देने वाले*), उनके लिए पापों की क्षमा और सबसे उदार प्रावधान है"। यह वाक्य बहुत कुछ कहता है इस्लाम के बारे में। और यह एक अच्छी पेप टॉक भी है।

यह उन सभी मदद की व्याख्या भी कर सकता है जो आतंकवादियों को "सामान्य" मुसलमानों से मिलती हैं।

०६६ ८/७५: “और वे (गैर-मुसलमान*) जो बाद में ईमान को स्वीकार करते हैं (मुसलमान बन जाते हैं), और अपनी कंपनी में विश्वास के लिए लड़ो - वे आप के हैं"। यदि आप मुस्लिम बन जाते हैं और मजदूरी करते हैं इस्लाम के लिए युद्ध, आपने साबित कर दिया है कि आप एक असली मुसलमान हैं। किसी भी मुसलमान के लिए एक अच्छा सबूत नेता जिसे योद्धाओं या आतंकवादियों की जरूरत है।

वर्ष ६२४ - ६२५ (?) सूरह 59:

०६७ ५९/२: "वह (अल्लाह*) है जिसने काफिरों को बाहर निकाला (यहूदी जनजाति बानू अल-नादिर*) किताब के लोगों के बीच (= यहूदी और ईसाई*) सबसे पहले अपने घरों से (बलों की) सभा।" यह मदीना से गैर-अरबों का निष्कासन था, जिसके बाद मुहम्मद को उनके खिलाफ कार्रवाई करने का बहाना मिल गया - मुहम्मद वास्तव में उन्हें मारना चाहते थे,

808

पेज ८०९

लेकिन बानू अल-नादिर के साथ एक वाचा रखने वाले अरब जनजातियों में से एक ने इसे असंभव बना दिया उसे - वह अभी भी पर्याप्त सैन्य नहीं था। यह बद्र की लड़ाई के तुरंत बाद हुआ था 624 ई. यह मुहम्मद के आर्थिक रूप से वास्तव में स्वयं बनने की दिशा में पहला कदम था। पर्याप्त के रूप में उन्होंने उनकी सारी भूमि, आदि को "अधिग्रहित" कर लिया, और पूर्ण शक्ति की दिशा में एक आवश्यक कदम मदीना।

०६८ ५९/5: "क्या तुमने (हे मुसलमानों!) कोमल खजूर के पेड़ों को काट दिया - - -।" छोटा करना ताड़ के पेड़ - रेगिस्तान में जीवन का आधार - ऐसा "निम्न" कार्य माना जाता था, कि यह लगभग अनसुना था। लेकिन मुहम्मद ने ऐसा किया - सरासर आतंकवाद और मनोवैज्ञानिक युद्ध। (मुसलमान आज इस आतंकवादी कृत्य को या इससे भी बदतर समझाने की कोशिश करते हैं, द्वारा कह रहा था कि उसने युद्ध के मैदान के लिए एक खुला स्थान बनाया है। यह "व्याख्या" बस इतना ही है बकवास। एक बात के लिए: यदि एक चीज है जो एक शुष्क और रेगिस्तानी भूमि में पर्याप्त है, तो वह है खुली जगह - यह सिर्फ इस बात पर सहमत होना था कि कहां मिलना है। दूसरे के लिए: जिनके पास पूरे इतिहास में है युद्ध ने कभी आदिम योद्धाओं के बारे में सुना है जो लड़ाई की शुरुआत करने के लिए जंगल काटते हैं? एक तिहाई के लिए: कोई भी - बिल्कुल कोई भी, इसमें कोई भी मुसलमान शामिल है - जिसने कभी खजूर का पौधा देखा हो हथेलियाँ अच्छी तरह जानती हैं कि पेड़ों के बीच लड़ने के लिए बहुत जगह है। लेकिन मुख्य तथ्य: कौन विश्वास करेगा कि एक कमजोर बल - बानू अल-नादिर - आएगा एक बहुत मजबूत के खिलाफ एक खुली लड़ाई लड़ने के लिए यथोचित रूप से सुरक्षित दीवारों के पीछे से बाहर दुश्मन? - और सबसे बढ़कर अपने परिवारों को असुरक्षित छोड़ दें? दो जानने वाला कोई समझदार आदमी नहीं युद्ध के बारे में मिलीमीटर ऐसा मानते हैं - और मुहम्मद पहले से ही बहुत कुछ जानते थे युद्ध. इस "स्पष्टीकरण" पर विश्वास करने के लिए आपको बहुत भोला होना होगा। मुस्लिम आतंकवाद कुछ भी नहीं नया।

०६९ ५९/६: "अल्लाह ने अपने रसूल (मुहम्मद*) को जो कुछ दिया है (और छीन लिया) उससे उन्हें (बानू अल-नादिर*) - इसके लिए तुमने (मुस्लिम योद्धाओं*) ने दोनों के साथ कोई अभियान नहीं किया घुड़सवार सेना या ऊंट - - -।" जो मुहम्मद के लिए बहुत अच्छा था, क्योंकि जब कोई नहीं था लड़ाई और दुश्मन ने बस हार मान ली, युद्ध की सभी लूट को "फे" कहा जाता था और यह था अल्लाह/मुहम्मद अकेले। मुहम्मद को कुछ ही समय में अच्छी अर्थव्यवस्था मिल गई।

०७० ५९/७: “अल्लाह ने अपने रसूल (मुहम्मद*) को जो कुछ दिया है (और उससे छीन लिया)

बस्ती के लोग (= पराजित लोगों से लूटे गए*) अल्लाह के हैं - उसके
रसूल और रिश्तेदारों और अनाथों के लिए, जरूरतमंद और राहगीर "- और क्या नहीं है
यहाँ उल्लेख किया गया है: मुहम्मद स्वयं और उनके बड़े परिवार के लिए (हालांकि यह सच होने की संभावना है कि
वह विलासिता में नहीं रहता था), धन बांटने वालों को भुगतान के लिए, "उपहार" के लिए
अनिर्णीत व्यक्तियों को मुसलमान बनने या रहने के लिए, अन्य तरीकों से बढ़ावा देने के लिए
धर्म, और कम से कम अधिक युद्धों के वित्तपोषण के लिए नहीं। साथ ही सभी मुसलमानों को तय "खराब टैक्स"
बहुत गरीब को भुगतान नहीं करना पड़ता है, इन सभी उद्देश्यों के लिए भी भुगतान करना पड़ता है, और अक्सर लड़ाई के लिए बहुत कुछ जाता है
और अन्य बातें, यह एक प्रश्न है कि क्या "खराब कर" नाम बिल्कुल सही है। ५९/६ को भी देखें
के ऊपर।

वर्ष सीए. इसका अधिकांश भाग 625 ई. (यह मदीना में नंबर २ हो सकता है, लेकिन उसके लिए ६२५ देर हो चुकी है), सूरह ३।

*०७१ ३/१११: "- - - अगर वे (पुस्तक के लोग = मुख्यतः यहूदी और ईसाई) बाहर आते हैं
तुमसे लड़ो, वे तुम्हें अपनी पीठ दिखाएंगे, और उन्हें कोई मदद नहीं मिलेगी"। योद्धाओं के लिए पेप टॉक।
हमेशा सच नहीं होता जैसा कि इतिहास ने दिखाया और दिखाया है।

०७२ ३/१२२: "याद रखें कि आपकी दोनों पार्टियों ने कायरता को मध्यस्थता की, लेकिन अल्लाह उनका था
रक्षक - - - (और वे युद्ध में गए*) - - -"। प्रोत्साहन देना।

०७३ ३/१२३: "अल्लाह ने बद्र में आपकी मदद की - - -"। यह मक्का के खिलाफ एक लड़ाई थी कि
मुसलमानों की संख्या ३:१ से अधिक होने के बावजूद जीती (मुस्लिम सूत्रों के अनुसार - वहाँ नहीं हैं
अन्य)। पेप टॉक - उसने तब आपकी मदद की, हमें विश्वास है, और यह संभावना है कि वह आपकी मदद करेगा
लड़ाई, भी।

०७४ ३/१२४: "क्या यह आपके (युद्ध में मुसलमानों) के लिए पर्याप्त नहीं है कि अल्लाह आपकी मदद करे
तीन हजार कोण (विशेषकर) नीचे भेजे गए?" योद्धाओं से बात करें - अल्लाह लड़ाई में आपकी मदद करता है
कोण योद्धाओं के साथ। युद्ध में नैतिकता मायने रखती है, और इस पर मुहम्मद के लिए युद्ध आवश्यक था
समय, हालांकि 625 ईस्वी में वह मक्का के खिलाफ रक्षा के बारे में भी सोच सकता है - वे फिर से हो सकते हैं
उनके कारवां को लूटने से रोकने के लिए हमला।

०७५ ३/१२५: "हाँ - अगर तुम (मुस्लिम योद्धा) दृढ़ रहो, और सही काम करो, भले ही दुश्मन
जल्दी से यहाँ तुम पर दौड़ना चाहिए, तुम्हारा रब (अल्लाह) तुम्हारी मदद करेगा पाँच हज़ार
एक भयानक हमला करने वाले स्वर्गदूत "। योद्धाओं से बात करें - "गॉट मिट अन"। आदिम,
मुहम्मद के पहले अनुयायियों के अशिक्षित लोगों के इस पर विश्वास करने की संभावना थी - विशेष रूप से
वे पहले 100 से अधिक वर्षों (732 ईस्वी तक) अक्सर लड़ाई और युद्ध जीते। क्या है
और भी बुरा; कुछ कट्टरपंथी या कट्टरपंथी आज भी इस पर विश्वास कर सकते हैं।

०७६ ३/१४०: "यदि एक घाव ने आपको (मुस्लिम योद्धा*) छुआ है, तो सुनिश्चित करें कि एक समान घाव है
दूसरों को छुआ (दुश्मन*)"। योद्धाओं को लड़ने पर तुले रहो। एक शांतिपूर्ण धर्म।

०७७ ३/१४१: "अल्लाह का उद्देश्य उन लोगों को भी शुद्ध करना है जो ईमान (सच्चे मुसलमान) में सच्चे हैं और
विश्वास का विरोध करने वालों को आशीर्वाद देने से वंचित (जो विश्वास नहीं करते हैं या दृढ़ता से विश्वास नहीं करते हैं
मुहम्मद*) में पर्याप्त है।" स्पष्ट प्रश्न का उत्तर: मुसलमानों को मजदूरी क्यों करनी पड़ती है
युद्ध और उनके जीवन को जोखिम में डालते हैं, जब अल्लाह सिर्फ "हो" कह सकता था और यह था? लेकिन जवाब नहीं है a
अच्छा एक - एक सर्वज्ञ ईश्वर को सामूहिक वध के बिना जाना जाता था (लेकिन मुहम्मद ने नहीं किया था
युद्ध के बिना शक्ति प्राप्त की, अगर अल्लाह मौजूद नहीं है)। किसी प्रकार की व्याख्या कम से कम, युद्ध क्यों?
"आवश्यक" था।

०७८ ३/१४२: "क्या तुमने सोचा था कि तुम उन लोगों की परीक्षा लिए बिना स्वर्ग में प्रवेश करोगे जिनके पास था"
(अपने कारण में) कड़ा संघर्ष किया और दृढ़ रहे (- वे स्वर्ग में एक अच्छी जगह के लायक हैं *)"।
कोई टिप्पणी आवश्यक नहीं सिवाय: क्यों - क्यों - एक सर्वज्ञ भगवान को अपनी परीक्षा देनी पड़ती है
अनुयायी ?? - वह सब कुछ पहले से जानता है, और सब कुछ पहले भी तय करता है! कोई नहीं है
इसमें तर्क। (लेकिन स्पष्ट रूप से एक तर्क है कि यदि धर्म किसी मुहम्मद की इच्छा से बनाया गया था
शक्ति।)

*०७९ ३/१४६: "कितने नबियों ने (अल्लाह की राह में) लड़ाई लड़ी और उनसे बड़ी लड़ाई लड़ी
ईश्वरीय पुरुषों के बैंड? लेकिन उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी, अगर वे अल्लाह के रास्ते में आपदा से मिले, और न ही
क्या उन्होंने कमजोर (इच्छा में) किया और न ही झुके। और अल्लाह उन्हें पसंद करता है जो दृढ़ और दृढ़ हैं। " ए

हर समय के योद्धाओं से बात करें - कभी हार न मानें, कभी हार न मानें, अगर आपको करना है तो पीछे हटें, लेकिन आगे बढ़ें और आप नबियों की तरह जीतेंगे, क्योंकि अल्लाह मदद करेगा - - - और देर-सबेर प्रेमी धार्मिक योद्धाओं की, अल्लाह आपको जन्नत देगा। जैसे पुराने नॉर्स धर्म में।

जहाँ तक पैगम्बरों की बात है, इस्लाम कहता है कि वे हर समय और हर जगह मौजूद हैं - हदीस संख्या 124oo का उल्लेख करें, लेकिन यह भी अनगिनत लोगों के लिए सिर्फ एक प्रतीक है। यह नहीं है सच है, क्योंकि एकेश्वरवादी भविष्यवक्ताओं का एक भी निशान मिलना संभव नहीं है (कुछ को छोड़कर बाइबिल में) कहीं भी या कभी भी किसी भी रूप में - इतिहास, साहित्य, कला, वास्तुकला, पुरातत्व, या लोक कथाओं में भी। यह संभव नहीं है कि इतने सारे नबी छोड़ दें न एकल निशान - विशेष रूप से युद्धरत लोगों को निशान छोड़ना चाहिए, भले ही उन्हें कोई सफलता न मिली हो धर्म का प्रसार।

और बहुत से भविष्यवक्ताओं के बारे में जिन्हें हम अन्य स्रोतों से नहीं जानते हैं - मुख्य रूप से बाइबल - ने वास्तव में युद्ध छेड़ना (एनबी: बाइबिल एफ। उदा। शाऊल और डेविड का मेल नहीं करता है - और यहां तक कि नहीं इब्राहीम, इसहाक, या याकूब, इश्माएल का उल्लेख नहीं करने के लिए - भविष्यद्वक्ताओं के रूप में।)

लेकिन श्रीमान बुश और अन्य लोगों को इसे दृढ़ता से याद रखना चाहिए था।

080 3/147: "- - - विश्वास का विरोध करने वालों के साथ हमारी मदद करें"। अगर आप इस्लाम के लिए लड़ते हैं तो अल्लाह मदद करेगा - or इस्लामी नेताओं के लिए यह कहना कि वे उम्माह और इस्लाम की रक्षा करते हैं।

मनोवैज्ञानिक रूप से एक शक्तिशाली उत्तेजना और लड़ाई की भावना को ऊपर उठाने की ताकत, विशेष रूप से अशिक्षित, आदिम योद्धाओं या कट्टरपंथियों के साथ।

०८१ ३/१४८अ: "और अल्लाह ने उन्हें (योद्धाओं को) इस दुनिया में एक इनाम दिया और उत्कृष्ट" आख़िरत का इनाम "। युद्ध की लूट का 80% - जिसमें दास और महिलाएं शामिल थीं - के लिए थे योद्धा और उनके नेता (शेष 20% अल्लाह/मुहम्मद/धार्मिक के लिए थे नेता - जो जल्द ही राजनीतिक नेता भी बन गए)। महिलाओं को गुलाम बनाना मजेदार था, क्योंकि दासियों का बलात्कार आपका अधिकार था पाप नहीं। इस्लाम के लिए लड़ाई करने के अलावा - और है - a स्वर्ग के लिए "भारी" आवेदन, और वहां पहुंचने का एक निश्चित तरीका चाहे आप किसी भी तरह का जीवन क्यों न हों नेतृत्व किया है, यदि आप इस्लाम के लिए युद्ध में मारे गए हैं (जिसका अर्थ जल्द ही - और अर्थ - के लिए) नेताओं)। लेकिन यह एक अजीब तथ्य है कि नेता कभी आत्मघाती हमलावर नहीं बनते।

०८२ ३/१४८बी: "अल्लाह उन लोगों से प्यार करता है जो अच्छा करते हैं (इस मामले में: अल्लाह के लिए युद्ध छेड़ने के लिए) मुहम्मद*)"। अल्लाह के लिए युद्ध करना - जलाना और मारना और हत्या करना और नष्ट करना और बलात्कार करना अच्छा देवता - एक अच्छी चीज है जिसे अल्लाह प्यार करता है। क्या किसी ने कहा कि आधुनिक आतंकवादियों को कुरान के शब्दों को उनके कर्मों के लिए उकसाने के लिए मोड़ो? और यह भी: मुहम्मद गोटी सस्ते योद्धा और धन और शक्ति प्राप्त की - युद्धों और डकैतियों में जो वास्तव में अवैध थे कुरान के अनुसार, क्योंकि वे वास्तव में आक्रमण के युद्ध थे, वास्तव में रक्षा के नहीं। और उन्होंने उसे कम से कम दो महिलाओं के साथ बलात्कार करने की संभावना दी - रैहाना बिन्त अमर और सफीजा बिन्त हुआय।

०८३ ३/१५२: "अल्लाह ने वास्तव में तुमसे अपना वादा पूरा किया जब तुम उसकी अनुमति के साथ थे" अपने दुश्मन का सफाया करने के बारे में - जब तक कि आप झुक नहीं गए और आदेश के बारे में विवाद करने के लिए गिर गए, और इसकी अवज्ञा की - - -"। यह उहुद की लड़ाई को संदर्भित करता है - की सेनाओं के बीच दूसरी लड़ाई मुहम्मद और मक्का - मदीना से 5 किमी। इस लड़ाई में मक्का के पास अधिक ताकतें थीं, लेकिन यह एक सैन्य सत्य है कि हमला करने की तुलना में बचाव करना आसान है - f की तुलना करें। भूतपूर्व। नेपोलियन बनाम। वाटरलू में वेलिंगटन की अवर सेनाएं जब तक ब्लूचर और उनके जर्मन नहीं आए, या माल्टा में १५६५ - कुछ ४०ooo मुस्लिम योद्धा बनाम १ooo रक्षकों से थोड़ा बेहतर + कुछ ८ooo स्थानीय लोग, जहां कई हफ्तों की लड़ाई के बाद हमलावरों को पीछे हटना पड़ा (18 मई से to 8 सितंबर।), और आंशिक रूप से इस वजह से भूमध्य सागर में आधिपत्य खो गया। या के लिए वह मामला WW2 के दौरान माल्टा: छोटी ब्रिटिश सेना और स्थानीय लोग बनाम नाममात्र के लिए अत्यधिक श्रेष्ठ इतालवी और कुछ जर्मन सेनाएँ - लेकिन माल्टा कभी नहीं गिरा।

उहूद में मुहम्मद की सेना जीतती दिख रही थी। लेकिन तीरंदाज अपना हासिल करना चाहते थे लूट के कुछ हिस्सों, और अपने बचाव पदों को छोड़ दिया - - - और लड़ाई बदल गई। शालीनता से कहा एक ड्रॉ में समाप्त हुआ (वास्तव में मुहम्मद युद्ध हार गए), और मुहम्मद ने बहुत से पुरुषों को खो दिया। इसे मिला कोई और गंभीर परिणाम नहीं, हालांकि, मक्का बहुत बाद में वापस नहीं आया, और तब मदीना और मुहम्मद तैयार हुए (खाई की लड़ाई, जो मुहम्मद जीता - मक्का के साथ आखिरी असली लड़ाई। खैर, वास्तव में यह कोई वास्तविक लड़ाई नहीं थी, बस एक घेराबंदी थी

जिसे अंत में मक्का को वापस लेना पड़ा)।

लेकिन इस मामले में सबक यह लग रहा था: जब तक योद्धाओं ने आज्ञा का पालन किया, तब तक अल्लाह ने अपनी बात रखी
मुहम्मद - और अल्लाह। जब उन्होंने ऐसा करना बंद कर दिया, तो चीजें गलत हो गईं। सबक: अल्लाह
अपनी बात रखता है और अल्लाह लड़ाई में मदद करता है, जब तक आप उसकी आज्ञा का पालन करते हैं - धार्मिक (अक्सर)
राजनीतिक के समान) नेता - आदेश। आतंकवादी और योद्धा: अल्लाह और अपने नेताओं का पालन करें।

०८४ ३/१५४: "यदि तुम अपने घरों में रहते, तो भी तुम में से वे लोग जिनके लिए मृत्यु थी
निश्चित रूप से उनकी मृत्यु के स्थान पर चले गए होंगे "। पूर्वनियति है a
लड़ाई करने के लिए शक्तिशाली उत्तेजना - आप अपने नेता और अल्लाह के लिए भी लड़ सकते हैं, क्योंकि यह है
खतरनाक नहीं, क्योंकि आप किसी भी तरह अपने नियत समय तक नहीं मरेंगे, और आपके पास हासिल करने के लिए बहुत कुछ है
एक युद्ध में - लूट, दास और स्वर्ग। यह भी देखें "कुरान में गलतियाँ", ३/१५४।

०८५ ३/१५५: "तुम में से जो दो सेनाओं के मिलने के दिन लौट आए थे (३०० लोग उहूद से चले गए थे)
लड़ाई से पहले, 700 को लड़ने के लिए छोड़कर, इस्लामी स्रोतों के अनुसार) - यह शैतान था जिसने
उन्हें विफल करने के लिए, - - -।" यह शैतान ही है जो आपको युद्धों में भाग लेने के लिए न तो चाहता है और न ही भयभीत करता है -
क्या आप शैतान के मित्र बनना चाहते हैं? मुहम्मद और के लिए लड़ने के लिए एक शक्तिशाली उत्तेजना
इस्लाम (या कभी-कभी व्यक्तिगत लाभ या शक्ति के लिए धर्म का उपयोग या दुरुपयोग करने वाले नेताओं के लिए)।

०८६ ३/१५६: "अविश्वासियों की तरह मत बनो, जो अपने भाइयों के बारे में कहते हैं, - - - 'यदि वे रुके होते
हमारे साथ (लड़ाई* से) वे न मरते, न मारे जाते।" यह एक मुसलमान के लायक नहीं है
ऐसा सोचो - मुहम्मद के लिए युद्ध करना एक पवित्र कर्तव्य है - - - और धन का मार्ग और
स्वर्ग। एक आतंकवादी के बारे में जानना अच्छा है - - - अगर वह वास्तव में गुमराह नहीं होता है जब वह मानता है कि वह लड़ता है
अल्लाह के लिए, और अगर कुरान सच है। (कुरान में कई गलतियाँ किसी को भी हैरान कर देती हैं
इस बिंदु पर भी यह कितना सच है - विशेष रूप से आंकड़ों के माध्यम से यह साबित करना आसान है कि
युद्ध का मैदान तुम्हारे बिस्तर से कहीं ज्यादा खतरनाक है।)

**०८७ ३/१५७: "और यदि तुम अल्लाह के मार्ग में मारे गए या मर गए, तो क्षमा और दया
अल्लाह जितना वे जमा कर सकते हैं, उससे कहीं बेहतर हैं।" आदमी कितना भी बुरा क्यों न हो (कुछ भी नहीं है
महिलाओं के बारे में कहा गया है) आप अल्लाह के लिए मारे गए हैं, जन्नत में जाने का पक्का तरीका है।

पुराने वाइकिंग्स "जानते थे" कि अगर वे युद्ध में मारे गए, तो वे वलहैला गए - जिसने बनाया
उन्हें क्रूर योद्धा। इस्लाम स्वर्ग में अपने आलसी विलासितापूर्ण जीवन और बहुत सारी महिलाओं के साथ, था
और एक ही प्रभाव पड़ता है।

हालाँकि, दो प्रश्न हैं: कौन तय करता है कि अल्लाह कौन से युद्ध चाहता है? - अगर तुम देखो
इतिहास में, ऐसा लगता है कि मुसलमानों ने जितने युद्ध लड़े हैं, वास्तव में वे धन के लिए थे और
शक्ति, लेकिन ज्यादातर उन्हें पवित्र युद्ध घोषित किया गया है, कई बार दोनों पक्षों द्वारा भी जब
दोनों हिस्से मुसलमान थे। और: क्या होगा अगर कुरान का आविष्कार किया गया है या पूरा सच नहीं बता रहा है? - सब
पुस्तक में गलतियाँ और अंतर्विरोध आदि किसी को भी आश्चर्यचकित कर देते हैं।

सुन्नी और शिया के बीच युद्धों में और नेताओं के बीच सत्ता संघर्ष में, बहुत सारे योद्धा
धोखा दिया गया है - मुसलमानों के बीच युद्ध में दोनों भाग अल्लाह और के लिए नहीं लड़ सकते हैं
"सही" विश्वास, लेकिन सभी योद्धाओं को अक्सर कहा जाता था कि वे अल्लाह के दुश्मनों के खिलाफ लड़े। अगर कम से कम
एक भाग सही था, विपरीत भाग के योद्धाओं ने नरक में एक कठोर जागरण किया था, भले ही
उन्हें बताया गया और माना गया कि वे अल्लाह के दुश्मनों से लड़ रहे थे। उल्लेख नहीं है कि सब कब था
नेताओं के बीच सत्ता के लिए संघर्ष, और अल्लाह इस बात से बिल्कुल भी सहमत नहीं था कि उनमें से कोई भी था
उसके लिए लड़ रहे थे - वे केवल "अच्छे कारण के बिना" साथी मुसलमानों को मारकर पाप कर रहे थे।
जो नर्क के योग्य घोर पाप है।

और इससे भी बदतर: अगर कुरान बना है या इस बिंदु पर सच नहीं बताता है, तो कोई टिप्पणी नहीं
आवश्यक है। खासकर अगर कोई दूसरा, सच्चा धर्म कहीं मौजूद है - एक धर्म
मुसलमानों की तलाश करना मना है।

**०८८ ३/१५८: “और यदि तुम मरते हो, या मारे जाते हो, तो देखो! यह अल्लाह के लिए है कि तुम्हें एक साथ लाया गया है"। होना
अल्लाह के लिए युद्ध में मारा गया, और स्वर्ग में जाना - एक योद्धा या आतंकवादी के लिए अच्छा "ज्ञान"।
जिसने भी कहा कि आतंकवाद को सही ठहराने के लिए कुरान का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, उसने शायद ही कभी कुरान पढ़ा हो। देखो
3/157 भी।

०८९ ३/१६८: "यदि उन्होंने केवल हमारी बात सुनी होती (और युद्ध में नहीं गए*), तो वे नहीं होते
मारे गए"। कुरान के अनुसार पाखंडी मुसलमान यही कहते हैं - और कौन बनना चाहता है
पाखंडी? अच्छा पेप बात।

**०९० ३/१६९: “उन लोगों के बारे में मत सोचो जो अल्लाह के रास्ते में मारे गए हैं। नहीं, वे रहते हैं - - - में
उनके भगवान (अल्लाह *) की उपस्थिति"। एक योद्धा इससे बेहतर और क्या मांग सकता है? - और सोच रहा हूँ
कि, उन्होंने मुस्लिम नेताओं के लिए सस्ते सैनिक बनाए - और बनाए। लेकिन क्या हुआ अगर मुहम्मद ने
यह सब ऊपर?

**०९१ ३/१७०: मृत योद्धाओं द्वारा छोड़ा गया परिवार और अन्य, शोक करने का कोई कारण नहीं है -
उनके प्रिय - योद्धा - जन्नत में हैं। अगर यह वास्तव में अल्लाह के लिए युद्ध था, न कि सत्ता के लिए
या किसी नेता के लिए धन। और अगर कुरान कम से कम इस बिंदु पर सच बोलता है।

०९२ ३/१७१: "वे ("शहीद" *) अनुग्रह और इनाम में महिमा (चांदी और ब्रोकेड और
महिलाओं*) अल्लाह की ओर से - - -"। परम उत्साह की बात: आपका बेटा या पति या पिता मर चुका है और
आप उसे फिर कभी नहीं देख पाएंगे, और जरूरत पड़ने पर वह आपकी कभी मदद नहीं करेगा - लेकिन वह स्वर्ग में है
एक किताब के अनुसार जिसमें सैकड़ों गलतियाँ हैं।

०९३ ३/१७२: "उन लोगों में से जिन्होंने अल्लाह और रसूल की पुकार का उत्तर दिया, यहां तक कि होने के बाद भी"
घायल - - - एक बड़ा इनाम है।" कोई टिप्पणी नहीं, सिवाय इसके कि मुहम्मद को ही चाहिए
योद्धाओं से लड़ रहा है, और ऐसा लगता है कि वह अपने संसाधनों का अधिकतम उपयोग करना चाहता है।

०९४ ३/१७३: "लोगों ने उनसे कहा: 'एक बड़ी सेना तुम्हारे खिलाफ इकट्ठा हो रही है': - - - लेकिन यह (केवल)
उनका विश्वास बढ़ाया - - -"। प्रोत्साहन देना। असली मुसलमान भयभीत नहीं हैं - और अल्लाह मदद करेगा।
पेप टॉक योद्धाओं को लड़ते रहने और युद्ध छेड़ने के लिए उकसाता है, जो निश्चित रूप से आवश्यक था
मुहम्मद को सुरक्षा, शक्ति और धन प्राप्त करने के लिए। उस समय के कई सरदारों की तरह।

०९५ ३/१७४: "और वे (युद्ध से) अल्लाह की कृपा और इनाम के साथ लौटे: कभी कोई नुकसान नहीं"
उन्हें छुआ - - -"। युद्ध और आसान धन की एक परी कथा चित्र। भर्ती के लिए एक अच्छा उत्साहवर्धक बात
नए योद्धा अगर पुरुष अशिक्षित और भोले हैं। युद्ध की महिमा और युद्ध की लूट आकर्षित करती है
नए योद्धा। "सेना" जितनी बड़ी होगी, नेताओं के लिए सफलता और शक्ति की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

०९६ ३/१७५: "केवल शैतान ही आपको (लड़ाइयों के) भय का सुझाव देता है"। कौन बनना चाहता है
शैतान का विषय - अल्लाह और मुहम्मद से डरना बेहतर है और लड़ाई करने से नहीं कतराते।

**०९७ ३/१९५: "- - - जो अपने घरों को छोड़ चुके हैं, या वहां से निकाल दिए गए हैं, या पीड़ित हैं
मेरे (अल्लाह के) कारण में नुकसान, या लड़े या मारे गए - वास्तव में, मैं उनमें से उनका नाम मिटा दूंगा
अधर्म, और उन्हें (स्वर्ग *) में स्वीकार करते हैं"। इसमें दो संदेश हैं: वे व्यक्ति जो
मुसलमान होने के कारण सताए जाते हैं और ऐसे योद्धा भी जो इस्लाम के लिए लड़ने के लिए बाहर जाते हैं - वे हैं
वही, और दोनों का अंत जन्नत में होगा। कई आतंकवादी अपना घर छोड़ चुके हैं, हो सकता है वह लड़ने का इरादा रखते हों
- या कॉल करें कि वह क्या लड़ाई करता है। थोड़े से भाग्य के साथ - या जानबूझकर - वह "कारण" के लिए मर सकता है।

813

पेज 814

बहुत बढ़िया - अगला पड़ाव स्वर्ग है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपने पहले क्या पाप किए हैं। किया था
क्या कोई कहता है कि कुरान को नफरत, हत्या, बलात्कार, युद्ध और आतंकवाद के लिए उकसाने के लिए इस्तेमाल करना पड़ा?

वर्ष ६२५ - ६२६ ईस्वी, सूरह ६१:

**०९८ ६१/४: "वास्तव में अल्लाह उन लोगों से प्यार करता है जो युद्ध के मैदान में उसके कारण लड़ते हैं जैसे कि वे एक थे"

ठोस मुख्य संरचना "। जो लोग कहते हैं कि कुरान बाइबिल जितना अच्छा है, इसका उल्लेख नहीं है
NT, कुरान को कभी नहीं पढ़ा है - जो हम बहुत ईसाई न होने पर भी कह सकते हैं।

1. सामूहिक वध और हत्यारों से प्यार करने वाला भगवान !!!
2. अगर वह एक अच्छा भगवान है, तो मुझे आशा है कि मैं कभी नहीं मिलूंगा a बुरा।
3. और यही इस्लाम का आदर्श और आदर्श है!
4. क्या आप एक मुस्लिम समाज में रहना पसंद करेंगे? ऐसे धर्म से शासित दुनिया?
5. और याद रखें: युद्ध और नफरत केवल एक हिस्सा है इस्लाम का।

वर्ष ६२५ (६२७?) - ६२९ ई.
मक्का के साथ लड़ाई - खाई की लड़ाई), सूरह 33:

०९९ सूरह ३३: मुसलमानों को मक्का और कुछ सहयोगियों से बहुत पहले चेतावनी मिली थी
हमला किया। फारस के एक आदमी (परंपरा के अनुसार), सलमान अल-फरीसी, ने सलाह दी
मुसलमानों के पास मदीना के चारों ओर गहरी खाई खोदने का समय था। जैसा कि यह एक तरह का बचाव कभी नहीं था
क्षेत्र में पहले इस्तेमाल किए गए, हमलावर इसके लिए पूरी तरह से तैयार नहीं थे, और करने में असमर्थ थे
इसे आग के नीचे पार करें। कुछ हफ्तों के बाद उन्हें वापस जाना पड़ा - आंशिक रूप से बर्फ-ठंड के कारण
मौसम। कुरान के अनुसार, मुसलमानों को अल्लाह ने बचाया था।

पहले 20 छंद ज्यादातर युद्ध के बारे में एक कहानी हैं। फिर युद्ध के बाद बातें हुईं -
मुहम्मद को संदेह था कि कुछ यहूदी विश्वसनीय नहीं हैं, भले ही उन्होंने इसमें भाग नहीं लिया था
आक्रमण। मुसलमानों ने जोर देकर कहा कि यहूदियों ने हमलावरों की मदद की थी, लेकिन दूसरों के अनुसार
यह सच नहीं था, और जो कुछ हुआ वह मुहम्मद के संदेह के कारण हुआ। मुसलमान
इन यहूदियों पर आक्रमण किया और उन्हें बन्दी बना लिया। तब मुहम्मद ने बस सभी आदमियों की हत्या कर दी
- हमने ६०० से ९०० तक की संख्याएँ देखी हैं, लेकिन सबसे संभावित संख्या लगभग ७०० है। असहाय
कैदी। मुसलमानों में इस पर और बाद में इसी तरह की घटनाओं से गुजरने या उस पर प्रकाश डालने की प्रवृत्ति होती है।
कम नहीं वे "व्याख्या" करते हैं या बस उस कहानी के बाकी हिस्सों को छोड़ देते हैं: मुहम्मद ने सब ले लिया
महिलाओं और बच्चों को गुलाम के रूप में - हमने यहां एक विश्वसनीय संख्या कभी नहीं देखी है, लेकिन कुछ 2000 हैं
संभावना है। महिलाओं में से एक, सफीज बिन्त हुयय, मुहम्मद व्यक्तिगत रूप से "अपने बिस्तर पर ले गए" = हे
उसके साथ बलात्कार किया और बाद में उससे शादी कर ली - उसके पास क्या विकल्प था? इससे पहले उसने रैहंस बिन्तो के साथ रेप किया था
इसी तरह की परिस्थितियों में अमर। सह ने उससे शादी करने से इनकार कर दिया, और उसने उसे अपने निजी के रूप में रखा
हरम गुलाम (उपपत्नी)। और निश्चित रूप से मुसलमानों ने उनकी सारी संपत्ति पर कब्जा कर लिया और
खेत। सामूहिक हत्या कभी-कभी अच्छा व्यवसाय है। (यहूदियों पर हुए इन हमलों ने भी किया
मुहम्मद आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर।)

और वह खैबर में कुरैज़ा की यहूदी जनजाति का अंत था।

यह सब अच्छे और शांतिपूर्ण भगवान अल्लाह द्वारा सहायता प्रदान की: कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि मुस्लिम आतंकवादी हत्या
कैदी आज भी - उनके पास एक अच्छा और अचूक शिक्षक है।

१०० ३३/१६: "यदि आप मृत्यु से दूर भाग रहे हैं या भाग रहे हैं तो भागने से आपको कोई लाभ नहीं होगा
वध (युद्ध *); और यहां तक कि अगर (आप बच जाते हैं), तो आपको एक संक्षिप्त (राहत) से अधिक की अनुमति नहीं दी जाएगी
मजा लेना!" अल्लाह ने तय किया है कि आपको कब मरना है - हदीसों के अनुसार जो होता है 5
आपके पैदा होने के महीनों पहले। उसके कारण युद्ध से भागने का कोई कारण नहीं है - आप करेंगे
किसी भी तरह अब (या कम) नहीं रहते।

**१०१ ३३/२६: "और किताब के लोगों में से (कुरैज़ा जनजाति के यहूदी - देखें .)
ऊपर*) जिन्होंने उनकी सहायता की थी - अल्लाह ने उन्हें उनके गढ़ों से नीचे उतार दिया और गिरा दिया
उनके दिलों में आतंक। (ताकि) कुछ तुम (मुसलमानों/मुहम्मद) ने कत्ल किया, और कुछ को तुमने बनाया
कैदी।" बहुत ही सरल और "अच्छा और वैध" - एक और श्लोक उद्धृत करने के लिए - सामूहिक हत्या,
गुलामी और लूट।

एक अच्छा और प्यार करने वाला भगवान और एक शांतिपूर्ण धर्म - और यह एकमात्र नरसंहार से बहुत दूर था
समय के साथ मुस्लिम देश। लेकिन यह विशिष्ट है कि अल्लाह ने हमले को ही पवित्र किया
बाद में।

१०२ ३३/२७: "और उसने (अल्लाह) तुम्हें उनकी भूमि, उनके घरों, और उनके माल, और के वारिस बना दिया
एक ऐसी भूमि जिसे आपने (पहले) बार-बार नहीं देखा था। और अल्लाह को हर चीज़ का अधिकार है।" कुछ अमीर
युद्ध की लूट बहुत कुछ सही ठहरा सकती है, और कई लोगों की अंतरात्मा को शांत कर सकती है - खासकर जब एक देवता
इसे पवित्र करता है। क्या ऐसी चीजें आज या भविष्य में हो सकती हैं? - हम जैसे नामों का उल्लेख नहीं करते हैं
दारफुर या इंडोनेशिया या पूर्वी तिमोर या तुर्कों ने 1900 ईस्वी के आसपास ईसाई वंश के खिलाफ
- एफ। भूतपूर्व। आर्मेनिया और स्मिर्ना में।

***103 33/61: "- - - जब भी वे (पाखंडी और बुरे गैर-मुसलमान, जो भी तय करता है कि किसे
वे *) पाए जाते हैं, वे आकार और मारे जाएंगे (दया के बिना)"। बहुतों के लिए एक अच्छी कविता a
मुल्ला और इमाम - और नरसंहार शुरू करने के लिए। जो बात हमें परेशान करती है वह यह है कि यह भविष्य हो सकता है
बहुत से स्थान।

वर्ष सबसे अधिक संभावना ६२६ ईस्वी में से अधिकांश, सूरह ४:

**104 4/66: "अगर हम (अल्लाह*) ने उन्हें अपने प्राणों की आहुति देने या अपने घरों को छोड़ने का आदेश दिया होता,
उनमें से बहुत कम लोगों ने ऐसा किया होगा (ज्यादातर मुसलमानों को युद्ध पसंद नहीं है*): लेकिन अगर उनके पास होता
उन्हें (वास्तव में) कहा गया था, यह उनके लिए सबसे अच्छा होता - - -"। अल्लाह ने पसंद किया था
यदि वे स्वेच्छा से युद्ध करने जाते हैं तो उन्हें अच्छा लगता है। पुराने नॉर्स धर्म की तरह, इस्लाम महिमामंडित करता है
युद्ध, कम से कम अल्लाह और मुहम्मद (और उसके उत्तराधिकारियों) के लिए युद्ध। और पुराने नॉर्स की तरह
धर्म, युद्ध में मरने का मतलब जन्नत में जाना है। यह क्रूर योद्धा बनाता है - और आज:
उग्र आतंकवादी। आतंकवादी अक्सर के नियमों के अनुसार भी जन्नत के काबिल नहीं होते
कुरान (उनका "युद्ध" वास्तव में जिहाद नहीं है, भले ही उनके नेताओं ने उन्हें ऐसा बताया हो, और/या वे
कुरान द्वारा स्वीकार नहीं किए गए तरीकों से अपने "युद्ध" का अभ्यास करें - दोषी को मारना, च। भूतपूर्व। - यहाँ तक की
हालांकि आतंकवादी पीड़ितों को दोषी के रूप में "परिभाषित" करते हैं - इरादा आत्म हत्या, वास्तव में ऐसा नहीं कहा जाता है
इस्लाम के अनुसार हो, आदि), लेकिन जब तक आतंकवादी मानते हैं कि वे सही हैं, प्रभाव है
वैसा ही।

१०५ ४/६७: "और हमें (अल्लाह) उन्हें देना चाहिए था (जो अपनी जान देने से कतराते हैं,
4/66 देखें) हमारी उपस्थिति से एक महान इनाम (यदि वे युद्ध में गए थे*)"। बहुतों में से एक
एक अच्छे और शांतिपूर्ण देवता या धर्म या पैगंबर के लिए युद्ध के लिए उकसाना। कभी-कभी हमें लगता है कि
हो सकता है कि बदसूरत पश्चिम के पास एक बेहतर दर्शन और नैतिकता हो। और अधिक मानव हो सकता है
भगवान, भले ही उसे खारिज करना और बदनाम करना राजनीतिक रूप से सही हो।

१०६ ४/६८: "और हमें (अल्लाह) उन्हें सीधा रास्ता दिखाना चाहिए था (ऊपर 4/67 देखें)
(= जन्नत का रास्ता*) (अगर वे युद्ध में गए)"। मुहम्मद के लिए युद्ध आवश्यक था - और फिर भी
कुछ मुसलमानों के लिए है - और युद्ध में जाने के लिए बहुत सारे उकसावे हैं। पसंद है या नहीं - NT दूर है,
कहीं अधिक शांतिपूर्ण। हां, ओटी भी, जैसा कि पुराने युद्धों के बारे में बताता है, ब्यूरो युद्ध के लिए उकसाता नहीं है
सदैव। और यह सच से बहुत दूर है जब मुसलमान इस्लाम को एक शांतिपूर्ण धर्म बताते हैं (सिवाय इसके कि)
एक ही संप्रदाय के साथी मुसलमान)।

१०७ ४/७१: "हे विश्वास करने वालों! अपनी सावधानी बरतें, और या तो पार्टियों में (युद्ध में *) आगे बढ़ें
या सब एक साथ आगे बढ़ो"। जब आप हमला करें तो मजबूत बनें।

*१०८ ४/७४ए: "उन लोगों को अल्लाह के लिए लड़ने दो जो इस दुनिया के जीवन को बेचते हैं"
इसके बाद"। यदि आप स्वर्ग में भावी जीवन के लिए यहां पृथ्वी पर अपने जीवन का आदान-प्रदान करने के इच्छुक हैं,
आपको अनुमति दी जानी चाहिए - और योग्य - अल्लाह के लिए युद्ध छेड़ने के लिए। (केवल हम आशा करते हैं कि आप हैं
धोखा नहीं दिया। अगर कुरान में कुछ गलत है - और कम से कम कई तथ्य गलत हैं -
आप काफी आश्चर्य में पड़ सकते हैं। यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि आपके पास क्या अशिष्ट जागरण होगा यदि
इस्लाम एक स्वप्निल धर्म है, और एक और धर्म है जो सत्य है। लेकिन इसी बीच में
मुस्लिम नेताओं के पास योद्धाओं और आतंकवादियों के लिए एक सस्ता स्रोत है)।

१०९ ४/७४बी: "उसके लिए जो अल्लाह के लिए लड़ता है - चाहे वह मारा जाए या जीत हासिल की जाए -
जल्द ही हम उसे महान (मूल्य) (= स्वर्ग *) का इनाम देंगे"। इससे अच्छा इनाम क्या हो सकता है?
और नेताओं के लिए योद्धाओं को पाने का इससे सस्ता तरीका और क्या हो सकता है?
अगला जीवन?

**११० ४/७५: "और तुम अल्लाह के लिए क्यों नहीं लड़ते - - -?" यह वाक्य बताता है
इस्लाम के बारे में अधिक, कुरान की तुलना में लंबे समय तक स्पष्टीकरण की तुलना में। दरअसल अगर कुरान

आज प्रकाशित किया गया था, यह नफरत को उकसाने, उकसाने के मुकदमों के लिए योग्य था
आतंक, युद्ध के लिए उकसाना, बदनामी और भेदभाव के लिए उकसाना। वास्तव में भ
सिर्फ इन्हीं कारणों से नीदरलैंड में किताब पर रोक लगाने का सवाल प्रसारित किया गया है। वे
निश्चित रूप से सफल नहीं होगा, क्योंकि यह धर्म है, लेकिन सिर्फ प्रस्ताव मात्रा बताता है कि कैसे
"शांतिपूर्ण" पुस्तक है। (कुरान एक मुस्लिम समाज के अंदर शांतिपूर्ण है, लेकिन गैर के प्रति नहीं-
मुसलमान - सभी मुस्लिम समाजों के प्रति भी नहीं, सुन्नी मुसलमानों के बीच कलह देखिए (कि .)
कुछ हद तक ईसाइयों के बीच प्रोटेस्टेंट की तुलना की जा सकती है) और शिया मुसलमानों (जो कि as . में है)
कैथोलिकों से किसी तरह की तुलना की जा सकती है))।

***१११ ४/७६: "जो लोग ईमान लाए (मुसलमान*) अल्लाह के लिए लड़ते हैं, और जो
ईमान को ठुकरा देना (गैर-मुसलमान*) बुराई के लिए लड़ो: तो शैतान के दोस्तों के खिलाफ लड़ो
- - -।" इसे कम से कम कहने के लिए: शब्दों को गलत नहीं समझा जाना चाहिए: गैर-मुसलमानों से लड़ो,
क्योंकि वे शैतान के मित्र हैं।

*११२ ४/७७: "हे हमारे रब! तूने हमें युद्ध करने का आदेश क्यों दिया है?" ये एक मुसलमान का सवाल है
लड़ना नहीं चाहते - और हमें याद रखना चाहिए कि आखिर वे बहुसंख्यक हैं (लेकिन
गैर-मुसलमानों के लिए परेशानी यह है कि यह जानना मुश्किल और असंभव है कि कौन आतंकवादी हैं, कौन
आतंकवादियों की मदद कर रहे हैं, जो आतंकवादियों को पैसा देते हैं, जिन्हें आतंकवाद से सहानुभूति है और
जो सीधे सादे हैं - और अक्सर सहानुभूतिपूर्ण - मनुष्य)। लेकिन श्लोक इसे बहुत स्पष्ट करता है - जैसा कि करते हैं
कुरान में कई अन्य छंद - धर्म के लिए युद्ध एक कर्तव्य और एक आदेश है। किसने कहा कि
आतंकवादियों को उकसाने और कारण खोजने के लिए कुरान का दुरुपयोग करना पड़ता है?

११३ ४/७७: अल्लाह की ओर से उन लोगों से कहा जो इस्लाम के लिए युद्ध में नहीं जाना चाहते: "संक्षिप्त है
इस संसार का भोग : परलोक उन लोगों के लिए सर्वोत्तम है जो सही करते हैं:---"। और यह
जो लोग सही करते हैं, वे हैं जो अल्लाह के लिए युद्ध लड़ते हैं।

816

पेज 817

*११४ ४/७८: "तुम जहाँ कहीं भी हो, मृत्यु तुम्हें मिलेगी, भले ही तुम मजबूत बने हुए टावरों में हों
और उच्च!" यह कुरान और इस्लाम की भविष्यवाणी का एक पक्ष है: कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कहाँ हैं
हैं, तुम तब मरोगे जब अल्लाह ने तुम्हें समय दिया है। इसलिए यह और नहीं है
अपने बिस्तर की तुलना में युद्ध में आपके लिए खतरनाक - आपका समय समाप्त होने से पहले आप नहीं मरेंगे
जैसे भी। बेशक यह गलत है - अगर नहीं तो आपकी बुद्धि आपको बताती है कि, इसे साबित करना आसान है
सांख्यिकी। लेकिन भोले या धार्मिक रूप से अंधे लोग इस पर विश्वास कर सकते हैं - और फिर मुहम्मद को मिला
(और हो जाता है) वह प्रभाव जो वह चाहता था।

११५ ४/८४: "फिर अल्लाह के लिए लड़ो - - -"। एक बार फिर स्पष्ट आदेश। एफ देखें। भूतपूर्व। 4/78.

११६ ४/८९: "लेकिन अगर वे (जो इस्लाम और मुहम्मद में पर्याप्त रूप से विश्वास नहीं करते हैं)
पाखण्डी बनो, उन्हें आकार दो और उन्हें मार डालो: और (किसी भी मामले में) किसी से मित्र या सहायक न लें
उनकी रैंक "। नए नियम के दो उद्धरण: "अपने शत्रुओं से प्रेम करो", "तुम मारोगे नहीं"।
जो लोग अल्लाह और यहोवा को एक ही ईश्वर मानते हैं, उन्हें मनोविज्ञान का अध्ययन करना होगा।

११७ ४/९०: "- - - अगर वे आपसे पीछे हटते हैं लेकिन आपसे लड़ते नहीं हैं, और बदले में आपको भेजते हैं (गारंटी देता है)
के) शांति, तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए (उनके खिलाफ युद्ध करने के लिए) कोई रास्ता नहीं खोला है।" सकारात्मक, यदि बहुत
सीमित। लेकिन सवाल यह है कि शांति के इस सीमित आदेश का भी कितनी बार सम्मान किया जाता है। कैसे
कई अपहृत व्यक्तियों ने आतंकवादियों से लड़ा? - उनका किसी तरह अपहरण कर लिया गया, और कुछ
निर्मम हत्या कर दी। यह उल्लेख नहीं है कि इतिहास के माध्यम से क्या हुआ है।

११८ ४/९१: "- - - यदि वे (गैर-मुसलमान) आपसे वापस नहीं लेते हैं और न ही आपको (गारंटी) देते हैं
शांति, उन्हें आकार दें और जहाँ भी मिले उन्हें मार डालें: - - - "। NT: "दूसरे गाल को मोड़ो",
"अपने दुश्मन से प्यार करो", "तू हत्या नहीं करेगा"। नए नियम के परमेश्वर के पास निश्चित रूप से a . है
बिल्कुल अलग मानसिकता। यदि यहोवा और अल्लाह डॉ. जेकेल और मिस्टर हाइड का मामला नहीं हैं, तो यह
संभव नहीं है यह वही भगवान है।

११९ ४/९४: "जो कोई भी आपको समाधान प्रदान करता है, उसे (छापे/युद्ध के दौरान योद्धा) न कहें: 'तू कला है
कोई आस्तिक नहीं!" - इस जीवन की खराब होने वाली वस्तुओं की लालसा - - -।" अधिकांश अरब और
और भी कई जगहों को इस तरह से इस्लामिक बना दिया गया - जान बचाने के लिए लोग मुसलमान बन गए और
उनके पास क्या स्वामित्व था। और कुछ पर विश्वास नहीं किया गया या विश्वास न करने का नाटक किया गया, ताकि
योद्धा अपनी इच्छानुसार चोरी कर सकते थे - या मार सकते थे या बलात्कार कर सकते थे।

*१२० ४/९५अ: "समान नहीं वे ईमानवाले हैं जो (घर पर) बैठते हैं और कोई चोट नहीं पाते हैं, और वे
जो अपने माल और अपने व्यक्तियों के साथ अल्लाह के लिए प्रयास करते हैं। अल्लाह ने एक ग्रेड दिया है

उन लोगों के लिए जो अपने देवताओं और व्यक्तियों के साथ प्रयास करते हैं (याद रखें; कुरान संघर्ष में)
आम तौर पर (घर पर) बैठने वालों की तुलना में शारीरिक लड़ाई*) का मतलब है।" के लिए एक बहुत ही स्पष्ट उत्तेजना
युद्ध करने जा रहे हैं। कुरान पर विश्वास करने वाला कोई भी व्यक्ति पढ़ने के बाद किसी बाहरी व्यक्ति के प्रति शांतिपूर्ण है
किताब, मदद की जरूरत है।

१२१ ४/९५बी: "सब से (ईमान में (= सभी मुसलमान)) अल्लाह ने भलाई का वादा किया है: लेकिन जो लोग
प्रयत्न किया है कि वह उन लोगों से ऊपर है जो (घर पर) विशेष पुरस्कार से प्रतिष्ठित हैं -।" क्या कोई है
टिप्पणियाँ आवश्यक? - एफ को छोड़कर। भूतपूर्व। इसकी तुलना एनटी से करें। कुरान कहीं अधिक जंगी है और
एनटी या एफ की तुलना में हत्या की तरह। भूतपूर्व। बौद्ध धर्म - और भी बहुत कुछ।

और एक आतंकवादी के लिए कितनी अच्छी कविता है!

१२२ ४/१००: "वह जो अल्लाह के लिए अपने घर को छोड़ देता है - - - क्या वह एक शरणार्थी के रूप में मरना चाहिए
अल्लाह और उसके रसूल के लिए घर से, उसका इनाम अल्लाह के पास निश्चित और निश्चित हो जाता है - - -"।
भले ही आप युद्ध में न मरें, युद्ध में ही मरें - f. भूतपूर्व। बीमारी या दुर्घटना से - ऐसा लगता है

तुम सीधे जन्नत में जाओ। अल्लाह के लिए युद्ध वास्तव में मुसलमानों के लिए मूल्यवान है। एक सच कोई भी आतंकवादी
"जानता है" - उनमें से ज्यादातर मुसलमान हैं।

१२३ ४/१०४: "वह जो अल्लाह के लिए अपना घर छोड़ देता है - - - क्या वह शरणार्थी के रूप में मर जाता है
घर से अल्लाह और उसके (अल्लाह के) रसूल (मुहम्मद*) के लिए, उसका इनाम देय हो जाता है
और अल्लाह के पास पक्का है - - -।" मरो मुहम्मद के लिए - और अल्लाह के लिए यदि वह मौजूद है - और जाना सुनिश्चित करें
स्वर्ग और (मुख्य रूप से) कामुक सुख वहाँ। एक आदिम और क्या हो सकता है - अक्सर
युद्ध से और अपने ही अमानवीय कर्मों से क्रूर - युवा योद्धा का सपना? मुहम्मद
कई मिले और उसके लिए सस्ते योद्धा।

**१२४ ४/१४१: "और अल्लाह अविश्वासियों को कभी भी उस पर विजय प्राप्त करने का मार्ग नहीं देगा
विश्वासियों"। विकास इस आयत को मुसलमानों के लिए 110 साल तक जायज़ ठहराते हुए लग रहा था - वे हार गए
लड़ाई, लेकिन शायद ही कभी युद्ध, कम से कम तब नहीं जब वे पश्चिम की ओर बढ़े। तब तक नहीं जब तक वे हार नहीं गए
फ्रांस में 732 में कार्ल मार्टेल के खिलाफ युद्ध। इसने एक छाप छोड़ी - कम से कम कुछ के लिए - और
कुछ समय के लिए कुरान की अचूकता पर कुछ संदेह किया। वही प्रभाव - और मजबूत - एक
१८०० के दशक और १९०० की शुरुआत में पश्चिम के खिलाफ हुए नुकसानों पर काबू पा लिया। अल्लाह - उसने ऐसा क्यों नहीं किया?
उन्हें जीतने दो?

लेकिन यह पेप टॉक के रूप में है। और एक कुशल पेप टॉक यह वास्तव में है। सबसे सक्रिय मुसलमान उम्मीद करते हैं
अल्लाह/मुहम्मद के वचन के अनुसार जल्दी या बाद में पृथ्वी पर कुल शक्ति जीतने के लिए।

क्या यह सऊदी अरब, अल्जीरिया, तुर्की, उत्तरी पाकिस्तान, लीबिया, इथियोपिया, या में रहने जैसा होगा?
ईरान? या अफ़ग़ानिस्तान?

वर्ष: 628 ई. के अंत में। सूरह 48 (100):

**125 48/15: "जो पीछे रह गए (लड़ाई या लड़ाई में सक्रिय भाग नहीं लिया*) (इच्छा
कहते हैं), जब आप ("असली" योद्धा *) (स्वतंत्र हैं) मार्च करते हैं और लूट लेते हैं (युद्ध में) - - -"। NS
चोरी और लूट और दासों और महिलाओं को ले जाना, सक्रिय योद्धाओं के लिए ही है - एक विशाल
गरीब, अशिक्षित बदमाशों के लिए प्रोत्साहन। क्या यह आंशिक रूप से वही प्रभाव है जो हम दारफुर में देखते हैं और f.
भूतपूर्व। बांग्लादेश और पूर्वी तिमोर में? - योद्धाओं को ढूंढना आसान, और सबसे अमानवीय व्यवहार। मई
ऐसी चीजें अन्य जगहों पर होती हैं यदि इस्लाम पर्याप्त रूप से मजबूत और कट्टर हो जाता है - या "सही"
किस तरह के मुल्ला या इमाम - नेतृत्व संभालें? लंदन में रुझान हैं, और
9/11 के कई आतंकवादी हैम्बर्ग से आए थे - कई शहरों में अशांति का उल्लेख नहीं करने के लिए
2006 में फ्रांस, और उस मामले के लिए (उत्तरी) अफ्रीका में कुछ उदार देशों में जहां
कट्टरपंथी सत्ता पर कब्जा करना चाहते हैं (एक अपवाद हो सकता है - बस हो सकता है - तुर्की हो सकता है, जो रहा है
1920 के दशक में अतातुर्क के बाद से धर्मनिरपेक्ष। मौका हो सकता है। अजीब तरह से पर्याप्त बांग्लादेश भी
और मलेशिया के पास मानव लोकतंत्र बनने का एक छोटा सा मौका है - और शायद जॉर्डन और ए
अमीरात के कुछ उदार तानाशाही। लेकिन बाकी सारी मुस्लिम दुनिया या तो है
कट्टरपंथियों की चपेट में या वर्तमान में उस ओर बह रहा है - जिसे कुछ लोग मुसलमान कहते हैं
कट्टरवाद, अन्य मुस्लिम रूढ़िवाद - संभवतः सबसे सही अभिव्यक्ति - और यहां तक कि अन्य
इस्लामवाद, लेकिन जो सभी कट्टरपंथियों के लिए अलग-अलग नाम हैं)।

आज की दुनिया कैसी दिखती अगर मुस्लिम दुनिया पथरीली न होती?

कट्टरवाद और स्थिर? - अगर यह मुस्लिम दुनिया थी जिसने उद्योग विकसित किया था और
बेहतर हथियार और लड़ने के तरीके? आप बहुत भारी बाधाओं के खिलाफ शर्त लगा सकते हैं कि दुनिया
अब इमामों द्वारा शासित किया गया था, और कभी भी स्वतंत्र होने का कोई वास्तविक मौका नहीं था
दुनिया।

**१२६ ४८/१६ए: "रेगिस्तानी अरबों से कहो (लेकिन अधिकांश कुरान सभी लोगों और सभी के लिए मान्य है)
इस्लाम के अनुसार समय*) जो पिछड़ गया: 'तुम्हें (लड़ाई के लिए) बुलाया जाएगा
लोगों को घोर युद्ध के लिए दिया गया है: तब तुम लड़ोगे, या वे अधीन हो जाएंगे। फिर अगर तुम दिखाओ
आज्ञाकारिता (लड़ाई *), अल्लाह आपको एक अच्छा इनाम (युद्ध और स्वर्ग की समृद्ध लूट *) देगा - -
-"। लड़ाई को आकर्षक बनाने के लिए एक विशाल गाजर - लेकिन शांतिपूर्ण धर्म क्या बनाने के लिए बहुत दूर है
युद्ध आकर्षक?

***१२७ ४८/१६बी: "- - - लेकिन अगर आप (48/16a का पहला भाग ऊपर देखें*) तो पीछे मुड़ें (इनकार करें)
लड़ो*) जैसा कि तुमने पहले किया था, वह (अल्लाह*) तुम्हें कठोर दंड देगा।" बहुत स्पष्ट
मुहम्मद और फिर इस्लाम के शब्द: युद्ध करो या नर्क में समाप्त हो जाओ। कुछ अच्छे "धर्म का
शांति"।

जब आप ४८/१६ पद को समग्र रूप से देखते हैं, तो केवल यही निष्कर्ष निकालना संभव है: अ
आदमी जो कहता है कि कुरान एक मानवीय और शांतिपूर्ण और मैत्रीपूर्ण धर्म को गैर-
मुसलमानों और मुसलमानों के कुछ हिस्सों ने या तो कुरान नहीं पढ़ा है, या धोखा दे रहे हैं
खुद, या झूठ बोल रहा है - और जानता है कि वह झूठ बोल रहा है। और कोई उस पर विश्वास करनेवाले ने या तो नहीं पढ़ा
कुरान, या खुद को धोखा दे रहा है या भोला है।

पूरे कुरान को पढ़ने के बाद और विशेष रूप से केवल यही निष्कर्ष संभव है
मदीना से सूरह - जो सबसे ऊपर मक्का से अधिक शांतिपूर्ण लोगों पर हावी है
इस्लाम के अपने नियम के अनुसार निरसन, क्योंकि मदीना के लोग छोटे हैं।

अगर कोई किताब राजनीति या धर्म के अलावा किसी अन्य विषय पर (वास्तव में मुस्लिम धर्म के लिए है)
राजनीति), नफरत करने के लिए इतनी दृढ़ता से उकसाना, (धार्मिक) जातिवाद, दमन (महिलाओं का और सभी का)
बाहरी लोग), बलात्कार, हत्या और युद्ध, यह सभी सभ्य और सबसे कम में निषिद्ध था
सभ्य देश। (नीदरलैंड में इसे प्रतिबंधित करने का प्रस्ताव है, लेकिन यह नहीं होगा
राजनीतिक रूप से संभव है)।

***128 48/17a: "- - - लेकिन वह (मुसलमान*) जो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करता है
(मुहम्मद*) - (अल्लाह) उसे ऐसे बाग़ों में प्रवेश देंगे जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं - - -"। महान
युद्ध भगवान (अल्लाह) और उनके प्रतिनिधि और पृथ्वी पर उच्च कमांडर (मुहम्मद) करेंगे
किसी भी मृत योद्धा (उर्फ लुटेरा, हत्यारा, बलात्कारी, आदि, "अच्छा और वैध" के अनुसार स्वीकार करें
कुरान) अपने योद्धाओं के स्वर्ग में धन और महिलाओं के साथ। 48/16a और 48/16b को भी देखें
के ऊपर।

१२८ ४८/१७बी: "और वह (48/17a का पहला भाग ऊपर* देखें) जो पीछे मुड़ता है (लड़ाई करने से*)
(अल्लाह) उसे कठोर दंड देगा।" कोई और टिप्पणी आवश्यक नहीं है - लेकिन देखें
48/17a ठीक ऊपर + 48/16a और 48/16b ऊपर।

वर्ष ६३० - ६३२ ईस्वी, सूरह ५७:

**१३० ५७/१०: "और तुम्हारे पास क्या कारण है कि तुम अल्लाह के लिए खर्च क्यों नहीं करते? - के लिए
आकाशों (बहुवचन और गलत*) और धरती की विरासत अल्लाह के पास है।" छितरा हुआ
कुरान के मदीना भाग में कई जगह आपको पैसे देने के लिए उकसावे मिलेंगे या
मुहम्मद और विश्वास के लिए सहारा खर्च करना। कुछ जगहों पर इसका सीधा मतलब खर्च करना हो सकता है
गरीबों के लिए दान के लिए। लेकिन ज्यादातर यह युद्ध के लिए खर्च करने को संदर्भित करता है (इस कविता में बहुत कम है
संदेह है कि इसका यही अर्थ है, क्योंकि यह एक पद्य महिमामंडित करने वाला युद्ध है)। इसके अलावा - और खासकर जब
मुहम्मद "अल्लाह को एक अच्छा उपहार देने", "एक सुंदर ऋण" या कुछ इसी तरह की बात करते हैं,
इसका मतलब है कि आप/मुसलमानों को अल्लाह "और उसके रसूल" के लिए अपनी जान देनी चाहिए (यदि
कुरान बना है, "उपहार" सिर्फ मुहम्मद के लिए है) और अगले जन्म में चुकाया जाए - सस्ते के लिए

पेज 820

मुहम्मद और बाद में मुस्लिम नेता कम से कम, खासकर अगर धर्म एक बना हुआ है, जैसे
सभी गलतियाँ, अंतर्विरोध आदि संकेत कर सकते हैं।

हमने इन छंदों को छोड़ दिया है। लेकिन इस पर विचार करते हुए वे छंद हैं जो बहुत मायने रखते हैं
मुसलमान दूसरों के अलावा आतंकवादियों और आतंकवादी संगठनों को पैसे दे रहे हैं। हो सकता है हम करें
उन छंदों में से कुछ और शामिल करें यदि इसे कभी संशोधित किया जाता है। लेकिन याद रखें कि वहाँ मौजूद है a
कुरान में इस तरह के वाक्यों की संख्या - अर्थव्यवस्था भी एक नेता के लिए मायने रखती है जो हासिल करने की कोशिश कर रहा है
अधिक राजनीतिक या सैन्य शक्ति।

**१३१ ५७/१०: "तुम्हारे बीच उन लोगों के बराबर नहीं हैं जिन्होंने खर्च किया (स्वतंत्र रूप से) और इससे पहले लड़े
विजय (मक्का लेने से पहले ६३० ई.*), (उन लोगों के साथ जिन्होंने बाद में ऐसा किया था
पद - - - "। मदीना में ६२२ ईस्वी के बाद इस्लाम के लिए यह विशिष्ट है कि जो मायने रखता है वह किस तरह का नहीं है
पुरुष (महिलाएं कम मायने रखती हैं) आप हैं, आपने कितने अच्छे काम किए हैं - हालांकि दान मायने रखता है
कुछ - आप अपने साथी नागरिकों की देखभाल कैसे करते हैं, आपके दिल में क्या है, आदि। वास्तव में जो मायने रखता है वह है
आप कितने उत्सुक योद्धा हैं - और यहाँ मुहम्मद/अल्लाह प्रारंभिक योद्धा अनुयायियों को दे रहे हैं
कुछ अतिरिक्त प्रशंसा।

इसकी तुलना NT से करें और देखें कि क्या अल्लाह = यहोवा। असंभव जब तक यहोवा - या अल्लाह - is
मानसिक रूप से बीमार।

१३२ ५७/१०: "वे (शुरुआती योद्धा अनुयायी) खर्च करने वालों की तुलना में रैंक में उच्च हैं
(स्वतंत्र रूप से) बाद में। लेकिन अल्लाह ने सभी से अच्छाई (इनाम) देने का वादा किया है।" युद्ध - और खर्च
युद्ध के लिए आपकी संपत्ति से - वास्तव में क्या मायने रखता है (यह कुरान के रूप में विशेष रूप से स्पष्ट है
अन्य जगहों को शब्दों में समझना संभव नहीं है, कहते हैं कि जो लोग सिर्फ मदद करते हैं और देते हैं,
असली योद्धाओं के बराबर नहीं हैं)।

क्या किसी ने शांतिपूर्ण धर्म के बारे में या अच्छे और शांतिपूर्ण और दयालु के बारे में कुछ कहा?
मुहम्मद?

१३३ ५७/११: "वह कौन है जो अल्लाह को एक सुंदर ऋण देगा (= युद्ध में अल्लाह को अपनी जान दे)?
क्योंकि अल्लाह इसे अपने क्रेडिट में कई गुना बढ़ा देगा, और उसे (इसके अलावा) एक उदार इनाम मिलेगा। "
युद्ध में मारे जाओ और परमेश्वर तुम्हें प्रतिफल देगा। यह पुराने नॉर्स धर्म की याद दिला सकता है
या गिंगिस खान के धर्म की - लेकिन यह निश्चित रूप से बाइबिल की पुष्टि नहीं है, और
विशेष रूप से एनटी नहीं। और क्या यह एक अच्छा भगवान है?

१३४ ५७/१८: "उन लोगों के लिए जो दान, पुरुषों और महिलाओं को देते हैं, और अल्लाह को एक सुंदर ऋण देते हैं"
ऋण, इसे कई गुना बढ़ाया जाएगा (उनके क्रेडिट के लिए), और उनके पास (बगल में) एक उदार होगा
इनाम।" खैर, यहाँ अंत में भी योद्धा शामिल नहीं हैं - योद्धा और अन्य सभी मिलेंगे
अगले जन्म में पुरस्कार - सरदार मुहम्मद के लिए कोई खर्च नहीं। (मुहम्मद इन
मदीना अपने समय के एक विशिष्ट सरदार थे - जैसे कुछ आज भी आप असभ्य भागों में पाते हैं
पाकिस्तान और अफगानिस्तान के। यह कहा जा सकता है कि वह अन्य सरदारों से भी बदतर नहीं था
उस समय अरब, लेकिन यह निश्चित रूप से सच है कि वह न तो कोई बेहतर था, न ज्यादा इंसान, न ही
कम खूनी। जो उसे होना चाहिए था अगर उसने एक अच्छे भगवान का प्रतिनिधित्व किया होता)।

*वर्ष ६३१ ई., सूरह ९:

श्लोक 9/5 प्रसिद्ध और कुख्यात "तलवार पद्य" है। और मानो यह श्लोक खूनी नहीं था
पर्याप्त है, यह इन श्लोकों के अलावा अन्य के द्वारा मजबूत किया गया है: ४/९१, ८/३९, ८/६०, ९/२९, ९/३३, ९/७३,
9/123, 25/36, 33/61, 33/73, 47/4, और 66/9। जिसका अर्थ है कि एफ. भूतपूर्व। समर्थक में एक केंद्रीय कविता
इस्लामी हमेशा ईमानदार नहीं (अल-तकिया?) प्रचार, जैसे पद २/२५६: "चलो कोई नहीं है

पेज 821

धर्म में विवशता" को कम से कम इन 13 भिन्नों द्वारा मारकर अमान्य कर दिया जाता है - निरस्त कर दिया जाता है
छंद (और वास्तव में एक अच्छी संख्या अधिक - कम से कम कुछ 30.)।

१३५ ९ / ५ ए: मुसलमानों और मुहम्मद की कुछ मूर्तिपूजक जनजातियों के साथ संधियाँ थीं जिन्होंने रखा था
जैसा कि वादा किया गया था, संधियों का उनका हिस्सा। इससे पहले मुहम्मद उन पर आक्रमण नहीं कर सके
समझौते के समय/महीने खत्म हो गए, "अल्लाह नेक लोगों से प्यार करता है"।

"लेकिन जब निषिद्ध महीने बीत चुके हैं, तो जहां कहीं भी आप पागानों से लड़ें और उन्हें मार डालें"
और उन्हें पकड़कर उन्हें संकट में डाल देना, और किसी युद्ध की युक्ति में उनकी घात में लेट जाना।"

1. क्या आप बीमार विडंबना देखते हैं? आपके साथी - अनुमति मिलते ही उन्हें मार डालो क्योंकि वे मुसलमान नहीं हैं। क्या ऐसा भी हो सकता है दूसरों के साथ उनकी संधियाँ हैं?
2. पगान - अरब पगान भी - बहुत मोटे हो गए अक्सर इलाज (हालांकि आधुनिक मुसलमान इस बारे में बात करते समय कभी उल्लेख न करें कि कैसे अतीत के मुसलमानों ने गैर-मुसलमानों के साथ व्यवहार किया); अक्सर उनके पास केवल दो विकल्प होते हैं: मरो या मुसलमान बनो - खुलेआम उल्लंघन में बिना किसी मजबूरी के कुरान के शब्द धर्म। एक शब्द जिसे वे अक्सर उद्धृत करना पसंद करते हैं आज भले ही वे जानते हैं कि यह मर चुका है - 2 -3 दर्जन बाद के छंदों द्वारा निरस्त।
3. यह श्लोक इसका एक कारण हो सकता है मुसलमानों का व्यवहार एफ. भूतपूर्व। जब जीतना भारत (अब पाकिस्तान + भारत + बांग्लादेश) और अफ्रीका में। बड़े पैमाने पर जन थे हत्याएं
4. यह आज के आतंकवादियों के लिए भी बहुत अच्छा शब्द है, कुरान में एक स्थिति के शब्दों के रूप में, सामान्य रूप से समान स्थितियों में उपयोग किया जा सकता है - और चूंकि मुस्लिम आतंकवादियों के साथ कोई संधि नहीं है गैर-मुसलमान, और विशेष रूप से पश्चिम में नहीं, यह सिर्फ हत्या शुरू करने के लिए है, क्योंकि भले ही यूरोपीय मूर्तिपूजक नहीं हैं, वे नहीं हैं मुसलमान। वही उनके व्यवहार के लिए जाता है एफ में भूतपूर्व। दारफुर।

***१३६ ९/५बी: "- और युद्ध की किसी भी चाल के साथ उनकी प्रतीक्षा में लेट जाओ"।

1. युद्ध के कानूनों को श्रमसाध्य रूप से स्वीकार किया गया है सोलफेरिनो की लड़ाई के बाद से धीरे-धीरे और इससे पहले, युद्ध को थोड़ा कम अमानवीय बनाने के लिए। आतंकवादी एक भी नियम को स्वीकार नहीं करते हैं। जितना अधिक अमानवीय उतना ही बेहतर। एक अच्छा धर्म।
2. यह वाक्य के लिए एक स्पष्ट "आगे बढ़ो" है किसी भी अत्याचार के लिए आतंकवादी - in यूरोप या कहीं भी।

अच्छे पड़ोसी (लेकिन याद रखें कि केवल कुछ ही मुसलमान उस तरह के पड़ोसी हैं -
हालांकि कभी-कभी यह जानना मुश्किल हो सकता है कि कौन सा है, और यह किसी भी गैर के लिए एक समस्या है।
मुस्लिम)।

***137 9/5c: पगान - और कभी-कभी अन्य - को अक्सर मुसलमानों से एक मोटा सौदा मिलता था। देखें
9/5 के अन्य भाग ठीक ऊपर। अक्सर विकल्प था: लड़ो और मारो या मुसलमान बनो:
"लेकिन अगर वे (मूर्ति, आदि) पश्चाताप करते हैं, और नियमित नमाज़ की स्थापना करते हैं (= मुसलमान बन जाते हैं) और
नियमित दान का अभ्यास करो, फिर उनके लिए रास्ता खोलो (= उन्हें जीने दो*)"। मुसलमान कहते हैं कि
कुरान के अनुसार धर्म बदलने के लिए इस्लाम द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली कोई ताकत या मजबूरी नहीं है
(दबाव, अर्थव्यवस्था, आदि और कुछ दंगों को छोड़कर)। लेकिन यह श्लोक ठीक इसके विपरीत कहता है-
हालांकि हम इसे किसी कारण या किसी अन्य कारण से मुसलमानों द्वारा उद्धृत नहीं सुनते हैं। लेकिन यह श्लोक का है
631 ई. इस्लाम के नियमों के अनुसार यदि दो या दो से अधिक आयतें टकराती हैं, तो नवीनतम

वे सही हैं और पुराने अमान्य हैं। और यह पद उपदेश देता है: उन्हें मार डालो
जब तक वे मुसलमान नहीं हो जाते। एक गरीब गैर मुस्लिम किस पर विश्वास करे? विशेष रूप से जैसा कि हम जानते हैं
कुछ परिस्थितियों में मुसलमानों को गैर-मुसलमानों के लिए झूठ बोलने की अनुमति है।

१३८ ९/१२: "लेकिन अगर वे (मक्का में नेताओं) अपनी वाचा के बाद अपनी शपथ का उल्लंघन करते हैं - - - लड़ाई
तुम अविश्वासियों के मुखिया - - -"। ख़ैर, एक बार के लिए मुहम्मद के पास एक वैध कारण है
युद्ध के नियमों के लिए: एक टूटी हुई वाचा फिर से शुरू होने वाले युद्ध का एक कारण हो सकती है। यह कुछ ही समय बाद है
मक्का ले रहा है, और वह पुराने शासकों पर बिल्कुल भरोसा नहीं करता है (लेकिन वाचा नहीं तोड़ी गई थी, और
मक्का पर कोई और युद्ध नहीं था)।

**१३९ ९/१४अ: "उनसे ("अविश्वासियों"*) से लड़ो, और अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों से दण्ड देगा,
उन्हें शर्म से ढँक दो, उन पर (जीत के लिए) तुम्हारी मदद करो - - -"। जब आप गैर-मुसलमानों से लड़ते हैं,
तुम भले और नेक ईश्वर अल्लाह का काम कर रहे हो।

कुछ धर्म: नफरत, लड़ाई, चोरी, लूट, बलात्कार, दासता और हत्याएं हैं
भगवान का काम।

और याद रखें: कुरान में "नैतिकता" तब के लिए थी, अभी के लिए और हमेशा के लिए - हमारे लिए और हमेशा के लिए
हमारे बच्चे और हमारे वंशज सभी भविष्य के लिए।

"क्या अद्भुत दुनिया है!" लुई आर्मस्ट्रांग को उद्धृत करने के लिए।

लेकिन एक सर्वशक्तिमान ईश्वर को हत्या और दमन करने के लिए मनुष्यों की आवश्यकता क्यों है?

१४० ९/१४ए: "(अल्लाह करेगा) उन पर आपकी (जीत के लिए) मदद करेगा, विश्वासियों के स्तनों को ठीक करेगा"।
युद्ध या अन्य तरीकों से गैर-मुसलमानों की हत्या या सामूहिक हत्या - याद रखें कि मुसलमान हैं
"युद्ध के किसी भी हथकंडे के साथ उनकी प्रतीक्षा में झूठ बोलने" का आदेश दिया (9/5) - के स्तनों को ठीक कर देगा
अच्छे मुसलमान।

ऐसा लगता है कि कुरान के अनुसार जीने वाले मुसलमान पड़ोसियों में सबसे अच्छे नहीं हो सकते।
(लेकिन फिर से: याद रखें कि उस पुस्तक के इन हिस्सों के अनुसार केवल अल्पसंख्यक ही रहते हैं - यद्यपि
हमारी खतरनाक कठिनाई यह है कि अक्सर यह जानना असंभव होता है कि कौन कौन है)।

१४१ ९/१६: "या तुम सोचते हो कि तुम्हें छोड़ दिया जाएगा, जैसे कि अल्लाह उन लोगों में से नहीं जानता था"
आप जो अपनी ताकत और मुख्य के साथ प्रयास करते हैं ("अपनी ताकत और मुख्य के साथ प्रयास करें" एक अभिव्यक्ति है
आप कुरान में कई बार मिलते हैं - इसका सीधा सा मतलब है युद्ध में लड़ाई*)"। निश्चित होना; अल्लाह करेगा
युद्ध में तुम्हारी मदद करो - और मरने पर तुम्हें जन्नत दो। युद्ध धर्मों में अक्सर इस प्रकार का होता है
उत्साहपूर्ण वार्ता और "सुखद अंत" के बारे में - थोर और वल्लाह के बारे में सोचें।

*१४२ ९/१९ए: "क्या आप तीर्थयात्रियों को पेय देते हैं, या पवित्र का रखरखाव करते हैं
मस्जिद (मक्का में काबा*), अल्लाह और अल्लाह पर ईमान रखने वालों के बराबर (पवित्र सेवा)
अंतिम दिन और अल्लाह के लिए अपनी शक्ति और दिमाग से प्रयास करें (ऊपर 9/16 देखें)?"

दारफुर में योद्धा और कहीं भी आतंकवादी सोचते हैं कि वे हत्या करके एक पवित्र सेवा कर रहे हैं और
हत्या - - और सामूहिक बलात्कार जैसे दारफुर और अन्य जगहों पर जहां यह सामान्य की तरह अधिक है
युद्ध, हिट एंड रन नहीं - और निश्चित रूप से "अच्छे और वैध" इनाम के लिए चोरी करना और लूटना भी
इस दुनिया में।

हाँ, एक अच्छा और मानवीय धर्म।

और गैर-मुसलमानों के लिए कुछ भविष्य - कुरान में एक जगह योद्धाओं को याद दिलाया जाता है कि
ऐसे स्थान हैं जहां युद्ध की समृद्ध लूट अभी तक नहीं ली गई है।

**143 9/19b: "वे (मुसलमान अच्छे कर्म कर रहे हैं*) अल्लाह की दृष्टि में तुलनीय नहीं हैं
(अल्लाह के लिए मारने/युद्ध करने वालों के साथ)”। आतंकवादी और अन्य हथियार का उपयोग कर रहे हैं और
अल्लाह के लिए क़त्ल करना सबसे अच्छा मुसलमान है।

अंदाजा लगाइए कि क्या इस तरह की आयतें कुछ एक-दिमाग वाले या कट्टर मुसलमानों पर अपना काम करती हैं। किसने कहा
"कुरान में ऐसी आयतें हैं जिनका उपयोग युद्ध और आतंक के लिए किया जा सकता है"? यह शायद ही संभव है
गैर-मुसलमानों के खिलाफ हथियारों का इस्तेमाल किए बिना वास्तव में पवित्र मुसलमान बनें।

***१४४ ९/२०ए: "जो लोग विश्वास करते हैं, और निर्वासन का सामना करते हैं और अपनी ताकत और मुख्य के साथ प्रयास करते हैं (= .)
हथियारों से लड़ो*), अल्लाह के लिए, अपने माल और अपने व्यक्तियों के साथ (= लड़ाई .)
व्यक्तिगत रूप से युद्ध या आतंकवाद में - "युद्ध की कोई भी चाल"*), की दृष्टि में सर्वोच्च रैंक है
अल्लाह - - -"।

आतंकवादी (- "युद्ध का कोई भी दृष्टिकोण" -) और अन्य योद्धा निस्संदेह सबसे अच्छे हैं
मुसलमान।

आने वाले समय में मुसीबतों के संभावित समय में - याद रखें कि मुसलमानों को इस्लाम को इस्लाम बनाने का आदेश दिया गया है
प्रमुख धर्म और अन्य सभी धर्मों के सदस्यों को दबाने के लिए - कुछ (? - 30% . का)
मुस्लिम "समझते हैं कि आतंकवादी जो करते हैं वह क्यों करते हैं" अंतरराष्ट्रीय चुनावों के अनुसार, कठिन
वह संख्या कुछ * बदलती है) मुसलमानों के लिए उच्चतम "नैतिकता" के अनुसार रहने वाले मुसलमान, करेंगे
पश्चिम और अन्य स्थानों में एक शक्तिशाली और कुशल 5. स्तंभ बनाना। यह एक सरल है
सैन्य और सुरक्षा तथ्य।

१४५ ९/२०बी: "- - - वे (आतंकवादी/योद्धा) वे लोग हैं जो (उद्धार) प्राप्त करेंगे"। पर
कम से कम कुरान कुछ चीजों के बारे में ईमानदार है - जैसे हिटलर "में काम्फ" में था - - - और
कुछ लोगों ने हिटलर पर तब तक विश्वास किया जब तक बहुत देर हो चुकी थी।

१४६ ९/२१: "उनके (आतंकवादी/योद्धा) भगवान (अल्लाह*) उन्हें दया की खुशखबरी देते हैं
(अल्लाह के लिए आतंकवादियों/योद्धाओं को व्यावहारिक रूप से किसी भी पाप को माफ कर दिया जाता है) खुद से (अल्लाह की ओर से)
व्यक्तिगत रूप से *), उनकी अच्छी खुशी के लिए (उन्होंने लड़ाई और हत्या के लिए किया है
अच्छे और दयालु भगवान*), और उनके लिए बाग़, जिनमें रमणीय (धरती के समान धन और)
महिला *) जो सहन करती है"। युद्ध, आतंक और हत्या के लिए अंतिम उत्साह की बात? अ के नाम पर
संभवतः शांतिपूर्ण धर्म और एक दयालु और अच्छा भगवान?

१४७ ९/२२: "वे (आतंकवादी/योद्धा) उसमें (स्वर्ग में) हमेशा रहेंगे। वास्तव में
अल्लाह की उपस्थिति एक इनाम है, सबसे बड़ा (सबसे बड़ा) "। योद्धा/आतंकवादी इतने उच्च सम्मान में हैं

823

पेज 824

अल्लाह की नज़र में, कि उन्हें जन्नत के उन हिस्सों में रहने के लिए आमंत्रित किया जाएगा जहाँ अल्लाह का है
उपस्थिति। (मुस्लिम जन्नत में कुछ हिस्से दूसरों से भी बेहतर हैं - जीसस एफ। एक्स। ओनली
2 में रहता है। स्वर्ग, जबकि मूसा एक बेहतर भविष्यवक्ता था और चौथे नंबर पर स्वर्ग में रहता है,
और इब्राहीम और मुहम्मद जैसे शीर्ष नबी, निश्चित रूप से सातवें नंबर पर, अल्लाह के सबसे करीब,
जो सातवें नंबर से ऊपर रहता है। इसके अलावा आकाश के कुछ क्षेत्र से बेहतर हैं
अन्य।

९/२१ की तुलना में यह और भी अधिक उत्साहपूर्ण बात हो सकती है।

***१४८ ९/२४: "यदि (आपका सबसे करीबी परिवार या करीबी रिश्तेदार *) आपको अल्लाह से ज्यादा प्रिय हैं, या
उसके रसूल (मुहम्मद*), या उसके (अल्लाह के *) कारण में प्रयास (युद्ध करना*) - तब
तब तक प्रतीक्षा करो जब तक अल्लाह अपना निर्णय न लाए (- वह तुम्हें दंड देगा*)"। इस्लाम चरम सीमाओं का धर्म है।
कुछ भी नहीं - कुछ भी नहीं - आपके लिए मुहम्मद से अधिक मायने रखने की अनुमति दी जा सकती है - और युद्ध
इस्लाम - इस धरती पर, और अल्लाह अगले संभव में।

१४९ ९/२५-२६: "और अल्लाह ने कई युद्धक्षेत्रों में और हुनैन के दिन तुम्हारी मदद की - - -
" बेशक युद्ध का देवता युद्ध में अपने योद्धाओं की मदद करता है - अच्छी बात है। हुनैन में लड़ाई
630 ई. का विशेष उल्लेख मिलता है। इस लड़ाई के बावजूद मुसलमान हारने के कगार पर थे
दुश्मन से भारी संख्या में, जब मुहम्मद की सेना के युद्ध-कठोर कोर
साथ ही 3 गुना अधिक योद्धाओं की वास्तविकता, अंत में लड़ाई के ज्वार को मोड़ने का प्रबंधन करती है - लेकिन
बड़ी संख्या में नए योद्धाओं की नैतिकता के लिए, यह निश्चित रूप से बेहतर मनोविज्ञान था
समझाओ कि यह अल्लाह ही था - हमेशा की तरह - चाहता था कि मुसलमान जीतें, और एक सेना नीचे भेज दी
अदृश्य कोणों के मुसलमानों के साथ मिलकर लड़ रहे हैं।

१५० ***९/२९: "उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह पर विश्वास नहीं करते - - -।" एक सबसे स्पष्ट आदेश - - - के बावजूद
"धर्म में कोई बाध्यता नहीं" (2/256)।

१५१ ९/३७: "- - - और पगानों से एक साथ लड़ो क्योंकि वे आप सभी से एक साथ लड़ते हैं (यहां तक कि चार में भी)
पुराने अरब और इस्लाम के पवित्र महीने*)"। जब तक मुहम्मद ने वास्तविक स्व के बारे में बात की-
रक्षा, यह ठीक है। जब उन्होंने युद्ध शुरू किए और पवित्र महीनों में लड़े (या कारवां लूटा)

12 चंद्र महीने नहीं)। उसके कारण भी, मुस्लिम वर्ष एक अंतरराष्ट्रीय से छोटा है मुसलमानों को एक साल फिर से होना चाहिए
वर्ष (सीए। ११ दिन छोटा - और १०० सामान्य वर्ष = सीए। १०३ मुस्लिम वर्ष)), और फलस्वरूप
मुस्लिम महीने अंतरराष्ट्रीय कैलेंडर की तुलना में बहाव करते हैं। उसके कारण भी समय
पवित्र महीनों की संख्या एक सामान्य वर्ष से दूसरे वर्ष में भिन्न होती है - हालांकि पुराने समय में मूर्तिपूजक
अरबों के लीप महीने थे। एक और प्रभाव यह है कि इस्लाम में वर्षों की तुलना में थोड़ा तेज चलता है
बाकी दुनिया। एफ. पूर्व. ६२२ . के बीच १४०० से अधिक (सी.१४४२) मुस्लिम वर्ष होंगे
ई. और 2022 ई.)

१५२ ९/३८: "हे विश्वास करने वालों! तुझे क्या बात है, कि जब तुझे जाने को कहा जाए
अल्लाह के मार्ग में (= युद्ध में जाने के लिए*), तुम पृथ्वी से बहुत चिपके रहते हो। क्या आप का जीवन पसंद करते हैं
परलोक के लिए यह दुनिया?" एक बहुत ही अलंकारिक प्रश्न यह वास्तव में एक पवित्र व्यक्ति के लिए बहुत कठिन है
मुस्लिम को "नहीं" का जवाब नहीं देना चाहिए। और एक सवाल जो इस्लाम के बारे में बहुत कुछ बताता है।

***१५३ ९/३९: "जब तक आप आगे नहीं जाते (युद्ध/लड़ाई*) में, वह (अल्लाह*) आपको एक के साथ दंड देगा
गंभीर दंड (आमतौर पर कुरान में नर्क का पर्यायवाची *) - - -"। एक आदेश संभव नहीं
एक धर्मपरायण - या कट्टर - मुस्लिम के लिए गलतफहमी।

हाँ, शांति, अच्छाई और स्वर्गीय नैतिकता पर बना धर्म।

१५४ ९/४०: "यदि आप मदद नहीं करते हैं (आपके नेता (तब मुहम्मद - आज कोई धार्मिक नेता? *)), (यह है
कोई बात नहीं (क्योंकि अल्लाह मदद करता है*))। यह आंशिक रूप से एक विशेष पृष्ठभूमि पर कहा जाता है, लेकिन बहुतों की तरह
कुरान में जगह, इसका मतलब किसी भी समय सभी मुसलमान हो सकते हैं।

**१५५ ९/४१: "आगे बढ़ो (युद्ध/लड़ाई* में) (चाहे सुसज्जित हो) हल्के से भारी, और प्रयास करें
और अपने माल और अपने व्यक्ति (= व्यक्तिगत रूप से *) के साथ संघर्ष (= लड़ाई *), के कारण में
अल्लाह"। एक आदेश जिसे गलत समझा जाना संभव नहीं है - इस्लाम जैसे शांतिपूर्ण धर्म में भी नहीं।

**१५६ ९/४४: "जो लोग अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं, उनसे कोई छूट नहीं माँगते
अपने माल और व्यक्तियों के साथ प्रयास करना (= युद्ध छेड़ना *)"।

अगर आप सच्चे मुसलमान हैं तो युद्ध में जाने से परहेज नहीं करते।

१५७ ९/४४: "और अल्लाह उन्हें (युद्ध में जाने वाले मुसलमानों) को अच्छी तरह से जानता है जो अपना कर्तव्य करते हैं"। यह
इनकार करना संभव नहीं है - जैसे अधिकांश मुसलमान और कई राजनीतिक रूप से सही करने वाले अन्य लोग आज ऐसा करने का प्रयास करते हैं
- वह युद्ध ("अविश्वासियों" के खिलाफ) मुसलमानों के लिए एक कर्तव्य है। इसे और अधिक सीधे तौर पर कहना असंभव है
कुरान की तुलना में यहाँ करता है।

***१५८ ९/४५: "केवल वे लोग छूट (लड़ाई करने से*) माँगते हैं जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते हैं
और सही दिन "। आतंकवादी और कट्टर मुल्ला/इमाम सही हैं और अपने अनुसार सही करते हैं
कुरान।

१५९ ९/४६: "यदि वे (जो युद्ध में जाने के लिए अनिच्छुक हैं) बाहर आने का इरादा रखते थे
युद्धक्षेत्र*), इसलिए उन्हें निश्चित रूप से कुछ तैयारी करनी चाहिए थी; लेकिन अल्लाह था
उनके भेजे जाने के विरोध में, इसलिए उसने उन्हें पिछड़ा बना दिया - - -"। पेप उन लोगों के बारे में बात करते हैं जो नहीं
युद्ध में जाना चाहते हैं; 'उन्हें बुरा मत मानना - वे खराब गुणवत्ता वाले हैं जो अल्लाह नहीं चाहता था' - कोई कारण नहीं
अपनी नसों को ढीला करने के लिए।

१६० ९/४७: "लेकिन अल्लाह उन लोगों को अच्छी तरह जानता है जो गलत करते हैं (= जो युद्ध में नहीं जाना चाहते हैं)"।
आतंकवादी सही हैं: गलत करने वाले आतंकवादी नहीं, हत्या करने वाले होते हैं
और मारो और लड़ो। वास्तव में शांति और भलाई के लिए एक धर्म।

१६१ ९/४९: "(कुछ कहते हैं*) 'मुझे अपवाद दें (युद्ध में जाने से*) और मुझे इसमें शामिल न करें
परीक्षण'। क्या वे पहले ही मुकदमे में नहीं फंस गए हैं?" युद्ध नहीं चाहने वाले मुसलमान पहले से ही हैं
न्याय किया और बर्बाद किया।

१६२ ९/५१: "हमें कुछ नहीं होगा सिवाय इसके कि अल्लाह ने हमारे लिए क्या आदेश दिया है - - -"। लड़ाई करना
आपके बिस्तर पर सोने से ज्यादा घातक नहीं है, क्योंकि अल्लाह ने आपकी मौत की घड़ी पहले ही तय कर दी है।
भोले और अशिक्षित लोग और धार्मिक कट्टरपंथी वास्तव में इस पर विश्वास कर सकते हैं - उन मामलों में यह
लड़ाई करने के लिए उत्साहवर्धक बात है।

***163 9/52: "क्या आप दो शानदार चीजों में से एक के अलावा हमारे लिए (किसी भी भाग्य) की उम्मीद कर सकते हैं - (शहादत या जीत)?"

एक योद्धा या आतंकवादी ही जीत सकता है।

ठीक है, वह एक अमान्य च बन सकता है। भूतपूर्व। और दुख में एक लंबा जीवन जियो - लेकिन ऐसा कभी नहीं होता उल्लिखित। साथ ही उसका परिवार दुख में जी सकता है - उसका भी कभी उल्लेख नहीं किया।

साथ ही कुरान में कभी यह उल्लेख नहीं है कि गैर-मुसलमान इंसान हैं या तबाही क्या है?
उनकी संस्कृति और जीवन का अर्थ उनके लिए है - इसका बिल्कुल कोई परिणाम नहीं है और इसके बिना
थोड़ी सी दिलचस्पी। फारस का विनाश - और उस स्थिति के लिए पूर्वी रोमन संस्कृति या
पाकिस्तान/भारत में आतंक - लोगों के लिए भयानक नाटकों और तबाही की लंबी श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करता है
और संस्कृति और विज्ञान, लेकिन केवल एक चीज जो इस्लाम के लिए मायने रखती थी - और अभी भी मायने रखती है, वह थी a
युद्ध की बहुत सारी लूट - और उनके नेताओं के लिए शक्ति और धन, और यह पसंद है या नहीं: अक्सर
लोगों को मुस्लिम बनने के लिए मजबूर करना - अक्सर हथियारों से, और हमेशा सामाजिक और अन्य के द्वारा
दबाव और अतिरिक्त कर द्वारा, अक्सर उच्च। आज भी हम किसी ऐसे मुसलमान से नहीं मिले जो देख सके
उनके युद्धों या हत्याओं या दमन के पक्ष में, बलात्कार और दासता के अर्थ का उल्लेख नहीं करने के लिए
लाखों पीड़ितों के लिए - आज तक कभी नहीं, एक बार भी नहीं। केवल पश्चिमी संस्कृति में
यह देखने की क्षमता व्यापक है - एक सैन्य कमजोर स्थान, लेकिन कुछ बिंदुओं में से एक जो शायद
पाश्चात्य संस्कृति को कुछ बड़े लोगों की तुलना में बेहतर बनाता है। (कुछ भी अच्छा कहने के लिए
पश्चिम के बारे में राजनीतिक रूप से गलत है, लेकिन हमें इसकी परवाह नहीं है कि राजनीतिक रूप से क्या सही है - हम
खुद को सोचने में सक्षम हैं, और जो मायने रखता है वह सही है, न कि वह जो राजनीतिक रूप से सही है)।

***१६४ ९/७३: "अविश्वासियों और पाखंडियों के खिलाफ कड़ी मेहनत (लड़ाई*) करो, और दृढ़ रहो
उनके विरुद्ध।" आपके पैसे के लिए सीधे शब्द।

१६५ ९/८१: जो युद्ध करने को तैयार नहीं हैं वे नरक में समाप्त हो सकते हैं।

१६६ ९/८३: जो युद्ध करने को तैयार नहीं हैं उन्हें सामाजिक रूप से तिरस्कृत किया जाना चाहिए।

१५७ ९/८४: "न ही तुम उनमें से किसी के लिए (जो युद्ध में नहीं जाना चाहते थे) प्रार्थना करना कि
मरता है, और न ही उसकी कब्र पर खड़ा होता है, क्योंकि उन्होंने अल्लाह को और (कम से कम? *) उसके रसूल को अस्वीकार कर दिया
(मुहम्मद*), और विकृत विद्रोह की स्थिति में मर गया।" कब आज्ञा न मानना विकृत है
इस्लाम युद्ध चाहता है। दौलत चोरी करने, गुलाम बनाने और औरतों से रेप करने की गाजर नहीं तो चाहिए
युद्ध में जाने के लिए अनिच्छुक लोगों को आकर्षित करें, फिर उन्हें जबरदस्ती करने के लिए भारी सामाजिक दबाव का उपयोग करें। युद्ध है
कुरान के लिए बहुत जरूरी है। और "है", न केवल "था" - "है" सभी भविष्य के लिए।

**१६८ ९/८५: "अल्लाह की योजना है कि उन्हें (जो युद्ध में नहीं जाना चाहते*) उन्हें दंड दें
इस दुनिया में चीजें, और उनकी आत्माएं अल्लाह के इनकार में नष्ट हो सकती हैं"। इनकार
युद्ध का अर्थ है:

1. सामाजिक अवमानना।
2. सबसे अधिक संभावना नरक में समाप्त होने के लिए।
3. अल्लाह को नकारना।

क्या किसी व्यक्ति पर युद्ध करने के लिए और अधिक सामाजिक और धार्मिक दबाव डालना संभव है -
इच्छुक हैं या नहीं? कोई भी कह रहा है कि इस्लाम शांतिपूर्ण है, या तो कुरान नहीं पढ़ा है, दोहरा रहा है
"सही" शब्द लेकिन गलत अर्थ, या एक मुसलमान है (जो इसे मानता है या नहीं मानता है)।

१६९ ९/८६: "जब एक सूरह उतरती है, तो उन्हें अल्लाह पर विश्वास करने और प्रयास करने का आदेश देती है और"
अपने रसूल (मुहम्मद*) के साथ संघर्ष (= युद्ध करना*) - - - (कुछ नहीं जाना चाहते हैं)
युद्ध - वे महिलाओं के साथ रहना पसंद करते हैं, 631 ईस्वी में एक अरब के लिए अच्छी प्रतिष्ठा नहीं, नहीं
एक बेडौइन योद्धा के लिए उल्लेख*)"। लेकिन आखिर हर मुसलमान को युद्ध पसंद नहीं था - या पसंद नहीं था।

१७० ९/८८: "परन्तु रसूल (मुहम्मद*) और वे सब जो उसके साथ ईमान लाए, प्रयत्न करते रहे और
अपने धन और अपने व्यक्तियों के साथ संघर्ष (= युद्ध छेड़ना *): उनके लिए (सभी) अच्छी चीजें हैं (जैसे .)
युद्ध की लूट, दास, बलात्कार के लिए महिलाओं, आदि *): और यह वे हैं जो समृद्ध होंगे "

कम से कम कहने के लिए: मुहम्मद/इस्लाम के लिए युद्ध छेड़ने के लिए उकसाना।

१७१ ९/८९: "अल्लाह ने उनके (उसके योद्धाओं/आतंकवादियों) के लिए बाग़ तैयार किए हैं जिनके नीचे नदियाँ हैं प्रवाह, उसमें रहने के लिए: यही सर्वोच्च आनंद है"।

एक बार और - कम से कम कहने के लिए: मुहम्मद के लिए युद्ध छेड़ने के लिए उकसाना - और अल्लाह के लिए अगर वह मौजूद।

१७२ ९/९३: "आधार (शिकायत का (युद्ध न चाहने के लिए*)) ऐसे दावे के खिलाफ है a छूट जबकि वे अमीर हैं - - -"। यदि आप युद्ध में जाने का जोखिम उठा सकते हैं - या यदि कोई, शामिल है नेता (9/92 देखें) आपकी मदद कर सकते हैं - तो यह शिकायत और अवमानना का एक वैध कारण है यदि तुम युद्ध में नहीं जाना चाहते।

एनटी के बिल्कुल विपरीत: "तू हत्या नहीं करेगा"।

१७३ ९/९४: युद्ध में न जाने की इच्छा रखने वालों के बहाने पर विश्वास न करें - वास्तविक कारण यह है कि वे बुरे मुसलमान हैं।

एक अच्छा मुसलमान जब भी अपने नेताओं को बुलाता है तो युद्ध में जाता है।

***174 9/95: "तो उन्हें छोड़ दो (जो युद्ध नहीं करना चाहते*): क्योंकि वे एक हैं घिनौना, और जहन्नम उनका ठिकाना है - जो (बुराई) उन्होंने किया, उसका उचित बदला"। नफरत और हत्या और चोरी नहीं करना और लूटना और बलात्कार करना और गुलाम बनाना और हत्या करना एक घृणा है और बुराई। इस तरह मुहम्मद और इस्लाम के लिए सत्ता की वृद्धि धीमी हो जाएगी?

युद्ध छेड़ना किसी भी योग्य मुसलमान का परम कर्तव्य है जो इसे वहन कर सकता है। कोई गलतफहमी नहीं मुमकिन।

बहादुर भविष्य की दुनिया।

क्या आप अब भी मानते हैं कि अल्लाह वही ईश्वर है जो एनटी में यहोवा है?

१७५ ९/९६: "----अल्लाह ना मानने वालों से (और युद्ध से इंकार करने पर) खुश नहीं होता"। अच्छा, दयालु, बुद्धिमान भगवान।

१७६ ९/१११अ: "अल्लाह ने ईमानवालों से उनके व्यक्तियों और उनके माल को मोल लिया है; उनके लिए (बदले में) बगीचा है (स्वर्ग का) - - -"। यह आपके लिए और आपके लिए एक अच्छा सौदा हो सकता है मुहम्मद अगर अल्लाह मौजूद है और वास्तव में यह चाहने के लिए एक खूनी भगवान है। अगर अल्लाह नहीं मौजूद है, यह केवल मुहम्मद और उनके उत्तराधिकारियों के लिए एक अच्छा सौदा है - और बहुत सारे धर्मों के लिए यह मानने का हर कारण है कि देवता बने हैं - और केवल वही हैं जो लाभ कमाते हैं धार्मिक नेताओं। (इस्लाम के लिए यह वास्तव में सिद्ध है - कोई सर्वज्ञ ईश्वर इतना नहीं बनाता है गलतियाँ, अंतर्विरोध, आदि जैसे कि आप कुरान में क्या पाते हैं)।

१७७ ९/१११बी: "- - - वे (योद्धा/आतंकवादी*) उसके (अल्लाह (या मुहम्मद के?*)) कारण से लड़ते हैं, और घात करते हैं और मारे जाते हैं: (और जन्नत में बड़ा प्रतिफल पाओ*)"। क्या सच में कोई कुरान पढ़ सकता है - एक मुसलमान भी - और बाद में विश्वास करें कि कुरान एक अच्छे, शांतिपूर्ण, पूर्ण ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है? एक को माया और इंकास के खून के अंगों की याद दिला दी जाती है, सिवाय इस्लाम के ज्यादातर हत्याएं होती हैं स्पॉट - असीरियन की तरह।

**१७८ ९/१११सी: "- - - वे उसके (अल्लाह के *) कारण में लड़ते हैं, और मारे जाते हैं और मारे जाते हैं: एक वादा
कानून, सुसमाचार, और कुरान के माध्यम से सच्चाई में उस पर बाध्यकारी - - "। यह भी नहीं है
गलत - यह बकवास है, और इसे केवल वही व्यक्ति बना सकता है जो सुसमाचारों को नहीं जानता। वहां
सुसमाचारों में ऐसा कुछ नहीं है - यह भले ही इस्लाम का ढोंग करता है कि पाठ एक सुसमाचार को संदर्भित करता है कि
गायब हो गया है ("तलवार" शब्द के संदर्भ हैं, लेकिन युद्ध या उकसावे के हिस्से के रूप में नहीं
युद्ध के लिए)। एक सैद्धांतिक संभावना है कि एक पुराना सुसमाचार मौजूद था, लेकिन यह परी
कहानी या दुःस्वप्न उस से भी नहीं लिया जाता है। क्योंकि अगर यह कभी अस्तित्व में था, तो हम जानते हैं
इसकी सामग्री, वर्तमान सुसमाचारों में से तीन के मामले में उस एक को अपने मुख्य स्रोत के रूप में उपयोग किया जाता है (the
अन्य सैद्धांतिक संभावना यह है कि उनमें से दो सुसमाचारों ने अपने स्रोत के रूप में सबसे पुराने सुसमाचार का इस्तेमाल किया - in
उस मामले में विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि कभी पुराना सुसमाचार था, लेकिन इसकी आशा की जानी चाहिए
था, क्योंकि यह बाइबल के लिए और भी पुराना लिखित स्रोत देता है - और इसे और भी अधिक बनाता है
इतिहास के अध्ययन और ऐसे विज्ञान के लिए सभी नियमों के अनुसार विश्वसनीय। वैसे: नहीं
गंभीर छात्र या इतिहास के प्रोफेसर कुरान को पुरानी घटनाओं के स्रोत के रूप में उपयोग करते हैं
610 ईस्वी - जो इस बारे में वॉल्यूम बताता है कि वे इस पुस्तक की विश्वसनीयता का मूल्यांकन कैसे करते हैं
एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा भेजा गया)।

लेकिन असली कारण यह है कि यह थोड़ा सा भी संदेह नहीं है कि यह बना हुआ है, यह वाक्य ऐसा है
पूरी तरह से और 180 डिग्री एनटी - और पूरे एनटी की शिक्षाओं का विरोध करते हैं।

१७९ ९/१२०अ: "यह मदीना के लोगों और अरब के बदौइन के लोगों के लिए उपयुक्त नहीं था
पड़ोस, अल्लाह के रसूल (युद्ध छेड़ने के लिए) का पालन करने से इनकार करने के लिए - - - "। लेकिन यह उपयुक्त है
इस्लाम के लिए चोरी करने और लूटने और अंत गुलामों को मारने और दबाने के लिए। तो फिर "नहीं होने दो" के बारे में क्या?
धर्म में मजबूरी "? - या धार्मिक युद्धों के बारे में?

और मुहम्मद को एक शक्तिशाली सरदार बनाना "उचित" था।

१८० ९/१२०बी: "यह (उनके लिए - ९/१२०* का पहला भाग देखें) उचित नहीं था कि वे अल्लाह का अनुसरण करने से इनकार करें।
रसूल, और न ही अपने जीवन को अपने - - - से तरजीह देना। युद्ध के लिए उकसाना। बस यही क्या करता है
इस्लाम के बारे में बताओ? और यह मुहम्मद और इस्लाम के बारे में जो बताता है वह यह है कि कुरान है - अ नहीं
परियों की कहानी, लेकिन एक दानव की कहानी?

और: मुहम्मद को एक शक्तिशाली सरदार बनाओ! हिटलर ने भी ऐसी ही बातें कही थीं (वास्तव में कुछ
बुद्धिजीवियों ने WW2 से पहले नाज़ीवाद की तुलना इस्लाम से की।)

१८१ ९/१२०सी: "- - - (नहीं*) (युद्ध में) अल्लाह के रसूल (मुहम्मद*) का अनुसरण करने से इनकार करने के लिए, न ही
अपने जीवन को उसके लिए पसंद करते हैं: क्योंकि वे कुछ भी पीड़ित या कर सकते थे, लेकिन उनके लिए गिना गया था
धार्मिकता के कार्य के रूप में श्रेय - - - अल्लाह के कारण - - -"। धार्मिकता की गवाही
अंधापन और अंधेरा सबसे खूनी मूर्तिपूजक धर्मों में से किसी के भी योग्य है - या आधुनिक संप्रदाय
एक देवता के लिए शैतान से प्रार्थना करना। या नाज़ीवाद या साम्यवाद का सबसे काला पक्ष।

१८२ ९/१२०डी: "- - - (पीड़ित *) अल्लाह के कारण में, या ट्रोड पथ क्रोध को बढ़ाने के लिए (स्वयं में नहीं)
रक्षा*!!!) अल्लाह के लिए
अच्छा करने वालों को खोने का इनाम नहीं मिला - "। युद्ध छेड़ने के लिए, सभी के साथ
विनाश और पीड़ा जिसका अर्थ है, अल्लाह और इस्लाम की नजर में अच्छे काम करना है
कुरान.

अपनी टिप्पणी करें। अपने खुद के विचार सोचो।

अल्लाह = NT में यहोवा? केवल अगर भगवान सिज़ोफ्रेनिक है।

१८३ ९/१२३: "उन अविश्वासियों से लड़ो जो तुम्हें बाँधते हैं, और वे तुम में दृढ़ता पाते हैं: और
जानो अल्लाह उनके साथ है जो उससे डरते हैं (= मुसलमान*)"। अगर "मैं" को आप जो करते हैं वह पसंद नहीं है - या
अगर "मैं" मुसलमानों और विशेष रूप से मध्य पूर्व के लोगों की तरह साजिश के सिद्धांतों का थोड़ा सा उपयोग करता हूं
अक्सर करते हैं, और सोचते हैं कि आप बुरी चीजों के लिए तैयार हैं, तो आप निश्चित रूप से मुझे घेर रहे हैं, और यह "मेरा" है
पवित्र कुरान के अनुसार आपको मारने का अधिकार।

हमें उम्मीद है कि हमारे पड़ोस का कोई भी मुसलमान ऐसा नहीं सोचेगा। समस्या यह है कि

[illegible]
मुसलमान? पीड़ितों को फिल्माने वालों की तरह वे जिंदा जल गए।

वर्ष ६३२ ई., सूरह ५:

१८४: ५/३३: "अल्लाह और उसके रसूल के खिलाफ युद्ध छेड़ने वालों की सजा"
(मुहम्मद - जिसे उन्होंने अभ्यास में पृथ्वी पर युद्ध किया*) - - - निष्पादन है, या
सूली पर चढाना, या विपरीत दिशा में हाथ और पैर (एक हाथ और एक पैर*) काटना, या निर्वासन
जमीन से"। यह कोई कागजी फैसला नहीं था - अक्सर पराजित लोगों की सामूहिक हत्या
शिकार हुए। महिलाओं और बच्चों को अक्सर गुलाम बना दिया जाता था, और मेड को मार दिया जाता था - by
सैकड़ों और हजारों और दस हजार। भारत में दिल्ली उन जगहों में से एक थी जहां
सामूहिक हत्या 100ooo तक पहुंच गई। लेकिन आज भी मुसलमान इनकी क्रूरता की बात करते हैं
क्रूसेडर।

१८५ ५/३५: "अल्लाह के प्रति अपना कर्तव्य करो, उसके पास जाने के साधनों की तलाश करो, और उसके साथ प्रयास करो"
पराक्रम और मन (= युद्ध करें*) उसके कारण में: कि तुम समृद्ध हो सकते हो"। यदि आप करते हैं तो आप समृद्ध होते हैं
इस तरह। वास्तव में इस्लाम कुछ शताब्दियों के बाद (सीए 1100 ईस्वी - या वास्तव में 1095 ईस्वी में)
पूर्वी और मध्य मुस्लिम क्षेत्र और सीए। ११९८ पश्चिम में) ने पाया कि वहाँ नहीं था
सोच और शोध और अध्ययन में समृद्धि - अध्ययन और दोहराने के अलावा
धर्म और संबंधित विषय।

१८६ ५/५४: "- - - अल्लाह के मार्ग में लड़ना - - -"। इसके विपरीत जब आप यीशु के लिए लड़ते हैं और
अपने दिमाग और शब्दों और अच्छे कामों के साथ यहोवा, जब आप मुहम्मद और के लिए लड़ते हैं
अल्लाह आप हथियारों से लड़ते हैं और युद्ध और आतंक करते हैं - एक प्रशंसनीय बात है। या?

१८७ ५/६४: "उनमें (यहूदियों*) हम (अल्लाह*) ने आज तक बैर और द्वेष रखा है।
परख का। जब भी वे युद्ध की आग जलाते हैं, अल्लाह उसे बुझाता है; लेकिन वे (हमेशा)
पृथ्वी पर शरारत करने का प्रयास करें "। खैर, जिस समय मुहम्मद ने यहूदी कबीलों के खिलाफ लड़ाई लड़ी, वह
मुहम्मद थे जिन्होंने लड़ाई शुरू करने के लिए एक कारण का इस्तेमाल किया या किया। वही जब मुसलमान
मुहम्मद ने फिलिस्तीन पर विजय प्राप्त करने के 6 साल बाद (और इसे इतना साफ-सुथरा चुराया/लूट लिया कि वहाँ था)
व्यापक भूख f. भूतपूर्व। यरूशलेम में)।

वर्ष ज्ञात नहीं, सूरह १३:

१८८ १३/४१: "देखो वे (गैर-मुसलमान*) नहीं कि हम (अल्लाह/मुसलमान*) धीरे-धीरे कम करते हैं
भूमि (उनके नियंत्रण में) - - - "।

युद्ध और इस्लाम/कुरान के बारे में एक उपयुक्त और विचारोत्तेजक अंतिम कविता।

अध्याय IV/2 के लिए पोस्ट स्क्रिप्टम।

इसके पहले के अध्याय का पद शास्त्र भी देखें - अध्याय IV/1।

829

पेज ८३०

कुरान के विचारों, आदेशों, उत्तेजनाओं, महिमा और खतरों के विषय में पढ़ना
युद्ध छेड़ना मुसलमानों का कर्तव्य बहुत विचारोत्तेजक है।

इस्लाम और मुसलमान बताते हैं और बताते हैं और बताते हैं कि एक अच्छा और शांतिपूर्ण और संपूर्ण धर्म इस्लाम क्या है
है। बहुत से मुसलमान ईमानदारी से इसे मानते भी हैं - उन्होंने कभी पूरा कुरान नहीं पढ़ा, या वे हैं
धार्मिक दृष्टि से अंधे, केवल वही देख रहे हैं जो वे देखना चाहते हैं। या हो सकता है कि वे इस सब को युक्तिसंगत बनाते हैं
आत्मरक्षा होने के नाते, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह वास्तव में मुसलमानों से कितनी आक्रामकता थी जिसने इसे शुरू किया (जैसे
मक्का के साथ युद्ध) - शब्द सस्ते हैं और चीजों को "समझाया जा सकता है"। यद्यपि 622 ई. से
कुरान नफरत और चोरी और बलात्कार और युद्ध को प्रभावित और प्रभावित करता है।

लेकिन यह असंभव है कि नेताओं और कुरान का अध्ययन करने वालों को यह पता नहीं है -
हालाँकि कुछ कमजोर आत्माओं ने इसे चमका दिया होगा या केवल उन छंदों को देखने दिया होगा जिन्हें वे देखना चाहते हैं,
गिनती

लेकिन असली, बुद्धिमान नेता इसे जानते हैं:

कुरान शांतिपूर्ण, अच्छे और परोपकारी ईश्वर या धर्म के बारे में नहीं बताता है। a . के बारे में बताता है

धर्म पर आधारित है और सत्ता और युद्ध और खून और शैतान पर आधारित है - एक डबल में
अर्थ - जो "हमारी" सेनाओं और आतंकवादियों का विरोध करने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं हैं। युद्ध की कोई भी युक्ति है
अनुमति और महिमामंडित। इतना ही नहीं: युद्ध सभी मुसलमानों के लिए एक पवित्र कर्तव्य है - एक कर्तव्य है कि
प्रभावित और प्रभावित और प्रभावित, और चित्रित किए गए वादों और एस्क्यूस के साथ मीठा
भारी धमकियों के साथ काला। "अच्छे और वैध" के आकर्षक वादों का उल्लेख नहीं करना
इस दुनिया में चोरी, लूट, बलात्कार, गुलाम, रखैल और धन।

यह सब एक भगवान के लिए भाग II और अन्य प्रत्येक गणितीय निश्चितता के साथ साबित होता है एक . नहीं हो सकता
सर्वज्ञ भगवान। नहीं - नहीं - सर्वज्ञानी भगवान कई छोटी और बड़ी गलतियाँ करते हैं।
सर्वज्ञानी ईश्वर बिल्कुल नहीं - एक बौना बच्चा भी नहीं भगवान कहीं छिपा है
Aldebaran क्षेत्र, ऐसा करता है। एक सर्वज्ञ भगवान बस कोई गलती नहीं करता - और में
धार्मिक अंधों को छोड़कर, कुरान की बहुत सारी और बहुत सारी गलतियाँ किसी के भी देखने के लिए स्पष्ट हैं।

इससे भी बदतर: कोई भी सर्वज्ञ ईश्वर अपने अस्तित्व के लिए गलत तथ्यों को "संकेत" या "प्रमाण" के रूप में उपयोग नहीं करेगा -
और विशेष रूप से गलत तथ्य या अन्य तार्किक रूप से अमान्य तर्क नहीं (जो बहुत सारे हैं और
कुरान में बहुत कुछ) जिसे उसे जल्द या बाद में जानना था, उसे देखा जाएगा और
उसकी विश्वसनीयता को नष्ट करो।

वही सभी विरोधाभासों के लिए जाता है।

नहीं, अल्लाह - यदि वह मौजूद है - कुरान द्वारा सिद्ध किया गया है कि वह सर्वज्ञ ईश्वर नहीं है। लेकिन वह एक हो सकता है
नाबालिग एक - सर्वज्ञ नहीं और न ही सर्वशक्तिमान (यदि वह सर्वशक्तिमान होता तो वह आसानी से प्राप्त कर सकता था
इसे साबित कर दिया, बहुत तेज़ बात का उपयोग करने के बजाय - और यहां तक कि तेज़ बात जो कि बिंदुओं पर थी
मनोवैज्ञानिक रूप से गलत (उदाहरण के लिए कि एक या दो आश्चर्य करने के लिए कोई भी प्रभावित नहीं होगा)) - कोशिश कर रहा
प्रमुखता के लिए अपने तरीके से झांसा देना और धमकाना।

क्रूर, अमानवीय तरीकों की बदौलत वह इसे बना भी सकता है।

लेकिन इससे कहीं अधिक संभावित व्याख्या यह है कि धर्म किसी ईश्वर की ओर से नहीं है। तथ्य यह है कि
कई गलतियाँ उस समय के विज्ञान के विश्वास के अनुसार कुल मिलाकर हैं,
बहुत दृढ़ता से इंगित करता है कि इस्लाम उस समय रहने वाले किसी व्यक्ति द्वारा बनाया गया है - चाहे वह मुहम्मद हो
खुद या कोई साथी।

अधिक तथ्य दृढ़ता से उसी का संकेत देते हैं: एक संकट होने के बाद अक्सर सूरह दिखाई देते थे। ए
भगवान ने इसे संकट से बचने के लिए समय पर भेजा था। मुहम्मद की पारिवारिक समस्याएँ भी थीं
अल्लाह के जन्नत में "बहुत श्रद्धेय मदर बुक"। एक पवित्र पुस्तक के बारे में सोचो - इतना पवित्र कि वह है
एक भगवान द्वारा अत्यधिक सम्मानित - जो एक भगवान द्वारा बनाया गया है या यहां तक कि अनंत काल से अस्तित्व में है - चर्चा
मुहम्मद की अपनी महिलाओं के साथ समस्या, या अपने व्यक्तिगत छोटे दुश्मनों को डांटना (सूरह १११) -
- - और हंसी।

और इस्लाम के अनुसार पूरे समय में 124000 नबी और दूत रहे हैं।
लेकिन लगभग सारी मदर बुक अरब और मुहम्मद के लिए ही बनी है। सभी के बारे में क्या
अन्य? - केवल बहुत कम लोगों को कोई मार्गदर्शन मिला है, या उनका उल्लेख किया गया है। आम तौर पर पहला
भविष्यवक्ताओं को सबसे अधिक मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी। प्रकल्पित मदर बुक में लगभग केवल अरब और
मुहम्मद मायने रखता है।

लेकिन अगर मुहम्मद या एक सहायक ने इसे बनाया - जैसे नए संप्रदायों या धर्मों के कई अन्य निर्माता -
सब कुछ अचानक फिट और समझ में आता है।

वही अगर इसे अंधेरे ताकतों द्वारा बनाया गया हो - सिवाय इसके कि कोई शैतान भी उन सभी को नहीं बनाएगा
गलतियाँ, आदि, केवल इसलिए कि उसे यह जानना था कि देर-सबेर उसे पता चल जाएगा और वह हार जाएगा
उसकी - या उसकी - विश्वसनीयता।

मुहम्मद इस तरह की नौकरी के लिए काफी बुद्धिमान थे, और एक पूर्व विक्रेता के रूप में वे बहुत कुछ जानते थे
लोगों के बारे में। पर्याप्त क्रूरता और शक्ति की इच्छा + कुछ भाग्य जोड़ें, और वह यह है।

लेकिन अगर यह स्पष्टीकरण है, तो सभी मुसलमानों के बारे में क्या है यदि कोई दूसरा मौजूद है, सच है,
धर्म?

कम से कम ये अध्याय (गलतियाँ, बड़ी गलतियाँ, युद्ध/युद्ध के लिए उकसाना, और
नापसंद/घृणा और मतभेद के लिए उकसाना) को एक किताब या एक पुस्तिका के रूप में मुद्रित किया जाना चाहिए
कुछ समाजों में इंटरनेट की तुलना में बहुत आगे तक पहुँचता है - बहुत से लोगों की पहुँच नहीं होती है। "सामान्य" के लिए
प्रिंट की दुकानें ऐसा करना बहुत खतरनाक हो सकता है। लेकिन भूमिगत प्रिंटर - या प्रिंटर के साथ
विशेष विषय - यह संभव होना चाहिए। इसे छापने से खतरा इस्लाम के बारे में बताता है:
उनकी दलीलें इससे ज्यादा मजबूत नहीं हैं कि उन्हें आतंकित करने और "बचाव" करने के लिए मार डाला जाए
विश्वास करना चाहते हैं - और विशेष रूप से धर्म के कमजोरों के बारे में किसी भी प्रश्न को नकारना और अस्वीकार करना
स्थान: मुहम्मद - एक संदिग्ध व्यक्ति जिसने खुद को एक अचूक भविष्यवक्ता घोषित किया
(जैसा कि कई अन्य लोगों ने किया है)। और यह संभावित भविष्य के बारे में और भी बहुत कुछ बताता है जहां
इस्लाम पृथ्वी पर हावी है - एक काली, धूमिल, स्थिर पृथ्वी से क्रूर दमन का प्रभुत्व है
"बड़ा भाई" - या हिटलर या स्टालिन या माओ या गिंगिस खान के अधीन - कभी-कभी नरसंहार के साथ
पोल पॉट के तहत भी - या अल-कायदा के तहत या तुर्की के तहत अर्मेनियाई लोगों के लिए।

यदि आप जोखिम उठाते हैं, तो आगे बढ़ें और इसे प्रिंट करें - पुस्तक के कुछ हिस्सों (उदाहरण के लिए ये पहले अध्याय या
जिहाद ओट गलतियों के बारे में अध्याय) या मुस्लिम दृष्टिकोण के बारे में अध्याय जोड़ें
अविश्वासियों या पूरी किताब। लेकिन सावधान रहें और सावधानी बरतें। हिटलर और स्टालिन की तरह और
माओ, इस्लाम अच्छाई है जिसे कभी-कभी पतले भेष की तरह पहना जाता है।

"ऐन उम्माह, ऐन विश्वास, ऐन फ्यूहरर!"। (उम्मा = मुस्लिम राष्ट्र)।

एक तथ्य यह भी है कि लोगों को सावधान रहना चाहिए: यह सिद्ध धर्म इसे बनाने की कोशिश कर रहा है
संयुक्त राष्ट्र ने इसे एक अंतरराष्ट्रीय कानून बना दिया है कि "अन्य धर्मों का अपमान" करना प्रतिबंधित है
पैगंबर" - हमें लगता है कि उनमें धार्मिक प्रतीक भी शामिल हैं। सभी नबियों और धार्मिकों में से
दुनिया में केवल मुहम्मद को ऐसे कानून की जरूरत है - और वह कानून इतना व्यापक और होना चाहिए

831

पेज ८३२

इतना अस्पष्ट कि उसके बारे में पूर्ण सत्य भी प्रतिबंधित हो जाएगा - वह वास्तव में एक संदिग्ध था
चरित्र, लेकिन इस संदिग्ध चरित्र पर सारा इस्लाम टिकी हुई है।

अगर हम इस तरह के कानून को यूएन पास करने की इजाजत देते हैं, तो आप 100% सुनिश्चित हो सकते हैं कि जो कुछ भी चापलूसी नहीं कर रहा है
- प्रचार के अनुसार - संत मुहम्मद, को अपमान या बदनामी के रूप में परिभाषित किया जाएगा
मुहम्मद और इस्लाम द्वारा निषिद्ध। भले ही आप हमें पसंद करते हैं, बस इस्लाम को ही उद्धृत करें (लेकिन बिना)
कठोर वास्तविकता पर चमक)।

आप जिस भी धर्म के हों उस कानून का विरोध करें।

2009 जोड़ा गया: बहुत देर हो चुकी - संयुक्त राष्ट्र में इस्लाम सफल हुआ।

कच्ची पांडुलिपि समाप्त: 16 जनवरी 2009।

भाग IV, अध्याय 3, (= IV-3-0-0)

जिहाद - पवित्र युद्ध (हालांकि ज्यादातर अमीरों के लिए अपवित्र युद्ध, लूट, गुलाम, शक्ति और इस्लाम का प्रसार) - में कुरान, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम, और की पवित्र पुस्तक अल्लाह

इस्लाम के नाम पर आतंकवाद: जिहाद - पवित्र (या अपवित्र) युद्ध - IN कुरान और इस्लाम में

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

यह भी देखें कि "मुसलमान बेहतर हैं", "गैर-मुसलमानों से दोस्ती न करें", और
"नापसंद, नफरत और दमन के लिए उकसाना"। यह अध्याय उनके साथ ओवरलैप करता है, लेकिन अन्य
सामान्य नापसंदगी, दूसरों से दूरी और खुद की श्रेष्ठता को बढ़ावा देने के बारे में हैं - एक बनाना

"दुश्मन तस्वीर" - जबकि यह अध्याय मुख्य रूप से प्रत्यक्ष उत्तेजना और प्रेरणा के बारे में है
युद्ध के लिए।

जैसा कि इस पुस्तक में दिखाया गया है, इस्लाम जैसा कि कुरान में माना जाता है, नफरत, डकैती का धर्म है,
दासता, भेदभाव और दमन, रक्त और युद्ध - कुछ मायनों में पुरुषों के लिए अच्छा है
मुसलमान, लेकिन सिद्धांत रूप में हर किसी के साथ युद्ध में - युद्ध में इस हद तक कि उसके अनुसार
इस्लाम के लिए दुनिया सिर्फ दो हिस्सों में बंटी हुई है, इस्लाम का क्षेत्र और युद्ध का क्षेत्र। विश्वास करो या
नहीं, लेकिन यह इस्लाम में सभी क्षेत्रों के लिए आधिकारिक नाम है जो इस्लाम का प्रभुत्व नहीं है। यह देना चाहिए
सोचने का कारण - 1930 के दशक में हमारे पास एक ईमानदार किताब थी जिसे बहुत से लोग नहीं चाहते थे
विश्वास करो। इसमें लगभग 50 मिलियन लोगों की जान गई और भारी विनाश हुआ। "में काम्फ" द्वारा
एडोल्फ हिटलर।

यह भी गहरी सोच का कारण होना चाहिए कि यह अचानक अपेक्षाकृत सौम्य से क्यों बदल गया और
शांतिपूर्ण, युद्ध और हत्या और बलात्कार और आतंकवाद के लिए - भेदभाव और नफरत को न भूलें

832

पेज ८३३

सभी बाहरी लोगों और विशेष रूप से पगानों के खिलाफ - 622 ईस्वी में और उसके बाद। क्या यह अल्लाह था जिसने पाया
उसने गलती की थी, या वह मुहम्मद था जिसे योद्धाओं की जरूरत थी?

जहाँ तक आज की स्थिति का सवाल है, कोई भी मुस्लिम देश या देशों का संयोजन दुनिया से नहीं मिल सकता है
"सामान्य" युद्ध में - हालांकि कुछ ऐसा करने में सक्षम होना चाहते हैं, कम से कम इज़राइल को "मारने" के लिए - ए
जो आज संभव नहीं है, क्योंकि न तो अमेरिका और न ही यूरोप इस बात को स्वीकार कर सकता है कि इजरायल है
नष्ट किया हुआ। पसंद करो या नहीं।

स्थानीय युद्धों को छोड़कर वर्तमान में उनके लिए युद्ध के केवल दो तरीके खुले हैं: परमाणु
सामूहिक विनाश और आतंकवाद के हथियार/हथियार।

पाकिस्तान के पास परमाणु हथियार हैं और वह अस्थिर है। अगर उग्रवादी सत्ता हथियाने में सक्षम हैं
पाकिस्तान, परमाणु हथियारों का इस्तेमाल किया जा सकता है। अगर 1944 और 1945 में हिटलर के पास परमाणु हथियार होते,
उसने उनका इस्तेमाल किया था। कई मुस्लिम आतंकवादी हिटलर से अधिक कट्टर हैं - और
इसके अलावा सुनिश्चित करें कि वे एक ऐसे भगवान के लिए लड़ रहे हैं जो उन्हें सीधे जन्नत में ले जाएगा यदि वे हैं
मारे गए। हो सकता है कि वे पहले पश्चिम पर बमबारी न करें - यूरोप उनके लिए पर्याप्त आवश्यक नहीं है,
और संयुक्त राज्य अमेरिका अपने रॉकेट के लिए बहुत दूर है। लेकिन शायद भारत। या फिर इसराइल। या एक परमाणु विस्फोट
न्यू यॉर्क या लंदन के बंदरगाह में एक जहाज में सभी कार्गो के नीचे पतवार में बम या
कहीं।ईरान परमाणु हथियारों के लिए इच्छुक है। उनके पास तेल का विशाल भंडार है - नहीं। ५ में
दुनिया, जहाँ तक हम जानते हैं - और परमाणु बिजली की जरूरत नहीं है। हो सकता है कि वे करना चाहें
बनाओ, लेकिन उन्हें इसकी आवश्यकता नहीं है। इसके अलावा: अगर वे ईमानदारी से केवल बिजली के लिए जा रहे थे, वहाँ
अंतरराष्ट्रीय समुदायों के साथ सहयोग नहीं करने का कोई कारण नहीं था। उनके पास रॉकेट हैं
यूरोप के कुछ हिस्सों - और इज़राइल तक पहुँचें। वे वर्तमान में उस दिशा में काम कर भी सकते हैं और नहीं भी
लक्ष्य - भविष्य में कम से कम एक बार।

और फिर आतंकवादी हैं - उनके लिए युद्ध का दूसरा रास्ता खुला है। लोकप्रिय और
राजनीतिक रूप से सही सिद्धांत यह है कि आतंकवाद गरीबी से उत्पन्न होता है। गरीबी से छुटकारा पाएं, और आप
आतंकवाद से छुटकारा।

गलत। आतंकवाद आदर्शवाद से उत्पन्न होता है - आदर्शवाद आपस में टकराता है। राजनीतिक और/या . द्वारा संचालित
धार्मिक आदर्शवादी और कट्टरपंथी।

न ही ज्यादातर गरीब ही आतंकवादी बनते हैं। यह केवल प्रचार और गलत है -
वे मध्यम वर्ग और कभी उच्च वर्ग के युवा हैं। अक्सर सुशिक्षित
एक ट्रैक दिमाग वाले युवा। यह आत्म-हत्या करने वाले आतंकवादियों के लिए और भी अधिक जाता है - हालांकि इसके लिए
"स्थानीय कार्य" भी अन्य लोगों की भर्ती की जाती है। दरअसल नेता ऐसे किसी भी आतंकवादी को भर्ती करते हैं जो वे कर सकते हैं
खोजें - कुछ जगहों पर गरीब और अशिक्षित भी बम मार सकते हैं और मार सकते हैं। उनके पास योजनाएं भी हैं
और संभावित संभावनाओं को संभालने के लिए मनोविज्ञान - युवा इसे करने के लिए पर्याप्त रूप से ट्रैक किए गए हैं,
और दूसरे। अजीब बात है कि नेता - निचले स्तर पर भी - कभी भी आत्म-हत्या का अभ्यास नहीं करते हैं
खुद पर बमबारी (हमने सिर्फ एक अपवाद के बारे में सुना है और ऊपर नहीं)।

आतंकवाद से तब तक मुक्ति नहीं मिलेगी जब तक:

1. नफरत का प्रचार करने वाली विचारधाराएं हैं,
दमन, हत्या और युद्ध।

2. जब तक विचारधाराएं काफी मजबूत हैं कुछ लोगों को विश्वास दिलाएं कि आतंकवाद एक निष्पक्ष है समाधान।
3. जब तक विचारधाराएं काफी मजबूत हैं लोगों को आतंकवादियों का समर्थन करें।

गरीबी का अंत मदद कर सकता है, लेकिन केवल मदद - और शायद ही जब धार्मिक आतंकवाद की बात आती है, यह और भी मजबूत हो सकता है क्योंकि उन्हें अमीर समर्थकों से अधिक पैसा मिलता है।

कम समय में आतंकवाद से लड़ना ही होगा कि उसके पास कौन से हथियार हैं। लंबे समय में एक के नफरत और हत्या पक्ष को कमजोर करके ही मुस्लिम आतंकवाद से सुरक्षित हो सकता है धर्म। साम्यवादी आतंकवाद एफ. भूतपूर्व। केवल तभी कम किया गया जब यह स्पष्ट हो गया कि कुछ साम्यवाद के साथ गलत था।

मुस्लिम आतंकवाद से वास्तव में छुटकारा पाने के लिए दुनिया के पास और कोई रास्ता नहीं है कि इसे कम करने की कोशिश की जाए कट्टरपंथी और घृणित सोच का कई मुसलमान प्रतिनिधित्व करते हैं। इसमें सालों लगेंगे और पीढ़ियाँ, लेकिन अगर नहीं तो हमेशा एक-दिमाग वाले मुस्लिम योद्धा और आतंकवादी होंगे। सबसे अधिक संभावना है कि यह उस दिन से पहले कभी समाप्त नहीं होगा जब मुसलमान इसके बारे में सोचना शुरू कर देंगे उनके धर्म के पीछे की वास्तविकता और जिस स्पष्ट तथ्य का वे सामना करने से इनकार करते हैं: वह सब जो गलत है और कुरान में - गलत तथ्य, अन्य गलतियाँ, अमान्य "संकेत" और "प्रमाण", अमान्य तर्क, विरोधाभास, आदि - 110% साबित करें कि धर्म में कुछ गंभीर रूप से गलत है।

लेकिन समस्या का एक अच्छा पक्ष है: मुसलमानों को पूरी बात के अलावा किसी को कुछ नहीं बताना है सच्चाई: इतने सारे गलत तथ्य हैं, इतने सारे विरोधाभास हैं, और इतने सारे अमान्य हैं कथन, "संकेत", और "प्रमाण", और बहुत कुछ जो पुस्तक में गलत है, कि यह है बिल्कुल स्पष्ट है कि कुरान में और इसलिए धर्म के साथ कुछ गलत है। विशेष रूप से कई गलत तथ्य और विरोधाभास दिखाना आसान है। लेकिन यह भी कैसे कई "संकेत" और "प्रमाण" तार्किक रूप से अमान्य हैं, और यह किसी के लिए कितना अतार्किक है ऐसे लोगों का उपयोग करने के लिए सर्वज्ञ भगवान। वह और सवाल: क्यों तेज और बहुत ही महत्वपूर्ण परिवर्तन ६२२ ईस्वी के आसपास एक शांतिपूर्ण धर्म से घृणा, दमन के धर्म की शिक्षा, बलात्कार, डकैती और खून? क्या शायद कोई दयालु अल्लाह था जो मुहम्मद को १२ तक ले जा रहा था वर्षों, लेकिन फिर मुहम्मद को जीवित रहने के लिए पर्याप्त योद्धाओं को प्राप्त करने के लिए धर्म को हाईजैक करना पड़ा और सत्ता हासिल करें?

कम से कम एक बिंदु पर कोई चर्चा नहीं होती है: बहुत सारे और बहुत सारे गलत तथ्य हैं और पुस्तक में विरोधाभास। हर श्रद्धालु मुस्लिम विरोध करता है, लेकिन गलतियां आसानी से दिख जाती हैं किसी भी तरह से किसी के लिए कुछ शिक्षा और पढ़ने में सक्षम। उसे कुछ काम करना चाहिए, अगर एक केवल कई मुसलमानों के धार्मिक अंधेपन के माध्यम से इसे प्राप्त कर सकता था।

लेकिन इस बात से भी सावधान रहें कि जॉर्ज बुश ने किन बातों पर ध्यान नहीं दिया: कट्टर दिमाग। और यह असफलताओं की ओर भाग्यवाद। छापे हुए और छापे हुए बयान का जिक्र नहीं: दृढ़ रहें और दुश्मन दे देते हैं। एफ। पूर्व। इराक से पीछे हटकर स्पेन ने भविष्य में कई इंसानों को मार डाला - इसने "साबित" किया कि आतंकवाद नरम पश्चिमी शासन और लोगों के खिलाफ काम करता है।

और तथ्य यह है कि यह कभी-कभी काम करता है, कभी-कभी काम करता प्रतीत होता है, और कभी-कभी हो सकता है दावा किए गए कार्य (उदाहरण के लिए 2008 और उसके बाद की आर्थिक मंदी का कारण था) कुछ के अनुसार मुस्लिम योद्धाओं और आतंकवादियों के कारण पश्चिम का खर्चा उठा था दावे), इसके जारी रहने के कारणों में से एक है।

लेकिन इतना भोला मत बनो कि गरीबी को मुख्य कारण मान लो - न तो रास्ते के लिए सोच, न ही इस्लाम की "सामान्य" आतंकवादी या आत्म हत्यारे पैदा करने की क्षमता के लिए।

और यह भी याद रखें कि मुसलमान प्रभावित और प्रभावित और प्रभावित हैं: दृढ़ रहें, दृढ़ रहें, दृढ़ रहें, दृढ़ रहें - और विरोधी या दुश्मन अंत में हार मान लेते हैं।

पेज ८३५

नीचे हम आतंकवादियों के सोचने के तरीकों के पीछे कुछ उत्तेजनाओं को जोड़ते हैं। अगर आप अंदर देखें
युद्ध और युद्ध के लिए उकसाने वाले अध्याय, आप और अधिक पाएंगे।

००१ २/४५: "नहीं, धैर्य के साथ (अल्लाह की) मदद मांगो - - -"। तब आप अंत में जीत जाते हैं।

००२ २/१५३: "धीरज और प्रार्थना के साथ मदद मांगो, क्योंकि अल्लाह उनके साथ है जो"
धैर्यपूर्वक दृढ़ रहें।" संघर्ष करते रहो और दुश्मन हार मान लेता है।

००३ २/१९१: "- - - कोलाहल (मुसलमानों के खिलाफ गैर-मुसलमानों से*) और दमन (की
मुसलमान*) वध से भी बदतर हैं (गैर-मुसलमानों के*) - - -।" सादा भाषण: गैर को मार डालो-
मुसलमान चाहें तो सत्ताधारी पदों पर (रहने के लिए) या आपको दबाने की कोशिश करें। (उचित स्थिति है
कि मुसलमान शासन करेंगे और गैर-मुसलमानों को कुरान के अनुसार दबा दिया जाएगा)।
यदि वे तुम्हें शासक नहीं बनने देंगे तो उन्हें मार डालो।

००४ २/१९३: "और उनसे (गैर-मुस्लिम*) तब तक लड़ो जब तक कोई और कोलाहल या उत्पीड़न न हो"। (ए
राज्य शरिया का पालन नहीं कर रहा है - मुस्लिम - कानून, या हिजाब पर प्रतिबंध लगाने वाला राज्य, आदि कई के अनुसार
मुसलमान मुसलमानों और इस्लाम पर अत्याचार और दमन कर रहे हैं। ऊपर 2/191 देखें।

००५ ३/१५ + १७: "उनके (अल्लाह के) सेवक (मुसलमान*) - - - जो धैर्य, दृढ़ता और
आत्म - संयम - - -"। वे अच्छे लोग हैं और अंत में अल्लाह उनकी मदद करेगा।

००६ ३/१४६: "और अल्लाह उन लोगों से प्यार करता है जो दृढ़ और दृढ़ हैं (युद्ध में *)"। एक और ताकतवर
आदिम योद्धाओं - और आतंकवादियों - को दृढ़ विश्वास के साथ उकसाना।

००७ ३/१५१: "जल्द ही हम (अल्लाह*) अविश्वासियों के दिल में आतंक डाल देंगे - - -।" का
अवधि। एक और अच्छी पेप-टॉक।

००८ ३/१८६: "तुम्हें निश्चय ही परखा जाएगा और परखा जाएगा - - -"। मुश्किलें तो बस अल्लाह का रास्ता है
आपकी परीक्षा लेता है, और आप परीक्षा में तब तक उत्तीर्ण नहीं होते जब तक आप लड़ते नहीं रहते। (लेकिन क्यों करता है an
सर्वज्ञ ईश्वर को आपकी परीक्षा लेने की आवश्यकता है - वह पहले से ही सब कुछ जानता है?)

००९ ३/१८६: "लेकिन अगर आप धैर्यपूर्वक - - - पर टिके रहें तो यह सभी में एक निर्धारण कारक होगा
मामलों ”। लड़ते रहो और तुम जीतोगे।

०१० ३/२००: “धैर्य और निरंतरता में बने रहें; ऐसी दृढ़ता में होड़; प्रत्येक को मजबूत करें
अन्य; और अल्लाह से डरो; कि तुम उन्नति करो"। अगर जॉर्ज बुश ने इसे पढ़ा होता, तो उन्होंने सुन लिया होता
उनके जनरलों और अधिक सैनिकों का इस्तेमाल किया - एक बार जब संयुक्त राज्य अमेरिका ने आक्रमण में बहुत कम सैनिकों का इस्तेमाल किया था
उन्होंने इराक पर आक्रमण किया।

011 4/76: "- - - शैतान के दोस्तों के खिलाफ लड़ो - - -"। बेशक आप ऐसा करना चाहते हैं - और
बेशक सभी गैर-मुसलमान शैतान के दोस्त हैं।

०१२ ४/९५: “समान नहीं वे ईमानवाले हैं जो (घर पर) बैठते हैं और चोट नहीं पाते हैं, और वे जो
अपने माल और अपने व्यक्ति के साथ अल्लाह के लिए प्रयास करें। अल्लाह ने एक उच्च ग्रेड दिया है
उन लोगों के लिए जो अपने माल और अपने व्यक्तियों के साथ प्रयास करते हैं"। स्पष्ट शब्द: युद्ध या आतंकवाद पर जाएं
और स्वर्ग के एक बेहतर हिस्से में समाप्त होता है। उत्तेजना "डी लक्स"।

०१३ ४/९५ + ९६: "- - - प्रयास करने वालों ने अल्लाह को बैठने वालों से ऊपर रखा है (घर पर)
एक विशेष इनाम के द्वारा - विशेष रूप से उसके (अल्लाह*) द्वारा दिए गए रैंक, और क्षमा (के लिए .)
कुछ भी अगर तुम युद्ध में मारे गए*) और दया।” इसमें कोई शक नहीं कि सबसे अच्छा मुसलमान कौन है और क्या?

835

पेज ८३६

इस्लाम में सबसे अच्छा काम है - योद्धा और युद्ध अल्लाह को सबसे ज्यादा भाते हैं। (इस्लाम बुलाने के लिए)
"शांति का धर्म" सूरह पढ़ने वाले हर व्यक्ति की बुद्धि का अपमान है
मदीना से।)

014 8/12: "मैं (अल्लाह*) अविश्वासियों के दिलों में आतंक पैदा करूंगा: तुम उनके ऊपर मारो
गर्दन और उनकी सभी उंगलियों को उन पर से मारो (उन्हें धनुष का उपयोग करने में असमर्थ बनाते हुए) - - -।" ए
योद्धाओं और आतंकवादियों को अच्छा प्रोत्साहन।

लेकिन क्या यह वास्तव में "शांति का देवता" "शांति का धर्म" शीर्षक है? इस धर्म को बुलाओ
जैसे यह कुरान से निकलता है, क्योंकि "शांति का धर्म" शब्द और का अपमान है
दुनिया - और इस दावे पर दुनिया के न हंसने का कारण ज्ञान की कमी है।

०१५ ८/३९: "और उनके साथ (उन अविश्वासियों से जो इस्लाम में परिवर्तित नहीं होंगे*) तब तक लड़ें
वहाँ कोई और उपद्रव या उत्पीड़न नहीं है, और अल्लाह में न्याय और विश्वास पूरी तरह से प्रबल है
और हर जगह "। टिप्पणियाँ अनावश्यक होनी चाहिए। **युद्ध तब तक लड़ो जब तक इस्लाम हावी न हो जाए
हर जगह। कभी न खत्म होने वाला आदेश और उत्तेजना।**

०१६ ८/४१: "और यह जान लो कि जितनी लूट तुम (युद्ध में) प्राप्त कर सकते हो, उसमें से पांचवां हिस्सा है
अल्लाह को सौंपा (/ मुहम्मद*) - - -।" यानी 80% योद्धाओं और नेताओं के लिए है
युद्ध का - **एक आर्थिक प्रोत्साहन जो कई गरीब लोगों के लिए से कहीं अधिक गिना जाता है
धर्म - युद्ध और आतंक = अच्छा व्यवसाय।** कई लोग धन्य हो गए, कई बन गए
अमीर, और कुछ बहुत अमीर बन गए - और डाकू योद्धाओं की नई पीढ़ियों के लिए सपनों के मॉडल
और डाकू बैरन। लेकिन मुसलमान और इस्लाम कभी विनाश में कीमत का जिक्र नहीं करते और
लुटेरों की इस अन्यायपूर्ण समृद्धि के लिए बहुतों को कीमत चुकानी पड़ी और जीवन को नष्ट कर दिया
विध्वंसक स्थानीय लोगों को अपने को फिर से हासिल करने में अक्सर (जीवित) 200 साल और उससे भी अधिक समय लग जाता है
जीवन का स्तर, स्वतंत्रता का उल्लेख नहीं करने के लिए। "द" के अच्छे और परोपकारी देवता के योद्धा
शांति का धर्म" अक्सर सामूहिक हत्याएं और नरसंहार और दासता "एन ग्रॉस" - और
सब कुछ चुरा लिया। पीड़ितों को जो कीमत चुकानी पड़ी और जो चुकानी पड़ी वह पूरी तरह से रुचिकर नहीं है - इस्लाम और
इसके मुसलमान कभी भी सांस्कृतिक स्तर तक नहीं पहुंचे हैं जहां पीड़ितों की पीड़ा है
एक कोटा गिना। शायद इसलिए कि सहानुभूति, नैतिक दर्शन और नैतिकता का दर्शन था
और पूरी तरह से अनुपस्थित है - एकमात्र नैतिक कोडेक्स है: क्या किया (नैतिक रूप से पतित)
हाइवेमैन, रेपिस्ट, और लुटेरा बैरन) मुहम्मद करते हैं?

०१७ ८/४६: "- - - धीरज रखो और दृढ़ रहो, क्योंकि अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है।"
लड़ते रहो, लड़ते रहो - देर-सबेर आप जीत ही जाते हैं। या दुश्मन थक जाता है और बाहर निकल जाता है।

०१८ ८/६५: "यदि आप में से बीस (मुसलमान*) धैर्यवान और दृढ़ हैं, तो वे जीत जाएंगे
दो सौ (गैर-मुसलमान) - - -"। खैर, कभी-कभी यह सही होता है।

019 8/65: "हे पैगंबर! (अल्लाह कहते हैं*) ईमान वालों को लड़ाई के लिए जगाओ।" के लिए कुछ शब्द
संभवतः अच्छा और शांतिपूर्ण और परोपकारी भगवान। और एक भगवान और उत्तम प्रकार के लिए कुछ कार्य
एक धर्म का प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति एक अच्छा, मानवीय और शांतिपूर्ण होने का आग्रह करता है। और आतंकवाद है
युद्ध, वे कहते हैं।

०२० ८/७४: "जो लोग ईमान लाए और उन्होंने बंधुआई को अपनाया, और ईमान के लिए संघर्ष करते रहे, अल्लाह के मार्ग में
साथ ही जो (उन्हें) शरण और सहायता देते हैं - ये (सब) वास्तव में ईमान वाले हैं - - -
।" आतंकवादियों के लिए भी एक अच्छी कविता।

०२१ ८/६६: "- - - अल्लाह सब्र रखने वालों के साथ है"। अल्लाह के साथ या उसके बिना, युक्ति
सफल हो सकता है यदि विपक्ष में नरम व्यक्ति हों।

836

पेज 837

०२२ ९/१९ "क्या तुम तीर्थयात्रियों को पेय देना, या पवित्र के रखरखाव के लिए करते हो
मस्जिद (मक्का में काबा*), अल्लाह और अल्लाह पर ईमान रखने वालों के बराबर (पवित्र सेवा)
अंतिम दिन और अपनी ताकत और दिमाग से प्रयास करें (= युद्ध करें*) (देखें ९/१६*) के कारण
अल्लाह?"

बेशक सक्रिय योद्धा - या आतंकवादी - सबसे अच्छे हैं। एफ. पूर्व. दारफुर और . में योद्धा
आतंकवादी कहीं भी सोचते हैं कि वे हत्या और हत्या करके एक पवित्र सेवा कर रहे हैं - - और गिरोह
दारफुर और अन्य जगहों पर बलात्कार की तरह जहां यह सामान्य युद्धों की तरह है, हिट एंड रन नहीं - और
बेशक इस दुनिया में "अच्छे और वैध" इनाम के लिए चोरी करना और लूटना भी।

हाँ, एक अच्छा और मानवीय और परोपकारी धर्म।

और गैर-मुसलमानों के लिए कुछ भविष्य - कुरान में एक जगह, योद्धाओं को याद दिलाया जाता है कि

ऐसे स्थान हैं जहां युद्ध की समृद्ध लूट अभी तक नहीं ली गई है। पश्चिम में? - या अन्य जगह? ऐसा होता है कोई फर्क नहीं पड़ता कि कहाँ - यह आयत एक बार फिर बताती है कि योद्धा सबसे अच्छे मुसलमान हैं - - - और युद्ध की लूट लुभावना है।

०२३ ९/२०ए: "जो लोग विश्वास करते हैं, और निर्वासन का सामना करते हैं और अपनी ताकत और मुख्य (= लड़ाई) के साथ प्रयास करते हैं हथियारों के साथ*), अल्लाह के लिए, अपने माल और अपने व्यक्तियों के साथ (= व्यक्तिगत रूप से लड़ना युद्ध या आतंकवाद - "युद्ध की कोई भी चाल" *), अल्लाह की दृष्टि में सर्वोच्च पद है - - -"।

निःसंदेह आतंकवादी और अन्य योद्धा सबसे अच्छे मुसलमान हैं। इनमें से एक बनें उन्हें!

024 9/20 "- - - वे (आतंकवादी/योद्धा*) वे लोग हैं जो (उद्धार) प्राप्त करेंगे"। कम से कम कुरान कुछ चीजों के बारे में ईमानदार है - जैसे हिटलर "में काम्फ" में था - - - **और कुछ हिटलर पर तब तक विश्वास किया जब तक बहुत देर हो चुकी थी।**

और कम से कम: यह मुहम्मद/अल्लाह के लिए युद्ध के लिए मुख्य उत्तेजनाओं में से एक को दोहरा रहा है।

०२५ ९/२१: "उनके (आतंकवादी/योद्धा*) भगवान (अल्लाह *) उन्हें दया की खुशखबरी देते हैं (अल्लाह के लिए आतंकवादियों/योद्धाओं को व्यावहारिक रूप से किसी भी पाप को माफ कर दिया जाता है) खुद से (अल्लाह की ओर से) व्यक्तिगत रूप से *), उनकी अच्छी खुशी के लिए (उन्होंने लड़ाई और हत्या के लिए किया है अच्छे और दयालु भगवान*), और उनके लिए बाग़, जिनमें प्रसन्नताएँ (पृथ्वी के समान धन और) हैं महिला *) जो सहन करती है"। युद्ध, आतंक और हत्या के लिए अंतिम उत्साह की बात? अ के नाम पर संभवतः शांतिपूर्ण धर्म और एक दयालु और अच्छा भगवान?

एक सवाल हालांकि: महिलाएं अक्सर आदिम, अशिक्षित के लिए सेक्स टॉय कैसे बनना पसंद करती हैं, और "कच्चे" योद्धा? हम जानते हैं कि इस्लाम दलितों की परवाह नहीं करता - केवल खुरदुरे और बहादुर अच्छे मुसलमान, और मुख्य रूप से मुस्लिम पुरुष, लेकिन किसी भी तरह; वे महिलाएं और घंटे कैसे करते हैं इस स्वर्ग की तरह?

०२६ ९/२२: "वे (आतंकवादी/योद्धा*) उसमें (स्वर्ग में) हमेशा रहेंगे। वास्तव में अल्लाह के में उपस्थिति एक इनाम है, सबसे बड़ा (सबसे बड़ा)"। योद्धाओं/आतंकवादियों की दृष्टि में बहुत सम्मान है अल्लाह की, कि उन्हें स्वर्ग के उन हिस्सों में रहने के लिए आमंत्रित किया जाएगा जहां अल्लाह की मौजूदगी है। (में मुस्लिम स्वर्ग कुछ हिस्से दूसरों की तुलना में भी बेहतर हैं - जीसस एफ। भूतपूर्व। 2 में ही रहता है। स्वर्ग, जबकि मूसा एक बेहतर भविष्यवक्ता था और स्वर्ग संख्या चार में रहता है, और शीर्ष इब्राहीम और मुहम्मद जैसे नबी निश्चित रूप से सातवें नंबर पर हैं, जो अल्लाह के सबसे करीब हैं सातवें नंबर से ऊपर रहता है। इसके अलावा आकाश के कुछ क्षेत्र दूसरों की तुलना में बेहतर हैं। (यह मुख्य रूप से हदीसों के अनुसार है।)

इसके ठीक ऊपर ९/२१ की तुलना में यह और भी अधिक उत्साहजनक बात हो सकती है।

***०२७ ९/२९: "उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह पर विश्वास नहीं करते - - -।" एक उकसावे की बात भी नहीं, लेकिन सबसे ज्यादा स्पष्ट आदेश - - - "धर्म में कोई बाध्यता नहीं" (2/256) के बावजूद।

०२८ ९/४०: "यदि आप मदद नहीं करते हैं (आपके नेता (तब मुहम्मद - आज कोई धार्मिक नेता? *)), (यह है कोई बात नहीं (क्योंकि अल्लाह मदद करता है*))। यह आंशिक रूप से एक विशेष पृष्ठभूमि पर कहा जाता है, लेकिन बहुतों की तरह कुरान में जगह, इसका मतलब किसी भी समय सभी मुसलमान हो सकते हैं। युद्ध में अपने नेताओं की मदद करें और अत्याचार - ठीक वैसे ही जैसे मुहम्मद को मदद की ज़रूरत थी।

०२९ ९/९५: "इसलिए उन्हें छोड़ दो (जो युद्ध नहीं करना चाहते*): क्योंकि वे घृणित हैं, और जहन्नम उनका ठिकाना है - जो (बुराई) उन्होंने किया उसका उचित बदला"। नफरत करने के लिए नहीं और मारना और चोरी करना और लूटना और बलात्कार करना और गुलाम बनाना और हत्या करना एक घृणित और बुराई है। उस रास्ते में मुहम्मद और इस्लाम के लिए सत्ता की वृद्धि धीमी हो जाएगी?

युद्ध छेड़ना किसी भी योग्य मुसलमान का परम कर्तव्य है जो इसे वहन कर सकता है। नहीं गलतफहमी संभव।

बहादुर भविष्य की दुनिया।

क्या आप अब भी मानते हैं कि अल्लाह वही ईश्वर है जो एनटी में यहोवा है? या कि "इस्लाम है शांति का धर्म?"

लेकिन यह भोले, अशिक्षित आदिम लोगों के लिए एक भारी उत्तेजना है।

०३० ११/४९: "अत: धीरज धरते रहो, क्योंकि धर्मियों का अन्त अन्त है।" मुसलमान
अंत में जीतेंगे अगर वे लड़ते रहेंगे।

****031 47/4: "इसलिए, जब तुम अविश्वासियों (लड़ाई में) से मिलते हो, तो उनके गले में मारो - - -।"
एक स्पष्ट आदेश। और सावधान रहें: हमारे सूत्रों के अनुसार "IN
लड़ाई" अरब पाठ में मौजूद नहीं है। उस स्थिति में वास्तविक पाठ है
कहीं अधिक भयानक और "शांतिपूर्ण": अविश्वासियों को जब भी मारें
आप ऐसा कर सकते हैं।

032 66/9: "हे पैगंबर (मुहम्मद*)! अविश्वासियों और पाखंडियों के खिलाफ कड़ी मेहनत करो,
और उनके विरुद्ध दृढ़ रहो। उनका ठिकाना नर्क है - - -।" एक स्पष्ट आदेश और एक स्पष्ट स्पष्टीकरण क्यों
वे उप-मानव हैं, और इस प्रकार मरने के योग्य हैं। "अनटरमेन्च" को मारना हमेशा ठीक होता है - वे
इसके लायक। ऐसा करने के लिए "Übermench" का भी अधिकार है - और कुरान में कोई संदेह नहीं है
मुसलमान "Übermench" हैं। (काफी नाजी दर्शन की तरह - सिवाय इसके कि के अनुसार)
नाज़ी, अरब "अनटरमेन्च" थे।(Übermench = सुपर इंसान, Untermench = Subhumans।)

०३३ ६४/१७: "यदि आप अल्लाह को एक सुंदर ऋण देते हैं, तो वह इसे आपके (क्रेडिट) से दोगुना कर देगा, और वह
आपको क्षमा प्रदान करेगा - - -"। सबसे खराब मध्ययुगीन ज्यादतियों के लिए बहुत समान सोच
एक बार रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा। लेकिन योद्धाओं की भर्ती के लिए अच्छे नारे -
और पैसा।

इस तरह और भी बहुत कुछ है - इसका बहुत कुछ दूसरे शब्दों के साथ। इसे अन्य सभी पेप में जोड़ें
कुरान में योद्धाओं के लिए बात करें, और आपको कुछ ऐसा मिलता है जिसे कभी नहीं भूलना चाहिए - नहीं
यहां तक कि यूएसए द्वारा भी।

838

पेज 839

और निश्चित रूप से यह कभी नहीं जानने की समस्या है कि कुछ लोग कौन हैं जो आतंकवादी बन जाएंगे,
और कुछ नहीं जो उनकी मदद करने को तैयार हैं - कम से कम पैसे के साथ। 5. स्तंभ। कुछ 30%
कम से कम मुसलमानों की सहानुभूति है या "समझते हैं" आतंकवादी काम पर क्यों हैं, अंतर्राष्ट्रीय
पोल दिखाते हैं - कुछ जगहों पर ज्यादा से ज्यादा।

और वही सब: यह कभी न भूलें कि बहुसंख्यक मुसलमान बिल्कुल कुछ नहीं चाहते हैं
लेकिन शांति और एक शांत पारिवारिक जीवन। नफरत और युद्ध और दमन की विचारधारा घृणित है,
लेकिन ऐसा नहीं है कि उनमें से सभी सामान्य लोग हैं।

इस्लाम को दूर रखने में बहुत देर हो चुकी है - बहुत से लोग पश्चिम में आकर बस गए हैं। पूर्ण
बहुसंख्यक आर्थिक कारणों से बनियान ले गए हैं, लेकिन मुसलमानों के लिए "दुश्मन" में जाने के लिए
क्षेत्र और फिर बाद में नियंत्रण करने की कोशिश करना, युद्ध की एक रणनीति है जिसकी अक्सर वकालत की जाती है
कुरान. वह एफ. भूतपूर्व। इंडोनेशिया में क्या हुआ था। इसके अलावा कुछ बिखरे हुए पश्चिम की ओर बढ़ सकते हैं
उस विचारधारा के कारण या आंशिक रूप से - लेकिन तब कहर बरपाने में कुछ ही लगते हैं।
हो सकता है कि किसी को समस्या को तब तक बड़ा नहीं करना चाहिए जब तक हम यह नहीं देख लेते कि यहां पहले से मौजूद लोग कैसे होंगे
विकास - एकीकरण और संस्कृति कैसे विकसित होगी। हालांकि पेरिस और अन्य स्थानों पर हो सकता है
भयावह चेतावनी हो।

पोस्ट स्क्रिप्ट से अध्याय IV/3.

इस्लाम के साथ कुछ ऐसे पक्ष हैं जो अच्छे नहीं हैं - और मुस्लिम संस्कृति और समाज के साथ भी।
पक्ष जो नफरत, बलात्कार, खून, और कम से कम दमन और भेदभाव से उत्पन्न होते हैं
जो कुरान और धर्म में सभी बाहरी लोगों के प्रति प्रचारित है। (यदि कुरान
एक सामान्य किताब रही है, इसे बहुत पहले प्रतिबंधित कर दिया गया था - और एक कारण के साथ। एक अच्छा
कारण - या कई अच्छे कारण।)

अभी के लिए किसी को उन पक्षों या पहलुओं से लड़ना होगा - और शायद उन्हें कम करने या रोकने की कोशिश करनी होगी
जब तक किसी को अधिक ज्ञान और अनुभव प्राप्त नहीं हो जाता तब तक आप्रवासन। ईमानदारी से अनुभव बोल रहा हूँ
अब तक मिश्रित है, और कुरान की शिक्षा उतनी ही ईमानदार है जितनी "मीन काम्फ" में है, जो भी
बहुत से लोग विश्वास नहीं करना चाहते थे जब तक कि बहुत देर हो चुकी थी। (1938 में विश्व प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक
कार्ल गुस्ताव यंग ने नाजी विचारधारा की तुलना सिर्फ इस्लाम से की, और नाज़ीवाद काफी था
मुस्लिम देशों में लोकप्रिय - हालांकि आंशिक रूप से क्योंकि उन्होंने ब्रिटिश और फ्रेंच से लड़ाई लड़ी,

जिनके पास मुस्लिम क्षेत्र में उपनिवेश थे)।

लेकिन भविष्य के लिए: आतंकवाद के खतरे को खत्म करने के लिए - या कम से कम इसे कम करने के लिए - एक ही रास्ता है इस्लाम के खूनी पक्षों को कम करें। और इसे करने के कुछ तरीकों में से एक है, उन्हें बनाना समझें कि कुरान में वास्तव में बहुत सारी गलतियाँ और अन्य गलतियाँ हैं, और यह कि इसका मतलब है कि धर्म में कुछ गलत है।

अच्छी बात यह है कि जैसा कि हमने उल्लेख किया है, केवल उन्हें बहुत स्पष्ट सत्य बताने की जरूरत है:

1. किताब में बहुत सारे गलत तथ्य हैं - कोई सर्वज्ञ भगवान उन सभी को नहीं बनायेगा गलतियाँ, खासकर जब उन्हें पता था कि वे जल्दी और बाद में नुकसान के साथ मिल जाएगा आत्मविश्वास का, और वह आसानी से उपयोग कर सकता था सही तथ्य।
2. बहुत सारे अप्रमाणित हैं - और यहां तक कि कुछ सीधे तौर पर गलत - बयान, "संकेत" (= कुरान के लिंगो में संकेत या सबूत) और कुरान में "सबूत" - कोई सर्वज्ञ नहीं

839

पेज ८४०

भगवान बहुत सारे अमान्य "सबूत" का उपयोग करेगा कि वह पता था कि जल्दी या बाद में देखा जाएगा के माध्यम से। गलत का जिक्र नहीं।
3. पुस्तक में बहुत सारे विरोधाभास हैं - और इस्लाम इस दावे का उपयोग करता है कि कोई नहीं है इसके लिए इसके एकमात्र प्रमाण के हिस्से के रूप में विरोधाभास कुरान एक भगवान की ओर से है: ऐसा होने का दावा किया जाता है एकदम सही है कि इसे एक भगवान से आना है। NS विरोधाभास इसके विपरीत साबित होते हैं।
4. अस्पष्ट भाषा वाले बहुत सारे स्थान हैं - और गलत तरीके से दावा की गई स्पष्ट भाषा है एक दैवीय मूल इस्लाम के लिए एक और "सबूत" दावे। सारी अस्पष्ट भाषा तब सिद्ध होती है विपरीत।
5. निष्कर्ष के रूप में बहुत सारे अमान्य तर्क हैं दावों पर आधारित हैं, सिद्ध तथ्यों पर नहीं। नहीं भगवान ऐसे लोगों का इस्तेमाल करेंगे।
6. और धर्म में परिवर्तन क्यों 622 ई. मक्का से सूरह पढ़ें और मदीना से अलग, और शिफ्ट शांतिपूर्ण से खूनी तक देखना बहुत आसान है - यह पारी क्यों? - और क्या वह अल्लाह था जिसने 12 . के लिए शांतिपूर्ण रहकर गलती की साल, या मुहम्मद? या मुहम्मद पर्याप्त पाने के लिए बस अल्लाह का धर्म बदलो जिंदा रहने के लिए और बाद में सत्ता हासिल करने के लिए योद्धा?

इसमें सबसे अच्छा समय लगेगा - किसी को काम करना होगा और "धैर्यपूर्वक दृढ़ रहना" होगा। और शायद में इस बीच आप्रवास के साथ "धीरे धीरे"।

वह आशावादी पक्ष था। निराशावादी और संभावित यथार्थवादी, यह संभावना नहीं है कि समस्याएं तब तक गायब हो जाएंगी जब तक मुसलमान वास्तव में यह नहीं देख लेते कि किताब में कुछ गड़बड़ है और धर्म - न केवल प्रश्न पूछना शुरू करें, बल्कि समझें। और ऐसा नहीं होगा शिक्षा प्रणाली के साथ इस्लाम और इस्लामी राष्ट्रों के पास आज है।

काहिरा, 17. अप्रैल 2009।

भाग V, अध्याय 1, (= V-1-0-0)

कुरान के अनुसार इस्लाम के तहत गैर-मुस्लिम, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक

कुरान में "अच्छा" छंद गैर-मुसलमान।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

840

पेज ८४१

यह भी देखें कि "मुसलमान बेहतर हैं", "गैर-मुसलमानों से दोस्ती न करें", और
"नापसंद, नफरत और दमन के लिए उकसाना"। यह अध्याय उनके साथ ओवरलैप करता है, लेकिन अन्य
सामान्य नापसंदगी, दूसरों से दूरी और खुद की श्रेष्ठता को बढ़ावा देने के बारे में हैं - एक बनाना
"दुश्मन-तस्वीर" - जबकि यह अध्याय मुख्य रूप से प्रत्यक्ष उत्तेजना और प्रेरणा के बारे में है
युद्ध के लिए।

इस बिंदु के दो पहलू हैं: इस्लाम और गैर-मुसलमान और - कहने के लिए नहीं बनाम - इस्लाम और
मुसलमान।

इस्लाम और गैर-मुसलमान एक काला इतिहास है - काफी काला नहीं, लेकिन लगभग - अच्छाई के बावजूद
आधिकारिक भाषणों और प्रचार में चमकदार झंडे के रूप में उपयोग किए जाने वाले बिंदु। लेकिन आखिर पूरी तरह से नहीं
काला, खासकर यदि आप "भूल जाते हैं" कि मक्का से नरम नियम अक्सर ओवरराइड हो जाते हैं
मदीना से नए, बहुत बदले हुए धर्म से बहुत कठिन - आंशिक रूप से क्योंकि
कुछ कानून और नियम कम से कम सैद्धांतिक रूप से सभी के लिए समान थे।

इस्लाम और मुसलमान एक और मानवीय कहानी है - लेकिन यहाँ भी: खासकर यदि आप भूल जाते हैं कि नरम
मक्का के नियमों को अक्सर नए और अधिक कठोर और अमानवीय इस्लाम द्वारा ओवरराइड किया जाता है
मदीना।

लेकिन सावधान रहें कि कुछ, यदि कोई हो, नैतिक और नैतिक कोडेक्स - कोडेक्स, दर्शन नहीं -
इस्लाम के इस हिस्से के पीछे भी मुहम्मद के विचार थे। वे मुख्य रूप से से लिए गए थे
पड़ोसी संस्कृतियाँ - यहूदी, ईसाई और फारसी ज्यादातर, लेकिन दूसरों से भी थोड़ी
पुराने अरब लोगों को शामिल किया गया और फिर युद्ध धर्म के लिए समायोजित किया गया।

इस्लाम और मुसलमानों के संबंध में इस्लाम के दो "प्रमुख" का उल्लेख करने के लिए:

1. मुहम्मद ने बालिकाओं की हत्या का अंत किया
   (6/51)। यह सच है, लेकिन एक बहुत बड़ा सच है।
   यह आज स्पष्ट है - और इसके द्वारा भी सहमत है
   मुस्लिम विद्वान - कि भले ही ऐसी हत्या
   अनुमति दी गई थी, ऐसा शायद ही कभी हुआ हो। शायद
   केवल दुर्लभ धार्मिक समारोहों के दौरान।
   मुहम्मद ने बस इस तथ्य का दुरुपयोग किया
   उसकी शिक्षाओं को "पवित्र" करें।
2. महिलाओं की स्थिति काफी बेहतर हुई
   इस्लाम के तहत मुसलमान बताना पसंद करते हैं। यह भी है
   आधे से भी कम सच।

कम से कम अरब के कुछ हिस्सों में शहरों में रहने वाली महिलाओं के लिए यह सच हो सकता है - लेकिन कितनी महिलाएं रहती हैं
६१०-६३२ ईस्वी के आसपास ग्रामीण क्षेत्रों में कितने नगर और कितने लोग रहते थे?

कुछ कस्बों में (उदाहरण के लिए मदीना), ग्रामीण इलाकों में और बेडौंस में भी स्थिति थी
बिल्कुल भिन्न। महिला पुरुष के बराबर अधिक थी, और यहां तक कि हो भी सकती थी
नेता - हाँ, कुछ मामलों में युद्ध में नेता भी। कुछ को छोड़कर सभी अरब महिलाओं के लिए
अपेक्षाकृत कम शहरवासियों ने इस्लाम को गलत तरीके से एक बड़ा कदम बताया।

अन्य संस्कृतियों में महिलाओं की भी यही स्थिति थी जो मुस्लिम बन गईं - वे बहुत बार
इस्लाम से पहले एक बेहतर, स्वतंत्र और सुरक्षित जीवन था। याद रखें कि नीचे केवल उल्लेख किया गया है
सकारात्मक नियम और कानून - धार्मिक बिंदु शामिल हैं।

पेज ८४२

A. इस्लाम और गैर-मुस्लिम।

००१ (६१६-६२० ई. - संख्या ०५३) ४५/१४: "उन लोगों से कहो जो ईमान लाए (मुसलमान*), जो उन्हें माफ कर दें
अल्लाह के दिनों (गैर-मुसलमानों) की प्रतीक्षा न करें: यह उसके लिए प्रतिशोध (के लिए) है
अच्छा या बीमार) प्रत्येक व्यक्ति ने जो कमाया है उसके अनुसार "। एक कोमल और मानवीय श्लोक -
लगभग एनटी की तरह। लेकिन मदीना से सूरह में खूनी और घृणित लोगों द्वारा ओवरराइड किया गया।

००२ (६२२-६२४* ई. - संख्या ८८) २/६२: "जो लोग (कुरान में) ईमान रखते हैं, और जो उनका अनुसरण करते हैं
यहूदी (शास्त्र), और ईसाई और सबियन - कोई भी जो अल्लाह और में विश्वास करता है
अंतिम दिन, और नेकी के कामों का, उनका प्रतिफल उनके रब (अल्लाह*) के पास होगा - - -"। ए
अच्छा श्लोक। (मदीना में पहली बार मुहम्मद ने अपेक्षाकृत बड़े यहूदी के साथ विलय की उम्मीद की थी
मण्डली, और उसी के अनुसार बात की।)

००३ (६२२ ई.-संख्या ८८) २/२५६: "धर्म में कोई बाध्यता न हो---"। यह अक्सर होता है-
मुसलमानों द्वारा अलीबी का हवाला दिया। लेकिन मदीना में यह पहला पूर्ण सूरा था। मुहम्मद ने कोशिश की
यहूदियों से दोस्ती करो और उनके साथ मिल जाओ - शायद कम से कम एक नेता के रूप में। बाद में
सूरह कठोर थे - और वास्तविकता कभी-कभी बहुत कठोर होती थी। वास्तव में यह श्लोक निराकृत है -
पागल अमान्य - कम से कम 30 बाद के कठोर छंदों द्वारा।

004 (632 ईस्वी - संख्या 107) 5/69: यहां 2/62 (ऊपर देखें) को लगभग बिना संक्षिप्त किए दोहराया गया है
अर्थ, और यहाँ इसे अधिक भार उठाना चाहिए, क्योंकि यह अंतिम सूरहों में से एक है, और
फलस्वरूप निरस्त नहीं किया गया।

००५ (६३२ ई. - संख्या १०७) ५/८२: "- - - उनमें से निकटतम (गैर-मुस्लिम*) प्रेम में
ईमान वाले (मुसलमान*) क्या आप उन्हें पाएंगे जो कहते हैं: हम ईसाई हैं - - -"। सकारात्मक
ईसाइयों के लिए उद्धरण - खासकर जब से यह एक सूरा इतनी देर से है, कि इसे शायद ही निरस्त किया गया हो।
हालाँकि, उद्धरण की सीमाएँ हैं।

इसमें एक दुखद जोड़ है - या दो:

1. हम चारों ओर पूछ रहे हैं, जिसमें शामिल हैं
   मुसलमानों, यह देखने के लिए कि क्या हमने किसी की अनदेखी की है
   गैर-मुसलमानों के लिए अच्छा छंद, लेकिन व्यर्थ।
   कुछ और हो सकते हैं, लेकिन हम रहे हैं
   उन्हें खोजने में असमर्थ।
2. इनमें से कुछ दयनीय हैं, दो स्पष्ट रूप से हैं
   कठोर द्वारा निरस्त और अमान्य कर दिया गया
   मदीना से सूरह - f. भूतपूर्व। तलवार से
   पद्य" (9/5)। श्लोक नं। 45/14 और संख्या 2/256 -
   कुछ मुसलमानों के लिए "फ्लैगशिप" में से एक
   दावा है कि इस्लाम के प्रति उदार है
   गैर-मुस्लिम - बहुत स्पष्ट रूप से मान्य नहीं हैं
   कोई और। इसके अलावा नहीं। 2/62 निरस्त किया जा सकता है,
   और किसी भी मामले में इस जीवन में कोई मूल्य नहीं है
   मुस्लिम समाज में रहने वाले गैर-मुसलमान। और
   अंत में नहीं। 5/82 भी अमान्य हो सकता है, जैसा कि था
   एक विशेष स्थिति से लिखा गया - तथ्य यह है कि
   क्षेत्र में बिखरे हुए ईसाइयों में से कई
   विद्वान और सहनशील व्यक्ति थे। इसके अतिरिक्त
   ईसाइयों के लिए कविता का बहुत कम मूल्य है, क्योंकि यह

पेज ८४३

मुसलमानों की स्थिति की बात करता है, उसके लिए नहीं
ईसाई।

कुरान में ६० से अधिक में से केवल ये कुछ छंद मूल्य के हो सकते हैं - हो सकते हैं
खासकर गैर-मुसलमानों के लिए। (लेकिन क्या यह हमेशा सभी मुसलमानों द्वारा सम्मानित किया जाता है - या फिर भी
उन्हें निरस्त कर दिया गया है (अमान्य बना दिया गया है) एक और सवाल है)। तो दयनीय रूप से कुछ (यदि हमें सब मिल गया है)
पूरी किताब में - एक धर्म में जो इस बात पर जोर देता है कि वह दुनिया में सबसे परोपकारी भी है
अविश्वासियों।

बी सामान्य नियम - गैर-मुस्लिमों के लिए सैद्धांतिक रूप से भी।

००७ (६१४-६१५ ई.-सं० ०३५) १९/७६: "----अच्छे कर्म, अपने रब की दृष्टि में श्रेष्ठ हैं---"।
गैर-मुसलमानों के लिए यह निश्चित रूप से तभी गिना जाता है जब वे जन्नत में आए (एक संभावना थी .)
इसके लिए यहूदियों और ईसाइयों के लिए, लेकिन पगानों के लिए नहीं)।

००८ (६१४-६१७ ईस्वी - संख्या ०३८) ३१/१७: "- - - जो उचित है उसे आज्ञा दें, और जो गलत है उसे मना करें - - -"।
यह मुसलमानों से कहा जाता है, लेकिन कम से कम सैद्धांतिक रूप से भी गैर-मुसलमानों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिए।
(हालांकि वास्तव में यह हमेशा से दूर था - मुस्लिम कानूनों में भी नहीं।)

००९ (६१५-६१६ ईस्वी - संख्या ०४२) २६/१८१-१८३: "उचित उपाय करें, और कोई नुकसान न करें (दूसरों को
धोखा)। और सच्चे और सीधे तराजू से तोलना। और पुरुषों के लिए उचित रूप से चीजों को न रोकें,
और देश में बुराई न करना, और बुराई का काम करना।" बहुत स्पष्ट नियम, लेकिन उन्हें बताना ठीक है।

010 (616 - 618 ईस्वी - संख्या 49) 41/34: "न ही अच्छाई और बुराई समान हो सकती है। पीछे हटाना (बुराई) साथ
क्या अच्छा है, तो क्या वह जिसके और तेरे बीच में बैर था, वह तेरा मित्र हो जाएगा
और अंतरंग। " **इसके बीच के अंतर को देखें - लगभग यीशु की तरह - सीए में। ६१६ - ६१८
एडी, और इसकी तुलना 622 ईस्वी के बाद इस्लाम क्या बन गया। क्या कोई भगवान बदल सकता है हाय
इस पर बहुत ध्यान दें?** - या यह एक मिशन वाला व्यक्ति है जिसे अधिक क्रूर पाया गया
मिशन ने बेहतर काम किया और अधिक शक्ति दी?

०११ (६२१ ईस्वी-संख्या ०६२) ७/८५: "सिर्फ माप और वजन दें, लोगों से न रोकें।
चीजें जो उनकी देय हैं। " व्यापार में मुहम्मद ने "उचित सौदे" का प्रचार किया, और अधिकतर वह
इसमें गैर-मुस्लिम भी शामिल थे - हालांकि अभिव्यक्ति "अरब सेल्समैन" बहुत का प्रतिनिधित्व करती थी
नाविकों के बीच ईमानदारी और विश्वसनीयता के नीचे - और इस तरह इस्तेमाल किया गया था - कम से कम कुछ तक
दशकों पहले। (यहां यह उल्लेख नहीं करना चाहिए कि मुहम्मद तब तक एक अरब विक्रेता थे
अपना धर्म शुरू किया।)

०१२ (६२१ ईस्वी - संख्या ०६३) ६/१५१: "- - - जीवन को न लें, जिसे अल्लाह ने पवित्र बनाया है, सिवाय इसके कि
न्याय और कानून का रास्ता "। अच्छा और अच्छा - लेकिन मदीना के खूनी सुरों द्वारा ओवरराइड किया गया।

०१३ (६२१ ईस्वी - संख्या ०६३) ६/१५२: "और अनाथ की संपत्ति के पास मत आओ - - - दे दो
(पूर्ण) न्याय के साथ माप और वजन - - - उचित बोलें, भले ही किसी निकट संबंधी का संबंध हो।"
ठीक है नियम सिवाय इसके कि गैर-मुसलमानों के प्रति इसे कुछ के तहत बेईमान होने की अनुमति है
परिस्थितियां।

014 (621 ईस्वी - संख्या 064) 28/77: "अल्लाह शरारत करने वालों से प्यार नहीं करता"। लेकिन कितना
जब गैर के इलाज की बात आती है तो यह वाक्य मदीना से सूरह द्वारा ओवरराइड किया गया था।
मुसलमान?

०१५ (६२१ ई.? - संख्या ०६५) १७/३१: "अपने बच्चों को अभाव के डर से मत मारो - - -"। बालिकाएं
कभी-कभी पुराने अरब समाज में मारे जाते थे - हालांकि मुसलमानों की तुलना में बहुत कम मात्रा में
कभी-कभी कहते हैं।

०१६ (६२१ ईस्वी? - संख्या ०६५) १७/३३: "और न ही जीवन लें - जिसे अल्लाह ने पवित्र बनाया है - सिवाय इसके कि
बस इसीलिये"। समस्या यह है कि मदीना के सूरहों ने इतने सारे कारण सिर्फ - या
न्यायसंगत ध्वनि करना संभव है।

०१७ (६२१ ईस्वी? - संख्या ०६५) १७/३४-३५: "अनाथ की संपत्ति के पास मत आओ - - - (और *) दे दो

जब तुम नापते हो तो पूरा नापते हो, और ऐसे तुला से तोलते हो जो सीधा---" होता है। ईमानदारी से डील करें।

018 (622 ईस्वी, मक्का - संख्या 078) 16/90: "अल्लाह न्याय, भलाई और स्वतंत्रता की आज्ञा देता है
रिश्तेदारों और रिश्तेदारों के लिए, और वह शर्मनाक कामों, और अन्याय और विद्रोह को मना करता है - - -"। अच्छा
गुलामों, महिलाओं को छोड़कर और मदीना आने के बाद भी गैर-मुसलमानों को छोड़कर
जब हल्के छंदों को कठोर के लिए प्रतिस्थापित किया गया था।

०१९ (६२२ ईस्वी मक्का या मदीना अनिश्चित - संख्या ०८६) ८३/१-३: "धोखा देने वालों के लिए हाय - - -
(और*) देय से कम दें।" व्यापार में ईमानदार रहें।

०२० (६२२-६२४ ई. - संख्या ८८) २/१९३: "- - - यदि वे (गैर-मुस्लिम अरब*) संघर्ष (लड़ाई*) करते हैं, तो
जुल्म करनेवालों को छोड़ और कोई दुश्मनी न हो।" खैर, यह सूरा माना जाता है
मदीना में पहले पूर्ण हो - यह बाद में कठोर हो गया। और अभ्यास अक्सर MUCH . था
कठोर - और गैर-मुसलमानों के लिए यह मुसलमानों की प्रथा है जो मायने रखती है कि वे कब मारते हैं या बलात्कार करते हैं या
तुम्हें दबाओ - अच्छे शब्द नहीं।

०२१ (६२२-६२४ ई.-संख्या ८८) २/२८०: "यदि देनदार मुश्किल में है, तो उसे आसान होने तक समय दें।
उसे चुकाने के लिए। " व्यापार कानून एक बिंदु तक ठीक थे।

०२२ (६२४ ई. - संख्या ९०) ८/६१: "लेकिन अगर दुश्मन (गैर-मुस्लिम अरब*) शांति की ओर झुके,
क्या तू (मुसलमान*) (भी) शांति की ओर झुकता है"। अच्छे शब्द - और हो सकता है मुहम्मद
उस समय इसका मतलब था। लेकिन सूरह और वास्तविकता बदल गई क्योंकि मुहम्मद ने ताकत हासिल की और
सत्ता - गैर-मुस्लिम अरबों के लिए भी बदली गई (बहुतों की हत्या कर दी गई अगर वे नहीं चाहते थे
मुसलमान बन जाते हैं)।

०२३ (६२९-६३० ईस्वी - संख्या १०२) ६०/७: "हो सकता है कि अल्लाह प्यार (और दोस्ती) दे।
तुम्हारे और तुम्हारे बीच जिन्हें तुम (अभी) शत्रुओं के लिए पकड़ते हो।" यह के बारे में लिखा गया था
समय मुहम्मद ने मक्का ले लिया। टेक ओवर के समय कोई वास्तविक लड़ाई नहीं हुई थी, और वह नम्रता से
मक्का के लोगों के साथ बहुत उदार व्यवहार किया (लगभग एक बार जब उसने ऐसा किया)।

०२४ (६२९-६३० ईस्वी-संख्या १०२) ६०/८: "अल्लाह आपको (मुसलमानों) को मना करता है, उन लोगों के संबंध में नहीं
जो आपसे (आपकी) आस्था (इस्लाम*) के लिए नहीं लड़ते हैं - - - उनके साथ दया और न्यायपूर्ण व्यवहार करने से "।
ऊपर 60/7 देखें।

०२५ (६३१ ईस्वी-नं।) ४९/९: "यदि कोई दुष्ट व्यक्ति आपके पास कोई समाचार लेकर आए, तो उसका पता लगा लें।
सच, ऐसा न हो कि आप अनजाने में लोगों को नुकसान पहुँचाएँ - - -।" लेकिन इसका उपयोग करने के लिए 100% अभ्यास नहीं किया जाता है
ख़ामोशी, जब "काफिरों" की बात आती है।

०२६ (६३१ ईस्वी - संख्या १०५) ९/७: "पगानों के साथ लीग कैसे हो सकती है - - - उनके अलावा, उन लोगों को छोड़कर
जिसके साथ तुमने पवित्र मस्जिद के पास सन्धि की।" 628 में मुहम्मद ने सन्धि की
शहर के नेताओं के साथ मक्का के पास हुदयबिय्याह - वह लेने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं था

844

पेज 845

मक्का अभी तक। यह एक समझौता था जो 10 साल तक चलना चाहिए, लेकिन 630 ईस्वी में मुहम्मद
एक महान सेना के साथ मक्का में प्रवेश किया और वास्तविक लड़ाई के बिना इसे ले लिया। जैसा लिखा है एक साल
जब उसने समझौता तोड़ दिया और शहर ले लिया, तो हम आश्वस्त नहीं हैं कि यह वास्तव में एक है
इस्लाम के लिए सकारात्मक बयान विशेष रूप से यह बताता है कि इसके साथ कोई अन्य समझौता नहीं हो सकता है
पगान इस से - - - - और यहां तक कि वह टूट गया। (मुसलमान मक्का के नेताओं को दोष देते हैं - यह हमेशा
दूसरों को दोष देना अच्छी नीति है।)

०२७ (६३२ ई. - संख्या १०७) ५/८: "अल्लाह के लिए दृढ़ता से खड़े रहो, निष्पक्ष व्यवहार के गवाह के रूप में, और चलो
दूसरों से घृणा नहीं कि तुम गलत की ओर बहक जाओ और न्याय से विमुख हो जाओ।" क्या यह था
सख्ती से रखा गया, यह समुदायों के लिए बहुत मायने रखता था।

०२८ (६३२ ई. - संख्या १०७) ५/४२: "यदि आप (मुस्लिम) न्याय करते हैं, तो उनके बीच समानता में न्याय करें (गैर-
मुसलमान)"। निष्पक्ष सिद्धांत। लेकिन यह तभी है जब दोनों हिस्से गैर-मुस्लिम हों।

०२९ (अज्ञात वर्ष - संख्या ११०) ५५/९: "इसलिए न्याय के साथ वजन स्थापित करें और इसमें कमी न करें
संतुलन"। व्यापार में ईमानदार रहें

.

C. इस्लाम और मुसलमान

इन्हें हम यहां छोड़ देते हैं, क्योंकि ये बहुत स्पष्ट हैं। मुसलमानों के लिए कई छंद अच्छे हैं,
लेकिन कुछ भी खास नहीं, न तो नैतिक रूप से और न ही नैतिक रूप से, जैसा कि मुहम्मद ने लिया था
पुराने अरब या पड़ोसी संस्कृतियों से। महिलाओं और दासों से संबंधित कानून/नियम में हैं
संबंधित अध्याय। युद्ध से संबंधित कानून और नियम अध्याय IV में हैं, हालांकि इसका उल्लेख नहीं है
स्पष्ट।

अध्याय V/I के लिए पोस्ट स्क्रिप्वर।

जैसा कि आप देखते हैं, गैर-मुसलमानों पर भी कुछ छंद "नरम" हैं। लेकिन इतने दयनीय रूप से कुछ की तुलना की गई
कठोर - और अक्सर घृणित - वाले। यह संभावना नहीं है कि हमारे यहां ऐसे सभी छंद हैं, लेकिन कम से कम
उनमें से कई, उन लोगों को छोड़कर जो सीधे कानूनों का हिस्सा नहीं हैं।

"तकिया" की समस्या भी है - गैर-मुसलमानों के लिए वैध झूठ। एफ. पूर्व. सूरह 4/142
कहता है कि अल्लाह उन पर हावी हो जाएगा - और फिर निश्चित रूप से मुसलमानों को भी अनुमति है
उन तक पहुंचना। जिसने कभी-कभी "अच्छे" छंदों को गैर-मुसलमानों के लिए अमान्य बना दिया
भूतकाल। और भविष्य में -?

भाग V, अध्याय 2, (= V-2-0-0)

कुरान के अनुसार इस्लाम के तहत गैर-मुस्लिम,
मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक

मुसलमानों से बेहतर हैं मुसलमान अन्य - हठधर्मिता

भेदभाव और रंगभेद में कुरान

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

यह भी देखें कि "मुसलमान बेहतर हैं", "गैर-मुसलमानों से दोस्ती न करें", और
"नापसंद, नफरत और दमन के लिए उकसाना"।

यह सामान्य है कि कुछ प्रकार की अधिनायकवादी व्यवस्थाओं में लोगों के शासक समूह को कहा जाता है
अन्य सभी की तुलना में बेहतर गुणवत्ता वाले लोग। कुरान में इसे बहुत हद तक व्यवस्थित किया गया है
- केवल मुसलमान ही ज्यादा मूल्य के होते हैं। विडंबना यह है कि अरबों ने सैकड़ों वर्षों तक सामंजस्य बिठाया
खुद को अन्य मुसलमानों से भी बेहतर गुणवत्ता का होना, और सबसे ऊपर होने की मांग करना -
जिसने अन्य मुसलमानों से कुछ शोर किया। (अधिक विडंबना: उन्हें कैसे माना जाएगा
नाजी द्वारा? - वे यहूदियों से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं।)

वर्ष ६११-६१४ ईस्वी, सूरह ६८:

001 68/8: "- - - तो उन लोगों की न सुनें जो इनकार करते हैं (सच्चाई)। - नीच की बात मत मानो
काफिर

००२ ६८/३५+३६: "क्या हम (अल्लाह*) ईमान वालों (मुसलमानों) के साथ पापी लोगों की तरह व्यवहार करेंगे
(गैर-मुस्लिम*)? तुम्हारे साथ क्या बात है? आप कैसे जज करते हैं?" हाँ, "तुम कैसे न्याय करो"
क्या गैर-मुसलमान मुसलमानों की तरह अच्छी गुणवत्ता वाले इंसान हो सकते हैं?

वर्ष ६१२-६१५ ईस्वी, सूरह ५३:

००३ ५३/२९: "- - - उन लोगों से दूर रहो जो हमारे (अल्लाह के) संदेश - - -" से मुंह मोड़ते हैं। गैर को दूर करें
मुसलमान।

वर्ष ६१४, सूरह ५०:

००४ ५०/२४: "- - - हर आपत्तिजनक अस्वीकार करने वाले (अल्लाह के) नरक में फेंक दो!" अच्छे मुसलमान करते हैं
नर्क में समाप्त नहीं होता, इसलिए वे स्पष्ट रूप से बहुत बेहतर हैं।

वर्ष ६१४-६१५ ईस्वी, सूरह २५:

००५ २५/४४: "वे (गैर-मुसलमान*) केवल मवेशियों की तरह हैं - नहीं, वे दुनिया में इससे भी बदतर हैं।
पथ।" गैर-मुसलमान मवेशियों से कम मूल्य के हैं। खैर, हमने सुना है कि कुछ मदरसों में
(मुस्लिम धार्मिक स्कूल*) वे चर्चा करते हैं कि क्या गैर-मुसलमानों के पास मुसलमानों का आधा मूल्य है या
कम। यह सच हो सकता है?

वर्ष ६१४ - ६१५ ईस्वी के बाद का नहीं, सूरह २०:

००६ २०/१६: "- - - जो उसमें विश्वास नहीं करते (कुरान* में) नहीं बल्कि अपनी वासनाओं का पालन करें,
तुझे (मुसलमान*) वहाँ से हटा दे---।" नहीं, मुसलमान होना कहीं बेहतर है।

846

पेज ८४७

वर्ष ६१४-६१५ ईस्वी, सूरह ३५:

००७ ३५/८: "तो क्या वह है, जिसे उसके आचरण की बुराई आकर्षक (गैर-मुस्लिम*) - - -
(उसके बराबर जो सही मार्गदर्शित है*)?" बिल्कुल नहीं - मुसलमान बहुत बेहतर हैं, बिल्कुल।
यह भले ही प्रसिद्ध मुस्लिम अल-ग़ज़ाली (1058 - 1111 ईस्वी) - "महानतम मुस्लिम"
मुहम्मद के बाद", इस्लाम के अनुसार - किसी भी विज्ञान में किसी भी नई सोच के अंत को चिह्नित किया
अपनी पुस्तक "द इनकोहेरेंस ऑफ द फिलॉसॉफर्स" के साथ पूर्वी और मध्य मुस्लिम दुनिया
1095 ई. में दर्शन के विरुद्ध। 900 से अधिक वर्षों से एक भी नया नहीं आया है
किसी भी तरह के विज्ञान में मानवता को आगे लाने वाले विचार या विचार, "ह्यूमेनोरिया" में शामिल हैं,
सभी मुस्लिम दुनिया से, महग्रेब/स्पेन को बाहर रखा गया। (वहां सोचने की क्षमता और स्वतंत्रता
खुद एक और सीए चली। १०० वर्ष - ११९८ में इब्न रुश्द (एवरोस) की मृत्यु
मनमाने ढंग से वहाँ अंत को चिह्नित करने के लिए कहा जा सकता है)। 900 से अधिक में एक भी नया विचार या नया विचार नहीं
वर्षों!!! अब कुछ 1.2 अरब लोगों के बीच!!! हाँ, यह वास्तव में कहा जाना है: यह मुश्किल है
मुसलमानों और इस्लाम से मेल खाने के लिए।

वास्तव में नए विचार कुछ जगहों पर लंबे समय तक सजा या मौत की सजा का मतलब था,
हालांकि कुछ समय बाद इस बात पर सहमति बनी कि कुरान और हदीसों पर नए विचार बन रहे हैं
स्वीकार किया जा सकता था, लेकिन अन्य सभी विचार "बुरे नए विचार" और नकारात्मक या दंडनीय थे।

008 35/19: "अंधे (गैर-मुस्लिम*) और देखने वाले (मुसलमान*) एक जैसे नहीं हैं - - -"। नहीं, ए
अंधे आदमी - स्टीवी वंडर की तरह - का कोई मूल्य नहीं है। इसके ठीक ऊपर 35/8 भी देखें।

009 35/20: "न ही (समान*) अंधेरे की गहराई (अर्थात् गैर-मुस्लिम*) और प्रकाश हैं
(अर्थात् मुसलमान*) - - -"। तार्किक रूप से उतना ही सत्य है जितना कि कई अन्य ढीले बयानों में
कुरान.

लेकिन क्या कोई धर्म और संस्कृति मनुष्य के लिए एक भी नया विचार या विचार नहीं ला रही है जिससे मनुष्य को लाभ हो?
900 से अधिक वर्षों से - और वह सचमुच बोल रहा है - वास्तव में प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता है?

०१० ३५/२१: "न ही (समान) (समान) छाया (गैर-मुस्लिम*) और (सामंजस्यपूर्ण) हीथ हैं
सूरज (मुसलमान*) - - -"। क्या यहाँ यह प्रतीकात्मक है कि जन्नत में के अनुसार छाया है?
कुरान?

०११ ३५/२२: "न ही (समान*) वे हैं जो जीवित हैं (मुसलमान*) और जो मरे हुए हैं (गैर-
मुसलमान*)। बौद्धिक रूप से जीवित मृतकों की गतिहीन सभ्यता में (देखें 35/8) अर्थात्
निश्चित रूप से सच होने की संभावना है। (लेकिन नए बौद्धिक जीवन के लिए कुछ छोटी-छोटी प्रवृत्तियाँ रही हैं
पिछले कुछ ६० वर्षों - हालांकि नए विचारों को सामने लाने के लिए पर्याप्त नहीं है, केवल कुछ पर सवाल उठाने के लिए

पुराने लोग)।

क्या यह प्रतीकात्मक है कि मध्यकालीन इस्लाम में बौद्धिक जीवन पश्चिम में सबसे लंबे समय तक चला? (महग्रेब/स्पेन?)?

लेकिन मुसलमान इस आयत के अनुसार सबसे अच्छे हैं और कुरान में और भी बहुत कुछ।

वर्ष ६१४-६१५ ईस्वी, सूरह ३८:

012 38/28: "क्या हम (अल्लाह*) ईमान लाने वालों और नेकी के काम करने वालों के साथ व्यवहार करें (मुसलमान*) वही हैं जो धरती पर शरारत करते हैं (गैर-मुसलमान*)?" बिल्कुल नहीं - मुसलमान सबसे अच्छे हैं और सबसे अच्छे इलाज के हकदार हैं। जर्मनी में नाजी की तरह, चीन में माओ का चीन, मिलोचेविच के तहत सर्ब या पोल पॉट के तहत कम्युनिस्ट, कुछ का उल्लेख करने के लिए।

847

पेज ८४८

०१३ ३८/२८: "क्या हम (अल्लाह*) उनके साथ बुराई (मुसलमानों) से रक्षा करने वालों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा जो दक्षिणपंथी (गैर-मुस्लिम*) से मुँह मोड़ लेते हैं?" ऊपर हमने टिप्पणी की है उद्धरण - और अधिक टिप्पणी करेंगे। लेकिन उन्हें अकेले पढ़ें और दिखावा करें कि आप आस्तिक हैं मुस्लिम। इस तरह के बहुत से बयान एक छाप छोड़ते हैं, और अंदर कुछ अमानवीय बनाते हैं एक व्यक्ति जो इस पर विश्वास करने के लिए आता है। (एक कारण हो सकता है कि मानवीय संगठन मुख्य रूप से पश्चिम में उत्पन्न होता है, f नहीं। भूतपूर्व। अमीर सऊदी अरब में? - एक मौलिक अंतर कहीं गहराई में?)

वर्ष ६१५-६१७ ईस्वी, सूरह ३९:

०१४ ३९/९: "क्या एक (मुसलमान*) रात के घंटों के दौरान भक्तिपूर्वक पूजा करता है - (जैसे एक कौन नहीं करता (गैर-मुस्लिम*)) - - -?" कुरान के अनुसार बड़ा अंतर है। और जो एक आदिम या दिमाग से धोए गए दर्शकों में या दर्शकों में विश्वास करना, समझना चाहते हैं वे हेरफेर कर रहे हैं?

015 39/9: "क्या वे समान हैं, जो जानते हैं (मुसलमान*) और वे (गैर-मुस्लिम*) जो ऐसा करते हैं नहीं जानता?" इस तरह के बयान और प्रश्न एक बनाने के लिए एक मनोवैज्ञानिक कुशल तरीका है "हमारी" अपनी श्रेष्ठता और विरोधियों की हीनता और बुराई में विश्वास। कई तानाशाह अक्सर समान तकनीक का उपयोग करते हैं - चाहे वह देश हों या संगठन। ज्यादा बुद्धिमान नहीं और/या सीमित शिक्षा वाले लोग ज्यादातर यह नहीं समझते हैं कि उनके साथ छेड़छाड़ की गई है।

०१६ ३९/९: "यह वे (मुसलमान*) हैं जो समझ से संपन्न हैं जो प्राप्त करते हैं नसीहत"। यह हेरफेर करने का एक और कारगर तरीका है: चापलूसी। विशेष रूप से वे नहीं बहुत अधिक समझ के साथ समाप्त - मध्यम बुद्धि और/या शिक्षा (और इसमें मामला धार्मिक शिक्षा और अन्य शिक्षा जिसमें महत्वपूर्ण शिक्षा शामिल नहीं है सोच गिनती नहीं है) - आसानी से इस तरह की बातों पर विश्वास करना पसंद करते हैं। इससे उनका स्वाभिमान बढ़ता है। और अगर अन्य समूहों को भी उनसे नीच कहा जाता है, तो निश्चित रूप से उन्हें कोई नुकसान नहीं होता है आत्मसम्मान या तो।

०१७ ३९/१९: "तो, क्या वह है जिसके खिलाफ सजा का आदेश उचित है (गैर-मुस्लिम *) (बुराई से बचने वाले (मुसलमान*) के बराबर)"। हेरफेर के लिए अभी भी एक और तकनीक, और में यह मामला आंशिक रूप से वास्तव में भेदभाव को प्रेरित करने के लिए है - "वे" बुरे लोग हैं और नहीं हो सकते "हम" की तुलना में। हो सकता है कि हम उनसे बेहतर दूर रहे हों - या इससे भी बदतर?

०१८ ३९/२२: "क्या वह है जिसका दिल अल्लाह ने इस्लाम (मुसलमानों) के लिए खोल दिया है - - - (एक से बेहतर नहीं) कठोर (गैर-मुस्लिम*))"। बेशक मुसलमान सबसे अच्छे हैं - कम से कम के हिसाब से कुरान. आत्मसम्मान के लिए अच्छा है, कम से कम उन लोगों के लिए जिन्हें अपने आत्मसम्मान को बढ़ाने की आवश्यकता है - जिसमें अक्सर एक समाज में मलबा शामिल होता है।

०१९ ३९/२४: "तो, एक (गैर-मुस्लिम*) है, जिसे उस दिन दंड (नरक*) की मार से डरना पड़ता है क़यामत का दिन - - - (जैसे एक (मुस्लिम*) जो वहाँ से पहरा दे)?" 39/22 की तरह।

०२० ३९/२९: "- - - उनमें से अधिकांश (गैर-मुस्लिम*) को कोई ज्ञान नहीं है।" लेकिन मुसलमान जरूर हैं, और बहुत बेहतर लोग हैं। इसमें जीवन को बढ़ावा देने वाला एक भी नया विचार शामिल नहीं था पूरे मुस्लिम समाज में लगभग 900 वर्षों में मनुष्य का। दरअसल एक मशहूर हदीस है कुछ ऐसा कहना 'सभी नए विचार (अरब* में ('बीदा') विधर्म हैं ("गलत शिक्षण"*), सब विधर्म गलत है, और जो कुछ भी गलत है वह नरक की ओर ले जाता है'। इस्लाम ने इसे मॉडरेट करने का एक तरीका ढूंढ लिया

थोड़ा, हालांकि: यदि एक नया विचार - एक "बीदा" - कुरान के अनुसार, सभी हदीसों के साथ है
(कुछ हजारों स्वीकृत हैं) और सभी निर्णय सर्वसम्मति से किए गए हैं

848

पेज ८४९

समय के माध्यम से अग्रणी विद्वान मुसलमानों (ऐसे फैसलों को अरब में "इज्मा" कहा जाता है)
नया विचार एक अच्छा "बीड़ा" हो सकता है - हो सकता है।'

ऐसी परिस्थितियों में यह अजीब नहीं है कि कुछ नए विचार सामने आते हैं - और कोई भी ऐसा नहीं है
पुराने विचारों पर सवाल उठाने (या कम से कम विरोध नहीं) करने के लिए, धर्म के साथ उल्लेख करने के लिए नहीं।

वर्ष ६१६-६१८ ईस्वी, सूरह ४०:

०२१ ४०/५८: "अंधे (गैर-मुस्लिम*) और जो (स्पष्ट रूप से) देखते हैं (मुसलमान*) के बराबर नहीं हैं"।
कुरान के अनुसार उत्तर स्पष्ट है - और मुसलमानों का आत्म-सम्मान बढ़ा।
हालाँकि, एक कमज़ोर भावना है कि कुछ गड़बड़ है। एक तरफ एक किताब पर निर्भर
केवल कुछ खास आदमी के शब्दों पर, और एक किताब जिसमें बहुत कुछ और बहुत कुछ है
धोखा देने, ठगने और धोखा देने के लक्षण। दूसरी ओर एक ऐसी संस्कृति जिसके बावजूद
गलतियाँ - एफ। भूतपूर्व। प्रत्येक साम्राज्य की तरह उपनिवेशों को लेना और यहां तक कि छोटी शक्तियों के पास भी है
सभी समय में किया गया, जिसमें अरब और अन्य मुस्लिम राज्य शामिल हैं - सबसे अधिक लाया है
मनुष्य पिछले कुछ सौ वर्षों में बहुत बेहतर जीवन - सिर्फ चिकित्सा में आज गरीब
अक्सर 100 साल पहले के सबसे अमीर राजा से बेहतर होते हैं।

जहाँ तक हम जानते हैं कि इनमें से एक भी दवा मुस्लिम जगत में उत्पन्न नहीं हुई है। न
अन्य नए विचारों में से एक किया।

लेकिन एक ऐसे समाज में जहां केवल अगली दुनिया (वास्तविक या काल्पनिक या गलत? - जैसा कि यह एक पर बना है)
बहुत सारी गलतियों वाली किताब) वास्तव में मायने रखती है, आखिर मुसलमान कुलीन हैं। बेशक - - -?

०२२ ४०/५८: "- - - न ही (समान) वे हैं जो ईमान लाए और नेकी के काम किए
(मुसलमान*) और बुराई करने वाले (गैर-मुस्लिम*)"। यह स्पष्ट है।

वर्ष ६१६-६१८ ईस्वी, सूरह ४१:

०२३ ४१/३३: "बोलने में बेहतर कौन है जो अल्लाह को पुकारता है, नेक काम करता है,
और (क्या मुस्लिम*)?" बेशक "हम" - मुसलमान - सबसे अच्छे हैं। मुहम्मद को नहीं पता था
मनोविज्ञान शब्द, हम सोचते हैं, लेकिन उन्होंने लोगों को समझा और उन्हें कैसे प्रेरित किया।

024 41/40: "कौन सा बेहतर है? - वह (गैर-मुस्लिम*) जो आग में डाला जाता है, या वह (.)
मुस्लिम*) के माध्यम से सुरक्षित आता है - - -"। क्या किसी को "भेदभाव" शब्द में समझदारी है?
- या सबूत की कमी?

वर्ष ६१६-६१८ ईस्वी, सूरह ४५:

०२५ ४५/२१: "क्या! जो लोग बुरे रास्ते (गैर-मुस्लिम*) की तलाश में रहते हैं, क्या वे सोचते हैं कि हम (अल्लाह*)
क्या उन्हें (मुसलमान*) ईमान लाने वालों और नेक काम करने वालों के बराबर ठहरायेंगे---?"
इसके अलावा एक सवाल है कि क्या यह एक नेक काम है, देने के लिए एक हजार साल के लिए
उनके विश्वासियों ने केवल मुस्लिम विज्ञान में शिक्षा प्राप्त की - सभी ज्ञान जो अध्ययन करने के लिए आवश्यक थे
इस्लाम, मुख्य रूप से धर्म और अरब और संबंधित ज्ञान - लेकिन जितने विश्वासियों को ब्लॉक करें
सभी "विदेशी विज्ञान" से संभव = अन्य सभी ज्ञान, जो कि कम से कम से था
अल-ग़ज़ाली ("दार्शनिकों की असंगति") 11वीं शताब्दी के अंत में (स्पेन में)
लगभग १०० साल बाद) - इस तरह की बातों को छोड़कर, कुरान सही हो सकता है: मुसलमान हैं
गुणों के शीर्ष।

वर्ष ६१८-६१९ ईस्वी, सूरह ६७:

849

०२६ ६७/२२: "तो क्या सिर के बल चलने वाला (गैर-मुस्लिम*) चेहरा बेहतर है
निर्देशित - या जो सीधे रास्ते पर समान रूप से चलता है (मुस्लिम *)?" के साथ एक अलंकारिक प्रश्न
एक स्पष्ट उत्तर - बेशक मुसलमान सबसे अच्छे हैं। खासकर जब वे अल्लाह की आज्ञा मानते हैं और बनाते हैं
युद्ध या अन्य तरीकों से गैर-मुसलमानों को मारना या दबाना - वे सामाजिक और नैतिक के शीर्ष पर हैं
और मानव पिरामिड।

वर्ष ६२० जल्द से जल्द, सूरह ३४:

०२७ ३४/३३: "हम (अल्लाह) अविश्वासियों की गर्दन पर जुए डालेंगे: यह केवल एक होगा
उनके (बीमार) कर्मों के लिए आवश्यक। " वही बुरे लोग इसके लायक हैं। वे बेहतर नहीं हैं।

वर्ष ६२१ ईस्वी, सूरह ६:

०२८ ६/२१: "उस (गैर-मुस्लिम*) से ज्यादा गलत कौन करता है जिसने झूठ का आविष्कार किया (कुछ कहा)
मुहम्मद* के अलावा) अल्लाह और उसकी निशानियों के खिलाफ (जिनमें से कोई भी तार्किक रूप से मान्य नहीं है)
सबूत*)?" नहीं, गैर-मुसलमानों से ज्यादा गलत होना संभव नहीं है। "हम" (मुसलमान)
नैतिक रूप से और अन्य तरीकों से बहुत श्रेष्ठ हैं। लेकिन: क्या इस्लाम में वास्तव में नैतिक या नैतिक है?
दर्शन? - उस मामले में हम इसे कभी नहीं मिले हैं। उनके पास कुछ आज्ञाएँ और कोडेक्स हैं
मुहम्मद से - और उनमें से कुछ भयानक हैं - और यही हमने पाया है।

वर्ष ६२१ ईस्वी, सूरह २८:

029 28/61: "क्या (ये दोनों) एक जैसे हैं? - जिससे हम (अल्लाह*) ने अच्छा वादा किया है
(मुस्लिम*) - - - और एक (गैर-मुस्लिम*) जिसे हमने इस जीवन की अच्छी चीजें दी हैं, लेकिन
कौन (नरक में जाएगा*)?" एक और अलंकारिक प्रश्न जिसका स्पष्ट उत्तर "हमारे" को बढ़ाता है
आत्म-सम्मान और धार्मिकता की भावना। लेकिन एक अतिरिक्त के साथ: कई धर्मों में एक समस्या है
गैर-विश्वासियों या विश्वासियों के साथ जो वास्तव में अच्छे लोग नहीं हैं जिनके पास इसमें एक अच्छा जीवन है
दुनिया। तो इस्लाम भी। लेकिन कुरान इसे बहुत सरल तरीके से समझाता है - कुछ अन्य धर्मों की तरह: यह है
अल्लाह जिसने अपने अथाह ज्ञान में यह फैसला किया है - बुरे व्यक्ति की कोशिश करने के लिए या के लिए
कोई और कारण तो सिर्फ अल्लाह ही समझता है - लेकिन अल्लाह उसे अगले जन्म में सजा देने वाला है।
एक संतोषजनक व्याख्या जो दूसरों की ईर्ष्या को आधा संतुष्ट करती है, और उनकी खुशी भी आधी
संतुष्ट - और हमारा आत्मसम्मान कम से कम बराबर या थोड़ा अधिक।

आप इस तर्क को कुरान में बार-बार भिन्नताओं में पाते हैं।

वर्ष ६२१ ईस्वी, सूरह ११ - छंद १२, १७, और ११३ मदीना काल (०६७) से हो सकता है:

०३० ११/१७ (= मदीना?): "क्या वे (गैर-मुस्लिम*) उन (मुसलमान*) की तरह हो सकते हैं जिन्होंने
स्पष्ट (चिह्न) (कुरान में कई संकेत वर्णित हैं, लेकिन एक भी एक मान्य नहीं है
अल्लाह का सबूत, क्योंकि यह कहीं भी साबित नहीं होता है कि उन्हें अल्लाह* ने अपने रब से दीक्षित किया है
(अल्लाह*)?" अपने अनुयायियों में "जनता" से श्रेष्ठ होने की भावना का निर्माण करने के लिए, यह है
अच्छा मनोविज्ञान। यह और भी अधिक है यदि आप चाहते हैं कि आपके अनुयायी एक अलग समूह बनें,
अन्य लोगों या समूहों से दूरी कम करना।

वर्ष ६२१ - ६२२ ईस्वी, सूरह २३:

०३१ २३/२८: "अल्लाह की स्तुति करो, जिसने हमें बचाया है (नूह के लोग जो कुरान का दावा करते हैं)
अच्छे मुसलमान*) गलत करने वालों से"। सबसे अच्छा बचा लिया गया - दावा किया गया
मुसलमान। लेकिन क्या एक अच्छे भगवान ने अन्य सभी को मारना सही किया था? - सबसे छोटा भी नहीं
बच्चों को सीखने का मौका मिला और शायद बाद में परिवर्तित हो गए। और क्या बुरे लोग खत्म हो गए?

स्वर्ग? - अन्य लोगों द्वारा मारे गए लोग उस मामले के लिए वहीं समाप्त हो जाते हैं जो उनके पास हो सकता है
अगर उन्हें सोचने या सीखने का समय मिला होता तो परिवर्तित हो जाते (और हत्यारे को पीड़ितों को अपने कब्जे में लेना चाहिए .)
पापों का बोझ - यह इस्लाम के अनुसार)।

०३२ २३/११७: "- - - अविश्वासियों के माध्यम से जीतने में असफल हो जाएगा!" - लेकिन मुसलमान नहीं, जैसे वे हैं

बहुत बेहतर गुणवत्ता।

वर्ष ६२१ - ६२२ ईस्वी, सूरह ३२:

०३३ ३२/१८: "तो क्या ईमान लाने वाला (मुसलमान) विद्रोही व्यक्ति से अच्छा नहीं है
और दुष्ट (गैर-मुस्लिम*)? वे समान नहीं हैं।" यह वास्तव में एक स्पष्ट उत्तर है कि
खुद देता है। क्या आप सहमत नहीं हैं?

०३४ १६/७५: "अल्लाह तुम्हारे लिए एक दृष्टान्त (दो आदमियों का: एक) एक गुलाम (गैर-मुस्लिम *) के तहत सेट करता है
दूसरे का प्रभुत्व (एक मुस्लिम*); उसके पास किसी प्रकार की कोई शक्ति नहीं है; और (दूसरा) एक आदमी पर
जिस पर हम (अल्लाह*) ने अपनी तरफ से नेक मेहरबानी की है और वह उसे ख़र्च करता है
(स्वतंत्र रूप से), निजी तौर पर और सार्वजनिक रूप से: क्या दोनों समान हैं? (किसी भी तरह से नहीं;) अल्लाह की स्तुति करो। " इस
कविता वॉल्यूम या किताबें नहीं, बल्कि गीगाबाइट की बात करती है कि कैसे मुसलमान - श्रेष्ठ वर्ग और
श्रेष्ठ धर्म - गैर-मुसलमानों को नीचा देखो: यहाँ तक कि उनकी पवित्र पुस्तक भी उन्हें बताती है कि गैर-
मुसलमान उनके गुलामों के समान हैं - अल्लाह की स्तुति करो। नीचे 16/76 भी देखें। असल में
कविता भी बहुत कुछ बताती है कि गुलामों पर मुसलमान कैसे दिखते थे (दिखते हैं?) और वे सही करते हैं, "आश्चर्य"
अल्लाह के लिए हो"। (ये अंतिम शब्द वास्तव में सोचने के तरीके में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं)।

०३५ १६/७६: "अल्लाह दो लोगों का दृष्टांत बताता है: उनमें से एक (गैर-मुस्लिम *) गूंगा,
किसी भी प्रकार की शक्ति के बिना; वह अपने मालिक (अल्लाह*) के लिए एक बोझिल बोझ है - - - ऐसा आदमी है
एक (मुस्लिम*) के बराबर जो न्याय का आदेश देता है, और सीधे रास्ते पर है?" यदि संभव हो तो यह
16/75 के बारे में टिप्पणियों को ठीक ऊपर मजबूत करता है।

अब हम 622 ई. में मक्का से याथ्रिब/मदीना के लिए उड़ान भर रहे हैं। 80 सूरह हैं कि
निश्चित रूप से +6 जो संभवतः मक्का काल के हैं। इसके अलावा 22 सूरह हैं कि
निश्चित रूप से मदीना काल के हैं, और अंत में 6 जहां उम्र संभव नहीं है
पता लगाना या अनुमान लगाना - 114 सभी एक साथ। (एक आरक्षण: हमारी सूची एक विहित नहीं है - यदि हम
एक बेहतर खोजो, हम गलतियों को सुधारेंगे, यदि कोई हो। लेकिन विशाल विभाजन और विशाल परिवर्तन के रूप में
धर्म का प्रकट होता है जब मुहम्मद 622 ईस्वी में मक्का से याथ्रिब/मदीना भाग गए, और
जैसा कि लगभग सभी सूरहों की अवधि (मक्का या मदीना) जानता है, इस तरह के सुधारों में होगा
६२२ ईस्वी से पहले के इस्लाम और ६२२ ईस्वी के बाद के इस्लाम की तुलना के लिए बहुत कम परिणाम, और
बड़े सवालों के लिए भी: यह बदलाव क्यों? - क्या सर्वज्ञ भगवान ने अपना मन बदल लिया
और अचानक से बहुत अधिक खूनी धर्म चाहते हैं? - या मुहम्मद को अचानक जरूरत पड़ी
योद्धा/राजमार्ग अपने अनुयायियों के साथ जीवित रहने और सत्ता पाने के लिए - वह और उसका समूह बच गया
622 ई. के बाद कई वर्षों तक डकैती/चोरी और जबरन वसूली पर। और: इन्हें किसने गहरा बनाया?
एक शिक्षण में परिवर्तन जो मूल रूप से और १२ वर्षों से काफी शांतिपूर्ण था? अल्लाह या
मुहम्मद?

जैसा कि आप देख सकते हैं, जब "हम सबसे अच्छे हैं" की बात आती है, तो इसमें कोई खास अंतर नहीं है
६२२ ईस्वी से पहले और बाद में "हम सबसे अच्छे हैं", क्योंकि यह हत्या और खून और युद्ध और नफरत के लिए है और
तीसरे अध्याय में दमन - यह हर समय रहा है। यह पूरी तरह से उम्मीद के मुताबिक है। कोई
"सामान्य" नए संप्रदाय या धर्म को "हम" और "उन" के बीच अंतर को चिह्नित करने की आवश्यकता है -
और अधिमानतः एक तरह से जो "हमें" को "उन" से बेहतर बनाता है। यह तब होता है जब कोई अधिक आता है
नए संप्रदायों या धर्मों के लिए असामान्य पक्ष इस्लाम खुद को बहुत "अमानवीय" तरीके से चिह्नित करता है - और करने के लिए
सबसे आश्चर्यजनक सीमा - ६२२ ईस्वी के बाद से। "सामान्य" के प्रभावों के बीच तुलना

असामान्य की तुलना में खुद को चिह्नित करने और शक्ति की कामना करने की कामना करता है
हत्या, डकैती, बलात्कार, दमन, घृणा और हत्या का महिमामंडन इसी धर्म में है
हड़ताली। धर्म कितनी तेजी से और कैसे पूरी तरह से और शीघ्र ही बदल गया था, इसके लिए भी यही बात लागू होती है
६२२ ईस्वी के बाद - यह गले में खराश की तरह चिपक जाता है। अल्लाह बस पहले एक ही भगवान नहीं है और
622 ई. के बाद

वर्ष ६२२ ई., सूरह १८:

०३६ १८/८०-८१: मूसा और एक बुद्धिमान व्यक्ति जिसे इस्लाम में (कुरान में नहीं) अल-कादिर या
अल-खिद्र एक लंबी सैर पर कुरान में वर्णित एक किंवदंती में हैं। वे एक युवक से मिलते हैं कि
बुद्धिमान व्यक्ति बिना उकसावे के हत्या कर देता है। बाद में वह बताते हैं कि इसका कारण यह था कि "हमने प्रदर्शन किया"
कि वह अपने अच्छे मुस्लिम माता-पिता को शोक मनाएगा। अगर इतना ही काफी है उनके बेटे को मारने के लिए, यह नहीं है
संदेह है कि मुसलमान - उसके माता-पिता - गैर-मुसलमानों की तुलना में बहुत बेहतर थे, और शायद वह
धर्मत्यागी - कम से कम बुरे लोग, मारे जाने के लायक हैं?

वर्ष ६२२ ई., सूरा १६:

०३७ १६/७५: "अल्लाह ने दृष्टान्त (दो पुरुषों का: एक) एक दास (= "काफिर" *) के तहत निर्धारित किया
दूसरे का आधिपत्य - - - और (दूसरा) एक आदमी (= मुस्लिम*) जिस पर हमारा (अल्लाह*) है
अपनी ओर से अच्छी उपकार की, और वह उसका (स्वतंत्र रूप से), निजी तौर पर खर्च करता है
सार्वजनिक रूप से: क्या दोनों बराबर हैं?" केवल एक उत्तर के साथ एक अलंकारिक प्रश्न - और निश्चित रूप से हम हैं
उन से अच्छा है जो विधर्मी देवताओं के अधीन दास हैं। (हालांकि यह एक खुला प्रश्न है कि वास्तव में कौन
अपने धर्म के तहत अंधे गुलाम थे - मूर्तिपूजक या मुसलमान? तीव्र और चरम में
संप्रदायों के अनुयायी अक्सर नेताओं के अनौपचारिक गुलाम होते हैं - भगवान के नहीं, बल्कि के
नेता (ओं))।

वर्ष ६२२ ई., सूरह १७:

०३८ ४७/१४: "तो क्या कोई (मुस्लिम*) जो अपने पालनहार की ओर से स्पष्ट (मार्ग) पर है, वह एक से बेहतर नहीं है
(गैर-मुस्लिम*) जिसे उसके आचरण की बुराई मनभावन लगती है---"। कमोबेश सभी की तरह
कुरान में इस तरह के प्रश्न, यह अलंकारिक है और एक संभावित तार्किक उत्तर के साथ है
केवल - एक जो सभी विश्वासियों के लिए प्रसन्न और चापलूसी करने वाला है - - - और सभी के लिए गंभीर प्रतीत होता है
धर्मांतरण करने वाले

०३९ ४७/१५: "(क्या ऐसे आनंद में उन (मुसलमानों) की तुलना ऐसे (गैर-मुस्लिम*) से की जा सकती है जैसे
हमेशा के लिए आग में निवास करेगा - - -"। ऊपर 47/14 देखें।

वर्ष ६२२ मदीना - मदीना से पहला पूर्ण सूरह होने की संभावना, सूरह २:

०४० २/११: "निश्चित रूप से, वे (गैर-मुस्लिम*) शरारत करने वाले हैं"। एक साफ
भेद - और छापे मुसलमान पहले से ही बना रहे थे - और आगे का पालन करने के लिए - नहीं था
शरारत?

०४१ २/१८: "बहरे, गूंगे और अंधे - वे ("काफिर", धर्मत्यागी *) वापस नहीं लौटेंगे (इस्लाम में *)"।
हाँ, उन्हें बहरा, गूंगा और अंधा होना चाहिए, अगर वे कुरान में जो कुछ भी गलत है, उस पर सवाल उठाते हैं। ए
उन्हें नीचा दिखाने का कारण।

०४२ २/९९: "- - - कोई भी (कोई मुस्लिम*) उन्हें अस्वीकार नहीं करता (अल्लाह की निशानियाँ - हालाँकि उनमें से एक भी नहीं है)
वे अल्लाह के लिए तार्किक रूप से मूल्यवान प्रमाण हैं, क्योंकि कहीं भी यह साबित नहीं होता है कि अल्लाह पीछे है
उन्हें*) लेकिन वे (गैर-मुस्लिम*) जो विकृत हैं"। अच्छे मुसलमानों के बीच की दूरी

852

पेज 853

और बुरे गैर-मुसलमान बढ़ते हैं - बाद वाले भी विकृत होते हैं !!! (उल्लेख नहीं है
स्थिति अगर वे पुस्तक के लोगों के भी नहीं हैं - यहूदी, ईसाई और सबियन
(सबाह एक ईसाई देश था जो अब यमन में है - वे बन गए थे
पूर्वी अफ्रीका के माध्यम से ईसाई, और शायद ग्रीक कैथोलिक अरब से थोड़ा अलग
अन्य स्थानों से मिले - इस्लाम अक्सर सबियों के लिए अन्य स्पष्टीकरणों का उपयोग करता है, हालांकि)।

विकृत "जानवरों" को दबाने या लूटने या बलात्कार या मारने का कोई कारण नहीं है !!??

०४३ २/२१२: "लेकिन धर्मी (अच्छे मुसलमान*) उनसे (अन्य सभी*) ऊपर होंगे।
जी उठने - - -।" बेशक - बेशक मुसलमान सबसे अच्छे हैं।

०४४ २/२५४: "वे (गैर-मुस्लिम*) जो ईमान (इस्लाम*) को ठुकराते हैं - वे अत्याचारी हैं"। अगर
आप कुरान पढ़िए, आपने कई बार गैर-मुसलमानों को गलत करने वाला कहा होगा। नहीं
टिप्पणी आवश्यक। सिवाय इसके कि यह एक दुश्मन की तस्वीर के नीचे बनता है - एक दुश्मन अक्सर इतना आधार,
कि वह बेहतर मारे गए कीड़े हैं।

०४५ २/२५७: "उन लोगों में से जो ईमान (गैर-मुस्लिम*) को अस्वीकार करते हैं, संरक्षक दुष्ट हैं (शैतान)
और उसके सहायक*)"। क्या मानव कीड़े बदतर हो सकते हैं?

वर्ष ६२४ ई., सूरह ८:

०४६ ७/५५: "अल्लाह की दृष्टि में सबसे बुरे जानवर के लिए वे हैं जो उसे अस्वीकार करते हैं - - -।" अजीब नहीं
कि सभी मुसलमान सभी से बेहतर हैं - सबसे बुरे से बेहतर होना मुश्किल नहीं है

जानवर
वर्ष ६२४ - ६२५ ईस्वी, सूरह ५९:

०४७ ५९/२०: "आग के साथी ("काफिर") और के साथियों के बराबर नहीं हैं
बाग़ (मुसलमान*): बाग़ के साथी (स्वर्ग*) जो हासिल करेंगे
फेलिसिटी।" इसमें कोई शक नहीं: अल्लाह की नज़र में मुसलमान सबसे अच्छे हैं। और की नज़र में
मुहम्मद वे निश्चित रूप से सर्वश्रेष्ठ थे - - - क्योंकि उन्होंने उसे शक्ति और योद्धा दिए?

वर्ष ६२५ ईस्वी, सूरह ३:

०४८ ३/११०ए: "ये (मुसलमान*) लोगों में सबसे अच्छे हैं, मानव जाति के लिए विकसित - - -"। अरे नहीं
अविश्वास करना संभव है कि मुसलमान मौजूदा मनुष्यों और मानव समाजों में सबसे ऊपर हैं, क्योंकि
कुरान ऐसा कहता है - और किसी मुसलमान को इस बात की जानकारी नहीं है कि शब्द सस्ते हैं। यह भी है
गैर-मुसलमानों की तस्वीर को वर्मिन या कम से कम उप मानव के रूप में मजबूत करना।

०४९ ३/११०बी: "- - - उनमें से अधिकांश (गैर-मुस्लिम*) विकृत उल्लंघनकर्ता हैं"। क्या यह संभव होगा
जोड़ें: - जो दमन और विनाश के लायक हो सकता है - कम से कम कभी-कभी?

०५० ३/१५६: "हे विश्वास करने वालों! अविश्वासियों की तरह मत बनो - - -"। अचूक आदेश।

०५१ ३/१६२: "क्या वह व्यक्ति जो अल्लाह की प्रसन्नता का अनुसरण करता है, उस व्यक्ति के समान है जो आकर्षित करता है"
खुद अल्लाह की माला - - -?" बिल्कुल नहीं - मुसलमान बेहतर हैं।

०५२ ३/१९२: "हमारे रब (अल्लाह*) कोई भी (गैर-मुस्लिम*) - - - सच में तू लज्जा से ढका है, और
गलत करने वालों को कभी कोई मददगार नहीं मिलेगा"। बिल्कुल नहीं - वे इतनी खराब गुणवत्ता के हैं, कि वे
किसी सहायता के पात्र नहीं हैं।

853

पेज 854

वर्ष ६२५ - ६२६, सूरह ६१:

०५३ ६१/९: "- - - वह (मुहम्मद या अल्लाह *) इसे (इस्लाम *) सभी धर्मों पर घोषित कर सकता है, यहाँ तक कि
सोचा था कि पगान (= मुस्लिम नहीं, यहूदी नहीं, ईसाई नहीं *) घृणा कर सकते हैं (इसे)"। क्या पगान
मतलब, बिल्कुल कुछ भी मायने नहीं रखता (और इसके बावजूद कि कुरान 2/256 में no . के बारे में क्या कहता है)
धर्म में मजबूरी, इनके द्वारा हजारों-हजारों की हत्या की गई है
कई बार केवल इसलिए कि उन्होंने मुसलमान बनने से इनकार कर दिया - यहाँ तक कि बुतपरस्त अरब भी पहले वर्षों में
विस्तार)। (कुछ मुसलमानों का उल्लेख नहीं है, यह है कि 2/256 को निरस्त कर दिया गया है और अमान्य कर दिया गया है
कुरान में कम से कम 30 बाद के छंदों द्वारा। सभी पढ़े-लिखे मुसलमान यह जानते हैं, लेकिन सभी
उसी तरह वे 2/256 का उपयोग इस बात के प्रमाण के रूप में करते हैं कि इस्लाम कितना अनुकूल है)।

वर्ष ६२५ - ६२९: ई., सूरह ३३:

०५४ ३३/५८: "और जो लोग विश्वास करने वाले पुरुषों और महिलाओं को नाराज करते हैं, वे अयोग्य रूप से सहन करते हैं (पर .)
खुद) एक निंदा और एक भयावह पाप।" लेकिन मुसलमानों के लिए चोरी करना, बलात्कार करना, दबाना और
बिना उकसाए गैर-मुसलमानों की हत्या करना, जब तक आप कर सकते हैं, तब तक "अच्छा और वैध" था
इसे जिहाद नाम दें - और किसी भी चीज को जिहाद कहा जाता है, जब तक कि विरोधी गैर-मुस्लिम है, तब तक नहीं
मूर्तिपूजक का उल्लेख करें। इसमें कोई शक नहीं कि मुसलमान कुछ ज्यादा ही बेहतर हैं, हां।

वर्ष ६२६, सूरह ४:

०५५ ४/७६: "जो लोग ईमान लाए (मुसलमान*) अल्लाह के लिए लड़ते हैं, और जो इनकार करते हैं
ईमान (इस्लाम*) बुराई के लिए लड़ता है: इसलिए शैतान के दोस्तों के खिलाफ लड़ो - - -। तो सभी
हम जो मुसलमान नहीं हैं, शैतान के दोस्त हैं। हालाँकि हम व्यक्तिगत रूप से - और जहाँ तक हम जानते हैं
अन्य भी - बस आश्चर्य करें: कोई महान शक्ति जो चोरी, विनाश, बलात्कार सिखाती है,
दासता, दमन, हत्या, घृणा, युद्ध - यह ईश्वर है, परोपकारी कुछ है या नहीं? -
या यह एक शैतान है? - शायद भेष में एक शैतान?

०५६ ४/९२: "आस्तिक को कभी भी आस्तिक को नहीं मारना चाहिए - - -"। बाइबिल में एनटी में
संबंधित आदेश है: "तुम नहीं मारोगे"। लेकिन गैर-मुसलमानों की गिनती कम और सच में होती है
कोई फरक नही पड़ता।

भेदभाव के निर्माण का हर इंच हाइवेमेन के नेता के लिए गिना जा सकता है और

योद्धा की। नीच प्राणियों को मारना बुरा नहीं है। इस मामले में सूरा बस हो सकता है
इसका मतलब क्या है - हालांकि फिर भी यह भगवान की मानसिकता के बारे में बहुत कुछ बताता है - या मनुष्य -
इस्लाम के पीछे। और निश्चित रूप से इस्लाम के बारे में ही। लेकिन मुहम्मद मे जैसा बुद्धिमान व्यक्ति
निहितार्थ भी इरादा किया है।

०५७ ४/९३: "यदि कोई व्यक्ति किसी आस्तिक को जानबूझ कर मारता है, तो उसका बदला नर्क - - -" है। एक शब्द नहीं है
एक गैर-मुस्लिम को मारने के बारे में कहा। एनटी की तुलना करें। लेकिन फिर फर्क है कि मुसलमान
मूल्यवान हैं, गैर-मुस्लिम तो कम।

०५८ ४/१४१: "और अल्लाह अविश्वासियों को कभी भी (विजय के लिए) रास्ता नहीं देगा"
विश्वासियों"। इस आयत के अनुसार मुसलमान हमेशा गैर-मुसलमानों पर विजय प्राप्त करेंगे। कम से कम
अंततः।

वर्ष ६२७ - ६२८ ईस्वी, सूरह ५८:

०५९ ५८/२२: "तुम्हें कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिलेगा जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखता हो
जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं, भले ही वे उनके पिता या उनके बेटे हों, या

854

पेज 855

उनके भाई, या रिश्तेदार। " वाकई बुरे लोग लगते हैं। यह वाक्य किसी टिप्पणी के योग्य नहीं है,
लेकिन यह उन संप्रदायों में बहुत आम है जहां नेता अपने पर पूर्ण नियंत्रण चाहते हैं
अनुयायी।

वर्ष ६२७-६२८ ईस्वी, सूरह २४:

०६० २४/३: "व्यभिचार या व्यभिचार का दोषी कोई भी पुरुष किसी महिला से समान रूप से विवाह न करे
दोषी, या एक अविश्वासी - - -"। एक अविश्वासी एक भ्रष्ट मुसलमान की भरपाई कर सकता है। यह बताता है
मुसलमान अपने और दूसरों के बीच अंतर के बारे में कुछ।

वर्ष ६३१ ईस्वी, सूरह ९:

०६१ ९/८: "- - - उनमें से अधिकांश (मूर्तिपूजक*) विद्रोही और दुष्ट हैं।" बेशक - वे नहीं हैं
यहां तक कि यहूदी, न ही ईसाई, जो काफी बुरे हैं। मुस्लिम नैतिक स्तर से बहुत नीचे।

०६२ ९/२८: "वास्तव में पगान अशुद्ध हैं - - -"। वे सबसे नीची जाति हैं - यहाँ तक कि से भी नीचे
यहूदी और ईसाई।

०६३ ९/६७: "वास्तव में पाखंडी विद्रोही और विकृत हैं।" कोई शक नहीं कि मुसलमान हैं
बेहतर - और निश्चित रूप से विकृत नहीं, लूटने या बलात्कार करने या दबाने या मारने पर भी नहीं,
क्योंकि वह पुस्तक के अनुसार "अच्छा और वैध" है। और विकृत लोगों का तिरस्कार करना है
अवधि।

०६४ ९/९५: "तो उन्हें (अच्छे मुसलमानों*) को अकेला छोड़ दो: क्योंकि वे घृणित हैं - - -।"
कोई टिप्पणी नहीं।

०६५ ९/१०९: "फिर कौन सा सबसे अच्छा है? - वह (मुस्लिम*) जो अल्लाह के लिए धर्मपरायणता पर अपनी नींव रखता है - -
- या वह (गैर-मुस्लिम*) जो एक कमजोर रेत-चट्टान पर अपनी नींव रखता है
टुकड़े-टुकड़े हो जाना?" अगर अल्लाह के होने का कोई छोटा सा सबूत होता तो इसमें कोई शक नहीं होता
उत्तर के बारे में।

वर्ष ६३२ ई., सूरह ५:

०६६ ५/६७: "अल्लाह उन लोगों ("काफिरों") का मार्गदर्शन नहीं करता जो ईमान (इस्लाम *) को अस्वीकार करते हैं।" नहीं, केवल अच्छा
मुसलमान मार्गदर्शन के लायक हैं।

वर्ष अनिश्चित, सूरा १३:

०६७ ११/२४: "इन दो प्रकारों (पुरुषों (गैर-मुस्लिम बनाम मुस्लिम*) की तुलना की जा सकती है
अंधे और बहरे, और जो अच्छी तरह देख और सुन सकते हैं। क्या वे तुलना करने पर समान हैं?" का
बिल्कुल नहीं - मुसलमान बहुत बेहतर हैं।

अध्याय V/2 के लिए पोस्ट स्क्रिप्टम।

ऐसा लग सकता है कि मुसलमानों के गैर-मुसलमानों से बेहतर होने की बात तेज से दूर है
622 ई. के बाद लेकिन इन छंदों के अलावा अक्सर अधिक मजबूत छंद होते हैं
युद्ध के बारे में अध्याय और युद्ध के लिए उकसाने के बारे में, तो सब कुछ एक ही नहीं है
संदेह है कि मदीना में असहिष्णुता के निर्माण में तेजी आई है। मुहम्मद - या अल्लाह - बदल गया
मजबूत शब्दों के लिए।

मनोवैज्ञानिक रूप से यह उत्साहपूर्ण बात है और एक छोटे से महापाषाण विश्वास का एक व्यवस्थित निर्माण है
अपने बारे में, और बहुत सारे भेदभाव - और मजबूत - नाम के अवर मलबे की ओर
यहूदी और ईसाई, सीढ़ी के नीचे वाले लोगों का उल्लेख नहीं करने के लिए, पगान कहलाते हैं।

उन लोगों के लिए जो वास्तव में कुरान पर विश्वास करते थे सच बोलते थे - और योद्धाओं के लिए और अधिक जाने के लिए
दौलत और स्त्रियाँ, और आज आतंकवादियों के लिए - यह सुनने में चीनी थी और है कि वे बुद्धिमान हैं,
वे सबसे अच्छे हैं, वे सही करते हैं, कि चोरी और दासता और हत्या "वैध और" है
अच्छा" - और गैर-मुसलमान कहीं न कहीं दूसरे वर्ग और कीड़ों के बीच में हैं। अगर होता
एक सामान्य किताब, इसे ज्यादातर देशों में नफरत फैलाने और इससे भी बदतर के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया था।

और इसने मुहम्मद और उसके उत्तराधिकारियों को मजबूत सेनाएँ देने में मदद की।

और यह अक्सर बना - और बना - मुसलमान 2/256 को भूल जाते हैं: "इसमें कोई मजबूरी न हो"
धर्म" - बहुत सारे मूर्तिपूजक और कभी-कभी दूसरों को इस बिंदु पर मुसलमान बनने के लिए मजबूर किया जाता था
एक तलवार की। भेदभाव, सामाजिक कलंक या आर्थिक बल द्वारा उल्लेख नहीं है
जबरन वसूली / कराधान। लेकिन तब 2/256 वास्तव में मृत और अमान्य है - कम से कम कुछ लोगों द्वारा निरस्त किया गया
30 कठोर छंद, एक तथ्य इस्लाम आमतौर पर कभी भी उल्लेख नहीं करता है।

और इस तरह के जोश और प्रचार का कम से कम प्रभाव यह नहीं है कि यह नींव बनाता है
इस विश्वास के लिए कि "हम" अच्छे हैं और "वे" उपमानव हैं और उस बुरे उपमान के ऊपर हैं।
उन्हें दबाना और उन्हें लूटना और उन्हें मारना ठीक है - बस यही वह है जिसके वे हकदार हैं! एक अच्छा
आपको अनुयायी हाईवेमैन और योद्धा बनाने के लिए शुरू करें। मुहम्मद अकेला नहीं है
इस रसीद का उपयोग करने वाले चरम संप्रदायों के धार्मिक नेता।

भाग V, अध्याय 3, (= V-3-0-0)

कुरान के अनुसार इस्लाम के तहत गैर-मुस्लिम, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक

"गैर के साथ कोई दोस्त मत बनाओ- मुस्लिम - भेदभाव और कुरान और में रंगभेद इस्लाम

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

यह भी देखें कि "मुसलमान बेहतर हैं", "गैर-मुसलमानों से दोस्ती न करें", और
"नापसंद, नफरत और दमन के लिए उकसाना"। यह अध्याय उनके साथ ओवरलैप करता है, लेकिन अन्य
सामान्य नापसंदगी, दूसरों से दूरी और खुद की श्रेष्ठता को बढ़ावा देने के बारे में हैं - एक बनाना
"दुश्मन-तस्वीर" - जबकि यह अध्याय मुख्य रूप से प्रत्यक्ष उत्तेजना और प्रेरणा के बारे में है
युद्ध के लिए।

यह आदेश/सलाह देने वाले समूहों में सबसे नरम है कि मुसलमानों को कैसे सोचना और महसूस करना है और
गैर-मुसलमानों के बारे में व्यवहार करें। लेकिन नफरत, बलात्कार, लूट, दासता के अध्याय को छोड़कर,
हत्या और युद्ध - यह सबसे दुखद और हृदयविदारक हो सकता है।

और यह एक अतिमानवीय/अमानवीय और युद्ध धर्म के निर्माण की नींव है।

वैचारिक समूहों के नेता अक्सर अपने बीच दूरी बनाए रखना बुद्धिमानी नहीं समझते हैं
सदस्य और शेष जनसंख्या - यदि नहीं तो विचारधारा को प्रभावित किया जा सकता है - या सुधारा जा सकता है -
अन्य अर्थों से या वास्तविकता से। यह विशेष रूप से सच्चाई के किनारे पर समूहों के लिए जाता है या
चरम समूह - "बाकी दुनिया" के साथ बहुत अधिक संपर्क प्रकट कर सकता है कि हो सकता है
समूहों की शिक्षाएं संदिग्ध हैं या दुनिया की हो सकती हैं और समूह के बाहर के लोग हैं
उतना बुरा नहीं जितना उनके नेता दिखावा करते हैं।

बस (पूर्व) कम्युनिस्ट देशों की तलाश करें - गैर-कम्युनिस्टों से संपर्क किया गया
कठिन या निषिद्ध भी। और शासन जितना कठोर था, उतना ही खतरनाक था/है
गैर-कम्युनिस्टों के साथ संपर्क। विश्वास करने वाला, शुद्ध विश्वास का शुद्ध कम्युनिस्ट, यह सीख सकता था
हो सकता है कि अन्य विचार बुरे न हों - शायद उनके विश्वास से भी अधिक सही। और वो भी
गैर-साम्यवाद के नर्क में रोज़मर्रा की ज़िंदगी अक्सर भविष्य से बेहतर थी
कम्युनिस्ट स्वर्ग।

कुछ देशों में "बाहर" लोगों को भी अपने लिए सोचने की अनुमति थी !!

इस्लाम उन समूहों में से एक है जो अपने सदस्यों को लोगों से संपर्क करने के लिए दृढ़ता से हतोत्साहित करता है
बाहर से"। इसमें हतोत्साहित करना - दृढ़ता से हतोत्साहित करना - सामान्य दैनिक शामिल है
गैर-मुसलमानों के साथ संपर्क और दोस्ती। वास्तविक दुनिया में ऐसे को छोड़ना संभव नहीं है
चीज़ें। लेकिन इसे कम से कम और केवल परिचितों और दूर के दोस्तों के रूप में ही रखें। और मत करें
चीजों पर बहुत अधिक चर्चा करें - आप ऐसे तथ्य सीख सकते हैं जो आपको "तथ्यों" पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं - विशेष रूप से
इस्लाम में गलत या संदिग्ध "तथ्य"। अथवा विचारधारा की दृष्टि से - f. भूतपूर्व। खूनी या
विचारधारा के युद्ध पक्षों को दबाना या बिगाड़ना। या फिर नफरत या बलात्कार की विचारधारा हो सकती है
संदिग्ध।

कुरान ५/१०१: "उन चीजों के बारे में कोई सवाल न पूछें, जो अगर आपको स्पष्ट कर दी जाए, तो आपको नुकसान हो सकता है"
मुसीबत"। उन चीजों के बारे में बात न करें जहां सच्चाई इस्लाम के साथ संघर्ष कर सकती है या हमेशा नहीं
आपके धार्मिक अधिकारियों की सही दास्तां। मुस्लिम इमाम एफ. भूतपूर्व। मुहम्मद . में से तीन को बनाया
कार्टून बदतर हैं क्योंकि शुरुआत में मुसलमानों ने पर्याप्त प्रतिक्रिया नहीं दी (स्रोत: अल जज़ीरा .)
या अल अरेबिया - मुस्लिम टीवी प्रेषक !! हमने खुद कार्यक्रम देखा - एक कार्यक्रम के बारे में
पश्चिमी मीडिया और अगर मुस्लिम मीडिया उनसे कुछ सीख सकता है, इसके बावजूद
मुहम्मद कार्टून (मुस्लिम पत्रकारों का निष्कर्ष एक सर्वसम्मत हाँ था।))

लेकिन: गैर-मुसलमानों से दोस्ती न करें - कम से कम कोई करीबी दोस्त नहीं - या अल्लाह आपको सजा देगा।

वर्ष 614-615 ई. सूरह 25:

001 25/28: "आह! धिक्कार है मैं (मुस्लिम*)! क्या मैंने ऐसा कभी नहीं लिया होता (गैर-
मुस्लिम*) एक दोस्त के लिए!" मुहम्मद को अपनी शिक्षा शुरू करने में 4-5 साल लग गए, पहली बार तक
समय दिखाई दिया कि हम कुरान में पा सकते हैं, जहां मुहम्मद अपने समूह को अलग करना चाहते हैं
तौर पर।

[illegible] के लिए अपना है

वर्ष ६२१, सूरह ६:

००३ ६/६८: "- - - आप (मुसलमान*) गलत काम करने वालों की संगति में न बैठें (गैर-
मुसलमान*)" एक बहुत ही स्पष्ट आदेश। और साथी से संभावित सामाजिक प्रतिक्रियाओं की चेतावनी
मुसलमान।

वर्ष ६२१ ईस्वी, सूरह २८:

००४ २८/८६: "- - - उन लोगों को किसी भी तरह से समर्थन न दें जो (अल्लाह के संदेश) को अस्वीकार करते हैं।" जैसा
एक आदेश को ठीक ऊपर 6/68 के रूप में साफ़ करें।

वर्ष ६२१ ईस्वी, सूरह ११:

००५ ११/११३: "- - - और उन लोगों की ओर झुकना नहीं है जो गलत करते हैं (गैर-मुस्लिम*), या आग (नरक)
आपको आकार देगा - - -"। ग़ैर-मुसलमानों की तरफ़ झुकना इतना बड़ा गुनाह है कि इससे भी बुरा होता है
मौत की सजा।

वर्ष ६२५-६२६ ईस्वी, सूरह ६३:

006 63/4: "वे (पाखंडी/गैर-मुसलमान, नकली मुसलमान*) दुश्मन हैं - - -"। निश्चित रूप से
आपको उन लोगों से दोस्ती नहीं करनी चाहिए जिन्होंने इस्लाम को "नहीं, धन्यवाद" कहा है।

वर्ष ६२६ ईस्वी, सूरह ४:

007 4/89: "- - - उनके (पाखंडियों/गैर-मुसलमानों*) रैंक से कोई मित्र न लें"। सीधा आदेश।

००८ ४/१३९: "हाँ, उन लोगों के लिए जो विश्वासियों के बजाय अविश्वासियों को दोस्त बनाते हैं (आप नहीं करेंगे
अल्लाह से सम्मान प्राप्त करें *)" आपको गैर-मुसलमानों को दोस्त के रूप में रखने की अनुमति है - वास्तव में
दुनिया में इसे प्रतिबंधित करना असंभव है - लेकिन करीबी दोस्त नहीं। सामाजिक होने की संभावना से सावधान रहें
अल्लाह से मुक्ति और सजा।

००९ ४/१४४: "ईमान वालों के बजाय अविश्वासियों के लिए दोस्त मत लो: क्या तुम अल्लाह की पेशकश करना चाहते हो
अपने खिलाफ खुला सबूत?" यह वास्तव में एक मजबूत है: अच्छे दोस्त बनाने के लिए
गैर-मुसलमान इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि आप अच्छे मुसलमान नहीं हैं - यह तो अल्लाह के लिए भी नहीं
सभी मुस्लिम समाज का उल्लेख करें। यह कविता एक मजबूत सामाजिक दबाव नहीं दे सकती है
गैर-मुसलमानों से जुड़ें।

वर्ष ६२७-६२८ ईस्वी, सूरह ५८:

०१० ५८/१४: "तू (अच्छे मुसलमान*) अपना ध्यान उन (बुरे या लापरवाह) की ओर न मोड़ें
मुसलमान*) जो (दोस्ती में) ऐसे लोगों की ओर मुड़ते हैं, जिन पर अल्लाह का प्रकोप होता है (गैर-
मुसलमान*)?" ऐसा कुछ है जो आपको नहीं करना चाहिए। एक मुल्ला के लिए एक अच्छी कविता, एक कट्टर, अन
आपका दुश्मन आपको चोट पहुँचाने की कोशिश कर रहा है, जो किसी के खिलाफ निष्कासन शुरू करना चाहता है
कोई भी - एक मजबूत सामाजिक खतरा: बुरे गैर-मुसलमानों के साथ बहुत ज्यादा न घुलें। एक बहुत
संभावित कारण - दूसरों के बीच - क्यों कई संस्कृतियों में मुसलमान फिट नहीं होते हैं।

वर्ष ६२९-६३० ईस्वी, सूरह ६०:

011 60/1: "मेरा (अल्लाह या मुहम्मद का - "मेरा" "म" के साथ लिखा है, "म" नहीं, इसलिए मत लो
संभवतः मुहम्मद के *) शत्रु (गैर-मुस्लिम*) मित्र (या रक्षक) के रूप में - - -"। आपस में मिलना
गैर-मुसलमानों के साथ विचार या ज्ञान का परिणाम हो सकता है जो मुसलमानों के लिए अच्छा नहीं है - च।
भूतपूर्व। कि कुरान में बहुत सारी गलतियाँ और विरोधाभास हैं, या यह कि सभी गैर-मुस्लिम नहीं हैं
बुरे हैं।

012 60/1: "और आप में से कोई भी (मुसलमान*) जो ऐसा करता है (गैर-मुसलमानों से दोस्ती करना*)
सीधे रास्ते (इस्लाम*) से भटक गया है"। दोस्त बनाने के लिए - कम से कम अच्छे दोस्त - साथ
गैर-मुसलमान एक पाप और इस्लाम से विचलन है। आपको क्या लगता है कि इस तरह की एक कविता कैसे काम करती है
अन्य समाजों में मुसलमानों के एकीकरण की संभावना? - या गैर-मुसलमान बनने की कोशिश कर रहे हैं

एक मुस्लिम समाज में एकीकृत? - या मुसलमानों और अन्य लोगों के बीच संपर्क के लिए भी?

०१३ ६०/९: "अल्लाह केवल आपको मना करता है - - - उनकी ओर मुड़ने से (गैर-मुसलमानों के खिलाफ प्रयास करना) आप अपने विश्वास के लिए *) उनकी ओर मुड़ें (दोस्ती या सुरक्षा के लिए):" दोस्त मत बनो अपने विरोधियों और इस्लाम के विरोधियों के साथ।

०१४ ६०/१३: "उन लोगों की ओर (दोस्ती के लिए) न मुड़ें जिन पर अल्लाह का प्रकोप है (गैर-मुसलमान*):" अपने पैसे के लिए स्पष्ट शब्द।

वर्ष ६३१, सूरह ९:

015 9/16: "- - - मित्रों और संरक्षकों के लिए कोई भी (गैर-मुस्लिम*) न लें - - -"। यह शायद ही अधिक सीधे शब्दों में मुसलमानों और अन्य लोगों के बीच निकट संपर्क को मना करना संभव है।

०१६ ९/२३: "अपने पिता या अपने भाइयों की रक्षा करने के लिए मत लो, अगर वे ऊपर से बेवफाई से प्यार करते हैं" आस्था (= अच्छे मुसलमान नहीं हैं*)"। 9/16 के ठीक ऊपर हमारी टिप्पणी गलत है। यह वाला और भी अधिक प्रत्यक्ष और सख्त - - - और हृदयहीन है।

017 9/24: यदि आप किसी से या किसी चीज से प्यार करते हैं - बिल्कुल किसी से - अल्लाह से ज्यादा और मुहम्मद (!!), आपको सजा का खतरा है। यह उतना ही बुरा है जितना स्टालिन, हिटलर, माओ और पोल पॉट अपने चरम पर। और मैत्रीपूर्ण संपर्क - दोस्ती का जिक्र नहीं - गैर के साथ-मुसलमान नर्क की ओर जा रहे गीगाबाइट हैं।

018 9/114: "- - - उसने (अब्राहम - इस्लाम द्वारा मुस्लिम होने के लिए कहा*) खुद को उससे अलग कर लिया (अब्राहम के मूर्तिपूजक पिता*)" सावधान रहें कि हर कोई किसी भी सकारात्मक परिणाम से सावधान रहे कि कुरान बाइबिल से "उधार" लेता है, कुरान में मुसलमान के रूप में तब्दील हो जाता है - कोई भी, यहां तक कि यीशु और नूह और यूसुफ, और मूसा और सभी भविष्यद्वक्ता - और इब्राहीम।

अपने माता-पिता के साथ भी दोस्त मत बनो अगर वे मुसलमान नहीं हैं!

यह कुरान के दुखद बिंदुओं में से एक है - यहां तक कि एक केंद्रीय बिंदु: इस्लाम का मतलब होगा आपको बहुत कुछ, कि अगर आपका सबसे करीबी परिवार - बच्चे या माता-पिता - भी आपकी बात नहीं मानते हैं और मुसलमान बनो: उन्हें छोड़ दो और उन्हें भूल जाओ। इस्लाम में कट्टरता आदर्श होगी। एक जैसा कुरान में और जगहों पर बातें कही गई हैं - नूह को चाहिए कि च. भूतपूर्व। उसके बेटे को डूबने दो, क्योंकि बेटा कोई मुसलमान नहीं था (जिसे नूह कहा गया था !!) एक अच्छा और परोपकारी और इंसान धर्म।

केवल इस्लाम ही वास्तव में आपका सबसे करीबी दोस्त हो सकता है। कुछ नहीं और कोई नहीं - मुहम्मद को छोड़कर - मायने रखता है

859

पृष्ठ ८६०

वर्ष ६३२, सूरह ५:

०१९ ५/५१: "यहूदियों और ईसाइयों को न लें (पगानों का उल्लेख भी नहीं किया गया है*) दोस्त और रक्षक। " यदि लोगों को एक नेता (संभव) दुश्मन के रूप में या संभव के रूप में देखता है आक्रमण और दमन के विषय, आपकी तलाश करने के लिए बनाए गए हैं जैसे कुछ बुरा और वंचित और व्यक्तिगत रूप से दूरी पर रखा गया है, उस नेता के लिए अपना बनाना बहुत आसान है अनुयायियों का मानना है कि "वह कीड़ा" हमला करने और मारने और बलात्कार के योग्य है और दबा दिया गया और उनकी संपत्ति चोरी हो गई - खासकर अगर उसके बीच के योद्धा अनुयायियों को लूटने और बलात्कार करने और गुलाम बनाने और खुद को कीमती सामान और महिलाओं को चोरी करने की अनुमति है "उचित और सही"।

और बाहर से कोई आपस में मिलने से नेता भी उस जोखिम को बहुत कम कर देता है विषय अवांछित विचारों या तथ्यों से मिलते हैं। फिर: नहीं दोस्ती, धन्यवाद।

०२० ५/५७: "उन लोगों को मित्रों और रक्षकों के लिए न लें जो आपके धर्म का मजाक उड़ाते हैं और एक खेल - - -"। शब्द वाजिब हैं - लेकिन मुख्य बात यह है कि: लोगों से न मिलें जिनके पास अन्य विचार हैं या जो चीजों को जानते हैं।

०२१ ५/८०: "आप उनमें से बहुतों (मुसलमानों? *) को अविश्वासियों से दोस्ती करते हुए देखते हैं। - - -

(नतीजे के साथ) कि उन पर अल्लाह का कोप है---"। गैरों से दोस्ती से दूर रहें
मुसलमान। नहीं तो अल्लाह तुमसे नाराज़ होगा। एक स्पष्ट संदेश। क्या किसी ने एकीकरण में कहा? पश्चिम मुश्किल है?

०२२ ५/८१: "यदि केवल वे अल्लाह पर ईमान रखते, (मुहम्मद*) - - - में वे कभी नहीं करते (मुसलमान*) ने उन्हें (गैर-मुसलमान*) दोस्तों के लिए लिया है---"। यह सिर्फ दुखद है - अधिकांश धर्म आज शांति और उचित सद्भाव में एक साथ रहने में सक्षम हैं। लेकिन इस्लाम इतना झुक गया है सभी अमानवीय दूसरों के प्रति अरुचि और अन्य सभी धर्मों पर विजय प्राप्त करने और उसका दमन करने पर लोगों, वह सहवास मुश्किल है। इस्लाम वास्तव में केवल श्रेष्ठता चाहता है।

इस सूची में एक उपयुक्त अंतिम शब्द।

अध्याय V/3 के लिए पोस्ट स्क्रिप्ट।

साथ ही इस अध्याय में ६२२ ईस्वी में धर्म में उल्लेखनीय परिवर्तन देखा गया है। एक बात यह है कि कुछ 86 सूरहों में गैर-मुसलमानों के साथ दोस्ती को हतोत्साहित करने वाली केवल पांच जगहें हैं मक्का से मुहम्मद के शिक्षण के पहले 12 वर्षों को कवर करते हुए, 17 की तुलना में (यदि हमारे पास है) सभी पाया) सीए में। मदीना से 22 सूरह पिछले 10 वर्षों को कवर करते हैं।

इससे भी अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि औसतन हतोत्साहित करना अधिक कठोर हो गया। बहुत सख्त।

एक संभावित कारण यह है कि मुहम्मद ने कारवां से लूटना और चोरी करना शुरू कर दिया है युद्ध की तैयारी कर रहा है। हर बाहरी व्यक्ति को एक अमानवीय दुश्मन मानने वाला समूह बहुत आसान है नफरत को उकसाना - और युद्ध या आतंकवाद या डकैती में जाने की इच्छा।

क्या एक दृढ़ विश्वास रखने वाला रूढ़िवादी मुसलमान वास्तव में एक अच्छा और भरोसेमंद जर्मन बन सकता है नागरिक? - भले ही कई मुसलमानों ने हिटलर को पसंद किया - और पसंद किया।

7. मार्च। 09

भाग V, अध्याय 4, (= V-4-0-0)

कुरान के अनुसार इस्लाम के तहत गैर-मुस्लिम, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक

कुरान में उकसाने के लिए नापसंद और भेदभाव गैर-मुसलमान - हठधर्मिता भेदभाव, रंगभेद और कुरान में बदतर और इसलिए में इस्लाम

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

यह भी देखें कि "मुसलमान बेहतर हैं", "गैर-मुसलमानों से दोस्ती न करें", और "नापसंद, नफरत और दमन के लिए उकसाना"।

हम दो बातों पर जोर देते हैं:

1. कुरान यही कहता है - क्या नहीं

कुछ मुस्लिम राज्यों की सरकारें कहती हैं
2. हम जितने मुसलमानों से मिले हैं, उनमें से अधिकांश रहते नहीं हैं
सबसे सख्त नियमों के अनुसार। वे बस
आप और मेरी तरह ही जीना और जीने देना चाहते हैं।
(लेकिन बेशक पुरानी समस्या है: How to
जानिए कौन अच्छा है और कौन एक (संभावित)
आतंकवादी - या आतंकवादियों का सहायक?) I - the
सिर्फ इस अध्याय के लेखक - कम से कम कुछ
दोस्त और कई परिचित जो
मुसलमान हैं, और वे भी उतने ही इंसान हैं
तुम और मैं।

इन चारों अध्यायों को सूरह की अनुमानित आयु के अनुसार व्यवस्थित किया गया है, आंशिक रूप से
क्योंकि यह देखना दिलचस्प है कि मुहम्मद/इस्लाम के दृष्टिकोण में कोई विकास हुआ है या नहीं
उन २३ वर्षों में देखें, और आंशिक रूप से क्योंकि इस्लाम में निरसन नियम के अनुसार, यदि वहाँ
कुरान में दो या दो से अधिक छंद हैं जो अलग-अलग बातें कहते हैं, सबसे पुराना अमान्य है और
सबसे छोटा क्या मायने रखता है - इसलिए गैर-मुसलमानों के लिए भी यह जानना आवश्यक है कि कौन से हैं
वास्तविक नियम, यह और भी अधिक है क्योंकि सबसे कम उम्र के नियम अक्सर सबसे सख्त होते हैं।

इस्लाम के अनुसार जीने वाले गैर-मुसलमान कितने बुरे हैं, इस बारे में बहुत बदनामी है
और इसके लिए उन्हें कैसे दंडित किया जाएगा - उन्हें नीचा दिखाने का एक अच्छा कारण। हम छोड़ते हैं

उनमें से अधिकांश, और (जो बन जाते हैं) मुसलमानों और उनके लिए सबसे सुखद अंत भी
बहुत बुरा अंत जो हमेशा गैर-मुसलमानों के साथ पकड़ में आता है - कहानियों को मजबूत करने के इरादे से
मुसलमानों और उनके मतधारकों की नैतिकता - और मुख्य रूप से अधिक प्रत्यक्ष पर ध्यान केंद्रित करना
गैर-मुसलमानों और मुसलमानों के बीच संबंध।

वर्ष ६१० से ६२२ - कुछ ८६ सूरह:

यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि मुहम्मद के मदीना भाग जाने से पहले के सभी वर्षों में शायद ही कोई
इस बारे में एक शब्द भी कि गैर-मुसलमान मुसलमानों के लिए खतरा थे, या इसका एक कारण था
उनसे नफरत है या ऐसा कुछ भी। गैर-मुसलमान इस मायने में बुरे थे कि वे आपको चाहते थे
मुहम्मद और मूर्ख को छोड़ने के लिए क्योंकि उन्होंने यह नहीं देखा कि मुहम्मद सच बोल रहे थे -
यह उल्लेख नहीं करने के लिए कि वे मूर्ख थे जिन्हें सबूत मांगना था। एक मामूली उल्लेख है
संघर्ष में उनसे मिलने की संभावना (१६/११०), लेकिन इसका मतलब बौद्धिक संघर्ष भी हो सकता है।
बस इतना ही हम पाते हैं। (यदि हमने कुछ भी अनदेखा किया है, तो कृपया हमें सूचित करें)। गैर-मुसलमानों को चाहिए
दोस्तों के लिए भी नहीं चुना जाता है, और निश्चित रूप से मुसलमान बहुत बेहतर गुणवत्ता वाले हैं। लेकिन इसमें
अवधि नफरत या दमन या हत्या या दासता या बलात्कार के लिए कोई उत्तेजना नहीं है या
हत्या या युद्ध।

लेकिन जैसे ही मुहम्मद मदीना पहुंचे, इन पर अचानक से धर्म परिवर्तन हो गया
अंक। पहले से ही पद संख्या में। 4 सूरह 47 में - नहीं। 47 आंशिक रूप से मदीना से होने की संभावना है और नहीं। 2
वहाँ से पहली पूरी तरह से। यह सब खून है ("उनके गले में मारना") और युद्ध और आतंक और
धन उगाही की संभावना।

मुहम्मद को हाइवेमेन और बाद में योद्धाओं की जरूरत थी।

(मुसलमान अक्सर वर्षों को लुटेरों और हत्यारों और जबरन वसूली करने वालों के रूप में प्रार्थना करते हैं
मुख्य रूप से और मक्का से कारवां पर, इसके साथ ही यह उस युद्ध का हिस्सा था जिसे मक्का ने मजबूर किया था
मदीना में मुसलमान। विनम्र होना गलत है। मक्का से छुटकारा पाकर ही बहुत खुशी हुई
मुहम्मद और उनके अनुयायी, और मुहम्मद नहीं तो खुशी-खुशी मदीना में उन्हें अकेला छोड़ दिया था
बार-बार उनके कारवां लूटे, कारवां के कुछ आदमियों को मार डाला और
दूसरों को बंदी बना लिया और उन्हें जिंदा रिहा करने के लिए पैसे की उगाही की। डकैती नहीं थे
युद्ध के कारण - युद्ध की शुरुआत खूनी और चोर व्यवहार के कारण हुई
मुसलमान।)

वर्ष ६२२ ईस्वी (मदीना), सूरह ४७:

***001 47/4: "इसलिए (क्योंकि अल्लाह इसे चाहता है !! - 47/3 * देखें), जब आप अविश्वासियों से मिलते हैं
(लड़ाई में), उनकी गर्दन पर मारना; अंत में, जब तुम उन्हें पूरी तरह से अपने वश में कर लो, तो एक बंधन बांधो

दृढ़ता से (उन पर)। उसके बाद या तो उदारता या फिरौती का समय है - - -"। कोई टिप्पणी नहीं
कोई आवश्यक नहीं। सिवाय इसके कि "(लड़ाई में)" शब्द अनुवादक द्वारा हमारे . के अनुसार जोड़े जाते हैं
aources - अरब में केवल गैर-मुसलमानों से मिलने पर मारने का आदेश है।

00a 47/23: "ऐसे पुरुष (गैर-मुस्लिम*) हैं जिन्हें अल्लाह ने शाप दिया है - - -"। और जब अल्लाह
उन्हें शाप दिया है, वे निश्चित रूप से केवल तिरस्कार के योग्य हैं।

००बी ४७/२९: "--- जिनके दिल में बीमारी है (=गैर-मुसलमान*)---"। एक बीमारी के साथ
वे निश्चित रूप से बहुत कम मूल्य के हैं।

वर्ष ६२२-६२४ ई. मुख्य रूप से (छंद २७५-२८१ ई. ६३२ ईस्वी), सूरह २:

002 2/11: "निश्चित रूप से, वे (गैर-मुस्लिम*) शरारत करने वाले हैं"। एक साफ
भेद - और छापे मुसलमान पहले से ही बना रहे थे - और आगे का पालन करने के लिए - नहीं था
शरारत?

००३ २/१८: "बहरे, गूंगे और अंधे - वे ("काफिर", धर्मत्यागी *) वापस नहीं आएंगे (इस्लाम में *)"।
हाँ, उन्हें बहरा, गूंगा और अंधा होना चाहिए, अगर वे कुरान में जो कुछ भी गलत है, उस पर सवाल उठाते हैं। ए
उन्हें नीचा दिखाने का कारण।

००४ २/९९: "- - - कोई भी (कोई मुस्लिम*) उन्हें अस्वीकार नहीं करता (अल्लाह की निशानियाँ - हालाँकि उनमें से एक भी नहीं है)
वे अल्लाह के लिए तार्किक रूप से मान्य प्रमाण हैं, क्योंकि कहीं भी यह साबित नहीं होता है कि अल्लाह पीछे है
उन्हें*) लेकिन वे (गैर-मुस्लिम*) जो विकृत हैं"। अच्छे मुसलमानों के बीच की दूरी
और बुरे गैर-मुसलमान बढ़ते हैं - बाद वाले भी विकृत होते हैं !!! (उल्लेख नहीं है
स्थिति अगर वे पुस्तक के लोगों के भी नहीं हैं - यहूदी, ईसाई और सबियन
(सबा दक्षिण यमन में एक ईसाई देश था - वे पूर्वी अफ्रीका के माध्यम से ईसाई बन गए थे,
और शायद ग्रीक कैथोलिक से थोड़ा अलग अरब अन्य स्थानों से मिले। इस्लाम अक्सर
Sabeans के लिए अन्य स्पष्टीकरण का उपयोग करता है)।

विकृत "जानवरों" को दबाने या लूटने या बलात्कार या मारने का कोई कारण नहीं है !!??

००५ २/१९१: "- - - और जहाँ कहीं भी आप उन्हें (गैर-मुस्लिम*) पाते हैं, उन्हें मार डालें और उन्हें बाहर निकाल दें
उन्होंने तुझे कहाँ से निकाला है।" कि मुसलमान उस जमीन को फिर से ले लें जिस पर उन्होंने एक बार विजय प्राप्त की थी
सही और न्यायपूर्ण प्रतीत होता है - कोई फर्क नहीं पड़ता कि उन्होंने खुद, एक बार इसे किसी और से लिया था।
लेकिन भारत में हिंदू अपना अब "छोटा" देश चाहते हैं - याद रखें कि भारत एक बार (जब तक)
1947) जो अब पाकिस्तान, भारत और बांग्लादेश थे - शासित होने के बजाय और
मुसलमानों द्वारा कुशासन बहुत बुरा है; हिंदुओं से नफरत और अधिकांश मध्य पूर्व में शामिल हैं
मिस्र और तुर्की कभी ईसाई थे। लेकिन जब ईसाई सौ साल के लिए एक बार फिर
क्षेत्र के प्रभुत्व वाले हिस्सों में, ईसाई अब तक के सबसे बुरे लोग थे। उनसे नफरत करो और उन्हें मार डालो।
और इंडोनेशिया में बौद्ध: जब वे "हम" से बेहतर करते हैं - उनसे नफरत करते हैं और उन्हें मार देते हैं
(इंडोनेशिया में विशेष रूप से चीनियों के खिलाफ नरसंहार में 200 से अधिक लोगों की जान चली गई है
सदी)। और जब पूर्वी तिमोर में ईसाइयों ने बहुत अधिक मुस्लिम दमन किया था
और मुक्त होने की मांग की: हजारों हत्याएं (अनुमानित 102.800 से मृत शामिल हैं .)
विकिपीडिया के अनुसार बीमारी से भूख और "मृत्यु") - यह वैध और न्यायसंगत है।
और जब इंडोनेशिया में मुसलमान पूर्वी तिमोर में हत्या नहीं करते हैं, तो वे हिंदुओं और ईसाइयों पर बमबारी करते हैं
बाली और अन्य स्थानों में। स्पेन को वापस लेने के बहुत गुप्त सपनों का उल्लेख नहीं करना और
दक्षिण पूर्व यूरोप "क्योंकि यह मुस्लिम भूमि हुआ करती थी, और हमें उन लोगों को बाहर करना चाहिए जो"
इसे हमसे ले लिया" - ओह, हाँ, हमने इसे सुना है।

जहां तक पूर्वी तिमोर की बात है तो इतिहास काफी सोचनीय है। इंडोनेशिया काफी सभ्य है
देश, और वैसे ही उन्होंने वैसा ही व्यवहार किया - और अपने स्वयं के चीनी के खिलाफ समान
पीढ़ियों से इंडोनेशियाई थे। इससे भी बदतर: इसमें से कुछ नियमित सेना द्वारा किया गया था या
सेना द्वारा रोका जा सकता था (वही पाकिस्तानी अमानवीयता के लिए जाता है
उस युद्ध में बांग्लादेश)। इसका मतलब है कि हम उत्तेजित मुसलमानों या नियमित मुस्लिमों की उम्मीद नहीं कर सकते हैं
सेनाएँ आज भी अन्य स्थानों पर बहुत बेहतर व्यवहार करती हैं।

और यह शायद ही अजीब बात है कि यह एक सपना है, क्योंकि इस्लाम का आधिकारिक लक्ष्य दुनिया पर हावी होना है
पूरी दुनिया, और सभी गैर-मुसलमानों का दमन और कर। जरा कुरान पढ़ो और देखो - कहा है
वहां।

यदि मुस्लिम क्षेत्र में गैर-मुस्लिमों का वर्चस्व है - उनसे घृणा करो और उन्हें मार डालो, ताकि मुसलमान हावी हो सकें और बचे लोगों को निष्पक्ष और न्यायपूर्ण तरीके से दबाएं और कर दें। निष्पक्ष खेल का मुस्लिम तरीका?

००७ २/२१७: "--- (मुसलमानों के*) कोलाहल और ज़ुल्म वध से भी बदतर हैं (गैर-मुसलमान*)"। यह सही है कि इस आयत में मूल रूप से मक्का के शासकों के बारे में कहा गया था। परंतु जैसा कि इस्लाम लगभग हमेशा कहता है: कुरान में जो कहा गया है, वह ज्यादातर समान स्थितियों के लिए जाता है हर जगह और किसी भी समय।

एक प्रभावशाली बात यह है कि कुरान सभी मुसलमानों को दबाने और कर लगाने और सभी को वश में करने का आदेश देता है पूरी दुनिया में गैर-मुसलमानों को जब और जब वे सक्षम होते हैं। नीचे 8/39 देखें।

वर्ष ६२४ ई., सूरह ८:

००८ ८/३९: "और उनसे (गैर-मुसलमानों) तब तक लड़ो जब तक कि कोई और कोलाहल या उत्पीड़न न हो, और अल्लाह में पूरी तरह और हर जगह न्याय और विश्वास कायम है - -"। हम इसे शामिल करते हैं युद्ध के बारे में अध्याय से, इस बात पर जोर देना कि युद्ध के लिए उकसाना भी नफरत के लिए उकसाना है। आप इस प्रकार गैर-मुसलमानों के खिलाफ घृणा, घृणा और भेदभाव के लिए बहुत अधिक उत्तेजना पाते हैं इसमें जो उल्लेख किया गया है उसके अलावा अध्याय। वही अध्याय "मुसलमान हैं" के लिए जाता है बेहतर" और "गैर-मुसलमानों से दोस्ती न करें"।

009 8/73: "अविश्वासी रक्षक हैं, एक दूसरे के - - -"। के खिलाफ एक साथ रहो गैर मुस्लिम।

वर्ष ६२५ ईस्वी मुख्य रूप से (कुछ छंद ६३१ ईस्वी), सूरह ३:

०१० ३/७५: "वे (ग़ैर-मुसलमान*) अल्लाह के ख़िलाफ़ झूठ बोलते हैं"। कोई टिप्पणी आवश्यक नहीं है।

०११ ३/११०: "उनमें से अधिकांश (यहूदी और ईसाई*) विकृत अपराधी हैं।" हाँ, एक करना है पुराने के भगवान में विश्वास करने के लिए विकृत हो - एक भगवान जो उनकी पवित्र पुस्तक के अनुसार है यहूदियों की तरह कई बार अपनी शक्ति प्रकट की, या हजारों द्वारा समर्थित पुस्तक में गवाहों (हालांकि इन दोनों मामलों में कुछ या विवरण गलत हो सकता है), की तुलना में एक मध्यम बड़े व्यवसायी में विश्वास करते हैं जो सत्ता को ज्यादा पसंद करते हैं, और इसके अलावा एक राजमार्ग कौन है आदमी, जबरन वसूली करने वाला, महिला बनाने वाला, बलात्कारी, यातना देने वाला, गुलाम बनाने वाला, गुलाम का सौदागर (बेचने या देने के लिए) अपने २०% गुलामों को रिश्वत देता है), हत्यारा, हत्यारा, सामूहिक हत्यारा, उसकी बातों को तोड़ने वाला (च. उदा. उन लोगों की हत्या करना जिन्हें उसने शांति वार्ता के दौरान सुरक्षा की गारंटी दी थी) और घृणा को भड़काना, भेदभाव और युद्ध - एक आदमी किसी भी तरह से समर्थित निराधार कहानियों को बताने के अलावा और कुछ करने में सक्षम नहीं है अमान्य और यहां तक कि गलत "संकेत" और "सबूत" द्वारा - ऐसी कहानियां जो सबसे ऊपर कई दर्शाती हैं धोखेबाज, धोखेबाज और धोखेबाज की पहचान। (मुसलमान: यह कोई बदनामी नहीं है - तथ्य हैं मुहम्मद के बारे में बताने और उनकी प्रशंसा करने के लिए इस्लाम की अपनी किताबों से लिया गया - इसमें केवल चीनी की कमी है दूर समझाने और वीरता का कोट। मिलने पर नाराज होने का कोई कारण नहीं है आपकी अपनी किताबों से बहुत सादा सत्य)।

हाँ, यहूदियों, ईसाइयों और उस मामले के लिए पगानों को विकृत होना होगा कि वे आधार पर विश्वास न करें ऐसे - अप्रमाणित - शब्द। और उसके आदेश पर मारने और आतंकित न करने के लिए।

०१२ ३/११८: "- - - वे (गैर-मुस्लिम*) आपको (मुसलमान*) भ्रष्ट करने से नहीं चूकेंगे"। अच्छा नहीं लोग।

०१३ ३/११८: "वे (गैर-मुस्लिम*) केवल आपके (मुसलमान*) को बर्बाद करने की इच्छा रखते हैं - - -"। एक अच्छा है ऐसे लोगों का तिरस्कार करने का कारण।

०१४ ३/११८: "- - - उनके (गैर-मुसलमानों) से रैंक नफरत (मुसलमानों की) पहले ही सामने आ चुकी है। मुंह - - -"। क्या बदतर इंसानों को खोजना संभव है?

०१५ ३/११८: "- - - जो उनके (गैर-मुस्लिम*) दिल छुपाते हैं, वह कहीं ज्यादा बुरा है (रैंक नफरत से भी बदतर) मुसलमानों के खिलाफ*) - - -"। नहीं, गैर-मुसलमानों से बदतर कोई नहीं मिल सकता।

०१६ ३/११९: "- - - वे गुस्से में आप पर अपनी उँगलियाँ काटते हैं (यदि आप किसी तरह से भाग्यशाली हैं) या अन्य*)"। नीच लोग।

०१७ ३/१२०: "यदि आप (मुसलमानों) पर कुछ भी अच्छा होता है, तो यह उन्हें (गैर-मुस्लिम*) दुखी करता है - - - " निर्दयी साथियों।

०१८ ३/१२०: "- - - लेकिन अगर कोई दुर्भाग्य आप (मुसलमानों) पर हावी हो जाता है, तो वे (गैर-मुसलमान*) उस पर आनन्दित हों"। नापसंद करने का एक अच्छा कारण है - या इससे भी बदतर - उन्हें।

०१९ ३/१४९: "यदि तुम (मुसलमान) अविश्वासियों की बात मानोगे, तो वे तुम्हें तुम्हारे चंगा करने के लिए पीछे कर देंगे - - - " अच्छा नहीं।

वर्ष ६२५-६२६ ईस्वी शायद, सूरह ६:

०२० ६१/७: "उनका (अधर्म करने वालों का) इरादा अल्लाह के प्रकाश को बुझाना है - - -" घृणास्पद।

वर्ष ६२५-६२९ ईस्वी - इसकी अधिकांश संभावना ६२७-६२९ ईस्वी, सूरह ३३:

०२१ ३३/६०: "वास्तव में, यदि पाखंडी, और जिनके दिलों में एक बीमारी है (गैर-मुसलमान) - - - नहीं चाहते - - - वे इसमें (एक शहर) आपके पड़ोसियों के रूप में किसी भी लम्बाई के लिए नहीं रह पाएंगे समय की - -"। बुरे लोगों को भगाना है।

***022 33/61: "(पाखंडी और गैर-मुस्लिम और अशांति फैलाने वालों*)
उन पर पाठ्यक्रम: जहां कहीं वे पाए जाते हैं, वे आकार और मारे जाएंगे (दया के बिना) "।
अधिक स्पष्ट रूप से यह बताना कठिन है - और कौन तय करे कि अशांति क्या है और कौन शुरू करता है और इसे जारी रखता है? पोग्रोम्स होते हैं - एफ। भूतपूर्व। इंडोनेशिया और मलेशिया में चीनी के खिलाफ बहुत पहले नहीं - वे मुसलमानों की तुलना में अधिक अमीर थे (चीनी अधिक काम करते हैं और अक्सर अधिक शिक्षा प्राप्त करते हैं)। क्या दूसरों के खिलाफ अशांति होगी क्योंकि वे मुसलमानों से कहीं ज्यादा अमीर हैं? भविष्य? - या सिर्फ इसलिए कि गैर-मुसलमानों को कभी भी मुस्लिम का बॉस नहीं होना चाहिए (इसकी संभावना नहीं है) आज एक नियम हो, शायद रूढ़िवादी क्षेत्रों को छोड़कर, लेकिन यह एक नियम के लिए हुआ करता था सैकड़ों साल कई जगह)?

०२३ ३३/६२: "ऐसे (गैर-मुसलमानों को मारने के लिए जो इस्लाम के दमन के कानूनों के अनुसार नहीं रह रहे हैं) गैर-मुस्लिम*) पहले से रहने वालों में अल्लाह की प्रथा (अनुमोदित) थी: नहीं क्या आप अल्लाह (अभी या भविष्य में) के अभ्यास (अनुमोदित) में परिवर्तन पाएंगे"। अगर इस्लाम/मुसलमान कुछ समय के लिए काफी मजबूत हो जाते हैं, यही उम्मीद की जाती है, उनके पवित्र के अनुसार किताब। आज दुनिया कैसी दिखती, अगर औद्योगिक क्रांति अपने श्रेष्ठ हथियारों के साथ, जहाजों और आर्थिक और सैन्य श्रेष्ठता मुस्लिम क्षेत्र में हुई थी? - इस्लाम के पास नहीं है दूसरों को दबाने के खिलाफ नैतिक, नैतिक, सहानुभूतिपूर्ण, वैचारिक या दार्शनिक विचार लोग - इसके विपरीत यह एक धार्मिक कर्तव्य है। वास्तव में इस्लाम का कोई नैतिक या नैतिक नहीं है दर्शन बिल्कुल - जो कि 1100 ईस्वी से पहले एक बार और सभी के लिए धर्म द्वारा तय किया गया था, अल के साथ ग़ज़ाली - "मुहम्मद के बाद सबसे बड़ा मुस्लिम" - कब्र खोदने वाले के रूप में अपनी पुस्तक "The ." के साथ दार्शनिकों की असंगति" (कुछ और समय के लिए कुछ विचारक थे - लगभग 100 .) अधिक वर्ष - स्पेन में, लेकिन मुख्यधारा के इस्लाम पर उनका बहुत कम प्रभाव पड़ा)।

वर्ष ६२९ ईस्वी, सूरह ६६:

024 66/9: "हे पैगंबर (मुहम्मद*)! अविश्वासियों और पाखंडियों के खिलाफ कड़ी मेहनत करो, और उनके खिलाफ दृढ़ रहो। " और मुहम्मद सभी मुसलमानों के लिए उदाहरण हैं।

वर्ष ६२९-६३० ईस्वी - सबसे अधिक संभावना ६३० ईस्वी पूर्व, सूरह ६०:

०२१ ६०/४: "आपके लिए (मुसलमान*) इब्राहीम में एक उत्कृष्ट उदाहरण (अनुसरण करने के लिए) है और

जो उसके साथ थे, जब उन्होंने अपने लोगों से कहा: 'हम तुमसे और जो कुछ भी तुम से स्पष्ट हैं
अल्लाह के सिवा इबादत करो: हमने तुम्हें ठुकरा दिया है, और हमारे और तुम्हारे बीच, पैदा हो गया है,
दुश्मनी और नफरत हमेशा के लिए - जब तक कि आप केवल अल्लाह और उसी पर विश्वास नहीं करते' - - "। उसे याद रखो
इस्लाम अक्सर और स्पष्ट रूप से बताता है कि कुरान में एक संदर्भ में जो कहा गया है, वह लगभग हमेशा होता है
सामान्य और सार्वभौमिक अर्थ और मूल्य। शब्दों को गलत समझना संभव नहीं है।

एक अतिरिक्त बिंदु: अच्छे मुसलमान के लिए एक और धर्म होना काफी है (इस्लाम के अनुसार)
"हमेशा के लिए दुश्मनी और नफरत" महसूस करने के लिए। बल्कि एक विचारोत्तेजक जानकारी है।

०२५ ६०/6: "वास्तव में उनके लिए (अब्राहम और 60/4* में उसके लोग) एक उत्कृष्ट थे
आपके (मुसलमान*) अनुसरण करने के लिए उदाहरण - - -।" ऊपर 60/4 देखें। और टिप्पणी नहीं
आवश्यक।

वर्ष ६३१ ईस्वी - आयु हालांकि निश्चित नहीं है, सूरह ९:

026 9/8: "- - - उनमें से अधिकतर (गैर-मुस्लिम*) विद्रोही और दुष्ट हैं"। नापसंद करना सामान्य है
और दुष्ट लोगों से दूर रहो। सलाह का एक भगवान टुकड़ा।

०२७ ९/२८ (११८): "वास्तव में पगान (लोग न तो मुसलमान हैं और न ही यहूदी और न ही ईसाई) हैं
अशुद्ध - - - "और कुरान में जो कहा गया है वह आज भी और हमेशा के लिए मान्य है। दौरान
मुस्लिम सैन्य विस्तार, बुतपरस्तों के साथ अक्सर बहुत कठोर व्यवहार किया जाता था - द्वारा मार दिया जाता था
हजारों और यहां तक कि हजारों की संख्या में f. भूतपूर्व। सिंध और शेष भारत में। से भी
अफ्रीका में बुरी अफवाहें हैं, लेकिन हम विश्वसनीय संख्या नहीं ढूंढ पाए हैं।

****028 9/29: "उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह पर विश्वास नहीं करते - - - जब तक वे जजिया (अतिरिक्त कर *) का भुगतान नहीं करते हैं
इच्छुक समर्पण के साथ, और खुद को वश में महसूस करते हैं ”। सबसे कोमल शब्द संभव:
भेदभाव। और जजिया अक्सर ऊंचा होता था।

०२९ ९/३२: "बेहोश क्या वे (ईसाई*) अल्लाह के प्रकाश को अपने मुँह से बुझा देंगे - - -"।
बुरे और घृणित लोग।

वर्ष ६३१:

०३० ४९/७: "- - - उसने (अल्लाह*) ने तुमसे (मुसलमानों*) को घृणा की - - -"। नफ़रत करना
अधिकांश लोगों के लिए अविश्वास का अर्थ अविश्वासियों/गैर-मुसलमानों से घृणा करना है।

वर्ष ६३२, सूरह ५:

०३१ ५/५२: "जिनके दिल में बीमारी है - - -"। यदि आप एक अच्छे मुसलमान नहीं हैं, तो एक
आप में रोग।

०३२ ५/६२: "वास्तव में बुराई वही है जो वे (यहूदी और ईसाई*) करते हैं।" कोई टिप्पणी नहीं, सिवाय
कि तुम ऐसे लोगों से घृणा करो और घृणा करो।

०३३ ५/८०: "बुराई वास्तव में (काम) हैं जो उनके (मुसलमानों से संपर्क / दोस्ती चाहते हैं)
ग़ैर-मुस्लिम*) आत्माओं ने उनके आगे आगे भेजा है, (जिसका नतीजा है कि अल्लाह का प्रकोप जारी है .)
उन्हें - -*)"। केवल गैर-मुसलमानों से संपर्क/दोस्ती लेने के लिए अल्लाह आपसे नाराज़ हो जाता है।
कोई टिप्पणी नहीं।

वर्ष अनिश्चित, सूरह 98:

०३४ ९८/६: "वे (गैर-मुस्लिम*) सबसे बुरे प्राणी हैं"। एक उपयुक्त अंतिम उद्धरण?

अध्याय V/4 के लिए पोस्ट स्क्रिप्ट।

इस अध्याय में हमने कुछ छंदों को सूचीबद्ध किया है - लेकिन सभी से दूर - नापसंद करने के लिए उकसाने के लिए,
भेदभाव, घृणा, आदि, जो अन्य अध्यायों में फिट नहीं होते (और कुछ जो फिट होते हैं)। आप पाएंगे
अधिक यदि आप पुस्तक पढ़ते हैं, खासकर यदि आप तथाकथित पाखंडियों को भी शामिल करते हैं, जिन्हें हम
ज्यादातर छोड़ दिया है।

इसके अलावा आप युद्ध के बारे में अध्यायों में इसके बारे में बहुत कुछ पाएंगे - जिसमें बहुत कुछ है
घृणा, भेदभाव और घृणा के लिए उकसाना - भेदभाव ("मुसलमान बेहतर हैं",
"गैर-मुसलमानों से दोस्ती न करें"), और मुसलमानों में गैर-मुसलमानों के बारे में छोटा
राज्यों। और उन सभी उत्तेजनाओं को न भूलें जो नापसंद, घृणा, भेदभाव और देखने के लिए हैं
ग़ैर-मुसलमानों पर थोपा गया है, जो कि सभी सैकड़ों ढीले-ढाले बयानों में पाया जाता है कि कैसे
अल्लाह के अनुसार बुरे गैर-मुसलमान हैं, और वह उन्हें क्या दंड देगा। इनमे से
इतने सारे हैं, और बहुत से देखने में इतने आसान हैं, कि हमने उन्हें सूचीबद्ध करने की जहमत नहीं उठाई -
पहली बार कुरान पढ़ने पर कोई भी एक लंबी सूची बना सकता है। एक प्रभावशाली
मैत्रीपूर्ण धर्म।

कुरान अच्छे शब्दों और शांति और ऐसी चीजों के बारे में बहुत कुछ कहता है। एक हद तक यह अंदर से सच है
मुस्लिम समुदाय - जब तक "अन्य" आपके संप्रदाय से बहुत अलग संप्रदाय से संबंधित नहीं हैं
अपना।

लेकिन गैर-मुसलमानों के प्रति इस्लाम घृणा, भेदभाव, दमन, घृणा और युद्ध की शिक्षा देता है।
और कुरान के अनुसार दासता, यदि नहीं तो पश्चिम ने आधिकारिक दासता बना ली थी
असंभव। (आधिकारिक तौर पर स्वीकृत दासता को समाप्त करने वाला अंतिम मुस्लिम राज्य मॉरिटानिया था
१९८२ ईस्वी के अंत में - और यह अविश्वसनीय २००७ तक एक दंडनीय अपराध नहीं बन पाया
एडी !!) हम आधिकारिक कहते हैं, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र के अनुसार आज (संख्या .) हैं
2007 की शुरुआत में जारी किया गया) कुछ 24 मिलियन गुलाम या गुलाम जैसी परिस्थितियों में रहने वाले लोग
दुनिया में - मुस्लिम देशों में उनमें से काफी बड़ी संख्या में (लेकिन पश्चिम - और बहुत कुछ)
स्थान - "सफेद" भी नहीं हैं: उनमें से कुछ 700.000 यूरोप में रहते हैं (पूर्वी यूरोप सहित) -
हमने यूएसए के लिए संख्याएं नहीं देखी हैं।)

मुसलमान अच्छे शब्द बोलते हैं - लेकिन पढ़ाते हैं और उपदेश देते हैं और अधिकांश जगहों पर जहां वे सत्ता में हैं, भी
भेदभाव के बारे में कुरान में कहीं अधिक भयावह वाक्यों के अनुसार जीना, देखना
नीचे, अलगाव (उन देशों में जहां उनके पास शक्ति नहीं है वे अक्सर नहीं चाहते हैं
बुरे "काफिरों" के साथ मिलना), और इससे भी बदतर। कुछ हद तक संभावित अपवाद देश हैं जैसे
मलेशिया और कुछ देश जहां रूढ़िवादी इस्लाम बहुत मजबूत नहीं है। लेकिन की शिक्षा
कई मदरसों (धार्मिक स्कूलों) में गैर-मुसलमानों के खिलाफ नफरत आम नहीं है
मुस्लिम समुदाय।

और किस लिए? अल-अजहर अल-शरीफ द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक .)

867

पेज ८६८

ऐसे विषय) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं
अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि
अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है
के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है। अगर कोई अल्लाह नहीं है
और/या मुहम्मद और एक ईश्वर के बीच कोई संबंध नहीं है, तो इस्लाम क्या है?

२६.२.०९

भाग V, अध्याय 5, (= V-5-0-0)

कुरान के अनुसार इस्लाम के तहत गैर-मुस्लिम, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक

इस्लाम और गुलामों के अनुसार कुरान

(इस्लाम दुनिया में सबसे बड़ा गुलाम मालिक और गुलाम व्यापारी था, शायद कुछ में नीग्रो को छोड़कर अफ्रीकी नीग्रो राज्य।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

यह भी देखें कि "मुसलमान बेहतर हैं", "गैर-मुसलमानों से दोस्ती न करें", और
"नापसंद, नफरत और दमन के लिए उकसाना"।

आज आप कई मुसलमानों से मिलते हैं जो बहुत ऊर्जा के साथ पीछे हटते हैं जब कोई इसका उल्लेख करता है
शब्द "गुलाम"। वे आपको बता सकते हैं कि मुहम्मद और इस्लाम हमेशा गुलामी को रोकने का इरादा रखते थे।
वे आपको बता सकते हैं कि काली दासता का मतलब अमेरिका था, और यह कि केवल कुछ ही मुस्लिमों में समाप्त हुए
देश। वे यह भी दावा कर सकते हैं कि मुसलमानों ने यूरोप को गुलामों के इस्तेमाल को खत्म कर दिया। या
कि दासों के साथ इतना अच्छा व्यवहार किया जाता था कि वे भागना या घर नहीं जाना चाहते थे।

दुखद सच्चाई यह है कि न तो मुहम्मद, न कुरान, न हदीस और निश्चित रूप से इस्लाम या
मुसलमानों ने कभी भी गुलामी को रोकने या एक संस्था के रूप में इसे खत्म करने की थोड़ी सी भी मंशा दिखाई। -
नहीं ओ!!! अल्लाह ने इसे स्वीकार किया और मुहम्मद ने इसका अभ्यास किया और इस्लाम ने कहा कि यह अच्छा और वैध था
और मुसलमानों ने उस पर पैसा कमाया। हाँ, कुरआन और हदीस में गुलामी को इतना स्वीकार किया गया है, और
इस्लाम में इस कदर स्वीकार किया गया था कि रूढ़िवादी मुस्लिम समाजों में आज भी का अंत
दासता को एक "नए विचार" के रूप में देखा जा सकता है - और याद रखें कि कुछ अपवादों के साथ ("अच्छा नया"
विचार" कुरान के अनुसार) - आज भी "नए विचारों" को गैर-इस्लामी माना जाता है
और रूढ़िवादी क्षेत्रों में विधर्म।

यूरोप में गुलामी एक हजार साल पहले या उससे थोड़ी कम हो गई थी, यह इस बात पर निर्भर करता है कि यूरोप में कहां है।
और यह अफ्रीका और हमारे बीच मुसलमानों के कारण नहीं मरा। एक बात के लिए व्यापार है
विभिन्न संस्कृतियों के बीच भी हमेशा संभव है यदि दोनों हिस्से इस पर पैसा कमाते हैं, और दूसरे के लिए
हमारे दास दक्खिन से नहीं, पूर्व से आए थे - तुम क्या समझते हो कि उन्हें क्यों बुलाया गया?
गुलाम नहीं तो ? (वे स्लाव जाति के थे।) यह आंशिक रूप से मर गया क्योंकि इसने अच्छी तरह से भुगतान नहीं किया था
हर साल गर्मियों में बस कुछ महीने काम करने के लिए गुलामों को खाना खिलाना - विशेष रूप से जैसे थे

आस-पास बहुत सारे सस्ते कर्मचारी - और आंशिक रूप से क्योंकि बहुत स्पष्ट रूप से यह इसके विपरीत था
धर्म।

मुख्य रूप से मानवीय और ईसाई आधारित के लिए 1800 के आसपास इंग्लैंड में वास्तविक उन्मूलन शुरू हुआ
कारणों और पीड़ितों के साथ सहानुभूति से, और यूरोप में कानूनों के रूप में जल्दी से स्वीकार कर लिया गया (एफ।
भूतपूर्व। डेनमार्क/नॉर्वे 1803, इंग्लैंड 1807), लेकिन कुछ समय बाद अमेरिका में (1864 इंच .)
अमेरीका)।

जहाँ तक हम जानते हैं कि किसी भी मुस्लिम देश ने आधिकारिक दासता को समाप्त नहीं किया, सिवाय इसके दबाव के
बाहर, और कई 1900 तक नहीं - मॉरिटानिया अविश्वसनीय रूप से 1982 तक देर से (और .)
और भी अविश्वसनीय: वर्ष २००७ तक नहीं !!!! - क्या यह एक दंडनीय अपराध बन गया
वहाँ दास हैं)। इसके अलावा हमने सुना है, लेकिन इसके लिए पुष्टि नहीं मिली है, कि नाइजर में
2003 तक गुलामी पर प्रतिबंध नहीं था।

अमेरिका के लिए अफ्रीका से दासों के आयात की विश्वसनीय संख्या 7 से 12 . तक भिन्न होती है
मिलियन (एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका 7-10 मिलियन कहता है, लेकिन 12 या अधिकतम 13 मिलियन अधिक बार होता है
देखा) सीए से। 1550 ई. - इस संख्या का एक भाग संयुक्त राज्य अमेरिका में समाप्त हुआ।

जहाँ तक मुस्लिम क्षेत्र में नीग्रो दासों की संख्या है, संख्या अधिक भिन्न हो रही है - १४० मिलियन तक
सीए। 650 ईस्वी तक जब तक कि उन्हें 1900 के दशक में इसे समाप्त करने के लिए मजबूर नहीं किया गया। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका कहते हैं 9
मिलियन सहारा भर में लाए गए + 5 मिलियन पूर्वी अफ्रीका से नाव द्वारा लाए गए (लेकिन यहां हैं
केवल वे ही शामिल हैं जो जीवित पहुंचे)। इसके अलावा वहाँ से १.५ लाख दास थे
यूरोप, काला सागर के आसपास के कई लोग शामिल थे। यूरोप से लगभग 15.5 मिलियन दास
और अफ्रीका एक साथ, परिवहन के तहत मरने वालों में शामिल नहीं हैं - और वे बहुत सारे हैं।
तब एशिया के दास थे - जहाँ तक पूर्व में वास्तव में चीन था। यहाँ हम रहे हैं
विश्वसनीय संख्या खोजने में असमर्थ, लेकिन काफी लाखों। यह जोड़ा जाना चाहिए कि मृत्यु
मुस्लिम अश्वेत दास व्यापार में दरें बहुत अधिक थीं, विशेष रूप से उन लोगों के बीच जिन्हें मजबूर किया गया था
मध्य अफ्रीका से भूमध्यसागरीय तट तक चलने के लिए - सहारा के पार - बेचा जाएगा
उन राज्यों में। 80-90% तक की संख्या का उल्लेख किया गया है, लेकिन हमें इससे समस्या है
यह मानते हुए कि उच्च संख्या - दासों की मृत्यु के बाद दासों ने पैसा खो दिया। लेकिन यह चाहिए
उल्लेख किया जा सकता है कि यदि परिवहन के दौरान मृत्यु दर ८० - ९०% (कुछ १०% की तुलना में)
अटलांटिक क्रॉसिंग) सही है, ब्लैक अफ्रीका से ली गई या खरीदी गई 140 मिलियन की संख्या
सदियों के माध्यम से, 14 लाख की तुलना में समझ में आने लगता है
सावधान एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका (कई अन्य लोगों की संख्या अधिक है)।

अंत में काले अफ्रीका (सहारा के दक्षिण में अफ्रीका) में नीग्रो दास थे। ऐसा करना कठिन है
यहां विश्वसनीय संख्याएं खोजें, लेकिन हो सकता है कि एक विश्वसनीय अनुमान कहता है कि औसतन ३०%
अफ्रीका के निवासी किसी भी समय गुलाम थे। उस मामले में इसका मतलब है कि किसी भी समय
अमेरिका और मुसलमानों को "निर्यात" की तुलना में अफ्रीका के अंदर अधिक काले गुलाम थे
हर समय क्षेत्र। समय के माध्यम से कुछ सैकड़ों लाखों अगर कोई 650 . से गणना करता है
आज तक ई.

महान गुलाम और गुलाम का मालिक काला अफ्रीका था - जनजातियों के पास अन्य जनजातियों के दास थे।
और याद रखें कि अफ्रीका का बड़ा हिस्सा वर्षों में मुस्लिम बन गया। नंबर 2 था
मुस्लिम क्षेत्र - और मुस्लिम गुलाम व्यापारी यहाँ एकमात्र याचक थे। नंबर 3 था
अमेरिका (उत्तर, मध्य और दक्षिण एक साथ) - यहां भी मुस्लिम दास व्यापारियों के साथ बड़े
याचक (अक्सर "भूल गए" तथ्य)।

और केवल यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका के कुछ हिस्सों में गुलामी को खत्म करने का विचार पैदा हुआ।

इसके अलावा: संयुक्त राष्ट्र के अनुसार आज लगभग 24 मिलियन लोग हैं (संख्या .)
2007 ई. में प्रकाशित) दुनिया में गुलाम या गुलाम जैसी परिस्थितियों में रहना - एक बड़ा
मुस्लिम देशों में उनका प्रतिशत।

जैसा कि उल्लेख किया गया है, मुसलमान भी अमेरिका को निर्यात में गहराई से शामिल थे। (दास लिया
और अमेरिका के लिए गुलाम जहाजों को बेचने के लिए गुलामों को खरीदा)। गुलाम कप्तानों में
अमेरिका के लिए दास व्यापार मुख्य रूप से अफ्रीका में गुलामों को खरीदा - वे शायद ही कभी गुलाम बन गए
खुद शिकार।

इसके अलावा, जैसा कि उल्लेख किया गया है कि गुलाम उन सभी क्षेत्रों में कब्जा कर रहे थे जिन पर इस्लाम ने विजय प्राप्त की या छापा मारा
एशिया, और एशिया में दास व्यापार जितना पूर्व में चीन - भारत में मुस्लिम "राजाओं" में से एक f. भूतपूर्व। है
कहा जाता है कि उसकी राजधानी में 180ooo गुलाम थे। साथ ही यहां हम कोई भी नहीं ढूंढ पाए हैं
विश्वसनीय कुल संख्या। भूमध्य सागर और काला सागर के किनारे ले जाए गए दासों के लिए, एक
कुछ 1.2 मिलियन की गणना करें - यदि आप शेष यूरोप (आइसलैंड के रूप में दूर और हो सकता है) को जोड़ते हैं
ग्रीनलैंड) और कब्जे वाले जहाजों में से एक लगभग 1.5 - 1.6 मिलियन पर समाप्त होता है। सभी बहुत छोटे शहर नहीं
मुस्लिम क्षेत्रों में आधिकारिक दास बाजार थे। यूरोप में लोगों ने गुलामों को मुफ्त में खरीदने के लिए पैसा इकट्ठा किया
कम से कम 1880 के दशक में मुस्लिम देशों से।

यह भी कहा जाता है कि मुस्लिम देशों में गुलामों का प्रदर्शन अमेरिका की तुलना में काफी बेहतर था। यह केवल .... ही
आंशिक रूप से सच।

सच तो यह है कि एक गरीब मुसलमान और गुलाम के बीच सामाजिक दूरी इतनी नहीं थी
अमेरिका की तरह महान। एक मुस्लिम एफ. भूतपूर्व। एक गुलाम लड़की से शादी कर सकता है, या एक मुस्लिम गरीब महिला कर सकती है
मुस्लिम गुलाम से शादी करो। ऐसी शादियां शायद ही अमेरिका में हुई हों।

यह भी सच है कि दास को आज़ाद करना एक अच्छा काम माना जाता था, खासकर अगर वह
एक मुसलमान था। वास्तव में यह अमेरिका में कई लोगों के बीच उसी तरह से माना जाता था, लेकिन
हमेशा सामाजिक रूप से सभी को समान रूप से स्वीकार नहीं किया जाता है।

इसके अलावा यह सच है कि मुस्लिम देशों में अक्सर घरेलू गुलामों की स्थिति खराब नहीं होती थी। लेकिन यह
अमेरिका के लिए भी सही था - यह घर के दास नहीं थे जिनके साथ बहुत दुर्व्यवहार किया गया था।

फिर यह अन्य दासों का प्रश्न था। यहाँ कहानी पूरी तरह से अलग है, इसके बावजूद
जिसे मुसलमान छुपाने की कोशिश करते हैं। खेतों में, खदानों में और अन्य जगहों पर काम करने वाले गुलाम - और
दास परिवहन के दौरान भी - अक्सर बेहद दुर्व्यवहार किया जाता था और मौत के लिए काम किया जाता था।

और अंत में शानदार और रोमांटिक हरम थे।

वहां महिलाएं काम और सेक्स के लिए या सिर्फ सेक्स के लिए थीं। और मुख्य चीज के रूप में सेक्स था, क्या
क्या हुआ अगर एक आदमी एक गुलाम लड़की से ऊब गया? - या बस कुछ नया और अधिक चाहता था
रोमांचक "मांस"? वह बस बेची गई - और फिर से बेची गई - और फिर से बेची गई। बड़ी संख्या में पारित किया गया
मनुष्य से मनुष्य से मनुष्य तक, और मानव के नष्ट किए गए मलबे और व्यंग्य के रूप में समाप्त हो गया
जीव, जिनका जीवन पूरी तरह से बर्बाद हो गया है। मुस्लिम पुरुषों की खुशी के लिए - जो के अनुसार

मुहम्मद और कुरान और इस्लाम के अनुसार इस तरह व्यवहार करने के लिए 100% सही थी
मुक्त और अच्छे धर्म इस्लाम, और दयालु अल्लाह के अनुसार। इसके अलावा, अगर वह नहीं थी
बेचा और बेचा, बलात्कार बलात्कार है। लेकिन इस्लाम ने नैतिकता के बारे में कभी दूसरा विचार नहीं व्यक्त किया, न तो युद्ध, चोरी/युद्ध की लूट, दासता, न ही कैदियों/दासों के बलात्कार के बारे में। हम यह जोड़ सकते हैं कि मुस्लिम देशों में आयात किए गए 3 में से 2 दास महिलाएं या बच्चे थे - आयातित सेक्स के लिए (जबकि अमेरिका में 3 में से 2 गुलाम वयस्क पुरुष थे - काम के लिए आयातित (सेक्स के साथ) नीग्रो महिला दासों का अभ्यास किया जाता था, लेकिन संयुक्त राज्य अमेरिका में कभी भी सामाजिक रूप से स्वीकार नहीं किया गया)।

कुछ स्पष्टीकरण भी होना चाहिए कि अमेरिका में दासों के पास कई क्यों हैं वंशज आज - लेकिन लाखों-करोड़ों के काले वंशज कहां हैं मुस्लिम देशों में गुलाम? वे इतने कम क्यों हैं? यह किस प्रकार का उपचार है इसके लिए स्पष्टीकरण? हमें जवाब नहीं मिले हैं। यानी हमें बताया गया है, लेकिन नहीं सत्यापित पाया गया कि अश्वेत दासों के विवाह पर प्रतिबंध था।

यह अजीब लग सकता है, लेकिन अभी हाल तक कुछ मुस्लिम विश्वविद्यालयों ने गुलाम कानून के बारे में सोचा था - दास चीजें थीं और मालिकों के अधिकारों, व्यापार आदि की रक्षा के लिए कानून आवश्यक थे दासों को स्वयं कोई अधिकार या सुरक्षा नहीं थी।

०१ २/२२१: "(विवाह करने के लिए) एक गुलाम महिला जो (इस्लाम * में) को मानती है, उससे शादी करने से बेहतर है अविश्वासी स्त्री, भले ही वह तुझे लुभाती हो।" खैर, यह इसके बारे में उतना ही बता सकता है गैर-मुसलमानों का मूल्य।

002 4/3: "- - - अपनी पसंद की महिलाओं से शादी करें, दो या तीन या चार - - - या (एक बंदी) कि आपकी दाहिने हाथ के पास - - -।" एक गरीब मुसलमान और गुलाम के बीच की दूरी अ से भी कम थी अमेरिका में भी ऐसी ही स्थिति थी - दासी से विवाह करना स्वीकार्य था। औरत तब औपचारिक रूप से अक्सर उसे स्वतंत्रता दी जाती थी और वह अब गुलाम नहीं रही - हालाँकि जितना अधिक या एक पुरुष की कम मजबूर पत्नी, उसकी स्वतंत्रता न तो बहुत वास्तविक थी और न ही बहुत वास्तविक थी। सामाजिक स्थिति थी हालांकि बेहतर है, और तलाक होने पर उसने अपनी आजादी बरकरार रखी।

००३ ४/२४: "इसके अलावा (निषिद्ध (मुसलमानों के लिए) हैं) महिलाएं पहले से ही विवाहित हैं, सिवाय उन लोगों के जिन्हें तेरे दाहिने हाथ में (= दासी स्त्री*)"। एक खास वजह से सामने आया यह सवाल: The योद्धा जानना चाहते थे कि क्या उन्हें बलात्कार करने की अनुमति है ("सेक्स करने के लिए" इसे और अधिक व्यक्त करने के लिए विनम्र) ने महिला बंदियों से भी शादी की जब वे युद्ध कर रहे थे। बंदियों से शादी नहीं की वे वे जानते थे कि वे जैसा चाहते हैं वैसा ही व्यवहार कर सकते हैं, लेकिन विवाहित लोगों के बारे में क्या? - विवाहित मुस्लिम पति के अलावा सेक्स के लिए मना किया गया था। और जवाब था जैसा आप देख रहे हैं: आप विवाहित गैर-मुस्लिम महिलाओं का भी बलात्कार करने के लिए स्वतंत्र हैं, (लेकिन एक अपवाद के साथ, यदि वे थीं तो नहीं) गर्भवती)। और यह एक सामान्य कथन और नियम के रूप में दिया गया था - कोई दास या महिला बंदी बलात्कार किया जा सकता है (गर्भवती होने को छोड़कर), पति या कोई पति नहीं।

004 4/25a: "यदि आप में से किसी के पास स्वतंत्र विश्वास करने वाली महिलाओं से शादी करने का साधन नहीं है, तो वे" विश्वास करने वाली लड़कियों से शादी कर सकते हैं जिनके पास आपका दाहिना हाथ है - - "। "जिन्हें आपका दाहिना हाथ है", गुलाम के लिए एक अरब अभिव्यक्ति है। गुलाम लड़की से शादी करना तो दूर की बात है सामाजिक रूप से, लेकिन स्वीकार्य। चाहो या ना चाहो गुलाम लड़की - यह सवाल कभी नहीं पूछा जाता कुरान (इसके अलावा, यह संभावना है कि बहुत से लोग इच्छुक होंगे, क्योंकि अक्सर इसका मतलब था कि वे औपचारिक रूप से बन गए मुक्त महिलाएं, अब गुलाम नहीं)।

००५ ४/२५बी: "- - - उनकी (एक स्वतंत्र मुस्लिम से शादी की दास महिलाओं*) सजा (अपराध के लिए या अभद्रता*) मुक्त महिलाओं के लिए इसका आधा है।" यह अमेरिका की तुलना में नरम था, जहाँ तक यह था अभ्यास किया जाता था (घर में दास अक्सर बहुत बुरा नहीं करते थे, जबकि दास खेतों, खानों में, आदि का जीवन भयानक हो सकता है - अमेरिका में सबसे खराब परिस्थितियों के विपरीत नहीं)।

००६ ४/३६: "- - - माता-पिता, रिश्तेदारों, अनाथों, जरूरतमंदों, पड़ोसियों के पास अच्छा करो, पड़ोसी जो अजनबी हैं, आपकी तरफ से साथी, राहगीर (आप मिलते हैं), और क्या आपका दाहिना हाथ है - - -"। अल्लाह अच्छे काम करने वाले लोगों को पसंद करता है - यहाँ तक कि गुलामों को भी। आपके दास उन राहगीरों के बाद भी उल्लेख किया जाता है जिनसे आप मिलते हैं, लेकिन उनका उल्लेख किया जाता है।

007 8/70: "हे पैगंबर! उन लोगों से कहो जो तुम्हारे हाथों में बंदी हैं: 'यदि अल्लाह को कोई अच्छाई मिल जाए तुम्हारे दिलों में, वह तुम्हें कुछ बेहतर देगा, जो तुमसे लिया गया है, और वह

पृष्ठ ८७२

आपको माफ कर देंगे - - -।" मुहम्मद गुलामों का एक महान लेने वाला था, और वह दासों से वादा करता है a
स्वर्ग में बेहतर जीवन - हमेशा सस्ते शब्द। यह भी थोड़ी विडंबना है कि मुहम्मद ने
हमला किया और चोरी किया और बलात्कार किया और हत्या कर दी और गुलाम बना लिया - लेकिन यह उसका शिकार था कि
क्षमा की आवश्यकता है। कुछ धर्म।

००८ १६/७५: "- - - दूसरे के अधीन एक गुलाम - - - एक आदमी जिस पर हम (अल्लाह*)
शुभ उपकार - - - दोनों समान हैं? (किसी भी तरह से नहीं); स्तुति अल्लाह के लिए हो।" इस
"अल्लाह की स्तुति करो," गुलामों के मुसलमानों के मूल्यांकन के बारे में कई पृष्ठ बताता है।

009 23/5+6: "(वे मुसलमान अच्छे हैं*) जो सेक्स से परहेज करते हैं, सिवाय उन लोगों के जो शामिल हो गए हैं
उन्हें शादी के बंधन में, या (बंदी) जिनके पास आपका दाहिना हाथ है (= दास) - के लिए (in .)
उनका मामला) वे दोष से मुक्त हैं"। एक लड़की को पकड़ो और उसे बंदी बनाओ - और तुम आज़ाद हो!
किसी भी दोष से यदि आप उसका बलात्कार करते हैं - या उसके साथ सामूहिक बलात्कार करते हैं - या अधिक महिलाओं को अपनी बंदी बनाते हैं और
उनके साथ भी बलात्कार करें - या हर आधे घंटे या दिन या सप्ताह में अपने साथियों के साथ लड़कियों का आदान-प्रदान करें। एक गुलाम है
एक गुलाम - और युद्ध की लूट आप कुरान और इस्लाम के अनुसार "न्यायपूर्ण और अच्छा" लेते हैं। हम
कभी-कभी आश्चर्य होता है कि क्या यही कारण है कि इतने सामूहिक बलात्कार कभी-कभी जब मुसलमान मजदूरी करते हैं?
युद्ध - दारफुर और बांग्लादेश याद रखने योग्य उदाहरण हैं। भूल जाओ कि महिलाएं हैं
मनुष्य - उन्हें बंदी बना लें और आप बिना किसी दोष के उनका बलात्कार करने के लिए स्वतंत्र हैं। वास्तव में अच्छा
धर्म।

लेकिन इसने मुहम्मद को सस्ते हाइवेमैन और बाद के योद्धाओं को लाया।

०१० २४/३२: "अपने में से जो अविवाहित हैं, या अपने दासों में नेक हैं, उनसे विवाह करो।
पुरुष या महिला - - -"। इसके अलावा पुरुष दासों के लिए एक स्वतंत्र महिला से विवाह संभव था - और इसके साथ
भाग्य बंधन से बाहर खुद से शादी करने के लिए। हमने कोई संख्या नहीं देखी है, लेकिन संभावना का अनुमान लगाएंगे
क्योंकि ऐसा विवाह दासी के लिथे पुरूष से कहीं अधिक उत्तम था।

०११ २४/३३ए: "और यदि आपका कोई दास लिखित रूप में विलेख मांगता है (उन्हें अपनी कमाई के लिए सक्षम करने के लिए)
एक निश्चित राशि के लिए स्वतंत्रता), यदि आप उनमें कोई अच्छाई जानते हैं तो उन्हें ऐसा कार्य दें---"। इस
ज्यादातर एक स्लीपिंग पैराग्राफ था, लेकिन जहां तक हमने सुना है, यह कभी-कभार होता था। हम
किसी भी पश्चिमी कानून को ऐसा कहते हुए नहीं जानते, लेकिन गुलामों को कभी-कभी उनका दिया जाता था
स्वतंत्रता और कम से कम कुछ बार पश्चिम में भी खुद को स्वतंत्र रूप से काम करने का मौका मिला।
(वास्तव में वाइकिंग्स के बीच ऐसा हुआ कि दासों को काम करने का मौका दिया गया
स्वयं मुक्त।)

०१२ २४/३३बी: "लेकिन अपनी दासियों (महिला दासियों*) को जब चाहें तब वेश्यावृत्ति के लिए विवश न करें।
शुद्धता (शब्दों के चयन पर ध्यान दें - यदि दासी इच्छुक है, तो ठीक है*), में
ताकि तुम इस जीवन की संपत्ति में लाभ प्राप्त कर सको।" हमें पता नहीं चला है कि कैसे
व्यापक रूप से इस तरह के जबरन - और मजबूर नहीं - वेश्यावृत्ति कुछ मुसलमानों में थी और अभी भी है
समाज। लेकिन यह सोचा जाता है कि अरब में वेश्या के लिए 26 शब्द हैं; यह है एक
भाषाओं में सामान्य प्रवृत्ति है कि अक्सर इस्तेमाल की जाने वाली अभिव्यक्तियों में कई किस्में होती हैं और
समानार्थी शब्द।

०१३ २४/५८: "जिनके दाहिने हाथ के अधिकारी (= दास*), और (बच्चों) के बीच में हों
आप जो बूढ़े नहीं हुए हैं, अपनी अनुमति मांगें - - -"। सामाजिक सीढ़ी पर और नीचे
एक घर में दास को रखना संभव नहीं है यदि वह आपके काम को करने में सक्षम होगा
उससे मांग - या उससे।

पृष्ठ ८७३

०१४ ३०/२८: "- - - क्या तुम्हारे (मुसलमानों) के उन लोगों में भागीदार हैं जो तुम्हारे दाहिने हाथ के पास हैं (=

[illegible] ने तुम्हें दी है? क्या आप डरते हैं

०१५ ३३/५५: "उनके सामने कोई दोष नहीं है (महिलाओं पर यदि वे (अश्लील कपड़े पहने हुए *) दिखाई देते हैं)
पिता या उनके पुत्र, उनके भाई या उनके भाइयों के पुत्र, या उनकी बहनों के पुत्र, या उनके
महिलाएं, या (दास) जिनके दाहिने हाथ हैं। " यह स्पष्ट नहीं है कि दो अंतिम समूह क्या हैं
वास्तव में कवर। "उनकी महिलाओं" का अर्थ उनकी दास महिलाएं हो सकती हैं - शाब्दिक रूप से "उनकी"। या उनके करीबी
महिला मित्र या रिश्तेदार। या - यदि यह आयत मुख्य रूप से मुहम्मद की पत्नियों के लिए निर्देशित है जैसे
कुछ टिप्पणीकारों का अर्थ है - सामान्य रूप से मुस्लिम महिलाएं। जहाँ तक "(दासों) का अधिकार है"
हाथों के पास" का अर्थ है कि उनके पास जो दास हैं, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि इसका अर्थ दोनों से है
लिंग - कि पुरुष दासों की गिनती इतनी कम थी कि यह ठीक था - लेकिन टिप्पणीकार ज्यादातर इसे चाहते हैं
मतलब "महिला दास।"

०१६ ३३/५२: "तुम्हारे लिए (मुहम्मद*) (अधिक विवाह करना) महिलाओं के लिए इसके बाद वैध नहीं है - - -
सिवाय तेरा कोई दाहिना हाथ - - -"। गुलाम महिलाओं की गिनती नहीं थी, इसलिए मुहम्मद
अभी भी एक रास्ता था अगर वह और अधिक महिलाओं को चाहता था।

०१७ ५८/३: "लेकिन जिन लोगों ने अपनी पत्नियों को जिहार (एक बहुत ही साधारण समारोह*) से तलाक दे दिया है, वे
उनके द्वारा कहे गए शब्दों पर वापस जाना चाहते हैं - (यह ठहराया जाता है कि ऐसा व्यक्ति) एक दास को मुक्त करना चाहिए
इससे पहले कि वे एक दूसरे को स्पर्श करें - - -"। कुछ पापों को एक दास को मुक्त करके सुधारा जा सकता है। अगर एक था
ऐसा करने के लिए पर्याप्त अमीर नहीं है, कोई अक्सर उपवास कर सकता है (दिन में खाना या पीना या सेक्स नहीं करना)
कुछ समय के लिए - इस मामले में दो महीने। महीने का उपवास = मनुष्य का वास्तविक मूल्य यदि वह या
वह एक गुलाम थी।

०१८ ७०/२९-३०: "और जो अपनी पत्नियों और (बंदियों) को छोड़कर, अपनी पवित्रता की रक्षा करते हैं।
जिनके दाहिने हाथ हैं (= दास*) - के लिए (तब) उन्हें दोष नहीं दिया जाना चाहिए - - -।" वहां
अपनी दासियों के साथ बलात्कार करने के लिए कोई दोष नहीं है - आप कितनी बार और कितनी बार चाहते हैं। एक अच्छा और
परोपकारी ईश्वर (कम से कम मुस्लिम मुक्त व्यक्ति के लिए)।

०१९ ९०/१२-१३: "और आपको (मुहम्मद/मुसलमान*) को क्या समझाए वह रास्ता जो सीधा है
(अर्थ में आरोही तेज, यह नहीं कि चलना कठिन है*)? - (यह है): बंधन को मुक्त करना, या
तंगी के दिन में भोजन देना (और कुछ अन्य चीजें*) - - -।" एक गुलाम को आज़ाद करना एक था
अच्छी बात है - लेकिन मुख्य तर्क और मुख्य नैतिक (?) कारण एक साथी की मदद नहीं करना था
मानव, लेकिन अल्लाह के साथ योग्यता हासिल करने के लिए। दूसरे शब्दों के साथ: अपने अगले जीवन में खुद की मदद करने के लिए।

अध्याय V/5 के लिए पोस्ट स्क्रिप्टम।

यह सब कुछ है जो कुरान गुलामों के बारे में कहता है - गुलाम किताब में कोई बड़ा विषय नहीं है, जैसे
पैसे के स्रोत के अलावा, मुहम्मद और उसके आदमियों के लिए गुलामों का कोई महत्व नहीं था,
सस्ते श्रम के लिए और सेक्स के लिए। इस्लाम आपसे बात कर रहा है, आदमी और (संभावित) योद्धा - the
आपकी अपनी दुनिया में केंद्रीय व्यक्ति - और आपकी अपनी दुनिया में केवल मुख्य व्यक्ति ही मायने रखता है।
अन्य तो बस ऐसी चीजें हैं जिनकी खुशी और भावनाएं और जीवन बहुत कम या कोई मायने नहीं रखता है -
आपके उपयोग और त्यागने के लिए सिर्फ चीजें - कुरान में वास्तविक इंसानों के रूप में भी नहीं माना जाता है। संतान
आप के लिए हैसियत और गौरव हैं, महिलाएं मुख्य रूप से वही हैं + लिंग, बूढ़े पुरुषों का शायद ही उल्लेख किया जाता है
आपके माता-पिता को छोड़कर, युद्ध के आक्रमणकारियों का उल्लेख नहीं किया गया है - युद्ध नैतिक के लिए बुरा है - और दास हैं
सिर्फ संपत्ति और आसान जीवन के लिए एक स्रोत - और सेक्स - आपके लिए, आदमी।

हमें यह जोड़ना चाहिए कि आज के मुसलमान कहते हैं कि गुलामों को केवल एक के दौरान लेने की अनुमति थी
जिहाद - पवित्र युद्ध, और परिणामस्वरूप मुस्लिम देशों में कई गुलाम नहीं थे। इस
अगर नहीं तो सच हो सकता था:

873

पेज ८७४

1. इस्लाम के अनुसार जिहाद घोषित किया जा सकता है
   वाइडेस्ट में आत्मरक्षा का कोई भी युद्ध
   शब्द का अर्थ. परिणाम है
   कि कोई भी युद्ध हो सकता है, और था और समझाया गया है
   और आत्मरक्षा में युद्ध घोषित कर दिया = जिहाद।
2. मुस्लिम योद्धाओं - और नेताओं - ने परवाह नहीं की
   इस बारे में एक हूट कि क्या वास्तव में युद्ध था a
   विजय का युद्ध - उन्होंने ले लिया और चुरा लिया क्या
   वे किसी भी तरह धन और दासों के हो सकते थे।
3. और अच्छे और कम अच्छे मुसलमानों ने छापा मारा और
   तीन महाद्वीपों पर गुलामों का शिकार - यह था

वस्तुओं के रूप में, अल्लाह से उनका दिव्य अधिकार
गैर-मुस्लिम थे एक अमेरिकी राजनयिक थे
1800 के दशक के अंत में बताया।

4. इस्लाम में कानून के सभी 4 स्कूलों के अनुसार,
एक ने इस तथ्य को स्वीकार किया कि विरोधी थे
गैर-मुसलमानों के लिए पर्याप्त कारण के रूप में
जिहाद घोषित करना - पवित्र युद्ध - और हमला करना।
इसके बारे में दूसरा विचार केवल में शुरू हुआ
1920 - 1930 के दशक, पश्चिमी से प्रभाव के बाद
सोच और शिक्षा।
5. और दासों को खरीदना संभव था। मुसलमानों
कम से कम एक गुलाम व्यापार नेटवर्क था
पश्चिम अफ्रीका में टिम्बकटू से चीन तक,
और दक्षिण रूस (काला सागर) से रास्ते तक
अफ्रीकी और भारतीय पर नीचे
महाद्वीप - कुछ द्वीपों का उल्लेख नहीं करने के लिए।

और हमने इससे पहले कभी मुस्लिम विचारकों या पादरियों या अन्य विद्वान पुरुषों के बारे में नहीं सुना
1930 के दशक में दास रखने, दास व्यापार, दास लेने के नैतिक और नैतिक पक्षों पर बहस, (या
गुलाम बलात्कार) - नैतिक प्रश्न कि 1800 के आसपास उन्मूलन आंदोलन शुरू हुआ क्या
इस्लाम बुरे पश्चिम को और बुरा कहता है। एक जिज्ञासा: पहले से ही कुछ यूनानी दार्शनिकों के पास था
दास लेने के नैतिक प्रश्न से समस्याएं - लेकिन मुस्लिम विचारकों ने कभी चर्चा तक नहीं की
ऐसी समस्या। यह केवल मुसलमानों या इस्लाम के लिए कोई समस्या नहीं थी जैसा कि कुरान ने कहा ठीक है और
महान मूर्ति के रूप में मोहम्मद ने खुद गुलामों को लिया और इस्तेमाल किया और बेचा। जब मुसलमान इस्लाम को बताते हैं
गुलामी रोकने के लिए तैयार है, यह गलत भी नहीं है - यह पाखंड है।

वास्तव में इस दावे के बारे में इस्लाम का पाखंड, बेईमानी, बेशर्मी और "पवित्रता" एक प्रमुख है।

मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से स्रोत - मैं जो सिर्फ ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ - से घृणित भावनाओं का
इस्लाम और किसी भी मुसलमान की ओर से ऐसे सीधे-सीधे असत्य अल-तकियास सीधे चेहरे के साथ। में
जैसा कि उल्लेख किया गया है, यूरोप की गुलामी एक स्वीकृत संस्था के रूप में समाप्त हो गई, मुख्यतः क्योंकि यह टकरा गई
मौलिक धार्मिक विचारों के साथ (लेकिन इस तथ्य से मदद मिली कि श्रम सस्ता हो गया, और इस प्रकार
दासता ने मालिक के लिए अच्छा भुगतान नहीं किया)। और जब यह अमेरिका में फिर से शुरू हुआ - दक्षिण में
स्पेनियों और पुर्तगालियों के आने के कुछ ही समय बाद स्थानीय भारतीयों के साथ मध्य अमेरिका
लगभग 1500 (1492) AD और बाद में आयातित नीग्रो के साथ, और जो कुछ में संयुक्त राज्य अमेरिका बन गया
१६०० के दशक के अंत में और १७०० के दशक में (यह १८६४ ईस्वी में समाप्त हुआ), अंत में पश्चिम
नैतिकता और नैतिकता थी और कम से कम इसे रोकने की रीढ़ तो नहीं थी। इस्लाम को खींचा और धकेला गया
और पीछे हटने के लिए मजबूर किया और इसे खत्म करने का विरोध किया।

874

पेज ८७५

और अब भी उनके पास वास्तविकता का सामना करने की नैतिक रीढ़ नहीं है, लेकिन लंगड़े दावों की सेवा करते हैं
योजनाबद्ध उन्मूलन के बारे में इतना आसान है कि लोगों की ओर से एकमात्र संभावित प्रतिक्रिया देखी जा सकती है
जो इसके बारे में कुछ जानता है, घृणा या मजबूत है।

माननीय और सम्मानित "कुरान का संदेश", 2008 संस्करण को उद्धृत करने के लिए:
"हमारे समय के कई इस्लामी विद्वानों के अनुसार (अच्छे कारणों से उन्होंने कोई भारी-
पुराने समय से उद्धृत करने के लिए वज़न, क्योंकि विषय पर बहस भी नहीं हुई थी*) (उदाहरण के लिए राशिद रिदा'),
यह (स्वतंत्र दासों को अपने पापों के प्रायश्चित के रूप में स्थापित करने के लिए*) संबंधित है, पहली बार में, से
जिन परिस्थितियों में 'दासता को उद्देश्य के अनुसार समाप्त कर दिया गया होगा'
इस्लाम"।

कम से कम बेशर्मी प्रभावशाली है।

लेकिन इस तरह से झांसा देना और नैतिक सवालों से भागना, और यहाँ तक कि हासिल करने के लिए उनके बारे में झूठ बोलना
सम्मान, भविष्य के लिए बुरी तरह से संकेत।

और आज आप अधिकांश "वास्तविक" दासों को कहां पाते हैं - ढीले कानूनों के साथ और इससे भी अधिक
ढीली कानून व्यवस्था?

पाखंड, रबर नैतिक रीढ़, और झूठ - "वैध" और धार्मिक रूप से स्वीकृत अल-

तकिया या नहीं - बहुत कम सम्मान पैदा करता है।
यह और भी अधिक है जब यह इस्लाम के प्रमुख विद्वानों से आता है। और होने के बाद
१३०० - १४०० वर्षों में मामले में कोई प्रगति नहीं हुई जब तक कि उन्हें पीछे की ओर मजबूर नहीं किया गया
ताकतों द्वारा इसे खत्म करना और बाहर से बुरी तरह से पसंद किए जाने वाले विचार।

एक अंतिम प्रश्न: आप अक्सर मुसलमानों से मिलते हैं जो गुलामों को लेने को सही ठहराते हैं
जिहाद - पवित्र युद्ध के दौरान ही अनुमति है। लेकिन एक बात यह है कि बहाना किसी भी तरह से बेकार है
जिस संघर्ष में मुसलमान शामिल होते हैं, उसे जिहाद नाम दिया जाता है। इस्लामी के लिए एक और और कहीं अधिक हानिकारक
नैतिक कोडेक्स, सवाल है: अच्छे और परोपकारी के लिए धार्मिक युद्ध कैसे लड़ सकते हैं?
भगवान दासता, चोरी और बलात्कार को पवित्र करते हैं? - खासकर जब हर लड़ाई और छापेमारी होती है
जिहाद कहा जाता है?

उत्तर मुस्लिम और इस्लामी नैतिक कोडेक्स के बारे में बहुत कुछ बताएगा (नैतिक दर्शन है
इस्लाम में कभी अस्तित्व में नहीं था - मुहम्मद ने जो कहा और किया उसके आधार पर केवल नैतिक कोडेक्स।)

भाग V, अध्याय 6, (= V-6-0-0)

कुरान के अनुसार इस्लाम के तहत गैर-मुस्लिम,
मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक

गैर-मुसलमानों में ए (भविष्य?) मुस्लिम दुनिया; कट्टर दमन और रंगभेद मुहम्मद और के अनुसार

कुरान और इसलिए इस्लाम के लिए और मुसलमान।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

यह भी देखें कि "मुसलमान बेहतर हैं", "गैर-मुसलमानों से दोस्ती न करें", और
"नापसंद, नफरत और दमन के लिए उकसाना"।

मुस्लिम और कुछ गैर-मुसलमान बताते हैं कि गैर-मुसलमानों के लिए मुस्लिम देशों में रहना नहीं है
समस्या - शांतिपूर्ण, सुरक्षित और शांत।

वे जो नहीं बताते हैं वह यह है कि कुरान के अनुसार, सौदा है: बदले में कुछ सुरक्षा:

1. कोई राजनीतिक शक्ति नहीं - बिल्कुल भी नहीं।
2. जीवन के सभी स्तरों में भेदभाव।
3. कानूनी सुरक्षा में भारी कमी - एक मुसलमान
   तुम्हारे घर में घुसकर तुम्हें लूट सकता है, और हंस सकता है
   आप पर बाद में, यदि आपके पास कोई मुसलमान नहीं है
   गवाह, भले ही आपके पास १० अन्य हों, गैर-
   मुसलमान एक मुसलमान के खिलाफ गवाही नहीं दे सकते,
   सिर्फ एक उदाहरण लेने के लिए।
4. पोग्रोम्स का शिकार बनने का वास्तविक जोखिम -
   वे अक्सर होते हैं, लेकिन वे होते हैं।
   कुछ साल पहले 2000 (?)
   इंडोनेशिया में मृत और एक FAR बदतर 1-2
   पीढ़ियों पहले (कम से कम 200ooo मृत, अधिकतर

जातीय चीनी)। साथ ही कुछ साल पहले
पूर्वी तिमोर में हजारों के साथ एक बुरा था
मृतकों की (अनुमानित १०२.८०० मृत . के अनुसार)
विकिपीडिया) - गैर-मुसलमानों की हत्या
उस पूर्वी तिमोर के साथ उनका संबंध मिला
आजादी। कॉप्टिक ईसाइयों में समस्या है
मिस्र। और उत्तरी नाइजीरिया, उत्तर जैसे स्थान
पाकिस्तान और दारफुर (आतंकवाद, बलात्कार, लूटपाट)
और मुस्लिम न्यायिक निकायों पर आधारित हत्या)
उल्लेख नहीं किया जाना है। लेकिन हम 1.2 . का उल्लेख कर सकते हैं
लाख अर्मेनियाई मारे गए - एक कहानी भी
अपेक्षाकृत आधुनिक तुर्की को नहीं मिला है
आज भी आमने सामने

5. कम से कम पुराने समय में और बिना किसी गारंटी के
भविष्य के लिए, नुस्खे अपने देने के लिए
मुसलमानों के लिए बच्चे - f. भूतपूर्व। जनिसरीज
ओटोमन्स के तहत (सख्ती से बोलना भाग नहीं)
कुरान की, सिवाय इसके कि गुलामी करना था / is
"वैध और अच्छा", लेकिन प्रभाव था
पीड़ितों के लिए समान)।

876

पेज ८७७

6. अतिरिक्त कर देना - कुछ स्थान और समय तो
उच्च और निर्दयी कि पीड़ित असमर्थ थे
भुगतान करने के लिए, और उन्हें अपने घरों से भागना पड़ा और
अक्सर देश से

वास्तव में कुरान मुस्लिम देशों में गैर-मुसलमानों के जीवन के बारे में ज्यादा कुछ नहीं कहता है।
इसमें से अधिकांश का अनुमान केवल परोक्ष रूप से ऐसी बातों के बारे में बात करने वाले छंदों से लगाया जाता है। एफ. पूर्व. वर्सेज
युद्ध की बात करना, गैर-मुसलमानों का दमन, मुसलमानों की श्रेष्ठता, विवाह आदि।

यह भी सावधान रहें कि "पुस्तक के लोगों" के बीच - आखिरकार - बहुत बड़ा अंतर है
(मुख्य रूप से यहूदी और ईसाई) और अन्य सभी गैर-मुसलमान, जिन्हें पगान कहा जाता है (कुछ स्थान और
कई बार फारस के जोरास्ट्रियन को अन्य विधर्मियों की तुलना में थोड़ा बेहतर माना जाता था)। NS
पैगन्स नीचे हैं।

यदि श्लोक नहीं होता तो २/२५६ में धर्म की कोई बाध्यता नहीं होती,
स्थिति और भी खराब हो सकती थी - हालाँकि मुसलमान अक्सर यह भूल जाते हैं कि
इतिहास, विशेष रूप से "मूर्तिपूजक" के साथ व्यवहार करते समय - और एक अच्छे कारण के लिए; 2/256 निरस्त कर दिया गया है
और कुछ 30 अलग-अलग बाद में और अधिक खूनी छंदों द्वारा अमान्य कर दिया गया - एक तथ्य हमेशा मुसलमान
उल्लेख करने के लिए "भूल जाओ"। सूरा नं। 2 मदीना में पहला था और दूसरे कठोर थे
वहाँ आने के बाद पेश किया गया, और इसलिए युद्ध और नफरत के बारे में कठोर सूरह पूर्वता लेते हैं
इसके ऊपर - निरसन के नियम (जब दो या दो से अधिक छंद संघर्ष करते हैं, तो सबसे नया सामान्य रूप से होता है
वैध एक)।

लेकिन कुछ श्लोक ऐसे भी होते हैं जिनसे सीधी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

०१ ८/३९: "- - - वहाँ (*) अल्लाह में एक साथ और हर जगह न्याय और विश्वास प्रबल होगा - -
-"। कानून का शासन होगा - लेकिन कानून का मुस्लिम शासन, जहां f. भूतपूर्व। एक गैर मुस्लिम
एक मुसलमान के खिलाफ गवाही नहीं दे सकता। लेकिन निष्पक्ष होने के लिए, कुरान कई जगह बताता है कि न्यायाधीश
सही ढंग से न्याय करेगा, इसलिए यदि कोई विशेष कारण नहीं है, यदि न्यायाधीश गैर-मुसलमानों के खिलाफ नहीं है,
यदि वह भ्रष्ट नहीं है, आदि, तो उचित निर्णय लेने का एक उचित मौका था - के अनुसार निष्पक्ष
मुस्लिम कानून। कम से कम जब तक आपका विरोधी मुस्लिम नहीं था, या इससे भी बदतर, एक शक्तिशाली
मुस्लिम। उस मामले में कानून उचित नहीं था।

लेकिन इस्लाम को प्रमुख धर्म होना चाहिए और होना चाहिए।

००२ ८/५८: "यदि आप किसी समूह से विश्वासघात से डरते हैं, तो उन्हें (उनकी अनुबंध) वापस फेंक दें - -
-"। यह "विश्वासघात से डरने" के लिए पर्याप्त था - या कहें कि उन्होंने किया - फिर गैर-मुसलमानों की स्थिति
अचानक अधिक असुरक्षित हो गया। पूरे इतिहास में ऐसा कई बार हुआ है - कभी-कभी
जिसके परिणामस्वरूप नरसंहार और नरसंहार होते हैं। कुछ साल पहले एक देर से इंडोनेशिया में था जहां कुछ

2000 चीनी निवासी हत्यारे थे और जातीयता के खिलाफ एक बड़ी तोड़फोड़ की होड़ हुई
चीनी इंडोनेशियाई नागरिक (और वह डर के कारण भी नहीं, बल्कि के कारण था)
चीनी अधिक काम करते थे और अक्सर शिक्षित थे और मुसलमानों से ज्यादा अमीर हो गए थे),
और एक जहां 1 - 2 पीढ़ी पहले कम से कम 200oo जातीय चीनी मारे गए थे। बहुत बुरा
कहानी 1900 ई. के आसपास अर्मेनियाई लोगों के खिलाफ थी। कुछ 1.2 मिलियन मारे गए और कोई नहीं जानता
बलात्कार और/या हरम के लिए कितनी लड़कियों/महिलाओं का अपहरण किया गया। यह कहानी समाचारों में थी
2007, और तुर्की के पास अभी भी इसका सामना करने की रीढ़ नहीं है। कम से कम 200ooo . के साथ दारफुर
मारे गए नागरिक - आज होता है। और भविष्य की कोई गारंटी नहीं है।

877

पेज ८७८

इसी तरह के और भी कई मामले हुए हैं - भले ही मुसलमान कभी भी अन्य तथ्यों के बारे में बात नहीं करते हैं
उस समय की तुलना में - कभी-कभी लंबे समय तक भी - मुस्लिम देश अपेक्षाकृत सुरक्षित थे
यहूदी, आदि अगर उन्होंने निम्न स्थिति, कोई शक्ति नहीं, थोड़ी कानूनी सुरक्षा और अतिरिक्त कर स्वीकार किए।

००३ ९/२९: "उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह पर विश्वास नहीं करते - - - जब तक वे जजिया नहीं देते (अतिरिक्त कर - कभी-कभी भारी) स्वेच्छा से प्रस्तुत करने के साथ और खुद को वश में महसूस करते हैं।" कैसे पर टिप्पणियाँ
ऐसी असहाय रंगभेद की स्थिति में रहना जरूरी नहीं है - दक्षिण में नीग्रो
अफ्रीका को कम से कम सबसे ऊपर एक अतिरिक्त कर का भुगतान नहीं करना पड़ा।

अन्य अध्याय भी देखें - f. भूतपूर्व। "मुसलमान दूसरे लोगों से बेहतर हैं", जैसे 68/35 + 36 या
25/44, और "सह-अस्तित्व का स्वर्ण युग।

(अधिक 2010 के बाद नहीं जोड़े जाएंगे)।

भाग वी,

कुरान के अनुसार इस्लाम के तहत गैर-मुस्लिम, मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की पवित्र पुस्तक

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

अध्याय 7 (= वी-7-0-0)

सीओ का दावा किया गया स्वर्ण युग- इस्लाम के शासन के बीच अस्तित्व और इसके मुसलमान और गैर-मुसलमान।

यह भी देखें कि "मुसलमान बेहतर हैं", "गैर-मुसलमानों से दोस्ती न करें", और
"नापसंद, नफरत और दमन के लिए उकसाना"। यह अध्याय उनके साथ ओवरलैप करता है, लेकिन अन्य
सामान्य नापसंदगी, दूसरों से दूरी और खुद की श्रेष्ठता को बढ़ावा देने के बारे में हैं - एक बनाना
"दुश्मन-तस्वीर" - जबकि यह अध्याय मुख्य रूप से प्रत्यक्ष उत्तेजना और प्रेरणा के बारे में है
युद्ध के लिए।

यह सच है कि ऐसे स्थान और समय थे - यहां तक कि लंबे समय तक - जहां यहूदी और अन्य थे
मुस्लिम देशों में रहने की इजाजत जैसे वहाँ स्थान और समय थे - यहाँ तक कि लंबे समय तक -
यहूदियों और अन्य लोगों को यूरोप में रहने की अनुमति थी। और यह सच है कि जब यहूदियों ने
स्पेन छोड़ने के लिए (स्टार मुस्लिम सबूत) वे काफी हद तक मुस्लिम क्षेत्रों में समाप्त हो गए - लेकिन यह भी
एफ। पूर्व में पुर्तगाल और फ्रांस में, एक तथ्य का मुसलमानों ने कभी उल्लेख नहीं किया)।

लेकिन यह सच नहीं है कि एक स्वर्ण युग मौजूद था जहां मुस्लिम और गैर-मुसलमान थे
समान थे और जहां मुसलमानों और "काफिरों" के बीच कोई दूरी नहीं थी। यह भी सच नहीं है

कि "काफिर" वास्तव में सुरक्षित थे और मुस्लिम दुनिया में कहीं भी स्वीकार किए जाते थे। वो हमेशा
दूसरे दर्जे के निवासी थे, और कठिन समय या कठोर खलीफा या कठोर मुल्ला आदि आते थे, तब

गैर-मुसलमानों और विशेष रूप से यहूदियों और पगानों के लिए खतरा था, लेकिन आप शर्त लगाते हैं: इसके लिए भी ईसाई।

सावधान रहें: "सभी विश्वास करने वाले मुसलमान रूढ़िवादी 'इस्लामी' हैं और हमेशा थे। बस यही है
जिन्हें आप आज पश्चिम में रूढ़िवादी कहते हैं, वे काफी हद तक रूढ़िवादी हैं - और थे।
कट्टरपंथियों, ऐसा कहने के लिए "। शांतिपूर्ण समय और स्थानों में भी स्थिति बदल सकती है
कम समय। अन्य समय और स्थानों पर स्थिति लंबे समय तक कठिन और खतरनाक थी।

"स्वर्ण युग" के कुछ उदाहरण, लेकिन याद रखें: कुछ उदाहरण - बहुत कुछ हैं
अधिक:

001 622 - 628? AD: मुहम्मद लूटपाट और हत्या करने वालों का नेता है
कारवां (मक्का के साथ युद्ध का कारण, जो स्वाभाविक रूप से अपने कारवां की रक्षा करना चाहते थे
चोरों, जबरन वसूली करने वालों और हत्यारों से)। मुहम्मद ने व्यक्तिगत रूप से कई छापों का नेतृत्व किया
स्वयं - नीचे दी गई अधिकांश तथाकथित लड़ाइयाँ वास्तव में केवल पैसे, क़ीमती सामानों के लिए छापेमारी हैं
और दास (XI/12 और XI/13 देखें)। बस चोरी, जबरन वसूली और गुलामी। कुछ "सुनहरा"
सहअस्तित्व"!!!

००२ ६२२ - ६३२ ईस्वी: चोरी और लूट के लिए आसपास की जनजातियों पर छापे - के दौरान लगभग ६० छापे
मुहम्मद के मदीना वर्ष। इब्न इशाक 43 नाम, और और भी थे - अध्याय XI/12 . देखें
और XI/13 - (कुछ स्वयं मुहम्मद के नेतृत्व में), कुछ मुख्य रूप से विरोधियों की हत्या के लिए शामिल थे।

003 623 ई.: वड्डन का युद्ध।

004 623 ई.: सफवान का युद्ध।

005 623 ई.: दुल-अशीर का युद्ध।

००६ ६२४ ई.: मुहम्मद और उनके अनुयायियों ने धन के लिए नियमित रूप से लूट के लिए छापेमारी शुरू की गति।

007 624 ई.: बद्र की लड़ाई - मक्का मुहम्मद के हमलों को समाप्त करने की कोशिश करता है।

008 624 ई.: बानी सलीम का युद्ध।

009 624 ई.: एड-उल-फितर और जकात-उल-फितर की लड़ाई।

010 624 ईस्वी: मदीना: बानू क़ेनुका (यहूदी जनजाति) मदीना से बेदखल। मुहम्मद
पुरुषों को मारना चाहता था, लेकिन खज़रे कबीले ने विरोध किया, और मुहम्मद अभी तक मजबूत नहीं थे
पर्याप्त - उसने उन्हें जाने दिया, लेकिन उन्हें संपत्ति और सभी घरों और भूमि के लिए लूट लिया
(मुहम्मद के लिए 20%)। संबंधित सूरह: 3/12 - निश्चित रूप से बाद में प्राप्त - बताया
कि मुहम्मद ने हमेशा की तरह सही किया था।

011 624 ई.: साविक का युद्ध।

012 624 ई.: घाटफान का युद्ध।

013 624 ई.: बहरान का युद्ध।

014 624 - 632 ईस्वी और बाद में: मदीना के आसपास और बाद में अरब के बाकी हिस्सों में बुतपरस्त अरब हैं
जबरन हथियारों से मुसलमान बनने के लिए मजबूर किया गया - कुरान के शब्दों के विपरीत।
(कुरान को नए सूरह मिले जो हल्के लोगों को पछाड़ते हैं: काफिरों को मार डालो, और विशेष रूप से
पगान)।

015 625 ई.: उहुद का युद्ध - मक्का ने एक बार फिर मुहम्मद की चोरी को समाप्त करने का प्रयास किया,
लूटपाट और हत्या।

016 625 ई.: हमरा-उल-असद की लड़ाई।

017 625 ईस्वी: मदीना: बानू ल'नादिर (यहूदी जनजाति) - मदीना से बेदखल, लेकिन छोड़ना पड़ा
उनकी अधिकांश संपत्ति। (मई खैबर - - - में बस गए और बाद में उनकी हत्या कर दी गई)।
इन दो निष्कासनों में से मुहम्मद के २०% ने उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना दिया। सूरह 59
बताता है कि यह अल्लाह था जिसने इसे चाहा।

017 625 ई.: धतूर-रीका का युद्ध।

019 626 ई.: बदुर-उखरा का युद्ध।

020 626 ई.: बानो मुस्तलक निकाह का युद्ध।

021 627 ई.: खाई की लड़ाई (मदीना)। मक्का की चोरी, रंगदारी रोकने की आखिरी कोशिश
मुहम्मद की हत्या।

022 627 ई.: अहज़ाब का युद्ध।

023 627 ईस्वी: मदीना में बानू कुरैज़ा (आखिरी बड़ी यहूदी जनजाति) आंशिक रूप से वध या बनाई गई
अर्ध दास (कुछ साल बाद खलीफा उमर के तहत बेदखल)। - एक महिला (रैहाना बिन्त अमर)
खुद मुहम्मद के लिए। मुहम्मद द्वारा व्यक्तिगत रूप से उसके साथ बलात्कार किया गया था, और उसे अपने हरम में रखा था।
वह बाद में उससे शादी करना चाहता था, लेकिन उसने मना कर दिया - जो कुछ कहता है। सूरह 33/26-27 बनाया
यह सब एक अच्छा काम है - यह कुछ ही समय बाद "आने" के लिए हुआ।

024 627 ई.: बानी लहयान का युद्ध।

025 627 ई.: घैबा का युद्ध।

०२६ ६२८ ईस्वी: खैबर नखलिस्तान: मुहम्मद ने सबसे पहले अपने में नेता अबी 'एल हकाक की हत्या की
नींद। बाद में उन्होंने खैबर के लिए एक प्रतिनिधिमंडल भेजा और नए नेता उस्यर बी का वादा किया। जरीम सुरक्षित
मदीना में शांति से और निश्चित रूप से उनकी समस्याओं के समाधान के बारे में चर्चा के लिए वापसी करें
सुरक्षित आचरण और सुरक्षित वापसी की गारंटी। जरीम 29 निहत्थे आदमियों के साथ रवाना हुआ - - - और सभी
एक को छोड़कर जो भागने में सफल रहा, मुहम्मद के आदमियों ने उसकी हत्या कर दी। "युद्ध विश्वासघात है,"
मुहम्मद ने बाद में कहा। फिर युद्ध हुआ। बानू नादिर यहूदियों का नरसंहार किया गया; - और सभी
खैबर में पुरुषों, लगभग 700 यहूदी पुरुषों (सभी) की हत्या कर दी गई, कुछ महिलाओं और बच्चों को बनाया गया
गुलाम किले खमुस से नेता किनाना अल-रबी को मौत के घाट उतार दिया गया था, क्योंकि
मुहम्मद धन की चोरी करना चाहता था, उसने सोचा कि किनाना जानता है कि कहाँ छिपा हुआ था। मुहम्मद
उसके सीने पर तब तक आग लगाई जब तक वह मर नहीं गया। तब मुहम्मद ने व्यक्तिगत रूप से किन्नन की नवविवाहिता का बलात्कार किया
पत्नी - 17 वर्षीय सफीजा - उसी रात, जबकि उसका आदमी अबू अयूब बाहर निगरानी रखता था
मामले में उसे इतना प्रतिरोध करना चाहिए कि यह मुहम्मद के लिए खतरनाक हो गया।
मुहम्मद उस समय लगभग ६० वर्ष के थे और निश्चित रूप से युवती के लिए एक खुशी की बात थी - विशेष रूप से

उसके ठीक बाद जब उसने अपने पति की एक पाशविक तरीके से हत्या कर दी थी। (उसने बाद में उससे शादी कर ली)। स्वर्ण
सह रहने की उम्र?

027 630 ई.: मक्का की विजय - और कुछ विरोधियों की हत्या।

028 630 ई.: हुन्सिन का युद्ध।

029 630 ई.: तबुकी का युद्ध

और भी बहुत कुछ था - साहित्य बताता है कि मुहम्मद ने पहल की
मुख्य रूप से चोरी/लूट/जबरन वसूली के लिए 60 से अधिक छापेमारी (आईबीएन .)
इसहाक नाम 43 उनमें से)। हमने आधे से भी कम का उल्लेख किया है
उन्हें।

(xxx 633 ई.: बहरीन, ओमान, महरा यमन और हद्रामौत पर हमला। इराक में छापे। (छापे)
मुख्य रूप से चोरी / लूट और गुलाम बनाने के लिए। यह सब खलीफा अबू बक्र के तहत।))

030 633 ई.: ओमान की लड़ाई।

031 633 ई.: हद्रामौत का युद्ध।

032 633 ई.: काजीमा का युद्ध।

033 633 ई.: वालाजा का युद्ध।

034 633 ईस्वी: उलेलिस की लड़ाई।

035 633 ई.: अनबर का युद्ध।

036 634 ई.: खलीफा अबू द्वारा गाजा और कैसरिया के बीच की सारी भूमि को बर्खास्त और नष्ट कर दिया गया
बक्र. कम से कम 4ooo किसान बस मारे गए - दूसरों के अलावा।

037 634 ई.: बसरा का युद्ध।

०३८ ६३४ - ६३५ ईस्वी: दमिश्क पर हमला करना और जीतना।

039 634 ई.: अजनादीन का युद्ध।

040 635-642 ई.: हमलों के दौरान - आत्मरक्षा जिहाद नहीं, बल्कि सीधे उल्लंघन में हमले
कुरान - मेसोपोटामिया में पूरी तरह से लूटपाट, विनाश, बलात्कार, गुलाम लेना, जबरदस्ती करना था
धर्म परिवर्तन, और विनाश - इतने सारे अल्लाह के नाम पर प्रचंड विनाश
अन्य स्थान। यह खलीफा उमर के अधीन है

041 634 ई.: दमिश्क का युद्ध।

042 634 ई.: नामरक की लड़ाई।

043 634 ई.: सकातिया का युद्ध।

044 635 ई.: ब्रिज की लड़ाई।

045 635 ई.: बुवैब का युद्ध।

046 635 ई.: दमिश्क की विजय।

047 635 ई.: फहल की लड़ाई।

048 635 ई.: यरमुक की लड़ाई।

049 635 ई.: कदसिया की लड़ाई।

050 636 ई.: मदन पर आक्रमण और विजय।

051 637 ई.: हमले के युद्धों में सीरिया और इज़राइल पर विजय प्राप्त करना।

052 637 ई.: जालुला का युद्ध।

053 637 ई.: यरमौक का युद्ध।

054 638 ई.: रोमियों के साथ युद्ध - सफल।

055 638 ई.: जज़ीरा पर आक्रमण और विजय।

056 639 ई.: खुजिस्तान पर हमला और विजय। मिस्र पर हमला।

०५७ ६३९ ईस्वी: विनाश के बाद यरूशलेम और इज़राइल में भूख की तबाही और प्लेग,
इसमें यहूदी और ईसाई प्रतीकों की निन्दा, और लूट और लूट शामिल हैं
मुसलमान। क्या यह काल्पनिक स्वर्ण युग की शुरुआत हो सकती है?

058 640 ईस्वी: फारस में हमले - शुस्टार और जांडे सबौर पर विजय प्राप्त करना। मिस्र में और हमले

059 641 ई.: निहवंद का युद्ध।

060 641? एडी: अमर बी। अल-अस ने मिस्र पर हमला किया:

1. बेहनेसा शहर: सभी निवासियों की हत्या कर दी गई
   उनके आत्मसमर्पण करने के बाद।
2. शहर फयूम: सभी निवासियों की हत्या कर दी गई।
3. अबोईत नगर: सब निवासी मारे गए।
4. किलिकिया : यहां के निवासियों को गुलाम बनाया जाता था।

०६१ ६४१ ईस्वी: खलीफा उमर (अम्र बी। अल-अस) ने पूरे शहरों और कस्बों को मार डाला और नष्ट कर दिया
इस समय के आसपास - और 641 ईस्वी में अलेक्जेंड्रिया में बिब्लियोथेक को नष्ट कर दिया (पूरी तरह से अद्वितीय)
प्राचीन दुनिया - मूर्खता और आतंकवाद के केवल इस टुकड़े ने अधिक प्राचीन को नष्ट कर दिया
पुराने धर्मग्रंथों की तुलना में ज्ञान सभी मुसलमानों ने एक साथ रखा, भविष्य के लिए कभी भी बचाया
एफ। भूतपूर्व। ग्रीस) क्योंकि किताबें या तो अनावश्यक थीं या खराब थीं, इस पर निर्भर करते हुए कि क्या वे सहमत हैं
कुरान के साथ या नहीं। सहवास या संस्कृति के लिए स्वर्ण युग?

062 641 ई. यूखैता, आर्मेनिया: सभी निवासियों की हत्या कर दी गई।

063 641 ई. असीरिया की जनसंख्या नष्ट हो गई। मुस्लिम सह का एक मानक उदाहरण-
बस्ती?

064 642 ई.: फारस में आर्य की लड़ाई।

०६५ ६४२ ईस्वी: वर्षों के आक्रमण के बाद मिस्र की विजय।

066 642 AD और फिर 643 AD में: Dvins के शहर को बर्खास्त कर दिया गया।

067 643 ई.: त्रिपोली पूरी तरह से बर्खास्त। इसके अलावा यहूदियों और ईसाइयों को भी मजबूर किया गया
अपनी सभी महिलाओं और बच्चों को अरब सेना को देने के लिए - अनुमान लगाएं कि किस लिए।

068 643 ईस्वी ?: कार्टेज को बर्खास्त कर दिया गया, नष्ट कर दिया गया और अधिकांश निवासियों की हत्या कर दी गई।

०६९ ६४३ ईस्वी: बाद के रूस में असरबैजान और तबरिस्तान पर हमला करना और जीतना। NS
काम पर "शांति का धर्म"?

०७० ६४४ ईस्वी: फ़ार्स, करमान, सिस्तान, मेकरान, और खारन पर हमला करना और जीतना - हमला,
रक्षा युद्ध नहीं। कम से कम ७३२ ई. तक इलाम लगातार आक्रमणकारी था।

071 645 ई.: वसा में हमले और छापे। अब खलीफा उस्मान के अधीन, बाद में खलीफा के बाद
अली।

072 646 ई.: खुरासान, आर्मेनिया और एशिया माइनर (बाद में तुर्की) में हमले और छापेमारी।

073 646 ई.: सायप्रोस द्वीप पर विजय।

074 648 ई.: बीजान्टिन के खिलाफ हमले और छापे।

०७५ ६५० ईस्वी: बीजान्टिन की सीमा पर कई भिक्षुओं और तपस्वियों की हत्या कर दी गई
साद की सेना।

076 651 ईस्वी: बीजान्टिन के खिलाफ नौसेना की लड़ाई।

०७७ ६५२-१२७६ ईस्वी: ६०० से अधिक वर्षों के लिए न्युबियन को दोनों लिंगों के दासों को भेजना पड़ा
प्रत्येक वर्ष काहिरा। (न्युबियन केवल उन लोगों से दूर थे जिन्हें इस तरह का भुगतान करना पड़ता था
मुस्लिम शासकों को श्रद्धांजलि।) गुलामों को आधिकारिक तौर पर केवल जिहाद (पवित्र) के दौरान लेने की अनुमति थी
युद्ध) मुसलमान कहते हैं (हालाँकि एक ईश्वर कितना अच्छा है जो न केवल दासता के दौरान भी अनुमति देता है
आत्मरक्षा का युद्ध, लेकिन इसे अपने योद्धाओं के लिए युद्ध के लिए उकसाने के रूप में उपयोग करता है? लेकिन जैसा सब कुछ था
जिहाद कहा जाता है, लूट, बलात्कार या दासता पर कोई समस्या या कारण नहीं था)।

078 658 ई.: नहरावां का युद्ध।

079 659 ई.: मिस्र में विजय।

080 666 ई.: सिसिली पर हमला हुआ।

081 666 ईस्वी: मुआविया ने साइप्रस को बर्खास्त किया, जिसमें बड़े नरसंहार शामिल थे। में भी हुई ऐसी ही बातें
मेसोपोटामिया, फारस, सीरिया और अनातोलिया।

883

पेज 884

081 670 ई.: उत्तरी अफ्रीका में पश्चिम की ओर आक्रमण।

083 670 ई.: पूर्व की ओर आक्रमण और काबुल (अफगानिस्तान में) पर विजय।

084 672 ई.: रोड्स द्वीप पर आक्रमण और विजय।

085 674 ई.: पूर्व में अधिक हमले और इस्लाम ऑक्सस नदी को पार करके ट्रांसऑक्सानिया में प्रवेश करता है।

086 677 ई.: समरकंद और तिमिज़ पर हमला करना और जीतना।

087 677 ई.: कॉन्स्टेंटिनोपल (अब इस्तांबुल) पर हमला।

088 687 ई.: कूफा का युद्ध।

089 691 ई.: दीर उल जलिक की लड़ाई।

090 695 ई.: उत्तरी अफ्रीका में काहिना पर हमला।

091 695 ईस्वी: ट्रांसऑक्सानिया में और हमले और किश पर कब्जा।

092 700 ई.: पश्चिमी उत्तरी अफ्रीका में बर्बरों पर हमला।

093 सीए 700-900? AD: Shu'ubiya - गैर-अरब मुसलमानों द्वारा गठित एक संगठन a . के रूप में
अरब मुसलमानों की प्रतिक्रिया अहंकार, भेदभाव और शीर्ष मालिक बनने की मांग
सब कुछ, यहां तक कि कठिन वे अभी भी मुख्य रूप से बर्बर थे। संगठन सबसे मजबूत था
मुहम्मद के बाद २ और ३ शताब्दी के दौरान। सहवास के स्वर्ण युग का प्रमाण?

094 702 ई.: इराक में विद्रोह और दीर उल जमीरा की लड़ाई। विद्रोह बहुत अच्छे हैं
स्वर्ण सह-अस्तित्व के प्रमाण।

095 704-705 ईस्वी: खलीफा वालिद प्रथम ने अर्मेनिया के पुरुष अभिजात वर्ग का एक बड़ा हिस्सा एकत्र किया
(ईसाई) नक्सकावन और अरैक्सिस के चर्चों में और उन्हें जिंदा जला दिया। बाकी को सूली पर चढ़ाया गया
या अन्य तरीकों से हत्या कर दी गई और उनकी महिलाओं और बच्चों को गुलाम बना लिया गया। वास्तव में हार्दिक
सहवास की अभिव्यक्ति - लेकिन एक स्वर्ण युग? - अच्छा वालिद मुझे बहुत सोना मिला।

096 711 ई.: स्पेन पर आक्रमण।

097 711 ई.: सिंध पर हमला (भारतीय उपमहाद्वीप पर - अब मोटे तौर पर पाकिस्तान)।

098 711 ई.: ट्रांसऑक्सानिया में नए सिरे से हमले। ऐसा लगता है कि ७११ ईस्वी को सक्रिय द्वारा चिह्नित किया गया है "शांति के धर्म" के लिए "रक्षा"।

099 712 ई.: सिंध के खिलाफ विजय युद्ध (पश्चिम भारत - अब पाकिस्तान) का आदेश (अब) इराक, हजाज के मुस्लिम गवर्नर और निष्पादित - शब्द के दोहरे अर्थ में - by मुहम्मद बी. कासिम।

1. देबल का शहर: मुस्लिम सेना को चाहिए 3 निवासियों की हत्या के दिन।

884

पेज 885

2. ब्रामिनाबाद शहर: पुरुष - लगभग 10ooo (कोई निश्चित रूप से नहीं जानता, लेकिन 6ooo के बीच) और 16ooo) की हत्या कर दी गई।

और भी थे।

100 713 ई.: मुल्तान की विजय।

102 716 ई.: कॉन्स्टेंटिनोपल पर नए हमले - इस बार भी आक्रमण।

१०३ ७२५ ई.: फ़्रांस पर आक्रमण - आधिपत्य f. भूतपूर्व। निम्स।

१०४ ७३२ ई.: फ्रांस में यात्रा की लड़ाई में मुस्लिम विस्तार के अंत का प्रतीक है पश्चिम। 110 वर्षों के आक्रमण और विजय के युद्धों के बाद। (हालांकि उन्होंने 737 में फिर से कोशिश की एडी, लेकिन फ्रांस में एविग्नन में पीटा गया था। और फिर ७९२ ई. में फ्रांस के दक्षिण में।)

105 737 ई.: खलीफा महदी ने मुस्लिम विजय के बाद असीरिया में बने सभी चर्चों को जला दिया। जबरन इस्लामीकरण। (मुसलमान बनो या मारे जाओ)।

052 आ 737 एविग्नन की लड़ाई - इस्लाम ने एक बार फिर फ्रांस पर हमला किया, लेकिन उसे पीटा गया।

106 740 ई.: शिया विद्रोह।

107 740 ई.: उत्तरी अफ्रीका में बर्बर विद्रोह - विद्रोह वास्तव में मैत्रीपूर्ण सह-अस्तित्व को सिद्ध करता है।

108 740 ई.: कुलीनों की लड़ाई।

109 741 ई.: उत्तरी अफ्रीका में बगदौरा का युद्ध। (कई त्रासदी लोगों पर ज़बरदस्ती की गई अफ्रीका, लेकिन हमें इसके बारे में बहुत कम जानकारी है।)

110 744 ई.: ऐन अल जुर्र की लड़ाई।

१११७४५ ईस्वी: कुफा और मोसुल पर खवारजीतों का कब्जा - स्वर्ण सह का समय-अस्तित्व?

112 746 ई.: रूपर थूथा का युद्ध।

113 746-748 ई.: बिहाफिरिड, फारस में विद्रोह।

114 747 ई.: खुरासान में विद्रोह। सह-अस्तित्व का स्वर्णिम समय?

115 748 ई.: रे की लड़ाई।

116 749 ई.: इस्फ़हान की लड़ाई।

117 749 ई.: निहावंद का युद्ध।

118 750 ई.: जाब की लड़ाई।

119 755 ई.: खुरासान (फारस) में सिनाबाद का विद्रोह। अधिक सुनहरा समय?

120 762 ई.: एक और शिया विद्रोह।

121 763 ई.: स्पेन में युद्ध - अब्बासियों (एक शासक मुस्लिम राजवंश) की हार।

122 767 ई.: खुरासान में एक और विद्रोह।

123 772 ई.: उत्तरी अफ्रीका में जानबी का युद्ध।

124 777 ई.: स्पेन में सारागोसे का युद्ध।

125 792 ई.: फ्रांस के दक्षिण में हमला, लेकिन पीटा गया।

125 781 ई.: इफिसुस को बर्खास्त कर दिया गया और 7oo यूनानियों को गुलाम बना लिया गया।

१२७,७९९ ई.: खजरों के विद्रोह को दबा दिया गया - स्वर्ण सह-अस्तित्व का अच्छा प्रमाण।

128 सीए ८००-८५० ईस्वी: खुर्रमी और बाबाक: विपक्ष और फिर २० साल का गृहयुद्ध
अरब वर्चस्व के खिलाफ (आंदोलन 700 के दशक की शुरुआत में शुरू हुआ, और अवशेष
कम से कम लगभग 1ooo AD तक मौजूद था)। सहवास का स्वर्ण युग?

129 805 ई.: मित्रवत सह-अस्तित्व में बीजान्टिन पर हमला - "शांति का धर्म"?

१३० ८०५ ई.: रोड्स पर आक्रमण और विजय।

131 805 ई.: साइप्रस पर आक्रमण और विजय।

134 814 ई.: गृहयुद्ध - मुसलमानों में भी कोई स्वर्ण सह-अस्तित्व नहीं? (समय के माध्यम से
कई तख्तापलट हुए, नेताओं की हत्याएं (पहले 11 खलीफाओं में से केवल एक - अबू बक्र
- स्वाभाविक रूप से मर गया), और यहां तक कि आंतरिक युद्ध भी।

135 815 ई.: शिया विद्रोह।

१३६८१६ ई.: मक्का (= मक्का) में शिया विद्रोह।

137 816 ई.: कोर्सिका पर आक्रमण और विजय।

१३८८१८ ई.: इबीसा, मेजरिका और सार्डिनिया पर आक्रमण और विजय।

139 837 ई.: जाटों का विद्रोह।

140 838 ई.: अजरबैजान में बाबेक का विद्रोह।

१४१ ८३८ ई.: अमोरियम बर्खास्त - कई हजार दास ले लिए गए - अंतरंग स्वर्ण के लिए प्रतीक
उम्र?

142 839 ई.: तबरिस्तान में मजार का विद्रोह।

१४३८३९ ई.: दक्षिण इटली पर आक्रमण और कब्जा।

१४४ ८३९ ईस्वी: मेसिना (सिसिली) पर हमला करना और जीतना।

पेज 887

145 843 ई.: अरबों का विद्रोह।

146 870 ई.: तुर्क विद्रोह।

147 874 ई.: दक्षिण इराक में जांज विद्रोह।

१४८ ८९८ ई.: करमाटियंस ने बसरा को बर्खास्त किया - कुछ स्वर्णिम सह-अस्तित्व!

149 903 AD: थेसालोनिकी बर्खास्त - 22oo ईसाइयों को गुलाम बना लिया गया।

१५० ९०८ ई.: सैफरीद प्रदेशों का समानिद का विलय। गोल्डन को- के लिए शांतिपूर्ण समय-
अस्तित्व?

151 909 ई.: अधिक नागरिक संघर्ष: फातिमियों ने अघलाबल्ड्स को उखाड़ फेंका।

152 924 ई.: सेंट मैरी का चर्च और सेंट मैरी और अन्य चर्चों का मठ
दमिश्क को लूट कर जला दिया गया। स्वर्ण युग में एक मैत्रीपूर्ण कार्य?

१५३ ९२९ ईस्वी: करमाटियंस ने मक्का को बर्खास्त कर दिया और काबा के काले पत्थर को ले गए। (वह था
951 ई. में लौटा।)

154 938 ई.: तख्तापलट से बगदाद पर बजकाम ने कब्जा कर लिया। (कई तख्तापलट हुए
इस समय और बाद में विभिन्न स्थानों पर। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए स्वर्णिम समय?)

१५५९६९ ईस्वी: फातिमियों (एक मुस्लिम शासक वंश) ने मिस्र पर विजय प्राप्त की।

१५६९७३ ईस्वी: बगदाद में सुन्नी और शिया के बीच "अशांति" (आज क्या होता है)
कुछ भी नया नहीं - यह इससे भी लगभग 300 साल पहले शुरू हुआ था)।

157 979 ई.: शिराज, फारस में जबरन धर्म परिवर्तन के बाद हंगामा हुआ।

158 1ooo AD: महमूद ने भारत के कुछ हिस्सों को गज़नी से बर्खास्त कर दिया। विनाश, डकैती, नरसंहार,
जबरन धर्म परिवर्तन। वह कोई संत नहीं था।

१५९ १००१ ईस्वी: महमूद गहज़नी (महमूद ग़ज़ानवी) से हिंदू शाही अपने दौरान
भारत पर हमला।

१६० १००४ ईस्वी: महमूद ने भारत में भाटिया पर कब्जा कर लिया।

१६१ १००४-५ ईस्वी: महमूद ने गज़नी से मुल्तान और घुर (भारत के राज्यों) पर आक्रमण किया। महमूदी
पहले की तरह व्यवहार करता है - मुख्य चीजें गैर-मुसलमानों को मारना और कीमती सामान चोरी करना है। बस एक
अल्लाह के नाम पर पेशेवर दस्यु सह सामूहिक हत्यारा।

१६२ १००४? ई.: महमूद गजनी के आदमियों से सोम्नत में लगभग 50ooo मारता है। निश्चित रूप से पूर्वी
सहवास के स्वर्ण युग की शुरुआत?

163 सीए 1ooo-1200 AD: पश्चिम में विद्रोह और गृह युद्ध - उत्तर पश्चिम में बर्बर्स
अरब प्रभुत्व, अहंकार और के कारण अरब और स्पेन अरबों से मुक्त हो गए
भेदभाव (एक कारण है कि कुछ हद तक स्वतंत्र सोच एक और 100 साल तक चली)
वहां)। सहवास का स्वर्ण युग?

पेज ८८८

१६४ १०१० ईस्वी और थोड़ा आगे: मुस्लिम स्पेन में सैकड़ों यहूदियों की हत्या - कई in
और कॉर्डोबा के आसपास।

165 1019 ई.: महमूद गजनी से पंजाब पर कब्जा कर लिया।

१६६ १०२०-२५ ईस्वी: एडेसा पर हमले - हत्या, लूट और ३००० गुलामों को ले जाना।

१६७ १०३३ ई.: मोरक्को के फ़ेज़ में कुछ ६० यहूदियों का नरसंहार किया गया।

१६८ १०४० ई.: एक बार फिर आंतरिक युद्ध - दंडनकान का युद्ध। सेल्जुक ने को हराया
गज़ानाविद।

१६९ १०६०-१०७० ईस्वी: एशिया माइनर (अब तुर्की): तुर्की आक्रमण - विनाश, चोरी,
लूटना, हत्या करना, नरसंहार करना, बड़ी मात्रा में दासों को ले जाना। ईसाई संस्कृति को नष्ट करना
सभी क्षेत्र में।

१७० १०६४ ई.: सुल्तान अल्प अरस्लान ने जॉर्जिया और आर्मेनिया को बर्खास्त कर दिया। सभी कैदी या तो थे
गुलाम बनाया या मार डाला।

171 1066 ई.: ग्रेनेडा में मुसलमानों द्वारा सभी यहूदियों - कुछ 4000 - की हत्या कर दी गई। किसी प्रकार का सुनहरा
उम्र।

172 1071 ई.: एक बार फिर बीजान्टिन पर हमला। मंज़िकर्ट की लड़ाई - बीजान्टिन
सम्राट कब्जा कर लिया है।

173 1082 ईस्वी: अल मोराविद (एक मुस्लिम शासक वंश) ने अल्जीरिया पर विजय प्राप्त की।

174 1086 ई.: स्पेन में युद्ध - ज़ल्लाखा की लड़ाई में ईसाई पराजित हुए।

175 1091 ई.: सिसिली ईसाई नॉर्मन्स से हार गया।

176 1095 ई.: पहला धर्मयुद्ध। इस्लाम धर्मयुद्ध के समय को भयानक समय मानता है,
क्योंकि उन्होंने मुस्लिम योद्धाओं की पशुता का थोड़ा-थोड़ा-थोड़ा-सा अनुभव किया
अपने पीड़ितों के खिलाफ अभ्यास किया। एक भी मुसलमान से हम मिले नहीं हैं, जिसकी तुलना हमने कभी की है
मुस्लिम योद्धाओं के अक्सर बहुत बुरे कर्मों के साथ क्रूसेडरों के काम - क्योंकि
मुस्लिम योद्धा निश्चित रूप से नायक थे, जबकि धर्मयुद्ध करने वाले जानवर थे। तुलना करें
एफ में मुस्लिम व्यवहार। भूतपूर्व। सिंध या आर्मेनिया या अफ्रीका के कुछ हिस्सों और अपना खुद का ड्रा करें
निष्कर्ष

१७७ ११३७ ईस्वी: अंडालूसिया पर विजय प्राप्त करने के बाद भी उत्तर (क्रेसाइट) और दक्षिण के बीच नफरत है
(यमेनाइट) अरब इतने ताकतवर थे कि सेना को अलग-अलग जगहों पर रखने की कोशिश करनी पड़ती थी
(असफल) गृहयुद्ध से बचने के लिए। स्वर्ण युग?

१७८ ११४५ - ११५५ ई.: प्रबल यहूदी-विरोधी उत्पीड़न में धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य होना शामिल था।

179 1165 ई.: यमन में यहूदियों के लिए जबरन धर्म परिवर्तन। मुसलमान बनो या मरो।

180 1174 AD: सलाह उल दीन (जिसे सलादीन के नाम से भी जाना जाता है) ने सीरिया पर कब्जा कर लिया। सलादीन की प्रतिष्ठा है
अपने पीड़ितों के प्रति बहुत अमानवीय व्यवहार नहीं करने के लिए। यह सच हो सकता है या नहीं भी हो सकता है, लेकिन अगर वह
ऐसी प्रतिष्ठा वाले कुछ मुस्लिम शासकों और सेनापतियों में से एक थे।

888

पेज 889

१८१ ११७५ ई.: आंतरिक युद्ध - घुरिदों ने गज़ तुर्कों को हराया।

182 1179 ई.: पेशावर पर कब्जा कर लिया गया।

183 1191 ई.: तराइन का प्रथम युद्ध।

184 1193 ई.: तराइन का दूसरा युद्ध।

१८५ ११९३ ई.: कुतुब उद दीन ऐबक और उसके सेनापति मुहम्मद खिलजी ने इसका अंतिम अंत किया।
बिहार में बौद्ध धर्म - उत्तर भारत में राज्य - व्यावहारिक रूप से सभी बौद्ध भिक्षुओं की हत्या करके।
वास्तव में बौद्ध धर्म पूरी तरह से 712 और 1200 ईस्वी के बीच भारत में जड़ से उखाड़ फेंका गया था (मुख्यतः
100 और 1200 AD के बीच)। हाँ, लोगों और लोगों के बीच सुनहरा सहवास

धर्म।

186 1194 ई.: दिल्ली पर मुसलमानों का कब्जा है।

१८७ ११९८ ई.: अदन में यहूदियों के लिए जबरन धर्म परिवर्तन।

१८८ ११९९ ई.: मुस्लिम घुरिदों द्वारा उत्तरी भारत और बंगाल पर विजय।

189 1232 ई.: मराकेश में यहूदियों का नरसंहार, उसके बाद पूरे मोरक्को में कठोर उत्पीड़न।

१९० १२४४ ईस्वी: आंतरिक युद्ध - अल मोहद्स ने अबू बयाशी की लड़ाई में मारिनिड्स को हराया
(इन सदियों के दौरान बहुत आंतरिक कलह और हत्याएं आदि होती हैं - हम केवल उल्लेख करते हैं
कुछ मामले)।

191 1250 - 1517 ई.: मिस्र में कई बार हंगामा हुआ क्योंकि गैर-मुसलमानों को अच्छी नौकरी मिली।

192 1258 ई.: मंगोलों ने बगदाद पर कब्जा किया। मंगोल एक और युद्ध संस्कृति का व्यवहार कर रहे थे
मुसलमानों की तरह - - - और इस्लाम के अनुसार भयानक जानवर थे। फिर वे बन गए
मुसलमान और पहले की तरह ही जारी रहे, लेकिन अब गैर-मुसलमानों के खिलाफ, और फिर वे
पाठ्यक्रम अच्छे थे और नायक - - - मुसलमानों और इस्लाम के अनुसार। इस्लाम की कोई नैतिकता नहीं है
दर्शन और कोई सहानुभूति नहीं।

193 1268 ई.: बैबर और उसके मुसलमानों द्वारा एंटिओकिया पर कब्ज़ा कर लिया और "यहां तक कि मुसलमान भी चौंक गए"
सभी हत्याओं और नरसंहारों से ”।

१९४ १२७५ ई.: फ़ेज़, मोरक्को में हंगामे - एक यहूदी को एक उच्च नौकरी मिली थी।

195 1280 ई.: उसका युद्ध।

196 1289 AD: 70+ असीरियन शहरों (मुख्य रूप से ईसाई) पर हमला। 500 मारे गए, 1000 बच्चे
गुलाम बना दिया।

197 1291 ई.: ताब्रीज़ में यहूदियों के लिए जबरन धर्म परिवर्तन (और फिर 1318 ई. में)।

198 1295 ई.: अश्शूरियों का जबरन इस्लामीकरण - मुख्य रूप से ईसाई।

१९९९ १२९७ ईस्वी: ईसाई अश्शूरियों पर नया हमला ("सौम्य" मुस्लिम शासन के तहत) - चर्च
जला दिया, 12oooo ने अमेडिया शहर में गुलाम बना लिया। हमले का नेतृत्व अला अल-दीन ने किया था।

889

पेज 890

२००१३१० ई.: एक बार फिर अश्शूरियों पर हमला: मंगोलों की मदद से अरबों ने अरबेला को अपने कब्जे में ले लिया। सभी
निवासियों की हत्या कर दी गई या उन्हें गुलाम बना लिया गया।

201 1315 ई.: ट्यूनीशिया में आंतरिक युद्ध। जैसा कि उल्लेख किया गया है कि बहुत सारे आंतरिक संघर्ष हैं, तख्तापलट,
इन सदियों के दौरान हत्या, और अन्य प्रकार की आंतरिक शक्ति संघर्ष - केवल हम
कुछ मामलों का उल्लेख करें।

202 1327 ईस्वी: निकिया शहर पर हमला किया और कब्जा कर लिया।

203 सीए १३३०-१६५६ ईस्वी: सुल्तान ओरखान द्वारा शुरू किया गया २०% ईसाई लड़कों के बीच
दक्षिण-पूर्वी यूरोप में १४ और २० वर्षों को गुलाम बनने के लिए मुसलमानों को सौंपना पड़ा
सैनिक (प्रति वर्ष संकेतित कुल संख्या से पता चलता है कि सबसे अधिक संभावना है कि 20% नहीं थे
भेजा - लेकिन दूसरी ओर काम करने वाले मुसलमान अक्सर कुछ अतिरिक्त बच्चों को चुन लेते हैं
खुद या माता-पिता से पैसे निकालने के लिए)। छोटे बच्चों के लिए एक समान "कर" (6 -
10 वर्ष) 1700 के दशक तक चला।

२०४ १३३३ ईस्वी: बगदाद में यहूदियों के लिए जबरन धर्म परिवर्तन (और फिर १३४४ में)।

205 1350 ई.: अब्दुर रजाक के खिलाफ विद्रोह।

206 1351 ई.: फिरोज शाह ने उत्तर भारत में सिंहासन पर प्रवेश किया - और एक आतंक और गुलाम बन गया-

शासक ले रहा है। ऐसा कहा जाता है कि उसकी राजधानी में उसके पास 180ooo गुलाम थे।
२०७ १३५३ ईस्वी: तुर्कों ने पश्चिमी तट पर टायम्पा के किले पर हमला किया और कब्जा कर लिया
हेलसेपॉन्ट = यूरोप महाद्वीप पर।

208 1361 ईस्वी: थ्रेस के कुछ हिस्सों पर विजय प्राप्त की गई।

209 1365 ई.: मतिजा का युद्ध - ईसाई पराजित हुए।

२१० १३६९ ईस्वी और उसके बाद: कट्टरपंथी मुस्लिम तैमूर लेनक, जिसे तामेरलेन या के नाम से भी जाना जाता है
तैमूरलेन। वह तुर्की था, लेकिन गिंगिस खान के वंशज होने का दावा करता था। वह और उसके आदमी
चोरी की संपत्ति के धनी बन गए - - - और सचमुच सैकड़ों-हजारों गैर-मुस्लिम थे
अगर वे मुसलमान नहीं बनना चाहते थे तो उनका नरसंहार किया गया। "शांति के धर्म" के लिए एक उल्लेखनीय शासक
और स्वर्ण युग।

211 1371 ई.: बुल्गारिया पर आक्रमण।

212 1381 ई.: सीस्तान का विलय, कंधार (अफगानिस्तान) पर कब्जा।

२१३ १३८४ ईस्वी: अस्त्राबाद की विजय और बहुत कुछ।

२१४ १३८६ ईस्वी: अजरबैजान, जॉर्जिया का विलय।

215 1394 ई.: मास्को के ड्यूक की हार हुई।

216 1395 ई.: अमीर तैमूर द्वारा इराक पर कब्जा। जैसा कि बताया गया है कि बहुत सारे आंतरिक हैं
इनके दौरान युद्ध, तख्तापलट, हत्याएं, "जमाव" और सत्ता संघर्ष के अन्य रूप
सदियों - हम केवल इसका कुछ उल्लेख करते हैं।

217 1398 ई.: भारत में "अभियान"।

218 1400 ईस्वी: तैमूर लेनक (जिसे तामेरलेन के नाम से भी जाना जाता है) और उसके मुस्लिम गिरोह ने त्बिलिसी को बर्खास्त कर दिया।
(जॉर्जिया) और आसपास। (ईसाई ज्यादातर)। (तैमूर के बारे में जानकारी के लिए स्रोत
लेनक मुख्य रूप से "ज़फ़र नामह" पुस्तक)।

219 1403 ई.: तैमूर लेनक त्बिलिसी और जॉर्जिया लौट आए। उसकी भीड़ - आप उन्हें बुला नहीं सकते
सैनिकों - 700 शहरों को नष्ट कर दिया, निवासियों का नरसंहार किया, लूट लिया जो वे ले सकते थे
उन्हें और त्बिलिसी के सभी चर्चों को जला दिया।

पवित्र मुस्लिम तैमूर लेनक और उनके आदमियों द्वारा कुछ अन्य "वीरताएँ":

1. दिल्ली (भारत) पर कब्जा कर लिया - 100ooo का आदेश दिया - एक सौ हजार - हिंदू कैदियों की हत्या क्योंकि "वे उसके लिए खतरा हो सकते हैं" सेनाएं"।
2. बर्खास्त मिराज (भारत में शहर) और चमड़ी हिंदू निवासी जीवित।

उसने उन सभी ईसाइयों की भी व्यवस्थित रूप से हत्या कर दी, जिन पर वह हाथ रख सकता था:

1. शिव में: 4oo ईसाइयों को जिंदा दफनाया गया।
2. तुस में: कुछ 10oo ईसाइयों की हत्या कर दी गई।
3. सराय में: कुछ 100oo ईसाइयों की हत्या कर दी गई।
4. बगदाद में : करीब 90 ईसाइयों की हत्या कर दी गई।
5. इस्फ़हान में: लगभग 70oo ईसाइयों की हत्या कर दी गई।
6. और और भी बहुत से नगर थे और शहरों।

युद्ध में मारे गए ईसाइयों को शामिल नहीं किया गया है - केवल जानबूझकर मारे गए लोग (For
तुलना: इस्राएल में सभी वर्षों के दौरान क्रुसेडर्स ने पूरी तरह से कितने लोगों की हत्या की? NS

क्रूसेडर बुरे लोग थे, मुसलमान कहते हैं, जबकि मुस्लिम हत्यारे हीरो थे?)

२२० १४४६ ईस्वी: कोसोवा की दूसरी लड़ाई - सर्बिया ने तुर्की पर कब्जा कर लिया, और बोस्निया बन गया
तुर्की जागीरदार। स्वर्णिम सह-अस्तित्व?

२२१ १४५३ ईस्वी: मुस्लिम सुल्तान मेहमत द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल लिया गया जिसने अपनी सेनाओं का वादा किया था
पूरी तरह से मुक्त चोरी, लूटपाट, बलात्कार और हत्या के दिन - और उसने अपनी बात रखी। NS
सैनिकों ने सड़क पर मिलने वाले सभी लोगों को मार डाला - सभी को। लेकिन कुछ समय बाद उन्होंने पाया कि
चोरी करना, लूटना और गुलामों को ले जाना बेहतर भुगतान करता है।

222 1456 ई.: सर्बिया पर हमला और कब्जा करना।

२२३ १४६५ ई.: मोरक्को के फ़ेज़ में उथल-पुथल - एक यहूदी को एक उच्च नौकरी मिल गई थी। सह का स्वर्ण युग-
बस्ती?

२२४ १४६१ ईस्वी: बोस्निया और हर्जेगोविना को तुर्की द्वारा लिया गया - - - आत्मरक्षा में "धर्म के द्वारा"
शांति"?

२२५ १४६२ ईस्वी: अल्बानिया पर विजय प्राप्त की - "शांति के धर्म" से आत्मरक्षा का एक और टुकड़ा
स्वर्ण सह-अस्तित्व के समय?" जब मुसलमान आपको इस्लाम के बारे में बताते हैं तो हंसें नहीं
केवल आत्मरक्षा में लड़ता है - हंसना अशिष्टता है।

226 1473 ई.: तुर्की और फारस के बीच युद्ध।

227 1475 ई.: तुर्की ने क्रीमिया पर आक्रमण किया और उस पर विजय प्राप्त की।

228 1475 ई.: तुर्की और वेनिस के बीच युद्ध। एजियन सागर पर तुर्की का दबदबा है।

२२९ १४९९ ई.: लेपैंटो की लड़ाई - तुर्कों द्वारा पराजित वेनिस का बेड़ा (लेकिन स्थिति
कुछ दशक बाद माल्टा की लड़ाई के साथ भूमध्य सागर में परिवर्तन शुरू होता है। भी
यूरोप अब धीरे-धीरे - बहुत धीरे-धीरे - औद्योगिक क्रांति की ओर अपना दावा शुरू करता है जो कि है
बाद में टेबल चालू करने जा रहे हैं)।

230 सीए १५०० - १९०० के दशक की शुरुआत में: यहूदियों, ईसाइयों के लिए कई बार जबरन धर्म परिवर्तन,
और दूसरे।

231 1526 ई.: मोहाकों का युद्ध। हंगरी के लुई को तुर्कों ने मार डाला।

232 1526 ई.: भारत में पानीपत की लड़ाई।

२३३ १५२८ ई.: हंगरी में बुडा (बुडापेस्ट का हिस्सा) पर तुर्कों ने कब्जा कर लिया।

234 1529 ई.: विजय के युद्ध (असफल) में वियना पर हमला।

२३५ १५६५ ईस्वी: माल्टा पर हमला - असफल, मुख्य रूप से आंतरिक प्रतिद्वंद्विता के कारण
मुस्लिम आक्रमण सेना, लेकिन एक मजबूत किले और कट्टर रक्षा के कारण भी
सिर्फ १००० से अधिक रक्षक + कुछ ८००० स्थानीय (कुछ २५००० - ४०००० मुस्लिम हमलावरों के खिलाफ)।
1571 में लेपैंटो के नौसैनिक युद्ध में इस हार और हार ने मुस्लिम प्रभुत्व को तोड़ दिया
भूमध्य सागर में।

२३६ १५७१ ईस्वी: लेपैंटो की एक नई लड़ाई - तुर्कों की हार और उनका प्रभुत्व
भूमध्यसागर समाप्त।

२३७ १६०० - १६९९ ईस्वी: साथ ही इस सदी को मुस्लिम क्षेत्र में बहुत अधिक आंतरिक संघर्ष से चिह्नित किया गया है -
बाहर अपने पड़ोसियों के लिए एक भाग्य। लेकिन निश्चित रूप से "सह के स्वर्ण युग" का माहौल नहीं है।
अस्तित्व"।

२३८ १६१७ ईस्वी: यहूदियों के लिए जबरन धर्म परिवर्तन + उत्पीड़न (और फिर १६२२ में)।

२३९ १६४१ ईस्वी: आज़ो (बाद में रूस का हिस्सा) पर हमला करना और कब्जा करना।

२४० १६५३-१६६६ ई.: फारस के सभी यहूदियों को मुसलमान बनना पड़ा।

२४१ १६७८ ई.: यमन में यहूदियों के लिए धर्म का नया जबरन धर्म परिवर्तन।

242 1683 ई.: वियना पर नया हमला। कोई सफलता नहीं। पूर्वी यूरोप में भी ज्वार-भाटा मुड़ने लगता है। यह भले ही नुकसान अधिक था क्योंकि तुर्की की अक्षमता (वे प्राप्त करने में असमर्थ थे)

युद्ध के मैदान में उनकी भारी बंदूकें) स्थानीय ताकत की तुलना में। अंत में उन्हें द्वारा पीटा गया 1687 में ऑस्ट्रियाई। स्वर्णिम सह-अस्तित्व का स्वर्णिम समय?

२४३ १६७९-८० ईस्वी: औरंगजेब के तहत हिंदुओं के खिलाफ हमला युद्ध - शायद सबसे खराब मुस्लिम भारत में कभी शासक, और इसका मतलब कुछ है - कम से कम 252 मंदिरों को नष्ट कर दिया। इस में अन्य सभी नायक के काम के अलावा। इस्लाम और के बीच सह-निवास का स्वर्ण युग अन्य लोग और धर्म?

244 1711 ई.: रूस के विरुद्ध युद्ध। पृथ के युद्ध में रूस की पराजय हुई।

245 1718 ई.: ऑस्ट्रिया के खिलाफ नया युद्ध - असफल। तुर्की ने हंगरी को ऑस्ट्रिया से खो दिया।

246 1761 ई.: भारत में पानीपत की लड़ाई। मुस्लिम क्षेत्र में धीमी गति से गिरावट आ रही है, जबकि यूरोप धीरे-धीरे बढ़ रहा है - लेकिन पूर्व में मुसलमान अभी भी स्थानीय लोगों की तुलना में अधिक मजबूत हैं।

247 1770-1786 ई.: यहूदियों को जेद्दा से बेदखल किया गया।

248 1790 ई.: टेटुआन, मारोको के यहूदियों ने नरसंहार किया।

२४९ १८०५ ई.: जैसा कि पिछली शताब्दियों में मुस्लिम क्षेत्र के अंदर और १८०५ में इब्न में बहुत संघर्ष हुआ था। सऊद ने मदीना को तुर्कों से छीन लिया।

२५० १८०७ ईस्वी: तुर्कों के खिलाफ दरकावी विद्रोह - स्वर्ण सह-अस्तित्व का एक और प्रमाण।

251 1812 ई.: मदीना पर मिस्र ने विजय प्राप्त की। किसी को आश्चर्य हो सकता है कि दुनिया को क्या हुआ था और दुनिया आज क्या होती, अगर यह सभी अंतर्देशीय युद्धों और संघर्षों के लिए नहीं होती "शांति के धर्म" के तहत सदियों से मुस्लिम क्षेत्र। एक धर्म जो प्रचार केवल आत्मरक्षा में युद्ध की अनुमति देता है - अल-तकियाय्या (वैध झूठ) का एक टुकड़ा? अभी भी - मुहम्मद के लगभग 1200 साल बाद - आम तौर पर मुसलमान जैसे हमलावर होते हैं वे हमेशा इन लगभग 12 शताब्दियों से गुजरे हैं।

लेकिन मुस्लिम विस्तार अब निश्चित रूप से इस समय के लिए समाप्त हो गया है और इसकी शक्ति में गिरावट आई है उसी समय जब पश्चिम पूरे वेग से आगे बढ़ रहा है। लेकिन अपने ही इलाके में मुसलमान अब भी राज करते हैं सह-अस्तित्व का स्वर्ण युग (?):

252 1828 ई.: बगदाद के यहूदियों ने नरसंहार किया।

253 1834 ई.: सफ़ेद में यहूदियों की हत्या और लूट।

254 1839 ई.: मेशेद में जबरन धर्म परिवर्तन और नरसंहार।

२५५ १८४० ईस्वी और बाद में: दमिश्क में यहूदियों की हत्याओं और लूट की एक लंबी श्रृंखला। (और मोरक्को, अल्जीरिया, ट्यूनीशिया, लीबिया और मध्य पूर्व के अरब देशों में भी)।

२५६ १८४२ ई.: बद्र खाम बे के नेतृत्व में असीरियन जाति को नष्ट करने का प्रयास (मुख्य रूप से ईसाई)।

२५७ १८६० ई.: लेबनान में कुछ दसियों हज़ार ईसाइयों को ड्रुज़ द्वारा कत्ल किया गया और कुर्द सेना।

893

पेज ८९४

258 1894 ई.: आर्मेनिया में ईसाइयों का नरसंहार।

259 1895 ई.: आर्मेनिया में ईसाइयों का नरसंहार।

२६० १८९५ ईस्वी: ईसाई अश्शूरियों का नरसंहार (१२००० केवल ऊर्फा शहर में कत्ल किया गया)।

261 1896 ई.: ईसाई अश्शूरियों पर नरसंहार जारी है। अनुमान है कि इससे अधिक
100oo सभी एक साथ मारे गए। हालांकि, इस तरह के हमलों से मुसलमानों ने अच्छा पैसा कमाया।

262 1896 ई.: आर्मेनिया में ईसाइयों का नरसंहार। १८९४ - १८९६ के दौरान कुछ २५० ईसाई
आर्मेनिया में मारे गए थे।

263 1904 ई.: आर्मेनिया में ईसाइयों का नरसंहार।

264 1909 ई.: आर्मेनिया में ईसाइयों का नरसंहार - कुछ 30oooo।

२६५ २. - १०. जनवरी १९१५ ई.: उर्मिया के लगभग ७० गांवों पर हमला किया गया और बर्खास्त कर दिया गया। की संख्या
पीड़ितों का पता नहीं है, लेकिन कम से कम कुछ हजारों (ईसाई) हैं।

266 1915 ई.: आर्मेनिया में भयानक नरसंहार - लगभग 1.2 मिलियन ईसाइयों की हत्या कर दी गई।
और सभी मुस्लिम नरसंहारों के दौरान सभी हत्याओं के समानांतर विनाश थे,
चोरी, बलात्कार और गुलाम लेना। 1915 के नरसंहार के दौरान कम से कम 80ooo ईसाई
अर्मेनियाई लड़कियों और युवतियों का अंत मुस्लिम हरम में हुआ, मुख्यतः तुर्की में।

२६७ १९१८ ई.: ४८ घंटों में लगभग ६००० ईसाई शरणार्थियों की सामूहिक हत्या (एक फ्रांसीसी में)
मिशन)।

268 1923 ई.: डेयर अल-सालिब के मठ को ध्वस्त कर दिया गया और निवासियों की हत्या कर दी गई
तुर्की सेना।

२६९ ११. - १६. अगस्त १९३३: ईसाई गांव सिमेले का नरसंहार - जिसमें बलात्कार और . शामिल हैं
कष्ट पहुंचाना। यह अनुमान है कि अगस्त 1933 के दौरान इस और अन्य नरसंहारों में लगभग 3000
ईसाइयों की हत्या कर दी गई - जिंदा जला दिया गया।

२७० १९३६ ई.: फिलिस्तीन में यहूदी आप्रवासन में वृद्धि ने लड़ाई को उकसाया। यह होना चाहिए
याद आया कि यहूदियों को जमीन बेचने वाले मुसलमान थे - इस पर यहूदियों ने जमीन नहीं ली
समय, उन्होंने इसे खरीदा।

२७१ १९४५ - १९४६ ई.: अजरबैजान और के अन्य क्षेत्रों में सैकड़ों ईसाइयों की हत्या
उत्तरी इराक।

२७२ १९६५ ई.: २५०० और ६००० गैर-मुस्लिमों के बीच (उनमें से कई जातीय चीनी)
इंडोनेशिया में बड़े पैमाने पर नरसंहार - या वास्तव में बड़े पैमाने पर नहीं - मुसलमानों और सेना द्वारा।

२७३ सीए 1975 ई.: बांग्लादेश में युद्ध। भले ही ये मुसलमान मुसलमानों के खिलाफ थे,
अन्य सभी अमानवीयता के अलावा, इतनी सारी लड़कियों और महिलाओं के साथ पाकिस्तानियों द्वारा बलात्कार किया गया
सैनिक, जो हमने बाद के अखबारों की रिपोर्टों में देखा है कि कुछ 200ooo बच्चे पैदा हुए थे
उन सभी बलात्कारों का परिणाम - और एक बच्चा पैदा करने के लिए औसतन कितने बलात्कार?. और वो थे a
नियमित सैनिक, अनियमित बल नहीं जैसे f. भूतपूर्व। दारफुर - और उन्होंने साथी मुस्लिम लड़कियों के साथ बलात्कार किया

894

पेज ८९५

और महिलाएं, मूर्तिपूजक या यहूदी या ईसाई नहीं। गोल्डन नहीं लेकिन कम से कम डायमंड
सहअस्तित्व।

२७४ १९८१ ई.: मुस्लिम देश संयुक्त राष्ट्र को . में #18 के पाठ को बदलने के लिए बाध्य करते हैं
मानवाधिकार - धर्म का होना मानव अधिकार है, लेकिन धर्म परिवर्तन का कोई मानव अधिकार नहीं है
एक दूसरे धर्म के लिए।

२७५ २४. सितंबर १९८८: इराक में लगभग २५० असीरियन और कैलडीन ईसाई "गायब हो गए" के बाद
थाने जाने का आदेश दिया।

276 बहुत सारे हजारों गैर-मुसलमानों की मुसलमानों और मुस्लिम इंडोनेशियाई द्वारा हत्या कर दी गई
सेना जब पूर्वी तिमोर मुक्त हुई। (१८६०० मारे गए/हत्या + अनुमानित ८४२०० "अधिक"
मौत "भूख और बीमारियों से।)

२७७ दारफुर: अफ्रीका के दारफुर में लगभग २००० गैर-मुसलमान मारे गए - ज्यादातर मारे गए। कोई भी नहीं
जानिए कितनी महिलाओं और लड़कियों के साथ रेप होता है और कितनी चोरी होती है

278 इंडोनेशिया: इंडोनेशिया में उथल-पुथल में कुछ 2oo - 4oo गैर-मुसलमानों की हत्या कर दी गई। अधिकतर
चीनी।

ये सभी से दूर हैं। से दूर। केवल वही जोड़ें जो हमारे पास नहीं है
मुहम्मद द्वारा शुरू किया गया (कुछ 40 का उल्लेख नहीं किया गया), और हमारे पास है
300 से अधिक मामले - व्यावहारिक रूप से ये सभी आक्रमण के युद्ध
और व्यावहारिक रूप से उन सभी ने जिहाद का नाम दिया - पवित्र युद्ध। यहां तक कि
"धर्म और शांति" के लिए बुरा नहीं होगा, लेकिन कई हैं
अधिक।

और ऐसे सैकड़ों या लाखों लोग हैं जो मर गए
बीमारी के दौरान और बाद में भूख या अत्यधिक मौतों से
हमले।

और इस दौरान "स्वर्ण सह-अस्तित्व" का समय कब था?

2007 ई.: मुस्लिम देशों ने संयुक्त राष्ट्र को अंतरराष्ट्रीय कानून बनाने के लिए मजबूर करने की कोशिश की
दूसरे धर्म के नबियों का अपमान करने पर रोक लगाना - देवताओं का नहीं, बल्कि पैगम्बरों का। अनुमान
जो इस धरती पर और पूरे इतिहास में एकमात्र और एकमात्र पैगंबर हैं जिन्हें इस तरह की जरूरत है
संरक्षण, और अनुमान लगाएं कि इस तरह के कानून का उपयोग कैसे किया जाएगा।

उससे लड़ो।

(२००९: इस्लाम सफल हुआ। दूसरी ओर किसी का अपमान नहीं करना है - सादा बताने के लिए)
मुहम्मद और इस्लाम के बारे में सच्चाई काफी नुकसानदेह है)।

अध्याय IV/4 के लिए पोस्ट स्क्रिप्ट।

ये केवल कुछ अत्याचार हैं, और ये कुछ उदाहरण हैं
3 लाख से अधिक हत्यारे "काफिरों" का प्रतिनिधित्व करता है - वाले
लड़ाई में या भूख से या अत्यधिक बीमारियों से मारे गए नहीं हैं

शामिल हैं, केवल मारे गए, निष्पादित और प्रताड़ित किए गए
मौत। पगान, ईसाई और यहूदी। और फिर इनहुमैनिटीज
सहारा के अफ्रीका दक्षिण को छुआ तक नहीं गया है (विश्वसनीयता की कमी के कारण)
जानकारी)।

हमने यह नहीं पाया है कि यूरोप में उनके धर्म के कारण कितने लोगों की हत्या की गई थी
समान कालखंड, लेकिन वे दसियों या सैकड़ों हजारों में थे, लाखों में नहीं।

लगभग १९०० से लेकर आज तक का समय हमारे लिए और भविष्य के लिए अधिक गंभीर है, क्योंकि यह
अब होता है और होता रहता है। और ऐसा होने पर विश्वास न करने का कोई कारण नहीं है
फिर से जब और अगर मुस्लिम कट्टरपंथी काफी मजबूत हो जाते हैं। बस कुरान पढ़ो।

"जब आदर्शवादी कहते हैं कि वे तुम्हें मारने जा रहे हैं, तो बेहतर होगा कि आप उन पर विश्वास करें"।

परोपकार के तहत लोगों और धर्मों के सह-निवास के स्वर्ण युग के लिए बहुत कुछ
इस्लाम।

और भविष्य की संभावनाओं के लिए बहुत कुछ अगर इस्लाम को नफरत के धर्म से नहीं बदला गया,
बलात्कार, डकैती, दमन और युद्ध, कुछ और शांतिपूर्ण करने के लिए। अगर ऐसा हो सके तो -
जो शायद ही है।

लेकिन याद रखें: लगभग 70% मुसलमान किसी भी तरह से इस्लाम के इस पक्ष को नहीं चाहते या पसंद या समर्थन नहीं करते हैं -
या आतंकवाद - अंतरराष्ट्रीय चुनावों के अनुसार।

लेकिन किसी को आश्चर्य हो सकता है कि क्या हुआ था और दुनिया कैसे हुई थी
हो गया अगर औद्योगिक क्रांति जिसने पश्चिम को अपनी शक्ति दी
(F. EX. इसके सैन्य बलों के बेहतर संगठन के साथ)
मुस्लिम क्षेत्र में हुआ था। एक शक्तिशाली केंद्र जो
कुरान के अनुसार दुनिया के बाकी हिस्सों को दबा दिया
मध्यकालीन आदर्श और कुछ हद तक नाजी-समान सोचने का तरीका और जैसा
नैतिक दर्शन का नाजी जैसा अभाव।

28. मार्च 2009।

एनबी: अगर आपको कहीं भी कोई गलती मिलती है, तो कृपया हमें सूचित करें। अगर यह एक वास्तविक गलती है, तो यह होगा
सुधारा गया।

भाग VI, अध्याय 1, (= VI-1-0-0)

**कुरान के अनुसार इस्लाम के तहत मुसलमान, पवित्र
मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब**

मुस्लिम पुरुषों के लिए जीवन कुरान के लिए और इसलिए मुस्लिम पुरुष और इस्लाम के लिए

896

पेज ८९७

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मुस्लिम पुरुषों के लिए जीवन का आसानी से वर्णन किया गया है: आप परिवार के शीर्ष पर हैं, और केवल एक ही हैं
जो वास्तव में कुरान के लिए मायने रखता है। आप वह सब कुछ तय करते हैं जो धर्म और आपके नेता करते हैं
निर्णय नहीं। और दुनिया और परिवार आपके चारों ओर घूमते हैं।

लेकिन उसके लिए: कुरान पढ़ें - लगभग हर चीज जो मुहम्मद या उस पर ध्यान केंद्रित नहीं करती है
मुहम्मद के भगवान, आपके बारे में है, आदमी (और एक योद्धा के रूप में)।

(अधिक 2010 के बाद नहीं जोड़े जाएंगे)।

भाग VI, अध्याय 2, अध्याय 1 (= VI-2-1-0)

**कुरान के अनुसार इस्लाम के तहत मुसलमान, पवित्र
मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब**

मुस्लिम महिलाओं के लिए जीवन मुहम्मद के अनुसार, थे कुरान, और अल्लाह, और इसलिए इस्लाम (मनुष्य के रूप में महिलाएं)।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस्लाम में एक महिला दूसरे दर्जे की इंसान है। उसके जीवन को कड़ाई से विनियमित किया जाता है - ताकि
उन लोगों की देखभाल करें जो लोग समझाते हैं, घोषणा करते हैं, और डींग मारते हैं - - - और उनमें से एक भी नहीं था
खुद ने उस जीवन को स्वीकार कर लिया जिसमें वे अपनी महिलाओं को मजबूर करते हैं।

धर्म भी मनुष्य का धर्म है। कुरान की ६००० से अधिक आयतों में से केवल ये कुछ
इसमें और अगले अध्याय + दासों के बारे में अध्याय, और कुछ और छंद (समानता के साथ)
सामग्री) महिलाओं के बारे में या आंशिक रूप से हैं। तो इन 2-3 छोटे अध्यायों में नीचे क्या है
(दासों के बारे में अध्याय शामिल है) कुरान में महिलाओं के बारे में कमोबेश यही है।
(कुछ अन्य अध्यायों में भी कुछ है, लेकिन कमोबेश यहाँ जैसा ही है)। हम विशेष रूप से
हालांकि, उल्लेख करें कि हम विरासत पर कानूनों में बहुत कम गए हैं, क्योंकि वे बहुत हैं
जटिल, क्योंकि मुहम्मद ने नियम बनाते समय अपना गणित सही नहीं पाया
(ऐसे आसान गणित में कोई भगवान ठोकर नहीं खाता था)। नतीजा यह होता है कि अक्सर
उत्तराधिकारियों के हिस्से विरासत से कम हैं, और कभी-कभी अधिक - सबसे खराब मामलों में
विरासत के अधिक (125%) तक। यह वकीलों के लिए अच्छा भोजन साबित हुआ है)। लेकिन छोटा होना
और उसके बारे में संक्षेप में: महिलाओं को विरासत में मिलता है, और जो उन्हें विरासत में मिलता है वह उनकी निजी संपत्ति है।
लेकिन वे उसी स्थिति में एक व्यक्ति को विरासत में मिली राशि का आधा ही विरासत में देते हैं। (आप मीड करेंगे
मुसलमानों का कहना है कि यह उचित है, क्योंकि पुरुषों को पत्नियों को "खरीदना" पड़ता है। दोनों तर्क हैं
उस दृष्टिकोण के पक्ष और विपक्ष में)।

897

पेज ८९८

००१ २/२६: "--- वे (मुस्लिम जन्नत के पात्र*) उसके साथ शुद्ध साथी हैं (और
पवित्र) (घंटा*) - - -।" घंटे कुछ खास तरह की महिलाएं हैं, लेकिन "तथ्य" कि वे हैं
स्वर्ग में आने वाले पुरुषों को अच्छे (?) कर्मों के भुगतान के रूप में दिया जाता है, किलोमीटर के बारे में बताता है
महिलाओं पर इस्लाम का दृष्टिकोण।

२/२२१: "अविश्वासी महिलाओं (मूर्तिपूजक) से शादी न करें, जब तक कि वे विश्वास न करें - - -"। के अनुसार
शरिया - मुस्लिम कानून - एक पुरुष को गैर-मुस्लिम महिला से शादी करने की अनुमति है, लेकिन एक महिला नहीं कर सकती
एक गैर-मुस्लिम आदमी से शादी करो। (मुस्लिम गुलाम लड़की की शादी गैर मुस्लिम से भी नहीं की जा सकती-
विवाह शून्य है और स्वचालित रूप से रद्द कर दिया गया है।)

002 2/222: "वे (मुसलमान*) आपसे (मुहम्मद*) महिलाओं के पाठ्यक्रम के बारे में पूछते हैं
(मासिक धर्म*)। कहो: वे एक चोट और एक प्रदूषण हैं: महिलाओं से दूर रहें
पाठ्यक्रम, और जब तक वे साफ न हों, तब तक उनके पास न जाएं। " मासिक धर्म वाली महिलाएं अनुष्ठानिक होती हैं
अशुद्ध।

००३ २/२२३: "तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हारे लिए एक भूमि (खेत, बाग*) के समान हैं; इसलिए जब
और आप कैसे करेंगे - - -"। अपने "टिल्थ" तक पहुंचें, अपनी महिला / महिला या साथी से संपर्क न करें
मनुष्य (ओं) या प्रिय (ओं)। और उनसे संपर्क करें कि आप कब और कैसे करेंगे - कब और
वह कैसे/वे कैसे करेंगे इसका उल्लेख नहीं किया गया है।

004 2/228a: "तलाकशुदा महिलाओं को तीन मासिक अवधियों के लिए अपने बारे में इंतजार करना होगा"।
यह सुनिश्चित करने के लिए कि यदि कोई बच्चा है तो पिता कौन है।

005 2/228c: "और महिला के अधिकार के अनुसार उनके खिलाफ अधिकारों के समान अधिकार होंगे"
न्यायसंगत क्या है; लेकिन पुरुषों के पास उनके ऊपर एक डिग्री (लाभ की) है"। जिसका अर्थ है कि
महिलाएं न्यायिक व्यक्तियों के रूप में पुरुषों से एक कदम छोटी या बड़ी हैं (वास्तव में मानव के रूप में भी)
प्राणी)।

००६ २/२३१: "यदि आप महिलाओं को तलाक देते हैं (अपरिवर्तनीय रूप से नहीं*) - - - या तो उन्हें न्यायसंगत रूप से वापस ले लें
शर्तों या उन्हें समान शर्तों पर मुक्त करें - - - (उनके लिए जीवन कठिन न बनाएं*)"। इस पर
बिंदु कुरान ठीक है।

007 2/233b: "किसी भी मां के साथ उसके बच्चे के कारण गलत व्यवहार नहीं किया जाएगा।" अगर माँ करती है
उसके पालन-पोषण का हिस्सा ठीक है, और बच्चा एक ही धूर्त निकला, माँ
(और समान शर्तों पर पिता भी) एक संतान के लिए जवाबदेह नहीं ठहराया जा सकता है
करता है। माता-पिता दोनों के लिए प्लस में एक अंक।

008 2/234: "यदि आप में से कोई मर जाता है और विधवाओं को पीछे छोड़ देता है (इसकी निष्क्रिय स्थिति पर टिप्पणी करें)
स्त्रियाँ - एक या अधिक*), वे अपने विषय में चार महीने दस दिन प्रतीक्षा करें
(पुनर्विवाह करने से पहले*) - - -।" यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतीक्षा करें कि कोई जानता है कि पिता कौन है यदि उसे करना चाहिए
गर्भवती होना। (कोई भी कम समय पर प्रतिक्रिया दे सकता है, लेकिन याद रखें कि शादियां शायद ही कभी होती हैं
जोश से विवाह थे, और यह कि एक महिला के लिए जीवन यापन करने के कुछ ही तरीके थे
खुद)।

००९ २/२३६: "आप पर कोई दोष नहीं है यदि आप महिलाओं को गर्भधारण से पहले तलाक दे देते हैं (= सेक्स *) या
उनके दहेज का निर्धारण; लेकिन उन्हें (एक उपयुक्त उपहार) प्रदान करें - - -।" एक शादी हो सकती है a
आकस्मिक मामला - कम से कम आदमी के लिए। लेकिन याद रखें: कुरान लगभग हमेशा से बहस करता है
आदमी का दृष्टिकोण।

०१० २/२४०: "तुम में से जो मर जाते हैं और विधवाओं को छोड़ देते हैं, उन्हें उनकी विधवाओं के लिए वसीयत दी जानी चाहिए"
एक वर्ष का प्रावधान और निवास - - -।" एक विधवा को अपने घर में रहने और रहने का अधिकार है
भोजन आदि कम से कम एक वर्ष तक - - - - यदि उसके पति ने ऐसी चीजें तैयार की हों ।

011 2/241: "तलाकशुदा महिलाओं के लिए उचित (पैमाने पर) प्रावधान (बनाया जाना चाहिए)। ये है
धर्मी का कर्तव्य। " जहां तक हकीकत में जाता है महिला के लिए सकारात्मक।

०१२ ३/१४: "मनुष्यों की दृष्टि में वह सुन्दर है, जिसका वे लालसा रखते हैं: स्त्रियां और पुत्र; ढेर-
सोने-चाँदी के ज़खीरे; घोड़े - - - और मवेशी और अच्छी तरह से जोत वाली भूमि"। क्या यह अस्तर
अपनी संपत्ति में एक आदमी की महिमा महिलाओं की स्थिति और मूल्य के बारे में कुछ बताती है
मुस्लिम समाज में? इसके ठीक नीचे 3/15 भी देखें।

०१३ ३/१५: "(स्वर्ग में मुस्लिम पुरुष*) अपना शाश्वत घर पाते हैं; साथियों के साथ (घंटे*)
शुद्ध (+ उनकी पत्नियाँ यदि वे जन्नत के योग्य हों), और अल्लाह की प्रसन्नता।" क्या ये
वाक्य कुछ बताएं कि इस्लाम में महिलाओं को कैसे महत्व दिया जाता है और उन्हें कैसे देखा जाता है? और देखें
3/14 ठीक ऊपर।

014 4/3: "- - - अपनी पसंद की महिलाओं से शादी करें, दो या तीन या चार, - - - "। इसके अलावा आप
जितनी चाहें उतनी रखैलें / दासियाँ रख सकती हैं। पत्नियों के लिए एक सीमा है (लेकिन .)
दास महिलाओं के लिए नहीं): आपको उनके साथ समान और न्यायपूर्ण व्यवहार करना होगा - लेकिन ज्यादातर मामलों में यह एक है
"भूल गए" वाक्य जब एक आदमी दूसरी पत्नी चाहता है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि यह दूर है
असामान्य रूप से बहुविवाही धर्मों या संप्रदायों के संस्थापकों को एक विशेष लाइसेंस प्राप्त होता है
भगवान (ओं) के लिए अतिरिक्त कई महिलाएं हैं - जैसे इस्लाम में मुहम्मद।

०१५ ४/४: "और महिला को (विवाह पर) उनका दहेज मुफ्त उपहार के रूप में दें।" औपचारिक रूप से डावर
खर्च करने के लिए औरत के लिए ही है। कभी ऐसे काम करता है तो कभी एक तरह से काम करता है
उस तरह, जैसे जीवन की वास्तविकताएं महिला को अपने परिवार और दैनिक कार्यों पर खर्च करने के लिए मजबूर करती हैं।
कभी-कभी यह उस तरह काम नहीं करता है, क्योंकि परिवार में एक महिला पर दबाव बनाने के कई तरीके हैं
इसे अन्य चीजों के लिए खर्च करने के लिए जो वह खुद वास्तव में चाहती है।

०१६ ४/१५: "यदि तेरी कोई स्त्री किसी व्यभिचार की दोषी है---- उन्हें तब तक घरों में बन्द रखना जब तक
मौत उनका दावा करती है"। पुरुषों के लिए कोई समान नियम नहीं है। एक विरोधाभासी श्लोक कहता है कि वे
सौ कोड़े मारने हैं - आधा अगर वह शादी के समय गुलाम थी। यह भी लायक है
यह उल्लेख करते हुए कि कुरान में इसके लिए सज़ा के रूप में पत्थरबाजी का उल्लेख नहीं है। लेकिन एक है
इस्लाम में मजबूत अफवाह है कि कुरान में कई छंद (100 हो सकते हैं) "इसे नहीं बनाया",
और "गैरकानूनी सेक्स" के लिए पत्थरबाजी के बारे में एक कविता उनमें से एक थी - लेकिन किताब में है

ऐसा कुछ नहीं है। हदीस में है, हालाँकि - और हदीसें यह भी बताती हैं कि मुहम्मद
व्यक्तिगत रूप से कम से कम एक ऐसे पत्थरबाजी में भाग लिया। एक आदिम और अमानवीय प्रकार की सजा
- और इससे भी अधिक अक्सर ऐसे मामलों में केवल महिला को ही पथराव किया जाता है।

०१७ ४/२४: "इसके अलावा (निषिद्ध (मुसलमानों के लिए शादी*) हैं) पहले से ही विवाहित महिलाएं, सिवाय
जिनके पास तुम्हारे दाहिने हाथ हैं (= दासी स्त्रियाँ*) - - -"। आप बलात्कार कर सकते हैं या गुलाम से शादी कर सकते हैं
महिलाएं भले ही पहले शादीशुदा थीं/हैं"। कोई टिप्पणी नहीं। इस संबंध में याद रखें
कि अविश्वसनीय 1982 ई. में अंतिम मुस्लिम में आधिकारिक दासता को समाप्त नहीं किया गया था
देश - मॉरिटानिया। (और इससे भी अधिक अविश्वसनीय 2007 तक यह दंडनीय नहीं बन गया
वहाँ अपराध)। यानी; हमने सुना है कि नाइजर बाद में भी था, लेकिन हमें नहीं मिला
इस पर कन्फर्मेशन. यह भी याद रखें कि संयुक्त राष्ट्र के अनुसार आज लगभग 24 मिलियन मनुष्य
"गुलाम के रूप में या गुलाम जैसी परिस्थितियों में रहते हैं" - मुस्लिम क्षेत्रों में उनमें से एक अच्छा प्रतिशत है।
और कम से कम नहीं: पुराने इस्लामी कानूनों के अनुसार (बाद में हालांकि मुहम्मद के बाद), सभी तथाकथित
इस्लामी काल की शुरुआत में "नए विचार" निषिद्ध और दंडनीय हो गए। उसका मतलब

899

पेज 900

कुरान या परंपराओं (हदीस) में सब कुछ नहीं। यह बहुत कठोर निकला, और वे
कुछ परिवर्तनों को स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया: परिवर्तन जो कुरान पर निर्माण करने के लिए कहा जा सकता है या
हदीस को "भगवान के नए विचार" कहा जाता था और अनुमति दी जाती थी, जबकि अन्य सभी को "बुरा नया" कहा जाता था
विचार "और अभी भी निषिद्ध है। गुलामी के उन्मूलन के बारे में मुसलमान चाहे कितना भी शेखी बघारें
इस्लाम का एक एकीकृत हिस्सा था/है, जो बहुत विनम्र होने के लिए केवल बकवास है। इस्लाम को मजबूर किया गया
पीछे की ओर और पश्चिम द्वारा उन्मूलन में लड़ रहे हैं। इसके अलावा मुहम्मद दोनों ने लिया, बलात्कार किया
(कम से कम रेहाना बिन्त अमर और सफ़िया बिन्त हुयय), उपहार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, उपहार के रूप में स्वीकार किया जाता है (कम से कम
उसकी काली उपपत्नी मारिया, जिसने उसे अपने बेटे इब्राहिम को जन्म दिया, जो एक बच्चे के रूप में मर गया, हालांकि) और
गुलामों को बेचा - और मुहम्मद इस्लाम में महान प्रतीक हैं: उन्होंने जो कुछ भी किया वह अनुमेय है,
अच्छा, और नैतिक और नैतिक रूप से ठीक। यदि इस्लाम ऊपरी हाथ और दबाव और विचारों को प्राप्त करता है
बाहर से समाप्त हो जाता है, तो क्या दासता को "अच्छा नया विचार" माना जाएगा या
"बुरा नया विचार" - और बाद के मामले में: क्या दासता धीरे-धीरे बहाल हो जाएगी? - कम से कम
जब तक गुलाम मुसलमान नहीं होंगे? ऐसे कई लोग हैं जिन्हें आश्चर्य नहीं होगा।
खासकर गुलाम औरतें एक प्रलोभन है।

018 4/25a: "यदि आप में से किसी के पास स्वतंत्र विश्वास करने वाली महिलाओं से शादी करने का साधन नहीं है, तो वे"
जिन लड़कियों के दाहिने हाथ हैं उनमें से ईमान वाली लड़कियों से शादी करें (= दासियाँ*) - -
- उनकी शादी उनके मालिकों की छुट्टी से की।" उनके मालिकों की छुट्टी, महिला की नहीं।

०१९ ४/२५बी: "- - - और उन्हें (जिन महिलाओं से आपने शादी की*) उनके दहेज दें - - -।" डावर्स
औपचारिक रूप से महिला की निजी संपत्ति बन गई। अगर वह एक दासी थी, तो अक्सर उसकी दहेज
बंधन से उसकी औपचारिक रिहाई थी - जैसे मुहम्मद के साथ सफीजा। वह उसे गुलाम के रूप में ले गया
खैबर ने अपने पति को प्रताड़ित कर मौत के घाट उतार दिया, उसके बाकी पुरुष परिवार की हत्या कर दी, सभी को गुलाम बना लिया
महिलाओं और बच्चों ने उसी रात उसके साथ बलात्कार किया जब उसके पति की हत्या कर दी गई थी - और शादी कर ली थी
उसे कुछ ही समय बाद। और उसका दहेज गुलामी से उसकी औपचारिक मुक्ति थी। एक सस्ती पत्नी के लिए
मुहम्मद.

०२० ४/३४ए: "पुरुष महिलाओं के रक्षक और रखवाले हैं, क्योंकि अल्लाह ने उन्हें दिया है"
एक और (शक्ति (केवल शारीरिक शक्ति मायने रखती है*)) दूसरे की तुलना में, और क्योंकि वे
उनके साधनों से उनका समर्थन करें (क्योंकि महिलाओं के पास शायद ही कोई और विकल्प था*)। इसलिए,
धर्मी स्त्रियाँ भक्ति की आज्ञाकारी (और पवित्र*) होती हैं।" समर्थन के लिए: कई समाजों में
इस्लाम से पहले, महिला काम कर रही थी और परिवार का समर्थन करने का अपना हिस्सा कर रही थी
खुद। उन कई मामलों में उसे समर्थन की आवश्यकता का कारण यह है कि इस्लाम उसे मना करता है
इसे स्वयं करने की संभावना। (वास्तव में इस्लाम जैसा युद्ध धर्म होने का एक कारण यह नहीं होगा
दुनिया को जीतने में सफल होना, बस महिला कार्यबल की अक्षमता है - और
दूसरा यह कि मुसलमानों को अपने बारे में सोचने के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता (और अभिनव हो) क्योंकि
तो वे इस्लाम के बारे में सवाल पूछना शुरू कर सकते हैं - अन्य बातों के अलावा सभी गलतियों के बारे में,
विरोधाभास, और अमान्य प्रमाण - और इसकी नैतिकता, नैतिकता और मानवता के साथ कुछ पहलू -
ओटी कमी या ऐसा। जहां तक सहानुभूति की बात है तो यह इस्लाम से इतनी दूर है कि यह एक खुला प्रश्न है कि क्या?
डिग्री एक औसत विश्वास करने वाला मुसलमान सहानुभूति महसूस करने में सक्षम है, कम से कम किसी भी चीज के लिए मुस्लिम नहीं -
यह इस्लाम के आदर्शों के लिए बहुत अलग है)।

०२१ ४/३४बी: "उन महिलाओं के लिए जिनकी ओर से तुम डरते हो (!!) विश्वासघात और दुर्व्यवहार - - - (यदि
शब्द मदद नहीं करते*) उन्हें (हल्के से) ताड़ना - - -।" हमें बताया गया है कि "हल्का" शब्द में नहीं है
मूल अरब ग्रंथ।

०२२ ४/४३: "- - - (यदि*) आपने एक महिला के साथ संपर्क किया है (इस मामले में: सेक्स किया है*) (आप हैं अशुद्ध*)"। हमें एक महिला के साथ यौन संबंध रखने के बारे में कोई संगत बयान नहीं मिला है
पुरुष अशुद्ध हो जाता है - लेकिन तब प्रकृति की स्त्रियां अधिक अशुद्ध होती हैं। सेक्स अच्छा है और इस्लाम के अनुसार जरूरी है, लेकिन यह भी अशुद्ध है। न केवल शारीरिक रूप से अशुद्ध, बल्कि

औपचारिक अशुद्ध। वही एक महिला के रस के लिए जाता है, और इसलिए आंशिक रूप से महिला खुद, कम से कम जब उसकी मासिक अवधि होती है। इसलिए यह मनुष्य के लिए आवश्यक है बाद में खुद को साफ करने के लिए - और अगर असली धुलाई संभव नहीं है, तो कम से कम औपचारिक सफाई, अगर किसी अन्य माध्यम से नहीं तो धूल या किसी प्रकार की पृथ्वी से। महिला औपचारिक है मासिक धर्म होने पर प्रतिबंधित - वह अशुद्ध है - और पूरी तरह से औपचारिक करना पड़ता है हर बार अवधि समाप्त होने पर सफाई। यह भले ही इस्लाम के अनुसार अल्लाह है जो महिलाओं को भी बनाया है, और मनुष्यों को परिपूर्ण बनाया है।

०२३ ४/५७: "- - - उसमें (स्वर्ग*) क्या उनके (योग्य मुस्लिम पुरुष*) साथी होंगे शुद्ध और पवित्र (घंटा*) - - -।" घंटे कुछ खास तरह की महिलाएं होती हैं, लेकिन "तथ्य" यह है कि वे अच्छे (?) कर्मों के प्रतिदान के रूप में स्वर्ग में आने वाले पुरुषों को दिए जाते हैं, बताता है महिलाओं पर इस्लाम के दृष्टिकोण के बारे में किलोमीटर।

०२४ ४/१२७: “वे स्त्रियों के विषय में तेरी (मुहम्मद की) शिक्षा माँगते हैं। कहो: अल्लाह दोथ आपको उनके बारे में निर्देश दें - - -"। उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा कुरान आपको निर्देश देता है। कुरान में नहीं है हालांकि, दूसरे तरीके से निर्देश दें। इसके अलावा: भले ही कुरान बहुत बुरा न हो महिला कुछ मायनों में, अन्य तरीकों से कुरान में "निर्देश" ऐसे हैं कि कोई भी पुरुष नहीं है इसे अपने लिए स्वीकार करेंगे - - - और किसी भी इंसान को यह मांग नहीं करनी चाहिए कि दूसरे इंसानों को जीना पड़े शर्तों के तहत वह खुद को मना कर देगा, और विशेष रूप से यह नहीं कि उसका सबसे करीबी परिवार - पत्नी और बेटियाँ- ऐसे जीने को मजबूर होना चाहिए।

०२५ ४/१२८: “यदि पत्नी अपने पति की ओर से क्रूरता या परित्याग से डरती है, तो इसमें कोई दोष नहीं है यदि वे आपस में (पति और पत्नी*) के बीच एक सौहार्दपूर्ण समझौता करते हैं; और ऐसा निपटान सबसे अच्छा है - - -।" मुहम्मद को न तो पारिवारिक कष्टों का अधिक शौक था और न ही तलाक, ताकि भले ही उसने तलाक को आसान बना दिया, खासकर पुरुषों के लिए, वह - और इस्लाम - बस्तियों और स्थिरता का समर्थन करता है (स्थिरता प्रशासन और शासन को भी आसान बनाती है शासक)।

०२६ ४/१२९: "तुम कभी भी महिलाओं (पत्नियों*) - - - के बीच निष्पक्ष और न्यायपूर्ण नहीं हो सकते। इस इस वाक्य को अक्सर मुसलमान "सबूत" के रूप में इस्तेमाल करते हैं क्योंकि बहुविवाह (कई पत्नियां) ज्यादा नहीं है मुस्लिम समाज में प्रयोग किया जाता है। हालाँकि, समस्या यह है कि यह पैराग्राफ सबसे अधिक नींद वाला है पुरुष जो खर्च कर सकते हैं और वास्तव में अधिक पत्नियां चाहते हैं। (सीरियल मोनोगैमी भी - बार-बार तलाक और विवाह - मौजूद है। मीडिया ने एक पुरुष के लिए 60 से अधिक शादियों की सूचना दी है। के बीच में शिया मुसलमान भी कम समय/निश्चित समय पर विवाह होते हैं - एक महीने के लिए विवाह, च। भूतपूर्व।)

०२७ ५/५: "(विवाह में आपके लिए वैध) (न केवल) पवित्र महिलाएं हैं जो विश्वास करने वाली हैं, लेकिन (यहूदियों और ईसाइयों*) के बीच पवित्र महिलाओं - - -।" पुरुषों से कहा जाता है- महिलाएं भी होती हैं ऐसी बहसों के लिए महत्वहीन। लेकिन यह महिलाओं से संबंधित है। ऐसा लगता है कि मुस्लिम पुरुष शादी कर सकते हैं जो महिलाएं यहूदी हैं, ईसाई हैं (हालांकि कुरान अन्य जगहों पर इसके खिलाफ लगती है) या मुसलमान, लेकिन मूर्तिपूजक नहीं (हालाँकि उन्हें रखैल के रूप में रखने के लिए कोई निषेध नहीं है या एक जैसा)। मुस्लिम महिलाएं केवल मुस्लिम पुरुषों से ही शादी कर सकती हैं - निषेध इतना सख्त है कि यदि a महिला एक गैर-मुस्लिम से शादी करती है, या उसका मुस्लिम पति दूसरे धर्म में परिवर्तित हो जाता है, उसे विवाह अमान्य है।

०२८ ५/६: "जब आप प्रार्थना की तैयारी करते हैं, तो धो लें (चेहरा, हाथ, निचले हाथ, पैर टखनों तक, और रगड़ें) आपका सिर*) - - - यदि आप अशुद्धता की स्थिति में हैं, तो स्नान करें (प्रैक्टिस वॉश में - हदीसें बताएं मुहम्मद ने "स्नान" के लिए 3-4 लीटर पानी का इस्तेमाल किया, और इसका मतलब केवल धोना है) तन। अगर - - - आप महिलाओं के संपर्क में रहे हैं (= सेक्स किया है*), और आपको पानी नहीं मिल रहा है, तो अपने लिये शुद्ध बालू और मिट्टी ले लो, और उस पर अपने चेहरे और हाथों से मलना।" नियम स्वच्छता के लिए मुसलमानों को कई अन्य लोगों की तुलना में कुछ हद तक साफ-सुथरा बना दिया, लेकिन वह

एक साइड इफेक्ट था, इरादा नहीं। मुख्य बात औपचारिक, औपचारिक स्वच्छता थी,
शारीरिक स्वच्छता नहीं। और औपचारिक रूप से अशुद्ध होने का एक सामान्य स्रोत था - और
है - महिला।

०२९ १६/५८: "जब उनमें से किसी एक (मुहम्मद* के समय के अरब) के पास समाचार लाया जाता है,
जन्म) एक महिला (बच्चा), उसका चेहरा काला हो जाता है, और वह आंतरिक दुःख से भर जाता है! शर्म से करता है
वह अपने आप को लोगों से छिपाता है, क्योंकि उसके पास एक बुरी खबर है!" आज शायद ही उतना बुरा है,
लेकिन कई मुस्लिम समाजों में केवल एक लड़का ही लड़का होता है।

०३० २३/६: "(अच्छे मुसलमान*) शादी में शामिल होने वालों को छोड़कर सेक्स से दूर रहें
बांड, या (बंदी) जिनके दाहिने हाथ हैं (= दास महिला*) - के लिए (उनके मामले में)
वे दोषमुक्त हैं - - -:" बंदी महिलाओं और दासियों का बलात्कार करना पूरी तरह से था/हैं
ठीक है (एक अपवाद के साथ: यदि वे गर्भवती थीं तो यह प्रतिबंधित था - लेकिन सबसे अधिक संभावना नहीं है कि यदि वे हैं
आपके बच्चे के साथ गर्भवती थीं)। एक "न्यायसंगत" युद्ध में एक महिला को बंदी बना लें - और कुछ भी था
नाम "जस्ट वॉर" - जिहाद - जब तक पीड़ित गैर-मुस्लिम थे, यह उल्लेख नहीं करने के लिए कि क्या वे
पगान थे - और आप अल्लाह के आशीर्वाद से उसका स्वतंत्र रूप से बलात्कार कर सकते थे, क्योंकि यह "अच्छा और" था
वैध"। और जैसा कि दास छापे भी पवित्र युद्ध के रूप में परिभाषित किया जा सकता है - "जिहाद" - पीड़ितों के रूप में
गैर-मुस्लिम, और सभी 4 इस्लामी कानून स्कूलों ने इस तथ्य को स्वीकार किया कि "दुश्मन" गैर-
मुसलमानों को जिहाद घोषित करने का "सच्चा" कारण बताया। यह था - और है (बलात्कार बहुत आम है
सशस्त्र संघर्ष जहां मुसलमान शामिल हैं) - योद्धाओं के लिए एक अच्छा जीवन।

०३१ २४/२३: "जो लोग पवित्र महिलाओं की निंदा करते हैं, अविवेकी लेकिन विश्वास करते हैं, वे इस जीवन में शापित हैं
और आख़िरत में - - -।" पवित्र महिलाएं एक अच्छी प्रतिष्ठा की हकदार थीं (क्योंकि यह भी)
उसके परिवार के पुरुषों और उसके पति, और उनकी प्रतिष्ठा के लिए गिना जाता है), लेकिन के प्रसारक
बदनामी अक्सर पकड़ना मुश्किल होता है, इसलिए भगवान से कुछ मदद/धमकी का मूल्य था।

०३२ २४/३१: "और विश्वास करने वाली स्त्री से कहो कि वे अपनी निगाहें नीची करें और अपनी रक्षा करें
नम्रता; कि वे अपनी सुंदरता और गहनों का प्रदर्शन न करें सिवाय इसके कि (जरूरी)
साधारणतया) उसके प्रकट होते हैं; कि वे अपना परदा अपनी छाती पर रखें और दिखावा न करें
उनके पति के अलावा उनकी सुंदरता - - - और कि उन्हें अपने पैरों पर प्रहार नहीं करना चाहिए
उनके छिपे हुए गहनों की ओर ध्यान आकर्षित करें।" कुरान में यही कहा गया है
इस बारे में कि एक महिला को एक अपवाद के साथ कैसे कपड़े पहनने चाहिए: वह भी
उसके बाल ढँकेंगे। बातों का ज़िक्र दूसरी जगहों पर है, लेकिन यहाँ जैसा ही है।
(एक जगह परदे की बात हो रही है, लेकिन वह केवल मुहम्मद की पत्नियों से संबंधित है, और यह है a
घूंघट एक कमरे के विभाजन के रूप में प्रयोग किया जाता है, न कि चेहरे को ढकने वाला घूंघट)। a . के बारे में और सब कुछ
औरत के कपड़े कुरान से नहीं हैं। (लेकिन हदीस में परदे का जिक्र है)।

०३३ २४/३३: "लेकिन जब वे शुद्धता की इच्छा रखते हैं तो अपनी दासियों को वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर न करें - - -"। यह था
एक नियम जो बहुत टूटा था - और आज भी बहुत टूटा हुआ है (और केवल मुसलमानों के बीच ही नहीं)
संयुक्त राष्ट्र के 24 मिलियन दासों के एक बड़े हिस्से के रूप में, जबरन वेश्यावृत्ति में महिलाएं हैं या
यौन शोषण।

०३४ २४/६०: "ऐसी बुजुर्ग महिलाएं जो शादी की संभावना से परे हैं - इसमें कोई दोष नहीं है"
यदि वे अपने (बाहरी) वस्त्रों को एक तरफ रख दें, बशर्ते कि वे अपने का ज़बरदस्त प्रदर्शन न करें
सुंदरता (महिला शरीर के अंग*): लेकिन उनके लिए विनम्र होना सबसे अच्छा है - - -।" सख्त कोडेक्स है
कुछ हद तक आराम से जब वह अब आकर्षक नहीं है।

०३५ २५/७४: "और जो लोग प्रार्थना करते हैं, 'हमारे भगवान (अल्लाह) हमें पत्नियां और संतान प्रदान करते हैं जो'
हमारी आँखों को सुकून देगा - - - (और कुछ अन्य नमाज़ें, अच्छे मुसलमान हैं और खत्म हो जाएंगी
स्वर्ग)" कोई टिप्पणी नहीं, सिवाय इसके कि कुरान महिलाओं पर कैसा दिखता है, इसके बारे में कुछ नहीं बताता।

०३६ ३३/२८-२९: "हे पैगंबर (मुहम्मद*)! अपनी पत्नियों से कहो: 'यदि ऐसा है कि तुम जीवन की इच्छा रखते हो'
इस दुनिया की, और इसकी चमक-फिर आओ! मैं आपके आनंद के लिए प्रदान करूंगा और आपको मुक्त कर दूंगा
सुन्दर ढंग से। लेकिन अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और उसके घर की तलाश करते हो
आख़िरकार, अल्लाह ने तुममें से नेकी करने वालों के लिए बड़ा बदला तैयार किया है।"

मुहम्मद की महिलाओं की समस्याएँ थीं - और अल्लाह (?) ने उनकी मदद की - यह एकमात्र समय नहीं है।
इस पाठ को देखें, मदीना के उस समय के तीव्र धार्मिक उत्साह को ध्यान में रखें,
प्रभाव और एक-दिमाग जो तीव्र, एकतरफा लोगों पर सामान्य प्रभाव है
धार्मिक आकर्षण - इतिहास या आक्रोश इतिहास के माध्यम से इस्लाम केवल एक ही नहीं है - साथ ही
भोलापन जो शिक्षा की कमी और एकतरफा प्रचार का अनुसरण करता है, साथ ही तथ्य यह है कि महिलाएं
जानते थे कि उनके पास क्या है, लेकिन उनके पास छोटे समाज में भविष्य से डरने का हर कारण था
अपने स्वयं के जीवन यापन की संभावनाएं, और एक ऐसे समाज में जहां वे हमेशा रहेंगे
"पैगंबर" को छोड़ने के लिए मुहर लगी अगर वे "मुक्त" थे - - इसमें कोई संदेह नहीं है कि
मुहम्मद अपने मनोविज्ञान और लोगों को जानते थे। उन्होंने सदियों पुरानी रणनीतियों में से एक का इस्तेमाल किया
युगों से शक्तिशाली और साधन संपन्न ने अपने परिवेश में हेरफेर करने के लिए उपयोग और उपयोग किया है -
उनकी महिलाएं शामिल हैं। और कुरान में कहीं-कहीं उसका ईश्वर उसका समर्थन करता है - क्या यह वास्तव में अ है?
एक भगवान के लिए कार्य? - और क्या यह कुछ ऐसा है जो द्वारा पूजनीय "मदर बुक" में है
अपने स्वर्ग में सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान भगवान? (और अगर पुरुष - और महिला - की स्वतंत्र इच्छा है, तो
कि भविष्य बंद नहीं है - इन विवरणों को अरबों वर्षों की पुस्तक में कैसे लिखा जा सकता है?
ऐसा होने से पहले? - यह तभी किया जा सकता है जब मनुष्य और जानवर सभी एक डोरी की कठपुतली हों
पूरी तरह से स्वतंत्र इच्छा के बिना।)

मुहम्मद बुद्धिमान और चालाक था।

और जिस हद तक यह कहानी दूसरों के लिए एक आदर्श बन सकती है, जीवन ऐसा ही था और आगे भी है
सभी भविष्य के लिए मुस्लिम महिलाएं, मुहम्मद के लिए महान मूर्ति और नैतिक आदर्श थे और हैं।

उनकी - और कई अन्य प्रमुखों की तस्वीर प्राप्त करने के लिए 33/28-29 से 33/33 तक एक साथ पढ़ें
मजबूत और अंधेरे धार्मिक समाजों में धार्मिक व्यक्ति - तकनीक। सबसे अधिक इस्तेमाल में से एक -
और सिद्ध कुशल - आश्रित व्यक्तियों के साथ छेड़छाड़ करने के तरीके। यहां तक कि भगवान का उपयोग भी।

०३७ ३३/३०: “हे पैगंबर की पत्नी। यदि आप में से कोई स्पष्ट रूप से अनुचित रूप से दोषी था
आचरण, उसके लिए सजा दोगुनी हो जाएगी, और यह अल्लाह के लिए आसान है"। टिप्पणियों के लिए
ऊपर 33/28-29 देखें - और यह भी ध्यान दें कि भगवान का उपयोग करना आसान है, मुहम्मद के लिए पसंद है
समाज में हर आत्म केंद्रित मानव जोड़तोड़ जहां धर्म एक प्रमुख उपस्थिति है।

उसकी तस्वीर प्राप्त करने के लिए 33/28-29 से 33/33 + 33/50 और 33/51 को एक साथ पढ़ें - और बहुत कुछ
कई अन्य प्रमुख धार्मिक व्यक्ति दृढ़ता से और अंधेरे धार्मिक समाजों में - तकनीक।
आश्रित व्यक्तियों के साथ हेराफेरी करने के सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले - और सिद्ध कुशल - तरीकों में से एक। यहां तक की
ऐसे व्यक्तियों के लिए भगवान का उपयोग विशिष्ट है। यह सब औपचारिक रूप से मुहम्मद के निजी के बारे में है
अंतरंग जीवन, लेकिन जैसा उन्होंने कहा और किया वह सही नैतिक और नैतिक कोडेक्स था
इस्लाम - और इसलिए जीवन के इस पहलू से संबंधित सभी महिलाओं के लिए आदर्श, हम इसे भी शामिल करते हैं
इस्लाम के तहत महिलाओं के जीवन के बारे में यह अध्याय।

०३८ ३३/३१: "लेकिन अगर तुम में से कोई अल्लाह और उसके रसूल की सेवा में समर्पित है (भी)
इस तरह की समस्याओं को हल करने के लिए वह खुद को सत्ता के अपने मंच - भगवान *) से चिपका लेता है, और काम करता है
नेकी - उसे हम (अल्लाह*) दो बार इनाम देंगे: और हमने इसके लिए तैयारी की है
उसे एक उदार जीविका। ”

जैसा कि ऊपर कहा गया है: उसकी तस्वीर पाने के लिए 33/28-29 से 33/33 + 33/50 और 33/51 को एक साथ पढ़ें।
- और बहुत से अन्य प्रमुख धार्मिक व्यक्ति दृढ़ता से और अंधेरे धार्मिक समाजों में -

तकनीक। आश्रितों में हेर-फेर करने के सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले - और सिद्ध कुशल - तरीकों में से एक
व्यक्तियों। ऐसे व्यक्तियों के लिए भगवान का उपयोग भी विशिष्ट है। यह सब औपचारिक रूप से के बारे में है
मुहम्मद का निजी अंतरंग जीवन, लेकिन जैसा उन्होंने कहा और किया वह सही नैतिक था
और इस्लाम में नैतिक संहिता - और इसलिए जीवन के इस पहलू से संबंधित सभी महिलाओं के लिए आदर्श,
हम इसे इस अध्याय में इस्लाम के तहत महिलाओं के जीवन के बारे में भी शामिल करते हैं।

039 33/32: "हे पैगंबर की पत्नी! तुम किसी भी (अन्य) महिलाओं की तरह नहीं हो: यदि तुम डरते हो
(अल्लाह) वाणी में बहुत ढिलाई न बरतें, कहीं ऐसा न हो कि जिसके हृदय में रोग है, वह हिल जाए
इच्छा के साथ: लेकिन तुम एक भाषण (अर्थात) उचित बोलो।

एक बार फिर: ३३/२८-२९ से ३३/३३ + ३३/५० और ३३/५१ को एक साथ पढ़कर उनकी तस्वीर प्राप्त करें -
और बहुत से अन्य प्रमुख धार्मिक व्यक्ति दृढ़ता से और अंधेरे धार्मिक समाजों में -
तकनीक। आश्रितों में हेर-फेर करने के सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले - और सिद्ध कुशल - तरीकों में से एक

व्यक्तियों। ऐसे व्यक्तियों के लिए भगवान का उपयोग भी विशिष्ट है। यह सब औपचारिक रूप से के बारे में है
मुहम्मद का निजी अंतरंग जीवन, लेकिन जैसा उन्होंने कहा और किया वह सही नैतिक था
और इस्लाम में नैतिक संहिता - और इसलिए जीवन के इस पहलू से संबंधित सभी महिलाओं के लिए आदर्श,
हम इसे इस अध्याय में इस्लाम के तहत महिलाओं के जीवन के बारे में भी शामिल करते हैं। यहाँ मुहम्मद अतिरिक्त डालता है
अपनी महिलाओं पर यह सुनिश्चित करने का दबाव डालते हैं कि वे "व्यवहार" करें।

०४० ३३/३३: "और अपने घरों में चुपचाप रहो, और एक चमकदार प्रदर्शन न करो, जैसा कि
पूर्व टाइम्स ऑफ इग्नोरेंस; और नियमित प्रार्थना की स्थापना, और नियमित दान देना; और आज्ञा मानो
अल्लाह और उसके रसूल (!!*)। और अल्लाह तो बस इतना चाहता है कि तुझ से हर घिनौनी चीज़ मिटा दे,
हे परिवार के सदस्यों, और तुम्हें शुद्ध और निष्कलंक बनाने के लिए।" हाँ, इस तरह
सर्वशक्तिमान, पराक्रमी भगवान मुहम्मद के दैनिक पारिवारिक जीवन को के अनुसार हल करने के लिए बोलते हैं
श्रद्धेय मदर बुक अपने ही घर में अपने स्वर्ग में (जिसकी कुरान एक प्रति है,
इस्लाम के अनुसार)।

जैसा कि पहले कहा गया है: चित्र प्राप्त करने के लिए 33/28-29 से 33/33 + 33/50 और 33/51 को एक साथ पढ़ें
उनके - और बहुत से अन्य प्रमुख धार्मिक व्यक्ति जो दृढ़ता से और अंधेरे धार्मिक समाजों में हैं
- तकनीक। आश्रितों में हेर-फेर करने के सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले - और सिद्ध कुशल - तरीकों में से एक
व्यक्तियों। ऐसे व्यक्तियों के लिए भगवान का उपयोग भी विशिष्ट है। यह सब औपचारिक रूप से के बारे में है
मुहम्मद का निजी अंतरंग जीवन, लेकिन जैसा उन्होंने कहा और किया वह सही नैतिक था
और इस्लाम में नैतिक संहिता - और इसलिए जीवन के इस पहलू से संबंधित सभी महिलाओं के लिए आदर्श,
हम इसे इस अध्याय में इस्लाम के तहत महिलाओं के जीवन के बारे में भी शामिल करते हैं। अल्लाह अपनी पत्नियों को होने का आदेश देता है
अच्छी लड़कियां - मुहम्मद के लिए एक अच्छी मदद। लेकिन क्या यह भगवान के लिए एक नौकरी है? - और क्या यह पाठ के योग्य है a
मदर बुक जिसे एक सर्वज्ञ ईश्वर अपने स्वर्ग में पूजता है - श्रद्धा करता है?

041 33/50: "हे पैगंबर! हम (अल्लाह*) ने तुम्हें (सेक्स के लिए) वैध बनाया है (यह असामान्य नहीं है
कि भगवान किसी धर्म या संप्रदाय के संस्थापक की ओर "अनुमति" देते हैं - ऐसा नहीं होता है
यदा-कदा*) तेरी पत्नियाँ जिन्हें तू ने उनके दान दिए हैं: और जिन्हें तेरा अधिकार है
हाथ युद्ध की लूट (जो काफी बड़ी संख्या * थी) से बाहर है जिसे अल्लाह के पास है
आपको सौंपा गया; और तेरे चाचा-चाची की बेटियां, और तेरे माता-पिता की बेटियां
मामा और मौसी, जो आपके साथ (मक्का (= मक्का *)) से चले गए; और कोई भी
विश्वास करने वाली महिला जो पैगंबर को अपनी आत्मा समर्पित करती है यदि पैगंबर उससे शादी करना चाहते हैं - यह
केवल तुम्हारे लिए है, और विश्वासियों के लिए नहीं (बड़े पैमाने पर); हम जानते हैं कि हमने नियुक्त किया है
उन्हें (सेक्स की अनुमति*) उनकी पत्नियों के संबंध में और जिनके पास उनके दाहिने हाथ हैं - क्रम में
कि तुझे कोई कठिनाई न हो।" दासों के लिए, एक बड़ी संख्या गुजरी
मुहम्मद के हाथ - शायद 2000 या उससे अधिक केवल खैबर से। हम नहीं जानते कि क्या और में
रैहाना बिन्त अमर और सफ़िया बिन्तो को छोड़कर उसने व्यक्तिगत रूप से उनमें से कितने लोगों के साथ बलात्कार किया
Huayay (जिसके बारे में हम जानते हैं क्योंकि पहले बाद में उसकी एक रखैल बन गई, और

904

पेज 905

उसकी पत्नियों में से एक), लेकिन आकस्मिक तरीका और न्यूनतम फ़ज़ जिसके साथ दो बलात्कार होते हैं
हुआ और बनाया, यह सोचना आसान बनाता है कि वे न तो पहले थे, और न ही एकमात्र -
किसी के बंदियों और दासों का बलात्कार करना इस्लाम में पूरी तरह से ठीक था (और औपचारिक रूप से अभी भी है)। यह सिर्फ
इस्लाम के तहत महिलाओं के लिए जीवन वैसा ही था/है।

और एक बार फिर: ३३/२८-२९ से ३३/३३ + ३३/५० और ३३/५१ को एक साथ पढ़िए ताकि उनकी तस्वीर मिल सके।
उनके - और बहुत से अन्य प्रमुख धार्मिक व्यक्ति जो दृढ़ता से और अंधेरे धार्मिक समाजों में हैं
- तकनीक। आश्रितों में हेर-फेर करने के सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले - और सिद्ध कुशल - तरीकों में से एक
व्यक्तियों। ऐसे व्यक्तियों के लिए भगवान का उपयोग भी विशिष्ट है। यह सब औपचारिक रूप से के बारे में है
मुहम्मद का निजी अंतरंग जीवन, लेकिन जैसा उन्होंने कहा और किया वह सही नैतिक था
और इस्लाम में नैतिक संहिता - और इसलिए जीवन के इस पहलू से संबंधित सभी महिलाओं के लिए आदर्श,
हम इसे इस अध्याय में इस्लाम के तहत महिलाओं के जीवन के बारे में भी शामिल करते हैं।

०४२ ३३/५१: "आप (मुहम्मद*) उनमें से किसी के भी (सेक्स करने की बारी) को टाल सकते हैं।
तू प्रसन्न है, और तू जो चाहे (अपने बिस्तर/सेक्स के लिए) प्राप्त कर सकता है: और कोई नहीं है
यदि तू किसी ऐसे व्यक्ति को बुलाता है, जिसे तू ने अलग कर दिया है, तो तेरा दोष है।" **यह आदमी की इच्छा है और
आनंद जो मायने रखता है, और यहाँ इस तथ्य की पुष्टि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपनी माँ में की है
पुस्तक** - हालाँकि यह केवल मुहम्मद को लिखी गई है और उस पुस्तक में किसी के समान कुछ भी नहीं कहा गया है
हजारों पूर्व भविष्यद्वक्ताओं (124oooo?) या सामान्य पुरुषों के लिए। लेकिन जैसा कि मुहम्मद
महान मूर्ति, उन्होंने जो कुछ कहा और किया वह सब कुछ था और अगर कुछ खास नहीं है तो करना सही है
कहा कि प्रतिबंधित है।

एक बार फिर: ३३/२८-२९ से ३३/३३ + ३३/५० और ३३/५१ को एक साथ पढ़कर उनकी तस्वीर प्राप्त करें -

और बहुत से अन्य प्रमुख धार्मिक व्यक्ति दृढ़ता से और अंधेरे धार्मिक समाजों में -
तकनीक। आश्रितों में हेर-फेर करने के सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले - और सिद्ध कुशल - तरीकों में से एक
व्यक्तियों। ऐसे व्यक्तियों के लिए भगवान का उपयोग भी विशिष्ट है। यह सब औपचारिक रूप से के बारे में है
मुहम्मद का निजी अंतरंग जीवन, लेकिन जैसा उन्होंने कहा और किया वह सही नैतिक था
और इस्लाम में नैतिक संहिता - और इसलिए जीवन के इस पहलू से संबंधित सभी महिलाओं के लिए आदर्श,
हम इसे इस अध्याय में इस्लाम के तहत महिलाओं के जीवन के बारे में भी शामिल करते हैं।

०४३ ३३/५३: "और जब तुम (मुस्लिम पुरुष*) (उसकी (मुहम्मद की) औरतों से कुछ माँगते हो तो तुम
चाहते हैं, उनसे स्क्रीन के सामने से पूछें - - -।" नोट: एक स्क्रीन, पर्दा नहीं। यही सब कहा जाता है
कुरान में महिलाओं के छिपे होने के बारे में और कुछ नहीं: एक स्क्रीन, पर्दा नहीं, और केवल
पत्नियों के बारे में - और संभवतः उनकी अन्य महिलाओं - मुहम्मद की। (लेकिन आप परदे पाते हैं
हदीसों में - जो 200 - 250 साल बाद लिखी गई है, और जहाँ यह बहुत स्पष्ट है कि बहुत कुछ है
गढ़ी हुई कहानियाँ (कुरान f। पूर्व। साबित करता है कि हदीसों में चमत्कारों के बारे में सभी कहानियाँ)
मुहम्मद के चारों ओर बने हैं))।

आगे: उसकी तस्वीर प्राप्त करने के लिए 33/28-29 से 33/33 + 33/50 और 33/51 को एक साथ पढ़ें - और
मजबूत और अंधेरे धार्मिक समाजों में बहुत से अन्य प्रमुख धार्मिक व्यक्ति -
तकनीक। आश्रितों में हेर-फेर करने के सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले - और सिद्ध कुशल - तरीकों में से एक
व्यक्तियों। ऐसे व्यक्तियों के लिए भगवान का उपयोग भी विशिष्ट है। यह सब औपचारिक रूप से के बारे में है
मुहम्मद का निजी अंतरंग जीवन, लेकिन जैसा उन्होंने कहा और किया वह सही नैतिक था
और इस्लाम में नैतिक संहिता - और इसलिए जीवन के इस पहलू से संबंधित सभी महिलाओं के लिए आदर्श,
हम इसे इस अध्याय में इस्लाम के तहत महिलाओं के जीवन के बारे में भी शामिल करते हैं।

044 33/59: "हे पैगंबर! अपनी पत्नियों और बेटियों, और विश्वास करने वाली महिलाओं से कहो, कि वे
अपने बाहरी वस्त्रों को अपने व्यक्तियों (जब विदेश में) पर डाल देना चाहिए - - -।" "बाहरी" क्या है
वस्त्र"? - कम से कम घूंघट का न तो उल्लेख किया गया है और न ही संकेत दिया गया है। और "विदेश में" क्या है?
- उनकी पत्नियों ने कभी अरब नहीं छोड़ा।

०४५ ३७/४८: "और उनके अलावा (स्वर्ग में मुस्लिम पुरुष) पवित्र महिलाएं होंगी, संयमी होंगी
उनकी नज़र, बड़ी आँखों से (आश्चर्य और सुंदरता की)। ये प्रसिद्ध घंटे हैं जो to . हैं
स्वर्ग में मुस्लिम पुरुषों को आराम। औरतें भी सिर्फ जन्नत में मर्दों की खुशी के लिए होती हैं
(ठीक है, पृथ्वी पर वे भी उसे पुत्र देने के लिए हैं)। कुरान में कहां के बारे में कुछ नहीं कहा गया है
घंटे आते हैं, इस बारे में कुछ नहीं कहा जाता है कि वे अक्सर किसी न किसी के हरम में कैसे रहना पसंद करते हैं,
अशिक्षित और आदिम - और भोले? - योद्धाओं - - - और कैसे के बारे में भी कुछ नहीं कहा जाता है
पत्नियां प्रतियोगिता का आनंद लेती हैं। केवल वही मायने रखता है जो आदमी को पसंद है।

एक और रहस्य है: घंटे कहाँ से आए? - और वे क्या थे। एक सिद्धांत
कि प्रारंभिक मुसलमान - f. भूतपूर्व। हसन अल-बसरी - माना जाता है कि वे महिलाएं थीं जिनके पास था
पृथ्वी पर एक पवित्र और अच्छा जीवन जिया। आवश्यकता के कारण उनका विवाह नहीं हो सकता था (या
पुरुषों से शादी की जो नर्क में समाप्त हुई?), क्योंकि विवाहित महिलाएं अपने पति का अनुसरण करती हैं - यह है
यह नहीं बताया कि यदि उनकी अधिक बार शादी हुई हो, लेकिन शायद आखिरी बार)। पर कैसे
उन लाखों योद्धाओं की तुलना में कई ऐसी एकल महिलाएं मौजूद थीं, जिन्हें तक का अधिकार था
70 प्रत्येक? और ऐसी महिलाओं को अक्सर असभ्य और आत्मकेंद्रित के लिए सेक्स गुलाम कैसे पसंद आया?
आदिम पुरुष - क्या यह उनके लिए भी स्वर्ग था, या - - -? एक अन्य सिद्धांत था/है कि वे थे
जिन लड़कियों की मृत्यु शिशुओं या अविवाहित बच्चों के रूप में हुई थी - लेकिन फिर वे उसी की होनी चाहिए
स्वर्ग में पिता का घर। और वही सवाल: बहुतों की तुलना में बहुतों की मौत हुई
प्रत्येक योद्धा और आतंकवादी को घंटे?

०४६ ४१/२५: "और हम (अल्लाह*) ने उनके लिए (स्वर्ग में मुस्लिम पुरुष) निकट नियत किया है
साथी (समान प्रकृति के) (घंटे*) - - -।" ऊपर 37/48 देखें।

एच०४७ ४४/५४: "--- और हम (अल्लाह*) उनके साथ सुंदर, बड़े, और
चमकदार आँखें। " घंटे कुछ खास तरह की महिलाएं होती हैं, लेकिन "तथ्य" जो उन्हें दिया जाता है
अच्छे (?) कर्मों के प्रतिदान के रूप में स्वर्ग में आने वाले पुरुष, इस्लाम के बारे में किलोमीटर बताते हैं
महिलाओं पर दृष्टि। ऊपर 37/48 भी देखें।

०४८ ५२/२०: "- - - और हम (अल्लाह*) उनके साथ साथियों के साथ शामिल होंगे, सुंदर बड़े और
चमकदार आँखें। " ऊपर 37/48 और 42/25 की तरह - उन्हें देखें।

०४९ ५२/३९: "या उसके (अल्लाह*) केवल बेटियाँ हैं और तुम्हारे बेटे हैं?" सबसे अविश्वसनीय और

इस झूठ के सबूत के रूप में माना जाता है कि अल्लाह के वंशज हैं। यह इस्लाम के बारे में बहुत कुछ बताता है
महिलाओं के संबंध में दृष्टिकोण। जब यीशु की बात आती है तो इस तर्क का कभी उल्लेख नहीं किया जाता है - हे
आखिर पुरुष था और मुहम्मद द्वारा चित्रित चित्र में फिट होना चाहिए।

050 53/21: "क्या! तुम्हारे लिए (मुसलमान*) पुरुष लिंग (बेटे*) और उसके लिए (अल्लाह*), स्त्री (बेटियाँ)?"। अभ्यास में जैसे ५२/३९ ठीक ऊपर।

०५१ ५५/५६ए: "उनमें (स्वर्ग के बगीचे*) होंगे (युवती (घंटा)), पवित्र,
उनकी नज़रों पर लगाम लगाते हुए - - -।" एफ देखें। भूतपूर्व। 37/48 ऊपर।

०५२ ५५/५६बी: "उनमें (स्वर्ग के बगीचे*) निष्पक्ष होंगे (साथियों (घंटों*)), अच्छा,
सुंदर - - -।" घंटे कुछ खास तरह की महिलाएं होती हैं, लेकिन "तथ्य" जो उन्हें दिया जाता है
अच्छे (?) कर्मों के लिए स्वर्ग में आने वाले पुरुष, इस्लाम के दृष्टिकोण के बारे में मीलों बताते हैं
महिला का। घण्टों की दासी प्रकृति-आदर्श नारी-वर्णन में भी बताती है
महिलाओं को कैसे व्यवहार करना चाहिए, इस पर इस्लाम के दृष्टिकोण के बारे में वॉल्यूम।

०५३ ५५/५६सी: "उनमें (स्वर्ग के बगीचे*) निष्पक्ष होंगे (साथियों (घंटों*)), अच्छा,
सुंदर - - -।" घंटे कुछ खास तरह की महिलाएं होती हैं, लेकिन "तथ्य" जो उन्हें दिया जाता है

अच्छे (?) कर्मों के भुगतान के रूप में स्वर्ग में आने वाले पुरुष, थाह और मील के बारे में बताते हैं
महिलाओं के बारे में इस्लाम का दृष्टिकोण।

०५४ ५६/२२: "और (होगा) सुंदर, बड़ी और चमकदार आँखों वाले साथी - - -।" में
ऊपर 37/48 की तरह अभ्यास - वह देखें।

०५५ ५६/२४: "(घंटा है*) उनके अतीत (जीवन) के कर्मों के लिए एक इनाम।" **महिलाएं कैसे होती हैं कुछ पहले के अज्ञात - और अक्सर अशिक्षित - आदमी के लिए एक इनाम बनना पसंद करते हैं? - और अनंत काल के लिए उसकी सेक्स स्लेव या सेक्स डॉल बनना? एक स्वर्ग?**

०५६ ५६/३५-३७: "हमने (अल्लाह*) ने (उनके साथी (घंटियाँ*)) विशेष रचना की है।
और उन्हें कुँवारी-शुद्ध (और निर्मल) बना दिया - प्रिय (स्वभाव से), उम्र में समान (अच्छे के लिए)
जन्नत में मुस्लिम पुरुष*) - - -।" घंटे कुछ खास तरह की महिलाएं होती हैं, लेकिन "तथ्य" यह है कि
वे स्वर्ग में आने वाले पुरुषों को अच्छे (?) कर्मों के भुगतान के रूप में दिए जाते हैं, मील बताते हैं और
महिलाओं के बारे में इस्लाम के दृष्टिकोण के बारे में वर्ग मील। घंटों की दासता प्रकृति - आदर्श
महिलाएं - विवरणों में, महिलाओं के बारे में इस्लाम के दृष्टिकोण के बारे में भी बताती हैं
व्यवहार करेगा।

०५६ ६०/१०: "जब आपके पास विश्वास करने वाली महिला शरणार्थी आती हैं - - -।" काफी संख्या में
पहली पीढ़ियों के दौरान महिलाएं इस्लाम में भाग गईं और (उन्होंने कहा) नए में परिवर्तित हो गईं
धर्म, नापसंद पतियों से दूर होने के लिए। एक मुस्लिम महिला और एक के बीच एक शादी
गैर-मुस्लिम व्यक्ति स्वतः ही निरस्त हो जाता है (भले ही दोनों इसे जारी रखना चाहें) और भाग जाना
महिला को अचानक और अनजाने में तलाक दे दिया गया था - और अपने अवांछित पति से मुक्त हो गई थी।

057 65/1: "हे पैगंबर! जब तुम (अन्य सभी मुसलमान*) स्त्रियों को तलाक दे दो, तो उन्हें तलाक दे दो
उनकी निर्धारित अवधि, और उनकी निर्धारित अवधियों को (सटीक रूप से) गिनें - - -।" खाते में नहीं
महिला के कल्याण के लिए, लेकिन यह सुनिश्चित करने के लिए कि बाद में कोई बच्चा होने पर पिता कौन है।

०५८ ७०/३०: "(मुस्लिम पुरुषों को सेक्स नहीं करना चाहिए*) अपनी पत्नियों और (बंदियों) को छोड़कर
जिनके दाहिने हाथ हैं - - -।" बंदी महिलाओं या दासियों को यौन संबंध बनाने के लिए बाध्य करना-
उनका बलात्कार करना - "अच्छा और वैध" था! कितना परोपकारी धर्म और कैसा परोपकारी
भगवान!!

भाग VI, अध्याय 2, अध्याय 2 (= VI-2-2-0)

कुरान के अनुसार इस्लाम के तहत मुसलमान, पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब

मुस्लिम महिलाएं और कानून

मुहम्मद, कुरान, अल्लाह, के अनुसार
और इसलिए इस्लाम के लिए

("महिलाएं मनुष्य के रूप में" और "गुलाम" भी देखें)।

907

पेज 908

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

०१ २/२२६ + २२६: "उन लोगों के लिए जो अपनी पत्नियों से दूर रहने की शपथ लेते हैं
तलाक*), चार महीने की प्रतीक्षा का आदेश दिया गया है; अगर वे वापस लौटते हैं (सब ठीक है और शादी)
चलता रहता है*)"। अगर आदमी 4 महीने के बाद भी तलाक चाहता है, तो ऐसा होता है। तलाक बहुत है
इस्लाम में पुरुषों के लिए सरल (लेकिन संभव है, हालांकि अधिक जटिल, महिलाओं के लिए भी)।

002 2/228a: "तलाकशुदा महिलाएं अपने बारे में (सेक्स करने*) तीन के लिए प्रतीक्षा करें
मासिक अवधि"। यह सुनिश्चित करने के लिए कि यदि कोई बच्चा है तो पिता कौन है।

००३ २/२२८बी: "और महिला को उनके खिलाफ अधिकारों के समान अधिकार होंगे, जैसा कि
क्या न्यायसंगत है - - -"। लेकिन सावधान रहें: यह a . के संभावित पुनरारंभ के संबंध में कहा गया है
विवाह जहां अलगाव है।

004 2/228c: "और महिला को उनके खिलाफ अधिकारों के समान अधिकार होंगे, जैसा कि"
न्यायसंगत क्या है; लेकिन पुरुषों के पास उनके ऊपर एक डिग्री (लाभ की) है"। जिसका अर्थ है कि
महिलाएं न्यायिक व्यक्तियों के रूप में पुरुषों से एक कदम छोटी या बड़ी हैं (वास्तव में मानव के रूप में भी)
प्राणी)।

005 2/229: "एक तलाक केवल दो बार (एक ही आदमी से*) - - - की अनुमति है।" दो बार होना चाहिए
पर्याप्त है, लेकिन इस्लाम में तलाक बहुत आसान है, और हो सकता है कि यह गुस्से में हो - और
बाद में पछताना। (यदि वे फिर से एक साथ चाहते थे, तो यह तभी संभव था जब
स्त्री ने दूसरे पुरुष से विवाह किया, उसके साथ यौन संबंध बनाए, और उस ने उसे तलाक दे दिया)।

००६ २/२३०: "यदि कोई पति अपनी पत्नी को तलाक देता है (अपरिवर्तनीय रूप से), तो वह उसके बाद उससे पुनर्विवाह नहीं कर सकता है।
जब तक वह दूसरे पति से ब्याह न ले ले और वह उसे त्याग न दे।" यह अधिक सड़े हुए में से एक है
शरिया में कानून (इस्लामी कानून)। यदि कोई महिला एक के बाद अपने पूर्व पति के पास वापस जाना चाहती है
बाध्यकारी तलाक - और वह उसे चाहता है - उसे ऐसा करने की अनुमति नहीं है जब तक कि वह वेश्या नहीं है
खुद को किसी अन्य पुरुष के साथ (इस मामले में औपचारिक विवाह स्वीकार नहीं किया जाता है)।

००७ २/२३३अ: "यदि पिता अपने वंश को दो वर्ष तक चूसता रहे,
कार्यकाल पूरा करना चाहता है।" एक लंबा समय - और पति या दास मालिक अगर वह गुलाम है
या रखैल निर्णय करती है, स्त्री नहीं।

008 2/233b: "किसी भी मां के साथ उसके बच्चे के कारण गलत व्यवहार नहीं किया जाएगा।" अगर माँ करती है
उसके पालन-पोषण का हिस्सा ठीक है, और बच्चा एक ही धूर्त निकला, माँ
(और समान शर्तों पर पिता भी) एक संतान के लिए जवाबदेह नहीं ठहराया जा सकता है
करता है। माता-पिता दोनों के लिए प्लस में एक अंक।

००९ २/२४०: "तुम में से जो मर जाते हैं और विधवाओं को पीछे छोड़ देते हैं, वे अपनी विधवाओं के लिए वसीयत करें
वर्ष का प्रावधान और निवास - - -।" एक विधवा को अपने घर में रहने और रहने का अधिकार है
भोजन आदि कम से कम एक वर्ष तक - - - - यदि उसके पति ने ऐसी चीजें तैयार की हों । और क्या इस बारे में
विधवाएं जो पुनर्विवाह नहीं कर सकतीं - f. भूतपूर्व। उम्र या बीमारी के कारण?

010 2/241: "तलाकशुदा महिलाओं के लिए उचित (पैमाने पर) प्रावधान (बनाया जाना चाहिए)। ये है
धर्मी का कर्तव्य। " जहां तक हकीकत में जाता है महिला के लिए सकारात्मक। कुछ नहीं कहा
क्या है और कौन तय करता है कि "उचित" क्या है।

पेज 909

011 2/282: "और अपके अपके जनोंमें से दो गवाह ले लो, और यदि दो मनुष्य न हों, तो एक
पुरुष और दो महिलाएं। " महिलाओं के पास पुरुष का आधा मूल्य है - या उससे भी कम, जैसा कि होना चाहिए
कम से कम एक आदमी हो।

012 4/11: "अल्लाह (इस प्रकार) आपको अपने बच्चों (विरासत) के संबंध में निर्देश देता है: पुरुष के लिए, ए
दो महिलाओं के अनुपात के बराबर।" एक पुरुष = दो महिलाएं, जैसे इस्लाम में अन्य मामलों में
(कुछ मामलों में कम - f. उदा। पुरुष निर्णय लेते हैं और पुरुष जो चाहें कर सकते हैं)।

०१३ ४/१९: "तुम्हें उनकी इच्छा के विरुद्ध महिलाओं के वारिस करने से मना किया गया है।" यदि आपका भाई मर जाता है, तो आप
अपनी पत्नी को तब तक विरासत में नहीं मिल सकता जब तक वह सहमत न हो। यह निश्चित रूप से दास महिलाओं के लिए नहीं जाता है, क्योंकि वे
संपत्ति/चीजें हैं।

०१४ २४/२: "स्त्री और पुरुष व्यभिचार के दोषी एक-एक सौ कोड़े मारते हैं
धारियाँ - - -"। कुरान के अनुसार अवैध सेक्स के लिए यह सजा है। पत्थरबाजी -
आम तौर पर केवल महिला के बारे में - जैसा कि कोई f के बारे में सुनता है। भूतपूर्व। नाइजीरिया और उत्तरी पाकिस्तान से, नहीं है
कुरान का हिस्सा। (ऐसी अफवाहें हैं, हालांकि, कि छंद - शायद १०० तक - थे
कुरान से हटा दिया गया था, और उनमें से एक में इस तरह के सेक्स के लिए पत्थर मारने का आदेश दिया गया था। लेकिन यह
बस अफवाहें हैं - जैसे अफवाहें कह रही हैं कि छंद जोड़े गए थे, हालांकि सूरह 111 और
उन जैसी आयतें जहां अल्लाह घरेलू समस्याओं को ठीक करता है या महिलाओं के लिए मुहम्मद न तो है
एक भगवान के योग्य, न ही एक सर्वज्ञानी भगवान के घर में एक मंडित मदर बुक में शामिल हैं: स्वर्ग।)

०१५ २४/६: "और जो लोग पवित्र महिलाओं के खिलाफ (अभद्रता या बदतर*) आरोप लगाते हैं,
और चार गवाह नहीं पेश करें (उनके आरोपों का समर्थन करने के लिए) - उन्हें 80 धारियों के साथ कोड़े - -।"
साथ ही एक महिला (और उसके परिवार की) प्रतिष्ठा के बचाव में सजा कठोर हो सकती है।

०१६ २४/६-८: "और वे (पुरुष*) जो अपने जीवनसाथी के खिलाफ आरोप लगाते हैं, और उनके पास (में .)
समर्थन) कोई सबूत नहीं लेकिन उनके अपने - उनके एकान्त साक्ष्य (प्राप्त किए जा सकते हैं) यदि वे सहन करते हैं
अल्लाह की ओर से चार बार (शपथ के साथ) गवाही दें कि वे सच्चाई से सच कह रहे हैं; और यह
पांचवां (शपथ) (होना चाहिए) कि वे अपने ऊपर अल्लाह के श्राप का आह्वान करते हैं यदि वे कहते हैं
एक झूठ"। (लेकिन ऐसे मामलों में पत्नी सजा टाल सकती है - खुद को साफ नहीं, बल्कि टाल दें)
सजा - उसी तरह की शपथ का उपयोग करके कि उसका पति झूठ बोल रहा है)।

०१७ २४/२६: "स्त्री अशुद्ध पुरुषों के लिए अशुद्ध है - - -।" अगर कोई महिला अपनी प्रतिष्ठा को नष्ट करती है, तो
सजा कठोर है - अगर वह जीवित रहती है। शरीयत सख्त है।

०१८ ३३/४९: "जब आप विश्वास करने वाली महिलाओं से शादी करते हैं, और अपने होने से पहले उन्हें तलाक दे देते हैं"
उन्हें छुआ, इद्दत (= प्रतीक्षा) की कोई अवधि नहीं है उनके संबंध में गिनती करने के लिए: तो दे
उन्हें एक उपहार। " जैसा कि आगे उल्लेख किया गया है: विवाह काफी आकस्मिक मामला हो सकता है। और ध्यान दें
कि अगले आदमी को अनुमति देने से पहले प्रतीक्षा न करने की जानकारी दी जाती है
(औपचारिक) पति या सामान्य रूप से पुरुषों को, महिला को नहीं। यह एक धर्म पर केंद्रित है
पुरुष और योद्धा।

019 58/1: "अल्लाह ने वास्तव में उस महिला के बयान को सुना (और स्वीकार किया) जो याचना करती है
तुम्हारे साथ (मुहम्मद') - - - और अल्लाह (हमेशा) दोनों के बीच तर्क सुनता और देखता है
आप के बीच - - -।" अन्य बातों के अलावा यह श्लोक सुनना भी असंभव बना देता है
संघर्ष में महिला/महिलाएं। लेकिन यह कोई रहस्य नहीं है कि उनकी न्यायिक स्थिति उनसे कमजोर है
पुरुष का।

पेज 910

020 60/10: "वे (मुस्लिम महिलाएं*) काफिरों के लिए वैध (पत्नियां) नहीं हैं - - -"। एक
इसका परिणाम यह होता है कि यदि कोई व्यक्ति इस्लाम छोड़ता है, तो उसका विवाह स्वतः ही अमान्य हो जाता है। परंतु
मुस्लिम पुरुष कम से कम यहूदी और ईसाई महिलाओं से शादी कर सकते हैं।

०२१ ६५/२: "इस प्रकार जब वे नियुक्त अपनी अवधि को पूरा करते हैं (एक प्रतिसंहरणीय तलाक* से जुड़ा),
या तो उन्हें समान शर्तों पर वापस ले लें या समान शर्तों पर उनके साथ भाग लें - - -।" कानून
स्पष्ट है, और अक्सर यह कार्य करता है। लेकिन खासकर जब बात उनके बच्चों के संपर्क की हो -
और विशेष रूप से लड़के - महिला कमजोर स्थिति में है।

022 65/4a: "आपकी ऐसी महिलाएं जो मासिक पाठ्यक्रम की आयु पार कर चुकी हैं (तलाक देते समय)
उन्हें*), उनके लिए निर्धारित अवधि (प्रतीक्षा की*) 3 महीने है यदि आपको कोई संदेह है, और के लिए
जिनके पास कोई पाठ्यक्रम नहीं है (यह वही है)। एक स्पष्ट कानून - और ऐसा होना चाहिए था
सब कुछ के बावजूद - गर्भावस्था - एक पिता को पता चल जाएगा।

०२३ ६५/४बी: "- - - (उनके गर्भ में जीवन) रखने वालों के लिए, उनकी अवधि (तलाक में*) है
जब तक वे अपना बोझ नहीं उतार देते (बच्चे के जन्म तक*) - - -।" एक स्पष्ट कानून भी।

024 65/6a: "महिलाओं को रहने दो ('इद्दाह (तलाक के आसपास की प्रतीक्षा अवधि *) में) उसी में
शैली के रूप में आप रहते हैं।" औपचारिक रूप से एक स्पष्ट कानून भी।

०२५ ६५/६बी: "- - - अगर वे (अपने गर्भ में जीवन) (तलाक पर*) ले जाते हैं, तो खर्च करें (अपना पदार्थ)
जब तक वे अपना बोझ न उठा लें, और यदि वे तेरी सन्तान को चूसें, तो उन्हें दे दें
प्रतिपूर्ति - - -।" एक और औपचारिक रूप से ठीक कानून। लेकिन ये सारे कानून आदमी को बताए जाते हैं-उसका
ज्यादातर चाहता है। महिला को नहीं। या दोनों को।

अध्याय VI/2 के लिए पोस्ट स्क्रिप्चर।

दासों के बारे में ये दो अध्याय और अध्याय मुख्य रूप से महिलाओं के बारे में क्या कहा जाता है
कुरान - हाँ, और घंटे, लेकिन घंटे आप स्वर्ग के बारे में अध्यायों में पाएंगे और
नरक। मुहम्मद की कई पत्नियों के बारे में थोड़ा अतिरिक्त है, लेकिन यह सामान्य से संबंधित नहीं है
महिला। और: विश्वास करने वाली मुस्लिम महिलाएं भी जन्नत में जाती हैं। थोड़ा और कुछ भी नहीं कहा जाता है
उनके अस्तित्व में, उनके पति के परिवार के कुछ हिस्सों को छोड़कर, उनकी नई महिलाओं को शामिल किया गया था -
सुंदर और आकर्षक घंटे। और उनके अस्तित्व के बारे में बिल्कुल कुछ नहीं कहा गया है
स्वर्ग, अगर वे अविवाहित या तलाकशुदा मर जाते हैं। (इसके अलावा कुछ भी नहीं कहा जाता है कि शिशुओं को क्या होता है या
बच्चे जो मर जाते हैं, और उनका जीवन स्वर्ग में।)

अन्य सभी भेदभाव इस्लाम महिलाओं के खिलाफ करता है, या तो (कुछ) हदीस से हैं या से हैं
मुहम्मद (f। पूर्व महिला खतना) से पहले बुतपरस्त परंपरा और धर्म द्वारा लिया गया
कई देशों में इस्लाम, साथ ही कुछ चीजें जोड़ दी गई हैं - हो सकता है कि पुरुष अधिक मुस्लिम हों
मुहम्मद की तुलना में (यह धर्म और कुछ अन्य आदर्शवादी समुदायों में एक विरोधाभास है, कि यदि a
बहुत कम निर्धारित है, हमेशा चरमपंथी मानते हैं कि अधिक बेहतर है, और अत्यंत
बहुत कुछ बहुत अच्छा है - भले ही भगवान केवल थोड़ा ही निर्धारित करते हैं, और भले ही
चरम भगवान या विचारधारा से अन्य अच्छे विचारों को नष्ट कर रहा है)।

जो निश्चित है वह यह है कि महिलाएं दूसरी गुणवत्ता वाली इंसान हैं, कम से कम मुख्य रूप से पुरुषों के लिए बनाई गई हैं।

भाग VI, अध्याय 3 (= VI-3-0-0)

**कुरान के अनुसार इस्लाम के तहत मुसलमान, पवित्र
मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब**

910

पेज 911

मुस्लिम बच्चों के लिए जीवन कुरान और के अनुसार इसलिए इस्लाम के लिए

दासों के बारे में अध्याय भी देखें - मुस्लिम क्षेत्रों में आयात किए जाने वाले दासों का एक पर्याप्त प्रतिशत बच्चे थे।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या 3 अंकों (00 या 0 सहित) के बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। [illegible]
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

कुरान में बच्चों के बारे में बहुत कम कहा गया है, सिवाय एक आदमी के लिए मूल्यवान संपत्ति के - कम से कम मुहम्मद: आदमी को छोड़कर कुरान में मुख्य व्यक्ति के लिए बेटे मूल्यवान थे और हैं।
इसके अलावा बार-बार इस बात पर जोर दिया जाता है कि व्यक्ति को विशेष रूप से ध्यान रखना पड़ता है अनाथ - जो इस तथ्य से जुड़ा हो सकता है कि मुहम्मद स्वयं 6 बजे अनाथ हो गए थे (और जन्म से पहले ही अपने पिता को खो दिया)।

लेकिन उसके लिए बच्चों के बारे में बहुत कम कहा जाता है - बच्चों का किसी के लिए बहुत कम परिणाम होता है सरदार हमें बताया गया है कि भ्रूण को उसकी आत्मा मिल जाती है और इस तरह वह चार महीने बाद मानव बन जाता है गर्भाधान (इसीलिए इस्लाम प्रारंभिक भ्रूणों के उपचार के साथ उदार है)। फिर बच्चा अधिमानतः अच्छा व्यवहार किया, और अधिमानतः एक अच्छा मुस्लिम और योद्धा बनने के लिए बड़ा हुआ। हम यह भी नहीं बताया जाता कि मरने वाले बच्चों या बच्चों का क्या होता है। वैसे तो वे स्वर्ग जाते हैं - लेकिन जैसे शाश्वत बच्चे या बच्चे? - या (युवा) वयस्कों के रूप में? यह नहीं कहा गया है। अक्सर इसका जिक्र होता है कि एक अच्छा मुसलमान जो मर जाता है, वह स्वर्ग में जाता है और देर-सबेर उसका परिवार होगा अपने आसपास - लेकिन उसके बच्चे, क्या वे अभी भी बच्चे हैं? इसके बारे में स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहा गया है।

यह भी उल्लेख किया जाना चाहिए कि अमेरिका में आयात किए गए दासों में 2/3 पुरुष शामिल थे काम, और बाकी मुख्य रूप से काम के लिए महिलाएं (नीग्रो दासों के साथ यौन संबंध, हालांकि कुछ हद तक अभ्यास किया) और कुछ बच्चे। मुस्लिम क्षेत्रों में, हालांकि, अनुपात 1/3 . था काम के लिए पुरुष और 2/3 महिलाएं और बच्चे, हरम के लिए काफी हद तक। बच्चे भी आसानी से इस्लाम में परिवर्तित हो गए - f. भूतपूर्व। जानिज़र - ईसाई बच्चों को जबरन ले जाया गया f. भूतपूर्व। मुस्लिम सैनिक बनने के लिए तुर्की।

०१ ४/२: "अनाथों को उनकी संपत्ति (जब वे अपनी उम्र तक पहुँचते हैं) को बहाल करते हैं।" अगर आपने लिया है एक अनाथ के क़ीमती सामानों की देखभाल करें, जब वे बड़े हों तो उसे वापस दे दें। अगर तुम गरीब हैं, आप इससे बच्चे की जरूरतों के लिए ले सकते हैं, लेकिन अधिमानतः नहीं - और यदि आप इसे विकसित किया है, तो और भी बेहतर।

००२ ४/३: "यदि तुम्हें इस बात का भय है कि अनाथों के साथ उचित व्यवहार न कर सकोगे, तो उन स्त्रियों से विवाह कर लो आपकी पसंद - दो या तीन या चार - - -"। शादी के लिए ठीक बहाना? कम से कम यह इसी से है वह पद जो मुसलमान जानते हैं कि उनकी अधिकतम 4 पत्नियाँ हो सकती हैं (+ रखैलें और दासियाँ अवधि)।

००३ ४/६: "अनाथों की तब तक परीक्षा करो जब तक वे विवाह की आयु तक नहीं पहुँच जाते; यदि तब आपको ध्वनि मिलती है उन में न्याय करो, उनकी संपत्ति उन्हें दे दो।" ऊपर 47" देखें।

००४ ४/९: "उन्हें (एक संपत्ति (एक अनाथ या विधवा / बच्चों के लिए) का निपटान करने दें) के पास समान है यदि वे अपने पीछे एक असहाय परिवार छोड़ गए होते तो उनके मन में अपने लिए भय होता -

- -"। इस्लाम का यह हिस्सा - अनाथों की देखभाल - एक ऐसा हिस्सा है जहां नैतिकता और नैतिकता हो सकती है मुरझाया नहीं और ६२२ ई. के बाद मर गया।

००५ ४/१०: "जो लोग अनाथों की संपत्ति को अन्याय से खाते हैं, वे आग को खा जाते हैं उनके अपने शरीर - - -।" एक अनाथ की संपत्ति का दुरुपयोग करना एक गंभीर पाप था - और है।

००६ ४/१२७: "और (याद रखें) किताब में आपको क्या पढ़ाया गया है, इसके बारे में (लड़की*) उन स्त्रियों के अनाथ जिन्हें तुम विहित भाग नहीं देते, और फिर भी जिन्हें तुम देते हो विवाह करने की इच्छा, साथ ही कमजोर और उत्पीड़ित बच्चों के संबंध में भी; कि तुम खड़े हो अनाथों के लिए न्याय के लिए दृढ़। " अगर आपके घर में कोई जवान अनाथ लड़की थी, तो करने का प्रलोभन उसे एक अतिरिक्त पत्नी बनाना आपके लिए विचारणीय हो सकता है।

007 6/151: "- - - अपने बच्चों को मत मारो - - -।" अरब में पूर्व-इस्लामिक समय में ऐसा हुआ था कि माता-पिता ने बच्चियों को मार डाला (जिंदा दफनाकर)। इस मुहम्मद ने समाप्त कर दिया। पर वो दोनों तरह से निष्पक्ष रहें: मुसलमान अक्सर यह दिखावा करते हैं कि पगानों द्वारा यह एक सामान्य बात थी, और इस प्रकार इस्लाम ने सदियों से बड़ी संख्या में लड़कियों को बचाया है। हकीकत - हकीकत आधुनिक मुस्लिम विद्वानों द्वारा भी स्वीकार किया गया है - क्या यह केवल यदा-कदा ही हुआ है, और शायद मुख्य रूप से समारोहों के संबंध में। (सब वही यह एक प्लस है जिसे उन्होंने समाप्त कर दिया यह)।

००८ ६/१५२: "और किसी अनाथ की संपत्ति के पास मत आओ, सिवाय इसे सुधारने के - - -।"
मुहम्मद ने अनाथों की रक्षा करने की पूरी कोशिश की - उनके लिए (बहुत कम) प्लसस में से एक।

009 25/74: "हे भगवान (अल्लाह *)! हमें पत्नियां और संतान प्रदान करें, जो हमें दिलासा देंगी
हमारी आँखें, और हमें (अनुग्रह) दे, ताकि धर्मियों का नेतृत्व किया जा सके। " मैं अच्छी चीजों और प्रतिष्ठा के लिए प्रार्थना करता हूं
मेरे लिए, मुख्य रूप से बच्चे के अच्छे जीवन के लिए नहीं, यहाँ कुरान में। में एकमात्र व्यक्ति
कुरान के हित का केंद्र - मुहम्मद को छोड़कर - आदमी और वास्तविक या क्षमता है
योद्धा।

०१० ९०/१५-१६: "(एक अच्छा काम दूसरों के बीच है*) अभाव के एक दिन में भोजन देना
रिश्ते के दावों के साथ अनाथ।" अनाथों का ख्याल रखना।

कुछ मुस्लिम विद्वानों के बीच अटकलें हैं कि अगर घंटे और पुरुष सेवकों में
स्वर्ग वे मनुष्य हैं जो बच्चों या बच्चों के रूप में मर गए हैं। उनके लिए तो यह जन्नत है
- शाश्वत सेक्स गुलाम या शाश्वत सेवक सिर्फ इसलिए कि अल्लाह ने उन्हें पृथ्वी पर अधिक समय तक जीवित नहीं रहने दिया।
लेकिन हम इस बात पर जोर देते हैं कि यह कुरान में नहीं कहा गया है - यह सिर्फ इस्लाम के भीतर शिक्षित अटकलें हैं।

भाग VI, अध्याय 4 (= VI-4-0-0)

कुरान के अनुसार इस्लाम के तहत मुसलमान, पवित्र मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह की किताब

मुस्लिम कानून - शरीयत। कुछ झलक

(यह भी देखें "महिला और कानून"।)

912

पेज 913

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

(अभी तक तैयार नहीं - 2010 ई. के बाद नहीं आएगा)

अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अकादमी (ऐसे विषयों पर मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक) a . में
पत्र दिनांक २७. दिसम्बर १९९८, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं,
और यह कि उसे साबित करना संभव नहीं है। यहां एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि कोई प्रमाण नहीं है
अल्लाह के लिए और उसे साबित करना असंभव है, स्वचालित रूप से इसके लिए कोई सबूत नहीं है, और
अल्लाह से मुहम्मद के कथित संबंध को साबित करना असंभव है। अगर कोई अल्लाह और/या नहीं है
मुहम्मद और एक भगवान के बीच संबंध, "नीचे" शरिया के तहत गायब हो जाता है।

भाग VII, अध्याय 1 (= VII-1-0-0)

तथ्य बनाम. दावे, कथन, (अमान्य) "संकेत", (अमान्य) "सबूत", आदि। कुरान में: कुरान और अल्लाह कुरान, मुहम्मद, इस्लाम और अल्लाह के अनुसार

अल्लाह बेहतर है या ज्यादा परोपकारी भगवान थान यहोवा/भगवान?

एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। पिछली संख्या (00 या 0 और 3) के बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

यह लंबे समय से राजनीतिक रूप से सही रहा है कि ईसाइयों और बाइबल के बारे में बुरा बोलना, और कभी-कभी कहते हैं कि इस्लाम बहुत कम खूनी धर्म है जिसका खूनी इतिहास कम और कम है क्रूर भगवान।

इस तरह की चर्चा के लिए तीन स्तर हैं:

1. पवित्र में दी गई शिक्षाओं की तुलना करना किताबें (+ इस्लाम के लिए हदीस)।
2. तुलना करने के लिए कि शिक्षाओं को कैसे सोचा जाता है पल्पिट आदि से - यानी असली कैसा है आज पढ़ा रहे हैं।
3. आर्थिक या के लिए धर्म का उपयोग कैसे किया जाता है? राजनीतिक उद्देश्यों के लिए या सत्ता हासिल करने के लिए?

जहां तक ईसाई धर्म का सवाल है, एक और बिंदु है जिसे अक्सर एक तरफ धकेल दिया जाता है: धर्म का निर्माण होता है बाइबिल का नया नियम, पुराने नियम से अधिक कठिन मुख्य रूप से ऐतिहासिक के साथ पृष्ठभूमि (यह यहूदी हैं जो पुराने नियम पर निर्माण करते हैं)। एक तथ्य जिसे अक्सर भुला दिया जाता है या "भूल गई"।

913

पेज 914

और अंत में: पूरे इतिहास और पूर्व-इतिहास में अधिकांश लड़ाई और युद्ध धन के लिए रहे हैं और शक्ति, धर्म के लिए नहीं। धर्म का अक्सर लोगों को उकसाने के लिए इस्तेमाल किया जाता रहा है और सैनिक, और प्राय: ही नहीं याजकों और मुल्लाओं ने शीघ्र ही पीछे का अनुसरण किया है। भी धर्म को कभी-कभी अत्याचारों के लिए इस्तेमाल किया गया है - दक्षिण में स्पेनियों के चरम उदाहरण हैं और मध्य अमेरिका, और अरब, मध्य पूर्व और मिस्र में मुसलमानों के दौरान और बाद में दक्षिण एशिया में विजयों का उल्लेख नहीं है - विशेष रूप से सिंध और शेष पुराने भारत में, प्लस इन आर्मेनिया, आदि, और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में। लेकिन मुख्य रूप से वास्तविक कारण धन रहे हैं, जिनमें शामिल हैं दास और शक्ति और शक्ति नीति।

अक्सर किसी चर्चा का उद्देश्य सत्य को खोजना नहीं होता, बल्कि चर्चा को जीतना होता है अपने दृष्टिकोण की रक्षा करना। फिर तर्कों का आदान-प्रदान अक्सर असली से गंदा हो जाता है तर्कों का मिश्रण। इस्लाम को एक अच्छा और शांतिपूर्ण धर्म कहा जाता है क्योंकि अधिकांश लोग पश्चिम में सामूहिक हत्याओं, पोग्रोम्स, युद्धों, दासता, दमन के बारे में कुछ नहीं जानता, आदि दुनिया के इस्लामी भागों में - और यहूदी मुस्लिम क्षेत्र के कुछ हिस्सों में रह सकते थे जब वे स्पेन छोड़ना पड़ा। ईसाई धर्म बुरा है, क्योंकि यहोवा ने यहूदियों को 2700 युद्ध लड़ने दिया - 4000 साल पहले। परन्तु यहोवा ने अपनी शिक्षाओं का एक अधिक नरम पक्ष प्रस्तुत किया जब उसने भेजा ईसाइयों के अनुसार ईसा से दो साल पहले। और सबसे अधिक संभावना है कि वे सच बोलते हैं, क्योंकि NT वास्तव में OT की तुलना में बहुत हल्का और अधिक मानवीय है। यीशु ने "नया समझौता" भी शुरू किया कि "पुराने समझौते" के बजाय आया, और उसने कई पुराने मोज़ेक कानूनों को रद्द कर दिया।

ईसाई भी बुरे हैं क्योंकि वे १७०० के आसपास या उससे थोड़ा पहले बेहतर बनने लगे थे संगठित और अधिक आविष्कारशील इसलिए उन्हें बेहतर हथियार और सवार भी मिले और ऊपरी हासिल किया हाथ, और वही किया जो इतिहास और पूर्व-इतिहास के माध्यम से सभी साम्राज्यों ने किया है: हासिल करने के लिए निकल पड़े धन और अधिक शक्ति - जैसे f. भूतपूर्व। उनके सामने मुसलमान लेकिन विजयी मुसलमानों को भुला दिया जाता है और बुरे ईसाई रह जाते हैं - भले ही यह व्यवसायी थे और जिन राजनेताओं ने उपनिवेश बनाए, धर्म नहीं।

हाँ, यदि आप बड़े धर्मों की पवित्र पुस्तकों को पढ़ेंगे, तो आप पाएंगे कि यीशु की शिक्षाएँ और बुद्ध की शिक्षाएं सबसे शांतिवादी, सबसे मानवीय और सबसे शांतिपूर्ण हैं वाले।

ओह, हाँ, हम उन लोगों की चीख सुनते हैं जो बाहर से सोचने में सक्षम नहीं हैं कि राजनीतिक रूप से क्या सही है। सत्य क्या है, इसकी खोज करने के लिए हम काफी असामान्य हैं, और जो है उसकी परवाह नहीं करते हैं राजनीतिक रूप से सही - हमारे पास खुद ज्ञान, किताबें और दिमाग है। लेकिन ध्यान रहे: हम हैं पवित्र पुस्तकों की सामग्री के बारे में बात करना, इस बारे में नहीं कि धर्मों का उपयोग कैसे किया गया है या अनुपयोगी

और [illegible] अनुपयोगी के साथ मिलाते हैं,
समाधान अक्सर बेवकूफ प्रतिद्वंद्वी को मारने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है जो यह नहीं समझता है कि "मैं"
मैं सही हूँ।

धर्मों या देवताओं की तुलना करनी है, तो समान स्तर की तुलना करनी होगी: आदर्शों के साथ आदर्श,
आज की शिक्षाओं के साथ आज की शिक्षा, अनुपयोग के साथ अनुपयोगी। अगर कोई तुलना करता है
इस्लाम के आदर्शों को बाइबल के दुरुपयोग के साथ, सत्य को छोड़कर, कोई भी परिणाम प्राप्त कर सकता है।
यह विशेष रूप से यदि कोई शांतिपूर्ण उपयोग करता है, लेकिन आतंकवादियों और अन्य उग्रवादियों के लिए जो अक्सर पुराने हो जाते हैं
मक्का से सूरह, और आसानी से (?) "भूल जाते हैं" कि उन्हें अक्सर निरस्त कर दिया जाता है (अमान्य बना दिया जाता है)
और शून्य) मदीना से नए और खूनी लोगों द्वारा। उपयोग और अनुपयोग के लिए, इस्लाम अधिक नहीं है
यूरोप की तुलना में घमंड करने के लिए। कई विजय अमानवीय आतंक में सबक थे। शासन करने वाला
अक्सर सबसे खराब यूरोपीय से बेहतर नहीं थे - सिंध (अब लगभग पाकिस्तान) कर सकते हैं

आसानी से बेल्जियम के कांगो एफ से तुलना की जा सकती है। भूतपूर्व। मुसलमानों के इतिहास में मुस्लिम शासक थे
जितने बड़े नायक उतने ही बुरे उन्होंने स्थानीय लोगों के साथ व्यवहार किया, और जितने अधिक गैर-मुसलमानों की उन्होंने हत्या की।
भारत के उन शासकों में से एकमात्र जो स्थानीय लोगों के साथ कुछ मानवीय व्यवहार करते थे - अकबर
महान (१५४२-१६०५) - मुसलमान सबसे अच्छे औसत दर्जे के हैं। यूरोप उपनिवेश के इतिहास को देखना होगा
आर्मेनिया की तरह खोजने के लिए दूर-दूर तक - 1.2 मिलें। द्वारा कुछ वर्षों में व्यवस्थित रूप से हत्या कर दी गई
उनके तुर्की स्वामी (तुर्की और इस्लाम में अभी भी उस हिस्से को पूरा करने के लिए नैतिक सहनशक्ति नहीं है
उनके अतीत के)। इसके अलावा आर्मेनिया की मूल विजय - और कई अन्य स्थान - एक तांडव था
खून और वध में। अफ्रीका में भी ज्यादती हुई, f. भूतपूर्व। मिस्र की विजय,
शहर के बाद शहर के साथ आखिरी बच्चे की हत्या - और अगर इस्लाम को कभी भी बनाने की रीढ़ है
मुसलमानों ने अफ्रीका और एशिया से कितने गुलामों को अगवा किया या खरीदा है, इसका एक अनुमान -
हमने कम से कम उस संख्या को कभी नहीं देखा है। चूंकि गुलामी शुरू से ही जारी थी
इस्लाम और उससे पहले, और १९०० और यहां तक कि २००० के दशक में भी, संख्या काफी अधिक है
लाखों।

मुझे लगता है कि हम प्रत्येक यूरोपीय के लिए एक मुस्लिम अतिरिक्त पाएंगे - कम से कम। लेकिन व्यवहार और
मुसलमानों के अत्याचारों के बारे में बहुत कम जाना जाता है, और इसके बारे में बात करना राजनीतिक रूप से सही नहीं है
उन्हें। जब आज की दैनिक शिक्षाओं की बात आती है, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि कुछ मदरसे
और मस्जिदों में किसी भी ईसाई चर्च की तुलना में एक गंभीर और अत्यधिक घृणित शिक्षा है या
स्कूल। और वह अधिकांश अन्य धर्मों की तुलना में समान है।

फिर आदर्शों की तुलना में आदर्श बने रहें - पवित्र बाइबिल की तुलना में पवित्र कुरान।

बहुत से लोग नहीं जानते कि कुरान में दो भाग होते हैं - सूरह
मक्का (लगभग 80-90 सूरह - जैसा कि उन सभी की उम्र नहीं पता है, यह कहना संभव नहीं है
सटीक संख्या, लेकिन शायद 86) और मदीना से (कम से कम 22 सूरह)। जैसे वो हे वैसे
पुस्तक में एक हाथापाई में रखा गया है, यह देखना आसान नहीं है कि कौन सा है, और यह एक कारण हो सकता है
यह तथ्य अच्छी तरह से ज्ञात क्यों नहीं है।

लेकिन मक्का के सूरा और मदीना के सूरह में बहुत अंतर है।
मक्का के लोग मुख्य रूप से शांतिपूर्ण और मानवीय हैं। अचानक से, जैसे मुहम्मद भाग गए
मदीना और अपने हाईवेमैन करियर और बाद में अपने सरदार कैरियर को शुरू करने के लिए योद्धाओं की जरूरत थी,
धर्म नाटकीय रूप से घृणा और दमन, हत्या, बलात्कार और युद्ध में बदल गया। मुसलमानों
आपको बताएंगे कि यह सब रक्षा युद्ध के बारे में है, लेकिन इसे स्वयं पढ़ें, और आप पाएंगे कि यह है
बकवास - मदीना के ग्रंथ मुख्य रूप से युद्ध और लूट और बलात्कार के लिए उकसाने वाले हैं और
दासता और अल्लाह के लिए अन्य अच्छी चीजों को मारना, और "अच्छे और" चोरी करके अमीर बनना
वैध रूप से", लेकिन आत्मरक्षा के बारे में बहुत कम। क्या यह अल्लाह था जिसने पाया कि शांतिपूर्ण और
काफी अच्छा धर्म उसके स्वाद के अनुसार नहीं था, इसके बारे में सोचने के लिए आया था, और अधिक चाहता था
नफरत और बलात्कार और खून, या अगर यह केवल मुहम्मद थे जिन्हें नफरत और योद्धाओं की जरूरत थी
चोरी और जबरन वसूली और हत्या से जीविका कमाने के लिए - और बाद में एक कठोर सरदार के रूप में - नहीं है
हमारे कहने के लिए।

परिणाम नाटकीय है, हालांकि, सूरह 2/106 के अनुसार (यह कहते हुए कि सूरह / छंद
कुछ इसी तरह या "बेहतर" के लिए प्रतिस्थापित किया जा सकता है) और इस्लाम के अनुसार, जब दो या
अधिक सूरह अर्थ में भिन्न होते हैं, सबसे छोटा सामान्य रूप से सही होता है। इस वजह से
कभी-कभी मक्का के लिए उदार सूरह अक्सर शून्य और अमान्य होते हैं यदि कहीं अधिक कठोर और अधिक
मदीना के अमानवीय कुछ और कहते हैं।

बस सूरा को कालानुक्रमिक क्रम में पढ़ें और चौंक जाएं - अंतिम धर्म के बारे में
और इसके पीछे भीषण योद्धा भगवान के बारे में।

किसी को आश्चर्य हो सकता है: मक्का के इस्लाम के पीछे के देवता वही देवता कैसे हो सकते हैं जो पीछे के देवता हैं?
मदीना का इस्लाम? - बड़े अंतर हैं। बहुत बड़ा नहीं तो कुछ गलत है या भगवान
बीमार।

वह भी बाइबल दो मुख्य भागों से बनी है, जिसे बेहतर जाना जाता है - पुराना नियम (थोड़ा सा)
से अधिक) और नया नियम (¼ से थोड़ा कम - हमारी पुस्तक में लगभग ११७० पृष्ठ
ओटी के लिए कुछ 320 पृष्ठों की तुलना में)।

ईसाइयों के लिए मुख्य बात एनटी है, जबकि ओटी जैसा कि पहले कहा गया है, ज्यादातर ऐतिहासिक है
पृष्ठभूमि (लेकिन यहूदी एनटी में बिल्कुल भी विश्वास नहीं करते हैं, और ओटी के अनुसार पढ़ाते हैं)। और यह
याहवे/भगवान आप एनटी में मिलते हैं और इसकी नई वाचा कहीं अधिक उदार और अच्छा भगवान है
ओटी में सख्त की तुलना में, हालांकि अंतर अल्लाह के परिवर्तन के लिए तुलनीय नहीं है
मदीना बनाम मक्का का अल्लाह। मुसलमान बताते हैं कि जिस वजह से भगवान ने नई शिक्षा दी है
अब और फिर, क्या दुनिया बदल रही है, और उसके कारण नए नियमों को करना पड़ा है
बनाया जाए। शायद वे सही हैं और यहोवा/भगवान ने पाया कि यह उच्च समय और शर्तें थी
एक अधिक शांतिपूर्ण धर्म में परिवर्तन के लिए पृथ्वी के कुछ हिस्सों और यीशु को भेजा? क्योंकि एक आदर्श के रूप में
इसमें कोई संदेह नहीं है कि यीशु और बुद्ध की शिक्षाएं दो सबसे अधिक हैं
शांतिपूर्ण, शांतिवादी और सभी बड़े धर्मों के हितैषी। (राजनीतिक क्षेत्र में जाने से पहले)
क्रोध के अन्य उपयुक्त: याद रखें कि हम शिक्षाओं के बारे में बात करते हैं, न कि दुरुपयोग या बदनामी के बारे में -
किस बात के लिए धर्म को दोष देना f. भूतपूर्व। सत्ता के लालच या भूख से किया गया था)।

किस भगवान के लिए पूछने के लिए - यहोवा / भगवान के रूप में हम उससे एनटी में मिलते हैं, या अल्लाह के रूप में हम उससे मिलते हैं
मदीना (और यही वह जगह है जहाँ हमें उससे मिलना है, क्योंकि वे सूरह सबसे छोटे हैं और इस तरह
इस्लाम के अनुसार सबसे सही - शांतिपूर्ण भगवान नहीं, बल्कि नफरत और युद्ध के देवता) - है
दोनों में सबसे अच्छा और सबसे परोपकारी, समय और ऊर्जा बर्बाद करना है। अंतर बहुत बड़ा है -
बस सीए पढ़ें। मदीना और एनटी से 22 सूरह एक बार, और आप एक नहीं पूछेंगे
सवाल। एक भी विरोध नहीं करेंगे। एक भी संदेह नहीं है।

लेकिन फिर ओटी के यहोवा का सवाल है - इससे पहले कि यीशु ने कानून बदले और
पुराने से नियम। बहुत से लोग जब चर्चा कर रहे होते हैं तो वे पर्याप्त ईमानदार नहीं होते हैं, पर्याप्त निष्पक्ष होते हैं या नहीं होते हैं
यीशु से पहले और बाद में और यहोवा के परिवर्तन के बीच अंतर करने के लिए बहुत कम ज्ञान
और यीशु की बहुत कोमल शिक्षा। वे ओटी से युद्ध या हत्याओं का इस्तेमाल बुरे के लिए उदाहरण के रूप में करते हैं
ईसाई धर्म, भले ही वह इतिहास के हिस्से के अलावा उस धर्म का हिस्सा नहीं है
यीशु ने "नई संधि" की अपनी शिक्षाओं को पीछे छोड़ दिया। ईसाइयों के लिए ओटी का अर्थ है, लेकिन जैसे
स्थानीय फुटबॉल प्रीमियर लीग की तुलना में बहुत दूर की जगह है, या इससे बेहतर तुलना हो सकती है
आज के दैनिक जीवन की तुलना में आपकी युवावस्था में स्कूल में इतिहास का पाठ।

इसलिए, आइए हम ओटी के यहोवा की तुलना उसके अंतिम और वर्तमान में अल्लाह से करें
चिरस्थायी छवि: ओटी में यहोवा ने जो ज्यादती की, या यहूदियों को करने दिया, वह ज्यादातर बनाने के लिए थी
इज़राइल के लिए कमरा - एक राष्ट्रीय देश के लिए जगह, बड़ा या छोटा - क्षेत्र के पूर्व में
भूमध्य सागर 2000-4000 साल पहले। कुरान नफरत और युद्ध और दमन की बात करता है
आज कल और हमेशा। ओटी की अधिकता इतनी अच्छी तरह से जानी जाती है कि हम इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं
अल्लाह की बहुत कम ज्ञात ज्यादती, जैसा कि कुरान में बताया गया है - और याद रखें: OT . के विपरीत
वे न केवल इतिहास के कुछ टुकड़े हैं, बल्कि सभी भविष्य के लिए आदर्श और आदेश हैं:

००१ ३/१३७: "-----पृथ्वी में घूमो, और देखो कि उन (गैर-मुसलमानों*) का क्या अंत हुआ?
जिसने सत्य (इस्लाम*) को नकार दिया"। अरब में और उसके आसपास बिखरे हुए खंडहर थे।
मुहम्मद ने बताया कि वे सभी शहरों और कस्बों और बस्तियों के अवशेष थे जिन्हें दंडित किया गया था
अल्लाह, क्योंकि वे मुसलमान नहीं बनेंगे। विज्ञान के अन्य स्पष्टीकरण हैं, लेकिन यदि
कुरान सच कहता है, अल्लाह ने इन सभी जगहों पर लोगों को मार डाला। यहाँ से अधिक हो सकता है

अपने पूरे करियर में यहोवा, क्योंकि भले ही खंडहर बिखरे हुए हों, क्षेत्र चौड़ा था,
एक साथ कई खंडहर बना रहे हैं। आखिरकार यहोवा ने मुख्य रूप से इस्राएल के लिए जगह बनाई, और इस्राएल एक है
छोटा देश - और यहूदियों ने अपने पहले के समय से सभी निवासियों को मार डाला
आया। इसके अलावा, पूर्व खंडहर थे जिन्हें तय किया गया था या फिर से बनाया गया था और रहने के लिए इस्तेमाल किया गया था
मुहम्मद के समय जब यह बताया गया था - उन स्थानों के पूर्व उपयोगकर्ता भी मारे गए थे
इस्लाम के अनुसार, उनके पापों के लिए अल्लाह द्वारा।

००२ ४/६: "देखो वे (लोग*) नहीं कि उनमें से कितनों को हम (अल्लाह*) ने उनसे पहले नष्ट कर दिया? -
पीढ़ियों को हमने धरती पर स्थापित किया था, इतनी ताकत में कि हमने तुम्हें नहीं दिया
(मुसलमान*) - --"। एक अनिर्दिष्ट संख्या मारे गए, लेकिन स्पष्ट रूप से कई - बहुवचन में पीढ़ियां
और मुसलमानों की तुलना में प्रत्येक अधिक आबादी वाला - या मजबूत - (यह सबसे अधिक संभावना 625 में कहा गया था, और
मुसलमानों ने कई अनुयायी और ताकत हासिल करना शुरू कर दिया था)। हो सकता है यहोवा जल्दी करे
ऊपर, सबसे ज्यादा मारने वाले की होड़ में बहुत पीछे नहीं रहने के लिए?

००३ १०/१३: "आप से पहले की पीढ़ियों (गैर-मुस्लिम*) हमने (अल्लाह*) तबाह कर दिया जब उन्होंने ऐसा किया
गलत - - -"। अल्लाह की आज्ञा मानो या मरो - और बहुत से लोग मर गए। कम से कम कुरान तो यही कहता है।

004 11/60: "हटाए गए (दृष्टि से (= मारे गए*)) 'विज्ञापन (बड़ी और समृद्ध अरब जनजाति,
अरब लोक कथाओं से "उधार"*)"। कुछ हजारों और अल्लाह द्वारा मारे गए।

005 11/67: "(पराक्रमी) विस्फोट ने अपराधियों को पछाड़ दिया (थमूद - एक और बड़ा और अमीर
जनजाति अरब की लोक कथाओं* से "उधार ली गई", और वे अपने घरों में साष्टांग प्रणाम (और मृत*) लेटे थे
सुबह से पहले - - -"। एक और कुछ हजारों मारे गए।

006 11/95: "- - - मद्यन (अभी भी एक अन्य जनजाति - देखें 11/60 और 11/67*) को हटा दिया गया था
(मारे गए*) - - -"। कुछ सैकड़ों या हजारों लाशें अल्लाह के हिसाब से ज्यादा हैं।

००७ १२/१०९: "क्या वे (गैर-मुसलमान*) पृथ्वी पर यात्रा नहीं करते हैं, और देखते हैं कि अंत क्या था
उनसे पहले की?" मक्का एक व्यापारिक केंद्र था जिसका कम से कम मिस्र से संपर्क था और
कांस्टेंटिनोपल काले पूर्वी अफ्रीका और भारत और यहां तक कि चीन तक। सभी में कई खंडहर थे
वह विस्तृत क्षेत्र, भले ही वे बिखरे हुए हों। सभी खंडहर लोगों से खाली थे, क्योंकि अल्लाह के पास था
उन्हें मार डाला क्योंकि उन्होंने मुहम्मद के अनुसार मुसलमान बनने से इनकार कर दिया था, और वही
उन सभी स्थानों के साथ जो खाली हो गए थे लेकिन जहां अब नए गोत्र रहते थे। अगर मुहम्मद
सही था, यहोवा को बेहतर था कि वह हत्या के क्षेत्र में अल्लाह से बहुत पीछे न रह जाए -
हत्या के क्षेत्रों को नहीं कहना।

००८ १५/७४: "और हम (अल्लाह*) ने (नगरों (सदोम और अमोरा) को बदल दिया - याद रखें कि
कुरान का दावा है कि अल्लाह = यहोवा*) उल्टा, और उन पर कठोर गंधक बरसाए
पके हुए मिट्टी के रूप में"। कुछ और मृत पीड़ित।

००९ १५/८०+८३: "रॉकी ट्रैक्ट के लोग (अरब में उत्तरी हिजाज़ में अल-हिज्र*) - - -
(पराक्रमी) विस्फोट ने उन्हें सुबह आकार दिया (और उन्हें मार डाला *)"।

०१० १६/२६: "- - - अल्लाह ने उनकी (पुराने समय के लोगों*) संरचनाओं को उनकी नींव से लिया,
और छत ऊपर से उन पर गिर पड़ी (और उन्हें मार डाला*)।" स्कोर बढ़ रहा है।

०११ १७/१६: "जब हम (अल्लाह*) एक आबादी को नष्ट करने का फैसला करते हैं - - -"। कोई टिप्पणी नहीं।

012!7/17: "नूह के बाद हम (अल्लाह*) ने कितनी पीढ़ियों को नष्ट किया है?" अल्लाह ने मार डाला
इतनी पीढ़ियाँ कि वह संख्या के बारे में निश्चित नहीं है। और यह हत्या का सवाल है

(नष्ट करना), प्राकृतिक मृत्यु का नहीं। यहोवा जिसने अभी-अभी इस्राएल/यहूदियों के लिए जगह बनाई है कि वे उन्हें जाने दें
उनका अपना छोटा सा देश है + कभी-कभी उनकी थोड़ी मदद की, शायद ही उसमें भी हो
अल्लाह के रूप में लीग।

०१३ १९/९८: "लेकिन उनसे पहले कितनी (अनगिनत) पीढ़ियाँ (मुहम्मद के अनुयायी*)

क्या हमने (अल्लाह*) नष्ट कर दिया है?" ऊपर 17/17 देखें। यहोवा के लिए स्थिति: आगे भी
प्रतियोगिता में जितना हमने सोचा था उससे पीछे।

०१४ २०/१२८: "क्या यह ऐसे लोगों के लिए चेतावनी नहीं है (ध्यान रखना) कि कितनी पीढ़ियाँ पहिले हैं
उन्हें हमने (अल्लाह) नष्ट कर दिया, वे (अब) किसके ठिकाने पर घूम रहे हैं? वास्तव में इसमें निशानियाँ हैं
पुरुष समझ के साथ समाप्त हुए। " ऐसा लगता है कि "इस्लाम" तब अब जैसा था (कम से कम के कुछ हिस्से)
इस्लाम): आतंक और हत्या के बड़े कृत्य एक चेतावनी है: जैसा हम चाहते हैं वैसा करो या हम और अधिक हत्या करेंगे
लोग। आतंकवादियों के लिए एक ज्वलंत उदाहरण। और लाशों की गिनती बड़ी संख्या में पहुँचती है।

०१५ २१/६: "- - - उन आबादी में से एक नहीं जिसे हमने (अल्लाह*) नष्ट कर दिया, विश्वास किया (थे .)
मुसलमान*)"। खैर, मुहम्मद से पहले मुसलमानों की एक भी आबादी ज्ञात नहीं है,
कुरान और इस्लाम क्या कहते हैं इसके बावजूद। और एकेश्वरवादियों का (जिसके बारे में इस्लाम दावा करता है)
पुराने समय में मुसलमान, लेकिन इसका एक भी निशान कभी नहीं मिला) मुख्य रूप से थे
यहूदी और ईसाइयों का झाग। मुहम्मद के समय अरबों का एक छोटा पंथ भी था
एकेश्वरवादी - शायद यहूदियों और ईसाइयों से प्रेरित।

०१६ २१/९: "- - - हमने (अल्लाह*) ने उन लोगों को नष्ट कर दिया जिन्होंने सीमा का उल्लंघन किया (का पालन नहीं किया)
उसके नबियों की शिक्षा*)"। याद रखें कि हदीस के अनुसार कम से कम
मुहम्मद से पहले 124ooo नबी, और शायद ही पुराने समय से एकेश्वरवाद का एक निशान
यहूदी और बाद में ईसाई। अल्लाह ने अनगिनत संख्या में "नष्ट" किया होगा
लोग। बेचारा यहोवा - वह इस प्रतियोगिता में बालवाड़ी में है।

०१७ २२/४८: "अंत में मैंने (अल्लाह*) उन्हें दंड दिया (अधर्मियों/गैर-मुसलमानों को मार डाला*)। प्रति
मैं ही (सबका) गंतव्य हूं।" एफ. पूर्व. यह अल्लाह तय करता है कि किसे मारना है।

०१८ २३/४१: "और उन्हें (नूह* के बाद की पीढ़ियों के लोग) ने न्याय के साथ धमाका किया
(और उन्हें मार डाला*), और हमने उन्हें मरे हुए पत्तों का कचरा बना दिया - - -"। यहोवा ने थोड़ा कारण दिया
नूह और इब्राहीम के बीच हत्या, लेकिन लगता है कि अल्लाह ज्यादातर समय व्यस्त रहा है।

019 25/36: ""जाओ तुम दोनों (मूसा और हारून - याद रखें कि इस्लाम दावा करता है कि अल्लाह एक ही है)
यहोवा के रूप में भगवान - जो यहोवा ने किया, फलस्वरूप अल्लाह ने किया*), लोगों के लिए (के लोग)
मिस्र*) जिन्होंने हमारी आयतों को ठुकरा दिया है'। और उन (लोगों को) हमने पूरी तरह से नष्ट कर दिया
विनाश"। कुछ और सामूहिक हत्याएं।

०२० २५/३७: "और नूह के लोगों - - - - हम (अल्लाह *) ने उन्हें - - -" डुबो दिया। ऊपर 25/36 देखें।

०२१ २५/३८ + ३९: "- - - भी 'अद और थमूद और रास के लोग (३ बड़े जनजातियाँ)
अरब लोककथाओं से "उधार", और उनके बीच की कई पीढ़ियाँ - - - और हर एक We
(अल्लाह*) सर्वनाश करने के लिए टूट गया - - -"। यहोवा/परमेश्वर के लिए सभी के साथ प्रतिस्पर्धा करना आसान नहीं है
यह थोक वध।

०२२ २८/४३: "हम (अल्लाह*) ने मूसा पर किताब उतारी (गलत - मूसा की किताबें थीं
सदियों बाद विज्ञान के अनुसार लिखा*) के बाद हमने पिछली पीढ़ियों को नष्ट कर दिया था -
- -"। नूह और मूसा के बीच और पीढ़ियां मारी गईं - अल्लाह बहुत अधिक काम करने वाला था
यहोवा की तुलना में, कम से कम हत्या के कारोबार में।

०२३ ४३/६ - ८: "लेकिन हम (अल्लाह*) ने कितने नबी भेजे थे (एक बयानबाजी का सवाल जैसा कि
हदीस बताता है कि पुराने लोगों के बीच कम से कम 124ooo*) थे? पर कभी नहीं आया
वहाँ उनके पास एक नबी था, लेकिन उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया। इसलिए हमने उन्हें नष्ट कर दिया - - -"। इसके साथ कई
भविष्यवक्ताओं, अभिव्यक्ति "थोक वध" चरम में महत्वहीन है। यहोवा है
इस प्रतियोगिता में शायद ही कोई बच्चा हो।

अध्याय VII/2 के लिए पोस्ट स्क्रिप्टम।

अगर आप कुरान को पढ़ेंगे तो आपको और भी बहुत सी जगहें मिलेंगी जहाँ के बारे में किताब बताती है - लगभग
के बारे में दावा करता है - बड़े पैमाने पर अत्याचार और हत्या। परन्तु हम यहीं ठहरते हैं, न कि यहोवा को हानि पहुँचाने के लिए
चेहरा भी बुरी तरह

दरअसल इस प्रतियोगिता में यहोवा के पास कोई मौका नहीं था। जैसा कि कुरान दावा करता है कि अल्लाह वही है
यहोवा के रूप में भगवान, अल्लाह ने वह सब कुछ किया है जो यहोवा ने पुरानी किताब के अनुसार किया था। लेकिन में
इसके अलावा अल्लाह के पास गंभीर अत्याचारों और बड़े पैमाने पर हत्याओं की एक लंबी सूची है, जहां यहोवा था

शामिल नहीं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि सबसे कठिन भगवान कौन है। यह और भी अधिक है क्योंकि अल्लाह वर्तमान में विकसित हुआ है
मदीना से युद्ध भगवान। जबकि यहोवा नरम हो गया - शायद इसलिए कि समय बदल गया
(जैसा कि इस्लाम बताता है) पृथ्वी पर कुछ स्थानों की बेहतरी के लिए और यह एक उदार धर्म का समय था?

16. 2. 09

भाग VII, अध्याय 2 (= VII-2-0-0)

तथ्य बनाम. दावे, कथन, (अमान्य) "संकेत", (अमान्य) "सबूत", आदि। कुरान में: कुरान और अल्लाह कुरान, मुहम्मद, इस्लाम और अल्लाह के अनुसार

क्या अल्लाह एक अच्छा भगवान है? (उसके बाद सभी रक्त की मांग करते हैं और जिहाद/पवित्र युद्ध शामिल आतंकवाद, जब वह अपने में सर्वशक्तिमान ठीक कर सकता है सब कुछ अपने आप से कुछ शब्द कह रहे हैं)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

919

पेज 920

यह लंबे समय से राजनीतिक रूप से सही रहा है कि ईसाइयों और बाइबल के बारे में बुरा बोलना, और
कभी-कभी कहते हैं कि इस्लाम बहुत कम खूनी धर्म है जिसका खूनी इतिहास कम और कम है
क्रूर भगवान।

इस तरह की चर्चा के लिए तीन स्तर हैं:

1. पवित्र में दी गई शिक्षाओं की तुलना करना किताबें (+ इस्लाम के लिए हदीस)।
2. तुलना करने के लिए कि शिक्षाओं को कैसे सोचा जाता है पल्पिट आदि से - यानी असली कैसा है आज पढ़ा रहे हैं।
3. आर्थिक या के लिए धर्म का उपयोग कैसे किया जाता है? राजनीतिक उद्देश्यों के लिए या सत्ता हासिल करने के लिए?

जहां तक ईसाई धर्म का सवाल है, एक और बिंदु है जिसे अक्सर एक तरफ धकेल दिया जाता है: धर्म का निर्माण होता है
बाइबिल का नया नियम, पुराने नियम से अधिक कठिन मुख्य रूप से ऐतिहासिक के साथ
पृष्ठभूमि (यह यहूदी हैं जो पुराने नियम पर निर्माण करते हैं)। एक तथ्य जिसे अक्सर भुला दिया जाता है या
"भूल गई"।

और अंत में: पूरे इतिहास और पूर्व-इतिहास में अधिकांश लड़ाई और युद्ध धन के लिए रहे हैं
और शक्ति, धर्म के लिए नहीं। धर्म का अक्सर लोगों को उकसाने के लिए इस्तेमाल किया जाता रहा है और
सैनिक, और प्राय: ही नहीं याजकों और मुल्लाओं ने शीघ्र ही पीछे का अनुसरण किया है। भी
धर्म को कभी-कभी अत्याचारों के लिए इस्तेमाल किया गया है - दक्षिण में स्पेनियों के चरम उदाहरण हैं
और मध्य अमेरिका, और अरब, मध्य पूर्व और मिस्र में मुसलमानों के दौरान और बाद में

विजय, दक्षिण एशिया में उल्लेख नहीं करने के लिए - विशेष रूप से सिंध और शेष पुराने भारत में, प्लस इन
आर्मेनिया, आदि, और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में। लेकिन मुख्य रूप से वास्तविक कारण धन रहे हैं, जिनमें शामिल हैं
दास और शक्ति और शक्ति नीति।

अक्सर किसी चर्चा का उद्देश्य सत्य को खोजना नहीं होता, बल्कि चर्चा को जीतना होता है
अपने दृष्टिकोण की रक्षा करना। फिर तर्कों का आदान-प्रदान अक्सर असली से गंदा हो जाता है
तर्कों का मिश्रण। इस्लाम को एक अच्छा और शांतिपूर्ण धर्म कहा जाता है क्योंकि अधिकांश लोग
पश्चिम में सामूहिक हत्याओं, पोग्रोम्स, युद्धों, दासता, दमन के बारे में कुछ नहीं जानता,
आदि दुनिया के इस्लामी भागों में - और यहूदी मुस्लिम क्षेत्र के कुछ हिस्सों में रह सकते थे जब वे
स्पेन छोड़ना पड़ा। ईसाई धर्म बुरा है, क्योंकि यहोवा ने यहूदियों को 2700 युद्ध लड़ने दिया -
4000 साल पहले। परन्तु यहोवा ने अपनी शिक्षाओं का एक अधिक नरम पक्ष प्रस्तुत किया जब उसने भेजा
ईसाइयों के अनुसार ईसा से दो साल पहले। और सबसे अधिक संभावना है कि वे सच बोलते हैं, क्योंकि
NT वास्तव में OT की तुलना में बहुत हल्का और अधिक मानवीय है। यीशु ने "नया समझौता" भी शुरू किया कि
"पुराने समझौते" के बजाय आया, और उसने कई पुराने मोज़ेक कानूनों को रद्द कर दिया।

ईसाई भी बुरे हैं क्योंकि वे १७०० के आसपास या उससे थोड़ा पहले बेहतर बनने लगे थे
संगठित और अधिक आविष्कारशील इसलिए उन्हें बेहतर हथियार और सवार भी मिले और ऊपरी हासिल किया
हाथ, और वही किया जो इतिहास और पूर्व-इतिहास के माध्यम से सभी साम्राज्यों ने किया है: हासिल करने के लिए निकल पड़े
धन और अधिक शक्ति - जैसे f. भूतपूर्व। उनके सामने मुसलमान लेकिन विजयी
मुसलमानों को भुला दिया जाता है और बुरे ईसाई रह जाते हैं - भले ही यह व्यवसायी थे
और जिन राजनेताओं ने उपनिवेश बनाए, धर्म नहीं।

हाँ, यदि आप बड़े धर्मों की पवित्र पुस्तकों को पढ़ेंगे, तो आप पाएंगे कि यीशु की शिक्षाएँ
और बुद्ध की शिक्षाएं सबसे शांतिवादी, सबसे मानवीय और सबसे शांतिपूर्ण हैं
वाले।

920

पेज 921

ओह, हाँ, हम उन लोगों की चीख सुनते हैं जो बाहर से सोचने में सक्षम नहीं हैं कि राजनीतिक रूप से क्या सही है।
सत्य क्या है, इसकी खोज करने के लिए हम काफी असामान्य हैं, और जो है उसकी परवाह नहीं करते हैं
राजनीतिक रूप से सही - हमारे पास खुद ज्ञान, किताबें और दिमाग है। लेकिन ध्यान रहे: हम हैं
पवित्र पुस्तकों की सामग्री के बारे में बात करना, इस बारे में नहीं कि धर्मों का उपयोग कैसे किया गया है या
अनुपयोगी

और यहाँ हम अंत में इस बिंदु पर आते हैं: जब कई "लड़ाकू" आदर्शों को अनुपयोगी के साथ मिलाते हैं,
और एक अपवित्र सूप में "सैद्धांतिक" धर्मों के साथ धन और शक्ति के लिए युद्ध,
समाधान अक्सर बेवकूफ प्रतिद्वंद्वी को मारने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है जो यह नहीं समझता है कि "मैं"
मैं सही हूँ।

धर्मों या देवताओं की तुलना करनी है, तो समान स्तर की तुलना करनी होगी: आदर्शों के साथ आदर्श,
आज की शिक्षाओं के साथ आज की शिक्षा, अनुपयोग के साथ अनुपयोगी। अगर कोई तुलना करता है
इस्लाम के आदर्शों को बाइबल के दुरुपयोग के साथ, सत्य को छोड़कर, कोई भी परिणाम प्राप्त कर सकता है।
यह विशेष रूप से यदि कोई शांतिपूर्ण उपयोग करता है, लेकिन आतंकवादियों और अन्य उग्रवादियों के लिए जो अक्सर पुराने हो जाते हैं
मक्का से सूरह, और आसानी से (?) "भूल जाते हैं" कि उन्हें अक्सर निरस्त कर दिया जाता है (अमान्य बना दिया जाता है)
और शून्य) मदीना से नए और खूनी लोगों द्वारा। उपयोग और अनुपयोग के लिए, इस्लाम अधिक नहीं है
यूरोप की तुलना में घमंड करने के लिए। कई विजय अमानवीय आतंक में सबक थे। शासन करने वाला
अक्सर सबसे खराब यूरोपीय से बेहतर नहीं थे - सिंध (अब लगभग पाकिस्तान) कर सकते हैं
आसानी से बेल्जियम के कांगो एफ से तुलना की जा सकती है। भूतपूर्व। मुसलमानों के इतिहास में मुस्लिम शासक थे
जितने बड़े नायक उतने ही बुरे उन्होंने स्थानीय लोगों के साथ व्यवहार किया, और जितने अधिक गैर-मुसलमानों की उन्होंने हत्या की।
भारत के उन शासकों में से एकमात्र जो स्थानीय लोगों के साथ कुछ मानवीय व्यवहार करते थे - अकबर
महान (१५४२-१६०५) - मुसलमान सबसे अच्छे औसत दर्जे के हैं। यूरोप उपनिवेश के इतिहास को देखना होगा
आर्मेनिया की तरह खोजने के लिए दूर-दूर तक - 1.2 मिलें। द्वारा कुछ वर्षों में व्यवस्थित रूप से हत्या कर दी गई
उनके तुर्की स्वामी (तुर्की और इस्लाम में अभी भी उस हिस्से को पूरा करने के लिए नैतिक सहनशक्ति नहीं है
उनके अतीत के)। इसके अलावा आर्मेनिया की मूल विजय - और कई अन्य स्थान - एक तांडव था
खून और वध में। अफ्रीका में भी ज्यादती हुई, f. भूतपूर्व। मिस्र की विजय,
शहर के बाद शहर के साथ आखिरी बच्चे की हत्या - और अगर इस्लाम को कभी भी बनाने की रीढ़ है
मुसलमानों ने अफ्रीका और एशिया से कितने गुलामों को अगवा किया या खरीदा है, इसका एक अनुमान -
हमने कम से कम उस संख्या को कभी नहीं देखा है। चूंकि गुलामी शुरू से ही जारी थी
इस्लाम और उससे पहले, और १९०० और यहां तक कि २००० के दशक में भी, संख्या काफी अधिक है
लाखों।

मुझे लगता है कि हम प्रत्येक यूरोपीय के लिए एक मुस्लिम अतिरिक्त पाएंगे - कम से कम। लेकिन व्यवहार और
मुसलमानों के अत्याचारों के बारे में बहुत कम जाना जाता है, और इसके बारे में बात करना राजनीतिक रूप से सही नहीं है
उन्हें। जब आज की दैनिक शिक्षाओं की बात आती है, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि कुछ मदरसे
और मस्जिदों में किसी भी ईसाई चर्च की तुलना में एक गंभीर और अत्यधिक घृणित शिक्षा है या
स्कूल। और वह अधिकांश अन्य धर्मों की तुलना में समान है।

फिर आदर्शों की तुलना में आदर्श बने रहें - पवित्र बाइबिल की तुलना में पवित्र कुरान।

बहुत से लोग नहीं जानते कि कुरान में दो भाग होते हैं - सूरह
मक्का (लगभग 80-90 सूरह - जैसा कि उन सभी की उम्र नहीं पता है, यह कहना संभव नहीं है
सटीक संख्या, लेकिन शायद 86) और मदीना से (कम से कम 22 सूरह)। जैसे वो हे वैसे
पुस्तक में एक हाथापाई में रखा गया है, यह देखना आसान नहीं है कि कौन सा है, और यह एक कारण हो सकता है
यह तथ्य अच्छी तरह से ज्ञात क्यों नहीं है।

लेकिन मक्का के सूरा और मदीना के सूरह में बहुत अंतर है।
मक्का के लोग मुख्य रूप से शांतिपूर्ण और मानवीय हैं। अचानक से, जैसे मुहम्मद भाग गए
मदीना और अपने हाईवेमैन करियर और बाद में अपने सरदार कैरियर को शुरू करने के लिए योद्धाओं की जरूरत थी,

धर्म नाटकीय रूप से घृणा और दमन, हत्या, बलात्कार और युद्ध में बदल गया। मुसलमानों
आपको बताएंगे कि यह सब रक्षा युद्ध के बारे में है, लेकिन इसे स्वयं पढ़ें, और आप पाएंगे कि यह है
बकवास - मदीना के ग्रंथ मुख्य रूप से युद्ध और लूट और बलात्कार के लिए उकसाने वाले हैं और
दासता और अल्लाह के लिए अन्य अच्छी चीजों को मारना, और "अच्छे और" चोरी करके अमीर बनना
वैध रूप से", लेकिन आत्मरक्षा के बारे में बहुत कम। क्या यह अल्लाह था जिसने पाया कि शांतिपूर्ण और
काफी अच्छा धर्म उसके स्वाद के अनुसार नहीं था, इसके बारे में सोचने के लिए आया था, और अधिक चाहता था
नफरत और बलात्कार और खून, या अगर यह केवल मुहम्मद थे जिन्हें नफरत और योद्धाओं की जरूरत थी
चोरी और जबरन वसूली और हत्या से जीविका कमाने के लिए - और बाद में एक कठोर सरदार के रूप में - नहीं है
हमारे कहने के लिए।

परिणाम नाटकीय है, हालांकि, सूरह 2/106 के अनुसार (यह कहते हुए कि सूरह / छंद
कुछ इसी तरह या "बेहतर" के लिए प्रतिस्थापित किया जा सकता है) और इस्लाम के अनुसार, जब दो या
अधिक सूरह अर्थ में भिन्न होते हैं, सबसे छोटा सामान्य रूप से सही होता है। इस वजह से
कभी-कभी मक्का के लिए उदार सूरह अक्सर शून्य और अमान्य होते हैं यदि कहीं अधिक कठोर और अधिक
मदीना के अमानवीय कुछ और कहते हैं।

बस सूरा को कालानुक्रमिक क्रम में पढ़ें और चौंक जाएं - अंतिम धर्म के बारे में
और इसके पीछे भीषण योद्धा भगवान के बारे में।

किसी को आश्चर्य हो सकता है: मक्का के इस्लाम के पीछे के देवता वही देवता कैसे हो सकते हैं जो पीछे के देवता हैं?
मदीना का इस्लाम? - बड़े अंतर हैं। बहुत बड़ा नहीं तो कुछ गलत है या भगवान
बीमार।

वह भी बाइबल दो मुख्य भागों से बनी है, जिसे बेहतर जाना जाता है - पुराना नियम (थोड़ा सा)
से अधिक) और नया नियम (¼ से थोड़ा कम - हमारी पुस्तक में लगभग ११७० पृष्ठ
ओटी के लिए कुछ 320 पृष्ठों की तुलना में)।

ईसाइयों के लिए मुख्य बात एनटी है, जबकि ओटी जैसा कि पहले कहा गया है, ज्यादातर ऐतिहासिक है
पृष्ठभूमि (लेकिन यहूदी एनटी में बिल्कुल भी विश्वास नहीं करते हैं, और ओटी के अनुसार पढ़ाते हैं)। और यह
याहवे/भगवान आप एनटी में मिलते हैं और इसकी नई वाचा कहीं अधिक उदार और अच्छा भगवान है
ओटी में सख्त की तुलना में, हालांकि अंतर अल्लाह के परिवर्तन के लिए तुलनीय नहीं है
मदीना बनाम मक्का का अल्लाह। मुसलमान बताते हैं कि जिस वजह से भगवान ने नई शिक्षा दी है
अब और फिर, क्या दुनिया बदल रही है, और उसके कारण नए नियमों को करना पड़ा है
बनाया जाए। शायद वे सही हैं और यहोवा/भगवान ने पाया कि यह उच्च समय और शर्तें थी
एक अधिक शांतिपूर्ण धर्म में परिवर्तन के लिए पृथ्वी के कुछ हिस्सों और यीशु को भेजा? क्योंकि एक आदर्श के रूप में
इसमें कोई संदेह नहीं है कि यीशु और बुद्ध की शिक्षाएं दो सबसे अधिक हैं
शांतिपूर्ण, शांतिवादी और सभी बड़े धर्मों के हितैषी। (राजनीतिक क्षेत्र में जाने से पहले)
क्रोध के अन्य उपयुक्त: याद रखें कि हम शिक्षाओं के बारे में बात करते हैं, न कि दुरुपयोग या बदनामी के बारे में -
किस बात के लिए धर्म को दोष देना f. भूतपूर्व। सत्ता के लालच या भूख से किया गया था)।

किस भगवान के लिए पूछने के लिए - यहोवा / भगवान के रूप में हम उससे एनटी में मिलते हैं, या अल्लाह के रूप में हम उससे मिलते हैं
मदीना (और यही वह जगह है जहाँ हमें उससे मिलना है, क्योंकि वे सूरह सबसे छोटे हैं और इस तरह
इस्लाम के अनुसार सबसे सही - शांतिपूर्ण भगवान नहीं, बल्कि नफरत और युद्ध के देवता) - है

दोनों में सबसे अच्छा और सबसे प्रोपकारी, समय और ऊर्जा बर्बाद करना है। अंतर बहुत बड़ा है -
बस सीए पढ़ें। मदीना और एनटी से 22 सूरह एक बार, और आप एक नहीं पूछेंगे
सवाल। एक भी विरोध नहीं करेंगे। एक भी संदेह नहीं है।

लेकिन फिर ओटी के यहोवा का सवाल है - इससे पहले कि यीशु ने कानून बदले और
पुराने से नियम। बहुत से लोग जब चर्चा कर रहे होते हैं तो वे पर्याप्त ईमानदार नहीं होते हैं, पर्याप्त निष्पक्ष होते हैं या नहीं होते हैं
यीशु से पहले और बाद में और यहोवा के परिवर्तन के बीच अंतर करने के लिए बहुत कम ज्ञान

और यीशु की बहुत कोमल शिक्षा। वे ओटी से युद्ध या हत्याओं का इस्तेमाल बुरे के लिए उदाहरण के रूप में करते हैं
ईसाई धर्म, भले ही वह इतिहास के हिस्से के अलावा उस धर्म का हिस्सा नहीं है
यीशु ने "नई संधि" की अपनी शिक्षाओं को पीछे छोड़ दिया। ईसाइयों के लिए ओटी का अर्थ है, लेकिन जैसे
स्थानीय फुटबॉल प्रीमियर लीग की तुलना में बहुत दूर की जगह है, या इससे बेहतर तुलना हो सकती है
आज के दैनिक जीवन की तुलना में आपकी युवावस्था में स्कूल में इतिहास का पाठ।

इसलिए, आइए हम ओटी के यहोवा की तुलना उसके अंतिम और वर्तमान में अल्लाह से करें
चिरस्थायी छवि: ओटी में यहोवा ने जो ज्यादती की, या यहूदियों को करने दिया, वह ज्यादातर बनाने के लिए थी
इज़राइल के लिए कमरा - एक राष्ट्रीय देश के लिए जगह, बड़ा या छोटा - क्षेत्र के पूर्व में
भूमध्य सागर 2000-4000 साल पहले। कुरान नफरत और युद्ध और दमन की बात करता है
आज कल और हमेशा। ओटी की अधिकता इतनी अच्छी तरह से जानी जाती है कि हम इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं
अल्लाह की बहुत कम ज्ञात ज्यादती, जैसा कि कुरान में बताया गया है - और याद रखें: OT . के विपरीत
वे न केवल इतिहास के कुछ टुकड़े हैं, बल्कि सभी भविष्य के लिए आदर्श और आदेश हैं:

००१ ३/१३७: "-----पृथ्वी में घूमो, और देखो कि उन (गैर-मुसलमानों*) का क्या अंत हुआ?
जिसने सत्य (इस्लाम*) को नकार दिया"। अरब में और उसके आसपास बिखरे हुए खंडहर थे।
मुहम्मद ने बताया कि वे सभी शहरों और कस्बों और बस्तियों के अवशेष थे जिन्हें दंडित किया गया था
अल्लाह, क्योंकि वे मुसलमान नहीं बनेंगे। विज्ञान के अन्य स्पष्टीकरण हैं, लेकिन यदि
कुरान सच कहता है, अल्लाह ने इन सभी जगहों पर लोगों को मार डाला। यहाँ से अधिक हो सकता है
अपने पूरे करियर में यहोवा, क्योंकि भले ही खंडहर बिखरे हुए हों, क्षेत्र चौड़ा था,
एक साथ कई खंडहर बना रहे हैं। आखिरकार यहोवा ने मुख्य रूप से इस्राएल के लिए जगह बनाई, और इस्राएल एक है
छोटा देश - और यहूदियों ने अपने पहले के समय से सभी निवासियों को मार डाला
आया। इसके अलावा, पूर्व खंडहर थे जिन्हें तय किया गया था या फिर से बनाया गया था और रहने के लिए इस्तेमाल किया गया था
मुहम्मद के समय जब यह बताया गया था - उन स्थानों के पूर्व उपयोगकर्ता भी मारे गए थे
इस्लाम के अनुसार, उनके पापों के लिए अल्लाह द्वारा।

००२ ४/६: “देखो वे (लोग*) नहीं कि उनमें से कितनों को हम (अल्लाह*) ने उनसे पहले नष्ट कर दिया? -
पीढ़ियों को हमने धरती पर स्थापित किया था, इतनी ताकत में कि हमने तुम्हें नहीं दिया
(मुसलमान*) - --"। एक अनिर्दिष्ट संख्या मारे गए, लेकिन स्पष्ट रूप से कई - बहुवचन में पीढ़ियां
और मुसलमानों की तुलना में प्रत्येक अधिक आबादी वाला - या मजबूत - (यह सबसे अधिक संभावना 625 में कहा गया था, और
मुसलमानों ने कई अनुयायी और ताकत हासिल करना शुरू कर दिया था)। हो सकता है यहोवा जल्दी करे
ऊपर, सबसे ज्यादा मारने वाले की होड़ में बहुत पीछे नहीं रहने के लिए?

००३ १०/१३: "आप से पहले की पीढ़ियों (गैर-मुस्लिम*) हमने (अल्लाह*) तबाह कर दिया जब उन्होंने ऐसा किया
गलत - - -"। अल्लाह की आज्ञा मानो या मरो - और बहुत से लोग मर गए। कम से कम कुरान तो यही कहता है।

004 11/60: "हटाए गए (दृष्टि से (= मारे गए*)) 'विज्ञापन (बड़ी और समृद्ध अरब जनजाति,
अरब लोक कथाओं से "उधार"*)"। कुछ हजारों और अल्लाह द्वारा मारे गए।

005 11/67: "(पराक्रमी) विस्फोट ने अपराधियों को पछाड़ दिया (थमूद - एक और बड़ा और अमीर
जनजाति अरब की लोक कथाओं* से "उधार ली गई", और वे अपने घरों में साष्टांग प्रणाम (और मृत*) लेटे थे
सुबह से पहले - - -"। एक और कुछ हजारों मारे गए।

006 11/95: "- - - मद्यन (अभी भी एक अन्य जनजाति - देखें 11/60 और 11/67*) को हटा दिया गया था
(मारे गए*) - - -"। कुछ सैकड़ों या हजारों लाशें अल्लाह के हिसाब से ज्यादा हैं।

००७ १२/१०९: "क्या वे (गैर-मुसलमान*) पृथ्वी पर यात्रा नहीं करते हैं, और देखते हैं कि अंत क्या था
उनसे पहले की?" मक्का एक व्यापारिक केंद्र था जिसका कम से कम मिस्र से संपर्क था और
कांस्टेंटिनोपल काले पूर्वी अफ्रीका और भारत और यहां तक कि चीन तक। सभी में कई खंडहर थे
वह विस्तृत क्षेत्र, भले ही वे बिखरे हुए हों। सभी खंडहर लोगों से खाली थे, क्योंकि अल्लाह के पास था

पेज 924

उन्हें मार डाला क्योंकि उन्होंने मुहम्मद के अनुसार मुसलमान बनने से इनकार कर दिया था, और वही
उन सभी स्थानों के साथ जो खाली हो गए थे लेकिन जहां अब नए गोत्र रहते थे। अगर मुहम्मद
सही था, यहोवा को बेहतर था कि वह हत्या के क्षेत्र में अल्लाह से बहुत पीछे न रह जाए -
हत्या के क्षेत्रों को नहीं कहना।

००८ १५/७४: "और हम (अल्लाह*) ने (नगरों (सदोम और अमोरा) को बदल दिया - याद रखें कि
कुरान का दावा है कि अल्लाह = यहोवा*) उल्टा, और उन पर कठोर गंधक बरसाए
पके हुए मिट्टी के रूप में"। कुछ और मृत पीड़ित।

००९ १५/८०+८३: "रॉकी ट्रैक्ट के लोग (अरब में उत्तरी हिजाज़ में अल-हिज्जर*) - - -
(पराक्रमी) विस्फोट ने उन्हें सुबह आकार दिया (और उन्हें मार डाला *)"।

०१० १६/२६: "- - - अल्लाह ने उनकी (पुराने समय के लोगों*) संरचनाओं को उनकी नींव से लिया,
और छत ऊपर से उन पर गिर पड़ी (और उन्हें मार डाला*)।" स्कोर बढ़ रहा है।

०११ १७/१६: "जब हम (अल्लाह*) एक आबादी को नष्ट करने का फैसला करते हैं - - -"। कोई टिप्पणी नहीं।

012!7/17: "नूह के बाद हम (अल्लाह*) ने कितनी पीढ़ियों को नष्ट किया है?" अल्लाह ने मार डाला
इतनी पीढ़ियाँ कि वह संख्या के बारे में निश्चित नहीं है। और यह हत्या का सवाल है
(नष्ट करना), प्राकृतिक मृत्यु का नहीं। यहोवा जिसने अभी-अभी इस्राएल/यहूदियों के लिए जगह बनाई है कि वे उन्हें जाने दें
उनका अपना छोटा सा देश है + कभी-कभी उनकी थोड़ी मदद की, शायद ही उसमें भी हो
अल्लाह के रूप में लीग।

०१३ १९/९८: "लेकिन उनसे पहले कितनी (अनगिनत) पीढ़ियाँ (मुहम्मद के अनुयायी*)
क्या हमने (अल्लाह*) नष्ट कर दिया है?" ऊपर 17/17 देखें। यहोवा के लिए स्थिति: आगे भी
प्रतियोगिता में जितना हमने सोचा था उससे पीछे।

०१४ २०/१२८: "क्या यह ऐसे लोगों के लिए चेतावनी नहीं है (ध्यान रखना) कि कितनी पीढ़ियाँ पहिले हैं
उन्हें हमने (अल्लाह) नष्ट कर दिया, वे (अब) किसके ठिकाने पर घूम रहे हैं? वास्तव में इसमें निशानियाँ हैं
पुरुष समझ के साथ समाप्त हुए। " ऐसा लगता है कि "इस्लाम" तब अब जैसा था (कम से कम के कुछ हिस्से)
इस्लाम): आतंक और हत्या के बड़े कृत्य एक चेतावनी है: जैसा हम चाहते हैं वैसा करो या हम और अधिक हत्या करेंगे
लोग। आतंकवादियों के लिए एक ज्वलंत उदाहरण। और लाशों की गिनती बड़ी संख्या में पहुँचती है।

०१५ २१/६: "- - - उन आबादी में से एक नहीं जिसे हमने (अल्लाह*) नष्ट कर दिया, विश्वास किया (थे .)
मुसलमान*)"। खैर, मुहम्मद से पहले मुसलमानों की एक भी आबादी ज्ञात नहीं है,
कुरान और इस्लाम क्या कहते हैं इसके बावजूद। और एकेश्वरवादियों का (जिसके बारे में इस्लाम दावा करता है)
पुराने समय में मुसलमान, लेकिन इसका एक भी निशान कभी नहीं मिला) मुख्य रूप से थे
यहूदी और ईसाइयों का झाग। मुहम्मद के समय अरबों का एक छोटा पंथ भी था
एकेश्वरवादी - शायद यहूदियों और ईसाइयों से प्रेरित।

०१६ २१/९: "- - - हमने (अल्लाह*) ने उन लोगों को नष्ट कर दिया जिन्होंने सीमा का उल्लंघन किया (का पालन नहीं किया)
उसके नबियों की शिक्षा*)"। याद रखें कि हदीस के अनुसार कम से कम
मुहम्मद से पहले 124ooo नबी, और शायद ही पुराने समय से एकेश्वरवाद का एक निशान
यहूदी और बाद में ईसाई। अल्लाह ने अनगिनत संख्या में "नष्ट" किया होगा
लोग। बेचारा यहोवा - वह इस प्रतियोगिता में बालवाड़ी में है।

०१७ २२/४८: "अंत में मैंने (अल्लाह*) उन्हें दंड दिया (अधर्मियों/गैर-मुसलमानों को मार डाला*)। प्रति
मैं ही (सबका) गंतव्य हूं।" एफ. पूर्व. यह अल्लाह तय करता है कि किसे मारना है।

पेज 925

०१८ २३/४१: "और उन्हें (नूह* के बाद की पीढ़ियों के लोग) ने न्याय के साथ धमाका किया

(और उन्हें मार डाला*), और हमने उन्हें मरे हुए पत्तों का कचरा बना दिया - - -"। यहोवा ने थोड़ा कारण दिया
नूह और इब्राहीम के बीच हत्या, लेकिन लगता है कि अल्लाह ज्यादातर समय व्यस्त रहा है।

019 25/36: "'जाओ तुम दोनों (मूसा और हारून - याद रखें कि इस्लाम दावा करता है कि अल्लाह एक ही है)
यहोवा के रूप में भगवान - जो यहोवा ने किया, फलस्वरूप अल्लाह ने किया*), लोगों के लिए (के लोग)
मिस्र*) जिन्होंने हमारी आयतों को ठुकरा दिया है'। और उन (लोगों को) हमने पूरी तरह से नष्ट कर दिया
विनाश"। कुछ और सामूहिक हत्याएं।

०२० २५/३७: "और नूह के लोगों - - - - हम (अल्लाह *) ने उन्हें - - -" डुबो दिया। ऊपर 25/36 देखें।

०२१ २५/३८ + ३९: "- - - भी 'अद और थमूद और रास के लोग (३ बड़े जनजातियाँ)
अरब लोककथाओं से "उधार", और उनके बीच की कई पीढ़ियाँ - - - और हर एक We
(अल्लाह*) सर्वनाश करने के लिए टूट गया - - -"। यहोवा/परमेश्वर के लिए सभी के साथ प्रतिस्पर्धा करना आसान नहीं है
यह थोक वध।

०२२ २८/४३: "हम (अल्लाह*) ने मूसा पर किताब उतारी (गलत - मूसा की किताबें थीं
सदियों बाद विज्ञान के अनुसार लिखा*) के बाद हमने पिछली पीढ़ियों को नष्ट कर दिया था -
- -"। नूह और मूसा के बीच और पीढ़ियां मारी गईं - अल्लाह बहुत अधिक काम करने वाला था
यहोवा की तुलना में, कम से कम हत्या के कारोबार में।

०२३ ४३/६ - ८: "लेकिन हम (अल्लाह*) ने कितने नबी भेजे थे (एक बयानबाजी का सवाल जैसा कि
हदीस बताता है कि पुराने लोगों के बीच कम से कम 124ooo*) थे? पर कभी नहीं आया
वहाँ उनके पास एक नबी था, लेकिन उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया। इसलिए हमने उन्हें नष्ट कर दिया - - -"। इसके साथ कई
भविष्यवक्ताओं, अभिव्यक्ति "थोक वध" चरम में महत्वहीन है। यहोवा है
इस प्रतियोगिता में शायद ही कोई बच्चा हो।

अध्याय VII/2 के लिए पोस्ट स्क्रिप्टम।

अगर आप कुरान को पढ़ेंगे तो आपको और भी बहुत सी जगहें मिलेंगी जहाँ के बारे में किताब बताती है - लगभग
के बारे में दावा करता है - बड़े पैमाने पर अत्याचार और हत्या। परन्तु हम यहीं ठहरते हैं, न कि यहोवा को हानि पहुँचाने के लिए
चेहरा भी बुरी तरह

दरअसल इस प्रतियोगिता में यहोवा के पास कोई मौका नहीं था। जैसा कि कुरान दावा करता है कि अल्लाह वही है
यहोवा के रूप में भगवान, अल्लाह ने वह सब कुछ किया है जो यहोवा ने पुरानी किताब के अनुसार किया था। लेकिन में
इसके अलावा अल्लाह के पास गंभीर अत्याचारों और बड़े पैमाने पर हत्याओं की एक लंबी सूची है, जहां यहोवा था
शामिल नहीं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि सबसे कठिन भगवान कौन है। यह और भी अधिक है क्योंकि अल्लाह वर्तमान में विकसित हुआ है
मदीना से युद्ध भगवान। जबकि यहोवा नरम हो गया - शायद इसलिए कि समय बदल गया
(जैसा कि इस्लाम बताता है) पृथ्वी पर कुछ स्थानों की बेहतरी के लिए और यह एक उदार धर्म का समय था?

एक wxtra PS: अल-अजहर अल-शरीफ द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक .)
ऐसे विषय) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं
अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि
अल्लाह के लिए कोई पुतला नहीं है और उसे पटाना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है
के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है। अगर अल्लाह नहीं
मौजूद है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह "अच्छा" है या बुरा। लेकिन उस मामले में: मुहम्मद के बारे में क्या?
किस्से?

925

पेज 926

16. 2. 09

भाग VII, अध्याय 3 (= VII-3-0-0)

तथ्य बनाम. दावे, कथन, (अमान्य) "संकेत", (अमान्य) "सबूत", आदि। कुरान में: कुरान और अल्लाह कुरान, मुहम्मद, इस्लाम और अल्लाह के अनुसार

मुहम्मद ने कहाँ से (OR .)

अल्लाह?) में कहानी "उधार"
क़ुरान? - की पवित्र पुस्तक
मुसलमान और इस्लाम।

कुरान में साहित्यिक चोरी

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

कुरान में ऐसा बहुत कम है जो मौलिक सोच हो। व्यावहारिक रूप से यह सब "उधार" है
पुराने समय से, या आसपास की संस्कृतियों से। कानून मुख्य रूप से पुरानी अरब परंपराओं से हैं,
मुख्य रूप से यहूदियों, ईसाइयों और फारस के कुछ विचारों द्वारा जोड़ा गया। साथ ही नैतिक और नैतिक
विचार समान स्रोतों से आए - आंशिक रूप से मूल रूप से नर्क से। (लेकिन तब इस्लाम वास्तव में कभी नहीं
नैतिक या नैतिकता का दर्शन था - वे ज्ञान के लिए कभी भी रुचि नहीं रखते थे
ज्ञान और सक्रिय रूप से दर्शन जैसी चीजों के खिलाफ लड़ा - एक युद्ध इस्लाम ने 1095 में जीता था
एक किताब ("द इनकोहेरेंस ऑफ द फिलॉसॉफर्स") सिर्फ दर्शन पर हमला करती है और "द" द्वारा लिखित है
मुहम्मद के बाद दूसरा सबसे बड़ा मुसलमान" अबू हामिद मुहम्मद इब्न मुहम्मद अल-
ग़ज़ाली (१०५८ - ११११), वास्तव में एक अरब नहीं, बल्कि फारस से है। इसके बजाय उन्होंने कुछ का अनुसरण किया
और कभी-कभी कुरान में अमानवीय आदेश)। और वही ज्ञान और विज्ञान के लिए जाता है -
मुख्य रूप से नर्क और फारस से और कुछ भारत से। लेकिन वास्तव में ज्ञान और विज्ञान था
मुहम्मद के समय में कम आपूर्ति में - पुरानी किताबों का अनुवाद शुरू हो गया था, च। भूतपूर्व। में
फारस - एक ऐसा देश जिसके साथ अरबों का बहुत संपर्क था, लेकिन इसका अधिकांश अनुवाद अरब में हुआ
बहुत बाद में आया (लगभग 820 ईस्वी से)। सब वही कुछ पुराने ज्ञान से
ग्रीस, फारस और भारत को अरब में भी जाना जाता था, और यह वह विज्ञान था जिस पर अरब विश्वास करते थे
मुहम्मद के समय में।

मुहम्मद अरब के समय में बस एक स्थायी बर्बर राज्य था जिसमें थोड़े से थे
बुनियादी शिक्षा को छोड़कर शिक्षा - और वह ज्यादातर "बेहतर" परिवारों के लिए - और के साथ
वास्तविक अराजकतावाद में जनजातियाँ लगातार एक दूसरे से लड़ रही हैं। कला का एकमात्र रूप जो अस्तित्व में था
कहानी और कविता। देश उत्तर में सबसे खराब जगहों से भी ज्यादा बर्बर था
पाकिस्तान और अफगानिस्तान और अफ्रीका आज। (यह एक कारण हो सकता है कि इस्लाम को सफलता मिली
अरब के बाद इसे युद्ध धर्म में बदल दिया गया - अरब संस्कृति के अनुसार थे - या यों कहें
अराजकतावाद - योद्धा दिल से क्योंकि वह बनने के लिए लाया गया था, और ए
युद्ध धर्म ने उनकी संस्कृति को फिट नहीं किया। बर्बरता एक संस्कृति नहीं है, चाहे वह कितनी भी अर्ध-
बुद्धिजीवी कहते हैं)।

ऐसी स्थितियों में मुहम्मद को आसपास से अच्छे विचारों को चुराने के लिए दोषी नहीं ठहराया गया था
- वास्तव में ऐसा न करना सिर्फ जिद्दी मूर्खता होगी - जैसा कि आप कुछ जगहों पर भी देखते हैं
आज: बाहर से और विशेष रूप से पश्चिम से सब कुछ खराब है, चुनने के बजाय
अच्छे विचार और बुरे विचारों को छोड़ना। मुहम्मद - या अल्लाह - की कोशिश करने के लिए काफी बुद्धिमान थे
ज्ञात विचारों को चुनें जहां से उन्होंने उन्हें पाया।

लेकिन मुहम्मद खुद कोई विचारक नहीं थे (क्षमा करें, लेकिन आज शायद ही कोई वास्तविक वैज्ञानिक इस बात पर विश्वास करता हो
कुरान एक भगवान द्वारा बनाया गया था - कुछ भी एक भगवान की ओर इशारा नहीं करता, सब कुछ मुहम्मद की ओर
और/या मानव सहायक)। और कुरान में भी मूल सामग्री के बारे में बहुत कम या कुछ भी नहीं है। NS
सभी कहानियाँ उस समय अरब में ज्ञात अन्य स्रोतों से ली गई हैं (एक भगवान को ऐसा क्यों करना चाहिए?
इसलिए?)

बाइबिल से बहुत कुछ लिया गया है, लेकिन मुहम्मद की शिक्षा के अनुरूप "समायोजित" किया गया है, हालांकि बहुत कुछ
यह वास्तव में वास्तविक बाइबिल से नहीं है, बल्कि धार्मिक परियों की कहानियों और लोक कथाओं या ग्रंथों से है
विभिन्न फ्रिंज संप्रदायों द्वारा निर्मित - नोस्टिक्स f. भूतपूर्व। काफी संख्या में "सुसमाचार" और
अन्य "पवित्र" कहानियाँ। अगर हम कहें कि मुहम्मद ने कुरान को खुद बनाया, तो यह देखना आसान है
वह अक्सर यहाँ क्यों चूक जाता है:

1. वह यहूदी धर्म के बारे में ज्यादा नहीं जानता था,
जब तक वह मदीना नहीं आया, तब तक वह था

बहुत देर हो गई।
2. वह ईसाई के बारे में ज्यादा नहीं जानता था
धर्म।
3. शायद वह नहीं जानता था कि कैसे पढ़ना है, और क्यों
यकीन है कि उसके पास कभी बाइबल नहीं थी।
4. असंख्य कहानियाँ और कविताएँ भी थीं
अरब में धार्मिक विषयों के बारे में - जैसा कि हमने कहा
कहानी सुनाना (और कहानी बनाना) और कविता
अरब में एकमात्र कला थी, और उनमें से एक भी थी
लंबी अवधि के दौरान ऐसी संस्कृतियों में कुछ शगल
शाम।

उसके लिए अक्सर यह जानना असंभव था कि वास्तव में एक सच्ची कहानी क्या थी और क्या नहीं।

इसके अलावा उन्हें कहानियों में देवत्व मिलाना था, अगर यह पहले नहीं था - यह भी हो सकता है
वहाँ पहले से, क्योंकि तब एक बुद्धिमान लेकिन काल्पनिक मस्तिष्क की कमी की तरह
मुहम्मद को केवल "अल्लाह" कहानियों के पीछे भगवान का नाम देना था। असल में उसने दोनों का इस्तेमाल किया
धार्मिक और गैर-धार्मिक कहानियों और उन्हें उनकी शिक्षा के अनुकूल बनाने के लिए पर्याप्त रूप से बदल दिया।

लेकिन कहानियों के लिए संभवतः यहूदी से और इससे भी ज्यादा ईसाई धर्म से
उनमें से कुछ को बस थोड़ा या बहुत घुमाया गया था, जबकि अन्य स्पष्ट रूप से बनावटी लोक से थे
और उस समय अरब में ज्ञात परियों की कहानियां, किंवदंतियां और मिथक।

हम उन जगहों पर टिप्पणी नहीं करते हैं जहां कुरान बाइबिल को घुमाता है - हमारे अधिकांश पाठक पहचानेंगे
उन्हें। हम केवल इतना ही जोड़ते हैं कि सीरिया और अरब में आंशिक रूप से ईसाईयों में से कई थे
गूढ़ज्ञानवादी संप्रदाय जीवित हैं, और वास्तव में कई कहानियाँ बाइबल से होने का दिखावा करती हैं
कुरान, गूढ़ ज्ञानवादी कहानियों से बना है। लेकिन हम कुछ अन्य को लेंगे - और कुछ
नोस्टिक वाले (स्रोत: दूसरों के बीच स्लॉट-हेनरिक्सन: कुरान पर टिप्पणियाँ):

001 मूसा और मछली - अनन्त जीवन की खोज के बारे में अरबी लोक कथाओं से। शायद
मूल रूप से बेबीलोन से - बेबीलोन के उगारिट ग्रंथों में भगवान के बारे में एक समान कहानी है
एल (अरब में और उसके आसपास अज्ञात नहीं)।

002 सुलैमान चींटियों को सुन रहा है - परियों की कहानी शायद बाइबल से प्रेरित है, Sol. 6/6.

सोलोमन के लिए काम करने वाले 003 जिन्न - स्थानीय परियों की कहानियों, लोक कथाओं और मिथकों से (जिन्स थे
अरब लोककथाओं में प्राणी जो इस्लाम में शामिल हैं)। जिसने भी पढ़ा है एफ. भूतपूर्व। 1001
रातें जानती हैं कि अलौकिक प्राणी कभी-कभी मनुष्यों के लिए काम करते थे।

004 मैरी मंदिर में (यरूशलेम में) बच्चे/युवा के रूप में काम कर रही हैं - "द प्रोटो गॉस्पेल आफ्टर" से
जैकब", भाग ८,१ और ८,१बी।

005 यीशु पालना में बात कर रहे हैं - धार्मिक कथा "द इजिप्टियन चाइल्ड गॉस्पेल" से शायद
"द अरब चाइल्ड गॉस्पेल" (मूल रूप से सीरिया से) के माध्यम से - दोनों परियों की कहानियों के बारे में
बालक यीशु के विषय में अद्भुत बातें। "द अरब चाइल्ड गॉस्पेल" को भी कहानियाँ मिलीं
"जैकब के बाद प्रोटो गॉस्पेल" और "द थॉमस चाइल्ड गॉस्पेल" - दोनों ने धार्मिक बना दिया
किंवदंतियाँ या मिथक।

006 यीशु मिट्टी से पक्षी बना रहे हैं - विधर्मी ज्ञानवादी "थॉमस के बाद बाल सुसमाचार" पढ़ें
पद १ - ४, एक बहुत ही रचा हुआ बाल सुसमाचार, और आप इसे वहां पाते हैं। (वास्तव में मंजिलों में से कोई भी नहीं
कुरान में यीशु के बारे में वैज्ञानिकों द्वारा सच माना जाता है। में जो कहा गया है उसमें से अधिकांश
ईसाई धर्म के बारे में कुरान, अपोक्रिफल से है - बना हुआ - स्रोत। वहाँ के रूप में अप्राकृतिक नहीं
एफ। भूतपूर्व। कई ज्ञानशास्त्रियों और अन्य अर्ध-ईसाई और अर्ध-यहूदी संप्रदायों के दायरे में थे
ईसाई धर्म। अरब निश्चित रूप से - और बाहर - उन फ्रिंज में थे)।

007 मेरी और हथेली - निर्मित धार्मिक कथा "मैथ्यू के बाद प्रोटो गॉस्पेल" से,
अध्याय 20.

008 मुहम्मद्स नाइट जर्नी ट्रेवल - यहूदी में ऐसी विभिन्न यात्राओं के बारे में पढ़ें
मरबाह रहस्यवाद या इससे भी अधिक ग्नोस्टिक "एनोक की जानी टू हेवन" (लगभग समान
इब्न इशाक की इस्लाम ने अबू सईद अल-चुदरी के बाद की कहानी स्वीकार की)।

009 गुफा में सोने वाले - इफिसुस से आज भी प्रसिद्ध धार्मिक कथा, के बारे में
7 युवक जो सम्राट डेसियस से भाग गए (एक असली सम्राट केवल 2 साल के आसपास 250
AD) और एक गुफा में सोने चले गए, और फिर अधिकतम 196 साल बाद जागे (कुरान कहता है
300 या 309 वर्ष) अधिक प्रसिद्ध सम्राट थियोडोसियस के अधीन)। बस इसे पढ़ें - यह सामान्य रूप से
कुरान से भी बेहतर बताया गया है।

010 सिकंदर महान/दुह्ल क़ार्नैयन - सिकंदर की कहानी जानने वाला कोई भी व्यक्ति; इस पढ़ें
सूरह 18 का हिस्सा और रोओ - या हंसो। अपने सबसे भोलेपन पर नकल करना। (वह एफ। पूर्व। नहीं था
मुसलमान, वह कभी पश्चिम नहीं गया - यह हम इतिहास से जानते हैं - दुनिया में कोई जगह नहीं थी
330 ईसा पूर्व के आसपास पूरी घाटी को बंद करने के लिए पर्याप्त लोहे के ब्लॉक)।

011 विज्ञापन के बारे में कहानी (कई बार दोहराई गई) - अरब लोक कथाओं से कॉपी की गई, संभवतः a
मुहम्मद (मूसा से पहले (लगभग 1230 ईसा पूर्व) से 2000 साल पहले की कहानी
कुरान के अनुसार), और मुहम्मद के पास कोई लिखित स्रोत नहीं था। अन्य सभी के अलावा: How
क्या इस बात की संभावना अधिक है कि कोई लोक कथा 2 वर्षों के बाद सत्य और वास्तविकता के समान हो?

928

पेज 929

०१२ थमूद के बारे में कहानियाँ - अरब से कॉपी की गई, संभवतः २०० साल पुरानी लोक कथाएँ। देखो
ऊपर विज्ञापन के बारे में किस्से।

013 मेडियन के बारे में कहानियां - अरब लोक कथाओं से कॉपी की गई।

014 जिन्न के बारे में कहानियां - अरब लोक कथाओं और किंवदंतियों से कॉपी की गई।

यदि आप देखें, तो हो सकता है कि आपको और नकलची मिलें।

015 7 आकाश। मूल रूप से ग्रीक और फारसी गलत खगोल विज्ञान से, लेकिन काफी संभावना के माध्यम से
ज़ोहर और/या हागीगाह।

०१६ ७ नरक (विभिन्न भागों के लिए ७ द्वार - और विभिन्न भयावह - नरक के): संभवतः से
ज़ोहर और/हागीगाह का।

017 2/55-56: मूसा और उसके लोग: तल्मूड (यहूदी) से लिया गया।

०१७ २/५९: एक आदमी १०० साल तक मरा और जागा। यह एक पुराने यहूदी कल्पित कुएं से लिया गया है
मुहम्मद के समय में अरब में जाना जाता है।

०१८ २/६०: १२ झरने बहते हुए - पूर्व-इस्लामिक किंवदंतियों से कॉपी किए गए।

०१९ २/६५: लोग वानर में बदल गए - उस समय की एक लोकप्रिय अरब किंवदंती से नकल की गई।

०२० २/१०२: दुष्ट। इसे खोजने के लिए "द मिड्राश यालकुट", अध्याय 44 देखें।

०२१ २/२६०: ४ कटे हुए पक्षी जीवित होकर इब्राहीम के पास उड़ जाते हैं। यह भी एक पुराने से लिया गया है
यहूदी कल्पित कहानी मुहम्मद के समय अरब में प्रसिद्ध थी।

022 3/35-37: मरियम का जन्म। काल्पनिक पुस्तक "द प्रोटोएवेंजेलियन्स जेम्स" से लिया गया
कमतर"।

०२३ ५/३०-३१: कौआ और कैन। यह "जोनाथन बेने के तारगम" में पाया जाना है
उज्जियाह" और "द टारगम ऑफ जेरूसलम" में भी। मुहम्मद ने कई जगहों से "उधार" लिया।

०२५ ७/७३-७७: ऊंट "सबूत"। अरब में प्रसिद्ध एक पुरानी अरब किंवदंती से लिया गया
मुहम्मद का समय: एक ऊंट एक चट्टान से निकला और एक नबी बन गया।

बारह ०२६ ७/१६३-१६६: लोग वानरों में बदल गए - उन लोगों की एक लोकप्रिय अरब किंवदंती से कॉपी किए गए

०२७ ७/१७१: माउंट सिनाई को यहूदियों के ऊपर से उठा लिया गया। यहूदी पुस्तक "अबोदा सारा" से लिया गया।

०२८ १८/९-२६: गुफा में सोने वाले - आज भी प्रसिद्ध धार्मिक कल्पित कहानी
इफिसुस, लगभग 7 युवक जो सम्राट डेसियस से भाग गए (एक वास्तविक सम्राट केवल 2
लगभग २५० ईस्वी के आसपास) और एक गुफा में सोने चले गए, और फिर अधिकतम १९६ वर्ष जाग गए
बाद में (कुरान 300 या 309 वर्ष कहता है) अधिक प्रसिद्ध सम्राट थियोडोसियस के अधीन)। अभी - अभी
इसे पढ़ें - यह सामान्य रूप से कुरान से भी बेहतर बताया गया है। "द 7 स्लीपर्स" एक प्रसिद्ध है
मुहम्मद के समय में ईसाई और शायद ग्रीक फैबेल भी अरब में प्रसिद्ध थे।

कुछ मुसलमान चाहते हैं कि यह एक पुराने यहूदी किंवदंती से प्रेरित हो, लेकिन ऐसा होता है
कुरान की "विश्वसनीयता" की मदद न करें जब यह बताता है कि यह एक सच्ची कहानी है - जो यह नहीं है।

०२९ २१/५१-७१: इब्राहीम ने निम्रोद की आग से छुड़ाया। "मिड्राश रब्बा" से लिया गया। और
एक और बिंदु: अब्राहम और निम्रोद एक ही समय में नहीं रहते थे (यदि वे कभी रहते थे)।
मुहम्मद में अलग-अलग समय के व्यक्तियों को मिलाने की प्रबल प्रवृत्ति थी (उदाहरण के लिए, हामान और)
रामसेस II - कुछ 800 साल गलत। या मरियम और मरियम - कुछ १२०० साल गलत।)

०३० २१/९६: गोग और मागोग - २ लोग या जनजातियाँ। मूल रूप से यह ओटी से हो सकता है जो बताता है
मागोग देश के राजा गोग के बारे में। लेकिन ऐसा लगता है कि मुहम्मद के पास अरब से है
(मुख्य रूप से मौखिक) साहित्य - शायद "इमरा 'उल केज़ का सबा मुल्लाकत"।

031 27/17-44: राजा सुलैमान और सबा की रानी। पुरानी किताब "द सैकोंडो" से लिया गया
एस्तेर का टारगम"।

०३२ २९/१६: इब्राहीम ने निम्रोद की आग से छुड़ाया। "मिड्राश रब्बा" से लिया गया। और
एक और बिंदु: अब्राहम और निम्रोद एक ही समय में नहीं रहते थे (यदि वे कभी रहते थे)।
मुहम्मद में अलग-अलग समय के व्यक्तियों को मिलाने की प्रबल प्रवृत्ति थी (उदाहरण के लिए, हामान और)
रामसेस II - कुछ 800 साल गलत। या मरियम और मरियम - कुछ १२०० साल गलत।)

033 29/31: मकड़ी अपना घर बना रही है। अरब से (मुख्य रूप से मौखिक) साहित्य - यह भी
(और कुछ अन्य जगहों पर) शायद "इमरा 'उल केज़ के सबा मुल्लाकत" से।

०३४ ३५/१: चन्द्रमा विच्छिन्न है। संभवतः अरब (मुख्य रूप से मौखिक) साहित्य से - यह भी (और .)
कुछ अन्य जगहों पर) शायद "इमरा 'उल केज़ के सबा मुल्लाकत" से।

०३५ ३७/९७-९८: अब्राहम ने निम्रोद की आग से छुटकारा पाया। "मिड्राश रब्बा" से लिया गया। और
एक और बिंदु: अब्राहम और निम्रोद एक ही समय में नहीं रहते थे (यदि वे कभी रहते थे)।
मुहम्मद में अलग-अलग समय के व्यक्तियों को मिलाने की प्रबल प्रवृत्ति थी (उदाहरण के लिए, हामान और)
रामसेस II - कुछ 800 साल गलत। या मरियम और मरियम - कुछ १२०० साल गलत।)

०३६ ४२/१७: अच्छे और बुरे कर्मों को तौलने का पैमाना। बने "द टेस्टामेंट" से
अब्राहम का"।

०३७ ५४/२७-२९: ऊंट "सबूत"। अरब में प्रसिद्ध एक पुरानी अरब किंवदंती से लिया गया
मुहम्मद का समय: एक ऊंट एक चट्टान से निकला और एक नबी बन गया।

038 87/19: अब्राहम की पुस्तकें। "इब्राहीम का वसीयतनामा" बनाई गई पुस्तक से लिया गया।

039 91/13-14: ऊंट "सबूत"। अरब में प्रसिद्ध एक पुरानी अरब किंवदंती से लिया गया
मुहम्मद का समय: एक ऊंट एक चट्टान से निकला और एक नबी बन गया।

040 101/6-9: अच्छे और बुरे कर्मों को तौलने का पैमाना। "द वसीयतनामा" से
अब्राहम"।

अधिक जोड़ा जा सकता है।

अध्याय VII/2 के लिए पोस्ट स्क्रिप्टम।

बस कुछ प्रश्न:

1. क्या एक सर्वज्ञ भगवान को पुराने की नकल करने की आवश्यकता होगी कहानियों?
2. क्या वह उन्हें और भी बहुत कुछ बताएगा मूल की तुलना में उबाऊ तरीके?
3. क्या वह उन्हें ऐतिहासिक के साथ बताएगा? गलत तथ्य?
4. अगर कुरान ही सत्य और पूर्ण है सत्य; फिर इसका उपयोग शायद ही कभी क्यों किया जाता है इतिहास के वास्तविक विज्ञान में स्रोत? और कभी नहीं ६१० ईस्वी से पहले हुई किसी भी घटना के लिए !

भाग VII, अध्याय 4 (= VII-4-0-0)

तथ्य बनाम. दावे, कथन, (अमान्य) "संकेत", (अमान्य) "सबूत", आदि। कुरान में: कुरान और अल्लाह कुरान, मुहम्मद, इस्लाम और अल्लाह के अनुसार

अल्लाह के लिए सबूत के लिए अनुरोध कुरान में - की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

किताब में कुरान में अल्लाह के लिए सबूत के लिए सवालों का दस्तावेजीकरण करना अनावश्यक होना चाहिए कुरान पर टिप्पणी कर रहे हैं। लेकिन हम इसे दो कारणों से आवश्यक पाते हैं:

1. यह दिखाने के लिए कि मुस्लिम और गैर-मुसलमानों ने समान रूप से मांगा, कामना की, और सबूत चाहता था।
2. यह दिखाने के लिए कि मुहम्मद को इतनी मुशी की आवश्यकता क्यों थी तेजी से बात करना, और अक्सर हल्के-फुल्के होने के लिए और तेज-तर्रार - क्योंकि वह करने में असमर्थ था कोई सबूत पेश करो।

हम बहुत अधिक उद्धरण नहीं देंगे - आप स्वयं और अधिक पा सकते हैं। यह भी सावधान रहें कि ग्रंथों से पुस्तक से यह स्पष्ट है कि प्रमाणों के बारे में अक्सर प्रश्न पूछे जाते थे। लेकिन कोई सबूत कभी नहीं था दिया गया - तब नहीं और बाद के 1400 वर्षों में नहीं। केवल शब्द - और शब्द सस्ते हैं।

०१ २/१०८: "क्या तुम (मुसलमान*) अपने रसूल (मुहम्मद*) से मूसा की तरह सवाल करोगे पुराने से सवाल किया?" कुरान कहता है कि अगर मूसा से लोगों को अपना दिखाने के लिए कहना गलत था भगवान, तो मुहम्मद से सबूत मांगना गलत है। मुहम्मद का तर्क सही नहीं है - वहाँ है एक भगवान को देखने के लिए कहने और उसके अस्तित्व के प्रमाण मांगने के बीच का अंतर - लेकिन यह एक था सवालों से बचने का तरीका।

००२ २/११८: "बिना ज्ञान के ये कहो (वे मूर्ख हैं जो अल्लाह से सवाल पूछने के लिए पर्याप्त हैं)
बेशक जवाब नहीं देगा*): 'अल्लाह हमसे बात क्यों नहीं करता? या हमारे पास क्यों नहीं आता?
संकेत?" जैसा कि इस उद्धरण में पहले कहा गया है: तो वे कहें जिन्हें ज्ञान नहीं है - और जो बनना चाहते हैं
बिना ज्ञान के कहा है?

००३ ३/१८३: "अल्लाह ने एक रसूल पर विश्वास नहीं करने का हमारा वादा लिया जब तक कि वह हमें नहीं दिखाता a
अग्नि (स्वर्ग से) द्वारा भस्म किया गया बलिदान "। अंतर्निहित प्रश्न: फिर कहाँ है
प्रमाण?

००४ ६/८: "वे (लोग*) कहते हैं: 'उसके पास (मुहम्मद को साबित करने के लिए एक फरिश्ता क्यों नहीं भेजा गया)
उसका धर्म*)"। इतने फ़रिश्ते कि क़ुरान में अल्लाह को रोज़ ऊपर-नीचे भेजने के लिए कहा गया है
(भले ही यह इस श्लोक में बाद में अलग-अलग ढंग से कहता है - असंगति), यह एक आसान होगा
प्रमाण।

००५ ६/३७: "वे (लोग*) कहते हैं: 'उस (मुहम्मद*) पर उसकी ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई
भगवान (अल्लाह*)?" कई प्रश्न और अनुरोध - एक भी अचूक संकेत नहीं। लेकिन बहुत सारे
तेजी से बात करना।

006 8/32: "- - - उन्होंने कहा: 'हे अल्लाह, अगर यह वास्तव में तुम्हारी ओर से सच है, तो हम पर बारिश करो
आसमान से पत्थरों की बारिश या हमें एक गंभीर दंड भेजें "। इसमें कोई शक नहीं कि सबूत वास्तव में
की जरूरत थी और इसका असर होता - लेकिन कभी कोई जवाब नहीं।

007 10/20: "उस पर (मुहम्मद*) कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई"। खैर, यह वास्तव में एक है
सवाल।

008 13/27: "अविश्वासियों का कहना है: 'उस पर (मुहम्मद*) की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई
उसका रब (अल्लाह*)?" संकेतों की बहुत आवश्यकता थी और स्पष्ट रूप से इसका कुछ मतलब होता - लेकिन
मुहम्मद एक देने में असमर्थ था। क्या अल्लाह नहीं चाहता था? या मुहम्मद वास्तव में उसका नहीं था
नबी? या अल्लाह एक कल्पना थी? कौन जानता है जब तक कि कुछ भी साबित न हो? - क्या ऐसा संभव है
विश्वास करो, खासकर अगर कोई चाहता है, लेकिन सबूत के बिना कोई ज्ञान नहीं है।

009 14/10: "ये (मुहम्मद*) हमें (मूर्तिपूजक अरब*) को (देवताओं) से दूर करना चाहते हैं
पिता पूजा करते थे, तो हमारे पास कोई स्पष्ट अधिकार लाओ।" इन पगानों ने नहीं कहा -
उन्होंने सबूत मांगा। सबूतों ने छाप छोड़ी होगी, लेकिन हमेशा की तरह मुहम्मद
कुछ भी साबित नहीं कर सका। लेकिन इसमें कोई शक नहीं: लोगों ने सबूत मांगे।

०१० १७/९०-९३: "वे (गैर-मुसलमान*) कहते हैं: 'हम तुम पर विश्वास नहीं करेंगे (मुहम्मद*), जब तक
तू पृथ्वी पर से हमारे लिये जल का सोता बहाता है (या हमें कोई और प्रमाण देता है*)"। मज़बूत
अनुरोध - और एक सकारात्मक उत्तर का असर होता। लेकिन इसके लिए कभी कोई सबूत नहीं था
कुछ भी नहीं - अल्लाह के लिए नहीं, गेब्रियल के लिए नहीं, नबी होने के लिए नहीं, इस्लाम के लिए नहीं।

011 अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अनुसंधान अकादमी (इस तरह मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक
विषयों) दिनांक २७. दिसंबर १९९८ के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं
अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि
अल्लाह के लिए कोई पुतला नहीं है और उसे पटाना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है
के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है।

अध्याय VII/4 के लिए पोस्ट स्क्रिप्ट।

932

पेज ९३३

यह दिखाने के लिए पर्याप्त होना चाहिए कि वास्तव में सबूत के लिए अनुरोध थे - आप पा सकते हैं
ऐसे और भी कुरान को खुद पढ़कर।

लेकिन मुहम्मद कभी उद्धार करने में सक्षम नहीं थे।

1. क्या अल्लाह अपने वजूद को साबित नहीं करना चाहता था?

क्या पता?

सभी गलतियाँ और उससे भी अधिक विरोधाभास और अमान्य कथन, "संकेत" और
"सबूत" हमें एक बुरा एहसास देते हैं।

भाग VII, अध्याय 5 (= VII-5-0-0)

तथ्य बनाम. दावे, कथन, (अमान्य) "संकेत", (अमान्य) "सबूत", आदि। कुरान में: कुरान और अल्लाह कुरान, मुहम्मद, इस्लाम और अल्लाह के अनुसार

प्राकृतिक घटना (डीआईएस) के रूप में प्रयुक्त (अमान्य) "संकेत" और "सबूत" IN कुरान

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

कुरान को पढ़ते समय, प्राकृतिक घटनाओं को "संकेत" या . के रूप में उपयोग करने से कोई त्रस्त हो जाता है
अल्लाह के लिए "सबूत"। सावधान रहें कि कुरान में "चिह्न" अक्सर "प्रमाण" या at . का पर्याय है
कम से कम "मजबूत संकेत"। आपको वास्तव में यह चौंकाता है कि उनमें से एक भी इसका वैध प्रमाण नहीं है
कोई भी देवता (बाइबल से लिए गए कुछ के संभावित अपवाद के साथ, जो मामले में ptove
यहोवा), और अल्लाह से भी कम।

ईश्वर का एक वैध प्रमाण होने के लिए, धर्म को पहले यह साबित करना होगा कि घटना वास्तव में बनी है
या किसी देवता द्वारा किया गया - लेकिन आज तक एक भी ऐसा प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है,
हालांकि कई धर्म ऐसा कहने की कोशिश करते हैं (फिर से बाइबिल में कुछ के संभावित अपवाद के साथ -
अगर बाइबल सच है, तो यहोवा के लिए और यीशु के लिए सबूत हैं, अगर इसे बनाया गया है, तो कोई सबूत नहीं है
वैध प्रमाण)।

और अगर ऐसा सबूत एक दिन सामने लाया जाए, तो यह साबित करना बाकी है कि
असली निर्माता या भगवान अल्लाह है।

तब तक किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी कुरान के समान ही कह सकता है: शिव ने ऐसा किया, इब्लीसी
ऐसा किया, बृहस्पति ने बनाया, थोर ने विभाजित किया, बाल ने पूर्व में सूर्य को उदय किया - अल्लाह नहीं कर सकता
इसे बनियान में उठाओ, एर्गो बाल असली भगवान है और अल्लाह एक धोखेबाज या कुछ बनाया है
यूपी। शब्द इतने सस्ते हैं। वास्तविक प्रमाणों के बिना, वे पूरी तरह से बिना मूल्य के हैं।

हां, इससे भी बदतर: कोई भी भगवान अमान्य "चिह्न" और "प्रमाण" का उपयोग नहीं करेगा - यही धोखेबाजों की पहचान है
और धोखेबाज। इस तरह का प्रयोग किसी भी देवता की उस तरह से धोखा देने की कोशिश की विश्वसनीयता को नष्ट कर देता है,
जब उसका पता चल जाता है।

यह और भी अधिक है क्योंकि भगवान के लिए सच बताना आसान हो गया था - - - और इस तरह
भविष्य ने अपने अस्तित्व का प्रमाण यह खोज कर पाया था कि भगवान ने किसी से पहले क्या कहा था
मानव ने पाया था, सच था - किसी भी सर्वज्ञ भगवान को यह पता था और इसका कोई कारण नहीं था
पूछने पर ऐसा नहीं कर रहे हैं।

कोई भी अपने दिमाग का इस्तेमाल कर रहा है और न केवल इच्छाधारी समझा रहा है, यह सच है।

लेकिन यह अजीब है कि तथ्यों का सामना करना कितना मुश्किल है - या अपने विश्वासों का सामना करना और पूछना कि क्या वे सच हैं। पूछने की तुलना में तथ्यों को नकारना बहुत आसान है: क्या मेरा धर्म अंधविश्वास और परियों की कहानियों पर आधारित है? - दानव कहानियों का उल्लेख नहीं करने के लिए? यह सुनिश्चित करना बहुत बेहतर और आसान है और पुराने में "सुरक्षित" है वास्तविक और सच्चे धर्म की तलाश करने के लिए - या मौका मिलने की तुलना में सही या गलत तरीके (यदि .) ऐसा मौजूद है)।

यह जानने योग्य है कि विज्ञान ने पाया है कि लोगों के एक छोटे प्रतिशत के पास एक इनब्रेड - जीन में - अलौकिक के लिए तरस - एक भगवान के लिए। और शायद बस इतना ही है इसके लिए: कुछ लोगों को एक भगवान की जरूरत होती है और एक का आविष्कार करते हैं। फिर कुछ मामलों में विश्वास फैलता है, an संगठित विश्वास या चर्च शक्तिशाली होता है - और वोइला: पृथ्वी पर कम से कम एक शक्तिशाली ईश्वर है - और उसके दूत - कि लोगों को धन देना और आज्ञा मानना है।

इस तरह की व्याख्या एक "भगवान" को बहुत सारी गलतियाँ करने और अमान्य का उपयोग करने की व्याख्या कर सकती है "सबूत" और "संकेत" और बयान।

एक और संभावना यह है कि एक शैतान ने गेब्रियल के रूप में प्रस्तुत किया। उस तरह की नैतिकता और युद्ध की लालसा के साथ, इस्लाम में दमन और आतंक की तरह, यह उससे कहीं अधिक संभावित स्पष्टीकरण है कि वहाँ है a इसके पीछे अच्छा, परोपकारी भगवान। लेकिन हम व्यक्तिगत रूप से इस पर विश्वास नहीं करते - यहाँ तक कि एक शैतान भी ऐसी स्पष्ट रूप से गलत और बेवकूफी भरी गलतियों, बयानों और सबूतों का इस्तेमाल नहीं किया है, क्योंकि वह उसे पता होना चाहिए कि देर-सबेर उसका पता चल जाएगा और उसकी विश्वसनीयता खत्म हो जाएगी।

यह बात बिल्कुल तय है कि एक सर्वज्ञानी भगवान ऐसे और इतने लोगों को मूर्ख नहीं बना देगा गलतियाँ - और इसके परिणामस्वरूप अल्लाह या तो सर्वज्ञ नहीं है या एक बना हुआ ईश्वर है।

और एक और बात जो पक्की है: अगर मुहम्मद ने कुरान की रचना की; उसके पास एक की एक बिल्ली थी सफलता और शक्ति, महिलाओं और भरपूर के साथ एक शानदार जीवन। लेकिन उस मामले में मुहम्मद भी है पृथ्वी पर रहने वाला अब तक का सबसे बुरा दानव - जिंजिस खान से भी बदतर, हिटलर से भी बदतर, माओ से भी बदतर, पोल पॉट से भी बदतर, तुलना में कुछ बौनों का उल्लेख करने के लिए - सभी के लिए उनकी तुलना में लगभग १४०० सौ वर्षों के दौरान उन्होंने पृथ्वी पर मृत्यु और दुख को पैदा किया है कुछ वर्षों में "बौने" ने दुनिया के कुछ हिस्सों को आतंकित कर दिया।

हम बिना सबूत के कुरान के कुछ दावों और बयानों का हवाला देते हैं - वहाँ बहुत अधिक हैं। लेकिन हम उन जगहों के बेहतर हिस्से का जिक्र करते हैं जहां प्राकृतिक घटनाओं का इस्तेमाल किया जाता है बिना किसी सबूत के "चिन्ह", "सबूत" आदि के रूप में, इसके पीछे वास्तव में अल्लाह है जो इसके पीछे है - ज्यादातर बयान सिर्फ ढीले बयान हैं जो कुछ नहीं पर लटके हुए हैं, या वे दूसरे पर बने हैं अप्रमाणित तथ्य। कोई एक भी अल्लाह के बारे में कुछ साबित नहीं करता। मुसलमानों से मिलेंगे चीजों को "साबित" करने की कोशिश करना - न्याय करने के लिए अपने स्वयं के ज्ञान और मस्तिष्क का उपयोग करें। (वास्तव में यह है इंसानों के लिए भगवान को साबित करना असंभव है - जो केवल एक भगवान ही कर सकता है - लेकिन मुहम्मद की जरूरत थी तर्क और वास्तविक सबूत पेश करने में असमर्थ था, इसलिए उसने कोशिश की।) और क्या आपको लगता है कि एक भगवान के पास था अवैध सबूतों का इस्तेमाल किया - सबूत जो उसे जानना था कि आदमी जल्द या बाद में देखेगा और झांसा देने के कारण भगवान ने अपनी विश्वसनीयता खो दी?

कम से कम सभी कथनों को "संकेत", "प्रमाण", आदि के रूप में उपयोग करने का प्रयास किया गया - जिन्हें हम संख्या देते हैं संख्याएँ - अध्याय II में गलत "तथ्यों" की संख्या को जोड़ती हैं, क्योंकि उन्हें होने की कोशिश की जाती है तथ्यों के रूप में प्रयुक्त या अनुपयोगी।

अक्षरों द्वारा क्रमांकित कोटेशन ढीले - और अमान्य - स्टेटमेंट हैं, जबकि कोटेशन संख्याओं द्वारा क्रमांकित अमान्य संकेत हैं (जो कुरान में प्रमाण के लिए सिर्फ एक नरम शब्द है) या समान, और इसके अतिरिक्त चिह्नित + संख्याएं अमान्य तथाकथित प्रमाण हैं। कोटेशन क्रमांकित 000 प्रासंगिक हैं, लेकिन विषय के बाहर हैं।

00a 2/21: "(अल्लाह*) ने तुम्हें बनाया - - -" वास्तविकता से पता चलता है कि आप मौजूद हैं। लेकिन बाकी एक अप्रमाणित है बयान।

00b 2/22: "(अल्लाह*) ने धरती को - - - बनाया है। पृथ्वी तो है, लेकिन उसके बारे में कुछ भी सिद्ध नहीं है इसे किसने बनाया - यह सिर्फ प्रकृति का हिस्सा है।

00c 2/22: "(अल्लाह*) ने बनाया - - - स्वर्ग (बहुवचन और गलत*) आपकी छत्र - - -"। स्वर्ग
प्रकाश के झुकने से बना एक प्राकृतिक भ्रम है - यह छत्र भी नहीं है।

००डी २/२२: "(अल्लाह*) तुम्हारे भरण-पोषण के लिए इसके साथ फल लाए - - -"। प्रकृति लाती है
आगे फल - लेकिन कहीं नहीं यह दर्शाता है कि एक भगवान - अल्लाह का जिक्र नहीं - शामिल है।

00e 2/28: "(अल्लाह*) तुम्हें मरने देगा - - -"। मरना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है - जब तक कि इस्लाम
कुछ और साबित करता है।

00f 2/29: "(अल्लाह*) ने तुम्हारे लिए धरती पर जो कुछ भी है - - - बनाया है। पृथ्वी पर सभी चीजें
या तो प्राकृतिक हैं या मानव निर्मित - इसका कोई प्रमाण नहीं है कि इसे किसी देवता ने बनाया है, और इस प्रकार यह सिद्ध होता है
कोई भगवान नहीं - अल्लाह का जिक्र नहीं।

001 2/164a: "स्वर्ग के निर्माण में - - - बुद्धिमान लोगों के लिए संकेत हैं।" गलत।
इस बात के सबूत के बिना कि यह वास्तव में अल्लाह का काम था, निशानी अमान्य है। और कुछ के बारे में
पाठक की चापलूसी - नीचे 2/164c देखें।

002 2/164b: "- - - रात और दिन के विकल्प में - - - वास्तव में लोगों के लिए संकेत हैं
जो बुद्धिमान हैं"। गलत। वह प्रत्यावर्तन पृथ्वी के घूमने का एक स्वाभाविक प्रभाव है। यह नहीं है
अल्लाह की निशानी - या कोई अन्य ईश्वर - जब तक कि इस्लाम पहले यह साबित न कर दे कि सूरज की चमक और
पृथ्वी के घूर्णन की शुरुआत अल्लाह द्वारा की जाती है। साबित करता है, सिर्फ राज्य या दावा नहीं, क्योंकि शब्द
और कथन हमेशा इतने सस्ते होते हैं, और किसी भी पुजारी, किसी भी "भविष्यद्वक्ता" और किसी भी "भगवान" द्वारा उपयोग किए जा सकते हैं
- हाँ, किसी आस्तिक द्वारा।

935

पेज 936

००३ २/१६४सी: "- - - समुद्र के पार जहाजों की नौकायन में - - - वास्तव में एक लोगों के लिए संकेत हैं
जो बुद्धिमान हैं।" गलत - और वास्तव में किसी भगवान ने कभी जहाज नहीं बनाया, और किसी भी भगवान ने कभी साबित नहीं किया
हवाओं को बनाया - हालांकि कुछ देवताओं के "भविष्यद्वक्ताओं" ने कहा कि पहले और कई - शामिल हैं
मुहम्मद - आखिरी कहा। भविष्यद्वक्ताओं के लिए भी शब्द सस्ते हैं। की कुछ चापलूसी से उत्साहित
श्रोता/पाठक; - वह बुद्धिमान है अगर वह मानता है! हकीकत यह है कि अगर वह मानता है तो वह भोला है
बिना दस्तावेज के।

004 2/164d: "- - - बारिश में जो अल्लाह आसमान से नीचे भेजता है - - - एक के लिए संकेत हैं
जो लोग बुद्धिमान हैं।" यह था - अगर अल्लाह या मुहम्मद या इस्लाम ने साबित कर दिया था कि यह वास्तव में था
मुहम्मद ने किया। वर्षा वाष्पीकरण द्वारा बनाई गई एक बहुत ही सरल घटना है और
संक्षेपण - और किसी भी भगवान ने कभी साबित नहीं किया कि वह इसे बनाता है। कुछ चापलूसी जोड़ी गई - 2/164c बस देखें
के ऊपर।

005 2/164e: "- - - सभी प्रकार के जानवरों में जो वह (अल्लाह*) पृथ्वी पर बिखेरता है - - -
निश्चय ही बुद्धिमान लोगों के लिए निशानियाँ हैं।" दरअसल, यह विभिन्न धर्मों के लोगों के पास है
एक्स साल के लिए कोशिश की साबित करने के लिए क्या उनके भगवान (रों) - न सिर्फ अल्लाह - किया। आज तक किसी ने साबित नहीं किया
इसका एक कोटा - शायद बाइबिल में अपवाद के साथ - - - अगर यह सच है। कुछ शामिल हैं
चापलूसी - ऊपर 2/164c देखें।

006 2/164f: "- - - हवाओं के परिवर्तन में - - - बुद्धिमान लोगों के लिए संकेत हैं।"
वास्तव में यह कोई बुरा नारा नहीं है - कौन स्वीकार करना चाहता है कि वह बुद्धिमान नहीं है? लेकिन यह सब सिर्फ और सिर्फ है
शब्दों। सबूत कहां हैं? हवाओं का परिवर्तन बहुत स्वाभाविक है - मतभेदों से उत्पन्न
हवा के दबाव में, तापमान में, और बाधाओं से - लेकिन "माई गॉड" कहने में कुछ भी खर्च नहीं होता है
इसे करें"। चापलूसी जोड़ा - ऊपर 2/164 देखें।

007 2/164g: "- - - (इन) मेघ जिन्हें वे (हवाओं*) अपने दासों की तरह बीच में ले जाते हैं
आकाश और पृथ्वी - (यहाँ) वास्तव में बुद्धिमान लोगों के लिए निशानियाँ हैं"। और यहाँ भी हैं
भोले, अशिक्षित लोगों को झांसा देने की संभावनाएं - खासकर अगर वे चापलूसी के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं।
या फिर अगर वे धर्म से अंधे हैं और इच्छाधारी सोच रखते हैं। लेकिन झांसा देना एक बानगी है
धोखेबाज और धोखेबाज। कुछ चापलूसी जोड़ा - यह अक्सर काम करता है (ऊपर 2/164c देखें)।

00g 2/172: "उन अच्छी चीजों में से खाओ जो हमने (अल्लाह) ने तुम्हारे लिए प्रदान की हैं - - -"। कई में
धर्म उनके भगवान (ओं) को भोजन के उत्पादन के तरीके प्रदान करते हैं, लेकिन कोई भगवान या पुजारी या
पैगंबर ने कभी दावा साबित किया है। मुहम्मद भी नहीं। और अल्लाह ज्यादा क्यों होना चाहिए

शब्द - - उसने अपने अस्तित्व को सिद्ध भी नहीं किया है, जो, लेकिन उसके लिए बहुत आसान होता [illegible] असमर्थ थे
मुहम्मद कुरान बनाते हैं?

००८ २/२५८: "लेकिन यह अल्लाह ही है जो सूरज को पूर्व से उगता है - - -"। इब्राहीम कहा जाता है
इसे अल्लाह के लिए (अन्य कारणों से पूरी तरह से अमान्य) प्रमाण के रूप में उपयोग करें। लेकिन एक बात के लिए ऐसा नहीं है
सूरज जो उगता है, लेकिन पृथ्वी जो बदल जाती है। एक और बात के लिए यह पूरी तरह से प्राकृतिक प्रक्रिया है
कि किसी भी तरह से एक भगवान द्वारा किया गया साबित नहीं होता - अल्लाह के द्वारा उल्लेख नहीं करने के लिए। लेकिन बाल का कोई पुजारी - या
अन्य - उतना ही कह सकते हैं।

00h 2/267: "- - - जो फल हमने (अल्लाह*) ने तुम्हारे लिए पैदा किये हैं - - -"। एक बयान
सबूतों के अभाव में हवा में लटके

00i 2/269: "वह (अल्लाह*) जिसे चाहता है उसे ज्ञान प्रदान करता है - - -"। बुद्धि का परिणाम है
जीन / बुद्धि और ज्ञान। कई देवता कहते हैं कि उन्होंने इसे प्रदान किया - उनमें से एक भी नहीं
आज तक साबित किया है। वर्ड एंड लूज स्टेटमेंट प्रूफ की तुलना में काफी सस्ते होते हैं।

936

पेज 937

00j 3/6: "वह (अल्लाह) वह है जो आपको गर्भ में आकार देता है जैसा वह चाहता है।" गर्भाधान एक है
सबसे प्राकृतिक प्रक्रिया - एक जिसे मुसलमान भी बहुत पसंद करते हैं, कभी-कभी
औरत तैयार है या नहीं - और अगर औरत आपकी गुलाम है या कैदी है, तो बलात्कार एक
ठीक है, "न्यायिक और ईश्वर", आपके लिए - बस मुहम्मद से पूछें, जो इस्लाम के अनुसार (दूसरों के बीच)
इब्न इशाक) ने स्वयं अभ्यास किया - च। भूतपूर्व। रैहाना बिन्त अमर और - लगभग ६० पर स्वयं - १७
साल की सफीजा, उसके पति को मौत के घाट उतारने के ठीक बाद (सफीजा के लिए उसका एक आदमी,
अबू अयूब, बाहर इंतजार कर रही थी कि वह इतना विरोध करे कि यह खतरनाक हो जाए
मुहम्मद और उन्हें मदद की ज़रूरत थी - लेकिन उन्होंने बिना मदद के बलात्कार को प्रबंधित किया)। कोई भगवान कभी साबित नहीं हुआ
वह अवधारणाएँ बनाता है - या प्राकृतिक प्रक्रियाओं की शुरुआत करता है।

00k 3/27: "तू (अल्लाह) दिन में रात को बढ़ाता है, और तू दिन को
रात को लाभ - - -"। यह वास्तव में सूर्य और पृथ्वी के घूर्णन के कारण होता है। कोई भगवान नहीं
कभी अलग साबित हुआ। लेकिन हमेशा की तरह: शब्दों और हार के बयान की कोई कीमत नहीं है - एक तथ्य यह है कि
सभी धोखेबाजों और धोखेबाजों के लिए अच्छा है।

००एल ३/२७: "तू (अल्लाह*) जिसे चाहता है उसे भरण-पोषण देता है - - -"। शायद - लेकिन कई
देवता भी ऐसा ही कहते हैं, और उनकी तरह न तो अल्लाह और न ही मुहम्मद ने कभी एक अकेला साबित किया
मिलीमीटर

००९ ३/१९०ए: "देखो, स्वर्ग के निर्माण में (बहुवचन और गलत) - - - वास्तव में हैं
समझदार लोगों के लिए संकेत - - -"। स्वर्ग प्राकृतिक के कारण होने वाला एक ऑप्टिकल भ्रम है
अपवर्तन (सूरज के प्रकाश का झुकना) दिन के हिसाब से, और हमारे द्वारा 3 आयामों में भी देखने में असमर्थता के कारण
संदर्भ के बिना लंबी दूरी, रात में। जब तक इस्लाम सिद्ध न हो तब तक शेखी बघारने के सिवा कुछ नहीं है
कि अल्लाह ने सचमुच किया। चापलूसी सस्ती है - लेकिन अक्सर काम करती है (ऊपर 2/164c और 3/190b . देखें)
नीचे)।

०१० ३/१९०बी: "- - - (और में) रात और दिन का विकल्प, वास्तव में पुरुषों के लिए संकेत हैं
समझने की - - -"। कौन - विशेष रूप से अशिक्षित लोगों को - यह सुनना पसंद नहीं है कि वे हैं
समझने वाले लोग? - या समझ में नहीं आने वाले के रूप में वर्गीकृत होने के लिए अनिच्छुक हैं? परंतु
सभी समान: किसी भी भगवान का रात और दिन से कोई लेना-देना नहीं है जब तक कि विपरीत साबित न हो - और
विपरीत के बयानों को दस्तावेज़ीकरण की आवश्यकता है। कुछ चापलूसी जोड़ें - यह सस्ता है और अक्सर
अच्छी तरह से काम करता है, खासकर अगर दर्शकों में थोड़े भोले-भाले लोग हों।

00m 5/88: "वह चीजें खाओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए प्रदान की है - - -"। केवल हार का बयान
अप्रमाणित धारणा पर बनाया गया है कि अल्लाह ने वास्तव में इसे प्रदान किया है, न कि स्वयं प्रकृति ने।

00n 6/1: "(अल्लाह*) ने आकाश (बहुवचन और गलत - जैसे कम से कम 199 स्थानों में बनाया)
कुरान) - - -"। 2/22 देखें।

00o 6/1: "(अल्लाह*) ने बनाया - - - पृथ्वी - - -"। 2/22 देखें।

00p 6/2: "(अल्लाह) ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया - - -"। एक बात के लिए विज्ञान ने लंबे समय से पाया है
कि मनुष्य का निर्माण नहीं हुआ था - वह पूर्व प्राइमेट से स्वाभाविक रूप से विकसित हुआ था। लेकिन कोई भी
लगभग किसी भी धर्म में "पैगंबर" या नीच पुजारी अपने भगवान को मनुष्य बनाने का श्रेय देते हैं -

मुहम्मद की तरह। ऐसा कहा जाता है कि एक मजबूत बयान के लिए एक मजबूत सबूत की जरूरत होती है। मुहम्मद कभी नहीं
किसी भी सबूत की पेशकश की, केवल शब्द इतने सस्ते हैं कि उनके पास सबूत के रूप में कोई मूल्य नहीं है - विशेष रूप से जैसा था
अधिकांश "भविष्यद्वक्ताओं" का कहना है: "मेरे भगवान ने इसे बनाया"। इसके अलावा: अल्लाह के अनुसार
कुरान ने आदम को 13 अलग-अलग तरीकों से बनाया है यदि आप उन सभी को गिनें - अधिकतम 1 सही हो सकता है
केवल एक आदम हो सकता है, और विज्ञान ने पाया है कि सभी गलत हैं।

०११ ६/५९: "एक पत्ता नहीं गिरता है, लेकिन उसके ज्ञान से - -"। (६/९७-९९ के अनुसार एक चिन्ह)।
खैर, फिर वह बहुत व्यस्त है जो कि छोटी चीजें भी नहीं हैं। लेकिन इसके अलावा: कोई भी पत्ता जल्दी गिर जाता है
या बाद में - वह प्रकृति के अनुसार है। किसी भी भगवान ने कभी यह साबित नहीं किया है कि वह - या वह - इसका कारण बनता है।

*०१२ ६/९५: "अल्लाह ही है जो बीज के दाने और खजूर के पत्थर को फूटने और अंकुरित करने का कारण बनता है।" (ए
6/97-99 के अनुसार हस्ताक्षर करें)। एक बार फिर एक प्राकृतिक घटना - या दो - जो मुहम्मद ने दी थी
एक भी सबूत के बिना, इसका श्रेय अल्लाह को जाता है। किसी भगवान को इतना श्रेय देना प्रभावशाली है--
- खासकर अगर दर्शक अशिक्षित हैं और बिना सबूत के विश्वास करने के लिए पर्याप्त भोले हैं, या वास्तव में
अवैध सबूतों के बावजूद। धोखेबाजों और धोखेबाजों के लिए आसान शिकार f. भूतपूर्व।

**०१३ ६/९७: "वह (अल्लाह*) है जो तुम्हारे लिए तारों को (बीकन के रूप में) बनाता है - - -" - और बांधा गया
सबसे निचले स्वर्ग में, जैसा कि हम कुरान में अन्य स्थानों से जानते हैं - और शूटिंग के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है
बुरी आत्माओं को दूर भगाने के लिए सितारे, उसी किताब के अनुसार। कि सितारे रोशनी हैं और
उस के खगोल विज्ञान के अनुसार चंद्रमा के नीचे - सबसे निचले आकाश में हथियार बांधे गए
समय - इस अप्रमाणित बयान के बारे में मुहम्मद की विश्वसनीयता को नष्ट कर देता है
तारों की तरह प्राकृतिक घटना। इससे भी बदतर: यह सिर्फ एक बयान नहीं है; यह अल्लाह के लिए एक निशानी है
- अन्य सभी की तरह अमान्य।

०१४ ६/९८: "वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें एक ही व्यक्ति से पैदा किया - - -"। के अनुसार
विज्ञान एक बच्चा पैदा करने में दो लेता है। लेकिन वह तरफ: इसका प्रमाण कहां है कि कोई भी देवता-नहीं
अल्लाह का जिक्र करना - क्या इसमें शामिल है? एक और अमान्य संकेत।

०१५ ६/९९अ: "वह (अल्लाह*) है जो आसमान से बारिश बरसाता है - - - इन चीजों में वहाँ
विश्वास करने वालों के लिए निशानियाँ हैं"। हां, लेकिन अगर इस्लाम यह साबित कर दे कि वास्तव में अल्लाह ही है जो इसका कारण बनता है
यह या यदि वे आँख बंद करके विश्वास करते हैं और उन्हें इस बारे में कोई शिक्षा नहीं है कि जल चक्र कैसे काम करता है - बिना
एक शामिल भगवान से कोई निशान और अल्लाह के लिए बिल्कुल कोई संकेत विशिष्ट नहीं है। चापलूसी जोड़ा है
सस्ता तेल।

**०१६ ६/९९बी: "- - - इसके साथ (बारिश) हम (अल्लाह*) सभी प्रकार की वनस्पति पैदा करते हैं - - - इनमें
बातें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो विश्वास करते हैं।" खैर वनस्पति प्रकृति में कोई फर्क नहीं पड़ता है।
हमारे पास केवल एक ही आदमी के शब्द हैं जिसके लिए अल्लाह शामिल है - एक आदमी जो खुद इस्लाम है
स्वीकार करता है एक हाईवेमैन, एक जबरन वसूली करने वाला, विरोधियों का हत्यारा, असहाय का सामूहिक हत्यारा है
कैदी, एक महिलावादी, एक बलात्कारी, उसकी बातों को तोड़ने वाला (उदाहरण के लिए, 29 पुरुषों की हत्या करके - 1 भाग गया -
उसने सुरक्षित आचरण का वादा किया था), सामूहिक रूप से एक गुलाम, आदि, सत्ता के लिए आकांक्षी - सभी में a
अपने और इस्लाम के अनुसार सही और बिल्कुल विश्वसनीय गवाह। और उल्लेख नहीं करने के लिए
इब्न इशाक के अनुसार उनका नारा: "युद्ध विश्वासघात है" - विश्वासघात और यहां तक कि किसी को तोड़ना
शपथ ठीक थी। खैर, चापलूसी कम से कम अच्छी लगती है - खासकर उन लोगों के लिए जो विश्वास करने के लिए पर्याप्त भोले हैं
सब कुछ वे विश्वास करना चाहते हैं।

017 6/99c: "- - - कुछ से हम (अल्लाह*) हरी (फसल) पैदा करते हैं - - - इनमें निशानियाँ हैं
विश्वास करने वाले लोगों के लिए"। ऊपर 6/99a और 6/99b देखें।

018 6/99d: "- - - जिसमें से (हरी फसल*) हम (अल्लाह*) अनाज पैदा करते हैं - - - इनमें हैं
विश्वास करने वालों के लिए संकेत "। ऊपर 6/99a और 6/99b देखें। चापलूसी सस्ती है।

019 6/99e: "- - - खजूर और उसके म्यान (या स्पैथ्स) से बाहर (आओ) खजूर के समूह
नीचे और पास लटके हुए हैं: और अंगूर, और जैतून, और अनार के बगीचे हैं,
प्रत्येक समान (तरह में) फिर भी भिन्न (विविधता में) - - - इन चीजों में उन लोगों के लिए संकेत हैं जो
मानना"। दूसरों को 6/99 से ठीक ऊपर देखें।

पेज 939

00q 6/101a: "उसे (अल्लाह *) आकाश की प्रारंभिक उत्पत्ति (= निर्माण *) के कारण है (बहुवचन और गलत*) - - -"। प्रमाण?

00r 6/101b: "उसके लिए (अल्लाह*) - - - पृथ्वी की आदिम उत्पत्ति (= निर्माण *) के कारण है"। प्रमाण?

*00s ६/१३६: "अल्लाह ने जो कुछ भी पैदा किया है, उसमें से तिल और मवेशियों में - - -"। एक सबूत या दस्तावेज़ीकरण के अभाव में हवा में लटका हुआ अधिक ढीला बयान। अरे नहीं अजीब बात है कि इस्लाम बिना सबूतों के अंध विश्वास का महिमामंडन करता है, या कहता है कि न होना आदिम है कुरान में ग्रंथों से देखने में सक्षम है कि यह सभी गलतियों और अमान्य के बावजूद एक भगवान से है "संकेत" और "सबूत" और बयान खोना - धोखेबाजों और धोखेबाजों की पहचान और पुरुषों के जोड़तोड़ - और सबूत मांगने के लिए आदिम के रूप में। भले ही वास्तव में आदिम क्या है बिना प्रमाण के किसी भी चीज और हर चीज पर विश्वास करना है - आदिम और भोला।

00t 6/141a: "वह (अल्लाह*) है जो बाग पैदा करता है - - -"। सबूत? दस्तावेज़?

00u 6/141b: "यह वह (अल्लाह') है जो सभी प्रकार की उपज के साथ - - - पैदा करता है - -"। प्रोफेसर?

**०२० ७/५४ + ५८: "- - - अल्लाह, जिसने आकाश बनाया (बहुवचन और गलत - 6 दिनों के हिस्से में*) - - - इस प्रकार हम संकेतों की व्याख्या करते हैं - - -"। प्रकृति से "उधार" एक अद्भुत प्रतीक और फिर भी कम से कम 2 गंभीर गलतियों के साथ - वास्तव में अल्लाह के लिए एक शानदार प्रमाण। एक अच्छा "संकेत" और स्पष्टीकरण। 7/190 देखें।

०२१ ७/५४ + ५८: "- - -अल्लाह, जिसने बनाया - - - पृथ्वी (भाग) में छह दिन - - - इस प्रकार हम करते हैं संकेतों की व्याख्या करें - - -"। लगभग उतना ही सुंदर अल्लाह का गलत प्रमाण जितना कि ऊपर वाला - पृथ्वी के निर्माण में लाखों वर्ष लगे, और न तो अल्लाह का कोई निशान है और न ही किसी अन्य ईश्वर का न सूर्य में, न पृथ्वी में। ओह, हम जानते हैं कि इस्लाम सहित कई धर्म स्वीकार करने से हिचकते हैं यह है, लेकिन आज तक एक भी वैध प्रमाण नहीं है। एक अच्छा "संकेत" और एक अच्छी व्याख्या। परंतु अमान्य।

**०२२ ७/५४ + ५८: "वह (अल्लाह*) दिन को परदे की तरह रात को खींचता है - - - इस प्रकार हम करते हैं समझाना"। प्रकृति से अल्लाह का एक नया अद्भुत गलत प्रमाण: रात में कोई वैज्ञानिक नहीं हो सकता जिस तरह से एक घूंघट के रूप में वर्णित किया जा सकता है, क्योंकि रात कुछ भी नहीं है - यह केवल प्रकाश की अनुपस्थिति है। अगर तुम वास्तव में विशिष्ट होना चाहते हैं, इसके अलावा मुहम्मद ने यह सब पूरी तरह से गलत कर दिया है - यह है दिन का उजाला जो रात पर शासन करता है, दूसरे तरीके से नहीं। एक और अच्छा "संकेत" - नहीं "स्पष्टीकरण" का उल्लेख करें।

०२३ ७/५४ + ५८: "उसने (अल्लाह*) ने सूरज की रचना की - - - इस प्रकार हम संकेतों की व्याख्या करते हैं - - -"। सबूत, कृपया - यदि नहीं तो हम मानते हैं कि सूर्य प्रकृति से है।

०२४ ७/५४ + ५८: "उसने (अल्लाह*) ने बनाया - - - चाँद - - - इस प्रकार हम संकेतों की व्याख्या करते हैं - - -"। ऊपर वाले को ही देखें।

०२५ ७/५४ + ५८: "उसने (अल्लाह*) ने बनाया - - - तारे - - - इस प्रकार हम संकेतों की व्याख्या करते हैं - - -" देखें 2 ठीक ऊपर। इस मामले में और भी अधिक, क्योंकि सितारों को सबसे कम तक बांधा नहीं जाता है स्वर्ग, और शूटिंग सितारों के समान नहीं है जैसे कुरान एक और कविता में बताता है।

०२६ ७/५४ + ५८: "- - - (सभी ब्रह्मांड है*) उसके आदेश के तहत कानूनों द्वारा शासित - - - इस प्रकार हम करते हैं संकेतों की व्याख्या करें - - -।" सभी देवताओं को यह कहना अच्छा लगता है, और यह कहना बहुत आसान है। खैर, शब्द और बयानों की कीमत एक बड़े मुंह से ज्यादा कुछ नहीं है - इसके लिए सबूत कहां हैं कि अल्लाह वास्तव में है अल्लाह के लिए इस "चिह्न" की शुरुआत की?

पेज 940

०२७ ७/५७-५८: "वह (अल्लाह*) है जो हवाओं को भेजता है - - - इस प्रकार हम संकेतों की व्याख्या करते हैं- - - " चूंकि यह वायुदाब और तापमान द्वारा संचालित एक प्राकृतिक घटना है - जो

मुहम्मद नहीं जानते थे - हम चाहेंगे कि इस्लाम सबूत पेश करे अगर वे कहते हैं कि अल्लाह ऐसा करता है।

०२८ ७/५७-५८: "- - - हम (अल्लाह*) उन्हें (बादलों को) एक मरे हुए देश में ले जाते हैं - - - इस प्रकार हम करते हैं संकेतों की व्याख्या करें- - -"। हवाएं ऐसा करती हैं। ऊपर अप्रमाणित "चिह्न" देखें।

०२९ ७/५७-५८: "- - - (अल्लाह) बारिश को उतरता है - - - इस प्रकार हम संकेतों की व्याख्या करते हैं - - -"। आसान शब्द, शब्द - केवल शब्द। यह प्रभावशाली होगा यदि अल्लाह रेगिस्तान में बारिश करे - लेकिन क्या वह? - या प्रकृति किया? - या शायद दूसरा - एक असली भगवान - अगर अल्लाह का आविष्कार किया गया है, क्योंकि कुछ भी कभी अल्लाह साबित नहीं किया।

०३० ७/५७-५८: "- - - (अल्लाह*) हर तरह की फसल पैदा करता है (बारिश* के साथ) - - - ऐसा हम समझाते हैं चिन्ह - - -"। आम तौर पर यह जड़ों और बीजों + पृथ्वी और पानी से उत्पन्न होता है। अगर अल्लाह श्रेय मांगता है, इस्लाम को इसे केवल शब्दों से अधिक साबित करना चाहिए - खासकर जब से वे हर चीज के लिए खुद दूसरों से सबूत मांगते हैं।

०३१ ७/५८: "उस भूमि से जो स्वच्छ और अच्छी है, उसके चेरिशर (अल्लाह *) की इच्छा से, झरने निकलते हैं उपज - - -"। जब आप सभी सवालों से बचते हैं तो सभी और हर चीज का श्रेय लेना आसान होता है सबूतों के बारे में।

00v 7/158a: "- - - यह वह (अल्लाह *) है जो देता है - - - जीवन - -"। क्रेडिट का दावा करने के लिए एक बहुत अच्छी बात के लिए - और दावे आसान हो जाते हैं यदि आपको इसे कभी साबित नहीं करना है।

00w 7/158b: "- - - यह वह (अल्लाह*) है जो देता है - - - मृत्यु - -"। दावा करने के लिए एक और प्राकृतिक घटना क्रेडिट के लिए - सच है या नहीं।

०३२ १०/४अ: "वह (अल्लाह) है जिसने सूरज को एक चमकदार तेज बनाया - - - (इस प्रकार) वह करता है जो लोग समझते हैं, उनके लिए उसकी निशानियों को विस्तार से समझाएँ"। समझने वाले जानते हैं कि सूरज अपने अंदर रेडियोधर्मी गतिविधि के कारण एक चमकदार महिमा है - एक तथ्य मुहम्मद ने नहीं किया जानना। अगर इस्लाम जोर देता है कि यह अल्लाह है - सिर्फ एक भगवान नहीं, बल्कि अल्लाह - जो इसका कारण बनता है, उन्हें करना होगा इसे साबित करें, न केवल महापाप का उपयोग करें, बल्कि बयानों को खो दें। जोड़ा गया चापलूसी अक्सर अच्छा देता है अशिक्षित, भोले श्रोताओं से बात करते समय सस्ते पैसे के लिए प्रभाव।

०३३ १०/४बी: "वह (अल्लाह*) है जिसने - - - चंद्रमा को प्रकाश (सुंदरता का) बनाया - - - (इस प्रकार) क्या वह समझने वालों के लिए अपनी निशानियों का विस्तार से वर्णन करता है"। इस मामले में जो लोग समझता है समझता है कि यह सूर्य है जो चंद्रमा को चमकता है (खूबसूरती से या नहीं), जैसा कि चंद्रमा कोई प्रकाश नहीं है (यह केवल सूर्य के प्रकाश को दर्शाता है। अगर अल्लाह - या कोई भगवान - शामिल है, तो यह कभी नहीं रहा है साबित। लेकिन किसी भी धर्म के पुजारी के लिए जिम्मेदारी का दावा करना अच्छी बात है अवधि। यानी: जब तक आपको इसे साबित करने की जरूरत नहीं है। मुहम्मद भी कीमत जानते थे चापलूसी का। यहां एक और बात से भी सावधान रहें: आप इस दावे को पूरा करेंगे कि कुरान एक या दो स्थान चंद्रमा को परावर्तित प्रकाश से चमकते हैं। लेकिन पूरे में एक भी जगह नहीं कुरान क्या आपको एक अरब शब्द मिलेगा जिसका अर्थ है "प्रतिबिंबित" या कुछ इसी तरह का। दावा बस एक "अल-तकिया" है - एक वैध झूठ - धर्म की रक्षा करने के लिए और यह दावा करने के लिए कि वह जानता था कि चांदनी धूप परिलक्षित हुई। एक आसान झांसा क्योंकि अधिकांश लोग पर्याप्त अरबी नहीं जानते हैं यह देखने के लिए कि यह एक झांसा है।

०३४ १०/६अ: "वास्तव में, यह रात और दिन का परिवर्तन - - - उन लोगों के लिए संकेत हैं जो उससे डरते हैं (अल्लाह*)।" यह शायद होता, अगर ऐसा नहीं होता क्योंकि हम जानते हैं कि यह सब प्रकृति द्वारा बनाया गया है, और

हमें कभी भी - कहीं नहीं - अल्लाह के शामिल होने का कोई सबूत नहीं मिला। यही वजह भी है इस्लाम अंध विश्वास का महिमामंडन क्यों करता है - धर्म के पीछे अंध विश्वास के अलावा कुछ नहीं है।

०३५ १०/६बी: "- - - जो कुछ भी अल्लाह ने बनाया है - - - उनके लिए संकेत हैं जो उससे डरते हैं"। प्रथम मुहम्मद और इस्लाम को साबित करना होगा कि अल्लाह ने कुछ भी बनाया है - अब तक कोई नहीं है यहां तक कि एक वायरस, या एक परमाणु के निर्माण के लिए एक ही प्रमाण - भले ही मुहम्मद ने प्रश्न किया हो बहुत बार। उसके पास केवल तेज बात और बचकानी शेखी बघारना था ("अगर अल्लाह ने चाहा - - -") an . के लिए उत्तर।

036 10/6c: "- - -इन (सृजन या अस्तित्व) स्वर्ग (बहुवचन और गलत*) - - - संकेत हैं उनके लिए जो उससे डरते हैं।" कुछ संकेत, जैसा कि विज्ञान ने बहुत पहले पाया है कि कुरान की तस्वीर

प्राकृतिक घटना। बुरी तरह से और पूरी तरह से गलत है। इसके लिए क्रेडिट का दावा करने के लिए लंबे समय में खराब व्यवसाय

०३७ १०/६डी: "- - - (* के निर्माण या अस्तित्व में) पृथ्वी - - - डरने वालों के लिए संकेत हैं
उसे।" यहां तक कि जब पृथ्वी के करीब की बात आती है, मुहम्मद - और इस्लाम - थे और हैं
कोई सबूत पेश करने में असमर्थ - केवल बड़े, सस्ते दावे।

00x 10/34: "कहो: 'यह अल्लाह है जो सृष्टि की उत्पत्ति करता है और इसे दोहराता है - - -'"। यह बहुत आसान है
कहते हैं - क्यों न एक बार के लिए यह साबित करने की कोशिश करें कि यह अल्लाह है न कि प्रकृति? सिर्फ कहने में कुछ खर्च नहीं होता
कुछ। किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी अपने भगवान के बारे में ठीक वैसा ही कह सकता है - उतना ही सस्ते में।

०३८ १०/६७अ: "वह (अल्लाह) वह है जिसने तुम्हें रात बनायी है - - - वास्तव में इसमें निशानियाँ हैं
जो सुनते हैं।" प्रमाण?

०३९ १०/६७बी: "वह (अल्लाह) वह है जिसने तुम्हें रात बनायी है कि तुम उसमें आराम कर सको - - -
निस्संदेह इसमें निशानियाँ हैं सुनने वालों के लिए---"। ढीले दावे का मूल्य क्या है या
बिना मूल्य के संकेतों का कथन क्योंकि वे सिद्ध नहीं होते हैं? रात और नींद दोनों - और यहाँ तक कि
दिन - हर समय घटित होने वाली प्राकृतिक घटनाएँ हैं। बेशक इसके लिए क्रेडिट का दावा करना अच्छा है -
लेकिन आपको बिना तर्क के भी इस पर विश्वास करने के लिए बहुत भोला और आदिम होना होगा
सत्य होने का संकेत है।

०४० १०/६७ग: "वह (अल्लाह*) वह है जिसने तुम्हें - - - दिन - - - बनाया है। के बारे में भी साबित हुआ
10/67b ठीक ऊपर - वह देखें।

०४१ १३/२: "अल्लाह वह है जिसने आकाश (बहुवचन और गलत) को बिना किसी खम्भे के ऊपर उठाया है।
हम देख सकते हैं (= अदृश्य स्तंभ*) - - - (अल्लाह है *) संकेतों को विस्तार से समझाते हुए - - "। जैसा कहा गया है
इससे पहले: इस बात का कोई सबूत नहीं है कि अल्लाह - या किसी भगवान - के पास कुछ भी था
करने के लिए स्वर्ग का निर्माण। लेकिन उन स्तंभों के बारे में बात करना थोड़ा खास है जिन्हें कोई नहीं देख सकता, जब वहां हो
अदृश्य स्तंभ भी नहीं हैं, और इससे भी अधिक: स्वर्ग के रूप में स्तंभों की कोई आवश्यकता नहीं है
जैसा कि हम देखते हैं कि यह सिर्फ एक ऑप्टिकल भ्रम है। (मुहम्मद का मानना था कि स्वर्ग (ओं) को बनाया गया था
किसी सामग्री से, और फिर निश्चित रूप से वे / यह बिना खंभों के नीचे गिरेंगे)। लेकिन यह
लग रहा था - दोहरे अर्थ में - शायद क्रेडिट का दावा करने के लिए एक अच्छी प्राकृतिक घटना। नहीं एक
अल्लाह के लिए "चिह्न" के लिए अच्छा विकल्प: पूरी तरह से गलत।

०४२ १३/२: "उसने (अल्लाह*) ने सूरज और चाँद को (अपने कानून के अधीन!) - - समझाते हुए
विस्तार से संकेत - - -"। प्राकृतिक नियम प्रकृति के एकीकृत भाग हैं, जब तक कि कोई ईश्वर यह साबित नहीं कर देता कि
गलत। किसी भी ईश्वर या पैगंबर ने कभी यह साबित नहीं किया है कि - यह देखना बाकी है कि इस्लाम ऐसा करने में सक्षम है या नहीं।

९४१

पृष्ठ ९४२

०४३ १३/३: "और वही (अल्लाह) है जिसने धरती को फैलाया - - - वास्तव में वहाँ इन चीजों में
विचार करने वालों के लिए निशानियाँ हैं"। अल्लाह या प्रकृति - सबसे अधिक संभावना प्रकृति, क्योंकि
प्रकृति ने पृथ्वी को गोल बनाया है, जबकि मुहम्मद/कुरान का मानना है कि यह समतल है। वास्तव में हम
यह मत समझो कि ऐसी गलती करना अल्लाह के लिए एक बहुत ही संदिग्ध "संकेत" है।

०४४ १३/२: "(अल्लाह ने पृथ्वी पर स्थापित किया है) पहाड़ स्थिर खड़े हैं - - - वास्तव में इन चीजों में हैं
विचार करने वालों के लिए संकेत"। पहाड़ सेट नहीं होते हैं, लेकिन बढ़ते हैं - और वे टेक्टोनिक से बढ़ते हैं
या ज्वालामुखी गतिविधि, किसी ईश्वर के कार्य से नहीं, जब तक कि कोई ईश्वर इसे गलत साबित न कर दे।

०४५ १३/२: "वह (अल्लाह*) रात को दिन पर परदे के रूप में खींचता है - - - वास्तव में इन चीजों में हैं
विचार करने वालों के लिए संकेत। " 7/54 + 58 देखें। इसके अलावा: रात सिर्फ रोशनी की कमी है। की कमी
कुछ पर्दा नहीं हो सकता।

०४६ १३/३: "- - - फिर भी उनमें से कुछ (फल, आदि, आदि*) हम (अल्लाह*) से अधिक उत्कृष्ट बनाते हैं
दूसरों को खाने के लिए। देख, उन बातों में समझने वालों के लिए निशानियाँ हैं!" पर
कम से कम यह समझना बहुत आसान है कि अल्लाह/मुहम्मद बहुत सारी प्राकृतिक चीजों का श्रेय लेते हैं
यह प्रकृति, खेतों और बागों में अपने आप होता है, यह साबित किए बिना कि उसके पास एक भी है
खेल में उंगली। चापलूसी लोगों को प्रभावित करने और धोखा देने के सबसे सस्ते साधनों में से एक है - as
झूठ के रूप में सस्ता और अमान्य "संकेत" और "प्रोफेसर", और उपयोग में आसान, क्योंकि इसके लिए कम सोच की आवश्यकता होती है
धोखेबाज़।

00y 13/12: "वह (अल्लाह*) है जो तुम्हें बिजली दिखाता है - - -"। एक प्रभावशाली प्राकृतिक
घटना है कि कई देवता स्वामी बनना पसंद करते हैं - लेकिन अल्लाह इससे अधिक साबित नहीं करता है
अन्य दिखावा करने वाले, जैसे f. भूतपूर्व। थोर (युद्ध के पुराने नॉर्स देवता - इस्लाम की तरह का धर्म)
ओल्ड वाइकिंग्स युद्ध का धर्म था)।

***00z 15/16: "यह हम (अल्लाह*) हैं जिन्होंने आकाश में राशियों को निर्धारित किया है (बहुवचन)
और गलत*)"। वास्तव में हम सोचते हैं कि ब्रह्मांड में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके बारे में मुहम्मद को पता हो,
जिसका श्रेय अल्लाह नहीं लेता। केवल एक अफ़सोस की बात है कि वह मुहम्मद के विश्वास तक ही सीमित था
वह जानता था - जो अतिरिक्त संदेह पैदा करता है जब सबूत की कमी के शीर्ष पर चीजें, कभी-कभी होती हैं
वास्तव में गलत।

इस पर विचार करने पर: यह वास्तव में अजीब है कि अल्लाह चीजों के लिए श्रेय का कोई दावा नहीं करता है
मुहम्मद के बारे में नहीं पता था - मुहम्मद और इस्लाम के भविष्य में जो बना होगा
अल्लाह के लिए सुरुचिपूर्ण सबूत। कोई भी नहीं हैं - बिल्कुल भी कोई सच्ची भविष्यवाणी नहीं है और न ही कोई वैज्ञानिक या
अन्य तथ्य जो मुहम्मद के समय अज्ञात थे, जो अल्लाह को सिद्ध कर देते
बाद में। (यह आम मुसलमानों के इस तरह के दावों के विपरीत है। लेकिन उन दावों की जाँच करें -
अब तक उनमें से प्रत्येक गलत रहा है। और एक और जिज्ञासु तथ्य: आप उनसे मिलते हैं
बिना पढ़े-लिखे आम मुसलमानों के दावे, और आप उनसे मिलने के लिए मीडिया में मिलते हैं
मुसलमानों या कभी-कभी गैर-मुसलमानों के लिए बहुत अधिक शिक्षा के बिना - अक्सर शिक्षितों द्वारा चलाया जाता है
मुसलमान, लेकिन लक्ष्य "जनता"। आप इसे शायद ही कभी मीडिया में पाते हैं जो वास्तव में शिक्षितों के लिए होता है
व्यक्तियों। अजीब, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?)

0ab 16/5: "और मवेशियों को उसने (अल्लाह) ने तुम्हारे (मनुष्यों) - - - के लिए पैदा किया है। मवेशी नहीं बनाए गए थे
मनुष्य के लिए - वे जंगली जानवर थे जिन्हें वन्य जीवन के लिए "सृजित" किया गया था, उस आदमी ने लगभग 15ooo वर्षों को वश में किया था
पहले वाले पहले। वास्तव में वे बनाए भी नहीं गए थे, बल्कि पहले के जानवरों से विकसित हुए थे।
क्या होता है जब कोई भगवान अच्छी चीजों का श्रेय लेता है और मनुष्य को बाद में पता चलता है कि यह सच नहीं है? -
खासकर जब भगवान और उनके प्रतिनिधि के बजाय केवल तेज बात करने में सक्षम होते हैं
सबूत?

९४२

पेज ९४३

0ac 16/8: "और (उसने (अल्लाह) ने घोड़ों, खच्चरों और गधों को बनाया है - - -"। 16/5 को देखें
के ऊपर।

०४७ १६/१०-११: "वह (अल्लाह*) है जो आसमान से बारिश बरसाता है - - - वास्तव में इसमें एक निशानी है
विचार देने वालों के लिए"। इसे कुछ विचार देते हुए, हम पाते हैं कि यह जल चक्र का हिस्सा है
प्रकृति - अगर कोई भगवान कुछ और साबित नहीं करता है, जो न तो अल्लाह ने और न ही किसी और ने किया है
अभी। कई अन्य जगहों की तरह: अंत में पाठक की चापलूसी का एक छोटा सा वाक्य।

०४८ १६/१०-११: "- - - इसमें से (बारिश) (बढ़ती है) वनस्पति जिस पर तुम अपने मवेशियों को चराते हो। - - -
निश्चय इसमें उन लोगों के लिए एक निशानी है जो विचार करते हैं।" यह सोचकर, हम समझते हैं कि यह
प्रकृति कैसी है - और यह कि अल्लाह ने साबित नहीं किया है कि यह उसका काम है - भले ही
मुहम्मद ने ऐसा कहा - लेकिन केवल इतना ही कहा। और पाठक की कुछ और चापलूसी।

०४९ १६/११: "इससे (बारिश) वह (अल्लाह*) तुम्हारे लिए मक्का, जैतून, खजूर, अंगूर और
हर प्रकार का फल : निश्चय इसी में चिन्तन करनेवालों के लिए एक निशानी है।" अभी भी दे रहा हूँ
सोचा, हमें लगता है कि यह साबित करने की तुलना में प्राकृतिक प्रक्रियाओं के लिए क्रेडिट का दावा करना बहुत आसान है
यहां तक कि शामिल। कम से कम मुहम्मद या अल्लाह ने कुछ भी साबित नहीं किया, सिवाय इसके कि अल्लाह है
एक भोले भगवान बिना मूल्य के संकेतों का उपयोग करते हैं, क्योंकि सब कुछ सिर्फ शब्दों पर टिका होता है और कुछ भी नहीं। और
कुछ "संकेत" और "प्रमाण" भी गलत हैं। और पाठक की चापलूसी ने बहुतों की तरह जोड़ा
अन्य स्थान।

०५० १६/१३: "और पृथ्वी पर जिन चीजों को उसने (अल्लाह) ने गुणा किया है - - - वास्तव में यह एक निशानी है
- - -"। कुछ भी वास्तविक संकेत या प्रमाण तब तक नहीं है जब तक कि यह केवल उस में होने वाली घटनाओं के लिए श्रेय का दावा कर रहा है
प्रकृति काफी स्वाभाविक रूप से - और इससे भी ज्यादा जब दावों के लिए एकमात्र सबूत ऊंचे हैं
कुछ भी नहीं पर बने शब्द। इस तरह के सबूत तब तक अमान्य हैं जब तक कि यह साबित न हो जाए कि अल्लाह
वास्तव में वही किया है जो दावा किया गया है।

०एडी १६/१४: "यही वह है जिसने समुद्र को - - -" बनाया है। साथ ही समुद्र मुहम्मद का दावा है -
बिना कुछ खाली शब्दों के किसी भी धर्म में कोई भी पुजारी अपने सबूत के लिए इस्तेमाल कर सकता है
देवालय

*0ae 16/48: "- - - अल्लाह की रचनाएँ, (सम) (निर्जीव) चीजों के बीच - - - उनकी (बहुत) छाया
दाएं से बाएं मुड़ें, खुद को अल्लाह को सजदा करें - - -"। इस पर विश्वास करें या नहीं:
परछाईं भी अल्लाह से दुआ करती हैं - भले ही परछाई में सिर्फ रोशनी की कमी हो = सचमुच और पूरी तरह से
कुछ नहीं।

०५१ १६/६६: "पशुओं में (भी) तुम्हें एक शिक्षाप्रद संकेत मिलेगा (क्योंकि वे दूध का उत्पादन करते हैं)"। NS
मुहम्मद के अनुसार मवेशियों के लिए अपने बच्चों को खिलाने का प्राकृतिक तरीका अल्लाह के लिए एक संकेत है। कुंआ,
क्या अल्लाह शामिल है, या यह प्रकृति द्वारा बनाई गई चाल है? बेशक यह कहना आसान है कि यह है
अल्लाह - लेकिन एक भगवान जो कुछ भी साबित करने में असमर्थ है - कुछ भी - देर-सबेर हार जाता है
विश्वसनीयता। यह ब्लफ़िंग की तरह अधिक लगता है। क्या मुहम्मद सिर्फ एक बुद्धिमान धोखेबाज थे और
धोखेबाज जिसने संप्रदायों के कुछ अन्य आरंभकर्ताओं की तरह आराम और शक्ति के लिए एक ही रास्ता पाया था
या धर्म? - पूरे समय में उनमें से कई रहे हैं, हालांकि उनमें से अधिकांश
स्थानीय सफलता के साथ, f. भूतपूर्व। अमेरिका और अफ्रीका में।

**०५२ १६/६७: "खजूर के फल और शराब से भी, तुम स्वस्थ हो जाओ (!!*)
पेय और भोजन; निहारना, इसमें भी बुद्धिमानों के लिए एक निशानी है"। दावा करने के अलावा
प्रकृति के एक और क्षेत्र का श्रेय - शराब बनाना - अल्लाह के लिए, यह कुछ हद तक मज़ेदार है
यह देखने के लिए कि यह (शराब) यहाँ (622 ईस्वी में लिखी गई) एक स्वास्थ्यवर्धक पेय बताया गया है, जबकि
बाद में शराब इतनी खराब है कि इस्लाम में इसे पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दिया गया है। 622 . में अल्लाह क्या नहीं जानता था

एडी? वैसे ही कुरान और इस्लाम और मुसलमान दावा करते हैं कि इसमें कुछ भी अप्रासंगिक नहीं है
कुरान - कुछ नहीं। क्या हम यह देखने के लिए पर्याप्त बुद्धिमान हैं कि यह किसी भी तरह से अप्रासंगिक है? - और वह यह
कुरान में एकमात्र जगह से बहुत दूर है। मुहम्मद ने बहुत चापलूसी की - इसका अच्छा परिणाम मिला
सस्ते पैसे के लिए। कौन यह सुनना पसंद नहीं करता कि वह बुद्धिमान है? - विशेष रूप से भोले वाले।

0af 16/68: "और तेरे रब (अल्लाह*) ने मधुमक्खी को पहाड़ियों में, पेड़ों पर और अंदर अपनी कोठरी बनाना सिखाया
(आदमी की) बस्तियाँ - - -"। मधुमक्खी बहुत कम से कम 50 मिलियन वर्ष है, और सबसे अधिक संभावना है
200 मिलियन वर्ष पुराना। इसे जीने और रहने के तरीके विकसित करने के लिए बहुत समय मिला है,
केवल प्रकृति के अनुकूल होने से। आप जो कुछ भी देखते हैं और जो कुछ भी देखते हैं उस पर दावा करना इतना अविश्वसनीय रूप से आसान है
आपके दिमाग में आता है - अपने वास्तविक या आविष्कार किए गए भगवान के सम्मान और श्रेय के लिए दावा करें, जब तक
जैसा कि आप कुछ भी साबित करने से कतराते हैं, और आपके दर्शक आपके तेज शब्दों को स्वीकार करते हैं -
कुछ ऐसा जो संभव हो सकता है जब आपके श्रोता अशिक्षित और भोले हों, या यदि वे अंदर हों
एक धार्मिक उत्साह और/या ऐसा ही ब्रेनवॉश किया गया। उल्लेख नहीं है कि क्या ये सभी शर्तें मौजूद हैं
- इस्लाम (और अन्य धर्मों) में सबसे तीव्र धार्मिक कट्टरपंथियों को आप निम्न में पाते हैं
होशियार हो या बहुत ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं, और पढ़े-लिखे लोगों के बीच एक-दिमाग वाले - एक-
प्रकृति या पोषण द्वारा ट्रैक किया गया।

0ag 16/72: "और अल्लाह ने तुम्हारे लिए साथी - - -" बनाया है। थोड़ा झिझकने के लिए: कुछ पुरुष और
कई महिलाएं सोचती हैं कि उनका साथी भगवान से नहीं, बल्कि शैतान का है। लेकिन कम से कम: आइए देखें
इसके सच होने का इस्लाम का प्रमाण।

०अह १६/७८: "- - - उसने (अल्लाह) तुम्हें श्रवण और दृष्टि और बुद्धि और स्नेह दिया - -"।
उस मामले में अल्लाह जल्दी उठने वाला था - विज्ञान ने इन लक्षणों की पहचान करोड़ों में की है
वर्षों पहले - और एक धीमी गति से काम करने वाला - जैसा कि प्रारंभिक जानवरों से 500 मिलियन से अधिक वर्षों में लिया गया था
एडियाकरियन काल में लगभग ६०० मिलियन (६३५-५४२ मिलियन) वर्ष पूर्व के अंत में
कैम्ब्रियम (या लगभग 3,5 बिलियन वर्ष यदि आप जीवन के पहले निशान से सामंजस्य बिठाते हैं) का उत्पादन करने के लिए
मानव बुद्धि। लेकिन 630 ईस्वी में अरब में किसी को भी इस तरह के दावे को खारिज करने का मौका नहीं मिला:
मुहम्मद इसे कहते हैं - और उनके जैसा एक अच्छा और विश्वसनीय डाकू, निश्चित रूप से केवल सच बोलता था!
(कभी-कभी मुसलमान आपको बताते हैं कि मुहम्मद अपने समय के व्यक्ति थे - कठिन और क्रूर समय -
और अरब में अन्य सरदारों और योद्धाओं से भी बदतर नहीं। वे सही हो सकते हैं, लेकिन वह
निश्चित रूप से कोई भी बेहतर नहीं था - और उसने एक उदार भगवान का प्रतिनिधित्व करने का नाटक किया (?) (यह एफ। पूर्व।
उनकी और यीशु की तुलना करना असंभव है - वे शिक्षाओं, नैतिकता और में अलग-अलग दुनिया हैं
नैतिकता - और एम्पाही का उल्लेख नहीं करना))।

*०५३ १६/७९: "- - - पक्षियों को देखो - - - कुछ भी उन्हें (लेकिन शक्ति) अल्लाह नहीं रखता।
निश्चय इसी में ईमान लाने वालों के लिए निशानियाँ हैं।" अच्छी तरह से अच्छी तरह से अच्छी तरह से। मुहम्मद बदकिस्मत है
f के बजाय "अल्लाह की शक्ति" अभिव्यक्ति का उपयोग करने के लिए पर्याप्त है। भूतपूर्व। इच्छा या निर्णय या
अल्लाह के नियम - "अल्लाह की शक्ति" शब्द अधिक स्पष्ट हैं और फिर अधिक कठिन हैं
समझाओ। यह अल्लाह की शक्ति नहीं बल्कि हवा की शक्ति है - वायुगतिकी के नियम
- जो उन्हें वहीं रखता है। एक मूर्ख और गलत चिन्ह का प्रयोग करने पर भगवान क्या करता है? -

कुछ ऐसा जो मुहम्मद नहीं जान सकता था, लेकिन यह कि किसी भी सर्वज्ञ ईश्वर को यह पता था
बिलकुल शुरुआत।

0ai 16/81: "यह अल्लाह है जिसने आपको छाया देने के लिए - - - चीजें बनाई - -"। अच्छा, अच्छा, एक बार
अधिक। छाया सिर्फ (सूर्य) प्रकाश की कमी है। कुछ अपवादों को छोड़कर प्रकृति के लिए यह असंभव है
बिना किसी चीज को सामने लाना उसके पीछे किसी चीज के लिए छाया बनानी पड़ती है अगर रोशनी है तो। परंतु
वैसे ही अल्लाह ने तुम्हारे लिए रंग बनाए हैं। सबूत? सबूत?

0aj 22/65: "वह (अल्लाह) आकाश (बारिश) को पृथ्वी पर गिरने से रोकता है, सिवाय उसके
छोड़।" साथ ही यह प्रकृति बिना किसी की मदद के बहुत अच्छी तरह से प्रबंधन कर सकती है। अगर पर्याप्त नहीं है

तापमान के सापेक्ष हवा में नमी तथाकथित ओस बिंदु तक पहुंचने के लिए,
या यदि बारिश की बूंदों के संघनन के लिए पर्याप्त - या पर्याप्त नहीं है - धूल / गुठली, कोई नहीं होगा
वर्षा। लेकिन यह कुछ ऐसा था जिसे मुहम्मद की मण्डली नहीं जानती थी, और इसके अलावा
वे भोले और कम पढ़े-लिखे थे और शायद थोड़े से दिमाग से धोए गए और आदिम-आसान थे
बिना किसी सबूत के "एक सवारी के लिए ले लो", बस तेज बात को स्वीकार करना। इसके अलावा: क्या वाकई बारिश होती है और नहीं
स्वर्ग के टुकड़े किताब किस बारे में बात करती है? - शब्द (बारिश) द्वारा डाला गया लगता है
अनुवादक।

0ak 23/79: "और उसने (अल्लाह*) ने तुम्हें धरती पर - - - - बढ़ा दिया है। इसे कम से कम कहने के लिए:
यह कुछ ऐसा है जो प्रकृति है और हमने बिना किसी की मदद के खुद को पूरी तरह से प्रबंधित कर लिया है -
और खुशी के साथ। सबूत?

०अल २६/७: “क्या वे (गैर-मुसलमान*) पृथ्वी की ओर नहीं देखते हैं - सभी प्रकार की कितनी नेक चीजें हैं
हमने (अल्लाह*) उसमें पैदा किया है?” हाँ, हम बहुत सी नेक चीज़ें देखते हैं - और बहुत कुछ
घिनौनी और भयानक बातें, जैसे दारफुर, कुछ मुस्लिमों में महिलाओं और गैर-मुसलमानों का जीवन
क्षेत्र, आतंकवादी, तबाही, आदि - दुनिया में। लेकिन हमें किसी भगवान का कोई प्रमाण नहीं दिखता - या कम से कम
उस ईश्वर का नहीं जिसने साबित कर दिया कि वह अल्लाह है।

**0am 27/61: "(अल्लाह*) ने धरती को रहने लायक बनाया है, उसके बीच में नदियां बनाई हैं; समूह
उस पर अचल पहाड़ - - -"। यह सब प्रकृति अपने आप को बहुत अच्छी तरह से प्रबंधित करती है। केवल
इस या अन्य प्राकृतिक घटनाओं के कारण जो चीजें अल्लाह के बारे में सिद्ध होती हैं, वे हैं:
कुरान हर चीज के लिए अल्लाह को श्रेय देना पसंद करता है, और यह कि वह कुछ भी साबित करने में सक्षम नहीं है।

क्या कोई सर्वज्ञ ईश्वर अपनी सारी विश्वसनीयता झूठे शब्दों पर, अमान्य और गलत पर भी स्थापित करेगा
संकेत, विरोधाभास, और अमान्य और गलत प्रमाण के रूप में? - वे बातें जो उसे जाननी थीं
जिस दिन इंसानों ने चीजों का पता लगाना शुरू किया, उस दिन उलटा असर हुआ?

०५४ २७/८६: "देखो, वे नहीं देखते कि हमने (अल्लाह*) ने उनके लिए रात बना दी है।
मुसलमानों/इंसानों*) में आराम करने के लिए - - - वास्तव में, इसमें विश्वास करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए संकेत हैं"।
मुहम्मद ने यह 180 डिग्री गलत पाया। दिन में सक्रिय जानवरों ने के लिए अनुकूलित किया है
निष्क्रियता के लिए इसका उपयोग करके अंधेरे की अवधि (जबकि रात में सक्रिय जानवर अवधि का उपयोग करते हैं
निष्क्रियता के लिए प्रकाश का) - यह दूसरा रास्ता नहीं है। इसके अलावा अगर हमारे पास स्थायी प्रकाश होता
सैकड़ों लाखों वर्षों के दौरान, जीवन उसके अनुकूल हो गया था और
चीजों को करने की स्थायी क्षमता - मनुष्यों को अधिक कुशल बनाना और उन्हें अतिरिक्त से बचाना
अंधेरे में मिले खतरे यह अब शारीरिक और मानसिक प्रक्रियाओं के लिए भी जाता है
रात में जगह।

और फिर भी हम सबूतों का एक दाना भी चूक जाते हैं कि अल्लाह शामिल है।

*0an 29/20: "पृथ्वी के माध्यम से यात्रा करें और देखें कि अल्लाह ने सृष्टि की उत्पत्ति कैसे की - - -"। हम
पृथ्वी के एक अच्छे हिस्से की यात्रा की है। हमने प्रकृति और संस्कृति को बहुत देखा है -
यहां तक कि कुछ चीजों के बारे में भी देखा और सुना है जो भगवान के लायक हैं (और कुछ शैतान के लायक हैं - जैसे युद्ध और
आतंकवाद)। लेकिन हमने ईश्वर का कोई प्रमाण नहीं देखा या सुना है - और अल्लाह का बिल्कुल भी प्रमाण नहीं है,
संभव अपवाद के साथ कि ऐसा भीषण और जंगी देवता - के बारे में सभी शब्दों के बावजूद
दया और परोपकार - कुछ भयानक कार्यों की व्याख्या हो सकती है।

०५५ ३०/२४: "(अल्लाह*) पृथ्वी को (पानी के माध्यम से) जीवन देता है उसके मरने के बाद: वास्तव में, उसमें
बुद्धिमानों के लिए निशानियाँ हैं"। जैसे ही सूखी धरती को पानी और अन्य जरूरत की चीजें मिलती हैं,
जड़ें और बीज अपने आप बढ़ने लगते हैं - भगवान या कोई भगवान नहीं। इसका कोई प्रमाण नहीं है

कुछ भी लेकिन वह प्रकृति लचीला है। जो कोई बुद्धिमान है वह विश्वास करने से पहले सबूत मांगेगा
और कुछ। और अंत में फिर से पाठक की कुछ चापलूसी।

०आओ ३५/३९: "वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हें धरती में वारिस बनाया है - - -"। क्या कोई भी -
मुस्लिम या नहीं - हमें बताएं कि अंतरिक्ष यात्रा के बिना और कहाँ रह सकते हैं, सिवाय और
धरती पर?

*0ap 36/36। "अल्लाह की महिमा, जिसने पृथ्वी द्वारा उत्पन्न सभी चीजों को जोड़े में बनाया - - -"। सभी
ऐसा लगता है कि पृथ्वी जो चीजें पैदा करती है वह प्रकृति द्वारा उत्पन्न होती है न कि अल्लाह द्वारा। के लिए एक सबूत
यह है कि प्रकृति जानती है कि कोई भी एक-कोशिका और सभी बहु-कोशिका वाले जीव नहीं बने हैं
जोड़े। जबकि इस बात को न तो मुहम्मद, न कुरान और न ही अल्लाह जानता है
पद्य

***0aq 37/6: "हमने (अल्लाह*) ने निचले स्वर्ग को - - - - सितारों - - - से सजाया है। NS
प्रकृति ने अरबों तारे पैदा किए हैं - जिनमें से मनुष्य अपनी नंगी आँखों से 6ooo देख सकता है-
7ooo। लेकिन किसी भी तरह से उसने उन्हें एक गैर-मौजूदा निचले स्वर्ग (चंद्रमा के नीचे) को डेक करने के लिए इस्तेमाल नहीं किया
उस समय के खगोल विज्ञान के अनुसार - - - और कुरान के रूप में चंद्रमा "के बीच" है
स्वर्ग") - और न ही प्रकृति बुराई को दूर भगाने के लिए सितारों को हथियार (शूटिंग सितारे) के रूप में उपयोग करती है
स्पिरिट्स ओट जिन्न जैसे कुरान में, अगली आयत (37/7)। क्या यह इस बात का प्रमाण है कि प्रकृति जानती है कि वह क्या है
कर रहा है, जबकि मुहम्मद झांसा दे रहा था?

0ar 39/6: "- - - उसने (अल्लाह) आपके लिए जोड़े में मवेशियों के आठ सिर नीचे भेजे (= 4 प्रकार के
पशु*) - - -"। सच बोलने के लिए: भेड़, बकरी, गाय और ऊंट - जिनके बारे में कुरान बात करता है
के बारे में - अल्लाह की ओर से नहीं दिया गया है, और किसी भी तरह से उस से नीचे नहीं भेजा गया है। उन्होंने विकसित किया है
कुछ दसियों मिलियन वर्षों में - या कुछ सैकड़ों मिलियन वर्षों में यदि आप पहले शामिल करते हैं
जानवरों से वे विकसित हुए (एक तथ्य यह है कि कई मुसलमान किसानों के रूप में जोरदार रूप से इनकार करते हैं
यूएसए में बाइबिल बेल्ट)। इसके अलावा संख्या गलत है: अधिक पालतू मवेशी हैं (f. उदा।
बारहसिंगा, लामा, अल्पाका, विकुंजा, गुआनाको (दक्षिण अमेरिका से दूर से ऊंट से संबंधित 4),
भारतीय हाथी, जल भैंस, और याक - और सूअर) लेकिन मुहम्मद नहीं जानते थे
उनके बारे में - किसी भी भगवान ने किया। फिर क्या यह प्रकृति या मुहम्मद/अल्लाह है जो के "निदेशक" हैं
पृथ्वी? - और कुरान की रचना किसने की - एक सर्वज्ञ ईश्वर या अरब में रहने वाला कोई व्यक्ति
लगभग 630 ई.

०५६ ३९/२१: "- - - वह (अल्लाह) इसे (प्रकृति को) सुखा देता है और नष्ट कर देता है। वास्तव में, इसमें एक है
समझदार लोगों के लिए स्मरण का संदेश।" अल्लाह को कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है
ऐसा होता है - कुछ के लिए बारिश को दूसरे स्थानों पर भेजकर प्रकृति खुद ही सब कुछ अकेले कर देती है
समय। लेकिन निश्चित रूप से प्रकृति को नियंत्रित करने में सक्षम होने के लिए स्थिति और प्रतीत होने वाली शक्ति को लंबे समय तक देता है
जैसा कि आपको कुछ भी साबित करने की आवश्यकता नहीं है, और जब तक अशिक्षित या भोले या धार्मिक रूप से
अंधे अनुयायी इस बात से संतुष्ट हैं कि "अल्लाह और उसके रसूल सबसे अच्छे से जानते हैं"।

०५७ ४१/१२: "तो उसने (अल्लाह *) ने उन्हें (स्वर्ग (ओं) *) को सात फर्मों (गलत - वहाँ) के रूप में बनाया
केवल एक*) दो दिनों में - - - ऐसा (उसे) पराक्रम में सर्वोच्च" का फरमान है। सिर्फ देखो
ऊपर, और आप आकाश को देखते हैं - यह रात में विशेष रूप से प्रभावशाली हो सकता है। प्रकृति अपने चरम पर
विशाल, भले ही यह पृथ्वी से छोटा दिखता हो। क्या किसी भगवान ने इसे बनाया है? क्या वह भगवान मामले में था
अल्लाह? ऐसा मानने के कुछ कारण हैं, और निश्चित रूप से कोई प्रमाण नहीं है। और 100% निश्चित क्या है:
इसे अल्लाह ने दो दिन में नहीं बनाया था।

अल्लाह ने कुरान में यह आदेश दिया है - "सबूत" के लिए सबसे दुर्भाग्यपूर्ण विकल्प।

कभी-कभी हमारी धारणा यह होती है कि मुहम्मद/कुरान किसी दूसरी दर की तरह व्यवहार करते हैं
राजनेता: वे तर्क और दावे चुराते हैं, फिर लोगों के सामने दौड़ते हैं और कहते हैं कि वे हैं
उनका नेतृत्व करना - इस मामले में चोरी के tiches, दास और सत्ता के लिए। मुहम्मद / कुरान पाता है
अच्छी घटनाएँ और बताती हैं कि अल्लाह ने उन्हें बनाया है। केवल कथन, केवल दावे, और केवल
किसी भी ईश्वर के लिए कोई भी "पैगंबर" शब्द सस्ते में उपयोग कर सकता है - और कभी-कभी 120% गलत।

०५८ ४५/३: "वास्तव में, स्वर्ग में (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी उन लोगों के लिए संकेत हैं जो
मानना"। हां, बहुत सारे संकेत हैं - लेकिन एक भी संकेत नहीं है जो इंगित करता है, उल्लेख नहीं है
अल्लाह को साबित करना, जब तक कि यह साबित न हो जाए कि "संकेतों" के पीछे वास्तव में अल्लाह ही है। एक नहीं
एक। हाँ, इस "चिह्न" में आकाश (बहुवचन) की संख्या भी गलत है।

**0as 45/5: "- - - और यह तथ्य कि अल्लाह जीविका भेजता है (बारिश?*) - - - के लिए संकेत हैं
जो बुद्धिमान हैं। " यह वाक्य केवल उन लोगों के लिए है जो बुद्धिमान हैं I
कुछ गंभीर रूप से गलत है, जैसा कि कहीं नहीं - कहीं नहीं - अंदर या बाहर
कुरान की स्थापना इस तथ्य के रूप में की गई है कि अल्लाह किसी को भी भेजता है
भरण-पोषण या बारिश !!!! बहुत सारे हारे हुए बयान और दावे हैं लेकिन एक भी नहीं है
सबूत - भले ही "झूठ बोलो, और लोग उस पर विश्वास करेंगे" का नारा है
गुण, यह अभी भी पतली हवा से लिए गए शब्दों को एक तथ्य नहीं बनाता है। इसके विपरीत: ढीले का प्रयोग
शब्द, अमान्य कथन, अमान्य "संकेत" या "सबूत", झूठे और गढ़े हुए का उल्लेख नहीं करने के लिए
"तथ्य" सभी धोखेबाजों, ठगों और धोखेबाजों के लिए पहचान हैं - एक ईमानदार, सर्वज्ञ भगवान
अपनी शिक्षाओं को इस तरह के तर्कों पर कभी टिकने नहीं देंगे। और अक्सर की तरह: की कुछ चापलूसी
पाठक।

कुरान को किसने बनाया - एक ईमानदार भगवान या कोई और? भेष में शैतान को मत भूलना - if
कहीं एक सच्चा और सच्चा धर्म है जो इस्लाम नहीं है, ऐसी शिक्षा होगी a
उस धर्म से अधिक से अधिक लोगों को दूर रखने की इच्छा रखने वाले शैतान के लिए मधुर स्वप्न, और
विशेष रूप से ऐसे खूनी और क्रूर विकल्प का उपयोग करना। (मुहम्मद की शिक्षा उसके बाद
मदीना में उतरा, इस विकल्प को असंभव नहीं बनाता)।

**०५९ ५५/१४: "उसने (अल्लाह*) ने मनुष्य को बजती हुई मिट्टी से मिट्टी के बर्तनों की तरह पैदा किया - - -।" एक आदमी और
किताब इससे ज्यादा नहीं जानती कि मनुष्य कैसे विकसित हुआ - क्या बाकी वे और बताते हैं
विश्वसनीय? ऐसा लगता है कि प्रकृति सही कहानी को बेहतर तरीके से जानती है। जैसा कि पहले कहा गया है: यह हो सकता है
धोखेबाज और धोखेबाज इस सब के पीछे अपनी कहानी के लिए सही "सबूत" चुनना नहीं जानते।

०६० ५७/२५: "--- हमने (अल्लाह) ने लोहा उतारा, जिसमें गजब की ताकत है--- के लिए
अल्लाह ताकत से भरा है, पराक्रम में ऊंचा है - - - "। दरअसल लोहा प्रकृति का हिस्सा है। अल्लाह अवश्य
जल्दी उठ गए हैं, क्योंकि यदि नहीं तो पृथ्वी को के केंद्र के रूप में बनाना संभव नहीं होगा
पृथ्वी मुख्य रूप से लोहा है - 4,6 अरब वर्ष पुरानी। इसके अलावा कुछ पहाड़ जहाँ आपको लोहा मिलता है
दसियों और सैकड़ों मिलियन वर्ष पुराने हैं। प्रमाण?

0at 64/3: "उसने (अल्लाह*) ने आकाश (बहुवचन और गलत*) और पृथ्वी को समान अनुपात में बनाया है।
या उसने सिर्फ इतना ही कहा कि प्रकृति ने जो बनाया है, क्या वह सही अनुपात में है?

**061 67/3: "वह (अल्लाह*) जिसने सात आकाशों को एक के ऊपर एक - - - में बनाया
अल्लाह की रचना"। यह कुरान में सबसे अधिक रुग्ण गलतियों में से एक है - और याद रखें कि
उस पुस्तक के अनुसार, आकाश को किसी सामग्री से बनाया जाना था (यदि तारे नहीं तो .)
सबसे निचले स्वर्ग में तय नहीं किया जा सकता)। प्रकृति ने इसे और अधिक सही पाया है - हो सकता है
प्रकृति थी जिसने इसे बनाया, अल्लाह नहीं (या मुहम्मद?) अतिरिक्त उपाय के लिए, ६७/१४ पढ़ें: "चाहिए
वह नहीं जानता - वह जिसने बनाया? - - - और अच्छी तरह से परिचित है (हर चीज के साथ *)।" कहने के लिए
कम से कम: अनपेक्षित विडंबना। और अधिक गलत होना शायद ही संभव हो।

0au 70/39: "क्योंकि हम (अल्लाह) ने उन्हें (अविश्वासियों*) को (मूल पदार्थ) से पैदा किया है।
वे जानते हैं!" यह विधि संख्या है। 13 अल्लाह ने इंसान को पैदा किया है - और इस बार सिर्फ
अविश्वासी - - - और वे सभी विज्ञान के अनुसार गलत हैं। लेकिन शायद यही वजह है
क्यों कुछ मुसलमान - कुछ मुस्लिम पादरी भी शामिल हैं और नेताओं ने गैर-मुसलमानों को गंभीरता से लिया
जानवरों और मुसलमानों (= इंसानों) के बीच कहीं अमानवीय होना। (लेकिन कोई डॉक्टर या
वैज्ञानिक ने कभी भी एक मुस्लिम के अंदर इस्लाम के कारण एक समान गैर की तुलना में अंतर पाया।
मुस्लिम - प्रकृति मुसलमानों और गैर-मुसलमानों के अंदर शारीरिक रूप से समान है)।

0av 73/20: "अल्लाह रात और दिन को उचित उपायों से नियत करता है।" यह किसी के द्वारा निर्देशित है
जो सुदूर दक्षिण और सुदूर उत्तर के बारे में कुछ नहीं जानता था - तथ्य और वास्तविकता और प्रकृति है
अधिकांश प्राणियों के लिए उचित उपाय क्या होंगे - इसमें मनुष्य भी शामिल है - समय-समय पर।
लेकिन मुहम्मद को यह नहीं पता था। कोई भगवान जानता था।

+062 78/6: "क्या हमने (अल्लाह*) ने पृथ्वी को एक विस्तृत विस्तार के रूप में नहीं बनाया है।" कुरान किया गया है
पहले भी ऐसा ही कहते हुए - अल्लाह ने (सपाट) धरती बनाई। लेकिन यहाँ इसका प्रयोग प्रमाण के रूप में किया जाता है - - - बिना
कभी भी साबित किया गया है - कभी भी ढीले पर बने बयानों से ज्यादा नहीं रहा
शब्दों। बस प्रकृति से लिया गया और वह कई बार। कुरान ने अल्लाह को श्रेय देने की कोशिश की,
लेकिन केवल शब्द - किसी भी पुजारी या "भविष्यद्वक्ता" किसी भी भगवान के लिए शब्द सस्ते में उपयोग कर सकते हैं / कर सकते हैं और
अपने देवता या देवताओं के प्रमाण के रूप में मूल्य के लिए उतना ही खाली। इसका अधिक उल्लेख करने के लिए: धोखा देती है,
धोखेबाज और धोखेबाज अक्सर इस तरह के हथकंडे अपनाते हैं।

+063 78/7: "(क्या अल्लाह ने * पहाड़ों को खूंटे के रूप में नहीं बनाया है)?" एक और अप्रमाणित कथन
अल्लाह के लिए अमान्य प्रमाण के रूप में उपयोग किया जाता है। क्या वाकई अल्लाह ने पहाड़ बनाए हैं? 78/6 देखें। इसके आलावा:
कोई नहीं जानता कि पहाड़ों और पर्वत श्रृंखलाओं की "जड़ें" कैसी दिखती हैं, बात करेंगे
खूंटे के बारे में।

+064 78/8: "और (क्या हमने (अल्लाह*)) आपको जोड़े में नहीं बनाया है? अप्रमाणित कथन के रूप में प्रयोग किया जाता है
अमान्य प्रमाण - यह कभी सिद्ध नहीं होता कि अल्लाह ने मनुष्य को बनाया है। 78/6 देखें।

+065 78/9: "(और अल्लाह नहीं*) ने आपकी नींद को आराम के लिए बनाया - - -"। अप्रमाणित कथन के रूप में प्रयोग किया जाता है
अमान्य प्रमाण। क्या सच में अल्लाह ने नींद का आविष्कार किया था? 78/6 देखें।

+066 78/10: "(और अल्लाह ने नहीं*) रात को एक आवरण के रूप में बनाया - - -"। क्या अल्लाह ने ईजाद किया?
रात? - अप्रमाणित कथन को प्रमाण के रूप में प्रयोग किया जाता है। 78/6 देखें। और प्रकाश की कमी है - कुछ भी नहीं - a
ढकना?

+067 78/11: "(और क्या अल्लाह* ने दिन को जीवन निर्वाह का साधन नहीं बनाया है?") क्या अल्लाह ने सच में
दिन का आविष्कार - या यह सूर्य के चमकने और पृथ्वी के घूमने का उपोत्पाद है? और था
यह वास्तव में निर्वाह के लिए था, या वह भी, सूर्य की चमक का उपोत्पाद था? दो
सबूत के रूप में इस्तेमाल किए गए बयान - दोनों अप्रमाणित और दोनों संदिग्ध। और दोनों प्रमाण के रूप में लंबे समय तक अमान्य हैं
क्योंकि यह प्रमाणित नहीं है कि अल्लाह ने इसे बनाया है। 78/6 भी देखें।

+068 78/12: "और क्या हमने (अल्लाह*) ने तुम्हारे ऊपर सात फ़र्म नहीं बनाए - - -"। एक
संदिग्ध कथन (अल्लाह द्वारा निर्मित) और एक गलत कथन (7 फ़र्म), सबूत के रूप में उपयोग किया जाता है।
पूरी तरह से अमान्य। 78/6 भी देखें। कोई भी ईश्वर अमान्य प्रमाण का उपयोग नहीं करता है - गलत प्रमाणों का उल्लेख नहीं करता है। कौन
कुरान की रचना की?

+069 78/13: "और (अल्लाह नहीं*) ने (उसमें) वैभव का प्रकाश (सूर्य*) रखा - - -"। एक
बिना सबूत के अधिक ढीला और संदिग्ध बयान (क्या अल्लाह ने सूरज बनाया?), सबूत के रूप में इस्तेमाल किया।
पूरी तरह से बिना मूल्य के - और एक प्रकार का प्रमाण जिसका कोई भगवान उपयोग नहीं करेगा। 78/6 भी देखें।

948

पेज 949

+०७० ७८/१४: "और क्या हम (अल्लाह*) बादलों से पानी बहुतायत में नहीं उतारते - - -"।
प्रमाण के रूप में अमान्य, क्योंकि यह साबित नहीं होता है कि अल्लाह का बारिश से कोई लेना-देना है। यह सभी देखें
७८/6.

०७१ ७८/१५: "(और*) कि हम (अल्लाह*) उससे (बारिश) मक्का और सब्जियां पैदा करें - - -
" साथ ही यह प्रमाण अमान्य है क्योंकि यह ढीली धारणाओं पर आधारित है, सिद्ध तथ्यों पर नहीं - यह है
कहीं भी साबित नहीं हुआ कि किसी भी चीज़ के बढ़ने से अल्लाह का कोई लेना-देना है। 78/6 भी देखें।

+072 78/16: "और (क्या अल्लाह नहीं पैदा करता) शानदार विकास के बगीचे?" 78/15 और 78/6 देखें।

0aw 86/6+7: "वह (मनुष्य) उत्सर्जित एक बूंद (वीर्य*) से बना है - से आगे बढ़ना
रीढ़ और पसलियों के बीच "। मामूली बात यह है कि यह साबित नहीं होता है कि यह है
प्रकृति या अल्लाह जो बच्चे पैदा करता है। बदतर: आदमी वीर्य से नहीं, बल्कि 2 अलग-अलग से बना है
कोशिकाएं। इससे भी बदतर: कुरान नहीं जानता कि वीर्य कहाँ से उत्पन्न होता है। मुहम्मद
हो सकता है कि उसने माना हो कि यह पेट के ऊपरी हिस्से से आया है - गलत "ज्ञान" उसे मिला
पुराने ग्रीक विज्ञान से - लेकिन कोई भी - यहां तक कि आधा भगवान - बेहतर जानता था। क्या यह इसका प्रमाण है
अल्लाह शामिल नहीं है, क्योंकि वह नहीं जानता कि वह किस बारे में बात कर रहा है? झांसा देने का खतरा

हमेशा खोजा जाना है। और यह कोई विश्वसनीयता नहीं छोड़ता है। (यह f. उदा। विश्वास करना संभव नहीं है
कि एक सर्वज्ञ भगवान ने इतनी सारी गलतियों के साथ एक किताब बनाई है और अमान्य - सीधे भी
गलत - "संकेत" और "प्रमाण"।)

0ax 95/4: "हमने (अल्लाह*) ने वास्तव में मनुष्य को सबसे अच्छे साँचे में बनाया है"। खैर, यह सबसे अच्छा था
प्रकृति प्रबंधन कर सकती है। लेकिन कोई भी सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर बहुत बेहतर कर सकता था: लांगर
उम्र की समस्याओं से पहले जीवन, बीमारियों के खिलाफ मजबूत प्रतिरोध, शरीर पहनने के खिलाफ मजबूत
और आंसू, बेहतर दृष्टि, अंधेरे में बेहतर दृष्टि - कम खतरा - बेहतर दिमाग, और भी बहुत कुछ
चीज़ें। क्या हमारा दयनीय शरीर और मस्तिष्क इस बात का प्रमाण है कि यह प्रकृति द्वारा बनाया गया है, न कि किसी
दयालु भगवान?

0ay 96/2: "(अल्लाह) ने जमाए हुए रक्त के एक (मात्र) थक्के से मनुष्य को बनाया - - -"। कुरान
उनका मानना है कि वीर्य एक प्रकार का बीज है जो एक महिला में "लगाए" जाने पर बढ़ना शुरू हो सकता है। यह
खून का थक्का बन जाता है, फिर एक छोटी सी चीज, फिर एक भ्रूण और फिर धीरे-धीरे एक बच्चा।
मुहम्मद जैसे सूक्ष्मदर्शी के बिना एक व्यक्ति के लिए, यह सबसे अच्छा स्पष्टीकरण हो सकता है। परंतु
प्रकृति बेहतर जानती थी - और एक सर्वज्ञ ईश्वर बेहतर जानता था। क्या यह उन बच्चों के लिए सबूत है
प्रकृति द्वारा बनाए गए हैं, किसी ऐसे सर्वज्ञ द्वारा नहीं जो यह नहीं जानता कि वह क्या कह रहा है
के बारे में?

इसके अलावा कुरान के रचयिता के रूप में यह किसकी ओर इशारा करता है?

000 114/3: "मानव जाति के भगवान (या न्यायाधीश) - - -"। एक बयान जो किसी भी तरह से साबित नहीं हुआ है। में
यह अध्याय बल्कि अस्वीकृत है - विशेष रूप से अमान्य ढीले शब्दों का उपयोग, अमान्य ढीला
दावे और बयान, अमान्य और गलत "संकेत" और "सबूत" किसी की ओर इशारा नहीं करते हैं
सर्वज्ञ भगवान।

लेकिन शायद एक आदमी के प्रति - - - या यहाँ तक कि भेष में एक शैतान की ओर, न चाहते हुए भी कि मनुष्य
सही धर्म खोजें - यदि ऐसा कोई मौजूद है।

प्राकृतिक घटना के 123 मामलों को अमान्य "सबूत" के रूप में इस्तेमाल किया गया। और आपको और मिल सकता है। (याद रखें कि कुरान में "चिह्न" प्रमाण को इंगित करता है)।

अध्याय VII/5 के लिए पोस्ट स्क्रिप्चर।

949

पेज 950

अध्याय II/1/3 और IV/2 और कुछ अन्य में यह आवश्यक था कि की विशालता को दिखाया जाए
समस्याओं पर चर्चा की। फिर हमने लगभग सभी प्रासंगिक छंदों को शामिल किया जो हमें मिला।

इस अध्याय में यह दिखाना अधिक आवश्यक था कि समस्या कितनी व्यापक है - और हमने छोड़ दिया है a
एक ही कथन की बहुत सारी पुनरावृत्ति। इस वजह से अगर आप कुरान पढ़ेंगे तो पाएंगे
बहुत सारे और बहुत सारे छंदों को हमने छोड़ दिया है। यह ज्यादातर इसलिए है क्योंकि इस मामले में हमें कोई दिखाई नहीं देता
एक ही तर्क पर बार-बार चर्चा करने का कारण - हालाँकि हमने ऐसा कुछ हद तक किया है
डिग्री। कुरान में कुछ कमजोरियां हैं जिन्हें साहित्य के रूप में गिना जाता है - एक तथ्य कुछ मुस्लिम और नहीं
मुस्लिम पादरियों के सदस्य कभी भी महिमामंडित पुस्तक के बारे में स्वीकार करेंगे। उनमें से एक यह है कि यह
दोहरा रहा है और दोहरा रहा है और दोहरा रहा है - पुस्तक में कुछ कहानियां दोहराई गई हैं
कम से कम १० - २० बार, और वह १००% शाब्दिक अर्थ है, एक ऐसा तथ्य जो पुस्तक को बहुत उबाऊ बनाता है
कभी-कभी पढ़ें - और इससे भी अधिक क्योंकि अधिकांश कहानियों में केवल दो में से एक छोर होता है: या तो
"पीड़ित" मुसलमान है या बन जाता है और जीत जाता है, या वह मुसलमान नहीं बनता और नर्क में जाता है
- जैसा कि हमने कहा दिलचस्प या उच्च गुणवत्ता वाला साहित्य नहीं। और इस सब के परिणामों में से एक
दोहराव यह है कि वही बयान - हमेशा सबूत या दस्तावेज के बिना - दोहराया जाता है
और दोहराया। इस वजह से आपको बहुत सारे ढीले बयान मिलेंगे और अमान्य "संकेत" के रूप में नहीं
इस सूची में शामिल है, विशेष रूप से पुस्तक के उत्तरार्ध में

हालांकि, हम मानते हैं कि हमने सभी अलग-अलग बयानों को (लगभग?) पाया है। अगर हमारे पास है
किसी की अनदेखी की, कृपया हमें सूचित करें।

इस अध्याय से कुछ निष्कर्ष निकालने के लिए:

1. बहुत सारे स्वाभाविक रूप से होने वाले तथ्य हैं और
   चीजें और अवसर जहां कुरान दावा करता है
   कि अल्लाह बनाता है या करता है या पहल करता है और

फलस्वरूप उसके लिए सारा श्रेय मांगता है।

2. इनमें से एक भी दावा सिद्ध नहीं होता है। नहीं
एक। अपवाद के बिना वे सभी दावे हैं या
कुछ भी नहीं पर बने बयान, या दूसरे पर निर्मित
बयान जो साबित नहीं होते हैं। पूरी तरह से
तर्क के रूप में मूल्य के बिना, के रूप में उल्लेख नहीं करने के लिए
अल्लाह के लिए "चिह्न" या "प्रमाण"।
3. कई कथन प्रत्यक्ष रूप से भी हैं
गलत। नए विज्ञान ने कुरान की सिद्ध कर दी है
कुछ बिंदुओं पर गलत बयान, बस।
४. कोई सर्वज्ञ ईश्वर कभी गलत प्रयोग नहीं करेगा
तथ्य या अमान्य संकेत या सबूत - यदि नहीं तो
दूसरा कारण: उसे पता होगा कि एक बार आदमी
खोजी गई गलतियाँ या झूठे संकेत या प्रमाण,
यह उसकी विश्वसनीयता को नष्ट कर देगा। (इसके अलावा
भगवान के लिए साबित करने का एक आसान तरीका था
खुद उन चीजों का उल्लेख करने के लिए जिन्हें कोई नहीं जानता था
उस समय अरब - बाद के समय में तब था
अचूक सबूत मिले। असल में कुछ
धर्म, जिसमें इस्लाम भी शामिल है, कमोबेश हैं
इस तरह के सबूत खोजने की सख्त कोशिश कर रहा है, लेकिन जैसे
उन्होंने अब तक जो पाया है वह बस हैं
ढोंग बयान, केवल भोली और
"विश्वास करना चाहते हैं" लोग उन पर विश्वास करते हैं

950

पेज ९५१

बयान। लेकिन आप उनसे बार-बार मिलते हैं
- तथ्यों के चेरी पिकिंग के साथ, एक इच्छाधारी मोड़
तथ्य और तर्क दोनों पर + बहुत कुछ
इच्छाधारी सोच वे आपको प्रस्तुत करते हैं
"सबूत" या "संकेत"। उन पर विश्वास करें यदि आप
मांगना। लेकिन उनसे असली सबूत मांगो और देखो
क्या होता है।)
5. कोई भी कथन उन बातों से संबंधित नहीं है जो
उस समय मध्य पूर्व में नहीं जाना जाता था
मुहम्मद - एफ। भूतपूर्व। इनमें से कोई नहीं हैं
पालतू जानवर जिन्हें अरब में नहीं जाना जाता है
उल्लिखित। वही अंतर के लिए जाता है
उष्ण कटिबंध में दिन और रात के बीच और
आर्कटिक - भले ही दिन के परिवर्तन और
रात का उल्लेख कम से कम 20 बार किया गया है। इस
सिर्फ एक भगवान के लिए दो आसान प्रमाणों का उल्लेख करने के लिए।
एक और संकेत स्पष्ट होगा
बाइबिल में मुहम्मद का उल्लेख or
एक और किताब - कोई नहीं है।
6. कोई भी वैज्ञानिक तथ्य या आविष्कार नहीं
६३२ ईस्वी के बाद की खोज का उल्लेख है
कुरान - एफ। भूतपूर्व। कि एक जहाज या एक वैगन कर सकता है
एक मशीन, या चिकित्सा तथ्यों द्वारा चलाया जा सकता है कि
पुराने लोगों की मदद कर सकते हैं। के लिए आसान सबूत
एक भगवान अगर उसने इसे कुरान में बताया था।
7. गलतियाँ किसके अनुसार होती हैं
मध्य पूर्व में विश्वास करने वाले विद्वान लोग
मुहम्मद के समय।
8. ढीले दावों का उपयोग और ढीले के रूप में
बयान, अमान्य या गलत या गलत (f. उदा।
सवालों से बचने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली कुछ तेज बातें
अल्लाह के प्रमाण के लिए, तो स्पष्ट रूप से आधारित है
गलत मनोविज्ञान, कि एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में
- और एक आदमी लोगों को इतनी अच्छी तरह से समझता है - जैसे
मुहम्मद, को पता था कि यह झूठा था)
"संकेत", और अमान्य या गलत या गलत

"सबूत" धोखे की पहचान है,
धोखेबाज, धोखेबाज और उस तरह के व्यक्ति।

9. मुहम्मद बुद्धिमान और समझदार थे
लोग - वह जानता था कि उसने कुछ बातें बताईं
सच नहीं थे। (एफ। उदा। वह चमत्कार नहीं होगा
अधिक लोगों को विश्वास दिलाएं)।

अंतिम निष्कर्ष:

1. ए. यह संभव नहीं है कि कुरान द्वारा बनाया गया है
एक सर्वज्ञ भगवान - ऐसा कोई भगवान नहीं बनायेगा
इतनी सारी गलतियाँ और अंतर्विरोध या आवश्यकता
इतने सारे निरस्तीकरण, उपयोग करने का उल्लेख नहीं करना
बयान, "संकेत" या "सबूत" बिना मूल्य के

९५१

पेज ९५२

या गलत भी। कुरान बस यही साबित करता है
100%। अल्लाह कोशिश कर रहा एक मामूली युद्ध भगवान हो सकता है
सत्ता हथियाने के लिए। या वह एक शैतान हो सकता है
लोगों को दूसरे को खोजने के लिए नहीं चाहते भेस
धर्म (मुहम्मद की उड़ान के बाद सूरह)
मदीना को ६२२ ई. में इसका संकेत हो सकता है, लेकिन
वैसे ही यह असंभव है - यहां तक कि एक शैतान भी होगा
उन सभी गलतियों को न करें या इस तरह का प्रयोग न करें
अमान्य तर्कों की संख्या, उल्लेख नहीं करने के लिए
अमान्य या गलत "सबूत", आदि)। या हो सकता है
एक या एक से अधिक मनुष्यों द्वारा निर्मित।

2. बी कुछ बिंदु दृढ़ता से इंगित करते हैं कि
कुरान की रचना किसी इंसान ने की थी
के समय में मध्य पूर्व में रह रहे हैं
मुहम्मद.

3. सी. कोई भी बनाना बहुत खतरनाक है
#8 से निष्कर्ष। इस्लाम के लिए यह बेहतर है
विश्वास करें कि सब कुछ ठीक है, नियंत्रित करने की तुलना में अगर
कुछ गड़बड़ है। की धुन के लिए बेहतर
वास्तविक तथ्य बताते हुए व्यक्तियों की हत्या करना और
प्रासंगिक प्रश्न पूछना। और मुहम्मद
जानता था कि वह कम से कम कभी-कभी झूठ बोल रहा था।

4. D. लेकिन क्या होगा अगर इस्लाम गलत है और दूसरा
धर्म सही है - और किसी मुसलमान को अनुमति नहीं है
पता लगाने के लिए? खैर, मुसलमानों के लिए क्या है अगर
एक अगला जीवन है?

11.4.09

भाग VII, अध्याय 5 (= VII-5-0-0)

तथ्य बनाम. दावे, कथन, (अमान्य) "संकेत", (अमान्य) "सबूत", आदि। कुरान में: कुरान और अल्लाह कुरान, मुहम्मद, इस्लाम और अल्लाह के अनुसार

अन्य "संकेत" और "सबूत" - नोट उनमें से एक तार्किक रूप से मान्य है अल्लाह के लिए एक सबूत, उनके लिए मुहम्मद की शिक्षाएँ, या फ़ोर

(एक संभावित अपवाद: कुछ सबूत बाइबल से उद्धृत किए गए हैं, लेकिन वे मामले में हैं इस्लाम
यहोवा।)

९५२

पेज ९५३

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

अध्याय VIII/5 में कई स्थानों को उद्धृत किया गया है - हालांकि सभी से बहुत दूर - जहां
कुरान/मुहम्मद ने प्राकृतिक घटनाओं को लिया है और उन्हें अल्लाह के लिए "सबूत" के रूप में इस्तेमाल किया है - - -
एक बार भी यह साबित करने के लिए कि उन घटनाओं के पीछे अल्लाह का हाथ था। शब्द बहुत हैं
सस्ता है, और किसी भी धर्म का कोई भी पुजारी अपने भगवान या देवताओं के बारे में ऐसा ही कह सकता है - हाँ, किसी ने ऐसा नहीं किया है
यहां तक कि एक पुजारी बनना पड़ा, जैसा कि कोई भी पुरुष और महिला ऐसा ही कह सकते हैं। शब्द इतने सस्ते हैं और
आसान। यह भी याद रखें कि कुरान में "साइन" अक्सर "प्रूफ" का पर्याय है। मुहम्मद
कई बार सबूत भी मांगे गए, लेकिन उनके पास केवल कुछ तेज-तर्रार बातें और अप्रमाणित बयान थे +
कुछ शेखी बघारने (?) के बारे में कि अल्लाह क्या कर सकता है "अगर वह चाहता है", पेशकश करने के लिए - थोड़ी सी भी समझदारी नहीं
कोई प्रमाण।

अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अकादमी (ऐसे विषयों पर मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक) a . में
पत्र दिनांक २७. दिसम्बर १९९८, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं,
और यह कि उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि इसके लिए कोई प्रमाण नहीं है
अल्लाह और उसे साबित करना असंभव है, स्वचालित रूप से इसका कोई सबूत नहीं है, और असंभव है
अल्लाह से मुहम्मद के कथित संबंध को साबित करें। अगर कोई अल्लाह और/या कोई संबंध नहीं है
मुहम्मद और एक ईश्वर के बीच, फिर इस्लाम क्या है?

मुसलमान कहेंगे कि कुरान खुद को साबित करता है, क्योंकि यह एक सर्वज्ञ भगवान द्वारा भेजा गया है। लेकिन एक
सर्वज्ञ भगवान बहुत सारी गलतियाँ और अमान्य "संकेत" आदि नहीं भेजता है। केवल एक चीज
कुरान साबित करता है कि यह किसी सर्वज्ञ द्वारा नहीं बनाया गया है। एक सर्वज्ञ भगवान बस
उस तरह की और उस तरह की गलतियाँ नहीं करता है। न ही वह अमान्य "संकेतों" का उपयोग करता है
न ही "सबूत" - विशेष रूप से किसी भी सर्वज्ञ भगवान के रूप में मनुष्य को जल्द या बाद में जानना नहीं था
धोखे की खोज करें, और उस पर और उसकी पुस्तक में विश्वास खो दें।

हम यह भी नहीं समझ पा रहे हैं कि एक सर्वज्ञ भगवान को अपना धर्म इतनी जल्दी क्यों बदलना पड़ा
और बहुत कुछ - और क्रूर - 622 ईस्वी में और उसके बाद। क्या उनकी पहले की खूनी शिक्षा नहीं थी कि
गलत?

और अगर कोई छोटा देवता है - या एक आदमी - सत्ता के लिए खुद को धमकाने की कोशिश कर रहा है, तो उसके पीछे
कुरान, और वास्तव में वह नहीं जो सब कुछ जानता था, सर्वज्ञता और शक्ति के प्रमाण हैं
अत्यंत जरुरी। "मजबूत दावे मजबूत सबूत मांगते हैं।" लेकिन चूंकि इसके लिए कोई सबूत नहीं हैं
दावे, वे सभी दावे प्रमाण के रूप में अमान्य हैं।

लेकिन "संकेत" के लिए और भी दावे हैं (ज्यादातर कुरान में "सबूत" के समानार्थी) और
"सबूत" - प्रकृति के दावों पर आधारित नहीं। वास्तव में इतने सारे कि हम उनमें से कुछ को ही चुनते हैं
उन्हें।

00a 2/39: "वे (गैर-मुस्लिम*) जो - - - हमारे (अल्लाह के *) संकेतों - - - को झुठलाते हैं। करने के लिए संदर्भ
अनिर्दिष्ट और अप्रमाणित संकेत। तर्क के सभी नियमों के अनुसार अप्रमाणित संकेत, सिद्ध करते हैं
कुछ नहीं। कुरान में ऐसे बहुत से हैं - हम उनमें से कुछ को ही उद्धृत करते हैं।

००बी २/४१: "- - - मेरी (अल्लाह की) निशानियाँ - - - बेचो। ऊपर 2/39 देखें।

00c* 2/87: "हमने (भगवान*) ने यीशु को - - - स्पष्ट (संकेत) - - -" दिया। हाँ, अगर बाइबल बोलती है
सच, यीशु के पास स्पष्ट संकेत थे। लेकिन यहूदी यीशु यहूदी (और ईसाई) के बारे में बोल रहे थे

पेज 954

भगवान यहोवा। अब मुसलमान यह बताना पसंद करते हैं कि अल्लाह और यहोवा एक ही ईश्वर हैं, लेकिन ऐसा नहीं है
तब तक संभव है जब तक कि वह ईश्वर मानसिक रूप से बीमार न हो। यहोवा के बीच इतना बड़ा अंतर है, विशेष रूप से
जैसा कि हम एनटी में उनसे मिलते हैं (ऐसी शिक्षाएं जिन पर ईसाई धर्म आधारित है), और कठिन
और खूनी योद्धा भगवान हम विशेष रूप से मदीना से लगभग 22 सूरहों में मिलते हैं, कि यह नहीं है
संभव है यह वही हो सकता है - तब तक नहीं जब तक कि वह कम से कम गहराई से सिज़ोफ्रेनिक न हो।

00d 2/118: "हमने (अल्लाह*) ने उन लोगों के लिए जो दृढ़ता से पकड़े हुए हैं, निशानियाँ स्पष्ट कर दी हैं
विश्वास के लिए - - -"। कुरान में "संकेत" मिलना संभव है, इसके लिए एक भी प्रमाण नहीं है
अल्लाह - - - जब तक कि आप किसी भी बात और किसी भी बात पर विश्वास करने के लिए तैयार न हों। यहाँ की तरह
कुरान में कई अन्य स्थान अनिर्दिष्ट के बारे में सिर्फ एक और सिद्ध बयान नहीं है, नहीं
सिद्ध संकेत। आम तौर पर बहस करने के ऐसे तरीके धोखेबाजों और धोखेबाजों की पहचान होते हैं - और हम
आपको याद दिलाता है कि मुहम्मद किस तरह का आदमी था - हाईवेमैन, बलात्कारी, हत्यारा और
सरदार, अपने वचन को तोड़ने में विश्वास रखने वाले अगर इससे बेहतर परिणाम मिले (f। उदा। "युद्ध विश्वासघात है") आदि।
पहली बार एक अरब सेल्समैन होने के बाद (सेल्समैन की भी १००% होने की कोई प्रतिष्ठा नहीं है
ईमानदार - और किसी भी नाविक से अरब लोगों के बारे में पूछें। यहाँ इस्लाम निश्चित रूप से कहता है कि वह ईमानदार था -
और यह सच हो भी सकता है और नहीं भी)।

०१ २/१२९: "हमारे रब (अल्लाह*)! उनमें (मुसलमान/अरब) एक दूत भेजो
(मुहम्मद*) अपने स्वयं के जो तेरी आयतों का पूर्वाभ्यास करेंगे - - -"। यह लक्षण है कि
मुहम्मद कभी भी एक भी वास्तविक और निर्विवाद "चिह्न" उत्पन्न करने में सक्षम नहीं थे, यहां तक कि
हालांकि उनसे कई बार इसके लिए कहा गया था।

00e 2/151: "- - - आपको (मुसलमानों*) हमारे (अल्लाह/मुहम्मद के*) संकेतों का पूर्वाभ्यास करना - - -": काफी
शायद मुहम्मद ने किया था - लेकिन अगर वह कुरान में केवल उन्हीं का अभ्यास करता है, उनमें से एक भी नहीं
सच था या साबित हुआ है, (बाइबल से साबित होने वाले कुछ संकेतों के संभावित अपवाद के साथ
यहोवा)।

००एफ २/१५९: "जो लोग स्पष्ट (निशान) को छुपाते हैं, हमने (अल्लाह*) नीचे भेजा है - - -"। नहीं
खतरा - अल्लाह के लिए एक भी वैध या स्पष्ट संकेत / प्रमाण नीचे नहीं भेजा गया है (जब तक कि इसे छोड़ा न जाए
कुरान से)। लेकिन कुरान के लिए "संकेतों" के बारे में बात करना बहुत विशिष्ट है जैसा कि वे थे
सिद्ध तथ्य। (और साथ ही अक्सर मांग किए बिना अन्य देवताओं के बारे में कुछ भी स्वीकार नहीं करते हैं
सबूत)।

002 2/187: "इस प्रकार अल्लाह मनुष्यों के लिए अपनी निशानियाँ स्पष्ट करता है - - -"। एक भी सिद्ध संकेत नहीं
को संदर्भित किया जाता है - वास्तव में एक अप्रमाणित भी नहीं।

००३ २/२०९: "यदि आप (मुसलमान*) स्पष्ट (संकेत) आपके पास आने के बाद पीछे हटते हैं - - -"। अरे नहीं
स्पष्ट संकेतों के बाद पीछे हटना संभव है जो कभी नहीं पहुंचे - केवल एक चीज जो कभी पहुंची
मक्का या मदीना या अन्य स्थान, अप्रमाणित शब्द थे - और ऐसे शब्द जो कोई भी पुरुष, महिला
या पुजारी उत्पादन कर सकते हैं।

00g* 2/211: "इस्राएल के बच्चों से पूछो कि हमने (ईश्वर) ने उन्हें कितने स्पष्ट (चिह्न) भेजे हैं।"
हाँ, अगर बाइबल सच बोलती है - काफी संख्या में। लेकिन उस मामले में साबित होता है
यहूदी/ईसाई भगवान याहवे, अल्लाह नहीं - जैसा कि 2/87 में कहा गया है कि यह असंभव है कि दोनों हो सकते हैं
वही, भले ही मुसलमान ढोंग करना/कहना पसंद करते हों - बहुत बुनियादी अंतर। (एक छोटा सा
जिज्ञासा: कल मुस्लिम देश मलेशिया की राजधानी कुआलालंपुर में एक अखबार,
ईसाई भगवान के लिए अल्लाह नाम का उपयोग करने के लिए मना किया गया था। (ऐसा अक्सर किया गया है
इतिहास के माध्यम से) "अल्लाह मुस्लिम भगवान का नाम है, और इसके बारे में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है"
ईसाई एक, (यहोवा या आमतौर पर ईसाइयों द्वारा भगवान कहा जाता है)"। QED - अल्लाह नहीं है
इस इस्लामी देश के अनुसार यहोवा।)

पेज 955

004 2/219: "वे (मुसलमान*) आपसे (मुहम्मद*) पूछते हैं कि वे कितना खर्च कर सकते हैं (पर)
जुआ*); कहो: 'तुम्हारी ज़रूरतों से परे क्या है।' इस प्रकार अल्लाह आपको अपनी निशानियाँ स्पष्ट करता है -
- -।" एक बात यह स्पष्ट कर रही है कि संकेत हमारे लिए स्पष्ट से बहुत दूर हैं। बदतर: क्या

संकेत? कुरान में कहीं भी अल्लाह के बारे में कोई सिद्ध संकेत नहीं हैं।

(एक और जिज्ञासा: अल-अजहर अल-शरीफ द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक .)
ऐसे विषय) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं
अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। वास्तव में यह एक व्यापक तथ्य का हिस्सा है:
मनुष्य के लिए ईश्वर को सिद्ध करना संभव नहीं है। यह तो एक भगवान ही कर सकता है (कुछ करके)
अलौकिक)। और यह बहुत स्पष्ट है: न तो अल्लाह और न ही मुहम्मद ने एक भी सबूत पेश किया
अल्लाह के लिए, कई अनुरोधों के बावजूद। लेकिन यीशु ने दोनों कुरान के अनुसार प्रमाण दिए
और बाइबल - यदि उनमें से एक सच बोलता है)।

00h 2/231 "अल्लाह के संकेतों को एक मजाक के रूप में न मानें - - -"। एक बार फिर: ये सिर्फ अमान्य हैं या
काल्पनिक संकेतों को ठोस प्रमाण की तरह माना जाता है - वे सभी सभी और तर्क के किसी भी नियम द्वारा अमान्य हैं।
कुरान पढ़ने वाला कोई भी व्यक्ति बड़ी संख्या में उन्हें ढूंढ लेगा - उन्हें ढूंढना इतना आसान है, कि हम
उनमें से कई और शामिल न करें। कोई भी सर्वज्ञ ईश्वर अमान्य "चिह्न" या "प्रमाण" का उपयोग नहीं करेगा।

005 2/241-242: "तलाकशुदा महिलाओं के लिए (प्रावधान किया जाना चाहिए) उचित (पैमाने पर) पर।
यह धर्मी का कर्तव्य है। इस प्रकार अल्लाह आपको अपनी निशानियाँ स्पष्ट करता है - - - "हमें अवश्य
स्वीकार करते हैं कि हमें न तो कोई चिन्ह दिखाई देता है और न ही इसे कैसे स्पष्ट किया जाता है। कम से कम कोई सिद्ध संकेत नहीं है।

006* 2/252: यहूदियों (या इस्राएलियों) राजा शाऊल/तलुत और दाऊद ने युद्ध में पलिश्तियों को हराया
और गोलियत गिर गया - - - "ये सब अल्लाह की निशानियाँ हैं - - -"। अगर वे संकेत थे, तो वे संकेत थे
यहूदी भगवान यहोवा की। 2/87 देखें।

00i 3/19: "लेकिन अगर कोई अल्लाह के संकेतों से इनकार करता है, तो अल्लाह जवाब देने में तेज है।" वह कॉल कर सकता है
जब तक एक भी सिद्ध संकेत इनकार करने के लिए मौजूद नहीं है, तब तक कोई भी खाता नहीं है।

००७* ३/४९: "मैं (यीशु*) तुम्हारे पास आया हूँ, तुम्हारे भगवान (भगवान *) के रूप में एक चिन्ह के साथ, मैं
अपने लिए मिट्टी से, जैसा कि यह था, एक पक्षी की आकृति बनाओ, और यह अल्लाह के द्वारा एक पक्षी बन जाता है
छोड़"। (यह कहानी एपोक्रिफ़ल में से एक से "उधार" ली गई है (= धार्मिक परियों की कहानियों से बनी*)
तथाकथित "बाल सुसमाचार", इस मामले में तथाकथित मिस्र के एक, लेकिन इसका भी उल्लेख किया गया है
500 ईस्वी के आसपास सीरिया से तथाकथित अरब, और ग्नोस्टिक (निर्मित) थॉमस चाइल्ड में
सुसमाचार - यह बाइबल से नहीं है*), मैं अंधों और कोढ़ियों को चंगा करता हूँ, और मैं मरे हुओं को जिलाता हूँ
(कहानियां "बाइबल* से "उधार ली गई") - - - (कुछ और बाइबिल से नहीं*)। निश्चित रूप से इसमें एक है
यदि तुम ने विश्वास किया तो अपने लिए हस्ताक्षर करो।" यदि यह सिद्ध हो गया होता, तो यह एक संकेत होता। अब केवल वाले
बाइबल से "उधार लिया" शायद सच हो - लेकिन उस मामले में वे यहोवा के लिए प्रमाण हैं।

अल्लाह के लिए सबूत के रूप में सब कुछ पूरी तरह से अमान्य है, जब तक:

1. यह प्रमाणित नहीं है कि वास्तव में अल्लाह ने ऐसा किया - और
   परियों की कहानियों की कहानियों को ठोस प्रमाण की आवश्यकता होती है। या:
2. यह प्रमाणित नहीं है कि वास्तव में अल्लाह और यहोवा
   वही भगवान है - जिसे सिर्फ मुसलमान चाहते हैं
   विश्वास करते हैं, और जिसे उन्होंने कभी उत्पन्न नहीं किया है
   इसके अलावा - - - के लिए थोड़ा सा सबूत
   दो देवताओं (?) की इतनी अलग शिक्षाएँ हैं
   यह असंभव है कि वे एक ही भगवान हो सकते हैं

955

पेज 956

(मुसलमान इसे इस तरह समझाते हैं कि बाइबिल है
झूठा है, लेकिन इतिहास में कोई भी प्रोफेसर होगा
बाइबल के सच होने की अधिक संभावना है - और
ठोस कारणों से - कुरान की तुलना में (हालांकि
यहाँ तक कि बाइबल भी आंशिक रूप से बनाई जा सकती है।
विज्ञान ने साबित कर दिया है कि बाइबल नहीं है
झूठा - गलतियाँ हो सकती हैं, लेकिन नहीं
पुराने ग्रंथों की तुलना में मिथ्याकरण। और
इस्लाम ने न ढूंढ़कर इसे और भी साबित कर दिया है
1400 वर्षों में मिथ्याकरण के लिए कोई सबूत। अगर
उन्होंने एक पाया था, उन्होंने चिल्लाया था
इसके बारे में - और ऐसी कोई चीख नहीं हुई है।)

नोस्टिक और अन्य कहानियां, किस्से और "सुसमाचार" अर्ध-ईसाई या द्वारा बनाए गए थे
कभी-कभी अर्ध-यहूदी संप्रदाय अपने विशेष दृष्टिकोण से फिट होते हैं कि भगवान कैसा होना चाहिए। NS
संप्रदाय एक समय में काफी व्यापक थे। मुसलमान अक्सर इनका उपयोग करते हैं और अन्य निर्मित
उनके बयानों को "साबित" करने की कोशिश करने के लिए किस्से। यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि कोई कितनी बार मुसलमान से मिलता है
तथाकथित बरनबास इंजील के संदर्भ - - - शायद खलीफा मुस्लिम दरबार में बना है
बगदाद में (1400 सदी में?)

और यह एक अजीब (?) तथ्य है कि कुरान अक्सर बनी बातों से सहमत होता है
अपोक्रिफ़ल किताबों और कहानियों से उत्तर प्रदेश की कहानियां अच्छी तरह से जानी जाती हैं
अरब, मुहम्मद के समय के बजाय सच हो सकता है
बाईबल में, और इससे कम विशिष्ट नहीं है कि यह तब समझाता है कि
भिन्नताओं का कारण यह है कि बाइबल मिथ्या है।

00j 3/86: "अल्लाह उन लोगों का मार्गदर्शन कैसे करेगा जो ईमान को स्वीकार करने और गवाही देने के बाद उसे अस्वीकार करते हैं"
कि रसूल (मुहम्मद*) सच्चा था और उनके पास स्पष्ट निशानियाँ आ गई थीं?" कुंआ,
इस वाक्य के आधार पर अल्लाह के लिए किसी का मार्गदर्शन करना संभव नहीं है, क्योंकि मुहम्मद/
कुरान (विज्ञान द्वारा) गलतियों से भरा हुआ सिद्ध है, और एक भी तथाकथित संकेत सत्य साबित नहीं होता है
- बाइबिल से कुछ "उधार" के संभावित अपवाद के साथ, और वे मामले में साबित करते हैं
यहोवा/ईश्वर, अल्लाह नहीं।

008 3/106-108: बुरे लोग नर्क में जाएंगे, अच्छे मुसलमान जन्नत में जाएंगे, किताब कहती है
उसे - बिना किसी दस्तावेज के - और जारी रखता है: "ये अल्लाह की निशानियाँ हैं"। खैर, यह एक है
पतली हवा में लटका हुआ बयान - आमतौर पर कुरान के लिए; सिद्ध नहीं है और सिद्ध करना असंभव है।
इस पर विश्वास करें यदि आप आदिम और काफी भोले हैं - विशेष रूप से इस तथ्य के बारे में सोचते हुए कि सभी
और सब कुछ केवल कुछ हद तक "विशेष" सरदार, बलात्कारी और के शब्दों पर आधारित है
तानाशाह जिसे सत्ता पसंद थी - और सवाल पूछें कि क्या आप पूरी तरह से भोले नहीं हैं।

00k 3/118: "हमने (अल्लाह*) ने आपके लिए निशानियाँ - - - को स्पष्ट कर दिया है। गलत। केवल एक चीज
तथाकथित संकेतों के बारे में स्पष्ट किया गया है कि कम से कम वे जो बाइबल से "उधार" नहीं लेते हैं
बिना किसी अपवाद के, किसी भी पुजारी और किसी भी विश्वास करने वाले व्यक्ति के लिए सिर्फ बयानबाजी और घटिया शब्द हैं
या स्त्री किसी भी धर्म में किसी भी देवता के बारे में उपयोग कर सकती है - वास्तविक या काल्पनिक।

यह कुरान के बारे में और मुहम्मद के बारे में क्या बताता है कि ढीले और ढीले बयान?
दावों को तथ्य और सबूत होने का दिखावा किया जाता है? आखिर उस तरह का तर्क उनमें से एक है
धोखेबाजों, धोखेबाजों और ठगों के लिए हॉलमार्क। तेज बात के लिए भी यही - आप यह भी पाते हैं कि
कुरान।

00l 4/56: "जो लोग हमारे (अल्लाह के) संकेतों को अस्वीकार करते हैं, हम जल्द ही आग में डाल देंगे - - -"। जैसा
जब तक कोई विश्वसनीय संकेत नहीं भेजा जाता, तब तक किसी को नर्क में डालने का कोई बहाना नहीं है।

००९ ५/११४: (यीशु ने कहा*): "हे हमारे भगवान अल्लाह! हमें स्वर्ग से एक मेज भेजें - - - के लिए - - - a
गंभीर त्योहार और आपकी ओर से एक संकेत - - -"। यह बाइबिल की कहानी नहीं है। और अगर यह था
सच है, आप 100% सुनिश्चित हो सकते हैं कि यह वहां था, क्योंकि यह एक और ठोस सबूत होगा
कुछ अलौकिक से यीशु का संबंध। मुसलमान किसी भी विसंगति को दूर करते हैं
कुरान और बाइबिल के बीच (इस्लाम के लिए सामान्य रूप से अप्रमाणित) कथन के साथ कि
बाइबिल मिथ्या है। लेकिन अगर कोई ईसाई बाइबल के कुछ हिस्सों को मिथ्या बनाना चाहता था, तो वह होता
यीशु को मजबूत करने के लिए किया गया था, उसे कमजोर करने के लिए नहीं। इस तरह के एक आश्चर्य ने उनके सम्मान को मजबूत किया था a
बहुत कुछ, और इसे कभी भी छोड़ा नहीं गया था अगर यह सच था - बाइबल का मिथ्याकरण या नहीं। विज्ञान
का मानना है कि कहानी एक मुड़ी हुई याद से प्रेरित है (मुहम्मद को बाइबिल नहीं पता था
ठीक है, और विशेष रूप से NT नहीं) यीशु के अंतिम ईस्टर भोजन का। इसके अलावा यीशु के पास था
वर्षों पहले मार दिया गया था यदि वह ज्ञात विदेशी बहुदेववादी भगवान अल- के बारे में प्रचार कर रहा था
लाह (मुहम्मद द्वारा नाम बदलकर अल्लाह कर दिया गया)।

एक "संकेत" एक बना हुआ - और निश्चित रूप से साबित नहीं हुआ - कहानी वास्तव में एक मूल्यवान और योग्य है
संकेत।

०१० ६/१९: "'कौन सी बात (अल्लाह के) सबूत में सबसे अधिक वजनदार है?' कहो: 'अल्लाह गवाह है'
मेरे (मोहम्मद*) और तुम्हारे (मुसलमान*) के बीच; इस कुरान को द्वारा प्रकट किया गया है
प्रेरणा - -"।

1. यह कहीं भी सिद्ध नहीं होता कि अल्लाह के पास कुछ था
   कुरान के साथ क्या करना - इसके विपरीत: सभी
   गलतियाँ आदि किताब में साबित करते हैं कि कोई भगवान नहीं
   शामिल था, कम से कम कोई सर्वज्ञ नहीं।
2. क्या इतनी सारी गलतियों वाली किताब ढीली हो सकती है?
   बयान और अमान्य "संकेत" और "सबूत"
   वास्तव में किसी भी चीज का सबूत हो? - के अलावा
   इस बात का सबूत है कि कुछ गलत है? और
   यह श्लोक ६/१९ बताता है कि यह सबसे भारी है
   अल्लाह के लिए सबूत!

०११ ६/९७: "वह (अल्लाह*) है जो तुम्हारे लिए सितारों (बीकन के रूप में) बनाता है, कि तुम मार्गदर्शन कर सकते हो
स्वयं, उनकी सहायता से, भूमि और समुद्र के अंधेरे स्थानों के माध्यम से: हम अपने संकेतों को विस्तार से बताते हैं
जो लोग जानते हैं"। खैर, इस बात का सबूत कहां है कि अल्लाह का इससे कोई लेना-देना नहीं है
सितारों का निर्माण बिल्कुल? कुरान भी खुले तौर पर साबित करता है कि अल्लाह/मुहम्मद ने नहीं किया है
तारे क्या हैं और वे कहाँ हैं (कुरान के अनुसार वे)
आग के बिंदु हैं जिनका उपयोग बुरी आत्माओं के खिलाफ हथियारों के लिए भी किया जा सकता है, जिन्हें बांधा जाता है
७ भौतिक आकाशों में से कोई नहीं सबसे कम - जिसका अर्थ है कि के खगोल विज्ञान के अनुसार
उस समय वे पृथ्वी और हमारे चंद्रमा के बीच कहीं स्थित होते हैं (जैसा कि चंद्रमा था
दूसरे स्वर्ग में बांधा गया, जो सबसे छोटा नहीं हो सकता))। कुछ "साइन" और कुछ विस्तृत
व्याख्या!

०१२ ६/१०४: "अब तुम्हारे पास (लोग/मुसलमान*), तुम्हारे पालनहार (अल्लाह*) की ओर से, प्रमाण - - -
" लेकिन किसी प्रमाण का उल्लेख नहीं है। बयान बस हवा में लटक रहा है। एक और ढीला
गैर-मौजूदा सबूतों को तथ्यों के रूप में मानते हुए बयान।

०१३ ७/३७: "उस से बढ़कर अन्यायी कौन होगा जो अल्लाह के विरुद्ध झूठ गढ़े या उसकी आयतों को ठुकरा दे?"
क्या होगा अगर किसी ने अल्लाह के बारे में झूठ का आविष्कार किया है और "चिन्ह" बनाया है? बहुत सारे हैं और
बहुत सारे शब्द, लेकिन कोई सबूत नहीं - बार-बार सबूत मांगने पर भी नहीं, मुहम्मद थे
एक एकल, छोटा एक उत्पन्न करने में सक्षम - केवल तेज बात और यहां तक कि कुछ गलतियां, संकेत और
वास्तविक मामले के बिना अविश्वसनीय किसी की पहचान।

०१४ १०/८२: "और अल्लाह अपने शब्दों के द्वारा अपने सत्य को सिद्ध और स्थापित करता है, चाहे वह कितना भी हो"
पापी इससे घृणा कर सकते हैं।" केवल पाँच सत्य हैं जो के कल्पित शब्दों से स्थापित होते हैं
अल्लाह - कुरान:

1. इसमें बहुत सारी गलतियाँ हैं
   किताब।
2. बहुत सारे और बहुत सारे अमान्य "संकेत" हैं और
   पुस्तक में "सबूत"।
3. बहुत सारे और बहुत सारे और बहुत सारे अमान्य हैं
   किताब में बयान।
4. इसमें बहुत सारे और बहुत सारे विरोधाभास हैं
   किताब।
5. इससे यह १००% या अधिक सिद्ध होता है
   कि कुरान एक सर्वज्ञ द्वारा नहीं बनाया गया है
   भगवान।

०१५ १८/९: "या क्या आप इस बात पर विचार करते हैं कि गुफा के साथी - - - के बीच चमत्कार थे
हमारी (अल्लाह की) निशानियाँ?" धार्मिक परी कथा - किंवदंती - इफिसुस में 7 स्लीपरों के बारे में
सम्राट डेसियस (252-254 ईस्वी) से भागकर 400 ईस्वी के आसपास उभरा, और में जाना जाता था
अरब (कुछ मुसलमान इसे डेड सी स्क्रॉल के क्षेत्र और समय में स्थानांतरित करने का प्रयास करते हैं)
परी कथा ऋण कम स्पष्ट है, लेकिन कहानी को पहचानना बहुत आसान है - इसके अलावा; एक काल्पनिक कहानी है
परियों की कहानी भले ही थोड़ी बड़ी हो जाए।) इसने धार्मिक कल्पित कहानी या किंवदंती बनाई
कुरान में एक तथ्य और एक वास्तविक आश्चर्य के रूप में और परिणामस्वरूप अल्लाह के लिए एक संकेत / प्रमाण के रूप में उपयोग किया जाता है।
लेकिन पहले कहानी को साबित करना पड़ता है - और एक परी कथा को एक मजबूत सबूत की जरूरत होती है - किसी भी मूल्य के लिए
किसी भी चीज का प्रमाण।

०१६ १८/१३: १८/१३ में वास्तविक विडंबना है: "हम (अल्लाह*) आपसे (श्रोताओं*) से संबंध रखते हैं, उनके (7 स्लीपर्स*) कहानी सच में - - -"। सच्चाई में? - एक परी की कहानी?

०१७ १८/१७: "तू ने सूर्य को उदय होते हुए देखा होगा, जो उनकी ओर से दाहिनी ओर गिर रहा होगा" (7 स्लीपर्स*) गुफा, और जब वह सेट हो, तो उनसे बाईं ओर मुड़कर, जबकि वे अंदर लेटे हुए थे गुफा के बीच में खुला स्थान। ये अल्लाह की निशानियों में से हैं---"। कुछ संकेत; हल्के ढंग से संशोधित परी कथा में सोते हुए पुरुषों को माना जाता है। (लेकिन कुरान में लगभग कोई कहानी नहीं है अरब में पहले से जाना जाता है - सभी पुरानी परियों की कहानियों, लोक कथाओं, दंतकथाओं, किंवदंतियों से लिए गए हैं, बाइबिल, टोरा और कुछ आगे पूर्व के देशों की कहानियों से, और फिर थोड़ा मुड़ गया कुरान में फिट होने के लिए। यह कोई अजीब बात नहीं थी कि संशयवादियों ने मुहम्मद और मुसलमानों से कहा कि वे न्याय करते हैं पुराने किस्से सुनाए।)

018 20/128: "क्या यह मनुष्यों के लिए चेतावनी नहीं है (ध्यान रखना) कि उनसे पहले की कितनी पीढ़ियाँ हैं" हम (अल्लाह*) ने नाश किया, किसके ठिकाने में वे (अब) चलते हैं? निस्संदेह इसमें पुरुषों के लिए निशानियाँ हैं समझ के साथ समाप्त हुआ "। यह एक विषय है मुहम्मद/कुरान अक्सर लौटते हैं: इन मध्य पूर्व में कस्बों और बस्तियों और घरों से बिखरे हुए खंडहर थे। मुहम्मद बताया कि वे सभी पहले के "अविश्वासियों" के अवशेष थे जिन्हें अल्लाह ने न के लिए दंडित किया था उनके कथित भविष्यवक्ताओं पर विश्वास करना। हमेशा की तरह बिना किसी सबूत के सभी जगहों के लिए एक साथ रखा गया।

958

पेज 959

(पाकिस्तान में इस साल मुसलमानों ने पुराने खंडहरों पर इस तरह की तख्तियां लगाने का प्रस्ताव रखा था- "काफिरों" के भाग्य के बारे में सबूत और चेतावनी। यह वास्तव में उनके बारे में कुछ बताता है मुसलमानों और शिक्षा के स्तर के बारे में आज भी - २००७ ई 2007 ई. संस्करण). फिर भोले, आदिम और शून्य शिक्षित गरीब लोगों का क्या 610-632 एडी? - क्या वे आसानी से "प्रभावित" थे?)

उनकी व्याख्या पर विश्वास करना और भी कठिन है, क्योंकि कोई भी प्रोफेसर और यहां तक कि छात्र भी पुरातत्व शुष्क क्षेत्रों में और विशेष रूप से शुष्क क्षेत्रों में खंडहरों के लिए कई अन्य स्पष्टीकरण दे सकता है ऐसे क्षेत्र जहाँ निवासी सभी समय-समय पर अन्य सभी के विरुद्ध युद्ध कर रहे थे।

वास्तविक प्रमाण के बिना बिल्कुल वैध संकेत नहीं है।

019* 21/91: "- - - और हम (भगवान*) ने उसे (मैरी के*) बेटे (यीशु*) को सभी लोगों के लिए एक निशानी बना दिया।" बहुत सही - लेकिन यहोवा/ईश्वर के लिए एक संकेत, अल्लाह के लिए नहीं - तब तक नहीं जब तक कि इस्लाम साबित न करे कि अल्लाह ही है यहोवा/ईश्वर के समान ईश्वर। और दो धर्म और दो देवता - विशेष रूप से युद्ध देवता मदीना से सुरा से अल्लाह एनटी से उदार भगवान की तुलना में - भी हैं यह संभव होने के लिए अलग है - तब तक नहीं जब तक कि ईश्वर मानसिक रूप से गंभीर रूप से बीमार न हो।

निश्चित रूप से अल्लाह के लिए सबूत नहीं है। यहोवा/परमेश्वर के लिए एक प्रमाण हो सकता है।

020 26/97-103: गैर-मुसलमानों का नर्क में अंत और कोई उनकी मदद नहीं कर सकता। "वास्तव में, इसमें एक निशानी है - - -"। हाँ, लेकिन केवल अगर यह सच है, न केवल भोले और/या आदिम को डराने के लिए बनाए गए शब्द लोग एक निश्चित धर्म को स्वीकार करते हैं। इस्लाम पेश करता है एक भी सबूत नहीं, सिर्फ सस्ते शब्द कोई भी इस्तेमाल कर सकता है। हम कैसे सीख सकते हैं अगर अल्लाह का वास्तव में इससे कुछ लेना-देना है? इस्लाम वास्तव में इसे साबित करने के लिए एक काम है। यह विशेष रूप से क्योंकि वे कभी भी चीजों को साबित करने की जहमत नहीं उठाते - बयान कहीं से उनका पेशा नहीं है।

०२१ २६/१९७: "क्या यह उनके लिए कोई निशानी नहीं है कि इस्राएल के बच्चों के विद्वान इसे जानते थे (जैसा कि) सच)?"

1. यह वाक्य बेईमानी है। यह सिद्ध नहीं है, लेकिन इस्लाम दावा करता है कि कुछ विद्वान यहूदी मुहम्मद को पैगंबर के रूप में स्वीकार किया। लेकिन केवल एक मामले में हजारों सीखा यहूदियों में से कुछ। अगर कहानी सच है, तो एक ईमानदार वाक्य था ने कहा: "- - - कुछ - - -" या अधिक से अधिक "- - - कुछ - - -"। काफी अंतर है के बीच "- - - सीखा - - -" और "- - - a कुछ सीखे - - -" में बेईमानी माना पवित्र ग्रंथ a . नहीं देता है अनुकूल प्रभाव। और क्यों है

बेईमानी जरूरी? - और कितने अन्य
किताब में अंक बेईमानी से उपजा है?

2. यहूदियों के विशाल बहुमत के रूप में - के रूप में सीखा
सीखा नहीं - इनकार किया कि मुहम्मद हो सकता है
एक नबी के रूप में भी वे लूट लिया गया था
संपत्ति, युद्धों में मारे गए, और
असहाय कैदियों के रूप में "सामूहिक रूप से" हत्या कर दी, it
पूरी तरह से निश्चित है कि यहूदियों ने क्या सीखा
या नहीं - उसके बारे में मतलब था, के लिए कोई संकेत नहीं था

959

पेज 960

मुहम्मद या अल्लाह। यह तो और भी अधिक
मुस्लिम बने रहने का एकमात्र तरीका था
किसी का धन और बाद में उसका जीवन, जैसे
मुहम्मद ने मदीना में सत्ता हासिल की, और फिर भी
अधिकांश यहूदियों ने उसे मना कर दिया। कुछ "पाखण्डी"
निगल गर्मी नहीं बनाते हैं।

3. एक सच्चा धर्म आसानी से रह सकता है - और बता सकता है -
सच्चाई या जिसे कोई ईमानदारी से मानता है वह है
ईमानदारी से जांच के बाद सच अगर एक धर्म
या किसी अन्य कहानी में झूठ या आधा का उपयोग करने की आवश्यकता है-
सत्य या यहां तक कि अल-तकियास (वैध झूठ) or
किटमैन (वैध अर्ध-सत्य), उल्लेख नहीं करने के लिए
अल-ताकिया और किटमैन को संस्थागत रूप देता है
धर्म की रक्षा और आगे बढ़ाने का मतलब है, एक
पूछना चाहिए कि झूठ क्यों जरूरी है? - और यह
स्वाभाविक अनुवर्ती प्रश्न: कितना
वे अपने धर्म के बारे में जो कुछ भी बताते हैं उससे अधिक
चैती झूठ हैं?

०२१ ३०/२५: "और उसकी (अल्लाह की) निशानियों में से यह है कि स्वर्ग और पृथ्वी उसके साथ खड़े हैं
कमांड - - -"। एक सबसे आसान बयान, जब तक मुहम्मद ने कुछ भी साबित करने से इनकार कर दिया
सब। अमान्य।

०२२ ३०/३७: "वे न देखें कि अल्लाह प्रावधान को बढ़ा देता है और इसे प्रतिबंधित कर देता है, जिसे वह
कृपया? वास्तव में इसमें ईमान लाने वालों के लिए निशानियाँ हैं।" असल में अल्लाह की निशानियाँ हैं
कि कुछ अमीर हैं, कुछ गरीब हैं और कुछ सीधे संकट में हैं? इस्लाम को साबित करना होगा कि नहीं
धन और गरीबी के लिए अन्य स्पष्टीकरण संभव हैं। ऐसे प्रमाण के बिना ये मान लिया गया
प्रमाण के रूप में संकेत अमान्य हैं।

०२३ ३२/२६: "क्या यह उन्हें (गैर-मुस्लिम*) सबक नहीं सिखाता, हम कितनी पीढ़ियाँ?
(अल्लाह*) ने उनसे पहले नष्ट कर दिया, वे अब किसके घरों में इधर-उधर जाते हैं? वास्तव में, उसमें
संकेत हैं - - -"। यह संकेत थे यदि यह स्पष्ट था कि यह वास्तव में अल्लाह ही था जिसने नष्ट कर दिया था
उन्हें।

०२४ ३४/९: "हम (अल्लाह*) उन पर (गैर-मुस्लिम*) आसमान का एक टुकड़ा गिरा सकते हैं।
निश्चय ही यह हर उस भक्त के लिए निशानी है जो अल्लाह की ओर फिरता है---"। आकाश एक ऑप्टिकल भ्रम है
ऊपरी वायुमंडल में प्रकाश के झुकने से बना - मुहम्मद जैसा भौतिक स्वर्ग नहीं
विश्वास किया। ऑप्टिकल भ्रम का एक टुकड़ा गिरना संभव नहीं है, और बिल्कुल नहीं
कोई व्यक्ति। (अरब उल्कापिंडों के बारे में जानते थे - कुरान वास्तव में गिरने वाले टुकड़े के बारे में बोलता है
आकाश, उल्कापिंड नहीं)।

इसके अलावा: यह कथन केवल एक दावा है, सिद्ध तथ्य नहीं है। अगर कोई बच्चा दावा करता है: "मेरे पिता हैं
आपकी तुलना में मजबूत", यह आसानी से गलत हो सकता है"।

पूरी तरह से अमान्य बयान। इस मामले में भी एक असत्य कथन। अल्लाह की कुछ निशानी।

०० मी ३४/४३: "जब हमारे स्पष्ट संकेतों का उन्हें अभ्यास किया जाता है - - -"। एक और जगह जहां
शब्द "चिह्न" - यहाँ भी "स्पष्ट" शब्द के साथ मजबूत किया गया है - जैसे कि तथाकथित संकेतों का उपयोग किया जाता है
प्रकट तथ्य हैं। लेकिन उनमें से एक भी सिद्ध तथ्य नहीं है - जैसा कि पहले कहा गया है; साथ
बाइबल से कुछ शांघई के संभावित अपवाद, लेकिन वे मामले में यहोवा/ईश्वर को साबित करते हैं।

पेज ९६१

क़ुरान में ऐसे सैकड़ों स्थान हैं जहाँ "साइन" शब्द का इस तरह दुरुपयोग किया गया है।

०२५ ३८/२९: "यहाँ एक किताब (कुरान*) है जिसे हमने (अल्लाह*) ने तुम्हारे पास उतारा है
(मुहम्मद*), - - - कि वे (लोग*) उसकी निशानियों पर मध्यस्थता करें, और वह लोग
समझ से नसीहत मिल सकती है।" कौन सा अनुयायी कभी स्वीकार करेगा कि वह एक आदमी नहीं था
समझ का? - खासकर अगर उसे थोड़ा ज्ञान था। लेकिन कुरान में एक नहीं है
वैध संकेत विशेष रूप से अल्लाह को साबित करना। एक भी सिंगल नहीं। और फिर यह "सबूत" किस लायक है
इस्लाम? - नकारात्मक और शून्य से कम, क्योंकि कोई सोचने लगता है कि किस तरह का भगवान - या
आदमी - अमान्य सबूत का उपयोग करता है?

०२६ ४०/४: "अल्लाह के संकेतों के बारे में कोई भी विवाद नहीं कर सकता लेकिन अविश्वासियों"। यह हो सकता है
बिलकुल सही:

1. यह मुस्लिमों में सामाजिक बहिष्कार का एक कारण है
   समाज कुरान में किसी भी शब्द पर संदेह करने के लिए।
2. यह कुछ में कारावास का कारण है
   मुस्लिम देश ज्यादा शक करें या इनकार करें
   कुरान में विश्वास। (मार्च 2008 को जोड़ा गया: ए
   मलेशिया में महिला, कमरिया अली, न्यायप्रिय थी
   (२००७? ई.) को २ साल की सजा सुनाई गई
   इस्लाम के साथ असंगत होना। न्यायाधीश,
   मोहम्मद अब्दुल्ला ने बताया कि उसने
   एक गंभीर अपराध किया है, और कि
   सजा जनहित में थी।)
3. कुछ देशों में यह एक अच्छा कारण है और
   कुछ समाजों द्वारा हत्या की जा रही है
   मुसलमानों में यदि आप बहुत अधिक संदेह व्यक्त करते हैं
   कुरान, मुहम्मद में उल्लेख नहीं करने के लिए - the
   धर्म में कमजोर कड़ी (एकमात्र दावा किया गया
   साक्षी और बहुत पवित्र चरित्र नहीं)।
4. यह अभी भी मौत की सजा का कारण है - अधिकारी
   या अनौपचारिक - कुछ मुस्लिम देशों में
   कुरान में बहुत अधिक संदेह, उल्लेख नहीं करना
   इस्लाम छोड़ना चाहते हैं।
5. आपका विवाह अपने आप शून्य हो गया है और
   उस क्षण का अंत हो गया जब एक मुसलमान ने इस्लाम छोड़ दिया -
   और हर कोई अपनी पत्नी को खोना नहीं चाहता या
   उनके पति उनके माता या पिता के
   बच्चे (अपने बच्चों को ढीला करने का उल्लेख नहीं करने के लिए)।
6. गैर-मुसलमानों के लिए भी खतरनाक है
   संकेतों और कुरान पर संदेह करें - वे हो सकते हैं
   हत्या कर दी इस्लाम को ताकत पर भरोसा नहीं
   शब्द - एक कारण के साथ, सभी के बारे में सोचना
   गलतियाँ और अमान्य कथन, "संकेत" और
   कुरान में "सबूत", आदि - और सहारा लें
   हत्या। कभी नहीं में विश्वास करना बेहतर है
   पिता के धर्म को सिद्ध करने की कोशिश करने की तुलना में
   पता करें कि क्या यह वास्तव में सच है। जैसे इस्लाम कहता है
   जब यहूदी धर्म अपनाने वालों के लिए "शिकार" करना: यह कठिन है
   अपने (विधर्मी*) गहरे विश्वासों पर सवाल उठाने के लिए

पेज ९६२

और आप एक बच्चे के रूप में क्या छापे गए थे"।
वे भूल जाते हैं कि यह मुसलमानों के लिए भी जाता है:
यदि आप जिस पर विश्वास करते हैं, उस पर नियंत्रण न करना बेहतर है
सही या गलत - और नहीं का जोखिम उठाने के लिए
में सही धर्म ढूँढना (यदि कोई मौजूद है)
समय, अगर इस्लाम गलत है।

हां, केवल गैर-मुस्लिम ही - या वास्तव में अनुमति है - के संकेतों पर चर्चा या विवाद कर सकते हैं
इस्लाम। और हमारे लिए भी यह इतना खतरनाक है, कि इस किताब को तब तक छापा नहीं जा सकता जब तक मुद्रक न हो
बहुत बहादुर, किताब के बहुत ही डाउन-टू-अर्थ होने और पूरी तरह से कुरान पर आधारित होने के बावजूद +
सही वैज्ञानिक ज्ञान।

०२७ ४५/१९+२०: "वे (गैर-मुसलमान*) अल्लाह की दृष्टि में तुम्हारे किसी काम के नहीं होंगे: यह केवल
अधर्म करने वाले (जो खड़े होते हैं) रक्षक, एक दूसरे के; लेकिन अल्लाह का रक्षक है
न्याय परायण। ये पुरुषों के लिए स्पष्ट प्रमाण हैं---"। इन दो वाक्यों को पढ़ें, और देखें कि क्या यह a . है
प्रमाण - स्पष्ट प्रमाण नहीं कहना - किसी बात का, जब तक कि कथन सिद्ध नहीं हो जाते। १००%
अमान्य।

***०२८ ४६/८: "कहो: ' अगर मैंने (मुहम्मद *) ने इसे (कुरान*) गढ़ा होता, तो क्या तुम प्राप्त नहीं कर सकते
अल्लाह की तरफ से मेरे लिए सिंगल (आशीर्वाद):" क्या एक अपराजेय प्रमाण !!!

029 मुहम्मद के बारे में कहा जाता है कि वह 3 गुप्त प्रश्नों के उत्तर देकर साबित करते हैं कि वह एक नबी थे
उकबाब द्वारा लाया गया। मदीना में यहूदी रब्बियों से अबू मुअत - उन्हें अल्लाह से जवाब मिला
गेब्रियल के माध्यम से। पहले का संबंध "सात स्लीपरों" से था। कोई भी भगवान जानता था कहानी बनी है
ऊपर - एक ईसाई किंवदंती - लेकिन मुहम्मद को यह नहीं पता था। दूसरा संबंधित सिकंदर
महान (धूल कर्नायन - उनके लिए एक अरब नाम) - और मुहम्मद किसी भी परियों की कहानियों का जवाब देते हैं
भगवान जानता था गलत थे। तीसरे का संबंध पवित्र आत्मा से था - और मुहम्मद के पास नहीं था
वास्तविक उत्तर। लेकिन उपद्रव के बाद निष्कर्ष (तब पता नहीं था कि यह एक बड़ा उपद्रव था)
स्पष्ट था: कहानी को एक अचूक प्रमाण के रूप में इंगित किया गया था कि मुहम्मद एक थे
नबी. इससे भी बदतर: आज भी जब हम आसानी से देखते हैं कि क्या गलत है, मुसलमानों
स्पष्ट को स्वीकार करने से इंकार और त्रुटियों को दूर करने का प्रयास -
और गलत जानकारी को उसके होने का पक्का सबूत मानें
असली नबी, इसके बावजूद अब तक किसी भगवान ने उन्हें जवाब नहीं दिया था
हकीकत से। किसी भी विचारशील व्यक्ति के लिए यह संदेह का विषय होना चाहिए - लेकिन तब
मुसलमानों के बारे में नहीं सोचा जाता है कि कैसे सोचें, बल्कि केवल स्वीकार करने और मानने के बारे में सोचा जाता है। यह वास्तव में एक है
दिलचस्प "सबूत"।

इसके अलावा: वास्तव में एक नबी होने के मानदंड हैं:

1. वास्तविक भविष्यवाणियां करने की क्षमता। नहीं तो वह
   कोई वास्तविक भविष्यवक्ता नहीं।
2. भविष्यवाणियां कम से कम ज्यादातर सच होती हैं। अगर
   वह झूठा नबी नहीं है।
3. इतनी बार-बार और/या इतना आवश्यक बनाने के लिए
   भविष्यवाणी करता है कि यह का एक उचित हिस्सा है
   उसकी गतिविधि।

(मुहम्मद ने इनमें से किसी भी बिंदु को पूरा नहीं किया। ठीक है, वह खुद को आराम दे सकता है कि वहाँ हैं
अन्य, पैगंबर शब्द की कम सख्त परिभाषा, भी - च। भूतपूर्व। एक व्यक्ति जो एक भगवान के शब्द बोलता है
और अपना नहीं - या ऐसा ही कुछ। इस कमजोर परिभाषा के अनुसार उसके पास हो सकता है

एक तरह का नबी रहा - अगर अल्लाह मौजूद है, अगर मुहम्मद के साथ वास्तविक संबंध थे - - -
और यदि मुहम्मद बहुत बार अपनी बात नहीं कहते थे, f. भूतपूर्व। क्रोधित पत्नियों को शांत करने के लिए या
व्यक्तिगत शत्रुओं को डांटना (सभी मुस्लिम विद्वान जैसे f. ex. surah 111 नहीं)। लेकिन एक "सच्चा"
असली पैगम्बर वास्तविक मापदंड के अनुसार? - नियत। जो एक अच्छा अंग्रेजी शब्द है जिसका अर्थ है
इसके नीचे कम से कम दो पंक्तियों के साथ "नहीं"।)

00n 62/5: "बुराई उन लोगों की उपमा है जो अल्लाह की निशानियों को गलत ठहराते हैं - - -"। यह क्या करता है
इसका मतलब है कि अमान्य संकेत मिथ्या हैं? विशेष रूप से इतनी सारी गलतियों वाली किताब में?

पोस्ट स्क्रिप्ट से अध्याय VII/5.

कुरान में अमान्य "संकेतों" के बारे में यह पर्याप्त होना चाहिए, क्योंकि ये बिंदु बहुत आसान हैं
पुस्तक पढ़ने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए खोजें। जब भी आप "साइन" शब्द देखें तो अपने आप से पूछें: Is
इसका मतलब एक संकेत होना था, या यह सिर्फ एक और दावा या संदर्भ है जो साबित नहीं हुआ "संकेत" दिखा रहा है
तथ्य होना? अगर इसे एक संकेत कहा जाए: क्या यह सिर्फ एक और बयान है जो बिना किसी सबूत और पतले पर बनाया गया है
वायु? और अगर इसे सबूतों पर बनाया गया संकेत कहा जाता है: जांचें कि यह "सबूत" पर टिकी हुई है, वास्तव में हैं
सबूत, और न केवल सस्ते शब्दों पर आधारित अन्य बयान।

हमें विश्वास है कि हमने उन सभी स्थानों की जाँच कर ली है जहाँ "चिह्न" या "प्रमाण" शब्दों का प्रयोग किया गया है
कुरान. बाइबल से लिए गए कुछ को छोड़कर, हमें कोई नहीं मिला - कोई नहीं - वह
तर्क के किसी भी नियम के अनुसार मान्य है। वे सिर्फ दावे या बयान हैं, या दूसरे पर टिकी हुई हैं
दावे या बयान साबित नहीं हुए। कुछ सीधे गलत भी हैं।

जहाँ तक बाइबल से ली गई बातों का प्रश्न है, कुछ गलत हैं, कुछ को विज्ञान द्वारा सिद्ध किया गया है
सही है, और काफी संख्या में न तो सही और न ही गलत साबित होते हैं। लेकिन कम से कम बाइबिल एक
कई लेखकों और कई गवाहों पर बड़ी डिग्री टिकी हुई है - हालांकि अंक किसी भी तरह गलत हो सकते हैं।
यह समय में जो कुछ हुआ, कुछ वर्षों से लेकर कुछ दसियों वर्ष बाद भी बहुत करीब लिखा गया है
एनटी के लिए, ६०० से अधिक वर्षों की तुलना में और मुख्य रूप से शब्दों के मुंह से सुनाया जाता है और
समान कहानियों के लिए कुरान के लिए किंवदंतियां। और केवल एक सरदार और बदतर ने बताया: एक
सत्ता के लिए इच्छुक और झूठ का उपयोग करने में विश्वास करने वाला और यहां तक कि टूटी हुई शपथ भी अगर यह आगे बढ़ सकता है
उसका मामला।

यह वास्तव में बहुत ही चिंतनीय है कि कुरान केवल एक ही आदमी के शब्दों पर बनाया गया है - एक आदमी
कि आज उसके जीवन और व्यवहार के कारण, एक अदालत में बहुत संदेह के साथ व्यवहार किया जाएगा
जब एक स्व-घोषित भविष्यद्वक्ता, राजमार्ग आदमी और सरदार के रूप में रह रहे हों। हाइवेमेन,
हत्यारों, बलात्कारियों और सरदारों को विश्वसनीयता के लिए बहुत अधिक दर्जा नहीं दिया जाता है। और स्वयंभू
भविष्यद्वक्ता? इतिहास के माध्यम से उनकी संख्या रही है। वे अक्सर सत्ता पसंद करते हैं, महिलाएं
और अक्सर एक अच्छा जीवन - और इसे प्राप्त करने के तरीके पर अक्सर "कठिन" नहीं होते हैं। मुहम्मद
कम से कम सत्ता और महिलाओं को पसंद आया।

यह जानकर भी हैरानी होती है कि यह एक सच्चाई है कि आसान शब्द, सस्ते, ढीले-ढाले बयान, और
अमान्य "संकेत" और "सबूत" सभी परजीवियों और धोखेबाजों के लिए हॉलमार्क हैं, कहने के लिए नहीं
ठग गोएबल्स की तरह: "एक झूठ को अक्सर बोलो, और लोग उस पर विश्वास करना शुरू कर देते हैं"।

भाग VII, अध्याय 7 (= VII-7-0-0)

तथ्य बनाम. दावे, कथन, (अमान्य) "संकेत", (अमान्य) "सबूत", आदि। कुरान में: कुरान और अल्लाह कुरान, मुहम्मद, इस्लाम और अल्लाह के अनुसार

963

पेज 964

अधिक (अमान्य) ढीले दावे और कथन - एक भी नहीं उन्हें साबित या तार्किक रूप से मान्य अल्लाह के लिए एक सबूत के रूप में, कुरान, या मुहम्मद के कनेक्शन के लिए एक भगवान को।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

ढीले दावे, ढीले बयान। इतना अविश्वसनीय रूप से सस्ता बनाने के लिए अगर आपको साबित करने की ज़रूरत नहीं है

कुछ भी। और इसलिए पूरी तरह से बिना मूल्य के। और भोले या आदिम या अशिक्षित के लिए इतना आसान - or
ब्रेनवाश - लोग, या लोग कुछ विचारों के साथ छापे और बिना विश्वास करने के लिए छापे
सोचना, गिरना। खासकर अगर वे विश्वास करना चाहते हैं। और इससे भी ज्यादा अगर स्पिनर
टेल्स एक करिश्माई नेता है जो लोगों को हेरफेर करना जानता है।

और फिर - कभी-कभी लोग जो कहानियां सुनाते हैं वे सच होती हैं। यहां तक कि अविश्वसनीय चीजें भी होती हैं।
आप क्या विश्वास करने वाले हैं?

विज्ञान का एक बहुत अच्छा नियम है: कहानी जितनी अविश्वसनीय होगी, उतनी ही मजबूत
सबूतों की जरूरत है।

और धर्म में प्रमाण आसान होने चाहिए - कोई भी देवता अपने अनुयायियों के लायक कुछ करने में सक्षम है
चमत्कार या चीजों की भविष्यवाणी करना।

लेकिन सबूतों के कई अनुरोधों के बावजूद, मुसलमानों को कभी भी कुछ भी नहीं मिला, लेकिन तेजी से बात करने और ढीली करने के अलावा
दावे और बयान, कई गलत तथ्य और अन्य गलतियाँ, आदि।

दूसरी ओर उनके पास ऐसे ढेर सारे झूठे दावे और बयान और गलतियाँ हैं -
सचमुच कम से कम हजारों की एक जोड़ी। लेकिन एक भी वैध प्रमाण नहीं।

यह कहा जा सकता है कि जब कोई कहानी कह रहा होता है, तो ऐसी कहानी बनानी पड़ती है
बयान, विवरण, आदि। एक हद तक यह सच है। लेकिन एक हद तक ही। आपको भोले होना होगा
या आदिम या दोनों पर विश्वास करने के लिए, और यहां तक कि अविश्वसनीय पर विश्वास करने के लिए, बिना प्रमाण के - और सभी
वही लोग मानते हैं - - - नाइजीरिया से आने वाले सभी पैसे के बारे में सोचें "यदि केवल आप"
पहले एक निश्चित राशि का भुगतान करें ”या अन्य झांसे में लोग आते हैं।

बेशक यह विश्वास करना आसान है कि आपको जो बताया गया है वह एक बच्चा था, और यहां तक कि
इससे भी अधिक यदि आप इसके अलावा विचार और छापे हुए हैं: नेता और इमाम हमेशा होते हैं
सही है, और अलग तरह से सोचना विधर्म, मूर्ख और खतरनाक है।

मुस्लिम देशों की है गंभीर समस्या: वे अपने बच्चों और युवाओं को नहीं पढ़ा सकते
आलोचनात्मक सोच - क्योंकि तब वे आलोचनात्मक प्रश्न पूछना शुरू कर देते हैं, और इस्लाम के पास बहुत से हैं

964

पेज ९६५

महत्वपूर्ण प्रश्न जो वे सुनना नहीं चाहते। लेकिन दूसरी ओर सभी प्रगति पर आधारित है
कोई इसके बारे में आलोचनात्मक प्रश्न पूछ रहा है - क्या यह सच है? - क्या यह अलग नहीं हो सकता,
या कुछ और बेहतर किया? यह मई एफ. भूतपूर्व। सरल व्याख्या हो क्यों संपूर्ण मुस्लिम
विश्व केवल कैलिफ़ोर्निया राज्य की तुलना में एक वर्ष में कम नए पेटेंट दर्ज करता है। ठीक है। कैलिफोर्निया है
अच्छा - लेकिन मुस्लिम दुनिया में भी शीर्ष विश्वविद्यालय हैं। और समस्या अनसुलझी है
जब तक कुरान में गलतियों आदि की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता, और जब तक
धार्मिक समाज प्रश्नों और कुछ प्रकार की शिक्षा को रोकने के लिए काफी मजबूत हैं।

क़ुरान काग़ज़ी और बयानों, "चिन्हों" और "सबूतों" पर बनाया गया है, उनमें से एक भी साबित नहीं हुआ (जैसा कि
हमने पहले कहा था: बाइबल से कुछ संकेतों के संभावित अपवाद के साथ जो हो सकता है
यहोवा को सिद्ध करो)। इसके अलावा बहुत सारे मनोविज्ञान।

हम केवल कुछ नमूने उद्धृत करेंगे, क्योंकि उनमें से बहुत सारे भयानक हैं, और जैसे वे हैं
एक बार जब आप उनकी तलाश में जाते हैं और सबूतों की कमी के कारण देखना आसान होता है। हम सिर्फ से कुछ उद्धरण देते हैं
यहाँ और वहाँ से कुछ - एक बहुत बड़ा विकल्प है।

०१ १/२: "अल्लाह की स्तुति करो - - - संसारों के पालनकर्ता"। एक कथन - लेकिन सिद्ध नहीं।

002 2/2: “यह पुस्तक है; इसमें मार्गदर्शन निश्चित है, निःसंदेह---”। दो कथन, दोनों
बिना सबूत के - और दोनों संदिग्ध।

००३ २/१६: "ये वे हैं जिन्होंने त्रुटि के लिए मार्गदर्शन किया है - - -"। सबूत चाहिए,
विशेष रूप से "मार्गदर्शन" के रूप में कुरान को संदर्भित करता है - - - बहुत सारी गलतियों वाली पुस्तक।

००४ २/२२: "(अल्लाह*) ने धरती को तुम्हारा पलंग - - - बनाया है। अल्लाह हो सकता है, एक और भगवान हो सकता है,
प्रकृति हो सकती है। कौन वास्तव में जान सकता है और बिना प्रमाण के विश्वास नहीं कर सकता?

005 2/25: "- - - (मुसलमान*) भाग बाग है - - -"। खैर, कम से कम ऐसा ही कहा गया है।
सबूत कहां है या कम से कम संकेत?

००६ २/२९: "- - - उसने (अल्लाह*) ने सात फर्मों (=आकाश*) को आदेश और पूर्णता प्रदान की - -
-"। यहाँ निश्चित रूप से अच्छे प्रमाणों की आवश्यकता है, क्योंकि यह कथन बहुत गलत है - वहाँ मौजूद है
कोई सात आकाश नहीं, केवल एक, और वह भी एक भ्रम है, भौतिक स्वर्ग नहीं।

007 2/39: "लेकिन वे (गैर-मुसलमान*) जो ईमान को ठुकराते हैं और हमारी (अल्लाह की) निशानियों को झुठलाते हैं, वे
आग के साथी होंगे - - -"। जितना कहा गया था, उतना ही कम या उतना ही कम प्रलेखित
ऊपर 2/25 में स्वर्ग के बारे में। बस शब्दों का कोई भी उपयोग कर सकता है - बाल या ज़ीउस का पालन करें और स्वर्ग में जाएं,
और उसकी अवज्ञा करो और नरक में जाओ। कोई भी तब तक कुछ भी कह सकता है जब तक वह मांगों से बच सकता है
सबूत के लिए।

०८ २/४६: "(मुसलमान*) इस निश्चितता को ध्यान में रखते हैं कि उन्हें अपने पालनहार (अल्लाह*) से मिलना है, और
कि वे उसके पास लौट आएं"। सभी मुसलमान चाहते हैं - और करें - इस पर विश्वास करें। लेकिन वे केवल
अक्सर क्रूर और कम से कम कभी-कभी अविश्वसनीय डाकू बैरन और सरदार के शब्द होते हैं
इसके लिए। बिना सबूत के एक बयान - मान्य नहीं है, और राजनेताओं को छोड़कर कोई मूल्य नहीं है और
धोखेबाज किसी भी न्यायाधीश ने आपराधिक मामले में इस तरह के बयान को सबूत के रूप में स्वीकार नहीं किया था। और एक संभव
अगला जीवन f से कहीं अधिक आवश्यक है। भूतपूर्व। एक छोटी सी चोरी।

009 2/65-66: "हम (अल्लाह*) ने उनसे (बुरे लोग*) कहा: 'तुम वानर बनो, तिरस्कृत और ठुकराया। इसलिए
हमने इसे उनके अपने समय और उनकी भावी पीढ़ी के लिए एक उदाहरण बनाया - - -"। मनुष्यों को बदलने के लिए
जानवरों को अक्सर परियों की कहानियों में किया जाता है - और कुरान अपनी कुछ कहानियों को परियों से लेता है

965

पेज ९६६

किस्से लेकिन एक कल्पित वास्तविक कहानी में ऐसा करने के लिए कुछ प्रमाणों की आवश्यकता होती है। और यहाँ केवल दावा है
या एक बयान - और कुछ नहीं। कोई सबूत नहीं।

010 2/87: "हमने (अल्लाह*) ने मूसा को किताब - - - दी। सस्ते पर बनाया गया एक ढीला बयान भी
शब्द, जैसा कि मूसा के पास वे पुस्तकें कभी नहीं थीं। उसके पास केवल दस आज्ञाएँ थीं
बाइबल बताती है कि उसे यहोवा ने कानून के बारे में बताया था, और बाद में इसे स्वयं लिखा था।) के अनुसार
विज्ञान कि किताब (टोरा = बाइबिल में पहली पांच "पुस्तकें") 500-800 साल बाद लिखी गई थी।
पुख्ता सबूत जरूरी।

०११ २/९८: "- - - ईमान (इस्लाम*) को ठुकराने वालों का अल्लाह दुश्मन है"।

1. मुहम्मद कभी साबित भी नहीं कर पाए कि
   अल्लाह मौजूद था।
2. मुहम्मद कभी कुछ साबित नहीं कर पाए
   उसके धर्म के बारे में। कभी नहीं। केवल अप्रमाणित
   दावों और अप्रमाणित बयानों के रूप में।
3. मुहम्मद कभी साबित नहीं कर पाए कि उनके पास है
   किसी भगवान से कोई संबंध, उल्लेख नहीं करने के लिए a
   विशेष भगवान। कभी नहीं। केवल अप्रमाणित दावे
   और अप्रमाणित बयानों के रूप में।

बेशक इस पर विश्वास करना संभव है - यहां तक कि इसमें दृढ़ता से विश्वास करना भी संभव है। लेकिन यह सिर्फ विश्वास है -
सही या गलत - वास्तविक ज्ञान नहीं। पसंद करो या नहीं।

०१२ २/१०७: "तुम नहीं जानते कि अल्लाह के लिए स्वर्ग का प्रभुत्व है (बहुवचन और
गलत) और पृथ्वी?" नहीं हम नहीं करते। यह सच हो सकता है या यह सच नहीं हो सकता है - हमारे पास केवल
एक किताब के शब्द हम जानते हैं कि कई गलतियाँ हैं, एक आदमी से सौंपे गए हम नहीं करेंगे
अगर हम अदालत में जज होते तो गवाह के तौर पर बहुत भरोसा करते। सबूतों की तत्काल आवश्यकता है।

०१३ २/१०९: "- - - अल्लाह के पास सभी चीजों पर अधिकार है।" शायद - और शायद नहीं। कम से कम उसके पास
अपने अनुयायियों द्वारा कई बार पूछने पर भी नहीं - और संशयवादियों द्वारा कभी भी अपनी शक्ति नहीं दिखाई
- अपने अस्तित्व के प्रमाण के लिए। मुहम्मद ने इसे तेज शब्दों से चमकाया - उन सभी में नहीं
तार्किक (f। पूर्व। कि एक भगवान का वास्तविक प्रमाण किसी को भी किसी पर विश्वास नहीं करेगा - बकवास होना
विनम्र), और मुहम्मद बहुत बुद्धिमान थे और उन लोगों के बारे में बहुत कुछ जानते थे जो इसे नहीं जानते थे
असत्य था।

०१४ २/११०: "- - - जो कुछ तुम करते हो अल्लाह अच्छी तरह देखता है।" सच हो सकता है। a . द्वारा एक स्मार्ट ट्रिक हो सकती है

हर समय आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए किसी को चालाकी से? केवल के आधार पर जानना संभव नहीं है
एक ढीला बयान। विश्वास करना - हाँ। दृढ़ता से विश्वास करना - हाँ। जानना - नहीं।

०१५ २/११५: "क्योंकि अल्लाह सर्वव्यापी, सब कुछ जानने वाला है"। दयनीय स्थिति को देखते हुए
तथ्य और कुरान में "संकेत" हैं, इसके लिए पुख्ता सबूतों की तत्काल आवश्यकता है।

०१६ २/११७: "उसे (अल्लाह *) आकाश की प्रारंभिक उत्पत्ति (बहुवचन और गलत *) के कारण है और
पृथ्वी - - -"। अल्लाह को या प्रकृति को? विज्ञान प्रकृति में अधिक विश्वास करता है, और अल्लाह कभी नहीं
विपरीत साबित हुआ।

०१७ २/११९: "वास्तव में, हमने (अल्लाह) ने तुम्हें (मुसलमानों) को वास्तव में खुशखबरी का वाहक भेजा है।
(मुहम्मद*) - - -"। मुहम्मद कभी भी यह साबित नहीं कर पाए कि उनके शब्द किसी ईश्वर की ओर से आए हैं।
बिना सबूत के इस्लाम को सवालों से दूर रहने के लिए आतंकवाद का रूप लेना पड़ा है। मुहम्मद is

इस्लाम के लिए कमजोर कड़ी, और नहीं - नहीं - संदेहपूर्ण प्रश्न या टिप्पणी स्वीकार किए जाते हैं। सबूत
सबसे तत्काल जरूरत है।

०१८ २/१२७: "और इब्राहीम और इश्माएल को याद करो ने सदन की नींव रखी (कबाह)
मक्का में*) - - -"। चूंकि यह बहुत कम संभावना है कि इब्राहीम ने कभी मक्का का दौरा किया, यह अप्रमाणित
कथन को वास्तविक प्रमाण की आवश्यकता है। अब यह एक निश्चित संप्रदाय की तरह है जो कहता है कि यीशु ने अमेरिका का दौरा किया था
पृथ्वी पर अपने अंतिम दिनों के दौरान - बस शब्द।

019 2/137: "वह (अल्लाह*) सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है"। 2/115 देखें।

०२० २/१३९: "क्या तुम हमारे साथ अल्लाह के बारे में विवाद करोगे, यह देखते हुए कि वह हमारा भगवान और तुम्हारा भगवान है - -
-"। इस्लाम यह दिखावा करना या यह बताना पसंद करता है कि अल्लाह और यहोवा/ईश्वर एक ही ईश्वर हैं। लेकिन दोनों
भगवान और उनकी शिक्षाएं बहुत अलग हैं - जैसा कि पहले कहा गया है, खासकर यदि आप तुलना करते हैं
युद्ध के खूनी देवता अल्लाह में बदल गया था और 622 ईस्वी के बाद मुहम्मद की जरूरत के बाद
योद्धाओं के लिए और बाद में युद्धों के लिए, हम सबसे अधिक विनम्र और परोपकारी भगवान से मिलते हैं
एनटी में। कुरान बहुत सारे बयान देता है, लेकिन एक भी सबूत नहीं है, भले ही वह होना चाहिए
अल्लाह के लिए कुछ साबित करना आसान हो - कम से कम उसका अपना अस्तित्व। इसके अलावा: इतिहास पढ़ें -
इब्न इशाक जैसे मुस्लिम इतिहास अगर आप चाहें - और देखें कि वास्तव में मुहम्मद किस तरह का आदमी है
था! मैं उस तरह के नैतिक और नैतिक मानकों वाले व्यक्ति के शब्द को स्वीकार नहीं करता, बिना
प्रमाण - भोले होने की भी सीमा होनी चाहिए।

०२१ २/१४०: "परन्तु जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसकी परवाह नहीं करता"। के बने एक बयान के आधार पर
शब्द, यह एक आशा हो सकती है। यदि यह सिद्ध हो गया होता तो निश्चित था। लेकिन मुहम्मद कभी नहीं
अल्लाह या उसकी बाकी शिक्षाओं के बारे में कुछ भी साबित करने में सक्षम था। एक बात नहीं।

पोस्ट स्क्रिप्वर टू चैप्टर VII/7.

जैसा कि हमने कहा कि ऐसे कई, कई अप्रमाणित कथन थे - यदि कोई हमें बताता है कि वहाँ हैं
कुछ 2000 हमें आश्चर्य नहीं होगा। हमने 2 के पहले हाफ में से सिर्फ 21 को चुना है।
और हमने अभी-अभी एक को यहाँ और एक को उस आधे हिस्से में से चुना है। 114 सूरह हैं (हालांकि
नहीं। 2 अब तक का सबसे लंबा है)।

20-21 आपको यह दिखाने के लिए पर्याप्त से अधिक हैं कि यह कैसे काम करता है - और किसी के लिए भी सबसे अधिक खोजना आसान है
शेष में से। जब आप किताब पढ़ते हैं तो बस अपने आप से पूछें "क्या यह वाक्य एक कथन या तथ्य है"।
किसी भी किताब में - तथ्यों की किताब में भी - बहुत सारे बयान होंगे। लेकिन कम से कम मुख्य बिंदु
एक कहानी सिर्फ ढीले शब्दों और अमान्य बयानों, "संकेत" और "सबूत" से अधिक होनी चाहिए।
कुरान में ऐसा नहीं है - इसके विपरीत: बहुत सारे "तथ्य" जो यह प्रस्तुत करता है वह सम है
गलत। और कम से कम नहीं: यह सत्ता के लिए प्रयास कर रहे बहुत ही संदिग्ध चरित्र के व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

पुस्तक को स्वयं पढ़ें - लेकिन ऐसा करते समय अपने मस्तिष्क और अपने ज्ञान को संलग्न करें।

हम पोस्ट से धोखेबाजों और धोखेबाजों के लिए हॉलमार्क के बारे में विचारों को नहीं दोहराते हैं
अध्याय IX का शास्त्र। लेकिन हम जोसेफ गोएबल्स नाम दोहराते हैं।

भाग VII, अध्याय 8 (= VII-8-0-0)

पेज 968

"अगर अल्लाह ने चाहा - - -" या - - घमंड? कुरान में, मुहम्मद की पवित्र पुस्तक, मुसलमान और इस्लाम

(किशोरों की तरह (?) तेजी से बात)।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

कुरान में ऐसी कई जगह हैं जहां अल्लाह/मुहम्मद बता रहे हैं कि अल्लाह क्या कर सकता है -
- - अगर वह केवल इच्छा करता है। यह बेचैनी से बचकाना शेखी बघारने जैसा लगता है - "मैं वह और वह कर सकता था और
कि अगर मैं केवल चाहता - या मेरे पिता कर सकते थे"। क्या आपने कभी बच्चों को डींग मारते सुना है?

और किसे शेखी बघारने और डींग मारने की जरूरत है? बच्चे और बड़े मुंह वाले और सभी उम्र के किशोर
शीर्ष लीग में होना चाहते हैं या कम से कम सामाजिक रूप से सम्मानित होना चाहते हैं, लेकिन यह जानते हुए कि वे नहीं हैं
खुद को साबित करने में सक्षम।

यह तथ्य पहली बार कुरान पढ़ने वाले किसी को भी चौंकाता है - और यह सवाल छोड़ता है कि यह क्यों?
व्यवहार और इस थोड़े अरुचिकर प्रकार के तर्क का उपयोग कुरान में किया गया है। के लिए
मुसलमानों पर विश्वास करने वाले और बच्चों / लोगों के लिए बताया और छापा कि यही वास्तविक सत्य है और
निश्चित तथ्य कि वे बच्चे थे, यह निश्चित रूप से बताए गए तथ्यों की तरह लगता है - भले ही वहाँ पसंद हो
इस्लाम में सब कुछ वास्तविक परिणाम के किसी भी चीज़ के लिए एक भी प्रमाण नहीं है। यह भी
और इसलिए कि उनका सारा जीवन उनके धार्मिक अधिकारियों को स्वीकार करने के लिए अंकित किया गया है
पूर्ण सत्य के लिए कहा और सत्य के अलावा कुछ नहीं, और कठिन प्रश्न पूछने के लिए नहीं।

वास्तव में इस्लाम - उनके विद्वान धर्मगुरु - पहले से ही लगभग 900 ईस्वी पूर्व से इस पर सहमत थे
सभी आवश्यक प्रश्नों पर इतनी बहस हो चुकी थी कि किसी भी परिणाम का सब कुछ था
स्पष्ट और निर्णय लिया। इस्लाम में एक समय के लिए सभी नए विचारों को भी प्रतिबंधित कर दिया गया था, लेकिन बाद में एक पाया गया
पुराने रीति-रिवाजों और नियमों में कुछ सुधारों को स्वीकार करना पड़ता था, जब तक कि वे संघर्ष न करें
इस्लाम के साथ। लेकिन जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है: लगभग 1100 ईस्वी से पूर्व और मध्य भागों में, और
लगभग १०० साल बाद मुस्लिम क्षेत्र के पश्चिमी हिस्सों में, एक भी नहीं आया है
जीवन के किसी भी पहलू में मनुष्य को आगे लाने वाला नया विचार या विचार। इस्लाम का बौद्धिक जीवन
और मुसलमान पूरी तरह से स्थिर हो गए। बॉक्स में अंतिम कील "द इनकोहेरेंस ऑफ द" पुस्तक थी
दार्शनिकों" द्वारा "मुहम्मद के बाद सबसे महान मुस्लिम", अल-ग़ज़ाली, १०९५ ईस्वी में
आज हम कई जगहों पर देखते हैं कि कोई भी नया विचार बुरा है - और अधिकांश नए विचारों और जीवन के तरीकों के रूप में
और यहां तक कि उत्पाद भी पश्चिमी संस्कृति से आते हैं, यह निश्चित रूप से और भी बुरा है।

केवल मुस्लिम तरीके - और इसका ज्यादातर मतलब पुराने तरीके - अच्छे हैं। और अगर केवल अल्लाह होता,
वह कुछ भी कर सकता था। ठीक वैसे ही जैसे एक बाहरी युवक चाहता है, लेकिन प्रभावित करने में असमर्थ है
वास्तविकता के साथ परिवेश - थोड़ी सी डींग मारने से मदद मिल सकती है (और इस्लाम में इसने किया और मदद करता है - it
मुसलमानों और धर्म अपनाने वालों को प्रभावित करता है)।

आपको खुद ही आंकना होगा कि कुरान में डींग मारने की इस तकनीक का इतना इस्तेमाल क्यों किया जाता है?
- और क्यों डींग मारना था और निंदनीय है।

पेज ९६९

001 2/20a: "और अगर अल्लाह चाहता तो वह उनकी (गैर-मुस्लिम*) सुनने की क्षमता को छीन सकता था।
और देखना; क्योंकि अल्लाह के पास हर चीज़ पर अधिकार है।" लेकिन 1400 सालों से गैर-मुसलमानों ने
न देखने में, न सुनने में कोई कमी।

002 2/220b: "और अगर अल्लाह चाहता तो वह आपको मुश्किलों में डाल सकता था (यदि आप नहीं करते हैं)
अपने आप से व्यवहार करें*)"। वैसे तो ज्यादातर लोगों को कभी न कभी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। शायद - - -?

००३ २/२५३: "अगर अल्लाह ने चाहा होता, तो आने वाली पीढ़ियाँ आपस में नहीं लड़ती"
एक दूसरे को - - -"। क्या यह तब एफ. भूतपूर्व। अल्लाह की इच्छा है कि मुसलमानों ने लड़ाई लड़ी और मार डाला और
1350 साल तक एक-दूसरे की हत्या और बलात्कार और दमन किया? उल्लेख नहीं करने के लिए कि वे क्या हैं
बाहरी लोगों के साथ किया है?

004 2/253: "अगर अल्लाह ने चाहा होता, तो वे आपस में नहीं लड़ते थे, लेकिन अल्लाह ने अपना पूरा किया"
योजना"। ऊपर 2/253 देखें। और: क्या यह अल्लाह की योजना रही है कि वह अपनी योजना को पूरा न करे (जीतने के लिए)
और शेष विश्व का दमन) लगभग १४०० वर्षों के लिए?

००५ ४/९०: "अगर अल्लाह ने चाहा होता, तो वह उन्हें (गैर-मुस्लिम दुश्मन*) शक्ति दे सकता था
तुम पर - - -"। गैर-मुसलमानों के पास कई बार सत्ता रही है। लेकिन यह शायद ही इसलिए था क्योंकि
इसने अल्लाह को खुश किया या नाराज़ किया - इस्लाम को इस तरह के दावे को साबित करना होगा।

००६ ४/१३३: "यदि यह उसकी (अल्लाह की *) इच्छा होती, तो वह तुम्हें नष्ट कर देता, हे मानव जाति, और
दूसरी जाति; क्योंकि उसके पास ऐसा करने की शक्ति है।" खैर, न तो वह और न ही इस्लाम खत्म कर पाए हैं
मानव जाति से अभी तक - हालांकि इस्लाम और मुसलमानों ने भारी विनाश किया है
बार। अगर मुसलमान भविष्य में मानव जाति को खत्म करने में सक्षम होंगे, तो शायद ही इसका कारण होगा
अल्लाह की ख्वाहिश है, लेकिन कट्टरपंथियों के बीमार और पतित विचारों की वजह से बहुत अधिक है
अल्लाह से ज्यादा "मुसलमान"।

००७ ५/१७: "- - - अगर उसकी (अल्लाह की *) इच्छा मसीह को नष्ट करने के लिए थी - - - उसकी माँ (मैरी *), और सभी -
हर कोई जो पृथ्वी पर है? (- अल्लाह यह कर सकता है*)"। हाँ, और मेरे पिता तुम्हारी पिटाई कर सकते थे
पिता - क्या तुमने कभी बच्चों को गुस्सा या शेखी बघारते सुना है?

००८ ५/४८: "अगर अल्लाह ने ऐसा चाहा होता, तो वह तुम्हें (मुसलमानों) को एक ही व्यक्ति - - -" बना देता।
लेकिन सत्ता की चाहत में स्थानीय प्रमुखों ने लगभग 1350 वर्षों से इसे असंभव बना दिया है। या तो एक
उम्मा अल्लाह की इच्छा के अनुसार नहीं है, या स्थानीय प्रमुखों या ख़लीफ़ाओं या जो भी मजबूत हैं
अल्लाह की तुलना में।

009 6/7: "अगर हम (अल्लाह*) ने (एक सबूत*) - - - भेजा होता। लेकिन कोई सबूत कभी नहीं भेजा गया था। इस के अलावा
तर्क मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत गलत है (दावा है कि चमत्कार/सबूत किसी को मना नहीं करेंगे)
- सबूतों ने कई लोगों को विश्वास दिलाया था।

०१० ६/३५: "अगर अल्लाह की इच्छा होती, तो वह उन्हें (गैर-मुसलमानों) को एक साथ इकट्ठा कर सकता था।
दिशा निर्देश - - - "। लेकिन वह अब तक कभी नहीं कर पाया है।

०११ ६/३७: "अल्लाह के पास निश्चित रूप से एक संकेत - - -" भेजने की शक्ति है। लेकिन मुहम्मद कभी नहीं थे
तेज शब्दों के अलावा कुछ भी उत्पन्न करने में सक्षम और "स्पष्टीकरण" को समझाने से कम। यह इसके लिए है
कहो: मुसलमानों को इस पर विश्वास करने के लिए प्रेरित किया जाता है - और अपने लिए नहीं सोचने के लिए, बल्कि केवल पालन करने के लिए
और इमाम पर विश्वास करो। इस वजह से उनमें से कई ईमानदारी से और बिना कुछ सोचे समझे
ओवर, विश्वास करें कि अमान्य दावे प्रमाण हैं।

पेज 970

०१२ ६/४१: "- - - यदि यह उसकी (अल्लाह की *) इच्छा है, तो वह (संकट) दूर करेगा - - -"। वह या प्रकृति
या मौका या खुद या एक सहायक?

०१३ ६/१०६: "अगर यह अल्लाह की योजना नहीं होती, तो वे (गैर-मुस्लिम*) झूठा नहीं लेते

देवताओं - - - "लोगों का एक निश्चित वर्ग है जो यह पता लगाता है कि लोग कहाँ जाना चाहते हैं, तब
उनके सामने चलता है, सभी को बताता है कि वे लोगों का नेतृत्व कर रहे हैं। आप अक्सर उन्हें ढूंढते हैं
राजनीति में और संगठनों में। वे हमें इस कविता के बारे में सोचते हैं। अगर केवल अल्लाह ने चाहा - - -!

०१४ ६/१३३: "- - - अगर उसकी इच्छा होती, तो वह आपको नष्ट कर सकता - - -"। खैर, उसने ऐसा नहीं किया है - सक्षम है या नहीं।

०१५ ६/१३७: "अगर अल्लाह चाहता तो (वह अन्यजातियों को "बचा" सकता था*)"। लेकिन मुहम्मद थे उनमें से कुछ ही "बचाने" (उन्हें मुसलमान बनाने) में सक्षम थे - बाकी या तो मारे गए या वे भागना पड़ा। और अभी भी दुनिया में कुछ अरबों मूर्तिपूजक और अन्य गैर-मुस्लिम हैं।

०१६ ६/१४८: "अगर अल्लाह ने चाहा होता, तो हम (लोग*) नहीं होते (अन्य देवता होते*) - - -" देखें ऊपर 6/106। और: कैसे अल्लाह लोगों को अन्य देवताओं में विश्वास करने के लिए दंडित करता है, जब वह विश्वास अपनी मर्जी के मुताबिक है??!! - यह अल्लाह है जो पहले से कुछ भी तय करता है आखिरकार, आपके विचार और कार्य भी कुरान के अनुसार।

०१७ ७/१५५: "यदि तेरी इच्छा होती तो तू उन दोनों को बहुत पहले ही नष्ट कर देता। लोग*) और मैं"। लेकिन किसी न किसी कारण से ऐसा नहीं हो पाया है।

०१८ ७/१७६: "अगर यह हमारी इच्छा होती, तो हम उसे (एक गैर-मुस्लिम*) अपने साथ ऊंचा कर देते संकेत। " खैर, न तो ऊंचाई थी, न ही संकेत। क्योंकि यह अल्लाह की मर्जी से हुआ था?
- या क्योंकि यह सब नहीं से। 001 और नीचे बस डींग मार रहा था और तेज बात कर रहा था?

०१९ १०/१६: "यदि अल्लाह ने ऐसा चाहा होता, तो मुझे (मुहम्मद*) को इसका पूर्वाभ्यास नहीं करना चाहिए था (कुरान*) आपसे - - -"। उसके लिए छोटे मौके - मुहम्मद अनुयायी चाहते थे।

०२० १०/९९: "यदि यह तुम्हारे रब (अल्लाह की) की इच्छा होती, तो वे सभी (इस्लाम में) ईमान लाते।
- सभी जो पृथ्वी पर हैं!" विश्वास तो दूर - १४०० साल बाद नहीं। या तो इसका मतलब है अल्लाह बहुसंख्यकों को विश्वास नहीं करना चाहिए, बल्कि नरक में जाना चाहिए - एक अच्छा भगवान? - या वह सक्षम नहीं है (?) मुहम्मद के शब्दों के बावजूद उन्हें विश्वास दिलाने के लिए।

०२१ ११/११८: "यदि तेरा रब (अल्लाह*) ऐसा चाहता, तो वह मानव जाति को एक कर सकता था - -
-"। या तो अल्लाह वास्तव में संघर्ष और युद्ध को पसंद करता है - वास्तव में एक दयालु ईश्वर - या वास्तव में वह असमर्थ है यह करने के लिए। जैसे कोई परिचितों या लड़कियों को प्रभावित करने के लिए डींग मार रहा हो।

०२२ १२/३१: "- - - अगर अल्लाह ने चाहा होता, तो वह सभी मानव जाति (दाहिनी ओर!) का मार्गदर्शन कर सकता था।" या तो अल्लाह को १४०० साल (और बहुत कुछ) के लिए पीढ़ी दर पीढ़ी देने में खुशी होती है अधिक - सभी तरह से वापस आदम के लिए) नरक में समाप्त होता है, या अल्लाह मनुष्यों को लड़ने और मारने के लिए पसंद करता है - - - या वह अपने शब्दों को साबित करने में असमर्थ है। मामले में अल्लाह से या मुहम्मद से डींग मारना?

०२३ १४/१९: "यदि वह (अल्लाह*) ऐसा चाहे, तो वह आपको (मनुष्य*) हटा सकता है और (आपके स्थान पर) एक नया रख सकता है। सृष्टि"। कम से कम उसने कभी नहीं किया - सक्षम या नहीं।

०२४ १६/९: "- - - अगर अल्लाह चाहता तो वह आप सभी (मनुष्य*) का मार्गदर्शन कर सकता था।" ऊपर 10/99 देखें।

०२५ १६/३५: "अगर अल्लाह ने ऐसा चाहा होता, तो हम (मनुष्य*) को उसके सिवा किसी और की पूजा नहीं करनी चाहिए थी - - -
" ऊपर 10/99 देखें।

०२६ १६/६१: "यदि अल्लाह मनुष्यों को उनके पापों के लिए दंड देता है - - - - - लेकिन वह उन्हें देता है एक निर्दिष्ट (लेकिन अज्ञात*) अवधि के लिए राहत - - -"। यानी कुछ भी साबित करने की जरूरत नहीं है। अच्छा मुहम्मद के लिए जो कभी भी कुछ भी साबित करने में सक्षम नहीं थे।

०२७ १६/९३: "अगर अल्लाह ने चाहा, तो वह आप सभी को एक व्यक्ति बना सकता है - - -"। ऊपर 11/118 देखें।

०२८ १७/५४: "- - - यदि वह (अल्लाह *) कृपया, वह आपको दया प्रदान करता है, या यदि वह चाहता है, तो दंड - -
-"। कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह वाक्य सही होना निश्चित है। एफ के लिए वास्तव में एक अच्छा वाक्य। भूतपूर्व। मुहम्मद - हमेशा सही, चाहे कुछ भी हो जाए। लेकिन यह कुछ भी साबित नहीं करता है।

०२९ १७/८६: "अगर यह हमारी (अल्लाह की *) इच्छा होती, तो हम वह ले सकते थे जो हमने तुम्हें भेजा है।

(मुहम्मद/मुसलमान*) प्रेरणा से (= कुरान*) - - -"। एक और धमकी अल्लाह कभी नहीं
पूरा किया। उसकी इच्छा नहीं है या नहीं - या मौजूद नहीं है?

०३० २३/२४: "- - - अगर अल्लाह चाहता तो - - - वह स्वर्गदूतों को नीचे भेज सकता था (नबी के रूप में) - - -"
लेकिन कुछ कारणों से वह या तो ऐसा नहीं चाहता था, भले ही वह कहीं अधिक कुशल हो - या
वह सक्षम नहीं था (या कोई इंसान झांसा दे रहा था?) ए एनबी: कुरान कुछ जगहों पर क्यों है
बता दें कि अल्लाह फ़रिश्ते भेजकर इस्लाम या मुहम्मद को साबित नहीं कर सकता क्योंकि ऐसा होगा
मतलब यह आखिरी दिन था? यहाँ वह कहता है कि यदि वह चाहे तो नीचे भेज सकता है, और अन्य स्थानों पर वह
उन्हें हजारों की संख्या में मुसलमानों के साथ युद्ध करने या अच्छाई लिखने के लिए भेजता है
या बुरे काम, या मदद करने के लिए। उसके लिए एक या कुछ और का कोई मतलब नहीं होगा। क्या कोई झांसा है
या तेजी से बात?

०३१ २५/४५: "यदि वह (अल्लाह *) चाहता, तो वह इसे (छाया) स्थिर कर सकता था!" एक अच्छी चीज
उसने ऐसा नहीं किया, क्योंकि ऐसा करने का एकमात्र तरीका पृथ्वी को घूमने से रोकना है। इच्छा
या क्षमता?

०३२ २५/५१: "अगर यह हमारी (अल्लाह की *) इच्छा होती, तो हम हर केंद्र पर एक चेतावनी भेज सकते थे
आबादी"। यदि वह ऐसा करने में सक्षम होता, तो उसने अरबों मनुष्यों को नर्क जाने से बचाया होता
- अगर इस्लाम सच कहता है? परोपकार? द्वेष? या कुछ भी उत्पादन करने में असमर्थता लेकिन
शब्दों?

०३३ २६/४: "अगर (ऐसे) हमारी (अल्लाह की *) इच्छा होती, तो हम उन्हें (गैर-मुस्लिम *) भेज सकते थे।
आकाश से एक चिन्ह, जिस पर वे नम्रता से अपनी गर्दनें झुकाते थे।" वास्तव में एक सुपर घमंड?
- खासकर जब से मुहम्मद कभी भी एक मिनी-प्रूफ भी नहीं दिखा पाए जो कि एक के रूप में मान्य था
प्रमाण? या एक "परोपकारी" भगवान का एक सच्चा बयान जो चाहता है कि अधिकांश मनुष्य जा रहे हैं
नरक? या सिर्फ कुरान के निर्माता से अपनी शक्ति को मजबूत करने के लिए कुछ डींग मार रहे हैं?

०३४ २९/५३: "- - - अगर यह (अल्लाह के द्वारा) नियुक्त अवधि (राहत की) के लिए नहीं था, तो सजा
निश्चित रूप से उनके पास (गैर-मुस्लिम*) आते - - -"। बहुत अच्छा - तब मुहम्मद हदी
एक स्पष्टीकरण क्यों "बुरे" लोग एक अच्छा जीवन जीते थे, और उन्हें कुछ भी साबित नहीं करना पड़ा - यह बस था
अल्लाह की अथाह इच्छा जिसने यह किया।

०३५ ३२/१३: "अगर हम (अल्लाह*) ऐसा चाहते, तो हम निश्चित रूप से हर आत्मा को उसकी सच्चाई में ला सकते थे।
दिशा निर्देश - - -"। 10/99 देखें।

971

पेज ९७२

०३६ ३३/२४: "- - - अल्लाह सत्य के लोगों (मुसलमानों) को पुरस्कृत कर सकता है - - - और दंडित करें
पाखंडी अगर वह उसकी मर्जी - - -"। हमेशा स्पष्टीकरण देने का एक निश्चित तरीका: "यदि ऐसा हो तो
अल्लाह की मर्जी।" और वही किसी भी अन्याय की व्याख्या कर सकता है जो अल्लाह या मुहम्मद नहीं कर सकता था या नहीं कर सकता था
सुधारना नहीं।

०३७ ३४/९: "अगर हम (अल्लाह *) चाहते तो हम पृथ्वी को उन्हें निगल जाते - - -।" आसानी से
तब तक कहें जब तक आपको कुछ साबित करने की जरूरत नहीं है।

०३८ ३५/१६: "यदि वह (अल्लाह*) इतना प्रसन्न होता, तो वह तुम्हें (मनुष्य*) मिटा देता और एक नया लाता
सृष्टि"। जब तक आप अपनी बड़ाई करते हैं तब तक शब्द सस्ते होते हैं - और हो सकता है कि यह डींग मार रहा हो, क्योंकि
भले ही कुरान में अन्य जगहों पर भी इसी तरह की बातें कही गई हों, लेकिन यह शब्दों के अलावा और कुछ नहीं था।

०३९ ३६/४३: "अगर यह हमारी (अल्लाह की *) इच्छा होती, तो हम उन्हें (मानव जाति *) - - -" डुबो सकते थे। देखो
35/16।

०४० ३६/६६: "अगर यह हमारी (अल्लाह की *) इच्छा होती, तो हम उनकी आँखों को मिटा देते - - -"। ए
यदि कोई बुरा कार्य किया गया हो, और वह नहीं किया गया हो - परोपकार या अक्षमता के कारण?

०४१ ४१/१४: "यदि हमारा रब (अल्लाह) ऐसा चाहता, तो निश्चय ही कोण उतार देता
(उपदेश देना)।" 23/24 देखें।

०४२ ४२/८: "यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें एक ही व्यक्ति - - -" बना सकता था। 11/118 . देखें
के ऊपर।

०४३ ४२/२४: "- - - अगर अल्लाह ने चाहा, तो वह तुम्हारे दिल को सील कर सकता है।" धमकी भरा बयान - लेकिन केवल एक बयान (और हमें नहीं लगता कि कुछ मुस्लिम योद्धाओं और आतंकवादियों के पास बहुत कुछ है) दिल सील करने के लिए।)

०४४ ४२/२९: "- - - वह (अल्लाह*) उन्हें (जीवित प्राणियों*) को एक साथ इकट्ठा करने की शक्ति रखता है जब वह चाहता है।" लेकिन जहां तक विज्ञान की जानकारी है, पहले जीवन के बाद से ऐसा कभी नहीं हुआ प्राणियों ने पृथ्वी को आबाद किया। हो सकता है कि अल्लाह ने कभी इच्छा न की हो? या वजह कुछ और है?

०४५ ४२/३३: "यदि यह उसकी (अल्लाह की) इच्छा है, तो वह अभी भी हवा - - -" कर सकता है। कि हम भी कर सकते हैं - - - as जब तक हमें इसे साबित नहीं करना है।

***046 43/20: "अगर यह (अल्लाह) की इच्छा होती - - - हम (पगानों *) नहीं होना चाहिए था ऐसे देवताओं की पूजा की!" ऊपर 10/99 देखें।

०४७ ४३/६०: "और अगर यह हमारी (अल्लाह की *) इच्छा होती, तो हम आप में से फ़रिश्ते बना सकते थे (गैर-मुस्लिम*) - - -।" फिर क्यों नहीं? - यह बचत करने का एक और अधिक कुशल तरीका रहा है लोगों की आत्माएं - अगर मुहम्मद ने सच बोला - पैगम्बरों, आतंक और युद्ध की तुलना में। लेकिन हो सकता है मुहम्मद ने धोखा दिया?

०४८ ४७/४: "- - - अगर अल्लाह की इच्छा होती, तो वह निश्चित रूप से बदला ले सकता था उन्हें (गैर-मुस्लिम*) (स्वयं); लेकिन (वह तुम्हें लड़ने देता है) तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए - - -"। एक झांसा और कुछ तेज-तर्रार? या हकीकत? इसके अलावा: यदि अल्लाह सर्वज्ञ है, तो परीक्षा का कोई कारण नहीं है - वह जानता है।

972

पृष्ठ ९७३

०४९ ४७/३०: "अगर हम (अल्लाह) चाहते तो हम उन्हें (बीमारी वाले लोगों को) दिखा सकते थे। उनके दिलों में = गैर-मुसलमान*) तुम्हारे ऊपर (मुहम्मद*) - - - "। लेकिन क्यों जीवन को आसान बनाते हैं आप?

०५० ५६/६५: "अगर यह हमारी (अल्लाह की *) इच्छा होती, तो हम इसे (बीज को) सुखाकर चूर्ण बना सकते थे - - -"। अल्लाह या प्रकृति?

०५१ ५६/६९: "अगर यह हमारी (अल्लाह की *) इच्छा होती, तो हम इसे (बारिश) नमक - - - बना सकते थे। और मैं कर सकता हूँ अगर मुझे यह नहीं करना है तो एक पहाड़ हिलाओ।

०५२ ५९/२१: "अगर हम (अल्लाह) ने इस कुरान को पहाड़ पर उतारा होता, तो तुम उसने अपने आप को दीन देखा और अल्लाह के डर से अपने आप को अलग कर लिया।" कुरान कई पर किया गया है पहाड़, और उसके कारण कभी कोई पहाड़ अपने आप को छोटा नहीं करता और न ही खुद को अलग करता है। ए बहुत स्पष्ट झांसा।

पोस्ट स्क्रिप्टम से अध्याय VII/8.

यदि आप देखने जाते हैं तो आपको कुछ और मिल जाएंगे, लेकिन यह सबसे उपयुक्त अंतिम है। अध्ययन इस तरह के छंद, आपको तेज बात करने और झांसा देने का सबसे मजबूत एहसास देते हैं।

मुहम्मद किसी कारण से थे - प्राकृतिक कारण? - के लिए किसी प्रकार का प्रमाण प्रस्तुत करने में असमर्थ उसकी शिक्षाएँ। यहोवा ने - बाइबिल के अनुसार और कुरान के अनुसार - एक का उत्पादन किया था बहुत सी अलौकिक घटनाएं जो उसके अस्तित्व को साबित करती हैं (यदि बाइबिल उत्तर/या कुरान बोलता है) सच्चाई)। और यीशु ने बहुत से अलौकिक चमत्कार किए - फिर भी यदि बाइबल और/या कुरान सच बोलता है। साथ ही बाइबल में कुछ गलतियाँ हैं (लेकिन बाइबल किसके द्वारा लिखी गई है) मनुष्य, किसी देवता द्वारा नहीं भेजा गया - मनुष्य अचूक नहीं हैं, और प्रलेखित गलतियाँ हैं धर्म के बारे में नहीं), लेकिन जब एनटी की बात आती है, तो इतने हज़ार गवाह थे सब एक साथ, और इसका अधिकांश भाग कुछ समय बाद लिखा गया जब चीजें हुईं - गवाहों ने दिया लेखक विश्वसनीय जानकारी देते हैं, और अगर उन्होंने जो लिखा वह गलत था, तो वे इसका विरोध करेंगे - तो वहाँ है a संभावना है कि इसमें से कम से कम कुछ सच हो।

लेकिन मुहम्मद अपनी एक भी बात को साबित नहीं कर पाए। नए के आरंभकर्ता क्या करता है ऐसे मामलों में संप्रदाय और धर्म क्या करते हैं (एक संख्या रही है)? - वे शब्दों का प्रयोग करते हैं और केवल

शब्दों। और कभी-कभी वे झांसा देते हैं। यह पूरा अध्याय झांसों और तेज-तर्रार बातों की एक श्रृंखला हो सकती है, जैसा कि एक शब्द का एहसास नहीं होता है या अन्य तरीकों से सिद्ध नहीं होता है (और अगला अध्याय बेहतर नहीं है)।

इसके अलावा: इतिहास या धार्मिक इतिहास का गंभीरता से अध्ययन करने वाले लोग कुरान का इस्तेमाल कभी क्यों नहीं करते? 610 ईस्वी पूर्व की किसी भी चीज़ के बारे में जानकारी के स्रोत के रूप में? - एक सर्वज्ञ से एक किताब भगवान विश्वसनीय होना चाहिए? लेकिन गंभीर शोध करने वाला कोई भी इसका उपयोग नहीं करता - कोई नहीं।

A PS: हदीसों में आपको मुहम्मद से जुड़े कुछ अजूबे मिलेंगे। लेकिन हदीस क्योंकि मुहम्मद की मृत्यु के 200-250 वर्ष बाद तक एक बात लिखी नहीं गई थी - बहुत सारे किंवदंतियों और परियों की कहानियों के उद्भव का समय - और दूसरी बात हदीस और उनकी कथाकारों की अनुमानित श्रृंखला (उनके "इस्नाद") सचमुच सौ हज़ारों द्वारा बनाई गई थीं उन वर्षों के दौरान कई कारणों से (अक्सर राजनीतिक)। इस वजह से जब कलेक्टर अंत में उन्हें इकट्ठा करना शुरू कर दिया, यह अक्सर अनुमान लगाया जाता था कि एक सच्ची कहानी क्या थी और क्या नहीं, और जहां अल्लाह से प्रार्थना करना शायद ही कभी यह तय करने के तरीकों में से एक था कि कौन सा था सच है और कौन सा नहीं। कभी-कभी हदीस सच होती है, लेकिन कभी-कभी स्पष्ट रूप से यह सच नहीं होती है। में किस्से मुहम्मद से जुड़े चमत्कारों के बारे में हदीस स्पष्ट रूप से कुरान में हैं - जो उनकी मृत्यु के कुछ ही वर्षों बाद लिखा गया था, और फिर ऐसे मामलों में और अधिक विश्वसनीय - इतना ही नहीं

कोई आश्चर्य नहीं है, लेकिन यह समझाने के लिए कि कोई चमत्कार क्यों नहीं हुआ? मुहम्मद द्वारा बनाया गया या उससे जुड़ा हुआ। कुरान अन्य बातों के अलावा यह भी साबित करता है कि सभी हदीसों में मुहम्मद से जुड़े चमत्कारों के बारे में कहानियां, यूओ बनाई जाती हैं - यदि नहीं कुरान ने ऐसे चमत्कारों की कुल कमी को दूर करने की कोशिश करने के बजाय कुछ चमत्कारों को फिर से बताया था चमत्कार

19. 09 अप्रैल (ई.)

भाग VII, अध्याय 9 (= VII-9-0-0)

तथ्य बनाम. दावे, कथन, (अमान्य) "संकेत", (अमान्य) "सबूत", आदि। कुरान में: कुरान और अल्लाह कुरान, मुहम्मद, इस्लाम और अल्लाह के अनुसार

कुरान में और अधिक तेजी से बात करें - "व्याख्या" दूर कठिन तथ्य और प्रश्न

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

००१ २/१०८: "क्या आप अपने रसूल (मुहम्मद*) से सवाल करेंगे जैसा कि मूसा से सवाल किया गया था पुराना? लेकिन जो कोई ईमान (इस्लाम*) से अविश्वास (कोई अन्य विश्वास या विश्वास नहीं) में बदल जाता है इस्लाम की तुलना में *), बिना किसी संदेह के रास्ते से भटक गया है"। कुरान मूसा के अनुसार इस्राएल/यहूदियों को उसे देखने की अनुमति देकर यहोवा/ईश्वर को सिद्ध करने के लिए कहा गया था - और उसके अनुसार वही किताब जो बहुत गलत मांग थी। नतीजतन मुहम्मद और से पूछना गलत है सबूत के लिए इस्लाम - अल्लाह को देखने के लिए नहीं, बल्कि सभी तरह के सबूत (कि मुहम्मद और इस्लाम थे) और उत्पादन करने में असमर्थ हैं)। हाँ, यह गलत से भी बदतर है - यह अविश्वास का संकेत है। तर्क? - कोई नहीं, लेकिन सुविधाजनक जब सबूत असंभव हो।

००२ ३/१८३: "उन्होंने (गैर-मुस्लिम/यहूदी*) (भी) ने कहा: 'अल्लाह ने विश्वास न करने का हमारा वादा लिया एक रसूल जब तक कि उसने हमें (स्वर्ग से) आग से भस्म हो गया बलिदान नहीं दिखाया। कहो: 'वहाँ स्पष्ट चिन्हों के साथ, और यहां तक कि जो कुछ तुम मांगते हो, उसके साथ दूत मेरे पास तुम्हारे पास आए: फिर क्यों? यदि तुम सच बोलते हो, तो क्या तुम ने उन्हें मार डाला?"

1. पहला वाक्य के अनुसार दूर है बाइबिल या अन्य यहूदी धर्मग्रंथों के साथ।
2. केवल बहुत कम भविष्यवक्ताओं ने आग का इस्तेमाल किया

स्वर्ग एक प्रमाण के रूप में या बिल्कुल लाया है
ऐसी आग। उनमें से कुछ के लिए जाना जाता है
मारे गए। तर्क के अलावा गलत है: वह
कहा जाता है कि उन्होंने कुछ को मार डाला, नहीं
अस्वीकृत करें कि यह न्यूनतम था
मांग।

मुहम्मद से सबूत मांगा गया। वह हमेशा की तरह कुछ भी साबित करने में असमर्थ था, और
एक - इस मामले में बहुत अच्छा नहीं - "इसे पूरी तरह से समझाने" का तरीका मिला ताकि इससे बचा जा सके
प्रश्न या मांग।

दरअसल: अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक द्वारा प्रमाणित किताब "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अनुसंधान अकादमी (इस तरह मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक
विषयों) दिनांक २७. दिसंबर १९९८ के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं
अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि
अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है
के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है।

००३ ६/७: "यदि हम (अल्लाह*) ने आपको (मुहम्मद*) चर्मपत्र पर एक लिखित (संदेश) भेजा होता,
ताकि वे (मुसलमान और गैर-मुस्लिम*) इसे अपने हाथों से छू सकें, अविश्वासियों
कहना सुनिश्चित किया है: 'यह स्पष्ट जादू के अलावा और कुछ नहीं है!'" मुहम्मद कभी भी सक्षम नहीं थे
उन्होंने अपने ज्यादातर भोले और अशिक्षित दर्शकों से जो कहा, उसके बारे में कुछ भी साबित करने के लिए। लेकिन उसे मिल गया
अनुयायियों और अन्य लोगों से इस तरह के सबूतों के बारे में कई बार सवाल और मांग करते हैं - यह f.
भूतपूर्व। कुरान में बार-बार उल्लेख किया गया है। उन्हें उन सवालों और मांगों से बचना पड़ा, और
एक स्पष्ट तरीका उन्हें समझाने के तरीके खोजना था। यहाँ वह जिस तकनीक का उपयोग करता है वह है "नहीं"
चाहे मैं कुछ भी सबूत पेश कर दूं, वे किसी भी तरह से विश्वास नहीं करेंगे, तो सबूत क्यों पेश करें?"
ठग और धोखेबाज भी ऐसी तकनीकों का इस्तेमाल करते हैं। यह उन लोगों के लिए स्पष्ट है जो सोचने में सक्षम हैं
खुद या खुद कि तर्क मुड़ गया है - लेकिन जो विश्वास करना चाहते हैं या बहुत भोले हैं
उस पर विश्वास कर सकता है। अधिक गंभीर बात यह है कि मुहम्मद एक बुद्धिमान व्यक्ति और एक व्यक्ति थे
लोगों के साथ व्यवहार करने और उन्हें प्रभावित करने के तरीके के बारे में बहुत कुछ जानना। ऐसा कोई तरीका नहीं है जिसे वह नहीं जानता था कि वह इस्तेमाल करता है
मुड़ तर्क और बेईमान मनोविज्ञान और कहानी, और किसी भी तरह से उसे नहीं पता था कि अगर वह
वास्तविक सबूत पेश किए जो उसके अनुयायियों को बहुत मजबूत करेंगे और विशाल बना देंगे
अविश्वासियों की संख्या आस्तिक बन जाती है। एक छोटे से वाक्य में: बुद्धिमान का कोई रास्ता नहीं होता
आदमी नहीं जानता था कि यह बहाना झूठ था।

004 6/8: "वे (लोग*) कहते हैं: 'उसके पास एक स्वर्गदूत क्यों नहीं उतारा गया?' अगर हम (अल्लाह*) ने
एक दूत भेज, मामला एक ही बार में सुलझा लिया जाएगा, और कोई राहत नहीं दी जाएगी
उन्हें"। यह प्रश्न - एक देवदूत के माध्यम से एक प्रमाण - बार-बार उठता था। मुहम्मद अक्सर
इस्तेमाल किया गया "स्पष्टीकरण" यह था: अल्लाह अंतिम दिन (दिन) तक एक स्वर्गदूत नहीं भेजेगा
कयामत की)। इसका मतलब यह है कि अगर वह कोण नीचे भेजता है तो वह दिन अंतिम दिन बन जाता है ("द ."
मामला एक ही बार में सुलझा लिया जाएगा"), और उस स्थिति में अविश्वासी अपना मौका खो देंगे
विश्वासी बनें ("- - - उन्हें कोई राहत नहीं दी जाएगी।) यह "स्पष्टीकरण" बकवास है
कुरान के अनुसार भी। वह किताब बताती है कि फरिश्ता गेब्रियल अक्सर मुहम्मद के पास जाता था,
यह बताता है कि स्वर्गदूत मरे हुओं की आत्माओं को लाने के लिए नीचे आते हैं, यह बताता है कि स्वर्गदूत नीचे आते हैं
जब आप सो जाते हैं तो अपनी आत्मा को ले आते हैं और जब आप जागते हैं तो उसे वापस करने के लिए, यह स्वर्गदूतों को बताता है
अपने अच्छे और बुरे कामों को नोट करने के लिए आपको घेर लें - हजारों स्वर्गदूतों का उल्लेख नहीं करने के लिए
अल्लाह बार-बार मुसलमानों के साथ युद्ध करने के लिए नीचे भेजता है।

एक भी कारण नहीं था कि अल्लाह प्रतिदिन असंख्य कोणों में से एक का उपयोग क्यों नहीं कर सकता था
और अक्सर मुहम्मद के लिए एक सबूत के रूप में भेजता है।

एक बहुत ही स्पष्ट झांसा और तेज-तर्रार बात।

005 6/9: "अगर हम (अल्लाह*) ने इसे (सबूत*) फरिश्ता बनाया होता, तो हमें उसे एक के रूप में भेजना चाहिए था
यार, और हम (= हमारे प्रमाण/परी*) ने निश्चित रूप से उन्हें एक मामले में भ्रम पैदा किया होगा
(धर्म*) जिसे वे पहले ही भ्रम में डाल चुके हैं।"

पेज 976

1. अल्लाह के पास छलावरण करने का कोई कारण नहीं है एक आदमी की तरह परी।
२. एक फरिश्ता का आना – चाहे कुछ भी हो गेस्टाल्ट जब तक यह स्पष्ट था कि यह एक देवदूत था - केवल सबसे अधिक संदेहास्पद लोगों को भ्रमित कर सकता है। बाकी सब आस्तिक हो जायेंगे।

लोगों को समझने वाला कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति यह सब जानता होगा। यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि कोई भगवान, हालाँकि छोटा है, इसे जानना सुनिश्चित होगा। मुहम्मद जानता था कि यह तेज-तर्रार बात थी - अपने आप से, द्वारा एक सहायक (यदि कुरान एक सहायक द्वारा बनाया गया था जैसा कि कुछ अफवाहों में कहा गया है), या अल्लाह द्वारा (यदि कुरान - या इसका यह टुकड़ा - वास्तव में अल्लाह द्वारा बनाया गया था)। मुहम्मद बहुत बुद्धिमान थे और लोगों के बारे में बहुत कुछ जानता था - वह जानता था कि यह एक झूठ था - दोनों कि एक कोण को एक जैसा दिखना था आदमी, और यह कि कोई भी अविश्वासी विश्वास नहीं करेगा यदि उन्हें वास्तविक प्रमाण मिले।

००६ ६/३५: "- - - फिर भी यदि आप जमीन में सुरंग या आसमान की सीढ़ी की तलाश कर सकते हैं और उन्हें (लोग - क्योंकि मुसलमानों ने भी सबूत मांगे*) एक निशानी - (क्या अच्छा?)" हाँ, बयानबाजी का सवाल होगा: एक वास्तविक प्रमाण से क्या अच्छा होगा? और के रूप में बयानबाजी - but गलत तर्क के कारण और उससे भी अधिक विकृत मनोविज्ञान के कारण - होगा: कुछ भी नहीं, क्योंकि अविश्वासियों ने किसी भी तरह विश्वास नहीं किया होगा। कौन लेकिन धोखेबाजों को तार्किक मोड़ की जरूरत है और मनोवैज्ञानिक तथ्य? 6/7 - 9 भी देखें।

००७ ६/३७: "अल्लाह के पास निश्चित रूप से एक चिन्ह भेजने की शक्ति है, लेकिन उनमें से अधिकांश (लोग *) नहीं समझता (इसलिए इसका कोई फायदा नहीं*)"। न होने के लिए मुहम्मद के "व्याख्याओं" की एक किस्म एक ही प्रमाण प्रस्तुत करने में सक्षम - केवल शब्द।

008 6/109: "निश्चित रूप से (सभी) संकेत अल्लाह की शक्ति में हैं: लेकिन आप (मुसलमान) क्या करेंगे एहसास है कि (यहां तक कि) अगर (विशेष) निशान नीचे आ गए, तो वे (गैर-मुस्लिम*) विश्वास नहीं करेंगे"। एक अधिक चोरी इतनी तार्किक और मनोवैज्ञानिक रूप से गलत है, कि मुहम्मद को पता होना चाहिए कि यह नहीं था सच - एक वास्तविक प्रमाण ने सबसे अधिक कट्टर गैर-मुस्लिम विश्वासियों को छोड़ दिया था। और यह था विश्वासियों के विश्वास को कम से कम १० के कारक से मजबूत किया। और एक बार फिर एक बिंदु जहां मुहम्मद को पता था कि वह झूठ बोल रहा था।

००९ ६/१११: "भले ही हम (अल्लाह*) ने उनके पास (गैर-मुस्लिम*) फ़रिश्ते भेजे, और मरे हुओं ने उन से बातें करो, और हम ने सब कुछ उनकी आंखों के साम्हने इकठ्ठा किया, वे नहीं हैं लोगों को विश्वास करने के लिए, जब तक कि यह अल्लाह की योजना न हो "। इसे दो तरह से समझा जा सकता है - दोनों ही काफी तेज बात:

1. संख्या की एक और और मजबूत किस्म। 6/109 और दूसरे।
2. मुहम्मद के कुछ श्रोताओं ने प्रश्न किया स्पष्ट रूप से गलत तर्क और मनोविज्ञान वह स्पष्ट प्रमाण किसी को प्रभावित नहीं करेगा, और एक कारण चाहिए क्यों नहीं - सभी- सभी के लिए व्यापक और अंतिम उत्तर कठिन या अनुत्तरित प्रश्न: यह है अल्लाह की मर्जी। कभी-कभी सबसे तेज तेज- बातचीत।

०१० ८/३२-३३: "याद रखें कि कैसे उन्होंने (गैर-मुसलमान*) कहा: 'हे अल्लाह, अगर यह वास्तव में सच है तेरी ओर से, हम पर आकाश से पत्थरों की वर्षा कर, और हम पर भारी दण्ड भेज।

पेज 977

लेकिन जब तक तुम (मुसलमान) उनमें से थे, अल्लाह उन्हें कोई सबूत नहीं भेजने वाला था।
न ही वह ऐसा करने जा रहा था, जबकि वे क्षमा मांग सकते थे। बेशक यह अच्छा था
मुसलमानों को कि अल्लाह बुरे लोगों को सज़ा देने पर उन्हें चोट पहुँचाने का जोखिम नहीं उठाएगा। लेकिन यह होगा संभावित रूप से सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए कोई समस्या नहीं है कि वह केवल दोषियों को दंडित करे - या दंडित करने के लिए समूह के अलग होने के बाद और मुसलमान बुरे लोगों के साथ नहीं मिले थे
अधिक। विश्वास करने के इच्छुक विश्वासियों के लिए, और इसकी आदत नहीं है - या इसमें प्रशिक्षित - आलोचनात्मक सोच, यह एक संतोषजनक फास्ट-टॉक/"स्पष्टीकरण" हो सकता है।

कि अल्लाह बुरे लोगों को तभी सज़ा देगा जब उन्हें माफ़ी मांगने में बहुत देर हो चुकी होगी (= कयामत का दिन) उल्लास में जोड़ा हो सकता है।

०११ १०/९६-९७: "वे (गैर-मुसलमान*) जिनके खिलाफ तेरे पालनहार (अल्लाह) का वचन है सत्यापित (अल्लाह के शब्द = कुरान किसी भी स्थान पर सत्यापित नहीं किया गया है - केवल वहाँ) मुहम्मद के शब्द हैं। इससे भी बदतर: मुहम्मद/कुरान बहुत गलत तथ्यों का इस्तेमाल करते हैं और अमान्य कथन, "संकेत" आदि। कोई सर्वज्ञ ईश्वर ऐसा कभी नहीं करेगा*) विश्वास नहीं करेगा,
भले ही हर चिन्ह उनके पास लाया गया था - - -"। सही हो सकता है वे उन पर विश्वास नहीं करेंगे संकेत, अगर कोई कुरान में संकेतों के बारे में बात करता है जो बाइबिल से उधार नहीं लिया गया है, क्योंकि एक नहीं उनमें से तार्किक रूप से मान्य हैं - वे केवल अप्रमाणित कथन हैं जिनका उपयोग कोई भी अपने बारे में कर सकता है भगवान का)। लेकिन असली सबूतों का असर होता। और मुहम्मद बुद्धिमान से भी बढ़कर थे यह जानने के लिए पर्याप्त था, और जानता था कि यह तर्क झूठ था।

०१२ १३/३२: "आपसे पहले (मुहम्मद*) भविष्यद्वक्ताओं का मज़ाक उड़ाया गया था: लेकिन मैंने राहत दी
अविश्वासियों के लिए, और अंत में मैंने उन्हें दण्ड दिया - - -"। जानो, ऐ मुसलमानों, कि मुहम्मद है
शक्तिशाली, भले ही उसका उपहास और विरोध किया जाए। एक ही कारण है कि अल्लाह उन्हें सज़ा नहीं देता क्या यह है कि किसी कारण से अपनी अथाह योजना में कुछ समय प्रतीक्षा करना चाहता है - लेकिन फिर उन्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जाएगी !!

और टिप्पणी नहीं।

०१३ १३/४२: "सोचो (मुसलमान*) ऐसा नहीं है कि अल्लाह उन (गैर-मुसलमानों) के कामों पर ध्यान नहीं देता है।
जो गलत करते हैं (मुसलमान नहीं बनते*)। लेकिन वह उन्हें एक दिन के खिलाफ राहत देता है जब आँखें डरावनी (कयामत का दिन*) में टिकी रहेंगी"। बुरे लोग क्यों नहीं होते
दंडित - कई लोग एक अच्छा जीवन भी जी रहे हैं - क्या अल्लाह अपने अथाह ज्ञान में चाहता है रुको - अगले जन्म तक हो सकता है - लेकिन फिर उन्हें वास्तव में दंडित किया जाएगा (बेशक कोई सबूत नहीं) ये कथन)। मुहम्मद/कुरान इस तरह के तर्कों का प्रयोग कई बार करते हैं, विशेषकर "समझाओ" क्यों कई गैर-मुस्लिम अमीर हैं और एक अच्छा जीवन जी रहे हैं, जबकि कई मुसलमान हैं
ताक-झांक करें और एक दयनीय जीवन जिएं (आखिरी बार इसके साथ समझाया जाता है कि अल्लाह सिर्फ आपकी परीक्षा ले रहा है।) विश्वासियों के लिए एक कुशल फास्ट-टॉक।

०१४ १५/७+८: "'तुम (मोहम्मद*) स्वर्गदूतों को हमारे पास क्यों नहीं लाते यदि तुम्हारे पास ऐसा है
(सच बोलें?' हम (अल्लाह*) फ़रिश्तों को तब तक नीचे नहीं भेजते जब तक कि वे उचित कारण न हों: यदि वे आए
(अधर्मियों के लिए), निहारना, उन्हें कोई राहत नहीं होगी (यह अचानक का दिन होगा) कयामत *)।

लाखों गैर-मुसलमानों को यह साबित करने का कोई उचित कारण नहीं है कि इस्लाम एक सच्चा धर्म है। देखें 6/8 के ऊपर।

०१५ १७/५९: "और हम (अल्लाह*) निशानियाँ (असली सबूत*) भेजने से केवल इसलिए परहेज़ करते हैं क्योंकि
पिछली पीढ़ियों के पुरुषों ने उन्हें झूठा माना: हमने शी-ऊंट को तमूद के पास भेजा

उनकी आँखें खोलो - - -"। थमूद यहाँ वर्णित एकमात्र उदाहरण है - एक कहानी "उधार" पुरानी अरब लोक कथाएँ।

एक बात यह है कि हम कभी नहीं समझ पाए हैं कि ऊंट किसका प्रमाण हो सकता है
अल्लाह। (लेकिन वास्तव में ऊंट एक पुरानी अरब लोक कथा का हिस्सा है: यह एक चट्टान से निकला है और एक भगवान के लिए एक नबी बन गया।) लेकिन बस बाइबल पढ़ें - जिसे कुरान "उधार" (और मुड़ता है) से कई कहानियाँ - और आप देखेंगे कि वास्तविक प्रमाण का प्रभाव होता है (जो कि सबसे स्वाभाविक है)। बस यही है कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा बस कुछ हद तक मुड़े हुए तर्क और मनोविज्ञान के साथ तेजी से बात करें - उनमें से एक कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति इस बारे में कुछ जानता है कि लोग कैसे सोचते हैं और प्रतिक्रिया करते हैं, यह जानना निश्चित था असत्य था।

016 26/205-206: "क्या आप देखते हैं? अगर हम (अल्लाह*) उन्हें कुछ सालों तक (इस जीवन) का आनंद लेने दें (कुछ भी अनंत काल की तुलना में "कुछ" है *), फिर भी उनके पास लंबाई में आता है (दंड) जिसका उनसे वादा किया गया था!" अगर आपको लगता है कि गैर-मुसलमान अच्छा करते हैं तो यह अन्याय है और आप नहीं, शांत हो जाओ - यह सिर्फ अल्लाह की योजना और उसके अंतहीन ज्ञान का परिणाम है, और निश्चिंत रहें; उन्हें अगले जन्म में दंडित किया जाएगा और आप शीर्ष पर आ जाएंगे।

017 32/29: "निर्णय के दिन, अविश्वासियों को कोई लाभ नहीं होगा यदि वे (तब) मानना!" आराम से, अविश्वासियों को अगले जन्म में दंडित किया जाएगा - यदि इसमें नहीं। भले ही वे अंत में खुद को बचाने की कोशिश करते हैं, कोई क्षमा नहीं होगी। फैसला उन पर पड़ेगा। का बेशक यह साबित करना संभव नहीं है, लेकिन ऐसा कहने वाले कई शब्द हैं। कई शब्द ही।

०१९ ३६/१०: “उन पर भी ऐसा ही है, चाहे तुम उन्हें (मुहम्मद*) न समझाओ या नहीं। उन्हें चेतावनी दो: वे (गैर-मुसलमान*) ईमान नहीं लाएँगे।” तो एफ के साथ परेशान क्यों। भूतपूर्व। असली सबूत?

019 40/4: "अल्लाह के संकेतों के बारे में कोई भी विवाद नहीं कर सकता लेकिन अविश्वासियों"। प्रकल्पित अल्लाह के संकेत (= संकेत या सबूत) वास्तविकता प्रकट होने का संकेत दिया जाता है, भले ही उनमें से एक भी सिद्ध नहीं है - "चिन्हों" पर विवाद करने का अर्थ है कि आप एक अविश्वासी हैं।

०२० ४२/२७: “यदि अल्लाह अपने बंदों (मुसलमानों) के लिए प्रावधान को बढ़ा देता, तो वे वास्तव में पृथ्वी के माध्यम से सभी सीमाओं से परे उल्लंघन - - -", - एक उचित तर्कसंगत कारण क्यों मुसलमान बनने का मतलब अपने आप ठीक हो जाना नहीं था: यह अल्लाह की मर्जी है, अवधि।

अध्याय VI/9 के लिए पोस्ट स्क्रिप्ट।

अगर आप कुरान पढ़ते हैं, तो मुहम्मद से मुश्किल से मिलने पर आपको और तेज़-तर्रार बात मिलेगी प्रशन। बहुत ज्यादा नहीं, लेकिन एक भगवान को किसी की बिल्कुल भी जरूरत नहीं होगी - और भी बहुत कुछ कागजों की साफ चादर वाले आदमी से ज्यादा की जरूरत होगी।

हालांकि, साफ-सुथरे कागजात के बिना किसी को तेजी से बात करने की आवश्यकता होगी।

अपने आप को देखें - और अपने लिए न्याय करें।

ए पीएस: अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में काहिरा में अनुसंधान अकादमी (इस तरह मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक विषयों) दिनांक २७. दिसंबर १९९८ के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है। अगर कोई अल्लाह नहीं है

और/या मुहम्मद और एक ईश्वर के बीच कोई संबंध नहीं है, तो इस्लाम क्या है? क्या यह सब तेज है-बातचीत?

14. फरवरी 09।

भाग VII, अध्याय 10, अध्याय 1 (= VII-10-1-0)

तथ्य बनाम. दावे, कथन, (अमान्य) "संकेत", (अमान्य) "सबूत", आदि। कुरान में: कुरान और अल्लाह कुरान, मुहम्मद, इस्लाम और अल्लाह के अनुसार

कैसे के लिए कुछ आवश्यक कुरान पढ़ा जाना है और समझा

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या (00 या 0 सहित) कुछ स्थानों के बाद अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। 1, 2 या 3 अंक
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस अध्याय में सामग्री:

1. कुरान कैसा होना चाहिए, इसके लिए कुछ जरूरी बातें
   पढ़ा और समझा।(VII-10-1-0)
2. कुरान को शाब्दिक रूप से समझा जाना है यदि
   और कुछ नहीं दर्शाया गया है। (VII-10-2-0)
3. 400+ अंक अस्पष्ट या मुश्किल के साथ
   यह सुनिश्चित करना या समझना असंभव है कि क्या है
   कुरान में वास्तविक और मूल अर्थ।
   (सातवीं-10-3-0)

मुसलमानों और इस्लाम एक बात का दावा करते हैं कि स्पष्ट और आसान भाषा इस बात का प्रमाण है कि यह है
एक भगवान द्वारा बनाया गया है, और दूसरे के लिए कि सही भाषा अल्लाह के अस्तित्व का प्रमाण है
(ऐसा कोई सबूत मौजूद नहीं है, इसलिए वे सबूत खोजने की कोशिश करते हैं)।

दोनों दावे बहुत स्पष्ट रूप से गलत हैं जैसा कि आप देखेंगे, क्योंकि भाषा अक्सर न तो होती है
स्पष्ट, न विशिष्ट या विशिष्ट, न ही समझने में आसान।

और कम से कम बहुत दूर: मुसलमानों को समझाने के लिए कुछ अंतिम उपाय "व्याख्या करना दूर" का उपयोग करना होगा
गलतियों को दूर करना, आदि जो इस्लाम के लिए नष्ट कर रहे हैं, लेकिन वास्तविक स्पष्टीकरण देना असंभव है
लिए। (यहां एक अतिरिक्त बिंदु: जो थोड़ी सी बुद्धि के साथ यह विश्वास करने में सक्षम है कि एक सर्वज्ञ
भगवान कह रहा है कि वह अपने धर्म को "सादे और समझने में आसान शब्दों" में समझा रहा है, जहां केवल
"दिल के बीमार" छिपे अर्थों की तलाश में चले जायेंगे, सही चुनने में इतना लाचार है
शब्द, कि मात्र मनुष्य को बार-बार और बार-बार उसकी मदद करनी पड़ती है और "व्याख्या"
वह वास्तव में क्या मतलब है" - - - जैसे इस्लाम और मुसलमानों को सचमुच सैकड़ों बार करना है
कुरान में, पुस्तक को उन अर्थों में फिट करने के लिए जो वे इसे व्यक्त करना चाहते हैं?

००१ ३/७: "वह (अल्लाह*) वह है जिसने तुम्हें (मुहम्मद और/या मुसलमानों*) पर उतारा है
किताब (कुरान*); **इसमें छंद मूल या मौलिक (स्थापित अर्थ के) हैं; वे
(सभी छंद जिन्हें शाब्दिक रूप से समझा जाना है*) पुस्तक की नींव हैं:** अन्य
अलंकारिक हैं। परन्तु जिनके हृदय में कुटिलता है, वे उसके उस भाग का अनुसरण करते हैं, अर्थात्
अलंकारिक, विकार की तलाश, छिपे अर्थों की खोज, लेकिन छिपे हुए को कोई नहीं जानता
मतलब, अल्लाह को छोड़कर।" लेकिन हो सकता है कि यह अलंकारिक भी हो, क्योंकि इस्लाम और कई अ
मुसलमान जैसे ही एक रूपक होने का दावा करते हैं, उसके पीछे छिपे अर्थों की तलाश कर रहे हैं
त्रुटियां और गलतियां हैं जिन्हें वे अन्यथा "व्याख्या" नहीं कर सकते हैं। क्या यह के कारण है
उनके दिल में "विकृतता"? - या शायद इसलिए कि उनके पास दिमाग, हिम्मत और दिमाग नहीं है
प्रश्न को पूरा करने के लिए रीढ़ की हड्डी आवश्यक: इसका क्या अर्थ है कि बहुत सारी गलतियाँ हैं और
कुरान में अन्य गलतियाँ? - या: अगर कुरान में सभी गलतियों और अन्य गलतियों का मतलब है कि
इस्लाम कई अन्य लोगों की तरह एक बना हुआ धर्म है - फिर हम सभी मुसलमानों को सफेद क्या करें यदि सब कुछ है
वही कयामत का दिन है? - - - और खासकर अगर कहीं कोई वास्तविक ईश्वर है जो हमारे पास है
खोजने से मना किया गया है?!

"- - - इसमें छंद मूल या मौलिक (स्थापित अर्थ के) हैं; वे (सभी छंद जो हैं
शाब्दिक रूप से समझा जा सकता है*) पुस्तक की नींव हैं": **इसमें कोई संदेह नहीं है कि
कुरान का शाब्दिक अर्थ है जहां और कुछ भी निर्दिष्ट नहीं है।** 11/1 को भी देखें
नीचे।

००२ ११/१: "(यह (कुरान*) एक किताब है, जिसमें छंद बुनियादी या मौलिक (स्थापित) हैं
अर्थ) - - -।" सीधे शब्दों में: छंद सरल भाषा में हैं और समझने योग्य हैं
शाब्दिक रूप से जहां अन्यथा स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है - "मूल और मौलिक" शब्दों में। लेकिन सभी
वही मुसलमान कुछ भी समझाने की कोशिश करते हैं जो कुरान में गलत है और जो वे नहीं करते हैं
इसके लिए "स्पष्टीकरण" खोजें, इसके साथ ही इसे शाब्दिक रूप से नहीं समझा जाना चाहिए - यह रूपक होना चाहिए। यह
जब त्रुटियों की व्याख्या नहीं की जा सकती है, तो उनकी तीन "अंतिम - और अक्सर उपयोग की जाने वाली - रक्षा की पंक्तियाँ" में से एक है।
(अन्य दो हैं: "आप एक या कुछ छंदों से कुछ भी नहीं निकाल सकते जो गलत दिखते हैं -
कुरान (या सूरह) को समग्र रूप से समझा जाना चाहिए"। और वास्तव में "कम गद्य" एक:
"आप झूठ बोल रहे हैं या बातें बना रहे हैं क्योंकि आप इस्लाम से नफरत करते हैं या इस्लाम सुन रहे हैं-

नफरत करने वाले" - इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कुरान या हदीस या जो कुछ भी सही ढंग से उद्धृत कर रहे हैं।)
इसके ठीक ऊपर 3/7 भी देखें।

००३ १८/१-२: "अल्लाह की स्तुति करो, जिसने अपने दास (मुहम्मद*) के पास किताब (
कुरान*), और उसमें कुटिलता की अनुमति नहीं है: (उसने इसे बनाया है) स्ट्रेट (और साफ़) - - -।"
सीधे शब्दों में: **कुरान की आयतें सीधे और स्पष्ट हैं न कि टेढ़े-मेढ़े शब्दों में**
- शाब्दिक रूप से समझा जाना (जहाँ कुछ और नहीं कहा जाता है सीधा और स्पष्ट)। देखें
ऊपर 3/7 और 11/1 पर टिप्पणी करें।

004 26/2: "ये किताब (कुरान*) की आयतें हैं जो (बातें) स्पष्ट करती हैं।" लेकिन सभी
वही मुसलमान आखिरी रास्ता बताते हैं - और धार्मिक अंधेपन में अक्सर ईमानदारी से विश्वास करते हैं -
कि त्रुटियां त्रुटियां नहीं हैं, बल्कि छिपे हुए अर्थ या रूपक को छिपा रही हैं।

005 27/1: "ये कुरान की आयतें हैं - एक किताब जो (चीजों) को स्पष्ट करती है।" 26/2 बस देखें
के ऊपर।

006 28/2: "ये किताब (कुरान*) की आयतें हैं जो (बातें) स्पष्ट करती हैं"। 26/2 . देखें
के ऊपर।

980

पेज 981

००७ ३२/२: "(यह है) किताब (कुरान*) का रहस्योद्घाटन जिसमें कोई संदेह नहीं है - - -।"
और वही इस्लाम और मुसलमान इस पर बहुत संदेह करते हैं और यह और यह और यह बताते हैं
रूपक होना चाहिए - - - विशेष रूप से यदि त्रुटियों को दूर करने का यही एकमात्र तरीका है।

008 41/3: "एक किताब (कुरान*) जिसकी आयतों को विस्तार से समझाया गया है - - -।" नहीं ओ!
उन्हें विस्तार से समझाया नहीं गया है, इस्लाम और मुसलमानों के अनुसार - वे रूपक हैं
छिपा हुआ अर्थ, या बहुत अलग अर्थ के साथ, इसलिए हमें इसे समझाना चाहिए - - - विशेष रूप से यदि
त्रुटियों और गलतियों को "समझाने" का यही एकमात्र तरीका है। ऊपर 3/7 और 11/1 भी देखें।

००९ ४३/२: "पुस्तक (कुरान*) द्वारा जो चीजों को स्पष्ट करती है - - -।" ऊपर 26/2 देखें।

०१० ४४/२: "पुस्तक (कुरान*) द्वारा जो चीजों को स्पष्ट करता है - - -।" ऊपर 26/2 देखें।

०११ ५४/१७: "और हमने (अल्लाह*) ने कुरान को समझने में आसान बना दिया है - - -।" यह स्पष्ट रूप से
सीधे शब्दों में है जो समझने में आसान है - और रूपक ज्यादातर समझाया या आसान है
समझना। लेकिन कोई नहीं! - इस्लाम और कई मुसलमानों के अनुसार - इसमें से अधिकांश के साथ रूपक हैं
बहुत छिपे हुए या अलग-अलग अर्थ - - - कम से कम यदि त्रुटियों को "समझाने" का यही एकमात्र तरीका है
या गलतियाँ। ऊपर 3/7 और 11/1 भी देखें।

012 54/22: ठीक ऊपर 54/17 के समान।

०१३ ५४/३२: ऊपर ५४/१७ के समान। **इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह/मुहम्मद का मतलब था**
कुरान को सीधे आगे पढ़ा जाना चाहिए और शाब्दिक रूप से समझा जाना चाहिए जहां कुछ और नहीं है
संकेत दिया।

०१४ ५४/४०: ऊपर ५४/१७ के समान। इसके ठीक ऊपर 54/32 भी देखें।

इसमें कोई शक नहीं कि कुरान का ही मतलब है कि कुरान होना है
मुख्य रूप से समझ में आता है। और छिपे हुए अर्थों की तलाश करना गलत है। कोई भी याद दिलाएं
मुसलमान यह दिखावा या दावा करके समस्याओं को "समझाने" की कोशिश कर रहे हैं कि वे रूपक हैं,
इस तथ्य के बारे में।

इसके बारे में कुछ और दस्तावेज, "कुरान का संदेश" की टिप्पणियों के साथ:

015 24/1: "(यह है*) एक सूरा जिसे हमने (अल्लाह*) उतारा है और जो हमारे पास है
ठहराया: उसमें हमने स्पष्ट निशानियाँ उतारी हैं; जिस से तुम चितावनी पाओ।"

"कुरान की मालिश", २४/१ पर टिप्पणी करें: अर्थात, "निषेध जिसके तहत हम (अल्लाह*)

अपने शब्दों के आधार पर स्वयं को स्पष्ट कर दिया है": इस प्रकार अब्द अल्लाह इब्न अब्बास बताते हैं
इस संदर्भ में अभिव्यक्ति फ़रदनाहा। - - - वही स्पष्टीकरण, इब्न के अधिकार पर भी
'अब्बास, तबरी द्वारा उन्नत है। ऐसा प्रतीत होता है कि अल्लाह के रखे जाने पर विशेष जोर दिया गया है
इस सूरा के नीचे "सादे शब्दों में" (आदर्श, लेकिन यहां अतिरिक्त जोर दिया गया है) के साथ जुड़ा हुआ है
इस क्रम में दिए गए निषेधाज्ञा की गंभीरता: **दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ है एक गंभीर**
किसी भी प्रयास के खिलाफ चेतावनी के माध्यम से उन निषेधाज्ञा को चौड़ा या फिर से परिभाषित कर रहे हैं
कटौती, हस्तक्षेप या मैदान से असंबद्ध कोई अन्य विचार
कुरान के शब्द"।

०१६ २६/२२५: "क्या तू नहीं देखता कि वे कैसे हर तराई में भटकते हैं?"

981

पेज 982

"कुरान का संदेश", 26/100 पर टिप्पणी करें (स्वीडिश संस्करण में 26/98 - जो
रूढ़िवादी के प्रति थोड़ा अधिक ईमानदार और थोड़ा कम "सही" लगता है): "मुहावरेदार"
वाक्यांश "हम फाई विद्या" (शाब्दिक, "वह भटक गया (या "वह घूमता था") घाटियों के माध्यम से) का प्रयोग किया जाता है, जैसे
अधिकांश टिप्पणीकार एक भ्रमित लक्ष्यहीनता का वर्णन करने के लिए इंगित करते हैं - और अक्सर स्वयं-
विरोधाभासी - शब्दों और विचारों के साथ खेलें। इस संदर्भ में यह जोर देने के लिए है
कुरान की शुद्धता के बीच अंतर, जो सभी आंतरिक अंतर्विरोधों से मुक्त है---
और अस्पष्टता अक्सर कविता में निहित होती है"।

यहाँ बात यह है कि पाठ को सटीक कहा गया है - जो यह होना चाहिए यदि दावा है कि यह है
एक सिद्ध भगवान द्वारा बनाया गया कोई भी अर्थ होगा। और एक सटीक भाषा का मतलब हमेशा ठीक होता है
क्या कहा जाता है - - - जिसका अर्थ है कि कुछ ऐसी अपरिष्कृत भाषा में लिखा गया है जैसे
कुरान खुदा से नहीं आ सकता।

लेकिन इस्लाम के पास कुछ ठोकर के पत्थर हैं:

०१७ ७/७५: ""तुम (विश्वासियों*) को जानो कि सालेह (गोत्र या लोगों के लिए एक दावा किया गया भविष्यवक्ता)
टेमस। वह कुरान के अनुसार नूह और मूसा के बीच कुछ समय रहा - मूसा इस
उसके बारे में बोलने के लिए कहा*) क्या उसके रब की ओर से नबी है?' उन्होंने कहा: 'हम वास्तव में विश्वास करते हैं
वह रहस्योद्घाटन जो उसके द्वारा भेजा गया है।'"

७/५८ (२००८ के अंग्रेजी संस्करण में ६०) पर टिप्पणी करें: "इस संदेश की सामग्री (शाब्दिक," कि .)
जिसके साथ उसे भेजा गया है") उन्हें इसके गुणों के आधार पर इसे स्वीकार करने के लिए पर्याप्त औचित्य दिखाई दिया,
सिलाह के मिशन के किसी भी गूढ़ "सबूत" की आवश्यकता के बिना। इस सूक्ष्म तरीके से यह कथन
आस्था का एक अर्थ है जो थमूद की कहानी से बहुत आगे जाता है। यह एक निमंत्रण है
संशयवादी जो धार्मिक संदेश के दैवीय मूल में विश्वास करने में असमर्थ है, उस पर न्याय करने के लिए
इसके आंतरिक गुण और उसकी स्वीकृति को बाहरी और निष्पक्ष रूप से निर्भर नहीं बनाते हैं
असंभव, इसकी उत्पत्ति के प्रमाण: केवल सामग्री के माध्यम से ही इसकी सच्चाई और वैधता हो सकती है
स्थापित"।

खैर, सबूत - या कम से कम दस्तावेज़ीकरण - इससे अधिक "उद्देश्यपूर्ण रूप से असंभव" नहीं है
ईसाइयों के पास एनटी में दस्तावेज हैं, और कुरान में आंशिक रूप से पुष्टि की गई है, इसके लिए
कुछ अलौकिक शामिल था (दूसरा सवाल यह है कि क्या कोई उस पर विश्वास करना चाहता है
दस्तावेज या नहीं)। एक भगवान के लिए अपने अस्तित्व को साबित करना हमेशा संभव होता है (लेकिन एक के लिए नहीं)
मानव एक भगवान साबित करने के लिए)। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस्लाम के पास इसके लिए एक भी प्रमाण नहीं है
धर्म से संबंधित कुछ भी - एक बिट नहीं; केवल एक आदमी के शब्द के साथ एक बहुत
विशेष नैतिकता - या अनैतिकता। इसलिए उन्हें अंध विश्वास के लिए और उसके लिए तर्क देना पड़ता है
सबूत अनावश्यक हैं, हां, सबूत की मांग बौद्धिक मूर्खता और कमी है
बुद्धि। जो वे करते हैं। और जो गलत है।

हालाँकि, एक समस्या यह है कि तार्किक और बौद्धिक रूप से कुछ जानना असंभव है
जो साबित नहीं हुआ है। एक अधिकतम दृढ़ता से विश्वास कर सकता है - कभी-कभी इतनी दृढ़ता से कि एक
विश्वास है कि एक जानता है। लेकिन सिद्ध नहीं मान्यताएं कभी भी विश्वासों से अधिक नहीं होती हैं - मजबूत या नहीं। बर
यहां तक कि मजबूत विश्वास भी कभी-कभी गलत रहे हैं - और हैं - गलत। लोग "जानते थे" पृथ्वी थी
फ्लैट - और यह गलत था। तब लोग "जानते थे" पृथ्वी भूगर्भीय ब्रह्मांड का केंद्र है
- और यह गलत था। तब लोग "जानते थे" सोल या हेलिओस (हमारे सूर्य के लिए 2 नाम) केंद्र थे
हेलियोसेंट्रिक यूनिवर्स का - गलत। और फिर वे हमारी आकाशगंगा ("द मिल्की वे") को "जानते" थे
संपूर्ण ब्रह्मांड - एक बार फिर गलत। और सभी धर्मों में - f. भूतपूर्व। इस्लाम - लोग हैं
कि "पता" कि वे सही हैं और अन्य सभी गलत हैं - - - और उनमें से अधिकांश को होना ही है

गलत (और मुसलमानों के साथ उनके कुछ खास संस्थापक और सब कुछ केवल दावों पर बनाया गया)

और बहुत से और बहुत सारी गलतियों के साथ, आदि उनकी पवित्र पुस्तक में, वास्तव में सबसे अधिक हैं
होने के लिए कमजोर स्थिति - यदि कोई हो - जो सही हैं)।

लेकिन क्योंकि उनके पास सबूतों और यहां तक कि वास्तविक संकेतों की कमी है, इस्लाम दावा करता है और दावा करता है और
दृढ़ता से दावा करता है कि पुस्तक में बहुत सारी गलतियाँ और त्रुटियाँ और गलतियाँ साबित करती हैं कि
एक भगवान ने बनाया है, इसे देखने की क्षमता की कमी आपकी मूर्खता है, ऐसा नहीं है कि किताब नहीं है
परिपूर्ण - और वह अंध विश्वास ही आदर्श है। **कौन सा मुख्य है - यदि मुख्य नहीं है - कारण क्यों**
मुसलमान और इस्लाम कुरान में किसी भी गलती को स्वीकार या देख नहीं सकते, चाहे कैसे भी हो
ज़ाहिर।

०१८ ५/१४: “उन लोगों के लिए भी, जो खुद को ईसाई कहते हैं, हमने (अल्लाह *) एक वाचा ली,
लेकिन वे उस संदेश का एक अच्छा हिस्सा भूल गए (पढ़ें; झूठा *) जो उन्हें भेजा गया था - - -"।

टिप्पणी 5/27: "मैं। इ। वे यीशु की वास्तविक शिक्षाओं से भटक रहे हैं - - -।"

टिप्पणी ५/२८: “--- यह स्पष्ट है कि इस सन्दर्भ में जिस बात का उल्लेख किया गया है, वह को छिपाना है
खुद से कुछ; दूसरे शब्दों में, यह धीरे-धीरे अस्पष्ट होने का संदर्भ है (पढ़ें;
मिथ्याकरण*), बाइबल के अनुयायियों द्वारा, इसकी मूल सत्यता के बारे में जो वे अब हैं
खुद को भी मानने को तैयार नहीं।"

यह दावा कि बाइबल को गलत ठहराया गया है, आप कुरान में कई जगह पाते हैं। लेकिन हमने लिखा है
इसके बारे में इतनी सारी जगहें, कि यहां हम आपको केवल यही याद दिलाते हैं कि यही संभव है
"स्पष्टीकरण" इस्लाम में है और मुहम्मद को सभी कई मतभेदों को "व्याख्या" करना पड़ा
बाइबिल और कुरान के बीच - - - और वह विज्ञान लंबे समय से और काफी स्पष्ट रूप से साबित हुआ है
यह गैर-दस्तावेज दावा गलत है - बाइबल यहाँ और वहाँ गलत हो सकती है, लेकिन एक नहीं
फर्जीवाड़ा का नमूना मिला है। इसके विपरीत: सभी कई पुरानी पांडुलिपियां दिखाती हैं
कि बाइबल आज भी पुराने समय की तरह ही है। इसका सबसे अच्छा प्रमाण इस्लाम है : अगर एक
मिथ्याकरण का एकमात्र वास्तविक प्रमाण कभी मिला था, दुनिया को इसके बारे में सूचित किया गया था
हर बार ईसाइयों या यहूदियों और मुसलमानों के बीच बहस होती है। एक भी नहीं
व्यंजन या स्वर को कभी भी वास्तविक प्रमाण के बारे में प्रसारित किया गया है - केवल अनिर्दिष्ट कथन
और दावे।

०१९ ६/२१: “लेकिन शैतान कभी भी अपने दोस्तों (गैर-मुसलमानों) को आपसे लड़ने के लिए प्रेरित नहीं करते हैं; अगर तुम
उनकी आज्ञा मानोगे, तो सचमुच तुम पगान हो जाओगे"।

यह दावा है कि आप सभी गैर-मुसलमानों के कहने से कतराएंगे - और साथ बहस करने से
उन्हें - आपको कुरान में कई जगह मिल जाएगी। एक स्पष्ट संभावित कारण वही है
कि नए और चरम संप्रदायों के सभी नेता इस बात से अवगत हैं: यदि आपके अनुयायियों को केवल आपका
सूचना या प्रचार, यह बहुत अधिक संभावना है कि वे आपके अनुयायी बने रहें, यदि वे भी हैं
संतुलित और सही जानकारी प्राप्त करें - इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे आपके शब्दों को सचमुच समझते हैं
या लाक्षणिक रूप से।

०२० ६/१०८: "इस प्रकार हमने (अल्लाह *) ने प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वयं के कार्यों के लिए आकर्षक बना दिया है"।

टिप्पणी ६/९२ (२००८ के अंग्रेजी संस्करण में ६/९३): "शा., 'इस प्रकार हमने ईश्वरीय रूप से बनाया है ...", आदि।
इसका अर्थ यह है कि यह मनुष्य के स्वभाव में है कि वह उस विश्वास को मानता है जो उसमें प्रत्यारोपित किया गया है
बचपन से, और जिसे वह अब अपने सामाजिक परिवेश के साथ साझा करता है, एकमात्र सच्चा और
संभव वाले - इसका परिणाम सफेद होता है कि उन विश्वासों के खिलाफ एक विवाद अक्सर उकसाता है a
शत्रुतापूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया। ” यह एक स्पष्टीकरण के रूप में कहा जाता है कि इस्लाम कभी-कभी क्यों मिलता है
नकारात्मक प्रतिक्रिया। लेकिन किताब इस तथ्य को छोड़ देती है कि **यह मुसलमानों के लिए भी है: यदि वे हैं**

दृढ़ता से प्रेरित, वे उन तर्कों और तथ्यों पर कड़ी प्रतिक्रिया दे सकते हैं जो उन्हें पसंद नहीं हैं -
और बिना सोचे-समझे - या मानसिक रूप से सोचने में सक्षम होने के बावजूद - यहाँ तक कि सच्चे तथ्य भी।

०२१ ७/१०१: "- - - वे (गैर-मुस्लिम*) उस पर विश्वास नहीं करेंगे जो उन्होंने पहले खारिज कर दिया था।"
(शाब्दिक रूप से: "- - - जिसके लिए उन्होंने पहले झूठ बोला था"।

टिप्पणी ७/८० (२००८ अंग्रेजी संस्करण में ७/८२): "- - - सहज के लिए एक संकेत
अधिकांश लोगों की उन धारणाओं को छोड़ने की अनिच्छा - सकारात्मक या नकारात्मक - जिनसे वे हैं
आदी। ”

लेकिन किताब यहाँ भी इस तथ्य को छोड़ देती है कि यह मुसलमानों के लिए भी जाता है: यदि वे दृढ़ता से हैं
अनुपयुक्त, वे उन तर्कों और तथ्यों पर दृढ़ता से प्रतिक्रिया कर सकते हैं जो उन्हें पसंद नहीं हैं - और बिना
अधिक सोचना - या मानसिक रूप से सोचने में सक्षम होना - यहाँ तक कि सच्चे तथ्य भी।

०२२ २३/२४: "- - - (इसके अलावा) हमने (गैर-मुस्लिम*) ने कभी ऐसा नहीं सुना (ऐसा कुछ)
हमारे पुराने ज़माने!" (शाब्दिक रूप से: "- - - (अरब" फाई "*) के संबंध में हमारे शुरुआती पूर्वाभास!")।

टिप्पणी २३/११: "- - - इस तथ्य के लिए एक कुरानिक संकेत है कि लोग अक्सर एक नई नैतिकता को अस्वीकार करते हैं"
इससे बेहतर कोई आधार नहीं है कि यह उनके विचारों की "विरासत में मिली" आदतों के साथ संघर्ष करता है
और जीवन के तरीके। परोक्ष रूप से, यह संकेत सभी अंधे "तक़लिद" की निंदा का तात्पर्य है, अर्थात an
धार्मिक सिद्धांतों या दावों की बिना सोचे-समझे स्वीकृति जो स्पष्ट रूप से नहीं हैं
दैवीय रहस्योद्घाटन, एक भविष्यद्वक्ता की स्पष्ट शिक्षाओं, या सबूतों द्वारा समर्थित
अनुचित कारण"।

1. लेकिन किताब इस तथ्य को छोड़ देती है कि यह भी जाता है मुसलमानों के लिए: यदि वे दृढ़ता से हैं प्रेरित, वे कड़ी प्रतिक्रिया कर सकते हैं तर्क और तथ्य जो उन्हें पसंद नहीं हैं - तथा बिना सोचे समझे - या मानसिक रूप से सोचने में सक्षम - यहां तक कि सच्चे तथ्य भी।
2. यहाँ की पुस्तक ने की परिभाषा को दर्जी बनाया है इस्लाम फिट। यह भूल गया है (?) कि एक बात के लिए वह कारण सही उत्तर नहीं ढूंढ पा रहा है पूरी और सही जानकारी के बिना - और कुरान गलतियों से भरा है, जिसके बारे में दावा किया गया है दैवीय रहस्योद्घाटन कुछ में 15 से दर्जन हैं बिना सबूत के धार्मिक मंडल और अमान्य प्रलेखन (कुछ मुहम्मद और अल्लाह पैदा करने में असमर्थ थे) - और वह वही किसी भी स्वयं घोषित भविष्यद्वक्ता के लिए जाता है, और विशेष रूप से इसलिए यदि उनकी शिक्षाएँ बहुत हैं बहुत चाहने वाले और वह खुद एक संदिग्ध व्यक्ति (असली मुहम्मद की तरह)। **परंतु इस तरह की परिभाषाओं का अक्सर उपयोग किया जाता है इस्लाम और कई मुसलमान वास्तव में इस पर विश्वास करते हैं ठीक है। तर्क - - - जो सीधा करते हैं उनके लिए सोचना मुश्किल**

०२३ २६/७४: "उन्होंने (गैर-मुसलमान*) कहा: 'नहीं, लेकिन हमने अपने पिताओं को ऐसा करते हुए पाया (हम क्या करते हैं)
करना)"।

टिप्पणी २६/३८: "(जमाक्षरी): '-----प्राचीन उपयोग और समय में पूर्वता का कोई प्रमाण नहीं है (ए
अवधारणा की) सुदृढ़ता"। रज़ी, अपने हिस्से के लिए, कहते हैं कि (यह *) कविता 'में से एक' का प्रतिनिधित्व करती है
अनैतिकता के सबसे मजबूत (कुरान) संकेत (अरब "फसाद" *) में निहित (सिद्धांत)
of) "तक़लीद", अर्थात् अंधा, निर्विवाद रूप से धार्मिक अवधारणाओं या प्रथाओं को अपनाना
किसी विद्वान या धार्मिक नेता के "अधिकार" से अधिक नहीं में किसी की आलोचनात्मक आस्था।

1. लेकिन किताब इस तथ्य को छोड़ देती है कि यह भी जाता है
मुसलमानों के लिए: यदि वे दृढ़ता से हैं
प्रेरित, वे कड़ी प्रतिक्रिया कर सकते हैं
तर्क और तथ्य जो उन्हें पसंद नहीं हैं - तथा
बिना सोचे समझे - या मानसिक रूप से
सोचने में सक्षम - यहां तक कि सच्चे तथ्य भी।

1. **लेकिन शायद ही कोई बड़ा धर्म अधिक हो आधिकारिक और स्पष्ट मांग के साथ इस्लाम की तुलना में अंध विश्वास के लिए।**

०२४ ३७/६९-७०: "सचमुच उन्होंने अपने पुरखाओं को गलत मार्ग पर पाया; इसलिए उन्हें (भी) जल्दी किया गया उनके कदमों के नीचे",

टिप्पणी 37/25 (2008 अंग्रेजी संस्करण में 37/27): "आई। इ। की अंधी नकल ("तक़लिद") -
स्पष्ट रूप से बेतुका - विश्वास, मूल्यांकन और रीति-रिवाज (उदाहरण के लिए कुछ मुस्लिम "नैतिक" कोडेक्स*) अपने गलत पूर्ववर्तियों का, और सत्य के सभी प्रमाणों (!!!*) की अवहेलना
कारण और दैवीय (?*) रहस्योद्घाटन दोनों द्वारा प्रदान किया गया, यहाँ का प्रमुख कारण दिखाया गया है
पीड़ा का उल्लेख - - -। (ज़माख़शरी)"।

कोई टिप्पणी आवश्यक नहीं - यह मुसलमानों पर भी १००% फिट बैठता है, न कि १२०% कहने के लिए।

०२५ ४३/२३: "हमने (गैर-मुस्लिम*) अपने पिताओं को एक निश्चित धर्म का पालन करते हुए पाया, और हम करेंगे निश्चित रूप से उनके नक्शेकदम पर चलते हैं "।

टिप्पणी ४३/२३: "रेज़ी (उस समय के सबसे प्रमुख मुस्लिम विद्वानों में से एक) कहते हैं: 'हदी'
कुरान में इन आयतों के अलावा और कुछ नहीं था, वे झूठ दिखाने के लिए पर्याप्त होते
सिद्धांत (एक मुस्लिम का) अंधा, निर्विवाद रूप से (किसी अन्य व्यक्ति का) गोद लेना
धार्मिक राय ("इब्तल अल-क़ावल बि'त-रक़लिद") - - -'"।

अगर उसने इस्लाम और बापों और/या इमामों का संकेत दिया होता, तो यह शायद ही संभव होता इसे और अधिक सटीक कहने के लिए। इस्लाम काफी हद तक स्वदेशी, सामाजिक . पर आधारित है अंध विश्वास का दबाव और महिमामंडन।

०२६ २८/६३: जिन्हें हमने (गैर-मुसलमानों*) ने इतनी गम्भीरता से ग़लती की, हमने ग़लती की
जैसा कि हम स्वयं गलती कर रहे थे।"

टिप्पणी २८/६६: "अपने गहरे अर्थों में, यह मार्ग - पूरे कुरान में इतने समान हैं"
- **नैतिक या बौद्धिक प्रस्ताव को स्वीकार करने की नैतिक अक्षमता को इंगित करता है इसके अलावा किसी अन्य आधार पर सत्य को पुरानी पीढ़ियों के लिए सत्य नहीं माना जाता था।"**

एक धर्म के सदस्यों के लिए केवल - केवल - कई गलतियों और गलतियों वाली पुस्तक पर और
आंशिक रूप से द्वेषपूर्ण नैतिक और नैतिक नियमों के साथ (लेकिन इतने एकीकृत और उनके द्वारा स्वीकार किए गए)

धर्म और संस्कृति, कि **वे स्वयं कुछ भी गलत या कितना बुरा नहीं देख सकते हैं वास्तव में है),** यह कुछ गहरी सोच का कारण होना चाहिए, और विशेष रूप से मुसलमानों के लिए।

०२७ २१/२४: "लेकिन उनमें से अधिकांश (गैर-मुस्लिम*) सच्चाई को जानते हैं, और इसलिए मुँह मोड़ लेते हैं"।

टिप्पणी २१/३१ (२०१८ के अंग्रेजी संस्करण में २१/३२): "दूसरे शब्दों में, अधिकांश लोग हठीले होते हैं"
इसके गुणों के आधार पर एक उचित प्रस्ताव पर विचार करने से इनकार करने का कारण अक्सर इससे अधिक नहीं होता है
साधारण तथ्य यह है कि यह उनके लिए परिचित नहीं है।"

हम अपने माता-पिता और संस्कृति से जो जानते हैं वह सही होना चाहिए - और हम कुछ भी नहीं जानते हैं
स्पष्ट गलतियों के बारे में (अधिकांश मुसलमान ईमानदारी से गलतियों के बारे में नहीं जानते - उनके पास भी है
अक्सर और बहुत लंबे समय से कहा गया है कि कुरान सही है, और इसके लिए "स्पष्टीकरण" बताया गया है
गलतियां)।

और फिर गलतियों और किसी भी चीज़ के बावजूद विश्वास करने का अपराजेय तर्क है:

"अंध विश्वास मुहम्मद द्वारा प्रस्तुत आदर्श है।"

०२८ ६/ **१४ ९: यहाँ कुरान इस दावे के बारे में बात करता है कि अल्लाह सब कुछ तय करता है, और उसी समय मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा होती है - एक दावा जो आप कुरान में कई स्थानों पर मिलते हैं - और an पूर्ण असंभवता** (यह "समय यात्रा विरोधाभास का एक संस्करण है, जो सिद्ध होता है" अघुलनशील)।

टिप्पणी ६/१४१ (२००८ अंग्रेजी संस्करण में ६/१४३): "दूसरे शब्दों में, वास्तविक संबंध भविष्य के बारे में अल्लाह के ज्ञान के बीच (और, इसलिए, जो है उसकी अनिवार्यता) भविष्य में घटित होगा) एक ओर, और मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा, दूसरी ओर - दो प्रस्ताव जो कि इसका चेहरा, एक दूसरे के विपरीत प्रतीत होता है - मनुष्य की समझ से परे है; लेकिन जबसे वे दोनों अल्लाह (कुरान* में) द्वारा निर्धारित हैं, दोनों सच होना चाहिए"। एक बहुत ही लंगड़ा "स्पष्टीकरण" या दावा।

यह समझना मुश्किल नहीं है कि मुसलमान मानते हैं जैसे वे करते हैं, पैदा होते हैं और विश्वास करने के लिए रोटी खाते हैं अंध विश्वास पर इस तरह के असंभव और अविश्वसनीय रूप से अतार्किक और भोले-भाले दावे।

भाग VII, अध्याय 10, अध्याय 2 (= VII-10-2-0)

तथ्य बनाम. दावे, कथन, (अमान्य) "संकेत", (अमान्य) "सबूत", आदि। कुरान में: कुरान और अल्लाह कुरान, मुहम्मद, इस्लाम और अल्लाह के अनुसार

कुरान को समझना है सचमुच अगर और कुछ नहीं है बताए गए

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस अध्याय में सामग्री:

कुरान और इस्लाम एक बात का दावा करते हैं कि स्पष्ट और आसान भाषा इसका प्रमाण है पुस्तक एक भगवान द्वारा बनाई गई है, और दूसरे के लिए कि सही भाषा एक प्रमाण है अल्लाह का अस्तित्व (ऐसा कोई प्रमाण मौजूद नहीं है, इसलिए वे प्रमाण खोजने की कोशिश करते हैं)। और कम से कम नहीं कि पुस्तक और उसकी संपूर्ण भाषा को शाब्दिक रूप से समझा जाना है यदि और कुछ भी संकेत नहीं दिया गया है - कि भाषा "स्पष्ट और आसान" है और केवल वे ही "जिनके दिलों में विकृति है" खोजते हैं छिपे हुए अर्थों के लिए - छिपे हुए अर्थ "यह केवल अल्लाह को समझना है"।

००१ ३/७: "वह (अल्लाह*) वही है जिसने तुम पर (मुहम्मद/मुसलमान*) किताब उतारी है। कुरान*), **इसमें छंद बुनियादी या मौलिक (स्थापित अर्थ के) हैं; वह हैं पुस्तक की नींव:** अन्य अलंकारिक हैं। **लेकिन जिनके दिलों में कुटिलता है उसके उस हिस्से का अनुसरण करें** जो अलंकारिक है, कलह की तलाश में है, और उसके छिपे हुए की तलाश कर रहा है अर्थ, परन्तु इसके छिपे अर्थों को अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता।" **यहाँ यह बहुत स्पष्ट है कि ग्रंथों में स्पष्ट और स्पष्ट अर्थ मुख्य रूप से सही समझ है।** जब आप याद रखें कि मुहम्मद की मण्डली मुख्य रूप से अशिक्षित और अक्सर भोले लोग थे, यह समझना और भी आसान है कि मामला होना ही था - इसे शाब्दिक और आसान के लिए होना था

समझ।
फिर आरोपों के बारे में सवाल है। कुछ बिखरे हुए छंद हैं जिन्हें कहा जाता है
रूपक या समान, और जिनका अर्थ समझाया गया है। जैसा कि अर्थ हैं
समझाया गया है, इन्हें "मूल या मौलिक छंद" में शामिल के रूप में समझा जाना चाहिए।

कोई स्पष्ट रूपक नहीं हैं जहां अर्थ स्पष्ट या समझाया नहीं गया है।

लेकिन **किसी भी पाठ में - यहां तक कि डोनाल्ड डक में भी - यह खोजना संभव है - या मेकअप - छिपा हुआ अर्थ।** लेकिन यहाँ इसके खिलाफ दृढ़ता से सलाह दी जाती है: केवल अल्लाह ही ऐसा करने के योग्य है: ”- नहीं
अल्लाह के सिवा कोई इसके छिपे अर्थ को जानता है।" और यह जानने के लिए अल्लाह से बेहतर कौन है?
- पुस्तक का निर्माता (?) - और अपने "घर" में प्रकल्पित मदर बुक का सम्मान करने वाला?
लेकिन फिर भी इस्लाम द्वारा किसी गलती या अंतर्विरोध की एक मानक व्याख्या यह है कि यह
शाब्दिक रूप से नहीं बल्कि अलंकारिक रूप से समझा जाना चाहिए। जैसे ही एफ. भूतपूर्व। विज्ञान से पता चलता है कि
कुछ गलत है, वह पाठ "मूल और मौलिक - स्थापित" होने से बदल जाता है
अर्थ", एक रूपक बनने के लिए। यह अल्लाह के बावजूद और के स्पष्ट शब्दों के बावजूद
कुरान। यह इस्लाम और मुसलमानों द्वारा उपयोग किए जाने वाले तीन सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले अंतिम खाई के तरीकों में से एक है
उन चीजों को "समझाने" की कोशिश करना जिन्हें समझाया नहीं जा सकता। (नंबर 2 है: "आप इसे नहीं ले सकते
अर्थ सिर्फ एक बिंदु या कुछ छंद से - आपको पूरे कनेक्शन से न्याय करना होगा (या
पूरा कुरान)।" इसके बावजूद वे खुद खुशी से और उल्लास के साथ उद्धरण और
अक्सर इस्लाम का समर्थन करने के लिए शब्दों को संदर्भ से बाहर कर देते हैं (उदाहरण के लिए "वहाँ (गलत तरीके से उद्धृत)
धर्म में कोई बाध्यता नहीं" - सही उद्धृत: "धर्म में कोई बाध्यता न हो"। NS
पहले एक तथ्य होने का दिखावा करता है, दूसरा वास्तव में एक इच्छा या कुछ और होता है। और यह वास्तव में क्या बनाता है
गलत तरीके से उद्धृत के अलावा, यह है कि इसे कम से कम 30 बाद में कम से कम निरस्त नहीं किया गया है
छंद - एक तथ्य जो कोई भी शिक्षित मुसलमान जानता है, लेकिन कभी उल्लेख नहीं करता) या किसी अन्य को बदनाम करने के लिए
धर्म। और 3. आखिरी खाई "स्पष्टीकरण" है: "आप झूठ बोल रहे हैं" "- एक मुस्लिम नफरत है" या "-

987

पेज 988

एक यहूदी निचला", जिनमें से किसी भी मामले में आपके अर्थ, तर्क और यहां तक कि आपके तथ्य भी
कुरान कोई परिणाम या रुचि के नहीं हैं। कुशल तरीके से बाहर निकलते हैं या "डी-रेलिंग" a
कठिन चर्चा।) लेकिन 3/7 साबित करता है कि शब्दों के पीछे छिपे अर्थों को बनाने के लिए - एफ।
भूतपूर्व। जहां एक रूपक का संकेत नहीं दिया गया है, वहां इसका अर्थ अलंकारिक होना गलत है और
अल्लाह की इच्छा और व्यवस्था के सख्त खिलाफ - यह "उन लोगों का काम है जिनके दिल में हैं"
विकृति ”।

नीचे 44/58 और 54/17 भी देखें।

००२ ४४/५८: "वास्तव में, हमने (अल्लाह *) ने आपकी (मुहम्मद की) जीभ में इस (कुरान) को आसान बना दिया है
ताकि वे (लोग*) ध्यान दें।” ऊपर 3/7 और नीचे 54/17 भी देखें। कोई नहीं है
संदेह है कि मुहम्मद/अल्लाह का मतलब कुरान को शाब्दिक रूप से समझा जाना था। छिपे हुए को खोजने के लिए
अर्थ "ए ला" स्पष्ट रूप से संकेतित रूपक नहीं है, गलत है। सभी एक ही मुसलमान और इस्लाम
पूर्व और पश्चिम में इस तरह के दावों का उपयोग अंतिम उपाय के रूप में "व्याख्या" करने में सक्षम होने के लिए करें कि डायन नहीं है
समझा जा सकता है अगर कोई कुरान को शाब्दिक रूप से पढ़ता है और जिस तरह से अल्लाह स्पष्ट रूप से कहता है कि यह होना है
पढ़ा और समझा - सिवाय उनके "जिनके दिलों में विकृति है" (3/7)।

००३ ५४/१७ = ५४/२० = ५४/३२ = ५४/४०: "और हमने (अल्लाह*) ने कुरान को आसान बना दिया है
समझना - - -।" कोई भी व्यक्ति जो गलतियों जैसे कठिन बिंदुओं को "समझाने" की कोशिश करना चाहता है या
अमान्य तर्क या अंतर्विरोधों को रूपक आदि कहकर इस वाक्य को पढ़ना चाहिए। यह
यहां तक कि 4 बार लिखा गया है और इस तरह एक ठोस और मजबूत सच्चाई: कुरान होना है
शब्दशः समझ में आता है और छिपे अर्थों की खोज केवल अल्लाह के लिए है, और ऐसी खोज केवल है
उनके लिए "जिनके दिलों में कुटिलता है - - -।" (3/7)। ऊपर 3/7 और 44/58 भी देखें।

इसके बारे में और दस्तावेज, "कुरान का संदेश" से टिप्पणियों के साथ
अध्याय VII-10-1 "कुरान को समझने के लिए कुछ आवश्यक"।

भाग VII, अध्याय 10, अध्याय 3 (= VII-10-3-0)

तथ्य बनाम. दावे, कथन, (अमान्य) "संकेत", (अमान्य) "सबूत", आदि। कुरान में: कुरान और अल्लाह कुरान, मुहम्मद, इस्लाम और अल्लाह के अनुसार

स्पष्ट और आसानी से समझा गया कुरान में भाषा?

- अस्पष्ट के 450+ मामले भाषा और छंद, या दोहरा या कई अर्थ।

(एक ऐसी किताब में जहां दावा की गई स्पष्ट भाषा इस बात का सबूत होने का दावा करती है कि यह एक भगवान द्वारा बनाई गई है।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

988

पेज 989

इस अध्याय में सामग्री:

अस्पष्ट भाषा के 450+ उदाहरणों में से कुछ, समझने में मुश्किल भाषा, या भाषा
एक से अधिक अर्थों के साथ - कम से कम 5 तक - और इस प्रकार अनुमान लगाया जाता है कि इसका वास्तव में क्या अर्थ है,
यदि आप ऐसी चीजों की तलाश में नहीं हैं तो शायद सबसे दिलचस्प चीजें न हों। हम सब एक ही
पूरी तरह से (एक हद तक) चुना है क्योंकि मुसलमानों में से एक चीज के बारे में वास्तव में गर्व है
कुरान में स्पष्ट और आसानी से समझी जाने वाली भाषा है।

मुसलमान एक बात के लिए दावा करते हैं कि स्पष्ट और आसान भाषा इस बात का प्रमाण है कि यह एक द्वारा बनाई गई है
भगवान, और दूसरे के लिए कि सही भाषा अल्लाह के अस्तित्व का प्रमाण है (ऐसा नहीं
सबूत मौजूद हैं, इसलिए वे कुछ खोजने की कोशिश करते हैं)।

दोनों दावे बहुत स्पष्ट रूप से गलत हैं जैसा कि आप देखेंगे, क्योंकि भाषा अक्सर न तो होती है
स्पष्ट, न विशिष्ट या विशिष्ट, न ही समझने में आसान।

दोहरा या अधिक अर्थ संभव - या अस्पष्ट अर्थ।

मुसलमान और कुरान समान रूप से कहते हैं कि कुरान के पाठ को समझना आसान है और नहीं
गलत समझना संभव है। अगर किसी सर्वज्ञ भगवान ने इसे बनाया होता, तो ऐसा होना चाहिए था।

लेकिन वास्तव में बहुत सी बातें और कई बिंदु अस्पष्ट हैं। हमने यहां कई बिंदुओं का उल्लेख किया है
और वहाँ इस पुस्तक में, और यह सिर्फ एक संक्षिप्त सारांश है:

1. जिस तरह से कुरान . के अनुसार हुआ
   दावों, गलतियों के लिए कई स्रोत थे।
   मुहम्मद को सब कुछ याद रखना पड़ा
   बिल्कुल सही। जिन लोगों के लिए उसने कहा था, उन्हें करना था
   सब कुछ ठीक से याद रखें जब वे
   इसे लिखने वालों को बताया -
   कभी-कभी कई सालों बाद इसे फिर से बताया गया
   कभी - कभी। शास्त्रियों को इसे लिखना पड़ा
   ठीक वैसा ही जैसा बताया गया था। और कम से कम नहीं: सभी
   हड्डी और केले के पत्ते और त्वचा के स्क्रैप,
   आदि पर छंद मूल रूप से लिखे गए थे - परंतु

केवल उनका - उपयोग किया जाना था जब
माना जाता है कि अंतिम कुरान में रचा गया था
650 ई. और कुछ भी "सही" नहीं होना था
"संगीतकारों" या खलीफा द्वारा। और नहीं करने के लिए
उल्लेख: पुस्तक के संपादकों को नहीं करना चाहिए
छोड़ने या छंद जोड़ने की कोई इच्छा है
"राजनीतिक" या अन्य कारण, जिसके अनुसार

इस्लाम के भीतर लगातार अफवाहों के लिए किया था
होना!

2. फिर अन्य सभी कुरान जो प्रसारित हुए, उन्हें
   अधिकारी को केवल एक ही बनाने के लिए नष्ट किया जाए
   लगभग 650 - 656 ई. वे नहीं थे, और
   बाद में हस्तलिखित प्रतियों को प्रभावित कर सकता है
   बेशक सभी हस्तलिखित थे)। लेकिन वहाँ
   11वीं में कम से कम "समानांतर" प्रतियां मौजूद थीं
   सदी - अगर एक कॉपी करने वाले के पास दो अलग-अलग कुरान हों
   कॉपी बनाने के लिए, उसने किसकी नकल की
   किस श्लोक या सूरह से?
3. तब वर्णमाला में परेशानी हुई:
   यह अधूरा था क्योंकि इसमें केवल था
   व्यंजन जब उन्हें आखिरकार एक पूरा मिल गया
   वर्णमाला कई साल बाद (लगभग 900 ईस्वी), it
   यह बताना असंभव था कि वास्तविक अर्थ क्या है
   कई शब्दों का था - दो या दो से अधिक अर्थ
   अक्सर संभव थे। (जैसा कहा गया है: यदि आप जानते हैं
   कि "h" और "s" एक अंग्रेजी शब्द का प्रतिनिधित्व करते हैं, it
   can का अंग्रेजी में मतलब होता है घर, होज़, उसका या है if
   आप नहीं जानते कि कौन से स्वरों को सम्मिलित करना है - तथा
   यही उनकी समस्या थी (कमी के अलावा)
   अरब को बाद में कुछ बिंदुओं का संकेत देना पड़ा
   पत्र))। और इसने वास्तव में के लिए समस्याएँ खड़ी कर दीं
   पाठ को कैसे समझें।
4. उन्होंने आसान रास्ता निकाला और कहा कि सब
   तार्किक अर्थ देने वाली किस्में थीं
   सही - भले ही अक्सर बड़े थे
   संभावित शब्दों के अर्थ में अंतर।
   कुरान अब स्पष्ट से बहुत दूर था -
   हर कोई अर्थ चुन सकता है और
   पाठ की विविधता वह चाहता था। वहाँ सचमुच थे
   हजारों किस्में। एक पूर्ण मिनी-
   अराजकता, और "स्पष्ट और नहीं" से बहुत दूर
   गलतफहमी"। छिपाने के लिए कि यह एक वास्तविक था
   किस्मों की हाथापाई, उन्होंने इसे "तरीके" कहा
   कुरान पढ़ना", किस्में नहीं। ईमानदार?
5. इस हाथापाई को धीरे-धीरे घटाकर 14 या उससे अधिक कर दिया गया
   वैटिटिज़, और थोड़ा-थोड़ा करके बस कुछ। NS
   आज की स्थिति केवल दो के साथ आंशिक रूप से परिणाम है
   प्रिंटिंग प्रेस की।
6. लेकिन आज भी शब्दों की समस्या है
   इस्लाम ने केवल और केवल पर फैसला नहीं किया है
   मीनिंग ऑफ। कम से कम 2 अर्थ संभव हैं
   कई मामलों में - "स्पष्ट और नहीं" से बहुत दूर
   गलतफहमी संभव"
7. एक तरह से इससे भी बुरी बात यह है कि पाठ स्वयं और
   अलंकार ही नहीं कई जगह भी नहीं है
   स्पष्ट, लेकिन इससे अधिक में समझना संभव है
   एक तरह से - एक गलती एक के लिए जरूरी नहीं है

पेज 991

सर्वज्ञ भगवान। यदि आप के बारे में थोड़ा पढ़ते हैं
कुरान, आप पाएंगे कि मुस्लिम ने सीखा
पुरुष - कुछ, यदि कोई महिला - अभी भी असहमत हैं
बहुत सारे अंक। साथ ही ऐसा लगता है कि वे एडजस्ट करते हैं
कहानियों के कुछ बिंदु कभी-कभी,
एफ। भूतपूर्व। यह बताने में सक्षम होने के लिए कि यह तदनुसार है
आधुनिक विज्ञान के साथ, जहां यह संभव है।

हम कुछ छंदों का उल्लेख करते हैं जहां मुहम्मद असद "कुरान का संदेश", द्वारा प्रमाणित है
काहिरा में अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च अकादमी और एक इस्लामिक अकादमी द्वारा मुद्रित,
कहते हैं कि पाठ या पाठ के भाग अस्पष्ट हैं या एक से अधिक तरीकों से समझना संभव है:
4/1, 4/3, 4/11, 4/16, 4/19, 4/25, 4/29, 4/31, 4/31, 4/34, 4/43, 4/51, 4/ ९४, ४/१०२, ४/105, ४/११७,
४/१४८, ४/१५३, ४/१६०, ४/१७१ (यह परिवर्तन द्वारा चुने गए एक सूरह में से ११४ हैं
अलग-अलग लंबाई)।

यदि आप किसी मुसलमान से यह कहते हुए मिलते हैं कि कुरान पूरी तरह से स्पष्ट है और इसे किसी भी तरह से गलत नहीं समझा जाना चाहिए
बिंदु, वह या तो कुरान के बारे में ज्यादा नहीं जानता है या वह अपने बचाव के लिए आपसे झूठ बोल रहा है
धर्म। ("काफिरों" से झूठ बोलना कुछ परिस्थितियों में इस्लाम में अनुमत है - यहाँ तक कि शपथ भी
निरपेक्ष नहीं हैं। वे इसे अल-तकिया (वैध झूठ) या किटमैन (वैध अर्ध-सत्य) कहते हैं -
अभिव्यक्तियाँ जो केवल बड़े धर्मों के इस्लाम में हैं।

बहुत स्पष्ट।

इस अध्याय में संक्षिप्तीकरण: ए = मुहम्मद आज़ाद: "कुरान का संदेश"
निम्नलिखित संख्या (f. उदा. A17) = फुटनोट संख्या। YA = A. युसुफ अली अपने "The ." में
कुरान का अर्थ"।

001 1/7 (ए 4): "- - - जिनका (हिस्सा) (अल्लाह का) क्रोध नहीं है - - -।" किसको करता है
"वे" यहाँ संदर्भित हैं? एफ. पूर्व. अल- ग़ज़ाली और मुहम्मद अब्दुह का मतलब है कि यह वही है जो छोड़ दिया है
इस्लाम। दूसरों की अन्य परिभाषाएँ हैं। 1400 साल बाद भी इस पर बहस होती है। स्पष्ट भाषण? (एक
अतिरिक्त बिंदु: आप दावों को पूरा करते हैं कि कोई भी इस्लाम नहीं छोड़ता है। यहाँ इस्लाम द्वारा इसकी पुष्टि की गई है कि यह करता है
होता है - और विशेष रूप से अल-ग़ज़ाली इस्लाम में एक वास्तविक भारी वजन था और है, "महानतम"
मुहम्मद के बाद मुस्लिम"।)

002 2/25 (A17): "- - - क्योंकि उन्हें कुछ दिया जाएगा जो उस (अतीत) को याद करेगा।" एकदम सही
अनुवाद: "इससे मिलता-जुलता कुछ"। "विभिन्न व्याख्याएं, उनमें से कुछ काफी गूढ़ हैं"
और अत्यधिक सट्टा, इस मार्ग को दिया गया है। - - - (एक संभावित अर्थ है*) 'यह यह है'
कि हम (मुसलमानों) को धरती पर अपने जीवन के दौरान ईमान के बदले में देने का वादा किया गया है और
नेक कर्म"। लेकिन कई अन्य व्याख्याएं संभव हैं।

००३ २/३४ (ए २६): "- - - वे (स्वर्गदूत *) सभी ने खुद को सजदा किया, इब्लीस (भविष्य) को बचाओ
शैतान*) - - - और इस तरह वह उन लोगों में से एक बन गया जो सच्चाई से इनकार करते हैं"। एक अतिरिक्त रहस्य है
यहाँ: यह यहाँ इंगित किया गया है कि इब्लीस एक फरिश्ता था, लेकिन कोण प्रकाश से बनाए गए थे, जबकि यह
कुरान में कई जगह कहा गया है कि इब्लीस आग से पैदा हुआ = इब्लीस एक जिन्न था। यह भी
तथ्य यह है कि वह अल्लाह के आदेश को अस्वीकार करने में सक्षम था, इस्लामी विद्वानों ने उसके होने पर सवाल उठाया
देवदूत, क्योंकि स्वर्गदूत पूरी तरह से आज्ञाकारी हैं। उसको छोड़कर:

(यह है) "बिल्कुल स्पष्ट है कि उस आदेश के समय वह (इब्लिस*) वास्तव में एक था
स्वर्गीय मेजबान। इसलिए हमें यह मान लेना चाहिए कि उनके "विद्रोह" का विशुद्ध रूप से प्रतीकात्मक महत्व है
और वास्तव में, अल्लाह द्वारा उसे सौंपे गए एक विशिष्ट कार्य का परिणाम है।"

991

पेज 992

यह कुछ मुसलमानों के लिए एक मार्मिक बात है: यदि इब्लीस आज्ञा मानने से इंकार कर देता, तो अल्लाह नहीं है

सर्वशक्तिमान [illegible] अल्लाह की योजना का हिस्सा है [illegible] बहुत दूर है शुद्ध और
सर्वशक्तिमानता परोपकार से अधिक आवश्यक है - लेकिन हमने इसका स्पष्ट उत्तर कभी नहीं देखा
पहेली। इस दृश्य का वास्तविक महत्व स्पष्ट नहीं है।

004 2/35a (A27): "हे आदम, तू और तेरी पत्नी इस बगीचे में निवास करें - - -।" सटीक अनुवाद:
"बगीचा"। "टिप्पणीकारों के बीच राय में काफी अंतर है"
यहाँ 'उद्यान' से क्या अर्थ है: सांसारिक अर्थों में एक बगीचा, या स्वर्ग जो प्रतीक्षा कर रहा है
आने वाले जीवन में धर्मी, या स्वर्गीय क्षेत्रों में कोई विशेष उद्यान?" पाठ इस प्रकार है
विशिष्ट नहीं है, और अर्थ अस्पष्ट है।

005 2/35b (YA49): "ऐसा नहीं है इब्लीस (बाद में शैतान*)।" लेकिन अरब पाठ वास्तव में कहता है: "वे
(कोण*) झुक गए, इबलीस को छोड़कर।" इस मामले में इसका मतलब है कि इब्लीस एक फरिश्ता था, जबकि
कुरान कई अन्य स्थानों पर बताता है कि वह एक जिन्न था (आग से बना था, जबकि कोण बनाए गए थे
प्रकाश से)। स्पष्ट पाठ?

००६ २/३६ (ए ३०): "- - - पृथ्वी पर तुम्हारा निवास और तुम्हारी आजीविका थोड़ी देर के लिए होगी!"
हम "कुरान का संदेश" से उद्धृत करते हैं: "इस वाक्य के साथ पता बदल जाता है
अब तक देखा गया दोहरा रूप (बहुवचन के लिए एक व्याकरणिक रूप जो कुछ भाषाओं में मौजूद है,
अरब शामिल है, जिसका अर्थ है कि विषय 2* हैं) बहुवचन के लिए: एक और संकेत है कि
कहानी का नैतिक समग्र रूप से मानव जाति से संबंधित है।" एक संकेत, लेकिन स्पष्ट नहीं
भाषा: हिन्दी। एक और टिप्पणी: मुहम्मद असद की प्रवृत्ति कई मुसलमानों की तरह ही है
उनके धर्म की व्याख्या या प्रचार करना: यह वाक्य आदम और शायद उसके लिए एक आदेश है
वंशज हैं कि उन्हें कुछ समय के लिए पृथ्वी पर रहना होगा। यदि आप एक नैतिक शामिल करना चाहते हैं
अल्लाह के शब्दों में पहलू, यह मामले में एक व्याख्या है जो सही या गलत हो सकती है, लेकिन जो
शब्दों का हिस्सा नहीं है।

+007 2/53a (A38): क्या यहाँ अरब पाठ का अर्थ है: "- और (इस प्रकार) एक मानक (द १०)
आज्ञाएँ*) जिसके द्वारा असत्य से सत्य की पहचान की जाए - - -"? या शायद: "- - - और
(इस प्रकार) मानवीय कारण जिससे असत्य से सत्य की पहचान की जा सके - - -"? और ये वेरिएंट भी
अरब पाठ में हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं।

008 2//53b (YA68): "- - - शास्त्र और मानदंड - - -।" शास्त्रों का अर्थ होना चाहिए
10 आज्ञाएँ (और कानून, जो इस्लाम कहता है कि उसे एक ही समय में मिला, लेकिन बाइबिल में यह है
उन्होंने कहा कि उन्हें कानून के बारे में बताया गया था और इसे बाद में खुद लिखा था - एक शास्त्र के रूप में नहीं दिया गया), लेकिन यह है
"मानदंड" केवल आज्ञाओं के लिए एक और शब्द है या यह कुछ और है - चमत्कार या
कुछ अन्य संकेत या शास्त्र? इस्लाम नहीं जानता। टेक्स्ट साफ़ करें?

+009 2/54 (ए 39): मूसा ने कहा: "- - - फिर, अपने (यहूदियों के) निर्माता के लिए पश्चाताप में बदलो और
अपने आप को धिक्कारें - - -।" या हो सकता है "- - - अपने आप को मार डालो - - -।" या हो सकता है "- - - एक दूसरे को मार डालो
- - -।" वास्तविक अर्थ क्या है यह बताने के लिए भाषा बहुत अस्पष्ट है - कम से कम 3 अलग-अलग।
(एम। असद को कुरान में अन्य ग्रंथों के कारण पहले अर्थ के लिए प्राथमिकता है)। और ये
रूपांतर भी अरब पाठ में हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं।

+010 2/61 (YA74): "तुम (यहूदी*) किसी भी शहर - - - में जाओ।" लेकिन यहाँ अरब शब्द "मिस्र" (नगर) है
इसका अर्थ "फिरौन का मिस्र" भी हो सकता है = इस मामले में "मिस्र की तरह उपजाऊ देश।"

992

पेज ९९३

011 2/101 (YA102): "उन्होंने (यहूदी*) अल्लाह की किताब को फेंक दिया - - -।" क्या इसमें
विशेष मामला कुरान या बाइबिल (ओटी) को इंगित करता है? - यह स्पष्ट नहीं है। दोनों अर्थ हैं
मुमकिन।

+०१२ २/१०२ (ए ८३): "- - - और ऐसी चीजें जो बाबुल में फ़रिश्तों हारुत और
मारुत।" इसका अर्थ आपको तब मिलता है जब आप अरबी मूल पाठ के व्यंजनों में से का उपयोग करते हैं
स्वर आए और "मलकायन" शब्द प्राप्त करें = दो देवदूत। यदि आप इसके बजाय अनुमान लगाते हैं कि
सही स्वर अन्य हैं और शब्द "मलिकायन" प्राप्त करें = दो राजा, आपको यह अर्थ मिलता है:
"- - - और ऐसी बातें जो हारुत और मारूत दो राजाओं पर उतरीं।" वहाँ एक अंतर है
2 स्वर्गदूतों और 2 राजाओं के बीच। और ये संस्करण भी प्रासंगिक के रूप में, अरब पाठ में हैं
शब्द के एक से अधिक अर्थ होते हैं। इन मुसलमानों जैसे तथ्यों और समस्याओं को दृढ़ता से नकारते हैं

जब वे कहते हैं कि कुरान सटीक और सही है "अंतिम अल्पविराम तक" (अल्पविराम मौजूद नहीं था
मुहम्मद के समय अरब)।

+०१३ २/१४६: "पुस्तक के लोग (यहूदी, ईसाई*) इसे जानते हैं क्योंकि वे स्वयं जानते हैं
बेटों।" लेकिन इसके बजाय "यह" का अर्थ "उसे" हो सकता है - अरब शब्द का दोहरा अर्थ है। फिर
अर्थ बन जाता है: "- - - उसे (मुहम्मद) के रूप में जानें - -।" एक छोटा सा मूत थोड़ा अलग।

+014 2/148 (YA153): "- - - एक लक्ष्य जिसके लिए अल्लाह उसे (एक व्यक्ति *) - - -" बदल देता है। या - निर्भर
आप मूल में अरब सर्वनाम "हुवा" को कैसे समझते हैं - हो सकता है: "- - - प्रत्येक के लिए एक है
जिस लक्ष्य की ओर वह मुड़ता है"। स्पष्ट और गलत नहीं समझा जाना चाहिए?

०१५ २/१५८ (ए१२८): "देखो! सफा और मारवाह (मक्का* में 2 पहाड़ियां या चट्टानें) इनमें से हैं
अल्लाह के प्रतीक। तो अगर वे लोग जो मौसम में या अन्य समय में सदन (काबा*) में आते हैं
उन्हें चारों ओर से घेर लेना चाहिए, यह उनमें कोई पाप नहीं है"। ये दो पहाड़ियाँ (अब अंदर
मस्जिद परिसर) इस्लाम से पहले बुतपरस्त समय में भी धार्मिक प्रतीक थे, और हदीस (f. पूर्व।
अल-बुखारी) इस आयत को उसी के साथ समझाते हैं, कई मुसलमानों ने सोचा कि अगर वे पुराने का पालन करते हैं
अनुष्ठान और उनसे मिलने गए, उन्होंने पुराने देवताओं को श्रद्धांजलि दी, लेकिन मुहम्मद ने तब इसमें
आयत ने उन्हें बताया कि यह कोई पाप नहीं था - इसके विपरीत यह अल्लाह का सम्मान करना है। अनुष्ठान
हैगर की दावा की गई खोज के प्रतीक के रूप में उनके बीच (आसपास नहीं) 7 बार जल्दबाजी करना है
पानी के लिए इब्राहीम ने उसे और उनके बेटे इश्माएल को छोड़ दिया था (इस्लाम का दावा है कि यह यहाँ था)
हुआ)। लेकिन सवाल यह है कि: क्या यह अनुष्ठान अनिवार्य है या "पवित्रता का अतिशयोक्तिपूर्ण कार्य" है?
(ज़माख़शरी और रज़ी)। इस बिंदु पर पाठ अस्पष्ट है। आज यह एक माना जाता है
तीर्थयात्रा का हिस्सा एकीकृत, लेकिन पाठ अस्पष्ट है।

०१६ २/१७८ (ए१४८): "लेकिन अगर मारे गए के भाई द्वारा कोई छूट दी जाती है - - -।" लेकिन
शाब्दिक पाठ केवल "और वह जिसे (कुछ) उसके भाई द्वारा प्रेषित किया जाता है" कहता है। फिर
प्रश्न यह है: "उसका" शब्द वास्तव में किससे संबंधित है? - पीड़ित का भाई या
हत्यारे का भाई? - या उस मामले के लिए विश्वास में एक "भाई"? इस्लाम अभी भी इस पर बहस कर रहा है - काफी
स्वाभाविक रूप से, क्योंकि प्रश्न और उसके उत्तर का हत्या के मामले में वास्तव में गंभीर प्रभाव हो सकता है। इस
एक ईमानदारी से स्पष्ट रूप से कहा जाना चाहिए था, और यह सबसे अधिक संभावना नहीं है कि एक भगवान छोड़ देगा
यह उतना ही अस्पष्ट है जितना यहाँ मामला है।

०१७ २/१८४: "परन्तु जो अपनी इच्छा से अधिक देगा, वह उसके लिए भला है।" लेकिन
अरब अभिव्यक्ति "अल्लाधिना युतिकुनाहु" "इसे करने में सक्षम" या "इसे वहन कर सकती है" हो सकती है। इसमें
अनुवाद यह "वहन करने की क्षमता" की ओर जाता है। लेकिन अगर कोई सोचता है कि दूसरा सही है,
इसका अर्थ यह हो सकता है: "जो कोई उससे अधिक भलाई करता है, वह उसका भला करने के लिए बाध्य है"
स्वयं इस प्रकार - - -।" ईश्वर को करना देने से कहीं अधिक व्यापक शब्द है।

९९३

पेज 994

+018 2/187 (YA196): "- - - काला धागा - - -" - क्या यह इंगित करता है "- - - तीनों चीजें (खाएं,
ड्रिंक, सेक्स*) व्रत के दौरान बंद कर देना चाहिए - - -"? - या: "जिसकी अनुमति है वह काफी है, लेकिन इसकी तलाश करें
आपके लिए उच्च चीजें निर्धारित की गई हैं। " बस चुनें कि आप अर्थ हैं।

019 2/194 (YA209): "निषिद्ध माह - - -।" लेकिन अरब में 4 निषिद्ध महीने थे, जब
एफ। भूतपूर्व। युद्ध निषिद्ध था - एक नहीं। क्या यहाँ हज का महीना हो सकता है - तीर्थयात्रा
("धू अल हिजाह") - या अगले महीने ("मुहर्रम") हो सकता है जिसे अक्सर "अल" कहा जाता था
हराम" = निषिद्ध या पवित्र? इस्लाम नहीं जानता। स्पष्ट भाषा?

०२० २/१९६ (YA२१५): "यह उन लोगों के लिए है जिनका घर पवित्र में नहीं है।
मस्जिद (काबा*) - - -।" यूसुफ अली को उद्धृत करने के लिए: "न्यायविदों के बीच असहमति है कि क्या"
मक्का के निवासियों को 'तमट्टू' बनाने की अनुमति है या नहीं।" बहुत स्पष्ट।

०२१ २/१९७ (ए१८०): "हज के लिए प्रसिद्ध महीने हैं।" तीन वर्जित/पवित्र महीने
तीर्थयात्रा के समय के आसपास? - या हर साल हज का महीना? कोई नहीं जानता
1400 साल के अध्ययन के बाद।

०२२ २/२०० (ए१८५): "- - - अल्लाह की स्तुति का जश्न मनाएं, जैसा कि आप की प्रशंसा का जश्न मनाते थे
अपने पिता की - - -।" अपने पिता/माता-पिता की प्रशंसा की तरह? - या उनकी प्रशंसा की तरह
पूर्वजों की तरह वहाँ मूर्तिपूजक समय में प्रथा थी? जानना असंभव है।

०२३ २/२०४ए (ए१८७): "इस दुनिया के जीवन के बारे में किस प्रकार का आदमी भाषण दे सकता है
आपको चकाचौंध - - -।" मुहम्मद के समकालीन कोई व्यक्ति? - एक सामान्य तस्वीर? इसलाम
नहीं जानता, लेकिन बहस करता है?

०२४ २/२०४बी (ए१८९): "- - - फिर भी वह दुश्मनों में सबसे अधिक विवादास्पद है।" यहाँ इस्लाम बस है
बेतहाशा अनुमान लगाना कि "वह" कौन है। पाठ बहुत अस्पष्ट है, और संभावनाएं बहुत अधिक हैं।

०२५ २/२०८ (ए१९१): "हे विश्वास करने वालों! पूरे मन से इस्लाम में प्रवेश करो; और फॉलो नहीं में
शैतान के पदचिन्ह - - -।" क्या यह मुसलमान हैं जो पूरे मन से धर्म का पालन करेंगे? - या
जो लोग बाइबिल में विश्वास करते हैं उन्हें इस्लाम में प्रवेश करना चाहिए? (ज़मखशरी, रज़ी)। मुसलमान
विद्वान अनुमान लगा रहे हैं।

026 2/221 (A208): "- - - एक गुलाम महिला - - -।" क्या इस विशेष मामले में इसका मतलब सामान्य है
गुलाम औरत? - या अल्लाह की गुलाम महिला = मुस्लिम महिला? - या एक गुलाम औरत है कि
मुसलमान? इस मामले में भेदों की गिनती बहुत अधिक हो सकती है - - लेकिन पुस्तक चुप है।

+027 2/233a (A219): "यदि वे दोनों दूध छुड़ाने का निर्णय लेते हैं - - -।" लेकिन यहाँ अरब शब्द है - "फिसल"
- इसका अर्थ अलगाव भी हो सकता है, जिसका अर्थ "कुरान का संदेश" यहां उपयोग करता है - अलगाव
बच्चा अपनी माँ से। इस बहुत ही अलग भाषा में दोनों अर्थ "सही" हैं।

०२८ २/२३३बी (ए२२०): "- - - बशर्ते कि आपने (माँ) जो कुछ आपने पेश किया - - -" का भुगतान किया हो। या करता है
मतलब "- - - बशर्ते आप बच्चे की सुरक्षा निष्पक्ष तरीके से सुनिश्चित करें - - -"? या शायद "- -
- बशर्ते आपने, निष्पक्ष तरीके से, बच्चे को आत्मसमर्पण कर दिया - - -"? बस अनुमान लगाते रहो - इस्लाम है
अनुमान भी।

029 2/238 (YA271): "- - - मध्य प्रार्थना - - -।" मुस्लिम अधिकारी सही के रूप में भिन्न हैं
अर्थ, जैसा कि अरब अभिव्यक्ति "अल सलात अल वुस्ता" के रूप में अच्छी तरह से "सर्वश्रेष्ठ या सबसे" का अर्थ हो सकता है
उत्कृष्ट प्रार्थना "और इस प्रकार दोपहर के मध्य में असर प्रार्थना का संकेत हो सकता है।

०३० २/२४३ (ए२३२): "क्या तू ने अपना दर्शन उन लोगों की ओर नहीं किया, जिन्होंने अपने घरों को छोड़ दिया था,
यद्यपि वे मृत्यु के भय से हजारों (संख्या में) थे?" कहाँ पे? कौन? कब? - बहुत सारा
प्रश्न और कोई उत्तर नहीं, क्योंकि यह कुल जानकारी है जो कुरान देता है, और कोई नहीं है
ज्ञात संबंध - एक परी कथा के लिए भी नहीं। पुस्तक में स्पष्ट जानकारी?

०३१ २/२५५ए (ए २४७): "वह (अल्लाह*) जानता है कि क्या (उसके प्राणियों के रूप में प्रकट होता है) पहले या
उनके बाद या उनके पीछे। " इस तरह ए युसुफ अली समझते हैं कि इसका शाब्दिक अर्थ क्या है: "- - - कि
जो उनके हाथों के बीच में है और जो उनके पीछे है।" इस्लाम में मंदबुद्धि नहीं है
वास्तविक अर्थ के बारे में विचार, और विद्वान कई में अनुमान लगाते हैं - और विरोधाभासी
और परस्पर विरोधी - तरीके। "- - - हाथों के बीच - - -" f.ex हो सकता है। मतलब यह दुनिया - - - या हो सकता है
अगले हो। और जो "- - - उनके पीछे है" का अर्थ इस दुनिया से हो सकता है क्योंकि इसे छोड़ना है - - -
या हो सकता है कि इसका मतलब अगला जीवन हो क्योंकि यह छिपी हुई दुनिया के लिए एक संकेत है। और एक नंबर
अन्य अस्पष्ट विचारों की। और यह मुजाहिद, 'अता, अद-अहहक, अल-कलबी, रज़ी,
ज़माखशरी और अन्य जो अनुमान लगा रहे हैं। स्पष्ट भाषा, समझने में आसान?

०३२ २/२५५बी (ए २४८): "उसका (अल्लाह का) सिंहासन आकाश और पृथ्वी पर फैला हुआ है - - -।"
शाब्दिक रूप से: "उनकी सीट (सत्ता का) - - -।" लेकिन इच्छित अर्थ क्या है? - "उसका प्रभुत्व" या
"उनकी संप्रभुता"? (ज़माख़शरी)। - या "उसका ज्ञान"? (मुहम्मद अब्दुह), - या "उनका"
महिमा और महिमा "? (राज़ी), - या कुछ और? क्या पता?

०३३ २/२५८-२६० (वाईए३०२): यह उद्धृत करने के लिए बहुत अधिक है, लेकिन हम ए युसुफ अली के कुछ उद्धरणों को उद्धृत करते हैं।
टिप्पणी, यह इस्लामी दावे के रूप में बहुत ज्ञानवर्धक है कि कुरान में भाषा है
क्रिस्टल स्पष्ट: "तीन पद २५८-२६० के रूप में बहुत विवाद का विषय रहा है
उन घटनाओं और व्यक्तियों से जुड़े होने का सटीक अर्थ, जिनके नाम नहीं हैं
उल्लिखित। ऐसे मामलों में जहां कुरान ने कोई नाम नहीं दिया है और पैगंबर ने खुद को
कोई संकेत नहीं दिया गया है, मुझे लगता है कि यह अनुमान लगाने के लिए बेकार है - - -।" हाँ, कुरान हमेशा क्रिस्टल है
स्पष्ट।

034 2/259 (YA304): "- - - एक गांव से, सभी खंडहर में - - -।" क्या यह यहेजकेल के दृष्टिकोण का उल्लेख करता है
सूखी हड्डियाँ (बाइबल: यहेजकेल 37/1-10), नहेमायाह के नष्ट किए गए यरूशलेम को (बाइबल: नहेमायाह)

२/११-२०), उज़ैर/एज़्रा से संबंधित किंवदंतियों में से एक के लिए, या कुछ और? इस्लाम नहीं करता
जानना। टेक्स्ट साफ़ करें?

०३५ २/२६० (ए२५७): "चार पक्षी लो; उन्हें वश में करना कि वे तेरी ओर फिरें (अब्राहम*); का एक हिस्सा डाल दो
उन्हें हर पहाड़ी पर, और उन्हें बुलाओ - - -।" लेकिन अरब अभिव्यक्ति "सुरहुन्ना इलयका" बस
इसका अर्थ है "उन्हें अपनी ओर झुकाओ"। और फिर वास्तव में अर्थ यह है: "- उन्हें जगह दें
(अलग से) हर पहाड़ी पर, और उन्हें बुलाओ - - -।" और यह बहुत अलग कहानी है। स्पष्ट
(परियों की कहानी?

036 2/275 (YA324): "- - - जो सूदखोरी खाते हैं"। यह सूदखोरी निषिद्ध है सबसे स्पष्ट है।
लेकिन सूदखोरी की परिभाषा क्या है? "जब सूदखोरी की परिभाषा की बात आती है तो जगह होती है"
विचारों के मतभेदों के लिए "- यहां तक कि जब किसी ऐसे विषय की बात आती है जो वास्तविक जीवन में इतना केंद्रीय है,
कुरान में ग्रंथ स्पष्ट नहीं हैं "क्योंकि पैगंबर ने प्रश्न के विवरण से पहले इस दुनिया को छोड़ दिया"
बसे हुए थे" - **और इस्लाम का कोई वास्तविक नैतिक दर्शन नहीं है, केवल मुहम्मद (कभी-कभी)
काफी अनैतिक) शब्द। और यहाँ ऐसे शब्द नहीं हैं।**

०३७ २/२८६ (ए२७८): "हे हमारे पालनहार! हम पर (मुसलमानों पर) ऐसा बोझ मत डालो जो तू
हम से पहले उन पर लेट गया - - -। " मुसलमानों को यह बताना अच्छा लगता है कि इसका मतलब है भारी बोझ
मूसा के कानून द्वारा यहूदी। लेकिन हकीकत में कुरान यह नहीं बताता कि वह किसके बारे में है
बोलना या किस तरह का बोझ (उदाहरण के लिए पूर्वजों का बुतपरस्ती और/या पापों का बोझ)।

995

पेज 996

०३८ ३/३: "वह (अल्लाह*) है जिसने तुम्हारे लिए बोया (मुहम्मद*) - - - पुस्तक, पुष्टि करने वाली
इससे पहले क्या हुआ - - -।" यहाँ संकेत दिया गया है कि यह बाइबल की पुष्टि करता है। लेकिन अरब मूल है
अधिक बादल छाए रहेंगे: "- - - मा बनयदही - - -" - शाब्दिक रूप से "- - - जो उसके हाथों के बीच है - - -
". क्या यह अनुमान लगाना सही है कि इसका अर्थ है "- - - पहले क्या हुआ - - -"? या यह अधिक सही है
लगता है इसका मतलब है "- - - अब क्या बचा है - - -।"? मुस्लिम विद्वान इसके बारे में विवाद करते हैं - अधिकांश सहमत हैं
पहला विकल्प, लेकिन कुछ दूसरे के लिए। और शाब्दिक अर्थ एक और है। स्पष्ट
भाषा: हिन्दी?

00a 3/7 (YA347): "- - - छंदों में मूल और मौलिक (स्थापित अर्थ का); वे
पुस्तक की नींव: अन्य अच्छी तरह से स्थापित अर्थ के नहीं हैं - - -।" टिप्पणियाँ
ज़रूरी? **कुरान को शाब्दिक रूप से समझा जाना है अगर कुछ और नहीं बताया गया है। लेकिन कुछ
इसका अर्थ स्थापित किया है और कुछ नहीं।**

०३९ ३/४९ (ए३७): "- - - मैं (यीशु*) तुम्हारे लिए मिट्टी से, जैसा कि वह था, एक पक्षी की आकृति और
इसमें सांस लें, और यह अल्लाह की अनुमति से एक पक्षी बन जाता है - - -"। पर ये सच्ची कहानी है या
रूपक? मुस्लिम विद्वान इस पर बहस करते हैं। (वास्तव में कहानी अपोक्रिफल (बनाई गई) में से एक से है
अप लेजेंड) "चाइल्ड गॉस्पेल"।) स्पष्ट भाषण?

+०४० ३/११८: "- - - वे (गैर-मुस्लिम*) आपको भ्रष्ट करने में असफल नहीं होंगे।" लेकिन सटीक पाठ कहता है
(स्वीडिश से अनुवादित): "- - - वे वह सब पसंद करते हैं जो आपको परेशान कर सकता है - - -।" और वह नहीं है
दूर तक एक ही अर्थ।

०४१ ३/१४२: "क्या तुमने सोचा था कि तुम अल्लाह के बिना लड़ने वालों की परीक्षा लिए बिना स्वर्ग में प्रवेश करोगे"
कठिन (उसके कारण में) और दृढ़ रहा?" लेकिन मूल पाठ का शाब्दिक अर्थ है: "-
- - जबकि अल्लाह ने तुममें से उन लोगों का अभी तक संज्ञान नहीं लिया है जिन्होंने प्रयास किया है। . . और वे
जो विपरीत परिस्थितियों में धैर्यवान हैं।" इस्लाम समझाता है कि जैसा कि अल्लाह सब कुछ जानता है, यह वास्तव में है
इसका मतलब है कि कुछ भी नहीं - कोई परीक्षण नहीं हुआ है। लेकिन अगर अल्लाह सर्वज्ञ है, तो अस्तित्व में नहीं है
किसी की परीक्षा लेने का एक ही कारण। और अगर अल्लाह नहीं जानता कि कैसे हर कोई
व्यवहार करेगा, वह सर्वज्ञ और भेदक नहीं है। यहाँ इस्लाम की व्याख्या तार्किक है
अमान्य। क्या उनके पास कुछ बेहतर है - (क्षमा करें) सामान्य सामान नहीं जहां वे "समझाते हैं" एक
एक जटिल प्रश्न का टुकड़ा, और फिर "यही कारण है" - और चुपचाप . के अन्य भागों को छोड़ दें
जटिल, जो दर्शाता है कि दावा गलत है या अमान्य है? - इसमें बहुत कुछ है
इस्लाम में।

०४२ ३/१७२ (ए१३०): "उन लोगों में से जिन्होंने अल्लाह और रसूल की पुकार का उत्तर दिया"
(मुहम्मद*) घायल होने के बाद भी - - -।" कौन? कहाँ पे? किस स्थिति में? कोई भी नहीं
जानता है - किताब खामोश है, और मुस्लिम विद्वानों की बहस। उहुद के बाद? बद्र अस-सुघरा को? या
कोई अन्य घटना? कोई भी अनुमान लगाने के लिए स्वतंत्र है।

०४३ ३/१७९ (ए१३६): "अल्लाह विश्वासियों को राज्य में नहीं छोड़ेगा (उदाहरण के लिए, शिथिल होने के कारण*)
जिसमें अब तुम हो - - -।" (वास्तव में उहुद की लड़ाई हारने के बाद - हालांकि मक्का ने नहीं किया था
समय में जीत का पालन करें)। क्या यह अरब का सही अर्थ है "मा अंतुम अलैही" (सटीक)
अर्थ: "जिस पर तुम हो")? या इसका मतलब यह है कि "(आर्थिक, आदि*) की स्थिति
तुम कौन हो"? (रेज़ी और अन्य)। पाठ स्पष्ट नहीं है।

044 4/1 (A1): "- - - ने आपको एक ही व्यक्ति ("नफ़्स") से बनाया है - - -।" क्या ये सही है
अर्थ? या f.ex. "- - - मानव जाति से - - -" (मुहम्मद 'अब्दु)? या "--- आत्मा से---
।" या "- - - आत्मा से - - -"? अथवा "---- एक जीव से---।"? या "--- एक प्राण से
सिद्धांत - - -"? या "- - - स्वयं से - -।"? आदि शब्द "नफ़्स" बहुत अस्पष्ट है और इसमें कई हैं
अर्थ - मुसलमानों के दावे की स्पष्ट भाषा से बहुत दूर। कम से कम 7 संभावित अर्थ।

996

पेज 997

+045 4/3 (A3): "- - - अपनी पसंद की महिलाओं से शादी करें, दो या तीन या चार - - -।" क्या यह
सही अर्थ? (सटीक शाब्दिक अर्थ: "- - - जैसे आपके लिए अच्छे हैं - -")। या "- - - जैसे हैं
आपके लिए वैध - - -" (मुहम्मद असद)? या ("- - - आपको उसी विचार को लागू करना होगा
जिस महिला से आप शादी करना चाहते हैं उसके अधिकार और हित (अनाथ* के रूप में) - - -।" (सईद इब्ने
जुबैर और अन्य)? या इसका सीधा सा मतलब है "- - - जैसे कि आपके लिए अच्छे हैं - - -।"? यहाँ या तो
कुरान या मुस्लिम विद्वानों ने कम से कम 4 अर्थ निकाले हैं। और ये वेरिएंट भी हैं
अरब पाठ में, प्रासंगिक शब्द के रूप में एक से अधिक अर्थ हैं।

०४६ ४/१२ (YA५२०): "- - - उनका हिस्सा एक चौथाई है - - -।" लेकिन यहाँ अरबी शब्द "कलाला" का प्रयोग हुआ है।
मुहम्मद के समय में इसका कोई निश्चित अर्थ नहीं था (यह उमर की इच्छा के 3 शब्दों में से एक है)
मुहम्मद ने अपनी मृत्यु से पहले परिभाषित किया था - अन्य दो "खिलाफा" और "रीबा" =
सूदखोरी)। क्या इस्लाम ने सही अनुमान लगाया है? कोई नहीं जानता।

०४७ ४/१९ (ए१७): "तुम्हें महिलाओं की इच्छा के विरुद्ध वारिस करने से मना किया गया है।" क्या इसका मतलब आपका हो सकता है
यदि वह मरने से पहले विरोध करती है, तो मरने के बाद उसके पास जो संपत्ति है, उससे विरासत में नहीं मिल सकती है? मुश्किल से -
विरासत के लिए इस्लामी कानूनों के साथ नहीं। ज़माख़शरीफ़ का प्रस्ताव है कि इसका मतलब यह हो सकता है
एक अनिच्छुक या प्यार नहीं करने वाली पत्नी को अपने साथ रहने के लिए मजबूर करने के लिए निषिद्ध है, विरासत की उम्मीद में
उसकी। अन्य अधिकारियों का कहना है कि इसका मतलब है कि आपको महिला को एक व्यक्ति के रूप में विरासत में लेने की अनुमति नहीं है
- एक अतिरिक्त पत्नी के लिए या आपके हरम के लिए (यह निश्चित रूप से अनुमति है यदि वह एक दास है) उसके खिलाफ
विल" (इस अर्थ में स्वतंत्र महिलाओं को विरासत में देना, अन्य कानूनों द्वारा भी निषिद्ध है)। इस बारे में है
मानव जीवन के अत्यंत आवश्यक बिंदु - किसी भी सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपने विधान में इतने अस्पष्ट शब्दों का प्रयोग नहीं किया था।

०४८ ४/२५ (ए२९): "यदि आप में से किसी के पास साधन नहीं है - - -।" अरब अभिव्यक्ति कहती है: "लम
यस्तदी' तवलान" का शाब्दिक अर्थ है: "खर्च नहीं कर सकता" - लेकिन इस मामले में ऐसा करने का अर्थ है "नहीं
पैसा", या क्या कोई बाधा (मुहम्मद अब्दुह) मायने रखती है? किताब कोई जवाब नहीं देती, यहां तक कि
अगर यह मानव के जीवन में केंद्रीय घटनाओं से संबंधित है।

०४९ ४/२९ (ए३८): "अपनी संपत्ति को आपस में व्यर्थ में न खाना"। लेकिन क्या यह सही है
अर्थ? "कुरान के संदेश" में है: "एक दूसरे की संपत्ति को मत खाओ"
गलत तरीके से - आपसी समझौते के आधार पर व्यापार के माध्यम से भी नहीं" - जो मोटे तौर पर कहता है
वही (कुछ और शब्दों में "एक दूसरे को धोखा न दें" या इससे भी बदतर)। लेकिन अरब
सामने शब्द "इल्ला" का अर्थ है "सिवाय" या "जब तक यह नहीं है", जिसका अर्थ है कि शाब्दिक अर्थ
वास्तविकता यह है कि "एक दूसरे की संपत्ति को गलत तरीके से न खाएं, जब तक कि यह (एक कार्य) व्यापार न हो"
आपसी समझौते के आधार पर" - - - जिसका अर्थ है कि गलत लाभ ठीक है यदि भाग सहमत हैं
यह - एफ। भूतपूर्व। एक ठग द्वारा जहां खरीदार का मानना है कि उसे एक उचित सौदा मिलता है। यह दृढ़ता से
अन्य इस्लामी कानूनों का खंडन करता है। इसे समझाने के लिए कुछ अत्यधिक उन्नत मौखिक जिम्नास्टिक की आवश्यकता होती है
दूर। हर विद्वान इस बात से सहमत है कि शाब्दिक अर्थ गलत होना चाहिए, लेकिन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए
विशेष अर्थों में उस अर्थ को गायब करने के लिए। का सबसे अच्छा बहुत ही असामान्य उपयोग
भाषा - इसके बावजूद कुरान खुद दावा करता है कि जिस भाषा को समझना है
शाब्दिक, और यह समझना आसान है। अधिक संभावना है कि यह एक ला 6/151 में एक बड़ी गलती है।

+०५० ४/३१ (ए४०): "और आपको महान सम्मान के द्वार पर स्वीकार करते हैं" = आपको एक सम्मानजनक रूप से स्वीकार करते हैं
मार्ग। यह अन्य रज़ी की व्याख्याओं में से एक है। लेकिन अरब शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है?
"मुदखल"? इसका अर्थ यह भी हो सकता है "- - - महिमा के निवास में प्रवेश करें" = एक गौरवशाली स्थान। स्पष्ट?

०५१ ४/३३ (वाईए५४३): "हर एक को (लाभ) करने के लिए, हमने (अल्लाह*) ने हिस्सेदार और वारिस नियुक्त किए हैं - -
-।" लेकिन उसके इस्तेमाल किए गए अरब शब्द का अर्थ हो सकता है: ए। निकट से संबंधित। बी वारिस। C. शेयरर या पार्टनर।
डी पड़ोसी। ई दोस्त। एफ रक्षक। जी ग्राहक। एच. भगवान या गुरु। कम से कम 8 अलग
अर्थ। स्पष्ट?

997

पेज 998

०५२ ४/३४ए (ए४३): "- - - धर्मी महिला - - - (पति की) अनुपस्थिति में पहरा क्या अल्लाह
उन्हें पहरा देंगे।" पर क्या? - क्या यह गैरकानूनी सेक्स के बारे में चेतावनी है? - इसका संबंध है
व्यापक अर्थों में आनंद? - अपने पति की संपत्ति का मार्गदर्शन करने के लिए? कौन जानता है - यह में से एक है
मुसलमानों के लिए अस्पष्ट बिंदु, भले ही यह जीवन का एक केंद्रीय बिंदु है।

+053 4/34b (YA547): "- - - उन्हें (हल्के से) - - - स्पैंक करें। लेकिन यहाँ जिस अरब शब्द का प्रयोग हुआ है -
"दरबा" - "कुरान में लगभग **17 अलग-अलग अर्थों के** साथ प्रयोग किया जाता है - - -।" क्या अल्लाह ऐसा है
एक शब्दावली सीमित है कि उसे इस तरह के एक फैलाने वाले भाषण का उपयोग करना है? **कम से कम यह बहुत स्पष्ट है कि
कुरान में ग्रंथ अक्सर बहुत अस्पष्ट होते हैं।**

०५४ ४/५१ (एद९): "वे टोना और बुराई में विश्वास करते हैं - - -।" लेकिन अरब (वास्तव में संभावना नहीं है
लिसन अल-अरब के अनुसार अरब हो) शब्द "अल-जिबत" जिसे ए यूसुफ अली कहते हैं मतलब टोना और
बुराई, एक अस्पष्ट शब्द है। वास्तविकता में इस वाक्य का अर्थ यह हो सकता है: "वे निराधार में विश्वास करते हैं"
रहस्य "(एम। असद)। या: "वे उस चीज़ में विश्वास करते हैं जिसमें कुछ अच्छा नहीं है" (बैदावी,
कामुस)। या: "वे जादू में विश्वास करते हैं" (उमर इब्न अल-खत्ताब)। या: "वे विश्वास करते हैं
कुछ भी जो अल्लाह के बजाय पूजा जाता है "(ज़मखशरी)। और कई अन्य
संभावनाओं में "सुझाव", "काल्पनिक विचार", "अंधविश्वासी अनुमान" और बहुत कुछ शामिल थे।
एक ऐसी किताब बनाने वाले भगवान के लिए उपयोग करने के लिए बहुत अस्पष्ट भाषा जो "स्पष्ट और समझने में आसान है।"

०५५ ४/५७ (ए७४): "हम उन्हें रंगों, ठंडा और गहरा करने के लिए स्वीकार करेंगे।" एक बात यह है कि यहाँ
दावा किए गए विश्व धर्म में "केवल अरब संदर्भ" के असंख्य मामलों में से एक है
पूरी दुनिया के लिए एक भगवान से। मोर डाउन टू अर्थ है: क्या वाक्य को सही ढंग से समझा गया है?
आज अरब शब्द "ज़िल" का अर्थ मुख्य रूप से "छाया" और "ज़िल ज़हिल" कुछ "घना" जैसा है
छाया" (ठंडे देशों के किसी व्यक्ति के लिए अच्छी बात नहीं है जो अच्छी धूप का सपना देखता है)। लेकिन सभी
भाषाएँ बदलती हैं - इसलिए अरब भी। पुराने अरब में इसका अर्थ "आवरण" या "आश्रय" या
"संरक्षण" या यहां तक कि "आराम, आनंद और प्रचुरता की स्थिति" या "खुशी" (लेन 1915) - और
"ज़िल ज़हिल" जिसका उपयोग यहाँ किया गया है "अत्यधिक खुशी" (राज़ी)। के बीच एक अंतर है
"गहरी छाया" और "अत्यधिक खुशी" - शायद गर्म के घर में रहने वालों को छोड़कर
रेगिस्तान

०५६ ४/८८ (ए१०५ - २००८ संस्करण १०७ में): "आपको इस बारे में दो पार्टियों में क्यों विभाजित किया जाना चाहिए
पाखंडी?" वह कौन थे? इब्न अब्बास और तबरी जैसे मुस्लिम अभिजात्य विद्वानों ने
बहुत कुछ अनुमान लगाया, लेकिन एकमात्र परिणाम "विभिन्न अनुमान" है। **और जब शीर्ष इस्लामी विचारक
१४०० वर्षों के दौरान "विभिन्न अनुमानों के साथ समाप्त होता है - हाँ, फिर भाषा में"
कुरान "स्पष्ट और आसान" है।**

०५७ ४/९४ (ए११८ (२००८ संस्करण में ए१२०)): "यहां तक कि आप पहले भी - - - थे।" शाब्दिक
अर्थ: "इस प्रकार आप (भी) पहले रहे हैं"। क्या यह इस्लाम की कमजोर शुरुआत को दर्शाता है?
मक्का? - या व्यक्तिगत रूप से आपके मुसलमान बनने से पहले या अल्लाह ने आपकी मदद की
तरीके? - या एक समुदाय के लिए समान? - या देश के लिए? संदर्भ पहले के पक्ष में है
अर्थ, लेकिन यह स्पष्ट से बहुत दूर है। और अगर इसका मतलब यह है: अल्लाह शुद्ध क्यों बनाता है?
अरब पर आधारित अरब धर्म 600-650 ईस्वी + किंवदंतियों और विपरीत कहानियों को उठाया गया
अरब इसी अवधि के दौरान पड़ोसी धर्मों आदि के बारे में, यदि वह सर्वशक्तिमान है,
सर्वज्ञ और भेदक और एक सार्वभौमिक, कालातीत धर्म बनाना चाहते हैं?

०५८ ४/१०२ (ए१३० - २००८ संस्करण ए१३२ में): "लेकिन आप पर कोई दोष नहीं है यदि आप अपना
बारिश की असुविधा के कारण हथियार - - -" - यानी यदि आपके हथियार क्षतिग्रस्त हो सकते हैं
"कुरान के संदेश" के अनुसार बारिश। लेकिन उनके पास एक ही हथियार था जो हो सकता था
बारिश से क्षतिग्रस्त, लोहे से बनी चीजें थीं जो जंग खा सकती थीं - मुख्य रूप से तलवार (तीर थे .)
उपयोग के लिए और शायद केवल एक बार, और थोड़ा जंग ज्यादा मायने नहीं रखता) और कोट-ऑफ-मेल - और

998

पेज 999

त्वचा से जो नरम हो सकती है (ढाल + चमड़े के कोट पर - कोट के रूप में अच्छी रक्षा नहीं-
ऑफ-मेल, लेकिन बहुत सस्ता)। लेकिन वे इतनी अच्छी तरह से जानते थे कि लोहे पर थोड़ी सी चर्बी का प्रयोग करें, और यह करता है
जंग नहीं, और वसा के साथ त्वचा/चमड़े को संसेचन, और यह पानी को पीछे हटा देता है। फिर यह वाक्य क्यों?
खैर, अरब शब्द "मातर" (= बारिश) के अन्य अर्थ भी हैं, जैसा कि इसका भी अर्थ है
(स्वीडिश से अनुवादित) "दबाव", "सख्त जरूरत", "दुर्घटना", "एक पीड़ा"। वास्तविक अर्थ
इस प्रकार बहुत भिन्न हो सकते हैं - f. उदाहरण: "लेकिन अगर आप अपनी बाहों को दूर कर देते हैं तो आप पर कोई दोष नहीं है"
तुम एक दु:ख से पीड़ित हो"। इस भगवान द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली "स्पष्ट और समझने में आसान" भाषा नहीं है
(?) कम से कम - कम से कम - दो बहुत अलग अर्थ। और ये वेरिएंट भी अरब में हैं
पाठ, प्रासंगिक शब्द के रूप में एक से अधिक अर्थ हैं।

+०५९ ४/१०३ (वाईए६१९): "जब तुम, प्रार्थना पास करो - - -।" 2 अर्थ संभव:
"जब आप सामूहिक प्रार्थनाएँ समाप्त कर लें", या "जब (गंभीर खतरे के कारण) आप"
सामूहिक प्रार्थनाओं से गुजरना पड़ता है - - -।" अपनी पसंद चुनें।

०६० ४/१०५ (ए१३१ - २००८ के संस्करण ए१३३ में): "हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें किताब भेजी है
(कुरान*) - - -।" आपको/तू/तू/आप शब्द का प्रयोग अक्सर इस तरह से किया जाता है जिससे इसे करना मुश्किल हो जाता है
तय करें कि "आप" कौन हैं (उदाहरण के लिए, आपके पास 4/113 में वही है)। यहाँ यह संभावना है, लेकिन निश्चित रूप से बहुत दूर है,
कि इसका मतलब मुहम्मद है। लेकिन इसका मतलब "तुम मुसलमान" या "तुम लोग" आदि भी हो सकते हैं - और
कुछ स्थानों पर अनुमान लगाना अधिक कठिन है और उत्तर यहाँ से अधिक अनिश्चित है। दूर से
"स्पष्ट और आसानी से समझी जाने वाली" भाषा - किसी भी सर्वज्ञ भगवान को से बेहतर करने में सक्षम होना चाहिए
यह।

०६१ ४/११७ (ए१३८ - २००८ संस्करण ए१४० में): "(द पैगन्स) उसे छोड़कर (अल्लाह'), कॉल करें लेकिन
महिला देवताओं पर - - -।" यह सही हो सकता है, क्योंकि अरब "इनथ" का अर्थ "एक महिला" हो सकता है।
लेकिन इसका अर्थ "निर्जीव चीजें" (लांस I, 112) या "बेजान प्रतीक" भी हो सकता है। असली हो सकता है
अर्थ कुछ इस तरह है "- - - पुकार लेकिन अपनी बेजान (लकड़ी) की मूर्तियों पर - - -।"? नहीं एक
भाषा "स्पष्ट और समझने में आसान।"

०६२ ४/१२७: "कमजोर और उत्पीड़ित बच्चों के संबंध में - - -।" मूल अरबी
यहाँ पाठ "महिलाओं के अनाथ" कहता है। क्या इसका मतलब विधवाओं के मरने के बाद अनाथ हो जाना है? - या
महिला बच्चे? इस्लाम नहीं जानता। एक स्पष्ट (?) भाषा **अनुवादक द्वारा "सिद्ध" -**
कुरान के अनुवादों में यह बहुत अधिक है (हालाँकि ए यूसुफ अली भी नहीं है
बुरा।)।

+063 4/142 (A157 - 2008 संस्करण A158): "पाखंडी - वे सोचते हैं कि वे हैं
अल्लाह को पछाड़, लेकिन वह उन (गैर-मुसलमानों*) को पछाड़ देगा - - -"। शाब्दिक अर्थ: "हे
उनका धोखेबाज है"। लेकिन एफ. भूतपूर्व। रेज़ी के पास है: "वह (अल्लाह*) उन्हें उनके धोखे के लिए बदला देगा।"
यहाँ एक स्पष्ट अंतर है: पहले मामले में अल्लाह गैर-मुसलमानों को धोखा देता है ताकि हो सकता है
इससे पहले कि वे मुसलमानों को कोई समस्या दें, योजनाएँ चरमरा जाएँगी। दूसरे मामले में वह बदला लेता है
उन्होंने क्या किया। 2 अलग अर्थ। और ये रूपांतर भी अरब पाठ में हैं, जैसे
प्रासंगिक शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं।

हम यह भी जोड़ते हैं कि यह वाक्य: "वह (अल्लाह *) उनका धोखेबाज है" इस्लाम के नैतिक आदर्शों में से एक है
"अल-तकिया" (वैध झूठ) और "किटमैन" (वैध अर्ध-सत्य) के अपने सिद्धांतों के लिए उपयोग करता है - ए
अनुमति दी गई बेईमानी को इस्लाम में शामिल किया गया लेकिन किसी अन्य प्रमुख धर्म में नहीं। अल-
कई मामलों में बिना पाप किए तकिया और किटमैन का उपयोग किया जा सकता है - f. भूतपूर्व। अपने को बचाने के लिए
जीवन, आपको गंभीर समस्याओं से बाहर निकालने के लिए, अपने पैसे बचाने के लिए, महिलाओं को धोखा देने के लिए - और यह होगा
यदि आवश्यक हो तो धर्म को बढ़ावा देने या उसकी रक्षा करने के लिए उपयोग किया जाता है। (यह केवल अनुमान है कि कितने
धर्मान्तरित जो अल-ताकिया और/या किटमैन से प्रभावित हुए हैं, जब यह सोचकर कि क्या इस्लाम
एक सच्चा और अच्छा धर्म है या नहीं। या कितने गैर-मुसलमानों को ठगा गया है

999

पेज १०००

विश्वास है कि कुरान दमन, अमानवीयता और खून की शिक्षा का आधार नहीं है,
लेकिन शांति को बढ़ावा देने वाली एक शांतिपूर्ण और परोपकारी किताब।)

०६४ ४/१४८ (ए १६० - २००८ संस्करण ए १६१ में): "अल्लाह को यह पसंद नहीं है कि विदेशों में बुराई का शोर मचाया जाए
सार्वजनिक भाषण में - - -।" इसका क्या मतलब है? जैसा कि उस संदर्भ में कहा गया है जहां पुस्तक है
पापियों के बारे में बात कर रहे हैं जो पश्चाताप करते हैं और मुसलमान बन जाते हैं और मुक्ति प्राप्त करते हैं (4/146-
१४७), एफ. भूतपूर्व। रेजी का कहना है कि यह पूर्व के बारे में बदनामी की चिंता करता है, लेकिन अब पश्चाताप किया और पापों को क्षमा कर दिया।

दूसरों का कहना है कि इसका मतलब सभी चीजों के बारे में बुराई करना है। (क्या उनका मतलब यह भी है कि जो कहा गया वह सच है?)
अस्पष्ट पाठ।

०६५ ४/१५० (ए१६१ - २००८ संस्करण १६२ में): "जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इनकार करते हैं, और
(जो) अल्लाह को उसके रसूलों से अलग करना चाहते हैं - - -।" या इसका मतलब यह है: "हम मानते हैं
कुछ में और हम दूसरों से इनकार करते हैं "- हम अल्लाह पर विश्वास करते हैं लेकिन उसके रसूलों (ज़माख़शरी) में नहीं?
या: "- - - हम कुछ प्रेरितों में विश्वास करते हैं, लेकिन दूसरों में नहीं - - -" (तबारी)? अस्पष्ट
भाषा: हिन्दी।

+066 4/153 (A164 - 2008 संस्करण 165 में): "पुस्तक के लोग (इस मामले में स्थानीय
यहूदी*) तुझसे (मुहम्मद*) एक किताब को स्वर्ग से उनके पास लाने के लिए कहते हैं - - -" - एक के रूप में
उसकी भविष्यवाणी के लिए सबूत। वैकल्पिक रूप से: "- - - कि आप (मुहम्मद*) एक रहस्योद्घाटन का कारण बनते हैं
उनके पास (यहूदियों*) स्वर्ग से नीचे भेज दिया जाए" (एम. असद) परिणाम वही होगा - अ
सबूत (लेकिन मुहम्मद कभी भी प्रसिद्ध अल्पविराम को साबित करने में सक्षम नहीं थे) - लेकिन वहाँ होगा
इस्तेमाल किए गए साधनों में काफी अंतर। बहुत अस्पष्ट भाषा - दो बहुत अलग अर्थ
वाक्य का। और अन्य सभी की तरह ये संस्करण भी प्रासंगिक के रूप में अरब पाठ में हैं
शब्द के एक से अधिक अर्थ होते हैं।

०६७ ४/१५८ (वाईए६६४): "नहीं, अल्लाह ने उसे (यीशु*) अपने ऊपर उठाया - - -"। वहाँ है
मुसलमानों के बीच अंतर इसका वास्तव में क्या अर्थ है: क्या यीशु को शारीरिक रूप से स्वर्ग में उठाया गया था और
कभी नहीं मरा? या क्या वह बाद में मर गया जब सूली पर चढ़ाए जाने से इस्लाम इनकार करता है और अपमान को बख्शता है
यहूदियों ने उसके लिए इरादा किया? मुसलमान आपको अलग-अलग जवाब देंगे, क्योंकि पाठ स्पष्ट नहीं है।
(लेकिन किसी से भी हम कभी नहीं मिले हैं, उसने इस बात का स्पष्ट जवाब दिया है कि अगर यीशु रहता तो वह कहाँ गायब हो गया
पृथ्वी पर - यीशु जैसा व्यक्ति चाहे कहीं भी भागे, कोई निशान नहीं छोड़ता - यदि वह भाग गया,
जो उसने बिल्कुल बाइबल के अनुसार नहीं किया)।

०६८ ४/१५९ (वाईए६६५): "और किताब के लोगों में से कोई भी नहीं है, लेकिन उस पर विश्वास करना चाहिए"
उनकी मृत्यु से पहले - - -।" क्या "उसकी मृत्यु" यीशु या व्यक्ति "व्यक्ति" को संदर्भित करता है
पुस्तक"? क्या पता? - पाठ बहुत अस्पष्ट है।

०६९ ४/१६० (ए१७४ - २००८ संस्करण १७५ में): "- - - इसमें उन्होंने (यहूदी*) कई लोगों को
अल्लाह का रास्ता - - -।" "कुरान का पैगाम:"- - - उनके (यहूदियों के*) बार-बार होने के कारण
अल्लाह की राह से मुकर गया - - -।" लेकिन अरब क्रिया "सड्डा" और संबंधित
संज्ञा "दुखद" दोनों सकर्मक या अकर्मक हो सकते हैं। यदि आप अनुमान लगाते हैं कि वे सकर्मक हैं,
आपको ऊपर लिखा अर्थ मिलता है। लेकिन अगर आपको लगता है कि वे अकर्मक हैं, तो अर्थ
बन जाता है: "- - - उनके होने के कारण (अक्सर) (खुद*) अल्लाह के रास्ते से दूर हो गए -
- -।" अल्लाह (?) वास्तव में "स्पष्ट भाषा, समझने में आसान" का उपयोग नहीं करता है।

०७० ५/१ (ए२): "आपके लिए वैध (भोजन के रूप में) (मुसलमान*) सभी चार पैरों वाले जानवर हैं, जिनके साथ
अपवाद नाम - - -"। लेकिन अरब का शाब्दिक अर्थ "बहिमत अल-अनम" है "चार पैरों वाला"
मवेशी" या "जानवरों का जानवर"। लेकिन "मवेशी" "सभी चार पैरों वाले" से बहुत अलग है
जानवरों"। रहस्य को जोड़ने के लिए रेज़ी और अन्य कहते हैं: "- - - सभी जानवर जो मिलते-जुलते हैं
(पालतू) मवेशी इस हद तक कि वह पौधों को खाता है और शिकार का जानवर नहीं है।" (एक सार

यह है कि मुसलमानों को समुद्री स्तनपायी नहीं खाना चाहिए - 4 पैर नहीं और उनमें से ज्यादातर हैं
शिकार के जानवर। साथ ही अधिकांश मछलियाँ "प्रार्थना के जानवर" हैं। इस श्लोक का मुख्य सार यह है कि नहीं
अरब विद्वान वास्तव में सुनिश्चित हैं कि इसका सही अर्थ कैसे समझा जाए, लेकिन **वे इस पर सहमत हैं
कि "चार-पैर वाले मवेशी" एक तनातनी है जो गलत होनी चाहिए** - एक और मामला जहां
बहुसंख्यक इस बात से सहमत हैं कि कुरान में कुछ पाठ गलत हैं (ऐसे कुछ हैं - देखें .)
अलग छोटा अध्याय। और जब बड़े-से-बड़े मुस्लिम विद्वान भी नहीं समझते कि क्या
पाठ का वास्तव में अर्थ है, यह "एक स्पष्ट और आसानी से समझी जाने वाली भाषा" नहीं है।

इसे मुस्लिम विद्वानों के बचाव में जोड़ा जाना चाहिए जो के अर्थ को "समायोजित" करने का प्रयास करते हैं
यह आयत, कि कुरान स्पष्ट रूप से शिकार की अनुमति देता है, और ज्यादातर वे भोजन के लिए शिकार पर जाते थे - - -
और तुम पशुओं का शिकार करने नहीं जाते। इस प्रकार यह बहुत स्पष्ट है कि जब वे यह कहते हैं तो वे सही होते हैं
टॉटोलॉजी गलत है।

+071 5/8 (A19): "- - - और दूसरों (गैर-मुस्लिम*) से आप (मुसलमानों) से नफरत न करने दें
तू गलत की ओर भटकता है और न्याय से दूर हो जाता है।" वैकल्पिक अर्थ है (से अनुवादित
स्वीडिश): "- - - लोगों के खिलाफ नफरत - - -।" और इसका सीधा विपरीत अर्थ है: In

पहले मामले में आप एक या एक से अधिक व्यक्तियों से नफरत करते हैं, दूसरे में यह आप ही हैं जो नफरत करते हैं, और न केवल कुछ व्यक्ति, बल्कि "एक लोग"। भाषा की गलत समझना स्पष्ट और असंभव है?

00b 5/20 (A32): "- - - (अल्लाह) ने आपको (यहूदी) राजा बनाया - - -।" यह सही शाब्दिक है
अरब पाठ का अर्थ। यदि इसका अर्थ यह हुआ कि मूसा ने अपने लोगों से कहा कि परमेश्वर ने उन्हें दिया है
राजाओं, यह ऐतिहासिक रूप से गलत है, क्योंकि पहले यहूदी की प्रतीक्षा में अभी भी लगभग 200 वर्ष बाकी थे
राजा, शाऊल। (मूसा ईसा पूर्व १४०० से १३०० ईसा पूर्व, शाऊल ११०० ई.पू. से पहले/लगभग रहते थे)। और अगर
मूसा का मतलब था कि भगवान ने प्रत्येक यहूदी (जैसा व्यवहार करने के लिए) को राजा बनाया है, हम भी नहीं करते हैं
इस वाक्य को समझने के उस तरीके पर टिप्पणी करने की जहमत उठाएं - - - और लगभग किसी को भी
दुनिया हमसे सहमत होगी। गलती को रोकने और छिपाने के लिए आपको यह अनुवाद “The .” में मिलता है
कुरआन का पैगाम: "--- और (अल्लाह*) ने तुम्हें अपना मालिक बनाया---।" ईमानदारी
धर्म? - अल-ताकिया? - - - एक भाषा "स्पष्ट और समझने में आसान"?

०७२ ५/२९ (YA732): "- - - मेरे पाप के साथ-साथ तुम्हारा - -।" स्पष्ट अर्थ यह है कि
हत्यारा भी पीड़ित के पापों को वहन करता है - क्योंकि पीड़ित को पछताने की संभावना को लूट लिया गया था
उसका पाप (यह इस्लाम में हठधर्मिता में से एक है)। लेकिन एक और संभावित अर्थ भी है: "माई"
पाप" का अर्थ मेरे विरुद्ध पाप हो सकता है जिसकी हत्या की गई है, और "तेरा पाप" तब किया जा सकता है
हत्या या "अपने आप के खिलाफ अपने पाप के लिए ऐसा गंभीर काम करके अपने आप को लूटना"
जन्नत के लिए।"

०७३ ५/३८ (YA742): "- - - उसके (चोर के *) हाथ काट दो - - -।" एक हाथ या दोनों हाथ?
इस्लाम आमतौर पर एक हाथ पहली बार कहता है, लेकिन पाठ स्पष्ट नहीं है क्योंकि यहां बहुवचन का प्रयोग किया गया है।
इसके अलावा: क्या यह छोटी चोरी के लिए भी जाता है? - मुसलमान असहमत हैं, हां या नहीं? - और पाठ नहीं है
स्पष्ट। क्या इस तरह के गंभीर प्रश्न में एक परोपकारी ईश्वर दिन के उजाले की तरह स्पष्ट नहीं होगा?

+074 5/41 (YA745): "- - - (कुछ*) आपके पास आए (मुहम्मद*) - - -"। लेकिन अरब शब्द कर सकते हैं
बस के रूप में अच्छी तरह से मतलब है "- - - आपके लिए आया - - -" जो बहुत अधिक अशुभ लगता है। स्पष्ट?

०७५ ५/४२ (वाईए७४७): "- - - निषिद्ध कुछ भी खाना।" क्या यह भोजन या कर्मों को संदर्भित करता है -
एफ। भूतपूर्व। सूदखोरी लेना ("सूदखोरी करना" इस्लाम में कई बार प्रयोग किया जाता है)? कोई नहीं जानता -
शायद दोनों?

०७६ ५/६० (ए७८ - २००८ संस्करण ए७७ में): "- - - जिनमें से (गैर-मुस्लिम*) वह (अल्लाह*)
वानर और सूअर में तब्दील - - -।" कई इस्लामी विद्वानों का कहना है कि इसका शाब्दिक अर्थ है

- एक और संख्या है कि यह सिर्फ भाषण का एक आंकड़ा है, नैतिक पतन की बात करते हुए नैतिक
वानर और सूअर (मुजाहिद) का स्तर। वास्तविक अर्थ तय करना असंभव है। एक "स्पष्ट और
समझने में आसान "भाषा?

०७७ ५/६२ (YA771): "- - - वर्जित चीजें खाना।" ऊपर 5/42 देखें।

०७८ ५/६६ (YA775): "- - - वे (अच्छे मुसलमान*) हर किसी से खुशी का आनंद लेते
पक्ष।" लेकिन अरब पाठ का शाब्दिक अर्थ है: "उन्होंने ऊपर से खाया होगा"
और उनके पैरों के नीचे से"। यह स्पष्ट है कि इसका मतलब कुछ सकारात्मक है, लेकिन सटीक अर्थ
किसी के लिए भी अनुमान लगाना असंभव है, और कोई भी व्याख्या केवल अनुमान है। ब्लूबेरी के रूप में साफ़ करें
कम से कम रस।

+079 5/107 (YA813): "- - - वैध अधिकार का दावा करने वालों में से - - -"। अरब शब्द
"इस्ताहक्का" (= कुछ पाने के योग्य - अच्छा या बुरा - एक के लिए जिम्मेदार) 2 देता है
अर्थ: (दोषी पाए जाने के योग्य क्योंकि उसने * किया था) या दोषी था। या: था or
एक वैध अधिकार (संपत्ति के लिए) का दावा किया। स्पष्ट?

०८० ५/११२ (ए१३८ - २००८ संस्करण ए१३७ में): "क्या तेरा (यीशु'*) प्रभु (यहोवा*) नीचे भेज सकता है
हमें एक टेबल सेट (विंड्स के साथ) - - -।" यह अरबों को देने के लिए स्वरों आदि के प्रयोग पर आधारित है
शब्द "हाल यस्तति रब्बुका" (कुछ ऐसा "क्या आपका पालन-पोषण करने में सक्षम है")। लेकिन अगर आप अन्य का उपयोग करते हैं
पत्र, आदि - और हदीस बताती है कि मुहम्मद के करीबी सहकर्मियों ने इसे इस तरह पढ़ा (अली, इब्न
अब्बास, इब्न जबल, ऐशा (मुहम्मद की पत्नी *)) - आपको "हल तस्तातिउ रबका" मिल सकता है
(स्वीडिश से अनुवादित): "क्या आप अपने भगवान को नीचे भेज सकते हैं - - -।" पहले मामले में एक
ऐसा चमत्कार करने की भगवान की क्षमता पर सवाल उठाता है। दूसरे प्रश्न में यीशु '
भगवान के साथ प्रभाव, और भगवान को ऐसा करने की यीशु की क्षमता। थोड़ा नहीं है

सही अर्थ है - और १४०० वर्षों के बाद भी इस्लामी विद्वान इस बात से सहमत नहीं हैं कि क्या है?

+081 6/1 (YA834): "- - - दूसरों को उनके अभिभावक-भगवान (अल्लाह *) के साथ समान ("अडाला") रखें।" लेकिन अरब शब्द "अडाला" के कई अर्थ हैं: ए: बराबर पकड़ो। बी: अच्छी तरह से संतुलन। सी: डील न्यायसंगत। डी: मुआवजा या क्षतिपूर्ति देने के लिए। ई: (पकड़ो) कुछ के बराबर के रूप में कुछ और। एफ: एक उचित पूर्वाग्रह या अनुपात देने के लिए। G: संतुलन को गलत तरीके से मोड़ने के लिए। आदि। टेक्स्ट को थोड़ा ट्विस्ट करें और लगभग वही अर्थ प्राप्त करें जो आप चाहते हैं। यहाँ पाठ लगभग इस प्रकार है जैसे ही ग्रंथ आते हैं क्रिस्टल स्पष्ट।

+082 6/2 (ए 2): "- - - और फिर (अल्लाह*) ने एक घोषित शब्द (आपके लिए) का फैसला किया। और हिसो में है उपस्थिति एक और निर्धारित शब्द - - -।" लेकिन ये बताए गए शब्द - क्या वे के अंत का उल्लेख करते हैं? दुनिया (कयामत का दिन)? या आपकी व्यक्तिगत मृत्यु के समय तक? या पहली बार है तुम्हारी मृत्यु और दूसरा कयामत का दिन? कोई नहीं जानता और मुस्लिम विद्वान असहमत हैं। एक "स्पष्ट और आसानी से समझी जाने वाली" भाषा को गलत समझना संभव नहीं है? कम से कम 3 संभव अर्थ। और ये रूपांतर हमेशा की तरह अरब पाठ में भी हैं, जैसा कि वहां प्रासंगिक शब्द है एक से अधिक अर्थ।

+083 6/13 (YA845): "- - - वह सब जो रात और दिन में (या छिपकर) रहता है।" लेकिन अरब शब्द "सकाना" के कई अर्थ हैं: ए: रहने के लिए। बी: आराम करने के लिए। सी: स्थिर रहना। डी: रोकने के लिए। ई: दुबकना। एफ: शांत करने के लिए। और भी हो सकता है। स्पष्टता के बारे में किसी टिप्पणी की आवश्यकता है?

084 6/20 (YA850): "जिन्हें हमने (अल्लाह*) ने किताब दी है (यहूदी, ईसाई*) इसे ऐसे जानो जैसे वे अपने पुत्रों को जानते हैं।" लेकिन यहाँ "इस" का अर्थ "उसे" हो सकता है - अरब

शब्द का दोहरा अर्थ है। तब अर्थ बन जाता है: "- - - उसे (मुहम्मद) के रूप में जानें - -।" एक छोटा सा मूत थोड़ा अलग।

+085 6/23 (YA851): "- - - उनके लिए कोई छल नहीं ("फ़ितना") - - -।" लेकिन अरब शब्द "फ़ितना" इसके कई अर्थ हैं: ए: परेशानी। बी: हंगामा। सी: दमन। डी: उत्पीड़न। ई: विवाद। एफ: सबटरफ्यूज। और अधिक। **अपनी पसंद की व्याख्या खोजने के लिए, बस वह अर्थ चुनें जो आप चाहते हैं पसंद। तब सब कुछ क्रिस्टल क्लियर हो जाता है।**

०८६ ६/३६ (वाईए८५७): "जो लोग (सच में) सुनते हैं, सुनिश्चित हो, स्वीकार करेंगे - - -।" यहाँ एक डबल है अर्थ: "यदि लोग सच्चाई और गंभीरता से सत्य को सुनें, तो उन्हें अवश्य ही विश्वास करना चाहिए।" या ईमानदारी से विश्वास करेंगे"। पहले की तरह कई बार क्लियर स्पीच।

+087 6/70 (ए 58 - 2008 संस्करण ए 60 में): "उन लोगों को अकेला छोड़ दो जो अपने धर्म को मात्र मानते हैं खेल और मनोरंजन - - -।" लेकिन अरब शब्द "अट्टाख़ादु दीनहम लाईबन वा-लहवान" भी इसका ठीक इसके विपरीत अर्थ हो सकता है: "उन्होंने अपना धर्म खेल और मज़ाक बना लिया है"। जिसका अर्थ है सही वाला? - कोई नहीं जानता, यहां तक कि एक शीर्ष अयातुल्ला भी नहीं। स्पष्ट भाषण जो असंभव है कुरान में गलत समझा? और ये रूपांतर हमेशा की तरह अरब पाठ में भी हैं, जैसे प्रासंगिक शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं।

+088 6/91 (A71): "- - - लेकिन तुम (यहूदी*) इसे (मूसा की किताब*) अलग-अलग शीट में बनाते हो कार्यक्रम के लिए - - -।" "कुरान का संदेश" के अनुसार वैकल्पिक अर्थ (अनुवादित .) स्वीडिश से): "- - - जिसे आप केवल कागज़ की शीट की तरह महत्व देते हैं/देखते हैं - - -।" एक छोटा, लेकिन अर्थ में महत्वपूर्ण अंतर। पहले मामले में आपके पास मूसा की पुस्तक के ग्रंथ हैं जिसका आप उपयोग नहीं करते हैं, दूसरे में आपके पास कुछ ऐसा है जिसे आप बेकार कागज मानते हैं। और ये संस्करण हमेशा की तरह अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द में एक से अधिक हैं अर्थ।

०८९ ६/९८ (ए८२ - २००८ संस्करण ए८३ में): "- - - यहाँ प्रवास का स्थान और प्रस्थान का स्थान है - - -।" लेकिन शब्द "मुस्तकार", शाब्दिक अर्थ (स्वीडिश से अनुवादित): "गंतव्य", "निर्णय", मुस्लिम विद्वानों के बीच जंगली असहमति का एक स्रोत है। इसका मतलब हो सकता है a रहने की जगह, इसका मतलब आपकी माँ का गर्भ (भ्रूण के रूप में) हो सकता है, इसका मतलब एक बिंदु हो सकता है जहां चीजें अपने अंत या पूर्ति तक पहुंच जाती हैं। बस अपनी पसंद चुनें। अल्लाह एक स्पष्ट और विशिष्ट . का उपयोग करता है भाषा समझने में आसान और गलत समझने में असंभव?

०९० ६/११४ (एए९९ - २००८ संस्करण १०१ में): "वे अच्छी तरह से जानते हैं, जिनके पास हम (अल्लाह*) हैं

किताब भेजी (इस मामले में: बाइबिल या कुरान?), कि इसे आपकी ओर से भेजा गया है
सच में प्रभु।" खैर, क्या यह यहाँ बाइबिल या कुरान है जो सच्चाई से नीचे भेजा गया है? क्या पता?

०९१ ६/१२८ (ए११० - २००९ संस्करण ११२ में): "हे जिन्नों की सभा - - -"। आम तौर पर शब्द
"अल-जिन्न" इन अलौकिक प्राणियों को सीधे और सीधे तौर पर संदर्भित करता है - और यहाँ बुरे लोगों के लिए
उनमें से। लेकिन यहाँ पूर्ण अभिव्यक्ति "माशर अल-जिन्न" है, और यह जटिल करता है
स्थिति, जैसा कि "माशर" का अर्थ है कोई आपके करीबी या, अच्छे दोस्त, ऐसा कुछ, या
बस आपका परिवार। इसके बजाय यह बुरे या पथभ्रष्ट लोगों को संबोधित कर सकता है: "आप जो रह चुके हैं
जिन्न के बुरे समूहों के निकट संपर्क"। आपको बस वास्तविक अर्थ का अनुमान लगाना है।

०९२ ६/१३५ (ए११६ - २००८ संस्करण ११८ में): "- - - जल्द ही तुम (लोग*) जानेंगे कि यह कौन है जिसका
अंत आख़िरत में (सर्वश्रेष्ठ) होगा।" शाब्दिक अर्थ: "- - - किसके लिए (खुश) अंत
निवास ("दार") संबंधित होगा"। यह अर्थ है यदि आप अनुमान लगाते हैं कि "दार" शब्द का अर्थ है
"दार अल-अखिरा" = "आने वाले जीवन में निवास"। लेकिन इसे केवल "दार" कहा जाता है, और तब यह हो सकता है
अच्छी तरह से "दार अद-दुनिया" = "इस जीवन में निवास" - - - और उस स्थिति में वाक्य का संदर्भ लें

1003

पेज १००४

कुरान इंगित करता है कि इस दुनिया में आपके पास एक समृद्ध और अच्छा भविष्य होगा। अपनी पसंद चुनें
या अनुमान। अल्लाह स्पष्ट और स्पष्ट शब्दों का प्रयोग कर रहा है? कम से कम 2 अर्थ। और इन रूपों के रूप में
सामान्य रूप से अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं।

०९३ ६/१३७ (ए१२० - २००८ संस्करण ए१२२ में): "- - - उनके (पैगन्स*) भागीदारों ने आकर्षक बनाया - -
-।" शाब्दिक अनुवाद (स्वीडिश से अनुवादित): "- - - उनके (अनुमानित) सहायक/साझेदार
उनके लिए मापा गया - - -।" यह स्पष्ट है कि प्रारंभिक मुसलमानों के लिए "साझेदार" के अनुसार
एफ। भूतपूर्व। रज़ी का अर्थ था बुरे प्राणी या बल। लेकिन आज उन लोगों के लिए इसका क्या मतलब है जो कोई नहीं करते हैं
अब काला जादू और उससे जुड़े प्राणियों में विश्वास करते हैं? जैसे कुरान ने सच में नहीं बताया
उस समय के मुसलमानों का वास्तव में "भागीदारों" के साथ क्या मतलब था, यह आज भी उतना ही खामोश है - कोई नहीं
वास्तव में जानता है - सभी को अनुमान लगाना होगा।

०९४ ६/१४९ (ए१४१ - २००८ संस्करण १४३ में): "अल्लाह के साथ तर्क है जो घर तक पहुंचता है (= .)
निर्णायक तर्क = यह अल्लाह ही तय करता है*): यदि यह उसकी इच्छा होती तो वह वास्तव में कर सकता था
आपका मार्गदर्शन किया है।"

"कुरान के संदेश" में यह टिप्पणी है:

**"दूसरे शब्दों में, भविष्य के बारे में अल्लाह के ज्ञान के बीच वास्तविक संबंध"
(और, इसलिए, भविष्य में जो होना है उसकी अनिवार्यता) एक तरफ, और
मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा, दूसरी ओर - दो प्रस्ताव, जो देखने में प्रतीत होते हैं
एक दूसरे का विरोध करना - मनुष्य की समझ से परे है; लेकिन चूंकि दोनों अभिधारणा हैं
अल्लाह के द्वारा, दोनों सच होना चाहिए।**

**बस स्पष्ट भाषण का अंतिम शिखर। और अंतिम जीत अंध विश्वास की नहीं, अंध विश्वास की
भोलेपन और बौद्धिक बेहोशी पर आधारित है।**

भविष्यवाणी के विपरीत आदमी की स्वतंत्र इच्छा वास्तव में "समय यात्रा विरोधाभास" का एक संस्करण है,
जो लंबे समय से अनसुलझी साबित हुई है। **कोई रास्ता नहीं है कि अल्लाह पूरी तरह से हो सकता है
भेदक, और न ही पहले से ही सब कुछ, और एक ही समय में मनुष्य का उल्लेख करने के लिए
स्वतंत्र इच्छा है।** (पूर्वनियति के बारे में अध्याय में और अधिक।)

अंतिम स्पष्ट और समझने में आसान दावा।

०९५ ७/३ (ए३): "(हे लोगों!) का पालन करें जो आपके भगवान (अल्लाह *) से आपको दिए गए रहस्योद्घाटन हैं,
और उसके अलावा मित्र या रक्षक के रूप में उसका अनुसरण न करें"। अब तक इतना अच्छा। लेकिन अस्पष्ट बिंदु
is: यह निषेध कितना व्यापक है? क्या यहां कुरान का मतलब सिर्फ धार्मिक सवालों से है? या
एफ हैं। भूतपूर्व। सांसारिक कानूनों में शामिल हैं? कई इस्लामी विचारक ऐसा दावा करते हैं - f. भूतपूर्व। इब्न हस्म और इब्ने
तमियाह। उनका कहना है कि कुरान में नहीं दिए गए कानूनों की कोई कानूनी वैधता नहीं है। लेकिन क्या यह भी
कुरान में दिए गए कानूनों के पूरक कानूनों के लिए जाओ? - एफ। भूतपूर्व। विरासत के संबंध में जहां
कुरान में नियम हमेशा विरासत का 100% तक जोड़ते हैं? (प्रैक्सिस में वास्तविक जीवन है
इस्लाम को इस तरह के नियम बनाने के लिए मजबूर किया, लेकिन क्या यह सख्ती से धर्म के अनुसार है"। और क्या
आधुनिक जीवन और आवश्यक कानूनों के बारे में - f. भूतपूर्व। सड़क यातायात के संबंध में? - क्या ऐसे कानून हैं
वास्तविक कानूनी वैधता (यदि नहीं तो यह एक गंभीर समस्या है, क्योंकि आप यह मांग नहीं कर सकते कि लोग सम्मान करें
अमान्य कानून - या उन्हें तोड़ने के लिए दंडित होना स्वीकार करें।) और वर्णित तथ्यों के बारे में क्या

खुलासे में, लेकिन सभी वही गलत हैं? - सऊदी में पादरियों को आए कुछ ही साल हुए हैं
अरब ने पृथ्वी को गोलाकार मानने की मान्यता को गलत बताया, क्योंकि के अनुसार
कुरान यह सपाट है)।

ये ऐसे बिंदु हैं जो अस्पष्ट होने के कारण अस्पष्ट हैं और कुरान में विशिष्ट ग्रंथ नहीं हैं।

+096 7/16 (A10 - 2008 संस्करण A11 में): "क्योंकि तू (अल्लाह*) ने मुझे (इब्लिस - द
डेविल*) रास्ते से हटकर - - -।" लेकिन क्या वास्तव में मुहम्मद का यही मतलब था? क्योंकि अरब
शब्द "अघवाहु" जो यहाँ प्रयोग किया गया है, कई अर्थों के साथ एक अस्पष्ट शब्द है। यह वाक्य
कम से कम ये अर्थ हो सकते हैं:

1. क्योंकि तू ने मुझे मार्ग से निकाल दिया है - - -।"
2. "क्योंकि तूने मुझे विफल कर दिया है - - -।"
3. "क्योंकि तूने मुझे गलत ठहराया है - - -।"
4. "क्योंकि आपने मुझे गलती करने की अनुमति दी है - - -।"
5. "क्योंकि तू ने मुझे बनाया है" निराश - - -।"
6. "क्योंकि तू ने मुझे विफल कर दिया है" मंशा - - -।"

जैसा कि पहले कहा गया है: अरब भाषा - अन्य सभी भाषाओं की तरह - में एक से अधिक शब्द हैं
अर्थ। और ऐसे मामलों में अरब अन्य भाषाओं की तुलना में एक मिलीमीटर अधिक सटीक नहीं है, यहां तक कि
यदि आपको कुरान में केवल एक शब्द (कई अर्थों के साथ) मिलता है, लेकिन अलग-अलग उपयोग करना पड़ता है
विभिन्न अर्थों को कवर करने के लिए किसी अन्य भाषा में शब्द। यह दावा करना कि ऐसे मामलों में अरब है
अधिक स्पष्ट और/या सटीक, केवल पाखंड या बेईमानी है - - - या अल-ताकिया।

+097 7/17 (ए11): "तब मैं (इब्लीस - द डेविल*) उन पर उनके आगे और पीछे से हमला करूँगा
उन्हें - - - ।" लेकिन "कुरान का संदेश" के अनुसार अरब वाक्य का अर्थ यह भी हो सकता है
(स्वीडिश से अनुवादित): "- - - मैं उन पर खुलेआम हमला करूंगा और उन्हें छिपे हुए रास्तों पर ले जाऊंगा - - -
।" उस वाक्य के कम से कम 2 भिन्न रूप। और ये रूपांतर भी अरब पाठ में हैं,
भी, जैसा कि वहां प्रासंगिक शब्द है, अक्सर एक से अधिक अर्थ होते हैं।

०९८ ७/३४ (वाईए१०१७): "प्रत्येक लोगों (राष्ट्र*) के लिए एक नियुक्त शब्द है - - -।" लेकिन अरब शब्द
यहाँ "लोगों" के लिए प्रयोग किया जाता है - "उम्मा" - का अर्थ "पीढ़ी" भी हो सकता है। उस मामले में अर्थ है:
"हर पीढ़ी के लिए एक टर्न नियुक्त किया जाता है - - -।" एक अल्पमत का उपयोग करने के लिए बिल्कुल समान नहीं है।

+099 7/38 (A28): "आखिरी को पहले के बारे में बताता है"। "आखिरी" का अर्थ "आने वाले" हो सकता है
अंतिम", या "अनुयायी (नेताओं के*)" जबकि "पहले" का अर्थ "उनमें से पहला" हो सकता है
पहुंचें" या "नेता"। 2 अर्थ। और ये रूप सामान्य रूप से अरब पाठ में भी हैं, जैसे
प्रासंगिक शब्द वहाँ एक से अधिक अर्थ हैं।

+१०० ७/३९ (ए३०): "तुम्हें (नर्क में नवीनतम आगमन*) कोई फायदा नहीं हुआ है (पहले
आगमन*) - - -।" लेकिन "कुरान का संदेश" के अनुसार अरब पाठ का अर्थ यह भी हो सकता है:
"आप हमसे श्रेष्ठ नहीं हैं क्योंकि आपने हमारी गलतियों से कुछ नहीं सीखा है।" कम से कम 2
अर्थ। और ये संस्करण अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द में और भी बहुत कुछ है
एक से अधिक अर्थ।

+१०१ ७/४० (ए३२): "- - - न ही वे (गैर-मुस्लिम/पापियों*) बगीचे में प्रवेश करेंगे (स्वर्ग*),
जब तक ऊँट सुई की आँख से नहीं गुजर सकता - - -"। लेकिन यहाँ एक गलत अनुवाद है
"कुरान का संदेश" के अनुसार - गलत है भले ही इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाए। और दावा है
इतना ज़ोर से जोर दिया और अंडर बिल्ट (ज़मखशरी, रेज़ी, और अन्य), कि यह सच होने की संभावना है
- यह और भी अधिक है क्योंकि पुस्तक अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च द्वारा प्रमाणित है
2008 से पहले अकादमी, सामान्य अनुसंधान, लेखन और अनुवाद विभाग
संस्करण (यह अकादमी काहिरा में अल-अजहर विश्वविद्यालय का हिस्सा है, जो २-३ अग्रणी में से एक है
दुनिया में इस्लामी विश्वविद्यालय)। अरब शब्द "जमाल" (जुमल, जुमल, जुमुल - वेरिएंट) in

पेज १००६

इस मामले का स्पष्ट अर्थ है "एक मोटी रस्सी" या "एक मुड़ी हुई केबल" या "एक मोटी, मुड़ी हुई रस्सी" (जवाहरी)। यह और भी स्पष्ट है क्योंकि मुहम्मद के सहकर्मियों ने स्पष्ट रूप से इस अर्थ का प्रयोग किया था, और इब्न अब्बास ने भी ज़मखशरी के अनुसार बहुत स्पष्ट रूप से कहा था कि इसका मतलब यही था यहां। एगो का वास्तविक अर्थ है: "- - - और न ही वे बगीचे में प्रवेश करेंगे जब तक कि एक मुड़ी हुई रस्सी नहीं हो सकती एक सुई की आंख से गुजरें "। स्पष्ट रूप से अस्पष्ट भाषा - या इसका उपयोग या (गलत) समझ भाषा: हिन्दी।

लेकिन एक छोटा लेकिन इसके अतिरिक्त है:

अब्दुल्ला यूसुफ अली एक विद्वान व्यक्ति थे। हो सकता है कि वह कम ज्ञात तथ्यों को जानता हो। वह भी एक था वह व्यक्ति जिसने स्पष्ट रूप से अपने धर्म को अपनी बौद्धिक अखंडता से पहले, निरपेक्ष से पहले रखा तथ्यों का मूल्य और पूर्ण सत्य के मूल्य से पहले - f. भूतपूर्व। उनकी पुस्तक "द मीनिंग ऑफ़ द कुरान" इसे बार-बार नहीं दिखाता है, और इस के उनके अनुवाद में उसी के निशान मिलते हैं कुरान। (केवल कथन के लिए हम पर मुकदमा करें - किसी को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त उदाहरण खोजना आसान है मुक्त न्यायालय। और वही मुहम्मद असद और उनका "कुरान का संदेश") जाता है। मई क्या उन्होंने और अन्य विद्वान विद्वानों ने उद्देश्य पर गलत अनुवाद का उपयोग किया है:

उन अल्पज्ञात तथ्यों में से एक जिन्हें वह शायद जानते हों, वह यह है कि अभिव्यक्ति "सुई की आँख" भी है एक और अर्थ है। पुरानी दीवारों वाले शहरों में मजबूत, भारी द्वार थे। गेट के अंदर या बाहर लोगों के लिए अंदर और बाहर जाना संभव बनाने के लिए अक्सर एक छोटा दरवाजा होता था, भले ही मुख्य शाम के लिए गेट बंद कर दिया गया था। कई जगहों पर इस छोटे से दरवाजे को "सुई की आँख" कहा जाता था।

कोई वयस्क ऊंट इस सुई की आंख को पार नहीं कर सकता था - लेकिन एक बच्चा ऊंट कर सकता था। और कोई मोटी रस्सी सका।

१०२ ७/४६ (ए३७ - वाईए१०२५): "उनके बीच (स्वर्ग में *) और ऊंचाइयों पर (अरब "अराफ") वे होंगे जो हर एक को उसके निशानों से पहचानेंगे: - - - उन्होंने प्रवेश नहीं किया होगा, लेकिन उनके पास (उसका) आश्वासन होगा।" लेकिन "'urf" (बहुवचन "A'raf") का प्राथमिक अर्थ है "उच्च" नहीं, बल्कि "पावती", "विवेक", "के संकाय" के पर्यायवाची विवेक (सही और गलत* के बीच)"। कई मुस्लिम विद्वान (अल-हसन, अल-बसरी, अज़-ज़ज्जाज, रेज़ी) इसलिए इसका मतलब है कि जो स्वर्ग से बाहर हैं, लेकिन अंदर आना चाहते हैं, वे हैं गुनगुना जो अच्छे और बुरे के बीच का अंतर जानता था (- हर एक अपने अंकों से अच्छा और बुरा*)" लेकिन इस या उस तरह से बहुत परवाह नहीं की - जो काफी योग्य नहीं हैं स्वर्ग, लेकिन नर्क के योग्य नहीं। यहाँ प्रश्न यह है: क्या यहाँ "अराफ" शब्द का अर्थ है? "ऊंचाई" या इसका मतलब है "वे जो समझने में सक्षम हैं, (लेकिन परवाह नहीं - उदासीन वाले)"? में अंतिम मामले का अर्थ बस कुछ इस तरह होगा: "- - - और गुनगुना (इससे .) life*) जो हर एक (अच्छे और बुरे*) को उसके अंकों से जानेगा - - -।" एक नाबालिग, लेकिन महत्वपूर्ण अंतर। और ये संस्करण हमेशा की तरह अरब पाठ में भी प्रासंगिक हैं शब्द के एक से अधिक अर्थ होते हैं।

+103 7/47 (YA1026): "- - - उनकी आँखें आग के साथियों की ओर लगी होंगी - - - ।" लेकिन "वे" कौन हैं? - जो अपने "केस" के खत्म होने का इंतजार कर रहे हैं? - या अच्छा स्वर्ग में मुसलमान? आपका अनुमान उतना ही अच्छा है जितना किसी और का।

१०४ ७/५९ (ए४५ - २००८ संस्करण ए४६ में): "- - - एक भयानक दिन की सजा"। इस्लाम अभी भी नहीं जानता कि इसका मतलब बड़ी बाढ़ का दिन है या कयामत का दिन। २ अर्थ - और अ अल्लाह द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली स्पष्ट भाषा। और ये रूपांतर हमेशा की तरह अरब पाठ में भी हैं, जैसे प्रासंगिक शब्द वहाँ loke अक्सर एक से अधिक अर्थ होते हैं।

पेज १००७

00c 7/64 (A46): मुसलमानों - यहां तक कि विद्वानों और अल-अजहर विश्वविद्यालय - को मुश्किल की जरूरत नहीं है वास्तविक अर्थ और सत्य और वास्तविकता के साथ परेशानी पाने के लिए भाषा। 7/64 "नहीं" विश्व जलप्रलय के सिद्धांत का समर्थन करते हैं" - इस तथ्य को बहादुरी से छोड़ते हुए कि इस्लाम और कुरान

सीरिया में २०८९ मीटर ऊंचे पहाड़ पर फंसे हुए सन्दूक का दावा करें (तुर्की में अरारत नहीं), जो कि है
असंभव अगर जलप्रलय सार्वभौमिक नहीं था - क्योंकि पानी तब नीचे की ओर बह गया था,
बाढ़ वाले स्थान नहीं। और "कुरान का संदेश" - 2008 के संस्करण में भी !! - जैसा
"हिम युग के दौरान" भूमध्यसागरीय बेसिन को भरने के साथ इसे वीरतापूर्वक समझाएं (समाप्त)
कुछ 10ooo - 15ooo साल पहले), इसके बावजूद यह भरना 4-5 मिलियन वर्ष हुआ
पहले, और कई अन्य कारणों से भी - f. भूतपूर्व। गलत जगह और भरने का गलत तरीका
- जलप्रलय की व्याख्या नहीं कर सकता। एक विशिष्ट अल-ताकिया (वैध झूठ - यहाँ एक स्पष्ट व्याख्या करने के लिए)
गलती और इस तरह इस्लाम की रक्षा) के रूप में भूमध्य सागर के भरने का समय है a
प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथ्य। काला सागर का भरना कुछ लोगों के लिए एक स्पष्टीकरण हो सकता है
अतिरिक्त स्पष्टीकरण - - - लेकिन यह एक ऊंचे पहाड़ पर सन्दूक के फंसे होने की व्याख्या नहीं कर सकता है
सीरिया, और न ही भयानक मौसम और न ही भारी लहरें, क्योंकि वह भी धीमी गति से भरने वाली थी
ऊपर (कम से कम महीनों के धीरे-धीरे बढ़ते जल स्तर।) जैसा कि कहा गया है: कुछ मुसलमान - यहां तक कि कुलीन भी
विद्वानों - भिन्न अर्थ प्राप्त करने के लिए कठिन भाषा की आवश्यकता नहीं - कम से कम से भिन्न
प्रसिद्ध तथ्य।

+105 7/71 (YA1041): "दंड और क्रोध तुम पर पहले ही आ चुका है (के लोग)
Ad*) अपने रब (अल्लाह*) की ओर से - - -।" 3 अलग-अलग अर्थ संभव: ए। एक भयानक का संदर्भ
कुछ समय पहले अकाल। B. वे जिस गुंडागर्दी और पाप में गिरे थे, वह एक चेतावनी थी। सी. अल्लाह
पहले ही तय कर लिया था कि क्या आना है। बहुत अस्पष्ट भाषा।

१०६ ७/७९ (वाईए १०४८): "तो सालेह ने उन्हें (तमूद के लोगों) को यह कहते हुए छोड़ दिया: 'हे मेरे लोग - - -।"
लेकिन क्या उनका भाषण आपदा से पहले की आखिरी चेतावनी थी? - या यह विलाप और दुःख था
अपने खोए हुए लोगों के लिए? क्या पता? - पाठ इसे प्रकट नहीं करता है।

+107 7/89 (A70 - 2008 संस्करण A72 में): "- - - आप (अल्लाह*) निर्णय लेने में सर्वश्रेष्ठ हैं।" लेकिन
अरब शब्द "फतहा" का एक और अर्थ भी है, जो इस वाक्य को इस तरह ध्वनि बनाता है: "-
- - आप सत्य को उजागर करने के लिए सर्वश्रेष्ठ हैं!" जो बिल्कुल अलग चीज है। कुरान
क्या एक स्पष्ट और विशिष्ट भाषा है जिसे समझना आसान है और गलत समझना संभव नहीं है? और
ये संस्करण निश्चित रूप से अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द में एक से अधिक हैं
अर्थ।

१०८ ७/११० (ए८४ - २००८ संस्करण में छोड़ी गई टिप्पणी): "उनकी (मूसा की) योजना आपको बाहर करने की है
(फिरौन*) अपने देश से: फिर तेरी क्या युक्ति है?" लेकिन यह अरब मूल में स्पष्ट नहीं है
जिन्होंने वास्तव में उद्धरण का अंतिम भाग कहा था। "कुरान के संदेश" में है: "(सैद)
फिरौन।) "तो, आप (उसके सलाहकार*) क्या सलाह देते हैं?" पहले मामले में यह सलाहकार हैं जो
फिरौन से पूछता है, दूसरे में यह बिल्कुल विपरीत है। 2 संभव और बहुत
परस्पर विरोधी अर्थ - इस मामले में सरासर अस्पष्ट भाषा से। और ये वेरिएंट
पाठ्यक्रम भी अरब पाठ में हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं।

१०९ ७/१४५ (वाईए ११०९): "जल्द ही मैं (अल्लाह *) तुम्हें दुष्टों का घर दिखाऊंगा - - -।" NS
सवाल मुसलमान पूछते हैं: जिस घर में वे रहते थे या रहते थे? - मुहम्मद ने बताया
मध्य पूर्व में चारों ओर बिखरे हुए खंडहर सभी पापों के लिए अल्लाह द्वारा दंडित किए गए लोगों के थे। या
उनके अंदर भयानक आध्यात्मिक स्थिति का दावा किया? या शायद उनका भविष्य घर नर्क? पर
कम से कम एक स्पष्ट बयान?

००डी ७/१५५ (ए१२०): "- - - जब वे हिंसक भूकंप के साथ आकार में थे ("रजफाह") - - -।" NS
अरब शब्द "रज्जफा" का सामान्य अर्थ भूकंप होता है। लेकिन यहां ए. युसूफ अली के सही होने की सबसे अधिक संभावना है
यह इंगित करते हुए कि यह वे पुरुष थे जिन्होंने कांपना शुरू किया - क्योंकि वे डरते थे।

११० ७/१७५ (वाईए११४९): "(मुहम्मद?*) उनसे (लोग*) उस आदमी की कहानी से जुड़ें हम
(अल्लाह*) ने हमारी निशानियाँ भेजीं, लेकिन उसने उन्हें - - - से गुज़रा।" समस्या किसी के पास कोई सुराग नहीं है क्या
यार अल्लाह (?) के बारे में बात की। कोई नहीं। सबसे स्पष्ट पाठ।

+१११ ७/१८७ (वाईए११६०): "- - - अगर आप की तलाश में उत्सुक थे - - -।" लेकिन अरब पाठ भी हो सकता है
इसका मतलब कुछ इस तरह है "- - - अगर आप - - - से अच्छी तरह परिचित थे।" स्पष्ट?

११२ ७/१९३ (ए१५६ - २००८ संस्करण ए१५८ में): "- - - यदि आप उन्हें (अल्लाह के) मार्गदर्शन के लिए कहते हैं - - -।"

2006 के स्वीडिश संस्करण के अनुसार यह शाब्दिक अर्थ और सामान्य अनुवाद है
"कुरान का संदेश।" लेकिन ज़माख़शरी, रज़ी, इब्न कथिर - - - और मुहम्मद असद
इसका अर्थ है कि "- - - यदि आप उनसे मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करते हैं - - -" अधिक सही ढंग से वास्तविकता को सामने लाता है
अर्थ। खैर, यह कुरान में स्पष्ट अरब भाषा का एक और मामला है। एक नाबालिग, लेकिन
अलग अंतर। और ये रूपांतर स्वाभाविक रूप से अरब पाठ में भी प्रासंगिक के रूप में हैं
शब्द (ओं) के एक से अधिक अर्थ हैं।

११३ ७/२०३ (ए१६५): "यदि आप (मुहम्मद*) उन्हें (संदेहवादी*) कोई रहस्योद्घाटन नहीं लाते हैं, तो वे कहते हैं:
'तुमने इसे (एक रहस्योद्घाटन/चमत्कार*) एक साथ (स्वयं*) क्यों नहीं प्राप्त किया?'"। लेकिन "संदेश"
कुरान का" बताता है कि अरब शब्द "लॉ ला 'दजतबायताह" परेशानी पैदा करता है (यह छोड़ा गया है
2008 संस्करण में) क्योंकि इसके कई अर्थ हैं, और वे इसके बजाय एक अधिक संभावित अर्थ कहते हैं:
"तू (मुहम्मद*) इसे (अल्लाह से) हासिल करने की कोशिश क्यों नहीं करता?" बल्कि एक अलग विवरण
- और कम से कम दो अलग-अलग अर्थ। कुरान में एक स्पष्ट भाषा? और ये वेरिएंट
स्वाभाविक रूप से अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के एक से अधिक अर्थ हैं।

११४ ८/४ (अ५) : "ऐसे ही ईमानवाले हैं: वे अपने रब के साथ मर्यादा रखते हैं"
(अल्लाह*), और क्षमा, और उदार जीविका - - -।" हाँ, उदार भरण-पोषण - परंतु
कहाँ पे? कई या अधिकांश विद्वान कहते हैं "स्वर्ग में" - इसके अतिरिक्त लाभ हैं जो वादे
विलासिता की मात्रा बड़ी हो सकती है, और किसी को यह समझाने की आवश्यकता नहीं है कि पवित्र लोग अक्सर बहुत अधिक क्यों नहीं होते हैं
धनी। लेकिन अन्य - जैसे राज़ी - का दावा है कि यह इस दुनिया में है, जिसमें अच्छी भावनाएं हैं
जब कोई मुख्य लाभ के रूप में दृढ़ता से विश्वास करता है। पाठ ही रहस्य के बारे में चुप है।
और ये संस्करण भी - हमेशा की तरह - अरब पाठ में हैं, जैसा कि प्रासंगिक शब्द है
एक से अधिक अर्थ।

११५ ८/६ (ए ६): "- - - (आपके कुछ अनुयायी * हैं) इसके बाद आपसे (मुहम्मद*) विवाद कर रहे हैं
प्रकट था (कि बद्र* में युद्ध होगा), मानो उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया - - -।" परंतु
यह स्पष्ट नहीं है कि अरब शब्द "काम" ("बस के रूप में" या "यहाँ तक") किस ओर इशारा करता है, और फिर वहाँ है
कम से कम एक और संभावित अर्थ (मुजाहिद, तबरी): "जैसे कुछ ईमान वाले थे"
कुरैश (मक्का*) से लड़ने के लिए मदीना से बाहर जाने के विपरीत, इसलिए, वे भी बहस करेंगे
तुम्हारे साथ कि क्या यह वास्तव में अल्लाह ने चाहा था।" अस्पष्ट भाषा = एक से अधिक
संभव अर्थ। कुरान में पाठ को गलत समझना एक स्पष्ट और असंभव है? और ये
रूपांतर स्वाभाविक रूप से अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) में एक से अधिक हैं
अर्थ।

११६ ८/९ (वाईए११८४): "मैं (अल्लाह*) एक हजार फ़रिश्तों (जैसे युद्ध में) के साथ आपकी सहायता करूंगा" लेकिन
इस्लाम खुद सवाल करता है कि संख्याएं सटीक हैं या लाक्षणिक। एक और सवाल: अगर अल्लाह है
सर्वशक्तिमान और सिर्फ कुरान को उद्धृत करने के लिए "हो, और यह है" कह सकता है, फिर उसे क्यों भेजना है

देवदूत? वह बस किसी भी लड़ाई के परिणाम को तय कर सकता है, या कैसे -? और वास्तव में: उसने क्यों किया
किसी लड़ाई की बिल्कुल जरूरत है? - वह सिर्फ यह सोच सकता था कि वह दुनिया को कैसे चाहता है।

+117 8/13 (ए16): "ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के खिलाफ संघर्ष किया - - -।" परंतु
वास्तव में अरब शब्द "शक्काहू" का अर्थ है "उसने खुद को उससे अलग कर दिया (या काट दिया)। है
सही अर्थ: "यह, क्योंकि उन्होंने खुद को अल्लाह और उसके रसूल से अलग कर लिया है"
- - -"? अर्थ सावधान और कुरान में ग्रंथ यहां उतने ही अस्पष्ट हैं जितने कि कई अन्य
स्थान।

११८ ८/१९ (ए२२ - २००८ संस्करण ए२१ में): "(हे अविश्वासियों!)
निर्णय, अब निर्णय आपके पास आ गया है: यदि आप (गलत से) रोकते हैं, तो यह सबसे अच्छा होगा
तुम: अगर तुम (हमले की ओर) लौटोगे तो हम (अल्लाह*) करेंगे। यह एक स्पष्ट चेतावनी प्रतीत होती है
दुश्मन के लिए (बद्र में कुरैश/मक्का)। लेकिन याद रहे कि ( ) में जो लिखा है वो डाल दिया है
वहाँ अनुवादक द्वारा समझाने या चीजों को और स्पष्ट करने के लिए - और यदि अनुवादक के पास है
गलत अनुमान लगाया, स्पष्टीकरण गलत हैं। एफ. पूर्व. रज़ी सोचता है कि इसका अर्थ यह है: "यदि आप
जीत के लिए प्रार्थना कर रहे हैं (हे विश्वासियों) - जीत अब वास्तव में आप पर आ गई है। और अगर
तुम (पाप करने से) दूर रहो, यह तुम्हारे ही भले के लिए होगा; परन्तु यदि तुम उसकी ओर लौटोगे, तो हम (अल्लाह*)
रद्द कर देंगे (सहायता का हमारा वादा)। अस्पष्ट भाषा समझ के कई रास्ते खोलती है
छंद। और ये संस्करण निश्चित रूप से अरब पाठ में भी प्रासंगिक शब्द के रूप में हैं
एक से अधिक अर्थ हैं / हैं।

११९ ८/५० (ए५७): "यदि आप (मुसलमान*) देख सकते हैं, जब फ़रिश्ते उनकी आत्माओं को ले जाते हैं
(अविश्वासियों) मृत्यु पर - - -।" यह अर्थ है यदि आप अनुमान लगाते हैं कि अरब शब्द "मलाइका"
स्वर्गदूतों को संदर्भित करता है। लेकिन अगर आपको लगता है कि यह अल्लाह को संदर्भित करता है, तो वाक्य इस तरह बन जाता है: "- - -
जब वह (अल्लाह*) (उन्हें) मरने देता है - - -"। मरने वाले के लिए अंतर का विवरण। परंतु
एक पाठ के लिए जो "सही और मुहम्मद और अल्लाह के अंतिम अल्पविराम के शब्दों के समान है",
यह भी इस बात का एक महत्वपूर्ण प्रमाण है कि यह दावा गलत है। और निश्चित रूप से ये वेरिएंट भी
अरब पाठ में हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के एक से अधिक अर्थ हैं/हैं।

+120 9/2 (YA1247): "- - - चार महीने के लिए - -।" 4 निषिद्ध महीने? या 4 महीने
घोषणा के बाद"? कोई नहीं जानता। स्पष्ट भाषण।

१२१ ९/३ (A३): "- - - महान तीर्थयात्रा का दिन - - -।" इस्लाम नहीं जानता कि यह किस दिन
यहाँ का उल्लेख है। सबसे अधिक संभावना ६३१ ईस्वी या ६३२ ईस्वी सन् की है - लेकिन किस मामले में? ए
विवरण - लेकिन अगर कुरान में भाषा एक भगवान की तरह परिपूर्ण थी, तो विवरण भी था
ध्यान रखा गया है, और विशेष रूप से विवरण इतना महत्वपूर्ण है कि उन्हें एक नाम मिलता है - और एक गर्व
नाम।

+122 9/10 (A16): "यह वे (गैर-मुस्लिम*) हैं जिन्होंने सभी सीमाओं का उल्लंघन किया है"। लेकिन जैसा
अक्सर अरब शब्दों के भी एक से अधिक अर्थ होते हैं। शब्द का एक और अर्थ "अल-
मुतादुन" यह अर्थ देता है: "यह वे हैं जो हमलावर हैं"। स्पष्ट और आसानी से
समझा, और बिना किसी संदेह के सटीक अर्थ के बारे में? और ये वेरिएंट स्वाभाविक रूप से और पसंद करते हैं
हमेशा अरब पाठ में भी होते हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द में एक से अधिक हैं/हैं
अर्थ।

१२३ ९/२४ (ए ३२): "- - - तब तक प्रतीक्षा करें (जो बहुत अच्छे मुसलमान नहीं हैं*) जब तक अल्लाह नहीं लाता
उनके निर्णय के बारे में - - -।" इस्लाम अभी भी इस बात पर बहस करता है कि यहाँ अल्लाह का क्या अर्थ है - कोई बुरा दिन या कुछ
उनके लिए यहाँ पृथ्वी पर गिरावट, या कयामत का दिन? और जब मुस्लिम विद्वानों को
एक वाक्य पर बहस करें, इसका मतलब है कि अर्थ "स्पष्ट और समझने में आसान" नहीं है।

1009

पेज १०१०

१२४ ९/२७ (ए३६): "अल्लाह, इसके बाद, फिर (दया में) किसकी ओर होगा - - -।" क्या
क्या यह संदर्भित करता है? - रज़ी उन मुसलमानों को मानते हैं जो हुनैय में कुछ समय पहले बुरी तरह लड़े थे
630 ई. में तबरी और अन्य मानते हैं कि इसका मतलब आम तौर पर "काफिर" होता है। एक और छोटा विवरण जो
यह स्पष्ट नहीं था कि किसी ईश्वर ने पुस्तक बनाई है या नहीं। और एक विवरण "the ." की तुलना में बहुत बड़ा है
अंतिम अल्पविराम। ”

१२५ ९/२९ (वाईए१२८२): "जब तक वे (गैर-मुसलमान) स्वेच्छा से सबमिशन के साथ जजिया का भुगतान नहीं करते ("ए
यदीन")"। लेकिन अरब शब्द "एक यादीन" - शाब्दिक रूप से "हाथ से" - के अधिक अर्थ हैं और
इस्लाम में इसकी "विभिन्न व्याख्या की गई है"।

१२६ ९/३४ (ए५० - २००८ के संस्करण ए५१ में): "वास्तव में पुजारियों में से कई हैं और
एंकराइट्स, जो झूठ में पुरुषों के पदार्थ को खा जाते हैं - - -।" यह की ओर निर्देशित है
मोज़ेक और ईसाई धार्मिक प्रतिष्ठान के समृद्ध हिस्से। लेकिन क्या यह वास्तव में संबोधित है
उन सभी के लिए जो "उचित कारणों" को दिए बिना ज्यादा पैसा कमाते हैं? इस्लाम अभी भी इस पर बहस करता है
१४०० वर्षों के बाद - - - क्योंकि यह पाठ में स्पष्ट नहीं है। और वास्तव में यह कम से कम अर्ध-
एक समाज में और धार्मिक लोगों के लिए केंद्रीय बिंदु - इतना अधिक, कि यह नहीं होना चाहिए था
एक खुले प्रश्न की तरह खड़ा रह गया। क्या एक सर्वज्ञ भगवान ने वास्तव में इस तरह के अस्पष्ट का इस्तेमाल किया था
इस विषय पर भाषण?

+१२७ ९/४९ (वाईए१३१२): "- - - मुझे (एक आदमी*) मुकदमे में न खींचे (फ़ितनाह"*) - - -"। लेकिन अरब
शब्द "फ़ितना" के कई अर्थ हैं - ऊपर 6/23 देखें। जो कि कई संभावित रूप प्रदान करता है
अर्थ। और ये रूपांतर अनिवार्य रूप से अरब पाठ में भी प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के रूप में हैं
एक से अधिक अर्थ हैं/हैं। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

+128 10/4 (ए 9): "- - - लेकिन जो उसे (अल्लाह*) को अस्वीकार करते हैं उनके पास उबलते तरल पदार्थ के ड्राफ्ट होंगे -
- -।" या: "- - - जलती हुई निराशा के मसौदे - - -।" समझने के दोनों तरीके संभव हैं
अरब पाठ - और दोनों का उपयोग किया जाता है, क्योंकि कोई नहीं जानता कि कौन सा सही है। और ये
निश्चित रूप से भिन्नताएं अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) में से अधिक है/हैं
एक अर्थ।

+१२९ १०/४० (ए६४): "कुछ ऐसे हैं जो विश्वास करते हैं, और कुछ जो नहीं करते - - -।" लेकिन अरब

शब्द "युमिनु" को वर्तमान काल दोनों में समझा जा सकता है - और उस स्थिति में ए.यूसुफ अली है
ऊपर की पंक्ति में - और भविष्य काल में। अंतिम मामले में अर्थ होगा: "वहाँ
वे हैं जो विश्वास करने आएंगे और जो नहीं करेंगे।" एक विवरण, लेकिन हम अभी भी दूर हैं
"अंतिम अल्पविराम" - लेकिन इस्लाम सटीक पाठ को समान रूप से नहीं जानता है। और ये वेरिएंट
स्वाभाविक रूप से अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द एक से अधिक हैं/हैं
अर्थ।

+१३० १०/५४ (वाईए१४४५): "वे घोषित करेंगे ("असरु"*) (उनका) पश्चाताप"। लेकिन अरब
शब्द "असरू" का अर्थ "छिपाना" या "छिपाना" भी हो सकता है। जो यह अर्थ देगा: "वे
दंड से बचने के लिए कुछ भी देगा - - -।" कुरान में स्पष्ट भाषा, हाँ।

१३१ १०/८३ (वाईए १४६६): "लेकिन मूसा पर कोई विश्वास नहीं करता था सिवाय उसके लोगों के कुछ बच्चों के - - -।"
इस वाक्य में "उसका" शब्द किसके लिए है? अधिकांश मुस्लिम विद्वान मूसा को मानते हैं,
लेकिन फिरौन के लिए कुछ नहीं। और पाठ का अध्ययन आपको कोई बुद्धिमान नहीं बनाएगा।

१३२ ११/३ (ए ३): "(कहो): 'वास्तव में मैं (मुहम्मद*) तुम्हारे पास (भेजा) हूँ - - -।" यह शब्द "कहो"
अरब पाठ में मौजूद नहीं है। "कुरान का संदेश" अभिव्यक्ति का उपयोग करता है "कहो, ओ ."
पैगंबर और व्याख्या करते हैं: "कोष्ठक के बीच, "कहो, हे पैगंबर" शब्दों का प्रक्षेप है
इस वाक्य के प्रथम-व्यक्ति निर्माण द्वारा आवश्यक "। **इसका मतलब है कि या तो हम**

**यहाँ उन स्थानों में से एक है जहाँ मुहम्मद स्वयं बोल रहे हैं (कुछ हैं)
जैसे 8 जगह जहां कुरान में ऐसा है), या हमारे पास एक और जगह है
कुरान जहां इस्लाम लिखित रूप में पुष्टि करता है कि कुरान में पाठ हमेशा स्पष्ट नहीं होता है
और सही।** स्पष्ट ग्रंथों को समझना आसान है - और परिपूर्ण क्योंकि यह एक भगवान द्वारा बनाया गया है?

१३३ ११/१८ (ए३३ - २००८ संस्करण ए३५ में): "वे (कयामत के दिन पापी*) होंगे
अपने रब (अल्लाह*) की तरफ़ फिरे और गवाह कहेंगे - - -।" लेकिन कौन
गवाह हैं? कई या अधिकांश मुस्लिम विद्वान सोचते हैं कि यह रिपोर्टिंग कोणों को संदर्भित करता है कि
प्रत्येक इंसान के साथ रहें और वह सब कुछ नोट करें जो वह करता है। अन्य - एक प्राधिकरण की तरह
इब्न अब्बास की तरह - ने कहा कि इसका मतलब नबियों से है कि कुरान के अनुसार आगे बुलाया जाएगा
कयामत के दिन गवाही दो। सही उत्तर क्या है, कोई नहीं जानता - किताब करती है
यह स्पष्ट न करें।

लेकिन इस विवरण का उल्लेख करने का एक अतिरिक्त कारण: **अल्लाह "अदालत" की व्यवस्था क्यों करता है और क्यों
गवाह, और क्यों लिख रहे हैं - इस मामले में और कुछ अन्य मामलों में
कुरान? अगर अल्लाह सर्वज्ञ है, तो वह सब कुछ जानता है और यह सब सिर्फ रंगमंच है - एक तमाशा।
या वह सर्वज्ञ नहीं है?**

लेकिन अगर वे सोचने में प्रशिक्षित नहीं हैं तो पृथ्वी पर अनुयायियों को बताने के लिए यह एक कुशल कहानी हो सकती है।
और coutse के ये रूप अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि वहां प्रासंगिक शब्द हैं/हैं
एक से अधिक अर्थ।

१३४ ११/३४ (ए५३ - २००८ संस्करण ए५६ में): "बिना किसी लाभ के मेरा (मुहम्मद का) वकील होगा
तुम, जितना मैं तुम्हें (अच्छी) सलाह देना चाहता हूं, अगर ऐसा हो कि अल्लाह तुम्हें भटका दे
- - -।" अरब शब्द "युघवियकुम" का शाब्दिक अनुवाद: "कि वह (अल्लाह *) आपको कारण देगा
गलत करना।" यह तो अल्लाह के सटीक शब्द होना चाहिए। लेकिन इस्लाम में भी कोई यह जानने की कोशिश करता है कि क्या है?
अल्लाह का वास्तव में मतलब है। अल-हसन अल-बसरी इसका अर्थ बताता है: "- - - कि वह तुम्हें तुम्हारे लिए दंड देगा
पाप।" तबरी: "- - - कि वह तुम्हें नष्ट कर देगा - - -।" अल-जुब्बाई: "- - - कि वह तुम्हें वंचित करेगा
सभी अच्छे - - -।" यदि पाठ अल्लाह के शब्द हैं, यदि वे भी हैं तो इससे क्या मदद मिलती है
अरब भाषी शीर्ष विद्वान भी इस बात पर सहमत नहीं हैं कि इसका वास्तव में क्या अर्थ है?

१३५ ११/३५ (ए५४ - २००८ संस्करण ए५७ में): नूह के बारे में कहानी की एक नई पुनरावृत्ति में - यह है
कुरान में कई बार दोहराया - यह आता है: "या क्या वे (लोग*) कहते हैं, 'हे'
(मुहम्मद*) ने इसे जाली बनाया है?' कहो: 'अगर मैं (मुहम्मद*) ने इसे गढ़ा होता, तो मेरा पाप मुझ पर होता!
और मैं उन पापों से मुक्त हूं जिनके लिए तुम दोषी हो।" क्या यह नूह की कहानी को संदर्भित करता है? - वह
उसने वह कहानी गढ़ी थी? या यह पूरे कुरान को संदर्भित करता है? - अथवा दोनों? का स्वभाव
पुस्तक में ग्रंथ इतने खराब हैं कि मिश्रण और दोहराव में बिखरे हुए टुकड़ों और टुकड़ों के साथ और
एक ही कहानियों और तर्कों और निष्कर्षों की पुनरावृत्ति, इसलिए कुछ भी संभव है जब यह
"मजाकिया" स्थानों पर कहानी या तर्क के ढीले टुकड़े खोजने की संभावना के लिए आता है। इस मामले में
इस्लाम केवल यह जानने के नुकसान में है कि क्या विश्वास किया जाए। कोई सोचता है कि कविता एक मार्ग है

कहानी में डाला गया है और मुहम्मद नूह की कहानी और पूर्व के बारे में बात कर रहे हैं
कुरान (इब्न कथिर, तबरी)। लेकिन जानना असंभव है। ऐसे "गलत संदर्भ में उद्धरण" या
पाठ को सम्मिलित करना जहां वह संबंधित नहीं है, कुरान में बहुत सामान्य है - इतना सामान्य है कि इस्लाम में एक है
इसके लिए विशेष नाम: "एक मूल समावेशन" या समान। यह कभी-कभी बहुत भ्रमित करने वाला होता है, और
पूरी तरह से "समझने में आसान एक स्पष्ट भाषा" का परिणाम नहीं है - f. भूतपूर्व। जैसे यहाँ है
यह सुनिश्चित करना असंभव है कि वह वास्तव में किस बारे में बात कर रहा है।

एक और कहानी यह है कि यदि मुहम्मद ने कुरान को गढ़ा, तो परिणामी पाप बहुत दूर थे केवल उस पर होने से।

१३६ ११/३८ (ए५७ - २००८ संस्करण ए६१ में): नूह ने आसपास के लोगों से कहा: "यदि आप उपहास करते हैं
हम अब (सन्दूक* बनाने के लिए) हैं, तो हम (अपनी बारी में) आप को उसी तरह उपहास के साथ देख सकते हैं"।
लेकिन इस्लाम के अनुसार नूह एक नबी था, और यह सोचना असंभव है कि एक नबी हो सकता है
किसी का उपहास या उपहास करने के लिए पर्याप्त मानव बनें। इसलिए पाठ गलत होना चाहिए और मैं
वास्तविकता का मतलब कुछ और है - फिर भी एक और जगह जहां इस्लामी विद्वान पाठ में कहते हैं
कुरान गलत होना चाहिए, हालांकि इस बार एक छोटी सी गलत। नूह का अर्थ होना चाहिए "अज्ञानी" - "यदि आप"
हमें अब अज्ञानी समझो, हमें लगता है कि तुम अज्ञानी हो जो हमारी कहानी को स्वीकार नहीं करते "एक लंबा बनाने के लिए
उद्धरण छोटा (ज़मखशरी, बघवी)। ईमानदारी से यह समझने में काफी भ्रमित करने वाला हो सकता है
अस्पष्ट पाठ, लेकिन किसी को भी स्पष्ट पाठ "सुधार" करना होगा इस्लाम पसंद नहीं करता है।

**१३७ ११/४०ए (ए५८ - २००८ संस्करण ए६२ में): "- - - और पृथ्वी के फव्वारे फूट पड़े -
- -।" अरब पाठ में शाब्दिक अर्थ (नीचे ११/४०बी भी देखें): "- - - पृथ्वी का चेहरा
उबला हुआ - - -।" "कुरान का संदेश" उद्धृत करने के लिए: "यह वाक्यांश . के अधीन किया गया है
कई परस्पर विरोधी व्याख्याएँ। " और यह वास्तव में एक भ्रमित करने वाला वाक्य है, अन्य कारणों से
क्योंकि केवल तरल पदार्थ ही उबाल सकते हैं। और भ्रम को पूर्ण करने के लिए आधुनिक इस्लाम में भी
2008 एक बार फिर भूमध्यसागरीय बेसिन को भरने का सहारा लिया, जो 4-5 . हुआ
लाख साल पहले - लगभग के पहले संभावित पूर्वजों के पहले निशान के समय में
होमो सेपियन्स ५ - ६ मिलियन वर्ष पहले, और होमो सेपियन्स (आधुनिक मनुष्य) से बहुत पहले
अस्तित्व में था, कुछ हज़ार साल पहले एक संभावित नूह से कुछ लाख साल पहले का उल्लेख नहीं करना।
असभ्य होना : इस्लाम में "कुरान के संदेश" का सम्मान इस बारे में क्या लिखता है, is
goblydegogh और उस शब्द की तरह गलत और अर्थहीन। **लेकिन जब कुरान में ग्रंथ हैं
इतना भ्रमित करने वाला कि शीर्ष इस्लामी विचारक भी अक्सर समझने की स्थिति में होते हैं और
इस बात पर सहमत होना कि ग्रंथों का वास्तव में क्या अर्थ है, और दूसरी बार केवल इस बात से सहमत हैं कि इसका अर्थ नहीं हो सकता
यह क्या कहता है - फिर मुसलमान कैसे दोहरा सकते हैं और दोहरा सकते हैं और दोहरा सकते हैं कि सब कुछ
कुरान स्पष्ट और समझने में आसान है, और विश्वास करने की मांग है?**

और कैसे इस्लाम में बड़े-बड़े विद्वान इतने गलत तथ्यों का इस्तेमाल कर सकते हैं - भोले और अशिक्षितों को बहकाने के लिए
लोग? - जो इतने प्रसिद्ध हैं और जांचना इतना आसान है और यहां तक कि बहुत कम बार भी नहीं
मीडिया में उल्लेख किया गया है, और फिर विश्वास करने की मांग की जाती है जब वे इसे लिखने का दावा करते हैं
नेक नीयत? विशेष रूप से इसलिए कि यह पहली बार नहीं है - और न ही आखिरी बार जब वे "झुकते हैं"
वैज्ञानिक और अन्य तथ्य उनकी इच्छा के अनुरूप हों।

+१३८ ११/४०बी (वाईए१५३३): "- - - और पृथ्वी के फव्वारे फूट पड़े - - -।" लेकिन अरब
अभिव्यक्ति "दूर अल तन्नूर" के दो शाब्दिक अर्थ हैं (ऊपर 11/40a भी देखें): एक
पहले से ही उल्लेख किया गया है और "- - - ओवन (अल्लाह के प्रकोप का) उबला हुआ - - -।" आप कौन सा करते हैं
बेहतरीन? और क्या भाषा उतनी ही स्पष्ट है जितनी इस्लाम दावा करता है?

१३९ ११/४६ (ए ६५ - २००८ संस्करण ए६८ में): (अल्लाह ने कहा): "हे नूह! वह (तुम्हारा पुत्र*) तुम्हारा नहीं है
परिवार: क्योंकि उसका चालचलन अधर्म है।" यह है अगर अरब शब्द "इन्नाहु 'अमल ग़ैर सालिह"
नूह के अनाम पुत्र से संबंधित है (बाइबल के अनुसार उसके पास केवल 3 थे - शेम,
हाम और येपेत) (ज़मखशरी)। लेकिन नूह ने अभी-अभी अपने ईश्वर से प्रार्थना की थी - अल्लाह
कुरान के अनुसार - उनके बेटे के लिए, और यदि उल्लिखित शब्द उसी से संबंधित हैं
प्रार्थना, अर्थ कुछ इस तरह बदल जाता है: "वास्तव में, यह प्रार्थना अधर्म का आचरण है
आप" (राज़ी, तबरी)। स्पष्ट और आसान और गलत न समझें? और निश्चित रूप से ये वेरिएंट
अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के एक से अधिक अर्थ हैं।

१४० ११/५२ (YA1547): "वह (अल्लाह *) तुम्हें आसमान भेज देगा, प्रचुर मात्रा में वर्षा करेगा, और जोड़ देगा
ताकत से ताकत - - -।" मुस्लिम विद्वान जो प्रश्न पूछते हैं, वह यह है कि क्या यह जोड़ा गया है
(राजनीतिक/सैन्य) समृद्ध भूमि की वजह से ताकत? - या क्योंकि . से बढ़ती आबादी
भोजन की बहुतायत? - या कुछ और? आपका अनुमान भी हमारे जैसा ही सटीक है।

१४१ ११/६७ (ए९७ - २००८ संस्करण ए९८ में): "(शक्तिशाली) विस्फोट ने गलत काम करने वालों (
थमुद लोग*) - - -।" लेकिन यहाँ इस्लाम को एक समस्या का समाधान करना है: 7/78 में कहा गया है कि थमुडी
मारे गए थे जब एक "- - - भूकंप उन्हें अनजाने में ले गया - - -।" इसे एक किताब में कैसे समझाया जाए
वह स्वयं कहता है कि वह जो कहता है उसे शाब्दिक रूप से समझा जाना चाहिए और जो वह कहता है वह स्पष्ट है
और आसानी से समझी जाने वाली भाषा? हम "कुरान का संदेश" (2008) से उद्धृत करते हैं: "- - - it
यह संभव है कि यहाँ और कई अन्य स्थानों पर उल्लिखित "विस्फोट ध्वनि" (विस्फोट*)
भूमिगत गड़गड़ाहट का वर्णन करता है जो अक्सर भूकंप से पहले और उसके साथ होता है
और/या ज्वालामुखी विस्फोट के शोर की तरह गड़गड़ाहट। - - - हालांकि, बार-बार उपयोग को देखते हुए
अलग-अलग संदर्भों में इस अभिव्यक्ति का, हम मान सकते हैं कि इसका अधिक सामान्य अर्थ है
'द ब्लास्ट ऑफ सज़ा' या - - - 'फाइनल ब्लास्ट'"। इसमें कोई शक नहीं: "कुरान एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है
यह समझना आसान है।" या - - -?

लेकिन क्या कोई भगवान इतनी कठिन या समझ में न आने वाली या अस्पष्ट भाषा का प्रयोग करेगा?

१४२ ११/७१ (ए१०२): "और उसकी (अब्राहम की *) पत्नी (वहाँ) खड़ी थी, और वह हँसी - - -।"
वह क्यों हँसी? कोई निश्चित रूप से नहीं जानता, और इस्लाम अभी भी इस समस्या पर बहस कर रहा है:
ज़माखशरी का अर्थ है इसका कारण यह था कि वह समझती थी कि आगंतुक स्वर्गदूत थे, और इस प्रकार नहीं
खतरनाक। इब्न कथिर और अन्य लोगों का कहना है कि इसका कारण यह था कि वह खुश थी क्योंकि के लोग
सदोम (और अमोरा) को नष्ट कर दिया जाएगा। एक मामूली विवरण - लेकिन कई विवरणों में से एक है कि
कुरान में दावा की गई स्पष्ट और आसानी से समझी जाने वाली भाषा का खंडन करता है। कोई भी भगवान कर सकता है
बहुत बेहतर बनाया है। कोई भगवान।

+143 11/78 (A108 - 2008 संस्करण A109 + YA1575 में): (लूत ने कहा): "यहाँ मेरी बेटियाँ हैं - -
-।" लेकिन क्या यह वास्तव में था: "- - - आपके शहर की ये युवा लड़कियां - - -"? के लिए कहना असंभव है
ज़रूर। अधिकांश लिखित अनुवादों में पहला प्रयोग किया जाता है, दूसरा वास्तविक के करीब होता है
अर्थ, "अधिकांश टिप्पणीकारों" ("कुरान का संदेश") के अनुसार। और ये
रूपांतर स्वाभाविक रूप से अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के पास/से अधिक है/हैं
एक अर्थ।

१४४ ११/८०: (लूत ने कहा): "क्या मुझे तुम्हें दबाने की शक्ति होती (सदोम के लोग और
अमोरा*) या कि मैं अपने आप को किसी शक्तिशाली समर्थन के लिए तैयार कर सकता हूँ।" क्या वह तरस रहा था
अपने गोत्र से समर्थन जो दूर ऊर में कसदिया में था जो अब दक्षिण में है
इराक? या वह एक मजबूत भगवान से मदद के लिए तरस रहा था? - लेकिन कुरान के अनुसार, लूत एक था
नबी, तो उसने अपने भगवान पर भरोसा क्यों नहीं किया? "वह पुस्तक जो सब कुछ समझाती है" इस प्रकार की है
अस्पष्ट कहानियों और भाषा की - मुस्लिम विद्वान (f.ex. Tabari) a . को खोजने में सक्षम नहीं हैं
1400 साल की बहस के बाद भी निश्चित जवाब। और जैसा कि पहले कहा गया है कि ये वेरिएंट भी हैं
अरब पाठ में, प्रासंगिक शब्द के रूप में एक से अधिक अर्थ हैं/हैं।

१४५ ११/८२ (ए११४): "- - - हम (अल्लाह*) ने (नगरों को) उल्टा कर दिया, और बारिश हुई
वे पकी हुई मिट्टी के समान कठोर गंधक-- . शाब्दिक रूप से: "हिज्जरह मिन सिद्जिल (या सिज्जिल)" = "पत्थर
सिडज्डजिल (या सिज्जिल) "। समस्या यह है कि कोई भी यह नहीं समझता है कि "सिज्जादजिल / सिज्जिल" का क्या अर्थ है। यह
फारसी "संग-ए-गिल" = "मिट्टी का पत्थर" या "पेट्रिफाइड क्ले" (कैमस, ताज अल-
'अरुस) जो ("कुरान का संदेश, 2008)" कमोबेश पर्यायवाची होगा
'ब्रिमस्टोन' (सल्फर का एक पुरातन नाम), जो बदले में ज्वालामुखी विस्फोट की ओर इशारा करता है।
- - - जो एक गंभीर कारण है कि आपको इस्लामिक साहित्य को तब तक नहीं पढ़ना चाहिए जब तक कि आपके पास न हो
कम से कम कुछ बेईमानी से तथ्यों के उपयोग को देखने के लिए पर्याप्त ज्ञान - ईमानदारी से
इसका थोड़ा अधिक है। इस मामले में: मिट्टी प्राप्त करने का केवल एक ही तरीका है, जो सामग्री है
मिट्टी के पत्थर, और वह पानी के माध्यम से है। मिट्टी एक अवसादी उत्पाद है, और
अवसादन केवल पानी में होता है। दुनिया में एक भी जगह नहीं और एक भी नहीं
इतिहास या पूर्व-इतिहास में समय क्या आपको मिट्टी या मिट्टी का पत्थर मिलेगा जो ज्वालामुखी का परिणाम है

विस्फोट। और क्या बुरा है: यह एक ऐसा सर्वविदित तथ्य है कि कोई भी व्यक्ति पर्याप्त मस्तिष्क वाला नहीं है
विश्वविद्यालय को पूरा करने के लिए - चाहे कोई भी विषय हो - यह नहीं पता (तलछट का संबंध है
अधिकांश देशों में माध्यमिक विद्यालय, और बाद में तृतीयक / "विश्वविद्यालय-तैयारी" स्कूल से नहीं)।
किसी को संदेह हो सकता है कि यह पत्थरों की बारिश के लिए एक (असत्य) "व्याख्या" के रूप में लिखा गया है -
भोले या अशिक्षित व्यक्तियों के लिए अभिप्रेत है।

इसके अलावा: मिट्टी सल्फर का "कम या ज्यादा पर्यायवाची" नहीं है। आम तौर पर मिलते भी नहीं
मिट्टी में सल्फर - मिट्टी पत्थर का अत्यंत महीन कण है, जबकि सल्फर एक रासायनिक पदार्थ है।
और सल्फर आपको मिट्टी के मुख्य गुणों की याद भी नहीं दिलाता है।

और एक प्रश्न: पुरातन शब्द "गंधक" का उपयोग क्यों करें? - क्योंकि अधिक पाठक देखेंगे
अगर कोई सही शब्द "सल्फर" का उपयोग करता है तो कुछ गलत है?

लेकिन अरब पाठ का कम से कम एक और संभावित अर्थ है: "शब्द "सिदजदजिल" या
"सिज्जिल" अरब से "सिजिल" = "एक लेखन" या "कुछ ऐसा जो डिक्री किया गया है" से निकला हो सकता है। में
इस मामले में अरब अभिव्यक्ति का अर्थ हो सकता है: "- - - सभी ताड़ना के पत्थर
अल्लाह का फरमान"। (ज़मखशरी, रज़ी)। लेकिन एक रूपक 2 शहरों को कैसे नष्ट कर देता है?

साफ भाषा। और सब कुछ समझना आसान है।

और ये रूपांतर स्वाभाविक रूप से अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि वहां प्रासंगिक शब्द हैं/हैं
एक से अधिक अर्थ।

१४६ ११/८३ (वाईए१५८१): "- - - न ही वे गलत करने वालों से दूर हैं!" कौन या क्या हैं
"वे"? - बदला लेने वाले गंधक? - या नष्ट हो चुके शहर, मतलब सजा दूर नहीं है
पापियों के लिए बंद? किताब कोई जवाब नहीं देती।

१४७ ११/१०७अ: "वे (पापियों*) उसमें (नरक) सदा बसे रहेंगे कि आकाश और
पृथ्वी सहती है - - -।" कमोबेश नीचे 11/108a के समान है।

१४८ ११/१०७बी (ए१३३ - २००८ के संस्करण ए१३४ में): (पापी हमेशा के लिए नर्क में रहेंगे), "सिवाय तेरा
रब (अल्लाह*) चाहता है।" यह वाक्य कुरान और इस्लाम में बड़ी पहेली में से एक है -
आप 6/128 में उसी जिज्ञासु और गूढ़ संदेश से मिलते हैं: सभी कुरान बताता है कि पापी हैं
हमेशा के लिए नर्क में रहने के लिए, लेकिन इसका मतलब है कि वहाँ सब एक ही रास्ता हो सकता है - कहीं कुछ के लिए? यह
इस्लाम में दिनों और महीनों और वर्षों और सदियों से बहस होती रही है - कोई निश्चित उत्तर नहीं है
मिला। हां, कुरान एक स्पष्ट और विशिष्ट भाषा का उपयोग करता है - सब कुछ समझना आसान है,
जैसा कि मुसलमान दावा करते हैं।

हम जोड़ सकते हैं कि कुछ मुस्लिम विद्वान इस पर अनुमान लगाते हैं कि एक संभावित अर्थ यह है कि
मुस्लिम पापियों को काफ़ी कल्पों के बाद नर्क से बाहर निकाल दिया जाएगा - लेकिन बहुत संभव है कि केवल मुसलमान ही
वाले।

१४९ ११/१०८ए (ए१३३ - २००८ संस्करण ए१३४ में): "वे (अच्छे मुसलमान*) उसमें निवास करेंगे
(स्वर्ग) हर समय के लिए जो स्वर्ग (बहुवचन और गलत *) और पृथ्वी सहन करते हैं"। क्या
क्या इसका मतलब है? स्वर्ग हमेशा के लिए है और पृथ्वी कयामत के दिन तक
कुरान में कई छंद। क्या वे वहां तब तक रहेंगे जब तक पृथ्वी मौजूद है, या - - -? में
पुराना अरब - इतना पुराना कि f. भूतपूर्व। तबरी को समझाना पड़ा - (स्वीडिश से अनुवादित): "- - - जब तक
स्वर्ग और पृथ्वी मौजूद हैं - - -" का अर्थ है हमेशा के लिए। और वह अच्छा और अच्छा है - - - सिवाय इसके कि
इस्लाम को तो यह समझाना होगा कि क्या इसका मतलब यह है कि पृथ्वी भी हमेशा के लिए मौजूद रहेगी, और कैसे
पृथ्वी हमेशा के लिए मौजूद हो सकती है, जब कुरान कहता है कि पृथ्वी जैसा कि हम जानते हैं, समाप्त हो जाएगी

आखरी दिन। कुरान में इस तरह के "सादे और आसानी से" का उपयोग करने का सबसे जटिल तरीका है
ऐसी भाषा समझी जिसे कोई गलत न समझे।" और, हाँ, ये वेरिएंट भी हैं
अरब पाठ, प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के रूप में एक से अधिक अर्थ हैं/हैं।

१५० ११/१०८बी (ए१३४ - २००८ संस्करण ए१३५ में): (अच्छे मुसलमान हमेशा स्वर्ग में रहेंगे),
"सिवाय जैसा कि तेरा रब (अल्लाह*) चाहता है - - -।" वास्तव में कोई नहीं जानता या समझता है कि यह क्या है
साधन। क्या यह खत्म हो सकता है? क्या यह बदल सकता है? क्या यह कभी बेहतर हो सकता है? या क्या? इस्लामी
विद्वान कर्तव्य और उपदेश से बंधे हैं - और महत्वपूर्ण सोच में प्रशिक्षण की कमी से - करने के लिए

आशावादी बनें, और वादा करें कि कुछ भी नहीं होगा "जब तक अल्लाह उन्हें प्रदान करने की इच्छा नहीं रखता"
और भी बड़ा इनाम (जो ज्यादा नहीं लगेगा - मुस्लिम स्वर्ग केवल भौतिकवाद है और
सेक्स, और महिलाओं के लिए केवल भौतिकवाद ज्यादातर) "(राज़ी)। लेकिन एक भी आत्मा कभी नहीं रही
इस वाक्य के बारे में अनुमान लगाने और उम्मीद करने के अलावा कुछ भी करने में सक्षम। और जैसा कहा
इससे पहले कि ये संस्करण अरब पाठ में भी हों, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) में और भी हैं/हैं
एक से अधिक अर्थ - या यहाँ: कोई स्पष्ट अर्थ नहीं।

१५१ ११/११८-११९ (१५१ - २००८ संस्करण १५२ में): "यदि आपके (लोगों के) भगवान (अल्लाह *) ने ऐसा चाहा होता,
वह मानव जाति को एक व्यक्ति बना सकता था: लेकिन वे विवाद करना बंद नहीं करेंगे, सिवाय उन लोगों के
जिसे तेरे रब ने अपनी रहमत दी है, और इसके लिए उसने उन्हें पैदा किया - - -।"
लेकिन अरब शब्द "ली-धालिका" (= "इसके लिए", "इस अंत तक") का क्या मतलब है? मुश्किल से "वे"
विवाद समाप्त नहीं होगा"। वाक्य बस हवा में लटकता है, बिना किसी बात की ओर इशारा किए
या किसी चीज से जुड़ा होना। कुछ (जैसे मुजाहिद और 'इकरीमा) मानते हैं कि यह अल्लाह की ओर इशारा करता है
मनुष्य पर कृपा। कुछ (जैसे अल-हसनंद 'अता) कहते हैं कि यह मनुष्य की अर्थ रखने की क्षमता को दर्शाता है
दूसरों से अलग' (इसकी पिछले वाक्य से कुछ प्रासंगिकता है)। अन्य (जैसे
ज़मखशरी) का अर्थ है कि यह नैतिक विकल्प बनाने के लिए मनुष्य की स्वतंत्रता को संदर्भित करता है। बस अपना अनुमान चुनें -
हर मुसलमान विद्वान भी यहीं अनुमान लगा रहा है। जैसा कि पहले कहा गया है: एक स्पष्ट और अचूक
भाषा को समझने में आसान। और ये रूप निश्चित रूप से अरब पाठ में भी हैं, जैसे
प्रासंगिक शब्द (ओं) के एक से अधिक अर्थ हैं - या यहां: कोई स्पष्ट अर्थ नहीं है।

+152 12/1 (ए 2) "ये प्रतीक हैं (या छंद (पाठ में पहले से ही 2 अर्थ*))
सुस्पष्ट (अरब: "मुबीन") पुस्तक।" लेकिन शब्द "मुबीन" या तो संज्ञा के लिए संदर्भित हो सकता है
गुणवत्ता (तब "मुबिन" का शाब्दिक अर्थ कुछ ऐसा है जो स्पष्ट, स्पष्ट, प्रकट, आदि है) या इसके लिए
फ़ंक्शन (तब "मुबिन" का शाब्दिक अर्थ कुछ ऐसा है जो कुछ स्पष्ट या स्पष्ट कर रहा है
या -"। अधिकांश इस्लामी विद्वानों का मतलब है कि यह यूसुफ की व्याख्या करने की क्षमता को दर्शाता है
सपने। "पुस्तक उस कहानी को स्पष्ट करती है जो वह स्पष्ट करती है"। उनमें कोई छोटा अंतर नहीं है
दो अर्थ। मुसलमान आपको बताएंगे कि दोनों अर्थ शामिल हैं। लेकिन भाषा अस्पष्ट है
(और 2 स्थानों से कम नहीं)।

+153 12/3 (A3 - 2008 संस्करण A5 में): "हम (अल्लाह*) आपसे (मुसलमान*) सबसे अधिक संबंध रखते हैं
कहानियों का सुंदर - - -।" लेकिन एक भाषाई-तकनीकी तर्क के साथ जो कि बस भी है
आम लोगों के लिए जटिल है, इसलिए हम इसे एफ के अनुसार यहां उद्धृत नहीं करते हैं। भूतपूर्व। ज़माखशरी अ
अधिक सही अर्थ कुछ इस तरह है "- - - सबसे अच्छी व्याख्या वाली कहानी - - -।" वहाँ है
इन दो अर्थों के बीच एक विस्तृत नदी। लेकिन इसे दोहराने के लिए: कुरान में भाषा स्पष्ट है
और समझने में आसान - और गलत समझना असंभव। और ये वेरिएंट हमेशा की तरह
अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के एक से अधिक अर्थ हैं।

१५४ १२/६ (ए १०): "इस प्रकार तेरा (यूसुफ का) भगवान (कुरान के अनुसार अल्लाह) आपको सिखाएगा
कहानियों की व्याख्या ("अहदित"*) - - -।" "अहदित" का शाब्दिक अर्थ (एकवचन)
"हदीस") "बातें" या "सूचना" है - "जो बातें आपको बताई जाती हैं -"। अधिकांश इस्लामी विद्वानों का मतलब यह है
यूसुफ की सपनों की व्याख्या देने की क्षमता को दर्शाता है। लेकिन थोड़े अलग के साथ
"हदीस" के उच्चारण से आपको "एक घटना", "एक घटना" का अर्थ मिलता है - और यह मामले में

वाक्य को यह अर्थ देता है कि यूसुफ को वास्तविक अर्थ को समझने के बारे में सोचा गया था
रज़ी पर आधारित एम. आज़ाद के अनुसार वास्तविक जीवन में वास्तव में जो कहा और किया गया था, उसके पीछे या पीछे।
असद भी सोचते हैं कि यह अधिक सही अर्थ है। दो बहुत अलग कौशल, मामले में। और
ये रूपांतर स्वाभाविक रूप से अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) में अधिक है/हैं
एक से अधिक अर्थ।

१५५ १२/१९ (वाईए१६५४): "आह वहाँ! अच्छी खबर ("बुशरा"*)"। लेकिन अरब शब्द "बुशरा" भी
एक उचित नाम हो सकता है। तब यदि विस्मयादिबोधक था: "आह, बुशरा!" एक विवरण - लेकिन
क्या एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ ईश्वर विवरण को भी अस्पष्ट बना देता है?

156 12/30 (ए 27 - 2008 संस्करण ए 28 में): "- - - वह (अज़ीज़ की पत्नी (वास्तव में एक शीर्षक ="
पराक्रमी", एक नाम नहीं - बाइबिल में नाम पोतीपर*)*) उनके लिए भेजा गया (निंदा करने वाला)
देवियों*) और उनके लिए एक भोज तैयार किया - - -।" अरब ग्रंथ वास्तव में जो कहते हैं, वह था
"एक ऐसी जगह तैयार करने के लिए जहां कोई लेट जाए - ("मुत्तका")" - या "एक कुशन वाला सोफे"। लेकिन यह है
पर्याप्त भाषा स्पष्ट नहीं है - इसलिए "व्याख्यात्मक अनुवाद"; "भोज", "शानदार"
रेपास्ट", या इसी तरह के अनुवादकों द्वारा उपयोग किया जाता है। स्पष्ट भाषा?

१५७ १२/४९ (ए४४ - २००८ संस्करण ए४८ में): "फिर उसके बाद (अवधि) एक वर्ष आएगा जिसमें
लोगों के पास प्रचुर मात्रा में पानी होगा - - -।" यहाँ कुरान की भाषा इतनी अस्पष्ट है -
पढ़ें "सीधे गलत" - कि ए.यूसुफ अली के धर्म ने उनके नैतिक और बौद्धिक को वश में कर लिया है
ईमानदारी। अरब क्रिया जिसका प्रयोग किया जाता है - "युघथ" - या तो संज्ञा "घयथ" = . से निकला है
"बारिश", या किसी अन्य संज्ञा से "घौथ" = "संकट से मुक्ति"। कोई रास्ता नहीं है कि यह
मतलब "पानी" हो सकता है। "स्पष्ट भाषा" 2 विकल्प प्रदान करती है - एक गलत, एक अच्छा नहीं
विवरण, इसलिए पवित्र मुसलमानों ने एक 3. और बेईमान का इस्तेमाल किया क्योंकि मिस्र में बारिश नहीं हुई लेकिन
नील नदी की बाढ़ (या वास्तव में एक "किटमैन" - एक वैध अर्ध-सत्य - बारिश के रूप में बहुत आगे
दक्षिण अफ्रीका में बाढ़ का कारण बनता है - - - लेकिन यह वह नहीं है जिसके बारे में कुरान बात कर रहा है।) ठीक है, तो
विनम्र बनो और बेईमानी को भूल जाओ - अल-तकिया (जो किटमैन का एक संस्करण है) - वैध झूठ
- आखिरकार इस्लाम में वैध है, और यहां तक कि इस्लाम की रक्षा या बढ़ावा देने के लिए यदि आवश्यक हो तो उपयोग करना भी एक कर्तव्य है
(और उत्सुकता से पर्याप्त भी महिलाओं को धोखा देने के लिए उपयोग करने की अनुमति है - महिलाओं के लिए कुछ
कभी-कभी याद रखें - - - f. भूतपूर्व। कि एक मुस्लिम व्यक्ति के लिए विवाह एक संभावित तरीका है
एक अमीर देश में निवास की अनुमति - यह अभी और तब होता है - और इसका उपयोग करने की अनुमति है
महिलाओं को धोखा देने के लिए अल-तकिया)। और ये रूपांतर अनिवार्य रूप से अरब पाठ में भी हैं, जैसे कि
प्रासंगिक शब्द (ओं) के एक से अधिक अर्थ हैं / हैं।

१५८ १२/५२ (ए४७ - २००८ के संस्करण ए५१ में): "यह (मैं कहो), ताकि वह (अज़ीज़*)
जान लो कि मैं उसकी अनुपस्थिति में कभी भी झूठा नहीं रहा, और यह कि अल्लाह कभी मार्गदर्शन नहीं करेगा
झूठे लोगों का जाल। न ही मैं अपने आप को - - - से मुक्त करता हूँ। यह सब अच्छा और अच्छा है। लेकिन कौन
यह कहते हैं? क्या यह पत्नी है, जैसे f. भूतपूर्व। इब्न कथिर और राशिद रिदा अनुमान? - या यह जोसेफ है, जैसे
दूसरों के बीच में तबरी, बघवी, और ज़माखशरी विश्वास करते हैं? कुरान में स्पष्ट (?) भाषा
एक भी विश्वसनीय सुराग नहीं देता - यह किसी का अनुमान है। स्पष्ट और अचूक ग्रंथ?

१५९ १२/७५ (ए७० - २००८ संस्करण ए७४ में): "उन्होंने कहा: 'दंड होना चाहिए - - -।" लेकिन कौन
ऐसा कहा? यदि यह मिस्रवासी थे, तो वह कानून था जिसका पालन करना था। अगर यह जोसेफ का था
भाइयों, यह मिस्रियों के लिए एक प्रस्ताव था, लेकिन एक कानून का परिणाम नहीं जिसे किसी को पालन करना था। NS
कुरान कोई सुराग नहीं देता है - और कुछ मुस्लिम विद्वान इसका अनुमान लगाते हैं, अन्य ऐसा। क्या कोई
सर्वज्ञ ईश्वर एक ऐसी भाषा का उपयोग करते हैं जो अक्सर अस्पष्ट होती है, जिसके दोहरे या कई अर्थ होते हैं,
और वह अक्सर अनुमान लगाने की मांग करता है? - कम से कम कोई भी जो इस भाषा को सबूत के तौर पर इस्तेमाल करता है
एक देवता के लिए, जंगल में दूर है।

१६० १२/९९ (ए ९२ - २००८ संस्करण ए९६ में): "(यूसुफ*) ने अपने माता-पिता के लिए एक घर प्रदान किया - -।"
इसका क्या मतलब है? बाइबल बताती है और कुरान को इस बात से कोई आपत्ति नहीं है कि उसकी मां राहेल
बिन्यामीन के जन्म के समय वह मर गया, और उसका केवल पिता याकूब हुआ। मुसलमान "हो सकता है,
इसलिए, मान लें कि "माँ" शब्द "माता-पिता" में निहित है, जैकब का एक और शब्द था
पत्नियां - - -।" "माँ" के लिए पालक माँ को बुलाना असामान्य नहीं है। कुछ संस्कृतियों में यह भी
के साथ बोलते समय एक सम्मानजनक शीर्षक के रूप में "माँ" और "पिता" शब्दों का उपयोग करना आम है
बुजुर्ग लोग। लेकिन एक पालतू नाम, एक सम्मानजनक नाम/शीर्षक, किसी को अपना माता-पिता नहीं बनाता है। NS
कम से कम अल्लाह को तो ऐसा करना ही चाहिए था अगर उसने "स्पष्ट और आसान" भाषा का उपयोग करने का दावा किया था
समझने के लिए" का अर्थ "उसके पिता और सौतेली माँ" कहना था। (संभावित व्याख्या यह है कि
जब मुहम्मद ने यह बताया, तो भूल गए कि यूसुफ की माता मर चुकी है)।

१६१ १२/१०० (ए९५ - २००८ संस्करण ए९८, ए९९ में): "- - - और वे जैकब और उसका परिवार*) गिर गए
साष्टांग प्रणाम में, (सब) उसके सामने (यूसुफ*) - - -।" यहाँ एक पहेली के अंदर एक बड़ी पहेली है
इस्लाम के लिए एक पहेली से घिरा हुआ है। याकूब जैसा पवित्र भविष्यवक्ता असंभव रूप से साष्टांग प्रणाम कर सकता था
इंसान के सामने खुद और यूसुफ जैसा पवित्र भविष्यद्वक्ता असंभव रूप से स्वीकार कर सकता था
यह। पाठ में कुछ गलत होना चाहिए। यह भले ही अरब पाठ "वा-खररू लहु"
sudjdjadah" का शाब्दिक अर्थ है "- - - और वे उसके सामने नीचे गिर गए (वैकल्पिक रूप से "जैसे")
साष्टांग प्रणाम (या स्वीडिश प्रति के अनुसार "उससे प्रार्थना करना")"। इस्लाम का कोई भला नहीं
स्पष्टीकरण जो हमने पाया है। 'अब्द अल्लाह इब्न' अब्बास के अनुसार "उसे" "पहले" में
उसे" अल्लाह का उल्लेख करना चाहिए - जो कि यह सबसे स्पष्ट रूप से नहीं करता है। रज़ी बताते हैं कि जोसेफ
सपना पूरी तरह से पूरा नहीं हुआ था, आदि। वास्तव में यहाँ पाठ बहुत स्पष्ट है - और केवल एक चीज
मुस्लिम विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि इसका शाब्दिक अर्थ गलत होना चाहिए, और यह बिना a
अच्छा वैकल्पिक अर्थ।

१६२ १३/१ (ए२) : "ये छंद ईश्वर के संकेत (या छंद (या रहस्योद्घाटन के संदेश*)) हैं।
किताब (कुरान*) - - -।" यहाँ पहले से ही कई अर्थ हैं। लेकिन इस्लाम के लिए मुख्य समस्या:
"ये पद" किससे संबंधित हैं? कई विद्वानों का मतलब इस सूरह में सिर्फ छंदों से है। अन्य

जैसे इब्न अब्बास/बगवी इस बात पर जोर देते हैं कि इसका मतलब सभी कुरान में सभी छंदों से होना चाहिए। NS
इस छोटी सी बात पर भी कुरान खुद अस्पष्ट है - लेकिन इतना बड़ा है कि 1400 . तक बहस का कारण बन सकता है
वर्षों।

+163 13/2a (YA1800): "अल्लाह वह है जिसने आकाश को बिना किसी खम्भे के ऊपर उठाया है जिसे आप कर सकते हैं
देख - - -।" या इसका मतलब यह है कि यह वह आकाश है जिसे आप नहीं देख सकते हैं? - अपनी पसंद चुनें (हालांकि यह
वह पहला व्यक्ति है जिससे हम अक्सर मिलते हैं)। A. युसूफ अली यहां स्तंभों को बलों के साथ समझाते हैं -
दिलचस्प है क्योंकि यह एक स्पष्टीकरण है जिसे हम पहले नहीं मिले हैं। लेकिन यह सब एक ही अर्थहीन है:
एक बात के लिए कोई बल क्षेत्र दर्ज नहीं किया गया है (क्या हम अनुमान लगाएंगे कि मुसलमान समझाएंगे?
यह केवल अल्लाह ही दर्ज कर सकता है बलों के बारे में एक ढीले और सुविधाजनक दावे के साथ?) लेकिन मुख्य
बात यह है कि कोई 7 आकाश नहीं हैं जो "उठाए गए" हैं और उनके स्थानों में रखे गए हैं - खंभों से नहीं,
न ही किसी और चीज से।

१६४ १३/२बी (ए५): "प्रत्येक (सूर्य और चंद्रमा*) नियत अवधि के लिए (इसका कारण) चलता है"। अनुसार
इस्लाम के लिए "नियुक्त शब्द" कयामत के दिन का उल्लेख कर सकता है - - - या उनके गुजरने के लिए
राशि चक्र "हवेली" ('अब्द अल्लाह इब्न' अब्बास / बगवी / रज़ी)। में काफी कुछ अंतर
एक स्पष्ट भाषा के लिए अर्थ। और ये संस्करण भी प्रासंगिक के रूप में, अरब पाठ में हैं
शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं/हैं।

+165 13/7 (ए 17 - 2008 संस्करण ए 17 में): "लेकिन आप (मुहम्मद *) वास्तव में एक चेतावनी देने वाले हैं, और
हर लोग एक गाइड। " लेकिन इस्लाम खुद बताता है कि से और भी अर्थ संभव हैं
अरबी पाठ: "तू तो केवल चेतावनी देने वाला है; और सब लोगों के पास तेरे समान एक मार्गदर्शक है - - -" दो
अर्थ में महत्वपूर्ण बारीकियों। या: "आप केवल एक चेतावनी देने वाले हैं - लेकिन (एक ही समय में) भी

सभी लोगों के लिए एक मार्गदर्शक" - 2 . में से प्रत्येक की तुलना में बारीकियों में कम से कम एक स्पष्ट अंतर
के ऊपर।" या: "आप केवल एक चेतावनी देने वाले हैं जो सौंपे गए संदेश को वितरित करने के अलावा और कुछ नहीं करने के लिए बाध्य हैं
तुम्हारे लिए, जबकि केवल अल्लाह ही है जो वास्तव में लोगों के दिलों को ईमान की ओर ले जा सकता है।" की तुलना में कहीं अधिक
अर्थों में सूक्ष्मता। एक स्पष्ट भाषा? - गलत समझना संभव नहीं है?

१६६ १३/१७-१८ (ए३९): "अल्लाह इस प्रकार दृष्टान्तों को बताता है।" स्पष्ट और आसान भाषा: यहाँ
अल्लाह ने समझाया है कि कैसे वह दृष्टान्तों को प्रस्तुत करता है। लेकिन यह इतना स्पष्ट नहीं है - क्योंकि यह स्पष्ट नहीं है कि
यह उसी संदर्भ से संबंधित है। उस मामले में एक और अर्थ मिलता है: "इस प्रकार अल्लाह ने निर्धारित किया"
उन लोगों के लिए दृष्टान्त जो अपने भगवान को जवाब देते हैं - - -। या एम. असद को उद्धृत करने के लिए: "उनके लिए जिनके पास है
उनके पालनहार (अल्लाह *) को जवाब दिया कि परम अच्छा (अल-हुस्ना) (स्टोर में) - - - है। नहीं
लगभग समान। स्पष्ट पाठ?

१६७ १३/२२ (ए४३ - २००८ संस्करण ए४४ में): "- - - और बुराई को अच्छे से बंद करें - -।" क्या करता है
इसका मतलब? एफ. पूर्व. इब्न केसन / ज़मखशरी: "यदि उन्होंने कोई पाप किया है, तो वे इसे पीछे हटा देते हैं (= इसके .)
स्वयं पर प्रभाव*) पश्चाताप करके"। या रज़ी: बुराई करने के लिए आपको कुछ कहना और/या करना होगा
स्थितियाँ सही। या अन्य, एफ। भूतपूर्व। तबरी: "आप बुराई को अच्छे से चुकाते हैं।" बस अपनी पसंद चुनें, जैसे
अरब पाठ का अर्थ इनमें से कोई भी हो सकता है। मुसलमान कुरान में ग्रंथों और भाषा का दावा करते हैं
वे इतने स्पष्ट हैं कि यह इस बात का प्रमाण है कि किताब अल्लाह की ओर से उतारी जानी चाहिए। हम
सहमत हैं कि यह कुछ साबित करता है - लेकिन एक सर्वज्ञ भगवान नहीं। निश्चित रूप से नहीं। और ये
रूपांतर भी अनिवार्य रूप से अरब पाठ में हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) में/से अधिक है/हैं
एक अर्थ।

+168 13/26 (YA1841): "- - - इस पृथ्वी पर जीवन परलोक में थोड़ा आराम है" = यह
मतलब अगले जन्म में कम। या: "- - - यह जीवन के लिए एक कदम (या कुछ*) है
आइए।" क्रिस्टल स्पष्ट अरब पाठ से दोनों अर्थ संभव हैं।

+169 13/38 (YA1863): "प्रत्येक अवधि के लिए एक पुस्तक (प्रकट) है" लेकिन दो अन्य सही हैं
अनुवाद होंगे: "प्रत्येक अवधि के लिए एक कानून (प्रकट) है", और "प्रत्येक अवधि के लिए एक डिक्री है"
स्थापित"। बस चुनें और चुनें।

१७० १३/४१ (ए७९ - २००८ संस्करण ए८० में): "उन्हें देखें ("काफिरों") यह नहीं कि हम (अल्लाह*) धीरे-धीरे
भूमि (उनके नियंत्रण में) को उनकी परिव्यय सीमाओं से कम करें?" (= हम अधिक से अधिक जीतते हैं
बिट्स और उनसे टुकड़े।) लेकिन यहां अरब शब्द का अनुवाद "पक्षों" या "सीमाओं" के साथ किया गया है।
- "अतरफ" - के कई अर्थ हैं। वाक्य का अर्थ यह भी हो सकता है: "हम उनके सर्वश्रेष्ठ पुरुषों को लेते हैं", या: "-
- - (पृथ्वी) लोगों और फलों का सबसे अच्छा हिस्सा "। आप कौन सा विकल्प पसंद करते हैं? और ये
रूपांतर भी अरब पाठ में हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) में/से अधिक है/हैं

एक अर्थ।

१७१ १३/४३ (वाईए१८६८): "मेरे (मुहम्मद*) और तुम्हारे बीच एक गवाह के लिए पर्याप्त"
मुसलमान*) अल्लाह है, और जैसे किताब (कुरान*) का ज्ञान रखते हैं" = कुरान एक
गवाही दे कि मैं भविष्यद्वक्ता हूं, और जो इसका अध्ययन करते हैं, वे इसे देखते और गवाही देते हैं। या: "- - -
जैसे किताब में सारा ज्ञान अल्लाह से आता है, कुरान भी मेरी गवाही देता है "= the
कुरान प्रत्यक्ष गवाह है। आपकी पसंद क्या है?

+172 14/4 (A4): "अब अल्लाह जिसे चाहता है उसे भटका देता है।" या हो सकता है "- - - अल्लाह
जो चाहे उसे भटका दे---"? पहला शाब्दिक अर्थ है, हालांकि दोनों हैं
अरब पाठ से संभव है। लेकिन यह परोपकारी भगवान की वास्तव में एक असंवेदनशील तस्वीर पेश करता है
अल्लाह, इसलिए मुस्लिम विद्वान काफी हद तक इस बात से सहमत हैं कि दूसरा अर्थ कुछ ऐसा है
एक सच होना चाहिए। यदि यह स्पष्ट है, लेकिन किसी को पसंद की गई तस्वीर में फिट नहीं है, तो समझाएं कि यह है

अस्पष्ट और वास्तव में इसका मतलब कुछ और है। और जैसा कि पहले भी कई बार कहा गया है; ये वेरिएंट
अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के एक से अधिक अर्थ हैं।

१७३ १४/५ (अ५): “अपने (मूसा के) लोगों (यहूदियों*) को अँधेरे की गहराई से बाहर निकालो
प्रकाश करो, और उन्हें अल्लाह के दिनों को याद करना सिखाओ ”। अल्लाह के दिनों का क्या मतलब है? -
मिस्र से पलायन? - या कयामत का दिन? - या उस मामले के लिए किसी और दिन? कोई भी नहीं
जानता है। लेकिन जब कोई भगवान इस तरह का आदेश देता है, तो यह महत्वहीन नहीं है कि उसके अनुयायी
यह समझने का अवसर प्राप्त करें कि वह किस बारे में बात कर रहा है। क्या कोई भगवान उस जानकारी को भूल जाएगा?

१७४ १४/२२ (ए३२): "मैं (शैतान*) तुम्हारी पुकार (मदद* के लिए) नहीं सुन सकता, न ही तुम (पापियों में)
नर्क*) मेरी बात सुनो"। या क्या इसका वास्तव में मतलब है: "मैं मदद के लिए आपकी कॉल का जवाब नहीं दे सकता, जैसे कि
आपको अपने जीवनकाल में मेरी पुकार का जवाब नहीं देना चाहिए था"? इस्लाम बस नहीं जानता।
और ये संस्करण निश्चित रूप से अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि वहां प्रासंगिक शब्द हैं/हैं
एक से अधिक अर्थ।

१७५ १४/४८ (ए ६४): "और तुम (मुसलमान*) पापियों को उस दिन (कयामत के) बंधे हुए देखोगे
एक साथ बेड़ियों में - - -।" असली बेड़ियों में? या यह उनके बुरे कामों (राज़ी) का एक रूपक है? या
शायद उनके इस जीवन (असद) में किए गए बुरे कर्मों की श्रृंखला प्रतिक्रिया की एक तस्वीर? आपका अनुमान
उतना ही अच्छा है जितना कि हमारा और उनका, और न तो कुरान और न ही इस्लाम इसका उत्तर दे सकता है - लेकिन यह एक वास्तविक होगा
भगवान अपनी पवित्र पुस्तक का इतना हिस्सा केवल अनुमान लगाने के लिए छोड़ दें? कुरान में कोई भी विषय मुस्लिम अभी भी
इतनी सदियों के बाद भी समझ नहीं पा रहे हैं या सहमत नहीं हैं या अपर्याप्त साबित हुए हैं
स्पष्ट रूप से पर्याप्त रूप से समझाया गया है - और किसी भी सर्वज्ञ और भेदक भगवान के पास भेजने से बहुत पहले था
नीचे (?) पुस्तक, ज्ञात है कि किन बिंदुओं को बेहतर या स्पष्ट स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

१७६ १४/५१ (YA१९३०): "और वास्तव में अल्लाह हिसाब लेने के लिए तेज है।" क्या इसका मतलब यह है: भले ही
"काफिर" जीवन में अच्छा करते हैं, इसका मतलब केवल यह है कि अल्लाह इंतजार कर रहा है, और तेजी से प्रतिक्रिया करेगा जब
उसका समय आता है? या: अल्लाह कयामत के दिन "काफिरों" के साथ तेजी से काम करेगा? नहीं
इसका उत्तर मुसलमान निश्चित रूप से बता सकता है।

१७७ १५/४ (ए ४): "हमने (अल्लाह*) ने कभी ऐसे लोगों को नष्ट नहीं किया, जिनके पास कोई नियम नहीं था और
पहले से सौंपा ”। यहाँ श्रीमान युसूफ अली ने एक बार फिर से कुछ स्वतंत्र रूप से अनुवाद किया है -
हो सकता है क्योंकि वह जानता था कि वास्तविक अर्थ असंभव रूप से सही हो सकता है। के अनुसार
मुहम्मद असद, "कुरान का संदेश", का शाब्दिक अर्थ है: "हमने कभी नहीं किया"
एक लोगों को तब तक नष्ट कर दो जब तक कि यह (समुदाय) एक दैवीय रिट नहीं जानता - - -।" शायद मिस्टर युसूफ
अली "अल-तकिया" (कानूनी झूठ - एक कर्तव्य जब बचाव की बात आती है) के नियमों को जानता था
इस्लाम)। होमो सेपियन्स 200ooo - 160ooo साल पुराना जैसा कुछ है। लेखन बस अस्तित्व में है
कुछ हजारों साल। लेकिन हजारों और हजारों जनजातियां और लोग गायब हो गए
इससे पहले। क्या हजारों लोग - व्यक्ति नहीं, बल्कि लोग - बिना मर गए हैं?
यह जानने वाले अल्लाह ने लिखने से पहले आविष्कार किया था? यहाँ कुछ कम से कम कहना गलत है
यह।

१७८ १५/२४ (वाईए१९६५): "- - - आप में से जो तेजी से आगे बढ़ते हैं, और जो पीछे रह जाते हैं"।
एक और गूढ़ वाक्य मुसलमानों को यकीन नहीं है कि इसका क्या मतलब है। इस्लाम स्वीकार करने वाले पहले, और
बाद वाले? पुराने जमाने के और बाद में आने वाले? युद्ध में पहला और
अनिच्छुक? क्या पता?

+179 15/70 (YA1993): "उन्होंने (सदोम और अमोरा के पुरुष*) ने कहा 'क्या हमने मना नहीं किया
आप (लूत*) (बोलने के लिए) सभी के लिए और विविध?'" - या इसका अर्थ हो सकता है "- - - किसी का मनोरंजन करना
अनजाना अनजानी।" - अरब पाठ दोनों अर्थों के लिए खुला है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है: भाषा साफ़ करें
क़ुरान।

१८० १५/७८ (YA2000): "- - - लकड़ी के साथी - - -"। वह कौन थे? एक और
मद्यन के लोगों के लिए नाम?. मदनियों के भीतर एक समूह? के पड़ोसी
मद्यनिवासी? या कोई अन्य जनजाति या समूह? कुरान में अस्पष्ट।

१८१ १५/९१-९२: (वाईए२०१३): "(ऐसे भी) जैसे कि कुरान को टुकड़े-टुकड़े कर दिया है (जैसा कि उन्होंने
कृपया)। इसलिए, आपके (मुहम्मद के *) भगवान (अल्लाह *) द्वारा, हम (अल्लाह *) निश्चित रूप से बुलाएंगे
उन्हें हिसाब देना है।" यह उन्हीं अपराधियों के बारे में प्रतीत होता है - लेकिन क्या एक मुस्लिम विद्वान सोच सकता है
पहला भाग यहूदियों और ईसाइयों के बारे में है
उनकी पवित्र पुस्तक), और उनके विचार से अंतिम भाग मक्का में अन्यजातियों के बारे में है। जवाब है
अस्पष्ट।

१८२ १६/४ (ए५): "उसने (अल्लाह*) ने मनुष्य को शुक्राणु की बूंद से पैदा किया है; और निहारना यह वही (आदमी)
एक खुला विवादकर्ता बन जाता है। " यह आलंकारिक हो सकता है - मनुष्य का विकास आदिकाल से
वयस्क होने तक शुरू करें और अपने लिए विवाद करने की क्षमता। या इसका मतलब यह हो सकता है कि मनुष्य की प्रवृत्ति है
अल्लाह की मर्जी का विरोध करो। बिल्कुल स्पष्ट बिंदु नहीं, लेकिन निश्चित रूप से एक भेद। और
ये संस्करण - एक बार फिर - अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द वहां हैं/हैं
एक से अधिक अर्थ।

१८३ १६/४१ (ए४२ - २००८ संस्करण ४३ में): "उन लोगों के लिए जो अल्लाह के लिए अपना घर छोड़ते हैं -
- - हम (अल्लाह*) इस दुनिया में एक अच्छा घर ज़रूर देंगे; लेकिन वास्तव में इनाम
इसके बाद अधिक होगा। अगर वे केवल (यह) महसूस करते हैं!" यह तनावपूर्ण स्थिति की चिंता करता है
मुहम्मद मक्का से भागने से पहले। कुछ अनुयायी अफ्रीका भाग गए, कुछ ने रहने का जोखिम उठाना पसंद किया
मक्का में - उड़ान उनके लिए बहुत खतरनाक थी। और फिर गैर-मुस्लिम थे। अंतिम
इस कविता में वाक्य बाद के दो भागों में से एक से संबंधित है - लेकिन कौन सा? बघवी,
ज़माख़शरी, रज़ी और अन्य का मतलब यहाँ कुरान गैर-मुसलमानों के बारे में बात करता है। इब्न कथिरो
और दूसरों का मतलब है कि यहां मुसलमानों का मतलब मक्का में रहना पसंद करते हैं। बस उठाओ
आपकी पसंद, क्योंकि कोई नहीं जानता कि क्या सही है। एक स्पष्ट पाठ गलत समझना संभव नहीं है?

+184 16/69 (YA2099): "(मधुमक्खियां*) कुशलता से अपने विशाल पथ ("धुलुलन") को ढूंढती हैं।
भगवान (अल्लाह*) - - -।" लेकिन जैसा कि अरब शब्द के कम से कम दो अर्थ हैं, सही हो सकता है a
"उनमें नम्रता और आज्ञाकारिता के विचार" के संदर्भ में। आप क्या पसंद करेंगे?

१८५ १६/७७ (ए८८ में २००८ संस्करण ए९०): "अल्लाह के लिए स्वर्ग का रहस्य है (बहुवचन)
और गलत*) और पृथ्वी, और समय की दशा (न्याय का) - - -।" लेकिन क्या यह है
अरब शब्द "ग़ैब" का वास्तव में क्या अर्थ है? शाब्दिक अर्थ "छिपी हुई वास्तविकता" है। क्या यह बस
मतलब: "और अल्लाह (अकेला) आकाशों की छिपी वास्तविकता का ज्ञान है और
धरती"? - या क्या यह स्वयं अल्लाह को एक छिपी हुई वास्तविकता के रूप में संदर्भित करता है? - या क्या? कोई नहीं जानता।

१८६ १६/८० (ए९१- २००८ के संस्करण ए९३ में): "--- और (अल्लाह*) तुम्हारे लिए, की खाल से बना है
पशु, (तम्बू) तुम्हारे लिए आवास।" लेकिन अरब तंबू खाल से नहीं बने होते - वे बुने जाते हैं।
ऐसा कैसे? (वास्तव में यह एक अजीब बात है, क्योंकि यहां खलीफा उस्मान अच्छी तरह जानते थे कि
तंबू बुने हुए थे - क्या अर्थ कुछ अलग है? - या यह ऊन है जो है
इस बहुत स्पष्ट और स्पष्ट तरीके से वर्णित है - भले ही ऊन का उल्लेख बाद में किया गया हो
कविता, और इस प्रकार इस व्याख्या को प्रतिबंधित करना चाहिए? एक पहेली।

१८७ १६/८१ (ए९५ - २००८ संस्करण ए९८ में): "उसने (अल्लाह*) ने तुम्हें - - - रक्षा के लिए मेल के कोट बनाए।
आप अपनी (आपसी) हिंसा से।" लेकिन अरब शब्द "सरबील" का सीधा अर्थ है "कपड़े" या इन
एक व्यापक अर्थ "आवरण"। इसका सीधा सा मतलब किसी भी तरह के कपड़े या कवरिंग की रक्षा करना हो सकता है
आप किसी चीज से। किसी भी भगवान ने मेल के कोट के लिए (अरब) शब्द का इस्तेमाल किया था अगर वह ऐसा था
मतलब और स्पष्ट भाषा का इस्तेमाल किया।

१८८ १६/११०ए (वाईए२१४७): "उन लोगों के लिए जो परीक्षणों और उत्पीड़न के बाद अपना घर छोड़ देते हैं - और उसके बाद विश्वास के लिए प्रयास करें और लड़ें और धैर्यपूर्वक - - - -"। खैर, कौन हैं इसमें "वे"? पगान जो मुसलमान बन गए? या किसको? मुसलमान अनुमान लगाते हैं, जैसा कि पाठ नहीं है स्पष्ट। (नीचे 16/110 भी देखें)।

१८९ १६/११० (वाईए२१४७): "उन लोगों के लिए जो परीक्षणों और उत्पीड़न के बाद अपना घर छोड़ देते हैं - और उसके बाद विश्वास के लिए प्रयास करें और लड़ें और धैर्यपूर्वक - - - -"। (16/110a को भी देखें के ऊपर)। लेकिन हो सकता है कि केंद्रीय शब्द में गलत स्वरों का इस्तेमाल किया गया हो (याद रखें; पुराने में) अरब वर्णमाला में स्वरों का अनुमान लगाना होता है) और यह अरब शब्द "फ्यूटिनु" नहीं है, जिसका अर्थ है, लेकिन "फतनु"। फिर अर्थ बदल जाता है: "- - - परीक्षण और उत्पीड़न (पर .) के बाद मुसलमान" - कमोबेश 180 डिग्री विपरीत। यह अकेला ऐसा स्थान नहीं है जहां कुरान - भाषा को गलत समझने के लिए एक अच्छी और स्पष्ट और असंभव।

१९० १७/५२ (वाईए२२३६): क्या यह कविता पिछली कविता में संशयवादियों के उत्तर का हिस्सा है? या क्या यह मुसलमानों के लिए एक अलग, गर्व का बयान है। क्या पता?

00e 17/59 (A70): "और हम (अल्लाह*) निशानियाँ भेजने से परहेज करते हैं, केवल इसलिए कि के पुरुष पिछली पीढ़ियों ने उन्हें झूठा माना - - -।" **यह कुरान में उन जगहों में से एक है जहां मुहम्मद जानता था कि वह झूठ बोल रहा है - चमत्कारों का प्रभाव होता है** (देखें एफ। पूर्व। फिरौन के जादूगर)। लेकिन असद के नोट और स्पष्टीकरण में एक दिलचस्प टिप्पणी है: "**उनका (मुहम्मद का*) केवल चमत्कार था और कुरान ही है"। यह मुसलमानों के बीच एक स्वीकृत तथ्य है विद्वानों और इस्लामी धार्मिक नेताओं। और वे वही जारी रखते हैं और (मेड अप) के बारे में उनकी मंडलियों को बताना जारी रखें मुहम्मद से जुड़े चमत्कार जो हदीस बताते हैं - और हदीस संग्रह में कहीं भी आपको चेतावनी नहीं मिलती है कि "कुरान साबित करता है कि ये चमत्कार बनाए गए हैं" दंतकथाएं।** एक ईमानदार धर्म? ईमानदार "पुजारी" ईमानदार प्रोफेसर? (इनमें से हैं कारण क्यों इस्लामी साहित्य पर भरोसा करना असंभव है - आप हर समय जानते हैं कि आपको करना है जानकारी का उपयोग करने से पहले "तथ्यों" की जांच करें (या गलत सूचना या इच्छाधारी सोच)।

१९१ १७/६० (वाईए २२४९): "हमने (अल्लाह*) ने तुम्हें (मुहम्मद*) वह दर्शन दिया जो हमने तुम्हें दिखाया - - -।" इस्लाम के लिए एक पहेली: कौन सी दृष्टि? स्वर्ग के लिए बड़ा? या इनमें से एक मई अन्य दावे? जानना संभव नहीं है। उ. युसूफ अली ने इस पर एक दिलचस्प टिप्पणी की है बिंदु: कि "ऐसे दर्शन चमत्कार हैं, और अविश्वासियों के लिए ठोकर बन जाते हैं"। क्या वह भूल गए कि कुरान बार-बार की कुल कमी को दूर करने की कोशिश करता है मुहम्मद से जुड़े चमत्कार, उस चमत्कार का किसी भी तरह कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा? पर वह है सही - चमत्कारों का एक बड़ा प्रभाव था यदि एक के रूप में ज्यादा हो। वह चमत्कारों की कमी को दूर करना, उन जगहों में से एक है जहां एक बुद्धिमान व्यक्ति पसंद करता है मुहम्मद जानता था कि वह हर बार झूठ बोल रहा था। (लेकिन तब अल-तकिया ठीक है)।

+192 17/71 (YA2266): "एक दिन हम (अल्लाह) सभी मनुष्यों को उनके साथ बुलाएंगे (संबंधित) इमाम - - -।" एक बार फिर एक अरब शब्द - "इमाम" - एक निश्चित अर्थ के बिना, जैसे इसके कई अर्थ हैं। इस मामले में कम से कम इसका मतलब यह हो सकता है: "- - - प्रत्येक व्यक्ति या समूह दिखाई देगा अपने नेता के साथ। " या: "- - - - इमाम = उनका रहस्योद्घाटन = कुरान"। या: "- - - इमाम is कर्मों के अभिलेख की पुस्तक (कोणों* द्वारा बनाई गई)।" बस अधिक अनुमान।

१९३ १७/८० (ए९८): "कहो: 'हे मेरे रब (अल्लाह*)! मुझे सत्य और सम्मान के द्वार से प्रवेश करने दो, और इसी प्रकार सत्य और सम्मान के द्वार से मेरा निकास; और मुझे अपनी उपस्थिति से अनुदान a सहायता करने का अधिकार (मुझे)।" यह एक गूढ़ है। ऐसा लगता है कि इस्लाम वास्तव में इसका अर्थ नहीं समझता है। 2002 से एम। असद (स्वीडिश से अनुवादित): "भगवान (अल्लाह)! मुझे मेरी कब्र में जाने दो

एक सच्चे और ईमानदार आस्तिक के रूप में और मुझे एक सच्चे और ईमानदार आस्तिक के रूप में इससे उठने दो, और दे दो मुझे अपनी शक्ति से विजयी होने के लिए। " और वह किताब कहती है कि शाब्दिक अर्थ (स्वीडिश से अनुवादित) है: "मेरा प्रवेश सत्य और मेरे बाहर निकलने के संकेत में हो" सत्य के चिन्ह में हो - - -।" अंग्रेजी में एम. असद (2008): "(हे मेरे पालनहार (अल्लाह*)! कारण

मुझे (जो कुछ भी मैं कर सकता हूं) सच्चे और सच्चे तरीके से प्रवेश करने के लिए, और मुझे छोड़ने के लिए (इसे) सच्चे और सच्चे तरीके से, और मुझे अपनी कृपा से, शक्ति प्रदान करने वाला प्रदान करें।" यह नया संस्करण ने इस कविता से संबंधित सभी टिप्पणियों को छोड़ दिया है जो पुराने संस्करणों में थी। नए संस्करण के लिए बहुत गूढ़? कम से कम यह तो तय है कि दावों का १००% यकीन नहीं है कुरान में पाठ कितना स्पष्ट और समझने में आसान है, इसके बारे में।

१९४ १७/१०४ (वाईए२३१४): "- - - चेतावनियों का दूसरा (यहूदियों के लिए*) - - -।" यहूदियों ने उनका इतिहास इतना विकृत था कि किसी को समझ ही नहीं आ रहा था कि इसका क्या मतलब है। एक अनुमान - लेकिन यह केवल शिक्षित अनुमान है। यहां तक कि कयामत के दिन को भी चेतावनियों में से एक के रूप में प्रस्तावित किया गया है हालांकि वाक्य भूतकाल में है। स्पष्ट भाषा?

१९५ १८/४-५ (ए२): "इसके अलावा, वह (अल्लाह *) उन (भी) को चेतावनी दे सकता है जो कहते हैं, 'अल्लाह के पास है एक पुत्र उत्पन्न हुआ': उन्हें ऐसी किसी बात का ज्ञान न था, और न उनके बाप-दादा को पता था।" लेकिन "बिही" में सर्वनाम "हाय" - क्या यह "अल्लाह ने एक बेटा पैदा किया है" या "अल्लाह" को इंगित करता है? आखिर में "कुरान के संदेश" के अनुसार यहाँ अर्थ का मामला करें (जो इस बात पर भी जोर देता है कि यह सही होना चाहिए, भले ही ऊपर वाला सामान्य है) यह है: "'अल्लाह ने ले लिया है' खुद एक बेटा'। उनके पास उसका (अल्लाह*) कुछ भी नहीं है।" 2 विकल्प - जिसे चुना जो आपको सबसे अच्छा लगता है। और; ये रूपांतर अरब पाठ में भी प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के रूप में हैं एक से अधिक अर्थ हैं/हैं।

+196 18/9 (YA2336): "- - - और शिलालेख ("रकीम") - - -।" अरब "रकीम" का अर्थ है शिलालेख लेकिन कुछ मुस्लिम विद्वानों के अनुसार यह कुत्ते का नाम भी हो सकता है। NS पुस्तक निर्दिष्ट नहीं करती है।

+197 18/21 (ए 31 - 2008 संस्करण ए 30 में): "आइए हम (लोग *) निश्चित रूप से पूजा की जगह बनाएं उनके ऊपर ("7 स्लीपर"*)"। या अधिक सामान्य अनुवाद सही है? - कि उन्हें चाहिए गुफा को बंद करने के लिए एक दीवार का निर्माण। क्या पता?

१९८ १८/५० (ए५३ - २००८ में छोड़ा गया): "देखो, हम (अल्लाह*) ने स्वर्गदूतों से कहा, 'नमस्कार करो आदम': इब्लीस को छोड़कर वे झुक गए। वह जिन्नों में से एक था - - -।" लेकिन यहाँ एक स्पष्ट है गलती - या अधिक संभावना; A. युसूफ अली के धर्म और अल-तकिया ने शायद उसका दमन किया हो ईमानदारी: यहाँ मूल अरब पाठ यह नहीं कहता कि वह एक जिन्न था: यह कुछ ऐसा कहता है (स्वीडिश से अनुवादित): "वह (इब्लिस *) अदृश्य प्राणियों की भीड़ से संबंधित था"। NS यहाँ पाठ ईमानदारी से और स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि वह शैतान बनने से पहले एक स्वर्गदूत था। पर दूसरी ओर कुरान अन्य स्थानों पर बताता है कि वह आग से बनाया गया था, जिसका अर्थ है कि वह इस पुस्तक के अनुसार वास्तव में एक जिन्न था। यह एक और जगह है जहाँ मुस्लिम विद्वान सहमत हैं कि कुरान में पाठ गलत है (हालांकि वे इसे स्पष्ट शब्दों में कभी नहीं कहते हैं) जैसा कि यहां है सबसे स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि इब्लीस एक फरिश्ता था।

+१९९ १८/५५ (ए६१): "- - - या उनके सामने क्रोध लाया जाए?" लेकिन अरब शब्द "कुबुलन" के 2 अर्थ हैं: "आमने-सामने" और "भविष्य में"। वैकल्पिक अर्थ तो है कुछ इस तरह: "- - - या (परम) दुख उन्हें (पापियों*) में पड़ना चाहिए इसके बाद।" इसके बारे में कम से कम कहने के लिए: किसी चेहरे से मिलने के बीच एक निश्चित अंतर है सामना करने के लिए - जिसका सबसे ऊपर अंतर्निहित अर्थ तेजी से है - और कभी-कभी उससे मिलने के लिए भविष्य या अगले जन्म में। और ये संस्करण निश्चित रूप से प्रासंगिक के रूप में अरब पाठ में भी हैं शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं/हैं।

२०० १८/५८ (वाईए २४०२): "लेकिन उनके (गैर-मुस्लिम*) का अपना नियत समय है, जिसके आगे उन्हें कोई शरण नहीं मिलेगी।" लेकिन अरब का अर्थ "मिन दूनी ही" इंगित नहीं कर सकता है समय, लेकिन कविता की शुरुआत में "अपने भगवान" के लिए। तब आपको अर्थ मिलता है: "- - - और उन्हें अल्लाह के सिवा कोई ठिकाना नहीं मिलेगा।" वही अरब शब्द - अलग अर्थ। स्पष्ट भाषा: हिन्दी?

00f 18/84 (A84 - 2008 संस्करण A85 में): "जब तक, जब तक वह (धुएल क्वार्नेयन/अलेक्जेंडर द महान*) सूर्य के अस्त होने पर पहुँचे, तो उन्होंने उसे गंदे पानी के झरने में डूबा हुआ पाया"। इस मामले में A.यूसुफ अली - ज्यादातर की तरह - का सही अनुवाद है। अरब शब्द "ऐन" का सामान्य अर्थ है a वसंत। मुसलमानों में यह दावा करने की प्रवृत्ति है कि "कई भाषाशास्त्री" यह भी कहते हैं कि इसका अर्थ हो सकता है "पानी की प्रचुरता", "पानी का एक बड़ा शरीर" या इसी तरह का। यह भले ही उसने देखा था यहां तक कि एक धुंधला प्रशांत महासागर, यह सूर्य के वास्तविक आकार की तुलना में केवल एक चाय-चम्मच था - बहुत दूर, बहुत दूर। असली सूरज का उल्लेख नहीं है, बहुत दूर बहुत गर्म है। तब वे -

शब्द "मर्की" को "भूलना" (कोई गन्दा महासागर मौजूद नहीं है और शायद ही कोई गन्दा वास्तव में बड़ा हो)
झील) - खुशी-खुशी समझाते हैं कि उसने समुद्र में सूर्य का प्रतिबिंब देखा होगा या
सागर, एक ऐसा नजारा जिसे सिकंदर ने पहले सैकड़ों बार देखा था और कभी भी गलती नहीं की थी
वह कुरान के अनुसार ढूंढ रहा था। जब धार्मिक लोगों को इनमें से किसी एक को चुनना हो
सत्य या वास्तविकता और धार्मिक "सत्य", सत्य और वास्तविकता दोनों एक गीत गाते हुए पश्चिम की ओर चल सकते हैं।
यहाँ पाठ स्पष्ट है - **लेकिन मुसलमान स्पष्ट से भागने के लिए अन्य अर्थ निकालते हैं**
कुरान में गलती। यह किताब में एकमात्र जगह नहीं है।

201 19/9 (YA2462): "उन्होंने कहा - - -।" किसने कहा? - देवदूत या जकर्याह? किताब अस्पष्ट है
उस बिंदु पर।

00g 19/30-33 (A24) - 2008 संस्करण A23 में: ऊपर 18/84 जैसा ही मामला: बेबी जीसस के रूप में
असंभव रूप से एक नबी हो सकता है, यह इस्लाम के अनुसार भी। अन्य होना चाहिए
स्पष्टीकरण, मुस्लिम विद्वानों के अनुसार।

२०२ १९/७१ए (ए५६ - २००८ संस्करण ए५५ में): "आप में से कोई नहीं बल्कि इसे पार करेगा (नरक*) - - -।"
"आप" शब्द किससे संबंधित है? इस्लाम नहीं जानता। या तो सभी पापी या सभी मनुष्य सबसे अधिक
संभावना है, लेकिन पाठ किस बारे में स्पष्ट नहीं है। पहले की तरह अक्सर।

+203 19/71b (YA2518): "आप में से कोई नहीं, लेकिन इसके ऊपर से गुजरेगा (नरक *) - - -।" 3 संभव
व्याख्याएं: ए: प्रत्येक आत्मा (व्यक्ति? - वे इस्लाम के अनुसार मांस में पुनर्जीवित होते हैं)
आग के ऊपर से / से गुजरना चाहिए। या बी: संभवतः यह केवल दुष्टों को संदर्भित करता है यदि
शब्द "आप" केवल उनके लिए निर्देशित है। या सी: हो सकता है कि यह पुल सीरत को संदर्भित करता हो (उल्लेख नहीं किया गया
कुरान में नाम से) नर्क के ऊपर और उस पार मार्च। यह किताब अस्पष्ट है।

+204 20/15 (YA2546): "मेरा (अल्लाह का) डिजाइन इसे (कयामत के दिन*) को छिपा कर रखना है - - -।"
लेकिन अरब शब्द "उखफी" का अर्थ "छिपा हुआ" या "प्रकट" हो सकता है। तब आपको विकल्प मिलता है
अर्थ: "मेरा डिज़ाइन इसे प्रकट करना है"। आपको जो पसंद है उसे चुनें।

२०५ २०/६९ (YA२५९१): "और जादूगर जहाँ जाता है वहाँ नहीं पनपता, (कोई बात नहीं)"। एक अस्पष्ट
इस्लामी विद्वानों के अनुसार कम से कम 2 संभावित अर्थों के साथ वाक्य: ए: झूठ और
चालबाजी कभी-कभी जीत सकती है, लेकिन अक्सर नहीं। या बी: छल और जादू एक बुराई के लिए आना चाहिए
समाप्त।

२०६ २०/९६ (ए ८२): "उसने (सामरी*) ने उत्तर दिया: 'मैंने वह देखा जो उन्होंने नहीं देखा: इसलिए मैंने मुट्ठी भर (का) लिया।
धूल) रसूल के पदचिह्न से, और इसे (बछड़े में) फेंक दिया - - -।" लेकिन क्या यह शाब्दिक है
अनुवाद सही? मुस्लिम विद्वान इसे अधिक लाक्षणिक रूप से समझते हैं। एफ. पूर्व. "NS

१०२३

पेज १०२४

कुरान का संदेश" (स्वीडिश 2006): "- - - (मैं), इसलिए, कुछ हद तक ले लिया क्या
मैसेन्जर ने पीछे छोड़ कर फेंक दिया था - - -।" और 2008 का अंग्रेजी संस्करण (ऐसा लगता है
हठधर्मिता की दिशा में छोटे "सुधार" किए हैं और थोड़ा कम ईमानदार हैं
मुहम्मद असद स्वयं, भले ही वह भी, कभी-कभी ईमानदार से अधिक हठधर्मी होते हैं): "--
- इसलिए मैंने कुछ प्रेरितों की शिक्षाओं को लिया और इसे दूर कर दिया। ” सच क्या है
व्याख्या? ऐसा लगता है कि किसी को यह सुनिश्चित करने के लिए अरब सीखना होगा - ईमानदारी हमेशा एक का हिस्सा नहीं होती है
धर्म। विशेष रूप से 2006 और 2008 के "The ." के संस्करण के बीच के पाठ में अंतर
कुरान का संदेश" मुसलमानों और इस्लाम के बारे में कुछ बता सकता है।

00h 21/4 (A5): स्पष्टीकरण में बदलाव: 2006 के स्वीडिश संस्करण में "द मैसेज ऑफ़ द
कुरान" बताता है कि अरब शब्द "गुल" की वर्तनी "पढ़ने के तरीके" = की विविधता में है
कुरानिक ग्रंथ - वारश के बाद, उत्तरी अफ्रीका के अधिकांश हिस्सों में उपयोग किया जाता है, जबकि हाफ के बाद की विविधता में,
शेष मुस्लिम क्षेत्र में उपयोग किया जाता है, इसे "कला" लिखा जाता है (मूल पुरानी पांडुलिपियों में था
सिर्फ ql लिखा है, इसलिए दोनों संभव हैं)। पहले का अर्थ है "कहना" की अनिवार्यता, दूसरी "हे"
(अल्लाह) ने कहा।" 2 किस्में। लेकिन यहां मुख्य बात यह मामूली किस्म नहीं है। **मुख्य बात यह**
कि "कुरान का संदेश" यहाँ पुष्टि करता है कि पुस्तक की किस्में हैं -
कुछ ऐसा जो कोई भी मुस्लिम विद्वान जानता है, लेकिन वही आम लोगों को वहां कभी नहीं बताया जाता है
एक से अधिक किस्म है या थी। केवल २ ही आज दैनिक उपयोग में बचे हैं - २ उल्लेखित - लेकिन
एक बार 14 स्वीकृत किस्में थीं (और उससे पहले कई और)। खैर, एक और है -
और अशुभ - दिलचस्प तथ्य के रूप में: यह अल्पज्ञात, लेकिन सबसे आवश्यक, तथ्य "गायब हो गया"
2008 के संस्करण से। यह कल्पना कि केवल एक कुरान है और हमेशा थी, अधिक है
ऐसा लगता है कि इस्लाम में ईमानदारी से ज्यादा जरूरी है। लेकिन अगर कोई धर्म सत्य है, तो यह आवश्यक नहीं होना चाहिए
इसके बारे में झूठ - आईटी-नारा याद रखें RIRO: रबिश इन = रबिश आउट।

२०७ २१/१० (अ१३): "हम (अल्लाह*) ने तुम्हारे लिए (ऐ आदमियों!) एक किताब उतारी है जिसमें एक संदेश है तुंहारे लिए"। लेकिन अरब शब्द "धिक्र" के कई अर्थ हैं। एफ. पूर्व. में "द मेसेज ऑफ़ द कुरान": "(हे पुरुषों!) अब हम (अल्लाह*) ने तुम्हें ऊपर से एक ईश्वरीय आदेश दिया है जिसमें वह सब शामिल है जिसे आपको ध्यान में रखना चाहिए"। कथन है कि कुरान में सभी शामिल हैं आपको जिस ज्ञान की आवश्यकता है वह अर्थ में एक बड़ा और दिलचस्प अंतर देता है। और वहाँ है अधिक संभावित अर्थ। हां, बहुत स्पष्ट पाठ वाली पुस्तक, समझने में आसान और नहीं गलत समझना संभव है। वह जानकारी जो आपको आवश्यक सभी ज्ञान में मिलनी है कुरान भी अपने आप में दिलचस्प है। जब आप इस्लाम को याद करते हैं तो एक अतिरिक्त सर्वव्यापी अर्थ इतिहास के माध्यम से सभी "गैर-इस्लामी विचारों" का दमन।

२०८ २१/१९ (ए२२ - २००८ संस्करण ए२३ में): "- - - यहां तक कि जो उसकी (बहुत) उपस्थिति में हैं, वे भी हैं उसकी सेवा करने में बहुत गर्व नहीं है - - -"। क्या इसका मतलब केवल कोण, या समर्पित विश्वासी भी हैं? इस्लाम नहीं जानता। लेकिन कुरान में पाठ स्पष्ट है, वे कहते हैं।

२०९ २१/५१ (ए५५ - २००८ संस्करण ए५९ में, लेकिन कुछ को छोड़ दिया गया है): "हमने (अल्लाह*) दिया इब्राहीम पर पहिले से उसके आचरण की शुद्धता - - -।" लेकिन अरब अभिव्यक्ति "मिन काबल" कि यहाँ "पूर्वकाल" का अनुवाद किया गया है, जिसका अर्थ "पहले से ही युवा वर्षों में" भी हो सकता है। " का संदेश कुरान", २००६ में (स्वीडिश से अनुवादित) है: "पहले से ही उनकी युवावस्था में हमने (अल्लाह*) दिया इब्राहीम - - -।" दिलचस्प बात यह है कि जिन्होंने उनके नाम पर 2008 के संस्करण को संशोधित किया है (मुहम्मद असद जहाँ तक हम मृत को जानते हैं - पुस्तक कम से कम बाद में नहीं है १९८०), ने अपनी कुछ जानकारी को छोड़ दिया है और पाठ को इसमें बदल दिया है: "और, वास्तव में, लंबा इससे पहले (मूसा के समय) हमने इब्राहीम के लिए प्रतिज्ञा की - - -।" के बारे में भी जानकारी वैकल्पिक अर्थ 2008 के संस्करण में छोड़े गए हैं। पाठ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए? - या बाहर ईमानदारी?

२१० २१/६४ (ए५८ - २००८ संस्करण ए६२ में): "निश्चित रूप से हम (अब्राहम के समकालीन*) में हैं गलत"। लेकिन क्योंकि उन्होंने अपने भगवान के चित्रों की रक्षा नहीं की या इसलिए कि उन्होंने गलत किया था इब्राहीम पर शक? इस्लाम नहीं जानता (इस बात को 2008 में छोड़ दिया गया है)।

२११ २१/६९ (ए६१ - २००८ संस्करण ए६४ में): "हम (अल्लाह*) ने कहा, 'हे आग! आप शांत रहें, और (ए .) के साधन) अब्राहम के लिए सुरक्षा"। लेकिन कुरान में कहीं भी वास्तव में ऐसा नहीं कहा गया है कि इब्राहीम आग में झोंक दिया गया था, तो आज भी इस्लाम खो गया है कि क्या विश्वास करें - कुछ कहते हैं हाँ और कुछ नहीं। स्पष्ट भाषा?

२१२ २१/१०५ (ए१०० - २००८ संस्करण ए१०१ में): "इससे पहले हम (अल्लाह*) ने भजन संहिता में लिखा था, संदेश के बाद (मूसा को दिया गया) - - -।" लेकिन अरब शब्द "ज़बूर" का अर्थ केवल "शास्त्र" है। या "पुस्तक"। इसलिए एफ. भूतपूर्व। इस तरह की समझ: "और, वास्तव में, (मनुष्य) को प्रोत्साहित करने के बाद, हमने (अल्लाह*) दैवीय ज्ञान की सभी पुस्तकों में लिखा है - - -।" काफी अलग - से अरबी पाठ को समझने में आसान। और ये रूपांतर हमेशा की तरह अरब पाठ में भी हैं, जैसे प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के एक से अधिक अर्थ हैं/हैं।

+२१३ २२/१५ (ए१५, वाईए २७८६): "यदि कोई सोचता है कि अल्लाह इसमें उसकी (उसके रसूल) मदद नहीं करेगा। दुनिया और उसके बाद, उसे एक रस्सी को छत तक फैलाने दो और (खुद को) काट दो (लटकाओ) वह स्वयं*) - - -।" लेकिन "छत" के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ "स्वर्ग" भी हो सकता है, और फिर अरब "फाल-यमदुद द्वि-सलाबिन इल्स 'समा थुम्मा ल'यक़्ता" का अनुवाद किया जा सकता है: "- - - उसे जाने दो किसी भी (अन्य) माध्यम से स्वर्ग तक पहुंचें (एक रस्सी? *) और (इस प्रकार कोशिश करें) आगे बढ़ें - - -।" बिलकुल अलग अर्थ - कुरान की स्पष्ट भाषा से। और ये वेरिएंट भी हैं अरब पाठ में, प्रासंगिक शब्द के रूप में एक से अधिक अर्थ हैं/हैं।

२१४ २२/१६ (ए१७): "- - - अल्लाह जिसे चाहता है मार्गदर्शन करता है।" या अर्थ है: "- - - के लिए (इस प्रकार यह .) यह है कि अल्लाह उसे मार्गदर्शन करता है जो चाहता है (मार्गदर्शन के लिए)"। बहुत फर्क है - पहले मामले में अल्लाह निर्णय करता है, दूसरे मामले में यह वह व्यक्ति है जो निर्णय लेता है (यदि स्वतंत्र इच्छा मौजूद है)। दोनों एक ही स्पष्ट पाठ जो समझने में आसान हो। और जैसा कि उल्लेख किया गया है ये रूप अरब पाठ में भी हैं, जैसा कि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के एक से अधिक अर्थ हैं / हैं।

२१५ २२/२७ (ए३७): "और पुरुषों के बीच तीर्थयात्रा की घोषणा - - -।" जैसे अल्लाह बोल रहा था के बारे में - नहीं, बल्कि के बारे में - इब्राहीम पिछली कविता में, कई मुस्लिम विद्वान ऐसा सोचते हैं

इब्राहीम से कहा गया था। लेकिन अब्राहम को संस्थागत रूप में मानने का कोई कारण नहीं है
इब्राहीम के लिए मक्का की तीर्थयात्रा - न तो बाइबिल में और न ही कुरान में कोई संकेत है
उसके बारे में। इतने सारे मुसलमान - f. भूतपूर्व। अल-हसन अल-बसरी - विश्वास करें कि शब्द के लिए थे
मुहम्मद. विश्वास करें कि आपको क्या पसंद है - पाठ दोनों अर्थों के लिए पर्याप्त स्पष्ट है।

२१६ २२/२९ (ए ४२): "फिर उन्हें (तीर्थयात्रियों *) उनके लिए निर्धारित संस्कारों को पूरा करने दें,
अपनी मन्नतें पूरी करें, और (फिर से) प्राचीन घर (काबा*) की परिक्रमा करें।" यह क्या है
ए यूसुफ अली का मानना है कि अरब "थुम्मा ल-यक़्दु तफ़ताहम" का अर्थ है - संस्कारों को पूरा करना।
दूसरे लोग इस तरह सोचते हैं: "- - - उन्हें उन प्रतिज्ञाओं को पूरा करने दें जो उन्होंने (हो सकता है) की हैं - - -।" नहीं
यहां तक कि मुसलमानों के लिए इतना केंद्रीय विषय है कि तीर्थयात्रा के मध्य भाग के दौरान क्या करना है,
कुरान में स्पष्ट पाठ स्पष्ट करता है। क्या कोई भगवान अपने भाषण में इतना नासमझ था
आवश्यक विषय?

+२१७ २२/६५ (ए८० वाईए२८४७): एक ही अरब शब्दों के दो अनुवाद:

1. ए यूसुफ अली: "वह (अल्लाह *) आकाश को रोकता है
(बारिश) गिरने से - - -।"

2. एम। असद, "सही" 2008: "- - - और (कि यह .)
वह है जो) आकाशीय पिंडों को धारण करता है (उनके . में)
कक्षाएँ), ताकि वे पृथ्वी पर न गिरें - -
-।" इनमें से एक की तुलना में बहुत बेहतर लगता है
अन्य - और धर्म में ईमानदारी नहीं है
बहुत मायने रखता है। कम से कम सभी धर्मों में तो नहीं।

इस अरब शब्द "समा" का अर्थ हो सकता है: ए: "कुछ ऊंचा"। बी: "एक छत, एक छत"। सी: "आकाश,
स्वर्ग की छत्र" ("ब्रह्मांड" * नहीं)। डी: "बादल या बारिश"। जिन्होंने संशोधित किया है
2008 के संस्करण ने वास्तव में अच्छा काम किया है। लेकिन क्या यह एक ईमानदार काम है? कम से कम साफ़ करें?

+२१८ २३/१ (वाईए२८६५): "विश्वासियों को (अंततः) जीतना चाहिए - - -।" या शायद "- - -
दु:खों और सब बुराइयों से मुक्ति पाओ।" अरब शब्द "अफलाहा" कम से कम 2 . दे सकता है
अर्थ। स्पष्ट भाषा?

२१९ २३/१७ (वाईए२८७६): हम बस उद्धरण देते हैं: "थराईक, पथ, सड़कें, कक्षाएँ, या दृश्य में पथ
स्वर्ग। ये सात हमारी आंखों (??*) पर स्पष्ट रूप से अंकित हैं, उस विशाल स्थान में जो हम देखते हैं
हमारे आसपास। इन गतियों के लिए किसी भी प्रशंसनीय सिद्धांत को बनाने के लिए हमें खगोल विज्ञान में जाना चाहिए। लेकिन उनका
सरलतम अवलोकन हमें ब्रह्मांड में सुंदरता, व्यवस्था और भव्यता का एक उत्कृष्ट दृश्य देता है।
अगले खंड में दिया गया आश्वासन, कि अल्लाह हमारी और उसकी सारी सृष्टि की परवाह करता है, पुकारता है
अल्लाह की भलाई पर ध्यान दें, जिसे आगे की आयतों में दिखाया गया है। " **बहुत सारा
बन्धन वाले सितारों के साथ 7 भौतिक आकाश के बारे में कुछ भी समझाने से बचने के लिए शब्द
सबसे निचले स्तर तक, जिसके बारे में कुरान वास्तव में बोल रहा है। यहां चीजें स्पष्ट हैं, लेकिन है
कुरान को स्पष्ट रूप से दूर करने के लिए अस्पष्ट बनाया और मौखिक ऊन में लपेटा गया
कई जगह बताता है।**

२२० २३/३२-४१ (ए१७): "और हम (अल्लाह*) ने उन्हें आपस में एक दूत भेजा - - -।"
"वे" कौन हैं और दूत कौन है? इस्लाम नहीं जानता। कुछ का अनुमान है कि यह हुड हो सकता है -
कभी-कभी कुरान में उल्लेख किया गया है। यह शायद मुहम्मद हो सकता है। या यह अस्पष्ट हो सकता है
सामान्य विवरण। स्पष्ट शब्द?

+२२१ २३/५५-५६ (ए३२): "क्या वे (लोग*) ऐसा सोचते हैं क्योंकि हमने उन्हें दिया है
धन और पुत्रों में बहुतायत, हम उन्हें हर अच्छे में जल्दी करेंगे?" एक और संभव
अरब पाठ का अनुवाद: "- - - हम (लेकिन चाहते हैं) उन्हें एक दूसरे के साथ काम करने के लिए प्रेरित करते हैं
(वे क्या मानते हैं) अच्छे काम?" 2 एक से बहुत अलग अर्थ और एक ही स्पष्ट (?)
अरब पाठ। और ये रूपांतर अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि वहां प्रासंगिक शब्द हैं/हैं
एक से अधिक अर्थ।

+२२२ २३//७७ (ए४७): "जब तक हम (अल्लाह*) उनके लिए एक ऐसा द्वार नहीं खोलते, जिससे कड़ी सजा मिलती है:
तो देखो, वे उस में मायूस होंगे।" बस उसी की एक वैकल्पिक समझ
स्पष्ट अरब भाषा: "- - - वे सभी आशाओं को निराश करेंगे।" जैसा कि आप कुरान में देखते हैं ग्रंथ इस प्रकार हैं

स्पष्ट और सीधा, फिर भी यहाँ और वहाँ दोहरे और कई अर्थ होंगे। है - यदि नहीं, तो चीजें संभव थीं

+223 23/112 (YA2948): "वह (अल्लाह*) कहेगा - - -"। यहाँ एक दिलचस्प छोटा - या बड़ा - है
विस्तार से जब आप सभी दावों के बारे में सोचते हैं कि वास्तव में मुहम्मद के शब्दों की तरह कैसे हैं
कुरान है: ए। यूसुफ अली सीधे 2 "पढ़ने के तरीकों" के बीच के अंतर को संदर्भित करता है। कोई है
हफ़्स संस्करण कुफ़ा के बाद, दूसरा बसरा के बाद है - इस्लाम अभिव्यक्ति का उपयोग करता है "के तरीके"
पढ़ना" ("क़िराह") और यह दिखावा करता है कि यह संस्करणों से कुछ अलग है, जो कि है
नहीं। इस्लाम सिर्फ इस तथ्य को दूर करने के लिए एक और शब्द का उपयोग करता है कि अस्तित्व और अस्तित्व अलग है

पुस्तक के संस्करण - एक बार 14 "कैननाइज्ड" वाले + कई अन्य थे। हम उद्धरण: "द
हाफ्स पढ़ना "काला", "वह कहेगा" है। यह कुफ़ा क़िराह का अनुसरण करता है। बसरा क़िराह
"कुल", "कहो" (अनिवार्य में) पढ़ता है।" यह अपने आप में एक छोटा सा विवरण है - हालांकि इससे कहीं अधिक
"अंतिम अल्पविराम के लिए सही" जैसा कि मुसलमान अक्सर दावा करते हैं - **लेकिन यह दस्तावेज करता है कि विभिन्न कुरान के संस्करण अभी भी मौजूद हैं और उपयोग किए जाते हैं।** (दरअसल दो जो आज दैनिक उपयोग में हैं,
अफ्रीका के कुछ हिस्सों में, विशेष रूप से उत्तरी अफ्रीका में, और दुनिया के बाकी हिस्सों में हाफ्स हैं।)

२२४ २४/३५ (ए५४): "अल्लाह जिसे चाहता है उसे अपने प्रकाश की ओर मार्गदर्शन करता है"। लेकिन अन्य (इंक।
ज़मखशरी) का अर्थ वही स्पष्ट और गलत नहीं है पाठ कहता है: "अल्लाह अपने प्रकाश की ओर ले जाता है"
वह जो चाहता है (निर्देशित होने के लिए) "। 180 डिग्री अलग अर्थ (पहले में अल्लाह तय करता है, में)
अन्य व्यक्ति) - दोनों "सही", क्योंकि पाठ को दोनों तरीकों से समझा जा सकता है। क्या कोई भगवान a . का उपयोग करेगा
भाषा इतनी लापरवाह और स्पष्ट रूप से समझने में मुश्किल? और ये वेरिएंट भी में हैं
अरबी पाठ, प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के रूप में एक से अधिक अर्थ हैं/हैं।

२२५ २४/४६ (ए६४): ठीक ऊपर २४/३५ की तरह।

२२६ २४/६० (ए८४): "ऐसी बुजुर्ग महिलाएं जो शादी की संभावना से परे हैं - - -।" एक बारीकियां
सटीक अर्थ से अलग: "- - - जो संभोग की इच्छा नहीं रखते (या आशा करते हैं) - - -
।" 2 बल्कि अलग-अलग अर्थ कम से कम औपचारिक रूप से?

+२२७ २४/६३ (वाईए३०४८): "मैसेंजर (मुहम्मद*) के सम्मनों को बीच में न समझें
आप में से एक के दूसरे को सम्मन की तरह: अल्लाह आप में से उन लोगों को जानता है जो फिसलते हैं
दूर किसी बहाने की शरण में - - -।" लेकिन पुरानी व्यंजन वर्णमाला 2 और भी देती है
संभावित रूप: "यह मत सोचो कि अल्लाह के पैगंबर की प्रार्थना आपके सामान्य की तरह है"
दूसरे से अनुरोध: पैगंबर की प्रार्थना गंभीर मामलों के बारे में होगी और स्वीकार की जाएगी
अल्लाह के द्वारा।" और: "पैगंबर को परिचित रूप से संबोधित न करें क्योंकि आप एक दूसरे को संबोधित करेंगे:
उसके लिए सम्मान की उचित शर्तों का उपयोग करें। " ये अर्थ बेतहाशा भिन्न होते हैं - लेकिन सभी सही हैं
सीए के अधूरे अरब वर्णमाला के अनुसार। 650 ई. में स्पष्ट और विशिष्ट भाषा
कुरान?

+२२८ २५/१ (वाईए:३०५४): "धन्य है वह (अल्लाह*) जिसने अपने लिए मानदंड उतारा है
नौकर - - -।" "यकुना" में सर्वनाम फुरकान (= मानदंड = का नाम) का उल्लेख कर सकता है
यह सूरह) या "अब्द" ("पवित्र पैगंबर" (मुहम्मद *))। आखिरी मामले में इसका मतलब होगा:
"- - - पवित्र पैगंबर को नीचे भेजा - - -"।

२२९ २५/३० (ए २३-२४): "वास्तव में मेरे (मुहम्मद के) लोगों ने इस कुरान को सिर्फ मूर्खता के लिए लिया
बकवास।" या (स्वीडिश से अनुवादित): "मेरे लोग इस कुरान को कुछ के रूप में देखते हैं
पुराना (जिसे दूर किया जा सकता है)।" मूर्खतापूर्ण बकवास और के बीच अंतर है
कुछ ऐसा जो शायद ठीक रहा हो, लेकिन अब पुराना हो चुका है (मुहम्मद की अधिकांश कहानियाँ
कुरान, पुरानी कहानियों से "उधार" और "समायोजित" किया गया था।)

२३० २५/३४ (YA३०९४): "- - - रास के साथी - - -।" "रास का अर्थ "एक पुराना" हो सकता है
कुआं" या "एक उथले पानी का गड्ढा" या "मृतकों के दफन" से जुड़ा हो या यह हो सकता है
किसी शहर या स्थान का नाम। इस्लाम एक नुकसान में है कि यहाँ के लोगों का क्या मतलब है - कुरान बस है
बहुत अस्पष्ट।

२३१ २५/५९: (ए४६ - २००८ संस्करण ए४७ में, लेकिन वैकल्पिक "गायब हो गया"): "- - - आप से पूछें (आदमी*),
फिर, उसके (अल्लाह*) किसी परिचित (ऐसी बातों से) के बारे में"। क्या यह "कोई" अल्लाह है? - या
मुहम्मद? - या कुरान? बहुत से मुसलमान सोचते हैं कि यह अल्लाह है, लेकिन यह केवल अनुमान लगा रहा है -
अन्य काफी संभव हैं। स्पष्ट पाठ?

पेज १०२८

२३२ २६/२० (YA३१४९): "मूसा ने कहा: 'मैंने इसे तब किया, जब मैं गलती से था।" 3 संभव निहितार्थ: "मैं इसे गुस्से में और जल्दबाजी में करने में गलत था," या "मैं गलत था" कानून को अपने हाथ में ले लिया, लेकिन पश्चाताप किया और अल्लाह से माफ़ी मांगी, "या" वह एक था उस समय जब मैं आपके प्रभाव में था, लेकिन तब से मैं एक बदला हुआ आदमी हूं, जैसा कि अल्लाह ने बुलाया है मुझे।" सटीक अर्थ अस्पष्ट।

२३३ २६/५७-५८ (ए३१ - २००८ के संस्करण में छोड़ी गई वैकल्पिक व्याख्या): "तो हम (अल्लाह*) उन्हें बगीचों, झरनों, खजानों और हर तरह के सम्मानजनक पदों से निकाल दिया - - -।" क्या यहीं मिस्रियों ने समय के साथ इस्राएलियों को लूटा है? - या अल्लाह सज़ा देता है मिस्रवासी बाद में? इस्लाम अभी भी इस अस्पष्ट बिंदु पर बहस कर रहा है।

+२३४ २६/५८-५९ (वाईए३१६९): "खजाना, और हर तरह का सम्मानजनक पद; इस प्रकार यह था, लेकिन हम (अल्लाह) ने बच्चों को बनाया है अगर इसराइल को ऐसी चीजों का वारिस है"। लेकिन वैकल्पिक इन दो छंदों का अर्थ है: श्लोक 58 "हम (फिरौन *) ने इस्राएलियों को देश से बेदखल कर दिया है। देश में सब कुछ अच्छा है, और उन्हें अपना दास बना लिया है"। श्लोक 59 (अल्लाह टिप्पणी): "गरीब" अज्ञानी आदमी (फ़िरौन*)! आप उन पर अत्याचार कर सकते हैं जो असहाय हैं, लेकिन हमारे पास (अल्लाह) है घोषित किया कि वे इन चीजों के वारिस होंगे"। जैसा कि कोई मूल भाषा में समझता है कुरान स्पष्ट, विशिष्ट और गलत समझने के लिए असंभव है (!)। 2 बहुत अलग अर्थ।

+२३५ २६/१२९ (ए५७): "और क्या आप जीने की आशा में अपने लिए अच्छी इमारतें प्राप्त करते हैं उसमें (हमेशा के लिए)?" - या: "- - - कि आप उन्हें बनाने के लिए अमर यश प्राप्त कर सकते हैं?" यह क्या किसी को अंदाजा है कि कुरान का वास्तव में यहां क्या मतलब है। स्पष्ट भाषण? और ये वेरिएंट - हमेशा की तरह - अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द में एक से अधिक हैं/हैं अर्थ।

२३६ २६/१३७ (ए५९ - २००८ के संस्करण ए६० में लेकिन वैकल्पिक स्पष्टीकरण को छोड़ दिया गया): "यह नहीं है" पूर्वजों की एक प्रथागत सेवा के अलावा "। पुराने मूर्तिपूजक इससे अपने धर्म की रक्षा करते हैं यह हमारे पूर्वजों का विश्वसनीय धर्म है (इब्न अब्बास, 'इकरीमा, क़तादाह)। या हो सकता है वस उल्टा? - कि उन्होंने मुसलमानों पर आरोप लगाया (इस मामले में प्रकल्पित भविष्यवक्ता) हुड) सिर्फ पुरानी बकवास बताने के लिए? - "यह जो आप हमें बताते हैं, पुराने की पुनरावृत्ति (है*) और पुराने विचार।"

२३७ २६/१७६ (YA3214): "- - - लकड़ी के साथी - - -"। वह कौन थे? एक और मदन के लोगों के लिए नाम? मदनियों के भीतर एक समूह? के पड़ोसी मद्यनिवासी? या कोई अन्य जनजाति या समूह? कुरान में अस्पष्ट।

२३८ २६/१८९ (ए७७ - २००८ के संस्करण ए७८ में): "फिर अंधेरे पर छाया की सजा उन्हें आकार दिया (मदयान के लोग, और वह एक महान दिन का दंड था।" क्या यह संदर्भित करता है? भौतिक अंधकार को? - लेकिन कुरान के अनुसार भूकंप से मद्यन नष्ट हो गया (७/९१), और भूकंप के साथ अंधेरा नहीं होता। या यह आध्यात्मिक को संदर्भित करता है अफसोस के कारण अंधेरा - लेकिन अगर हर कोई मर गया तो खेद महसूस करने के लिए कोई नहीं बचा था (ए .) तथ्य जिसका उल्लेख नहीं है)? इस्लाम उत्तर नहीं जानता - पाठ इसे स्पष्ट नहीं करता है।

एक और बात: "कुरान का संदेश" यहाँ उस तबाही की टिप्पणी करता है जिसने उन्हें मार डाला मदन लोगों और जुड़े हुए अंधेरे के बारे में कुरान में इस तरह से बताया: "यह हो सकता है" या तो भौतिक अंधकार का संदर्भ लें जो अक्सर ज्वालामुखी विस्फोट के साथ होता है और भूकंप (जो 7/91 में दिखाया गया है, मद्यन के लोगों को पछाड़ दिया) - - -"। यह नहीं है - दोहराना: नहीं - भूकंप से जुड़ा सच। यह असामान्य नहीं है यदि कोई ज्वालामुखी बहुत अधिक उड़ाता है राख है कि यह अंधेरा हो जाता है, लेकिन असामान्य है अगर यह केवल या मुख्य रूप से लावा उत्सर्जित करता है, और यह पूरी तरह से असत्य है भूकंप। बेईमानी या अल-ताकिया (वैध झूठ - यहाँ धर्म की रक्षा के लिए)।

पेज 1029

अगर हम ७/९१ की जाँच करते हैं, तो फुटनोट संख्या ७३ कहती है: "उस हर्रा की तरह जो एक बार बसा हुआ था
मद्यन से सटे थमूद जनजाति ज्वालामुखी विस्फोट के पर्याप्त प्रमाण दिखाती है
और भूकंप "। यह सब कुछ है जो ज्वालामुखी गतिविधि के बारे में कहा जाता है। मुख्य ज्वालामुखी
लगभग ४०० साल पहले बंद कर दिया गया था, लेकिन बाद में थोड़ी गतिविधि हुई है।

फिर यदि आप ७/९१ में जाते हैं, तो यह कहता है: "तब एक भूकंप ने उन पर हमला किया: और वे लेट गए
बेजान, अपने घरों में, ज़मीन पर।" ज्वालामुखी के बारे में एक शब्द भी नहीं।

उन्होंने भूकंप से शुरुआत की। लेकिन चूंकि भूकंप कभी भी १००% नहीं मारता (आमतौर पर अधिकतम १०% और
कम गुणवत्ता वाली ऊंची इमारतों को छोड़कर शायद ही कभी 30% से अधिक),
फुटनोट ने ज्वालामुखी विस्फोट की संभावना का संकेत दिया। फिर फुटनोट A78 से 26/189 . में
यह विकसित हुआ है "- - - ज्वालामुखी विस्फोट और भूकंप (जो, जैसा कि 7/91 में दिखाया गया है,
मद्यन के लोगों को पछाड़ दिया।) "।

**यह एक तरह की बेईमानी और एक तरह का बौद्धिक भ्रष्टाचार है जो दूर तक मिलता है
अक्सर इस्लामी धार्मिक साहित्य में, एक वैज्ञानिक पर होने का नाटक करने वाले साहित्य में शामिल
स्तर।**

अगला जीवन - यदि यह मौजूद है - लोगों को धोखा देने के लिए एक बहुत ही गंभीर विषय है। और अगर आपको करना है
लोगों को अपने धर्म की ओर आकर्षित करने के लिए धोखा देना या "अल-तकिया" या झूठ बोलना - या दबाव या धमकियों का इस्तेमाल करना, या
अपने सदस्यों को अंदर रहने के लिए, यह रुकने का समय है और यह सोचना शुरू करें कि आपके पास क्यों है
झूठ बोलना या धोखा देना या दबाव बनाना। ऐसे मामलों में संभावना अधिक होती है कि कुछ है
गंभीर रूप से गलत और धर्म सत्य नहीं है। एक सच्चा धर्म ईमानदार होने का जोखिम उठा सकता है, इसलिए यदि आप
धोखा देना या झूठ बोलना या दबाव बनाना, यह दर्शाता है कि किसी का उपयोग करना गलत है
अल्पकथन।

यदि आपका धर्म पूरी ईमानदारी को बर्दाश्त नहीं कर सकता है, तो यह एक स्पष्ट संकेत है कि यह सच नहीं है
धर्म। और यह अकेला लगभग इस बात का प्रमाण है कि आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं - यदि कोई है
अगला जीवन। (यदि नहीं, तो आप जिस तरह से आगे बढ़ रहे हैं, कोई फर्क नहीं पड़ता - सिवाय एक अच्छे के सस्ते तरीके के रूप में
आपके धार्मिक नेताओं के लिए सांसारिक जीवन।)

और एक अंतिम, लगभग उतना ही गंभीर तथ्य है: यदि लिखने वाले व्यक्ति - या पसंद करते हैं " का संदेश
कुरान" 2008, इसे संशोधित करना - ऐसे साहित्य बुद्धिमान हैं (और वे स्पष्ट रूप से हैं), वहां
ऐसा नहीं है कि वे स्वयं नहीं देखते कि वे सत्य के साथ छेड़छाड़ कर रहे हैं। वे यह कर रहे हैं
ठंडे और मनोवैज्ञानिक रूप से सुनियोजित तरीके से - भोले और भोले-भाले लोगों को लुभाने और धोखा देने के लिए कुशल
कम पढ़े-लिखे और जो पहले से विश्वास करना चाहते हैं, लेकिन एक तरीका आसानी से
आलोचनात्मक सोच में प्रशिक्षित व्यक्तियों के लिए पहचानने योग्य। उन्हें ऐसे तरीकों का इस्तेमाल क्यों करना पड़ता है?

२३९ २६/१९३ -१९६ (ए८५ - २००८ संस्करण ए८३ में): "इसके साथ (कुरान) आत्मा नीचे आया और
सत्य - अपने दिल और दिमाग के लिए, कि आप सुस्पष्ट अरबी भाषा में सलाह दे सकते हैं।
निःसंदेह यह भूतपूर्व लोगों की प्रकाशित पुस्तकों में (घोषित) है।" लेकिन क्या यह कुरान है
इसकी घोषणा की जाती है, जैसा कि यहां बताया गया है, और यह इस्लाम में सबसे व्यापक रूप से माना जाने वाला दृष्टिकोण है
(भले ही कुरान का निश्चित रूप से उल्लेख नहीं किया गया है, बाइबिल में घोषित नहीं कहा गया है)? - या
क्या यह ऐसी सामग्री है जिसे पहले भेजा गया है (लेकिन इस्लाम द्वारा दावा किया गया है कि इसे गलत ठहराया गया है), जैसे f. भूतपूर्व।
ज़माखशरी और बदावी सोचते हैं? जानना असंभव है - इस बिंदु पर पाठ स्पष्ट नहीं है।

+२४० २६/२१८: "- - - जो तुम्हें (मुसलमानों*) को (प्रार्थना में) खड़े हुए देखता है।" या हो सकता है
(मुजाहिद/तबारी): "- - - तुम जहां भी हो, तुम्हें कौन देखता है।" दोनों अर्थ संभव हैं
अरब पाठ से। और ये संस्करण - पहले की तरह - भी प्रासंगिक के रूप में, अरब पाठ में हैं
शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं/हैं।

२४१ २७/८ (ए७) : "लेकिन जब वह (मूसा*) आग के पास आया - - -।" लेकिन जल्दी के अनुसार
टिप्पणीकार, ताबारी द्वारा संदर्भित, इस संदर्भ में अरब शब्द "नार" (अग्नि) पर्यायवाची है
एक अन्य अरब शब्द "नूर" (प्रकाश) के साथ स्वर का अनुमान लगाया जाना है। तब आपको मिलता है: "- - - आया
प्रकाश के लिए - - -।" एक तीसरा विकल्प यह है कि यहां मूल पाठ - "मन फ़ाई 'एन-नार वा-मन
हवालाहा" अल्लाह के अपने प्रकाश की बात कर रहा है। ये तीनों अर्थ संभव हैं
अरब पाठ। और ये रूप - पहले की तरह - भी प्रासंगिक शब्द के रूप में, अरब पाठ में हैं
एक से अधिक अर्थ हैं/हैं। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

+२४२ २७/३७ (ए २९): "उनके पास वापस जाओ, और सुनिश्चित हो कि हम उनके पास (सबा*) ऐसे ही आएंगे

एक सेना (सेना *) के रूप में वे कभी नहीं मिल पाएंगे: हम उन्हें वहां से अपमान में निकाल देंगे,
और वे दीन महसूस करेंगे (वास्तव में)। यह पिछले और निम्नलिखित दोनों से बहुत स्पष्ट है
छंद कि यहाँ यह सुलैमान बोल रहा है। लेकिन शांतिपूर्ण दूतावास के लिए यह कोई तार्किक जवाब नहीं है।
कुरान औपचारिक रूप से यह भी कहता है कि हमले के युद्ध की कभी भी अनुमति नहीं है (हालांकि मुसलमानों के पास है
उस औपचारिकता के इर्द-गिर्द कई रास्ते खोजे।) तो मुस्लिम विद्वानों ने पाया है कि यह एक और है
अर्थ: यह अल्लाह है जो साबियों को मुसलमान बनने की चेतावनी दे रहा है - सुलैमान निश्चित रूप से एक था
इस्लाम के अनुसार धर्मनिष्ठ मुसलमान। इस मामले में दूसरा अर्थ स्पष्ट रूप से बना है - लेकिन यह
इस्लाम के लिए वास्तविक है। और भाषाई रूप से यह संभव है।

२४३ २७/३८ (ए३१): "हे मुखियाओं! तुम में से कौन मेरे पास आने से पहले अपना सिंहासन मेरे पास ला सकता है
समर्पण में।" कहानी के इस पड़ाव पर समर्पण का कोई तार्किक अर्थ नहीं है - और
खासकर इतने दूर देश के लिए नहीं। इसलिए हो सकता है - या रखने के लिए हो सकता है
यह दिखावा कि सुलैमान (!) जैसे अच्छे मुसलमान कभी युद्ध शुरू नहीं करते - इस्लाम ने एक और पाया है
अर्थ: इसका अर्थ है इस्लाम के प्रति समर्पण। खैर, स्पष्टीकरण उतना असंभव नहीं है जितना कि
27/37 ठीक ऊपर। लेकिन ऐसा नहीं है जो किताब कहती है। "समर्पण" एक राजनीतिक और सैन्य शब्द है
स्पष्ट अर्थ के साथ। इसका उपयोग अन्य संबंध में भी किया जाता है, लेकिन फिर यह स्पष्ट किया जाता है कि क्या
संबंध - जैसे "अल्लाह के सामने समर्पण", या "वह मेरे सामने आत्मसमर्पण कर देगी" जो आगे निहित है
विवरण, स्पष्ट या नहीं, शब्द "समर्पण" के लिए। यहां पर यह मामला नहीं है।

२४४ २७/४० (ए३२): "उस ने कहा जिसे किताब का ज्ञान था - - -।" यह कौन था? इस्लाम is
उस पर सहमत नहीं हो पा रहे हैं। रज़ी कहते हैं कि यह स्वयं सुलैमान है - लेकिन संदर्भ स्पष्ट रूप से दिखाता है कि यह
व्यक्ति सुलैमान से बात करता है। स्पष्ट पाठ?

+२४५ २७/४२-४३: "- - - और हम (सबा की रानी - अरब परंपरा में बिलकिस* कहा जाता है)
अल्लाह को सौंप दिया (इस्लाम में)। और उसने (सुलैमान*) उसे दूसरों की उपासना से हटा दिया
अल्लाह के सिवा - - -।" पुस्तक का वैकल्पिक संभव अर्थ जो स्पष्ट हो और संभव न हो
गलत समझने के लिए: "और हम (सुलैमान *) को अल्लाह के संदेश का ज्ञान था और उसने इसे स्वीकार कर लिया
उसके सामने - - - और अल्लाह के अलावा दूसरों की पूजा ने उसे (सच्चे धर्म से) हटा दिया।
स्पष्ट या भ्रमित? - 2 बहुत अलग अर्थ।

२४६ २७/४८ (ए४७): "शहर में एक परिवार में नौ पुरुष थे जिन्होंने शरारत की थी - - -।"
लेकिन "परिवार में" शब्द किसी के द्वारा जोड़े गए प्रतीत होते हैं, और अरब शब्द "रहत" हो सकता है
यहाँ भी मतलब कबीले। एक शहर में शरारत करने वाले 9 आदमियों में बहुत फर्क होता है,
और 9 कुलों ने ऐसा ही किया। इसके अलावा हो सकता है कि यह वास्तव में एक शहर नहीं था, बल्कि एक पूरा क्षेत्र था - अल-
उत्तरी हिजाज़ में हिरज (अरब में "काउंटी")। कई अर्थ संभव - एक स्पष्ट (?) पाठ से।

00i 27/82: "और जब उनके (अधर्मियों) के खिलाफ वचन पूरा हो जाएगा, तो हम से उत्पादन करेंगे
पृथ्वी एक जानवर (सामना करने के लिए) उन्हें - - -।" यह जानवर क्या है? कोई नहीं जानता - लेकिन ए. युसूफ अली
ने प्रस्तावित किया कि यह भौतिकवाद का प्रतीक है (YA3313)। मुसलमान एफ. भूतपूर्व। बहुत साबित हुआ
अपने सभी युद्धों में भौतिकवादी और चोरी/लूट के लिए छापेमारी। क्या पता?

पेज १०३१

+२४७ २८/३८ (ए३७ - वाईए३३७१): "(फिरौन ने कहा*)
सौ साल बाद और सैकड़ों किमी आगे पूर्व में - फारस में - और मिस्र का नाम नहीं
दोनों में से एक*)! - - - मेरे लिए एक ऊंचे स्थान का निर्माण करें, कि मैं मूसा के देवता के पास चढ़ सकूं - - -। मुसलमानों
यह बताना पसंद करते हैं कि यह बाबुल के टॉवर (ईंटों से निर्मित) जैसी किसी चीज़ का उल्लेख नहीं करता है, लेकिन
एक पिरामिड के लिए - - - और जाने-माने तथ्यों के बारे में एक भी शब्द का उल्लेख किए बिना जैसे कि यह लिया
एक बड़ा पिरामिड बनाने के लिए कुछ 20-30 साल (और उस समय रामसेस II विज्ञान यह मानता है
हुआ अगर ऐसा हुआ, युवा नहीं था), या कि मिस्र में पिरामिड प्राकृतिक से बनाए गए थे
पत्थर ईंट से नहीं, इसलिए भट्ठे का उनसे कोई संबंध नहीं है।

लेकिन यहां असली सवाल यह है कि क्या यह अरब शब्द "इत्तलिउ" का सही अर्थ है। या किया
फिरौन की इच्छा है कि "- - - क्या मैं मूसा के देवता को देख सकता हूँ - - -"? या (अनुवादित
स्वीडिश से): "- - - कि मुझे मूसा के देवता के बारे में कुछ जानकारी मिल सके - - -।" नहीं भी
अर्थों में बड़े बदलाव, "सटीक से अंतिम अल्पविराम" से थोड़ा दूर, जैसे मुसलमान पसंद करते हैं
डींग मारना।

एक और खुला प्रश्न: क्या यह कटाक्ष है या गंभीरता से लिया गया आदेश है? - कुरान नहीं बताता।

२४८ २८/६८ (ए७४): "तेरा रब (अल्लाह*) अपनी मर्जी से पैदा करता है और चुनता है: कोई विकल्प नहीं है

पूर्वनियति में) लेकिन [illegible] से टकराती है
(पूर्वनियति और स्वतंत्र इच्छा पारस्परिक रूप से एक दूसरे को छोड़कर है। दोनों का संयोजन है
सैद्धांतिक रूप से भी असंभव है, और मुसलमानों को दोनों को कम करने के लिए बहुत दर्द होता है ("वास्तविक नहीं"
पूर्वनियति" और "आंशिक रूप से स्वतंत्र इच्छा") दोनों के लिए थोड़ी जगह बनाने के लिए, लेकिन कोई बात नहीं: यह अभी भी
धार्मिक इच्छाधारी सोच को छोड़कर उन्हें - - - जोड़ना सैद्धांतिक रूप से भी असंभव है।
क्या यही कारण है कि कई मुसलमानों द्वारा इस स्पष्टीकरण को पसंद किया जाता है (ज़मख़शरी,
आदि): "(अल्लाह) चुनता है (मानव जाति के लिए) जो उनके लिए सबसे अच्छा है।" फिर की समस्या
पूर्वनियति को छोड़ दिया गया है - और दोनों अरब पाठ "मा काना लाहम अल-" से संभव हैं।
खियाराह"। (अल-खियारा या खिराह (आप वहां कौन से स्वर रखते हैं) = "पसंद" या
"चुनने की स्वतंत्रता")। बस चुनें।

249 28/85 (YA3416): "- - - वापसी का स्थान।" क्या इसका मतलब मक्का या जन्नत है? कोई भी नहीं
जानता है।

२५० २९/५ (YA3427): "- - - अल्लाह द्वारा (नियुक्त) अवधि के लिए निश्चित रूप से आ रहा है - - -"। क्या ये
मृत्यु के लिए नियत समय और इस प्रकार इस जीवन के अंत, या इस जीवन के शेष समय का संदर्भ लें
और इस प्रकार अगले जीवन की तैयारी की संभावना?

२५१ २९/२९ (वाईए३४५०): "क्या तुम (सदोम और अमोरा के लोग) वास्तव में पुरुषों के पास जाते हो, और
राजमार्ग काट दिया - - -।" क्या "- - - राजमार्ग काट दिया - - -" हमला करने का संदर्भ देता है और
यात्रियों के साथ समलैंगिक बलात्कार, या यह डकैती का उल्लेख करता है? इस्लामी विद्वान असहमत हैं और
कुरान इसे स्पष्ट नहीं करता है।

२५२ २९/४५-४६ (ए४०): "जो कुछ भी किताब से आपको प्रेरणा से भेजा गया है उसे पढ़ें - - -।" लेकिन कौन है
या इस मामले में "आप" हैं? मुहम्मद? - या आम तौर पर मुसलमान? अंतिम मामले में अर्थ
अरब का "मा उहिया इलयका मीना 'एल-किताब" हो सकता है "- - - जो कुछ भी दैवीय रिट ने प्रकट किया है
अपनी समझ के अनुसार"। इस्लाम को अनुमान लगाना है कि वास्तव में यहाँ क्या मतलब है - आप वही करते हैं।
हां, कुरान एक बहुत ही स्पष्ट ग्रंथ है।

२५३ ३०/९ (ए ७): "- - - उन्होंने (पहले के पैगन्स*) मिट्टी की जुताई की और इसे अधिक संख्या में आबाद किया
इनसे (मुहम्मद* के समय के लोगों) ने - - - किया है।" लेकिन अरब शब्द

१०३१

पेज १०३२

"अक्तर" जिसका यहाँ अनुवाद "अधिक (संख्या)" में किया गया है, वास्तव में इसका अर्थ केवल "अधिक" है,
और इस मुहावरे का भी इस्लाम के अनुसार इस तरह अनुवाद किया जा सकता है: "वे महान थे (the .)
पुराने समय के मूर्तिपूजक*) सत्ता में उनसे (मुहम्मद* के समकालीन लोग) हैं,
और उन्होंने पृथ्वी पर अधिक प्रभाव छोड़ा, और इसे और भी बेहतर बनाया - - -।" पहले मामले में
वे अधिक लोग थे (और इस प्रकार अधिक शक्तिशाली), दूसरे मामले में वे अधिक अमीर थे और इसलिए
कि अधिक शक्तिशाली। पहले की तरह अक्सर: अपनी पसंद चुनें क्योंकि बहुत आसान
समझें कि अरब शास्त्र दोनों अर्थों की अनुमति देता है। और ये किस्में अरबी में भी हैं
पाठ, प्रासंगिक शब्द के रूप में एक से अधिक अर्थ हैं/हैं। अल्लाह (?) वास्तव में a . का उपयोग करता है
स्पष्ट भाषा।

+254 31/10 (YA3587): "उसने (अल्लाह*) ने आकाश को बिना किसी खम्भे के बनाया जिसे तुम देख सकते हो -
- -।" या इसका मतलब यह है कि यह वह आकाश है जिसे आप नहीं देख सकते हैं? - अपनी पसंद चुनें (हालांकि यह है
सबसे पहले हम अक्सर मिलते हैं)। A. युसूफ अली यहां खंभों को ताकतों के साथ समझाते हैं - दिलचस्प
जैसा कि यह एक स्पष्टीकरण है जिसे हम पहले नहीं मिले हैं। लेकिन यह सब एक ही अर्थहीन है: एक के लिए
कोई भी बल क्षेत्र कभी पंजीकृत नहीं किया गया है (क्या हम अनुमान लगा सकते हैं कि मुसलमान इसे समझाएंगे?)
बलों के बारे में एक ढीले और सुविधाजनक दावे के साथ केवल अल्लाह ही दर्ज कर सकता है?) लेकिन मुख्य बात यह है कि
कि कोई 7 आकाश नहीं हैं जो "उठाए गए" हैं और उनके स्थानों में रखे गए हैं - न तो खंभों से, न ही द्वारा
और कुछ।

+२५५ ३२/२३ (वाईए३६५७): "हम (अल्लाह *) ने वास्तव में मूसा को किताब दी थी: नहीं
फिर उसके (तुम्हें) पहुँचने के सन्देह में - - -।" लेकिन अरब सर्वनाम "हाय" का अनुवाद या तो किया जा सकता है
"उसका" या "उसका"। अंतिम मामले में यहाँ अर्थ है: "- - - तो उसके (मूसा*) पर संदेह न करें
पहुँचना (तुम्हें) (यह मूसा के विचारों या उदाहरण या कर्मों के मामले में होना चाहिए) - - -"।

एक दिलचस्प अतिरिक्त अंश: मूसा की पुस्तक का उल्लेख करने के संबंध में, ए. युसूफ अली
संदर्भित करता है "- - - उसका (मूसा) इंजिल या सुसमाचार - - -।" (वाईए३६५६)। सुसमाचार (या वास्तव में सुसमाचार -
वहाँ ४ हैं) यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान का इतिहास है, और फलस्वरूप नहीं हो सका
यीशु की मृत्यु के पश्चात् लिखा जाए (वह ३३ वर्ष का हो गया)। विज्ञान निर्गमन को बताता है - यदि यह

हुआ - हुआ सीए। १२३५ ईसा पूर्व और बाइबिल और कुरान दोनों कहते हैं कि उन्हें मिल गया
आज्ञाएँ (और कुरान किताब जोड़ता है, जबकि बाइबल बताती है कि उसे अभी बताया गया था)
कानून - और केवल वह - और यह कि उन्होंने खुद इसे बाद में लिखा था)। अगर मूसा को सुसमाचार मिल गया
10 आज्ञाओं के साथ, उसने उन्हें लगभग १२६८ साल पहले प्राप्त किया था
लिखित। साथ ही इस्लाम के बाहर कोई भी व्यक्ति, जिसमें विज्ञान भी शामिल है, कभी भी सबसे कमजोर से भी आगे नहीं बढ़ा
मूसा के सुसमाचार का निशान।

256 33/35 (ए 36 - 2008 संस्करण ए 38 में): "- - - जो पुरुष और महिलाएं उपवास करते हैं (और इनकार करते हैं)
खुद) - - -।" लेकिन क्या यह केवल खुद को नकार रहा है कि उपवास क्या मांग करता है? अरब शब्द
"सईम" का वास्तव में अर्थ है "वह जो खुद को किसी भी चीज़ से नकारता है या उससे दूर रहता है"। फिर
अर्थ बदल जाता है: "- - - सभी आत्म-इनकार करने वाले पुरुष और आत्म-इनकार करने वाली महिलाएं - - -।" एक तरह से
वही, लेकिन अर्थ बहुत व्यापक है। और ये संस्करण निश्चित रूप से अरब में भी हैं
पाठ, प्रासंगिक शब्द के रूप में एक से अधिक अर्थ हैं/हैं। अल्लाह (?) वास्तव में a . का उपयोग करता है
स्पष्ट भाषा।

२५७ ३३/५२ (ए६४ - २००८ संस्करण ए६५ में): "यह तुम्हारे लिए नहीं है (मुहम्मद*) (अधिक शादी करने के लिए)
इसके बाद महिलाएं - - -।" क्या यह उन 4 श्रेणियों से अधिक महिलाओं से संबंधित नहीं है जिनमें वह शामिल है
श्लोक 52 कहा गया था उसके लिए वैध थे? या यह सभी महिलाओं को संदर्भित करता है - दासों को छोड़कर? इसलाम
अंतिम पर विश्वास करने की प्रवृत्ति है, लेकिन f. भूतपूर्व। तबरी ने पहले कहा। और किसी को कभी पता नहीं चलेगा। स्पष्ट
भाषा: हिन्दी? (यह श्लोक ६२९ ई. या बाद के इस्लाम के अनुसार है। मुहम्मद तब थे
लगभग 60. हो सकता है कि उसने एक दर्जन पत्नियों और रखैलियों को संतुष्ट करने का दबाव महसूस किया हो?)

१०३२

पेज १०३३

२५८ ३३/५५ (ए७१ - २००८ संस्करण ए७२ में): "- - - या उनकी (विश्वास करने वाली महिलाएं*) महिलाएं - - -"। प्रति
यह किस महिला से संबंधित है? - जैसा कि बाद में वाक्य में दासों का अलग से उल्लेख किया गया है, यह
गुलाम महिला नहीं हो सकती। करीबी रिश्तेदार? अन्य करीब या बहुत करीब नहीं? या सभी महिलाएं? इसलाम
अंतिम पर विश्वास करने की प्रवृत्ति होती है, लेकिन पद्य उन सभी अर्थों के लिए खुला है। और इन रूपों के रूप में
सामान्य भी अरब पाठ में हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द में एक से अधिक हैं/हैं
अर्थ। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

२५९ ३३/७२ (ए८६ - २००८ संस्करण ए८७ में): "हमने (अल्लाह*) ने वास्तव में ट्रस्ट की पेशकश की थी
स्वर्ग (बहुवचन और गलत) और पर्वत - - -।" लेकिन अरब का अर्थ क्या है?
शब्द "अमाना" जिसे यहाँ "ट्रस्ट" कहा जाता है? **सीधी-सादी हकीकत यह है कि कोई नहीं जानता।** और
एक सीधा सा सच यह है कि कोई भी अनुवाद कितना भी भव्य क्यों न हो, आप कभी भी मिलेंगे ("विश्वास का
कारण और इच्छा "च। उदा।) यह अनुमान के अलावा और कुछ नहीं है। लेकिन मुसलमानों में इस्तेमाल करने की हिम्मत है
दावा किया गया है कि "कुरान में स्पष्ट और आसानी से समझी जाने वाली भाषा" इस बात के प्रमाण के रूप में है कि किताब है
मनुष्यों द्वारा नहीं बनाया गया। और इससे भी बुरी बात यह है कि बहुत कम पढ़े-लिखे मुसलमान वास्तव में इसे मानते हैं
वह स्वयं।

२६० ३४/४ (ए३) : "ताकि वह (अल्लाह*) ईमान लाने वालों और उनके काम करने वालों को प्रतिफल दे
धार्मिकता - - -।" हाँ - लेकिन कहाँ? कई या अधिकांश विद्वान कहते हैं "स्वर्ग में" - यह है
अतिरिक्त लाभ जो विलासिता के वादे बड़े हो सकते हैं, और किसी को यह समझाने की आवश्यकता नहीं है कि क्यों
पवित्र लोग अक्सर बहुत अच्छे नहीं होते हैं .. लेकिन अन्य - जैसे रज़ी - का दावा है कि यह इस दुनिया में है,
अच्छी भावनाओं के साथ जब कोई मुख्य लाभ के रूप में दृढ़ता से विश्वास करता है। ये पाठ
खुद रहस्य के बारे में चुप है। और ये संस्करण भी प्रासंगिक के रूप में, अरब पाठ में हैं
शब्द (ओं) के एक से अधिक अर्थ हैं।

२६१ ३४/११ (ए१३): "तू (डेविड*) मेल के कोट बनाओ, श्रृंखला के छल्लों को अच्छी तरह से संतुलित करते हुए
कवच, और धर्म का काम करो, क्योंकि निश्चय ही मैं (अल्लाह*) वह सब देख रहा हूँ जो तुम करते हो।" ये हैं
काफी पारंपरिक अनुवाद। लेकिन मुहम्मद असद एक और व्याख्या के लिए दृढ़ता से तर्क देते हैं,
और यह 2008 के संस्करण में इस तरह चलता है: "अच्छे कर्मों को बिना किसी काम के करो, और गहरा करो"
उनके स्थिर प्रवाह के लिए विचार। और (इस प्रकार, हे विश्वासियों, तुम सभी को चाहिए) नेक काम करो: क्योंकि,
वास्तव में, जो कुछ तुम करते हो, मैं उसे देखता हूँ!" **हम अच्छी तरह से समझ सकते हैं यदि आप उस लिखित पर विश्वास करने से इनकार करते हैं
शब्द इतना अस्पष्ट हो सकता है कि एक और एक ही पद इतनी भिन्न व्याख्या दे सकता है।
लेकिन उद्धरण सटीक हैं,** और दोनों पुस्तकें अंग्रेजी में स्वतंत्र रूप से उपलब्ध हैं (अब्दुल्ला यूसुफ
अली: "पवित्र कुरान" और मुहम्मद असद: "कुरान का संदेश", अल द्वारा प्रमाणित।
अजहर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च एकेडमी, काहिरा)। लेकिन समस्या को याद रखें
पुराने अरब धर्मग्रंथों से कुरान का अनुवाद केवल कुछ अक्षरों के साथ लिखा गया है, और
बाकी आपको अनुमान लगाना होगा। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं: जब आप मुसलमानों से यह दावा करते हुए मिलते हैं कि
कुरान में स्पष्ट भाषा इस बात का प्रमाण है कि इसे किसी ईश्वर की ओर से भेजा गया है, या इसी तरह के दावे -

या कि यह अल्लाह या मुहम्मद के शब्दों की एक सटीक प्रति है - तो हम सोचते हैं जैसा है
आशिष्ट - - - और यदि वे धार्मिक क्षेत्र में बहुत कम शिक्षा प्राप्त करते हैं, तो वे विश्वास भी कर सकते हैं
वे क्या कहते हैं। हम दोहराते हैं: और ये रूप निश्चित रूप से अरब पाठ में भी हैं, जैसे कि
प्रासंगिक शब्द (ओं) के एक से अधिक अर्थ हैं / हैं। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट . का उपयोग करता है
भाषा: हिन्दी।

२६२ ३४/१६ (वाईए३८१३): "- - - बांधों से बाढ़ (मुक्त) - - -।" लेकिन अरब शब्द
"अरिम" - क्या यह एक नाम है, या इसका मतलब बांध या तटबंध है? कोई नहीं जानता।

२६३ ३४/५१-५४ (वाईए३८६७): हम केवल ए युसुफ अली को "द मीनिंग ऑफ द होली" में उद्धृत करते हैं
कुरान": "- - - छंद ५१-५४ को कई अर्थों में समझा जा सकता है: (१) विवरण
इस जीवन में स्थिति की तुलना में, इसके बाद अंतिम में स्थिति पर लागू होता है। (२) आईटी
मदीना (=मदीना*) में विजयी इस्लाम पर लागू होता है और बाद में,

१०३३

पेज १०३४

मक्का (= मक्का*) में अपने शुरुआती दिनों में सताए गए इस्लाम की स्थिति। (३) यह पर लागू होता है
दुनिया के इतिहास के विभिन्न चरणों में सही और गलत की स्थिति को उलट देना, या (4)
व्यक्तिगत इतिहास। " बहुत स्पष्ट और विशिष्ट पाठ।

00k 35/14 (A14 - 2008 संस्करण A13 में): "यदि आप उन्हें (आपके "घर के बने" देवताओं *) का आह्वान करते हैं, तो वे
तेरी पुकार न सुने; और यदि वे सुन भी सकते हैं, तो भी वे आपको उत्तर नहीं देंगे।
और (विथाल) क़ियामत के दिन वे तुम्हारे साथ होने से पूरी तरह इनकार कर देंगे
उन्हें अल्लाह के साथ।" यह एक विरोधाभास है जिसे कुरान में कई जगह मिलती है: देवता
लकड़ी या पत्थरों (और संतों) से बना स्वाभाविक रूप से आपको सुन या प्रतिक्रिया या उत्तर नहीं दे सकता है। लेकिन सभी
वही वे कयामत के दिन बात करते हैं। संतों के लिए बात करना एक बात है, लकड़ी और पत्थर के लिए
और धातु यह काफी अलग है। मुसलमानों को खुद महसूस करना चाहिए, क्योंकि सबसे आम
"व्याख्या" चमत्कार या कुछ अलौकिक का दावा नहीं है, बल्कि इसका मतलब है
प्रतीकात्मक रूप से - इस्लाम में अस्पष्टीकृत के खिलाफ प्रसिद्ध अंतिम खाई में से एक।

264 35/30 (ए 22 - 2008 में छोड़ी गई टिप्पणी): "- - - वह (अल्लाह *) उन्हें उनका न्याय प्रदान करेगा
पुरस्कार, और उन्हें (यहां तक कि) उसके इनाम से अधिक दें; क्योंकि वह बार-बार क्षमा करनेवाला है, उसके लिए सबसे अधिक तैयार है
सराहना (सेवा)।" "कुरान का संदेश" (2008) में यह इस प्रकार है: "- - - के लिए, वास्तव में। वह
बहुत क्षमाशील है, कृतज्ञता के प्रति सदैव प्रतिक्रिया करता है।" के अनुसार शाब्दिक अर्थ क्या है
कम "संशोधित" 2006 संस्करण, है (स्वीडिश से अनुवादित): "वह (अल्लाह *) बहुत क्षमा करता है और वह
बड़ी कृतज्ञता प्रकट करता है।" पाठ को "समझने" के विभिन्न तरीकों से प्राप्त हो सकता है
तथ्य यह है कि यह सही नहीं हो सकता है कि महान भगवान अल्लाह मात्र के प्रति कृतज्ञता दिखा सकता है
मनुष्य?

२६५ ३६/१ (वाईए ३९४३): "हां पाप"। कई सूरह कुछ अक्षरों से शुरू होते हैं जहां यह है
किसी भी अर्थ को समझना असंभव है। उन्हें कभी-कभी "संक्षिप्त अक्षर" कहा जाता है
और लगभग १४०० वर्षों से इस्लाम और मुसलमानों के लिए एक पहेली बना हुआ है। इस अध्याय में . के बारे में
कुरान में स्पष्ट भाषा नहीं - इस्लाम के बावजूद पुस्तक में स्पष्ट भाषा का प्रयोग an . के रूप में किया गया है
इस बात का संकेत है कि कुरान अल्लाह द्वारा बनाया गया है - हमने ज्यादातर इन्हें उद्धृत नहीं करने के लिए चुना है,
लेकिन इस सूरह में यह संभव है कि अक्षरों का एक अर्थ हो - - - वास्तविक या सिर्फ इच्छाधारी
विचारशील। और वास्तविक अर्थ या स्वप्न का अर्थ - कोई नहीं जानता। इस मामले में यह संभव है
इसका अर्थ है "हे मनुष्य!" - अगर यह महज संयोग नहीं है। और इस्लाम का दावा है कि अगर यह निर्देशित है
आम तौर पर पुरुषों के लिए नहीं, बल्कि खास आदमी के लिए: मुहम्मद।

लेकिन एक बार फिर: कोई नहीं जानता।

२६६ ३६/२८ (ए १७ - २००८ में छोड़ी गई टिप्पणी): "और हम (अल्लाह*) ने उसके खिलाफ नहीं भेजा
लोग, उसके बाद (एक आदमी जो 36/20* में दौड़ता हुआ आया) - - -।" अरबी का शाब्दिक अर्थ
"हाय मे मिन बदीही" "उसके बाद" (जैसे यहां कहा गया है) या "इस" के बाद है। लेकिन क्या यह "क्या के बाद" का उल्लेख करता है
उसने इस स्थिति में किया" या - जैसा कि बताया गया है कि वह 36/26 (पहले 2 पद) में स्वर्ग गया था - करता है
"उनकी मृत्यु के बाद" का संदर्भ लें। इस्लाम नहीं जानता और 2008 में "संशोधित" "द मेसेज ऑफ द"
कुरान" अपने पाठकों को अनिश्चितता के बारे में और अधिक जानकारी देना भी नहीं चाहता है।

२६७ ३६/३२ (वाईए३९७६): "वे उनके पास नहीं लौटेंगे - - -।" इसका क्या मतलब है? कोई भी नहीं
जानता है, लेकिन कई अनुमान लगा रहे हैं। वे कौन हैं"? और वे कौन हैं"? १३०० - १४०० वर्ष
मुस्लिम विद्वानों के बीच अनुमान लगाने से कोई उत्तर नहीं मिला है। यह इंगित करता है कि कुरान है
एक दैवीय भाषा के साथ धन्य, दैवीय रूप से स्पष्ट और दैवीय रूप से समझने में आसान?

२६८ ३६/३८ए (ए२१ - २००८ संस्करण ए१९ में): "और सूर्य एक अवधि के लिए अपना पाठ्यक्रम चलाता है
उसके लिए निर्धारित - - -।" लेकिन अरब अभिव्यक्ति "ली-मुस्तकारिन लहा" अस्पष्ट है। NS
इस अभिव्यक्ति का सामान्य अनुवाद जब कुरान की व्याख्या की जाती है, "और सूरज अपनी ओर दौड़ता है"

विश्राम का स्थान - - - "जो कुछ बहुत अलग है (और जो सूरह 18 में एक तालाब है
बदली का पानी)। मुसलमान अक्सर कहते हैं कि यहाँ मतलब सूर्यास्त की जगह है, लेकिन सूरज
वहाँ विश्राम नहीं करता। "द मेसेज ऑफ़ द" के 2008 संस्करण में एक 3. अनुवाद का उल्लेख करने के लिए
कुरान" इस मार्ग को उपर्युक्त सामान्य अनुवाद से बदलकर "- - - यह (the .) कर दिया गया है
सूरज*) अपनी खुद की कक्षा (!!*) में दौड़ता है - - -।" इस तथ्य को छोड़कर कि सूर्य परिक्रमा नहीं करता है
पृथ्वी, वे लगभग आधुनिक खगोल विज्ञान के लिए पाठ को समायोजित करने में कामयाब रहे हैं - ईमानदारी या नहीं
पाठ में वास्तविक अर्थ के संबंध में ईमानदारी। और इस पहेली को स्पष्ट करने के लिए और
अचूक पाठ क्रिस्टल स्पष्ट: यदि आप कुछ अक्षर बदलते हैं और उपरोक्त उद्धृत अरब को पढ़ते हैं
इस तरह का पाठ: "ला मुस्तकारा लाहा" का अर्थ बदल जाता है "- - - यह बिना किसी के चलता है"
आराम - - -।" (पुराने अधिकारियों में से एक, 'अब्द अल्लाह इब्न मसूद ने इसे इस तरह उद्धृत किया है'
वह - एक आवश्यक तथ्य ऐसा लगता है, क्योंकि यह कुरान के पाठ से कम गलत है। में
2008 के उल्लेखित संस्करण का उपयोग कुरान को और अधिक सही बनाने के लिए एक बहाने के रूप में किया जाता है
सामान्य अनुवाद की तुलना में। ईमानदारी और बौद्धिक अखंडता?) कम से कम: कुछ स्पष्ट
मूलपाठ! और ये संस्करण अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) में और भी हैं
एक से अधिक अर्थ। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है। ए. युसूफ अली का कमेंट भी देखें
36/38b ठीक नीचे।

२६९ ३६/३८ए (वाईए३९८३): "और सूर्य एक निर्धारित अवधि ("मुस्तक़ार") के लिए अपना पाठ्यक्रम चलाता है
इसके लिए - - -।" इस टिप्पणी के अनुसार, कम से कम 5 अर्थ पढ़ना संभव है:

1. "- - - समय की एक सीमा - - -।"
2. "- - - निर्धारित अवधि - - -।"
3. "- - - आराम की जगह - - -"।
4. "- - - मौन का स्थान - - -"।
5. "- - - निवास स्थान - - -।"

ये सभी अर्थ मूल अरब कुरान के अनुसार सही हैं - और इसके अधूरे
वर्णमाला।

स्पष्ट? या बस बहुत स्पष्ट?

+२७० ३६/४६ (ए२७ - २००८ संस्करण ए२५ में): "उनके पास (गैर-विश्वासियों*) से कोई संकेत नहीं आता है
उनके रब (अल्लाह*) की निशानियों में से - - -।" लेकिन एक और अनुवाद: "- - - - का कोई संदेश नहीं
उनके पालनहार (अल्लाह के) संदेश - - -।" संदेश संकेत से बड़ा शब्द है। एक संकेत हो सकता है a
संदेश, लेकिन एक संदेश का अर्थ संकेत से कहीं अधिक जानकारी हो सकता है। किस ने अल्लाह (?)
अर्थ? और ये संस्करण निश्चित रूप से अरब पाठ में भी प्रासंगिक शब्द के रूप में हैं
एक से अधिक अर्थ हैं / हैं। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

२७१ ३६/७५: "वे (विभिन्न देवताओं*) में उनकी (मनुष्य?*) सहायता करने की शक्ति नहीं है, लेकिन वे
(किसको?*) एक सेना के रूप में (हमारे (अल्लाह के) न्याय आसन के सामने) लाया जाएगा (होने के लिए)
निंदा की।" ए युसुफ अली को उद्धृत करने के लिए: "दोनों के बीच कुछ मतभेद है
इस खंड से जुड़े होने के सटीक अर्थ के बारे में टिप्पणीकार। ” अधिक स्पष्ट होना: इस्लाम न्यायसंगत
अनुमान लगा रहा है कि इसका क्या अर्थ हो सकता है। अस्पष्ट भाषा बस।

+२७२ ३६/७७ (ए४७ - २००८ संस्करण ए४५ में): "फिर भी देखो, वह (आदमी*) (आगे खड़ा है) एक खुले के रूप में
विरोधी (अल्लाह के लिए? *)।" लेकिन फिर हम अरब शब्दों पर वापस आ गए हैं। रज़ी और ज़माख़शरी सेट
"ख़ासिम" = "नातिक" और तब आपको यह अर्थ मिलता है: "- - - वह (आदमी) खुद को संपन्न दिखाता है
सोचने और तर्क करने की शक्ति के साथ। ” आपको जो पसंद है उसे चुनें।

२७३ ३७/१ (ए१ और वाईए४०३१): "द्वारा (= अल्लाह (!) कसम खा रहा है*) जो खुद को सीमा में रखते हैं
रैंक - - -।" लेकिन क्या इनका मतलब कोणों से है या मुसलमानों से? इस्लाम नहीं जानता
उत्तर- इस बिंदु पर भाषा स्पष्ट नहीं है। वही इसके लिए जाता है: क्या यह वही हैं जो
श्लोक 2 और 3 में उल्लेख किया गया है?

२७४ ३७/१३० (ए४८ और वाईए४११४ए): "एलियास जैसे लोगों को शांति और सलाम!" लेकिन इस्तेमाल किया गया नाम
अरब पाठ में इल-यासीन है, जिसका अर्थ हो सकता है (यहूदी नबी) "एलियास" (यह भी लिखा एलिया या
एलिय्याह), या "एलियाह और उसके बाद के लोग" (तबारी और के अनुसार)
ज़माखशरी)। एक विवरण - लेकिन एक भगवान भी विवरण को स्पष्ट करता है, और यहां यह अस्पष्ट है। और
ये संस्करण निश्चित रूप से अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) में और भी हैं
एक से अधिक अर्थ। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

275 38/1a (YA4146): "दुखद"। कई सूरह कुछ अक्षरों से शुरू होते हैं जहाँ यह असंभव है
किसी भी अर्थ को समझने के लिए। उन्हें कभी-कभी "संक्षिप्त अक्षर" कहा जाता है और है
लगभग १४०० वर्षों से इस्लाम और मुसलमानों के लिए एक पहेली बना हुआ है। इस अध्याय में स्पष्ट नहीं के बारे में
कुरान में भाषा - इस्लाम के बावजूद पुस्तक में स्पष्ट भाषा का उपयोग an . के रूप में किया गया है
इस बात का संकेत है कि कुरान अल्लाह द्वारा बनाया गया है - हमने ज्यादातर इन्हें उद्धृत नहीं करने के लिए चुना है,
लेकिन इस सूरह में यह संभव है कि अक्षरों का एक अर्थ हो - - - वास्तविक या सिर्फ इच्छाधारी
विचारशील। और वास्तविक अर्थ या स्वप्न का अर्थ - कोई नहीं जानता। इस मामले में यह संभव है
कि यह "क़िस्सा" = कहानियों के लिए छोटा है - अगर यह सिर्फ एक संयोग नहीं है।

लेकिन एक बार फिर: कोई नहीं जानता।

+२७६ ३८/१बी (ए३): "- - - द्वारा (= शपथ ग्रहण*) कुरान, नसीहत से भरा - - -।" लेकिन एक बार फिर
अनुमानित और दावा किया गया स्पष्ट पाठ कई अर्थों के साथ एक अरब शब्द का उपयोग करता है: "धिक्र" मे
मतलब "अनुस्मारक", याद, "वह जो याद किया जाता है", (या कारण क्यों एक
याद), "प्रसिद्ध", "प्रसिद्धि", "उत्कृष्टता", "प्रख्यात लक्षण", आदि। इसका मतलब है कि इसमें कई हैं
अर्थ - एफ। भूतपूर्व। "- - - जिसमें वह सब पाया जाता है जिसे आपको ध्यान में रखना चाहिए।" एक अद्भुत
स्पष्ट और विशिष्ट भाषा, हाँ। और ये संस्करण भी प्रासंगिक के रूप में, अरब पाठ में हैं
शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं/हैं। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

२७७ ३८/७ (ए९ - २००८ के संस्करण ए१० में): "हमने (गैर-मुस्लिम*) इसके बारे में कभी नहीं सुना (इस तरह)
बाद के दिनों के लोगों के बीच "। अरब पाठ का शाब्दिक अर्थ है (से अनुवादित
स्वीडिश): "- - - (अनुयायियों के बीच) अंतिम (या नवीनतम *) विश्वास - - -।" अरब शब्द "अल-
मिलती 'एल-अखिरिया' - क्या यह ईसाइयों या किसी धर्म को संदर्भित करता है? - इस्लाम नहीं जानता,
क्योंकि कुरान विशिष्ट नहीं है। और ये संस्करण भी प्रासंगिक के रूप में, अरब पाठ में हैं
शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं/हैं। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

278 38/13 (YA4161): "- - - लकड़ी के साथी - - -"। वह कौन थे? एक और
मद्यन के लोगों के लिए नाम?. मदनियों के भीतर एक समूह? के पड़ोसी
मद्यनिवासी? या कोई अन्य जनजाति या समूह? कुरान में अस्पष्ट।

+२७९ ३८/३२ (ए २९): "वास्तव में क्या मैं (सुलैमान*) भलाई के प्यार से प्यार करता हूँ, उसकी महिमा के लिए
मेरे रब (अल्लाह कुरान* के अनुसार) - - -।" लेकिन छोटा सा अरब शब्द "ए" मजाक कर रहा है
कोई भी अनुवादक उसे, जैसा कि यह अभिव्यक्ति देता है "एक ढिकरी 'अल्लाह" अधिक संभावित अर्थ, एफ। भूतपूर्व।
"- - - मेरे भगवान के बारे में विचार ने मुझमें - - - के लिए बहुत प्यार स्थापित किया है।" स्पष्ट रूप से स्पष्ट
इस पुस्तक में जिस भाषा का प्रयोग किया गया है। और ये रूपांतर हमेशा की तरह अरब पाठ में भी हैं, जैसे
प्रासंगिक शब्द (ओं) के एक से अधिक अर्थ हैं / हैं। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट . का उपयोग करता है
भाषा: हिन्दी।

२८० ३८/३१ (वाईए४१८३): ए. युसूफ अली यहाँ सीधे कहते हैं: "डेविड और के बारे में अंश
सुलैमान को टीकाकारों द्वारा विभिन्न प्रकार से व्याख्यायित किया गया है"। भाषा बहुत अस्पष्ट है
कि विभिन्न व्याख्याएं संभव हैं। क्या एक ईश्वर है जो अपनी पवित्र पुस्तक बनाते समय अस्पष्ट है - और
अपने ही "घर" में पूजी जाने वाली "माँ की किताब"? यदि नहीं: कुरान किसने बनाया?

+२८१ ३८/३२ (वाईए४१८५): "वास्तव में क्या मैं (राजा डेविड*) भलाई के प्यार से प्यार करता हूँ,
मेरे प्रभु की महिमा - - -"। लेकिन अन्य मुस्लिम विद्वानों का अनुसरण करना भाषाई रूप से उतना ही सही है, जो
इसका मतलब है: "वास्तव में मैंने (इस दुनिया की) अच्छी चीजों को याद करने के लिए पसंद किया था"
आपका भगवान "।

अंतिम व्याख्या के मामले में ए. युसूफ अली इंगित करते हैं कि डेविड के पछतावे का कारण
हो सकता है कि वह अपनी अस्र की नमाज़ भूल गया हो (कम से कम ५ मुसलमानों में से प्रत्येक को नमाज़ पढ़नी चाहिए)
दिन)। लेकिन यह कैसे संभव है? - हदीसों के अनुसार यह मुहम्मद ही थे जिन्होंने अल्लाह को बनाया
एक दिन में 5 प्रार्थनाओं पर निर्णय लें (अल्लाह मूल रूप से 50 चाहता था)। 5 प्रार्थनाओं का नियम इस प्रकार नहीं हो सका
लगभग १६०० साल पहले मौजूद थे (डेविड १००७ - ९७१ ईसा पूर्व राजा थे, अधिकतम १० दें या लें
वर्षों)।

२८२ ३८/३४ (ए३२): "और हम (अल्लाह*) ने सुलैमान की कोशिश की: हमने उसके सिंहासन पर एक शरीर रखा
(बिना जीवन) - - -।" यह कहानी अब तक सभी इस्लाम अच्छे तरीके से समझाने में असमर्थ रहे हैं।
अधिकांश "व्याख्याएं" इतनी दूर हैं कि मुसलमान भी उन्हें छोड़ देते हैं। और वो भी जो
अटकलों, रूपक के दावों, आदि के अस्पष्ट दायरे में बने रहना बहुत दूर है। इसमें कोई शक नहीं:
अल्लाह एक ऐसी भाषा का उपयोग करता है जिसे गलत समझना असंभव है, और वह जो कुरान में स्पष्ट है।

+२८३ ३९/७ (ए११): "यदि आप (लोग*) अल्लाह को अस्वीकार करते हैं - - -।" या: "- - - अगर आप कृतघ्न हैं - - -"। नहीं
बिल्कुल वही अर्थ?

२८४ ३९/१८ (ए२२): "वे जो वचन को सुनते हैं, और उसमें सर्वश्रेष्ठ का पालन करते हैं - - -।" क्या ये
मतलब वे जो कुरान में सबसे अच्छे का पालन करते हैं? - या जो हर धर्म को सुनते हैं
प्रस्ताव और वह चुनता है जो उसका दिमाग उसे सबसे अच्छा (राज़ी) बताता है? यह कोई नहीं कहा गया है
स्पष्ट।

२८५ ३९/२३ (ए २७ - २००८ संस्करण ए २९ में): "वह (अल्लाह *) इसके साथ मार्गदर्शन करता है (कुरान *) जिसे
वह प्रसन्न करता है - - -।" लेकिन अगर आप अरब पाठ पढ़ते हैं तो यह व्याख्या बिल्कुल सही है: "हे"
गाइड - - - वह जो चाहता है (निर्देशित होने के लिए)"। बिल्कुल 100% विपरीत अर्थ। स्पष्ट
भाषा: हिन्दी?

२८६ ३९/६५ (ए६३ - २००८ में पाठ "सही" है): "लेकिन यह आपको पहले ही प्रकट कर दिया गया है - -
-।" यहाँ "तुम" कौन है? पाठ से यह मुहम्मद लगता है। लेकिन इस्लाम कहता है सामग्री
उसके लिए असंभव का मतलब हो सकता है - वह कभी भी अल्लाह के साथ देवताओं में शामिल नहीं होगा, जैसा कि इसमें कहा गया है
अगली पंक्ति। फिर यह मुसलमानों से कहा जाता है या औरों से? बस अपनी पसंद चुनें।

२८७ ४०/१५ (सभी - २००८ के संस्करण ए१२ में): "रैंकों (या डिग्री) से ऊपर उठकर, (वह (अल्लाह*)
है) भगवान - - -।" शाब्दिक अर्थ: "वह सर्वशक्तिमान के सिंहासन के - - -।" विकल्प
ए युसुफ अली के अनुसार अर्थ "द ग्लोरियस कुरान", नोट 4376 (अनुवादित .)
स्वीडिश): "वह जो अपने बनाए गए प्राणियों को उच्च सम्मान (आत्माओं के दायरे में) उठाता है।" अगर
आप सभी कुरान के माध्यम से देखते हैं, आप अस्पष्ट से बनी बहुत सारी और बहुत सारी किस्में पाते हैं
भाषा: हिन्दी।

२८८ ४०/५५ (वाईए४४२९): "- - - शाम और सुबह में अपने भगवान की स्तुति करो।" का हवाला देते हुए
"पवित्र कुरान का अर्थ" से: "लेकिन 'शाम और सुबह' वाक्यांश का अर्थ 'अति' भी है
सभी समय'"। स्पष्ट।

२८९ ४०/७० (YA4447): "- - - पुस्तक - - -।" लेकिन क्या यहाँ वाक्य कुरान या to . का उल्लेख करता है
तथाकथित "माँ पुस्तक" अल्लाह के स्वर्ग में? अस्पष्ट।

+२९० ४१/१० (वाईए४४७३): "- - - जो (भोजन) चाहते हैं"। लेकिन भले ही अरब शब्द
"सैलिन" का अर्थ "खोजने वाले" हो सकता है, इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि "जो लोग पूछते हैं या पूछते हैं" - - - और
तब अर्थ बदल जाता है - जैसे कुरान में अक्सर होता है।

२९१ ४१/२५ (अ) : "और हम (अल्लाह*) ने उनके लिए घनिष्ठ साथी (समान के) नियत किए हैं
प्रकृति), जिन्होंने उन्हें आकर्षक बनाया (नकारात्मक बातें*) - - -।" लेकिन अरब शब्द
"क़ाराना / क़ारिन" का बेहतर अनुवाद किया गया है: "हमने उन्हें सौंपा (उनके अपने बुरे आवेगों के रूप में)

उनके) अन्य स्व - - -।" दो अर्थों के बीच बहुत सारे "अंतिम अल्पविराम" हैं।

२९२ ४१/१-२ (वाईए४५२७): "हा मिम" - "ऐन सिन कफ"। इस सूरह में तथाकथित डबल सेट है "संक्षिप्त पत्र"। कोई नहीं समझता कि क्यों - या उनका क्या मतलब है। एक स्पष्ट किताब - आसान करने के लिए समझना।

२९३ ४२/८ (ए७) : "- - - वह (अल्लाह*) जिसे चाहता है अपनी दया के लिए स्वीकार करता है - - -।" या "- - - हे मार्गदर्शन करता है जिसे वह अपनी दया के लिए चाहता है - - -।" अरब पाठ "अल्लाहु यहदी मन यूशा' वा-युदिलु" मन यश" यह इसे समझने के दोनों तरीकों के लिए खुला है - और संभावना लगभग 50-50 के लिए है प्रत्येक सही होना। कुरान में एक स्पष्ट भाषा? - और भगवान के भाषण की स्पष्ट स्पष्टता?

२९४ ४२/४० (ए४१ - २००८ संस्करण ए४० में): "चोट के लिए प्रतिपूर्ति एक चोट के बराबर है उसके बाद (डिग्री में) - - -।" अरब शब्दों का शाब्दिक अर्थ है "- - - है (या "हो सकता है") an बुराई पसंद है"। और "कुरान का संदेश" के "आधुनिकीकरण" 2008 संस्करण में बिल्कुल सही है वही अरब शब्द पश्चिम और अन्य लोगों के लिए इस तरह व्याख्या करते हैं: "लेकिन (याद रखें कि an कोशिश करना) बुराई का त्याग करना भी एक बुराई बन सकता है - - -।" कोई टिप्पणी नहीं।

२९५ ४३/१२ (ए९ - २००८ संस्करण ए१० में): "(अल्लाह*) ने सभी चीजों में जोड़े बनाए हैं - - -।" या करता है इसका मतलब है "- - - (उसने *) ने सभी चीजों को बनाया है - - -"? (बगवी, ज़मखशरी, बदावी, इब्ने कथिर)। या वह "- - - सब कुछ विपरीत में निर्मित होता है - - -"? (राज़ी)। कुरान में एक लगता है बहुत सारे विकल्प होने के लिए। और ये रूपांतर अरब पाठ में भी प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के रूप में हैं एक से अधिक अर्थ हैं/हैं। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

२९६ ४३/३८ (YA4641): "क्या आपके और मेरे बीच की दूरी पूर्व की दूरी होती" और पश्चिम!" खैर, वास्तव में पूर्व और पश्चिम के बीच की दूरी शून्य है - मेरे एक तरफ है पूर्व एक दूसरे पर पश्चिम है। हालाँकि, यह स्पष्ट है कि यहाँ कुरान का अर्थ "एक बड़ी दूरी" है - और एक तरह से यह एक ऐसी अभिव्यक्ति का उपयोग कर रहा है जो वास्तव में गलत है। लेकिन यहाँ मुख्य बात यह है कि अरब पाठ का वास्तविक अर्थ है: "- - - दो पूर्व की दूरी"। एक का मानना है कि यह मतलब गर्मी और सर्दी के बीच की दूरी - कम से कम एक ऐसा मानता है। ए इस पुस्तक में स्पष्ट भाषा?

+२९७ ४३/४४ (वाईए४६४७): "(कुरान) वास्तव में तुम्हारे लिए संदेश ("धिक्र"*) है (मुहम्मद*) और आपके लोग - - -।" लेकिन अरब शब्द "धिक्र" के कई अर्थ हैं, जो इस वाक्य के कम से कम 2 अलग-अलग अर्थों में परिणाम। १) "कुरान एक संदेश देता है रसूल और उसके लोगों के लिए सत्य और मार्गदर्शन "। 2) "कुरान का रहस्योद्घाटन उठाता है" दूत का पद, और वे लोग जिनके बीच, और जिनकी भाषा में यह था

प्रख्यापित, उन्हें दुनिया के इतिहास में हमेशा के लिए याद रखने के योग्य बना दिया "। - में पुराने अरब मुसलमानों के दूसरों की तुलना में बेहतर होने के दावों की पुष्टि करने का एक प्रकार का मामला (एक के लिए) बात मुसलमान गैर-मुसलमानों से बेहतर हैं, लेकिन दूसरे अरब मुसलमानों के लिए (या कम से कम) अन्य मुसलमानों की तुलना में बेहतर थे - इस अभिमानी दृष्टिकोण ने के माध्यम से बहुत परेशानी की सदियों)।

+२९८ ४३/६१ (ए४८): और (यीशु) एक संकेत होगा (आने के लिए) घंटे (न्याय के) - - -।" या इसका मतलब यह है "और, देखो, यह (ईश्वरीय रिट (कुरान*)) वास्तव में एक साधन है कि अंतिम घंटा आने वाला है - - -" (क़तदाह, अल-हसन अल बसरी, सईद इब्न जुबैर)? ये पाठ दोनों को ही संभव बनाता है। स्पष्ट और विशिष्ट पाठ? और ये वेरिएंट - हां, ये भी हैं अरब पाठ, प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के रूप में एक से अधिक अर्थ हैं/हैं। अल्लाह (?) सच में स्पष्ट भाषा का प्रयोग करता है।

+299 44/3 (YA4690): "एक धन्य रात के दौरान - - -।" यह एक रात को संदर्भित कर सकता है (अंतिम तीसरा .) का) रमजान का महीना। या यह किसी निर्दिष्ट रात का बिल्कुल भी उल्लेख नहीं कर सकता है। स्पष्ट भाषण।

३०० ४४/१०a (YA४६९५): "फिर आप (मुहम्मद या मुसलमान) दिन के लिए देखें - - -।" परंतु जिस दिन? आम तौर पर कोई यह मानता है कि यह कयामत के दिन का उल्लेख करता है, लेकिन मुस्लिम विद्वान बता दें कि निम्नलिखित श्लोक - विशेष रूप से 44/12 - बताते हैं कि यहां ऐसा नहीं हो सकता (समय .) इस दिन के बाद पारित होना था, वे कहते हैं)। अस्पष्ट - कोई नहीं जानता।

301 44/10b (YA4696): "- - - जिस दिन आकाश एक प्रकार का धुंआ (या धुंध) लाएगा स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।" जिस दिन? - यह किसी का अनुमान है। भूख का दौर था मक्का ६१८ ईस्वी (यह सूरा ६१४ - ६१८ ईस्वी से माना जाता है) और एक अन्य सीए। 630 ई. -

दोनों वर्षों तक चले, हालांकि, दिनों के लिए नहीं। वे - और विशेष रूप से अंतिम - at
समय इतना गंभीर था कि यह लोगों की दृष्टि को प्रभावित कर सकता था। दूसरी ओर कुरान
कुछ ठोस के बारे में स्पष्ट रूप से बोलता है, कल्पना नहीं। वास्तविक अर्थ कोई नहीं जानता।

+३०२ ४४/१८ (ए११ - २००८ संस्करण ए१० में): "मुझे (मूसा*) अल्लाह के सेवकों को बहाल करो - - -
।" या "मुझे दे दो, हे अल्लाह के दास - - -।" पहला मतलब यह है कि फिरौन को सेट करना चाहिए
यहूदी स्वतंत्र, दूसरे मिस्रवासी - वे भी अल्लाह के दास - अल्लाह को स्वीकार करना चाहिए
और अच्छे मुसलमान बनो। अर्थों में बहुत बड़ा अंतर। स्पष्ट भाषा?

+303 45/21 (YA4759): "क्या! क्या वे लोग जो बुरे रास्ते खोजते हैं, यह समझते हैं कि हम (अल्लाह*)
उन्हें ईमान लाने और नेक काम करने वालों के बराबर ठहराओ - - -?" यहां 3 अलग
अर्थ संभव हैं: १) दुष्ट लोग अल्लाह की दृष्टि में धर्मी लोगों की तरह नहीं हैं। 2) The
बुरे और अच्छे लोग इस जन्म में और अगले जन्म में एक जैसे नहीं होते - बुरे वाले
इस जीवन में फल-फूल सकते हैं, लेकिन अगले में अच्छे। 3) धर्मी का वास्तविक जीवन नहीं है
दुष्टों में से एक की तरह - उनका आध्यात्मिक जीवन अलग है।

+३०४ ४६/९ए (ए१०): "मैं (मुहम्मद*) नए सिद्धांत का कोई जनक नहीं हूं - - -।" = मैं नहीं लाता
नया धर्म - मैं जो धर्म लाता हूं वह पुराना है। या: "मैं (अल्लाह के) प्रेरितों में से पहला नहीं हूं - -
-"= मुझसे पहले प्रेरित हुए हैं। या "मैं प्रेरितों में कोई अन्वेषक नहीं हूँ - - -" = नहीं
पहले विकल्प के विपरीत, लेकिन इस अर्थ पर अतिरिक्त जोर देने के साथ कि वह नहीं बदलता है
पुराना धर्म। या: "मैं अल्लाह के उन सभी संदेशवाहकों की तरह एक इंसान हूं, जो पहले थे
me" = दूसरे से बिल्कुल अलग अर्थ 3. पुराने अरब शास्त्रों में स्पष्ट भाषा?
और ये रूपांतर जितनी बार पहले भी अरब पाठ में हैं, उतने ही प्रासंगिक शब्द हैं
एक से अधिक अर्थ हैं / हैं। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

१०३९

पेज १०४०

३०५ ४६/९बी (ए११): "- - - न ही मैं (मुहम्मद*) जानता हूं कि मेरे साथ या तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा
(लोग*)।" ठीक है - लेकिन इस दुनिया में (तबारी, अल-हसन अल-बसरी), या इस और अगले दोनों में
(बायदावी)? अनुमान लगाना मुफ़्त है। और अनुमान लगाना भी बच्चों का खेल है जब भाषा अस्पष्ट होती है
और उत्तर जानने वाला कोई नहीं है।

+306 48/4 (YA4824): "लेकिन जो मारे गए हैं - - -"। लेकिन जैसा कि मूल अरब वर्णमाला थी
अधूरा, अरब में इस शब्द को 2 तरीकों से पढ़ा जा सकता है: "कतालु" = "जो लोग लड़ते हैं", और
"कतिलु" = "जो मारे गए हैं"। हमारे लिए लड़ने और होने में अंतर है
मृत।

307 48/5 (YA4825): "जल्द ही वह (अल्लाह*) उनका मार्गदर्शन करेगा और उनकी स्थिति में सुधार करेगा - - -।"
लेकिन "उन्हें" कौन संदर्भित करता है? यदि यह मृत है (ठीक ऊपर 48/4 देखें), तो यहाँ इसका अर्थ है a
भविष्य में अच्छा जीवन। अगर यह लड़ रहे हैं, तो यह केवल धन और धन का उल्लेख कर सकता है
और लूट और दासियाँ और स्त्रियों का बलात्कार करना। अपनी पसंद चुनें।

३०८ ४८/१५ (ए१४): "- - - जब आप (मुसलमान*) (स्वतंत्र हैं) मार्च करें और लूट लें (युद्ध में) - - -
।" या: "जैसे ही आप (ऐ मुसलमानों!) एक युद्ध शुरू करने वाले हैं जो लूट का वादा करता है - - -।"
कुछ अजीब (?) कारणों से हमारे किसी भी भिन्न अनुवाद में शाब्दिक अर्थ का उपयोग नहीं किया गया है
अरब पाठ का (स्वीडिश से अनुवादित): "- - - लूट लेने के लिए छापेमारी पर निकलता है - - -।" **मई
कभी-कभी कुरान के ग्रंथों की समझ में विविधताएं होती हैं क्योंकि एक
वह नहीं चाहता जो वास्तव में किताब में कहा गया है। इस्लामी जानकारी के अनुसार or
मुहम्मद के सभी छापे (हमारे पास छापे में से लगभग 60 के नाम हैं) को गलत बताया गया था
आत्मरक्षा में, और फिर "शांति के धर्म" के लिए "सुधार" करना बुद्धिमानी हो सकती है
थोड़ा पाठ करें और इसे अधिक स्वादिष्ट और सही बनाएं? - कुरान का अनुवाद करने के बजाय
सही ढंग से और स्वीकार करना होगा कि मुहम्मद ने "लूट लेने के लिए छापे मारे" - बहुत नहीं
पवित्र जिहाद।**

३०९ ४८/२० (ए२३ - २००८ के संस्करण ए२२ में): "अल्लाह ने तुमसे कई लाभ का वादा किया है जो तुम करेंगे
अधिग्रहण करना - - -।" लूट का माल। योद्धाओं को पाने का एक अच्छा और सस्ता तरीका। लेकिन क्या यहां सिर्फ बात होती है
इस जीवन में "सोना और दास और कुछ बलात्कार" (इस मामले में खेबर हो सकता है), या अगले में भी
इब्न अब्बास ने सोचा दूसरों के बीच जीवन की तरह?

३१० ४८/२१ (ए २६ - २००८ के संस्करण ए २५ में, लेकिन सबसे अधिक छोड़ा गया): "और अन्य लाभ (वहाँ हैं) जो

आपकी शक्ति के भीतर नहीं हैं, लेकिन जिन्हें अल्लाह ने घेर लिया है - - -।" क्या यह तत्कालीन भविष्य के बारे में है
मक्का की विजय जैसे कई मुस्लिम विद्वान मानते हैं? - या किसी और भविष्य के बारे में
विजय? - या अगले जीवन के बारे में? क्या पता? - लेकिन कम से कम एक अच्छे अगले जीवन के बारे में वादा करता हूँ
योद्धाओं और आतंकवादियों को आकर्षित करने के लिए सस्ता पैसा था (और है)। हो सकता है अस्पष्ट भाषा is
इस्लामी नेताओं के लिए सुविधाजनक?

३११ ५०/२१ (YA4957): "- - - प्रत्येक के साथ ड्राइव करने के लिए एक (परी (?*)) होगा, और एक (पूरी (?*)) को
गवाही देना।" कई व्याख्याएं संभव हैं: 1) यह इस्लाम के 2 स्वर्गदूतों के दावों का उल्लेख कर सकता है
अच्छे और बुरे कर्मों को नोट करने के लिए आपके दाएं और बाएं तरफ हैं। २) यह फ़रिश्ते नहीं हो सकते, लेकिन
आपके बुरे कर्म जो "आपको एक कार्य-स्वामी की तरह चलाते हैं। 3) "उनके दुरुपयोग किए गए अंगों और संकायों"
उसे उसके क़यामत की ओर ले चलो, जहां उसके अच्छे-अच्छे अंग और क्षमताएं उसकी गवाही देंगी" - to
उद्धरण "पवित्र कुरान का अर्थ" बिल्कुल।

३१२ ५०/२३: "और उसका साथी (क़यामत के दिन एक व्यक्ति) कहेगा - - -।" और एक बार
अधिक कठिन अरब शब्द: "क़ारिनुहु" - शाब्दिक अर्थ "उसका अंतरंग साथी", या
कुछ ऐसा ही ए.यूसुफ अली लिखते हैं। लेकिन इसका एक हिस्सा "क़रीन" को "(किसी का) अन्य" के रूप में पढ़ा जा सकता है

१०४०

पेज १०४१

स्व" - और फिर यह अर्थ उभरता है: "और उसका एक हिस्सा कहेगा - - -।" सचमुच एक और
अर्थ।

३१३ ५१/१-४ (ए१): "(हवाओं (?*)) द्वारा जो बिखराव प्रसारित करता है; और जो उठाते हैं और सहन करते हैं
भारी वजन; और जो पूरब और नम्रता से ढिलाई करते हैं; और जो बांटते हैं और
कमांड द्वारा विभाजन - - -।" कोई भी – कोई भी – जो वास्तविक और विश्वसनीय जानकारी दे सकता है
यहाँ जो अर्थ है उसके बारे में, कम से कम इस्लामिक दुनिया में प्रसिद्ध होगा, कम से कम
धार्मिक विद्वान। कोई कुछ नहीं जानता या समझता है - सिवाय इसके कि शायद हवा है
शामिल - लेकिन कई अनुमान। यहाँ अल्लाह (?) द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली एक अनुकरणीय स्पष्ट भाषा।

३१४ ५१/२ (वाईए४९८८): "- - - और जो भारी वजन उठाते और उठाते हैं - - -"। यह क्या करता है
अर्थ? - वर्षा? - बादल? - या जो कुछ भी? कोई नहीं जानता।

३१५ ५१/३ (वाईए४९८९): "- - - और जो सहजता और नम्रता के साथ बहते हैं - - -।" अर्थ ??? यह
हवा हो सकती है - यह सिर्फ अनुमान है, लेकिन एक उचित अनुमान है। "स्याही और अंधेरे की तरह साफ।"

३१६ ५१/४ (वाईए४९००): "- - - और जो कमांड द्वारा वितरित और विभाजित करते हैं - - -"। 51/3 . देखें
ठीक ऊपर - और 51/1-4 और 51/2 ऊपर।

३१७ ५१/३५-३६ (ए२३ - २००८ संस्करण में छोड़ा गया): इन दो छंदों में कौन बात कर रहा है? - क्या यह है
फ़रिश्ते जो ५१/३४ से जारी हैं, या वह अल्लाह है जिसने बोलना शुरू किया है? इसलाम
अनुमान

318 52/2 (YA5038): "- - - एक डिक्री द्वारा खुदा हुआ - - -"। यह आलंकारिक या रहस्यवाद है? अर्थात्
किसी का अनुमान।

३१९ ५२/४ (वाईए५०३९): "- - - एक बहुत बार-बार होने वाले फैन द्वारा - - -"??? एक अनुमान है कि यह हो सकता है
मतलब काबा, या कोई मस्जिद, या तम्बू, या यरूशलेम में मंदिर - - - एक
अनुमान

३२० ५२/६ (ए ४): "और प्रफुल्लित से भरे महासागर द्वारा - - -।" लेकिन अरब मूल "अल-बहरी 'एल-
मसदजुर" का अर्थ है: "ज्वलंत समुद्र के द्वारा"। अगर कुछ है तो आप पानी के बारे में कभी नहीं कह सकते, यह
क्या वह प्रज्वलित है - ठीक है, सूर्यास्त और सूर्योदय के समय इसका थोड़ा सा हिस्सा ज्वाला जैसा लग सकता है, लेकिन जैसा कि
१४०० वर्षों के बाद इस्लाम - अच्छे कारण के साथ क्योंकि यह सिर्फ एक मृगतृष्णा या प्रतिबिंब है - नहीं है
उस "उत्तर" को गले लगा लिया, यह स्पष्ट रूप से कुछ और है। पर क्या? फिर से: स्पष्ट भाषण?

३२१ ५२/२८ (ए१५ - २००८ संस्करण ए१६ में): "वास्तव में, हम (स्वर्ग में मुसलमान*) ने उसे पुकारा था
(अल्लाह*) प्राचीन काल से: वास्तव में वही है जो उपकार करने वाला, दयालु है।" लेकिन यहाँ हम में भागते हैं
पुराने अरब व्यंजन वर्णमाला के साथ परेशानी: क्या हमने सही स्वरों का अनुमान लगाया है? वहां
दो अरब शब्द हैं: "अन्नाहू" ("वह है"), f द्वारा इष्ट। भूतपूर्व। मदीना स्कूल, और
"इन्नाहू" ("वह है" या "वास्तव में, वह है"), f द्वारा इष्ट। भूतपूर्व। कुहफा और बसरा। एक देता है
ऊपर उद्धृत अर्थ, दूसरा: "वास्तव में हमने उसे (अकेले) आह्वान किया था: (और अब वह)

(अकेले) सो है) कि एक छोटा सा विवरण, लेकिन यह स-कारने के लिए कला, महत्वपूर्ण है, स, बिना कहीं होगा
विवरण पर भी स्पष्ट?

३२२ ५२/३५ (वाईए५०६९): "क्या वे ("मिनट"*) कुछ भी नहीं - - -" से बने थे। लेकिन अरब पूर्वसर्ग "मिनट" के अधिक अर्थ हैं: "का", "द्वारा", "के साथ", "के लिए"। जो कम से कम ये अतिरिक्त दें व्याख्याएं: 2) "क्या वे कुछ भी नहीं बनाए गए थे - - -"। ३) “क्या वे बिना कुछ लिए बनाए गए थे (के लिए .) कोई उद्देश्य नहीं) - - -"। क्या कोई ईश्वर इतनी अस्पष्ट भाषा का प्रयोग करेगा?

+३२३ ५२/४९ (वाईए५०८२): "- - - जबकि आप (मुहम्मद या मुसलमान*) खड़े हैं (प्रार्थना में*) - - -।" लेकिन अरब शब्द "तकुमु" का सामान्य अर्थ है "नींद से उठना" - एक अर्थ मुस्लिम टीकाकार अक्सर यहां व्याख्या करते हैं। स्पष्ट भाषा नहीं है।

324 53/1a (YA5085): "स्टार द्वारा - - -"। अरब शब्द "नजम" के कई अर्थ हैं - यह च। भूतपूर्व। इसका अर्थ एक तारा (कोई भी तारा) हो सकता है या इसका अर्थ प्लीएड्स ("7-सितारे") हो सकता है। 53/1b भी देखें नीचे।

३२५ ५३/१बी (ए१): "तारे के द्वारा जैसे वह नीचे जाता है - - -।" लेकिन अरब शब्द "नज्म" का अर्थ यह भी हो सकता है "खुलासा" - कुछ ऐसा जो धीरे-धीरे प्रकट होता है। और फिर एक और अर्थ प्रकट होता है: "इसे (अल्लाह के संदेश (कुरान*) के प्रकट होने पर विचार करें, क्योंकि यह ऊपर से नीचे आता है!" "डाउन-टू-अर्थ" विद्वान ज्यादातर पहले के लिए जाते हैं, कुछ अन्य दूसरे के लिए - इच्छाधारी सोच का कभी-कभी प्रबल प्रभाव हो सकता है।

326 53/1c (YA5085): "तारे द्वारा जैसे ही यह नीचे जाता है - - -।" लेकिन भले ही अरब शब्द "हवा" इसका अर्थ "नीचे जाना" या "सेट" हो सकता है, इसका अर्थ "उठना" भी हो सकता है। द्वारा प्रयोग की जाने वाली एक बहुत ही भ्रमित करने वाली भाषा अल्लाह - या किसी के द्वारा।

३२७ ५३/२८ (ए २१): "लेकिन उन्हें (मनुष्यों) को इसमें कोई ज्ञान नहीं है (स्वर्गदूतों का लिंग, आदि।*)।" लेकिन अरब सर्वनाम "हाय" शायद स्वर्गदूतों को इंगित नहीं करता है। शायद यह इंगित करता है अल्लाह (एम। असद)। उस मामले में वाक्य का अर्थ है: "लेकिन उन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं है अल्लाह के बारे में।" स्पष्ट भाषण?

३२८ ५४/१ (वाईए५१२८): "- - - चाँद अलग हो गया है।" यह समझाया नहीं गया है। यह 1 का उल्लेख कर सकता है) एक कहानी के बारे में एक बार जब चंद्रमा मुहम्मद के समय में अलग हो गया था (हदीस में उल्लिखित)। 2) कयामत के निकट आने का एक भविष्य का संकेत (संभावित) अर्थ)। 3) सिर्फ एक रूपक बयान। बल्कि एक भगवान से अस्पष्ट भाषण?

+329 54/2 (YA5129): "यह (लेकिन) क्षणिक जादू है"। लेकिन अरब शब्द "मुस्तमिर" मे इसका अर्थ "शक्तिशाली" = "- - - शक्तिशाली जादू" भी है। 2 अर्थ।

३३० ५५/१३ (ए४) : "तो फिर तुम अपने रब (अल्लाह*) की किस नेमत से इनकार करते हो?" का हिस्सा यहां प्रश्न अंग्रेजी में नहीं आता है, क्योंकि "आप" एकवचन और बहुवचन में समान है। परंतु अरब में एकवचन और बहुवचन दोनों होते हैं और इसके अलावा दोहरी - दो से बात करते समय। और इसमें मामले में यह दोहरी प्रयोग किया जाता है, तो यह स्पष्ट है कि प्रश्न दो से पूछा जाता है। लेकिन कौन से दो? - आखिर यह है एक बहुत ही आवश्यक प्रश्न है, और किसी को पता होना चाहिए कि संबोधित करने वाले कौन हैं। इस्लाम के लिए अनुमान लगाता है दो समूह, जिन्न और पुरुष, या पुरुष और महिला हो सकते हैं। लेकिन यह केवल अनुमान के रूप में पाठ के रूप में है अक्सर कुरान में स्पष्ट से बहुत दूर है।

३३१ ५५/१६: ठीक ऊपर ५५/१३ के समान।

३३२ ५५/१७: "(वह (अल्लाह*) है) दो पूर्वों का स्वामी और दो पश्चिमों का स्वामी"। सबसे गुप्त अधिकांश मुसलमानों के लिए - आप मुसलमानों से यह कहते हुए भी मिलेंगे कि यह इस बात का प्रमाण है कि कुरान जानता था पृथ्वी गोलाकार है !! पढ़े-लिखे मुसलमान मानते हैं - मानते हैं - यह विषुवों की ओर इशारा करता है। स्पष्ट?

३३४ ५५/१८: ऊपर ५५/१३ के समान।

३३५ ५५/२१: ऊपर ५५/१३ के समान।

३३६ ५५/२३: ऊपर ५५/१३ के समान।

पेज १०४३

३३७ ५५/२५: ऊपर ५५/१३ के समान।

३३८ ५५/२८: ऊपर ५५/१३ के समान।

३३९ ५५/३०: ऊपर ५५/१३ के समान।

340 55/32: उपरोक्त 55/13 के समान।

३४१ ५५/३४: ऊपर ५५/१३ के समान।

३४२ ५५/३४: ऊपर ५५/१३ के समान।

३४३ ५५/३६: ऊपर ५५/१३ के समान।

३४४ ५५/३८: ऊपर ५५/१३ के समान।

३४५ ५५/४०: ऊपर ५५/१३ के समान।

३४६ ५५/४२: उपरोक्त ५५/१३ के समान।

३४७ ५५/४५: ऊपर ५५/१३ के समान।

३४८ ५५/४७: उपरोक्त ५५/१३ के समान।

३४९ ५५/४९: उपरोक्त ५५/१३ के समान।

३५० ५५/५१: ऊपर ५५/१३ के समान।

351 55/53: उपरोक्त 55/13 के समान।

352 55/55: उपरोक्त 55/13 के समान।

३५३ ५५/५७: ऊपर ५५/१३ के समान।

३५४ ५५/५९: उपरोक्त ५५/१३ के समान।

३५५ ५५/६१: उपरोक्त ५५/१३ के समान।

३५६ ५५/६३: ऊपर ५५/१३ के समान।

३५७ ५५/६५: उपरोक्त ५५/१३ के समान।

३५८ ५५/६९: ऊपर ५५/१३ के समान।

३५९ ५५/७१: उपरोक्त ५५/१३ के समान।

360 55/73: ऊपर 55/13 के समान।

३६१ ५५/७५: उपरोक्त ५५/१३ के समान।

१०४३

पेज १०४४

३६२ ५५/७७: उपरोक्त ५५/१३ के समान।

३६३ ५५/३१ (ए१४): "हे दोनों जगत्"। आदमी और जिन्न? आदमी और औरतें? या कुछ और?
क्या पता? ऊपर 55/13 देखें। और ये रूप - हमेशा की तरह - अरब पाठ में भी हैं, जैसे कि
प्रासंगिक शब्द (ओं) के एक से अधिक अर्थ हैं / हैं। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट . का उपयोग करता है
भाषा: हिन्दी।

+३६४ ५५/३७ (ए१८): "जब आकाश फट जाता है (अंतिम दिन*), और यह फिर जैसा हो जाता है
मरहम"। लेकिन अरब शब्द "दीहान" के अधिक अर्थ (तबारी) हैं, और वाक्य समाप्त हो सकता है
"- - - जैसे (जलता हुआ) तेल", या "- - - जैसे ताजा तनी हुई चमड़ा", या "- - - लाल चमड़े की तरह"
(ज़मखशरी), या "जैतून के तेल की तरह" (राघिब)। एक विवरण - एक छोटा विवरण भी। परंतु
क्या कोई भगवान अनुमान लगाने के लिए छोटे विवरण भी छोड़ देगा? कम से कम यह "स्पष्ट भाषा" से दूर है।

३६५ ५५/४४ (ए२१): "उबलते गर्म पानी के बीच में वे घूमेंगे!" लेकिन एक बार फिर:
अरब शब्दों के एक से अधिक अर्थ हो सकते हैं। "उबलते पानी" - "हमीम" - का भी अर्थ हो सकता है
एफ। भूतपूर्व। "जलती हुई निराशा" या "काटने वाली ठंड"। अल्लाह का (?) सही अर्थ f हो सकता है। भूतपूर्व। "- - - में
जलती हुई निराशा के बीच वे इधर-उधर भटकेंगे "। कोई भी उनका अर्थ चुन सकता है
पसंद करना। और ये रूपांतर अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि वहां प्रासंगिक शब्द हैं/हैं
एक से अधिक अर्थ। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

३६६ ५५/४६ (ए२२): "- - - दो बगीचे होंगे (दो स्वर्ग*) - - -।" यह इनमें से एक है
स्पष्ट बोली जाने वाली कुरान में रहस्यमय रहस्य, और इस्लाम 1400 वर्षों से अनुमान लगा रहा है
इसका क्या मतलब है। एफ. पूर्व. "उनके (अच्छे मुसलमानों*) अच्छे कर्म करने के लिए एक जन्नत, और दूसरा
उनके पापों से बचने के लिए" (ज़मखशरी), या "एक स्वर्ग जिसमें आध्यात्मिक और दोनों शामिल हैं
भौतिक सुख, मानो दो जन्नत हों" (राज़ी), या दो बगीचों के बीच भटकना
जन्नत कहा जाता है। हाँ, यह एक बहुत ही स्पष्ट और संक्षिप्त भाषा है जो आप कुरान में पाते हैं।

+३६७ ५५/४८ (ए२३): "- - - सभी प्रकार (पेड़ों और प्रसन्न) से युक्त - - -।" लेकिन हम वापस आ गए हैं
संक्षिप्त और विशिष्ट अरब भाषा: शब्द "फ़ैन" (बहुवचन "अफनान"), में कई हैं
अर्थ: "दयालु", "मोड", "तरीका", रंग "," रंग "," एक अद्भुत चीज "और बहुत कुछ, और
बहुवचन रूप "अफनान" का अर्थ "पेड़ की शाखा" आदि भी हो सकता है, जो एक अमीर को जुड़ाव देता है
प्रकृति, ठंडी छाँव, ढेर सारे अलग-अलग फल, आदि। बस अनुमान लगाते रहो - इस वाक्य में है a
संभावित अर्थों की संख्या, तो बस अनुमान लगाएं कि आप किस प्रकार का स्वर्ग पसंद करते हैं। परंतु
याद रखें कि केवल अनुमान है। और ये रूप निश्चित रूप से अरब पाठ में भी हैं, जैसे
प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के एक से अधिक अर्थ हैं/हैं। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट . का उपयोग करता है
भाषा: हिन्दी।

३६८ ५५/६२ (ए२८): "और इन दोनों के अलावा, दो अन्य बगीचे होंगे - - -।" एक और
इस्लाम के लिए पहेली: किस लिए? एक "क्यों" भी होना चाहिए था, लेकिन हमने नहीं किया
सभी जगह दौड़ाना। तो "किस लिए?" निम्न गुणवत्ता वाले अच्छे मुसलमानों के लिए हो सकता है - जिनके पास है
कम योग्यता प्राप्त की? - या "कई बगीचों" का प्रतीक हो सकता है - लेकिन कुरान केवल उल्लेख करता है
ये 2 + 2, और अधिक के बारे में संकेत भी न दें। या - - -? आपका अनुमान उतना ही अच्छा है
किसी का क्योंकि कोई नहीं जानता। जैसा कि पहले बताया गया है: कुरान स्पष्ट और संक्षिप्त की ओर ले जाता है
केवल सटीक जानकारी देने वाली भाषा।

+३६९ ५५/७६ (वाईए५२२०): "- - - हरे कुशन पर झुकना - - -"। लेकिन अरब शब्द "रफराफ"
इसका अर्थ "घास का मैदान" = "- - - हरी घास के मैदान पर" भी हो सकता है।

३७० ५६/१० (ए३ - २००८ संस्करण में छोड़ा गया): "और वे सबसे महत्वपूर्ण (विश्वास में (यह समावेश है)
ए युसुफ अली द्वारा जोड़ा गया और मूल पाठ का हिस्सा नहीं*)), सबसे आगे होगा (में)

१०४४

पेज १०४५

इसके बाद (यह भी जोड़ा गया*))"। लेकिन अरब शब्द "अस-सबिकुन" - यहाँ "द" द्वारा अनुवादित है
सबसे आगे "- के अधिक अर्थ हैं, जिससे इस वाक्य की अलग-अलग व्याख्याएँ हुई हैं,
और वे व्याख्याएं (स्वीडिश से अनुवादित): "सभी भगवान हैं और स्वीकार किए जा सकते हैं" (इब्न)
कथिर)। यह स्वीकार करना होगा कि यहां भी कुरान में स्पष्ट और संक्षिप्त भाषा नहीं है
संक्षिप्त - और अस्पष्ट। और ये वेरिएंट भी - जैसा कि हमने कई बार कहा है - अरब में हैं
पाठ, प्रासंगिक शब्द के रूप में एक से अधिक अर्थ हैं/हैं। अल्लाह (?) वास्तव में a . का उपयोग करता है
स्पष्ट भाषा।

३७१ ५६/२८ (YA5238): "- - - लोटे के पेड़ों के बीच - - -।" यह एक प्रकार के पेड़ के मामले में है, वह फूल
बहुतायत से। लेकिन अरब शब्द "ताल्ह" - इसका अर्थ केले का पेड़ हो सकता है (भले ही

केले के पेड़ के लिए सामान्य अरब शब्द "माव्ज़" है, जैसे कुछ मुसलमान इसे समझते हैं?

+372 56/37 (ए15): "- - - उम्र में बराबर - - -"। आपकी पत्नियाँ (और रखैलें और दासियाँ?)
हमेशा के लिए युवा कुंवारी के रूप में पुनर्जीवित किया जाएगा (यह कहीं भी नहीं कहा गया है) महिलाओं के बराबर
आप के लिए उम्र, जो एक युवा वयस्क के रूप में भी पुनर्जीवित होते हैं। लेकिन यहाँ जो अरब शब्द है
"हमेशा के लिए युवा", "अतरब" - बहुवचन "तिर्ब" - का अनुवाद "अच्छी तरह से मेल खाने वाला" भी हो सकता है। भी
अच्छा - शायद और भी बेहतर - लेकिन एक ही अर्थ नहीं। और ये वेरिएंट भी में हैं
अरबी पाठ, प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के रूप में एक से अधिक अर्थ हैं/हैं। अल्लाह (?) वास्तव में उपयोग करता है
एक स्पष्ट भाषा।

+२७३ ५६/७५ए (ए२६): "इसके अलावा मैं सितारों की स्थापना को देखने के लिए बुलाता हूं"। अरब शब्द
"मावकी" - बहुवचन "मवाकी" - का शाब्दिक अर्थ है "वह स्थान (या समय) जहां (कब) कुछ
नीचे गिर जाता है"। और अरब शब्द "नुद्जुम" - यहाँ "सितारे" - का अर्थ भी कुछ इस तरह हो सकता है
"अध्याय"। "एर्गो" और "वोइला": एक अधिक पवित्र अनुवाद: "मैं आने वाले पतन को देखने के लिए कहता हूं
भागों में (इस कुरान के)"। इस संभावना को न छोड़ें कि इच्छाधारी या "सही" सोच हो सकती है
प्रभाव व्याख्या। यहाँ कम से कम दो अर्थ हैं - हालाँकि पहला सबसे अधिक है
एक स्वीकार किया।

374 56/75b (YA5258): "- - - सितारों की सेटिंग - - -।" यहां कई संभव हैं
शाब्दिक किस्मों के अतिरिक्त रहस्यवादी अर्थ (ऊपर 56/75a देखें)। यहाँ ३ हैं
संभावनाएं: १) विनम्रता का प्रतीक। 2) कयामत के दिन के लिए लाक्षणिक भाषण। 3) The
उज्ज्वल चीजें जो हमें पसंद हैं वे गायब हो सकती हैं। "स्पष्ट भाषण", हाँ।

375 57/8 (YA5283): "- - - आपकी वाचा - - -"। क्या यह उस वाचा को संदर्भित करता है जो कि है
इस्लाम स्वीकार करने का परिणाम? - या बाइबिल में उल्लिखित या संकेतित अनुबंधों में से एक के लिए
कुरान में अन्य स्थान?

३७६ ५७/१८ (ए२६): "उनके लिए जो दान में देते हैं - - -।" यह मानक व्याख्या है यदि
आप कुरान के उस संस्करण का उपयोग करते हैं जिसका नाम "आसिम फ्रॉम कूफा आफ्टर हाफ्स" के नाम पर रखा गया है - या केवल संक्षेप में
"हाफ्स के बाद पढ़ने का तरीका"। (एक बार कुरान के 14 स्वीकृत संस्करण थे - और
वास्तविकता में अधिक। सदियों से उनमें से अधिकांश अनुपयोगी हो गए हैं, और आज केवल 2 ही उपयोग में हैं
दैनिक उपयोग: यह एक (जो प्रमुख है) और "युद्ध के बाद मदीना से नफी" (में प्रयुक्त)
अफ्रीका के बड़े हिस्से) - या सिर्फ "युद्ध के बाद पढ़ने का तरीका"। इस्लाम कभी शब्द का प्रयोग नहीं करता
इन 14 और अधिक किस्मों के लिए "संस्करण", और ज्यादातर दिखावा करते हैं कि वे मौजूद नहीं हैं - वे कहते हैं
उन्हें "पढ़ने के तरीके"; एक पाखंडी का असली सच छुपाने का तरीका - इसे झूठ कहो, इसे अल कहो-
तकिया, इसे एक खतरनाक सच्चाई से उड़ान कहते हैं।) लेकिन इतने छोटे विवरणों पर निर्भर करता है जैसे कि
"सैड" और "दाल" जैसे लैटिन अक्षरों में लिखे जाने वाले व्यंजनों का वोकलिज़ेशन,
इसका अर्थ बदल जाता है: "वास्तव में, उन पुरुषों और महिलाओं के लिए जो सत्य को सत्य मानते हैं"
(ज़माख़शरी, असद)। कुरान में एक स्पष्ट और संक्षिप्त भाषा? कोई भी भगवान बहुत था
यह सुनिश्चित करने के लिए अधिक सटीक है कि हर कोई समझ सकता है - और यह कि हर कोई सहमत है

अर्थ और पंथ और संप्रदायों में विभाजित नहीं - - - जैसे इस्लाम के साथ हुआ है
इतिहास (ऐसा कहा जाता है कि इस्लाम में लगभग ३००० संप्रदाय मौजूद हैं या मौजूद हैं)।

३७७ ५८/४ (वाईए५३३७): "- - - वह साठ गरीब लोगों को खिलाना चाहिए - - -"। हम "The ." से उद्धृत करते हैं
पवित्र कुरान का अर्थ": "(१४०० साल बाद भी) बहुत कुछ सीखा हुआ है
के तहत तोप (शरिया*) कानून की सटीक आवश्यकताओं के बारे में न्यायविदों के बीच तर्क
निर्धनों को "खिलाना" शब्द।" क्या कोई भगवान इतना अस्पष्ट भाषण देगा कि विशेषज्ञ भी कभी नहीं हैं
यह समझने में सक्षम है कि वह वास्तव में क्या मतलब है, यहां तक कि संभवतः समझाने में आसान है
इस तरह की समस्याएं?

३७८ ५८/११ (ए१८): "जब तुमसे कहा जाए कि सभाओं में जगह बनाओ, (फैलाओ और) बनाओ
कमरा - - -।" मुहम्मद के आसपास भीड़ में? - मस्जिदों में? - ज़िन्दगी में? मुसलमान करते हैं
विश्वास करें कि यह विकल्प 2 को संदर्भित करता है - लेकिन यह केवल एक अनुमान है। स्पष्ट भाषण?

+379 59/21: "क्या हम (अल्लाह*) ने इस कुरान को किसी पहाड़ पर उतारा होता - - -" (= पहाड़ पर)।
लेकिन अरब पाठ आपको एक शब्द को बदलने की अनुमति देता है - और दूसरा अर्थ प्राप्त करता है: "हदी
हमने इस कुरान को एक पहाड़ पर ऊँचे से उतारा - - -।" यहाँ इसका अर्थ है किसी को भेजा गया
- पु रूप? - पहाड़ पर ऊंचे स्थान से। बस चुनाव करें।

00l 59/23 (YA5402): यहां हम केवल "पवित्र कुरान का अर्थ" उद्धृत करना चाहते हैं: "कैसे

क्या एक अनुवादक शानदार अरबी की उदात्तता और व्यापकता को पुन: पेश कर सकता है
शब्द, जिसका अर्थ है एक ही प्रतीक में इतना गूढ़?" **लेकिन यह सिर्फ एक और महिमा है**
कहने का तरीका: "कोई ऐसी भाषा से कैसे अनुवाद कर सकता है जहां शब्द इतने कम हों
अर्थ में सटीक और इतना अस्पष्ट, कि यह जानना मुश्किल है कि वास्तव में क्या मतलब है"।

३८० ६१/२ (ए१): "हे विश्वास करने वालों! तुम वह क्यों कहते हो जो तुम नहीं करते?" क्या यह मुसलमानों के लिए है
उहुद की लड़ाई से पहले मुहम्मद को छोड़ दिया? - या पाखंडियों के लिए? - या दूसरों को? आपका अनुमान इस प्रकार है
किसी और की तरह अच्छा। साफ भाषा।

381 61/6 (ए 7 - छोड़ा गया और पाठ 2008 संस्करण में बदल गया): "लेकिन जब वह उनके पास आया
स्पष्ट संकेतों के साथ - - -।" यह "वह" कौन है? पद ६१/६ में पुस्तक यीशु के बारे में बताती है, और
प्राकृतिक व्याख्या "वह" = यीशु है, लेकिन यह स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है। के अनुसार एक विकल्प
इस्लाम, "वह" = मुहम्मद (जैसा कि वे दावा करते हैं कि उनके पास स्पष्ट संकेत थे)। दोनों विकल्प संभव हैं (लेकिन
"कुरान का संदेश" के कम ईमानदार 2008 संस्करण के लिए विशिष्ट, वे केवल इसका उल्लेख करते हैं
मुहम्मद वैकल्पिक - "अच्छे" तर्क नैतिक अखंडता से अधिक आवश्यक हैं और
धर्म में भी ईमानदारी

३८२ ६१/१३ (ए१३): "- - - अल्लाह से मदद और एक त्वरित जीत।" क्या यह पेप-टॉक है? (कोई मुसलमान नहीं
सहमत होंगे)। क्या मक्का पर कब्जा करने की उम्मीद है? - यह 4-5 साल पहले कहा गया था। क्या यह का जिक्र कर रहा है
एक या एक से अधिक छापे जो मुसलमानों ने कुछ साल पहले शुरू किए थे? - या छापे
आइए? या भविष्य के लिए एक सामान्य आशा? अपना अनुमान लगाएं - जब तक वे न्याय नहीं करते तब तक कोई नहीं जानता
इच्छाधारी सोच या "सही" अर्थों से, क्योंकि पुस्तक कुछ नहीं कहती है। बहुत स्पष्ट भाषण।

+२८३ ६२/४ (ए३) : "अल्लाह का अनुग्रह ऐसा है, जिसे वह चाहता है - - -।" या:
"वह इसे किसी को भी देता है जो इच्छुक है (इसे प्राप्त करने के लिए)।" ये दो व्याख्याएं हैं
अरब पाठ की तुलना में समकक्ष। स्पष्ट भाषण? - अर्थ तो निश्चित रूप से हैं
विभिन्न। और ये रूपांतर स्वाभाविक रूप से अरब पाठ में भी हैं, वहां प्रासंगिक शब्द के रूप में
एक से अधिक अर्थ हैं / हैं। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

+३८४ ६४/११ (ए९) : "- - - अगर कोई अल्लाह पर ईमान रखता है, (अल्लाह) उसके दिल को सही दिशा देता है (ठीक) - -।" या
कुछ इस तरह "- - - आस्तिक के दिल में विश्वास, उसे अल्लाह की ओर ले जाता है - - -।"
दोनों अरब स्पष्ट पाठ से संभव हैं।

३८५ ६६/१२ (ए २६): "- - - हम (अल्लाह*) ने (उसके (मैरी के) शरीर में) हमारी आत्मा - - - में सांस ली। करता है
यह संदर्भित करता है कि यीशु को कैसे बनाया गया था? - या क्या यह आत्मा के सामान्य हस्तांतरण को संदर्भित करता है कि
इस्लाम के अनुसार मनुष्य को भ्रूण बनाता है, और जो इस्लाम के अनुसार होता है 5
बच्चे के जन्म के महीनों पहले? कोई नहीं जानता - और यह ईमानदारी से आध्यात्मिक रूप से एक आवश्यक है
सिर्फ इस मामले में सवाल। लेकिन पाठ इससे अधिक स्पष्ट नहीं है।

३८६ ६७/५ (ए५ - २००८ संस्करण में छोड़ा गया): "हम (अल्लाह*) ने, (पुराने से) को सजाया है
निम्नतम स्वर्ग (7 में से कुरान अक्सर बताता है, और जिसके बारे में मुहम्मद भी कहते हैं
दौरा किया*) लैंप (तारे*) के साथ, और हमने ऐसी (लैंप) (as) मिसाइलें बनाई हैं जो दूर भगाने के लिए हैं
दुष्ट - - -।" लेकिन असहमति चिंता का विषय है: क्या यह शूटिंग सितारों में पत्थर है जो पीछा करते हैं
जिन्न, आदि दूर? - अरब शब्द "रुदजुम" - "रज्जम" के बहुवचन का अर्थ है "पत्थर फेंकना"
या "पत्थरबाजी" (शैतान के लिए एक नाम f. उदा। "अर-राजिम" = "पत्थर वाला")। या यह आग है?
- कुरान में वास्तव में आग का जिक्र है। एक बार और: अनुमान लगाना शुरू करें। (2008 का संस्करण "The ."
कुरआन का पैगाम भी एक नया मिला है - कम से कम हमारे लिए नया: कुरान बात नहीं कर रहा है
सितारों के बारे में शूटिंग सितारों की तरह इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन बुरे ज्योतिषियों द्वारा भविष्यवाणी के लिए वस्तुओं के रूप में उपयोग किया जाता है।
उस निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए उन्हें बहुत आसान शब्दों की आवश्यकता है, लेकिन क्या? - जैसा कि हमने संकेत दिया है
पहले: कभी-कभी धर्म ईमानदारी और बौद्धिक अखंडता से अधिक आवश्यक होता है।
यद्यपि हमने इस विषय को पहले भी छुआ है, हम फिर से पूछते हैं: **यह क्या दर्शाता है कि a**
धर्म को छल और बेईमानी का सहारा लेना पड़ता है? आम तौर पर ऐसी विधियों का मतलब है कि एक
वास्तविक तर्क नहीं है। **धर्म में भी एक गंभीर तथ्य है: यदि कोई अगला है**
जीवन, और यदि किसी धर्म को अपने जीवन को झूठ पर आधारित करने की आवश्यकता है - यहां तक कि केवल आंशिक रूप से - यह एक मजबूत है
इस बात का संकेत है कि धर्म सत्य पर आधारित नहीं है। और उस मामले में इसके विश्वासियों
किसी जन्नत में नहीं जागेगा।)

387 68/1 (YA5592): "नन"। यह तथाकथित "संक्षिप्त अक्षरों" में से एक है जिसे आप पाते हैं

सूरह के 29 में से शीर्ष - और जिसके बारे में कोई कुछ नहीं समझता है। वे कुल हैं
पहेली कुछ मामलों में उन्हें शब्दों के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है - डिजाइन द्वारा या संयोग से भी
किसी को नहीं मालूम। यह उन मामलों में से एक है क्योंकि अरब पत्र जिसका उच्चारण "नन" भी हो सकता है
मतलब मछली या स्याही धारक। कोई नहीं जानता कि मामले में इसका क्या अर्थ है, लेकिन आपको बहुत कुछ मिल सकता है
अटकलों का। जैसा कि इस अध्याय में कई बार कहा गया है: अल्लाह या किसी और ने वास्तव में अ का इस्तेमाल किया है
इस पुस्तक में स्पष्ट और समझने में आसान भाषा।

३८८ ६८/१३ (ए८): "हिंसक (और क्रूर) - उस सब के साथ, आधार-जनित ("ज़ानिम") - - -।" समस्या यह है
कि कोई नहीं जानता कि अरब शब्द "ज़ानिम" का क्या अर्थ है - ऐसा लगता है कि इसका निर्माण
कुरान के निर्माता। कई अनुमान लगाए गए हैं। ज़माखशरी, रज़ी, और अन्य तर्क देते हैं
इसका मतलब यह हो सकता है कि "विवाह से पैदा हुआ"। स्पष्ट भाषा?

389 68/14 (YA5602): "- - - क्योंकि उसके पास धन और (कई) पुत्र हैं"। लेकिन कौन करता है
यह "क्योंकि वह" इंगित करता है? - 68/14 में हिंसक और क्रूर व्यक्ति (ठीक ऊपर देखें) या
68/10 में नीच झूठा? अस्पष्ट।

३९० ६८/४१: "या क्या उन्होंने ("काफिरों"*) कुछ 'साझेदार' (भगवान में) हैं?" ज़माकज़री और रज़ीक
सोचता है कि "साझेदार" एक ही विश्वास के बुद्धिमान मनुष्यों ("उकला") को संदर्भित करते हैं। इब्न कथिर और अन्य कि
यह "निम्न" देवताओं को संदर्भित करता है। इस बिंदु पर कुरान अस्पष्ट है।

१०४७

पेज १०४८

३९१ ६९/१७ (ए११): "और स्वर्गदूत उसके किनारों पर होंगे, और आठ दिन (कयामत के दिन) होंगे।
उनके ऊपर अपने प्रभु (अल्लाह*) का सिंहासन धारण करो।" लेकिन अगर अल्लाह कुछ फैलाना है कि
हर जगह, वह सिंहासन का उपयोग कैसे कर सकता है? - और अगर वह इतना बड़ा है तो सिर्फ 8 कोण उसे कैसे ले जा सकते हैं?
इस्लाम अभी भी नहीं जानता है। दूसरी ओर: आप मुसलमानों को पूरी तरह से आश्वस्त हो सकते हैं
जिसे यह मूल रूप से कहा गया था - भोले और अशिक्षित और विश्वास करना चाहते थे - यह विश्वास करते थे
एक सटीक तस्वीर थी। स्पष्ट भाषा?

३९२ ६९/३६ (ए२०): "न ही उसके पास (नरक में पापी*) भ्रष्टाचार के अलावा कोई भोजन नहीं है
घावों की धुलाई ('घिसलिन')"। समस्या यह है कि एक बार फिर एक अरब शब्द है कोई नहीं
समझता है, या कभी समझा है; "घिसलिन"। दुभाषिया उसमें क्या अर्थ रखता है
शब्द, घृणित कुछ के बारे में सिर्फ अनुमान है। बहुत स्पष्ट भाषा!

+३९३ ७०/२८ (वाईए५६९३): "उनके भगवान की नाराजगी शांति के विपरीत है और
शांति"। लेकिन इस अरब पाठ का अर्थ यह भी हो सकता है "और उनके भगवान की नाराजगी एक है"
जिसके खिलाफ कोई सुरक्षा नहीं है।" एक बार फिर गौरवान्वित भाषा में अलग-अलग अर्थ -
या वर्णमाला - पुराने अरब की।

३९४ ७१/७ (वाईए५७१०): "- - - (गैर-मुस्लिम*) अपने कपड़ों से खुद को ढँक लेते हैं - - -।" परंतु
क्या इसका शाब्दिक या लाक्षणिक अर्थ यहाँ है? - घमंड, बुरी आदतें, रीति-रिवाज, परंपराएं, और उनके
अल्पकालिक हितों और मानकों? यह किसी का अनुमान है।

395 71/13 (YA5713A): "- - - जगह - - - अल्लाह में दया और लंबे समय तक आपकी आशा।"
लेकिन उसी मूल अरब पाठ का एक और अर्थ है: "- - - कि तुम अल्लाह के संदेश से डरते हो"।
स्पष्ट?

३९६ ७२/८ (ए६) : "और हम ने स्वर्ग के भेदों की याचना की, परन्तु पाया कि वह कठोर पहरेदारों से भरा हुआ है।
और धधकती आग (सितारों की शूटिंग*)" बहुसंख्यक मुसलमान सोचते हैं कि यह कोशिश करने वाले जिन्नों को संदर्भित करता है
स्वर्ग पर जासूसी करने के लिए। लेकिन फिर मुसलमानों के अनुसार अन्य संभावित स्पष्टीकरण हैं:
कि यह यहूदियों और सुरक्षा और विशेष उपचारों में उनके "घृणित" विश्वास को संदर्भित करता है क्योंकि
यह विश्वास कि वे "यहोवा के चुने हुए लोग" थे (कुरान क्यों करते हैं - और मुसलमान -
कभी भी इस बात का उल्लेख न करें कि इस विश्वास का वास्तविक कारण यह था कि उनका मानना था कि उनके पास एक है
यहोवा के साथ वाचा? - एक वाचा के साथ दुर्व्यवहार किया गया और उसे तोड़ा गया, लेकिन कभी समाप्त नहीं हुआ।) या को
ज्योतिष के लिए यहूदियों की विशेष रुचि - एक विशेष रुचि जो किसी और को नहीं बल्कि मुसलमानों को पता है। इस
एक और जगह है जहां इच्छाधारी से अधिक कई अर्थ अस्तित्व में आ सकते हैं
वास्तविक भाषाई समस्याओं की तुलना में बदनामी जैसी सोच - - - लेकिन वे उतनी ही वास्तविक हैं जब तक
मुसलमान उन पर विश्वास करते हैं।

३९७ ७३/१ (वाईए५७५४): "ओह तू (मुहम्मद? *) कपड़ों में मुड़ा हुआ है!" लेकिन अरब शब्द
"मुज़म्मिल" भी अर्थ दे सकता है: "- - - प्रार्थना के लिए ठीक से तैयार", और "- - - मुड़ा हुआ"

एक शीट में"। यहाँ रहस्यवाद को भी खोजना संभव है - - - और अंत में "मुज़म्मिल" एक था
मुहम्मद के लिए प्रयुक्त नाम (= "हे तू, मुहम्मद!")। चुनें कि आपको सबसे ज्यादा क्या लगता है
संभावना है कि अल्लाह का इरादा है, लेकिन ऐसा लगता है कि स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में असमर्थ रहा है।

३९८ ७४/१ (ए१) : "हे तू लिपटा हुआ (मेंढक में)!" लेकिन अरब अभिव्यक्ति "मुदथथिर"
इसका अर्थ "एक आवरण में लिपटा हुआ" नहीं है। इसका सीधा सा अर्थ है "लपेटा हुआ" (किसी चीज में)। इसलिए
अस्पष्ट भाषा के कारण फिर से अटकलें लगाई जा रही हैं। मुख्य प्रतिस्पर्धी व्याख्या
है: "हे तू (एकांत में - या अकेलेपन में) आच्छादित!" उनमें से कोई भी सही हो सकता है। और ये
रूपांतर भी अरब पाठ में हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) में एक से अधिक हैं/हैं
अर्थ। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

१०४८

पेज १०४९

३९९ ७४/४ (ए२): "और आपके (मुहम्मद*) वस्त्र दाग से मुक्त रहते हैं!" (शाब्दिक रूप से सही: "- -
- आपके वस्त्र शुद्ध होते हैं!") लेकिन क्या इसका शाब्दिक अर्थ है या नहीं? रज़ी, ज़माखशरी और कई अन्य
लगता है कि यह लाक्षणिक रूप से है - कुछ ऐसा है जैसे "- - - अपने दिल को सब कुछ से शुद्ध करें
निंदनीय"। आपकी पसंद मुफ्त है।

+४०० ७४/११ (ए५): "मुझे (अल्लाह*) अकेला छोड़ दो, (सौदा करने के लिए) उस (प्राणी) के साथ जिसे मैंने बनाया है
(नंगे) और अकेले!" या: "- - - जिसे मैंने अकेले बनाया है।" दोनों अर्थ सही हैं, निर्भर करता है
केवल इस बात पर कि क्या आप अकेले शब्द सोचते हैं - अरब में "वाहिद" - अल्लाह को संदर्भित करता है या वह क्या करता है
(आदमी) बनाया। और ये रूपांतर स्वाभाविक रूप से अरब पाठ में भी प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के रूप में हैं
एक से अधिक अर्थ हैं/हैं। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

401 74/30 (ए15): "इसके ऊपर उन्नीस हैं।" उन्नीस क्या? कोई नहीं जानता!! एक अनुमान के लिए
देवदूत या शक्तियाँ या पहरेदार या जो कुछ भी। लेकिन कोई नहीं जानता। कुरान में एक स्पष्ट भाषा? -
असंभव नहीं समझना? गलत समझना असंभव है?

४०२ ७६/५ (ए ७): "धर्मी के रूप में, वे एक प्याला पीएंगे (शराब का (स्वर्ग में शराब नहीं है)
नशीला, कुरान के अनुसार *)) काफूर के साथ मिश्रित - - -।" और फिर "काफूर" क्या है?
सरलता से कोई नहीं जानता। यदि आप एक शब्दकोष खोलेंगे तो आपको अलग-अलग उत्तर मिलेंगे - ज्यादातर मीठा
पौधों के हिस्से, लेकिन कपूर भी - लेकिन वास्तव में कुछ भी निश्चित नहीं है, इनमें से किसका उल्लेख नहीं है?
प्रस्ताव कुरान में सही है। स्पष्ट रूप से अस्पष्ट भाषा।

+403 76/8 (ए 11 - 2008 संस्करण ए 10 में): "और वे अल्लाह के प्यार के लिए, गरीब को खिलाते हैं,
अनाथ, और बंदी - - -।" या: "- - - और जो खाना देते हैं-चाहे उनके अपने हों
इसके लिए चाहते हैं - ज़रूरतमंद, अनाथ और बंदी को - - -।" अरब अभिव्यक्ति "अला
हुब्बी" का मतलब दोनों हो सकता है। स्पष्ट और अचूक?

४०४ ७६/२१ (ए२०): "- - - उनके (स्वर्ग में मुसलमान*) भगवान (अल्लाह*) उन्हें पीने के लिए देंगे
एक शराब शुद्ध और पवित्र"। लेकिन कुछ मुसलमानों का मतलब है कि वाक्य का यह हिस्सा जो किया गया है
भौतिक चीजों के बारे में, यहाँ आध्यात्मिक में बदल गया है, और इसका अर्थ है "अपने आप को शुद्ध करना"
- - -।" ऐसी व्याख्या का बचाव करना संभव है - जो एक बार फिर से कितनी स्पष्ट हो जाती है
और अलग भाषा अल्लाह (?) ने किताब में इस्तेमाल किया है।

405 77/1a (A1): "(हवाओं) द्वारा एक के बाद एक - - -।" या में अर्थ है
वास्तविकता: "विचार (या "द्वारा" *) इन (संदेशों) को तरंगों में भेजा गया - - -"? इस्लाम अनुमान लगा रहा है
इतने स्पष्ट शब्दों के बीच। इसके ठीक नीचे 77/1a भी देखें।

+406 77/1b (YA5864): "(हवाओं) द्वारा एक के बाद एक - - -।" देखें ७७/१a जस्ट
के ऊपर। लेकिन इसके बजाय शायद इसका अर्थ यह भी हो सकता है: "स्वर्गदूतों द्वारा - - - -" या: "द्वारा"
दूत भेजे गए।"

+४०७ ७७/३३ (ए१२): "- - - मानो पीले ऊंट (तेजी से चल रहे) थे।" परंतु
यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि अरब शब्द "जिमलत" का वास्तव में क्या अर्थ है, हालांकि अधिकांश व्याख्याकार
विश्वास करो इसका मतलब ऊंट है। परेशानी यह है कि इसका मतलब मुड़ी हुई रस्सी या मोटी रस्सी भी हो सकता है,
और आपको इस तरह की व्याख्याएं मिलती हैं: "- - - विशाल आग की रस्सियों की तरह।" - या (से अनुवादित
स्वीडिश): "- - - जैसे यह पीली मुड़ी हुई रस्सियाँ थीं।" - या यहां तक कि (स्वीडिश से भी अनुवादित): "-
- - एक सतत धारा में) आग से मुड़ी हुई रस्सी की तरह। " एक सबसे अद्भुत स्पष्ट और विशिष्ट
इस पुस्तक में भाषा, हाँ। और ये संस्करण भी प्रासंगिक के रूप में, अरब पाठ में हैं
शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं/हैं। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

४०८ ७८/१९ (ए १०): "और आकाश (बहुवचन और गलत*) खुले होंगे जैसे कि वे थे
दरवाजे।" लेकिन क्या इसका मतलब शाब्दिक या आलंकारिक रूप से है? - आखिरी मामले में आपको मिलता है: "आकाश'
मनुष्य की समझ के रहस्य खुल जाएंगे।" इनमें काफी अंतर है
दो। कुरान की भाषा कभी-कभी "स्याही की तरह स्पष्ट" लगती है।

४०९ ७८/२३ (ए१२): "वे (पापी*) उसमें (नरक*) युगों तक वास करेंगे।" यह बहुत अच्छा नहीं है
इस्लाम में जाना जाता है, लेकिन गहरी पहेली: कुरान इस बारे में स्पष्ट नहीं है कि आपको नर्क में रहना है या नहीं
हमेशा के लिए, या केवल सीमित समय के लिए - एक प्रकार का शुद्धिकरण। कई जगह किताब कहती है
स्पष्ट रूप से और अनजाने में कि यह हमेशा के लिए है। अन्य जगहों पर यह ऐसे शब्दों का उपयोग करता है जो एक सीमित का संकेत देते हैं
समय - शायद एक लंबा समय, लेकिन सीमित समय, या कि अल्लाह कम से कम कुछ कर सकता है
नर्क में मुसलमान (यह भी देखें f. उदा. 6/128)। इस मामले में इस्तेमाल किया जाने वाला अरब शब्द, "हुक़ब" या
"हिक़बाह" (याद रखें कि कुछ अक्षरों का अनुमान लगाया जाना है) के लिए अस्पष्ट अर्थ हैं
कब तक, लेकिन निश्चित रूप से "हमेशा के लिए" नहीं। साथ ही कुछ हदीसें स्पष्ट रूप से संकेत करती हैं कि नर्क हो सकता है
होना हमेशा के लिए नहीं है। स्पष्ट?

+410 79/1-5a (A1-3 - YA5916-5919): यह कुरान में वास्तव में (संयुक्त राष्ट्र) स्पष्ट लोगों में से एक है:
"(= शपथ ग्रहण*) द्वारा (कोण) जो हिंसा से (दुष्टों की आत्माओं को) फाड़ देते हैं; द्वारा
जो धीरे से बाहर निकालते हैं (धन्य की आत्माएं); और उनके द्वारा जो साथ में सरकते हैं (on
दया के काम), फिर दौड़ की तरह आगे बढ़ें, फिर करने की व्यवस्था करें (उनकी आज्ञा
भगवान (अल्लाह*) - - -।" फिर इसकी तुलना इस से करें - ठीक उसी अरब मूल का अनुवाद
पाठ: "उन (सितारों) पर विचार करें जो केवल सेट करने के लिए उठते हैं, और (अपनी कक्षाओं में (!!)) स्थिर के साथ चलते हैं
गति, और तैरते हुए (अंतरिक्ष के माध्यम से) तैरते हुए निर्मल के साथ, और फिर भी आगे निकल जाते हैं (एक दूसरे के साथ)
तेजी से आगे निकल जाते हैं, और इस तरह वे (रचनाकार (अल्लाह के)) के आदेश को पूरा करते हैं!" क्या यह उसी से है
किताब? या ऑस्ट्रेलिया के आदिवासियों से कुछ? यह भी नोट करें कि ( ) to . में जोड़ा गया है
उन अर्थों पर पहुंचें जो कोई चाहता है - जिसकी इस्लाम में अनुमति है (एनबी: इस तरह के समावेशन से दूर)
हमेशा "नाक से अग्रणी" होते हैं - यह अक्सर सही अतिरिक्त स्पष्टीकरण होता है)। लेकिन कोई भी
जो कुरान में इस्तेमाल की गई बहुत स्पष्ट भाषा के दावे में विश्वास करते हैं, उनके पास या तो नहीं है - शून्य
- इसके बारे में ज्ञान, या बहुत भोला है, या केवल इच्छाधारी सोच से जाता है, उसकी नाक से नेतृत्व होता है - -
- या "सिर सिकोड़ें" की जरूरत है। क्षमा करें, लेकिन ऐसा ही है।

४११ ७९/१-५बी (वाईए५९१७) (७९/१-५ए से जारी): "विचारों में बहुत अंतर है
इन श्लोकों में वर्णित पाँच बातों या प्राणियों के बारे में टीकाकारों के बीच। " स्पष्ट
भाषा: हिन्दी?

४१२ ७९/१४ (ए६ - २००८ में छोड़ा गया): "- - - वे (मृत लोग*) (पूर्ण) जागरण में होंगे
(निर्णय के लिए)।" यह अरब अभिव्यक्ति का सबसे सामान्य अर्थ है "बि-स-साहिरह"। बहुत
मुसलमानों की पहली पीढ़ियों ने इसे इस तरह समझाया: "- - - वे सतह पर होंगे
पृथ्वी (= कब्रों से उठी हुई*)" (इब्न कथिर)। आपको स्पष्ट?

413 79/20 (YA5931): "तब (मूसा ने) उसे (फिरौन *) महान चिन्ह दिखाया"। लेकिन कोई नही
जानता है कि पुस्तक क्या संदर्भित करती है। कुरान (17/101) 9 संकेतों को संदर्भित करता है (बाइबल 11 - कर्मचारी +
10 विपत्तियाँ), लेकिन उनमें से किसी को भी महान चिन्ह के रूप में इंगित नहीं किया गया है - वे बहुत भिन्न नहीं हैं
स्तर (बाइबल में यह आखिरी, भयानक प्लेग होता, लेकिन इसका उल्लेख नहीं किया गया है
क़ुरान)। मुस्लिम विद्वानों के बीच अधिक अनुमान।

४१४ ८०/१७ (ए५): "मनुष्य पर हाय! किस बात ने उसे अल्लाह को ठुकरा दिया?" लेकिन यह अच्छा नहीं है
अनुवाद, जैसा कि यहाँ प्रयुक्त क्रिया के रूप में - "कुतिला" - का अर्थ है "मारना"। भले ही कोई उस क्रिया को पढ़ता हो
लाक्षणिक रूप से, अनुवाद अच्छा नहीं है। एक और है: "(लेकिन बहुत बार) आदमी खुद को नष्ट कर लेता है:
वह कितनी हठपूर्वक सच्चाई को झुठलाता है!" फिर भी एक और (स्वीडिश से अनुवादित): "(लेकिन) उसके द्वारा"
(मनुष्य का *) सत्य को पूरी तरह से नकारना, मनुष्य (अल्लाह के) कयामत को बुलाता है और खुद को छोड़ देता है

उसकी अच्छाई से।" और यहां तक कि एक और (स्वीडिश से भी अनुवादित): "क्या वह आदमी
उसके इनकार के लिए (अल्लाह द्वारा) बर्बाद किया जाएगा!" कुरान में एक स्पष्ट भाषा? स्पष्ट रूप से नहीं।

+415 82/1 (YA5997): "जब आकाश अलग हो जाता है - - -।" के दिन के लिए एक शाब्दिक संदर्भ
कयामत? - या लाक्षणिक रूप से आपकी मृत्यु के लिए? - या रूपक के रूप में "के जागरण"
आंतरिक आत्मा"। एक बार फिर: कोई नहीं जानता।

416 83/18 (YA6019): "- - - इलियिन - - -।" इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "उच्च स्थान", लेकिन क्या
क्या इसका मतलब यहाँ है? एक अनुमान है "वह स्थान जहाँ धर्मियों का रजिस्टर रखा जाता है"। परंतु
यह केवल एक "शिक्षित अनुमान" है। (और एक सर्वज्ञ भगवान को एक रजिस्टर की आवश्यकता क्यों है? - कम से कम वह
एक पीसी है? - - - अगर उसका दिमाग काफी अच्छा नहीं है।)

४१७ ८३/२५-२६ (ए८): "उनकी (स्वर्ग में मुसलमान*) प्यास शुद्ध शराब से बुझाई जाएगी
मुहरबंद; उसकी मुहर कस्तूरी होगी - - -।" लेकिन एक बार फिर: एक अरब शब्द - "किथामुहू" -
एक से अधिक अर्थ के साथ। जिसका स्पष्ट अर्थ है कि इसके और भी अर्थ हो सकते हैं
मूल अरब पाठ। एफ। पूर्व .: "उन्हें एक पेय दिया जाएगा जिस पर मुहर (अल्लाह की) होगी"
सेट किया गया है।" फिर: क्या अल्लाह या मुहम्मद का वास्तविक और सटीक अर्थ आपके लिए स्पष्ट है? और ये
निश्चित रूप से भिन्नताएं अरब पाठ में भी हैं, क्योंकि प्रासंगिक शब्द (शब्दों) में से अधिक है/हैं
एक अर्थ। अल्लाह (?) वास्तव में एक स्पष्ट भाषा का उपयोग करता है।

418 85/3 (YA6054): "साक्षी द्वारा - - -"। कोई भी ठीक से नहीं समझता कि कौन -
मुहम्मद और पैगंबर (3/81), अल्लाह (3/81 और 10/61), रिकॉर्डिंग एन्जिल्स (50/21),
पापी स्वयं का दुरुपयोग किए गए अंगों (24/24), पापी के कर्मों का रिकॉर्ड (17/14), या स्वयं पापी के पास है
(१७/१४)? इस सटीक भाषा में काफी विकल्प है।

४१९ ८६/१ (ए१): "(शपथ का संकेत*) से आकाश और रात्रि-आगंतुक (उसमें) - - -।" परंतु
अरब शब्द "अत-तारिक" (= "जो रात में आता है"), क्रिया "तारक" से लिया गया है,
सबसे अस्पष्ट है। मुस्लिम विद्वानों ने इसकी व्याख्या "सुबह का तारा", "द" के रूप में भी की है
सितारे", "स्वर्गीय सांत्वना", "अचानक, सहज ज्ञानोदय"। यदि आप खोजते हैं, तो आप पा सकते हैं
अधिक। हाँ, एक स्पष्ट और विशिष्ट भाषा।

420 86/3 (YA6068): "- - - भेदी चमक का तारा - -"। यहां इस्लाम फिर से अनुमान लगा रहा है।
सुबह का तारा? शनि ग्रह? सीरियस? प्लीएड्स? शूटिंग के तारों? जानना संभव नहीं है
कुरान का यहाँ क्या अर्थ है।

+४२१ ८८/१७ (ए५): "क्या वे (गैर-मुस्लिम*) ऊंटों को नहीं देखते, वे कैसे बनते हैं?"
लेकिन ऊंट के लिए अरब शब्द - "इबिल" - का अर्थ "बादल" भी है। तब आपको इसका अर्थ मिलता है
बिल्कुल वही पाठ और बिल्कुल सही व्याख्या: "तो, वे (जो इनकार करते हैं)
पुनरुत्थान) पानी से गर्भवती बादलों को कभी न देखें, (और देखें) वे कैसे हैं
बनाया था?" खैर, कभी-कभी कुरान का अध्ययन करना मजेदार होता है।

४२२ ८९/१ (ए१) : "दिन के विराम के द्वारा (शपथ का संकेत*)"। लेकिन अरब शब्द "फज्र" - करता है
इसका मतलब केवल शाब्दिक भोर है? मुश्किल से। और इस तरह मुसलमानों ने कम से कम एक और पाया है
अर्थ: यह "स्पष्ट रूप से मनुष्य के आध्यात्मिक जागरण का प्रतीक है - - -।" अपनी पसंद चुनें।

४२३ ८९/२ (ए१) : "(शपथ का संकेत करके) रातें दो बार पांच (= 10*)"। क्या यह संदर्भित करता है
चंद्र माह रमजान के दस अंतिम दिन जब मुहम्मद के बारे में कहा जाता है कि उनका पहला दिन था
रहस्योद्घाटन? - या चंद्र माह के दस पहले दिन "धू 'एल-हिद्जेजाह" जब हज की रस्में होती हैं
जगह लें? या शायद कुछ और? इस्लाम नहीं जानता। लेकिन वे बहुत दृढ़ता से कहते हैं कि

कुरान की भाषा इतनी अलग और स्पष्ट है, कि बहुत ही स्पष्टता इस बात का प्रमाण है कि यह है
एक भगवान द्वारा बनाया गया। उस मामले में: पुस्तक में सभी सैकड़ों अस्पष्ट बिंदु क्या साबित करते हैं?

४२४ ८९/३ (ए२): "(शपथ का संकेत*) द्वारा सम और विषम (विपरीत) - - -": या कोई अन्य
अनुवाद: "एकाधिक और एक पर विचार करें!" - पहले से ही कुछ अंतर। शाब्दिक अर्थ:
"सम और विषम" या "एक" - दोनों संभव हैं। लेकिन मुख्य बात यह है कि मुसलमान

और इस्लाम नहीं जानता कि वह किस बारे में बात कर रहा है। वे इसके लिए या उसके लिए अनुमान लगाते हैं, लेकिन यह सही है शिक्षित अनुमान - कभी-कभी बल्कि "उन्नत"। क्या वह "स्पष्ट बात" है?

४२५ ८९/४ (ए३) : "और रात को जब वह गुजरेगा - - -।" क्या यह शाब्दिक के बारे में बात है रात या आत्मिक "अंधेरे" से प्रबुद्धता? इस्लाम नहीं जानता - लेकिन पसंद करते हैं एक शिक्षित अनुमान के रूप में अंतिम व्याख्या। लेकिन क्या यह सब अनुमान एक स्पष्ट संकेत देता है और कुरान में अलग भाषा? केवल एक ही संभावित उत्तर है: नहीं। क्या बुरा है: All मुस्लिम विद्वानों को यह जानना होगा, क्योंकि किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति के लिए यह देखना बहुत आसान है कुरान के बारे में कुछ ज्ञान, कि कई, कई बिंदु अस्पष्ट हैं (और बिल्कुल सभी मुस्लिम विद्वानों को पता है कि पुस्तक में कई, कई बिंदुओं के वास्तविक अर्थ पर बहस होती है) और फिर भी वे अपने "झुंड" और दुनिया को बताते हैं कि कुरान की भाषा स्पष्ट है, सटीक, समझने में आसान और गलत समझने में असंभव। धर्म में ईमानदारी? - और क्या होगा अगर इन सभी अनियमितताओं से यह जुड़ जाता है कि इस्लाम एक बना हुआ धर्म है (सभी गलतियाँ, आदि।) यह 100% स्पष्ट है कि यह कम से कम किसी सर्वज्ञ भगवान द्वारा नहीं बनाया गया है) और सभी मुसलमानों के पास है धोखा दिया गया या धमकाया गया और इस प्रकार यह देखने से रोका गया कि क्या कोई वास्तविक धर्म मौजूद है और एक या अधिक वास्तविक भगवान? गुमराह अनुयायी मामले में कठोर जागने के लिए हैं अगले जीवन संभव। और गुमराह करने वाले? खैर, उनमें से कम से कम बहुतों ने यहाँ अच्छा जीवन व्यतीत किया है धरती पर।

+426 89/7 (YA6114): "- - - इरम - - -"। क्या यह एक शहर का नाम है? - मामले में विज्ञापन की राजधानी? या यह एक आदमी का नाम है - एक पुराने नायक (विज्ञापन से?)? एक शहर और में अंतर है एक आदमी।

४२७ ९०/१-२ (ए१): "मैं (अल्लाह?*) इस शहर (मक्का? *) को देखने के लिए बुलाता हूं - और तुम (मुहम्मद?*) इस शहर के एक स्वतंत्र व्यक्ति हैं - - -।" यह सबसे आम व्याख्या है मुसलमानों के अनुसार। लेकिन इसे इस तरह पढ़ना भी संभव है: "मैं (अल्लाह या मुहम्मद*) इस भूमि को देखने के लिए बुलाओ (पूरी पृथ्वी * हो सकती है) जिसमें आप (मुसलमान या आदमी) स्वतंत्र हैं बसना - - -"। कुरान में एक स्पष्ट और विशिष्ट भाषा?

४२८ ९१/१-२ (ए१) : "(शपथ लेकर*) सूर्य और उसका (शानदार) वैभव; से चंद्रमा के रूप में वह उसका पीछा करती है - - -।" यह ठीक दिखता है, क्योंकि अरब अभिव्यक्ति का शाब्दिक अर्थ है "- - - जैसा कि यह इस प्रकार है - - -।" लेकिन फिर हम "व्याख्याओं" पर वापस आ जाते हैं। " का संदेश कुरान", 2008, में यह इस प्रकार है: "- - - और चंद्रमा जैसा कि यह सूर्य को दर्शाता है!" वैज्ञानिक सही!! और अल्लाह के लिए एक सबूत मुहम्मद के रूप में यह नहीं जान सका !!! लेकिन क्या इसकी अनुमति है धर्म में ईमानदारी, व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा, इच्छाधारी सोच, और कुछ अन्य के बारे में प्रश्न पूछें अशिष्ट प्रश्न? **कम से कम यह शीर्ष मुस्लिम के तरीकों का अच्छा प्रदर्शन है विद्वान उपयोग करते हैं - और यह काहिरा में शीर्ष मुस्लिम अल-अजहर विश्वविद्यालय द्वारा प्रमाणित है। (NS आमतौर पर लह को बताने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला अरब शब्द परिलक्षित होता है, कुरान में कहीं भी इसका इस्तेमाल नहीं किया गया है।)** यह भी देखें 89/4 ऊपर।

४२९ ९१/१५ (ए १०): "और उसके लिए (अल्लाह *) इसके परिणामों के लिए कोई डर नहीं है।" लेकिन क्या यह श्लोक सच में अल्लाह के बारे में बात करो? एक और व्याख्या इस प्रकार है: "- - - किसी के लिए नहीं (उनमें से जो ऊंट का वध) उन्हें इस बात का कोई डर नहीं था कि उन पर क्या होगा।" बिल्कुल वही नहीं एक ही स्पष्ट (?) मूल अरब पाठ से अर्थ। और निश्चित रूप से ये वेरिएंट भी हैं

१०५२

पेज 1053

अरब पाठ, प्रासंगिक शब्द (शब्दों) के रूप में एक से अधिक अर्थ हैं/हैं। अल्लाह (?) सच में स्पष्ट भाषा का प्रयोग करता है। ए यूसुफ अली (YA6158) का अर्थ है कि "उसे" अल्लाह का उल्लेख कर सकता है, या पैगंबर सलीह, या ९१/१२ में उल्लिखित ऊंट को मारने वाले व्यक्ति के लिए दावा किया। कौन जानिए यहां कुरान का सही अर्थ क्या है?

+४२० ९२/११ (ए ६): "न ही उसकी (पापी की*) दौलत उसे तब लाभ देगी जब वह सिर के बल गिरेगा गड्ढा)।" एक बयान। या: "- - - जब वह नीचे जाता है तो उसका धन उसका क्या लाभ उठाएगा (उसके) गंभीर)?" एक सवाल - छोटे-मोटे नतीजों में से एक - लेकिन क्या कोई भगवान छोटी-छोटी चीजें भी कर देता है अस्पष्ट?

४३१ ९३/६ (ए३) : "क्या उसने (अल्लाह*) तुम्हें अनाथ नहीं पाया और तुम्हें आश्रय (और देखभाल) नहीं दिया?" इस वाक्य में "तुम" कौन है? - मुहम्मद, जिन्होंने अपने माता-पिता को जल्दी खो दिया? - या आदमी जो इस्लाम मिला? - या - - -? कहना असंभव है। स्पष्ट भाषण?

४३२ ९५/७ (वाईए६२०१): "फिर इसके बाद क्या हो सकता है, आपका खंडन - - -"। यह not . में से एक है

कुरान में कुछ जगह जहां यह स्पष्ट नहीं है कि "तुम" या इसी तरह के शब्द का उल्लेख करते हैं
मुहम्मद या आम तौर पर मुसलमानों के लिए। यह बात कुरान में कई जगह स्पष्ट नहीं है।

४३३ ९६/१७ (ए९) : "फिर, वह (मदद के लिए) अपनी परिषद (कामरेडों के) - - - को बुलाए।" क्या ये
एक विशेष परिषद का संदर्भ लें? - एफ। भूतपूर्व। "दार अन-नदवाह" (मक्का में बड़ों की परिषद)?
या यह एक बेहतर व्याख्या है: "- - - उसे (उसकी सहायता के लिए) अपने स्वयं के परामर्शों को बुलाने दें
(नकली) ज्ञान। "? इस्लाम से पूछने का कोई फायदा नहीं है - कोई नहीं जानता, क्योंकि पाठ स्पष्ट नहीं है
यह बिंदु या तो।

434 97/1 (YA6217): "- - - शक्ति की रात"। यह इस्लाम में कुछ रहस्यवादी है। हो सकता है
रमजान के महीने में देर रात में से एक (23., 25. या 27. अक्सर उल्लेख किया जाता है), या यह हो सकता है
एक और रात - या यह शुद्ध रहस्यवाद हो सकता है।

४३५ ९८/१-२ (ए२) : "जिन लोगों ने (सत्य को) झुठलाया, वे पुस्तक के लोगों (यहूदी और
ईसाई - जैसा कि मुहम्मद को भी नहीं पता था कि पारसी लोग एक तरह से एक भगवान थे और एक
पुस्तक*) और बहुदेववादियों के बीच, जहां जाने के लिए नहीं जा रहे हैं (उनके रास्ते से) वहां तक
उनके पास स्पष्ट साक्ष्य आना चाहिए - अल्लाह का एक दूत - - -।" लेकिन यह टकरा गया
तथ्य। फिर अंत में इब्न तैमियाह ने इसे समझने का एक और तरीका खोजा: "- - - वे नहीं थे
परित्यक्त (अल्लाह द्वारा') तक - - -।" क्या कोई सर्वज्ञ ईश्वर ऐसी अस्पष्ट भाषा का प्रयोग करेगा?

४३६ १००/२: "(स्टीड्स) द्वारा जो (शत्रु के बीच में) चलता है - - -।" अरब शब्द "अल-
'अदियात' का अर्थ निस्संदेह युद्ध-घोड़ा या चार्जर है। लेकिन क्या अर्थ शाब्दिक है? या आरोप है
मुहम्मद/अल्लाह के लिए लड़ने वाले अच्छे मुस्लिम का प्रतीक? या यह प्रतीक है "किसी से भी परे"
संदेह" के लिए "गलती करने वाली मानव आत्मा या स्वयं"? मुस्लिम विद्वान इस पाठ को अस्पष्ट पाते हैं, और अभी भी हैं
वाद-विवाद - १४०० वर्षों के बाद।

+४३७ १०३/१ (वाईए६२६२): "(के टोकन) समय (युग के माध्यम से) - - -।" लेकिन फिर हम वापस आ गए हैं
अस्पष्ट पुरानी अरब वर्णमाला के लिए - इस अरब शब्द "अल 'असर" का अर्थ "- - - के माध्यम से" हो सकता है
दोपहर"। समय पहलू में थोड़ी कमी।

+४३८ १०७/१ (वाईए६२८१): "आप (मुहम्मद या मुसलमान*) को देखते हैं जो फैसले से इनकार करते हैं
("दिन"*) (आने के लिए)?" लेकिन अरब शब्द "दीन" यह अर्थ भी दे सकता है: "आप एक को देखें"
कौन विश्वास (या धर्म*) को नकारता है?"

१०५३

पेज १०५४

+439 113/1 (YA6302): "- - - भोर के भगवान - - -"। के अनुसार कम से कम ३ अर्थ
इस्लामी विद्वान: १) भोर। २) (संभव) धार्मिक अज्ञानता से बचना। 3) गैर-
अस्तित्व विपरीत अस्तित्व।

इसके अलावा 29 गूढ़ और पूरी तरह से समझ में नहीं आने वाले "संक्षिप्त अक्षर" हैं। हम
उनमें से ३ - ४ पर टिप्पणी की है, जिसका अर्थ है कि इसमें कम से कम २५ और अस्पष्ट बिंदु हैं
कुरान = **कम से कम ४६४ अंक जहां मुस्लिम विद्वान इस बात से असहमत हैं कि चीजों का क्या मतलब है, या बस समझ में नहीं आता - एक ऐसी किताब में जहाँ भाषा की शान और स्पष्टता होती है केवल "वास्तविक" प्रमाण है कि यह एक भगवान द्वारा बनाया गया है** ।

हकीकत में और भी कई हैं। यदि आप विद्वानों के पास जाते हैं - और कुछ वकीलों - जो बहस करते हैं
पुस्तक में ठीक बिंदु, आप पाएंगे कि कई और बिंदु हैं जो अस्पष्ट हैं
कुरान।

क्या सच में इसे कोई भगवान बना सकता है?

भाग VIII, अध्याय 1, (= VIII-1-0-0)

कुरान के अनुसार अगला जीवन की पवित्र पुस्तक मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह

स्वर्ग जैसा वर्णन किया गया है

कुरान

इस अध्याय का पोस्टस्क्रिप्ट भी पढ़ें

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

कुरान में वर्णित मुस्लिम स्वर्ग पृथ्वी से बहुत नीचे है, ऐसा कहने के लिए। यह सब
कयामत के दिन से शुरू होता है। तब प्रत्येक मनुष्य पुनरुत्थित होता है - आत्मा के रूप में नहीं, बल्कि पुनः निर्मित के रूप में
मनुष्य हड्डियों और मांसपेशियों और रक्त और त्वचा में ठीक वैसे ही जैसे वे अपने पहले जीवन में थे
पृथ्वी, लेकिन युवा वयस्कों की तरह।

पुराने अरब के लिए यह स्वीकार करना कठिन था - अधिकांश धर्मों में पुनरुत्थान है, लेकिन
शरीर में पुनरुत्थान, उनके लिए थोड़ा दूर था। क्या एफ. भूतपूर्व। अगर एक आदमी को जानवरों द्वारा खाया जाता था, नहीं
कैनिबल्स द्वारा उल्लेख करने के लिए?

हर किसी को अपने लिए फैसला करना होगा कि क्या यह परिदृश्य भगवान था और क्या है
के लिए समझौता होगा - आखिरकार शरीर के बजाय आत्माओं के साथ एक परिदृश्य कई मायनों में अच्छा है
विचार। और एक वास्तविक भगवान के पास चीजें हो सकती हैं जो उसे सबसे अच्छी लगती हैं - कम से कम अगर वह सर्वज्ञ है और
सर्वशक्तिमान

अगला कदम अच्छे लोगों को बुरे लोगों से अलग करना है। यह कैसे किया जाता है यह स्पष्ट नहीं है
कुरान में समझाया गया है, लेकिन अन्य मुस्लिम स्रोतों के अनुसार, मुहम्मद ने अपनी "रात" पर
यात्रा" ने इसे आदम द्वारा पहले और सबसे निचले 7 स्वर्गों में किया, जिसे कुरान गलत तरीके से बताता है
के बारे में (जैसा कि कुरान उन्हें सितारों को जकड़ने के लिए भौतिक आकाश के रूप में वर्णित करता है, यह है

यह जानना आसान है कि यह गलत है)। वहाँ एक आदमी (एडम) उन्हें छाँट रहा था - और कम से कम कुछ
हदीसों के अनुसार नरक के लिए नियत लोगों के पास अजीब आकार थे (यदि वे उन्हें रखते थे
नर्क में आकृतियाँ नहीं कहा गया है)। लेकिन कुरान में उनके बारे में केवल होने का वर्णन है
निर्देशित दाएं और बाएं और सर्वश्रेष्ठ विशेष रूप से (= 3 समूह) - सर्वश्रेष्ठ और भाग्यशाली के साथ
लोगों ने स्वर्ग के लिए नियत सही मार्गदर्शन किया, जबकि लोगों ने नर्क में बाएं छोर का मार्गदर्शन किया।

मुस्लिम जन्नत में 7 स्वर्ग हैं - उनमें से ज्यादातर सिर्फ अतिरिक्त विशेष मनुष्यों के लिए हैं, या
अधिक सही भविष्यद्वक्ता। यीशु एफ. भूतपूर्व। केवल 2 के लिए योग्य है। स्वर्ग (यीशु मुख्य है .)
मुहम्मद के प्रतिद्वंद्वी, और मुहम्मद को दोनों में से सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए उन्हें नीचा दिखाना पड़ा),
जबकि यूसुफ जैसा उच्च मान्य व्यक्ति - फिरौन से मिलने वाला युवक - (वह भी a
कुरान के अनुसार पैगंबर) को 3 के लिए रेट किया गया था। स्वर्ग, और वास्तव में मूसा की तरह बड़ी रोशनी
6. वां। और सबसे ऊपर इब्राहीम था - पूर्ण मुस्लिम - जो रहता है अल्लाह के सबसे निकट
ऊपर 7. स्वर्ग। यह बताना अनावश्यक होगा कि मुहम्मद उसी में हैं
इब्राहीम के रूप में स्वर्ग - निकटतम अल्लाह (लेकिन एनबी: यह पैराग्राफ अन्य से इसकी सामग्री लेता है
मुस्लिम स्रोत, मुख्य रूप से इब्न इशाक, और हदीस, कुरान से नहीं)। बस इसका उल्लेख करने के लिए:
इस्लाम में मुहम्मद की रात की यात्रा काफी हद तक f के समान है। भूतपूर्व। ग्नोस्टिक (बनाई गई) कहानी
मुहम्मद से कुछ सौ साल पहले "हनोक की स्वर्ग की यात्रा"। कोई उल्लेख कर सकता है
यह मुहम्मद के लिए विशिष्ट है कि शायद ही उनकी या कुरान की कोई कहानी मूल है - वे हैं
कई स्रोतों से "उधार" लिया गया, जिसमें धार्मिक लोक कथाएँ और परियों की कहानियाँ शामिल थीं। साथ ही इस रात
यात्रा - जिस पर मुसलमान सहमत नहीं हैं कि यह वास्तविक था या सपना - हो सकता है
ऐसा "ऋण"।

कुरान से जो निश्चित है, वह यह है कि स्वर्ग के कुछ हिस्से आम मुसलमानों के लिए हैं और
शायद कुछ ईसाई और यहूदी पर्याप्त धार्मिक योग्यता प्राप्त करने के लिए (यह नहीं कहा गया है कि क्या हुआ
बुतपरस्त जिन्हें कभी एक ईश्वर के बारे में सुनने का मौका नहीं मिला, लेकिन संकेत हैं
कुरान कि अल्लाह उनकी निंदा करने के लिए अनिच्छुक था) के हिस्से भी बेहतर और अधिक आकर्षक थे
दूसरों की तुलना में - मुसलमानों के लिए आरक्षित है जो अतिरिक्त मानक के योग्य हैं या अल्लाह के थोड़ा करीब हैं। यह
यह बहुत स्पष्ट नहीं है कि मतभेदों में वास्तव में क्या शामिल है सिवाय इसके कि योद्धा उच्च स्कोर करते हैं।

लेकिन जो बहुत स्पष्ट है वह यह है कि स्वर्ग में जीवन इस वर्तमान में पृथ्वी पर जीवन के समान है/है
जीवन - लेकिन इस जीवन में अमीरों और बहुत अमीरों के जीवन की तरह जीवन - क्या गरीब जैसा जीवन,
अक्सर गर्म अरब के रेगिस्तान में उस समय के अशिक्षित और भोले-भाले लोग
सपना देख सकता था कि शाही जीवन और स्वर्ग जैसा होगा।

सामान्य, अच्छे मुसलमानों के लिए जन्नत एक बगीचा था (या कुछ बगीचे - शायद 4) साथ
बहुत झरने और नदियाँ - रेगिस्तानी लोगों के लिए एक सपना। बगीचे में सब प्रकार के फल थे
अरब इस जीवन और अन्य अच्छे भोजन से बहुत कुछ जानते थे। गर्मी से छाँव थी
सूरज - एक गर्म रेगिस्तान में स्थिति की तरह लगता है: स्वर्ग बहुत गर्म है और इसलिए छाया है
कुछ अच्छा। सुखद तापमान के बारे में कुछ नहीं कहा गया है जहां छाया नहीं है
आवश्यक - या सूर्य के बारे में ठंडे स्थानों के लोगों के लिए सूर्य को पसंद करते हैं, यह भले ही अल्लाह
सर्वज्ञ है और जानता है कि सबसे सुखद स्वर्ग वह है जहां तापमान अच्छा होता है
और सूरज थोड़ा गर्म है (हालांकि बहुत गर्म नहीं है)।

और रहने के लिए उत्तम स्थान थे - हवेलियाँ।

एक स्वर्ग बिल्कुल गरीबों की तरह राजाओं और अन्य अमीर रईसों के जीवन की तस्वीर
और मुहम्मद के समय अरब के आसपास, अतिरिक्त प्लस के साथ कि वहाँ बहुत कुछ था और है
पानी डा। ढेर सारी महिलाओं को जोड़ें, और खुरदुरे और सीधे-सादे योद्धाओं के सपने थे
उत्तम। एक छोटी सी जिज्ञासा: भले ही स्वर्ग में बहुत सारे अच्छे भोजन और पेय हों, उसके अनुसार
हदीस को कभी शौचालय की जरूरत नहीं होती।

और वहां महिलाएं थीं - बहुतायत में। एक बात के लिए तुम अपनी पत्नियों और दासियों को ले आए -
और यहाँ एक छोटा सा सवाल है: एक जगह कुरान कहता है कि महिलाओं - घंटे शामिल हैं
- उपयुक्त आयु के हैं, आवश्यकता की आयु आपकी अपनी आयु के अनुसार भिन्न होती है। अन्य स्थान यह
बताता है कि सभी मनुष्यों को युवावस्था में पुनर्जीवित किया गया है - एक और छोटी, लेकिन अप्रासंगिक नहीं है
कुरान. और तुम्हारी स्त्रियों के अतिरिक्त इस जीवन से - यदि उन्होंने स्वयं को अयोग्य न ठहराया होता
जन्नत के लिए - उल्लिखित घंटे हैं। इस बारे में कोई उल्लेख नहीं है कि कहाँ से है
घंटे आते हैं, लेकिन वे पूरी तरह से आपकी खुशी के लिए सुंदर और सुखद महिलाएं हैं - 70 . तक
अन्य स्रोतों के अनुसार वास्तव में एक बहादुर योद्धा के लिए। तारों के दौरान सपने देखने के लिए कुछ
युवाओं के लिए युद्ध के लिए लंबी पैदल यात्रा पर रातें और इतने युवा नहीं। में कुछ नहीं कहा गया है
कुरान सीधे उनके साथ सेक्स के बारे में है, लेकिन और क्या के लिए आदिम, और अक्सर क्रूर से
युद्ध, पुरुषों को खूबसूरत महिलाओं की जरूरत है? - कम से कम विनम्र बातचीत के लिए नहीं।

इस स्वर्ग में जीवन की तरह घंटे कैसे हैं - कुछ योद्धाओं के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है
आखिर अशिक्षित, असभ्य और क्रूर साथी थे। लेकिन फिर महिलाएं क्या पसंद करती हैं और क्या सोचती हैं
इस्लाम में बहुत कम मायने रखता है - यह एक आदमी और एक योद्धा का धर्म है, और सहानुभूति या सहानुभूति है
दलित शायद ही मौजूद हों, सिवाय इसके कि आप बच्चों की मदद करें - कम से कम वे जो खो गए हैं
उनके माता-पिता - और गरीब, और अपने दासों के साथ बहुत बुरा व्यवहार न करें। (जैसा कि सहानुभूति के लिए - और
विशेष रूप से गैर-मुसलमानों के साथ - आप इसे कुरान या इस्लाम में बिल्कुल नहीं पाते हैं)।

निःसंदेह ऐसे जन्नत में नौकर होते हैं - ठीक वैसे ही जैसे इस जीवन में अमीर परिवारों में। जैसा
ने कहा: मुस्लिम जन्नत अरब में और उसके आसपास के अमीरों के लिए जीवन की तरह है
मुहम्मद + अधिक पानी और महिलाएं, जैसा कि आदिम गरीब अंडरक्लास की आंखों से देखा जाता है
लोग - सुधार; पुरुष।

यह भी एक शब्द नहीं है कि ये सुंदर नौकर - हमेशा के लिए युवा - कहाँ से आते हैं
(कुछ मुस्लिम विद्वानों का मानना था कि वे इंसान थे जो बच्चों के रूप में मर गए थे)। न
उनके लिए स्वर्ग कैसा है, इसके बारे में एक वाक्य। कुरान में केवल केंद्रीय व्यक्ति - आदमी - है
भावनाओं और एक इंसान है, और वह अपने ब्रह्मांड में केंद्र है। भावनाओं और खुशी और
दूसरों का जीवन, गैर-मुसलमानों या महिलाओं या दासों का उल्लेख नहीं करना, बहुत कम या कोई दिलचस्पी नहीं है या
परिणाम - "अल्लाह के लिए आश्चर्य हो"। (यह एक कारण हो सकता है कि सहानुभूति और
दूसरों के साथ सहानुभूति ईसाई और कुछ अन्य समाजों में बहुत गहरी है - यहाँ तक कि उनमें भी
गैर-धार्मिक व्यक्ति। एफ. पूर्व. सबसे अधिक सहायता और मानवीय संगठनों आदि की उत्पत्ति में हुई
पश्चिम और अक्सर अभी भी पश्चिम से काम करते हैं।)

इस्लाम में एक कहानी में केवल केंद्रीय व्यक्तियों के बारे में सोचने की प्रवृत्ति है और उनके लिए जीवन कैसा है
- इस मामले में योद्धा वर्ग, और निश्चित रूप से मुख्य रूप से पुरुष।

००१ २/२५: "--- उनका (मुसलमानों का) भाग बाग़ है, जिसके नीचे नदियाँ बहती हैं। हर बार
वे उसके फलों से खिलाए जाते हैं, वे कहते हैं: 'क्यों, यह वही है जो हमें पहले खिलाया गया था', क्योंकि वे
चीजें समान रूप से दी जाती हैं - - -"। मुस्लिम स्वर्ग में फल और भोजन एक ही हैं
इस जीवन में - बस बहुत कुछ और केवल सबसे अच्छा। जैसा कि कहा गया है: एक पृथ्वी जैसा स्वर्ग। साथ ही ढेर सारा
पानी और महिलाएं - लोगों के लिए स्वर्गीय - पुरुष - एक रेगिस्तान से। लेकिन के लोगों का क्या
दुनिया के अन्य हिस्सों में अन्य प्रकार के फलों के साथ? - अरबों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले कई फल होंगे
उनके लिए अज्ञात, और दूसरी तरफ।

002 4/122: बल्कि ऊपर 2/25 के समान।

003 5/85: बल्कि ऊपर 2/25 के समान।

००४ ५/११९: बल्कि ऊपर २/२५ के समान।

005 7/42-43: बल्कि ऊपर 2/25 के समान।

००६ ९/७२: "अल्लाह ने विश्वासियों (मुसलमानों) से वादा किया है - पुरुषों और महिलाओं - के तहत बगीचे
कौन सी नदियाँ बहती हैं, उनमें बसने के लिए, और अनन्त आनंद के बागों में सुंदर हवेली - - -
" इस दुनिया में अमीरों के जीवन जैसा स्वर्ग - साथ ही अधिक पानी। और निश्चित रूप से प्लस
माना, लेकिन अल्लाह को कभी साबित नहीं किया।

007 9/89: बल्कि ऊपर 9/72 के समान।

008 9/100: बल्कि ऊपर 9/72 के समान - मुहम्मद के पास आविष्कारशील कल्पना नहीं थी, केवल
स्मार्ट किस्म।

००९ ९/१११: "अल्लाह ने ईमानवालों (मुसलमानों) से उनके व्यक्तियों और उनके सामानों को खरीद लिया है;
उनके लिए (बदले में) बगीचा (स्वर्ग का) है; वे लड़ते हैं और मारते हैं और मारे जाते हैं - - -"। ए
ठेठ युद्ध और योद्धाओं का धर्म। (धर्म को शांतिपूर्ण से युद्ध में बदल दिया गया था
६२२ ईस्वी में और उसके तुरंत बाद धर्म - सर्वज्ञ अल्लाह ने अपना विचार बदल दिया या मुहम्मद
योद्धाओं की जरूरत है।) खैर, इस दुनिया में युद्ध के जीवन के लिए संभावित अगली दुनिया में स्वर्ग, मई
अच्छी बात है अगर मुहम्मद ने सच कहा और सच के अलावा कुछ नहीं। अगर यह सब एक धोखा था,
मुहम्मद और उनके उत्तराधिकारियों ने खुद को बहुत सस्ते योद्धा और धन और बहुत कुछ प्राप्त किया
कुछ नहीं के लिए शक्ति। और धोखेबाज, धोखेबाज और ठग के कई लक्षण हैं
कुरान - जिनमें से कम से कम कुछ लोगों को समझने वाले बुद्धिमान व्यक्ति के पास होना निश्चित है
मान्यता प्राप्त। (एफ। पूर्व। कि अल्लाह द्वारा दिए गए चमत्कारों ने किसी को विश्वास नहीं दिलाया था।)

०१० १०/९: "जो लोग ईमान लाए (मुसलमान*), और नेकी का काम करते हैं (जिनमें युद्धों में लड़ना भी शामिल है,
चोरी, बलात्कार और हत्या*) - उनका रब (अल्लाह*) उनके ईमान के कारण उनका मार्गदर्शन करेगा:
उनके नीचे आनंद के बागों में नदियाँ बहेंगी।" से एक आदिम योद्धा का स्वर्ग
गर्म रेगिस्तान। एक जिज्ञासा: हदीसों के अनुसार "हमारी" नदियों के 2 - नील और
यूफ्रेट्स - स्वर्ग/स्वर्ग में शुरू।

०११ ११/१०८: "वे (मुसलमान*) उसमें हमेशा रहेंगे कि आकाश (बहुवचन और
गलत*) और पृथ्वी सहती है, सिवाय इसके कि जैसे तेरा रब (अल्लाह*) चाहे - - -"। का अंतिम भाग
कुरान में कहीं भी वाक्य की व्याख्या नहीं की गई है। ९/१०७ में नर्क के बारे में समान शब्दों का प्रयोग किया गया है,
और कुछ मुस्लिम विचारकों का कहना है कि इसका मतलब यह हो सकता है कि शायद नर्क हमेशा के लिए नहीं रहेगा - कम से कम
इसके सभी कैदियों के लिए नहीं। अगर हम जन्नत के लिए एक ही तर्क का इस्तेमाल नहीं करते हैं, तो इस आयत का मतलब है कि
स्वर्ग सभी वास्तविक मुसलमानों के लिए हमेशा के लिए रहेगा (और कुछ यहूदी और ईसाई भी हो सकते हैं
योग्य स्वर्ग)। लेकिन वास्तव में यह श्लोक संकेत कर सकता है कि जन्नत भी पूरी तरह से नहीं है
हमेशा के लिए - हालांकि अधिकांश कुरान कई जगहों पर यह कहता है। कुछ मुसलमान इस अनिश्चितता को स्वीकार करते हैं
इस दावे के साथ कि बचाए गए लोग और भी बेहतर परादीस में समाप्त होंगे।

०१२ १३/२३ - २४: "निरंतर आनंद के बगीचे: वे (मुसलमान*) वहां प्रवेश करेंगे, साथ ही साथ
उनके पिता, उनके जीवनसाथी, और उनके वंश के बीच धर्मी - - - अंतिम कितना उत्कृष्ट है
घर।" आदिम लोग यहां की तरह 3-4 पीढ़ियों में सोच सकते हैं, लेकिन कुरान में कहीं नहीं है
बताया कि कैसे 40 या सौ पीढ़ियों के लिए पारिवारिक जीवन की व्यवस्था की जानी है। ना ही
बच्चों या बच्चों के रूप में मरने वालों का क्या होगा, इस बारे में कहीं भी कुछ भी कहा गया है
जन्नत - क्या वे आपकी खुशी के लिए हमेशा के लिए बच्चे या बच्चे रहेंगे (कुरान में एक है
चीजों को केवल मुख्य व्यक्तियों के दृष्टिकोण से देखने की प्रवृत्ति) या वे बड़े होंगे?
या उन्हें युवा वयस्कों के रूप में पुनर्जीवित किया जाएगा या कैसे? - और उनके परिवारों के बारे में क्या?

पेज १०५८

कोई बात नहीं - ये ऐसी समस्याएं हैं जिनका समाधान एक ईश्वर के लिए संभव है। लेकिन मुस्लिम जन्नत अभी भी है
इस दुनिया में अमीर लोगों के लिए जीवन की एक प्रति जैसा कि गरीबों और आदिम लोगों की आंखों से देखा जाता है
पुरुष रेगिस्तानी निवासी और बहुविवाह।

०१३ १३/३५: "बगीचे का दृष्टान्त जिसकी प्रतिज्ञा धर्मी लोगों से की जाती है! - इसके नीचे प्रवाह
नदियाँ : उसका भोग और उसकी छाया सदा है---"। जैसा कहा गया है: स्वर्ग जैसा है
अमीरों का जीवन + अधिक पानी और महिलाओं, जैसा कि आदिम और गरीबों की आंखों से देखा जाता है
एक गर्म रेगिस्तान के पुरुष निवासी। लेकिन अल्लाह पूरी दुनिया और सभी लोगों का भगवान होना चाहिए।
और ऐसा आदिम स्वर्ग क्यों? - क्योंकि जैसे ही स्वर्ग आते हैं, यह एक आदिम है।

०१४ १४/२३: बल्कि ऊपर १३/३५ की तरह, इसके अतिरिक्त: "उनका अभिवादन इस प्रकार होगा:
'शांति'" यह शब्द केवल उसी के बारे में है जिसे स्वर्ग में अनुमत भाषण से संदर्भित किया गया है, सभी में
कुरान. बौद्धिक स्तर उच्च होने का संकेत नहीं है।

०१५ १५/४५: "बागों और फव्वारों के बीच (साफ बहते पानी के) धर्मी (होंगे)।
(उनका अभिवादन होगा): 'शांति और सुरक्षा में तुम यहां प्रवेश करो'। और हम (अल्लाह*) हटा देंगे
उनके दिल से चोट की कोई छिपी भावना: (वे होंगे) भाई (खुशी से) एक-दूसरे का सामना कर रहे हैं
अन्य सिंहासन पर (गरिमा के)।" एक अस्तित्व कोई उनसे ईर्ष्या कर सकता है - - - यदि यह सब नहीं होता
कुरान में गलत है, जिसके परिणामस्वरूप "क्या होगा" की गुप्त भावना होती है। - क्या हुआ अगर यह सब भी है
गलत? - क्या होगा अगर यह लोगों को आकर्षित करने के लिए परियों की कहानी है - और योद्धाओं - का एक मंच बनाने के लिए
शक्ति? - और धर्म में विश्वास करने वालों के लिए और भी बुरा: क्या होगा यदि कोई वास्तविक धर्म मौजूद है
कहीं, एक जिसके लिए इस्लाम मार्ग को अवरुद्ध करता है? (कम से कम जो बात पूरी तरह से निश्चित है, वह यह है कि कुरान
न तो किसी सर्वज्ञ द्वारा बनाया गया है और न ही किसी परोपकारी ईश्वर द्वारा बनाया गया है)।

०१६ १६/३०: "उन (मुसलमानों) के लिए जो अच्छा करते हैं, इस दुनिया में (कभी-कभी*) अच्छाई है, और
आख़िरत का घर (स्वर्ग*) और भी बेहतर है; और उत्कृष्ट वास्तव में का घर है
धर्मी - अनंत काल के उद्यान जिनमें वे प्रवेश करेंगे: उनके नीचे (सुखद) नदियाँ बहती हैं - - -
" वादा है: अनंत काल के लिए।

०१७ १८/३१: "उनके लिए (मुसलमान*) अनंत काल के बगीचे होंगे; उनके नीचे नदियाँ बहेंगी;
वे उस में सोने के कंगनों से अलंकृत होंगे, और वे उत्तम हरे रंग के वस्त्र पहिने होंगे
रेशम और भारी ब्रोकेड: वे उसमें उठे हुए सिंहासनों पर झुकेंगे। " नहीं के बारे में सपना
सामान्य अमीर आदमी का जीवन - यह है शाही अंदाज।

०१८ १८/१०८: "जहाँ (स्वर्ग*) वे (मुसलमान*) निवास करेंगे (हाँ के लिए)।" कुरान ज्यादातर
कहते हैं कि जन्नत हमेशा के लिए है, लेकिन 2 - 3 श्लोक हैं जो समय को थोड़ा सा कर देते हैं
अनिश्चित। मुस्लिम विद्वान पूह-पूह करते हैं, और कहते हैं कि मामले में इसका मतलब है कि अल्लाह लाएगा
इसके बजाय कुछ और भी बेहतर।

०१९ १९/९६: "उन लोगों पर जो ईमान लाए और नेकी के काम किए (याद रखें कि a
इसका अनिवार्य हिस्सा मुहम्मद - और उसके उत्तराधिकारियों के लिए युद्ध करना है *, होगा (अल्लाह) मोस्ट
अनुग्रह प्रदान करता है प्यार "। यह उन कुछ जगहों में से एक है जहां "प्यार" शब्द है
कुरान में उल्लेख किया गया है, सिवाय आपके परिवार के संबंध में - और वहां भी नहीं है
अक्सर इस्तेमाल किया। एनटी से बहुत अलग जहां प्यार मुख्य स्तंभों में से एक है - बीच
स्वर्ग और मनुष्य और मनुष्यों के बीच।

020 22/14: बल्कि ऊपर 9/72 के समान।

०२१ २२/२३: "अल्लाह ईमान लाने वालों और नेक काम करने वालों को नीचे के बगीचों में प्रवेश देगा"
जो नदियां बहती हों, वे उस में सोने और मोतियों के कंगनों से सजाई जाएं; और उनका

पेज 1059

वस्त्र रेशम के होंगे"। जैसा कि पहले कहा गया है: बहुत अमीरों और राजाओं के जीवन जैसा स्वर्ग
उस समय अरब को गरीबों और आदिम की नजर से देखा जाता था।

०२२ २५/२४: "बगीचे के साथी (मुसलमान*) अच्छे होंगे, उस दिन (कयामत*) में
उनका निवास स्थान, और विश्राम के लिए सबसे उचित स्थान हैं"। एक अच्छा भविष्य - अगर सच है।

०२३ २८/८४: "यदि कोई भलाई करता है, तो उसके लिए प्रतिफल उसके काम से उत्तम है; लेकिन अगर कोई बुराई करता है,
बुराई करने वालों को उनके कर्मों का दंड केवल (उस हद तक) मिलता है।" यह बहुत मुश्किल नहीं है
मुसलमानों के लिए जन्नत तक पहुंचें: अच्छे कामों के गुण कई गुना बढ़ जाते हैं, और 10 . तक के कारक से
कुरान के अनुसार, जबकि बुरे कामों को केवल एक बार ही महत्व दिया जाता है। और अगर आप किसी भी तरह चालू हैं
माइनस आप हमेशा कुछ अच्छे काम कर सकते हैं जैसे धर्म के लिए झूठ बोलना, चोरी करना या हत्या करना
और मेहरबान अल्लाह से ढेर सारी खूबियां पाओ

०२४ २९/५८: "- - - उन्हें (मुसलमान*) हम (अल्लाह*) स्वर्ग में एक घर देंगे, बुलंद
हवेलियाँ जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं, उनमें रहने के लिए ऐ - - -"। सुपर रिच प्लस का जीवन
खूब सारा पानी।

०२५ ३५/३४: "(स्वर्ग में मुसलमान कहेंगे*) अल्लाह की स्तुति करो, जिसने हमसे दूर कर दिया है
(सब) दु: ख - - -"। सामग्री के अलावा कम से कम कुछ, जो वास्तव में वह सब है
अन्य छंदों के बारे में बात कर रहे हैं।

०२६ ३५/३३: "सनातन बागों में वे (मुसलमान*) प्रवेश करेंगे: उसमें वे सुशोभित होंगे
सोने और मोतियों के कंगन, और उनके वस्त्र रेशम के होंगे।" सांसारिक विलासितापूर्ण जीवन।

०२७ ३५/३५: "--- हमें (मुसलमानों) में कोई परिश्रम और थकान की भावना स्पर्श नहीं करेगी (में)
स्वर्ग*)।" अमीर और पराक्रमी की तरह: उन्हें मेहनत नहीं करनी पड़ी और वे थके हुए नहीं थे।

०२८ ३६/५६: "वे (मुसलमान*) और उनके साथी (ठंडे) छाया में झुके हुए होंगे
ऑन थ्रोन्स (गरिमा का) "। हम आज भी ग़रीबों के शाही सपनों से लिए गए जन्नत में हैं और
बहुत गर्म देश में रहने वाले आदिम लोग - लेकिन क्या सभी सर्वशक्तिमान ईश्वर सक्षम हैं
प्रस्ताव?

०२९ ३६/५७: "(हर एक) फल (आनंद) उनके लिए होगा; उनके पास जो कुछ भी होगा
के लिए कॉल - - -"। एक बहुत ही भौतिक स्वर्ग।

०३० ३७/४१-४४: "उनके लिए (मुसलमान*) एक निर्धारित जीविका है (स्वर्ग* में), फल
(खुशी); और वे (आज्ञा देंगे) सम्मान और गरिमा, गार्डन ऑफ फेलिसिटी में, प्रत्येक का सामना कर रहे हैं
अन्य ऑन थ्रोन्स (गरिमा के)।" अधिकतर जब जन्नत में खाने की बात होती है तो बात होती है
फल। साथ ही उन्हें अमीर और प्रतिष्ठित होना चाहिए, क्योंकि वे सभी सिंहासन पर बैठते हैं। बहुत होना चाहिए
सिंहासनों की लंबी कतारें - बहुत लंबी और कई ऐसी।

०३१ ३७/४५-४७: "उन्हें (मुसलमानों) को एक स्पष्ट प्रवाह से एक कप दिया जाएगा
फव्वारा, क्रिस्टल-सफ़ेद, पीने वालों के लिए स्वादिष्ट स्वाद का, सिरदर्द से मुक्त,
न ही वे उसका नशा भोगेंगे।" न केवल अच्छा खाना, बल्कि अच्छा पेय भी - नहीं
मादक।

०३२ ३७/४८: "और उनके पास (मुसलमान*) पवित्र स्त्रियाँ होंगी, जो अपनी नज़रों को क़ाबू में रखेंगी,
बड़ी आँखों से (आश्चर्य और सुंदरता की) "। प्रसिद्ध घंटे - मुफ्त उपयोग के लिए। और क्या फायदा हुआ
आदिम - और उस मामले के लिए कुछ अन्य - पुरुष सोचते हैं? शायद ही विनम्र और बौद्धिक
बातचीत।

1059

पेज १०६०

कुरान में ऐसा कोई स्थान नहीं है जिसमें एक विचार का उल्लेख किया गया हो कि जन्नत किस प्रकार के लिए है
घंटे। मुख्य व्यक्तियों की तुलना में कुरान शायद ही कभी दूसरों के जीवन और भावनाओं की परवाह करता है -
पुरुष मुस्लिम, अधिमानतः एक योद्धा। घंटे, दास औरत, दास, नौकर, और अन्य:
बहादुर योद्धा के उपयोग और उसकी सेवा करने के लिए बस चीजें। चीज़ें।

033 38/50-51: जन्नत में अच्छा खाना-पीना। सांसारिक विलासिता।

०३४ ३८/५२: "और उनके पास पवित्र स्त्रियाँ होंगी, जो अपनी दृष्टि को वश में रखेंगी, (साथियों)
समान आयु का।" एक बार और घंटे। में प्रत्येक आदमी के लिए कितने के बारे में कुछ नहीं कहा गया है
कुरान, लेकिन हदीस में एक बहादुर योद्धा के लिए 70 का उल्लेख है। कुछ कहा भी नहीं जाता
इस बारे में कि योद्धा की पत्नी या पत्नियों ने अपने पति को कई "पवित्र" के साथ साझा करने के लिए कैसा महसूस किया

महिलाएं, स्वयं से अधिक सुंदर और आकर्षक होने की संभावना है। लेकिन तब: कुरान ही
कहानी में मुख्य व्यक्ति/पुरुष के बारे में परेशान करती है - अक्सर योद्धा।

कहानी में मुख्य पुरुष के उपयोग के लिए माध्यमिक व्यक्ति चीजें हैं - और कौन परवाह करता है
उनके जीवन या भावनाओं या खुशी के बारे में?

इस समय एक आदिम और अमानवीय शिक्षा - लेकिन आदिम योद्धाओं के लिए उत्कृष्ट - यहाँ तक कि
आज।

०३५ ३९/२०: "लेकिन यह उनके लिए है जो अपने रब (अल्लाह) से डरते हैं, जो ऊँचे-ऊँचे भवन हैं।
दूसरा, बनाया गया है: उनके नीचे नदियाँ बहती हैं। एक लग्जरी कॉन्डोमिनियम की तरह -
यदि सही।

०३६ ३९/७५: "और आप सिंहासन (दिव्य) के चारों ओर के कोणों को गाते हुए देखेंगे।
उनके रब (अल्लाह*) की महिमा और पुरस्कार"। जैसा कि अल्लाह 7 से ऊपर रहता है। स्वर्ग और मात्र सामान्य
जन्नत में भी मुसलमान बहुत नीचे रहते हैं, यह नजारा थोड़ा समझाएगा।

०३७ ४०/८: "और हमारे पालनहार (अल्लाह*) को यह अनुदान दो कि वे (मुसलमान*) अनंत काल के बागों में प्रवेश करें,
जो तू ने उन से, और उनके पितरोंमें से धर्मी से, और उनकी पत्नियों, और
उनकी वंशावली (वंशज*)!" अच्छा और अच्छा, लेकिन यहाँ कुरान गणित में चलता है
और व्यावहारिक असंभवता। तुम्हारे पिता और पत्नियाँ ठीक हैं। लेकिन आपके बच्चे और उनके बच्चे
(क्योंकि तुम्हारे पुत्रों का एक ही वचन है), और उनके पुत्र, और उनके पुत्र, और उनके पुत्र - - -।
यह 1000 पीढ़ियों के बाद काफी हाथापाई होगी।

०३८ ४३/७०-७१: "तुम और तुम्हारी पत्नियों, (सुंदरता और) आनन्द में, बगीचे में प्रवेश करें। उनको
सोने के पात्र और प्याले गोल घुमाए जाएंगे; वहां वह सब कुछ होगा जो आत्माएं चाहती हैं,
वह सब जिसमें आंखें प्रसन्न हो सकती हैं - - -"। अरब के सबसे धनी लोगों की तरह - और भरपूर . के साथ
43/73 के अनुसार खाने के लिए फल।

०३९ ४४/५१-५५: बल्कि ७/९२ से ऊपर + घंटे की तरह।

०४० ४५/३०: "--- जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनका रब (अल्लाह*) स्वीकार करेगा
उन्हें उनकी दया के लिए - - -।" सादा और सरल। (और निश्चित रूप से सबसे अच्छा काम था और जाना है
युद्ध।)

041 47/12: बल्कि ऊपर 9/72 की तरह।

०४२ ४७/१५: "(यहाँ है) उस बगीचे का एक दृष्टान्त जिसका धर्मी लोगों से वादा किया जाता है: इसमें हैं
जल की नदियाँ अविनाशी; दूध की नदियाँ जिनका स्वाद कभी नहीं बदलता, शराब की नदियाँ

(यह सूरा ६२२ ईस्वी से है - मदीना की उड़ान के आसपास) पीने वालों के लिए एक खुशी; और नदियाँ
शहद का शुद्ध और स्पष्ट। उसमें उनके लिए सब प्रकार के फल हैं---।" हाँ, यूटोपिया की तरह or
एक और पार्थिव परादीस जिसका सपना गरीब लोगों ने एक शुष्क भूमि में देखा था - या किसी और ने
उनके लिए सपने बनाना। एक भौतिकवादी स्वर्ग, लेकिन यहाँ कम से कम अतिरिक्त अनुग्रह के साथ
अल्लाह। और जन्नत में मुसलमानों को शराब पीने की इजाज़त दी जाती है - "एक खुशी"।

०४३ ५२/१९-२०: "(उनसे (स्वर्ग में मुसलमान*) कहा जाएगा) 'खाओ और पियो, लाभ के साथ
और अपने (अच्छे) कामों के कारण चंगा करो।' वे सिंहासन पर (आसानी से) झुकेंगे (of .)
गरिमा) रैंकों में व्यवस्थित; और हम उनके साथ साथियों (प्रसिद्ध घंटे *) के साथ शामिल होंगे
सुंदर बड़ी और चमकदार आंखें।" एक गरीब, कुपोषित युवा - या बूढ़ा - अशिक्षित इससे अधिक और क्या हो सकता है?
और अकृषि और असंस्कृत आदमी रेगिस्तान के सपने के बारे में?

०४४ ५२/२१-२२: ऊपर ४०/8 देखें, और अच्छा भोजन और फल जोड़ें।

०४५ ५२/२३: "वे वहाँ एक दूसरे के साथ आदान-प्रदान करेंगे, एक (निचला) प्याला निः शुल्क, मुफ्त
बीमार के सभी दागों से। " स्वर्ग में शराब का एक अच्छा प्याला - - - लेकिन शायद शराब के बिना (?)

०४६ ५२/२४: "उनके चारों ओर (मुसलमान और उनके घंटे*) उनकी सेवा (समर्पित) करेंगे,
युवा (सुंदर) मोती के रूप में अच्छी तरह से संरक्षित "। ये जन्नत में नौकर हैं - हमेशा के लिए
युवा, सुंदर पुरुष। वे कहाँ से आते हैं, और सामान्य रूप से इस बारे में कुछ नहीं कहा गया है
कुरान यह एक शब्द नहीं कहा गया है कि कहानी में माध्यमिक व्यक्ति कैसा महसूस करते हैं या जीवन पसंद करते हैं, या कैसे

उनके लिए जन्नत है। केंद्रीय व्यक्ति अमीर और शीर्ष पर होते हैं, और यही मायने रखता है - अन्य कम रुचि के हैं। दलितों के साथ सहानुभूति कुरान में मौजूद नहीं है।

०४७ ५५/४६: "लेकिन ऐसे लोगों के लिए समय आ गया है जब वे (मुसलमान*) सामने खड़े होंगे उनके रब (अल्लाह*) के जजमेंट सीट पर दो बाग़ होंगे - - -"। नीचे 55/62 देखें।

०४८ ५५/४८-६०: ४७/१५ + घंटा जैसा कुछ।

०४९ ५५/६२: "और इन दोनों के अलावा, दो अन्य बाग़ हैं - - -"। सामान्य के लिए स्वर्ग मनुष्य कम से कम ४ बगीचों में बंटा हुआ है, और ऐसा लगता है कि उसके अनुसार अंतर हो सकता है आप इस जीवन में कितने अच्छे मुसलमान और कितने उग्र योद्धा रहे हैं - उतना ही अधिक मुहम्मद के आदर्शों के लिए आप जीते हैं और लड़े हैं, आप बेहतर बगीचे में समाप्त हो जाएंगे। लेकिन सभी 4 स्वर्ग हैं जिनमें से प्रत्येक में दो झरने हैं, ढेर सारे फल, आराम करने के लिए समृद्ध कालीन और बहुत सारी महिलाएं / घंटे "- - - (युवती), पवित्र, अपनी नज़रों को रोकना, जिन्हें कोई पुरुष या उनसे पहले जिन्न (मुसलमान*) ने (=कुंवारियों*) - - - को छुआ है। शाही सांसारिक मानक जीवित और कुंवारी आपकी सुविधानुसार मुफ्त उपयोग के लिए।

"भौगोलिक" विवरण में अंतर यह प्रतीत होता है कि सबसे अच्छे उद्यानों में भी है अधिक प्रचुर मात्रा में पानी, और वे पानी की प्रचुरता से गहरे हरे रंग के होते हैं - वास्तव में एक स्वर्ग गरीब और आदिम रेगिस्तानी निवासियों के लिए। एक आदर्श स्वर्ग बनाने में ज्यादा समय नहीं लगता भोले और आदिम लोग।

यह अभी भी बहुत कम कहा जाता है कि बच्चों और महिलाओं के लिए स्वर्ग कैसा है, इसमें घंटे भी शामिल हैं।

(हम जोड़ सकते हैं कि हदीसों के अनुसार नील और फरात नदी के बागों में शुरू होती है स्वर्ग। अविश्वसनीय? हाँ, लेकिन यह सच है कि हदीस ऐसा कहते हैं)।

०५० ५५/६४-७६: ४७/१५ + ५५/४८/६० के समान लेकिन एक डिग्री बेहतर।

१०६१

पृष्ठ १०६२

०५१ ५६/७+१०: "(कयामत के दिन*) तुम्हें तीन वर्गों में बांटा जाएगा। - - -। और वे (वर्ग*) सबसे आगे (विश्वास में) सबसे आगे होगा (परलोक में)"। कक्षाएं भी हैं जन्नत में (और अन्य आयतों और हदीस के अनुसार, वे उप-वर्गों में विभाजित हैं)। ए वास्तविकता अगर यह एक वास्तविकता है। अनुयायियों और योद्धाओं को प्रेरित करने का एक अच्छा तरीका - प्रयास करें और लड़ें अगले जन्म में कठिन और आगे बढ़ना - शासक (शासक) और युद्ध की लूट के लिए ही, यदि धर्म है बना।

०५२ ५६/७ + १०: "(कयामत के दिन) आपको तीन वर्गों में बांटा जाएगा - - - और वे सबसे आगे (विश्वास में) सबसे आगे (आखिर में) होगा।" सबसे अच्छे मुसलमान - और वो पाठ्यक्रम में उग्र सेनानियों को शामिल करें - स्वर्ग में सबसे अच्छी जगहों पर जाएंगे, और निकटतम भी अल्लाह। बाकियों में से जो दाहिनी ओर छांटे गए हैं वे स्वर्ग के निम्न गुणवत्ता वाले भागों में जाएंगे, जबकि बाईं ओर क्रमबद्ध लोग नर्क में जाएंगे। (यहां एक छोटी सी जिज्ञासा: पुराने अरब में दाएं को "अच्छा" पक्ष माना जाता था और बाएं को "बुरा" पक्ष माना जाता था। क्या यह संयोग है कि पूरे विश्व के लिए सर्वज्ञ ईश्वर ने मृत लोगों को रीति-रिवाजों और नियमों के अनुसार क्रमबद्ध किया पृथ्वी पर सभी छोटे अरब के बाद?)

०५३ ५६/१५-१६: "(वे (पवित्र मुसलमान*) होंगे) सिंहासन पर (सोने के साथ और कीमती पत्थर), उन पर झुककर, एक-दूसरे का सामना करते हुए "। इसका अर्थ है . की लंबी दोहरी पंक्तियाँ सिंहासन - लाखों या शायद कुछ अरबों सिंहासन एक दूसरे के सामने दोहरी पंक्तियों में। और भी, यदि स्त्रियां और बच्चे और सब घण्टे भी सिंहासन पर विराजमान हों। वहाँ भी पंक्तियों के बीच कुछ जगह होनी चाहिए, क्योंकि कालीनों पर आराम करने के लिए जगह होनी चाहिए अन्य छंदों में और फलों के पेड़ों और पानी के लिए उल्लेख किया गया है।

हालाँकि सिंहासनों की अंतहीन दोहरी पंक्तियाँ एक परिपूर्ण स्वर्ग के हमारे विचार की तरह नहीं लगती हैं, नहीं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मुफ्त उपयोग के लिए कितने घंटे और अच्छा भोजन और पेय लगभग एकमात्र शगल है - कुछ विनम्र और बौद्धिक रूप से मांग न करने वाली बातचीत ही एकमात्र विकल्प है उल्लिखित। नीचे ५६/२५-२६ उद्धरण भी देखें।

०५४ ५६/१७: "उनके चारों ओर सदा ताजगी के युवा (सेवा) करेंगे - - -।" फिर से ये रहस्यमय नौकर। कुरान उनमें पूरी तरह से उदासीन है और उनके बारे में कुछ नहीं बताता है -

रुचि का एकमात्र व्यक्ति मुस्लिम वयस्क व्यक्ति है - अजीब तरह से वही जो हो सकता है
मुहम्मद और उनके उत्तराधिकारियों के लिए योद्धा। दूसरों की ज्यादा गिनती नहीं है।

वे क्या हैं - नौकर और हौटी? वे कहां से आते हैं? कैसे है जन्नत
उन्हें? (कुछ मुस्लिम विद्वान इस संभावना के बारे में अनुमान लगाते हैं कि वे मनुष्य हो सकते हैं जो
बच्चों या बच्चों के रूप में मृत्यु हो गई - लेकिन उनके माता-पिता से उनके बच्चों के हिस्से के रूप में वादा किया जाता है
स्वर्ग, और फिर वे दूसरों के लिए नौकर या सेक्स डॉल नहीं हो सकते।

०५५ ५६/१८-२०: "(नौकर) प्याले के साथ, (चमकते हुए) बीकर, और कप (भरे हुए) साफ-
बहते हुए सोते (शराब के) : न तो वे उस से दुख पाएँगे और न ही पाएँगे
नशा सहना : (और अच्छा खाना-मांस और फल*)---।" यह सूरा सीए से है। 615
AD- इससे पहले अल्लाह को पता चला कि शराब अच्छी नहीं होती। लेकिन कम से कम जन्नत में भी ६१५
एडी आप बीमार नहीं हुए या बहुत शराब से सिर दर्द नहीं हुआ।

०५६ ५६/२५-२६: "उनमें न तो कोई तुच्छता की बात सुनी जाएगी, और न ही किसी रोग का कलंक - केवल कहावत,
'शांति, शांति!' यह आशा की जानी चाहिए कि भले ही कोई व्यक्ति ठीक उसी पुराने शरीर के साथ फिर से जीवित हो जाए
यह जीवन, मस्तिष्क बहुत बदल जाएगा - केवल इन लीलाओं के साथ अनंत काल उबाऊ होगा
बुद्धिमान और बौद्धिक रूप से सक्रिय व्यक्तियों के लिए चरम "।

पेज १०६३

०५७ ५६/२७-३४: "दाहिने हाथ के साथी (अच्छे, लेकिन शीर्ष पवित्र और/या नहीं)
योद्धा*) - - - (होगा) बिना कांटों वाले लोटे के पेड़ों में - - - फूलों वाले पेड़ (या फल)
एक के ऊपर एक ढेर - - - छाया में - - - लगातार बहते पानी से, और फलों में
बहुतायत - - - और सिंहासन पर (गरिमा की) - - - (और अगले छंदों में घंटे - उनकी पत्नियाँ
उल्लेख नहीं किया गया है*) - - -"। शीर्ष वर्ग की तरह नहीं, लेकिन कम से कम राजाओं के साथ "बराबर"। परंतु
पुरुषों और संभावित योद्धाओं के बुनियादी और आधारभूत सांसारिक सपनों को पूरा करने के लिए हर चीज उपयुक्त है
आदिम प्रकार की और आदिम परिस्थितियों से। उससे आगे की कोई बात नहीं।

०५८ ५६/३५-३७: "हमने (अल्लाह*) ने (उनके (मुसलमानों) साथियों को) विशेष रचना की है।
और उन्हें (घंटों*) कुँवारी-शुद्ध (और निर्मल) बना दिया - प्रिय (स्वभाव से), उम्र में समान - -
-"। इस दुनिया की पत्नियों और दासियों का भी उल्लेख नहीं है। लेकिन अजीब वाक्य
"उम्र में समान" फिर से प्रकट होता है - क्यों, यदि सभी को नवयुवकों/लोगों की तरह पुनरुत्थित किया जाता है?

०५९ ५७/१२: बल्कि ऊपर ९/७२ के समान है।

०६० ६९/२२-२४: "ऊँचे बगीचे में, फल जिसके (गुच्छों में लटकेंगे) नीचे और पास।
'खाओ (मुस्लिम जन्नत में) और तुम (अच्छे) के कारण, पूरी संतुष्टि के साथ पीओ
काम जो तुम ने अपने आगे भेजे थे, उन दिनों में।" यह कर्म है जो मायने रखता है - यद्यपि
इस्लाम में भी अगर कर्म किए जाएं तो अल्लाह से अर्जित की गई योग्यता में कुछ सुधार होता है
गलत कारणों से।

०६१ ७४/४०: "(वे (अच्छे मुसलमान*) होंगे) बगीचों में (खुशी के): वे प्रत्येक से सवाल करेंगे
अन्य, और (पूछें) पापियों के: 'किस कारण आपको नरक-अग्नि में ले जाया गया?'" अधिक दूरी नहीं है
जन्नत और नर्क के बीच - संचार संभव है। इस तरह का यह अकेला मामला नहीं है
कुरान में संचार।

०६२ ७६/१३: "उठाए गए सिंहासनों पर (बगीचे) में लेटे हुए, वे न तो सूर्य को देखेंगे
(अत्यधिक गर्मी) और न ही (चंद्रमा की) अत्यधिक ठंड।" रेगिस्तान के आदमी के सपने का हिस्सा -
दुनिया के सभी स्थानों से दूर, केवल अरब जैसे गर्म रेगिस्तानों में तापमान इतना बदल जाता है
इतने कम समय में, कि दिन अत्यधिक गर्म और रातें अत्यधिक ठंडी हो जाती हैं।

०६३ ७६/१४-२१: पृथ्वी जैसे शाही स्वर्ग के समान विवरण के बारे में अधिक जानकारी, लेकिन के साथ
शराब में मिलाने के लिए "ज़ांजाबिल" (76/17) नामक एक सामान के अलावा (इस सूरह की उम्र ज्ञात नहीं है,
और फलस्वरूप हम नहीं जानते कि क्या अल्लाह ने अब तक शराब के बारे में अपना दृष्टिकोण बदल दिया है), और अ
फव्वारा "साल्सबिल" (76/18)। पहले शब्द का अर्थ अदरक हो सकता है, दूसरा कोई नहीं जानता,
हालांकि अनुमान है।

०६४ ७७/४१: जैसे ७६/१४-२१ ठीक ऊपर, लेकिन दो अतिरिक्त शब्दों के बिना।

०६५ ७८/३१-३६: ऊपर ७६/१४-२१ की तरह, लेकिन दो अतिरिक्त शब्दों के बिना।

०६६ ८३/१८-२१: "नहीं, वास्तव में, धर्मियों का रिकॉर्ड 'इलियिन' में (संरक्षित) है। और क्या
आपको समझाएगा कि 'इलियिन' क्या है? (एक रजिस्टर (पूरी तरह से) खुदा हुआ है, जिस पर भालू
(अल्लाह के सबसे नज़दीकी लोगों को) गवाही दो।" सर्वज्ञ भगवान अल्लाह को गवाहों की जरूरत है - और वह नहीं है
उससे कहीं अधिक उन्नत और सर्वज्ञ, सब कुछ एक अच्छे, पुराने में लिखा जाना है-
जमाने की किताब।

067 85/11: बल्कि ऊपर 9/72 के समान।

०६८ ८८/१०-१६: "ऊँचे बगीचे में, जहाँ वे (स्वर्ग में मुसलमान*) नहीं सुनेंगे (शब्द)
घमंड की: उसमें एक बुदबुदाती वसंत होगी: उसमें सिंहासन (गरिमा का), ऊंचा उठाया जाएगा,
प्याले (शराब* के लिए) रखे (तैयार), और तकिए पंक्तियों में सेट, और समृद्ध कालीन (सभी) फैले हुए हैं।"
एक अच्छी तस्वीर - सिवाय जब आप करोड़ों लोगों के बारे में सोचते हैं, जिनमें से प्रत्येक अपने से बंधा होता है
अपने कुल के पुत्र के रूप में एक पुत्र के पुत्र के रूप में - - - आदि, उस तरह रखा। केवल अंतहीन पंक्तियाँ। कुछ
स्वर्ग।

069 98/8: बल्कि ऊपर 9/72 के समान।

पोस्ट स्क्रिप्चर टू चैप्टर VIII/1.

हमने मुस्लिम स्वर्ग का विस्तृत विवरण देना चुना है, आंशिक रूप से इसलिए कि अनंत काल
एक स्थान पर रहने और आंशिक रूप से पूरी तस्वीर देने के लिए एक लंबा समय है। यह मुख्य रूप से पृथ्वी के समान है
अरब में और उसके आसपास मुहम्मद के समय और क्षेत्र में, लेकिन अधिक पानी और इच्छा के साथ और
आज्ञाकारी सुंदर महिलाएं, और आंखों से देखे जाने वाले उच्च कुलीनता जैसा जीवन और
युवा और इतने युवा नहीं, बल्कि वीर आदिम, अशिक्षित और भोले योद्धाओं के सपने - पुरुष
बेशक योद्धा।

क्या यह वास्तव में सबसे अच्छा स्वर्ग है जिसे एक सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान ईश्वर बना सकता है? या यह कोई है
आदिम, अशिक्षित और भोले-भाले मर्दों के धन के बारे में गुप्त सपनों पर खेलना और
महिला? "झूठ अक्सर बोलो, और लोग विश्वास करना शुरू कर देते हैं" - जोसेफ गोएबल्स।

सारांश बनाने के लिए:

1. जन्नत हमारे और हमारे ऊपर के आसमान में है
   समतल पृथ्वी, और पहले में स्थित प्रतीत होती है
   स्वर्ग, जैसा कि ऊँचे आकाश अधिक के लिए हैं
   सामान्य मुसलमानों की तुलना में योग्य व्यक्ति।
2. यह मामले में सभी सितारों के समान स्वर्ग है
   के लिए बांधा जाता है, और जहां से कुछ
   सितारों का उपयोग सितारों को भगाने के लिए किया जाता है
   जिन्न/बुरी आत्माएं स्वर्ग की जासूसी करना चाहती हैं।
   हालांकि अल्लाह और उसके फ़रिश्तों की जासूसी कैसे करें
   ऊपर 7. स्वर्ग, जब जिन्न और अन्य जासूस
   1 से भी नीचे थे। भारी?
3. संचार की संभावनाएं हैं
   जन्नत में और नर्क में इंसानों के बीच -
   शायद गोलार्द्धों के रिम के साथ
   आकाश बनाना? - जैसा नर्क लगता है
   समतल 7 पृथ्वी के नीचे स्थित है, अर्थात a
   संभावना।
4. कयामत के दिन इंसान 3 . में बंट जाता है
   समूह (कुछ हदीसों में केवल 2 का उल्लेख है), और
   योग्य 2 सर्वश्रेष्ठ समूह एक को समाप्त करते हैं
   उत्कृष्ट भाग स्वर्ग - और एक में सर्वश्रेष्ठ
   अतिरिक्त उत्कृष्ट भाग।
5. जन्नत के ये हिस्से उपविभाजित हैं
   मानकों के अनुसार कितना अच्छा है और
   आप एक मुसलमान के लिए उत्सुक हैं। (यह नहीं है

कुरान में नहीं उल्लेख है, लेकिन स्पष्ट है
हदीसों का निर्माण - 1: बूतपूर्व अल-बुखारी)।

6. मुख्य रूप से मुसलमान जन्नत में खत्म होते हैं, लेकिन कुछ यहूदी और ईसाई दृढ़ विश्वास के साथ और एक उत्कृष्ट नैतिक जीवन, एक मौका है, के अनुसार कुरान में कम से कम कुछ छंदों के लिए। वहां दूसरों के लिए भी एक उदघाटन हो सकता है जो कभी नहीं अल्लाह के बारे में सुना था। क्योंकि अल्लाह है जो लोग नहीं जानते उन्हें दंडित करने के लिए अनिच्छुक उन्होंने गलत काम किया।
7. जन्नत में तुम बड़े-बड़े मकानों में रहते हो।
8. और आप सिंहासन लगाने की अध्यक्षता करते हैं - उनमें से अंतहीन पंक्तियाँ - या तकिए पर आराम करें कालीनों पर लेटा हुआ।
9. लगता है जन्नत लोगों के लिए बनी है एक गर्म, शुष्क देश से, बहुत जोर के साथ छाया और पानी पर। हदीस 2 . के अनुसार पृथ्वी पर नदियाँ - नील और फरात - जन्नत में शुरू होता है, मानो या न मानो।
10. बहुत सारे पेड़ हैं - इसलिए उनमें से कुछ छाया - समृद्ध फलों के पेड़ शामिल हैं।
11. लोगों को जन्नत के लिए पुनर्जीवित किया जाता है (और के लिए) नर्क) शरीर में, आत्मा में ही नहीं।
१२. १२. यह संभावना है, लेकिन पूरी तरह से निश्चित नहीं है, कि सब युवा वयस्कों की तरह पुनर्जीवित होते हैं।
13. 13. जन्नत में कपड़े बहुत अमीर हैं - वही व्यक्तिगत आभूषण हैं। कुछ इस तरह पृथ्वी पर एक राजा का शाही पहनावा।
14. 14. खाना भी बढ़िया है। विशेष रूप से बहुत सारे फलों का उल्लेख अक्सर किया जाता है, लेकिन यह भी बहुत सारा मांस। यह स्पष्ट किया जाता है कि भोजन कमोबेश पृथ्वी के समान ही है, लेकिन में भरपूर और उच्च गुणवत्ता में। इस तरह भी जीवन पृथ्वी पर जैसा है - लेकिन पृथ्वी पर एक राजा की तरह।
15. 15. आप जो पीते हैं वह भी वही है - केवल बेहतर - जैसे पृथ्वी पर। इसमें शराब शामिल है (but एक नशीला किस्म - या जल्दी में सूरह शायद आपको बुरा नहीं दे रहे हैं "दिन के बाद"।
16. 16. प्रत्येक व्यक्ति को एक द्वारा परोसा और परोसा जाता है युवा आकर्षक लड़कों या पुरुषों की सेना। NS कुरान कोई नाम नहीं देता और न ही कोई जानकारी वे कहाँ से आते हैं या वे कैसे पसंद करते हैं स्वर्ग में उनकी स्थिति।
17. 17. हर कोई - कम से कम पुरुषों - के पास है माता-पिता, पत्नी और उनके आसपास के बच्चे यदि ये जन्नत के योग्य हैं - जो इसे बनाता है स्पष्ट है कि स्वर्ग का निवास होना चाहिए के पुत्रों के पुत्रों के रूप में विशाल कुलों सैकड़ों पीढ़ियों में बेटे धीरे-धीरे जुड़ते हैं ऊपर, और सभी से वादा किया जाता है कि उनके माता-पिता होंगे और पत्नियां और उनके आसपास के बच्चे (जैसा कि)

बच्चों, यह मुख्य रूप से बेटों के लिए जाना चाहिए, जैसा कि
बेटियाँ ज्यादातर की पत्नी के रूप में समाप्त होती हैं
किसी अन्य कबीले में, या किसी अन्य भाग में
एक ही कबीले।

18. 18. फिर प्रसिद्ध घंटे हैं - in
कुंवारी पुरुषों के लिए वास्तविकता सेक्स गुलाम। हदीस बताता है
कि वास्तव में एक अच्छा (योद्धा) मुसलमान हो सकता है
उनमें से 70 तक। कैसे . के बारे में कुछ नहीं कहा गया है
पुरुषों की पत्नियों को यह प्रतियोगिता मिलती है। परंतु
तो इस्लाम वयस्क व्यक्ति के लिए एक धर्म है, और
महिलाओं और उन्हें जो पसंद है वह बहुत कम मायने रखता है।
घंटे क्या हैं, इसके बारे में कुछ नहीं कहा गया है,
वे कहाँ से आते हैं या वे इसे कैसे पसंद करते हैं
स्वर्ग - यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि वे कैसे पसंद करते हैं
असभ्य, अशिक्षित और कभी-कभी सेवा करें
बदतर योद्धा। क्या वाकई में जन्नत है
उन्हें? ऐसा लगता है कि सवाल कोई दिलचस्पी नहीं है
न कुरान के लिए, न इस्लाम के लिए, न ही करने के लिए
मुस्लिम पुरुष या विद्वान।

19. 19. जैसा कि उल्लेख किया गया है कि 7 स्वर्ग हैं -
सामग्री वाले (यदि नहीं तो इसे ठीक करना संभव नहीं था
उनमें से सबसे नीचे के सितारे)। NS
उच्च आकाश भविष्यद्वक्ताओं और अन्य के लिए हैं
अतिरिक्त लोग। आप बेहतर गुणवत्ता वाले मुस्लिम
थे, आप ऊँचे स्वर्ग में समाप्त हुए। यीशु
एफ। भूतपूर्व। 2 में है। स्वर्ग - वह वास्तव में मुख्य है
मुहम्मद के प्रतियोगी, और होना ही था
उसे निम्न स्वर्ग में स्थान देकर कम किया गया
उसे एक नबी के रूप में कम करने के लिए। दूसरी ओर
पैमाने का 7 में लच्छेदार अब्राहम है।
स्वर्ग - एक स्वर्ग जिसके साथ उसे साझा करना होगा
कयामत के दिन के बाद मुहम्मद। यह कहा जाता है
आकाश कैसा था, इसके बारे में कुछ नहीं
मुहम्मद की यात्रा के समय आबाद
स्वर्ग - कुरान सिखाता है कि मृत
कयामत के दिन तक इंतजार करना होगा
जी उठने, लेकिन सभी एक ही दोनों नर्क और
आकाश आबाद थे जब
मुहम्मद ने स्वर्ग का दौरा किया और जब वह
नरक दिखाया गया था। एक स्पष्ट विरोधाभास।

20. 20. एक बड़ा और अनुत्तरित प्रश्न है - as
ऊपर बिंदु 19 में उल्लेख किया गया है - कैसे
इब्राहीम और दूसरों को पहले से ही मिल सकता है
स्वर्ग में उनकी जगह, कयामत के दिन के रूप में
अभी तक सामने नहीं आया है।

२१. २१. अल्लाह का ठिकाना है "७ के ऊपर।
स्वर्ग" हदीसों के अनुसार।

ए पीएस: अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अनुसंधान अकादमी (इस तरह मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक

विषयों) दिनांक २७. दिसंबर १९९८ के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं
अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि
अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है
के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है। अगर कोई अल्लाह नहीं है
और/या मुहम्मद और एक ईश्वर के बीच कोई संबंध नहीं है, उसके जैसा कोई स्वर्ग भी नहीं है
मुहम्मद के बारे में बताया।

भाग VIII, अध्याय 2, अध्याय 1 (= VIII-1-0-0)

अगला जीवन कुरान में वर्णित है

इस्लाम में वर्णित नरक।

1. कब्र में सजा

- एक प्रकार का पार्गेटरी जो शुद्ध नहीं होता है?

(एनबी: यह आप केवल हदीसों में पाते हैं, कुरान में नहीं।)

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस्लाम में एक छोटा और गैर-मुसलमानों के लिए अल्पज्ञात पार्गेटरी है: कब्र में सजा। इस
मरे हुओं के मरने के समय के बारे में कुरान में जो कहा गया है, उसका विरोधाभास है,
जब तक वह कयामत के दिन तक नहीं जागता, जिसे शून्य कहा जाता है, और आपको इसके बारे में कुछ भी नहीं मिलेगा
कुरान में कब्र में सजा।

लेकिन हदीसों में कुछ कहानियाँ हैं - f. भूतपूर्व। मरे हुए लोग जिन्हें कब्र में दर्द होता है क्योंकि
अपनों के लिए रो रहे हैं (युद्ध धर्म में रोना और मरे हुओं पर दुख नहीं है)
अच्छा - और जीवित योद्धाओं के लिए मनोबल गिराने वाला हो सकता है) और अन्य कारणों से।

चूंकि यह कुरान में नहीं है - इस पुस्तक का विषय - हम अब इसमें और नहीं जाते हैं, लेकिन हो सकता है
इसके बारे में कुछ समय बाद में और जोड़ें।

हम उल्लेख करते हैं, हालांकि, जैसा कि कुरान में इसका उल्लेख नहीं है, यह संभावना नहीं है
कब्र में सजा मुहम्मद की मृत्यु के बाद की जाती है, लेकिन हदीसों में स्वीकार किया जाता है
वही - जैसे मुहम्मद से जुड़े चमत्कारों की कहानियाँ।

भाग VIII, अध्याय 2, अध्याय 2 (= VIII-2-2-0)

अगला जीवन कुरान में वर्णित है

कुरान में वर्णित नरक।

नरक, असली वाला

१०६७

पेज १०६८

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

नर्क को कुरान में स्वर्ग के समान विवरण के रूप में वर्णित नहीं किया गया है, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह
एक वास्तविक साधु द्वारा संचालित एक अच्छी जगह नहीं है। मुहम्मद और अरब अच्छी तरह जानते थे कि
सबसे खराब दर्द जो आपको सामान्य रूप से मिलता है वह है जलने से, और पुराने धर्मों से नरक को अपनाया जहां
नरक अग्नि से अधिकतम शारीरिक पीड़ा का स्थान है, जिसमें घृणित और दर्दनाक भोजन और
पेय प्लस कुछ मनोवैज्ञानिक संकट जोड़ा गया।

जैसा कि आप जन्नत के अध्याय से देखते हैं, जिन्हें के दिन के दौरान बाईं ओर रखा जाता है
कयामत, नर्क में समाप्त होती है। यह कुरान में निर्दिष्ट नहीं है जहां जहन्नम है, लेकिन यह स्पष्ट है कि यह है
नीचे कहीं - सबसे अधिक संभावना 7 (!) समतल पृथ्वी के नीचे। (हदीस के अनुसार, यह है
जहाँ तुम नर्क पाते हो)।

नर्क में भी मतभेद हैं। एक बात के लिए ७ द्वार हैं जो ७ अलग-अलग स्थानों की ओर जाते हैं,

एक दूसरे को कोई इलाज, और दूसरी बात के लिए इलाज हर जगह और भी बदतर हो सकता है

लेकिन नर्क से जन्नत में बुलाने की (सीमित) संभावनाएं हैं या दूसरा रास्ता- बस बनाने के लिए
नर्क के कैदियों की आत्मा और भी कम।

नर्क क्यों है, यह वास्तव में स्पष्ट नहीं है। इब्लीस - एक जिन्न सबसे अधिक संभावना है - को स्वर्ग से हटा दिया गया था
अल्लाह, और अल्लाह से नर्क शुरू करने की अनुमति मिली। कुछ मुसलमान सोचते हैं कि नर्क वास्तव में हिस्सा है
अल्लाह की अथाह योजनाओं के बारे में। उस मामले में अल्लाह केवल दयालु से दूर है। जबकि कुछ
संशयवादी सोचते हैं कि मुहम्मद को एक कार्यात्मक धर्म बनाने के लिए नर्क आवश्यक था।

कोई बात नहीं: यह एक बुरी जगह है जो शारीरिक पीड़ा से भरी हुई है - एक ला पृथ्वी को दर्द देती है।

०१ ४/५६: "जो लोग हमारी आयतों को ठुकराते हैं, हम (अल्लाह) जल्द ही आग में डाल देंगे: जितनी बार
जैसे उनका चमड़ा भूना जाता है, हम उन्हें नई खाल के लिये बदल देंगे, कि वे चख लें
दंड - - -।" एक अच्छा और परोपकारी देवता - की गंभीरता के अनुसार दंड देना
कम से कम कुरान के अनुसार, पाप, और कभी भी गलत तरीके से कठोर सजा नहीं। हालांकि आपको करना है
वास्तव में इस दुखद दंड के योग्य होने के लिए वास्तव में, वास्तव में बुरे पापी बनें।

००२ ७/४१: "उनके लिए (पापियों*) नरक है, जैसे एक सोफे (नीचे) और सिलवटों और सिलवटों
ऊपर कवर "। जैसा कहा गया: स्पष्ट रूप से कहीं नीचे।

००३ ७/४६: "उनके बीच (स्वर्ग में जाने वाले और नर्क में जाने वाले) एक पर्दा होगा - -"
- और पहले वाले आखिरी वाले को बता रहे हैं कि इस्लाम सही था।

004 7/50: "आग के साथी बगीचे के साथियों को बुलाएंगे: 'डालना'
हमारे लिए पानी या कुछ भी जो अल्लाह तुम्हारे भरण-पोषण के लिए प्रदान करता है।' वे कहेंगे:
"इन दोनों चीजों को अल्लाह ने उन लोगों के लिए मना किया है जिन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया"। यदि आप दर्द में हैं, तो यह
और भी बदतर हो जाता है यदि आप जानते हैं कि रिलीज मौजूद है, लेकिन आप उस तक नहीं पहुंच सकते। मुहम्मद या अल्लाह
अनुयायियों को प्रभावित करना जानते थे।

००५ १०/४: "- - - जो उसे (अल्लाह *) को अस्वीकार करते हैं, उनके पास उबलते तरल पदार्थ (के लिए .) के ड्राफ्ट होंगे
मद्यपान*), और एक शास्ति गंभीर - - -।" नर्क कोई जन्नत नहीं है - और अल्लाह एक सख्त ईश्वर है।

००६ ११/१०६-१०७: "- - - उनके लिए (पापियों*) उसमें (और कुछ नहीं) का ढेर होगा
आह और सिसकना। वे उस में हर समय वास करेंगे कि स्वर्ग (बहुवचन और गलत*)
और पृथ्वी सदा स्थिर रहती है, सिवाय इसके कि जैसा तेरा रब (अल्लाह*) चाहे।" अनंत काल के लिए कोई आशा नहीं -
सिवाय शायद उस अंतिम वाक्य के अंतिम भाग में। मुसलमान इस बात पर सहमत नहीं हो सकते कि क्या हो सकता है
इसका मतलब है कि एक बार बहुत दूर के भविष्य में नर्क का अंत हो सकता है, कम से कम कुछ कैदियों के लिए।

००७ ११/१०८: "वे (मुसलमान*) उसमें हमेशा रहेंगे कि आकाश (बहुवचन और
गलत*) और पृथ्वी सहती है, सिवाय इसके कि जैसे तेरा रब (अल्लाह*) चाहे - - -"। का अंतिम भाग
कुरान में कहीं भी वाक्य की व्याख्या नहीं की गई है। ९/१०७ में नर्क के बारे में समान शब्दों का प्रयोग किया गया है,
और कुछ मुस्लिम विचारकों का कहना है कि इसका मतलब यह हो सकता है कि शायद नर्क हमेशा के लिए नहीं रहेगा - कम से कम
इसके सभी कैदियों के लिए नहीं। अगर हम जन्नत के लिए एक ही तर्क का इस्तेमाल नहीं करते हैं, तो इस आयत का मतलब है कि
स्वर्ग सभी वास्तविक मुसलमानों के लिए हमेशा के लिए रहेगा (और शायद कुछ यहूदियों और ईसाइयों के लिए)
योग्य स्वर्ग)।

008 14/49-50: "और तुम (मुहम्मद/मुसलमान*) उस दिन पापियों को देखोगे।
कयामत*) बेड़ियों में बंधे - उनके तरल के वस्त्र, और उनके चेहरे
आग"। एक बुरी जगह और संकट पृथ्वी पर सबसे दर्दनाक संभव के समान।

००९ १५/३३-३९: "(इब्लिस (भविष्य के शैतान*) ने कहा): 'मैं खुद को आदमी को सजदा करने वाला नहीं हूं,
जिसे तू ने बजती हुई मिट्टी से, और गढ़ी हुई मिट्टी से जो आकार में गढ़ी है, उत्पन्न किया है'। (अल्लाह) ने कहा:
'तब यहां से निकल जाओ, क्योंकि तू ठुकराया हुआ, शापित है। और शाप तुझ पर होगा
न्याय के दिन तक।' (इब्लिस) ने कहा: 'हे मेरे भगवान! मुझे उस दिन तक राहत दो (मृत)
उठाया गया हैं।' (अल्लाह) ने कहा: 'आपको राहत दी गई है - नियत समय के दिन तक।' (इब्लिस)
कहा: 'हे मेरे भगवान! क्योंकि तूने मुझे गलत में डाल दिया है, मैं (गलत) को गोरा बना दूंगा
उनके लिए पृथ्वी पर, और मैं उन सभी को गलत - - - में डाल दूंगा। इस तरह नर्क आया। NS
कहानी बहुत तार्किक नहीं है, और कई मुस्लिम विद्वान अनुमान लगाते हैं कि क्या इब्लीस वास्तव में है

अल्लाह की गुप्त योजनाओं के अनुसार अल्लाह के लिए काम करना। पृथ्वी पर कोई भी कभी नहीं जान पाएगा।

०१० १५/४४: "इसके लिए (नरक*) सात द्वार हैं: उनमें से प्रत्येक के लिए एक (विशेष) वर्ग (का) है
पापियों) को सौंपा। " जितना बुरा गैर-मुस्लिम - या यहां तक कि मुस्लिम पापी - नरक का उतना ही बुरा हिस्सा।

०११ २१/९८: "वास्तव में तुम (अविश्वासियों) और (झूठे) देवताओं को तुम अल्लाह के अलावा पूजते हो, (लेकिन)
नरक के लिए ईंधन"। एक प्रश्न: ईसा मुसलमानों के लिए नबी हैं। लेकिन मुसलमानों के अनुसार वह भी
ईसाइयों के लिए एक झूठा भगवान है (मुहम्मद त्रिमूर्ति को नहीं समझते थे - उनका मानना था कि यह 3 देवता हैं
मैरी के साथ नहीं के रूप में। 3))। एक झूठे (?) भगवान के रूप में, क्या वह नरक के लिए ईंधन है?

०१२ २२/१९-२२: "- - - उनके लिए (गैर-मुसलमान*) आग का एक वस्त्र काटा जाएगा: उनके ऊपर
सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा। इससे उनके शरीर में जो कुछ है, वह भी जल जाएगा
(उनकी) खाल के रूप में। इसके अलावा उन्हें लोहे की गदा (दंड देने के लिए) होगी। हर बार वे चाहते हैं
वहाँ से दूर जाने के लिए, पीड़ा से, वे वहाँ वापस जाने के लिए मजबूर होंगे - - -"। सख्त व्यवस्था।

०१३ २५/१३-१४: "और जब वे डाले जाते हैं, एक साथ बंधे हुए, उस में एक संकुचित स्थान में"
(नरक*), वे वहाँ विनाश की याचना करेंगे! इस दिन एक भी नहीं के लिए विनती करें
विनाश: बार-बार विनाश की याचना करना"। नर्क का अर्थ है लगातार जलाना
विनाश के द्वारा पीड़ा से मुक्ति पाने की संभावना के बिना।

०१४ ३२/१३: "अगर हम (अल्लाह*) ऐसा चाहते, तो हम निश्चित रूप से हर आत्मा को उसकी सच्चाई में ला सकते थे
मार्गदर्शन: लेकिन मेरी ओर से वचन सच हो जाएगा, 'मैं नरक को जिन्नों और पुरुषों से भर दूंगा'
साथ में'"। एक विचार: हो सकता है कि यह सच हो अल्लाह ने नर्क की भी व्यवस्था की है। एक और विचार: नहीं
उसके पास है या नहीं - जब तक वह नर्क को जीवित प्राणियों से भरना चाहता है, वह परोपकारी नहीं है

भगवान। (जिन्स अरब लोककथाओं और पहले के बुतपरस्त धर्म से उधार लिए गए प्राणी हैं - के अनुसार
इस्लाम के लिए वे अल्लाह द्वारा धुएं रहित आग से बनाए गए हैं, जबकि कोण प्रकाश से बनाए गए हैं।)

०१५ ३५/३७: "उसमें (नरक) वे (गैर-मुस्लिम / पापी *) जोर से चिल्लाएंगे (सहायता के लिए): 'हमारे
भगवान (अल्लाह*)! हमें बाहर निकालो: हम धर्म के काम करेंगे, न कि (कर्मों) जो हम करते थे!'"
नर्क के कैदी रहम की याचना करेंगे, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

०१६ ३७/६४-६८: "इसके लिए (जक्कुम का पेड़) एक ऐसा पेड़ है जो जहन्नम की तलहटी से निकलता है:
उसके फल-डंठल के अंकुर शैतानों के सिर के समान हैं: सचमुच वे (पापी नरक में*) खाएँगे
और उसी से अपना पेट भर लो। फिर उसके ऊपर का मिश्रण दिया जाएगा
उबला पानी"। मार्किस डी साडे - "दुखदवाद" को नाम देना - की तुलना में एक शौकिया था
कुरान।

०१७ ३८/७५-८२: वही कहानी जो ऊपर १५/३३-३९ में थी (मुहम्मद में दोहराने की प्रवृत्ति थी
खुद - साहित्य की गुणवत्ता के लिए भगवान नहीं), लेकिन इसके अलावा इब्लिस क्यों नहीं चाहता था
आदम के लिए खुद को दण्डवत करें: "मैं उससे बेहतर हूं: तू ने मुझे आग से और तू ने बनाया है
मिट्टी से बनाया गया है।" इब्लीस अभिमानी था या - अगर वह एक खेल में अल्लाह के साथ था
नर्क बनाने का एक कारण होने के कारण - वह अभिमानी था।

०१८ ४०/४९-५०: "जो लोग (पापी*) आग में हैं, वे नर्क के रखवालों से कहेंगे: 'अपने लिए प्रार्थना करो
भगवान (अल्लाह या शैतान? *) हमें कम से कम एक दिन के लिए दंड को हल्का करने के लिए।' वे कहेंगे: 'दीदी'
क्या तुम्हारे पास स्पष्ट संकेतों वाले दूत नहीं आए हैं?' वे जवाब देंगे, 'हां'। वे (the
रखवाले*) उत्तर देंगे, 'फिर प्रार्थना करो (जैसा तुम चाहो)! (बिना परिणाम*)"। नरक में कोई क्षमा नहीं है।

०१९ ४०/७१-७२: "जब उनके (पापियों के नरक में*) जूए और जंजीरें उनके चारों ओर हों;
उन्हें साथ घसीटा जाएगा - उबलते तरल पदार्थ में; तब वे आग में जलाए जाएंगे।" नहीं एक
परिष्कृत उपचार, लेकिन कुशल - और आदिम पुरुषों के लिए समझने में आसान भी। दैनिक जीवन
मुहम्मद या अल्लाह के अनुसार नर्क (?)

०२० ४०/८५: "लेकिन उनके (पापियों*) ने ईमान का दावा किया जब उन्होंने (वास्तव में) हमारे (अल्लाह के) को देखा।
सजा से उन्हें कोई लाभ नहीं होने वाला था।" नर्क से बचने के लिए आपको पछताना पड़ेगा - और अधिमानतः
अपने पापों को समय पर, और मरने से पहले अच्छे समय में सुधारें।

०२१ ४४/४३: "वास्तव में ज़क़ुम का पेड़ (एक पेड़ जो केवल नर्क में उगता है) का भोजन होगा
पापी - पिघले हुए पीतल की तरह; यह उनके अंदर उबाल जाएगा। खौलते पानी के उबलने की तरह।"

शाश्वती नर्क पृथ्वी के समान है जिसमें पापियों को भोजन और पेय की आवश्यकता होती है - जो कि का हिस्सा भी बन जाते हैं
उनकी दुखद यातना। वे ज्यादातर जो पीते हैं वह उबलता है या अधिक गर्म होता है, लेकिन कई बार
बर्फ से ज्यादा ठंडा हो सकता है। और खाना ज़क़्क़ुम पेड़ से है, कंटीली दारी झाड़ी या
"घावों से भ्रष्टाचार"।

०२२ ५५/४४: "उबलते गर्म पानी के बीच में वे (पापी नरक में *) भटकेंगे"।
बदलाव के लिए एक और किस्म।

०२३ ५६/५२-५४: “तुम निश्चित रूप से ज़क़्क़ुम के पेड़ का स्वाद चखोगे। तब क्या तुम अपने भीतर भरोगे
उसके साथ, और उसके ऊपर उबलता पानी पी लो।” शुद्ध परपीड़न और यातना।

०२४ ५६/९२-९३: "उसके लिए (पापी*) उबलते पानी से मनोरंजन है और उसमें जल रहा है
नरक-अग्नि।" अब उबलता पानी सामान्य आग की तुलना में बहुत ठंडा होता है, लेकिन सभी के लिए बहुत अधिक गर्म होता है
मानव शरीर।

१०७०

पेज १०७१

०२५ ६९/३०-३३: "उसे (पापी*) आकार देना, और उसे बांधना, और उसे धधकते हुए जला देना
आग। इसके अलावा, उसे एक जंजीर में घुमाओ, जिसकी लंबाई सत्तर हाथ है! (= ३५ मीटर?*)"।
एक लंबी और भारी श्रृंखला स्थिति को और भी बदतर बना देती है।

०२६ ६९/३६: “न ही उनके पास (पापियों के पास) कुछ भी भोजन नहीं है सिवाय उनके धोने से भ्रष्टाचार के।
घाव - - -।" घृणित भोजन - - - लेकिन कुरान में भी विरोधाभासों में से एक, जैसा कि वे
ज़क़्क़ुम पेड़ से भी खाना था - ऊपर 44/43 और 56/52-54 देखें - और दारी झाड़ी (भी
केवल नर्क में बढ़ने के लिए कहा), नीचे 88/6 देखें।

०२७ ७७/३०-३३: "तुम (पापियों*) को तीन स्तंभों में एक छाया (आरोही धुएँ की) की ओर प्रस्थान करो,
(जो उपज) शीतलता की कोई छाया नहीं है, और भयंकर ज्वाला के खिलाफ किसी काम का नहीं है। वास्तव में यह फेंकता है
स्पार्क्स (विशाल) किलों के रूप में - - -।" यह कयामत से नर्क की यात्रा के बारे में है।

०२८ ७७/३५-३८: "वह (कयामत का दिन*) वह दिन होगा जब वे (पापियों*)
बोलने में सक्षम। न ही यह उनके लिए याचना करने के लिए खुला होगा। आह धिक्कार है, उस दिन को
सत्य को अस्वीकार करने वाले! वह छंटनी का दिन होगा! हम (अल्लाह*) तुम्हें एक साथ इकट्ठा करेंगे
और जो पहले (आप)!" अगर इस्लाम एक बना हुआ धर्म है जो लोगों को हासिल करने के लिए हेरफेर करता है
मुहम्मद के लिए शक्ति का मंच, और आँख बंद करके विश्वास करने वाले अनुयायियों को प्राप्त करने के लिए, मुहम्मद ने इस्तेमाल किया
बिल्कुल सही मनोविज्ञान - और बहुत से चरम संप्रदायों के स्टार्टर द्वारा उपयोग किया जाने वाला मनोविज्ञान या
धर्म: बहुत अधिक सही जानकारी में बाधा डालने के लिए जितना संभव हो सके संभावनाओं को अलग करें
और प्रश्न, दावा किए गए सत्य से भर दें, और शहद और छड़ी के मिश्रण का उपयोग करें - यहाँ
स्वर्ग और नरक। ऐसे नेताओं के लिए पुराना और परखा हुआ तरीका।

०२९ ८८/६: "उनके लिए (नरक में पापियों) के लिए कोई भोजन नहीं होगा, लेकिन कड़वी दारी (एक झाड़ी के साथ)
कांटे और कड़वा स्वाद*)"। अन्य स्थानों में जो कहा गया है, उसके अनुसार बिल्कुल नहीं
कुरान.

०३० १०१/९: "(पापी*) का घर (नरक*) एक अथाह गड्ढे में होगा।" नरक गहरा होना चाहिए
नीचे कहीं।

नर्क का भी नाम से उल्लेख किया गया है या वास्तव में कम से कम इन स्थानों पर:

10/8 - 10/54 - 11/17 - 13/25 - 13/35 - 14/21 - 14/22 - 15/43 - 16/27 - 16/29 - 18/49 -
18/102 - 18/106 - 19/70 - 19/72 - 19/86 - 23/103 - 23/106-110 - 25/11 - 25/34 - 26/91 -
28/84 - 29/55 - 32/20 - 34/20-21 - 35/36 - 37/19-20 - 37/22-23 - 37/31-34 - 37/38-39 -
37/55 - 38/55 - 38/61 - 38/85 - 39/70-72 - 41/28 - 43/74-77 - 44/33-34 - 47/12 - 48/23 -
56/42-44 - 68/43 - 84/10-12।

पोस्ट स्क्रिप्टम से अध्याय VIII/2.

कुरान में नरक कुछ अतिरिक्त विवरणों के साथ बाइबिल से उधार लिया जा सकता है। वहां कुछ भी नहीं है
इसके बारे में और कहा जा सकता है, कि यह एक नारकीय जगह है और लोगों को डराने के लिए अच्छी तरह से डिजाइन किया गया है -
विशेष रूप से भोले, अशिक्षित और आदिम।

हालाँकि, यह जोड़ा जा सकता है कि अगर अल्लाह नर्क का असली "मालिक" है, तो वह इसके बारे में कुछ बताता है

वह, जो इस्लाम के अमानवीय पहलुओं की व्याख्या कर सकता है - हो सकता है कि यह शैतान नहीं था जो
गैब्रियल की तरह कपड़े पहने और मुहम्मद को किसी भी तरह कुरान दिया (सैद्धांतिक रूप से एक)
उस पुस्तक के निर्माण के लिए संभावित स्पष्टीकरण।)

भाग IX, अध्याय 1 (= IX-1-0-0)

१०७१

पेज १०७२

कुछ विशेष - बहुत विशेष - इस्लाम के पहलुओं के रूप में बताया गया है
कुरान - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम की पवित्र पुस्तक,
और अल्लाह

भविष्यवाणी (सब कुछ है इससे पहले कि यह कर सकता है अल्लाह द्वारा तय किया गया (होता है) इस्लाम में जैसा बताया गया है मुहम्मद या अल्लाह में कुरान।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

पूर्वनियति इस्लाम में एक भारी बिंदु है - और धर्म के लिए भी एक समस्या है।

भले ही यह इस पुस्तक में स्पष्ट रूप से नहीं दिखाई देगा, धर्म में एक स्पष्ट विकास हुआ था
मुहम्मद के उपदेश के 23 वर्षों में, अधिक भार डालने की दिशा में
पूर्वनियति। क्या कारण यह था कि अल्लाह ने अपनी शिक्षाओं को बदल दिया, चाहे मुहम्मद
वास्तव में पूर्वनियति में अधिक से अधिक विश्वास करने लगे, या क्या मुहम्मद ने कोई रास्ता खोज लिया
इसे और अधिक प्राप्त करना था - और उग्र - योद्धा, कहना आसान नहीं है। (नहीं जाने का कोई कारण नहीं है
युद्ध करने के लिए, और हमले के सामने न होने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि जब तक अल्लाह ऐसा नहीं करेगा तब तक तुम नहीं मरोगे
किसी भी तरह - लेकिन उस समय आप युद्ध में या बिस्तर पर मरते नहीं हैं। उस पर भी
समय यह एक प्रति-सहज कथन था, लेकिन धर्म कभी-कभी आपके दिमाग से अधिक मजबूत होता है
और आपकी बुद्धि। लेकिन आज यह इस्लाम के लिए और भी बुरा है, क्योंकि आज यह संभव है
आंकड़ों के माध्यम से साबित करें कि यह गलत है।

लेकिन पूर्वनियति हमेशा मुस्लिम विचारकों के लिए एक समस्या थी - वे लगभग 700 . से अस्तित्व में थे
लगभग १२०० ईस्वी तक (गैर-धार्मिक सोच मुख्य रूप से लगभग ८००-९०० ई
AD, पश्चिमी महग्रेब और स्पेन में लगभग १०० वर्षों के अतिरिक्त)।

1. अगर सच में अल्लाह ने सब कुछ तय कर दिया तो कैसे? समझाओ कि मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा थी?
2. अगर सच में अल्लाह ने सब कुछ तय कर लिया, तो कैसे वह फिर आदमी को दंडित करता है, उसे भेजने का उल्लेख नहीं करता भाड़ में?
3. और आज यह आंकड़ों के माध्यम से आसान है, साबित करें कि कम से कम कुछ पहलू पूर्वनियति गलत हैं। एफ. पूर्व. यह बहुत स्पष्ट है कि यह झूठ है कि इसमें मरने का ज्यादा खतरा नहीं है अपने खेतों में काम करने की तुलना में एक भीषण युद्ध में या अपने बिस्तर में सो रहा है।
4. स्वतंत्र इच्छा और अल्लाह के को एक करना असंभव है सब कुछ तय करना। बहुत सारे शब्द हैं "समझाने" के लिए प्रयोग किया जाता है कि यह निश्चित रूप से है

संभव है, और निश्चय ही वह स्वतंत्र इच्छा है
इस्लाम में मौलिक - और वह स्वतंत्र इच्छा, नहीं
अल्लाह कई बुरी चीजों का कारण है, लेकिन
उन शब्दों के पीछे तर्क है
मुड़ गया।इस वजह से आज आप पाते हैं कि
मुसलमान अक्सर इस बात पर ज़ोर देते हैं कि आदमी के पास आज़ादी है
इच्छा, और वह सभी बुरी चीजें जो होती हैं
उसके लिए, उसकी स्वतंत्र इच्छा का उपयोग करने के कारण है
अल्लाह से अलग सोचो।

5. यह बिना समझाए कैसे आदमी
वास्तव में एक स्वतंत्र इच्छा हो सकती है जब वह है
हर बार जब वह सोचता है या कार्य करता है तो उसे दंडित किया जाता है
अल्लाह से अलग।
6. यह समझाने में सक्षम हुए बिना कि कैसे आदमी
वास्तव में एक स्वतंत्र इच्छा हो सकती है जब यह बहुत हो
कुरान में स्पष्ट है कि कुछ भी नहीं होता जब तक
अल्लाह ऐसा चाहता है।
7. यह समझाने में सक्षम हुए बिना कि कैसे आदमी
वास्तव में एक स्वतंत्र इच्छा हो सकती है जब यह बहुत हो
कुरान में स्पष्ट है कि अल्लाह f. भूतपूर्व। अक्सर
एक पापी के विश्वास की ओर लौटने का मार्ग अवरुद्ध करता है?
8. यह समझाने में सक्षम हुए बिना कि कैसे आदमी
वास्तव में उसे प्रभावित करने की स्वतंत्र इच्छा हो सकती है
भविष्य और उसकी मंजिल, जब यह बहुत है
कुरान से स्पष्ट है कि f का कारण। भूतपूर्व।
क्यों कुछ - यहां तक कि गैर-मुसलमानों - के पास अच्छा है
जीवन धन और शक्ति के साथ, जबकि आप जीते हैं
गरीबी और संकट में, यह है कि अल्लाह इसे चाहता है
इसलिए?
9. यह समझाने में सक्षम हुए बिना कि कैसे आदमी
वास्तव में उसे प्रभावित करने की स्वतंत्र इच्छा हो सकती है
भविष्य और उसकी मंजिल, जब कुरान
कई जगहों पर यह 110% स्पष्ट करता है कि अल्लाह
आपके पैदा होने से पहले भी (5 महीने पहले),
आपकी मृत्यु का समय तय कर लिया है, कोई फर्क नहीं पड़ता
आप क्या करते हैं या आप कैसे रहते हैं, या वह "हर"
मामले का अपना नियत समय है"? - एक बयान
जिस तरह से आज साबित करना सबसे आसान है
आँकड़ों के माध्यम से असत्य (जिसके द्वारा
रास्ता एक अतिरिक्त कारण हो सकता है कि इस्लाम आज क्यों है
जब यह आता है तो इतनी मजबूती से बैक-पेडलिंग कर रहा है
पूर्वनियति के लिए, इस तथ्य के बावजूद कि
मुहम्मद ने पूर्वनियति पर अधिक बल दिया
मक्का की तुलना में मदीना में, और इस प्रकार इसे बनाया
उनकी शिक्षाओं में अधिक केंद्रीय)।
10. उस पूर्वनियति को देखने का एक आसान तरीका
मनुष्य के लिए अल्लाह और स्वतंत्र इच्छा असंभव है
गठबंधन, यह है कि स्वतंत्र व्यक्ति हमेशा रहेगा
अपना मन एक बार फिर बदल सकता है, और फिर
सब कुछ अल्लाह "जानता था" और पूर्वनिर्धारित

पहले, गलत हो जाना। इसके अलावा द्वारा पूर्वनियति
दावा की गई स्वतंत्र इच्छा के साथ संयुक्त अल्लाह
आदमी "द टाइम ट्रैवेल" का एक संस्करण है

विरोधाभास" - एक विरोधाभास जो सिद्ध होता है
हल न करने योग्य।

11. इस्लाम भी मानता है कि इसकी व्याख्या करना असंभव है
कैसे ये दो दावे - पूर्वनियति by
अल्लाह और स्वतंत्र इच्छा (यहां तक कि "सीमित स्वतंत्र इच्छा"
जिसके बारे में कुछ मुसलमान बात करते हैं) आदमी के लिए -
गठबंधन करना संभव है। एकमात्र और बहुत
उनके पास लंगड़ा स्पष्टीकरण है: "लेकिन सभी
वही सच होना चाहिए, क्योंकि अल्लाह ऐसा कहता है
कुरान।" तुम्हारा अचूक समर्पण
अंध विश्वास के लिए मस्तिष्क और आपकी बुद्धि
नैतिक रूप से बहुत के सिद्ध शब्द नहीं हैं
संदिग्ध आदमी।

इन समस्याओं को दूर करने के लिए इस्लाम बहुत अच्छा काम नहीं कर रहा है - आंशिक रूप से इसलिए कि बहुत कुछ इसके बारे में एक विचारशील व्यक्ति को यह समझाना संभव नहीं है। विश्वास करने के लिए "स्पष्टीकरण" आपको बहुत भोला होना चाहिए और/या बहुत कम ज्ञान होना चाहिए और समझ - या आपको ३३/३६ में दृढ़ता से विश्वास करना होगा: "यह एक आस्तिक के लिए उपयुक्त नहीं है, यार या महिला, जब कोई मामला अल्लाह या उसके रसूल (या मुहम्मद के) द्वारा तय किया गया हो उत्तराधिकारियों*) के पास अपने निर्णय के बारे में कोई विकल्प रखने के लिए - - -"।

हम केवल पूर्वनियति के बारे में कुछ कथनों को उद्धृत करते हैं। इसलिए, यह अध्याय नहीं होगा इस बिंदु पर मुहम्मद - या अल्लाह - के विकास को साबित करें। लेकिन यह एक सर्वविदित तथ्य है प्रासंगिक विश्वसनीय विज्ञान है कि मुहम्मद अपने में देर से अधिक पूर्वनियति की ओर "विकसित" हुआ जीवन (यह अफ़सोस की बात है कि इस्लाम जिसे इस्लामी विज्ञान कहता है, वह ईमानदार, विश्वसनीय विज्ञान नहीं है, लेकिन केवल कुरान और इस्लाम को ज्ञात और वैज्ञानिक तथ्यों के अनुकूल बनाने के तरीके खोजने की कोशिश कर रहे हैं - या वीज़ा वर्सा - इसमें स्पष्ट गलतियों को भी समझाना शामिल है, ठीक कुछ अंधेरे की तरह कट्टरपंथियों और कट्टरपंथियों कई धर्मों में करते हैं। आप जो चाहते हैं उससे चिपके रहना बेहतर है विश्वास करें, यह पता लगाने के बजाय कि यह सच है या नहीं - - - भले ही आपको पता न चले कि आप हैं एक संभावित अगले जन्म तक गलत, आप सच्चे धर्म के नरक में समाप्त हो जाएंगे (यदि ऐसा है) मौजूद))।

वर्ष 622 ई. मदीना:

001 2/7: "अल्लाह ने उनके (गैर-मुस्लिम*) दिलों पर और उनके सुनने पर, और उनके दिलों पर मुहर लगा दी है। आँखें घूंघट; उन्हें (उठाना) दंड बहुत अच्छा है।" क्या वे वास्तव में इसे तब झेलते हैं जब यह इसके अनुसार होता है अल्लाह की योजना (6/107 ऊपर देखें)? - और जब अल्लाह उनके देखने की संभावनाओं को नष्ट कर देता है वे गलत हैं (यदि वे गलत हैं)? यह कैसा भगवान है?

002 2/26: "- - - वह (अल्लाह*) बहुतों को भटका देता है - - -।" यहाँ मुख्य बात यह है कि यह अल्लाह है जो इसका कारण बनता है।

वर्ष ६२५ ई.

००३ ३/२६: "तू (अल्लाह*) जिसे चाहता है शक्ति देता है, और तू शक्ति छीन लेता है जिसे तू चाहता है, तू उसका आदर करता है, जिसे तू चाहता है, और तू उसे नीचा दिखाता है जिसे तू चाहे: तेरे हाथ में सब भला है। निस्सन्देह सब बातों पर तेरा अधिकार है।" स्वीकार करें

आपके नेता और आपकी स्थिति, क्योंकि यह सब अल्लाह द्वारा तय किया गया है - अल्लाह के पास शक्ति है और सभी निर्णय लेता है।

004 3/54: "- - - और अल्लाह ने भी साजिश रची और योजना बनाई, और सबसे अच्छा योजनाकार अल्लाह है।" उस में वास्तविकता अल्लाह है जो सब कुछ तय करता है - "योजनाकारों में सबसे अच्छा"। (यह श्लोक इसके अतिरिक्त एक है छंद की मुस्लिम घटना अल-तकिया (वैध झूठ) पर आधारित है - जब अल्लाह "साजिश और योजना" कर सकते हैं (बेईमान साधनों का उपयोग करने का संकेत) निश्चित रूप से उनके अनुयायी कर सकते हैं जब तक कि यह निषिद्ध नहीं है - जो यह नहीं है)।

००५ ३/१४५: "और न ही कोई आत्मा अल्लाह की अनुमति के बिना मर सकती है, शब्द लिखने के रूप में तय किया जा रहा है"। युद्ध छेड़ो - आप तब मरते हैं जब आपका कार्यकाल आता है और पहले नहीं, चाहे आप कुछ भी कर रहे हों। यहाँ एक दिलचस्प संक्षिप्त कथन है: "- जैसा कि लिखकर":

पुराने समय में जब ज्यादातर लोग पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे, तब लिखित पाठ होता था
सम्मान की दृष्टि से देखा - कि कई भोले-भाले और अशिक्षित गरीबों के लिए कुछ लिखा गया था
आत्माओं का मतलब था कि यह इस बात का प्रमाण था कि यह सच था। ज़रा सोचिए कि एक पुजारी कहाँ से पढ़ना शुरू कर रहा है
एक चर्च में बाइबिल; कई देशों में वह कुछ इस तरह से शुरू करता है जैसे "यह लिखा है" - जो
पुराने समय में अपने श्रोताओं के लिए इसका सीधा सा अर्थ था: यह सत्य होना निश्चित है। यह एक हो सकता है
स्पष्टीकरण क्यों मुहम्मद और कुरान इतनी बार जोर देते हैं कि उनकी शिक्षा एक किताब से है या
कि यह लिखा है (आज हम जानते हैं कि इसका कोई मतलब नहीं है कि कुछ लिखा है या नहीं - वहाँ
जितनी परियों की कहानियां हैं और उतने ही झूठ जो बोले गए शब्दों में लिखे गए हैं)।

००६ ३/१५४: "भले ही आप (युद्ध में भाग लेने में सक्षम आदमी) अपने घरों में रहे हों, वे
जिनके लिए मृत्यु का आदेश दिया गया था, निश्चित रूप से उनकी मृत्यु हो गई होगी "। लड़ाई करना है
घर पर रहने से ज्यादा खतरनाक नहीं - जो भी भोले या मूर्ख है, उस पर विश्वास करो
इसपर विश्वास करो। आँकड़ों के माध्यम से इसे गलत साबित करना आज आसान है - अगर आपको किसी और की ज़रूरत है
आपकी गूढ़ता से अधिक प्रमाण।

वर्ष ६२६ ई.

००७ ४/७८: "तुम जहाँ कहीं भी हो, मृत्यु तुम्हें खोज लेगी, भले ही तुम मजबूत बने हुए टावरों में हों
और उच्च"। जब भी आप किसी मुसलमान से यह कहते हुए मिलते हैं कि कुरान वास्तव में इसके बारे में बात नहीं करता है
पूर्वनियति, आप एक बेईमान मुसलमान से बात कर रहे हैं - या एक भोले व्यक्ति को नहीं पता कि वह क्या है
की बात कर रहा है।

008 4/88: "जिन्हें अल्लाह ने रास्ते से निकाल दिया है, उन्हें कभी भी रास्ता नहीं मिलेगा।"
जब अल्लाह ने फैसला कर लिया है - और वह फैसला करता है - चीजों को अपने तरीके से रखने का कोई तरीका नहीं है।

वर्ष ६२१ ई.:

009 6/2: "- - - और फिर (अल्लाह*) ने एक निश्चित अवधि (आपके लिए) तय कर दी।" अन्य जगहों से (हदीस)
हम जानते हैं कि आपका "कथित कार्यकाल" (= आप कितने समय तक जीवित रहेंगे) अल्लाह द्वारा तय किया जाता है जब
भ्रूण 4 महीने का है = आपके जन्म से 5 महीने पहले। जिसका मतलब है कि आप भी जा सकते हैं
मुहम्मद के लिए युद्ध और शायद लूट कर अमीर बन जाओ, क्योंकि तुम एक पूर्वनिर्धारित पर मरोगे
दिन कोई बात नहीं।

०१० ६/१०७: "अगर यह अल्लाह की योजना नहीं होती, तो वे (गैर-मुस्लिम*) झूठे देवताओं को नहीं लेते -
- - "। फिर कैसे - कैसे - कैसे !! - क्या एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर को एक माना जा सकता है
अच्छे और परोपकारी भगवान, अन्य देवताओं को लेने के लिए मनुष्यों को नरक में जाने के लिए, जब उन्होंने ऐसा किया
अपनी ही योजनाओं के कारण ????

पेज १०७६

०११ ६/१११: "- - - वे (गैर-मुसलमान*) ईमान लाने वाले नहीं हैं, जब तक कि यह अल्लाह की योजना न हो"।
यह ठीक ऊपर ६/१०७ से भी बदतर है - अल्लाह ने इसे गैर- के लिए असंभव बना दिया है।
मुसलमान बनने के लिए मुसलमान, अगर यह उसके लायक नहीं है। लेकिन फिर भी वह उन्हें नर्क की निंदा करता है !!!

हमारे दृष्टिकोण या अरुचि को समझाने के लिए कोई टिप्पणी भी संभव नहीं है।

०१२ ६/१२८: "- - - हम (मनुष्य*) अपने कार्यकाल (मृत्यु का पूर्वनिर्धारित दिन*) पर पहुँचे, जिसे तू ने
(अल्लाह) ने हमारे लिए नियुक्त किया है।" ऊपर 6/2 देखें।

०१३ ६/१३४: "जो कुछ तुमसे वादा किया गया है (बेहतर या बदतर * के लिए) पूरा हो जाएगा: न ही
क्या आप इसे निराश कर सकते हैं (कम से कम)": अल्लाह ने आपके लिए जो कुछ पहले से तय किया है, वह होगा।

वर्ष ६२१ ई.:

०१४ ७/३४: "हर एक व्यक्ति के लिए एक नियत समय है; जब उनका कार्यकाल पूरा हो जाता है, तो एक घंटा नहीं हो सकता
वे देरी का कारण बनते हैं, न ही (एक घंटा) वे आगे बढ़ सकते हैं (उम्मीद में)। अल्लाह ने फैसला किया है। परंतु
आतंकियों को समझना मुश्किल : इस हिसाब से वो तमाम हजारों बेगुनाह लोग
न्यूयॉर्क में ट्विन टावर्स में मर गए थे क्योंकि उनका समय समाप्त हो गया था, भले ही आतंकवादी हों
घर पर रहा था। या क्या? क्या कुरान में कुछ और गलत है?

०१५ ७/८९: "- - - और न ही हम (मनुष्य*) किसी भी तरीके से या साधन से वापस आ सकते हैं (अधिकार
रास्ता *), जब तक कि यह अल्लाह की इच्छा और योजना के अनुसार न हो - - -:" आप वापस सड़क पर नहीं मिल सकते

स्वर्ग, जब तक कि यह अल्लाह द्वारा पूर्वनिर्धारित न हो। लेकिन ऐसा न करने पर अल्लाह आपको सजा देता है !!

वर्ष ६३१ ई.:

016 9/51: "हमें कुछ नहीं हो सकता सिवाय इसके कि अल्लाह ने हमारे लिए क्या आदेश दिया है - - -"। खैर, इस्लाम बताता है कि यह मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा है जो बुरी घटनाओं और जीवन को जन्म देती है। यह श्लोक इस बात का खंडन करता है कि, इसे कम से कम कहने के लिए। तो बस सुरक्षित रूप से युद्ध के लिए जाओ।

वर्ष ६३१ ई.:

०१९ ९/७७: "----उसने (अल्लाह*) ने उनके दिलों में पाखंड के रूप में (आखिर तक) डाल दिया है दिन (कयामत* का)"। जैसा कि आप देखते हैं कि पाखंडियों के पास कोई विकल्प नहीं है - वे वास्तव में बनाए गए हैं अल्लाह द्वारा पाखंडी। लेकिन अच्छा भगवान उन्हें कड़ी सजा देने जा रहा है।

वर्ष ६२१ ई.:

०२० १०/४९: "प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक कार्यकाल (समाप्त होने की तारीख*) नियुक्त किया जाता है: जब उनका कार्यकाल होता है पहुँच गए हैं, एक घंटा नहीं वे देरी का कारण बन सकते हैं, न ही (एक घंटा) वे आगे बढ़ सकते हैं (यह प्रत्याशा में) ”। इंसान चाहे कुछ भी करें, फैसला तो अल्लाह ही करता है।

०२१ १०/६४: "- - - वर्तमान और परलोक के जीवन में; में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता अल्लाह के शब्द ”। अल्लाह जो फैसला करता है वह अंतिम है। और बहुत सी चीजें वह जल्दी तय कर लेता है - f. भूतपूर्व। NS आपकी मृत्यु का दिन और क्या आप नरक में समाप्त होंगे या स्वर्ग (अन्य स्थानों के अनुसार कुरान) आपके पैदा होने से 5 महीने पहले तय किया था।

वर्ष अज्ञात:

१०७६

पेज १०७७

०२२ १३/४२: "---- लेकिन सभी चीजों में मास्टर प्लानिंग अल्लाह की है।" अल्लाह ही फैसला करता है यथार्थ में।

वर्ष ६२१ ई.:

०२३ १५/४: "हमने (अल्लाह*) ऐसी आबादी को कभी नष्ट नहीं किया, जिसकी कोई अवधि तय नहीं थी और पहले से सौंपा ”। अल्लाह के पास सब कुछ पहले से तय है।

०२४ १५/५: "न तो लोग इसके कार्यकाल का अनुमान लगा सकते हैं (जिस तारीख को उसकी किस्मत या जीवन खत्म हो जाएगा*), और न ही इसमें देरी करें"। लोग चाहे कुछ भी कर लें, वे अपने भाग्य को प्रभावित नहीं कर सकते।

वर्ष ६२२ ई.

०२५ १६/७१: "अल्लाह ने आप में से कुछ को अपनी जीविका का उपहार अधिक स्वतंत्र रूप से दिया है अन्य - - -"। आप अमीर हों या गरीब यह अल्लाह के फैसले पर निर्भर करता है।

वर्ष ६२२ ई.

०२६ १८/५८: "- - - लेकिन उनके पास अपना नियत समय है, जिसके आगे उन्हें कोई शरण नहीं मिलेगी।" अल्लाह ने तय कर लिया है कि उनका अंत कब होगा।

०२७ १८/५९: "- - - हमने (अल्लाह*) ने उनके विनाश के लिए एक नियत समय निर्धारित किया है"। मनुष्य कर सकते हैं यह या वह, लेकिन अल्लाह तय करता है।

वर्ष ६१४-६१६ ई.

०२८ १९/८४: "तो उनके खिलाफ (गैर-मुस्लिम*) जल्दी मत करो, क्योंकि हम (अल्लाह*) उन्हें एक (सीमित) संख्या (दिनों की)।” अल्लाह ने ग़ैर-मुसलमानों के भी दिन गिन रखे हैं - और उसी समय अल्लाह (?) अनुचित के लिए एक उचित तार्किक "स्पष्टीकरण" देता है और अनैतिक तथ्य यह है कि गैर-मुस्लिम अक्सर मुसलमानों से बेहतर जीवन जीते हैं: अल्लाह अपने अथाह में ज्ञान ने ऐसा ही तय किया है, लेकिन उनसे ईर्ष्या न करें या क्रोध न करें - उन्हें दंडित किया जाएगा

(दंड कभी सिद्ध नहीं होता है, हालांकि)।
029 19/84: "- - - हम (अल्लाह*) लेकिन उनके लिए एक (सीमित) संख्या (दिनों की) गिनें"। क्या अल्लाह पूर्वनिर्धारित है जो मायने रखता है।

वर्ष ६१४-६१५ ई.

०३० २०/१२९: "क्या यह एक शब्द के लिए नहीं था जो आपके (मुसलमानों के) भगवान से पहले निकला था (अल्लाह*), (उनका दंड) अवश्य ही आ गया होगा; लेकिन एक टर्म नियुक्त किया गया है (के लिए राहत)"। अल्लाह ने समय तय किया है, और इसे नहीं बदलेगा - दोषियों को दे सकता है a मुस्लिम बनने का मौका, लेकिन अन्य जगहों पर कुरान कहता है कि अल्लाह इसे कठिन या असंभव बना देता है कुछ गैर-मुसलमानों के लिए अल्लाह का रास्ता खोजने के लिए।

वर्ष ६१६ ई. लगभग:

031 22/76: "- - - अल्लाह के पास सभी प्रश्नों (निर्णय के लिए) वापस जाओ।" अल्लाह ही फ़ैसला करता है सब कुछ - फिर वह ग़ैर-मुसलमानों और बुरे मुसलमानों को नर्क में कैसे आंक सकता है कि उन्हें क्या करना है? वे क्या मानते थे, उन्होंने खुद तय किया, लेकिन वास्तव में अल्लाह के फैसले कौन से थे?

वर्ष सीए. ६२१ - ६२२ ई.

०३२ २३/४३: "कोई भी व्यक्ति अपने कार्यकाल (समाप्त होने का समय*) को जल्दी नहीं कर सकता और न ही इसमें देरी कर सकता है"। नहीं कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे क्या करते हैं और कितना स्वतंत्र रूप से उपयोग करेंगे - वे अल्लाह को बदलने के लिए कुछ नहीं कर सकते पूर्वनियति। और क्या यह स्वतंत्र इच्छा है?

वर्ष ६२१ ई. से पहले का नहीं:

०३३ २८/६८: "तेरा (मुसलमानों)*) भगवान (अल्लाह *) अपनी इच्छानुसार बनाता और चुनता है: कोई विकल्प नहीं क्या उन्होंने (गैर-मुस्लिम*) (मामले में)"। कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या करते हैं, आप कुछ नहीं कर सकते अल्लाह ने जो मंज़िल पहले से तय की है उसे बदल दो।

वर्ष सीए. ६२१ - ६२४ ई.

०३४ २९/५: "---क्योंकि अल्लाह की ओर से (नियुक्त) अवधि अवश्य आ रही है---।" अल्लाह फैसला करता है।

०३५ २९/२१: "न तो पृथ्वी पर और न ही स्वर्ग में तुम (भागने) के लिए (उसकी योजना) - - -" को विफल करने में सक्षम होंगे। जो अल्लाह ने नियत किया है उसे कोई नहीं बदल सकता।

०३६ २९/५३: "- - - यदि यह एक अवधि के लिए (राहत) नहीं होता, तो सजा निश्चित रूप से होती उनके पास आओ - - -।" पूर्वनियति सब कुछ तय करती है।

वर्ष ६१४ - ६१५ ई.

०३७ ३१/२९: "- - - प्रत्येक (सूर्य और चंद्रमा*) नियत अवधि के लिए अपना पाठ्यक्रम चला रहा है - - -"। यहाँ तक कि सूर्य और चन्द्रमा की भी अपनी "अवधि" अल्लाह द्वारा नियत की गई है।

वर्ष ६२५-६२९ ई. (०९५):

०३८ ३३/१६: "भागने से आपको (मुस्लिम योद्धा*) कोई लाभ नहीं होगा, यदि आप भाग रहे हैं मृत्यु या वध से, और यहां तक कि अगर (तुम बच जाते हो), तो एक संक्षिप्त (राहत) से अधिक नहीं होगा आनंद लेने की अनुमति दी "। खैर, इससे दो बातें सिद्ध होती हैं: पूर्वनियति से बचना संभव नहीं है - नहीं कोई फर्क नहीं पड़ता कि इस्लाम आज आपको क्या बताने की कोशिश करता है - और कुरान के बावजूद, आप कम से कम कर सकते हैं "थोड़ी सी राहत" के साथ अपना गंतव्य बदलें। एक राहत जो कम से कम कुछ घंटों के लिए होनी चाहिए या दिन - यदि नहीं तो निकटतम दहाई के आसपास नव-मृत भयभीत योद्धा होते थे और कुछ युद्धक्षेत्रों से अधिक किलोमीटर - से भागने के बाद बिना किसी स्पष्ट कारण के मृत लड़ाई

यह उस आधुनिक सांख्यिकीय विज्ञान के अतिरिक्त लंबे समय से इस श्लोक को बकवास साबित कर रहा है।

लेकिन मुहम्मद को कई और भयानक, लेकिन भोले योद्धा मिले।

०३९ ३३/१६: "भागने से आपको (मनुष्यों/मुसलमानों*) लाभ नहीं होगा, यदि आप भाग रहे हैं
मृत्यु और वध से; और यहां तक कि अगर (आप बच जाते हैं), तो आप एक संक्षिप्त (राहत) से अधिक नहीं होंगे
आनंद लेने की अनुमति दी। " यह वास्तव में स्पष्ट घोषणाओं में से एक है: मुहम्मद के लिए युद्ध में जाओ (और .)
उसके उत्तराधिकारी), क्योंकि तुम तब तक नहीं मरोगे जब तक तुम्हारा समय किसी भी तरह समाप्त नहीं हो जाता - और जब वह समाप्त हो जाता है,
तुम मर जाओगे कोई बात नहीं।

वर्ष ६२० ई. ?:

०३८ ३४/३०: "तुम्हारे लिए नियुक्ति एक दिन के लिए है, जिसे तुम एक घंटे के लिए भी वापस नहीं कर सकते और न ही
प्रस्तुत करो"। आप जो कुछ भी करते हैं, आप अपनी मृत्यु के घंटे को नहीं बदल सकते, जो कि अल्लाह के पास है
निर्णय लिया। अगर आप भेड़ हैं तो हज पर मक्का छोड़कर भी नहीं। एक युद्ध में एक आदमी के लिए वही।

वर्ष ६१४-६१५ ई.

०३९ ३५/११: "न ही मनुष्य को दीर्घजीवी दिया जाता है, और न ही उसके जीवन का कोई अंश काट दिया जाता है।
लेकिन एक डिक्री (नियत) में है।" अल्लाह ने तय किया है कि आपको कितने दिन जीना है।

वर्ष ६१४ - ६१५ ई.

०४० ३५/४५: "- - - जब उनकी अवधि समाप्त हो जाती है - - -"। अल्लाह ने समय की शर्तें निर्धारित की हैं।

वर्ष 615 -617 ई.

०४१ ३९/४२: "- - - जिन पर उसने (अल्लाह*) ने मौत का फरमान सुनाया है - - -।" अल्लाह
फैसला करता है।

वर्ष ६१६-६१८ ई.

०४२ ४०/६७: "(अल्लाह*) आपको (जीवित प्राणी*) नियत अवधि तक पहुँचने देता है - - -"। अल्लाह किसी को भी देता है
जीवित प्राणी मरने के समय तक पहुँचने का फैसला किया है। हालांकि अगर आप भेड़ हैं और
हज से पहले मक्का लाए गए, आँकड़ों के माध्यम से यह साबित करना आसान है कि आपके पास था a
हज के बाद जिंदा रहने का बेहतर मौका अगर आप घर पर रहे होते। और वही एक आदमी के लिए
एक लड़ाई में।

वर्ष ६१६-६१८ ई.

०४३ ४२/३०: "तुम्हारे साथ जो भी दुर्भाग्य होता है, वह तुम्हारे हाथों की चीजों के कारण होता है
गढ़ा - - -"। कृपया इस अध्याय में उद्धृत कुछ अन्य छंदों से इसकी तुलना करें और बताएं
मैं: क्या उस तरह के मुस्लिम तर्कों में ईमानदारी है? क्यूंकि क़ुरान साफ़ बताता है
कुछ जगहों पर जहां अल्लाह सब कुछ तय करता है, और यह कि आप च। भूतपूर्व। द्वारा अपना भाग्य नहीं बदल सकता
लड़ाई से दूर रहना।

या मुख्य बात यह है कि वे जिस पर विश्वास करना चाहते हैं, उससे चिपके रहें? - और इसके बजाय यह पता न लगाएं कि क्या वे हैं
संभव अगली दुनिया में गलत, जब कुछ वास्तविक में समाप्त नहीं होने में बहुत देर हो सकती है
धर्म का नरक?

वर्ष सीए. 620 ई.:

०४४ ४६/३: "हमने (अल्लाह*) ने आकाशों और धरती को नहीं बल्कि उनके बीच सभी को पैदा किया
बस समाप्त होता है, और नियत अवधि के लिए - - -।" "नियुक्त शर्तें" अल्लाह द्वारा पूर्वनिर्धारित हैं।

वर्ष ६१४? एडी:

०४३ ५४/३: "- - - हर बात का अपना नियत समय होता है।" अल्लाह ने हर एक के लिए एक समय नियत किया है
होने वाली हर चीज।

वर्ष ६३०-६३२ ई.

०४४ ५७/२२: "पृथ्वी पर या तुम्हारी आत्मा में कोई दुर्भाग्य नहीं हो सकता है, लेकिन एक फरमान में दर्ज किया गया है"
इससे पहले कि हम (अल्लाह*) इसे अस्तित्व में लाएं: यह वास्तव में अल्लाह के लिए आसान है:" ऊपर 4/78 देखें,
प्लस: इस्लाम कैसे समझाता है कि अल्लाह प्राकृतिक आपदाएँ क्यों करता है - जैसे 2004 की सुनामी?
और वे कैसे समझाते हैं कि गैर-मुसलमानों को नर्क में क्यों दण्डित किया जाता है, जब "कोई दुर्भाग्य नहीं"
आपकी आत्माएं" एफ। भूतपूर्व। मुसलमान नहीं बनना, अल्लाह की मर्जी के अलावा हो सकता है? ए
दयालु भगवान?

वर्ष अज्ञात:

०४४ ६४/११: "अल्लाह की अनुमति के बिना किसी भी प्रकार की आपदा नहीं हो सकती - - -"। ऊपर 57/22 देखें।

पोस्ट स्क्रिप्वर से अध्याय IX/1.

जब मानव भाग्य के बारे में छंदों की बात आती है, तो आप देखेंगे कि वे बयाना में आने लगते हैं
६२१ - ६२२ ईस्वी, उसी समय मुहम्मद को मक्का में वास्तव में गंभीर परेशानियाँ होने लगीं
और अपने अनुयायियों को उत्साहित करने की जरूरत थी, और यदि संभव हो तो विपक्ष को थोड़ा डराएं। तुम भी
देखेंगे कि प्रासंगिक छंद गहरे और अधिक सीधे भर्ती करने के उद्देश्य से बढ़ते हैं और
योद्धाओं को उत्तेजित करना।

और यह कहना कि कुरान जो कुछ पूर्वनियति के बारे में बताता है, उसके कम से कम हिस्से वास्तव में वास्तविक नहीं हैं
पूर्वनियति, बकवास भी नहीं है - यह सर्वथा बेईमानी है।

इसके अलावा एक और किताब है जो इस संबंध में उल्लेख करने के लिए प्रासंगिक है: मुहम्मद इब्ने
इशाक की "द लाइफ ऑफ मुहम्मद" (जिसे "लाइफ ऑफ द पैगंबर" या "लाइफ ऑफ द पैगंबर" भी कहा जाता है
मुहम्मद") सीए से। 750 ईस्वी, और मुहम्मद . के बारे में सबसे केंद्रीय इस्लामी जीवनी
पुराने समय से। अन्य बातों के अलावा यह पुस्तक स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि मुहम्मद बहुत बार
छंद मिला (?) जब वह ऐसी स्थिति में था जहां उसे समस्याओं को हल करने या प्राप्त करने के लिए बैक-अप की आवश्यकता थी
नैतिक ऊपरी हाथ (शायद ही कभी परिस्थितियों के उत्पन्न होने से पहले)। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि
अप्रत्याशित समय पर आवश्यकता उत्पन्न होती है क्योंकि जीवन में परिवर्तन इसे आवश्यक बनाता है, यदि मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा है
और अलग-अलग निर्णय लेने में सक्षम हैं, कुछ ऐसा जो भविष्य को अप्रत्याशित बनाता है और
दूर का भविष्य पूरी तरह से अप्रत्याशित। फिर यह कैसे संभव है कि ये श्लोक लिखे गए हों - या
लिखा नहीं - युगों पहले जैसा इस्लाम कहता है? यह तभी संभव है जब पूर्वनियति पूर्ण हो।
(इस्लाम इस तथ्य को स्पष्ट करने में सक्षम नहीं है - हालांकि मुसलमान कोशिश करते हैं।)

पूर्वनियति इस्लाम में एक सच्चाई है - भले ही वह अल्लाह के बारे में बहुत सारी काली बातें बताता हो या
मुहम्मद. और भले ही आज सांख्यिकीय रूप से साबित करना आसान हो कि यह स्पष्ट रूप से गलत है, उपयोग करना
विनम्र शब्द।

लेकिन "तथ्य" को कैसे जोड़ा जा सकता है कि अल्लाह सब कुछ चाहता है और सब कुछ जानता है
आदमी के लिए दावा मुक्त इच्छा के साथ भविष्य?

यह बस संभव नहीं है:

1. अगर अल्लाह सब कुछ चाहता है - कुरान की तरह
   बार-बार बताता है - तो प्रति परिभाषा मनुष्य के पास है
   कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं।
2. भले ही अल्लाह इच्छा न करे
   सब कुछ, लेकिन केवल उसकी सर्वज्ञता में है
   पूरी तरह से क्लैरवॉयंट और भविष्य के बारे में सब कुछ जानता है -
   जैसे इस्लाम और कुरान का दावा है कि वह करता है - that

इसका मतलब है कि मनुष्य की कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं है
पल अल्लाह कहता है: अब मैं उस टुकड़े को जानता हूँ
भविष्य। यदि मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा है, तो इसका अर्थ है कि वह कर सकता है
उसका मन बदलो - - - और फिर क्या अल्लाह
जानता है गलत है, जो संभव नहीं है
अल्लाह सब कुछ जानता है और हमेशा सही होता है।
और अल्लाह तमन्नाओं को बहुत जल्दी कर देता है: तुम्हारा
जब आप 4 महीने के थे तब मौत का इंतजार किया गया था
बूढ़ा भ्रूण - और मुहम्मद के साथ झगड़ा
उनकी पत्नियों की उम्र लाखों वर्ष थी -
- - नहीं तो वे माता में प्रकट नहीं हो सके
स्वर्ग में किताब और इसलिए कुरान में।

3. दूसरी ओर यदि मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा हो तो अल्लाह
भविष्य को नहीं जान सकता, केवल इसलिए कि मनुष्य
अपना मन बदल सकता है - और वह हमेशा कर सकता है
एक बार फिर उसका मन बदलो।
4. मनुष्य बनाम अल्लाह के लिए स्वतंत्र इच्छा सब कुछ जानता है
भविष्य बस समय यात्रा का एक संस्करण है
विरोधाभास, जो अनसुलझा साबित होता है। (NS
राजा को गोली मार दी गई। सीरियस के पास एक अंतरिक्ष जहाज था
एफटीएल रेडियो के माध्यम से सूचित किया गया (एफटीएल = से तेज
प्रकाश = समय में पीछे की ओर बढ़ना)। वे पर
एक बार राजा को FTL चेतावनी भेजी - और जैसे
एफटीएल समय के साथ पीछे की ओर बढ़ता है, राजा को मिल गया
गोली मारने से पहले की चेतावनी, और बच गया
हत्यारा। और चूंकि राजा को गोली नहीं मारी गई थी, नहीं
अंतरिक्ष जहाज को FTL संदेश भेजा गया था - और
जहाज ने राजा को चेतावनी नहीं दी, जिसे गोली मार दी गई थी,
और जहाज को एक एफटीएल संदेश भेजा गया - - -।)

इस्लाम ने इस असंभव विरोधाभास को समझाने की कोशिश करने के लिए उनके अधिक भोले या को छोड़कर दिया है
अशिक्षित अनुयायी। अपने अधिक बुद्धिमान प्रश्नकर्ताओं के लिए उनके पास केवल यही उत्तर है - स्वतंत्र रूप से
"कुरान का संदेश" के बाद: "यह समझना संभव नहीं है कि दोनों दावे कैसे हो सकते हैं"
सच है, लेकिन जैसा कि अल्लाह ने कुरान में कहा है, यह बिल्कुल वैसा ही सच होना चाहिए"।

कोई टिप्पणी नहीं। और कोई टिप्पणी आवश्यक नहीं होनी चाहिए। का अंतिम दमन
अंध विश्वास से बुद्धि और अपने विश्वास में अंधे होने की माँगों से।

लेकिन सभी एक ही पूर्वनियति इस्लाम का एक अनिवार्य हिस्सा था और है।

भाग IX, अध्याय 2 (= IX-2-0-0)

कुछ विशेष - बहुत विशेष - इस्लाम के पहलुओं के रूप में बताया गया है कुरान - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम की पवित्र पुस्तक, और अल्लाह

स्वतंत्र इच्छा है या नहीं इस्लाम में आदमी के अनुसार कुरान, मुहम्मद और अल्लाह?

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं

एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामला।

मनुष्य के लिए स्वतंत्र इच्छा कुरान में एक स्वयंसिद्ध है। किसी को सही ठहराने में सक्षम होने के लिए यह एक आवश्यकता है
बुरे कामों की सजा और भगवान के खिलाफ "अवज्ञा"। दंडित करना बहुत अनुचित है
किसी के लिए जो दूसरों ने उसे करने के लिए मजबूर किया है - यह उल्लेख करने के लिए नहीं कि यह कितना अनुचित है a
भगवान पहले किसी को कुछ बुरा करने के लिए मजबूर करे और फिर उसके लिए कड़ी सजा दे
बाद में। यह पूरी तरह से स्वतंत्र इच्छा से बहुत दूर है, क्योंकि पुस्तक कई जगहों पर इसे बहुत बनाती है
स्पष्ट है कि वास्तव में अल्लाह सब कुछ तय करता है, और ऐसा कुछ भी नहीं होता है जो उसके अनुसार नहीं है
अल्लाह की योजना। इस्लाम के भीतर कई - f. भूतपूर्व। A.यूसुफ अली "पवित्र कुरान का अर्थ" में -
स्वीकार करें कि यह केवल एक सीमित स्वतंत्र इच्छा है। और वास्तव में यह भी असंभव है यदि "सब कुछ
अल्लाह की योजना के अनुसार होता है"।

लेकिन फिर भी यह कुरान में दो बुनियादी "तथ्यों" से टकराता है:

1. पहले ही उल्लेख किया गया तथ्य कि के अनुसार कुरान अल्लाह बिल्कुल तय करता है सब कुछ - एक बयान जो दोहराया जाता है किताब में कई बार और कई तरह से (पूर्वनियति के बारे में अध्याय देखें - अध्याय IX/5)। परन्तु : कि अल्लाह गुनाहों की सज़ा दे खुद ने किसी को करने के लिए मजबूर किया है, ऐसा है अनुचित है कि यह स्वीकार नहीं किया जा सकता कि a दावा किया कि परोपकारी भगवान ऐसे काम करता है, और फलस्वरूप कुरान बार-बार कहता है कि दंड पापों के कारण हैं व्यक्ति ने स्वयं निर्णय लिया है - हालांकि कभी यह बताए बिना कि यह कैसा है "तथ्य" को जोड़ना संभव है कि अल्लाह सब कुछ तय करता है और वह सब कुछ अल्लाह की योजना के अनुसार होता है, के साथ दावा करें कि मनुष्य निर्णय ले सकता है खुद। बस इतना ही कहा गया है कि यह ऐसा ही है - और विश्वासी इस कथन को स्वीकार करते हैं अंकित मूल्य। रहस्यवाद अक्सर का हिस्सा होता है धार्मिक लोगों के लिए वास्तविकता। और कामना भी विश्वास करने के लिए अक्सर एक बूंद सवाल करता है अतार्किक और अस्पष्ट के बारे में - और यहां तक कि असंभव भी। कमेंट भी देखें 6/141 "कुरान के संदेश में - वहाँ" कोई मानता है कि संयोजन है असंभव है, लेकिन वहाँ जोड़ता है जैसा कि अल्लाह ने कहा है

तो कुरान में, यह सब एक ही होना चाहिए सच। (यह अंध विश्वास भी नहीं है - यह है अविश्वसनीय अंधी भोलापन। टिप्पणी है और नीचे उद्धृत किया।
2. दूसरा तथ्य पूर्वनियति है। भविष्यवाणी के लिए एक कठिन प्रश्न है आधुनिक मुसलमान - आंशिक रूप से उसी के लिए बिंदु 1 में कारण - प्रशंसा को कैसे सही ठहराया जाए और कर्मों की सजा जो वास्तव में हैं अल्लाह जिसने फैसला किया है? - और आंशिक रूप से क्योंकि आज यह साबित करना आसान है कि कम से कम कुछ पूर्वनियति के पहलू केवल सत्य नहीं हैं। (के सबसे प्रसिद्ध पक्ष का उल्लेख करने के लिए इस्लामी भविष्यवाणी: "आप भी जा सकते हैं" युद्ध करने और युद्ध करने के लिए, क्योंकि अल्लाह के पास लंबे समय से है जब से तुम्हारी मृत्यु का समय निश्चित किया है, और तुम उस समय मर जाओगे या तो तुम युद्ध में हो या अपने बिस्तर में।" यह आज इतना आसान है

सांख्यिकीय विश्लेषण के साधन यह साबित करने के लिए कि यह
सच नहीं है - मजबूत अभिव्यक्तियों का उपयोग नहीं करना।)

इन दो समस्याओं के कारण आज आप मुसलमानों से यह कहते हुए मिलते हैं कि पूर्वनियति में
कुरान वास्तविक पूर्वनियति नहीं है - लेकिन हम कभी किसी से नहीं मिले जो यह समझाने में सक्षम हो कि यह क्या है
है (आमतौर पर वे यह समझाने की कोशिश भी नहीं करते हैं कि यह "वास्तव में" क्या है)। और कुरान और दोनों
हदीस इस बिंदु पर सबसे स्पष्ट स्थानों पर हैं: अल्लाह न केवल सब कुछ तय करता है, बल्कि वह बहुत कुछ करता है
ऐसा होने से बहुत पहले तय करता है। एफ. पूर्व. कुरान (या वास्तव में स्वर्ग में मदर बुक
जिसकी यह एक प्रति है) पुस्तक के अनुसार युगों पहले बनाई गई थी, और सभी समान
विवरण, उनकी पत्नियों के साथ झगड़े, एक युवक के साथ आयशा की सैर, योद्धा शामिल हैं
लूट, आदि बांटने के उसके तरीके से असहमति, सब ठीक वैसा ही है जैसा बाद में हुआ
मुहम्मद - - - जिसका अर्थ है कि मुहम्मद की कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं थी, क्योंकि यदि वह
उसका मन कभी इतना कम बदला, किताब अब और सही नहीं थी।

और यहाँ हम पूर्वनियति और मनुष्य के लिए स्वतंत्र इच्छा के लिए मुख्य समस्या पर हैं
इस्लाम। दोनों ही धर्म के अनिवार्य अंग हैं, लेकिन इन दोनों को मिलाना नामुमकिन है
दावे। वे बस परस्पर अनन्य हैं। या तो मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा है, या अल्लाह पूर्वनियत करता है -
दोनों संभव नहीं हैं।

या तो अल्लाह सर्वज्ञ है, जिसमें भेदक भी शामिल है, और एक निश्चित समय पर कहता है: "अब मैं"
इस व्यक्ति का भविष्य जानो" - और उसके बाद व्यक्ति स्वतंत्र इच्छा के बिना है, क्योंकि यदि वह
कुछ भी नया तय करता है, भविष्य के बारे में अल्लाह का ज्ञान गलत है।

या मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा है और वह निर्णय ले सकता है। लेकिन फिर अल्लाह के लिए दूरदर्शिता असंभव है,
क्योंकि व्यक्ति हमेशा अपना मन एक बार फिर बदल सकता है।

जैसा कि इस पुस्तक में एक अन्य स्थान का उल्लेख किया गया है, वास्तव में कुरान में पूर्वनियति मुक्त इच्छा है
समय यात्रा विरोधाभास की एक किस्म है = एक ऐसी स्थिति जहां भविष्य में कोई कार्य प्रभावित करता है
अतीत एक तरह से जो इसे स्वयं की दीक्षा या अस्तित्व को प्रभावित करता है - एक विरोधाभास जो लंबे समय से है
दिवालिया साबित हुआ।

(समय यात्रा विरोधाभास वास्तव में इस तरह चलता है: राजा मारा जाता है। कोई टैच्योन का उपयोग करता है
रेडियो इसके बारे में सीरियस के पास एक अंतरिक्ष जहाज के चालक दल को बताने के लिए। टैचियन हैं (सैद्धांतिक, कभी नहीं
पाए गए) नकारात्मक द्रव्यमान वाले कण (इसे विरोधी पदार्थ के साथ न मिलाएं), और इस प्रकार वे तेजी से यात्रा करते हैं
प्रकाश की तुलना में (एफटीएल) और फलस्वरूप समय में पीछे की ओर (जैसा कि कहा गया है, टैचियन एक कण है जो है
कभी नहीं मिला (लेकिन आइंस्टीन के समीकरणों के अनुसार सैद्धांतिक रूप से संभव है))। कप्तान
जहाज के अपने टैचियन रेडियो के माध्यम से राजा को चेतावनी देने के लिए जल्दबाजी करता है - और जैसा कि उल्लेख किया गया है, टैचियन
समय में पीछे की ओर, राजा को मारने से पहले संदेश पहुंचता है। इसलिए वह बचता है
साजिश और मारा नहीं गया है - - - और जहाज पर कोई संदेश नहीं भेजा जाता है, और राजा को चेतावनी नहीं दी जाती है और है
मारे गए - और जहाज को एक संदेश भेजा जाता है - - -। और इसी तरह एड इनफिनिटम।)

इस्लाम भी मानता है कि मनुष्य के लिए पूर्वनियति और स्वतंत्र इच्छा का संयोजन असंभव है
समझने या समझाने के लिए। हम "कुरान का संदेश" उद्धृत करते हैं, टिप्पणी १४१ से अध्याय ६ में
स्वीडिश संस्करण (१४३ अंग्रेजी में २००८ में): "दूसरे शब्दों में, के बीच संबंध
भविष्य के बारे में अल्लाह का ज्ञान (और, इसलिए, जो कुछ भी होना है उसकी अनिवार्यता)
भविष्य) एक तरफ, और दूसरी तरफ मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा - दो प्रस्ताव जो, चेहरे पर
यह एक दूसरे का खंडन करता प्रतीत होता है - मनुष्य की समझ से परे है; लेकिन चूंकि दोनों हैं
अल्लाह ने (केवल कुरान में*) कहा है, दोनों सच होने चाहिए।" बस के लिए अंतिम हार
इस्लामी तर्क, और रहस्यवाद के लिए अंतिम जीत और अंधेपन की मांग के लिए
आस्था।

और उद्धरण जारी है: "अल्लाह" की अवधारणा ही उसकी सर्वज्ञता का अनुमान लगाती है; और यह
नैतिकता और नैतिक जिम्मेदारी की अवधारणा ही मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा को मानती है।" इस
यही एक कारण है कि इस्लाम के लिए इस अंतर्विरोध को छोड़ना असंभव है - स्वतंत्र इच्छा के बिना
मनुष्य, उसे कुकर्मों के लिए दंडित करना अनैतिक है, लेकिन दूसरी ओर: एकेश्वरवादी क्या है
भगवान जब तक कि वह सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान न हो? फिर यह उस धर्म के बारे में क्या बताता है कि at
इनमें से कम से कम एक दावा गलत है?

इस प्रश्न के विनाशकारी उत्तर के कारण, दोनों दावे एक ही होने चाहिए
इस्लाम के अनुसार, ईश्वर और धर्म की नैतिकता को बचाने के लिए संयुक्त।

लेकिन "तथ्य" को कैसे जोड़ा जा सकता है कि अल्लाह सब कुछ चाहता है और सब कुछ जानता है
आदमी के लिए दावा मुक्त इच्छा के साथ भविष्य?

यह बस संभव नहीं है:

1. अगर अल्लाह सब कुछ चाहता है - कुरान की तरह
   बार-बार बताता है - तो प्रति परिभाषा मनुष्य के पास है
   कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं।
2. भले ही अल्लाह इच्छा न करे
   सब कुछ, लेकिन केवल उसकी सर्वज्ञता में है
   पूरी तरह से क्लैरवॉयंट और भविष्य के बारे में सब कुछ जानता है -
   जैसे इस्लाम और कुरान का दावा है कि वह करता है - that
   इसका मतलब है कि मनुष्य की कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं है
   पल अल्लाह कहता है: अब मैं उस टुकड़े को जानता हूँ
   भविष्य। यदि मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा है, तो इसका अर्थ है कि वह कर सकता है
   उसका मन बदलो - - - और फिर क्या अल्लाह
   जानता है गलत है, जो संभव नहीं है
   अल्लाह सब कुछ जानता है और हमेशा सही होता है।
   और अल्लाह तमन्नाओं को बहुत जल्दी कर देता है: तुम्हारा
   मौत और तुम नर्क या स्वर्ग में जा रहे थे

१०८४

   जब आप 4 महीने के भ्रूण थे -
   और मुहम्मद का अपनी पत्नियों से झगड़ा
   लाखों वर्ष की आयु के थे - - - यदि नहीं
   वे मदर बुक में प्रकट नहीं हो सके
   स्वर्ग और इसलिए कुरान में।
3. दूसरी ओर यदि मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा हो तो अल्लाह
   भविष्य को नहीं जान सकता, केवल इसलिए कि मनुष्य
   अपना मन बदल सकता है - और वह हमेशा कर सकता है
   एक बार फिर उसका मन बदलो।
4. मनुष्य बनाम अल्लाह के लिए स्वतंत्र इच्छा सब कुछ जानता है
   भविष्य बस समय यात्रा का एक संस्करण है
   विरोधाभास, जैसा कि ऊपर बताया गया है, सिद्ध होता है
   हल न करने योग्य।

इस्लाम ने इस असंभव विरोधाभास को समझाने की कोशिश करने के लिए उनके अधिक भोले या को छोड़कर दिया है
अशिक्षित अनुयायी, जिन्हें बस इतना कहा जाता है कि अल्लाह हमेशा वही देख सकता है जो
आप करने की योजना बना रहे हैं। अपने अधिक बुद्धिमान प्रश्नकर्ताओं के लिए उनके पास केवल उपर्युक्त है
हठधर्मी उत्तर - "कुरान का संदेश" के बाद स्वतंत्र रूप से: "समझना संभव नहीं है
दोनों दावे कैसे सच हो सकते हैं, लेकिन जैसा कि अल्लाह ने कुरान में कहा है, यह सब सच होना चाहिए
वैसा ही"।

और टिप्पणियां नहीं। और कोई और टिप्पणी आवश्यक नहीं होनी चाहिए। यह परम है
अंध विश्वास द्वारा बुद्धि का दमन और अपने विश्वास में अंधे होने की मांग।

लेकिन पूर्वनियति इस्लाम का एक अनिवार्य हिस्सा था और है।

भाग IX, अध्याय 3 (= IX-3-0-0)

कुछ विशेष - बहुत विशेष - इस्लाम के पहलुओं के रूप में बताया गया है कुरान - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम की पवित्र पुस्तक, और अल्लाह

कुरान में नैतिकता और नैतिकता और इस्लाम जैसा मुहम्मद ने बताया

या अल्लाह।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस्लाम में नैतिकता या नैतिकता के बारे में कोई दर्शन नहीं है। उनके पास केवल हमेशा नैतिक नहीं होता है या
मुहम्मद के बहुत नैतिक शब्द और कर्म - cfr। जिस महिला के लिए कड़ी सजा दी जाती है
अनैतिकता क्योंकि उसके साथ बलात्कार किया जाता है, लेकिन उसे दोषी ठहराया जाता है क्योंकि वह 4 पुरुष पैदा करने में असमर्थ है
रेप के गवाह हैं।

(अभी तक तैयार नहीं है - यह अध्याय 2010 के बाद समाप्त नहीं होगा)।

१०८५

पेज १०८६

भाग IX, अध्याय 4 (= IX-4-0-0)

कुछ विशेष - बहुत विशेष - इस्लाम के पहलुओं के रूप में बताया गया है कुरान - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम की पवित्र पुस्तक, और अल्लाह

"अल-तक़िया" (कानूनी झूठ) और "किटमैन" (कानूनी आधा-सत्य) कुरान में - नैतिक और नैतिक नियम केवल आप - केवल - इस्लाम में खोजें। जैसा बताया गया मुहम्मद या अल्लाह।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

अल-तकिया (वैध झूठ) और किटमैन (वैध अर्ध-सत्य) कुछ ऐसा है जो विशेष है
इस्लाम। आप इस तरह की स्वीकृत बेईमानी को किसी अन्य प्रमुख धर्म में नहीं पाते हैं - और
नाबालिगों में से कुछ।

वास्तव में अल-तकिया और किटमैन को कुरान में स्पष्ट रूप से पेश नहीं किया गया है। यह आधारित है
निष्कर्ष इस्लामी विद्वानों ने (बेईमान) योजना के बारे में कही और की गई बातों से बनाया है
या धोखाधड़ी, ईमानदारी, शपथ तोड़ना, आदि किताब में और हदीसों में। नीचे दिए गए श्लोक देखें।

कुरान और इस्लाम बताते हैं कि सिद्धांत रूप में आपको ईमानदार होना चाहिए। लेकिन कई मामलों में जहां
बेईमानी एक बेहतर परिणाम देगी, आपको झूठ बोलने और यहां तक कि झूठी शपथ लेने या करने की अनुमति है
तूने जो शपथ खाई है, उसे तोड़ो। कुछ मामलों में अल्लाह कहेगा कि यह ठीक है, और अन्य मामलों में वह करेगा
कहो; "ठीक है - अगर आप मुझे कुछ पैसे देते हैं या मुझे बाद में प्रायश्चित के लिए उपहार देते हैं"। और फिर में
कुछ मामलों में इसकी न केवल अनुमति है, बल्कि यदि आवश्यक हो तो इसका उपयोग करना अनिवार्य है: बचाव या बढ़ावा देना
इस्लाम।

कम से कम इन मामलों में अल-ताकिया और किटमैन का उपयोग किया जा सकता है:

1. खुद को या दूसरों को खतरे से बचाने के लिए।
2. तंग जगह से निकलना।
3. एक परिवार में शांति बनाने के लिए।
4. जब यह ईमानदारी से बेहतर परिणाम देगा
   या किसी की शपथ का सम्मान करना।
5. महिलाओं को धोखा देना (द्वारा याद किया जाना चाहिए .)

मुस्लिम बॉयफ्रेंड वाली लड़कियां जो सेक्स चाहती हैं - or
में निवास परमिट प्राप्त करने के लिए विवाह करना चाहते हैं
एक समृद्ध देश।)

6. विरोधियों/दुश्मनों को धोखा देना।

7. शत्रुओं को धोखा देना।
8. किसी के पैसे को सुरक्षित करने के लिए (से बहुत स्पष्ट हदीस)।
9. इस्लाम की रक्षा के लिए। (अनिवार्य यदि आवश्यक हो तो सफल।)
10. इस्लाम को बढ़ावा देना। (अनिवार्य यदि आवश्यक हो तो सफलता के लिए।)

लेकिन अल-तकिया एक दोधारी तलवार है: थोड़े समय में आप किसी को धोखा दे सकते हैं और धोखा दे सकते हैं
वाले - वास्तव में लंबे समय में भी यदि विपरीत भाग को इस पक्ष के बारे में पता नहीं है
मुसलमान और इस्लाम के, या यदि वह भोले हैं।

लेकिन गंभीर दुष्परिणाम यह है कि लोग जल्दी सीख जाते हैं कि कोई निश्चित रूप से कभी नहीं जान सकता एक मुसलमान पर गंभीर सवालों पर कब विश्वास करें: क्या वह ईमानदार है या वह अल-तकिया का इस्तेमाल कर रहा है?

और इसका एक और दुष्परिणाम है: मुसलमानों को विश्वास करने में कठिनाई होती है, भले ही वे हैं
पूर्ण सत्य बोलना - बहुत अच्छे कारणों से विपरीत पक्ष पूरी तरह से विश्वास करने से हिचकते हैं
उन्हें, जैसा कि वे सच कहते हैं या हो सकता है कि वे अल-तकिया या किटमैन का अभ्यास कर रहे हों।

और ये दोनों दुष्प्रभाव - जो वास्तव में समय के साथ मुख्य प्रभाव हो सकते हैं - बदतर हो जाते हैं
क्योंकि मुसलमानों के पास शपथ के रूप में शपथ लेकर अपने शब्दों को मजबूत करने का कोई तरीका नहीं है
मुसलमानों का कोई मूल्य नहीं है, क्योंकि उन्हें झूठी शपथ और शपथ तोड़ने की अनुमति है
- ऐसा करना कोई पाप नहीं है यदि आपके पास कोई कारण है, और विशेष रूप से तब नहीं जब आप अल्लाह को उपहार देते हैं
बाद में प्रायश्चित।

०१ २/२२५: "अल्लाह आपको अपनी शपथों में मूर्खता के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराएगा, लेकिन इसके लिए"
दिल में इरादा" यदि आप बिना सोचे-समझे शपथ लेते हैं - या पर्याप्त नहीं है -
आप इससे बंधे नहीं हैं। लेकिन अन्य लोगों को कैसे पता चलेगा कि आपने जो शपथ ली है वह है?
आपके लिए बाध्यकारी है या नहीं - या यदि आप इसे तोड़ देंगे?

002 4/142: "पाखंडी - वे सोचते हैं कि वे अल्लाह को पछाड़ रहे हैं, लेकिन वह आगे निकल जाएगा"
उन्हें - - -।" यह अल-तकिया और किटमैन के लिए इस्लाम के बहाने में से एक है: जब अल्लाह धोखा दे सकता है,
तो निश्चित रूप से उनके अनुयायी भी ऐसा ही कर सकते हैं।

००३ ५/८९: "अल्लाह आपको जवाब देने के लिए नहीं बुलाएगा कि आपकी शपथ में कहाँ व्यर्थ है, लेकिन वह बुलाएगा
आप अपनी जानबूझकर की गई शपथों के लिए जिम्मेदार हैं: (यदि आप इस तरह की शपथ को तोड़ते हैं *) प्रायश्चित के लिए, फ़ीड 10
अपने परिवारों के भोजन के लिए औसत के पैमाने पर निर्धन व्यक्ति: या उन्हें कपड़े पहनाएं, या
एक गुलाम को उसकी आजादी दो। यदि वह आपके सामर्थ्य से बाहर है, तो तीन दिन का उपवास करें। वह यह है कि
(* तोड़ने) के लिए प्रायश्चित जो आपने शपथ ली है। परन्तु अपक्की शपय पर बने रहो।" सिद्धांत में:
अपनी कसमें रखो। लेकिन अगर आप उन्हें तोड़ते हैं, तो बहुत कुछ नहीं खोता है, क्योंकि यह सिर्फ प्रायश्चित का भुगतान करने के लिए है, और
सब कुछ ठीक है। और यदि शपय बिना कुछ सोचे समझे की जाए, तो तू भी नहीं
इसके लिए बाध्य या प्रायश्चित का भुगतान करने के लिए बाध्य।

004 8/30: "वे (गैर-मुस्लिम*) साजिश और योजना बनाते हैं, और अल्लाह भी योजना बनाता है; लेकिन योजनाकारों का सबसे अच्छा
अल्लाह है"। जब अल्लाह कुटिल और कपटपूर्ण योजनाएँ बना सकता है, तो निश्चित रूप से उसके अनुयायी भी कर सकते हैं।
यह अल-ताकिया और उसके भाई किटमैन की संस्था के लिए मुख्य बहाना हो सकता है।

००५ १०/२१: "- - - वे (लोग*) हमारी (अल्लाह की) निशानियों के खिलाफ साजिश रचते हैं! कहो: 'तेजी से'
योजना अल्लाह है!'" यह अल-ताकिया और किटमैन के लिए मुख्य बहाना है: जब अल्लाह कर सकता है
कुटिल साधनों का उपयोग करें जैसा कि यहां बताया गया है, निश्चित रूप से कोई भी मुसलमान कर सकता है।

006 27/50: "उन्होंने (गैर-मुस्लिम*) साजिश रची और योजना बनाई, लेकिन हमने (अल्लाह*) ने भी योजना बनाई - - -।" जैसा ऊपर कहा गया है: जब अल्लाह धोखा दे सकता है, तो बेशक कोई भी अच्छा मुसलमान ऐसा ही कर सकता है।

००७ ३८/४४: "और अपने हाथ में एक छोटी सी घास लेकर उस से मार, और अपनी शपथ न तोड़।"
अय्यूब ने अपनी पत्नी को 100 चाबुक मारने की कसम खाई थी क्योंकि वह पर्याप्त रूप से विश्वास नहीं करती थी ("धर्म में कोई बाध्यता नहीं"?) लेकिन फिर उसने अपनी शपथ पर पछताया, और इसके बजाय उसे हल्के से मारा एक बार घास के १०० तिनके लेकर - तब उसने अपनी शपथ ली थी! एक शपथ या एक वादा को दरकिनार करने के लिए या केवल उन्हें रखने का दिखावा करना ठीक है - किटमैन का एक छोटा सा उदाहरण।

अल-तकिया और किटमैन हर गैर-मुस्लिम के लिए एक समस्या बनाते हैं: क्या यह कभी भी संभव है? यह जानने के लिए कि कोई मुसलमान गंभीर प्रश्न में कब सच बोलता है? - जब वह अल- का उपयोग कर रहा हो आपको धोखा देने के लिए तकिया या किटमैन?

लेकिन यह मुसलमानों के लिए भी एक समस्या है: जब आप हैं तब भी लोगों को आप पर विश्वास कैसे करें? जब वे वैध झूठ और वैध अर्धसत्य (अल-
तकिया और किटमैन)? और जब शपथ भी विश्वसनीय न हो तो अपने वचन को कैसे दृढ़ करें?

ए पीएस: अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में काहिरा में अनुसंधान अकादमी (इस तरह मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक विषयों) दिनांक २७. दिसंबर १९९८ के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि अल्लाह के लिए कोई पुतला नहीं है और उसे पटाना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है। क्या सब अल-तकिया है?

भाग IX, अध्याय 5 (= IX-5-0-0)

कुछ विशेष - बहुत विशेष - इस्लाम के पहलुओं के रूप में बताया गया है कुरान - मुहम्मद, मुसलमानों, इस्लाम की पवित्र पुस्तक, और अल्लाह

दृढ़ रहें - एक आवश्यक शब्द गैर-मुसलमानों को कभी नहीं करना चाहिए भूल जाओ।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

(दृढ़ रहें। अभी तक तैयार नहीं है - 2010 के बाद नहीं जोड़ा जाएगा)।

भाग X, अध्याय 1 (= X-1-0-0)

इस्लाम पर बहस करना - बहुत बार झूठा या असत्य तर्क, जैसा कि मुसलमान बहस जीतने के लिए जाते हैं, नोट

सत्य की खोज के लिए - - - और अल-तकिया की अनुमति है। ए सच्चा धर्म सत्य तथ्यों और सूचनाओं पर जीवित रह सकता है, इस्लाम नहीं कर सकता - मुहम्मद और अल्लाह, मुसलमान और इस्लाम "जिंदा रहो" और इस्लाम आंशिक रूप से बेईमानी पर फैलता है और

धूर्त तर्क और दावे, साथ ही हिंसा

निष्ठाहीन और/या बेईमानी कुरान में बहस। - शिक्षा और नैतिक नियम केवल आप - केवल - इस्लाम में खोजें। जैसा बताया गया मुहम्मद या अल्लाह।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

हम पहले ही कुरान में बहस करने के कुछ कपटपूर्ण तरीकों की ओर इशारा कर चुके हैं - f. डब्ल्यूएक्स. अल-तकिया
और किटमैन (अध्याय IX-4 देखें)। इसमें बहुत सी बेईमानी शामिल है जो आप कुरान में पाते हैं -
सभी दावों और "संकेत" और "सबूत" की तरह कुछ भी नहीं, या सभी दावों और बयानों पर बनाया गया
अमान्य या गलत जानकारी या "तथ्यों" पर बनाया गया है। लेकिन कम से कम एक और है:

राजनेताओं और अन्य लोगों के पास बहस करने की एक तकनीक होती है जिसका उपयोग और अनुपयोग करने में उन्हें मज़ा आता है: बताने के लिए
आप विरोधियों का क्या मतलब है या सोचते हैं या चाहते हैं या डरते हैं - बिना यह जांचे कि वे क्या कहते हैं
सत्य हैं, केवल यह वही है जो सम्मानित वक्ता आगे कहना चाहता है और वह आपको क्या चाहता है
सम्मानित प्रतिद्वंद्वी के बारे में विश्वास करने के लिए।

कुरान इस तकनीक का काफी इस्तेमाल करता है। हम इन विषयों पर लौटेंगे, लेकिन इस बीच
पुस्तक में खोजना आसान है: "काफिर" क्या सोचते हैं और साजिश करते हैं और योजना बनाते हैं और चाहते हैं, और कैसे
वे डरे हुए और बेईमान और कायर हैं और सोचते और महसूस करते हैं।

कभी यह सही हो सकता है, कभी यह निश्चित रूप से गलत है।

लेकिन हमेशा "काफिरों" की एक बुरी तस्वीर और मुसलमानों की एक अच्छी तस्वीर को चित्रित करने के लिए "ऐसा" होता है।
एक समूह के नेता के लिए अच्छा मनोविज्ञान। लेकिन यह बेईमानी है।

यदि हम अपनी पाठ्यपुस्तकों से "बोलने की कला" के बारे में सही ढंग से याद करते हैं, तो यह तकनीक - to
बता दें कि प्रतिद्वंद्वी के पास कम दिमागी या बुरे विचार हैं जिसे उन्होंने प्रसारित या व्यक्त नहीं किया है - नाम दिया गया है
"३ डिग्री की जिद या बेईमानी"। यह अध्याय 2010 के बाद समाप्त नहीं होगा - if
चीजें योजना के अनुसार चलती हैं।

भाग X, अध्याय 2 (= X-2-0-0)

इस्लाम पर बहस करना - बहुत बार झूठा या असत्य तर्क, जैसा कि मुसलमान बहस जीतने के लिए जाते हैं, नोट सत्य की खोज के लिए - - - और अल-तकिया की अनुमति है

निष्ठाहीन और/या बेईमानी से वाद-विवाद सेंट्रल इस्लामिक लिटरेचर।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले

भाग X, अध्याय 3 (= X-3-0-0)

इस्लाम पर बहस करना - बहुत बार झूठा या असत्य तर्क, जैसा कि मुसलमान बहस जीतने के लिए जाते हैं, नोट सत्य की खोज के लिए - - - और अल-तकिया की अनुमति है। ए सच्चा धर्म सत्य तथ्यों और सूचनाओं पर जीवित रह सकता है, इस्लाम नहीं कर सकता - मुहम्मद और अल्लाह, मुसलमान और इस्लाम "जिंदा रहो" और इस्लाम आंशिक रूप से बेईमानी पर फैलता है और निराधार तर्क और दावे

वाद-विवाद में निष्ठाहीन मुसलमान कुरान के बारे में, मुहम्मद, इस्लाम और अल्लाह

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

अभी तक तैयार नहीं है - 2010 से बाद में और नहीं जोड़ा जाएगा।

मुसलमान हमेशा वाद-विवाद में निष्पक्ष खेलने पर तुले नहीं होते - मुख्य बात चर्चा जीतना है,
नहीं कि वे इसे कैसे जीतते हैं या क्या सही है या गलत। हमारे पास एक निजी लघु सिद्धांत है जो कह रहा है कि
हो सकता है कि यह अल-तकिया (वैध झूठ) और किटमैन (वैध अर्ध-सत्य) की परंपरा हो
काम - और न केवल परंपरा; जब इस्लाम की रक्षा करने या आगे बढ़ाने की बात आती है, तो यह एक कर्तव्य है
यदि आवश्यक हो तो इसका उपयोग करें।

भले ही हमारे पास यह अध्याय अभी तक इंटरनेट के लिए तैयार नहीं है, हम एक हालिया का उल्लेख करेंगे
उदाहरण:

यह इंटरनेट पर हमारे एक आउट कॉन्टैक्ट के साथ हुआ (और हमने जाँच की कि यह वास्तव में सच था) -
में दो सबसे बड़े समाचार पत्रों में से एक के इंटरनेट संस्करण पर बहस के लिए पृष्ठों पर
नॉर्वे, आफ्टेनपोस्टेन। (www.aftenposten.no)।

इस्लाम और मुसलमानों के बारे में बहस में एक सक्रिय व्यक्ति एक उत्सुक मुसलमान था
खुद को करताल कहते हैं।

अब करताल सबसे प्रतिभाशाली नहीं था और वह सबसे अच्छे शिक्षित लोगों में से एक नहीं था। उनके
तर्क ज्यादातर सफलता से नहीं मिले।

लेकिन वह कंप्यूटर के साथ चतुर था - और उसने एक रास्ता खोज लिया: उसने बस "अक्षरों" को गलत बताया
विरोधियों द्वारा भेजे जाने का नाटक जो उसके लिए बहुत चालाक थे। यदि आप चतुर हैं
कंप्यूटर, आप इंटरनेट पर कई काम कर सकते हैं।

"पत्रों" में - करताल को संबोधित - "विरोधियों" ने यह और वह स्वीकार किया, और कभी-कभी
वास्तव में छोटे लड़कों के साथ सेक्स जैसी बुरी चीजें, आदि - - - और करताल को उनके खिलाफ अच्छे अंक मिले।

एक उदाहरण: मजबूत प्रतिद्वंद्वी से कथित "पत्र" XXX: "मैं मानता हूं कि हम ईसाई हैं
छोटे लड़कों के साथ सेक्स करना पसंद करते हैं।" और अच्छे और परोपकारी करताल ने उत्तर दिया: "वह है
अच्छा XXX। प्रवेश पहला कदम है"।

.

एक बात तो यह है कि कोई भी सुगन्धित प्राणी ऐसी जगह ऐसी बातों को स्वीकार नहीं करता, जहां पुलिस आसानी से हो
आपको ट्रेस कर सकता है - और यह कि पीडोफेली की प्रवृत्ति कमोबेश पूरी दुनिया के लिए समान है - दे या
सांस्कृतिक, धार्मिक आदि प्रभाव के लिए थोड़ा सा लें (याद रखें सभी बाल दास जो भेजे गए थे
मुस्लिम क्षेत्रों के लिए - और कुछ अमेरिका के लिए)। लेकिन संक्षिप्त वाक्य में उन्होंने दावा किया कि XXX के पास था

भेजा गया, वह - जो एक अप्रवासी था - ने कम से कम 4 व्याकरण संबंधी त्रुटियां कीं (जबकि XXX हमेशा कमोबेश सही लिखा)। और इसके अलावा अन्य के बीच वाद-विवाद पृष्ठ पर खोजें चीजों ने दिखाया कि XXX ने उस वाद-विवाद मंच के अपने सैकड़ों पत्रों में कभी भी इसका इस्तेमाल नहीं किया था शब्द "स्मागटर" (= छोटे लड़के)।

जैसा कि कहा गया है: करताल के पास विचार थे, लेकिन आवश्यक ज्ञान और बुद्धि नहीं थी।

लेकिन स्वाभाविक रूप से लोग इस तरह की बेईमानी पर प्रतिक्रिया देते हैं। (लेकिन वह इस्लाम का बचाव कर रहे थे, और फिर इस तरह के झूठ मुसलमानों के लिए प्रशंसनीय हैं - अल-तकिया के लिए नियम देखें)।

लेकिन जैसा कि उल्लेख किया गया है, करताल न तो सबसे तेज था और न ही अच्छी तरह से शिक्षित। उसके पास विचार थे, लेकिन नहीं "अक्षरों" को विश्वसनीय बनाने के लिए बुद्धि और ज्ञान। उसे जल्दी से देखा गया।

वैसे भी यह एक छोटा, लेकिन अच्छा रोज़मर्रा का उदाहरण है कि किस चरम सीमा तक और क्या कम है कुछ स्तर - हम कुछ पर जोर देते हैं - मुसलमान इस्लाम का विरोध करने वालों को "मार" देते हैं।

और: करतल अल-तक़िया के आदर्शों और आदेशों पर खरा उतरा।

एक अंतिम छोटा बिंदु: अल-अजहर अल-शरीफ द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ कुरान" में काहिरा में इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक .) ऐसे विषय) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि अल्लाह के लिए कोई पुतला नहीं है और उसे पटाना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है।

यह अध्याय 2010 के बाद समाप्त नहीं होगा।

१०९१

पेज १०९२

भाग X, अध्याय 3 (= X-3-0-0)

इस्लाम पर बहस करना - बहुत बार झूठा या असत्य तर्क, जैसा कि मुसलमान बहस जीतने के लिए जाते हैं, नोट सत्य की खोज के लिए - - - और अल-तकिया की अनुमति है। ए सच्चा धर्म सत्य तथ्यों और सूचनाओं पर जीवित रह सकता है, इस्लाम नहीं कर सकता - मुहम्मद और अल्लाह, मुसलमान और इस्लाम "जिंदा रहो" और इस्लाम आंशिक रूप से बेईमानी पर फैलता है और निराधार तर्क और दावे

से कुछ गलत तर्क कुरान के बारे में मुसलमान, मुहम्मद, इस्लाम और अल्लाह - और उत्तर

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

(अभी तक समाप्त नहीं हुआ - 2010 ईस्वी के बाद नहीं जोड़ा जाएगा।)

अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में काहिरा में अकादमी (ऐसे विषयों पर मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक) a . में पत्र दिनांक २७. दिसम्बर १९९८, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं, और यह कि उसे साबित करना संभव नहीं है। यहां एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि कोई ptoof for . नहीं है अल्लाह और उसे वश में करना नामुमकिन है, खुद-ब-खुद इसका कोई सबूत भी नहीं है, और नामुमकिन है अल्लाह से मुहम्मद के कथित संबंध को साबित करें। अगर कोई अल्लाह और/या कोई संबंध नहीं है मुहम्मद और एक ईश्वर के बीच, फिर इस्लाम क्या है?

भाग XI, अध्याय 1 (= XI-1-0-0)

मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं

सीए 570 - 610 ईस्वी: मुहम्मद से पहले मुसलमान बन गए और शुरू हो गए कुरान के बारे में उपदेश, इस्लाम और अल्लाह।

१०९२

पेज १०९३

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

यह अध्याय अभी तैयार नहीं है - 2010 के बाद नहीं जोड़ा जाएगा।

अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अकादमी (ऐसे विषयों पर मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक) a . में
पत्र दिनांक २७. दिसम्बर १९९८, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं,
और यह कि उसे साबित करना संभव नहीं है। यहां एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि कोई ptoof for . नहीं है
अल्लाह और उसे वश में करना नामुमकिन है, खुद-ब-खुद इसका कोई सबूत भी नहीं है, और नामुमकिन है
अल्लाह से मुहम्मद के कथित संबंध को साबित करें। अगर कोई अल्लाह और/या कोई संबंध नहीं है
मुहम्मद और एक ईश्वर के बीच, फिर इस्लाम क्या है?

भाग XI, अध्याय 2 (= XI-2-0-0)

मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं

"टीएलई" (टेम्पोरल लोब) क्या है? मिर्गी)? - शायद मुहम्मद बीबीसी के अनुसार बीमारी

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

बीबीसी टू (17. अप्रैल 2003) के अनुसार यह बीमारी व्हाट्स जैसे धार्मिक अनुभवों की व्याख्या करती है
कहा जाता है कि मुहम्मद के पास था।

हम बोली:

"विवादास्पद नए (2003) शोध से पता चलता है कि क्या हम ईश्वर में विश्वास करते हैं, यह सिर्फ नहीं हो सकता है
स्वतंत्र इच्छा की बात। वैज्ञानिकों का अब मानना है कि के दिमाग में शारीरिक अंतर हो सकता है
उत्साही विश्वासियों।

इस काम के लिए प्रेरणा उन रोगियों के एक समूह से मिली है जिन्हें मस्तिष्क विकार है जिसे कहा जाता है

टेम्पोरल लोब मिर्गी (संक्षेप में; "TLE*)। अल्प संख्या में रोगियों में, यह स्थिति प्रेरित करती है
विचित्र धार्मिक मतिभ्रम - - -।

सैन डिएगो में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर वी.एस. रामचंद्रन का मानना था कि
मस्तिष्क के लौकिक लोब धार्मिक अनुभव में महत्वपूर्ण थे।

प्रोफेसर रामचंद्रन ने अपने आश्चर्य के लिए जो खोजा वह यह था कि जब टेम्पोरल लोब
रोगियों को किसी भी प्रकार की धार्मिक कल्पना दिखाई गई, उनके शरीर में नाटकीय परिवर्तन हुआ
उनके (विद्युत *) त्वचा प्रतिरोध में। - - - उन्हें एक विशाल गैल्वेनिक त्वचा प्रतिक्रिया मिलती है।

१०९३

पेज १०९४

यह नैदानिक साक्ष्य का पहला टुकड़ा था कि धार्मिक प्रतीकों के लिए शरीर की प्रतिक्रिया
निश्चित रूप से मस्तिष्क में टेम्पोरल लोब से जुड़ा हुआ था।

हम जो सुझाव देते हैं वह यह है कि टेम्पोरल लोब के भीतर कुछ निश्चित सर्किट होते हैं जो कि रहे हैं
इन रोगियों में चुनिंदा रूप से सक्रिय और किसी तरह इन विशिष्ट तंत्रिकाओं की गतिविधि
सर्किट उन्हें धार्मिक विश्वास के लिए प्रवृत्त करता है।

योय का जन्म टेम्पोरल लोब मिर्गी - टीएलई - के साथ हो सकता है या यह बाद में विकसित हो सकता है, या यह हो सकता है
आपके सिर पर प्रहार की तरह दुर्घटना का परिणाम।

वे (वैज्ञानिक*) मानते हैं कि टेम्पोरल लोब मिर्गी के दिमाग के अंदर क्या होता है
मरीज हमारे दिमाग के अंदर क्या चल रहा है इसका एक चरम मामला हो सकता है।"

पहले के लिए और दूसरा विकल्प हो सकता है कि आप टीएलई कैसे प्राप्त करते हैं, विज्ञान (के अनुसार
एफ। भूतपूर्व। न्यू साइंटिस्ट) बाद में (2007 या 2008) ने पाया है कि अक्सर धार्मिक होने की प्रवृत्ति होती है
व्यक्तियों में एक या कुछ विशिष्ट जीनों से जुड़ा होता है।

विज्ञान के पास आगे एक सिद्धांत है कि धार्मिक विश्वास जीवित रहने के लिए एक मूल्य है, और इसलिए
प्रासंगिक जीन का विकास और प्रसार, केवल इस तथ्य से कि एक सामान्य धर्म
समूह के सदस्यों को अधिक मजबूती से जोड़ता है, और यह समूह को समूह के रूप में बनाता है
मजबूत।

आज विज्ञान यहीं खड़ा है।

लेकिन एक अतिरिक्त सिद्धांत जो यहां प्रासंगिक है, वह यह है कि उसी विज्ञान के अनुसार, यह संभव है या
संभावना है कि "अतीत में प्रसिद्ध धार्मिक व्यक्ति भी इस स्थिति से पीड़ित हो सकते थे"
(टीएलई*)"।

मुहम्मद एक ऐसे "प्रसिद्ध धार्मिक व्यक्ति" हैं।

जहाँ तक मुहम्मद का सवाल है, उनके कुछ "दर्शनीय स्थलों" के संबंध में भी वह अक्सर फिट बैठता था
"मैसेंजर्स", "हर मेडिकल प्रोफेशनल को मिर्गी के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करें।"

सत्ता के लिए टीएलई प्लस मुहम्मद की इच्छा इस्लाम की पूरी शुरुआत हो सकती है।

भाग XI, अध्याय 3 (= XI-3-0-0)

मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं

वर्ष ६१० - ६२२ ई.: मुहम्मद - ए के लिए शांतिपूर्ण उपदेशक शांतिपूर्ण धर्म

पेज १०९५

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस्लाम एक शांतिपूर्ण धर्म के रूप में शुरू हुआ। सभी १२ वर्षों के दौरान - और लगभग ९० सूरह - मक्का में,
नफरत, दूसरों के दमन, बलात्कार, चोरी या युद्ध के बारे में शायद ही कोई शब्द था।

यह अध्याय 2010 ई. के बाद समाप्त नहीं होगा।

अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अकादमी (ऐसे विषयों पर मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक) a . में
पत्र दिनांक २७. दिसम्बर १९९८, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं,
और यह कि उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि इसके लिए कोई प्रमाण नहीं है
अल्लाह और उसे साबित करना असंभव है, स्वचालित रूप से इसका कोई सबूत नहीं है, और असंभव है
अल्लाह से मुहम्मद के कथित संबंध को साबित करें। अगर कोई अल्लाह और/या कोई संबंध नहीं है
मुहम्मद और एक ईश्वर के बीच, फिर इस्लाम क्या है?

भाग XI, अध्याय 4 (= XI-4-0-0)

मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं

वर्ष ६२२ - ६३२ ई
खूनी के लिए अमानवीय पैगंबर और अमानवीय इस्लाम और अल्लाह

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस्लाम तेजी से और बहुत तेजी से बदल गया - शांतिपूर्ण से युद्ध धर्म में - 622 में और उसके तुरंत बाद
ई., मक्का से मदीना की उड़ान के बाद, और मुहम्मद और उनके अनुयायियों के बाद
हाईवे डकैती और गांवों के खिलाफ छापे आदि से जीते हैं। यह बड़ा और तेज बदलाव और क्यों
मुहम्मद और/या अल्लाह ने इस सनातन धर्म को बदल दिया, इस्लाम कभी बात नहीं करता।

लेकिन एक प्रासंगिक प्रश्न अब पहले से ही है: क्या वह वास्तव में एक भविष्यद्वक्ता था?

एक नबी वह व्यक्ति है जो:

1. का उपहार और/या दैवीय संबंध है
   उसे भविष्यवाणियां करने में सक्षम बनाएं।
2. उसकी/उसकी भविष्यवाणियां कम से कम अधिकतर सही हैं
   - नहीं तो यह एक झूठा peophet है।
3. बहुत सारी और/या आवश्यक भविष्यवाणियाँ करता है,
   कि यह स्पष्ट रूप से उसका हिस्सा है (आमतौर पर
   उसका) मिशन।

१०९५

पेज १०९६

मुहम्मद इन सभी 3 मानदंडों से बाहर हैं - और जहां तक भविष्यवाणियां करने की बात है, उन्होंने कभी भी उस उपहार के होने का दिखावा या दावा किया। इस्लाम इसकी पुष्टि यह कहकर करता है कि एकमात्र चमत्कार है कि मुहम्मद से जुड़ा था, कुरान की रचना थी (भविष्यवाणियां चमत्कार हैं - देखने के लिए) या जानें कि क्या नहीं हुआ है)।

मुहम्मद बस कोई वास्तविक पैगंबर नहीं थे - उन्होंने केवल "उधार" लिया जो कि थोपने वाली उपाधि थी।

(ओह, हम जानते हैं कि "पैगंबर" शब्द की अन्य परिभाषाएँ भी हैं। अक्सर इसका उपयोग किसी के लिए किया जाता है एक संप्रदाय का करिश्माई नेता - जिसकी शुरुआत इस्लाम में हुई थी। या इसका उपयोग उन लोगों के लिए किया जाता है जिन्हें माना जाता है a भगवान बोलता है, लेकिन जरूरी नहीं कि भविष्यवाणी करता हो। इन कमजोर परिभाषाओं के अनुसार मुहम्मद एक नबी होता - अगर अल्लाह होता और अगर मुहम्मद सच में होता उसके लिए कनेक्शन। लेकिन सख्त, 24 कैरेट परिभाषा के अनुसार बस नहीं: नहीं, वह नहीं था असली नबी।)

बड़े (29 खंड) अमेरिकी विश्वकोश को उद्धृत करने के लिए "फंक एंड वांगेल्स न्यू" इनसाइक्लोपीडिया", खंड १४, पृ.२६३। वे इस्लाम के बारे में अपना लेख इस तरह से शुरू करते हैं; "इस्लाम, ए प्रमुख विश्व धर्म, मुहम्मद की शिक्षाओं पर अरब में स्थापित, जिसे कहा जाता है पैगंबर।"

मुहम्मद को "पैगंबर" कहा जाता है।

यदि मुहम्मद और इस्लाम दावा करते हैं कि वह उसी ईश्वर के लिए पैगंबर थे, जो पुराने इजरायली पैगम्बर थे, कम से कम दो और मानदंड हैं जिन्हें वह पूरा नहीं करता है। उनमें से एक यह है कि सर्वज्ञ देवता निश्चित रूप से वही तथ्य और भविष्य के बारे में वही कहानियां हर समय और सभी के माध्यम से बताता है उसके पैगम्बर - नहीं तो कुछ बदल गया है और अगर वह नहीं जानता तो वह सर्वज्ञ नहीं हो सकता शुरू से ही सही इतिहास।

1. इसका मतलब है कि अगर मुहम्मद एक नबी थे या यहोवा के दूत (वही ईश्वर जो इस्लाम के अनुसार अल्लाह), उसे प्रतिनिधित्व करना था पहले के दूतों के समान धर्म या भविष्यद्वक्ताओं जैसे एफ। भूतपूर्व। यीशु, का धर्म यहोवा - जो वह स्पष्ट रूप से नहीं करता है। वहां यीशु में बुनियादी बातों के बीच महासागर हैं ' शिक्षाएँ और मुहम्मद के।
2. और इसका मतलब है कि उसके शब्द और व्यवहार पुराने नबियों के अनुसार होना था यीशु और उनकी भविष्यवाणियों के साथ शामिल थे, जो वह बहुत स्पष्ट रूप से नहीं करता है। इसके साथ - साथ पुराना सवाल है:
3. वह यहोवा के लिए भविष्यद्वक्ता होने का दावा कैसे कर सकता है - या अल्लाह के लिए - जब वह वास्तव में नहीं है नबी? - उसके पास केंद्रीय नहीं है एक वास्तविक भविष्यवक्ता बनने के लिए न्यूनतम योग्यता: वास्तविक भविष्यवाणियां करने की क्षमता। वह नहीं यहां तक कि उस उपहार के होने का दावा किया या होने का दिखावा भी किया।

अंक १ और २ के लिए: क्षमा करें, मुसलमानों, लेकिन विज्ञान ने इतना स्पष्ट रूप से दिखाया है कि बाइबिल नहीं है झूठा, कि यह आपका पसंदीदा तरीका अब मान्य नहीं है। आपका कभी भी प्रलेखित दावा नहीं मिथ्याकरण के बारे में बस सच नहीं है। आपको उन दो बिंदुओं के लिए बेहतर स्पष्टीकरण खोजने होंगे

१०९६

पेज १०९७

बाइबिल के मिथ्याकरण के बारे में आसान और कभी सिद्ध दावों की तुलना में। पढ़े-लिखे लोग बस करते हैं अब उस परियों की कहानी पर विश्वास नहीं है।

अंत में: अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में काहिरा में अनुसंधान अकादमी (इस तरह मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक विषयों) दिनांक २७. दिसंबर १९९८ के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है। अगर कोई अल्लाह नहीं है

तो कोई पवित्र योद्धा नहीं है - केवल [illegible] और [illegible] की तलाश में है,
महिला और पैसा - कम से कम रिश्वत के लिए।

यह अध्याय 2010 ई. के बाद समाप्त नहीं होगा।

भाग XI, अध्याय 5 (= XI-5-0-0)

मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं

मुहम्मद कुरान में झूठ बोल रहे हैं, मुसलमानों की पवित्र पुस्तक, इस्लाम और अल्लाह

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मुहम्मद ने अल-ताकिया (वैध झूठ), किटमैन (वैध अर्ध-सत्य), और . का परिचय दिया
अपने धर्म की शपथ भी तोड़ने की अनुमति। साथ ही उनका एक नारा था: युद्ध विश्वासघात है।

कुरान में कुछ ऐसे स्थान भी हैं जहाँ मुहम्मद जैसा बुद्धिमान व्यक्ति स्पष्ट रूप से
जानता था कि वह झूठ बोल रहा था - f. भूतपूर्व। जब वह अपने अनुयायियों और दूसरों को बताता है कि इसका कारण अल्लाह
प्रदर्शन नहीं करेगा - या मुहम्मद को प्रदर्शन करने नहीं देगा - कोई चमत्कार, यह है कि यह किसी को नहीं बना देगा
किसी भी तरह इस्लाम में विश्वास करो।

यह अध्याय 2010 के बाद समाप्त नहीं होगा।

दरअसल: अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक द्वारा प्रमाणित किताब "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अनुसंधान अकादमी (इस तरह मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक
विषयों) दिनांक २७. दिसंबर १९९८ के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं
अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि
अल्लाह के लिए कोई पुतला नहीं है और उसे पटाना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है
के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है।

१०९७

पेज १०९८

भाग XI, अध्याय 6 (= XI-6-0-0)

मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं

पीडोफिलिक मुहम्मद - स्वयंभू नबी के लिए अल्लाह और इस्लाम

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

यहाँ स्टार तर्क आयशा है, जिससे उसने ६२३ ईस्वी में शादी की थी जब वह ६ साल की थी और वह ५३ (या .)

शायद ५४ - कुछ लोग कहते हैं कि उनका जन्म वास्तव में ६१९ में हुआ था, न कि (६०४ ई.) में। उसके साथ सेक्स तब शुरू हुआ जब वह 9 था - यह इस्लाम जो कहता है उससे बहुत स्पष्ट है विश्वसनीय स्रोत हैं (f. उदा. अल-बुखारी, इमाम
मुस्लिम, मुहम्मद इब्न इशाक)। वह बचपन से ही उसकी पसंदीदा पत्नी थी
632 ई. में मृत्यु हो गई जब वह 15 वर्ष की थी। (आप मुसलमानों से यह दावा करते हुए मिलेंगे कि सेक्स
17 साल की उम्र तक उसकी शुरुआत नहीं हुई थी - जो कि बकवास है, क्योंकि तब तक मुहम्मद की मृत्यु हो चुकी थी
2 वर्ष - यदि वर्ष सही हैं (और यदि नहीं, तो वे बहुत अधिक नहीं हैं))।

लेकिन उसके लिए एक स्पष्ट और विश्वसनीय संकेत है, भले ही मुहम्मद अपनी पत्नियों को पसंद करते थे
युवा - पहले वाले को छोड़कर वे सभी उससे कम से कम 20 वर्ष छोटे थे - और यहां तक कि
यद्यपि वह स्पष्ट रूप से बच्चे ऐशा का आनंद लेता था, वह वास्तव में और जुनून से पीडोफिलिक नहीं था।
(जो सच है वो सच है)।

यह अध्याय 2010 ई. के बाद समाप्त नहीं होगा।

भाग XI, अध्याय 7 (= XI-7-0-0)

मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं

महिला और बलात्कारी मुहम्मद - स्वघोषित कुरान के पैगंबर, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मुहम्मद ने व्यक्तिगत रूप से कम से कम 2 महिलाओं का बलात्कार किया - 627 ईस्वी में रैहाना बिन्त अमर और सफ़िया
628 ई. में बिन्त हुयय। दोनों ही मामलों में उनके परिवारों को गुलाम बनाने या उनकी हत्या करने के बाद
- मारे गए पतियों में शामिल हैं - (सफ़िया सिर्फ 17 साल की थी और नवविवाहित थी - मुहम्मद लगभग
60 काफी संभावना है कि उसके लिए एक अच्छा अनुभव था)। वे दोनों युद्ध के कैदी थे और बने
मुहम्मद द्वारा गुलाम। यह ज्ञात नहीं है कि उसने अधिक बंदी महिलाओं या दासियों के साथ बलात्कार किया, लेकिन
उसके आदमियों ने उसके द्वारा किए गए कार्यों पर जिस तरह से आकस्मिक प्रतिक्रिया व्यक्त की, वह कुछ संकेत कर सकता है। हदीसें भी
चीजों को इंगित करें - जैसे "हमें सहवास इंटरप्टस का अभ्यास करने में मज़ा आया" महिला कैदियों के साथ (= बलात्कार
उन्हें, लेकिन वीर्य "अंदर आने" से पहले "बाहर निकलो", जो मीलों इस्लामिक नैतिकता के बारे में बताता है
उस समय (और हमेशा के लिए) - और तथ्य यह है कि मुहम्मद ने उन्हें बलात्कार को बाधित न करने के लिए कहा था,
क्योंकि यह अल्लाह को तय करना था कि बच्चा होने वाला है या नहीं (अल-बुखारी से) -
मुहम्मद के बारे में और भी अधिक बताता है।

यह सर्वविदित है कि उसकी एक दर्जन पत्नियाँ (11 निश्चित रूप से) जैसी कुछ थीं। कम प्रसिद्ध हैं
उनकी 2 रखैलें, उनकी 16 कम समय की पत्नियां और 7 जो औपचारिक रूप से हो भी सकती हैं और नहीं भी
उससे शादी की। ३६ सब एक साथ जिन्हें हम नामों से जानते हैं (सावधान रहें कि नाम थोड़े हो सकते हैं
एक स्रोत से दूसरे स्रोत में अलग-अलग वर्तनी - यह अक्सर ऐसा होता है जब कोई अनुवाद करता है (या .)
प्रतिलेखन) एक वर्णमाला से दूसरे में)।

यह सूची आंशिक रूप से डॉ. होमा दरबी फाउंडेशन (डॉ. रौशनगर) की है।
http://www.homa.org/Details.asp?ContentID=2137352816&TOCID=2083225414)
सावधान रहें कि अलग-अलग स्रोत हमेशा इस बात पर सहमत नहीं होते हैं कि विवाह कब हुआ था।
(जब मतभेद होते हैं तो हम डॉ. होमा दराबी की जानकारी का अनुसरण करते हैं)।

मुहम्मद की "दीर्घकालिक" पत्नियाँ:

1. खदीजाह। 595 ई. में शादी की। वह 40 वर्ष की थी (हालांकि यह संभव है कि वह छोटी थी - कुछ .)
मुसलमान ऐसा दावा करते हैं, और यह तथ्य कि शादी में ५ या ६ बच्चे थे, इसे बनाता है
संभव है कि उनके पास यहां एक बिंदु हो, क्योंकि ४० के बाद ५ या ६ बच्चे होना थोड़ा असामान्य है)।
मुहम्मद 25 वर्ष के थे (या 26 वर्ष के हो सकते हैं यदि उनका जन्म 569 ईस्वी में हुआ था और 570 ईस्वी में नहीं)। यह कहा जाता है
एक खुशहाल शादी हुई है, हालांकि कम से कम 2 . के आधार पर सवाल उठाए गए हैं
तथ्य:
    1. शादी के दौरान खदीजा के 6 बच्चे थे: 2 बेटे - कासिम (एक शिशु के रूप में मृत्यु हो गई, लेकिन
    अपने ज्येष्ठ पुत्र के नाम से मुहम्मद को नाम मिला - उसका कुंजा - अबू कासिम
    = कासिम के पिता), अब्दुल्ला (= मुहम्मद के पिता के समान नाम - की मृत्यु हो गई
    शिशु, और हम शायद ही कभी उससे इस्लामी साहित्य में मिलते हैं), और 4 बेटियाँ - फातिमाह
    (उनके बच्चों में से केवल एक जो उनसे बच गया, और केवल आधे साल से- शादी कर ली
    अली, बाद में 4. खलीफा, और उसके 2 बेटे थे हसन - 670 ईस्वी की मृत्यु - और हुसैन - 680 की मृत्यु हो गई
    AD), ज़ैनब (629 AD की मृत्यु हो गई), रुकय्याह (624 AD की मृत्यु हो गई), और उम्म कुलथुम (630 में मृत्यु हो गई)
    एडी)। (मुहम्मद की मृत्यु 8 जून 632 ईस्वी में हुई थी) लेकिन उनकी अन्य सभी महिलाओं में से कोई भी नहीं
    केवल एक (दास मारीह) को छोड़कर उसके साथ बच्चे थे, भले ही उसे कहा गया हो
    यौन रूप से बहुत सक्रिय होना। एक आसान व्याख्या जो प्रसारित होती है, वह यह है कि यह हो सकता है
    सुविधा का एक विवाह रहा है ताकि खदीजा के पास "प्रवृत्त" होने पर एक ऐलिबी हो
    एक और "कनेक्शन" उसे किसी कारण से गुप्त रखना पड़ा - ऐसी बातें है
    इतिहास के माध्यम से कई बार हुआ, और अक्सर जो हुआ वह बस यही था; वह
    एक अमीर औरत ने इस ऐलिबी को पाने के लिए एक गरीब आदमी से शादी कर ली। यदि तब मुहम्मद बाँझ थे,
    यह आसानी से उसके बाद के बच्चों की कमी की व्याख्या करता है। मारीह का पुत्र, इब्राहिम, हो सकता है a

    मुहम्मद के 100% बाँझ न होने का परिणाम - या एक या एक से अधिक गुप्त यात्राओं का मरीह
    हो सकता है कहीं बनाया हो।
    2. दिसंबर 619 ई. में खदीजा की मृत्यु हो गई)। पहले से ही 2-3 महीने बाद (फरवरी 620 ई.)
    मुहम्मद ने पुनर्विवाह किया - बल्कि एक दु: ख से पीड़ित व्यक्ति के लिए जल्दी से। (आप कभी नहीं पाते
    मुहम्मद के बारे में चमकदार "आधिकारिक" पत्रों में उल्लिखित ये दो तथ्य, लेकिन दिमाग
    अटकलें लगा रहे हैं और जुबान लड़खड़ा रही है)।
2. सूदेह। जैसा कि उल्लेख किया गया है कि उन्होंने 620 ईस्वी में शादी की थी। वह उनसे 20 साल छोटी थीं। (वह 50,
वह 30)।
3. आयशा। उनकी प्रसिद्ध और कुख्यात बाल वधू। वह उनके अच्छे दोस्त और सह की बेटी थी-
कार्यकर्ता अबू बक्र (बाद में पहला खलीफा)। कनेक्शन 623 ईस्वी में स्थापित किया गया था, जब वह
वह सिर्फ 6 साल का था - और वह 53 (या 54) - 47 (या 48) उससे बड़ा था, हालांकि विवाहित जीवन
- सेक्स - 3 साल बाद तक शुरू नहीं हुआ, जब वह 9 साल की थी। कई लोग उसकी शादी के खिलाफ प्रतिक्रिया देते हैं a
बच्चा और 9 साल के बच्चे के साथ यौन संबंध बनाना (यही कारण है कि कई मुसलमान बाल विवाह को स्वीकार करते हैं)
और लड़की से सेक्स 9 है)। लेकिन असल में ब्लैक स्पॉट यह नहीं है कि उसने 9 साल की बच्ची के साथ सेक्स किया था
लड़की। वास्तव में काला धब्बा यह है कि बचपन में उनकी पसंदीदा पत्नी के रूप में एक बच्चा था
- जब वह मरा तब वह सिर्फ 15 साल की थी। (कुछ मुसलमानों का दावा है कि 17 साल की उम्र तक सेक्स शुरू नहीं हुआ था - लेकिन
तब तक मुहम्मद को मरे हुए 2 वर्ष हो चुके थे यदि समय सही हो)।
4. हाफिज। 625 ई. में विवाह हुआ। वह 18 वर्ष की थी, वह उससे 55 - 37 वर्ष बड़ी थी।
5. ओमे सलमेह 626 में। वह 29 वर्ष की थी, वह 56 वर्ष की थी - उम्र का अंतर 27 वर्ष।
6. ज़ैनब - 626 ई. में भी। वह 30 साल की थी - उम्र का अंतर 26 साल।
7. जोरीह - युद्ध लूट के रूप में लिया गया, और 627 ईस्वी में अपनी जनजाति को मुक्त करने के लिए उससे विवाह किया। वह 20 वर्ष की थी, वह 57 -
37 साल का अंतर।
8. ज़ैनब - उस नाम के साथ एक और। ६२८ ईस्वी में विवाहित - वह 38 वर्ष, वह 58 = 20 वर्ष
अंतर। उसने अपने दत्तक पुत्र ज़ैद से शादी की थी, लेकिन मुहम्मद से शादी करने के लिए ज़ैद को तलाक दे दिया।
भले ही मुसलमान यहां नैतिक सवालों को हल करने की पूरी कोशिश करते हैं, यह एक काला है
आयशा के साथ पीडोफिलिक कहानी के रूप में लगभग उतना ही बुरा है, आंशिक रूप से क्योंकि अरब में यह था
अनाचार होने के लिए फिर से। साथ ही जो "स्पष्टीकरण" दिया गया था - कि मुहम्मद ने उससे शादी की थी
यह दिखाने के लिए कि एक आदमी एक दत्तक पुत्र की तलाकशुदा पत्नी से शादी कर सकता है - बहुत लंगड़ा था और
थोड़ा बुद्धिमान (एक "प्रकट" कविता ने ऐसा ही किया था - और कितना जरूरी था a
प्रदर्शन? - आखिरकार ऐसा अक्सर नहीं होता है और उसकी बहू शादी करना चाहती है।)
9.. रामलेह- वह भी 628 ई.
10. सफीजा - 628 ई. में एक बार फिर। कुछ दिन पहले ही उसकी शादी हुई थी, लेकिन मुहम्मद ने हमला कर दिया
उनका घर (खैबर)। उसके परिवार को मार दिया गया या गुलाम बना लिया गया और पति किनाना को यातना दी गई
मौत उसे पैसे के बारे में बताने के लिए मजबूर करने के लिए मुहम्मद का मानना था कि उनके पास था, जो मुहम्मद
चोरी करना चाहता था, और उसी रात वह उसे अपने डेरे में ले गया और उसके साथ बलात्कार किया - कहानी करती है
यह नहीं बताया कि कितनी बार, और उसका एक आदमी मदद करने के लिए बाहर पहरा दे रहा था
मुहम्मद अगर उसने इतना विरोध किया कि यह उसके लिए खतरनाक हो सकता है। उसने उससे शादी की
कुछ ही समय बाद। सफीजा सिर्फ 17 साल के थे, मुहम्मद ने कहा कि लगभग 60 - हाँ, सबसे अधिक संभावना है कि एक अच्छा
उसके लिए अनुभव - - - और इस्लामी बयान के लिए एक गंभीर प्रश्न चिह्न है कि

मुहम्मद पाप से मुक्त थे।

11. मैमूनेह - 628 इस्वी में अंतिम। वह उनसे 27 साल - 31 साल छोटी थीं।

पहली बार अपवाद के साथ - अमीर विधवा - वह बहुत छोटी पत्नियों को पसंद करती थी - 20 . से
खुद से 47 साल छोटा।

मुहम्मद की रखैलें:

1. मेरीह। मिस्र के राजा (?) से मुहम्मद को उपहार के रूप में दिया गया एक मिस्र का काला गुलाम। वह पुत्र इब्राहिम को मिला, परन्तु वह लगभग 1 वर्ष का हो गया। मारीह कॉप्टिक ईसाई थे, और ऐसा कहा जाता है जिस कारण से उसने उससे शादी करने से इनकार कर दिया, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह चाहता था, वह थी अपना धर्म छोड़कर मुसलमान बनने से इंकार कर दिया।

2. रेहाना बिन्त अमर। सफीजा की तरह उसे भी गुलामी में ले जाया गया और सफिज्जा की तरह बलात्कार किया गया (सफीजा से एक साल पहले) - उसके परिवार के मारे जाने या गुलाम होने के बाद जैसा कि ऊपर कहा गया है। ("बिंट" = "की बेटी")। लेकिन सफीजा के विपरीत रैहाना ने बाद में उनसे शादी करने से इनकार कर दिया।

मुहम्मद की कम समय की पत्नियाँ:

1. अस्मा बिन्त नेमन।
2. घोतिलेह बिन्त घैसे
3. मलाइके बिन्त काब।
4. तुला जंदेब बिन्त दमारेह।
5. फातिमा बिन्त सहक।
6. ओमरेह बिन्त यज़ीद।
7. आयलेह बिन्त ज़ोबयान।
8. सबा बिन्त सोफ़यान।
9. नेशा बिन्त रफ़ीह।
10. ग़ज़ीह बिन्त जबेर।
11. फातिमा बिन्त शोरेह।
12. सना बिन्त सलीम।
13. अलशानबा बिन्त उमर।
14. खोले बिन्त अलहवील।
15. शार्ग बिन्त खलीफे।
16. कोल्लेह बिन्त हकीम।

महिलाएं जो मुहम्मद से विवाहित (औपचारिक रूप से) हो भी सकती हैं और नहीं भी:

1. हबीबेह बिन्त सहल।
2. लैली बिन्त खतेम।
3. ओमेह बिन्त अबी तालेब।
4. दोबेह बिन्त आमिर।
5. सफ़ीह बिम्त बेशामेह।
6. इमरेह या इमामेह बिन्त हफ़्ज़े।
7. ओमेह हबीब बिन्त अलबास।

ये वही हैं जिन्हें नाम से जाना जाता है। जैसा कि कहा गया है कि यह ज्ञात नहीं है कि उसने अधिक बलात्कार किया या नहीं
दास या युद्धबंदी या अन्य तरीकों से अन्य महिलाएं थीं।

मुहम्मद के पास कई महिलाओं को रखने के लिए अल्लाह से विशेष लाइसेंस था - कुछ ऐसा जो नहीं है
नबियों के लिए असामान्य - या "भविष्यद्वक्ताओं" - नए संप्रदायों या धर्मों के। कुछ "भविष्यद्वक्ताओं" को सेक्स पसंद है
और महिलाएं।

मुहम्मद के यौन जीवन के साथ एक और पक्ष है जिस पर मुसलमानों ने कभी चर्चा नहीं की: एक आदमी ने क्यों किया?
सेक्स पर इतना अधिक - जैसे बहुत से स्वघोषित "भविष्यद्वक्ताओं" - क्या इतने कम बच्चे हैं?

एक सिद्धांत यह है कि वह वास्तव में बाँझ था।

खैर, उनकी पहली पत्नी से कुछ बच्चे थे। इसके लिए 2 संभावित स्पष्टीकरण हैं:

1. वह किसी कारणवश बाद में बांझ हो गया।

2. या खदीजा से उसकी शादी एक औपचारिकता थी। इतिहास के माध्यम से ऐसे बहुत से मामले हैं जहां अमीर महिलाओं ने खुद को पति के साथ "कनेक्शन" करने में सक्षम होने के लिए एक एलिबी के रूप में खरीदा एक और दिलचस्प, लेकिन निषिद्ध आदमी। और एक अमीर आदमी की तुलना में एक गरीब आदमी खरीदना सस्ता था

एक - मुहम्मद उस समय एक गरीब आदमी थे। यहाँ यह भी याद रखना चाहिए कि इस्लाम से पहले अरब में यौन नैतिकता बहुत कम थी - सेक्स और शराब "दो" थे रमणीय चीजें"। एक और, गुप्त प्रेमी के लिए सक्षम होने के लिए एक व्यवस्थित विवाह का विचार उस समय असंभव से बहुत दूर होगा।

उनके रंगीन दास मारीह के साथ उनका एक बेटा भी था - एक बेटा जो जल्दी मर गया। यहाँ भी दो स्पष्टीकरण संभव हैं:

1. वह 100% बाँझ नहीं था, और एक बार बहुत भाग्यशाली परिस्थितियों में वह सफल हुआ।
2. या मारीह ने किसी को एक या एक से अधिक अंधेरी रातें दीं।

भाग XI, अध्याय 8 (= XI-8-0-0)

मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं

चोर / लुटेरा, निकालने वाला, गुलाम, और गुलाम व्यापारी मुहम्मद - स्वघोषित कुरान के पैगंबर, मुसलमानों, इस्लाम और अल्लाह

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया (बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मुहम्मद और उनके अनुयायी से चोरी/लूट, जबरन वसूली, दास लेने आदि से रहते थे 622 ई. में मदीना पहुंचने के कुछ ही समय बाद।

यह अध्याय 2010 ई. के बाद समाप्त नहीं होगा।

भाग XI, अध्याय 9 (= XI-9-0-0)

मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं

अमानवीय मुहम्मद - स्व- के घोषित पैगंबर

कुरान, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मुहम्मद ने ६२२ ईस्वी के बाद सत्ता हासिल करने के बाद अपने साथ कई अमानवीय पहलू दिखाए
-बलात्कार, गुलाम, अत्याचारी, पोषित, सामूहिक हत्यारा, दमन करने वाला, नफरत फैलाने वाला, एक महान युद्ध
लूट के लिए छापेमारी में मारे गए पतियों और अन्य लोगों को दुखी करने के लिए अनुयायियों को प्रतिबंधित करना, या
मुहम्मद और अल्लाह के लिए सत्ता का बदला, आदि। मुसलमान समझाते हैं कि वह नहीं था
उस समय अरब में अन्य राजमार्ग लुटेरों, लुटेरों, और सरदारों से भी बदतर।
यह सच हो सकता है, लेकिन वह निश्चित रूप से बेहतर नहीं था - - - और उसने एक का प्रतिनिधित्व करने का नाटक किया (?)
दयालु भगवान।

यह अध्याय 2010 ई. के बाद समाप्त नहीं होगा।

अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अकादमी (ऐसे विषयों पर मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक) a . में
पत्र दिनांक २७. दिसम्बर १९९८, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं,
और यह कि उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि इसके लिए कोई प्रमाण नहीं है
अल्लाह और उसे साबित करना असंभव है, स्वचालित रूप से इसका कोई सबूत नहीं है, और असंभव है
अल्लाह से मुहम्मद के कथित संबंध को साबित करें। अगर कोई अल्लाह और/या कोई संबंध नहीं है
मुहम्मद और एक ईश्वर के बीच, फिर इस्लाम क्या है?

भाग XI, अध्याय 10 (= XI-10-0-0)

मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं

मुहम्मद; सत्ता की उसकी लालसा, और उसकी शक्ति का मंच: The

कुरान, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मुहम्मद ने ६२२ ईस्वी के बाद सत्ता हासिल करने के बाद अपने साथ कई अमानवीय पहलू दिखाए
-बलात्कार, गुलाम, अत्याचारी, पोषित, सामूहिक हत्यारा, दमन करने वाला, नफरत फैलाने वाला, एक महान युद्ध
लूट के लिए छापेमारी में मारे गए पतियों और अन्य लोगों को दुखी करने के लिए अनुयायियों को प्रतिबंधित करना, या
मुहम्मद और अल्लाह के लिए सत्ता का बदला, आदि। मुसलमान समझाते हैं कि वह नहीं था

उस समय अरब में अन्य राजमार्ग लुटेरों, लुटेरों, और सरदारों से भी बदतर।
यह सच हो सकता है, लेकिन वह निश्चित रूप से बेहतर नहीं था - - - और उसने एक का प्रतिनिधित्व करने का नाटक किया (?)
दयालु भगवान।

सत्ता के लिए मुहम्मद की लालसा कुरान और हदीस दोनों से आसानी से देखी जा सकती है। और एक

धर्म - नया या पुराना - कई लोगों के लिए शक्ति का मंच रहा है और कई भविष्यवक्ता
था "पैगंबर"।

यह अध्याय 2010 ई. के बाद समाप्त नहीं होगा।

भाग XI, अध्याय 11 (= XI-11-0-0)

मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं

हत्यारे मुहम्मद - के स्वयंभू पैगंबर कुरान, मुसलमान, इस्लाम, और ओ.एफ दयालु भगवान अल्लाह

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

प्रासंगिक साहित्य बताता है कि मुहम्मद ने 26 विरोधियों की हत्या कर दी थी। इब्न इशाक के नाम १०
उन्हें। इसके अलावा अन्य सभी हत्याएं हुईं।

यह अध्याय 2010 ई. के बाद समाप्त नहीं होगा।

भाग XI, अध्याय 12 (= XI-12-0-0)

मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं

मुहम्मद और उनके छापे मुख्य रूप से धन के लिए जबकि भविष्यवक्ता के लिए कुरान, मुसलमान, इस्लाम, और

अल्लाह - - - और "धर्म" के लिए शांति की"!!

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मुहम्मद और उनके अनुयायी मुख्य रूप से सीए से चोरी / लूट और जबरन वसूली से रहते थे। 622
ई. इब्न इशाक ने 43 छापे नाम दिए - लेकिन और भी हैं (आप संख्या 63 छापे, लड़ाइयाँ मिलेंगे,
या युद्ध, और आप संख्या 82 "एपिसोड" से मिलेंगे) - मुख्य रूप से लूटने के लिए, लेकिन कुछ के लिए भी
विरोधियों को मारना। मुहम्मद ने स्वयं कुछ छापों का नेतृत्व किया।

यह अध्याय 2010 ईस्वी के बाद समाप्त नहीं होगा, लेकिन यहां ज्ञात ऐसे छापों की एक सूची है।

(सावधान रहें कि विरोधियों की हत्या के लिए भी छापेमारी + उसके युद्ध इस सूची में शामिल हैं)।

ध्यान दें: सावधान रहें कि घटनाओं का क्रम हमेशा 100% सही नहीं हो सकता है। इस
आंशिक रूप से क्योंकि कभी-कभी चीजें कब हुईं, इसके बारे में परस्पर विरोधी जानकारी होती है,
और आंशिक रूप से क्योंकि कभी-कभी हम केवल वर्ष जानते हैं, लेकिन नहीं कि वर्ष में कब चीजें होती हैं
हुआ, और फिर अनुमान लगाना होगा कि पहले क्या हुआ और आखिरी में क्या हुआ। लेकिन अगर वहाँ हैं
गलतियाँ, वे बड़ी नहीं हैं।

वर्ष (ई.)	स्थान या व्यक्ति हमला किया।	द्वारा नेतृत्व।	प्रयोजन।
623	वड्डन	मुहम्मद	लूट।
623	निचला थानियातुल-मारा	उबैदा ब अल-हरिथ	लूट।
623	अल-'इस तट पर'	हमजा बी अब्दुल- मुत्तलिब रॉबिंग।	
623	बुवाटो	मुहम्मद	लूटना।
623	उषायरा	मुहम्मद	लूट।
623	अल-खररारी	साद बी. अबू वक्कासी	लूट।
623	सफवान (1. छापेमारी बद्र)	मुहम्मद	बदला, माल वापस लेना। पीछा करना कुर्ज़ बी. जबीरो
623	दुल-'आशिरो	?	?
623?	नखला (बहरान)	अब्दुल्ला बी. जाह्श बी. रियाबी अल-असदी	जासूसी, लूट।

624, जनवरी।	बद्री की लड़ाई	मुहम्मद	लूट का इरादा, सेना से मिले।
624	काब बी. अल अशरफ	मुहम्मद बी. मालामा	हत्या।
624?	अल-क़रादा	जायद बी. हरिथा	लूट।
624	बानी सलीम	मुहम्मद	लूटना
624	"ईद/ज़कात-उल-फ़ित्र"		
६२४, फ़र.	बानी क़ाइनुगा	मुहम्मद	यहूदियों को मारें या निष्कासित करें और उन्हें लूटें।
624	साविकी	अबू सफ्यान b.हरबी	लूटना
624	गहतफान (धू अमर) मुहम्मद		लूट।
624	बहरानी	मुहम्मद	लूटना
625	उहुडो	मुहम्मद	के युद्ध में रक्षा की लड़ाई आक्रमण
625	हमरा-उल-असदी		

६२५, जून	बानू नादिरो	मुहम्मद	यहूदियों को मारो, निष्कासित करो, लूटो
625	धातुल-नखली का रिका	मुहम्मद	लूट।
626	बद्र – 3. छापे	मुहम्मद	अबू सुफियान से मिलें
626	बदरू-उखरस		
626	दुमातुल-जंडाली	मुहम्मद	लूटना
627, फरवरी।	खाई (मदीना)	मुहम्मद	आक्रमण के युद्ध में रक्षा
627	अहज़ाब		
६२७, जुलूस	बानी कुरैज़ा	मुहम्मद	रोब यहूदी।
627	बानी लाहनी	मुहम्मद	बदला लेना और लूटना।
627	घईबा		
६२७?(६२८?) बानो मुस्तलक निकाह मुहम्मद			यहूदियों को मारो, निष्कासित करो, लूटो।

627, अगस्त।	ख़ैबरी	मुहम्मद	यहूदियों को मारो, गुलाम बनाओ, लूटो।
628	अल-हुदैबिया	मुहम्मद	युद्ध का इरादा नहीं है लेकिन शायद उत्तेजना
629	ख़ैबरी	मुहम्मद	यहूदियों को मारो, लूटो, गुलाम बनाओ।
630, जनवरी।	मक्का	मुहम्मद	विजय।
६३०, फ़र.	हुनैन (हुन्सिन?)	मुहम्मद	
630	औरसो		
630	तैफ	मुहम्मद	विजय।
६३०, सितम्बर ताबुकी		मुहम्मद	पूर्व-खाली हमला।

सभी एक साथ 40.

इसके अलावा ऐसे भी हैं जहां हमारे पास वर्ष नहीं है:

मुहम्मद द्वारा नेतृत्व और भाग लिया:

? अल-खांडक मुहम्मद रॉबिंग।

इब्न इशाक बताता है (पृष्ठ ६५९) कि मुहम्मद ने व्यक्तिगत रूप से २६ लड़ाइयों और छापों में भाग लिया (अधिकांश छापेमारी)। "शांति के धर्म" के लिए एक अच्छी मूर्ति।

अन्य मुसलमानों के नेतृत्व में:

? बीर मौना	अल-मुंधीर बी. अम्र	लूट।
? धुल-क़स्सा	अबू उबैदा बी. अल-जर्राह	लूट।
? टर्बा	उमर बी. अल Khattab	लूट।
? यमनी	अली बी. अबू तालिब	लूट।
? अल-कदीदो	गालिब बी. अब्दुल्ला अल-कल्बी डकैती।	
? जुधम	जायद बी. हरिथा	लूट।
? वाडील-कुरा - b.Fazar	जायद बी. हरिथा	लूट।
? ख़ैबर (अल-उसय्यर बी.रिज़ाम) अब्दुल्लाह बी. रावाहः		हत्या।

? खैबर - एक और छापा	अब्दुल्ला बी. रावाहः	लूट।
? खालिद बी. सुफियान बी. नुबैह अब्दुल्ला B. Unays		हत्या।
? बी अल-अनबारी	उयना बी. वह, न	लूट।
? बी मुर्रास	गालिब बी. अब्दुल्ला	लूट।
? धातु-सलादीली	अमर बी. अल-'असो	सीरिया में युद्ध के लिए सहयोगियों को प्राप्त करें।
? इदामो की घाटी	इब्न अबू हदरादी	लूट।
? रिफा बी. क़ैस अल-जुशामी	इब्न अबू हदरादी	हत्या।
? डुमारू-अल-जंडाली	अब्दुल-रमन बी. 'औफ'	डकैती।
? अबू अफ़ाकी	सलीम बी. 'उमायरी'	हत्या।
? 'अस्मा' डी. मरवन	उमर बी. 'आसिया'	हत्या।
? थुमामा बी. अतल अल-हनफ़ी मुस्लिम घुड़सवार सेना		अभी सोचा नही है।
? ?	अलकामा बी. मुजाज़ीज़	बदला।
? बाजिलिसो	कुर्ज़ बी. जबीरो	बदला।
? यमन, 2. छापे	अली बी. अबू तालिब	लूट।
? बलका'+ अल-दारुम, फ़िलिस्तीन उसामा b. ज़ैद		लूट।

सभी एक साथ 23.

ये 63 लड़ाइयाँ और छापे हैं - मुख्य रूप से छापे - हम नाम खोजने में सफल रहे हैं। लेकिन 63 इंच
कुछ 9 साल - 7 साल - हर दूसरे महीने में एक से ज्यादा - बहुत बुरा नहीं है। (और भी बदतर:
साहित्य एक साथ 82 के बारे में बात करता है = मामले में 9 साल)। विशेष रूप से "धर्म" के लिए ऐसा नहीं है
शांति"।

और कुछ और भी हो सकते हैं जो हमें नहीं मिले हैं, कम से कम जब लूट के लिए छापे मारने की बात आती है।

और: व्यावहारिक रूप से वे सभी मुहम्मद की आक्रामकता का परिणाम थे (कुछ ही थे)

अपवाद), और शायद ही उनमें से कोई भी वास्तव में रक्षा करता है। यहां तक कि बद्र, उहुद और द ट्रेंच/मदीना
आक्रमण के युद्ध में रक्षा की लड़ाई शुरू हुई और मुहम्मद के छापे द्वारा जीवित रखी गई
पैसा, गुलाम और कीमती सामान।

(मुख्य स्रोत: मुहम्मद इब्न shaq "मुहम्मद का जीवन"। लेकिन यह भी
www.islamist.dk/forum/showthread.php?t=588 और http://terror-

watch.net/modules.php?name=Forums&file=viewtopic&p=4908&sid=dff और
http://www.usc.edu/dept/MSA/history/chronology/)।

ए पीएस: अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अनुसंधान अकादमी (इस तरह मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक
विषयों) दिनांक २७. दिसंबर १९९८ के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं
अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि
अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे पेशाब करना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत नहीं है
के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है। अगर कोई अल्लाह नहीं है
और/या मुहम्मद और एक भगवान के बीच कोई संबंध नहीं, "जिहाद" मौजूद नहीं है - केवल दस्यु!
और युद्ध।

भाग XI, अध्याय 13 (= XI-13-0-0)

मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं

जिहाद। मुहम्मद के युद्ध - कुरान के पैगंबर, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

मुहम्मद ने कुछ युद्धों का नेतृत्व किया। वे सभी (यहां तक कि लूट और गुलामों के लिए उनके छापे भी) जिहाद कहलाते थे -
पवित्र युद्ध - वास्तव में आक्रमण के युद्ध होने के बावजूद, वास्तविक आत्मरक्षा के नहीं। (और भी
बद्र, उहुद और मदीना/ट्रेंच की लड़ाई वास्तव में के युद्ध में रक्षा लड़ाई थी
आक्रमण शुरू हुआ और मुहम्मद के छापे, लूट और जबरन वसूली से जीवित रहा)।

वास्तविक युद्ध युद्ध थे - या वास्तव में युद्ध - मक्का के साथ उकसाया गया और जीवित रखा गया
मुहम्मद द्वारा मक्का से आने-जाने वाले कारवां आदि को लूटना
बद्र, उहुद और मदीना (जिसे खाई की लड़ाई भी कहा जाता है)। तब की लड़ाई हुई थी
हुनयन जिसे वास्तविक युद्ध कहा जा सकता है। ताबूक की ओर मार्च एक युद्ध साबित हुआ जो
कभी शुरू नहीं किया।

बाकी सिर्फ छापेमारी थी - ज्यादातर चोरी करने, लूटने, जबरन वसूली और गुलाम बनाने के लिए।

यह अध्याय 2010 ई. के बाद समाप्त नहीं होगा।

अल-अजहर अल-शरीफ इस्लामिक रिसर्च द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में अकादमी (ऐसे विषयों पर मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक) a . में
पत्र दिनांक २७. दिसम्बर १९९८, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं,
और यह कि उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि इसके लिए कोई प्रमाण नहीं है
अल्लाह और उसे साबित करना असंभव है, स्वचालित रूप से इसका कोई सबूत नहीं है, और असंभव है

पेज 1110

अल्लाह से मुहम्मद के कथित संबंध को साबित करें। अगर कोई अल्लाह और/या कोई संबंध नहीं है
मुहम्मद और एक ईश्वर के बीच, फिर इस्लाम क्या है?

भाग XI, अध्याय 14 (= XI-14-0-0)

**मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका
मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक
चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं**

मुहम्मद - स्वयं - के घोषित पैगंबर कुरान, मुसलमान, इस्लाम, और अल्लाह - उसका नैतिक, नैतिकता, और सफलता से नष्ट हुई सहानुभूति, शक्ति और अहंकार?

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

ऐसा कुछ वैज्ञानिक मानते हैं - - - अगर वह हमेशा से ऐसा नहीं था, लेकिन तब तक छिपा रहा जब तक
काफी शक्तिशाली हो गया।

यह अध्याय 2010 ई. के बाद समाप्त नहीं होगा।

मुहम्मद के साथ इन पहलुओं के बारे में जितना लिखा गया है, हमारे
उसके बारे में अध्याय केवल छोटे होंगे - - - लेकिन सही के साथ
जानकारी।

भाग XI, अध्याय 15 (= XI-15-0-0)

**मुहम्मद का जीवन - और उसका कुरान, उसका इस्लाम और उसका
मुस्लिम: ऐतिहासिक मुहम्मद - कुछ हद तक
चमकदार तस्वीर से अलग मुसलमान रंगना पसंद करते हैं**

के जीवन में दिनांक और वर्ष मुहम्मद, स्वघोषित उनके नबी कुरान, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह

पेज 1111

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं

एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

(उसके कुछ छापे आदि के वर्ष यहां शामिल हैं। बाकी के लिए अलग देखें
"मुहम्मद" के तहत सूची; मुख्य रूप से धन के लिए उनके छापे - - -"।)

ध्यान दें: सावधान रहें कि घटनाओं का क्रम हमेशा 100% सही नहीं हो सकता है। इस
आंशिक रूप से क्योंकि कभी-कभी चीजें कब हुईं, इसके बारे में परस्पर विरोधी जानकारी होती है,
और आंशिक रूप से क्योंकि कभी-कभी हम केवल वर्ष जानते हैं, लेकिन नहीं कि वर्ष में कब चीजें होती हैं
हुआ, और फिर अनुमान लगाना होगा कि पहले क्या हुआ और आखिरी में क्या हुआ। लेकिन अगर वहाँ हैं
गलतियाँ, वे बड़ी नहीं हैं। हम विशेष रूप से उल्लेख करते हैं कि मुहम्मद के विवाह के लिए हम अनुसरण करते हैं
डॉ. होमा दराबी फाउंडेशन की सूची - अन्य स्रोत कुछ अलग जानकारी दे सकते हैं,
लेकिन अनिवार्य रूप से ऐसा नहीं है।

570 ई., गर्मियों में मुहम्मद के पिता अब्दुल्ला की मृत्यु हो गई।

५७० ई., अगस्त	मुहम्मद का जन्म उनके पिता की मृत्यु के कुछ सप्ताह बाद हुआ है। (कुछ - अधिकतर मुस्लिम - सूत्रों का कहना है कि उनका जन्म 569 में हुआ था, और कुछ का कहना है कि 571)। यह संभावना है उसे अमीन नाम मिला (उसकी माँ अमीना डी। वहब के बाद), और वह मुहम्मद नाम बाद में आया।
५७० ई	उसकी देखभाल बेडौइन महिला हलीमा करती है। (काफी सामान्य "बेहतर" परिवारों के बच्चे क्योंकि एक का मानना था कि रेगिस्तान में जीवन बेहतर था शहर की तुलना में बच्चों के लिए)।
५७६ ई	वह अपनी मां अमीना के पास वापस आ गया है।
576 ईस्वी (या 577?)	उसकी माँ मर जाती है। उनके दादा 'अब्दुल-मुत्तलिब ने 6 साल तक देखभाल की बूढ़ा बच्चा। मुस्लिम इतिहास के अनुसार उन्होंने एक अच्छा और प्यार भरा काम किया।
५७८ ई	अब्दुल-मुत्तलिब मर जाता है। (कुछ सूत्रों का कहना है 580)। 578 ई. में मुहम्मद 8 साल था। मुहम्मद के चाचा अबू तालिब ने लड़के की देखभाल की। साथ ही अबू तालिब एक अच्छे कार्यवाहक प्रतीत होते हैं।
५८३ ई	व्यापारिक कारवां के साथ सीरिया की उनकी पहली यात्रा - 13 साल पुरानी।
५८६ ई	मुहम्मद ने फिजर के युद्ध में भाग लिया - प्रतिष्ठित रूप से थोड़े सम्मान के साथ।
५९१ ई	कहा जाता है कि मुहम्मद "हिलफुल फुदुल" का सक्रिय सदस्य बन गया - एक समूह पीड़ितों की राहत के लिए। अगर यह सच है, तो यह उसके अनुसार है मक्का में १२ साल का प्रचार (जो १९ साल बाद शुरू हुआ)।
५९४ ई	मुहम्मद विधवा खदीजा के लिए काम करता है - कुछ सूत्रों का कहना है कि a चरनी, कुछ उसे पदानुक्रम में और नीचे रखते हैं।
५९५ ई	मुहम्मद अपने नियोक्ता खदीजा से शादी करता है। वह 25 वर्ष का था, वह 40. (वहां है एक संभावना है कि वह कुछ छोटी थी)।
५९५ ई	सीरिया की उनकी दूसरी यात्रा।
५९८ ई	उसका बेटा, कासिम, पैदा हुआ, लेकिन जल्दी मर गया (कुछ सूत्रों का कहना है कि उसके 2 बेटे थे खदीजा के साथ, लेकिन दोनों जल्दी मर गए)।
600 ईस्वी	उनकी बेटी ज़ैनब का जन्म हुआ है।
603 ई	उनकी बेटी उम-ए-कलथुम का जन्म हुआ है।
604 ईस्वी	उनकी बेटी रयक़य्या का जन्म हुआ है।
605 ई	उनकी बेटी फातिमा का जन्म हुआ है। वह अपने बच्चों की इकलौती थी कि वह बच गया और केवल थोड़े समय के लिए।

१११११

पेज 1112

605 ई	पहली बार मुहम्मद ने खुद को टिप्पणी की: वह एक गंभीर हल करता है मुस्लिमों के अनुसार, काबा मंदिर के जीर्णोद्धार के दौरान विवाद इतिहास - बाद में इस्लाम के लिए मुख्य मस्जिद।
610 ईस्वी	मुहम्मद का दावा है कि उनकी पहली मुलाकात महादूत गेब्रियल से हुई है (अरब: जिब्रील) - माउंट पर एक गुफा में। हीरा मक्का के बाहर कुछ दूरी पर है।
६१३ ईस्वी	मुहम्मद का इस्लाम का पहला सार्वजनिक उपदेश। उसे कुछ अनुयायी मिलते हैं।
614 ईस्वी	मुहम्मद ने हाशिमियों को मुसलमान बनने के लिए आमंत्रित किया।
६१५ ईस्वी	मुहम्मद के नए धर्म का विरोध इतना मजबूत हो गया कि उनके कुछ अनुयायी पूर्वी अफ्रीका के एबिसिनिया भाग गए। (इसे कहा जाता है

पहला हिज्र)।

६१६ ई	एक दूसरा समूह एबिसिनिया के लिए रवाना होता है।
६१७ ई	कुरैश द्वारा मुहम्मद और उनके अनुयायियों का सामाजिक बहिष्कार मक्का में प्रमुख जनजाति।
619 ई	बहिष्कार हटा दिया गया है।
619 ई	मुहम्मद के चाचा अबू तालिब की मृत्यु हो गई। यह अतिरिक्त गंभीर था क्योंकि अबू मुहम्मद की सुरक्षा की गारंटी तालिब थी। (पुराने अरब में इसने काम किया इस तरह: आप एक समूह या जनजाति, और समूह और उसके नेता के थे अगर किसी ने आपको चोट पहुंचाई तो बदला लेने की गारंटी। लेकिन बाद में नया नेता अबू तालिब ने मुहम्मद की बहुत कम परवाह की।)
६१९ ई.,	दिसम्बर खदीजा मर जाता है।
620 ई.,	फरवरी। मुहम्मद ने सौदा से शादी की (एनबी: लैटिन अक्षरों का उपयोग करते समय, अरबी नामों को एक अनुवाद से कुछ अलग तरीके से लिखा जा सकता है (या प्रतिलेखन) दूसरे के लिए)। (सूत्र कह रहे हैं कि यह शादी थी 619 में, लेकिन अगर देस में खदीजा की मृत्यु हो गई। 619, यह असंभव है - यह हुआ खदीजा की मृत्यु के बाद)। जैसा कि इस्लाम मुहम्मद के विवाह का दावा करता है खदिया बहुत खुश थे, उल्लेखनीय है कि वह उसकी मृत्यु के 2-3 महीने बाद ही पुनर्विवाह कर लिया - यह भले ही a शादी को अरेंज करने में हमेशा कुछ समय लगता है। उसने शुरू किया होगा खदीजा की मृत्यु के तुरंत बाद - या उससे पहले की तैयारी। वह हो सकता है या हो सकता है अपनी पहली और बड़ी पत्नी को दुखी नहीं किया - केवल मुस्लिम स्रोत हैं, और उनका दावा है कि खदीजा से शादी एक खुशहाल थी।
620 ई	मुहम्मद का असली या सपना - इस्लाम नहीं जानता कौन - "रात" यात्रा ”स्वर्ग के लिए। आयशा के बाद हदीसें कहती हैं कि यह एक सपना था।
620 ई	5 प्रार्थना एक दिन संस्थागत है।
६२१ ई., अप्रैल	मुहम्मद यथ्रिब (बाद में नाम बदलकर मदीना) से 12 तीर्थयात्रियों से मिलते हैं। इस कनेक्शन की शुरुआत है जो बाद में यत्रिब की ओर भागने की ओर ले जाती है जब हा को 622 ई. में मक्का छोड़ना पड़ा।
६२१ ई	1. अकाबा में प्रतिज्ञा।
६२२ ई	2. अकाबा में प्रतिज्ञा।
६२२ ई., जून	मुहम्मद और उनके एकमात्र साथी, अबू बक्र, यत्रिब पहुंचे।
६२३ ई	वडुन की लड़ाई (एनबी: "लड़ाई" कभी-कभी वास्तविकता में केवल छोटी होती थी चीजें - झड़पें या छापे)।
६२३ ई	सफवान की लड़ाई।
६२३ ई	दुल-'आशीर का युद्ध।

६२३ ई	मुहम्मद 6 साल की बेटी आयशा से शादी करता है अगर उसका दोस्त और सह- कार्यकर्ता - और बाद में पहला खलीफा - अबू बक्र। यह हदीसों में बताया (f. पूर्व. अल-बुखारी) कि सेक्स "केवल" 3 साल बाद शुरू हुआ - जब वह 9 वर्ष की थी। (यह है यही कारण है कि कई मुस्लिम धर्मगुरु विवाह और संबंधित पाते हैं लड़की से सेक्स ठीक 9 है)। कई उसके साथ यौन संबंध रखने के लिए नकारात्मक प्रतिक्रिया करते हैं एक 9 साल का बच्चा। लेकिन नकारात्मक प्रतिक्रिया करने का और क्या कारण है, वह यह है कि वह बचपन में उसके साथ यौन संबंध रखता था, और वह a 632 ईसवी में उनकी मृत्यु तक बच्चे उन सभी वर्षों में उनकी पसंदीदा पत्नी थे - जो आयशा थी। (हदीस से हम जानते हैं कि जैसा कहा गया है वह ६ साल की थी जब उसने शादी की। अगर यह ६२३ में था, तो इसका मतलब है कि वह केवल १५ साल की थी जब मुहम्मद की मृत्यु हो गई (और बाद में पुनर्विवाह नहीं कर सका))।
623 ई., नवम्बर.	नमाज़ की दिशा यरुशलम से बदलकर मक्का में काबा कर दी गई है।
६२४ ई	मुहम्मद ने वित्त पोषण के लिए लूट और जबरन वसूली की छापेमारी शुरू की आंदोलन (जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, पहले कुछ छिटपुट छापे मारे गए थे)।
624 ई., जनवरी?	बद्र की लड़ाई (मक्का और उसके नेतृत्व के खिलाफ 3 मुख्य लड़ाइयों में से पहली) जनजाति, कुरैश।)
624 ई., जनवरी.	महिला कवयित्री अस्मा बिन्त मारवान की हत्या कर दी गई - उन्होंने इसका विरोध किया मुहम्मद.

६२४, फ़र.	[illegible] कहा जाता है .) उनमें से)।
६२४, फ़र.	क़ैनुका की लड़ाई। (यहूदी जनजाति बानी क़ैनुका का निष्कासन मदीना)।
624, जुलाई	कवि काब इब्न अल-अशरफ की हत्या कर दी गई है।
624, जुलाई	मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को यहूदियों को मारने की सलाह दी।
624	जकात - गरीब कर - अनिवार्य हो जाता है। जकात - 0% से 10%, लेकिन ज्यादातर 2.5% - मुहम्मद को भुगतान किया गया था। यह था और माना जाता है से नहीं आपकी आय, लेकिन आपकी कुल संपत्ति से। "गरीब-कर" नाम है भ्रामक, क्योंकि पैसा - और अभी भी - 5 अलग-अलग के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है चीजें, धर्म को आगे बढ़ाने और युद्ध छेड़ने के लिए शामिल हैं।
624	बानी सलीम की लड़ाई।
624	"ईद-उल-फितर" (एक धार्मिक समारोह का नाम) और "जकात-उल-फितर" की लड़ाई (ईद-उल-फितर से जुड़े एक विशेष कर का नाम)।
624	साविक की लड़ाई।
624	घाटफान की लड़ाई।
624	बहरान की लड़ाई।
625, जनवरी।	उहुद की लड़ाई। मक्का और कुरैश के साथ दूसरी मुख्य लड़ाई। मुहम्मद यह लड़ाई हार गए, लेकिन मक्का ने समय पर इसका पालन नहीं किया।
625, अप्रैल।	मुहम्मद के आदेश पर खालिद इब्न सुफियान की हत्या कर दी गई।
625	मुहम्मद ने हफ़्ज़ेह से शादी की, जो मुहम्मद के एक अन्य करीबी की बेटी थी दोस्त और सहकर्मी, उमर (या उमर) इब्न खताब (बाद में दूसरा .) खलीफा)।
625	बीर मौना में 70 मुस्लिम मारे गए।
625	हमरा-अल-असद की लड़ाई।

625	बानू नादिर की लड़ाई - एक यहूदी जनजाति जिसे मदीना से खदेड़ दिया गया था।
625	धतूर-रीका का युद्ध।
626	बदरू-उखरा का युद्ध।
626	दमतुल-जंदल का युद्ध।
626	बानो मुस्तलक निकाह की लड़ाई।
626	मुहम्मद ने ओमे सलमेह से शादी की।
626	मुहम्मद ज़ैनब बिन्त खज़ीमेह से शादी करता है (वह कुछ महीने बाद मर जाती है)।
627, फरवरी।	खाई की लड़ाई (मदीना)। मक्का के साथ आखिरी बड़ी लड़ाई 630 ई. में मक्का की विजय। मदीना के चारों ओर एक बड़ी खाई ने बचाया मुसलमान।
627	अहज़ाब की लड़ाई।
627, मार्च	कुरैज़ा की लड़ाई। मुहम्मद ने रेहाना बिन्त अमर को पकड़ लिया और बलात्कार किया अपने परिवार के पुरुष हिस्से की हत्या करके और महिलाओं को बनाया और बच्चे गुलाम।
627	बानी लहयान की लड़ाई।
627	घैबा की लड़ाई।
627	मुहम्मद ने जोरीह बिन्त हार्स से शादी की।
627	मुहम्मद ने दूसरी ज़ैनब से शादी कर ली। वह उनके दत्तक पुत्र की पत्नी थी, ज़ैद, लेकिन मुहम्मद ने उसे तलाक देने के लिए कहा, ताकि वह - मुहम्मद - उससे शादी कर सकता था। इस्लाम में बहुत सारे "अच्छे" स्पष्टीकरण हैं कि यह क्यों था नैतिक नहीं, लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई इसे कैसे समझाने की कोशिश करता है - और इस्लाम ' "स्पष्टीकरण" लंगड़ा है और बुद्धिमान नहीं है - यह ज़ैद के खिलाफ विश्वासघात था - और पुराने अरब नियमों के अनुसार अनाचार।
627, दिसम्बर।	औरत उम्म क़िरफ़ा मुहम्मद के आदेश पर होने के कारण हत्या कर दी गई है 2 ऊंटों के बीच बंधे - जब उन्हें विपरीत दिशाओं में खदेड़ा गया, वह दो टुकड़ों में "विभाजित" थी। जैसा कि सभी जानते हैं, मुहम्मद थे

	एक अच्छे और परोपकारी भगवान का प्रतिनिधि।
627, दिसम्बर।	यहूदी सल्लम की हत्या कर दी गई है।
628, जनवरी यहूदी अल-यूसैर है हत्या कर दी	
628	मुहम्मद ने मक्का और कुरैशी के साथ हुदैबिया में संधि पर हस्ताक्षर किए १० साल की शांति और मुसलमानों के लिए ३ दिन हज में प्रवेश पर सहमति - तीर्थयात्रा - हर साल मक्का में मस्जिद काबा के लिए।
628, अगस्त।	खैबर की लड़ाई (या खैबर) - मदीना के उत्तर में एक यहूदी क्षेत्र। बाद में सभी पुरुष कैदी - कहीं 600 और 900 के बीच (अधिकांश संभावना सीए. 700) - हत्या कर दी गई, और सभी बच्चे और महिलाएं (कुछ .) 2000?) को गुलाम बनाया गया - - - और उनकी सारी संपत्ति चोरी हो गई, 20% के साथ - नए दास शामिल थे - मुहम्मद को (आधिकारिक तौर पर अल्लाह के लिए, the दयालु भगवान)।
628, अगस्त।	मुहम्मद ने किनाना को मौत के घाट उतार दिया है (अर्थात जब वह है तो वह उसका सिर काट देता है) लगभग मृत)। फिर उसी शाम उसने किनाना की 17 साल की बच्ची के साथ रेप किया विधवा, सफीजा बिन्त हुयाय। मुहम्मद लगभग ६० के हैं। (वह उससे शादी करता है बाद में)।

628	मुहम्मद ने विभिन्न राष्ट्राध्यक्षों को पत्र भेजकर उन्हें आमंत्रित किया मुसलमान बनें - लेकिन बहुत कम सफलता के साथ।
628	मुहम्मद रमीह (कॉलेड ओमेह हबीबे) से शादी करता है।
628	जैसा कि उल्लेख किया गया है, मुहम्मद ने 17 वर्षीय और नवविवाहित सफीजा बिन्त से शादी की है Huayay शीघ्र ही उसके पति की हत्या कर दी है, और के पुरुष भागों उसके परिवार ने उसके परिवार के बाकी लोगों (और खुद को) को गुलाम बना लिया। उसने बलात्कार किया उसी शाम उसने उसके पति किनाना को यातना देकर मौत के घाट उतार दिया था। और फिर कुछ हफ्ते बाद उससे शादी कर ली। जैसा कि सभी जानते हैं: मुहम्मद सिद्ध और पाप रहित था।
628	मुहम्मद ने मीमूनेह से शादी की - उनकी आखिरी लंबी शादी। (हम नहीं उनके कम समय के विवाह के लिए वर्ष हैं - जिन महिलाओं से उन्होंने शादी की, लेकिन कुछ ही समय बाद तलाक हो गया)।
628	शरणार्थी एबिसिनिया से लौटते हैं।
629	मुहम्मद और कई अनुयायी मक्का की तीर्थयात्रा - हज - करते हैं।
629	मक्का की घुड़सवार सेना के नेता, खालिद इब्न अल-वालिद, मक्का को रेगिस्तान और मुसलमान हो जाता है।
630, जनवरी।	मक्का की विजय - बल्कि शांति से, लेकिन मुहम्मद के पास "कुछ" थे व्यक्तिगत शत्रु मारे गए / मारे गए। "किताब अल-तबक़त अली" के अनुसार कबीर" इब्न साद द्वारा, खंड 2, पृष्ठ 168, वे ये 6 पुरुष और 4 महिलाएं थीं: 1. इकरीमा इब्न अबी जहल। 2. हब्बर इब्न अल-असवाद। 3. अब्द अल्लाह इब्न साद इब्न अबी सरह। 4. मिक्यास इब्न सबाबा अल-लैथी। 5. अल-हुवेरिथ इब्न नुक़ायद। 6. अब्द अब्बा इब्न हिलाल इब्न खतेल अल-अद्रमी ("इब्न खतेल")। 7. हिंद बिन्त उत्बा। 8. सारा (अमर इबू हाशिम की मताधिकारी लड़की)। 9. फरताना। 10. क़रीबा। इब्न खतेल की हत्या कर दी गई थी, भले ही वह पवित्र काबाही में खड़ा था वहाँ एक पवित्र चिलमन को पकड़े हुए - यह मुहम्मद के विशेष आदेश पर। मुहम्मद ने पवित्र चीजों (या समय) का सम्मान नहीं किया जब तक कि यह उनके अनुकूल न हो।
630	हुन्सिन की लड़ाई (या हुनैन)।
६३०, अप्रैल	मुहम्मद के बेटे इब्राहिम का जन्म उनके काले गुलाम मारीह से हुआ है। (इब्राहिम मर जाता है

लगभग एक साल बाद, जून 631 ईस्वी में।)

631	मुसलामा इब्न हबीब एक नबी होने का दावा करता है, लेकिन उसे मार दिया जाता है।
631	ताबुक के लिए अभियान।
631	प्रतिनियुक्ति का वर्ष।
632, मार्च	मुहम्मद मक्का के लिए "विदाई तीर्थ" बनाता है।
६३२, जून	मुहम्मद मदीना में मर जाता है। (विषाक्तता के बारे में अटकलें मौजूद हैं, लेकिन हमने इसके लिए कोई वास्तविक संकेत नहीं देखा है)।

(स्रोत: "धन के लिए मुहम्मद के छापे" के समान)

एक अतिरिक्त बिंदु: अल-अजहर अल-शरीफ द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक .)
ऐसे विषय) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं
अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि
अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है
के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है। अगर अल्लाह पर है
और/या यदि मुहम्मद और ईश्वर के बीच कोई संबंध नहीं था तो इनमें से कोई भी जिहाद नहीं था
(पवित्र युद्ध) और न ही ग़ज़वा (पवित्र युद्ध)।

भाग XII, अध्याय 1 (= XII-1-0-0)

कुरान से संबंधित विभिन्न विषयों पर संक्षिप्त, मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह

कुछ प्रासंगिक के बारे में संक्षिप्त विषय।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस अध्याय की सामग्री:

I. क्या कुरान मोहम्मद या अल्लाह के शब्दों के समान है?

वास्तविक वैज्ञानिक स्पष्ट रूप से नहीं कहते हैं। गलतियों के लिए बहुत सारे स्रोत हैं:

1. मुहम्मद को यह सब अपने से हुक्म देना था मन।
2. ग्रंथों को तब याद किया गया था और याद किया जाता है और शब्दों के मुंह से कहा जाता है 50-55 वर्ष तक (610 ईस्वी से सबसे पुराने के लिए सूरह, शायद ६५६ ईस्वी तक)।
3. ग्रंथों को थोड़ा-थोड़ा करके नीचे लिखा गया था किसी भी प्रकार की सतह; हड्डियाँ, लकड़ी, हथेली पत्ते, त्वचा। ये स्क्रैप के लिए संग्रहीत किए गए थे उनमें से कई से पहले यहाँ और वहाँ साल ज़ैद इब्न थाबित द्वारा एकत्र किए गए थे - मोहम्मद के सचिव - जिन्होंने बाद में उन्हें दिया

खलीफा उमर (2. खलीफा) के लिए जिन्होंने उन्हें दिया था
पत्नी हाफ्स, जहां खलीफा उस्मान बाद में

११११६

पेज 1117

उन्हें मिला। क्या ज़ैद को सभी स्क्रैप मिले और थे
सब कुछ वास्तव में लिखा गया और सब कुछ किया
यह अंत में खलीफा उस्मान की स्थिति में समाप्त होता है?
और सभी शब्द-दर-शब्द लिख रहे थे
सही? कुछ भी छोड़ा या जोड़ा नहीं गया था (पुराना
इस्लामी परंपराओं का कहना है कि लगभग १०० छंद
छोड़े गए और कुछ जोड़े गए)?

4. खलीफा उस्मान (3. खलीफा) को एक बनाना पड़ा
सूरह के संग्रह का आधिकारिक संस्करण।
उन्होंने लिखित और मौखिक को इकट्ठा किया और क्रमबद्ध किया
वह सामग्री जो वह पा सकता था जिसे सच माना गया था
114 सूरह में अपना कुरान बना रहे हैं। परंतु
क्या उसने सभी छंदों का उपयोग किया और कोई छंद नहीं था
जोड़ा - इरादे से या दुर्घटना से? आज भी
इस्लाम में अफवाहों के बारे में कहा जाता है
कुछ १०० छंद छोड़े गए और कुछ के लिए जोड़ा गया
राजनीतिक कारण - के बारे में संघर्ष थे
खलीफा के रूप में नौकरी (११ पहले खलीफाओं में से, केवल एक
- अबू बक्र, पहला - एक प्राकृतिक मर गया
मौत)। और क्या उन्होंने हर मामले में
कौन सा निर्णय लेते समय सही चुनाव करें
श्लोक सत्य थे और कौन से नहीं?

५. ऐसा करने के बाद उसने अपने मुख्य को प्रतियां भेजीं
संपर्क, सभी को सभी को नष्ट करने का आदेश देना
अन्य प्रतियां। लेकिन यह स्पष्ट है कि यह नहीं था
किया हुआ। एक बात तो बहुतों को पुराना पाठ पसंद आया
बेहतर, और दूसरे के लिए: किताबें महंगी थीं
- वे हाथ से लिखे गए थे, और इसमें एक
एक किताब लिखने के लिए कई हफ्तों तक मुंशी लिखें, करने के लिए नहीं
उल्लेख करें कि लेखकों को अच्छी तरह से भुगतान किया गया था
विशेषज्ञ। 2007-वेतनों में स्थानांतरित हो सकता है
एक कुरान की कीमत १०० यूरो है - और एक is
10ooo यूरो फेंकने के लिए अनिच्छुक। यह है
स्पष्ट है कि कम से कम ११०० ई.पू. तक
पुराने संस्करण मौजूद थे जो हो सकते हैं
नई प्रतियों को प्रभावित करता है जब नया बनाया गया था।

6. एक बहुत ही मौलिक अतिरिक्त समस्या: In
656 ई. में पूर्ण अरब का अस्तित्व नहीं था
वर्णमाला। खलीफा उस्मान का कुरान था
स्वरों के बिना और अंकों के बिना लिखा गया
कुछ अक्षरों को परिभाषित करते समय उपयोग किया जाता है
आधुनिक अरब लिखते समय उपयोग करता है। परिणाम
क्या यह अक्सर मुश्किल होता है, और कभी-कभी
यह अनुमान लगाना असंभव है कि वह वास्तव में कौन सा शब्द था
इरादा - कभी-कभी आप अनुमान लगा सकते हैं
संदर्भ और कभी-कभी नहीं। हमारे दोहराने के लिए
उदाहरण: यदि आपके पास "h" और "s" अक्षर हैं
और कहा जाता है कि वे एक अंग्रेजी शब्द का प्रतिनिधित्व करते हैं
स्वरों को घटाकर, वह शब्द कम से कम हो सकता है
"घर", "नली", "उसका", और "है"। जो है

११११७

पेज 1118

सही वाला? इस्लाम ने समस्या का समाधान द्वारा किया
यह तय करना कि शब्दों को समझने के सभी तरीके
जो सही लगा और तार्किक अर्थ दिया,
सही थे, भले ही एक शब्द हो सकता है
2-3 अलग-अलग तरीकों से समझा।

इसके परिणामस्वरूप के सैकड़ों प्रकार सामने आए
पुस्तक - यहाँ कुछ किस्मों के आधार पर और
वहां।

छलावरण के लिए कि वहाँ की किस्में थीं
कुरान, इसे "अलग-अलग तरीके" कहा जाता था
"विभिन्न किस्मों" के बजाय "पढ़ना"। ए
झूठ बोलने का विनम्र और कूटनीतिक तरीका। NS
कुरान विशेषज्ञ इब्न मोहैर (डी। 935 ईस्वी) और ए
कॉमिटी ने अंततः 7 को विहित किया, और प्रत्येक के रूप में
2 किस्मों में मौजूद है, जिसका अर्थ है 14 किस्में
(लेकिन इसके बाद और भी थे)। देखें
इस पर और अधिक के लिए प्रस्तावना।

आज केवल 2 संस्करणों का उपयोग किया जाता है (मिस्र)
(हफ़्स) १९२० के दशक से और एक और है
(Warsh) अफ्रीका में कुछ जगहों का इस्तेमाल किया)। कैसे
इसके लिए बड़ा मौका है बस यही है
वही शब्द जो मुहम्मद ने उच्चारित किए थे?
बहुत छोटा। और दोनों नहीं हो सकते
100% सही।

7. 250 वर्षों से अरब लिखित भाषा
विकसित किया गया था और कुरान में भाषा
शिक्षित और प्रतिभाशाली पुरुषों द्वारा पॉलिश (से .)
यहाँ हमारे पास भाषा में शान है
पुस्तक में प्रयुक्त)। यह काम कमोबेश था
लगभग 900 ई. में समाप्त हुआ। क्या मौका है
उसके लिए "एक शब्द नहीं, एक अक्षर नहीं, एक नहीं"
अल्पविराम" इस प्रक्रिया के दौरान बदल दिया गया था?
विनम्रता से शून्य कहा। एक वर्णमाला विकसित करने के लिए और
फिर पूरी किताब की भाषा को पॉलिश करें
एक शब्द या अल्पविराम बदले बिना है
गणितीय रूप से, शारीरिक रूप से और अन्य सभी
विज्ञान असंभव (अल्पविराम भी नहीं था
तब मौजूद हैं)।

संभावना है कि आज का कुरान मुहम्मद के शब्दों की नकल है, हैं
दसवीं शक्ति के लिए असीम रूप से छोटा।

द्वितीय. पाठों में परिणाम।

कुरान और मुसलमान गर्व से घोषणा करते हैं कि किताब में महत्वपूर्ण बिंदुओं की कमी है
इसके अल्लाह द्वारा नीचे भेजे जाने का प्रमाण।

लेकिन एक बात के लिए: यहां तक कि अगर किताब में कोई महत्वपूर्ण बिंदु नहीं थे, तो वह केवल था
इसका मतलब है कि निर्माता ने अच्छा काम किया है - किसी देवता का कोई प्रमाण नहीं।

लेकिन मुख्य बात यह है कि कुरान में असंगत बिंदु हैं। मैंने एक की ओर इशारा किया है
युगल, लेकिन कई और भी हैं। आप कितनी सख्ती से न्याय करते हैं इस पर निर्भर करता है। मैंने देखा है
एक न्यायाधीश कितनी सख्ती से निर्भर करता है, इसके आधार पर 100 से 200 तक की संख्या।

III: निरसन - अमान्य छंद।

निरसन ऐसे बिंदु हैं जिन्हें कुरान द्वारा या कुछ हदीस द्वारा बदल दिया जाता है। एक निरसन
इसका मतलब है कि एक या अधिक कविता (ओं) को अमान्य कर दिया गया है, क्योंकि एक नई कविता आती है जो कह रही है
एक ही चीज़ के बारे में कुछ अलग। नियम सरल है: यदि दो या दो से अधिक छंद (या .)
हदीस) "टकराना", सबसे छोटी कविता (या हदीस के बारे में कहावत या कार्य) सामान्य रूप से
वैध एक है, और अन्य उस समय से अमान्य कर दिए गए हैं (लेकिन उन्हें इसमें रहना है
कुरान सभी समान)। वास्तव में निरसन भी एक असंगति है - एक सर्वज्ञ ईश्वर
खुद को सुधारना है! यहां हमने 5 से 500 तक की संख्याएं देखी हैं, लेकिन वैज्ञानिकों का रुझान है
200 के आसपास और 225 तक की संख्या के बारे में बात करें - उनमें से ज्यादातर मक्का से शांतिपूर्ण छंद हैं,
मदीना से कठिन छंदों के लिए आदान-प्रदान, और अक्सर अधिक खूनी छंद। शांतिपूर्ण जीवन
और 622 ईस्वी के बाद घृणा और खून और आतंक के लिए परोपकार को समाप्त कर दिया। एफ. पूर्व. अब शांति नहीं
गैर-मुसलमानों के साथ: उन्हें मार डालो। (निरसन पर अलग अध्याय भी देखें)। एक बुरा तथ्य यह है कि
अधिकांश शांतिपूर्ण छंद मक्का काल (610 - 622 ईस्वी) से हैं, जबकि छंद
नफरत और बलात्कार और लूट, हत्या और युद्ध बाद के मदीना काल (622 - 632 .) से हैं
एडी)। इसका मतलब है कि कई शांतिपूर्ण छंद, यहां तक कि कई जिनका उल्लेख मुसलमान करते हैं
वाद-विवाद अमान्य हैं। उन निरसनों ने इस्लाम को शांतिपूर्ण धर्म से युद्ध में बदल दिया
धर्म घृणा और दमन और रक्त और अमानवीयता का महिमामंडन करता है।

चतुर्थ। शरिया (मुस्लिम कानून)।

आज शरिया के बारे में इतना कुछ कहा जाता है कि हम इसकी गहराई में नहीं जाएंगे। हम केवल जोड़ना चाहते हैं
कि पूरा शरीयत कुरान का हिस्सा नहीं है। कुछ वहां से लिए जाते हैं, कुछ वहां से
हदीस (लघु कथाएँ - सच हो सकती हैं, सच नहीं हो सकती हैं - मुहम्मद और उनके कुछ लोगों के बारे में)
पुरुषों और उत्तराधिकारियों ने कहा और किया, कुछ रूढ़िवादी के बीच आम सहमति (इज्मा) से तय होते हैं
विद्वान नेता (बैठक में नहीं, बल्कि समय के साथ इस पर सहमत होकर कि यह और वह होना चाहिए
दाएं), और अंत में उपमाओं (कियस) द्वारा - "यह मामला कुछ हद तक वैसा ही है जैसा कि हुआ था
वह हदीस, और फिर उचित और न्यायसंगत समाधान ऐसा ही होना चाहिए"। (लेकिन यह अध्याय भी देखें
निरसन - अस्पष्ट निरसन कानून के लिए समस्या पैदा करता है।)

शरिया को समझने और अभ्यास करने के 4 अलग-अलग तरीके हैं - 4 स्कूल। अजीब
पर्याप्त रूप से सभी चार को आम तौर पर सही माना जाता है, भले ही वे भिन्न हों, और कर सकते हैं
यहां तक कि एक ही समय में भी इस्तेमाल किया जा सकता है - लेकिन वास्तव में उस धर्म में कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए जहां
एक समय में कुरान की 14 या उससे अधिक किस्में थीं, सभी को सही कहा गया था। ये सभी 4
स्कूलों की शुरुआत 700 के दशक के अंत या 800 के दशक की शुरुआत में हुई थी। पहली बार बहुत कुछ हुआ जैसे वे
यह सब वास्तविक जीवन में समायोजित करने के लिए काम किया। लेकिन 900 ईस्वी के आसपास उन्होंने पाया कि अब सब कुछ क्रम में था
और यह कि चर्चा करने के लिए और कुछ नहीं था। उसके बाद शरीयत कमोबेश
असंक्षिप्त। एक ऐसा तथ्य जिसने छात्रों को सैकड़ों . के लिए एक ही पाठ्य पुस्तकों का उपयोग करने में सक्षम बनाया
साल, और एफ। भूतपूर्व। लगभग आज तक के छात्र गुलाम कानून, विवाह और का अध्ययन कर रहे हैं
जिन्न और इंसानों के बीच तलाक, आदि। एक कानून जिसमें आज स्पष्ट कमियां हैं
आधुनिक जीवन - एक समस्या जिसे एक सर्वज्ञ ईश्वर को देखना चाहिए था।

और एक ऐसा कानून जहां 1100 साल से कुछ नहीं हुआ।

वी। इस्लाम छोड़ना:

दुष्प्रचार के बावजूद लोगों ने इस्लाम छोड़ दिया है। लेकिन ऐसा करने के लिए आधिकारिक तौर पर एक बहादुर व्यक्ति की जरूरत होती है,
खासकर यदि आप गैर-मुस्लिम क्षेत्र में प्रवास नहीं करते हैं।

कानून आपके खिलाफ होगा। समाज आपके खिलाफ होगा। आपका परिवार विरोध करेगा
आप। और कम से कम: यह एक बुरा मुसलमान है जो आपको नहीं मारता।

दुनिया भी आपकी मदद नहीं करती: संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार घोषणापत्र में #18
नवंबर 1981 में समायोजित किया गया था, और मुसलमानों ने संयुक्त राष्ट्र को बदलने के अधिकार को छोड़ने के लिए मजबूर किया
धर्म। (यह स्पष्ट रूप से एक मानव अधिकार है - लेकिन इस्लाम इसे स्वीकार नहीं करता है। उन्होंने यहां तक कि बनाया है
कुरान और मुहम्मद के बाद मुसलमानों के लिए आधिकारिक मुस्लिम मानवाधिकार।)

इससे भी बदतर: अब मुसलमान संयुक्त राष्ट्र को "दूसरे धर्म के पैगम्बरों का अपमान" करने पर रोक लगाने की कोशिश कर रहे हैं।
इस पृथ्वी पर केवल एक ही भविष्यद्वक्ता है जिसे इस तरह के कानून की आवश्यकता है - और एक कारण के साथ - और
वह मुहम्मद है। और जरा आप अंदाजा लगाइए कि उस कानून का इस्तेमाल कैसे होगा !! आप जो कुछ भी कर सकते हैं वह करें

इसे रोक।

ताजा खबर: संयुक्त राष्ट्र में इस्लाम सफल हुआ।

(दूसरी ओर कुरान में, हदीसों में, और साथ में बहुत कुछ गलत और हानिकारक है
मुहम्मद, हो सकता है कि सफलता बहुत गंभीर न हो। बस उनके बारे में सच बताओ और
मुहम्मद के बारे में और आपके पास किसी भी अपमान से अधिक भारी बंदूक है।)

भाग XII, अध्याय 2 (= XII-2-0-0)

कुरान से संबंधित विभिन्न विषयों पर संक्षिप्त, मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह

कुछ रस और विचार।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

इस अध्याय की सामग्री:

1. व्यक्ति मुहम्मद।

छोटा इतिहास।

१. ५७० ईस्वी के आसपास एक अनिर्दिष्ट समय पर जन्मे। अधिकांश स्रोत कहते हैं 570 ईस्वी, कुछ - अधिकतर इस्लामी स्रोत - 569 ईस्वी, और कुछ 571 ई. हम जोड़ सकते हैं कि कुछ वैज्ञानिक मानते हैं मुहम्मद कभी अस्तित्व में नहीं थे, लेकिन एक कल्पना है बाद में अरबों द्वारा बनाया गया जिसे a . की आवश्यकता थी नए धार्मिक विचारों की पहचान - जैसे राजा आर्थर को राजा या नाबालिग बना दिया गया था राजा जो बाद में बहुत बड़ा हुआ - लेकिन अधिकांश संभावना है कि वह एक वास्तविक व्यक्ति था।
2. वह एक सेल्समैन बन गया। अरब सेल्समैन ने ईमानदारी के लिए कोई अच्छी प्रतिष्ठा नहीं, लेकिन इस्लाम जोर देकर कहते हैं कि वह बहुत ईमानदार थे। कहना असंभव है हाँ या नहीं - कोई तटस्थ जानकारी मौजूद नहीं है, और इस्लामिक सूत्रों को बताकर बहुत कुछ हासिल करना है वह बहुत ईमानदार था।
3. 25 साल के युवा के रूप में उन्होंने 15 साल की शादी की वृद्ध अमीर विधवा। आम तौर पर ऐसी शादियां विशेष कारणों से होता है, लेकिन तटस्थ नहीं स्रोत मौजूद हैं। मुस्लिम सूत्रों का कहना है कि यह एक था बहुत खुश शादी - लेकिन फिर: मुस्लिम सूत्रों का कहना है कि बहुत कुछ हासिल करने के लिए है वह।
४. रमजान ६१० ई. के चांद्र महीने में हे बताना शुरू किया कि उसे अल्लाह के संदेश मिले हैं

उस समय अल लाह नाम दिया गया - और बाद में शुरू हुआ
उसकी शिक्षाएं। भगवान अल-लाह उस समय था
अरब में अग्रणी मूर्तिपूजक देवता।

5. अपने बाकी के जीवन के बारे में उन्होंने इस तरह के बारे में बताया संदेश - एक समय में कुछ छंद, और नहीं कभी-कभी वे समस्याओं को हल करने के लिए होते थे उसके लिए - यहां तक कि व्यक्तिगत भी - और हमेशा के लिए उसका लाभ। एक परेशान करने वाला सवाल यह है कि क्यों एक सर्वज्ञ भगवान ने संदेश नहीं भेजा चीजें होने से पहले, इसलिए मुहम्मद कर सकते थे समस्याओं से बचें या जानें कि क्या था चीजें होने पर सही काम करना। था वह हर बार सही करने के लिए भाग्यशाली था, या थे बाद में मापने के लिए बने छंद? - (वास्तविक वैज्ञानिक अंतिम पर विश्वास करते हैं)।
6. एक और परेशान करने वाला सवाल यह है कि स्व-घोषित भविष्यवक्ताओं को अक्सर पसंद किया जाता है और उनके भगवान ने मदद की - हमने इसे देखा है कई मामले और कई संप्रदाय। अल्लाह ने सच में लिया मुहम्मद में एक व्यक्तिगत रुचि - लेकिन हमेशा बाद में चीजों को साफ करना, उसकी मदद नहीं करना एफ में नहीं चलाने के लिए भूतपूर्व। महिलाओं के साथ समस्याएं। में संप्रदाय यह भी असामान्य नहीं है कि स्व-घोषित पैगंबर में कई महिलाएं हैं।

7. संदेश के साथ बैठकों में पहुंचे महादूत गेब्रियल, सपनों में या ध्वनियों की तरह वह समझ। कभी कोई नहीं थे एक शब्द के गवाह, लेकिन उसे देखा गया कभी-कभी फिट हो जाते हैं - आधुनिक डॉक्टर जुड़ते हैं उन्हें एक निश्चित बीमारी (टीएलई) के लिए।
८. १२ वर्षों तक उनकी शिक्षा लगभग a . थी अपेक्षाकृत उदार और शांतिपूर्ण भगवान - अल-उस समय के मुख्य अरब देवता लाह/अल्लाह। लेकिन उसने बताया कि अन्य सभी देवता नकली थे, और कि अल्लाह यहूदी के समान था और ईसाई यहोवा। उनके शिक्षण के साथ मुलाकात की कम से मध्यम सफलता - मुख्य रूप से के बीच गरीब और अशिक्षित।
9. मक्का के हाकिमों में वह प्रिय नहीं था, और ६२२ ईस्वी में उसे बाद में यत्रिब भागना पड़ा मदीना का नाम बदला Yathrib में उसे a . खोजना था अपने और अपने झुंड के लिए जीने का तरीका। के सभी चीजें जो उसने डकैती पर तय कीं - लूट कारवां, मुख्य रूप से और मक्का से, और बाद में बस्तियों और गांवों में भी।
10. वह राजमार्गों के प्रधान के रूप में रहता था कुछ साल - उन्होंने कई का नेतृत्व भी किया "अभियान" खुद। यह डकैती थी बाद में मक्का के साथ युद्ध का कारण।
11. उसके धर्म के आसपास कुछ हुआ 622 ई. और यत्रिब के लिए उड़ान। यह बदल गया बल्कि मानव से, अच्छे और परोपकारी, से a . तक युद्ध और घृणा का धर्म। के बाद भी परोपकारी मुसलमानों के समूह के अंदर एक फैशन, लेकिन नफरत, खून, बलात्कार, डकैती और दमन के लिए समूह के बाहर सभी। अगर कोई पढ़ता है पहले मक्का से कुछ ८६ सूरह, और फिर मदीना से कुछ 22 (कुछ सूरह हैं एक की उम्र नहीं पता), अंतर है

देखने में आसान और हड़ताली। यह एक धर्म बन गया आदिम और लालची योद्धाओं के लिए - और अभी भी है (+ कट्टरपंथियों के लिए)। इस रूप में धर्म विस्तार करना शुरू किया - अक्सर विश्वास के कारण नहीं, लेकिन चोरी करने और लूटने की अनुमति के कारण और बलात्कार करो और गुलाम बनाओ। और नहीं भूलना चाहिए: "मुसलमान बनो या मरो" के कारण - अधिकांश शेष अरब बलपूर्वक मुसलमान बन गए और मजबूरी के अलावा लालच से भी युद्ध की हानी।

12. मुहम्मद भी बदलते नजर आए - तो कुछ अमानवीय, कठोर और खूनी (जब हम कहते हैं "लगता है" ऐसा इसलिए है क्योंकि के ये पक्ष उसे कम से कम पहले नहीं दिखाया था - लेकिन उसका डकैती, हत्या और जबरन वसूली की ओर रुख करना

११२२

पेज 1123

कारवां और ड्राइवर कुछ इशारा कर सकते हैं जो पहले छिपा हुआ था)। वास्तविक वैज्ञानिक उस शक्ति और अधिक शक्ति के लिए वासना का अनुमान लगाएं उसकी नैतिकता को नष्ट कर दिया - शक्ति अक्सर है एक आदमी को नष्ट कर दिया।

१३. एक प्रभाव यह हुआ कि उसे होने लगा विरोधियों की हत्या कर दी। इनमें से थे:
    1. अल-नादर - से एक व्यक्तिगत दुश्मन मक्का।
    2. ओकेबा। यह दोनों हत्याएं ठीक थीं अल्लाह द्वारा सूरह 8/67 - - - बाद में। दोनों बद्र की लड़ाई के ठीक बाद के थे।
    3. अस्मा बिन्त मारवान - एक महिला कवि जो उनके खिलाफ गया था। हत्या उसके बिस्तर में जब उसे चूसना दे शिशु।
    4. अबू अफाक - एक गैर-मुस्लिम अरब कवि, १०० वर्ष से अधिक पुराने, जिनके पास था उसके खिलाफ गया। अबू अफाक था सोते हुए मार डाला
    5. कब इब्न अल-अशरफ - एक और कवि कि मुहम्मद के खिलाफ गया था - मुसलमानों द्वारा हत्या और सिर कलम उसके दोस्त होने का नाटक कर रहा है।
    6. इब्न सुनाया - यहूदी व्यवसायी मुहम्मद के कहने के बाद हत्या उसके अनुयायियों की हत्या करने के लिए क्या यहूदी वो कर सकते हैं।
    7. अबू उजी - की लड़ाई से एक कैदी बद्र
    8. ओथमान बिन मोघिरा।
    9. अबी ल'हुकयाक - यहूदी प्रमुख, उसके बिस्तर में हत्या कर दी।
    10. किनाना ख. अल-रबी (उसके पति रेप पीड़िता सफीजा- यह भी लिखा साफिया)। मार-पीट कर मार डाला।

ये अलग-अलग हत्याएं हैं जहां हम पीड़ितों के नाम मिल गए हैं - वहां संख्या अधिक थी (कम से कम 26 के अनुसार कुछ स्रोत)।

14. **फिर सामूहिक हत्याएं हुईं। NS तीन सबसे प्रसिद्ध हैं:**

15. Usayr के साथ विश्वासघात और कसाई।
    जरीम और उसके 28 आदमी जैसा कि पहले बताया गया है (+ 1 जो बच गया)। जैसा कि मुहम्मद ने कहा: "युद्ध है विश्वासघात"।
16. मार्च 627 ई. में हुई तबाही
    मदीना से भागे बानो नादिर

1123

पेज 1124

625 ई. में खैबर - कोई नहीं जानता कि कैसे
कई मारे गए, लेकिन कई।

17. के सभी लगभग 700 पुरुषों की सामूहिक हत्या
    अगस्त ६२८ में ख़ैबर में यहूदी जनजाति
    एडी - पहले भी उल्लेख किया गया है।
18. **मुहम्मद बलात्कारी।**

    उसने कम से कम दो महिलाओं के साथ बलात्कार किया जहां नाम
    मौजूद है (+ अन्य महिला दास?)

19. रैहाना बिन्त अमर - से बंदी बना लिया गया
    सभी की हत्या करने के बाद कुरैशी और बलात्कार
    उसका पुरुष परिवार।
20. सफीजा - 17 साल की और हाल ही में विधवा हुई
    मुहम्मद ने अपने पति किनाना की हत्या कर दी
    बी। अल-रबी - न केवल हत्या की गई, बल्कि यातना दी गई
    मौत। इसके बावजूद मुहम्मद जानता था
    एक महिला के बाद बहुत दुख हो सकता है
    पति को खोना - एफ। भूतपूर्व। वह के अनुसार
    हदीस (f। उदा। अल-बुखारी १२८०, १२८१, और
    1282) ने एक विधवा को शोक मनाने की अनुमति दी
    पति 4 महीने और 10 दिन की तुलना में
    कि कोई केवल एक भाई या पिता का शोक मना सकता है
    3 दिन (एक राजमार्ग और एक सरदार के लिए)
    शोक करने वाली महिलाएं नैतिकता के लिए खराब हैं)।
21. मुहम्मद द्वारा अधिक बलात्कार निर्दिष्ट नहीं हैं
    इस्लामी इतिहास में, लेकिन बहुत ही आकस्मिक तरीके से उनका
    पुरुषों ने इन बलात्कारों पर प्रतिक्रिया व्यक्त की, और तथ्य भी
    कि बलात्कार पीड़िताओं/कैदियों का था
    मानक - और "वैध और अच्छा" - इस्लाम के लिए
    योद्धाओं, कुछ अनुमान लगाने की अनुमति दें।
22. **विश्वासघात:**
23. हम पहले ही के विश्वासघात का उल्लेख कर चुके हैं
    उस्यार बी. जरीम।
24. ज़ैनब - वह उनके दत्तक पुत्र की पत्नी थी
    ज़ैद। मुहम्मद उसे चाहता था, लेकिन अरब
    दत्तक पुत्र को पुत्र माना, और
    कानूनों के अनुसार वह शादी नहीं कर सकता था
    उनके बेटे की पत्नी। लेकिन अल्लाह ने वास्तव में उसकी मदद की -
    मुहम्मद ने बताया कि उन्हें एक सूरा मिला है (33/2-8)
    यह घोषित करना कि दत्तक वास्तविक पुत्र नहीं है,
    और वह गोद लेने के अनुसार नहीं था
    अल्लाह की इच्छा (मुसलमान औपचारिक रूप से नहीं कर सकते
    इस कहानी के कारण आज भी अपनाएं)।
    ज़ैनब ने ज़ैद को तलाक दे दिया - और मुहम्मद को मिल गया
    एक और पत्नी।

    इस्लाम कितनी दिलचस्पी के बारे में अच्छी कहानियां गाता है
    ज़ैनब मुहम्मद में थी। लेकिन कोई बात नहीं -
    उसने ज़ैद को धोखा दिया।

११२४

पेज 1125

25. सैटेनिक वर्सेज। अपनों को धोखा दिया
धर्म से अधिक स्वीकृति प्राप्त करने के लिए
मक्का के शासक और लोग (उन्होंने स्वीकार किया कि
अल्लाह की 3 बेटियाँ थीं - 3 देवी अल-
लाट, अल-उजी और मंटा)। लेकिन बाद में वह मुकर गए
उसकी बातें - और मक्का के शासकों को धोखा दिया।
(मुसलमानों के पास इसके लिए "अच्छा" स्पष्टीकरण है
कहानी, लेकिन वैज्ञानिक वास्तव में उन्हें स्वीकार नहीं करते हैं
संस्करण)।
26. हुदैबिया की शांति - उसने तोड़ी।
27. और उनका नारा मत भूलना: "युद्ध है
विश्वासघात"।
28. उसके बाद अल-
तकिया (वैध झूठ), किटमैन (कानूनी)
अर्धसत्य), और शपथ पर उनके विचार - वे कर सकते थे
तोड़ दिया जाए अगर इससे बेहतर परिणाम मिले, हालांकि
कभी-कभी आपको अल्लाह को होने का तोहफा देना पड़ता है
माफ़ कर दिया।
29. यदि आप देखें, तो हमें लगता है कि आप और पाएंगे। परंतु
मुख्य बात यह है कि विश्वासघात और छल था
मुहम्मद की नीति का हिस्सा: "युद्ध है
विश्वासघात" या "युद्ध छल है" उसे एक बार उद्धृत करने के लिए
अधिक। क्या उसने अपने धर्म के साथ विश्वासघात किया? - या उसका
अनुयायी (उसने किया अगर इस्लाम बना हुआ है
धर्म)।
30. **अत्याचारी।**
31. अत्याचार का इस्तेमाल प्राय: नहीं किया जाता था
मुहम्मद.
32. **महिलाएं।**
33. उसके बहुत समय तक 11 पत्नियां रहीं, अर्थात् 2 रखेलियां,
16 थोड़े समय की पत्नियाँ, और 7 हम नहीं जानते
उससे शादी की थी या नहीं। ये 36
जिन्हें इस्लाम नाम से जानता है।
34. **गुलाम।**
35.। मुहम्मद ने सचमुच हजारों
गुलाम मुसलमानों का कहना है कि यह उसके लिए सामान्य था
समय - लेकिन मुहम्मद ने प्रतिनिधित्व करने का नाटक किया
एक दयालु भगवान। मुसलमान भी कहते हैं गुलाम
केवल रक्षा युद्धों में लिया गया था, जिसे कहा जाता है
जिहाद या पवित्र युद्ध (सच नहीं) - लेकिन युद्धों में भी
बचाव के लिए मुहम्मद ने प्रतिनिधित्व करने का नाटक किया
एक दयालु भगवान। इसके अलावा: सब कुछ था
जिहाद नाम दिया है, इसलिए यह दावा सिर्फ हिपोक्रेसी है।
36. **सरदार।**
37. सरदार। अपने जीवन के अंत में मुहम्मद
वास्तव में एक सरदार बन गया - और एक चतुर।
लेकिन एक क्रूर, अमानवीय और जानलेवा भी
एक। मुसलमान - और कुछ अन्य - कहते हैं कि यह एक था
कठिन समय और वह दूसरों से भी बदतर नहीं था
उस समय के सरदार। शायद - लेकिन वह

पेज 1126

निश्चित रूप से भी बेहतर नहीं था, के बावजूद
तथ्य यह है कि उसने दुनिया को बताया कि वह प्रतिनिधित्व करता है

एक अच्छा और दयालु आदमी।

38. इस तथ्य से कोई बचा नहीं है कि
    मुहम्मद का वचन विश्वसनीय नहीं था, कि वह
    एक महिलावादी था, कि वह एक चोर था और
    अपने हाईवेमैन से लुटेरा और कातिल
    अवधि और बाद में, कि वह एक बलात्कारी था, कि वह
    जबरन वसूली का अभ्यास किया, कि उसने अच्छा पैसा कमाया
    हाईवेमेन के लिए बॉस बनने से और बाद में
    एक सरदार के रूप में, कि वह एक गुलाम था और
    दास व्यापारी, कि वह सत्ता और महिलाओं को पसंद करता है,
    अधिमानतः युवा महिलाएं, जिनमें कम से कम शामिल हैं
    एक बच्चा - और रिश्वत के लिए पैसा। यह बहुत ही
    मुस्लिम स्रोतों से स्पष्ट - कोई मुसलमान नहीं कर सकता
    इसके लिए विरोध करें, भले ही वह बहुत कुछ करेगा
    इसे दूर समझाना पसंद है।

अगर आप कोर्ट में जज होते और यह आदमी आपके सामने गवाह होता - तो आप कितनी दूर होते
एफ में अपने गवाह पर भरोसा करें। भूतपूर्व। हत्या का मामला?

मुसलमान अपना सारा धर्म केवल इसी आदमी के वचन पर बनाते हैं - और एक धर्म उससे कहीं अधिक गंभीर है
हत्या के मामले की तुलना में

द्वितीय. कुरान:

1. साहित्य के रूप में यह सब कुछ होते हुए भी अच्छा नहीं है
   मुसलमानों से मौखिक फूल। एफ. पूर्व. अभी तक भी
   बहुत दोहराव, कहानियाँ बहुत समान,
   कहानियों का अंत बहुत स्पष्ट है। यह भी
   शैली परिपूर्ण से बहुत दूर है - और बहुत उबाऊ।
2. कमोबेश सभी सामग्री "उधार" है
   अन्य स्रोतों से - विनम्र होने के लिए एक नकलची।
3. अप्रमाणित कथनों से भरा हुआ - कुछ का
   उन्हें सीधे गलत भी।
4. गैर-प्रलेखित "संकेतों" से भरा हुआ (पर्यायवाची)
   कुरान में "सबूत" या कम से कम "संकेत" के साथ-
   बोलो) - उनमें से कुछ भी सीधे गलत।
5. तथाकथित "सबूत" में से कोई भी एक के रूप में मान्य नहीं है
   प्रमाण।
6. पुस्तक गलत तथ्यों से भरी है।
7. इसमें बहुत तेज-तर्रार और शेखी बघारने वाली बात है।
8. धोखेबाजों, धोखेबाजों के लिए विशिष्ट हॉलमार्क से भरा
   और धोखेबाज।

सबसे ईमानदार न्यायाधीशों द्वारा निर्देशित, बुरे हॉलमार्क से भरी यह पुस्तक अनिच्छुक होगी
बहुत विश्वास है, सभी इस्लाम के लिए एकमात्र वास्तविक - या वास्तविक नहीं - आधार है।

कोई आश्चर्य नहीं कि उनके नेताओं को एक अंतरराष्ट्रीय कानून के माध्यम से मुहम्मद के लिए सुरक्षा की आवश्यकता है
अभ्यास में उसके बारे में केवल तीखे शब्दों की अनुमति देना।

III. इस्लाम।

धर्म का तेजी से विस्तार हो रहा है। यह कुछ शताब्दियों में प्रमुख धर्म हो सकता है - बहुत कुछ
पहले अगर उन्हें सैन्य या आतंकवादी तरीकों से ऐसा करने का साधन मिलता है।

यह एक शांतिपूर्ण धर्म होने का दिखावा करता है - और एक तरह से यह अपने ही प्रति है। लेकिन यह "भूल जाता है"
उल्लेख करें कि मक्का से शांतिपूर्ण छंदों को निरस्त कर दिया गया है - अशक्त - खूनी द्वारा और
मदीना से कठोर।

वे यह उल्लेख करना "भूल जाते हैं" कि 622 ईस्वी में और उसके बाद मुहम्मद ने अपना धर्म बदल लिया
बल्कि उदार, दमन, लूट, घृणा, बलात्कार और हत्या के धर्म के लिए - एक युद्ध
धर्म। मुसलमान खराब पश्चिम की शिकायत करते हैं, लेकिन जब हमने मुसलमानों के बारे में पढ़ना शुरू किया

इतिहास, हमने कभी-कभी सकारात्मक रूप से बीमार महसूस किया है। एक बात है युद्ध - निर्मम युद्ध भी और
यहां तक कि विजय के युद्ध भी। एक और चीज है लाखों लोगों द्वारा हत्या और वध और नरसंहार
और लाखों - और गुलामी और बलात्कार "बड़े पैमाने पर" और परपीड़न। जिंजिस खान खराब थे। पोल पोटा
खराब था। माओ बुरा था। स्टालिन खराब था। हिटलर बुरा था। लेकिन वे सिर्फ दूसरे दर्जे के थे
वध और परपीड़न, विनाश और चोरी, बलात्कार और दमन की तुलना में
और अल्लाह की तारीफ़ में कुछ मुसलमानों की गुलामी - दूसरे दर्जे की इसलिए भी क्योंकि
मुसलमानों ने अपना "काम" इतने लंबे समय तक किया है।

और "धर्म में कोई मजबूरी नहीं"? - यह मजाक भी नहीं है - यह विडंबना है।

चतुर्थ। मुसलमान।

मुसलमान हमसे अलग नहीं हैं क्योंकि वे एक अलग तरह के इंसान हैं। लेकिन बहुत सारे
अलग हैं क्योंकि वे बहुत अलग संस्कृति में पले-बढ़े हैं। एक संस्कृति जहां वे
कुछ सदियों पुराने विचारों को छापा गया है, वे दृढ़ता से मानते हैं कि यह सत्य है कि क्या यह है
सच्ची या बीमार अमानवीय कहानियाँ। इस तथ्य से कोई बच नहीं सकता है, क्योंकि केवल एक ही दुनिया है
साझा करना।

लेकिन हमें उन्हें यह दिखाने की कोशिश करनी चाहिए कि उनके कुछ विचार कितने अमानवीय और कैसे - हाँ - बीमार हैं।
क्योंकि यह उनके कुछ विचार हैं जो बीमार हैं - जैसे दासता पर धर्म का दृष्टिकोण,
गैर-मुस्लिम विरोधियों का दमन और हत्या - मनुष्य के रूप में उनका मूल्य नहीं। **और हम
यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि जब बीमार आदर्शवादी आपको मारने और जीतने का वादा करते हैं, तो आप
बेहतर होगा कि इस पर विश्वास करें** - हिटलर के शिकार लोगों से पूछिए - - - जिसने भविष्यवाणी की थी कि वह क्या चाहता है
करते हैं, लेकिन अधिकांश लोगों ने उस पर तब तक विश्वास नहीं किया जब तक कि बहुत देर हो चुकी थी। इन आखिरी के दौरान क्या हुआ
वर्षों से पता चलता है कि इस्लाम अभी भी नफरत और दमन और युद्ध का धर्म है।

और वही सब: याद रखें कि सभी मुसलमानों का 70% युद्ध से कोई लेना-देना नहीं है और
कोलाहल। और बाकी ज्यादातर कम से कम ऐसी चीजों में सक्रिय भाग नहीं लेना चाहते हैं।

v. इस्लाम में सहानुभूति, नैतिक और नैतिकता।

1. सहानुभूति - दूसरे जो महसूस करते हैं उसे महसूस करने की क्षमता
और उनके लिए जीवन या स्थिति कैसी है - is
कुरान और इस्लाम में पूरी तरह से अनुपस्थित। NS
एकमात्र व्यक्ति, जो मायने रखता है, मजबूत मुख्य है
व्यक्ति: आप - अधिमानतः एक योद्धा। और का
बेशक मुहम्मद और उनके उत्तराधिकारी। यह है
आपके - मजबूत योद्धा की - रुचियां और
इच्छाएं जो मायने रखती हैं। आप के लिए अच्छा होगा

बच्चे, महिलाएं, बूढ़े, आदि, लेकिन क्योंकि
यह एक अच्छा काम है, सहानुभूति के कारण नहीं।
और सहानुभूति का कोई निशान नहीं है
गुलाम, गैर-मुसलमान, घंटे, या युवा
पुरुषों को हमेशा के लिए स्वर्ग में दास बनने के लिए मजबूर किया गया,
बंदी या विजित का उल्लेख नहीं करने के लिए
राष्ट्र / लोग।
2. नैतिक। इस्लाम और मुसलमान अक्सर इसका इस्तेमाल करते हैं
शब्द। लेकिन शायद ही कोई नैतिक कोडेक्स है
इस्लाम, और निश्चित रूप से कभी नहीं रहा है
नैतिक समस्याओं का अध्ययन करने वाला कोई भी दर्शन।
कुरान में कुछ आदेश और संकेत हैं
और हदीसों में क्या करना है और क्या करना है?
नहीं करना है, और वह यह है। कोई कोडेक्स जैसा नहीं
"दूसरों के प्रति वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप दूसरों को चाहते हैं"
आपके प्रति व्यवहार करने के लिए", आदि। नैतिक समस्याएं
शायद ही मौजूद हों - कुरान और पैगंबर का पालन करें,
और वह सब कुछ हल करता है - शामिल
लूटने और बलात्कार करने और दबाने की अनुमति और
नफरत करो और मार डालो।
3. बस के बारे में ज्यादा सोच रहे हैं और बस

नैतिक कोडेक्स से मुक्त, जैसा कि इसके बारे में है
कुरान और हदीसों में नैतिक। अधिक
या कम कुछ नहीं।

VI. इस्लाम किस तरह का है? (- निश्चित रूप से कुरान के अनुसार कोई "शांति का धर्म" नहीं है

इसके लिए केवल एक बहुत ही संक्षिप्त उत्तर की आवश्यकता है: इस्लाम और मुसलमानों के मजबूत दावों के बावजूद - जो अधिकांश मुसलमानों और सभी विद्वानों के रूप में बेहतर ज्ञान के बावजूद सामने रखा जाना चाहिए, क्योंकि वे अच्छी तरह से जानते हैं कि शांतिपूर्ण छंदों को निरस्त कर दिया जाता है और अमान्य कर दिया जाता है - इस्लाम एक युद्ध धर्म है, और एक ठेठ युद्ध धर्म। युद्ध सबसे केंद्रीय और भारी विषय है - शायद अल्लाह और के बाद मुहम्मद. युद्ध भगवान और "उसके दूत" की सर्वोच्च सेवा है। युद्ध धार्मिक है रोमांस। युद्ध का महिमामंडन किया जाता है। युद्ध सबसे मूल्यवान अच्छा काम है और सबसे निश्चित टिकट स्वर्ग - और स्वर्ग के सर्वोत्तम भागों में। युद्ध एक स्पष्ट और धार्मिक कर्तव्य है। के खिलाफ युद्ध गैर-मुस्लिम सभी 4 "कानून अचूक" के अनुसार हमेशा जिहाद थे - "पवित्र युद्ध" - नहीं कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह किस तरह का युद्ध था (आधिकारिक तौर पर जिहाद को केवल आत्मरक्षा में ही घोषित किया जा सकता है - लेकिन तो पूरी तरह से सब कुछ आत्मरक्षा है "इस्लाम के लिए शब्द के व्यापक अर्थ में")। अगर आप आज मुसलमानों के लिए बने आधुनिक आधिकारिक मुस्लिम साहित्य को पढ़ते हैं, आपको वही मिलता है आधिकारिक धार्मिक दृष्टिकोण की बात: गैर-मुसलमानों के खिलाफ लड़ाई एक पवित्र कर्तव्य और रीढ़ की हड्डी है इस्लाम।

मुहम्मद के जीवन के अंतिम दशकों के दौरान यह भी एक व्यक्ति का धर्म था - मुहम्मद थे एकमात्र केंद्र और नेता और मालिक। वह मुहम्मद को सत्ता पसंद थी, परोक्ष रूप से है, लेकिन कुरान में बहुत स्पष्ट रूप से देखा गया है। (और हदीसों में भी।)

सातवीं। पीएस रामसेस II के बारे में:

विकिपीडिया बताता है कि वह सीए पैदा हुआ था। १३०३ ईसा पूर्व, लगभग २० साल का फिरौन बन गया, और उसके पास था लगभग 1213 या 1212 ईसा पूर्व तक 67 वर्षों तक शासन किया। इसका मतलब है कि उसने कुछ वर्षों तक शासन किया हमारे अन्य स्रोतों में कहा गया से अधिक लंबा - f. भूतपूर्व। अच्छी प्रतिष्ठा का एक विश्वकोश - जो कहता है सीए तक 1230 ई.पू. लेकिन इस मामले में कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि दोनों ही मामलों में रामसेस द्वितीय ने शासन किया था

११२८

पेज 1129

1235 ईसा पूर्व जब विज्ञान के अनुसार पलायन हुआ था - - - यदि हुआ था। इस्लाम कोशिश करता है बताओ कि यह कोई परिणाम नहीं है कि वह कौन सा फिरौन था, और हम इसके बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं जब पलायन हो सकता है, और वे कुछ अन्य संभावित फिरौन का उल्लेख करते हैं - शामिल तुत-अंक-आमोन (तब यह समझाना आसान नहीं है कि कुरान गलत क्यों नहीं हो सकता है फिरौन का डूबना, हालांकि तूत-अंक-आमोन भी नहीं डूबा)। लेकिन क्या है परिणाम यह है कि विज्ञान वास्तव में विश्वास करता है कि वर्ष आसपास था १२३५ ईसा पूर्व - - - और इससे भी अधिक: यदि कोई फिरौन उचित समय पर इतिहास में डूब गया था, हमने 3 धर्म चिल्लाए थे FACT के बारे में - जो वे नहीं करते हैं। जिसका अर्थ है कि फिरौन ने स्पष्ट रूप से किया था डूबना नहीं।

सावधान रहें कि कुछ मुस्लिम सूत्रों का तर्क है कि यह कुछ और अस्पष्ट के तहत हुआ था फिरौन (अक्सर 1500 - 1600 ईसा पूर्व से एक)। ये मुख्य रूप से ऐसे व्यक्ति या संस्थाएं हैं जिनके पास यह चाहने का एक कारण कि यह दूसरी बार हुआ हो, f. भूतपूर्व। क्योंकि हम जानते हैं कि रामसेस द्वितीय ने किया था डूबो नहीं, और चाहते हैं कि यह एक फिरौन के अधीन हो जो डूब गया हो (बनाने के लिए) कुरान या बाइबिल सच हो)। आम तौर पर विज्ञान इच्छाधारी से अधिक तटस्थ और सही होता है विचारक, लेकिन क्या निर्गमन सब कुछ वैसा ही (यदि हुआ हो) किसी अन्य के तहत हुआ हो रामसेस II की तुलना में फिरौन, हम जो कहते हैं उसके बारे में जो कुछ हुआ उसके लिए समायोजित किया जाना चाहिए। लेकिन जैसा कि कहा गया है: विज्ञान मुख्य रूप से इस बात पर सहमत है कि यदि पलायन हुआ, तो यह हुआ। 1235 ई.पू.

भाग XII, अध्याय 3 (= XII-3-0-0)

कुरान से संबंधित विभिन्न विषयों पर संक्षिप्त, मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह

सांस्कृतिक विकास और मुस्लिम क्षेत्र में ठहराव

632 ई. से

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

संस्कृति के बारे में बात करना अक्सर कला के बारे में सोचता है जिसमें वास्तुकला, साहित्य के बारे में, के बारे में शामिल हैं
सीखने और सोचने के तरीके, सोचने और बोलने की स्वतंत्रता के बारे में, और के तरीकों के बारे में
जिंदगी।

पुराने अरब में वास्तव में संस्कृति कहलाने लायक कुछ भी नहीं था, एक अपवाद के साथ:
साहित्य। इसमें बहुत कम लिखा गया था, लेकिन कहानी कहने की एक समृद्ध परंपरा थी,
इतिहास और किस्से, और कविता के लिए भी।

लेकिन उसके लिए कला का बहुत कम था, वास्तुकला को बुलाने लायक बहुत कम या कुछ भी नहीं, थोड़ा ज्ञान,
अगर कोई मौलिक सोच मानवता को आगे ले जाने में सक्षम हो, तो थोड़ा सा भी वास्तविक धार्मिक हित
और सोच। और ऐसे आदिम जनजाति और योद्धा देश में दैनिक जीवन? - एक कठिन संघर्ष
दैनिक जीवन और अस्तित्व के लिए - जिसे अक्सर स्थानीय संस्कृति कहा जाता है, क्योंकि हमारे पास नहीं है
इसके लिए दूसरा शब्द।

इसने विजयों को रंग दिया - और आदिम और द्वारा किए गए विनाश और कहर
कट्टर योद्धा जो अचानक मदीना से और फिर अरब से बाहर निकले। वे मुड़े हुए थे
सोने और धन और दासों और शक्ति पर - और कर। अन्य प्रकार के मूल्य उनके पास बस नहीं थे
समझने की संभावना - और विनाश मुक्त था और अल्लाह के सम्मान के लिए। परिणाम
मानव और सांस्कृतिक आपदाएँ थीं, जैसे कि अब तक का मुस्लिम क्षेत्र जहाँ तक भारत है
तैमूर लेनक और उनके के संभावित अपवादों के साथ, न तो पहले और न ही बाद में कभी नहीं देखा
मंगोल, और बाद में तुर्क जब वे उत्तर-पूर्व से आए। झूठा और बदनाम
ईसाई धर्मयुद्ध अपने सबसे बुरे रूप में, भले ही उतने ही बुरे रहे हों, लेकिन आखिरकार एक छोटे से क्षेत्र में और a
सीमित समय - तथ्य अरब और अन्य मुसलमान उस समय के बारे में शिकायत करने पर "भूल जाते हैं"।

परन्तु कुछ पीढ़ियों में भूमि का पुनर्निर्माण किया गया, और अब लूट से समृद्ध और
दमन अरबों ने अपने बच्चों को पढ़ाया - यहाँ तक कि गैर-धार्मिक विषय भी। और पर्याप्त समय से अधिक
स्थिति बदल गई।

हमें मुस्लिम/अरब वास्तुकला मिली - मूल रूप से बीजान्टिन के मिश्रण से प्रेरित, अन्य
ईसाई और फारसी वास्तुकला। पेंटिंग एक सम्मानित कला थी - दोनों स्थानीय रूप से प्रेरित और
बीजान्टिन और फारसी प्रेरित। शरिया (मुस्लिम कानून) ने अपना रूप 8. शताब्दी ई. में पाया -
यह भी स्पष्ट रूप से रोमन/बीजान्टिन (अब इस्तांबुल), यहूदी और फारसी कानूनों से प्रेरित है, in
पुराने अरब कानूनों और कुरान के अलावा।

और वे ग्रीस और फारस और भारत से प्राचीन विज्ञान और दर्शन में आए -
पहला तत्कालीन पूर्वी रोमन या बीजान्टिन साम्राज्य के माध्यम से और अंतिम फारस के माध्यम से। लेकिन तब तक नहीं
लगभग 820 ईस्वी - मुहम्मद के लगभग 200 साल बाद, और बहुत धार्मिक अब्बासी के अधीन नहीं
(उनके पहले खलीफा, अबू मुस्लिम के नाम पर) खलीफा - बहुत नया अनुवाद था
ग्रीक और फारसी से। और उसके बाद ही मुस्लिम धीमी गति से अपने स्वर्ण युग की ओर चढ़ना शुरू करते हैं
- और आप पर ध्यान दें: यह केवल किसी प्रकार का बौद्धिक स्वर्ण युग था - और आंशिक रूप से इसके बावजूद और
इस्लाम का विरोध, इस्लाम के कारण नहीं। काल्पनिक राजनीतिक स्वर्ण युग जब लोग और
धर्म शांतिपूर्ण और मैत्रीपूर्ण अगल-बगल मौजूद थे? - यह वास्तव में कभी अस्तित्व में नहीं था।
मुसलमानों का हमेशा भारी हाथ था - उन्होंने हर समय इसका बहुत अधिक उपयोग नहीं किया।

वर्षों से मुस्लिम दार्शनिकों ने सीखा कि पुराने यूनानी और फारसी स्वामी क्या कर सकते थे
उन्हें पढ़ाओ - और कुछ अज्ञात में चले गए। अल-किंडी, अल- जैसे नाम हैं
सरखसी, अल-फ़राबी, इब्न सिना (यूरोप में एविसेना के रूप में जाना जाता है) - और प्रसिद्ध और कुख्यात
अल-ग़ज़ाली, "मुहम्मद के बाद सबसे महान मुसलमान"। विभिन्न प्रकार के दर्शन,
खगोल विज्ञान, गणित, ज्यामिति, चिकित्सा, आदि।

लेकिन कई जल्द ही धर्म के साथ समस्याओं में पड़ गए: कई "नए विचार" इस्लाम के साथ संघर्ष में थे।
इस्लाम ने ज्ञान को दो भागों में विभाजित किया: "इस्लामी" विज्ञान जो इस्लाम की मदद कर सकता है या समझने में मदद कर सकता है
इस्लाम, और "विदेशी" विज्ञान जिसका धर्म के लिए बहुत कम या कुछ भी नहीं था - ये थे
कम या नकारात्मक मूल्य का माना जाता है। पहले धर्म, भाषा जैसे विषय थे

(अरबी) और संबंधित विषयों-कानून, इतिहास मुहम्मद के बाद उनकी शिक्षाओं, भूगोल,
खगोल विज्ञान (धार्मिक समारोहों आदि के लिए सही तिथियां खोजने के लिए), बयानबाजी, और (मुस्लिम)
साहित्य। "विदेशी" - और इस प्रकार अनावश्यक या नकारात्मक भी - विज्ञान में शामिल हैं:
यूनानी और फारसी/भारतीय विज्ञान जैसे भौतिकी, तत्वमीमांसा, दर्शन, की सभी शाखाएँ
गणित और ज्यामिति, प्राकृतिक विज्ञान, कीमिया, चिकित्सा (!!!), और संगीत।

जब कुरान ने ज्ञान प्राप्त करने की बात की, तो इस्लाम "इस्लामी" प्राप्त करना समझ गया
ज्ञान, "विदेशी" ज्ञान नहीं, और "विदेशी" ज्ञान का नकारात्मक मूल्य बन गया
समय बीतने के साथ अधिक से अधिक जोर दिया। इसके खिलाफ विरोध हुआ, और

११३०

पेज 1131

यहां तक कि कारावास और ऐसे विज्ञान करने वाले पुरुषों से भी बदतर (अल-सरखसी एफ। पूर्व के लिए निष्पादित किया गया था
उसका विज्ञान, और वह अकेला नहीं था)।

"विदेशी" विज्ञान के लिए निश्चित अंत, दर्शन शामिल है - नई सोच का विज्ञान
विचार - १०९५ ईस्वी में दर्शन और विज्ञान के विरुद्ध एक पुस्तक के साथ आया: "इनकोहेरेंस ऑफ़
द फिलॉसॉफर्स", अल-ग़ज़ाली द्वारा। १०९५ के बाद एक भी नया नहीं आया
वह विचार या विचार जो मानवता को मदद या आगे ला सकता है
सभी मुस्लिम देश (सुदूर पश्चिम को छोड़कर जहां सोच रहे हैं)
लगभग 100 वर्षों तक चला) - एक भी विचार या नया नहीं
करीब 900 साल तक सोचा!!! पिछले कुछ छोटे अपवाद रहे हैं
कुछ 100 साल, लेकिन ज्यादातर उन्हें धर्म ने रोक दिया है।

सुदूर पश्चिम में सोचने की संभावना का उल्लेख किया - सोचने की स्वतंत्रता नहीं, लेकिन कम से कम
संभावना - इब्न बज्जा (यूरोप में एवम्पेस) जैसे पुरुषों के साथ लगभग एक सदी तक चली,
इब्न तुफायल, और इब्न रुश्द (यूरोप में एवर्रोस)। फिर यहीं अंत भी था।

आइए हम इब्न तुफैल को उद्धृत करें: "धार्मिक सत्य उन लोगों के लिए हैं जो विचारहीन हैं, जिन्हें सीमित करना चाहिए
धार्मिक आज्ञाओं का पालन करने और परंपराओं का पालन करने के लिए उनकी गतिविधियाँ "। "नहीं-
सोचने वाली जनता" - विद्वान मुसलमानों के नेतृत्व में - जीत गई। लगभग १२०० ईस्वी में विचार आया
स्पेन में भी समाप्त। मनमाने ढंग से कोई कह सकता है कि अंत ११९८ में इब्न रुश्द की मृत्यु के साथ आया
ई. इब्न वाराक द्वारा "मैं मुस्लिम क्यों नहीं हूं" उद्धृत करने के लिए: "ज्ञान का विचार"
ज्ञान की खातिर मुस्लिम संबंधों में अर्थहीन था "।

और अंत में रेनन (इस्लाम और मुसलमानों का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक) (अंग्रेजी में अनुवादित) को उद्धृत करने के लिए:
"इस्लाम को एवरोज़ और कई अन्य उत्कृष्ट विचारकों के लिए सम्मान देने के लिए, जो रहते थे"
आधा जीवन जेल में, छिपकर, अनादर में, जिसे मिला
पुस्तकें जल गईं और लगभग समाप्त हो गईं
प्रतिष्ठान, जांच को सम्मान देने जैसा है
गैलीलियो की खोज और संपूर्ण विज्ञान का विकास
रुकने में असमर्थ थे"।

मानवता के लिए कितने नए विचार या विचार
F. EX से आए हैं। वर्ष के बाद अल्जीरिया, मिस्र, सीरिया या फारस
1100 ई.? या अरब से? बिल्कुल शून्य। (लेकिन शब्द "हत्यारा" और कई
साजिश के सिद्धांत वहीं से आए)।

पिछले १०० वर्षों में कुछ छिटपुट और आंशिक रूप से दबे हुए अपवादों के साथ सभी मुसलमान
देश लगभग 900 वर्षों से दिमागी तौर पर मर चुके हैं - पूरी तरह से
इस्लाम द्वारा दबा दिया गया।

यह इस हद तक कि व्यावहारिक चीजों के नए विचार भी कठिन हैं - कैलिफोर्निया राज्य
एक वर्ष में अधिक नए पेटेंट दर्ज करें, जितने पूरे इस्लामी जगत ने एक साथ रखे हैं।

मुसलमानों को केवल नेताओं और सदियों पुराने विचारों और अधिकारियों का पालन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, न कि
गंभीर रूप से सोचें या खुद सोचें।

और किस लिए? अल-अजहर अल-शरीफ द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में
काहिरा में इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम दुनिया में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक .)
ऐसे विषय) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि नहीं

अल्लाह के लिए सबूत, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि यदि

अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, स्वचालित रूप से कोई सबूत भी नहीं है
के लिए, और अल्लाह के साथ मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है। अगर कोई अल्लाह नहीं है
और/या मुहम्मद और एक ईश्वर के बीच कोई संबंध नहीं है, तो इस्लाम क्या है?

इस्लाम के तहत विज्ञान के स्वर्ण युग के लिए बहुत कुछ - यह एक फैशन के बाद और कुछ के लिए अस्तित्व में था
समय, और इसने पुराने यूनानी ज्ञान और कई पुराने यूनानी विचारों को बचाया
(हालांकि यह भुला दिया गया है कि बहुत पुराने ज्ञान भी पूर्वी रोमन के माध्यम से पश्चिम में आए थे
एम्पायर - कॉन्स्टेंटिनोपेल / बायसेंट्ज़), लेकिन काफी हद तक इस्लाम के बावजूद, और काफी हद तक
इस्लाम के कारण नहीं, इस्लाम द्वारा दबाया गया।

और लोगों और धर्मों के सह-निवास मानवतावाद के काल्पनिक स्वर्ण युग के बारे में क्या? यह
बस यही है - एक कहावत। अगला अध्याय देखें।

20.4.09.

भाग XII, अध्याय 4 (= XII-4-0-0)

कुरान से संबंधित विभिन्न विषयों पर संक्षिप्त,
मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह

के बारे में कुछ अंतिम निष्कर्ष कुरान, मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह।

इस पुस्तक में टिप्पणियों की संख्या ३ संख्याएँ (०० या ० सहित) कुछ स्थानों के बाद हैं
एक छोटा अक्षर = स्पष्ट मामले। टिप्पणियों को 00 या 0 और उसके बाद 1, 2 या 3 अक्षरों द्वारा क्रमांकित किया गया
(बड़ा या छोटा) = संभावित मामले।

कुरान का अध्ययन करने के बाद कई विचार और निष्कर्ष निकल सकते हैं - और कम से कम
ये बिल्कुल निश्चित हैं:

1. कुरान किसी सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा नहीं बनाया गया है - कोई भी सर्वज्ञ ईश्वर इतने का उपयोग नहीं करेगा
   गलत तथ्य और विरोधाभास, अमान्य तर्क का उल्लेख नहीं करना और अमान्य और गलत के रूप में भी
   संकेत और सबूत। एफ. पूर्व. एक कल्पित सर्वज्ञ भगवान से केवल एक गलती साबित करने के लिए पर्याप्त है
   कि कुछ गलत है, और कई हैं - सैकड़ों और इससे भी अधिक।
2. कुरान या तो एक नाबालिग भगवान द्वारा सत्ता के लिए अपने रास्ते को धमकाने की कोशिश कर रहा है, एक शैतान द्वारा या किसी और द्वारा बनाया गया है
   अन्य अंधेरे बलों, या मानव या मनुष्यों द्वारा। लेकिन कुछ गलतियाँ आदि इतनी स्पष्ट हैं
   कि न तो कोई छोटा देवता और न ही कोई शैतान उनका उपयोग करेगा - वे जानते थे कि इसका पता चल जाएगा
   जल्दी या बाद में और पुस्तक की विश्वसनीयता नष्ट हो गई।
3. इसके साथ ही वे सभी गलतियाँ जो अरब के आसपास के लोगों के विश्वास से मेल खाती हैं
   मुहम्मद का समय सबसे दृढ़ता से इंगित करता है कि कुरान बनाया गया था - या बनाया गया - एक
   या उस समय अधिक मनुष्य। (ऐसी बहुत सारी गलतियाँ एक संयोग होना - बहुत अधिक।)
4. उस समय के भविष्य का एक भी तथ्य ऐसा नहीं है, जिसके बारे में मुहम्मद ने वास्तविक होने का दावा किया हो
   भविष्यवाणी (और हदीसों में, अल-बुखारी, आपको उसकी पत्नी से कम से कम एक क़ानून मिलेगा
   आयशा (?) ने कहा कि कोई भी कह रहा है कि मुहम्मद भविष्य बता सकते हैं झूठ बोल रहे थे)। एक
   सर्वज्ञ ईश्वर को इस तरह सीमित नहीं किया गया था। और एक भी निशान बाहर कहीं नहीं
   ६१० ईस्वी से पहले एक मुस्लिम या इस्लाम के कुरान/हदीस में अप्रमाणित दावे, in

कुरान और इस्लाम में इसके विपरीत सभी शब्दों के बावजूद। मांग प्रमाण - शब्द और
बयान और दावे इतने सस्ते हैं कि ऐसे मामलों में उनका कोई मूल्य नहीं है।

5. मुसलमानों के लिए वाद-विवाद करने का एक सामान्य तरीका है, कुछ कहना - कोई सबूत नहीं, सिर्फ बयान या दावे - और फिर आप जो कहते हैं उसके लिए सबूत मांगें यदि आप असहमत हैं। ऐसे सबूत अक्सर आसान नहीं होते हैं वहाँ और फिर, और फिर वह प्रतीत होता है "जीत" बिंदु - - - और यहां तक कि अगर आप इसे साबित करते हैं, वह आपके लिए अप्रमाणित करने के लिए सिर्फ नए अप्रमाणित बयानों को लॉन्च करता है। यह सस्ता स्वीकार न करें तकनीक - वे जो कहते हैं उसके लिए सबूत मांगते हैं। और याद रखें: एक मौजूद नहीं है मुहम्मद या इस्लाम या कुरान के लिए किसी भी प्रकार का एकल प्रमाण या विश्वसनीय भविष्यवाणी न तो न ही ऐतिहासिक समय से पहले। ६१० ईस्वी के बाद तक उनमें से किसी का भी कहीं उल्लेख नहीं किया गया है (और इसमें यीशु और उनके शिष्यों की बातें, ओटी में सभी व्यक्ति और सभी ऐतिहासिक शामिल हैं रामसेस II (मूसा के फिरौन) और सिकंदर महान (डुह्ल क़र्नेयन) जैसे व्यक्ति कुरान) विपरीत के बारे में सभी मुस्लिम परियों की कहानियों के बावजूद - एक भी नहीं। वहां बाइबिल में मुहम्मद के लिए एक भी प्रमाण या विश्वसनीय भविष्यवाणी मौजूद नहीं है, इसके बावजूद सभी मुस्लिम इच्छाधारी सोच और "स्पष्टीकरण"। इसके लिए एक भी प्रमाण मौजूद नहीं है अल्लाह, कुरान में सभी "संकेतों" के बावजूद (यहां तक कि इस्लाम भी इसे स्वीकार करता है, हालांकि इसकी ओर नहीं) उनके अशिक्षित अनुयायी) - उनमें से एक भी प्रमाण के रूप में तार्किक रूप से मान्य नहीं है बाइबिल से लिए गए कुछ के संभावित अपवाद - लेकिन वे मामले में यहोवा (यहूदी) को साबित करते हैं और ईसाई भगवान) अल्लाह नहीं), क्योंकि सभी बयान कुछ भी नहीं, या अन्य अमान्य पर बनाए गए हैं बयान किसी भी धर्म में कोई भी पुजारी अपने भगवान के बारे में निः शुल्क उपयोग कर सकता है। वहाँ करता है मुहम्मद की शिक्षाओं के लिए एक भी प्रमाण मौजूद नहीं है - एक भी नहीं। केवल के शब्द मुहम्मद - एक ऐसा व्यक्ति जो संत होने या कहानियों को स्पिन करने में असमर्थ होने से बहुत दूर था या मुस्लिम इतिहास की किताबों के अनुसार विश्वासघात करने के लिए जैसे इस्लाम में बहुत सम्मानित इब्न इशाक: "मोहम्मद का जीवन" या हदीसों के बाद f. भूतपूर्व। अल-बुखारी या मुस्लिम - च। भूतपूर्व। याद करना मुहम्मद के शब्द: "युद्ध विश्वासघात है"। हाँ, यहाँ तक कि मुहम्मद के लिए भी कोई वास्तविक प्रमाण नहीं है (हालांकि यह अत्यधिक संभावना है कि वह एक ऐतिहासिक व्यक्ति था)।
6. इस्लाम के इस कथन का एक भी प्रमाण नहीं है कि अल्लाह वही ईश्वर है जो यहोवा है। वास्तव में यह असंभव है कि वे हैं, क्योंकि भले ही वे सतही प्रतीत हों समानताएं, उनकी शिक्षाओं के मूल सिद्धांत दुनिया से अलग हैं - इतने अलग कि यह साबित होता है 100% कि अल्लाह और यहोवा एक ही ईश्वर नहीं हो सकते जब तक कि वह अत्यधिक सिज़ोफ्रेनिक न हो। (हाँ, वास्तव में अल्लाह को भी सिज़ोफ्रेनिक होना चाहिए यदि वह मक्का के शांतिपूर्ण इस्लाम के बारे में सोचता है ६१०-६२२ ईस्वी, और फिर मदीना के नफरत और युद्ध इस्लाम ६२२-६३२ ईस्वी - में परिवर्तन ६२२ ईस्वी के आसपास के धर्म इतने बड़े हैं। व्याख्या?)
7. इस्लाम अपने मिशनरियों से कहता है कि "गलत" विश्वास और "सूचना" को बदलना मुश्किल है लोगों ने सत्य के रूप में स्वीकार किया है - विशेष रूप से वे चीजें जो उन्होंने बच्चों के रूप में सीखी हैं और हैं उनके सत्य के रूप में स्वीकार किया। यह झूठे या गलत "तथ्यों" के लिए भी जाता है, जिसे मुसलमानों ने स्वीकार किया है सच - और मुसलमानों की धार्मिक मान्यताओं के लिए।
8. "झूठ अक्सर बोलो, और लोग विश्वास करने लगते हैं कि यह सच है"। जोसेफ गोएबल्स - प्रचार के कुख्यात नाजी मंत्री। अल्लाह या इस्लाम के लिए एक भी वास्तविक प्रमाण नहीं है कुरान - यह केवल दावा किया जाता है और दावा किया जाता है और दावा किया जाता है और दावा किया जाता है।
9. आप अक्सर चीजों पर इसलिए विश्वास नहीं करते क्योंकि यह सच है, बल्कि इसलिए कि कोई एकतरफा निर्देश देता है आपके प्रति सूचना और शिक्षा - और अधिकांश मुस्लिम देशों में यही स्थिति है और समाज।
10. यदि मुहम्मद ने इस्लाम बनाया है, तो यह समझना आसान है कि उन्होंने इतना जोर क्यों दिया कि आप गैर-मुसलमानों के साथ चर्चा नहीं करनी चाहिए "जब तक आपके पास शब्दों से ज्यादा मजबूत साधन न हों", और क्यों उन्होंने और भी अधिक बार कई तरीकों से कहा कि यदि आप उनके बारे में बहस करते हैं तो आप एक "काफिर" थे अमान्य "संकेत", आदि, और "अल्लाह और उसके" के बाद राय रखना उचित क्यों नहीं था मैसेंजर" ने फैसला किया था।
11. अगर मुहम्मद ने कुरान की रचना की, तो किताब में और भी बहुत सी बातें समझने में आसान हैं - एफ। भूतपूर्व। प्रमाणों की कमी, अमान्य कथन, "संकेत" और "प्रमाण", गलत "संकेत" और "सबूत", भविष्यवाणी की कमी, सभी गलतियों और गलत तथ्यों का उल्लेख नहीं करना और विरोधाभास, खुद को अल्लाह से बांधना (बहुत स्पष्ट रूप से देखा गया) और अंधों की महिमा करना आस्था।

पेज 1134

12. अगर मुहम्मद ने कुरान की रचना की, तो वह इंसान के लिए सबसे ज्यादा दुख का कारण है दौड़, इस पूरी दुनिया में, आदम के इस तरफ नहीं, बल्कि होमो इरेक्टस लॉन्ग के इस तरफ आधुनिक मनुष्य के अस्तित्व से पहले।
13. अगर मुहम्मद ने कुरान की रचना की, तो उनके अनुयायियों का सही नाम वास्तव में मुसलमान नहीं है लेकिन मुसलमानों की तरह कुछ होना चाहिए या "जिन्हें देखने के अधिकार से वंचित किया गया" स्वर्ग "(यदि स्वर्ग मौजूद है)।
14. इसके अलावा: यह कभी न भूलें कि जब कोई बीमार आदर्शवादी आपको दबाने या मारने का वादा करता है, तो आप उस पर विश्वास करना बेहतर था।

15. और मुस्लिम नारा "दृढ़ता" को कभी न भूलें।

२१.४.०९.

एनबी और पीएस .: लेकिन सभी समान: यह कभी न भूलें कि अधिकांश मुसलमानों का कठोर दृष्टिकोण है
कुरान में छंद। कुछ इसलिए कि वे वास्तव में इस्लाम को शांतिपूर्ण मानते हैं, कुछ इसलिए कि
वे युद्ध और संघर्ष को नापसंद करते हैं, और कुछ को अलग-अलग कारणों से। कभी किसी मुसलमान को बुरा मत समझना
क्योंकि वह एक मुसलमान है। बहुमत अन्य लोगों से बेहतर और बुरा नहीं है।

622 ई. से पहले इस्लाम एक शांतिपूर्ण धर्म था। लेकिन उसमें और उसके बाद नाटकीय रूप से बदल गया
वर्ष। शायद इसलिए कि मुहम्मद को हाइवेमैन और फिर योद्धाओं की जरूरत थी - जैसा कि पहले कहा गया था।
विज्ञान यह भी कहता है कि मुहम्मद की नैतिकता उस समय बदल गई या नष्ट हो गई - या वह
जब वह शक्तिशाली हुआ तो उसका असली रूप सामने आया। उसके बारे में जो भी सच्चाई है, वह निश्चित है
और मदीना में उनकी शिक्षाएँ मक्का में ६१०-६२२ ईस्वी के वर्षों से बहुत भिन्न थीं।

मदीना के लगभग 22 सूरह एक क्रूर और क्षमाशील व्यक्ति और धर्म को दिखाते हैं
शक्ति और महिलाओं और धन (कम से कम अनुयायियों और संभावित अनुयायियों को रिश्वत देने के लिए) - a
नैतिकता और लक्ष्य जिसने अरब में कई आदिम और युद्ध जैसी जनजातियों को आकर्षित किया, और बनाया
धर्म शक्ति और धन में अपनी वास्तविक वृद्धि शुरू करता है। कई के लिए मुख्य आकर्षण नहीं था
मुख्य रूप से धर्म, लेकिन धन और दास और शक्ति की इच्छा "अच्छा और वैध"।

लेकिन आज बहुत से मुसलमान युद्ध में रुचि नहीं रखते, युद्ध नहीं चाहते और उनसे अलग नहीं हैं
अन्य लोगों के रूप में। बहुत से लोग ईमानदारी से सोचते हैं कि इस्लाम एक शांतिपूर्ण और अच्छा धर्म है, और आधार
मक्का से शांतिपूर्ण सूरह पर इस बिंदु पर उनके विश्वास - शायद जानते भी नहीं
कौन से सूरह पहले और आखिरी आए, कौन से वैध हैं और कौन से नहीं। ईमानदारी से शांतिपूर्ण इंसान
अपने पड़ोसियों, मुसलमानों के साथ अच्छे संबंध के साथ शांतिपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं या नहीं। यह है
यह अनुमान लगाना असंभव है कि मुसलमानों का यह हिस्सा कितना बड़ा है, लेकिन हमने जो संख्या देखी है, वह आमतौर पर होती है
दुनिया भर में लगभग 70%, हालांकि एक स्थान से दूसरे स्थान पर काफी सावधान रहना। वहाँ सब है
सभी मुसलमानों को आतंकवादियों या बुरे लोगों की तरह आंकने का कारण स्वचालित रूप से नहीं है।

लेकिन फिर एक ऐसा समूह है जो निश्चित रूप से खुद किसी चीज में हिस्सा नहीं लेगा, लेकिन कौन
मुस्लिम सत्ता के विचारों के प्रति सहानुभूति रखते हैं - इसमें युद्ध और आतंक का उपयोग करना शामिल है, और
इसमें यह भावना शामिल थी कि इस्लाम और मुसलमान अन्य सभी को दबाने के अधिकार के साथ श्रेष्ठ हैं।
दुनिया भर में इस समूह की गिनती लगभग 30% या सभी मुसलमानों से थोड़ी कम हो सकती है। सहानुभूति, पैसा
और इस समूह की सक्रिय मदद से चरमपंथियों के लिए काम करना संभव हो जाता है। ये भी हैं
मुख्य रूप से शांतिपूर्ण लोग, लेकिन वे "सक्रिय" के लिए आतंक और अन्य ज्यादतियों को संभव बनाते हैं
वाले। (और कुल मुसलमानों का ३०% आख़िरकार ३०० मिलियन से अधिक बनाता है)।

फिर "सक्रिय" हैं, जिनमें चरमपंथी और आतंकवादी शामिल हैं। वे अपेक्षाकृत कम हैं -
लेकिन कुछ 1.2 अरब मुसलमानों का एक कम प्रतिशत भी कुल मिलाकर एक संख्या बनाता है
"कार्यकर्ता"

और आपको मारने के लिए कई "कार्यकर्ता" नहीं लगते - और हमारी समस्या यह है कि यह असंभव है
जानिए कौन शांतिपूर्ण है, कौन "युद्ध" में मदद कर रहा है और कौन आतंकवादी है या बनेगा आदि।

जब हम अपने सीमित ज्ञान के साथ इतना कुछ पाते हैं जो गलत है
कुरान, एक वास्तविक विद्वान कितना अधिक सक्षम होगा
पाना!

और एक विचार: अल-अजहर अल द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ द कुरान" में-
काहिरा में शरीफ इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक)
ऐसे विषयों पर दुनिया) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि
अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु
यह है कि अगर अल्लाह के लिए कोई पुतला नहीं है और उसे पटाना असंभव है, तो स्वचालित रूप से भी है
के लिए कोई सबूत नहीं है, और अल्लाह से मुहम्मद के दावा किए गए संबंध को साबित करना असंभव है। अगर वहाँ कोई नहीं है
अल्लाह और/या मुहम्मद और एक ईश्वर के बीच कोई संबंध नहीं है, तो इस्लाम क्या है?

एनबी: अगर आपको कहीं भी कोई गलती मिलती है, तो कृपया हमें सूचित करें। अगर यह एक वास्तविक गलती है, तो यह होगा सुधारा गया।

नायब, नायब, नायब:

1. पहले 2 छोटे अध्याय पढ़ें "कुरान को कैसे पढ़ा जाए इसके लिए कुछ आवश्यक बातें और समझा" (VII-10-1) और "कुरान को शाब्दिक रूप से समझा जाना है यदि और कुछ नहीं है संकेत दिया" (VII-10-2)।

2. http://www.1000mistakes.com को कई मुस्लिम अधिकारियों ने ब्लॉक कर दिया है। के साथ बहस करने के लिए ऐसे क्षेत्रों में रहने वाले लोग, जो आप चाहते हैं उसे काट कर चिपकाएँ और इसे शीर्षकों के तहत भेजें http://www.1000mistakes.com से अलग।

3. http://www.1000mistakes.com उन 9 पेजों में से एक है, जिन्हें मुस्लिम संगठनों ने चेतावनी दी थी विशेष रूप से 2008 और 2009 के खिलाफ - यह विशेष रूप से प्रोसेलिट्स को अपना विश्वास खो सकता है इस्लाम; सही और "डाउन-टू-द-अर्थ" जानकारी काम करती है। इस संबंध में यह लायक है यह देखते हुए कि "चेतावनी" में http://www.1000mistakes.com 3 में से एक था जो न तो था गलत तथ्य लाने का आरोप लगाया, न ही हेट पेज होने का।

४. टिप्पणी १४१ (श्लोक ६/१४९ तक) "कुरान का संदेश" (देखें बिंदु ५) बताते हैं (स्वीडिश से अनुवादित) अल्लाह के दावा किए गए सर्वज्ञता बनाम मनुष्य की दावा की गई स्वतंत्र इच्छा के बारे में:

"दूसरे शब्दों के साथ: भविष्य के बारे में अल्लाह के ज्ञान के बीच वास्तविक संबंध (और .) फलस्वरूप भविष्य में क्या होने वाला है*) एक तरफ अपरिहार्य के बारे में और दूसरे पर मनुष्य की अपेक्षाकृत (!!*) स्वतंत्र इच्छा - दो कथन जो प्रत्येक के विपरीत प्रतीत होते हैं अन्य - वह बाहर है जो मनुष्य के लिए समझना संभव है, लेकिन जैसा कि दोनों कथन हैं अल्लाह से बना (कुरान* में) दोनों सच होने चाहिए"। अविश्वसनीय। अंध विश्वास ही है जीवन का सही और बुद्धिमान तरीका, पूरी तरह से असंभव का सामना करते हुए भी !!

5. और एक विचार: अल-अजहर अल द्वारा प्रमाणित पुस्तक "द मैसेज ऑफ कुरान" में- काहिरा में शरीफ इस्लामिक रिसर्च अकादमी (मुस्लिम में 2-3 शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक) ऐसे विषयों पर दुनिया) 27 दिसंबर 1998 के एक पत्र में, यह अनिच्छा से स्वीकार किया जाता है कि अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं हैं, और उसे साबित करना संभव नहीं है। यहाँ एक अतिरिक्त बिंदु यह है कि अगर अल्लाह के लिए कोई सबूत नहीं है और उसे साबित करना असंभव है, तो स्वचालित रूप से भी है कोई सबूत नहीं है, और यह साबित करना असंभव है कि मुहम्मद का ईश्वर से संबंध है। और अगर वहाँ अल्लाह नहीं है और/या मुहम्मद और ईश्वर के बीच कोई संबंध नहीं है, तो मुहम्मद क्या है? - और इस्लाम से बढ़कर क्या है? - एक बना हुआ, अमान्य धर्म?

6. आगे: उस पुस्तक में सभी गलतियाँ, अंतर्विरोध आदि 100% साबित करते हैं कि कुरान नहीं है एक सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा किया गया - कोई भी ईश्वर ऐसी और इतनी गलतियाँ आदि नहीं करता है। यदि इस्लाम है तो a धर्म बनाया, फिर उन सभी मुसलमानों का क्या जिन्हें देखने से मना किया गया है एक वास्तविक धर्म के लिए (यदि ऐसा कोई मौजूद है)? और जीने के बाद कहाँ जागेंगे और इस्लाम जैसे अमानवीय युद्ध धर्म का पालन करना कुरान (और हदीसों) के अनुसार है। अगर कहीं दूसरा जीवन है? - नरक या स्वर्ग?

7. एनबी और पीएस: आप किसी चीज के बारे में कितने भी आश्वस्त हों, अगर यह साबित नहीं होता है, तो यह नहीं है ज्ञान, केवल विश्वास या दृढ़ विश्वास, और गलत हो सकता है। केवल वही साबित या संभव है सिद्ध ज्ञान है।

(जैसा कि http://www.1000mistakes.com कई मुस्लिम क्षेत्रों में अवरुद्ध है - जो दर्शाता है कि वे हैं इससे डरते हैं और तर्कों की कमी करते हैं (यदि उनके पास http://www.1000mistakes.com के लिए वास्तविक तर्क थे) गलत है, ब्लॉक करना अनावश्यक था) - जो कुछ भी आप चाहते हैं उसे "काटें और पेस्ट करें" और भेजें if आप सूचित करना चाहते हैं या वहां बहस करना चाहते हैं। नाम छोड़ना याद रखें http://www.1000mistakes.com)।

श्रीमान / महोदया।

मुस्लिम आतंकवाद के युग में इस तरह के तथ्यों के बारे में लोगों को सूचित करना एक विचार हो सकता है - सच
जानकारी रूढ़िवादी इस्लाम के लिए हानिकारक है। यह कुछ मुसलमानों को नाराज कर सकता है - और बहुत कुछ।
लेकिन गुस्सा किसके खिलाफ अगर यह गुमनाम रूप से और इंटरनेट कैफे से मुस्लिम में पोस्ट किया जाता है या
अन्य देश? या अन्य तरीकों से गुमनाम रूप से वितरित किया गया? एफ. पूर्व. को प्रतियां भेजकर
जिन व्यक्तियों में रुचि हो सकती है।

यह कुछ युवा मुस्लिम या मुस्लिम धर्म अपनाने वालों को सोचने पर मजबूर कर सकता है। कुछ वर्षों में यह
काम कर सकता है - शायद आतंकवादियों की संख्या 1-2% कम करें यदि यह पर्याप्त पाठकों तक पहुँचता है।
(समाचार PR. 2009: मुस्लिम संगठनों ने कुछ इंटरनेट के खिलाफ चेतावनी दी है)
पन्ने क्योंकि वे मुस्लिम दुराचार के लिए विनाशकारी हो सकते हैं। में से एक
नाम द्वारा उल्लिखित 9 http://www.1000mistakes.com है - और केवल 3 में से एक नहीं है
"हेट पेज" कहा जाता है या गलत तथ्य देने का दावा किया जाता है।

और यह आतंकवादियों और आतंकवादी भर्ती से लड़ने का एक बहुत ही सस्ता तरीका है।

मुद्रण कई मामलों में अधिक कुशल होगा, लेकिन बहुत सावधान रहें। कुछ वर्षों में हो सकता है
जब पाठ इंटरनेट से पर्याप्त रूप से जाना जाता है? - अगर सर्वर अवरुद्ध या मजबूर नहीं हैं
इसे हटा दें - - - शक्ति शक्ति है और आतंक आतंक है। लेकिन आप चाहें तो आगे बढ़ें। किताबें अक्सर जाती हैं
इंटरनेट से आगे। लेकिन यह पांडुलिपि बड़ी है (3.75 Mb pr. Oct.2009) - यह प्रिंट करने के लिए भुगतान कर सकती है
एफ। भूतपूर्व। केवल विषयों के अनुसार व्यवस्थित की गई गलतियाँ + ५ मेगा गलतियाँ + गलतियाँ

मुस्लिम विद्वानों और इस्लाम + अंतर्विरोधों + कुछ और द्वारा स्वीकार किया गया। लेकिन अगर आपका लक्ष्य
इस्लाम का अध्ययन करने वाले छात्रों की पूरी सूची शामिल की जानी चाहिए।

एक चीज जो किसी को नहीं करनी चाहिए - भले ही कुछ अमेरिकियों को विशेष रूप से लुभाया जाएगा - वह है
इस प्रो-क्रिश्चियन या प्रो-एनीथिंग-जैसे प्रोजेक्ट बनाएं। तो ज्यादातर मुसलमान इसे खारिज कर देंगे
प्रचार के रूप में। सादा सत्य के अलावा काफी है - एक शिक्षित, बुद्धिमान के लिए यह असंभव है
यह मानने के लिए प्रशिक्षित व्यक्ति कि कुरान एक भगवान द्वारा बनाया गया है। बहुत ज्यादा हैं
गलत तथ्य और अन्य गलतियाँ, और बहुत सारे अमान्य दावे, "संकेत" और "सबूत", आदि।
आखिरी वाले वास्तव में ठगों, धोखेबाजों, धोखेबाजों - और राजनेताओं की पहचान हैं
(मुहम्मद एक चतुर राजनीतिज्ञ थे)।

कुरान में गलतियों के बारे में इंटरनेट पर बहुत कुछ है, लेकिन हमें ऐसा कुछ नहीं मिला है
पृष्ठ।

यदि आप अपनी इच्छानुसार किसी भी भाषा में इसका अनुवाद कर सकते हैं - अंग्रेजी नहीं बोलने वालों के लिए। हम कर
f में अनुवाद करने की क्षमता या भाषाई ज्ञान स्वयं नहीं है। भूतपूर्व। मुसलमान
भाषाएं। या अपनी भाषा में छपाई के लिए - तो उस भाषा में कुरान का प्रयोग करें
उस पुस्तक के उद्धरणों के अनुवाद के लिए - लेकिन सावधान रहें कि यूसुफ अली के अनुवाद
कभी-कभी कुछ अन्य की तुलना में अधिक सही हो सकता है।

यदि आप स्वयं इसका उपयोग नहीं कर सकते हैं या नहीं करेंगे, तो इस पते को किसी ऐसे व्यक्ति को अग्रेषित करें जो कर सकता है।

भाग XII, अध्याय 4 (= XII-4-0-0)

**कुरान से संबंधित विभिन्न विषयों पर संक्षिप्त,
मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम और अल्लाह**

कुछ प्रासंगिक पते कुरान के बारे में जानकारी, मुहम्मद, मुसलमान, इस्लाम, अल्लाह, आदि।

1. http://news.bbc.co.uk./2/hi/science/nature/2865009.stm
टीएलई - मुहम्मद' घ बीमारी?

2. http://www.islamist.dk/forum/ahowthread.php?t=121
की एक अच्छी सूची पता

2 बी. http://www.islamist.dk (डेनिश और कुछ अंग्रेजी)
नकारात्मक करने के लिए इस्लाम।

3. http://face-of-muhammad.blogspot.com
NS मुहम्मद

११३७

पेज 1138

कार्टून - एक नज़र देख लो और हमें बताओ: Is यह कुछ चलाने के लिए मजाक के लिए? - इस्लाम और मुसलमान कागजात है बहुत कुछ था और भी बुरा कार्टून अबोर या शामिल अन्य धर्मों प्रतीक

4. http://www.thereligion of शांति . com/Pages/Links.htm
एक अच्छी सूची ओग पते।

4 बी. http://www.thereligionofpeace.com
न राजनीतिक, न धार्मिक, लेकिन नकारात्मक से इस्लाम। अच्छा जानकारी।

5. http://listislam.freeweb-hosting.org/
बड़ा पता सूची, लेकिन के कई पतों अक्रिय।

6. http://answereing-islam.org/
अच्छा जानकारी।

यहूदियों के बारे में

7. batyeor@club-soft.ch — तथा ईसाइयों अंतर्गत मुस्लिम शासन

पेज 1139

के माध्यम से इतिहास।

8. http://www.faithfreedom.info — हो सकता है दैनिक के लिए सर्वश्रेष्ठ जानकारी इस्लाम के बारे में।

9. watch.islam@gmail.com — एक अच्छी पहल।

10. http://answering-islam.org/ — एक वाद - विवाद स्थल।

11. http://debatt.aftenposten.no/item.php?GroupID=57&Group=&ThreadID=168060 — एक वाद - विवाद इस्लाम के बारे में 900+ . के साथ टिप्पणियाँ, आंशिक रूप से अंग्रेज़ी, आंशिक रूप से स्कैंडिनेवियाई .

और जोड़े जाएंगे।